प्रकाशक

चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा गठित
उपसमिति राजस्थानी सबद कोस
पावटा, जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय
द्वारा संचालित प्रादेशिक भाषाओं के
विकास संबंधी योजना से सहायता प्राप्त

प्रथम संस्करण

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस
जोधपुर

तुलसी साथी विपत के, विद्या विनय विवेक ।
साहस सुकृत सत्य वृत, राम भरोसौ एक ॥

महात्मा तुलसीदास

अपनी बात

राजस्थानी शब्द कोश का कार्य अब गतिशील बन रहा है। यही कारण है कि हम एक वर्ष के अल्पकाल में ही पाठकों के सम्मुख द्वितीय खंड की द्वितीय जिल्द प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रथम खंड एवं द्वितीय खंड की प्रथम जिल्द के बीच में चार वर्ष का लम्बा समय निकल गया था। हम उम्मीद कर रहे हैं कि इतना समय अब नहीं लग पायेगा। और दो तीन वर्षों में ही पूर्ण कोश को विद्वानों एवं सहृदय पाठकों के सामने प्रस्तुत कर सकेगें।

इस नवीन विश्वास के क्या कारण है? यह भी बता देना उचित होगा। यदि कोश के कार्य केवल श्रम साध्य एवं वैयक्ति लगन का ही परिणाम होता तो यह कोश कभी का सम्पूर्ण बन गया होता। कोश की तैयारी के लिए वस्तुतः एक ऐसे तंत्र की व्यवस्था बिठानी पड़ती है, जिससे शब्द, अर्थ और उसकी व्यंजना के साथ साथ उन्हें स्वर–वर्ण के क्रमानुसार व्यवस्थित भी करना होता है। अतः इस तंत्र में बौद्धिक एवं लिपिक की वैविध्यपूर्ण कल्पना एवं विचारगत का एक संतुलन निर्मित करना पड़ता है। इस व्यवस्था को बनाने के लिये धन, अर्थात् द्रव्य की भी आवश्यकता रहती है। इतना ही नहीं इस प्रकार की पांडुलिपि को छपा लेने में भी काफी द्रव्य की आवश्यकता रहती है। अर्थात् कोश के कार्य की गति को तीव्र बनाने के लिये श्रम एवं साधना के अतिरिक्त धन का भी कम योगदान नहीं रहता। वस्तुतः आज हमारे कार्य में सबसे बड़ा व्यवधान द्रव्य का समुचित संग्रह ही रहा है।

कोश के कार्य के लिए केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने सन् १९५९–६० से सहायता देना प्रारंभ किया और गत वर्ष तक (१९६६–६७) के कार्यकाल तक सहायता बराबर मिलती रही। इस वर्ष भी उम्मीद है कि यथा-साधन हमें सहायता मिलेगी। हम इस सहायता को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं। वस्तुतः यही आर्थिक सहायता कोश को छपवाने में सहायक सिद्ध हुई। किन्तु राजकीय नियमों के क्रम में यह सहायता वर्ष के किसी भी अवसर पर मिला करती है, और परिणाम स्वरूप सहायता की आशंका में कार्य की गतिविधि कभी धीमी और कभी तीव्र हो जाया करती थी।

इस गंभीर परिस्थिति में हमें सबसे बड़ा सहारा राजस्थान के शिक्षा विभाग ने प्रदान किया। शिक्षा विभाग ने कार्य की महता को स्वीकृत करते हुए, एक ऐसी व्यवस्था के लिए आर्थिक सहायता देना मन्जूर किया, जिससे कोश कार्यालय का बुनियादी कार्य किसी भी हालत में रुके नहीं। इस सहायता को मिलेते हुए आज एक वर्ष से कुछ ही अधिक महीने बीत चुके हैं और इस काल में कोश कार्य सन्तोषजनक गति से विकसित हो सका है। इस कार्य का श्रेय राजस्थान शिक्षा विभाग के अपर शिक्षा निदेशक श्री अनिल बोर्दिया को है, जिन्होंने साहित्यिक सहृदयता और कोश के महत्व को आत्मसात करके आवश्यक सहायता की नियमानुकूल व्यवस्था करवाने में सम्पूर्ण सहायता प्रदान की। श्री बोर्दिया को अपनी सहायता के लिए राजस्थान का वर्तमान साहित्यिक समाज ही नहीं अपितु भारतीय भाषाओं के असंख्य विद्वानों का सम्पूर्ण दल अपने अन्तरतम मन से आशीर्वाद प्रदान करेगा, हमारी उपसमिति का यह अचल विश्वास है कि कोश जैसे कार्य से न केवल आज के समाज, बल्कि भावी समाज और भावी पीढ़ी की एक बहुत बड़ी सांस्कृतिक मांग पूर्ण हुआ करती है, और वही पीढ़ी ऐसे कार्य का सही सही मूल्यांकन करने में समर्थ होगी।

यहां हम पुनः उल्लेख करना चाहते हैं कि राजस्थानी हिन्दी बृहद शब्द कोश में प्रथम खंड में स्वर-प्रकरण एवं क-वग के सभी अक्षारों का क्रमानुसार प्रकाशन आठ सौ तीस पृष्ठों में पूर्ण हो चुका है। इसी प्रकार द्वितीय खंड की प्रथम जिल्द में "च" अक्षर से लेकर "त" अक्षर तक पहुंचा जा सका। यहां तक पृष्ट संख्या १५९८ पहुंच गई। प्रस्तुत जिल्द अर्थात् द्वितीय

खंड की द्वितीयजिल्द में हम "थ" अक्षर से न" अक्षर तक पहुंचे हैं, और पृष्ठों की दृष्टि से २२४५ तक आ गये हैं हमें विश्वास है कि यथाशीघ्र तृतीय खंड को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकेंगें। कोश की प्रेस कापी काफी सीमा तक आगे बढ़ चुकी है।

इस जिल्द के छपते हुए, हमारे कार्य के सहयोगी रूप में भारत सरकार के राज्य शिक्षा मन्त्री श्री भागवत झा आजाद, संसद सदस्य सेठ श्री गोविन्दास एवं श्री अमृत नाहटा का नवीन सहयोग और समर्थन प्राप्त हुआ। अन्य सभी राजस्थानी एवं भारतीय सज्जनो का सहयोग उसी रूप में मिल रहा है, जो गत खंडों के प्रकाशन के दौरान में मिल रहा था। हम पुनः अपना धन्यवाद सभी महानुभावों के प्रति दोहराते हैं।

इसी कार्यकाल में कोश सम्बन्वी उपसमिति का पुनर्गठन भी हुआ और अब यह कार्य कुशल प्रशासक ब्रिगेडियर श्री आपजी रणधीरसिंहजी जी साहब की देख रेख में चल रहा है। श्री आपजी के सक्रिय सहयोग ने कोश कार्यालय को नवीन प्राण दिये हैं। इन्हीं आशापूर्ण संकेतों के बीच में राजस्थान के अक्षरों एवं शब्दों का इतिहास लिखा जा रहा है। भविष्य की उज्जवल कामना के साथ पाठकों के हाथ में यह जिल्द सौंपते हुए, मन में असीम हर्ष है।

विनीत

(कर्नल) ठा० श्यामसिंह

सचिव

उपसमिति राजस्थांनी सबद कोस जोधपुर

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा
सं० २०२४ वि०

—: दूहा सोरठा :—

नारायण भूले नहीं, अपणी मायाईश । रोग पैल आखद रचैं, जगवाला जगदीश ॥१॥
साच न वूढो होय, साच अमर संसार में । कैंतो घोबो कोय, ओ सेवट प्रकटै 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम । इण सूं पूरै आज, सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह, ईशर कीरपा सू उदय ॥४॥
सत ऊजल संदेश, उदयराज उजल अखे । दीपै वांरा देश, ज्यारा साहित जगमगे ॥५॥

भारत संसद में सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भासावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानो तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में अपणी भासा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरू हुवो ।

राजस्थानी रो विरोध में अकसर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो । ओ घाटो मिटावण सारु में श्री सीतारामजी लालस ने क्यो क्योकि हूँ जाणता हो के डिंगल रा शब्द संग्रह रो उणां ने कांफी अनुभव है । श्री सीतारामजी इणा काम सारु तैयार हो गया ने म्हें दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग से मैनत सूं कोश रो काम शुरू कियो ने इण में खर्च रोमदत रो जरुरत हुई तो उसा बाबत म्हें स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब वार एटला पोकरण ने अरज करी । इणां कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १–५–५१ सूं रुपीया री मदद देणी चालू कर दीवी । सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दियो और म्हें दोनू तारीख १–५–५१ सूं सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बंद हो गई । इण सूं सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बन्द रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री पूरी लगन ही । म्हें करनल श्री सोमसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ में कोश में सहायता देण सारु कागद लिखियों उण रो जबाब उणां तारीख २९–६–५६ रा कागद में म्हने लिखियों के कोश सारु मावार रु० ५०), ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला । परन्तु उणांरा पिता करनल श्री अनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू में देरी हुई । उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में मास नवम्बर रा अन्त में ने दिसम्बर रा सरु में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणां री सहायता सूं सन् १९५७ री जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दिया क्योकि जद उणां रो तबादला जोधपुर में हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दों री स्लिप कोपिया पेलो बणी हुई ही । उणारी स्लिपां काट काटकर अक्षरवार अलग अलग कर दी गई ने नवा शब्द भी जो मिलिया के शामिल कर दिया गया । इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां ने अक्षरवार रजिस्टरों में लिख लिया गया । इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो । म्हें पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोष करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया रीं सहायता सूं पूरी हुवो ।

इणरे बाद प्रेस कापी बणाइण रो काम चालू हुवे । उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सू श्री नीवांज ठाकुर साहब सू रुपियां री सहायता लेने करायो ने करे छपण री प्रबन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासणी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११–३–१९५६ ने सीतारामजी ने इण सांध संस्था शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपु घणी मदत ही इण वास्ते बैकुठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां । तारीख २२–५–५७ ने लिख दय मुजब हो :—

चांद बाव
ता० २२ - ५

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यन्त्र श्री उदयराजजी उज्जवल यन्त्री (मेकेनिक) के वल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जांचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश विविध भाषाओं के वल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा हैं राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूर्ण संतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान काय प्रशंसा करेंगे। फकत नित्यानंद शास्त्री।

इणी तरे ननण विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाओ रो जाणकार है ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनी विज्ञान संबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान में आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनूं कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारा मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह वधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है :—

THINITY COLLEGE, CAMBRIDGE 26 Feb., 1960.

It is excellent news for Indo-Aryan Linguistics that the Rajastani Dictionary of Shri Udayraj Ujjwal and Shri Sitaram Lalas is now to be published Rajasthani has long presented a serious gap in the comparative Study of the vaca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at last it is filled by the devoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors, I know well and difficulties that have beset the under taking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no longer be denied.

Sd. W. S. Allen. M.A.P.H.D.
Protessor of Comprative Philology
In the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों रो रुपीया रो मदत सूं शुरू होय ने पूरो वणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफक महे ता० २६-६-५७ ने इण वावत काव्य गीत, कवित, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वा अठे दिया जावे है इणा ने दोनूं सरदारो रो धन्यवाद रे तौर पर वणने है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी में

कोम मरु वाणरो सुणे वण्यो नह किणी सू, लाख शब्दो तणे वडो लेखो गया भूपात कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजाना नरेसो देखता, गया तजमाल, ठकरेत गाढा। सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पंथ धन छोड़ लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे संसार में, सुजसफल लागवे घणी सरसे। मिले सुखलाध हितकर चित समाजां, दिनों दिन कितां सनमान दरसे ॥३॥
पांण मरु वांन है प्रांत रो परंपर. वेण परताप राजस्थान ऊचों। रखी नह पढण में भायखां प्रांतरी, निरखतां जाय है प्रांत नीचों ॥४॥
वणाई चारणों व्याकरण विधोवित्र, वणेगी कोश ही लाख सवदो। सीत रो परिश्रम अथग फलियों सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सकल सवदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चापे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कीयो। पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामंसी रौडले कांम सीधी ॥६॥
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण, कमवज आज अखियाज कीधी। वार विपरीत में हजारो खरचवे, दाद ऊजल 'उदे' देस दीधी ॥७॥
चारणा दोय मिल व्याकरण कोश रचि, वण्या नह वडो कवराज मिलियो। कमवा दोय मिलकियी सुभकांमजो, महीयो कियो नह वीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूर्यमल मिशण से वनाया वंस भास्कर बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदियापुर रान के कोप वल धरके।
सीताराम लालस ने कीन राजस्थानी कोश, उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोश हित कोप वने दानी धनवधर के।
प्रान्त की प्रवल भाषा प्रतिष्ठित परंपरा विभुवन दीनमाल वीरपद वाला है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हू में रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है।
डूवत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित विदाजा है।
जीवित उहेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके वनेगे जिआला है।

Sd. ह० उदयराज उज्वल
Sd. Nemi chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

ared by
Bhawar Singh
क्ष्मीप्रकाश गुप्ता

संकेताक्षरों का विवरण

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचियता का नाम
अं०	अंग्रेजी	
अ०	अरबी	
अक०	अकर्मक	
अक० रू०	अकर्मक रूप	
अनु०	अनुकरण	
अनेक०, अनेका०	अनेकार्थी कोश	श्री उदयरांम बारहट (गूंगा)
अप०	अपभ्रंश	
अमरत	अमरत सागर	श्री महाराजा प्रतापसिंह (जयपुर)
अ०मा०	अवधान माला	श्री उदयरांम बारहट (गूंगा)
अ०रू०	अकर्मक रूप	
अल्प० अल्पा०	अल्पार्थ रूप	
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	सिवदास गाडण
अव्य०	अव्यय	
इब०	इबरानी	
उ०	उदाहरण	
उप०	उपसर्ग	
उभ०लि०	उभयलिंग	
ऊ०र०	उक्ति रत्नाकर	
ऊ०का०	ऊमर काव्य	श्री ऊमरदांन लाळस
एका०	एकाक्षरी नांम माळा	श्री वीरभांण रतनू, श्री उदयरांम बारहट (गूंगा)
ऐ०जै०का०सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपादक-अगरचंद जी नाहटा
क०कु०बो०	कविकुळ बोध	श्री उदयरांम बारहट
क०च०	करणी चरित्र	ठा० किशोरसिंह बार्हस्पत्य
कर्म०वा०, कर्म०वा०रू०	कर्म वाच्य रूप	
कहा०	कहावत	
कां०दे०प्र०	कान्हड़ दे प्रबंध	श्री पद्मनाभ
क्रि०	क्रिया	
क्रि०अ०	क्रिया अकर्मक	
क्रि०प्र०	क्रिया प्रयोग	
क्रि०प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	
क्रि०वि०	क्रिया विशेषण	
क्रि०स०	क्रिया सकर्मक	
क्व०क्व०प्र०	क्वचित् प्रयोग	
क्षेत्र	क्षेत्रीय प्रयोग	
ग०मो०	गज मोख	हरसूर बारहठ
गी०रां०	गीत रांमायण	श्री अमृतलाल माथुर
गु०	गुजराती	(कुचेरा निवासी)

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
गु०रू०बं०	गुण रूपक बंध	श्री केसोदास गाडण
गो०र०	गोरादि	
गो०रू०	गोगादे रूपक	श्री पहाड़ खां आढो
ची०	चीनी	
चेत मांनखा	चेतमांनखा	श्री रेवतदांन कल्पित
चौबोली	चौबोली	सम्पादक डॉ० कन्हैयालाल सहल
ज०खि०	जग्गा खिड़िया रा कवित्त	श्री जग्गो खिड़ियो
जा०	जापानी	
ज्यो०	ज्योतिष	
डि०	डिंगल	
डि०को०	डिंगल कोश	कविराजा मुरारिदांन जी (बूंदी)
डि०नां०मा०	डिंगल नांम माला	श्री हरराज (कवि)
ढो०मा०	ढोला मारू [1]	सम्पादक श्री रामसिंह श्री सूर्य करण पारीक श्री नरोत्तमदास स्वामी
तु०	तुर्की	
द०दा०	दयालदास री ख्यात	श्री दयालदास सिंढायच
दसदेव	दस देव	नांनूरांम संस्कर्ता
द०वि०	दलपत विलास	सम्पादक श्री रावत सारस्वत
दे०	देखो	
देवि, देवी	श्री देवियांण	श्री ईसरदास बारहठ
द्रो०पु०	द्रोपदी पुकार	श्री रांमनाथ कवियो
ध०व०ग्रं०	धर्म वर्धन ग्रंथावली	संपादक अगरचंद नाहटा
ना०मा०	नांम माला	अज्ञात
ना०डि०को०	नागराज डिंगल कोस	श्री नागराज पिंगल
ना०द०	नाग दमण	श्री साइयां झूला
नी०प्र०	नीति प्रकास	श्री सगरांम सिंह मुहणोत
नैणसी	मुहणोत नैणसी री ख्यात	प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
पं०	पंजाबी	
पं०पं०चौ०	पंच पंडव चरित्र	शालिभद्र सूरि
प०च०चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	लब्धोदय
पर्याय	पर्यायवाची शब्द	
पा०	पाली	
पा०प्र०	पाबू प्रकास	कवि श्री मोडजी आसियो
पि०प्र०	पिंगल प्रकास	श्री हमीरदांन रतनू
पी०ग्रं०	पीरदांन ग्रंथावली	पीरदांन लालस

१. इसके अतिरिक्त हमने "ढोला मारू" की भिन्न २ लेखकों द्वारा लिखित हस्तलिखित वार्तों की प्रतियों में से भी शब्द लिए हैं, उनका भी संकेत चिन्ह ढो.मा. ही रखा गया है।

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
पु०	पुलिंग	
पुर्त्त०	पुर्त्तगाली	
पृष०	पृषोदरादि	
पे०रू०	पेमसिंह रूपक	श्री प्रतापदान गाडण
प्र०	प्रत्यय	
प्रा०	प्राकृत	
प्रा०प्र०	प्राचीन प्रयोग	
प्रा०रू०	प्राचीन रूप	
प्रे०	प्रेरणार्थक	
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	
फा०	फारसी	
फ्रां०	फ्रांसिसी	
बहु०	बहु वचन	
बां०दा०	बांकीदास ग्रंथावली भाग १,२,३.	श्री बांकीदास
बां०दा०ख्या०	बांकीदास री ख्यात	श्री बांकीदास
बी०दे०	बीसल दे रासो	बीसल दे
भ०मा०	भक्तमाल	श्री ब्रह्मदास जी दादूपंथी
भाव०	भाव वाचक	
भाव वा भाव वा०रू	भाव वाच्य रूप	
भिक्खु	भिक्खु दृष्टान्त	
भि०द्र०	,, ,,	
भू०	भूतकाल	
भू०का०क्रि०	भूत कालिक क्रिया	
भू०का०कृ०	भूतकालिक कृदन्त	
भू०का०प्र०	भूत कालिक प्रयोग	
भ्रं०पु०	भ्रंगी पुराण	श्री सूरदास
म०	मराठी	
मह०महत्व०	महत्ववाची शब्द	
मा०	मागधी	
मा०का०प्र०	माधवानल काम कंदला प्रबंध	कवि गणपति
मा०म०	मारवाड़ मृर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी श्री देवी प्रसाद
मि०	मिलाओ	
मीरां	मीरां बाई	
मु०मुहा०	मुहावरा	
मेघ०	मेघदूत	श्री नारायणसिंह भाटी
मे०म०	मेहाई महिमा	श्री हिंगलाजदान कवियो
यू०	यूनानी	
यौ०	यौगिक	
र०ज०प्र०	रघुवरजस प्रकास	श्री किसनो आढो

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
र०रू०	रघुनाथ रूपक गीतां रो	श्री मंछाराम, मंछकवि
र० वचनिका	रतनसिंह महेशदासोत री वचनिका	जग्गो खिड़ियो
र० हमीर	रतना हमीर री वारता	महाराजा मानसिंह जोधपुर
रा०	राजस्थानी	
रा०ज०रासो	राउ जैतसी रो रासो	अज्ञात
रा०जै०सी०	राउ जैतसी रो छंद	श्री बीठू सूजो नगराजोत
रात वासो	राजस्थांनी कांणी संग्रह	नृसिंह राजपुरोहित
रा०दू०	राजस्थानी दूहा	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
रा०प्र०	राजस्थानी प्रत्यय	
रां०रा० रांम रासो	रांम रासो	श्री माधोदास दधवाड़ियो
रा०रू०	राज रूपक	श्री वीरभांण रतनू
रा०वं०वि०	राठोड़वंस री विगत	अज्ञात
रा०सा०सं०	राजस्थानी साहित्य - संग्रह भाग १	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
ल०पिं०	लखपति पिंगल	श्री हमीरदान रतनू
ला०रा०	लावा रासो	श्री गोपालदांन कवियो
लू०	लू	ठा० चन्द्रसिंह बीको
लै०	लैटिन	
लो०गी०	राजस्थानी लोक गीत	
वं०भा०	वंश भास्कर	श्री सूर्यमल मीसण
व०	वर्तमान काल	
व०का०कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त	
वचनिका	वचनिका रतनसिंह महेशदासोत री	श्री जग्गो खिड़ियो
वरसगांठ		श्री मुरलीधर व्यास
व०स०	वर्णक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल सांडेसरा आदि
वांणी	संत वाणी	
वादळी	वादळी	ठा० चन्द्रसिंह बीको
वि०	विशेषण	
वि०कु०	विनय कुमार कुसुमांजली	
विलो०	विलोम	
वि०वि०	विशेष विवरण	
वि०सं०	विरुद सिणगार	कविराजा करणीदान कवियो
वी०दे०	वीसल दे रासो	
वी०मा०	वीरमायण	बहादुर ढाढी
वी०स०	वीर सतसई	सूर्यमल मीसण
वी०स०टी०	वीर सतसई टीका	श्री किसोरदांन बारहट
वेलि०	वेलि किसन रुकमणी री	महाराजा प्रिथीराज राठोड़
वेलि०टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
व्या०	व्याकरण	
शक०	शकदादि	
शा०हो०	शालि होत्र	
शि०वि०	शिखर वंशोत्पत्ति	श्री गोपाल कवियो
शि०सु०रू०	शिवदांन सुजस रूपक	श्री लालदांन बारहट
सं०	संस्कृत	
सं०उ०	संज्ञा उभय लिंग	
सं०पु०	संज्ञा पुल्लिंग	
सं०स्त्री	संज्ञा स्त्री लिंग	
स०	सकर्मक	
स०कु०	समय सुन्दर कृति कुसुमांजली	महाकवि समय सुन्दर
स०रू०	सकर्मक रूप	
सर्व०	सर्वनाम	
सू०प्र०	सूरज प्रकाश	कविराज करणीदान कवियो
स्त्री०	स्त्री लिंग	
स्पे०	स्पेनिश	
श्री हरि पु०	श्री हरि पुरुषजी	
ह०नां० / ह०ना०मा०	हमीर नाम माला	हमीरदान रतनूं
ह०पु०वां०	श्री हरि पुरुषजी की वांणी	
हं०प्र०	हंस प्रबोध	श्री हमीरसिंहजी राठौड़
ह०र०	हरि रस	श्री ईसरदास बारहठ
हा०झा	हाला झालां रा कुण्डलिया	श्री ईसरदास बारहठ

* [यह संकेत इस बात को सूचित करता है कि यह शब्द केवल कविता में ही प्रयोग होता हैं।

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी बृहत् कोश]

[द्वितीय खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)

थ

थ— संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला में सत्रहवां व्यञ्जन जो तवर्ग का द्वितीय वर्ण है। यह तालव्य स्पर्श व्यञ्जन है। इसके उच्चारण में जीभ ऊपरी मसूड़ों को स्पर्श करती है। यह अघोष और महाप्राण है।

थंड–सं०पु०—१ समूह, दल। उ०—१ चौधारां लाल लाल खग चौरंग बयंडां थंडां ओरवै बाज, फौजां कहर तमर भर फाड़ै, रव जम जळहळियौ जसराज।— चांवंडदांन बारहठ

उ०—२ जुड़ै सेन थंडां जाडा वाळी घोम जाळा री सावात जागी। —दुरगादत्त बारहठ

२ सेना, फौज। उ०—जाडा थंडां जियार, लोह आडां भड़ लागा। जेण वार 'जैसाह', भिड़ै हरवळ दळ भागा।—सू.प्र.

३ सघनता। उ०—चंपू की अंधेरी बोलसरू के थंड। रतिराज के असपक्क आसापालव के भंड।—सू.प्र.

४ ढेर, राशि। उ०—सारी ही वस्तु री तयारी हुवै छै, अमलां पांणियां रा थंड लाग रह्या छै, चार पहर रात नैं दिन गहतंत हुवा रहै छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

५ देखो 'ठंड' (रू.भे.)

वि०—घना, सघन।

रू०भे०—थंडाक, थंडौ।

थंडणौ, थंडबौ–क्रि०स०—१ पराजित करना, हराना, खदेड़ना।

उ०—मंडै खगझाट थंडै नग मेर।—सू.प्र.

२ प्राप्त करना। उ०—थटै आयौ जैत थंडे, मेड़तै मुक्कांम मंडै। —सू.प्र.

३ कस कर भरना, ठूंस-ठूंस कर भरना। उ०—१ चंडे चंडे कहि चरच, मंडै चित्रांम सिंदूरां। थंडै सोर थेलियां, भरै गोळा भरपूरां। —सू.प्र.

उ०—२ धरे मझारां धूप आपतापा आतापां। थेलां दारू थंडे गजां गोळां अणपारां।—सू.प्र.

क्रि०अ०—४ एकत्रित होना, इकट्ठा होना। उ०—मंत्री सुभट थंडत नह मेला, चवै न नव रस सुकवि सचेला।—सू.प्र.

थंडणहार, हारौ (हारी), थंडणियौ—वि०।

थंडवाड़णौ, थंडवाड़बौ, थंडवाणौ, थंड़वाबौ, थंडवावणौ, थंडवावबौ, थंडाड़णौ, थंडाड़बौ, थंडाणौ थंडाबौ, थंडावणौ, थंडावबौ—प्रे०रू०।

थंडिओड़ौ, थंडियोड़ौ, थंडयोड़ौ—भू०का०कृ०।

थंडीजणौ, थंडीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

थंडाक—देखो 'थंड' (रू.भे.) उ०—डाक ध्रीह त्रांबाक गांजाक तौ भळाक दीसै, रचै औ थंडाक केण ऊपरै राजेस।—वखतौ खिड़ियौ

थंडियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पराजित किया हुआ, हराया हुआ, खदेड़ा हुआ. २ प्राप्त किया हुआ. ३ कस कर भरा हुआ, ठूंस-ठूंस कर भरा हुआ. ४ एकत्रित हुवा हुआ, इकट्ठा हुवा हुआ।

(स्त्री० थंडियोड़ी)

थंडिल, थंडिल्ल–सं०पु० [सं० स्थण्डिल] १ जैनियों का 'संथारो' करने का स्थान (जैन) २ जैनी साधुओं के शौचादि जाने का स्थान (जैन) ३ शौच; टट्टी, विष्टा (जैन) ४ क्रोध, गुस्सा (जैन) ५ वेदी, वेदिका. ६ ढेलों का ढेर. ७ सीमा, हद।

रू०भे०—ठंडिल, ठंडिल्ल।

थंडी, थंडीस—१ सर्प, नाग (रू.भे.) उ०—जांमंगी भंडीस ज्याग, आयौ ज्यूं चंडीस जायौ, राजपत्री आयौ ज्यूं थंडीस वाळै रेस। ओडंडीस कसीसतौ लांगड़ौ कपीस आयौ, कोडंडीस कसीसतौ आयौ गुड़ाकेस।—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ शेषनाग।

थंडौ–सं०पु०—१ देखो 'थंड' (रू.भे.)। उ०—१ पछै लूंणकरण, करमसी सिंध सूं अजांणजक रा अठी नूं आय नै मांमा रावत भीमा नूं सहेट माथै तेड़िया, सु आया। अठी सूं वां आप घोड़ा लिया। पछै असवारां रौ थंडौ वांसै राखियौ।—नैणसी

उ०—२ तरै कह्यौ, 'इणां रा दांत पाड़िया चाहीजै।' तरै एकबार आपरौ साथ ले नै बाहर चढ़िया। वे आगै थंडौ कर ऊभा रह्या था, देठाळौ हुवौ, तठै मांमलौ हुवौ।—नैणसी

२ देखो 'ठंडौ' (रू.भे.) उ०—इतरा में भरमल री मां री वडारण आय कही—सताब पधारौ, थाळ थंडौ हुवै छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

थंथ–सं०पु०—अनर्गल प्रलाप, तथ्यहीन बात, बकवास।

उ०—माळ-मेळ मिळणौ न हर, थोथी कर मत थंथ। पीव पग समहर पड़ै, पिसणां-पग घर पंथ।—रेवतसिंह भाटी

थंथायलौ, थंथौ, थंथ्यौ–वि०—अनर्गल प्रलाप करने वाला, तथ्यहीन बात करने वाला।

थंब–सं०पु० [सं० स्तम्भ] १ राजपूतों का एक भेद. २ सहारा, आश्रय। उ०—जीव दियौ जसवंत जद, चमकै लोक अचंभ। थिर पर राजस्थांन रौ, थंब गिरचौ रण थंभ।—ऊ.का.

३ रक्षा करने वाला, रक्षक। उ०—सुर तन तेज भळळाट पौरस सरस, खित सुछळ जेज नह धरी अड़ीखंब। नेजबंध बेहूं ओछाड़ कोटां नवां, थया मुह मेज धरती तणा थंब।—पहाड़खां आढ़ौ

रू०भे०—थंभ।

४ देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.)

थंबजंग–सं०पु०यौ० [सं० स्तम्भ+फा० जंग] बहादुर, योद्धा, वीर।

उ०—आप नांमी दादा रा उजाळिया विरद आचां, गाढैराव गाळिया जोड़ रा भड़ां गाव। मारवाड़ थंबजंगां जीत 'विसनेस' मारू, वणै घाव अंगां छत्रीपणा रा वणाव।—विसनसिंह रौ गीत

थंबणौ, थंबबौ—देखो 'थंभणौ, थंभबौ' (रू.भे.)

थंबियोड़ौ—देखो 'थंभियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थंवियोड़ी)

थंवली—१ देखो 'थंबो' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'थोवली' (रू.भे.)

थंवियो—देखो 'थंवो' (अल्पा., रू.भे.)

थंवी—१ देखो 'थंवो' (अल्प., रू.भे.) २ देखो 'थोवली' (रू.भे)

थंवीड़—देखो 'थंवो' (मह., रू.भे.)

थंवो-सं०पु० [सं० स्तम्भ] स्तम्भ, खंवा, थंवा, थूनी ।
रू०भे०—थंभो, थांवो, थांभड़, थांभो ।
अल्पा०—थंवली, थंवियो, थंवी, थंभली, थंभियो, थंभी, थांवलियो, थांवली, थांवलो, थांवियो, थांभलियो, थांभली, थांभलो, थांभियो ।
मह०—थंव, थंवीड़, थंभ, थंभीड़, थांव, थांवड़, थांभ, थांभड़, थाम ।

थंभ-सं०पु० [सं० स्तम्भ] १ अहंकार (जैन) २ मान (जैन)
३ देखो 'थंव' (२, ३) (रू.भे.) उ०— १ करै पांति चौसरी जरी तांणियां सिमांनां । उठै भूप आविया थंभ दुहुं हिंदुसथांनां ।—सू.प्र.
उ०—२ मुरधर मांहि मेड़तिया, सेखा भड़ आंवेर । चूंडा थंभ चितौड़ रा, बीदा बीकानेर ।—अज्ञात
४ देखो 'थंवो' (मह., रू.भे.) उ०—नमो विगनांन गिनांन विखंभ । थंभै जिण आभ प्रथी बिण थंभ ।—ह.र.

थंभजमी-सं०पु०यौ० [सं० स्तम्भ+फा० जमीन] योद्धा, वीर, बहादुर ।
(मि० थंवजंग)

थंभण-वि० [सं० स्तम्भन] १ थामने वाला, रोकने वाला, ठहराने वाला । उ०—नमो नांम नोमवण, नमो नर सुर नीपावण । नमो पतंग घर नमो, गयण थंभा विन थंभण ।—ह.र.
२ रक्षक, सहायक । उ०—जदिन 'अभै' जांणियौ इळा थंभण उमरावां । गज समपण लख गांव, एम जांणै उमरावां ।—सू.प्र.
सं०पु०—१ ठहराव, रुकावट. २ शरीर से निकलने वाली वस्तु (जैसे—मल, मूत्र, शुक्र इत्यादि) को रोकने वाली औषधि. ३ तंत्र के छः प्रयोगों में से एक ।
[सं० स्तम्भनः] ४ कामदेव के पांच बांणों में से एक ।

थंभणौ, थंभवौ-क्रि०अ० [सं० स्तम्भनम्] १ चलता न रहना, रुकना ठहरना । उ०—१ अपछरा हूर रथ आसमांण । वजि सौक वांण थंभियौ विमांण ।—सू.प्र.
उ०—२ सीळ सनाह मंत्रीसरइं, आवतां अरिदळ थंभ्या रे । तिहां पणि सांनिध मई कीधी, वळि धम्म कारज आरंभ्या रे ।—स.कु.
२ जारी न रहना, बंद होना । उ०— ताहरां जंगळ रा अग हालि आवै, अगां रै गळै मांहै सोनै री माळा घालै । राग जाहरां थंभै ताहरां अग भाजि जावै ।—सयणी री वात
३ उतावला न होना, धीरज धरना, ठहरा रहना ।
क्रि०स०—१ टिकाना, रोकना, थामना । उ०—नमो विगनांन गिनान विखंभ । थंभै जिण आभ प्रथी विण थंभ ।—ह.र.
२ रोकना, ठहराना, थामना । उ०—१ देखो ऊभा देवड़ी राजा थंभी वाग । जे मांणै इणि नारि सूं, तिण री मोटौ भाग ।—ढो.मा.
उ०—२ जठै किरमाळ झटी जमरांण । भिड़ै गहलोत थंभै रथ भांण ।—सू.प्र.
थंभणहार, हारौ (हारी), थंभणियौ—वि० ।
थंभवाड़णौ, थंभवाड़वौ, थंभवाणौ, थंभवावौ, थंभवावणौ, थंभवाववौ, थंभाड़णौ, थंभाड़वौ, थंभाणौ, थंभावौ, थंभावणौ, थंभाववौ—प्रे०रू० ।
थंभिओड़ौ, थंभियोड़ौ, थंभ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
थंभीजणौ, थंभीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
थांभणौ, थांभवौ, थांमणौ, थांमवौ—सक०रू० ।
ठंभणौ, ठंभवौ, ठभणौ, ठभवौ, ठमणौ, ठमवौ, थंबणौ, थंबवौ, थमणौ, थमवौ—रू०भे० ।

थंभली —१ देखो 'थंवो' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'थोवली' (रू.भे.)

थंभवाय-सं०पु०—घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के मुंह से लार व आंखों से पानी गिरता है (शा.हो.)

थंभाड़णौ, थंभाड़वौ—देखो 'थंभाणौ, थंभावौ' (रू.भे.)
थंभाडणहार, हारौ (हारी), थंभाड़णियौ—वि० ।
थंभाड़िओड़ौ, थंभाड़ियोड़ौ, थंभाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
थंभाड़ीजणौ, थंभाड़ीजवौ—कर्म वा० ।
थंभणौ, थंभवौ—अक०रू० ।

थंभाड़ियोड़ौ—देखो 'थंभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थंभाड़ियोड़ी)

थंभाणौ, थंभावौ-क्रि०स० ['थंभणौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ ठहारना, रोकाना. २ बन्द कराना ।
थंभाणहार, हारौ (हारी), थंभाणियौ—वि० ।
थंभायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
थंभाईजणौ, थंभाईजवौ—कर्म वा० ।
थंभणौ, थंभवौ—अक०रू० ।
ठंभाणौ, ठंभावौ, ठमाणौ, ठमावौ, थंभाड़णौ, थभाड़वौ, थंभावणौ, थंभाववौ, थमाड़णौ, थमाड़वौ, थमाणौ, थमावौ, थमावणौ, थमाववौ—रू०भे० ।

थंभायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ठहराया हुआ, रोका हुआ. २ बन्द किया हुआ ।
(स्त्री० थंभायोड़ी)

थंभावणौ, थंभाववौ—देखो 'थंभाणौ, 'थंभावौ' (रू.भे.)
थंभावणहार, हारौ (हारी), थंभावणियौ—वि० ।
थंभाविओड़ौ, थंभावियोड़ौ, थंभाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
थंभावीजणौ, थंभावीजवौ—कर्म वा० ।
थंभणौ, थंभवौ—अक०रू० ।

थंभावियोड़ौ—देखो 'थंभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थंभावियोड़ी)

थंभियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ. २ बन्द हुवा

हुआ. ३ धीरज धरा हुआ. ४ टिका हुआ, रुका हुआ, थमा हुआ. ५ रोका हुआ, ठहराया हुआ।
(स्त्री० थंभियोड़ी)

थंभियौ—देखो 'थंभौ' (अल्पा., रू.भे.)

थंभी—देखो 'थंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थंभीड़—देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.)

थंभौ—देखो 'थंबौ' (रू.भे.)

थ-संस्त्री०—१ सरस्वती. २ छाक।
सं०पु०—३ गणेश. ४ गरुड़. ५ ऊपर का होठ (एका.)
सर्व०—देखो 'त' (२) (रू.भे.)

थेइं, थइ—देखो 'थई' (रू.भे.)

थइआयत-सं०पु०—वह नौकर जो पान के बीड़े साथ लिये हुए अपने मालिक के संग रहे। उ०—अनेक गणनायक दंडनायक राजेस्वर तलवर माडंबीक कौटंबिक मंत्रि महामंत्रि गणक दौवारिक अमात्य चेटक पीठमरद्दक स्रीगरणा वयगरणा स्रेस्ठि सारथवाह दूत सिंधिपाळ प्रतिहार पुरोहित थइआयत सेनांनी।—व.स.
रू०भे०—थईआइतु, थईआयतु, थईयात, थईयायत, थईयार, थेईयात।
(मि० थईधर)

थइणौ, थइबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.)
उ०—१ ग्यांनी ध्यांनी सब सुण लीजो, वांठां चेतन रइया। सत लोक सोहं घरवासा, थिर थांणा थइया।—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—२ दूरि दळ देख जसवंत थइयौ दई। कोड़ लग पाखरचा कटक आयौ कई।—हा.झा.

थइली—देखो 'थैली' (रू.भे.)

थई-संस्त्री० [सं० स्था] १ ढेर, राशि. २ देखो 'थेई' (रू.भे.)
[सं० स्थगी] ३ एक प्रकार की चमड़े की थैली. ४ पान रखने की डिबिया।

थईआइतु, थईआयतु—देखो 'थइआयत' (रू.भे.) उ०—पाछइ थईआइतु, डावइ मंत्रीस्वर, जिमणइं पुरोहित, बिहु पासे अंगोळगू तणी हारि इसउ आस्थांनमंडप।—व.स.

थईतथई—देखो 'थेईथेई' (रू.भे.)

थईधर-सं०पु० [सं० स्थगीधर] राजा का ताम्बूल-वाहक।
उ०—छत्रधर नइ चमरधर बेह, थईधर नइ कुब्जक जेह। छट्ठउ तिहां दधिपरण राय, रथिइं बइठा रूडइ ठाइ।—नळ-दवदंती रास

थईयात, थईयायत, थईयार—देखो 'थइआयत' (रू.भे.)
उ०—राय कहै कोई काज ल्यो, राखो माहरो मांन। थईयायत कांमो लियो, राय अपावै पांन।—स्रीपाळ रास

थक—देखो 'थोक (?) (रू.भे.) उ०—अनंत कोट ब्रह्मांड तणा इंद्र तन खोहण म्रत लोक तणा। सात पायाळ तणा इंद्र साखइ, घणू सु थक मेलिया घणा।—महादेव पारवती री वेल

थकइ-अव्य०—से। उ०—करहउ कूड़इ मनि थकइ, पग राखीयउ जांण। ऊकरड़ी डोका चुगइ, अपस डंभायउ आंण।—ढो.मा.

थकणौ, थकबौ—देखो 'थाकणौ, थाकबौ' (रू.भे.) उ०—निज घर परा पार निरवांना, थकत वैखरी गांना।—स्री सुखरांमजी महाराज
थकणहार, हारौ (हारी), थकणियौ—वि०।
थकवाड़णौ, थकवाड़बौ, थकवाणौ, थकवाबौ, थकवावणौ, थकवावबौ—प्रे०रू०।
थकाड़णौ, थकाड़बौ, थकाणौ, थकाबौ, थकावणौ, थकावबौ—क्रि०स०।
थकिओड़ौ, थकियोड़ौ, थक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थकीजणौ, थकीजबौ—भाव वा०।

थकां-क्रि०वि० [सं० ष्ठा=स्थित-स्थितेसति अथवा ष्टक् प्रतिघाते=स्थक्कित:] १ होते हुए, रहते हुए। उ०—१ राव मालदे बुरी कीवी जु राठौड़ डूंगरसी कन्है जैतारण उरी लीधी, जसवंत सरीखा बेटा थकां। तरै जसवंतजी कह्यौ—उण मां रावजी री दोस कोई नहीं।—राव मालदे री वात
उ०—२ चुगइ चितारइ भी चुगइ, चुगि चुगि चितारेह। कुरझी बच्चा मेल्हिकइ, दूरी थकां पाळेह।—ढो.मा.
उ०—३ सांई एहा भीचड़ा, मोलि महूंगे वासि। ज्यां आछन्नां दूरि भी, दूरि थकां भी पासि।—हा.झा.
२ हुए। उ०—१ जिकै घोड़ा सोनै री सागत रा, रूपै री साजां में मंडिया छै। आंवळा पेच नांखियां थकां बावळा असवार चढ़िया छै।
—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ तरै जसवंत जी नूं रावळ सूधौ कह्यौ हाथी रांणैजी मंगायां, हूं रांणा री चाकर, हाथी उरा दे। तरै जसवंतजी कह्यौ—हूं कोई तेड़ण गयौ थौ? बैठां थकां आया क्यूंकर देणी आवै। हिमै जिकै लेसी तिकै मोनुं मार नै लेसी।—राव मालदे री वात
३ होकर। उ०—निवळा पड़िया तरै धोधां री ठकुराई मांहे मुकाती थकां रैहता।—नैणसी
४ ही। उ०—उठा सूं प्यादल थकां कांधै गंगाजळ री कावड़ लीवी, पगां में खड़ाऊ हाथ में आसो, सरब परिगह सहित रंगनाथजी रै मंदिर पधारिया।—बां.दा.ख्यात
अव्य०—से, पर। उ०—१ जठै पनां बोली—ऐ तौ पांन को बीड़ौ छै, रखावस्यो ही मन का मनोरथ हुवां थकां बधाई पावसो हीज।
—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ भाव सत्य राख्यां थकां। भव भव में दुख पायो रे।
उ०—३ भड़ां वीरां री नै कायरां री परीक्षा तो जुध में त्रंबाळ नगारा त्रहत्रहीयां वाजियां थकां पड़े।—वी.स.टी.
रू०भे०—थकांई, थका, थिकां, थिका।

थकांई-क्रि०वि० [सं० स्थित+रा०प्र०ई या स्थक्कित:+रा०प्र०ई] से ही। उ०—दूर थकांई देखतां, जद मैं लीना जांण। घर मुरधर रा धाड़वी, आपड़ि उसरांण।—पा.प्र.

थकांण, थकांन—देखो 'थकावट' (रू.भे.)

थका—देखो 'थकां' (रू.भे.) उ०—१ उठा जोधपुर हुंता राव कल्यांण-

मनजी कन्हां विदा करि नें कुंवरपदवी थका महाराजाधिराज महाराज स्री रायसिंघजी मिरजै इब्राहम रो वांसो कियो।—द.वि.

उ०—२ राजि सिमांणै थका हीज सिगळै देस मांहै पातिसाहजी किरोड़ी मेल्हिया हुता।—द.वि.

थकाड़णो, थकाड़बो—देखो 'थकाणो, थकाबो' (रू.भे.)

थकाड़णहार, हारो (हारी), थकाड़णियो—वि०।

थकाड़िग्रोड़ो, थकाड़ियोड़ो, थकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

थकाड़ीजणो, थकाड़ीजबो—कर्म वा०।

थकणो, थकबो, थाकणो, थाकबो—ग्रक०रू०।

थकाड़ियोड़ो—देखो 'थकायोड़ो' (भू.का.कृ.)
(स्त्री० थकाड़ियोड़ी)

थकाणो, थकाबो—क्रि०स०—१ शिथिल करना, श्रान्त करना, क्लान्त करना. २ मंदा कर देना, धीमा कर देना, ढीला कर देना. ३ हैरान करना, उबा देना. ४ मुग्ध करना, मोहित करना, लुभाना।

थकाणहार, हारो (हारी), थकाणियो—वि०।

थकवाड़णो, थकवाड़बो, थकवाणो, थकवाबो, थकवावणो, थकवावबो —प्रे०रू०।

थकायोड़ो—भू०का०कृ०।

थकाईजणो, थकाईजबो—कर्म वा०।

थकणो, थकबो, थाकणो, थाकबो—ग्रक०रू०।

थकाड़णो, थकाड़बो, थकावणो, थकावबो—रू०भे०।

थकायोड़ो—भू०का०कृ०—१ शिथिल किया हुआ, श्रान्त किया हुआ, क्लान्त किया हुआ. २ ढीला किया हुआ, मंदा किया हुआ, धीमा कर दिया हुआ. ३ हैरान किया हुआ, उबा दिया हुआ. ४ मुग्ध किया हुआ, मोहित किया हुआ, लुभाया हुआ।
(स्त्री० थकायोड़ी)

थकार—सं०स्त्री०—'थ' अक्षर।

थकाव—सं०पु०—शिथिलता, थकावट।

थकावट—सं०स्त्री०—थकने का भाव, शिथिलता, हैरानी।

थकावणो, थकावबो—देखो 'थकाणो, थकाबो' (रू.भे.)

थकावणहार, हारो (हारी), थकावणियो—वि०।

थकाविग्रोड़ो, थकावियोड़ो, थकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

थकावीजणो, थकावीजबो—कर्म वा०।

थकणो, थकबो, थाकणो, थाकबो—ग्रक०रू०।

थकावियोड़ो—देखो 'थकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० थकावियोड़ी)

थकित—वि० [सं० स्थकितः] १ थका हुआ, शिथिल। उ०—१ ग्रानूप रूप दुति सग्रय रूप। हालंत मधुर जिम थकित हंस।—सू.प्र.
२ आश्चर्ययुक्त, चकित, भौंचक्का।

थकियोड़ो—देखो 'थाकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० थकियोड़ी)

थकियो—देखो 'थको' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मियो पण दरवाजै पड़ियो थकियो रात भर सोर करै।—पदमसिंह री वात

थकी—प्रत्य० [सं० स्थित या स्थिकितः] से। उ०—१ थे सिध्धावउ सिघ करउ, पूजउ थांकी ग्रास। मत वीसारउ मन-थकी, उवा छै थांकी दास।—ढो.मा.

उ०—२ तुझ समरण थकी मुज्झ करम मूंकइ केरउ। सहस किरण सूरज ऊग्यां किम रहइ ग्रंधेरउ हो।—स.कु.

उ०—३ साजण सेती प्रीतड़ी, कीजइ धुरि थकी जोइ। कीजियइ तउ नवि छोडियइ, कंठइ प्रांण जां होइ।—स.कु.

उ०—४ इयं प्रस्तावि राजि नागोर थकी सिवांणै नूं कूच कियो।—द.वि.

वि०स्त्री० (पु० थको) १ लिए, हेतु। उ०—ताहरां हरदांन फेर ग्ररज कीवी—तो म्हांरी थकी कोठार में राखजो।—पलक दरियाव री वात

२ वाली, की। उ०—सु बाहर की वांसै चढ़ियो नहीं, नैं खापरो रात पोहर १ पाछली थकी ग्रावू निजीक उठै उलरियो।—नैणसी

३ कारण। उ०—धरम थकी धन संपजइ रे, धरम थकी सुख होय। धरम थकी ग्रारती टळइ रे, धरम समउ नहिं कोय।—स.कु.

४ हुई। उ०—१ सो रांमदासजी ग्रावता रै बरछी वाही सो इकी घोड़ो फूट नें बरछी जाती थकी धरती में रुपी।—रा.सा.सं.

उ०—२ लाहोर री पिसोर री वणी ठावी घणी वनात में लपेटी थकी, घणैं कलावूत सूं गूंथी थकी।—रा.सा.सं.

५ होती हुई, रहती हुई। ज्यूं—पदमणी कुंवारी थकी ग्रापरा मन में पतिव्रत धरम पाळण रो व्रत कीधो।

क्रि०वि०—पर। उ०—एतली वात कह्यां थकी।—वी.कु.

थकेलो—देखो 'थाकेलो' (रू.भे.) उ—थकेलोय ग्रोजक ग्राळस थोक। रह्या पड़ भील न राखिय रोक।—पा.प्र.

थकै—क्रि०वि० [सं० स्थित या स्थकितः] हुए। उ०—१ या सुणतां ही लोहछक होय पड़ियै थकै ही मलप ले'र चाळुक्यराज हमीर कैमास री कांख में चंपियां ग्रापरा स्वांमी नूं झाटकियो।—वं.भा.

उ०—२ हुवां मेवाड़ विग्रह जंघम हुवां, पलट सह ऊमरां हूंत परताप। कोपिया थकै काकोधरा काढ़िया, ग्रभनमो 'भीम' ग्रोठांमियां ग्राप।—उमेदसिंह सीसोदिया री गीत

थकोड़ो—देखो थाकोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० थकोड़ी)

थको—वि० [सं० स्थित या स्थिकितः] (स्त्री० थकी) १ होता हुआ, रहता हुआ। उ०—१ दीवा मणि मंदिरे कातिग दीपक, सुत्री समांणियां माहि सुख। भीतर थका बाहिर इम भासै, मनि लाजती सुहाग मुख।—वेलि.

उ०—२ पण इतरी फौज ऊपरै निसंक थको तोरण माथै वींद जावै ज्यूं माहरो पति निसंक जाय रह्यो छै।—वी.स.टी.

उ०—३ इयां ठाकुरे राजा भगवंतदास, राजा गोपाळदास, राव भोज कुंवरपदै थको, राज स्री सिगार कुंवरपदै थको, राव जगमाल पंवार बीजा ही ग्रसवार पनरह भला भला वांसै हुया।—द.वि.

२ हुवा हुआ। उ०—१ अर गुजरात रौ अधीस विकळ थकौ परिवार सूं चंद्रहास लेतो ही आगै आय पड़ियो।—वं.भा.

३ हुआ। उ०—सहु भूत प्रेत ग्रह ह्वं समा, सुपोत्रे ह्वं धरमसी सही। देखिज्यो दांन दीधौ थकौ, नेट कठै निस्फळ नहीं।—ध.व.ग्रं.

४ लिए, वास्ते, निमित्त। ज्यूं—औ थारै थकौ है।

५ समान, तुल्य। उ०—दांन थकौ नह दूसरौ, ओखद नह अदभूत। हेक थकौ सारा हरै, महारोग मजवूत।—बां.दा.

६ वाला, का। ज्यूं—दिन पीहर अेक पाछलो थकौ रह्यौ तद उठै आइया।

७ कारण। ज्यूं—अपांनै धरम थकौ धन सूंपणौ चाहिजै, धरम थकौ सुख व्है है।

क्रि०वि०—१ ही। उ०—१ दांन थकौ नह दूसरौ, ओखद नह अदभूत। हेक थकौ सारा हरै, महारोग मजवूत।—बां.दा.

उ०—२ तद अेक आथूणी कांनी अळगौ थकौ अेक भाखर ऊपर अगन बळती री चांनणौ दीठौ।—रीसाळू री वात

२ होकर। उ०—१ उण कह्यौ—'तूं गुजरात रै पातसाह सूं मेळ मत करै। म्हारै कांम अरथ म्हारौ थकौ रहै।—नैणसी

उ०—२ एक दिन रै समाजोग वींझरौ वहिन रै प्रांहुणौ थकौ गयौ हुतौ सू कोटड़ी मांहै डेरौ दियौ।—बींझरै अहीर री वात

३. (गुप्त) रूप से। उ०—तिण नूं कह्यौ तूं पाछै छांनो थकौ जा देख आव, कठै जाय आवै छै? तरै पाछै पाछै बांधरौ गयौ।
—सोजत रै मंडळ री वात

प्रत्य०—से। उ०—तिण हेते लसकर तुमै, विदा करावौ साहि। सहस पंच राखौ नखै, जो डर आंणौ मन मांहि। इम सुणि कहइ अच्छक थकौ, कांम गहेलो साह। कहो कुण थै हम डरइं, हम सूं जगत डराय।—प.च.चौ.

अल्पा०—थकियौ, थक्यौ।

थक्कणौ, थक्कबौ—देखो 'थाकणौ, थाकबौ' (रू.भे.)

उ०—'पता' समभ हिम्मत पखै, जस कह थक्कै जीह। इधकै सूं सरसै इधक, दरसै दीहोदीह।—जैतदांन बारहठ

थक्कियोड़ौ—देखो 'थाकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थक्कियोड़ी)

थक्यौ—देखो 'थकौ' (अल्पा. रू.भे.)

थग—सं०पु०—१ हद, किनारा, पार। उ०—सुत फतमाल वंस रा सूरज, मांगण भड़ां वधारण मोद। थग आवै महरांण थागियां, सहजां थग ना'वै सीसोद।—मेघराज आढ़ौ

२ थाह. ३ ढेर, समूह।

थगणा—सं०स्त्री० [सं० स्थगणा] भूमि, पृथ्वी।

थगथगणौ, थगथगबौ—क्रि०अ०—लड़खड़ाना। उ०—मोटै गिर मग तोह, थगथगतौ आवण थटै। पिसळै मो पग तोह, डिगतौ राखै डोकरी।—रांमनाथ कवियौ

थड़—देखो 'थड़ौ' (मह., रू.भे.)

थड़क्क—सं०स्त्री०—थर्राने या कंपायमान होने का भाव।

उ०—कसणक्क भणक्क बड़क्क कड़ा। पिडवक्क थड़क्क दड़क्क पुड़ा।—पा.प्र.

थड़णौ, थड़बौ—क्रि०अ०—१ बहुत से मनुष्यों का इकट्ठा होना, समूह बनाना. २ देखो 'थुड़णौ, थुड़बौ' (रू.भे.) ३ धक्का देना।

उ०—करके तरवारग्रहे हिरणाकुस, मूढ़ निरोस निवार मुड़ै। सुत के बळ एक मुरार तणौ सज, थंभ विडार गिलार थड़ै।—भगतमाळ

थड़बड़—सं०स्त्री०—लड़खड़ाने की क्रिया या भाव।

थड़ियौ—देखो 'थड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

थड़ौ—सं०स्त्री०—छोटे बच्चे के खड़े होने की क्रिया।

क्रि०प्र०—करणी।

रू०भे०—थिड़ी, थिरी।

थड़ौ—सं०पु० [सं० स्थल, स्थलकम्] १ मृत पुरुष के दाह-स्थान पर बनाया हुआ स्मृति भवन, छतरी या चबूतरा। उ०—थड़ै मसांण थयांह, आतम पद पूगां अलख। गंगा हाड गयांह, वीसरसां तद 'वाघ' नै।—आसो बारहठ

मुहा०—थड़ौ सींचणौ—मृतक के दाह स्थान पर जाकर जल अथवा दूध का अभिसिंचन करना।

२ बैठने की जगह, बैठक. ३ दुकान की गद्दी. ४ ऊंट के चारजामे के साथ लगी हुई गद्दी।

रू०भे०—थडउ।

मह०—थड़।

अल्पा०—थड़ियौ।

थच्च—सं०स्त्री० अनु०—ध्वनि विशेष। उ०—हाजरियौ काती महीना रा कुत्ता ज्यूं लपक्यौ पण नजीक आवतां ईज रंभा उण रा मूंडा पर थच्च करनै थूक दियौ।—रातवासौ

थट—सं०पु० [सं० स्थात] १ ढेर, राशि। उ०—हणै पसू तिण खिण हुए, (चे) हिय दया री हांण। थाळी मांह मसांण थट, गिलही छोड गिलांन।—बां.दा.

रू०भे०—थट्ट।

२ देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—१ दमगळ रवि थांभै वाग दीठ। रिम थटां दियौ खग भटां रीठ।—सू.प्र.

उ०—२ इम गढ़ निकट विकट थट आया। छपन कोड़ि जांणै घण छाया।—सू.प्र.

उ०—३ थट नाथ फबै वळ पूर थाट। परताप चौगुणै 'अजण' पाट।
—सू.प्र.

यौ०—थट-पति।

थटक, थटक्क—देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—सुणै दीधा दाद रे थटक्कां भड़ां लीधा साथ, पीधा चंडी स्वाद रै गटक्का स्रोण पूत। जगन्नाथ भात सीधा आदरै अटक्का ज्यूं ही, वाघरै घटक्का कीधा बटक्का 'वळूंत'।—दुरगादत्त बारहठ

थटणो, थटबो–क्रि०प्र०—१ शोभित होना, शोभायमान होना।
उ०—१ नाथ क्रपा सु मांन नृप, जांणै सरब जहांन। भुजदंड धारौ भूतनों, थटियौ हींदूग्रांन।—मोडजी आढ़ौ
उ०—२ वजै त्रंबक घोंसर वजै, नोबति सबद निराट। मदमत खंभू ठांण मय, थटै गयंदां थाट।—बगसीरांम प्रोहित री वात
२ सुसज्जित होना। उ०—थट्टां हले वहीर, विखम पहटां अविघट थट। राज द्वार आवियौ, थटै 'वगतेस' वीर थट।—सू.प्र.
३ तैयार रहना या होना, कटिबद्ध रहना, सन्नद्ध रहना।
उ०—१ थळ कतार लांघण थटै, लै जिहाज जळ अंत। भोळी-ढाळी बांणगी, बेटा धूत जणंत।—बां.दा.
उ०—२ कुळ भ्रात मंत्री सुत कटै, उर क्रोध रांवण ऊपटै। मन समझ नहचै थटै मरणौ, सजै घण घमसांण।—र.रू.
४ इकट्ठा होना। उ०—थट श्री सरब तूझ कजि थटियौ। राजा आव वीर इम रटियौ।—सू.प्र.
५ डटना। उ०—१ पग पग थटिया पांहुणा, खागां सहणी खांत। पीव पखसै पांत में, भूलै केम दुभांत।—वी.स.
उ०—२ अर मरणीक हुवा मच्छरीकां रा समूह वाट में आया सिपाहां नै वाढ़ता प्रछन्न प्रकोस्ट रै समीप थटिया।—वं.भा.
६ प्रकट होना, उत्पन्न होना। उ०— ज्वाळ झाळा थटी, छूटी लोयणां जटी, आछटी तेग दहुं ओड आखै। हियै वरछी थटी वेग 'गोपाळहर', 'मघाहर' आछटी तेग माथै।—पहाड़खां आढ़ौ
७ प्रविष्ट होना, घुसना। उ०—ज्वाळ झाळा थटी, छूटी लोयणां जटी, आछटी तेग दहुं ओड आखै। हियै वरछी थटी वेग 'गोपाळहर', 'मघाहर' आछटी तेग माथै।—पहाड़खां आढ़ौ
८ दाखिल होना। उ०—सावतौ आऊग्रौ राख खटेगौ भू-लोक सोभा मिटेगौ ईंदरां मांण देगौ खळां मीच। धूप-धारां वंसी चौड़ै कटेगौ ऊजळी धारां, बीजौ 'पाळ' थटेगौ अमरां लोकां बीच।
—मोडजी आढ़ौ
९ हटना, मिटना। उ०—मिटै मोह छोळां थटै देवमाया। उठै थाट लै भूप सुग्रीव आया।—सू.प्र.
क्रि०स०—१० संग्रह करना, इकट्ठा करना। उ०—छाछ कवांण खुदंग सर, समसेरां ईरांन। आंणै अस अराक सूं, थटण घणौ थन थांन।—बां.दा.
११ पीछे हटाना, पराजित करना, खदेड़ना। उ०—थटै आयौ जंत थंडै, मेड़तै मुकांम मंडै।—सू.प्र.
थटणहार, हारौ (हारी), थटणियौ—वि०।
थटवाड़णौ, थटवाड़बौ, थटवाणौ, थटवाबौ, थटवावणौ, थटवाववौ, थटाड़णौ, थटाड़बौ, थटाणौ, थटाबौ, थटावणौ, थटाववौ—प्रे०रू०।
थटिओड़ौ, थटियोड़ौ, थट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थटीजणौ, थटीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
थट्टणौ, थट्टबौ—रू०भे०।

थटा–सं०स्त्री०—सेना। उ०—थटा खूर आया राड़ै, देस हक डक थियौ, हड़हड़ै काळका किलक वीरां हियौ।—नींबाज ठा. अमरसिंह री गीत
थटाथट—देखो 'थटोथट' (रू.भे.)
थटियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभित। २ सुसज्जित हुवा हुआ. ३ तैयार हुवा हुआ, कटिबद्ध, सन्नद्ध. ४ इकट्ठा हुवा हुआ. ५ डटा हुआ. ६ प्रकट हुवा हुआ, उत्पन्न हुवा हुआ. ७ प्रविष्ट हुवा हुआ, घुसा हुआ. ८ दाखिल हुवा हुआ. ९ हटा हुआ, मिटा हुआ. १० संग्रह किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ. ११ पीछे हटाया हुआ, पराजित किया हुआ, खदेड़ा हुआ।
(स्त्री० थटियोड़ी)
थटीलौ–वि० (स्त्री० थटीली) १ ठाट-बाट से रहने वाला.
२ मस्त, प्रसन्न।
थटेत, थटेल, थटैत, थटैल–सं०पु०—१ योद्धा, वीर।
२ ठाट-बाट से रहने वाला, ऐश्वर्यवान।
थटोथट–वि०—पूर्ण।
रू०भे०—थटाथट।
थट्ट–वि०—१ बहुत, अधिक। उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, सीय पड़ेसी थट्ट। सोहागिण घर आंगणइ, दोहागिण रइ घट्ट।—ढो.मा.
२ देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—गैदंतौ पाडा खुरौ, आरण अचळ अघट्ट। भूंडण जाणै सूं भू-भलौ, थोभै अरियां थट्ट।—हा.झा.
थट्टणौ, थट्टबौ—देखो 'थटणौ, थटबौ' (रू.भे.) उ०—लोही खाळ पूरपट्टां हजारां वैणनै लागा, थटै रंभां हजारां गैण नै लागा थाट। रूकां झट हजारां दैत्य नै लागा काळ रूपी, लागा टूक ह्वैण नै हजारां जंगी लाट।—गिरवरदांन कवियौ
थट्टौ—देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—हयवर गयवर हींसता, गौ महिसी थट्टा।—ध.व.ग्रं.
(स्त्री० थट्टियोड़ी)
थट्टियोड़ौ—देखो 'थटियोड़ौ' (रू.भे.)
थड—देखो 'थड्डौ' (मह., रू.भे.)
थडउ— देखो 'थड़ौ' (रू.भे.) (उ.र.)
थडियौ—देखो 'थड्डौ' (अल्पा., रू.भे.)
थडौ—देखो 'थड्डौ' (रू.भे.)
थड्ड—देखो 'थड्डौ' (मह., रू.भे.)
थड्डौ–सं०पु०—धक्का, आघात, टक्कर।
रू०भे०—थडौ।
अल्पा०—थडियौ।
मह०—थड, थड्ड।
थढ़ंकणौ, थढ़ंकबौ, थढ़कणौ, थढ़कबौ–क्रि०स०—१ संहार करना, मारना, गिराना। उ०—मेरगर जसा चळ चळ थया, अचळ मह गरड़ भार थरं थढ़ंकै गजगाह।
२ धक्का देना।

थढ़णौ, थढ़बौ—रू०भे०

थढ़कियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ, गिराया हुआ. २ धक्का दिया हुआ।
(स्त्री० थढ़कियोड़ी)

थढ़णौ, थढ़बौ—देखो 'थढ़करणौ, थढ़कबौ' (रू.भे.)

थढ़ियोड़ौ—देखो 'थढ़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थढ़कियोड़ी)

थण–सं०पु० [सं० स्तन] १ स्त्रियों व मादा पशुओं का वह स्थान जहां से बच्चे दूध पीते हैं, स्तन, कुच।
उ०—सूधी सींधणियां च्यारूं थण सोधै। विमनी विणजारण कारण परबोधै।—ऊ.का.
अल्पा०—थणैलौ।
२ पुरुषों के वक्षस्थल का स्तन के आकार का चिन्ह।
उ०—सु कनै भळकौ पड़ियौ थौ तिकौ झाल नै लाखै सोळंकी राज नूं चूंक लियौ, सु राज रै थण रै लाग गयौ, सु वात करतां राज सोळंकी रौ हंस राजा उड गयौ।—नैणसी
३ स्तन मे निकलने वाला दूध। उ०—पूत महादुख पाळियौ, बय खोवण थण पाय। अेम न जांण्यौ आवही, जांमण दूध लजाय।
—वी.स.
रू०भे०—थन, थांन।
अल्पा०—थणचौ।

थणअंतर–सं०पु०—हृदय (डि.को.)

थणकढ़–सं०पु० [सं० स्तन+कर्ष] स्तन से निकला हुआ ताजा दूध, धारोष्ण। उ०—ग्यारह हसै डंड करि अवगाढ़ौ। थणकढ़ पियै दोय मण थाढ़ौ।—सू प्र.

थणचौ—देखो 'थण' (अल्पा., रू.भे.)

थणिय–वि० [सं० स्तनित] स्तन का (जैन)

थणिय-सद्द–सं०पु० [सं० स्तनित-शब्द] अत्यधिक रति सुख में उत्पन्न होने वाला शब्द (जैन)

थणी–सं०स्त्री०—१ स्तन के आकार की लम्बी मांसल पिण्डी जो बकरी के गले में लटकती है। ये दो होती हैं. २ हाथियों के कान के पास थन के आकार का निकला हुआ मांस का अंकुर (ऐव) ३ घोड़े की लिंगेन्द्रिय में थन के आकार का लटकता हुआ मांस।

थणैलौ—देखो 'थण' (१) (अल्पा., रू.भे.) (शेखावाटी)

थणौ, थबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.) उ०—१ माळव-देस विछोड़िया, मारू किया बखांण। मारू सोहागिण थई, सुंदरि सगुण सुजांण।—ढो.मा.
उ०—२ प्रथीराज संभरकुळ दळपत, थयौ जिकण कुळ भीम वड़े थत। बाहरिये गढ़राज न्रिपांवर, कंवर थयौ जिण रै घर केहर।
—केहर प्रकास

थत–सं०पु० [सं० स्थिति] वैभव, ठाट। उ०—प्रथीराज संभरकुळ दळपत, थयौ जिकण कुळ भीम वड़े थत।—केहर प्रकास

थताथेइ—देखो 'ताताथेई' (रू.भे.) उ०—मुख आगै ऊभी रहै देवी रे, करती नित थताथेई रे।—जयवांणी

थथोपणौ, थथोपबौ–क्रि०स०—१ धैर्य देना, धीरज बंधाना।
उ०—इतरी कह म्होकमसिंघ नूं थथोपियौ।
—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री वात
२ शान्त्वना देना, ढाढ़स बंधाना।

थथोपियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ धैर्य दिया हुआ, धीरज बंधाया हुआ.
२ शान्त्वना दिया हुआ, ढाढ़स बंधाया हुआ।
(स्त्री० थथोपियोड़ी)

थथोबाबाज, थथोबेबाज–वि०यौ०—फुसलाने वाला, चकमा देने वाला, धोका देने वाला।

थथोबौ–सं०पु०—१ झूठा विश्वास, धोखा, झांसा। उ०—सो है बीजा कुळ रौ एक हो बाळक है नै एक ही जुध सारूं ऊससै है सो इण नै यूं कोई तरै भोळो दे'र, थथोबौ वा पोटाय नै अबार जुध न करै, इण तरै सूं भुलाव सो इण री वंस रहै, नहीं तौ औ सूरवीर बाळक जुध सारू रुकै नहीं।—वी.स.टी.
क्रि०प्र०—खाणौ, दैणौ।
२ ढाढ़स, धैर्य, आश्वासन, शान्त्वना।
क्रि०प्र०—दैणौ।
रू०भे०—तत्तोथबौ।

थद्ध–वि० [सं० स्तब्ध] १ अहंकारयुक्त, अहंकारी (जैन)
२ रोका हुआ।

थन्न—देखो 'थांन' (रू.भे.) उ०—देवी वम्मरे डुंगरे रन्न वन्ने, देवी थंबड़े लीवड़े थन्न थन्ने।—देवि.

थप-उथप—देखो 'थाप-उथाप' (रू.भे.) उ०—वडम सूर ताळा विळंद, पह थप-उथप प्रमांण। वाजी मुरधर देस री, तूझ भुजां सुरतांण।
—नीबाज ठा. सुरतांणसिंह री दूहौ

थपकणौ, थपकबौ—१ देखो 'थपकाणौ, थपकावौ' (रू.भे.)
२ देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.)
थपकणहार, हारौ (हारी), थपकणियौ—वि०।
थपकवाड़णौ, थपकवाड़बौ, थपकवाणौ, थपकवावौ, थपकवावणौ थपकवावबौ—प्रे०रू०।
थपकिओड़ौ, थपकियोड़ौ, थपक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थपकीजणौ, थपकीजबौ—कर्म वा०।

थपकाड़णौ, थपकाड़बौ—देखो 'थपकाणौ, थपकाबौ' (रू.भे.)
थपकाड़णहार, हारौ (हारी), थपकाड़णियौ—वि०।
थपकाड़िओड़ौ, थपकाड़ियोड़ौ, थपकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थपकाड़ीजणौ, थपकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

थपकाड़ियोड़ौ—देखो 'थपकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थपकाड़ियोड़ी)

थपकाणो, थपकाबो-क्रि०स०—१ आराम पहुँचाने के लिये शरीर पर धीरे-धीरे हाथ मारना, धीरे-धीरे ठोंकना. २ सहलाना, पुचकारना. ३ दिलासा देना, ढाढ़स देना ।

थपकाणहार, हारौ (हारी), थपकाणियौ—वि० ।

थपकवाड़णौ, थपकवाड़बौ, थपकवाणौ, थपकवाबौ, थपकवावणौ, थपकवावबौ—प्रे०रू० ।

थपकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

थपकाईजणौ, थपकाईजबौ—कर्म वा० ।

थपकणौ, थपकबौ, थपकाड़णौ, थपकाड़बौ, थपकारणौ, थपकारबौ, थपकावणौ, थपकावबौ—रू०भे० ।

थपकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ आराम पहुँचाने के लिये शरीर पर धीरे-धीरे हाथ मारा हुआ, ठोंका हुआ. २ सहलाया हुआ, पुचकारा हुआ. ३ दिलासा दिया हुआ, ढाढ़स बंधाया हुआ ।

(स्त्री० थपकायोड़ी)

थपकारणौ, थपकारबौ—देखो 'थपकाणौ, थपकाबौ' (रू.भे.)

उ०—फगत कंठक मगाकतां, भींगर उडै चकारै । अळगं वाड़ां टोकरियां, नींदन थपकारै ।—शक्तिदांन कवियो

थपकारियोड़ौ—देखो 'थपकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थपकारियोड़ी)

थपकावणौ, थपकावबौ—देखो 'थपकाणौ, थपकाबौ' (रू.भे.)

थपकावणहार, हारौ (हारी), थपकावणियौ—वि० ।

थपकाविओड़ौ, थपकावियोड़ौ, थपकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

थपकावीजणौ, थपकावीजबौ—कर्म वा० ।

थपकावियोड़ौ—देखो 'थपकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थपकावियोड़ी)

–[illegible]कियोड़ौ—१ देखो 'थपकायोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थपकियोड़ी)

[illegible]कियौ-सं०पु०— एक प्रकार की रोटी (शेखावाटी)

२ मिट्टी के बर्तन वाला, कुम्हार ।

रू०भे०—थपथपियौ ।

[illegible]की—देखो 'थापी' (रू.भे.)

[illegible]ड़—देखो 'थप्पड़' (रू.भे.)

[illegible]ड़ी-सं०स्त्री०—१ दोनों हथेलियों को एक दूसरी से जोर से टकरा कर ध्वनि उत्पन्न करने की क्रिया. २ ताली बजाने का शब्द, ताली ।

[illegible]णौ-वि०—स्थापन करने वाला, मुकर्रर करने वाला, प्रतिष्ठित करने वाला । उ०—[illegible] पागड़ा लगा [illegible] चढ़ै ऐ वळै, रण रता [illegible] राजै । [illegible] थपण आपह मता, '[illegible]' दीजै [illegible] छाजै ।—[illegible] आढ़ौ

[illegible] सं०पु०—पत्थर, लकड़ी आदि का बना किसी वस्तु को पीटने का उपकरण, थापी ।

थपणौ, थपबौ-क्रि०अ०—१ स्थापित होना । ज्यूं—जोधपुर थपियौ जदी स्वांमी चिड़ियानाथ राव जोधा नूं स्राप दियौ कै थारै राज में पांणी री दुमार रहसी अर एकांतरै काळ पड़सी ।

२ मुकर्रर होना, निश्चित होना । ज्यूं—बाई री विवाह आकातीज मातै थपियौ । ३ देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.)

उ०—१ कान्ह उथपियौ रिड़मल थपियौ, या साची सहनांणी । बीकांणै राठोड़ां बगस्यौ, जाहर जग में जांणी ।—राघवदास भादौ

उ०—२ कहि सिव सनकादं ध्रू प्रहळादं, अहपत आद जेण जपै । सुक नारद व्यास जळ कहि जासं, थिर कर तासं दास थपै ।—र.ज.प्र.

४ देखो 'थापलणौ, थापलबौ' (रू.भे.) उ०—चड़ै रीस चख चोळ, छिवै भोहो अणी मुछारां । खतम ऊपड़ै खाग, थपै कांधा तोखारां ।

—पनां वीरमदे री वात

थपणहार, हारौ (हारी), थपणियौ—वि० ।

थपवाड़णौ, थपवाड़बौ, थपवाणौ, थपवाबौ, थपवावणौ, थपवावबौ, थपाड़णौ, थपाड़बौ, थपाणौ, थपाबौ, थपावणौ, थपावबौ—प्रे०रू० ।

थपिओड़ौ, थपियोड़ौ, थप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

थपीजणौ, थपीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

थप्पणौ, थप्पबौ—रू०भे० ।

थपथपियौ—देखो 'थपकियौ' (रू.भे.)

थपथपी—देखो 'थापी' (रू.भे.)

थपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ स्थापित हुवा हुआ. २ निश्चित हुवा हुआ, मुकर्रर हुवा हुआ. ३ देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)

४ देखो 'थापलियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थपियोड़ी)

थपेड़, थपेट-सं०स्त्री०—१ टक्कर, आघात । उ०—हाली नइ भवि हळ खड़्या, फाड़्या प्रिथवी पेट । सूड़ निदांण किया घणा, दीधी बळद थपेट ।—स.कु.

२ देखो 'थप्पड़' (रू.भे.)

थपेटणौ, थपेटबौ-क्रि०स०—१ जोश दिलाने अथवा प्यार करने के लिये थपकी देना, पीठ ठोंकना, थापी देना । उ०—इउं सुण भरड़ौ ऊठ, पाव तणी पड़ियौ पगां । पीर थपेटौ पूठ, ज्यूं मारूं जाय जींद नैं ।

—पा.प्र.

२ पीटना, मारना ।

थपेटणहार, हारौ (हारी), थपेटणियौ—वि० ।

थपेटिओड़ौ, थपेटियोड़ौ, थपेट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

थपेटीजणौ, थपेटीजबौ—कर्म वा० ।

थपेटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (जोश दिलाने अथवा प्यार करने के लिये) थपकी दिया हुआ, पीठ ठोंका हुआ. २ पीटा हुआ, मारा हुआ ।

(स्त्री० थपेटियोड़ी)

थप्पड़-सं०पु० (अनु०) १ हथेली से किया हुआ आघात, तमाचा, चोट । क्रि०प्र०—कसणौ, दैणौ, पड़णौ, मारणौ, लगाणौ, लागणौ ।

२ एक वस्तु पर दूसरी वस्तु के वार वार वेग से पड़ने का आघात, धक्का।

रू०भे०—थपड़, थपेड़, थपेट।

थप्पणौ, थप्पबौ—देखो 'थपणौ, थपबौ' (रू.भे.)

उ०—१ जिम जांणि जुगतउ सिस्य जिणसिंघ, सूरि पाटइ थप्पिऔ। सइं हत्थि आचारिज्ज पद दे, सूरि मंत समप्पिऔ।—स.कु.

उ०—२ नहीं थिर देह न गेह न नेह, सही थिर थप्पहु रांम सनेह।
—ऊ.का.

थप्पियोड़ौ—देखो 'थपियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थप्पियोड़ी)

थप्पलणौ, थप्पलबौ—देखो 'थापलणौ, थापलबौ' (रू.भे.)

उ०—रब्बारां थप्पले, घग्घ पाकेट भयंकर। नेसां चसळक नयण, झाळ झागूंडां नीझर।—सू.प्र.

थप्पलियोड़ौ—देखो 'थापलियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थप्पलियोड़ी)

थप्पी—देखो 'थापी' (रू.भे.)

थबोळौ-सं०पु०—हिलोर, लहर, तरंग। उ०—दरियाव किसोयक छै, पाजां सूधौ भरियौ, थबोळा खाय छै।—पनां वीरमदे री वात

थमणौ, थमबौ—देखो 'थंभणौ, थंभबौ' (रू.भे.) उ०—सूनी कांकड़ री चांनणी रात में तरवारां चमकी, पळाक-पळाक अर घारिया रै टकराय नै कड़ंद-कड़ंद री आवाज हुई, झाड़ां पर बैठचोड़ा पंखेरू डरग्या अर दिखणाद पवन ई थोड़ौ थमग्यौ।—रातवासौ

थमणहार, हारौ (हारी), थमणियौ—वि०।

थमवाड़णौ, थमवाड़बौ, थमवाणौ, थमवाबौ, थमवावणौ, थमवावबौ—प्रे०रू०।

थमाड़णौ, थमाड़बौ, थमाणौ, थमाबौ, थमावणौ, थमाववौ—
क्रि०स०।

थमिओड़ौ, थमियोड़ौ, थम्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थमीजणौ, थमीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

थमाड़णौ, थमाड़बौ—देखो 'थंभाणौ, थंभाबौ' (रू.भे.)

थमाड़णहार, हारौ (हारी), थमाड़णियौ—वि०।

थमाड़िओड़ौ, थमाड़ियोड़ौ, थमाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थमाड़ीजणौ, थमाड़ीजबौ—कर्म वा०।

थमणौ, थमबौ—अक०रू०।

[थ]माड़ियोड़ौ—देखो 'थंभायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थमाड़ियोडी)

[थ]माणौ, थमाबौ—देखो 'थंभाणौ, थंभाबौ' (रू.भे.)

उ०—सुरस्सा असी जोजनां डाव साहै। थमाऊ निवै जोजनां व्है अथाहै।—सू.प्र.

थमाणहार, हारौ (हारी), थमाणियौ—वि०।

थमायोड़ौ—भू०का०कृ०।

थमाईजणौ, थमाईजबौ—कर्म वा०।

थमणौ, थमबौ—अक०रू०।

थमायोड़ौ—देखो 'थंभायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थमायोड़ी)

थमावणौ, थमावबौ—देखो 'थंभाणौ, थंभाबौ' (रू.भे.)

थमावणहार, हारौ (हारी), थमावणियौ—वि०।

थमाविओड़ौ, थमावियोड़ौ, थमाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थमावीजणौ, थमावीजबौ—कर्म वा०।

थमणौ, थमबौ—अक०रू०।

थमावियोड़ौ—देखो 'थंभावियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थमावियोड़ी)

थमियोड़ौ—देखो 'थंभियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थमियोड़ी)

थय—देखो 'थे' (रू.भे.)

थयणौ, थयबौ-क्रि०अ०—होना। उ०—१ इण अवसर मत आळसै, ईसर आखै अेम। प्रांणी हररस प्रांमियां, जनम सफळ थयै जेम।
—ह.र.

उ०—२ सहर अजंपुर जोधपुर, सोवै राख जवन्न। पूठ अकव्वर वाहरां, थयौ विवखधर मन्न।—रा.रू.

उ०—३ पिंगळ पूगळ आवियउ, देसै थयउ सुगाळ। तेणि न राखी सासरइ, अजै स मारू बाळ।—ढो.मा.

थयणहार, हारौ (हारी), थयणियौ—वि०।

थयोड़ौ—भू०का०कृ०।

थईजणौ, थईजबौ—भाव वा०।

थयोड़ौ-भू०का०कृ०—हुवा हुआ।

(स्त्री० थयोड़ी)

थर-सं०स्त्री० [सं० स्तर] १ खड़ी चुनाई में दो भागों को जोड़ने के लिये बीच में लगाया जाने वाला पदार्थ जिससे ऊपर का भाग स्थिर हो सके, परत, तह। उ०—सिद्धराव कारीगर नूं पूछियौ, अै वींटी कांसूं तरै। कारीगर कह्यौ 'अै वीच थर हुसी' तरै राजा रै जमैखातरी हुई।—नैणसी

२ दूध अथवा पकाये हुए गर्म लेह पदार्थ के ठंडा होने पर उसके ऊपर जमने वाली तह, परत। उ०—प्राव्रट प्राव्रट री आवट मन मारै, थर नै पापां रा थर लेग्या लारै।—ऊ.का.

[सं० स्थल] ३ वाघ अथवा शेर की मांद, गुफा।

सं०पु०—४ स्थान, जगह (जैन) ५ ढेर, समूह, राशि।

उ०—प्राव्रट प्राव्रट री आवट मन मारै। थर नै पापां रा थर लेग्या लारै।—ऊ.का.

६ कंपायमान होने की क्रिया या भाव। उ०—वायू आयू हर विवरण वहरावै। थर थर थरकत थिर थिरचर थहरावै—ऊ.का.

रू०भे०—थरकण, थरकन।

यौ०—थरत्थर, थरथर।
अल्पा०—थरकौ।
७ देखो 'थिर' (रू.भे.) उ०—'माल' दलीम्र तणी धड़ मोड़ै, लोड़ै जगा बावन गढ़ लीध। 'ऊदै' 'संग' उर माह अमावै, कमधज वेद पंथ थर कीध।—महाराजा मांनसिंह रौ गीत

थरक-सं०स्त्री०—१ भय, डर। उ०—अरिराज थरक मांनै अमत, तप अहराज तराज रौ। इण राज जोड़ न राज अनि, राज एम जसराज रौ।—सू.प्र.
२ कँपकंपी, थर्राहट. ३ देखो 'थिरक' (रू.भे.)
वि०—कंपायमान, कंपित। उ०—मिळिया सुराघव लिखमणं, अत कपी पोरस ऊफणं। सुग्रीव अड आकास सोरख, थरक गिर थहरं।
—र.रू.
रू०भे०—थरकण, थरकन।

थरकण—१ देखो 'थर' (रू.भे.) २ देखो 'थरक' (रू.भे.)

थरकणौ, थरकबौ—क्रि०अ०—१ डर से कांपना, कंपायमान होना, भयभीत होना। उ०—१ हलकारां दहुंवै दळां, दीनो खबर सिताव। हेत धणी चित हरखियौ, उर थरकियौ निवाव।—रा.रू.
उ०—२ वायू आयू हर विवरण वहरावै। थर थर थरकत थिर थिरचर थहरावै।—ऊ.का.
उ०—३ उलकापात हुवौ वळी, थरकै अहिपति तांम।—वि.कु.
२ शोभायमान होना, शोभित होना। उ०—सेस सारंग सदन, सहत न सकै सरक। रींझ राकेस नभ, थरक रहियौ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
३ देखो 'थिरकणौ, थिरकबौ' (रू.भे.)
थरक्कणौ, थरक्कबौ—रू०भे०।

थरकन—१ देखो 'थर' (रू.भे.) २ देखो 'थरक' (रू.भे.)

थरकाड़णौ, थरकाड़बौ—देखो 'थरकाणौ, थरकाबौ' (रू.भे.)
थरकाड़णहार, हारौ (हारी), थरकाड़णियौ—वि०।
थरकाड़िग्रोड़ौ, थरकाड़ियोड़ौ, थरकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थरकाड़ीजणौ, थरकाड़ीजबौ—कर्म वा०।
थरकणौ, थरकबौ—अक०रू०।
थरक्कणौ, थरक्कबौ—रू०भे०।

थरकाड़ियोड़ौ—देखो 'थरकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरकाड़ियोड़ी)

थरकाणौ, थरकाबौ-क्रि०स०—१ गिराना, पटकना।
मुहा०—बात थरकाणी—असत्य बात कहना, डींग मारना।
२ स्थापित करना। उ०—मुखमल री सबदु पायरी माहै। पाथरियउ रेसम रौ पाट। कळ पदम करि चहु किनारै, थरकाई वेहां कर थाट।—महादेव पारवती री वेल
थरकाणहार, हारौ (हारी), थरकाणियौ—वि०।
थरकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
थरकाईजणौ, थरकाईजबौ—कर्म वा०।
थरकणौ, थरकबौ—अक०रू०।

थरकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गिराया हुआ, पटका हुआ. २ स्थापित किया हुआ।
(स्त्री० थरकायोड़ी)

थरकावणौ, थरकावबौ—देखो 'थरकाणौ, थरकाबौ' (रू.भे.)
थरकावणहार, हारौ (हारी), थरकावणियौ—वि०।
थरकाविग्रोड़ौ, थरकावियोड़ौ, थरकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थरकावीजणौ, थरकावीजबौ—कर्म वा०।
थरकणौ, थरकबौ—अक०रू०।

थरकावियोड़ौ—देखो 'थरकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरकावियोड़ी)

थरकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भयभीत हुवा हुआ, कांपा हुआ. २ शोभित हुवा हुआ. ३ देखो 'थिरकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरकियोड़ी)

थरकौ—देखो 'थर' (अल्पा., रू.भे.)

थरक्कणौ, थरक्कबौ—देखो 'थरकणौ, थरकबौ' (रू.भे.)
उ०—विजळां सिलहक्क जरक्क वहै। रथ थांभि अरक्क थरक्क रहै।—सू.प्र.

थरक्कियोड़ौ—देखो 'थरकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरक्कियोड़ी)

थरणा-सं०पु० (बहु व०) हृदय, दिल। ज्यूं—उण रा सींगां नै देख नै थरणा कांपै है।

थरत्थरणौ, थरत्थरबौ—देखो 'थरथरणौ, थरथरबौ' (रू.भे.)

थरत्थरियोड़ौ—देखो 'थरथरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरत्थरियोड़ी)

थरत्थराणौ, थरत्थराबौ—१ देखो 'थरथरणौ, थरथरबौ' (रू.भे.)
२ देखो 'थरथराणौ, थरथराबौ' (रू.भे.)

थरत्थरायोड़ौ—देखो 'थरथरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरत्थरायोड़ी)

थरथपणौ, थरथपबौ—देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.)

थरथपियोड़ौ—देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरथपियोड़ी)

थरथरणौ, थरथरबौ-क्रि०अ०—कांपना, थर्राना।
थरत्थरणौ, थरत्थरबौ, थरथराणौ, थरथराबौ—रू०भे०।

थरथरा'ट-सं०स्त्री०—कांपने की क्रिया, कँपकँपी।
रू०भे०—थरथराहट, थरथरी, थररा'ट।

थरथराणौ, थरथराबौ-क्रि०स०—१ कंपायमान करना, कँपाना.
२ देखो 'थरथरणौ, थरथरबौ' (रू.भे.)

थरथरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कंपायमान किया हुआ, कँपाया हुआ.
२ देखो 'थरथरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरथरायोड़ी)

थरथराहट, थरथरी—देखो 'थरथरा'ट' (रू.भे.)

थरथरियोड़ौ-भू०का०कृ०—कांपा हुआ।
(स्त्री० थरथरियोड़ी)
थरथापणौ, थरथापबौ—देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.)
थरथापियोड़ौ—देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरथापियोड़ी)
थरपड़-सं०स्त्री०—लड़खड़ाने की क्रिया। उ०—ढळती रात में ठाकर री लास थरपड़ थरपड़ करती धरती पर डिगण लागी।—रातवासौ
थरपणौ, थरपबौ-क्रि०स०—१ रचना, बनाना, स्थापित करना।
उ०—गुर गोविंद बताइया जी, जिन थरप्या ब्रह्मंड। तीन लोक चौदह भवन जी, सपत दीप नव खंड।—रुकमणी मंगळ
२ देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.) उ०—१ भैरूंजी पीवरियै रै मांय थरपूं देवळौ। हूं आवती नै जावती थांनै धोक सूं।—लो.गी.
उ०—२ राज वभीखण थरपियौ, पुर आंण फेराया।
—केसोदास गाडण
उ०—३ उठा री प्रजा ई नूं राजा थरपसी।—सिंघासण बत्तीसी
उ०—४ कोई पावूजी नै थरप्यौ थांरौ सायबौ।—लो.गी.
थरपणहार, हारौ (हारी), थरपणियौ—वि०।
थरपवाड़णौ, थरपवाड़बौ, थरपवाणौ, थरपवाबौ, थरपवावणौ, थरपवावबौ, थरपाड़णौ, थरपाड़बौ, थरपाणौ, थरपाबौ, थरपावणौ, थरपावबौ—प्रे०रू०।
थरपिओड़ौ, थरपियोड़ौ, थरप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थरपीजणौ, थरपीजबौ—कर्म वा०।
थरपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ रचा हुआ, बनाया हुआ, स्थापित किया हुआ. २ देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरपियोड़ी)
थरप्पणौ, थरप्पबौ—देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.)
उ०—पनरैसै पैंताळवै, सुद वैसाख सुमेर। थावर बीज थरप्पियौ, बीकै बीकानेर।—द.दा.
थरप्पियोड़ौ—देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरप्पियोड़ी)
थरमौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र। उ०—थरमौ थिरक्यौ अंग परि, डगळी आवी दाय। ठाढ़ौ वाजै हो प्रिया, तो लीजै अंग लगाय।—व.स.
२ कुछ लंबाई लिये हुए लम्बा घेरा जो अंगूठी के ऊपर होता है और जिसमें लम्बा नगीना लगाया जाता है।
थररा'ट—देखो 'थरथरा'ट' (रू.भे.)
थरसळणौ, थरसळबौ-क्रि०अ०—१ कंपायमान होना, थर्राना।
उ०—धमस नाळ रजधोम, झळळ तप झंख कमळ झळ। धर थरसळ धर धरण, उतन दिस हलै 'अभैमल'।—सू.प्र.
२ भयभीत होना, कांपना।
थरसल्लणौ, थरसल्लबौ—रू०भे०।

थरसळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कंपायमान हुवा हुआ, थर्राया हुआ।
२ भयभीत हुवा हुआ।
(स्त्री० थरसळियोड़ी)
थरसल्लणौ, थरसल्लबौ—देखो 'थरसळणौ, थरसळबौ' (रू.भे.)
थरसल्लियोड़ौ—देखो 'थरसळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरसल्लियोड़ी)
थरहर-सं०स्त्री०—भय के कारण होने वाली घबराहट, कँपकँपी।
उ०—थरहर खळ सहर अनर नर गजथट, गड़गड़ तबल सदळ गहर। तरण अकळ वळ कमळ भळळ तप, हर नर 'अभमल' 'गजन' हर।
—पहाड़ खां आढ़ौ
रू०भे०—थरहरी।
थरहरणौ, थरहरबौ-क्रि०अ०—१ भय के कारण घबराना, काँपना।
उ०—१ जिण री प्रथवी ऊपर आंण दांण फिरै। राव राजा सारा ही थरहरै।—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ जितइं सुभट गाजइं, तेतइ कायर थरहरइ।—व.स.
२ हिलना, डोलना। उ०—१ कोई घुड़लां री टापां सूं धरती थरहरी।—लो.गी.
थरहराणौ, थरहराबौ—रू०भे०।
थरहराणौ, थरहराबौ-क्रि०स०—१ कंपायमान करना, कंपाना।
२ देखो 'थरहरणौ, थरहरबौ' (रू.भे.)
थरहरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कंपायमान किया हुआ, कंपाया हुआ।
२ देखो 'थरहरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरहरायोड़ी)
थरहरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भय के कारण घबराया हुआ, कंपित।
२ हिला हुआ, काँपा हुआ, डोला हुआ।
(स्त्री० थरहरियोड़ी)
थरहरी—देखो 'थरहर' (रू.भे.)
थरावणौ, थरावबौ—थरहराणौ, थरहराबौ' (रू.भे.)
थराविओड़ौ—देखो 'थरहरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरावियोड़ी)
थरु, थरू-वि० [सं० स्थिर] अटल, स्थिर। उ०—१ जिण राघव जापियौ, थरु घर नव निघ थावत।—र.ज.प्र.
उ०—२ चढ़ै सिंह चंडी मधूकीट खंडी। खळं ओक खप्पी थरू दास थप्पी।—केहर प्रकास
उ०—३ जिण मुख जोवतां दुख प्राचत जावै। थरू आय घर नव निघ थावै।—र.ज.प्र.
उ०—४ सह तरा रूप कळ विरद्ध अखै सकळ, थरु दुत मेर सिखरां आथाघौ।—र.ज.प्र.
थळ-सं०पु० [सं० स्थल] १ स्थान, जगह। उ०—१ कै 'सोनागिर' कै 'दुरंग', कै खीची 'मुकनेस'। अै जांणै छळ सांम री, जिण थळ रहै नरेस।—रा.रू.

उ०—२ प्रीतम कामणगारियां, थळ थळ बादळियांह। धण वरसंतइ सूकिया, तू मूं बांठुळियांह।—ढो.मा.

उ०—३ मीगं मीगं मर धूंघळ धुर माटे। थळ थळ ऊथळती बळती दरसाई।—ऊ.का.

३ भूमि, जमीन। उ०—१ जहं थळ थळ जळ हुइ रह्यउ, बोलइ मोर सिगार। सांवण डूमर है गयौ, किहां मुक प्राण-प्रधार —ढो.मा.

उ०—२ मेरां तूटां ग्रन वहळ, थळ ताड़ा जळ रेस। करसण पाका राम सिरा, तद कउ वखण करेस।—ढो.मा.

३ वैभव, सम्पत्ति। उ०—लनकत जाभळियां वाजण नैं लागी, भूपा मरनोटी मळकत पड़ भागी। वो'रा थळ विहूणां तिल खळवत तरजे, यहां पैसी नैं साधू ज्यों बरजे।—ऊ.का.

४ धन-दौलत। उ०—१ गोढ़ै थळ गोडा पहुवी पोढ़ण नैं। गाभा गळती निस ग्राभो ग्रोढ़ण नैं।—ऊ.का.

उ०—२ मनमी ग्रांटीला थळिया थळ वाळा। विपदा बांटीला वळिया वळ वाळा।—ऊ.का.

५ बालू रेत का टीला। उ०—१ भूली सारस-सद्दड़इ, जांणउ कर-हउ माय। धाई-धाई थळ चढ़ी, पग्गे दाधी माय।—ढो.मा.

उ०—२ भरियो गाडो भार सूं, परगट जांण पहाड़। थळ सांमै चढ़ता थकां, घोळै पूगी धाड़।—बां.दा.

६ भवन, घर। उ०—पारबती पिता तणै थळ पहुंती, ग्रावउ ईसर ग्राप रै ग्रावास। परणीजण नूं थळ नवी परि, दळ मेलवा पठावै दास।—महादेव पारवती री वेल

७ देखो 'थळी' (रू.भे.) उ०—१ थळ कतार लांघण घटै, ले जिहाज जळ ग्रंत। भोळी ढाळी वांणकी, वेटा धूत जणंत।—बां.दा.

उ०—२ थळ मग्गइ ऊजासडउ, पे इण केहइ रंग। धण लीजइ प्री मारिजइ, छाडि बिडालउ संग।—ढो.मा.

८ भाव (शब्द) उ०—धण थळ उवत बाज सुर घंटा, खंभु ठांण सुर बाघर थान। मह भालां ग्रंतम नह मानै, मद छक घूमै बारह मान।—सिवा रोहड़िया रो गीत

रू०भे०—थळू।

थळकण—देखो 'थळगट' (रू.भे.)

थळकणौ, थळकबौ-क्रि॰अ॰—१ मोटाई के कारण शरीर के मांस का हिलना. २ तना हुआ या जमा हुआ न रहने के कारण झोल पड़ना, धसकना।

थळकियोड़ौ-भू॰का॰कृ॰—झोल पड़ा हुआ, धसका हुआ।
(स्त्री॰ थळकियोड़ी)

थळगट, थळगटी-सं॰स्त्री॰ [सं॰ स्थल स्तंभ] द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे रहती है और जिसे लांघ कर भीतर घुसते हैं अथवा इस स्थान पर लगा हुआ पत्थर, देहली।

रू॰भे॰—थळवट, थळी, थळेटी।

थळ-गांमी-वि॰ [सं॰ स्थलगामी] भूमि पर निवास करने अथवा विचरण करने वाला।

थळचट-वि॰—१ पराया माल खाने वाला, चटोरा।

उ०—भूवा भगनी रा थळचट भिखियारी। धन्यां कन्यां रा गळकट हठधारी।—ऊ.का.

२ द्वार-द्वार पर खड़ा रह कर भीख मांगने वाला।

थळचर, थळचारी-सं॰पु॰ [सं॰ स्थलचर] पृथ्वी पर रहने वाला जीव।

उ०—१ जळचर थळचर खेचरू जीवा, उर पर भुज पर लेख। सबळ निरबळ नैं भखै जीव, वैर मांहो मांही देख।—जयवांणी

उ०—२ सुज बळ वध जळ ग्राह समथको। थळचारी जिण हूं गज वियको।—र.ज.प्र.

रू॰भे॰—थळयर।

थळथळणौ, थळथळबौ, थळथळाणौ, थळथळाबौ-क्रि॰अ॰—मोटाई के कारण शरीर के मांस का झूल कर इधर-उधर हिलना।

थळपति-सं॰पु॰ [सं॰ स्थल=भूमि+पति] राजा, नृप (डि.को.)
(मि॰ भूपति)

थळभारी-सं॰पु॰यौ॰—पालकी उठाने वाले कहारों की एक बोली जिससे वे पालकी के पीछे वाले कहारों को आगे रेतीले मैदान का होना सूचित करते हैं।

थळयर—देखो 'थळचर' (रू.भे., जैन)

थळवट, थळवटी, थळवट्ट, थळवट्टी—देखो 'थळी' (रू.भे.)

उ०—१ वांरा भड़ मेळाउ ग्राया। चंचळ थळवट दिसा चलाया। —रा.रू.

उ०—२ गरु ग्रंग वडापण तुज्ज घणौ, तुम वीर राजा थळवट्ट तणौ।—वी.मा.

उ०—३ वीरमदे धीरप वळै, चढ़ खूर चलाया। साथ लियां दळ सांमठा, थळवट्टी ग्राया।—वी.मा.

थळवा-सं॰स्त्री॰—पंवार वंश की एक शाखा (वं.भा.)

थळायूणी-सं॰स्त्री॰—मुठभेड़, युद्ध, टक्कर।

थळि—देखो 'थळी' (रू.भे.)

थळियामारू-सं॰पु॰यौ॰—दामाद को गाया जाने वाला गीत।

थळियौ-सं॰पु॰—रेगिस्तान में रहने वाला, मरुस्थल निवासी।

उ०—ग्रनमी ग्रांटीला थळिया थळवाळा। विपदा वांटीला वळिया वळ वाळा।—ऊ.का.

वि॰—मरुस्थल सम्बन्धी, रेगिस्तान सम्बन्धी।

रू॰भे॰—थळेचौ।

थळी-सं॰स्त्री॰—१ मरुस्थल, रेगिस्तान। उ०—वदीजै किसूं कीरती हेक वाकै। थळी री दुर्गा दाखती मेस थाकै।—मे.म.

रू॰भे॰—थळ, थळवट, थळवटी, थळवट्ट, थळवट्टी।

२ देखो 'थळगट' (रू.भे.)

थळू—देखो 'थळ' (रू.भे.)

थळेचो—देखो 'थळियौ' (रू.भे.)

थळेरी—देखो 'थळगट' (रू.भे.)

थळेस्वरी-सं०स्त्री० [सं० स्थल+ईश्वरी] देवी, शक्ति।

थवक्क, थवक्को-सं०पु० [सं० स्तवक] समूह। उ०—तुंग पयोहर उल्लसइ सिंगार थवक्का। कुसुमबांणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्का।—प्राचीन फागु संग्रह

थवणी-[सं० स्तवनिका, स्थापनिका] सुस्मृति, स्मृति-चिन्ह।
उ०—परिणीय आपी पंडुकुमरि आपणीय जि थवणी। सहीयर वलि एकंति हुई पुत्तु जायउ रमणी।—पं.पं.च.

थवणौ, थवबौ-क्रि०अ०—होना।

थवियोड़ौ-भू०का०कृ०—हुवा हुआ।
(स्त्री० थवियोड़ी)

थविर-वि० [सं० स्थविर] १ बुड्ढा, वृद्ध।
२ परिपक्व बुद्धि वाला, स्थिर बुद्धि वाला. ३ स्थविर-कल्पी, साधु (जैन)
रू०भे०—थिवर, थीवर, थेर, थेवर।

थह, थहक-सं०स्त्री० [सं० स्था] सिंह, सूअर, रींछ आदि की मांद, कंदरा। उ०—१ घाल घणा घर पातळा, आयौ थह में आप। सूतौ नाहर नींद सुख, पौरुहौ दियै प्रताप।—बां.दा.
उ०—२ फिरतौ देख दिसूं दिस दोळा, अणडरतौ करतौ ओछाह। डाकरतौ आयौ थह डारण, वीफरतौ फिरतौ वाराह।
—महादांन महड़ू
रू०भे०—थै, थेह, थैह।

थहण-उ०लिं० [सं० स्था] स्थान, जगह। उ०—चहूं चक्क चल चलिय सेस चळचळिय सहस सिर। कमठ पीठ कळमळिय थहण दळमळिय सुचर थिर।—र.रू.

थहरणौ, थहरबौ-क्रि०अ०—१ ठहरना, टिकना, रुकना।
उ०—जस थहरै तो जीभ में, क्रिपा हूंत बिधि कीध। मंहरै तौ म्रिगसींग में, पैंठी बांन पसीध।—बां.दा.
२ दुर्बलता या भय से कांपना।

थहराणौ, थहराबौ-क्रि०स०—१ कांपना, थर्राना. २ ठहराना, टिकाना।

थहरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कांपा हुआ, थर्राया हुआ. २ ठहराया हुआ।
(स्त्री० थहरायोड़ी)

थहरावणौ, थहरावबौ—देखो 'थहराणौ, थहराबौ' (रू.भे.)
उ०—बायू आयू हर विबरण वहरावै। थर थर थरकत थिर थिरचर थहरावै।—ऊ.का.

थहरावियोड़ौ—देखो 'थहरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थहरावियोड़ी)

थहरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ठहरा हुआ, टिका हुआ, रुका हुआ.
२ कांपा हुआ, थर्राया हुआ।
(स्त्री० थहरियोड़ी)

थां-सर्व०—आप, तुम। उ०—१ बारठ केसरिसिंघ सूं, अक्खी 'सोनंग' साह। खत्रि सपूता चार री, थां हूं ता निरवाह।—रा.रू.
उ०—२ रे मीत नचिंत हुवौ कंप राजिंद, याद हरी नह आवै। तोरौ वीर विछंडै तीरां, थां गथ सो हिव थावै।—र.रू.

थांअळी—देखो 'थांहरी' (रू.भे.)
(स्त्री० थांअळी)

थांण—देखो 'थांन' (रू.भे.) उ०—१ देवी गंद्रपांवास अरबद गांमै। देवी थांण उडियांण समसांण ठांमै।—देवि.
उ०—२ मांण थांण परसण बिय 'मोकळ', घसण फौज पड़ घण घणी। घणी चत्रंग बैसतां धारण, धारण चूकौ दिली धणी।
—महारांणा जगतसिंह बडा रौ गीत
उ०—३ थांण करै आखूं थड़ां, नह थण काती न्हाय। समर जिमा नव लख सगत, कंत उदार कहाय।—रेवतसिंह भाटी

थांणगिद्धी-सं०स्त्री० [सं० स्त्यानगृद्धि] सोते सोते छः मास बीत जाने का भाव (जैन)

थांणथप—देखो 'थांणाथप' (रू.भे.)

थांणबंध—देखो 'थांणाबंध' (रू.भे.)

थांणाथप-वि०—एक ही स्थान पर अमिट रूप से रहने वाला।
सं०पु०—वह वृद्ध जैन साधु जो चलने-फिरने में असमर्थ हो तथा एक ही स्थान पर रहता हो।
रू०भे०—थांणथप।

थांणादार—देखो 'थांणेदार' (रू.भे.) उ०—जणी नाकै गोळकुंडा री थांणादार रहै। जिकण सूं भील पालवी अंगेजियाई बहै।
—केहर प्रकास

थांणादारी—देखो 'थांणेदारी' (रू.भे.)

थांणाबंध-सं०पु० [सं० स्थानबंध] डिंगल का एक गीत छंद विशेष।
रू०भे०—थांणबंध।

थांणायत-सं०पु० [सं० स्थान+रा०प्र०आयत] १ चौकीदार।
उ०—१ सो वीकांण धरा चै सांधै, बळ मेटियौ जु हूता बांधै। केताई गांव थांणायत कोटां, लूटै देस किया सहलोटां।—रा.रू.
उ०—२ तद पूनियां रै थांणायत अंगरेजकीवी—परगनौ नयौ दबियो छै।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
वि०—एक ही स्थान पर अमिट रूप से रहने वाला।
रू०भे०—थांणैत।

थांणु, थांणू-सर्व०—१ आपका, तुम्हारा. २ देखो 'थांणौ' (रू.भे.)
उ०—१ हां हो जीव दया धरम वेलड़ी, रोपी स्त्री जिनराय। जिन सासण थांणु जिहां, ऊगी अविचळ आय।—स.कु.
उ०—२ कांन्ह नै भांग रिड़माल राजा कियौ, पियौ पय हाकड़ौ समंद पांणूं। बीक नै दियौ बरदांन तें बीसहथ, थिर कियौ दुरंग देसांण थांणूं।—बालावक्ष बारहठ

[सं० स्थाणु] ३ महादेव, शिव. ४ सूखा वृक्ष।

थांनेत-सं०पु०—१ किसी स्थान का अधिपति. २ किसी चौकी या अड्डे का मालिक. ३ किसी स्थान का देवता.
४ देखो 'थांणायत' (रू.भे.)

थांणेदार, थांनेदार-सं०पु० [सं० स्थान+फा० दार] १ पुलिस स्टेशन का वह अधिकारी या प्रधान जो किसी स्थान पर शान्ति बनाये रखने और अपराध की छानबीन करने के लिये नियुक्त रहता है।
२ जकात का वह अधिकारी या चौकीदार जो आयात और निर्यात के माल पर कर (चुंगी) वसूल करता है।
रू०भे०—थांणादार।
अल्पा०—थांणेदारियो।

थांणेदारी-सं०स्त्री०—१ थांनेदार का पद।
क्रि०प्र०—मिळणी।
२ थानेदार का कार्य।
क्रि०प्र०—करणी।
रू०भे०—थांणादारी।

थांणो-सं०पु० [सं० स्थान] १ वह स्थान जहां आसपास की रक्षा के लिये थोड़े से सिपाही आदि रहते हों, चौकी। उ०—१ वरात रा समाधांन पर आपरा सुभट सचिव राखि तत्काळ ही बूंदी आइ अमल कीधो। जठै आपरो थांणो राखि पाछो ऊमर थूणें जाइ आसाढ़ क्रिस्ण नवमी कुजवार रा लग्न पर गोळवाळ री दो ही पुत्रियां रो विवाह चाळुकराज रा दो ही कंवरां रै साथ कर दीधो।—वं.भा.
उ०—२ जड़ि ठांम ठांम थांणा जबर, बैठा मुगळ महाबळी। आसुरां सुरां प्रजळि अगनि, छोह ध्रोह झळ ऊछळी।—सू.प्र.
२ वह स्थान जहां अपराधों की सूचना दी जाती है और कुछ सरकारी सिपाही रहते हैं, पुलिस स्टेशन, पुलिस की बडी चौकी.
३ टिकने या ठहरने का स्थान। उ०—थाटपति मेवाड़ थांणे, रचै निजरां दीघ रांणे।—सू.प्र.
४ स्थान। उ०—ग्यांनी घ्यांनी सब सुण लीजो, वांठां चेतन रइया। सत लोक सोहं घर वासा, थिर थांणा थइया।
—स्री हरिरांमजी महाराज
५ वह घेरा या गड्ढा जिसमें कोई पौधा लगा हो, आलवाल, थाल।
उ०—१ वल्ली तसु बीज भागवत वायो, महि थांणो प्रिथु दास मुख। मूळ ताल जड़ अरथ मंडहे, सुथिर करणी चढ़ि छांह सुख।
—वेलि.
उ०—२ इकं थांणे रोपिया रे, इक आंबो एक बूळ। वाको रस नीको लगै रे, वाकी भागै सूळ।—मीरां
रू०भे०—थांवळो।
यौ०—तुळछी-थांणो।
६ समूह। उ०—पड़ियो मुरझाय सेस इळ ऊपर, सकत रांण सुत सांझी। घरकै भाल वनचरां थांणा, मुख कुमळांणां मांझी।—र.रू.

७ एक प्रकार का सरकारी लगान।
क्रि०प्र०—देणो, लागणो।
सर्व० (स्त्री० थांणी) आपका, तुम्हारा।
रू०भे०—थांणु थांणू, थांनो।

थांन-सं०पु०[सं० स्थान] १ किसी देवी-देवता का मंदिर अथवा चबूतरा।
उ०—१ जे कठड़ै औ भैरव कठड़ै थांरो जी थांन। कठड़ै औ भैरव कठड़ै थांरी थापना।—लो.गी.
उ०—२ विमळ देह धारियां सगत जंगळ घर विराजै। थांन देसांण स्री हात थाया।—खेतसी बारहठ
२ स्थान, जगह, ठौर, ठिकाना। उ०—सिद्ध थयो कारज सहू, कुमरी नो तिण थांन।—वि.कु.
३ कपड़े व गोटे आदि का निश्चित लम्बाई का पूरा टुकड़ा।
उ०—अभयसिंहजी रो खरच कियो, सारां टीको घोड़ा नजर रा दीन्हा, राजाधिराज बखतसिंहजी नागौर सूं टीका रा हाथी घोड़ा कपड़ै रा थांन लेय धाय नूं मेल्हो।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
४ देखो 'थण' (रू.भे.)
रू०भे०—थन्न, थांण।

थांनअनाद-सं०पु०—देवालय।

थांनक-सं०पु० [स्थानक] १ किसी देवी-देवता का चबूतरा या मंदिर, देवालय. २ स्थान, जगह। उ०—१ मन वाड़ी गुण फूलड़ा, पिय नित लेता वास। अब उण थांनक रैण दिन, पिय विन रहूं उदास।
—अज्ञात
उ०—२ आसा राघव पूर अनेकां, थांनक दासा थापै।—र.ज.प्र.
उ०—३ गंगा जिण थांनक गई, सुणियो तीरथ सोय। तीरथ होय न गंग विन, गुड़ विन चौथ न होय।—बां.दा.
यौ०—थांनकराय।
३ श्वेताम्बर जैनी साधुओं के ठहरने का स्थान। उ०—जयमलजी रा टोळा मांहि थी संवत् १८५२ रै आसरै गुमांनजी, दुरगदासजी, पेमजी, रतनजी आदि सोळै जणा नीकळ्या। थांनक, नित्य, पिंड, कलाळ रो पांणी वहिरणो आदि छोड, नवो साधपणो पचख्यो, पिण सरधा तो वाहिज पुन री।—भि.द्र.
यौ०—थांनकवासी।

थांनकवळ-सं०पु० [सं० स्थान+वलि] पाताल।

थांनकवासी-स०पु०यौ०—श्वेताम्बर जैन साधु।

थांन-वंदावणो—विवाह की एक रस्म या प्रथा विशेष जिसमें बारात रवाना होते समय दूल्हा के घोड़े या पालकी पर चढ़ते ही माता उसे स्तन पान कराती है।

थांनिक-सं०स्त्री०—१ राजधानी. २ देखो 'थांनक' (रू.भे.)
उ०—१ इळ छळि थाट वडा आफाळै, थांनिक मोटै वात थयी। जिम दीजै तिम सेखै दीधी, लीजै जिम तिम राड़ लयी।
—राठोड़ सेखा सूजावत गांगा बाघावत रो गीत

उ०—२ चित समंद थांनिक 'चौंडरै' । कमधज्ज राजस इम करै ।
—सू.प्र.

थांपण—देखो 'थापण' (रू.भे.) उ०—१ कूड़ा कथन रखै करौ, सूंस कूड़ी साख । थांपण मोसो मत करै, रिद्धि पारकी राख ।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ चाडी खाधी चउतरइ, कीधउ थांपण मोसउ । कुगुरु कुदेव कुधरम नउ, भलउ आंण्यउ भरोसउ ।—स.कु.
वि०—स्थापित करने वाला । उ०—दूजो सवळां उथांपण, तीजौ निवळां थांपण ।—रा.सा.स.

थांपणि—देखो 'थापण' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—करि रखवाळ थांपणि तणुं अजीउ फिरेवुं अम्हि वनि घणुं । नमी हिंडंवा पाछी जाइ वापराजि धणियांणी थाइ ।—पं.पं.च.

थांब, थांवड़—देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.)

थांवणौ, थांबबौ—देखो 'थांभणौ, थांभबौ' (रू.भे.)
उ०—ढोलाजी करहलो थांब्यो रे, झेंक्यो रेतूड़ रै मांय । काडचौ डावा पग री ताकळी, कोई पूग्यो छिन रै मांय ।—लो.गी.

थांबलियौ—देखो 'थंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थांबली-सं०स्त्री०—देखो 'थंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थांबलौ—देखो 'थंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थांबियोड़ौ—देखो 'थांभियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थांबियोड़ी)

थांबियौ—देखो 'थंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थांबीड़—देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.)

थांबौ—देखो 'थंबौ' (रू.भे.)

थांभ—१ देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.) २ देखो 'तोरणथांभ' (रू.भे.)

थांभउ—देखो 'थंबौ' (रू.भे.) (उ.र.)

थांभणौ, थांभबौ-क्रि०स०—१ रोकना, ठहराना । उ०—१ जुध भागां थांभै जिकौ, गढ़ तजियां नहिं गत्त । गढ़ नूं म्है बांधी गळै, आवौ सो असपत्त ।—बां.दा.
उ०—२ सोरठ थूं सुरनार, सिर सोनै री बेहड़ौ । पग थांभौ पिणि-हार, वातां बूझै बींझरौ ।—बींझा सोरठ री वात
२ जारी न रखना, बन्द करना. ३ धैर्य रखना, शांत होना ।
उ०—भरमल री डील तौ विरह सूं पसीज गयौ, बहुत उदास हुई, नयणां सूं प्रवाह छूटियो, नीठ सी जीव थांभियौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
४ किसी गिरती हुई वस्तु को अधर में ठहरा लेना, पकड़ लेना ।
उ०—सखी अमीणो साहिबो, बौह जूझौ बळवंड । सो थांभै भुजडंड सूं, खड़हड़तौ ब्रहमंड ।—बां.दा.
थांभणहार, हारौ (हारी), थांभणियौ—वि० ।
थंभवाड़णौ, थंभवाड़बौ, थंभवाणौ, थंभवाबौ, थंभवावणौ, थंभवावबौ, थं ड़णौ, थंभाड़बौ, थंभाणौ, थंभाबौ, थंभावणौ, थंभावबौ—प्रे०रू० ।
थांभिओड़ौ, थांभियोड़ौ, थांभ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
थांभीजणौ, थांभीजबौ—कर्म वा० ।
थंबणौ, थंबबौ, थंभणौ, थंभबौ, थमणौ थमबौ—अक०रू० ।
ठांबणौ, ठांबबौ, ठांभणौ, ठांभबौ, ठांमणौ, ठांमबौ, थांबणौ, थांबबौ, थांमणौ, थांमबौ—रू०भे० ।

थांभलियौ—देखो 'थंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थांभली-सं०स्त्री०—देखो 'थंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थांभलौ—देखो 'थंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थांभायत-सं०पु०—कुल या वंश की शाखा या उप-शाखा का प्रमुख व्यक्ति अथवा पूर्वज ।

थांभियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ रोका हुआ, ठहराया हुआ. २ बन्द किया हुआ. ३ किसी गिरती हुई वस्तु को अधर में रोका हुआ, अधर में पकड़ा हुआ. ४ धैर्य रखा हुआ, शान्त ।
(स्त्री० थांभियोड़ी)

थांभियौ—देखो 'थंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थांभीड़—देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.)

थांभु, थांभौ-सं०पु०—१ वंश अथवा कुल की शाखा या उपशाखा.
२ देखो 'थंबौ' (रू.भे.) उ०—१ तिहां नु रे थांभु तेह नीखीउ तेणइ ठाइ । कुतूहल कीधू तेणइ बळवंतइ ए ।—नळ-दवदंती रास
उ०—२ कठठे हठी पाकेटूं की कतार । सो कैसे बगलूं के उरळे गिर सिखरूं से थूंभा । जूबलूं के धाट देवळूं के थांभा ।—सू.प्र.
उ०—३ अर जगमाल मालावत घोड़ौ दाबियौ सु थांभौ खिसियौ नहीं ।—नैणसी

थांम—देखो 'थंभौ' (मह. रू.भे.)

थांमणौ, थांमबौ—देखो 'थांभणौ, थांभबौ' (रू.भे.)
उ०—रथ तांम थांम देखंत रवि, उडै रीठ तरवारियां । घण करै पार जरदां घटां, करदां छुरां कटारियां ।—सू.प्र.

थांमियोड़ौ—देखो 'थांभियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थांमियोड़ी)

थांम्हणौ, थांम्हबौ—देखो 'थांभणौ, थांभबौ' (रू.भे.)

थांम्हियोड़ौ—देखो 'थांभियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थांम्हियोड़ी)

थां'ळौ, थांरउ, थां'रौ—देखो 'थांहरौ' (रू.भे.) उ०—१ राजि थांरउ रूप सकळ सुखदा ।—वि.कु.
उ०—२ अं साथी हुसी कुंवर इतरी कही तद लोकै कही थां'रौ ऐसौहीज धीरज दीसै छै ।—चौवोली
(स्त्री० थां'ळी, थां'री)

थांवळौ—देखो 'थांणौ' (५) (रू.भे.)

थांहरौ-सर्व० (स्त्री० थांहरी) आपका, तुम्हारा । उ० -१ थांहरी तौ सूरति जिनवर राजै छइ नीकी ।—वि.कु.
उ०—२ थांहरा छै ज्यूं थां दाई आवै त्यूं करौ । मारी भावै राखौ ।
—द.वि.

उ०—३ ताहरां किरोड़ी तेड़ नै कह्यो—थांहरा आदमी गांवै मूको ज्यूं पइसा ल्यावै।—नैणसी

था—सं०स्त्री०—१ गंगा. २ पृथ्वी. ३ द्युति. ४ मृदंग (एका.)

सर्व०—तुझ। उ०—सांई ! तूं ज वडो धणी, था सूं वडो न कोय। तू जेना सिर हत्थ दे, सो जग में वड होय।—ह.र.

क्रि०अ० (बहु व०) एक शब्द जिससे भूतकाल में होना सूचित होता है, राजस्थानी के 'थो' शब्द का बहुवचन, थे। उ०—सखी सु सज्जण आविया, हुंता मुझ्झ हियाह। सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह।—ढो.मा.

प्रत्य०—करण और अपादान कारक का चिन्ह, तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिन्ह, से। उ०—१ सु सिरोही था नजीक घाटी छै तठै आय देवळ लखै घाटी विघाड़ रै वास्तै रोकी छै।

—राव लाखै री वात

उ०—२ संवत १६७८ ब्रहांनपुर था छाड नै राव रतन रै वास वसियो।—नैणसी

थाक—सं०स्त्री०—थकावट।

थाकउ—देखो 'थाको' (रू.भे.) उ०—जइ भागउं तो वाराहउं, जइ थाकउ तो पार करउ घोडउ, जइ ठालउ तोइ कपूर तणउ दाबडउ, जइ जूनउं तोइ पाटू।—व.स.

थाकड़ौ—देखो 'थाको' (अल्पा., रू.भे.) उ०—भूखा तिसिया थाकड़ा, राळीजै नेड़ाह। ढळिया हाथ न आवसी, 'गोगादे' घोड़ाह।—गो.रू.

थाकणौ—वि० (स्त्री० थाकणी) थकने वाला, शिथिल पड़ने वाला।

रू०भे०—थाकु।

सं०पु०—रुकने या ठहरने की क्रिया, ठहराव। उ०—थांनिक थांनिक थाकणे, दीजइ जे मागइ। पंच वरण दयां भरी, वळि चालइ आगइ।

—ऐ जै का.सं.

थाकणौ, थाकबौ—क्रि०अ०—१ शिथिल होना, श्रान्त होना, क्लान्त होना। उ०—ऊनाळा में लूण रा कण चमक'र आंख्यां नै पांणी रो धोखो देवै। तिरस्या हिरण्या पांणी देख'र दौड़ता रै'वै अर थाकर मर जावै।—रातवासो

२ दुर्बल होना, कृश होना। उ०—दुनिया में सब रोगां री दवा है पण वैं'म री ओखद कठैई कोयनी। थनै म्हारै थाकण रो वैं'म व्हैग्यो है।—रातवासो

३ काम करने योग्य न रहना, अशक्त होना, शक्तिहीन होना.

४ कम पड़ना, बाकी रहना। ज्यूं—ब्याव मे रुपया दो हजार री जरूरत ही, पनरै सो तो है पण पांच सौ रुपया थाक रह्या है।

५ निर्धन होना ज्यूं—कैं'ड़ो वण्योड़ो घर थो पण अबै थाक ग्यो।

६ हैरान होना, ऊब जाना। उ०—प्रगट खांप खांप रा एम दौड़ै वड़ रावत, ठौड़ ठौड़ राठौड़ घणा मुगळां खग धावत। पचि थाको पतसाह किलम विहडाय कराळा, क्रोध जतन कीजतां, ठहै न कमंध हठाळा।—सू.प्र.

७ चलता न रहना, मंद पड़ना, धीमा पड़ना, रुक जाना। ज्यूं—कारखांनो सागै चालतो हो पण अबै थाक रह्यो है।

८ मुग्ध होकर स्थिर हो जाना, मोहित होकर अचल हो जाना। ज्यूं—चांद सो मुखड़ो'र केहर सी कटी देख'र आंख्यां थाकी री थाकी रयगी।

थाकणहार, हारो (हारी), थाकणियो—वि०।

थकवाड़णौ, थकवाड़बौ, थकवाणौ, थकवाबौ, थकवावणौ, थकवावबौ, थकाड़णौ, थकाड़बौ, थकाणौ, थकाबौ, थकावणौ, थकावबौ—प्रे०रू०।

थाकिओड़ौ, थाकियोड़ौ, थाक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थाकीजणौ, थाकीजबौ—भाव वा०।

थकणौ, थकबौ, थक्कणौ, थक्कबौ—रू०भे०।

थाकल—वि०—१ शिथिल, धीमा. २ अशक्त, कमजोर. ३ कृश, दुर्बल. ४ निर्धन, कंगाल।

थाकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ शिथिल, श्रान्त, क्लान्त. २ दुर्बल, कृश. ३ शक्तिहीन, अशक्त. ४ कम पड़ा हुआ, बाकी रहा हुआ. ५ निर्धन, कंगाल. ६ ऊबा हुआ, हैरान. ७ मंदा, धीमा. ८ अचल, स्थिर.

(स्त्री० थाकियोड़ी)

थाकी—देखो 'थकी' (रू.भे.) उ०—महारइ थाकी राजकुंआरि परणीय जा परदेसडइ ए।—विद्याविलास पवाडउ

वि०स्त्री०—अशक्त, दुर्बल।

थाकु—देखो 'थाकणौ' (रू.भे.)

थाकेलो—सं०पु०—१ थकान, शिथिलता। उ०—थांहरो घर छै, दस बीस दिन टिको, थाकेलो उतारो।—कुंवरसी सांखला री वारता

क्रि०प्र०—आणौ।

२ दुर्बलता, कृशता।

क्रि०प्र०—आणौ।

३ हैरानी।

क्रि०प्र०—आणौ।

रू०भे०—थकेलो।

थाकोड़ौ, थाको—देखो 'थाकियोडो' (रू.भे.) उ०—धुर धुर धूजंता थुड़ता थाकोड़ा। पीळा पड़ियोड़ा गिलिया पाकोड़ा।—ऊ.का.

रू०भे०—थकोड़ौ।

यौ०—थाको-मांदो।

(स्त्री० थाकोड़ी)

थाग—सं०पु०—१ गहराई, थाह. २ गहराई का अन्त, धरती का वह तल जिस पर पानी हो। उ०—थाग न आवै थागतां, उदध समावां आप। नेक वगत लोपै नहीं, पाजा धरम 'प्रताप'।—चिमनदांन रतनू

३ गहराई का पता, गहराई का अंदाज। उ०—गयणाग कवण चीतै गहीर। निज थाग लहै कुण महण नीर।—रांमदांन लाळस

४ पार, अंत, परिमिति। उ०—जळ में झीणा जीव थाग नहीं कोय रे।—जयवांणी

५ सीमा, हद। उ०—वहु खाटै जयचंद विरद, वधि खग दत विणवार। आवै नहि जे थाग अति, पावै नहि को पार।—सू.प्र.

६ पता, इल्म। उ०—तेरस तेरै वर गई, आज न लागै थाग। हिवड़ो हळवळियो हमैं, ऊमीजै ऊमाग।—अज्ञात

क्रि०प्र०—लागणी।

७ एक ही प्रकार के फूलों के हार के बीच में लगाया जाने वाला भिन्न रंग का पुष्प अथवा भिन्न रंग का कागज आदि।

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी।

अल्पा०—थेगड़ी।

८ रोक, सहारा।

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी।

९ गंभीरता. १० नदी के पानी के कटाव तथा बाढ़ के कारण किनारों के नीचे की ओर स्थान-स्थान पर पड़ने वाले बड़े गड्ढे

उ०—नदी रा थागां में, उजाड़ कांकड़ में अर डूंगरां री छायां में चोरां रा अड्डा हा।—रातवासौ

रू०भे०—थाघ।

अल्पा०—थागौ।

थागड़-वि०—निडर, निर्भीक। उ०—भूंडण तौ भूंडा जिणै, हिरणी जिणै सुगट्ट। पांन खड़क्कै उठ चलै, थागड़ चालै थट्ट।—अज्ञात

थागड़ौ-वि०—थाह लेने वाला। उ०—झूळ रथ साथ उरवसी रा झागड़ै, निज हरक डाक डक लगाई नागड़ै। घरर घर अेक डंका घरर अण थागड़ै, पकड़ भालौ कठी दीयै पग पागड़ै।

—महादांन महड़ू

थागणौ, थागबौ-क्रि०स०—गहराई की जांच करना, अंत तक पहुँचना, थाह लेना। उ०—१ थागै कुण अणथाग बात अेहड़ी विचारौ। सांम दांम डंड भेद, सरै जिम कारज सारौ।—पे.रू.

उ०—२ सुत फतमाल वंस रा सूरज, मांगण भड़ां वधारण मोद। थग आवै महरांण थागियां, सहजां थग ना'वै सीसोद।

—मेघराज आढ़ौ

थागणहार, हारौ (हारी), थागणियौ—वि०।

थागिओड़ौ, थागियोड़ौ, थाग्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थागीजणौ, थागीजबौ—कर्म वा०।

थाघणौ, थाघबौ—रू०भे०।

थागत-सं०स्त्री०—थाह। उ०—अस वाजस पक्खर गूगरियूं। तित थागत लेत सुरंतर यूं।—पा.प्र.

थागिड़दा-सं०पु०—ढोल का बोल।

थागियळ-सं०पु०—समुद्र, जलधि। उ०—थागियळ पूछियौ भणी भागीरथी, सांवळा नीर किसां समोहां। साह री फौज 'सगता' हरै सींघळी, लाल रंग चाढ़ियौ मार लोहां।—अज्ञात

थागियोड़ौ-भू०का०कृ०—गहराई की जांच किया हुआ, अंत तक पहुँचा हुआ, थाह लिया हुआ।

(स्त्री० थागियोड़ी)

थागौ-वि०—१ कम गहरा, उथला।

रू०भे०—थाघौ।

२ देखो 'थाग' (अल्पा., रू.भे.)

थाघ—देखो 'थाग' (रू.भे.) उ०—आलम मोरा औगुणां, साहिव तूझ गुणांह। बूंद-विरखा रैण-कण, थाघ न लब्भी त्यांह।—ह.र.

थाघणौ, थाघबौ—देखो 'थागणौ, थागबौ' (रू.भे.) उ०—दड़ी पड़तां द्रहा में, चढै झांकियौ कदंब डाळ, नीर थाघै अथाग चडतां वाद नार। खेल्ह बाळव्रंद रै करंतां लगाड़ियौ खेटौ, काळी नाग जगाड़ियौ नंद रै कंवार।—र.ज.प्र.

थाघियोड़ौ—देखो 'थागियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थाघियोड़ी)

थाघौ—१ देखो 'थाग' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'थागौ' (रू.भे.)

थाट-सं०पु० [सं० स्थात] १ समूह, दल। उ०—१ साथै नर नारी ना थाट।—वि.कु.

उ०—२ हुवौ अलि सींधवौ राग वागी हकां। थाट आया पिसण घाट लागै थकां।—हा.झा.

२ सेना, फौज, दल (अ.मा.) उ०—१ खत्रवट प्रकट 'अमरेस' रै खेलतै, ठेलतै थाट रहिया नहीं ठांहि। मार तुरकां दिया कमधां मुहै, मार कमधां दिया कुरभां मांहि।—चतरौ मोतीसर

उ०—२ मिटै मोह छोळां थटै देव माया। उठै थाट ले भूप सुग्रीव आया।—सू.प्र.

उ०—३ वदै रांण नूं कोण कै दास वारां। किसै वैर तैं थाट मारै कंवारां।—सू.प्र.

उ०—४ राव चूंडा री थाट पण भूंडेल रहतौ।—नैणसी

यौ०—थाट-थंभ।

३ सामान, सामग्री. ४ संपत्ति. ५ वैभव।

यौ०—थाट-पाट।

६ आनन्द। उ०—१ गो वळग्यौ निज गांव थाट घर मंगळ थाया। मुड़दौ देख मसांण चिलमियां चाढ़ण चाह्या।—ऊ.का.

उ०—२ वुहौ जिकण तूं थाट, त्रित सूं थाट चितारसी। थैं कोना सह थाट, जग में पग-पग 'जसा'।—ऊ.का.

७ प्रसन्नता, हर्ष। उ०—पैंड पैंड ज्यां रा पिसण, त्यां रा कड़वा वैण। जग जांनूं देखै जळै, नहि थाटां व्है नैण।—बां.दा.

८ मनोकामना, मनोरथ। उ०—१ आसण गूढ़ करूं पण आसुर, ज्याग विधूंसै जावै। रिख्या थाट करै जो राघव, थाट संपूरण थावै।

—र.रू.

उ०—२ सखी सहेली सांभळै, म्है मन वांध्या थाट। नव दिन कीधा नोरता, सो प्रीतम हदवाट।—ढो.मा.

९ बाहुल्यता, प्रचुरता। उ०—बिभी जेहं नै अति घणी, घन घीणा ना थाट।—जयवांणी

१० चद्दर, पतरा। उ०—थाट हेम हिंद थळी खास राजस किय थांनां। राजां किया रतन्न बड़मद्युति उज्वळ वांनां।—केहरप्रकास

११ सातों स्वरों का वह निश्चित रूप जिसके आधार पर अनेक राग-रागनियों का विधान किया जाता है। उ०—रंग की वरखा अलगोजूं के नाद। ग्रैसी भांति अनेक उछव सें गावते हैं, तारीफ की तांन असमांन सैं लावते हैं। ग्रैसा मूरतिवंत राग का थाट रचि जरकस जंवहरू के इनांम पाए।—सू.प्र.

सं०पु०—१२ गज; हाथी ? उ०—१ पुरुख ते जे पुण्यदंत, स्त्री ते जे पुत्रवंत, हाट ते जे वस्तुवंत, थाट ते जे सिंदूरवंत, घाट ते जे सुथवंत, भाट ते जे वचनवंत, खाट ते जे घरणिवंत, मठ ते जे मुनिवंत।
—व.स.

उ०—२ राजा लोह संपूरण सन्नद्ध हूउ युद्ध करइ, सुहड़ चूरइ. रथावळि ऊथलावइ, मुट्टु उघा मांकड जिम नचावइ, पाखरया थाट हणाइ।—व.स.

१३ देखो 'ठाट' (रू.भे.) उ०—राखिउं ए राउ जूठिलु विदुरंह वयणु न मांनीउं ए। हारीयां ए हाथियं थाट भाइय हारीय राजि सउं ए।
—पं.पं.च.

रू०भे०—थट, थटक, थटक्क, थटी, थट्ट, थट्टी, थाटि।

थाटणी—वि० (स्त्री० थाटणी) १ शोभा बढ़ाने वाला, वैभव बढ़ाने वाला। उ०—कोटेंक ग्रघंदळ काटणी, ग्रसुरेस मूळ उपाटणी। थिर संत थांनक थाटणी, ग्रभनिमो सगर ग्ररोड़।—र.ज.प्र.

२ प्राप्त कराने वाला।

उ०—तोपां रण ताळ रै सकज भूपाळं संवारी, खै ग्रकाळ खाटणी काळ थाटणी करारी।—मे.म.

थाटणौ, थाटबौ—क्रि०स०—१ शोभित करना. २ सुसज्जित करना. ३ तैयार करना, तैयार रखना. ४ एकत्रित करना, संग्रह करना. ५ प्रकट करना, उत्पन्न करना. ६ धारण करना. ७ स्थापित करना. ८ मुकर्रर करना, तय करना, निश्चित करना. ९ प्राप्त कराना।

थाटणहार, हारौ (हारी), थाटणियौ—वि०।

थटवाड़णौ, थटवाड़बौ, थटवाणौ, थटवाबौ, थटवावणौ, थटवावबौ, थटाड़णौ, थटाड़बौ, थटाणौ, थटाबौ, थटावणौ, थटावबौ—प्रे०रू०।

थाटिग्रोड़ौ, थाटियोड़ौ, थाटचोड़ौ—भू०का०कृ०।

थाटीजणौ, थाटीजबौ—कर्म वा०।

थटणौ, थटबौ, थट्टणौ, थट्टबौ—अक०रू०।

थाट-थंभ—सं०पु०यौ०—अकेला ही फौज को रोकने वाला, योद्धा, वीर। उ०—ग्रोद्रकै हेमगढ़ ग्रही दध ग्रोदकै, सांकै खुरसांण छत्र खड सारै। सुतन 'जसराज' ग्रवतार छतीस वंस, थाट-थभ नमै ग्राय पाव थारै।
—बारहठ ईसरदास सूरजमलोत

थाटनाथ—सं०पु०यौ०—सेनापति। उ०—थाटनाथ होसी दहुं थाटां। भळहळ भड़ां परख खग झाटां।—सू.प्र.

थाटपति, थाटपती—सं०पु०यौ०—सेनापति।

वि०—वैभवशाली। उ०—थाटपति मेवाड़ थांणै। रचै निजरां दीध रांणै।—सू.प्र.

थाट-पाट, थाट-बाट—सं०पु०यौ०—१ वैभव, ऐश्वर्य. २ सजावट, शृंगार. ३ तड़क-भड़क, आडम्बर। उ०—पाहड़ां ग्रोघाटां चलै जळाधार ग्राटपाटां, ऊमदाव देत झाटां त्रमाटां ग्रसेख। पाप रा कपाटां तोड़ ग्रघां मोड़ थाट-पाटां, बाटां लायौ भागीरथी सुघाटां वसेख।—गंगा रौ गीत

४ शान-शौकत।

रू०भे०—थाट-वाट।

थाट-पाटां—वि०यौ०—१ हृष्ट-पुष्ट। उ०—जायोड़ा जोड़ रा, थाट-पाटां थायोड़ा। दिल ग्रायोड़ा दाय, तिका सोव्रण तायोड़ा।—मे.म.

२ सम्पन्न, वैभवशाली।

थाटब—सं०पु०—कवि।

वि०—ठाट-बाट से रहने वाला।

थाटवौ—सं०पु०—युवराज (राज्य के ग्रधिकारी) का छोटा भाई।

थाटि—देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—१ सुखासण तणी द्रडवड, घोडा तणं थाटि, पायक तणं पहटि, बहुली लागि तणइ चीत्कारि, भाट नगारी तणइ कयवारि, राजा राजवाटिका चडिउ।—व.स.

उ०—२ गुणनिधांनसूरि पाटि, सोहइ मुनिवर थाटि। गुरुतण ग्रागरू ए, खिमा ग्रति सागरू ए।—प्राचीन फागु संग्रह

थाटियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ शोभित किया हुग्रा, शोभायमान किया हुग्रा. २ सुसज्जित किया हुग्रा. ३ तैयार किया हुग्रा, कटिबद्ध किया हुग्रा, तैयार रखा हुग्रा. ४ एकत्रित किया हुग्रा, इकट्ठा किया हुग्रा, संग्रह किया हुग्रा. ५ प्रकट किया हुग्रा, उत्पन्न किया हुग्रा. ६ धारण किया हुग्रा. ७ स्थापित किया हुग्रा. ८ मुकर्रर किया हुग्रा, तय किया हुग्रा, निश्चित किया हुग्रा. ९ प्राप्त किया हुग्रा। (स्त्री० थाटियोड़ी)

थाटियौ—सं०पु०—गाड़ी का ग्रगला हिस्सा जिस पर गाड़ीवान बैठ कर गाड़ी हांकता है, ग्रधारिया, मोढ़ा।

थाटेसरी—सं०पु०—एक प्रकार के संन्यासी। उ०—थाटेसरी ग्रकास मुनी थट। जळ सभि करै वधारै नख जट।—सू.प्र.

थाटौ—सं०पु०—१ गाड़ी की छत. २ खाद या धूलि से भरी हुई गाड़ी. ३ उतनी मात्रा का खाद या धूलि जो एक बार में गाड़ी में समा सके. ४ वक्ष-स्थल।

वि०—स्थिर, ठहरा हुग्रा। उ०—थिर ग्रासोज वेद मग थाटौ। लंपट बाळि रांमण कुळळाटौ।—ऊ.का.

थाडो—देखो 'ठाडो' (रू.भे.) उ०—१ वरसै सघण नीझरण वाजै, थाडै वादळ गरक थयौ। वरसाळै नीला वनवाळै, कांळै गिर सर पाव कियौ।—स्री ग्रावूजी रौ गीत

उ०—२ थाडो पांणी पी नै खुदा री सुकरगुजारी न करै जिणनै परलोक मांय खुदा सजा देवै।—बां.दा. ख्यात

(स्त्री० थाडी)

थाढ़–सं०पु०—सहारा, स्तंभ। उ०—आभ तूटी पडइ तउ कुण थाढ़ दिइ, चंद्रमाहइं पित्त उपजइ तउ कउण सीतळोपचार करइ, हिमाचळहइं ठाढ़ि लागइ तउ किहांतउ ओढ़णउं आंणियइं धन्वंतरि मांदउं थाइ तउ कउण वैद्य, काळ'स नी आंखि फूलउं तउ कउण उपचार, इंद्र नी आंखि दूखइ किहां पाटउ बांधिजइ।—व.स.

२ देखो 'ठंड' (रू.भे.)

थाढ़ौ–सं०पु० [सं० स्थातृ] १ सहारा।

वि०—२ खड़ा। उ०—ग्यारहसै डंड करि अवगाढ़ौ। थण कढ़ पियै दोय मण थाढ़ौ।—सू.प्र.

२ ठंडा, शीतल। उ०—१ दिन छोटा मोटी रयण, थाढ़ा नीर वस्त्र। तिण रित नेह न छांडियइ, हे वालम वडमन्न।—ढो.मा.

उ०—२ वजसी थाढ़ौ वायरौ, गजसी मधुरौ गाज। घण जद तजसी ढोलियौ, सजसी जाग समाज।—मयारांम दरजी री वात

थाणौ, थाबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.) उ०—१ सींगाळौ अवखललणौ, जिण कुळ हेक न थाय। जास पुरांणी वाड़ जिम, जिण-जिण मत्थै पाय।—हा.झा.

उ०—२ अरध उरध अरु उत्तर दक्षिण, पूरव पश्चिम नहिं थासी। आदि रु अंत मध्य नहिं मेरे, है ज्यूं का त्यूं थासी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

थात–सं०पु०—१ पैर के नीचे का हिस्सा, पैर का तलुआ।

वि० [सं० स्थात] जो बैठा या ठहरा हो, स्थित।

थाप–सं०स्त्री०—१ हाथ के पूरे पंजे का आघात, थप्पड़, तमाचा।

उ०—नरहरि थंभ विदारियौ, सेवग हूंदी चाड। हेक थाप चूरण हुआ, हिरणाकुस रा हाड।—बां.दा.

क्रि०प्र०—देंणी, मेलणी, लगाणी।

२ तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे का आघात, थपकी।

रू०भे०—थापटी।

अल्पा०—थापड़ी।

३ विचार, मंत्रणा। उ०—पातिसाह पासें जाइइं जी, हुं करस्युं जे वात। रावळजी छोडायस्यां जी, पाछै करेस्यां घात। भलौ भलौ सुभटे कह्यौ जी, थाप्यौ एहज थाप। इम आलोच आलोचतां जी, प्रात हुओ गत पाप।—प.च.चौ.

वि०—स्थापित करने वाला। उ०—१ इत जयपुर उत जोधपुर, दोनूं थाप-उथाप। कूरम मारचौ डीकरौ, कमधज मारचौ बाप।
—कविराजा करणीदांन

उ०—२ अनि करै कुण विण आप, इहं दिलो थाप-उथाप। तत-वीर कर धरि तोर, असपती कीजै ओर।—सू प्र.

थाप-उथाप–सं०स्त्री०यौ०—निर्णय, फैसला। उ०—१ औ दोनूं छै मांहरै, विढ़ता दीसै बाप। कहौ राज क्यों करि हुवै, इण री थाप-उथाप।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ घणी कुसियाळी में राग रंग गोठां करीजै। थाप-उथाप रावजी री ठहरी। सीसोदियां री गिणत काई रही नहीं।
—राव रिणमल री वात

वि०—१ स्थापित करने एवं उखाड़ने वाला. २ स्थापित किए हुए को उखाड़ने वाला।

रू०भे०—थप-उथप, थापण-उथापण।

थापड़ी–सं०स्त्री०—१ देखो 'थाप' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आई-आई जंवाई नै रीस। गोरै मुखड़ै पर मारी थापड़ी।
—लो.गी.

२ देखो 'थेपड़ी' (रू.भे.)

थापट—देखो 'थाप' (रू भे.)

थापण–सं०स्त्री० [सं० स्थापन] १ स्थापित करने की क्रिया या भाव।

२ धरोहर, अमानत। उ०—इम पभणइ 'धरमसी' साह, ए कुमर वडउ गजगाह। पूजजी हिव क्रिपा करीजइ, ए मांहरि थापण लीजइ।
—ऐ.जै.का.सं.

मुहा०—थापण बांधणी—कर्जा करना, किसी की धरोहर हजम करना, ऋण करना।

रू०भे०—थांपण, थांपणि, थापन, थापिणी।

थापण-उथापण—देखो 'थाप-उथाप' (रू.भे.) उ०—महाराज गजसिंहजी वडो प्रतापी राजा हुवौ, बादसाहां री थापण-उथापण हुवौ।
—राठौड़ राजसिंह री वारता

थापणा—देखो 'थापना' (रू.भे.)

थापणौ, थापबौ–क्रि०स०—१ स्थापित करना, जमाना, बैठाना.

२ प्रतिष्ठित करना. ३ मुकर्रर करना। उ०—१ जग मांहे सहू नार, माता कर थापणी।—जयवांणी

उ०—२ प्रीति परस्पर जांणि नै, वेस्या थापी नारि।—वि.कु.

उ०—३ राज री थापियौ राज न लहै रवद। धणी म्हे थापसां जको जोधांण।—बां.दा.

४ तय करना, निश्चित करना। उ०—१ तरै आपरै नांवै तौ विजैराव नै झालियौ नै देवराव वरस ५ में बेटो हुतौ तिण रै नांवै नाळे'र झालियौ नै साहो थापियौ।—नैणसी

उ०—२ इतरै भीमी कहियौ जो राज रौ परधांन मेल्हौ जु ब्याह थाप नै मेल्हसां।—लाली मेवाड़ी री वारता

५ प्रहार करना। उ०—पूछ्यां विनां पयंपै पापी, थट विच कहै लात सिर थापी। वदन मत दिखाळै वंस द्रोही चलै।—र.रू.

६ सुपुर्द करना, संभलाना। उ०—घर थापी पुत्रां भणी, जिम सहू सजन जिमाड़ हो।—जयवांणी

थापणहार, हारौ (हारी), थापणियौ—वि०।

थपवाड़णौ, थपवाड़बौ, थपवाणौ, थपवाबौ, थपवावणौ, थपवावबौ, थपाड़णौ, थपाड़बौ, थपाणौ, थपाबौ, थपावणौ, थपावबौ—प्रे०रू०।

थापिओड़ौ, थापियोड़ौ, थाप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थापीजणौ, थापीजबौ—कर्म वा०।

थपणो, थपबो—अक०रू० ।

थकणो, थपकबो, थपणो, थपबो, थरथपणो, थरथपबो, थरथापवणो, थरथापवबो, थरपणो, थरपबो, थरप्पणो, थरप्पबो, थिरपणो, थिरपबो —रू०भे० ।

न—देखो 'थापण' (रू.भे.) उ०—कुळ देवी थापन करे, जात गया री जाय । सरब ठिकांणे विदर से, कळ में मूढ़ कहाय ।—वां.दा.

ना-सं०स्त्री० [सं० स्थापना] १ वह सांकेतिक या कल्पित वस्तु जिसकी किसी वास्तविक वस्तु की अनुपस्थिति में या अभाव के कारण कल्पना की जाती है (जैन) २ आकार, आकृति, चित्र, मूर्ति (जैन) ३ स्थापन, न्यास (जैन) ४ अनुज्ञा, सम्मति (जैन) ५ जैन साधु को भिक्षा में दी जाने के लिये रखी हुई वस्तु और इस रखी हुई भिक्षा से साधु को लगने वाला दोष (जैन)

रू०भे०—ठवणा ।

६ स्थापन, प्रतिष्ठा. ७ मूर्ति की स्थापना या प्रतिष्ठा ।

उ०—जे कठड़ै औ भैरव कठड़ै थांरी जी थांन । कठड़ै औ भैरव कठड़ै औ थांरी थापना ।—लो.गी.

८ नवरात्रि का प्रथम दिन. ९ नवरात्रि में दुर्गापूजा के लिए घट-स्थापना. १० अधिकार, कब्जा । उ०—सोजत तो राव रिड़मल री ज्ञाटी छै । थापना कदीम छै ।—राव मालदे री वात

रू०भे०—थापणा ।

नाकरम-सं०पु० [सं० स्थापनाकर्म] स्थापनाकर्म (जैन)

रू०भे०—ठवणाकम ।

नाचारज- सं०स्त्री० [सं० स्थापनाचार्य] स्थापनाचार्य ।

उ०—वाहिर साहि झाड़, साहि विभाड़, वलियां साहि कंधि कुदाळ, प्रबळ साहिमांन मरदन निवळ साहि थापनाचारज, संग्रांम साहि रिण भाजणा साहि जइतखंभ, सुरितांण दूसरउ अलावदीन । किसइ अेक प्रारंभि पारंभि आइ टिक्यउ छइ ।—अ. वचनिका

नाचारिज-सं०पु० [सं० स्थापनाचार्य] वह वस्तु जिसके लिये आचार्य का संकेत किया जाय (जैन)

रू०भे०—ठवणायरिय, ठवणारी ।

नापुरस-सं०पु० [सं० स्थापनापुरुष] पुरुष की स्थापना, आकृति, मूर्ति या चित्र (जैन)

रू०भे०—ठवणापुरिस ।

नासच, थापनासच्च, थापनासत्य, थापनासाच-सं०पु० [सं० स्थापनासत्य] किसी वस्तु में वास्तविकता न होने पर भी मनुष्य का अपनी श्रद्धा या भावुकता के कारण उसे सत्य मान लेने का भाव । यथा-बच्चे को लकड़ी के घोड़े में भी सत्यता प्रतीत होती है । श्रद्धालु व्यक्ति मूर्ति को ही ईश्वर कहता है (जैन)

रू०भे०—ठवणासच्च ।

पल—देखो 'थापो' (रू.भे.)

पलणो, थापलबो-क्रि०स०—पीठ पर या कंधे पर जोश दिलाने के लिये या प्यार करने के लिये थपकी देना । उ०—१ कंध थापल 'देवल' रीझ करै । पग दे चढ़ 'पाल' रकेब परै ।—पा.प्र.

उ०—२ हळ थळ वाखळ में बळवळ थळ हेरै, टणमण टोकरिया बळदां गळ टेरै । पाणां प्रेरणिकां पापल पुचकारै, बापू-बापू कर थापल बुचकारै ।—ऊ.का.

उ०—३ नरेस सुरजन भी पुत्र रो कांधो थापलो हृदय हूं लगाई विसवासियो ।—वं.भा.

थापलणहार, हारो (हारी), थापलणियो—वि० ।

थापलिओड़ो, थापलियोड़ो, थापल्योड़ो—भू०का०कृ० ।

थापलीजणो, थापलीजबो—कर्म वा० ।

थपणो, थपबो, थप्पलणो, थप्पलबो—रू०भे० ।

थापलियोड़ो-भू०का०कृ०—थपकी दिया हुआ, जोश दिलाया हुआ ।
(स्त्री० थापलियोड़ी)

थापिणि—देखो 'थापण' (रू.भे.) उ०—बाहुकनि कहि; लि आ विद्या जु ईछा छि ताहरी; अस्व तणी विद्या तुझ पासि छि ए थापिणि माहारी ।—नळाख्यांन

थापोटणो, थापोटबो-क्रि०स०—कंधों या पीठ पर जोश दिलाने अथवा प्यार करने हेतु थपकी देना । उ०—भरसो कट हुंकै भोलड़ी, जूंझ वधारचो झागड़ो । काळवी कंध थापोट कर, 'पाल' उछाडचो पागड़ो ।—पा.प्र.

थापोटियोड़ो-भू०का०कृ०—कंधे या पीठ पर जोश दिलाने अथवा प्यार करने हेतु थपकी दिया हुआ ।
(स्त्री० थापोटियोड़ी)

थापो-सं०पु०—१ वह सांचा जिस पर रंग आदि पोत कर कोई चिन्ह अंकित किया जाता है. २ गीली हल्दी, मेंहदी, रंग आदि हथेली पर पोत कर हाथ के पंजे को कहीं पर दबाने अथवा मारने से बनने वाला चिन्ह. ३ वह सांचा जिसमें किसी गीली वस्तु को डाल कर अथवा दबा कर कोई वस्तु बनाई अथवा ढाली जाती है. ४ खलियान में अनाज को चोरी आदि से बचाने के लिये अनाज के ढेर पर गीली मिट्टी अथवा गोबर से डाला हुआ चिन्ह. ५ ढेर, राशि. ६ खलिहान में साफ किये हुए अनाज का ढेर. ७ झड़बेरी के पत्तों का ढेर. ८ रहँट के कंगूरेदार बड़े चक्र में मजबूती के लिये लगाई जाने वाली बड़ी लकड़ी. ९ विवाह के अवसर पर देवी-देवताओं के लिये माना हुआ निश्चित स्थान ।

वि०वि०—इस स्थान पर स्त्रियां अथवा चित्रकार गणेश व देवी-देवताओं के चित्र बनाते हैं जिनकी वर-वधू कई बार जाकर पूजा करते हैं ।

१० एक बाहुमूल के नीचे से लगा कर संपूर्ण वक्षस्थल तथा दूसरे बाहुमूल के नीचे तक का भाग. ११ विवाह संस्कार सम्पन्न होने के उपरांत दहेज देने के समय सास द्वारा दामाद की पीठ पर मांग-लिक रंगों से अपने हाथ का चिन्ह बनाने की प्रथा विशेष या इस

क्रिया से दामाद की पीठ पर बना हुआ सास के हाथ का चिन्ह ।
(राजपूत, चारण मारवाड़)

थावीजणौ, थावीजबौ–भाव वा०—आर्थिक संकट से दुखी होना, अर्थाभाव में पड़ना ।

थावीजियोड़ौ–भू०का०कृ०—अर्थाभाव में पड़ा हुआ, आर्थिक संकट से दुखी हुवा हुआ, निर्धन ।

थावौ–सं०पु०—१ तकलीफ, पीड़ा. २ निष्फल आने जाने की क्रिया या भाव ।

मुहा०—थावा खाणा—निष्फल भटकना, व्यर्थ डोलना ।

थायणौ, थायबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.)

थायी—देखो 'स्थायी' (रू.भे.)

थायोड़ौ—देखो 'थावियोड़ौ' (रू.भे.)

थारउ—देखो 'थारौ' (रू.भे.) उ०—घन घन हो राजा अचळेसर थारउ जियउ जिणि पातिसाह सउं खांडउ लियउ ।
—अ. वचनिका

थारोड़ौ—देखो 'थारौ' (अल्पा. रू.भे.) उ०—१ मरजी रे राइका थारोड़ी जी नार, सैणां री बिछोवी दुसमी पाड़ियो जी म्हारा राज ।
—लो.गी.

उ०—ओ है बाईजी थारोड़ौ भरतार नणदल म्हारी ए, ओ है बाईजी थारोड़ौ भरतार कादौ नै विलोवै, रांणौ काछबौ जी म्हारा राज ।—लो.गी.

(स्त्री० थारोड़ी)

थारौ–सर्व० (बहु व० थारा, स्त्री० थारी) तेरा, तुम्हारा ।

उ०—१ मुणी मैं स्यात अम्हीणी मत्त । गोविंद न लाधी थारी गत्त ।—ह.र.

उ०—२ बाबहिया तूं चोर, थारी चांच कटाविसूं । राति ज दीन्ही लोर, मइं जांण्यउ प्री आवियउ ।—ढो.मा.

उ०—३ करहा नीरूं जउ चरइ, कंटाळउ नइ फोक । नागरवेलि किहां लहइ, थारा थोबड़ जोग ।—ढो.मा.

थाळ–सं०पु० [सं० स्थालम्] कांसे या पीतल का बना बड़ा छिछला बर्तन, बड़ी थाली (उ.र.) उ०—बजि थाळ सकळ वाजित्र बजै, कुसुम सघण सुरियंद किया । वेखियांहीज आवै वणै, उण दिन तणी अजोधिया ।—सू प्र.

अल्पा०—थाळकियौ, थाळियौ, थाळी ।

(मह० थाळीड़, थाळौ)

थाल–सं०पु०—१ वह घोड़ा जो अपने गालों को चाटता है (अशुभ) (शा.हो.) २ पार्श्व पलटने की क्रिया या भाव ।

क्रि०प्र०—दैणौ ।

वि०—ठीक ।

मुहा०—१ थाल (थालै) पड़णौ—सुधरना, ठीक होना. २ थाल बैठणौ—देखो 'थाल पड़णौ' ।

थाळकड़ी, थाळकली—देखो 'थाळी' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—अंके थाळकली रै सागै जीमिया ।—लो.गी.

थाळकियौ—१ देखो 'थाळ' (अल्पा. रू.भे.)

२ देखो 'थाळौ' (अल्पा. रू.भे.)

थाळकी—देखो 'थाळी' (अल्पा. रू.भे.)

थालणौ, थालबौ–क्रि०स०—१ पार्श्व पलटना. २ सीधा करना. ३ स्थापित करना, रखना. ४ देखो 'ठाळणौ, ठाळबौ' (रू.भे.)

थाळि—देखो 'थाळी' (रू.भे.) उ०—थळ भांति गात निरतंत थाळि । भ्रम जात अतन तन रूप भाळि ।—रा.रू.

थालियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पार्श्व पलटा हुआ. २ सीधा किया हुआ. ३ स्थापित किया हुआ, रखा हुआ. ४ देखो 'ठाळियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० थालियोड़ी)

थाळियौ–सं०पु०—१ गाड़ी का वह अग्र भाग जिस पर गाड़ीवान बैठता है. २ देखो 'थाळ' (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'थाळौ' (अल्पा. रू.भे.)

थाळी–सं०स्त्री० [सं० स्थाली=बटलोई, थालिका] १ कांसे या पीतल का बड़ा छिछला बरतन जिसमें खाने के लिये भोजन रखा जाता है ।

मुहा०—थाळी खोसणी (लैणी)—किसी की रोजी छीनना, किसी की आमदनी हड़पना ।

२ बड़ी तश्तरी. ३ ढोल के ढमके के साथ ताल मिलाने के लिये बजाया जाने वाला कांसी का थालीनुमा वाद्य. ४ नाच की एक गत जिसमें घोड़े को घेरे के बीच नाचना पड़ता है. ५ पाटल वृक्ष । (वि०वि०—देखो 'पाडळ')

रू०भे०—थाळि ।

अल्पा०—थाळकड़ी, थाळकली, थाळकी ।

(मह० थाळीड़)

६ देखो 'थाळ' (अल्पा. रू.भे.)

थाळीड़—१ देखो 'थाळ' (मह. रू.भे.) २ देखो 'थाळी' (मह. रू.भे.)

३ देखो 'थाळौ' (मह. रू.भे.)

थाळौ–सं०पु० [सं० स्था] १ जमीन का वह टुकड़ा जिसे निवास-स्थान अथवा मकान बनवाने के लिये चुना गया हो, प्लॉट. २ सोने या चांदी की बनी देवमूर्ति. ३ गले में लटकाने का सोने या चांदी का बना आभूषण विशेष जिसमें किसी देव या देवी की आकृति होती है. ४ वह घेरा या गड्ढ़ा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है, पेड़ को पानी पिलाने के लिये भी उसके चारों ओर ऐसा गड्ढ़ा या घेरा खोद कर बनाया जाता है, थांवला. ५ वह स्थान जहां पर कुएं से पानी निकाल कर मवेशियों के लिये एकत्रित किया जाता है. ६ गाड़ी की छत ।

अल्पा०—थाळकियौ, थाळियौ ।

(मह० थाळीड़)

७ देखो 'थाळ' (मह. रू.भे.)

थावणी-सं०पु०—पौधे अथवा पेड़ के चारों ओर पानी देने के लिये बनाया हुआ गड्ढा।

थावणौ, थाववौ-क्रि०अ० [सं० स्था] होना। उ०—जिकां लखि वावन वीर जरूर। देस्यां जस गावत थावत दूर।—मे.म.

थावणहार, हारौ (हारी), थावणियौ—वि०।

थाविग्रोड़ौ, थावियोड़ौ, थाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थावीजणौ, थावीजवौ—भाव वा०।

थइणौ, थइवौ, थणौ, थवौ, थाणौ, थावौ, थायणौ, थायवौ, थिणौ, थिवौ, थिग्णौ, थियवौ, थुवणौ, थुववौ—रू०भे०।

थावर-वि० [सं० स्थावर] १ जो चलता-फिरता न हो, स्थावर (जीव) उ०—१ नहीं तू बाळ न व्रद्ध न मूळ। नहीं तू थावर सुक्खम थूळ। —ह.र.

उ०—२ राजकंवार नीमरांणा की बांधरवाड़ै व्याई। परतख होय पांगळी पांवां, थावर संग्या थाई।—मे.म.

उ०—३ पांच थावर नै त्रिणि विकलेंद्रि।—घ.व.ग्रं.

२ अचल, स्थिर. ३ मूर्ख, नासमझ. ४ पागल।

उ०—सिंधुरवर बावर भूंडण कर सांधै। वांमा वैजळ नै थावर गळ बांधै।—ऊ.का.

५ ढीठ, निर्लज्ज।

सं०पु०—१ पर्वत. २ धनुष की डोरी, प्रत्यंचा. ३ शनिवार।

अल्पा०—थावरियौ।

४ शनिश्चर ग्रह। उ०—लालच री दौड़ै लहर, भवन धियां धन भाळ। वैठौ थावर बारमौ, कांधै आंण कराळ।—बां.दा.

थावरियौ-सं०पु०—वह ब्राह्मण जो शनिश्चर की पूजा का दान लेता हो, शनि की पूजा करने वाला ब्राह्मण।

थावस-सं०पु०—धैर्य, विश्वास।

वि०—स्थावर, अटल। उ०—नेजां दकूळ उडतां निहंग, हसत फूल मिळ हालिया। कुळ असट गिरंद जांणै सकळ, थावस सुज जंगम थिया।—सू.प्र.

थावियोड़ौ-भू०का०कृ०—हुवा हुआ।

(स्त्री० थावियोड़ी)

थावौ-वि०—स्थिर, दृढ़।

थाह-सं०स्त्री० [सं० स्था] १ धरती का वह तल जिस पर पानी हो, नदी, ताल, समुद्र आदि के नीचे की जमीन, गहराई का अंत।

उ०—विस खावौ के सरण लौ, सरवरिया री थाह। कै कंठा विच घाल लौ, घाघरिया री थाह।—अज्ञात

क्रि०प्र०—लागणी, लेणी।

२ अंत, पार, सीमा, हद। उ०—१ धरती जैसी धीरज कहिये, समुद्र ज्यूं गंभीर। आर पार कोई थाह न आवै, यूं संतां मत वीर। —श्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारू आसा लुब्ध। परदेसे घांघल घणा, विखउ न जांणइ मुग्ध।—ढो.मा.

३ कोई वस्तु कितनी या कहां तक है इसका अनुमान।

क्रि०प्र०—लागणी, लेणी।

थाहणौ-वि० [सं० स्था] रोकने वाला। उ०—थटै गयंदां 'थाट' क फौजां थाहणा। वणै तुरंगां वाळ अगाटां वाहणा।

—वगसीरांम प्रोहित री वात

थाहणौ, थाहवौ-क्रि०स० [सं० स्था] १ गहराई का पता चलाना, थाह लेना. २ अंदाज लगाना, पता लगाना।

थाहर-सं०पु० [सं० स्था] १ सिंह की मांद, गुफा, कंदरा।

उ०—१ सूतौ थाहर नींद सुख, सादूळौ बळवंत। बन कांठै मारग वहै, पग पग होल पड़ंत।—बां.दा.

उ०—२ सूनी थाहर सिंघ री, जाय सकै नहिं कोय। सिंह खड़ां थह सिंह री, क्यों न भयंकर होय।—बां.दा.

२ स्थान। उ०—थाहर थाहर थूरिया, मारू अर घमसांण। 'पातल' रा नह पांतरै, कर जरमन केवांण।—किसोरदांन बारहठ

३ रिक्त स्थान, खाली जगह। उ०—बिसइवा फिरवा थाहर अति मोकळी।—व.स.

४ नगर, शहर. ५ गढ़, किला। उ०—१ सिया थाहर समर दसाणण साझा, अवी उछाहर दीन निवाजा। दीठां थाहर कनक दराजा, रीझ खीज जाहर रघुराजा।—र.ज.प्र.

उ०—२ विहद भूपत सीत वाहर, जार दस सिर समर जाहर। थरर लंका जिसा थाहर, विसर त्रंबक वाज।—र.ज.प्र.

६ भवन, मकान।

वि०—१ कम गहरा, छिछला. २ योद्धा (?)

उ०—वांसा नूरमली तिण वाहर, थूरै दौड़ अरोड़ा थाहर।—रा.रू.

थाहरणौ, थाहरवौ-क्रि०अ० [सं० स्था] कम रुकना, थोड़ा ठहरना, खिसकना, गिरना। उ०—१ पांखे पांणी थाहरइ, जळि काजळ गहिलाइ। सयणां-तणा संदेसड़ा, मुख वचने कहिवाइ।—ढो.मा.

२ ठहरना, स्थिर होना। उ०—परमेस आप पांणी पवन, कळंक मांहि निकळंक किरि। संसार मांहि बाहरि सदा, थाहरियौ थळ मांहि थिरि।—पी.ग्रं.

थाहरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ खिसका हुआ, गिरा हुआ, कम रुका हुआ, थोड़ा ठहरा हुआ. २ ठहरा हुआ, स्थित।

(स्त्री० थाहरियोड़ी)

थाहरै-सर्व०—तेरे, तुम्हारे। उ०—इमां वळै देखि नै कह्यौ, भाभी जे हिवै ईंडौ थाहरै मूंडा आगै आंणिस्यां।—चौबोली

थाहरौ-सर्व०—(स्त्री० थाहरी) तुम्हारा, तेरा।

उ०—१ घट 'पातल' उवजो घणौ, रण थंभण राठौड़। थें मरियां सूं थाहरौ, ठालौ रहसी ठौड़।—ऊ.का.

उ०—२ इण 'परिग्रा' में थाहरौ हो मुनिवर! संयम थिर नहीं

होय। गंधरण कुळ रा सरप ज्यूं हो मुनिवर ! वमिया नै मत जोय।
—जयवांणी

थाहियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ थाह लिया हुआ, गहराई का पता लगाया हुआ. २ अंदाज लगाया हुआ, पता लगाया हुआ।
(स्त्री० थाहियोड़ी)

थि-सं०स्त्री०—१ यमुना. २ गोदावरी. ३ नींद. निद्रा।
सं०पु०—४ बैल (एका.)

थिकत-वि०—चकित, दंग। उ०—तरण रथ थकित घण वहै खागां अतर।—सू.प्र.

थिकां, थिका—देखो 'थकां' (रू.भे.) उ०—१ जे पंच परमेस्ट महामंत्र समरियां थिकां हूंतां राजारथी राज पांमइ।—व.स.
उ०—२ वांडि आडा थिका एकि कांपइ। एक वीर सिर से जई झांपई।—विराटपर्व
उ०—३ सांधिइ सांधि जूजूई कीधी, थर पाडेवा लागा। ऊपरि थिका हाथीया घोडा, घण तणे घाए भागा।—कां.दे.प्र.

थिकु, थिकौ—देखो 'थकौ' (रू.भे.) उ०—सांभळिवाइ थिकु धरम लाभइ। ए वात कहइ छइ। विहुं गाहै करी।—षष्टिशतक प्रकरण

थिग-सं०स्त्री० [सं० स्थगित] १ ढेर, समूह, राशि. २ नृत्य का बोल। उ०—थिग मिग थिग थिग थेइ, थेइ थिग मिग। थेइ थेइ तत नक ताथेई।—ध.व.ग्रं.
३ लड़खड़ाने की क्रिया। उ०—१ तरुणी वरुणी में नींझर झर हाकी। थिग थिग म्रगनैणी पिकवैणी थाकी। पिंजर पासळियां भीतर पैठोड़ा। बोलै बोबाता डोबा बैठोड़ा।—ऊ.का.
उ०—२ मां वाश वाखोटिया, थिगथिग पकड़ै चाल। लूआं नैडी आवतां, खिणे'क राख्या ख्याल।—लू
क्रि०वि०—१ पास, ढिग।

थिगणौ, थिगबौ—क्रि०अ० [सं० स्थगितं] १ लड़खड़ाना, डगमगाना।
उ०—मगर पचीसी मांय, डोकरौ बणगौ डाकी। डांगड़ियां निठ डिगै, थिगै डांगड़ियां थाकी।—ऊ.का.
२ ठहरना। उ०—गवाक्ष तैं म्रगाक्ष की कटाक्ष तैं निगै नहीं। थिराभ चंद्रसाळ चंद्रसाळ पै थिगै नहीं।—ऊ.का.
थिगणहार, हारौ (हारी), थिगणियौ—वि०।
थिगवाड़णौ, थिगवाड़बौ, थिगवाणौ, थिगवावौ, थिगवावणौ, थिगवावबौ, थिगवाड़बौ, थिगवाड़बौ, थिगाणौ, थिगावौ, थिगावणौ, थिगाववौ—प्रे०रू०।
थिगिओड़ौ, थिगियोड़ौ, थिग्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थिगीजणौ, थिगीजबौ—भाव वा०।

थिगली-सं०स्त्री०—रुपये रखने की थैली।

थिगियोड़ौ-भू०का०कृ० [सं० स्थगित] १ लड़खडाया हुआ, डगमगाया हुआ. २ ठहरा हुआ।
(स्त्री० थिगियोड़ी)

थिड़णौ, थिड़बौ—देखो 'थुड़णौ, थुड़बौ' (रू.भे.)

थिड़ियोड़ौ—देखो 'थुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थिड़ियोड़ी)

थिड़ी—देखो 'थड़ी' (रू.भे.)

थिडणौ, थिडबौ—देखो 'थुड़णौ, थुड़बौ' (रू.भे.)
उ०—थिडिबे थिडिबे थिड़िया थट्टं। थीया कटकह कोअरण थट्टं।
— गु.रू.व.

थिडियोड़ौ—देखो 'थुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थिडियोड़ी)

थिणौ, थिबौ—देखो 'थावणौ, थाववौ' (रू.भे.) उ०—१ थूर हथ धवळ री थाट मेंवट थियौ। काळ चाळौ चखां चोळ बोळां कियौ।
—हा.झा.
उ०—२ हुवै पंख राव जिम वीर हाका लियां। थरहरै कायरां उवर ढीला थियां।—हा.झा.

थित-वि० [सं० स्थितः] १ स्थित। उ०—महाराजा अजमाल, करै राजस अवकारै। प्रिय चहुवांण पतिव्रता, धरम थित गरभ सधारै।
—सू.प्र.
२ मौजूद, विद्यमान. ३ अटल, दृढ़।
वि० [सं० स्थित] १ स्थिर। उ०—साधो भाई आ मत लै कोई नर रे, जाग्रत मांय सुसुप्ती बरते, निज स्वरूप थित कर रे।
— स्री सुखरांमजी महाराज
२ नित्य, हमेशा।
सं०स्त्री० [सं० स्थिति] १ स्थिरता। उ०—ब्रह्म विचार परमपद लीना, तहां नित थित रह लागी। इंद्रादिक का तुच्छानंद त्याग्या, लग्यौ निजानंद सागी।—स्री सुखरांमजी महाराज
२ धन, दौलत, लक्ष्मी। उ०—जग थित झूठी जांणणी, मूठी भीड़ म रख्ख। माया मेवौ माढुवां, चंगा चाखव चख्ख।—बां.दा.
यौ०—थितवित।
३ ठहरने का स्थान, पड़ाव, डेरा, मुकाम। उ०—१ भूपति तणै वचन मन भाया, वेऊं प्रागहरा बोलाया। कुंवर सभ्रण थित दिल्ली केरी, फुरमायौ सुज वात न फेरी।—रा.रू.
उ०—२ भारी तुज्ज भरोस, रिण में थित बांधे रह्या। खीची लीनी खोस, सारी मो वाळी सुरै।—पा.प्र.
[सं० क्षिति, प्रा० छिति] ४ पृथ्वी। उ०—दळ धाय महा सिध पाव दिया, हव सेन थरत्थर कंप हिया। नह धापेय लोह अजै लड़ती, थित घावत वीर लडत्थड़तो।—पा.प्र.
५ देखो 'थिति' (रू.भे.)

थिति-सं०स्त्री० [सं० स्थिति] १ स्थिति। उ०—१ सिव सक्ती का सब विस्तारा, ब्रह्मा कीट लग कर रे। इणमें ई उत्पति थिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे।—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ सुरग पुव्वसर राज, गयणधर धुरि वारिध थिति। वासव

ग्रह प्रति चतुर, जगत गुर पारिख सेवित ।—ध.व.ग्रं.

२ वैभव, ऐश्वर्य । उ०—संसारइ भमतां बहु दुख खमतां भव गयउ । भव थिति नइ भोगइ, करम संयोगइ सुख थयउ ।—वि.कु.

३ अवस्था, दशा । उ०—जळ कै उपळ जैसैं करणैं यथाप्रवृति, करम थिति तुच्छ कै परम देस ग्रंथ ग्रंथ । कीनो है अपूरवकरण अनुभौ प्रमांण, ग्यांन कै मंथांन सुं मिथ्यात मोह मंथ मंथ ।—ध.व.ग्रं.

४ निरन्तर बना रहना, अस्तित्व । उ०—पंच तत्व तिरगुण ज्यां नाईं, उत्पति थिति नहि नासी । निराकार आकार न वांई, नहीं वैकुंठ चौरासी ।—स्री सुखरांमजी महाराज

[सं० क्षिति, प्रा० छिति] ५ पृथ्वी (अ.मा.)

६ देखो 'थित' (रू.भे.)

थितिभाव-सं०पु० [सं० स्थाई भाव] स्थायी भाव ।

थितियौ-वि०—स्थिर, अटल, स्थायी-भूत ।

क्रि०वि०—लगातार, स्थायी रूप से, निरन्तर, हमेशा ।

उ०—तिण वखत में केसरीसिंहजी औरंगजेब रै तावीन रह्या । ड्योढ़ी ढोलियौ थितियौ रह्यौ ।—महाराजा पदमसिंह री वात

रू०भे०—थतियौ ।

थिती—देखो 'थिति' (रू.भे.)

थिमिय-वि० [सं० स्तमित] १ भय से रहित, निर्भय (जैन)

२ स्थिर (जैन) ३ अंतगड सूत्र के प्रथम वर्ग के पांचवें अध्ययन का नाम (जैन)

थियणौ, थियबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.) उ०—१ चतुर साथ पूगी चतुर, सती रमा सुरलोक । सोमेस्वर संभर सुपहु, थियौ दमण अरि थोक ।—वं.भा.

उ०—२ मन दुमन थियौ फोकै मुखर, यम सूरजमल आखियौ ।

—पा.प्र.

थियोड़ौ—देखो 'थावियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थियोड़ी)

थिर-सं०स्त्री० [सं० स्थिरा] १ पृथ्वी । उ०—१ वायू आयू हर बिवरण वहरावै । थर थर थरकत थिर थिरचर थहरावै । खेहाडंवर खर अंबर अरड़ावै । धरणीतळ धूणं गरदव गरड़ावै ।—ऊ.का.

उ०—२ जीव दियौ जसवंत जद, चमकै लोक अचंभ । थिर पर राजस्थांन रौ, थंभ गिरचौ रणथंभ ।—ऊ.का.

सं०पु० [सं० स्थिर] २ ४९ क्षेत्रपालों में से ३३ वां क्षेत्रपाल.

३ ज्योतिष में वृष, सिंह, वृश्चिक और कुंभ ये चारों राशियां जो स्थिर मानी गई हैं. ४ ज्योतिष में एक योग का नाम. ५ वृक्ष, पेड़. ६ वह कर्म जिससे जीव को स्थिर अवयव प्राप्त होते हैं (जैन)

वि० [सं० स्थिर] १ स्थिर । उ०—१ कोई मरता होय तो अमर वतावै । अस्थिर हुवै तो थिर ठहरावै ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ उपजै विणसै गुण धरै, यहु माया का रूप । दादू देखत थिर नहीं, छण छांही छण धूप ।—दादूवांणी

२ स्थायी । उ०—भरोसा रा सुभट सचिवां रै अधीन करि च्यारि ही ठांम थांणा थिर जमाइ दिया ।—वं.भा.

३ चिरकाल तक रहने वाला, चिरस्थायी । उ०—जस प्यारौ पुरसां जिकां, नांणौ प्यारौ नांह । नांणौ थिर ठहरै नहीं, जस जुग जुग रह जांह ।—वां.दा.

४ जो हिलता-डोलता या चलता न हो, निश्चल, ठहरा हुआ ।

उ०—करम आठ मेटै कियौ, पंचम गुण परवेस । थिर सिद्धाचळ थापना, आदीस्वर आदेस ।—वां.दा.

५ शान्त ।

यौ०—थिर-मिजाज, थिर-सभाव ।

६ दृढ़, अटल । उ०—इम रहतां सुख सूं सदा, जे हुओ छै विरतंत । सुण्यो चित्त देइ सुगण. मन थिर करी एकंत ।—प.च.चौ.

७ मजबूत, दृढ़ । उ०—जितै करै हट पांहुणौ, इतै करै हट एह । पग थिर रोपै पांहुणौ, एह हुवै असनेह ।—बां.दा.

८ मुकर्रर, नियत. ९ सदा बना रहने वाला । उ०—थारो भाग सुहाग थिर, कहूं जिका सुणि कांन । मांन करौ मति मारवणि, ऊभौ आरतवांन ।—पनां वीरमदे री वात

रू०भे०—थर, थेरू ।

थिरक-सं०स्त्री०—(नृत्यों में चरणों की) चंचल गति ।

उ०—१ चांदणा में वांरा मुखड़ा चमाचम चमकण लागता अर एकूका धम्मीड़ा पर वांरौ अंग अंग थिरक जावतौ ।—रातवासौ

उ०—२ घटा घुमंड़ उतराध री, चढी व्योम घहराय । छटा चिमक तिण में छिपै, थिरक थिरक थहराय ।—लो.गी.

रू०भे०—थरक ।

थिरकणौ, थिरकबौ-क्रि०अ० (नृत्य में पैरों का) गतिमान होना, अंग मटकाना, नाचना । उ०—थिरकि रह्यउ निज घाट में, चंचळ माहरउ चित्त । संसारी सुख ऊपरइ, हीयडउ हींसइ नित्त ।—वि.कु.

२ देखो 'थरकणौ, थरकबौ' (रू.भे.) उ०—थरमौ थिरबणौ अंग परि, डगळो आवी दाय । ठाढ़ौ वाजै हो प्रिया; तौ लीजै अंग लगाय ।

—व.स.

थिरकणहार, हारौ (हारी), थिरकणियौ—वि० ।

थिरकवाड़णौ, थिरकवाड़बौ, थिरकवाणौ, थिरकवाबौ, थिरकवावणौ, थिरकवावबौ, थिरकाड़णौ, थिरकाड़बौ, थिरकाणौ, थिरकाबौ, थिरकावणौ, थिरकावबौ—प्रे०रू० ।

थिरकिओड़ौ, थिरकियोड़ौ, थिरक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

थिरकीजणौ, थिरकीजबौ—भाव वा० ।

थिरकस-सं०पु०—१ चित्त-वृत्तियों के निरोध का चिन्तन, एकाग्र चिन्तन । उ०—थिरकस होय ठीकरा जोया, थिरकस ठीकर मांई । देखसमा घट भीतर देख्या, दीस्या अमर गुसांई ।

—स्री हरिरांमजी महाराज

२ परब्रह्म । उ०—थिरकस होय ठीकरा जोया, थिरकस ठीकर

मांई। दे चसमा घट भीतर देख्या, दीस्या अमर गुसांई।
—स्री हरिरामजी महाराज

थिरकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ (नृत्य में पैरों को) गतिमान किया हुआ, अंग मटकाया हुआ, नाचा हुआ।
२ देखो 'थरकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थिरकियोड़ी)

थिरचर—सं०पु० [सं० स्थिरा+चर] भूमि पर विचरण करने वाले, भूमि पर निवास करने वाले, भूचर। उ०—वायू आयू हर विवरण वहरावै। थर थर थरकत थिर थिरचर थहरावै।—ऊ.का.

थिरता—सं०स्त्री० [सं० स्थिरता] १ धैर्य, शान्ति। उ०—थिरता मन री नहिं तन री गति थाकी। फुरणां परघन री अन री नहिं फाकी।
—ऊ.का.
२ स्थायित्व। उ०—दिन दिन प्रांणी मात्र जे, जम के आलय जात। थिरता चाहत पीछले, फिर का अचरज तात।
—महात्मा स्वरूपदास दादूपंथी
३ स्थिर होने का भाव, ठहराव, निश्चलता। उ०—मन नी थिरता राख नै, ध्यांन सकुळजी ध्याय।—जयवांणी
४ मजबूती, दृढ़ता। उ०—अवगुण ह्वै आळसू, अवल थिरता गुण आंणै। चपल होय चळ वित्त, वडौ उद्यमी वखांणै।—घ.व ग्रं.
रू०भे०—थिरताई।
वि०—स्थिर, अटल। उ०—नरक पड़ंता राखियौ हे राजुल! इम बोल्यौ रहनेम। मुज नै थिरता कर दियौ हे राजुल! वचन-अंकुस गज जेम।—जयवांणी

थिरताई—देखो 'थिरता' (रू.भे) उ०—अथिर आदि मंडांण न को दीसै थिरताई। काळ ग्रास संसार आस जीवणो न काई।—रा.रू.

थिरथाप—वि०—अटल, दृढ।

थिरथोभ—वि० [सं० स्थिर-स्तम्भः] स्थिर, अटल, दृढ़।
उ०—पाट सात पाछइ जिण देस मेवाड़ मइं रे, थाप्यौ गच्छ थिरथोभ। कटारिया कुळदीपक जग जस जेहनउ रे, स्री खरतरगच्छ सोभ।—प च चौ.

थिरपणौ, थिरपबौ—देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.)
उ०—आप विराजो ईस्वरी, थिरपौ मढ़ सद्धर। दस गांवां सूं देसणोक, निमि कीधी निज्जर।—ठाकुर जुझारसिंह मेड़तियो
थिरपणहार, हारौ (हारी), थिरपणियौ—वि०।
थिरपवाड़णौ, थिरपवाड़बौ, थिरपवाणौ, थिरपवावौ, थिरपावणौ, थिरपाववौ, थिरपाड़णौ, थिरपाड़बौ, थिरपाणौ, थिरपावौ, थिरपावणौ, थिरपाववौ—प्रे०रू०।
थिरपिओड़ौ, थिरपियोड़ौ, थिरप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थिरपीजणौ, थिरपीजबौ—कर्म वा०।

थिरमौ—सं०पु० [देश] एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा विशेष।
उ०—भर मोल नीलक भार। आसावरी स उदार। दुल्लीच गिलम दुस्साल। थिरमौ सफंभ सुथाल।—सू.प्र.
रू०भे०—थुरमौ।

थिरवंत, थिरवंतौ—वि० [सं० स्थिरवंत] स्थिर, अटल।
उ०—जाग्रत स्वप्न सुसुप्ती जांणौ, ब्रह्म रूप थिरवंता। सब वरतावै सब में साखी, तुरिया नभ रहंता।—स्री सुखरामजी महाराज

थिरा—सं०स्त्री० [सं० स्थिरा] पृथ्वी, वसुधा (अ.मा.)
उ०—१ मित्र जांणियौ अमल हुवौ दुसमण हथियारा। किसा किसा मैं कथूं थिरा में ओगण थारा।—ऊ.का.
उ०—२ थिरा आवड़ा नांम विख्यात थायौ। छिपा सत्रु सो तेमड़ै छत्र छायौ।—मे.म.
यौ०—थिरा-थंभ।

थिरी—देखो 'थड़ी' (रू.भे.) उ०—आंगणियै न करावी थिरी कन्हैया! आंगुळियां विळगाय रे। हाऊ वैठो छै तिहां कन्हैया, अळगौ तूं मति जाय रे।—जयवांणी

थिरु, थिरू—वि० [सं० स्थिर] स्थिर, अटल, दृढ़। उ०—१ थिरू मूरती सूर रै तूर थाई। तिका स्वप्न रै मांहि पिंडां बताई।—मे.म.
उ०—२ मही प्रमार री थिरू, हुती धुराद मंड सूं। अरोग भोम भूप आय, हौ जको अफंद सूं।—पा.प्र.

थिवर—देखो 'थविर' (रू.भे.) उ०—वखांणियै जगि जासु उत्तम, लब्धि महिमा अति घणी। स्री 'अज्जसंती' थिवर कहियउ, तासु पाट्टिहि गच्छ धणी।—ऐ.जै.का.सं.

थी—सं०स्त्री०—१ निद्रा. २ रेवा नदी. ३ स्त्री।
सं०पु०—४ समुद्र. ५ घाव (एका.)
प्रत्य०—तृतीया या पंचमी विभक्ति का चिन्ह। उ०—१ गाजै ग्रह मांझल बैठो गुज्झ, पुजारां पंच चढावै पुज्ज। स्रव्वां थी तुम्ह तुम्हां थी सब्भ, उपज्जै जेम अकासां अब्भ।—ह.र.
उ०—२ आठ पौर जस इंदु री, जिण घर दुत जागंत। तिण घर सूं अपजस तिमर, अळगा थी भागंत।—वां.दा.
उ०—३ एक मुगळ सूं 'सातल' कुसांणौ कन्है अठै वडी वेढ़ कीधी। घणी मारवाड़ री बंध छुडाई। तिण थी ओ घडुला री गीत गवांणौ।—राव जोधा रै बेटां री वात
क्रि०अ०—राजस्थानी में 'है' के भूतकाल 'थौ' का स्त्री०।
उ०—रावळ भीम वरस १० टीको नीसरियौ, तरै सारी मदार खेतसी ऊपर थी। पछै रावळ भी मोटो हुवौ, तरै खेतसी नूं वरती वारै काढ़ियौ। तरै एक वार तौ भाटी घणा साथै काढ़िया था।
—नैणसी

थीणौ—वि० [सं० स्त्यास्नु] जमा हुआ. ठसा हुआ, गाढ़ा (घी)
उ०—१ थेवा पड़तोड़ी रावां घी थीणा। धापरि देखांला दूजै भव धीणा। हुयग्या हत आसा हक बक सुणि हाको। निरधन वनवाळां रो नीकळग्यौ नाको।—ऊ.का.
उ०—२ पग नह मांडै पालियौ, रावतियां रो साथ। केहर सूं कुसती करो, द्यो थीणा में हाथ।—वां.दा.

मुहा०—थींगा में हाथ; थींगा में हाथ देणौ—आनन्द प्राप्त करना, लाभ उठाना।

थीतंकर—देखो 'तीरथंकर' (रू.भे.) उ०—आबू रै घणी पाल्हण परमार सरब धातु मांहे भरत रो भरियो थीतंकर रो बीब हुतो सू मनाय अचळेसर है।—बां.दा.ख्यात

थीमड़ी-सं०पु०—मूलें लगी हुई चमड़े की वह पट्टी जिसे बछड़े के मुंह पर गाय के स्तन-पान करने से रोकने के लिये बांधी जाती है।

थीवर—देखो 'थविर' (रू.भे.)

यौ०—थीवरकल्पी।

थीवली—देखो 'त्रिवळि' (रू.भे.) उ०—कउलिए लाकु ग्रहीजइ, कडियडि लहकइ थीणि। नाभि मयणरस वापिय, त्रिरिए थीवली तीणि।—प्राचीन फागु संग्रह

थुंग-सं०पु० (अनु०) नृत्य का बोल। उ०—उमंग अंग उछरंग, रंग कुकु थुंग थुंग रत। थेइय थेइय त त थेइय, त त त त त थेइय थेइय त त।—सू.प्र.

थुंटी-सं०स्त्री० (देश०) स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष (राज घराने में)।

थुंभ-सं०पु० [सं० स्तूप] स्तूप। उ०—१ हिव तिहां थी मारग विचि आवतां, सुंदर थुंभ निवेस। पद पंकज जिन मांणिक सूरि ना, भेटचा तिणे प्रदेस।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—२ साह 'पीथइ' 'हाथी' 'रायसिंघइ', 'मांडण' आदइ करि 'भुज' संघइ। उद्यम करि थुंभ तणउ रगइ, थाप्या पूरव दिसि मन सगट्ट।—ऐ.जै.का.सं.

रू०भे०—थूंभ, थूभ।

थुंभी—देखो 'थूंभी' (रू.भे.)

थु-सं०पु०—१ विष्णु. २ त्याग. ३ भूत।

सं०स्त्री०—४ कोयल. ५ अविद्या, मूर्खता (एका.)

वि०—१ मैला-कुचैला. २ उच्छृष्ट, जूठा, ऐंठा (एका.)

प्रत्य०—तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिन्ह 'से'।

थुइ, थुई-सं०स्त्री०—१ ऊँट के पीठ की कूबड़, ऊँट के पीठ का उभरा हुआ भाग. २ पुष्टता. ३ आगे निकला हुआ पेट, तोंद।

मुहा०—थुई चढ़णी—चरबी बढ़ना, पेट का फूलना, तोंद निकलना, पुष्ट होना।

[सं० स्तु] ४ स्तुति, प्रशंसा।

उ०—१ जिणि दिन पांचमि तप करइ तिणि दिन आरंभ टाळइ रे। पांचमि तवन थुइ कहइ, ब्रह्म चरिज पणि पाळइ रे।—स.कु.

उ०—२ इय जिण वल्लह-थुइ भणिय, सुणियइ करइ कल्लांणु। देउ बोहि चउवीस जिण, सासइ सखनिहांणु।—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—३ थिदो सदय मुण निज थुई, टीटभ हूंत कसांन। उण ग वाळ उबारिया, महामंत्र जस मांन।—बां.दा.

रू०भे०—थूई, थूही।

थुओ—देखो 'थूओ' (रू.भे.)

थुकाई-सं०स्त्री०—थूकने की क्रिया, थूकने का कार्य।

थुकाड़णौ, थुकाड़बौ—देखो 'थुकाणौ, थुकाबौ' (रू.भे.)

थुकाड़ियोड़ो—देखो 'थुकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० थुकाड़ियोड़ी)

थुकाणौ, थुकाबौ-क्रि०स० [सं० थूत्करणं] ('थूकणौ' क्रिया का प्रे०रू०) थूकने के लिये प्रेरित करना, थूकने का कार्य दूसरे से करवाना, उगलवाना।

थुकाणहार, हारो (हारी), थुकाणियौ—वि०।

थुकायोड़ो—भू०का०कृ०।

थुकाईजणौ, थुकाईजबौ—कर्म वा०।

थुकाड़णौ, थुकाड़बौ, थुकावणौ, थुकावबौ—रू०भे०।

थूकणौ, थूकबौ—अक०रू०।

थुकायोड़ो-भू०का०कृ०—थूकने के लिये प्रेरित किया हुआ, थूकने का कार्य दूसरे से करवाया हुआ, उगलाया हुआ।

(स्त्री० थुकायोड़ी)

थुकावणौ, थुकावबौ—देखो 'थुकाणौ, थुकाबौ' (रू.भे.)

थुकावियोड़ो—देखो 'थुकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० थुकावियोड़ी)

थुड़-सं०पु०—१ वृक्ष का तना। उ०—१ अति प्रगट रस थुड़ डाली अदभुज, गाथ अति रंग आदरै। जिम पुरख नियतीवंत नृप जग प्रजा उर सुख पाव रे।—रा.रू.

उ०—२ चंबइ विचित्र थइ रही, अंब तणी वनरायौ जी। थुड़ साखा अंकुरित थइ, सोह वसंतइ पायी जी।—वि.कु.

२ मूर्ख, नासमझ।

रू०भे०—थुड़ि, थुड़, थुड, थुडि।

थुड़णौ, थुड़बौ-क्रि०अ०—लड़ना, भिड़ना, टक्कर लेना। उ०—जुड़ें पड़ें लड़ें मुड़ें, थुड़ें अनेक जग में। अनेक ऊकटें मिटें, कटें तुटें सु अंग में।—रा.रू.

२ डगमगाना, लड़खड़ाना। उ०—थुर थुर धूजंता थुड़ता थाकोड़ा। पीळा पड़ियोड़ा पिलिया पाकोड़ा।—ऊ.का.

थड़णौ, थड़बौ, थिड़णौ, थिड़बौ, थुड़णौ, थुडबौ—रू०भे०।

थुड़ि—देखो 'थुड़' (रू.भे.) उ०—रूंख तणी थुड़ि बोडो बांधि नै रे, कुमर चढ्यौ वांनर रे साथ रे। साख ऊपरि बैठा जाइ नै रे, नेह धरी तिहां जोड़ै बाथ रे।—वि.कु.

थुड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ लड़ा हुआ, भिड़ा हुआ, टक्कर लिया हुआ. २ डगमगाया हुआ, लड़खड़ाया हुआ।

(स्त्री० थुड़ियोड़ी)

थुडि-सं०पु०—एक प्रकार का व्यंजन? उ०—मरिच ना चमत्कार, अत्यंत सुकमार, हस्तिपद प्रमाण, प्रीणतां प्राण हाथितळ वळइं, मुहि पड्यां गळइ, स्वरगि थिका देव देखी टळवळइ, इसां अनेक प्रकारि वडां, थुडि वडां, मोतीयां वडां।—व.स.

थुड—देखो 'थुड़' (रू.भे.)

थुडणौ, थुडबौ—क्रि०अ० [सं० थुड्=संवरण] १ आच्छादित होना, फैलना, छाना। उ०—उद्यान वन माहि आंणिउ, विळासीए वखाणिउ, साकर नी पाळि दूधि पायउ, कोइल तणे वृंदि छायउ, रूपि सुचंगु नम्यउ नवरंगु, थुडि थोरु पथिक वधूजन चित्तचोरु।—व.स.

२ देखो 'थुड़णौ, थुड़बौ' (रू.भे.)

थुडि—देखो 'थुड़' (रू.भे.)

थुडियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ आच्छादित हुवा हुआ, फैला हुआ, छाया हुआ. २ देखो 'थुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थुडियोड़ी)

थुणणौ, थुणबौ—क्रि०स० [सं० स्तुत्] १ स्तुति करना, प्रशंसा करना, गुणगान करना। उ०—१ नयन कितारथ आज थया मुझ, मूरति देखतां प्राय जी। जीभ पवित्र थई वळी माहरी, थुणतां स्री जिनराय जी।—स.कु.

उ०—२ कमळ लंछन भगवांन 'विनयचंद्रइं' थुण्यौ। तुम गुण गण नौ पार, कुंणइ ही नवि गुण्यौ रे।—वि.कु.

२ स्मरण करना, याद करना। उ०—प्रह ऊठी नै थुणजै जी।
—वृहद् स्तोत्र

थुणियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ स्तुति किया हुआ, प्रशंसा किया हुआ, गुणगान किया हुआ. २ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ।

(स्त्री० थुणियोड़ी)

थुतकारणौ, थुतकारबौ—देखो 'थुथकारणौ, थुथकारबौ' (रू.भे.)

थुतकारियोड़ौ—देखो थुथकारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थुतकारियोड़ी)

थुतकारियौ—देखो 'थुथकारियौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थुतकारियोड़ी, थुतकारी)

थुतकारौ—देखो 'थुथकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

थुतकी—सं०स्त्री०—देखो थुथकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

थुतकौ—देखो 'थुथकारौ' (रू.भे.)

थुथकारणौ, थुथकारबौ-क्रि०स० [सं० थूत्करणम्] दृष्टि-दोष (नज़र) से बचाने के लिये मुंह से थू थू करना (टोटका) उ०—भली आकृति भाळ धणी वणियां थुथकारै।—दसदेव

थुतकारणौ, थुतकारबौ—रू०भे०।

थुथकारियोड़ौ—भू०का०कृ०—दृष्टि-दोष (नज़र) से बचने के लिये मुंह से थू थू किया हुआ।

(स्त्री० थुथकारियोड़ी)

थुथकारियौ—वि० [सं० थूत्कृत:] (स्त्री० थुथकारियोड़ी, थुथकारी) वह व्यक्ति, जानवर अथवा वस्तु जिसको दृष्टि-दोष (नज़र) से बचाने के लिये मुंह से थू थू किया जाय। उ०—घण मोला घोड़ाह, घण मोली केई घोड़ियां। थुथकारिया थोड़ाह, जग में तौ जोड़ा 'जसा'।—ऊ.का.

रू०भे०—थुतकारियौ।

थुथकारी—सं०स्त्री०—देखो 'थुथकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

थुथकारौ—सं०पु० [सं० थूत्कार:] किसी को दृष्टि-दोष (नज़र) से बचाने के लिये मुंह से थू थू का शब्द, थू थू का कार्य। उ०—१ जै जै जोगेस्वर भोगेसर भूला। धारण पक्की धर चक्की नहिं चूला। अै तौ जिन कल्पी अल्पी अणगारा। थीवरकल्पी जन नांखै थुथकारा।—ऊ.का.

उ०—२ उसके मुंह से थुथकारे ऐसे कढ़ै, मनौ तारत की मोखी से मछर से उडे।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ सासुवां रूप अर तरह देख घणी राजी हुई, राई लूण वारिया, थुथकारा नांखिया।—कुंवरसी सांखला री वारता

क्रि०प्र०—नांकणौ।

रू०भे०—थुतकारौ, थुतकौ, थुथकौ।

अल्पा०—थुतकारी, थुतकी, थुथकारी, थुथकी।

थुथुकी—सं०स्त्री०—देखो 'थुथकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

थुथुकौ—देखो 'थुथकारौ' (रू.भे.)

थुर—देखो 'थर' (१, ५, ६) (रू.भे.) उ०—वासप नैणां सूं निकळै मुख वाफां। रैणूं ऐडी पर फाटोड़ी राफां। थुर थुर धूजंता थुड़ता थाकोड़ा। पीळा पड़ियोड़ा पिलिया पाकोड़ा।—ऊ.का.

थुरन—सं०स्त्री० [सं० स्फुरणम्] हिलने की क्रिया, फड़कन, स्फुरण।

उ०—अरूं मैं एकाकी थुरन मत थाकी इन अगें। लखूं मैं खांचू तो प्रबळ ठग पांचूं मग लगें।—ऊ.का.

थुरमौ—देखो 'थिरमौ' (रू.भे.) उ०—तद इण आप थुरमा रौ दुसालौ ढोलियै सूं उठाय ओढ़ायौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

थुली, थुल्ली—सं०स्त्री० [सं० स्थूल+रा०प्र०ई] गेहूँ के दले हुए मोटे कणों का पकाया हुआ व्यञ्जन।

क्रि०प्र०—रांधणी।

मह०—थुल्लौ।

थुल्लौ—सं पु०—देखो 'थुली' (मह., रू.भे.) (अवज्ञा एवं व्यंग्य)

थुवणौ, थुवबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.) उ०—बावा सिख मिळै बाथां सूं, थळ जातां सू हरक थुवौ।—बांकीदास वीठू

थुवियोड़ौ—देखो 'थायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थावियोड़ी)

थुवौ, थुहौ—देखो 'थूअौ' (रू.भे.)

थूं—देखो 'तूं' (रू.भे.) उ०—थूं हिंदुसथांन में जगळधर देस न जांणै। जठै चवदह जणां हुता राजा हिंदवांणै।—मे.म.

थूंक—देखो 'थूक' (रू.भे.) उ०—उत्तम थूंक विलोव ही, मध्यम मूकी थाप। वणिक अधम चिढ़ता करै, पनसेरी सूं थाप।—बां.दा.

थूंकणौ थूंकबौ—देखो 'थूकणौ, थूकबौ' (रू.भे.) उ०—१ पै'लौ मास उलरियौ ए जच्चा वे रौ आळसियौ मन जाय। दूजौ ए मास उलरियौ ए जच्चा, वै रौ थूंक तड़ै मन जाय।—ला.गी.

उ०—२ वीर कुळयां मांहि ऊपनौ, तौ नै खाय मुंडा थी थूंक्यौ रे।
—अवांणी

थूंकियोड़ो—देखो 'थूकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० थूंकियोड़ी)

थूंडमथूंट-सं०पु०—धक्कम धक्का ? । उ०—अति खूंणा ऊंडा थूंडम-थूंडा कूंडा पंथ करंदा है ।—ऊ.का.

थूंड, थूंडर-सं०स्त्री—थूथन । उ०—तद डाढ़ाळो ऊठ सांम्हो आइयौ जे बागवांन नूं बोलणै संभळण नहीं दियौ । रठाय थूंडर सूं उलट नांखियौ, जांघां दोनां फाड़ नांखी ।—डाढ़ाळा सूर री वात

थूंणी-सं०स्त्री० [सं० स्थूणा] १ बल्ली, खंभ ।
उ०—१ जीण मेरी बाई ग्रे, बोरी सो होग्यो ज्यांरी पेट । भंवरां की ये रांणी, थूंणी सी होगी ग्रे जां री बांवळा ।—लो.गी.
उ०—२ पड़तौ थो जिम टापरौ, दीधी थूंणी लगाय । पिम 'मेघ' संयम थी डिग्यौ, पिण वीर दीधौ सहाय ।—जयवांणी
२ वह गड़ी हुई लकड़ी जिससे रस्सी का फंदा लगा कर मथनी के मथदंड को अटकाते हैं. ३ घास-फूस की छाजन अथवा खपरैल के छाजन के दोनों ओर ऊपर उठी हुई त्रिभुजाकार दीवारों के ऊपर का भाग जिस पर वेंडरी रहती है ।
रू०भे०—थूणी ।

थूंथकौ—देखो 'थुथकारौ' (रू.भे.) उ०—पड़दां री जाळियां में मयारांम नै देखै छै । सारी सहेल्यां हुइ चख एकै ठै भाळ भाळ नै थूंथका नांखै छै । मयारांम पर मोती पांवै छै ।—मयारांम दरजी री वात

थूंथी-सं०स्त्री० (देश०) छोटे कानों वाली बकरी ।

थूंब—देखो 'थूंबौ' (मह., रू.भे.) उ०—सु भाखर वारै फेर ऊपर वाड़ै हुय नै कोसै १६ सांमो आयौ । अठी रिणधीर थूंब चढ़ नै पाछौ जोयौ जु खंगार ना'यौ ।—नैणसी
२ देखो 'थूंबी' (मह., रू.भे.)

थूंबड़ी—देखो 'थूंबी' (अल्पा., रू.भे.)

थूंबड़ो-सं०पु०—१ देखो 'थूंबौ' (१) (अल्पा., रू.भे.) उ०—देवी बम्मरे डुंगरे रन्न वन्ने । देवी थूंबड़े लींवड़े थन्न थन्ने ।—देवि.
२ देखो 'थूंबी' (अल्पा., रू.भे.)

थूंबलिया-सं०स्त्री०—राठौड़ राव मल्लिनाथजी के पुत्र जगमाल के वंश की राठौड़ों की एक उपशाखा ।

थूंबलियौ-सं०पु०—१ 'थूंबलिया' शाखा का व्यक्ति ।
२ देखो 'थूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

थूंबली—१ देखो 'थूंबी' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'थोवली' (रू.भे.)

थूंबी-सं०स्त्री०—बैल और ऊंट की पीठ पर उभरा हुआ भाग, डिल्ला, ककुद्, कोहान ।
मुहा०—थूंबी चढ़णी—देखो 'थुई चढ़णी' ।
रू०भे०—थूंभी, थूंभी ।
अल्पा०—थूंबड़ी, थूंबड़ो, थूंबली, थूंभड़ी, थूंभली ।
मह०—थूंब, थूंबौ, थूंभ, थूंभौ ।

थूंबौ-सं०पु० (देश०) १ भीड़ा, टीबा । उ०—जमांनै करवट बदळी अर देस नै आजादी मिळी । मुलक में बडी उथल-पुथल हुई । अंग-रेजा रा वींटा कसीजतां ई राजावां रा राज गया अर जागीरदारां री जागीरां खोसीजगी । कांई री कांई व्हैग्यौ । थूंबा री जगै थळ अर थळ री जगै थूंबा व्हैग्या । बूढ़ा-ठाडा मिनख जूनी आंख्यां नुंवौ जुग देख रह्या हा ।—रातवासौ
रू०भे०—थूंभौ ।
अल्पा०—थूंबड़ो, थूंबलियौ ।
मह०—थूंब, थूंभ ।
२ देखो 'थूंबी' (मह., रू.भे.)

थूंभ—१ देखो 'थूंबौ' (मह., रू.भे.) २ देखो 'थूंबी' (मह., रू.भे.)
उ०—मजबूत थूंभ डाचा मगर, जियां पूंछ करवत जिसा । भोखियां सिंधु नुखतां भटकि, अंध कंध राकस इसा ।—सू.प्र.
३ देखो 'थुंभ' (रू.भे.) उ०—भरत कराव्यउ भलउ देहरउ रे, सउ भाई ना थूंभ रे । आप मूरति सेवा करइ रे, जांणे जोइयइ ऊभ रे ।
—स.कु.

थूंभड़ी—देखो 'थूंबी' (अल्पा., रू.भे.)

थूंभली—१ देखो 'थुंभी' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'थोवली' (रू.भे.)

थूंभी—देखो थूंबी' (रू.भे.)

थूंभौ—१ देखो 'थूंबौ' (रू.भे.) २ देखो 'थूंबी' (मह., रू.भे.)

थू-सं०स्त्री०—१ दासी. २ पगड़ी ।
सं०पु०—३ पारशर. ४ दास (एका०) ५ देखो 'तूं' (रू.भे.)
उ०—जोय ग्रीध कप कारज सारै, दे द्रग सवरी गोहद सारै । थू वस-त्रास राख मन थारै, सांवळियौ जन नांज विसारै ।—किसनो आढ़ो
अव्य०—१ थूकने पर मुंह से उत्पन्न होने वाला शब्द. २ घृणा और तिरस्कारसूचक शब्द ।

थूई—देखो 'थुई' (रू.भे.)

थूऔ-सं०पु० (देश०) १ आभूषण, जेवर, गहना । उ०—पोह देसां परदेसां जोया, वोह गढ़ कोटां जाय । मैं राखियौ थूऔ मेड़तिया, निरधन रा आभूखण नाय ।—ओपो आढ़ो
२ सम्पति, पूंजी, धन-दौलत. ३ ककुद्, डिल्ला ।
मुहा०—थूऔ चढ़णी—देखो 'थुई चढ़णी' ।
रू०भे०—थुऔ, थुवौ, थुहौ, थूवौ, थूहौ, थेवौ ।

थूक-सं०पु० [सं० थूत्कृतम्] वह गाढ़ा व कुछ लसीला रस जो मुंह के भीतर जीभ तथा मांस की झिल्लियों से छूटता है, लार ।
उ०—'वांका' राखै वांणियौ, सारां हूत सलूक । कदियक खीजै तौ करै, वयण विलोवै थूक ।—वां.दा.
मुहा०—१ थूक उछाळणौ—व्यर्थ की बकवास करना. २ थूक उलांगणौ—आज्ञा का पालन नहीं करना, आज्ञा का उलंघन करना. ३ थूक गिटणौ—वचनहार होना, वचन पर अटल न रहना, मुकरना, घबराना, डरना. ४ थूक विलोणौ—देखो 'थूक उछाळणौ'.

५ थूक मथणी—देखो 'थूक उछाळणी'. ६ थूक लगाणी—हराना, नीचा दिखाना, लौंडेबाजी करना (बाजारू) ७ थूक सूं कांन चेपणा—देखो 'थूक सूं सांधा देणा'. ८ थूक सूं सांधा देणा—ठीक कार्य नहीं करना, कच्चा कार्य करना, कृपणता से धन इकट्ठा करना, कंजूसी से जमा करना. ९ थूक सूकणी (थूक अटकणी)—भयभीत होना, घबराना. १० थूक सुकाणी—धमकाना, भय दिखाना, डराना।

२ बलगम, खखार, ष्ठीवन। उ०—आवै देख उवाक, थूक रा थेचा थाया। ऊलरया सूत अणूंत, मूंत रेला नह माया।—ऊ.का.

थूकणी, थूकबौ-क्रि०अ० [सं० थूत्करणम्] मुंह से थूक निकालना या फेंकना, मुंह से थूक उगलना। उ०—म्हारै ऊभां थांनै लूटै तौ म्हारै जीविया नै धिक्कार है। दुनिया म्हारा नांम पर थूकैला अर म्हारै वडेरां री कीरत नै काळख लाग जावैला।—रातवासौ

मुहा०—१ थूक नै चाटणी—कहे हुए वचन से टल जाना, वचन पर अटल न रहना, वचनहार होना, मुकरना. २ नांम माथै थूकणी—घृणा की दृष्टि मे देखना, घृणा करना, तिरस्कार करना।

थूकणहार, हारौ (हारी), थूकणियौ—वि०।

थुकवाड़णौ, थुकवाड़बौ, थुकवाणौ, थुकवाबौ, थुकवावणौ, थुकवावबौ, थुकाड़णौ, थुकाड़बौ, थुकाणौ, थुकाबौ, थुकावणौ, थुकावबौ—प्रे०रू०।

थूकिओड़ौ, थूकियोड़ौ, थूक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थूकीजणौ, थूकीजबौ—भाव वा०।

थूंकणौ, थूंकबौ—रू०भे०।

थूकियोड़ौ-भू०का०कृ०—मुंह से थूक निकाला हुआ, थूक उगला हुआ। (स्त्री० थूकियोड़ी)

थूड-सं०पु० [सं० तुंड] सूअर का थूथन। उ०—पाळा मारूं पांचसै, पाखरिया पच्चास। तुरी उलाळूं थूड सूं, तो भूंडण भरतार।—लो.गी.

(देश०) २ भुजा पर बांधा जाने वाला आभूषण विशेष, भुजबंध।

थूणी—देखो 'थूंणी' (रू.भे.)

थूथउ—देखो 'थूथौ' (रू.भे.) (उ.र.)

थूथण-सं०पु० [सं० तुंड] सूअर आदि पशुओं का लंबा निकला हुआ मुंह।

रू०भे०—थूथणी।

थूथणी-सं०स्त्री० (देश०) १ हाथी के मुंह का एक रोग जिसमें उसके तालू में घाव हो जाता है. २ देखो 'थूथण' (रू.भे.)

थूथौ-वि० [सं० तुच्छम्] १ तुच्छ. २ मूर्ख, नासमझ. ३ छोटे कान वाला।

सं०पु०—वह बकरा जिसके कानों में कुछ कसर हो।

रू०भे०—थूथउ।

थूभ—देखो 'थूंभ' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—चउरासी प्रतिस्ठा कीद्ध, 'अहमदाबाद' थूभ सुप्रसिद्ध। तासु पदइ 'जिनसुंदर सूरि', स्री जिनहरस सूरि सूय पूरि।—ऐ.जै.का.सं.

थूर-वि० [सं० स्थूल] १ मोटा, बड़ा। उ०—थूर हथ धवळ रौ थाट मैंवट थियौ। काळ चाळौ चखां चोळ बोळां कियौ।—हा.झा.

२ हृष्ट-पुष्ट।

३ राक्षस, असुर। उ०—खर खेत खंडै थूर थंडै, सूर कुळ सिरताज। —र.ज.प्र.

४ देखो 'थोर' (रू.भे.)

थूरणौ, थूरबौ-क्रि०स० [सं० थुर्वणम्] १ नाश करना, संहार करना, मारना। उ०—थाहर थाहर थूरिया, मारू अर घमसांण। 'पातल' रा नह पांतरै, कर जरमन केवांण।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ भिड़ पहलां कासमखां भागौ, लड़वा 'मुकन' तणौ नभ लागौ। भाटी राव वहै मन भांणै, थूरै जिण चेराई थांणै।—रा.रू.

उ०—३ थूरण रिण दैतां थोका, लाज रक्खण संत लोका। रांम रिण दसमाथ रोका, करां झोका करां झोका।—र.ज.प्र.

२ ध्वस्त करना, तहस-नहस करना। उ०—बल देखे बोलियौ, सुणि खांनां सुरतांणां, 'सूरजमल' मो पिता, तेणि थूरे अरिथांणां। —गु.रू.ब.

थूरणहार, हारौ (हारी), थूरणियौ—वि०।

थूरिओड़ौ, थूरियोड़ौ, थूर्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थूरीजणौ, थूरीजबौ—कर्म वा०।

थोरणौ, थोरबौ—रू०भे०।

थूळ-सं०पु० [सं० स्थूल] १ तंबू, डेरा, खेमा। उ०—सो सुनि हुलकर सैंन ले, जैंपुर ढिग आया। करि मुकाम प्रकार तट, निज थूळ तणाया। —वं.भा.

२ समूह। उ०—थेइ त्थेइ नच्चत कबंधन थूळ। बनै तंहं कातर पत्त बघूळ।—वं.भा.

उ०—२ तूळ जिम उडै खळ थूळ गुरजां तड़छ, झूळ चवसठ लगी लेण झंपा। सूळ चमकावता फिरै बावन सुभट, स्यांम बाघूळ बिच जांण संपा।—बालाबख्स बारहठ

३ असुर, राक्षस। उ०—थूळ ऊथापिया साध नै थापिया। इंदरा राज इंदि सरीखां आपिया।—पी.ग्रं.

४ साधारणतया इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके वह पदार्थ, वह जो स्पर्श, घ्राण, दृष्टि आदि की सहायता से जाना जा सके. गोचर पिंड। उ०—१ थावर जंगम थूळ, सुछम जग निखल निवासी। —ह.र.

५ अन्नमय कोश।

वि०—१ जो यथेष्ट स्पष्ट हो, जिसकी विशेष व्याख्या करने की आवश्यकता न हो, सहज में दिखाई देने या समझ में आने योग्य, सूक्ष्म का उल्टा। उ०—जिण सरवा सूं रचना कीवी, कारण सूक्ष्म थूळा जी। आतम तज अन आतम धारा, निज सरणा भूला जी। —स्री सुखरांमजी महाराज

२ नष्ट होने वाला, नाशवान। उ०—दीसत थूळ भोग सब द्रस्टि, हर तरह सूं परहरणा। त्रिपती न थाय करोड़ जुग भोगं, मिथ्या त्रिगत्रिमणा।—स्री सुखरांमजी महाराज

३ मूर्ख, नासमझ, जड़. ४ दृढ़, मजबूत. ५ जिसके अंग फूले हुए या भारी हों, मोटा, पीन। उ०—कोमळ कमळ ऊपरै रे त्रिवळी समर सोपांन रे रंग। कटि तटि अति सूछिम कही रे, थूळ नितंब वखांण रे रंग।—प.च.चौ.

६ विस्तृत, अधिक, बहुत।

थूळनास, थूळीनास–सं०पु० [सं० स्थूलनासिका] सूअर, वराह। (ह.नां., अ.मा., डिं.को.)

थूवौ—देखो 'थूग्रौ' (रू.भे.)

थूहर—देखो 'थो'र' (रू.भे.)

थूही—देखो 'थुई' (रू.भे.)

थूहौ—देखो 'थूग्रौ' (रू.भे.)

थें—देखो 'थे' (रू.भे.) उ०—मिसंजर के मिस मन भयौ, पीउ जो लाय बुलाय। मोल मुहंगौ थें लीयौ, सौ माहरै ग्रावी दाय।—व.स.

थे–सं०पु०—१ ताल. २ संबोधन. ३ निवास (एका.)

४ देखो 'थह' (रू.भे.)

सर्व०—१ आप, तुम। उ०—निज कीनौ थे नास, कहौ किण रक्षा करस्यौ। बात खरी हे बपण, मौत बिन नाहक मरस्यौ।—ऊ.का.

२ देखो 'थें' (रू.भे.)

थेइ, थेइय, थेई–सं०पु० (अनु०) १ नृत्य और ताल का बोल।

उ०—१ थिगमिग थिग थिग थेइ थेइ थिग मिग। थेइ थेइ तत नक ता थेइ।—घ.व.ग्रं.

उ०—२ उमंग अंग उछरंग, रंग कुकु थुंग थुंग रत। थेइय थेइय तत थेइय, त त त त त थेइय थेइय त त।—सू.प्र.

उ०—३ थेई त्थेइ नच्च कवंधन थूळ। बनै तंह कातर पत्र बघूळ। —व.भा.

यौ०—थेइय-थेइय, थेईत्थेई।

२ छोटे बच्चे के खड़े होने की क्रिया।

थेईकार–सं०पु० (अनु०) कत्थक नृत्य के बोलों का आधार।

यथा—ता थेई थेई तत्त।

थेईयात—देखो 'थेइग्रायत' (रू.भे.) उ०—लेख-लिखा नइ पारखी, कोठारी थेईयात। अंगरखा अंघोळीया, पांडव पोढ़ी वात। —मा.कां.प्र.

थेगड़–सं०पु० (देश०) सहारा। उ०—वाल्ही वेगड़ नै थेगड़ दे बाळै। भाळी भोळी नै भोंडी नै भाळै।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—देणौ।

थेगड़ौ–सं०पु०—१ कटि-मेखला या गले के हार आदि में लगाया जाने वाला विशेष गठन का सोने, चांदी आदि की चद्दर का चपटा भाग।

२ देखो 'थाग' (७) (अल्पा., रू.भे.)

थेगल, थेगली–सं०स्त्री०—फटे हुए वस्त्र आदि का छेद बंद करने का छोटा टुकड़ा, पैवंद। उ०—१ सीत निवारण जीरण कंथा, ताकै थेगल लागी। गिर तरु मंडी मतांण चौड़ै, ऐसे रह अनुरागी। —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ सकौ तेड़िया भूपति 'विजै' भाई वेटां बूझ सला, आया सुणौ दिखणी लुटीजै लोक आथ। कइक कायरां कह्यौ आटै लूण जोग कठै, न लागै थेगली आभ फाटै प्रथीनाथ।—महेसदास कूंपावत री गीत

२ देखो 'थोवली' (रू.भे.)

थेगलौ–सं०पु०—देखो 'थेगली' (अल्पा., रू.भे.)

थेगा–सं०पु०—एक प्राचीन राजवंश।

थेगौ–सं०पु०—सहारा, आश्रय। उ०—रोपै पाव उंडा घड़ा तेहरी रमावै रोळै, सारां थेगौ हजारां लगावै फूटै संध। फुणां फेर ऊभी तोपां घमावै भमाळै फौजां, कलै आज वाळौ खांपां न मावै कमंध। —गोपालजी दधवाड़ियौ

क्रि०प्र०—देणौ।

थेघ–सं०पु० (देश०) १ एक के ऊपर एक चुनने की क्रिया, तह।

क्रि०प्र०—देणौ, लागणौ

२ सहारा, आश्रय।

क्रि०प्र०—लगाणौ।

थेघल, थेघली—देखो 'थेगल' (रू.भे.)

थेच—देखो 'थेचौ' (मह., रू.भे.)

थेचाकूटौ–वि०यौ० (देश०) १ मार खाने का आदी, पिटने का आदी होने वाला, ढीठ. २ कुम्भकार का औजार विशेष

कहा०—कठै राज री रेवाड़ी नै कठै कुम्हार री थेचाकूटौ।

थेचौ–सं०पु० (अनु०) १ भैंस के एक बार किए हुए मल का समूह।

२ किसी गीले पदार्थ का वह अंश जो डले की तरह बंधा हो, लोंदा।

उ०—आवै देख उबाक थूक रा थेचा थाया। उतरचा सूत अणूंत मूंत रेला नह माया।—ऊ.का.

३ ढेर।

मह०—थेच।

थेट–वि० (देश०) १ निरा, निपट. २ बिल्कुल, एकदम. ३ समस्त, सारा. ४ शुद्ध. ५ वास्तविक, सही।

६ देखो 'ठेट' (रू.भे.) उ०—१ थेट गया सुख होय, पीया तेरै देस रे। हरिरांम हर पाय, पूरै हर आस रे।—स्री हरीरांमजी महाराज

उ०—२ अे भड़ भल है आज रा, थाहर जासी थेट। चंगी चाव चलावसी, इम रमणौ आखेट।—बां.दा.

उ०—३ महाराज उण ऊपर निराठ क्रिपा फरमावता, जोरावरसिंह थेट सूं रांमसिंह कन्है थौ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

थेटा-लग–क्रि०वि०—१ अन्त तक। उ०—एक सु तत्तं संग्रहै, हूंता सेन बहूत। थेटा-लग काढ़ै परी, किय तुरके तावूत।—नैणसी

२ परम्परा से, सदा से।

थेटू–क्रि०वि० (देश०) १ प्रारम्भ से, शुरू से, परंपरा से।

उ०—सार तथा ग्रणसार, थेटू गळ वंधियौ थको। वडां सरम री भार, राळ्यां सरै न राजिया।—किरपारांम

२ हमेशा से, नित्य से। उ०—थेटू घर संबर ऊंडा सर थाघै। ग्रां रै माळागर मूंढ़ा रै ग्रागै।—ऊ.का.

वि०—हमेशा का, नित्य का। उ०—थेटू छोड ववां थोक, मह ग्रध दीध हांसल मोक। सातूं ईतरौ नह सोक, लंगर सुखी सगळा लोक।—र.रू.

थेथड़णौ, थेथड़बौ–क्रि०स० [सं० तेस्तीरणम्] किसी गाढ़ी वस्तु को छितरी हुई अवस्था में थपथपा कर लगाना। उ०—तिका काळी, डीगी, मोटा दांत, दूवळी, घणी डरावणी, माथा रा लटा विखरया, घणा तेल मांहै चवती, धवळा केस, माथै निलाड़ सिंदूर थेथड़ियौ थकौ, लोवड़ी काळी, काळौ घावळौ, कांचळी तेल मांहै गरकाव थकी, उघाड़ै माथै कीधां, हाथ मांहै त्रिसूळ झालियां दरवार ग्राई।—जगदेव पंवार री वात

थेथड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—किसी गाढ़ी वस्तु को छितरी अवस्था में थपथपा कर लगाया हुग्रा।

(स्त्री० थेथड़ियोड़ी)

थेथा–सं०स्त्री० (देश०) चौहान वंश की एक शाखा।

थेथौ–सं०पु०—चौहान वंश की 'थेथा' शाखा का व्यक्ति।

थेपड़—देखो 'थेपड़ी' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'थेपड़ौ' (१) (मह., रू.भे.)

थेपड़की—देखो 'थेपड़ी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थेपड़ियौ—देखो 'थेपड़ौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थेपड़ी–सं०स्त्री० (ग्रनु०) ईंधन के लिये गोवर को थाप कर वनाई हुई गोल टिकिया, उपला।

रू०भे०—थापड़ी।

ग्रल्पा०—थेपड़की।

मह०—थेपड़, थेपड़ौ।

थेपड़ौ–सं०पु० (ग्रनु०) १ कुम्हार द्वारा छाजन के लिये मिट्टी का बनाया हुग्रा वह खपड़ा जो चौड़ा, चौरस ग्रौर चिपटा होता है, खपरैल।

ग्रल्पा०—थेपड़ियौ।

मह०—थेपड़।

२ देखो 'थेपड़ी' (मह., रू.भे.)

थेवौ–स०पु० (देश०) १ किसी गीले पदार्थ का वह ग्रंश जो डले की तरह वधा हो, लोंदा। उ०—थेवा पड़तोड़ी रावां घी थीणा। थां परि देखां ला दूजै भव धीणा। हुयग्या हत ग्रासा हकदक सुणि हाकौ। निरधन धन वाळां नीकळग्यौ नाकौ।—ऊ.का.

२ सहारा. ३ दीवार वनाते समय किसी लंवे पत्थर को खड़ा करने के लिये उसके सहारे हेतु लगाया जाने वाला छोटा पत्थर.

४ देखो 'थोवौ' (१, २) (रू.भे.)

थेर—देखो 'थविर' (रू.भे.)

थेरू—देखो 'थिर' (रू.भे.) उ०—महाराज नूं राज रीझै समाप्यौ। थेरू राज री राज देसांण थाप्यौ।—मे.म.

थेलकी—देखो 'थैली' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थेलियौ—देखो 'थैलौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थेली—देखो 'थैली' (रू.भे.) उ०—१ धिन धिन धनवंता थेली ले घायां। भायां लातरतां झेली भुज भायां। ग्रवळां उद्धारी सवळां कुळ ग्राया। पुन परचारण रा परमोदय पाया।—ऊ.का.

उ०—२ ग्रसी सिरपाव ग्रनेक कड़ा मोती गज कंकण। थाट दरव थेलियां घणा जंवहर भूखण घण।—सू.प्र.

उ०—३ छोडियौ छाप वंध जास हूंता जतन। काट थेली थकी वांचै स्रीकसन।—रुखमणी हरण

थेलीड़—१ देखो 'थैली' (मह., रू.भे.) २ देखो 'थैलौ' (मह., रू.भे.)

थेलौ—देखो 'थैलौ' (रू.भे.) उ०—हमालां दरब थेलां भरण, उरड भरण खट वाविया।—सू.प्र.

थेवर—देखो 'थविर' (रू.भे.) उ०—धन्य पांचै 'पांडव', तजी 'द्रोपदी' नार। थेवर नो पासै, लीधौ संयम भार।—जयवांणी

थेवौ–सं०पु० (देश०) १ सहारा, मदद. २ देखो 'थूग्रौ' (रू.भे.)

थेह—देखो 'थह' (रू.भे.) उ०—या सुण कर डाढ़ाळौ भूंडण नूं ग्राप री थेह लेय ग्रायौ।—डाढ़ाळा सूर री वात

थैं—देखो 'थै' (रू.भे.) उ०—१ दादू गुरु गरवा मिळ्या, ता थैं सब गम होइ। लोहा पारस परसतां, सहज समांणा सोइ।—दादू वांणी

उ०—२ ग्यांन लहर जहां थैं उठै, वांणी का परकास। ग्रनुभव जहं थैं ऊपजै, सब्दै किया निवास।—दादू वांणी

उ०—३ तदा नाभि कमळ थैं ब्रहमां नीपनौ।—द.वि.

थै–सं०पु०—१ ताल. २ देवता. ३ विरुद, कीर्ति।

सं०स्त्री०—४ कील।

वि०—१ पूर्ण. २ उर्ध्व (एका.)

प्रत्य०—१ तृतीया ग्रौर पंचमी विभक्ति का चिन्ह, से।

२ देखो 'थे' (रू.भे.)

रू०भे०—थैं।

थैई–सं०स्त्री० [सं० स्थिति] १ चमड़े की बनी विशेष वनावट की थैली जिस में बारूद ग्रादि रखते हैं. २ देखो 'थेई' (रू.भे.)

थैलकी—देखो 'थैली' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थैलियौ—देखो 'थैलौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थैली–सं०स्त्री० [सं० स्थल=कपड़े का घर] १ कपड़े, टाट ग्रादि को सी कर वनाया हुग्रा पात्र जिस में सामान भरा जाता है।

उ०—ऊजळा दही व्है जिसा कपड़ां में फूटरी-फूटरी गुजरातणियां ग्रर हाथां में थैलियां लियोड़ा ग्राहक सब एक साथै इज वाड़ा मांयनै

मूं चकरियां निकळी व्है ज्यूं परभात में इज निकळ गया हा।
—रातवासो

२ रुपये डालने का कपड़े आदि का बना पात्र, तोड़ा।

३ कागज या कपड़े की बनी पत्र डालने की थैली, लिफाफा।

उ०—इण भांत पत्र लिख थैली में मेल्ह लाखोटो कर प्रोहित नूं सांपियो, प्रोहित पत्र लेय बाहिर हुग्रो।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—थेली, थैई।

अल्पा०—थेलकी, थैलकी।

मह०—थेलीड़, थैलीड़।

थैलीड़—१ देखो 'थैली' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'थैलो' (मह., रू.भे.)

थैलो-सं०पु० [सं० स्थल=कपड़े का घर] १ कपड़े, टाट आदि को सी कर बनाया हुआ पात्र जिसमें कोई वस्तु भर कर बंद की जा सके.

२ रुपये रखने के लिये मजबूत कपड़े आदि का बना थैलीनुमा पात्र, तोड़ा। उ०—थैला धरै राव सूजै ज दिन, सांसण तीन समापिया।
—सू.प्र.

३ पायजामे का वह भाग जो जंघा से घुटने तक होता है.

४ मकान के दरवाजों के ऊपरी हिस्से पर चारों ओर लगाये जाने वाले चौड़े पत्थर के नीचे का पत्थर।

रू०भे०—थेलो।

अल्पा०—थेलियो, थेली, थैलियो, थैली।

मह०—थेलीड़, थैलीड़।

थैह—देखो 'थह' (रू.भे.)

थो-सं०पु०—१ तरु, वृक्ष. २ मन. ३ पुत्र. ४ नृसिंह.

५ चालाक (एका.)

थोक-सं०पु० [सं० स्तोमं, स्तोम्, स्तोमः, स्तोमक] १ आनन्द।

उ०—१ किया सहि थोक निमो किरतार। परमेसर तूझ तणो कोइ पार।—गुणनारायण

उ०—२ आज ठाकुर री क्रपा कर अर रावळै सोह थोक छै।
—नैणसी

२ वैभव। उ०—थारै राज रिद्ध सं थोक छै सो थारो सुक्र आज तूती दाई तूई तूई करवो करै।—नी.प्र.

३ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत। उ०—मित्र सेवक रा घणा थोक कीजै जिको आपको सरीर मरणै मारणै री वेळा थारी ढाल होय।—नी.प्र.

४ पदार्थ। उ०—१ चंपो मरवो केवड़ो, नीरू तीनै थोक। ग्रे हर ढोलो करहलो, फुकियो ना'वै फोक।—ढो.मा.

उ०—२ साहजी भाग छाया री भांत साथ छै, आपांरै जे इतरा थोक था सो केयां।—साह रांमदत्त री वारता

५ घटना, वात। उ०—आर्खं युधिस्टर आळ, अरक सुत उत्तर घालै। ब्रह्म न वांचै वेद, पाप गंग नहि पालै। डिगै गैण अगडोल, जोग तज वंसे संकर। हार कंठ सिणगार, भार छोडवै मिणंधर। एतला थोक वरतै इळा, जळण घ्रत होम न जळै। सेवगां तणा 'मेहा' सद्, साद न करणी संभळै।—चौथ वीठू

६ प्रकार, तरह, भांति। उ०—१ न दीयं कांइ क्रपण नर, सहु इम कहै संसार। सात थोक कहै घरमसी, ए ग्रोहिज दातार।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ विद्या दस थोकै वधै।—ध.व.ग्रं.

७ चुभती वात, व्यंग। ज्यूं—छोरी रै सासरै गयो उठै छोरी री सासू म्हनै घणा थोक सुणाया। ज्यूं— इतरी वात सारू थूं म्हनै घणा थोक कह्या।

८ इकट्ठी वस्तु, कुल। उ०—कास्ठ उपाड़ै थोक।—धर्म पत्र

९ विक्री का इकट्ठा माल, इकट्ठा वेचने की चीज, खुदरा का उलटा।

१० समूह। उ०—१ ओपत तन तेल सिंदूरां आंगा, आच गदाधर रूप अढ़ंगा। भारथ थोक सवळ खळ भांगा, लागै फोका महाबळ लांगा।—र.ज.प्र.

उ०—२ 'भवणवई' 'व्यंतर' 'ज्योतिखी' रे लाल, पहिलो दूजो देवलोक हो भविक जन। आगत कही दोनां तणी रे लाल, गत पांचां नो थोक हो भविक जन।—जयवांणी

११ झुण्ड, मण्डली, यूथ। उ०—नगरी मांहे जाय ए, कुटुंब भेळो कियो राय ए। व्याही न्यातीला लोक ए, ज्यां का मिळिया घणा थोक ए।—जयवांणी

१२ राशि, ढेर, अटाला।

अल्पा०—थोकड़ो।

थोकड़ो—देखो 'थोक' (१२) (अल्पा., रू.भे.) उ०—तड़ां भड़ां थोकड़ां सचोकड़ां चुकाया त्याग, ग्रोकड़ां सोकड़ां छुटै सुपातां अछेह। मोती कड़ां मूंदड़ां गांमड़ां गजां घोड़ां मोजां, मंडै झड़ां दांमड़ां रोकड़ां गड़ां मेह।—महादांन महड़ू

थोकडेडा-सं०स्त्री० (देश०) सोलंकी वंश के राजपूतों की एक शाखा।

थोकडेडो-सं०पु० (देश०) सोलंकी वंश के राजपूतों की 'थोकडेडा' शाखा का व्यक्ति।

थोकायती-सं०पु० [सं० स्तोमक+रा०प्र०आयत] थोक, झुंड अथवा समुदाय का पति या नायक। उ०—थया मदहीण अरहरां थोकायती, जग अचळ किया झोकायती जेर।—अमरसिंह सीसोदिया री गीत

थोगणो-वि० (देश०) (स्त्री० थोगणी) थाह लेने वाला।

थोगणो, थोगवो-क्रि०स० (देश०) थाह लना।

थोगणहार, हारो (हारी), थोगणियो—वि०।

थोगिग्रोड़ो, थोगियोड़ो, थोग्योड़ो—भू०का०कृ०।

थोगीजणो, थोगीजवो—कर्म वा०।

थोगियोड़ो-भू०का०कृ०—थाह लिया हुआ।

(स्त्री० थोगियोड़ी)

थोगो-सं०पु० (देश०) १ सहारा, आश्रय। उ०—आच पकड़ ढावै अड़वहियां, पग पग चाढ़ै वडै प्रमांण। थोगा सरव 'जवांना' थारो, खांमंदपणो घनो खूमांण।—चांवडदांन दधवाड़ियो

२ अवलंबन, स्तम्भ । उ०—कजाकी संभायो घणी जोधांण रूठतां किलो, आरांण तूटतां थोगो लगायो श्रेवास ।
—आउआ ठाकुर वखतावरसींघ री गीत

क्रि०प्र०—देणो, लगाणो ।

थोड़उ—देखो 'थोड़ो' (रू.भे.)

थोड़-थाड़—वि०यौ०—किञ्चित ।

थोड़लो—देखो 'थोड़ो' (अल्पा., रू.भे.)　उ०—द्रढ़ समकिति नर थोड़ला, इम भाख्यो जिनराय । द्रढ़ समकित पाळै तिकै, वेगा सिवपुर जाय ।—जयवांणी

(स्त्री० थोड़ली)

थोड़ो—वि० [सं० स्तोक, प्रा० थोअ+रा०प्र०ड़ो (स्त्री० थोड़ी) कम, अल्प, न्यून, तनिक । उ०—१ थोड़ै काळ भण्या घणूं रे, धरम ध्यांन रस लीन । केवळग्यांन लही करी रे, पोहता मुगति अदीन ।
—वि.कु.

उ०—२ इम समरै हो निज क्रित पाप, आतम निंदइ आपणी । हुवइ थोड़ो हो पिण अपराध, उत्तम मोनै करि घणो ।—वि.कु.

रू०भे०—थोड़उ, थोडउ, थोडो, थोलउं ।

अल्पा०—थोड़लो, थोडलउं, थोडलउ, थोडलो ।

थोटक—सं०पु०—कर विशेष ?　उ०—दांण पूंछी हल भोम भाग भेट तलारक्षक वद्धापन मलवरक बळ चंचा चारिका गढ़ वाटी छत्र आलहण थोटक कुमारादि सुखडी इति क्रमेणास्टादस करा जाता ।
— व.स.

थोड—सं०पु० [सं० तुंड] १ बैलगाड़ी के सब से आगे के भाग में लगा हुआ लकड़ी या लोहे का वह डंडा जो कुछ नीचे की ओर झुका हुआ होता है और जिसे बिना जुती हुई गाड़ी को जमीन पर ठहराने के लिये तथा गाड़ी के अगले भाग को धरातल से कुछ ऊँचा रखने के लिये लगाया जाता है ।

रू०भे०—थौड ।

२ देखो 'थोडी' (मह., रू.भे.)

थोडउ, थोडउ—देखो 'थोड़ो' (रू.भे.) (उ.र.)　उ०—वरसइ थोडउं बहु तपइं, गाजइ गयणि निटोल । अधिकुं दाखी ऊसरइ, जिम नीसत ना बोल ।—मा.कां.प्र.

थोडलउं, थोडलउ, थोडलो—देखो 'थोड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ जइ वादळउं तउ दीह, जइ लहुडउ तउ सीह, तिम थोडलउ सुपात्र दांन ।—व.स.

उ०—२ आपणुं कुळ दूसइ, पिरायुं भूसइ, घणइं न तूसइं, थोडलइं अपमानि रूसइ, न जांई वेटी ।—व.स.

थोडिउ—देखो 'थोड़ो' (रू.भे.)　उ०—मोटउं कूडउं मागसिरि, वळी विचारी जोइ । दिन थोडिउ रयणी घणी, वयरणी कांई विगोइ ।
—मा.कां.प्र.

थोडी—सं०स्त्री० [सं० तुंड] सर्प का मुँह ।

मह०—थोड ।

थोडेरूं, थोडेरो—वि० [सं० स्तोक, प्रा० थोअ+स्वार्थिक 'ड'+सं० तर] अपेक्षाकृत कम ।　उ०—कूबर चिंतइ त्यारइ जेह, संग्रांम करिसइ मझस्यूं एह । घणउं सैन्य छइ स्नीनळह तणउं, माहरूं सैन्य थोडेरूं गणउं ।—नळ-दवदंती रास

थोडो—देखो 'थोड़ो' (रू.भे.)　उ०—१ माधव माधव मुखि कहइ, मंदिर मांहि न जाइ । थोडइ पांणी मीन जिम, तिम तिल पापड़ थाइ ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ आव्यां बीडां पांनह तणां । आव्यां लूगड थोडा घणां ।
—विद्याविलास पवाडउ

(स्त्री० थोडी)

थोती—सं०स्त्री० (देश०) (चौपायों के) मुँह का अगला भाग, थूथन ।

थोथ—सं०स्त्री० (देश०) १ खोखलापन, शून्य स्थान. २ निःसारता. ३ निर्जन भूमि ।

थोथरो, थोथो—वि० (देश०) (स्त्री० थोथरी, थोथी) १ खोखला, खाली, पोला । उ०—ताहरां खांन ऊदै नूं कहाड़ियो—'माल ल्यावो, अर तियै बरछी मांहै वाही ।' देखै घास थोथा तो है नहीं ? ताहरां बरछी एक रजपूत रै साथळ रै लागी ।—नैणसी

मुहा०—थोथा चिणा वाजै घणा—थोथा चना अधिक शब्द करता है । जिनमें गुण नहीं होते वे ही बढ़-बढ़ कर बातें करते हैं ।

२ निर्धन, कंगाल । उ०—दोनां सूं बातां करै, खरची खावै सो घर सारो थोथो कियो ।—नापै सांखलै री वारता

३ अनुपजाऊ । उ०—१ इत्यादि मोथी आदति रा अळिया । थोथी थळवट रा थळिया वेथळिया । ढीली लांगां रा ढेरा ढळकाता । टोघड़ टुकड़ां रा खेरा खळकाता ।—ऊ.का.

उ०—२ जायो तूं जिण देस, जळ ऊंडा थोथा थळां । भंवरपणा री भेस, रळयो कंठा सूं राजिया ।—किरपारांम

४ सारहीन, निकम्मा, बेकार । उ०—१ डहक्यो डंफर देख, वादळ थोथो नीर विन । हाथ न आई हेक, जळ री बूंद न जेठवा ।
—जैतदांन बारहठ

उ०—२ थोथा गैडंबर संवर विण थाया । छपनै सूमां सा आडंबर छाया । तुरत तिजोरी में जळ नै जड़ दीनूं । दे दे खांडेला खड़ नै खड़ दीनूं ।—ऊ.का.

मुहा०—थोथी बात, सारहीन बात , व्यर्थ की बकवास ।

५ मूर्ख, नासमझ । उ०—फिट रे पापी वंभणा मन रंगे रे । मूरिख जट्ट गमार लाल मन रंगे रे । फिट रे थोथा पंडिया मन रंगे रे । मूळ न समझै गमार लाल मन रंगे रे ।—प.च.चौ.

थोपणो, थोपबो—क्रि०स० [सं० स्थापन] १ जमाना, रखना ।
उ०—जांण्यो बीडो चनण रो, आसी वास सुवास । जे जांणूं क इरंड हो, पग नी थोपूं पास ।—अज्ञात

२ आरोपित करना, मत्थे मढ़ना, लगाना ।

थोंबणहार, हारौ, (हारी) थोंबणियौ—वि०।
थोंबवाड़णौ, थोंबवाड़बौ, थोंबवाणौ, थोंबवाबौ, थोंबवावणौ, थोंबवावबौ, थोंबाड़णौ, थोंबाड़बौ, थोंबाणौ, थोंबाबौ, थोंबावणौ, थोंबावबौ—प्रे०रू०।
थोंबिग्रोड़ौ, थोंबियोड़ौ, थोंब्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थोंबीजणौ, थोंबीजबौ—कर्म वा०।

थोंबियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ जमाया हुआ, रखा हुआ. २ आरोपित किया हुआ, मत्थे मढ़ा हुआ, लगाया हुआ।
(स्त्री० थोंबियोड़ी)

थोद—देखो 'थोंम' (रू.भे.)

थोवड़—देखो 'थोवड़ौ' (मह., रू.भे.) उ०—करहा नीरूं जउ चरइ, कंटाळउ नइ फोग। नागरवेलि किहां लहइ थारा थोवड़ जोग।
—ढो मा.

थोवड़ियौ—देखो 'थोवड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

थोवड़ौ–सं०पु० [सं० तुवर=श्मश्रुहीन (मुख) अथवा फा० तोबर] मुँह, मुख (अवज्ञा, व्यंग)
मुहा०—थोवड़ौ सुजाणौ—मुँह फुलाना, नाराज होना।
अल्पा०—थोवड़ियौ।
मह०—तोवड़, थोवड़।

थोवणौ, थोवबौ—देखो 'थोभणौ, थोभबौ' (रू.भे.)

थोवणहार, हारौ (हारी), थोवणियौ—वि०।
थोववाड़णौ, थोववाड़बौ, थोववाणौ, थोववाबौ, थोववावणौ, थोववावबौ, थोवाड़णौ, थोवाड़बौ, थोवाणौ, थोवाबौ, थोवावणौ, थोवावबौ—
—प्रे०रू०।
थोविग्रोड़ौ, थोवियोड़ौ, थोव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थोवीजणौ, थोवीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

थोवली–सं०स्त्री० [सं० स्तम्भ्+रा०प्र०ली] वह खंभा जो किसी बोझ को रोकने के लिये नीचे से लगाया जाय। सहारे का खंभा, चांड।
रू०भे०—थंवली, थंबी, थंभली, थांवली, थूंबली, थूंभली, थेगली।

थोवियोड़ौ—देखो 'थोभियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थोवियोड़ी)

थोबौ–स०पु०—१ बछड़े द्वारा दुग्धपान करते समय थनों पर लगाया जाने वाला मुँह का धक्का, टक्कर।
क्रि०प्र०—देणौ, लगाणौ।
[सं० स्तम्भ] २ सहारा, आश्रय।
रू०भे०—थेबो।
३ स्तम्भ, खंबा।

थोभ–सं०पु० [सं० स्तम्भ] १ स्तम्भ, खंबा। उ०—मूकइ वनि सूंडी तगाउ, नेम न पुहुंचइ लोभ। कोइलि जि कदळी तणी, किम करि थोहरि थोभ।—मा.कां.प्र.
२ रुकावट, रोक। उ०—१ केतेक दिवस दीधउ कीए, पिण थिर थोभ न को थयउ। 'समयसुंदर' कहइ सत्यासीया, तेतइं तूं ब्यापी गयउ।—स.कु.
उ०—२ जठै संगर रौ भार आप माथै ओढि गुजर धरा रौ कपाट होय आपरा १२ बारह सै वांनैतां समेत काठो अरणदेव चंद्रहास रा चौड़ा वाढ़ चलावण रै काज प्रथीराज रा वीरां रै थोभ लगाइ लड़ियौ।—वं.भा.
३ सीमा, हद। उ०—द्रव दे दे गिण नगण दे, बलि निज देह विराट। पेस लोभ रौ थोभ प्रभु, बावन वण्या विराट।
—रेवतसिंह भाटी
मुहा०—लोभ रौ कांई थोभ—लालच की कोई सीमा नहीं होती है।

थोभणौ, थोभबौ–क्रि०स० [सं० स्तम्भ्] १ रोकना। उ० –१ गैदंतौ पाडा छुरो, आरण अचळ अघट्ट। भूंडण जणै सु भू भजो, थोभै अरियां थट्ट।—हा.झा.
२ किसी गिरती हुई वस्तु को अधर में रोक लेना, ठहरा लेना, पकड़ लेना। उ०—१ साजि कनक अंबरां भीड़ सिंधुरां दरग्गहि। सुकवि सोभ संभरै थोभि नभ धरै जिसा महि।—रा.रू.
उ०—२ आयौ जोधांणे 'अजो', थोभंतौ असमांन। साथे सहिजादौ दुरग, संग सुजायत खांन।—रा.रू.
३ सहारा देना। उ०—ग्रेक प्रजा ग्रेम ऊचळी, ग्रेक इसिउ ग्रे थंभ। मुझ मति प्रापि, महामति, तुं खिति थोभण थंभ।—मा.कां.प्र.
क्रि०अ०—डटना, रुकना, ठहरना। उ०—ईसरहरौ थोभियौ अण-भंग, धसतौ ऊससतौ कुळ धोड़। डार सनाह जाऊते दूजै, रिणि रोहै सोहै राठोड़।— नरपाळ राठोड़ रो गीत
थोभणहार, हारौ (हारी), थोभणियौ—वि०।
थोभवाड़णौ, थोभवाड़बौ, थोभवाणौ, थोभवाबौ, थोभवावणौ, थोभवावबौ, थोभाड़णौ, थोभाड़बौ, थोभाणौ, थोभाबौ, थोभावणौ, थोभावबौ—प्रे०रू०।
थोभिग्रोड़ौ, थोभियोड़ौ, थोभ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थोभीजणौ, थोभीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।
थोवणौ, थोवबौ—रू०भे०।

थोभियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ रोका हुआ. २ किसी गिरती हुई वस्तु को अधर में रोका हुआ, थामा हुआ. ३ सहारा दिया हुआ. ४ रुका हुआ, डटा हुआ, ठहरा हुआ।
(स्त्री० थोभियोड़ी)

थो'र–उभ०लि०—एक प्रकार की एक ही जड़ पर पनपने वाली गुल्म जिसमें लचीली टहनियां नहीं होती हैं। गांठों से गुल्ली या डंडे के आकार के डंठल निकलते हैं। इसके डंठलों और पत्तों में एक प्रकार का कड़ुवा दूध भरा रहता है जो औषधियों में काम आता है। यह प्रायः पहाड़ियों की तराई में उगती है।
पर्या०—महातरु, सेंहुड।
रू०भे०—थूर, थूहर, थोहर, थोहरि, थोहरी।

थोरणौ, थोरबौ-क्रि०स०—आग्रह करना, अनुरोध करना, किसी बात मनाने के लिये गरज करना। उ०—जसां मालू नै जगावै छै, मांगै ज्यूं मंगावै छै। म्यारांमजी कैफ में घोरांणा, मालू नै ग्रहणां थोरांणा। म्यारांमजी नै जगावै मालू, तौ थांको जनम को दाळद पालूं।—मयारांम दरजी री वात

२ देखो 'थूरणौ, थूरबौ' (रू.भे.)

थोरणहार, हारौ (हारी), थोरणियौ—वि०।

थोरिप्रोड़ो, थोरियोड़ो, थोरचोड़ो—भू०का०कृ०।

थोरीजणौ, थोरीजबौ—कर्म वा०।

थोरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ आग्रह किया हुआ, अनुरोध किया हुआ, गरज किया हुआ. २ देखो 'थूरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० थोरियोड़ी)

थोरियौ-सं०पु०—थूहर का फल।

थोरी-सं०पु०—भीलों की तरह की एक जाति, अथवा इस जाति का व्यक्ति।

थोरु—देखो 'थो'र' (रू.भे.) उ०—रितुराउ वसंतनउ प्रणधि, उद्यांन वन मांहि आंणिउ, विळासीए वखांणिउ, साकर नी पाळि दूधि पायउ, कोइल तणै व्रिंद छायाउ, रूपि सुचगु नम्यउ, नवरंगु थुडि थोरु पथिक वधूजन चित्त चोरु।—व.स.

थोरौ-सं०पु०—आग्रह, अनुरोध, निहोरा।

उ०—स्वांमी फळ दरसण तणौ, करदै खोटी करसणां। कर जोड़ इतो थोरौ करूं, दीज्यौ मोरौ दरसणां।—ऊ.का.

थोलउं—देखो 'थोड़ो' (रू.भे.) उ०—जइ कुरमांणउं तोइ नागरखंडउं पांत, जइ थोलउं तोइ सत्पात्रि दांनु।—व,स.

थोलौ-सं०पु० (देश०) तलवार की मूठ का निचला भाग जिस से मूठ के पकड़ने के भाग को मजबूती के साथ लगाया जाता है।

थोवौ-वि०—थोड़ा। उ०—मध्य अनंतानंत छयें में, थोवा सिद्ध अनंता। एक निगोदी जीव अनंता, वळिय वनस्पति वंता।—ध.व.ग्रं.

थोहर, थोहरि, थोहरी—देखो 'थो'र' (रू.भे.) उ०—१ सूकइ वनि सूडी तणउ, लेस न पहुंचइ लोभ। कोइलि जि कदळी तणी, किम करि थोहरि थोभ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ थांणू थोहरि थूंकणी, थगि थगि थापटि थाग। थळि थळि थांणे थिर रहइ, थूयाहूली थाप।—मा.कां.प्र.

थौ-सं०पु०—१ संग. २ गमन. ३ मन. ४ मोह, प्रेम. ५ अष्टसिद्धि (एका.)

क्रि०अ० [सं० स्था] एक शब्द जिस से भूतकाल में होना सूचित होता है। राजस्थानी के 'छै' अथवा 'है' का भूतकाल। उ०—१ पछै राव जिण वड़ हेठै बैठो थौ, सु वड़ लोही वूठो।—नैणसी

उ०—२ तिण रै बेटी न थौ, तरै राव रांणंगदे री बैर राव केल्हण नूं कहाड़ियौ।—नैणसी

थौको-सं०पु०—समूह। उ०—रै झौका सीरांमं, तूं सातै ताळ वेधण तीरं। थूरै देतां थौका, दीनां चा नाथ जगदाता।—र.ज.प्र.

थौड—देखो 'थोड' (१) (रू.भे.)

थ्यावस-सं०पु० [सं० स्थेयस] १ ठहराव, स्थिरता. २ धैर्य, धीरता।

थ्यु, थ्यौ-भू०का०कृ० [सं० स्था] १ स्थित. २ हुआ।

उ०—ब्रांह्म[ण] नि तां वरूण करतां सिंधु त थ्यु मारुआडि, तु सूं पुण्य करयूं मि मन सूं, चिता पांमि हाडि।—नळाख्यांन

द—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का अठारहवां व्यञ्जन तथा तवर्ग का तीसरा अक्षर जिसका उच्चारण स्थान दंतमूल है। यह अल्पप्राण है और इसमें संवार, नाद और घोष नामक बाह्य प्रयत्न होते हैं।

दं-सं०पु०—१ इन्द्र. २ युग. ३ अभिमान. ४ दंड।

सं०स्त्री०—दैत्य की स्त्री (एका.)

दंग-वि० [फा०] १ विस्मित, चकित, आश्चर्यान्वित।

उ०—सिवरी मत भंग भयो जिण सेती, खार हुवो जळ गंग खरो। कहियो रिख दंग कहा अब कीजियै, ढंग न को हरि अंग वरो।
—भगतमाळ

क्रि०प्र०—रैणो, होणो।

सं०पु०—१ घबराहट, भय।

सं०स्त्री० [देश] २ चिनगारी, अग्नि-कण। उ०—इक राह चाह लागो असुर; निर सहाय प्राकार नव। 'अवरंग' प्रथी पर उलटियौ, दंग प्रगट्टयो जांण दव।—रा.रू.

३ देखो 'दंगो' (मह., रू.भे.)

दंगइ-वि० [फा० दंग+रा०प्र०ई] १ दंगा करने वाला, फिसादी, लड़ाका, उपद्रवी. २ प्रचंड, उग्र।

दंगणो, दंगबो—देखो 'दागणो, दागबो' (रू.भे.) उ०—आधी रातै 'रोलू' अंगण, डस्यो साप काळै जम डंडण। मूवो जांणि'लै चाल्या दंगण, सन्मुख मिळचा 'खरतरगच्छ' मंडण।—ऐ.जै.का.सं.

दंगर-सं०पु०—शत्रु। उ०—उछट अंगरां धार रीझां करण अधपति खत्री दळ दंगरां हियै खटकै 'मांन' राजा तणा दिया मातंगरां। लंगरां घणा अदतार लटकै।—महादांन महडू

दंगळ-सं०पु० [फा० दंगल] १ पहलवानों की कुश्ती, मल्ल-युद्ध।

उ०—आणंद मंगळ आह, नित दंगळ होता नया। पण जंगळ पतसाह, जस खाटण लीन्हो 'जसा'।—ऊ.का.

२ युद्ध, लड़ाई। उ०—तठै 'सवळावत' 'सूरतसींघ'। सझै खळ दंगळ मोहणसींघ।—सू.प्र.

३ मल्ल-युद्ध का स्थान, अखाड़ा।

मुहा०—दंगळ में उतरणो—कुश्ती लड़ने के लिए अखाड़े में आना। घर के जंजाल में आना। किसी लड़ाई या प्रतियोगिता में किसी की बराबरी में खड़ा होना।

४ खेल, तमाशा. ५ समूह, जमात, मण्डली।

दंगियोड़ो—देखो 'दागियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दंगियोड़ी)

दंगो-सं०पु० [फा० दंगल] १ झगड़ा, उपद्रव। उ०—सहर में रोळारो! हिंदू मुसळमांनां री दंगो कांनी-कांनी।—वरसगांठ

उ०—२ बवोई भर रा मोवाळियां अर दादां रो अड्डो। कोरी मुसळमांनां री वस्ती अर बडी खतरनाक जगै। दंगा-दोड़ा रा दिनां में तो भींडी बाजार मुसळमांनां रो खास गढ बण जाया करै हो।
—रातवासो

यौ०—दंगा-दोड़, दंगा-फिसाद।

२ शोर-गुल, हुल्लड़।

मह०—दंग।

दंठेल-वि०—जबरदस्त, बड़ा। उ०—सांवळा हुवा चहुंआंण संग। राठोड़ तणा चख चोळ रंग। भारात हाथ वावंत भील। फाटका कटै दंठेल फील।—पा.प्र.

दंड-सं०पु० [सं०] १ दो गणगण के दूसरे भेद का नाम. २ काव्य छंद का भेद विशेष. ३ ३६ प्रकार के दंडायुद्ध में से एक (व.स.)

४ देखो 'डंड' (रू.भे.) उ०—१ उठै तीन लोकां तणो दंड आवै। नरां हैमरां गैमरां पार ना'वै।—सू.प्र.

उ०—२ पुरुख कोए करि जु हासूं, तेहनि दंड देवु निरधार। तु हूं रहूं तह्मारि पासि, जिहां आवि माहारु भरथार।—नळाख्यांन

दंडक-सं०पु० [सं०] १ डंडा. २ दंड देने वाला पुरुष, शासक. ३ छंदों का एक वर्ग (जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो।)

उ०—एक सिलोक का वणाव सो बतीस अखिरू से लेकरि चौरासी अखिरू लग लही, इस ऊपर होय सो दंडक कहियै।—सू.प्र.

५ वह छंद जो दो छंदों को मिला कर बनाया जाय (र.ज.प्र.)

६ इक्ष्वाकु राजा का एक पुत्र. ७ दंडकारण्य. ८ एक प्रकार का वात रोग. ९ युद्ध राग का एक भेद. १० जैन मतानुसार प्राणी अपने कर्मों का दण्ड भोगे उन स्थानों का एक समूह, जाति या वर्ग विशेष जो चौवीस माने गये हैं।

वि०वि०—पुराणानुसार अंडज, स्वेदज, उद्भिज और जरायुज को चौरासी लाख योनियों में विभक्त किए गयेहैं जिनमें—

मनुष्य	—	चार लाख	पशु	—	तीस लाख
पक्षी	—	दस लाख	कृमि	—	ग्यारह लाख
स्थावर	—	बीस लाख	जलजंतु	—	नौ लाख
					कुल चौरासी लाख

किन्तु जैनमतानुसार उक्त चौरासी लाख योनियों को चौवीस दण्डकों में विभक्त किया गया है जो निम्न प्रकार हैं—

सात लाख	पृथ्वीकाय	एक दण्डक
सात ,,	अपकाय	,, ,,
सात ,,	तेऊकाय	,, ,,
सात ,,	वाऊकाय	,, ,,
चौदह ,,	साधारण वनस्पतिकाय	
दस लाख	प्रत्येक वनस्पतिकाय	,, ,,

दो	,,	बे-इन्द्रिय	एक दण्डक
दो	,,	ते-इन्द्रिय	,, ,,
दो	,,	चौ-इन्द्रिय	,, ,,
चार	,,	तिर्यंच पंचेन्द्रिय	,, ,,
चौदह	,,	मनुष्य योनि	,, ,,
चार	,,	नरक	,, ,,
चार	,,	देवता	तेरह दण्डक
कुल चौरासी लाख योनियों			कुल चौवीस दण्डक

रू०भे०—डंडक।

दंडकळ—देखो 'दंडकळा' (रू.भे.)

दंडकळस—सं०पु०—ध्वजडंड और कलस ? उ०—वालीग्र गोरि जाळि प्रवाह छूटइ, वंध फुटइ, देहरि दंडकळस आमलसारा सोना तणा जळकइ।—व.स.

दंडकळा—सं०स्त्री० [सं०] एक छंद जिसमें १०,८ और १४ के विराम से ३२ मात्राएं होती हैं किन्तु इसमें जगण न आना चाहिये।

दंडकार, दंडकारण, दंडकारण्य, दंडकारौ—सं०पु० [सं० दंडकारण्य] वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था (रामायण)

वि०वि०—दंडक नामक इक्ष्वाकु राजा के पुत्र ने एक बार अपने गुरु शुक्राचार्य्य की कन्या का कौमार्य्य भंग किया। इस पर शुक्राचार्य्य ने शाप देकर इन्हें इनके पुर सहित भस्म कर दिया। इनका देश जंगल हो गया और दंडकारण्य कहलाने लगा।

उ०—१ वनां दंडकारा विचै पंचवट्टी। जठै धार गोदावरी आय जट्टी।—सू.प्र.

उ०—२ जुथां दंडकारां घरै भेख जू जो। दतां भेख हेको त्रिगां भेख दूजो।—सू प्र.

दंडगौरी—सं०स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

दंडजात्रा—सं०स्त्री० [सं० दंडयात्रा] १ सेना की चढ़ाई. २ दिग्विजय के लिये प्रस्थान. ३ वरयात्रा, वरात।

दंडण—सं०पु० [सं०] दंड देने की क्रिया, शासन।

दंडणी—सं०स्त्री०—दंड देने वाली। उ०—देवी दंडणी देव वेरी उदंडा। देवी वज्जया जमा देतां विखंडा।—देवि.

दंडणौ, दंडबौ—देखो 'डंडणौ, डडबौ' (रू.भे.)

उ०—भूप रघुवर, सभत धनु सर, जूभ मंडे, दैत दंडे।—र.ज.प्र.

दंडणहार, हारौ (हारी), दंडणियौ—वि०।

दंडवाड़णौ, दंडवाड़बौ, दंडवाणौ, दंड़वाबौ, दंडवावणौ, दंडवाववौ, दडाड़णौ, दंडाड़बौ, दंडाणौ, दंडावौ, दंडावणौ, दंडाववौ—प्रे०रू०।

दंडिग्रोड़ौ, दंडियोड़ौ, दंडयोड़ौ—भू०का०कृ०।

दंडीजणौ, दंडीजबौ—कर्म वा०।

दंडतांम्री—सं०स्त्री० [सं०] वह जलतरंग वाजा जिसमें तांबे की कटोरियां काम में लाई जाती हैं।

दंडधर, दंडधार—सं०पु० [सं०] १ यमराज (डि.को.) २ सन्यासी. ३ शासन-कर्त्ता।

वि०—डंडा रखने वाला।

दंडनायक, दंडनायिक—सं०पु० [सं० दंडनायक] १ दंड विधान करने वाला राजा या हाकिम। उ०—पुरोहित, दंडनायिक सेनापति पुंतार अस्ववाहक प्रतीकारआरिक।—व.स.

२ सेनापति। उ०—स्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा, देवगरणा नायक दंडनायक अंगलेखक।—व.स.

३ सूर्य के एक अनुचर का नाम।

दंडनीति—सं०स्त्री० [सं०] दंड देकर अर्थात् पीड़ित कर के शासन में रखने की राजाओं की नीति।

दंडापांणि—सं०पु० [सं० दंडापाणि] १ काशी में भैरव की एक मूर्ति. २ यमराज।

दंडपात—सं०पु० [सं०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमें रोगी को नींद नहीं आती है और पागलों की भांति इधर-उधर घूमता है।

दंडपाळक—सं०पु० [सं० दंडपालक] द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।

दंडपासक—सं०पु० [सं० दंडपाशक] १ दंड देने वाला प्रधान कर्मचारी। २ जल्लाद, घातक।

दंडवाळधि—सं०पु० [सं० दण्ड वालधि] हाथी।

दंडमुद्रा—सं०स्त्री० [सं०] १ तंत्र की एक मुद्रा जिसमें मुट्ठी बांध कर बीच की उँगली ऊपर को खड़ी करते हैं. २ साधुओं के दो चिन्ह—दंड और मुद्रा।

दंडयांम—सं०पु० [सं० दण्डयाम] १ यमराज. २ दिन, दिवस. ३ अगस्त्य मुनि।

दंडलक्षण—सं०पु० [सं०] ७२ कलाओं में से एक कला।—व.स.

दंडवत—देखो 'डंडोत' (रू.भे.) उ०—राजा स्नांन कर दिव्य देह होय, देहरा मांही जाय देवी नूं दंडवत करी, दरसण किया।
—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—दंडव्रत।

दंडवासी—सं०पु० [सं०] १ गांव का हाकिम, मुखिया. २ द्वारपाल।

दंडविधि—सं०स्त्री० [सं०] अपराधों के दंड से सम्बन्ध रखने वाला नियम या व्यवस्था, जुर्म और सजा का कानून।

दंडव्यूह—देखो 'डडव्यूह' (रू.भे.)

दंडव्रत—देखो 'डंडोत' (रू.भे.) उ०—मुख मंद हास आणंदमय, आराधित अहि नर अमर। दंडव्रत तूझ मारण दयत, वारण तारण लच्छिवर।—सू.प्र.

दंडा—सं०स्त्री०—पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक कला। (उ.र.)

दंडाउछणउ [सं० दण्डकपुञ्छनम्] (उ.र.)

दंडाक्ष—सं०पु० [सं०] चंपा नदी के किनारे का एक तीर्थ।

दंडाधिपति—सं०पु०—मुख्य न्यायाधीश।

उ०—१ अंगलेखक भांडागारिक संधिविग्रही साहणी मसाहणी पड-

माहणी नळवगी, दंडाधिपति प्रतिहार आरक्षक । (व.स.)

उ०—२ तीणि नगरि, सांमंत मंडळेस्वर मंत्रि महामंत्रि, स्रेस्ठि सारथवाह पुत्र दंडाधिपति प्रहक प्रमुखलोकसेव्यमान । (व.स.)

दंडापतानक-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का वातरोग जिस से मनुष्य का शरीर सूने काठ की तरह जड़ हो जाता है ।

दंडायुध-सं०पु० [सं० दंड+आयुध] दण्ड देने योग्य आयुध अस्त्र-शस्त्र।

उ०—१ छत्रीसइ दंडायुध लीधां, पंडगि पड्यां तिणि वार। आस्या-पुरी मकति कर जोडी, रावळि करिउ जुहार ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ ऊपरि अनुळीवळ चढ़िया, वीरा वंस विसुद्ध। दंडायुध छत्रीस करि करि सदाइ युद्ध ।—मा.कां.प्र.

२ दण्ड देने के आयुध को धारण करने वाला ।

दंडाहड़ि-सं०पु०—होलिका पर ढोल की ताल के साथ परस्पर डंडों को टकरा कर किया जाने वाला नृत्य विशेष ।

उ०—वाजे इसैं विनांणि, खग ढानां सिर खाटखड़ि। रमै महा रिण रूक रस, जोध दंडाहड़ि जांणि ।—वचनिका

रू०भे०—दंडीहड़, दंडेहड़, दंडेहलि।

दंडिका-सं०स्त्री० [सं०] बीस अक्षरों की एक वर्ण वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण के उपरांत एक जगण, इस प्रकार गणों का जोड़ा तीन बार आता है और अंत में गुरु लघु होता है ।

दंडित-वि० [सं०] जिसे दंड मिला हो, दंड पाया हुआ ।

रू०भे०—दंड्यो ।

दंडियोड़ी—देखो 'डंडियोड़ी' (रू.भे.)

(स्त्री० दंडियोड़ी)

दंडी— देखो 'डंडी' (रू.भे.)

दंडीहड़, दंडेहड़, दंडेहलि—देखो 'दंडाहड़ि' (रू.भे.)

दंडोत—देखो 'डंडोत' (रू.भे.)

दंड्यो— देखो 'दंडित' (रू.भे.) (डि.को.)

दंत—देखो 'दांत' (रू.भे.) उ०—१ वाभी दिन दिन बोल में, कहता वढ़णी कंत। हमैं निहारो हाथियां, देवर पाड़ै दंत ।—वी.स.

उ०—२ फवै वग्ग पंती आगै दंत फोजं। गजां वाजि वीजं खिवै सीस गज्जं ।—वचनिका

दंतक-सं०पु० [सं०] १ पहाड़ की चोटी. २ पहाड़ से निकलने वाला एक प्रकार का पत्थर. ३ देखो 'दांत' (रू.भे.)

दंतकट्ठ—देखो 'दंतकास्ट' (रू.भे.) (जैन)

दंतकथा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] ऐसी बात जिसका कोई पुष्ट प्रमाण न हो, जिसे बहुत दिनों से लोग एक दूसरे से सुनते चले आए हों, सुनी-सुनाई बात, जनश्रुति ।

रू०भे०—दांत-कथ, दांत-कथा ।

दंतकरम्म-सं०पु० [सं० दंतकर्म] ७२ कलाओं में से एक कला (व.स.)

दंतकास्ट-सं०पु० [सं० दंतकाष्ठ] दतून, मुखारी।

रू०भे०—दंतकट्ठ ।

दंतकुळी-सं०पु० [सं० दंत+कुली] १ दांतों का ढेर, दांतों का समूह । उ०—दंतकुळी अंगुळी, करी कोपरी कपाळां । वीच सेत विल्वरी, फरी विहरी किरमाळां ।—रा.रू.

२ हाथी; गज ।

दंतच्छद-सं०पु० [सं०] ओष्ठ, ओठ (डि.को.)

दंतड़—देखो 'दांत' (मह., रू.भे.)

दंतड़ो—देखो 'दांत' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ जलले हूंदा दंतड़ा, बूबन हूंदा गाल । जांणे कंचन ऊपरां, भलां धिराजी लाल ।

—जलाल बूबना री वात

उ०—२ दुरै निहारै दंतड़ा, बादळ दांमणियांह । अति ऊजळ त्यां आगळी, की हीरा कणियांह ।—बां.दा.

दंतदरसण-सं०पु० [सं० दंतदर्शन] क्रोध या चिड़चिड़ाहट में दांत निकालने की क्रिया ।

दंतधावण-सं०पु० [सं० दंतधावन] १ दातुन करने की क्रिया. २ दतौन, दातुन. ३ करंज का पेड़. ४ मौलसिरी. ५ खैर का पेड़, खदिर वृक्ष।

दंतपुप्पुट-सं०पु० [सं०] मसूड़ों का एक रोग जिसमें वे सूख जाते हैं और दर्द करते हैं ।

दंतमूळ-सं०स्त्री० [सं० दंतमूल] १ दंतमूल. २ दांत का एक रोग ।

दंतल—देखो 'दांतलो' (मह., रू.भे.)

दंतली-सं०स्त्री० [सं० दंत+रा.प्र.ली] १ आभूषणों पर खुदाई करने का एक उपकरण. २ देखो 'दांत' (४) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—सूअर वाही दंतळी, जाय रड़क्की हड्ड । भाई हुवै सो बाहुड़ै, गये विडांणें छड्ड ।—डाढ़ाळा सूर री वात

वि०—बड़े-बड़े दांतों वाली ।

दंतलू-सं०पु०—देखो 'दांत' (४) (अल्पा , रू.भे.)

उ०—जडंते है डोरी लथोवथ होय जावै। एकलगिड वाराहूँ की दतलूं झड़ ओझड़ ऐसे दरसावै ।—सू.प्र.

दंतलो—देखो 'दांतलो' (रू.भे.)

(स्त्री० दंतली)

दंतवा-सं०पु०—डाढ़ों या दांतों पर गालों के बाह्य भाग पर होने वाला फोड़ा ।

दंतवाळो-सं०पु० [सं० दंतावल] हाथी, गज (डि.को.)

दंतसंकु-सं०पु० [सं० दंतशंकु] चीर-फाड़ का एक औजार जो जौ के पत्तों के आकार का होता था । (सुश्रुत)

दंतसकट-सं०पु० [सं० दंतशकट:] हाथी दांत का बना रथ विशेष (उ.र.)

दंताजुध-सं०पु० [सं० दंत+आयुध] जंगली सूअर ।

दंताळ-सं०पु० [सं० दंत+आलुच्] १ श्रीगणेश, गजानन ।

२ देखो 'दंतावळ' (मह. रू.भे.) (डि.नां.मा.; डि.को.)

उ०—थापलि कुंभाथळां, बाप बोलां बिरदाया । तुरकां दळ रणताळ, दळण दंताळ दगाया ।—मे.म.

वि०—१ बड़े दांतों वाला. २

उ०—भरणसाल भीजइं, क्षरण एक रेलि लीजइं, मारग निसंचर भेद्या निरंतर, वयार ऊलटइं, दंताळ वाहीइं, वयार गाहीइं ।—व.स.

दंताळद्रप-सं०पु० [सं० दंतावल+दर्पक] गजासुर को मारने वाला, महादेव (डि.को.)

दंताळपत्र-सं०पु० [सं० दंत+आलुच्+पत्रम्] कविता रूप में किसी गांव या भूमि का सनद पत्र।

दंताळय-सं०पु० [सं० दंत+आलय] दांतों का स्थान, मुख।

दंताळिका-सं०स्त्री० [सं० दंतालिका] लगाम ।

दंताळियौ—१ देखो 'दंताळी' (अल्पा. रू.भे.)

२ देखो 'दंतावळ' (अल्पा., रू.भे.)

दंताळी-सं०स्त्री० [सं० दंत+आलुच्+रा.प्र.ई] १ घास-फूस एकत्रित करने, क्यारियां बनाने अथवा रेत, खाद आदि के ढेर को छितराने का लकड़ी का कंघे की भांति, बड़े दांतेदार एक उपकरण ।

उ०—जाय देखै तो आगै ठाकुर रै माथै तो रुमाल छै, घोड़ां रै ठांण दंताळी देवै छै ।—ठाकुर जैतसिंह री वारता

रू०भे०—दांताळी ।

[सं० दंतालिका] २ लगाम ।

अल्पा०—दंताळियौ ।

वि०स्त्री०—बड़े-बड़े दांतों वाली ।

दंताळौ-वि० [सं० दंत+आलुच्] (स्त्री० दंताळी) १ बड़े-बड़े दांतों वाला ।

२ देखो 'दंतावळ' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

उ०—बैठी दरीखांने तीख चौख री करेवा वातां, अनेकां ठौड़ री ख्यातां सुणेवा आजांन । दंताळा दुसाला ताजी मदीलां दुपट्टां देवा, रूपगां महोला लेवा पधारो राजांन ।

—रतलांम नरेस वळवंतसिंह री गीत

दंतावळ, दंताहळ-सं०पु० [सं० दंतावल] १ हाथी, गज । (डि.को.)

उ०—अेकल करण अहार, दंतावळ ज्यां दूसरा । पळ भर पाळणहार, प्रगटचौ सिंघ प्रतापसी ।—फतहकरण ऊजळ

अल्पा०—दंताळियौ, दंताळौ ।

मह०—दंताळ ।

दंतियौ—१ सोने या चांदी के आभूषणों पर दानेदार खुदाई करने का एक औजार. २ देखो 'दांतलौ' (रू.भे.)

दंती-सं०पु० [सं० दंतिन्] १ हाथी, गज (डि.नां.मा., अ.मा., डि.को.)

उ०—१ दांणव दळि जिम दडवडंतु दंती देखी नइ, धायउ अरजुनु धसमसंतु वयरी मूंकी नइ।—पं.पं.च.

२ अंडी की जाति का एक पेड़. ३ जमालगोटा.

४ देखो 'दांत' (रू.भे.) उ०—मारू मारइ पहियडा, जउ पहिरइ सोवन्न । दंती, चूडइ, मोतियां, त्रीयां हेक वरन्न ।—ढो.मा.

५ प्रथम लघु से पांच मात्रा का नाम । (डि.को.)

वि०—दांतों वाला, जिसके दांत हों । उ०—१ के दंती स्रंगी किता, किता नखी वन जंत । समझाया दे दे सजा, सादूळै बळवंत ।

—बां.दा.

उ०—२ मारू-मारू कळाइयां, उज्जळ-दंती नारि । हसनइ दे हुँकारड़उ, हिवड़उ फूटणहारि ।—ढो.मा.

उ०—३ निरमळ कमळ सकोमळ नारी । सुत देसळ गाअैं स विचारी । वारंगनाह सती विकसंती । दौलतवंती दाड़िम-दंती ।—ल.पि.

मह०—दंतील ।

[सं० दंत्य] २ (वर्ण) जिसका उच्चारण दांत की सहायता से हो—जैसे तवर्ग. ३ दंत सम्बन्धी. ४ दांतों का हितकारी (औषध)

दंती-उडांण-सं०पु०यौ० [सं० दंती=हस्ती+रा. उडांण] हाथियों का उड़ाने वाला, हाथियों का संहार करने वाला, भीमसेन ।

दंती-धावक-सं०पु०यौ० [सं०] इन्द्र (अ.मा.)

दंतीभख-सं०पु०यौ० [सं० दंती+भक्ष्य] पीपल का वृक्ष (डि.को.)

दंतील—देखो 'दंती' (मह., रू.भे.) उ०—जोड़ै हेक पाया नीर बाकरी बाघ रा जूह, उडाया दंतील गैणाग रा ज्यूं अरेस । हरोळां चलाया कै खाग रा वाह सुत हेकै, हलाया जेव मैं दली आगरा हमेस ।

—चैनजी सांदू

दंतीलौ—१ देखो 'दांतलौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दंतीली)

२ देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)

दंतुर-सं०पु० [सं०] १ ४९ क्षेत्रपालों में से ३४ वां क्षेत्रपाल.

२ हाथी (डि.नां.मा.) ३ सूअर, वराह ।

वि०—जिस के दांत आगे निकले हों, दंतुला ।

दंतुळ-सं०पु० [सं० दंतुल] हाथी, गज (डि.नां.मा.)

दंतुली-वि०स्त्री० [सं० दंतुल] १ जिस के दांत आगे निकले हों, दंतुली ।

२ देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)

दंतुलौ—१ देखो 'दांतलौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दंतुली)

सं०पु०—२ देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)

दंतुसळ, दंतुसळि, दंतूसळ, दंतूसळय, दंतूसळि-सं०पु० [सं० दंतमुसल: या दंतस्य सल्लं] हाथी या सूअर का बाहर निकला हुआ दांत, आगे निकला हुआ लंबा दांत । (उ.र.)

उ०—१ सावळ दंतुसळां, घाट फवियौ दीपक घट । कमळ पंख जिम कमळ, झेल घण हुवौ खगां झट ।—सू.प्र.

उ०—२ काळी घड़ पावस कंवलयं, वक पंगति दीप दंतूसळयं ।

—गु.रू.वं.

उ०—३ दंतूसळूं की औझड़ घोड़ भड़ां सूं लड़ते हैं । जाजुळमांन जोधार सेलूं सें जड़ते हैं । ऐसे वराहू के ऊपर घण वीजूजळां का घाव ।—सू.प्र.

उ०—४ दंतूसळ मुखि दिनकर झळकै, उर मणि फणि मणिहार ।

पहिलो दंद पुराण अगोचर, प्रगमीजइ प्रतिहार।—रुकमणी मंगळ

नोट:—चूंकि गणेशजी का मुख भी हाथी के मुख के समान होता है अत: उनके आगे निकले हुए दांत के लिए भी 'दंतूसळ' शब्द का प्रयोग होता है जैसा कि उपर्युक्त चतुर्थ उदाहरण में हुआ है ।

दंतैरू—सं०पु०—बच्चों के मुंह, गाल, ललाट या शिर पर होने वाला फोड़ा विशेष ।

दंद—देखो 'दुंद' (रू.भे.) उ०—भूंडण भूंडो नह जणै, ना पिह लोपै रेह । तिण सूं पहला ठहर तूं, दंद मचावै खेह ।

—डाढ़ाळा सूर री वात

दंदभ, दंदव—देखो 'दुंदुभी' (रू.भे.) (अ मा.)

दंदसुक, दंदसूक-सं०पु० [सं० दंदशूक] १ सांप, नाग (अ मा., ह.नां.) २ राक्षस विशेष ।

दंदोळी—वि० [सं० द्वंद्व+रा०प्र० ओळी] उत्पात मचाने वाला, उपद्रवी। उ०—मावीतां हो नां मनै, दुख द्ये दंदोळी । गरढ़ै न सरै का गरज, नांणै विण नोळी ।—घ.व.ग्रं.

दंदौ—सं०पु० (देश०) १ ताल देने का एक वाद्य। (प्राचीन) २ देखो 'दुंद' (अल्पा., रू.भे.) उ०—वैठो दीठी वारणै, गोरोजी गात गयंदो रे। हरखित मनि पदमणी हुवै, दूर करेसी दंदो रे।

—प.च.च

दंधभ—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.)

दंपत, दंपति, दंपती—सं०पु० [सं० दंपती] १ पति-पत्नी का जोड़ा, दंपति । उ०—१ निमां स्यांम आई वंदी रुसनाई, पीछे रघुराजा दंपत सुख साजा ।—र.रू.

उ०—२ परस्पर दंपति संपति पाय । हिकोहिक भेट करै हरखाय ।

—मे.म.

दंबु—सं०पु०—पाटल वृक्ष । (अ.मा.)

वि०वि०—देखो 'पाडळ' ।

दंभ—सं०पु० [स०] (वि० दंभी) १ गर्व, अभिमान । उ०—तुकमां रूप खतंम फतै रा फब्बिया । देखंतां उर दंभ अरंदां दब्बिया ।

—किसोरदांन वारहठ

२ झूठी ठसक, आडंबर. ३ कपट, पाखंड (डि.को.)

उ०—हीण राव विण न्याव, न्याव ध्रिक पक्ष ऊपजै । पक्ष हीण धन सटै, हीण धन धरम न पूजै । धरम हीण स-दंभ, दंभ ध्रिक भूठ दिखावै । भूठ ध्रिक विण काज, काज ध्रिक सांम न भावै, ध्रिक सांमि क्रिया-गुण वीसरै, गुण धिकार विन हरि तरणि । सुजि ध्रिक तरणि पिय अंत सुणि, घर तकै मोटा घरणि ।—रा.रू.

३ देखो 'डांम' (रू.भे.) उ०—अतीसार ग्रहणी विखै, दंभ वतावै पंच । नाभि चिहुं दिसि च्यार दयौ, कूरम पद कै संच ।—घ.व.ग्रं. ४ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक (व.स.) ५.

उ०—सांई तेरी सेवा सच्ची, दूजी काया माय कच्ची, साता दाता माता भ्राता, तूं ही दूजा दंभा है ।—घ.व.ग्रं.

दंभणौ, दंभबौ—क्रि०अ० [सं० दंभ्] पाखंड करना, आडम्बर करना, ढोंग करना ।

दंभियोड़ौ—भू०का०कृ०—पाखंड किया हुआ, आडम्बर किया हुआ, ढोंग किया हुआ ।

(स्त्री० दंभियोडी)

दंभी—वि० [सं० दंभिन्] १ गर्वीला, अभिमानी. २ आडम्बर रचने वाला, पाखण्डी । उ०—देखै अंजस दीह, मुळकैलो मन ही मनां । दभी गढ़ दिल्लीह, सीस नमंतां सीसवद ।—केसरीसिंह बारहठ

सं०पु० [सं० दम्भोलि:] १ सुदर्शन चक्र (नां.मा.)

२ दोनों ओर मुंह वाला सांप जो काटता नहीं है । उ०—सवळी रूप धार सेखा री, छिन में कैद छुडांणी । दंभी रूप कूप 'अणदा' रै, पकड़ो लाव पुरांणी ।—इन्द्रवाई (खुड़द)

दंभोळ, दंभोळि—सं०पु० [सं० दम्भोलि:] इन्द्रास्त्र, वज्र (अ.मा., नां.मा.)

उ०—सेलां बडभागणि वेधत सेख, वातायण वाह सुहागणि वेख । हणै खळ आवड़ बिव्वड़ होल, दळै दळ चक्रक सक्र दंभोळ ।—मे.म.

दंस—सं०पु० [सं० दंश] १ कवच (डि.को.) उ०—सजै ओपरा टोप सोभा सिघाळी । जिकै भीड़ियां दंस नागोद जाळी ।—वं.भा.

२ दांत से काटने से होने वाला घाव, दंत-क्षत. ३ दांत से काटने की क्रिया, दंशन. ४ विषैले जन्तुओं का डंक. ५ दांत. ६ एक राक्षस का नाम । (महाभारत)

७ वि०—दुष्ट, पापी । उ०—पंचायण जंबुक यथा, विहिरू वायस हंस । तिम माधव नइ अवर नर, दासि न जांणउ दंस ।

—मा.कां.प्र.

दंसक—सं०पु० [सं० दंशक] डांस नाम की मक्खी, जो बड़े जोर से काटती है ।

वि०—दांत से काटने वाला, वह जो काटता हो ।

दंसटरी, दंसटरीर—देखो 'दंस्ट्री' (रू.भे.) (अ.मा.)

दंसण—१ देखो 'दरसण' (रू.भे.) (जैन)

उ०—१ संघु सयलि आणंदु, दंसण नांण चारित्त धरो । सिरि 'जिण उदय' मुणिंदु, जउ दीठउ नयणिहि सुगुरो ।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—२ तूं करुणा सागर गुण आगर, महियळ महिमावंत जी । सुर नर नायक पाय नमै नित, दंसण नांण अनंत जी ।—स्रीपाळ रास

२ देखो 'दसन' (रू.भे.)

दंसणौ, दंसबौ—क्रि०स०—काटना, डसना । उ०—गिणतां राइ 'दस' कह्यू तव, दंसु भूपति नाग । करूप अति राजा थयु, विस्मि ते जोई लाग ।—नळाख्यांन

दंसन—सं०पु० [सं० दंशन] दांत से काटने की क्रिया, डसना ।

क्रि०प्र०—करणौ ।

रू०भे०—दंमण ।

दंसियोड़ौ—भू०का०कृ०—काटा हुआ, डसा हुआ ।

(स्त्री० दंसियोड़ी)

दंसी—वि० [सं० दंशिन्] दांतों से काटने वाला, डसने वाला ।
सं०स्त्री०—छोटा डांस ।
दंस्टरी—देखो 'दंस्ट्री' (रू.भे.) (ह.नां.)
दंस्ट्र—सं०पु० [सं० दंष्ट्र] दांत ।
दंस्ट्राजुध—सं०पु० [सं० दंष्ट्रायुध] (वह जिसका अस्त्र दांत हो) शूकर, वराह ।
दंस्ट्राळ—वि० [सं० दंष्ट्राल] बड़े-बड़े दांतों वाला ।
दंस्ट्री—वि० [सं० दंष्ट्रिन्] बड़े-बड़े दांतों वाला ।
सं०पु०—१ सूअर, वराह. २ सांप, नाग ।
रू०भे०—दंसटरी, दंसटरीर, दंस्टरी ।
द—स०पु०—१ देवगण. २ खग. ३ साधु. ४ सार.
दइंत—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—ब्रह्मादिक तणउ हुग्रौ दइंतां वर ।
—महादेव पारवती री वेल
सं०स्त्री०—दया (एका.)
वि०—अपार, असीम (एका.)
दइ—१ देखो 'दई' (रू.भे.) २ देखो 'दैव' (रू.भे.)
दइगपाळ—देखो 'दिकपाल' (रू.भे.) उ०—उलंघ मेर उलंघे उदध, उलंगे दइग-पाळ । रासा वरत वेल रा, नवड परचा नाळ ।—द.दा.
दइणौ, दइबौ—देखो 'दैणौ, देबौ' (रू.भे.) उ०—चित हरखंत हुया हिमाचळ, दउडिया दइण वधाईदार ।—महादेव पारवती री वेल
दइत—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—१ नांमां देवां मांनवां, दइतां भी ग्रांण ।—केसोदास गाडण
दइतड़ी—सं०स्त्री०—एक प्रकार का पकवान, मिठाई ।
दइत-निकंद, दइत-निकंदण—सं०पु०यौ० [सं० दैत्य-निकृन्दन] दैत्यों का संहार करने वाला, भगवान, ईश्वर । उ०—नमो मछ स्रग-मंडांण मुकुंद । नमो कळि रास दइत-निकंद ।—ह.र.
दइतां-गुर—सं०पु०यौ० [सं० दैत्य+गुरु] १ शुक्राचार्य. २ रावण, दशानन ।
दइत्त—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—जटाधर अंध दइत्त जळाय । विमोहै रूप ग्रनूप बणाय ।—ह.र.
दइत्यंद्र—सं०पु० [सं० दैत्य+इन्द्र] १ वलिराजा ।
रू०भे०—दईतंद्र ।
२ देखो 'दैत्य' (मह., रू.भे.) (नां.मा.)
दइवांण—१ देखो 'दइवांण' (रू.भे.)
उ०—लड़ एण तरह नागांण लीध । दइवांण बध वन पटै दीध ।
—वि.सं.
२ देखो 'दीवांण' (रू.भे.)
दइवंत—देखो 'दैव' (रू.भे.)
दइवंत-गति—देखो 'देवगत, देवगति' (रू.भे.) उ०—रस वीर मुरधर राव, दइवंत-गति दरसाव । रिम काळ रूप नरेस, दळ अकळ निरजळ देस ।—रा.रू.
दइव—देखो 'दैव' (रू.भे.) उ०—१ सत-संगत प्रेम समरण सदा, इता थोक वंछै ग्रदै । मांगियौ मूझ द्यौ महमहण, दइव सीळ संतोक दै ।
—ज.खि.
उ०—२ अजौ बाळ अवसता लेख दइवै गढ़ लीधौ । घर छळ भड़ घूहड़ां, कटक तड़ तड़ मिळ कीधौ ।—सू.प्र.
उ०—३ पुर अंब उदैपुर जोधपुर, इम तप निजरां ग्राविया । 'जैसाह' ब्रहम 'अमरौ' त्रजट, दइव 'अजौ' दरसाविया ।—सू.प्र.
उ०—४ अवधि राज करि इधक, महल सुख कीध महाबळ । सफै त्याग असमेघ, दइव जीता वोह नृप-दळ ।—सू.प्र.
उ०—५ सासत्र विध सतसंग समाजा । राजनीति जांणं सब राजा । पह तूं सदा भेख पद पूजै । दइव विनां उपदेस न दूजै ।—सू.प्र.
दइवराय, दइग्ररायौ—१ देखो 'दईवराय, दईवरायौ' (रू.भे.)
२ देखो 'देवराज' (रू.भे.) उ०—नृपत मांन धन तपोबळ, मुरधरणनाथ निज, राइयां ग्राभरण दइवराया । वडेरां जिकां खयकरण होत विदा, ऊवरण जकै तौ सरण ग्राया ।
—जोधपुर नरेस महाराजा मांनसिंह रौ गीत
दइवांण, दइवांन—वि०—१ विशालकाय, भीमकाय । उ०—दइवांण रुद्र एकादसां, प्रांणपूर पति धरमपण । कपिराय धीय कवि मंछ कह, जय जय स्रीरघुवीर जण ।—र.रू.
२ महान्, जबरदस्त । उ०—सुज भ्रात जेठौ 'सेस' रा, दइवांन वंस दनेस रा । हृद कंज मधुप महेस रा, मन महण रूप समाथ ।
—र.ज.प्र.
३ शक्तिशाली, समर्थ । उ०—दइवांण उद्रम दांमणी, इम करै जुध ग्रधियांमणी । मेरौ'र चाचौ मारिया, सह ग्रवर दुसह संघारिया ।
—सू.प्र.
४ वीर, योद्धा । उ०—१ साह रौ जोध जोतां समंद । कठहड़ै चढ़ण मलफै कमंद । किलमांण मीर हिक मल्ल कीद । दइवांण पांण जम-डाढ़ दीध ।—वि.सं.
उ०—२ देखूं हाथ ग्राज दइवांणां । किसड़ा एक तुटौ केवांणां ।
—सू.प्र.
उ०—३ अणी खग झाट हणै दइवांन । जुड़ै सुत दुज्जणसींघ 'जवांन' ।—सू.प्र.
रू०भे०—दइवांण, दईवांण ।
५ देखो 'दीवांण' (रू.भे.) उ०—१ भड़ हसनखांन वळवांन भुज, गढ़ अभियांन गुमांन रौ । सालियौ तांम सुण साह उर, दळ दुगांम दइवांण रौ ।—रा.रू.
उ०—२ पातिसाह ग्रहण जोधांणपति, पेखै मौसर पावियौ । दइवांण 'अजौ' दळ सझि दिली, ग्राप मुरादौ ग्रावियौ ।—सू.प्र.
उ०—३ दिली तखत दइवांण, हेल मांही करि हिम्मति । ऊथल पथल अनेक, पांन जिम किया असपति ।—सू.प्र.
उ०—४ दई ग्रो दई गत कुंभक्रन दूसरा, चाह गुर ग्रापरै पंथ चालै ।

गंगा दइवांण पर हंस लागो रिमां, हंस जळ ज जुवै पंथ हालै ।
—महारांणा प्रताप री गीत

दइवी—देखो 'दैव' (रू.भे.) उ०—थो दिल्ली वर ऊपनो, दइवी आग्या दंद । हिंदू धरम उवेळवा, अही सरम गोविंद ।—रा.रू.

दई–सं०पु० [सं० दधि] १ वह दूध जो खटाई पड़ जाने के कारण जम कर थक्के के रूप में हो गया हो, खटाई के द्वारा जमाया हुआ दूध, दधि, दही ।

क्रि०प्र०—जमणौ, जमाणौ ।

पर्या०—खीरज, गोरस, दध ।

मुहा०—दई देणौ—दूल्हे का तोरण द्वार पर पहुँचने पर दूल्हे की सास द्वारा रुपये से दही का तिलक लगाने की एक प्रथा ।

रू०भे०—दध, दधि, दही, दी ।

अल्पा०—दहीड़ियो, दहीड़ो, दहीयो ।

[सं० दैव ?] २ आश्चर्य । उ०—दई ओ दई गत कुंभक्रन दूसरा, चाह गुर आपरै पंथ चालै । रांण दइवांण पर हंस लागो रिमां, हंस जळज जुवै पंथ हालै ।—महारांणा प्रताप री गीत

३ प्यारा, प्रिय ? उ०—हेक पराया जव चरो, हालो ऊगां सूर । दाढ़ाळा मूंडण भणै, भागां माखर दूर । दूरि दळ देख जसवंत थइयो दई, कोड़ लग पाखरचा कटक आयो कई । हाक कुण करै जसवंत सूं हलचलो, उडियां लोह अंबर अड़ै हेकलो ।—हा.झा.

४ देखो 'दैव' (रू.भे.) उ०—१ धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि । मज्जीठां जिम रच्चणां, दई सु सज्जण मेळि ।—ढो मा.

उ०—२ सूरां अर सतवादियां, धीरां अंक मनांह । दई करेसी कांमड़ा, अरंड फळेसी तांह ।—चौवोली

उ०—३ कहै बंक कवि सूध कवि, काहू धुर तप कीव । जग दाता ऊनड़ जिसो, दई घणी जै दीध ।—वां.दा.

उ०—४ सहू दई रा दीकरा, लीला लाडै लोक । दई हूंता छांना दिवस, सै काटै विण सोक ।—वां.दा.

दईगत—देखो 'देवगत' (रू.भे.)

दईतंद्र—१ देखो 'दइत्यंद्र' (१) (रू.भे.) (अनेका.)

२ देखो 'दंत' (मह., रू.भे.) (अ.मा.)

दईत–सं०पु० [सं० दैत्य] १ मुसलमान, यवन । उ०—दईतहं रुधो मारू देस । तिसा ही लंखण तुरुक नरेस ।—रा.ज. रासो

२ देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—१ दुनी चा काळ भुजाळ दईत । जिकै दळ साझ उभै ग्रह जीत ।—ह.र.

दईतेंद्रवर–सं०पु० [सं० दैत्य+इन्द्र=वलिराजा+वर=वरदान देने वाला] महादेव, शिव (अ.मा.)

दईत्यारी–सं०पु० [सं० दैत्य+अरि] देवता (अ.मा.)

दईय, दईय, दईव—देखो 'दैव' (रू.भे.) उ०—१ पूगलि पिंगळ राउ, नळ राजा नरवरे नयरे । अदिठा दूरिट्ठा ये, सगाई दईय संजोगे ।
—ढो.मा.

उ०—२ आदि तूझ थी ऊपना, जग जीवण सह जीव । ऊंचनीच घर अवतरण, दां कइ दोस दईव ।—ह.र.

उ०—३ रोम रोम में रम रियो, देख अखंड दईव । चोरी जिण सूं नह चलै, जावक भोळा जीव ।—र.ज.प्र.

उ०—४ वसिस्ठ आय जेण वार, त्यांन कीध धू-मती । दईव सेस तूझ नंद भै न कोइ भूपती ।—सू.प्र.

उ०—५ तरै हाजीखांन राठौड़ देईदास नूं पूछियो—राठौड़ तेजसी डूंगरसियोत किसड़ो सो रजपूत छै, जिको इसड़ी बात कहै छै ? तरै देईदास जी कह्यो—मारणो मरणो दईव हाथ छै ।
—राव मंगळदे री वात

उ०—५ आदू पर पाळै आपांणै, सोभा जग नित नवी सदीव । चारण करै करै जो चाकर, दै ठाकर तो 'जसा' दईव ।
—चावंडदांन दधवाड़ियो

दईवगत—देखो 'देवगत' (रू.भे.) उ०—खळां उपाड़ै जड़ां ज्यांरै अदन खीजियो, कर महर रीझियो सरै काजा । दुआ 'वजपाळ' जांणो तनै देखतां, राजगत दईवगत हेक राजा ।—जादूरांम आढ़ो

दईवराय, दईवरायो–वि० [सं० देव+राट्] १ महान्, बड़ा, शक्तिशाली, वलवान । उ०—अथीपत वेपखां पहु मोटा प्रगट, ओछ वेध कै जुध भार आवै । तोल अणियाळ जळबोळ चखतां तणा, रोद हीलोळिया दईवरायै ।—नरहरदास बारहठ

रू०भे०—दइवराय, दइवरायो ।

२ देखो 'देवराज' (रू.भे.)

दईव-संजोग—देखो 'देवजोग' । उ०—पण एक दिन इसड़ो दईव-संजोग हुवो सो म्होकमसिंघ तो हिरण री सिकार मूळ बैठो थो ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

दईवांण—१ देखो 'दइवांण' (रू.भे.) उ०—१ दुजणसिंघ दईवांण, सूर बोलै 'सबळावत' । भूप भड़ां भुजदंड, पटा इण कजि पूजावत ।
—सू.प्र.

उ०—२ धाड़ायत वाहरवां रिण-ढांण । दळां मुह मेज हुवो दईवांण ।
—गो.रू.

उ०—३ 'दलो' कहै दईवांण, साच वचन भायां सुणो । भुयण न ऊगै भांण, वीरम सूं चूकां वचन ।—गो.रू.

२ देखो 'दीवांण' (रू.भे.)

दउडणो दउडबो—देखो 'दौड़णो, दौड़बो' (रू.भे.)

उ०—चित हरखंत हूया हिमाचळ, दउडिया दइण वधाईदार ।
—महादेव पारवती री वेल

दउढ़—देखो 'डोढ' (रू भे.) उ०—दउढ़ वरस री मारुवी, त्रिहूं वरसांरउ कंत । वाळपणइ परण्यां पछइ, अंतर पड़यउ अनंत ।
—ढो.मा.

दउढ़ो—देखो 'डोढो' (रू.भे.) उ०—गुण दुगुण अढ़ार धुरि गणधारं, आचारज सुभ आचारं । उवझाय उदारं सूत्र सुधारं, गुण पचवीसे

आगारं । भल तप भंडारं ए अणगारं, इण गुण दउढ़ा अढ़ारं ।
—घ.व.ग्रं.

दउलत— देखो 'दौलत' (रू.भे.)

दउलती—१ देखो 'दौलत' (रू.भे.) उ०—जिसी देवनागरी इसी मनोहर राजकुमारी, लघुलाघवी कळा, मन कीधा मोकळा, चित्त नी उदार, अति घणुं दातार, दउलती हाथ, परमेसर देजे तेह तु साथ ।
—व.स.

२ देखो 'दौलतमंद' ।

दउलेय-सं०पु० [सं० दौलेय] कछुआ ।

दक-सं०पु० [सं०] पानी, नीर, जल । उ०—सीरांवण जीमण दोपैरां सारो । पीसण पोवण में आरो पछलारो । आती ओलण नैं अंबक दक आयो । छाती छोलण नैं छपनो छित छायो ।—ऊ.का.

रू०भे०—दग ।

दकसीर-सं०स्त्री० [सं० दकशिरा] नदी (अ.मा.)

दकार, दकारियौ-सं०पु० [सं० दकार] तवर्ग का तीसरा अक्षर 'द' ।

उ०—एक वरग में ऊपना, सूंम कहै इकसार । दोलत हरैं दकारियौ, दोलत थंभ नकार ।—बां.दा.

अल्पा०—दकारियौ ।

दकाळ-सं०स्त्री०—१ फटकार. २ ललकार ।

दकाळणौ-वि० (स्त्री० दकाळणी) १ उत्साहित करने वाला, जोश दिलाने वाला । उ०—आघा चारण खाबकां, बीड़ी मौज बटंत । दूरा केम दकाळणां, हूंचकतां भड़ हंत ।—वी.स.

२ ललकारने वाला. ३ फटकारने वाला ।

दकाळणौ, दकाळबौ-क्रि०स०—१ उत्साहित करना, प्रोत्साहन देना । उ०—थे कहौ हौ कै म्हे राजपूतां नै पौरस चढ़ाय दकाळण वाळा हां तौ साथै रहौ, भड़ हूचकै लड़ै तठै हंत आवौ मरौ मारौ।
—वी.स.टी.

२ ललकारना । उ०—१ तद चारण गोरधन रै भाई सूं घोड़ौ बकसियौ थौ, वीं रौ नांम पतासौ कहता, सो आंण हाजर कियौ । उण रै ऊपर आप असवार हुवा सो लोहांपूर हुवा । लोगां नूं दकाळै छै सो पाघ पड़ियां पाछै लोह लागिया ।—पदमसिंह री वात

उ०—२ तद असवार दस पन्द्रह साथ सूं वध मगरां आंण लागिया, दकाळियौ त्यूं सुंदरदास साथरां सूं समचौ कर पाछा नांखिया, आप भिळियौ ।—सुंदरदास भाटी री वात

उ०—३ आंखियां भय री मारी आफेई मीचीज जावै छे, किण री उणिहारौ इण सींह नै दकाळै ।—वी.स.टी.

३ फटकारना । उ०—सारां कांमखांन्यां वयांमखांजी नै दकाळ्या । तैसौ फतेपुर का वयांमखांजी राज चाल्या ।—शि.वं.

दकाळणहार, हारौ (हारी), दकाळणियौ —वि० ।

दकाळिओड़ौ, दकाळियोड़ौ, दकाळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दकाळीजणौ, दकाळीजबौ—कर्म वा० ।

दकाळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उत्साहित किया हुआ, प्रोत्साहन दिया हुआ. २ ललकारा हुआ. ३ फटकारा हुआ ।

(स्त्री० दकाळियोड़ी)

दकिखण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.)

दकूळ—देखो 'दुकूळ' (रू.भे.) उ०—१ अदभुत लसै छव गवर अंग, पदमणि कोमळ चंपक प्रसंग । दुलड़चां रमैं संग सखी ढूल, दमकंत अंग जरकस दकूळ ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ सो माथा पर किलंगी अनै सेवरौ, केसर में रंगिया दकूळ कपड़ा, वागौ केसर में रंग दौ ।—वी.स.टी.

दक्काळौ-सं०पु०—ललकारने का शब्द, धिक्कारने का वचन ।

उ०—द्रौपद दक्काळाह, दुसट-सभा-विच दाखवै । लायौ नंदलालाह, चीर दुसाला चौगणा ।—रांमनाथ कवियौ

रू०भे०—दुक्काळौ ।

दक्ख—१ देखो 'दक्ष' (रू.भे.) २ देखो 'दुख' (रू.भे.)

उ०—हसी हसी पूछउं वातडी, प्रीय सेंजडी बइठ । सख सु अंति समौ सम्यउं वीसारिउं दक्ख ऊबीठ ।—प्राचीन फागु संग्रह

दक्खण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—हसंन अली दक्खण गयौ, अबदुल्लौ दरगाह। सां हूंतां मन फेरियौ, दिन फिरिये पतसाह ।
—सू.प्र.

दक्खणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.)

दक्खणी—देखो 'दखणी' (रू.भे.) उ०—दक्खणी सेन आया अवाहं, पक्खरे तुरी पहिरे सनाहं ।—गु.रू.बं.

दक्खणौ, दक्खबौ—देखो 'दाखणौ, दाखबौ' (रू.भे.)

उ०—दुज दे आसिवाद विधि दक्खै । आंणौ एह सांमग्री अक्खै ।
—सू.प्र.

दक्खि—देखो 'दुखी' (रू.भे.) उ०—हरि हरि करि उद्धरै, दक्खि न्रप वडौ सुदांमा । हरि हरि करि उद्धरै, सेस संकर सिव ब्रहमा ।
—ज.खि.

दक्खिण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—१ दक्खिण लीध जीपि खग दावै । कपाळिया भड़ तिकै कहावै ।—सू.प्र.

उ०—२ वडफर भुज वांमंग, सफै दक्खिण भुज सावळ । जांम विख भरी जमी, वहसि असि चढ़ै अतुळबळ ।—सू प्र.

उ०—३ अपभ्रंस भाखा प्राक्रत सौ कुळ का विचार जिस सेती प्राक्रत भाखा विस्तार करि गाई । जिसमें पूरव पच्छिम उत्तर दक्खिण की ए च्यार भाखा कहि दिखाई ।—सू.प्र.

उ०—४ इण मारिया काढ़िया इण नूं । दहल सोच पड़सी दक्खिण नूं ।—सू.प्र.

दक्ष-सं०पु० [सं० दक्ष] एक प्रजापति का नाम जिस से देवता उत्पन्न हुए थे ।

वि०वि०—इसकी कन्याओं में एक सती भी थी जो रुद्र को व्याही गई थी । दक्ष ने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया जिस में सती और रुद्र को

नहीं बुलाया। सती बिना बुलाए ही अपने पिता के यहां यज्ञ देखने चली गई। वहां पर अपमानित हो कर उसने अपना शरीर त्याग दिया। रुद्र ने क्रोधित हो कर वीरभद्र को पैदा कर के दक्ष का यज्ञ विध्वंस करवा दिया और उसे शाप दे कर मनुष्य योनि में भेज दिया।

उ०—जिम कह्यं वीरभद्र दक्ष जग्यन, कचर-घांण किलमांण रौ।
इम 'अभा' हुंत मिसलति अरज, रटं 'पतौ' महिरांण' रौ।
—सू.प्र.

वि० [सं०] १ निपुण, कुशल, चतुर, होशियार.
२ दाहिना, दक्षिण।
रू०भे०—दक्ख, दख, दखि, दख्यण, दच्छ, दछ, दछि, दिख।

दक्षण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—ज्वाळा ना सहस्र झरतउ, देदीप्यमांन, दक्षण हरित वच्चउ लइ, चउरासी सहस्र अति स्वच्छ निरमळ वस्त्र।—व.स.

दक्षणपंथी—देखो 'दक्षिणपथी' (रू.भे.) (शा.हो.)

दक्षण-वरतन—देखो 'दक्षिणावरत' (रू.भे.)

दक्षणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—१ परदक्षण दई दक्षणा नई विलंब मंडई वार। कर कनक कापइ दांन, आपइ सूपिळ सिणगार।
—रुकमणी-मंगळ

उ०—२ राजा कनकरथ पण सारा सहर रा ब्राह्मण जीमाया। गौ-दांन री दक्षणा दीवी।—पलक दरियाव री वात

दक्षणावरत्त—देखो 'दक्षिणावरत' (रू.भे.) उ०—देवता ग्रिहांगणि निधांन संचारइं, रत्न मणि मौक्तिक प्रवाळ पद्मराग दक्षणावरत्त संखे करी भंडार भरइ, कण कोठार व्रिद्धवंत हुइ।—व.स.

दक्षता-सं०स्त्री० [सं०] निपुणता, योग्यता।
रू०भे०—दखता।

दक्षन—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—जिन दिलावरखांन नै कळह के रोज दक्षन के दरम्यांन निजांमन मुलक सेती जंग किया, च्यार हजार दुसमन कूं मार समसेरूं की धार सेती निमक की सरियत पर सिर दिया।—सू.प्र.

दक्षसावरणी-सं०पु० [सं० दक्षसावर्णि] नवें मनु का नाम।
रू०भे०—दखसावरणी।

दक्षा-सं०स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
वि०—निपुण, कुशल।
रू०भे०—दखा।

दक्षिण-वि० [सं०] १ दाहिना. २ उस ओर का जिधर सूर्य की ओर मुंह कर के खड़े होने पर दाहिना हाथ पड़े। उत्तर का उल्टा।
यौ०—दक्षिणायण।
३ चतुर, कुशल।
सं०स्त्री०—१ उत्तर के सामने की दिशा, दक्खिन दिशा।
रू०भे०—दखणाद, दखणाद, दखणी, दिखणांण।

२ दक्षिण देश की भाषा।
सं०पु०—३ दक्षिण प्रदेश. ४ साहित्य या काव्य में वह नायक जिसका अनुराग अपनी सभी नायिकाओं पर समान हो.
५ विष्णु. ६ तंत्रोक्त एक मार्ग या आचार।
रू०भे०—दकिखण, दक्खण, दक्खिण, दक्षण, दक्षन, दखण, दखन, दखिण, दिक्खण, दिक्षण, दिखण, दिखिण, दिच्छिण।

दक्षिणगोळ-सं०पु० [सं० दक्षिणगोल] विषुवत रेखा से दक्षिण पड़ने वाली राशियां जो छः हैं—तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।
रू०भे०—दखणागोळ।

दक्षिणचतुरथांसपादासण-सं०पु० [सं० दक्षिणचतुर्थांशपादासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पैर के पिंडी दबे इस चाल से बांयें पैर की नली भरा कर बैठना होता है। पांव के हेर-फेर से वांमचतुर्थांशपादासन कहलाता है।

दक्षिणजांन्वासण-सं०पु० [सं० दक्षिणजान्वासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पैर की एड़ी दाहिने नितंब के मध्य भाग को लगा कर पंजे तक के भाग को आडा रख कर और बांयें पांव के घुटने को दाहिने पैर के घुटने पर रख कर उसी पांव की एड़ी दाहिने नितंब को लगा कर बैठा जाता है। इसके विपरीत चाल से बैठने पर वामजान्वासन होता है।

दक्षिणतरकासण-सं०पु० [सं० दक्षिणतर्कासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें बांयें हाथ के पंजे को कान के ऊपर मस्तक को लगा कर उसी हाथ की ठेउनी को उसी पांव के घुटने पर रख कर शरीर को उसी अलंग झुका कर बैठना और दाहिने पांव को आड़ा रख कर उसी पर दाहिने हाथ को रखा जाता है। यह वाम-तर्कासन कहलाता है तथा इसका विपरीत दक्षिणतर्काशिन कहलाता है।

दक्षिणपथ, दक्षिणपथी-सं०पु० [सं० दक्षिण पथः] १ दक्षिणापथ-देशोत्पन्न घोड़ा. २ देखो 'दक्षिणापथ' (रू.भे.)
रू०भे०—दक्षणपंथी, दखणपंथी।

दक्षिणपादअपांनगमनासण-सं०पु० [सं० दक्षिणपादअपानगमनासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पांव को घुटने से मोड़ कर उसी पांव का पंजा बांयें पांव की जंघा में भिड़ाने और एड़ी को नाभि के बाजू में लगा कर बैठना होता है। यह वाम-पादअपानगमनासन का विपरीत है।

दक्षिणपादसिरासण-सं०पु० [सं० दक्षिणपादशिरासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन जिसमें बैठ कर दक्षिण पांव को शिर के पीछे के भाग की तरफ लेजा कर गरदन पर चढ़ाना होता है।

दक्षिणवक्रासण-सं०पु० [सं० दक्षिणवक्रासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन जिसमें बांयें पांव को घुटने से तिरकस मोड़ कर फिर दाहिने पांव के घुटने को बांयें पांव के घुटने से एक बिता

दूर रख के उसी पांव की नली बायें पांव के पंजे पर रख कर बैठना होता है। यह वामवक्रासन का विपरीत है।

दक्षिणसाखासण-सं०पु० [सं० दक्षिणशाखासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पैर की एड़ी बायें पैर की जांघ के मूल में रख कर उसी पांव के पंजे को बायें पैर की पिंडी पर रख कर बैठा जाता है। इसके विपरीत रीति से बैठने पर वामशाखासन होता है।

दक्षिणा-सं०स्त्री० [सं०] १ किसी शुभ कार्यादि के समय अथवा यज्ञादि कर्म कराने के बाद ब्राह्मणों या पुरोहितों को दिया जाने वाला दान. २ वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध कर लेने पर भी वैसी ही प्रीति दिखाती है. ३ दक्षिण दिशा।

रू०भे०—दखणा, दखिणा, दख्यणा, दच्छणा, दिखणा, दिखणा।

दक्षिणाचळ-सं०पु० [सं० दक्षिणाचल] मलयगिरि, मलयाचल।

रू०भे०—दखणाचळ।

दक्षिणाचार-सं०पु० [सं०] शुद्ध और उत्तम आचरण वाला।

रू०भे०—दखणाचार।

दक्षिणाचारी-सं०पु० [सं०] विशुद्धाचारी, सदाचारी।

रू०भे०—दखणाचारी।

दक्षिणापथ-सं०पु० [सं०] विंध्य पर्वत के दक्षिण ओर का वह प्रदेश जहां से दक्षिण भारत के लिये रास्ते जाते हैं।

रू०भे०—दखणापथ।

दक्षिणायण-सं०पु० [सं० दक्षिणायन] १ वह छः महीने का समय (२१ जून से २२ दिसम्बर तक) जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चल कर बराबर दक्षिण की ओर अर्थात् मकर रेखा की ओर बढ़ता रहता है. २ सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति।

वि०—भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर, दक्षिण की ओर का।

रू०भे०—दखणायण, दखणांण, दखणाद, दिखणायण।

दक्षिणावरत-सं०पु० [सं० दक्षिणावर्त्त] एक प्रकार का शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है।

वि०—जो दाहिनी ओर घूमा हुआ हो, जिसका घुमाव दाहिनी ओर को हो। उ०—अत्रुट अक्षय लक्ष्मी चिंतामणि दक्षिणावरत संख। —व.स.

रू०भे०—दक्षणावरतन, दक्षणावरत्त, दखणावरत, दखिणाव्रत, दाहिणाव्रत।

दख—१ देखो 'दक्ष' (रू.भे.)

२ देखो 'दुख' (रू.भे.)

दखण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.)

दखणपंथौ—देखो 'दक्षिणपथौ' (शा हो.)

दखण पति, दखण-पती-सं०पु० [सं० दक्षिणपति] १ चन्द्रमा, चांद (अ.मा.) २ यमराज।

दखणांण-सं०स्त्री०—१ दक्षिण दिशा. २ देखो 'दक्षिणायण' (रू.भे.) ३ देखो 'दिखणांण' (रू.भे.)

दखणागोळ—देखो 'दक्षिणगोळ' (रू.भे.)

दखणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—अरु दिन वारै उठै विराजिया। मा'राज लारै ब्रह्म-भोज दखणा करवाया. अरु ठावा मूवा जिणां लारै ब्रांमण भोजन करवायौ।—द.दा.

दखणाचळ—देखो 'दक्षिणाचळ' (रू.भे.)

दखणाचार—देखो 'दक्षिणाचार' (रू.भे.)

दखणाचारी—देखो 'दक्षिणाचारी' (रू.भे.)

दखणाद-वि० [सं० दक्षिण+रा०प्र०आद] दक्षिण दिशा का।

सं०स्त्री०—१ देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) २ देखो 'दक्षिणायण' (रू.भे.) ३ दक्षिण दिशा। उ०—पेख उतराद दखणाद पूरब पछिम, धूज मन सरम सारी धरा की। सवळ दोय राह री साह री मांन संक, ताह री करन-सुत ओट ताकी।—भोपत आसियौ

४ देखो 'दखणी' (४) (रू.भे.)

रू०भे०—दखणाध, दखिणाद, दखिणाध, दिखणाद, दिखणाध।

दखणादू—देखो 'दखणाधू' (रू.भे.)

दखणाध—देखो 'दखणाद' (रू.भे.) उ०—दळकार हठे दखणधरा, दिल्ली फौंजां निरवही। किरि जांण अपूठा बाहुड़ै, जांन वोळाए मांड ही।—गु.रू.बं.

दखणाधि, दखणाधी, दखणाधू-सं०पु० [सं० दक्षिण+आ+सं० ध्रुव] दक्षिण दिशा की वायु।

क्रि०वि०—दक्षिण की ओर, दक्षिण में। उ०—१ जखड़ै सोचियौ, व्याह तौ तीन छः, तिकै उगूणाळ कै उतराधा छै नै माजी दखणाधू सासरौ कह्यौ, तिकौ किसी भांति।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

उ०—२ ब्राहनपुर घेरियौ कटक दखणाधी आए।—गु.रू.बं.

वि०—दक्षिण दिशा का। उ०—'महिकर' घेरौ सवळ, कियौ दखिणाधि कटक्कां।—गु.रू.बं.

रू०भे०—दखणादू, दखिणाधी, दिखणाधी, दखिणाधू, दिखणादू, दिखणाधि, दिखणाधी, दिखणाधू, दिखणाधौ।

दखणापथ—देखो 'दक्षिणापथ' (रू.भे.)

दखणायण—देखो 'दक्षिणायण' (रू.भे.) उ०—दखणायण हूतां दंत देतां, उतरायण आयौ अरक।—जोगीदास कंवारियौ

दखणावरत—देखो 'दक्षिणावरत' (रू.भे.)

दखणी-सं०पु० [सं० दक्षिणीय] १ दक्षिण देश का निवासी।

उ०—सेर विलंद इण रीत सूं, वसियै अहमदवाद। रूके दखणी राखिया, आप तणी मरजाद।—रा.रू.

सं०स्त्री०—२ दक्षिण देश की भाषा.

३ दक्षिण दिशा (रू.भे.) उ०—इब्राहीम पूरब दिसा न उलटै, पछम मुदाफर न दै पयांण। दखणी महमदसाह न दौड़ै, 'सांगो' दांमण त्रहु सुरतांण।—महारांणा सांगा (बडा) री गीत

४ दक्षिण दिशा की वायु।

वि०—दक्षिण देश का। उ०—गयगमणी गूजर धरा, आंणां

दखणी चोर। मनह संकोडी माळवी, सोहइ तुरुक सरीर।—ढो.मा.
रू०भे०—दक्खणी, दिखणी।

दखणी चंवळा-सं०पु०—एक प्रकार का पौधा जिस में लगने वाली फलियों का शाक बनाया जाता है।

दखणीचोर—देखो 'दिक्खणीचोर' (रू.भे.)

दखणो, दखबो—१ देखो 'दाखणो, दाखबो' (रू.भे.)
उ०—१ ग्राद मत्त अग्यार, दुतीय पद तेर मात दख। काव्य छंद तिण कहत, अवध ईस्वर कीरत अख।—र.ज.प्र.
उ०—२ दखें माख ज्यांरा जतो वंस दीता। सको कंत त्रिलोकनाथ सीता।—सू.प्र.

दखता—देखो 'दक्षता' (रू.भे.)

दखन—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.)

दखमा-सं०पु०—वह स्थान जहां पारसी अपने मुरदे रखते हैं। (मा.म.)

दखळ, दखल-सं०स्त्री० [अ० दखल] १ हस्तक्षेप।
उ०—१ तद जोगे नूं वंसांण रावजी जोधपुर आया सो धरती नूं मोहिलां री दखल होणी लागियो।—नापे सांखलै री वारता
उ०—२ पांणी पीवै तिण नै तो खेद करै हीज पिण पग मांहे बोड़ै तिण सूं ही दखल करै छै।—नैणसी
क्रि०प्र०—करणो, देणो।
मुहा०—दखल देणो—हस्तक्षेप करना, रोड़े अटकाना, कूद पड़ना।
२ अधिकार, कब्जा। उ०—जाका चेरा ताके सारै, दखल और का नांही। जो तुम मारो मारि निवाजो, भी चित चरणां मांही।
—ह.पु.वा.
क्रि०प्र०—करणो।
मुहा०—दखल करणो—अधिकार करना, शासन जमाना।

दखळनांमो, दखलनांमो-सं०पु० [अ० दखल+फा० नामा+रा.प्र.ओ] वह पत्र (विशेषतः सरकारी आज्ञापत्र) जिस में किसी व्यक्ति के लिये किसी पदार्थ पर अधिकार कर लेने की आज्ञा हो।

दखसावरणी—देखो 'दक्षसावरणी' (रू.भे.)

दखा—देखो 'दक्षा' (रू.भे.)

दखि—देखो 'दक्ष' (१) (रू.भे.) उ०—१ सुता जनंक वध करि समताई। इम दखि सुता छळण कजि आई।—सू.प्र.
उ०—२ आयस भरथ लड़ै भड़ एहां। जगि दखि तणै वीरभद्र जेहां।—सू.प्र.

दखिण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—१ तरतो नदि नदि ऊतरतो तरि तरि, वेलि वेलि गळि गळै विलग्ग। दखिण हूंत आवतो उतर दिसि, पवन तणा तिणि वहै न पग्ग।—वेलि.
उ०—२ कांम की जो दखिण दिसा हूंति त्रिविध पवन सीतमंदसुगंध प्रगटै छै।—वेलि.टी.
उ०—३ देस सुहावउ जळ सजळ, मीठा-बोला लोइ। मारू कांमण भुइं दखिण, जइ हरि दियइ त होइ।—ढो.मा.

दखिणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—तोय भूप पग धोयत तखिणा। दस दस मोहर समापै दखिणा।—सू.प्र.

दखिणाद, दखिणाध—देखो 'दखणाद' (रू.भे.) उ०—उत्तर आज न जाइयइ, जिहां स सीत अगाध। ता भइ सूरिज डरपतउ, ताकि चलइ दखिणाध।—ढो.मा.

दखिणाधी, दखिणाधू—देखो 'दखणाधी, दखणाधू' (रू.भे.)
उ०—डहोळंतो दखिणाधी घड़ा रायांसिंघ दूजो, हिलोळंतो तुरी खुरी उरै वंध हाल। तोलंतो सोहै भिजड़ खोलंतो स्रोणी खळां रै, रोळंतो छडाळो राजा टंटोळंतो टाल।—वीठू दूदो सुरतांणोत

दखिणानिळ-सं०पु० [सं० दक्षिण+अनिल] दक्षिण की ओर से आने वाली वायु, मलयानिल। उ०—लीयै तसु अंग वास रस लोभी, रेवा जळि क्रित सौच रति। दखिणानिळ आवतो उतर दिसि, सापराध पति जिम सरति।—वेलि.

दखिणावत—देखो 'दक्षिणावरत' (रू.भे.) उ०—मांणक च्यार अस्व सरस मेक। उभळी दखिणावत-संख एक।—सू.प्र.

दखियांणी-सं०स्त्री० [दखि=राजा दक्ष+रा०प्र० आणी या सं० दाक्षायनी] राजा दक्ष की पुत्री, सती। उ०—दखि अंस आप सुता दखियांणी। जटधर अंस चंद विध जांणी।—सू.प्र.
रू०भे०—दयांरुणी, दिख्यांणी।

दखियोड़ो—देखो 'दाखियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दखियोड़ी)

दखोड़ी-सं०स्त्री०—पतंगा विशेष।
वि०वि०—वर्षा ऋतु की रात्रि में उड़ने वाला कीड़ा। यह शरीर पर बैठ जाता है तो फफोला हो जाता है (शेखावाटी)

दख्ख—देखो 'दाख' (रू.भे.) उ०—अहर पयोहर दुह नयण, मीठा जेहा मख्ख। ढोला एही मारुई, जांणै मीठी दख्ख।—ढो.मा.

दख्खणी—देखो 'दखणी' (रू.भे.)

दख्यण—देखो 'दक्ष' (रू.भे.) उ०—खट भाख लख्यण देख दख्यण राज रख्यण रीति इळि।—ल.पि.

दख्यणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—चांदराइण वरत कीधो थो तो बांमण कोई आयो नहीं अर दख्यणा दीधी नहीं है सो थांनै संकळप रै वास्तै मांहरी बाई आपनै बुलावै है।
—राजा रा गुर रा बेटां री वात

दख्यणो-वि०—कहने वाला, दिखाने वाला, प्रकट करने वाला।
उ०—देसल सुत चिति रीति दुआपुर दख्यणो। राजस लाज मजाद खत्री ध्रंम रख्यणो।—ल.पि.
रू०भे०—दाखणो।

दख्यणो, दख्यबो—देखो 'दाखणो, दाखबो' (रू.भे.)
उ०—दादू गैब मांहि गुरुदेव मिळ्या, पाया हम परसाद। मस्तक मेरे कर धरया, दख्या अगम अगाध।—दादू वांणी

दख्यांणी—देखो 'दखियांणी' (रू.भे.)

दगंत—देखो 'दिगंत' (रू.भे.)

दगंतर—देखो 'दिगंतर' (रू.भे.)

दगंवर—देखो 'दिगंवर' (रू.भे.)

दगंवरता—देखो 'दिगंवरता' (रू.भे.)

दगंवरी—देखो 'दिगंवरी' (रू.भे.)

दगंमर—देखो 'दिगंवर' (रू.भे.)

दग-सं०स्त्री० (अनु०) १ ध्वनि विशेष। उ०—१ दग-दग गाड़ियां चाली गई।—नैणसी

२ बूंद। उ०—झग-झग ऊठै हीया में झाळां, दग-दग द्रग जळ डारै।
—ऊ.का.

रू०भे०—दगग।

३ देखो 'दक' (रू.भे.) ४ देखो 'दाग' (रू.भे.)

दगग—देखो 'दग' (१) (रू.भे.)

दगड़-सं०पु०—१ लड़ाई में वजाया जाने वाला बड़ा ढोल, जंगी ढोल. २ बड़ा पत्थर. ३ बिना गढ़ा हुआ पत्थर, अनगढ़ पत्थर. ४ खुला स्थान।

रू०भे०—दग्गड़।

यौ०—दगड़-बार।

दगड़बार-सं०पु०यौ०—१ बहुत बड़ा खुला दरवाजा. २ खुला मैदान।

दगणौ, दगबौ-क्रि०अ०—१ छूटना, चलना (तोप आदि का)।

उ०—१ दहुंवळां तोप लग्गी दगण, रूप काळ डाचा रुखी। रवि प्रळै काज जांणै रसम, ज्वाळ भाळ ज्वाळामुखी।—सू.प्र.

उ०—२ कहै एम दीठां प्रळै नेम कोपां। लगी टेक गोळां दगी अद्रि लोपां।—वं.भा.

उ०—३ आतस दगि झड़ मंडे अंगारां। निहस पड़ै रण तूर नगारां।—सू.प्र.

२ जलना, दग्ध होना, झुलस जाना. ३ चिन्हित होना, दागा जाना. ४ धोखा खाना, ठगा जाना। उ०—सांई सच्चा सचियार कुडियार दगै।—केसोदास गाडण

५ देखो 'दागणौ, दागबौ' (रू.भे.) उ०—तिण वार दहुं दळ दगय तोप। अणपार पारगण सार ओप।—वि.सं.

६ धोखा खाना।

दगणहार, हारौ (हारी), दगणियौ—वि०।

दगवाड़णौ, दगवाड़बौ, दगवाणौ, दगवाबौ, दगवावणौ, दगवावबौ, दगाड़णौ, दगाड़बौ, दगाणौ, दगावौ, दगावणौ, दगावबौ—प्रे०रू०।

दगिओड़ौ, दगियोड़ौ, दग्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दगीजणौ, दगीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दग्गणौ, दग्गबौ—रू०भे०।

दगदगी-सं०स्त्री० [सं० दगदगा] १ एक प्रकार की कंडील. २ डर, भय, कंपकंपी. ३ शक, संदेह।

दगदग्गणौ, दगदग्गबौ-क्रि०अ०—भयभीत होना, घवराना, कांपना।

उ०—ठग घोमर भोळा ठगे, दगदग्गै देवीस। ले कंकण जाळण लगे, अर उठ भगे ईस।—भगतमाळ

दगदग्गियोड़ौ-भू०का०कृ०—भयभीत हुवा हुआ, घवराया हुआ, कांपा हुआ।

(स्त्री० दगदग्गियोड़ी)

दगध—देखो 'दग्ध' (रू.भे.) उ०—१ तरै मेरे कह्यौ—काका! रजपूत तो रूड़ो छूं पिण मां नूं सासतो दगध घणो छै तिण सूं हूं हेठो हेठो जाऊं छूं।—नैणसी

उ०—२ ह! झ घ र घ न ख भ होय अंक अग दगध अघीरह। आखर दग्ध अठारह वदै कवसळ वर वीरह।—र.रू.

उ०—३ पहली छंद प्रबंध में, लघु गुरु दगध अलेप। गण सुभ अण सुभ दुगण गण, सो बरणू संक्षेप।—र.रू.

दगधअखर, दगधअखिर—देखो 'दग्धाक्षर' (रू.भे.)

दगधमंत्र—देखो 'दग्धमंत्र' (रू.भे.)

दगधा—देखो 'दग्धा' (रू.भे.)

दगधाखर—देखो 'दग्धाक्षर' (रू.भे.)

दगधाजीरण-सं०पु० [सं० दग्धाजीर्ण] एक प्रकार का अजीर्ण रोग।
(अमरत)

दगपाळ—देखो 'दिकपाळ' (रू.भे.) उ०—करण धक चाळ मेवास ब्रह-वट करण, आउआ धणी दस देस उजवाळ। धणी नव कोट रो सरै छत्र धारियां, 'पाळ' हर जोड़ रा सरै दगपाळ।—दयाळदास आढ़ौ

दगमग-सं०स्त्री०—दमकने का भाव, दमक, चमक। उ०—जगमग जोत जड़ाव री, दगमग गळै दिपंत। सकै वरण कुण सूर री, छिव लख किरणर छिपंत।—महादांन महडू

दगली—देखो 'डगली' (रू.भे.)

दगलौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का धड़ पर धारण करने का कवच। उ०—वाहेली रा खांवंद री घोड़ी उण री ही सिलै रतनां लगावै है, इण भांति जिलै, मोजा, सूथण, दगलौ दसतांन टोप घटाटोप सजियां मसतांन इण भांत मरद भेस कर हाथ में वरछी झाल घोड़ चढ़ एकली ही हाली।—र. हमीर

२ देखो 'डगली' (अल्पा., रू.भे.)

दगाड़णौ, दगाड़बौ—देखो 'दगाणौ, दगावौ' (रू.भे.)

दगाड़णहार, हारौ (हारी), दगाड़णियौ—वि०।

दगाड़िओड़ौ, दगाड़ियोड़ौ, दगाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दगाड़ीजणौ, दगाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दगणौ, दगबौ—अक०रू०।

दगाड़ियोड़ौ—देखो 'दगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दगाड़ियोड़ी)

दगाणौ, दगाबौ-क्रि०स० [सं०] ('दगणौ' व 'दागणौ' क्रियाओं का प्रे०रू०) १ (तोप आदि) चलवाना, छुड़वाना।

उ०—'सूरसाह' तिण समै, अडर सांमुहा चलाया। वजि त्रंवाळ चहुं-

वळां, दुरम आरवां दगाया ।—सू.प्र.

२ झुलसाना, जलवाना. ३ चिन्हित करवाना, दाग दिलवाना. ४ धोखा दिलवाना, दगा दिलवाना, ठगवाना. ५ किसी फोड़े आदि को किसी तेज दवा से जलवाना, सुखाना ।

दगाणहार, हारौ (हारी), दगाणियौ—वि० ।

दगायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दगाईजणौ, दगाईजबौ—कर्म वा० ।

दगणौ, दगबौ—अक०रू० ।

दगवाड़णौ, दगवाड़बौ, दगवाणौ, दगवाबौ, दगवावणौ, दगवावबौ, दगाड़णौ, दगाड़बौ, दगावणौ, दगावबौ—रू०भे० ।

दगायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (तोप आदि) चलवाया हुआ, छुड़वाया हुआ. २ झुलसाया हुआ, जलवाया हुआ. ३ चिन्हित करवाया हुआ, दाग दिलवाया हुआ. ४ धोखा दिलवाया हुआ, ठगवाया हुआ. ५ किसी फोड़े आदि को किसी तेज दवा से जलवाया हुआ, सुखाया हुआ ।

(स्त्री० दगायोड़ी)

दगादार-वि० [फा० दगा+दार] धोखेबाज, छली ।

उ०—तरै साह-बेगम पातिसाह सूं अरज कीधी कि रैवले-जहां, ऐ हिंदू है दगादार, जांणां आवै नावै ।—वीरमदे सोनिगरा री वात

दगाबाज-वि० [फा० दग़ाबाज़] कपटी, छली, धोखेबाज ।

दगाबाजी-सं०स्त्री० [फा० दग़ाबाज़ी] १ कपट, छल. २ धोखा देने की क्रिया या भाव ।

क्रि०प्र०—करणौ ।

दगावणौ, दगावबौ—देखो 'दगाणौ, दगाबौ' (रू.भे.)

उ०—घांघू रिणछोड़ वाहे खग धार । दगावत तोप चह्वाण उदार ।

—सू.प्र.

दगावणहार, हारौ (हारी), दगावणियौ—वि० ।

दगाविओड़ौ, दगावियोड़ौ, दगाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दगावीजणौ, दगावीजबौ—कर्म वा० ।

दगणौ, दगबौ—अक०रू० ।

दगावियोड़ौ—देखो 'दगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दगावियोड़ी)

दगियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (तोप आदि) छूटा हुआ, चला हुआ. २ जला हुआ, दग्ध हुवा हुआ, झुलसा हुआ. ३ चिन्हित हुवा हुआ. ४ धोखा खाया हुआ, ठगा गया हुआ.

५ देखो 'दागियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दगियोड़ी)

दगैल—देखो 'दागल' (रू.भे.)

दगौ-सं०पु० [अ० दग़ा] १ धोखा । उ०—तैं लारै तरवार रै, पायौ रजक पलीत । दीधौ खांवंद नूं दगौ, संत नहीं रण गीत ।—बां.दा.

उ०—२ जोधै आंगि चोर धाड़व्यां में जाळ नांख्यौ । सूरा लाडखांनी नै दगा सूं मारि नांख्यौ ।—शि.वं.

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ, होणौ ।

२ कपट । उ०—तरै पंजू कह्यौ, थे देसोत छौ । मन मांहे दगौ राखौ तौ मोनै मेलो मती । पछै आपणै रस रहसी नहीं ।

—वीरमदे सोनिगरा री वात

क्रि०प्र०—करणौ, राखणौ ।

रू०भे०—दग्गौ ।

दग्ग—देखो 'दाग' (रू.भे.) उ०—करहउ मन कूडइ थयउ, राखै यूंही पग्ग । ढोलइ मन चिंता हुई, दीजइ केइक दग्ग ।—ढो.मा.

दग्गड़—देखो 'दगड़' (रू.भे.) उ०—परवत फळ रै नांव, वेद व्यावां में गायौ । दग्गड़ मंगळ टोळ, पुरावै पिरोत पायौ ।—दसदेव

दग्गणौ, दग्गबौ—देखो 'दगणौ, दगबौ' (रू.भे.) उ०—एक साथ आरबां, दुगम विहुंवै दळ दग्गै । अगन सोर ऊछळै, लाय घर अंबर लग्गै ।

—सू.प्र.

दग्गज्ज—देखो 'दिग्गज' (रू.भे.)

दग्गौ-सं०पु०—१ देखो 'दगौ' (रू.भे.)

उ०—१ नवाब के सांमने आया, हल्ले का जिकर चलाया । किस तौर से आज का दग्गा, कौन भिड़ा कौन भग्गा ।—ल.रा.

उ०—२ वह दग्गै सूं खांन बहादर । आयौ गढ़ जोधांणै ऊपर ।

—रा.रू.

दग्ध-वि० [सं०] १ जला हुआ. २ जलाया हुआ. ३ दुखित. ४ शुष्क, सूखा । उ०—किहां मातंग ग्रिहांगण किहां एरावत, किहां दुरगत विपणि किहां चिंतामणि, किहा दग्ध मरु किहा कलपतरु ।

—व.स.

सं०पु०—१ दुःख. २ दग्धाक्षर ।

रू०भे०—दगध ।

दग्धमंत्र-सं०पु० [सं०] तंत्र के अनुसार वह मंत्र जिसके मूर्द्धा प्रदेस में वह्नि और वायु-युक्त वर्ण हो ।

रू०भे०—दगधमंत्र ।

दग्धा-सं०स्त्री० [सं०] १ कुछ विशिष्ट राशियों से युक्त कुछ विशिष्ट तिथियां । यथा—मीन और धन की अष्टमी । वृष और कुम्भ की चौथ । मेष और कर्क की छठ । कन्या और मिथुन की नौमी । वृश्चिक और सिंह की दशमी । मकर और तुला की द्वादसी ।

वि०वि०—इन दग्धा तिथियों में वेदारंभ, विवाह, स्त्री-प्रसंग, यात्रा या वाणिज्य आदि करना बहुत हानिकारक माना जाता है (स्मृति)

२ एक प्रकार का वृक्ष जिसे कुरु कहते हैं. ३ सूर्य के अस्त होने की दिशा ।

रू०भे०—दगधा ।

दग्धाक्षर, दग्धाखर-सं०पु० [सं० दग्धाक्षर] ख घ झ घ न भ र तथा ह ये आठ अक्षर जिनको छंद के प्रथम चरण के आरम्भ में रखना वर्जित है (र.रू.)

रू०भे०—दगधग्रखर, दगधग्रखिर, दगधाखर ।

दड़ंद, दड़ंदी–सं०पु० (ग्रनु०) किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द.
२ देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दड़–सं०स्त्री०—१ कृषि उपयोगी विना जोती हुई भूमि जिसे प्रायः उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिये छोड़ दी जाती है। उ०—झाड़ू दै ढांणी झालरिया झाड़ै। पांणी पालरिया पीवरण पछखाड़ै। लोरी दै पोळछ लालरिया लेती। दड़ खिल खोडां नै हालरिया देती।
—ऊ.का.

२ मकान की छत पर मंदला करने के लिये डाले जाने वाले कंकर.
३ देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.)
यौ०—दड़-दौट।
४ पदार्थ विशेष के ऊपर से गिरने के कारण उत्पन्न ध्वनि।
उ०— घुवि खाग झड़झड़ नाग धड़धड़ प्रिसण दड़ दड़ सिर पड़ै।
—सू.प्र.

दड़ग्रड़—देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.)

दड़क–क्रि०वि० (ग्रनु०) ग्रचानक शीघ्र।

दड़कणौ, दड़कबौ–क्रि०ग्र०—भागना; दौड़ना।
दड़कणहार, हारौ (हारी), दड़कणियौ—वि०।
दड़किग्रोड़ौ, दड़कियोड़ौ, दड़क्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दड़कीजणौ, दड़कीजबौ—भाव वा०।
दड़क्कणौ, दड़क्कबौ—रू०भे०।

दड़कली—देखो 'दड़ी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दड़काणौ, दड़काबौ–क्रि०स० (ग्रनु०) १ उंडेलना. २ मारना, काटना।
उ०—दंताळां दड़काय, मोताहळ विथरै मही। स्याळां मती संताय, लंकाळां गज भख 'लछा'।—भगवांनजी रतनू
दड़काणहार, हारौ (हारी), दड़काणियौ—वि०।
दड़कायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दड़काईजणौ, दड़काईजबौ—कर्म वा०।
दड़कणौ, दड़कबौ—ग्रक०रू०।
दड़काड़णौ, दड़काड़बौ, दड़कावणौ, दड़कावबौ—रू०भे०।

दड़कायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ उंडेला हुग्रा. २ मारा हुग्रा, काटा हुग्रा।
(स्त्री० दड़कायोड़ी)

दड़कियोड़ौ–भू०का०कृ० भागा हुग्रा, दौड़ा हुग्रा।
(स्त्री० दड़कियोड़ी)

दड़कै, दड़कैं–क्रि०वि० (ग्रनु०) तेज गति से, निर्विलंवता से, तुरन्त, शीघ्र, जल्दी। उ०—१ चतुर होय कोई चेला चेली, ऊठ संवारै ग्रावै। दरसण कर साधां रै दड़कै, पावां में पड़ जावै।—ऊ.का.
उ०—२ गात सुहातां नीर हठीली लार म छोडै। कड़क घमंका मांड डरपती दड़कै दौड़ै।—मेघ.

दड़कौ–सं०पु० (ग्रनु०) १ दौड़. २ द्रुतगति. ३ ध्वनि विशेष।

दड़क्कणौ, दड़क्कबौ–क्रि०ग्र० (ग्रनु०) १ कट कर दूर पड़ना।
उ०—मुक्कै सैल, घुवकै घरा, दड़क्कै धड़ां सूं माथा।
—बुधसिंह सिढ़ायच
२ लुढ़कना. ३ देखो 'दड़कणौ, दड़कबौ' (रू.भे.)

दड़क्कियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ कट कर दूर पड़ा हुग्रा. २ लुढ़का हुग्रा. ३ देखो 'दड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दड़क्कियोड़ी)

दड़गल—देखो 'दड़घल' (रू.भे.)

दड़गली—देखो 'दड़ी' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—सोनै को रे चिटियौ घड़ायौ ग्रो जी राज, राय रूपै री भंवर थांरी दड़गली जी राज।
—लो.गी.

दड़घल–सं०पु०—१ ग्रमृतसागर के ग्रनुसार एक ग्रौषधि विशेष जिसका सिट्टा ऊपर से लाल व नीचे से सफेद होता है। इसके सिट्टे में छोटे बारीक काले बीज होते हैं। इसका शाक भी बनता है। २ वर्षा ऋतु में शेखावाटी में खेतों में होने वाला पौधा विशेष।
वि०वि०—इस पौधे के डंठल पर कदम के पुष्प के ग्राकार का फूल ग्राता है ग्रौर उसमें सफेद पंखुरियां निकलती हैं जिसमें सुगंध ग्राती है। इसे पशु खाते हैं।

दड़ड़–सं०स्त्री० (ग्रनु०) १ दड़ड़ की ध्वनि। उ०—१ भड़ ग्रनड़ वड-वड ग्रमुड़ जुध भड़, दुजड़ पड़ झड़ वड़ड़ खित झड़। दड़ड़ रत पड़ ग्रगुट दड़दड़, चड़ड़ ऊघड़ प्रगड चख ग्रड।—र.ज.प्र.
उ०—२ फौल धड़ पड़ ग्रभड़ झड़ फड़। हुय दड़ड़ रत मुनंद हड़हड़ पड़ै दळ ग्रणपार।—सू.प्र.
उ०—३ वरसतै दड़ड़ नड़ ग्रनड़ वाजिया, सघरण गाजियौ गुहिर सदि। जळनिधि ही सांमाइ नहीं जळ, जळवाळा न समाइ जळदि।
—वेलि.
उ०—४ धोम धड़हड़ ग्रनड़ दीठ तोपां धुवै, रीठ पड़ि दड़ड़ गोळा विरोधा। 'ग्रजा' रै हेक जोधार थांभै ग्रसुर, जवन रा हेक इकवीस जोधा।—सू.प्र.

दड़ड़णौ, दड़ड़बौ–क्रि०ग्र०—१ गुंजित होना, गूंजना। उ०—खंभा जब वड़ड़ै, सुररथ खड़ड़ै, ग्रंबर दड़ड़ै, घर वड़ड़ै।—भगतमाळ
२ ध्वनि विशेष का होना।

दड़ड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ गुंजित हुवा हुग्रा, गूंजा हुग्रा. २ ध्वनित।
(स्त्री० दड़ड़ियोड़ी)

दड़णौ, दड़बौ–क्रि०स० (ग्रनु०) किसी विवर, दरार, छिद्र ग्रादि को गोवर या चूने ग्रादि से बंद करना।
दरड़णौ दरड़बौ—रू०भे०।

दड़ियोड़ौ–भू०का०कृ० —(विवर, दरार, छिद्र ग्रादि) बंद किया हुग्रा।
(स्त्री० दड़ियोड़ी)

दड़दड़, दड़द्दड़–उ.लि. (ग्रनु०) 'दड़दड़' शब्द की ध्वनि।
उ०—१ भड़ ग्रनड़ वड़वड़ ग्रमुड़ जुध भड़। दुजड़ पड़ झड़ वड़ड़

लित झड़। दड़ड़ रत पड़ अगुट दड़दड़। चड़ड़ ऊवड़ प्रगड चख त्रट।—र.ज.प्र.

उ०—२ घड़ड़कड़ वाजि घड़ां किरमाळ, बड़ब्बड़ भाजि पड़ंत बंगाळ। दड़द्दड़ मुंड रड़ब्बड़ दीस, ग्रड़ब्बड़ लेत चड़च्चड़ ईस।
—वचनिका

दड़पणी, दड़पवी–क्रि०स० (अनु०) १ आच्छादित करना, ढकना. २ लीपना।

दड़पियोड़ो–भू०का०कृ०—१ ढका हुआ, आच्छादित. २ लीपा हुआ। (स्त्री० दड़पियोड़ी)

दड़वड़—देखो 'दड़वड़' (रू.भे.)

दड़वड़णी, दड़वड़वी—देखो 'दड़वड़णी, दड़वड़वी' (रू.भे.)

उ०—दिखणी दळ जाय न दड़वड़िया। चंचळ ज्यां 'अभमल' नह चड़िया।—द्वारकादास दधवाड़ियो

दड़वड़ाट—देखो 'दड़वड़ाट' (रू.भे.)

दड़वड़ाणी, दड़वड़ावी—देखो 'दड़वड़ाणी, दड़वडावी' (रू.भे.)

उ०—ताहरां कुंवर स्री भोपतजी करोड़ियां नूं दड़वड़ाया।—द.वि.

दड़वड़ायोड़ो—देखो 'दड़वड़ायोड़ो' (रू भे.) (स्त्री० दड़वड़ायोडी)

दड़वड़ियोड़ो—देखो 'दड़वड़ियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० दड़वड़ियोड़ी)

दड़वड़ी—देखो 'दडबडी' (रू.भे.)

दड़वो–सं०पु०—१ भूमि का उभरा हुआ अथवा उठा हुआ स्थान, टीवा. २ ढेर, राशि. ३ धन, द्रव्य. ४ अनगढ़ पत्थर।

उ०—भरिया समंद मांयं भाटो दड़वो साऊ ने है।—भीली कहावत

[फा० दर] ४ वह कटघरा जिसमें मुर्गियां व मुर्गे रखे जाते हैं। (मि० खुडो)

५ छोटा बंद कमरा।

दड़वक–सं०स्त्री० [सं० द्रव] द्रुत गति से भागने की क्रिया या भाव।

दड़वड़–सं०स्त्री० (अनु०) ध्वनि विशेष। उ०—१ उठ दासी मत ढोलियो, गहरा दीपक जोय। दड़वड़ माची देहरां, सांयत साजन होय।—लो.गी.

उ०—२ धेठा होय नै धपटिया, दड़वड़ लागा डागा रे। वांनर जेम विलगिया, लपटी गढ़ ने लागा रे।—प.च.चौ.

रू०भे०—दडबड, दरवर।

दड़वड़णी, दड़वड़वी–क्रि०अ० [सं० द्रव] दौड़ना, भागना।

उ०—उरि लोह फूटइ तंग तूटइ, वेगि वाहइ चोट। ए भल कुंअर सहइ तुंअर, दड़वड़ई दड़ दोट।—रुकमणी मंगळ

दड़वड़णहार, हारो (हारी), दड़वड़णियो—वि०।

दड़वड़िओड़ो, दड़वड़ियोड़ो, दड़वड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

दड़वड़ीजणो, दड़वड़ीजवो—भाव वा०।

दड़वड़णी, दड़बड़वी, दडवडणी, दडवडवी—रू०भे०।

दड़वड़ाट–सं०स्त्री० (अनु०) वाहन आदि चलने से उत्पन्न ध्वनि।

रू०भे०—दड़बड़ाट, दडवडाट, दडवडाटि।

दड़वड़ाणी, दड़वड़ावी–क्रि०स० [सं० द्रव] दौड़ाना, भगाना।

दड़वड़ाणहार, हारो (हारी), दड़वड़ाणियो—वि०।

दड़वड़ायोड़ो—भू०का०कृ०।

दड़वड़ाईजणो, दड़वड़ाईजवो—कर्म वा०।

दड़बड़ाणी, दड़वड़ावी, दड़वड़ाड़णी, दड़वड़ाड़वी, दड़वड़ावणी, दड़वड़ाववी, दडवडाणी, दडवडावी—रू०भे०।

दड़वड़ायोड़ो–भू०का०कृ०—दौड़ाया हुआ, भगाया हुआ। (स्त्री० दड़वड़ायोड़ी)

दड़वड़ियोड़ो–भू०का०कृ०—दौड़ा हुआ, भागा हुआ। (स्त्री० दड़वड़ियोड़ी)

दड़ाक–सं०स्त्री० (अनु०) किसी वस्तु के गिरने की ध्वनि। क्रि०वि०—अचानक, शीघ्र।

दड़ाछंट, दड़ाछट–वि०—निर्भय, निशंक, निडर।

उ०—थारै जलम रै दो बरस पै'लां री बात है। आंपणै गांव में धाड़ो पड़चो हो—धन तेरस रै सें दिन चवदै आदमी नव ऊंठां पर चढ़ नै गांव लूटण नै आया हा। धवळै दिन रा दोपार री वेळा दड़ाछट दौड़ता नव ऊंठ गांव में घुस्या।—रातवासौ

दड़िंदक—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—अैसा वंस छत्रीस दरग्गह उंबरा, सांमंद चंद दड़िंदक आरिख इंद रा।—वचनिका

दड़ियड़—देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.) उ०—गोळी तीर आछटै गोळा, दोळा आलम तणा दळ। पड़ दड़ियड़ चड़ियड़ चहुं पासै, खुमांण लूंबिया खळ।—खेमराज सोदौ

दड़ींदो–सं०पु० (अनु०) १ प्रहार, चोट. २ ध्वनि विशेष।

दड़ी–सं०स्त्री० (देश०) गेंद। उ०—१ मोह लगाय त्रिस्णा तुरी, चित चौगानां हाथि। जन हरिदास माया दड़ी, चलै न काहू साथि।
—ह.पु.वा.

उ०—२ कांसे का बना एक चौखूंटा टुकड़ा जिसके पहलुवों में गोल-गोल छोटे-बड़े गड्ढे होते हैं। इस पर सुनार घुंघरू आदि बोरों की खोरियाँ बनाता है, कंसुला।

मह०—दड़, दड़अड़, दड़ियड़, दड़ूलो, दडो, दडूल, दडूलो, दडो।

दड़ूकणो–वि० (अनु०) (वह बैल या सांड) जो जोश भरी आवाज करता हो।

रू०भे०—दडूकणो।

दड़ूकणो, दड़ूकवो–क्रि०अ० (अनु०) बैल या सांड का मुंह से जोश भरी आवाज करना। उ०—गोरी गांमड़ हाली जी गाया। सांड दड़ूकै सबद सुणाया।—द्वारकादास दधवाड़ियो

दड़ूकणहार, हारो (हारी), दड़ूकणियो—वि०।

दड़ूकिओड़ो, दड़ूकियोड़ो, दड़ूक्योड़ो—भू०का०कृ०।

दड़ूकीजणो, दड़ूकीजवो—भाव वा०।

दडूकणो, दडूकवो—रू०भे०।

दड़ूकियोड़ो–भू०का०कृ०—जोश भरी आवाज किया हुआ।

(स्त्री० दड़कियोड़ी)

दड़ूलों—देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.)

दड़ो—सं०पु०—१ रेत का टीला, टीबा।
उ०—धूंधा धोरा नांव, कठै लाका लांमोड़ा। गाळा ग्रोडावळा, गगरण चुंबी डीगोड़ा। टोकी भव्य सोपांन, सांतसम सीतळ टोळी। ढिस्सा दड़ा पड़ाळ, लुभांणी खितिज खोळी।—दसदेव
२ देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.) उ०—कहाड़ै विरद वंका भीड़ियां छकड़ा कड़ां, वधै रोळै भड़ां ग्रागा वाधै नंसवांन। विछोड़ै गयंदां घड़ा दूजड़ां ग्रोभड़ां वाह, मुगळळां मूंडड़ां दड़ां मेले दूजो 'मांन'।
—रावत सारंगदेव (दूसरा कांनोड़) रौ गीत
रू०भे०—दडो।
ग्रल्पा०—दडूलु, दडूलो।

दचको—देखो 'डचको' (रू.भे.)

दच्छ—देखो 'दक्ष' (रू.भे.) उ०—धरण धनुस वांम पांण, वांण दच्छ हाथ है। भंजण गढ़ लंक भूप, गंजण दस माथ है।—र.ज.प्र.

दच्छणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.)

दछ—देखो 'दक्ष' (रू.भे.)

दछा—देखो 'दसा' (रू.भे.) उ०—१ ग्रादमी २० राव रा पासवांन हुवा। राव री दछा खडी दीठी।—नैणसी
उ०—२ पछै गैचंद नूं रजपूतै भखायो, कह्यो—'तिण री इसी दछा दीसै छै, थांनूं मार धरती ग्रै लेसी।'—नैणसी

दछि—देखो 'दक्ष' (रू.भे.) उ०—१ ग्रटा दछि ज्याग घटा गज ग्रेम। जटाधर ग्रोध छुटा गण जेम।—सू.प्र.
उ०—२ दछि ग्रंस ग्राप सुता दखियांणी। जट-धर ग्रंस चंद विध जांणी।—सू.प्र.

दछिणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.)

दजोण, दज्जोण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.) उ०—१ भांण करन्न प्रमांण वळ, मांण दजोण क पथ। रण जूंभै पण जीपणौ, कुण पूजै समरत्थ।—रा.रू.
उ०—२ ग्रहंकार नव्वाब दज्जोण ग्रेहो। जठै हिंदवां नाथ पाराथ जेहो।—सू.प्र.

दझणो, दझवो—देखो 'दाझणो, दाझवो' (रू.भे.) उ०—झगड़े म करै झूठ, कहै छै यूं झझै। दै नहीं कोइ साखि, दुखै देही दझै।—ध.व.ग्रं.

दझळणो, दझळवो—देखो 'दाझणो, दाझवो' (रू.भे.)

दझळियोड़ो—देखो 'दाझियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दझळियोड़ी)

दझाड़णो, दझाड़वो—देखो 'दझाणो, दझावो' (रू.भे.)

दझाड़ियोड़ो—देखो 'दझायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दझाड़ियोड़ी)

दझाडणो, दझाडवो—देखो 'दझाणो, दझावो' (रू.भे.)
उ०—जळचर खेचर भूमिचर, भोग करइ लयलीन। दैव दझाडइ देहडी, दूजि जणां ग्रम्ह दीन।—मा.कां.प्र.

दझाडियोड़ो—देखो 'दझायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दझाडियोड़ी)

दझाणो, दझावो—क्रि०स० [सं० दग्ध] १ जलाना. २ झुलसाना, दग्ध करना. ३ दुखी करना. ४ कुढ़ाना।
दझाणहार, हारो (हारी), दझाणियो—वि०।
दझायोड़ो—भू०का०कृ०।
दझाईजणो, दझाईजवो—कर्म वा०।
दझणो, दझवो, दझळणो; दझळवो, दाझणो, दाझवो—ग्रक०रू०।
दझाड़णो, दझाड़वो, दझाडणो, दझाडवो, दझाळणो, दझाळवो, दझावणो, दझाववो—रू०भे०।

दझायोड़ो—भू०का०कृ०—१ जला हुग्रा. २ झुलसाया हुग्रा, दग्ध किया हुग्रा. ३ दुखी किया हुग्रा. ४ कुढ़ाया हुग्रा।
(स्त्री० दझायोड़ी)

दझाळणो, दझाळवो—देखो 'दझाणो, दझावो' (रू.भे.)
उ०—१ पाखर रैणां-पहर कटै किम पलक हुवंती। दिवस दझाळण दाह घटै किण जोग चढ़ंती। नैण नचांणी! ग्राज न मन री ग्रास पुरीजै। झाळ दझाळै ग्रंग बिखायत हियो भरीजै।—मेघ.
उ०—२ झंखड़ खसता व्रच्छ दवानळ दपटां झाळै। झूमरकाळी सुराधेण रा पूंछ दझाळै।—मेघ.
दझाळणहार, हारो (हारी), दझाळणियो—वि०।
दझाळिग्रोड़ो, दझाळियोड़ो, दझाळयोड़ो—भू०का०कृ०।
दझाळीजणो, दझाळीजवो—कर्म वा०।
दझळणो, दझळवो—ग्रक०रू०।

दझाळियोड़ो—देखो 'दझायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दझाळियोड़ी)

दझावणो, दझाववो—देखो 'दझाणो, दझावो' (रू.भे.)
उ०—रैणां साथण तूझ निमांणी विरह दझावै। दिनां विलमतां काज म इतरो जोर जतावै।—मेघ.

दझावियोड़ो—देखो 'दझायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दझावियोड़ी)

दझियोड़ो—देखो 'दाझियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दझियोड़ी)

दट—सं०पु०—१ किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि।
[सं० दुष्ट] २ दुष्ट। उ०—दट ग्रणघट ग्रघ विकट दळां री राजा सांचो रांम। बळ सौ है दिन जन निवळां रो, नित जापो तै नांम।
—र.ज.प्र.
क्रि०वि०—शीघ्र, झट।

दटणो, दटवो—क्रि०ग्र०—१ दबना, मिटना। उ०—१ वरण विद्युत वरण, पीत ग्ररु धरण नील पट। तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट।—र.रू.
क्रि०स०—२ दबाना, मिटाना
उ०—२ रसना 'किसना' जिण क्रीत रटो। दुख प्राचत ग्रोघ ग्रमोघ

दटौ।—र.ज.प्र.

२ देखो—दटणौ, दटबौ (रू.भे.)

दटपट-सं०पु० [सं० द्रुतपद] एक मात्रिक छंद विशेष जिसमें १३ और १० की यति से कुल २३ मात्राएं होती है और अन्त में गुरु होता है।

दटाक—देखो 'दट' (रू.भे.)

दटियोड़ौ—देखो 'डटियोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दटियोडी)

दठि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

दडड—देखो 'दडौ' (रू.भे.) (ऊ.र.)

दडदड़ी-सं०स्त्री०—(देश) वाद्य विशेष। उ०—नफेरी सरणाइ बरगां ढोल झालर हुंटि दमामां दडदडी म्रिदंग नीसांण प्रमुख वाजित्र वाजइ, तेणइ आकास गाजइ अहंमदावाद नगर माहि।—व.स.

रू०भे०—दड़दड़ी, दडवडी।

दडवड—देखो 'दड़वड़' (रू.भे.) उ०—मठ देवकुळ खडहडंत पाडतउ चतुस्पद दटवड। द्रडवडतउ, घलहल घ्रित तैल भोजन ढोळतउ।

—व.स.

दडवडणौ, दडवडवौ—देखो 'दड़वड़णौ, दड़वड़बौ' (रू.भे.)

उ०—दांणव दळि जिम दडवडतु दंती देखी नइ, धायउ अरजुनु धमगसंतु वयरी मूंकी नइ।—पं.पं.च.

दडवडाट, दडवडाटि—देखो 'दड़वड़ाट' (रू.भे.) उ०—सीकडि तणइ झमाळि, सुखासण नइ दडवडाटि, घोडा तणइ धांकि, पायक तणइ पहटि, रथ तणे चीत्कारि, भट वंदि तणे जया रवि।—व.स.

दडवडियोड़ौ—देखो 'दड़वड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दडवडियोड़ी)

दडवडी—देखो 'दडदड़ी' (रू.भे.) उ०—तिवल दमांमा दडवडी, निरघोस्यां नीसांण। रेणू असंखित ऊछळी, भूतळि छाहिउ भांण।

—गा.कां.प्र.

दडिदक—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दडूकणौ, दडूकबौ—देखो 'दड़ूकणौ, दड़ूकबौ' (रू.भे.)

दडूलु, दडूलौ—१ देखो 'दडौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ 'दडौ' (मह., रू.भे.) उ०—कारि धरि सोविन-गेडिका, रत्न दडूलु आंणि। रांमा-सिउं रंगि रमइ, प्रेमि प्रांण-प्रमांणि।—मा.कां.प्र.

दडौ—१ देखो 'दड़ौ' (रू.भे.) २ देखो 'दड़ौ' (मह., रू.भे.)

उ०—१ मोटिम्म मेरु मलिकह मुकुट स्त्री अहिमद उद्दम दमइ। अरि मुंड दडा ऊछाळतउ असि गेडी रांमति रमइ।—व.म.

उ०—२ दडा लगइ गुरू भेटिउ द्रोणु सु बंभणवेसि। तेह पासि विद्या पढ़इ कूपगुर नइं उपदेसि।—पं.पं चो.

दडढ़णौ दड्ढ़बौ-क्रि०अ० [सं० दग्धनम्] जलना, भस्म होना।

उ०—द्रोण विधुर गंगेय गुर न हल्लि कोहग्गि दड्ढ़ीय।—पं.पं.च.

दढ़णौ, दढ़बौ—रू०भे०।

दड्ढ़योड़ौ-भू०का०कृ०—जला हुआ, भस्म हुवा हुआ।

(स्त्री० दड्ढ़योड़ी)

दढ़—देखो 'द्रढ़' (रू.भे.)

दढ़णौ, दढ़बौ—देखो 'दड्ढ़णौ, दड्ढ़बौ' (रू.भे.) उ०—बेटा पाखइ इक दोहिलउं घरइं। बेटे छते इकि वढ़ी दढ़ी मरइं।—सिहुंगति चउपई

दढ़ि—देखो 'दाढ़ी' (रू.भे.) उ०—मियां खांन मिलकसह, ऊंडा मंडै पग्ग। एक कर घतै दढ़ियां, एक कर घूणै खग्ग।—गु.रू.बं.

दढ़ियळ—१ देखो 'डढ़ियळ' (रू.भे.)

२ देखो 'डाढ़ाळौ' (रू.भे.)

दढ़ियोड़ौ—देखो 'दड्ढ़योडौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दढ़ियोड़ी)

दढ्ढ़—देखो 'डाड' (मह., रू.भे.) उ०—वडौ देव वाराह इळा दढ्ढ़ां ऊधारण। वडो देव वाराह सबळ दैतां संघारण।—ज.खि.

दढ्ढ़ा—देखो 'डाड' (रू.भे.)

दणयर—१ देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—मारू सी देखी नहीं, अण मुख दोय नयणांह। थोड़ी सो भोळ पड़इ, दणयर ऊगंतांह।

—ढो.मा.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दणव—देखो 'दांनव' (रू.भे.)

दणियर—१ देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—१ पुहवि न पारावार गढ़ अनिय गांवां तणा। सुर तेतीसइ राम धरणि, दणियर देखणहार।

—अ. वचनिका

उ०—२ मुहकम लग्गौ मेड़तै, ज्यां दणियर पर पेख। आपड़ियो घर लूटतां, वाहर गोहर सेख —रा.रू.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दणी-सं०स्त्री० [सं० धनुष] धनुष।

दणीयर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) (अ.मा.)

दणु—देखो 'दनु' (रू.भे.)

दत-सं०पु० [सं० दत्त] १ दान। उ०—१ देतौ अडबपसाव दत, वीर गौड़ वछराज। गढ़ अजमेर सुमेर सूं, ऊंचौ दीसै आज।—वां.दा.

उ०—२ सुग्रीव सकाजा रच कपिराजा, भूपत निवाजा भ्रात भणे। भुरजास भभीखण क्रत दत कंचण, साख पुरांणण वेद सुणे।

—र.ज.प्र.

रू०भे०—दति, दती।

यौ०—दत-दायजौ।

२ जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक. ३ दत्तात्रेय।

४ सन्यासी। उ०—सुणै वात मारीच थांन सिधाए। उभै देत मांमी सु भांणेज आए। जुथां दंडकारां घरै भेख जू जो। दतां भेख हेको म्रिगां भेख दूजौ।—सू.प्र.

५ पौष्टिक पदार्थ।

क्रि०प्र०—दैणौ।

वि०—दिया हुआ।

रू०भे०—दत्त।

दतक—देखो 'दत्तक' (रू.भे.)

दतचाळ-सं०पु० [सं० दत्त या दत्तः=दान+राज० चाळ] दानवीर, राजाकर्ण। (अ.मा.)

दतणौ, दतबौ-क्रि०स० [सं० दत्त] १ पौष्टिक पदार्थ खिलाना।
उ०—अनै घोड़ा सांकळां तोड़ रया छै। इण दतियोड़ा सो इण घर माथै तौ प्राहुण (सत्रू) आवण री विचारसी तौ आसी चूड़ विछोड़ लुगायां रा चूड़ा फोड़ाय नै आवसी क्यूंकि अठै आयोड़ा पाछा जीवता जावै नहीं।—वी.स.टी.

२ दान देना।

दतणहार, हारौ (हारी), दतणियौ—वि०।

दतिओड़ौ, दतियोड़ौ, दत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दतीजणौ, दतीजबौ—कर्म वा०।

दतदायजौ—देखो 'दत्तदायजौ' (रू.भे.)

दत-देव-सं०पु०—दत्तात्रेय मुनि। उ०—नमौ मधुसूदण देवण मोख, नमौ दत-देव विडारण दोख।—ह.र.

दतव—देखो 'दत्तव' (रू.भे.)

दतवर-सं०पु०—शिव, महादेव (क.कु.बो.)

दता—देखो 'दाता' (रू.भे.) उ०—लैणा दैणा लंक, भुज दंड राघव भांमणै। आपायत अणसंक, सूर दता दसरथ तणा।—र.ज.प्र.

दतार—देखो 'दातार' (रू.भे.) उ०—अनाथ अगम, अनेह अगेह। दतार अपार अणंकव देह।—ह.र.

दतात्रय—देखो 'दत्तात्रेय' (रू.भे.) उ०—नमौ त्रय रूप दतात्रय देव। नमौ जप तप्प धियांन अजेव।—ह.र.

दतावरी—देखो 'दातावरी' (रू.भे.)

दति—१ देखो 'दत' (१) (रू.भे.) उ०—आगै लगनां माल गु आंणी जग आभौ। पूरी मति 'भारै' मति, जाभै दति आभौ।—ल.पिं.
२ देखो 'दिति' (रू.भे.)

दतियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पौष्टिक पदार्थ खिलाया हुआ।
२ दान दिया हुआ।
(स्त्री० दतियोड़ी)

दतिसुत-सं०पु० [सं० दितिसुत] असुर, दैत्य, राक्षस (डिं.को.)
रू०भे०—दतीसुत।

दती-वि०—दातार, उदार।
सं०पु०—१ दत्तात्रेय ऋषि.
२ देखो 'दत' (१) (रू.भे.) ३ देखो 'दिती' (रू.भे.)

दतीसुत—देखो 'दतिसुत' (रू.भे.) (अ.मा., डिं.को.)

दतुण—देखो 'दांतण' (रू.भे.) उ०—आकां दतुण न कीजिये, संपां न खाजै मांस। 'जला' जेथ न जायजे, जेठां जंद विनास।
—जलाल बूबना री वात

दत्त—देखो 'दत' (रू.भे.) उ०—१ दादू दत्त दरबार का, को साधू बांटै आइ। तहां रांम रस पाइये, जहं साधू तहं जाइ।
—दादू बांणी

उ०—२ घुर पैंड न हालै माथो धूणै, हांकुं केण दिसा हैराव। दत्त मोनै 'राघव' तैं दीनो, पाछो लेतो लाख पसाव।—ओपो आढ़ौ

उ०—३ दादू कहं या गोरख भरथरी, अनंत सिधां का मंत। परकट गोपीचंद है, दत्त कहै सब संत।—दादू बांणी

उ०—४ रजपूत मुगळ भभरूप वरणि, दुफड़ां झाटक दौड़िया। अवधूत जांणि करि करि अमल, दत्त अखाड़ै पौढ़िया।—सू.प्र.

यौ०—दत्त-दायजौ।

दत्तक-सं०पु० [सं०] शास्त्र विधि से बनाया हुआ पुत्र, गोद लिया हुआ लड़का।
रू०भे०—दतक।

दत्तचित्त-वि० [सं०] जिसने किसी कार्य में खूब जी लगाया हो।

दत्तणौ, दत्तबौ—देखो 'दतणौ, दतबौ' (रू.भे.)

दत्तति—देखो 'दत्तात्रेय' (रू.भे.)

दत्ततीरथक्रत-सं०पु० [सं० दत्ततीर्थकृत्] जैन मतानुसार गत उत्सर्पिणी के आठवें अर्हंत।

दत्तदायजौ-सं०पु०यौ०—दहेज।
उ०—१ कितरा अेक दिन पाछै बादसाह जलाल नूं सीख दीन्ही। दत्तदायजो दियौ। बूबना नूं छत्तीस पांण दायजै दीन्हा।
—जलाल बूबना री वात

उ०—२ लाग-बाग दीजै छै। तठै परणिया, भात दिया, पिण मन किण ही री राजी नहीं। दत्तदायजौ दे नै सीख दीन्ही।
—राव रिणमल री वात

रू०भे०—दात-दायजौ।

दत्तब, दत्तव-सं०पु० [सं० दत्त] दान। उ०—दुनियां दातारां जूझारां देवै। लिपळा लोकां नै लेखै कुण लेवै। दत्तब करतब मैं दौढ़ा दरसाता। सारी प्रथवी सिर सोढ़ा सरसाता।—ऊ.का.
रू०भे०—दातव।

दत्ता—१ देखो 'दत्तात्रेय' (रू.भे.)
२ देखो 'दाता' (रू.भे.)

दत्तावरी—देखो 'दातावरी' (रू.भे.) उ०—देवांण विद्या दत्तावरी, देवी धन दातावरी। चहुवांण वंस रूपक चवां, सारसत्त भुवनेस्वरी।
—नैणसी

दत्तियोड़ौ—देखो 'दतियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दत्तियोड़ी)

दत्ती-सं०स्त्री०—पार्वती, दुर्गा, शक्ति (क.कु.बो.)

दत्ती-वि० [सं० दाता] दानी, उदार। उ०—दत्तौ भाटी देवराज देरावर पुर का। वगसै छपन हजार बाज घन कोड़स धर का।
—दुरगादत्त बारहठ

दत्तोपनिसद-सं०पु० [सं० दत्तोपनिषद्] एक उपनिषद् का नाम।

दत्तोलि–सं०पु० [सं०] पुलस्त्य मुनि का एक नाम।
दद—देखो 'उदधि' (रू.भे.)
ददाग्रतंनिधदान–सं०पु० [सं० ददाय निधि दानददक=दायक] कल्प-वृक्ष (अ.मा.)
ददराज–सं०पु० [सं० उदधि+राज] समुद्र, सागर।
उ०––रणक घंट ददराज, गाज ज्यूं हो गज गाजत। सिर अंकुस सिरताज, बीज उपमा ज विराजत।—सू.प्र.
ददांमो–सं०पु०—वाद्य विशेष।
उ०—तिबल ददामो दडवडी, निरघोस्या नीसांण। रेणूं असंखित ऊछळी, भूतळि छाहिउ भांण।—मा.कां.प्र.
ददौ–सं०पु० [सं० द] १ 'द' अक्षर. २ देने के लिये कहा जाने वाला शब्द, देने का भाव। उ०—१ बावनां बाहिरौ त्रिपट पड़ियौ तेपन्नौ। दातारे तजि ददौ, निपट करि झाल्गौ नन्नौ।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ देई आदर दीजै दांन कहै ददौ। मांणस रे धरमसी कहै आदर सुं मुदौ।—ध.व ग्रं.
३ देखो 'दादौ' (रू.भे.) उ०—ददौ इण 'केहर' रौ दइवांण।
—सू.प्र.
रू०भे०—दद्दौ।
दद्धीच—देखो 'दधीचि' (रू.भे.) उ०—क्रन्न काय हरचंद क्रन्न कज ग(क) हर कहंता। काय समर दद्धीच काय जीवाहन जंता।
—नैणसी
दद्दौ—देखो 'ददौ' (रू.भे.) उ०—बावन आखर में वडौ, नन्नौ आखर सार। दद्दौ तौ जांणूं नहीं, लल्ले आखर प्यार।—अज्ञात
दध–सं०स्त्री० [सं० द्वेष] १ डाह, ईर्ष्या.
२ देखो 'उदधि' (रू.भे.) उ०—१ पदम हिलै क छिलै दध पाजा। राजा हूंत सांमुद्रौ राजा।—सू.प्र.
उ०—२ इम चहुवांण प्रवळ दळ ओपै। लहरि अजाद जांणि दध लोपै।—सू.प्र.
३ देखो 'दई' (रू.भे.) उ०—१ जतन सूं सखी दध वेचवा जावतां। अचांनक कांन री धाड़ ऊठै।—वां दा.
उ०—२ वेवै चक्र करै नृप वंदण। चाढ़ै हळद दोव दध चंदण।
—सू प्र.
दधखीर—देखो 'उदधिखीर' (रू.भे.) उ०—मन थारौ मणजै मुरधरिया। खुस रीझां देवण दधखीर।—द दा.
दधजा–सं०स्त्री० [सं० उदधिजा] लक्ष्मी, रमा (डि.को.)
दधणौ, दधबौ–क्रि०अ० [सं० दग्ध] भस्म होना, जलना।
दधधांम–सं०पु० [सं० उदधिधाम] वरुण (अ.मा.)
दधपुरी–सं०पु० [सं० उदधिपुरी] सात पुरियों में से एक पुरी, ारकापुरी। (अ.मा.)
दध-भेदी–सं०पु०यौ० [सं० उदधि-भेदिन्] केवट, मल्लाह।
दधमुख–सं०पु० [सं० दधिमुख] सुग्रीव का मामा और मधु वन का रक्षक एक बन्दर जो रामचन्द्र की सेना में था। उ०—घख हणू भुजअद धारखा, सुग्रीव अंगद सारखा। नळ नील दधमुख पणस नाहर, विहद जंबूवांन।—र.ज प्र.
रू०भे०—दधिमुख।
दधविधी–सं०पु० [सं० उदधि+विध] केवट (अ.मा.)
दधसार–सं०पु० [सं० दधि+सार] १ मक्खन, नवनीत (ह.नां., अ.मा.)
[सं० उधदि+सार] २ मदिरा (अ.मा.)
रू०भे०—दधिसार।
दधसुत–सं०पु० [सं० उदधि+सुत] १ शंख (अ.मा.)
२ अमृत (अ.मा.) ३ चन्द्रमा (डि.को.) ४ प्रवाल, मूंगा (अ.मा.)
५ मोती। उ०—दधसुत कांमण कर लिये, करण हंस प्रतिपाळ। बीच चकोरन चुग लिये, कारण कोण जमाल ?—जमाल
६ विष. ७ कमल. ८ जालंदर दैत्य।
रू०भे०—दधिसुत।
दधसुतनी, दधसुता–सं०स्त्री० [सं० उदधि+सुता] १ लक्ष्मी, पद्मा (डि.को.)
२ सीप।
रू०भे०—दधिसुता।
दधाणौ, दधाबौ–क्रि०स० [सं० दग्धं] दग्ध करना, जलाना।
उ०—अरां किया पैमाल, दधाई छाती अमीरां अदेवाळां। घाई वीरताई प्रथी जमाई धींगं।—जवांनजी आढ़ौ
दधायोड़ौ–भू०का०कृ०—दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ।
(स्त्री० दधायोड़ी)
दधि–सं०पु०—१ वस्त्र, कपड़ा. २ देखो 'उदधि' (रू.भे.)
उ०—१ दधि वीणि लियौ जाइ वणतौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससत। नासा अग्रि मुताहळ निहसति, भजति कि सुक मुख भागवत।
—वेलि.
उ०—२ प्रसिधि दधि पाज, व्रवण गज वाज। मदति व्रजराज मरद अनमध। ल.पि.
उ०—३ जिसौ दधि खेवट हीण जहाज।—रांमरासौ
३ देखो 'दई' (रू.भे.) उ०—सहंस समपि कपिळा इक साथै। हळद दोव चंदण दधि हाथै।—सू.प्र.
दधिकर–सं०पु० [सं०] ३६ राजवंशों में से एक।
दधिगांमणी, दधिगांमिनी–सं०स्त्री० [सं० उदधिगामिनी] सरिता, नदी।
दधिजात–सं०पु० [सं०] १ मक्खन, नवनीत।
[सं० उदधि जात] २ चन्द्रमा।
सं०स्त्री०—३ लक्ष्मी, पद्मा।
दधिभव–सं०पु० [सं० उदधि-भव] विष्णु, ईश्वर। उ०—मुख इम पवित्र करिस कंस-मंजण, भखै प्रसाद तूझ दुख भंजण। रसण निपाप करिस इम राघव, भणै तूझ गुण तारण दधिभव।—ह.र.
दधिमंडोद–सं०पु० [सं०] पुराणानुसार दही का समुद्र।

दधिमंडोद–सं०पु० [सं०] १ पुराणानुसार पृथ्वी के सात खंडों में से एक. २ पौराणिक सात महासागरों में से प्रमुख महासागर।

दधिमती—देखो 'दधिमथी' (रू.भे.)

दधिमथणी–सं०स्त्री०यौ० [सं० दधि+मंथन] दही को मथने का लकड़ी डंडा विशेष, मथानी। उ०—फजरां हथणी सी दधिमथणी फुरती, माटां घर घर में घणहर सी घुरती।—ऊ.का.

दधिमथी–सं०स्त्री०—समुद्र मंथन कर अमृत निकालने वाली मोहिनी (विष्णु शक्ति)।

वि०वि०—अथर्वा ने इसी की उपासना कर 'दध्यञ्च्' (जिसे दधीचि और दधीचं भी कहते हैं) पुत्र प्राप्त किया। (दधि=दधिमथी(ती) का अञ्च्=पूजक इसी के शज दाधीच वा दाधिमथ (दाहिमा) ब्राह्मण व क्षत्रिय प्रसिद्ध हैं।

रू०भे०—दधिमती।

दधिमुख—देखो 'दधमुख' (रू.भे.)

दधियोड़ौ–भू०का०कृ०—भस्म हुवा हुआ, जला हुआ। (स्त्री० दधियोड़ी)

दधिसार—देखो 'दधसार' (रू.भे.)

दधिसुत—देखो 'दधसुत' (रू.भे.)

दधिसुता—देखो 'दधसुतनी' (रू.भे.)

दधी—१ देखो 'दधि' (रू.भे.) २ देखो 'उदधि' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—दधी लहरी जळ हेक न दोय।—ह.र.

दधीच—देखो 'दधीचि' (रू.भे.) उ०—सांमा तौ सुभराज, ऊगं दन 'ऊनड़'हरा। जेहा धरम जिहाज, कीरत काज दधीच 'ऋन'।—बां.दा.

दधीचास्थी–सं०पु० [सं० दधीच+अस्थि] वज्र (अ.मा.)

दधीचि, दधीची–सं०पु० [सं०] एक पौराणिक ऋषि जिनकी हड्डियों का वज्र बना कर इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया था।

उ०—१ वातापी पीधु वळी, अंगइ अणि अगस्ति। इंद्र तणा आयुध गळी दीध दधीचिइ अस्थि।—मा.कां.प्र.

उ०—२ देवी दधीची रूप तें हाड दांधौ, देवी हाड रौ तख्त थै वज्र कीधौ। देवी वज्र रै रूप तें व्रत्र नास्यौ, देवी व्रत्र रै रूप तें सक्र त्रास्यौ।—देवि.

रू०भे०—दद्धीच, दधीच।

दधीलौ–वि० [सं० द्वेष+रा०प्र०ईलौ] द्वेष रखने वाला, डाह रखने वाला, ईर्ष्यालु।

दधीस–सं०पु० [सं० उदधि+ईश] १ समुद्र, सागर. २ वरुण।

दधूण—वृक्ष विशेष। उ०—दांति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दधूण। देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण।—मा.कां.प्र.

दधेस–सं०पु० [सं० उदधि+ईश] १ समुद्र सागर. २ वरुण

दध्न–सं०पु० [सं०] चौदह यमों में से एक यम।

दन—१ देखो 'दांन' (रू.भे.) उ०—रांमण नह सोनौ दियौ, लहि सोना री लंक। क्रन दन सोनौ कापियौ, विण ही लंका 'वंक'।

२ देखो 'दिन' (रू.भे.)—बां.दा.

दनइस—देखो 'दिनेस' (रू.भे.) (डिं.को.)

दनकर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) (डिं.को.)

दनमण, दनमणि—देखो 'दिनमणि' (रू.भे.) (डिं.को.)

दनमांन—देखो 'दिनमांन' (रू.भे.) उ०—त्रंब पावू उडै रज ग्राव तिकै जिदराव तणा दनमांन जकै।—पा.प्र.

दनादन–क्रि०वि० (अनु०) १ दन दन शब्द के साथ. २ लगातार. ३ तीव्र वेग के साथ।

दनि—देखो 'दांन' (रू.भे.) उ०—लाख प्रथम दनि लहै, आदि 'राजसी' अखावत। लख दूजौ दनि लहै, पात 'राजसी' पतावत।
—सू.प्र.

दनियां—देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

कहा०—दनियां ये सारई पूगे, रांमें नी पूगे—संसारी मनुष्यों तक सभी की पहुँच होती है परन्तु राम तक नहीं हो सकती।

दनीस—देखो 'दिनेस' (रू.भे.) उ०—सभै बंदगी सुरीस, देव तौ जपै दनीस। लाख...लद्धीस, नांमणौ नरीस।—र.ज.प्र.

दनु–सं०स्त्री० [सं०] १ दक्ष की कन्या जो कश्यप ऋषि को व्याही गई थी। यह दानवों की माता थी। इसके चालीस दानव पैदा हुए थे।
सं०पु०—२ एक राक्षस का नाम जो श्रीदानव का पुत्र था. ३ दैत्य, राक्षस (अ.मा.)

दनुज–सं०पु० [सं०] दनु से उत्पन्न दानव, असुर, राक्षस।

उ०—१ दंती बराह नाहर दनुज, सो तिण ठां रह साबता। रे पुत्र धणी विध राखजो, जनक सुता रा जाबता।—र.रू.

उ०—२ देवी दैंत रै रूप तें देव ग्रहिया। देवी देव रै रूप कै दनुज दहिया।—देवि.

उ०—३ सरव सगुण सह सरसै। दनुज दहण भुज दरसै।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दनूज।

दनुजदळणी, दनुजदळनी–सं०स्त्री० [सं० दनुजदलनी] दुर्गा, शक्ति।

दनुजराय–सं०पु० [सं० दनुजराज] १ दानवों का राजा हिरण्यकश्यप. २ दानवपति रावण।

दनुजेंद्र–सं०पु० [सं०] दानवों का राजा—१ रावण, २ हिरण्यकश्यप

दनुजेस–सं०पु० [सं० दनुजेश] १ हिरण्यकश्यप. २ रावण. ३ राजा बलि।

दनु-पत–सं०पु० [सं० दनु+पति] असुरराज, राजा बलि (अ.मा.)

दनु-संभव–सं०पु० [सं०] दनु से उत्पन्न, दानव।

दनूज—देखो 'दनुज' (रू.भे.) उ०—करि सहाय कमळासण केरी, हरन दनूज दसां दिस हेरी।—मे.म.

दनेस—देखो 'दिनेस' (रू.भे.) उ०—सुज भ्रात जेठी सेस रा, दइवांण वंस दनेस रा।—र.ज.प्र.

दन्न–सं०पु०—ध्वनि विशेष।

दन्नि—देखो 'दांन' (रू.भे.) उ०—दुवौ न जोड़ि स्राग दन्नि तेण स

घरा पतो। नरां पती जोवांण नाय ऐड़ड़ो 'प्रमैपतो'।—सू.प्र.

दग्यां—देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

कहा०—दग्यां मांये मा बाप नी मळे बीजूं सारू मळे—दुनिया में माता पिता नहीं मिलते अन्य समस्त पदार्थ मिलते हैं (भील)

दप-सं०पु० (अनु०) मृदंग का बोल। उ०—दों दों दों दप मप द्राग्दि-दिक दमकं म्रिदंग। भण रण रण भं भं भाभरि भमकित भूंग।
—घ.व ग्रं.

दपट-सं०स्त्री०—१ छलांग, कुदान। उ०—कदमां छेक दपट जम कळका, तलफ-स कर जळ का तास। पलट फिरत दरपण दुत पळका, बीजळ का भळका वरहास।—देवजी दधवाड़ियो

२ आग के प्रज्वलन से उठी हुई आग की लौ, आग की लपट। उ०—भंखड़ खसता व्रख दवानळ दपटां भाळं, भूमर काळी सुरावेन रा पूंछ दभाळं।—मेघ.

३ आक्रमण, धावा। उ०—सो रंजक री रपट। बाज री भपट। लाय री लपट। चीता री दपट। वज्र कर संकर किना विह्ना नौ चक्र छूटो।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

४ डांट, फटकार।

रू०भे०—दपट्ट।

वि०—अधिक, तेज। उ०—धारी अंधाधूंध अंध आदत अळियां री, दपट उठै दुरगंध गंध नासैं गळियां री—ऊ.का.

दपटणो, दपटबो-क्रि०स०—१ खूब खाना या पीना, आहार करना। उ०—लख ग्रहणां वप लपटजो, राज अपटजो रीज। दारू आसो दपटजो, तुरां भपटजो तीज।—मयाराम दरजी री वात

२ कैंची से दाढ़ी को छोटी करना। ३ आक्रमण करना, धावा करना। ४ आवेष्टन करना, लपेटना। उ०—जद या कहै और तो कठै ठौड़ नहीं नै या मंजूस है जणी में घसै जाम्रो, पछै परधांन है मजूस में घालै नै ऊपर चीथरां थी दपटचो नै कमाड़ खोल्या जद अमल पांणी में गोता खातो खातो मैं तो मांहे आयो।
—कांना रजपूत री वात

५ छलांग भरना, कूदना। ६ तेज भागना। ७ संहार करना, मारना। ८ अधिक खर्च करना। ९ किसी को डराने के लिये बिगड़ कर जोर से बोलना, घुड़कना, डांटना।

क्रि०अ०—१० दौड़ना। उ०—वळ अमट ऊवट गयण वट, द्रढ़ दनुज दहवट कज दपट भट भिड़ै वार सघीर।—र.रू.

दपटणहार, हारो (हारी), दपटणियो—वि०।

दपटवाड़णो, दपटवाड़बो, दपटवाणो, दपटवावो, दपटवावणो, दपट-वावबो, दपटाड़णो, दपटाड़बो, दपटाणो, दपटाबो, दपटावणो, दपटा-वबो—प्रे०रू०।

दपटिओड़ो, दपटियोड़ो, दपटचोड़ो—भू०का०कृ०।

दपट्टणो, दपट्टबो, दपेटणो, दपेटबो, दपटणो, दपटबो, दापटणो, दापटबो—रू०भे०।

दपटाड़णो, दपटाड़बो—देखो 'दपटाणो, दपटाबो' (रू.भे.)

दपटाड़णहार, हारो (हारी), दपटाड़णियो—वि०।

दपटाड़िओड़ो, दपटाड़ियोड़ो, दपटाड़चोड़ो—भू०का०कृ०।

दपटाड़ीजणो, दपटाड़ीजबो—कर्म वा०।

दपटणो, दपटबो—अक०रू०।

दपटाड़ियोड़ो—देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दपटाड़ियोड़ी)

दपटाणो, दपटाबो-क्रि०स० (दपटणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ खूब खिलाना या पिलाना, आहार करा ना. २ कैंची से दाढ़ी को छोटी कराना. ३ आक्रमण कराना, धावा कराना. ४ आवेष्टन कराना, लिपटाना. ५ छलांग भराना, कुदाना. ६ भगाना, दौड़ाना. ७ संहार कराना, मराना. ८ अधिक खर्च कराना. ९ डांट दिलाना, घुड़काना, डराना।

दपटाणहार, हारो (हारी), दपटाणियो—वि०।

दपटायोड़ो—भू०का०कृ०।

दपटाईजणो, दपटाईजबो—कर्म वा०।

दपटणो, दपटबो—अक०रू०।

दपटाड़णो, दपटाड़बो, दपटावणो, दपटावबो, दपट्टाड़णो, दपट्टाड़बो, दपट्टाणो, दपट्टाबो, दपट्टावणो, दपट्टावबो—रू०भे०।

दपटायोड़ो-भू०का०कृ०—१ खूब खिलाया या पिलाया हुआ, आहार कराया हुआ. २ कैंची से दाढ़ी को छोटी कराया हुआ. ३ आक्रमण कराया हुआ, धावा कराया हुआ. ४ आवेष्टन कराया हुआ, लिप-टाया हुआ. ५ छलांग भराया हुआ, कुदाया हुआ. ६ भगाया हुआ, दौड़ाया हुआ. ७ संहार कराया हुआ, मराया हुआ. ८ अधिक खर्च कराया हुआ. ९ डांट दिलाया हुआ, घुड़काया हुआ, डराया हुआ।
(स्त्री० दपटायोड़ी)

दपटावणो, दपटावबो—देखो 'दपटाणो, दपटाबो' (रू.भे.)

दपटावणहार, हारो (हारी), दपटावणियो—वि०।

दपटाविओड़ो, दपटावियोड़ो, दपटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

दपटावीजणो, दपटावीजबो—कर्म वा०।

दपटणो, दपटबो—अक०रू०।

दपटावियोड़ो—देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दपटावियोड़ी)

दपटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ खूब खाया हुआ या पिया हुआ, आहार किया हुआ. २ कैंची से दाढ़ी को छोटी किया हुआ. ३ आक्रमण किया हुआ, धावा किया हुआ. ४ आवेष्टन किया हुआ, लपेटा हुआ. ५ छलांग भरा हुआ, कूदा हुआ. ६ तेज भगाया हुआ. ७ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ८ अधिक खर्च किया हुआ. ९ घुड़का हुआ, डांटा हुआ. १० दौड़ा हुआ, भगा हुआ।
(स्त्री० दपटियोड़ी)

दपट्ट–वि०—देखो 'दपट' (रू.भे.)। उ०—दारू मांस दपट्ट, अमल अणमाप अरोगे। चमड़पोस रै चींठ, भंवर मादक सुख भोगे। —ऊ.का.

दपट्टणौ, दपट्टबौ—देखो 'दपटणौ, दपटबौ' (रू.भे.)
उ०—निरधार निवाजण में अघ भांजण, सेवग तारं सधीर सो जी। दुख देवां दहण दैत दपट्टण, वीर निको रघुवीर सो जी।—र.ज.प्र.

दपट्टाड़णौ, दपट्टाड़बौ—देखो 'दपटाणौ, दपटाबौ' (रू.भे.)

दपट्टाड़ियोड़ौ—देखो 'दपटायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपट्टाड़ियोड़ी)

दपट्टाणौ, दपट्टाबौ—देखो 'दपटाणौ, दपटाबौ' (रू.भे.)

दपट्टायोड़ौ—देखो 'दपटायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपट्टायोड़ी)

दपट्टावणौ, दपट्टावबौ—देखो 'दपटाणौ, दपटाबौ' (रू.भे.)

दपट्टावियोड़ौ—देखो 'दपटायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपट्टावियोड़ी)

दपट्टियोड़ौ—देखो 'दपटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपट्टियोड़ी)

दपणौ, दपबौ—देखो 'दीपणौ, दीपबौ' (रू.भे.) उ०—कुरंद कपै हद केलंपुर, दपै ऊजळ दांन। छत्री सूंम सारा छिपै, जगपत जिपै जिहांन।—उमेदसिंह सीसोदिया रौ दूहौ

दपेटणौ, दपेटबौ—देखो 'दपटणौ, दपटबौ' (४) (रू.भे.)

दपेटियोड़ौ—देखो 'दपटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपेटियोड़ी)

दप्पण—देखो 'दरपण' (रू.भे.) उ०—तोळियां तोरण डगमगंत, दप्पण विसथारिउं। मच मिसिहि किरि सुरविमांण, महियळि अवतारिउं। —प्राचीन फागु संग्रह

दफण–सं०पु० [अ० दफ़न] १ किसी चीज को जमीन में गाड़ने की क्रिया. २ मृतक को जमीन में गाड़ने का कार्य।

दफणाणौ, दफणाबौ–क्रि०स० [अ० दफ़न] १ जमीन में गाड़ना।
उ०—आदर चाहै मूढ़ वे, सूंबां रै घर जाय। सिर लिखमी रै दी सिला, घर आया दफणाय।—वां.दा.
२ मृतक को जमीन में गाड़ना, दफनाना।
दफणाणहार, हारौ (हारी), दफणाणियौ—वि०।
दफणायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दफणाईजणौ, दफणाईजबौ—कर्म वा०।

दफणायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ जमीन में गाड़ा हुआ. २ मृतक को जमीन में गाड़ा हुआ, दफनाया हुआ।
(स्त्री० दफणायोड़ी)

दफतर—देखो 'दपतर' (रू.भे.) उ०—१ दफतर दिस देखतां, वरस साठां तक वीतां। जम अमली जांण जै, ग्यांन पढ़िया कै गीता। —अरजुणजी वारहठ

उ०—२ कर भक्ती पाछा पड़ै रे, इचरज आवै मोय। दफतर नांमा कट गया, भलो काय सूं होय।—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—३ दिवस रा थाका मांदा, सै सिझ्या भाज्या आवता। दरोगी दफतर रा दाझया, पून निरोगी पावता।—दसदेव
यौ०—दफतर-खांनौ।

दफतरी—देखो 'दपतरी' (रू.भे.) उ०—दफतरी ओसवाळ, कोठारी कूकड़, चौपड़ौ भीमराज सूजावत।—द.दा.

दफतरीखांनौ—देखो 'दपतरीखांनौ' (रू.भे.)

दफती–सं०स्त्री० [अ० दफ्तीन] कागज के कई तख्तों को एक में सटा कर बनाया हुआ गत्ता।

दफदर—देखो 'दफ्तर' (रू.भे.)

दफा–सं०स्त्री० [सं० दफ़अ] १ किसी कानूनी पुस्तक का वह एक अंश जिस में किसी अपराध के विषय में व्यवस्था हो, धारा।
क्रि०प्र०—देणा, लगाणा।
२ मर्त्तबा, बार, वेर।
३ नाश। उ०—चाहीजै गरज उण लड़ाई सूं छूट पूरी भलाई री न होय धरम न छूटै और दफा अन्याव उत्पात रौ होय।—नी.प्र.
वि० [अ० दफ़ा:] दूर किया हुआ, हटाया हुआ, तिरस्कृत।
मुहा०—दफा होणौ—हट जाना, दूर हो जाना, टल जाना, भाग जाना।
रू०भे०—दफै।

दफादार–सं०पु० [अ० दफअ:+फा० दार] १ फौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों. २ पुलिस का जमादार।
३ तहसीलदार के अधीनस्थ वह कर्मचारी जिस की मातहती में सुतर सवार रहते हैं।
रू०भे०—दफैदार।

दफादारी–सं०स्त्री०—१ दफादार का पद. ४ दफादार का कार्य।
रू०भे०—दफैदारी।

दफै—देखो 'दफा' (रू.भे.) उ०—१ किसी दफै फिदवी पर खीजता इस तरह दीसै। अपणै दसतों से सिर पीट कर दांतूं कूं पीसै। —दुरगादत्त वारहठ
उ०—२ तोय दुसमण होसी दफै तास। केई जुगां राज थारौ प्रकास।—रांमदांन लाळस

दफैदार—देखो दफादार' (रू.भे.)

दफैदारी—देखो 'दफादारी' (रू.भे.)

दफ्तर–सं०पु० [फ़ा०] किसी कारखाने आदि के सम्बन्ध की कुल लिखा-पढ़ी और लेन-देन करने का स्थान, कार्यालय, ऑफिस।
उ०—दफ्तर सब दहयूं इसो, कियो सतायु सिताव। आयौ पाछौ वणक इक, जमपुर सुं कर जाव।—वां.दा.
रू०भे०—दफतर, दफदर।

दफ्तरी–सं०पु० [फ़ा०] १ किसी कार्यालय का वह कर्मचारी जो कागज

आदि ठीक करता है, कागजों पर रूलें खींचता है, कागजों को फाइल करता है अथवा इसी तरह के अन्य कार्य करता है. २ पुस्तकों की जिल्द बांधने वाला, जिल्दसाज।
रू०भे०—दफतरी।
दफ्तरीखांनो-सं०पु० [फ़ा० दफ्तरीखाना] १ वह स्थान जहां बैठ कर दफ्तरी कार्य करता है २ वह स्थान जहां पर पुस्तकों पर जिल्द बांधी जाती है।
रू०भे०—दफतरीखांनो।
दबंग-वि०—जिसका लोगों पर रोब हो, प्रभावशाली।
दब-वि०—गुप्त (अ.मा.)
दबक-सं० स्त्री० [सं० दमन] १ दबने या छिपने की क्रिया या भाव.
२ धातु आदि को लम्बा करने के लिये पीटने की क्रिया।
यौ०—दबकगर।
३ सिकुड़न, शिकन।
४ भय, डर।
क्रि०प्र०—दैणी, होणी।
रू०भे०—दुबक।
दबकगर-सं०पु०—धातु आदि को पीट कर लंबा तार बनाने वाला।
दबकणो, दबकबौ-क्रि०अ० [सं० दमन] १ भय के कारण किसी संकरे स्थान में छिपना, दबकना। उ०—बंबी अंदर पोढ़ियो, काळो दबकै काय। पूंगी ऊपर पाघरौ, आवै भोग उठाय।—बी.स.
२ छिपना, लुकना (टोह में) ३ क्षुब्ध होना, डरना।
उ०—राजा पण वातां सुण दबकीज गयो, मूंहडो उतर गयो।
—राजा भोज अर खाफरै चोर री बात
क्रि०स०—४ किसी धातु को हथौड़ी से चोट लगा कर बढ़ाना या चौड़ा करना, पीटना।
[सं० दर्पः] ५ घुड़कना, डपटना, डाँटना।
दबकणहार, हारौ (हारी), दबकणियौ—वि०।
दबकवाड़णो, दबकवाड़बौ, दबकवाणो, दबकवावौ, दबकवावणो, दबकवावबौ, दबकाड़णो, दबकाड़बौ, दबकाणो, दबकावौ, दबकावणो, दबकावबौ—प्रे०रू०।
दबकिओड़ौ, दबकियोड़ौ, दबक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दबकीजणो, दबकीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
दुबकणो, दुबकबौ—रू०भे०।
दबकाड़णो, दबकाड़बौ—देखो 'दबकाणो, दबकावौ' (रू.भे.)
दबकाड़ियोड़ौ—देखो 'दबकायोड़ौ' (रू.भे.)
दबकाणो, दबकावौ-क्रि०स०—१ छिपाना, लुकाना. २ भय दिखाना, डराना।
('दबकणो' क्रिया का प्रे०रू०) ३ हथौड़ी से चोट लगा कर किसी धातु को चौड़ा कराना या बढ़वाना. २ घुड़काना, डपटाना।
दबकाणहार, हारौ (हारी), दबकाणियौ—वि०।
दबकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दबकाईजणो, दबकाईजबौ—कर्म वा०।
दबकणो, दबकबौ—अक०रू०।
दबकाड़णो, दबकाड़बौ, दबकावणो, दबकावबौ—रू०भे०।
दबकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ छिपाया हुआ, लुकाया हुआ. २ भय दिखाया हुआ, डराया हुआ. ३ हथौड़ी से चोट लगा कर किसी धातु को बढ़वाया हुआ, धातु को चौड़ा करवाया हुआ. ४ घुड़काया हुआ, डपटाया हुआ।
(स्त्री० दबकायोड़ी)
दबकावणो, दबकावबौ—देखो 'दबकाणो, दबकावौ' (रू.भे.)
दबकावियोड़ौ—देखो 'दबकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दबकावियोड़ी)
दबकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भय के कारण किसी संकरे स्थान में छिपा हुआ, दुबका हुआ. २ लुका हुआ, छिपा हुआ (टोह में) ३ क्षुब्ध हुवा हुआ, डरा हुआ. ४ किसी धातु को हथौड़ी से चोट लगा कर बढ़ाया हुआ, चौड़ा किया हुआ. ५ घुड़का हुआ, डपटा हुआ, डाँटा हुआ।
(स्त्री० दबकियोड़ी)
दबकी-सं०स्त्री० [सं० दमन] १ छिपने या दुबकने की क्रिया या भाव।
मुहा०—दबकी मारणी—गायब हो जाना, अदृश्य हो जाना, छुप जाना।
२ क्षुब्ध होने या डरने का भाव।
मुहा०—१ दबकी दैणी—क्षुब्ध करना, भय दिखाना, डराना.
२ दबकी मारणी—भयभीत होना, डरना।
३ घुड़कने या डाँटने की क्रिया या भाव।
मुहा०—१ दबकी दैणी—डाँट बताना, घुड़कना, दपटना.
२ दबकी मारणी—देखो 'दबकी दैणी'।
रू०भे०—दुबकी।
दबकै-क्रि०वि०—झट से, तुरन्त। उ०—पइसौ आवै प्रेम सूं तो दबकै लैणो दाव।—ऊ.का.
दबकै री सलमो-सं०पु० (देश०) दबके का बना हुआ सलमा जो बहुत चमकीला होता है।
दबको-सं०पु० [सं० दमन=तार आदि पीटना] कामदानी का सुनहला या रुपहला तार।
दबगर-सं०पु०—१ मांस को सेकने के निमित्त आग में औटने का ढंग या क्रिया। उ०—ओझरा धोय-धोय मांहे मसळां मारियो मांस घात दबगर कीजै छै।—रा.सा.सं.
२ देखो 'डबगर' (रू.भे.)
दबड़काणो, दबड़कावौ-क्रि०स० (अनु०) दौड़ाना। ज्यूं—घोड़ा नैं साचा दबड़काया जिको दिनूंगां पं'ली ठेट पूगा।
दबड़कावणो, दबड़कावबौ—रू०भे०।

दवड़कायोड़ौ-भू०का०कृ०—दौड़ाया हुग्रा।
(स्त्री० दवड़कायोड़ी)

दवड़कावणौ, दवड़कावबौ—देखो 'दवड़काणौ, दवड़काबौ' (रू.भे.)

दवड़कावियोड़ौ—देखो 'दवड़कायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दवड़कावियोड़ी)

दवणी-सं०स्त्री० [सं० दमन] १ ग्रसहाय, हीन या विवश होने की ग्रवस्था। उ०—तद प्रोहित वीकमसी रै बेटै देवीदास वीदावतां भाजतां नूं कयौ, 'रे रावजी दवणी मैं ग्राया पाछा घिरौ।'—द.दा.
मुहा०—दवणी में, दवणी मैं ग्राणौ, दवणी में होणौ—ग्रसहाय ग्रथवा हीन दशा में होना, संकट में होना। वश में होना, ग्रधिकार में होना।

दवणौ, दवबौ-क्रि०ग्र० [सं० दमन] १ बोझ के नीचे पड़ना, भार के नीचे ग्राना। ज्यूं—घर री भींत ढही सो पांच मिनख दविया।
२ किसी के दवाव या ग्रातंक में पड़ कर स्वतंत्रतापूर्वक ग्राचरण न कर सकना. ३ किसी के ग्रातंक या प्रभाव में पड़ कर किसी के इच्छानुसार कार्य करने के लिये विवश होना. ४ किसी के प्रभाव या ग्रातंक में ग्रा कर कुछ कह नहीं सकना. ५ किसी की तुलना में ग्रपेक्षाकृत काम जँचना, ग्रपने गुणों ग्रादि की कमी के कारण किसी के मुकाबिले में ठीक या ग्रच्छा नहीं जँचना। उ०—फळ वीह रूप में फबिया। देखै प्रभा नाखिग्रगण दविया।—सू.प्र.
६ ऐसी दशा में होना जिस में किसी ग्रोर से बहुत जोर पड़े, दाव में ग्राना। ज्यूं—सेनापती रै कै'णै सूं राजा नै दवणौ पड़ियौ।
७ किसी प्रवल शक्ति की टक्कर या मुकाबिले के कारण पैर न जमना, पीछे हटना, ग्रपने स्थान पर ठहर न सकना. ८ हारना.
९ शान्त रहना, उभड़ न सकना। ज्यूं—गुस्सौ दवणौ।
१० किसी बात का जहां का तहां रह जाना, किसी बात का ग्रधिक बढ़ या फैल न सकना. ११ ग्रपनी चीज का ग्रनुचित रूप से किसी दूसरे के ग्रधिकार में चला जाना। उ०—तौ जोगै री भळ भटियांणी रावजी नूं लिखी जो धरती दबै नहीं, मोहिलां री दखल हुवै छै।—नापै सांखलै री वारता
१२ मंद पड़ना, धीमा पड़ना।
मुहा०—१ दवियोड़ी ग्रावाज (जवांन)—धीमी ग्रावाज होना, ग्रस्पष्ट कहना, डरते हुए पूरी बात न कह कर थोड़ी ध्वनि निकालना. २ दवियौ दबायौ रै'णौ—कार्रवाई या उपद्रव न करना, चुपचाप या शान्तिपूर्वक रहना. ३ दवी ग्रावाज—देखो 'दवियोड़ी ग्रावाज'।
१३ संकोच करना, झेंपना. १४ छुपना, गुप्त होना। उ०—सु ग्रै चढ़ तयार हुइ ऊभा रया था। सु सांम्हां ग्राय तळाव १ मांहै दविया ऊभा था।—नैणसी
१५ ऐसी ग्रवस्था में ग्रा जाना जिस में कुछ वस न चल सके।
मुहा०—करजा में दवणौ—कर्ज हो जाना, दिवालिया हो जाना, कर्ज के कारण विवश हो जाना।
दवणहार, हारौ (हारी), दवणियौ—वि०।
दववाड़णौ, दववाड़बौ, दववाणौ, दववाबौ, दववावणौ, दववावबौ—प्रे०रू०
दवाड़णौ, दवाड़बौ, दवाणौ, दवाबौ, दवावणौ, दवावबौ दावणौ, दाववौ—क्रि०स०।
दविग्रोड़ौ, दवियोड़ौ, दव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दवीजणौ, दवीजवौ—भाव वा०।
दव्वणौ, दव्ववौ, दवणौ, दववौ—रू०भे०।

दवदवौ-सं०पु० [ग्र० दवदवा] रौब, ग्रातंक, भय, प्रताप।

दवमौ-सं०पु० [सं० दमन] लकड़ी की छत पर रेत, कंकड़ ग्रादि डाल कर पूरी छत बनाया हुग्रा मकान।
वि०—दवता हुग्रा।

दववार-वि० [सं० दमन] दवने वाला, दर्बल, कमजोर।

दवाऊ-वि० [सं० दमन] १ दवाने वाला. २ जिसका (गाड़ी ग्रादि का) ग्रगला हिस्सा पिछले हिस्से की ग्रपेक्षा ग्रधिक बोझिल हो.
३ दब्बू, कमजोर।

दबाड़णौ, दबाड़बौ—देखो 'दवाणौ, दवाबौ' (रू.भे.)।
उ०—दिल में जांणै पाय दवाड़ू, ग्रवरां रा पग दाबैं ग्राप। कळ कसूं कसूं नर कांपै, प्रांणी भजन तणौ परताप।—ग्रोपौ ग्राढ़ौ
दवाड़णहार, हारौ (हारी), दवाड़णियौ—वि०।
दवाड़िग्रोड़ौ, दवाड़ियोड़ौ, दवाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दवाड़ीजणौ, दवाड़ीजवौ—कर्म वा०।
दवणौ, दववौ—ग्रक०रू०।

दवाड़ियोड़ौ—देखो 'दवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दवाड़ियोड़ी)

दवाणौ, दवावौ—१ 'दवणौ, दववौ' का प्रे.रू.। २ देखो 'दाबणौ, दाववौ' (रू.भे.) उ०—१ दिलीस्वरां घर जिती दबाई। खव जोवरा दिली पतिसाही।—सू.प्र.
उ०—२ मूळी रौ परगनौ। वीरमगांव वासै गांव ३६ लागै। गांव ४ पातसाही दाखल। वीजा गांव काठियां दवाया। पंवार रायसिंह भूमियौ छै।—नैणसी
उ०—३ पछै पड़िहार दिन दिन गळता गया, धरती सारी केल्हण वयुं दे-ले नै दवाई। खरड़ री धरती सारी रा धणी केल्हण हुवा।—नैणसी
उ०—४ तरै रावळ घड़सी ग्राप रा मांणस ले नै फळोधी रै किनारै किरड़ा रै किनारै गांव वधाउड़ी छै, तठै मांणसां नूं राख नै ग्राप पातसाही ग्रोळग गयौ। उठै वरस १२ चाकरी कीवी। ग्रादमी १०० तया १२ भाटी नै ग्रादमी २ चारण कनै था, सु उठै वोहत परेसान हुवा। भूख गाढ़ा दवाया।—नैणसी
दवाणहार, हारौ (हारी), दवाणियौ—वि०।

दबायोड़ो—भू०का०कृ० ।
दबाईजणो, दबाईजबो—कर्म वा० ।
दबणो, दबबो—अक०रू० ।
दबादब-क्रि०वि० (अनु०) १ एक के बाद एक. २ अत्यंत शीघ्रता के साथ ।
दबाब—देखो 'दबाव' (रू.भे.) उ०—चाळीस कोस हैजम चलाय, जाळीस घरत बाळीस जाय । रच कियो चूहड़ां भड़ां राव, देवड़ा भडां माथै दबाब ।—वि.सं.
दबाबो-सं०पु० (देश०) सुरंग खोदने अथवा अन्य किसी प्रकार का उपद्रव करने के लिये गुप्त रूप से कुछ आदमियों को शत्रु के किले में उतारने का लकड़ी का बना बहुत बड़ा संदूक ।
दबायोड़ो—१ देखो 'दाबियोड़ो' (रू.भे.) २ देखो 'दबबायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० दबायोड़ी)
दबाव-सं०पु० [सं० दमन] १ दबाने की क्रिया या भाव. २ रौब, धाक. ३ आतंक, डर, भय. ४ प्रभाव ।
क्रि०प्र०—पड़णो, आणो ।
५ लिहाज ।
मुहा०—दबाव डाळणो—किसी कार्य को करने के लिये किसी पर जोर डालना ।
६ बोझ, भार ।
रू०भे०—दबाब ।
दबावणो, दबावबो—देखो 'दाबणो, दाबबो' (रू.भे.)
उ०—रूप अगर बगतेस रै, मांन अगर बगतेस । नांमावण अनमां नरां, दबावण दसदेस ।
—ठाकुर बगतावरसिंह नै रूपजी कछवाह री गीत
दबावणहार, हारो (हारी), दबावणियो—वि० ।
दबाविओड़ो, दबावियोड़ो, दबाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
दबावीजणो, दबावीजबो—कर्म वा० ।
दबणो, दबबो—अक०रू० ।
दबावियोड़ो—देखो 'दाबियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दबावियोड़ी)
दबियारी-सं०स्त्री० [सं० दमन] १ दबाने की क्रिया या भाव. २ आतंक. ३ प्रभाव. ४ बोझा, भार ।
दबियोड़ो-भू०का०कृ०—१ बोझ के नीचे पड़ा हुआ, भार के नीचे आया हुआ. २ किसी के दबाव या आतंक में पड़ा हुआ. ३ किसी के आतंक या प्रभाव में पड़ कर किसी के इच्छानुसार कार्य करने के लिये विवश हुवा हुआ. ४ किसी के प्रभाव या आतंक में आकर कुछ कह सकने में असमर्थ हुवा हुआ. ५ अपने गुणों आदि की कमी के कारण किसी की तुलना अथवा मुकाबिले में अपेक्षाकृत कम जँचा हुआ अथवा ठीक नहीं जँचा हुआ. ६ दाब में आया हुआ, जोर में पड़ा हुआ. ७ किसी प्रबल शक्ति की टक्कर या मुकाबिले के कारण पीछे हटा हुआ, अपने स्थान पर नहीं ठहरा हुआ. ८ हारा हुआ. ९ शान्त रहा हुआ, नहीं उभड़ा हुआ. १० जहां का तहां रहा हुआ, नहीं फैला हुआ (समाचार, मामला, घटना आदि) ११ अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में गया हुआ (संपत्ति, पदार्थ, जमीन आदि) १२ मंद पड़ा हुआ, धीमा पड़ा हुआ. १३ संकोच किया हुआ, झेंपा हुआ. १४ छुपा हुआ, गुप्त हुवा हुआ. १५ ऐसी अवस्था में आया हुआ जिस में कुछ बस न चल सके ।
(स्त्री० दबियोड़ी)
दबीकळ-सं०पु०—सांप, सर्प ।
दबू—देखो 'दब्बू' (रू.भे.)
दबेल, दबैल-वि० [सं० दमन] १ दबने वाला. २ दुर्बल, अशक्त. ३ असमर्थ ।
दबोचणो, दबोचबो-क्रि०स० [सं० दमन] १ अचानक पकड़ कर धर दबाना, दाब लेना. २ छिपाना ।
दबोचणहार, हारो (हारी), दबोचणियो—वि० ।
दबोचिओड़ो, दबोचियोड़ो, दबोच्योड़ो—भू०का०कृ० ।
दबोचीजणो, दबोचीजबो—कर्म वा० ।
दबोचियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पकड़ कर दबा लिया हुआ. २ छिपाया हुआ ।
(स्त्री० दबोचियोड़ी)
दबौ-सं०पु० [सं० दमन ?] छुपने की क्रिया या भाव ।
उ०—ताहरां जोईया फिर आय वसिया । गोगादेजी दबौ मार बैठा हुता ।—नैणसी
क्रि०प्र०—मारणो ।
दब्बणो, दब्बबो—देखो 'दबणो, दबबो' (रू.भे.) उ०—१ पड़ै दीठ आसेर ज्यां मेर पब्बै । दुती देखियां सरग रो दुरग दब्बै ।—मे.म.
उ०—२ गढ़ फोड़ेवा चणो गरब्बै, कुंजर कूं कीड़ी पग दब्बै । ए विण खून हमारै आगै, जंगम तें सुर के भ्रम जागै ।—रा.रू.
दब्बियोड़ो—देखो 'दबियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दब्बियोड़ी)
दब्बुनी-वि०—दबाने वाली ? उ०—विसाळ भाळ तोप को विसाळ जाळ विस्थुरे, धमंक भू धुजावणी धमंक मेघलां धुरे । महांन रंज दब्बुनी अरीन दब्बूनी मही, कथै कवीर नै कही चिगाव की चही चही ।—ऊ.का.
दब्बू-वि० [सं० दमन] १ दबने वाला. २ दुर्बल, अशक्त. ३ असमर्थ, हीन ।
रू०भे०—दबू ।
दभंगजळ-सं०पु०—युद्ध, संग्राम, समर ।
दभिक-सं०पु०—दहिया राजपूत वंश या इस वंश का व्यक्ति ।
उ०—दाधिम भट्टिय दभिक कुंभ संभर जावळ कुळ । डव्भिय सोढ़े डोड चउ हि प्रामार स संखुळ ।—वं.भा.

दभ्र-वि० [सं०] थोड़ा, अल्प, कम।

दमंक—देखो 'दमक' (रू.भे.) उ०—छमंक बिच्छवांन की दमंक ना दरीन की। झमंक जेहरांम की चमंक ना चुरीन की।—ऊ.का.

दमंकणौ, दमंकवौ—देखो 'दमकणौ, दमकवौ' (रू.भे.)

उ०—१ दांत दमंकै अहर दुत, जांण चमंकै बीज। ज्यांरी धुनि मधुरी सुणै, रहै तपोधन रीज।—बां.दा.

उ०—२ चिग पडदारूं पाळ चमंकै। दांमण जांण सिळाउ दमंकै। —सू.प्र.

उ०—३ घुरै सहांणी गाज अदंगां ताळ घमंकै। कळप तणा रसराज पियंतां कांन दमंकै।—मेघ.

दमंकियोड़ौ—देखो 'दमकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दमंकियोड़ी)

दमंग-संस्त्री० [सं० दव=दावाग्नि] १ अग्निकण, चिनगारी।

उ०—१ प्रळै झळ एक दमंग प्रचंड। खपावत जांणि घणा वन खंड।—सू प्र.

उ०—२ महावळ कांणण रांण मलंग। दारू मझ जांण कुंसांण दमंग।—मे.म.

रू०भे०—ददंग, दुमंग।

२ देखो 'दमक' (रू.भे.)

वि०—निडर, निर्भय, निशंक।

दमंगळ-संपु० [फ़ा० दंगल] १ युद्ध, लड़ाई, रण, समर।

उ०—१ दमंगळ विण दुमनौ रहै, जड़ै न कंगळ जंत। सखी वधावौ त्यां भड़ां, जेथ जुड़ीजै कंत।—वी.स.

उ०—२ हुवै मंगळ धमळ दमंगळ वीरहक, रंग तूठौ कमध जंग रूठौ। सघण वूठौ कुसुम वोह जिण मोड़ सिर, विखम उण मोड़ सिर लोह वूठौ।—बां.दा.

२ उपद्रव, उत्पात, बखेड़ा। उ०—सत्र भागौ जाळोर सूं, सुहड़ संचिता साथ। किण वळ दळ जायै कुसळ, मग दमंगळ भाराथ। —रा.रू.

रू०भे०—दमगळ, दुमंगळ।

दम-संपु० [फ़ा०] १ श्वास, साँस। उ०—ऊठ 'फरीदा' जाग रे, जागण की कर चूंप। यह दम हीरा लाल है, गिण-गिण रब को सूंप। —फरीद

क्रि०प्र०—आणौ, चलणौ, जाणौ, लैणौ।

मुहा०—१ दम अटकणौ—सांस अटकना, विशेषतः मरने के समय सांस रुकना. २ दम उखड़णौ—देखो 'दम अटकणौ'. ३ दम खींचणौ—साँस ऊपर चढ़ाना, सांस खींचना, चुप रह जाना, न बोलना. ४ दम घुटणौ—सांस न लिया जा सकना। हवा की कमी के कारण सांस रुकना. ५ दम घोटणौ—किसी को सांस लेने से रोकना, सांस न लेने देना, बहुत कष्ट देना. ६ दम घोट नै मारणौ—१ गला दबा कर मारना. २ देखो 'दम घोटणौ'. ७ दम चढ़णौ—दमे के रोग का दौरा होना, अधिक परिश्रम के कारण सांस व जल्दी-जल्दी चलना, हांफना. ८ दम टूटणौ—प्राण निकलना, सांस बंद हो जाना, अधिक हांफना. ९ दम फूलणौ—देखो 'दम चढ़णौ' १० दम भरणौ—किसी के प्रेम अथवा मित्रता का पक्का भरोसा रखना और समय-समय पर गर्व से उसका वर्णन करना। अधिक परिश्रम के कारण थकना, हांफना. ११ दम मारणौ—विश्राम करना, सुस्ताना. १२ दम लैणौ—देखो 'दम मारणौ'।

२ नशे आदि के लिये सांस के साथ धूआं खींचने की क्रिया।

मुहा०—१ दम खींचणौ—'दम लगाणौ'. २ दम लगाणौ—गांजे चरस, तम्बाकू आदि को चिलम में रख कर उसका धूआं खींचना ३ दम लागणौ—गाँजा, तम्बाकू आदि का धूआं खींचा जाना, धूम्र पान होना।

३ उतना समय जितना एक बार सांस खींचने में लगता है, पल।

उ०—नारायण रा नांम सूं, भरियौ रह भरपूर। दांमोदर नै दाखवै दम दम कर नह दूर।—ह.र.

यौ०—दम-भर, दमेक।

४ प्राण, जान, जी। उ०—अहि खग म्रिग दम हंस अळूझै। सुणै न सबद गात न सूझै।—सू.प्र.

मुहा०—१ दम उळझणौ—चित्त में व्याकुलता होना, जी घबराना २ दम टूटणौ—प्राण निकलना, मरना. ३ दम निकळणौ—प्राण निकलना, मर जाना, अत्यन्त आसक्ति होना, घबराना, बेचैनी होना

५ पदार्थ की वह शक्ति जिस से उसका अस्तित्व बना रहे, जीवनी शक्ति। ज्यूं—इण सायकल में हमै दम कोनी, फजूल रगड़ी हौ।

यौ०—दमदार।

६ धोखा, छल, फरेब।

यौ०—दम-झांसौ, दम-पांसौ, दम-बाज।

[फ़ा० दमः] ७ एक प्रसिद्ध रोग जिस में श्वास-वाहिनी नाली के अंतिम भाग में, जो फेफड़ों के पास में होता है, आकुंचन और ऐंठन के कारण साँस लेने में बहुत कष्ट होता है, खांसी आती है और कफ रुक-रुक कर बड़ी कठिनता से धीरे-धीरे निकलता है।

क्रि०प्र०—ऊठणौ, होणौ।

रू०भे०—दमौ।

[सं०] ८ भीम राजा के एक पुत्र और दमयंती के एक भाई का नाम.

९ देखो 'दमन' (रू.भे.)

दमक-संस्त्री ('चमक' का अनु०) १ द्युति, आभा, चमक।

उ०—छकी हीरां मदन छकि, वण बुध सदन विसेख। चंद वदन मुळकण दमक, रदन तड़त की रेख।—बकसीरांम प्रोहित री वात

२ तपन, गर्मी, ताप, उष्णता।

वि० [सं०] रोकने या शांत करने वाला, दबाने वाला, दमनकर्त्ता।

रू०भे०—दमंग।

दमकणौ, दमकबौ-क्रि०अ० ('चमकणौ' का अनु०) १ चमचमाना,

चमकना, दमकना। उ०—१ काळी कांठळ में दांमणियां दमकी। चित में कांमणियां विरहानळ चमकी।—ऊ.का.

उ०—२ चूड़ी चमकीलो कचबीड़ी चमकै। दांमण दमकीली दांमणि सी दमकै।—ऊ.का.

उ०—३ हिम हीर गोरव जाळी हजार। दमकंत जोति अति जिलह-दार।—सू.प्र.

२ वाद्य का बजना, ध्वनि करना। उ०—दों दों दों दप द्रग्डिदक दमकै म्रिदंग। झण रण रण झें झें झाझरि झमकित झंग।

—ध.व ग्रं.

दमकणहार, हारौ (हारी), दमकणियौ—वि०।

दमकवाड़णौ, दमकवाड़बौ, दमकवाणौ, दमकवावौ, दमकवावणौ, दमकवावबौ—प्रे०रू०।

दमकाड़णौ, दमकाड़बौ, दमकाणौ, दमकावौ, दमकावणौ, दमकावबौ —क्रि०स०।

दमकिग्रोड़ौ, दमकियोड़ौ, दमक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दमकीजणौ दमकीजबौ—भाव वा०।

दमक्कणौ, दमक्कबौ—रू०भे०।

दमकाड़णौ, दमकाड़बौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)

दमकाड़णहार, हारौ (हारी), दमकाड़णियौ—वि०।

दमकाड़िग्रोड़ौ, दमकाड़ियोड़ौ, दमकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दमकाड़ीजणौ, दमकाड़ीजबौ—भाव वा०।

दमकणौ, दमकबौ—अक०रू०।

दमकाड़ियोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दमकाड़ियोड़ी)

दमकाणौ, दमकावौ—क्रि०स० ('चमकाणौ' का अनु०) १ चमकाना. २ वाद्य से ध्वनि उत्पन्न करना, बजाना।

दमकाणहार, हारौ (हारी), दमकाणियौ—वि०।

दमकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दमकाईजणौ, दमकाईजबौ—कर्म वा०।

दमकणौ, दमकबौ—अक०रू०।

दमकाड़णौ, दमकाड़बौ, दमकावणौ, दमकावबौ, दमक्काड़णौ, दमक्काड़बौ, दमक्काणौ, दमक्कावौ, दमक्कावणौ, दमक्कावबौ—रू०भे०।

दमकायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चमकाया हुआ. २ ध्वनि उत्पन्न किया हुआ, बजाया हुआ।

(स्त्री० दमकायोड़ी)

दमकावणौ, दमकावबौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)

दमकावणहार, हारौ (हारी), दमकावणियौ—वि०।

दमकाविग्रोड़ौ, दमकावियोड़ौ, दमकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दमकावीजणौ, दमकावीजबौ—कर्म वा०।

दमकणौ, दमकबौ—अक०रू०।

दमकावियोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दमकावियोड़ी)

दमकिग्रोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चमका हुआ. २ ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० दमकियोड़ी)

दमकीलौ—वि० [रा० दमक+ईलौ प्रत्य०] (स्त्री० दमकीली) चमकने वाला, आभायुक्त, चमकीला। उ०—चूड़ौ चमकीलौ कचबीड़ी चमकै। दांमण दमकीली दांमणि सी दमकै।—ऊ.का.

दमक्कणौ, दमक्कबौ—देखो 'दमकणौ, दमकबौ' (रू.भे.)

उ०—दमक्कै वहै म्रिग ऊडांण देतौ। लखै बांण हूं वेधियौ डांण लेतौ।—सू.प्र.

दमक्काड़णौ, दमक्काड़बौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)

दमक्काड़ियोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दमक्काड़ियोड़ी)

दमक्काणौ, दमक्कावौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)

दमक्कायोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दमक्कायोड़ी)

दमक्कावणौ, दमक्कावबौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)

दमक्कावियोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दमक्कावियोड़ी)

दमक्कियोड़ौ—देखो 'दमकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दमक्कियोड़ी)

दमगळ—देखो 'दंमगळ' (रू.भे.) (डिं.को.) उ०—१ मन विजय दसम वधियौ संग्रांम। धिखियौ अहमदपुर धांम धांम। सजियौ क्रोधांनळ बियौ 'सीह'। दावानळ दमगळ तीन दीह।—वि.सं.

उ०—२ दिन मांचै दूंद खूंदवै दमगळ, पतसाही मझ रौळ पड़ै। हाडी चढ़ि फौजां हलकारै, लाडी जसवंत तणी लड़ै।

—रांणी जसमांदे हाडी री गीत

दमघोख—सं०पु० [सं० दमघोष] चेदि देश के प्रसिद्ध राजा जो शिशुपाल के पिता थे (वेलि, रुखमणी हरण)

दमचूल्हौ—सं०पु० [फा० दम+सं० चुल्हिः] लोहे का गोल चूल्हा विशेष जिस के बीच एक जाली होती है। नीचे एक बड़ा छिद्र होता है जिस में से हवा आती रहती है जिस से जाली पर आग सुलगती रहती है और राख जाली में से नीचे गिरती रहती है। चूल्हे की दीवार पर पकाने का बरतन रख दिया जाता है।

दमजोड़ौ—सं०पु०—तलवार।

दमड़ी—सं०स्त्री० [सं० द्रविण=धन] १ पैसे का आठवां भाग। २ पैसा, पाई। उ०—पल पल आतां गी चमड़ी नित पीनी। दमड़ी खरची री जातां नह दीनी।—ऊ.का.

मुहा०—१ दमड़ी रा छांणा धुआंधार मचाई—कम पैसा और अधिक आडम्बर. २ दमड़ी री डोकरी नैं टको सिर मुंडाई रौ—कम मूल्य की वस्तु पर अधिक व्यय. ३ दमड़ी री हांडी ही बजा'र

लेवणी—अल्प मूल्य की वस्तु को भी देख-भाल कर लेना चाहिए।
मह०—दमड़ो।

दमड़ो-सं०पु० [सं० द्रविण=धन] १ रुपया, धन, द्रव्य।
उ०—१ चाकरियां गरडा भया, **दमड़ा** चित्त दियाह। वळै विदेसी वालमा, कहड़ा कांम कियाह।—अज्ञात
उ०—२ सूण सुण रे जीवांणं रा तेली, घांणी पीलौ केसर नै किसतूरी, ओ तेल नवल वना रै अंग चढ़सी, लेखौ वांरा काकोसा कर लेसी, दमड़ा वांरा भाभोसा भर देसी।—लो.गी.
मुहा०—दमड़ा करणा—वेच वाच कर दाम प्राप्त करना। किसी भी तरह पैसा प्राप्त करना।
२ देखो 'दमड़ो' (मह., रू.भे.)

दमडको—देखो 'दमड़को' (रू.भे.)

दमण-वि० [सं० दमन] १ दमन करने वाला, दवाने वाला।
उ०—जोध तणौ घर जैतसी, बंका राइ विभाड़। दुसमण दावट्टण **दमण**, उत्तर भड़ां किमाड़।—रा.ज. रासौ
२ नाश करने वाला। उ०—चतुर साथ पृगी चतुर, सती रमा सुरलोक। सोमेस्वर संभर सुपह, थियौ **दमण** अरियोक।—वं.भा.
३ देखो 'दमणौ' (रू.भे.) ४ देखो 'दमन' (रू.भे.)

दमणक-सं०पु० [सं० दमनक] १ प्रत्येक चरण में प्रथम तीन नगण एक लघु एक गुरु सहित ११ वर्णों का वर्णिक छंद विशेष, दमनक (पिं.प्र.) २ देखो 'दमणौ' (रू.भे.)
वि०—दमन करने वाला, दमनशील।
रू०भे०—दमनक।

दमणौ-सं०पु० [सं० दमनक] एक पौधा जिसकी पत्तियां गुलदाऊदी की तरह कटावदार होती हैं और जिन में से कुछ तेज, पर कुछ कडुई सुगंध आती है, दौना। उ०—१ **दमणा** पाडल केतकी रे, जाइ जुही सुविसाळ। फूल तिहां महकइ घणा रे, तिम फूलां री माळ।
—ऐ.जै.का.सं.
उ०—२ तिलक केसर कोरंट वकुल पाडल वरी रे। **दमणौ** मरुवौ कुसुम कळी वहु विध मिळी रे।—वि.कु.
रू०भे०—दमण, दमणक, दमनिक, दवनौ।

दमणौ, दमबौ-क्रि०स० [सं० दम्] १ रोकना, वश में करना।
उ०—मयमत्ता मेंगळ महा, मणिधरि केहरि मल्ल। सगळा दमणा सोहिला, मन दमणौ मुसकल्ल।—ध.व.ग्रं.
२ दमन करना। उ०—जधा पवित्र करिस हूं जटधर, नृत करतौ आगळ नाटेसर। इंद्रियां पवित्र करिस अप्रंप्रम, दमे गिनांन तूझ दयतां-दम।—ह.र.
३ पीड़ित करना, दवाना। उ०—सरोवर सहु निरमळ सरिया, मलिन थयुं मोरु अंग। काती! जाती नहीं निसा, मुझ-नइं दमइ अनंग।—मा.कां.प्र.

दमणहार, हारौ (हारी), दमणियौ—वि०।
दमवाड़णौ, दमवाड़वौ, दमवाणौ, दमवावौ, दमवावणौ, दमवाववौ, दमाड़णौ, दमाड़वौ, दमाणौ, दमावौ, दमावणौ, दमाववौ—प्रे०रू०।
दमिओड़ौ, दमियोड़ौ, दम्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दमीजणौ, दमीजवौ—कर्म वा०।
दम्मणौ, दम्मवौ—रू०भे०।

दमदमौ-सं०पु० [फ़ा० दमदम:] वह किलेवंदी जो लड़ाई के समय थैलों में वालू भर कर की जाती है, मोरचा। उ०—वेलदार अर कुहाड़ी-वरदार जिकां री जमात दस हजार। जिको बनकटी करै अर मोरचा वणावै। सुरंगां खोदै अरु **दमदमा** चुणावै। रूई री वरकियां रा गाडा, जिके खंदक भरवा नूं आवै आडा।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

दमदार-वि० [फ़ा०] १ दृढ़, मजबूत. २ जिस में जीवनीय शक्ति यथेष्ट हो।

दमन-सं०पु० [सं०] १ किसी को दबाने के लिये दिया जाने वाला दंड।
क्रि०प्र०—करणौ।
२ दवाने या रोकने की क्रिया।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
३ इंद्रियों की चंचलता को रोकने की क्रिया, निग्रह, दम।
क्रि०प्र०—करणौ।
४ एक ऋषि का नाम जिनके यहां दमयंती उत्पन्न हुई थी।
५ एक पौधा, दमनक, दौना।
[सं० धन:] ६ ४९ क्षेत्रपालों में से २१ वां क्षेत्रपाल.
७ देखो 'दमण' (रू.भे.)
रू०भे०—दवण।

दमनक-वि० [सं०] १ संहार करने वाला, संहारक।
उ०—विरुदावळि वंदनि वित्थरै, अतिवेग सम्मुह उप्परै। वजि कटक **दमनक** रचक धमचक। अटक दक तक मुलक अकवक।—वं.भा.
२ देखो 'दमणक' (रू.भे.)

दमनकि—देखो 'दमणौ' (रू.भे.) उ०—दव जिम दीठइं करुण ए, करणाइ ए हियुं निकांमु। मरूउ वरूउ दमनकि मन, किहिं नहीं य विस्रांमु।
—नेमिनाथ फागु

दमनी-सं०स्त्री० [सं० दामिनी] विद्युत, विजली। उ०—हिंदूवांन विमांन अपच्छर की, गळबांह मनौ **दमनी** घन को। तुरकांन लिए परलोक परी, गमनी मनु जुट्टि जुराफन की।—ला.रा.

दमवंधौ-वि०—
उ०—मांणिक्य दंडउ हस्ती, खुरसांणिउ घोडउ, मुरस्थळी नउं उंट दंडाहिनउ वळद, भीमासननउ करपूर, जागडउ कुंकुम, काकतुंडउ अगुरु, **दमवधौ** धूप सिंहलदिवउ हार।—व.स.

दमबाज-वि०यौ० [फ़ा० दमबाज] धोखा देने वाला, फुसलाने वाला।

दमवाजी-सं०स्त्री० [फा० दम+वाजी] वहानेवाजी, फुसलाने का कार्य।

दमयंती-सं०स्त्री० [सं०] निषध देश के चंद्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र

राजा नल की पत्नी जो विदर्भ देश के राजा भीमसेन की कन्या थी।
रू०भे०—दवदंति, दवदंती।

दमल-सं०पु० [फ़ा दंगल] युद्ध, द्वन्द्व।

दमसाज-सं०पु० [फ़ा० दमसाज़] वह मनुष्य या गवैया जो किसी दूसरे गवैये के गाते समय सहायता देने हेतु केवल स्वर भरता है।

दमांम-सं०पु० [फ़ा० दमामः] एक प्रकार का बड़ा सुपारी की बनावट का नगाड़ा जिसे दो डंडों से बजाया जाता है। इस पर दो डंकों से अनेक बोल निकाले जाते हैं। इसे लकड़ी की चौखट पर टेढ़ा रखा जाता है।

उ०—१ घण माळ ज्युंही असुरांण घड़ा। खित आवित मेन किसेन खड़ा। रिण तूर नफेरिय भेर रुड़ै। गहरै स्वर तांम दमांम गुड़ै।—रा.रू.

उ०—२ दळ पूठै दिली आगळी यर दळ, साकबंध सांपन संग्राम। वीठळदास तणै सर वाजै, दोय पतसाहां तणा दमांम।
—वीठळदास गोपाळदासोत री गीत

रू०भे०—दमांमो, दम्मांम, दम्मांमो, दुदांम, दुदांमो, दुमांम, दुमांमो।

दमांमी-सं०पु० [फ़ा० दमामः+रा.प्र.ई] (स्त्री० दमांमण) नक्कारा बजाने वाला, नक्कारची, ढोली।
रू०भे०—दुमांमी।

दमांमो—देखो 'दमांम' (रू.भे.) उ०—१ ढोलउ चाल्यउ हे सखी, वज्या दमांमा-ढोल। माळवणी तीने तज्या, काजळ तिलक तंबोल।
—ढो.मा.

उ०—२ अवरां नइ दीजइ उदियारण, तइ ईसर तणइ नहीं काइ तोट। वहुनांमी दीवाड वहूली, चढ़िया वींद दमांमै चोट।
—महादेव पारवती री वेलि

दमाक, दमाग—देखो 'दिमाग' (रू.भे.)

दमाज-सं०पु०—उष्ट, ऊंट। उ०—सखि हे, राजिद चालियउ, पल्लांणियां दमाज। किहि पुनवंती सांमुहउ, म्हां उपरांठउ आज।
—ढो.मा.

दमाद—देखो 'दांमाद' (रू.भे.) २ देखो 'दमाज' (रू.भे.)

दमादम-क्रि०वि० (अनु०) १ दम दम शब्द के साथ. २ लगातार, बराबर।

दमि-वि० [सं० दम्] दमनशील। उ०—ग्यांनि विग्यांनी तपि, जपि, समि, दमि, संयमि करीअ तुच्छ।—रा.सा.सं.
रू०भे०—दमी।

दमिण—देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—दीपै जिम दमिण जेम दुरांति।
—रांमरासो

दमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ रोका हुआ, वश में किया हुआ. २ दमन किया हुआ. ३ पीड़ित किया हुआ, दबाया हुआ।
(स्त्री० दमियोड़ी)

दमिल-सं०पु०—देश विशेष का व्यक्ति, अनार्य देश का मनुष्य (व.स.)

दमिस्क-सं०पु०—यवनों का एक तीर्थ स्थान (बां.दा.ख्यात)

दमी-वि० [सं० दम्] दमनशील।
सं०स्त्री० [फ़ा० दम] १ दम लगाने का नेचा. २ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

दमीदौ—देखो 'दमेदौ' (रू.भे.)

दमुना, दमूना-सं०स्त्री० [सं० दमुनस्, दमूनस्] अग्नि, आग (ह.नां.)

दमे'क-क्रि०वि० [फा० दम=सं० एक] क्षण भर, पल भर।

दमेदौ-सं०पु०—१ बड़ा बतासा (शेखावाटी) २ घी में तल कर बनाई जाने वाली बताशे की आकार की रोटी।

दमैंती—देखो 'दमयंती' (रू.भे.)

दमोइ-सं०स्त्री०—दोनों ओर मुंह वाला सांप।

दमोदर—देखो 'दांमोदर' (रू.भे.) उ०—१ अखभ कपिल हयग्रीव विसंभर, दत्तात्रय हरि हुंस दमोदर। राय-विकुंठ धनंतर रिखभ, गरुड़ारूढ़ प्रथू प्रसनीग्रभ।—ह र.

उ०—२ दोय दंत दोय भुज नहीं हर दमोदर, एक दंत च्यार भुज चिहन उण रै।—पीथो सांदू

उ०—३ भव पाप भव दुख भरम भंजण, भगत वछळ भूधरं। देवकी नंदण मुगति दायक, देवरूप दमोदरं।—पिं.प्र.

दमौ—देखो 'दम' (रू.भे.)

दम्म-सं०पु० [अ. या फा. दिरम] १ एक प्रकार का प्राचीन सिक्का जो चांदी या सोने का बना होता था। उ०—१ विरचै प्रबंध तस जस विसाळ, लुभवाय सुणायौ भाट लाल। तिण दुरथ भाव कमधज्ज तोड़ि, करि रजत दम्म बक्सीस कोड़ि।—वं.भा.

उ०—२ ए कग्गर कूरम सुणत इत मंत्र उपाया। देणौ दम्म न उचित करि, लड़णौ चित लाया।—वं.भा.

२ देखो 'दम' (रू.भे.) उ०—नहीं तू जीव नहीं तू जम्म, नहीं तो देह नहीं तो दम्म। नहीं तू नार नहीं तू नाह, नहीं तू घाम नहीं तू छांह।—ह.र.

दम्मणौ, दम्मबौ—देखो 'दमणौ, दमबौ' (रू.भे.) उ०—नमो निरंजणनाथ, पार कुण तोरा पम्मं। निगम कहै गम नांय, देह जोगेसर दम्मं।—ह र.

दम्मांम, दम्मांमो—देखो 'दमांम' (रू.भे.) उ०—धरणी धडधडीय गडगडिय दम्मांम धुनि, दह दिसे परिवरया सबळ सूरा। तुरंग भल पाखरया सस्त्र हाथै धरया, नाचता माचता रण सनूरा।
—खीपाळ रासा

दम्मियोड़ौ—देखो 'दमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दम्मियोड़ी)

दयंत-वि०—१ देने वाला. २ देखो 'दैत्य' (रू.भे.)
उ०—१ ऊभै मिसल अंब खास, पड़ै घड़हड़ अणपारां। राव जांणि नरसिंघ, हलै करि दयंत विहारां।—सू.प्र.

उ०—२ प्रसन्न दास प्रीत रा, बियार अत्यचीत रा। जुआं दयंत जीत रा, सरंम नाथ सीत रा।—र.ज.प्र.

उ०—३ डरावणे रूप रा दयंतां भांगा दूछरेल।—र.ज.प्र.

दय–सं०स्त्री० [सं०] दया, कृपा, करुणा।

दयण–वि० [सं० दान] दातार, देने वाला।

दयत—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—१ मुख मंदहास आणंदमय, आराधित अहि नर अमर। दंडव्रत तूझ मारण दयत, वारण तारण लच्छिवर।—सू.प्र.

उ०—२ दोऊ दयत महादुख दीनौ। कमळ योनि तव सुमिरन कीनौ।—मे.म.

दयतां-दम, दयतां-दव–सं०पु०यौ० [सं० दैत्य+दम] दैत्यों का दमन करने वाला, भगवान। उ०—१ जंघा पवित्र करिस हु जटधर, नृत करतौ आगळ नाटेसर। इंद्रियां पवित्र करिस अप्रंप्रम, दमै गिनांन तूझ दयतां-दम।—ह.र.

उ०—२ काय निपाप करिस इम केसव, दंडवत करै तूझ दयतां-दव। रोम रोम तो नांम रहाविस, इम करतौ हरि-चरणां आविस।—ह.र.

दयांनत–सं०स्त्री० [अ० दियानत] १ सत्यनिष्ठा, ईमान।

उ०—अमांनत दयांनत पंडितां धरम जांणणहार सांचा प्रवीण इसी कही छै।—नी.प्र.

२ नियत।

रू०भे०—दांनत, दियांनत।

दयांनतदार–वि० [अ० दियानत+फ़ा० दार] ईमानदार, सच्चा।

रू०भे०—दांनतदार।

दयांनतदारी–सं०स्त्री० [अ० दियानत+फ़ा० दारी] ईमानदारी, सच्चाई।

रू०भे०—दांनतदारी।

दया–सं०स्त्री० [सं०] १ दूसरे के कष्ट को देख कर उत्पन्न होने वाला मन का वह दुःखपूर्ण वेग जो उस कष्ट को दूर करने की प्रेरणा करता है, सहानुभूति का भाव, करुणा, रहम।

क्रि०प्र०—आणी, करणी।

यौ०—दया-द्रस्टी।

२ कृपा (अ.मा.)

पर्या०—अनुकंपा, अनुक्रोस, क्रपा, घ्रिणा, पोस, प्रसन्नता, मया, महर, महरबांनगी, सुद्रस्ट, सुधानजर, सुनजर, हंतोगति।

क्रि०प्र०—करणी।

३ धर्म की पत्नी जो राजा दक्ष की कन्या थी।

सं०पु०—४ राजपूतों के ३६ वंशों में से 'दहिया' राजपूत-वंश जो दधीचि मुनि के वंशज माने जाते हैं।

दयाकर–वि० [सं० दया+कर] दयालु। उ०—पदमण रिख असमांन पहूंती, पंखां विनां जिहांन पढ़ीजै। केवट कुळ प्रतपाळ दयाकर, चरण पखाळ जिहाज चढ़ीजै।—र.ज.प्र.

दयाणौ–वि० [सं० दक्षिण] (स्त्री० दयाणी) १ दाहिना।

उ०—कोई दयाणं तौ हाथ में भालौ भळकणौ।—पाबूजी रा पवाड़ा

२ देखो 'दयावणौ' (रू.भे.)

दया-द्रस्टी–सं०स्त्री०यौ० [सं० दया+दृष्टि] मेहरवानी की नज़र, कृपा-दृष्टि, रहम का भाव।

दयानंद–सं०पु० [सं०] एक ऋषि जो आर्य समाज के प्रवर्त्तक, सुधारक एवं सत्यार्थप्रकाश के लेखक थे। इनकी मृत्यु दीपावली के दिन (जहर के कारण-कथित) अजमेर में हुई थी।

दयानिध, दयानिधांन, दयानिधि–वि० [सं० दयानिधान, दयानिधि] जिस में वहुत दया हो, दयालु, कृपालु।

उ०—१ भरै भरपूर कुबेर भंडार। दयानिध दोसत कै दरबार।—ऊ.का.

उ०—२ अलख पुरुस आदेस, देस वचाय दयानिधे। वरणान करू विसेस, सुहृद नरेस 'प्रतापसी'।—दुरसौ आढ़ौ

दयापात्र–वि० [सं०] जिस पर दया करना उचित हो, जो दया के योग्य हो।

दयामणउ—देखो 'दयामणौ' (रू.भे.) पहिली होय दयामणउ, रवि आथमणउ जाइ। रवि ऊगइ विहँसइ कंमळ, खिण इक विमणउ थाइ।—ढो.मा.

(स्त्री० दयामणी)

दयामणौ—देखो 'दयावणौ' (रू भे.) उ०—दीसै वदन दयामणौ, डूबण जोगौ डौळ। रहै हमेसां राज में, मावड़ियां री मौळ।—वां.दा.

(स्त्री० दयामणी)

दयामय–वि० [सं०] दया से पूर्ण, दयालु।

सं०पु०—ईश्वर का एक नाम।

दयारास–सं०पु०—ईशान और पूर्व के मध्य की दिशा?

दयाळ–सं०पु०—१ विष्णु, ईश्वर (क.कु.बो.) २ देखो 'दयाळु' (रू.भे.)

उ०—देस अनै परदेस दसै दिस, तिजड़ां वहण रिमां रिणताळ। आसाळुवां अखी करि आई, देवी सरणै राख दयाळ।—अज्ञात

दयाळ-मन–वि०यौ० [सं० दयालु+मनस्] उदार, दयालु (डि.को.)

दयाळु–वि० [सं० दयालु] जिस में दया का भाव अधिक हो, दयालु।

रू०भे०—दयाळ, दयाळू, दयाळौ।

दयाळुता–सं०स्त्री० [सं० दयालुता] दयालु करने की प्रवृत्ति, दयालु होने का भाव।

दयाळू, दयाळौ—देखो 'दयाळु' (रू.भे.) उ०—१ टेपरिया सुं ई रंभा पर मार ज्यादा पड़ी। उण री चीखां ठेट रावळा में सुणीजी। जद दयाळू ठकरांणी हुकम देय नै उण नै छुडाय दी।—रातवासौ

उ०—२ दुरै दिखाळै फेक काळै अचळ थाळै ऊपरै। दीठा दयाळै तेण ताळै वय वडाळै वीर।—र.रू.

दयावंत–वि० [सं० दयावान् का वहु व०] दयालु, दयावान।

उ०—नंद महेसुर जन निमंत हित दयावंत हद।—र.ज.प्र.

दयावणउ, दयावणौ–वि० [सं० दया+रा० आवणौ] (स्त्री० दयावणी) जिस से दया उत्पन्न हो।

उ०—इतरै एक लुगाई ऊभी रोवै छै तिण नै दयावणी देखी तरै सतवादी नै दया आई ।—सतवादी री वात

२ खिन्न चित, दुखी, दीन । उ०—धणियां विण दयावणी, दीसै अेमी देह । चाकर मंगण मात पित, चित्त विलखै सारो गेह ।

—पलक दरियाव री वात

रू०भे०—दयाणो, दयामणउ, दियाणो, दियावणो, द्यामणो ।

दयावती-सं०स्त्री० [स०] ऋषभ स्वर की तीन श्रुतियों में से पहली श्रुति ।

वि०स्त्री०—दया करने वाली ।

दयावांन-वि० [सं० दयावान्, स्त्री० दयावती] दयालु ।

दयावीर-सं०पु० [सं०] वह जो दूसरों का दुःख दूर करने में प्राण तक दे सकता हो ।

दयिता-सं०स्त्री० [सं०] १ पत्नी, प्रेयसी । उ०—वळि रमियो अठ दस वरस, तूं वाळक टोळी । परणाव्यो तूं-नइ पछै, दयिता हुई दोळी । मगर-पचीसी मांणतो, करै कांम कल्लोळी । गाहड़ में घूमै घणूं, गिळि मफरा गोळी ।—ध.व.ग्रं.

२ स्त्री, औरत । उ०—तिल पापड़ तरुणी थइ, अधिकी वेदन अंगि । रोइ पीटइ आवटइ, दयिता दमी अनंगि ।—मा.कां.प्र.

दरंग-सं०पु० [सं० दुर्गः ?] १ टीवा, टीला ।

उ०—कूंभड़ियां करळव कियउ, घरि पाछिले दरंगि । सूती साजण संभरया, करवत वूही अंगि ।—ढो.मा.

दर-सं०पु० [सं० दरः] १ शंख (डि.को., अनेका.)

२ देखो 'डर' (रू.भे.)

[सं० दरं] ३ गुफा, कंदरा । उ०—घोरां घोरां घर धूंधळ घुरघाई । थळ थळ ऊथळती वळती वुरकाई । पड़तो पुळ पुळ पर भुळ भुळ भर भूंजे । सरकर सर सोखत गिरवर दर गूंजे ।—ऊ.का.

४ दरार, गड्ढा. ५ विवर, बिल । उ०—ऊंदर दर खण मरै, पेस भोगवै भुयंगह । हळ वहि मरै वहिल्ल, हरी जव चरै तुरंगह ।

—नैणसी

रू०भे०—दिर ।

६ तीर, वाण (अनेका.) ७ आभूषण विशेष (व.स.)

८ [फ़ा०] द्वार, दरवाजा ।

मुहा०—दर दर भटकणो—पेट पालने के लिये या कार्यसिद्धि के लिये द्वार द्वार, घर घर, गली गली मारा मारा फिरना, दुर्दशाग्रस्त हो कर घूमना ।

९ जगह, स्थान. १० छड़ीदार, दरवान (अ.मा., अनेका.)

११ देखो 'दरि' (१) (रू.भे.) उ०—जिसो लाय जाळियो, फजर मिळ जाय फकीरां । साह दहण सेकियो, इसो पेखियो अमीरां । मुर नवाव दर मज्झि जाव वोलिया अतारा । कळा प्रांण कावळी जांणि सचळा अंगारा । पतिसाह पांन करि अप्पियो, करि वास हैदरकुळी । खग प्रवळ इरादिति दसां, किया विदा पतिकावली ।—रा.रू

[फ़ा० दर=भीतर, में] हृदय, अन्तरात्मा । उ०—१ प्रेम पियाला नूर का, आसिक भर दिया । दादू दर दीदार में, मतवाळा किया ।

—दादू वांणी

उ०—२ आसिक अमली साधु सव, अलख दरीवे जाइ । साहिव दर दीदार में, सव मिळ वैठे आइ ।—दादू वांणी

सं०स्त्री० [फ़ा०] १२ भाव, निर्ख ।

वि० [सं०] किञ्चित, थोड़ा, अल्प (अ.मा.)

अव्य० [फ़ा०] में, भीतर । उ०—१ तुम थैं तव ही होइ सव, दरस परस दर हाल । हम थैं कवहुं न होइगा, जे वीतहिं युग काळ ।

—दादू वांणी

उ०—२ विरह अगिन में जळ गये, मन के विसय विकार । ता थैं पंगुळ ह्वै रह्या, दादू दर दीदार ।—दादू वांणी

दरअसल-क्रि०वि० [फ़ा०] वास्तव में ।

दरक-सं०पु०—ऊंट, उष्ट (ना.डि.को.)

(मि० जमीक, जमीकरवत)

रू०भे०—दरक्क, दारक, दारक्क ।

अल्पा०—दरको ।

दरकड़-सं०पु०—राठौड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

दरकणो, दरकवो-क्रि०अ० [सं० द्री=वीदार्णे] विदीर्ण होना, फटना ।

दरकाड़णो, दरकाड़वो—देखो 'दरकाणो, दरकावो' (रू.भे.)

दरकाड़ियोड़ो—देखो 'दरकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दरकाड़ियोड़ी)

दरकाणो, दरकावो-क्रि०स०— विदीर्ण करना ।

उ०—की नृप ! दैंघी कायरां, दिल दमगळ दरकाय । खरा चून रा खावण्यां, वद वद सीस वढ़ाय ।—रेवतसिंह भाटी

दरकाड़णो, दरकाड़वो, दरकावणो, दरकाववो—रू०भे० ।

दरकायोड़ो-भू०का०कृ०—विदीर्ण किया हुआ ।

(स्त्री० दरकायोड़ी)

दरकार-सं०स्त्री० [फ़ा०] १ आवश्यकता, जरूरत । उ०—१ फेर उठै उवांरै तो घर वार मंडिया मंडाया छै तीसूं आवण री कोई दरकार नहीं दीसै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ कोई गुनाह आप सूं हुवो विचारै नै जांणै कै प्रभू री माफी री दरकार छै तो चाहीजे माफी आपरी उणसूं आघी नहीं दरकार काढ़ै ।—नी.प्र.

२ अभिलाषा ।

वि०—आवश्यक, अपेक्षित ।

दरकावणो, दरकाववो—देखो 'दरकाणो, दरकावो' (रू.भे.)

दरकावियोड़ो—देखो 'दरकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दरकावियोड़ी)

दरकियोड़ो-भू०का०कृ०—विदीर्ण हुवा हुआ, फटा हुआ ।

(स्त्री० दरकियोड़ी)

दरकूंच, दरकूंचां, दरकूच, दरकूचां–क्रि०वि० [फ़ा०] १ बराबर यात्रा करता हुआ, मंजिल-दर-मंजिल। उ०—१ जद अटेर सूं दरकूंच आया आदमी लाख दोय था सो गगराडां आय राड़ कीवी। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ अखडैंत पटैंत जवांन इसा, दरकूंच कियौ दिखणाद दिसा। —मे म.

उ०—३ दरकूंचां अरबुदाचळ जाय मुकांम लागतां ही।—वं.भा.

उ०—४ दरकूचां चाय अब्बूगढ़ रा आधीस प्रामार राज सलख सूं सत्कार पायौ।—वं.भा.

उ०—५ मरै न्याय सांभळ रे मूरख, सह तो वाळा लखण समूचां। थां म्रित हिमैं जेज नह थावै, कठठ खड़ी आवै दरकूचां।—र.रू.

दरकौ—देखो 'दरक' (अल्पा., रू.भे.) उ०—वहै ढेल वीटियां जगै जांमकियां ढोया। दरका सर दीवडा सोर भाथड़ां संजोया।—पा.प्र.

दरक्क—देखो 'दरक' (रू.भे.) उ०—१ अपणी रिद्ध संभाळ सव, करै दरक्कां पीठ। आवध बंधे ऊठिया, आकारीठ गरीठ।—रा.रू.

उ०—२ उत्तर आज स उत्तरउ, पल्लांणियां दरक्क। दहिसी गात कुंवारियां, थळ जाळी बळि अक्क।—ढो.मा.

दरक्कणौ, दरक्कबौ—देखो 'दरकणौ, दरकबौ' (रू.भे.)

दरक्कियोड़ौ—देखो 'दरकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दरक्कियोड़ी)

दरखत–सं०पु० [फा० दरख्त] वृक्ष, पेड़ (ह.नां., अ मा., डिं.को.)

उ०—खट रित ही सफळ कुसुम वन दरखत। खट ही साख उपावै हरखत।—र.रू.

रू०भे०—दरखद।

अल्पा०—दरखतियौ।

दरखतियौ—देखो 'दरखत' (अल्पा., रू.भे.)

दरखद—देखो 'दरखत' (रू.भे.)

दरखास्त–सं०स्त्री० [फ़ा० दरख्वास्त] १ वह लेख जिस में किसी बात के लिये विनती की गई हो, निवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र।

क्रि०प्र०—देणी।

२ किसी बात के लिये प्रार्थना, निवेदन।

क्रि०प्र०—करणी।

दरगह, दरगा, दरगाह, दरग्गह–सं०स्त्री० [फ़ा दरगाह] १ दरवार।

उ०—१ ज्यां आगै फेरजै, वडा लाखीक वछेरा। ज्यां दरगह नित दिपै, कोड़ सुख इंद्रह केरां।—ज.खि.

उ०—२ पवन वरुणह अनळ धनपह, नखत नवग्रह दीन हुय वह। रहत दरगह नृपह दिग्गह, जीति विग्रह दुसह जह जह।—र.रू.

उ०—३ दरगाह सदर दौलत दराज। ताळा वुलंद इस्लांम ताज। —ऊ.का.

उ०—४ ता पछै रावजी स्री रायसिंघजी जमीयत ले वळै दरगाह गया अरु पातसाहजी री चाकरी वहुत आछी तरै कीवी अरु अकवर साहजी नूं वहुत खुस किया।—द.दा.

उ०—५ जंगू के जैतवार अजांनवाह। ऐसे भड़ आय विराजै महाराज की दरगाह।—सू.प्र.

उ०—६ अरस सीस ओडतौ, रीस रत्तौ रसवायौ। तजै दरग्गह वार, एम गह छायौ आयौ।—रा.रू.

२ न्यायालय, कचहरी।

उ०—१ केई अळ्ज्या असुभ में, केइयक सुभ बंदाय। सुभ के असुभ कहै, वह दरगा दाद न पाय।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ मया दया तू अबोला जीव सूं करी तिण सूं प्रभू री दरगाह में कुरब घणौ पायौ।—नी.प्र.

३ सभा। उ०—१ इस्क सलूना आसिकां, दरगह थैं दीया। दरद मुहब्बत प्रेम रस, प्याला भर पीया।—दादू बांणी

उ०—२ बांदरा तणौ बणियौ वदन, धरवीणा दरगह धसै। संपेख रूप सगळी सभा, हडहडहडहडहडहड हंसै।—र.रू.

४ तीर्थस्थान, मंदिर, मठ. ५ किसी सिद्ध पुरुष का समाधि-स्थान, मकबरा, मजार।

रू०भे०—दरग्गह, दरिगह।

दरड़–सं०पु० (अनु०) १ द्रव पदार्थ के ऊपर से गिरने की ध्वनि।

उ०—दूध दही रा दरड़, घिरत रा घर घर धीणा। घणी लकड़ियां घास, मतीरा मीठा खांणा।—दसदेव

अल्पा०—दरड़कौ।

२ देखो 'दरड़ौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ भागीजै तज भींवड़ा, ओडै जिम तिम अंत। किण दिन दीठां ठाकुरां, काळा दरड़ करंत। —वी.स.

उ०—२ 'तौ पड़ौ दरड़ में। घर में दिनूंगै-सिंज्या-रौ सरतन कोयनी पण जांनां तौ पूरी चार-ई देवैला, वाहरै अक्कल।—वरसगांठ

दरड़कणौ, दरड़कबौ–क्रि०अ० (अनु०) द्रव पदार्थ के प्रवाहित होने या गिरने से ध्वनि होना। उ०—खंजर बाथ खरड़कै, हाड मरड़कै हजारां। दरड़कै स्रोण दहुंअै दळां, बकै छकै अछरां वरां। —वखतौ खिड़ियौ

दरड़णौ, दरड़बौ—रू०भे०।

दरड़कियोड़ौ–भू०का०कृ०—ध्वनित।

(स्त्री० दरड़कियोड़ी)

दरड़कियौ—देखो 'दरड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

दरड़कौ—१ देखो 'दरड़' (१) (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'दरड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

दरड़णौ, दरड़बौ–क्रि०अ०—१ देखो 'दड़णौ, दड़बौ' (रू.भे.)

२ देखो 'दरड़कणौ, दरड़कबौ' (रू.भे.)

दरड़ियोड़ौ—१ देखो 'दड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'दरड़कियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दरड़ियोड़ी)

दरड़ियौ—देखो 'दरड़ौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—ठौड़ ठौड़ ठांवड़ा वरतै,

बगियां कूंडा कड़लिया। रूप बिगाड़ै लेग माटी, खुणिया ऊंडा दरड़िया।—दसदेव

दरड़ौ-सं०पु० (देश०) १ खड्डा, गड्ढा। उ०—कोल काळज्यौ थोथौ करै, लगै न कारी कूड़ री। फूस कूटळ दरड़ा भरै, होड हुवै ना धूड़ री।—दसदेव

२ विवर, बिल। उ०—तद सूरवीर कही कि किण दिन दीठा हा थे ठाकुरां, काळा नाग दरड़ा करतां, ऊंदरा खोदै नै रेवै, इण तरै गढ़ बांधौ म्हे रहसां।—वी.स.टी.

३ बिना बंधा हुआ कुआ।

अल्पा०—दरड़कियौ, दरड़ियौ।

मह०—दरड़।

दरज-वि० [फ़ा० दर्ज] कागज पर चढ़ा हुआ, लिखा हुआ, अंकित।

सं०स्त्री० [सं० दर] वह खाली जगह जो फटने या दरकने से पड़ जाय, दरार।

उ०—तोपां घर दरजां पड़ै, झड़ै गिरां सिर झाट। जांणै सागर खीर रै, मंदर री अरराट।—वी.स.

दरजण-सं०स्त्री० [अं० डज़न] १ बारह का समूह. २ दर्जी की स्त्री।

उ०—हाथ ज लेस्यां बागो ए सइयां मोरी। दरजण होय होय जास्यां।—लो.गी.

दरजी-सं०पु० [फ़ा० दर्जी] (स्त्री० दरजण) १ एक जाति जो कपड़े सींने का व्यवसाय करती है या इस जाति का व्यक्ति। उ०—कह्यौ बुलाय कांचळी करजी, चित सूं मरजी चाढ़। गात निहारि त्रिया क्रिस गरजी, दरजी ऊपर दाढ़।—ऊ.का.

पर्या०—कपड़विदार, गजधर, तूनवाय, सूयीआर।

२ वह जो कपड़े सींता हो, कपड़े सींने वाला व्यक्ति।

दरजोण, दरजोधन—देखो 'दरयोधन' (रू.भे.) उ०—१ पांण रौ भीम रोसेल 'पेम', जोसेल मांण दरजोण जेम। मोजां सु दयण मन रौ सुमेर, कलियांण हरी धन रौ कुबेर।—पे.रू.

उ०—२ जोवै ज्यां घर राज, मुवां सुर राज मिळै मन। किसन थकां हिज कियौ, जूंझ जुजथिर दरजोधन।—सू.प्र.

दरणौ, दरबौ—देखो 'डरणौ, डरबौ' (रू.भे.) उ०—पातसाह कंपियौ, विविध मनुहार पठाई। बिना तेल दीपक्क, हुवै इण ताक सवाई। मुगळ सर्फ निज ग्रेह, न को दरि देह दिखावै। बाज पंख बज्जियां, जेम लाई छिप जावै।—रा.रू.

दरथ—देखो 'दसरथ' (रू.भे.)

दरद-सं०पु० [फ़ा० दर्द] १ पीड़ा, कष्ट। उ०—निज पितु छोडै नीच, तुरत छोडै महतारी। निज भ्रम छोडै निलज, निलज छोडै निज नारी। भल छोडै निज भ्रात, छैल कुळ घर छिटकावै। प्रभु नै छोडै परौ, जिकण दिस फेर न जावै। दांम री भांम झेली दुकर, भव सारै नै भांडियौ। छिता पर इता गुण छोड दै, रांड न छोडै रांडियौ।

—ऊ.का.

२ बीमारी, रोग। उ०—पिंड री गई परतीत, मांण निट गयौ मरदां में, ग्यांन मिळ गयौ गरद, दांम रुळग्यौ दरदां में।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—ऊठणौ, करणौ, होणौ।

३ दुख, तकलीफ, व्यथा। उ०—हे री म्हां दरदे दिवांणी म्हांरा दरद न जांण्यां कोय।—मीरां

रू०भे०—दरद्द।

दरदराणौ, दरदराबौ-क्रि०स० [सं० दरण] किसी वस्तु को इस प्रकार हल्के हाथ से पीसना या कूटना कि उसके मोटे-मोटे रवे या टुकड़े हो जांय।

दरदरायोड़ौ-भू०का०कृ०—मोटे-मोटे टुकड़े किया हुआ।

(स्त्री० दरदरायोड़ी)

दरदरी-सं०स्त्री० [सं० धरित्री] धरती, पृथ्वी, जमीन (डि.नां.मा.)

वि०—मोटे रवे की।

दरदरौ-वि० [सं० दरण] (स्त्री० दरदरी) जिसके कण टटोलने से मालूम पड़ते हों, जिसके मोटे रवे हों, जिसके कण स्थूल हों, जो बारीक पिसा हुआ न हो।

दरदवंत-वि० [फ़ा० दर्द+सं० वंत] १ कृपालु, दयालु.

२ पीड़ित, दुखी।

रू०भे०—दरदवांन।

दरदवंद-वि० [फ़ा० दर्दमंद] १ दुखी, पीड़ित। उ०—दरद हि बूझै दरदवंद, जाकै दिल होवै। क्या जांणै दादू दरद की, नींद भर सोवै।

—दादू बांणी

२ दयालु, कृपालु। उ०—इस्क अजब अवदाळ है, दरदवंद दरवेस। दादू सिक्का सब्र है, अक्ल पीर उपदेस।—दादू बांणी

दरदवांन—देखो 'दरदवंत' (रू.भे.)

दरदी-वि० [फ़ा० दर्द] १ दूसरे का दर्द समझने वाला, दयावान्।

२ पीड़ित, दुखी।

दरद्रु-सं०पु० [सं० दद्रु] दाद नामक रोग।

दरदुर—देखो 'डेडरौ' (रू.भे.) (डि.को.)

दरद्द—देखो 'दरद' (रू.भे.) उ०—१ कावल साझी जिण करां, दझी चीण दरद्द। 'पतौ' धरा यूरोप री, माझी मेर मरद्द।

—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ अबदुल्ला आरत हिये, पीडांणां सइयद्द। महाराजा अजमाल नूं, दाखै वेध दरद्द।—रा.रू.

दरप-सं०पु० [सं० दर्प] गर्व, अभिमान, घमण्ड, अहंकार (डि.को.)

उ०—१ खीची कहियौ प्रजा नूं, पीड़ा दैण रौ करम तौ हूं भी अंत्यजां रौ ही जांणू परंतु बूंदी में अंत्यज ठाकुर कहायै सो दरप मेटण रै काज इण तरह आइ उणां रा बळ रौ अनुमांन प्रमांणू।

—वं.भा.

उ०—२ तिको बळ वीरज सूरज तप। दहसै रांवण अब दरप।

—रांम रासौ

रू०भे०—दाप।

दरपक—सं०पु० [सं० दर्पक] १ कामदेव, अनंग (ह.नां., डिं.को.) २ श्रीकृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न (वेलि.)

दरपण—सं०पु० [सं० दर्पण] वह कांच जो प्रतिबिंब के द्वारा मुँह देखने के लिये सामने रखा जाता है, मुँह देखने का शीशा, आइना, आरसी (डिं.को.) उ०—१ मन ही मंजन कीजिये, दादू दरपण देह। मांही मूरति देखिये, ईहिं अवसर कर लेह।—दादू बांणी

रू०भे०—दप्पण, दरप्पण।

अल्पा०—दरपणी।

दरपणी—देखो 'दरपण' (अल्पा., रू.भे.)

दरपणौ, दरपवौ—देखो 'डरपणौ, डरपवौ' (रू.भे.) उ०—दरपइ दीठइ दोरडइ, सांप न आंणइ संक। बीहइ विलाडां-वच्चडइ, वाघिणी वाळइ वंक।—मा.कां.प्र.

दरपियोड़ौ—देखो 'डरपियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दरपियोड़ी)

दरप्प—सं०पु० [सं० दर्पक] रूपक छंद का भेद विशेष।

दरप्पण—देखो 'दरपण' (रू.भे.) उ०—वरतुळ सुछम कपोळ, रसीली वांम रा। किया तयारी वेह, दरप्पण कांम रा।—बां.दा.

दरबदी—सं०स्त्री० [फ़ा०] किसी वस्तु की दर या भाव निश्चित करने की क्रिया, लगान आदि की निश्चित की हुई दर।

दरब—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) उ०—१ असि सिरपाव अनेक, कड़ा मोती गज कंकण। थाट दरब थैलियां, घणा जंवहर भूखण घण।—सू.प्र.

उ०—२ गंजे रिम केतां गरब, धार सरब ग्रद घेठ। दे कौड़ां दुजबर दरब, जीत परब जग जेठ।—र.ज.प्र.

दरबर—देखो 'दड़बड़' (रू.भे.)

दरबांन—देखो 'दरवांन' (रू.भे.)

दरबांनी—देखो 'दरवांनी' (रू.भे.)

दरबार—सं०पु० [फ़ा०] (वि० दरबारी) वह स्थान जहां राजा अथवा सरदार अपने सामन्तों और मुसाहिबों के साथ बैठता है, राज-सभा, कचहरी। उ०—१ दिन प्रति वसंत सोभा दिपै, सुख किरि सरव संसार रौ। आगळी भूप 'अभसाह' रै, दिपै रूप दरबार रौ।—रा.रू.

उ०—२ तितरै ओठी आय दरबार रै मांहै मुंहड़ै उतारियो, आय जुहार कियौ।—नैणसी

मुहा०—१ दरबार करणौ—राज-सभा बुलाना, राज-सभा में बैठना. २ दरबार जुड़णौ—राज-सभा के सभासदों का इकट्ठा होना, राज-सभा में मंत्रियों और राजा का बैठना। बड़े-बड़े लोगों का इकट्ठा होना. ३ दरबार बरखास्त होणौ—राज-सभा का उठना या किसी दिन का कार्य समाप्त होना. ४ दरबार लागणौ—देखो 'दरबार जुड़णौ'. ५ दरबार होणौ—देखो 'दरबार जुड़णौ'।

यौ०—दरबार-आंम, दरबार-खास।

२ राजा, महाराजा. ३ वह स्थान जहां पर सिखों का धर्म-ग्रंथ ग्रंथ साहब रखा हुआ हो (सिक्ख)।

रू०भे०—दुरबार।

दरबार-आंम—सं०पु०यौ० [फ़ा० दरबार+अ० आम] बादशाहों आदि का वह दरबार जिस में साधारणतः सब सम्मिलित होते हैं।

दरबार-खास—सं०पु०यौ० [फ़ा०+अ०] बादशाहों आदि का वह दरबार जिस में केवल विशिष्ट लोग ही रहते हैं।

दरबारदारी—सं०स्त्री० [फ़ा०] १ किसी के यहां जा कर खुशामद करने का कार्य।

क्रि०प्र०—करणी।

२ राज सभा में उपस्थिति, राज-सभा में हाजिरी।

दरबारी—सं०पु० [फ़ा०] १ राज-सभा का सभासद।

उ०—१ सीळ संतोख दया दरबारी, खिमांह मारै दाई। ग्यांन विचार विवेक सिंहासण, सुख में सुरत समाई।—ह.पु.वा.

उ०—२ राजा अर दरबारी सैं' ही अचरज करणै लागिया।
—सिंघासण बत्तीसी

२ द्वारपाल, छड़ीदार। उ०—ताहरां दरबारी सेतरांम नै भीतर ले गयौ।—नैणसी

सं०स्त्री०—३ एक राग विशेष (मीरां)

वि०—दरबार का, दरबार के योग्य।

दरबारी-कांन्हड़ौ—सं०पु० [फ़ा० दरबारी+रा० कांन्हड़ौ] एक राग विशेष (संगीत)

दरबौ—सं०पु० [फ़ा० दर] १ कबूतरों, मुर्गियों आदि के रखने के लिये काठ का खानेदार संदूक. २ काल कोठरी. ३ भूत-प्रेतों का निवास-स्थान (अंध विश्वास)

दरब्ब—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) उ०—१ दिल्लीस रखत दरब्ब, सुजि लियूं वांटि सरब्ब। ह्वै हुकम जिम हिज होय, करि उजर न सकै कोय।—सू.प्र.

उ०—२ सहनाय मुरसलां रंग सवाद। नववती घोर मंगळीक नाद। सुभ सुभड़ मंत्रि कवि लोक सब्ब। दुति करति नजर घण रजत दरब्ब।—सू.प्र.

दरब्बार—देखो 'दरबार' (रू.भे.)

दरभ—सं०पु० [सं० दर्भ] एक प्रकार का कुश, डाभुस, डाभ।

उ०—जळ गंगा जमना पुहकर जळ। दळ ग्रह दरभ छिड़क तुळछी दळ। लख बुध वेद मंत्रि जपि लेवै। अगर धूप चंदन उखेवै।
—रा.रू.

दरमजल—सं०स्त्री०यौ० [फ़ा० दर+अ० मंजिल] यात्रा में पड़ाव लेने की क्रिया, ठहराव। उ०—१ इण तरह कर पूनिया रै थांणायत नूं विदा कियौ, आप मजल दरमजल कूच कियौ सो गोपाळपुर पधारिया।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ अबै रावजी रजपूतां रौ साथ तेड़ायौ। असवार हजार बारै सूं चढ़िया। साथै सांमांन लियौ, सखरौ मुहरत साभ चालिया।

दरमजले गोड़वाड़ पोंहता ।—राव रिड़मल री वात
दरमाहो-सं०पु० [फ़ा० दरमाहा] मासिक वेतन ।
दरमियांन—देखो 'दरम्यांन' (रू.भे.)
दरमियांनी—देखो 'दरम्यांनी' (रू.भे.)
दरम्यांन-सं०पु० [फ़ा० दरमियान] मध्य, बीच । उ०—कितरायेक दिन दरम्यांन दे नै एक दिन वाघै नूं रावजी कह्यौ—वाघा देखा थारो तरगस ।—ऊमादे भटियांणी री वात
क्रिवि०—बीच में, मध्य में । उ०—जिन दिलावर खांन नै कल्ह के रोज दक्षन के दरम्यांन निजांमनमूलक सेती जंग किया —सू.प्र.
रू०भे०—दरमियांन ।
दरम्यांनी-वि० [फ़ा० दरमियानी] बीच का, मध्य का ।
सं०पु०—बीच में पड़ने वाला व्यक्ति, निबटारा करने वाला, मध्यस्थ ।
रू०भे०—दरमियांनी ।
दरयाई-सं०स्त्री० [फ़ा० दाराई] एक प्रकार की पतली रेशमी साटन ।
उ०—केसर चीर दरयाई को लैंगो, ऊपर अंगिया भारी । आवत देख किसन मुरारी, छिप गई राधा प्यारी ।—मीरां
वि० [फ़ा० दरियाई] समुद्र का, समुद्र सम्बन्धी ।
रू०भे०—दरियाई ।
दरयाव—देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—१ बीच बजारां वांणियां, भांजै सरजै भाव । पावां रा लेखा करै, दावां रा दरयाव—बां.दा.
उ०—२ दरयाव रूप हूं कोस दोय । जग मुकट कीध डेरास जोय ।
—सू.प्र.
दररौ-सं०पु० [फ़ा० दर्र:] १ पहाड़ों के बीच में हो कर जाने वाला संकरा मार्ग. २ दरार ।
वि० [सं० दरण] जिस के कण स्थूल हों, जो बारीक पिसा हुआ न हो, जिस के कण टटोलने से मालूम पड़ते हों ।
दरव—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.)
दरवरता-सं०स्त्री० [सं० द्रवता] द्रवत्व, तरलता । उ०—अग्नि उसण अरु जळ दरवरता, जैसे पवन सफंदा रे । सूंन्य पोल'रु भूमि कठोर, यूं जग ब्रह्म कहंदा रे ।—स्री सुखरांमजी महाराज
दरवांण, दरवांन-सं०पु० [फ़ा० दरवान] १ द्वारपाल (अ.मा.)
उ०—हुवौ जनांनां जावतौ, दिय फाटक दरवांन । मिळी रात घण तम मई; भैंसा मती भयांन ।—पा.प्र.
२ राजदूत. ३ छड़ीदार (अ.मा.)
रू०भे०—दरवांन, दरेवांण, दरेवांण ।
दरवांनी-सं०स्त्री०—द्वारपाल का कार्य, पहरेदार का कार्य ।
रू०भे०—दरवांनी ।
दरवाजौ-सं०पु० [फ़ा० दरवाजा] १ द्वार, मुहाना । उ०—आ सत्रू जांण लैला क म्हांसूं डरतो दरवाजो जड़ै है तिण कारण किमाड़ उघाड़ो राख सोवै छै ।—वी.स.टी.
पर्या०—द्वार, पोळ, वार, वारणूं, मेरणो ।
२ किवाड़ ।
दरवायौ-सं०पु० (देश०) हल के पीछे नीचे की ओर लगाया जाने वाला लोहे का वह कड़ा जिस में बीज बोने के उपकरण को फंसा कर बांधा जाता है ।
दरवी-सं०स्त्री० [सं० दर्वी] १ करछी, चमचा. २ सांप का फन ।
दरवीकर-सं०पु० [सं० दर्वीकर] १ फन वाला सांप (ह.नां.)
२ सांप ।
दरवेस-स०पु० [फ़ा० दरवेश] (वि० दरवेसी) १ फकीर, महात्मा ।
उ०—१ रिजक न पल्लै बांधता, पंछी अो दरवेस । जिण का तकिया रब्ब है, तिण के रिजक हमेस ।—अज्ञात
उ०—२ देखै पग देव करै आदेस, बडा पग जांण वंदै दरवेस । पगां दहुं-राह करै परणांम, सेवै पग सन्यासी सबह जांण ।—ह.र.
२ मुसलमान । उ०—१ खबर थई दळ मारवां, दरवेसां चो दौड़ । ऊभा जोड़ै घूमरां, चढ़ घोड़ै राठौड़ ।—रा.रू.
उ०—२ कुंतां कळह चढ़ै राव कांधल, दरवेसां भांजतौ दळ । अहंकार देसोवर आई, स्रग लै पौहती सहंसवर ।—द.दा.
३ बादशाह । उ०—वारां वेहुं समोभ्रम वीरम, कह केतां जम किता कहेस । वह दरवेस दुरंग कीधौ वस, दीधौ सौ वही दरवेस ।
—दूदौ बारहठ
रू०भे०—दुरवेस, दुरवेस ।
दरवेसी—देखो 'दुरवेसी' (रू.भे.)
दरस-सं०पु० [सं० दर्श] १ दर्शन, दीदार । उ०—भळहळै नूर तप तेज वप भांमणां, वांमणां घड़ी पळ बिगत वेवी । जांमणां जोय गोचर गिरह जांणियां, दिया रळियामणां दरस देवी ।—मे.म.
२ छवि, रूप, सुन्दरता । उ०—दीध प्रदछण हाथ जोड़ न हरि, चरणाम्रत दरस निहार । करै तिलक राघव जस किता, जीता 'किसन' जिकै जमवार ।—र.ज.प्र.
रू०भे०—दरस्स, दिरस ।
दरसण-सं०पु० [सं०] १ साक्षात्कार, अवलोकन, चाक्षुक ज्ञान ।
उ०—१ जीव होत गुरु मांनव कीना, मांनव देव दिखाई । देव पलट गुरु दरसण दीना, सब में ब्रह्म बताई ।—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—२ विरछां वेलां पर चढणौं बुधि चाही, उर में अलवेलां वेलण सुध आई । आंणा लेवण नै अंधूळा आया, दरसण देवण नै मोभी मुळकाया ।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—करणौ, देणौ, पाणौ, होणौ ।
मुहा०—१ दरसण देणा—प्रत्यक्ष होना, अपने को दिखाना, देखने में आना. २ दरसण पाणा—किसी को देखना, साक्षात्कार करना ।
२ भेंट, मुलाकात. ३ वह विद्या या शास्त्र जिस से तत्वज्ञान हो अर्थात् जिस से पदार्थों के धर्म्म, कार्य्य, कारण, सम्बन्ध आदि का बोध हो । उ०—धोरी धरम धूरीण, निगम आगम अवतारी । दरसण अर उपनिसद, जिणां री टोळी न्यारी ।—दसदेव

४ नेत्र, आंख. ५ दर्पण. ६ नाथ संप्रदाय के सन्यासी के कान के कुण्डल। उ०—१ रतननाथजी रा कांनां रा दरसण जैसळमेर है। रावळजी नित दरसण करै।—बां.दा.ख्यात

उ०—२ तिण सूं घरै किसै मूंढ़ै जावूं, म्हारी परणी लहुड़ा भाई री अंतेवर कहावै, तिणसूं औ सवद मोनै जरै नहीं। मोनै दरसण हीज द्यौ। ताहरां जोगेसर छोटै आसण बैठांण थोड़ो सो चीरो दीधौ, कासमीरी मुद्रा घाली, नाद सूंप्यौ, माथै टोपी पहिराई, सेली गळा मांहै घाली।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

मुहा०—दरसण पैं'रणा (लैंणा)—नाथ सम्प्रदाय के अनुसार फकीरी लेना, कानों में कुण्डल धारण करना।

७ राजस्थान की छः जातियों का समूह—देखो 'खट दरसण' (२)

८ ७२ कलाओं में से एक।

रू०भे०—दसण, दरसन, दरस्सण, दरिसण, दस्सण।

दरसणी, दरसणीक, दरसणीय–वि० [सं० दर्शनीय] १ सुन्दर, मनोहर. २ दर्शन करने योग्य, देखने योग्य। उ०—धिन्न हा वे दरसणीक वीर क्षत्री कोई दिन इण भारतवरस में घरोघर अंडा लाधता हा। —वी.स.टी.

सं०पु०—१ राजस्थान में 'खट दरसण' के अन्तर्गत आने वाला व्यक्ति, देखो 'खट दरसण' (२)। उ०—आया नै उपदेस, प्रथम प्रतिमा मत पूजो। वांदो मत अम्ह विना, दरसणी यती को दूजो।

२ देखो 'दारसणीक' (रू.भे.) —ध.व.ग्रं.

रू०भे०—दरसनी, दरसनीक, दरसनीय।

दरसणी हुंडी–सं०स्त्री०यौ० [सं० दर्शनी+रा० हुंडी] १ वह हुंडी जिसको दिखाने से ही उसका भुगतान हो जाय. २ वह हुंडी जिसकी भुगतान की तिथि को दस दिन या इससे कम दिन बाकी हों।

दरसणौ, दरसबौ–क्रि०अ० [सं० दर्शन] १ दिखाई पड़ना, दृष्टिगोचर होना। उ०—१ वेलां तरवर बीटियां; दुति कुसमां दरसंत। निजर पिया व्रज नाहरै, बनमय सदन वसंत।—बां.दा.

उ०—२ तम गिर गुफा न पायदे, जेथ मणी जोगेस। कीजै आदर कुकवियां, दरसै तम जिण देस।—बां.दा.

२ प्रतीत होना, महसूस होना। उ०—आप ओजगो बताओ सो सारो साथ रात घोड़ां पर खड़ो रह्यो तिण नूं ओजगो नहीं दरसै। —कुंवरसी सांखला री वारता

क्रि०स०—३ देखना, लखना। उ०—दरसी जोत दीदार, तिरवेणी री ताक में। छूटा सकळ विकार, आया मन माग में। —स्री सुखरांमजी महाराज

दरसणहार, हारौ (हारी), दरसणियौ—वि०।

दरसवाड़णौ, दरसवाड़बौ, दरसवाणौ, दरसवावौ, दरसवावणौ, दरसवावबौ—प्रे०रू०।

दरसाड़णौ, दरसाड़बौ, दरसाणौ, दरसावौ, दरसावणौ, दरसावबौ— —क्रि०स०।

दरसिओड़ौ, दरसियोड़ौ, दरस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दरसीजणौ, दरसीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दरसन—देखो 'दरसण' (रू.भे.) उ०—आलि मोहि लागत व्रिंदाबन नीको। घर घर तुळसी ठाकुर पूजा, दरसन गोविंदजी को।—मीरां

दरसनी, दरसनीक, दरसनीय—देखो 'दरसणी, दरसणीक, दरसणीय' (रू.भे.)

उ०—१ गुणतीत सो दरसनी आप घरै उठाई। दादू निरगुण रांम गह, डोरी लागा जाई।—दादू बांणी

उ०—२ मंत्रहीन राजा, ठाकुरहीन कटक, कळाहीन पुरुस, तपोहीन मुनि, प्रतिग्याहीन पुरुस, सीळहीन दरसनी, दांनहीन वित्त, वेदहीन विप्र, गंधहीन फूल, सीळहीन नारी, तिम दया हीन धरम न सोभई। —व.स.

उ०—३ असंतोसी ब्रांह्मण, पाखंडिया दरसनी प्रतापहीन पुरुस। —व.स.

उ०—४ रांमलगनजी राज रा, दरसनीक दीदार। करवा री म्हारै घणी, सगरांमदास कहै प्यार।—सगरांमदास

दरसाड़णौ, दरसाड़बौ—देखो 'दरसाणौ, दरसावौ' (रू.भे.)

दरसाड़णहार, हारौ (हारी), दरसाड़णियौ—वि०।

दरसाड़िओड़ौ, दरसाड़ियोड़ौ, दरसाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दरसाड़ीजणौ, दरसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दरसणौ, दरसबौ—अक०रू०।

दरसाड़ियोड़ौ—देखो 'दरसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दरसाड़ियोड़ी)

दरसाणौ, दरसावौ–क्रि०अ० [सं० दर्शन] १ दृष्टिगोचर होना, दिखाई देना। उ०—१ ले मुख उडत नाग जिम लुडियौ, औ सिध सिंघल दीप दिस उडियौ। दीप सिंघल पदमण दरसाई, आकरखण मंत्र पढ़ै उडाई।—सू.प्र.

उ०—२ चख रा वचन सुणै चड़खायौ, अंग असळाक मोड़तौ आयौ। 'दूलावत' इसड़ौ दरसायौ, जांणक भूखौ बाघ जगायौ।—वरजू बाई

२ प्रकट होना। उ०—१ यातैं हीरां के सरीर ऊपर सूरज रूपी जोवन आयौ छै। हाव-भाव दरसायौ छै।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ दुनियां दातारां जूझारां देवै। लिपळा लोकां नै लेखै कुण लेवै। दत्तव करतव मैं दोढ़ा दरसाता। सारी प्रथवी सिर सोढ़ा सरसाता।—ऊ.का.

उ०—३ साहिव साहिव सम देखो दरसायौ, हरदम 'हरियंद' सेखो सरसायौ।—ऊ.का.

३ प्रतीत होना, मालूम होना, अनुभव होना, महसूस होना।

उ०—१ काठी कुरळातां काती निस काळी। होळी हीयै में दांतां दीवाळी। सांमूं सीयाळौ साकी सरसायौ। बाकी बंचियां नै डाकी दरसायौ।—ऊ.का.

उ०—२ औ ऊपर ऊनाळौ आयौ। दीन जनां दोरौ दरसायौ। पांणी

ग्यांन कोई नहिं पायो। फूकै लोक हुवो अति कायो।—ऊ.का.

क्रि०स०—४ दृष्टिगोचर कराना, दिखाना। उ०—एक दिन रै समैं-जोग रावत प्रतापसिंघ कनै एक पंडित पुरांणीक आयो जिकरण बडा बडा ग्रंथां रौ समुद्र को सो पार दरसायो।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

५ स्पष्ट करना, समझाना, बताना। उ०—अठा सवाय आखर आयां कंठ सिथळ होय। दोय अखिर सूं कंठ घटतो न होय। दोय अखिर सूं कंठ की हद छै सो दरसाई छै।—र.ज.प्र.

दरसाणहार, हारौ (हारी), दरसाणियौ—वि०।

दरसवाड़णौ, दरसवाड़बौ, दरसावणौ, दरसावबौ, दरसवावणौ, दरसवावबौ—प्रे०रू०।

दरसायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दरसाईजणौ, दरसाईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दरसणौ, दरसबौ—अक०रू०।

दरसाड़णौ, दरसाड़बौ, दरसालणौ, दरसालबौ, दरसावणौ, दरसावबौ, देठाळणौ देठाळबौ—रू०भे०।

दरसायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दृष्टिगोचर हुवा हुआ, दिखाई दिया हुआ. २ प्रकट हुवा हुआ. ३ प्रतीत हुवा हुआ, मालूम हुवा हुआ, अनुभव हुवा हुआ, महसूस हुवा हुआ. ४ दृष्टिगोचर कराया हुआ, दिखाया हुआ. ५ स्पष्ट किया हुआ, समझाया हुआ, बताया हुआ।

(स्त्री० दरसायोड़ी)

दरसाळणौ, दरसाळबौ—देखो 'दरसाणौ, दरसावौ' (रू.भे.)

उ०—भाखतौ वयण जिहुं इज नर भाळियौ, दोयणां प्रळै रौ रूप देठाळियौ। देह काच सीसी टूक दरसाळियौ, उजाळै 'किसारी' वंस उजवाळियौ।—जोरजी चांपावत रौ गीत

दरसाळियोड़ौ—देखो 'दरसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दरसाळियोड़ी)

दरसाव—सं०पु० [सं० दृश] १ दृश्य, नजारा। उ०—ऐसा गढ़ जोधांण और सहर का दरसाव, जिसके चौतरफ कौ बागीचूं का डंबर और दरियाऊं का वणाव।—सू.प्र.

२ दिखाई देने की क्रिया या भाव, दर्शन। उ०—कर हाकळ भीलां ए दूर किया। दरसाव दिनंकर जेम दिया।—पा.प्र.

क्रि०प्र०—दैणौ, होणौ।

३ प्रकट होने की क्रिया या भाव, प्रकटन। उ०—ताहरां उवै ठाकुर बाहूड़िया उठा कूच कियौ अर कुंवर स्री भोपतजी नूं सीतळा रौ दरसाव हुऔ।—द.वि.

क्रि०वि०—होणौ।

दरसावणौ, दरसावबौ—देखो 'दरसाणौ, दरसावौ' (रू.भे.)

उ०—१ आपै हौ जांणावसी, भलौ ज होसी वगि। कै मांगिण दरसावियां, कै ऊछजियां खगि।—हा.का.

उ०—२ पूर अंब उदैपुर जोधपुर, इम तप निजरां आवियौ। 'ग्रंसाह' ग्रहम 'अमरो' अजट, दइव 'अजो' दरसावियौ।—सू.प्र.

दरसावणहार, हारौ (हारी), दरसावणियौ—वि०।

दरसाविश्रोड़ौ, दरसावियोड़ौ, दरसाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दरसावीजणौ, दरसावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दरसणौ, दरसबौ—अक०रू०।

दरसावियोड़ौ—देखो 'दरसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दरसावियोड़ी)

दरसियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दिखाई दिया हुआ, दृष्टिगोचर हुवा हुआ. २ प्रतीत हुवा हुआ, महसूस हुवा हुआ. ३ देखा हुआ, लखा हुआ।

(स्त्री० दरसियोड़ी)

दरस्स—देखो 'दरस' (रू.भे.) उ०—१ भलो-स आज मुंझ भाग, आप ग्रेह आविया। दरस्स तो रघू दिलीप, पुन्यहूंत पाविया।—सू.प्र.

उ०—२ समवाद रिखिकेस पाधरौ संभारियौ क, तिवा देण गाथ रौ उचारियौ सरस्स। बीछड़ेंधौ साथ रौ प्रमाद भू विचारियौ क, दूजा गोपीनाथ रौ जुहारियौ दरस्स।—साहिबौ सुरतांणियौ

दरस्सण—देखो 'दरसण' (रू.भे.)

दरहरणौ, दरहरबौ—क्रि०अ०—हवा का चलना। उ०—जितै पवन दरहरै, जितै नव नाथन, अखतर, परमेस भगत जितरै प्रगट जोगमाया संकर जितै, ऊवरू दवा जितरै 'अभा' तूझ राज रहजो तितरै।

—बखतौ खिड़ियौ

दरहाल—सं०पु० [फा० दर+अ० हाल] प्रतिक्षण। उ०—पूरक पूरा है गोपाळ, सब की चिंत करै दरहाल। समरथ सोई है जगनाथ, दादू देख रहै संग साथ।—दादू वांणी

दरांती—सं०स्त्री० [सं० दात्र] दांतेदार घास काटने का एक उपकरण (शेखावाटी)

दराड़—देखो 'दरार' (रू.भे.)

दराड़णौ, दराड़बौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)

दराड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दराड़ियोड़ी)

दराज—वि० [फा०] (स्त्री० दराजी) १ बड़ा, महान्।

उ०—१ रण त्रिसत जीति राठोड़ राज। दिस च्यारि आंण फेरी दराज।—वं.भा.

उ०—२ स्री गणनायक सारदा, दीजै उकत दराज। वरण प्रती 'किसनौ' वदै, जस राघव महाराज।—र.ज.प्र.

उ०—३ 'रांम' 'बखतेस' री चाड भाला रमां, दीह घण करि गल्लां दराजी। कथन बांई मिसल तणा मांझी कहै, मेल रे जीमणी तणा मांझी।—पहाड़ खां आढ़ौ

२ चिर, दीर्घ। उ०—तिण सूं तमांम खुरासांण लाड लाडै था, नै वैरी धाक सूं गळै था, प्रभू ऊमर दराज करै।—नी.प्र.

क्रि०वि०—बहुत, अधिक। उ०—सोहै दराज सारौ सहर, आज राज महाराज रौ।—बखतौ खिड़ियौ

सं०स्त्री० [अं० ड्राअर] मेज आदि में लगा हुआ संदूकनुमा खाना।
रू०भे०—दाराज।

दराड—देखो 'दरार' (रू.भे.)। उ०—तरु जड़ सरप दराड दिस्ट मिटी, सुद्ध रज्जू आतमथांणी। जाग्रत स्वप्न सुखुपती तुरिया, ज्यारूं ई भरम विलांणी।—स्री सुखरामजी महाराज
२ देखो 'दरार' (रू.भे.)

दराणौ, दरावौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)
उ०—दादै संकेत समझ'र कयौ—हां! मनै इयै रै बाप री दरायोड़ी सोगंध याद है।—वरसगांठ

दरायोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दरायोड़ी)

दरार-सं०स्त्री० [सं० दर] १ वह खाली जगह जो किसी चीज के फटने से लकीरनुमा पड़ जाती है, शिगाफ. २ छिद्र, छेद।
रू०भे०—दराड़, दराड।
मह०—दरारौ।

दरारौ—देखो 'दरार' (मह., रू.भे.)

दरावणौ, दराववौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)
उ०—पीछै कंवर स्री वीकैजी प्रोहित वीकमसी नूं राव जोधैजी खनै जोधपुर मेलियौ कै आप मदत करौ तौ भाई वीदै नूं ठिकांणौ दरावां।—द.दा.

दरावियोड़ौ—देखो 'दिरावयोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दरावियोड़ी)

दरि-सं०पु० [फा० दरिखाना] १ दरवार, राज-सभा।
उ०—खिति हूंता आयां खवरि, आया दरि उमराव। संभारै थोखौ सकळ, धारै लेख प्रभाव।—रा.रू.
रू०भे०—दर।
२ दरवाजा। उ०—वसत विडांणी रे जीवड़ा, हरि सगौ हरि सुमरै क्यूं नाहिं। नरपति भौपति दरि पड़ा, ढाल धुजा फहराइ।—ह पु वा.
३ देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—दिस लंक अंगद आद द्वादस, तहकिया तेखी। इक अरण सो विच त्रिसा आतुर, दरि द्रग देखी।
—र.रू.

दरिआउ, दरिआव—देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—१ दळ डोहै दरिआउ, हैवै वहि हदमाल रौ। जोड़ै रिणमालां 'जगौ', रहिआै खिड़ियौ राउ।—वचनिका
उ०—२ राज रौ सिरताज कांइम लाज रौ रढ़ रांण। भाउ रौ दरिआउ देसल राउ रौ कुळ भांण।—ल.पि.

दरिगह—देखो 'दरगाह' (रू.भे.)

दरिद, दरिद्र-वि० [सं० दरिद्र] धनहीन, निर्धन, कंगाल।
उ०—घट दीन दरिद्र घुमावत क्यूं। पुरुसारथ हीन पुमावत क्यूं।
—ऊ.का.
सं०पु०—निर्धन मनुष्य।
रू०भे०—दरिद्री, दरीद्दर, दळदरी, दळद्री, दळिद, दळिदर, दळिद्र, दाळदी, दाळिदर, दाळिद्र।

दरिद्रता-सं०स्त्री० [सं०] कंगाली, निर्धनता। उ०—ग्रांमि एक अति दरिद्रता करी दुखित डोकरी एक हूंती।—तरुणप्रभ

दरिद्री—देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दरिया—देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—१ वोछा करै गुमांन बड़ौ कै नांहि रे। भादू वरसै मेह नदी घर राहि रे। दरिया उझळै नांहि ता मांहि समाहि रे। हरिहां जन हरिदास यूं साधि देखि जग मांहि रे।
—ह.पु.वा.
उ०—२ दादू दरिया प्रेम का, ता में झूलै दोइ। इक आतम परमात्मा, एकमेक रस होइ।—दादू वांणी

दरियाई—देखो 'दरयाई' (रू.भे.) उ०—घेर घुमारौ घाघरौ, दरियाई रे नेफौ।—लो.गी.

दरियाईघोड़ौ-सं०पु० [फ़ा० दरियाई+सं० घोटक] गैंडे के समान मोटी खाल वाला एक जानवर जो अफ्रिका में नदियों के किनारे पाया जाता है।

दरियाईनारियळ-सं०पु० [फ़ा० दरियाई+सं० नारिकेल] समुद्र के किनारे पैदा होने वाला एक प्रकार का नारियल जो अमेरिका, अफ्रिका आदि देशों में पाया जाता है। सूखने पर इसकी गिरी पत्थर के समान कड़ी हो जाती है। इसके खोपरे का पात्र बनता है जिसे सन्यासी आदि अपने पास रखते हैं।

दरियाखीर-सं०पु० [सं० दरिया+सं० क्षीर] क्षीर-सागर।
उ०—आदम अरु बंभदेव मिळियंदे, आए सब दरियाखीरंदे।
—र.ज.प्र.

दरियादासी-सं०पु०—निर्गुण उपासक साधुओं का एक सम्प्रदाय जिसे दरिया साहब नामक एक व्यक्ति ने चलाया था।

दरियाफत, दरियापत-वि० [फ़ा० दरियाफ्त] मालूम, ज्ञात।
उ०—अरजी सुण कर दरियाफत अल्ला। बरदे महरबांन के बुल्ला।
—र.ज.प्र.
क्रि०प्र०—करणौ।

दरियाव-सं०पु० [फ़ा० दरिया] सागर, समुद्र (अ.मा.)
उ०—१ साजन तुम दरियाव हो, मैं औगण की जा'ज। अबकी पार लगाय दे, कर पकड़े की लाज।—अज्ञात
उ०—२ मुरधर प्रकट थयौ महाराजा, वाजै सु सुर पंच सर वाजा। सुंदर वदन निरख सुण पावै, ईखण नाथ साथ दरियावै।
—रा.रू.
रू०भे०—दरयाव, दरिआउ, दरिआव, दरिया, दरीयाव।
अल्पा०—दरियौ।

दरियावजी-सं०पु०—एक महात्मा का नाम। जोधपुर राज्यान्तर्गत मेड़ता के रैण (राहण) नामक ग्राम के मुसलमान पिंजारे (धुनिया)

थे। इनका जन्म वि०सं० १७३३ माना जाता है। संवत् १७६६ से ये हिन्दू हो गये और रामस्नेही साधु पेमदास के चेले बन कर राम की भक्ति करने लगे। इनकी गादी रैण (राहण) गांव में है। वि०सं० १८०५ में इनका देहान्त माना जाता है।

दरियोड़ो—देखो 'दरियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दरियोड़ी)

दरियो—देखो 'दरियाव' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ देख्यौ दरियौ भरियो जळ घरणोजी, तब बोले नरनाथ। वारिधि पूरो हल वीहळ हुइ रे, मूंछां घालै हाथ।—प.च.चौ.

उ०—२ उरणनै तो दीखतो हो पीळो-पीळो अथंग दरियो।
—रातवासो

उ०—३ सेठ कहै खप अम्ह नथी, वैठो भाड़ो देई रे। भरियै दरियै चालिया, मन में हरख धरेई रे।—स्रीपाळ रास

दरिसण—देखो 'दरसण' (रू.भे.) उ०—भय भंजरण भगवंत, जैसलमेर जयौ री। उपगारी अरिहंत, दरिसण दुख गयो री।—ध.व.ग्रं.

दरी-सं०स्त्री० [सं०] १ गुफा, खोह, कंदरा। उ०—सिला तखत केसर चमर, अनड़ दरी आवास। प्रगट लियां अगराज परण, सादूळा स्यावास।—बां.दा.

२ वह कोठरी या घर जो जमीन के नीचे बना हो, तहखाना, तल-गृह. ३ मकान के अन्दर दीवार के समानान्तर लगा हुआ वह लम्बोतरा पत्थर जिस पर सामान आदि रखा जाता है।

[सं० स्तर] ४ मोटे सूत का बना हुआ मोटा बिछौना।
रू०भे०—दरि।

दरीखांनो-सं०पु० [फ़ा० दर+खाना] १ राजा-महाराजा या सरदारों के दरबार का स्थान जिस के बहुत से दरवाजे होते हैं।

उ०—१ दुनियांन सयल राजांन देखस्यइ, पग पग कूंदरण भारि जइ पाज। दरीखांनइ नांखिया दुलीचा, श्रावण तणी हुई आवाज।
—महादेव पारवती री वेल

उ०—२ बूबना रा महल नीचै एक वडो दरीखांनो। मूंहडा आगै छप्पर बांध, तिण नीचै सारा उमराव आय वैसै।
—जलाल बूबना री वात

२ दरबार। उ०—जदी यो राजा फौज ले अर सिंघमार रा राजा ऊपर आयो। जदी वो राजा अर सिंघमार दोई दरीखांनो करै वैठा छै। अर खबर आई।—पंचमार री वात

३ घर में बनी हुई मरदाना बैठक।

दरीद्र—देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दरीपट्टी-सं०स्त्री० (देश०) जुलाहों का एक खड्ग के आकार का औज़ार जिसे बाना बैठाया जाता है। यह अधिकतर बकरी के बालों से बुने जाने वाले वस्त्रों के उपयोग में लिया जाता है, वैयन।

दरीवौ-सं०पु० [फ़ा० दर] १ बाजार। उ०—आसिक अमली साधु सत्र, अलख दरीवै जाइ। साहिब दर दीदार में, सब मिळ वैठे आइ।
—दादू वांणी

२ कोठार। उ०—श्रीखमंत हुयौ सुरांराज रौ भाळवौ गोम, पणांखी सुणैवौ वेण वाज रौ इलाप। ऊखेड़वौ महा काळ दरीवां अनाज रौ क, मेड़तिया गरीवांनवाज रौ मिळाप।—साहिवौ सुरतांणियौ

३ ढेर। उ०—ढेरिय संभरी माल, लुट्टि संभर पुर लिन्हिय। निमक दरिवन रुद्धि, दाव दव्वन उर दिन्हिय।—ला.रा.

४ पान का बाजार। उ०—कहा करूं ऐसी भई, मन पड़या दरीवै जाय। जन हरिदास मतिवाल मैं, मेरा मन हरि लिया चुराय।
—ह.पु.वा.

दरीभुत, दरीभ्रत-सं०पु० [सं० दरीभृत] पर्वत, पहाड़ (अ.मा., नां.मा.)

दरीमुख-सं०पु० [सं०] राम की सेना का एक बन्दर।

दरीयाखाना— । उ०—कद दोकद चुपदा मासपदा तनुबंध सरबंध कमरबंध मगवनां कमळवनां दरीयाखांना कतीनी झूंना प्रताप सचोप।—व.स.

दरीयाव—देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—बंध ग्राह दरीयाव बीच पड़ संघट फील पुकारियां। ईस ऊबाहरण पाय आय धर हत्थूं सूंड ऊधारियां।—र.ज.प्र.

दरून-सं०पु० [फ़ा० दारूद] मुहम्मद साहब की स्तुति, दुआ (मा.स.)
यौ०—फातिहा-दुरूद।

दरून-सं०पु० [?] हृदय। उ०—दादू दरूनै दरदवंद, यहु दिल दरद न जाइ। हम दुखिया दीदार के, महरवांन दिखलाइ।—दादू वांणी

दरेवांण, दरेवांण—देखो 'दरवांण' (रू.भे.) उ०—पाछिली घड़ि दो राति हुई तरै दरवाजै जाइ ऊभा। दरेवांण नूं कह्यो दावड़ो बरस दोइ रो फौत हूवो छै। उघाड़ि।—चौबोली

दरोग-सं०पु० [अ०] असत्य, मिथ्या। उ०—दादू दुई दरोग लोग को भावै, सांई साच पियारा। कौन पंथा हम चलैं कहो धू, साधो करो विचारा।—दादू वांणी

दरोगहलफी-सं०स्त्री० [अ०] १ सत्य बोलने की सौगन्ध खा कर भी झूठ बोलना. २ झूठी गवाही।

दरोगी-वि० (?) समीप रहने वाला। (?)
उ०—आलम की आवाज सुरण तहवरखां त्रास पाई। मेरे दरोगी गयो आपकी कमाई।—रा.रू.

सं०स्त्री०—दासी, सेविका।

दरोगो-सं०पु० (स्त्री० दरोगण, दरोगी) १ दास, सेवक.
२ देखो 'दारोगो' (रू.भे.)

दरोवस्त-सं०पु० [फ़ा० दर व वस्त] कुल, पूरा, सब।
उ०—राव सुरतांण हरराज री तोडड़ी छोड नै रांणा रायमल कनै चीतोड़ आयौ, तरै रांणै वधनोर गढ़ दरोवस्त पटै दियो।—नैणसी

दरोळ-सं०पु०—१ विघ्न, बाधा।
उ०—तीर और रुकड़ां तरवारियां नै रख न्यारी न्यारी कर न्हांकवे है, कांनी कांनी वीरां री मोळ पड़ गई, एक इण पूंचाळा जोधार आवण सूं दळ में पूरी दरोळ पड़गी।—वी.स.टी.

क्रि०प्र०—पड़णौ।

२ उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा, विद्रोह। उ०—१ मिसलात विरोळ अमंगळ में, मंझ रात दरौळ दमंगळ में। अत थाळ विसाळ रसाळ भरै, सह जांनिय डेरेय सैंभर रै।—पा.प्र.

उ०—२ हुय धुरळ श्रेम हंसी हंसार, खोस नै कियौ सरसौ खवार। लड़ लई लूट जिहि नारनोळ, दिली मंडळ पड़ इसडौ दरौळ।—पे.रू.

क्रि०प्र०—पड़णौ, होणौ।

३ खलबली। उ०—दिल्ली रा दळ में दरौळ देखतां ही साहजादा री सेना बडे जोर बंधी थकी आगै आइ उछाह रै उफांण महाप्रळै मचायौ।—वं.भा.

रू०भे०—दरोळ।

दरोळ—देखो 'दरौळ' (रू.भे.) उ०—रुख रुख तीरां-रूकड़ां, मुख-मुख वीरां मोळ। पूंचाळा हेकण पखै, दळ मैं प्रवळ दरोळ।—वी.स.

दळ—सं०पु० [सं० दल] १ सेना, फौज। उ०—१ ऊमर ऊतावळि करइ, पल्लांणियां पवंग। खुरसांणी सूधा खयंग, चढ़िया दळ चतुरंग।

—ढो.मा.

उ०—२ अकबर दळ अप्रमांण, उदैनयर घेरै अनय। खागां वळ खूमांण, साहां दळण प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

रू०भे०—दळि, दुळ।

२ मंडली, टोली, गुट, चक्र। उ०—आंधी खुंखाटा करती उठ आवै। फदकै मूंफाटा चेता चुळ जावै। गोळू गायां ले गांमां गळ गाहै। दुखिया सुखिया मिळ दोनूं दळ दाहै।—ऊ.का.

३ समूह, झुण्ड। उ०—वळतौ विप्र भणै स्त्री सांभळि, देव तणां दळ आव्या। सोवन थाळ भरी मणि मांणिक, वेगइं विप्र वधाव्या।

—रुकमणी मंगळ

४ ढेर, राशि। उ०—१ राघव रट रट हरख कर, मट मट अघ दळ महत। जनम मरण भय हरण जन, कज भव हर रिख कहत।

—र.ज.प्र.

उ०—२ दीनदयाळ पाळकर गौ दुज, निज प्रिया सिया मनरंजण। जाप 'किसन' मा बाप रांम जस, भव त्रय ताप पाप दळ भंजण।

—र.ज.प्र.

५ किसी वस्तु के उन दो सम-खण्डों में से एक जो स्वभावतः जुड़े हुए हों और थोड़ा सा जोर अथवा दबाव पड़ते ही अलग हो जांय।

६ भोज्य पदार्थ, अनाज। उ०—दादू जळ दळ रांम का, हम लेवें परसाद। संसार का समझै नहीं, अविगत भाव अगाध।—दादू वांणी

७ किसी वस्तु की मोटाई, तह या परत की तरह फैली हुई वस्तु की मोटाई। ज्यूं—आंवा री गुठली माथै दळ घणोई है, इण काकड़ी में कोरा बीज ईज है, दळ कोयनी।

यौ०—दळ-दार।

८ किसी पौधे, वृक्ष, लतादि की पत्ती (अ.मा.) ज्यूं—तुळसी-दळ। उ०—कळियां कूंळां री कादै में कळगी। विखहर संगत सूं पीपळियां वळगी। करता विस्वंभर कसरां का कांई। नागरवेलो दळ निरफळ फळ नाहीं।—ऊ.का.

९ फूल की पंखड़ी।

रू०भे०—दळि।

यौ०—कमळ-दळ-लोचण।

१० तमालपत्र. ११ पत्र, चिट्ठी। उ०—१ इम खट रित करि उछव अति, दिल आणंद दुझाल। दरसण काज दिलेस रां, मेलै दळ 'अभमाल'।—सू.प्र.

१२ शस्त्र के ऊपर का आच्छादन, म्यान। उ०—१ यूं दळां हूं त जांणै खड़ग ऊकढ़ी, वादळां हूं त जांणै कढ़ी बीज।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ खिवै फळ सेल खुलै दळ खग्ग। दिपै दव आग कि झाळ सदग्ग।—रा.रू.

रू०भे०—दळौ।

१३ भौंरा (अ.मा.) १४ नशा, मद। उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, वीजा सहु अकयथ्थ। जिए चडचा दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ।—ढो.मा.

१५ लड्डू (अनेका.) १६ शरीर (कविराजा बांकीदास)

उ०—दळ कहतां सरीर ए जु बाळक जब ऊपजै छै तब कळि रौ जु वाउ लागै छै तब ही उह बाळक नूं भूख त्रिस लागि छै।—वेलि.टी.

दल—देखो 'दिल' (रू.भे.)

दळ-अभंग—सं०पु०यौ० [सं० दल+अभंग] बलभद्र (अ.मा.)

दळ-आगळ—सं०पु०यौ० [सं०दल+अग्र] अग्रणी, हरावल।

दलक—सं०पु० [अ०] रोजगीरों का एक औज़ार जिस से निवकासी साफ की जाती है।

दळकणौ, दळकवौ—क्रि०अ०—१ फटना. २ थर्राना, कांपना. ३ चौंकना।

दळकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ फटा हुआ. २ थर्राया हुआ, कांपा हुआ. ३ चौंका हुआ।

(स्त्री० दळकियोड़ी)

दलगीर—देखो 'दिलगीर' (रू.भे.) उ०—तरै रावजी मन मांहे दलगीर हूण लागा। तरै जैतेजी कह्यौ—थे दलगीर मत हुवौ, थे कहस्यौ तिकुं कांम करस्यां।—राव मालदे री वात

दळण—सं०स्त्री० [सं० दलन] १ दरदरा करने या पीसने की क्रिया या भाव. २ मारने या संहार करने की क्रिया या भाव।

वि०—संहार करने वाला, नाश करने वाला, पीसने वाला।

उ०—अकबर दळ अप्रमांण, उदैनयर घेरै अनय। खागां वळ खूमांण, साहां दळण प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

दळणी—सं० स्त्री० [सं० दलन] १ चक्की।

दळणौ—वि०—दलने वाला. २ काटने वाला. ३ संहार करने वाला।

दळणो, दळवौ-क्रि०स० [सं० दलन] १ चक्की में डाल कर अनाज आदि के दानों को दरदरा करना. २ संहार करना, मारना।
उ०—१ भेदे तें वार किता भूगोळ, करंतो आंणी गंग किलोळ। दळे तें केता वार दईत, इंद्रासण दीधो सक्र अजीत।—ह.र.
उ०—२ जरै गजारूढ़ प्रमारसिंह उरग असि चलाय आप रा सुरंग होदा रै बराबर कढ़तो दाहिमा रो तुरंग दळियो।—वं.भा.
३ नाश करना, नष्ट करना। उ०—१ जोवन में मर जावणो, दळ वळ साजै दाप। एह उचित वोह आवखो, सिहां बडो सराप।
—बां.दा.

उ०—२ आपगां दळण गीखम जळण आहोटी, विसै खटचलण फळियां कदमनंद। बारवाहां कई आठ मासा वळण, नह कई वळण कूं जसोमत नंद।—वां.दा.
दळणहार, हारो (हारी), दळणियो—वि०।
दळवाड़णो, दळवाड़वौ, दळवाणो, दळवावौ, दळवावणो, दळवाववौ, दळाड़णो, दळाड़वौ, दळाणो, दळावौ, दळावणो, दळाववौ—प्रे०रू०।
दळिओड़ो, दळियोड़ो, दळयोड़ो—भू०का०कृ०।
दळीजणो, दळीजवौ—कर्म वा०।

दळथंभ, दळथंभण-सं०पु० [सं० दल+स्तम्भ] १ महान् वीर, योद्धा।
उ०—घोड़ां हींस न भल्लिया, पिय नींदड़ी निवारि। वैरी आया पांवणा, दळथंभ तूझ दुवारि।—हा.झा.
२ मुगल बादशाहों द्वारा राजाओं को दी जाने वाली उपाधि।
उ०—आसेर सतारो ऊझड़ै, धोम कोम अहि धूजियो। दळथंभ नांम असपति दियो, पटां वधारां पूजियो।—सू.प्र.
रू०भे०—दळांथंभ।

दळद—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—१ दीधो धन लीधो दळद, कीधो गात कुढंग। गनका सूं राखै गुसट, रसिया तोनूं रंग।—वां.दा.
उ०—२ चाढ़णो कुळ जळ, दळद चोजां वाढ़णो विरदैत।
—र.ज.प्र.

दळदरी—देखो 'दरिद्र' (रू.भे.) उ०—दीयै किसुं दळदरी, सवळ रीझवियो संतां। सगळो ही संसार, घरै आस धनवंतां।—ध.व.ग्रं.

दळदळ-सं०पु० [सं० दलाढ्य] १ कीचड़, पंक. २ वह भूमि जो गहराई तक गीली हो और जिस में पांव आदि धँसता हो. ३ महीन धूलि वाला रेगिस्तानी भू-भाग जिस में प्राणी का पांव पड़ते ही अन्दर धँस जाता है।
मुहा०—दळदळ में फसणो (पजणो)—कीचड़ में फँसना, आपत्ति या कष्ट में फँसना, किसी कार्य का अनिर्णीत अवस्था में रहना।
४ बुड्ढी स्त्री (बाजारु)

दळदार-सं०पु०यौ० [सं० दल+फा० दार] जिस की तह या परत मोटी हो, मोटे दल वाला।

दळद्र—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—विधि कीधी वळै वांदनइ तोरण, मूंग नांखिया जोई मुख। सुख संपदा हुई सिगळां ही, दळद्र गयउ नइ गयउ दुख।—महादेव पारवती री वेल

दळद्री—देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दळनाथ, दळनायक, दळप, दळपत, दळपति, दळप्पति-सं०पु० [सं० दलनाथ, दलनायकः, दलप, दलपति] १ किसी मंडली या समुदाय का अगुआ, प्रधान, सरदार। उ०—कट्टार हीर नग जड़ित कीध। दळनाथ कमंध रो नजर दीध।—सू.प्र.
२ सेनापति। उ०—१ दळनायक नमो पराक्रम, 'देवा', थर भांजिया वधारै आघ। झटका रतन जड़ाव जेहड़ा, वणिया वदन अभनमा 'वाघ'।—जीवणदास बारहठ
उ०—२ दळ समुदाय भांजइ, दळपति गांजइ।—व.स.
३ वीर, योद्धा। उ०—१ सुर रायां सुप्रसण हुये, दीजै मो वरदांन। सुजस गाऊं 'भारत' सुत, दळनायक सिवदांन।—शि.सिं.रू.
उ०—२ पूरण प्रसिध प्रघट प्रज-पाळण, दळपति दियण दोखियां दाव। भवि कोइ घड़िस त भलो भाखिस्यां, रावळ 'जांम' सरीखो राव।—ईसरदास बारहठ
उ०—३ दळप्पति दोमजि दूथ दुरंग। कियो कमरो जिणि भांजि कुरंग।—रा.ज. रासो
रू०भे०—दळवइ, दळांनाथ, दळांपति, दळांपती।

दळवट-सं०पु०—मच्छर, वरै आदि के काटने अथवा खुजलाने आदि के कारण शरीर की चमड़ी पर पड़ने वाली सूजनयुक्त गोल लाल चकती, चटखर, ददोरा।

दळवळियो-वि०—१ खिन्नचित्त, उदासीन। उ०—दळिया रांधे दळवळिया हल-वांणं। वेचण बींदणियां इधणियां आंणै।—ऊ.का.
२ दुखी. ३ भूखा।

दळवादळ—देखो 'दळवादळ' (रू.भे.) उ०—१ दळवादळ ल्यायो साथै फौज मेरी मां की ये जायो! सावत न छोडया ये कोई देवरा।
—लो.गी.

उ०—२ दळवादळ डेरा ऊभा किया रे, ऊतरियो सुलतांण। सिंहलदेस दुहाई फेरि के रे, पकडो सिंघल रांण।—प.च.चौ.

दळभंजण, दळभंजन-वि० [सं० दल+भंजन] सेना का संहार करने वाला, महावीर, योद्धा।
सं०पु०—वह घोड़ा जिस के शिर (मस्तक) पर के पाटे पर काला या लाल दाग हो (अशुभ)

दलभ—देखो 'दुरलभ' (रू.भे.) उ०—भल करम मन वतन अत दलभ, अखत वयण अह नर अमर। कर हरख पहर अठ कव 'कसन', सधर समन रघुवर समर।—र.ज.प्र.

दलम-सं०पु० [सं० दालिमः=इन्द्र का नाम] इन्द्र (ह.नां., अ.मा.)
रू०भे०—दलमि।

दलमट्ठो, दलमठो—देखो 'दिलमठो' (रू.भे.) उ०—ईहगां कलावां कहै आसीसता, जोड़ रा रीसता दहै जारां। दलमठा रहै आठूं पहर दीसता,

लोह पग घींसता वहै लारां।—महादांन महड़ू

दळमळणौ, दळमळबौ–क्रि०स०—१ कुचलना, रौंदना, मसल डालना। उ०—बाग विधूंस्या, लंका दळमळी, सारचा राजा रांमचंद्र का कांम; बाबा बजरंगी री बंगळी हद वण्यौ।—लो.गी.

२ मार डालना, संहार करना।

दळमळियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ मसला हुआ, रौंदा हुआ, कुचला हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ।

(स्त्री० दळमळियोड़ी)

दलमाठौ—देखो 'दिलमठौ' (रू.भे.) (डि.को.)

दलमि—देखो 'दलम' (रू.भे.) (ना.डि.को.)

दळमोड़–वि० [सं० दल+रा० मोड़] सेना को पीछे हटाने वाला, महावीर।

दळवइ—देखो 'दलपति' (रू.भे.) उ०—दह दिसि इम जां वनु आरोडइं, जीव वीणासइं तरूयर मोडइं। जां इम दळवइ पारधि लागइ, तांम असंभमु पेखइ आगइ।—पं.पं.च.

दळवादळ–सं०पु० [सं० दल+वारिद] १ बड़ा भारी खेमा, बहुत बड़ा शामियाना। उ०—पेसखांना वाळी वात परीछइ, आगा लगई करण आरास। दळवादळ तांणिया दुवाहे, फारक ईसर तणा फरास।

—महादेव पारवती री वेलि

२ बड़ी भारी सेना। उ०—दळवादळ तावीन दे, हिंदू मुस्सलिमांण। चगथै 'जसौ' चलाविओ, जुध मंडण जमरांण।—वचनिका

३ मुलायम गदेला। उ०—पोढण हिंगळू ढोलियौ, थांरै दळवादळ री सेज।—लो.गी.

रू०भे०—दळबद्दळ, दळवादळ।

दळसणगार— देखो 'दळसिणगार' (रू.भे.) उ०—दूजी वार धिराज दियौ दुख, सांसण जवत किया हेक साथ। दळसणगार मांडियौ 'देवै', हितवां काज उदक नै हाथ।

—पोकरण ठाकुर सवाईसिंह री गीत

दळसाह–सं०पु० [सं० दल+फा० शाह] १ सूअर, वराह (अ.मा.) २ सेनापति।

दळसिणगार–सं०पु० [सं० दल+शृंगार] १ सेना की शोभा बढ़ाने वाला, वीर, पराक्रमी (बांकीदास) उ०—दळसिणगार कहै गोदाउत, थिर जस अथिर कळू धावंत। व्रिख-छाया आचारि खत्री वंस, पातां सूं सोभा पावंत।—राठौड़ हरिरांम ऊहड़ री गीत

२ सेनापति।

रू०भे०—दळसणगार।

दलांण—देखो 'दालांण' (रू.भे.)

दळांथंभ—देखो 'दळथंभ' (रू.भे.) उ०—कियौ प्रथम साकौ वडौ दली कणियागरै, दळांथंभ कमंद चीतोड़ खत्रदाव। 'अमर' अवगाढ़ जमडाड जम आछटै, रांण रड़माल उजवाळिया राव।

—नरहरदास बारहठ

दलांन—देखो 'दालांन' (रू.भे.)

दळांनाथ—देखो 'दळनाथ' (रू.भे.) उ०—दली हाथियां हैमरां पाय कली तोड़ा लाय दारू, दूठ मलां चहुं दिसां हाकली दुवाह। दळांनाथ बापौ बाप खलीलू दूसरा 'दला', बळी ना दूसरी वार धूकळी वेवाह।

—उम्मेदसिंह सिसोदिया री गीत

दळांपति, दळांपती—देखो 'दळपति' (रू.भे.) उ०—खत्रीवट खागति आगि 'खंगार' जिसा ग्रिद खाटणौ। दळांपति आरंभ रांम दुगांम खळां दळ दाटणौ।—ल.पिं.

दळांमुकट–सं०पु० [सं० दल+मुकुट] सर्व-श्रेष्ठ योद्धा, महावीर। उ०—बळ हीणा केता नर बीजा, हव प्रसणां चै तरफ हुवा। भड़ अण डोलक अेक 'भवांना', दळांमुकट 'जगरांम' दुवा।

—लांविया ठाकुर भवांनीसिंह री गीत

(मि० दळांसिणगार)

दळाड़णौ, दळाड़बौ—देखो 'दळाणौ, दळाबौ' (रू.भे.)

दळाड़णहार, हारौ (हारी), दळाड़णियौ—वि०।

दळाड़िओड़ौ, दळाड़ियोड़ौ, दळाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दळीजणौ, दळीजबौ—कर्म वा०।

दळाड़ियोड़ौ—देखो 'दळायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दळाड़ियोड़ी)

दळाणौ, दळाबौ–क्रि०स० ('दळणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ अनाज आदि के दानों को चक्की आदि से दरदरा कराना. २ संहार कराना, मराना। उ०—घर ऊपर फेरै घरट, दांणू सरब दळाया। सीता बाहर रांमचंद्र नीसांण घुराया।—केसोदास गाडण

३ नष्ट कराना, नाश कराना।

दळाणहार, हारौ (हारी), दळाणियौ—वि०।

दळायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दळाईजणौ, दळाईजबौ—कर्म वा०।

दळाड़णौ, दळाड़बौ, दळावणौ, दळाववौ—रू०भे०।

दळायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ अनाज आदि के दानों को चक्की आदि से दरदरा कराया हुआ. २ संहार कराया हुआ, मराया हुआ। ३ नाश कराया हुआ, नष्ट कराया हुआ।

(स्त्री० दळायोड़ी)

दलाल–सं०पु० [अ० दल्लाल] १ वह व्यक्ति जो किसी वस्तु के विनिमय अर्थात क्रय या विक्रय में सहायता दे, मध्यस्थ। उ०— अे दलाल अे खुड़दिया, हुंडी वाळ बजाज। अे हिज करै पसारटौ, केवल धन रै काज।—बां.दा.

२ वह व्यक्ति जो किसी कार्य की सिद्धि के लिये दो पक्षों के बीच मध्यस्थता करता है या सहायता देता है।

वि०वि०—दलाल अपने लिये आर्थिक लाभ के उद्देश्य से मध्यस्थता करता है।

वि०—विशाल हृदय, उदार।

दलाली-सं०स्त्री० [अ० दल्लाली] १ दलाली का कार्य।
क्रि०प्र०—करणी।
२ दलाल को उस के कार्य के बदले में मिलने वाला द्रव्य या पदार्थ।
क्रि०प्र०—देंणी, लेंणी।

दलावड़ा-सं०स्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा।

दळावणो, दळाववो—'दळाणो, दळावो' (रू.भे.)
दळावणहार, हारो (हारी), दळावणियो—वि०।
दळाविग्रोड़ो, दळावियोड़ो, दळाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
दळावीजणो, दळावीजवो—कर्म वा०।

दळावियोड़ो—देखो 'दळायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दळावियोड़ी)

दळि—१ देखो 'दळ' (१) (रू.भे.) उ०—१ वइरी व्रघवक के वेधवत्ति, पखियां जु प्रासइ दूरि पत्ति। असपत्ति तणइ दळि असराळ, काविली केवि धारा कराळ।—रा.ज.सी.
उ०—२ तइ नरसिंघदास का कटकबंध चालतां सांतरि आगळइ दळि पांणी, पाछिलइ दळि कादम। तइ कादम कइ ठांहि खेह उडती जाइ।—अ. वचनिका
२ देखो 'दळ' (६) (रू.भे.) उ०—कमळ ने दळि सायर पायरिउ। मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ।—विराट पर्व
३ देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—भूपति लख्यपती नरप्पती सुभेद, वेउरे अढ़ारही पुरांण वेद। खट भाख जांण तल्ल दूसरो खंगार, इहणां गमे दळि इंद्र अव्वतार।—ल.पिं.

दळित-वि० [सं० दलित] १ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, खण्डित।
क्रि०प्र०—करणो।
२ कुचला हुआ, रौंदा हुआ. ३ मसला हुआ, मर्दित. ४ विनष्ट किया हुआ।

दळिद—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.) २ देखो 'दाळद' (रू.भे.)
उ०—१ मांगणहारां सीख दी, ढोलइ तिण हि ज ताळ। सोवन-जड़ित सिंगार दे, नांख्यउ दळिद उलाळ।—ढो.मा.
उ०—२ घरमसी कहै सात, सात दुख जाय न सहणा। दीसै घरि में दळिद, लोक वळि मांगै लहणा।—ध.व.ग्रं.

दळिदर—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)
२ देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दळिद्द—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—कवण चतुर गणिका करै, चारु-दत्त घर चित्त। तजि दळिद्द भजि मुज्झ तू, विलसि अप्रमित वित्त।
—वं.भा.

दळिद्र—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.) उ०—उण दळिद्र द्विज रै अरथ, वणि दासी विणमोल। उलटो निज घर अप्पियो, करि अधीन असु कोल।—वं.भा.
२ देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—भाई डूंगरसी भलो, लघु बंधव गुण विंदो रे। दुखियां दळिद्र भंजणो, भागचंद कुळचंदो रे।—प.च.चौ.

दळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ अनाज आदि के दानों को चक्की द्वारा दरदरा किया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ।
(स्त्री० दळियोड़ी)

दळियो-सं०पु०—१ दरदरे किये हुए अनाज का पकाया हुआ व्यञ्जन।
उ०—दळिया रांधै दळबळिया हळ वांणै। वेचण बींदणियां ईंधणियां आंणै। लादी भारी नैं ओळावो नेती, दुरभख धारी नैं बोळावो देती।—ऊ.का.
२ वह अनाज जो बारीक पिसा हुआ न हो, दरदरा अनाज।
उ०—इण भांबी रै अठै जितरी वार पीसणो दियो बिल्कुल दळियो काढ़ नै दियो। इण वास्तै म्हैं उण भांबणकी नैं कह्यो—अे वाला, यूं दळियो मत काढ़्या कर, थोड़ो महीन पीस्या कर। मूंघा रै भाव रो धांन है सो धांन रो धूड़ मत किया कर।—रातवासो

दळी-क्रि०वि०—चौतरफ, चारों ओर।

दली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—१ जोगणपुर जपै चत्रगढ़ जाणो, घणं तेज तन पूर घणो। मोती दली कहै मेवाड़ा, तैं तोड़ियो स नाक तणो।—महाराणा राजसिंह रो गीत
उ०—२ कियो प्रथम साको वडो दली कणियागरै, दळांथंभ कमंध चीतोड़ खत्रदाव। 'अमर' अवगाढ़ जमडाड जम आहटै, रांण रढ़माल उजवाळिया राव।—नरहरदास बारहठ

दलीचो—देखो 'दुलीचो' (रू.भे.) उ०—१ आप ऊमर सूंमरा सांम्है गया, आंगै दलीचां रा बिछावणा हुइ रह्या छै, जठै ढोलोजी जाइ बैठा।—ढो.मा.
उ०—२ पांच पांच पलटि यह लावै। बैसि दलीचै लोक बुलावै।
—ह.पु.वा.

दलीप—देखो 'दिलीप' (रू.भे.)

दलीपत, दलीपति देखो 'दिल्लीपति' (रू.भे.)
उ०—पह नवाब दलीपत खपिया, जागा मरहट जुआ जुआ। हूं ता धींग ज्यांनै रंक किया हर, हुता रंग जे धींग हुआ।—ओपो आढ़ो

दलील-सं०स्त्री० [सं०] १ तर्क, बहस, वाद-विवाद।
उ०—पढ़णी वेळा में पग फावै, पढ़चां विचै पोमाई नै। करै दलील जिकां सूं कोई, लाधै त्यार लड़ाई नै।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—करणी।
२ युक्ति।
क्रि०प्र०—देणी, लगाणी।

दलीस—देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.)

दळूंत-वि० [सं० दलन] नाश करने वाला, संहारक।
उ०—कासूं जोर लागै थेट हरी रै अगाड़ो कूंतो, दूसरो न पूंतो उठै अक्रमां दळूंत। तजै मोहमाया वासी साजोत रै हुवो तूंतो, वांमी वंद हूं तो तो नै न भूलूं 'वळूंत'।—सरूपदास दादूपंथी

दलेचो-सं०स्त्री० (देश०) मकान के मुख्य द्वार के बाहर का बरामदा।

दलेल–वि०—विशाल हृदय, उदार, दातार। उ०—१ दिल का दलेल लहरू का दरियाव। रूपके केसरी रीभ 'गजवंध' का सभाव।—सू.प्र.
उ०—२ तरां सेखोजी बोलिया, इतरा दिनां म्हांरी मत संभाळियां पछै म्है कदेई मांहे अकेला रसोड़ै जीम्यां न छां नै सदा-मद पांतियौ दे घणा रजपूतां रा झूल मांहे जीम्या, तिण सूं डूंगरसी भतीज, थारौ जीव दलेल छै, रजपूतां नै राख जांणै छै।
—जैतसी ऊदावत री वात

दलेस—देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.) उ०—१ झाळ विकराळ वासग तरह झटा री, दोखियां लटा री अलंग दारू। दलेसां घटा री दांमणी दरसियौ, मेलतां कटारी करग मारू।—कविराजा करणीदांन
उ०—२ कलक भैरू सगत पीयण काळ रा, दलेसां साल रा ताप दैणा। अंग उग्र भाळ रा नजर आवै इसा, लाल रा सुतन गढ़ खळां लैणा।—रांमलाल आढ़ौ

दलेसुर—देखो 'दिल्लीस्वर' (रू.भे.)

दलै–अव्य० (देश०) हाथीवानों की एक बोली जिस के द्वारा वे हाथियों को पानी पीने के लिये प्रेरित करते हैं।

दळौ—देखो 'दळ' (१२) (रू.भे.) उ०—तिसै वीजळी चमकी नै पिउसंधी तरवार चलाई, तिकौ कड़ियां मांहै वूही। दोइ टूक हुवा नै हेठौ पड़ियौ। लोही रौ चीखलौ हुवौ। तरै पिउसंधी तरवार दळै करि भींवा रै पाखती पौढ़ी रही।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
क्रि०प्र०—करणौ।

दल्लौ—देखो 'दल्लौ' (रू.भे.)

दल्ली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.)

दवंग—देखो 'दमंग' (रू.भे.) उ०—आंखां अंगीठीह, धखै दवंग जिम घाव रा।—पा.प्र.

दव–सं०पु० [सं० दव] १ दावाग्नि, दावानल। उ०—१ ज्यौं दव लगे जंगळे, रहै छंम कोइ घास। यौं मेवाड़ उवेळियौ, मेट कमंधां त्रास।
—रा.रू.
उ०—२ दळ सुरितांण जांण डूंगरि दव, कंपि धरा हुई प्रज लव क्रव। अहि सुरितांण आवियउ अवथरि, करन तणा ऊठिय गज केसरि।—रा.ज.सी.
उ०—३ अर जगमाल मस्तक रा भार नूं महा गरिस्ट मांनि अद्रि रै ऊपर दव लगाइ धारा तीरथ रै उछाह इसड़ी अनेक वातां री अवलंब गहियौ।—वं.भा.
२ अग्नि, आग। उ०—१ सोर किधौ सावात में दव दुंग मिळाया।
—वं.भा.
उ०—२ दव दाधी हेक हेक दुख दाधी, किसनावती कहै सुर कोड़ि। गंधारी न जुड़ि थारी गति, जुड़ि न कूंता थारी जोड़ी।
—गोरधन बोगसौ
३ वन, जंगल। उ०—१ झाळ झाझी झटका करइ, जिम जांणै दव गाह। हूं हरणी हवडां वळूं, सार करिसि न नाह।—मा.कां.प्र.
उ०—२ खिवे फळ सेल खुलै दळ खग। दीपै दव आग कि झाळ सदग्ग।—सू.प्र.
४ देखो 'दावौ' (रू.भे.) उ०—तर तुसार दव जळै सीस माधव रुत आवै, ग्रीखम रेणा गात जळण वरसात मिटावै।—रा रू.

दवखण, दवखणप–सं०पु० [सं० दवक्षणप=ताप का अवसर रखने वाला] यमराज (डि.को.)

दवटणौ, दवटबौ—देखो 'दपटणौ, दपटबौ' (रू.भे.)
उ०—करि जीण सपक्खर बाज कटै। दहोड़ै खळ एम तुरी दवटै।
—सू.प्र

दवटियोड़ौ—देखो 'दपटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दवटियोड़ी)

दवण—देखो 'दमन' (रू.भे.)

दवणौ, दवबौ–क्रि०अ०—१ जलना, भस्म होना.
२ विकृत होना. उ०—अपणाई सांभरि 'अभै', 'अजन' वणै अजमेर उर झंखांणा आसुरां, जांण दवांणा मेर।—रा.रू.
३ देखो 'दवणौ, दवबौ' (रू.भे.)

दवदंति, दवदंती—देखो 'दमयंती' (रू.भे.) (जैन)
उ०—१ दवदंति विरहानळि, हा नळि नडिय अपार। प्रिय मेळव केते वासरे, आस रे वडिय संसार।—नेमिनाथ फागु
उ०—२ तेणी गुफाइ सात वरस रही दवदंती नारि। धरम आराध जिन तणु, सफळ करइ संसार।—नळ-दवदंती रास

दवना–सं०पु० [सं० दमुनस्, दमुनाः] अग्नि (डि.को.)

दवनौ—देखो 'दमणौ' (रू.भे.)

दवर–सं०पु० [सं० द्वार] द्वार, दरवाजा। उ०—अमर पुर मचि दव दरवर। उदर पर मिळि मुखर पळचर।—वं.भा.

दवांगीर—देखो 'दवागीर' (रू.भे.)

दवा–सं०स्त्री० [अ०] १ कोई रोग या व्याधि दूर करने की वस्तु औषध।
यौ०—दवाखांनौ, दवा-दारू।
२ रोग दूर करने का उपाय, चिकित्सा।
क्रि०प्र०—करणी।
रू०भे०—दवाई, दुवाई, दुवायी।
[अ० दुआ] ३ अभिवादन। उ०—उवां जेम ओरि असि रिण अथग साजूं 'विलंद' समाज सूं। असुरांण रुधिर खग करि अरुण, सभूं दव महाराज सूं।—सू.प्र.
४ देखो 'दुआ' (रू.भे.) उ०—१ नै जोगी रौ सिक्कौ धारियौ तरै जोगी खुसी हुय दवा दीनी।—नैणसी
उ०—२ रखी वारता पूछी—तरै आप सारी ही क्रम कथा कही तरै रखी दवा कर वर दीनौ।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वा

दवाइती—देखो 'दवायती' (रू.भे.)

दवाई—१ देखो 'दवा' (१,२) (रू.भे.) उ०—हकीम वैद सब पचि हारया, दीनी बहुत दवाई। जांण असाध्य व्याध जगदंबा, अंबा वांसै आई।—मे.म.

२ देखो 'दुहाई' (रू.भे.)

दवाईखांनो, दवाखांनो-सं०पु० [अ० दवा+फा० खाना] दवा मिलने का स्थान, औषधालय।

दवाग—१ देखो 'दावाग्नि' (रू.भे.) २ देखो दुवागो (रू.भे.)

उ०—ऊपर खांन तणौ दळ आया, अर निरदळता कमंध अछाया। ऊठी वाग दवाग अलल्ले, हेवै मार लियौ हरवल्ले।—रा रू.

३ देखो 'दुहाग' (रू.भे.) उ०—१ वड़वड़िया ढोल ऊपड़ी वागां, दैगा अपछरां घरां दवाग। वासग तणी डीकरी वरवा, पड़ियौ कोयर मांय प्रयाग।—प्रयाग राठौड़ रो गीत

उ०—२ चवदै सं चोकड़ी घू कूं वरती, माता कहै समझाई। आंपां तप कियौ नहीं भव आगलै, जब राजा दवाग दिराई।

—स्री हरिरांमजी महाराज

दवागण—देखो 'दुहागण' (रू.भे.) उ०—दवागण लागै सवागण रै पाय। मोरै सरीसी कर मोरी माय।—अज्ञात

दवागि, दवागिन, दवाग्नि—देखो 'दावाग्नि' (रू.भे.)

उ०—सोचंत मोहकम साह, सुख छूट ऊठ सदाह। अति हितू भड़ वड़ आगि, दिसि अस्ट जांणि दवागि।—रा.रू.

दवागीर, दवागीरू-वि० [अ० दुआ+फा० गो] १ दुआ देने वाला, आशीर्वाद देने वाला। उ०—१ महाराज के दवागीर अैसे अैसे कवंध।—बुधजी आसियौ

उ०—२ दवागीरू का सुरतर दावागीरू का साल। स्रव राजूं का सिरपोस महाराजा 'अभमाल'।—सू.प्र.

२ शुभचिंतक. ३ कवि. ४ याचक (अ.मा.)

रू०भे०—दवांगीर।

दवाजो-वि० [अ० दुआ+फा० गो] १ आशीर्वाद देने वाला।

उ०—स्री विजयदेव तपगछराजा, स्री विजयसिंह गुरु वड दवाजा। वाचक उदय विजय प्रणीता, पास जिनवर तणी राज गीता।

—प्राचीन फागु संग्रह

[?] २ डेरा, पड़ाव ? उ०—तरै पंवारै नीमाज लूटी। सोनै सिलो हुवो। डूंगरसी कन्है पुकार गई। तरै डूंगरसी वैस रह्यो। वाहर कांई की नहीं। तरै पंवारै दीठो—अठै खाली मैदांन। तरै सवारै जैतारण माथै दवाजा कीया नै परधांन दोय मेलिया—म्हांनूं बेटी परणावो कै म्है जैतारण झूंबस्यां।—राव मालदे री वात

रू०भे०—दिवाजो।

दवात-सं०पु० [अ०] १ स्याही रखने का पात्र। उ०—सरै ल्यावो ल्यावो कलम दवात, कोई लिख परवांणो म्हारै गळ वांचो।—लो.गी.

रू०भे०—दवात।

यौ०—दवात-कलम।

दवात-पूजा-सं०स्त्री० [अ० दवात+सं० पूजा] १ दीपावली और होली के बाद पड़ने वाला तीसरा दिन. २ इस दिन दवात की पूजा की जाती है।

दवादस—देखो 'द्वादस' (रू.भे.) उ०—एक अग्र चित सुध आराधै, सेवा वरस दवादस साधै।—सू.प्र.

दवादसी—देखो 'द्वादसी' (रू.भे.) उ०—जैतारण सिर आवियौ, ऊदा ले जगरांम। काती क्रिसण दवादसी, पुर घेरियौ दुगांम।—रा.रू.

दवादसौ—देखो 'द्वादसौ' (रू.भे.)

दवादस्स—देखो 'द्वादस' (रू.भे.) उ०—लहै अंगद दक्खण माग लीधा। दवादस्स सेनापति लार दीधा।—सू.प्र.

दवानल—देखो 'दावानल' (रू.भे.) उ०—ठहै दवानल ठठर, झोकि पिंड सांमी झाळां। खोभ गिरंद खोहरां, लिया गोरचां लंकाळां।

—सू.प्र.

दवापर, दवापुर—देखो 'द्वापर' (रू.भे.)

दवावैत—देखो 'दवावैत' (रू.भे.) उ०—दवावैत मझि दाखियौ, इसड़ौ राज अपाल। जोधांणै जोधांण-पति, मांणै घर 'अभमाल'।

—सू.प्र.

दवायती-सं०स्त्री०—अनुमति, आज्ञा, इजाजत।

उ०—१ जीव उवारणो चाहौ तौ म्हास जावौ सो भागलां लार आवै नहीं, घर लूटण री दवायती दी सो इण नै वीर री स्त्री है सो धन री इचरज नहीं म्हासण री कयौ सो आं ऊपरै दया आई।

—वी.सी.टी.

उ०—२ जठै चतरू जाय लिखमीदास नूं वतळावै है म्हांनूं चंद्रावती बाई सूं मिळण री दवायती दीजै।—र. हमीर

रू०भे०—दुआइती, दुआती, दुवाइती, दुवाती, दुवायत्ति, दुवायती।

दवार—देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—गाजै विच गिर झंगरां, सीहां म्रिगां सिरदार। कांपै गज चढ़ काळ ज्वर, बाघा राज दवार।—बां.दा.

दवारका—देखो 'द्वारका' (रू.भे.)

दवारट—देखो 'बारहठ' (रू.भे.) उ०—चारणां, बामणां, भटां, अघटां ओहटां चेळा, दवारटां खैरसटां प्रगटां 'अजीत'। केइकां सुभटां वीना कुभटां फुगटां कीनी, आगाहटां वटांपटां न लोपी 'अजीत'।

—अज्ञात

दवारी-सं०स्त्री० [सं० दव=वन+अरि] दावाग्नि।

दवारौ—१ देखो 'द्वार' (अल्पा. रू.भे.) उ०—विध हलै वीर महाबलं, गह वाल हूंत दमंगळं। दिल अभय केकंधा दवारै, गजै सुर गहरं।

—रा.रू.

२ देखो 'द्वारौ' (रू.भे.)

दवाळ—देखो 'द्वाळी' (रू.भे.) उ०—बारह मत तुक आठ प्रत, आख वीपसां अंत। छीनूं मत दवाळ प्रत, यूं गोखौ आखंत।—र.ज.प्र.

दवाल—देखो 'दीवार' (रू.भे.) उ०—गजां रत पोट, पड़ि चोट तंवागळां, वचण अरि ओट लै विसा वीसै। धचवड़ां गहै मन-मटो

ज्यां सिर घर्स, दवालां कोट सँलोट दीसै ।—अनोपसिंघ सांदू

दवाळी-सं०स्त्री० (देश०) तलवार लटकाने का वह उपकरण जिसे कमर में बांधा जाता है । उ०—यौं मद्दल भुजबंध सो, सम सज्ज सुहाया । हारी दवाळी दोउ घां, उर अंतर आया ।—वं.भा.

दवाळौ-सं०पु०—१ देखो 'देवाळौ' (रू.भे.)
उ०—दुसहां दन दन वढ़ै दवाळौ, सैणां वित वाळौ दरसाव । मैं भाळ्यौ थारै महाराजा, पूरव तप वाळौ प्रभाव ।—किसनसिंह बारहठ
२ देखो 'द्वाळौ' (रू.भे.) उ०—अरघ दवाळौ आंकणौ, बीजो अरघ वखांण । अरघ भाखड़ी कवि अखै, जुगत त्रिहुं विध जांण ।—र.ज.प्र.

दवावैत-सं०स्त्री० [अ० वैत] राजस्थानी भाषा की गद्य रचना विशेष ।
वि०वि०—यह दो प्रकार की होती है—१ शुद्ध-बंध अर्थात् पद-बंध जिस में अनुप्रास मिलाया जाता है. २ गद्य-बंध जिस में अनुप्रास नहीं मिलाया जाता है।
रू०भे०—दवावैत, वेदवावैत ।

दवासु, दवासूं, दवासौ-सं०पु०—नगाड़ा ?
उ०—१ डिगमगै धरण मग डाक भैरू डमक, झूलमिळ अच्छर मग वोम ऊपर झमक । दवासु अतर झड़ दुंग तोड़ा दमक, चडै दळ घटा सम वीज सावळ चमक ।—रांमलाल बारहठ
उ०—२ वाजै जूंझरा दवासू फौजां आंमी सांमी चडै वादां, उभै ओड़ उड़ीकै 'अजा' रा वटां आज । साजां वीच थारै भुजा दइ लाजां पातसाह, राजा बोल किसा नै दिली रौ देसी राज ।
—वखतौ खिड़ियो

दवि-सं०स्त्री० [सं० दव] दावाग्नि, दावानल ।
उ०—सव्वे भला मांसडा, पण वइसाह न तुल्ल । जे दवि दाधा रूंखडां, तीहं माथइ फुल्ल ।—रा.सा.सं.

दवियोड़ौ—देखो 'दबियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दवियोड़ी)

दवीयण—देखो 'दुरवचन' (रू.भे.) उ०—गजसिंघोत भूप धन गाढम, ततखण माच वनै रणताळ । दवीयण मुंह काढ़तै दरसी, मुगळ परै काढ़ी प्रतमाळ ।—नरहरदास बारहठ

दवैया-सं०पु०—प्रत्येक चरण में १६ और १२ की यति से कुल २८ मात्राओं का छंद विशेष जिस के अंत में गुरु होता है ।

दव्व—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) (जैन) उ०—सो गुरु सुगुरु जु सील धम्म निम्मळ परिपाळइ । सो गुरु क्षुगुरु जु दव्व संग विसंम सम भणि टाळइ ।—ऐ.जै.का.सं.

दस-सं०पु० [सं० दश] १ पांच की दूनी संख्या. २ दस की संख्या का सूचक अंक—१०.।
३ देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—आज घरा दस ऊनम्यउ, काळी घड़ सखरांह । उवा धण देसी ओळंवा, कर कर लांबी बांह ।—ढो.मा.
वि०—जो गिनती में नौ से एक अधिक हो, पांच का दूना ।
रू०भे०—दह, दहि, दिहि ।

दसकंठ, दसकंद, दसकंध, दसकंधर-सं०पु० [सं० दशकंठ, सं० दश+स्कंध] रावण । उ०—१ कळह रचै दसकंध, नवग्रह बंध निवारियो । हुवा धनुक गुण शवद ह्वै, गतमद जग मदगंध ।—बां.दा.
उ०—२ जोय धर लंका जेण, सोना री हूंती सरब । दसकंधर रै मुख देण, मिळियो रतौ न मोतिया ।—रायसिंह सांदू
रू०भे०—दहकंध, दहकंधर ।

दसक-सं०पु० [सं० दशक] दस का समूह । उ०—जिकण झकट में जुज्झार होय एक अयुत तीन हजार सेना रै साथ अजमेर रा अनीक में सांमतां री दसक खेत पड़ियो ।—वं.भा.

दसकत, दसकत्त-सं०पु० [फ़ा० दस्तख़त] हस्ताक्षर, दस्तखत ।
उ०—१ इम दसकत आविया, देखि वाचिया सयद्दां । करै हुकम विण कही, मुलक नह दियै मरद्दां ।—सू.प्र.
उ०—२ क्रोध मैं बंबर नह अरज कीध । दसकत्त नकल फुरमांण दीध ।—सू.प्र.

दसकरम-सं०पु० [सं० दशकर्म] गर्भाधान से ले कर विवाह तक के दस संस्कार ।

दसकोसी-सं०स्त्री० [सं० दशकोषी] रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक । (संगीत)

दसखीर-सं०पु० [सं० दशक्षीर] सुश्रुत के अनुसार इन दश प्राणियों का दूध—गाय, बकरी, ऊंटनी, भेड़, भैंस, घोड़ी, स्त्री, हथनी, हिरनी और गदही।

दसग्रीव-सं०पु० [सं० दशग्रीव] रावण ।

दसचरण-सं०पु० [सं० दश+चरण] रथ (डि.नां.मा.)

दसजोगभंग-सं०पु० [सं० दशयोगभंग] फलित ज्योतिष में एक नक्षत्रवेध जिस में कोई शुभ कर्म नहीं किया जाता है ।

दसण-सं०पु० [सं० दशन] दांत । उ०—१ दसण निपाप करिस दांमोदर, आणंद तूझ हसै गिरवर-धर । अहर निपाप करिस अघ-वारण, मुळकै तूझ प्रेम मधु मारण ।—ह.र.
उ०—२ स्यांमा पातळ दसण दमकणा अधरै विंवां । झुकती पीण कुचां धण चालै धीर नितंवां ।—मेघ.

दसणांण-सं०पु० [सं० दशानन] रावण, दशानन ।

दसत-सं०स्त्री० [फा० दस्त, मि०सं० हस्त] १ हाथ । उ०—दसत चाप अरु रास दसत्तां । महा प्रवळ नदि सुजळ मसत्तां ।—सू.प्र.
२ पतला विरेचन ।
[फा० दहशत] ३ भय, डर । उ०—जरद पोसां कड़ा भीड़ रोसां झड़ै, पोह वगत नकीवां तणा हाका पड़ै । घार थारी दसत सतारौ घड़घड़ै, राज री नगारौ आज खारौ रड़ै ।
महाराजा मांनसिंह (जोधपुर) री गीत
रू०भे०—दस्त ।

दसतगीर-वि० [फा० दस्तगीर] १ सहारा देने वाला, सहायक, मदद-

गार। उ०—पीर पैगंबर दसतगीर, सब हाजर बंदे।
—केसोदास गाडण

२ हाथ से काम करने वाला।

रू०भे०—दस्तगीर।

दसतांन, दसतांनौ—देखो 'दस्तांनौ' (मह., रू.भे.) उ०—झंडे बाहरि गट्टि कैं, भुज दंड झुकाया। फूल दराया सांन पैं, असि वाढ़ चिराया। सिल्लै खांना खुल्लि कैं, वर हेति वराया, तोप वक्कतर ओप कैं, दसतांन दिपाया।—वं.भा.

दसतावेज—देखो 'दस्तावेज' (रू.भे.)

दसतावेजी—देखो 'दस्तावेजी' (रू.भे.)

दसतूर—देखो 'दस्तूर' (रू०भे०)

उ०—१ वेळा वित्त वगसण वीरपुरा, निज दातार चढ़ंतै नूर। ऊतर मेह न जावै अहळौ, दखणी वाव तणौ दसतूर।—ओपौ आढ़ौ

उ०—२ आंमदांनी इक दोय, अन तीसरी अवाई। दिली तणा दसतूर, सरा तोरा पतिसाई।—सू.प्र.

उ०—३ जिका पातसाह री दसतूर जिका ही वसत वा आदमी दोढ़ी में जाय जिणां नूं देख नै जावा देवै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

दसतूरी—देखो 'दस्तूरी' (रू.भे.) उ०—ग्रसै तमासै अनेक भांति-भांति पातिसाहूं की दसतूरी की सिकार। होसनायकां की जीवन स्री महाराजाजी रीझवार।—सू.प्र.

दसतोदर-सं०पु० [सं० दस्तोदर=कृशोदर, दसु-उपक्षये] कुवेर (नां.मा.)

दसतौ—१ देखो 'दस्तांनौ' (रू.भे.) उ०—१ माथै टोप सनाह तन, कर दसता रिण काज। मावड़िया सोभै नहीं, सूरां हंदौ साज।
—बां.दा.

उ०—२ हजार मेंखी दसतौ हाथ में पहरियां जैमलजी रात रा तीनूं पहरां री चौकी में चित्तोड़ आप फिरता। संग्रांम नांमा वंदूक अकबर रा हाथ री छूटी गोळी जैमल रै लागी।—बां.दा.ख्यात

२ देखो 'दस्तौ' (रू.भे.)

दसतूर—देखो 'दस्तूर' (रू.भे.) उ०—सिरी गंग रो नीर सन्नांन सारू। दसत्तूर सिंदूर कप्पूर दारू।—मे.म.

दसदिनेस-सं०पु० [सं० दिनेश] सूर्य (अ.मा.)

दसदोस-सं०पु० [सं० दशदोष] १ राजस्थानी में काव्य के ये दस दोष माने हैं—१ अंध, २ छबकाळ, ३ हीण, ४ निनंग, ५ पांगळौ, ६ जात विरुध, ७ अपस, ८ नाळछेद, ९ पखतूट, १० बहरौ।

दसद्वार-सं०पु० [सं० दशद्वार] शरीर के दस छिद्र—कान २, आंखें २, नाक २, मुंह, गुदा, लिंग और ब्रह्मरंध्र।

दसधा-वि० [सं० दशधा] दश प्रकार का।

दसघू-सं०पु० [सं० दश+रा. घू=शिर] रावण, दशानन।

उ०—हल हल्लिय लंक गढ़ वंकसौ, दस-घू पै हल काहल्लिय। हल्लिय पताल गजराज पैं, विजै कटक राघव हल्लिय।—र.ज.प्र.

दसन—देखो 'दसण' (रू०भे०)

दसनच्छद-सं०पु० [सं० दशनच्छद] होंठ।

दसनबीज-सं०पु० [सं० दशनबीज] अनार।

दसनवसनांगराग-सं०स्त्री० [सं० दशनवसनांगराग] ६४ कलाओं में से एक।

दसनरोग-सं०पु० [सं० दशनरोग] दांतों का रोग (व.स.)

दसनांम, दसनांमी-सं०पु० [सं० दशनाम, दशनामी] सन्यासियों का एक वर्ग जो अद्वैतवादी शंकराचार्य के शिष्यों द्वारा चलाया गया।

वि०वि०—शंकराचार्य के पद्मपाद, हस्तामलक, मंडन और तोटक ये चार शिष्य थे, इन चारों के दश शिष्य थे, इन्हीं दश शिष्यों के नाम से सन्यासियों के दश भेद चले जो—तीर्थ, आश्रम, वन, आरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी हैं।

दसप-सं०पु० [सं० दशप] जो राजा की ओर से दस ग्रामों का अधिपति या शासक बनाया गया हो।

दसपधण, दसपधण-सं०पु० [सं० दशापधन, दशेन्धन] दीपक (ह.नां.)

दस-भूत-वर-सं०पु०यो० [सं० दश-भूत-वर] सत्य, सांच (अ.मा.)

दसम-सं०स्त्री० [सं० दशमी] चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष की दशमी तिथि।

रू०भे०—दसमि, दसमी।

दसमउ—देखो 'दसमौं' (रू.भे.) (उ.र.)

दसमथ, दसमथ्थ—देखो 'दसमाथ' (रू.भे.)

उ०—१ मथ रिण उदध मांण दसमथ का, आपण सरण भभीखण अथका। सोव्रन गढ़ जस ओप समथ का, क्रपा कोप आखै दसरथ का।—र.ज.प्र.

उ०—२ दस अठ अठ छांम चव विस्रांमं, छंद सुनाथं तिरभंगी। रघुनाथ समथ्थं हणि दसमथ्थं, रखि दळ गथ्थं रिण संगी।
—र.ज.प्र.

दसमभाव-सं०पु० [सं० दशमभाव] फलित ज्योतिष में एक जन्म लग्नांश कुंडली में लग्न से दसवां घर।

दसमलव-सं०पु० [सं० दशमलव] वह भिन्न जिस के हर में दश या उसका कोई घात हो।

दसमांस-सं०पु० [सं० दशमांस] दसवां हिस्सा, दसवां भाग।

दसमाथ-सं०पु० [सं० दश+मस्तक] रावण।

उ०—दसमाथ भण समाथ भुज रघुनाथ दीन दयाळ। गुह ग्राह ग्रीधक वंध तैं गत श्रवण भाल विसाळ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दशमथ, दशमथ्थ, दहमथ, दहमाथ।

दसमि, दसमी—देखो 'दसम' (रू.भे.)

दसमुख, दसमुखि, दसमुखौ-सं०पु० [सं० दशमुख] रावण।

उ०—दसमुखी हुकम स्रीमुखि दीयौ, वनचर पूछि विसतरौ।
—रांमरासौ

दसमुदरा-सं०स्त्री० [सं० दशमुद्रा] मुद्रा योग के अन्तर्गत दस प्रकार की मुद्राएं—१ महामुद्रा, २ महावंध, ३ महावेध, ४ खेचरी, ५ उड्डि-

यान, ६ मूलबंध, ७ जालंधरबंध, ८ विपरीतकरणी, ९ वज्रोली, १० शक्ति-चालन (हठयोगप्रदीपिका)।
रू०भे०—दसमुद्रा।

दसमुद्रका—देखो 'दसमुद्रिका' (रू.भे.) (व.स.)

दसमुद्रा—देखो 'दसमुदरा' (रू.भे.)

दसमुद्रिका—सं०स्त्री० [सं० दशमुद्रिका] आभूषण विशेष।
उ०—स्रोणीसूत्र कांचीकलाप रसना किरीट चूडामणि। मुद्रानंतक दसमुद्रिका अंगुलीयक अंगूथळा।—व.स.
रू०भे०—दसमुद्रका।

दसमूळ—सं०पु० [सं० दशमूल] दश पेड़ों की छाल या जड़ जो दवा के काम आती है।
वि०वि०—सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी और गोखरू इन पांचों को लघु पंचमूल कहते हैं तथा बेल, कुम्भेर, पाढल, अरनी और अरलू इन पांचों को वृहत्पंचमूल कहते हैं। लघुपंचमूल और वृहत्पंचमूल को मिलाने से दशमूल बनता है।

दसमौं—वि० [सं० दशमः] (स्त्री० दसमी) जिस का स्थान क्रम से नौ के बाद हो, दसवां। उ०—पुत्र **दसमौं** चित सुबुधि प्रकासी, भूप मुकट मिण खळां अमासी।—सू.प्र.
सं०पु०—मृत्यु के पश्चात् दसवें दिन होने वाला कर्म-कांड।
रू०भे०—दसवौं।

दसमौं-दुआर, दसमौं-द्वार—सं०पु०यौ० [सं० दशमः+द्वार] शिर के ऊपर तालू के पास का रंध्र छेद जो बंद रहता है, ब्रह्म रंध्र, ब्रह्म द्वार। उ०—१ सोम दिवाकर साखि करि, दाखी **दसमइ-दुआरि**।
—मा.कां.प्र.
उ०—२ नौमी आरती नौ दरवाजा, खिड़की बंद करै सोइ राजा। दसमी आरती **दसमैं-द्वारै**, अरस परस मिळै रांम प्यारै।
—स्री हरिरांमजी महाराज
रू०भे०—दसवौं-द्वार।

दसमौंसाळगरांम—सं०पु० [सं० दशमः+शालिग्राम] महान् योद्धा को जनता द्वारा दी जाने वाली एक उपाधि। उ०—राव कानड़ दे सांवतसी रो जाळोरधणी हुवौ, **दसमौंसाळगरांम** गोकळीनाथ कहांणौ। संवत १३६८ जाळोर रै गढ़रोहै अलोप हुवौ।—नैणसी

दसमौळि, दसमौळी—सं०पु० [सं० दशमौलि] रावण।

दसरंग—सं०पु० [सं० दश+रंग] मालखंभ की एक प्रकार की कसरत।

दसरथ—सं०पु० [सं० दशरथ] एक रघुवंशी राजा जो अयोध्या पर राज्य करते थे। मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र इन्हीं के ज्येष्ठ पुत्र थे।

दसरथतण, दसरथरावउत, दसरथसुत—सं०पु० [सं० दशरथ+तनय, दशरथराज+पुत्र, दशरथ+सुत] राजा दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र (अ.मा.) उ०—वेणी पवित्र करिस लिखमीवर, मसतग चाढ़ै तुळसी मंजर। तुच इम पवित्र करिस **दसरथ-तण**, चरच विलेप करे हर चंदण।—ह.र.

दसरथि—देखो 'दसरथ' (रू.भे.)

दसरात्र—सं०पु० [सं० दशरात्र] १ एक यज्ञ जो दश रात्रियों में समाप्त होता था. २ दश रातें।

दसरावौ—सं०पु० [सं० दशहरा] १ आश्विन शुक्ला दशमी को मनाया जाने वाला त्यौहार, इस दिन रावण मूर्ति के रूप में मारा जाता है, विजयादशमी। उ०—१ 'सांगण' दूसरा अभनमा 'उदैसी' 'अमरा,अंबर अड़ियौ। दै आसीस तनै **दसरावौ**, नवरोजै नां वड़ियौ।
—महारांणा अमरसिंह रो गीत
उ०—२ तठा पछै आपही बडी जमीयत कर नै **दसरावै** चढ़ नै रांणा रै मुजरै गयो नै मेवाड़ री चाकरी करण लागो।—नैणसी
२ विजयादशमी के दिन भेंट किया जाने वाला रुपया. ३ चैत्र-शुक्ला दशमी का दिन (त्यौहार) ४ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं।
रू०भे०—दसराहौ।

दसराहौ—देखो 'दसरावौ' (रू.भे.) उ०—१ **दसराहा** लग भी रह्यउ, माळवणी री प्रीत। वरिखा-रुति पाछी वळी, आवी सरद सुचीत।
—ढो.मा.
उ०—२ आसोज रै **दसराहै** नूं जुहार करण नूं आवां तद सारां नूं भेळा कर कह्यो।—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

दसलियौ—देखो 'दसा रौ दा'ड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

दसळौ, दसलौ—सं०पु० [सं० दश+रा०प्र०लौ] ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की दश बूंटियां हों।

दसवन—सं०पु० [सं० दुश्चयवनः] इन्द्र (अ.मा.)

दसवाजी—सं०पु० [सं० दशवाजिन्] चन्द्रमा।

दसवाहु—सं०पु० [सं० दशवाहु] शिव, महादेव।

दसवीर—सं०पु० [सं० दशवीर] एक सत्र या यज्ञ का नाम।

दसवौं—देखो 'दसमौं' (रू.भे.)
(स्त्री० दसवीं)

दसवौं-द्वार—देखो 'दसमौं-द्वार' (रू.भे.) उ०—१ मेर डंड का मारग लाघा, उलटा पवन चढ़ाया। **दसवें-द्वार** निरंजन जोगी, हम गुरु गम तें पाया।—ह.पु.वा.
उ०—२ त्रिवेणी तटि ताळी लागी, मन थिर पवन सुखमनां जागी। **दसवेंद्वारि** वस्या मन जाय, बंक नाळि अम्रत रस खाय।—ह.पु.वा.

दससतकमळ—सं०पु० [सं० दशशतकमल] सहस्रार्जुन। उ०—रज रज हुआ 'जगो' भरियो रज, भेळवा मुगत न जांणै भेव। **दससतकमळ** लयण दस सहँसा, दससत करग वादिया देव।—जगा रावत रो गीत

दससहंस, दससहंसौ, दससहस, दससहसौ, दस-साहंस, दससाहंसौ—सं०पु० यौ०—गहलोत वंश के क्षत्रियों के लिए डिंगल गीतों में प्रयुक्त होने वाला उपाधिस्वरूप शब्द। उ०—१ भलो रांण सगरांम इम अघड़ची मुख भणे, दुजड़हत **दससहंस** बोल दीधो। पदमहत मयंक चो ग्रहण ग्है अधपहर, कलम चो ग्रहण दिन तीस कीधो।
—महारांणा सांगा रो गीत

उ०—२ गढ़ गढ़ पत गाजै गहलोतां, कुळ सारां में येम कह्यो। समदां पर न गो दससहंसो, रांम वांण रै मांह रह्यो।

—बापा रावळ री गीत

उ०—३ नवसहंसां दससाहंसां, मेछ गया तज भोम। ग्रहियै री ग्रदसा गई, ज्यां उग्रहियै सोम।—रा.रू.

दससिर–सं०पु० [सं० दश+शिरस्] रावण। उ०—१ परगट कट तट पढ़त पट, सरस सघण तन स्यांम। गह भर समपण कनक गढ़, रहचण दससिर रांम।—र.ज.प्र.

उ०—२ सझि ग्रसंख दळवळ सवळ, दससिर ग्रावियो ग्रवनाड़।

—सू.प्र.

दससिरधर–सं०पु० [सं० दश+शिरस्+धारिन्] रावण।

दससीस–सं०पु० [सं० दशशीर्ष] रावण (ग्र.मा.)

उ०—वध दोट भुज भुज वीस रा, सिर वोट कर दससीस रा।

—र.रू.

रू०भे०—दहसीस।

दसस्यंदन–सं०पु० [सं० दशस्यंदन] राजा दशरथ।

दसांग–सं०पु० [सं० दशांग] पूजन में सुगंध के निमित्त जलाने का एक धूप जो दस सुगंधित पदार्थों के मेल से बनता है।

रू०भे०—दिसांग।

दसांण—देखो 'दसारण' (रू.भे.) उ०—पूगां देस दसांण केवड़ा फूल वनां में। महकीजै मुळकाय धोळकी ग्राभ जिणां में। माळा विरछां मांझ घणेरा पंछी घालै। वन जांमूनां जेथ हंसला दिन दो मालै।

—मेघ.

दसांधी—देखो 'दसूंद, दसूंदी' (रू.भे.)

दसा–सं०स्त्री० [सं० दशा] १ अवस्था, स्थिति, हालत।

उ० मोटी माफी मांग ग्रमलदारां सूं ग्रड़स्यां। देस सुधारण दसा लाख विध थांसूं लहस्यां।—ऊ.का.

२ मनुष्य के जीवन की अवस्था।

वि०वि०—ये दस मानी गई हैं—गर्भवास, जन्म, बाल्य, कौमार, पौगंड, यौवन, स्थाविर्य, जरा, प्राणरोध और नाश। मतान्तर से ये छः भी मानी जाती हैं—शैशव, कौमार, कैशोर, यौवन, वार्धक्य और अंतिम। अंतिम को राजस्थानी में छठी भी कहते हैं।

३ विरही की अवस्था जो साहित्य के अन्तर्गत मानी जाती है, ये दस प्रकार की होती हैं—१ अभिलाष, २ चिंता, ३ स्मरण, ४ गुण-कथन, ५ उद्वेग, ६ प्रलाप, ७ उन्माद, ८ व्याधि, ९ जड़ता, १० मरण। ४ दीपक की बत्ती।

(मि० दसा-सुत)

५ वर्णसंकर संतान का वंश. ६ देखो 'दिसा' (रू.भे.)

७ मनुष्य के जीवन में फलित ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक ग्रह का नियत भोग काल।

वि०वि०—दशा दो प्रकार से निकालते हैं, पहले के अनुसार मनुष्य की ग्रायु को १२० वर्ष की मान कर जिस से निर्धारित दशा विंशोत्तरी कहलाती है तथा दूसरे के अनुसार मनुष्य की ग्रायु को १०८ वर्ष की मान कर जिस से निर्धारित दशा अष्टोत्तरी कहलाती है। पूरी ग्रायु के समय में प्रत्येक ग्रह के भोग के लिये वर्षों की संख्या अलग-अलग नियत है जैसे अष्टोत्तरी रीति के अनुसार सूर्य की दशा ६ वर्ष, चंद्रमा की १५ वर्ष, मंगल की ८ वर्ष, बुध की १७ वर्ष; शनि की १० वर्ष, बृहस्पति की १९ वर्ष, राहु की १२ वर्ष और शुक्र की २१ वर्ष मानी गई है। जन्म लेते ही कौनसी दशा शुरू होती है यह जन्मकाल के नक्षत्र के अनुसार जाना जाता है।

रू०भे०—दछा, दिसा, दीसा।

दसाग्रवतार–सं०पु० [सं० दशावतार] १ प्रकाश, ज्योति, रोशनी (ह.नां.) २ दीपक (ह.नां.)

दसाइग्रां, दसाइयां–सं०स्त्री०बहु व० [सं० दश+ग्रहानि, ग्रप० दसाहाइ] लग्न के बाद वर-वधू को कन्या पक्ष की ओर से दिये जाने वाले दस भोज (श्रीमाली)

रू०भे०—दसैया, दहियां।

दसाकरख, दसाकरस–सं०पु० [सं० दशाकर्ष] दीपक (ह नां.)

दसाणण, दसाणणि–सं०पु० [सं० दशानन] दस मुखों वाला, रावण।

उ०—लंका मार दसाणण लेणो। दांन वभीखण सेवग देणो।

—र.ज.प्र.

दसातीर–सं०स्त्री०—पारसी लोगों की एक धार्मिक पुस्तक (मा.म.)

दसादहाड़ो, दसादा'ड़ो—देखो 'दसारोदा'ड़ो (अल्पा., रू.भे.)

दसाधिपति–सं०पु० [सं० दशाधिपति] १ फलित ज्योतिष में दशाओं के अधिपति ग्रह. २ दस सैनिकों या सिपाहियों का अफसर।

दसापत–सं०पु० [सं० दिशापति] दिक्पाल, दिग्पाल।

दसापवित्र–सं०पु० [सं० दशापवित्र] श्राद्ध में दान दिये जाने वाले वस्त्रादि।

दसापोत–सं०पु० [सं० दशा+पोत] १ प्रकाश (ग्र.मा.) २ दीपक।

दसाभव–सं०पु० [सं० दशाभव] १ दीपक (नां.मा.) २ ज्योति, रोशनी, प्रकाश (ग्र.मा.)

दसार–सं०पु० [सं० दशार्ह] १ कोष्ट्र वंशीय धृष्ट राजा का पुत्र. २ राजा वृष्णि का पौत्र. ३ वृष्णिवंशीय पुरुष. ४ वृष्णिवंशीय ग्रधिकृत देश।

दसारण–सं०पु० [सं० दशार्ण] १ विंध्य पर्वत के पूर्व दक्षिण की ओर स्थित एक प्रदेश का प्राचीन नाम जिस में से हो कर धसान नदी बहती है। उ०—देस दसारण ते सुदांमा राजांन। पुत्री वि ग्रह्यो तेह तणी एक भीम दीधी दांन।—नळाख्यांन

२ उक्त देश का निवासी या राजा. ३ तंत्र का एक दशाक्षर मंत्र. ४ जैन पुराण के अनुसार एक राजा जिस ने तीर्थंकर के दर्शन के निमित्त जा कर अभिमान किया था। तीर्थंकर के प्रताप से उसे वहां

१६७७७२१६००० इंद्र तथा १३३७०५७२८०००००००० इंद्राणियां दिखाई पड़ीं और उसका गर्व चूर्ण हो गया। उ०—मोटा ही ध्रम कांम में, अधिको करें अदेख। दसारण री रिधि देख नें, सक्र संज्यौ सुविसेख।—ध.व.ग्रं.

दसा-रो-डोरो—सं०पु०यौ०—सूत के दस तार का डोरा जो होलिका-दहन के समय होली की ज्वाला में से निकाला जाता है। तत्पश्चात् चैत्र कृष्ण दशमी के दिन जब स्त्रियां 'दसादा'ड़ा' का व्रत करती हैं तो इस तागे को सुपारी पर लपेट कर पीपल वृक्ष के पूजन के साथ इसकी भी पूजा करती हैं। तत्पश्चात् इस तागे को सावधानीपूर्वक सुरक्षित स्थान पर रख देती हैं।

दसा-रो-दा'ड़ो—सं०पु०यौ०—सधवा स्त्रियों के करने का एक व्रत विशेष जो होलिका-दहन के बाद दशवें दिन होता है। इसे सौभाग्यवती स्त्रियां दश वर्ष तक प्रतिवर्ष नियमपूर्वक करती हैं। दश वर्ष के बाद उद्यापन कर के व्रत को छोड़ देती हैं।

रू०भे०—दसादहाड़ो, दसादा'ड़ो।

दसावळ—क्रि०वि० [सं० दश+रा० प्र० वल–ओर] दशों दिशाओं में, चारों ओर। उ०—प्रथीमाल परमांण वधे चहुवांण तणें वळ। तेण वंस बल्लाल दांन दीपियौ दसावळ।—नैणसी

दसावहारी—सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

दसावीसो—सं०स्त्री० [सं० दस+विंशति] लड़कों के खेलने का एक देशी खेल।

वि०वि०—इस में एक डंडा भूमि में गाड़ दिया जाता है। एक लड़का डंडे से दश कदम दूर खड़ा किया जाता है तथा दूसरा उस से विरुद्ध दिशा में डंडे से बीस कदम दूर खड़ा किया जाता है। डंडे के पास ही खड़े निर्णायक के संकेतानुसार दोनों एक साथ दौड़ते हैं। यदि दस कदम दूर वाला लड़का डंडे को ले कर दश कदम लौट जाय तब बीस कदम वाला उसे नहीं पकड़ सके तो दश कदम वाला विजयी होता है। दूसरी बार लड़कों को परस्पर बदल दिये जाते हैं अर्थात् बीस कदम दूर वाले को दश कदम दूरी की ओर तथा दश कदम दूर वाले को बीस कदम दूरी की ओर खड़ा कर दिया जाता है और इसी तरह पुनः दौड़ कराई जाती है। यदि एक लड़का दोनों बार विजयी होता है अर्थात् दश कदम की ओर नहीं पकड़ाने में तथा वही बीस कदम दूर खड़े होने पर दस कदम वाले को पकड़ लेने में सफल हो जाय तो वह विजयी होता है अन्यथा बराबर हो जाते हैं।

रू०भे०—दस्सौ-वीसौ (अल्पा.) दस्यौ-वीस्यौ।

दसासुत—सं०पु० [सं० दशा=बत्ती+सुत] दीपक, दीप, दीया।
(ह.नां., नां.मा.)

दसासूळ—देखो 'दिसासूळ' (रू.भे.) उ०—दसासूळ भद्रा वितीपात महूरत दियौ। कमीयौ काळ चंद्रकाळ सनमुख कियौ।
—रुपमणी हरण

दसास्वमेध—सं०पु० [सं० दशाश्वमेध] १ काशी के अन्तर्गत एक तीर्थ। २ प्रयाग में त्रिवेणी का एक घाट।

दसियौ—वि० [सं०दश+रा०प्र०यौ] १ आवारा, लोफर. २ बदमाश. ३ उपद्रवी. ४ धोखेबाज. ५ जो नौ के बाद पड़ता हो, दसवां।

सं०पु०—१ दसवां भाग. २ देखो 'दसौ' (३) (अल्पा., रू.भे.)

दसी—१ देखो 'दसा' (रू.भे.) (उ.र.) २ देखो 'दिसा' (रू.भे.)
उ०—जदी इतौ चूरमौ मता ले नीकळ्या, जो पा'ड़ दसी चाल्या। आगै चोर पा'ड़ मांहे था।—पंचमार री वात

दसु—देखो 'दसू' (रू.भे.)। (ह.नां.)।

दसुटण—देखो 'दसोटण' (रू.भे.) उ०—विरध वधाई नांव, समूरथ साख सगाई। व्याह विनायक वेळ, महोछव मेळ विदाई। पूजा-पाठ निराठ, वरै व्रनमाळा मोखी। जागण रातीजगां, दसुटण दायजां चोखी।—दसदेव

दसूंद, दसूंदी, दसूंध—सं०स्त्री० [सं० दशमांश या दशमान्धस्] १ राजाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली ब्रह्मभटों की उपाधि अथवा इस पदवी के उपलक्ष में राजाओं व सरदारों द्वारा ब्रह्मभटों को दिया जाने वाला द्रव्य या नेग।

सं०पु०—२ 'दसूंद' नेग प्राप्त करने वाला राव या ब्रह्मभट।

३ राज्य सरकार द्वारा कृषिउपज में लिया जाने वाला दसवां भाग।
उ०—माळी कही म्हारी बादसाह रोखड़ां री हांसिल नहीं लेवै, खेती री दसूंध लेवै छै।—नी.प्र.

वि०—'दसूंद' लेने वाला।

रू०भे०—दसूंध, दसांधी, दसौंधी।

दसू—सं०पु० [सं० दस्यु] १ चोर, डाकू (अ.मा.) २ शत्रु (अ.मा.)
रू०भे०—दसु।

दसूठण, दसूट्ठण—देखो 'दसोटण' (रू.भे.) उ०—हिव दिन दसमइ आवियइ ए, करइ दसूठ्ठण प्रेम। सगा सही निहतरइ ए, असुचि उतारइ एम।—ऐ.जै.का.सं.

दसेंधण—सं०पु० [सं० दशा=बत्ती+इन्धनम्] दीपक (ह.नां.)

दसे'क—वि० [सं० दश] दश के लगभग।

दसोटण—सं०पु० [सं० दशोत्थान] पुत्र जन्म के दश दिन या दश मास बाद किया जाने वाला बड़ा भोज एवं उत्सव। उ०—१ कुंवर जायौ, वधाई बांटी, गुळ बांटियौ, नारेळ बांटिया, वडा उत्सव हुआ, दसोटण हुऔ।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ महाराज हिसार सूं रिणी पधारिया, जैसलमेरीजी रै कुंवर उपजियौ थौ तिण रै दसोटण ऊपर फौज सारी सूं मुसदी हिसार राख आया था।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

रू०भे०—दसुटण, दसूठण, दसूठ्ठण, दसौंठण।

दसोतरी—सं०स्त्री० [सं० दशोत्तरशतम्] सौ के बाद दिये जाने वाले दश, सौ के ऊपर दश।

दसौंठण—देखो 'दसोटण' (रू.भे.). उ०—साहुकार री छोटी वहु रै वेटौ

हुवौ। जद्दे उद्धव कियौ पद्दे वडी बहु रा तौ प्यारी बेटा मांई री खवर नहीं पूछी। पद्दे दसौंठण कियौ।—साहूकार री वात

दसौ–सं०पु० [सं० दशम्] १ दसवां वर्ष. २ दस का अंक—१०। ३ वर्णसंकर।

रू०भे०—दस्सौ।

अल्पा०—दसियौ।

दस्ट, दस्टी—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—निस ग्ररध, समर मच निराताळ। किलकार दस्ट जोगरण कराळ।—रांमदांन लाळस

दस्तंदाजी–सं०स्त्री० [फ़ा०] हस्ताक्षेप, दखल।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

दस्त—देखो 'दसत' (रू.भे.) उ०—उजब कि इरांनी गोल ग्राप। चगताह तुरांनी दस्त चाप। वहलिम इलांम मझ कजळ वास। रुमी ग्ररु हबसी दस्तरास।—वि.सं.

दस्तगीर—देखो 'दसतगीर' (रू.भे.)

दस्तताळ–सं०पु०यौ० [फा० दस्त+सं० ताल] भुजाग्रों पर ताल लगाने की क्रिया। हाथ से थपथपाने की क्रिया। उ०—हरणमंत रूप जगजेठू नै भुजंग दंडू पर दस्तताळ दिया, मांनूं ग्रनेक रणजीत ग्रंबाळू के सीस इक डंका क्रिया।—सू.प्र.

दस्तपनाह–सं०पु० [फ़ा०] चूल्हे से ग्राग निकालने का उपकरण, चिमटा।

दस्तपोसी–सं०स्त्री० [फा० दस्तबोसी] हाथ चूमने की क्रिया।

उ०—बीच में दूलची बैठौ थौ सो ऊठ दस्तपोसी कर मिळियौ, पद्दे बैठा।—दूलची जोइयें री वारता

क्रि०प्र०—करणी, लेणी।

दस्तफोती–सं०पु०यौ० [फा०दस्त=हाथ+ग्र० फौती=मरने से संबंध रखने वाला] मारने के लिए, प्रहार करने की हाथ की स्थिति ?

उ०—सो दोनूं रांम-रांम कीवी, दस्तफोती कर फरवांन री नकलां लीवी।—गोपाळदास गौड़ री वारता

दस्तबंद, दस्तबंध–सं०पु० [फ़ा० दस्तबंद] १ स्त्रियों के हाथ की कलाई पर धारण करने का सोने का एक ग्राभूषण. २ नृत्य का एक प्रकार।

वि०—कर-बद्ध। उ०—ग्रादम ग्ररु बंभदेव मिळियंदे, ग्राए सव दरियाखीरंदे। काहल दस्तबंध कुवरंदे, गिरोग्ररि गुजरांनूंदा।
—र.ज.प्र.

दस्तबुगचौ–सं०पु० [फ़ा० दस्तबुक्च:] हाथ में रखने का थैला।

उ०—इतरी पोसाक संध्या तांई तयार करवाय दस्तबुगचै मांहो घाल ले ग्राई।—कुंवरसी सांखला री वारता

दस्तरि, दस्तरी–सं०स्त्री० कागज की बनी तख्ती।

उ०—लेखउं करी लीजइ, राती जागइ, दस्तरि लिखीइ, वळी वळी एकत्र मेलीइं।—व.स.

२ मारवाड़ राज्य का वह महकमा जिस में राज्य की खास-खास घटनाग्रों का विवरण लिखा जाता था।

दस्तांन—देखो 'दस्तांनौ (मह., रू.भे.)

दस्तांनी—देखो 'दस्तांनौ' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—यूं कही थापे री बांह खोली, झाड़काई ग्रौर कही जे म्हारी दस्तांनी में घणा ग्रौरंगजेव छै, हजरत कासूं जांणै छै।
—महाराजा जयसिंह ग्रांमेर रै धणी री वारता

दस्तांनौ–सं०पु० [फ़ा० दस्तान:] १ हाथ का कवच, हस्तत्राण।

२ हाथ की हिफाजत के लिये पहना जाने वाला एक विशेष वस्त्र।

रू०भे०—दसतांनौ, दसतौ।

ग्रल्पा०—दस्तांनी।

मह०—दसतांन, दस्तांन, दस्तौ।

दस्ताएवज—देखो 'दस्तावेज' (रू.भे.)

दस्ताएवजी—देखो 'दस्तावेजी' (रू.भे.)

दस्तार–सं०स्त्री० [फ़ा०] पगड़ी, ग्रम्मामा। उ०—ग्रंबजी डाभड़ा नूं वाजेराव पेसवै मारियौ। हैदराबाद रौ नवाव ग्रापरै माथा सूं पाग उतार दीवी, कह्यौ—हमारा दस्तार भाई त्रंबकराव कूं मारा जिण कूं मार मैं पाग वांधूंगा, पछै वाजेराव नवाव सूं मिळियौ है। नवाव नूं राजी कियौ जद नवाब कह्यौ—मांग, तूठौ। इण कह्यौ—पाग वांध लीजै। नवाब पाग वांध लीवी।—वां.दा.ख्यात.

दस्तावर–वि० [फ़ा०] जिस से दस्त ग्रावे, विरेचक।

दस्तावेज–सं०पु० [फ़ा०] वह कागज जिस में दो या कई ग्रादमियों के बीच के व्यवहार की बात लिखी हो ग्रौर जिस पर व्यवहार करने वालों के दस्तखत हों।

रू०भे०—दसतावेज, दस्ताएवज।

दस्तावेजी–वि० [फ़ा० दस्तावेज] दस्तावेज संबंधी।

रू०भे०—दसतावेजी, दस्ताएवजी।

दस्ती–वि० [फ़ा०] हाथ सम्बन्धी, हाथ का।

दस्तूर–सं०पु० [फा०] १ नियम, कायदा, विधि. २ कानून, विधान. ३ परंपरा, रिवाज. रीति, रस्म, चाल, प्रथा. ४ व्यवहार, रविश. ५ कटौती, कमीशन. ६ लेने का ग्रधिकार, हक. ७ पारसियों का पुरोहित जो उन के धर्मग्रंथानुसार कर्मकांड कराता है।

रू०भे०—दसतूर, दसत्तूर।

दस्तूरी–सं०स्त्री० [फ़ा०] कमीशन, हक, कटौती।

वि०—वैधानिक, कानूनी।

रू०भे०—दसतूरी।

दस्तौ–सं०पु० [फा० दस्त:] १ वह जो हाथ में रहे या हाथ में ग्रावे। २ किसी ग्रौजार, शस्त्र ग्रादि का वह हिस्सा जो हाथ में पकड़ा जाता है, मूठ, बेंट. ३ जग या डोंगे ग्रादि का हैंडिल. ४ (फूलों ग्रादि का) गुच्छा, गुलदस्ता, मुट्ठा। उ०—एक दिन एक ग्रादमी फूलां रौ दस्तौ नजर लायौ सो लीन्हौ।—नी.प्र.

५ सिपाहियों का छोटा दल. ६ कागज के चौबीस तावों की गड्ड ७ टंटा, फिसाद, वखेड़ा ?

उ०—कठै ही टक वात सुणै तौ तुरत आप जाय राजी कर दस्तौ मेट आवै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

८ देखो 'दस्तांनौ' (रू.भे.)

रू०भे०—दसतौ, दिस्तौ ।

दस्यावड़-सं०स्त्री०—बुने हुए कपड़े के छोर का आधा बुना हुआ भाग ।

दस्सण—देखो 'दरसण' (रू.भे.) उ०—भूप छभा भूपाळ, वदन दस्सण ओमाहे । मिळ भेटै मुख राग, स तौ निज भाग सराहे ।—रा.रू.

दस्सा—देखो 'दसा' (रू.भे.)

दस्सौ—देखो 'दसौ' (रू.भे.)

दस्सौ-वीस्सौ—देखो 'दसावीसौ' (रू.भे.) (शेखावाटी)

दह-सं०पु० [सं० ह्रद (आद्यंत विपर्यय)] १ नदी में वह स्थान जहां पानी बहुत गहरा हो, नदी के भीतर का गड्ढा । उ०—गिड़ सूर तौ वन वाड़ियां नै डोहे है, अर ऊंडा ऊंडा पहाड़ी नदियां रा दहां नै गजराज डोह रहिया छै ।—वी.स.टी.

२ पोखर, गड्ढा । उ०—रैण में एक दह मेह रा पांणी सूं भरियौ दीठौ ।—नी.प्र.

३ बहुत गहरा और बड़ा गड्ढा । उ०—१ मन तारै मन तिरै, मन लै पारि उतारै । मन चौरासी का जीव, फेरि ऊंडै दह मारै ।

—ह.पु.वा.

उ०—२ डाढ़ाळो उठा सूं हाल दह आयौ । संपाड़ौ कियौ । पछै ऊंची वरड़ी ऊपर आय ऊभौ रहियौ । ऊभौ रहि नै स्री सूरजनारायण नूं अरघ देंण लागियौ ।—डाढ़ाळा सूर री वात

४ कुंड, हौज ।

सं०स्त्री० [सं० दहन] ५ ज्वाला, लपट ।

वि० [सं० दशः, प्रा० दह] दस । उ०—१ दुख-वीसारण, मन-हरण, जउ ई नाद न हुंति । हियड़उ रतन-तळाव ज्यउं, फूटी दह दिसि जंति ।—ढो.मा.

उ०—२ गइवर-गळइ गळत्थियउ, जहं खंचइ तहं जाइ । सीह गळ-त्थण जइ सहइ, तउ दह लक्खि विकाइ ।—अ. वचनिका

दहकंध, दहकंधर—देखो 'दसकंध, दसकंधर' (रू.भे.) (अ.मा., नां.मा.) उ०—१ जुधां टंकारिया धनख राघव ज तैं । जारिया दुसह दहकंध जेहा ।—र.ज.प्र.

उ०—२ अटृके नह सकिया अंगद, दहकंध दुवारै । दइतां इम दीसै अंगद, अंतक उणहारै ।—सू.प्र.

दहक-सं०स्त्री० [सं० दहन] १ आग दहकने की क्रिया. २ ज्वाला, लपट. ३ लज्जा, शर्म ।

दहकणौ, दहकबौ—क्रि०अ० [सं० दहन] १ धधकना, जलना, प्रदीप्त होना. २ भयभीत होना, डरना । उ०—नगारां ठोर माथा घुकै नाग रा, अकवकै रैण दहकै दली आगरा । लोह लाट सुभट थट केण धक लागरा, विडंग काथा हकै धका वजराग रा ।

—माघोसिंह सीसोदिया रौ गीत

३ शरीर का गरम होना, तपना ।

दहकणहार, हारौ (हारी), दहकणियौ—वि० ।

दहकवाड़णौ, दहकवाड़बौ, दहकवाणौ, दहकवाबौ, दहकवावणौ, दहकवावबौ—प्रे०रू० ।

दहकाड़णौ, दहकाड़बौ, दहकाणौ, दहकाबौ, दहकावणौ, दहकावबौ —क्रि०स० ।

दहकिओड़ौ, दहकियोड़ौ, दहक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दहकीजणौ, दहकीजबौ—भाव वा० ।

दहक्कणौ, दहक्कबौ—रू०भे० ।

दह-कमळ-सं०पु०यौ० [सं० दश+रा०कमळ=शिर] रावण, दसकंधर । उ०—१ वहिया बाळ मुकाळ वुळ, हीया व्रद बंका । डारण सज्भै दहकमळ, वज्जे जस डंका ।—र.ज.प्र.

उ०—२ इकरां रांम तणी तिय रांवण, मंद हरेगौ दह-कमळ । टीकम सोहि ज पथर तारिया, जगनायक ऊपरा जळ ।—जमणाजी वारहठ

दहकाड़णौ, दहकाड़बौ—देखो 'दहकाणौ, दहकाबौ' (रू.भे.)

दहकाड़णहार, हारौ (हारी), दहकाड़णियौ—वि० ।

दहकाड़िओड़ौ, दहकाड़ियोड़ौ, दहकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दहकाड़ीजणौ, दहकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

दहकणौ, दहकबौ—अक०रू० ।

दहकाड़ियोड़ौ—देखो 'दहकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दहकाड़ियोड़ी)

दहकाणौ, दहकाबौ—क्रि०स० [सं० दहन] १ धधकाना, जलाना, प्रदीप्त करना. २ भयभीत करना, डराना. ३ क्रोधित करना, भड़काना ।

दहकाणहार, हारौ (हारी), दहकाणियौ—वि० ।

दहकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दहकाईजणौ, दहकाईजबौ—कर्म वा० ।

दहकणौ, दहकबौ—अक०रू० ।

दहकाड़णौ, दहकाड़बौ, दहकावणौ, दहकावबौ—रू०भे० ।

दहकायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ धधकाया हुआ, जलाया हुआ, प्रदीप्त किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ, डराया हुआ. ३ क्रोधित किया हुआ, भड़काया हुआ ।

(स्त्री० दहकायोड़ी)

दहकावणौ, दहकावबौ—देखो 'दहकाणौ, दहकाबौ' (रू.भे.)

दहकावणहार, हारौ (हारी), दहकावणियौ—वि० ।

दहकाविओड़ौ, दहकावियोड़ौ, दहकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दहकावीजणौ, दहकावीजबौ—कर्म वा० ।

दहकणौ, दहकबौ—अक०रू० ।

दहकावियोड़ौ—देखो 'दहकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दहकावियोड़ी)

दहकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ धधका हुआ, जला हुआ, प्रदीप्त. २ डरा हुआ, भयभीत. ३ (शरीर) गरम हुवा हुआ, तप्त ।

(स्त्री० दहकियोड़ी)

दहक्कणौ, दहक्कबौ, दहक्कवणौ, दहक्कवबौ—देखो 'दहकणौ, दहकबौ' (रू.भे.) उ०—जगहत्थ जगत सिर जळहळै, दस द्रिगपाळ दहक्कवै। महिमाल छट्टां जिहां सातमां, चोथै पहोरै चक्कवै।—सू.प्र.

दहक्कवियोड़ौ, दहक्कियोड़ौ—देखो 'दहकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दहक्कवियोड़ी, दहक्कियोड़ी)

दहण—सं०स्त्री० [सं० दहन] १ जलने की क्रिया या भाव, दाह।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

२ अग्नि, आग (अ.मा.) उ०—जो नह आवै करण जुध, सुण बोलावौ सीह। दाह हुवै नह दहण सूं, दिनकर हुवै न दीह।
—बां.दा.

३ एक रुद्र का नाम. ४ तीन की संख्या॰ ५ ज्योतिष में एक योग जो पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती इन तीन नक्षत्रों में शुक्र के होने पर होता है. ६ ज्योतिष में एक वीथी जो पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्रों में शुक्र के होने पर होती है।

वि०—१ नाश करने वाला। उ०—१ हरण कसट जन हर है, विमळ वदन रघुवर है। सरब सगुण सह सरसै, दनुज दहण भुज दरसै।—र.ज.प्र.

उ०—२ सर धनंख धरण कर दहण दैतां सघर। दुख नरक त्रास हरण जनां जगदीस।—र.ज.प्र.

२ जलाने वाला, भस्म करने वाला। उ०—बावहिया डूंगर दहण, छांडि हमारउ गांम। सारी रात पुकारियउ, लइ लइ प्रिउ कउ नांम।—ढो.मा.

रू०भे०—दहन, दहन्न।

दहणौ—देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.) उ०—दहणइ कर दीध प्रगट राजादिक, ब्रह्मा आगातै कीध विचार।—महादेव पारवती री वेलि.

दहणौ, दहबौ—क्रि०अ० [सं० दहन] १ भस्म होना, जलना. २ संतप्त होना, कुढ़ना। उ०—सउदागर-संदेसड़ो, सांभळिया स्रवणेहि। मारुवणी ते मन दहइ, मूंवयउ जळ नयणेहि।—ढो.मा.

क्रि०स०—भस्म करना, जलाना। उ०—१ एको ही नांम अनंत रा, पेलै पाप प्रचंड। जव तिल जेतौ ज्वाळ नळ, खोण दहै नवखंड।
—ह.र.

उ०—२ और हजारां ही खेत सोधण रै समय सचेत अचेत प्राणधारी पाया तिकै सरब ही ओरंग रा आदेस रूप अनळ में दहिया।
—वं.भा.

४ नाश करना, संहार करना। उ०—१ राजा किसन दाउ करि रहिओ, दांणव तिकौ पछै फिरि दहिओ। हार जीप वातां हरि हाथै, विहुं पतिसाहि सरिस हूं वाथै—वचनिका

उ०—२ रजरीत रहै वंस वाट वहै, अरि थाट दहै अविआट इसो।
—ल.पि.

उ०—३ देवी दैत रै रूप तैं देव ग्रहिया, देवी देव रै रूप कै अनुज दहिया। देवी मच्छ रै रूप तूं संखमारी, देवी संखवा रूप तूं वेद हारी।—देवि.

५ दूर करना, मिटाना, नाश करना। उ०—दळिदि कबीर तणौ तैं दहियौ, वसियौ भगत सरग रै बीच। चोर कांइ भगतां रै चडियो, खाधो कांइ करमां रो खीच।—पी.ग्रं.

६ दाह-संस्कार करना. ७ संतप्त करना, कुढ़ाना।

दहणहार, हारौ (हारी), दहणियौ—वि०।

दहवाड़णौ, दहवाड़बौ, दहवाणौ, दहवाबौ, दहवावणौ, दहवावबौ।
—प्रे०रू०।

दहाड़णौ, दहाड़बौ, दहाणौ, दहाबौ, दहावणौ, दहावबौ—क्रि०स० एवं प्रे०रू०।

दहिओड़ौ, दहियोड़ौ, दह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दहीजणौ, दहीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दहदहणौ, दहदहबौ—क्रि०अ०—कांपना, थर्राना, भयभीत होना।

उ०—ढाक वूक वाजी, तेहे वाजति ऐरावणि ऊमडिउं, दिग्गज दहदह्या, वूंबारव पाटा, तारागण त्रूटा।—व.स.

दहदहियोड़ौ—भू०का०कृ०—कांपा हुआ, थर्राया हुआ, भयभीत।

(स्त्री० दहदहियोड़ी)

दहन—सं०स्त्री० [सं०] १ जलन, कुढ़न। उ०—दादू बिना रांम कहीं को नाही, फिर हो देस विदेस। दूजी दहन दूर कर बोरै, सुण यहु साधु संदेस।—दादू बांणी

२ प्रथम गुरु चार मात्रा का नाम (डिं.को.)

३ देखो 'दहण' (रू.भे.) उ०—वदळ भंडार ढंढ़ार हवाला, दळ जळ ते दळिया दहन। उदर तुहाळै राव आवुआ, वळै जरंड वाछा तवन।—दुरसौ आढ़ौ

दहन्न—देखो 'दहण' (रू.भे.) उ०—मुकुंद जिकांह वसै तूं मन्न, दहै नहिं ताहि संसार दहन्न। रटै तो नांम जिकै घणरूप, कदै न संसार पड़ै मझ कूप।—ह.र.

दहवट्ट, दहवाट—देखो 'दहवट' (रू.भे.) उ०—१ कहिया था आगै कथन, समझ प्रभाकर भट्ट। सांचा कीधा 'सींग' तैं, ग्रंथ करै दहवट्ट।
—बां.दा.

उ०—२ द्रविड़ कियौ दहवाट तैं, रूठै चाळक रांण। पाया गूजर खंड पत, क्रतमाळा केकांण।—बां.दा.

दहमंग, दहमग—सं०पु० [दह=सं० दश+मग=सं० मार्ग] १ तहस-नहस, ध्वंस। उ०—'अभो' प्रगटियौ गुणां अभंगां, मंडळ दिली कियौ दहमंगां। 'अजै' तखत राजा अपणायौ, 'अभो' मुजफ्फर ऊपर आयौ।—रा.रू.

२ संहार, नाश।

(मि० दहवट्ट, दहवाट)

दहमथ, दहमाथ—देखो 'दसमाथ' (रू.भे.)

दहमुख, दहमुखौ—देखो 'दसमुख, दसमुखौ' (रू.भे.)

दहल-सं०स्त्री० [सं० दरः] १ भय से एक बारगी कांप उठने की क्रिया, डर, त्रास, आतंक। उ०—१ पावस आयां जक पड़ै, पैलां दहल अपार। भाजड़ री घर-घर भरणै, हुआं लोह अभिसार।—वी.स.
उ०—२ कीरत 'अजन' कमंध री, पसरी प्रथी प्रमांण। दहल खमे रहिया दिल्ली, हिंदू मूसलमांण।—रा.रू.
क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।
२ धाक, रौब। उ०—दहल पुर नयर पुगी महळ दोयणां। भय रहित किया सुर नाग नर-भोयणां।—र.ज.प्र.
रू०भे०—दहल्ल।

दहलणौ, दहलबौ-क्रि०अ० [सं० दरः] भय से एक बारगी कांप उठना, भयभीत होना, डरना, घबराना। उ०—१ दहले दिग्गज दिसा मेर मरजाद मुक्किय। अदल बदल जळ उदध चंडि सिध आसन चुक्किय।
—र.रू.
उ०—२ 'जगो' विजावत आवियो, 'ऊदो' 'घीर' सुतन्न। मिळ मारू दळ हल्लिया, उर दहलिया जवन्न।—रा.रू.
उ०—३ हिंदसथांन हरखियो, तांम दहलै तुरकांणो। जगत सरव जांणियो, जोध लेसी जोधांणो।—सू.प्र.
दहलणहार, हारौ (हारी), दहलणियौ—वि०।
दहलवाड़णौ, दहलवाड़बौ, दहलवाणौ, दहलवाबौ, दहलवावणौ, दहलवावबौ—प्रे०रू०।
दहलाड़णौ, दहलाड़बौ, दहलाणौ, दहलाबौ, दहलावणौ, दहलावबौ—क्रि०स०।
दहलीजणौ, दहलीजबौ—भाव वा०।
दहल्लणौ, दहल्लबौ—रू०भे०।

दहलाड़णौ, दहलाड़बौ—देखो 'दहलाणौ, दहलाबौ' (रू.भे.)
दहलाड़णहार, हारौ (हारी), दहलाड़णियौ—वि०।
दहलाड़िओड़ौ, दहलाड़ियोड़ौ, दहलाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दहलाड़ीजणौ, दहलाड़ीजबौ—कर्म वा०।
दहलणौ, दहलबौ—अक०रू०।

दहलाड़ियोड़ौ—देखो 'दहलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दहलाड़ियोड़ी)

दहलाणौ, दहलाबौ-क्रि०स० [ ] भयभीत करना, कँपाना, डराना, दहलाना।
दहलाणहार, हारौ (हारी), दहलाणियौ—वि०।
दहलायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दहलाईजणौ, दहलाईजबौ—कर्म वा०।
दहलणौ, दहलबौ—अक०रू०।
दहलाड़णौ, दहलाड़बौ, दहलावणौ, दहलावबौ—रू०भे०।

दहलायोड़ौ-भू०का०कृ०—भयभीत किया हुआ, कँपाया हुआ, डराया हुआ, दहलाया हुआ।
(स्त्री० दहलायोड़ी)

दहलावणौ, दहलावबौ—देखो 'दहलाणौ, दहलाबौ' (रू.भे.)
दहलावणहार, हारौ (हारी), दहलावणियौ—वि०।
दहलाविओड़ौ, दहलावियोड़ौ, दहलाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दहलावीजणौ, दहलावीजबौ—कर्म वा०।
दहलणौ, दहलबौ—अक०रू०।

दहलावियोड़ौ—देखो 'दहलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दहलावियोड़ी)

दहलियोड़ौ-भू०का०कृ०—भयभीत हुवा हुआ, घबराया हुआ, डरा हुआ।
(स्त्री० दहलियोड़ी)

दहली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—एक दिन दोय सिपाही आय कर दहली में दीवांण सूं मुजरौ कियौ।—दूलची जोइयै री वारता

दहलोत-वि० [सं० दरः+रा०प्र०लोत] भयभीत करने वाला, डराने वाला, दहलाने वाला। उ०—थाहण खळ दळां विरद थाटक रा दाटक रा क्रपणां दहलोत। करै उछट क्रीत खाटक रा हाटक रा गहणा गहलोत।—अनाड़सिंघ दधवाड़ियौ

दहल्ल—देखो 'दहल' (रू.भे.) उ०—छाजा पड़ै अछेह, मंडप उड़ि पड़ै महल्लां। मुगळांणियां अमाप पड़ै आधांन दहल्लां।—सू.प्र.

दहल्लणौ, दहल्लबौ—देखो 'दहलणौ, दहलबौ' (रू.भे.)
उ०—१ चलै राजकुमार पिता चो, सासण पाय सहल्लै। रांवण सहत घणां खळ राखस, दारुण दंत दहल्लै।—र.रू.
उ०—२ उदधि सुजळ ऊभळै, हेम प्रघळै जळ हल्लै। दइत नाग नर देव, दसं द्रगपाळ दहल्लै।—सू.प्र.

दहल्लियोड़ौ—देखो 'दहलियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दहल्लियोड़ी)

दहवट, दहवटि, दहवट्ट, दहवाट, दहवाटौ-सं०पु० [सं० दश+वाट=दश मार्ग] संहार, नाश। उ०—१ वज खंभ आहट हुय विकट, हद्द किमग खळ खट लाग हट। बळ अवट ऊमट गयण वट, द्रढ़ दनुज दहवट कज दपट।—र.रू.
उ०—२ तिण वार कहै तिजड़ा हयौ, 'केहर' खीची जोस करि। खग झटां करै दहवट खळां, वसूं अमरपुर रंभ वरि।—सू.प्र.
उ०—३ औरंग पतिसाही ग्रही, दहवटि करि 'दारा' ह। रज्ज पियारा रज्जियां, भाई दुपियाराह।—ध.व.ग्रं.
उ०—४ एकण पासै एकलो, एकणि साहि कटक्क। वाबा तो हूं 'वादळौ', मारि करूं दहवट्ट।—प.च.चौ.
उ०—५ काविली थट्ट दहवट्ट किय, 'वीका' हर राड़ वघरू। 'जइतसी' प्रवाडउ किय जमा, जांम सूर ससिहर जरू।—रा.ज.सी.
उ०—६ भोज तणै भुज-वळां, असुर दहवट्टां कीया। अचळदास गागुरण, कोट माथै-सूं दीया।—अ. वचनिका
उ०—७ काटि खग झाटि अरि दहवाटि करि, अधिक जस आपरै तखत आयौ। भलभलो भेंट भूपां तणी भोगवै, 'सवळ' तण आज प्रतपै सवायौ।—ध.व.ग्रं.

उ०—८ वाछ्टो केहरी बचो, भांजे गैवर थाटो रे। तो हूं थारो छावड़ो, रिपु म्हांनूं दहवाटो रे।—प.च.चौ.

२ तहस-नहस, ध्वंस। उ०—१ किरण रोस कळकळं, रूपक झळहळं प्रगटां। अरुण रूप आंखियां, दली करवा दहवटां।

—वखतौ खिड़ियौ

उ०—२ भुज दहुवां वळ बीस भुज, कळ दस माथा काट। तैं दीधो दसरथ तणा, दससिर घर दहवाट।—बां दा.

३ आतंक, डर, भय. ४ दसों दिशाओं के मार्ग।

उ०—दिन ऊगो निज कारिजे, जाय दहवट्टा। त्यूं ही कुटंब सवै मिळयो, मत जांणि उलट्टा।—ब व.ग्रं.

रू०भे०—दहवट्ट, दहवाट, द्रहवाट।

दहवन-सं०स्त्री० [सं० दधिवर्णा] गाय (अ.मा.)
(मि० अरजुणी)

दहसत, दहसति, दहसत्त-सं०स्त्री० [फ़ा० दहशत] आतंक, भय, डर, खौफ। उ०—१ कमधज दळ हालतां कराळां। दहसत पड़ै दसै द्रगपाळां।—सू.प्र.

उ०—२ खांन अवर दहसत सब खावै। आप हूंत लड़वा नह आवै।—सू.प्र.

उ०—३ धणी दहसत रै मारे पग उण री बिछावणे ऊपर फिसळियो।—नी.प्र.

उ०—४ रंक सैं राव जोरावर करणे न पावै। पंखी को पर सेती बाज दहसति खावै।—सू.प्र.

उ०—५ दिखणांण थाट दीधा दवाय। खुरसांण थाट दहसत्त खाय। सुरतांण ग्रह मोखण सकाज। दइवांण 'अभा' ऊमरदराज।—वि.सं.

क्रि०प्र०—खाणी, पड़णी, होणी।

२ धाक, रोब। उ०—घोड़ा जवां बिगर रहिया। हाथी बाड़ बिगर रहिया। इसी दहसत्त पहुंची सो कोई भी दरियावां जावै नहीं।

—डाढ़ाळा सूर री वात

दहसीस—देखो 'दससीस' (रू.भे.)

दहसोत—देखो 'देसोत' (रू.भे.)

उ०—पाड़ हथां क्रन दांन आपिया, रिख नै वेटा अवध-नरेस। इण कारण कीरत आदरियो, दहसोतां मुसकल औ देस।

—क्षत्रिय प्रसंसा रो गीत

दहाई-सं०पु० [सं० दह=दश] १ दश का मान या भाव. २ वह लिखित अंक जो अंकों के स्थानों की गिनती में (दांए से वांए) दूसरा पड़ता हो जिस से उतने ही गुने दस का बोध होता है।

[?] ३ मुख्य (?) उ०—उठा वळै आघो सेखांणै पट्टण नूं पातिसाहजी कूच कियो। उवै डेरै रो कूच हुवो ताहरां पातिसाहजी दहाई रो सिरै रो हाथी गजतिलक खीजी चढ़िया।—द.वि.

दहाड़-सं०स्त्री० (अनु०) १ किसी भयंकर जंतु का घोर शब्द, गर्जना।
उ०—सेर दहाड़ मार बाहर बाघ ऊपर आयो।

—ठाकुरसी जैतसियोत री वारता

रू०भे०—दांड़।

दहाड़णो, दहाड़बो-क्रि०अ० (अनु०) १ घोर शब्द करना, गरजना, गुर्राना, दहाड़ना। उ०—नदी किनारे वराह दोड़ै सिंह दहाड़ै पण राजा नदी तीर जाय ठाडो हुवो।—सिंघासण बत्तीसी

२ देखो 'दहाणो, दहावो' (रू.भे.)

दहाड़णहार, हारो (हारी), दहाड़णियो—वि०।

दहाड़िओड़ो, दहाड़ियोड़ो, दहाड़चोड़ो—भू०का०कृ०।

दहाड़ीजणो, दहाड़ीजवो—भाव वा०।

दहाड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ घोर शब्द किया हुआ, गरजा हुआ, गुर्राया हुआ, दहाड़ा हुआ. २ देखो 'दहायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दहाड़ियोड़ी)

दहाड़ो-वि०(अनु०) १ जिसका बहुत आतंक हो, रोब वाला, जबरदस्त।
उ०—दूलची वडो दातार देस रा देस गुणीजन, कवीस्वर जावै सो दांन पावै सो वडो दांनी दहाड़ो।—दूलची जोइये री वारता

२ बहुत बातें जानने वाला, बहुश्रुत, वयोवृद्ध. ३ पुराना, प्राचीन।

दहाड़ो—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

दहाणो, दहाबो-क्रि०स० [सं० दहन] १ भस्म करना, जलाना.
२ संतप्त करना, कुढ़ाना।
('दहणो' क्रिया का प्रे०रू०) ३ नाश कराना, संहार कराना. ४ भस्म कराना, जलवाना. ५ दूर कराना, मिटवाना. ६ संतप्त कराना, कुढ़वाना. ७ दाह-संस्कार कराना।

दहाणहार, हारो (हारी), दहाणियो—वि०।

दहायोड़ो—भू०का०कृ०।

दहाईजणो, दहाईजबो—कर्म वा०।

दहणो, दहवो—अक०रू०।

दहायोड़ो-भू०का०कृ०—१ भस्म किया हुआ, जलाया हुआ. २ संतप्त किया हुआ, कुढ़ाया हुआ. ३ नाश कराया हुआ, संहार कराया हुआ. ४ भस्म कराया हुआ, जलवाया हुआ. ५ दूर कराया हुआ, मिटवाया हुआ. ६ संतप्त कराया हुआ, कुढ़वाया हुआ. ७ दाह-संस्कार कराया हुआ।
(स्त्री० दहायोड़ी)

दहावणो, दहाववो—देखो 'दहाणो, दहावो' (रू.भे.)

दहावणहार, हारो (हारी), दहावणियो—वि०।

दहाविओड़ो, दहावियोड़ो, दहाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

दहावीजणो, दहावीजवो—कर्म वा०।

दहणो, दहवो—अक०रू०।

दहावियोड़ो—देखो 'दहायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दहावियोड़ी)

दहावन-सं०स्त्री० [सं० दीर्घ+अवन] गाय (ह.नां.)

दहि—१ देखो 'दस' (रू.भे.) उ०—विरह मढ़ी में पैसि करि, दहि दिस दोन्ही आगि। जीव लग्या पखि पीव के, रही निरंतर लागि।

—ह.पु.वा.

२ देखो 'दई' (रू.भे.)

दहिया-सं०पु०—एक राजपूत वंश।

दहियावटी, दहियावाटी-सं०स्त्री०—वह स्थान जहां दहिया वंश के राजपूतों का राज्य था।

वि०वि०—परवतसर के आसपास का प्रान्त 'दहियावाटी' पुकारा जाता है क्योंकि वहीं इस वंश के राजपूतों का राज्य था। जालोर के आसपास के क्षेत्र को भी 'दहियावाटी' कहते हैं क्योंकि वर्तमान समय में भी वहां इस वंश के राजपूत अधिक संख्या में आवाद हैं।

दहियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भस्म हुवा हुआ, जला हुआ. २ संतप्त हुवा हुआ, कुढ़ा हुआ. ३ संतप्त किया हुआ, कुढ़ाया हुआ. ४ भस्म किया हुआ, जलाया हुआ. ५ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ. ६ दूर किया हुआ, मिटाया हुआ, नाश किया हुआ. ७ दाह-संस्कार किया हुआ।

(स्त्री० दहियोड़ी)

दहियौ-सं०पु०—'दहिया' राजपूत वंश का व्यक्ति।

दही—देखो 'दई' (रू.भे.) उ०—तिण समै विजैराव लांजो आबू रा पंवारां रै परणियौ तरै सासू निलाड़ दही दियौ तरै कह्यौ—'बेटा! उत्तर दिसि भड़-किवाड़ हुए।'—नैणसी

दही-फोरड़ौ-सं०पु०—एक देशी खेल (शेखावाटी)

दहीयौ—देखो 'दई' (अल्पा., रू.भे.) उ०—सांवणियै में साग न खायौ, भर भादूड़ै में दहीयौ हो रांम। आसोजां में खीर न खाई, काती कियौ कसारौ हो रांम।—लो.गी.

दहुं—देखो 'दहूं' (रू.भे.)

दहुंए, दहुऐ, दहुंधा, दहुंवां, दहूंव-क्रि०वि०—दोनों ओर, दोनों तरफ।

उ०—१ दरड़कै स्रोण दहुंअे दळां, बकै छकै अछरां वरां। जरड़कै झुकै हिंदू जवन, धकै काज वागां धरा।—बखतौ खिड़ियौ

उ०—२ चूरे दुसह सहंस पंच चहुवै, दळपति अमर विहंडवा दहुवै।—सू.प्र.

वि०—दोनों। उ०—करि चाळ वीर सांजति करै, घणा जोम हूंता घणा। किण भांति तरफ दहुंवां कहूं, तिकै रूप चहुंवां तणा।—सू.प्र.

दहूं, दहू-वि०—दोनों। उ०—छूटै प्रांण पाव नह छूटै। जाजुळि एम दहूं दळ जूटै।—सू.प्र.

दहेज-सं०पु० [अ० जहेज] वह धन और सामान जो विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जाता है।

रू०भे०—दे'ज।

दहेलौ-वि०—दुर्लभ, कठिन।

दहोड़णौ, दहोड़बौ-क्रि०स०—संहार करना, मारना।

उ०—करि जीण सपक्खर वाज कटै। दहोड़ै खळ एम तुरी दवटै।—सू.प्र.

दहोड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—संहार किया हुआ, नाश किया हुआ।

(स्त्री० दहोड़ियोड़ी)

दहोतरसौ-वि० [सं० दशोत्तरशत] एक सौ दश।

दां-सं०स्त्री०—दफा, बार।

वि० [फा०] जानने वाला, ज्ञाता।

दांइंदौ-वि०—समवयस्क, हमउम्र। उ०—पांच पांच दस दस इकळासिया दांइंदा भेळा वैठा छै।—रा.सा.सं.

दांइ, दांई-सं०स्त्री०—१ आयु, उम्र।

उ०—१ काज सरणाइयां भूप सिर कावली, दुभ्रळ धन रावळी कठै दांई। बाप रवि ठांमियौ घड़ी दोय बाजतां, ताही सुत ठांमियौ पौहर तांई।—महाराजा मांनसिंह, जोधपुर

उ०—२ आपरी दांई रा अलवेलिया मोटियार आठ पहर कन्है रहै।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ वार; दफा, मर्तबा। उ०—वारां एक दांई पंथ आया छां नवीनां। वाइं ही पठांण राव सेखौ राख लीनां। जां दिनां में चंद्रसेणि राजा आंमेर। मोजावादि वरवाड़ा ऊपरि वहुत सेर।—शि.वं.

३ तरह, प्रकार, भांति। उ०—राजि पिण घणी दूर रा ताकीद में खड़िया उतावळा पधारिया छौ, घोड़ां रै परसेवौ गरमी सूं सांवण भाद्रवा दांई मेह वरसै छै ज्यूं गरमी वरसै छै।—राव रिणमल री वात

दांगड़ी-सं०स्त्री०—दरवाजे या कपाट के पिछले भाग में लगा काष्ट का छोटा डंडा।

दांगी-सं०स्त्री०—१ भुट्टा, बाल (गेहूं)।

(मि० ऊंबी)

२ वह लकड़ी जो जुलाहों की कंघी में लगी रहती है. ३ एक वाद्य विशेष।

दांगौ-वि०—हृष्ट-पुष्ट, मजबूत।

दांडाजिनिक-सं०पु० [सं०] वह जो दंड और अजिन धारण कर के अपना स्वार्थ साधन करता फिरे, साधु के वेश में धोखेबाज मनुष्य।

दांडी—देखो 'डांडी' (रू.भे.) (उ.र.)

दांडू—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) (अमरत)

दांण-सं०पु० [सं० दान] १ शतरंज, चौपड़ की कौड़ी आदि का पड़ना जिस से जीत या हार का पता चले। उ०—तठै आय ऊभौ रह्यौ, दांण वतावण लागौ। सखरा दांण करै।—नैणसी

२ चौपड़ शतरंज आदि में दाव पड़ने पर गोटी के चलने का ढंग, चाल। उ०—तठै आय ऊभौ रह्यौ, दांण वतावण लागौ।—नैणसी

३ चौपड़, शतरंज आदि का प्रारम्भ से समाप्ति तक एक वार खेला जाने वाला खेल। उ०—तरै आप कमालदी रमण लागा सु मूळराज दांण दांण जीतौ।—नैणसी

४ समय, वक्त। उ०—दांण उठै दांन दिखाया दांमण, चमकत रसण डसण रस चोळ। अहर प्रवाळी हूंता अनोपम, कूं कूं व्रंन सारिखा कपोळ।—महादेव पारवती री वेल

५ वार, दफा (मेवाड़). ६ ऊंट के अगले पैरों का बंधन.

७ देखो 'डांग' (३) (रू.भे.) उ०—१ तद मोटो राजा फळोधी वसै छै। तद दांण घणो धरती मांहे लागतो।—नैणसी

उ०—२ सु तद गयाजी दांण निपट घणो सिनांन रो लागतो सु तिण री रावजी ग्ररज कर नै गया रो दांण छुडायो।

—राव जोधाजी रै वेटां री वात

उ०—३ ग्रटक गोपी मही दांण उघरावजै, पावजै ग्रवर रस गोरधन पास। घर लुकट मुकट वन वीथियां धावजै, वांस री वावजै ग्रहीरां-वास।—वां.दा.

८ देखो 'डांण' (५) (रू.भे.) उ०—गजां दांण सूके इसा वांण गाजै। प्रळै काळ सद्दै गिसी नाळ वाजै।—रा.रू.

९ देखो 'डांण' (१३) (रू.भे.) १० देखो 'दांन' (रू.भे.)

उ०—दाव्यो वळ दांणव लीधो दांण, उपाविय पिंड जमी ग्रसमांण। वांध्यो तैं वार किता वळराव, वगोविय दांणव कीध वणाव।—ह.र.

दांणउ—१ देखो 'दांणो' (रू.भे.) २ देखो 'दांन' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—कंठळी कंनक प्रवाळ मांणिक, विविध रूप विस्तार। दाणउ दूग्रासर मांदळयां, उर मोतियां भरि हार।—रुकमणी मंगळ

दांण-दपांण—सं०पु०—१ सरकारी कर. २ जगात।

दांण-दापो—सं०पु०यौ०—सरकारी कर विशेष।

दांणदार—देखो 'दांणेदार' (रू.भे.) उ०—तरवारियां किसी एक छै थेट री नीपनी सीरोही दांणदार।—जैतसी ऊदावत री वात

दांणपुरधांण—सं०पु० [सं० दण्ड=शासन+प्रधान] मंत्री (डि.नां.मा.)

दांणमंडही—सं०स्त्री० [सं० दानमण्डपिका] दान देने का स्थान (उ.र.)

दांण-लीला—देखो 'दांन-लीला' (रू.भे.)

दांणव—सं०पु० [सं० दानव] १ राक्षस, ग्रसुर (ग्र.मा.)

उ०—प्रथम पुवाडई पूतनां सोखी, मर दळीयो मुसाळ। ए हरि नइं ग्रागइं दावानळ, दांणव नइ कुलि काळ।—रुकमणी मंगळ

२ दुष्ट. ३ मुसलमान, यवन। उ०—नहवांणी भागा छाडि नेस, दांणवां घणी साभिया देस। विढ़ि काढ़ि प्रिसण हूंता विहार, सीवाळ सवइ किधा समार।—रा.ज.सी.

रू०भे०—दांणव्व, दांणू, दांनव, दांनवू।

ग्रल्पा०—दांनो।

यौ०—दांणव-राज, दांणव-राय, दांणव-राह।

दांणव-गुर, दांणव-गुरु—सं०पु०यौ० [सं० दानवगुरु] शुक्राचार्य।

रू०भे०—दांनवगुर, दांनवगुरु।

दांणवत—सं०पु० [सं० दानव+पुत्र] ग्रफीम (डि.को.)

दांणवराय, दांणवराह, दांणवांराई—सं०पु०यौ० [सं० दानवराज]

१ हिरण्यकश्यप. २ राजा वलि. ३ रावण, ४ वादशाह, यवनपति। उ०—ऊरसर्सै नैसासियो, विखियो दांणव-राह। हिंदू ग्राध न ग्रावही, नहीं मळे छै मांह।—नैणसी

रू०भे०—दांणवे-राव।

दांणवि, दांणवी—वि० [सं० दानवीय] दानवों की, दानव सम्बन्धी।

उ०—दळि दांणवि जइत सरूप दीठ। नेठाहि धीरि नांखिय निसीठ।

—रा.ज.सी.

सं०स्त्री०—दानव स्त्री, राक्षसी।

दांणवे-राव—देखो 'दांणव-राय' (रू.भे.)

दांणव्व—देखो 'दांणव' (रू.भे.) उ०—ग्रढ़ंगा कहा वोल जेता ग्रघाये, पलं तेत रा ग्राज तूंना पसाये। नरां नारि को नागणी ना वियांणी, रही वांभणी देव दांणव्व रांणी।—ना.द.

दांणादार—देखो 'दांणेदार' (रू.भे.)

दांणा-पांणी—सं०पु०—१ ग्रन्न-जल, खान-पान. २ जीविका.

३ रहने का संयोग।

दांणी—सं०पु०—१ कर लेने वाला, नाकेदार। उ०—दांणी मार दांण में दीया, ग्रपणा मूल न हारं। पूंजी रहे विणज ज्यूं विणजूं, पैंडा ग्रगम ग्रपारं।—ह.पु.वा.

सं०स्त्री०—२ दाख (ग्र.मा.)

दांणू—१ देखो 'दानव' (रू.भे.) (डि.को.) २ देखो 'दांणो' (रू.भे.)

दांणेदार—वि०यौ० [फा० दानः+दार] जिस में दाने हों, रवादार।

सं०पु०—१ एक प्रकार के वढ़िया लोह की तलवार।

उ०—सु किण भांत री तरवार थेट सिरोही री, सांतरी दांणेदार, मिग्रांन घातियां बिग्रांगुळे वाढ़े. भेरिग्रां।—रा.सा.सं.

२ एक प्रकार का वढ़िया फौलाद।

रू०भे०—दांणदार, दांणादार, दांणे-दार।

दांणो—सं०पु० [फा० दानः] १ ग्रनाज, ग्रन्न। उ०—१ ग्रगणित ग्रवळावां छावां जुत ग्राई। निरमळ नैणां जळ वळवळ विलळाई। भारी नांणां विन दांणां विन भूमै। घर री रदनोरी सदनां विन घूमै।

—ऊ.का.

उ०—२ सरदी री मौसम नै दांणा रा दिन। करसा रात'र दिन लोटां में लाग्योड़ा हा। ग्राछो दांणो जितरो जल्दी हु सकै उतरो जल्दी घरै लावण री कोसिस में हा।—रातवासो

मुहा०—१ दांणा-पांणी ऊठणो—स्थायित्व का हटना. २ दांणै-दांणै सारू तरसणो—गरीबी से खाने के लिये दाना भी न मिलना, भोजन न पाना, ग्रन्न का कष्ट सहना. ३ दांणै-दांणै सारू मोहताज—जिस के पास खाने को एक दाना भी न हो, ग्रत्यन्त गरीब. ४ दांणै दांणै म्होर छाप—प्रत्येक दाने पर खाने वाले की छाप होती है ग्रर्थात् प्रत्येक दाना भी भाग्य में लिखे ग्रनुसार ही मिलता है।

यौ०—दांणा-पांणी।

२ ग्रनाज का एक कण, ग्रन्न का एक वीज. ३ घोड़े, सूग्रर ग्रादि को खिलाया जाने वाला ग्रनाज। उ०—घुड़लां नै देस्यां जंवाईजी दांणो उड़द रो जी, थां रै करलां नै कोरड़ घलाय, एक वर ग्राज्यो जंवाईजी म्हारै घर पांवणा।—लो.गी.

यौ०—दांणो-चारो।

४ सूखा भुना हुआ अन्न, चवेना. ५ कोई छोटा बीज जो गुच्छे, फल, बाल आदि में लगे। जैसे—पोस्त रौ दांणौ, राई रौ दांणौ. ६ कोई छोटी गोल वस्तु, कण, रवा. ७ किसी सतह पर के छोटे-छोटे उभार जो टटोलने से अलग-अलग मालूम हों।

८ शरीर पर उभरने वाले महीन-महीन उभार जो किसी रोग के कारण अथवा खुजलाने के कारण हो जाते हैं। ज्यूं—मोतीजरै रा दांणा. ९ एक प्रकार की शक्कर. १० देखो 'दांणव' (रू.भे.)

उ०—आद वाराह अलाह तूं, हिरणाकुस दांणां।—केसोदास गाडण

रू०भे०—दांणउ, दांणू।

दांणौ-दापौ—देखो 'दांण-दापौ' (रू.भे.)

दांत—सं०पु० [सं० दन्त] जीवों के मुँह, तालू, गले और पेट में अंकुर के रूप में निकलने वाली कठोर हड्डी जो आहार चवाने, तोड़ने तथा आक्रमण करने, जमीन खोदने इत्यादि के काम आती है, दंत, दशन, रदन।

वि०वि०—मनुष्य तथा दूध पिलाने वाले जीवों में दांत, दाढ़, मुँह में जवड़े के मांस में लगे रहते हैं। मछलियों और सरिसृपों में दांत केवल जवड़ों में ही नहीं वल्कि तालू में भी होते हैं। पक्षियों के दांत मसूड़ों के गड्ढ़ों में जमे रहते हैं, उन के दांत का काम चोंच से निकलता है। बिना रीढ़ की हड्डी वाले क्षुद्र जीवों के दांतों की बनावट और स्थिति में परस्पर विभिन्नता होती है। केंकड़ा, झिंगवा आदि के पेट या अंतड़ी में महीन-महीन दांत या दानेदार हड्डियां होती हैं। दूध पिलाने वाले जीवों के दो बार दांत आते हैं। बचपन के दूध के दांत ६ से १२ वर्ष की अवस्था के बीच झड़ जाते हैं और फिर नये दांत आते हैं। मनुष्य के बच्चों में दूध के दांतों की संख्या बीस होती है। सामने के ऊपर और नीचे के चार-चार दांत चौका या राजदंत वर्ग कहलाते हैं। चौका के बाद ऊपर और नीचे के दो-दो नुकीले दांतों को राजस्थानी में कूंठा, कांणेठा या खूंटा कहते हैं जिन्हें हिन्दी में शूल दंत या कुकुर दंत कहते हैं। इस के बाद ऊपर और नीचे दाढ़ें शुरू हो जाती हैं। ये चौड़ी और चौकोर होती हैं, इन्हें हिन्दी में चौभड़ कहते हैं। २१ या २२ वर्ष की अवस्था में जब अंतिम दाढ़ या अकल दाढ़ निकलती है तो ३२ दांत पूरे हो जाते हैं।

पर्या०—खादन, डसण, दंत, दंस, दसण, दुज, मुख-दीपण, रद, रदन, वांणी-मंड।

मुहा०—१ दांत आणा—दांत निकलना, वाक्पटु होना. २ दांत इ नहीं लागणा—दांतों से नहीं चबाना, निगल जाना, किसी का माल हड़प कर लेना. ३ दांत उखेलणा—दांत उखाड़ना, कठिन दंड देना. ४ दांत काढ़णा (निकाळणा)—ओठों को कुछ हटा कर दांत दिखाना, व्यर्थ हँसना, दीनता दिखाना, गिड़गिड़ाना, डर या घबराहट से ठक रह जाना, टें बोल देना, मुँह बा देना, देखो 'दांत उखेलणा'. ५ दांत खाटा करणा—परास्त करना, पस्त करना, खूब हैरान करना. ६ दांत खाटा होणा—परास्त होना, पस्त होना, हैरान होना. ७ दांत खोळा पड़णा—दांत ढीले पड़ना, वृद्ध होना. ८ दांत टूटणा—दांत गिरना, बुढ़ापा आना. ९ दांत तिड़णा (निकळणा)—नशे अथवा मृत्यु की अवस्था में मुँह बा देना. १० दांत तिड़ाणा—देखो 'दांत काढ़णा'. ११ दांत तोड़णा—देखो 'दांत उखेलणा'. १२ दांत दिखाणा—डराना, घुड़कना, अपना वड़प्पन दिखाना, हँसना. १३ दांत पटकणा—मारना, पीटना. देखो 'दांत उखेलणा. १४ दांत पीसणा—कोप प्रकट करना, क्रोध से दांत पीसना. १५ दांत बोलणा—सरदी के कारण दांतों का किटकिटाना. १६ दांत भींचणा—कृपण होना, कंजूस होना, सहना, बाध्य होना. १७ दांत मूंडा में इज फूटरा दीसैं—दांत मुँह में ही शोभा देते हैं। वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा देती है. १८ दांता-कसी करणी—(दांताकिटकिट, दांताघिसी) लड़ाई टंटा करना, व्यर्थ का प्रलाप करना, बकझक करना. १९ दांतां चढ़णौ—दुनिया की निगाह में आना, दुनिया के लिये चर्चा का विषय बनना, जायकेदार होना, स्वाद होना. २० दांतां चाढ़णौ—दुनिया की निगाह में लाना, चर्चा का विषय बनाना. २१ दांतां तळै आंगळी देणी—आश्चर्य-चकित होना. २२ दांतां में तिणकौ लेणौ—दीनता प्रकट करना, हाहाकार करना. २३ दांतां विचली जीभ—दांतों के बीच में जीभ। चारों ओर विरोधियों या दुश्मनों से घिरे हुए रहना. २४ दांतां (दांते) मिळणौ—बैल, भैंसे आदि पूर्ण युवा होना. २५ दांतां लागणौ—बहुत थोड़ा (खाद्य पदार्थ). २६ दांतां लोह रा चिणा चवाणा—बहुत कठिन कार्य करना. २७ दांतां लोही लागणौ—चस्का लग जाना, आदी हो जाना. २८ दांतिया करणा—लड़ाई करना, बहस करना. २९ दांते चढ़णौ—देखो 'दांतां चढ़णौ'. ३० दांते चाढ़णौ—देखो 'दांतां चाढ़णौ'

रू०भे०—दंत, दंतक, दंती।

अल्पा०—दांतड़लौ।

[सं० दांत] २ दमयंती के भाई जो विदर्भ नरेश भीमसेन के दूसरे पुत्र थे।

वि०—१ तप आदि का क्लेश सह सकने वाला, इंद्रियजित (जैन)।

उ०—सांत थई अंतर गुणे, दुसमन सहु दमिया लो अहो। दांत पणइ अविकार थी, विसयादिक वमिया लो अहो।—वि.कु.

२ जिसका दमन किया गया हो, वशीभूत. ३ जो दांत का बना हो, दांत सम्बन्धी।

दांत-कथ, दांत-कथा—देखो 'दंत-कथा' (रू.भे.)

दांतड़लौ—देखो 'दांत' (अल्पा., रू.भे.) उ०—दांतड़ला मूमल रा दाड़मियै रा बीज रे, कोई होठड़ला मूमल रा जांणे हिंगळू ढोळियो, हरियाळी ए मूमल हालै तौ ले चालूं मुरधर देस में।—लो.गी.

दांतड़ैल—सं०पु० [सं० दंत+रा०प्र०ड़ैल] सूअर, सूकर।

उ०—झड़ाया ओझाड़ां झाड़कां कड़ैल पवै मूळां, सांकड़ैल भड़ां मूळां अड़ाया सधीर। वीफरैल गुसैल कदेई तोल न आया वीजां, केई दांतड़ैल जई गुड़ाया कंठीर।—महकरण महियारियो

दांतण-सं०पु० [सं० दंत+रा०प्र०ण] १ दांत साफ करने की क्रिया।
उ०—१ माता ए, ऊठो दांतणियो जी फाड़, थांरै दांतण की जी वेळा ग्रब हुई।—लो.गी.
उ०—२ महाराज जनांनै पधारीजै, रसोड़ो तयार हुवो छै नै मंहाराणी बाघेलीजी दांतण कियां विनां विराजिया छै।
—जगदेव पंवार री वात

क्रि०प्र०—करणो।
२ नीम, बबूल ग्रादि वृक्षों की हरी टहनी का टुकड़ा जिससे दांत साफ किये जाते हैं। उ०—१ रांमजी, ऊगतड़ै परभात, मात जसोदाजी दांतण मांगियो।—लो.गी.
उ०—२ साथीड़ां रा डेरा हरिया बाग, जंवाई रा डेरा मोती महल में। साथीड़ां रै दांतण बोर, जंवाई रै काची केळ रो।—लो.गी.
मुहा०—दांतण वेचयां दळदर को जावैनी—दांतुन वेचने से दरिद्रता नहीं जाती। तुच्छ कार्य करने से काम पार नहीं पड़ता।
३ एक राजस्थानी लोक गीत।
रू०भे०—दतुण, दांतणि, दातण।
ग्रल्पा०—दांतणियो।

दांतणि—देखो 'दांतण' (रू.भे.) उ०—ढोलउ सरवरि दांतणि करइ, सूडो जाए इम ऊचरइ।—ढो.मा.

दांतणियो—देखो 'दांतण' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—रांमजी, चाल्या ए नंदजी को लाल, दांतण लाया जी काची केळ रो। माता ए ऊठो ना दांतणियो जी फाड़, थांरै दांतण की जी वेळा ग्रब हुई।—लो.गी.

दांतवसन-सं०पु० [सं० दंत+वसनम्] ग्रोष्ठ, ग्रोंठ (डि.को.)

दांतळी-वि०—सं०स्त्री०—१ देखो 'दात' (४) (ग्रल्पा., रू.भे.)
उ०—१ सूवर वाही दांतळी, ग्रांण खटक्की हड्ड। भाई ह्वै तो वावड़ै, गया विरांणा छड्ड।—लो.गी.
उ०—२ हिरणां लांबी सींगड़ी, भाजण तणो सभाव। सूरां छोटी दांतळी, दै घण थट्टां घाव।—हा.झा.
२ देखो 'दातो' (ग्रल्पा., रू.भे.)
मुहा०—दांतळी सूं नीम नी कटै—फसल काटने के ग्रोजार से नीम नहीं काटा जा सकता, वड़े कार्य के लिये वड़े साधन की ग्रावश्यकता होती है।

दांतळैल—देखो 'दांतड़ेल' (रू.भे.) (डि.को.)

दांतलो-वि० [सं० दंतुर] (स्त्री० दांतली) १ जिसके दांत ग्रागे निकले हों, वड़े-वड़े दांतों वाला, दंतुला.
रू०भे०—दंतलो, दंतियो, दंतीलो, दंतुलो, दांताळो, दांतिलउ।
मह०—दंतल।

दांताळी—देखो 'दंताळो' (रू.भे.)

दांताळो-सं०पु० [सं० दंतावल] १ हाथी (डि.को.)
उ०—चकतै तणा चालिया चाळ टावो करै घणा टळिया। दोय दरगाह विचै दांताळा मतवाळा घाये मिळिया।
—ग्ररजण गोड़ ग्रर ग्रमरसिंह राठोड़ री गीत

२ देखो 'दांतलो' (रू.भे.)

दांति—देखो 'दांती' (रू.भे.) उ०—दांति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दघूण। देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण।—मा.कां.प्र.

दांतिलउ—देखो 'दांतलो' (रू.भे.) (उ.र.)

दांतियो—सं०पु० [सं० दांतिक] १ खरगोश. २ सियार.
३ ढोलो (मेवाड़)।
रू०भे०—दांत्यो।
वि०—दांत का। उ०—जोइजै वीरो म्हारो चीरोया री हाट, दांतियो चुड़लो वीरो मोलवै।—लो.गी.

दांती-सं०पु० [सं० दंत] नारेलो या गेंडे की ढाल का ग्रथवा हाथी दांत का चूड़ा वनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति जो ग्रपने को सैयद कहता है।
सं०स्त्री०—२ कंघी या कंघे से शिर के वाल साफ करने के लिये कंघी के दांतों में विशेष प्रकार से धागा लपेटने की क्रिया या ढंग।
क्रि०प्र०—दैणी।
३ कंघी. ४ देखो 'दातो' (ग्रल्पा., रू.भे.) ५ देखो 'दंताळी' (रू. भे.)
उ०—काती भळै दांती फेरी, लासू वनरा वाडतां। झाड़ जुगत लादां लदावै, ढिगलां टोकी काढ़तां।—दसदेव
६ दांतों की पंक्ति, वत्तीसी. ७ वृक्ष विशेष.
८ देखो 'दातो' (ग्रल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—दांति।

दांतील-सं०पु० [सं० दंतुर] वह ऊंट जिस के चार दांत ग्रा गये हों।

दांतूसळ-सं०पु० [सं० दंत+मूसल] हाथी के उन गोल ग्रौर लंबे दांतों में से एक जो वाहर दिखाई देते हैं। उ०—१ घड़सी हाथी रा दांतूसळां माथै पग दे नै ग्रंवाड़ी मांहे पग दे नै पातसाह नूं हेठो नांखियो।—नैणसी
उ०—२ पोगर दांतूसळ धकै, डाळ वचै नह डंड। कूंजर चाळक रा करै, खंड खंड स्रोखंड।—वां.दा.

दांतेड़ो—देखो 'दातो' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दांतो-सं०पु० [सं० दंत] १ दांत के ग्राकार का कंगूरा।
मुहा०—दांता पड़णा—धार वाले किसी ग्रोजार ग्रथवा हथियार के वीच में से झड़ कर गुठले या गड्ढे पड़ जाना।
२ ग्रंकुर की तरह निकली हुई नुकीली वस्तु जो वहुतों के साथ एक पंक्ति में हो।
३ देखो 'दातो' (रू.भे.)
वि०—दांत का। उ०—वनड़ी न्हाय-धोय वैठी वाजोट, कांई ग्रांमण-दूमणी। म्हें तो नहीं मांगां गळहार, कांई दांतो चूड़लो।
—लो.गी.

ग्रल्पा० रू०भे०—दांत्यो।

दांत्यूणी-सं०स्त्री०—ज़मालघोटा की जड़ (ग्रमरत)

दांत्यौ—१ देखो 'दांतियौ' (रू.भे.)
२ देखो 'दांतौ' (रू.भे.)

दांदड़—देखो 'दांनड़' (रू.भे.)

दांन—सं०पु० [सं० दान] १ वह वस्तु जो उदारतावश या धर्म के भाव से किसी को दे दी जाय. २ उदारतावश या धर्म के भाव से देने की क्रिया जिस में वापस लेने का उद्देश्य न हो ।
उ०—दाता जग माता पिता, दाता सांप्रत देव। दाता सरवस दांन दे, ऊतर एक अदेह ।—बां.दा.
पर्या०—अपवरजन, आचार, आपण, उछरंजण, उतसरजन, करतब, क्यावर, त्याग, दत, देंण, नवाज, प्रतिपायण, प्रवाह, बगसण, स्रवण, मौज, रीझ, वरीस, वितरण, विलसण, विसरजण, विसरारण, विहाइति, समपण, सुमोज ।
क्रि०प्र०—करणौ, देंणौ ।
यौ०—कन्या-दांन, गऊ-दांन, गुपत-दांन ।
३ देने की क्रिया या कार्य
रू०भे०—दन, दनि, दन्नि, दांण, दांणउ, दांनि ।
४ देखो 'दांण' (रू.भे.) (डिं.को.)

दांनअयन—सं०पु० [सं० दान+अयन] दान देने वाला, दातार (अ.मा.)

दांनक, दांनख—सं०पु० [सं० दानक] बुरा दान, कुत्सित दान ।
वि०—देने वाला। उ०—दीनानाथ अभै पद दांनख, भांनख अंतक समर भर। मांनख जनम सफळ कर मांगण, धांनख धर पद सीस धर ।—र.ज.प्र.

दांन-गुर, दांन-गुरु—सं०पु० [सं० दान+गुरु] दान देने में सब से बड़ा, महादानी, दानवीर। उ०—कळह-गुर, दांन-गुर हालियौ 'कलाउत', लाख ऊपर कवण वाग लेसी। अम्हां गज मौज मौताद कुण आपसी, दांन सौ लाख कुण रीझ देसी।—दुरसौ आढ़ौ

दांनड़—सं०पु० (देश०) कूड़ा-करकट (मेवाड़)
रू०भे०—दांदड़।

दांनत—देखो 'दयांनत' (रू.भे.) उ०—थांहरी दांनत रा कारण सूं सावधांनी रौ पल्लौ पकड़ियौ (नी.प्र.)

दांनतदार—देखो 'दयांनतदार' (रू.भे.)

दांनतदारी—देखो 'दयांनतदारी' (रू.भे.)

दांनपति—सं०पु०यौ० [सं० दानपति] १ सदा दान देने वाला, दानवीर. २ अक्रूर का एक नाम क्योंकि वह 'स्यमंतक' मणि के प्रभाव से हमेशा दान देता था ।

दांनपत्र—सं०पु०यौ० [सं० दानपत्र] वह आज्ञा-पत्र या लेख जिस के द्वारा कोई सम्पत्ति किसी को दी जाय ।

दांनपात्र—सं०पु०यौ० [सं० दानपात्र] दान देने के लिए उपयुक्त व्यक्ति।

दांनलीला—सं०स्त्री० [सं० दानलीला] श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों से गो-रस बेचने का कर वसूल करने की लीला ।
रू०भे०—दांणलीला ।

दांनव—देखो 'दांणव' (रू.भे.) उ०—देवी कालिका मा नमौ भद्रकाळी, देवी दूरगा लाघवं चारिताळी। देवी दांनवां काळ सुरपाळ देवी, देवी साधकं चारणं सिधं सेवी ।—देवि.

दांनव-गुर, दांनव-गुरु—देखो 'दांणव-गुर, दांणव-गुरु' (रू.भे.)

दांनवज्र—सं०पु० [सं० दानवज्र] मन की तरह वेगवान् एक प्रकार के अश्व जो कभी बूढ़े नहीं होते हैं और देवताओं तथा गंधर्वों की सवारी में रहते हैं (महाभारत) ।

दांनवारि—सं०पु० [सं० दानवारि] हाथी का मद ।

दांनवी—सं०स्त्री० [सं० दानव] दानव स्त्री, राक्षसी ।
वि० [सं० दानवीय) राक्षसों सम्बन्धी ।

दांनवीर—सं०पु० [सं० दानवीर] दान देने में साहसी पुरुष, अत्यन्त दान देने वाला, धर्मात्मा ।

दांनवू—देखो 'दांणव' (रू.भे.) उ०—सूरां के सहायक, दांनवूं के दावागीर, दिलपाकूं के दोसत ।—र.रू.

दांनवेंद्र—सं०पु० [सं० दानवेंद्र] १ राजा बलि. २ हिरण्यकशिपु. ३ रावण, दशानन ।

दांनसागर—सं०पु० [सं० दानसागर] एक प्रकार का महादान ।
वि०वि०—इस में भूमि, आसन आदि सोलह वस्तुओं का दान दिया जाता है। इस का प्रचार बंग देश में है ।

दांन-साळा—सं०स्त्री० [सं० दान-शाला] वह स्थान जहां अपाहिजों या अनाथों को दान, भोजन आदि दिया जाय । उ०—तठा उपरांति क्रिरि नै राजांन सिलांमति देवळां री पाखती धरम-साळा, दांन-साळा मंडीजै छै ।—रा.सा.सं.

दांनसील—सं०पु० [सं० दानशील] दान करने वाला, दानी ।

दांनसीलता—सं०स्त्री० [सं० दानशीलता] दान करने की प्रवृत्ति, उदारता

दांनाई—सं०स्त्री० [फा० दानाई] १ बुद्धिमता, अक़लमंदी. २ वृद्धावस्था

दांनादकी—सं०स्त्री० [सं० दान ?] दांन लेने का अधिकार ।
उ०—१ पीछे उण हीज वरस प्रोहित मांनमहेस री पटौ जबत हुवौ वा बारठ चौथजी खुंडियै रौ पटौ पण जबत हुवौ। पीछै अै घरणा क बीकानेर आया। आखर अवार डिंगली रहै छै तठै जुहर कर सा मुवा। तोळियासर रां सूं प्रोहितपणौ गयौ। बारठजी सूं बारठपण तथा दांनादकी गई।—द.दा.
उ०—२ जगात पिण माफ कीवी, ताजीम बगसी, दांनादकी दीवी —द.दा

दांनाध्यक्ष—सं०पु० [सं० दानाध्यक्ष] वह जिस के द्वारा दान किया हु द्रव्य बांटा जाय ।

दांनापण—सं०पु० [फा० दाना+रा०प्र० पण] १ अक्लमंदी, बुद्धिमत २ बुढ़ापा । उ०—दांनां दांनापण हांनै घर दीन्हौ ।—ऊ.का.

दांनि—१ देखो 'दांन' (रू.भे.) उ०—सरम धारी करण सुघर ब्रहम बाचा दांनि विक्रम। जस करण समदि अण जंगम दीपि बिरदाळ ताई भूपाळजी भूपाळ ।—ल.पिं.

२ देखो 'दांनी' (रू.भे.) उ०—सरीखौ न को दांनि पूजै सकै । जिकां मोंड़िजै तांह हूंता जकै ।—ल.पि.

दांनिसमंद-वि० [फा० दानिशमंद] बुद्धिमान ।

दानिसमंदी-सं०स्त्री० [फा० दानिशमंदी] बुद्धिमानी ।

दांनी-सं०पु० [सं० दानिन्] १ राजा कर्ण ।

(मि० दांनी-रिप)

२ दान करने वाला व्यक्ति, दाता ।

वि०—जो दान करे, उदार । उ०—दांन जिसौ नह दूसरो, दांन स्वरग रो द्वार । जो दांनी जसवंत नै, सब जांणै संसार ।—ऊ.का.

रू०भे०—दांनि ।

दांनीक-वि० [फा० दाना+रा०प्र०ईक] १ बुद्धिमान, अक्लमंद ।

[सं० दान+रा०प्र०ईक] २ दान देने वाला, उदार ।

दांनीरिप-सं०पु० [सं० दानिन्=राजा कर्ण+रिपु] अर्जुन, पार्थ । (अ.मा.)

दांनेसरा-सं०पु० [सं० दानेश्वर] राठौड़ों के तेरह प्रमुख वंशों में से एक वंश ।

दांनेसरी, दांनेसवर, दांनेसुर-वि० [सं० दानीश्वर, दानेश्वर] दान देने वाला, दातार (अ.मा.)

उ०—तण जास पास नय कुळ तणी, सीचै भोर आचा सही । अभिनमो 'कन्न' दांनेसवर, रायसिव विवनो म कही ।—नैणसी

दांनो-सं०पु० [फा० दाना] (स्त्री० दांनी) १ बुद्धिमान, अक्लमंद ।

उ०—१ घटै आव जस धन घटै, अकल हटै बळ अंग । नींदवियो दांनां नरां, पातर तणो प्रसंग ।—बां.दा.

उ०—२ कांपै अनुकंपा लांपो कर लीनो । दांनां दांनांपण हांनी घर दीनो । किण ढिग ढूकां म्हे किण ढिग म्हे कूकां । हरदम हीया में ऊठै हरि हूकां ।—ऊ.का.

२ हितैषी, शुभचिन्तक, सज्जन । उ०—दुसमणां लाभ दांनां दहण; खुली न कांनां खिड़कियां । नर परम धरम बूझै नहीं, हूकी सूझै हिड़कियां ।—ऊ.का.

३ देखो 'दांणव' (अल्पा., रू.भे.) उ०—भक्त ग्रिमां कै कारण, रिख का वायक लाया । दांनां मारचा देव उवारचा, अनेक पवाड़ा कीया ।—रुकमणी मंगळ

दांपत्य-वि० [सं०] पति-पत्नी सम्बन्धी ।

सं०पु०—पति-पत्नी के बीच का प्रेम या व्यवहार ।

दांभिक-वि० [सं०] १ आडम्बर करने वाला, पाखण्डी. २ अभिमानी, घमण्डी. ३ धोखेबाज, दगाबाज ।

दांम-सं०पु० [सं० द्रम्म: अथवा फा. दाम] १ रुपये का ४० वां भाग । —नैणसी

२ पैसे का पच्चीसवां भाग. ३ एक प्राचीन सिक्का जो पैसे के बराबर होता था. ४ वह द्रव्य जो बेचने वाले को किसी वस्तु के बदले में दिया जाय, मूल्य, कीमत ।

मुहा०—दांम करणा—मूल्य निश्चित करना, कीमत ठहराना, मूल्य प्राप्त करना. ५ धन, रुपया, पैसा । उ०—१ निज पितु छोडै नीच, तुरत छोडै, महतारी, निज भ्रम छोडै निलज निलज छोडै निज नारी । भळ छोडै निज भ्रात, छैल कुळ घर छिटकावै, प्रभु नै छोडै परो जिकण दिस फेर न जावै । दांम री भांम झेली दुकर भव सारै नै भांडियो । छिता पर इता गुण छोड दै, रांड न छोडै रांडियो । —ऊ.का.

उ०—२ बांम बांम बकता बहै, दांम दांम चित देत । गांम गांम नांखै गिडक, रांम नांम में रेत ।—ऊ.का.

उ०—३ नरहर समरतां नह बीतै नांणो, लव सूं तीको न लेवै । परनारी निरखै कर प्रीतां, दांम हजारां देवै ।—र.रू.

अल्पा०—दांमड़ियौ, दांमड़ो ।

[सं० दाम] ६ राजनीति की एक चाल जिस में शत्रु को धन द्वारा वश में करते हैं ।

७ माला, हार, लड़ी. ८ रज्जु, रस्सी ।

वि०—किञ्चित, जरा, कम । उ०—दांम न होय उदास, मतलब गुण ग्राहक मिनख । ओखद रो कड़वास, रोगी गिणै न राजिया । —किरपारांम

दांमड़ियौ, दांमड़ो [सं० दामिट्ठी] देखो 'दांम' (अल्पा., रू.भे.)

दांमिट्ठी-सं०पु०—इन्द्र की रथ सेना का सेनापति ।

उ०—नाटच गंधरव हय गज व्रिखभ रथ पदाति रुपक तणा स्वांमी नीलंजणारिद्धंजस हरि एरावण मातलि दांमिट्ठी हरिणेगमेखी सरवांगि सन्नाह पहिरि ।—व.स.

दांमण-सं०पु० [फा० दामन] १ वस्त्र का छोर ।

२ देखो 'दांमी' (मह., रू.भे.) उ०—चूड़ी चमकीली कचवीही चमकै, दांमण दमकोली दांमणि सी दमकै । भंवरयो फुरणी में भंवराळो भळकै, पाघर वहती रा पसवाड़ा पळकै ।—ऊ.का.

३ पहाड़ के नीचे की भूमि (अलवर)

[सं० दाम+रा०प्र०ण] ४ बंधन । उ०—१ इब्राहिम पूरब दिसा न उलटै, पछम मुदाफर न दै पयांण । दखणी महमदसाह न दौड़ै, 'सांगो' दांमण अहूं सुरतांण ।—महारांणा सांगा री गीत

५ देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—१ चिग पड़ दारू पाल चमंकै । दांमण जांण सिळाउ दमंकै ।—सू.प्र.

उ०—२ किरमाळ झड़ै तनत्रांण कपै । भळकै किर दांमण मेघ वपै । —रा.रू.

६ देखो 'दांमणी' (मह., रू.भे.) उ०—हाथी लख च्यार भेळा दांमण फेराया । तव पसवाड़ा फेरिया आळस मोड़ाया । —केसोदास गाडण

७ धन, घटा । उ०—काळी दांमण मैंगळां पाहड़ परमांणी, सेन वरां दांतूसळां मुख सोह मंडांणी ।—गिरवरदांन खिड़ियो

८ देखो 'दावण' (२) (रू.भे.)

वि०—१ बंधन में डालने वाला, बांधने वाला। उ०—अति मति ऊजळी रजवट प्रघट आसति, महण मेर मजाद। ऊदमां दांमण कळहि असुरां, नरां नांमण नाद।—ल.पि.

२ चंचल (डि.को.)

रू०भे०—दांव, दांवण।

दांमणणौ, दांमणबौ—क्रि०स०—ऊंट, बैल, घोड़े आदि पशुओं के पैर बांधना। दांवणणौ, दांवणबौ—रू०भे०।

दांमणगीर—सं०पु० [फा० दामन-गीर] दामन पकड़ने वाला।

दांमणि—देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—१ उघटंत नचत के कांमणि दमकै, घटा ऊजळ जिम दांमणि।—सू.प्र.

उ०—२ चूड़ी चमकीली कचबीड़ी चमकै, दांमण दमकीली दांमणि सी दमकै। भँवरयौ फुरणी में भंवराळी भळकै, पाधर वहती रा पसवाड़ा पळकै।—ऊ.का.

दांमणियोड़ौ—भू०का०कृ०—पैर बंधा हुआ।

(स्त्री० दांमणियोड़ी)

दांमणियौ—वि० [सं० दमन] १ दमन करने वाला।

रू०भे०—दांवणियौ।

२ देखो 'दांमणौ' (अल्पा., रू.भे.)

दांमणी—सं०स्त्री० [सं० दामिनी] १ बिजली, विद्युत।

उ०—१ काळी कांठळ में दांमणियां दमकी, चित में कांमणियां विरहानळ चमकी। छूटी आसारां कासारां छिलती, पड़ती परनाळां पहुवी पिलपिलती।—ऊ.का.

उ०—२ फौज घटा खग दांमणी, बूंद लगइ सर जेम। पावस प्रिउ विण वल्लहा, कहि जीवीजइ केम।—ढो.मा.

[सं० दामनी] २ रस्सी, रज्जु।

[सं० दाम = माला] ३ स्त्रियों के सिर पर धारण करने का एक आभूषण विशेष। उ०—गज मोत्यां री दांमणी, मुखड़ै सोभा देत। जांणै तारा पांत मिळ, राख्यौ चंद लपेट।—अज्ञात

(देश०) ४ विधवा स्त्रियों के ओढ़ने की एक प्रकार के पक्के रंग की रंगी ओढ़नी।

रू०भे०—दमिण, दांमण, दांमणि, दांमिण, दांमिणि, दांमिणी, दांमिन।

मह०—दांमणेस।

दांमणेस—देखो 'दांमणी' (मह., रू.भे.) उ०—रांम रूप घनस्यांम विराजै, सीता दुति दांमणेस साजै।—गी.रां.

दांमणौ—सं०पु० [सं० दाम, दामनी] १ गाय दुहते समय उसके पिछले पैरों को घुटनों के ऊपर से बांधने की रस्सी। २ ऊंट, घोड़ा, बैल आदि पशुओं के अगले पैर बांधने की रस्सी जिस से वे तेज भाग न सकें। ३ देखो 'दांमौ' (अल्पा., रू.भे.)

वि०—बांधने वाला। उ०—दइवांण उद्दम दांमणौ, इम करै जुध अधियांमणौ।—सू.प्र.

रू०भे०—दांवणौ, दावणौ।

अल्पा०—दांमणियौ, दांवणियौ।

मह०—दांमण, दांवण।

दांमणौ, दांमबौ—क्रि०स० [सं० दमन] १ बन्धन में डालना, बांधना।

२ दमन करना।

दांवणौ, दांववौ—रू०भे०।

दांमाद—सं०पु० [फा० दामाद] पुत्री का पति, जँवाई, जामाता।

रू०भे०—दमाद।

दांमाळौ—वि० [सं० द्रम्मः + आलुच्] १ रुपये-पैसे का लोभी.

२ रुपये-पैसे वाला, धनवान।

दांमिण—देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—दुहुँ बाजार झंडा देठाळै। दांमिण गजां घजां देठाळै।—वचनिका

दांमिणी—सं०स्त्री०—एक प्रकार की लता या इसका फल जिस का शाक बनाया जाता है। उ०—दांमिणी दोभी दूधिअ, देवदाळि दूधेलि। दारूहलद्र दुरालभा, दह दिसी दीसइ वेलि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दांमणी' (रू.भे.)

दांमिणी, दांमिन—देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—१ स्रांवण मास में विरहणि जांमनी जांम न जात, सजि आडंबर जंवर दांमिणी मिळै वरसात।—घ.व.ग्रं.

उ०—२ दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणावै। घुमंट घटा ऊलर होइ आई, दांमिन दमक डरावै।—मीरां

दांमियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ बंधन में डाला हुआ, बांधा हुआ.

२ दमन किया हुआ।

(स्त्री० दांमियोड़ी)

दांमौ—सं०पु० [सं० दाम = बन्धन] परस्पर जुड़ी हुई दो अंगूठियों का जोड़ा विशेष जो हाथ के मध्य की दोनों अंगुलियों में पहना जाता है।

अल्पा०—दांमणौ।

मह०—दांमण।

दांमोदर—सं०पु० [सं० दामोदर] १ श्रीकृष्ण (अ.मा.)

२ विष्णु (डि.को.) ३ ईश्वर। उ०—१ नारायण रा नांम सूं, भरियो रह भरपूर। दांमोदर नै दाखवै, दम दम कर नह दूर।

—ह.र.

उ०—२ दांमोदर दीजै मती, कायर कांठै वास। सरणै राखै सूर रै, तेथ न व्यापै त्रास।—वां.दा.

४ एक जैन तीर्थंकर का नाम. ५ रुपया पैसा रखने की लंबी थैली उ०—खत्या खेसलिया भाखलियां खांधै। वेभड़ दांमोदर चांमोदर वांधै।—ऊ.का.

दांमोदांम—वि० [सं० द्रम्मः] पूर्ण। उ०—वांणी दीनदयाळ री, सुणलौ दांमोदांम। सबद सबद में या कही, रांमचरण भज रांम।

—संगरांमदास

उ०—२ नारायण रा नाम नूं, भरियो रह भरपूर । दामोदर नां दाखर्व, दम दम कर नंह दूर ।—ह.र.

उ०—३ प्रातर पै पिण समकणहार सनेहा नवि दाखविस्यो छेहा हो ।—वि.कु.

दाखवणहार, हारौ (हारी), दाखवणियौ—वि० ।

दाखवियोड़ो, दाखवियोड़ो, दाखव्योड़ो— भू०का०कृ० ।

दाखवीजणौ, दाखवीजबौ—कर्म वा० ।

दाखवियोड़ो—देखो 'दाखियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दाखवियोड़ी)

दाखिण—देखो 'दाक्षिण' (रू.भे.)

दाखिणात्य—देखो 'दाक्षिणात्य' (रू.भे.)

दाखिणिक—देखो 'दाक्षिणिक' (रू.भे.)

दाखियोड़ो-भू०का०कृ०—१ दिखाया हुआ. २ कहा हुआ. ३ वर्णन किया हुआ, कथा हुआ. ४ प्रकट किया हुआ ।

(स्त्री० दाखियोड़ी)

दाखिल-वि० [अ० दाख़िल] १ प्रविष्ठ । उ०—१ इतरै सारो लोग श्रांण सांमल हुवो, उठा सूं कूच कियो सो मजल-दर-मजल हाल वै नागोर दाखिल हुवा ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ डेरां दाखिल दुझल, होय दरवार क्रोध हद । जठै आदि 'जैसाह', जवन सह आय मिळे जद ।—सू.प्र.

२ मिला हुआ, सम्मिलित, शरीक ।

रू०भे०—दाखल ।

दाखिल-खारिज-सं०पु० [अ० दाखिल+फा० ख़ारिज] किसी सरकारी कागज पर से किसी जायदाद के हकदार का नाम काट कर उस पर उस के वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखने का काम, एक व्यक्ति की जगह दूसरे का मालिक नियुक्त होना ।

रू०भे०—दाखल-खारिज ।

दाखिल-दफ्तर, दाखिले-दफ्तर-वि० [अ० दाखिल+फा० दफ्तर] किसी प्रार्थना-पत्र का अस्वीकृत हो कर मिसिल में किसी सुबूत आदि के लिए सुरक्षित रहना ।

रू०भे०—दाखल-दफ्तर ।

दाखिलो—देखो 'दाखलो' (रू.भे.)

दाखी—देखो 'दाक्षी' (रू.भे.)

दाखीण-सं०पु० [सं० दाक्षिण्य] किसी के हित की ओर प्रवृत्त होने का भाव, अनुकूलता । उ०—तरै जैतसी जी बोल्या—बाई, म्हांनै पण छै वांमण, चारण, भाट, सवासणी—इनरां री बिस्वो खांण री पण छै, सो पण भांज्यो थारा दाखीण सूं ।

—जैतसी ऊदावत री वात

दाग-सं०पु० [फा० दाग़, सं० दग्ध] (वि० दागल, दागी) १ पशुओं के शरीर पर पहिचान हेतु अग्नि-दग्ध क्रिया द्वारा बनाया हुआ निशान विशेष ।

क्रि०प्र०—देणौ, लगाणौ ।

[फा० दाग़] २ रंग का वह भेद जो किसी वस्तु के तल पर अलग दिखाई पड़े, चित्ती, धब्बा ।

क्रि०प्र०—पड़णौ, लागणौ ।

३ चिन्ह, निशान. ४ कलंक, दोष, लांछन ।

उ०—१ देरांणी कुळ ऊपजी, दोही पख विण दाग । की मुख ल्होड़ी सोक रो, थारो लियण सुहाग ।—वी.स.

उ०—२ दूजां ज्यूं भागो नहीं, दाग न लागो देस । दागां खागां वंकड़ो, मह वांको 'माहेस' ।—महेसदास कूंपावत रो दूहो

क्रि०प्र०—लागणौ ।

५ पाप, अघ ।

उ०—राखै धेख न राग, भाखै न जोहा बुरो । दरसण करतां दाग, मिटै जनम रा मोतिया ।—रायसिंह सांदू

क्रि०प्र०—छूटणौ, मिटणौ ।

[सं० दाघ:] ६ अग्नि । उ०—एक फिरत आतुर भ्रमित, विद्युत सम चित दाग । उचकै पग पुगै अवनि जांणिक लगै दाग ।—रा.रू.

७ जलन । उ०—कसंता बिजै मंड कोदंड कंधां, वणावै त्रिया वर रै जेरबंधां । सटा याळ जाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नागवाळी लखै दाग पावै ।—वं.भा.

८ जलाने का काम, दाह. ९ मुर्दा जलाने की क्रिया, मृतक का दाह-कर्म्म । उ०—१ सो आदमी आठ तो मर गया त्यांनूं खड़ा रहि दाग दिरायो ।—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

उ०—२ सो पांच हजार डोळी ऊठी बाकी खेत रहियां नूं दाग दिरायो, देहली आया ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

मुहा०—दाग देणौ—मुरदे का क्रियाकर्म करना, मृतक का दाह-संस्कार करना ।

रू०भे०—दग, दग्ग ।

दागड़ियो-सं०पु० (देश०)—१ ठग, धूर्त. २ लूटेरों या डाकुओं के दल का व्यक्ति ।

दागड़ो-सं०पु० (देश०)—डाकुओं अथवा लुटेरों का पैदल समूह ।

दागणौ, दागबौ-क्रि०स० [सं० दग्ध अथवा दह] १ दाह-संस्कार करना ।

उ०—१ सूड़ा, सगुण ज पंखिया, म्हांकउ कह्यउ करे ज । नव मण चंदण मण अगर, माळवणी दागे ज ।—ढो.मा.

उ०—२ हर हर कर परहर अवर, हरि रो नांम रतन्न । पांचू पांडव तारिया, कर दागियो करन्न ।—ह.र.

उ०—३ पिंड री हुती प्रतीत, साकदड़ै दीधी सरब । इण घर आ हिज रीत, 'दुरगो' ही सफरा दागियो । —ठा० करणसिंह चांपावत

२ दग्ध करना, जलाना । उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जांण्या, दुतिये कास्ठ दागी । जीवन मुक्ति सदा सुखदाई, समदरसी वीतरागी ।

—स्रो सुखरांमजी महाराज

३ चिन्ह अंकित करने वाले लोहे के उपकरण को तपा कर पशुओं

के शरीर के किसी अंग को दग्ध करना जिस से अभीष्ट चिन्ह अंकित हो जाय।

४ तोप, बन्दूक आदि छोड़ना। उ०—गंज गाडां जंबूरां जंजाळां दागी गोम गाज, दळां आडा अच्छरां अच्छरां लागी दीठ। जाडा थंडां ऊपरै जोसेल आग जागी जठै, रोसेल गुराड़ां हाडां वागी खागां रीठ।—दुरगादत्त बारहठ

५ किसी रंग आदि से चिन्ह अंकित करना, धब्बा करना।

दागणहार, हारो (हारी), दागणियो—वि०।

दगवाड़णौ, दगवाड़बौ, दगवाणौ, दगवावौ, दगवावणौ, दगवावबौ, दगाड़णौ, दगाड़बौ, दगाणौ, दगावौ, दगावणौ, दगावबौ, दागाड़णौ, दागाड़बौ, दागाणौ, दागावौ, दागावणौ, दागावबौ—प्रे०रू०।

दागिओड़ौ, दागियोड़ौ, दाग्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दागीजणौ, दागीजबौ—कर्म वा०।

दंगणौ, दंगबौ, दगणौ, दगबौ—अक०रू० एवं रू०भे०।

दागभाव-सं०पु०—हाथी का एक रोग।

दागल-वि० [फ़ा० दाग+रा०प्र०ल] १ जिस पर दाग लगा हो, जिस पर धब्बा हो। उ०—केम कळंक लागै कुळ निकळंक, जालम तूझ तणा रव जेम। कंद वाळा नह हुआ समंद कण, हुआ नहीं दागल अंग हेम।—चत्रभुज सौदो

२ जिस पर सड़ने का चिन्ह हो, दागी. ३ चिन्हित किया हुआ (पशु)। उ०—अकबरियै इक बार, दागल की सारी दुनी। अण-दागल असवार, रहियो रांण प्रतापसी।—दुरसो आढ़ो

४ कलंकित, दोषयुक्त, लांछित। उ०—१ दागल नह हुआ 'सारंगदे' दूजा, रांणा तूझ तणी रजवाट। मैला नहीं हुआ मोताहळ, कंचन कदे न लागै काट।—चत्रभुज सौदो

उ०—२ सांगी सतहीणा है जतहीणा, मतहीणा मांगंदा है। पागल सिस पाया दागल दाया, भागल सिर भागंदा है।—ऊ.का.

५ सजा पाया हुआ, दंडित।

रू०भे०—दगैल, दागी।

दागियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दाह-संस्कार किया हुआ. २ दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ. ३ चिन्हित किया हुआ (पशु) ४ तोप-बंदूक आदि छोड़ा हुआ. ५ किसी रंग आदि से चिन्ह लगाया हुआ, धब्बा लगाया हुआ।

(स्त्री० दागियोड़ी)

दागी—देखो 'दागल' (रू.भे.)

दागीणौ-सं०पु० [फा० दाग+रा० प्र० ईणौ] १ चीज, पदार्थ, वस्तु, गहना, जेवर. २ आभूषण।

वि०—१ जिस पर दाग लगा हो, जिस पर धब्बा हो.

२ जिस पर सड़ने का चिन्ह हो, दागी. ३ चिन्हित किया हुआ (पशु) ४ कलंकित, दोषयुक्त, लांछित. ५ सजा पाया हुआ।

दाघ-सं०स्त्री० [सं० दाघः] १ गरमी, ताप. २ दाह, संताप।

उ०—बैरी कंटक नाग विस, बीछू कैंवच बाघ। यां सूं दूर रहंतड़ां, दूर रहै दुख दाघ।—बां.दा.

३ पीड़ा, क्लेश, दुःख। उ०—रूप सोभागइ आगळु, सुरकन्या कइ लीधउ रे। लीधउ नइ दीधउ दाघ, हीइ घणु ए।

—नळ-दवदंती रास

४ वैद्यक के अनुसार पित्त से प्रकुपित एक रोग विशेष जिस में शरीर में जलन मालूम होती है, कंठ सूकता है और प्यास लगती है (व.स.)

५ अंतिम संस्कार, दाह-क्रिया।

रू०भे०—दाघ, दाह।

दाघणौ, दाघबौ-क्रि०स० [सं० दग्ध] जलाना।

दाघवणौ, दाघवबौ—रू०भे०।

दाघवणौ, दाघवबौ—देखो 'दाघणौ, दाघबौ' (रू.भे.)

उ०—मुख मंगळ नाम उचार सदा, तन के अघ ओघन दाघव रे। हनमंत विभीखन भांन तनै, जिन कीन वडे जन लाघव रे।—र.ज.प्र.

दाघवियोड़ौ—देखो 'दाघियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दाघवियोड़ी)

दाघियोड़ौ-भू०का०कृ०—जलाया हुआ।

(स्त्री० दाघियोड़ी)

दाघौ—वि० [सं० दग्ध] जलाने वाला, भस्मीभूत करने वाला।

उ०—१ कीजे वारणै छिब कांम कौटिक दीन दुख दाघौ। साभाव सरण-सधार स्रीवर, राज रौ राघौ।—र.ज.प्र.

दाड़—१ देखो 'डाड' (रू.भे.) २ देखो 'दहाड़' (रू.भे.)

दाड़कली-१ देखो 'दाढ़ी' (अल्पा; रू.भे.) २ दाढ़ी के बाल।

दाड़म-सं०स्त्री० [सं० दाडिम] १ अनार (एक फल) (अ.मा.)

पर्या०—गदपाळ, पिगपुस्ट, सुकप्रिय, हालम-कर।

२ दाडिम वृक्ष।

रू०भे०—डाडिम, दाडू, दाड़िम, दाड़िमी, दाडिम, दाडिमी, दाडूं, दाडचा, दाडयूम, दाडेयू, दारिउं।

अल्पा०—दाड़मियौ।

दाड़मियौ—देखो 'दाड़म' (अल्पा., रू.भे.) उ०—दांतड़ला मूमल रा दाड़मियै रा बीज रे, कोई होठड़ला मूमल रा जांणै हिंगळू ढोळियो। हरियाळी ये मूमल हालै तौ ले चालूं मुरधर देस में।—लो.गी.

दाड़मी—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—छुटी बूंद आंसू आंण अछब, जुटी मांणंक दमंक जळा। लालबंद कसां नी तुटी लड़, कर छुटी दाड़मी कुळा।—कविराजा करणीदांन

दाड़व-सं०पु० (देश०) कासी से दो योजन पश्चिम में एक ग्राम जिस में कल्कि भगवान अधर्मी म्लेच्छों का नाश कर के शांतिपूर्वक निवास करेंगे। (भविष्य ब्रह्मखण्ड)

दाड़िम, दाड़िमी—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—१ असहां सुणत छाती एम जायै फाट दाड़िम जेम।—रा.रू.

उ०—२ दाड़िमी बीज विसतरिया, दीसै निउंछावरि नांखिया नग।

चरणे नूंनिन राग फळ चुंबित, मधु मुंचंति सींचंति मग ।—वेलि.

दांड़ो—संपु०—१ सूर्य ।

कहा०—दांड़ो बादळो ऊगा जे करण हूं अणछाना न है—सूर्य का उदय होना किसी से छिपा नहीं रहता है अर्थात् जो बात सहज ही सब के लिये स्पष्ट हो वह छिपाई नहीं जा सकती (भील)

२ देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—दटे गिरा न दांड़ा दूसह, धाड़ा धके धकेल । रजवाड़ा परदे रटक, पांव प्रवाड़ा पेल ।

—रेवतसिंह भाटी

दाछंट वि० (देश०) निर्भय, निःशंक ।

दाजणो, दाजबो—देखो 'दाझणो, दाझबो' (रू.भे.)

उ०—दई देतां डांमड़ा दीया का सासू हाथ दाजे, राळे वनी नांमड़ा पीया का माथे रेत ।—उदैभांण बारहठ

दाजियोड़ो—देखो 'दाझियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दाजियोड़ी)

दाझ, दाझण-संस्त्री० [सं० दह] १ जलन, दाह । उ०—आखे अेम 'ओपलो' आढ़ो, खूनी कासूं लाभ खटै । ताहरी रसण डसण ताखा री, मेळूं जद मो दाझ मिटै ।—ओपो आढ़ो

२ ईर्ष्या, डाह ।

दाझणो, दाझबो-क्रि०अ० [सं० दह] १ तप्त होना, जलना ।

उ०—१ बंदीवाळूं घणा सोदाता, दीठा पाडइ डाढ़ि। दीसि अगासइ तावडि दाझइ, रातइ वाइ ताढ़ि ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ भली थूं सांझ सुखां री देण, दाझतै दिनड़ै री ठाडोळ । नींद री नणदल सपनां सेज, परखती सरग परी री खोळ ।—सांझ

२ आंच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित व विकृत होना, झुलसना । उ०—प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि । हियड़ा भीतर प्रिय वसइ, दाझणती डरपाहि ।—ढो.मा.

मुहा०—दाझ्या माथै डांम—जले हुए को और जलाना, दुखी को अधिक दुखी करना, जले पर नमक छिड़कना ।

३ किसी पदार्थ का अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में हो जाना, जलना, भस्म होना, दग्ध होना । उ०—ए वि वर इंद्रि आपिया, प्रीति करी निस्चळ स्थापिया । पावक तेडच्यू आवि पास, दाझि नहीं तेणि तनु (ह) तास ।—नळाख्यांन

४ किसी पदार्थ का बहुत गर्मी या आंच के कारण रूप बदल देना, विकृत हो जाना । भाप या कोयले आदि के रूप में हो जाना । ज्यूं—पेड़ दाझणो, रोटी दाझणी, घी दाझणो ।

उ०—जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ वन खंड दाह । जिण रित माळवणी कहइ, कुंण परदेसां जाह ।—ढो.मा.

५ दुखी होना, संतप्त होना । उ०—१ दादू इस संसार सौं, निमख न कीजे नेह । जांमण मरण आवटणा, छिन छिन दाझै देह ।

—दादू वांणी

उ०—२ रहव गळां दळ रोळणा, वीर उभै वरियांम । 'किचनर' 'पाताल' रै करां, लंदन तणी लगांम । कावल साझी जिण करां, दाझी चीण दरद । 'पतो' धरा यूरोप री, माझी मेर मरद ।

—किसोरदांन बारहठ

उ०—३ प्रजळै उर पातिसाह, दाह ओरिस अति दाझै । मनै न हुकम अमीर, साह मनसूबा साझै ।—सू.प्र.

उ०—४ यहु संसार खार में दीसै, (तामें) दाझै जीव अपार । पीवत छकै थकै निज मारण, मैं ते मोह विकार ।—ह.पु.वा.

६ विरहानल में जलना, संतप्त होना । उ०—विरह-भुअंगमि हूं डसी, खिण खिण दाझइ देह । माहरइ माधव-कैरडी, आस अमी-रस अेह ।—मा.कां.प्र.

७ ईर्ष्या करना, कुढ़ना, जलना । उ०—समजावै सोही वैरी वोही, द्रोही हुय दाझंदा है । पिंड में नहि पांणी निज निरमांणी, सठ हांणी साझंदा है ।—ऊ.का.

दाझणहार, हारो (हारी), दाझणियो—वि० ।

दझळवाड़णो, दझळवाड़बो, दझळवाणो, दझळवाबो, दझळवावणो, दझळवावबो, दझवाड़णो, दझवाड़बो, दझवाणो, दझवाबो, दझवावणो, दझवावबो—प्रे०रू० ।

दझाड़णो, दझाड़बो, दझाणो, दझावो, दझाळणो, दझाळबो, दझावणो, दझावबो, दीझाळणो, दीझाळबो—क्रि०स० ।

दाझिओड़ो, दाझियोड़ो, दाझ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दाझीजणो, दाझीजबो—भाव वा० ।

दझणो, दझबो—रू०भे० ।

दाझियोड़ो—भू०का०कृ०—१ तप्त हुवा हुआ, जला हुआ. २ आंच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित व विकृत हुवा हुआ, झुलसा हुआ. ३ अग्नि के संयोग में आ कर लपट के रूप में हुवा हुआ, भस्म हुवा हुआ, जला हुआ. ४ आंच या तेज गर्मी के कारण रूप बदला हुआ, भाप या कोयले के रूप में हुवा हुआ. ५ संतप्त हुवा हुआ, दुखी । ६ विरहानल में जला हुआ, संतप्त. ७ ईर्ष्या किया हुआ, कुढ़ा हुआ, जला हुआ ।

(स्त्री० दाझियोड़ी)

दाट-संपु० [सं० दान्तिः]—१ बोतल इत्यादि का मुंह बन्द करने की वस्तु, कॉर्क, डाट. २ प्रतिबंध, रोक. ३ ।

उ०—नवरंग कटाच्छ रस रंग नूत, जंग जंग बाजिय जगत । ह्वै रमिय उरप तुरपंग हद, लाग दाट त्रेवट लगत ।—सू.प्र.

४ नाश, ध्वंस । उ०—१ पड़ झाट थाट छळराट पाट, दिल्लीस जळै दळ वळै दाट ।—रा.रू.

उ०—२ खग-झाट मुंह वह थाट-खेसण, वाट-दह अवियाट । भिड़ घाट घाय रिम-घड़ा भांजण, दुयण वाळण दाट ।—नैणसी

क्रि०प्र०—वाळणी ।

५ फटकार. ६ देखो 'डाट' (रू.भे.) उ०—उचार काट ग्रन्थ बाट वेद बाट में बहे, निराठ दाट घाट की नहीं सम्राट की सहे ।—ऊ.का.

दाटक-वि० (देश०) १ बड़ा, महान्, जबरदस्त ।
उ०—समोभ्रम 'आणंद' 'सूर' 'संग्रांम' । करै खग भाटक दाटक कांम ।—सू.प्र.
२ समर्थ । उ०—दाटक रांम आलाटक दंडण । हाटक कोट अघीस विहंडण ।—र.ज.प्र.
३ शक्तिशाली, जबरदस्त । उ०—१ रघुनाथ संत समाथ तारण, नाथ वोहीनांमी । दसमाथ भंज प्रचंड दाटक, भुजाडंड भांमी ।
—र.ज.प्र.
उ०—२ दाटक अनड दंड नह दीघौ, दोयण घड़ सिर दाव दियौ । मेळ न कियौ जाय बिच महलां, केळपुरै खगमेळ कियौ ।—दुरसौ आढ़ौ
४ भयंकर । उ०—करदे वाळ कळाप जद, नांनी यम जांणियौ । सूतौ दाटक साप, परत जगायौ पापणी ।—पा.प्र.
५ दमन करने वाला । उ०—थाहण खळ दळां विरद थाटक रा, दाटक रा क्रपणां दहलोत । करै उछट क्रीत खाटक रा, हाटक रा गहणा गहलोत ।—लिछमणसिंह सीसोदिया री गीत
रू०भे०—दाटी, दाटीक, दाठीक ।
दाटणौ-वि० [सं० दम्] १ दमन करने वाला, दबाने वाला, नाश करने वाला । उ०—खत्री वट खागिति आगि खंगार जिसा व्रिद खाटणौ । दळांपति आरंभ रांम दुगांम खळां दळ दाटणौ ।—ल.पिं.
२ काटने वाला, संहार करने वाला. ३ वश में करने वाला ।
४ अधिकार करने वाला, कब्जा करने वाला. ५ गाड़ने वाला, दबाने वाला ।
दाटणौ, दाटबौ-क्रि०स० [सं० दम्] १ दमन करना, दबाना ।
उ०—तेण संत तराया, गाथ बेदस गाया । लेख हाथ लगाया, दळां आसंख दाट । तार बांम रखीते, सू चंदर सखीते, पाळ दीन पखीते, कळेसां सत्र काट ।—र.ज.प्र.
२ कब्जा करना, अधिकार करना । उ०—१ उतन विलायत किलकता कांनपुर आविया, ममोई लंक मदरास मेळा । यलम धुर वहण अंगरेज दाटण यळा, भरतपुर ऊपरा हुवा भेळा ।
—कविराजा बांकीदास
उ०—२ पढ़ी बीर पाटी पाव आरांण न लागै पाछा, ताखा लाटी वठाई ऊगती मूछां तांण । बाप खाटी मेदनी, उजाळा रूकां पांण वापो, राज दाटी भुजां रै भरोसै भाला रांण ।
—गोपाळदांन दघवाड़ियौ
३ वश में करना, काबू में रखना, दबाना । उ०—घर-घर ओघट घाट, टाट निस दीह कुटावै । दिल नहिं लेवै दाट, लाट गंज हाट लुटावै ।—ऊ.का.
४ गाड़ना, दबाना, छिपाना । उ०—यळ ऊपर लोभी अपत, नह राखै निज नांम । यळ भीतर खाटै अधम, दाटै राखै दांम ।—बां.दा.
उ०—२ वांटी वीकाणां; 'रासै' मांया राठवड़ । जुग सारौ जांणै, महिम्र न दाटी मोतिया ।—रायसिंह सांदू
५ देखो 'डाटणौ' डाटबौ' (रू.भे.)
दाटणहार, हारौ (हारी), दाटणियौ—वि० ।
दटवाड़णौ, दटवाड़बौ, दटवाणौ, दटवाबौ, दटवावणौ, दटवावबौ, दटाड़णौ, दटाड़बौ, दटाणौ, दटाबौ, दटावणौ, दटावबौ—प्रे०रू० ।
दाटिओड़ौ, दाटियोड़ौ, दाटचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
दाटीजणौ, दाटीजबौ—कर्म वा० ।
दाटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दमन किया हुआ, दबाया हुआ. २ कब्जा किया हुआ, अधिकार किया हुआ. ३ वश में किया हुआ, काबू में रखा हुआ, दबाया हुआ. ४ गाड़ा हुआ, दबाया हुआ, छिपाया हुआ.
५ देखो 'डाटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दाटियोड़ी)
दाटी—देखो 'दाटक' (रू.भे.)
दाटीक—देखो 'दाटक' (रू.भे.) उ०—हाकियां सूं पादरौ नह हालै, वांकम नीर वाहण त्रवळ । मंत्र जंत्र ओखद नह मूळी, खादा जण दाटीक खळ ।—नींबाज ठाकुर जगरांमसिंह री गीत
दाटौ—देखो 'डाटौ' (रू.भे.) उ०—कर दिल काठौ दियौ न दाटौ, मन माठौ मुरझाई नै । उर सूं काठौ आगै पड़ियौ, औ भाटौ जद आई नै ।
—ऊ.का.
दाठीक, दाठीकर-वि० [सं० दृष्टिकर ?] १ धैर्यवान्, बुद्धिमान ।
उ०—राव रायसिंघ री वैर, राव उदैसिंघ री मां चांपांबाई, राव गांगा री बेटी, सु निपट दाठीक आदमी ।—नैणसी
२ गंभीर. ३ देखो 'दाटक' (रू.भे.)
दाड—देखो 'डाड' (रू.भे.)
दाडाळ—१ देखो 'डाढ़ाळ' (मह., रू.भे.) उ०—घमक नाळ घर घसकि, थाट परवत थरसल्ले । कमळ सेस भिड़ कमठ, दाढ़ दाडाळ दहल्ले ।
—सू.प्र.
२ देखो 'दाढ़ाळ' (रू.भे.) ३ देखो 'डाढ़ाळी' (मह., रू.भे.)
दाडिम—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—दांति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दधूण । देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण ।
—मा.कां.प्र.
दाडिम कुसुम-वि० [सं०] लाल* (डिं.को.)
दाडिमसार-सं०पु०—वस्त्र विशेष (व.स.)
दाडिमहूलौ-सं०पु०—एक प्रकार का कीमती वस्त्र । उ०—भइरव सांनवाफ पहिरणइ, दाडिमहूला ते ऊढ़णइ । वंघालग पहिरइं वहू-मूलि, अंबोडे चांपा नां फूल ।—प्राचीन फागु संग्रह
दाडिमास्टक-सं०पु० [सं० दाडिमाष्टक] वैद्यक में अनार के छिलके आदि से तैयार किया जाने वाला चूर्ण ।
दाडिमी—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—अघर प्रवळ सा जांणजै, दांत दाडिमी बीज । रसना नागर पांन सी, चूंपां चमकै वीज ।
—कुंवरसी सांखला री वात
दाड़ूं, दाडचा, दाडयूम, दाडयूं—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) (अमरत)

नग्गे लुंचित सग फळ चुंवित, मधु मुंचंति सीचंति मग ।—वेलि.

दा'ड़ो–सं०पु०—१ सूर्य ।

कहा०—दा'ड़ो बादळी ऊगा जे कण हूं अणचाना न है—सूर्य का उदय होना किसी से छिपा नहीं रहता है अर्थात् जो बात सहज ही सब के लिये स्पष्ट हो वह छिपाई नहीं जा सकती (भील)

२ देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—दटै गिण न दा'ड़ा दुसह, घाड़ा सकै घकेल । रजवाड़ा परदै रटक, पोत प्रवाड़ा पेल ।

—रेवतसिंह भाटी

दाछंट वि० (देश०) निर्भय, निःशंक ।

दाजणो, दाजवो—देखो 'दाझणो, दाझवो' (रू.भे.)

उ०—दई देतां डांमड़ा दीया का सासू हाथ दाजै, राळै वनी नांमड़ा पीया का माथै रेत ।—उदैभांण बारहठ

दाजियोड़ो—देखो 'दाझियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दाजियोड़ी)

दाझ, दाझण–सं०स्त्री० [सं० दह] १ जलन, दाह । उ०—आखे अेम 'ओपलो' आढ़ो, खूनी कासूं लाभ खटै । ताहरी रसण डसण ताखा री, मेळूं जद मो दाझ मिटै ।—ओपो आढ़ो

२ ईर्ष्या, डाह ।

दाझणो, दाझबो–क्रि०अ० [सं० दह] १ तप्त होना, जलना ।

उ०—१ बंदीवाळूं घणा सीदाता, दीठा पाडइ डाढ़ि । दीसि अगासइ तावडि दाझइ, रातइ वाइ ताढ़ि ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ भली थूं सांझ सुखां री दैण, दाझतै दिनड़ै री ठाडोळ । नींद री नणदल सपनां सेज, परणती सरग परी री खोळ ।—सांझ

२ आंच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित व विकृत होना, झुलसना । उ०—प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि । हियड़ा भीतर प्रिय वसइ, दाझणती डरपाहि ।—ढो.मा.

मुहा०—दाझ्या माथै डांम—जले हुए को और जलाना, दुखी को अधिक दुखी करना, जले पर नमक छिड़कना ।

३ किसी पदार्थ का अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में हो जाना, जलना, भस्म होना, दग्ध होना । उ०—ए वि वर इंद्रि आपिया, प्रीति करी निस्चळ स्थापिया । पावक तेडयु आवि पास, दाझि नहीं तेणि तनु (हु) तास ।—नळाख्यांन

४ किसी पदार्थ का बहुत गर्मी या आंच के कारण रूप बदल देना, विकृत हो जाना । भाप या कोयले आदि के रूप में हो जाना । ज्यूं—पेड़ दाझणो, रोटी दाझणो, घी दाझणो ।

उ०—जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ वन खंड दाह । जिण रित माळवणी कहइ, कुंण परदेसां जाह ।—ढो.मा.

५ दुखी होना, संतप्त होना । उ०—१ दादू इस संसार सौं, निमख न कीजै नेह । जांमण मरण आवटणा, छिन छिन दाझै देह ।

—दादू वांणी

उ०—२ रहच खळां दळ रोळणा, वीर उभै वरियांम । 'किचनर' 'पाताल' रै करां, लंदन तणी लगांम । कावल साझी जिण करां, दाझी चीण दरद । 'पतो' धरा यूरोप री, माझी मेर मरद ।

—किसोरदांन बारहठ

उ०—३ प्रजळै उर पातिसाह, दाह ओरिस अति दाझै । मनै न हुकम अमीर, साह मनसूबा साझै ।—सू.प्र.

उ०—४ यहु संसार खार में दीसै, (तांमै) दाझै जीव अपार । पीवत छकै थकै निज मारग, मैं ते मोह विकार ।—ह.पु.वा.

६ विरहानल में जलना, संतप्त होना । उ०—विरह-भुअंगमि हूं डसी, खिण खिण दाझइ देह । माहरइ माधव-केरडी, आस अमी-रस अेह ।—मा.कां.प्र.

७ ईर्ष्या करना, कुढ़ना, जलना । उ०—समजावै सोही वैरी वोही, द्रोही हुय दाझंदा है । पिंड में नहि पांणी निज निरमांणी, सठ हांणी साझंदा है ।—ऊ.का.

दाझणहार, हारौ (हारी), दाझणियो—वि० ।

दझळवाड़णो, दझळवाड़वो, दझळवाणो, दझळवावो, दझळवावणो, दझळवाववो, दझवाड़णो, दझवाड़वो, दझवाणो, दझवावो, दझवावणो, दझवाववो—प्रे०रू० ।

दझाड़णो, दझाड़वो, दझाणो, दझावो, दझाळणो, दझाळवो, दझावणो, दझाववो, दोझाळणो, दोझाळवो—क्रि०स० ।

दाझिओड़ो, दाझियोड़ो, दाझ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दाझीजणो, दाझीजवो—भाव वा० ।

दझणो, दझवो—रू०भे० ।

दाझियोड़ो–भू०का०कृ०—१ तप्त हुवा हुआ, जला हुआ. २ आंच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित व विकृत हुवा हुआ, झुलसा हुआ. ३ अग्नि के संयोग में आ कर लपट के रूप में हुवा हुआ, भस्म हुवा हुआ, जला हुआ. ४ आंच या तेज गर्मी के कारण रूप बदला हुआ, भाप या कोयले के रूप में हुवा हुआ. ५ संतप्त हुवा हुआ, दुखी । ६ विरहानल में जला हुआ, संतप्त. ७ ईर्ष्या किया हुआ, कुढ़ा हुआ, जला हुआ ।

(स्त्री० दाझियोड़ी)

दाट–सं०पु० [सं० दान्तिः]—१ बोतल इत्यादि का मुंह बन्द करने की वस्तु, कॉर्क, डाट. २ प्रतिबंध, रोक. ३ ।

उ०—नवरंग कटाच्छ रस रंग नूत, जंग जंग वाजिय जगत । छूटै रमिय उरप तुरपंग हद, लाग दाट अेवट लगत ।—सू.प्र.

४ नाश, ध्वंस । उ०—१ पड़ झाट थाट छळराट पाट, दिल्लीस जळै दळ वळै दाट ।—रा.रू.

उ०—२ खग-झाट मुंह वह थाट-खेमण, दाट-दह अवियाट । भिड़ घाट घाय रिम-घड़ा भांजण, दुयण वाळण दाट ।—नैणसी

क्रि०प्र०—वाळणी ।

५ फटकार. ६ देखो 'डाट' (रू.भे.) उ०—उचार काट अन्य वाट वेद वाट में वहे, निराट दाट घाट की नहीं सम्राट की सहे ।—ऊ.का.

दाटक-वि० (देश०) १ बड़ा, महान्, जबरदस्त ।
उ०—समोभ्रम 'आणंद' 'सूर' 'संग्रांम'। करै खग झाटक दाटक कांम।—सू.प्र.
२ समर्थ। उ०—दाटक रांम आलाटक दंडण। हाटक कोट अघीस विहंडण।—र.ज.प्र.
३ शक्तिशाली, जबरदस्त। उ०—१ रघुनाथ संत समाथ तारण, नाथ वोहीनांमी। दसमाथ भंज प्रचंड दाटक, भुजाडंड भांमी।
—र.ज.प्र.
उ०—२ दाटक अनड दंड नह दीधौ, दोयण घड़ सिर दाव दियौ। मेळ न कियौ जाय विच महलां, केळपुरै खगमेळ कियौ।—दुरसौ आढ़ौ
४ भयंकर। उ०—करदे वाळ कळाप जद, नांनी यम जांणियौ। सूतौ दाटक साप, परत जगायौ पापणी।—पा.प्र.
५ दमन करने वाला। उ०—थाहण खळ दळां विरद थाटक रा, दाटक रा क्रपणां दहलोत। करै उछट क्रीत खाटक रा, हाटक रा गहणा गहलोत।—लिछमणसिंह सीसोदिया री गीत
रू०भे०—दाटी, दाटीक, दाठीक।

दाटणौ-वि० [सं० दम्] १ दमन करने वाला, दबाने वाला, नाश करने वाला। उ०—खत्री वट खागिति आगि खंगार जिसा व्रिद खाटणौ। दळांपति आरंभ रांम दुगांम खळां दळ दाटणौ।—ल.पिं.
२ काटने वाला, संहार करने वाला. ३ वश में करने वाला।
४ अधिकार करने वाला, कब्जा करने वाला. ५ गाड़ने वाला, दबाने वाला।

दाटणौ, दाटबौ-क्रि०स० [सं० दम्] १ दमन करना, दबाना।
उ०—तेण संत तराया, गाथ वेदस गाया। लेख हाथ लगाया, दळां आसंख दाट। तार बांम रखीते, सू चंदर सखीते, पाळ दीन पखीते, कळ सां सत्र काट।—र.ज.प्र.
२ कब्जा करना, अधिकार करना। उ०—१ उतन विलायत किलकता कांनपुर आविया, ममोई लंक मदरास मेळा। यलम धुर वहण अंगरेज दाटण यळा, भरतपुर ऊपरा हुवा भेळा।
—कविराजा बांकीदास
उ०—२ पढ़ी वीर पाटी पाव आरांण न आगै पाछा, ताखा लाटी वठाई ऊगती मूछां तांण। बाप खाटी मेदनी, उजाळा रूकां पांण वापो, राज दाटी भुजां रै भरोसै झाला रांण।
—गोपाळदांन दघवाड़ियौ
३ वश में करना, काबू में रखना, दबाना। उ०—घर-घर ओघट घाट, टाट निस दीह कुटावै। दिल नहि लेवै दाट, लाट गंज हाट लुटावै।—ऊ.का.
४ गाड़ना, दबाना, छिपाना। उ०—यळ ऊपर लोभी अपत, नह राखै निज नांम। यळ भीतर खाटै अघम, दाटै राखै दांम।—बां.दा.
उ०—२ वांटी वीकाणै; 'रासै' माया राठवड़। जुग सारौ जांणै, महिम न दाटी मोतिया।—रायसिंह सांदू
५ देखो 'डाटणौ' डाटबौ' (रू.भे.)
दाटणहार, हारौ (हारी), दाटणियौ—वि०।
दटवाड़णौ, दटवाड़बौ, दटवाणौ, दटवाबौ, दटवावणौ, दटवावबौ, दटाड़णौ, दटाड़बौ, दटाणौ, दटाबौ, दटावणौ, दटावबौ—प्रे०रू०।
दाटिओड़ौ, दाटियोड़ौ, दाट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दाटीजणौ, दाटीजबौ—कर्म वा०।

दाटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दमन किया हुआ, दबाया हुआ. २ कब्जा किया हुआ, अधिकार किया हुआ. ३ वश में किया हुआ, काबू में रखा हुआ, दबाया हुआ. ४ गाड़ा हुआ, दबाया हुआ, छिपाया हुआ.
५ देखो 'डाटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डाटियोड़ी)

दाटी—देखो 'दाटक' (रू.भे.)

दाटीक—देखो 'दाटक' (रू.भे.) उ०—हाकियां सूं पादरौ नह हालै, वांकम नीर वाहण त्रवळ। मंत्र जंत्र ओखद नह मूळी, खादा जण दाटीक खळ।—नींबाज ठाकुर जगरांमसिंह री गीत

दाटौ—देखो 'डाटौ' (रू.भे.) उ०—कर दिल काठौ दियौ न दाटौ, मन माठौ मुरझाई नै। उर सूं काठौ आगै पड़ियौ, औ भाटौ जद आई नै।
—ऊ.का.

दाठीक, दाठीकर-वि० [सं० दृष्टिकर ?] १ धैर्यवान्, बुद्धिमान।
उ०—राव रायसिंघ री वैर, राव उदैसिंघ री मां चांपांबाई, राव गांगा री वेटी, सु निपट दाठीक आदमी।—नैणसी
२ गंभीर. ३ देखो 'दाटक' (रू.भे.)

दाड—देखो 'डाड' (रू.भे.)

दाडाळ—१ देखो 'डाढ़ाळ' (मह., रू.भे.) उ०—धमक नाळ घर धसकि, थाट परवत थरसल्ले। कमळ सेस भिड़ कमठ, दाढ़ दाडाळ दहल्ले।
—सू.प्र.
२ देखो 'दाढ़ाळ' (रू.भे.) ३ देखो 'डाढ़ाळी' (मह., रू.भे.)

दाडिम—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—दांति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दघूण। देवदार दीसइ भला. दिसि दिसि दीपइ दूण।
—मा.कां.प्र.

दाडिम कुसुम-वि० [सं०] लाल* (डिं.को.)

दाडिमसार-सं०पु०—वस्त्र विशेष (व.स.)

दाडिमहूलौ-सं०पु०—एक प्रकार का कीमती वस्त्र। उ०—भइरव सांनवाफ पहिरणइ, दाडिमहूला ते ऊढ़णइ। वंघालग पहिरइं वहू-मूलि, अंबोडे चांपा नां फूल।—प्राचीन फागु संग्रह

दाडिमास्टक-सं०पु० [सं० दाडिमाष्टक] वैद्यक में अनार के छिलके आदि से तैयार किया जाने वाला चूर्ण।

दाडिमी—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—अघर प्रवळ सा जांणजै, दांत दाडिमी बीज। रसना नागर पांन सी, चूंपां चमकै बीज।
—कुंवरसी सांखला री वात

दाडूं, दाडचा, दाडच़ूम, दाडच़ूं—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) (अमरत)

दाढ़—१ देखो 'डाड' (रू.भे.) उ०—१ प्रयम्मो जाती रेस पायाळ, दाढ़ां विच राखी दीनदयाळ। राखी घर बार किता तैं रांम, सझे हिरणाख विखै संग्रांम।—ह.र.

उ०—२ धमक नाळ धर धसकि, थाट परवत थरसल्ले। कमळ सेस भिड़ कमठ, दाढ़ दाढ़ाळ दहल्ले।—सू.प्र.

२ देखो 'डाढी' (रू.भे.) उ०—दाढ़ गरद्दां भारिया, अंग जरद्दां दूण। रूप मरद्दां मीर सब, लंक करद्दां तूंण।—रा.रू.

दाढ़णो, दाढ़वो—क्रि०स० [सं० दंशन] १ दांतों से चबाना, कुचलना (पोकरण)

२ देखो 'डाडणो, डाडवो' (रू.भे.)

दाढ़ाळ—१ देखो 'डाढ़ाळी' (मह., रू.भे.) २ देखो 'डाढ़ाळो' (रू.भे.) (ना. डि.को., ह.नां., अ.मा.)

उ०—१ वेढ़ नवीठा वज्जिया, दोय पोहर दाढ़ाळ। 'भांण' भले रिण भांजिया, चोडै चांमरयाळ।—रा.रू.

उ०—२ दंतकुळी अंगुळी मत्य पग हत्थ निराळा। अंत तंत्र वित्यरी हुंत दाढ़ाळ हठाळा।—रा.रू.

उ०—३ धमक नाळ धर धसकि, थाट परवत थरसल्ले। कमळ सेस भिड़ कमठ, दाढ़ दाढ़ाळ दहल्ले।—सू.प्र.

दाढ़ाळी—देखो 'डाढ़ाळी' (रू.भे.) उ०—सेखारात्र नूं मुळतांण सपाहां, जड़ियो सांकळ जाळी। पाछो जको आंणियो पूंगळ, देवी थै दाढ़ाळी। —बां.दा.

दाढ़ाळो—देखो 'डाढ़ाळो' (रू.भे.) उ०—१ हेक पराया जव चरो, हालो ऊगां सूर। दाढ़ाळा भूंडण भणैं, भागां भाखर दूर।—हा.झा.

उ०—२ पागाळा खेड़े पमंग, दाढ़ाळा जमदूत। किम न्हांसूं वांणैं अगे, रांणां हूं रजपूत।—पा.प्र.

दाढ़ी—देखो 'डाडी' (रू.भे.) उ०—१ दखै नांम अल्लाह दे हाथ दाढ़ी। चवै रांम मूंछां वळै भ्रूंह चाढ़ी।—सू.प्र.

उ०—२ तिण ऊपरि रांमसिंघजी विरागिया। वाढ़ी न सुवराई। कपड़ा न धोवाई। वागो न पहिरै।—द.वि.

दाढेची—सं०स्त्री०—जिस के दाढ़ी हो, दाढ़ी वाली, देवी, दुर्गा।

उ०—माढ़ेची सौंचै महिप. पाढ़ेची खळ पंथ। काढ़ेची दुख कविजणां, दाढेची रिम दंत।—वालावख्स बारहठ गजूकी

दात—सं०पु० [सं० दत्त] १ दहेज। उ०—१ पग पग बावल चूंरी गुदायी, दीनी दोवड़ दात। ओ ल्यो भावज घर आपणूं, मैं तो जावूं पियाजी रै देस।—लो.गी.

उ०—२ वांणी सगळी वस्तु संभाळ एकट्ठी कर सारै साथ नूं देखाय पछै भरमल री मां नूं बुलाय दिखाइया। रूपै री दात, वेस पांच सो, सो वेस तो भरमल नूं वीजा सासू सोकां वास्तै लोगां नूं गांठ बांधी। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ पुष्य नक्षत्र का एक नाम।

सं०स्त्री० [सं० दात्र] ३ फसल काटने का औजार, हंसिया। [सं० दंत या दात्र] ४ सूअर के निचले जबड़े का बाहर निकला हुआ दांत। उ०—केहर रै हाथळ करी, कीधी दात वराह। सूर काज कीधो सुजड़, विध करतापण वाह।—बां.दा.

अल्पा०—दंतली, दंतलू, दांतली, दातड़ी, दातरड़ी, दातरली, दातरी, दातली, दाती।

मह०—दातर, दातल।

वि०—देने वाला। उ०—कुवजा नारद विदर री, विवरां संजुत वात। हरि रा दासां ज्यूं हुअे, दासां नूं सुख दात।—बां.दा.

दातड़ियाळ—देखो 'दाअड़ियाळ' (रू भे.) (ह.नां., अ.मा.)

दातड़ी—सं०स्त्री०—१ देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—इण कवळै (वाराह) तूंड रै जोर हाथी पाड़िया—फेट दे घोड़ा सवार पाड़िया डाढ़ां (दातड़ी) सूं सूरवीरां नै ओझाड़िया। —वी.स.टी.

२ देखो 'दातो' (अल्पा. रू.भे.)

दातड़ो—देखो 'दातो' (अल्पा, रू.भे.)

दातण—देखो 'दांतण' (रू.भे.) उ०—१ परि अेणि प्रहि प्रगडो, दातण संव्या कीध। अस्व सकळ सिंगार-सिउं, पात्र विधोगति दीध। —मा.कां.प्र.

उ०—२ भूप-तणउ भय लेखवी, मांणस आव्यां आडि। डसण डसी अळगां करयां, जांणे दातण फाडि।—मा.कां.प्र.

दात-दायजो—देखो 'दत-दायजो' (रू.भे.) उ०—भलो सिरदार, मांटी पणै री आंक पछै घणो दात-दायजो देय जांन विदा कीन्ही। —ठाकुरसी जैतसियोत री वारता

दातर—१ देखो 'दातो' (मह., रू.भे.) उ०—घाड़ैती गांव भांग रह्या है नै थे बाजरी में लुक रह्या हो। फिट रे नादारां थांनै। राजपूतां री आंख्यां में लाल डोरा तणग्या अर मूंछां रा बाळ ऊभा व्हैग्या। उणी वखत हाथ रा दातर फैंक नै वै गांव कांनी रवांनै व्हैग्या। —रातवासो

२ देखो 'दात' (४) (मह, रू.भे.)

दातरड़ी—१ देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.)

दातरड़ो—देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.)

दातरली—सं०स्त्री०—१ देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.)

दातरलो, दातरियो—देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.)

दातरी—सं०स्त्री०—१ पक्षी विशेष.

२ देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.) ३ देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.)

दातरो—देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.)

दातल—१ देखो 'दातो' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'दात' (४) (मह., रू.भे.)

दातली—सं०स्त्री०—१ देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.) उ०—फौजां दळ नै फेर नै, जीत'र ऊभो जंग। चपला वरणी दातली, भरी कसूंबल रंग।
—डाढाळा सूर री वात

दातलौ—देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)

दातव—देखो 'दत्तव, दत्तव' (रू.भे.) उ०—पात सुजस अखियात पयंपै, दातव असमर वात दुवै। जगरांम तुहाळै जोड़ै, हुवौ न कोई और हुवै।—र.रू.

दाता, दातार—सं०पु० [सं०] १ वह जो दान दे, दानशील (अ.मा.)
उ०—१ दाता दै वित दांन, मोज मांणै मुरसंडा। लाखां ले धन लूट, पूतळी पूजक पंडा।—ऊ.का.
उ०—२ अजे घणी ऊजेण, भणजै वातां भोज री। जग में दाता जेण, मरै न कीरत मोतिया।—रायसिंह सांदू
उ०—३ जग दातार जनारदन, गिरधारी गुण गेह। ब्रजपत रोटी बांटणा, मोटी नींद म देह।—बां.दा.
पर्या०—अपल, उछरजण, उदभंट, उदात, उदार, उदीरण, त्यागी, दांनअपन, दांनेसरी, द्रबउभेल, निरवपण, प्रतपायण, बगसण, मनऊच, मनमोट, महातमा, महामन, महेछू, मोटमन, मोजी, विलसण, विहायत, विसरजण, विसरायण, व्रवण, समप्पण, सुदता, सुदात।
२ देने वाला।
यौ०—रिण-दाता।
३ कुटुम्ब का वृद्ध पुरुष. ४ छप्पय छंद का ३४ वां भेद जिस में ३७ गुरु, ७८ लघु से कुल ११५ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं (र.ज.प्र.)
५ शिव, महादेव।
रू०भे०—दता, दत्ता, दत्तौ, दातारू।

दातारगी, दातारी—सं०स्त्री० [सं० दातृ+रा०प्र०गी] दान देने का भाव, दातार का काम, दानशीलता।
उ०—१ तद पूलै नूं कयौ, 'चोधरी, इसी दातारगी कर सू पांडू सूं नांम वधतौ हुवै।—द.दा.
उ०—२ औगुणां नूं ढांकै इसौ कांई छै। तरै कही—दातारी सांच जांणौ दातारी कीयां बिगर वडाई न होय।—नी प्र.
क्रि०प्र०—करणी, होणी।

दातारू—देखो 'दातार' (रू.भे.) उ०—कातर क्रिपन की आसा तैं लाजै। महासूर दातारू कै दरबार राजै।—रा.रू.

दातावरी—वि० स्त्री० [सं० दात्री] देने वाली। उ०—देवांण विद्या दत्तावरी, देवी घन दातावरी। चहुवांण वंस रूपक चवां, सारसत्त भुवनेस्वरी।—नैणसी
सं०स्त्री०—दानशीलता।
रू०भे०—दतावरी, दत्तावरी।

दाति—सं०पु०—दान। उ०—दुरजन नी प्रीति, चाउडां नी दाति, गोदंडा तणी वाट, स्त्रीजन तणउ स्नेह, जातउ जातउ लाभइ छेह।
—व.स.

दातिव—सं०पु० [सं० दातव्य] दान, पुण्य।

दाती—सं०स्त्री०—१ देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.)
३ देखो 'दाति' (रू.भे.)

दातुण—देखो 'दांतण' (रू.भे.) उ०—प्रभात ही ऊठ दिसा जाय दातुण कर स्नांन किया।—साह रांमदत्त री वारता

दातौ—सं०पु० [सं० दात्रं] लोहे का बना अर्द्धचन्द्राकार धारदार औज़ार जिस से खेत की फ़सल, तरकारी आदि काटी जाती है, हँसिया।
रू०भे०—दांतौ, दात्र।
अल्पा०—दंतीलौ, दंतुली, दंतुलौ, दांतली, दांतलौ, दांती, दांतेलौ, दातड़ी, दातड़ौ, दातरड़ी, दातरड़ौ, दातरली, दातरलौ, दातरियौ, दातरी, दातरौ, दातली, दातलौ, दाती।
मह०—दात, दातर, दातल।

दात्र—सं०स्त्री० [सं० दात] १ देने वाली.
२ देखो 'दातौ' (रू.भे.)

दात्रड़ियाळ, दात्रिड़िआळ, दात्रीड़ीयाळ, दात्रीयाळ—सं०पु० [सं० दात्र-पाल या दात्रबल] सूअर, वराह। उ०—१ चेवह वांटी चीभड़ा, एकल दात्रड़ियाळ। कांनां सुण 'बूढ़ै' कमंद, चाटकाय चंचाळ।
—पा.प्र.
उ०—२ दात्रिड़िआळ वडौ तूं डारण। तूं एकल मल भूत अथाह।
—पी.ग्रं.
उ०—३ अनमी कंद फौदां आफळतौ, कावळतौ दळतौ कुरम। यळ लड़ियाळ 'मांन' अपणाई, जै खळ दात्रीड़ीयाळ जम।
—चांवंडदांन दधवाड़ियौ
रू०भे०—दातड़ियाळ।
२ वराहावतार।

दाद—सं०स्त्री० [सं० दद्रु] १ एक चर्म रोग जिस में शरीर पर उभरे हुए (बारीक फुंसियों के छत्ते के रूप में) चकत्ते पड़ जाते हैं जिस से खुजली हो जाती है।
सं०स्त्री० [फ़ा०] २ धन्यवाद, प्रशंसा, वाहवाह।
उ०—बीजा लोग सो मारवाड़ नै घणी ही ऊजळी कीवी। सारा ही हिंदुआं राजा घणी स्यावास दाद दीवी।—अमरसिंह राठौड़ री वात
उ०—२ तिकौ वारलां नूं तौ कठा तक दीजै दाद, पण मांहिलां री भी रजपूती हद सूं ज्याद।—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री वात
क्रि०प्र०—दैणी।
३ न्याय, इन्साफ। उ०—केई अळू ज्या असुभ में, केइयक सुभ वंदाय। सुभ कर के असुभ कहै, वह दरगा दाद न पाय।
—स्री हरिरांमजी महाराज
यौ०—दाद-फरियाद।
रू०भे०—दादि, दाध।

दादद्वारौ—देखो 'दादूद्वारौ' (रू.भे.)

दादनी-अव्य० [फ़ा० दादन=देना] देने योग्य। उ०—अरवाहे सिजदा कुनंद, वजूद रा चे कार। दादू नूर दादनी आसिकां दीदार।
—दादू वांणी

दादर-सं०पु०—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।
२ देखो 'दादुर' (रू.भे.) उ०—१ सर सरिता जळ सूखिया, मरिया दादर जीव। तर झड़िया लग्गी तपत, अब घर आवो पीव।
—अज्ञात
उ०—२ तर घर सूका नदी तड़ागा, लाज धरम विद्या मग लागा। आरज हंसा उडगा आगा, कपटी दादर रहगा कागा।—ऊ.का.

दादरियो—देखो 'दादुर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—डूंगरिया हरिया हुवा भरिया ताळ तळायो। दादरिया करिया रवदीरघ, भीभर रयी भरणायो।—अज्ञात

दादरो-सं०पु०—१ दो अर्द्ध मात्राओं का ताल जिस में केवल एक आघात होता है. २ एक प्रकार का चलता गाना।
३ देखो 'दादुर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ वीजळियां अंबर चढ़ी, मही ज वूठा मेह। बोलण लागा दादरा, सालण लागो सनेह।
—अज्ञात

दादस—देखो 'दादी सासू' (रू.भे.) (शेखावाटी)

दादसरो—देखो 'दादीसुसरो' (रू.भे.) (शेखावाटी)

दादांण, दादांणो-सं०पु० (देश०) १ दादे का घर अथवा गांव।
उ०—जोगी नांनांणो दादाणो जोड़ो। ताजाकुळ दोनूं रोटी रो तोडो।
—ऊ.का.
२ पिता का ननिहाल।

दादाई-वि०—१ पितामह के वंश का. २ उद्दंडता।

दादागुर, दादागुरु, दादागुरू-सं०पु०—गुरु का गुरु। उ०—जिनदत्त सूरि रो पोतो चेलो जिनकुसळ सूरि। दादागुरू पोतो चेलो दोनूं दादाजी कहावै।—वां.दा.ख्यात

दादाभाई-सं०पु०—बड़ा भाई।

दादारंग-वि० (देश०) पागल। उ०—चपेट चंदरदास री, चींटा चट चोरंग। कटकांपत दादो किया, देखो दादारंग।—रेवतसिंह भाटी

दादि—देखो 'दाद' (रू.भे.) उ०—१ पितामह पाय लगै सप्रवंति। दिवी तदि दादि घणी 'दळपत्ति'।—सू.प्र.
उ०—२ जैपुर आंगि सेवै कायदाई वात कीनी। जैपुर भूप 'जैसे' तीन वारी दादि दीनी।—शि.व.

दादी-सं०स्त्री० (देश०) पिता की माता।

दादीसासू-सं०स्त्री० [रा० दादी+सं० श्वश्रू] ददिया श्वसुर की स्त्री, सास की सास, ददिया सास। उ०—सासू दादी सासुआं, राजी सयल रहंत। माजी नूं मीरा कहै, मोटा संत महंत।—वां.दा.
रू०भे०—दादस।

दादीसुसरो-सं०पु० [रा० दादी+सं० श्वसुर] (स्त्री० दादी-सासू) श्वसुर का पिता, ददिया ससुर।
रू०भे०—दादसरो।

दादुर-सं०पु० [सं० दर्दुरः] (स्त्री० दादुरी) मेंढ़क (डि.को.)।
उ०—१ सुर दादुर पिक सोर, सबद म्रिदु मोर सुहावै। घण सांवण घरहरै, सिखर दांमण दरसावै।—रा.रू.
उ०—२ हरै लीनो हियो तनां हरिआळिआं, सोर कर सरै दादुर सुहाया। गाज ऊंडो करै मेघ आया गयण, नागरी कांनजी घरै नाया।
—बां दा.
उ०—३ वापीऊडु वालइ होऊं, मोर चिणइ मोरं मास। जिम जिम वाहावइ दादुरो, तिम तिम पांमु आस।—मा कां.प्र.
रू०भे०—दादर, दुरदुर।
अल्पा०—दादरियो, दादरो।

दादुरवाजउ, दादुरवाजो-सं०पु० [सं० दर्दुर वाद्यम्] एक प्रकार का वाद्य विशेष (व.र.)।

दादुरियो, दादुरो—देखो 'दादुर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ अग साखा असि अगा, पवन उडांण डांण झापंदा। पालो हरि विलिपिगा, दादुरिया नैव कुदंति।—रांमरासो
उ०—२ देख सरप ह्वं दादुरा, सब्द कळा कर सून। पुरख असैंदो पेख ह्वं, मावडियां मुख मून।—वां.दा.

दादू-सं०पु०—१ 'दादूपंथ' का अनुयायी।
२ देखो 'दादूदयाळ' (रू.भे.)

दादूदयाळ-सं०पु०—एक महात्मा का नाम। बचपन में इनका पालन-पोषण अहमदाबाद में लोदीराम नामक धुनिया ने किया था। इन्होंने राम-नाम के रूप में निर्गुण परब्रह्म की उपासना चलाई। इनके नाम पर एक पंथ चला है जो 'दादूपंथ' कहलाता है। बादशाह अकबर के समय में दादू अच्छे पहुँचे हुए साधुओं में गिने जाते थे। अन्त में इन्होंने जयपुर से बीस कोस पर नरेना नामक स्थान पर निवास किया। स्व० मुंशी देवीप्रशाद (जोधपुर निवासी) के मतानुसार वि० सं० १६६० में इसी स्थान पर इनका देहान्त हो गया था।

दादूपंथ-सं०पु०—महात्मा दादूदयाल के द्वारा चलाया हुआ पंथ।

दादूपंथी-सं०पु०—महात्मा दादूदयाल के चलाये हुए पंथ का अनुयायी।

दादूद्वारो-सं०पु०—दादूपंथी महात्माओं के रहने का स्थान।
रू०भे०—दाद-द्वारो।

दादेरो—देखो 'दादांणो' (रू.भे.)

दादो-सं०पु० (देश०) १ पिता का पिता, पितामह, दादा। उ०—पीढ़ी पर पीढ़ी पोतोजी पाया। अगले काळां रा दादोजी आया।—ऊ.का.
मुहा०—दिनां रो दादो—अति वृद्ध, बुड्ढा।
२ बड़े भाई के लिये प्रयोग किया जाने वाला सम्मानसूचक शब्द.
३ बड़े-बूढ़ों के लिये आदरसूचक शब्द. ४ वह मनुष्य जिस का आतंक इर्द-गिर्द फैला हुआ हो। (बाजारू)
वि०वि०—बदमाश और लड़ाईखोर के लिये भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

५ पंडित, ब्राह्मण (शेखावाटी)

रू०भे०—डडो, ७डो, ददो, दद्दौ।

अल्पा०—डडियौ, ददियौ।

दाध—१ देखो 'दाद' (रू.भे.)

२ देखो 'दाघ' (रू.भे.)

३ देखो 'दाह' (रू.भे.) उ०—रांण अनै 'अमरेस' रै, वळै प्रगटचो वेध। मन फाटौ खाटां चितां, खूटै दाध न खेध।—रा.रू.

दाधजोग-सं०पु०—फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि वार सम्बन्धी बनने वाले पांच योगों में से द्वितीय योग।

दाधणौ, दाधबौ-क्रि०अ० [सं० दग्ध] १ नष्ट होना। उ०—१ जउ तूं ढोला नाविय‌उ, मेहां नीगमवांह। किया करायइ सज्जणा, दाधा मांहि घणांह।—ढो.मा.

२ भस्म होना। उ०—१ वळै पुहप विण वास, भमर मन मांहि न भावै। दव दाधौ वन देखि, जीव सहु छोडि जावै।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ दव दाधी हेक हेक दुख दाधी। किसनावती कहै सुर कोडि।
—गोरधन बोगसौ

३ जलना। उ०—भूली सारस-सद्दड़इ, जांणउ करहउ थाय। धाई धाई थळ चढ़ी, पग्गे दाधी माय।—ढो.मा.

४ विकृत होना, दग्ध होना। उ०—कळहकारिणी, महापाप तणइ, उदयि, पांमीयइ, रोस चडी कुणही न मनावीय, रांधती सीधती खारु मउळु करइ, दाधुं काचउं करइ, ढीलुं गीलुं करइ, जे खाधुं ते खाधुं।
—व.स.

५ पीड़ित होना, संतप्त होना। उ०—१ मन दुख दाधा डौल मत, साधा जग तज साव। मांनव भव भीता मिटण, गुण सीतावर गाव।
—र.ज.प्र.

उ०—२ दाधी दुखड़ै री फिरतोड़ी दोरी, गोरै मुखड़ै री गिरतोड़ी गोरी। चांमीकर धांमै कांमी कर चोड़ै। जांमी जांमी कर सांमी कर जोड़ै।—ऊ.का.

उ०—३ भूदेव ब्रांह्मण चेंदि देसि गयु जोवा कांम। घणूं जेणि रमाडी छि सिसु थकां निज धांम। चिन्ह सघळां ओळखि ते, गयु राज-भवंन। निरखतां तव नयणे, निरखी दुखि दाधूं तंन।
—नळाख्यांन

क्रि०स०—६ भस्म करना. ७ दग्ध करना, जलाना।

उ०—गाढ्ढ दाध्यउ दग्ग करि, सासू कहइ वचन्न। करहउ ए कूडइ मनइ, खोडउ करइ यतन्न।—ढो.मा.

८ पीड़ित करना, संतप्त करना। उ०—उत्तर आज स उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि। संजोगणी सोहामणइ, विजोगणी अंग दाधि।
—ढो.मा.

९ अधिकार करना, कब्जा करना। उ०—दाधण घर दोखी दहै, दमगळ विण हूं दूं न। खूंन सींचियां खाटसी, खाटी सींचै खून।
—रेवतसिंह भाटी

दाधणहार, हारौ (हारी), दाधणियौ—वि०।

दधवाड़णौ, दधवाड़बौ, दधवाणौ, दधवाबौ, दधवावणौ, दधवावबौ दधाड़णौ, दधाड़बौ, दधाणौ, दधाबौ, दधावणौ, दधावबौ, दाधाड़णौ, दाधाड़बौ, दाधाणौ, दाधाबौ, दाधावणौ, दाधावबौ—प्रे०रू०।

दाधिओड़ौ, दाधियोड़ौ, दाध्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दाधीजणौ, दाधीजबौ—कर्म वा०।

दधणौ, दधबौ—अक०रू०।

दाधलौ—देखो 'दाधियोड़ौ' (रू.भे.) उ०—हूं जांणउ परधांन पणि, परघू सहु परिवार। अेह तात घरि मात छइ, दुख-दाधलां अपार।
—मा.कां.प्र.

(स्त्री० दाधली)

दाधावडी-सं०स्त्री० [सं० दग्ध+वटक+रा०प्र०ई] एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। उ०—मुंगवडी पेठावडी रे लाल, खारावडी मन खंति। डबकवडी दाधावडी रे लाल, व्यंजन नांना भंति।—प.च.चौ.

दाधिम-सं०पु० [सं० दाधीच] दाहिमा राजपूत वंश या इस वंश का व्यक्ति (वं.भा.)

दाधियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भस्म हुवा हुआ. २ जला हुआ, तप्त हुवा हुआ. ३ नष्ट हुवा हुआ. ४ विकृत हुवा हुआ, दग्ध हुवा हुआ. ५ पीड़ित हुवा हुआ, संतप्त हुवा हुआ. ६ भस्म किया हुआ. ७ दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ. ८ पीड़ित किया हुआ, संतप्त किया हुआ. ९ अधिकार किया हुआ, कब्जा किया हुआ।

(स्त्री० दाधियोड़ी)

रू०भे०—दाधलौ, दाधौ।

दाधीच, दाधीचि-सं०पु० [सं० दधीचि] १ दधीचि के वंश का मनुष्य, दधीचि का गोत्रज।

सं०स्त्री०—२ दधीचि कुल के ब्राह्मणों की शाखा।

दाधौ, दाध्यौ—देखो 'दाधियोड़ौ' (रू.भे.) उ०—हरखीउ कउरवु राउ देखी दाधां मांणुसहं। जोयउ पुन्नपभाउ पंडव जीवी ऊगरऊ।
—पं.पं.च.

(स्त्री० दाधी)

दाध्योड़ौ—देखो 'दाधियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दाध्योड़ी)

दाप-सं०पु० [सं० द्राव] १ वेग (अ.मा.) २ देखो 'दरप' (रू.भे.)

उ०—१ जोबन में मर जावणौ, दळ खळ साजै दाप। एह उचित वौह आवखौ, सिहा बडो सराप।—वां.दा.

उ०—अवधेस अभंगं, जीपण जंगं, कोटि अनंगं धारी कळं। खर दूखर खंडण, वाळ विहंडण, दाप निवारण पाप दळं।—र.ज.प्र.

दापक-सं०पु० [सं० दर्पक] दबाने वाला।

दापड़—देखो 'दाफड़' (रू.भे.)

दापटणौ, दापटबौ-क्रि०स० [सं० दाप्] १ संहार करना, मारना।

उ०—दांणव दापटै जी थिर सदगत थटी। कर कर मगकरी जी पहुँता पंचवटी।—र.रू.

२ देखो 'दपटणी, दपटबौ' (रू.भे.)
दापटणहार, हारी (हारी), दापटणियो—वि० ।
दापटिग्रोड़ो, दापटियोड़ो, दापटयोड़ो—भू०का०कृ० ।
दापटीजणो, दापटीजबौ—कर्म वा० ।
दपटणो, दपटबौ—अक०रू० ।

दापटियोड़ो—भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ ।
२ देखो 'दपटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दापटियोड़ी)

दापणो, दापबौ—क्रि०स० [सं० दाप्] १ संहार करना, नाश करना, मारना. २ दवाना, दावना ।
दापणहार, हारी (हारी), दापणियो—वि० ।
दापिग्रोड़ो, दापियोड़ो, दाप्योड़ो—भू०का०कृ० ।
दापीजणो, दापीजबौ—कर्म वा० ।

दापिक—सं०पु०—एक राज वंश (व.स.) ।

दापियोड़ो—भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ. २ दावा हुआ, दवाया हुआ ।
(स्त्री० दापियोड़ी)

दापौ—सं०पु० [सं० दाप्य] १ विवाह, यज्ञोपवीत आदि मांगलिक अवसरों पर ब्राह्मणों को दिया जाने वाला द्रव्य विशेष ।
उ०—राव वरजांग वडो ठाकुर हुवौ, गढ़ जैसळमेर राव वरजांग परणियौ, तद इतरो खरच लाग दापौ कियौ सु अजेस जैसळमेर उण चंवरी को परणीजै न छै, राव वरजांग री चँवरी ठौड़ प्रगट छै ।
—नैणसी
यौ०—चँवरी-दापौ ।
२ वह धन जो पिता द्वारा कन्या की मंगनी के समय वर के पिता से कन्या के मूल्य रूप में लिया जाता है (मेवाड़) ।
उ०—दुहिता धर डोळी दियौ, पहलौ ओसर पाया । दापौ ले बाजै दुभल, कायर कवण कहाय ।—रेवतसिंह भाटी

दाफड़—सं०पु० (देश०) शरीर पर थोड़े से घेरे में पड़ी हुई सूजन जो खटमल, मच्छर आदि के काटने या खुजलाने के कारण चकती की तरह बन जाती है, चटखर, ददोरा । उ०—उतराद्यो खटमल आवौ दिखणाद्यो, मचायो खटमल सोयबा दै । रांणीजी रा हाकम सोयवा दै । नाथूरांमजी रै खटमल लड़ियौ, बांकी लूंठी के दाफड़ पड़ियौ रे, खटमल सोयवा दै ।—लो.गी.
रू०भे०—दापड़ ।

दाब—उभ०लि०—१ दवने या दवाने का भाव. २ किसी वस्तु पर पड़ने वाला भार, बोझ ।
क्रि०प्र०—पड़णी ।
३ घास का चौकोर ढेर. ४ वगल, कांख. ५ शक्कर और घी का मिश्रित योग ।
वि०वि०—आंख दुखने पर यह रोगी को खिलाया जाता है ।
६ कलेजे का मांस, कलेजी. ७ शराव पीने का प्याला अथवा इस प्याले में समाने वाली शराव की मात्रा । उ०—इतरै में भरमल पोसाक आभरण कर दारू सीसी पियालौ ले आय गई । आंण मुजरौ कर कन्है बैठी व दाव देवण लागी, मारग रो स्रम दूर हुवौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता
रू०भे०—दाव ।

दावड़ियौ—सं०पु० (देश०) सिंचाई कार्य की पानी की नाली में निकास-स्थान पर (किसी विशेष दिशा में पानी के प्रवाह को रोकने के लिये) मिट्टी के साथ जमाया हुआ घास-फूस ।

दावड़ो—सं०पु० (देश०) १ कपूर आदि रखने की डिबिया ।
२ देखो 'डावड़ो' (रू.भे.)
उ०—दरवांण नूं कह्यौ—दावड़ौ वरस दोई रो फौत हुवौ छै ।
—चौबोली
रू०भे०—दाबडउ ।

दाबडउ—देखो 'दाबड़ो' (रू.भे.) उ०—जइ भागउं तौ वाराहउं, जइ थाकउ तौ पार करउं घोडउ, जइ ठालउ तोई कपूर तणउ दाबडउ ।
—व०स०

दावणो, दावबौ—क्रि०स० [सं० दमन] १ बोझ के नीचे डालना, भार रख कर दबाना. २ किसी को अपना आतंक दिखा कर स्वतंत्रता-पूर्वक आचरण न करने देना. ३ किसी को अपने आतंक या प्रभाव में डाल कर अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिये विवश करना. ४ किसी को अपना आतंक या प्रभाव दिखा कर बोलने न देना, अपने विरुद्ध जवान नहीं चलने देना, मुंह बन्द करना. ५ अपने विशेष गुणों आदि के कारण अपनी तुलना में किसी को नीचा दिखाना, अपेक्षाकृत कम जचने देना, मात करना, दूसरे के गुणों का प्रकाश नहीं होने देना. ६ किसी पदार्थ अथवा वस्तु पर किसी ओर से जोर पहुंचाना. ७ किसी प्रवल शक्ति की टक्कर या मुकाबिले में विरोधियों को पीछे खदेड़ देना. ८ शिकस्त देना, हराना. ९ शान्त करना, उभड़ने नहीं देना. १० किसी अफवाह या वात को फैलने नहीं देना, जहां की तहां दवा देना. ११ किसी दूसरे की वस्तु को वलपूर्वक अपने अधिकार में करना । उ०—१ लोहि हणि 'जैत' बीकांणगढ़ जै लियौ । दहुडि खुरसांण अजमेर गढ़ दावियौ ।
—सू. प्र.
उ०—२ पड़गनौ धांणसियै रौ गांवां ८४ सूं साहुवै अमरै खनै सूं लियौ और जमी वाराहां री दावी और पड़गनौ करणावाटी रो डाहलियां सूं लियौ और हंसार रै पठांणां री जमी दावी या वाघोड़ां री जमी दावी ।—द.दा.
१२ किसी की वस्तु को अनुचित रूप से या धोखे से ले लेना, हड़पना. १३ वेग या झटके के साथ वढ़ कर किसी चीज को दवा लेना, धर दवाना, दवोचना । उ०—महेस जी इण साथ मांहे था सो महेसजी तौ साथ नै घणौ ही पालियौ पिण साथ उरड़ नै मैदांन गयौ । मुगळां पाछा

वळिया नै वीजौ साथ भागौ, महेसजी रा घोड़ा नूं हाथी दावियौ।
—राव चंद्रसेन री वात

१४ मंद करना, धीमा करना. १५ शरमिंदा करना. झेंपाना. १६ गुप्त करना, छुपाना। १७ ऐसी अवस्था में लाना जिस में कुछ वस न चल सके।

मुहा०—करजा में दावणौ—ऋण दे कर अपने अधीन कर लेना। दीवालिया वना देना।

१८ जमीन में गाड़ना, दफन करना. १९ ठूंसना, दावना।

उ०—नवी हुग्रोड़ा नीच, डवी भर लेवें डाकी। वैठ सभा रै वीच, करै मनवार कजाकी। दे पटपोरा दोय, नाक में दावै नीकां। मूंढौ खांधौ मोड़, छड़ाछड़ खावै छींकां।—ऊ.का.

दावणहार, हारौ (हारी), दावणियौ—वि०।

दववाड़णौ, दववाड़वौ, दववाणौ, दववावौ, दववावणौ, दववाववौ
—प्रे०रू०।

दाविग्रोड़ौ, दावियोड़ौ, दाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दावीजणौ, दावीजवौ—कर्म वा०।

दवणौ, दववौ—ग्रक०रू०।

दवाड़णौ, दवाड़वौ, दवाणौ, दवावौ, दवावणौ, दवाववौ—रू०भे०।

दावदी—देखो 'दाऊदी' (रू.भे.) उ०—गुलालूं के डंबर सूरगुलूं का प्रकास। दावदी ग्रजूवां गुलरोसनूं का उजास।—सू.प्र.

दावियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ बोझ के नीचे डाला हुग्रा, भार रख कर दवाया हुग्रा. २ ग्रातंक से स्वतंत्रता छीना हुग्रा. ३ ग्रातंक या प्रभाव से ग्रपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिये विवश किया हुग्रा. ४ ग्रपने विरुद्ध वोलने से रोका हुग्रा, मुंह वन्द किया हुग्रा. ५ ग्रपने विशेष गुणों ग्रादि के कारण ग्रपनी तुलना में किसी को नीचा दिखाया हुग्रा, मात दिया हुग्रा. ६ किसी पदार्थ या वस्तु पर किसी ग्रोर से जोर पहुँचाया हुग्रा. ७ किसी प्रवल शक्ति की टक्कर या मुकाविले में विरोधियों को पीछे खदेड़ा हुग्रा. ८ शिकस्त दिया हुग्रा, हराया हुग्रा. ९ शान्त किया हुग्रा, उभड़ने से रोका हुग्रा. १० किसी ग्रफवाह या वात को फैलने नहीं दिया हुग्रा, जहां का तहां दवाया हुग्रा. ११ किसी दूसरे की वस्तु को वलपूर्वक ग्रपने ग्रधिकार में किया हुग्रा. १२ किसी की वस्तु को ग्रनुचित रूप से या धोखे से लिया हुग्रा, हड़पा हुग्रा. १३ झोंक के साथ वढ़ कर किसी वस्तु को दवाया हुग्रा, दवोचा हुग्रा. १४ मंद किया हुग्रा, धीमा किया हुग्रा. १५ शरमिंदा किया हुग्रा, झेंपाया हुग्रा. १६ गुप्त किया हुग्रा, छुपाया हुग्रा. १७ ऐसी ग्रवस्था में लाया हुग्रा जिसमें कुछ वस न चल सके. १८ जमीन में गाड़ा हुग्रा, दफन किया हुग्रा. १९ ठूंसा हुग्रा, दवाया हुग्रा।

(स्त्री० दावियोड़ी)

दावेड़ौ—सं०पु० (देश०) वह स्थान जहां कूए से चड़स वाहर निकाल कर खाली किया जाता है।

दावोतरौ—सं०पु० (देश०) एक प्रकार का सरकारी लगान।

दावौ—सं०पु० [सं० दमन] १ दावने की क्रिया या भाव. २ वह पदार्थ जो किसी वस्तु को उड़ने से वचाने के लिये भार स्वरूप रखा जाता है. ३ वे सामन्त या योद्धा जो सरहद पर राज्य की रक्षा के लिये नियुक्त किये जाते थे ग्रथवा वसाये जाते थे।

मुहा०—धरती रा दावा—धरती को ग्रपने ग्रधिकार में रखने वाला, धरती की रक्षा करने वाला. ५ धोखा देने की क्रिया या भाव।

ज्यूं—सौ रुपयां रौ दावौ दे दियौ।

क्रि०प्र०—देणौ, लागणौ।

दाभ—देखो 'डाब' (रू.भे.)

दायंदार—वि०—देखो 'दावादार' (रू.भे.)

दाय—सं०पु० [सं० दायः] १ पैतृक या सम्बन्धी का वह धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाजन हो सके।

[सं० ग्रं तृप्तौ घञ्=ग्राय=दाय] २ तरह, भांति, प्रकार।

उ०—१ छूटिया सौ जिणरै लागियौ सो ही पंखारो न भीनौ कवूतर दाय लोटता नजर ग्रावै।—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

उ०—२ जीं रै मस्तक गज कळस, मन सूं गेरै जाय। सो ही नरपति नगर रौ, निस्चय है इण दाय।—सिंघासण वत्तीसी

सं०स्त्री०—३ इच्छा। उ०—१ सिधां सिधावौ सिध करौ, रहजौ ग्रपणी दाय। इण लाखीणी जीभ सूं, जावौ कह्यौ न जाय।
—ढो.मा.

उ०—२ तौ ही नहीं मांनी। तद कही—म्हांनूं ग्रागै जावण देवौ, पछै थांहरी दाय पड़ै ज्यूं करज्यौ।—महाराजा पदमसिंह री वात

४ पसन्द। उ०—१ नापै नूं रांणा कन्है मेल्हियौ, कही थारै दाय ग्रावै जिण तरह वात कर नै जायगां या राख।
— नापै सांखले री वारता

उ०—२ तद वादसाह सलांमत फुरमाई—जे तुम्हारे दाय वात यूं ग्राई।—महाराजा जयसिंह ग्रांमेर रै धणी री वारता

उ०—३ घट में दौड़ै घोड़ा घोड़ी, ग्रौर दाय नहिं ग्रावै। न्याय धरम नीति निज न्यारी, कांम सुद्ध छिटकावै।—ऊ.का.

उ०—४ विण जुध कारज वाघ रै, दूजौ ना'वै दाय। एक ग्रनेकां ऊपरा, जुलम करेवा जाय।—वां.दा.

वि०—पसन्द का। उ०—जग ग्रपजस देखै नहीं, देखै स्वारथ दाय। जिम तिम कर वणियौ रहै, वणियौ तेण कहाय।—वां.दा.

क्रि०वि०—१ प्रकार से, तरह से। उ०—ऐहळा जाय उपाय, ग्राछोड़ी करणी ग्रहर। दुस्ट किणी ही दाय, राजी हुवै न राजिया।
—किरपारांम

२ कारण से, लिए, वास्ते। उ०—ना गुलाव ना केतकी, संकर इहां दिखाय। सुगंध सव ठां ह्वै रही, फिरै भंवर की दाय।
—जलाल वूवना री वात

रू०भे०—दाइ, दाई

दायक-वि० [सं०] देने वाला, दाता। उ०—१ दायक खबर रांम सिय दौड़ा। तायक काळ नेस सिर तोड़ा।—र.ज.प्र.

उ०—२ रस भरत अम्रत सरद राका रेण वण जण कारणे। दिन सुखद राति विलास दायक, हित चकोर निहारणे।—रा.रू.

दायचौ—देखो 'दायजौ' (रू.भे.) उ०—हिव चवरी मंडप तणै, फेरा लिया च्यार वे। दत्त घणा वड दायचा, दीघा राज अपार वे।—रीसाळू री वात

दायज—देखो 'दायजौ' (मह., रू.भे.) उ०—हरख उछाह बहु विध कियौ, राज नगर रै मांहि। दायज दीन्हौ बहुत सो, वरण सकै कोउ नांहि।—पंचदंडी री वारता

दायजउ—देखो 'दायजौ' (रू.भे.) उ०—रस रहियउ जंग मेरहर जीतउ, जोइ जोइ करि परठ जिण। दीन्हउ गिरवरए इतउ दाइजउ, कीमति जिणरी हुवइ किण।—महादेव पारवती री वेलि

दायज-वाळ, दायजाळ, दायजावाळ-संपु० [सं० दायः+रा०प्र० जाळ अथवा वाळ] वधू के साथ दहेज में आने वाला प्राणी (यथा—स्त्री, पुरुष, गाय आदि)

दायजौ-संपु० [सं० दायः] वह सम्पति जो विवाह के अवसर पर कन्या को उसके पिता की ओर से दी जाती है। यौतुक, दहेज।

उ०—१ तद महाराज परणीजणे नूं जयपुर पधारिया, विवाह बडा हरख सूं हुवौ, माधवसिंहजी दायजौ सखरौ दियौ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ दायजौ घोड़ा-हाथी मांणस साज नै तैयार किया।—पंचदंडी री वारता

रू०भे०—डाईचउ, डाईचौ, डाईजौ, डायचौ, डायजौ, दाइजउ, दाइजौ, दाईजौ, दायचौ, दायजउ।

मह०—दाइज, दायज।

दायण-संस्त्री०—प्रसव कराने में सहायता करने या प्रसूती की सेवा करने वाली स्त्री।

दायनौ-संपु० (देश०) एक प्रकार की लगाम।

दायभाग-संपु० [सं०] १ वपौती या वरासत की मिल्कियत को वारिसों या हकदारों में बांटने का कायदा कानून. २ पैतृक धन का विभाग।

दायम-क्रिवि० [अ०] सदा, हमेशा। उ०—हरदम हाजिर होना बाबा, जब लग जीवे बंदा। दायम दिल सांई सौं सावित, पंच वक्त क्या धंघा।—दादू बांणी

दायमा—देखो 'दाहिमा' (रू.भे.)

दायमौ—देखो 'दाहिमौ' (रू.भे.)

दायर-वि० [अ०] १ चलता, जारी।

मुहा०—१ दायर करणौ—किसी व्यवहार, अभियोग आदि को उपस्थित करना, पेश करना. २ दायर होणौ—उपस्थित किया जाना, पेश होना।

२ चलता हुआ, फिरता हुआ।

दायरौ-संपु० [अ० दाएरः] १ गोल घेरा, कुंडल, मंडल. २ वृत्त. ३ कक्षा. ४ फकीरों के रहने का स्थान ?

उ०—महदवी दरवेसां रौ थांन दायरौ कहावै, तकियौ कहावै नहीं।—बां.दा.ख्या

दायाद-वि० [सं०] (स्त्री० दायदी) जिस सम्बंध के कारण किसी क जायदाद में हिस्सा मिले, जो दाय का अधिकारी हो, जिसे दा मिले। उ०—दो ही साहजादा मिळिया तिके दूजा-दूजा अग्रज अनुकार सांचै संकळप दिल्ली रा दायाद होइ सांम्हां चलाया।—वं.भ

संपु०—१ पुत्र, बेटा. २ सपिंड, कुटुंबी. ३ दाय पाने क अधिकारी मनुष्य।

दायादी-संस्त्री० [सं०] कन्या, पुत्री।

दायिणी-संस्त्री० [सं० दायिनी] देने वाली।

दायां—देखो 'दाई' (रू.भे.) उ०—ज्युं छोरु दीठी मुंहडौ सीह रौ पि मनुस्य री ताहरां दायां नाठयां।—देवजी बगड़ावत री वात

दायेंदार, दायेदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.) उ०—के तुम ऊंचे हो के हमसे वतराया। के तुम दायेंदार हो कर तेग समाया।—ला.रा.

दायौ-संपु० [अ० दावा] अधिकार, हक, कब्जा।

उ०—१ नहिं ज्यां फुरणा नहीं अफुरणा, नहहिं जीव नहिं माया ईस्वर ब्रह्म कोऊ नहिं तांमे, नहिं दायां निरदाया।—स्री सुखरांमजी महारा

उ०—२ नमांमी तो माया चलत नहिं दाया सुदन रौ। धुरो पा साया अटल मठ छायो घर धरो।—ऊ.का.

उ०—३ पांती वार लीनी भोमि छोडया वंट दाया। बाकी दे दाब्या राज 'सेखै' यों वधाया।—शि.वं.

दार-संस्त्री० [सं० दाराः] १ पत्नी, भार्य्या। उ०—१ जठै तौ बडाव अमीरां रा आपांण प्रहार पहली ही पड़ता देखि राठौड़ रा जसवंतसिंह रांणावत राजा रायसिंह प्रमुख किता ही आरच जव रा ओघ 'दारा' रौ साथ छोडि दारा रौ साथ करण आप आव आगार चालिया।—वं.भा.

उ०—२ दिन रात दार कारा करै, वहै कळेजा बीच रे। जो पै' हूं जांणतो, तो नेड़ौ न जातो नीच रे।—ऊ.का.

२ स्त्री, औरत। उ०—दार तैं कु दार पैर पोच में दियौ। कार ब बिगार सोच लार सैं कियौ।—ऊ.का.

[सं० दारु] ३ काष्ठ, लकड़ी। उ०—१ पांण जोड़ै हुकुम पा अतुर वारैं भरथ आवै। ले चले हित लेख। चिता घर समसांण चा दार चंदण बीच दाहे। विथा हूंत विसेख।—र.रू.

उ०—२ सांमंत विछोहै अंग सार, दोय जेम करै करवत्त दार। प सीस विनां लोटै पठांण, फिर ज्वार सिटै हूका क्रसांण।—ला.र

४ अग्नि, आग (अ.मा.)

५ दरार।

प्रत्य० [फ़ा०] वाला। उ०—सूळीदार सुभाव, त्रिसूळदार तैयारी। मरजदार होय मांग, ग्रांणी कहुं दार उधारी। जमींदार हुय जमीं करजदारी में कळगी। ईजतदार अंधार गरजदारी में गळगी। छळदार होय छाती छडै, ग्रमलदार मुरदार री। ग्रौर तौ दार सब ग्रा मिळै, कमी एक कळदार री।—ऊ.का.

दारक, दारक्क—देखो 'दरक' (रू.भे.) उ०—सांसण कोड़ सवाय उभै हसती सो हैमर। दस्स सहंस दारक्क सहंस दस भैंसा सद्धर।
—नैणसी

दारचींणी, दारचीणी—देखो 'दाळचीणी' (रू.भे.)

दारण—वि० [सं० दारुण] १ जबरदस्त, प्रचंड, शक्तिशाली।
उ०—१ धारियां 'रतन' तणां धुर धारण। 'दांनौ' 'बलू' 'खेतसी' दारण। सोभावतां तणौ पण साचौ। कळहण खरा न कौ रण काचौ।—रा.रू.
उ०—२ ज्यां पर सिलह ससत्र तन जड़िया। कळहण जोस चठठती कड़िया। ग्रोपम नयण धिखंतां धारण। दोय-दोय चडिया भड़ दारण।—सू.प्र.
२ योद्धा, वीर। उ०—तिकौ ग्रचरिज्ज किसौ घर तास। दादौ जिण दारण 'भैंरवदास'।—सू.प्र.
३ देखो 'दारुण' (रू.भे.) उ०—१ विरथ पिता जहां दारण वन। तहां रिखी स्रंग तपोधन तन।—रांमरासौ
उ०—२ दारण दसमास दुखित ग्रह ग्रवळा, जळ मळ भोजन कीया। वहता मळ-मूत्र नासिका ऊपरि, उदर सांस में लीया।—ह.पु.वा.

दार-मदार—सं०पु०यौ० [फ़ा० दार+ग्र० मदार] १ किसी कार्य का किसी पर ग्रवलम्बित रहने का भाव, कार्य का भार।
उ०—लिखै है ग्रेक ग्रित-संजीवणी दवा-रौ नुसखौ, प्रांण भर दे जिसौ साबर-मंतर। ई लिखावट माथै ई तौ सगळौ दार-मदार है।
—वरसगांठ
२ ग्राश्रय, ठहराव।
रू०भे०—दारौ-मदार।

दारा—सं०स्त्री० [सं० दारा:] १ स्त्री, पत्नी, भार्य्या (ग्र.मा.)
उ०—१ वेरा वैरागर सागर सम सोभा। रीती गागर लै नागर तिय रोभा। धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै। जोवन संजीवन जीवन धन जोवै।—ऊ.का.
उ०—२ दादू झूठे तन के कारणे, कीये बहुत विकार। ग्रिह दारा धन संपदा, पूत कुटुंब परिवार।—दादू बांणी
(देश०) २ एक प्रकार की मछली।

दाराज—देखो 'दराज' (रू.भे.)

दारिउँ—देखो 'दाड़म' (रू.भे.)

दारिद, दारिद्र—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—संतापु सुयणह करई, पुण्यहीन जिम राय रोळई। दारिद्र दुक्खु केह भरई, त्रिणा कज्जि गिरि सिहरु ढोळइ।—पं.पं.च.

दारिया—सं०स्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा।
—बां.दा.ख्यात

दारियौ—सं०पु० [सं० दारका=रंडी, वेश्या ग्रथवा सं० दारक:] १ रंडी या वेश्या का पुत्र। उ०—तरै पांडव ताजणौ वाह्यौ; तरै वीजा पांडव नूं गाळ दीवी, कह्यौ 'फिट रे दारिया गोला! लाख री वछेरी री ग्रांख फोड़ी।—नैणसी
२ पुत्र. ३ सोलंकी वंश की दारिया शाखा का व्यक्ति।

दारी—सं०स्त्री० [सं० दारका] १ वेश्या, रंडी (ग्र.मा.)
उ०—खिति वाग राखै खत्री खंडाधार, सूरमा पयार। राजा कौ यसी विचारी, ग्री तौ सरग-की दारी, सुणौ वात हमारी।
—ग्र. वचनिका

दारीवाडउ—सं०पु० [सं० दारिकापाटक:] वेश्याग्रों का निवास-स्थान।

दारु—सं०स्त्री० [सं०] १ काठ, लकड़ी। उ०—मणां तेल तिल मांय, वास जिम पुहप विराजत। रंग मजीठ सु रहत, सबद ग्ररथादिक साजत। वेळा सायर वसत, दारु मझ ग्रगन दिखावत। पयस मांझ घ्रत पूर; ऊख मधु रस उपजावत। वळि दाहकता पावक विसै, साधूजण सोहे सहण। 'ईसरौ' भणै त्यूं ही ग्रवस, मो मन वसियौ महमहण।—ह.र.
२ देवदारु वृक्ष. ३ पीतल. ४ देखो 'दारू' (रू.भे.)
उ०—१ तद गांम रै धणी यौं जांण्यौ सो ग्रणी दारु पीदौ है। जणी सौं चूक बोलै है।—राजा रा गुर रा वेटा री वात
उ०—२ होकवा राग सिंधू हुवा, दगै तोप झल दारुवां। ग्रम्ह सम्हा रीठ गोळां उडै, मारू घर काज मारवां।—सू.प्र.

दारुक—सं०पु० [सं०] १ देवदारु का वृक्ष. २ श्रीकृष्ण का एक सारथी।

दारुकदळी—सं०स्त्री० [सं०] जंगली केला।

दारुका—सं०स्त्री० [सं०] कठपुतली।

दारुकावन—सं०स्त्री० [सं०] एक वन का नाम जो पवित्र तीर्थ माना जाता है।

दारुड़ी—सं०स्त्री०—देखो 'दारू' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—सीसी तौ धकधक करै, प्यालौ करै पुकार। हाथ प्यालौ धण खड़ी, पीग्रौ राजकुमार। म्हारै दारुड़ी रौ प्यालौ पियो नी ग्रो वादीला म्हारी मनवार रौ।—लो.गी.

दारुड़ौ—देखो 'दारू' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—भर ला ए म्हारी सुघड़ कलाळी दारुड़ौ दाखां रौ, पीवण वाळौ लाखां रौ, भर ला ए म्हारी सुघड़ कलाळी दारुड़ौ दाखां रौ।—लो.गी.

दारुजोखित—सं०स्त्री० [सं० दारुयोषित] कठपुतली।

दारुण—वि० [सं०] १ घोर, भयंकर, भीषण। उ०—लूग्रां फिर फिर रोहियां, रळकाया सै राह। पथ मेटण मिस मारिया, पंथी दारुण दाह।—लू
२ कठिन, दुःसह, विकट. २ देखो 'दारण' (रू.भे.)
उ०—दारुण 'गोयंद' चोगड़द, फिरिया पह-फट्टी। ग्रो भी मागि

व्रजागि श्रंग, नाराज निछ्ट्टी ।—सू.प्र.

दारुणारि-सं०पु० [सं०] विष्णु ।

दारुणी-सं०स्त्री० [सं०] १ महाविद्या का नाम (व स.)

२ देखो 'दारण' (रू.भे.) उ०—दउंड राइ चक्र फेरियइ चंगि । दारुणी देस लीघइ दुरंगि ।—रा.ज.सी.

दारुतउ- । उ०—पवन जिम चालतउ दंतादि विधतउ, पाडतउ फोडतउ, दारुतउ मोरुतउ, चूरतउ स्वरतउ । —व.स.

दारुन—देखो 'दारुण' (रू.भे.) उ०—देखि देखि दांनव अति दारुन। राजिव नयन भये रोखारुन ।—मे.म.

दारुनटी, दारुनारी-सं०स्त्री० [सं०] कठपुतली ।

दारुपात्र-सं०पु०यौ० [सं०] काठ का पात्र ।

दारुयोखित-सं०स्त्री० [सं० दारुयोषित] कठपुतली ।

उ०—उच्चरचो खांन सोही करंचो, यो मति कीमत मांनखां । मीरखां दारु-योखित भयौ, तार गह्यौ असमांनखां ।—ला.रा.

दारुहळदी-सं०स्त्री० [सं० दारुहरिद्रा] श्राल की जाति का एक सदाबहार वृक्ष । यह हलदी की जाति का नहीं होता है (वैद्यक)

रू०भे०—दारूहळदी, दारूहळद्र ।

दारू-सं०पु० [फ़ा०] १ शराब, मद्य । उ०—जरां मालकी बोली, हीये री वात खोली । आप सारू दारू की भटी कढ़ाई छै । लाख रुपियां री टीप चढ़ाई छै ।—मयारांम दरजी री वात

यौ०—दारू-दड़बौ ।

२ दवा, औषधि । उ०—१ मेरा करम काळ ह्वै लागा, तव गुर 'वोखद' लाई । थोड़ा रोग वहुत दारू दे, वेदिन दूर गमाई । —ह.पु.वा.

उ०—२ पातसाह महमंद वडौ धरमात्मा हुवौ । श्रो श्रोखदां री हाट ४ मंडावो, वैद्य राखिया । वेमारां नूं दारू धरम री दीजै । —नैणसी

३ बारूद । उ०—१ घोम दुरंग दारू घड़हड़िया । पाहड़ सिखर जांणि उडि पड़िया ।—सू.प्र.

उ०—२ खग घावां नह पूगे खड़तां, ले टक छोह खटाई । दीघी डोर गुडी दो-दोखी, दारू आग दखाई ।—देवजी दधवाड़ियौ

उ०—३ दारू कौ गंज देख, मरद कौ अगन मिळवै । कोप्यौ केहर कोप, खांत कर नै खिजरावै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

अल्पा०—दारुड़ी, दारुडौ, दारूडी, दारूडौ ।

४ देखो 'दारु' (रू.भे.) उ०- १ ऊससै घणं उछाह, चाप वांण धरै चाह । वांम हाथ लीध वाह । जीमणं कसीस जाह । तोड टूक करै ताह । श्राक दारू जूं श्रयाह । सकोई करै सिराह । महावाह महावाह ।—र.रू.

उ०—२ कर हिक सिसु हय चढ़ करै, दारू-दुधार-वार । हेली जांणी सुवण व्हे, असं-घणि अस-असवार ।—रेवतसिंह भाटी

दारूकार-सं०पु० [फ़ा० दारू+कार] शराब बनाने वाला ।

दारूखोरियौ, दारूखोरौ- [फ़ा० दारू+खूर] मदिरा पीने का आदी, शरावी । उ०—१ जिण तरै कोई दारूखोरिया नै परूसगारो सूंप दे नै वो एकलौ प्याला भर-भर आपरा पेट री करै नै आयो प्यालो कै स्वाहा ।—वी.स.टी.

उ०—२ लाखां जन डोलै भचभेड़ा लेतां, दारूखोरां री घोरां दव देता । भाजो भाजो कर भोजन कज भीखै, दुख में दरवाजौ दांतां री दीखै ।—ऊ.का.

दारूड़ी—देखो 'दारू' (अल्पा., रू.भे.) उ०—दीसै छाकया दारूड़ी, झाभू तीखा नैण । मन सूं मोह्या मारुड़ै, रस री माभल रैण । —अज्ञात

दारूड़ौ—देखो 'दारू' (अल्पा., रू.भे.)

दारू-दड़बौ-सं०पु०यौ० [फ़ा० दारू+रा० दड़बौ] नशापता, नशा ।

दारू-पात्र-सं०पु०यौ० [फ़ा० दारू+सं० पात्र] १ शराब का पात्र.

२ काष्ठ का बना पात्र ।

दारूफूल-सं०पु० [फ़ा० दारू+सं० पुष्प] पुष्पों का निकाला हुआ शराब ।

उ०—रावळ रातूंरात मेहमांनी री तयारी करी तिण सारी रसोई मांहै धतूरो बचनाग जाफो घातियो, दारूफूल उलटा री पुलटो कढ़ायो, सारी तयारी कीवी ।—नैणसी

दारू-री-भट्टी-सं०स्त्री० [फ़ा० दारू+सं० भ्राष्ट्र+रा०प्र०ई] १ एक शराब की भट्टी पर लिया जाने वाला सरकारी कर. २ शराब बनाने की भट्टी ।

दारूहळदी, दारूहळद्र—देखो 'दारुहळदी' (रू.भे.) (अमरत)

उ०—दांमिणी दोभी दूधिम्रां, देवदाळि दूधेधि । दारुहळद्र दुरालभा, दह दिसि दीसइ वेलि ।—मा.कां.प्र.

दारोगाई-सं०स्त्री० [फ़ा० दारोगः+रा०प्र०आई] १ दारोगा का कार्य ।

क्रि०प्र०—करणी ।

२ दारोगा का पद. ३ दारोगा का वेतन ।

दारोगौ-सं०पु० [फ़ा० दारोग:] १ निगरानी रखने वाला अफसर.

२ पुलिस का अफसर, थानेदार ।

रू०भे०—दरोगौ ।

दारोमदार—देखो 'दारमदार' (रू भे.)

दाळ-सं०स्त्री० [सं० दालि] १ दलों में किया हुआ चना, मूंग, अरहर, मसूर, ग्वार आदि ।

क्रि०प्र०—दळणी ।

यौ०—दाळ-मोठ ।

२ वह दला हुआ अन्न जो मसाले और पानी के साथ उवाल कर रोटी, भात आदि के साथ खाया जाता है ।

मुहा०—१ दाळ गळणी—कार्य सिद्धि के लिये किसी युक्ति का चलना, प्रयोजन सिद्ध होना, मतलव निकलना. २ दाळ दळणी—व्यर्थ की बातें करना, अरुचिकर बातें करना. ३ दाळ पेटियौ

दैणौ (मिळणौ)—भरण-पोषण करना, मारना-पीटना। डाँट-डपट देना। ताने देना. ४ दाळ में काळौ होणौ—किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई पड़ना, संदेह या खटके की बात होना। कुछ बुरा रहस्य होना. ५ दाळ रोटी—सामान्य भोजन, सादा खाना।

३ दाल के आकार की कोई वस्तु. ४ फोड़े-फुंसी या खास कर चेचक का ऊपर का चमड़ा जो सूख कर छूट जाता है, पपड़ी।

रू०भे०—दाळि, दाळी।

दाळचिणी, दाळचीणी—सं०स्त्री० [सं० दारु+चीणी=चीन देश का] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल सुगन्धित होती है तथा दवाइयों में काम आती है। यह टेनासिरम, सिंहल और दक्षिण भारत में होता है. २ इस वृक्ष की छाल जिसे सुखा कर काम में ली जाती है। उ०—तिण मांहे गिरी केसर, दाळचीणी, जावंत्री, जायफळ, इळायची, पांन, लूंग, डोडा, धतूरा रा बीज, मोहरौ मिसरी घाल नै काढ़ीजै।—राव रिणमल री वात

दाळद—सं०पु० [सं० दारिद्रय] १ गरीबी, दरिद्रता, निर्धनता।

उ०—१ दाळद घर दोळौ हुवै, परणी ना'वै पास। रुपिया होवै रोकड़ा, सोरा आवै सांस।—ऊ.का.

उ०—२ लारै बाळद रो डेरो लीनोड़ो। दोळौ दाळद रो घेरो दीनोड़ो।—ऊ.का.

पर्या०—कसालो, कीकट, कुरिद, घाटो, टोटो, दाळीद, दुरगत।

२ कूड़ा-करकट।

रू०भे०—दळद, दळद्र, दळि, दळिद, दळिदर, दळिद्द, दळिद्र, दारिद, दारिद्र, दाळद्द, दाळद्र, दाळध, दाळिंद, दाळिदर, दाळिद्र।

दाळद्द—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—दाळद्द-पाप-संताप-दह, पारस संगम लोह पर। निज नांम नमो तो नारियण, हंस नमो सिरताज हर।—ह.र.

दाळदहरण—सं०पु० [सं० दारिद्रय+हरण] १ शिव, महादेव, शंकर. २ ईश्वर।

वि०—दारिद्रय को दूर करने वाला।

दाळदी—देखो 'दरिद' (रू.भे.)

दाळद्र—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—दाळद्र पाप राखस दमन, पारस संगम लोह परि। निज नांम नमो नारायण, हंसराज सिरताज हर।
—ह.र.

दाळध—देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दालांण, दालांन—सं०पु० [फ़ा० दालान] मकान के आगे का वह लम्बा घर जो चारों ओर की दीवारों से घिरा हुआ न हो कर एक, दो या तीन ओर से खुला होता है तथा खुली ओर से प्रायः खम्भों पर आधारित रहता है, बरामदा।

रू०भे०—दलांण, दलांन।

दाळि—देखो 'दाळ' (रू.भे.) उ०—खाजां खरहर चूरतां, कूर तां आविउ थाळि। नांमइ घ्रित जिम पांणीय, तांणीय लीजइ दाळि।
—नेमिनाथ फागु

दाळिउट्ट, दाळिउद्द—सं०पु०—लघु दल का अधिपति (?)

उ०—दंडनायिक, सेनापति, पउंतार, आरोहक, प्रतीकारआरिक, भांडागारिक, महाभांडागारिक, मांणिक्यभांडागारिक, करप्पटभांडागारिक, तंडभांडागारिक, करपूरपट्टिक, कोस्टाकारिक, पारिग्राहिक, प्रतिहार, चतुद्वारिक, कास्टिक, राजद्वारिक, संधिविग्रहिक, भांडपति, महाजनिक, दूत, दाळिउट्ट, कटुक, भट्टपुत्र, नट, विट।—व.स.

दाळिद—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—कारण फतै जुध दाळिद कापण। अचिरज किसो राज अधिआपण।—सू.प्र.

दाळिदर, दाळिद्र—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

२ देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दाळिदरी—वि० [सं० दरिद्र, स्त्री० दाळदण] १ मैला-कुचैला.

२ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दाळिदी, दाळिद्र—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

२ देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—१ दादू टोटा दाळिदी, लाखों का व्यापार। पैसा नाहीं गांठड़ी, सिरै साहूकार।—दादू बांणी

उ०—मेटण दाळिद्र मंगणां, करण गुणां अधिकार। औ वहियो दांनं 'अभो', रांणै रीझ अपार।—रा.रू.

दाळियालाडु—सं०पु०यौ०—एक प्रकार के लड्डू विशेष। उ०—पछै प्रीस्या ढूला, जांणै नांन्हा गाडू। कुण कुण ते नांम, जीमतां मन रहै ठांम। मोतिया लाडू, दाळिया लाडू, सेविया लाडू, कीटी रा लाडू, नांदउलि रा लाडू, तिल ना लाडू, मगरिया लाडू, भूमरिया लाडू, सिंह केसरिया लाडू।—रा.सा.सं.

दाळियो—सं०पु० (देश०) पीतल की कड़ी जो मजबूती के लिये लगाई जाती है।

दाळी—देखो 'दाळ' (रू.भे.)

दाळीद—देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दाळीदर—वि० [सं० दरिद्र] (स्त्री० दाळदण) १ मैला-कुचैला.

२ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

३ देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दाळीदरी—वि० [सं० दरिद्र] (स्त्री० दाळदण) १ मैला-कुचैला।

२ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दाल्मि—सं०पु० [सं०] इन्द्र, सुरपति।

दावँ, दाव—सं०पु० [सं० प्रत्य० दा (दाच्)] १ किसी कार्य के लिये अनुकूल संयोग, उपयुक्त समय, अवसर, मौका। उ०—दिन आयां जमराव सुतो निज दाव संभाळै। तिको दो'ह नह टळै गळै पंडव हेमाळै।—रा.रू.

मुहा०—१ दाव चूकणौ—अनुकूल समय पा कर भी कुछ न कर सकना, अवसर जाने देना, मौका खोना. २ दाव ताकणौ (देखणौ)—मौका देखते रहना, अवसर की ताक में रहना.

३ दाव लागणौ—मौका मिलना, अवसर मिलना, वश चलना, अधिकार चलना।

२ उपाय, युक्ति। उ०—घणी सीळ सत घणौं भणीं लालां भटियांणी। किसूं दाव वळ कोप ग्राव जम हत्य विकांणी।—रा.रू.

मुहा०—(१). दाव लगाणौ—युक्ति लगाना, उपाय करना।

(२) दाव लड़ाणौ, तर्कित सोचना, उपाय सोचना।

देखो—'दाव लगाणौ'।

३ दाव लागणौ—कार्य साधन के लिये युक्ति का फलीभूत होना, उपाय लगना।

३ कुटिल युक्ति, पेच। उ०—नींद न ग्रावै रात री, पावै भरम ग्रपार। ग्राखै साह नवाव सूं, राखो दाव विचार।—रा.रू.

क्रि०प्र०—चलणौ।

मुहा०—दाव खेलणौ—कुटिल युक्ति से ग्रपना कार्य सिद्ध करना।

४ कपट, छल, धोखा। उ०—१ दोयण मारै दाव सूं, नीत वात निरधार। पेख हिरण चीतौ प्रगट, मूंसै पेख मंजार।—बां.दा.

उ०—२ तठा पछै वरिहाहा रजपूत, कहै छै, पंवारां भिळो, तिणां री ठाकुराई ऊंच देरावर कनै छै, तठै हुती। नै खाडाळ मांहे विजैराव रहै, सु भाटियां रौ साथ वरिहाहां रा सासता विगाड़ करै, सु इणां नूं जोर खारा लागै तरै दीठो, वीजो तौ पोहचां नहीं नै दाव करां।—नैणसी

क्रि०प्र०—करणौ, रचणौ।

५ विचार। उ०—साह चढ़े सहलां सदा, उर घर दाव ग्रनेक। ग्रांगमणी ग्रावै नहीं, 'ग्रजो' ग्रनेकां एक।—रा.रू.

यौ०—दाव-पेच।

क्रि०प्र०—धरणौ।

६ प्रहार, चोट। उ०—तठा पछै ढालां बांधीजै छै। तिके किसीहेक छै—ग्रसल साखी गैंडा री, घणां री मारी वधै, मोहर-तोळै रंग लागै। तरवार, तीर, बरछी री दाव लागै नहीं। इसी ढालां ग्रलीबंध नांखीजै छै।—जैतसी ऊदावत री वात

क्रि०प्र०—करणौ, लगाणौ, लागणौ, होणौ।

यौ०—दाव-घाव।

७ प्रभाव। उ०—सवळ सेन तेहनै घणौ, मोटौ जस सुभाव। दुसमण डर मांनै घणौ, देखो तिण री दाव।—ढो.मा.

८ वार, मर्तबा, दफा. ९ कई ग्रादमियों में एक दूसरे के पीछे क्रम से ग्राने वाला किसी के लिए किसी वात का समय, पारी।

ज्यूं—थारी दाव ग्रावै जणै थूं थारै मन ग्रावै ज्यूं करजै।

क्रि०प्र०—ग्राणौ, लागणौ।

१० एक दूसरे खिलाड़ी के पीछे क्रम से पड़ने वाला खेलने का समय, वारी, पारी।

क्रि०प्र०—ग्राणौ, देणौ, लागणौ।

११ चौपड़ ग्रादि खेल में कौड़ियों या पासे को गिराने से निकलने वाला परिणाम, पासा।

वि०वि०—चौपड़ के खेल में सात कौड़ियां होती हैं। खिलाड़ी कौड़ियों को हाथ में लेकर धीरे से जमीन पर फेंकता है। कौड़ियों के निश्चित रूप में उल्टी-सीधी गिरने से दाव के ग्रंक माने जाते हैं, जैसे—

छः कौड़ियां उल्टी ग्रौर एक सीधी				=	१० का दाव	
पांच	,,	,,	,, दो ,,	=	२	,, ,,
चार	,,	,,	,, तीन ,,	=	३	,, ,,
तीन	,,	,,	,, चार ,,	=	४	,, ,,
दो	,,	,,	,, पांच ,,	=	२५	,, ,,
एक कौड़ी	,,		,, छः ,,	=	३०	,, ,,
यदि सातों कौड़ियां उल्टी गिरें				=	७ का दाव	
,,	,,		,, सीधी ,,	=	१४	,, ,,

यदि सात या सात से ऊपर का दाव पड़ जाय तो खिलाड़ी को एक बार कौड़ियां फेंकने का ग्रौर मौका दिया जाता है।

कौड़ियों के स्थान पर हाथी दांत या हड्डी के बने तीन पासे फेंक कर भी यह खेल खेला जाता है। प्रत्येक पासे के छः पार्श्व होते हैं ग्रौर हर पार्श्व का कुछ बिंदियों के चिन्ह होते हैं जिनकी संख्या कम से कम एक ग्रौर ग्रधिक से ग्रधिक छः होती है। इसमें प्रत्येक पासे के ऊपर पड़ने वाले पार्श्व की बिंदियों के चिन्हों के दाव के ग्रंक माने जाते हैं किन्तु ग्रंक तथा ग्रंक मानने का ढंग कौड़ियों से भिन्न होता है।

क्रि०प्र०—ग्राणौ, देणौ, लागणौ।

१२ कुश्ती में काम में लाई जाने वाली युक्ति, पेच।

यौ०—दाव-पेच।

१३ देखो 'दाव' (७) (रू.भे.) उ०—घणी फीनसताई चोज लियां ग्रारोगजै छै। दारू रा दाव वीच-वीच लीजै छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—दाह, दाहौ।

दावड़—सं०स्त्री० (देश०) १ सूत की पतली सूतली जो सूत कातने के (चर्खे के) चक्कर की खपच्चियों पर लपेटी जाती है।

रू०भे०—दांवण।

२ देखो 'द्राविड़' (रू.भे.) उ०—जाळंधर कसमीर सिंध सोरठ खुरसांणी, ग्रोड़ीसा कनवज्ज नगर थट्टा मुळतांणी। कुंकण नै केदार दीप सिंगल माले री, वावड़ सावड़ देस, ग्रांण तिलंगांणाह फेरी।
—नैणसी

दावड़ी—देखो 'डावड़ी' (रू.भे.) उ०—दावड़्यां ग्रायां इयें नूं कहै।
—देवजी वगड़ावत री वात

दावड़ो—देखो 'डावड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दावड़ी)

दावटण—वि०—दवाने वाला, दबोचने वाला। उ०—गिरंद गाहटण नूंभ मणा सझै रिख विसम गत। दोयण घण दावटण 'जैत' दूजो।
—द.दा.

दावट्टणौ, दावट्टवौ—क्रि०स० [सं० दमन] दमन करना, दबोचना।

उ०—'जोध' तणैं घर 'जैतसी', वंका राइ विभाड़। दुसमण दावट्टण दमण, उत्तर भड़ां किमाड़।—रा.ज. रासौ

दावण-सं०पु० [?] स्त्रियों का वस्त्र विशेष (?)।
उ०—१ घूमघुमाळौ दावण पहर श्रो खींवराजजी, ऊपर श्रोढो वोरंग चूंदड़ी। चालौ ना मदरी जी चाल श्रो खींवराजजी, श्रसल कुहावो श्रसतरी।—लो.गी.
उ०—२ दावण सिमाद्यौ श्रो जी नणदोई, चूनड़ी री साई बालम से लगाई, प्यारा नणदोई।—लो.गी.
[सं० दामन् या दामनी] २ खाट के पायताने की श्रोर लगी वह रस्सी जिससे खाट की बिनन को तंग किया जाता है।
उ०—खातीड़ा तूं मोल चंदण रौ रूंख, काढ़ घड़ लाजै रंग री ढोलियौ। श्राया पाया रतन जड़ाव, ईसां ढळावौ जाजा हींगळू। चमचीर वेभ बणाय, दावण घलावौ मखमूळ री। सूश्रा वरणी सोड़ भराय, गालमसी रा गादी गींडवा।—लो.गी.
रू०भे० -दांवण।
दावणगिरी-सं०पु०—देखो 'दांमणगीर' (रू.भे.)
उ०—दरगा में दावणगिरियां हूं वणूं।—लो.गी.
दावणौ—देखो 'दांमणौ' (रू.भे.) (शेखावाटी)
दावणौ, दावबौ-क्रि०स० [सं० दह्] १ विरह में जलाना, पीड़ित करना, संतप्त करना। उ०—जे थूं म्हांनै श्रोजूं दावेगौ, तौ थन रांम दुहाई, चंदा, छिप ज्या रे बदळी मांही।—लो.गी.
२ जलाना, दग्ध करना।
दावत-सं०स्त्री० [श्र० दश्रवत] १ भोज, ज्योनार।
क्रि०प्र०—करणी, दैणी।
२ निमंत्रण।
क्रि०प्र०—दैणी।
दावदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.) उ०—तळां श्रोखणै छडाळा खुरां खूंदै तुरां, धोम धोम रूपी चखां जोभ धारै। दावदारां पड़ै धाक धारूं दसा, श्राप सा मांटियां करै श्रारै।—वखतौ खिड़ियौ
दावदी-सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की लता जिसके फूलों में हल्के गुलाबी रंग की झांई होती है।
२ देखो 'दाऊदी' (रू.भे.) उ०—डहडहत कुसुम पूरत पराग, पल्लव दळ मिळ जेव जाग। रवमुखी, दावदी पुन पळास, नाफुरम परगस श्रास पास।—मयारांम दरजी री वात
दावां-सं०स्त्री० (बहु व०) [सं० दामन्] रहट की माल को उल्टी घूमने से रोकने के हेतु घेरे की पटड़ियों पर बंधे हुए रस्सी के टुकड़े।
दावाश्रगन—देखो 'दावाग्नि' (रू.भे.) उ०—'दुरग' के पुत्र भतीजे श्रोर भाई। दावाश्रगन साह लागै मेघ तैं सवाई।—रा.रू.
दावागर, दावागिर, दावागीर, दावागीरू-सं०पु० [श्र०दावा+फागीर] १ शत्रु। उ०—१ दावागरां साल पोह दारुण, दिल्लेसुरां तणौ दावागर। जम कैंळास दिसा नह जावै, इम जोधांण न श्रावै श्रासुर।
—सू.प्र.
उ०—२ कड़ियाळू के वीचि कूड़छुंरू खरड़ाते वग्गे। दावागीरू के हियै विच सूळ से लग्गे।—सू.प्र.
उ०—३ सूरू के सहायक, दांनवूं के दावागीर, दिलपाकूं के दोसत।
—र.रू.
उ०—४ श्रागै गढ़ तौ कितेक वात पण दावागीर नै तौ उरस मैं जाय झपट ल्यावै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—५ दवागीरूं का सुरतर दावागीरूं का साल। सव राजूं का सिरपोस महाराजा 'श्रभमाल'।—सू.प्र.
दावाग्नि-सं०स्त्री० [सं०] वन की श्रग्नि।
रू०भे०—दवाग, दवागि, दवागिन, दवाग्नि, दावाश्रगन।
दावात—देखो 'दवात' (रू.भे.)
दावादार-सं०पु० [श्र० दावा+फा० दार] १ श्रपना हक जताने वाला, दावा करने वाला। २ भागीदार, हिस्सेदार।
रू०भे०—दायंदार, दायेंदार, दायेदार, दावदार, दावेदार।
दावानळ, दावानल-सं०स्त्री० [सं० दावानल] वन में पैदा होने वाली श्रग्नि, दावाग्नि (श्र.मा.) उ०—१ रस में वेरस वस रागां रळ रीसै। दूलहिण दूलह नै दावानळ दीसै।—ऊ.का.
उ०—२ दी श्राग्या दूसरां मेळ कीजै ग्रह मंगळ। जण समयै दिस श्राठ काठ जग्गे दावानळ।—रा.रू.
रू०भे०—दवानळ।
दावाबंध-सं०पु० [श्र० दावा+सं० बंध] पदार्थ विशेष पर हक (श्रधिकार) प्रकट करने वाला, दावा करने वाला।
उ०—धरि हिंदवांणां ढाल, दावाबंध दिलेस रा। इम स्रुग गौ 'श्रजमाल', जस राखे 'जसराज' उत।—सू.प्र.
दावामुदी-वि० [श्र० दावा+मुद्दई] विरोध करने वाला, दावा करने वाला, विरोधी। उ०—भागा श्रनेक सोबा भिड़ै, कमंध खाग ग्रहियां करां। जीवियौ जितै रहियौ 'जसौ', दावामुदी दिलेस रां।
—वखतौ खिड़ियौ
दावायत, दावायतौ-स०पु० [श्र० दावा+रा०प्र०श्रायत] विरोध करने वाला, शत्रु, दुश्मन। उ०—त्र्यंबक बाग वसराळ गैणाग जग श्रातसां, खाग दावायतां श्राव खूटी। लाग बूंदी तगत लयंतां लगाई, श्राग जैपुर नगर जाग ऊठी।—कोटा नरेस दुरजणसिंघ रौ गीत
दावियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ विरह से जलाया हुश्रा, पीड़ित किया हुश्रा, संतप्त किया हुश्रा। २ जलाया हुश्रा, दग्ध किया हुश्रा।
(स्त्री० दावियोड़ी)
दावेदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.)
दावै-सं०पु०—कारण, हेतु। उ०—श्रनंत दावै विना वाळि नां श्राहणौ।—पी.ग्रं.
वि०—समान, तुल्य। उ०—पूठ वाथां न मावै, पूछौ चम्मर दावै।
—रा.सा.सं.
क्रि०वि०—(देश०) श्रवसर पर, मौके पर।
उ०—तिण दावै सांखलौ देवराज पण इण फौज मांहे हुतौ, राव चूंडौ मारियौ।—नैणसी

दावोदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.) उ०—वळि विगठी वारं सांझ सवारं, दंडाकारं कांतारं। सांम्रव सिरकारं सिह सिकारं, दावोदारं दरवारं।—व.व.ग्रं.

दावौ–सं०पु० [अ० दावा] १ किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने की क्रिया, अधिकार, कब्जा। उ०—दुरविध घमड़ी दे सगणकारी साजी। भारी भमड़ी लै घर में भूवाजी। चिलमी अमलों के जुलमी चितचावा, दासी वेस्यां रा मदवां रा दावा।—ऊ.का.

२ स्वत्व, हक। उ०—सु थारी तरै देख फुरमावां हां कै जोधपुर में थारा भायां सूं जमी रौ दावौ मती करजै, जिण रौ वचन दै। तद कंवर वीकैजी कयौ, 'आपरै फुरमावणै सूं भायां सूं दावौ नहीं करसूं।—द.दा.

२ अपना अधिकार स्थिर करने के लिये न्यायालय में दिया जाने वाला प्रार्थना-पत्र, मुकद्दमा। उ०—१ बीच वजारां वांणियां, भांजै सरजै भाव। पावां रा लेखा करै, दावां रा दरयाव।—बां.दा.

उ०—२ कचैड़ी में दावौ पेस हुयौ अर न्याव रा ठेकेदारां उण रै नांम कुड़की रौ हुकम निकाळ दियौ।—रातवासौ

यौ०—दावा-पूळी।

४ शत्रुता, वैर। उ०—१ तद सूराचंद रा चहुआंणां रै माथै राठौड़ां री वैर थी, सु सेखै मरतै कह्यौ थौ—राठौड़ जैतसी ऊदावत नूं कहज्यौ, तेजसी डूंगरसियोत नूं कहज्यौ औ दावौ वाळज्यौ।
—राव मालदे री वात

उ०—२ क ती हूं मोटौ हुईस, नै मांहरी धरती गई छै सु वाळीस। मांह रौ दावौ वरिहाहां मांहे छै, सु वळसी।—नैणसी

क्रि०प्र०—वाळणौ।

५ प्रतिकार; बदला। उ०—राव उदैसिंघ वीकूंपुर धणी। वळोच समै राव आसकरण पूगळ रौ धणी मारियौ हुतौ, सु उदैसिंघ समा नूं घणा साथ सूं मारियौ, वडौ दावौ वाळियौ।—नैणसी

६ स्पर्धा, होड। उ०—वांनरां सुरां सापां नरां वीरवर, दूसरा च्यार सूं धरौ दावौ। उलंघौ अरोगौ भार सिर उठावौ, ऊथपौ तखत मरजाद आवौ।—द.दा.

७ युद्ध। उ०—(महा) मौड़ मुरधर तणा खळां दळ मोड़तां, दौड़ पतिसाह सूं करै दावा। रौड़ रमतां थकां चौड़ रिम्म चूरतां, ठौड़ ही ठौड़ राठौड़ ठावा।—ध.व.ग्रं.

८ वैभव, ऐश्वर्य। उ०—तूं जीवज्ये कोड़ाकोड़ि वरसां माह री आसीस। दिन दिन ताह री चढ़त दावौ करौ स्री जगदीस।
—प.च.चौ.

९ अधिकार, जोर, प्रताप. १० किसी बात पर जोर दे कर कहना, दृढ़तापूर्वक कथन।

[सं० दव] ११ दावाग्नि, दावानल। उ०—घोड़ा री वाग तौ ढीली मेल्ह दीधी, ध्यांन सूं देखतौ जावै। देखियौ! वन में दावौ लग रह्यौ है। कठी नै ई वच नै भागवा रौ गेलौ नीं?—मूमल
(मि० दव)

दावौ–सं०पु० [सं० दव] शीतकाल में सप्तर्षियों के अस्त होने के स्थान से अर्थात् उत्तर व वायव्य दिशा के मध्य से चलने वाली वायु जो फसल को हानि पहुँचाती है। उ०—मेघ मरोड़ै डाळ, पवन आंधी झक-झोळै। दावौ देवै दाग, वैर गिरमी मिस घोळै।—दसदेव

रू०भे०—दाग्रौ, दाहौ।

दास–सं०पु० [सं०] (स्त्री० दासी) १ अपने को दूसरे की सेवा में समर्पित करने वाला, सेवक, नौकर।

पर्या०—अनुचर, करमकर, किंकर, चाकर, चेट, परजात, परिचारक, वेली, भ्रत्त।

२ भक्त। उ०—नमौ जग-आदि-पुरुख जगीस, नमौ अवतार असंखे ईस। नमौ नारायण जोग-निवास, नमौ दुख-मेट उधारण-दास।
—ह.र.

अल्पा०—दासिक, दासौ।

दासड़ली, दासड़ी, दासडली, दासडी—देखो 'दासी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ दूधडला नै पीधा ओ राव 'माल' घर री डावड़ी, हां रे छाछड़ला रा किस्या रे सवाद। दासड़ली रौ जायौ ओ राव 'माल' घोड़ै चढ़ै।—लो.गी.

उ०—२ तळफत तळफत बहु दिन बीता, पड़ी बिरह की पासड़ियां। अब तौ वेगि दया करि साहिब, मैं तौ तुम्हरी दासड़ियां।—मीरां

उ०—३ दह दिसि दासडी, आगळि आळस छंडि। वहठी बावन पूतळी, सो सार-ठीउ मंडि।—मा.कां.प्र.

उ०—४ देव! तुम्हारी दासडी, पनही परठणहारि। साथ न मेहलूं स्वांमि नूं, स्वरग नरगि संसारि।—मा.कां.प्र.

दासतांन—देखो 'दास्तांन' (रू.भे.)

दासता–सं०स्त्री० [सं०] सेवक का कर्म, सेवावृत्ति, दासत्व।

क्रि०प्र०—करणी।

दासदासांन—देखो 'दासानुदास' (रू.भे.) उ०—समवाद काळी तणौ एह सारौ। चवै दासदासांन 'सांयौ' चितारौ।—ना.द.

दासदीकोळा–वि०—दासी आदि के (?)। उ०—अगारय महामात्य सुहासोला उचितबोला, दासदीकोळा गादीया मसूरिया पुडपुडीया।
—व.स.

दासनंदणी, दासनंदिनी–सं०स्त्री० [सं० दाशनंदिनी] धीवर की पुत्री सत्यवती जो व्यास की माता थी।

दासपण, दासपणौ–सं०पु० [सं० दासत्वन=दासत्व, अप० दासप्पण, प्रा० दासत्तण] १ दासत्व, सेवावृत्ति। उ०—१ एतलइं अति पग-भव पूरी। एक दासपण चित्त अणूरी।—विराटपर्व

उ०—२ चरचै तन चंदण चीतोड़ा, चाचर पोहप चडावै। दासपणौ न करै दीवाळी, ईद तणै घर आवै।—महाराणा अमरसिंह रौ गीत

दासरत्य, दासरथ, दासरथि, दासरथी, दासरथ्थी–सं०पु० [सं० दाशरथः, दाशरथि] १ राजा दशरथ के पुत्र, श्रीराम (अ.मा., नां.मा.)

उ०—१ सभै आवळा भूल जांनी सुरंगा। चढ़ै दासरत्यं वजै राग जंगा।—सू.प्र.

उ०—२ रटैत वधाई अवैं दासरत्थं। उघम्मेस ओघेस घन्नेस अरथं।

—सू.प्र.

उ०— ३ दासरथ सुजस नव खंड जाहर दुफ्ल, करां भुजदंड वाखांण केहा।—र.ज.प्र.

उ०—४ लसै वळ भूप जनक मन दुमन लख, भुजां वळ दासरथ चाप भंजै।—र.ज.प्र.

उ०—५ जम लग कठै भै सीस जियां, तन दासरथी नित वास तियां। तन दासरथी नह वास तियां, जम लगसी माथै जोर जियां।

—र.ज.प्र.

उ०—६ दासरथी चौथै दिवस, आये सिद्ध आस्रम।—रांमरासौ

उ०—७ दासरथी लिखमण सुत दसरथ, दोऊ सुणै सिधारे दसरथ। दीह उचाटी कीधे दसरथ, दीधौ प्रांण पछाड़ी दसरथ।—र.रू.

वि०वि०—यह शब्द राजा दशरथ के चारों पुत्रों के लिये प्रयुक्त हो सकता है किन्तु विशेषत: श्रीराम के लिये ही।

२ राजा दशरथ। उ०—चुरस मारग नीत चालै, घाव भागां निकूं घालै। वीरवर दासरथ-वाळौ, कळह आसुर अंत काळौ। विरध धारण वीर।—र.ज.प्र.

दासातन—सं०पु० [सं० दासत्वन=दासत्व] दासता, दासत्व।

उ०—१ लघु अत जिम अभिलाख सु लाधै। समै तेणि दासातन साधै।—सू.प्र.

उ०—२ नांम धरावै दास का, दासातन वै दूर। दादू कारज क्यौं सरै, हरि सौं नहीं हजूर।—दादू बांणी

दासानुदास—सं०पु० [सं०] सेवक का सेवक, अत्यन्त तुच्छ (शिष्टता का द्योतक) उ०—माता करइ कर फास, पित्ता का थया सुपास, सुकुमाल सुविलास अधिक उल्हास जु। समयसुंदर तास चरण दासानुदास, जपति सुजस वास, साहिब सुपास जु।—स.कु.

रू०भे०—दासदासांन।

दासि—देखो 'दासी' (रू.भे.) उ०—१ पिया समीप रूपरासि दासि आसि पासियं। भरै प्रकास स्त्री उदोति दीप जोति भासियं। सुगंध गंधसार एण सार मेघसार ए। सवास अंबरे लुवांन डंबरे निसार ए।

—रा.रू.

उ०—२ काळमुही फिरइ मंदिर मांहि, रति वल्लभ तणइ तडि जाए। जीवतइ तइं पराभवि पूरी, देव दासि जिम दुरजनि मारी।

—विराट पर्व

दासिक—देखो 'दास' (अल्पा., रू.भे.) उ०—लोहायळ अत चोलिय सुंदर। नागायरूजण मैं नहुं दासिक। मैं न मछंदर मैं न जळंधर। मैं हु रे! गोरख तूं 'भरड़ा' लख।—पा.प्र.

दासिका—देखो 'दासी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मुणूं और कासूं प्रभू देखि मोहै। सखी उरवसी दासिका रूप सोहै।—सू.प्र.

दासी—सं०स्त्री० [सं०] १ सेवा करने वाली स्त्री, सेविका।

पर्या०—कळचाळी, किंकरी, गोली, चेडी, दिलरखी, भत्या, विदरी।

२ वेश्या, गनिका (अ.मा.)

[सं० दाशी] ३ धीवर की स्त्री।

रू०भे०—दासि।

अल्पा०—दासड़ली, दासड़ी, दासडली, दासडी, दासिका।

दासीजादौ—सं०पु०यौ० [सं० दासी+फा० जादः] दासी का पुत्र।

उ०—दासीजादा दे दगा, पास रहंता पूर। रीझै खीजै राखणा, दासीजादा दूर।—बां.दा.

दासेर, दासेरक—सं०पु० [सं० दासेरा:, दासेरक:] ऊँट (डि.को.)

दासौ—सं०पु० (देश०) १ दरवाजे के मध्य नीचे लगाया जाने वाला वह पत्थर जिसे लांघ कर भीतर या बाहर आना जाना होता है।

२ वह गढ़ा हुआ पत्थर जो नींव से कुछ ऊपर उठी हुई दीवार पर लगाया जाता है। इसकी किनारी दीवार से बाहर रहती है।

३ देखो 'दास' (अल्पा., रू.भे.)

दास्तांन—सं०स्त्री० [फ़ा० दास्तान] १ वृत्तांत, हाल. २ कथा.

३ वर्णन।

रू०भे०—दासतांन।

दाह—सं०स्त्री० [सं०] १ भस्म करने या जलाने की क्रिया या भाव, भस्मीकरण। उ०—१ जो नह आवै करण जुध, सुण बोलावौ सीह। दाह हुवै नह दहण सूं, दिनकर हुवै न दीह।—बां.दा.

२ मुर्दा जलाने का कर्म, शव फूंकने की क्रिया।

उ०—१ महाराजा अभयसिंहजी संवत् १८०५ आसाढ़ सुदी ५ नूं अजमेर मांही देवलोक हुवा। स्त्री पोहकरजी ऊपर दाह हुवौ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ तिणइ दिवसि वेढ़ि मांडिसइ, वीरमदेव प्रांण छांडिसइ। मस्तक तणउ अम्हारु नाह, जमली रही करावसु दाह।—कां.दे.प्र.

३ जलन, ताप। उ०—१ मैं कीन्हौ सांचै मतै, नायक तो सूं नेह। वण आवै सो देह वित, दाह विरह मत देह।—बां.दा.

उ०—२ पासर रैणां-पहर कटै किम पलक हुवंती। दिवस दभाळण दाह घटै किण जोग चढ़ंती।—मेघ.

उ०—३ अंबरि बारइ रवि तपइ, दिसा-प्रति दि दाह। सीतळ तुझ संभारवउं, अवर न अेकू ठाह।—मा.कां.प्र.

४ अग्नि (अ.मा.) ५ दु:ख। उ०—१ धूजंत धर तन धीर, अनि भूप सरब अमीर। दिल सोच महमंद दाह, हुय कंप उर पतिसाह।

—सू.प्र.

उ०—२ इळ कनक मोर उडाय, वधि जोम तबल वजाय। दे साह रै उर दाह, इम आवियौ 'अभसाह'।—सू.प्र.

६ पीड़ा। उ०—पूरव पुण्य सजोगइ पांम्यउ, तूं त्रिभुवन नउ नाह जी। एक वार मुझ नयन निहाळउ, टाळउ भव दुह दाह जी।

—स.कु.

७ ईर्ष्या, जलन, डाह. ८ देखो 'दाव' (रू.भे.)

उ०—जिसिउ घाय चूकउ भड़, जिसिउ डाळ चूकउ वांनर, जिसिउ

विद्या चूकउ विद्याधर, जिसिउ ठांम भूलउ भंडारी, दाह चूकउ जुआरी, जिसिउ स्थांन भ्रस्ट हरिण, इसिउ विच्छाय वदन।—व.स.

दाहक–सं०पु० [सं०] अग्नि, आग।

वि०—जलाने वाला। उ०—सुर जपणौ सतेज, स्रवण अम्रत हिमकर सम। उर दाहक सम आग, तौर सुर-राज राज तिम।
—र.ज.प्र.

दाहकता–सं०स्त्री [सं०] जलने का भाव या गुण।

दाहकरम–सं०पु०यौ० [सं० दाहकर्म] शव जलाने का कार्य।

रू०भे०—दाहक्रम।

दाहकास्ठ–सं०पु०यौ० [सं० दाहकाष्ठ]अगर जिसे सुगंध के लिये जलाते हैं।

दाहक्रम—देखो 'दाहकरम' (रू.भे.)

दाहक्रिया–सं०स्त्री०यौ० [सं०] मृतक को जलाने का संस्कार, शव-दाह-कर्म।

दाहजनक–वि०यौ० [सं०] जलन या ताप उत्पन्न करने वाला।

दाहज्वर–सं०पु० [सं०] वह ज्वर जिसमें शरीर में बहुत अधिक जलन मालूम हो।

दाहण–सं०पु० [सं० दाहन] अग्नि, आग।

दाहणौ–वि० [सं० दाह] (स्त्री० दाहणी) १ नाश करने वाला, संहार करने वाला, मारने वाला। उ०—१ मती क्रोध दावा दूठ दाहणी असंत माडां, संत चाडां आवै सग्र चाहणी सादेस। वूडती जेहाजां संध थाहणी अथाह बाहां, उग्राहणी साहां सिंघवाहणी आदेस।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ सूर धीर तास संत, मांण पांण तेज मंत। दाहणौ जुधां दयंत, नंत नंत नंत।—र.ज.प्र.

२ जलने वाला, भस्म करने वाला. ३ देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.)

उ०—१ काळा कीट साथि दळ काजू। वार हजार दाहणी वाजू।
—सू.प्र.

उ०—२ रांणी रा हृदय पर दाहणौ वाजू जे तिल छै सो नहीं बणाइयौ।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ आच उधार दाहणौ जाई, ग्रह आंगणै मेलंतां गाय। तैं करनादे साह तारियौ, महण बीच डूबंतौ माय।—चौथ वीठू

दाहणौ, दाहबौ–क्रि०अ० [सं० दाहः] १ भस्म होना, जलना।

उ०—दव विण सारा दाहिया, अथवा खारच अंग। नर कायर बांछै नहीं, जिण घर माथै जंग।—बां.दा.

२ संतप्त होना, दुखी होना, कुढ़ना। उ०—आंघी खूंखाटा करती उठ आवै। फदकै मूंफाटा चेता चुळ जावै। गोळू गायां ले गांमां गळ गाहै। दुखिया सुखिया मिळ दोनूं दळ दाहै।—ऊ.का.

क्रि०स०—३ भस्म करना, जलाना. ४ संतप्त करना, दुखी करना, कुढ़ाना। उ०—१ सुहिणा हूँ तइ दाहवी, तो नइ दहियउ अग्गि। सव जोयण साजण वसइ, सूती थी गळि लग्गि।—ढो.मा.

उ०—२ महराज भूप इण भेद मांहि। दीधा बहु सांसण क्रिपण दाहि।—वं.भा.

उ०—३ विरहौ मोहे दाहे सदा, कासूं करूं पुकार। करो आप हो अब क्रिपा, लेवो हाथ पसार।—कुंवरसी सांखला री वारता

५ संहार करना, नाश करना, मारना। उ०—चलै आवतां फिरंगी सीस, ऊससै कोघार 'चैनो', चोळ चखां सार धारां, दाहणां चंचाळ। उवक्कै अरावां आग, हूवकै जोधार अंग। ताता जंगां पमंगां मेलिया निराताळ।—बुधसिंह सिढ़ायच

दाहणहार, हारौ (हारी), दाहणियौ—वि०।

दहवाड़णौ, दहवाड़बौ, दहवाणौ, दहवाबौ, दहवावणौ, दहवाववौ, दहाड़णौ, दहाड़बौ, दहाणौ, दहाबौ, दहावणौ, दहाववौ, दाहाड़णौ, दाहाड़बौ, दाहाणौ, दाहाबौ, दाहावणौ, दाहावबौ—प्रे०रू०।

दाहिओड़ौ, दाहियोड़ौ, दाह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दाहीजणौ, दाहीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दाहनौ—देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.) उ०—दिसासूळ दाहनौ पूठ जोगणी पुणीजै। डावौ दिन मांनियौ चंद सनमुखौ सुणीजै।—पा.प्र.
(स्त्री० दाहनी)

दाहा–सं०स्त्री०— शव फूंकने की क्रिया, दाह-संस्कार।

उ०—दाहा सब होतां देसोती, स्वाहा चव समसांणै।—ऊ.का.

दाहिणउं, दाहिणउ—देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—नयणह आगळि गयउ कुरंगू, राय चींति जां हूयउ विरंगू, जोइ वांमुं दाहिणउं।—पं.पं.च.

दाहिणै–क्रि०वि० [सं० दक्षिण] दाहिने हाथ की ओर, उस दिशा की ओर जिधर दाहिना हाथ हो।

रू०भे०—दाहिनै।

दाहिणौ–वि० [सं० दक्षिण] (स्त्री० दाहिणी) १ बांया का उल्टा, दांया, दक्षिण। उ०—१ खग रूपी भड़ दाहिणै, घणै पराक्रम जांण। भुज ओढ़ण भूपाळ रै, वांमै तिकै वखांण।—रा.रू.

उ०—२ सो देखतां ही कोपानळ में मरा कान्ह चहुवांण ऊठि मूंछ रा हाथ सहित दाहिणै खांधै खड्ग रौ प्रहार कियौ।—वं.भा.

२ दाहिने हाथ की ओर पड़ने वाला।

रू०भे०—दहणौ, दाहणौ, दाहिणउं, दाहिणउ।

दाहिनै—देखो 'दाहिणै' (रू.भे.)

दाहिनौ—देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.)

दाहिमा–सं०पु० [सं० दाधीच] १ एक ब्राह्मण वंश. २ एक प्राचीन राजपूत वंश।

रू०भे०—दायमा।

दाहिमौ–सं०पु०—१ 'दाहिमा' ब्राह्मण वंश का व्यक्ति. २ 'दाहिमा' राजपूत वंश का व्यक्ति।

रू०भे०—दायमौ।

दाहियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ भस्म हुवा हुआ, जला हुआ. २ संतप्त हुवा हुआ, दुखी हुवा हुआ, कुढ़ा हुआ. ३ भस्म किया हुआ, जलाया हुआ. ४ संतप्त किया हुआ, दुखी किया हुआ, कुढ़ाया हुआ.

५ सँहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ।
(स्त्री० दाहियोड़ी)

दाहु—देखो 'दाह' (रू.भे.) उ०—१ मणूं कोडि मिळी दिसी कस्मली ललीय घूळि दिनि अंबर नइं मिळी। करइ दाहु विदाहु हियइ धरइ, कहु कीचक हुइ मरत मरइ।—विराट पर्व

उ०—२ त्रिभुवननायक ग्यांनिय मांनिय वरू संसार, नेमि न यौवनि परिणए अरणए घरइं दसार। कहइं कहावइ ते जिम तेजि मनोहर नाहु, तिम तिम किमइं न मांनइ, ए मांनइ मनि अति दाहु।
—नेमिनाथ फागु

दाहो–सं०पु० [सं० दाह] १ उष्णता प्रकट कर आने वाला ज्वर.

२ देखो 'दाव' (रू.भे.) उ०—१ हीर चीर नइ पटकूळ, रायनु सिंगार रे। तिम तिम नांखइ पासा तिहां, दाहा आवइ आसार रे।
—नव-दवदंती रास

उ०—२ नळ कूबर तिहां बइठा वेउ, दाहा नांखइ अति भला तेउ। नळइ कूबर हरावीउ, दस अंगुळी मुखि करावीउ।—नळ-दवदंती रास

३ देखो 'दावो' (रू.भे.) उ०—विरहणी कांमणिग्रां रा मुखां कमळ कांम री दाह सूं वळिया छै, तिण भांति दाहे बाळिग्रा छै।
—रा.सा.सं.

दिकनखत्र, दिगनक्षत्र–सं०पु० [सं० दिङ्नक्षत्र] विशेष नक्षत्र जो फलित ज्योतिष में विशिष्ट दिशाओं से सम्बद्ध माने जाते हैं।

दिगमूढ़—देखो 'दिगमूढ़' (रू.भे.) उ०—हुम्रो दिगमूढ़ ब्रहम्माय देख; अजंपाय दाखव रूप अलेख। सनक्क सनातन गात सुरीत, चिंताविय ब्रह्माय हंस चरीत।—ह.र.

दिंड–सं०पु०—एक प्रकार का नाच।

दिंडी–सं०पु० [सं०] उन्नीस मात्राओं का एक छंद जिसके अन्त में दो गुरु होते हैं और जिसमें ९ और १० पर विश्राम होते हैं। इसमें कभी केवल दो चरणों का और कभी चार चरणों का अनुप्रास होता है।

दि–सं०स्त्री०—१ आंख. २ दशों दिशाएं (एका०)

वि०—१ दाता, दातार. २ पालने वाला, पालक (एका०)

दिग्रण–वि०—देने वाला, दाता। उ०—१ गुणपति गुणे गहीरं, गुण-ग्राहग दांन गुण दिग्रणं। सिधि रिधि सुबुधि सधीरं, सुंडाळा देव सुप्रसनं।—वचनिका

उ०—२ दिग्रण दांन मांन दातारा, अमर नांम दार उदार। सगह सूर धीर सांमंत, विमळ जोतिवंत जैवंत।—ल.पि.

दिग्राळीएल (हेल)—देखो 'दीवाळीएल (हेल)' (रू.भे.)

दिग्रा-सळाई, दियासलाई—देखो 'दिया-सळाई' (रू.भे.)

दिक–सं०स्त्री० [सं० दिक्, दिग्] १ ओर, तरफ, दिशा (डि.को.)

सं०पु० [अ० दिक] २ तपेदिक. क्षय रोग।

वि०—१ तंग, हैरान।

क्रि०प्र०—रैं'णी, होणी।

२ अस्वस्थ, बीमार।

क्रि०प्र०—रैं'णी, होणी।

दिक-कन्या—[सं० दिक्कन्या] दिशा रूपी में कन्या।

वि०वि०—दिशाओं को पुराणों में ब्रह्मा की कन्याएं मानी हैं। वाराह पुराण के अनुसार जिस समय ब्रह्मा सृष्टि रचना की चिंता में थे ठीक उस समय उनके कान से दश कुमारिकाएं उत्पन्न हुईं। ब्रह्मा ने उन्हें आदेश दिया कि जिधर तुम्हारी इच्छा हो उधर चली जाओ। तत्पश्चात वे कन्याएं एक-एक करके दश ही दिशाओं में चली गईं। इसके बाद ब्रह्मा ने आठ लोकपालों की रचना की और इन्हीं अपनी आठ कन्याओं को बुला कर प्रत्येक लोकपाल को एक एक कन्या दे दी। तत्पश्चात ब्रह्मा स्वयं आकाश की ओर चले गये और नीचे की ओर शेष भगवान को भेजा।

दिककुमार–सं०पु० [सं० दिक्कुमार] भवनपति नामक देवताओं में से एक (जैन)

दिकचक्र–सं०पु० [सं० दिक्चक्र] आठों दिशाओं का समूह।

दिकपति–सं०पु० [सं० दिक्पति] १ ज्योतिष के अनुसार दिशाओं के स्वामी—ग्रह। वि०वि—फलित ज्योतिष में आठ दिशाओं के आठ स्वामी माने गये हैं। यथा—दक्षिण का स्वामी मंगल, पश्चिम का स्वामी शनि, उत्तर का बुध, पूर्व का सूर्य, अग्नि कोण का शुक्र, नैर्ऋत कोण का राहु, वायु कोण के चन्द्रमा और ईशान कोण के बृहस्पति।

२ देखो 'दिक्पाळ' (रू.भे.)

दिकपाळ–सं०पु० [सं० दिकपाल] पुराणानुसार दशों दिशाओं का पालन करने वाले देवता।

(१) पूर्व में—इन्द्र. (२) अग्नि कोण में—वन्हि. (३) दक्षिण में—यम. (४) नैर्ऋत्य में—नैर्ऋत. (५) पश्चिम में—वारुण. (६) वायुकोण में—मरुत. (७) उत्तर में—कुबेर. (८) ईशान में—ईश. (९) ऊर्ध्व में—ब्रह्मा. (१०) अधो में—अनन्त।

रू०भे०—दइगपाळ, दगपाळ, दिगपाळ, दिग्पाळ।

दिकमूढ़—देखो 'दिगमूढ़' (रू.भे.)

दिकरेखा–सं०स्त्री० [सं० दिक्रेखा] क्षितिज।

रू०भे०—दिगरेखा।

दिकसाधन–सं०पु० [सं० दिक्साधन] वह उपाय जिससे दिशाओं का ज्ञान हो।

दिकसूळ—देखो 'दिसासूळ' (रू.भे.)

दिकस्वामी–सं०पु० [सं० दिक्स्वामी] दिक्पाल।

दिक्खा—देखो 'दीक्षा' (रू.भे)

दिक्षण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे)

दिक्कत–सं०स्त्री० [अ० दिक्कत] १ तंगी, परेशानी।

क्रि०प्र०—होणी।

२ कठिनाई, मुश्किल।

क्रि०प्र०—आणी, करणी।

दिक्कुमारिका-सं०स्त्री० [सं०] तीर्थंकर भगवान के जन्मकाल में प्रसूति कार्य में सेवा करने वाली कुमारिका—ये संख्या में ५६ मानी जाती हैं।

वि०वि०—१ अधःलोक में रहने वाली—

१ भोगंकरा, २ भोगवती, ३ सुभोगा, ४ भोगमालिनी, ५ तोयधारा, ६ विचित्रा, ७ पुष्पमाला, ८ आनंदिता।

२—उर्ध्व लोक में निवास करने वाली—

१ मेघंकरा, २ मेघवती, ३ सुमेघा, ४ मेघमालिनी, ५ सुवत्सा, ६ वत्समित्रा, ७ वारिषेणा, ८ बलाहका।

३—पूर्व दिशा के रुचक पर्वत पर निवास करने वाली—

१ नंदोतरा, २ नंदा, ३ आनंदा, ४ नंदवर्द्धिनी (आनंदवर्द्धिनी), ५ विजया, ६ वैजयंती, ७ जयंती, ८ अपराजिता।

४—दक्षिण रुचक पर्वत पर निवास करने वाली—

१ प्रभाहार, २ सुप्रदत्ता, ३ सुप्रबुधा, ४ यशोधरा, ५ लक्ष्मीवती, ६ शेषवती, ७ चित्रगुप्ता, ८ वसुंधरा।

५—पश्चिम रुचक पर्वत पर निवास करने वाली—

१ इलादेवी, २ सुरादेवी, ३ पृथिवी, ४ पद्मावती, ५ एकनासा, ६ नवमिका, ७ भद्रा, ८ सीता।

६—उत्तर रुचक पर्वत पर निवास करने वाली—

१ अलंबुसा २ मितकेशी, ३ पुण्डरिका, ४ वारुणी, ५ हासा, ६ सर्वप्रभा, ७ श्री, ८ ह्ृ।

७—विदिशा में निवास करने वाली—

१ विचित्रा, २ चित्र कनका, ३ तारा, ४ सौदामिनी।

८—मध्यदिशा में निवास करने वाली—

१ रूपा, २ रूपाशिका, ३ सरूपा, रूपकावती।

उ०—जन्म समइ छप्पन दिक्कुमारिका स्तुति करइ।—व.स.

दिक्खण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—'दुरगो' दिक्खण देस में, ऊगो जेठ अदीत। पूगो धर यूरोप री, 'पातल' वीर प्रवीत।
—किसोरदांन बारहठ

दिक्षा—देखो 'दीक्षा' (रू.भे.) उ०—देसूरी नो नाथो साधु स्त्री बेटी मां छोड़ दिक्षा लीधी।—मि.द्र.

दिक्षागुरु—देखो 'दीक्षा-गुरु' (रू.भे.)

दिख—देखो 'दक्ष' (रू.भे.) उ०—१ जिनके काका सोनगिर आसमांन का थंभ। रण के आरंभ दिख ज्याग का सा सिंभ।—रा.रू.

उ०—२ दस दिहाड़ा जांन राखी राजा दिख, अंत पखउ दायजउ दियउ। सुसरइ वळे जवाई सरिसउ, क्युंहेक खाटउ जीव कियउ।
—महादेव पारवती री वेलि

दिखण—१ देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—१ इम सुण पाछा दूत उडाया। वे जिम दिखण गया तिम आया।—रा.रू.

उ०—२ तद दीठौ 'अभपति' विकट तौर। दळ दिखण भाग मरहट्ट दौर। दीन हो आसीरवाद दीध। कंकर तब वाजीराव कीध।
—वि.सं.

२ देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—देख वेद विद्या दिखण, पूज दूजां रा पाव। दीधा दांन अनेक विध, सविनय तैं सिधराव।—वां.दा.

दिखण चीर—देखो 'दिखणी चीर' (रू.भे.) उ०—मारू अघरतं बोलै मांगिया; कडी दिखण चीरेण। थणहर कांचूं मांगिया, नयण न जांणूं केण।—ढो.मा.

दिखणांग-वि० [सं० दक्षिण+रा०प्र०आंण] दक्षिण का।

उ०—१ लाख दळ सहत गळ रह्यौ 'आपो' लड़े, वळ चहूं सांभळे सुजस वाजा। तीड दिखणांण भड़ मरैं आवै तिता, रैण खग चाखतां पांण राजा।—महाराजा विजयसिंह जोधपुर रो गीत

उ०—२ दिखणांण थाट दीधा दवाय। खुरसांण थाट दहसत्त खाय।
—वि.सं.

सं०पु०—१ दक्षिण का निवासी।

रू०भे०—दखणांण।

सं०स्त्री०—२ दक्षिण दिशा। उ०—विकट लीधां दळां 'जसा' रा वीरवर, केळवै खगां खत्रवाट कांमौ। साहि सुरथांण दिखणांण मेलै सही, साहि त्रकुटांण दिखणांण सांमौ।
—महाराजा अजीतसिंह जोधपुर रो गीत

३ देखो 'दक्षिणायण' (रू.भे.)

दिखणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.)

दिखणाद—देखो 'दखणाद' (रू.भे.) उ०—१ अठी दिखणाद दिसा 'अजमाल', प्रळै किर सागर मील अपाल। उठी दिस उत्तर पुत्तर इंद, सफै दळ जेळ कि वेळ समंद।—रा.रू.

उ०—२ अखड़ै त पटैत जवांन इसा। दरकूंच कियौ दिखणाद दिसा।
—मे.म.

दिखणादू, दिखणादौ—देखो 'दिखणाधू' (रू.भे.)

उ०—१ झाड़ां पर बैठयोड़ा पंखेरू डरग्या अर दिखणादू पवन ई थोड़ो थमग्यो।—रातवासो

उ०—२ इण खुणै जोय, थोड़ो उण खुणै जोय, पूरब पिछम घुर दिखणादो जोय। आभै में धरा रो वासी वसै नहिं कोय सैंयां हे, सैंणां री बाड़ी में थारो छैल भंवर व्है तो जोय।—चेत मांनखो

दिखणाध—देखो 'दखणाध' (रू.भे.) उ०—औरंगजेब पाछै हलियो, दिन दस अंतर पाय। पर दिखणाध उलट्टियो, धर सोवा ठहराय।
—रा.रू.

दिखणाधि, दिखणाधी—देखो 'दखणाधी' (रू.भे.) उ०—१ दळ दिखणाधि उतर देठाळै, डेरा दुहूं दिआ देठाळै। दुहुं बाजार झंडा देठाळै, दांमिण गजां घजां देठाळै।—वचनिका

उ०—२ कोट री समचौरस सफीलां री विगत—सफील अगूणी गज ४०१, सफील दिखणाधी गज ४०३, सफील आथमणी गज ४०७, सफील उतराधी गज ४०६।—द.दा.

दिखणाधू, दिखणाधौ—देखो 'दखणाधू' (रू.भे.)

दिखणि, दिखणी-सं०पु० [सं० दक्षिणीय] १ दक्षिण देश का अधिपति।

उ०—दुय चत्रमास वादियौ दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस। पूगौ नहीं चाकरी पकड़ी, दीधौ नहीं मड़ ठां देस।—वां.दा.
२ देखो 'दखणी' (रू.भे.) उ०—१ देस निवांणूं सजळ जळ, मीठा बोला लोइ। मारू कांमणि दिखणि धर, हरि दीयइ तउ होइ।
—ढो.मा.
उ०—२ उत्तार मेह न जावै ग्रहळी, दिखणि धाव तणौ दसतूर।
—ओपो आढ़ो

दिखणी-चीर-सं०पु०यौ० [सं० दक्षिणी-चीर] सधवा स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष। उ०—१ झूठा सब आभूखणा री, साची पियाजी की प्रीति। झूठा पाट पटंबरा रे, झूठा दिखणी चीर।—मीरां
उ०—२ जीणा म्हारी बाई ए असी ओ कळयां रौ सीमाडूं घाघरौ अर मंगवाद्यूं दिखणी चीर।—लो.गी.
रू०भे०—दखणी चीर, दिखण चीर।

दिखद-सं०पु० [सं० दृषद्] पत्थर (अ.मा.)

दिखलाई—देखो 'दिखाई' (रू.भे.) उ०—रांम रटन छाडै नहीं, हरि लै लागा जाइ। बीचैं हीं अटकै नहीं, कळा कोटि दिखलाइ।
—दादू बांणी

दिखलाड़णौ, दिखलाड़बौ—देखो 'देखाणौ, देखाबौ (रू.भे.)
दिखलाड़णहार, हारौ (हारी), दिखलाड़णियौ—वि०।
दिखलाड़िओड़ौ, दिखलाड़ियोड़ौ, दिखलाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दिखलाड़ीजणौ, दिखलाड़ीजबौ—कर्म वा०।
दीखणौ, दीखबौ—अक०रू०।

दिखलाड़ियोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिखलाड़ियोड़ी)

दिखलाणौ, दिखलाबौ—देखो 'देखाणौ, देखावौ' (रू.भे.)
उ०—ग्यांन प्याला पीवत दरस्या, चतुर अवस्था ख्याल। है ज्यूं का त्यूं कहि दिखलाऊं, यो ही वचन विसाळ।—स्री सुखरांमजी महाराज
दिखलाणहार, हारौ (हारी), दिखलाणियौ—वि०।
दिखलायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दिखलाईजणौ, दिखलाईजबौ—कर्म वा०।
दीखणौ, दीखबौ—अक०रू०।

दिखलायोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिखलायोड़ी)

दिखलाळणौ, दिखलाळबौ—देखो 'देखाणौ, देखावौ' (रू.भे.)
दिखलाळणहार, हारौ (हारी) दिखलाळणियौ—वि०।
दिखलाळिओड़ौ, दिखलाळियोड़ौ, दिखलाळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दिखलाळीजणौ, दिखलाळीजबौ—कर्म वा०।

दिखलाळियोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिखलाळियोड़ी)

दिखलावणौ, दिखलावबौ—देखो 'देखाणौ, देखावौ' (रू.भे.)
उ०—ग्यांन अग्यांन दोऊ दिखळावै, आप न ग्यांन अग्यांन भया।
—स्री सुखरांमजी महाराज
दिखलावणहार, हारौ (हारी), दिखलावणियौ—वि०।
दिखलाविओड़ौ, दिखलावियोड़ौ, दिखलाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दिखलावीजणौ, दिखलावीजबौ—कर्म वा०।
दीखणौ, दीखबौ—अक०रू०।

दिखलावियोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिखलावियोड़ी)

दिखाई—देखो 'देखाई' (रू.भे.)

दिखाऊ-वि० [सं० दृश+रा०प्र०आऊ] १ बनावटी।
उ०—लोग दिखाऊ अन-जळ त्याग्यौ, अेक भखै बस पून। आयै-गयै सूं मुख ना बोलै, अैसी धारी मून।—डूंगजी जवारजी री पड़
२ जो केवल देखने योग्य हो किन्तु काम नहीं आ सके. ३ दिखाने योग्य. ४ देखने योग्य।
रू०भे०—देखाऊ।

दिखाओ—देखो 'दिखावौ' (रू.भे.)

दिखाड़णौ, दिखाड़बौ, दिखाडणौ, दिखाडबौ—देखो 'देखाणौ, देखावौ' (रू.भे.)
उ०—१ गांव जोगळिया री सांमोर महेसदास जिण महाराज गजसिंघजी नूं जीभ दिखाड़ी।—बां.दा.
उ०—२ दिठौ तउ गत्त न बूझव देव। अगम्म अगोचर तोर अवेव। लख्यौ तउ पार लहां न अलक्ख। नवै-खंड मंझ दिखाडिय नक्ख।
—ह.र.
उ०—३ आकासि वैस्वांनर वाळइ, पाताळ कन्या प्रत्यक्ष दिखाडइ, कडयडारव करतां वनखंड मोडइ, परवत तणां सिखर ढाळइ, इसिउ मांत्रिक योगी।—व.स.
उ०—४ राधावेधु करीउ दिखाडइ, तिसउ न कोई तीणि अखाडइ।
—पं.पं.च.
दिखाड़णहार, हारौ (हारी), दिखाड़णियौ—वि०।
दिखाड़िओड़ौ, दिखाड़ियोड़ौ, दिखाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दिखाड़ीजणौ, दिखाड़ीजबौ—कर्म वा०।
दीखणौ, दीखबौ—अक०रू०।

दिखाड़ियोड़ौ, दिखाडियोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिखाड़ियोड़ी, दिखाडियोडी)

दिखाणौ, दिखाबौ—देखो 'देखाणौ, देखावौ' (रू.भे.)
दिखाणहार, हारौ (हारी), दिखाणियौ—वि०।
दिखायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दिखाईजणौ, दिखाईजबौ—कर्म वा०।
दीखणौ, दीखबौ—अक०रू०।

दिखायोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिखायोड़ी)

दिखाळणौ, दिखाळबौ—देखो 'देखाणौ, देखावौ' (रू.भे.)
उ०—१ वांटै नहीं धन वांणियौ, खाटै धन कर खांत। रीझ करै ताळी दिए, हंसै दिखाळै दांत।—वां.दा.

उ०—२ संसार तिका हिज वात सरदही, रायहर जिका दिखाळी रीत। गीत तिकै मंगळीक गाइजै, गाया तियइ दिहाडइ गीत।
—महादेव पारवती री वेलि

दिखाळणहार, हारो (हारी), दिखाळणियो—वि०।

दिखाळिग्रोड़ो, दिखाळियोड़ो, दिखाळयोड़ो—भू०का०कृ०।

दिखाळीजणो, दिखाळीजबो—कर्म वा०।

दीखणो, दीखबो—अक०रू०।

दिखाळियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिखाळियोड़ी)

दिखाव—सं०पु० [सं० दृश्+रा०प्र०आव] १ देखने की क्रिया या भाव. २ दर्शन, दीदार। उ०—तरै 'जैसे' चारण कह्यो—'तूं पातसाह कनै जाय नै मोनूं दिखाव दे।'—नैणसी

३ दृष्टि की सीमा, नजर की पहुँच. ४ ऊपरी तड़क-भड़क, आडम्बर. ५ दृश्य।

रू०भे०—देखाव।

दिखावट—सं०स्त्री० [सं० दृश्+रा०प्र०आवट] १ ऊपरी तड़क-भड़क, बनावट, आडम्बर. २ दिखाने का ढंग या भाव।

रू०भे०—देखावट।

दिखावटी—वि० [सं० दृश्+रा०प्र०आवटी] १ जो केवल देखने लायक हो किन्तु काम में नहीं आ सके. २ जो असली न हो, बनावटी।

रू०भे०—देखावटी।

दिखावणो, दिखावबो—देखो 'देखाणो, देखावो' (रू.भे.)

उ०—१ पयंपत ईसर जोड़िय पांण। क्रपाळ करो हिव मूझ कल्यांण। दिखावउ तूझ अनूप दिदार। संसारह बाहर मांहि संसार।—ह.र.

उ०—२ मुह मेज किये द्रढ़ राख मणां। पिड़ खेत दिखावण सूरपणां। जग मांझ अमां नह मूंह जोए। हथ तुज्ज रहू मुझ मोख होए।—पा.प्र.

दिखावणहार, हारो (हारी), दिखावणियो—वि०।

दिखाविग्रोड़ो, दिखावियोड़ो, दिखाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

दिखावीजणो, दिखावीजबो—कर्म वा०।

दीखणो, दीखबो—अक०रू०।

दिखावियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिखावियोड़ी)

दिखावो, दिखाहो—सं०पु० [सं० दृश्+रा०प्र०आवो] १ वाह्याडंबर, तड़क-भड़क। उ०—लोक दिखावो मति करो, हरि देखै त्यूं देख। जन हरिदास हरि अगम है, पूरण ब्रह्म अलेख।—ह.पु.वा.

२ ढोंग, पाखण्ड।

रू०भे०—दिखाओ, देखाओ, देखावो, देखाहो।

दिखिण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.)

दिख्यांणी—देखो 'दखियांणी' (रू.भे.) (क.कु.बो.)

दिगंत—सं०पु० [सं०] १ आकाश का छोर, क्षितिज। उ०—मेघा महंत दीपत दिगंत। आदाव अोघ, अक्षय अमोघ।—ऊ.का.

२ दिशा का अंत, दिशा का छोर. ३ दशों दिशाएँ. ४ चारों दिशाएँ। उ०—छिब वंत उदंत दिगंत छिये। भल संत महंत अनंत भये।—ऊ.का.

रू०भे०—दगंत।

दिगंतर—सं०पु० [सं०] दिशाओं के बीच का स्थान, दो दिशाओं का अन्तर। उ०—१ बराबर दीस दिगंतर बाह्य, अगोचर गोचर गीप्ति अग्राह्य।—ऊ.का.

उ०—२ मांननि कर मूकइ नहीं, माधव मांगइ मांन। दूर दिगंतर किम सहइ; आडा डूंगर रांन।—मा.कां.प्र.

उ०—३ वीज लवइ गज्जइ गयण, पवन-तणा परिचार। इणि आसाढ़ि हुं डरउं, दहि दिगंतर दार।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—दगंतर।

दिगंबर—सं०पु० [सं०] १ नंगा रहने वाला जैन यती, क्षपणक।

उ०—मांहे जोगेसर पवन रा साझणहार, त्रिकुटी रा चडावणहार, धूम्रपांन रा करणहार, उरधवाहू, ठाढेसरी, दिगंबर, सेतंबर, निरंजनी, आकास मुनी।—रा.सा.सं.

२ एक जैन संप्रदाय. ३ शिव, महादेव। उ०—घरपति बहु सेवै अंबरधर। बहु सेवै अवधूत दिगंबर।—सू.प्र.

४ दिशाओं का वस्त्र, अंधेरा, अंधकार. ५ सिद्धि प्राप्त परमहंस (महात्मा)। उ०—सूंब सूंब कहै सरव दिन, जाचक पाड़ै बूंब। सिद्ध दिगंबर वाजही, ज्यूं धनवंतो सूंब।—बां.दा.

वि०—नंगा, नग्न। उ०—ग्रांम दिगंबर के रजकाग्रह, गेह कियो गिन दांम न दीने। खांट खुजा दिन रात रहै खुस, लात लई पय पात न पीने।—ऊ.का.

रू०भे०—डगंबर, डिगंबर, डिगंमर, दगंबर, दगंमर, दिगंमर।

दिगंबरता—सं०स्त्री० [सं०] नंगापन, नग्नता।

रू०भे०—दगंबरता।

दिगंबरी—सं०पु० [सं०] १ एक जैन संप्रदाय. २ नंगा रहने वाला जैन यती, क्षपणक.

सं०स्त्री०—३ दुर्गा, शक्ति।

दिगंस—सं०पु० [सं०] क्षितिज वृत का ३६० वां अंश, एक डिग्री।

दिग—देखो 'द्रग' (रू.भे.) (ना.डिं.को.)

दिगज—देखो 'दिग्गज' (रू.भे.) उ०—जाजुळ गोळा ज्वाळ, गरन जिण काळ उगल्लै। त्रासै सुरग पताळ, दिगज दिगपाळ दहल्लै।—मे.म.

दिगदंत—सं०पु०—दिशा-गज, आशा-गज। उ०—इंद्र नै चंद्र नागेंद्र चित चमकिया, धड़हड़यो सेस नै धरा धूजै। लचकि किचकोच करै पीठ कूरंमतणी, हलहलै मेरु दिगदंत कूजै।—प.च.चौ.

दिगदरसक-जंत्र, दिगदरसक-यंत्र—सं०पु०यौ० [सं० दिग्दर्शक यंत्र] डिबिया के आकार का एक प्रकार का यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है।

दिगदरसण—सं०पु० [सं० दिग्दर्शन] १ वह जो उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत

किया जाय, नमूना. २ नमूना दिखाने का कार्य. ३ जानकारी।
रू०भे०—दिगदरसन, दिग्दरसण, दिग्दरसन।

दिगदरसणी—देखो 'दिगदरसक जंत्र' (रू.भे.)

दिगदरसन—देखो 'दिगदरसण' (रू.भे.)

दिगदरसनी—देखो 'दिगदरसक जंत्र'।

दिगदाह—सं०स्त्री० [सं० दिग्दाह] सूर्यास्त होने पर दिशाओं का लाल और जलता हुआ ज्ञात होना, एक दैविक घटना (अशुभ, अपशकुन)
उ०—दिली लखै दिगदाह, विगत हित साह विचारी। खर भूकै रव खैंग, स्वांन कूकै सुखहारी।—रा.रू.
रू०भे०—दिग्दाह।

दिगदेवता—देखो 'दिग्देवता' (रू.भे.)

दिगपति—देखो 'दिग्पति' (रू.भे.)

दिगपाळ [सं० दिग्पाल] १ वीर, समर्थ, शक्तिशाली। उ०—जिकै दिगपाळ रजपूत सांमंत आजांनवाह ठाकुर अड़। भीड़ दरवारे आई खड़ा रहिया छै।—रा.सा.सं.
२ देखो 'दिकपाळ' (रू.भे.) उ०—जाजुळ गोळा ज्वाळ, गरज जिण काळ उगल्लै। आसै सुरग पताळ, दिगज दिगपाळ दहल्लै।—मे.म.

दिगमूढ़—वि० [दिङ्‌मूढ़] आश्चर्य-चकित, दंग। उ०—ठीठइ राय मनि उध्रसिउ, लोयण चढघा ललाटि। डसण डसी दिगमूढ़ थिउ, घणउं न आवइ घाटि।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—दिगमूढ़, दिकमूढ़ा।

दिगर—वि० [फा० दीगर] दूसरा, अन्य।

दिगरेखा—देखो 'दिकरेखा' (रू.भे.)

दिगवास—सं०पु० [सं० दिकवासः] शिव, महादेव (अ.मा.)
रू०भे०—दिग्वास।
(मि० दिगंबर)

दिगविजई—देखो 'दिग्विजयी' (रू.भे.) उ०—इण विध दिगविजई 'अजन', कीधी कमंधां राव। नव नवगढ़ कोटां निजर, नव नव उच्छव चाव।—रा रू.

दिगविजय—देखो 'दिग्विजय' (रू.भे.) उ०—१ अवींध मोतियूं के अक्षत चढ़वाये। सो कैसी मांनूं महाराज का जस दिगविजय करि रवि किरण अरोहि जगजीत होय स्री कमठि आए।—सू.प्र.
उ०—२ जग जीतन की जीव में, जगी अखंडित जोति। दयानंद दिगविजय किय, अपने बळ उद्योति।—ऊ.का.

दिगविजेय—देखो 'दिग्विजय', (रू.भे.)

दिगविजै—देखो 'दिग्विजय' (रू.भे.) उ०—दिगविजै कजि नरनाथ सजि दळ प्रवळ उच्छव पेखियौ। सब घरण नव सुख नवल सोभा विमळ रूप विसेखियौ।—रा.रू.

दिगि—सं०स्त्री० (अनु०) (मृदंग आदि वाद्य की) ध्वनि विशेष।
उ०—झागड दिगि दिगि सिरि वल्लरी झुणण झुण पाउ नेउरी। दों दों छंदिहि तिविल रसाळ धुणणं धुणणं धुंधुर घमकार।
—विद्याविलास पवाडउ

दिगी—वि०—आठवीं*। उ०—रचै सातमौ रूप तू काळरात्री। दिगी गोरी तु निध्यमी सिद्ध दात्री।—मे.म.

दिगीस—सं०पु० [दिक्+ईश] दिशा का स्वामी, दिक्‌पाल।
उ०—'जगतेस' फवज्ज प्रबंधु करै, भुव कंपित भार दिगीस डरै। मन आंन महीपन के प्रजरै, किन पै वसुधा-पति कोप करै।—ला.रा.
रू०भे०—दिगेस, दिग्गीस।

दिगीस्वर—सं०पु० [सं० दिगीश्वर] दिशा का स्वामी, दिक्‌पाल।

दिगेस—देखो 'दिगीस' (रू.भे.)

दिग्गज—सं०पु० [सं०] पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाये रखने और दिशाओं की रक्षा करने के लिये स्थापित हैं, उनके नाम—
(१) पूर्व में—ऐरावत. (२) पूर्व-दक्षिण में—पुंडरीक.
(३) दक्षिण में—वामन. (४) दक्षिण-पश्चिम में—कुमुद.
(५) पश्चिम में—अंजन. (६) पश्चिम-उत्तर में—पुष्पदंत.
(७) उत्तर में—सार्वभौम. (८) उत्तर-पूर्व में—सप्ततीक।
उ०—थळ कज्जळ सरजीव कना असताचळ अग्रज। कना सेव कोरणै देव सुत आया दिग्गज।—रा.रू.
वि०—१ दिग्विजयी, वड़ा, महान्। उ०—किता हुआ दिग्गज कवी, समुझणहार असेख। धुर रूपक ज्यांही धरै, विखमावरण विसेख।
—र.रू.
२ जबरदस्त।

दिग्गयंद—सं०पु० [सं० दिग्गेन्द्र] दिग्गज।

दिग्गीस—देखो 'दिगीस' (रू.भे.)

दिग्दरसण, दिग्दरसन—देखो 'दिगदरसण' (रू.भे.)

दिग्दरसनी—देखो 'दिगदरसक जंत्र'।

दिग्दाह—देखो 'दिगदाह' (रू.भे.)

दिग्देवता—सं०पु० [सं०] दिशा का स्वामी, दिक्‌पाल।
रू०भे०—दिगदेवता।

दिग्पति—सं०पु० [सं०] दिशापति, दिक्‌पाल।
रू०भे०—दिगपति।

दिग्पाळ—देखो 'दिकपाल' (रू.भे.) उ०—वीवाह करण तेथ वैठा ब्रांह्मण, समघा अगिनि सोचतइ सारि। नवग्रह दस दिग्पाळ निजीकी, अथवा वरइ करइ आचार।—महादेव पारवती री वेलि

दिग्बळ—सं०पु० [सं० दिग्वल] लग्नादि केन्द्रों पर स्थित ग्रहों का वल—
(फलित ज्योतिष)
वि०वि०—लग्न केन्द्र (पूर्व) में बुध-गुरु, लग्न से चतुर्थ स्थान (उत्तर) में चंद्र-शुक्र, लग्न से सप्तम स्थान (पश्चिम) में शनि और लग्न से दशम स्थान (दक्षिण) में रवि-मंगल दिग्वल पाते हैं। उपरोक्त ग्रहों के इन केन्द्रों (स्थानों) पर होने से सम्बन्धित दिशाएं भी वलवती मानी जाती हैं।

दिग्वळी—सं०पु० [सं० दिग्वलिन्] फलित ज्योतिष में वह ग्रह जो किसी दिशा में वली हो।

दिग्भरम, दिग्भ्रम–सं०पु० [सं० दिग्भ्रम] दिशाओं को भूलने की अवस्था, दिशाओं का भ्रम होना।

दिग्मंडळ–सं०पु० [सं० दिग्मंडल] १ दिशाओं का समूह, सम्पूर्ण दिशाएं. २ क्षितिज वृत।

दिग्राज–सं०पु० [सं०] दिशा का राजा, दिक्पाल।

दिग्वसन, दिग्वस्त्र–सं०पु० [सं०] १ शंकर; शिव. २ नंगा यती, सन्यासी. ३ दिगंबर सन्यासी, क्षपणक (जैन) (मि० दिगंबर)

दिग्वारण–सं०पु० [सं०] दिग्गज।

दिग्वास—देखो 'दिगवास' (रू.भे.)

दिग्विजय–सं०स्त्री० [सं०] १ राजाओं द्वारा अपनी वीरता दिखलाने व महत्व प्रकट करने हेतु देश देशांतरों में जाकर युद्ध करना व विजय प्राप्त करना। उ०—जिण भीम जूनागढ़ रा वढेल, अंगदेस रा वघेल, आसेर रा बारड़, मांण भजि आपरै चरण लगाया अर दिग्विजय रै चढ़ांण केही जंग करि देस देस रा नरेसां रै घरै सूता वैर जगाया। —वं.भा.

२ अपने पाण्डित्य का प्रभाव जमाने व सम्प्रदाय-सिद्धान्तों के प्रचार हेतु महात्माओं और पंडितों की दशों दिशाओं की यात्रा।

रू०भे०—दिगविजय, दिगविजै, दिग्विजे, दिग्विजै।

दिग्विजयी–वि० [सं०] दिग्वजय करने वाला, चक्रवर्ती।

रू०भे०—दिगविजई, दिगविजेय।

दिग्विजे, दिग्विजै—देखो 'दिग्विजय' (रू.भे.) उ०—प्रधांन गोळ कप मोर सोर कोस संग्रहे, उदग्ग खग्ग मग्ग में विवग्ग अग्ग की गहे। चमूप सस्त्र अस्त्र लेय दिव्य दिग्विजे चढें, स्वसुद्ध 'ऊम्मरेस' की विसुद्ध भारती वढ़े।—ऊ.का.

दिग्व्यापी–वि० [सं०] जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।

दिग्व्रत–सं०पु० [सं०] जैनियों का एक व्रत जिसमें वे निश्चित समय में निश्चित दूरी से अधिक न जाने का प्रण कर लेते हैं (जैन)

दिग्सिधुर–सं०पु० [सं०] दिग्गज।

दिग्सिखा–सं०पु० [सं० दिग्शिखा] पूर्व दिशा।

दिग्सूळ—देखो 'दिशासूळ' (रू.भे.)

दिच्छा—१ देखो 'दीक्षा' (रू.भे.) २ देखो 'दिसा' (रू.भे.)

दिच्छिण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—सर्भ फौज कीधी विदा 'अंगदेसं'। दिसा दिच्छिणं सोधवा काजि देसं।—सू.प्र.

दिज—१ देखो 'दुज' (रू.भे.) २ देखो 'द्विज' (रू.भे.)

उ०—दिज जग पूजा करै दसरथ।—रांमरासौ

दिजराज—देखो 'दुजराज' (रू.भे.)

दिट्ठंती—देखो 'द्रस्टांत' (रू.भे.) उ०—इणपरि सांमणि वूझवी, वोली वहु दिट्ठंति। नाच मनावी घरि गई, हीयडइ हरख धरंति। —विद्याविलास पवाडउ

दिट्ठ—१ देखो 'द्रस्ट' (रू.भे.) उ०—हंस कहै रे डेडरा, सायर लहर न दिट्ठ। ज्यां नाळेर न चाखिया, काचरिया ही मिट्ठ।—अज्ञात

२ देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—सज्जण अळगा तां लगइ, जां लग नयणे दिट्ठ। जब नयणां हूं बीछुड़ै, तब उर मंझ पइट्ठ।—ढो.मा.

दिट्ठणौ, दिट्ठबौ—देखो 'देखणौ, देखबौ' (रू.भे.) उ०—दूग्रवयणि दूग्रवयणि राउ जूठिल्लु गिरि गंधमायण गिया इंदकीलु तिसु सिहरु दिट्ठऊ। मुकलावी अरजुनु चडई नमीउ तित्थु तसु सिहरि बइट्ठउ। —पं.पं.च.

दिट्ठि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

दिठ—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—कहियौ जिम जावा नृप कीधी। दिठ चंद्रकूप तणै मझि दीधी।—सू.प्र.

दिठाळौ—देखो 'दैठाळौ' (रू.भे.)। उ०—तिकौ पहिलौ महिलांण वीलाड़ै कियौ। बीजै दिन कूच कियौ। जरां वळै सावण हुवा। तिण में फूही डावी-थकी वोली। दहियापूछि रौ दिठाळौ हुवौ। —जैतसी ऊदावत री वात

क्रि०प्र०—होणौ।

दिठौण, दिठौणौ–सं०पु० [सं०द्दष्टि+रा.प्र. औणौ] बालकों को नजर से बचाने के लिए लगाई जाने वाली काजल की बिन्दी।

उ०—चुंनी सुचंग रूपचै कणंस नील क्रांमती। दिठौण रूप भोम दीध रीझियै रतीपती।—सू.प्र.

दिढ़—देखो 'द्रढ़' (रू.भे.) उ०—ध्रमसासत्र मारग दिढ़ धारै। सदा-वरत समपै जग सारै।—सू.प्र.

दिढ़क–सं०पु० [सं० द्दढ़] स्वामी कार्तिकेय, षडानन (नां.मा.)

दिढ़वंत–सं०पु० [सं० द्दढ़वान्] गरुड़ (नां.मा.)

दिढ़ाड़णौ, दिढ़ाड़बौ—देखो 'दिढ़ाणौ, दिढ़ाबौ' (रू.भे.)

दिढ़ाड़णहार, हारौ (हारी), दिढ़ाड़णियौ—वि०।

दिढ़ाड़िओड़ौ, दिढ़ाड़ियोड़ौ, दिढ़ाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिढ़ाड़ीजणौ, दिढ़ाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दिढ़ाड़ियोड़ौ—देखो 'दिढ़ायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० दिढ़ाड़ियोड़ी)

दिढ़ाणौ, दिढ़ाबौ–क्रि०स० [सं० दृढ़] दृढ़ करना, मजबूत करना।

उ०—आहवि वाहि वहाड़ि असिम्मर, महाराज ले जाज्यो 'मधुकर'। मतो दिढ़ाइ मिळै राउ मारू, सीख 'रतन' कीधी स्रग सारू। —वचनिका

दिढ़ाणहार, हारौ (हारी), दिढ़ाणियौ—वि०।

दिढ़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दिढ़ाईजणौ, दिढ़ाईजबौ—कर्म वा०।

दिढ़ाड़णौ, दिढ़ाड़बौ, दिढ़ावणौ, दिढ़ावबौ—रू०भे०।

दिढ़ायोड़ौ–भू०का०कृ०—दृढ़ किया हुआ, मजबूत किया हुआ। (स्त्री० दिढ़ायोड़ी)

दिढ़ावणौ, दिढ़ावबौ—देखो 'दिढ़ाणौ, दिढ़ाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ दादू ऐसा कोण अभागिया, कछू दिढ़ावै और। नांम बिना

पग धग्न कूं, कहौ कहां है ठौर ।—दादू वांणी

उ०—२ भूठे अंधे गुरु घणां, भरम दिढ़ावै कांम । वंधे माया मोह से, दादू मुख से रांम ।—दादू वांणी

दिढ़ावणहार, हारौ (हारी), दिढ़ावणियौ—वि० ।

दिढ़ाविश्रोड़ौ, दिढ़ावियोड़ौ, दिढ़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दिढ़ावीजणौ, दिढ़ावीजवौ—कर्म वा० ।

दिढ़ावियोड़ौ—देखो 'दिढ़ायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिढ़ावियोड़ी)

दिणंकर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—सूर विरत सल्लले ज्वाळ भळहळे फुणांधर । कनां प्रळै क्रिति करण किरण परजळै दिणंकर । —रा.रू.

दिणंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—१ ते मथिला ना तमे धणी राजा प्रसन्नचंद । थाईसि मोटी पदवीइ, जेहवु हुइ दिणंद । —नळ-दवदंती रास

उ०—२ आज सुदिन मेरी आस फळी री । आदि जिणंद दिणंद सो देख्यौ, हरख्यौ हृदय ज्युं कमळ कळी री ।—ध.व.ग्रं.

उ०— ३ निजर परक्खे राठवड़, अकवर तेज दिणंद । जांणै व्योम विमांन सम, भोम प्रगट्टयौ इंद ।—रा.रू.

दिणंदौ—देखो 'दिनंद' (अल्पा., रू.भे.) उ०—देख मुख नूर मिटै दुख दूर, नसै अंधकार ज्युं देखि दिणंदा । स्त्री धरमसीह कहै निसदीह उदौ, करि संघ कौ आदि जिणंदा ।—ध.व.ग्रं.

दिणयर, दिणयरु—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—१ बीजा दिवसह दिणयर उदइ । ध्यांन प्रभावि आव्या सइ ।—पं.पं.च

उ०—२ रजनी ! सजनी माहरी, तु रहिजे जुग चियारि । दिणयर ! दीसंतु रखे, नीसत नयणां-वारि ।—मा.कां.प्र.

उ०—३ धूळि मिळीय भळमळीय सयळ दिसि दिणयरु छाईउ । गयणे दुंदुहि द्रमद्रमीय सुर वरि जसु गाईउ ।—पं.पं.च.

दिणयरौ—देखो 'दिनकर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ स्रीफळ सारीखा कठन पयोहरा, उरवरि मंडन तरळ हारा । द्वादसी दिणयरा मुकुट मोती तपै, चंपला कुसुम ची भरथ भारा ।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ वाजीय त्रंवक गुहिर नीसांण दिणयरो रेणिहिं छाईउ ए । पहूतउ जांणीउ पंडु नरिंदु द्रूपद पहूचए सांमहो ए ।—पं.पं.च

दिणिंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—१ इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद, नमाए हैं त्रिंद आणंद विधाता । धोरी धरम कौ धीर धरा धर, ध्यांन धरै धरमसी गुण ध्याता ।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ ऐउ ऐउ रिख भांनन अरिहंत नमौ, भय भजण स्री भगवंत नमौ । धातकी खंड जिणिंद नमौ, केवळ ग्यांन दिणिंद नमौ । —स.कु.

दिणि—देखो 'दिन' (रू.भे.) उ०—कुंडळ सरिसउ लाधउ वाळौ, रंकु लहइ जिम रयण भमाळौ । तिणि दिणि दीठउ सुमिणइ सूरौ, अम्ह घरि आविउ पुन्नह पूरौ ।—पं.पं.च.

दिणिअर, दिणियर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.)

उ०—जग इण मारग जाय. ऊगै दिणियर आथमै । हियै खटक्कै हाय, तूझ मरण 'प्रतापसी' ।—जैतदांन वारहठ

दिणूं—देखो 'दिन' (रू.भे.) उ०—हरियळा द्रूपदि देवि इकु दिणूं ए नारद परिभवि ए । वेह रहइं कन्हु जाएवि सुद्रह ए माहि वाटडी ए । —पं.पं.च.

दित—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—रिख मख त्राता, दित कुळ घाता । सु भुज निघायौ, किरण उडायौ । गवतम नारी, रज पय तारी । भव जय भाखी, सुर मुनि साखी ।—र.ज.प्र.

दितवार—देखो 'अदीतवार' (रू.भे.)

दिति, दिती—सं०स्त्री० [सं० दिति] १ दक्ष प्रजापति की कन्या जो कश्यप ऋषि की पत्नी और राक्षसों की माता थी ।

उ०—दिती सुत सुंभ निसुंभ विदारि, कई रत वीज गई अडकारि । —मे.म.

रू०भे०—दति, दती ।

दिती-पुत्र—सं०पु०यौ० [सं० दिति+पुत्र] राक्षस, असुर, दैत्य ।

दितेस—सं०पु० [सं० दैत्येश] १ राक्षस, असुर । उ०—जे जुध हरणाकुस नूं जरियौ, धड़ नाहर मांनव चौ धरियौ । जिण कारण देव दितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनाथ सूं ।—र.ज.प्र.

२ देखो 'दैत्येस' (रू.भे.)

दिदार—देखो 'दीदार' (रू.भे.) उ०—१ दरसी जोत दिदार, तिरवेणा री ताक में । छूटा सकल विकार, आया मन माग में । —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ चोरासी लख जोनिमां, भमता बहु अवतार । भाग्य भलेरे भेटीये, प्रभुजी नौ दिदार ।—प्राचीन फागु संग्रह

दिधा—देखो 'द्विधा' (रू.भे.) उ०—करौ जैसो पाई अकल अब आई जब कहैं । दिधा काई धाई दुक्रित दुखदाई कब दहैं ।—ऊ.का.

दिनंकर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—१ अधोखज अक्खर तुज्झ अभेव । दिनंकर चंद न जांणै देव । त्रणै-गुण तूझ न जांणै तंत । अयास सवद्द न जांणै अंत ।—ह.र.

उ०—२ सुपातां पाळ-गर जोग पारथ समर, केवियां गाळ-गर वंस रा दिनंकर । वसू साधार भोक लागै क्रीतवर, अभंग पारथ अत इळा राजौ 'अमर' ।—विसनदास वारहठ

दिनंद—सं०पु० [सं० दिनेन्द्र] १ सूर्य, रवि (ह.नां., अ.मा., नां.मा.)

उ०—१ आखा कर ऊछाळ, कमंध तणी कर परक्रमण । भव भव औ भालाळ, दे खांवद मोनूं दिनंद ।—पा.प्र.

उ०—२ यळा तांजे जद अनंत दिनंद ऊगै पिछम दिस । गोरस गोरस ग्र ग्रै व्यास सिखवै माया वस ।—पा.प्र.

२ दिन (अ.मा.)

रू०भे०—दइंद, दइंदौ, दडिंदक, दडिंदक, दिणंद, दिणिंद, दिनद, दुइंद, दुड़इंद, दुड़यंद, दुडिंद, दुड़ियंद, दुड़ियंदौ, दुडंद, दुडियंद, दुड-इंद, दुणिंद ।

अल्पा०—दिणंदौ।

दिन-सं०पु० [सं०] १ सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, सूर्य की किरणों के प्रकाश का समय।

वि०वि०—पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती हुई स्वयं भी अपने अक्ष पर घूमती है। इस घूमने में उसका आधा भाग सूर्य के सामने रहता है जो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है, उसे दिन कहते हैं और इसके विपरीत भाग में जो सूर्य के सामने नहीं होता है और वहां पर अंधेरा होता है, रात्रि कहलाता है।

पर्याय०—अह, दिनंद, दिव, दिवस, दिवा, दिवि, दुतिवांन, दूं, वासर।

मुहा०—१ आडै दिन—साधारण दिन. २ ढळतौ दिन—मध्यान्ह के बाद का समय. ३ दिन काटणौ—दिन काटना, दिन व्यतीत करना. ४ दिन काडणौ (काढ़णौ)—देखो 'दिन काटणौ'. ५ दिन खावणा—मजदूरी हजम करना. ६ दिन खूटणौ—दिन खत्म होना, दिन व्यतीत होना. ७ दिन गमाणौ—दिन गँवाना, व्यर्थ दिन व्यतीत करना. ८ दिन गाळणौ—देखो 'दिन घोळणौ'. ९ दिन घोळणौ—दिन व्यतीत करना. १० दिन चुकाणा—मजदूरी करना. ११ दिन चूकणौ—अवसर खोना. १२ दिन जाणौ—दिन व्यतीत होना. १३ दिन तोड़णौ—देखो 'दिन काटणौ'. १४ दिन दा'ड़ै (दहाड़ै, दिहाड़ै)—दिन के समय. १५ दिन दूणौ नै रात चोगणौ—निरन्तर बढ़ता हुआ. १६ दिन दोपारां—देखो 'दिन दा'ड़ै'. १७ दिन धोळै—देखो 'दिन दा'ड़ै. १८ दिन निकळणौ—देखो 'दिन खूटणौ'. १९ दिन नै दिन अर रात नै रात नीं जांणणौ (समझणौ)—निरन्तर परिश्रम करना. २० दिन पाछा पड़णा—समय निकलना, वक्त गुजरना। २१ दिन पूरौ करणौ—देखो 'दिन काटणौ'. २२ दिन भांगणौ—देखो 'दिन गमाणौ'. २३ दिन माथै लैणौ—पूरे दिन को समाप्त करना. २४ दिन में तारा दिखाणा—देखो 'दिन रा तारा दिखाणा. २५ दिन में तारा दीखणा—देखो 'दिन रा तारा दीखणा'. २६ दिन में तारा देखाणा—देखो 'दिन रा तारा दिखाणा' २७ दिन रा तारा दिखाणा—बहुत कष्ट देना. २८ दिन रा तारा दीखाणा—बहुत कष्ट होना, बहुत कष्ट भुगतना. २९ दिन रा तारा देखाणा—देखो 'दिन रा तारा दिखाणा'. ३० दिन सांम्हौ लेणौ—किसी कार्य के लिये पूरा दिन खर्च करना. ३१ दिनां नै पूठ दैणी—समय निकालना, वृद्धावस्था को प्राप्त होना। ३२ धोळै दिन—देखो 'दिन दा'ड़ै. ३३ धोळौ दिन करणौ—महत्वपूर्ण कार्य करना।

यौ०—दिन-रात, रात-दिन।

२ पृथ्वी के एक बार अपने अक्ष पर घूमने का समय, आठ प्रहर या चौबीस घंटे का समय।

वि०वि०—साधारणतः दिन दो प्रकार का माना जाता है। नाक्षत्र तथा सौर या सावन। नाक्षत्र दिन का समय ठीक उतना ही होता है जितने में पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर घूम चुकती है अथवा यह दिन उतने समय का होता है जितने में किसी नक्षत्र को एक बार याम्योत्तर रेखा पर से होकर जाने और फिर दोबारा याम्योत्तर रेखा पर आने में लगता है। अतः इस दिन के मान (समय) में घटती बढ़ती नहीं होती है। ज्योतिषी लोग शुद्धता के लिये इसी को व्यवहार में लाते हैं। सावन दिन सूर्योदय से पुनः सूर्योदय तक माना जाता है, यद्यपि यह समय सदा चौबीस घंटे का नहीं होता है क्योंकि सूर्योदय सदैव एक ही निश्चित समय पर नहीं होता है। आजकल सरकारी दफ्तरों आदि में अर्द्धरात्रि (१२ बजे) से पुनः अर्द्धरात्रि तक दिन माना जाता है।

मुहा०—१ दिन करणा—मृतक की मृत्यु के दिन से बारहवें दिन पर्यंत विशेष संस्कारों का करना. २ दिन गिणणा—किसी की प्रतीक्षा में दिन व्यतीत करना. ३ दिन सुधारणा—मृतक की मृत्यु के दिन से बारहवें दिन तक विशेष संस्कारों को ठीक ढंग से सम्पन्न करना. ४ दिन होणा—मृतक की मृत्यु के दिन से बारहवें दिन तक विशेष संस्कारों का सम्पन्न होना. ५ दिन-दिन, दिनौ-दिन—प्रति दिन, निरन्तर।

३ समय, काल, वक्त। उ०—१ फिरै उपाय न फेर, घिरै न दिन जितरै घरै। हारै चकवा हेर, रातां मिळै न राजिया।—किरपारांम

उ०—२ आछै दिन पाछै रहे, हरि सौं कियौ न हेत। अब पछतायै होत क्या, चिड़िया चुग गइ खेत।—अज्ञात

उ०—३ दिन आछै जग जस दियौ, दिन फिर दोस दहंत। सदा सुबुद्धि मांणसां, कुबुद्धि लोक कहंत।—अज्ञात

मुहा०—१ काळ रा दिन—दुर्भिक्ष का समय, दुष्काल का समय. २ घणा दिन—बहुत समय, बहुत काल. ३ घणा दिनां री—बहुत समय का, प्राचीन, पुराना, बुड्ढा. ४ चढ़ता दिन—उन्नति का समय. ५ चोखा दिन—अनुकूल समय. ६ ढळता दिन—अवनति का समय. ७ दिन आगा पाछा करणा—विलम्ब करना. ८ दिन आणा—अनुकूल समय आना, प्रतिकूल समय आना. ९ दिन ओळखणौ—समय पहिचानना, समय को समझना. १० दिन काटणा—समय व्यतीत करना. ११ दिन काडणा (काढ़णा)—समय व्यतीत करना. १२ दिन खाणा—विलम्ब करना. १३ दिन खूटणा—समय समाप्त होना. १४ दिन गमाणा—समय नष्ट करना, समय गँवाना. १५ दिन गाळणा—देखो 'दिन काडणा', देखो 'दिन गमोणा'. १६ दिन गिणणा—समय व्यतीत करना. १७ दिन गुजरणा—समय व्यतीत होना. १८ दिन गुजारणा—समय व्यतीत करना. १९ दिन घरै आणा (होणा)—अनुकूल समय आना (होना). २० दिन घिरणा—अनुकूल समय आना. २१ दिन फिरणौ—समय बदलना. २२ दिन घोळणा—समय व्यतीत करना. २३ दिन चुकाणौ—अवसर में व्याघात डालना. २४ दिन चूकणौ—अवसर टलना. २५ दिन जाणा—समय व्यतीत होना. २६ दिन जुड़णा—समय की अवधि

का वढ़ना. २७ दिन टळणा (टळणौ)—समय का निकल जाना, समय चला जाना. २८ दिन तोड़णा—समय गुजारना, समय व्यतीत करना. २९ दिन दूखणा—देखो 'दिन खटकणा'. ३० दिन देखणा—समय का अनुभव करना, परिस्थितियों को अनुभव करना. ३१ दिन निकळणा—समय व्यतीत होना. ३२ दिन निकाळणा—समय व्यतीत करना. ३३ दिन पतळा पड़णा—समय का अनुकूल न होना, आर्थिक स्थिति ठीक न होना, निर्धनता आना. ३४ दिन पाछा दैणा—समय निकालना, समय गुजारना. ३५ दिन पाछा पड़णा—समय निकलना, समय गुजरना. ३६ दिन पादरा होणा—अनुकूल समय आना. ३७ दिन पूरा करणा—समय व्यतीत करना.
३८ दिन पैंड़णा—बुरा समय आना, संकट का समय आना.
३९ दिन फिरणा (फिरणौ)—समय बदलना. ४० दिन फोरा आणा—प्रतिकूल समय आना. ४१ दिन बांधणा—समय निश्चित करना. ४२ दिन बावड़णा—अनुकूल समय आना. ४३ दिन बिताणा—समय व्यतीत करना. ४४ दिन बीतणा (बीतणौ)—समय व्यतीत होना. ४५ दिन भारी पड़णा—समय का कठिनता से गुजरना. ४६ दिन मांणणा—उपभोग लेना, आनन्द लेना. ४७ दिन रेजलं पड़णा—कार्य सम्पन्न होने में विलम्ब होना. ४८ दिन लगाणा—समय व्यतीत करना, समय नष्ट करना. ४९ दिन लागणा—समय नष्ट होना, समय व्यतीत होना. ५० दिन वदलणा (पलटना)—समय वदलना, समय पलटना. ५१ दिन वळणा (वळणौ)—देखो 'दिन घिरणा'. ५२ दिन वोळाणा—समय गुजारना, समय व्यतीत करना. ५३ दिन सांकड़ा—कम समय, तंग समय. ५४ दिन होणा—अनुकूल समय होना. ५५ दिनां नै धक्का दैणा—किसी तरह समय गुजारना, कठिनाई से निर्वाह करना.
५६ दिनां नै पूठ दैणौ—देखो 'दिन पाछा दैणा'. ५७ दिनां में अळूफणौ—कार्य सम्पन्न होने में अधिक समय लगना. ५८ दिनां रो फेर—समय का चक्र, समय का दौर, समय का फेरा. ५९ दुखां रो पालण दिन—दुःखों के घाव को समय ही भरता है. ६० सांकड़ा दिन—देखो 'दिन सांकड़ा'।
यौ०—दिन-दसा, दिन-मांन।
४ निश्चित् समय, अवधि।
मुहा०—१ काळ रा दिन—मृत्यु का समय, वृद्धावस्था. २ चढ़ता दिन—बाल्यावस्था के पश्चात् युवावस्था में प्रवेश करने का समय. ३ ढळता दिन—आयु का पिछला भाग, वृद्धावस्था. ४ दिन आणा—आयु की समाप्ति के समीप आना, मृत्यु के निकट पहुंचना. ५ दिन उतरणा—जवानी का समाप्त होना, वृद्धावस्था में प्रविष्ठ होना. ६ दिन ऊवा—आयु का समय. ७ दिन किरणां आणौ—आयु का समाप्ति के समीप पहुंचना. ८ दिन किरणां में—मृत्यु के निकट होना. ९ दिन खड़कणा (खिड़कणा)—आयु के वहुत से वर्ष व्यतीत कर देना, वृद्धावस्था के निकट पहुंचना. १० दिन खूटणा—आयु की अवधि का समाप्ति के समीप पहुंचना, मृत्यु के निकट होना. ११ दिन चढ़णा—गर्भ ठहरने के दिन प्रसव के दिन की ओर उत्तरोत्तर समय का बढ़ना. १२ दिन डूबणा—आयु का समाप्ति के समीप पहुंचना. १३ दिन ढळणा—युवावस्था के पश्चात् वृद्धावस्था में प्रविष्ठ होना. १४ दिन थोकड़ै देणा—देखो 'दिन खड़कणा'. १५ दिन दैणा—मृत्यु से बचाना, जीविका सम्बन्धी साधनों का देना. १६ दिन निकळणा—आयु का व्यतीत होना. १७ दिन निकाळणा—आयु व्यतीत करना, जीवन का समय गुजारना. १८ दिन पड़णा—आयु की अवधि का समाप्ति की ओर पहुंचना, समय गुजर जाना. १९ दिन पूरा करणा—आयु की अवधि को समाप्त करना, जीवन का समय गुजारना. २० दिन पूरा होणा—जीवन का समय गुजरना, आयु का समाप्ति की ओर बढ़ना. २१ दिनां री जतन करणौ—आयु की रक्षा करना. २२ दिन लैणा—देखो 'दिन खड़कणा. २३ दिनां में धूड़ पड़णी—वृद्धावस्था में अनुचित या अव्यवहारिक कार्य कर के अपयश प्राप्त करना, कलंक का भागी होना. २४ दिनां माथै पांणी फेरणौ—देखो 'दिनां में धूड़ पड़णी'. २५ दिनां री दादी—पुराना, वृद्ध, वुड्ढ़ा. २६ पड़ता दिन—युवावस्था के बाद का समय. देखो 'ढळता दिन'. २७ पूरा दिनां—गर्भस्थ शिशु की पूर्णावस्था का समय, प्रसव काल के समीप का समय।
५ तिथि, तारीख।
मुहा०—१ दिन तै करणौ—देखो 'दिन मुकर करणौ'. २ दिन मुकर करणौ—किसी कार्य के लिए तिथि निश्चित करना, तारीख तय करना, दिन धरना।
६ सूर्य। उ०—दिन जुव अत लाग्यौ दुसह, अर भग्गौ निस अद्ध। ऊगै दिन चढ़ियौ 'अजौ', अड़ियौ कोप उरद्ध।—रा.रू.
मुहा०—१ दिन आथमणौ—सूर्यास्त होना, अवनति होना. २ दिन उगाणौ—सूर्योदय के समीप पहुंचना, किसी कार्य को निरन्तर करते रहना. ३ दिन ऊगणौ—सूर्योदय होना. ४ दिन किरणां आणौ—सूर्य का अस्ताचल के निकट पहुंचना. ५ दिन किरणां में—सूर्य का अस्ताचल में होना. ६ दिन चढ़णौ—सूर्य का उदय होने के बाद ऊपर उठना, सूर्य का प्रातःकाल से मध्यान्ह की ओर बढ़ना. ७ दिन छतें—देखो 'दिन थकें'. ८ दिन छिपणौ—देखो 'दिन आथमणौ'. ९ दिन डूबणौ—देखो 'दिन आथमणौ'. १० दिन ढळणौ—सूर्य का मध्यान्ह के पश्चात् अस्ताचल की ओर बढ़ना. ११ दिन ढळियां—सूर्य का मध्यान्ह से अस्ताचल की ओर बढ़ने पर तीसरे प्रहर में. १२ दिन थकें—दिन के होते हुए, सायंकालीन समय जब सूर्य डूबने में कुछ समय हो. १३ दिन निकळणौ—सूर्योदय होना. १४ दिन मथारै आणौ—सूर्य का उस स्थिति में आना जिससे मध्यान्ह हो जाय. १५ दिन माथा माथै आणौ—देखो 'दिन मथारै आणौ'. १६ दिन माथै आणौ—देखो 'दिन मथारै आणौ'।
रू०भे०—दन, दिणि, दिणू, दिनि, दिन्न, दिन्नि।

अल्पा०—दिनड़ो ।

दिनग्रर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.)

दिनग्रवसांण–संपु० [सं० दिन+अवसान] सायंकाल, संध्या (डि.को.)

दिनकंत–सं०पु० [सं० दिनकांत] सूर्य्य ।

दिनकर–सं०पु० [सं०] १ सूर्य्य (अ.मा., नां.मा.) उ०—जो नह ग्रावै करण जुध, सुण बोलावौ सीह । दाह हुवै नह दहण सूं, दिनकर हुवै न दीह ।—वां.दा.

२ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राए होती हैं ।

रू०भे०—दरणयर, दरिणयर, दनकर, दिणंकर, दिणयर, दिणयरु, दिणिग्रर, दिणिय, दिणिया, दिनंकर, दिनकरण, दिनकार, दिनियर, दिनेर, दुणियर ।

अल्पा०—दिणयरो ।

दिनकरकन्या–सं०स्त्री० [सं०] यमुना ।

दिनकरण—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) (ह.नां., डि.को.)

दिनकर-सुत–सं०पु० [सं०] १ कर्ण. २ यम. ३ शनि. ४ सुग्रीव. ५ अश्विनीकुमार ।

दिनकार—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—जिम चकवा दिनकार, मोरां नइ जळधार ।—वि.कु.

दिनड़ो—देखो 'दिन' (अल्पा., रू.भे.) उ०—चढ़ियो रांणो ढळती मांझल रात, कोई दिनड़ो ऊगोयो दूदाजी रै मेड़तै हो राज ।—मीरां

दिनक्षय–सं०पु० [सं०] किसी तिथि का गिनती में न आना, तिथि की हानि, तिथिक्षय ।

दिनचरया–सं०स्त्री० [सं०] दिन भर का कार्य ।

दिनद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दिन-दसा–सं०स्त्री० [सं० दिनदशा] देखो 'दिनमांन' ।

दिनदीप–सं०पु० [सं०] सूर्य्य (डि.को.)

दिनदुलह, दिनदुलहो–सं०पु० [सं० दिनदुर्लभ] कामदेव (ह.नां.)

वि०—बांका वीर । उ०—दिनदुलहां मांणीगरां, इण गढ़ रा धणियांह । आंणी सींगळ दीप सूं, पेखै पदमणियांह ।—वां.दा.

दिननाथ, दिननाह–सं०पु० [सं० दिननाथ] सूर्य्य ।

दिनप, दिनपति–सं०पु० [सं०] १ सूर्य्य । उ०—१ जग ईख स्वाद पी ऊख रस, जिम अवर चार अनारयं । सुख परम दिनपति नृपति सेवत, विवध भोग विहारयं ।—रा.रू.

उ०—२ मीठी ग्रौर न कोई मिठाई, मीठा ग्रौर न मेवा । ग्रातम रांम कळी ज्यूं उलसे, देखण दिनपति देवा ।—ध.व.ग्रं.

२ टगण की छः मात्राओं के तृतीय भेद का नाम ऽ।ऽ। (डि.को.)

दिनपात–सं०पु० [सं०] तिथि का गिनती में न आना, तिथिक्षय, दिनक्षय ।

दिनपाळ–सं०पु० [सं० दिनपाल] सूर्य्य ।

दिनबळ–सं०पु० [सं० दिनवल] फलित ज्योतिप में वह राशि जो दिन के समय बलवान हो ।

दिनमण, दिनमणि, दिनमणी–सं०पु० [सं० दिनमणि] सूर्य्य ।

उ०—१ भव दुख भंजण स्वामी निरंजण, संकट कोट प्रमाथ । ग्रदृ-रथ वंस विभूखण दिनमणि, संजमर मणी सनाथ ।—स.कु.

उ०—२ गुरु गुरु दिनमणि हंस, मेघ मंदर मुगता गण । मति दुति गति ग्रति सोह, वांणि मणि गुण जाके तण ।—ध.व.ग्रं.

रू०भे०—दनमण, दनमणि, दनमणी, दनमिणि, दनमिणी ।

दिनमांन–सं०पु० [सं० दिनमान] १ दिन ग्रौर रात्रि का मान ।

२ ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का दैनिक दशाक्रम । उ०—महाराज गढ़ रिणथंभरि अलावदीन पातसाह ग्रड़्या, राव हमीर बारह बरस विग्रह लड़्या, पातसाह परदळ खूटा, दिनमांन छूटै गढ़ तूटां ।

—अ. वचनिका

३ देखो 'ग्रह गोचर' ।

दिनमाळी–सं०पु० [सं० दिनमाली] सूर्य्य ।

दिनरत्न–सं०पु० [सं०] सूर्य्य ।

दिनराई, दिनराउ, दिनराज–सं०पु० [सं० दिनराज] सूर्य्य ।

दिनांई–सं०पु० [सं० दिन स्थायी] सूर्य्य, दिवाकर । उ०—हार सुरेस नरेस दिनाई । वाघै साजै दीह वधाई ।—दयाळदास

क्रि०वि०—प्रतिदिन ।

दिनांतक–सं०पु० [सं] ग्रंधकार, अंधियारा ।

दिनांध–सं०पु० [सं०] वह जिसे दिन को न सूझे ।

दिनांस–सं०पु० [सं० दिनांश] दिन के प्रातःकाल, मध्यान्ह ग्रौर सायंकाल ये तीन अंश या विभाग ।

दिनागम–सं०पु० [सं०] प्रभात, तड़का ।

दिनाधीस–सं०पु० [सं० दिनाधीश] सूर्य्य ।

दिनि–सं०पु० [सं० दान] १ दान-पुण्य । उ०—सुत जीवराज काज कजि साथै । मुहतो 'गिरधर' 'गुणेस' माथै । बोलै गुणां 'रुघपति' बारठ । वर्ण खग्ग दिनि 'वाघ' तणी वट ।—रा.रू.

२ भेंट. ३ देखो 'दिन' (रू.भे., अ मा.)

दिनियर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.)

दिनो–वि०—बहुत दिनों का, पुराना ।

दिनेर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.)

दिनेस–सं०पु० [सं० दिन+ईश] सूर्य्य, दिवाकर । उ०—१ वुग्रो घर व्याव वुलाव विसेस, घायं जहं देव दिनेस घनेस । कुवुद्धि किकेइ कुमंत्र किधेव, सिया वन रांम ग्रनंत सिवेव ।—ह.र.

उ०—२ सट पटत भर सेस अति चक्रित अरेस । दिन धूंधळ त्रिनेस थरराहइ ग्रर साय ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दनइस, दनीस, दनेस ।

दिनेसर—देखो 'दिनेस्वर' (रू.भे.)

दिनेसात्मज–सं०पु० [सं० दिनेशात्मज] १ शनि. २ यम. ३ सुग्रीव. ४ कर्ण. ५ अश्विनीकुमार ।

दिनेस्वर–सं०पु० [सं० दिन+ईश्वर] सूर्य्य, दिवाकर ।

रू०भे०—दिनेसर।

दिन्नं–वि० [सं० दत्तं] दिया हुआ, दत्तं (जैन)

दिन्न, दिन्नि—देखो 'दिन' (रू.भे.) उ०—१ जीता माधवदास रा, जुध 'अखमाल' 'विसन्न'। गुण चाळीसै भाद्रवै, तेरस उज्जळ दिन्न।—रा.रू.

उ०—२ बीतो यों साठो वरस, स्री महाराज प्रसन्न। ऊपर आयो इकसठो, दुयणां फिरिया दिन्न।—रा.रू.

दिपणो, दिपबो–क्रि०अ०—देखो 'दीपणो, दीपबो' (रू.भे.) उ०—१ पतित न्हाय ह्वै पीतपट, दिपै निकट रिखदेव। नचै मुगत नटनार ज्यूं, स्री गंगा तट सेव।—बां.दा.

उ०—२ किनियांणी कळजुग में, दिप रह्या दिनंकर।—ठाकुर जुझारसिंह मेड़तियो

उ०—३ 'सतो' हालियो आगरै चक्र सज्जै, वजै बंब भेरी मुरै त्रंब वज्जै। छले मेह ज्यों खेह आकास छाई, दिपै चंचळा सेल धारा दिखाई।—वं.भा.

उ०—४ दिपै वप लोह वरन्न सिंदूर। सोभावत जांण उदेगिर सूर।—सू.प्र.

उ०—५ खिवै फळ सेल खुलै दळ खग्ग। दिपै दव आग कि झाळ सदग्ग।—रा.रू.

दिपणहार, हारो (हारी), दिपणियो—वि०।

दिपवाड़णो, दिपवाड़बो, दिपवाणो, दिपवाबो, दिपवावणो, दिपवावबो—प्रे०रू०।

दीपाड़णो, दीवाड़बो, दीपाणो, दीपाबो, दीपावणो, दीपावबो—क्रि०स०।

दिपिओड़ो, दिपियोड़ो, दिप्योड़ो—भू०का०कृ०।

दिपीजणो, दिपीजबो—भाव वा०।

दिपव्वणो, दिपव्वबो—देखो 'दीपणो, दीपबो' (रू.भे.) उ०—सहस्र विभूत वियापक सव, दुवादस आंगळ गात दिपव्व। जदूकुळ-नायक सांमिय-जग्ग, पदम्म पताक अलंक्रत पग्ग।—ह.र.

दिपव्वयोड़ो—देखो 'दीपियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० दिपव्वियोड़ी)

दिपह—देखो 'दीपक' (रू.भे.) उ०—सोच महंमद साह नूं, मोच थयो मन मह। प्रात ससोकित ज्यूं दिपह, राति अनंद रवह।—रा.रू.

दिपाड़णो, दिपाड़बो—देखो 'दीपाणो, दीपाबो' (रू.भे.)

दिपाड़णहार, हारो (हारी), दिपाड़णियो—वि०।

दिपाड़िओड़ो, दिपाड़ियोड़ो, दिपाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

दिपाड़ीजणो, दिपाड़ीजबो—कर्म वा०।

दिपणो, दिपबो, दीपणो, दीपबो—अक०रू०।

दिपाड़ियोड़ो—देखो 'दिपायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० दिपाड़ियोड़ी)

दिपाणो, दिपाबो–क्रि०स० [सं० दीपी] १ चमकाना. २ प्रज्वलित करना. ३ प्रकाशित करना, देदीप्यमान करना, रोशन करना. ४ शोभित करना. ५ लावण्ययुक्त करना. ६ प्रसिद्ध करना. ७ प्रकट करना।

दिपाणहार, हारो (हारी), दिपाणियो—वि०।

दिपायोड़ो—भू०का०कृ०।

दिपाईजणो, दिपाईजबो—कर्म वा०।

दिपणो, दिपबो, दीपणो, दीपबो—अक०रू०।

दिपाड़णो, दिपाड़बो, दिपावणो, दिपावबो, दीपाड़णो, दीपाड़बो, दीपाणो, दीपाबो, दीपावणो, दीपावबो—रू०भे०।

दिपायोड़ो–भू०का०कृ०—१ चमकाया हुआ. २ प्रज्वलित किया हुआ. ३ प्रकाशित किया हुआ, देदीप्यमान किया हुआ, रोशन किया हुआ. ४ शोभित किया हुआ. ५ लावण्ययुक्त किया हुआ. ६ प्रकट किया हुआ. ७ प्रसिद्ध किया हुआ। (स्त्री० दिपायोड़ी)

दिपावणो, दिपावबो—देखो 'दिपाणो, दिपाबो' (रू.भे.) उ०—दूजा दिपावै दीप ज्यूं, आप धरै अंधार। पहुंचाया सिव पांच रो, खंदक पोतै ख्वार।—ध.व.ग्रं.

दिपावणहार, हारो (हारी), दिपावणियो—वि०।

दिपाविओड़ो, दिपावियोड़ो, दिपाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

दिपावीजणो, दिपावीजबो—कर्म वा०।

दिपणो, दिपबो, दीपणो, दीपबो—अक०रू०।

दिपावियोड़ो—देखो 'दिपायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० दिपावियोड़ी)

दिपियोड़ो—देखो 'दीपियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० दिपियोड़ी)

दिब—देखो 'दिव्य' (रू.भे.) उ०—पूंज तणै तेरह सुत दिब पख। सुजि त्यां हूंत कमंध तेरह सख।—सू.प्र.

उ०—२ दिब नयणां परब्रहम न देखै। पराक्रती नर जिम हरि पेखै।—सू.प्र.

दिबस—देखो 'दिवस' (रू.भे.) उ०—रात दिबस के रेस कोस में, बाजी लाव बणावै। जाकी पार कोई हुय जावै, वेनिंग पोस्ट वतावै।—ऊ.का.

दिम—देखो 'दिव' (रू.भे.) उ०—सावण छठि सुकिल दिम सु, सिरि छत्त वहंतो। तुंग तुरंगम रहि चडेवि रवि जिम दीपंतो।—प्राचीन फागु संग्रह

दिमाणियो–सं०पु० [सं० द्वि+रा० मांणो] अनाज मापने का एक माप।

दिमाक—देखो 'दिमाग' (रू.भे.) उ०—मावड़िया मुख ढंकियां, बैसे फाड़ै वाक। स्रवण सुणै नह वीर रस; दुरबळ घणो दिमाक।—बां.दा.

दिमाकदार—देखो 'दिमागदार' (रू.भे.)

दिमाग–सं०पु० [अ०] मस्तिष्क, भेजा।

मुहा०—१ दिमाग ऊंचो होणो—देखो 'दिमाग चढ़णो'. २ दिमाग

आसमांन माथै होणौ (चढ़णौ)—देखो 'दिमाग चढ़णौ'. ३ दिमाग खाणौ—देखो 'दिमाग चाटणौ'. ४ दिमाग खाली करणौ—मगजपच्ची करना. ५ दिमाग चढ़णौ—बहुत अधिक घमण्ड होना. ६ दिमाग चाटणौ—व्यर्थ की बातें कहना जिससे सिर में दर्द होने लगे, बकवास करना. ७ दिमाग झड़णौ—घमण्ड उतरना, अभिमान दूर होना. ८ दिमाग परेसांन करणौ—देखो 'दिमाग खाली करणौ'. ९ दिमाग परेसांन होणौ—मगजपच्ची से तंग होना. १० दिमाग में रै'णौ—घमण्ड में रहना।

यौ०—दिमाग-चट।

२ समझ, मानसिक शक्ति, बुद्धि।

मुहा०—१ ऊंचे दिमाग रौ—तीव्र बुद्धि वाला. २ दिमाग ऊंचौ होणौ—बुद्धि का तीव्र होना. ३ दिमाग खाली करणौ—मानसिक शक्ति का व्यय करना. ४ दिमाग में खलल पड़णौ (होणौ)—विवेक शक्ति का न रहना, सनकी होना. ५ दिमाग में रै'णौ—ध्यान में रहना, समझ में रहना, स्मरण रहना. ६ दिमाग लड़ाणौ (दौड़ाणौ)—बहुत सोचना, खूब विचार करना।

यौ०—दिमागदार।

रू०भे०—दमाक, दमाग, दिमाक।

दिमागदार–वि० [अ० दिमाग़+फा० दार] १ जिसकी मानसिक शक्ति अच्छी हो, बुद्धिमान. २ घमण्डी, अभिमानी।

रू०भे०—दिमाकदार।

दिमागी–वि० [अ०] दिमाग़ सम्बन्धी, दीमाग़ का।

दियण–वि० [सं० दा] देने वाला, दाता। उ०—१ बत्तीस आखड़ी रौ निवाहणहार, वैरियां विभाड़णहार, पर-भोम पंचायण, घण दियण, जस लियण, कळाय रौ मोर, सूंधै भीनै गात, केसरिया पोसाख कियां, पांच हथियारां बांध्यां आंण घोड़ै असवार हुवै छै। —रा.सा.सं.

उ०—२ रिध-सिध दीयण कोयलारांणी। वाळा बीजमंत्र ब्रहमांणी। वयण-जुगति द्यौ अवचळ वांणी। पुणां कीत जिम सारंगपांणी। —ह.र.

रू०भे०—दिअण।

दियांनत—देखो 'दयांनत' (रू.भे.) उ०—प्रभू नै वंदै स्मरण भजन री दियांनत छै, सो पाळियां में इहलोक परलोक रौ नफौ छै।—नी.प्र.

दियाळी—देखो 'दीवाळी' (रू.भे.) उ०—दियौ सबद सुणियां दुसह, लागै तन मन लाय। सूंब दियौ न करै सदन, परब दियाळी पाय। —बां.दा.

दियाळीएल(हेल)—देखो 'दिवाळीएल(हेल)' (रू.भे.)

दियावणौ—देखो 'दयावणौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दियावणी)

दियासण, दियासणी–सं०स्त्री [सं० दीपक+आसन] दीपक रखने के लिये पत्थर का बना स्थान विशेष।

दियासळाई–सं०स्त्री० [सं० दीपक+शलाका] लगभग डेढ़ इंच लम्बी लकड़ी की वह पतली तीली जिसके सिरे पर गंधक आदि भभकने वाले पदार्थ लगे रहते हैं और मुलायम लकड़ी की डिबिया (जिसमें किये तीलियां भरी रहती हैं) के पार्श्व पर (जहां विशेष प्रकार के मसाले लगे रहते हैं) रगड़ने से जल उठती है। यह दीपक जलाने, आग सुलगाने, सिगरेट, बीड़ी आदि जलाने के काम में ली जाती है।

रू०भे०—दिआसळाई, दीयासळाई।

दियोड़ौ–भू०का०कृ०—दिया हुआ।

(स्त्री० दियोड़ी)

दियौ—देखो 'दीपक' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ दियौ सबद सुणियां दुसह, लागै तन मन लाय। सूंब दियौ न करै सदन, परब दियाळी पाय।—बां.दा.

उ०—२ परापरी पासै रहै, कोई न जांणै ताहि। सदगुरु दिया दिखाइ कर, दादू रह्या ल्यौ लाइ।—दादू बांणी

मुहा०—दिया जोगौ भाग व्है तो रातींदौ ई क्यूं व्है—भाग्य अच्छा होता तो विपत्ति ही क्यों आती।

दिर–सं०पु०—१ सितार का एक बोल (संगीत)

२ हाथी. ३ दुर्योधन का एक भाई. ४ देखो 'दर' (५) (रू.भे.)

दिरक, दिरख–सं०पु० [सं० दक्ष] राजा दक्ष। उ०—१ अकळ अछेद अजोनी अवचळ, खत्री ऊजड कांई खडइ। दिरक जोगेसर इसउ देखतां, चरणे रज तिकाइ चढ़इ।—महादेव पारबती री वेलि

उ०—२ भ्रिग आगळि दिरक गयर भाजे नइ, प्रभु ऊबेळि तुहारी पूठि। जग मांहे तूं मुखी जांणियइ, दिरख रिख वचन कहइ मुख दूठि।—महादेव पारवती री वेलि

दिरब—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) (अ.मा.) उ०—साधां जोड़ै साधड़ा, सांधा तोड़ै संग। दरसण दे लेवै दिरब, आंदा भींत अनंग।—ऊ.का.

दिरस—देखो 'दरस' (रू.भे.) उ०—दिरस अदिरस दोऊं प्रकासो, सोहु अचळ अखेरो। दिरस आंदिरस नहीं मेरे में, ये निश्चय मम हेरो। —श्री सुखरांमजी महाराज

दिराड़णौ, दिराड़बौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

उ०—घणी दिराड़ै घूमरां, गवराड़ै नह गूढ़। भाड़ै वाळी भांम नूं, माथै चाढ़ै मूढ़।—बां.दा.

दिराड़णहार, हारौ (हारी), दिराड़णियौ—वि०।

दिराड़िओड़ौ, दिराड़ियोड़ौ, दिराड़योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिराड़ीजणौ, दिराड़ीजबौ—कर्म वा०।

दिराड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिराड़ियोड़ी)

दिराणौ, दिराबौ–क्रि०स० [सं० दा, 'देखो' क्रिया का प्रे०रू०] देने का काम कराना, दिलवाना, दिलाना। उ०—१ पछै गोधूळक वेळा हुई, तरै आप मांहे पधारिया, बीजा साथ नै डेरा दिराया। —लालो मेवाड़ी री वारता

उ०—२ सु राव खेतसी साथै आवतो दीठौ तरै ढोल दिरायौ। —नैणसी

उ०—३ तरै रांगी लिखमी राव सूजा सौं अरज कर नै गांव चोपड़ा वसी नूं दिरायो ।—नैणसी

दिराणहार, हारौ (हारी), दिराणियौ—वि० ।

दिरायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दिराईजणौ, दिराईजवौ, दिरीजणौ, दिरीजवौ—कर्म वा०

दराड़णौ, दराड़वौ, दराणौ, दरावौ, दरावणौ, दराववौ, दिराड़णौ, दिराड़वौ, दिरावणौ, दिराववौ, दिवराड़णौ, दिवराड़वौ, दिवराणौ, दिवरावौ, दिवरावणौ, दिवराववौ, दिवाड़णौ, दिवाड़वौ, दिवाणौ, दिवावौ, दिवारणौ, दिवारबौ, दिवावणौ, दिवाववौ, देराड़णौ, देराड़वौ, देराणौ, देरावौ, देरावणौ, देराववौ, दैवाड़णौ, दैवाड़वौ—रू०भे० ।

दिरायोड़ौ—भू०का०कृ०—देने का काम कराया हुआ, दिलवाया हुआ, दिलाया हुआ ।

(स्त्री० दिरायोड़ी)

दिरावणौ, दिराववौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)

उ०—१ रह रह सुंदरि माठ करि, हळफळ लग्गो काइ । डांभ दिरावइ करहलउ, सेकंतां मरि जाइ ।—ढो.मा.

उ०—२ घांन दिरावण नै सुखदेवौ घायौ, पांणी निरमळ नित सबळां ले पायौ । आछा आछां जनवासी व्हैगा वनवासी, उठगा उगलांणा पाछा कद आसी ।—ऊ.का.

दिरावणहार, हारौ (हारी), दिरावणियौ—वि० ।

दिराविओड़ौ, दिरावियोड़ौ, दिराव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दिरावीजणौ, दिरावीजवौ—कर्म वा० ।

दिरावियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिरावियोड़ी)

दिल—सं०पु० [फा०] हृदय, चित्त, मन, जी (डिं.को.)

उ०—१ विपळ सत सघण नवीन रा, ग्रत गाय दुज आधीन रा । भुज दहण खळ जस भीन रा, दिल महण वंधव दीन रा ।

—र.ज.प्र.

उ०—२ आळसवां अज्जांणवां, दिल-खोटंतां दूर । साहिव सोचां साधवां, है हाजरां हजूर ।—ह.र.

उ०—३ दिल साफ रखे निज दोस दहै ।—ऊ.का.

मुहा०—१ दिल उचकणौ—देखो 'जीव उचकणौ'. २ दिल उमड़णौ—देखो 'जीव भरीजणौ'. ३ दिल ऊठणौ—देखो 'जीव ऊठणौ'. ४ दिल काठौ करणौ—धैर्य धारण करना, कृपणता करना, कंजूसी करना. ५ दिल खाटौ करणौ—देखो 'जीव खाटौ करणौ'. ६ दिल खाटौ पड़णौ (होणौ)—देखो 'जीव खाटौ पड़णौ, जीव खाटौ होणौ'. ७ दिल खिलणौ—प्रसन्नता होना. ८ दिल खुलणौ—देखो 'जीव खुलणौ'. ९ दिल खोल नै—देखो 'जीव खोल नै'. १० दिल चालणौ—देखो 'जीव चालणौ'. ११ दिल चुराणौ—देखो 'जीव चुराणौ'. १२ दिल जांन सूं—देखो 'दिलो जांन सूं'. १३ दिल टूटणौ—देखो 'जीव टूटणौ'. १४ दिल ठिकांणै रैणौ (होणौ)—देखो 'जीव ठा' माथै रैणौ'. १५ दिल थांमणौ—धैर्य धारण करना. १६ दिल दुखाणौ—देखो 'जीव दुखाणौ'. १७ दिल दूखणौ—देखो 'जीव दूखणौ'. १८ दिल धड़कणौ—देखो 'जीव धड़कणौ.

१९ दिल पसीजणौ—चित्त में दया का उद्रेक होना. २० दिल फाटणौ—देखो 'जीव फाटणौ'. २१ दिल फिरणौ—देखो 'जीव फिर जाणौ', देखो 'जीव फिरणौ'. २२ दिल फीकौ पड़णौ (होणौ)—देखो 'जीव फीकौ पड़णौ'. २३ दिल वडाणौ (वढ़ाणौ)—उत्साहित करना. २४ दिल वहलणौ—देखो 'मन वहलणौ'. २५ दिल वहलाणौ—देखो 'मन वहलाणौ'. २६ दिल बैठणौ—व्याकुल होना, भयभीत होना. २७ दिल भटकणौ—चित्त में स्थिरता नहीं होना. मन अस्थिर होना. २८ दिल मिळणौ—देखो 'मन मिळणौ'.

२९ दिल में आणौ—देखो 'जीव में आणौ'. ३० दिल में घर करणौ—विश्वास-पात्र होना. ३१ दिल चुभणौ—देखो 'जीव में चुभणौ'. ३२ दिल में जागा करणौ—देखो 'दिल में घर करणौ'. ३३ दिल दरियाव—बहुत उदार. ३४ दिल में राखणौ—देखो 'जीव में राखणौ'. ३५ दिल रा दरवाजा खुलणा—साहसी होना.

३६ दिल रौ दलाल—देखो 'दिल रौ वादसाह'. ३७ दिल रौ वादसाह—बहुत बड़ा उदार, मनमौजी, लहरी. ३८ दिल ललचाणौ—देखो 'जीव ललचाणौ'. ३९ दिल लागणौ—देखो 'मन लागणौ'. ४० दिल वधणौ—देखो 'जीव वधणौ'. ४१ दिल साफ कसूर माफ—चित्त शुद्धि ही सब से महत्वपूर्ण है. ४२ दिल सूं (से)—देखो 'जीव सूं.' ४३ दिलो जांन सूं—पूर्ण रूप से, सच्चे मन से ।

२ कलेजा. ३ प्रवृत्ति, इच्छा । उ०—दिल आवै ज्यूं कीजो दुरस ।

—वी.मा.

मुहा०—दिल आणौ—किसी की ओर प्रवृत्त होना, मोहित होना, इच्छा होना, अभिलाषा होना ।

रू०भे०—दल ।

अल्पा०—दिलड़ौ ।

दिलगीर—वि० [फ़ा०] १ शोकाकुल, दुखी । उ०—तथा करमचंद नूं देख कर महाराज रै नेत्रां में जळ आयो अरु खातरी फुरमाय डेरां पधारिया, तारां करमचंद रा वेटा दोय लखमीचंद, भागचंद करमचंद नै कयौ के आपनै देख महाराज दिलगीर हुवा सू आपसूं मोह घणौ दीसै छै ।

—द.दा.

२ उदास, चिंतातुर । उ०—१ दूत वीजी वार वाहर आइयो, देखैं तो पेई नहीं, अठी उठी नूं जोइयौ कठै ही दीसै नहीं, दिलगीर हुवो ।

—पंचदंडी री वारता

उ०—२ सु ओ गाढ़ौ दिलगीर छै नै राहवेधी आदमी छै ।—नैणसी

क्रि०प्र०—होणौ ।

रू०भे०—दलगीर ।

दिलगीराई, दिलगीरी—सं०स्त्री० [फ़ा० दिलगीर+रा०प्र०आई तथा ई]

१ रंज, दुःख। उ०—१ तूं दिलगीराई किए ही बोल री मत करै। दिलासा करि अर पूछियो।—द.वि.

उ०—२ करना फकीरी क्या दिलगीरी, सदा मगन मन रहना रे। कोई दिन वाड़ी तो कोई दिन बंगळा, कोई दिन जंगळ रहना रे। —मीरां

२ उदासी। उ०—१ आज अपूठा सो रह्या जी, रह्यो के अंदेसो छाय। कै चित आयो थांरै देसड़ो जी, कै चित आया थांरै माई ये बाप, भँवर दिलगीरी क्यूं ल्याया जी।—लो.गी.

उ०—२ जिको दिल ईस्वर री इच्छा सूं राजी रहै, हाय पुकार नहीं करै, इए खातिर उएनूं दुख दिलगीरी नहीं व्यापै।—नी.प्र.

क्रि०प्र०—करणी, राखणी।

रू०भे०—दलगीरी।

दिलड़ी—देखो 'दिल्ली' (अल्पा., रू.भे.) उ०—आयो आगरै जग टकी जवनपुर, समहर संग सप्रांणै। दिलड़ी तणी घरा धकधूणी, रोस चईनो रांणी—नैणसी

दिलड़ौ—देखो 'दिल' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

उ०—जिण री जोऊं वाट, तैं सज्जण दीसै नहीं। दिलड़ा मांहि उचाट, सु जनम क्यूं जासी 'जसा'।—जसराज

दिलचलो—वि० [फ़ा० दिल+सं० चलन] १ उदार, दाता, दानी. २ खुश मिजाज. ३ पागल. ४ हिम्मत वाला, साहसी. ५ शूर, वीर।

दिलचस्प—वि० [फ़ा०] १ चित्ताकर्षक. २ मनोहर, सुंदर।

दिलचस्पी—सं०स्त्री० [फ़ा०] चित्त को किसी ओर प्रवृत्त करने का भाव।

क्रि०प्र०—राखणी, लैणी।

दिलजमई—सं०स्त्री० [फ़ा० दिल+अ० जमअः+रा०प्र०ई] संतोष, इतमिनान, तसल्ली।

दिलजळो—वि० [फ़ा० दिल+सं० ज्वलन] अत्यन्त दुखी।

दिलदराज—वि० [फ़ा० दिल+दराज] बड़े दिल का, उदार दिल।

उ०—दिवस केता दिलदराजै, गुमर धरिया आय गाजै, रोस ताजै रोपिया।—र.रू.

दिलदार—वि० [फ़ा०] १ रसिक, प्रेमी। उ०—जिए सिल साजन बैठता, वो सिल सदा सुरंग। सिल दीखै साजन नहीं, म्हारै वहै कटारी अंग। ओ दिलदार म्हारो अब क्यूं अंग जळावो।—लो.गी.

२ उदार, दाता।

दिलदारी—सं०स्त्री० [फ़ा० दिल+दार+रा०प्र०ई] १ उदारता. २ रसिकता।

दिलदूठ—वि० [फा० दिल+सं० दुष्ट] दृढ़, मजबूत। उ०—के आया लंगर कीसां रा, सो जीते थाट अरिसां रा। देखाळ तिकै दिलदूठ दुवाहै, सांमल कीधो साखियो। अत हेत अहेस सुकंठ अनै, करुणानिध स्त्री रघुवीर कनै। दिल मोद महादिल आयर दोई, भेद सकोई भाखियो। —र.रू.

दिलपसंद—वि०यौ० [फा०] जो मन को अच्छा जँचे, मन को पसन्द आने वाला।

सं०पु०—एक प्रकार का फुलवार या चुनरी की तरह का कपड़ा जिस पर बेल बूटे छपे हुए होते हैं।

दिलपाक—वि० [फ़ा०] पवित्र मन वाला, स्पष्ट, निष्कपट।

उ०—१ सांम कांम में सधीर, सुरूं के सहायक, दांनवूं के दावागीर, दिलपाकूं के दोसत, सरणायां के साधार।—र.रू.

उ०—२ खैरादियां रा दिल खुसहाल, दिलपाक तरंदा। —केसोदास गाडए

दिलप्यास—सं०पु० [फ़ा० दिल+सं० पिपासा] एक प्रकार का रेशमी बेल-बूटे छपा हुआ कपड़ा।

दिलबर—वि० [फ़ा०] जिससे प्रेम किया जाय, प्यारा, प्रिय।

उ०—पोस जोस सरदी तमा, जाड़ो पड़ै अनंत। दिलबर बसत दिसावरां, बैठा होय नचंत। जो सिरकार सरदी जरदी तन छाई मेरी जांन।—लो.गी.

दिलबहार—सं०पु० [फ़ा०] खशखाशी रंग का एक भेद।

दिलमट्ठौ, दिलमठौ—वि० [फ़ा० दिल+सं० मष्ट] कृपण, कंजूस, सूम।

उ०—सोमंबर लाखरां ऊभळ देतां सुद्रब, दिलमठा ठाकरां तणा दाजै। दत खगां आखरां अडग मारू दुझल, छतीसह साखरां सुगट छाजै।—आईदांन सोदो

रू०भे०—दलमठौ, दलमट्ठौ, दलमाठौ।

दिलरखी—सं०स्त्री० [फ़ा० दिल+सं० रक्षिका] दासी (अ.मा.)

दिलरुबा—सं०पु० [फ़ा०] वह जिससे प्रेम किया जाय, प्यारा।

दिलाड़णौ, दिलाड़बौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

दिलाड़णहार, हारौ (हारी), दिलाड़णियौ—वि०।

दिलाड़िओड़ौ, दिलाड़ियोड़ौ, दिलाड़योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिलाड़ीजणौ, दिलाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दिलाड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिलाड़ियोड़ी)

दिलाणौ, दिलाबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

दिलाणहार, हारौ (हारी), दिलाणियौ—वि०।

दिलायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दिलाईजणौ, दिलाईजबौ, दिलीजणौ, दिलीजबौ—कर्म वा०।

दिलायोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिलायोड़ी)

दिलावणौ, दिलावबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

दिलावणहार, हारौ (हारी), दिलावणियौ—वि०।

दिलाविओड़ौ, दिलावियोड़ौ, दिलाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिलावीजणौ, दिलावीजबौ—कर्म वा०।

दिलावर—वि० [फ़ा०] १ शूर, वीर। उ०—लोग सारौ कांम रौ बडौ दिलावर पए फूहड़ गंवार लोग सो उघाड़ो ही जे रहै, पंछी ज्यूं वास करै।—दूलची जोइयै री वारता

२ उत्साही, साहसी. ३ उदार, दानी।

दिलावरी-सं०स्त्री० [फा०] बहादुरी, साहस।

दिलावियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिलावियोड़ी)

दिलासा-सं०स्त्री० [फा० दिल+सं० आशा] ढाढ़स, तसल्ली, धैर्य, आश्वासन। उ०—साह दिलासा मोकळी, झूठी आसा धार। तूं मेरै सवकै सिरै, अवकै आवै मार।—रा.रू.

दिलासौ-सं०पु०—देखो 'दिलासा' (रू.भे.)

दिली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—१ सूरां मुगट सूर पण साचैं, वीर सधीर वयण यूं वाचैं। अगसत जेम नेम वळ ओडां, छात दिली दळ जळ विण छोडां।—रा.रू.
उ०—२ सहर उग्राहै सार वळ, मार सहै असुरांण। डरै दिली डर खांग रैं, पुर आगरै भगांण।—रा.रू.
वि० [फा० दिल+रा०प्र०ई] दिल सम्बन्धी, हृदय सम्बन्धी, हार्दिक।

दिलीछात, दिलीछातपत—देखो 'दिल्लीछातपत' (रू.भे.)

दिलीनाथ—देखो 'दिल्लीनाथ' (रू.भे.) उ०—दिलीनाथ ऊमरा कोट कांमरा करारां। अन नवाव सालतै वहू वोटिया बरारां। खांनदोरा सारिखा खांन जाफरां सजोड़ै। दरस काज आविया घमक पाखरां सघोड़ै।—वखतौ खिड़ियौ

दिलीप-सं०पु० [सं०] इक्ष्वाकु-वंशी एक राजा जो वाल्मीकि के अनुसार राजा सगर के परपोते, भगीरथ के पिता और रघु के परदादा थे।
रू०भे०—दलीप, दुलीप।

दिलीपत, दिलीपति, दिलीपती, दिलीपत्ति—देखो 'दिल्लीपति' (रू.भे.)
उ०—१ मारण मतै दिलीपत मोनूं, तिण सूं वाध लिखूं की तोनूं। भूप 'अजीत' रहै मो भेळौ, इण वळ टळै खळां ऊखेळौ।—रा.रू.
उ०—२ 'जसा' छळ पौरस झाल जगत्ति। दिलीपत हूंत लड़ै 'दलपत्ति'।—सू.प्र.
उ०—३ नेजा खासा तोग नवव्वति। पह दीधा मो विनां दिलीपति।
—सू.प्र.

दिलीमंडळ-सं०पु० [दिल्ली+सं० मण्डल] भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।
उ०—हुय धुरळ अेम हुंसी हुंसार, खोस नै कियौ सरसौ खवार। लड़ लइ लूट जिहि नारनोळ, दिलीमंडळ पड़ इसड़ौ दरोळ।—पे.रू.
रू०भे०—दिल्ली मंडळ।

दिलीवर-सं०पु० [दिल्ली+सं० वर] दिल्ली का स्वामी, वादशाह।
उ०—पदमणी दिलीवर होण प्रीत। साजादा जूटे रण सरीत। सूरमा लड़ै चवड़ै संभाळ। वेगमां घसै पड़दा विचाळ।—वि.सं.

दिलीस-सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की बन्दूक.
२ देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.) उ०—'करण' रौ 'जगपत' कियौ, कीरत काज कुरव्व। मन जिण धोखौ ले मुवा, साह दिलीस सरव्व।
—करणीदांन वारहठ (मूंदियाड़)

दिलीसर, दिलीस्वर—देखो 'दिल्लीस्वर' (रू.भे.)
उ०—१ तुम दिलीसर जगदीसौ रे, नमठेह सुं केही रीसौ रे। इ विनय वचन सुणीइजे रे, सिरपाव सिंघल नैं भेजे रे।—प.च.चौ.
उ०—२ दिलीस्वरां घर जिती दबाई। सब जोवतां दिलो पति साही।—सू.प्र.

दिलेदार-सं०पु०—एक प्रकार का कपाट जिसमें दिलहा लगा रहता हो

दिलेर-सं०पु० [फा०] १ दिल वाला, साहसी. २ बहादुर, शूर।

दिलेरी-सं०स्त्री० [फा०] १ साहस, हिम्मत. २ बहादुरी, वीरता।
क्रि०प्र०—करणी।

दिलेस—देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.) उ०—१ मेलियौ तुजवक मीर, दी हाथ पांनदांन। आखियौ दिलेस एम, पांति हूंत फेरि पांन।—सू.प्र.
उ०—२ आवियौ हुकम जोधांण इव, द्रढ़ सुरतांण दिलेस रौ। हि मूझ सवायौ होयवा, कर चाह्यौ 'दुरगेस' रौ।—रा.रू.

दिलेसर, दिलेसुर, दिलेस्वर—देखो 'दिल्लीस्वर' (रू.भे.)
उ०—१ धरि हिंदवांण ढाल, दावावंध दिलेसुरां। इम सुग 'अजमाल', जस खाटै 'जसराज' उत।—सू.प्र.
उ०—२ वीड़ा ले वोलियौ, कमध घातै मूंछां कर। उछब करी अस पती, सोच मति धरौ दिलेसर।—सू.प्र.
उ०—३ जिण बहु वार मुगळ दळ जीता, प्रजळै तेणि दिलेस्व पंजर।—सू.प्र.
उ०—४ दळथंभ तणा दिलेसुर दीधौ, जुड़ियौ मुरधर सूर सक। त ऊगतौ वांदियौ तुरकां, आथमतौ वांदै अरक।
—महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) जोधपुर रौ गी

दिलौ—देखो 'दिल्लौ' (रू.भे.)

दिल्लगी-सं०स्त्री० [फ़ा० दिल+सं० लगे] १ मसखरी, मजाक, मखौल ठट्टा।
क्रि०प्र०—करणी।
२ दिल लगाने की क्रिया या भाव।

दिल्लगीबाज-सं०पु० [दिल्लगी+फ़ा० बाज] हँसाने वाला, मसखरा ठठोल।

दिल्लगीबाजी-सं०स्त्री० [दिल्लगी+फ़ा० बाजी] १ दिल्लगी करने क काम. २ दिल लगाने की क्रिया या भाव. ३ मसखरी, मखौल, ठठोली।
क्रि०प्र०—करणी।

दिल्ली-सं०स्त्री०—यमुना नदी के किनारे उत्तर-पश्चिम भारत का एक बहुत प्रसिद्ध नगर जो भारत की राजधानी है।
उ०—१ दिल्ली सूं उत्तर दिसा, जमणा तणै उपकंठ। ऊतरियौ मिश्र आपरां, गुंज प्रकासण गंठ।—रा.रू.
उ०—२ खसर करतां तिकै असुर सहु खूंपिया, जीविया तिकै त्रिणौ लेहि जीहैं। सवद आवाज सिवराज री सांभळै, विली जिम दिल्ली रौ धणी वीहै।—ध.व.ग्रं.

वि०वि०—दिल्ली को किसने कब बसाया इसके लिये कई मत हैं। कुछ लोगों का मत है कि इन्द्रप्रस्थ के मयूरवंशीय अंतिम राजा दिलू ने इसे बसाया था, इसी से इसका नाम दिल्ली पड़ा। यह भी कहा जाता है कि पृथ्वीराज के नाना अनंगपाल एक गढ़ बनवा रहे थे। उसकी नींव डालने के शुभ मुहूर्त में उनके पुरोहित ने जमीन में एक कील गाड़ी और कहा कि यह शेषनाग के मस्तक पर जा लगी है। इससे तुम्हारा तोंग्र वंशीय राज्य अचल हो गया। राजा को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने कील उखड़वा दी। उस स्थान पर लहू आने लगा तब राजा ने बहुत पश्चात्ताप किया और कील पुनः गड़वा दी किन्तु इस बार कील ठीक नहीं गड़ी और ढीली रह गई। इसी से ढीली नगर कहा जाता था। ढीली शब्द में परिवर्तन होते-होते बाद में इसे दिल्ली कहा जाने लगा, किन्तु उस कील (लोहे के स्तम्भ) पर अनंगपाल से बहुत पहले के किसी चन्द्र राजा की प्रशंसा का लेख है। सन् ११९३ में मुहम्मद गोरी ने इस पर अधिकार किया। तैमूर ने सन् १३९८ में इसे नष्ट किया। सन् १५२६ में इस पर बाबर ने अधिकार किया तब से यह मुगल सम्राटों की राजधानी बना रहा। सन् १८०३ में इस पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया। सन १९१२ में अंग्रेजों ने इसे अपनी राजधानी बनाया। इससे पहले अंग्रेजी भारत की राजधानी कलकत्ता था। पिछले दो हजार वर्षों में यह नगर कई बार बसा और कई बार उजड़ा। अब दिल्ली के पास ही नई दिल्ली बसी हुई है।

पर्याय०—अहिपुर, चंडी, चंडीनगर, चंडीपुर, जोगरण, जोगरणपुर नागपुर, सगतीनगर, सगतीपुर, हथरणापुर, हेवैंपुर।

मुहा०—१ दिल्ली दूर होणी—किसी कार्य के पूर्ण होने में देर होना। व्यर्थ मन के लड्डू खाना, किसी कार्य शक्ति से बाहर होना. २ दिल्ली फकीरां जोगी होणी—दरिद्रावस्था में होना, निर्धन होना, कंगाल होना. ३ दिल्ली में रैं नैं भाड़ झोकणी—अच्छा अवसर मिलने पर भी लाभ न उठा सकना. ४ दिल्ली रो सिंघासरण लैणो—किसी बहुत बड़ी प्राप्ति की आशा करना।

रू०भे०—डीली, ढल्ली, ढिली, ढिल्लीय, ढिल्ली, ढीली, दली, दल्ली, दहली, दिली, देहली।

अल्पा०—ढिलड़ी, ढीलड़ी, ढेलड़ी, दिलड़ी।

दिल्लीछात, दिल्लीछातपत–सं०पु० [दिल्ली+सं० छत्रपति] दिल्ली का छत्र धारण करने वाला, दिल्ली का स्वामी, बादशाह।

उ०—पोस मास पख चांदणै, त्रीज तणो दिन प्रात। डेरै जोधांनाथ रै, आयो दिल्लीछात।—रा.रू.

रू०भे०—दिलीछात, दिलीछातपत।

दिल्लीनाथ–सं०पु० [दिल्ली+सं० नाथ] दिल्ली का स्वामी, बादशाह।

उ०—मारु फागरण मास में, आप गयो दरगाह। दिल्लीनाथ दरस्सिवा, नाथ नवाब सगाह।—रा.रू.

रू०भे०—दिलीनाथ।

दिल्लीपत, दिल्लीपति–सं०पु० [दिल्ली+सं० पति] दिल्ली का स्वामी, बादशाह। उ०—१ पाय खलीतो साहरो, दिल्ली पहुंचे आप। दिल्लीपत आदर दियो। आठों पहर अमाप।

—ठाकुर जगरांमसिंह रो दूहो

उ०—२ दिल्लीपति दाखै इसो, सुभटां नैं समझाय। सहु तुमे हिव सांमठा, जुड़ो तुरंगां जाय।—प.च.चौ.

रू०भे०—दलीपत, दलीपति, दिलीपत, दिलीपति, दिलीपतो, दिलीपत्ति, दिल्लीवई।

दिल्लीबोर–सं०पु० [दिल्ली+सं० बदरं] एक प्रकार के बड़े बेर जिनका रंग हरा और पूर्ण पकने पर कुछ पीला हो जाता है।

दिल्लीमंडळ—देखो 'दिलीमंडळ' (रू.भे.)

दिल्लीवई—देखो 'दिल्ली-पति' (रू.भे.) उ०—तखत तळइ गेरइ तुं हि, तुं हि दिल्लीवइ जांणू। कहै तुहि सब साच, अउर का कह्या न मांनू।

—प.च.चौ.

दिल्लीवर–सं०पु० [दिल्ली+ सं० वर] दिल्ली का बादशाह, सम्राट।

उ०—असपति 'फरक सेर' तिरण अवसर, बींद जवांन हुवो दीलीवर।

—सू.प्र.

रू०भे०—दिलीवर।

दिल्लीवाळ–वि० [दिल्ली+सं० आलुच्] दिल्ली का, दिल्ली सम्बन्धी।

सं०पु०—दिल्ली का निवासी।

दिल्लीस–सं०पु० [दिल्ली+सं०ईश] दिल्ली का स्वामी, बादशाह, सम्राट।

उ०—झड़िया सनाह तन तुरंग जीरण, हुय गया मुगळ दुख दहल हीरण। पड़ झाट थाट छळ राट पाट, दील्लीस जळै दळ वळै दाट।

—रा.रू.

रू०भे०—दलीस, दलेस, दिलीस, दिलेस, दिल्लेस।

दिल्लीसर, दिल्लीसरू, दिल्लीस्वर–सं०पु० [दिल्ली+सं० ईश्वर] दिल्ली का सम्राट, बादशाह। उ०—रीझवियो जिरण साहजहां दील्लीसरू रे, कर दीधउ फुरमांण।—प.च.चौ.

रू०भे०—दिलीसर, दिलीस्वर, दिलेसर, दिलेसुर, दिलेस्वर, दिल्लेसुर।

दिल्लेदार–वि०—एक प्रकार का किंवाड़ जिसमें दिलहा लगा हो, दिलहे वाला (किंवाड़)

दिल्लेस—देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.) उ०—दिल्लेस काज ग्रह पाधरा, वंक न थायै राजपुर।—रा.रू.

दिल्लेसुर—देखो 'दिल्लीस्वर' (रू.भे.) उ०—१ दाखै वार वार दिल्लेसुर स्री महाराज राजराजेस्वर।—रा.रू.

उ०—२ जिनके रस स्वाद के मजा देवतूं का मन हरै। दिल्लेसुर परमेसुर जिसकी स्री मुख से तारीफ करै।—सू.प्र.

दिल्लो–सं०पु० (देश०) शोभा के लिये किंवाड़ के पल्लों में बनाया या जड़ा जाने वाला लकड़ी का चौखटा।

रू०भे०—दलो, दिलो।

दिव–सं०पु० [सं० दिवम्] १ आकाश (डि.नां.मा., डि.को.)

२ स्वर्ग (नां.मा.) उ०—पूगी दिव श्रवसांग पर, सील निधि नृप सत्थ। भूप भाव संग्रांम भजि, प्रफित हुआ रग पत्थ।—वं.भा.

३ वन, जंगळ. ४ सूर्य (ना.डि.को.) ५ दिन, दिवस (अ.मा)

उ०—तारंग मंत्र आदेस तो, दिढ़चा रंग निस संधि दिव। सारंग नयग उमया सुवर, सीस गंग धारंग सिव।—सू.प्र

६ दीपक। उ०—त्रिग राव त्रिगेही भवनपति सिद्धलल्ल इम उच्चरै। इत्थ चवत्यौ राव हुवै, तो दिव जळती कर धरै।—नैणसी

७ देखो 'दिव्य' (रू.भे.) उ०—खट कास्टें निरदूख खित, आहुत घिरत कपूर। दिव पंडित वेदी सद्रढ़, सोभत अगनि सनूर।—रा.रू.

दिवउखद, दिवग्रोकस, दिवखद—सं०पु० [सं० दिवौकस्, दिविपद्] देवता, सुर (ह.नां.,नां.मा., डि.को.)

रू०भे०—दिवाकेसा, दिवीग्रोक, दिवोकसौ, दिवौका।

दिवदिस्ट, दिवद्रस्टी—देखो 'दिव्यद्रस्टी' (रू.भे.) उ०—१ अलख लखाया दिवदिस्ट सतगुरु समझाई।—केसोदास गाडण

उ०—२ निकाई छाई ते प्रकट प्रभुताई सिख नखा। समस्टी व्यस्टी तें सजन दिवद्रस्टी रिखि सखा।—ऊ.का.

दिवपुर—सं०पु० [सं० देवपुर] १ स्वर्ग। उ०—जग अवलंब खंभ सतजुग रा, दिवपुर वसतां 'सिव' दुग्रा।—रांमलाल वारहठ

२ वैकुंठ।

दिवराट—सं०पु० [सं०] १ इन्द्र (अ.मा.) २ सूर्य।

दिवराड़णौ, दिवराड़बौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

दिवराड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिवराड़ियोड़ी)

दिवराणौ, दिवराबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

उ०—'जैत' हर आभरण सतर-घड़ जोपणा, वरै कुण घड़ा दिवराय वाजा। दांन मोजां तणा कवण गहणा दियै, रतन रौ मोल कुण दियै राजा।—दुरसौ आढ़ौ

दिवरायोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिवरायोड़ी)

दिवरावणौ, दिवरावबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.) (उ.र.)

दिवरावियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिवरावियोड़ी)

दिवली—देखो 'दीवी' (अल्पा., रू.भे.)

दिवलौ—देखो 'दीपक' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ पहिलइ पोहरै रैग कै; दिवला अंबर झूल। धग कसतूरी हुइ रही, प्रिय चंपा रौ फूल।—ढो.मा.

उ०—२ म्हारौ कंवर घर रौ चांनणौ, कुळवहु ग्रे दिवलै री जोत, सहेल्यां ए आंव मोरियौ।—लो.गी.

दिवस—सं०पु० [सं०] १ दिन, वासर। उ०—१ कांमो फिर वांमी क्रपग, जादूगर नर चार। रात दिवस पड़दै रहै, पड़दा सूं हिज प्यार।—वां.दा.

उ०—२ दिवस एक जैचंद, वीर मिसलित विचारी। जीपि किया सव जेर, धरा हिंदू छत्रधारी।—सू.प्र.

२ सूर्य, रवि।

रू०भे०—दिवसि, दिवस्स, दीस, दीह, दीहि, दीहु, दीहू, देवस, द्यौस।

अल्पा०—दहाड़ौ, दहाडौ, दाड़ू, दा'ड़ौ, दा'ड़ू, दा'डौ, दिहड़ौ, दि[illegible] दिहाड़उ, दिहाड़ि, दिहाड़ी, दिहाड़ौ, दिहाडउ, दिहाडि, दि[illegible] दिहाडौ, दीहड़ौ, दीहडौ, दीहौ, देहाड़ौ, देहाडौ।

मह०—दीहड़।

दिवसग्रंध—वि० [सं० दिवसांध] जिसे दिन में दिखाई न दे।

सं०पु०—उल्लू।

दिवसकर, दिवसनाथ—सं०पु० [सं०] सूर्य, दिनकर।

दिवसप—सं०पु० [सं० दिवस्पति] १ इन्द्र (अ.मा.)

[सं० दिवसपति] २ सूर्य।

दिवसपत, दिवसपति, दिवसपती—सं०पु० [सं० दिवसपति] सूर्य।

रू०भे०—दीहपत, दीहपति, दीहपती।

दिवसमणि—सं०पु० [सं०] सूर्य।

दिवसमुख—सं०पु० [सं०] सवेरा, प्रातःकाल।

दिवसमुद्रा—सं०स्त्री० [सं०] एक दिन का वेतन।

दिवसि—देखो 'दिवस' (रू.भे.) उ०—एक दिवसि सुर पूजतां, पहि[illegible] हीरा हेम। आवी अति ऊतावळी, पटरांणी घरि प्रेम।—मा.कां.प्र

दिवसेस—सं०पु० [सं० दिवस+ईश] सूर्य, भानु। उ०—इहि अंतर अ[illegible] सेस अव, दुवनाड़ी दिवसेस। बुंदी भट छिज्जत बढ़चो, विजय क्रूरम वेस।—वं.भा.

दिवस्पति—सं०पु० [सं०] १ इन्द्र।

[सं० दिवसपति] २ सूर्य।

रू०भे०—दिवसप।

दिवस्स—देखो 'दिवस' (रू.भे.)

दिवांण—देखो 'दीवांण' (रू.भे) उ०—१ 'अधिराज' रौ दिवांण उचारै। भेळू असि खग कढ़ि गज भारै।—सू.प्र.

उ०—२ राजाधिराज नागौर पधार पहलां पंचोळी लाला नूं दिवांण कियौ। पछै धाय रा कह्या सूं सिंघवी सायरमल नूं दिवांण कियौ। पछै इग मुवां इगरौ वेटौ अमरचंद दिवांण कियौ। अमरचंद नूं मार सिंघवी फतैचंद नूं दिवांण कियौ।—वां.दा.ख्यात

दिवांणग्रांम—देखो 'दीवांनग्रांम' (रू.भे.)

दिवांणखास—देखो 'दीवांनखास' (रू.भे.)

दिवांणगी—देखो 'दीवांणगी' (रू.भे.) उ०—दिवांणगी रौ कांम सांगो जी करता। सू जिगां दिनां मैं सांगोजी वछावत गुजरा।—द.दा.

दिवांणी—१ देखो 'दीवांणी' (रू.भे.) २ देखो 'दीवांनी' (रू.भे.)

उ०—गरज-दिवांणी गूजरी, अव आई घर कूद। सांवण छाछ न घालती, जेठ परोसै दूध।—अज्ञात

दिवांध—वि० [सं०] जिसे दिन में नहीं सूझे।

सं०पु०—१ उल्लू. २ दिनौंधी का रोग।

दिवांन—देखो 'दीवांण' (रू.भे.)

दिवांनगिरी—देखो 'दीवांणगी' (रू.भे.) उ०—अर उणीज वेळा राजा सारा ही सांभळतां कयो जो मैं अणी फलांणा रजपूत नैं माहरा राज री दिवांनगिरी दीधी है।—गांम रा धणी री वात

दिवांनी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का पेड़. २ देखो 'दीवांणी' (रू.भे.) ३ देखो 'दीवानी' (रू.भे.)

दिवांनौ-सं०पु०—१ दरबार। उ०—दड़े दिवांनै सगळै दीपता, संघ घणौ सोभागी जी। मांनै मोटा रांणा राजिया, वणारीस वडभागी जी।—ऐ.जै.का.सं.

२ देखो 'दीवांनौ' (रू.भे.) उ०—गूंगा गहला बावळा, सांई कारण होइ। दादू दिवांना ह्वै रह्या, ताकौ लखै न कोइ।—दादू वांणी

(स्त्री० दिवांनी)

दिवा-सं०पु० [सं०] दिन, दिवस।

अव्य०—दिन से, दिन के समय में।

दिवाकर-सं०पु० [सं०] १ सूर्य, रवि (अ.मा.) उ०—१ सिव सिवसुत हिमगिरसुता, विसनु दिवाकर वंद। अब कायर उपहास री, रचना रचूं अमंद।—वां.दा.

उ०—२ सोम दिवाकर साखि करि, दाखि दसमइ दूआरि। गणिका तु जउ हुं गणउं, आज ज अंक अग्यार।—मा.कां.प्र.

२ आक, मदार।

रू०भे०—देवाकर, देवायर।

दिवाकीरती-सं०पु० [सं० दिवाकीर्ति] १ नाई, हज्जाम. २ चाण्डाल. ३ उल्लू।

दिवाकैसा-सं०पु०—देखो 'दिवोकस' (रू.भे.) (नां.मा.)

दिवाड़णौ, दिवाड़बौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)

उ०—तोडरमल जीतौ रे, जीतुं जीतुं द्वारिका नुं राई। जीतुं जीतुं हळधरवीर, जीतां केरा ढोलड़ा दिवाड़ि।—रुकमणी मंगळ

दिवाड़णहार, हारौ (हारी), दिवाड़णियौ—वि०।

दिवाड़िओड़ौ, दिवाड़ियोड़ौ, दिवाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिवाड़ीजणौ, दिवाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दिवाड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिवाड़ियोड़ी)

दिवाचर-सं०पु० [सं०] १ पक्षी, चिड़िया. २ चाण्डाल।

दिवाजउ-सं०पु०—शोभा। उ०—हय गय रह पायक, मेली बहु जन व्रिंद। करि सवळ दिवाजउ, वंदइ स्री जिनचंद।—ऐ.जै.का.सं.

दिवाजौ—देखो 'दवाजौ' (रू.भे.)

दिवाटन-सं०पु० [सं०] काक, कौआ।

दिवाणौ, दिवावौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.) उ०—नै रोजा भोज ईसी तरै थी साहूकार री असतरी रो सांचो न्याव कीधौ है अर आधौ माल दिवायौ है।—साहूकार री वात

दिवाणहार, हारौ (हारी), दिवाणियौ—वि०

दिवायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दिवाईजणौ, दिवाईजबौ—कर्म वा०।

दिवानाथ-सं०पु० [सं०] सूर्य, भानु।

दिवाप्रस्ट-सं०पु० [सं० दिवापृष्ठ] सूर्य, रवि।

दिवाभिसारिका-सं०स्त्री० [सं०] दिन के समय शृंगार करके अपने प्रेमी से मिलने के लिये संकेत स्थान पर जाने वाली नायिका।

दिवामण, दिवामणी-सं०पु० [सं० दिवामणि] सूर्य, रवि।

दिवायर, दिवायरु, दिवायरू—देखो 'दिवाकर' (रू.भे.) (ना.डिं.को.)

उ०—१ पेखि किरि रूव लावन्न गुण आयार, जण जण जंपए मनि धरी ए। सिरि माल्हूय कुळ कमळ दिवायर, वादीय गये घड केसरी ए।—ए.जै.का.सं.

उ०—२ सिज्जंभव जसभद्द, अज्ज संभूय दिवायरू। भद्दबाहु सिरि थूळभद्र, गुणमणि रयणायरू।—ऐ.जै.का.सं.

दिवारणौ, दिवारबौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.) उ०—पडह दिवारइ नयर मझारि, ए लिपि वाचइं जे नर नारि। भला भलेरा छइ प्रधांन, तेह ऊपरि ते करउं प्रधांन।—विद्याविलास पवाउड

दिवारियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिवारियोड़ी)

दिवारूप-सं०पु० [सं० दिव्‌रूप] आकाश, व्योम (डिं.नां.मा.)

दिवायोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिवायोड़ी)

दिवाळ—देखो 'देवाळ' (रू.भे.)

दिवाल—देखो 'दीवार' (रू.भे.) उ०—१ पांणी पड़ियौ पेख पग, दिल मत हरख दिवाल। पैलां पाड़ण पड़त पग, इणरी आ हिज चाल।—वां.दा.

उ०—२ उडि पड़ै पाट दिवाल, लागि लाल पाथर लाल। धड़ड़ंत झळ धोमाळ, कड़ड़ंत बीज कराळ।—सू.प्र.

दिवाळगी-सं०स्त्री०—देने का भाव। उ०—धरमी जे धर में धरै, निसचो न तजै नेट। चंद्रवतंसक ना चल्यौ, थिर दिवाळगी थेट।
—ध.व.ग्रं.

दिवाळय—देखो 'देवालय' (रू.भे.)

दिवाळियौ—देखो 'देवाळियौ' (रू.भे.)

दिवाळी—देखो 'दीवाळी' (रू.भे.) उ०—अंग दया घर घोर अंधारो, पूनम सी छवि पावै। दयाहींण घर दीन दिवाळी, काळी, रात कहावै।
—ऊ.का.

दिवाळिएल(हेल)—देखो 'दीवाळीएल(हेल)' (रू.भे.)

दिवाळौ—देखो 'देवाळौ' (रू.भे.) उ०—भाव दिवाळौ काढियो रे, ऊंदा ताळा देह। लख चौरासी भटकसी, वस्त कोई नहिं लेह।
—स्री हरिरांमजी महाराज

दिवावणौ, दिवावबौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)

दिवावणहार, हारौ (हारी), दिवावणियौ—वि०।

दिवाविग्रोड़ो, दिवावियोड़ो, दिवाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
दिवावीजणो, दिवावीजबो—कर्म वा०।
दिवावियोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दिवावियोड़ी)
दिवी-सं०पु० [सं०] नीलकंठ पक्षी।
दिवीग्रोक-सं०पु०—देखो 'दिवग्रोकस' (रू.भे.) (ग्र.मा.)
दिवीरथ-सं०पु० [सं०] पुरुवंशी राजा भूमन्यु के पुत्र का नाम। (महाभारत)
दिवीसत-सं०पु० [सं० दिविषत्] देव, देवता।
दिवीस्ठी-सं०पु० [सं० दिविष्ठ] १ देव, देवता. २ स्वर्ग में रहने वाला, स्वर्गवासी. ३ ईशानकोण के एक देश का नाम।
दिवेस-सं०पु० [सं० दिवेश] १ सूर्य. २ दिग्पाल।
दिवोकसा—देखो 'दिवग्रोकस' (रू.भे.)
दिवोदास-सं०पु० [सं०] चंद्रवंशी राजा भीमरथ के एक पुत्र का नाम।
दिवोल्का-सं०स्त्री० [सं०] दिन के समय ग्राकाश से गिरने वाला चमकीला पिंड या उल्का।
दिवौ—देखो 'दीपक' (रू.भे.)
दिवौका—१ देखो 'दिव-ग्रोकस' (रू.भे.)
२ चातक पक्षी।
दिव्य-वि० [सं०] १ अलौकिक, अद्‌भुत, ग्रनोखा, चमत्कारपूर्ण।
उ०—नमो स्वांमी दयानंद दिव्य ग्यांन दाता। ग्रारच धरम ग्राप विना हाथ नहीं ग्राता।—ऊ.का.
२ स्वर्ग से सम्बन्ध रखने वाला, स्वर्गीय. ३ बहुत बढ़िया, ग्रच्छा. ४ प्रकाशमान, चमकीला. ५ पवित्र, उत्तम। उ०—चोरां जुगती कुगती कीन्हीं, भोग भोगणी घणा सुख भीन्ही, कपटी दरसण सूरत कीन्हीं, दिव्य घरम बोळावणी दीन्हीं।—ऊ.का.
रू०भे०—दिव्र, दिव।
दिव्यकवच-सं०पु० [सं०] वह स्तोत्र जिसका पाठ करने से ग्रंगरक्षा हो।
दिव्यगंध-सं०पु० [सं०] १ लौंग. २ गंधक।
दिव्यगंधा-सं०स्त्री० [सं०] १ वड़ी इलायची. २ वड़ी चेंच का साग।
दिव्यगायन-सं०पु० [सं०] स्वर्ग में गाने वाले, गंधर्व।
दिव्यचक्षु-सं०पु० [सं० दिव्यचक्षुस्] १ ज्ञान चक्षु. २ ग्रंधा. ३ चश्मा, ऐनक. ४ बंदर।
दिव्यद्रस्टी-सं०पु० [सं० दिव्यदृष्टि] गुप्त, परोक्ष ग्रथवा ग्रंतरिक्ष के पदार्थ देखने की ग्रलौकिक दृष्टि, ज्ञान दृष्टि। उ०— भजन करूं सिमरूं भगवांनो, वंस धरम रो तजियो वांनो। छित पर रहूं जगत सूं छांनो, दिव्य द्रस्टि कोई लखसी दांनो।—ऊ.का.
रू०भे०—दिवदिस्ट, दिवद्रस्टी।
दिव्यधरमी-वि० [सं० दिव्यधर्मिन्] जिसका स्वभाव बहुत ग्रच्छा हो, पवित्र स्वभाव का, सुशील।
दिव्यनगर-सं०पु० [सं०] ऐरावती नगरी।
दिव्यनदी-सं०स्त्री० [सं०] १ ग्राकाश, गंगा. २ एक नदी का नाम (पौराणिक)
दिव्यनारी-सं०स्त्री० [सं०] ग्रप्सरा।
दिव्यपंचाम्रत, दिव्यपंचाम्रित-सं०पु० [सं० दिव्यपंचामृत] घी, दूध, दही, मक्खन ग्रौर चीनी इन पांच चीजों को मिला कर बना हुग्रा पंचामृत।
दिव्ययमुना-सं०स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम (पौराणिक)
दिव्यरत्न-सं०पु० [सं०] चिंतामणि नामक एक कल्पित रत्न।
दिव्यवाह-सं०स्त्री० [सं०] वृषभानु गोप की छः कन्याग्रों में से एक।
दिव्यसरिता-सं०स्त्री० [सं० दिव्यसरित्] ग्राकाश गंगा।
दिव्यसानु-सं०पु० [सं०] एक विश्वदेव।
दिव्यसार-सं०पु० [सं०] साल वृक्ष।
दिव्यसुरि-सं०पु० [सं०] रामानुज संप्रदाय के ग्राचार्य।
दिव्यस्त्री-सं०स्त्री० [सं०] ग्रप्सरा।
दिव्यस्रोत-सं०पु० [सं०] वह कान जिससे सब कुछ सुना जाय।
दिव्यांगणा, दिव्यांगना-सं०स्त्री० [सं० दिव्यांगना] १ देव वधू. २ ग्रप्सरा।
दिव्यांसु-सं०पु० [सं० दिव्यांशु] सूर्य।
दिव्या-सं०स्त्री० [सं०] १ स्वर्गीय या ग्रलौकिक नायिका जो तीन प्रकार की नायिकाग्रों में से एक होती है. २ बांझ. ३ महामेदा. ४ सफेद दूब. ५ हड़. ६ कपूर कचरी. ७ ब्राह्मी जड़ी. ८ शतावर. ९ बड़ा जीरा. १० ग्रांवला।
दिव्यादिव्य-सं०पु० [सं०] देवताग्रों के समान गुणों वाला नायक जो तीन प्रकार के नायकों में से एक होता है।
दिव्यादिव्या-सं०स्त्री० [सं०] स्वर्गीय स्त्रियों के समान गुणों वाली नायिका जो तीन प्रकार की नायिकाग्रों में से एक होती है।
दिव्यालय-सं०पु० [सं०] महाभारत के ग्रनुसार एक प्राचीन पुण्य क्षेत्र जहाँ पूर्व काल में भगवान विष्णु ने तपस्या की थी।
दिव्यासन-सं०पु० [सं०] तंत्र के ग्रनुसार एक प्रकार का ग्रासन।
दिव्यास्त्र-सं०पु० [सं०] देवताग्रों द्वारा दिया हुग्रा हथियार।
दिसंतर-सं०पु० [सं० देशांतर] १ देशांतर. २ विदेश, परदेश।
उ०—१ दादू सब्द बांण गुरु साधु के, दूर दिसंतर जाय। जिहिं लागैं सो ऊबरैं, सूतैं लिये जगाय।—दादू वांणी
उ०—२ दादू स्वांगी सब संसार है, साधू कोई एक। हीरा दूर दिसंतरा, कंकर ग्रौर ग्रनेक।—दादू वांणी
क्रि०वि०—दिशाग्रों के ग्रंत तक, बहुत दूर तक।
दिसंतरी-वि० [सं० देशान्तर+रा०प्र०ई] १ दूसरे देश का, विदेशी. [सं० दिशा+ग्रन्तर] २ दिशा का, दिशा सम्बन्धी. ३ देखो 'दिसांतरी' (रू.भे.)
दिसंवर-सं०पु० [ग्रं० डिसंबर] ग्रंग्रेजी वर्ष का बारहवां या ग्रन्तिम महीना।

दिस—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—१ चत्र दिस जाइ न सकै चक्रति, निजर काळ देखै नमरण। म्रिग जीव सरण मारीजतो, राख राख राघारमण।—ज.खि.

उ०—२ उण ही गांम में पी'र क उठे ही सासरो। आथवणी दिस खेत न चवै आसरो। नाडा खेत नजीक जठे हळ खोलणा, एता दे किरतार फेर नहिं बोलणा।—अज्ञात

उ०—३ प्यारी कह पीयळ सुणो, धोळां दिस मत जोय। नरां तुरां अर वन फळां, पाक्यां ही रस होय।—चंपादे

मुहा०—कांणी दिस—वह स्थान जो दूर या एकान्त में हो।

दिसउ-क्रि०वि० [सं० दिशा] ओर, तरफ। उ०—अति सुंदर कवळ मांडिया ऊपर, सोभा अति पांमई सादीत। चंद-वदनो मुख दिसउ चाहतां, ऊगा किरि बारह आदीत।—महादेव पारवती री वेलि

दिसड़ी—देखो 'दिसा' (अल्पा., रू.भे.) उ०—वनी रौ जिण दिसड़ी में देस, उणी दिस हिवड़ो हुलस्यो जाय।—सांझ

दिसड़ो-सं०पु०—देखो 'दिसा' (रू.भे.)

दिसट—१ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—दिसटां ग्रंतक नमो उदास। —गजमोख

२ देखो 'द्रस्टी' (रू.भे.)

दिसटांत—देखो 'द्रस्टांत' (रू.भे.)

दिसटाळ, दिसटाळौ—१ देखो 'देठाळी' (रू.भे.) २ दर्शन। उ०—दये मत नीच म्हनै दिसटाळ। कियो किर बांधव पाबु अकाळ।—पा.प्र.

दिसटी—देखो 'द्रस्टी' (रू.भे.)

दिसपति-सं०पु० [सं० दिशा+पति] दिक्पाल। उ०—निज निज रूप थया दिसपति, मन मांहां आनंद पांमी सती।—नळाख्यांन

रू०भे०—दिसिप।

दिसली-क्रि०वि०—१ तरफ से। उ०—थांनै खरच न लगावां गोठ तो म्हांकी दिसली करस्यां।—राव रिणमल री वात

वि०—१ ओर की, तरफ की। उ०—अेक जोड़ी ढूंढाड़, मथराजी, आगरी पूरब दिसली गंगा पार तांई जोइयो।—सूरे खींवे री वात

२ देखो 'दिशा' (अल्पा., रू.भे.)

दिसांतरी-सं०पु० [सं० दिशा+अंतर+रा०प्र०ई] डंक ऋषि से उत्पन्न एक जाति विशेष, डाकोत।

रू०भे०—दिसंत्री, देसंतरि, देसंतरी, देसांतरी।

दिसा-सं०स्त्री० [सं० दिशा] १ क्षितिज वृत के किये हुए कल्पित विभागों में से किसी एक ओर के विभाग का विस्तार।

वि०वि०—क्षितिज वृत के मुख्य चार विभाग माने गये हैं—पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण। पूर्व के ठीक सामने पश्चिम तथा उत्तर के ठीक सामने दक्षिण माना गया है। इन चारों में से प्रत्येक के लिए निम्न पर्यायवाची हैं—

पूर्व के लिये इंद्रा (ऐंद्री);
पश्चिम के लिये वारुणी;
उत्तर के लिये सोमा; और
दक्षिण के लिये याम्या।

उपर्युक्त चार मुख्य दिशाओं के अतिरिक्त इनके बीच में चार कोण माने गये हैं जिन्हें उपदिशाएं या मध्यदिशाएं कहते हैं, वे निम्न हैं—

१ पूर्व और दक्षिण के मध्य के कोण को अग्निकोण।

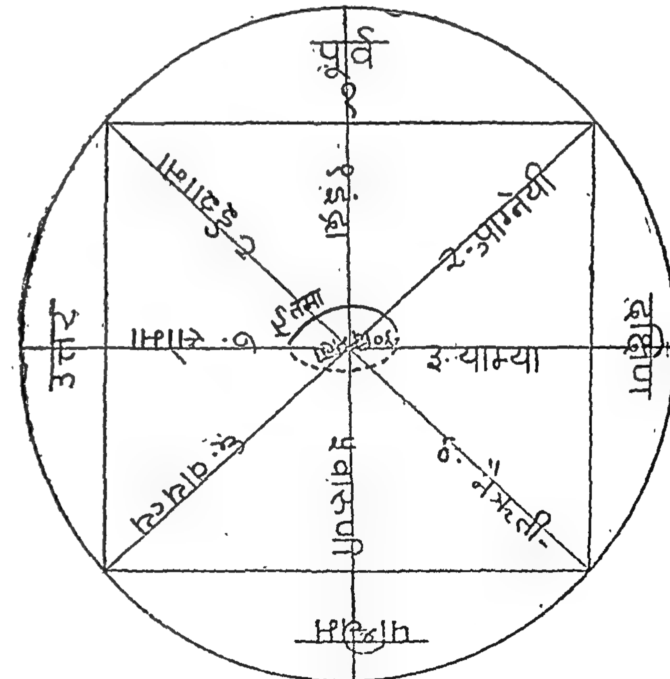
२ दक्षिण और पश्चिम के मध्य के कोण को नैऋर्त्यकोण।

३ पश्चिम और उत्तर के मध्य के कोण को वायव्यकोण।

४ उत्तर और पूर्व के मध्य के कोण को ईशानकोण।

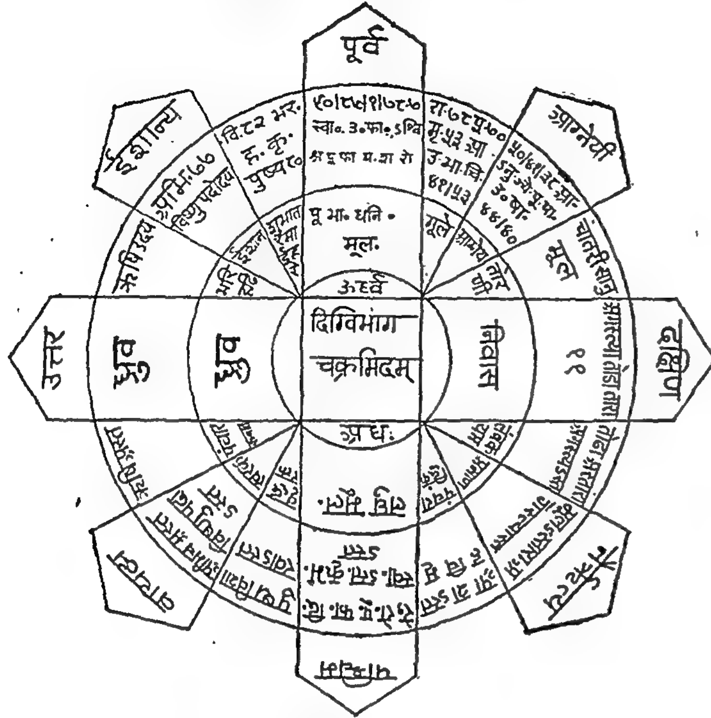
आकाश की ओर व पाताल की ओर दो दिशाएं और मानी गई हैं जिन्हें क्रमशः ऊर्ध्व व अधः कहते हैं तथा इन्हीं को जैन ग्रंथों में क्रमशः विमला व अंध या तमा कहते हैं। इस प्रकार चार मुख्य दिशाएं व उनके मध्य के चार कोण, आठ हुई तथा ऊर्ध्व व अधः दो और जोड़ने से कुल दश दिशाएं हुई जो निम्न दिग्चक्रों के अनुसार स्पष्ट हैं—

आचारांग सूत्र के अनुसार
दश दिशा सूचक स्थान का चित्र
(प्रथम श्रुतस्कन्ध - प्र.अ.प्र.उ. निर्युक्ति गाथा ४३)



दिग्चक्र —१

दिग्विभाग चक्रम्
शकुन बसंतराज के अनुसार
(वसंतराज शाकुने सप्तमो वर्ग: पृष्ठ संख्या ११७)



दिग्चक्र—२

उपर्युक्त दिशाओं में और विकास हुआ तथा आठ दिशाओं के मध्य आठ और उपकोण माने गये जिनका उल्लेख जैन ग्रंथ आचाराङ्ग सूत्र का निरुक्ति के अन्तर्गत गाथा संख्या ५२ से ५८ तक में हुआ है। संस्कृत ग्रंथ शकुन वसन्तराज में भी अठारह दिशाओं का उल्लेख हुआ है परन्तु उनके नामों का मेल आचारांग सूत्र से नहीं होता है। शकुन वसन्तराज में ये दिशाएं शुभाशुभ शकुनों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये मानी गई हैं। इसी प्रकार राजस्थानी में भी शुभाशुभ शकुन ज्ञान के निमित्त अठारह दिशाएं मानी गई हैं जिनके कुछ नामों का मेल शकुन वसन्तराज से होता है। राजस्थानी में क्षितिज वृत के किमी निश्चित स्थान को ही दिशा विशेष का संकेत स्थान मानते हैं जो क्षितिज वृत्त में नक्षत्रों के उदय और अस्त स्थानों पर आश्रित है। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि शकुन वसन्तराज के आधार पर ही राजस्थानी में अठारह दिशाओं की कल्पना की गई है न कि जैन ग्रंथों के आधार पर।

आचारांग सूत्र के अनुसार उपरोक्त आठ दिशाओं के मध्य में आठ और उपकोण या विदिशाएं मानी गई हैं जिनका क्रम निम्नानुसार है—

१ पूर्वा (पूर्व दिशा) तथा पूर्व-दक्षिण (अग्निकोण) के मध्य की दिशा सामुत्थानी।

२ पूर्व-दक्षिणा (अग्निकोण) तथा दक्षिणा (दक्षिण दिशा) के मध्य की दिशा कपिला।

३ दक्षिणा (दक्षिण दिशा) दक्षिणापरा (नैऋत्यकोण) के मध्य की दिशा खेलिज्जा।

४ दक्षिणापरा (नैऋत्यकोण) तथा अपरा (पश्चिम दिशा) के मध्य की दिशा असिधर्मा।

५ अपरा (पश्चिम दिशा) तथा अपरोत्तरा (वायव्यकोण) के मध्य की दिशा परिया।

६ अपरोत्तरा (वायव्यकोण) तथा उत्तरा (उत्तर दिशा) के मध्य की दिशा धर्मा।

७ उत्तरा (उत्तर दिशा) तथा पूर्वोत्तारा (ईशानकोण) के मध्य की दिशा सावित्री।

८ पूर्वोत्तरा (ईशानकोण) तथा पूर्वा (पूर्व दिशा) के मध्य की दिशा पण्णवित्ती।

उपरोक्त क्रम निम्नानुसार अधिक स्पष्ट हो जायगा—

पूर्व दिशा (पूर्वा) से दक्षिण दिशा (दक्षिणा) के मध्य की उपदिशाओं का क्रम—

१ सामुत्थानी
२ पूर्व-दक्षिणा (अग्निकोण) तथा
३ कपिला

दक्षिण दिशा (दक्षिणा) से पश्चिम दिशा (अपरा) के मध्य की उपदिशाओं का क्रम—

१ खेलिज्जा
२ दक्षिणापरा (नैऋत्यकोण) तथा
३ असिधर्मा

पश्चिम दिशा (अपरा) से उत्तर दिशा (उत्तरा) के मध्य की उपदिशाओं का क्रम—

१ परिया
२ अपरोत्तारा (वायव्यकोण) तथा
३ धर्मा

उत्तर दिशा (उत्तरा) से पूर्व दिशा (पूर्वा) के मध्य की उपदिशाओं का क्रम—

१ सावित्री
२ पूर्वोत्तारा (ईशानकोण) तथा
३ पण्णवित्ती

उपर्युक्त दोनों क्रमों से सोलह दिशाएं ज्ञात हुई और दो ऊर्ध्व (देवदिशा) व अध: (अधोदिशा) इस प्रकार कुल अठारह दिशाएं हुईं जिनका उल्लेख आचारांग सूत्र में है।

राजस्थानी में उपरोक्त सोलह दिशाओं के लिये कुछ पर्यायवाची प्रयोग किये जाते हैं जिनका उल्लेख प्रसंगानुसार कई राजस्थानी ग्रंथों में मिलता है। उदाहरण के लिये मुंहता नैणसी की ख्यात में कई स्थानों पर उक्त दिशाओं में से कुछ के लिये पर्यायवाची प्रयुक्त हुए हैं। राजस्थानी में उक्त दिशाओं के लिये जो पर्यायवाची बोले जाते हैं वे निम्न हैं—

पूर्व से दक्षिण के मध्य की दिशाओं के लिये—

१ पूर्व दिशा (पूर्वा) के लिये—इंद्र।
२ सामुत्थानी के लिये—उडीक, परियांण, मेवास।
३ अग्निकोण (पूर्व-दक्षिणा) के लिये—अगन, चींगण।
४ कपिला के लिये—रूपारास।

दक्षिण से पश्चिम के मध्य की दिशाओं के लिये—

१ दक्षिण दिशा (दक्षिणा) के लिये—निवास, लंका।
२ खेलिज्जा के लिये—पंचाद—वाव।
३ नैऋत्यकोण (दक्षिणापरा) के लिये—निरांत, नैरत।
४ असिधर्मा के लिये—खरक।

पश्चिम से उत्तर के मध्य की दिशाओं के लिये—

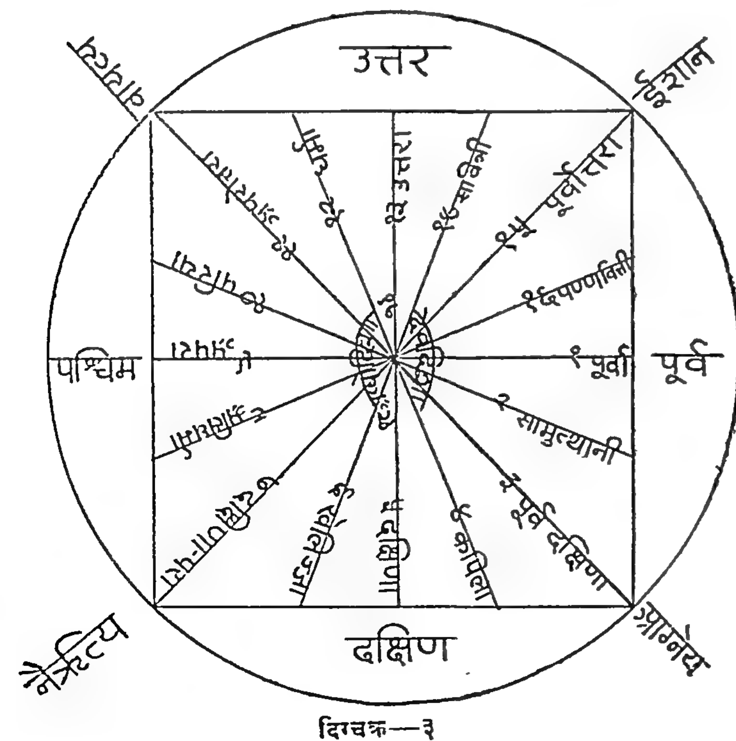
१ पश्चिम दिशा (अपरा) के लिये—आथुण।
२ परिया के लिये—पंचाद।
३ वायव्यकोण (अपरोत्तरा) के लिये—वाय।
४ धर्मा के लिये—ऊंच।

उत्तर से पूर्व के मध्य की दिशाओं के लिये—

१ उत्तर दिशा (उत्तरा) के लिये—ध्रुव।
२ सावित्री के लिये—भरणीजळ, भरहरे।
३ ईशानकोण (पूर्वोत्तरा)—कुबेर।
४ पण्णवित्ती के लिये—दयारास, लांणी, वित्रभव।

उपर्युक्त दिशाओं के पूर्ण स्पष्टीकरण के लिये यहां आचारांग सूत्र, शकुनवसन्तराज और राजस्थानी के अनुसार तीन दिग्चक्र दिये जाते हैं।

आचारांग सूत्र के अनुसार
१८ दिशाओं की नामावली और दिशा स्थान
(आचारांग प्रथम श्रुत स्कंध. प्र. अ. प्र. उ. निर्युक्ति गाथा ५२ से ५८)



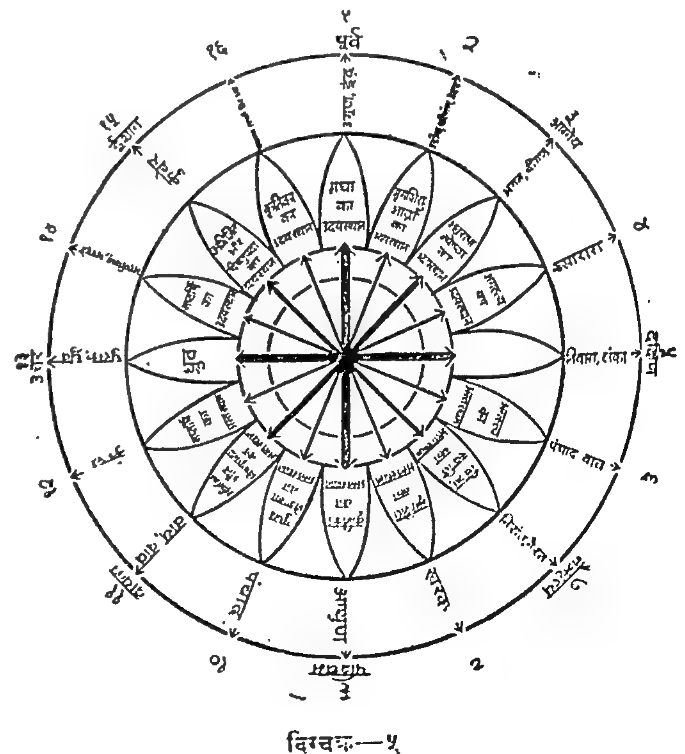
दिग्चक्र—३

दिग्विभाग चक्र—शकुन वसंतराज के अनुसार
(वसंत शाकुने सप्तमोवर्ग पृष्ठ संख्या ११८)



दिग्चक्र—४

राजस्थानी शकुन-शास्त्र के अनुसार
सोलह दिशाओं की नामावली व स्थान



दिग्चक्र—५

पर्याय०—आसा, कुकुभ, कन्या, कास्टा, गो।
मुहा०—१ दिसा जाणी—शौच जाना. २ दिसोदिसी—चारों ओर।
२ चार की संख्या* ३ दस की संख्या*।
४ देखो 'दसा' (रू.भे.) उ०—वस्त्र हरीनि हंस गयु ते विठी याहारि वाहार। तेह रांकनु वांक किसु, जु दिसा पडी अपार।—नळाख्यान
५ देखो 'दीक्षा' (रू.भे.) उ०—करइ ति मांणिक वालिय वालिय वूना काज। परघरि हुइ दिसा लिय टाळिय दीजतउ राज।
—नेमिनाथ फागु
क्रि०वि०—ओर, तरफ। उ०—१ रूक हथौ भाटी 'रैणायर', मांभी तीन साथ दळ मोगर। वांरा भड़ मेळाऊ आया, चंचळ थळवट दिसा चलाया।—रा.रू.
उ०—२ देवड़ैं मैंगळदे भांणेज नूं पोहचावण नूं घड़सी आवू दिसा गयौ थौ, सु पाछौ वळतौ मेहवा मांहे आयौ।
—नैणसी
रू०भे०—दिच्छा, दिस, दिसि, दिसिया, दिसी, दिस्सा, दीसा।
अल्पा०—दिसड़ी, दिसड़ौ, दिसली।

दिसाउर—देखो 'दिसावर' (रू.भे.) उ०—माळवणी तूं मन समी, जांणइ सहू विवेक। हिरणाखी हसिनइ कहइ, करउं दिसाउर एक।
—ढो.मा.

दिसागज-सं०पु० [सं० दिशागज] दिग्गज (वं.भा.)।

दिसाचक्षु-सं०पु० [सं० दिशाचक्षु] गरुड़ के एक पुत्र का नाम (पौराणिक)

दिसाजय-सं०पु० [सं० दिशाजय] दिग्विजय।

दिसाटौ—देखो 'देसोटौ' (रू.भे.)

दिसादिसी-क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—जठै आपरौ अकंटक अमल जमा'र नरेश भी वूंदी आ'र विजय रौ सुजस सत्रवां समेत दिसो-दिसी डुलायौ।—वं.भा.

दिसापाळ-सं०पु० [सं० दिशापाल] दिक्पाल।

दिसावर-सं०पु०—१ वैश्यों की जाति. २ देखो 'देसावर' (रू.भे.)

दिसाभूल, दिसाभ्रम-सं०पु० [सं० दिशाभ्रम] दिशाओं के सम्बन्ध में भ्रम होना। उ०—दिसाभूल हुयोड़ा दुसटी, आथण रा आथड़िया रे।
गा —ऊ.का.

दिसावकासकव्रत-सं०पु० [सं० दिशावकाशव्रत] जैनि ं का एक प्रकार का व्रत जिसमें वे प्रातःकाल यह निश्चय कर लेते हैं कि आज हम अमुक दिशा में इतनी दूर जायेंगे।

दिसावड़-सं०पु० [देश०] कपड़ा वुनने का वह अंतिम छोर जहां वाना नहीं डाला जाता है।

दिसावर-सं०पु० [सं० दिशापर] दूसरा देश, परदेश, विदेश।
उ०—साजन चले दिसावरां, पग मे उळझी डोर। पीछा फिर नै देखियो, थारै घण लारै गणगौर।—लो.गी.
रू०भे०—दिसाउर, देसाउर, देसाउरि, देसावर।

दिसावरी, दिसावरू-वि० [सं० दिशापर+रा०प्र०ई,उ] परदेशी, विदेशी। उ०—दिसावरू अर आडा मारगां पर वांरी खास निजर रैवती। मारग वैवता मिनख नै लूट नै मार नांखणौ वांरै डावा हाथ रौ खेल हौ।—रातवासौ
रू०भे०—देसावरी।

दिसावळ, दिसावळौ-वि० [सं० दिशा+आलुच्] दिशा-भ्रमित।
उ०—दिस ऊगूणी चालियौ रे, फिर फिर उलटा थाय। दिल्ली न सूजै दिसावळा, गोता आथूणा खाय।—स्री हरिरांमजी महाराज

दिसासूळ-सं०पु० [सं० दिक्शूल] फलित ज्योतिष के अनुसार यात्रा-मुहूर्त देखने में शूल की वह उपस्थिति जो विशिष्ट वार व नक्षत्र के कारण विशिष्ट दिशाओं में रहती है।
निम्न सारणी के अनुसार विशिष्ट दिशाओं में विशिष्ट वारों को दिशाशूल रहता है। अतः यात्रा करना निषेध है।
उत्तर—मंगल, वुध।
दक्षिण—गुरू।
पूर्व—सोम, शनि।
पश्चिम—रवि, शुक्र।
वि०वि०—कुछ विद्वानों के अनुसार दिशाशूल की परिभाषा इस प्रकार है—'फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास जो कुछ विशेष योगनियों के योग के कारण माना जाता है। जिस दिन जिस दिशा में कुछ विशिष्ट योगनियों के योग के कारण इस प्रकार का वास और दिक्शूल माना जाता है उस दिन उस दिशा की ओर यात्रा करना वहुत ही अशुभ और हानिकारक माना जाता है।'
किन्तु उपर्युक्त मत भ्रमपूर्ण है। दिशाशूल काल एवं योगनियों से पूर्णतः पृथक है। दिशाशूल विशिष्ट वारों और नक्षत्रों के कारण केवल मुख्य दिशाओं में ही लागू होता है जव कि काल विशिष्ट वार के कारण मुख्य दिशाओं एवं उपदिशाओं पर भी लागू होता है। दिशाशूल एवं काल की गति एक दूसरे के विपरीत होती है। दिशा-शूल एवं योगनियों से भी कोई संवंध नहीं है क्योंकि योगनियां तिथियों पर आधारित रहती हैं, उनका वारों व नक्षत्रों से कोई संवंध नहीं होता है। काल व योगनियां भी परस्पर पृथक हैं क्यों कि काल विशिष्ट वार के कारण विशिष्ट दिशा अथवा उपदिशा में रहता है जव कि योगनी की उपस्थिति विशिष्ट तिथि के कारण विशिष्ट दिशा में रहती है।
रू०भे०—दसासूळ।

दिसि—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—१ एक नगर अदभुत दिसि उत्तर। पंचसठि कोस गिरंद तारापुर।—सू.प्र.
उ०—२ जाहरां परमात्मा माया दिसि देख्या तियां थी महतत्त्व नीपना।—द.वि.

दिसिटि—देखो 'द्रस्टी' (रू.भे.)

दिसिदुरद-सं०पु० [सं० दिशाद्विरद] दिग्गज।

दिसिनायक-सं०पु० [सं० दिशानायक] दिक्पाल ।

दिसिनियम-सं०पु० [सं० दिशानियम] जैनी साधुओं के द्वारा बनाया हुआ नियम जिसके अनुसार वे निश्चय कर लेते हैं कि उन्हें अमुक दिशा में प्रति दिन अथवा किसी विशेष दिन कितनी दूरी तक चलना है । (मि० दिसावकासव्रत)

दिसिप—देखो 'दिसपति' (रू.भे.)

दिसिया—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—१ उण दिसिया अजमेर सूं, आयौ तहवरखांन । इण दिसि वग्गा सिंधुवा, भुज लग्गा असमांन । —रा रू.

उ०—२ घोड़ा १० री जमै आगै की, सु वरसावरस द्यै । आप मिळियौ । अमीखांन दिसिया कह्यौ—'मारल्यौ थांहरौ गुनैगार छै ।' हमैं घोड़ा ६० वरसावरस द्यै छै ।—नैणसी

दिसिराज-सं०पु० [सं० दिशाराज] दिक्पाल ।

दिसी—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—ढोलउ किम परचइ नहीं, सहु रहिया समझाइ । के पुळिया पूगळ दिसी, के कांही कजि काइ ।—ढो.मा.

दिसोटौ—देखो 'देसोटौ' (रू.भे.)

दिसौ-सं०पु०—देखो 'दिसा' (अल्पा., रू.भे.) उ०—हुय तवल वंब दळ सझि हले, दुगम गरद उडि नभ दिसौ । उण वार रूप 'अभमाल' रौ, जोम देह धरियां जिसौ ।—सू.प्र.

दिस्ट—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—१ सुव सुदा दिस्ट जोयौ सगत । तांहां उठघो 'लाखण' वेग तंत ।—रांमदांन लाळस

उ०—२ अत चित्त उदार सभाव इसा, नह दिस्ट परै परनार दिसा । —शि.सु.रू.

उ०—३ दिस्ट न लागण सारू दीठूणौ दियौ । किना दिस्ट लागण री ही उपाव कियौ ।—र. हमीर

दिस्टांत—देखो 'द्रस्टांत' (रू.भे.)

दिस्टि, दिस्टी—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

उ०—१ दिस्टि दई सतगुरु मिळया, हीरा लिया सुभाय । हरीदास जन जौहरी, खोटा कदै न खाय ।—ह.पु.वा.

उ०—२ तिहारी स्रिस्टी पै अमिय कर व्रिस्टी तन तजूं । कुद्रस्टी दिस्टी को भसम कर इस्टी हरि भजूं ।—ऊ.का.

दिस्तौ—देखो 'दस्तौ' (रू.भे.)

दिस्सा—देखो 'दिसा' (रू.भे.)

दिहदा-वि० [फा०] देने वाला, दाता ।

दिह—१ देखो 'दीह' (रू.भे.) २ देखो 'देह' (रू.भे.)

उ०—पासा परवस थया प्रीउनि, पुस्कर ना सवळा पडि । विपरीत छि कांइ वारता, माहा दिह नि अतिसि नडि ।—नळाख्यांन

दिहड़ौ, दिहडौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

दिहरौ—देखो 'देवरौ' (रू.भे.)

दिहांनगी—देखो 'दैनगी' (रू.भे.) उ०—राव मालै नूं बोलायौ, दिहानगी करदी ।—नैणसी

दिहाड़उ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

दिहाड़णौ, दिहाड़बौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

दिहाड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिहाड़ियोड़ी)

दिहाड़ि, दिहाड़ौ-क्रि०वि० [सं० दिवस ?] १ नित्य, हमेशा । उ०—सुहड़ लियां गजा वळ साजै, पीपळोद 'अजमाल' विराजै । नैड़ा कांठै लर्दं अनाड़ी, दोड़ै काजमवेग दिहाड़ौ ।—रा.रू.

रू०भे०—'दिहाडि, दिहाडौ' ।

२ देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

दिहाड़ौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ ताहरां इसी मिसलत कीधी 'आज हूं पांच मैं दिहाड़ै दोपहरी विरियां सरब कांम करस्यां ।' —नैणसी

उ०—२ जुरा झंप जीवन खिसै, घटै ज नवलौ नेह । अेक दिहाड़ै सज्जणा, जम करसी जुध अेह ।—अज्ञात

उ०—३ धन दिहाडउ आज कउ, देव उठि दीयौ चउगिणउ मांन । मेल्ही चावर वइसणइ, राव उडीसा कौ परधांन ।—बी.दे.

दिहाडउ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—चीतविया पासा पडइ, उं करतां पाधरु थाइं, लक्ष्मी बारणि लांखइं अनइं ऊपरवाडि पयसइ, इसिउ दिहाडउ भलउ ।—व.स.

दिहाडि, दिहाडौ—१ देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ए चंदन काठ किहां नीपनु ? मळीआगिरी परवति, माहा मसवाडि सुकळ पखवाडि, बीज तणि दिहाडौ ।—व.स.

२ देखो 'दीहाड़ौ' (रू.भे.) उ०—तह घरि जाइ माधवउ, दिहाडौ पूजण देव । चतुरपणइ चूकइ नहीं, सदा निरंतर सेव ।—मा.कां.प्र.

दिहाडौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) (उ.र.)

उ०—एक दिहाडै इंद्र कूं, पकड़ि पछाड़ै काळ । हरिदास जन यूं कहै, गोपी रहै न ग्वाळ ।—ह.पु.वा.

दिहात—देखो 'देहात' (रू.भे)

दिहाती—देखो 'देहाती' (रू.भे.)

दिहि—देखो 'दस' (रू.भे.) उ०—१ इंद्री कसे घसे मन दिहि दिस, मन कूं कटकि न राखै, तन पाटण तहीं मन में वासी, नाना विधि रस चाखै ।—ह.पु.वा.

उ०—२ हरि विण जांणी खोटा खात, रांमजी सूं प्रीति नांही ऊठि दिहि दस जातै ।—ह.पु.वा.

दी-सं०पु०—१ अमृत. २ स्वामी (एका.) ३ सूर्य । उ०—पौ फाटी दी ऊगियौ, आया पूछण वत ।—ढो.मा.

४ दिन । उ०—नारायण ! हौं तुझ नमां, इअ कारण हरि ! अज्ज । जिअ दी औ जग छंडणौ, तिअ दी तो सूं कज्ज ।—ह.र.

५ देखो 'दई' (रू.भे.)

कहा०—दी दूधां रा पांमणा'र छाछ सूं ही अभावणा—ऐसे मेहमान जिनको दही, दूध मिलना चाहिए उनको छाछ भी नहीं देना अनुचित है । योग्य मेहमानों को साधारण वस्तुओं से नहीं टरका कर उनका यथायोग्य स्वागत करना चाहिए ।

वि०—दानी (एका.)

प्रत्य०—षष्ठी या सम्बन्ध का चिन्ह, की। उ०—तिण दी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै सब कच्चा है। वोले सुत संम्रत स्यंभ ग्रज वायक, सीतानायक सच्चा है।—र.ज.प्र.

दीग्रट—देखो 'दीवट' (रू.भे.)

दीग्रण—वि० [सं० दा] देने वाला, दाता। उ०—१ सह वातां समरत्थ भांज घड़वा त्रेभुग्रण। सह वातां समरत्थ लिग्रण लंका गढ़ दीग्रण। —ज.खि.

उ०—२ ग्ररिसाल; विजाइमाल; लख दीग्रण; जस लीग्रण; राजांय के राजा; तपै महाराज रयण।—वचनिका

दीग्राळी—देखो 'दीवाळी' (रू.भे.)

दीग्राळीएल(हेल)—देखो 'दीवाळीएल(हेल)' (रू.भे.)

दीग्रो—देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दीकरी—देखो 'डीकरी' (रू.भे.) उ०—१ राजा रांणी नूं कहइ, वात विचारउ जोइ। ग्राज विखइ थां दीकरी, हांसउ हसिसी लोइ। —ढो.मा.

उ०—२ नैख देसि नळ सि न जांणु? प्रीऊडु माहारु ते सपरांणु। भीमराय नी डीकयरी।—नळाख्यांन

दीकरौ, दीकिरउ—देखो 'डीकरौ' (रू.भे.) उ०—१ देवळां मूरतां हूंत जो कणी दिन, खुरम रौ डीकरौ कुवद खेलै। दूठ तौ तुरत गजसिंह रौ दीकरौ, मसीतां ग्राभ रा धूंग्रा मेलै। —महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) जोधपुर रौ गीत

उ०—२ ग्रांमि एक ग्रति दरिद्रता करी दुक्खित डोकरी एक हूंती। हूंसउ इसइ नांमि तेहनउ दीकिरउ एक हूंतउ।—तरुणप्रभ

(स्त्री० दीकरी)

दीक्षक—सं०पु० [सं०] दीक्षा देने वाला, शिक्षक, गुरु।

दीक्षांत—सं०पु० [सं०] किसी यज्ञ के समापनांत में उसकी त्रुटि ग्रादि के दोष की शांति के लिये किया जाने वाला ग्रवभृत यज्ञ।

दीक्षा—सं०स्त्री [सं०] १ गुरु या ग्राचार्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश।

क्रि०प्र०—दैणी, लैणी।

२ वह मंत्र जिसका उपदेश गुरु करे. ३ सोमयागादि का संकल्प-पूर्वक ग्रनुष्ठान, यज्ञकर्म. ४ ग्राचार्य द्वारा गायत्री मंत्र का उपदेश, उपनयन-संस्कार. ५ पूजन।

रू०भे०—दिक्षा, दिच्छा, दिसा।

दीक्षागुरु—सं०पु० [सं०] मंत्रोपदेश देने वाला, गुरु।

दीक्षापति—सं०पु० [सं०] दीक्षा या यज्ञ का रक्षक, सोम।

दीक्षित—वि० [सं०] १ जिसने गुरु से मंत्र लिया हो, जिसने ग्राचार्य से दीक्षा ली हो।

२ जिसने सोम योगादि का संकल्पपूर्वक ग्रनुष्ठान किया हो।

सं०पु०—ब्राह्मणों का एक भेद। उ०—जोसी जांनी जेतला, पाठक पंड्या पाढि। वाजपेय दीक्षित दवे, राउल-सरसा राढ़ि।—मा.कां.प्र.

दीख—देखो 'दीक्षा' (रू.भे.) उ०—१ जिसिउ गुरु तिसिउ ग्रभ्यास, जिसी सीख तिसी दीख, जिसिउ ग्राहार तिसिउ नीहार।—व.स.

उ०—२ जोइन तउ संयम नी जइ सीख। परिहरि नारि न नेहिय रे हियडा लइ दीख।—नेमिनाथ फागु

दीखणौ, दीखबौ—क्रि०ग्र० [सं० दृश्] १ दृष्टिगोचर होना, देखने में ग्राना, दिखाई देना। उ०—१ ग्रनमी ग्रांटीला थळिया थळ वाळा। विपदा वांटीला बळिया वळ वाळा। दुरजय दीखण में निरभय दिन दूल्हा। भीखण दुरभिख में भुजवळ नह भला।—ऊ.का.

उ०—२ लाखां जन डोलै भचभेड़ा लेता, दारूखोरां री घोरां दव देता। भाजो भाजो कर भोजन कर भीखै, दुख में दरवाजो दांतां रो दीखै।—ऊ.का.

क्रि०स० [सं० दिक्ष्] २ दीक्षा देना, दीक्षित करना (उ.र.)

दीखणहार, हारौ (हारी), दीखणियौ—वि०

दिखवाड़णौ, दिखवाड़बौ, दिखवाणौ, दिखवाबौ, दिखवावणौ, दिखवावबौ—प्रे०रू०

दिखाड़णौ, दिखाड़बौ, दिखाणौ, दिखाबौ, दिखावणौ, दिखावबौ, देखाड़णौ, देखाड़बौ, देखाणौ, देखाबौ, देखावणौ, देखावबौ—क्रि०स०

दीखिग्रोड़ौ, दीखियोड़ौ, दीख्योड़ौ—भू०का०कृ०

दीखीजणौ, दीखीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०

द्रस्टणौ, द्रस्टबौ—रू०भे०

दीखियोड़ौ—१ दृष्टिगोचर हुवा हुग्रा, दिखाई दिया हुग्रा. २ दीक्षा दिया हुग्रा, दीक्षित।

(स्त्री० दीखियोड़ी)

दीगेस—सं०पु० [सं० दिक्+ईश] दिक्पाल।

दीठ—सं०स्त्री० [सं० दृष्टि] १ ग्रांख की ज्योति, दृष्टि, नजर।

उ०—१ सर विद्या इम सीखजे, जिम सीखो पीथल्ल। सर गोरी रै साभियो, दीठ हीणा दूभल्ल।—वां.दा.

२ ग्रांख, नेत्र।

३ ग्रच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि जिसका प्रभाव बुरा पड़े, नजर।

उ०—पुरुस पछइ परहरि घरइ, डाकिणी-सरसी दीठ। भोगवीए भूंडा थइ, ग्रेहवउं थाय ग्रनीठ।—मा.कां.प्र.

ग्रव्य०—१ प्रति एक, हर एक, फी।

उ०—पाखर हैवर पांच सो, तुरियां दीठ तवल्ल। सीस फरां कट खजरां, चढिया तुरां मुगल्ल।—रा.रू.

मुहा०—१ घर दीठ—प्रत्येक घर। २ टावर दीठ—प्रति वालक। ३ पोथी दीठ—प्रति पुस्तक।

२ देखो 'दीठौ' (रू.भे.) उ०—खाधो सोहो मीठ है, ग्रग्र जनम किण दीठ। ऊखांणो ग्रदतां पढै। पूरव पद द पीठ।—वां.दा.

रू०भे०—दीठि।

दीठउ—देखो 'दीठौ' (रू.भे.) (उ.र.)

दीठि—सं०पु० [सं० दृष्टि] १ नेत्र, नयन (ह.नां.)

२ देखो 'दीठ' (रू.भे.)

दीठूणौ-सं०पु० [सं० दृश्] दृष्टि दोप से वचने के लिये चेहरे पर लगाया जाने वाला चिन्ह। उ०—दिस्ट न लागण सारू दीठूणौ दियौ। किना दिस्ट लागण रौ ही उपाव कियौ।—र. हमीर

दीठोड़ौ, दीठोडौ, दीठौ-भू०का०कृ०—देखा हुआ, देखा।

उ०—पडयं जिण जोध पोकार सगळै पड़ी, घरै नहीं अरज पातिसाह घीठौ। राह वंधी हुई रखै कोई रोकसी, देवै 'जसवंत' रौ साथ दीठौ।
—घ.व.ग्रं.

(स्त्री० दीठी, दीठोड़ी, दीठोडी)

दीण—देखो 'दीन' (रू.भे.) उ०—१ लूटे न ग्रेह अलीण, दुजराज न लुटे दीण। अमि लूटि स्रब असहास, सकि नारनोळह नास।—सू.प्र.

उ०—२ मही दीठ धारै चवै वैण मंदं। निरक्खे भड़ां वोलियौ वाळि नंदं। उलंघूं अहं सामंद्र वीस वारा। सझै दीण भाखा नमी सीस सारा।—सू.प्र.

दीत-सं०पु० [सं० आदित्य] १ सूर्य, भानु। उ०—उगा मुख वारह दीत उदार। भिड़े तिण वार मुंछार भुंहार।—सू.प्र.

२ रविवार।

दीता*-सं०पु० [सं० आदित्य] १ सूर्य, सूरज। उ०—दखै भाख ज्यारा जती वंस दीता। सको कंत श्रीलोक रौ नाथ सीता।—सू.प्र.

दीद-सं०पु० [फ़ा०] १ दर्शन, दीदार। उ०—राघव सिफत वखांणी सच्चे सायरां। आफताव दुनियांणी दीद नगाहए।—र.ज.प्र.

२ देखो 'दीन्हौ' (रू.भे.)

दीदनी-अव्य० [फ़ा०] देखने योग्य, दर्शनीय। उ०—यकै नूर खूब खूवां, दीदनी हैरांन। अजव चीज खुरदनी, पियालए मस्तांन।—दादू वांणी

दीदम-सं०स्त्री० [फा० ?] १ दृष्टि। उ०—कुळ आलम यके दीदम, अरवाहे इखलास। वद अमल वदकार दूई, पाक यारां पास।
—दादू वांणी

२ दर्शन, दीदार। उ०—१ हक़ हासिल नूर दीदम, करारे मकसूद। दीदार दरिया अखाहे, आमद मोजूदे मोजूद।—दादू वांणी

उ०—२ आसिकां रह कब्ज करदा, दिल वजा़ रफतंद। अल्लह आले नूर दीदम, दिल हि दादू वंद।—दादू वांणी

दीदवांन-सं०पु० [फ़ा० दीदवान] वन्दूक के घोड़े के निकट नाल पर लगा हुआ छेददार लोहे का गुटका जिसमें से 'मक्खी' की सीध मिलाई जाती है।

दीदा-सं०स्त्री० [फ़ा०] १ दृष्टि, नजर. २ दर्शन, दीदार।

दीदार-सं०पु० [फा०] १ मुख, छवि। उ०—दिन ऊगै नित देखणौ, दाता रौ दीदार। भागै भूख कळेस भय, 'वंक' न लागै वार।
—वां.दा.

२ दर्शन, अवलोकन। उ०—पन्नग लोक म्रित लोक तणा प्रभु, वडा रिखीसर जोवै वाट। दहनांमी दीदार देखवा, घडे हुवा हूवा गज घाट।—महादेव पारवती री वेलि

३ भेंट, साक्षात्कार।

दीदारू-वि० [फ़ा० दीदार] दर्शनीय, देखने योग्य।

दीदी-सं०स्त्री० [देश०] बड़ी बहिन के लिये प्रयोग किया जाने वाला शब्द।

दीदौ—देखो 'दीन्हौ' (रू.भे.) उ०—पछै औ रजपूत वणीज राजा रै चाकर रयौ। अणां हैं लाख रुपयां रौ पटौ दीदौ।
—कांणा राजपूत री वात

(स्त्री० दीदी)

दीध—देखो 'दीन्हौ' (रू.भे.) उ०—भूपति अति संतोख्या भीम, सीख करी चाल्या पुर सीम। विहिवाविधि मांडीनि कीध, मांन घणां नळ रांनि दीध।—नळाख्यांन

दीधति, दीधती-सं०स्त्री० [सं० दीधिति] किरण (नां.मा.)

उ०—ससांक नी दीधति दिव्य वस्त्र, सदा सदाचारि करि पवित्र। सुवरणवेदी अहिनांणि जांणि, सरद्वतीसूनु क्रिपांणपांणि।
—विराट पर्व

दीधल-वि० [सं० दा] दिया हुआ, दत्त। उ०—परही पुळ आंणिय ठांण परं, भुरजाळा री खेग हुती वुहरं। भणियै क वखांण किसूं भलरी, वरदाइ नै दीधल देवल री।—पा.प्र.

दीधुं, दीधु, दीधू—देखो 'दीन्हौ' (रू.भे.) (उ.र.)

(स्त्री० दीधी)

दीधोडौ—देखो 'दीन्हौ' (रू.भे.)

दीधौ—देखो 'दीन्हौ' (रू.भे.) उ०—दुजं दीन व्है आसरीवाद दीधौ। क्रपानाथ वंदे विदा व्रह्म कीधौ।—सू.प्र.

(स्त्री० दीधी, दीधोड़ी)

दीन-वि० [सं०] १ हीन दशा का, गरीव, दरिद्र।

उ०—१ औ ऊपर ऊनाळौ आयौ, दीन जनां दोरौ दरसायौ। पांणी ग्यांन कोई नहि पायौ, फूकै लोक हुवौ अति कायौ।—ऊ.का.

उ०—२ दातार सूर सीळ के निवास। दीन के सहाय द्विज गऊ के दास।—सू.प्र.

२ भय या दुख से अधीनता प्रकट करने वाला, नम्र।

उ०—१ किण सरणै जाऊं रे, दीन भाख सुणाऊं रे। सतहीण न थाऊं रे, दीन भाख सुणाऊं रे।—प.च.चौ.

उ०—२ दीन पुकार स्रवण सुण हसती। तज कमळा पाळा करत सती।—र.ज.प्र.

३ दयनीय। उ०—भ्रिग मरकट मन मीन, नाव नागरीनयण नट। देख हुवै औ दीन, अस 'जेहल' वगसै इसा।—वां.दा.

४ उदास, खिन्न. ५ दुखी, कातर, संतप्त. ६ कायर.

७ देखो 'दीन्हौ' (रू.भे.)

सं०पु० [अ०] १ धर्म, मजहव, मत, विश्वास।

उ०—१ महदी रै वंस रा पीरजादां फनै महदवियां रा दीन री क़िताव है।—वां.दा.ख्यात

उ०—२ दादू दुनियां सौं दिल वांध कर, वैठे दीन गमाय। नेकी नांम विसार कर, करव कमाया खाइ।—दादू वांणी

उ०—३ लीन श्रो श्रलीन भीन चीन्ह तें लयो। लीन व्है श्रलीन दोऊ दीन तें गयो।—ऊ.का.

२ वह द्रव्य या धन जो कोई पिता अपनी कन्या के विवाह के लिये वर पक्ष से लेता है. ३ तगर का फूल।

दीनता–सं०स्त्री० [सं०] दरिद्रता, गरीबी. २ कातरता, आर्त्त भाव।

उ०—१ सो छोकरी आधी रात में बादसाह री गोर ऊपर जाय घणी दीनता सूं प्रभू नूं बीणती करी।—नी.प्र.

उ०—२ स्राप सुण थां दोनूं हाथ जोड़ कै अरज करी—जे म्हारै साधारण अपराध बदळै दंड मोटो दियो। यूं कहि दीनता करी।

—डाढ़ाळा सूर री वात

३ उदासी, खिन्नता. ४ दुख से उत्पन्न अधीनता का भाव, नम्रता, विनीत भाव। उ०—१ नह कायरता दीनता, 'पता' तिहारै पिंड। करता तो रचतां किया, अत्ता नेम अखंड।—जैतदांन बारहठ

उ०—२ हे वणावटी रावतां सीह मत वाजो, थांरै मांहै सीह वाजो जेड़ी सकती नहीं, दीनता सूं आपरा दिन गुजारो, आपरो पोरस सीह वाजण रो नहीं।—वी.स.टी.

५ दयनीयता. ६ कायरता।

रू०भे०—दीनताई, दीनती।

दीनताई—देखो 'दीनता' (रू.भे.) उ०—लई दीनताई रहै खांनजादे। कहै खो गये मेच्छ वेरे विवादे।—ला.रा.

दीनती–सं०स्त्री० [सं० दीनता] १ दीनता के साथ की जाने वाली प्रार्थना। उ०—'गुमांना' सुतन बीनती करै गरज री, दीनती अरज री भाव दासा। जळंधर नाथ महाराज अण जीव री, एक चरणारबंद तणी आसा।—महाराजा मांनसिंह

२ देखो दीनता' (रू.भे.)

दीनत्व–सं०पु० [सं०] दीनता।

दीनदयाळ, दीनदयाळु, दीनदयाळौ–वि० [सं० दीनदयालु] दीनों पर दया करने वाला। उ०—दीनदयाळ छेह नहि देता सदा अछेह सभावां।

—ऊ.का.

सं०पु०—ईश्वर का नाम। उ०—प्रथम्मी जाती रेस पयाळ। दाढ़ां विच राखी दीन-दयाळ।—ह र.

रू०भे०—दीनादयाळ।

दीनदार–वि० [अ० दीन+फ़ा० दार] जो धर्म पर विश्वास रखता हो, धार्मिक।

दीनदारी–सं०स्त्री० [अ०+फ़ा०] धर्म की आज्ञाओं के अनुसार आचरण, धर्म्माचरण।

दीनदुनी–सं०स्त्री० [अ० दीन+दुनिया] लोक-परलोक।

दीनबंधु, दीनबंधू, दीननबंधू–सं०पु० [सं० दीनबंधु] १ ईश्वर का एक नाम। उ०—१ राज के विहीन सत्य सिंधु ते रह्यो। भाज के अधीन दीनबंधु के भयो।—ऊ.का.

उ०—२ दीननबंधू हुय दीनन दुख दीन्हो।—ऊ.का.

२ गरीब और दुखियों का सहायक. ३ प्याज।

दीनादयाळ—देखो 'दीनदयाळ' (रू.भे.)

दीनानाथ–सं०पु० [सं० दीन+नाथ] १ ईश्वर का एक नाम. २ दीनों का स्वामी या रक्षक।

दीनार–सं०पु० [फ़ा०] १ स्वर्ण-मुद्रा. २ सोने या चांदी का बना एक प्राचीन सिक्का। उ०—बादसाह फरमाई सो हजार **दीनार** उणनूं मिळिया।—नी.प्र.

दीनोड़ो, दीनोडो, दीनो—देखो 'दीन्हो' (रू.भे.)

उ०—१ ताहरां नाई नूं मिळियो। नाई नूं घणी भोळावण दीनो।

—नैणसी

उ०—२ लारै बाळद रो डेरो लीनोड़ो। दोळो दाळद रो घेरो दीनोड़ो। जूंवां लीखां रा जमियोड़ा जाळा। नीचा नमियोड़ा कड़-कोड़ा काळा।—ऊ.का.

उ०—३ रावळो पीसणो टेपरिया भांबी रै अठै दीनोड़ो हो सो आटो लावण नै गयो।—रातवासो

उ०—४ जका तो कयो न कीनो हर करड़ो ही उतर दीनो।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

(स्त्री० दीनी, दीनोड़ी. दीनोडी)

दीन्ह, दीन्हउ, दीन्होड़ो, दीन्हो–भू०का०कृ० (स्त्री० दीन्ही, दीन्होड़ी) दिया हुआ, प्रदत्त। उ०—१ दादू माया मांहै काढ़ कर फिर माया मैं दीन्ह। दोऊ जन समझै नहीं, एको काज न कीन्ह।—दादू बांणी

उ०—२ अंऊकार दीन्हउ न कीयो आदरि, पडलइ नेत तिण छाया पाप। दीठी सती आवती दुवारइ, बइठउ हुए अपूठउ बाप।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ राजा त्यां नूं एक मंसापूरण जड़ी दीन्हो।

—सिंघासण बत्तीसी

उ०—४ दादू सुमिरण सहज का, दीन्हा आप अनंत। अरस परस उस एक सौं, खेलै सदा वसंत।—दादू बांणी

उ०—५ तहां दमनी वात संभाळ कह्यो तैं भूंडी कीन्हीं, घर रो भेद दीन्हो।—पंचदंडी री वारता

रू०भे०—दीध, दीधोड़ो, दीधो, दीन, दीनउ, दीनोड़ो, दीनोडो, दीनो।

दीपंतो–वि० [सं० दीप्त] चमकता हुआ, दीप्तिमान्, प्रकाशित।

दीप–सं०पु० [सं० दीप] १ दीपक (ह.नां.) उ०—१ पेखो घर में पवन सूं, बचै दीप दुतिवंत। दीप हूंत दरसंत, घर मैं उजवाळो घणो।

—वां.दा.

उ०—२ ओप दीप आंरती रूप देखै राय पुत्रिय। जिसो रांम पुर जनक दरसि अभिरांम अद्वितिय।—रा.रू.

रू०भे०—दीव, दीवउ।

२ इन्द्र (ना.डि.को.) ३ दस मात्राओं का एक छंद जिसके अन्त में तीन लघु फिर एक गुरु और फिर एक लघु होता है. ४ लक्षपत

डिंगळ के अनुसार एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तीन गुरु एक लघु फिर तीन गुरु, एक लघु तथा अंत में गुरु लघु से कुल १७ मात्राएं होती हैं. ५ छप्पय छंद का ६८ वां भेद जिसमें तीन गुरु और १४६ लघु से १४९ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। (र.ज.प्र.)

[सं० द्वीप] ६ देश, प्रदेश। उ०—मड़ सड़ वाहि म कंबड़ी, रांगां देह म चूरि। विहुं दीवां विचि मारुइ, मो-थी केती दूरि।—ढो.मा.

७ देखो 'द्वीप' (रू.भे.) उ०—पर मंडळ पर दीप में, हद घर घर कथ होत। कीरतवर जेहो कुंवर, जाड़ेचां घर जोत।—वां.दा.

दीपक-सं०पु० [सं० दीपक:] १ चिराग, दीया, दीप।

उ०—१ करै कमाई कोय, दीपक ज्यूं सांमी दियै। जीमण सीरा जोय, मुलमुल पैरण मोतिया।—रायसिंह सांदू

उ०—२ जड़ियौ तिलक जवाहरां, जांणै दीपक जोत। बालम चीत पतंग विधि, हित सूं आसक होत।—वां दा.

पर्याय०—उजासी, उतमदसा, उदोत, कजळअंक, कळधन, ग्रहमिण; ताईतिमर, ताईपतंग, दीप, दुत, नेहांनेह, प्रदीप, सारंग, सिखजनम, सिखाजोत।

रू०भे०—दिपह, दीपक्क, दीपग, दीवक, दीवक।

अल्पा०—दिग्रौ, दियौ, दिवलौ, दीग्रौ, दीपक्कौ, दीयौ, दीवटिउ, दीवटिग्रौ, दीवटियउ, दीवटियौ, दीवटीउ, दीवटीग्रौ, दीवटीयउ, दीवटीयौ, दीवटौ, दीवडलौ, दीवडु, दीवडू, दीवडौ, दीवलउ, दीवलियौ, दीवलौ, दीवौ, दीवौ।

२ पीला॥ (डि.को.) ३ एक अलंकार विशेष जिसमें उपमेय और उपमान की एक ही धर्मवाची क्रिया हो. ४ संगीत में छः रागों में से एक राग जो हनुमत के मत से दूसरा है और इसके गाने का समय ग्रीष्म ऋतु का मध्यान्ह है। इसका सरगम यह है—स र ग म प ध नी सा. ५ एक ताल का नाम (संगीत) ६ दश मात्राओं का एक मात्रिक छंद विशेष (र.ज.प्र.) ७ वेलिया सांणोर गीत के मिलते-जुलते लक्षणों का पांच चरण का एक गीत (छंद) विशेष जिसके पांचवें चरण में १५ मात्राएं होती हैं (र.ज.प्र.)

८ डिंगल के वेलिया सांणोर गीत का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ६० लघु दो गुरु सहित ६४ मात्रायें होती हैं तथा शेष के द्वालों में ६० लघु एक गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं (पि.प्र.)

९ केसर (ह.नां.)

वि०—१ पाचन अग्नि को तेज करने वाला. २ उजाला फैलाने वाला, दीप्तिकारक।

दीपकमाळा-सं०स्त्री० [सं० दीपकमाला] १ दीप-पंक्ति. २ दीपक अलंकार का एक भेद. ३ प्रत्येक चरण में भगण, मगण, जगण और गुरु युक्त एक वर्णवृत्त।

दीपकसुत-सं०पु० [सं०] काजल, कज्जल (डि.को.)

दीपकामाळ-सं०स्त्री० [सं० दीपमालिका] १ दीपावली. २ दीपों की पंक्ति।

दीपकाळ-सं०पु० [सं० दीप:+काल] दीपक जलाने का समय, सन्ध्या समय।

दीपक्क—देखो 'दीपक' (रू.भे.) उ०—इसे नासिका सग्ग दीपक्क एरी, कळी चंप जांणै लळी लंप केरी। नवे नेह दीरग्घ पंकज्ज नेत्रे, सुभा मीन खंजन म्रिग्गी सवेत्रे।—ना.द.

दीपक्कौ—देखो 'दीपक' (अल्पा.; रू.भे.) उ०—तरुणी पुणोवि गहियं परीयच्चय भितरेण पिउ दिट्ठं। कारण कवण सयांणे दीपक्को धूणए सीसं।—ढो.मा.

दीपग—देखो 'दीपक' (रू भे.) उ०—भूप जड़ावै मुगट मझ, रोहण गिर उतपत्त। निस दीपग प्रतिनिध रतन, प्रभा अपूरव भत्त।—वां.दा.

दीपगर-सं०पु० [सं० दीपगृह ?] १ दीपकों का समूह।

उ०—निगरभर तरुवर सघण छांह निसि, पुहपित अति दीपगर पळास। मोरित अंब रीझ रोमंचित, हरखि विकास कमळ क्रित हास।—वेलि.

२ दीपक रखने का स्थान, दीपगृह।

दीपचंदी-सं०स्त्री० [सं० दीप+चंद्र] १ १४ मात्राओं की ताल।

दीपण—देखो 'दीपन' (रू.भे.)

दीपणौ-वि० [सं० दीपि] (स्त्री० दीपणी) १ चमकने वाला, जगमगाने वाला, प्रकाशित होने वाला. २ रोशन होने वाला, प्रकाशित होने वाला. ३ देदीप्यमान होने वाला. ४ प्रज्वलित होने वाला.

५ शोभित होने वाला। उ०—दातार है मर देग्रणौ, जस लेग्रणौ घण जांण। देसां सिरोमणि दीपणौ, जुध जीपणौ जमरांण।—ल.पिं.

६ लावण्य युक्त होने वाला. ७ प्रसिद्ध होने वाला. ८ प्रकट होने वाला।

दीपणौ, दीपवौ-क्रि०अ० [सं० दीपि] १ चमकना, जगमगाना, प्रकाशित होना। उ०—१ प्रगट कहै 'जैमाल' 'पतौ', अचळ अचळ कर अंग। कायर रेहण कढ़ गयां, दीपै कनक दुरंग।—वां.दा.

उ०—२ दौलति परजि सहु एम आसीस दै, जीपिया जंग तिम वळै जीपौ। दूथियां पाळ सु दयाळ 'दायाळ' हर, दीपते सूर जिम सदा दीपौ।—ध.व.ग्रं.

२ रोशन होना, प्रकाशित होना। उ०—दहदिसि दीवा दीपया, चिहुं दिसि मंगळ च्यारि। कांमिनी 'जी जी' जंपती, जगदंबा-जयकार।

—मा.कां.प्र.

३ देदीप्यमान होना। उ०—पर छती जगि रिण जीपियौ। दससहस रच्छिक दीपियौ।—सू.प्र.

४ प्रज्वलित होना। उ०—जे जळसीकर ते उद्वेग करइ, जे सीतळो-पचार इंग विकारइ, इणि परि प्रज्वलित स्नेह पटल विरहानळ दीपतेइ।—वं.स.

५ शोभित होना, शोभा देना। उ०—आठ गुरु बारह लघू होय। दीपै जिण अंतै गुरु दोय।—र.ज.प्र.

उ०—२ गढ़ नरवर अति दीपता, ऊंचा महल अवास। घरि कांमिण

हरणाखियां, किसउ दिसावर तास ।—ढो.मा.

६ लावण्ययुक्त होना, नूर चढ़ना । उ०—दूध दही खाया दूजां रा, दीपी देहड़ली । मरियां सूं सूनी मिळ जासी, खूनी खेहड़ली ।—ऊ.का.

७ प्रसिद्ध होना, ख्याति प्राप्त करना, चमकना।

उ०—प्रथीमाल परमांण वधे चहुवांण तणं वळ । तेण वंस 'वल्लाल' दांन दीपियौ दसावळ ।—नैणसी

८ प्रकट होना, प्रकटना । उ०—दिली लखै दिगदाह, विगत हित साह विचारी । खर भूकै रव खेंग, स्वांन कूकै सुखहारी । चडै स्वास सज्जणां, नास विपरीत उपज्जै । नह राजै दीवांण, सबद बाजे न गरज्जै । वड चौक लोक संकत रहै, खांति रहै नह खट्टणं । दीपै न नूर दरगाह मैं, आगम साह पलट्टणं ।—रा.रू.

दीपणहार, हारौ (हारी), दीपणियौ—वि० ।

दिपवाड़णौ, दिपवाड़बौ, दिपवाणौ, दिपवाबौ, दिपवावणौ, दिपवावबौ —प्रे०रू० ।

दिपाड़णौ, दिपाड़बौ, दिपाणौ, दिपाबौ, दिपावणौ, दिपावबौ, दीपाड़णौ, दीपाड़बौ, दीपाणौ, दीपाबौ, दीपावणौ, दीपावबौ—क्रि०स० ।

दीपिओड़ौ, दीपियोड़ौ, दीप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दीपीजणौ, दीपीजबौ—भाव वा० ।

दिपणौ, दिपबौ—रू०भे० ।

दीपत—वि० [सं० दीप्तिकर] १ रमणीय, सुन्दर, अच्छा (ह.नां.) २ देखो 'दीप्ति' (रू.भे.)

दीपति, दीपती—देखो 'दीप्ति' (रू.भे.) (नां.मा.)

उ०—वित ए आसोज मिळै नभि वादळ । प्रथी पंक जळि गुडळपण । जिम सतगुरु कळि कळुख तणा जण । दीपति ग्यांन प्रगटै दहण ।—वेलि.

दीपतौ—वि० [सं० दीप्त] (स्त्री० दीपती) १ चमकता हुआ. २ कांतिमान्, दीप्तिमान, देदीप्यमान. ३ प्रकाशित, रोशन. ४ प्रज्वलित. ५ शोभित । उ०—देवां मांहै दीपतौ हो, तुं परता सुद्ध पास । सोहै तारां स्रेणि में हो, एकज चंद आकास ।—ध.व.ग्रं.

६ प्रसिद्ध.

दीपदध—सं०स्त्री० [सं० उदधिदीप] जमीन (अ.मा.)

दीपदांन—सं०पु० [सं० दीपः+दान] १ दीप रखने का स्थान, दीपगृह. २ लकड़ी या धातु का बना उपकरण जिस पर दीपक रखा जाय अथवा जिसके ऊपर की कटोरी में दीपक जलाया जाय ।

३ किसी देवता के सामने दीपक जलाने का कार्य. ४ राधा-दामोदर के निमित्त कार्तिक में बहुत से दीप जलाने का कृत्य. ५ कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिवस गृह-द्वार पर भय निमित्त रखा हुआ दीपक. ६ मृत्य व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात आने वाली प्रथम दीपावली को सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व जलाशय (कूप, तालाब आदि) पर की जाने वाली दीपपंक्ति (श्रीमाली ब्राह्मण)

दीपदांनी—सं०स्त्री० [सं० दीपः+दान+रा०प्र०ई या दीपः+धानी] बत्ती, घी आदि दीपक जलाने की तथा पूजा की सामग्री रखने की डिबिया ।

दीपधुज, दीपध्वज—सं०पु० [सं० द्वीपध्वज] कज्जल, काजल (अ.मा.)

दीपन—सं०पु० [सं०] १ प्रकाशित या प्रज्वलित करने का कार्य. २ भूख को उभारने की क्रिया. ३ केसर (नां.मा.)

वि०—जठराग्निवर्द्धक ।

दीपनगण—सं०पु० [सं०] जठराग्नि को तीव्र करने वाले पदार्थ ।

दीपनभ—सं०पु० [सं०] तारा (अ.मा.)

दीपनी—सं०स्त्री० [सं०] १ मेथी. २ अजवाइन ।

दीपमाळ, दीपमाळका, दीपमाळा, दीपमाळिका, दीपमाळी—सं०स्त्री [सं० दीपमाला, दीपमालिका] १ दीपों की पंक्ति । उ०—छटा विसाळ साळ तैं छवी घटा छपै नहीं । दिवाल पै सुवाळ दीपमाळ सी दिपै नहीं ।—ऊ.का.

२ दीपावली, दीवाळी (ह.नां.) उ०—भाला वह भळहळै, जेण वेळा जुध जीपक । जांणै घर घर जगै, दीपमाळा मझि दीपक । —सू.प्र.

दीपवती—सं०स्त्री० [सं० द्वीपवती] १ पृथ्वी. २ नदी (अ.मा.)

दीपवरतिक—सं०पु० [सं० दीपवर्तिक] दीपक धारन करने वाला ।

उ०—अंगरक्षक वीरमहर धनुरद्धर खड्गधर दीपवरतिक भोजिक सूरच काय चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य त्रिखभ वैद्य मांत्रिक, तांत्रिक । —व.स.

दीपसुत—सं०पु० [सं०] कज्जल, काजल (अ.मा.)

दीपसुरलोक—सं०पु० [सं० सुरलोकदीपः] इन्द्र (ना.डिं.को.)

दीपाऊ—वि० [सं० दीपी] १ देदीप्यमान करने वाला, चमकाने वाला. २ सुंदर, मनोहर ।

दीपाड़णौ, दीपाड़बौ—देखो 'दीपाणौ, दीपाबौ' (रू.भे.)

दीपाड़णहार, हारौ (हारी), दीपाड़णियौ—वि० ।

दीपाड़िओड़ौ, दीपाड़ियोड़ौ, दीपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दीपाड़ीजणौ, दीपाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

दिपणौ, दिपबौ, दीपणौ, दीपबौ—अक०रू० ।

दीपाड़िओड़ौ—देखो 'दिपायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दीपाड़ियोड़ी)

दीपाणौ, दीपाबौ—देखो 'दिपाणौ, दिपाबौ' (रू.भे.)

उ०—दुस्ट व्याधि मुझ पति तणी, जो किम हीए जाय । तो अपजस सगळौ टळै, जिन सासन दीपाय ।—स्रीपाळ रास

दीपाणहार, हारौ (हारी), दीपाणियौ—वि० ।

दीपायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दीपाईजणौ, दीपाईजबौ—कर्म वा० ।

दिपणौ, दिपबौ, दीपणौ, दीपबौ—अक०रू० ।

दीपायण, दीपायन—देखो 'द्वैपायन' (रू.भे.) उ०—तीजौ मदिरापांन व्यसन तजि, चित्त धरी वळि चाहि । दीपायन रिखि दूहव्यौ जादवे, द्वारिका नो थयो दाह ।—ध.व.ग्रं.

दीपायोड़ौ—देखो 'दिपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दीपायोड़ी)

दीपारती-संस्त्री०—दीपकों द्वारा की जाने वाली परछन, दीपक आरती। उ०—अमै चार दीपारती जोत भासै, प्रभा सूर वारंत सोभा प्रकासै।—रा.रू.

दीपावणौ, दीपाववौ—देखो 'दिपाणौ, दिपाबौ' (रू.भे.)
उ०—१ कुण उवह तागै ऊंमडै, प्रथम दीपावै पांवडे।—रा.रू.
उ०—२ दीपाविया सुदन पर दीपै, रायजादे वड राजां। भारमलोत तिके नव दै भड़, है चाडै जेहाजां।—नैणसी
दीपावणहार, हारौ (हारी), दीपावणियौ—वि०।
दीपाविग्रोड़ौ, दीपावियोड़ौ, दीपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दीपाबीजणौ, दीपावीजवौ—कर्म वा०।
दिपणौ, दिपवौ, दीपणौ, दीपवौ—अक०रू०।

दीपावती-संस्त्री० [सं०] १ दीपक और सरस्वती के योग से उत्पन्न एक रागिनी। २ दीपावली [सं० द्वीपवती] ३ वह जिस पर दीप स्थित हों। उ०—एको रांमरो दास जोरै अपारै। धरा सात दीपावती सेस धारै।
—सू.प्र.

दीपावळि, दीपावळी-संस्त्री० [सं० दीप+अवलि] १ दीपों की पंक्ति, दीप-श्रेणी. २ दीवाली त्योहार।

दीपावियोड़ौ—देखो 'दिपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दीपावियोड़ी)

दीपिका-संस्त्री० [सं०] १ हिंडोल राग की पत्नी मानी जाने वाली एक रागिनी जो प्रदोषकाल में गाई जाती है. २ छोटा दीपक।
वि०—उजाला करने वाली, प्रकाश फैलाने वाली।

दीपित-वि० [सं०] १ चमकता हुआ, प्रकाशित, दीप्त. २ उत्तेजित।

दीपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, जगमगाया हुआ, प्रकाशित. २ रोशन हुवा हुआ, प्रकाशित. ३ देदीप्यमान हुवा हुआ. ४ प्रज्वलित हुवा हुआ. ५ शोभा दिया हुआ, शोभित. ६ लावण्य-युक्त हुवा हुआ, नूर चढ़ा हुआ. ७ ख्याति प्राप्त किया हुआ, प्रसिद्ध हुवा हुआ, चमका हुआ. ८ प्रकट हुवा हुआ, प्रकट हुआ।
(स्त्री० दीपियोड़ी)

दीपोत्सव-संपु० [सं०] दीवाली। उ०—दिन दीपोत्सव केरडा, करि-वरि पासा लेय। माधव सिउं सारे रमइ, मांणिक सत मूकेय।
—मा.कां प्र.

दीप्त-वि० [सं०] १ चमकता हुआ, जगमगाता हुआ, प्रकाशित. २ जलता हुआ, प्रज्वलित।

दीप्ताग्नि-वि० [सं०] १ जिसकी पाचन शक्ति बहुत प्रबल हो. २ तेज भूख वाला, भूखा।

दीप्ति-संस्त्री० [सं०] १ आभा, चमक. २ उजाला, प्रकाश, रोशनी. ३ कांति, छवि, शोभा. ४ किरण, रश्मि।
रू०भे०—दीपति, दीपती।

दीप्तिमांन-वि० [सं० दीप्तिवान्] १ कांतियुक्त, दीप्तियुक्त. २ प्रकाशित।

दीप्य-वि० [सं०] जो जलाया जाने को हो।

दीवक—देखो दीपक' (रू.भे.)

दीबड़ी—देखो 'दीवड़ी' (रू.भे.)

दीवेल-संपु० [सं० दीप+तैल] दीपक में जलाया जाने वाला ते
रू०भे०—दीवेल।

दीम, दीमक-संस्त्री० [फ़ा०] चींटी की तरह का एक छोट कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदि में लग कर उसे खोखला औ कर देता है, वल्मीक (डिं.को.)

दीयट—देखो 'दीवट' (रू.भे.)

दीयाळीएल(हेल)—देखो 'दीवाळीएल (हेल) (रू.भे.)

दीयावळि-संस्त्री० [सं० दिशा+आलुच्] दिशाभ्रम।

दीयावळौ-संपु० [सं० दिशा+आलुच्] दिशाभ्रम, दिशाओं जाना।
वि० (स्त्री० दीयावळी) जिसे दिशाभ्रम हो गया हो।

दीयासळाई—देखो 'दियासळाई' (रू.भे.)

दीयासूळौ—देखो 'दीयावळौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दीयासूळी)

दीयौ—देखो 'दीपक' (रू.भे.) उ०—दीयौ सूं निज कंवर देखि लियौ हुलराई नै। मां वाजण नै वळियौ मूंडौ, औ अळियौ नै।—ऊ.का.

दीयोड़ौ—देखो 'दियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दीयोड़ी)

दीरग्घ, दीरघ-वि० [सं० दीर्घ] (स्त्री० दीरघा) १ बड़ा, विश उ०—नमौ दुजरांम दमोदर देव। नमौ गुरु द्रोण करण नमो वप वांमण दीरघ वीख। भिखंग पुरंदर भांजण भीख।
२ महान्, वड़ा। उ०—निराकार निरलेप निगम निरदोख दीरघ दीनदयाळ, देव दुख-दाळद भंजन।—ऊ.का.
३ लम्बा. ४ चिर, लम्बा। उ०—अति वर्ष कीत दीरग्घ सुजि हुवै जोग दारण सभाव। उच्छाह सदा राखै अनंत। जिम भुगतै भूमिकंत।—सू.प्र.
५ स्थूल, भारी, मोटा। उ०—नहीं तो नार पुरख सनेह दीरघ छुच्छम देह। नहीं तो वित्त नहीं तो वांण, नहीं तो खि तो खांण।—ह.र.
संपु०—१ चिरकाल, लम्बा समय। उ०—अधम ! न जा अवर, तु जा सुरसरि तीर। दीरघ लहसी तीन द्रग, सुजळ सरीर।—वां.दा.
२ वह वर्ण जिसका उच्चारण खींच कर हो, द्विमात्र या गु ह्रस्व का उल्टा। उ०—किवळौ पिच्छू कहै लहू लघुअंक गिणौ छंद वस गुरू कवी लघु चार कहावै। बीजा दीरघ वर गुरु आदि संजोगी। विसरग अग सिर बिंदु भणै तारख सौं

रू०भे०—दीरघ्घ, दीह।

दीरघकरण—सं०पु० [सं० दीर्घ+कर्ण] गधा, खर।
(मि० लंबकरण)
वि०—जिसके कान बड़े-बड़े हों।

दीरघकाय—वि० [सं० दीर्घकाय] जिसका डीलडौल बड़ा हो, लम्बे-चौड़े शरीर का।

दीरघग्रीव—सं०पु० [सं० दीर्घग्रीव] ऊँट (डि.को.)

दीरघड़ो—देखो 'दीरघ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—टप टप टपकै नैण दीरघड़ा, हिवड़ो भर भर आवै।—लो.गी.
(स्त्री० दीरघड़ी)

दीरघ-छळ—सं०पु० [सं० दीर्घ+रा० छळपंजा] केसरी सिंह, शेर (ना.डि.को.)

दीरघजग्य—देखो 'दीरघयग्य' (रू.भे.)

दीरघजीवी—वि० [सं० दीर्घजीविन्] बहुत काल तक जीवित रहने वाला।

दीरघतपी—वि० [सं० दीर्घतपस्] जिसने बहुत दिनों तक तपस्या की हो।

दीरघतमा—सं०पु० [सं० दीर्घतमा] महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो उतथ्य के पुत्र थे।

दीरघदरसी—वि० [सं० दीर्घदर्शी] १ दूरदर्शी. २ विचारवान्, बुद्धिमान। सं०पु०—१ गिद्ध. २ भालू।

दीरघनिस्वास—सं०पु० [सं० दीर्घनिश्वास] दुःख या शोक के आवेग के कारण ली जाने वाली लम्बी सांस।

दीरघपत्र, दीरघपत्रक—सं०पु० [सं० दीर्घपत्रक] प्याज (डि.को.)

दीरघपत्रिका—सं०स्त्री० [सं० दीर्घपत्रिका] १ सफेद वच. २ शालपर्णी।

दीरघपिस्ट, दीरघपीठ—सं०स्त्री [सं० दीर्घपृष्ठ] १ सर्प, सांप, नाग (अ.मा., ह.नां.) २ हाथी, गज।

दीरघफळ—सं०पु० [सं० दीर्घफल] अमलतास।

दीरघबाहु—सं०पु० [सं० दीर्घबाहु] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम (महाभारत)
वि०—जिसकी भुजाएं लम्बी हों, आजानु बाहु।

दीरघमारुत—सं०पु० [सं० दीर्घमारुत] हाथी।

दीरघमुख—सं०पु० [सं० दीर्घमुख] एक यक्ष का नाम।

दीरघमूळ—सं०पु० [सं० दीर्घमूल] १ एक प्रकार की पीली घास। २ एक प्रकार की बेल।

दीरघयग्य—वि० [सं० दीर्घ यज्ञ] जिसने बहुत काल तक यज्ञ किया हो।
रू०भे०—दीरघजग्य।

दीरघरसन—सं०पु० [सं० दीर्घरसन] सर्प, सांप (डि.को.)

दीरघरोमो—सं०पु० [सं० दीर्घरोमन] १ शिव का एक अनुचर। २ भालू।

दीरघवाह—वि०—देखो 'दीरघबाहु' (रू.भे.) उ०—उदर सुमित्र लछण जीपण अरि, घरै सेस अवतार धुरंधर। वियो सत्रघण सुजस सवायक, दीरघवाह वड़ो वरदायक।—र.रू.

दीरघसूत्रता—सं०स्त्री० [सं० दीर्घसूत्रता] हर कार्य में विलंब करने की आदत, देर लगाने का स्वभाव।

दीरघसूत्री—वि० [सं० दीर्घसूत्रिन्] प्रत्येक कार्य में विलम्ब करने वाला।

दीरघस्थणी, दीरघस्थनी—वि० [सं० दीर्घस्तनी] बड़े स्तनों वाली।

दीरघस्वर—सं०पु० [सं० दीर्घस्वर] द्विमात्रिक स्वर।

दीरघा—वि०स्त्री० [सं० दीर्घा] बड़े आकार वाली। उ०—दीरघा लघु वपु द्रढ़ा, सवेही रूप विरूपा, वकळा सकळा व्रजा, उपावण आप आपुपा।—देवि.

दीरघायु—वि० [सं० दीर्घायु] लम्बी आयु वाला, चिरंजीवी।
रू०भे०—दीहाउ, दीहाऊ।

दीरघि—सं०स्त्री० [सं० दीर्घ] लम्बाई। उ०—गंगा तडा तडि अछइ ओयणु। वित्थरि दीरघि बारह जोयणु।—पं.पं.च.

दीरघिका—सं०स्त्री० [सं० दीर्घिका] १ वापिका। उ०—दमयंती नि सदनि आव्या, दीरघिका दीठी भरी। विकज-वारिज-वन देखी ऊतरचा ते अणिसरी।—नळाख्यांन
२ झील।

दीरध—देखो 'दीरघ' (रू.भे.)

दीव—सं०पु० [सं० दिवम्=आकाश] १ सूर्य। उ०—जे अंतरजामी वार नमांमी स्वांमी जग साधार। जोड़ी चिरजीवं पतनी पीयं, सुज सस दीवं सार।—र.ज.प्र.
२ देखो 'दीप' (रू.भे.) ३ देखो 'द्वीप' (रू.भे.)

दीवउ—देखो 'दीप' (रू.भे.) उ०—घर नीगुल दीवउ सजळ, छाजइ पुणग न माइ। मारू सूती नींद्र भरि, साल्ह जगाई आइ।—ढो.मा.

दीवक—देखो 'दीपक' (रू.भे.) उ०—रांमदेव राठोड़ सुत, हुवा बीस जय हेतु। वय सब छोटौ गुण वडौ, कुळ दीवक सतकेतु।—वं.भा.

दीवड़की, दीवड़ली—देखो 'दीवड़ी' (अल्पा रू.भे.)

दीवड़लो—देखो 'दीपक' (अल्पा रू.भे.)

दीवड़ी—सं०स्त्री० [सं० दृतिः] १ मोटे कपड़े (कैनवास) या बकरे की खाल से बनाई हुई पानी रखने की थैली। उ०—छोटी दीवड़ियां काखां तळ छालै। मोटी लोटड़ियां दाखां जळ मालै।—ऊ.का.
रू०भे०—दीवड़ी, दीवडी।
अल्पा०—दीवड़की, दीवड़ली।
मह०—दीवड़, दीवड़ो, दीवड, दीवड्डु, दीवड्ड, दीवडो।
२ एक प्रकार का कटाह ? उ०—राव मालदे रै वास। लवेरौ पटै। लवेरै राजथांन कियौ। लवेरै कढ़ाई दीवडी, भूंजाई वडी पळी।—नैणसी

दीवड़ो—देखो 'दीवड़ी' (मह., रू.भे.)

दीवट—सं०स्त्री० [सं० दीपस्थ, प्रा० दीवट्ठ] लकड़ी, धातु आदि का बना डंडे के आकार का आधार जिस पर दीपक रखा जाता है।
रू०भे०—दीअट, दीयट।

दीवटिउ, दीवटिओ, दीवटियउ, दीवटियो, दीवटीउ, दीवटीओ, दीवटीयउ, दीवटीयो, दीवटो—सं०पु० [सं० दीपवर्त्तिकः = प्रा०दीअवट्टिओ] १ दीपक थामने वाला, मशालची (उ.र.) उ०—१ सिव सांति

करइ वैस्वांनर कापड़ा पखाळइं, ब्रह्मा पुरोहित, नारायण दीवटिम्रो दिस्वामित्र ग्राभरण घडावइ ।—व.स.

उ०—२ महा भंडारी रसोई तलार, राजवैद्य गजवैद्य ज सार । दीवटीम्रा मुहबोल जेह, उचित बोला वइठा छइ तेह ।

—नळ दवदंती रास

उ०—३ पहुरायत पूठि थया, ग्रहीग्रा वळी तलार । दीवटीया दह दिसि रह्या, पालीयात नहीं पार ।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—दीवलउ, दीवलियौ ।

२ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दीवड—देखो 'दीवड़ी' (मह., रू.भे.)

दीवडलौ—देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—म्हारी काळी माता जोगी दीवडलो घड ल्याय, बीनांणी लाव सारे कलकत्ते में बीरो चांणु जे ।—लो.गी.

दीवडो—देखो 'दीवड़ो' (रू.भे.)

दीवडु, दीवडू—१ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—तेल विहूणउ दीवडु, मूळ विहूणी वेलि । पांणी विहूणी दहू री, तिम होईं ति महेलि ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दीवडी' (मह., रू.भे.)

दीवडी—१ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—दाखि न राखुं दीवडा ? कां दहइ मुझ सरीर ? पवनि करी परहो कहूं, ऊपरि नांमूं नीर ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दीवड़ी' (मह., रू.भे.)

दीवळ—सं०स्त्री० [देश०] दीमक (शेखावाटी)

दीवलउ—१ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—सा बाळा प्रो चितवइ, खिण खिण रयणि विहाइ । तिण हर परहुव्यउ, ज्यूं दीवलउ वुझाइ ।—ढो.मा.

२ देखो 'दीवटियौ' (रू.भे.)

दीवलियौ—१ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—थे छौ ग्रो वाईसा ! दीवलिया-री लोर, कोई, पावूजी कहीजै ज्यांरी चांनणौ ।—लो.गी.

२ देखो 'दीवटियौ' (रू.भे.)

दीवली—देखो 'दीवी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दीवलौ—देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) १ उ०—सखी संजोवै दीवला, पूजै लक्ष्मी मात । रळमिळ पोढ़ै कांमणी, ले प्रीतम न साथ ।

—लो.गी.

उ०—२ म्हारो कंवर ज कुळ रो दीवलो, कँवरांणी दीवलै री लोय, ग्राज म्हारी ग्रमली फळ रही ।—लो.गी.

दीवांण—सं०पु० [फ़ा० दीवान] १ राजसभा, दरबार ।

उ०—जीवत म्रित हुइ साहिजहां, दिल्लीवै सुरितांण । राति दीह ग्रंदर रहै, नह मंडै दीवांण ।—वचनिका

क्रि०प्र०—करणौ, जुड़णौ, होणौ ।

२ वह स्थान जहां बादशाह या राजा का दरबार जुड़ता हो ।

यौ०—दीवांण-ग्राम, दीवांण-खास ।

३ राज्य का प्रबन्ध करने वाला, मंत्री, वजीर, प्रधान ।

उ०—एक दिन दोय सिपाही ग्राय कर दहली में दीवांण मुजरो कियौ ।—दूलची जोइयै री वारता

४ स्वामी, ग्रधिपति । उ०—१ पड़सो जद कांम दोसी पाळी, दाढ़ाळी ग्रसुरां भुजडांण । वा ग्रावै ऊपर इकताळी, देसणोक वाळी दीवांण ।—ग्रज्ञात

उ०—२ भाळियौ प्रभाते रथ चक्रवाक रो (क), पाप खंड प्रांण रौ(क) पावियौ प्रचार । तंतसार पांण रा प्रयांण रो मेटियौ ताप, दूदां रा दीवांण रौ (क) भेटियौ दीदार ।—साहिबौ सुरतांणियौ

५ शिव, महादेव । उ०—१ दीवांण तणउ चोज देखतां, किसा मनुख वाखांण करइं । परगह इतउ इतउ दीपै परि, सीह ग्रजा वे साथ चरइं ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कियउ प्रगट प्रभु रूप कहंतां, वदता जे पहिली वाखांण । ग्रायउ वोल तियांरउ ऊपर, दूल्हउ जिम ग्रायउ दीवांण ।

—महादेव पारवती री वेलि

६ उदयपुर के महाराणाग्रों की उपाधि जो ग्रपने ग्राप को श्री इकलिंग भगवान का दीवान (मंत्री) समझ कर राज्य करते थे ।

उ०—१ पटकूं मूछां पांण, कै पटकूं निज तन करां । दीजै लिख दीवांण, इण दो महली बात इक ।—प्रिथीराज राठौड़

उ०—२ ए ग्रागम कथन जेसाहर ग्राखै, पोह धू जांणै मेर प्रमांण । मोनै ग्रस रीझै मोकळियौ, 'देसू ग्रस वदळो दीवांण ।—वां.दा.

७ जोधपुर राज्यान्तर्गत बिलाड़े में ग्राईमाता का सेवक (प्रधान)

८ मंदिर । उ०—देवी रै दीवांण, हत्र सह नर भेळा हुग्रा । इंद्र तणै एहलांण, जाजम वैठो 'जींदरो' ।—पा.प्र.

९ ईश्वर, परमात्मा । उ०—वडा वडेरा धड वडा भी वडा दीवांण ।

—केसोदास गाडण

वि०—१ मस्त । उ०—बादसाह इण कजियै में हैरांन हुवो । झांखी सूं वैठो देखै छै । सो नीचै एक मस्तांनो ग्रायो । तरै बादसाह फरमाई इण दीवांण नूं लावो तिण सूं सलाह करूं । दीवांणो ग्राइयो तरै बादसाह पूछी ।—नी.प्र.

२ वीर, बहादुर. ३ पागल. ४ देखो 'दइवांण' (रू.भे.)

रू०भे०—दइवांण, दईवांण, दइवांण, दईवांण, दीवाण, दीवांन ।

दीवांण-ग्रांम—सं०पु०यौ० [फ़ा० दीवान+ग्र० ग्राम] १ वह स्थान जहां ग्राम दरबार लगता हो. २ ऐसा दरबार जिसमें राजा या बादशाह से सब लोग मिल सकते हों, ग्राम दरबार ।

रू०भे०—दीवांनग्रांम ।

दीवांणखांनो—सं०पु० [फ़ा० दीवान+खान:] बैठक का कमरा या स्थान जो घर के बाहरी भाग में होता है । वैभवशाली ग्रौर प्रतिष्ठित लोग ग्रपने घर के इसी स्थान पर ग्रन्य लोगों से मिलते हैं ।

उ०—गंजण रा केहरी नमो झुंझार गुर, मांण तज जगत सोह हुकम

मांनै। पाड़ियौ तिको पतसाह री पाखती, खास सुरतांण दीवांणखांनै।
—अमरसिंह राठौड़ री वात

रू०भे०—दवांनखांनौ।

दीवांणखालसौ–सं०पु० [फा० दीवान+खालिसः] वह अधिकारी जिसके पास राजा या बादशाह की मुहर रहती है।

रू०भे०—दीवांन-खालसौ।

दीवांणखास–सं०पु० [फा० दीवान+अ० खास] १ वह सभा जिसमें राजा या बादशाह अपने खास मंत्रियों और चुने हुए प्रधान लोगों के साथ बैठता है, खास दरबार. २ वह स्थान जहां खास दरबार होता हो।

रू०भे०—दीवांनखास।

दीवांणगिरी, दीवांणगी–सं०स्त्री० [फा० दीवान+रा०प्र० गिरी या गी] १ दीवान का कार्य।

क्रि०प्र०—करणी।

२ दीवान का पद। उ०—१ अरु सूरसिंघजी दीवांणगिरी री कांम महेसरी राठी मूंता किल्यांण केसोदासोत नूं हुवौ।—द.दा.

उ०—२ अरु कांम दीवांणगी री मुंहता वेद ठाकुरसी नूं हुवौ। तथा गोठ आरोगण महाराज ठाकुरसी री हवेली पधारिया। सारी त्यारी दस्तूर मुजब हुई।—द.दा.

रू०भे०—दिवांणगी, दिवांणगिरी।

दीवांणियौ—देखो 'दीवांनौ' (अल्पा., रू.भे.)

दीवांणी–सं०स्त्री० [फा० दीवानी] १ दीवान का कार्य।

क्रि०प्र०—करणी।

२ दीवान का पद. ३ वह न्यायालय जो सम्पत्ति सम्बन्धी स्वत्वों का निर्णय करे। व्यवहार सम्बन्धी न्यायालय।

रू०भे०—दिवांणी, दिवांनी।

४ देखो 'दीवांनी' (रू.भे.)

दीवांणौ—देखो 'दीवांनौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दीवांणी)

दीवांन—देखो 'दीवांण' (रू.भे.) उ०—दादू वंदीवांन है, तूं बंदी छोड़ दीवांन। अब जन राखौ वंदि में, मीरां महरवांन।—दादू वांणी

दीवांनआंम—देखो 'दीवांणआंम' (रू.भे.)

दीवांनखांनौ—देखो 'दीवांणखांनौ' (रू.भे.)

दीवांनखालसौ—देखो 'दीवांणखालसौ' (रू.भे.)

दीवांनखास—देखो 'दीवांणखास' (रू.भे.)

दीवांनी–वि०स्त्री० [फा० दीवानः] १ पगली, बावली, विक्षिप्ता।

रू०भे०—दिवांणी, दिवांनी।

२ देखो 'दिवांणी' (रू.भे.)

दीवांनौ–वि० [फा० दीवानः] (स्त्री० दीवानी) १ पागल, विक्षिप्त. २ उन्मत्त. ३ मस्त। उ०—दीवांनौ कही जिण निमित देणौ कियौ थौ उण ही नूं जे देवौ।—नी.प्र.

रू०भे०—दिवांणौ, दीवांणौ।

अल्पा०—दीवांणियौ।

दीवाड़—देखो 'दीवाड' (रू.भे.)

दीवाझारी–सं०स्त्री० [देश०] जल पात्र। उ०—सोवन चौकी सोवटा, पासावळि नवि रंग। दीवाझारी गाळ मसूरी, उभउ सीसा अति चंग।—ढो.मा.

दीवाटड़ी–सं०स्त्री०—मिट्टी का दीप।

दीवाड–वि० [सं० दा] देने वाला, दातार। उ०—अवरां नइ दीजइ उदियारण, तइ ईसर तणइ नहीं काइ तोट। बहुनांमी दीवाड बहूळी, चढिया वींद दमांमे चोट।—महादेव पारवती री वेलि

रू०भे०—दीवाड़।

दीवाधरी–वि० [सं० दीपधारिन् या दीपकधारिणी] दीपक थामने वाली, दीपक रखने वाली, दीपकधारिणी। उ०—मुख जोवइ दीवाधरी, पाछउ करइ पलाह। मारू दीठी सास विण, मोटी मेल्हइ धाह।
—ढो.मा.

दीवार, दीवाल–सं०स्त्री० [फा० दीवार] १ मकान आदि बनाने अथवा किसी स्थान को घेरने के निमित्त पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि को चुन कर उठाया हुआ परदा, भींत. २ किसी वस्तु अथवा स्थान का घेरा (प्रायः किनारे का) जो ऊपर उठा हो।

रू०भे०—दवाल, दिवार, दिवाल।

दीवाळी–सं०स्त्री० [सं० दीप+अवलि] पूर्णिमान्त मास के अनुसार कार्तिक की अमावस्या तथा अमान्त मास के अनुसार आश्विन की अमावस्या को मनाया जाने वाला शारदीय पर्व जिसमें सायंकाल को दीपक जला कर घर में, बाहर तथा छत पर पंक्तिबद्ध रखे जाते हैं और भवनों में लक्ष्मी पूजन किया जाता है।

वि०वि०—यह पर्व प्रदोषकाल व्यापिनी अमावस्या को मनाया जाता है। यदि अमावस्या, चतुर्दशी और दूसरे दिन भी प्रदोष काल में व्याप्त हो तो दूसरे दिन दीपावली मनाई जाती है। परन्तु यदि चतुर्दशी के प्रदोष काल में अमावस्या व्याप्त है और अमावस्या के दिन तिथि साढे तीन पहर से अधिक है तथा प्रतिपदा वृद्धि गामिनी है तो अमावस्या के प्रदोष में प्रतिपदा के रहते हुए भी दीपावली मनाई जाती है और यदि चतुर्दशी के दिन में अमावस्या आ जाय तथा अमावस्या साढे तीन प्रहर से पूर्व ही समाप्त हो जाय तो फिर दीपावली चतुर्दशी को मनाई जायगी।

यदि चतुर्दशी के प्रदोष में अमावस्या हो और अमावस्या के दिन अमावस्या साढे तीन प्रहर की हो तो भी प्रदोष आसन्न होने से दीपावली अमावस्या को ही मनाई जायगी।

यह त्योहार राजस्थान में तीन दिन मनाया जाता है। प्रथम दिवस दीपावली के एक दिन पूर्व आरंभ होता है। इस दिन को राजस्थान में 'कांणी दीवाळी' नाम से पुकारते हैं। इस दिन मकानों में द्वार के एक पार्श्व पर एक-एक दीपक रखा जाता है। दूसरा दिन 'रांणी दीवाळी' के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन भवनों में दीपकों की पंक्ति यथास्थान चारों ओर लगा दी जाती है जिससे भवन जगमगा

उठता है। तीसरे दिन लोग परस्पर एक-दूसरे के भवन पर मुबारिकवाद देने को जाते हैं। इस दिन को 'रामासांमा' भी कहते हैं। चतुर्थ दिन दवात पूजा करके लोग यथापूर्व अपने अपने कार्य पर लग जाते हैं।

उ०—१ काय अमावस रैंण प्रसंसा कीज ही। दीवाळी सुखदाय प्रभा दरसीज ही।—वां.दा.

उ०—२ काठो कुरळातां काती निस काळी। होळी हीयैं में दांतां दीवाळी। सांमू सीयाळो साकी सरसायो। वाकी वचियां नैं डाकी दरसायो।—ऊ.का.

मुहा०—दिन धोळै दीवाळी करणी (धोळै दिन दीवाळी करणी)—अनहोनी बात करनी।

रू०भे०—दियाळी, दिवाळी।

अल्पा०—दीवाळो।

दीवाळीएल(हेल)—सं०स्त्री० [देश०] लड़की के विवाहोपरान्त सीख देने के बाद वर पक्ष वालों को पुनः निमंत्रित कर के दिया जाने वाला भोज (श्रीमाली ब्राह्मण)

वि०वि०—यह भोज विवाह के साल दो साल बाद भी दिया जा सकता है।

रू०भे०—दिग्राळीएल(हेल), दियाळीएल(हेल), दिवाळीएल(हेल), दीग्राळीएल(हेल), दीयाळीएल(हेल)।

दीवाळो—१ देखो 'दीवाळी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—माछंदर वाळो सिधां सिघाळो, बूढो बाळो जुग बाळो। जीतो जम जाळो जगत निराळो, हुवो उजाळो दीवाळो।—पा.प्र.

२ देखो 'देवाळो' (रू.भे.) उ०—भूपति टोटां में दीवाळा भिळिया, मोटां मोटां रा कुळ मगतां मिळिया। वांधै गांठड़ियां वड़ियां चग वाळै, राली गूदड़ ले कांधै पर राळै।—ऊ.का.

दीविय—देखो 'दीवी' (रू.भे.) उ०—चमरी जिम चळ लखमीय विखमीय विखय नी वात। नारीय नेह विण दीविय जोदिय बहु उपघांत।—नेमिनाथ फागु

दीवी—सं०स्त्री० [सं० दीपिका] लकड़ी या धातु का बना वह उपकरण जिसमें दीपक जलाया जाता है अथवा जिस पर दीपक रखा जाता है। उ०—जे राजा रांम म्हारै कन्है आय वैठे जिण वखतां हूं दीवी वोहडाय पीलसोत मंगाऊं तिण वखतां मांही थां जाहिर होय कन्है आय पकड़ लीज्यो।—जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

वि०वि०—यह उपकरण कई प्रकार का होता है। एक तो लम्बा डंडे के समान होता है जिसके ऊपर दीपक रखा जाता है अथवा ऊपर की कटोरी में दीपक जलाया जाता है। यह प्रायः मंदिरों या वैभवशाली घरों में होता है। दूसरा जो साधारण घरों में पाया जाता है वह लोहे की पत्तियों का चौड़ा उपकरण होता है जिसे दीवार पर लटकाया जा सकता है। इसमें नीचे की ओर एक बड़ा दीपक लगा रहता है जिसमें दीपक जलाया जाता है तथा दूसरी पंक्तियों पर भी दीपकों की पंक्तियां लगी रहती हैं। विशेष अवसरों पर इसके सारे दीपक जलाये जा सकते हैं।

२ पलीता, मशाल. ३ देखो 'दीपक' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—दीविय।

अल्पा०—दिवली, दीवली।

भू०का०कृ०—प्रदान की, दी। उ०—१ अबै वा जायगा म्हारी दीवी रहसी थांहरै कनै कोई न लेसी।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ वडारण कन्है ही वैठी थी सो वडो दिलासा दीवी। पवन करणे नूं लागी।—कुंवरसी सांखला री वारता

दीवीझाड—सं०पु०—झाड़ के आकार का रोशनी करने का सामान जो छत में लटकाया जाता है। उ०—सगडी सूकडी वाळिइ, अमरतणा ऊंबाड। चंपेली चूआ बळइ, दीपति दीवीझाड।—मा.कां.प्र.

दीवेल—देखो 'दीवेल' (रू.भे.)

दीवो—देखो 'दीपक' (डि.को.) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—दह दिसि दीवा दीपया, चिहुं दिसि मंगळ च्यारि। कामिनि 'जीजो' जंपती, जगदंवा जयकार।—मा.कां.प्र.

मुहा०—१ दांतां रा दीवा करणा—दांत निकालना, व्यर्थ हँसना.

२ दीवा तळै अंधारो, दीवा नीचै अंधारो, दीवा हेटै अंधारो—दीपक के नीचे अंधेरा रहता है। बहुत अच्छाइयों के साथ थोड़ी बुराई भी रहती है जिसका पता तक नहीं रहता. ३ दीवै वाट चढ़णी—संध्या समय, संध्या होना. ४ दीवं वाट चढ़ियां—संध्या समय होने पर.

५ दीवो जळणो—सन्ध्या समय होना. ६ दीवो जळाणो—दिवाला निकालना. ७ दीवो ठंडो होणो—किसी के मरने से उसके कुल में अंधकार छा जाना. ८ दीवो वडो करणो—दीपक बुझाना. ९ दीवो वडो होणो—दीपक बुझना। देखो 'दीवो ठंडो होणो'. १० दीवो हँसणो—दीपक की बत्ती से गुल या फूल झड़ना। दीपक की जलती हुई बत्ती में चमकते हुए गोल-गोल रवे दिखाई देना (इससे घर में प्रतिष्ठित मेहमान आने, विवाह होने अथवा लड़का जन्मने आदि के शुभ शकुन समझे जाते हैं।)

दीवो दीवो—देखो 'देणो, देवो' (रू.भे.) उ०—दादू दीया है भला, दीया करो सब कोय। घर में धरा न पाइये, जे कर दिया न होय।

—दादू वांणी

दीस—सं०पु० [सं० दिवस] १ दिन, वासर। उ०—१ सिंघ सकळ पैसारो कोन, गोरेविण सखरी देसना दीन। सवत पनरेसे पचवीस, वदी वैसाख पंचमि सुभ दीस।—ऐ.जै.का सं.

उ०—२ आखु दीस तुमनइ संभारइ, करइ तुम गुणग्रांम रे। सिउं कहूं घणउं कदंव ! तुमनइ ? न वीसारिउं नांम रे।

—नळ-दवदंती रास

२ सूर्य, रवि। उ०—१ जउ वैस्वांनर ताढउ थाइ, पस्चिम ऊगइ दीस। नारायण टळतउ कान्हडदे, कहि न नांमइ सीस।—कां.दे.प्र.

उ०—२ एतइ अतिरथि सारथि आवइ, करण तणूं कुळ राउ जणावइ। मई गंगा ऊगमतइ दीस, लाधी रतनभरी मंजूस।—पं.पं.च.

दीसणौ, दीसबौ—क्रि०अ० [सं० दृश्] दिखाई देना, दृष्टिगोचर होना, दीखना। उ०—ऊंधा चूंधा कर फेरा उळझावै, वनड़ी वनड़ी वर मनड़ो मुरझावै। रस में वेरस बस रागांरळ रोसैं, दुलहरिण दुलहै नै दावानळ दीसै।—ऊ.का.

दीसणहार, हारौ (हारी), दीसणियौ—वि०।

दीसिग्रोड़ो, दीसियोड़ो, दीस्योड़ो—भू०का०कृ०।

दीसीजणौ, दीसीजबौ—भाव वा०।

दीहणौ, दीहबौ—रू०भे०।

दीसा—क्रि०वि—१ लिए। उ०—इतरै में नायक सुजांण कह्यौ—बापजी, महाराज कुंवार हाथी दीसा फुरमावै छै। ताहरां हाथी मंगाय नजर कियौ।—पलक दरियाव री वात

२ देखो 'दसा' (रू.भे.) ३ देखो 'दिसा' (रू.भे.)

दीसियोड़ो—भू०का०कृ०—दृष्टिगोचर हुवा हुआ, नजर आया हुआ। (स्त्री० दीसियोड़ी)

दीसी—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—मन-में वडी सूग आई। वो आप-रै भायलं-रै घर दीसी टुरियो।—वरसगांठ

दीसोटौ, दीसोटौ—देखो 'देसोटौ' (रू.भे.)

दीह—सं०पु० [सं० दिवस, प्रा० दिवह दिग्रस, दिग्रह=दीह] १ सूर्य। उ०—१ दीह गयउ डर डंवरे, नीले नीझरणेहि। काली जाया करहला, बोल्यउ किसे गुणेहि।—ढो.मा.

उ०—२ गुघळियो तोइ गंगजळ, खांकळियो तोइ दीह। खरो विखाती 'खीमरो', सांकळियो तोइ सीह।—अज्ञात

२ देखो 'दिवस' (रू.भे.) उ०—१ सयणां, पांखां प्रेम की, तइं अब पहिरी तात। नयण कुरंगउ ज्युं बहइ, लागइ दीहं नइं रात।

—ढो.मा.

उ०—२ कहियौ नृप कारिज सिध कीजै। दत वर मूझ पदमणी दीजै। वदै सिद्ध नृप विसवावीसां। पदमण आंणू दीह पचीसां।

—सू.प्र.

उ०—३ जो नह आवै करण जुध, सुण वोलावी सीह। दाह हुवै नह दहण सूं, दिनकर हुवै न दीह।—बां.दा.

३ देखो 'दीरघ' (रू.भे.) उ०—१ लघु दीरघ दीरघ लघु, पढ़ियां सुधरै छंद। दीह लघु लघु दीह करि, पढ़ि कविराज अनंत।

—र.ज.प्र.

उ०—२ ह्रस्व दीह संगोर चो, नेम नहीं निरनाह। मुर ढळा सो मंछ कहि, तवै पंखाळो ताह।—र.रू.

उ०—३ दासरथी लिखमरण सुत दसरथ, दोऊ सुणै सिधारै दसरथ। दीह उचाटी कीधे दसरथ, दीधो प्रांण पछाड़ी दसरथ।—र.रू.

४ देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—दोख निज दीह न दीसै रे, रसा भवरां पर रीसै रे। वात निज हाथ विगाड़ी रे, आई सोइ पांत अगाड़ी रे।—ऊ.का.

दीहड़—देखो 'दिवस' (मह., रू.भे.) उ०—मा दीहड़ मद मत्ती छत्र चमर छत्ती। मा छत्र चमर छत्ती। जोवत जोति जगत्ती भेळी भगवत्ती।—मे.म.

दीहड़उ, दीहड़ो, दीहडउ, दीहडो—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ आजूणउ घन दीहड़उ, साहिब-कउ मुख दिट्ठ। माथा भार उळथ्थियउ, आंख्यां अमी पयट्ठ।—ढो.मा.

उ०—२ मरदां खाजो खरचजो, मती लगाजो वार। पांचां सातां दीहड़ां, है जिव जावणहार।—अज्ञात

उ०—३ हिळ मिळ सब सूं हालणौ, ग्रहणौ आतम ग्यांन। दुनियां में दस दीहड़ा, माढू तू मिजमांन।—बां.दा.

उ०—४ ए वाड़ी, ए बावड़ी, ए सर-केरी पाळ। वै साजण, वै दीहड़ा, रही संभाळ संभाळ।—ढो.मा.

दीहणौ, दीहबौ—देखो दीसणौ, दीसबौ' (रू.भे.)

दीहपत, दीहपति, दीहपती—देखो 'दिवसपति' (रू.भे.)

उ०—अपछरा थां हूर तन री आंणियौ, दीहपत अेह कर न्याव दीधौ। विहड़ खंड हुतो जोड़ियौ तन, विधाता कमंध जग जीवतां संभ कीधौ।—गोरधन गाडण

दीहर—देखो 'दीरघ' (रू.भे.) उ०—नीर निरक्षिय नीरज नीरज हावऊं केमु। टाळइं ए केलीहर दीहर खळ जिम खेमु।

—नेमिनाथ फागु

दीहाउ, दीहाऊ—देखो 'दीरघायु' (रू.भे.) (जैन)

दीहाड़ी—सं०पु० [सं० दिवस] दिन, वासर। उ०—आहेड़ जमरांण डांण मंडै दीहाड़ी। सरकम वंध संधिया, चाप आवरदा चाडी।—ज.खि.

क्रि०वि०—नित्य, प्रति दिन। उ०—होळी खंडाहळां रहै दोळी दीहाड़ी। अरजण लगी आंण जांण खंडी बन वाड़ी।—रा.रू.

रू०भे०—दिहाड़ि, दिहाड़ी, दिहाडि, दिहाडी, दीहाडी।

दीहाड़ो, दीहाडो—देखो 'दिवस' (अल्पा., (रू.भे.)

उ०—१ धिन दीहाड़ो, धिन घड़ी, धिन वेळा, धिन वास। नयणे सयण निहारिया, पूरी मन री आस।—अज्ञात

उ०—२ आरंभियो सोइ करै बाथ गिरमेर उपाड़ै। आंणै माल अवंब करै धमचक दीहाड़ै।—राव रिणमल री वात

दीहि, दीहु, दीहूं, दीहू—देखो 'दिवस' (रू.भे.)

उ०—१ युद्ध सत्रि जिम राउ जि मंत्रइ। एक दीहि भड कोडि निमंत्रइ।—विराट पर्व

उ०—२ कालि चऊदसि दीहु तुम्हें रूडइं जोइजउ, एउ दुरयोधनु सीहु आइ उपाइं मारिसिए।—पं.पं.च.

उ०—३ दिहाडु दीहू घणा रहइ, राति न व्याही रांड। जिम जिम तेडूं नींद्र-नइं, तिम तिम जाई मांड।—मा.कां.प्र.

दीहौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ भोळा प्रांणी रांम भज, तूं तज झोड़ तमांम। दीहा छेल्है देख रे, केसो हूंता कांम।—र.ज.प्र.

उ०—२ यरां जैता जंगां अडर, यक-रंगां जग अखै। सको गावो जीहा अवस, निस-दीहा भज सखै।—र.ज.प्र.

दुंकारव-सं०पु०—दहाड़। उ०—दुंकारव करतो, वाघ महा विकराळ। नहरां अति तीक्षण, जिम करवत दंताळ पुछा, छोट करतो, फदक त्यैं तीजी फाळ, प्रभु नांम प्रसादैं, सींह भगैं ज्यूं स्याळ।—ध.व ग्रं.

दुंग-सं०स्त्री० [देश०] चिनगारी। उ०—१ कै काकोदर चंप तैं फण फैल वणाया। सोर किधौं सावात मैं दव दुंग मिळाया।—वं.भा.

उ०—२ सर्फ 'सवळेस' 'अजो' रिण संग। उभै किर केहर पाखर अंग। लहै किर दुंग सिळग्गिय लाय। वडै वळ वेल गयै लग वाय।

—रा.रू.

रू०भे०—दूंग।

दुंडदुंडी-सं०स्त्री० (अनु०) ढोल से मिलता जुलता एक प्रकार का वाद्य। उ०—पंचइ पंडव पय पणमंति, अतिथिदांनु ते मुनिवर दिंत। वाजी दुंदुहि अनु दुंडदुंडो, अंबर हूती वाचा पडी।—पं.पं.च.

रू०भे०—दुड़दुड़ी, दुडदडी, दुडदुडी, दुडवडी।

दुंद-सं०पु० [सं० द्वन्द्व] १ युद्ध (अ.मा.) उ—१ करै रीफ इम कमंध, सूर ऊगतै दळ सब्बळ। अमरचंद उणवार, दुंद कीधौ दखिणी दळ।

—सू.प्र.

उ०—२ मेड़तिया महाराज दळ, किया मुदै करतार। दुंद अमंदी सालुळै, त्यां हूंदी तरवार।—रा.रू.

२ उपद्रव, उत्पात, विद्रोह। उ०—१ आगरै गढ़ उणवार, ऊठियौ दुंद उदार। धर छत्र बहसै धांम, निज 'नेकसेरह' नांम।—सू.प्र.

उ०—२ दुंद मिटावण कारणैं, यां लिखियो 'अवरंग'। जो मांगै सोई दियो, लागै हाथ दुरंग।—रा.रू.

३ कलह. ४ गुप्त बात, भेद की बात, रहस्य. ५ युग्म, जोड़ा. ६ दो आदमियों की लड़ाई. ७ 'और' आदि संयोजक पदों का लोप कर के बनाया जाने वाला एक प्रकार का समास जिसमें मिलने वाले सब पद प्रधान रहते हैं और वे एक ही क्रिया के लिये प्रयुक्त होते हैं। जैसे रात-दिन कांम करो, हाथ-पांव बांधो, रोटी-दाळ खाओ। इनमें 'और' का लोप हो रहा है—जैसे रात और दिन कांम करो, हाथ और पांव बांधो, रोटी और दाळ खाओ।

रू०भे०—दंद, दूंद, द्वंद, द्वंद्व, द्वंद्वर, दंध।

अल्पा०—दंदौ।

८ देखो 'दुदुभी' (मह., रू.भे.)

दुंदभ, दुंदभि, दुंदभी—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.) उ०—१ डहंत केलि डाळयं, उपंति वंद्रवाळयं। वहंत दुंदभं वयं, जपंत देव जैजयं।

—सू.प्र.

उ०—२ वेदौ द्वारि दुंदभ वजि, विमळ पौहप देवै वरखि।

—रांमरासौ

दुंदलौ—देखो 'धूंधाळौ' (रू.भे.) उ०—तिहां वैठा बत्रीसलक्षण पुरुस दुंदला फुंदला, जाकजमाळा मुंछाळा केई जमाई केई साळा।—व.स.

दुंदव—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.)

दुंदाळ-सं०स्त्री०—१ दुनाळी बंदूक। उ०—नर लीध कर दुंदाळ, काळांन के अंतकाळ। सज कमर भैरुसींघ, घर रूप मुरघर धींग।

—पे.रू.

२ देखो 'धूंधाळौ' (मह., रू.भे.) उ०—गणपति गोरू गज वयण, अेक दंत दुंदाळ। आसनि तु उंदरि भला, युगति जनोई व्याळ।

—मा.कां.प्र.

दुंदाळौ—देखो 'धूंधाळौ' (रू.भे.) उ०—तिहां वइठा बत्रीस लक्षण पुरुस फांदाळा, फुंदाळा, दुंदाळा, भाकभमाळा, मुंहाळा।--वं.स.

दुंदुभ, दुंदुभि, दुंदुभी-सं०स्त्री० [सं० दुंदुभि] १ नगाड़ा, धौंसा। उ०—कुमार प्रिथ्वीराज जीत रा दुंदुभि घुराय खेत सुधाय कन्ह-कन्ह गोइंदराज, प्रसंगराज, पहाड़राज, लंगरीराज प्रमुख घायलां नूं निजांन चढ़ाय गिरिनार मुकांम दीधौ।—वं.भा.

२ एक राक्षस का नाम जिसे वालि ने मारा था।

वि०वि०—वालि ने इस राक्षस को मार कर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था। इस पर मतंग ऋषि ने शाप दिया था जिसके कारण बालि उस पर्वत के पास नहीं जा सकता था। बालि से वैर हो जाने पर उसके अनुज सुग्रीव ने इसी पर्वत पर निवास किया था।

रू०भे०—दंदभ, दंदव, दंधभ, दुंदभ, दुंदभि, दुंदभी, दुंदव, दुंदुभ, दुंदुभि, दुंदुहि, दुंधभी, दुंधुवी, दुधुभि, दुधुभी।

मह०—दुंद।

दुंदुमार-सं०पु० [सं० धुंधुमार] राजा त्रिशंकु का पुत्र।

रू०भे०—दुंधमार।

दुंदुह, दुदुहि-सं०पु० [सं० डुंडभ] १ पानी का सांप, बिना विष का सांप (डि.को.)

२ देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.) उ०—जनममहोछवु सुर करइं, नाचइं अप-छरवाळ। दुंदुहि वाजइ गयणयले, धरणिहिं ताल कंसाल।

—पं.पं.च.

रू०भे०—दुदूह।

दुंधभी—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.) उ०—स्रोण चंडी पयाळां नवालां ग्रीध भकै मांस, दुंधभी दुसालां चालां मुसालां जैं दीठ। दुभाळां वलाळां भाळां अचाळां दखणी दळां, रूक भालां जंजाळां गैढ़ाळां मातौ रीठ।

—पहाड़खां आढ़ौ

दुंधमार—देखो 'दुंदुमार' (रू.भे.)

दुंधु-सं०पु०—मधु दैत्य का एक पुत्र।

दुंधुवी—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.) उ०—महोख मोख तंगितारगंत्रिका गुरैं नहीं। महांग अंध धुंध कंध दुंधुवी दुरैं नहीं।—ऊ.का.

दुंब-सं०पु० [फा० दुंबः] एक प्रकार का मेंढ़ा या मेष जिसकी पूंछ पर चर्वी की वड़ी चकती सी होती है। मेद पुच्छ।

उ०—उभै दुंब आचरै एक करि कंब कवावे। चंपे चंगुल ग्रीव तजै दुरजीव सितावे।—रा.रू.

रू०भे०—दुंबी।

अल्पा०—दुंबलियौ।

दुंबलियो—देखो 'दुंब' (अल्पा., रू.भे.)
दुंबायत-सं०पु०—वह भूमिपति जो सरकार में भूमि के उपभोग के उपक्रम में कुछ निश्चित रकम देता हो।
दुंबी—देखो 'दुंब' (रू.भे.)
यौ०—दुंबी-घेटी।
दुंबो-सं०पु० [देश०] १ सामन्तों द्वारा अपने बाहुबल से अधिकार में की हुई भूमि का राज्य सरकार को दिया जाने वाला निश्चित कर. २ लूट के माल में से निश्चित रकम जो लुटेरों द्वारा बादशाह को दी जाती थी। ३ टीवा, भीडा।
दुंहु-वि० [सं० द्वि] दोनों।
दु-सं०पु० [सं० द्यु] १ दिन, दिवस. २ पुत्र (अ.मा.) ३ हाथ. ४ हाथी. ५ सूंड. ६ दुख (एका.)
वि०—१ दरिद्र. २ प्रचंड. ३ प्रधान (एका.) ४ दो।
उ०—२ उपाड़ बंधाड़ समंदर ओड। कवी सम नील जकै दु करोड़। —ह.र.
उ०—३ वडी मठोठ ते वहै, दु होठ दंत तैं दबै।—ऊ.का.
दुअगम-वि०—कठिन।
दुअट्ठ—देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—वळट्ठ दुअट्ठ हठाळ बंगाळ, चकरथा इसा चालिया काळ चाळ।—वचनिका
दुअसपाह, दुअसपौ—देखो 'दोसापो' (रू.भे.)
उ०—एक हजार दुअसपाह।—नैणसी
दुआ-सं०स्त्री० [अ०] प्रार्थना, विनती, याचना। उ०—दुआ सो विनती दरगाह प्रभू री मांही अपणै कांम अरथ री चाहना नूं जिण राजा बादसाह नूं कूंची विनती री हाथ आवै। विनती प्रभू सही मांनै। —नी.प्र.
दुआइती—देखो 'दवायती' (रू.भे.) उ०—थांनै माहरी दुआइती है सो थांरा ससतर भलांई वाहयलो अनै औ हूं एकलो थांरै सांमनै आय नै खड़ो हूं।—वी.स.टी.
दुआई—१ देखो 'दवा' (१, २) (रू.भे.) २ देखो 'दुहाई' (रू.भे.) ३ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)
दुआग—देखो 'दुहाग' (रू.भे.)
दुआगण—देखो 'दुहागण' (रू.भे.)
दुआगोई-सं०स्त्री० [अ०+फा०] प्रार्थना करने की क्रिया, कहने का ढंग। उ०—भांति दुआगोई री दोय तीन बचन इणां रा उत्तम स्वभावां रौ वयांन कर लिखूं।—नी.प्र.
दुआती—देखो 'दवायती' (रू.भे.)
दुआदस—देखो 'द्वादस' (रू.भे.)
दुआदसी—देखो 'द्वादसी' (रू.भे.)
दुआदसौ—देखो 'द्वादसौ' (रू.भे.)
दुआपुर—देखो 'द्वापर' (रू.भे.) उ०—देसल सुत चिति रीति दुआपुर दाखणौं। राजस लाज अजाद खत्री ध्रम रक्खणौ।—ल.पि.
दुआर—देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—वधाई वाजा राज दुआर। —रांमरासौ
दुआरामती—देखो 'द्वारामती' (रू.भे.) उ०—सम्मति रा किना ए सुहिणी, आयौ कि हूं अमरावती। जाइ पूछियौ तिण इमि जांणियौ, देव सु आ दुआरामती।—वेलि.
दुआरी—१ देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—इम विमासी मनह मझारि पुहतां आहड नयर दुआरि। देखी नयर तणू मंडांण ते त्रिन्हिइं रंजिआं सुजांण।—विद्याविलास पवाडउ
२ देखो 'दूवारी' (रू.भे.)
दुआळी-सं०स्त्री० [फा० द्वाल] चमड़े का वह तस्मा जिससे कसेरे सिकलीगर सान और बढ़ई खराद घुमाते हैं।
दुआळो-सं०पु०—१ लकड़ी का एक बेलन जिसे सुनहरी छपी हुई छींटों के छापों को बैठाने के लिये फेरते हैं. २ देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.) ३ देखो 'द्वालौ' (रू.भे.)
दुइंद्रिय—देखो 'द्विइंद्रिय' (रू.भे.) (जैन)
दुइ-वि० [सं० द्वि] दो। उ०—साल्हकुमार विलसइ सदा, कांमिण सुगुण सुगात। माळवणी नूं एक निस, मारवणी दुइ रात।—ढो.मा.
रू०भे०—दुई।
दुइज—देखो 'दूज' (रू.भे.)
दुइण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—सुरे सांतरस उदभुत रस किआ। दुइणां करुणा रस किआ।—वचनिका
दुई—१ देखो 'द्वैत' (रू.भे.) उ०—दादू दुई दरोग लोग को भावै, सांई साच पियारा। कौन पंथ हम चलैं कहौ धू, साधो करो विचारा। —दादू वांणी
२ देखो 'दुइ' (रू.भे.) उ०—विराट विसाळ निपाविय व्रक्ख, दुई फळ जेण किया सुख दुक्ख।—ह.र.
दुग्रै-वि० [सं० द्वि, द्वै] उभय, दोनों। उ०—केहरी तणा जमरांण मचतै कंदळि, दुग्रै कर जोड़ियां खड़ी दोहां। पुकारै जवांनी, नेस दिस पधारो, लाजि आखैं, हमैं वाजि लोहां।—लिखमीदास व्यास
दुश्रो-सं०पु० [सं० द्वि] १ दो का अंक. २ दो की संख्या।
[सं० द्वितीय] ३ वह व्यक्ति जो अपने किसी पूर्वज की तुलना में समान गुणों वाला हो। उ०—१ घणा थटां वदाकर नागपुर घेर रे, सांम ध्रोहां मथै खेर रे सार। दुआ 'वगतेस' थांवी खंवो देर रे, धरा समसेर रै जोर छत्रधार।—रतनजी बोगसौ
उ०—२ जग अवलंब खंव सतजुग रा, दिवपुर वसतां 'सिव' दुआ। पांच हजार वरस प्रोछत रा, हमैं सपूरण आज हुआ। —रांमलाल बारहठ
४ देखो 'दूवौ' (रू.भे.) उ०—१ रांणी दुश्रो दीधौ।—वेलि टी.
उ०—२ वाजा चौसर वाजिया, जस प्रगटै जैकार। दीन्हौ कूरम्मां दुश्रौ, 'अभो' हुओ असवार।—रा.रू.
वि०—द्वितीय, दूसरा। उ०—सत द्वीप नवै खंड भूम सरै, कुण 'पाल' तणी नर मींड करै। हिक मींड गोगो चहुंवांण हुवौ, दखजै कुण पावुअ मींड दुश्रौ।—पा.प्र.

रू०भे० —दुवौ, दूग्रौ, दूवौ।

दुकड़हा–वि०—तुच्छ, नीच, कमीना।

दुकड़ियौ—देखो 'विकड़ियौ' (रू.भे.) उ०—इतरा में खवास ग्रांण ग्ररज कीवी—भुंजाई तयार छै, पाटोता विछाया छै। तद सरदार सारा ऊठिया। ऊठतां कही—फकीर साहिब पधारौ! तो फकीर कही वावा हमारे तो इहां ही भेज देवौ। हम तो ग्रंदर नहीं ग्रावं। तद कही भलो वात, विराजिये। ग्राप भींतर गया, जाय पांतियां वैठिया। तद सूरेजी कह्यो—ग्रेक वार तो दुकड़ियौ जाय फकीर साहिव नूं देय ग्रावो।—सूरे खींवे री वारता

दुकड़ौ–सं०पु० [सं० द्वि+कुण्ड+रा०प्र०इयौ] १ तवलों की जोड़ी में एक तवला। २ तबलों से मिलता जुलता एक प्रकार का वाजा जो प्राय: सहनाई के साथ बजाया जाता है। ३ दो दमड़ी, छदाम।
रू०भे०—दुकडौ।

दुकट, दुकट्ट–वि० [सं० दु = खराव, बुरा+कट = शव] भयंकर, विकट।
उ०—देखं तद 'वीरम' कोप दुकट्ट। हमं सुण नार न मांडिय हट्ट।
—गो.रू.

दुकडौ—देखो 'दुकड़ौ' (रू.भे.)

दुकणियौ—देखो 'दूखणौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दुकणी–सं०पु० [सं० द्वि+कण+रा०प्र०ई] एक साथ दो दाने निकालने वाली ज्वार।

दुकर–वि० [सं० दुष्कर] १ कठिन, मुश्किल. २ दुष्ट।
उ०—निज पितु छोडै नीच तुरत छोडै महतारी। निज भ्रम छोडै निलज निळज छोडै निज नारी। भल छोडै निज भ्रात छैल कुळ घर छिटकावै। प्रभु नै छोडै परौ जिकण दिस फेर न जावै। दांम री भांम झेली दुकर भव सारै नै भांडियौ। छिता पर इता गुण छोड दै रांड न छोडै रांडियौ।—ऊ.का.
रू०भे०—दुक्कर।

दुकळ—वि० [सं० द्वि+कलि=युद्ध] १ ग्राततायी, दुष्ट.
२ देखो 'द्विकळ' (रू.भे.)

दुकांतरा—देखो 'दुखांतरा' (रू.भे.)

दुकान–सं०स्त्री० [फा० दुकान] वह स्थान जहां पर विक्रय के लिये रखी हुई वस्तुग्रों को ग्राहक खरीदने के लिये जाते हों, माल विकने का स्थान।
मुहा०—१ दुकांन उठाणी—कारोवार वन्द करना, दुकान वन्द करना. २ दुकांन खोलणी—देखो 'दुकांन मांडणी'. ३ दुकांन चलणी—दुकान में होने वाले व्यवसाय में वृद्धि होना. ४ दुकांन डोडी करणी—दुकान वन्द करना. ५ दुकांन वंद करणी—देखो 'दुकांन डोडी करणी', देखो 'दुकांन उठाणी'. ६ दुकांन मांडणी—दुकांन लगा कर विक्री करना, दुकान जारी करना, दुकान खोलना।

दुकांनदार–सं०पु० [फा० दुकानदार] १ दुकान का सौदा वेचने वाला।
२ दुकान का मालिक।

दुकांनदारी–सं०पु० [फा० दुकानदारी] दुकान पर माल वेचने का काम. विक्री वट्टे या दुकान का काम।
क्रि०प्र०—करणी।

दुकाड़णौ, दुकाड़बौ—देखो 'दुखाणौ, दुखावौ' (रू.भे.)

दुकाड़ियोड़ौ—देखो 'दुखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुकाड़ियोड़ी)

दुकाणौ, दुकाबौ–क्रि०स० [सं० दुःख] १ जलाना, होमना।
२ देखो 'दुखाणौ, दुखावौ' (रू.भे.)
दुकाणहार, हारौ (हारी), दुकाणियौ—वि०।
दुकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दुकाईजणौ, दुकाईजबौ—कर्म वा०।

दुकायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ जलाया हुग्रा, होमा हुग्रा.
२ देखो 'दुखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुकायोड़ी)

दुकार—देखो 'दुत्कार' (रू.भे.) उ०—सूरज ऊगै साहवांण में, नित धाह घलावै। माल ज हंदा जोड्यां, घर वैठौ खावै। 'दला' ग्रर 'देपाळ' कूं दुकार सुणावै। वीरम न्याव न हल्लहो, ग्रनियाव सुहावै।
—वी.मा.

दुकारणौ, दुकारबौ—देखो 'दुत्कारणौ, दुत्कारबौ' (रू.भे.)
दुकारणहार, हारौ (हारी), दुकारणियौ—वि०।
दुकारिग्रोड़ौ, दुकारियोड़ौ, दुकारचोड़ौ—भू०का०कृ०।
दुकारीजणौ, दुकारीजबौ—कर्म वा०।

दुकारियोड़ौ—देखो 'दुत्कारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुकारियोड़ी)

दुकाळ–सं०पु० [सं० दुष्काल] १ दुर्भिक्ष, ग्रकाल।
उ०—धरती मांहे दुकाळ पड़ियौ तरै राठौड़ तेजसिंहजी रै खरची री भीड़ घणी।—राव मालदे री वात
उ०—२ पूंगळ देस दुकाळ थियुं, किणही काळ विसेसि। पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवर चइ देसि।—ढो.मा.

दुकाळी–वि० [सं० दुष्काली] कठिनता से जीवन व्यतीत करने वाला, दुखी।

दुकावणौ, दुकावबौ—देखो 'दुखाणौ, दुखावौ' (रू.भे.)

दुकावियोड़ौ—देखो 'दुखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुकावियोड़ी)

दुक्स्ति– । उ०—लागौ दाव दुक्स्ति लगाई, हटचौ खाय हहरांनी। घवरायौ घोरन कौ घेरचौ, पद नटि कै मदपांणी।—ऊ.का.

दुकूळ–सं०पु० [सं० दुकूल] १ रेशमी वस्त्र।
उ०—महा उचूळ मूळ के दुकूळ देह में नहीं। कहां सुगंध कंध वीचि गंध गेह में नहीं।—ऊ.का.

२ वस्त्र। उ०—१ सीस कलंगी सेहरो, केसर बोळ दुकूळ। कीजै मूझ चलावणौ, मरियौ नावै मूळ।—वी.स.

उ०—२ दरजी फाड़ दुकूळ नूं, सींवै लिए सुधार। इण विध री रचना अठै, जांणै जांणणहार।—बां.दा.

रू०भे०—दकूळ।

दुकेलौ—देखो 'दुक्कौ' (रू.भे.)

दुक्कड़, दुक्कड—१ देखो 'दुक्रत' (रू.भे.) (जैन)

२ देखो 'दुकड़ौ' (मह. रू.भे.)

दुक्कर, दुक्करु—देखो 'दुकर' (रू.भे.) उ०—१ ते आग्या भंग लगी महापाप हुइ। तेह पाप लगी जिन धरम्म गाढ़उ दुक्कर हुइ।
—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—२ माइ भणइ दुक्करु चरणु, तुहु पुणि अइ सुकुमालु। कुमर भणइ दुक्करह विणु, नहु छळियइ कलि काळु।—ऐ.जै.का.सं.

दुक्कार—देखो 'दुत्कार' (रू.भे.)

दुक्काळौ—देखो 'दक्काळौ' (रू.भे.)

दुक्की-संस्त्री० [सं० द्विक्] दो बूटियों वाला ताश का पत्ता।

रू०भे०—दुगी, दुग्गी।

दुक्कौ-वि० [सं० द्विक्] जो अकेला न हो।

रू०भे०—दुकेलौ।

दुक्ख—देखो 'दुख' (रू.भे.) उ०—यौं सज्जण सुख पूरिया, दूर गया सह दुक्ख। दळ नव पल्लव डहडहै, ज्यौं जळ पाया रुक्ख।—रा.रू.

दुक्खित—देखो 'दुखित' (रू.भे.) उ०—ग्रांमि एक अति दरिद्रता करि दुक्खित डोकरी एक हूंती।—तरुणप्रभ

दुक्रत-स०पु० [सं० दुष्कृत] १ पाप (अ.मा.) उ०—प्राग जाय जळ पैस, चिता ऊजळ कर चोखा, वळै मेट अभवास काट सब दक्रत दोखा।
ज.खि.

२ कुकर्म, कुकृत्य। उ०—दिघा कोई धाई दुक्रत दुखादाई दव दहै।
—ऊ.का.

रू०भे०—दुक्कड़, दुक्कड, दुक्रति, दुक्रती, दुक्रिती, दुष्क्रत, दुस्क्रति, दुस्क्रित, दुस्क्रिति, दुस्क्रिती।

दुक्रति, दुक्रती, दुक्रिती-वि० [सं० दुष्कृति] १ पापी. २ कुकर्मी।

३ देखो 'दुक्रत' (रू.भे.) (ह.नां.)

रू०भे०—दुसक्रति, दुस्क्रति।

दुखंड, दुखंडौ-वि० [सं० द्विखण्ड] १ जिसमें दो खण्ड या भाग हों, दो खण्ड का. २ दो मंजिल का (भवन)

दुखंत—१ देखो 'दुस्यंत' (रू.भे.) २ देखो 'दुस्यंत' (रू.भे.)

दुख-सं०पु० [सं० दुःख] प्राणियों की वह अवस्था जिससे वे छुटकारा पाना चाहते हों, वह अवस्था जो प्राणियों की इच्छा के प्रतिकूल हो, सुख का विलोम, कष्ट, तकलीफ (अ मा.) उ०—सारै दुख सहियो-ह, नव ग्रह बांधे नांखिया। रांवण नह रहियो-ह, माथा दस ही मोतिया।
—रायसिंह सांदू

पर्याय०—असुख, आभील, उतपात, कछर, कदन, कस्ट, गहन, वेदना, विधुर, संकट।

मुहा०—१ दुख उठाणौ—देखो 'दुख सहणौ'. २ दुख झेलणौ—देखो 'दुख सहणौ'. ३ दुख देणौ—कष्ट देना, परेशान करना. ४ दुख पड़णौ—आपत्ति आना. ५ दुख पाणौ—कष्ट प्राप्त करना, दुखी होना. ६ दुख भुगतणौ—देखो 'दुख सहणौ'. ७ दुख भोगणौ—देखो 'दुख सहणौ'. ८ दुख में भाग लेणौ—कष्ट या संकट के समय साथ देना. ९ दुख सहणौ—तकलीफ सहन करना, कष्ट भुगतना।

२ पाप (अ.मा.) ३ काला, श्याम* (डिं.को.)

४ तप्त, गरम* (डिं.को.)

रू०भे०—दक्ख, दख, दुक्ख, दुह।

अल्पा०—दुखड़ौ, दूखड़ू।

दुखघाती-वि०—दुखों को मिटाने वाला। उ०—नमौ दंतापाती धरम धुर जाती धव नमौ। नमौ ध्वांतारातौ दळद दुखघाती तव नमौ।
—ऊ.का.

दुखड़ौ-सं०पु० [सं० दुःख+रा०प्र०ड़ौ] १ दुख का वृत्तान्त, दुख का हाल।

क्रि०प्र०—कैणौ, रोवणौ।

२ देखो 'दुख' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ आंख्यां में सुइयां सहूं, सूळी सहूं पचास। औ दुखड़ौ कैसे सहूं, पिव औरां के पास।—लो.गी.

उ०—२ दाधी दुखड़ै री फिरतोड़ी दोरी। गोरै मुखड़ै री फिरतोड़ी गोरी।—ऊ.का.

दुखण—देखो 'दुसण' (रू.भे.)

दुखणखाई-संस्त्री० [सं०दुःख+खाद्] एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा जिसके काटने से बड़ा दर्द होता है।

दुखणियौ—देखो 'दूखणौ' (अल्पा., रू.भे.)

दुखणौ, दुखबौ—देखो 'दूखणौ, दूखवौ' (रू.भे.) उ०—दुखै तौ डांम देवाड़ौ।—भीली कहावत

दुखतर-संस्त्री० [सं० दुस्तर अथवा दुहितृ] बेटी, कन्या (डिं.को.)

दुखतौ-वि० [सं०दुःख+रा०प्र०तौ] दर्द देने वाला, दुखदायी।

उ०—डसां गड़ड़ ओगाज, तोपां विखम दोयणां। दळां भक काज मह वेध दुखतौ। असंभ गजराज अवपती घड़ ऊपरा, बरूथौ मयंद अध-राज 'वखतौ'।—महाराज वखतसिंह रौ गीत

दुखत्यौ-वि०—दुख भोगने वाला, दुखी। उ०—दुखत्या ना वार ने तेवार सारा एक।—भीली कहावत

दुखथळ-सं०पु० [सं० दुःख+स्थल] १ वह स्थान जहां दुख प्राप्त हो.

२ शरीर का वह भाग जहां पर दर्द होता है, पीड़ित स्थान।

दुखद-वि० [सं० दुःखद] कष्ट पहुंचाने वाला, दुखदायी।

दुखदाई—देखो 'दुखदायी' (रू.भे.) उ०—चित विपदा वारिधि पार करन को चाही। अदविच में आती नाव भंवर में आई। दुर-

भागिन को हा दैव भयो दुखदाई, धन पोल प्हूंच्यो धारधूस ले धाई।—ऊ.का.

उ०—हा हा दुखदाई छपना हतियारा।—ऊ.का.

दुखदायक-वि० [सं०] १ कष्ट देने वाला. २ शत्रु (अ.मा., ह.नां.)

दुखदायण-वि०स्त्री० [सं० दुःख+दायिन्] दुख देने वाली, दुखदायक।

उ०—ले खंजर मारग लग्यो, अपड़ वनी आकाय। मो दुखदायण नैं मुदे, झरड़ा तन मत जाय।—पा.प्र.

दुखदायी-वि० [सं०] (स्त्री० दुखदायण) दुख देने वाला।

उ०—विना विचारियौ कियौ कांम निस्चयी दुखदायी होय।

—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—दुखदाई।

दुखपाळ-सं०पु० [सं० दुःख+पाल] सोना (अ.मा.)

दुखम-सं०पु० [सं० दुःख] जैन मतानुसार अवसर्पिणी काल का वह पांचमा काल विभाग जिसमें केवल दुख हो।

रू०भे०—दूसमि।

दुखम-दुख-सं०पु०यौ०—जैन मतानुसार अवसर्पिणी काल का छठवां तथा उत्सर्पिणी काल का प्रथम काल विभाग जिसमें केवल दुख ही दुख हो।

दुखम-सुख-सं०पु०यौ०—जैन मतानुसार अवसर्पिणी काल का चतुर्थ तथा उत्सर्पिणी काल का तृतीय काल विभाग जिसमें दुख के ह्रास के बाद सुख हो।

दुखर—देखो 'दूसण' (५) (रू.भे.) उ०—जुत भारत दसरथ सुत जोपण, खर दुखर असुरां खेंगाळ।—ह.नां.

दुखवारण-वि० [सं० दुःख+वारण] दुखों को मिटाने वाला, दुख दूर करने वाला।

दुखांत-वि० [सं० दुःखांत] जिसका अंत दुख में हो।

दुखांतरा-सं०पु० [सं० दुःखांत्र या अंत्र+दुःख] पेशाव का कठिनता से उतरने का एक रोग विशेष, एक प्रकार का मूत्रकृच्छ्र।

दुखाड़णौ, दुखाड़बौ—देखो 'दुखाणौ, दुखाबौ' (रू.भे.)

दुखाड़णहार, हारौ (हारी), दुखाड़णियौ—वि०।

दुखाड़िओड़ौ, दुखाड़ियोड़ौ, दुखाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दुखाड़ीजणौ, दुखाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दूखणौ, दूखबौ—अक०रू०।

दुखाड़ियोड़ौ—देखो 'दुखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुखाड़ियोड़ी)

दुखाणौ, दुखाबौ-क्रि०स० [सं० दुःख] १ कष्ट पहुंचाना, पीड़ा देना, व्यथित करना. २ किसी के घाव अथवा मर्म स्थान आदि को छू देना, जिससे उसमें पीड़ा हो।

दुखाणहार, हारौ (हारी), दुखाणियौ—वि०।

दुखवाड़णौ, दुखवाड़बौ, दुखवाणौ, दुखवाबौ, दुखवावणौ, दुखवावबौ —प्रे०रू०।

दुखायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दुखाईजणौ, दुखाईजबौ—कर्म वा०।

दूखणौ, दूखबौ—अक०रू०।

दुकाड़णौ, दुकाड़बौ, दुकाणौ, दुकाबौ, दुकावणौ, दुकावबौ, दुखाड़णौ, दुखाड़बौ, दूखावणौ, दूखावबौ, दूखणावणौ, दूखणावबौ, दूखाड़णौ, दूखाड़बौ, दूखाणौ, दूखाबौ, दूखावणौ, दूखावबौ—रू०भे०।

दुखायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कष्ट पहुंचाया हुआ, पीड़ा दिया हुआ, व्यथित किया हुआ. २ किसी के मर्म-स्थान अथवा घाव को छुआ हुआ।

(स्त्री० दुखायोड़ी)

दुखारौ-वि० [सं० दुःख] पीड़ित, दुखी।

दुखावणौ, दुखावबौ—देखो 'दुखाणौ, दुखाबौ' (रू.भे.)

उ०—करसां नैं साख दीवी पण फगत देखण नैं अर मन दुखावण नैं।—रातवासौ

दुखावणहार, हारौ (हारी), दुखावणियौ—वि०।

दुखाविओड़ौ, दुखावियोड़ौ, दुखाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दुखावीजणौ, दुखावीजबौ—कर्म वा०।

दूखणौ, दूखबौ—अक०रू०।

दुखाविओड़ौ—देखो 'दुखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुखावियोड़ी)

दुखिणी—देखो 'दुखिया' (रू.भे.) उ०—नृप नैं मयण सांभरी, कन्या ए वर जोगी रे। अविनय नो फळ जिम लहै, थावै दुखिणी रोगी रे।

—स्रीपाळ रास

दुखित-वि० [सं० दुःखित] जिसे कष्ट हो, पीड़ित।

रू०भे०—दुक्खित।

दुखिया-वि०स्त्री० [सं० दुःखिनी] दुख से पीड़ित (स्त्री०)

उ०—डावया टोडा टोडड़ी, लोप्या नदी बनास। आडावळा उलांघिया, जद धण छोडी आस। ओ उमराव म्हांनै दुखिया कर चाल्या।

—लो.गी.

दुखियारी—देखो 'दुखी' (रू.भे.) उ०—१ द्रोपत दुखियारी-ह, पूकारी अवळापणै। मदती हर म्हारी-ह, करणाकर करस्यो करां।

—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ सुख सूं सूती थी परजा सुखियारी, दुसटी आतां ही करदी दुखियारी। जग में ऊसरियौ खापरियौ जैरी, वाल्हा वीछोडण बापरियौ वैरी।—ऊ.का.

विलो०—सुखियारी।

दुखियारौ-वि० [सं० दुःख] १ कष्ट देने वाला. २ देखो 'दुखी' (रू.भे.)

उ०—घट में ओघट-घाट, घड़ी घड़ी घड़तौ रहां। बैसी कद ओ-बाठ, जिय दुखियारौ हे 'जसा'।—ऊ.का.

(स्त्री० दुखियारण, दुखियारी)

विलो०—सुखियारौ।

दुखियौ—देखो 'दुखी' (अल्पा०, रू.भे.) उ०—दादू दुखिया तब लगें, जब लग नांम न लेहि। तब ही पावन परम सुख, मेरी जोवनि येहि। —दादू बांणी

मुहा०—दुखिया री आंख होणौ—दुखी आँख के समान बरसना, खूब वर्षा होना।

(स्त्री० दुखिया)

विलो०—सुखियौ।

दुखी—वि० [सं० दुःखी] १ जो कष्ट या दुख में हो, जिसे दुख हो। उ०—भाई डूंगरसी भलो, लघु बंधव गुण व्रिंदौ रे। दुखियां दळिद्र भंजणौ, भागचंद कुळचंदो रे।—प.च.चौ.

२ जिसके मन में खेद उत्पन्न हुआ हो, मानसिक कष्ट से पीड़ित, व्यथित. उ०—आखा तीजां घणी अमांमी, सिद्ध जनमियौ संकर स्वांमी। वेद धरम सद सुकत वतायौ, अमल नयौ वेदांत अचायौ। प्रीत नीत गळवांणौ पायौ, खंडन जैन खीचड़ी खायौ। संकर वेगो गयौ सिधाई, परजा दुखी घणी पिछताई।—ऊ.का.

३ बीमार, रोगी. ४ अपाहिज. ५ शत्रु (अ.मा.)

रू०भे०—दखि, दुखारौ, दुखियारौ, दुखियारौ, दुखीयारौ, दुख्यारौ, दुही।

अल्पा०—दुखवियौ, दुखियौ, दुखीलौ।

विलो०—सुखी।

दुखीयारौ—देखो 'दुखी' (रू.भे.)

विलो०—सुखीयारौ।

दुखीलौ—देखो 'दुखी' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० दुखीली)

विलो०—सुखीलौ।

दुखीवंत—वि० [सं० दुःख+वान्] पीड़ित, दुखीं।

उ०—दुखीवंत भू बंदरां रंध्र देखें। पंखी उडुता चक्कवा हंस पेखें। सुरंगां घसे हाथ हूँ हाथ साहे। महा हेमरा धांम आरांम माहे। —सू.प्र.

दुग—देखो 'दुरग' (रू.भे.) उ०—बाप बाप हो! थारा आरंभ पारंभ लागि गढ़ लेवणहार, किना बाप बाप हो! थारा सत तेज अहंकार, राइ, दुग राखणहार।—रा.सा.स.

दुगड़ियौ—सं०पु० [सं० द्विघटिकम्] १ राजा महाराजाओं की जनानी ड्योढ़ी पर रखा नगारा जो प्रायः संध्याकाल में ड्योढ़ी बंद (मंगळ) करने के समय बजाया जाता है तथा प्रातः ड्योढ़ी खुलने पर बजता है. २ किसी मांगलिक कार्य या यात्रादि के आरम्भ करने के लिये वार गणना से निकाला हुआ मुहूर्त (फलित ज्योतिष)

उ०—१ इसड़ी विनय करि आग्या पाय पिंडतां नूं बुलाय दुगड़ियौ महूरत थापियौ।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ भैरव डावी भणें दुगड़ियौ मांन दिरीजै। जो राजा जीमणौ पोहर हेकण ठेहरीजै।—पा.प्र.

वि०वि०—ये संख्या में २४ होते हैं। इनकी गणना सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त तथा सूर्यास्त से सूर्योदय पर्यन्त की जाती है। ये दिन में बारह और रात्रि में भी बारह होते हैं।

प्रत्येक दुघड़िये का समय दिन मान तथा रात्रि मान का बारहवां भाग ($\frac{1}{12}$) तुल्य होता है। अतः बढ़ता-घटता रहता है। दुघड़िये कुल सात होते हैं, जिनके नाम क्रमशः सूर्यादि सात वारों के नाम से प्रसिद्ध हैं।

वराहमिहिराचार्य के समय से होरा गणना प्रसिद्ध है। यही होरा गणना कालान्तर में राजस्थानी में दुघड़िया नाम से प्रसिद्ध हुई है। दैनिक कार्य-सम्पादन हेतु इसका बहुत महत्व है।

रवि आदि वारों के दिन प्रथम दुघड़िया उसी वार के नाम का होता है। फिर क्रमशः छट्ठे छट्ठे वार के नाम से दुघड़िया आता रहता है। (इसमें वह जिसका प्रथम दुघड़िया प्रारम्भ हुआ है गणना में शामिल गिना जाता है)। इस प्रकार दिन का अंतिम अर्थात् बारहवां दुघड़िया उस वार के पूर्व वार का होता है या यों कह सकते हैं कि दिन के प्रथम दुघड़िये से सातवें वार का होता है। फिर सूर्यास्त के समय दिन के अंतिम दुघड़िये से छट्ठा अर्थात् उस वार से पांचवें वार का दुघड़िया रात्रि का प्रथम दुघड़िया होता है फिर क्रमशः छट्ठा छट्ठा आता रहता है। इस प्रकार रात्रि का अंतिम दुघड़िया पूर्व दिन के वार से चौथे वार वाला अर्थात् रात्रि के प्रथम दुघड़िये के पूर्व वार का होता है। फिर आगामी दिन में सूर्योदय के समय से उसी वार का दुघड़िया प्रारम्भ होता है।

उदाहरणार्थ रविवार के दिन सूर्योदय से प्रथम दुघड़िया रवि का और दूसरा उससे छट्ठा अर्थात् शुक्र का, तीसरा उससे छट्ठा बुद्ध का, चौथा बुद्ध से छट्ठा चंद्र का, पांचवां चन्द्र से छट्ठा शनि का, इसी प्रकार छट्ठा गुरु का, सातवां मंगल का, आठवां रवि का, नवां शुक्र का, दशवां बुद्ध का, ग्यारहवां चंद्र का और बारहवां दिन का अंतिम शनि का रहता है। रविवार की रात्रि में प्रथम दुघड़िया शनि से छट्ठा अर्थात् गुरु का, दूसरा मंगल का, तीसरा सूर्य का इसी प्रकार छट्ठे-छट्ठे के अनुसार क्रमशः चौथा शुक्र का, पांचवां बुद्ध का, छट्ठा चंद्र का, सातवां शनि का, आठवां गुरु का, नवां मंगल का, दशवां सूर्य का, ग्यारहवां शुक्र का और अंतिम बारहवां शुक्र से छट्ठा अर्थात् बुद्ध का रहता है और आगामी दिन चन्द्रवार को बुद्ध से छट्ठा चन्द्र का ही प्रथम दुघड़िया आ जाता है।

इष्ट वार से तीसरे वार वाला और पांचवें वार वाला दुघड़िया एक-एक वार तथा दूसरे सब दुघड़िये दो-दो वार आते हैं। आठवां दुघड़िया पुनः वही होता है।

दुघड़िये शुभ और अशुभ दो प्रकार के होते हैं—

शुभ—चंद्र, बुद्ध, गुरु और शुक्र।

अशुभ—सूर्य, मंगल और शनि।

सूर्य का दुघड़िया राज्य सेवा में;

बुद्ध का ज्ञान प्राप्त करने में;

शुक्र का प्रवास में;
मंगल का युद्ध अथवा वाद-विवाद में;
गुरु का विवाह में;
शनि का द्रव्य संग्रह करने में; और
चंद्र का दुघड़िया प्रत्येक कार्य करने में शुभ है।

३ प्रति दिन एक समय किया जाने वाला भोजन जो दो घड़ी दिन अवशेष रहने पर किया जाता है. ४ सूर्यास्त के पहले का दो घड़ी दिन।

रू०भे०—दुघड़ियौ।

यौ०—दुगड़ियौ-मोरत।

दुगड़ी, दुगडी—सं०स्त्री [देश०] एक प्रकार का आभूषण जिसे स्त्रियां हाथ में पहनती हैं।

दुगण—वि० [सं० द्विगुण] दुगुना, द्विगुणा। उ०—पहली छंद प्रबंध में, लघु गुरु दगध अलेप। गण सुभ अण सुभ दुगण गण, सो वरणूं संखेप।—र.रू.

दुगणित, दुगणौ—वि० [सं० द्विगुणित] दुगुना।

रू०भे०—दोगुणौ।

दुगत—देखो 'दुरगति' (रू.भे.)

दुगदुगी—सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार का आभूषण जो गले में पहना जाता है।

दुगध—देखो 'दूध' (रू.भे.) (ह.नां., डिं.को.)

दुगधा—सं०स्त्री० [सं० दुग्धा] १ दूध देने वाली गाय।
उ०—दुगधा कारण फिरै दुखारी, सुरत बसी सुत मांनै हो। चात्रग स्वाति बूंद मन मांही, पीव पीव उकळांणै हो।—मीरां
२ जमीन, भूमि (अ.मा.)

दुगम—सं०पु०—सिंह, शेर (ना.डिं.को.) २ सुअर (ह.नां.)
३ एक प्रकार का घोड़ा जो चलने में रुक-रुक कर चलता हो (शा.हो.)
४ देखो 'दुगांम' (रू.भे.) ५ देखो 'दुरगम' (रू.भे.)
उ०—१ देवपत रूप वैराट थारौ दुगम, अणू मन सेवगां सुगम आवै।—र.ज.प्र.
उ०—२ दरवाजा वणिया दुगम, कीना लोह कपाट। एक एक तें आगळा, थटै सुभट्टां थाट।—वगसीरांम प्रोहित री वात

दुगमौ—सं०पु०—१ सूअर (अ.मा.) २ देखो 'दुगांम' (रू.भे.)
३ देखो 'दुरगम' (रू.भे.)

दुगम्म—१ देखो 'दुगम' (रू.भे.) उ०—१ भड़ पूतारे आपरा, धारै सांम धरम्म। भांण तणौ अस भेळियां, दळ सांवणौ दुगम्म।
—रा.रू.
उ०—२ दळां रोळ दंताळ अैसा दुगम्मं। जमं चालिआ सांमुहा जांणि जम्मं।—वचनिका
२ देखो 'दूरगम' (रू.भे.)

दुगह—देखो 'दूगं' (रू.भे.)

दुगांणी—सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा सिक्का।
उ०—तरै जसवंतजी कह्यौ—'उण मां रावजी रौ दोस कोई नहीं। औ तेजसी रौ दोस। जैतारण रौ धणी लास दुगांणी रै वास्तै रावजी रा हुजदार 'अभा' सरीखा नै क्युं रोकै? थाळी राव री क्युं लै? सारी वात कही।—राव मालदे री वात

दुगांम—वि० [सं० दुर्गम] १ वीर, योद्धा। उ०—१ अै वरियांम निह-स्सिया, दोय घड़ी इक जांम। 'अजवौ' वीठळदास रौ, पड़ियौ खेत दुगांम।—रा.रू.
२ जबरदस्त। उ०—धर पूरब 'सूजो' धणी, दिखणी खरौ दुगांम। साहिजहां 'दारा' सुकर, त्यौं सिरि कोपै तांम।—वचनिका
३ असह्य। उ०—खूंदालम मन खांचियौ, उर संचियौ विरांम। हियै न भावै 'गजन' हर, दुसहां 'अजन' दुगांम।—रा.रू.
४ विकट। उ०—जैतारण सिर आवियौ, 'ऊदा' ले जगरांम। काती क्रसण दवादसी, पुर घेरियौ दुगांम।—रा.रू.
रू०भे०—दुगम, दुगमौ, दुगम्म, दुग्गम, दुग्गमौ।
५ देखो 'दुरगम' (रू.भे.) उ०—दोहूँ भड़ कंदल मांड दुगांम।
—गो.रू.

दुगाय—सं०स्त्री० [सं० दुर्गा] एक देवी का नाम।

दुगाळ—सं०पु० [सं० द्वि+गंड=गल्ल] शीतकाल में मस्ती के साथ ध्वनि करते हुए दोनों गिलाफों से गलसूआ बाहर निकालने वाला ऊँट।
उ०—मद भरै करै आकास मून, रिस भरै चरै ताते सु चून। गूंगला मस्त वोलै दुगाळ, झुकतां सखुनी नुखता सभाळ।—पे.रू.

दुगाह—वि० [सं० दुर्+गाह] जो जीता न जाय, अजय।
उ०—सुत रांम 'रूप' निज दळ सनाह, 'गोरधन' तणौ नाहर दुगाह। मुख एता ऊदा महाबाह, सांधिया वेध सूं पातसाह।—रा.रू.

दुगी—सं०स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष.
२ देखो 'दुक्की' (रू.भे.)

दुगुंदुग—सं०पु० [सं० दोगुन्दक] समृद्धिशाली देव विशेष। उ०—अति स्वच्छ निरमळ वस्त्र मस्तिक चंद्रमंडळ सम श्रिम्र छत्र, कनक दंड चमर, दिव्य आभरण डंवर, इंद्र समांनि देव सपरिवारे ते आयस्त्रिंश इसिई नांमइं दो दुगुदुग देव, ४ लोकपाल, पद्मा सिवा सुलसा अचळ कालिंदी भांणू ए अठ अग्रमहिसि, सोळ सहस्र देवीपरिवृत, १२ सहस्र अभ्यंतर सभा तणा देव, १४ सहस्र माध्यम सभा तणा देव, १६ सहस्रवाह्य सभा तणा देव, ७ कटक।—व.स.

दुगौ—सं०पु० [देश०] प्रारम्भ के दो दांतों वाला, ढाई वर्ष का वैल या भैंसा।

दुगुच्छा—सं०स्त्री० [सं० जुगुप्सा] १ निंदा, बुराई. २ अश्रद्धा, घृणा।
वि०वि०—साहित्य में यह बीभत्स रस का स्थायी भाव है और शांत रस का व्यभिचारी।

दुगं—वि०—१ दो मंजिल वाला. २ दो भाग वाला।
रू०भे०—दुगह।

दुग—देखो 'दुरग' (रू.भे.)

दुगम, दुगमी—१ देखो 'दुगांम' (रू.भे.) २ देखो 'दुरगम' (रू.भे.)
उ०—वडो दुगमी देस जोधं विलूंधो। सुघं अंगद अंतानेर सूंघो।
—सू.प्र.

दुगय—देखो 'दुरगति' (रू.भे.) उ०—वेस न रख कउ पंघं पाउ पारद्धहि प्रणंतउ। चोरी म करि अयांण रखि दुगय जिउ जंतउ।
—पहराज

दुगाह-वि०—दोहरा। उ०—मोडा दुगह मालिया, गाय-र फोगं गाल। भोगं सुंदर भांमणी, मुफत अरोगं माल।—ऊ.का.

दुगी—देखो 'दुक्की' (रू.भे.)

दुघर-वि०—विकट, भयावह, भयंकर। उ०—दुघय वेळा कठण दुहेली, उर धर म्हे अकुळावां। मुरधर घणी मसांण मे'ल नें, पुर घर जाण न पावां।—ऊ.का.
यौ०—दुघर-वेळा।

दुग्धसमुद्र-सं०पु० [सं०] पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक समुद्र, क्षीरसागर।

दुग्धाक्ष-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का नग या पत्थर जिस पर सफेद-सफेद छींटे होते हैं।

दुग्धाब्धि-सं०पु० [सं०] क्षीर समुद्र।

दुघट-सं०पु०—दो धार। उ०—उलट सुलट मिति वट झपट, दुघट तिघट चढ़ पाइ। परख विकट अस गति लगं, नट नटवर उर लाइ।
—रा.रू.

वि०—विकट, जबरदस्त। उ०—परवतां सिरि पंथ लागा, दुघट घट भागा, सूर सूझइ नहीं खेह आगा।—अ. वचनिका

दुघड़ियौ—देखो 'दुगड़ियौ' (रू.भे.) उ०—सुण बांधव विवनौ समर, राव दिया कर रेठ। दिन हूतौ नभ दुघड़ियौ, जूझ रह्या पिड जेठ।
—पा.प्र.

दुड़ंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—सुरांपत इंद्र नै कियौ गजराज सज, दुड़ंद नै जीण सपतास डहियौ। 'कुसळउत' अनै भूरौ दुरंग वस कियौ, व्रखभधुज अनै कर त्रिपुर वहियौ।
—नींबाज ठाकुर अमरसिंह री गीत

दुड़इंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दुड़की-सं०स्त्री० (अनु०) घोड़े के दौड़ने की एक चाल विशेष।
मुहा०—दुड़की दैणी—(किसी कार्य के लिये) तुरन्त भागना, तेज दौड़ना।
रू०भे०—दुलकी, धुड़की।

दुड़णौ, दुड़बौ-क्रि०अ० [देश०] १ ओट में होना, दबकना, छिपना। उ०—सोहे अंगिया ओट, हरी रंग साज में। दुड़िया चकवा दोय, सिवाल समाज में।—वां.दा.
२ देखो 'धुड़णौ, धुड़वौ' (रू.भे.)
दुड़णहार, हारौ (हारी), दुड़णियौ—वि०।
दुड़वाड़णौ, दुड़वाड़बौ, दुड़वाणौ, दुड़वाबौ, दुड़वावणौ, दुड़वाववौ
—प्रे०रू०।
दुड़िओड़ौ, दुड़ियोड़ौ, दुड़योड़ौ—भू०का०कृ०।
दुड़ीजणौ, दुड़ीजबौ—कर्म वा०।

दुड़दुड़ी—देखो 'दुडदुडी' (रू.भे.)

दुड़वड़णौ, दुड़वड़बौ-क्रि०अ० (अनु०) १ भागना, दौड़ना. २ शरीर की थकान मिटाने या आराम पहुंचाने के लिये मुष्टिका से हल्के प्रहार करना।

दुड़वड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दौड़ा हुआ, भागा हुआ. २ मुष्टिका से हल्के प्रहार किया हुआ।
(स्त्री० दुड़वड़ियोड़ी)

दुड़वड़ी, दुड़वुड़ी-सं०स्त्री० (अनु०) थकान मिटाने के लिये अथवा आराम पहुंचाने हेतु मुष्टिका से किसी के शरीर पर किए जाने वाले हल्के प्रहार। उ०—१ ताहरां 'मेलौ' पोढ़ियौ। सिखरौ दुड़बड़ियां देण लागौ ज्यूं 'मेलै' नूं अमल आयौ घोरांणौ।
—ऊदै ऊगमणावत री वात
उ०—२ ग्रीभणि दीयं दुड़बड़ी, समळी चंपै सीस। पंख झपेटां पिउ सुवै, हूं बळिहारी थईस।—हा.झा.
रू०भे०—दुड़वड़ी।

दुड़यंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) (डि.को.)

दुड़वड़ी—१ देखो 'दुंडदुडी' (रू.भे.) २ देखो 'दुड़वड़ी' (रू.भे.)

दुड़िंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—बिळकुळे राज रमणी वदन, निरखै रूप नरयंद री। जांणं विकास प्रांमं जळज, देखि प्रकास दुड़िंद री।—रा.रू.

दुड़ियंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—जोत चंद्र ऊजळी मिटै दुड़ियंद प्रगट्टां। ग्रीखम भाजै गात अंब वरसात उलट्टां।—रा.रू.

दुड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ओट में हुवा हुआ, दुबका हुआ।
२ देखो 'धुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुड़ियोड़ी)

दुड़ी-सं०स्त्री०—स्त्रियों के कलाई पर धारण करने का चांदी या सोने का आभूषण।
रू०भे०—दुडी।

दुचत—देखो 'दुचित' (रू.भे.)

दुचताई-सं०स्त्री० [सं० द्विचित्त+रा०प्र०आई] १ खिन्नता, उदासी। उ०—सोकड़ल्यां चख मांहि करै कड़वाइयां। ते आंसू टपकंत हिए दुचताइयां।—वां.दा.
२ चिन्ता।
रू०भे०—दुचितई, दुचिताई।
विलो०—सुचताई।

दुचतो—देखो 'दुचित' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ दुचतो गई अपसरा घर दिस, सती थई वामंग 'माहेस'। थिरमन प्रसन्न 'दलांणी' थायो, रांणी वर पायो राजेस।—महेसदास कूंपावत रो गीत

उ०—२ आज दांन उमांणी आज सरसत दुचती।
—पहाड़खां आढ़ो

उ०—३ जिके सूरवीर दमंगळ झगड़ा कियां दुचता रहै और जुद्ध में बगतर री जंत कड़ियां जड़ै नहीं, उघाड़ी छाती लड़ै। इसा सूरवीरां में जुद्ध करण वाळो है सखियां म्हारो पति।—वी.स.टी.

(स्त्री० दुचती)

विलो०—सुचतो।

दुचवन-सं०पु० [सं० दुश्च्यवन] इन्द्र (ह.नां.)

दुचाव-सं०पु० [देश] एक प्रकार की घास (शेखावाटी)

दुचित—देखो 'दुचित' (रू.भे.)

विलो०—सुचित।

दुचितो—देखो 'दुचित' (अल्पा., रू.भे.) उ०—तरां लोहार सारा ई दुचिता बैठा। तरै गिरधारी री बेटी बोली—बापजी दुचिता क्यूं बैठा छो।—वीरमदे सोनिगरा री वारता

विलो०—सुचितो।

दुचित-वि० [सं० द्विचित्त] १ खिन्न, उदास (डिं.को.) उ०—प्राग अजोध्या मधुपुरी, ओखामंडळ आद। देखे सुख रहिया दुचित, विचित्र न पूगा वाद।—रा.रू.

२ चिंतित. ३ संदेह, खटका. ४ नाराज।

रू०भे०—दुचत, दुचित, दुच्चित।

अल्पा०—दुचतो, दुचितो, दुचित्तो, दुचित्तौ, दुचीतो।

विलो०—सुचित।

दुचितई, दुचिताई—देखो 'दुचताई' (रू.भे.)

विलो०—सुचितई, सुचिताई।

दुचितो, दुचित्तो, दुचीतो—देखो 'दुचित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ थे जिकां रा वधावा गावो छो तिकां रा सुभाव सूं म्हारा पती रो सुभाव विलक्षण छै—किसो कि दमंगळ (जुद्ध) विनां दुचितो रहै।—वी.स.टी.

उ०—२ जेठी घोड़ो छै सु सिखरै उगमणावत नूं देई। अर रजपूत दुचिता छै सू तूं सुचिता करै। इयै मोहिल सरव दुहविया छै।
—नैणसी

उ०—३ कदै विचारै जे जीवतो ही मुवै री खवर कराऊं यूं करता हालियो आवै छै। सो खरो दुचीतो वहै छै।
—साह रामदत्त री वारता

(स्त्री० दुचिती, दुचिती, दुचीती)

विलो०—सुचितो, सुचित्तो, सुचीतो।

दुच्चित—देखो 'दुचित' (रू.भे.) उ०—देख परी बोली हुय दुच्चित, सती इतो दुख केम सहो। लाखां विचै कंथ हूं लाई, कठै गया छा जरां कहो।—महेसदास कूंपावत रो गीत

दुच्छरा-सं०स्त्री० [सं० द्वि-क्षुरिका] खड्ग, तलवार।

उ०—छरा दुच्छरा मेच्छ ले मह्द छक्कं। हजारां मुहां वाधि व्है वीर हक्कं।—वचनिका

दुछण-सं०पु० [देश] सिंह (डिं.को.)

दुछर-सं०पु०—१ सिंह. (डिं.को.) २ वीर, योद्धा।

उ०—१ मछर घर मंज सुर सत सुजळ माटकां, कर सधर ध्यांन गिरधर अक्रत काटकां। दुछर नर अडर हर हर उचर दाटकां, फाटतां फजर वागो गजर फाटकां।—किसनजी आढ़ो

उ०—२ वरण वर राड़ियां हूर रंभ वड़ वड़ै, खपर धर चोसटी बीर रख खड़खड़ै। फजर हवदां गजां केत खुल फड़फड़ै, जरद ससतर दुछर केण माथै जड़ै।—रावत संग्रांमसिंह रो गीत

(मि० दुवाह)

रू०भे०—दूछर।

मह०—दुछरेल, दूछरल, दूछरेल, दूछरैल।

दुछरेल, दुछरैल—देखो 'दुछर' (मह., रू.भे.)

दुज-सं०पु० [सं० द्विज] १ ब्राह्मण। उ०—वांचै चत्र वेद विरंच वखांण, प्रकासै व्यास अठार पुरांण। खत्री दुज वैस गया सुद्र खोज, हुतो ज हुतो ज हुतो ज हुतो ज।—ह.र.

२ वह जिसे यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार हो. ३ ज्योतिषी।

उ०—कायर घर आंवण करै, पूछै ग्रह दुज पास। स्वरगवास खारो गिणै, सब दिन प्यारो सास।—बां.दा.

४ परशुराम। उ०—१ किधो रव घोर महेम कोदंड। अवै तिरलोक डरचा वळबंड। आयो रिख कोप चवंत अंगार। तज्यो बळ चाप हुओ दुज त्यार।—ह.र.

उ०—२ दुजं दीन व्है आसीरवाद दीधो। क्रपानाथ वंदे विदा ब्रह्म कीधो।—सू.प्र.

५ ब्रहस्पति (अ.मा.) ६ चन्द्रमा (अ.मा., ना.डिं.को.)

७ अण्डज प्राणी. ८ पक्षी (अ.मा.) ९ गिद्धिनी (डिं.को.)

१० दांत (अ.मा.) उ०—वर बर वाजै बंब वहु, वाजै थोजड़-वाढ़। वाजै दुज विह बैरि जा, घर वाजै गळ गाढ़।—रेवतसिंह भाटी

११ भौंरा. १२ सर्प, सांप. १३ चार मात्रा का नाम।

उ०—त्रै दुज गुर कळ चवद तठै। जांणो हाकळ छंद जठै। भव सागर तर रांम भजो। तै विण आंन उपाय तजो।—र.ज.प्र.

१४ देखो 'दूज' (रू.भे.) १५ देखो 'द्विज' (रू.भे.)

रू०भे०—दिज, दुजि, दुज्ज, दुज्जय, दूज, द्विज, द्विज्ज।

अल्पा०—दुज्जड़।

दुजड़-सं०स्त्री०—१ तलवार, खड्ग (डिं.को.)

उ०—१ यां बंधव आळोचियो, जगपती 'चतुरेस'। वंस 'मधकर' ऊधरा, दुजड़ उजागर देस।—रा.रू.

उ०—२ दुजड़ वांण जमदाढ़, सेल दे वाढ़ संवारचा। अणियां धार उपेत, नेतबंध जैत निहारचा।—मे.म.

२ कटार।

रू०भे०—दुजड़ी, दुज्जड़, दूजड़, दूझड़।

दुजड़झल, दुजड़हत, दुजड़हथौ, दुजड़ाहथौ–वि० [रा० दुजड़+सं० हस्त] सुभट, वीर, योद्धा। उ०—१ भलो रांण सगरांम इम अवड़ री मुख भग्गं, दुजड़हत दससहंस बोल दीधौ। पदमहत मयंक चौ ग्रहण व्है अधपहर, कलम चौग्रहण दिन तीस कीधौ।—महारांणा सांगा रौ गीत

उ०—२ मुहिअड़ सोनगिरै 'फतमल्लौ'। दुजड़ाहथौ जोड़ तिण 'दल्लौ'। 'कमा' सदा आगळ नव कोटां। चडियां पति आरति चड़ चौटां।
—रा.रू.

दुजड़ी–सं०स्त्री० [देश] १ कटारी (डिं.को.) २ देखो 'दुजड़' (रू.भे)

दुजण—१ देखो 'दुरजण' (रू.भे.) (ह.नां.) उ०—रुद्र कड़ा ज्यूं रूक दे, दुजणां धरम दवार। तो हत्थां 'तखतेस' तण, ब्रिटिन जाय वळिहार।
—किसोरदांन बारहठ

२ देखो 'दुरजण' (रू.भे.)

दुजणसाल–सं०पु० [सं० दुर्जनशल्य] दुष्टों का संहार करने वाला।

दुजणसाही–वि० [देश०]। उ०—इण भांत रौ तिजारौ सू गोरां भूवरियां पूंह्चां सूं दुजण साह्यां कटोरां में भला जुवांन मचकावै छै। वेवड़ी गळणी सूं खींच चाढ़ छांणजै छै।—रा सा.सं.

दुजन्मौ–वि० [सं० द्वि+जन्म+रा०प्र०औ या द्विजन्मन्] जिसका जन्म दो बार हुआ हो, द्विज। उ०—पुगावै गुफा-गरभ पाखै पुजारा। दुजन्मां जमातां हुवै जेण द्वारा।—मे.म.

दुजपंख–सं०पु० [सं०द्विज+पक्ष] १ भौंरा. २ पक्षी. ३ गरुड़।

उ०—नमो दुज-पंख विजै रथ धज्ज। गुणेह अतीत लखन्न-अग्रज्ज।
—ह.र.

दुजपत, दुजपति, दुजपती–सं०पु० [सं० द्विजपति] १ ब्राह्मण।

२ परशुराम। उ०—पय मिथुला पथ्थं साझ समथ्थं, हण धनु हथ्थं पह प्रांणे। सिय परण सिधाये दुजपत आये, गरब गमाये जग जांणे।
—र.ज.प्र.

३ चन्द्रमा (डिं.को.) ४ कपूर. ५ गरुड़ (नां.मा.)

रू०भे०—द्विजपति।

दुजबर—देखो 'दुजवर' (रू.भे.) उ०—१ दोय मगण सेखा तिलक, तिलक सगण दु, रगण दोय। वीजोहा दुजबर करण, सो चऊरसा होय।—र.ज.प्र.

उ०—२ सत दुजबर ठांणौ त्रय कळ आंणौ, कहि घता यकतीस कळ। रटजै मझ राघौ दुख अघ दाघौ, फिर तन धारण पाय फळ।
—र.ज.प्र.

दुजमंडण–सं०पु० [सं०द्विज+मंडण] तांबूल, पान (अ.मा.)

दुजमुख–सं०पु० [सं०द्विज+मुख] पान, तांबूल (अ.मा.)

दुजरांण, दुजरांम–सं०पु० [सं०द्विज+राट्, द्विज+राम] परशुराम (डिं.को.) उ०—१ जेठ रा भांण सम असह वरफांण जम, मांण दुजरांण असहांण मारै।—र.ज.प्र.

उ०—२ नमो दुजरांम दमोदर देव। नमो गुरु द्रोण करण्ण गंगेव। नमो वप वांमण दीरघ वीख। भिखंग पुरंदर भांजण भीख।—ह.र.

रू०भे०—दुज्जरांम।

दुजराज, दुजराजा, दुजांराज–सं०पु० [सं द्विजराज] १ ब्राह्मण (डिं.को.)

उ०—१ रछिक गऊ दुजराज, सील गंगेव कहावै। एक लखां आंगमै, एक लख अंगम न आवै।—सू.प्र.

उ०—२ पोह ऊत कविराजं हरख उछाजं, सुजस समाजं दध पाजं। रिखवर मुनिराजं सिवसिध राजं, स्तुति दुजराजं नित साजं।—र.ज.प्र.

२ परशुराम. ३ ऋषि. ४ चन्द्रमा (अ.मा., नां.मा.)

उ०—१ दूज वंक दुजराज सखि, वांकौ राहु विहना। वांकौ खग वर वांकड़ो, पहु न पिसण फटकना।—रेवतसिंह भाटी

५ गरुड़। उ०—दुजराज त्रास काळी डरै, सोभर धांम संभारियौ। कूरमां तेम कमधज रौ, ध्यांन नेम कर धारियौ।—रा.रू.

६ इन्द्र. ७ कपूर.

रू०भे०—दिजराज, दुजांराज, दुजांराय, द्विजराज, द्विजराय।

दुजवर–सं०पु० [सं० द्विजवर] १ ब्राह्मण। उ०—कछवाहा गजसिंघ था राजा नरवर का। एक कवित पें एक लाख दीधौ दुजवर का।
—दुरगादत्त बारहठ

२ छंद शास्त्र में चार लघु मात्रा का नाम। उ०—खट दुजवर कर प्रथम पद, अंत जगण गण आंण। दूजी तुक दुज साथ धर, जगण सिखा सो जांण।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दुजबर।

दुजांण–सं०पु० [सं० द्विज+रा०प्र० आंण] १ ब्राह्मण।

उ०—१ सुखवर सुरांणां, गौ दुजांणां माधवांणां सुख मिळै। मह जिग मंडांणां, थांणथांणां दैत घांणां दूठ।—र ज.प्र.

२ ऋषि, मुनि। उ०—नर नाग सुरा सुर जोड़ नथी, कथ वेद पुरांण दुजांण कथी। मुर कीट मधू हण सिंध मथी, रट रे मन राघव दासरथी।—र.ज.प्र.

३ वृहस्पति (अ.मा.) ४ पक्षी (नां.मा.)

दुजांराज, दुजांराय—देखो 'दुजराज' (रू.भे.) उ०—१ दुजांराज ज्यांरा धरै ध्यांन देखै। प्रभू सच्चिदानंद स्रीरांम पेखै। दुज दीन व्है आसरीवाद दीधौ। क्रपानाथ वंदै विदा ब्रह्म कीधौ।—र.ज.प्र.

उ०—२ जकै वार री औधि सोभा जगांणी। ब्रहम सारदा होत जायै वखांणी। जनंकेस बोलै वळै जांन आए। उठै धोम रूपी दुजांराय आए।—र.ज.प्र.

दुजाई–वि० [सं० द्वि] दूसरा।

दुजात–सं०पु० [सं० द्विज+जाति] १ ब्राह्मण, भूदेव (डिं.को.)।

उ०—इक कपि राकस दैत इक, दूणा दोय दुजात। यां जिम नांम उदार रौ, चिरं-जीव सुखदात।—वां.दा.

२ देखो 'दुजाति' (रू.भे.)

दुजाति–सं०पु० [सं० द्विजाति] १ जिनको शास्त्रानुसार यज्ञोपवीत

धारण करने का अधिकार हो, ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य, द्विज.
२ ब्राह्मण. ३ पक्षी. ४ अंडज प्राणी. ५ दांत ।
रू०भे०—दुजात, द्विजाति ।

दुजायगी-सं०स्त्री०—भिन्नता, भेद, परायापन । उ०—राज वड़ा छो, ठाकुर छो, सदा हेत मोकलास राखो छो, तिण सूं विसेस रखावसो, दुजायगी कणी वात री न जांणसो ।—वीरविनोद

दुजिंद-सं०पु० [सं० द्विजेंद्र] १ ब्राह्मण । उ०—कथा सो सुणी ना सुणी भूप कीधी । दुजिंदां कविंदां भड़ां रीझ दीधी ।—वं.भा.
२ चन्द्रमा. ३ गरुड़. ४ कपूर ।
रू०भे०—द्विजेंद्र ।

दुजि—१ देखो 'दुज' (रू.भे.) २ देखो 'द्विज' (रू.भे.)

दुजीभ, दुजीहं, दुजीह-वि० [सं० द्विजिह्व] १ जिसके दो जीभें हों.
२ चुगलखोर. ३ दुष्ट. ४ चोर. ५ झूठ बोलने वाला, झूठा.
६ दुःसाध्य ।
सं०पु०—१ सांप, सर्प (अ.मा., डि.को.) २ तीर. ३ एक रोग.
४ नगाडा (डि.को.) उ०—जोधारां तोखारां ह्वै दवा सूं भेक जरद्दाळां । दवा सूं कराळां नाद वाजिया दुजीह ।—फिरपारांम महड़ू
रू०भे०—दोयजीह ।
अल्पा०—दुजीहो ।

दुजीहो—देखो 'दुजीह' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मैला वांका चालता, विखमय भीखण देह । खीर पावंतां पिण डसै, सही दुजीहा तेह ।
—स्रीपाळ रास

दुजेस-सं०पु० [सं० द्विज+ईश] १ ब्राह्मण. २ चन्द्रमा ।
उ०—नखत्रां दुजेस छाजै, देवतां सुरेस नांमी । रावतां राजै येम 'जसो' रावतेस ।—हुकमीचंद खिड़ियो
३ गरुड़. ४ कपूर. ५ महर्षि । उ०—भुजगेस महेस दुजेस रिखी, नित पै रज चाहत माधव रे । तजि आंन उपाय सबै 'किसना', भज राघव राघव राघव रे ।—र.ज.प्र.
६ परशुराम ।
रू०भे०—द्विजेस ।

दुजेसर-सं०पु० [सं० द्विजेश्वर] १ महर्षि । उ०—१ साझै पय वंदणी सुरेसर । जस प्रभणै ग्रह सिभ दुजेसर ।—र.ज.प्र.
उ०—२ जे जुध हरणाकुस नूं जरियो, धड़ नाहर मांनव चो धरियो । जिण कारण देव दितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनाथ सूं ।—र.ज.प्र.

दुजोड़ियो-सं०पु० [सं० द्वि+रा० जोड़ी=दो वैल] वह कुआ जिसके पानी को निश्चित समय में, एक के बाद दूसरी इस प्रकार के दो जोड़ियों द्वारा निकाल कर सींच दिया जाय, फिर उसमें अधिक पानी की गुंजाइश नहीं रहती है । उतने पानी का कूआ जिसका पानी सिंचाई के लिये क्रमशः दो जोड़ियों द्वारा निश्चित समय में निकाल लिया जाय ।

दुजोड़ो—देखो 'दूजो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—जद मयारांम नै मालकी तोरण लावै छै, सात ही वडारणां दुजोड़ी सार्थ छै ।
—मयारांम दरजी री वात
(स्त्री० दुजोड़ी)

दुजोण, दुजोधण, दुजोधन—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—१ किता वेर पांडव ऊपर कीध, लाखा-ग्रह कुंता काढै लीध । दुसासण कन्न गंगेव दुजोण, खपै कुरखेत अढ़ार अखोण ।—ह.र.
उ०—२ वेध्यो मछ जिण वार, मांण दुजोधन मेटियो । खंचै फच उण खार, थां पारथ वैठथां थकां—रांमनाथ कवियो

दुजोयण-वि० [सं० दुर्जन] १ दुष्ट, नीच. २ देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—मांण दुजोयण मालदे, जिण बाधो जगहत्थ । भारथ भिड़िया जास भिड़, साह हूंत समरत्थ ।—बां.दा.

दुजो—देखो 'दूजो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुजी)

दुज्ज—१ देखो 'दुज' (रू.भे.) उ०—१ नहीं तू गुज्झ नहीं तू ग्यांन । नहीं तू दुज्ज नहीं तू दांन । नहीं तू जीव नहीं तू जंत । नहीं तू आदि नहीं तू अंत ।—ह.र.
उ०—२ उवै सास्त्र लखि दुज्ज उचारै । ध्यांन धरेस अखंडित धारै ।—सू.प्र.
२ देखो 'द्वि' (रू.भे.)

दुज्जड़—देखो 'दुज' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'दुजड़' (रू.भे.)
उ०—खहर गमै व्रत दुजड़ां, सहर करै दहवाट । आया थाणा 'अजन' रा, लूट विडांणा राट ।—रा.रू.

दुज्जण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—१ सज्जण दुज्जण के कहै, भड़िक न दीजै गाळि । हळिवइ हळिवइ छंडियइ, जिम जळ छंडइ पाळि ।—ढो.मा.
उ०—२ तप तेज परख हिंदु तुरक, सदा हरक मन सज्जणा । कोमळ किसोर तौ ही कमंध, दुति कठोर उर दुज्जणा ।—रा रू.

दुज्जणो—देखो 'दुरजण' (अल्पा., रू.भे.)

दुज्जय—१ देखो 'दुज' (रू.भे.) उ०— दुवार है सरव दास जै वसेख दुज्जयं । अतीत ग्रेह तथा आय प्रीत हूंत पुज्जयं ।—सू.प्र.
२ देखो 'द्विज' (रू.भे.)

दुज्जरांम-सं०पु०—देखो 'दुजरांम' (रू.भे.) । उ०—मच्छ कच्छ वाराह महम्मण । नारसिंघ वांमन नारायण । दुज्जरांम रघुरांम दिवाकर । किसन वुध कलकी करुणाकर ।—ह.र.

दुज्जोण, दुज्जोध, दुज्जोहण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—१ देवी सारदा रूप प्रींगळ प्रसन्नी । देवी मांण रे रूप दुज्जोण मन्नी ।—देवि.
उ०—२ आजांनुवाह परसै उरस, गह अथाह सरसै गुमर । कर रह्या जोध पांडव किनां, प्रबळ क्रोध दुज्जोध पर ।—मे.म.
उ०—३ दुज्जोहण घर घरणि सांमि सिक्ख रउतीय मग्गइ । धम्मपुत्त वयणेण पुण इंद पुत्त तिणि मग्गि लग्गइ ।—पं.पं.च.

दुज्यूं-क्रि०वि०—अन्यथा । उ०—चाचो मेरो मारियो । तिण सूं अरज करां तिका फीकी लागै, दुज्यूं मन मांहै तो घणा ही वेराजी थका दुख

पावां छां।—राव रिणमल री वात

दुभल, दुभल्ल, दुभाल, दुभेल–वि० [सं० द्वि+रा० भल] १ वीर, योद्धा।
उ०—१ 'दुरग' तणौ साथै दुभल, 'करन' हरा कुळ थंभ। 'कचरा-वत' 'विजपाळ' सा, आदरियौ आरंभ।—रा.रू.
उ०—२ जस गल्ह रहवांणजे सहल, मइयल भंजै मेहवर। 'गजमल्ल' 'मल्ल', 'गंगे' कुळी, रिण दुभल्ल रट्ठोड़ हर।—गु.रू.बं.
उ०—३ 'दलावत' सूर 'विसन्न' दुभाल। लोहां अरि ढाहि करै घर लाल।—सू.प्र.
उ०—४ मूठ कर खग्ग मेल, मूंछां वळ घालियां। दारुण रूप दुभेल, हवेली हालियां।—महाराजा पदमसिंह री वात
२ जबरदस्त। उ०—दुभल जिण भुजां-वळ हूंत आठूं दिसा, लंघ सांमंद कीधी लड़ाई। जीत लीधी जमी कठै थी जेण री, पराजै हुई नह फतै पाई।—र.रू.
३ पंडित, विद्वान। उ०—दुय दुय पदां दुमेल, मंछ कहै मोहरा मिळै। म्होरां चारां मेल, दाखै पालवणी दुभल।—र.रू.
रू०भे०—दूभल्ल।

दुटपी–वि० [सं० द्वि+रा० टपी] दानों ओर की, दुतरफी, दुरुखी।
उ०—वरजे पर ही वेट वेगार, आप वसै जिहां व्है अधिकार। दुटपी वात कहै दरबार, सह नो समभीजै ततसार।—ध.व.ग्रं.

दुट्ठ, दुठ—१ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—हैय दैवह हैय दैवह दुट्ठ परि-णामु।—पं.पं.च.
२ देखो 'दूठ' (रू.भे.) उ०—तेजसी दुठ ठाकुर थौ। मन में आ वात राखी जे म्हारी लाख दुगांणी राव रा हुजदार कन्है लेहणी छै।
—राव मालदे री वात

दुठर—देखो 'दुस्तर' (रू.भे.)

दुठाणौ, दुठावौ–क्रि०अ०—कोप करना (?)। उ०—जोसंगी दुठावौ आंण दलेसां सूं करै जावौ, वुठावौ चूक रौ चखां आखां भीम वाथ। तठीनै रुठावौ जठी भसमा भूक रौ तावौ, हुए कठी रूक रौ मूठावौ हिंदूनाथ।—महादांन महड़ू

दुठायोड़ौ–भू०का०कृ०—कोप किया हुआ, कुपित (?)।
(स्त्री० दुठायोड़ी)

दुठाळौ–वि० [सं० दुस्ट+आलुच्] (स्त्री० दुठाळी) १ जबरदस्त, शक्तिशाली। उ०—काट फरासर ढोल करीजै, सोळै कोसां सबद सुणीजै। पूछै तांम भड़ां पूंछाचाळां, दारण आप जिसा दुठाळा।
—गो.रू.

दुट्ठ, दुट्ठि—१ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) (जैन)
२ देखो 'दूठ' (रू.भे.) (जैन)

दुडंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—दांना अंवर पावक पवन इंद चंद दुडंदे।—केसोदास गाडण

दुड–वि०—पूर्ण तृप्त, अघाया हुआ।

दुडइंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—सजै पग छांह सातूं रिख स्यांम, रंजै पग छांह जिसा वळ रांम। देखै पग सेव करै दुडइंद, चरच्चै पग निरम्मळ चंद।—ह.र.

दुडदडी, दुडदुडी—देखो 'दुडंदुडी' (रू.भे.) उ०—काहल तणौ कोलाहळि कांन कम्मकम्यां, डूंडि दमांमा दुडदडी द्रमद्रमाटि।—व.स.

दुडयंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दुडवडी—देखो 'दुंडदुडी' (रू.भे.) उ०—सुत दीठइ दुख वीसरया ए, वाजइ ताळ कंसाळ। दमांमा दुडवडी ए, वाजइ वनरमाळ।
—ऐ.जै.का.सं.

दुडिंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—सपत पयाळ न सात समंद, दसै द्रगपाळ न चंद दुडिंद। सुमेर न सेस पहल्लां सो ज, हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज।—ह.र.

दुडियंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दुडी—देखो 'दुड़ी' (रू.भे.)

दुणिंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—चळ चळिय चक्रवइ च्यारि चंद। दळ रजी पाइ छायउ दुणिंद। मूगळ जिनावर बांणि मारि। आयास हूंत आंणइ उतारि।—रा.ज.सी

दुण—देखो 'दूणौ' (रू.भे.) उ०—औ व्रसपत दसमे ग्रह आयौ, विदुख तिकां दुण लाभ बतायौ।—रा.रू.

दुणियर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) (ह.नां.) उ०—भागौ तौ वारह राह ग्रहियौ तोइ दुणियर। खोड़ौ तोइ हणवंत जोर माथियौ तोइ सायर।
—द.दा.

दुणेटौ—देखो 'दूणौ' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—बणेटौ।

दुणौ—देखो 'दूण' (रू.भे.) उ०—बोल्यौ प्रोहित बेलियां, विध विध रंग बखांण। अमलां करौ दुणा अथग, तुरंगां करौ पलांण।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

दुतग, दुतंगर–सं०पु०—घोड़े की जीन या पलान कसने का दोनों ओर का तसमा। उ०—१ भीड़ियां दुतंग हय रवण सळका भरै, बीर जुध बयण घक ओघ वरसै। नंद 'गुमनेस' छक छलै थारै नयण, दार भवणी तरह गयण दरसै।—जवांनजी आढ़ौ
उ०—२ सब साज सजायर, चोट पटासिर, नेवर पायर वाज नखी। गजगाह दुतंगर भीड़ खतंगर, ओप उजाळर चोव रखी।
—किसनौ दधवाड़ियौ

दुत–सं०पु० [सं० द्युति] १ कान्ति, प्रभा, चमक, दमक, ज्योति।
उ०—१ दांत दमकै अहर दुत, जांण चमकै बीज। ज्यां री धुनि मधुरी सुणै, रहै तपोधन रीज।—वां.दा.
उ०—२ आठ पौर जस इंदुरी, जिण घर दुत जागंत। तिण घर सूं अपजस तिमर, अळगा थी भागंत।—वां.दा.
२ किरण (डिं.को.) ३ प्रकाश, रोशनी। उ०—दुत चंद नखत्रन ढांक दिया। लख तुंगिय जांभर पैर लिया। करसै निस कांम कमंधज रौ। यळ आहट साद वजै अजरौ।—पा.प्र.

४ शोभा। उ०—नर नारी शोभत निपट, लाख लोक लेखंत। पीछोला के ऊपरै, दुत गवरां देखंत।—बगसीरांम प्रोहित री वात
५ दीपक (अ.मा.) ६ वेग (अ.मा.)
वि० [सं० द्वैत] ७ दोहरा। उ०—दुत भाव तजो दुनियां पगली, गुर ग्यांन गहो समजो सगळी। सुन स्वार विचार तजो सब ही, अज कांम करो सो करो अब ही।—ऊ.का.
रू०भे०—दुति।
यौ०—दुत-भाव।
अव्य०—१ असीम लज्जा सूचक शब्द. २ बच्चों आदि के प्रति बहुत प्यार जताने के निमित्त बोला जाने वाला शब्द. ३ बहुत घृणा के कारण मुँह से निकलने वाला शब्द. ४ तिरस्कारसूचक शब्द।
रू०भे०—धत, धत्त।

दुतअंगम-सं०पु० [सं० द्युति+अंगम] आभूषण (अ.मा.)

दुतकार—देखो 'दुतकार' (रू.भे.)

दुतकारणौ, दुतकारबौ—देखो 'दुतकारणौ, दुतकारबौ' (रू.भे.)

दुतकारियोड़ौ—देखो 'दुतकारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुतकारियोड़ी)

दुतभाव-सं०पु०यौ० [सं० द्वैतभाव] १ ऐक्यता का अभाव, अनैक्यता, भिन्नता. २ अज्ञान।

दुतमूरति-सं०पु० [सं० द्युति मूर्ति] सूर्य्य, सूरज (अ.मा.)

दुतर—देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—दुतर भव सागर मंझार, तत नाव तिरंदा। ऊंडा दुतर भव समंद, तंत नांम तिरंदा।—केसोदास गाडण

दुतरणि-वि० [सं० दुस्तर] बहुत कठिन, दुखदायी।
उ०—वीणा डफ महुयरि वजाए, रोरी करि मुख पंचम राग। तरुणी तरुण विरहि जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग।—वेलि.

दुतरफ, दुतरफौ-वि० [रा० दो+अ० तरफ या सं० द्वि+अ० तरफ] (स्त्री० दुतरफी) जो दोनों ओर हो, दोनों ओर का, दुतरफा।
उ०—मूंधड़ै जसरूप रै बोहत घाव लागा पण बंचियो ओर आदमी ५० दुतरफा कांम आया।—द.दा.

दुतलाल-सं०पु० [सं० लाल+द्युति] मंगल (अ.मा.)

दुतवीस-वि० [सं० द्युति] द्युतिमान, प्रकाशयुक्त, कांति वाला।
उ०—पै संग्या कीरत मुख प्रीतां वारज अवध मूल दुतवीस। प्रणवै भंजै संग्रहे पेखै उतवंग जवां करण चख ईस।—र.रू.

दुतार, दुतारो-सं०पु० [सं० द्वि+फा० तार] १ एक बाजा जिसमें दो तार लगे होते हैं और अंगुली से सितार की तरह बजाया जाता है।
उ०—डफ खंजरी दुतार, विखम रोहिला वजावै। पसतो अरबी पाड़, गजल कड़खा वह गावै।—सू.प्र.
रू०भे०—दुतार, दुतारो।
२ देखो 'दुस्तर' (रू.भे.)

दुति-सं०स्त्री० [सं० द्युति] १ दीप्ति, कांति, चमक।
उ०—तिण ग्रहतां महि रौ वप तजियौ। छत्रपति हाथि खडग हुय छजियौ। रूप खडग अदभुत दुति राजै। तडित सिलावत धोम तराजै।—सू.प्र.
२ शोभा, छवि। उ०—१ मकरंद तंबोळ कोकनद मुख मझि, दंत किंजळक दुति दीपंति। करि इक बीड़ो वळै वांम करि, कीर सु तसु जाती क्रीड़ंति।—वेलि.
उ०—२ वेलां तरवर बीटियां, दुति कुसमां दरसंत। निजर पिया नाह रै, बनमय सदन बसंत।—बां.दा.
३ लावण्य। उ०—निज दिन हूंत मास इक नंमै। जा दिन अद्रती चंद जनंमै। सकति रूप अदभुत दुति सज्जे, उद्र अपुरा परमार उपज्जे।—सू.प्र.
४ रश्मि, किरण (नां.मा.) ५ देखो 'दुत' (रू.भे.)
रू०भे०—दुती, दुत्ती, द्युति, द्योत।

दुतिमांन-वि० [सं० द्युतिमत्] प्रकाशयुक्त, चमकीला, शोभित।

दुतिमाळा-सं०स्त्री०[सं० माला=मेघमाला+द्युति] बिजली (नां.मा.)

दुतिय—देखो 'दुतीय' (रू.भे.) उ०—आदि एक अविणासी तत निराकार दुतिय तेजोमय। प्रभु आकार प्रकासी, त्रितीय स्वरूप नमो कमळापति।—सू.प्र.
(स्त्री० दुतिया)

दुतियक—१ देखो 'दुतिय' (रू.भे.) २ देखो 'दुतिया' (रू.भे.)
उ०—एकोतरै अठार सै, सांवण दुतियक स्वेत। बांकै ग्रंथ वणावियो, कायर कुजस निकेत।—बां.दा.

दुतिया-सं०स्त्री० [सं० द्वितीया] १ प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि, दूज।
उ०—दुतिया चांद, मजीठ रंग, साध वचन प्रतिपाळ। पाहण रेख'र करम-गत, जै नहिं मिटत 'जमाल'।—जमाल
वि०—दूसरी।
रू०भे०—दुतियक, दुतिया।

दुतियौ—देखो 'दुतीय' (अल्पा., रू.भे.) उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जांण्या, दुतियै काष्ट दागी। जीवन मुक्ति सदा सुखदायी, समदरसी बीतरागी।—स्री सुखरांमजी महाराज

दुतिवंत-वि० [सं० द्युति+वंत] १ आभायुक्त, कांतिवान, प्रकाशयुक्त, चमकीला। उ०—१ पेखो घर में पवन सूं, बचै दीप दुतिवंत। दीप हूंत दरसंत, घर में उजवाळो घणो।—बां.दा.
उ०—२ अधरां डसणां सूं उदै, विमळ हास दुतिवंत। सो संध्या सूं चंद्रिका, फैली जांण फबंत।—बां.दा.
२ रूपवान, सुंदर। उ०—१ रांम महराज, करण जन काज। कोट रवि क्रांत, देह दुतिवंत।—र.ज.प्र.
उ०—२ चत्रवर बजार चित्रकांम चार। दुतिवंत वेलि गुल रंगदार।—सू.प्र.

दुती—१ देखो 'दुति' (रू.भे.) उ०—अधर दुति आक्रती जंत्र वजवती जुगत्ती। रूपवती रंजति माळ भूलती मुकत्ती।—सू.प्र.

२ देखो 'दुतीय' (रू.भे.) उ०—तेर प्रथम सोव्रह दत्ती. मझ तुक वे विसरांम। गुणती मत अंते वे गुरु, निमंध मछटथळ नांम।
—र.ज.प्र.

दुतीतेज-सं०पु० [सं० तेज+द्युति] सुदर्शन चक्र (नां.मा.)

दुतीय-वि० [सं० द्वितीय] (स्त्री० दुतीया) दूसरा। उ०—आद मत अगीयार, दुतीय पद तेर मात दख। काव्य छंद तिण कहत, अवध ईस्वर कीरत अख।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दुतीय, दुतीयक, दुत्ती, दुत्तीय, दूतीय।

अल्पा०—दुतियो, दुतीयो, दूतीयो, द्वितीयो।

दुतीया—देखो 'दुतिया' (रू.भे.)

दुतीयो—देखो 'दुतीय' (अल्पा., रू.भे.) उ०—अद्वितीय ब्रह्म अखंड सूं, दुतीया यूं ठांणी। फुरणा माया फुरत ही, दोख आवरण आंणी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

दुतीवांन-सं०पु० [सं० द्युतिवान्] दिनकर, सूर्य (ह.नां.)

दुत्कार-सं०स्त्री० [सं० टु दु उपतापे अनु० दुत+रा०प्र० कार] किसी का दुत्-दुत् कह कर किया जाने वाला अपमान तिरस्कार, फटकार, धिक्कार। उ०—चोधरी भींत सूं नीचो उतर नै दूजोड़ा बंगळा कांनी चाल्यो पण उठै भी उण नै ठैरण नहीं दियो अर दुत्कार नै निकाळ दियो।—रातवासो

रू०भे०—दुकार, दुक्कार, दुतकार, धतकार, धुतकार।

दुत्कारणो, दुत्कारबो—क्रि०स० [सं० टु दु उपतापे] दुत् दुत् शब्द कह कर किसी को अपने पास से हटाना, दूर करना. २ तिरस्कृत करना. धिक्कारना।

दुत्कारणहार, हारो (हारी), दुत्कारणियो—वि०।

दुत्कारिओड़ो, दुत्कारियोड़ो, दुत्कारयोड़ो—भू०का०कृ०।

दुत्कारीजणो, दुत्कारीजबो—कर्म वा०।

दुकारणो, दुकारबो, दुतकारणो, दुतकारबो, दुरकारणो, दुरकारबो धतकारणो, धतकारबो, धुतकारणो, धुतकारबो—रू०भे०।

दुत्कारियोड़ो-भू०का०कृ०—१ (किसी को) दुत् दुत् कह कर दूर हटाया हुआ. २ तिरस्कृत किया हुआ, अपमानित।
(स्त्री० दुत्कारियोड़ी)

दुत्तर, दुत्तारि—देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—'जिणदत्तसूरि' जिन नमहि पय, पउम मच्चु (गव्वु) नियमणि वहहि। संसार उयहि दुत्तारि, पडिय, तिनहु' तरंडइ चडि तरिहि।—ऐ.जै.का.सं.

दुत्तार, दुत्तारो—१ देखो 'दुतार, दुतारो' (रू.भे.)
२ देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—ता(उ) तूंगो मेरुगिरी, मयर हरो (सायरो) ताव होय दुत्तारो। ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति।—ऐ.जै का.सं.

दुत्ती—१ देखो 'दुति' (रू.भे.) २ देखो 'दुतीय' (रू.भे.)
उ०—प्रथम्मा तुही पव्वई सैल-पुत्ती। दुरग्गा तुही ब्रह्मचारण्य दुत्ती।
—मे.म.

दुत्तीय—देखो 'दुतीय' (रू.भे.)

दुत्थ-वि० [सं० दुस्थ] दुखी। उ०—दीन दुत्थ उपगार करइ ए, गुरु-जननइ ए मांन। धरमकांम नित साचवइ ए, धरइ जगगुरु ध्यांन।
—नळ-दवदंती रास

दुत्थभाव-सं०पु० [सं० दुःस्थ+भाव] दारिद्रय, कंगाली, निर्धनता।
उ०—विरचे प्रवंध तस जस विसाळ, लुभवाय सुणायो भाट लाल। तिण दुत्थभाव कमधज्ज तोड़ि, करि रजत दम्म बखसीस कोडि।
—वं.भा.

दुत्थिय-सं०पु० [सं० दुःस्थ] दारिद्रय, निर्धनता। उ०—समरथ सूर तोगां 'वदि' रसुत, अहिमद आणंदि मिळई। दुत्थिय दुरुख आरति टळइ, सयळ सिद्धि वंछित फळइ।—व.स.

दुथडियो-सं०पु० [सं० द्वि+स्तर] घोड़े का सूत का बना चारजामा विशेष।

दुथणी, दुथन, दुथनी, दुथ्थणी, दुथ्थनी-वि० [सं० द्वि+स्तन+रा०प्र०ई] जिसके दो स्तन हों, द्विस्तनधारी।
सं०स्त्री०—दो स्तनों वाली, स्त्री। उ०—१ दुथणी जणै न कोई दूजो, 'अखवी' हरा बरावर आज।—राव कूंपा ओर जैता रो गीत
उ०—२ सेवग 'भीम' घणी धर तो सम, दुथणी जायो नकू दुओ। जमी चाड अवगाढ़ 'अजीता', हमकै डाढ़ वराह हुओ।
—किसनो आढ़ो

रू०भे०—दोयथणी।

दुदंती-सं०पु० [सं० द्वि+दंत+रा०प्र०ई] हाथी, गज।

दुदळ—देखो 'द्विदळ' (रू.भे.)

दुदांम, दुदांमो—देखो 'दमांम' (रू.भे.) उ०—साव दळइ चालिउ सुर-तांण, वार सहस्र वाज्यां नीसांण। चाल्यां कटक दुदांमां करी, खेह तणी दीसइ डांमरी।—कां.दे.प्र.

दुदीथटो-सं०पु०—सूअर (अ.मा.)
रू०भे०—दूदीथटो।

दुदेली—देखो 'दूधी' (अल्पा., रू.भे.)

दुद्द, दुद्धी—१ 'दुंद' (रू.भे.) उ०—हणे दुद्द नूं बालि हेलां अहूणो। घरै भुडंडा दुद्दरी देह घूणो।—सू.प्र
२ देखो 'दूध' (रू.भे.) उ०—दादू माया सौं मन विगड़ा, ज्यों कांजी कर दुद्ध। है कोई संसार में, मन कर देवै सुद्ध।—दादू वांणी

दुद्धी—देखो 'दूधी' (रू.भे.)

दुध—देखो 'दूध' (रू.भे.). उ०—जोगी थां कोन कहै हो वात। दुधइ न्हिावऊं घणी हो नीवात।—वी.दे.

दुधड़ियो—देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

दुधार-वि० [सं० दोग्ध्री], १ दूध देने वाली.
[सं० द्वि+धार] २ जिसके दोनों ओर धार हो. ३ तलवार।
उ०—धुर धरम धारणो नीर धार हो, दुसमण दळ दावानळ दुधार।
—ऊ.का.

सं०पु०—१ कटार, बरछी. २ दो धार वाला खड्ग।

उ०—छेड़ हुई कांठायतां, आया खेड़ अपार। झड़ लागी सर गोळियां, हुय होळियां दुधार।—रा.रू.

३ माला (डि.को.) ४ रथ (डि.नां.मा.)

रू०भे०—दूधार, दोधार।

अल्पा०—दुधारौ, दुवधारौ, दोधारौ।

दुधारी-वि० [सं० द्वि+धार] दो धार वाली।

सं०स्त्री०—कटारी (डि.को.)

रू०भे०—दुवधारी।

सं०स्त्री०—१ कटार, बरछी. २ दूध देने वाली।

रू०भे०—दुवधार, दोधारी।

दुधारू—देखो 'दुधाळू' (रू.भे.)

दुधारौ-सं०पु० [सं० द्वि+धार] १ बढ़ई का एक ओजार.

२ देखो 'दुधार' (अल्पा., रू.भे.) उ०—केवांणां झमंका करै घरां दीप काळका सा, दमंकै दुधारा दीप माळका सा दीप।—नन्दजी सांदू

दुधाळ—१ देखो 'दुधाळू' (रू.भे.) २ देखो 'दूध' (रू.भे.)

उ०—जनमाळ घुराळ दुधाळ सिरज्जत, काळ में क्यों न गवाळ करै।—करुणासागर

दुधाळू-वि० [सं० दोग्ध्री अथवा दुग्ध+आलुच्] अधिक दूध देने वाली।

रू०भे०—दुधार, दुधारू, दूधार, दूधारू, दूधाळ, दूधाळू।

दुधुभि, दुधुभी—देखो 'दुंदुभी' (रू.भे.) उ०—अबीर गुलाल उडावत रोरी। डफ दुधुभी बाजत थोरी थोरी।—मीरां

दुधेल—देखो 'दूधाळू' (रू.भे.)

दुनड़-सं०पु० [सं० दुर्नट] शत्रु (अ.मा.)

दुनां-वि० [सं० द्वि] दोनों। उ०—ताजदार बैठो तखत, रज में चोटै रंक। गिणै दुना नूं हेक गत, निरदय काळ निसंक।—बां.दा.

दुनाळ, दुनाळिय, दुनाळी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+नाल] वह बंदूक जिसके पृथक पृथक दो गोलियां भरने के लिये दो नालें एक साथ सटी हुई हों।

उ०—१ केइ आय भड़ कोठार, बारूद लावत बार। सब लेत सस्त्र संभाळ, दिढ़ जुजरवा दुनाळ।—पे.रू.

उ०—२ बदै जय 'भैरव' खाग समाय, मंडै पग खांन रहै रिणमाय। अयौ जद सामहि बाज उपाड़, झलै कर खांन दुनाळिय झाड।
—पे.रू.

वि०वि०—इस बन्दूक की दोनों नालों में गोलियां भर कर इसे एक साथ या अलग-अलग समय में दो बार छोड़ी जा सकती हैं।

रू०भे०—दोनाळी।

मह०—दुनाळ।

दुनाळौ-वि०—दुनाळी बंदूक रखने वाला।

सं०पु०—१ वह मकान जिसके दो जीने होते हैं.

२ देखो 'दुनाळी' (मह., रू.भे.)

दुनि—देखो 'दुनिया' (रू.भे.) (डि.को.)

दुनियण-सं०पु० [सं० दिनकर अथवा अ० दुनिया+सं० नयन] १ सूर्य. (डि.को.)

(मि० जगचख)

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दुनियां-सं०स्त्री० [अ० दुनिया] संसार, जगत्। उ०—रोम रोम आमय रहै, पग पग संकट पूर। दुनियां सूं नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दूर।—बां.दा.

मुहा०—१ दुनियां उलटणी—बहुत लोगों का इकट्ठा होना, खूब गर्दी होना, बहुत भीड़ होना. २ दुनियां दुरंगी—दुनियां दो रंग की होती है, दुनियां अवसर देख कर अपने स्वार्थ की ओर झुक जाती है.

३ दुनियां नै जीतणी—सांसारिक प्रपंच से छुटकारा पाना। लोगों को वश में करना। जनता को अपने अनुकूल बनाना. ४ दुनियां परायै सुख दूबळी—दुनियां दूसरों के सुख को देख कर ईर्ष्या करती है. ५ दुनियां पलटणी—पुरानापन दूर होकर नयापन प्रतीत होना, जनता का विरुद्ध होना. ६ दुनियां भर रौ—बहुत अधिक. ७ दुनियां री हवा लागणी—सांसारिक अनुभव होना ८ दुनियां सूं ऊठणी—मर जाना, चल बसना. ९ दुनियांदारी री बात, व्यावहारिक बात, छल भरी बात, बनावटी बात।

२ संसार के लोग, जनता. ३ संसार का प्रपंच, जगत-जंजाल।

रू०भे०—दणयर, दणियर, दन्या, दुनि, दुनियण, दुनियांण, दुनियांणी, दुनियांन, दुनियाई, दुनीं, दुनां, दून्यां।

दुनियांण, दुनियांणी—देखो 'दुनियां' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ उदयवत आज दुनियांण सह ऊपरा, सार रौ तार लागौ सवां हीं। हंस राखै जिकां नीर अळगौ हुवै, नीर राखै जिकां हंस नाहीं।—महारांणा प्रताप रौ गीत

उ०—२ राघव सिफत बखांणी, सच्चे सायरां। आफताब दुनियांणी दीद नगाहए।—र.ज.प्र.

दुनियांदार—देखो 'दुनियादार' (रू.भे.)

दुनियांदारी—देखो 'दुनियादारी' (रू.भे.)

दुनियांन—देखो 'दुनियां' (रू.भे.) उ०—अमिट भड़ां बळ अंग में, कोठारां सांमांन। सांमध्रमी ठाकुर सको, दिए रंग दुनियांन।
—बां.दा.

दुनियाई-वि० [अ० दुनिया+रा०प्र०ई] १ सांसारिक.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दुनियादार-सं०पु० [अ० दुनिया+फ़ा० दार] सांसारिक प्रपंच में फंसा हुआ मनुष्य, संसारी, गृहस्थ।

वि०—व्यवहारकुशल।

रू०भे०—दुनियांदार।

दुनियादारी-सं०स्त्री० [अ०+फ़ा०] १ गृहस्थ का जंजाल, दुनिया का कारबार. २ वह व्यवहार जिससे अपना प्रयोजन सिद्ध हो, स्वार्थ-साधन. ३ दिखावटी व्यवहार, दुराव।

रू०भे०—दुनियांदारी ।

दुनियासाज–वि० [अ० दुनिया+फ़ा साज़] १ लल्लोचप्पों करने वाला, चापलूस. २ युक्ति से अपना प्रयोजन सिद्ध करने वाला, स्वार्थ-साधक ।

दुनियासाजी–सं०स्त्री० [अ० दुनिया+फ़ा साज़ी] १ स्वार्थ-साधन की वृत्ति, खुद का मतलब निकालने का ढंग. २ बात बनाने का ढंग, चापलूसी ।

दुनीं, दुनी–सं०स्त्री० [अ० दुनिया] १ पृथ्वी । उ०—लख हय मड़ दिय सैंस लख, हाथी भखरा हजार । रावत रण पर रीझियौ, दुनी प्रळै दातार ।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)(डि.को.) उ०—१ दीह घणा माफळ दुनीं, रुळियौ देखै रूप । माधव हमें प्रकास मो, सिव ताहरौ सरूप ।—ह.र.

उ०—२ करचो ढ्रंग देसांण प्रसथांण इंदर सकति, प्रेम अप्रमांण रा अन्नत पीधा । 'करनला' मात रा आप दरसण किया, दुनी नूं आपरा दरस दीधा ।—मे.म.

उ०—३ दिन पलटी पलटी दुनी, पलटी सह परिवार । (इक) महामाया पलटी मती, बीसहथी उण वार ।—चौथ बीठू

उ०—४ अकबरिये इक बार, दागल की सारी दुनी । अणदागल असवार, रहियौ रांण प्रतापसी ।—दुरसौ आढ़ौ

उ०—५ देख ताप खावै दुनी, आप पराक्रम आस । रोस भाळ पूळा रहै, सादूळा स्याबास ।—बां.दा.

दुनीपत–सं०पु०यौ० [अ० दुनिया+सं० पति] १ बादशाह, सम्राट. २ राजा । उ०—दुनीपत मारका कोट 'विजपत' दुआ, खसोटण पारका मुलक खीसै । जोर कर मारका वचन काढै 'जसौ', दुवारका दली बिच नक्कू दीसै ।—तिलोकजी बारहठ

दुनीय—देखो 'दुनियां' (रू.भे.) उ०—एक छत्र जिण पुहवी, निस्चळ कीधी घर उप्पर । आंणं किरि नव खंड, अदल कीधी दुनीय-प्पर ।
—प.च.चौ.

दुनुप्रोहित–सं०पु० [सं० दनुजप्रोहितं] असुरों का गुरु, शुक्र (अ.मा.)

दुनै–वि० [सं० द्वि] दोनों । उ०—वैराट समांन निपावै ब्रक्ख । दुनै फळ जेण किया सुख दुक्ख । निपावै रूप उभै नर नार । च्यारै खांणी वांणी च्यार ।—ह.र.

दुन्नि, दुन्नी–वि० [सं० द्वीनि] १ दो । उ०—तसु घरि रांणी अछइ दुन्नि एक नांमि गंगा । पुरा, जाउ गंगेउ नांमि तिणि तिहूणि चंगा ।
—पं.पं.च.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दुप—देखो 'द्विप' (रू.भे.) उ०—मोती धूड़ मिळाविया, तैं सादूळ तमांम । देतौ सदा जणाय दुप, किल औ होणौ कांम ।—बां.दा.

दुपड़ती–वि०स्त्री० [सं० द्विवर्ती, द्विअर्थी] (पु० दुपड़तौ) १ दो परत वाली. २ दो अर्थ का बोध कराने वाली बात ।

ज्यूं—दुपड़ती बात करै है साफ़ को कै'नी ।

दुपटी–सं०स्त्री० [सं० द्वि+पट+रा०प्र०ई] ओढ़ने का वस्त्र ।

उ०—ओढी अंगरखियां दुपटी छिब देती । गोढ़ै वरड़ी जे पूरा गमिती ।—ऊ.का.

रू०भे०—डुपटी, दुपट्टी ।

दुपटौ–सं०पु० [सं० द्वि+पट+रा०प्र०औ] ओढ़ने का वस्त्र विशेष (व.स.)

उ०—१ सजण सिधाया हे सखी, हरियौ दुपटौ हाथ । सूनी करगा सेजड़ी, तन मन लेग्या साथ ।—अज्ञात

उ०—२ अरि गज घटा पीठि पछटै इम । जळ सिल तटा रजक दुपटा जिम ।—सू.प्र.

मुहा०—१ दुपटौ तांण नै सोवणौ—निश्चिंत होना, अच्छी तरह दिन बिताना. २ दुपटौ बदळणौ—सखी बनना ।

रू०भे०—डुपटौ, डुपट्टौ, दुपट्टौ ।

अल्पा०—डुपटी, डुपट्टी, दुपटी, दुपट्टी ।

दुपट्टी—देखो 'दुपटी' (रू.भे.)

दुपट्टौ—देखो 'दुपटौ' (रू.भे.) उ०—उरै जोई परै जोई, जोई ढोलिया रै हेटै । मारवणी री नथ मारूजी रै दुपट्टा रै हेटै ।—लो.गी.

दुपडुं–वि० [सं० द्वि+वर्ती] १ दो पर्त का. २. दो अर्थ का ।

उ०—बलीयौ कहै हुं निबळ, नामकिण ही में न पडुं । छिपौ वरग रै छेह, देखि तोइ कहै मुझ दुपडुं झगड़ा झाटा झांझ झझौ सहु बाते झूठौ । पहिली ते हुं पछै, एह किम न्याय अपूठौ ।—ध.व.ग्रं.

दुपदी–सं०स्त्री० [सं० द्वि+पद+रा० प्र०ई] २८ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष ।

दुपराड़णौ, दुपराड़बौ—देखो 'दुपराणौ, दुपराबौ' (रू.भे.)

दुपराड़णहार, हारौ (हारी), दुपराड़णियौ—वि० ।

दुपराड़िओड़ौ, दुपराड़ियोड़ौ, दुपराड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दुपराड़ीजणौ, दुपराड़ीजबौ—भाव वा० ।

दुपराड़ियोड़ौ—देखो 'दुपरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुपराड़ियोड़ी)

दुपराणौ, दुपराबौ–क्रि०अ० [सं० दुष्प्रराव, प्रा० दुप्पराव] रुदन करना, विलाप करना, रोना ।

दुपराणहार, हारौ (हारी), दुपराणियौ—वि० ।

दुपरायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दुपराईजणौ, दुपराईजबौ—भाव वा० ।

दुपराड़णौ, दुपराड़बौ, दुपरावणौ, दुपरावबौ—रू०भे० ।

दुपरायोड़ौ–भू०का०कृ०—रुदन किया हुआ, विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।

(स्त्री० दुपरायोड़ी)

दुपरावणौ, दुपरावबौ—देखो 'दुपराणौ, दुपराबौ' (रू.भे.)

दुपरावणहार, हारौ (हारी), दुपरावणियौ—वि० ।

दुपराविओड़ौ, दुपरावियोड़ौ, दुपराव्योड़ौ—भू०का०कृ०

दुपरावीजणो, दुपरावीजबो—भाव वा०।

दुपरावियोड़ो—देखो 'दुपरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुपरावियोड़ी)

दुपहर, दुपहरा—देखो 'दोपहर' (रू.भे.) उ०—आसाढ़ का दिनां को तपन कहतां सूरिज। इसो अधिक ताप्यो छै। दुपहरा की वरीयां यै सो नीजण होय गयो छै जु कोई मनुस्य फिरै डोलै न छै। कैसी भांति जैसो माह की राति होय।—वेलि टी.

दुपहरियौ—देखो 'दोपारियो' (रू.भे.)

दुपहरी—१ देखो 'दोपहर' (रू.भे.) उ०—तरै चंद्रसेन दुपहरी नूं सुखपाळ मांहै बैसांण असवार तथा पाळा साथै ले जोगियां रै पगै लागण गयो।—नैणसी

२ देखो 'दोपारी' (रू.भे.)

दुपार—देखो 'दोपहर' (रू.भे.) उ०—जे कोई धूजी नै दुपारै रो गावै। दुपारै रो गावै मनचाह्यो फळ पावै।—लो.गी.

दुपारी—देखो 'दोपारी' (रू.भे.)

दुपारौ—देखो 'दोपारो' (रू.भे.)
उ०—वै'रा टावर-टूवर धमचक मचावता अर वैनै जिकर सुवावती कोयनी। टावरां नै दुपारौ-सिरावण-ई जोयीजती, अठीनै घर में भूंदरा थिड़चां करता हा।—वरसगांठ

दुपियाज, दुपियाजो—देखो 'दुप्याज, दुप्याजो' (रू.भे.)

दुपियारो-वि० [सं० दुष्प्रिय] (स्त्री० दुपियारी) बुरा लगने वाला, अप्रिय। उ०—१ क्राहि भाय कूकसी सयण सायण सुत नारी। काया हूसी अकज सवै माया दुपियारी।—ज.खि.

उ०—२ 'औरंग' पतिसाहि ग्रहीं, दहवटि करि 'दाराह'। रज्ज पियारा रज्जियां, भाई दुपियाराह।—ध.व.ग्रं.

दुपी—देखो 'द्विप' (रू.भे.) (डिं.को.)

दुपेरी—१ देखो 'दोपहर' (रू.भे.) २ देखो 'दोपारी' (रू.भे.)

दुपेरो—देखो 'दोपारो' (रू.भे.)

दुपैर—देखो दोपहर (रू.भे.) उ०—प्रात प्रदोस दुपैरां जगमगै जोतां, मां जगमगै जोतां! मंगळ धमळ हमेसां व्है पूजन होतां। जय मात करनी।—मे.म.

दुपैरी—१ देखो 'दोपहर' (रू.भे.) २ देखो 'दोपारी' (रू.भे.)

दुपारै—देखो 'दोपारो' (रू.भे.)

दुप्याज, दुप्याजो-सं०पु० [सं० द्वि+फ़ा० प्याज] एक प्रकार का मांस जिसमें प्याज ही डाला जाता है। उ०—कलिया पुलाव विरंज दुप्याजा जेरी विरियां अखनी चरू ताळ भांति भांति के मजे।—सू.प्र.
रू०भे०—दुपियाज, दुपियाजो, दोप्याजो।

दुप्रब्ब-वि० [सं० दुष्प्रभ] तीव्र कांतियुक्त जिसकी ओर देखा न जा सके, दुष्प्रभ। उ०—नमो पंच-ब्रह्म-पवित्र सु पीत; सु स्यांम सु नील, सुरत्त सु सीत। सहस्त्र जगत व्यापत सव्व, हुव दस अंगुळ गात दुप्रब्ब।
—ह.र.

दुफसळो-वि०स्त्री० [सं० द्वि+अ० फ़स्ल+रा० प्र० ई] वह (भूमि) जिसमें रवी और खरीफ की दोनों फसलें होती हों। उ०—सारी धरती दुफसळो छै।—नैणसी

दुबक—देखो 'दबक' (रू.भे.)

दुबकणो, दुबकबो—देखो 'दबकणो, दबकबो' (रू.भे.)
उ०—नीम पेस्टी दांत उजाळै, मोती सा चिलकै जबर। मुखड़ै में खुसबू सुवाणी, दुरगंध डर दुबकी कबर।—दसदेव
दुबकणहार, हारो (हारी), दुबकणियो—वि०।
दुबकिप्रोड़ो दुबकियोड़ो, दुबक्योड़ो—भू०का०कृ०।
दुबकीजणो, दुबकीजबो—भाव वा०।

दुबकी-सं०स्त्री० [सं० द्वि-पदी] १ गधे या घोड़े के अगले पैरों में बांधा जाने वाला बंधन। उ०—घोड़े रै दुबकी दीधी।—नैणसी
वि०वि०—उक्त पशुओं को चरने के लिये छोड़ते समय इस बंधन को बांध कर छोड़ा जाता है।
२ लकड़ी के जोड़ पर लगाई जाने वाली लोहे की पत्ती।
३ देखो 'दबकी' (रू.भे.)

दुबगळी-सं०स्त्री०—मालखंभ की एक कसरत।

दुबदा, दुबद्या, दूबध्या, दुबध्या—देखो 'दुविधा' (रू.भे.)
उ०—१ करम फूटगा कहो कवण नै जाय कंवां। दुबद्या मांहे दुसह रात दिन धुकता रैवां।—ऊ.का.
उ०—२ टींगर टोळी ले चटपट घण टोळी। चहुंवां चींघण सी दुबधा घट दोळी। ऊसर वैणां सूं स्रवती अलभ्रारां। धूसर नैणां सूं स्रवती जळधारां।—ऊ.का.
उ०—३ संत गुरू है मेरा जी, ज्यारै दुबध्या दरसै नाहीं। संत गुरू है मेरा जी।—स्त्री सुखरांमजी महाराज

दुबराळगोळो-सं०पु०—तोप का लम्बोतरा गोळा।

दुबळापण-सं०पु०—क्षीणता, कृशता।

दुबळो—देखो 'दुरबळ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुबळी)

दुबाक-वि० (अनु०) एकदम, अचानक।
सं०स्त्री०—दोनों पांवों से कूदने का कार्य।

दुबाट—देखो 'दुवाट' (रू.भे.) उ०—वहेजु वाट वाट में पिता पिता महा वहैं। सुखी सुबाट ते सदा दुखी दुबाट में दहैं।—ऊ.का.

दुबारा-क्रि०वि० [सं० द्वि+वार] दूसरी वार।
रू०भे०—दुवेरा, दुब्बार।

दुबारो-सं०पु० [सं० द्वि+वार] एक प्रकार का तेज शराब।
उ०—१ झलवां झलूस साज सहेल्यां रो साथ जोवै। वांदी वीजी हुइ रूप देखै हाकवाक। कुरवां ववारै लाडी 'जसा' नै सुनाथ कीजै। छैल वना लीजै दोय दुबारै की छाक।—मयारांम दरजी री वात
उ०—२ हुवै हाक डाक वकी कायरां ऊकै हियो, डकडकै भैरवी वजावै रुद्र डाक। धुकै ज्वाळा चसमां झड़ै के खळां फूल धारा। छकै

घावां वर्क के दुवारा वाळी छाक।
—नींवाज ठाकुर सुरतांणसिंह री गीत

उ०—३ वीर पुरख री स्त्री रा वचन है—हेक लाली म्हारै पति नैं सेझ में रंग रमण वासतै म्हैं दारू फूल तथा दुवारौ दियौ।
—वी.स.टी.

रू०भे०—दुव्वार।

दुवाह-वि० [सं० दुर्वाह या द्विवाह=द्विबाहु] १ दोनों हाथों से प्रहार करने वाला, वीर, योद्धा। उ०—१ वैरियां ऊवेड़ जाड़ा धंखी माह बांवराड़ा। दुवाह अखाड़ाजीत घाड़ा रांमदूत।—र.ज.प्र.

उ०—२ हुई हळवळ हैंमरां वणी सिंधुरां सवाहां। दसतांना बगतरां अंग आसुरां दुवाहां।—रा.रू.

२ जबरदस्त, शक्तिशाली (बांकीदास)

सं०पु०—३ तुरंग, घोड़ा। उ०—१ सिलहां खांना ऊघड़ै वह भड़ कछै दुवाह। कटकां विहुं हूंकळ कळळ, हुवै सनाह सनाह।
—वचनिका

उ०—२ महा समूह मूंह देखि मूंह मोड़ते नहीं। उछाह चाह आहवी दुवाह दौड़ते नहीं।—ऊ.का.

उ०—३ गढ़ गोळा खायां गजब, दुय रे दुरद दुवाह। रण में रूडी रूक ही, सूरा-ढल्ल सनाह।—रैवतसिंह भाटी

४ सेना, फौज। उ०—दळी हाथियां हैमरां पाय कळी तोड़ा लाय दारू। दूठमलां वहुं दिसा हाकली दुवाह।
—उमेदसिंह सीसोदिया री गीत

रू०भे०—दुवाह।

अल्पा०—दुवाहियौ, दुवाहौ, दुवाहौ।

दुवाहियौ, दुवाहौ—देखो 'दुवाह' (अल्पा., रू.भे.) उ०—पात्रां दळ मोटा निज पांणां, चौरंगी खळां सावळां चोट। दूजो 'जेत' दियंतौ दीपै, कठकां बधै दुवाहौ कोट।
—राठौड़ दयाळदास सूरजमलोत चांपावत री गीत

दुविध, दुविधा—देखो 'दुविधा' (रू.भे.)

दुबे-सं०पु० [सं० द्विवेदी] ब्राह्मणों का एक भेद।

दुवेरा—देखो 'दुवारा' (रू.भे.)

दुवौ-वि० [सं० द्वि] दूसरा, भिन्न। उ०—दुवै असि आप चढ़ै सु दुभाल। निजां असि चाढ़वियौ नदलाल। विहूं झलिया झड़तां खग वूर। 'पिथा' हर सूर दता अद पूर।—सू.प्र.

दुव्वळ—देखो 'दुरवळ' (रू.भे.) उ०—कहां जेठ दिनकर कहां, खद्योत खिसाया। कहां सिंह गजरिपु कहां, किंखि दुव्वळ काया।—वं.भा.

दुव्वाधि-सं०पु०—१ एक वानर का नाम। उ०—विदूरथ पच्चास जोजन्न वांणी। डळा साठ जोजन्न दुव्वाधि आंणी।—सू.प्र.

२ देखो 'दुविधा' (रू.भे.)

दुव्वार—देखो 'दुवारौ' (रू.भे.) उ०—इक भाटी आवखी, पियै दुव्वार सरावां। भैंसा आधा भखै, बोट नुकळ मैं कवावां।—वं.भा.

दुभर—देखो 'दूभर' (रू.भे.) उ०—१ दुभर पेट भरण नूंन दिन, दस रड़वड़सां देस वदेस। पांखां वगर किया पारेवा, ज सुरग विया 'जगतेस'।—जवांनजी आढ़ौ

उ०—२ घणै परकार हीरां अठै, दुभर भरै दिवस। तो ग्रेक सखिया तवै, आसी पीव अवस।—वगसीरांम प्रोहित री वात

दुभांत-सं०स्त्री० [सं० द्वि-भांति या दुर्भाति] भिन्नता, भेद, कपट, दुराव। उ०—पग पग घटिया पाहुणा, खागां सहणी खांत। परूसै पांत में, भूलै केम दुर्भांत।—वी.स.

रू०भे०—दुरभांत, दुरभांति।

दुभाखी—देखो 'दुभासी' (रू.भे.)

दुभाखियौ, दुभासियौ—देखो 'दुभासी' (अल्पा., रू.भे.)

दुभासी-वि० [सं० द्विभाषिन्] १ दो भाषाएँ जानने वाला.

२ दो भाषाएँ वोलने वाला।

सं०पु०—वह मनुष्य जो दो अलग-अलग भाषाएँ जानने वाले मनुष्यों को एक दूसरे की बात समझावे, दो भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलने वालों के बीच का मध्यस्थ जो दोनों की भाषाओं को जानता हो और एक दूसरे को उनकी बात का अभिप्राय समझावे।

रू०भे०—दुभाखी।

अल्पा०—दुभाखियौ, दुभासियौ।

दुभितियौ-वि० [सं० द्वि+भीत्ति] दो दीवार वाला मकान।

दुभ्भर—देखो 'दूभर' (रू.भे.) उ०—सकत सेर मन मेर, वेर दुभ्भर भर झल्लण। भुज आजांन प्रमांण, पांण असहां खग पल्लण।
—रा.रू.

दुमंग—देखो 'दमंग' (रू.भे.) उ०—'सूर' सुतण तिण समै, 'हठी' बोलियौ झळाहळ। उमंग समर उछाह, दुमंग पौरस दावानळ।
—सू.प्र.

दुमंगळ—देखो 'दमंगळ' (रू.भे.) उ०—कहितौ इम आद लगे कछ-वाहो, सूरां मरणौ सही संसार। दुमंगळ हुवा अमंगळ देखै, नांम कुसळ मत देखै नार।—गोरधन गाडण

दुमंजलौ—देखो 'दोमंजलौ' (रू.भे.)

दुमंनउ—देखो 'दुमनौ' (रू.भे) उ०—हीयौ तेह फूटियौ, जेण मन कियौ दुमंनउ। स्रवण तेह सधीइ, जेण हरि सुण्यउ विमंनउ।
—प.च.चौ.

दुम-सं०स्त्री० [फा०] १ पुच्छ, पूंछ। उ०—अद्रु रूप सिखर थळ दुम विमोह, सिंगार चमर किर पूंछ सोह। निज तेज सरति चत्र जुवल नालि।—रा.रू.

२ पीठ का निम्न भाग, (१)। उ०—हय हैरांण पलांणै है(य)वर, ताता खड़ै और ही तौर। अपणा चित राखै आगारी, दुम ऊपर वागारौ दौर।—कपूत री गीत

दुमकड़ौ—देखो 'दमकड़ौ' (रू.भे.)

दुमगी-सं०पु०—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।

दुमची–सं०स्त्री० [फ़ा०] १ घोड़े के पुट्ठे पर पहनाया जाने वाला आभूषण विशेष २ घोड़े के साज में वह तसमा जो पूंछ के नीचे दबा रहता है. ३ पुट्ठों के बीच की हड्डी।

रू०—धुमची।

दुमणा, दुमणापणौ–सं०पु० [सं० दुर्मनस्+त्व] उदासीनता।

उ०—किम आप कमांण न जाय कितं। निसचै सिर भोगवणी तं। कथ कूड़ उपावय साच करो। हित सूं दुमणापण वेग हरो।
—पा.प्र.

दुमता–वि० [सं० द्वि+मत] १ दूसरे मत वाला, विरुद्ध।

उ०—रथ कुळ लज्जा धारियो, थयो पतसाह दुमत्त। भुज दूभर धुर ओड़ियो, अइयो 'आसावत्त'।—रा.रू.

२ भिन्न मति या विचार का।

सं०स्त्री०—दो मात्रा (छंदशास्त्र) उ०—गण संजोगी आद गुरु, संजुत व्यंदु गुरेण। गुरु फिर वक्र दुमत गणि, लघु सुध एक कळेण।
—र.ज.प्र.

दुमदार–वि० [फ़ा०] १ पूंछ वाला. २ जिसके पीछे कोई पूंछ की सी वस्तु लगी या बंधी हो।

दुमन—देखो 'दुमनौ' (रू.भे.) (डिं.को.) उ०—१ 'दारा' चुप रहियो दुमन, सिर नमाय अति सोच। 'रतो' बुलावण साह रै, उर थायो आलोच।—वं.भा.

उ०—२ ऊठतो अनै पड़तो अवन, तन विपती सूं तावियो। मन दुमन थियो फीकै मुखर, यम सूरजमल आवियो।—पा.प्र.

दुमनू, दुमनो, दुमन्नौ–वि० [सं० दुर्मनस् (स्त्री० दुमनी, दुमन्नी) उदासीन, खिन्न, दुखी (डिं.को.) उ०—१ दमंगळ विन दुमनो रहै, जड़ै न कंगल जंत। सखी वधावौ त्यां भड़ां, जेथ जुड़ीजै कंत।—वी.स.

उ०—२ दुमना थया विखायती मरतां सांमंत सीह। थळ आया वळ ओढ़णा सोई धमळ अबीह।—रा.रू.

उ०—३ धमळ विभन्नो धुर तजै, देख दुमन्नो साथ। उण वेळा तांडै 'अजो', मूछां घालै हाथ।—रा.रू.

रू०भे०—दुमंन्नउ, दुमन, दूमणउ, दूमणो, दूमनो।

दुमांम—देखो 'दमांम' (रू.भे.)

दुमांमी–उभ०लिं० [देश०] १ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—१ कंत वहोत कर रीझीआं, सुंदर सुं सुख जांण। कांमणि ऊभी मोहल मइं, सो दे दुमांमी आंण।—व.स.

उ०—२ मुलतांणी ताखो मछीपटणो तासतो टुकडी दूमेंणां वासतो मीसंजर भेरू तनमुख चोरसो अटायण दुमांमी सालु जरकसी कचीयो चुंनड़ी।—व.स.

२ देखो—'दमांमी' (रू.भे.)

दुमात, दुमाता–सं०स्त्री० [सं० द्वि=दूसरी+मातृ] सौतेली मां।

उ०—१ पछै राव ही समायो तद टीको सुरूपसिंह दुमात भाई थो उण नूं दियो।—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

उ०—२ म्हारो दूजो दुमात भाई राज बैठो, म्हांनूं धरती मांह सूं परा काढ़िया।—नैणसी

उ०—३ सू प्रथीराजजी रै पाटवी कंवर 'भींवसी' अरु 'रतनसी' हा, 'सांगैजी' रै दुमात भाई।—द.दा.

यौ०—दुमात-जायो, दुमात-भाई।

दुमायो–वि० [सं० द्वि=दूसरी+मातृ+जात] (स्त्री० दुमाई, दुमायी) सौतेली मां से जन्मा हुआ, सौतेला।

दुमार–सं०स्त्री० [सं० दुः=कठोर, दुरूह+मारः=हनन, बाधा, अड़चन] १ कष्ट, तकलीफ, तंगी।

उ०—१ जठै जम काळ जरा नहिं जोर, घुरै घट नाद अनाहद घोर। दुरास दुमार न त्रास दुकाळ। सुधा जळ वारह मास सुकाळ।
—ऊ.का.

उ०—२ नहर सुधार रु नीर री, दाटी सै'र दुमार। मेरवांन मुरधर महिप, हेर गया म्हे हार।—ऊ.का.

२ अभाव, कमी। उ०—करै सुमार भलाई कितरां, जेठ तुमार जमाड़ी। ओर खुमार चढ़ी नहिं अंतर, एक दुमार अगाड़ी।
—ऊ.का.

दुमिला–सं०पु०—आठ सगण का एक वर्णवृत्त विशेष (र.ज.प्र.)

दुमिला-निसांणी–सं०स्त्री०—डिंगल का वह 'निसांणी' छंद जिसमें प्रथम १४ और फिर ९ मात्रायें हों और तुकांत में गुरु लघु हों।

दुमुखि–वि० [सं० द्विमुखी] कपटी, धूर्त। उ०—प्रगटघो वरस पचोतरो, सांवण सघण सराय। साह करंडव पंखि पर, दुमुखि रहै चख लाय।
—रा.रू.

सं०स्त्री० [सं० द्विमुखी] दो मुंह वाला सांप जिसमें विष नहीं होता है।

दुमेण, दुमेण, दुमेणियो, दुमेणो–सं०पु० [सं० द्वि+फा० मोम] बरसात के बचाव के लिये एक प्रकार का मोम मिला हुआ मोटा कपड़ा।

उ०—१ जरदोज कसबो मुंगीपटण तफ्ई अतलस मुलमुल जांमावाडि लखारस वासतो मछीपटण ताखो साळू जरकसी दुमेणा कचीयो तनसुख नीलक पटोली सुप चुंनडी अटांयण मीसंजर तासतो चोरसो।
—व.स.

उ०—२ वरसाळ बहु भांति हे. भीजतो घरि आय। मो सुगणी रा साहिवा, दो दुमेण्या ल्याव।—व.स.

दुमेळ–वि०—जिसका मेल न मिलता हो, असमान।

सं०पु०—१ वैमनस्य, शत्रुता। उ०—१ दिल साजनां दुमेळ, नीच संग ओछी नजर। अति सबळां ऊखेल, पैलां घर वांछै पिसण।
—वां.दा.

उ०—२ रुखमणी राजि तणै पटरांणी, दईता हुंता सदा दुमेळ। प्रम परधांन वात नां अह्नां, मुंहमद......मेळ।—पी.ग्रं.

२ 'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार डिंगल का एक गीत छंद विशेष जिसके प्रथम और तृतीय चरण में प्रत्येक में दो दो वार तुकबंदी सहित सोलह-सोलह मात्राएं होती हैं तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण की तुकबंदी होती है और प्रत्येक में दस दस मात्राएं होती हैं। इसी

क्रम से अन्य द्वाले भी बनते हैं. ३ 'रघुनाथरूपक' के अनुसार डिंगल का एक गीत छंद विशेष जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम चरण में १८ मात्राएं होती हैं तथा अन्य सभी चरणों में सोलह-सोलह मात्राएं होती हैं। प्रत्येक चरण के अंत में चौकल (चार मात्रा का शब्द) होता है तथा द्वाले के चार चरणों में प्रथम दो की परस्पर तुकबंदी होती है तथा तृतीय और चतुर्थ चरण की भी परस्पर तुकबंदी होती है।

दुमेळसावझड़ौ–सं०पु०—'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार डिंगल का एक गीत छंद विशेष जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम चरण में १६ मात्राएं होती हैं तथा अन्य सभी चरणों में सोलह-सोलह मात्राएं होती हैं। प्रत्येक द्वाले के प्रथम और द्वितीय चरण की तुक मिलती है तथा तृतीय व चतुर्थ चरण की तुक मिलती है। तुकांत में गुरु लघु का नियम नहीं होता है।

वि०वि०—यदि चारों चरणों की तुक मिलती है तो यह गीत 'पालवणी' कहलाता है और यदि द्वितीय व चतुर्थ चरण की तुक मिलती है तो यही 'अवंकड़ौ' गीत कहलाता है।

दुयंगम—योद्धा, वीर। उ०—'गिरधर' सुत सिवसाह, दुयगम। 'अमर' सुजाव 'धीर' बळ ओपम।—रा.रू.

देखो 'दुरगम' (रू.भे.) उ०—वनिता-तणउ वियोग ते, महा-दुयंगम होय। उमया! संकर! वीनवउं, मुझ मेळावनु सोय।
—मा.कां.प्र.

दुय–वि० [सं० द्वि] दो। उ०—१ पत आलंबन प्रिया, प्रिया आलंबन पीव वर। हेक प्रांण दुय देह, प्रीत अणरेह परसपर।—र.रू.

उ०—२ सुजि पौंचिया भुजंग दुय संधिया। बाजूबंध भुजंग दुय बांधिया।—सू.प्र.

दुयण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—२ हिंदवा पाट रा ओट जसराज हर, दळां घण थाट रा मौड़ दरसै। आट रा दुयण खत्रबाट रा ईखतां, वदन खत्रवाट रा नूर दरसै।—आईदांनजी सोदौ

उ०—२ समां सिणगार दिढ़गाढ़ पेखै सयण, दुयण जमदाढ़ जमदाढ़ देखै।—क.कु.बो.

उ०—३ बीतौ यौं साठौ बरस, स्री महाराज प्रसन्न। ऊपर आयौ इकसठौ, दुयणां फिरिया दिन्न।—रा.रू.

दुयेण–वि० [सं० द्वि+रा०प्र०एण] १ दो।

२ दुगना, द्विगुन। उ०—देव राघव दोन पाळ दयाळ वंछित दायकं। नाग मांनव देव नांम रटंत सीय सुनायकं। माथ-पंथ दुयण भंज अगंज भूप महाबळं। वंद तूं 'किसनेस' पात सुपाय जे जन वाछळं।—र.ज.प्र.

दुयोड़ी—देखो 'दूहियोड़ी' (रू.भे.)

दुयोड़ौ—देखो 'दूवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुयोड़ी)

दुरंग, दुरंगि, दुरंगौ–सं०पु० [सं० दुर्ग] १ दुर्ग, गढ़, किला (डिं.को.)

उ०—१ नीसरणी लागै नहीं, लागै नहीं सुरंग। लड़ नहिं लीधौ जाय औ, दीधौ जाय दुरंग।—बां.दा.

उ०—२ ज्यों कीध बंदगी हाथ जोड़, वां दीध बगस दौलत अरोड़। इंद्रसिंघ राव सूं वैर अंग। दळ सजे जेण घेरै दुरंग।—वि.सं.

उ०—३ चउंड राइ चक्र फेरियइ चंगि। दारुणी देस लीधइ दुरंगि।
—र.ज.प्र.

२ वन, कानन (नां.मा.)

३ दो मुँह से या दुतरफा बात करने का भाव, छल, कपट।

वि०—१ दो रंगों का। उ०—१ सित कुसुमां गूँथी सुखद, वेणी सहिया व्रंद। नागणि जांणे नीसरी, सांपड़ि खीरसमंद। सांपड़ि खीर समंद दुरंग संवारिया। धारा फेण कलिंद, तनूंजा धारिया। भासण उपमा और मनोरथ भेळिया। मझ आटी मखतूळ क मोती मेलिया।
—बां.दा.

२ अप्रिय, कटु। उ०—बापइ आगळि बाळपणइ, कहीउ वयण दुरंग। एक दिवस ते संभरिउ, हूउ मनि उछंग।
—विद्याविलास पवाडउ

३ खराब, बुरा।

रू०भे०—दोरंगी।

दुरंगीयज–सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)

दुरंगौ–वि० [सं० द्वि+रंग] (स्त्री दुरंगी) १ दो रंगों का. २ दो प्रकार का, दो तरह का. ३ अप्रिय. ४ खराब, बुरा. ५ भिन्न प्रकृति या स्वभाव का. ६ दोनों पक्षों की ओर झुकने वाला, दोगला. ७ वर्णशंकर।

रू०भे०—दोरंगौ।

दुरंड–वि०—कटा हुआ। उ०—कटचा घण सज्जळ छज्जळ कांन। सिर गिर कज्जळ कूट समांन। ससूदित साप समाकृत सुंड। दतूसळ मूसळ रूप दुरंड।—मे.म.

दुरंत–वि० [सं० दुर्=अंत] १ शत्रु (ह.नां.) २ भयंकर, भीषण।

उ०—दगि नाळ झाळ दुरंत, गढ़ घेरियौ गहतंत। उडि रीठ गोळां आग, लग अगन में झड़ लाग।—सू.प्र.

३ जिसका अंत या पार पाना कठिन हो, अपार. ४ जिसे करना या पाना सहज न हो, दुर्गम, कठिन, दुस्तर. ५ जिसका अंत या परिणाम बुरा हो, अशुभ, कुत्सित, बुरा।

रू०भे०—दुरंद।

दुरंतक–सं०पु० [सं०] शिव, महादेव।

दुरंतक–सं०पु० [देश०] ऊंट (अ.मा.)

दुरंतर–वि० [सं० दुर्+अंतर] अति दूर, बहुत दूर।

उ०—भाई तौ गत अलख अदेस। दोखी निज दीख दुरंतर देस।
—गो.रू.

दुरंद—देखो 'दुरंत' (रू.भे.)

दुर—अव्य०वा०उप० [सं० दुर्] १ इसका प्रयोग दूषण, निषेध, कठिन

आदि के लिये होता है जैसे दुरात्मा, दुरदष्ट, दुरगम आदि, दुरदिन।
[सं० दूर] २ एक शब्द जिसका प्रयोग तिरस्कार पूर्वक हटाने के लिये होता है जिसका अर्थ होता है 'दूर हो'।
(मि० दुर)
सं०पु०—छिपने या गुप्त रहने का भाव।

दुरइ—अव्य० [सं० दूर] दूर, अलग, पृथक। उ०—लोक सहू मनि हरखित थया। दुख दोहाग दुरइ टळि गया। पुगळ मांहि वधावा घणा। हिव ऊमर करइ सा परि मुणउ।—ढो.मा.

दुरकरम—सं०पु० [सं० दुष्कर्म] बुरा कार्य, दुष्कर्म।
उ०—माई ! मुरां घरम सरसावो। मेछ्र घरम दुरकरम मिटावो।
—रा.रू.

दुरकारणौ, दुरकारबौ—देखो 'दुतकारणौ, दुतकारबौ' (रू भे.)
उ०—"फिट रांड ! थारो काळो मूंहडो; हूं तो थारो मन जोवतो थो; तूं रांड इसड़ा कांम करै" तरै रांड नै दुरकारी; तरै पाछी आई।—नैणसी
दुरकारणहार, हारौ (हारी), दुरकारणियौ—वि०।
दुरकारिओड़ौ, दुरकारियोड़ौ, दुरकारयोड़ौ—भू०का०कृ०।
दुरकारीजणौ, दुरकारीजबौ—कर्म वा०।

दुरकारियोड़ौ—देखो 'दुतकारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुरकारियोड़ी)

दुरखी—सं०स्त्री [फा० दुरुख] दो तह। उ०—वहे साज वींटिया, विहद मुखमलां बनातां। रेसम तंग मुहरियां, तखी दुरखी दरसातां।—सू.प्र.

दुरगंद, दुरगंध, दुरगंधि, दुरगंधी—सं०स्त्री० [सं० दुर्गंध] बुरी गंध, बदबू, बुरी महक। उ०—घारी ग्रंबा-वुंघ, ग्रंद ग्रादत ग्रळियां री। दपट उडै दुरगंध, गंध नासै गळियां री।—ऊ.का.

दुरग—सं०पु० [सं० दुर्ग] १ गढ़, किला (डि.को.)
उ०—की वह सेव राज हव कीजै। मनसुध बंवव दुरग मांगीजै।
—सू.प्र.
२ ऊंट (डि.को.)
वि०—जहां पहुंचना कठिन हो, दुर्गम।
रू०भे०—दुग, दुग्ग, दुरंग, दुरगस, दुरग्ग, दुरंग, दुरंगू, दुरुग, द्रंग, द्रुंग, द्रुग, द्रुग।

दुरगत—स०स्त्री० [सं० दुर्गति] १ निर्धनता, कंगाली (डि.को.)
२ देखो दुरगति' (रू.भे.) उ०—हाका हूवो सुण नै लोग-बाग भेळा हुग्या। रावळा रा कणवारिया री आ दुरगत देख'र वे डरग्या।
—रातवासो

दुरगतरणी—सं०स्त्री० [सं० दुर्गतरणी] एक देवी का नाम।

दुरगति, दुरगती, दुरगत्त—सं०स्त्री० [सं० दुर्गति] १ बुरी गति, दुर्दशा, बुरा हाल. २ परलोक में होने वाली दुर्दशा, नरक।
उ०—१ वाहु नांम तीर्थकर यउ मुम्ह, दुरगति पड़तां बांह रे। हुं तपतउ आव्यउ तुम्ह पासै, तुम्हे करउ ठाढ़ी छांह रे।—स.कु.
रू०भे०—दुग्गय, दुग्गत।

दुरगदास—सं०पु०—इतिहास प्रसिद्ध वीर राठौड़ दुर्गादास।
वि०वि०—वीर दुर्गादास राठौड़ आसकरण का पुत्र था। इसका जन्म वि०सं० १६९५ के दूसरे सावण की १४ सोमवार तदनुसार १३-८-१६३८ ई० को हुआ था। यह बड़ा देशप्रेमी, वीर, सदाचारी, स्वार्थ त्यागी और स्वामिभक्त था। मारवाड़ नरेश जसवन्तसिंह के देहावसान पर उसके नवजात पुत्र अजीतसिंह की मुगल सम्राट ओरंगजेब से इसी वीर ने रक्षा की थी तथा उसे गुप्त रूप से सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया था। दुर्गादास ने बड़ी स्वामि-भक्ति से राजकुमार का पालन-पोषण करवाया। राजकुमार के युवा होने तक उसने बराबर मुगलों से लोहा लिया। युवा हो जाने पर अजीतसिंह ने इसी वीर तथा अन्य सरदारों की मदद से अपने पैतृक राज्य पर पुनः अधिकार किया था। कुछ समय पश्चात् महाराजा अजीतसिंह कुछ बुरे लोगों के बहकावे में आकर वृद्ध दुर्गादास को देश निकाला दे दिया। इस महान् और स्वामि-भक्त वीर की मृत्यु उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे हुई थी जहां पर एक छतरी बनी हुई है।

दुरगपाळ—सं०पु०—गढ़ का रक्षक, किलेदार।

दुरगम—वि० [सं० दुर्गम] १ कठिन, विकट, दुस्तर. २ जहां जाना बहुत कठिन हो, औघट. ३ जो आसानी से समझ में नहीं आवे, जिसे जानने के लिए सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता हो, दुर्ज्ञेय.
(नां.मा.) ४ भयावह, डरावना।
सं०पु०—१ संकट, स्थान. २ दुर्ग, किला, गढ़. ३ वन, जंगल. ४ विष्णु।
रू०भे०—दुगम, दुगमी, दुगम्म, दुर्गाम, दरगम, दुरगमी, दुर्यगम।

दुरगमता—सं०स्त्री० [सं० दुर्गमता] दुर्गम होने का भाव।

दुरगरक्षक—सं०पु० [सं० दुर्गरक्षक] किलेदार।

दुरगलंघण, दुरगलंघन—सं०पु० [सं० दुर्गलंघन] रेतीले व दुर्गम स्थानों को पार करने वाला, ऊंट।

दुरगांमी—वि०—कुमार्गी, पापी।

दुरगा—सं०स्त्री० [सं० दुर्गा] १ आदि शक्ति, देवी. २ पार्वती, महामाया (अ.मा.) ३ नौ वर्ष की कन्या।

दुरगाधिकारी—सं०पु०यौ० [सं० दुर्गाधिकारी] गढ़ का अधिपति, किलेदार।

दुरगाध्यक्ष—सं०पु० [सं० दुर्गाध्यक्ष] गढ़ का प्रधान, किलेदार।

दुरगानवमी—सं०स्त्री० [सं० दुर्गानवमी] १ चैत्र शुक्ला नवमी. २ आश्विन शुक्ला नवमी. ३ कार्तिक शुक्ला नवमी।

दुरगाष्टमी—सं०स्त्री० [सं० दुर्गाष्टमी] १ चैत्र शुक्ला अष्टमी. २ आश्विन शुक्ला अष्टमी।

दुरगुण—सं०पु० [सं० दुर्गुण] बुरा गुण, दोष, ऐब।

दुरगेस—सं०पु० [स० दुर्गेश] दुर्गाध्यक्ष. दुर्गरक्षक, किलेदार।

दुरगोत्सव—सं०पु० [सं० दुर्गोत्सव] दुर्गा पूजा का उत्सव जो नवरात्रि में होता है।

दुरग्ग—देखो 'दुरग' (रू.भे.)

दुरग्रह-सं०पु० [सं०] १ ज्योतिष के अनुसार दुष्ट ग्रह।
उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित। दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासै दुसुपन दुरनिमित।
—वेलि.
२ देखो 'दुराग्रह' (रू.भे.)

दुरघट-वि० [सं० दुर्घट] १ जो कठिनता से हो, मुश्किल से होने लायक, कष्ट-साध्य. २ बुरा, खराब. ३ भयंकर, डरावना।

दुरघटना-सं०स्त्री० [सं० दुर्घटना] १ ऐसी बात, संयोग या कार्य जिसके होने से बहुत कष्ट, पीड़ा या शोक हो, अशुभ घटना।
क्रि०प्र०—घटणी, होणी।
२ विपद्, आफत।

दुरघोस-सं०पु० [सं० दुर्घोष] जो कटु या कर्कश ध्वनि करे; जो बुरा स्वर निकाले।
सं०पु०—भालू।

दुरड़ी-सं०स्त्री० [अनु०] मिट्टी का बना वह गोल घेरा जो पानी की नाली में निकास स्थान पर लगाया जाता है (कृषि-कूप)

दुरड़ौ-सं०पु० [देश०] छेद, सुराख, गड्ढा। उ०—संकर सागर हुयगो सुग्ड़ा। करण मिळै नहिं पांणी कुरड़ा। चोभ मांय ठहरै नहिं चुरडा। जिण री पाळ पड़ै दस दुरड़ा।—ऊ.का.

दुरचारि, दुरचारी—देखो 'दुराचारी' (रू.भे.)
उ०—१ केसि घरी नइ तांणीउं दुसासणि दुरचारि। बाळप्पिणि हुं नवि मूई कांइं तुम्ह नारि।—पं.पं.च.
उ०—२ चपल मती दुरचारणी, चित्त भाव विभचार। सीघ्र त्याग कर सूर सभा, कर नर अंगीकार।—पा.प्र.
(स्त्री० दुरचारणी)

दुरजण, दुरजन-सं०पु० [सं० दुर्जन] १ दुष्ट, नीच, खल।
उ०—१ 'बांका' विख फळ नीपजै, ज्यों विख तर री डाळ। यूं दुरजण री जीभड़ी, रैकारी कै गाळ।—वां.दा.
उ०—२ सज्जन बांधै पाळ सिर, सीसा छकियां गाळ। दुरजण फोड़ै गाळ दे, प्रीत सरोवर पाळ।—वां.दा.
उ०—३ चिड़ो बचां री चांच में, चांच दिवै भर चार। दुरजन मुख इण विध दिवै, मूरख स्रवण मभार।—वां.दा.
२ शत्रु, दुश्मन। उ०—जाळंधर 'अगजीत' रै, पुत्र 'अभौ' अवतार। दुरमत व्यापै दुरजणां, सयणां सुमत अपार।—रा.रू.
रू०भे०—दुइण, दुजण, दुज्जण, दुयण, दुरजिन, दुरिज्जण, दुरिजन्न, दूजण, दोइण, दोयण, दोयरण।
अल्पा०—दुज्जणो।
विलो०—सज्जण।

दुरजनता-सं०स्त्री० [सं० दुर्जनता] दुष्टता, खोटापन।

दुरजनि—देखो 'दुरजन' (रू.भे.) उ०—कालमुही फिरइं मंदिर मांहै, राति वल्लभ तणइं तडि जाए। जीवतइ तइं पराभवि पूरी, देव दासि जिम दुरजनि मारी।—विराट पर्व

दुरजय-वि० [सं० दुर्जय] जिसे जीतना आसान न हो, जिसे जीतना बहुत कठिन हो। उ०—अनमी आंटीला थळिया थळ वाळा। विपदा वांटीला वळिया बळ वाळा। दुरजय दीखण में निरभय दिन दूल्हा, भीखण दुरभिख में भुजबळ नह भूला।—ऊ.का.
सं०पु०—१ विष्णु. २ एक राक्षस का नाम।

दुरजाति-सं०स्त्री० [सं० दुर्जाति] नीच जाति, बुरी जाति।
वि०—बुरे कुल का।

दुरजीव- सं०पु० [सं० दुर्जीव] क्षुद्र प्राणी, जीव, प्राणी (?)।
उ०—उभै दुंब आचरै एक कवि कंब कवावे। चंपै चंगुल ग्रीव तजै दुरजीव सितावे।—रा.रू.

दुरजोण, दुरजोध, दुरजोधण, दुरजोधन, दुरजोधनौ—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—१ दुरजोण मांण, अरजणह वांण। भुजबळी भीम, सूराति सीम।—वचनिका
उ०—२ गढ़पति मिळै उजेणि गढ़, राजा 'जसौ' 'रतन्न'। रांम लख्खमण राठवड़, किर दुरजोध करन्न।—वचनिका
उ०—३ मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख। केळा छोत विसेख, जाय विदुर घर जीम्हिया।—र.ज.प्र.
उ०—४ अरजण अर दुरजोधन सहाव मांगिवा कै काजि स्री क्रिस्णजी कन्है आया। तब पणि इहै विधि हुई।—वेलि टी.
उ०—५ राजा जुचठळराओ, धारण मन ध्रु खत्र ध्रमांणी, पाळण पैज प्रत्यंग्या दुरजोधनौ 'केहरी' मांण।—गु.रू.बं.

दुरज्जटा-सं०स्त्री० [सं० दुर्ज्जटा] बिखरे हुए केशों वाली देवी।
उ०—देवी भूतड़ा अम्मरी वीस भूजा, देवी त्रीपुरा भैरवी रूप तूजा। देवी राखसं धोमरे रक्त रूती, देवी दुरज्जटा विकट्टा जम्मदूती।
—देवि.

दुरज्योधण, दुरज्योधन—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—अरजुन का वांण, दुरज्योधन का मांण। रस विलास का पंद, वचन का हरचंद।—वगसीरांम प्रोहित री वात

दुरणौ, दुरबौ-क्रि०अ० [देश०] १ गुप्त होना, ओट में होना, लुकना, छिपना। उ०—१ दुरै निहारै दंतड़ा, वादळ दांमणियांह। अति ऊजळ त्यां आगळी, की हीरा कणियांह।—वां.दा.
उ०—२ भजि जात प्रजा मय वात भंगीलां, पाटण तूंअर कंप पुरै। वड गूजर जाट अहीर तजै वळ, दाट लगै पुर राट दुरै।—रा.रू.
२ दूर होना, समाप्त होना, मिटना। उ०—उगै हुए पूरव पुण्य अंकूर। दुरी दुवधा दुख दाळद दूर।—ऊ.का.
दुरणहार, हारौ (हारी), दुरणियौ—वि०।
दुरवाड़णौ, दुरवाड़बौ, दुरवाणौ, दुरवाबौ, दुरवावणौ, दुरवावबौ, दुराड़णौ, दुराड़बौ, दुराणौ, दुराबौ, दुरावणौ, दुरावबौ—प्रे०रू०।

दुरिग्रोड़ो, दुरियोड़ो, दुरचोड़ो—भू०का०कृ०।
दुरीजणो, दुरीजबो—भाव वा०।
दुरत–वि० [सं० दुरित] १ भयंकर, भयावह।
उ०—मेख उखिक खीजिया भमंगा। दुरत रोस चख भड़ै दमंगा। —सू.प्र.
२ जबरदस्त। उ०—बजरंग घाट काळा विकट, दुरत थाट जमदूत सा। कर जोम गयण ग्रोधस करै, घोम नयण अवधूत सा।—सू.प्र.
३ पापी, दुष्ट।
[सं० दुःसह] ४ जो कठिनता से सहा जा सके.
५ गुप्त (ग्र.मा.)
सं०पु०—१ क्रोध (ग्र.मा.) उ०—दुरत निलै तसळै वळ दीधो। कमधज घनख टंकारव कीधो।—सू.प्र.
२ पाप, पातक. ३ उपपातक, छोटा पाप।
४ शत्रु (ग्र.मा.)
रू०भे०—दुरत्त, दुरित, दुरिति, दुरिउ, दुरीय।
मह०—दुरतेस।
दुरतेस—देखो 'दुरत' (मह., रू.भे.) उ०—दसै खग भाट पड़ै दुरतेस। समोभ्रम 'रूप' लड़ै 'सुरतेस'।—सू.प्र.
दुरतो–सं०पु०—वह घोड़ा जिसका रंग सफेद या श्याम हो। (अशुभ, शा.हो.)
दुरत्त—देखो 'दुरत' (रू.भे.) उ०—वळ दुर्ण विजपाळ रो, जोड़ घमळ जगवत्त। वाभ निभाहण मारवां, गाहण मेछ दुरत्त।—रा.रू.
दुरद, दुरदन—देखो 'द्विरद' (रू.भे.) (ग्र.मा.)
उ०—ग्रस्व दुरद जेब ग्रनेक, ग्रनि छात ग्रिह ग्रनेक। सुभ तांन नौबत सद्द, मनि हग्त गंध्रव मद्द।—रा.रू.
दुरदम, दुरदमन–वि० [सं० दुर्दम, दुर्दमन] जिसका दमन करना कठिन हो, प्रचण्ड, प्रबल।
दुरदर–वि०—दुःख से उत्तीर्ण (?)। उ०—विच्छाय स्यांम दीनवदन हूग्रो, जिसिउ चपेटां ग्राहणिउ मांकड़, जिसिउ डाळ चूको वानर, जिसिउ घाय चूको सुभट, जिम दाव चूको जूग्रारी, विद्या चूक्यो विद्याधर, फाल चूको दुरदर, ठांम चूको भंडारी, यूथभ्रस्ट हरिण, चोर जिम ग्रणग्रसंण, राज्य चूको राजा, पदवी चूको पदस्थ, भीख चूको भिखारी।—व.स.
दुरदरस–वि० [सं० दुर्दर्श] १ जिसे देखना ग्रत्यन्त कठिन हो, जो कठिनता से दिखाई दे. २ जो देखने में भयंकर हो।
रू०भे०—दुरदरसन।
दुरदरसन–सं०पु०—१ कौरवों का एक सेनापति।
२ देखो 'दुरदरस' (रू.भे.)
दुरदसा–सं०स्त्री० [सं० दुर्दशा] बुरी दशा, दुर्गति।
उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित। दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, दुनासै सुपन दुर निमित। —वेलि.
दुरदांन–सं०पु० [सं० दुर्दान] चांदी।
दुरदाळ–सं०पु० [सं० दुर्दलम्] हाथी (डि.को.) उ०—वहै रत छोळ ठहै विकराळ, दंतूसळ भूमि थहै दुरदाळ।—सू.प्र.
दुरदिन, दुरदीह–सं०पु० [सं० दुर्दिन, दुर्दिवस] दुर्दशा का समय, बुरा दिन, बुरा वक्त (डि.को.)। उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित। दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासै दुसुपन दुरनिमित।—वेलि.
दुरदुर—देखो 'दादुर' (रू.भे.) (डि.को.)
दुरदुरूढ़–सं०पु० [सं० दुर्दुरूढ] नास्तिक।
दुरदेव–सं०पु० [सं० दुर्दैव] १ दुर्भाग्य, ग्रभाग्य. २ बुरा संयोग।
दुरद्द—देखो 'द्विरद' (रू.भे.) उ०—दुहूं विसाळ चंपडाळ ग्रोपयं भुजा इसो। दुरद्द दुत रंगदार चद्रबाह चोपसो।—सू.प्र.
दुरद्धर–सं०पु० [सं० दुर्द्धर] १ पारा. २ एक नरक का नाम.
३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम. ४ महिषासुर का एक सेनापति.
५ शंखासुर के एक मंत्री का नाम. ६ अशोक वाटिका में हनुमान के हाथ से मारा जाने वाला एक राक्षस जो रावण का सैनिक था.
७ विष्णु।
वि०—१ जो सरलता से पकड़ में न आ सके. २ प्रबल, प्रचंड.
३ जो सरलता से समझ में नहीं आवे।
दुरद्धरख, दुरधरस–सं०पु० [सं० दुर्द्धर्ष] १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम. २ एक राक्षस जो रावण का सैनिक था।
वि०—१ जिसको वश में करना कठिन हो। जिसका सरलता से दमन नहीं किया जा सके. २ प्रबल, उग्र।
दुरद्रस्टी–सं०स्त्री० [सं० दुर्+दृष्टि] बुरी निगाह, बुरी दृष्टि।
दुरधर, दुरधार–वि० [सं० दुर्द्धर] कठिन, मुश्किल।
उ०- दुरधर डंका दे बंका द्रढ़ धाया। उठिया उद्योगी उद्दिम उमगाया। कित है बंबोई उड़िया कलकत्तो। मादू मुरधरिया करियो मिळ मत्तो।—ऊ.का.
दुरनिमित दुरनिमित्त–सं०पु० [सं० दुर्निमित] भावी बुरी घटना की सूचना देने वाला शकुन, बुरा शकुन उ०—मन सुद्धि जपंता रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित। दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासै दुसुपन दुरनिमित।—वेलि.
रू०भे०—दुरमित।
दुरनीति–सं०स्त्री० [सं० दुर्नीति] कुनीति, अन्याय।
दुरन्याय–सं०पु० [सं०] ग्रत्याचार, अन्याय।
दुरपंथ–सं०पु० [सं०] बुरा मार्ग, कुमार्ग।
दुरपदी—देखो 'द्रोपदी' (रू.भे.)
दुरपारो–वि० [सं० दुष्पार] जिसको कठिनता से पार किया जा सके. दुर्लंघ्य। उ०—दक्खण हसन ग्रली दुरपारो। ग्रागळ सूरां संद ग्रफारो।—रा.रू.
दुरबख—देखो 'दुरभिख' (रू.भे.) उ०—लादी भारी नै ग्रोळावो लेतो। दुरबख वारी नै वोळावो देतो।—ऊ.का.

दुरबळ–वि० [सं० दुर्बल] १ अशक्त, कमजोर (डि.को.)
उ०—१ मावड़िया मुख ढंकियां, वैसे फाड़े वाक। स्रवण सुणे नह वीर रस, दुरबळ घणो दिमाक।—बां.दा.
उ०—२ भोगी कहो दुरबळ किउं क्षत्री।—सिंघासण बत्तीसी
उ०—३ निरबळ चोरां डर बसियोड़ा नैड़ा। दुरबळ मारां पर कसियोड़ा डेरा।—ऊ.का.
२ दुबला-पतला, कृश। उ०—मारग मांहीं एक दुरबळ दीन ब्राह्मण आय सो धेनू मांगी। तद राजा तुरत देय हाथ जोड़िया।
३ निर्धन, कंगाल। —सिंघासण बत्तीसी
रू०भे०—दुब्बळ, दुरबळ।
अल्पा०—दुबळो, दूबळो।

दुरबळता–सं०स्त्री० [सं० दुर्बलता] १ कमजोरी, अशक्तता।
उ०—मिनख-हृदय-री दुरबळता-ई विचित्र हुवै है।—वरसगांठ
२ दुबलापन, कृशता।

दुरबाळ–वि० [सं० दुर्बाल] जिसके बाल झड़ गये हों, गंजा।
दुरबास–सं०स्त्री० [सं० दुर्वास] बुरी बास, दुर्गंध।
दुरबासा—देखो 'दुरवासा' (रू.भे.)
दुरबिध—देखो 'दुरविध' (रू.भे.) उ०—दुरबिध घमड़ी दे सणकारी साजी। भारी भमडीलै घर में भूवाजी। चिलमीं अमली के जुलमीं चितचावा। दासी वेस्यां रा मदवां रा दावा।—ऊ.का.
दुरबिधभाव—देखो 'दुरविधभाव' (रू.भे.)
दुरबीन—देखो 'दूरबीन' (रू.भे.)
दुरबुदी, दुरबुद्धि, दुरबुधी–वि० [सं० दुर्बुद्धि] १ दुष्ट बुद्धि वाला, नीच।
उ०—१ दुरबुदी धेन सोह चरत देख। सक्रोद भयौ तातै विसेख।
—रांमदांन लाळस
उ०—२ देह दुख दीजो संकट दीजो, सिंघ सरप भल खाई। दुरबुद्धि जन की संग न दीजो, मो सूं सही न जाई।
—स्री सुखरांमजी महाराज
२ मूर्ख।
सं०स्त्री०—बुरी बुद्धि।

दुरबेस–सं०पु०—देखो 'दरवेस' (रू.भे.)
उ०—नह पलटै खरडकै अहोनिस, घड़ दुरबेस घडै घण घाव। 'सांगा' हरो तणै आलम सह। पांतर दै महपत अनपाव।—पीथो आसियो
दुरबोध–वि० [सं० दुर्बोध] १ जो जल्दी समझ में न आवे, गूढ़।
उ०—पतसाह सचिक्कण कुंभ पर, सघण बूंद वांणी सुजण। दुरबोध मांन रहियौ सद्रढ़, कांन न कीधो वयण कण।—रा.रू.
२ मूर्ख। उ०—तूं ऊपर दोयण तणै, दया करै दुरबोध। हितअत नीत सुणाव हव, किण सिर करणो क्रोध।—बां.दा.
सं०स्त्री० [सं० दुर्+बोध] कुमंत्रणा, बुरी सलाह, कुबुद्धि।
उ०—दोयण मत खोटी दियै, बांका बिसवा वीस। डहकायो दुरबोध दे, ग्रादम नै इळवीस।—बां.दा.

दुरब्बा—देखो 'दुरबा' (रू.भे.) उ०—लांबा लांबा घर आंबा अड़ जावै। घड़ घड़ बड़ घड़ कै पीपळ पड़ि जावै। टणका टणका तरु जरब्बै दुरि जावै। दुरब्बा गुरब्बा गुण गरबै दुर जावै।—ऊ.का.
दुरभक, दुरभख–सं०पु०—१ दुख, कष्ट। उ०—१ जन हरिदास दुरभख तहां, जहां न हरि सूं हेत। जे नर लाग्या न हरि हठि, जम द्वारे डंड देत।—ह.पु.वा.
देखो 'दुरभिख' (रू.भे.)
उ०—१ भेटै दुरभक मुरधरा, सुर भख चारू चाल। रायपाळ पायौ विरद, मही रेलण घणमाल।—पा.प्र.
उ०—२ दुरभख सत सटौ अड़सटौ दोनूं, कण तोटौ गुणंतरै कियौ। अबकै दियै माळवै उत्तर, 'देवै' उत्तर नकू दियौ।—देवनाथ री गीत
दुरभग—देखो 'दुरभाग्य' (रू.भे.)
दुरभर–वि० [सं० दुर्भर] १ जो लादा न जा सके, जिसे उठाना कठिन हो. २ भारी, वजनी।
दुरभांत, दुरभांति—देखो 'दुभांत' (रू.भे.) उ०—'समझदार तौ को कैवै नी, मूरखां-री वात छोडौ। मनै तौ हैरांनी आवै है, थे माइत होय'र खवावण-पीवावण-में दुरभांत कियां राखौ। छोरौ तौ कांई दूध देवै अर छोरी खोस लेवै! छीः, कित्ता ओछा विचार।
—वरसगांठ
दुरभाग—देखो 'दुरभाग्य' (रू.भे.)
दुरभागी–वि० [सं० दुर्भाग्य या दुर्भागिन्] (स्त्री० दुरभागण, दुरभागणि, दुरभागिन, दुरभागिनी) मन्द भाग्य का, अभागा।
उ०—चित विपदा वारधि पार करण को चाही, अदबिच में आती नाव भंवर में आई। दुरभागिन को हा देव भयो दुखदाई, धन पौळ पहूंच्यौ घोर घूंस ले धाई।—ऊ.का.
दुरभाग्य–सं०पु० [सं० दुर्भाग्य] खोटी किसमत, बुरा अदृष्ट, मंद भाग्य।
रू०भे०—दुरभग, दुरभाग।
दुरभाव–सं०पु० [सं० दुर्भाव] १ बुरा भाव। उ०—रयणायर पुत्री रमा, डाटी करै दुरभाव। रयणायर ते डूबवै, सूंमां केरी नाव।
—बां.दा.
२ मनोमालिन्य, द्वेष।
दुरभावना–सं०स्त्री० [सं० दुर्भावना] १ चिंता, अंदेशा, खटका.
२ बुरी भावना।
दुरभासी, दुरभासू–वि० [सं० दुर्भाषिन्] कर्कश शब्द बोलने वाला, कटु भाषी।
दुरभिक, दुरभिख–सं०पु० [सं० दुर्भिक्ष] अकाल, दुष्काल।
उ०—१ मांनव विकै पाव अन माटै दुरभिक जग में ताव दियौ, अन रांधै कोरै नह उत्तर 'लाखै' हद सोभाग लियौ।—बां.दा.
उ०—२ दुरभिख निकटासण किण नै नह दीधौ। नकटै नकटापण कृपणासय कीधौ। मिळगा धूळी ज्यूं जेस्टास्रम जूनां। सालै सूळी ज्यूं जेस्टास्रम सूनां।—ऊ.का.

रू०भे०—दुरवल, दुरमक, दुरमल।

दुरभेद, दुरभेद्य–वि० [सं० दुर्भेद, दुर्भेद्य] १ जो सरलता से भेदा न जा सके. २ जो आसानी से पार नहीं किया जा सके।

दुरमट—देखो 'दुरमुस' (रू.भे.)

दुरमत, दुरमति, दुरमती, दुरमत्ति, दुरमत्ती–सं०स्त्री० [सं० दुर्मति] खोटी बुद्धि. बुरी बुद्धि, नासमझी। उ०—भेद लिया जब दुख सुख त्याग्या, रांम नांम रंग भीना। घट घट में साहब सत जांण्या, दुरमत दूरी कीना।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ जाळंधर 'अगजीत' रै, पुत्र 'धमो' अवतार। दुरमत व्यापै दुरजणां, सयणां सुमत अपार।—रा.रू.

उ०—३ जन हरिदास या जीव कूं, अटकि अटकि समझाय। दूजि दुरमति दूरि करि, हरि चरणां चित लाय।—ह.पु.वा.

वि०—जिसकी बुद्धि ठीक न हो, दुर्बुद्धि, कम अक्ल, दुष्ट, खल।

उ०—१ ज्यूं ज्यूं लालच खार जळ, सेवै दुरमत संग। बांका अत त्यूं त्यूं बधै, असना तणी तरंग।—बां.दा.

उ०—२ दीपियौ एम मंडळ दिली, देख भ्रमं दुरमत्ति नूं। तन दहै अग्नि ज्वाळा तणा भोभाळा असपत्ति नूं।—रा.रू.

दुरमद–वि० [सं० दुर्मद] नशे या अभिमान में चूर, उन्मत्त।

दुरमन–वि० [सं० दुर्मनस्] १ उदास, खिन्न, अनमना (डिं.को.)

उ०—कुमार प्रिथ्वीराज दुरमन होय कोका री गरहा प्रकट करी अर कन्ह री मूरछा बिहाय आपरी हवेली जाय पाछौ सभा आवण री, आंट धरी।—वं.भा.

२ बुरे चित्त का, दुष्ट. ३ दुखी।

दुरमित—देखो 'दुरनिमित' (रू.भे.)

दुरमिळ–सं०पु० [सं० दुर्मिल] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १०,८ और १४ के विराम से ३२ मात्रायें होती हैं। अंत में एक सगण और दो गुरु होते हैं, इसमें जगण का निषेध होता है।

दुरमुख–सं०पु० [सं० दुर्मुख] १ राम की सेना का एक बन्दर.

२ महिषासुर के एक सेनापति का नाम. ३ नाग. ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम. ५ साठ संवत्सरों में से एक. ६ गणेशजी का एक गण।

वि० (स्त्री० दुरमुखी) १ बुरे वचन बोलने वाला, कटुभाषी.

२ जिसका मुख बुरा हो।

दुरमुखी–सं०स्त्री० [सं० दुर्मुखी] एक राक्षसी जिसे रावण ने जानकी को समझाने के लिए नियत किया था।

वि०—बुरे मुंह वाली।

दुरमुच, दुरमुसो–सं०पु० [सं० दुर्मस] कंकड़ या मिट्टी पीटने का मुगदर।

वि०वि०—एक लम्बे डंडे के नीचे लोहे या पत्थर का गोल टुकड़ा लगा रहता है जो प्रायः सड़कों पर कंकड़ और मिट्टी पीटने के काम में लिया जाता है।

रू०भे०—दुरमट।

दुरयोधन—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.) उ०—ईसे दुरयोधन अनियाई, सकळ पांडवां चींत संभाई।—रा.रू.

दुररांनी–सं०स्त्री० [फा दुर्रानी] अफगानों की एक जाति।

दुरळ–सं०पु० [देश०] उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा, झगड़ा, विघ्न।

उ०—'देसळ' राज तणा जसदंतो, दस देसां करता दुरळ।

—क.कु.बो.

दुरलभ–वि० [सं० दुर्लभ] १ जो कठिनता से मिल सके, दुष्प्राप्य।

उ०—सुज दुरलभ रखां बळ सिधां साधकां, जोगीराजां दुलभ जग। खाटण सुजस भेटियौ 'खूमैं', नरां सुरां बच जको नग।—बां.दा.

२ दुर्लंघ्य, कठिन, मुश्किल। उ०—तजन जतन सैं करत है, ममता तजै न कोय। एक कनक औ कांमिनी, दुरलभ घाटी दोय।

—सिंघासण बत्तीसी

३ बुरा, खराब। उ०—लाखां लोकां री लाखां भर लीन्ही। दुरलभ वेळा में वेळां भर दीन्ही।—ऊ.का.

४ अनोखा. ५ प्रिय, प्यारा।

विलो०—सुलभ।

सं०पु०—दूल्हा। उ०—नीराजन प्रमुख समस्त ही विधांन करि अरबुद रै अधीस दुरलभ प्रिथ्वीराज नूं आपरैं अंतहपुर आंणि वेद मंत्रां रा विधांन पूरवक अंगजा इच्छणी परिणाय दीधी।—वं.भा.

रू०भे०—दुलभ, दुल्लभ, दुल्लह।

दुरवंछ, दुरवंछौ–वि० [सं० दुर्वांछिन्] बुरा चाहने वाला।

उ०—करखि प्रांण केवियां दसा अमरखि दुरवंछां। सुरिख बांण सासत्र जांण सुरं तारिख वंछा।—रा.रू.

दुरवंस–सं०पु०—बुरे वंश का, नीच। उ०—परम अंस रवि वंस, अवर दुरवंस अभायौ। हंस वंस अवतंस, पुंस परताप सवायौ।—रा.रू.

दुरवच, दुरवचन–सं०पु० [सं० दुर्वचन] कटु वचन, दुर्वाक्य, गाली।

रू०भे०—दवीयण, दुवयण, दुवियण, दुवीयण।

वि०—१ अति तीक्ष्ण* (डिं.को.) २ तप्त, गरम* (डिं.को.)

दुरवरण, दुरवरणक–सं०पु० [सं० दुर्वर्ण, दुर्वर्णक] चांदी, रजत (अ.मा.)

दुरवळ—देखो 'दुरबळ' (रू.भे.)

दुरवसनी–वि० [सं० दुर्+व्यसनी] जिसकी आदतें बुरी हों।

दुरवस्था–सं०स्त्री० [सं०] खराब हालत, बुरी हालत।

दुरवा—१ देखो 'दोब' (रू.भे.) उ०—जिम आकासि माहि सरब पदारथ आवइं तिम दधि दुरवा अक्षत चंदन कुसम कुंकुम।—व.स.

२ देखो 'दुरवाचाप'।

दुरवाचकजोग, दुरवाचकयोग–सं०पु० [सं० दुर्वाचक योग] १ कठिन स्थलों का तात्पर्य निकालना, ६४ कलाओं में से एक।

दुरवाचाप–सं०स्त्री० [देश०] दीवार में लगभग कमर तक की ऊंचाई पर लगाया जाने वाला पत्थर जिसका किनारा दीवार से आगे तक बाहर निकला रहता है।

दुरवाद-सं०पु० [सं० दुर्वाद] १ अनुचित विवाद. २ अपवाद, निंदा, बदनामी।

दुरवादी-वि० [सं० दुर्वादिन्] हुज्जत करने वाला, कुतर्की।

दुरवार—देखो 'दरबार' (रू.भे.) उ०—कियां दुवाहां कोट 'पाल' जांगड़ गवरावै। गह मह वै दुरवार वडा भूपत वह आवै।—पा.प्र.

दुरवासना-सं०स्त्री० [सं० दुर्वासना] १ ऐसी कामना जो कभी पूरी नहीं हो सके. २ खोटी आकांक्षा, बुरी इच्छा।

दुरवासा-सं०पु० [सं० दुर्वासस्] एक मुनि जो अत्रि के पुत्र थे। ये बहुत क्रोधी स्वभाव के थे। इनके शाप और वरदान की अनेक कथाएं महाभारत एवं पुराणों में भरी पड़ी हैं। उ०—१ दुरवासा देता घणा, सगरांमदास कहै स्राप। अंवरीख पर कोपिया, उण हलगत सूं आप।
—सगरांमदास

उ०—२ द्वापर में पांडवां रै द्वारै, दुरवासा घर आई। कोप करै कर वहु दुख दीना, तौ ई रे सती सत न गमाई।
—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—दुरवासा।

दुरविध-वि० [सं० दुर्विध] दरिद्र, कंगाल, निर्धन।

उ०—गडियौ जिण रै चित्त गुण, धन तिण रै मन धूळि। दुरविध सो ही विबुध द्विज, मांनौ जीवन मूळि।—वं.भा.

सं०स्त्री०—१ निर्धनता, कंगाली. २ भूख।

रू०भे०—दुरविध।

दुरविधभाव-सं०पु० [सं० दुर्विधभाव] निर्धनता, दारिद्रय, कंगाली।

उ०—सहर अवती जिण समय, चारु दंत द्विज चंद्र। क्रम पढ़ियौ विद्या कळा, दुरविधभाव अतंद्र।—वं.भा.

रू०भे०—दुरविधभाव।

दुरविनीत-वि० [सं० दुर्विनीत] अशिष्ट, अविनीत।

दुरविवाह-सं०पु० [सं० दुर्विवाह] निंदित विवाह, बुरा विवाह।

दुरविस-सं०पु० [सं० दुर्विष] महादेव, सिव।

वि०वि०—महादेव पर विष का कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ था, अतः वे दुर्विष कहलाये।

दुरविसन-सं०पु० [सं० दुर्व्यसन] खराब आदत, बुरी लत, ऐब, अवगुण।

रू०भे०—दुरव्यसन।

दुरविसनी-वि० [सं० दुर्व्यसनी] बुरी लत वाला।

रू०भे०—दुरव्यसनी।

दुरवीणी—देखो 'दूरबीन' (रू.भे.)

दुरवेस—देखो 'दरवेस' (रू.भे.) उ०—दुरवेस गयौ पतसाह दिसी। चड मूठिय भूठिय वात इसी। सुणतां कमधां दळ मांन सही। रस वाघ थयौ निस आध रही।—रा.रू.

उ०—२ कूंतां कळह चढ़े राव कमधज, दुरवेसां पाडतौ दळ। अहंकार दे सूवर ले आई, स्वरग ले पहुंची सहस वळ।
—नापे सांखलै री वारता

उ०—३ इम 'दुरगेस' भड़सियै आयौ, दळ दुरवेस ऊठै दरसायौ। क्यों मुंहमेळ कियौ नवकोटां, असुर गया भज घाटी ओटां।—रा.रू.

उ०—४ नह पलटै खरड़कै अहो निस, घड़ दुरवेस घड़ै घण घाव। 'सांगा' हरौ तणौ आलम साहि, पात रहै महपत अन पाव।
—पीथौ आसियौ

उ०—५ दुज जंगम दुरवेस, जोगी सन्यासी जती। लोभ न राखै लेस, 'वांका' उण नूं वंदिए।—वां.दा.

वि०—दुरवेसी।

दुरवेसी-वि०—१ मुसलमान का, मुसलिम। उ०—राजा राव मिळै मन राखै, दाखै 'अजन' वचन सुज दाखै। अधपत साथ लियां दळ आया, दुरवेसी वांना दरसाया।—रा.रू.

२ बादशाह का, बादशाही. ३ फकीर का।

रू०भे०—'दरवेसी' (रू.भे.)

४ देखो 'दरवेस' (रू.भे.) उ०—दळ छीजतौ लखे दुरवेसी, वळियौ छोडै देस विदेसी।—रा.रू.

दुरव्यवस्था-सं०स्त्री० [सं० दुर्व्यवस्था] कुप्रबन्ध, अव्यवस्था।

दुरव्यवहार-सं०पु० [सं० दुर्व्यवहार] दुष्ट आचरण, बुरा बर्ताव।

दुरव्यसन—देखो 'दुरविसन' (रू.भे.)

दुरव्यसनी—देखो 'दुरविसनी' (रू.भे.)

दुरव्रत-सं०पु० [सं० दुर्व्रत] नीच मनोरथ, बुरा आशय।

वि०—बुरे मनोरथों वाला, जिसने बुरा व्रत लिया हो।

दुरस-वि० [फा० दुरुस्त] १ सीधा। उ०—दुरवेस विकट करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरौ। मम हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मंडोवरौ।—रा.रू.

२ उचित। उ०—१ निलजी कैरव नार, के ऊभी मुळक्या करै। आसी कुटुंब उधार, दैणा सो लैणा दुरस।—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ तांणतौ मांण ताकै तिको, ऊंचै मुख सूं आंगणौ। लेखवौ दुरस सगळै लखण, मरण सरीखौ मांगणौ।—ध.व.ग्रं.

३ ठीक। उ०—१ महाराज प्रसन हुय फुरमायौ—दूदा मांग! तद दूदै कयौ वचन पाऊं, अरु महाराज फुरमायौ—दुरस है, करौ अरज।—द.दा.

उ०—२ तद खाफरै कही—दुरस महाराज! हूं तौ महीना पांच सूं आज घरां आयौ छूं, विरांणपुर गयौ थौ।
—राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

उ०—३ पढ़ियौ राय विचारणा, अजुगति वात सुणाई रे। किम हो दुरस पड़ै नहीं, दोतड पडियौ भाई रे।—स्रीपाळ रास

उ०—४ महिपत महलां मांय, वीजड़ काच विड़ावियौ। जोयौ भरड़ै जाय, दुरस भुवा कीनौ दगौ।—पा.प्र.

४ श्रेष्ठ. ५ सत्य, यथार्थ. ६ जो टूटा फूटा न हो, ठीक. ७ स्वस्थ।

रू०भे०—दुरस्त, दुरुस्त, दूरस।

दुरसि—देखो 'दुरस' (रू.भे.) उ०—स्यांम वरण दोन्यूं दुरसि, एक

अजब अनुराग। जन हरिदास बोल्यो विगति, कहां कोयल कहां काग।—ह.पु.वा.

दुरसीस—देखो 'दुरासीस' (रू.भे.) उ०—१ पल पल आंतां री चमड़ी नित पीनीं, दमड़ी खरची री जातां नह दीनीं। सोचै थोरां सिर भरियोड़ा रीमां, सत्यानासी री देता दुरसीसां।—ऊ.का.

उ०—२ फरियादियां री दुरसीस सूं घरणौ डरणौ।—नी.प्र.

दुरसौ-संपु०—डिंगल के एक प्रसिद्ध कवि जो चारण (आढ़ा गोत्र के) थे

दुरस्त—देखो 'दुरस' (रू.भे.) उ०—१ जिका बात वर्ण लिए में पहिलां अभरोसौ विचारजे तो अरथ दुरस्त दीसै।—नी.प्र.

उ०—२ तद कुंअर अरज करी—साम्र चरणै रेढ़ा जावै छै, हुकम जै हुवै रेढ़ा मार ल्यावां। गोठ रो सवाद तो रेढ़ा ही छै। तद रावजी फुरमायो—दुरस्त बात छै, पण जावतो घणौ कर जायज्यो।

—डाढ़ाळा सूर री बात

उ०—३ बादसाह कन्है सूं भिस्तिन घर गई और घर जाय भिस्ती सूं कही—आज बादसाह खाणा नहीं खावै था। पण हूं कौल सोंस घणी तरह सूं कर खिला आई हूं। बार-बार बादसाह तुम से अरज करणे कहता है सो तुम्हारा अरज करणे में क्या बिगड़ता? तो भिस्ती—बात तो दुरस्त कही, पण बादसाह बादसाह की जांणै सो जांणै क्या फुरमावै।—सांई री पलक में खलक

दुरहित-संपु० [सं० दुर्हित] शत्रु (ह.नां., अ.मा.)

दुराउ—देखो 'दुराव' (रू.भे.)

दुराक-संपु० [सं०] १ एक देश का नाम. २ एक म्लेच्छ जाति का नाम।

दुराग्रह-संपु० [सं०] १ व्यर्थ किया जाने वाला जिद, बुरे ढंग से अड़ने का काम, बेकार हठ। उ०—सत वक्ता सुधासील समीक्षक सूरौ, पुरुसारथ पूरण प्रेम प्रतिग्या पूरौ। दुरव्यसन दुराग्रह दूखण सौं अ्रढ़ दूरौ, अनभंग उतंग उमंग न अंग अधूरौ।—ऊ.का.

२ अपना मत अनुचित या त्रुटिपूर्ण साबित होने पर भी उस पर स्थिर रहने का काम।

रू०भे०—दुरग्रह।

दुराग्रही-वि० [सं०] १ उचित अनुचित का विचार किये बिना ही अपनी बात पर अड़ने वाला, हठी, जिद्दी. २ अपने मत के अनुचित या गलत साबित होने पर भी उस पर स्थिर रहने वाला।

उ०—१ रसा बिधांन ध्यांन के बिग्यांन ग्यांन के रहै। वपू अधीर पीर में न नीर नैन ते वहै। दुकार ब्रह्म द्वार व्है हकार इक्क हत्थ दें। दुराग्रही विवाद बाद को सवाद सत्य दें।—ऊ.का.

उ०—२ महामुनि समांन में महांन हांनि मुक्ति में। अभोग रोग ना अरै जरै न जोग जुक्ति में। दुराग्रही दटै नहीं यथा ग्रिही अखरब तैं। स्वनग्न मांन सरवदा सखा अलग्न सरब तैं।—ऊ.का.

दुराचरण-संपु० [सं०] खोटा व्यवहार, बुरा चाल-चलन।

दुराचार-संपु० [सं०] दुष्ट आचरण, बुरा चाल-चलन।

दुराचारी-वि० [सं०] (स्त्री० दुराचारण, दुराचारणी) दुष्ट आचरण करने वाला, बुरे चाल-चलन का।

रू०भे०—दुरचारि, दुरचारी।

दुराज-संपु० [सं० दुराज्य] १ बुरा शासन, बुरा राज्य. २ एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन।

दुराजी-वि० [सं० दुराज्य+रा०प्र०ई] जहां दो राजा हों, दो राजाओं का।

दुराजौ-संपु० [सं० द्वि+राजा] वैमनस्य, मनमुटाव।

दुराड़णौ, दुराड़बौ—देखो 'दुराणौ, दुराबौ' (रू.भे.)

दुराड़ियोड़ौ—देखो 'दुरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुराड़ियोड़ी)

दुराणौ, दुराबौ-क्रि०अ० [देश०] १ आड़ में होना, छिपना. २ दूर हटना, टलना।

क्रि०स०—३ छिपाना. ४ दूर करना, हटाना. ५ त्यागना. ६ पराजित करना, हराना।

दुराणहार, हारौ (हारी), दुराणियौ—वि०।

दुरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दुराईजणौ, दुराईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दुरणौ, दुरबौ—अक०रू०।

दुराड़णौ, दुराड़बौ, दुरावणौ, दुराववौ—रू०भे०।

दुरातसत्य-संपु० [सं०] इन्द्र (ना.डि.को.)

दुरात्मा-वि० [सं० दुरात्मन्] दुष्ट, खोटा, बुरा।

दुराधन-संपु० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुराधर-संपु० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुराधरस-वि० [सं० दुराधर्ष] जिसका दमन करना कठिन हो, प्रचण्ड और उग्र।

संपु०—१ पीली सरसों. २ विष्णु।

दुराधार-संपु० [सं०] शिव, महादेव।

दुराप, दुराप-वि० [सं० दुराप] कठिनता से मिलने वाला, दुर्लभ।

उ०—तार तुळा हाटक तुळा, एक एक दै आप। सुरभी आठ समेत सत, दीधी दीन दुराप।—वं.भा.

दुरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ आड़ में हुवा हुआ, छिपा हुआ. २ दूर हटा हुआ, टला हुआ. ३ छिपाया हुआ. ४ दूर किया हुआ, हटाया हुआ. ५ त्यागा हुआ. ६ पराजित किया हुआ, हराया हुआ।

(स्त्री० दुरायोड़ी)

दुराराध्य-वि० [सं०] कठिनाई से आराधन करने योग्य, जिसको संतुष्ट करना कठिन हो।

संपु०—विष्णु।

दुरालंभ, दुरालभ-वि० [सं० दुर्लभ] १ जिसका मिलना कठिन हो, दुष्प्राप्य।

२ देखो 'दुरालभा' (रू.भे.)

उ०—दांति दुरालभ दूघीउ, दाडिम द्राख दघूरण। देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूरण।—मा.कां.प्र.

दुरालभा–सं० स्त्री० [सं०] जवासा, धमासा। उ०—दांमिणि दोभी दूधिग्रां, देवदालि दूघेलि। दारू हलद्र दुरालभा, दह दिसी दीसइ वेलि।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—दुरालभ।

दुरालाप–सं०पु० [सं०] बुरा वचन, कुवचन, गाली।

वि०—दुर्वचन कहने वाला।

दुराव–सं०पु० [देश०] १ अविश्वास या भय के कारण किसी से बात गुप्त रखने का भाव, किसी बात को दूसरे से छिपाने का भाव, छिपाव, भेदभाव। उ०—१ हमें रतना अठा तक दुराव करें है, हालती थकी जीमणो पग पहलो धरै।—र. हमीर

उ०—२ तब कह्यो ब्रांह्मण जु द्वारिका तैं क्रिस्णजी कुंदणपुर पधारिया छै। लोक इसी बात कहै छै। इतरो दुराव राख्यो।
—वेलि.टी.

२ छल, कपट। उ०—मुख ऊपर मीठा मिळचां, दिल में खोट दुराव। म्हांसूं छांनैं सौक घर, राखो आवण जाव।—अज्ञात

रू०भे०—दुराउ।

दुरावणौ, दुराववौ—देखो 'दुराणौ, दुराबौ' (रू.भे.)

उ०—१ जिण में आसणां री सवियां आवण लागी। तठै रतनां निजर दुरावण लागी।—र. हमीर

उ०—२ जु रुखमणीजी कै पट घूंघट छै। तिं माहि एक वार कटाछि करि देखै छै अर बहुड़ि द्रस्टि दुरावै छै।—वेलि टी.

दुरावणहार, हारौ (हारी), दुरावणियौ—वि०।

दुराविग्रोड़ौ, दुरावियोड़ौ, दुराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दुरावीजणौ, दुरावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दुरणौ, दुरबौ—अक०रू०।

दुरावियोड़ौ—देखो 'दुरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुरावियोड़ी)

दुरास–वि० [सं० दुराशा] १ जिससे अच्छी आशा न हो।

उ०—जठै जम काळ जरा नहिं जोर, घुरै घट नाद अनाहद घोर। दुरास दुमार न आस दुकाळ, सुधा जळ बारह मास सुकाळ।
—ऊ.का.

२ विकराल, भयंकर। उ०—ईरांनी तूरांनी ऐसे, जवन दुरास पळासी जैसे। सू मकरांण हरेवी सिंधी, आरब्बी गखड़ै अनमंधी।
—रा.रू.

दुरासद–वि० [सं० दुर+असु] १ कठिनता से वश में होने वाला।

उ०—निर्भै नद त्रास न आस निरास, वस्यौ हरिरांम अभै पद वास। दुरासद मारण आस दुकाळ, सुधा झड़ि बारह मास सुकाळ।—ऊ.का.

२ दुःसाध्य, कठिन. ३ दुष्प्राप्य।

सं०पु०—दुष्कर्म, पाप।

दुरासय–सं०पु० [सं० दुराशय] बुरी नीयत।

वि०—बुरी नीयत वाला।

दुरासा–सं०स्त्री० [सं० दुराशा] व्यर्थ की आशा, झूठी उम्मीद।

दुरासीस–सं०स्त्री० [सं० दुराशिष] १ बद दुआ, बुरा आशीर्वाद।

उ०—ऊपाड़ै आवू जिती, पर निंदा री पोट। पिसण न्याय पग डग पड़ै, दुरासीस लग दोट।—बां.दा.

२ शाप।

रू०भे०—दुरसीस।

दुराह, दुराहौ–सं०पु० [सं० द्वि+फा० राह+रा०प्र०औ] जहां पर से दो रास्ते भिन्न दिशाओं को जाते हों अथवा जहां पर दो रास्ते मिलते हों। उ०—वाघो अठा-सूं विदा हुवौ हंतौ, सु दुराहौ ऊपर जावतां चील्हा नजर पड़िया।—ऊमादे भटियांणी री बात

दुरिउ—देखो 'दुरत' (रू.भे.) उ०—विसु दीधउं दुरयोधनिहिं, भीमह भोजन माहि। अम्रित हुई नइ परिणमिउ, पुन्निहिं दुरिउ पुलाइ।
—पं.पं.च.

दुरिजण, दुरिजन्न, दुरिज्जण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.)

उ०—१ कमळि कमळि सुभ वइण, कमळि दुरिजण निकासै।
—गु.रू.बं.

उ०—२ माधव ! तुझ गुणि ते करिउं, जे न करइ दुरिजन्न। काळिज काढीनइं लीउं, सूनुं माहरुं तन्न।—मा.कां.प्र.

उ०—३ घण अस्सि दुरिज्जण घड़िय घाइ, रइणायर वाघउ जोधि राइ। जोधि मेवाड़ काढ़िय जड़ांह, भंगवट्ट दीध मोटां भड़ांह।
—रा.ज.सी.

दुरित—देखो 'दुरत' (रू.भे.) उ०—१ पाड़ै किता खड़ो जुधि न पड़ै, दुरित खवा असमांण दुहि। भरि-भरि वांम खाग अरि मांजै, 'केहरि' का माथै कळहि।—टीकमदास खिड़ियौ

उ०—२ 'जोधा' 'सूजा' अणि, अणि 'सूजां' ही 'ऊदा'। वडरावत वरसींध, दुरित दुसासण 'दूदा'।—गु.रू.बं.

दुरितारि–सं०पु० [सं०] ५२ वीरों में से एक वीर का नाम।

दुरति—देखो 'दुरत' (रू.भे.) (ह.नां.)

दुरिस्ट–सं०पु० [सं० दुरिष्ट] १ वह यज्ञ जो मारण, मोहन, उच्चाटन आदि अभिचारों के लिये किया जाय।

२ पाप, पातक।

दुरी–वि० [सं० दुर] १ दुख देने वाला, दुखदायी।

उ०—तथापि रहै न हूं सकूं वकूं तिणि, त्रिया अनैं प्रेम आतुरी। राज दूरि द्वारका विराजो, दिन नेडउ आइयौ दुरी।—वेलि.

२ शत्रु (अ.मा.)

सं०स्त्री०—१ शत्रुता. २ निर्धनता, कंगाली. ३ गुफा, खोह।

दुरीमुख–सं०पु०—राम की सेना का एक वानर।

दुरीय—देखो 'दुरत' (रू.भे.) उ०—आंणीय ए सभां मझारि दुरीय दुरयोधनु इम भणं ए। आवि न ए आवि उत्संगि द्रूपदि वइसिन मुझ तणं ए।—पं.पं.च.

दुरीस-सं०पु० [सं० दुः+ईश] दुष्ट राजा। उ०—प्रज उदभिज सिसिर दुरीस पीडतौ, ऊतर ऊथापिया असंत। प्रसन वायु मिसि न्याय प्रवरत्यौ, वनि वनि नयरे राज वसंत।—वेलि.

दुरीह-वि० [सं० दुर्=खराब+ईहा] बुरी इच्छा वाला, दुष्ट। उ०— आयौ गांगै ऊपरै, दोलत-खांन दुरीह। पावू रै आयै पगां, कमधज अरज करीह।—पा.प्र.

दुरंग दुरंगू—देखो 'दुरग' (रू.भे.) उ०—प्रळै काळ का पावस आतसू का एक भुरजाळ। सिखराळ दुरंगू के भड़ भिड़ज भूक काळ। —सू.प्र.

दुरुख, दुरुखौ-वि० [सं० द्वि+फा० रुख] (स्त्री० दुरुखी) १ जिसके दोनों ओर मुँह हो. २ जिसके दोनों ओर चिन्ह हो. ३ जिसका झुकाव दोनों पक्षों की ओर हो।

दुरुग—देखो 'दुरग' (रू.भे.) उ०—दुरुग चितोड़ संसोभित ठाई। तत-खीण राय पहुंतौ जाई।—वी.दे.

दुरुत्तर-वि० [सं०] जिसका पार पाना कठिन हो, दुस्तर।
सं०पु०—दुष्ट उत्तर।

दुरुधरा, दुरुधुरा-सं०स्त्री० [यू० दुरोथोरिया] जन्म कुण्डली का एक योग जिसमें अनफा और सुनफा दोनों योगों का मेल होता है। (वृहज्जातक)

दुरुपयोग-सं०पु० [सं०] बुरा उपयोग, बुरा इस्तेमाल।

दुरुफ-सं०पु०—ताजिक शास्त्र में नीलकंठ द्वारा कहा हुआ फलित ज्योतिष का एक योग जो षोडस योगों में से सोलहवां योग है।

दुरुस्त—देखो 'दुरस' (रू.भे.) उ०—१ प्रोहित अरज कीवी आप फरमाई सो वात दुरुस्त छै।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ वखतसिंहजी कही ठाकुरां वखतै सांहणी वात कीवी छै सो दुरुस्त छै।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
उ०—३ सगळी वात दुरुस्त छै, कुंवर जायसी आज। मोनूं डर कुछ भी नहीं, राखै गोविंद लाज।—गोपाळदास गौड़ री वारता
मुहा०—दुरुस्त करणौ—ठीक करना, दण्ड देकर उचित आचरण के लिये वाध्य करना।

दुरुस्ती-सं०स्त्री०—सुधार, संशोधन।

दुरुह, दुरूह-वि० [सं० दुरूह] १ समझ में न आने योग्य, जिसका जानना कठिन हो, गूढ़। उ०—दिल्ली हूंत दुरूह, अकवर चढ़ियो एक दम। रांण रसिक रणरुह, पलटै केम प्रतापसी। —दुरसो आढ़ो
२ कठिन, मुश्किल। उ०—दुजां दुरूह काजां करण। वाजां जम बोधक वयण।—वं.भा.
३ भयंकर। उ०—अमैं प्रत्यूह व्यूह पै समस्तु भ्रूह लौं भिरी। क्रमै प्रत्यूह ओपमा दुरूह दंतली किरी।—ऊ.का.
४ जबरदस्त, प्रचण्ड। उ०—आहव उछाह उर अधिक ऊह। दूदावत-मेड़तिया दुरूह।—ऊ.का.
५ दोनों ओर, दोनों तरफ। उ०—करि मुकांम पुर घेरि, सोर चहु ओर प्रजारिय। गहि दुरूह सिकदार, हाटि पट्टन संभारिय।—ला.रा.

दुरेफ—देखो 'द्विरेफ' (रू.भे.)

दुरोदर-सं०पु० [देश०] जुआ, द्यूत। उ०—१ नित्य महेल्यूं, धरम छांडच्, त्यज्यूं पंडित संग। राजकारज वीसरचां नि दुरोदर सूं रंग। —नळाख्यांन
उ०—२ अलखांमणु किम धरम थ्यु ये हूतु आदर आप? वचन ते कां वीसरचूं ये दुरोदर मांहि पाप।—नळाख्यांन

दुरयोधन-सं०पु० [सं० दुर्योधन] कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र। महाभारत के युद्ध में भीम ने इसे मारा था।
रू०भे०—दजोण, दज्जोण, दरजोण, दरजोधन, दुजोण, दुजोधण, दुजोधन, दुजोयण, दुरजोण, दुरजोध, दुरजोधण, दुरजोधन, दुरज्योधण, दुरज्योधन, दुरयोधन, दूजेण; द्रजोण, द्रुजोण, द्रोजोवण।

दुरयोधन-पुर-सं०पु० [सं० दुर्योधनपुर] दिल्ली। उ०—सन्निधि सुभट समरन समीक। इवक तै इवक उधत अनीक। दुरयोधन-पुर देसक दरोळ। है दुरगदास वेसक हरोळ।—ऊ.का.

दुलकी—देखो 'दुड़की' (रू.भे.)

दुलड़, दुलड़ौ-वि० [सं० द्वि+रा० लड़] (स्त्री० दुलड़ी) १ दो लड़ी का। उ०—१ सुभ खिल्लत पंच वसन सुरंगी, असि खंजर सरपेच कलंगी। मुकतमाळ दुलड़ी उर मंडित। अती भार सब सत्त अखंडित। —रा.रू.
उ०—२ कोकिल कंठ सुहामणी रे, पति भुज वल्ली खंभ रे रंग। मोतिन की दुलड़ी वणी रे, त्रिवळी रेख अचंभ रे रंग।—प.च.चौ.
२ दोहरा। उ०—मूंढ़ौ खांधौ मेल हाथ खांधड़ौ हिलावै। सीरा धरणी दिस सिथळ मुरड़ खांधड़ौ मिळावै। ढील खांधड़ौ दुलड़ झपक खांधड़ौ झुकावै। दोस खांधड़ौ दियै रोध खांधड़ौ रुकावै। —ऊ.का.

दुलट्ट-सं०पु०—हाथी के पैर का बंधन? उ०—डग बेड़ियां दुलट्ट, लगां चहुवां पग लंगर। आकासी सारसी, करै अग्राज भयंकर।—सू.प्र.

दुलती-सं०स्त्री० [सं० द्वि+रा० लात] घोड़े, गधे आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को एक साथ उठा कर मारने की क्रिया।
क्रि०प्र०—दैणी, मारणी।
रू०भे०—दुलात।

दुलदुल-सं०पु० [अ०] वह खच्चरी जो मिश्र के एक हाकिम ने मुहम्मद साहब को नजर में दी थी। (मुहर्रम के दिनों इसकी नक्ल निकाली जाती है।)

दुलभ—देखो 'दुरलभ' (रू.भे.) उ०—१ अमियौ नंह मारत कंवर, पाछौ प्रसभ प्रकास। कहियौ छोडै साथ किम, दुलभ पिता रो दास। —वं.भा.
उ०—२ सुज दुरलभ रखां वळ सिवां साधकां, जोगीराजां दुलभ जग। खाटण सुजस भेटियौ 'खूमैं', नरां सुरां वच जकौ नग।—बां.दा.
उ०—३ देवां तर नाग सु भाग दुलभ।—रांमरासो

उ०—४ रोद्रव दुख सुत विघन सुणै रिख । खंडित सेव कीध हेकरिण पख । इसो वमेक सद्रढ़ मत ऐहो । जोगेसुरां दुलभ अति जेहो ।

—सू.प्र.

उ०—५ दातण मिळवौ दुलभ, सघन वन वने जिते सह । विलपत जळ विन वाळ, भरै सर नळ उफळत वह ।—जैतदांन बारहठ

दूलह—१ देखो 'दूल्हौ' (रू.भे.) उ०—१ कहियौ नृप आपण सकळ, वीर वराती वेस । एक दुलह वणियौ अठै, सोहै पूरण सेस ।—वं.भा.

उ०—२ त्रिण्हि फेरि फेरीया । चौथे फेरे दुलह आगै हूग्रौ । दुलहणि पाछी हुई ।—वेलि टी.

२ देखो 'दुरलभ' (रू.भे.) उ०—कथ इम सासत्र कहै, दुलह लहिजै पूरब दत । आज दोय अधिकार, मध्धि सरस्वति द्वारामति ।—सू.प्र.

दुलहण, दुलहणि, दुलहन, दुलहि, दुलही-सं०स्त्री०—[सं० दुर्लभा] वह युवती या वाला जिसका हाल ही में विवाह हुआ हो या होने वाला हो, वधु ।

उ०—१ कूरम नृप उच्छव कियौ, वेद सनीत विचार । दुलहणि जुग लीधा दुलहि, चौंरी फ़ेरा च्यार ।—रा.रू.

उ०—२ कळप व्रिक्ष लता टूटी कना, मिळण मनोगत मुख मुणै । दुलहणि थियोड़ी विण दुलह, ऊभी सूफै आंगणै ।—पा.प्र.

उ०—३ दुल्लह 'रयण' दुफाल, सूरा पूरा जांन सहि । हैवै घड़ दुल-हणि हुई, घज तोरण गजढ़ाल ।—वचनिका

उ०—४ दुलहणी जांण दमघोख री दीकरी । दळ सवळ मांभीयां हूग्रौ दिन दूसरौ ।—रुखमणी हरण

उ०—५ सुभ रचित पुंज समूळ, फवि वास मंजुल फूल । विध तेण पाट वणाय, रुचि दुलहि दूलह राय ।—रा.रू.

उ०—६ पंजाब रौ सूबादार नवाब रहीमअली आपरा वाहुवळ थी पातसाह वणि दिल्ली जिसड़ी दुलही नूं वरण रै काज आयौ ।

—वं.भा.

रू०भे०—दुल्लहण, दुल्लहणी, दुल्ही, दूलहण, दूलहणी, दूल्हण, दूल्हणी, दूल्ही ।

दुलहौ—देखो 'दूल्हौ' (रू.भे.) उ०—रस में वेरस वस रागांरळ रीसै । दुलहणि दुलहै नै दावानळ दीसै ।—ऊ.का.

(स्त्री० दुलही)

दुलात—देखो 'दुलत्ती' (रू.भे.) उ०—असली री ओलाद, खून करयां न करै खता । वाहै वद वद वाद, रोड दुलातां राजिया ।—किरपाराम

दुलार-सं०पु० [सं० दुर्लालन] वच्चों या प्रेमपात्रों को प्रसन्न करने के लिये की जाने वाली प्रेम-पूरण चेष्टा ।

दुलारणौ, दुलारवौ-क्रि०स० [सं० दुर्लालन, प्रा० दुल्लाडन] वच्चों या प्रेमपात्रों को प्रसन्न करने के लिये उनके साथ अनेक प्रकार की प्रेम-पूर्ण चेष्टाएँ करना, प्यार करना, लाड़ करना ।

दुलारणहार, हारौ (हारी), दुलारणियौ—वि० ।

दुलारिग्रोड़ौ, दुलारियोड़ौ, दुलारचोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दुलारीजणौ, दुलारीजवौ—कर्म वा० ।

दुलारियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्यार किया हुआ, लड़ाया हुआ ।

(स्त्री० दुलारियोड़ी)

दुलारौ-वि० [सं० दुर्लालन] जिसका वहुत लाड़ प्यार हो, लाड़ला ।

दुलावौ-सं०पु० [सं० द्वि+रा० लाव] वह कूआ जिस पर दो मोट (चड़स) से एक साथ सिंचाई के लिये जल निकाला जाता हो ।

दुलिचौ, दुलीचौ-सं०पु० [देश०] कालीन, गलीचा ।

उ०—१ ताहरां बुकण रै पातसाह रै घर रो माल, विध-विध विछा-वणा दुलिचा, कपड़ा वीरमजी दीठा ।—नैणसी

उ०—२ जिकै दिगपाळ रजपूत सांमंत अजांनवाह ठाकुर अड़ावीड़ दरवारे आइ खड़ा रहिया छै । दरवार दुलीचा विछाइजै छै । विछात वणी नै रही छै ।—रा.सा.सं.

रू०भे०—दलीचौ ।

मह०—दुल्लीच ।

दुलीप—देखो 'दिलीप' (रू.भे.)

दुलोही-सं०स्त्री० [सं० द्वि+लोह] एक प्रकार की तलवार जो लोहे के दो टुकड़ों को जोड़ कर वनाई जाती है ।

दुल्लभ, दुल्लह—१ देखो 'दुरलभ' (रू.भे.) उ०—१ पिंड विहंड होय चुख चुख पडूं, तांय वरूं रंभ हित तिको । सुलभ ही जिकौ पाऊं सुरग, जगत घणौ दुल्लभ जिको ।—सू.प्र.

उ०—२ दुल्लह लाधउ मांणस जंम । अनी विसेखइं जिणवर धंमु ।

—चिहुंगति चउपई

उ०—३ आसि जिणेसर सूरि पढमु, अणहिलपुर पट्टणि । वसहि मग्ग पयडेण, राउ रंजिउ 'दुल्लह' जिणि ।—धरमकळस मुनि

२ देखो 'दुल्हौ' (रू.भे.)

दुल्लीच—देखो 'दुलीचौ' (मह., रू.भे.) उ०—भर मौल नीलक भार, आसावरीस उदार । दुल्लीच गिलम दुसाल, थिरमा सफंभ सुथाळ ।

—सू.प्र.

दुल्ही—देखो 'दुलहण' (रू.भे.)

दुल्हौ—देखो 'दूल्हौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुल्ही)

दुव-वि० [सं० द्वि] १ दूसरा । उ०—पहली अतीय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख । चरण दूहा चुरस कर, भल किव तिण नूं भाख ।

२ दो ।

—र.ज.प्र.

दुवकी—देखो 'दुवकी' (रू.भे.)

उ०—तोड़ी वा लोवां री लगांम, जांमण की ये जाई, सेड़ी रा तोड़्या ये दुवकी दांवणां ।—लो.गी.

दुवजीह-सं०पु० [सं० द्विजिह्व] १ कटार (डि.नां.मा.)

२ सांप, नाग ।

दुवणौ, दुववौ—देखो 'दूमणौ, दूमवौ' (रू.भे.)

उ०—१ ताहरां एक लकड़ी रौ चाहोलो कर वाकरा रै नाक मांहे

देग्रर झोटिंग रै हाथ दियौ कह्यौ जू तूं दुवि। ताहरां झोटिंग दुवण लागो।—नैणसी

उ०—२ मांस छुन छुन पासै जै छै, मोरां पसवाड़ां पींडा रो मांस देगचां में घातै छै, हडोई रौ मांस पासै चरुवां में घातै छै, सीरो होस-नाक सुधारै छै, दुयजै छै।—रा.सा.सं.

दुवद्या—देखो 'दुविधा' (रू.भे.)

दुवध—क्रि०वि० [सं० द्विविधि] दोनों प्रकार से।

दुवधा—देखो 'दुविधा' (रू.भे.)

दुवधार—देखो 'दुधार' (रू.भे.)

दुवधारी—देखो 'दुधारी' (रू.भे.) (डि.को.)

दुवधारो—देखो 'दुधार' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

दुवयण—देखो 'दुरवचन' (रू.भे.) उ०—सुरतांणोत लियण ग्रद सवळी, सवळां खळां उतारण सीस। मुड़वा तूझ तणो 'मेड़तिया', दुवयण न काहाड़ै जगदीस।—वां.दा.

दुवळ—क्रि०वि०— दूसरी ओर। उ०—आगै मालदेजी रै अेकै खवै नगो भारमलोत बैठो है अरु दुवळ प्रथीराजजी जाय बैठा नै यांनूं सन्मुख बैसांणिया।—द.दा.

दुवा—सं०स्त्री० [अ० दुआ] १ आशीर्वाद। उ०—तरै आप रखो री दुवा ले, नमह मह करे, असवार होय हालिया।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढ़ेल री वात

२ देखो 'दुआ' (रू.भे.) उ०—तीजां बेटो सपूत धरमात्मा उण रा जीव नूं जको दुवा करै दांन देवै।—नी.प्र.

वि०—दूसरे। उ०—मिथल्लेस रै ज्याग आए समीपं। दुवा भूप आए मिळै सात दीपं।—सू.प्र.

दुवाइती—देखो 'दवायती' (रू.भे.)

दुवाई—१ देखो 'दवा' (१, २) (रू.भे.) उ०—सैंती सैंती पीड़ ताड़ी, लपेट लकड़ी लीरड़ा। तीजै दिन वन पयांन करै, त्याग दुवाई चीरड़ा।—दसदेव

२ देखो 'दुहाई' (रू.भे.) उ०—जठै फेर असतरी स्रीरांम दुवाई खाधी, कही अठै होज है।—राजा रा गुर रा बेटां री वात

३ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)

दुवाग—देखो 'दुहाग' (रू.भे.)

दुवागण—देखो 'दुहागण' (रू.भे.) उ०—जा जा रे दुवागण रा जाया, विना रै विरीत गोदी कैसे आया। जे तनै चायै धूजी राजाजी री गोदी, म्हारै उदर धूजी क्यूं नहिं आया।—लो.गी.

दुवागो—सं०पु०—घोड़े की लगाम विशेष।

दुवाघ—वि० [सं० दुः+व्याघ्र] दुष्ट, व्याघ्र। उ०—रिण सूर तिकां मुख नूर रचै, मिळ दीठ दुहूं दळ रीठ मचै। मिळ दाय दुहूं दिस घाय मिळै, निहसै किर नाग दुवाघ निळै।—रा.रू.

दुवाड़णो, दुवाड़बो—देखो 'दुवाणो, दुवाबो' (रू.भे.)

उ०—तेजाजी ओ गाय दुवाड़ूं धरमी छाळ री। दूध(ए) पकाळं गुदळी खीर।—लो.गी.

दुवाड़ियोड़ो—देखो 'दुवायोड़ो' (रू.भे.)

दुवाड़ियोड़ो—देखो 'दुवायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुवाड़ियोड़ी)

दुवाट—वि० [सं० दुःवाट] बुरा मार्ग, कुमार्ग।
रू०भे०—दुवाट।

दुवाणो, दुवावो—क्रि०स० (दूहणो क्रिया का प्रे०रू०) १ दूध दुहाना, दूध निकलवाना. २ सार निकलवाना।

दुवाणहार, हारो (हारी), दुवाणियो—वि०।

दुवायोड़ो—भू०का०कृ०।

दुवाईजणो, दुवाईजबो—कर्म वा०।

दुवाड़णो, दुवाड़बो, दुवावणो, दुवाववो, दुहाड़णो, दुहाड़बो, दुहाणो, दुहाबो, दुहावणो, दुहाववो, दोवाड़णो, दोवाड़बो, दोवणो, दोवाबो, दोवावणो, दोवाववो, दोहाड़णो, दोहाड़बो, दोहाणो, दोहाबो, दोहावणो, दोहाववो—रू०भे०।

दुवाती—देखो 'दवायती' (रू.भे.) उ०—प्रथम हुकम होवतो पछै होवतो दुवाती।—अरजनजी बारहठ

दुवादस—देखो 'द्वादस' (रू.भे.) उ०—सोभंति राग वाजिंत्र सुर, आचि-रजे ग्रंध्रव अछर। करि रूप दुवादस सूर किर, नूर परवरे नार नर।
—रा.रू.

दुवादसी—देखो 'द्वादसी' (रू.भे.)

दुवादसौ—देखो 'द्वादसौ' (रू.भे.) उ०—अबै मास आठ नव में हुवां रांणोजी देवलोक हुवा। तरै दुवादसौ कर कंवर चूंडोजी टीकै बैसण री तैयारी करै छै।—राव रिणमल री वात

दुवापुर—देखो 'द्वापर' (रू.भे.) उ०—कळि काळि परि क्रम अे करम, देखियइ दुवापुर दिख्या दम। कणइ्दु कन्हा धर लूणकन्नि, मारुयइ राइ ली मोटमन्नि।—रा.ज.सी.

दुवाय—देखो 'दुआ' (रू.भे.) उ०—ताहरां बाहिर आइ नै पातिसाह नूं वे—दुवाय दी जू पठांणां री पातिसाही जाविसी।
—सयणी री वात

दुवायति, दुवायती—देखो 'दवायती' (रू.भे.)

दुवायी—१ देखो 'दवा' (१, २) (रू.भे.) उ०—गायां भैंस्यां गोर, ठांण नीमां रै नीचै। सीयाळै री ओट, उन्हाळै छायां वीचै। पसु निदांन नीरोग, जिणां री दूध दुवायी। रतन तेरवौ धिरत, पलावित विड़द वडाई।—दसदेव

२ देखो 'दुहाई' (रू.भे.) ३ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)

दुवायोड़ी—भू०का०कृ०—दूध निकलवाई हुई।

दुवायोड़ो—भू०का०कृ०—१ दूध निकाला हुआ. २ सार निकाला हुआ।
(स्त्री० दुवायोड़ी)

दुवार—देखो 'द्वार' (रू.भे.) (डि.को.) उ०—धांम गयां जोर्यां धणी, नांम करै संसार। वाको सुज सुणियो 'अभै', दिल्ली साह दुवार।
—रा.रू.

दुवारका, दुवारकाजी देखो 'द्वारका' (रू.भे.) (डि.को.)

दुवारि—देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—मईं घोड़ा वेच्या घणा, रहियउमास चियारि। राति दिवस ढोलइ कन्हइ, रहतउ राज दुवारि।—ढो.मा.

दुवारिका—देखो 'द्वारका' (रू.भे.) उ०—उत्तम धांम दुवारिका, महिमा सुहित संभारि। लियौ महासुख एक पख, निप परसियौ मुरारि।—रा.रू.

दुवारी—देखो 'दुवारी' (रू.भे.)

दुवारौ-सं०पु० [सं० द्वि+वारः+रा०प्र०ग्रौ] १ दो बार उलट कर निकाला हुआ शराब. २ देखो 'द्वार' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.) उ०—अट्टके नह सकिय अंगद, दहकंध दुवारै। दइतां इम दीसै अंगद, अंतक उणहारै।—सू.प्र.

३ देखो 'द्वारौ' (रू.भे.)

दुवाळ-सं०पु०—१ प्रपंच, धंधा। उ०—घवराड़ण धू्य म जांणै घरतां, चिन्न पुहर करतां चाळ। मन लागौ वाळक माइतां, दूजी छोडी सहु दुवाळ।—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'द्वाळौ' (मह.रू.भे.)

दुवाळौ—देखो 'द्वाळौ' (रू.भे.)

दुवावणौ, दुवावबौ—देखो 'दुवाणौ, दुवाबौ' (रू.भे.)

दुवावियोड़ी—देखो 'दुवायोड़ी' (रू.भे.)

दुवावियोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० दुवावियोड़ी)

दुवाह—देखो 'दुवाह' (रू.भे.)

दुवाहौ—देखो 'दुवाह' (अल्पा., रू.भे.) उ०—पेसखांनां वाळी वात परिछइ, आगा लगइ करण आरास। दळवादळ तांणिया दुवाहै, फारक ईसर तणा फरास।—महादेव पारवती री वेलि

दुविधा, दुविध्या-सं०स्त्री० [सं० द्विविधा] १ दो में से किसी एक बात पर चित्त के न जमने की क्रिया या भाव, अनिश्चय।

उ०—१ माटी मांहीं ठौर कर, माटी माटी मांहि। दादू सम कर राखिये, द्वै पख दुविधा नांहि।—दादू वांणी

उ०—२ तन मन आतम एक है, दूजा सब उनहार। दादू मूळ पाया नहीं, दुविध्या भरम विकार।—दादू वांणी

२ चिंता, दुख। उ०—सेन लागौ संत सेवा, भाव धर उर भूर। रूप धर कर सेन कौ हरि, करी दुविधा दूर।—भगतमाळ

३ संदेह, संशय। उ०—मन थी दुविधा मेट अडिग आंणीजै हो, अधिकी मन में आसता रे। नांमै एह नं नेट पातक पुळायै हो, थायइ सिव सुख सासता रे।—ध.व.ग्रं.

४ पशोपेश, असमंजस, आगा-पीछा।

मुहा०—१ दुविधा डाळणी—पशोपेश में डालना, संदेह में डालना. २ दुविधा न्हांकणी—देखो 'दुविधा डाळणी'. ३ दुविधा पटकणी—देखो 'दुविधा डाळणी'. ४ दुविधा में न्हांकणौ—देखो 'दुविधा डाळणी'. ५ दुविधा में पड़णौ—असमंजस में पड़ना, आगा पीछा सोचना।

रू०भे०—दुवदा, दुवद्या, दुवधा, दुवध्या, दुविध, दुविधा, दुव्वाधि, दुवधा।

दुवियण—देखो 'दुरवचन' (रू.भे.)

दुविहार-सं०पु० [सं० द्वि+आहारः] दो प्रकार का आहार। उ०—संध्या वंदन साध, सज्ज सावधांन स कोई। विवेकी स्रावग सज्जै, पडिकमणा सोई। चौवीहार दुविहार गहै, व्रत करि निज गरहा। सारै दिन संचिया, पाप नासै सहु परहा।—ध.व.ग्रं.

दुवीजणौ, दुवीजबौ-कर्म वा०—दुहा जाना।

दुवीजणहार, हारौ (हारी), दुवीजणियौ—वि०।

दुवीजिग्रोड़ौ, दुवीजियोड़ौ, दुवीज्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दुवीजियोड़ी-भू०का०कृ०—दुही गयी हुई।

दुवीजियोड़ौ-भू०का०कृ०—दुहा गया हुआ।

दुवीयण—देखो 'दुरवचन' (रू.भे.)

दुवै-वि० [सं० द्वि] १ दोनों। उ०—१ इसा गज्ज घंटाळ घंटा अपारं, त्रिलोह लोक कोतिक्क देखंत त्यारं। दुवै फौज फव्वै गिरं गज्ज डांणै, उभै जांणि ग्राडावळा खेत आंणै।—वचनिका

उ०—२ पात सुजस अखियात पयंपै, दातव असमर वात दुवै। जग में रांम तुहाळै जोड़ै, हुवौ न कोई फेर हुवै।—र.रू.

२ दूसरा, द्वितीय। उ०—दसै दिस मांहि पौहौ जोड़ न हुवै दुवै। हाक जिण आंण सुणि हिरण खोड़ा हुवै।—सू.प्र.

दुवौ—१ देखो 'दूजौ' (रू.भे.) (डि.को.) उ०—देखतां छहूं विध 'सगर' 'हरचंद' दुवा, सोगुणी अधिक अहनिस सुभावै। रांम असरण सरण भूप गुण राजा रा, पार सीतारमण कमण पावै।—र.ज.प्र.

२ देखो 'दूवौ' (रू.भे.) उ०—१ वात करै कीधौ विदा, नरपत नाहरखांन। जोगावतौ पायौ दुवौ, साथ हुवौ भगवांन।—रा.रू.

उ०—२ इसै वखत, समइयै में गंगेव नींवावत बोलै छै, मन री उमंग खोलै छै। सैलां-सिकारां री दुवौ हुवौ छै, भाई अमराव साहणियां नै हुकम हुवौ छै।—रा.सा.सं.

दुसंत-वि०—१ असाधु, दुष्ट, दुर्जन. २ देखो 'दुस्यंत' (रू.भे.)

दुसंध-उभ०लिं०—शरीर का संधि-स्थान, जोड़।

उ०—होय दुसारां वगतरां, उर फीकर फट्टे। कंध दुसंधां ऊतरै, वहते खग झट्टे।—द.दा.

दुसंध्या-सं०स्त्री०—सीसोदिया वंश की एक शाखा।

दुसंध्यौ-सं०पु०—सीसोदिया वंश की 'दुसंध्या' शाखा का व्यक्ति।

दुस-सं०पु० [सं० द्विज] १ ब्राह्मण. २ पण्डित, ज्ञानी।

दुसकत, दुसकित—देखो 'दुकृत' (रू.भे.) उ०—पुण्यवंत ना दुसकित टळइ, पुण्यवंतनइ चामर ढळइ। पुण्यवंत सिरि छत्र धराइ, पुण्यवंत नवि पाळा जाइ।—कां.दे.प्र.

दुसट—१ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—दिन रैणां पंथ वहतां दुसट, सैण घणां उर सालणा। इण भांत पियण वाळा अकड़, हूकौ देखि न हालणा।—ऊ.का.

दुसटसासना—संपु० [सं० दुष्ट+शासन] दुष्टोचित दण्ड ।

दुसटांदळ—वि० [सं० दुष्टदलन] दुष्टों का नाश करने वाला ।
उ०—नमो प्रम-संत गऊ-प्रतिपाळ, नमो दुसटां-दळ दीनदयाळ । नमो भव-बुद्ध भए भगवांन नमो ग्रह जीव दया उर ग्यांन ।—ह.र.
संपु०—ईश्वर, परमात्मा ।

दुसटी—देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—सुख सूं सूती थी पिरजा सुखियारी। दुसटी आतां ही करदी दुखियारी ।—ऊ.का.
(स्त्री० दुसटण, दुसटणी, दुसटा)

दुसण—देखो 'दूसण' (रू.भे.)

दुसतर—देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—तपि अगनि अम्रत वारि अणा-तर पंथ दुसतर पावरे । अहनाथ दिन गो गरम ग्रह ग्रह असह निस हिम उत्तरे ।—रा.रू.

दुसम—देखो १ 'दुखम' (रू.भे.)
उ०—स्री जिनहरख मुनीस्वर गाईये, पाईये वंछित सीद्ध । दुसम काळ मांहिं पणि दीपतो, किरिया सुद्धी कीध ।—जिनहरस
२ बुरा. ३ कठिन ।

दुसमण—संपु० [फा० दुश्मन अथवा सं० दुः शमन] शत्रु, वैरी (अ.मा.)
उ०—रावळ जेसळ दुसाझ री बेटो, तिण नूं गजनी रै पातसाह रावळ 'भोजदे' नैं मार नै लुद्रवो दियो, सु जेसळ मन मांहे जांणै जु 'आ ठौड़ पाधर मांहै नैं मांहरै माथै हजार दुसमण छै, सु कठै कं म्हे वांकी ठौड़ देखनैं गढ़ बीजो करावां ।'—नैणसी

रू०भे०—दुसमी, दुस्मण, दुस्मी, दुहमण ।

दुसमणायगी, दुसमणी—संस्त्री० [फा० दुश्मनी] १ वैर, शत्रुता.
२ विरोध । उ०—हर भांति रै इलाज सूं वणै जितरै उण नूं राजी कर दुसमणायगी मिटाई चाहिजै ।—नी.प्र.
रू०भे०—दुस्मणी ।

दुसमी—देखो 'दुसमण' (रू.भे.) उ०—मरजो रै राइका थारोड़ी जी नार । सैणां री विछवो दुसमी पाड़ियो जी म्हारा राज ।—लो.गी.

दुसराड़णो, दुसराड़बो—देखो 'दुसराणो, दुसराबो' (रू.भे.)

दुसराड़ियोड़ो—देखो 'दुसरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुसराड़ियोड़ी)

दुसराणो, दुसराबो—क्रिस० [सं० दुः+ रा० सराणो] त्रुटि निकालना, कमी निकालना । उ०—सिर कटाय निज समपतां, दाख डोढ़ दुसराय । ठाकर की वो ठीकरो, कुण भड़ सीस कटाय ।
—रेवतसिंह भाटी

दुसराणहार, हारो (हारी), दुसराणियो—वि० ।
दुसरायोड़ो—भू०का०कृ० ।
दुसराईजणो, दुसराईजबो—कर्म वा० ।
दुसराड़णो, दुसराड़बो, दुसरावणो, दुसराववो—रू०भे० ।

दुसरायोड़ो—भू०का०कृ०—त्रुटि निकाला हुआ, कमी निकाला हुआ ।
(स्त्री० दुसरायोड़ी)

दुसरावण—संपु० [सं० द्वि+रा० सरावणो=भोजन करना] भोज्य सामग्री से सजा हुआ वह थाल जो भोजन करते समय आवश्यकता-नुसार परोसने के लिये पास में रखा जाता है (मेवाड़)

दुसरावणो, दुसराववो—देखो 'दुसराणो, दुसराबो' (रू.भे.)

दुसरावियोड़ो—देखो 'दुसरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुसरावियोड़ी)

दुसवार—वि० [फा० दुशवार] १ कठिन, दुरूह. २ दुःसह ।

दुसवारी—संस्त्री० [फा० दुशवारी] (वि० दुसवार) कठिनता ।

दुसह—वि० [सं दुः सह] १ भयंकर । उ०—आकास रसातळ दिस असट, पारावर समद्र पथ । जमजाळ दुसह जायं जहां, आंणो ग्रह मेरे अरथ ।—रा.रू.
२ जो न सहा जा सके, असह्य । उ०—दियो सबद सुणियां दुसह, लागं तन मन लाय । सूंब दियो न करै सदन, परव दियाळी पाय ।
—बां.दा.
३ कठिन । उ०—भेळो तैं कीधो भलो, जळहर ओ जळ जाळ । धुन मधुरी पुहमी ध्रवै, दुसह निवार दुकाळ ।—बां.दा.
संपु०—१ शत्रु वैरी । उ०—१ वीराधिवीर पित तणं वैर । निज दळ सझि घेरे दुसह नैर ।—सू.प्र.
उ०—२ मेरो'र चाचो मारिया, सह अवर दुसह संघारिया ।—सू.प्र.
२ अग्नि (अ.मा.) ३ क्रोध (अ.मा.)
क्रिवि०—दूर, पृथक । उ०—'मदू' अखै 'वीरमां' क्या मरजी थारी। 'वीरम' कह्यो वाद में आकर उपगारी। बांण कबांण बंदूक की पल चोट पलारी । जद मैं 'मदू' जांणसां थिर धीरज थारी । 'मदू' अखै कटक में सुणजो भड़ सारी । 'वीरम' सूं जुध वाजतो तोले तरवारी । बांण-कवांण बंदूक कूं दुसह कर डारी । दाखै मुख देवाळदे हरपाळ विचारी ।—वी.मा.

दुसही—वि० [सं० दुः सह] १ जो कठिनता से सह सके.
२ डाही, ईर्ष्यालु ।

दुसहो—संपु० [सं० दुःसह्य] शत्रु, वैरी ।

दुसाकियो—१ देखो 'दुसाको' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दुसाखो' (१) (अल्पा., रू.भे.)

दुसाको—संपु० [सं० द्वि+शाक] १ एक साथ जुड़े हुए पीतल के दो गहरे वर्तन जिनमें अलग अलग शाक रख बीच के जोड़ स्थान पर लगे कड़े को पकड़ कर परोसने ले जाया जाता है । वर्तनों का आकार गोल होता है ।
रू०भे०—दुसाखो ।
अल्पा०—दुसाकियो, दुसाखियो ।

दुसाखियो—१ देखो 'दुसाको' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दुसाखो' (१) (अल्पा., रू.भे.)

दुसाखो—संपु० [सं० द्वि०+सं० शाखा] १ ऐसा स्थान या भूमि जहां रवी और खरीफ दोनों फसलें उत्पन्न होती हों ।
उ०—सु तद रा जाळोर वांसै पड़िया तासु हमैं जाळोर वांसै हीज छै ।

परगनो सैणो जालोर सूं कोस १० सीरोही दिसा उगवण नूं, सीरोही रा गांवां सूं कांकड़, परगनो दुसाखौ छै, सहर छोटी सी भाखरी री खांम ।—नैणसी

अल्पा०—दुसाकियौ, दुसाखियौ, दुसाख्यौ ।

२ देखो 'दुसाको' (रू.भे.)

दुसाख्यौ—देखो 'दुसाखौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ठाकुर वाळक होय हुकम ठकुरांणियां । दुसाख्यौ हुवै गांम वसती वांणियां । जोईजै दरवार जिकूं घर तोलणा । एता दे किरतार फेर नहि बोलणा ।—अज्ञात

दुसार-क्रि०वि० [सं० द्वि+रा० सालणौ] १ आरपार ।

उ०—१ लड़ालूंव आभूखणां प्रथी री सोभाग लेती, उडावै चरमी ताग सेती ऐणवार । लोहलाठ दोयणां कळेजा वाळा भाग लेती, दंती घड़ा राग देती नीसरे दुसार ।—जवांनजी आढ़ौ

उ०—२ खंजर कटार छुकुमार मार, नटसाल घाव पंजर दुसार ।
—लावारासा

२ सं०स्त्री०—१ तलवार । उ०—द्रढ़ दंत दब्बि देखत दुसार । आवत न पार दुख सिंधु पार ।—ऊ.का.

सं०पु०—२ आरपार छेद. ३ शस्त्र के दोनों ओर का पैना भाग.

३ भाला । उ०—गोखां चढवै गोरियां, मंडवै राग मलार । आलीजा विलमै उठै, दिल में वहै दुसार क नारि निहारवै, उझकि अटा सूं ऊठ मूठ सी मारवै ।—सिववक्स पाल्हावत

रू०भे०—दुसारक, दुसारण, दूसार ।

अल्पा०—दूसारौ ।

दुसारक—देखो 'दुसार' (रू.भे.) उ०—छछोहक वाहत भाल छड़ाळ । दुसारक डाळ पड़ै रवदाळ ।—सू.प्र.

दुसारण—देखो 'दुसार' (रू.भे.) उ०—धकै मत आव न होवत धीर । वुहो विवनो आज पावुअ वीर । करूं उर वीच दुसारण कूंत । परौ खह धूरत सारंग पूत ।—पा.प्र.

दुसारां-क्रि०वि०—इस ओर से उस ओर, आरपार ।

उ०—तूटै सिर धड़ तड़फड़ै, जळ तुच्छै मछ जांण । सेल दुसारां नीसरै, केतां सह केकांण ।—किसोरदांन बारहठ

दुसाल-सं०पु० [सं० द्वि+शल्य] १ आरपार छेद ।

२ देखो 'दुसालौ' (मह., रू.भे.) उ०—भर मौल नीलक भार, आसा-वरीस उदार । दुल्लीच गिलम दुसाल, थिरमा सफंभ सुथाळ ।—सू.प्र.

दुसालापोस-वि० [फ़ा० दोशालः+पोश] जो दुशाला ओढ़े हो, अमीर ।

दुसालाफरोस-सं०पु० [फ़ा० दोशालः+फ़िरोश] दुशाला वेचने वाला ।

दुसालौ-सं०पु० [फ़ा० दोशालः] १ जिसमें दो शाल एक साथ जुड़े हों, पश्मीने या रेशम की कामदार दोहरी चादर. २ जरी तथा रेशम का एक प्रकार का ओढ़ने का वस्त्र. ३ विशेष रंग का वड़ा सांप जिसे देख कर प्राणी हिलडुल नहीं सकता ।

अल्पा०—दुसालियौ ।

मह०—दुसाल ।

दुसासण, दुसासणु, दुसासन-सं०पु० [सं० दुः शासन] धृतराष्ट्र का एक पुत्र । उ०—कउरव नइ दळि गुरु गंगेउ, क्रिपु दुरयोधनु सल्यु मिळेउ । सकुनि दुसासणु जयद्रथु पुत्रु, गरूउ भूरिस्रवा भगदत्तु ।
—पं.पं.च.

वि०वि०—यह अत्यन्त क्रूर स्वभाव का था । पांडवों के जूए में हार जाने पर यही द्रौपदी के वाल पकड़ कर सभा में लाया था तथा उसकी साड़ी खींचते हुए थक गया था । भीम ने उस समय यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं इसे मार कर इसका रक्त-पान करूंगा तथा द्रौपदी तब तक अपने वाल नहीं बांधेगी जब तक वह इसके रक्त से उसके बाल न रंग दे । महाभारत के युद्ध में भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी ।

वि०—जो किसी का दवाव न माने, जिस पर शासन करना कठिन हो ।

रू०भे०—दुस्यासन, दुस्सासण, दुस्सासेण, दूसासण ।

दुसील-वि० [सं० दुः शील] शील-रहित, दुष्ट ।

दुसुपन-सं०पु० [सं० दुः स्वप्न] वुरा सपना, अशुभ स्वप्न ।

उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित । दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासै दुसुपन दुरनिमित ।
—वेलि.

दुसूती-सं०स्त्री० [सं० द्वि०+सूत्र+रा०प्र०ई] ऐसा कपड़ा जिसमें दो तागों का ताना और वाना होता है ।

दुसेन्या-सं०स्त्री० [सं० द्वि+सेना] दोनों ओर की सेना ।

उ०—नगारा निहस्सै, सनूरा तरस्सै । दुसेन्या दरस्सी, कड़ै कंठळी सी ।—रा.रू.

दुस्कर-वि० [सं० दुष्कर] जो सरलता से न हो, जिसे करना कठिन हो, दुःसाध्य ।

रू०भे०—दूकर, दुक्कर ।

सं०पु०—आकाश ।

दुस्करण-सं०पु० [सं० दुष्कर्णः] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

दुस्करम-सं०पु० [सं० दुष्कर्म] १ वुरे कर्म, कुकर्म. २ पाप ।

दुस्करमी, दुस्करमौ-वि० [सं० दुष्कर्मन्+रा०प्र०ई तथा औ] १ वुरा करने वाला. २ पापी ।

दुस्काळ-सं०पु० [सं० दुष्काल] १ वुरा समय. २ अकाल, दुर्भिक्ष । ३ महादेव ।

दुस्कीरत्ति-सं०स्त्री० [सं० दुष्कीर्ति] अपयश, कुकीर्ति, वदनामी ।

दुस्कुळ-वि० [सं० दुष्कुल] नीच कुल का, तुच्छ घराने का ।

सं०पु०—नीच कुल, वुरा खानदान ।

दुस्कुलीन-वि० [सं० दुष्कुलीन] नीच कुल का, वुरे घराने का ।

दुस्कृत, दुस्कृति, दुस्कृती, दुस्क्रित, दुस्क्रिति, दुस्क्रिती—१ देखो 'दुक्रत' (रू.भे.) उ०—पुण्यवंत ना दुसक्रित टळइ, पुण्यवंत नइ चांमर

दळइ। पुण्यवंत सिरि छत्र धराइ, पुण्यवंत नवि पाळा जाइ।
—कां.दे.प्र.

२ देखो 'दुक्रति' (रू.भे.)

दुख्खदिर-सं०पु० [सं० दुख्खदिर] एक प्रकार का खैर का पेड़ जो कुछ छोटा होता है।

दुश्चिक्य-सं०पु० [सं० दुश्चिक्य] फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म लग्न से तीसरा स्थान।

दुस्ट-सं०पु० [सं० दुष्ट] १ शत्रु (ह.नां., अ.मा.) २ चोर (अ.मा.) ३ कुष्ट रोग।

वि०—दुर्जन, दुराचारी, पापी। उ०—१ हळधर-बंधव गोकुळ-वाळ, खिमावंत साधुवं दुस्ट खैगाळ। तवैं जे नांम अहोनिस तुह्य, जरांतक काळ न व्यापै जम्म।—ह.र.

उ०—२ राक्षस एक महाबळी, महा दुस्ट सो आहि। पर दुख नासी हे नृपति, निश्चय नासो ताहि।—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—दिसठ, दुग्रट्ठ, दुट्ठ, दुठ, दुट्ठ, दुसट, दुसटी, दुस्टी, दूट, दूठ।

दुस्टता-सं०स्त्री० [सं० दुष्टता] १ बुराई, खराबी. २ बदमाशी, दुर्जनता. ३ ऐब, दोष, नुक्स।

दुस्टात्मा-वि० [सं० दुष्टात्मा] जिसका अंतःकरण बुरा हो, खोटी प्रकृति का।

दुस्टी—देखो 'दुस्ट' (रू.भे.)

दुस्तर-वि०[सं०] १ जिसे पार करना कठिन हो, कठिनता से पार करने योग्य। उ०—१ भीतर घर द्रढ भाव, तो मांझल डूबा तिकै। दुस्तर भव दरियाव, नर तरिया निरझर नदी।—बां.दा.

उ०—२ काया माया ह्वै रही, योद्धा बहु बळवंत। दादू दुस्तर क्यों तिरै, काया लोक अनंत।—दादू बांणी

२ कठिन, विकट। उ०—पंचम राग मुख करि सुर नीके करि गावै छै। तरुणी स्त्री अर तरुण पुरुस। जु फागुण विरही जण नै दुस्तर छै।—वेलि टी.

रू०भे०—दुठर, दुतर, दुतार, दुतारो, दुत्तर, दुत्तारि, दुत्तार, दुत्तारो, दुसतर, दूतर।

दुस्फोट-सं०पु० [सं० दुस्फोट] शस्त्र विशेष। उ०—कुंत करागि कीघ, छुरी पासु परसु पट्टिस सक्ति करमुक्त यंत्रमुक्त मुक्ता-मुक्त दुस्फोट तरवारि··· ।—व.स.

दुस्मण—देखो 'दुसमण' (रू.भे.) उ०—भीज्योड़ा कपड़ां री बेढंगी पोसाक में वो चोर ह्वै ज्यूं ईज जचतो हो। सगळी भीड़ उण री दुस्मण ह्वियोड़ी ही। इण वास्तै उण री सुणै कुण?—रातवासो

दुस्मणी—देखो 'दुसमणी' (रू.भे.)

दुस्यंत-सं०पु० [सं० दुष्यन्त] ऐति नामक पुरुवंशी राजा के एक पुत्र जिनका वृत्तान्त महाभारत में इस प्रकार मिलता है।

वि०वि०—राजा दुष्यंत एक दिवस आखेट खेलते-खेलते कण्व ऋषि के आश्रम के पास पहुंच गये। उस समय कण्व ऋषि द्वारा पालित शकुंतला वहीं पर थी। उसने राजा का यथोचित आतिथ्य सत्कार किया। राजा उसके सौंदर्य पर मोहित हो गया। दर्यापत करने पर राजा को ज्ञात हुआ कि शकुंतला उर्वशी नामक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र ऋषि की कन्या है। राजा ने शकुंतला की सम्मति से उसके साथ गंधर्व विवाह किया और उसे वहीं कण्व ऋषि के आश्रम में छोड़ कर चल दिया। परन्तु गंधर्व विवाह के कारण शकुंतला उस समय गर्भवती हो गई थी अतः कुछ काल के उपरान्त उसके पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम आश्रम वालों ने सर्वदमन रखा। कालान्तर में यही सर्वदमन भरत नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घटना को लेकर महा कवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तल नामक संस्कृत में नाटक लिखा जो संस्कृत भाषा का सर्वश्रेष्ठ नाटक गिना जाता है।

रू०भे०—दुख्यंत, दुसंत।

दुस्यासन, दुस्सासण, दुस्सासेण—देखो 'दुसासन' (रू.भे.)

उ०—१ मैं जांणूं मारूं हूं हवडां दुस्यासन माहा पापी।—नळाख्यांन

उ०—२ दुस्सासण जिकै जिसा दुरजोधन रिख अस्रथांमा द्रोण रिख।
—पु.रू.वं.

उ०—३ दुस्सासेण माथ री क्रतांत रोध धायो दूठ। जेठी पाराथ री किना 'भाराथ' री जोध।—हुकमीचंद खिड़ियो

दुहंडणौ, दुहंडबौ-क्रि०स०—संहार करना, मारना, नाश करना।

उ०—ऊकासण अनड़ अंजणेत्र अंग ऊमाहे, माहा संध समाहे मुनंद्र मुहंडे। असह ली मोड़ पत्र नाथ रण धरण मोड़, दली छत्र तोड़ तूं ही ज दुहंडे।—कविराजा करणीदांन

दुहंडणहार, हारौ (हारी), दुहंडणियौ—वि०।

दुहंडिग्रोड़ौ, दुहंडियोड़ौ, दुहंड्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दुहंडीजणौ, दुहंडीजबौ—कर्म वा०।

दुहंडियोड़ौ-भू०का०कृ०—संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ।

(स्त्री० दुहंडियोड़ी)

दुह—देखो 'दुख' (रू.भे.) उ०—पूरब पुण्य संजोगइ पांमियउ, तं त्रिभुवन नउ नाह जी। एक बार मुझ नयण निहाळउ, टाळउ भव दुह दाह जी।—स.कु.

दुहड़उ—देखो 'दूहो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—तितरइ आगला चारण-कउ दुहड़उ छइ।—अ. वचनिका

दुहड़ौ—१ देखो 'दूहो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ ईसा मांही राजाजी बोलता हुवा, अगलो चारण को कहो दुहड़ो।—अ. वचनिका

उ०—२ लूणै कहिया दुहड़ा, मारू रूप अपार। उतरि लाग पमाव करि, दिन्हो साल्ह कुमार।—ढो.मा.

उ०—३ पहसर आखर पाधरा वापार पडांणां। पाधरसला दुहड़ा के दीहरहांणां।—मयाराम दरजी री वात

दुहण—देखो 'दुहिण' (रू.भे.)

दुहणो, दुहवो—देखो 'दूवणो, दूववो' (रू.भे.) उ०—कांमधेनु दुहि पीजिये, ताकी लखे न कोइ। दादू पीवै प्यास सौं, (सो) महारस मीठा सोइ।—दादू बांणी
दुहणहार, हारौ (हारी), दुहणियौ—वि०।
दुहिग्रोड़ौ, दुहियोड़ौ, दुह्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दुहीजणौ, दुहीजवौ—कर्म वा०।

दुहत्थ—देखो 'दुहत्थ' (रू.भे.)

दुहत्थौ—देखो 'दुहत्थौ' (रू.भे.) उ०—केहरि मरू कळाइयां रुहिरज रत्तड़ियांह। हेकणि हाथळ गैं हणै, दंत दुहत्था ज्यांह।—हा.झा.

दुहत्थ-वि० [सं० द्वि हस्त] १ दो हाथ वाला। उ०—प्रगल्य कंठ पेल देत कंठ कंठिराव को, दुहत्थ हत्थ ठेल देत हत्थलैं प्रदाव को।—ऊ.का.
२ दो मूठ वाला. ३ देखो 'दुहत्थौ' (रू.भ.)
रू०भे०—दुहत्थ, दुहथ।

दुहत्थि, दुहत्थी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+हस्त] १ मालखंभ की एक कसरत.
२ देखो 'दुहत्थि' (रू.भे.)

दुहत्थौ-वि० [सं० द्वि+हस्त+रा०प्र०ग्रौ] दो हाथ लम्बा।
उ०—केहर कुंभ विदारियौ, तोड़ दुहत्था दंत। रुहिर कळाई रत्तड़ी, मद तर तैं महकंत।—बां.दा.
रू०भे०—दुहत्थौ, दुहथौ।

दुहथि, दुहथी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+हस्त] तलवार। उ०—इसउ कीजइ, श्रेक धाराळा की धार खिरी छइ ते पुनरपि घरावजइ, घाग्रे पाटा बांधिजइ, दुहथि उठिजइ, मूळ उडइ चालिजइ, गजदळ गाहिजइ।
—ग्र. वचनिका
रू०भे०—दुहत्थि, दुहत्थी।

दुहथौ—देखो 'दुहत्थौ' (रू.भे.)

दुहमण—देखो 'दुसमण' (रू.भे.)

दुहरौ—१ देखो 'दो'रौ' (रू.भे.) उ०—ईहै स्वाद ग्रनेक ग्रालसू, जे वलि ग्रंगे। दुहरी न करै देह, सुखो विसयारस संगे।—ध.व.ग्रं.
२ देखो 'दोहरौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहरी)

दुहवणौ, दुहववौ-क्रि०स० [सं० दुःखापन्] नाराज करना, कष्ट पहुँचाना, ठेस पहुँचाना, पीड़ित करना। उ०—१ ताहरां रिणमल नूं कह्यौ—'तूं नीसर। जे तूं जीवतौ छै तौ तूं म्हारौ वैर लेईस। ग्रर श्रै रजपूत नीसरिया छै, तियां सूं दोख मतां राखै। श्रै थारै वडै कांम ग्रावसी। जेठी घोड़ौ छै सु सिखरै उगमणावत नूं देई। ग्रर रजपूत दुचिता छै सु तूं सुचिता करै। इयै मोहिल सरब दुहविया छै।—नैणसी
उ०—२ सजन रहौ न राखिया, कोट प्रकार कियाह। काय थां मन चिंता वसी, कांई म्है दुहविया।—ढो.मा.
दुहवणहार, हारौ (हारी), दुहवणियौ—वि०।
दुहविग्रोड़ौ, दुहवियोड़ौ, दुहव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दुहवीजणौ, दुहवीजवौ—कर्म वा०।
दूहणौ, दूहवौ, दूहवणौ, दूहववौ, दोवणौ, दोववौ—रू०भे०।

दुहवियोड़ौ-भू०का०कृ०—नाराज किया हुग्रा, दुखी किया हुग्रा; पीड़ित किया हुग्रा।
(स्त्री० दुहवियोड़ी)

दुहवै-वि० [सं० द्वि] दोनों।
क्रि०वि०—दोनों ग्रोर।

दुहाई-सं०स्त्री० [सं० द्वि०=दो+ग्राह्वाय=पुकार] १ उच्च स्वर से किसी बात की सूचना जो चारों ग्रोर दी जाय, घोषणा, मुनादी।
उ०—१ जो हुं ऐसी जांणती, प्रीत कियां दुख होय। देस दुहाई फेरती, प्रीत करौ मत कोय।—ढो.मा.
२ राजाज्ञा। उ०—बीजो लोग सरब नास गयौ। नागोर लियौ। दुहाई फेरी। हिवै नागोर ग्राय बैठो।—नैणसी
क्रि०प्र०—फेरणी।
३ प्रताप, तेज। उ०—१ निमक की सरीतो पै सिर दिया, हूर के विमांन बैठि ग्रासमांन को गया। ग्राज के हल्ले में नवाब दुहाई, सीना से सीना मिला कर तरवार चलाई।—ला.रा.
४ बचाव या रक्षा के लिये, सहायता के लिये ग्रथवा सताए जाने पर किसी का नाम लेकर पुकारने की क्रिया जो बचा सके।
क्रि०प्र०—देणी।
५ सौगंध, कसम, शपथ। उ०—१ ताहरां राजा ब्रहदभांण कह्यौ—देवीदास, ग्रा तपावस म्हासूं ना होवै। ग्रा तौसूं हीज होसी। तौनै इण बात री माहित छै। ज्यौ तूं जांणै छै, त्यौ सरब कह। तौनै थारै कुळ री ग्रांण छै। स्त्री लक्ष्मीनारायणजी री ग्रांण छै। ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज! मनै ठाकुरां री दुहाई मतां देवौ। हूं कांई कहूं नहीं। राजा कह्यौ—तूं क्यौं नहीं कहै। ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज! ग्रा बात मैं कही तौ इण घड़ी म्हारी देह छूट जासी।
—पलक दरियाव री बात
उ०—२ हे मेहाई! तौनै ग्राई री दुहाई बेगी ग्राव।—मे.म.
उ०—३ विस्व में रहे है व्याप, प्रांणी करै पुण्य पाप, ग्रापकुं न जांणै ग्राप, भूल्यौ फिरै भरम भरम। घ्यावौ प्रभु घरमनाथ, सुद्ध घरम सीळ साथ, घरम की दुहाई भाई, जो न बोलै घरम घरम।—ध.व.ग्रं.
क्रि०प्र०—देणी।
रू०भे०—दवाइ, दुग्राई, दुवाई, दुवायौ, दूवाग्री, दोहाई, द्वाई।
६ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)

दुहाग-सं०पु० [सं० दुर्भाग्य या दौर्भाग्य] १ वैधव्य।
उ०—कर क्रोध दुहाग दयौ किण नै। धारुग्रां जड़ साज चलौ घण नै।—पा.प्र.
२ पति द्वारा मान न मिलने का भाव. ३ पति द्वारा मान न मिलने पर होने वाला दुख. ४ वियोग ग्रथवा विछोह के कारण होने वाला दुख, वियोग-जनित दुख। उ०—हेली पीहर देखियौ, एकण रात सुहाग। घर ग्रायां घण जांणियौ, दूणा दूण दुहाग।—वी.स.
५ दुर्भाग्य, बदनसीबी. ६ दुःख, कष्ट।

रू०भे०—दवाग, दुग्राग, दुवाग, दोहाग ।

विलो०—सुहाग ।

दुहागण, दुहागणि, दुहागिण, दुहागिणि, दुहागिन, दुहागिनि—सं०स्त्री० [सं० दुर्भागिन्] १ वह स्त्री जिसका पति उससे विमुख हो ।

उ०—१ माळवौ देस मांहै धार नगरी । तठै पंवार उदयादित राज करै, नै तिण रै रांणियां दो । तिण मांहै पटरांणी वाघेली । तिण रै कंवर रिणधवळ हुवौ । नै दूजी रांणी सोळंखणी, तिका दुहागण । तिण रै कंवर रौ नांम जगदेव दीधौ ।—जगदेव पंवार री वात

उ०—२ जदी सुहागण री वचन सुण नै दुहागण पण कह्यौ आछी वात है, कथा वंचावौ ।—गांम रा धणी री वात

उ०—३ राय कहै रूठौ थकौ रे, तूं निरधन वर जोग रे दुहागिणि । ऐ मतिसारू नवि मिळे रे लाल, तुझ ने उत्तम भोग रे दुहागिणि ।
—स्रीपाळ रास

उ०—४ सखी सुहागिनि सब कहै, हूं र दुहागिनि आहि । पिव का महल न पाइये, कहां पुकारूं जाइ ।—दादू बांणी

२ विधवा ।

रू०भे०—दवागण, दुग्रागण, दुवागण, दोहागण, दोहागिण ।

विलो०—सुहागण ।

वि०स्त्री०—दुखी, पीड़ित ।

दुहागियौ, दुहागी—वि० [सं० दुर्भागिन्] (स्त्री० दुहागण) १ दुखी, पीड़ित । उ०—दादू सब जग दीसै एकला, सेवक स्वांमी दोइ । जगत दुहागी रांम विन, साधु सुहागी सोइ ।—दादू बांणी

२ दुर्भागी, अभागा ।

रू०भे०—दोहागी ।

अल्पा०—दुहागियौ, दोहागियौ ।

विलो०—सुहागियौ, सुहागी ।

दुहातीकरोती—सं०पु० [सं० द्वि+हस्त+करपत्रक] दोनों हाथों से चलाई जाने वाली आरी, करोती ।

दुहाथळ—सं०पु० [सं० द्वि+हस्त=सिंह-पंजा] सिंह के अगले पैर का पंजा जिससे वह प्रहार करता है । उ०—१ तंवैरम कुंभ दुहाथळ तत्थ । आडागिरी मत्थ क हत्थ अगत्थ ।—मे.म.

उ०—२ दुहाथळ वज्र दढां जज्र दंड, पूरा नव हाथ महाबळ पिंड ।
—मे.म.

दुहायोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहायोड़ी)

दुहारी—देखो 'दूवारी' (रू.भे.)

दुहारौ—सं०पु०—दुहने वाला । उ०—भैंसां मूळ न पावसै, सूकै पाडो साथ । हारा दुहारा उट्ठिया, ठाली वरतण हाथ ।—लू

दुहावणी—सं०स्त्री० [सं० दुग्धं+रा०प्र० आवणी] १ गाय, भैंस आदि दुहने का काम. २ वह धन जो दुहने के बदले में दिया जाय, दुहने की मजदूरी ।

दुहावणौ, दुहावबौ—देखो 'दुवाणौ, दुवावौ' (रू.भे.)

दुहावियोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहावियोड़ी)

दुहिण—सं०पु० [सं० द्रुहणः, द्रुहिणः] ब्रह्मा (ह.नां.)
रू०भे०—दुहण, दुहिन, द्रुघण, द्रुहिण ।

दुहिता—सं०स्त्री० [सं० दुहितृ] कन्या, लड़की ।
उ०—दैव रा सम विसम प्रवाह रै कारण एक जसराज नांम गोळवाळ चहुवांण इण मीणां रै प्रधांन हूं तौ तिकण रै दोइ दुहिता सुरूप री सदन जांणि जैता रै पुत्र बिग्रहराज इंद्रद्युम्न जसा री पुत्रियां विवाहण विचारी ।—वं.भा.
रू०भे०—दोहिता ।

दुहितापति—सं०पु० [सं० दुहितृ पति] जामाता, दामाद (डिं.को.)

दुहिन—देखो 'दुहिण' (रू.भे.) (नां.मा.)

दुहियोड़ी—देखो 'दूवियोड़ी' (रू.भे.)

दुहियोड़ौ—देखो 'दूवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहियोड़ी)

दुहिलउ, दुहिलौ—देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.) उ०—राखिस हिरदै तुं म्हारो स्वांमी । मैं दुहिलै पांम्यौ अंतरजांमी ।—दादू बांणी
उ०—२ अकबरिया इण वार, मर रे मैंगळ हर धणी । सुहिलौ सह संसार, दुहिलौ कोइ देखां नहीं ।—सूरायच टापरियौ
(स्त्री० दुहिली)

दुही—देखो 'दुखी' (रू.भे.) (जैन)

दुहुं—वि० [सं० द्वि] दोनों । उ०—करां खग झाल दुहुं राह मातौ कळह, दूठ लागौ पलां दोण दावै । जीव री आस तौ प्रसण नह गहै जळ, जळ गहै प्रसण तौ जीव जावै ।—महारांणा प्रताप रौ गीत
उ०—२ दुहुं पाखां ससि दीन्ह अंधार निकंदवा । तेजोमय रथ तास निघात पही नवा ।—बां.दा.

दुहुंवां—क्रि०वि०—१ दोनों ओर. २ दोनों से ।
उ०—भुज दुहुंवां बळ बीस भुज, कळ दस माथा काट । तैं दीधौ दसरथ तणा, दस सिर घर दहवाट ।—बां.दा.
वि०—दोनों ।
उ०—१ बावहियउ नइ विरहणी, दुहुंवां एक सहाव । जब ही बरसइ घण घणउ, तब ही कहइ प्रिय आव ।—ढो.मा.
उ०—२ घरै ले जाह ज्यूं थारी दुहुवां री पण रहै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रू०भे०—दुहुवां ।

दुहुंवै—वि०—दोनों । उ०—१ वांणी सकति एम सुणि वाचा । सुपह घरै दुहुंवै पण साचा ।—सू.प्र.
उ०—२ तन पड़ै दुहुंवै खळ तठै । जळ दीध मोकळ नूं जठै ।—सू.प्र.

दुहूभ्रत—सं०पु० [सं० द्वि+भृत्य] स्वामी कार्तिकेय (नां.मा.)

दुहूलूं—देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.) उ०—दुहूलूं सुहूलूं छि ते केहवुं प्रेम ते केहेवुं अणि ।—नळाख्यांन

दुहूं, दुहू—देखो 'दुहु' (रू.भे.) उ०—१ अग-रिपु नर केई मुणै, मुणै केक अग राज। इण गज गंजण सीह उर, दुहूं प्रकारां लाज।
—बां.दा.

उ०—२ देवी चाखंडे चंड नै मुंड चीन्हा, देवी देव द्रोही दुहू घमी दीन्हा।—देवि.

दुहेल-सं०पु० [सं० दुर्हेल] दुख, विपत्ति, मुसीबत।

दुहेलउ, दुहेलु, दुहेलू—देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.)

उ०—१ तिण मेलउ दे मुझ भणी, जिम मन मां सुख थावइ रे। जउ चिंता चित्त राखियइ, दिवस दुहेलउ जायइ रे।—वि.कु.

उ०—दूते कंठ भेलू, थयौ दुहेलू, अज्जामेळू अंतवेळू। करते पुत्र हेलू, नांम कहेलू, सब क्रम ठेलू छूटेलू।—भगतमाळ

दुहेलौ-वि० [सं० दुर्हेला] (स्त्री० दुहेली) १ संकट युक्त।

उ०—रांम संभाळिये रे, विखम दुहेली बार।—दादू बांणी

[सं० दुर्लभ] २ सरलता से नहीं मिलने वाला, दुर्लभ, दुष्प्राप्य।

उ०—१ दादू जे तूं मोटा मीर है, सब जीवों में जीव। आपा देख न भूलिये, खरा दुहेला पीव।—दादू बांणी

उ०—२ बरसण लागा बैंण विरंगा, तरसण लागा तीठा। परसण लागा पाव दुहेला, दरसण छैला दीठा।—ऊ.का.

३ देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.) उ०—१ साहिब सौं मिळ खेलते, होता प्रेम सनेह। दादू प्रेम सनेह बिन, खरी दुहेली देह।—दादू बांणी

उ०—२ दुरवेसै मोरचौ दबायौ, इतरै 'अखो' मधावत आयौ। वळ धरतौ धीरपतौ बेली, हुई जवन दळ घड़ी दुहेली।—रा.रू.

उ०—३ स्यांम बिनां जिवड़ो मुरझावै, जैसे जळ बिन बेली। मीरां कूं प्रभु दरसण दीज्यौ, जनम जनम की चेली। दरस बिन खड़ी दुहेली।—मीरां

उ०—४ दीह दुहेलौ जाइ, निसि नीसासै नीगमूं। दुखिया देखी दाइ, आवै तौ आवै 'जसा'।—जसराज

उ०—५ पंथ दुहेला दूर घर, संग न साथी कोइ। उस मारग हम जाहिंगे, दादू क्यों सुख सोइ।—दादू बांणी

उ०—६ दुबध्या तज तौ आपा अवखा, तजण दुहेला लोय। आपा तजे तौ बहु भिड़ आडा, कांम क्रोध अरु मोह।
—स्री सुखरांमजी महाराज

दुहोतरी—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दुहोतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहोतरी)

दुहौ—देखो 'दूहौ' (रू.भे.)

दुह्य-सं०पु० [सं०] शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति के एक पुत्र का नाम।

दुहिद, दुरहिद-सं०पु० [सं० दुः हृदयिन्, दुर्हृदयिन्] शत्रु, दुश्मन।

उ०—दराज देह दुरहिदांन राज दाहिनी नहीं। चहू चरित्र चित्र सी, विचित्र बाहनी नहीं।—ऊ.का.

दूंग—देखो 'दुंग' (रू.भे.) उ०—तठै दूंग तूटै धिखै आग तोड़ां। घणूं नाळ ताळां वजै नास घोड़ां।—सू.प्र.

दूंण—देखो 'दूणौ' (रू.भे.) उ०—कीधौ चौथ विखायतां, कितां इजारौ कीध। केतांइ झालो चाकरी, दूंण इजाफा दीध।—रा.रू.

दूंणू—देखो 'दूणौ' (रू.भे.) उ०—चरणां आठां चालियौ, जंगळ री रुख जाय। पुरस हूंत दूंणू पसू, अंतक कीधौ आय।—बां.दा.

दूंद—१ देखो 'तुंद' (रू.भे.) उ०—गरद मोटौ गात पेट दूंद छिटकी पड़ै।—पा प्र.

२ देखो 'दुंद' (रू.भे.) उ०—'गजन' रा नमौ तौ पराक्रम खत्री-गुर, समर दुहूं तणा रवि-चंद साखी। खागि दाखै अचळ खूंद वड खेंगरै, दूंद करि खूंद सूं अचड़ दाखी।
—महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ (प्रथम) रौ गीत

दूंदळोत-सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा.ख्यात)

दूंदळौ—देखो 'दूंदाळौ' (रू.भे.) (डि.को.)

दूंदवाळ, दूंदाळु, दूंदाळौ-वि० [सं० तुंद+आलुच्] बड़े उदर वाला, तोंदीला (डि.को.) उ०—वांटि भेटइ वांणीउ, दूंदाळु करि दोति। कांमिनि-करि कोडे करिउ, दीप धरंतु द्योति।—मा.कां.प्र.

दूंदुह—देखो 'दूदुह' (डि.को., रू.भे.)

दूंब—देखो 'दूंबौ' (मह., रू.भे.)

दूंबलियौ—देखो 'दूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

दूंबाइत, दूंबायत-सं०पु०—वह छोटा जागीरदार जो राजस्व या खिराज रूप में राज्य में निश्चित रकम भरता हो।

रू०भे०—धूंबाइत, धूंबायत।

दूंबौ-सं०पु०—१ छोटे गांव की खिराज या राजस्व में दी जाने वाली निश्चित रकम. २ वह भू-भाग जो आसपास के तल से उभरा हुआ हो, टूह, भीटा. ३ धूलि आदि का बनाया हुआ छोटा शिखर का ढेर।

रू०भे०—धूंबौ।

अल्पा०—दूंबलियौ, धूंबड़ौ, धूंबलियौ, धूबी।

मह०—दूंब, धूंब, धूंबड़।

दू-अंगम-वि० [सं० दुर्गम्] कठिनता से पार करने योग्य, जिसका पार करना महा कठिन हो। उ०—विलखी हुई वंछतां, नेटि नाविउ माह। माह! थाइ मूंह नइं, महा दू-अंगम माह।—मा.कां.प्र.

उ०—२ आई! अवलंबन किसूं, अम्ह नइं अेता दीह। जंबू कि हूं किम जाळवूं, विरह दू-अंगम सीह।—मा.कां.प्र.

दूअ—देखो 'दूत' (रू.भे.) उ०—दूअ वयणि दूअ-वीरां राउ जूठिल्लु।
—प.पं.च.

दूआर, दूआरि—देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—नीजांमा नइं नायता, माछी मिळया गुआर। मीणा मोची मोकळां, मूकि गयां दूआर।—मा.कां.प्र.

दूआसर-सं०पु० [सं० द्वि+रा० सर=लड़] आभूषण विशेष।

दूइज—देखो 'दूज' (रू.भे.) उ०—हो गये स्यांम दूइज के चांद।—मीरां

उ०—कंठळी कनक प्रवाळ मांणिक, विविध रूप विस्तार। दांगउ दूग्रासर मादल्यां, उर मोतियां भरि हार।—रुकमणी मंगळ

दूइजो—देखो 'दूजो' (रू.भे.) उ०—सवळां खळां नांमीजै समहरि, कवि सवळां दम कीजै, कुळ ग्रजुग्राळ 'गंगेव' कळोधर, दूइजां मोढ न दीजै।—ईसरदास कल्यांणदासोत राठौड़ रो गीत

दूउ—सं०पु० [सं० दौत्य] संदेसा, पैगाम। उ०—चीठो काढ़इ नितू कूंयारि, ग्रावइ वारउ जण विवहारि। ग्राजू ग्रम्हारइ ग्राविउ दूउ, ग्राज न छूटउं हूं ग्रणमूउ।—पं.पं.च.

दूग्रो—१ देखो 'दुग्रो' (रू.भे.) उ०—१ दळां मिळण ग्रावै दूग्रो, होळी खेल नगारो हुग्रो।—रा.रू.

उ०—२ वोध बीज निरमळ मुझ हुग्रो, दियो दुरति नइ दूग्रो जो।
—वि.कु.

२ देखो 'दूवो' (रू.भे.) ३ देखो 'दूहो' (रू.भे.)

दूकणियो—देखो 'दूखणो' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दूकणो—देखो 'दूखणो' (रू.भे.)

दूकणो, दूकवो—देखो 'दूखणो, दूखवो' (रू.भे.)

दूकणहार, हारो (हारी), दूकणियो—वि०।

दुकवाड़णो, दुकवाड़वो, दुकवाणो, दुकवावो, दुकवावणो, दुकवाववो—प्रे०रू०।

दुकाड़णो, दुकाड़वो, दुकाणो, दुकावो, दुकावणो, दुकाववो—क्रि०स०।

दूकिग्रोड़ो, दूकियोड़ो, दूक्योड़ो—भू०का०कृ०।

दूकीजणो, दूकीजवो—भाव वा०।

दूकियोड़ो—देखो 'दूखियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दूकियोड़ी)

दूखड़ं—देखो 'दुख' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—दूखियां देखी देवनि ग्रति दूखडूं लागि। पणि भोगव्यां विण वयम छूटीयि ये कीधां ग्रागि?
—नळाख्यांन

दूख—सं०स्त्री० [सं० दुःख] १ पीड़ा, दर्द. २ देखो 'दुख' (रू.भे.)

उ०—१ हियड़इ भीतर पइसि करि, ऊगउ सज्जण रूंख। नित सूकइ नित पल्हवइ, नित नित नवला दूख।—ढो.मा.

उ०—वर्णं केसरां ग्रत्तरां वोह वागां, प्रभा चंद्र मोहै भड़ां व्रिद पागां। हुए संग मारूत्त सौरंभ हालै, परस्सै तिणां पोख सूं दूख पालै।
—रा.रू.

दूखण—देखो 'दूसण' (रू.भे.) उ०—१ मन ही मांही ह्वै मरै, जीवै मन ही मांहि। साहिब साक्षी भूत है, दादू दूखण नांहि।
—दादू वांणी

उ०—२ पिंडि नख सिख लगि ग्रहणे पहिरिए, महिमूं वांणी वेलि मई। जग गळि लागि रहै ग्रसै जिमि, सहै न दूखण जेम सई।
—वेलि.

दूखणावणो—सं०पु० [सं० दुःख] दर्द, पीड़ा।

दूखणावणो, दूखणाववो—देखो 'दुखाणो, दुखावो' (रू.भे.)

दूखणावियोड़ो—देखो 'दुखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दूखणावियोड़ी)

दूखणियो—देखो 'दूखणो' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दूखणो—सं०पु० [सं० दुःख+रा० प्र० णो] १ फोड़ा, फुंसी. २ घाव (मि० चांदी, टाको)

रू०भे०—दूकणो।

ग्रल्पा०—दुकणियो, दुखणियो, दूकणियो, दूखणियो।

दूखणो, दूखवो—क्रि० ग्र० [सं० दुःख] १ (किसी ग्रंग का) पीड़ित होना, पीड़ायुक्त होना, दर्द करना। उ०—मारग ग्रांधो मालणो, जवहर लीधा जांह। माजी री दूखो मती, माथो ऊमर मांह।
—वां.दा.

मुहा०—दूखै जिणरै पीड़—जिसके दर्द होता है उसी को पीड़ा का ग्रनुभव होता है ग्रर्थात् किसी की पीडा का ग्रनुभव दूसरा नहीं कर सकता।

क्रि०स०—२ दोष लगाना, कलंकित करना, ऐब लगाना।

दूखणहार, हारो (हारी), दूखणियो—वि०।

दुखवाड़णो, दुखवाड़वो, दुखवाणो, दुखवावो, दुखवावणो, दुखवाववो—प्रे०रू०।

दुखाड़णो, दुखाड़वो, दुखाणो, दुखावो, दुखावणो, दुखाववो—क्रि०स०।

दूखिग्रोड़ो, दूखियोड़ो, दूख्योड़ो—भू०का०कृ०।

दूखीजणो, दूखीजवो—भाव वा०, कर्म वा०।

दुखणो, दुखवो, दूकणो, दूकवो—रू०भे०।

दूखर, दूखरो—देखो 'दूसण' (५) (रू.भे.) उ०—१ रांमण इंद्रजीत खर दूखर, गंजे कूंण गिणावै। खांत लगै केता खळ खाधा, वेळ दांत वहजावै।—र.ज.प्र.

उ०—२ खरा दूखरा ग्रस्सरा दैत खीजै। भिड़ेवा कजै ग्राविया क्रोध भीजै।—सू.प्र.

दूखाड़णो, दूखाड़वो—देखो 'दुखाणो, दुखावो' (रू.भे.)

दूखाड़णहार, हारो (हारी), दूखाड़णियो—वि०।

दूखाड़िग्रोड़ो, दूखाड़ियोड़ो, दूखाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

दूखाड़ीजणो, दूखाड़ीजवो—कर्म वा०।

दूखणो, दूखवो—ग्रक० रू०।

दूखाड़ियोड़ो—देखो 'दुखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दूखाड़ियोड़ी)

दूखाणो, दूखावो—देखो 'दुखाणो, दुखावो' (रू.भे.)

उ०—कुळ निकळंक कळंकियो, जिनसासन दूखाय। पुत्री मूई दुख नहीं, पिण दुख सह्यो न जाय।—स्रीपाळ रास

दूखाणहार, हारो (हारी), दूखाणियो—वि०।

दूखायोड़ो—भू०का०कृ०।

दूखाईजणो, दूखाईजवो—कर्म वा०।

दूखणो, दूखवो—ग्रक० रू०।

दूखायोड़ो—देखो 'दुखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दूखायोड़ी)

दूखावणो, दूखावबो—देखो 'दुखाणो, दुखावो' (रू.भे.)
दूखावणहार, हारो (हारी), दूखावणियो—वि० ।
दूखाविग्रोड़ो, दूखावियोड़ो, दूखाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
दूखावीजणो, दूखावीजबो—कर्म वा० ।
दूखणो, दूखबो—अक० रू० ।

दूखावियोड़ो—देखो 'दूखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दूखायोड़ी)

दूखियोड़ो—भू०का०कृ०—१ पीड़ित हुवा हुआ, दर्द किया हुआ. २ दोष लगाया हुआ, कलंकित किया हुआ ।
(स्त्री० दुखियोड़ी)

दूछर—देखो 'दुछर' (रू.भे.) उ०—चकरधर मग सघर संचर। सिथळ पर घर जांण ईसर, छांड नगधर धरण दूछर। मकर यर सर चकर मोख'र ।—र.ज.प्र.

दूछरल, दूछरेल, दूछरैल—देखो 'दूछर' (मह., रू.भे.)
उ०—१ वरस लघ घेर गढ़ ग्रोहीज घर वजवजै, विरद जस जग जगै भुजां वाजी । दूछरल पाथ जिम हाथ कुण देखतो, राज पण देखसो हुसो राजी ।—किसनो आढ़ो
उ०—२ तैही लंक सांगा सौ जोजनां गिणै दूछरेल ! मछरेल ग्रढंगां ग्रयारां मेल मीच । डरावणै रूप रा दयंतां भांगा दूछरेल । भांमणै रांम रा लागा पूंछरेल भीच ।—र.ज.प्र.
उ०—३ ग्रोहि धाड़ा ऊछरैल वाहरू लार ज्यूं ग्रांणै, जांणै क्रोधार ज्यूं फौजां तूछरैल जंग । रिमां मूछरैल पैलां पार ज्यूं राखियौ राजा, दूछरैल बाघां कंठहार ज्यूं दुरंग ।—महादांन महडू

दूज—सं० स्त्री० [सं० द्वितिया, प्रा० दुइयच, दुइज] १ प्रत्येक मास की दूसरी तिथि, द्वितीया । उ०—दस तन धरिया काय, सुधा घर दूज रै ।—बां.दा.
मुहा०—दूज रो चांद—दर्शन दुर्लभ होना, बहुत कम दिखाई देना ।
२ देखो 'दुज' (रू.भे.) उ०—ग्राजि चलावै देव हइ । वचन हमारउ मांनौ नूं मांन । कर जोड़ै दूज वीनमैं । थे घरि चालो, नूं लावो हो वार ।—वी.दे.
रू०भे०—दोज, बीज ।

दूजउ—देखो 'दूजो' (रू.भे.) उ०—दीजइ नाळेर हुवइ को दूजउ, इयउ रंग तरंग ग्राप रइ रहइ । दाखवि परि काहिक रिख नारद, कर जोड़े हेमगिरि कहइ ।—महादेव पारवती री वेलि.

दूजड़—देखो 'दुजड़' (रू.भे.) उ०—कहाड़ै विरद वंका भोड़ियां छकड़ा कड़ां, वर्षै रोळे भड़ां ग्रागा वाधै वंसवांन । विछोड़ै गयंदां घड़ा दूजड़ां ग्रोफड़ां वाह, मुगल्ला मूंडड़ां दड़ां मेळै दूजो 'मांन' ।
—रावत सारंगदेव री गीत

दूजण—वि० [सं० द्वि०+जन] १ (दो जन, दुकेला) गृहस्थ, विवाहित, दंपति । उ०—ग्रलग कहहिय छइ एकलां, दूजण सरिस कहइ घर वास । राजा रिधि छइ ग्रापणइं, ईण परिपुरजई मन की ग्रास ।
—वी.दे.
२ देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—यतो न भेद जांणिये-ह, ज्याग सैण दूजणं । संधांण-वांण जांण ए न, तांण ए सरासणं ।—सू.प्र.

दूजणी—देखो 'दूझणी' (रू.भे.)

दूजणो, दूजबो—देखो 'दूझणो, दूझबो' (रू.भे.)

दूजवर—सं०पु० [सं० द्वितीय वर] दूसरा विवाह करने वाला पुरुष, दुहाजू ।

दूजांण—सं०पु० [सं० द्विज+रा० प्र० ग्रांण] ब्राह्मण, विप्र ।
वि०—दूसरा । उ०—नीठ से दीध दूजांण नेक । ग्राठ में दीह ताजीम एक । वड़वा दळ दिखणी तेण वार । ग्राविया लियां लस्कर ग्रपार ।—वि.सं.

दूजियांण—सं०स्त्री० [सं० द्वितीय+रा०प्र०ग्रांण] दूसरी बार बच्चा देने वाली गाय या मादा पशु ।

दूजेण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.) उ०—लाखा सु-दिन, करताव करन । ग्रहिकार रांण, दूजेण मांण, ग्ररजन बांण ।—ग्र. वचनिका

दूजोड़ो—देखो 'दूजो' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—एक तो नगारो घणियां रातेनाडै वाजै ग्रो । दूजोड़ो नगारो घणियां ठेट वाजै ग्रो क भगड़ो रोपियो ।—लो.गी.
(स्त्री० दूजोड़ी)

दूजो—वि० [सं० द्वितीयः] (स्त्री० दूजी) १ जो क्रम में दो के स्थान पर हो, पहिले के बाद का । उ०—१ प्रथम लाख समपियो कवी बारठ संकर कर । 'लखपति' बारठ लाख दीध दूजो करि डंबर ।—सू.प्र.
उ०—२ धुर सोळह दूजो चवद, ती चौबीस तवंत ।—र.ज.प्र.
२ जिसका उपस्थित व्यक्ति या विषय से सम्बन्ध हो ।
सं०पु० [सं० द्वितीयः] १ वह व्यक्ति जो अपने किसी पूर्वज की तुलना में समान गुण वाला हो । वह व्यक्ति जिसकी उपमा के लिए उसके पूर्वज का उल्लेख किया जाय । उ०—१ छत्र-धारी दूजा 'जगा' धरा-थंभ उदा छात, 'सिभू' रा मिघळी 'दौला' हरा 'सुरतांण' ।
—ठाकुर सुरतांणसिंह नीमाज री गीत
उ०—२ है खुरां गांह तो हेकां, बोलाड़तो भड़ां बीजां साहंतो वाहंतो सार, गाहंतो सरीक । ढाहंतो काळां ढेचाळां, रोदाळां पोचाळां राजा, वडा ब्रद 'वीका' वाळा वहै दूजो 'वीक' ।—दूदो सुरतांणोत बोढ़ू
२ पौत्र (डि.को.)
वि०वि०—यह शब्द संस्कृत के द्वितीय और द्वितीयः का ग्रपभ्रंश रूप है, जिनका ग्रर्थ संस्कृत साहित्य में दूसरा और कुटुम्ब में दूसरा पुत्र, मित्र, साथी ग्रादि होता है । इसी कारण से राजस्थानी में भी द्वितीय शब्द का ग्रपभ्रंश रूप 'दूजो' है । विशेष कर डिंगल गीतों में यह शब्द समान गुण वाले वंशज के ग्रर्थ में प्रयोग होने लगा ।
रू०भे०—दुग्रो, दुवो, दूइजो, दूग्रो, दूजउ, दूवो वियो, बीजउ, बीजो ।

अल्पा०—दुजोड़ौ, दूजोड़ौ।

दूज्यूं, दूज्यू—देखो 'दुज्यूं' (रू.भे.) उ०—दूज्यू औ तौ वडौ वडी वातां नूं वाय घालै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

दूझ—देखो 'दोझ' (रू.भे.)

दूझड़—देखो 'दुझड़' (रू.भे.) उ०—दूझड़ां 'रायपाळां' दुझल वयल-घरां सिर दुंद वणा।—सू.प्र.

दूझणी-वि० [सं० दोहनी] दूध देने वाली।

उ०—१ धोळती चरावं; वो तो दूझणी कोई ल्यावे-ल्यावे घरां ए चराय, सांड दड़ूकणा।—लो.गी.

उ०—२ मेरी वडलो भतीजो वांवे भूरटी, मेरी छोटवयो वांवे गाय, धोळी दूझणी।—लो.गी.

सं०स्त्री०—गाय, गौ।

रू०भे०—दूजणी।

दूझणौ, दूझबौ-क्रि०स० [सं० दोहनं] १ दूध देना। उ०—१ भइसि दूझइ ग्रह्य घरि काळी। नारि ग्रांखि ग्रतिहिं अणोयाळी।

—विराट पर्व

उ०—२ कातर केतउं भूझइ, वंध्या गो केतउं दूझइ, समुद्र केतउ पीजइ।—व स.

क्रि०अ०—२ आमदनी होना। (जागीर आदि से)

दूझणहार, हारौ (हारी), दूझणियौ—वि०।

दूझिअोड़ौ, दूझियोड़ौ, दूझ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दूझीजणौ, दूझीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

दूजणौ, दूजबौ—रू०भे०।

दूझल—देखो 'दुझल' (रू.भे.) उ०—सर विद्या इम सीखजे, जिम सीखो 'पीथल्ल'। सर गोरीवे साझियो, दीठ-हीण दूझल्ल।—वां.दा.

दूझार, दूझाळ, दूझाळी-वि०—अधिक दूध देने वाली (गाय, भैंस आदि) उ०—एकां ऊन वाळी छाळी दूझाळी न दीखें एकां, थूंमाळी झमाळी हेकां दूझै काळी थाट। सदा रा सुगाळी एक दुकाळी किताक दीसै, वंसाळी कमाइ चाली वाळी जाये वाट।—ध.व.ग्रं.

दूट—१ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) २ देखो 'दूठ' (रू.भे.)

दूटी-सं०स्त्री० [देश०] ऊंट के आंख में होने वाली ग्रंथी जिससे ऊंट की आंख चली जाती है।

रू०भे०—दूठी।

दूठ-वि० [सं० दुष्ट वा दुःस्थः] १ जल्दी नाराज होने वाला, कुपित होकर बुरा करने वाला, उग्र, क्रूर (देवी, देवता आदि)

२ जबरदस्त, शक्तिशाली, बलवान, समर्थ। उ०—१ देवळां मूरतां हूंत जो करणी दिन, तुरम रो डीकरो कुबद खेलै। दूठ तौ तुरत गजसिंघ रो दीकरो, मसीतां आभरा धुंआ मेलै।

—महाराजा जसवंतसिंह प्रथम रो गीत

उ०—२ झड अनड झाड आंणे उपाड, दळ मिळें दूठ रिण भिडै रुठ।—र.रू.

उ०—३ राव मांनसिंघ दूदा रो। वडौ दूठ ठाकुर हुवौ। घणौ तपियो। पातसाही फौजां सूं घणूं वेढ़ को।

उ०—४ भूठ अवाच अपूठ महाजुध, दूठ सरूठ अदंडां दंडण परचंड मंड जय भासत, खंड परस कोदंड वितंडण।—र.ज.प्र

उ०—५ रूठ असो दे रेस, ऊठ महाभड़ ऊठ अब। कूट गहे दूठ वृकोदर देख रे।—रामनाथ कवियो

३ वीर, बहादुर। उ०—करां खग झाल दहुं राह मातो दूठ लागो पलां येण दावे। जीव रो आस तो प्रसण नह गहे जळ गहे प्रसण तो जोव जावे।—महाराणा प्रताप रो गीत

४ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—१ दूठ घणोई दाखियो, पूठ पर पवक। मूंठ खड़ग हथ मेलतां, कीधी ऊठ कड़क।—भगत

उ०—२ संत दादूदास सेती, मुगळ मत के मंद। दूठ हाथी दीनो, रयो सैंभर रद्द।—भगतमाळ

उ०—३ मती क्रोध दावा दूठ दाहणी असंत माडां, संत चाडा सग्र चाहणी सादेस। बूडती जेहाजां संघ थाहणी अथाह उग्राहणी साहां सिंघ वाहणी आदेस।—हुकमीचंद खिड़ियो

रू०भे०—दुट्ठ, दुठ, दूट्ठ, दूठ।

मह०—दूठाळ।

यो०—दूठमल।

दूठणौ, दूठबौ-क्रि०अ० [सं० दुष्ट] क्रोधित होना, कुपित होना।

दूठणहार, हारौ (हारी), दूठणियौ—वि०।

दूठवाड़णौ, दूठवाड़बौ, दूठवाणौ, दूठवाबौ, दूठवावणौ, दूठ... दूठाड़णौ, दूठाड़बौ, दूठाणौ, दूठाबौ, दूठावणौ, दूठावबौ—प्रे०...

दूठिअोड़ौ, दूठियोड़ौ, दूठ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दूठीजणौ, दूठीजबौ—भाव वा०।

तूठणौ, तूठबौ—विलो०।

दूठमल-वि०यो० [सं० दुःस्थ+मल्ल] योद्धा, वीर। उ०—१ मेळ फौजां हुका धका उर चंचळां, सुजड़हत पका रावत स... दूठमल सुणे 'उमेद' थारा डंका, रिमां घर ओद्रका पड़े राजा

—सगत...

उ०—२ दळी हाथियां हैमरां पाय कळी तोड़ा लाय दारू, ... चहुं दिसा हाकली दुवाह।—उमेदसिंह सीसोदिया रो गीत

दूठा-सं०स्त्री० [देश०] पंवार वंश की एक शाखा (बां.दा.ख्यात)

दूठाळ—देखो 'दूठ' (मह., रू.भे.)

दूठियोड़ौ-भू०का०कृ०—क्रोधित हुवा हुआ, कुपित।

(स्त्री० दूठियोड़ी)

दूठौ-सं०पु०—पंवार वंश की 'दूठा' शाखा का व्यक्ति।

दूण—देखो 'दूणौ' (रू.भे.) उ०—१ वसन सु पीत देही घ... किरीटी कुंडळ सोभै कांन। उभै कर दूण आवद्ध असंख, सारंग... गदा चक्र संख।—ह.र.

उ०—२ पाराथ सेवग ग्राथ ग्रापरण, कररण सिध मन काथ। दस दूरण हाथ समाथ दाटक, मार खळ दसमाथ।—र.ज.प्र.

दूणता–सं०स्त्री० [सं० द्विगुणता] दुगुणापन।

दूणभुजंगी–सं०स्त्री०—ग्राठ यगरण का छंद विशेष। (लखपत पिंगळ)

दूणागिर—देखो 'द्रोणगिरि' (रू.भे.) उ०—रांम नांम परताप, हणू दूणागिर लायो। रांम नांम परताप, इंद्र इंद्रासरण पायो।—ह.र.

दूणू—देखो 'दूणौ' (रू.भे.)

दूणेटो—देखो 'दूणौ' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—तरै वांसै साथ प्रथीराज भाखर चाढै छै सु प्रथीराज......देवड़ा नै सूरजमल री चाकर महियो भाखरात ग्रै दोनूं वाजिया......महिया नूं मार लिया ग्रै दोनूं ठोडै दूणेटो पावता नै माहयो सीसोदिया छै।—नैणसी

दूणौ–वि० [सं० द्विगुण] (स्त्री० दूणी) दुगुना, द्विगुण।

उ०—१ हिरदै ऊणा होत, सिर धूणा ग्रकवर सदा। दिन दूणा दैसोत, पूणा ह्वै न प्रतापसी।—दुरसो ग्राढो

उ०—२ कितरोइ पुर उच्छव कियौ, दूणौ सुख दरबार। कथै महा गुरण सूत कवि, चित हित मंत्र उचार।—रा.रू.

सं०पु०—'पिंगळ सिरोमरिण' के ग्रनुसार राजस्थानी का वह गीत (छंद) जिसमें ग्राठ द्वाले हों।

रू०भे०—दुरण, दुणौ, दूंरण, दूंणूं, दूरण, दूणू, बमरणौ, विमरणौ।

ग्रल्पा०—दुणेटो, दूणेटो, बमरणेटो, विमरणेटो।

दू'णौ, दू'वौ—देखो 'दूवणौ, दूववौ' (रू.भे.)

दू'णहार, हारौ (हारी), दू'णियौ—वि०।

दुयोड़ो, दुयोड़ौ—भू०का०कृ०।

दुईजणौ, दुईजवौ, दुयोजणौ, दुयोजवौ—कर्म वा०।

दूण-ग्रट्ठौ-सावझड़ौ–सं०पु०यौ०—एक राजस्थानी डिंगल गीत छंद जिसमें 'वृहद् नाराच छंद' के चार द्वाले होते हैं (र.ज.प्र.)

दूत–सं०पु० [सं०] (स्त्री० दूती) १ वह मनुष्य जो संदेशा ले जाने, संदेशा लाने ग्रथवा किसी विशेष कार्य के लिये भेजा जाय, चर (डि.को.)

उ०—ग्रंगद मेलियो सद दूत ग्रपंपर, वळ ग्रकलां मजबूत वडाळो। वप सिणगार धूत खळ बैठो, रचै सभा ग्रदभूत रढ़ाळो।—र.रू.

२ प्रेमी की ग्रोर से प्रेमिका के पास ग्रथवा प्रेमिका की ग्रोर से प्रेमी के पास संदेशा लाने या ले जाने वाला.

पर्याय०—खबरी, चर, चार, धावरण, हलकारो।

३ यमदूत।

उ०—दूत रा उघाड़ा क्रूर दांत। भूत रा मुरांड़ा तरणइ भांत। हुव जेठ तावड़ा दुसह होम। घावड़ा ग्रंगारां चिनख घोम।—वि.सं.

रू०भे०—दूग्र, दूय।

दूतपाळक–सं०पु० [सं० दूत पालक] एक राज्याधिकारी।

उ०—कथाकथक पीठ मरदक जिहा, संधिरेहा दूतपाळक तिहा। एहवी सभाइ वइठु राय, नरवर लक्ष सेवइ तस पाय।

—नळ-दवदंती रास

दूतर–सं०पु०—१ चन्द्रमा। उ०—उरण ग्रढ़ार दूरण वंस वया त्यां सेर कर। वरण ग्रढ़ारै देखतां त्यां तारांणी दूतर।

—नाहड़ियां रा झूलणा

२ देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—१ जळाबोळ कळ जुग्ग, महा दूतर भवसागर। मोह लोभ जळ मांझि, हुवा गरकाव किता नर।

—ज.खि.

उ०—२ पांन झड़ै सब दुख के, वळि गई तन सूखि। दूतर राति बंसत की, गया पियारा मूकि।—ग्रज्ञात

दूति, दूतिका—देखो 'दूती' (रू.भे.) उ०—ग्राजाति जाति पट घूंघट ग्रंतिर, मेळग्ग एक कररण ग्रमिळी। मन दंपती कटाछि दूति मैं, निय मन सूत्र कटाछि नळी।—वेलि.

दूती–सं०स्त्री० [सं०] स्त्री-पुरुषों को मिलाने ग्रथवा प्रेमी व प्रेमिका का संदेश एक दूसरे के पास पहुँचाने वाली स्त्री, कुटनी।

उ०—१ कटाछि एक वार उहां जाय छै एक वेर फिरि इहां ग्रावै। तौ जांणिजै छै इह दुहुं का मन दंपति छै तौ ये कटाछि नहीं छै। ए दूती छै, विचि फिरै छै।—वेलि.टी.

उ०—२ देखै फिरती दूतियां, सूतौ धूंणै सीस। फंसियौ कांमरण फंद में, रसियौ करै न रीस।—बां.दा.

रू०भे०—दूति, दूतिका।

२ चुगलखोर स्त्री. ३ चुगली। ज्यूं०—थूं म्हारी दूतियां क्यूं करै।

[सं० द्वि+हस्त+रा०प्र०ई] ३ जुलाहों के नापने के लिये दो हाथ की लकड़ी जिसे वे लिये रहते हैं, ग्रउठा।

दूतीय—देखो 'दुतीय' (रू.भे.)

दूतीयौ–सं०पु० [सं० द्वितीय] १ दुंधी भाव, द्विधा भाव।

उ०—एक ग्रखंडी ग्रलख ग्रभेखैं, द्रस्टि सम कर सब में देखै। दूतीया दूर गमावै। संत सदा सुख सागर वासी, कह सुखरांम मुक्ति ज्यांरी दासी, निजानंद थित थावै।—स्री सुखरांमजी महाराज

२ देखो 'दुतीय' (रू भे.)

दूथ–वि० [सं० दुष्ट] योद्धा, वीर।

उ०—१ दळप्पति दोमझि दूथ दुरंग, कियौ 'कमरौ' जिरण भांजि कुरंग।—रा.ज. रासौ

उ०—२ ररिण हरिण चरड थूथ टाळिय सयळ दूथ, कीधउं सगळ सूथ ग्राणंद करौ कवि कहइ।—व.स.

(मि० दूठ)

दूथी–सं०पु० [सं० द्वियः, द्विस्थः, वा द्विकथो] १ चाररण कवि, चाररण (डि.को.) उ०—सौ गाडा भरिया सदा, पाव न डिंगळ पास। क्यूं कूंड़ा डंबर करै......दूथी हुसी उदास।—क कु.बो.

२ कवि (डि.को.)

दूद—१ देखो 'दूध' (रू.भे.)

२ देखो 'दूदो' (मह., रू.भे.)

उ०—ग्रांट नृप 'रांम' सु 'कुसळ' कीधी ग्रभंग, कमंद नरवाहियौ तकौ

कढ़ियो। सार भड़ 'दूद' हर अगर कर सांमठा, राज वगतेस' रै खेत रहियो।—सतीदांन बारहठ

दूदड़—देखो 'दूध' (मह. रू.भे.)

दूदड़लो, दूदड़ियो—देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

दूदड़ो—१ देखो 'दूद' (अल्पा, रू.भे.)

२ देखो 'दूदो' (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

दूदांण, दूदा-सं०पु०—राव दूदा के वंशज मेड़तिया राठोड़ों के लिये प्रयोग किया जाने वाला शब्द।

दूदियादांत—देखो 'दूधियादांत' (रू.भे.)

दूदियो—१ देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'दूधियो' (रू.भे.)

दूदो—देखो 'दूधो' (रू.भे.)

दूदोयटो—देखो 'दुदोयटो' (रू.भे.)

दूदु-सं०पु० [देश०] पत्तों का बना गहरे कटोरे के आकार का पात्र, दोना।

उ०—कमळ पांन रै तणु दूदु करि आंणि आणिउं नळ जोइ वारि रे। नीसामु मूंकीनइ पांणी पीइ, कहइ-कहइ दवदंती नारि रे।

—नळ-दवदंती रास

दूदुह-सं०पु० [देश०] निर्विष सर्प (डि.को.)

रू०भे०—दूंदुह।

दूदो-सं०पु०—१ मेड़ता अधिपति राव दूदा का वंशज, मेड़तिया राठोड़।

उ०—'चांपा' 'करन' 'जैत' नृप चाया, 'ऊदा' 'दूदा' खळां अभाया। 'जोधा' 'जैत' 'कमा' नै जादव, इळ मद्धरीक करै धव(र) ओद्धव।

—रा.रू.

२ देखो 'दूध' (२) (अल्पा., रू.भे.)

दूद्यो—१ देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.) उ०—जाटणती के लगै मतवाळो काचो दूद्यो प्यावै। रांगड़ी कै सदा रंगीलो मद का प्याला प्यावै। मतवाळा भेरूं कासी का वासी।—लो.गी.

२ देखो 'दूध' (२) (अल्पा., रू.भे.)

दूध-सं०पु० [सं० दुग्ध] १ स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों में रहने वाला सफेद रंग का तरल पदार्थ जिससे उनके बच्चों का बहुत दिनों तक पोषण होता है (डि.को)

पर्याय०—अम्रित, उत्तामरस, ऊधस, खीर, गोरस, जळमित, जीवनीय, पय, पुंसर, मधु, सतन, सर, सवादक, ससात, सोमिज।

मुहा०—१ दूध अमूजणो—स्तन पर किसी आघात के कारण दुग्ध प्रवाह का रुक जाना जिससे स्तन में दर्द होता है. २ दूध उतरणो—(गाय, भेंस आदि के) दूध कम होना. ३ दूध चढ़णो—गाय, भेंस आदि के दूध में वृद्धि होना। देखो 'दूध पड़णो'. ४ दूध चढ़णो—गाय, भेंस आदि के दूध में वृद्धि हो जाना. ५ दूध चढ़ाणो—गाय, भेंस आदि को उनका अभीष्ट खाद्य पदार्थ नहीं मिलने के कारण अथवा अपने बच्चे के मोह के कारण दूध स्तनों में ऊपर खींच लेना. ६ दूध पड़णो—गाय, भेंस आदि का गर्भवती होना. ७ दूध पा'णो (पावणो)—कन्या के उत्पन्न होने पर उसके विवाहादि के भावी संकट की आशंका के कारण विष देकर मार डालना. ८ दूध भिळणो—देखो 'दूध पड़णो'. ९ दूध रो ऊफांण—शीघ्र शांत हो जाने वाला क्रोध या मनोवेग, क्षणिक आवेग. १० दूध रो दूध नै पांणी रो पांणी करणो—ऐसा न्याय करना जिसमें किसी भी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो। बिल्कुल ठीक न्याय करना।

११ दूध रो बळयो छाछ नै फूंक दै—दूध का जला छाछ को फूंक लगाता है, एक बार धोखा खाने पर मनुष्य छोटी सी बात पर भी सतर्क रहता है. १२ दूध सूं धोय नै देणा—उधार का रुपया उपयोग के पश्चात् ठीक समय पर बिना किसी रुकावट के लौटा देना.

१३ दूधां न्हावो, पूतां फळो—सौभाग्यशाली और सन्तानशाली बनो, आशीर्वाद. १४ दूधां री वेरी—अधिक दूध देने वाली गाय, भेंस आदि. १५ धोळो, धोळो दूध जांणणो—पवित्र या शुद्धात्मा समझना, कपटी या धूर्त नहीं समझना।

२ अनाज के बीजों में अपरिपक्व अवस्था में होने वाला रस जो पकने पर कठोर रूप धारण कर लेता है।

मुहा०—दूध पड़णो—अनाज के बीजों में रस पड़ना।

३ अनेक प्रकार के पौधों की पत्तियों और डंठलों में होने वाला दूध के रंग का तरल पदार्थ जो उनको तोड़ने से बाहर निकलता है.

४ वंश, गोत्र (साधु. फकीर). ५ देवी के लिये बलिदान किये जाने वाले बकरे का रक्त. ६ रक्त, खून।

मुहा०—दूध पा'णो—युद्ध-स्थल में पराजित घायल व्यक्तियों को तलवार के घाट उतारना।

रू०भे०—दुगध, दुद, दूद, दूधि।

अल्पा०—दूदड़लो, दूदड़ियो, दूदड़ो, दूदियो, दूदो, दूद्यो, दूधड़लो, दूधड़ियो, दूधड़ो, दूधियो, दूधो, दोदो, दोधो।

मह०—दूदड़।

दूधका-सं०पु०—पाटल वृक्ष (अ.मा.)

वि०वि०—देखो 'पाडळ'।

दूधकोसी-सं०स्त्री०—नेपाल राज्य के अंतर्गत सप्तकोशी नदी की सात सहायक नदियों में से एक सहायक नदी।

दूधगिलारी, दूधगिलासड़ी-सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छिपकली की जाति का जन्तु जिसका रंग सफेद होता है। यह प्रायः जंगल में पाया जाता है और बड़ी तेजी से इधर-उधर भागता है।

दूधड़लो, दूधड़ियो, दूधड़ो—देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ माताजो मनावै मीरां थे मांनो, दूधड़ला री पत राख, भक्ति छोडो हरि नांम की।—मीरां

उ०—२ पदमइया स्वांमी सुखदाईक, नाईक नयणे दीठा रे। रांम नांम मनोरथ पूरया, दूधड़ै पावस वूठा रे।—रुकमणी मंगळ

दूधचढ़ी–वि०स्त्री० [सं० दुग्ध+उच्चलन = प्रा० उच्चडन, अप० चड्ढन] १ जिसके स्तनों में दूध पूर्व की अपेक्षा बढ़ गया हो. २ वह गाय, भैंस, बकरी आदि जो गर्भवती हो चुकी हो।

दूधडियो–वि० [सं० द्वि+घड+रा०प्र०इयो] १ दो बराबर विभाग का। २ दूध (अल्पा., रू.भे.)

दूध-बैं'न–सं०स्त्री० [सं० दुग्धभगिनी] १ वह लड़की जो किसी दूसरी स्त्री का दूध पिला कर पाली जाती है तो उस स्त्री की संतान की दूध बहन कहलाती है. २ सहोदरा।

दूध-भाई–सं०पु० [सं० दुग्ध भ्राता] १ वह लड़का जो किसी दूसरी स्त्री का दूध पिला कर पाला जाता है तो उस स्त्री की संतान का 'दूध-भाई' कहलाता है।

दूधमुंहो–वि० [सं० दुग्ध मुख] जो अभी तक माता का दूध पीता हो, अबोध बालक, शिशु।

दूधली–देखो 'दूधी' (अल्पा., रू.भे.)

दूधसेराह–सं०पु० [देश०] दूधिया रंग का घोड़ा (शा.हो.)

दूधा–सं०स्त्री०—पुरोहित ब्राह्मणों का एक भेद जो श्रीमाली ब्राह्मणों में से निकले हैं।

दूधाधारि, दूधाधारी–वि० [सं० दुग्धाहारी] केवल दूध का आहार करने वाला। उ०—मन जोगी जंगम सेस, मन बहो भेस बणावै। दूधाधारी होय फिरै भरमैं दुख पावै।—ह.पु.वा.

रू०भे०—दूधाहारी।

दूधापांणी–सं०पु०—एक टोना विशेष जो स्त्रियों द्वारा वर को वधू के वश में रखने के लिये किया जाता है।

वि०वि०—इसमें वर को वधू का झूठा दूध पिलाया जाता है।

दूधार—देखो 'दुधार' (रू.भे.)

दूधारू—देखो 'दुधाळू' (रू.भे.)

दूधाळ, दूधाळू—देखो 'दुधाळू' (रू.भे.)

उ०—दोळै दूधाळू गळियोड़ी गेरी। ढोळै ढळियोड़ी रतनां री ढेरी।
—ऊ.का.

दूधाळो–वि० [सं० दूध+आलुच्] १ दूध का सा गाढ़ा।

उ०—इतरा में खवास आंण अरज कीवी—जे कसूंभो तैयार छै। तद सरदार लोगां कही—ले आवो। सो कळस च्यार भरिया जाजम रै पाखती धरिया। लोटा भला भर कचोळा हाथां में लीया। तद सूरेजी कह्यौ—पहलां फकीर साहिब नूं देवणो। तो खवास पाछो घिर आ कही—जे फकीर साहब लेवो। दूधाळो कसूंभो छै, आरोगो।
—सूरे खींवै री वात

२ दूध वाला।

दूधाहारी—देखो 'दूधाधारी' (रू.भे.) (मा.म.)

दूधि—देखो 'दूध' (रू.भे.) उ०—स्यांम गऊ चै दूधि समोवै। धोवै पछै गंगाजळि धोवै।—सू.प्र.

दूधियापत्थर–सं०पु० [सं० दुग्ध+प्रस्तर] एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं।

दूधियादांत–सं०पु० (बहु व०) [सं० दुग्ध+दन्त] बच्चों के जन्म के उपरांत आने वाले दांत। उ०—खाली साची सूं कांम को चलैनी। आज मा-रै दूध री लाज राखणी है। बडै भारी राखसी नरमेध जिग में होमीजतै दूधियैदांतां वाळा टाबरां, युवकां अर अबळावां री रीख्या करणी है।—वरसगांठ

रू०भे०—दूदियादांत।

दूधियो–सं०पु० [सं० दुग्ध+रा०प्र०इयो] १ एक प्रकार का सफेद बढ़िया चिकना और चमकीला पत्थर जिसकी गिनती रत्नों में होती है. २ एक प्रकार का सफेद घटिया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियां आदि बनाई जाती हैं. ३ हल्की सफेदी करने का कार्य. ४ लकड़ी का कोयला. ५ लौकी. ६ एक जंगली फल. ७ देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

वि०—१ जिसके बनाने में दूध की मिलावट हो, दूध का, दूध सम्बन्धी. २ दूध के रंग का, श्वेत।

रू०भे०—दूदियो।

दूधी–सं०स्त्री० [सं० दुग्धिका] १ एक प्रकार का क्षुप जो छत्ते के समान भूमि पर छितरा हुआ रहता है और जिसके पत्तों या टहनियों को तोड़ने पर दूध निकलता है।

वि०वि०—यह तीन प्रकार का होता है—एक नोंकदार लाल पत्तों का, एक गोल पत्तों का और एक मूंगों के दानों के समान छोटे-छोटे पत्तों का।

२ एक प्रकार की लता विशेष। उ०—दांमिणि दोभी दूधिआं, देवदालि दूधेलि। दारूहळद्र दुरालभा, दह दिसि दीसइ वेलि।
—मा.कां.प्र.

रू०भे०—दुद्धी, दूदी।

अल्पा०—दुदेली, दूधेलि, दूधेली।

दूधीउ–सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—दांति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दधूण। देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण।—मा.कां.प्र.

दूधीगिडोळियो–सं०पु०—१ लौकी (अमरत)

२ छिपकली जैसा शरीर पर धारी वाला मुलायम चमकदार कीड़ा। (शेखावाटी)

दूधेलि, दूधेली–सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की लता विशेष।

उ०—दांमिणि दोभी दूधिआं, देवदालि दूधेलि। दारूहळद्र दुरालभा, दह दिसि दीसइ वेलि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दूधी' (अल्पा., रू.भे.)

दूधो—देखो 'दूध' (मह., रू.भे.)

उ०—वाळो गोदी दूधो चूंग, दूध चुंगावत बोली यूं। धोळै पय पर कायरता री, काळो दाग म लायै तूं।—लो.गी.

दूनो–सं०पु० [सं० द्रोण] पत्तों का बना कटोरेनुमा पात्र जिसमें भोज्य पदार्थ रख कर खाये जाते हैं।

रू०भे०—दोनो, दोनौं, दोनो।

दून्यां-वि० [सं० द्वि] १ दोनों। उ०—महा निसि कहतां अरध राति कै विखै सव कोई सोयै छै। यांका मन परमेस्वर सौं लागा छै। यांका मन रति सौं लागा छै। ये दून्यां जागै छै।—वेलि.टी.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दूपराणो, दूपराबो-क्रि०अ० [देश०] रुदन करना, रोना।

दूपराणहार, हारो (हारी), दूपराणियौ—वि०।

दूपरायोड़ो—भू०का०कृ०।

दूपराईजणो, दूपराईजबो—भाव वा०।

दूपरायोड़ो-भू०का०कृ०—रुदन किया हुआ, रोया हुआ।

(स्त्री० दूपरायोड़ी)

दूपरी-सं०स्त्री० [देश०] रुदन, रोना, विलाप। उ०—नै एकण गुढ़ा मांहे एकण रै टावर मुश्रो थो, तिणसूं दूपरी करती थी, नै एकण रै जायो हुवो छो, सो गीत गावती थी।—जगदेव पंवार री वात

दूब—देखो 'दोब' (रू.भे., डि.को.)

उ०—हरियौ हरियौ कांई करो श्रे, हरी ए वन में तो दूब। हरियो सूरज जी री घोड़लो, हरी वहू रंणां दे री कूख।—लो.गी.

दूबक—देखो 'दबक' (रू.भे.)

दूबड़—देखो 'दोब' (मह., रू.भे.)

दूबड़ो—देखो 'दोब' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—मास दोय रा हुता ओर डूंगर में आग लागी। वनसपती, कंदमूळ, घास व फळ फूल सह वळिया, नीली पाती न रही। सूरज कुंड रै आसपास दूबड़ो रही जे चील्हरां नूं चरावै। डाढाळी नै भूंडण बडा दिन कसालो काढै।—डाढाळा सूर री वात

दूबळउ—देखो 'दुरबळ' (रू.भे.) (उ.र.)

दूबळती—देखो 'दोब' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—थारी तो पाली गोरी रा साहिवा, घोरां दूबळती हो जासूं म्हारा राज।—लो.गी.

दूबळो-वि० [सं० दुर्बल] १ भूखा, निर्धन, कंगाल। उ०—उमराव मुजरै नूं आवै, त्यांनै कस्तूरी कपूर री चोळी कर निपट मुंहगै मोल रो वीड़ो देय इतर में गरकाव रहै। हमेसां गोठां हुवै। दूबळा लोग जिका आवै धाप धाप जावै।—जलाल वूबना री वात

२ देखो 'दुरबळ' (रू.भे.) (डि.को.)

(स्त्री० दूबळी)

दूबारो-सं०पु० [सं० द्वि+वार] १ दूसरी वार उलट कर निकाली जाने वाली शराब, तेज शराब. २ दूसरी वार।

रू०भे०—दोवारो।

दूबो-सं०स्त्री०—दो मुंह का सांप।

दूभ—देखो 'दोब' (रू.भे.)

दूभड़ो—देखो 'दोब' (अल्पा., रू.भे.)

दूभर-वि० [सं० दुर्भर] १ दुख-पूर्ण, आपत्तिजनक। उ०—'बाला' 'अखई' बोलिया, परगह सहत प्रचंड। दूभर विरियां सांम छळ, भुज थंभां ब्रहमंड।—रा.रू.

२ जो सहन न किया जा सके, दुःसह्य। उ०—जळथळ थळजळ हुइ रह्यउ, वोलइ मोर किंगार। सावण दूभर हे सखी! किहां मुझ प्रांण अधार।—ढो.मा.

३ कष्ट से काटा जाय ऐसा समय, कठिन, मुश्किल।

उ०—पंखी झूलै रै पींजरै, वाड़ै ग्रग विहरै। अब तो बंदियां धरै, दूभर दिवस भरै।—अज्ञात

४ जिसका पार करना कठिन हो, दुस्तर। उ०—पार नहीं पाइये रे, रांम विना को निरबाहणहार। तुम बिन तारण को नहीं, दूभर यह संसार। पैरत थाके केसवा, सूझै वार न पार।—दादू वांणी

सं०स्त्री०—वह मादा ऊंट जिसके गर्भ न हो।

रू०भे०—दुभर, दुभ्भर।

दूमणउ—देखो 'दुमनो' (रू.भे.) उ०—१ ढोला आंमण दूमणउ, नख ती खूंदइ भीति। हम थी कुण छइ आगळी, वसी तुहारइ चीति।

—ढो.मा.

दूमणो—देखो 'दुमनो' (रू.भे.) उ०—१ माळवणी मनि दूमणी, आवी वरग विमासि। रइवारी पूछी करी, आई करहा पासि।—ढो.मा.

उ०—२ थां सो सायब खीण, दूमणो मिळवा खातो। उमगै अंबक नीर, निसासां कांम घुळातो।—मेघ.

उ०—३ रावइ कहइ सुणी! राजकुमारि। दुमनो काई हीयडइ वर नारि।—बी.दे.

दूमणो, दूमबो-क्रि०स०—बलिदान किये हुए बकरे के सिर व पैरों को आग में झुलसना जिससे उसके बाल जल कर दूर हो जांय।

रू०भे०—दुवणो, दुवबो, दूवणो, दूवबो।

दूमला-सं०पु०—आठ सगण का छंद विशेष।

दूय—देखो 'दूत' (रू.भे.) उ०—विनय किसिउ, सरव जनांनुकूळ, धरम तणउ मूळ, कल्यांणवल्लीकंद, आश्रित नु निस्यंद, सुगति नउ दूय, उपसमनउ कूय।—व.स.

दूयभावि-सं०पु० [सं० दूत+भावेन] दूत भाव। उ०—दूयभावि दूयभावि गयउ गोवाळु।—पं.पं.च.

दूरंतर—देखो 'दुरंतर' (रू.भे.)

दूरंतरी-क्रि०वि० [सं० दूर+अंतर] दूर ही से। उ०—दूरंतरी आवतउ देखि ब्राह्मण का पगां वंदना कीधी।—वेलि. टी.

दूरंदाज-वि० [सं० दूर+फा० अंदाज] १ दूर से निशाना लगाने वाला. २ दूरदर्शी।

रू०भे०—दूरंदाजो।

दूरंदाजी-सं०स्त्री० [सं० दूर+फा० अंदाज+रा०प्र०ई] १ दूर से निशाना लगाने की क्रिया. २ देखो 'दूरंदाज' (रू.भे.)

दूरंदेस-वि०—देखो 'दूरअंदेस' (रू.भे.)

दूरंदेसी-वि० [सं० दूर+देश+रा०प्र०ई] १ दूर देश का, विदेशी।

२ देखो 'दूर-अंदेसी' (रू.भे.)

दूर–क्रि०वि० [सं०, फा०] देश, काल, परिस्थिति या सम्बन्ध आदि के विचार से बहुत अंतर, बहुत फासले पर, समीप या पास का उलटा।

उ०—१ सूंमपणो पातक छटो, अपजस तर आंकूर। कारण इण 'वीकम' 'करण' इण सूं रहिया दूर।—वां.दा.

उ०—२ कांम सूंप कीनो नहीं, दोस बिनां कोइ दूर। कियो गुनो तोइ माफ किय, हा जसवंत हजूर।—ऊ.का.

मुहा०—१ अजें दिल्ली दूर है—अभीष्ट स्थान से दूर होना, किसी कार्य के सम्पन्न होने में समय लगना. २ दूर करणो—पृथक करना, अलग करना, पास से हटाना; मिटा देना. ३ दूर भागणो—घृणा या तिरस्कार के कारण पास न रहना, बहुत बचना. ४ दूर रा ढोल सुहावणा लागणा—दूर के ढोल सुहावने लगना, कोई वस्तु दूर से तो अच्छी लगती है पास जाने पर उसकी असलियत खुल जाती है. ५ दूर री कैंणी—बहुत बुद्धिमानी और दूरदर्शिता की बात कहना. ६ दूर री बात—दुर्गम बात, कठिन, दुसाध्य, भविष्य की बात. ७ दूर री सूझणी—बहुत बारीक बात सोचना। भविष्य की बात सोचना. ८ दूर रैंणी—देखो 'दूर भागणी'।

९ दूर सूं इज सिलांम करणी—भय के कारण दूर रहना। घृणा या तिरस्कार के कारण दूर रहना. १० दूर होणो—अलग होना, पृथक होना, हट जाना। मोह एवं ममत्व को छोड़ देना।

वि०—जो दूर हो, जो फासले पर हो। ज्यूं—दूर गांवां में करसां री दसा ठीक नीं है।

दूरअंदेस–वि० [फा० दूर-अन्देश] बहुत दूर तक की बात सोचने वाला, अग्रसोची, दूरदर्शी। उ०—मसलत करणी योग्य छै तो चाहीजें के सलाह हिम्मत धारणी अर परख रा धणी नै दूरअंदेस, वूढ़ा, कांमां रै अंत रा देखणै वाळां सूं पूछै।—नी.प्र.

दूरअंदेसी–सं०स्त्री० [फा० दूरअंदेशी] दूर की बात सोचने का गुण, दूरदर्शिता। उ०—सो इण रा उमरावां मुलाहिजो अंत कांम री कर दूरअंदेसी कर कागद आपरै वादसाह रै वैरी नूं लिखियो।—नी.प्र.

दूर-तेरी–सं०पु० [सं० दूर+तारी] केवट (अ.मा.)

दूर-दरसक–वि० [सं० दूर दर्शक] दूर तक देखने वाला।

दूर-दरसिता, दूर-दरसिताई–सं०स्त्री० [सं० दूरदर्शिता] दूर की सोचने का गुण। दूर-अंदेशी।

दूर-दरसी–वि० [सं० दूरदर्शी] जो पहिले ही भला बुरा परिणाम समझ ले, दूर की सोचने वाला। अग्र-सोची।

दूर-द्रस्टी–सं०स्त्री० [सं० दूर-दृष्टि] दूरदर्शिता, भविष्य का विचार।

दूर-पलो–सं०पु० [सं० दूर+रा०पलो] दूरी का छोर, बहुत दूर तक की सीमा।

दूर-नैण–सं०पु०यो० [सं० दूर+नयन] गिद्ध (डि.को.)

दूरवा—देखो 'दोव' (रू.भे.) (डि.को.)

दूर-बीण, दूर-वीण, दूर-वीणी–सं०स्त्री० [फा० दूरवीन] एक प्रकार का यंत्र विशेष जिससे दूर के पदार्थ समीप स्पष्ट और बड़े दिखाई देते हैं। दूरदर्शक यंत्र। उ०—१ चख रहै दूरवीणी चढी दिस दिस निजरां देण नै।—अरजुणजी वारहठ

उ०—२ कवर रै साथ रतनां री निजर इण भांत जावै है, भागीरथ लार गंगा-धार होय इसी ओपमा पावै है, वळै कितरीक दूर तांई दूरवीणी लगाई सारां सूं वधती सनेह री सगाई।—र. हमीर

दूर-भावी–वि० [सं०] भविष्य में होने वाला। उ०—बारद्धक में विसेस जिवावणहार आपरा प्रारब्ध री गरहणा करि वंवावदा रै वारै ही जोगणि नांम देवी नूं मस्तक चढ़ाइ अभीस्ट लोक पुगो सो उदंत अठै दूर-भावी जांणीजै।—वं.भा.

दूरस—देखो 'दुरस' (रू.भे.)

उ०—तद सांगैजी कयो कै नरूकै करमचंद दसावत नूं मारियां विना देस जमैं नहीं। तद यां आपरो साच देय कयो कै दूरस है, कीजै कूच।—द.दा

दूरा–वि० [सं० अर्द्ध+पूरा=अधूरा] १ कम, थोड़ा। उ०—पण सैं थोड़ै में हारियो। वीसळदे तो म्हारा रुपिया लाख खर्चे तो दूरा।—नैणसी

२ अपूर्ण।

दूरा-पाती–वि० [सं० दूर+रा०प्र०आ; सं० पात+रा०प्र०ई] दूर से प्रहार करने वाला। दूर से मारने वाला। उ०—राज पुत्र तेहे घोड़ै किस्या चडचा ? दूरापाती लघु संधांनी द्रढ़-प्रहारी सब्द-वेधी। —व.स.

दूरि—१ देखो 'दूर' (रू.भे.)

उ०—सांई एहा भीचड़ा, मोलि महुंगै वासि। ज्यां आछंन्ना दूरि भी, दूरी थकां भी पासि।—हा.झा.

२ देखो 'दूरी' (रू.भे.)

उ०—कोई दूरि तांई जाटवांनै भी भजाया।—शि.व.

दूरिट्ठ–वि० [सं० दूर+स्थ:] दूर रहने वाला, दूरस्थ। उ०—पूगळि पिंगळ राऊ, नळ राजा नरवरे नयरे। अदिठा दूरिट्ठा ये, सगाई दईय संजोगे।—ढो.मा.

दूरितार-वीर–सं०पु० [सं०] बावन वीरों में से एक वीर का नाम।

दूरि-पार-वीर–सं०पु० [सं०] बावन वीरों में से एक वीर का नाम।

दूरी–सं०स्त्री० [सं० दूर+रा०प्र०ई] दो पदार्थों, स्थानों आदि के मध्य की लंबाई या स्थान, अंतर, फासला।

रू०भे०—दूरि।

दूरूंतर–क्रि०वि० [सं० दूर+अंतर] दूर से, फासले पर।

उ०—उरस तणै मग आविया, दळ वाहर दोड़ा। दूरूंतर से देखिया, चंचळ चरतोड़ा।—वी.मा.

दूरे-अमित्र–सं०पु० [सं०] उनचास मरुतों में एक मरुत का नाम।

दूरो—देखो 'दूर' (रू.भे.) उ०—पुरसारथ पूरण प्रेम प्रतिग्या पूरो। दुर व्यसन दुराग्रह दूसण सूद्रढ़ दूरो।—ऊ.का.

दूलह, दूलो—देखो 'दूल्हो' (रू.भे.) उ०—यों सिर मौड़ रतन मय ओपै, ऊपरि आतपत्र आरोपै। दूलह सिर सिर राज दुलारी, करै चमर कन्या कोमारी।—रा.रू.

दूलहण, दूलहणौ दूल्हौ—देखो 'दुलहण' (रू.भे.) उ०—दूल्हौ हाडौ वाळा ही हतौ पण सयांणौ थौ सो घोग्ज धरि विनय करि कुंवरजी नूं कही।—राजसिंह कूंपावत री वारता

दूल्हौ-सं०पु० [सं० दुर्लभ, प्रा० दुल्लह] (स्त्री० दूल्ही) १ वह युवक जिसका हाल ही में विवाह हुआ हो अथवा होने वाला हो।

उ०—कियउ प्रगट प्रभु रूप कहंतां। वदता जे पहिली वाखांण। आयउ बोल तियां रउ ऊपर। दूलहउ जिम आयउ दीवांण।
—महादेव पारवती री वेलि

रू०भे०—दुलह, दुलहौ, दुल्हौ, दूलह, दूलौ।

दूवणौ, दूवबौ-क्रि०स० [सं० दोहनम्] १ गाय, भैंस, बकरी आदि का दूध निकालना। उ०—रोवता टाबरियां नै छोड, आई दूवण नै घर नार। घणं री हूंगी गोयर मीड़, सुणीजै मीठी दूधां धार।—सांझ

२ सार निकालना. ३ देखो 'दूमणौ, दूमबौ' (रू.भे.)

दूवणहार, हारौ (हारी), दूवणियौ—वि०।

दूवाड़णौ, दूवाड़बौ, दूवाणौ, दूवावौ, दूवावणौ, दूवावबौ—प्रे०रू०।

दूवियोड़ौ, दूवियोड़ौ, दूव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दूवीजणौ, दूवीजबौ—कर्म वा०।

दुहणौ, दुहबौ, दूं'णौ, दूं'बौ, दूहणौ, दूहबौ, दो'णौ, दो'बौ, दोवणौ, दोवबौ, दोहणौ, दोहबौ—रू०भे०।

दूवाग्री, दूवायी—१ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)

२ देखो 'दुहाई' (रू.भे.) उ०—लीनो क्यूं ना रे ग्वाळा वीरा, करणी माता री नांव। दूवाग्री तो तैं कढ़ायी क्यूं ना रे पाबूजी राठोड़ री।—लो.गी.

३ देखो 'दवा' (१, २) (रू.भे.)

दूवारी-सं०स्त्री० [सं० दुग्ध+रा० प्र० आरी] १ दूध निकालने का काम।

क्रि०प्र०—करणी।

२ दूध निकालने के बदले मे दिया जाने वाला धन, दूध निकालने की मजदूरी. ३ दूध निकालने वाली स्त्री।

रू०भे०—दुग्राई, दुग्रारी, दुवाई, दुवायी, दुवारी, दुहाई, दुहारी, दूवाग्री, दूवायी, दोवाई, दोवारी, दोहाई, दोहारी।

दूवियोड़ौ-भू०का०कृ०—दूध निकाली हुई।

दूवियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दूध निकाला हुग्रा. २ सार निकाला हुग्रा। (स्त्री० दूवियोड़ी)

दूवौ-सं०पु० [ग्र० दुग्रा] १ आज्ञा, हुक्म।

उ०—१ हित पत धरम कंद वस हूवौ। दियो साह पूछण को दूवौ। रिध निप ग्रह चो भरम रहायो। पियो जहर कर प्रांण परायो।
—रा.रू.

उ०—२ देवाधिदेव चै लावै दूवै, वाचण लागो ब्राहमण। विधि पूरवक कहै बीनवियो, सरण तूझ ग्रसरण सरण।—वेलि.

२ प्रारब्ध, भाग्य।

३ देखो 'दुग्रौ' (रू.भे.) ४ देखो 'दूजौ' (रू.भे.)

५ देखो 'दूहौ' (रू.भे.)

रू०भे०—दुवौ, दूग्रौ।

दूव्य—१ देखो 'द्रोपदी' (रू.भे.) उ०—१ कंचण कुंडळ हार दोर, मणि मउड सिंगारो। पंच कुमर पूठहि गयंदि दूव्य बयसारो।
—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ धन्न सु कुंतिय मायडिय, जसु इसा कुमारा। धनु धनु दूव्य तउं जि पर, जसु इसा भतारा।—प्राचीन फागु-संग्रह

दूस-सं०पु० [सं० दूष्य] १ कपड़ा, वस्त्र. २ छतीस प्रकार के दण्डा-युद्धों में से एक (व.स.)

दूसण-सं०पु० [सं० दूषण] १ दोष, कलंक। उ०—१ दूसण दीधै दुरजणं, आपै कथित ग्रसल्ल। लूग्र भळवकै लागतै, ग्रावै स्वाद ग्रवल्ल।
—ध.व.ग्रं.

उ०—२ कुरांन में कहै है—मुसळमांन री त्रिया विधवा हुग्रां पछै मन में ग्रावै तौ च्यार महीना दसां दिनां पछै ग्रन्य पुरस सूं निका करै, दूसण नहीं।—बां.दा.ख्यात

२ ऐब, ग्रवगुण। उ०—ग्राप में दूसण हुवै सो दूसण ग्रौर में काढ़ियां बंदो निरदूसण हुवै नहीं।—बां.दा.ख्यात

३ बुराई। उ०—पहिलै वधावै जिणवर देव जुहारघा, सफळो हो सफळो जन्म हुवो सही। बीजै वधावै समकित रतन सु लाधो, दिल में हो संकादिक दूसण नहीं जी।—ध.व ग्रं.

४ दोष लगाने की क्रिया या भाव. ५ एक राक्षस का नाम जो रावण का भाई था ग्रौर पंचवटी में सूर्पणखा की नाक कटने पर राम से युद्ध करता हुग्रा मारा गया।

रू०भे०—दुखर, दूखर।

६ जैनियों के सामयिक व्रत में ३२ त्याज्य बातों या ग्रवगुणों का नाम जिनमें से १२ कायिक, १० वाचिक ग्रौर १० मानसिक हैं।

रू०भे०—दुखण, दुसण, दूखण, दोखण, दोसण।

दूसणारि-सं०पु० [सं० दूषणारि] 'दूषण' को मारने वाले श्री रामचंद्र।

दूसमि-सं०पु०—देखो 'दुखम' (रू.भे.)

उ०—पांचमइ दूसमि वरती ग्रांण, वरिस सहस ते एकवीस जांणि। सात हाथ देह सुकुमाल सय, वरिस माहि पहचइ काल।
—चिहुंगति चउपई

दूसय-सं०पु० [सं० दूष्यम्] डेरा, खेमा, शामियाना, तंबू (डि.को.)

दूसर, दूसरौ-वि० [सं० द्वितीय] (स्त्री० दूसरी) १ जो क्रम में दो के स्थान पर हो, एक के बाद का, द्वितीय।

उ०—दादू देखु दयाळु को, बाहर भीतर सोइ। सब दिसि देखूं पीव को, दूसर नांहीं कोइ।—दादू बांणी

२ पूर्वजों के समान गुणों वाला। उ०—दिखण वाको हुवै सुणै दिल्लीस री, हुवो हरवळ तिकण दीह 'मुकना' हरो। जवन दळ ठेलिया धिनो दिन ग्राज री, दुरग पघरावियो 'मालदे' दूसरौ।
—तेजसी खिड़ियो

३ गैर, ग्रन्य।

दूसार—१ देखो 'दुसार' (रू.भे.) २

उ०—मदनातुर मेरो मरण, दुसतर ग्रवा दूसार। कर ऊंचो कर कहत है, हर हर सरजणहार।—वगसीराम प्रोहित री वात

दूसारो—देखो 'दुसार' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दूसासण—देखो 'दुसासण' (रू.भे.)

दूसित—वि० [सं० दूषित] १ ग्रभिशप्त (डिं.को.)

२ दोषयुक्त, खराब, बुरा।

दूसीविस—सं०पु० [सं० दूषी-विष] विषैले पदार्थ केखाने या सर्पादि के काटने के कारण शरीर में प्रविष्ट होने वाला वह विष जो कई दिनों के बाद विकार पैदा करे (ग्रमरत)

दूहउ—देखो 'दूहो' (रू.भे.) उ०—भाऊ भाट तणी मनि वात, ढोला-तणी वसी मनि घात। मांगणहारउ दूहउ कहियउ, तिणि ढोलइ दूहइ चिति रह्यउ।—ढो.मा.

दूहड़ो—देखो 'दूहो' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—१ लिख लिख वाचै लोक, कै सीखै चरचै किता। सुणै हरण मन सोक, दातारां जस दूहड़ा।

—बां.दा.

उ०—२ बीस कहिया दूहड़ा, मारू रूप विचार। ऊतर मुहर पसाउ करि, दीनी साल्ह कुमार।—ढो.मा.

दूहणो, दूहबो—१ देखो 'दूमणो दूमबो' (रू.भे.)

उ०—सीरी होसनाक सुधारै छै। दूयजै छै।—रा.सा.सं.

२ देखो 'दूवणो, दूवबो' (रू.भे.) उ०—पीसण खांडण प्रसिध वळै, गौ दूहि विलोवै। जीमण संधि जिमाव लाज सुं जिमै लुकोवै।

—ध.व.ग्रं.

३ देखो 'दुहवणो, दुहवबो' (रू.भे.)

दूहणहार, हारो (हारी) दूहणियो—वि०।

दूहिग्रोड़ो, दूहियोड़ो, दूह्योड़ो—भू०का०कृ०।

दूहीजणो, दूहीजबो—कर्म वा०।

दोवणो, दोवबो—रू०भे०।

दूहवणो, दूहवबो—देखो 'दुहवणो, दुहवबो' (रू.भे.)

उ०—१ नेसालिया ते देखी मूरख मूरख चट्ट कहंति। तिम तिम ते मनि दूहवीइ अंतराय फल हूंति।—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ इंद्र पूछीया तरइ ब्रह्मादिक, मेछ कीयइ रइ हाथ मरइ। देव ग्रनइ महांत दूहवइ, तिण कहर सुरांपति खेद करइ।

—महादेव पारवती री वेलि

दूहवियोड़ो—देखो 'दुहवियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दूहवियोड़ी)

दूहेलो—१ देखो 'दुहेलो' (रू.भे.)

२ देखो 'दोहिलो' (रू.भे.)

३ देखो 'दोहेलो' (रू.भे.)

दूहो—सं०पु० [सं० दोधक ?] १ राजस्थानी का एक विख्यात छंद जिसके चार चरण होते हैं किन्तु प्रायः दो पंक्तियों में लिखा जाता है। प्रथम ग्रौर तृतीय चरण में १३-१३ मात्राएं तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में ११-११ मात्राएं होती हैं। द्वितीय ग्रौर चतुर्थ चरण का तुकान्त मिलाया जाता है जो लघु होता है।

वि०वि०—यह ग्रपभ्रंश काल का प्रमुख छंद माना जाता है तथा इसको उलटने से सोरठा बन जाता है।

२ देखो 'द्वालो' (रू.भे.) उ०—छोटा वडा सांगोर री, नेम नहीं नहचेण। निमंधे त्रिण दूहा निपट, तवै पंखाळो तेण।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दुहो, दूग्रो, दूवो, दूहउ, दोहो।

ग्रल्पा०—दुहड़ो, दुहड़उ, दूहड़ो, दोहलो।

दे—सं०पु० [सं० देव] १ हिंदुग्रों के ग्रन्थ विशेष का नाम, पुराण।

सं०स्त्री० [सं० देवी] २ शिवा, भवानी. ३ एक प्रकार की चिड़िया जिसके शकुन लिए जाते हैं. ४ स्त्री (एका.)

ग्रव्य०—१ स्त्री वाची नामों के ग्रगाड़ी लगने वाला शब्द जो सम्मान-सूचक माना जाता है। ज्यूं०—मालण दे, रूपा दे, रांणा दे।

२ वाद पूरक ग्रव्यय शब्द। उ०—दवदंती नै कहणो मेल्हिउ जीवत दांन दीधउ दे।—नळ-दवदंती रास

३ से। उ०—इतरै में कुंवरसी ग्रापरै साथ में जाय भड़ाक दे घोड़ै रै ऊपर सवार हुवो।—कुंवरसी सांखला री वारता

[सं० देव] ४ देखो 'देव' (रू.भे.) उ०—तिणि नयरि जैसिंघ दे—राउ नवउ खणावइ तिहां तळाव।—विद्याविलास पवाडउ

देग्रणो—वि० [सं० दा] देने वाला। उ०—देग्रणो मांन पात्रां वडावांन मेर।—ल.पिं.

देग्रणो, देग्रबो—देखो 'दैणो, दैबो' (रू.भे.)

देग्ररांणी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.) उ०—जेठ नीचउ देखइ, वर पुण लडइ देवर नडइ, जेठांणी कुसइ, देग्ररांणी हसइ।—व.स.

देई—१ देखो 'दई' (रू.भे.) उ०—सुरभी कासारां लारै सुख लेगी। देई बिलोई दोई दुख देगी।—ऊ.का.

२ देखो 'देवी' (रू.भे.)

देउ—१ देखो 'देव' (रू.भे.) उ०—नकुल ग्रनइ सहदेवु भडो, जुग्रळइं जाया वेउ। प्रभु चंद्रप्रभु थापीयउ, नासिकि कूंती देउ।—पं.पं.च.

२ देखो 'देवी' (रू.भे.)

देउर—देखो 'देवर' (रू.भे.) उ०—रमिझिमि रणकइं नेउर, देउर सिउं करइं ग्रालि। नेमिकुमर नवि भीजइ ए, कीजइ ए ते सहू ग्रालि।—प्राचीन फागु संग्रह

देउरांणी, देउरानी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.)

देउल, देउलि—१ देखो 'देवळ' (रू.भे.)

उ०—१ देउल देव जोया सवि फिरी, नगर लोक दीठां कुंयरी। गढ़ ऊपरि कुंयरि तिणि कालि, करइ सनांन कुंडि जावळि।—कां.दे.प्र.

उ०—२ सोवन वीटी रयणे जडी, मुझ नाचंतां देउलि पडी। प्रीति-वचन प्रांमी मनमांहि, महुतउ पाछउ वळिउ उछांहि।

—विद्याविलास पवाडउ

देख—सं०स्त्री०—देखने की क्रिया या भाव, ग्रवलोकन।

रू०भे०—देखणी ।

यौ०—देख-रेख, देख-भाळ ।

देखण-सं०स्त्री० [सं० दृश्] आंख, नयन (अ.मा, ह.नां.)

देखणी—देखो 'देख' (रू.भे.)

मुहा०—देखणी में—ध्यान में, नजर में ।

देखणो-सं०पु० [सं० दृश्] दृष्टि डालने की क्रिया या भाव, अवलोकन । उ०—दलतसिंहजी नागोर सूं टीका रा हाथी घोड़ा कपड़े रा थांन लेय धाय नूं मेल्हीं सो धाय जोधपुर आई, आय भीतर नूं देखणो करायो ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

देखणो, देखबो-क्रि०स० [सं० दृश्] १ नेत्रों द्वारा किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूप रंग आदि का ज्ञान प्राप्त करना, अवलोकन करना । उ०—दान सुणि पाछउ वळइ, जां नवि देखइ गंग । चउवीसं (वासं) रहइ जीसु रङ्गीगु (घणंगु) ।—पं.पं.च.

मुहा०—१ देखण में—ध्यान में, नजर में. २ देखणो जैड़ो वरतणो—देखना जैसा बर्ताव करना, देशकालानुसार काम करना चाहिए. ३ देखणो सो भूलणो नहीं—जो देखा जाय उसे भूलना नहीं चाहिए । संसार के दृश्यों को देखना चाहिए और उन्हें देख कर याद रखना चाहिए. ४ देखतां देखतां—आंखों के सामने, तुरंत, उसी समय. ५ देखतो रै' जाणो—आश्चर्यान्वित होना. ६ देखांणी देखते हैं, प्रतीक्षा करते हैं ।

ज्यूं—देखांणी हमैं कांई हुवै ।

७ देखी जाणी—भविष्य में विचार किया जाना. ८ देखै न भूसै—जहां परस्पर देखते ही झगड़ा होता हो वहां से दूर रहना चाहिए । ९ देखो—सावधान हो जाओ, सचेत हो जाओ ।

२ निरीक्षण करना, मुआयना करना. ३ परीक्षा करना, जांच करना. ४ तलाश करना, ढूंढ़ना. ५ किसी वस्तु पर ध्यान रखना, निगरानी रखना. ६ समझना, विचारना, सोचना. ७ पढ़ना, बांचना. ८ आजमाना, अनुभव करना. ९ प्रतीत करना, भोगना. १० शुद्ध करना, संशोधित करना, शोधना ।

ज्यूं—प्रूफ देखणा ।

देखणहार, हारो (हारी), देखणियो—वि० ।

दिखवाड़णो, दिखवाड़बो, दिखवाणो, दिखवावो, दिखवावणो, दिखवाववो, देठाड़णो, देठाड़बो, देठाणो, देठावो, देठाळणो, देठाळबो ।
—प्रे०रू०

देखिओड़ो, देखियोड़ो, देख्योड़ो—भू०का०कृ० ।

देखीजणो, देखीजबो—कर्म वा० ।

दीखणो, दीखबो—अक०रू० ।

द्रस्टणो, द्रस्टबो—रू०भे० ।

देखभाळ-सं०स्त्री०—१ निगरानी, जांच-पड़ताल ।

क्रि०प्र०—रखणी ।

२ साक्षात्कार, दर्शन ।

क्रि०प्र०—करणी ।

रू०भे०—देखाभाळी ।

देखरेख-सं०स्त्री०—निगरानी, निरीक्षण, देखभाल ।

क्रि०प्र०—करणी ।

देखाई-सं०स्त्री०—१ दिखाने की क्रिया या भाव. २ दिखलाने के बदले में दिया जाने वाला धन, दिखलाने की मजदूरी ।

रू०भे०—दिखलाई, दिखाई ।

देखाऊ-सं०पु०—१ घोड़ों की जाति या इस जाति का घोड़ा (कां.दे.प्र.) देखो 'दिखाऊ' (रू.भे.)

देखाओ—देखो 'दिखावो' (रू.भे.)

देखाड़णो, देखाड़बो-देखो 'देखाणो, देखाबो' (रू.भे.)

उ०—राजकुमारी मांगां नहि, नहि तुमस्युं दिल खोटो रे । नाक नमणि हम सुं करो, देखाड़ो चित्रकोटो रे ।—प.च.च.

देखाड़णहार, हारो (हारी), देखाडणियो—वि० ।

देखाड़िओड़ो, देखाड़ियोड़ो, देखाड़चोड़ो—भू०का०कृ० ।

देखाड़ीजणो, देखाड़ीजबो—कर्म वा० ।

दीखणो, दीखबो—अक०रू० ।

देखाड़ियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० देखाड़ियोड़ी)

देखाणो, देखाबो-क्रि०स० [सं० दृश्] १ अवलोकन कराना, दिखाना. २ निरीक्षण कराना, मुआयना कराना, ३ परीक्षा कराना, जांच कराना. ४ तलाश कराना, ढूंढ़ाना. ५ किसी वस्तु पर ध्यान रखाना, निगरानी कराना. ६ समझाना, सोचाना. ७ पढ़ाना. ८ आजमाइश कराना. ९ प्रतीत कराना, भोगाना. १० शुद्ध कराना, संशोधित कराना ।

देखाणहार, हारो (हारी), देखाणियो —वि० ।

देखायोड़ो—भू०का०कृ० ।

देखाईजणो, देखाईजबो—कर्म वा० ।

दीखणो, दीखबो—अक०रू० ।

दिखलाड़णो, दिखलाड़बो, दिखलाणो, दिखलाबो, दिखलावणो, दिखलावबो, दिखाड़णो, दिखाड़बो, दिखाणो, दिखाबो, दिखाळणो, दिखाळबो, दिखावणो, दिखावबो, देखाड़णो, देखाड़बो, देखाणी, देखावो, देखावणो, देखावबो, द्रस्टाड़णो, द्रस्टाड़बो, द्रस्टाणो, द्रस्टावो, द्रस्टावणो, द्रस्टावबो ।—रू०भे०

देखादेख, देखादेखी-सं०स्त्री० [सं० दृश्] अनुकरण करने की क्रिया या भाव । उ०—देखादेखी सब चलै, पार न पहुंच्या जाइ । दादू आसन पहल के, फिर फिर बैठे आइ ।—दादू वांणी

क्रि०प्र०—करणी ।

देखाभाळी—देखो 'देखभाळ' (रू.भे.)

देखायोड़ो-भू०का०कृ०—१ अवलोकन कराया हुआ, दिखाया हुआ. २ निरीक्षण कराया हुआ, मुआयना कराया हुआ. ३ परीक्षा कराया हुआ, जांच कराया हुआ. ४ तलाश कराया हुआ, ढूंढ़ाया हुआ. ५ किसी वस्तु पर ध्यान रखाया हुआ, निगरानी कराया हुआ.

६ समझाया हुग्रा, सोचाया हुग्रा. ७ पढ़ाया हुग्रा. ८ ग्राजमाइश कराया हुग्रा. ९ प्रतीत कराया हुग्रा, भोगाया हुग्रा. १० शुद्ध कराया हुग्रा. संशोधित कराग्रा हुग्रा ।
(स्त्री० देखायोड़ी)

देखाळणौ, देखाळबौ—देखो 'देखाणौ, देखाबौ' (रू.भे.)
उ०—ग्राकासि वैस्वानर प्रज्वाळइ, पाताळकन्या प्रत्यक्ष देखाळइ ।
—व स.

देखाळणहार, हारौ (हारी), देखाळणियौ—वि० ।
देखाळिग्रोड़ौ, देखाळियोड़ौ, देखाळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
देखाळीजणौ, देखाळीजबौ—कर्म वा० ।
दीखणौ, दीखबौ—ग्रक०रू० ।

देखाळियोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० देखाळियोड़ी)

देखाव—देखो 'दिखाव' (रू.भे.)

देखावट—देखो 'दिखावट' (रू.भे.)

देखावटी—देखो 'दिखावटी' (रू.भे.)

देखावणौ, देखावबौ—देखो 'देखाणौ, देखाबौ' (रू.भे.)
उ०—जंवाई प्यारा ! म्हांनै चितारता रहीजो। चितारता रहीजो नै भूल मत जाईजो । मनोहर थांरी मूरत देखावता रहीजो ।—गी.रां.
देखावणहार, हारौ (हारी), देखावणियौ—वि० ।
देखाविग्रोड़ौ, देखावियोड़ौ, देखाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
देखावीजणौ, देखावीजबौ—कर्म वा० ।
दीखणौ, दीखबौ—ग्रक०रू० ।

देखावियोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० देखावियोड़ी)

देखावौ, देखाहौ—देखो 'दिखावौ' (रू.भे.)

देखियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ ग्रवलोकन किया हुग्रा, देखा हुग्रा. २ निरीक्षण किया हुग्रा, मुग्रायना किया हुग्रा. ३ परीक्षा किया हुग्रा, जाँच किया हुग्रा. ४ तलाश किया हुग्रा, ढूंढ़ा हुग्रा. ५ किसी वस्तु पर ध्यान रखा हुग्रा, निगरानी रखा हुग्रा. ६ समझा हुग्रा, विचारा हुग्रा, सोचा हुग्रा. ७ पढ़ा हुग्रा, बांचा हुग्रा. ८ ग्राजमाया हुग्रा. ९ प्रतीत किया हुग्रा, भोगा हुग्रा. १० शुद्ध किया हुग्रा, संशोधित किया हुग्रा, शोधा हुग्रा ।
(स्त्री० देखियोड़ी)

देग-सं०स्त्री०—देखो 'देगचौ' (मह.; रू.भे.) उ०—चढ़ी देग सुर राय नै, त्यार हुई सिघताव । पेखण राव पधारियौ, कहै भाद्रवै कड़ाव ।
—पा.प्र.

मुहा०—देगतेग—दातार, शूरवीर ।

देगड़—१ देखो 'देगचौ' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'देगड़ौ' (मह., रू.भे.)

देगड़ियौ—देखो 'देगचौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'देगड़ौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

देगड़ी-सं०स्त्री०—१ देखो 'देगड़ौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'देगचौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

देगड़ौ-सं०पु० [फा० देग+रा०प्र०ड़ौ]-१ पानी रखने का पात्र जो प्रायः पीतल का बना हुग्रा होता है ।
२ देखो 'देगचौ' (रू.भे.)
रू०भे०—डेगड़ौ ।
ग्रल्पा०—डेगड़ियौ, डेगड़ी, देगड़ियौ, देगड़ी ।
मह०—डेगड़, देगड़ ।

देगच—देखो 'देगचौ' (मह., रू.भे.)

देगचियौ—देखो 'देगचौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

देगची-सं०स्त्री०—देखो 'देगचौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

देगचौ-सं०पु० [फा० देगचः+रा०प्र०ग्रौ] चौड़े मुंह ग्रौर चौड़े पेट का बड़ा बरतन जिसमें खाद्य सामग्री पकाई जाती है ।
उ०—१ मांस रंधांणा देगचां वेसवार ग्रपारा । सूळा त्यार किया सही जाजै घ्रित झारा ।—पा.प्र.
उ०—२ गोळ में कहाई कै तो पळ रा देगचा उठाइ म्हांरा ग्रादेस रै ग्राधीन हुवौ, मीसण बडै बेग ग्रठै ग्रावै ।—वं.भा.
रू०भे०—डेगचौ, देगड़ौ, देवचौ ।
ग्रल्पा०—डेगचियौ, डेगची, देगड़ी देगचियौ, देगची ।
मह०—डेग, डेगड़, देग, देगड़, धूंग ।

देगवट-सं०पु०—ग्रातिथ्य सत्कार । उ०—जिसड़ौ हुतौ देगवट जाहर, तेग वगां ग्रत कियौ तिसौ । भांजे खळां लूण छळ भिड़ियौ, सोधै खेत उजेणी जिसौ ।—उम्मेदसिंह सीसोदिया रौ गीत

देगहत-वि०—दातार ।

देज-सं०पु०—१ देना क्रिया । २ देखो 'दहेज' (रू.भे.)
यौ०—देज-लेज ।

देठाळउ, देठाळौ-सं०पु० [सं० दृश्] दृष्टिगोचर होने का भाव, दिखाई देना । उ०—१ चाहंतां जादम रिण चाळौ । दुयणां तणौ हुयौ देठाळौ । ग्रसुर सरोख डांखिया ग्राया । ग्रागै जादम रांड़ ग्रधाया ।
—रा.रू.
उ०—२ ग्रळगी ही नैड़ी की ऊखुवतै, देठाळौ हुग्रौ दळां दुहूं । वागां ढेरवियां वाहरुए, मारकुए फेरिया मुंह ।—वेलि.
रू०भे०—दिठाळौ, दिस्टाळ, दिस्टाळौ ।

देतर—देखो 'दैत्य' (मह., रू.भे.)

देतांदुयण-सं०पु० [सं० दैत्य+दुर्जन=शत्रु] ईश्वर (नां.मा.)

देदीप्यमांन-वि० [सं०] ग्रत्यंत प्रकाश युक्त, चमकता हुग्रा ।

देधड़ा-सं०स्त्री०—ढोलियों की एक शाखा ।

देधड़ौ-सं०पु०—ढोलियों की 'देधड़ा' शाखा का व्यक्ति ।

देवी—देखो 'देवी' (रू.भे.)
उ०—होज्यौ देवी जीमणी, बूड मल्हाळौ वा सीय-माल । चाल्यौ राजा जाई भोवाळ ।—वी.दे.

देवणहार—वि०—देने वाला ।

देर—सं०स्त्री० [फा०] १ नियमित, उचित या आवश्यक से अधिक समय, विलंब, अतिकाल ।

क्रि०प्र०—करणी, लगाणी, होणी ।

२ समय, वक्त । ज्यूं—उठै थे किती देर लगावो ?

ज्यूं—थे उठै घणी देर करदी ।

रू०भे०—देरी ।

देरांणी—सं०स्त्री० [सं० देवरः+राज्ञी] पति के छोटे भाई (देवर) की पत्नी । उ०—ग्रचांनक सत्रु चढ़ ग्राया तठै देरांणी जेठांणी री वीरता देरांणी कहै है—हे बाभीसा ! ग्रचांनक सत्रु ग्राज हलो कर ग्राया, ग्रादमी घरै नहीं ।—वी.स.टी.

रू०भे०—देग्ररांणी, देउरांणी, देउरांनी, देवरांणी, दोरांणी, दोरांणी ।

देराड़णौ, देराड़बौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

देराड़णहार, हारौ (हारी), देराड़णियौ—वि० ।

देराड़िग्रोड़ौ, देराड़ियोड़ौ, देराड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

देराड़ीजणौ, देराड़ीजबौ—कर्म वा० ।

देराड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० देराड़ियोड़ी)

देराड़ी—सं०स्त्री०—मुंडन संस्कार कर यज्ञोपवीत पहना कर बच्चे को उसके ननिहाल ले जाकर देव-पूजन ग्रौर नये वस्त्र पहिनाने की एक रस्म विशेष (पुष्करणा ब्राह्मण)

देराणौ, देराबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

उ०—तद इयै रांणी राजा नूं भलाय नै कुंवर नुं देसोटौ देरायौ ।
—चौबोली

देराणहार, हारौ (हारी), देराणियौ—वि० ।

देरायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

देराईजणौ, देराईजबौ, देरीजणौ, देरीजबौ—कर्म वा० ।

देरायोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० देरायोड़ी)

देराळी—सं०स्त्री०—यह समावर्तन संस्कार का बिगड़ा स्वरूप है। पहले यज्ञोपवीत के बाद बालक गुरु-ग्राश्रम पर विद्याध्ययन समाप्त करने पर जब घर लौट ग्राता तथा विवाह से पूर्व यह संस्कार किया जाता था । ग्राजकल बालक को ननिहाल ले जाकर उसे वहां ब्रह्मचारी का वेष त्याग करवा नये वस्त्र ग्रादि पहना कर वापस लाते हैं । ननिहाल वाले उस ग्रवसर पर 'माहेरा' भी दिया करते हैं । ग्राजकल यह प्रथा कम हो रही है ।

देरावणौ, देराबबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

देरावणहार, हारौ (हारी), देरावणियौ—वि० ।

देराविग्रोड़ौ, देरावियोड़ौ, देराव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

देरावीजणौ, देरावीजबौ—कर्म वा० ।

देरावरिया—सं०स्त्री०—भाटी वंश की एक शाखा (बां.दा.ख्यात)

देरावरियौ—सं०पु०—भाटी वंश की 'देरावरिया' शाखा का व्यक्ति ।

देरावियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० देरावियोड़ी)

देरी—देखो 'देर' (रू.भे.) उ०—१ तीन लोक ठहरया कछु वेरी, घर हित घणौ ग्राणंद री मेरी । फिरगो रतनागर चहुं फेरी, विचरो वासा मीठी वेरी ।—ऊ.का.

देरूतरी—सं०स्त्री० [सं० देवरः+पुत्री] पति के छोटे भाई (देवर) की पुत्री ।

रू०भे०—देरूती, देरूत्री ।

देरूतरौ—सं०पु० [सं० देवरः+पुत्र] (स्त्री० देरूतरी) पति के छोटे भाई (देवर) का पुत्र ।

रू०भे०—देरूतौ, देरूत्रौ ।

देरूती—देखो 'देरूतरी' (रू.भे.)

देरूतौ—देखो 'देरूतरौ' (रू.भे.)

देरूत्री—देखो 'देरूतरी' (रू.भे.)

देरूत्रौ—देखो 'देरूतरौ' (रू.भे.)

देळ—सं०पु०—राठौड़ों की तेरह शाखाग्रों में से एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

देळी—सं०स्त्री० [सं० देहली] १ मकान के दरवाजे के दोनों ग्रोर लगी हुई काठ या पत्थर की पट्टी जिनके सहारे किंवाड़ खड़े रहते हैं (शेखावाटी) ।

२ देखो 'देहली' (रू.भे.)

देवंगण—देखो 'देवांगना' (रू.भे.)

देवंता—देखो 'देवता' (रू.भे.)

उ०—कमळा ऊपर कड़छिया, कुर पंडव केता । सेष वर्धं जुग च्यार लौं, दांणव देवंता ।—द.दा.

देव—सं०पु० [सं०] १ वह ग्रमर प्राणी जो स्वर्ग में रहता या क्रीड़ा करता है, दिव्य शरीर-धारी, देवता, सुर (ग्र.मा., नां.मा., डिं.को.)

मुहा०—१ देव जिसा पुजारी—एक जैसे गुणों वाले व्यक्तियों का सम्मेलन. २ देवां पै'ली नकटां री पूजा—योग्य से पहले ग्रयोग्य की पूछ ।

२ तेजोमय व्यक्ति. ३ पूज्य व्यक्ति. ४ राजा के लिए ग्रादर सूचक शब्द या सम्बोधन. ५ बड़ों के लिए ग्रादर सूचक शब्द या सम्बोधन. ६ ब्राह्मणों की एक उपाधि. ७ देवर. ८ पारा. ९ देवदार. १० ज्ञानेंद्रिय. ११ वह यज्ञ करने वाला जिसका यज्ञ में वरण किया जाय, ऋत्विज्. १२ सूर्य, भानु (क.कु.बो.)

१३ [सं० महादेव] महेश रुद्र । उ०—रज रज हुवौ 'जगौ' भरियां रज, भळवा मुकत जांणियौ भेव । सहंसा दस वाळा घू सारू, दस मत करग वाधिया देव ।—महादांन महड़ू

१४ घोड़ा (डिं.को.) १५ तेतीस की संख्या. १६ कांचरी.

उ०—घरां हूं चालियो जांन मेले घणी, जीमणी देव नें सांमही जोगणी ।—रुखमणी हरण

१७ देखो 'दैव' (रू.भे.) ज्यूं—दुरवळ नै देव भी सतावै ।

१८ देखो 'देवी' (रू.भे.)

उ०—डाकण भूत कुवै पग दिगतां, कड़की बीज आकासां। करतां याद मेहा सुत करणी, देव उवेळो दासां ।—कविराजा बांकीदास

[फा०] १९ असुर, दैत्य, राक्षस. २० पारसियों द्वारा हिन्दुओं के लिए रखा गया नाम जिसका अर्थ उनकी भाषा में असुर होता है।

रू०भे०—दे, देउ ।

अल्पा०—देवकियो, देवड़ो ।

देवअंसी-वि० [सं० देव+अंशिन्] १ जो किसी देवता का अवतार हो.

२ जो किसी देवता के अंश से उत्पन्न हो ।

३ देखो 'देवासी' (रू.भे.)

देवउकस-सं०पु० [सं० देवौकस] देवता, सुर (ह.नां.)

देवउठणी, देवऊठणी-सं०स्त्री० [सं० देवोत्थानी] कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी ।

वि०वि०—इस दिन विष्णु भगवान सो कर उठते हैं अतः इसका माहात्म्य बहुत माना जाता है ।

रू०भे०—देवठणी ।

देवक-सं०पु० [सं०] १ एक यदुवंशी राजा जो श्रीकृष्ण के नाना थे.

२ देवता, सुर ।

देवकरम-सं०पु० [सं० देवकर्म] देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किया हुआ कर्म ।

देवकाळो-सं०पु० [सं० देव+काल:] एक देव, भैरव ।

देवकियो—देखो 'देव' (अल्पा., रू.भे.)

देवकिरी-सं०स्त्री० [सं०] एक रागिनी जो मेघराग की भार्या मानी जाती है ।

देवकी-सं०स्त्री० [सं०] वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता ।

देवकी-नंदण, देवकी-नंदन-सं०पु०यौ० [सं० देवकी नंदन] १ श्रीकृष्ण.

२ ईश्वर (नां.मा.)

देवकी-पुत्र-सं०पु०यौ० [सं०] श्रीकृष्ण।

देवकुंड-सं०पु० [सं०] १ वह जलाशय जो किसी देवता के निकट या नाम पर होने के कारण पवित्र माना जाता है.

२ प्राकृतिक जलाशय ।

देवकुरु-सं०पु० [सं०] जंबूद्वीप के ६ खंडों में से एक खंड (जैन)

देवकुल्या-सं०स्त्री० [सं०] १ मरीचि और पूर्णिमा की एक कन्या.

२ गंगानदी ।

देवकूट-सं०पु० [सं०] १ कुवेर के आठ पुत्रों में से एक.

२ एक पवित्र आश्रम (महाभारत)

देवक्रच्छ्र-सं०पु० [सं० देवकृच्छ्र] एक विशेष प्रकार का व्रत जिसमें तीन तीन दिन तक क्रमशः लपसी, शाक, दूध, दही, घी खाते थे और उसके बाद तीन दिन तक वायु पर ही रहते थे ।

देवगंगा-सं०स्त्री० [सं०] १ एक छोटी नदी का नाम.

२ सुरसरी, गंगा (डि.को.)

देवगण-सं०पु० [सं०] १ नक्षत्रों का एक समूह जिसके अंतर्गत अश्विनी, रेवती, पुष्य, स्वाती, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, और श्रवण हैं. २ किसी देवता का अनुचर. ३ देवताओं का वर्ग ।

देवगण-वंद-सं०पु०यौ० [सं० देवगणवंद्य] विष्णु (डि.नां.मा.)

देवगत, देवगति-सं०स्त्री० [सं० देवगति] १ भाग्य की गति, प्रारब्ध.

उ०—विधा भलपण समंद जळ, ऊंच तणो आकास । उत्तर पंथ'र देवगत, पार नहीं प्रथुदास ।—प्रथ्वीराज राठौड़

२ मरने पर देवयोनि की प्राप्ति, उत्तम गति या स्वर्गलाभ ।

उ०—१ यूं करतां रावजी सीहोजी देवगत हुवा ।—नैणसी

उ०—२ ताहरां पदमसी लोभाय थकै जाइनै त्रिभुवणसी नूं पाटां मांहै सोमल नींव मांहै भेळियो । पाटै मांहै विस हुवो । त्रिभुवणसी देवगत हुवो ।—नैणसी

रू०भे०—दइवंतगति, दईगत, दईवगत, दैवगत, दैवगति ।

देवगर—देखो 'देवगिरि' (रू.भे.) उ०—पतंग ऊगतो रहै थांकै विहंग राज पंथ, जाय गंग मुह खायं निहंग भोलो । सेस धर तजै पंथ भंजै वांगां समर, देवगर डगै तो चगै 'दौलो' ।—नाथजी वारहठ

देवगरणो-सं०पु० [सं० देव करणः] राज्याधिकारी विशेष ?

उ०—सेनापति मंत्रि महामंत्रि राणा स्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा देवगरणा नायक दंडनायक ।—व.स.

देवगरभ-सं०पु० [सं० देवगर्भ] वह मनुष्य जो देवता के गर्भ से उत्पन्न हो।

देवगरो-सं०पु०—जाति विशेष का घोड़ा (शा.दे.प्र.)

देवगांधार-सं०पु० [सं०] संपूर्ण जाति का एक राग जो भैरव राग का पुत्र माना जाता है ।

देवगांधारी-सं०स्त्री० [सं०] शिशिर ऋतु में तीसरे पहर से आधी रात गाई जाने वाली एक रागिनी जो श्रीराग की भार्य्या मानी जाती है।

देवगायक-सं०पु० [सं०] गंधर्व ।

देवगायन-सं०पु० [सं०] गंधर्व ।

देवगिर-सं०पु०—१ एक स्थान विशेष ।

२ देखो 'देवगिरि' (रू.भे.)

उ०—लीधो दळ परमार दळ, आबू भोळे राव । गाजै जादव देवगिर, लीधो करन सुजाव ।—वां.दा.

देवगिरा-सं०स्त्री० [सं०] देववाणी ।

देवगिरि, देवगिरी-सं०पु० [सं०देवगिरि] १ सुमेरु पर्वत.

२ गुजरात का रैवत पर्वत, गिरनार. ३ देवगिरि नामक पर्वत से निकलने वाला एक विशेष प्रकार का पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं. ४ दक्षिण का एक प्राचीन नगर जो बहुत समय तक यादव राजाओं की राजधानी रहा था। बादशाह मुहम्मद तुगलक को जब अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरि ले जाने की सनक जंची तब

उनके दूसरा नाम दौलताबाद रखा। आज भी यह नगर इसी नाम से पुकारा जाता है।

सं०स्त्री०—५ मधूर्न जाति की एक रागिनी विशेष जो हेमंत ऋतु में दिन के चौथे प्रहर से लेकर आधी रात तक गाई जाती है। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। किसी के मत से यह रागिनी संकर है और शुद्ध पूर्वी और सारंग के मेल से और किसी के मत से सरस्वती, मालश्री और गांधारी के मेल से बनी है। विभिन्न मतान्तरों से यह वसंत, नागध्वनि, नटकल्याण और हनुमत की भार्या मानी जाती है.

६ घोड़े की एक जाति विशेष

रू०भे०—देवगर, देवगिर, देवागिर।

देवगिरो-सं०पु०—जाति विशेष का घोड़ा (कां.दे.प्र.)

देवगुरु-सं०पु० [सं०] १ देवताओं के गुरु बृहस्पति. २ देवताओं के पिता, कश्यप।

देवगुही-सं०स्त्री० [सं०] सरस्वती।

देवग्रह-सं०पु०[सं० देवगृह] देवताओं का घर, देवालय।

देवड़ा-सं०स्त्री०—चौहान क्षत्रियों की एक शाखा (बां.दा.ख्यात)

देवड़ो-सं०पु० (स्त्री० देवड़ी) १ चौहान क्षत्रियों की 'देवड़ा' शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'देव' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—मारवाड़ मालांणी मगरे, खाखो चोखो मेवड़ो। सूको सस्तो देवै सदा, मुरधर खेजड़ देवड़ो।—दसदेव

देवचालो-सं०पु० [सं०] इन्द्रजाल के छः भेदों में से एक (संगीत)

देवचिकित्सक-सं०पु० [सं०] १ अश्विनीकुमार.

२ दो की संख्या* (डि.को.)

देवचो-सं०पु०—१ प्रतिज्ञा। उ०—तरै रावळ कह्यो—किसो वात दिसा थे देवचो करावो छो।—नैणसी

२ देखो 'देगचो' (रू.भे.)

देवज-वि० [सं०] देवताओं से उत्पन्न।

देवजस-सं०पु० [सं० देवयश] भक्ति रस के भजन, स्तुति।

देवजसा—देखो 'देवयसा' (रू.भे.)

उ०—देवजसा जगि चिर जयउ तीर्थंकर, देव पुस्कर द्वीप मझार रे। भव्य जीव प्रतिबोधता, क्रमि क्रमि करइ विहार रे।—स.कु.

देवजी-सं०पु० [देश०] देवजी बाघजी बगड़ावत के पौत्र और रावत भोज के पुत्र थे। रावत भोज भिनाय (अजमेर के समीप) के स्वामी राव बाघसिंह पड़िहार (प्रतिहार) द्वारा मारा गया था। रावत भोज के दो रानियां थीं—पहली के 'भूणा' नामक दो वर्ष का बालक था और दूसरी रानी का नाम 'सेढ़ां' था जो रावत भोज की मृत्यु के समय गर्भवती थी। इसी से देवजी का जन्म गांव आसींद (मेवाड़) में हुआ। मुंशी देवीप्रसाद कृत मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट के अनुसार देवजी का जन्म संवत् १३०० के लगभग माना गया है। बड़े होकर देवजी ने बड़ी बहादुरी से पिता का बदला लिया और कई सिद्धियां दिखाई। गूजर जाति देवजी को अपना इष्टदेव मानती है और उनकी पूजा करती है। गूजर लोग देवजी की शपथ को बड़ी पक्की मानते हैं। देवजी के पुजारी (भोपे) भी गूजर ही होते हैं जो अविवाहित रहते हैं। देवजी की जन्म-तिथि माघ सुदि ६ मानी जाती है जो गूजरों का एक त्योंहार है। देवजी के साथ उनकी माता 'सेढ़ां' और भाई 'भूणाजी' की भी पूजा होती है।

मेवाड़ के महाराणा सांगा ने चित्तौड़गढ़ पर देवजी का देवरा (मंदिर) बनवा कर उनके प्रति आदर भाव दर्शाया। गूजरों का कहना है कि महाराणा सांगा देवजी के नाम का 'फूल' पहनते थे।

देवजीभि-सं०पु०—एक प्रकार के चावल। उ०—तठा उपरायंत सीरो-पुड़ी वणै छै। सोहितै सारू देवजीभि जोयजै छै।—रा.सा.सं.

देवजी-रोटो-सं०पु०यौ० [देश०] कई प्रकार के मसाले मिला कर भूंज कर बनाया हुआ रोटा। उ०—१ सोनगरां की सु वातां पूछी। तितरै भूंजाई री पधारी हुवी। रिणमलजी ई आया। चारण नूं साथै ले आया। भूंजाई-घणा देवजी-रोटा सोहिता। ईयै भांत चारण भूंजाई जीमियो।—नैणसी

उ०—२ आगै भूंजाई तयार हुई छै। अर आया। आगै घणो सीरो पूड़ी देवजी-रोटो तयार हुवो छै। सरव साथ आय भूंजाई बैठो। भूंजाई जीमनै अपूठा घरै आया।—नैणसी

देवजूण-सं०स्त्री० [सं० देवयोनि] स्वर्ग, अंतरिक्ष आदि में रहने वाले उन जीवों की सृष्टि जो देवताओं के अंतर्गत माने जाते हैं।

रू०भे०—देवजोण, देवजोणी।

देवजोग-सं०पु० [सं० दैवयोग] भाग्य का आकस्मिक फल, भवितव्यता, होनहार, भावी, संयोग, इत्तिफाक। उ०—१ किणहीक सहर में पांच जणा स्त्रीमाळी स्त्रीमाळियां री पंचायती करता। उयै देवजोग सूं पांचूं ही सरीर पात हुआ।—बां.दा. ख्यात

उ०—२ सो विधना रै लेख सूं भूंडण प्रातकाल घड़ी दोय रै तड़कै ऊठ सूरज कुंड में स्नान करणै नूं गई। वींही समै देवजोग सूं डाढ़ाळो वींही सूरज कुंड मांही स्नांन करणै नूं आयो, सो देखै तो भूंडण स्नांन कर रही छै।—डाढ़ाळा सूर री वात

रू०भे०—देवाजोग, दैवजोग।

देवजोणी—देखो 'देवजूण' (रू.भे.)

देवझूलणी-सं०स्त्री० [सं० देव+दोलः] भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी जिस दिन देवताओं को किसी जलाशय में तैराते हैं अथवा नहलाते हैं। इसका बड़ा उत्सव होता है और जलूस के साथ देवताओं को पालकियों में बैठा कर जलाशय पर लाया जाता है तथा नहलाने के बाद पुनः मंदिरों को ले जाया जाता है।

उ०—ऊनाळो वातां करतां बीतग्यो अर बरसाळो ई बीतण मायँ हुज हो। भादवै री देवझूलणी एकादसी रै दिन मुकलावा रो मुहरत हो, उण में फगत च्यार दिन आटा रैया हा।—रातवासो

वठणी—देखो 'देवऊठणी' (रू.भे.) उ०—इतरा जप तुळछां जपिया

जद, साळगरांमजी वर पायो हो रांम। कातिक मास, देवठणी इग्यारस, तुळछांजी रो व्याव रचायो हो रांम।—लो.गी.

देवण–सं०पु० [सं० देवता] १ देवता।

सं०स्त्री० [सं० दा] २ देने की क्रिया या भाव।

वि०—देने वाला।

देवणो–देखो 'दैणो' (रू.भे.) उ०—ग्रो रुपयो तो काले उतर जासी। ग्राछा सोच में पड़चा। म्हारैं वावैं ग्रांख मीची जद म्हां पर ग्राठ सो रो देवणो हो।—रातवासो

देवणो, देववो—देखो 'दैणो, दैवो' (रू.भे.)

देवणहार, हारो (हारी), देवणियो—वि०।

दियोड़ो—भू०का०कृ०।

देवीजणो, देयीजवो—कर्म वा०।

देवत–सं०पु० [सं० दैवत] स्वर्ग में रहने वाला ग्रमर प्राणी, सुर।

उ०—१ हुवो थिर समदर ग्राभो जांण, कसां में घुळे कसूंबल रंग। निचोयो सांझ नार जिमि चीर, दई के देवत नैण सुरंग।—सांझ

उ०—२ च्यारूं खांण चतुर लख जाती, भूख सबन के लागी। देवत दांनव मांनव मोनी, कोइयन छोडचा इण नागी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

देवतड़ो—देखो 'देवता' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—मीठा मीठा काचरा गवारफळी कचनार। मोठ फळी चूंळा फळी मांय मतीरो मिळाय। यो पंचमेळा रो साग देवतड़ां नैं भी नाय मिळै जी राज।—लो.गी.

देवतपणो–सं०पु०—देवत्व, देवत्व। उ०—जो धारत जत सूंह, प्रगटचो फिर देवतपणो। सगत तणो सत सूंह, हव कमधज वैठो हुवो।

—पा.प्र.

देवतर—देखो 'देवतरु' (रू.भे.) उ०—भुजवळ की महिमा दांन को प्रवाह। देवतर साखा तैं सो गुणी सराह।—रा.रू.

देवतरपण–सं०पु० [सं० देवतर्पण] ब्रह्मा, विष्णु ग्रादि देवताग्रों के नाम ले ले कर पानी देने की क्रिया।

उ०—प्रभात स्नांन, नित्यदांन, वेदपढ़इ, वेदांत जांणइ, सिद्धांत वखांणइ, देवतरपण, गुरुतरपण, रिखीतरपण, पित्रतरपण इसिउ नैस्ठिक ब्राह्मण।—व.स.

देवतरु–सं०पु० [सं०] देवताग्रों के वृक्ष (मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष ग्रौर हरिचंदन ग्रादि)।

रू०भे०—देवतर।

देवतरेसर–सं०पु० [सं० देव+तरु+ईश्वर] कल्प वृक्ष।

उ०—नायक है जगरांम नरेसर, ते कर लायक देवतरेसर। 'सीत' तणो पत संत सधारण, चाव करै भज तूं धिन चारण।—र.ज प्र.

देवता–सं०पु० [सं०] १ स्वर्ग में रहने वाला प्राणी, सुर (डि.को.)।

पर्याय०—ग्रगनी-मुखा, ग्रज, ग्रदीतसुत, ग्रादत्या, ग्रनमिख, ग्रनमुखाद, ग्रनिद्रा, ग्रपसराविहारी, ग्रमर, ग्रम्रताभख, ग्रम्रतेस, ग्रसपरा ग्रसुरारि, ग्रस्वपन, कांमरूप, क्रतभुखण, क्रतभुज, गिरवांण चिरायुस, जरारहित, त्रिदवेस, त्रिदस, दईत्यारी, दांणववैरी, दिवग्रोकस, दिवखद, देव, देवत, नलंप, नाकी, निरजर, पुरियंदसेवता, वरहीमुख, वाससुमेर, विमांणग, मरुत, रिभु, लेख, वरद, विबुध, व्रंदारक, सुधाभुज, सुपरवांण, सुमनस सुर, सुरगी, स्रग-विहारी, स्वाहाग्रसण।

२ ब्राह्मण। उ०—तिकै चालिया चालिया एकै रोही मांहै ग्राया। उठै एक ब्राह्मण रो घर। उठै ब्राह्मण सघरो ही रहै। तद कुंवर ब्राह्मण रै घरै गयो। उठै जाय नै ब्राह्मण नु पूछी। कही देवता तूं ग्रठै क्युं रहै छै रोही मांहै। तद ब्राह्मण कही ग्रठै हूं एक विद्या सीखूं छूं।—चौबोली

३ चारण।

वि०—१ गरीब. २ सीधा, सरल। ज्यूं०—वडो देवता ग्रादमी है कदै ही किणी नैं दुख नीं देवै।

ग्रल्पा०—देवतड़ो, देवतियो।

देवताधिप–सं०पु० [सं०] इंद्र (डि.को.)

देवता-रो-कांसो–सं०पु० [सं० देवता+कांस्य] पुष्करणा ब्राह्मणों के ग्रंतर्गत विवाह की एक रस्म जिसमें विवाह के एक दिन पूर्व कन्या पक्ष वालों की ग्रोर से वर के घर खाद्य सामग्री से परोसे हुए थाल भेजे जाते हैं।

देवतावसर– । उ०—महान्यायपालकु, धरम्ममय मूरत्ति, मकरध्वजावतारु, श्रीसरवग्यभावभावितु, दुस्टापहारु, विक्रमनिवासु, सप्तव्यसननिसेध तत्पर, सरवदा, सदसि उपविस्टु, पुरुसप्रमांणु, सिंहासनू, कटिप्रमाण पादपीठ, ग्राजांनवाहु, उपविस्ट, देवतावसर, मंत्रग्रसुर, तिलककउ ग्रवसर, ग्रारतीयावसरु।—व.स.

देवतियो—देखो 'देवता' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—ना मूं बांमण वांणये री, ना विणजारै री धीय। हूं तो संकळ देवतियै पांगळियां पग देय।—लो.गी.

देवतीरथ–सं०पु० [सं० देवतीर्थ] १ ग्रगूठे ग्रौर उंगलियों का वह ग्रग्र भाग जहां से संकल्प या तर्पण के लिये जल गिराया जाता है.

२ देव पूजा के लिये उपयुक्त समय।

देवत्रयी–सं०पु० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु ग्रौर महेश इन तीनों देवताग्रों का समूह।

देवथांन—देखो 'देवस्थांन' (रू.भे.)

देवदत्त–सं०पु० [सं०] १ ग्रर्जुन के शंख का नाम. २ ग्रष्ट कुल नागों में से एक. ३ देवता के निमित्त दी हुई वस्तु या सम्पत्ति. ४ शरीरस्थ पांच वायुग्रों में से एक वायु जिससे जंभाई ग्राती है।

वि०—१ देवता का दिया हुग्रा.

२ जो देवता के निमित्त दिया गया हो।

देवदसम, देवदसमि [सं० देव+दशमी] । उ०—देवदसमि एकादसी, हरिवासर जे होइ। पुण्य प्रथम ते पारणइ, द्वादस नी दिनी जोइ।—मा.कां.प्र.

देवदांनी—देखो 'देवयांनी' (रू.भे.)

देवदार—सं०पु० [सं० देवदारु] प्रायः पहाड़ी स्थानों पर लगभग ६००० से ८००० फुट की ऊँचाई तक पाया जाने वाला एक पेड़ विशेष जो बहुत ऊँचा होता है। इसकी लकड़ी में घुन, कीड़े आदि नहीं लगते हैं तथा बहुत मजबूत होती है (अ.मा.)। उ०—दांति दुरालभ दूघीउ, दाडिम द्राख दघूण। देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण।
—मा.कां.प्र.

देवदारादि—सं०पु० [सं० देवदार्वादि] एक प्रकार का क्वाथ जो ज्वर, दाह आदि में प्रसूता स्त्री को पिलाया जाता है (वैद्यक)।

देवदाळि, देवदाळी—सं०पु० [सं० देवदाली] एक लता जो देखने में तुरइ की बेल से मिलती-जुलती होती है। उ०—दामिणि दोभी दूधिग्रां, देवदाळि दूयेलि। दारू हळद्र दुरालभा, दह दिसि दीसइ वेलि।
—मा.कां.प्र.

देवदासी—सं०स्त्री० [सं०] १ मंदिरों की दासी या नर्तकी.
२ वेश्या।

देवदिवाळी, देवदीवाळी—सं०स्त्री० [सं० देवदीपमालिका] कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा का दिन (मेवाड़)

देवदुस्य, देवदुस्यवस्त्र, देवदूसितवस्त्र, देवदूस्य, देवदूस्यवस्त्र—सं०पु० [सं० देव+दूष्यम्] वस्त्र विशेष। उ०—१ पछइ भला वस्त्र पहिराया ते कुण कुण, देवदुस्यवस्त्र, रत्नकंबल, पांमडी, खीरोदक।—व.स.
उ०—२ पछि वस्त्र पहिरावइ, देवदूसितवस्त्र, रतनकांबळ, चीर, सोनइरी।—व.स.
उ०—३ तनसुख मनसुख कमखा चलाखा मलाखा देवदूस्य बंघालग कोठालग।—व.स.
उ०—४ अथ वस्त्र; देवदूस्य चीनांसुक गोजी चउडसी नील नेत्र सचोपां।—व.स.

देवदेव—सं०पु० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, इंद्र।

देवदेवाधि—सं०पु० [सं०] १ देवताओं का भी देव, इंद्र.
२ ईश्वर।

देवदेवाला—सं०पु० [सं० देवदेवालय] देव-मंदिर (?)।
उ०—हूं ते ग्रह्मारूं अणहीलपुर पाटण वणवूं; पणि कसू एक छि जे अणहलपुर पाटण ? सघट घाटे करी विचित्र चित्रांमे करी अभिरांम, महामहोछवे भलां आरांम, पंचासर प्रमुख देवदेवाला, जे नगरमांह दांनसाळा पोसवसाळा धरमसाळा, गढ़ मढ़ मंदिर प्रकार।—व.स.

देवद्रुम—सं०पु० [सं०] १ स्वर्ग के वृक्ष, कल्पवृक्ष, पारिजात आदि वृक्ष.
२ देवदार।

देवधन—सं०पु० [सं० देवधेनु अथवा देवधन] गाय (अ.मा.)

देवधाम—सं०पु० [सं० देवधाम] १ देवस्थान. २ तीर्थस्थान.
३ स्वर्ग।

देवधुनि, देवधुनी—सं०स्त्री० [सं० देवधुनिः, देवधुनी] गंगा नदी। उ०—हिंद्र गुरंद सगां हूंचकिया, वहिया वाहण मुझ विचाळ। दळ सुध देवधुनी इम दासे, रतनाकर बहिया रतसाळ।
—बळवंतसिंह हाडा रो गीत

देवधूप—सं०पु० [सं०] गुग्गुल, गूगुल।

देवधेनु—सं०स्त्री० [सं०] कामधेनु।

देवनंदी—सं०पु० [सं० देवनन्दिन्] इंद्र का द्वारपाल।

देवनगां—सं०स्त्री०—एक देवी विशेष जो चारण भीमा आसिया की पुत्री थी।

देवनदी—सं०स्त्री० [सं०] १ गंगा, सुरसरि (अ.मा.)
उ०—प्रांणी तूं डूबो पुरुत, मोहनदी रै मांहि। देवनदी में डूबियो, नख पग हुंदो नांहि।—वां.दा.
२ सरस्वती नदी।

देवनांमा—सं०पु० [सं० देवनामन्] १ कुश द्वीप के एक वर्ष का नाम.
२ कुश द्वीप के राजा हिरण्यरेता के एक पुत्र का नाम।

देवनागरी—सं०स्त्री० [सं०] १ भारतवर्ष की प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत, हिन्दी, मराठी, राजस्थानी आदि देशभाषाएं लिखी जाती हैं. २ उन अक्षरों का नाम जिन से उक्त भाषाएँ लिखी जाती हैं।

देवनाथ—सं०पु० [सं०] १ शिव, महादेव. २ सुरपति, इंद्र।
उ०—प्रसनिकुमार अगनि वन आखो, देवनाथ महि वांमण दाखो। समंद प्रजापति आदि सुरेसर कमधां धणी तणी रक्षा कर।—रा.रू.

देवनायक—सं०पु० [सं०] इन्द्र, सुरपति।

देवनिहंग—सं०पु०—सूर्य, रवि, भानु। उ०—हुवै रथ चक्रित देवनिहंग, खहाव्रत मेघ कि वेग खसंग, धड़ध्धड़ वेधड़ वज्जहि धार, कड़क्कड़ आठकि काठ कुठार।—रा.रू.

देवनीक—वि० [सं० देव+नीक?] देवताओं के समान, देवतुल्य।

देवपत, देवपति—सं०पु० [सं० दिवपति] १ विष्णु।
उ०—दासतन भजन विन तौ सग्री दासरथ, थिरू बस कोइ़ वातै न थावै। देवपत रूप वैराट थारो दुगम, अणु मन सेवगां सुगम आवै।
—र.ज.प्र.
२ इंद्र।
रू०भे०—देवांपत।

देवपदमणी, देवपदमनी—सं०स्त्री० [सं० देवपद्मिनी] आकाश में बहने वाली गंगा का एक नाम।

देवपर—सं०पु० [सं०] संकट पड़ने पर कोई उद्योग नहीं करने वाला मनुष्य।

देवपसु—सं०पु० [सं० देवपशु] १ वह पशु जो देवता के नाम पर उत्सर्ग किया जाय. २ देवता का उपासक।

देवपुत्र—सं०पु० [सं०] (स्त्री० देवपुत्री) देवता का पुत्र।

देवपुत्री—सं०स्त्री० [सं०] १ देवता की पुत्री. २ इलायची.
३ कपूरी साग।

देवपुर, देवपुरी—सं०स्त्री० [सं०] १ इंद्र की राजधानी अमरावती.
२ स्वर्ग, सुरलोक।

देवपुस्का–सं०स्त्री०—सोनजुही।

देवपूजा–सं०स्त्री० [सं०] देवताओं का पूजन।

देवपोढ़णी, देवपोढ़णी-एकादसी–सं०स्त्री०यौ० [सं० देव+प्रलोठनम्+एकादशी] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

वि०वि०—कहा जाता है कि इस दिन से विष्णु भगवान का शयन प्रारम्भ होता है। देवोत्थानी एकादशी को जो कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में आती है विष्णु भगवान सो कर उठते हैं।

देवप्रयाग–सं०पु० [सं०] हिमालय में टिहरी जिले के अंतर्गत एक तीर्थ।

देवप्रस्न–सं०पु० [सं० देवप्रश्न] १ किसी देवता के प्रति समझा जाने वाला शुभाशुभ संबंधी वह प्रश्न जिसका उत्तर किसी युक्ति से निकाला जाता है. २ ग्रह, नक्षत्र, ग्रहण आदि के सम्बन्ध का प्रश्न।

देवप्रसाद–सं०पु० [सं०] देवता का प्रसाद।

उ०—पूजा देवप्रसाद, वंधै झालरि घंट वाजा। सुभ मारग मिळ सयरा, सकळ सुख वधै सकाजा।—सू.प्र.

देवबंद–सं०पु० [सं०] घोड़े के छाती पर की भँवरी (अशुभ)

देवबांणी—देखो 'देववांणी' (रू.भे.)

देवबाळ–सं०स्त्री० [सं० देव+वाला] १ सुरबाला. २ अप्सरा।

देवब्रह्म–सं०पु० [सं० देवब्रह्मन्] नारद।

देवब्राह्मण–सं०पु० [सं० देवब्राह्मण] किसी देवता की पूजा कर के जीविका निर्वाह करने वाला ब्राह्मण, पुजारी।

देवभाग–सं०पु० [सं०] देवताओं को दिया जाने वाला भाग।

देवभासा–सं०पु० [सं० देवभाषा] संस्कृत भाषा।

देवभिसक–सं०पु० [सं० देवभिषग्] अश्विनीकुमार।

देवभूमि–सं०स्त्री० [सं०] स्वर्ग, देवलोक।

देवभूरख–सं०पु० [देश०] स्वामी कार्तिकेय (नां.मा.)।

देवमंदिर–सं०पु० [सं०] वह घर जिसमें किसी देवता की मूर्ति स्थापित हो, देवालय।

देवमणि–सं०स्त्री० [सं०] १ कौस्तुभ मणि. २ महामेदा नामक औषधि. ३ घोड़े की भँवरी (शा.हो.)
४ सूर्य।

देवमांन–सं०पु० [सं० देवमान] काल की गणना में देवताओं का मान जैसे मनुष्यों के सौ वर्षों का देवताओं का एक दिन माना जाता है।

देवमाया–सं०स्त्री० [सं०] १ परमेश्वर की माया जो जीवों को बंधन में डालती है. २ देवताओं की माया।

उ०—मिटै मोह छोळां थटै देवमाया। उठै थाट ले भूप सुग्रीव आया।—सू.प्र.

देवमास–सं०पु० [सं०] १ देवताओं का महीना.
२ गर्भ का आठवां महीना।

देवमीढ़–सं०पु० [सं०] १ एक यदुवंशी राजा.
२ मिथिला के एक प्राचीन राजा।

देवमुनि–सं०पु० [सं०] नारद ऋषि।

देवमूरत देवमूरति–सं०स्त्री० [सं० देवमूर्त्ति] देवता की प्रतिमा।

देवयग्य–सं०पु० [सं० देवयज्ञ] होमादि कर्म जो पंच यज्ञों में से एक है।
रू०भे०—देवजग।

देवयजन–सं०पु० [सं०] यज्ञ की वेदी।

देवयजनी–सं०पु० [सं०] पृथ्वी।

देवयसा–सं०पु० [सं० देव यशस्] एक जैन मुनि। उ०—सरव भूत नृप नंदनो रे हां, गंगा मात मल्हार। देवयसा ससि लंछने रे हां, 'विनयचंद्र' सुखकार।—वि कु.
रू०भे०—देवजसा।

देवयांण, देवयांन–सं०पु० [सं० देवयान] शरीर से अलग होने के उपरांत जीवात्मा के जाने के लिये दो मार्गों में से वह मार्ग जिससे होता हुआ वह ब्रह्मलोक को जाता है।

देवयांनी–सं०स्त्री० [सं० देवयानी] १ सांभर शहर का एक बड़ा तीर्थ-स्थान

वि०वि०—शुक्राचार्य की कन्या जो राजा ययाति को व्याही गई थी। इसका स्थान सांभर से २ मील दूरी पर है।

बृहस्पति का पुत्र कच मृत संजीवनी विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य का शिष्य हुआ। इनकी कन्या देवयानी कच पर मुग्ध हुई। असुरों ने कच को अनेक वार मारा पर शुक्राचार्य ने मृत संजीवनी के बल से उसे जिला दिया। एक बार उसे पीस कर सुरा में मिला दिया। शुक्राचार्य कच को सुरा के साथ पी गये। किन्तु देवयानी के विलाप करने पर कच को मृत संजीवनी विद्या ग्रहण करवा कर पेट से बाहर निकाला। देवयानी ने कच से विवाह करना चाहा पर कच राजी न हुआ। इस पर देवयानी ने शाप दिया कि तुम्हारी विद्या निष्फल होगी। कच ने कहा यह विद्या अमोघ है अतः जिसे मैं सिखाऊँगा उसके हाथ से फलवती होगी। तुमने व्यर्थ शाप दिया। पर तुम्हारा विवाह ब्राह्मण से न होगा।

दैत्यराज वृषपर्व्वा की कन्या शर्मिष्ठा और देवयानी में सखी भाव था। एक बार इन्द्र की चालाकी से जल-विहार के समय जल्दी में वस्त्रों की अदला बदली के कारण झगड़ा हो गया और शर्मिष्ठा ने देवयानी को कूए में ढकेल दिया। नहुष पुत्र ययाति ने इसको कूए से निकाला। शुक्राचार्य इससे क्रुद्ध होकर अन्यत्र जाने को तैयार हुए पर वृषपर्व्वा के विनती करने पर वहीं ठहर गये। देवयानी का विवाह राजा ययाति से हो गया और शर्मिष्ठा अपनी सहस्रों दासियों सहित देवयानी की दासी बन कर रहने लगी। देवयानी के गर्भ से यदु और तुर्वसु नाम के दो पुत्र और इसी के द्वारा शर्मिष्ठा के द्रुह्यु, अणु और पुरु तीन पुत्र हुए।
रू०भे०—देवसुयांनी।

देवर–सं०पु० [सं० देवरः] पति का छोटा भाई। उ०—ए लारै देवर जी दौड़िया ए रुणझुणियो लै, म्हारी भावज घरै पधार जाझी मरवो लै।—लो.गी.
रू०भे०—देउर।
अल्पा०—देवरियो।

देवरथ, देवरथ्थ–सं०पु० [सं० देवरथ] १ देवताओं का रथ, विमान।
उ०–नहम्मे नगारा नरांग नवारा, काली नाग नै कांन फूकै करारा। नांगी नाग री कोप री सांम हूय्यां, रहो देमवा ठाठ री देवरथ्यां।–ना.द.
२ सूर्य का रथ. ३ ५२ वीरों में से एक वीर का नाम।
देवरवट–सं०पु० [देवर+रा० वट] एक प्रथा जिसमें पति की मृत्यु के पश्चात् स्त्री अपने देवर को पति मान लेती है (विश्नोई)
देवरव्याह–सं०पु० [देवरः+विवाह] पति की मृत्यु के पश्चात् देवर से किया जाने वाला पुनर्विवाह।
देवरांणी– देखो 'देरांणी' (रू.भे.) उ०—बाई ए पहला थारा देवर नै सिणगार। पछै 'हर' री देवरांणियां।—लो.गी.
देवराज, देवराजा–सं०पु० [सं० देवराज] देवताओं का राजा इंद्र.
२ राठोड़ों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
रू०भे०—देराज।
देवराजोत–सं०पु०—राठोड राव चूंडा के पुत्र देवराज के वंशजों की राठोड़ों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
देवराट–सं०पु० [सं०] देवताओं का सम्राट, इंद्र।
उ०—देवराट भ्रीत खाट, नाट बोल न दखं। रे नरेस राघवेस, गायजं भजं रिखं।—र.ज.प्र.
देवरारिवीर–सं०पु० [सं०] ५२ वीरों में एक वीर का नाम।
देवरावर–सं०पु० [देश०] यादवों के एक प्राचीन राज्य देरावर की राजधानी।
देवरिख, देवरिख– देखो 'देवरिसी' (रू.भे.)
उ०—सहलां ऊपर सार मैं, नीसाटां वगे। खेचर भूचर देवरिख, पळचर उछरंगे।—द.दा
देवरिद्धि–सं०पु० [सं० देवर्द्धि] जैनों के एक प्रसिद्ध स्थविर का नाम।
देवरियो–देखो 'देवर' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ भाकर में घमीड़ो ऊठ्यो, गाडो किण रो आयो रे, ठालो भूलो देवरियो लेवण नै आयो रे, लारै जाऊं नी। हां रे लारै जाऊं नी परणियो परदेस मा'लै रे, लारै जाऊं नी।—लो.गी.
उ०—२ देरांणी जेठांणी झगड़ो लागै, देवरियो मनावण जावै रे म्हारो गोरबंध लूंबाळो।—लो.गी.
उ०—३ बेटा ईंधण पांणी बहु गयी, बेटा छोटोड़ो देवरियो साथ। पपइयो बोलै हरियाळा बाग में।—लो गी.
देवरियो–देखो देवरो' (अल्पा., रू.भे.)
देवरिसि, देवरिसी–सं०पु० [सं० देवर्षि] देवर्षि नारद।
देवरूप–सं०पु० [सं० दैवीरूप, ईश्वरीय रूप, दैवी रूप।
उ०–१ तरै नाल्हो बहू नूं सिणगार ल्याई, बहू रा पग धरती लागै नहीं बहू देवरूप हुई।—नैणसी
उ०—२ मित्रड़ी मिहिरि सस्त्र नियुंज्या, देवरूप वलि मंत्र प्रयुंज्या। दूरइं रहइं ते मति आलो, ग्या विराट नृप मंदिरि चालो।
—विराटपर्व

देवरौ–सं०पु० [सं० देवगृह] १ देवालय, मंदिर।
उ०—रात पो'र सवा आई। राजा माताजी रै देवरै पूजा रो साज लेनै बैठा छै।—जैतसी ऊदावत री वात
२ जैन मंदिर (जालोर) ३ श्मशान भूमि पर बनाये गये राजा-महाराजाओं के स्मृति भवन।
रू०भे०—दिहरो, देवहर, देव्हर, देहरइरउ, देहरउ, देहरु, देहरू, देहरो।
अल्पा०—देवरियो, देहरियो।
देवळ, देवल–सं०पु० [सं० देवालय] १ मंदिर, देवालय।
उ०—१ पड़घा पग देवळ थंभ प्रमांण, न केवल पिंड अडां अहनांण। गुड़ंघा गज आव गुड़ावत गोड़, घणां सहि घाव पड़घा कइ घोड़।
—मे.म.
उ०—२ प्रीतम प्रांणिया तूं देवळि बैठो आय, निज देवळ सांज्यो नहीं, तो जासी जन्म ठगाय।—ह.पु.वा.
पर्याय०—चैत, थांनअनाद, द्रुमग्रह, धजधर, धांमहर, प्रासाद, मंडप, विहार, सुरमंडप।
२ किसी मृतक की स्मृति में बनाया गया स्मृति-भवन.
३ परिहार (प्रतिहार) राजपूत वंश की एक शाखा या इस शाखा व्यक्ति। उ०— देवल कावा मनि डरै, बोहा भड़ बालोत।
—गु.रू.बं.
४ देवल ऋषि की संतान।
सं०स्त्री०—५ सिढ़ायच गोत्र के चारण भलला की पुत्री देवलबाई जिसे देवी का अवतार माना जाता है. ६ हरि-भक्त चारण आणंद मीसण की पुत्री जो देवी का अवतार मानी जाती है।
वि०वि—इस देवी की गायों की रक्षा के निमित्त वीर पाबू राठोड़ जिंदराव खीची से युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।
७ देखो 'देवळी' (मह., रू.भे.) उ०—नहिं देवळ सूं वैरता, नहिं देवळ सूं प्रीति। 'किरतम' तजि गोविंद भजै, यह साधां की रीति।
—ह.पु वा
देवळथंभो–सं०पु०—हाथी (ना.डि.को.)
देवळी–सं०स्त्री०—१ प्रतिमा, मूर्त्ति।
उ०–संवत् १५९५ चैत सुद ६ ब्रहस्पतवार श्री करनीजी जोगअग्नि सूं परम धाम पधारिया। पीछे रावळ जैतसी देसणोक पूजा मेली। तोरण रूपै रो अजे छै। अठ सुथार बूढ़ो देवळी देसणोक ले आयो। तद मूरत गुंभारै में पधराई। सं० १५९५ चैत्र सुद १४ सनीवार उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र प्रतिस्ठा हुई।—द.दा.
२ समाधि।
अल्पा०—देवळो।
मह०—देवळ।
देवलोक–सं०पु० [सं०] स्वर्ग।
मुहा०—देवलोक होणो—स्वर्गवास होना, मृत्यु को प्राप्त होना।
(प्रतिष्ठित

देवळी—देखो 'देवळ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—भैरूंजी पीवरिये रै मांय थरपूं देवळो, हूं आवती नै जावती थां नै धोक सूं, भैरूंजी, अेक अरज म्हारी, हेलो सांभळो। लो.गी.

देववंसी—सं०पु०—१ दर्जियों की एक शाखा.
२ देखो—'देवासी' (रू.भे.)

देववधू—सं०स्त्री० [सं०] १ देवताओं की स्त्री, देवी.
२ अप्सरा।

देववरणिनी—सं०स्त्री० [सं० देववर्णिनी] विश्रवा मुनि की पत्नी और कुबेर की माता।

देववरधन—सं०पु० [सं० देववर्द्धन] १ राजा देवक के एक पुत्र का नाम.
२ देवकी का एक भाई और श्रीकृष्ण का मामा (भागवत)

देववलभा, देववल्लभा—सं०स्त्री० [सं० देववल्लभ] केसर।
(ह.नां., अ.मा., नां.मा.)

देववांणी—सं०स्त्री० [सं० देववाणी] १ संस्कृत भाषा. २ किसी अदृश्य देवता का वचन जो आकाश से सुनाई पड़े, आकाश वाणी।
रू०भे०—देववांणी।

देववायु—सं०पु० [सं०] बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

देववाहन—सं०पु० [सं०] अग्नि (देवताओं का हव्य लेकर पहुँचाने वाला)

देवविहाग—सं०पु० [सं० देव विभाग] कल्याण और विहाग अथवा सारंग और पूरबी के योग्य से बनने वाली एक राग।

देवव्रक्ष—सं०पु० [सं० देववृक्ष] १ मंदार वृक्ष. २ गूगल.
३ सतिवन।

देवव्रत—सं०पु० [सं०] भीष्म का एक नाम (महाभारत)

देवसंजोग—सं०पु० [सं० दैव संयोग] दैव संयोग, इत्तफाक।
उ०—इण समय आधी रात गई छै, देवसंजोग चोर एक घर में आय पैठो।—पंचदंडी री वारता

देवसची—सं०पु० [सं० देवशचि] शचिपति, इंद्र (डिं को.)

देवसदन—सं०पु० [सं०] १ देवताओं का आगार, देवालय, मंदिर.
२ स्वर्ग।

देवसभा—सं०स्त्री० [सं०] १ देवताओं का समाज.
२ राज-सभा।

देवसरि—सं०स्त्री० [सं०] सुरसरि, गंगा।

देवसाक—सं०पु० [सं० देवशाक] १७ दंड से २० दंड समय तक गाने का एक संकर राग विशेष जो शंकराभरण, कान्हड़ा और मल्लार से मिल कर बना है। इसमें गांधार कोमल लगता है।

देवसार—सं०पु० [सं०] इंद्रताल के छः भेदों में से एक।

देवसावरणि—सं०पु० [सं० देवसावर्णि] तेरहवें मनु का नाम (भागवत)

देवसिंधु—सं०पु० [सं०] १ देवताओं का समुद्र, सागर।
२ मानसरोवर।

देवसुनी—सं०स्त्री० [सं० देवशुनी] देवलोक की कुतिया, सरमा.

देवसुयानी—देखो—'देवयांनी' (रू.भे.)। उ०—दैत्य-गुरु घरि दीकरी, देवसुयानी नांम। गल्यु कच्छं कढ़ाहि-महि, फटकइ फेडिउ ठांम।
—मा.कां.प्र.

देवसुरह—सं०स्त्री० [सं० देवसुरभि] १ कामधेनु नामक गाय. २ गाय।
उ०—करनादे वडो प्रवाड़ो कीधो, आखे सुर नर नाग अनेक। देवसुरह एकण हथ दूही, हाथ समंद लग पूठो हेक।—चौथ बीठू

देवसेन—सं०पु० [सं०] १ बावन वीरों में से एक वीर का नाम। २. एक तीर्थङ्कर का नाम। उ०—देवसेन देव तुं सुयंड, परम क्रिपाळ कहीत। तिस तुझ सरणइ हुं आवियउ, हिव तुं देव तुं गुरु मीत।—स.कु

देवसेना—सं०स्त्री० [सं०] १ देवताओं की सेना. २ सावित्री के गर्भ से उत्पन्न प्रजापति की कन्या।

देवसेनापति—सं०पु० [सं०] देवताओं का सेनापति, स्कंद।

देवस्थांन—सं०पु० [सं० देवस्थान] १ देवताओं के रहने का स्थान, देवालय, मन्दिर. २ पांडवों को वनवास के समय उपदेश देने वाले एक ऋषि (महाभारत)

देवस्थांनधरमपुरौ, देवस्थांनधरमादौ—सं०पु०यौ० [सं० देव+स्थान+धर्म, पुर] देवालयों के प्रबंध एवं देख-रेख का एक महकमा।
वि०वि०—अपाहिजों और अनाथों को प्रायः राज्य की ओर से उदर-पोषणार्थ आर्थिक सहायता इसी विभाग द्वारा दी जाती है।

देवस्रवा—सं०पु० [सं० देवश्रवस्] १ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम.
२ वसुदेव के भाई।

देवस्रेणी—सं०स्त्री० [सं० देवश्रेणी] १ मरोरफली, मूर्वा. २ देवताओं की पंक्ति।

देवस्व—सं०पु० [सं०] १ देवता की सेवा के लिए अर्पित किया हुआ धन या सम्पत्ति. २ यज्ञशील मनुष्य का धन।

देवहंम—सं०पु० [सं०] एक प्रकार की बतख।

देवहर—देखो 'देवरो' (रू.भे.) उ०—पूजिय जिनप्रतिमा घरइं, देवहरइ जिनराइ। सेव करी निज भगति स्यूं, प्रणमइ सुह गुरु पाय।
—प्राचीन फागु-संग्रह

देवहाली—सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता जिसके फलों पर रोयें होते हैं। फल तोरई के आकार के रोएँदार होते हैं।

देवहूति—सं०स्त्री० [सं०] स्वायंभुव मनु की तीन कन्याओं में से एक जो कर्दम मुनी को व्याही थी (भागवत)।

देवह्राद—सं०पु० [सं० देवहृद] श्री पर्वत पर एक सरोवर जिसमें स्नान का बड़ा माहात्म्य है (महाभारत)

देवां—वि० [सं० द्वि] देवता (?) उ०—लोक परमारथव्रित्तिइं च वली बाह्य व्रित्तिइं पुण अभिमांन अहंकार तेहनइ वसि देवां गुरुईह इं वरणवइं।—षष्टिशतक प्रकरण

देवां-आगीवांण, देवां-आगेवांण—सं०पु०यौ० [सं० देव+अग्र+रा.प्र. वान] गणेश, गजानन (ह.नां.)

देवांग—सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)

उ०—चीर चाचनट आट नइ बइठी, देवांग वस्त्र पहिराया देव। पार्वति मनौं पावरण आणइ, अनम सगार नहइ जड भेव।
—महादेव पारवती री वेलि

देवांगचोर-संपु०—एक प्रकार का ओढ़ने का वस्त्र विशेष (व.स.)

देवांगणा, देवांगना-संस्त्री० [सं० देवांगना] १ स्वर्ग की स्त्री, देवताओं की स्त्री। उ०—मानव नको नको ताइ मलायर, भमण तणा अनेरा भेव। उलटड रूप अनूप माखियइ, देवांगना न कोई देव।
—महादेव पारवती री वेलि

२ अप्सरा। उ०—घर आवतां मारग मांहीं एक देहरौ आयौ, तेथी जाय दरसण किया। उहां प्रस्ट देवांगना बैठी, सो पूजन करै।
—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—देवंगण।

देवांण-संपु०—१ ब्रह्मा (डि.नां.मा.) २ देवता, देव।
उ०—तूं भंजण तोटा अनम, अगोटा जुधयर जोटा जै वांण। रिख गोतम नारी उपळ उधारी, देह सुधारी देवांणं।—र.ज.प्र.
३ पूज्य व्यक्ति।

देवांतक-संपु० [सं०] एक राक्षस जो रावण का पुत्र था (रामायण)

देवांदेव-संपु०—१ श्रीकृष्ण (अ.मा.)
२ देखो 'देवाधिदेव' (रू.भे.)

देवांपत—देखो 'देवपति' (रू.भे.) (डि.को.)

देवांराज—देखो 'देवराज' (रू.भे.) (डि.को.)

देवांसी—१ देखो 'देवअंसी' (रू.भे.) उ०—तदै कुमरजी कही—औ आंबौ देवांसी छै। सायै चीत सांमरौ आंबौ कराय देवौ। भूतखा नहित सौ अठै पड़सी।—रीसाळू री वात
२ देखो 'देवासी' (रू.भे.)

देवा-संपु०—पति का छोटा भाई, देवर (डि.को.)।

देवाई-संस्त्री०—देवत्व। उ०—चत्रमुख ईस पारथै चुत्रभुज, कैतुहळ गोकळ सुभ काज। देव अमां छोडी देवाई, महराई पावां माहाराज।
—सिवदांन बारहठ

देवाकर—देखो 'दिवाकर' (रू.भे.)

देवागिर—देखो 'देवगिरि' (रू.भे.)

देवाजोग—देखो 'देवजोग' (रू.भे.)

देवाट-संपु०—हरिहर क्षेत्र नामक तीर्थ (वराहपुराण)

देवातणौ-संपु०—देवत्व, दैवी बल।

देवातन-संपु०—देव शक्ति, देव बल। उ०—तरै सारै चाकरै नाग ही रा देवातन री वात राव कनै कही, पण मंडळीक मानै नहीं।
—नैणसी

देवातिथि-संपु० [सं०] एक पुरुवंशी राजा का नाम (भागवत)

देवातिदेव-संपु०—विष्णु।

देवात्मा-संपु० [सं०] १ देवस्वरूप. २ अश्वत्थ, पीपल।

देवादिदेव-संपु०—१ देखो 'देवाधिदेव' (रू.भे.)। उ०—देवादिदेव सुर असुर सेव। राजाधिराज सविता समाज।—ऊ.का.
२ विष्णु. ३ इंद्र।
रू०भे०—देवांदेव, देवाधिदेव।

देवाघण-संस्त्री० [सं० देव या दिव्य+घन] गाय (ह.नां.)

देवाधिदेव-संपु० [सं० देव+अधिदेव] १ वह जिसके अधीन समस्त देवता हों, देवताओं का देव। उ०—देवाधिदेव री सिवाजी की आग्या पाय कागळ वाचण लागौ।—वेलि.
२ परमेश्वर, ईश्वर (रू.भे.)
रू०भे०—देवादिदेव।

देवाधिप-संपु० [सं०] १ देवताओं के अधिपति, परमेश्वर, ईश्वर, देखो 'देवादिदेव' २ विष्णु. ३ इंद्र।

देवानीक-संपु० [सं०] १ एक सूर्यवंशी राजा।
उ०—देवानीक तास पुत्र दीपत, सुर दातार अनीक तास सुत।
२ देवताओं की सेना। —सू.प्र.

देवानुज-संपु० [सं०] दैत्य, असुर (नां.मा.)।

देवाभक्ष-संपु० [सं० देव+भक्ष्य] अमृत, सुधा (ह.नां.)

देवायर—देखो 'दिवाकर' (रू.भे.) उ०—१ कहि म गेर डोल है कहि म जळ हळ है सायर। कहि म चंद लुकिक है कहि म छैहल देवायर।
—नैणसी

उ०—२ अरणोद अउगम जांणियं, गो आधारे अगम गमे, दतणाघ 'गजेसी' दीपियौ, किरि देवायर ऊगमे।—गु.रू.बं.

देवायु-संस्त्री० [सं० देवायुस्] देवताओं की आयु जो बहुत अधिक होती है।

देवारय्य-संपु० [सं० देवार्य्य] एक अर्हत के एक गण का नाम (जैन)

देवारि-संपु० [सं०] १ ५२ वीरों में से एक वीर का नाम।
२ असुर, राक्षस।

देवाळ-वि० [सं० दा] देने वाला, दातार, दाता।
उ०—महाराजा साजां गुणां, कविराजां प्रतिपाळ। तेरह सायां सैंचणी, सौ लक्खां देवाळ।—रा.रू.
रू०भे०—दिवाळ।

देवाळय, देवालय-संपु० [सं० देवालय] १ वह घर जिसमें किसी देवता की मूर्ति रखी जाती हो, मंदिर. २ स्वर्ग।
रू०भे०—देवाळै।

देवाळि-संस्त्री० [सं० देवतालि] ।

देवाळियौ-वि० [सं० दा] जिसके पास ऋण चुकाने के लिये द्रव्य न हो, जो ऋण चुकाने में असमर्थ हो, जिसने दिवाला निकाला हो, ऋणी, कंगाल। उ०—ए वाजै साजै पलै, साजौ साहूकार। ए वाजै देवाळिया, ऊंधा ताळा मार।—बां.दा.

देवा-लेई-संस्त्री०—लेने देने की क्रिया, लेन-देन।

देवाळै—देखो 'दवाळय' (रू.भे.)

देवाळौ-संपु० [सं० दा] १ पूंजी या आय न रहने के कारण ऋण चुकाने में असमर्थता, वह अवस्था जिसमें मनुष्य के पास अपना ऋण चुकाने के लिये कुछ न रह जाय।

उ०—हूंडी सूं भूंडी हुवै, ऊंडी गाडै आथ। देवाळो दरसाय दै, कर काठो हिय हाथ।—वां.दा.

मु०—१ देवाळो काडणौ (निकाळणौ)—ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाना, दिवालिया बन जाना. २ देवाळो घर में घालणौ—निर्धनता अपनाना, घाटा खाना. ३ देवाळो निकळणौ—कर्जदार बन जाना, ऋणी हो जाना, ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाना, घाटा होना, नुकसान होना।

२ देखो 'देवालय' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—रुखमणीजी जांण्यो पहिली ही लड़ाई पड़सी। ठाकुर को दरसण विण हीं कीयां तव पहिले ही रुखमणीजी सेन्यां चित लाया। देवाळा थे बाहरि आइ। समस्त सेनां दिसि द्रस्टि करि देख्यो। पाछै वयौं थोड़ो सौ हस्या।—वेलि.टी.

रू०भे०—दवाळो, दिवाळो, दीवाळो।

देवावास-सं०पु० [सं०] १ देवता का मंदिर. २ स्वर्ग. ३ पीपल का वृक्ष।

देवासी-सं०पु० [सं० देव+अंशिन्] १ राईका (गडरिया) नामक जाति या उस जाति का व्यक्ति।

वि०वि०—ये अपने को महादेव के अंश से उत्पन्न मानते हैं।

२ देव अंशी।

रू०भे०— देवंसी, देवांसी।

देवास्व-सं०पु० [सं० देवाश्व] इंद्र का घोड़ा, उच्चैःश्रवा।

देवि—देखो 'देवी' (रू.भे.) उ०—१ पंच पंडव पंच पंडव देवि परिणेवि।—पं.पं.च.

उ०—२ वयराट रांणी मनि देवि आंणी। गई तेह नइं लेविणु मद्यपांणी।—विराट पर्व

देविका-सं०स्त्री० [सं०] १ एक नदी का नाम (पौराणिक) २ घाघरा नदी।

देवी-सं०स्त्री० [सं०] १ देवपत्नी, देवता की स्त्री. २ पार्वती, उमा, दुर्गा, शक्ति। उ०—देवी उम्मया खम्मया ईस-नारी। देवी धारणी मुंड त्रिभुवन्न धारी।—देवि.

३ सरस्वती, शारदा (अ.मा.) ४ ब्राह्मण स्त्रियों की एक उपाधि. ५ अच्छे गुणों वाली स्त्री, दिव्य गुणों वाली स्त्री. ६ राजा की पटरानी जिसका अभिषेक राजा के साथ हुआ हो।

७ नव प्रसूता गाय, भैंस या बकरी का वह दूध जो किसी नियत समय तक किसी देव विशेष के अर्पण कर खा लिया जाता है।

उ०—एक बाई कह्यो स्वांमीजी म्हारै भैंस ब्यावै जब पधारो तो लाहो लो, ते किम ? भैंस व्यायां एक महिना तांई दूध दही वावर देवै पिण विलोवै नहीं। ते देवी रै टांणे पधारज्यो।—भि.द्र.

८ मरोड़ फली, मूर्वा. ९ हर्र, हरीतकी. १० श्यामा पक्षी ११ कोचरी पक्षी। उ०—वांमो राजा रूपड़ो, दांहण रूपारेल। देवी वांमी साद दै, जद हालो वाढ़ेल।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढ़ेली री वात

१२ आर्या या गाहा छंद का भेद विशेष जिसके चारों चरणों में २१ गुरुवर्ण और १५ लघुवर्णों सहित ५७ मात्रा होती हैं (ल.पि.)

रू०भे०—दई, देउ, देवी, देवि।

देवक-वि० [सं० देवी+रा०प्र०क] देव करामात या चमत्कार वाला।

उ०—भींत फाड़ी दीसै नहीं ताहरां सारां ही मिळि नै कह्यो साहजी घोड़ी देवीक हुती। घोड़ी उपन गई। साहजी कह्यो खरी बात।

—चौबोली

देवीकवच-सं०पु०—एक प्रकार की तलवार।

देवीपुरांण-सं०पु०—एक पुराण जिसमें देवी के अवतारों की महिमा का वर्णन है।

देवी भागवत, देवी भागोत-सं०पु० [सं० देवी भागवत] एक पुराण जिसकी गणना बहुत से लोग उपपुराणों में और कुछ लोग पुराणों में करते हैं।

देवु—देखो 'देव' (रू.भे.) उ०—तेडीउ ए देवु मुरारि राउ दुरयोधनु आवीउ ए। इछीय ए दीजइं दांन बिंबप्रतिस्ठा नीपजं ए।

—पं.पं.च.

देवेन्द्र-वि० [सं०] देवताओं का राजा, इंद्र।

देवेस-सं०पु० [सं० देवेश] १ परमेश्वर। उ०—मिळयो ब्रह्म सूं ब्रह्म सो ध्यांन मायो। पमंगेस देवेस री तंत पायो।—पा.प्र.

२ महादेव. ३ विष्णु। उ०—फल कंदळी स्रीय स्वादे अफारा। छयं स्रेय बादांम पिस्ता छुहारा। सुधा साव नारंगियां रंग सोहै। महादेव देवेस मेवे विमोहै।—रा.रू.

४ देवताओं का राजा इन्द्र। उ०—१ मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजंगेस देवेस स्रब्वेस भेळा।—सू.प्र.

उ०—२ दूखण देखी देव नूं, दिसि दिसि गयु देवेस।—तव इंद्रांणी आंणती, हूं ती नधुख नरेश।—मा.कां.प्र.

देवेसय-सं०पु० [सं० देवेशय] १ विष्णु. २ परमेश्वर, ईश्वर।

देवेसी-सं०स्त्री० [सं० देवेशी] १ देवी. २ पार्वती, उमा।

देवेस्ट-सं०पु० [सं० देवेष्ट] गुग्गुल, महामेदा।

वि०—देवताओं का प्रिय।

देवैयो-वि०—देने वाला।

देवौकस-सं०पु० [सं० देवौकस्] देवताओं का स्थान, सुमेरु पर्वत।

देव्हर—देखो 'देवरौ' (रू.भे.)

देसंतर—देखो 'देसांतर' (रू.भे.) उ०—१ जस देसंतर जावही, रूपंतर बळहंत। काळंतर न कळीजणौ, जेहा तूं जाणंत।—वां.दा.

उ०—२ सज्जण देसंतर हुवा, जे दीसंता नित्त। नयणे तो वीसारिया, तूं मत विसरै चित्त।—ढो.मा.

उ०—३ जो जावै खह समर पंख धर पाछै जाओ। चित्त पयाळ चितवै, खोद कड्ढो ग्रह आओ। देसंतर ऊतरै, देसपत्ती संग बंधो। करै संघ जो कोय साह तिण प्रीत असंघो।—रा.रू.

देसंतरि, देसंतरी—१ देखो 'देसांतरी' (रू.भे.) उ०—१ जे पहिरइ

मुड़ राग्वी. गावड़ जवी जोगी कावड़ी। देसतरि पंगीना भाट, मन गमाणी मुह्ड़ वाट।—नो.दे प्र.

२ देखो 'देसावर' (रू.भे.) उ०—घर माहे हो जउ प्रगटयउ निधान तउ देसंतरि रहउ कुण भमउ। सोना कउ हों जउ पुरसउ सीध. तउ मानुवादि नउ कुण धमउ।—स.कु.

देस-सं०पु० [सं० देश] १ पृथ्वी का वह विभाग जिसका कोई अलग नाम हो और जिसमें बहुत से नगर, ग्राम आदि हों तथा प्राय: एक जाति व एक भाषा बोलने वाले लोग रहते हों, जनपद (अ.मा.)

पर्याय०—उपवरतन, खंड, जनपद, जनाद, विसयक, मंडळ, मुलक, रास्ट्र, विखय, हदवंत।

२ वह भूभाग जो एक राजा या शासक के अधीन हो।

उ०—धनरा पुरस आदेस, देस बचाय दयानिधे। वरणन करूं विसेस, मूहड़ नरेस प्रतापसी।—दुरसो आढ़ो

मुहा०—१ देस जिसोई भेस—जैसा देश वैसा भेष, जिस देश में रहा जाय वहां के नियमों का पालन करना चाहिए. २ देसी गधी, पूरबी चाल—देश में विदेशी चाल-ढाल को अपनाने वाले के लिये।

यौ०—देस-देसावर, देस-परदेस।

३ स्थान, जगह. ४ एक राग विशेष. ५ जैन शास्त्रानुसार चौथा पंचक जिसके द्वारा धर्मानुसंधानपूर्वक त स्या अर्थात् गुरु, जन, गुहा श्मशान और रुद्र की वृद्धि होती है. ६ किसी पदार्थ का एक भाग, खंड, अंश, हिस्सा (जैन)

अल्पा०—देसड़उ, देसड़लो, देसड़ी, देसड़ो, देसलड़ो।

देसकंत-सं०पु० [सं० देश+कान्त] राजा (अ.मा.)

देसकळी-सं०स्त्री० [सं० देशकली] एक रागिनी (संगीत)

देसकार-सं०पु० [सं० देशकार] सम्पूर्ण जाति का एक राग (संगीत)

देसकारी-सं०स्त्री० [सं० देशकारी] हनुमत के मत से मेघराग की पत्नी मानी जाने वाली एक रागिनी विशेष (संगीत)

देसगांधार-सं०पु० [सं० देशगांधार] सवेरे एक दंड से पांच दंड तक गाया जाने वाला एक राग (संगीत)

देसड़उ—देखो 'देस' (रू.भे.) उ०—बाबा वाळूं देसड़उ, जिहां डूंगर नहि कोइ। तिणि चढ़ि मूकउं धाहड़ी, हीयउ उरळउ होइ।—ढो.मा.

देसड़लो—देखो 'देस' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—थानो लागं छूं म्हारो देसड़लो ए लो क्यूंकर जाऊं परदेस, बाला जी ए लो।—लो.गी.

देसड़ी—देखो 'देस' (अल्पा., रू.भे.)

देसड़ो—देखो 'देस' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आज अणमणा हो रह्या जी, रह्यो के संदेसो आय। कै चित आयो थांरो देसड़ो जी, कै चित आया माई बाप।—लो.गी.

देस-चारित्र-सं०पु० यौ० [सं० देश चारित्र] श्रावक द्वारा किया जाने वाला आंशिक त्याग) (जैन) उ०—गुजरमलजी बोल्या चारित्र धारनमां स्यारत में नहीं हुवै तो नीलोतरी रा त्याग रो कांई काम (?) इनलै स्वामीजी पधारया। उणां रै मांहोमांहीं अड़वो देखनै जणो नेड़ो आयनै त्यांनै बात-चीत कर सकै नही तिणसूं दोई पा पासे बाजोट मेल दिया। पछै त्याग बतायनै दोयां नै स्वामीजी सम झाया। स्वामीजी कह्यो स्रावक में पांच चारित्र नहीं ते तेरी सा आतमा इज कहणी अनै त्याग नी अपेक्षा देस चारित्र कहियो। ए कही नै अड़वो मेटो।—भि.द्र.

वि० वि०—जैन शास्त्रों में इस प्रकार के त्याग के निम्न लिखि बारह भेद माने गये हैं यथा। (१) प्राणातिपात विरमण व्रत (२) स्थू मृषावाद विरमण व्रत (३) स्थूल अदत्त दान विरमण व्रत (४) मैथु विरमण व्रत (५) स्थूल परिग्रह विरमण व्रत (६) दिशा परिम व्रत (७) भोगोपभोग विरमण व्रत (८) अनर्थ दण्ड विरमण व्रत (९) सामयिक व्रत (१०) दिशावकाशिक व्रत (११) पौषधोपवास व्रत (१२) अतिथि संविभाग व्रत।

देसज-सं०पु० [सं० देशज] शब्द के तीन विभागों में से एक जो किसी प्रदेश में लोगों के बोल-चाल से यों ही उत्पन्न हो गया हो।

वि०—देश में उत्पन्न।

देसण, देसणा-सं०स्त्री० [सं० देशना] १ उपदेश (जैन)। उ०—धन्न ति पुरवर पट्टणइं, धन्न ति देस विचित्त। जिहिं विहरइ जिणवइ सुगुरु, देसण करइ पवित्त।—पष्टिशतक प्रकरण

२ व्याख्यान (जैन)। उ०—१ नव रस देसण वांणि अहे, घण जिम गाजइ ए गुहिर सरे। मयण दवानळ वारि अहे, नांणिहि जळि वरि सइ सुखरे।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—तिहां विहरता मांणिक सूरी, आविया आणंद पूरि। देसणा दिद्ध सनूरी, नीसुणइ भवियण भूरि।—ऐ.जै.का.सं.

रू०भे०—देसन, देसना।

देसणोक-सं०पु० [देश+नाक=स्वर्ग] यह बीकानेर से १६ मील दक्षिण में है। यहां इसी नाम का रेल्वे स्टेशन बना हुआ है और पास ही में बस्ती बसी हुई है। यहां श्री करणीजी का प्रसिद्ध मन्दिर है।

वि०वि०—दयाळदास सिढ़ायच के मत से देसणोक का अर्थ है देश का नाक। राठौड़ों से पहले यहां सांखलों का राज्य था। उन्होंने यहां पर विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में दो तालाब खुदवाए जो राजोळाव और अणखोळाव के नाम से प्रसिद्ध हैं। पहले यहां कोई बस्ती बसी हुई नहीं थी। यहां घास प्रचुर मात्रा में होती थी अत: सांखलों ने यहां चारागाह बना दिया और यहां उनके घोड़े रखे जाते थे जो समीप के दो तालाबों से पानी पीते थे। फिर यह स्थान राठौड़ों के पूर्वज राव चूंडा के अधिकार में आ गया और उसके पुत्र कान्हा ने भी इसे पूर्ववत् अपने घोड़ों के लिए चारागाह बनाये रखा। तत्पश्चात् श्री करणी जी ने, जो शक्ति का अवतार मानी जाती थीं, अपने रहने के लिए इसी स्थान को पसंद किया। राव कान्हा श्री करनीजी को यहां से निकालने के लिए उपस्थित हुआ तो दैव के कोप के कारण वहीं उसकी मृत्यु हो गई और रिड़मल जांगलू का स्वामी बना। श्री

करनीजी ने विक्रमी संवत् १४७६ मि० वैशाख शुक्ल द्वितिया, शनिवार को देसणोक नगर का शिलान्यास किया। इनकी मान्यता आसपास के गांवों में बहुत फैल चुकी थी, इसलिए इनके कई भक्त वहीं आ बसे। जब यह वस्ती एक गांव के रूप में आ गई तो एक दिन राव रिड़मल ने जोहड़ में पहुंच कर श्री करनीजी से प्रार्थना की कि यह गांव मेरे देश की ओट (पनाह) है इसलिए इसका नाम 'देश-ओट' रखिए। इस पर श्री करनीजी ने उत्तर दिया कि नहीं, यह देश का नाक है इसलिए इसका नाम 'देश नाक' रखती हूं। यही देशनाक शब्द विगड़ कर वीकानेर निवासियों के उच्चारण भेद के कारण पीछे से देसनोक— देसणोक बन गया। श्री करणीजी ने महाप्रयाण से एक वर्ष पूर्व लगभग १५० की आयु में वि० सं० १५९४ में अपने रहने के लिए यहां एक छोटा सा कोठा बनवाया जो गुम्भारा कहलाता है। वे इसमें बैठ कर ध्यान करती थीं। आज भी सहस्रों यात्री प्रतिवर्ष दर्शन के लिए आते हैं। बीकानेर नरेशों द्वारा गुम्भारे पर सुंदर मन्दिर बनवा दिया गया है। गुम्भारा में चूहे रहते हैं जो 'कावे' कहलाते हैं। इन्हें मारा या पकड़ा नहीं जाता है बल्कि इनके दाने-पानी की व्यवस्था की जाती है। ऐसा माना जाता है कि श्रीकरणीजी की सहायता से ही राव बीका ने बीकानेर राज्य की स्थापना की थी अतः बीकानेर महा-राजाओं में पीढ़ी दर पीढ़ी यह नियम चला आ रहा है कि वे अपने राज्य से बाहर जाने से पहले देसणोक जा कर श्री करणीजी का दर्शन करें।

रू०भे०—देसांण, देसांणो, देसणोक, देसांण।

देसणोकियौ–सं०पु०—देशणोक ग्राम का निवासी।

वि०—देशणोक संबंधी, देशणोक का।

देसथळी–सं०स्त्री० [सं० देश+स्थल] रेगिस्तानी प्रदेश।

उ०—हुवौ खळां थांणौ खळहांणौ। लेखा पखे सु घन लूटांणौ। देस-थळी प्रासरणौ दीधौ। लोड़ें डंड फळोधी लीधौ।—रा.रू.

देसधणी–सं०पु० [सं० देश+धनिक] राजा, नृप।

देसन, देसना—देखो 'देसण, देसणा' (रू.भे.) (जैन)

उ०—१ दांन सीअल तप भाव गुरु देसन करइ रे, तेहांना जे द्रस्टांत सहू ते उवरइ रे।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ प्रवचन वचन विस्तार अरथ तरवर घणा रे। कोकिल कांमिनी गीत गायइ स्त्री गुरु तणा रे। गाजइ गाजइ गगन गंभीर स्त्री पूज्यनी देसना रे। भवियण मोर चकोर थायइ सुभ वासना रे।
—कवि कुसळलाभ

देसनिकाळौ–सं०पु० [सं० देश+निष्कासनम्] देश से निकाल दिये जाने का दंड।

देसपत, देसपति, देसपती, देसपत्त, देसपत्ति, देसपह–सं०पु० [सं० देशपति, देश प्रभु] राजा, नृप (डि.को.) उ०—१ मेघह रौ तेग खरौ राजगती मोट मती। पाटपती देसपती राउ तणौ लखपती।—ल.पि.

उ०—२ मो कथ सखा धारि निज मनया। तूं इण देसपती री तनया।—सू.प्र.

देसभासा–सं०स्त्री० [सं० देश भाषा] १ वह भाषा जो किसी देश या प्रांत विशेष में ही बोली जाती हो. २ ७२ कलाओं में से एक कला।

देसभासाग्यांन–सं०पु० [देश भाषाज्ञान] १ प्राकृतिक बोलियों का जानना. २ ६४ कलाओं में से एक।

देसमंडप–सं०पु० [सं० देशमण्डप] राह पर लोगों के ठहरने का स्थान ? उ०—कोस्टाकार सत्राकार मठ विहार प्रपामंडप देसमंडप त्रिक चतुस्क चत्वर (व.स.)

देसमल्लार–सं०पु० [सं०] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

देसराज–सं०पु० [सं० देशराज] १ राजा, नृप. २ आल्हा व ऊदल के पिता का नाम जो राजा परमाल के सामंतों में थे।

देसलड़ौ—देखो देस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—नहिं भावै थांरौ देसलड़ौ रंगरूड़ौ। थांरै देसां में रांणा साध नहीं छै, लोग बसै सब कूड़ौ। नहिं भावै थांरौ देसड़लो रंगरूड़ो।—मीरां

देसवट, देसवटौ—देखो 'देसूंटौ' (रू.भे.)

उ०—माहरै इण कंवर रौ कांम नहीं, इण नै देसवटौ देस्यां।
—रीसाळू री वात

देसवरति–सं०स्त्री० [सं० देशविरति] हिंसा आदि का आंशिक त्याग, अणुव्रत (जैन) उ०—सरववरति न देवाय, देसवरति लीउ भाय। मुगति जसिउ सही ए, आ भवि केवळ लही ए।—प्राचीन फागु-संग्रह

रू०भे०—देसविरति।

देसवाळ–सं०पु० [सं० देश+आलुच्] स्वदेश का।

देसवाळी, देसवाळीपठांण–सं०स्त्री० [देश०] एक मुसलमान जाति जो पहले राजपूत थे।

देसवासी–वि० [सं०] एक ही देश में रहने वाला स्वदेशी।

उ०—आबादांन गांवां में किसांणां नै बसाया। उदकी भी यनांमी देसवासी चैन पाया।—शि.वं.

देसविरति—देखो 'देसवरति' (रू.भे.) उ०—महाध्वज, संघपतिता, चैत्यपरिपाटिका, परिधांमनिका, उद्यापन, सम्यक्त्वारोपण देसविरति प्रतिपत्ति।—व.स.

देसांण, देसांणौ—देखो 'देसणोक' (रू.भे.) उ०—१ जोय कटक नृप 'जैत' सहर देसांण सिधायौ।—मे.म.

उ०—२ भड़तां खुरसांण जकै दळ भागा, आयौ 'करण' तौ आळी ओट। वीकांणौ देसांणा वांसै, कम पलटै करनादे कोट।
—महाराजा करणसिंघ

देसांतर–सं०पु० [सं० देशांतर] १ ध्रुवों से होकर उत्तर दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्य रेखा से पूर्व व पश्चिम की दूरी, लंबांश।
—भूगोल

२ अन्य देश, विदेश। उ०—पाउल देउल रंग-भरि, देस देसांतर हांम। स्रिस्टा सरजाडि न कां, केलि करंतां कांम।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—देसंतर, देसंतरि, देसंतरी, देसांतरी।

देसांतरविसेस-सं०स्त्री०—७२ कलाओं में से एक (व.स.)

देसांतरी-वि० [सं० देशांतरित] १ विदेशी, परदेशी (ऊ.र.)

उ०—देस तणा देसांतरी, बहुआ पाउइ बूंद। सावलिया सघळा मिळ्या, माग मांहिला दूंद।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दिसांतरी' (रू.भे.)

३ देखो 'देसांतर' (रू.भे.)

देसाउर, देसाउरि—देखो 'दिसावर' (रू.भे.) उ०—मोर मलिक मार्‌या तिण मांही, इसी वात देसाउरि जाइ। ढीलां नवि वहमइ दीवांण, वाहरि मुहत न दीइ सुरतांण।—कां दे.प्र.

देसाखी-सं०स्त्री० [सं० देशाखी] वसन्त ऋतु के मध्यान्ह में गाई जाने वाली हनुमत के मत से एक रागिनी (संगीत)

देसाचार-सं०पु० [सं० देशाचार] देश की चाल या व्यवहार।

देसाटण-सं०पु० [सं० देशाटन] भिन्न भिन्न स्थानों एवं प्रदेशों की यात्रा, देश भ्रमण। उ०—हां मा वाप हमें कित हेरूं, पतो न लागो पूरो, जग में छोड गया कित जांमी, देसाटण कर दूरो।—ठाकुर फतैसिंघ

देसाधिप-सं०पु० [सं० देशाधिप] देश का स्वामी, राजा, नृप।

उ०—सयंवर मंडप मंडाउं, सहू देसाधिप तेडाउं। इण सरिखो जो वर पाउं, तो बेटी मैं परणाउं, हो लाल।—सीपाळ रास

देसाधिपति, देसाधिपत्ति-सं०पु० [सं० देश+अधिपति] देशपति, राजा, नृप। उ०—१ जांण चाल्यां री गणती कोण करि सकै। वडा देसाधिपति साथि होइ नै चाल्या।—वेलि. टी.

उ०—२ नवसहस जहुत नरवइ नरेस, देसाधिपति जांगळू देस। जिणि भोमि पट्ट पहविजइ चीर, मुणियइ धर जंगळ कासमीर।

—रा.ज.सी.

देसार-सं०स्त्री०—ढोली जाति की एक शाखा (मा.म.)।

देसालिक-सं०पु० [सं० दिशा+आलिक] दिशा-दर्शक, मार्ग-दर्शक (?)

उ०—कुटिकार चाटुकार उपानहधर खिगागधर स्थगतिधर चित्रक देसालिक मसूरिक अंककार।—व.स.

देसाळी-सं०स्त्री०—एक जाति विशेष (?)

उ०—पचोळी डवगर वावर फोफलिया फडहटिया फडिया लोगडिया सिगटिया भोई कंदोई देसाळी कलाळी गोळी गवाळ पसूयाळ राज-पात्र विद्यापात्र विनोद पात्र।—व.स.

देसि, देसी—१ देखो 'देस' (रू.भे.) उ०—पूगळ देस दुकाळ थियुं, किणही काळ विसेसि। फिगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवर चइ देसि।

—ढो.मा.

सं०पु०—२ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.) (अश्वचितामणि)

सं०स्त्री०—३ एक रागिनी (संगीत)

वि०—१ स्वदेश का, स्वदेश सम्बन्धी. २ स्वदेश में उत्पन्न या बना हुआ।

देसीगोखरू-सं०पु० [सं० देशीय+गोक्षुरक] जमीन पर फैलने वाली गोल कांटेदार बूंटी।

देसीलुहार-सं०पु० [सं० देशीय+लोहकार] लुहारों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

देसूंटो, देसोट, देसोटो-सं०पु० [सं० देशात्+उत्थानम्] देश से निकाल देने का दंड, देश-निकाला। उ०—१ बळवंत नळराजा आसिउ दीसइ? लोक तिहां वारत्ता करइ, देसोटुं दीइ भाइनइ तिहां राज्य अंत पुर हरइ।—नळ-दवदंती रास

उ०—२ राजपूतां नूं कह्यो—लाखां नूं देसोटो दियो छै।—नैणसी

उ०—३ तद इयै रांणी राजा नुं भलाय नैं कुंवर नुं देसोटो देरायो।

—चौबोली

रू०भे०—दिसाटो, दिसोटो, दीसोटो, देसवट, देसवटो, देसोटी, दैसोटो, दैसोटो।

देसोत-सं०पु० [सं० देशपति] १ देशपति, राजा।

उ०—है उत्तम गज मत्त, सुभट पण रत्त समेळा। देस देस देसोत, साथ कमधज्ज सचेळा।—रा.रू.

[सं० देश+पुत्र=देश+उत] २ राजपुत्र, राजकुमार।

उ०—अमरसिंह गजसिंहजी रै वडो कुंवर। सांचोर रा चहुवांणां रो दोहितो। सो गजसिंहजी री रजा नहीं। अमरसिंह निराठ सारी वात में अव्वल, वडो देसोत, मांटी-पणै री आंक।

—अमरसिंह राठौड़ री वात

३ जागीरदार, सामंत, सरदार. ४ 'राइका' जाति का वह व्यक्ति जो ऊंटों के झुंड के साथ रहता है।

वि०—१ वीर, योद्धा। उ०—आज बीड़ो झेलतां मिजाज गाळी भड़ां आंन, आदू रिड़मलां तणी संभाळी ऐसोत। पीढ़ियां वडाळी रीत स्यांम ध्रमी प्रीत पाळी, दादा वाप वाळी वातां उजाळी देसोत।

—ठा. महेसदास कूंपावत रो गीत

२ सुन्दर, रूपवान।

रू०भे०—दहसोत, देसौत, दैसोत, दैसौत।

अल्पा०—देसोतड़ो, देसौतड़ो, दैसोतड़ो, दैसौतड़ो।

देसोतड़ो—देखो 'देसोत' (अल्पा., रू.भे.)

देसोटो—देखो 'देसोटो' (रू.भे.)

देसौत—देखो 'देसोत' (रू.भे.) उ०—देसौत देस देसाधिपति, एम छत्र-पति ओळगै। पावै न माग दरबार पह, ईढ़दार भूपां अगै।—रा.रू.

देह-सं०स्त्री० [सं०] शरीर, तन (डि.को.)। उ०—१ जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ थावै देह। भाग हुवै तो भागवत, सांभळजै सत्र-णेह।—ह.र.

उ०—२ नहीं तो नार पुरख सनेह, नहीं तो दोरघ सुच्छम देह।

—ह.र.

उ०—३ विमळ देह सिवब्राह्मणी, ओपै कळा अखंड। वडां-वडी चहुं विम्मळा, महि पताळ नव खंड।—खेतसी बारहठ

मुहा०—१ देह छूटणी—मृत्यु होना, जीवन समाप्त होना.

२ देह छोडणी—मर जाना।

रू०भे०—दिह, देही, देहु।

अल्पा०—देहड़ली, देहड़ी, देहली, देहुडी।

देहकरण-सं०पु०—७२ कलाओं में से एक कला।

देहड़ली, देहड़ी—देखो 'देह' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ दूध दही खाया दूजां रा, दीपी देहड़ली। मरियां सूं सूंनी मिळ जासी, खूनी खेहड़ली।—ऊ.का.

उ०—२ सोवन वरणइ रे दीपइ देहड़ी, सुमनस सवित पाय सलूणा। —वि.कु.

देहचिंता-सं०स्त्री० [सं०] मल त्याग की इच्छा (?)

उ०—देहचिंता मिसि ऊठयउ, सुंदरी न मेल्हइ ते पूठउ। राग धरी नवि बोलइ, सूनइ चिति घरि डोलइ।—प्राचीन फागु-संग्रह

देहज-वि० [सं०] (स्त्री० देहजा) १ देह से उत्पन्न। उ०—उणमें मेह देहजा आई, किनियांणी जगदंब कहाई।—मे.म.

२ देह (शरीर) संबंधी।

देहतती-सं०पु० [सं० देहतत्वी] मनुष्य (अ.मा.)

देहत्याग-सं०पु०यौ० [सं०] मृत्यु, मौत।

देहधारक-वि० [सं०] शरीर धारण करने वाला।

देहधारण-सं०पु० [सं०] १ जन्म, उत्पत्ति. २ जीवन रक्षा।

देहधारी-वि० [सं० देहधारिन्] शरीर धारण करने वाला।

देहनायक-सं०पु० [सं०] देह का निर्माता, ब्रह्मा। उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुगविधायक। सरवजीव विस्व-क्रत ब्रह्म सू, नरवर हंस देहनायक।—वेलि.

देहयात्रा-सं०स्त्री० [सं०] १ भरण-पोषण, पालन. २ भोजन. ३ मृत्यु, मरण।

देहरइरउ, देहरउ—देखो 'देवरौ' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—भरत कराव्यउ भलउ देहरउ रे, सउ भाई ना थूंभ रे। आप सूरति सेवा करइ रे, जांणे जोइयइ ऊभ रे।—स.कु.

देहरांपंथी, देहरापंथी-वि० [सं० देवगृह+पथ] मंदिर-मार्गी, मूर्ति-पूजक।

देहरासर, देहरासरु-सं०पु० [सं० देवतावसर:] देवता का उत्सव (?)

उ०—रूपि रवि रोही रहइ, कोडि कळा जिम कांम। नीचूं जोतु नितु पुलइ, जिहां देहरासर-ठांम।—मा.कां.प्र.

देहरियौ—देखो 'देवरौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—बावन देहरियां जी, परि-दखणा परियां। वंदन त्रिण वरियां जी, धरम ध्यांनइ धरियां। —ध.व.ग्रं.

देहरी—देखो 'देहळी' (रू.भे.)। उ०—यहि आंगणां यहि देहरी, यही ससुर को गांव। दुलहण दुलहण टेरते, बुढ़िया पड़ग्यो नांव। —अज्ञात

देहरु, देहरू, देहरौ—देखो 'देवरौ' (रू.भे.) उ०—१ सहस आभरणां सारि करि, स्वांमी-केरी सेव। ललना लय मनि लेखवइ, ग्रे देहरु ग्रे देव!।—मा.कां.प्र.

उ०—२ लोक सगळां कन्हैं जीजिया लीजियैं, देहरा ठांम महिजीद दीसैं। थरहरै गाय इण राव इंद्रसी थकां, हियो इण राज सुं केम हीसैं।—ध.व.ग्रं.

देहळ—देखो 'देहळी' (मह. रू.भे.) (डिं.को.)

देहळी-सं०स्त्री० [सं० देहली] १ द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे होती है और जिसे लांघते हुए लोग भीतर घुसते हैं (डिं.को.)। उ०—दै घर री तज देहळी. पणघट सांमां पाय। वाजै घूघर पार विण, सोर सरोवर जाय।—बां.दा.

रू०भे०—डेळी, डेल्ही, डेहळी, देळी, देहरी।

मह०—डेळ, डेहळ, देहळ।

२ देखो 'देह' (अल्पा., रू.भे.)

देहवंत, देहवांन-वि० [सं०] देहधारी।

सं०पु०—शरीरधारी व्यक्ति, सजीव प्राणी।

देहांत-सं०पु० [सं०] मृत्यु, मौत।

देहांतर-सं०पु० [सं०] १ जन्मांतर, दूसरा शरीर. २ मरण, मृत्यु।

देहा—देखो 'देह' (रू.भे.)

उ०—देवी जक्खणी भक्खणी देव जोगी, देवी नम्मळा भोज भोगी निरोगी। देवी मात जांनेसुरी व्रन्न मेहा, देवी देव चांमुंड संख्याति देहा।—देवि.

देहाड़ौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

देहात-सं०स्त्री० [फा०] गांव, ग्राम।

रू०भे०—दिहात।

देहाती-वि० [फा० देहात+रा०प्र०ई] १ गांव का, ग्रामीण. २ गंवार।

रू०भे०—दिहाती।

देहातीपण, देहातीपणौ, देहातीपन-सं०पु० [फा० देहात+रा०प्र०पण, पणौ] १ ग्रामीण दशा. २ गँवारपन।

रू०भे०—दिहातीपण।

देहारी-वि० [सं० देह] देह संबंधी, शरीर का, दैहिक।

देहिका-सं०स्त्री० [सं०] एक प्रकार के कीड़े का नाम।

देही-सं०पु० [सं० देह] १ शरीरधारी प्राणी, देह को धारण करने वाला जीवात्मा. २ देवता. ३ दही. ४ देखो 'देह' (रू.भे.)

उ०—१ हाथ धोय बैठा साहिनें, साराइ खोइ सनेही। होय अनूप राख हुयगी वा, दोय घड़ी में देही।—ऊ.का.

उ०—२ वसन्न सु पीत देही घनवांन, किरीटी कुंडळ सोभै कांन। उभै कर दूण आवद्ध असंख, सारंग पदम्म गदा चक्र संख।—ह.र.

वि०—१ शरीर का, शरीर संबंधी. २ देने वाला, दाता।

देहीपंच-सं०पु० [सं० पंच देही] शरीर (अ.मा.)

देहु—देखो 'देह' (रू.भे.) उ०—१ पाहणि पाहणि आफळीउ, बाळ न दूमीउ देहु। पाहण सवि चूनउ हूयए, केवडु कउतिगु एहु।—पं.पं.च.

उ०—पति दगुह जुनूं एहु तूय सांमि सबळू देहु।—पं.पं.च.

देहुडी—देखो 'देह' (श्रल्पा., रू.भे.)

उ०—जीव-विना जिम देहुडी, वारि-विना जिम मच्छि। पुरुस-विना तिम पदमिनी, साचूं संभळि वच्छि।—मा.कां.प्र.

देहूरौ—देखो 'देवरौ' (रू.भे.) उ०—दादू हिंदू लागै देहुरै, मूसलमांन मसीति। हम लागै ग्रलेख सौं, सदा निरंतर प्रीति।—दादू बांणी

दैं'ण—देखो 'दैं'ण' (रू.भे.)

दैत, दैत्य—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) (डि.को.) उ०—१ चलै राजकुमार पिता चो सासण पाय सहल्लै। रांवण सहत घणां खळ राखस, दारुण दैत दहल्लै।—रा.रू.

उ०—२ भूप रघुवर, सभ्भत धनु सर। जूझ मंडै, दैत दंडै।—र.ज.प्र.

दैण-सं०स्त्री० [सं० दा] १ देने की क्रिया या भाव।

उ०—थे बिछड्यां म्हां कळपां प्रभुजी, म्हारो गयो सब चैन। मीरां रे प्रभु कब रे मिळोगे, दुख मेटण सुख दैण।—मीरां

यौ०—दैण-लैण।

२ प्रदत्त वस्तु, दी हुई वस्तु (डि.को.) ३ दान।

वि०—देने वाला। उ०—१ सोनागिर चांपावत हाथ खग तोलै। विसर्म मैं द्रढ दैण कोप दैण बोलै।—रा.रू.

उ०—२ भली यूं सांझ सुखां री दैण, दाझतै दिनड़ै री ठाडोळ। नींद री नणदल, सपनां सेज, परणती सरग परी री खोळ।—सांझ

दैं'ण-सं०स्त्री० [सं० दहन] १ दुख, कष्ट, पीड़ा.

२ जलन, परेशानी।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

रू०भे०—दहण।

दैणदार-वि० [सं० दा] १ देने वाला. २ ऋण चुकाने वाला, ऋणी, कर्जदार। उ०—खींवसर गांव में तो कांई पण पड़ोस रा गांवां में ई कोई मातवर करसो इसो नहीं हो के जो सेठां री दैणदार नहीं व्है।

—रातवासौ

दैणदारी-सं०स्त्री०—ऋणी होने की अवस्था।

दैण लैण-सं०पु०यौ०—महाजनी का वह व्यवसाय या व्यापार जिसमें व्याज पर रुपया उधार दिया जाता है।

दैणवर-सं०पु०—स्वामी कार्तिकेय (नां.मा.)

दैणायत, दैणायत-वि०—१ देने वाला. २ ऋण चुकाने वाला, ऋणी, कर्जदार। उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति जिण भांत लैणायत दीठां दैणायत घटै तिम तिणि भांति दिन दिन निसि दीठैं सूरज रो तेज घटण लागो।—रा.सा.सं.

दैणी-अव्य०—से। ज्यूं—भट दैणी, भड़ाक दैणी बंदूक छूटी।

मि०—दें' (३)।

दैणौ-वि० [सं० दा] (स्त्री० दैणी) देने वाला। उ०—१ लंका मार दसांणण लैणो। दांन भभीखण सेवग दैणो।—र.ज.प्र.

उ०—२ नाहरां नूं करै जेर जाहरां वनोद नैणी, प्रचा दोय राहरां नूं देर लैणी पेस। दली ईस जसा फेर नरां नूं उथाप दैणी, दीनानाथ सैणी वीसकरां नुं ग्रादेस।—सैणीजी री गीत

सं०पु०—ऋण, कर्ज। उ०—दैणो भलो न बाप रो, बेटो भलो न ग्रेक। पैंडो भलो न कोस रो, साहब राखै टेक।—ग्रग्यात

ज्यूं—ग्रबै थारै माथै कितरो दैणो है।

रू०भे०—देवणौ।

दैणौ, दैबौ-क्रि०स० [सं० दा] १ दूसरे के अधिकार में करना, किसी वस्तु पर से अपना स्वत्व हटा कर दूसरे का स्वत्व स्थापित करना।

ज्यूं—ए सारा ई बरतण बेटी रा दायजा में दे दीना है।

मुहा०—दियां रा देवळ चढै—देने वाले के देवल बनते हैं अर्थात् देने वाले की कीर्ति बढ़ती है।

२ किसी वस्तु को अपने पास से अलग कर के दूसरे के पास रखना, हवाले करना, सौंपना। ज्यूं—आ मोटर म्हे थानै इण सारू नी दी है के थे इण नै खराब कर देवो।

३ हाथ पर या पास रखना, थमाना. ४ प्रयुक्त या मिश्रित करना, स्थापित करना, लगाना। उ०—१ बाबहिया निल-पंखिया, वाढ़त दइ दइ लूण। प्रिय मेरा मइं प्रीउ की, तूं प्रिउ कहइ स कूण।

—ढो.मा.

उ०—२ देव किसी उपमा देऊं, तैं सिरज्या सह कोय। तूं सारिसो तुं हिज तूं, ग्रवर न दूजो कोय।—ह.र.

५ डालना, रखना। ज्यूं—कालै जज सा'ब दो मुजरिमां नै पांच-पांच वरस री जेळ देदी।

ज्यूं—थोड़ी देर कैदियां नै मिळवा दियां पछै जेलर सा'ब पाछा ग्रावतां ईज जेळ में दे दिया।

६ प्रहार करना, मारना। उ०—पर गढ़ लैणा रोप पग, ग्ररि सिर दैणा तोड़। धरा हूंत नहि धापणो, सूंडाळमां न खोड़।—बां.दा.

ज्यूं—लकड़ी री दैणी, थप्पड़ दैणी।

७ अनुभव कराना, भोगाना।

ज्यूं—दुख दैणो।

८ उत्पन्न करना, निकालना।

ज्यूं—ग्रबै म्हारी मुर्गियां ग्रंडा दैणा सरू कर देसी।

९ बन्द करना, भिड़ाना।

ज्यूं—ताळो दैणो, बोतल रो डाट दैणो, किवाड़ दैणो।

१० किसी क्रिया विशेष का करना। उ०—१ सो जिग चौकी दैण मनोभव साखियो। रूप नरेसुर ग्रापका, सीदी राखियो।—बां.दा.

उ०—२ कौ बांधव की दीकरा, हुकम दिए जो फेर। पातसाह जांनूं पकड़, चाढ़ गढ़ ग्वाळेर।—बां.दा.

उ०—३ ढोलइ सूवउ सीख दइ, जा पंछी ग्रह वास। उडियर पाछउ ग्रावियउ, माळवणी कइ पास।—ढो.मा.

दैणहार, हारौ (हारी), दैणियौ—वि०।

दिराड़णौ, दिराड़बौ, दिराणौ, दिराबौ, दिरावणौ, दिरावबौ, दिलाणौ,

दिलावौ, दैराड़णौ, दैराड़वौ, दैराणौ, दैरावौ, दैरावणौ, दैरावबौ —प्रे०रू०।
दियोड़ौ, दीदौ, दीधउं, दीधउ, दीधु, दीधू, दीधौ, दीनौ—भू०का०कृ०
दिरीजणौ, दिरीजवौ—कर्म वा०।
दीणौ, दीवौ, देवणौ, देववौ, द्यणौ, द्यवौ—रू०भे०।

दैत—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—लिधा तैं वार किता गढ़ लंक। संघारिय दैत मनाविय संक।—ह.र.

दैत-अरि—देखो 'दैत्यारि' (रू.भे.) (डि.नां.मा.)

दैतपत, दैतपति, दैतपती—देखो 'दैत्यपति' (रू.भे.)

दैतार-सं०पु० [सं० दैत्य+अरि] १ अर्जुन (अ मा.)
२ देखो 'दैत्यारि' (रू.भे.)

दैत्य-सं०पु० [सं०] १ कश्यप के वे पुत्र जो दिति नामक स्त्री से पैदा हुए, असुर।
पर्याय०—अदेव, असुर, उच्चातुर, करबुर, कोणप, जवन, जातधांन, तमचर, दतीसुत, दनुज, दांणव, देवानुज, नइत्ति, नरखयकार, निकसासुत, निसाचर, पूरवदेव, मेछ, राकस, रात्रिबळ, संभावळ, सुक्रसिस, सुरवंधु, सुररिप।
२ असाधारण बल वा लम्बे डील-डौल का मनुष्य.
३ दुराचारी, दुष्ट या नीच व्यक्ति।
रू०भे०—दइत, दइत्त, दईत, दयंत, दयत, दैंत, दैत्य, दैत।
मह०—दइत्यंद्र, दईतंद्र, देतर।

दैत्यगुरु-सं०पु० [सं०] शुक्राचार्य।

दैत्यजुग-सं०पु० [सं० दैत्ययुग] दैत्यों का युग जो देवताओं के बारह हजार बरसों या मनुष्यों के चार युगों के बराबर होता है।

दैत्यदेव-सं०पु० [सं०] १ दैत्यों के देवता. २ वायु.
३ वरुण।

दैत्यधूमिणि, दैत्यधूमिनी-सं०स्त्री० [सं० दैत्यधूमिनी] उलटी हथेलियों को मिला कर विशेष-विशेष उंगलियों को एक दूसरी से फँसा कर बनाई हुई तारादेवी की तांत्रिक उपासना की मुद्रा।

दैत्यपति-सं०पु० [सं०] १ रावण, दशानन।
उ०—सीता सती-सिरोमणी, रांम-घरणि राचंति। देखण-कारणि दैत्यपति, दस सर खोयां खंति।—मा.कां.प्र.
२ राजा बलि. ३ हरिण्यकश्यपु।
रू०भे०—दैतपत, दैतपति, दैतपती।

दैत्यमाता-सं०स्त्री० [सं० दैत्यमातृ] दैत्यों की माता, दिति।

दैत्यसेना-सं०स्त्री० [सं०] केशी राक्षस की प्रेमिका जो प्रजापति की कन्या और देवसेना की बहिन थी। केशी ने इसे हर कर व्याह लिया था।

दैत्यारि-सं०पु० [सं०] १ दैत्यों के शत्रु. २ देवता. ३ इंद्र.
४ विष्णु।
रू०भे०—दैत-अरि।
५ देखो 'दैतार' (रू.भे.)

दैत्येंद्र, दैत्येस-सं०पु० [सं० दैत्य+इंद्र, दैत्य+ईश] १ राजा बलि.
२ हरिण्यकश्यपु. ३ लंकापति रावण।
रू०भे०—दितेस।

दैधांण-सं०पु० [सं० उदधि+रा०प्र०आंण] समुद्र, सागर।
उ०—गुटकांण सीदांण विमांण तणी गत, नाव तिरांण दैधांण नूणौ। पुखरांण वेगांण प्रमांण पराछक, वात वसै विडंगांण भणौ।
—किसनजी दधवाड़ियौ

दैनकी—देखो 'दैनगी' (रू.भे.)
रू०भे०—ध्यांनगी।

दैनगण, दैनगणी-सं०स्त्री० [सं० दैनिक+रा०प्र०ण] मजदूरी लेकर दिन भर कार्य करने वाली स्त्री, वह स्त्री जो मजदूरी लेकर दिन भर कार्य करती हो।

दैनगियौ-सं०पु० [सं० दैनिक+रा०प्र०इयौ] (स्त्री० दैनगण, दैनगणी) मजदूरी के बदले में दिन भर कार्य करने वाला मनुष्य।
रू०भे०—ध्यांनगियौ।

दैनगी-सं०स्त्री० [सं० दैनिक+रा.प्र.ई] दिन भर के कार्य की मजदूरी।
उ०—जद वेगा-ई जासो घर दैनगी पूरी गिणासौ ?—वरसगांठ
रू०भे०—दिहांनगी, दैनकी।

दैन्य-सं०पु० [सं०] १ दीनता, दरिद्रता. २ अपने को तुच्छ समझने का भाव. ३ काव्य के संचारी भावों में से एक, कातरता।

दैवाड़णौ, दैवाड़वौ, दैवाडणौ, दैवाडवौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)
उ०—वहन दैवाडू देवकी। थारौ व्याह करूं गंगा कई पार।—वी.दे.
दैवाड़णहार, हारौ (हारी), दैवाड़णियौ—वि०।
दवाड़िओड़ौ, दवाड़ियोड़ौ, दैवाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।
दैवाड़ीजणौ, दैवाड़ीजवौ—कर्म वा०।

दैवाड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दैवाड़ियोड़ी)

दैवाणौ, दैवाबौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)
दैवाणहार, हारौ (हारी), दैवाणियौ—वि०।
दैवायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दैवाईजणौ, दैवाईजवौ—कर्म वा०।

दैवायोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दैवायोड़ी)

दैवावणौ, दैवावबौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)

दैव-सं०पु० [सं०] १ भाग्य, प्रारब्ध (डि.को.)
उ०—हई! हई! दैव किसूं करिउं ? रत्न उदाळिउ हत्थि। कालि किसूं कारण हतूं, आज अनेरी भत्ति।—मा.कां.प्र.
२ विधाता। उ०—दुरभागिन को हा दैव भयौ दुखदाई। घन पौल पहूंच्यौ घोरधूस ले धाई।—ऊ.का.
३ विष्णु. ४ योग में होने वाले पाँच प्रकार के विघ्नों में से एक
(योगी)

रू०भे०—दईव, देव।
वि० (स्त्री० देवी) १ देवता सम्बन्धी.
२ देवता के द्वारा होने वाला।
रू०भे०—दइ, दइवंत, दइव, दइवी, दई, दईव, दईय, दईव।
दैवगत, दैवगति—देखो 'देवगत, देवगति' (रू.भे.)
उ०—कांगुरां नहीं 'दुरगेस' रो 'अमंक्रन' 'पीयलो' चंडावळ नहीं पेखो। वांणियां तणो सारो हुवो वळोवळ, दैवगत राजगत भई देखो।
सुरतो योगसो
दैवग्य-सं०पु० [सं० देवज्ञ] ज्योतिषी।
दैवजोग—देखो 'देवजोग' (रू.भे.)
उ०—संवत १६१० रा वैसाख वद २ मेड़ता ऊपर रावजी आया। मेड़ते कुंडळ तळाव माथै जैमल रावजी सूं राड़ कीवी। जैमल वीरमदेवोत दैवजोग सूं जीतो।—बां.दा.ख्यात
दैवतपति-सं०पु० [सं०] इन्द्र (डि.को.)
दैवतीरथ-सं०पु० [सं० दैवतीर्थ] आचमन करने में उंगलियों के अग्र भाग का नाम, उंगलियों की नोंक।
दैववस-क्रि०वि० [सं० दैववश] संयोग से, कदाचित्, अकस्मात्।
दैववादी-सं०पु० [सं०] भाग्य के भरोसे रहने वाला, आलसी, निरुद्यमी
दैवविवाह-सं०पु० [सं०] स्मृतियों में लिखे आठ प्रकार के विवाहों में से एक।
दैव संजोग—देखो 'देव संजोग' (रू.भे.) उ०—इतरै दैवसंजोग सूं सेखरचन्द्र रांणी साथै द्वार मांहीं पैठै सो देवदत्त सूंड सूं उठाय कळस रो जळ उवां दोनां रै सिर पर गेरियो।—सिंघासण बत्तीसी
दैवांण—देखो 'दीवांण' (रू.भे.) उ०—अचांणक जड़ी अजड़ी कमळ ऊपरा, जठै पकड़ी छटा खड़हड़ी जांण। कोप करड़ी घणी हंस उडतां कंवर, दुसह घट कटारी जड़ी दैवांण।
—महाराजा बखतसिंह जी रो गीत
दैवाकारी-सं०स्त्री० [सं०] यमुना नदी।
दैवागति—देखो 'देवगत, देवगति' (रू.भे.)
दैवात्-क्रि०वि० [सं०] दैवयोग से, इत्तिफाक से, अचानक, अकस्मात्।
दैविच्छा-सं०स्त्री० [सं० दैव+इच्छा] १ भवितव्यता, होनी.
२ ईश्वर-इच्छा। उ०—हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हांणी। जग में दैविच्छा किणहीं नह जांणी। बादळ बीजळियां नभ में नहि नैड़ी। भेजी भगणायी भळकी पुळ भैड़ी।—ऊ.का.
दैवी-वि०स्त्री० [सं०] १ देवताओं द्वारा दी हुई, देवकृत.
ज्यूं—दैवीलीला. २ देवताओं से सम्बन्ध रखने वाली. ३ आकस्मिक, प्रारब्ध या संयोग से होने वाली।
ज्यूं—दैवी घटना. ४ सात्विक। ज्यूं—दैवी संपत्ति।
सं०स्त्री०—दैव विवाह द्वारा ब्याही हुई पत्नी।
दैवु—देखो 'दैव' (रू.भे.) उ०—दैवु न गिणई दैवु न गिणई पुण्यु नइ पापु।—पं.पं.च.

दैसत-सं०स्त्री० [फा० दहशत] भय, डर।
दैसांण—देखो 'देसणोक' (रू.भे.)
दैसाळिक—देखो 'देसाळिका' (रू.भे.)
उ०—स्यगिकाधर चित्रक दैसाळिक मसूरिक दीपवरतिक भोजिक सूपकार।—व.स.
दैसिक-सं०पु० [सं० देशिक] १ गुरु. २ उपदेशक. ३ राहगीर।
दैसोटौ—देखो 'देसोटो' (रू.भे.)
दैसोत—देखो 'देसोत' (रू.भे.) उ०—१ हिरदै ऊणा होत, सिर धूणा अकबर सदा। दिन दूणा दैसोत, पूणा हूं न प्रतापसी।
—दुरसो आढ़ो
उ०—२ वासी नरकां रा बिदर, ग्यासी रा गैसोत। सत्यानासी रा सुगुन, दासी रा दैसोत।—ऊ.का.
दैसौत—देखो 'देसोत' (डि.को.) (रू.भे.)
दैसौतड़ौ—देखो 'देसोत' (अल्पा., रू.भे.)
दौं, दौंकार, दौंकारि-सं०स्त्री० [अनु०] नगारे, तबले, मृदंग या ऐसे ही किसी अन्य वाद्य की ध्वनि। उ०—१ दौं दौं दौं दप मप द्राहिड़दिक दमके अदंग। भण रण रण भैं भैं भाभरि भमकित भंग।
—घ.व.ग्रं.
उ०—२ धां धां धपमु महुर म्रिदंग चचपट चचपट तालु सुरंग। कधुंगनि धोंगनि घुंगा नादि गाइं नागड दौं दौं सादि।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—३ वाजइ संदर सरणाइ, सुणतां स्रवणे सुखदाइ। वाजइ झालरि ना झणकार, पड़इ मादळ ना दौंकार। —कवि सीसार
उ०—४ भेरि तणै भांकारि, झल्लरी तणै भारकारि, संख तणै ओंकारइ, तिविल तणै दौंकारि, मादळ तणै धोंकारि।—व.स.
दौ-वि० [सं० द्वि] एक से एक अधिक, तीन से एक कम।
मुहा०—१ दो एक—कुछ, थोड़ा सा. २ दो कौडी रो—तुच्छ, नीच. ३ दो चार—कुछ, थोड़े से।
४ दो टूक जवाब देणो—भले-बुरे की परवाह किए बिना ही स्पष्ट कहना. ५ दो दिन रो—थोड़े समय का. ६ दो दांणा ई कोयनी—अक्ल नहीं होना, मूर्ख के लिये. ७ दो दिन रो मेहमांन—जल्दी मरने वाला, जल्दी ही कहीं जाने वाला।
रू०भे०—दोय, दोह।
सं०पु० [सं० द्यो] १ स्वर्ग. २ आकाश (अ.मा.)
यौ०—दोमिण।
३ वृषभ. ४ दैत्य. ५ स्त्रियों की कनपटी के ऊपर गूंथी जाने वाली बालों की गुच्छी, लट. ६ सिंह. ७ दान. ८ लिंग. ९ हाथ. १० पांव.
सं०स्त्री०—११ रात्रि (एका.) १२ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक (व.स.) १३ दो की संख्या।
दो'-सं०पु० [सं० दोष] मनौती न मनाने से या अन्य कारण से किसी

देवता का कुपित होकर पैदा किया जाने वाला विकार या बाधा। (एका.)

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

रू०भे०—दोस, दोह।

दोग्रांनी–सं०स्त्री० [सं० द्वि+ग्राणक] एक रुपये के आठवें भाग का सिक्का।

दोइ—देखो 'दोई' (रू भे.) उ०—तीड रौ सलख कुळ चाढ़ तोइ। दन खगां विरद ग्रजवाळ दोइ।—सू.प्र.

दोइण—देखो 'दुरजरा' (रू.भे.) उ०—दळ भंजे डेरा फुरळि, गमी दखणी दहवाट। 'गज' केसरी ध्रांसाड़ियौ, दोइणां वाळ दाट। —गु.रू.बं.

दोइतरी—देखो 'दोहिती' (रू.भे.) उ०—ग्रा मळकी सिद्धपुख रै कस्बै कंवरपाळ री दोइतरी छै।—द दा.

दोइतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दोइतरी)

दोइती—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोइतौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दोइती)

दोई–वि० [सं० द्वि] १ दोनों।
उ०—देखै सेद ममथ पथ दोई। सुणि सुणि ग्रचरज थया सकोइ। —रा.रू.

२ तीन से एक कम, द्वि, दो। उ०—दोई पहर रात कैसे कटेगी! —चौबोली

दोईतरी—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोईतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दोईतरी)

दोईति—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोईतौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दोईती)

दोईत्री—देखो 'दोहिती' (रू भे.)

दोईत्रौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे)
(स्त्री० दोईत्री)

दोईरद–सं०पु० [सं० द्विरद] हाथी (ह.नां.)

दोऊ, दोऊ–वि० [सं० द्वि] दोनों।

दोकड़ौ–सं०पु०—एक रुपये के सौ वें अंश के मूल्य का एक प्रकार का प्राचीन सिक्का। उ०—विरद पुंज ग्रण वीह 'गोइंद' विया, दिल कहै न धारू देण हिक दोकड़ौ।—ग्रज्ञात

दोकद–सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

दोकी–सं०स्त्री० [सं० द्वि] १ विद्यार्थी का गुरु के पास से दो उंगली उठा कर शौच जाने की छुट्टी मांगने की क्रिया या भाव.
२ दो की संख्या।

वि०—दो।

दोखंभा–सं०पु० [सं० द्वि+स्तम्भ] एक प्रकार का नैचा जिसमें कुल्फी नहीं होती, यह नैचा काट कर लोहे की कमानी पर बनाया जाता है।

दोख–सं०पु० [सं० दोष] १ कोप, गुस्सा, क्रोध।
उ०—जे तूं जीवतौ छै तौ तूं म्हारौ वैर लेईस। ग्रर ग्रै रजपूत नीसरिया छै तियां सूं दोख मतां राखै।—नैणसी

२ देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—नमौ मधुसूदण देवण मोख। नमौ दत देव विडारण दोख। नमौ प्रहळाद उतारण पार। नमौ हर संकट मेटणहार।—ह.र.

दोखण—१ देखो 'दूसण' (रू.भे.)
उ०—इण दोखण नृप नह ग्रादरसी। भावि साखि मुनिंद तद भरसी। —सू.प्र.

२ देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—नह व्है जात पित नांम हीण दोखण सो कहियै। वरण होय विसुद निनंग दोखण ते नहियै।—र.ज.प्र.

दोखादोगंदक, दोगंधक–सं०पु० [सं० दौगुन्दुक] ग्रतिशय रति क्रीड़ा करने वाली एक देव जाति। उ०—१ दोगंदक नी परइ, सही सगळा संजोग। निज प्रीतम साथइ सदा, विलसइ नव नव भोग। —कवि स्रीसार

उ०—२ राति दिवस भीनौ रहै, पदमणि स्युं बहु प्रेम रे रंग रसिया, पंच विसय सुख भोगवै रे, दोगंधक सुर जेम रे रंग रसिया। —प.च.चौ.

दोखियौ—देखो 'दोखी' (रू.भे.)

दोखी, दोखीलौ–वि० [सं० दोषिन्] १ शत्रु, दुश्मन (डि.को.)
उ०—सिर ऊपर दोखी जम सिरखा। नांम सिमर रणछोड़ नृप। (ह.नां)

२ देखो 'दोसी' (रू.भे.)

रू०भे—दोहगी।

दोखौ—देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—प्राग जाय जळ पैस, चित्त ऊजळ कर चोखा। वळै मेट ग्रभ-वास, काट सब दुक्रत दोखा।—ज.खि.

दोगड़—१ देखो 'दोघड़' (रू.भे.)
२ विचार।

दोगणौ—देखो 'दुगणौ' (रू.भे.)
उ०—व्यांवां घर दोगण दियणा, सुरधर में माटी तणा।—दसदेव

दोगलौ–सं०पु० [फा० दो+गुल्ला] (स्त्री० दोगली) १ वह प्राणी जिसके माता पिता भिन्न जाति के हों।
२ वह व्यक्ति जो ग्रपनी माता के यार से उत्पन्न हो, जारज।

दोगी–सं०स्त्री०—[देश०] १ नार कंकरी नामक एक देशी खेल की चाल विशेष. २ पीड़ा, दर्द, कष्ट. ३ संकट, ग्रापत्ति. ४ दुविधा. ५
उ०—भूमि मांझ घसगो जस भोगी। साच सु हस्ती ससकै सोगी। दांन ऊंट रै लागी दोगी। जांण ग्रजांण सोई थाकौ जोगी।—ऊ.का.
६ शत्रु, दुश्मन.

दोवड़-सं०पु० [सं० द्वि+पटः] १ सिर पर एक साथ उठाये जाने वाले दो जल-पात्र या कलश। उ०—म्हारा राजीड़ा री छिन छिन ग्रोळूं ग्रावै। ले दोवड़ जद पणघट जाऊं, साजन री सुध ग्रावै।—लो.गी.
[सं० द्वि+घट्ट] २ दुहरी उथल-पुथल, चिन्ता, उचाट।
रू०भे०—दोगड़।

दोघड़ो-वि० [सं० द्वि+घट्ट] चिंतित, उदास, खिन्न। उ०—ग्राद्र तिवार में सुगन ग्रो देख ग्रमल बिन दोघड़ा। ग्रा रसम फंसाई ग्रमलियां तार न सोचै टोवड़ा।—ऊ.का.

दोघणो-सं०पु०—बुरा, ग्रहित। उ०—सु राजि जीवतां कुंग्रर स्री भोपति कुंवर स्री दळपतजी री काइ दोघणो कियो हुतो।
—द.वि.

दोट-सं०पु० [सं० द्वि पट] सूत का बना हुग्रा मजबूत दुहरा वस्त्र।

दोचोलट, दोचौलट-सं०स्त्री० [देश०] ग्राभूषणों की खुदाई में जाली काट नेका एक लोहे का ग्रोजार।

दोज—देखो 'दूज' (रू.भे.)
उ०—ललाट दोज चंद मोज की मिलंदनी। नमांमि मात 'इंदरा' 'समंद' नंदनी।—मे.म.

दोजक—देखो 'दोजख' (रू.भे.)
उ०—नहिं बोलां तौ नीच, जो बोलां निलजा जपै। बसणौ दोजक बीच, जग हसणौ बाकी 'जसा'।—ऊ.का.

दोजकी—देखो 'दोजखी' (रू.भे.)

दोजख-सं०पु० [फा० दोजख] १ इस्लाम धर्म के ग्रनुसार पापी, दुरात्मा मनुष्यों को मिलने वाला स्थान, नरक। इसके सात विभाग माने जाते हैं। उ०—लख लख भख मारै सुख ह्वै किण लेखै। दुसमीं दळियै रा दोजख दुख देखै। कंठी कंठां में चंदण री काळी। गुरुपद वंदण री मूंढै में गाळी।—ऊ.का.
२ दुःख, कष्ट।
रू०भे०—दोजक, दोजग, दोजिक, दोजिग।

दोजखी-वि० [फा० दोजखी ग्रथवा सं० जक्ष भक्ष-हसनयो=दुर्जक्षी] १ पापी, दुरात्मा. २ दुखी।
रू०भे०—दोजकी, दोजगी।

दोजग—देखो 'दोजख' (रू.भे.)
उ०—१ ग्रागळ सुरग कपाट ग्रघ, दोजग ग्रगुग्रो देख। संपत लता कुठार सम, विपत लता घण वेख।—बां.दा.
उ०—२ ज्यां हुंदा क्रत जोय, दोजग नह वासो दियौ। ते न्हावै तुव तोय, जोत समावै जहांनमी।—बां.दा.
उ०—३ सुत भीम भीम भुजबळ सप्रांण, भाटी दळ हरवळ इंद्रभांण। संग 'हरी' निडर 'मधकर' सुजाव, रिण पण हजार दोजग दुराव।
—रा.रू.

दोजगी—देखो 'दोजखी' (रू.भे.)
उ०—सोडि विचि सूडजै तापिजै सिगडिए, सबळ सी मांहि पिण सद्रब नीरा। एतिण वार में पांणती ग्रोजगी, दोजगी भरै निस दिवस दोरा।—घ.व.ग्रं.

दोजांणो—देखो 'दोजो' (२, ३) रू.भे.)

दोजिक, दोजिग—देखो 'दोजख' (रू.भे.)
उ०—दरबार दोजिग गरक गुरमां, मनो मारै मोर। महर का मकसूद एही, पडद पोसै पीर।—ह.पु.वा.

दोजियायती, दोजीवायती, दोजीवाती, दोजोवायती-सं०स्त्री० [सं० द्विजीवा] वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भवती स्त्री।

दोजो-सं०पु० [सं० दोग्ध] १ दूध देने वाले मादा पशु का स्तन. २ दूध व दूध से मिलने वाले पदार्थ. ३ दूध देने वाले पशु।
रू०भे०—दोजांणो, दोझांणो।

दोझांणो—देखो 'दोजो' (१, २) (रू.भे.)

दोझाल-वि० [सं० द्वि+रा० झाल] १ वीर, योद्धा, बहादुर. २ क्रुद्ध, कुपित।

दोझो—देखो 'दोजो' (रू.भे.)

दोट-सं०पु० [सं० धाव्] १ ग्रांधी, तूफान. २ हवा का झोंका, बवंडर. ३ टक्कर, प्रहार, चोट, ग्राघात, वार।
उ०—सत्र लोट पोट उडि दोट, धजर चोट खग धोहड़ां। नवकोट छ खड वागा निडर, लालकोट मझि लोहड़ां।—सू.प्र.
४ ठोकर, ठेस. ५ ग्राघात का प्रभाव, मार, घाव. ६ मवेशी. ७ मूर्ख, नासमझ. ८ बाल, केश।
९ ग्राक्रमण, हमला। उ०—कुळ री बार में भड़ां भली ग्रछेहरी कीधी, दीधी झाट जंगां ज्यों केहरी गजां दोट। गाढ़ै मत्तै खाग दंडां भुदंडां जेहरी कीधी, चाळागारां खेलियौ तेहरी की सी चोट।
—डूंगजी री गीत
१० मानसिक व्यथा, शोक, संताप. ११ समूह, गुबार।
उ०—हिंदूतल्ला कांनी सूं एक भीड़ ग्रांधी री दोट ज्हे ज्यूं ऊठी ग्रर मुसळमांन संभळ्या संभळ्या जितरै तो भींडी बजार में जाय धमकी। ग्रादमी, लुगाई, छोरी-छावरो जिको ग्रागै चढयो उण नै काट'र फेंक दियो।—रातवासो
[सं० धाव] १२ दौड़ने की क्रिया या भाव।
उ०—तव राजा कठिण ग्रति थयु, सूती नारी त्यजिनि गयु। तिहां थकी तां दीधी दोट, वळती (कांइ नवि वाळी) कोट।—नळाख्यांन
ग्रल्पा०—दोटियो, दोटी।
१३ देखो 'दोटी' (मह., रू.भे.) उ०—दड़ी दोट ज्यों मारियै, तिहूं लोक में फेरि। धुर पहुंचे संतोख है, दादू चढ़वा मेरि।—दादू वांणी

दोटणो, दोटबो-क्रि०स० [सं० धाव] १ पैरों के नीचे कुचलना, रौंदना। उ०—दुरद पगां दोटीह, तैं टोटी इण वखत में। मुरधर री मांटीह, ग्रवट 'पता' खताय दी।—जुगतीदांन देथो
२ संहार करना, मारना. ३ ठोकर लगाना, ठुकराना. ४ गेंद के बल्ले की चोट मारना. ५ दवाना. ६ दौड़ना, भागना. ७ वेग

के साथ उछाल मारते हुए बहना, वेग से ऊपर उठना और गिरना।
उ०—घण जांमूंनां-कुंज दोटती रेवा दौड़ै। गज-मद गंधे नीर मेघ थूं पीनां छोडै।—मेघ.
दोटणहार, हारौ (हारी), दोटणियौ—वि०।
दोटवाड़णौ, दोटवाड़बौ, दोटवाणौ, दोटवावौ, दोटवावणौ, दोटवावबौ, दोटाड़णौ, दोटाड़बौ, दोटाणौ, दोटाबौ, दोटावणौ, दोटावबौ—प्रे०रू०।
दोटिश्रोड़ो, दोटियोड़ौ, दोटचोड़ौ—भू०का०कृ०।
दोटीजणौ, दोटीजबौ—कर्म वा०।

दोटियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ पैरों के नीचे कुचला हुआ, रौंदा हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ ठोकर लगाया हुआ, ठुकराया हुआ. ४ गेंद के बल्ले की चोट मारा हुआ. ५ दबाया हुआ. ६ दौड़ा हुआ, भागा हुआ।
(स्त्री० दोटियोड़ी)

दोटियौ—१ देखो 'दोट' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दोटी' (अल्पा., रू.भे.)
३ देखो 'दोटौ' (अल्पा., रू.भे.)

दोटी—सं०स्त्री० [सं० द्विपटी] १ कपड़े, रबड़ या चमड़े का गोला जिससे लड़के खेलते हैं. २ एक प्रकार का वस्त्र (व.स.)
अल्पा०—दोटियौ।
मह०—दोट, दोटौ।

दोटौ—सं०पु० [देश०] १ दहलीज के ऊपर की लकड़ी जिसे लांघ कर मकान के भीतर या बाहर जाया जाता है।
उ०—त्रिगया रमैं आवता मारग, देखत ऊभी दोटैं। आज कुलंग भ्रमण तिण ऊपर, लाग जिनावर लोटैं। रे रंग खोटे रे रंग खोटे, किण विध कीजियै।—र.रू.
२ वायु का बवंडर, झोंका। उ०—पवन रो एक दोट आयौ अर उण रौ मूंडो भींजग्यौ। वो बैठौ व्हैग्यौ अर राली काठी लपेट ली। —रातवासौ
३ गेंद पर बल्ले का प्रहार।
मुहा०—दोटा देणा—इधर-उधर घूमना। किसी विषय में पूर्ण जानकारी न होने पर भी काल्पनिक उड़ान भरना, गप्प हांकना।
अल्पा०—दोटियौ।
मह०—दोट।
४ देखो 'दोट' (अल्पा., रू.भे.)
५ देखो 'दोटी' (मह., रू.भे.)
वि०—नाश करने वाला, संहार करने वाला।
उ०—ऐ' णै छकोटा तन सुजस, रिम दोटा सुर रंज। धन राघव मोटा धणी, भव जन तोटा भंज।—र.ज.प्र.

दोठौ—सं०पु० [देश०] एक प्रकार का खाद्य पदार्थ, व्यञ्जन विशेष।
उ०—१ अथ पक्वांन, सातपड़ा खाजां, घुवडां खाजां, एक वडां खाजां, फीणी खांड गळी खाजली, दोठां घारा, घेवर।—व.स.
उ०—२ निज-निज वरण रे वस्त्रादिक ठवै, नवपद तणी समेळि। खाजा दोठा रे नुकती लाडुआ. भाभी साकर भेळि।—स्रीपाळ रास

दोडंगौ—सं०पु०—एक प्रकार का फल विशेष (व.स.)

दोणकियौ, दोणकौ—सं०पु० [देश०] (स्त्री० दोणकी) १ वह मिट्टी का पात्र जो मृतक के द्वादशे पर काम आता है।
वि०वि०—यह संख्या में बारह होते हैं। छः माह के संस्कार पर इनकी संख्या छः होती है।
२ देखो 'दोणियौ' (रू.भे.)

दोणातार—सं०पु० [देश०] आभूषणों की खुदाई के काम में तार पर नन्हे-नन्हे दाने खोदने का एक औजार।

दोणियौ—वि०—दुहने का कार्य करने वाला, दुहने वाला.
सं०पु०—दूध दुहने का पात्र।
रू०भे०—दोणकौ।
अल्पा०—दोणकियौ।

दोणौ, दोबौ—देखो 'दूवणौ, दूवबौ' (रू.भे.)
दोणहार, हारौ (हारी), दोणियौ—वि०।
दोयोड़ौ—भू०का०कृ०।
दोईजणौ, दोईजबौ—कर्म वा०।

दोत—१ देखो 'दवात' (रू.भे.) उ०—जन हरिदास अवगति अगम, जहां भ्रांति नहि छोत। हम बात तहां की लिखत है, कर लेखणि विन दोत।—ह.पु.वा.
२ देखो 'दूज' (रू.भे.) उ०—दोत घरि आव्यौ वीसळराई। राई भतीजी सांमही जाई।—बी.दे.

दोतड—सं०पु० [सं० द्वि+तट] दुहरा, दुविधा (?) उ०—पडियौ राय विचारणा, अजुगति वात सुणाई रे। किम ही दुरस पडे नहीं, दोतड पडियौ भाई रे।—स्रीपाळ रास

दोतडि—सं०स्त्री० [सं० दुस्तटी] दुष्ट नदी (?) उ०—जिसा मरुदेसि कूप जळ, जिसी सिला उच्च सरळ तिसी आंगुळी विरळ, जिसा तालव्रिक्ष तरळ तिसिउ जंघा युगळ, जिसी परवत तणी दोतडि, इसी मोटी कडो, इसिउ पिसाच।—व.स.

दोति—देखो 'दवात' (रू.भे.) उ०—वळि लिखेवा लेखवउं, रोवउं ह्रदय न माय। कागळ लेखणि दोति पणि, त्रहिण्ये गयां तणाय। —मा.कां.प्र.

दोदौ—देखो 'दूध' (२) (अल्पा., रू.भे.)

दोधक—सं०पु० [सं०] १ एक वर्णवृत्त जिसमें तीन भगण और अंत में दो गुरु वर्ण होते हैं (र.ज.प्र.)
२ चार भगण युक्त १६ मात्रा तथा बारह वर्ण का छंद विशेष.

दोधार—देखो 'दुधार' (रू.भे.)

दोधारी—सं०स्त्री०—१ सोने चांदी के आभूषणों पर जौ की खुदाई का एक लोह का औजार। २ देखो 'दुधारी' (रू.भे.)

दोधारी—देखो 'दुधार' (अल्पा., रू.भे.)
दोधी-संपु० [देश०] १ एक प्रकार का बरसाती पौधा जिसके पत्ते आदि में दूध निकलता है। इसके फल को 'खोरड़ो' कहते हैं।
२ देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)
दोन—देखो 'दोनौ' (रू.भे.)
दोनव—देखो 'दानव' (रू.भे.)
उ०—गांम कांम में सधीर, मूरू के सहायक, दोनवूं के दावागीर, दिलपाकूं के दोमत।—र.रू.
दोनां—देखो 'दोनौं' (रू.भे.)
दोनाळी—देखो 'दुनाळी' (रू.भे.)
उ०—बिढवा हांम गूजरां वाळो, निरखे भूप रूप दोनाळी।—रा.रू.
दोनुं, दोनूं, दोनू, दोनौं-वि० [सं० द्वि] उभय, दोनों।
उ०—१ दोनुं मिळ भेळा हूवा, 'आसो' नै 'रिडमल्ल'।—रा.रू.
उ०—२ ढोलइ मनह विमासियउ, सांच कहइ छइ एह। करइ फेंकि दोनूं चढ्या, कूंट न संभाळेह।—ढो.मा
उ०—३ माथै लिया अजीमसा, दक्खण गयौ नवाब। भळियो दोनूं देस री, खांन इनायत जाब।—रा.रू.
रू०भे०—दोन, दोनां, दोनो, दोन्यां, दोन्यु, दोन्यूं, दोनौं, दोनौ।
दोनौ-संपु० [देश०] १ कलंक, दोष। उ०—सवारै फूल चढ़ण लागो। तरै इण जमला अहीर री वेटी अरज कीधी—"म्हारै पेट थांहरो कारण रह्यो छै। मोनूं हेक रावळै हाथ री सहनांणी द्यौ, सवारै लोग म्हारै माथै दोनौ देसी।" तरै फूल आपरै हाथ री मूंदड़ी दीनी नै लिखत कर दियो।—नैणसी
२ देखो 'दूनौ' (रू.भे.). ३ देखो 'दोनौं' (रू.भे.)
उ०—पाय हुकम पागड़ै, पाव दीधो छत्रपत्ती। भरव दोनौ भेजि; सकति तेडी त्रिसकत्ती।—मे.म.
दोन्यां—१ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)
२ देखो 'दोनौं' (रू.भे.)
उ०—फेरयो दोय वारी भूप दोन्यां की लड़ाई। तीनूं वार ही में राव सेखो जैत पाई।—शि.वं.
दोन्युं, दोन्यूं—देखो 'दोनौं' (रू.भे.)
उ०—मन मांही संके सुभट, पदमणि दीधी राय। जो छूटै नहिं तो रखै, दोन्युं स्वारथ जाय।—प.च.चौ.
दोपइ-संस्त्री० [सं०] प्रत्येक चरण में १५ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।—पि.प्र.
दोपहर-संस्त्री० [सं० द्वि+प्रहर] सूर्योदय व सूर्यास्त के मध्य का समय, मध्यान्ह। उ०—म्हे दोपहरां पहले थां कन्है आवस्यां यूं कहि वहिर हुवौ।—कुंवरसी सांखला री वारता
रू०भे०—दुपहर, दुपहरी, दुपार, दुपेरी, दुपैरी, दोपहरी, दोपार, दोपारी, दोपाहर, दोपैर, दोफार, दोफारी, दौफार।
दोपहरियो—देखो 'दोपारियो' (रू.भे.)
दोपहरी—१ देखो 'दोपहर' (रू.भे.)
२ देखो 'दोपारी' (रू.भे.)
दोपार—देखो 'दोपहर' (रू.भे.)
उ०—परभातै मेह डंबरां, दोपारांह तपंत। रात्यूं तारा निरमळा, चेला! करो गच्छंत।—वर्षा विज्ञान
दोपारियो-संपु० [सं० द्वि+प्रहर+रा०प्र०यो] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसके फूल दुपहर के समय खिलते हैं।
२ देखो 'दोपारी' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—दुपहरियो, दोपहरियो।
दोपारी-संस्त्री० [सं० द्वि+प्रहर+रा०प्र०ई] १ मध्यान्ह का जलपान, प्रातः भोजन के पश्चात् मध्यान्ह में किया जाने वाला भोजन।
रू०भे०—दुपहरी, दुपारी, दुपेरी, दुपैरी।
२ देखो 'दोपहर' (रू.भे.)
दोपारौ-संपु० [सं० द्वि+प्रहर+रा०प्र०औ] प्रातःकाल भोजन करने के पश्चात् मध्यान्ह में किया जाने वाला हलका भोजन।
रू०भे०—दुपारौ, दुपेरौ, दुपैरौ, दोपैरौ, दोफारौ।
दोपाहर, दोपैर—देखो 'दोपहर' (रू.भे.)
उ०—१ सु दोपाहरै रौ हमीर पड़वै मांहे सूतो छै, तठै रावळ आय नै पग चांपण लागो।—नैणसी
उ०—२ अरावे आगै दाव लागै नहीं सो दोपैरां पाछा टेरां आता पाछै दिन पांच दस अरावै री राड़ जाय कीन्हीं।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
दोपैरौ—देखो 'दोपारौ' (रू.भे.)
दोप्याजौ—देखो 'दुप्याजौ' (रू.भे.)
दोफसळी—देखो 'दुफसळी' (रू.भे.)
दोफारी—देखो 'दोपारी' (रू.भे.)
दोफारौ—देखो 'दोपारौ' (रू.भे.)
दोब-संस्त्री० [सं० दूर्वा] बहुत प्रसिद्ध एक प्रकार की घास जो पश्चिमी पंजाब के थोड़े से रेतीले भाग को छोड़ कर सम्पूर्ण भारतवर्ष में होती है। हिंदू इसको मांगलिक द्रव्य मानते हैं तथा लक्ष्मी पूजन आदि में इसका उपयोग करते हैं। उ०—सोनो देसां सोळमो वाई देसां ए गज मोतियां रो हार। वधजो कड़वा नीम ज्यूं वीरा वधज्यो ओ हरियाळी री दोब।—लो.गी.
पर्या०—अनंता, दूरबा, रुह, सतपरवीका, हरिनाळी।
रू०भे०—दुरवा, दूब, दोभ, द्रोब, धोब, ध्रोब।
अल्पा०—दूबड़ी, दूबळती, दूभड़ी, दोबड़ी, दोभड़ी, द्रोबड़ी।
मह०—दूबड़, दोबड़, दोभड़, द्रोबड़।
दोबड़—देखो 'दोब' (मह., रू.भे.)
दोबड़ी—देखो 'दोब' (अल्पा., रू.भे.)
दो री—देखो 'दूबारौ' (रू.भे.)
दोबैं-संपु०—शिकार करने या डाका मारने के हेतु छिप कर बैठने का कार्य।

दोवंत—देखो 'दवावंत' (रू.भे.)

उ०—देवंतां दूहा सहित, चीठी एक उपाय ।—प.च.चौ.

दोभ—देखो 'दोव' (रू.भे.) (डि.को.)

दोभड़ी—देखो 'दोव' (अल्पा., रू.भे.)

दोभाग-सं०पु० [सं० दुर्भाग्य] मंद भाग्य, खोटी किस्मत ।

उ०—विद्वांस निरधन हुइ, कमळ कंटकी जोइ रे । दोभाग-पणउ रूपवंत नइ, कळपव्रक्ष कास्ट सोइ रे ।—नळ दवदंती रास

दोभो-वि०—ढीले शरीर वाला, सुस्त । उ०—ओछा कुळ में ऊपना, दोभा डावड़ियांह । हवळ बोलै होट में, मूरख मावड़ियांह ।—बां.दा.

दोमंजलो, दोमंजिलो-वि० [सं० द्वि०+फा० मंजिल] दो खंड का, दो मरातिब का ।

रू०भे०—दुमंजलो, दुमंजिलो ।

दोमज, दोमजि, दोमझि-सं०पु० [सं० द्वि+मध्य] युद्ध, संग्राम (डि.को.)

उ०—१ वीहारी घूहड़ वाजै धजवड तुंग त्रसींगड़ तुड़ तरसै । दोमजि रत दहिग्रड़ जांण नदी नड़ जोरा जम जड़ जोध खसै ।—गु.रू.बं.

उ०—२ दरजी 'अमरेस' वणाई दोमझ, तरकी सुजड़ कूंत खग तीर । रोम रोम खीलांणो रावत, सिध कंथा ताहरो सरीर ।

—महारांणा अमरसिंह रो गीत

उ०—३ दोमझ 'रासा' दूसरा, भंजण सुरतांणा । वीड़ा झल्लै ऊठियो, लग्गा असमांणा ।—द.दा.

उ०—४ दळप्पति दोमझि दूथ दुरंग । कियो कमरो जिण भांजि कुरग ।—रा.ज. रासो

रू०भे०—द्रोमझि ।

[दो]मल-सं०पु०—प्रत्येक चरण में आठ सगण सहित २४ वर्ण का वर्णिक वृत विशेष (पिंगळ प्रकास)

[दो]मिण-सं०पु० [सं० द्यो+मणि] सूर्य, भानु (अ.मा.)

[दो]मी— ।

उ०—वैगरणां सैगरणां मुदता, साद करइ सुआर । दोमी दळ की संवया आंणइं, मांहइ चक्र तलार ।—रुकमणी मंगळ

[दो]य—देखो 'दो' ' (रू.भे.) (डि.को.)

[दो]यक—देखो 'दोयेक' (रू.भे.)

[दो]यककुत-सं०पु० [सं० द्वि+ककुद्] ऊंट ।

[दो]यजीह—देखो 'दुजीह' (रू.भे.) (डि.को.)

[दो]यण-सं०पु० [सं० दुर्जन] १ राक्षस, दानव.

२ देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—१ फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण कियां न खळा डळा । खवां खांच चूड़ै खावंद रै, उण हिज चूड़ै गई यळा ।—बां.दा.

उ०—दोयण, रमणीय, कवेसुर, दासां, जत्र, समर, सुरतर, निज जोत । अवध भूप दरसै तो आळां, अवनी मोहै रूप उद्योत ।—र.रू.

[दो]यतरी—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

[दो]यतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोयतरी)

दोयती—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोयतौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोयती)

दोयथणी—देखो 'दुथणी' (रू.भे.) उ०—कुळ दीपक जायौ य जोग कणी । थित और न थायौ य दोयथणी । रांणियां वड सूरत वंधरती । जण-जौ सुत मीढुम 'पालजती' ।—पा.प्र.

दोयम-वि० [फ़ा०] दूसरे नंबर का, दूसरा ।

दोयरण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.)

दोयलौ—देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोयली)

दोयसपी-सं०पु० [फ़ा० दो अस्प] वह सैनिक जिसके पास दो निजी घोड़े हों, दो घोड़ों की डाक ।

दोयसैंक-वि०—दो सौ के लगभग ।

दोयेंक-वि० [सं० द्वि+एक] दो के लगभग ।

उ०—आ मूठी जितरीक कमर इणीज तरै खीण होती जावसी तौ दिन दोयेंक मैं दीसण ही न पावसी ।—र. हमीर

दोयोड़ी—देखो 'दूवियोड़ी' (रू.भे.)

दोयोड़ौ—देखो 'दूवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोयोड़ी)

दोरंगी—देखो 'दुरंगी' (रू.भे.)

दोरंगौ—देखो 'दुरंगौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोरंगी)

दोर-सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का आभूषण विशेष (व.स.)

[सं० दोस्] २ हाथ, कर (ह.नां.) ३ शक्ति, बल ।

उ०—कळिया गाडा काढ़तौ, दे कांधौ वड दोर । हुव धवळौ बूढ़ौ हुवौ, जगपत सूं की जोर ।—बां.दा.

४ देखो 'दौर' (रू.भे.) उ०—१ जोरा रा भड़ जस जोड़ा जेठी, दळ वधता जोरा रा दोर । जोरा रा तोरा जोरावर, जोरा रा रावत भी जोर ।—जोरावरसिंह ऊदावत रौ गीत

उ०—२ पदमसिंहजी रणखेत में बैठा छै । इतरै में जादूराय आय माथै रै मांही तरवार री दीवी, सो माथौ फाड़ त्रिकुटी आंण बैठी । इतरै में महाराज बैठा ही लप झड़प मारी सो वागै रा दोर हाथ में आया, तींसूं मुंहडै आगै आंण पड़ियौ । जद आप अेक-दोय कटार मारी सो कांम सारो सीझ गयौ ।—पदमसिंह री वात

उ०—३ जेळै कई जब्बर वब्बर जोर । दिखावत वायु बरब्बर दोर । रथां पलटाय पछा प्रति राह । अछा झपटाय कहावत वाह ।

—मे.म.

दोरउ—१ देखो 'डोरौ' (रू.भे.) उ०—पंख पसारी सुसतउ कीउ, पगि दीठउ दोरउ बांधिउ ।—विद्याविलास पवाडउ

२ देखो 'दोरौ' (रू.भे.)

दोरडी-सं०स्त्री०—डोरी (?) उ०—हाथ छड़ी पग दोरडी, बाघइ कंटि विसाळ। पयोधर पेटु जइ अडइ, भग थाइ भग-नाळ।
—मा.कां.प्र.

दोरडो—देखो 'डोरो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—एक जि बंधिउ दोरडइ, कर आपतां कांइ। कांमिनि ! ए कौतुक किसिउं, पहिलूं ते पूजाइ।
—मा.कां.प्र.

दोरदंडण, दोरदंडन-सं०पु० [सं० दोस्=हस्त+दण्ड] मजबूत भुजा, दृढ़ हाथ।

दोरप, दोरम-सं०स्त्री० [देश०] १ तकलीफ, कष्ट, पीड़ा. २ वियोग अभाव जन्य दुःख।

उ०—१ अपहड़ अथग अरेह, जिको विनड़ियो वधंतो। कुवचन मुख काढ़तां, जिको सुवचन जांणंतो। एक घड़ी आंतरै, दोरम सोहि दाखंतो। जिको जीव जीवतो, न को अंतर राखंतो।
—पहाड़खां आढ़ो

उ०—२ मैं न दीठी मात उदर जिण जनमण आयो। होयै सीस हुलराय पोसकर नह पय पायो। काकै पित रौ नांम जप्यो नांनी जद जांणू। हींण मात म्हारी अगै किण दोरम आंणू।—पा.प्र.

दोरांणी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.) उ०—सुण देवर थांनै बात कहूं रे कहतां आवै लाज। म्हारी दोरांणी कुछ न जांणै रीत भांत की बात, जो देवरिया प्यारा ए जी वो देवर मतवारा, रीझ रह्या जी पर-नारियां।—लो.गी.

दोराई-सं०स्त्री० [देश०] तकलीफ, कष्ट, पीड़ा।

दो'राणो, दो'रावो-क्रि०स० [सं० द्वि+रा०प्र० राणो या सं० द्वि+आवृत्ति] १ किसी बात को पुनः कहना या किसी काम को पुनः करना, दोहराना. २ किसी कागज या कपड़े को दो तहों में करना; दोहरा डालना।

दो'राणहार, हारो (हारी), दो'राणियो—वि०।

दो'रायोड़ो—भू०का०कृ०।

दो'राईजणो, दो'राईजबो—कर्म वा०।

दो'रावणो, दो'राववो—रू०भे०।

दोरायतो-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा जो अशुभ माना जाता है (शा.हो.)

दोरायोड़ो-भू०का०कृ०— १ किसी बात को पुनः कहा हुआ अथवा किसी कार्य को पुनः किया हुआ. २ दो तहों में किया हुआ, दोहरा किया हुआ (कागज, कपड़ा आदि)
(स्त्री० दो'रायोड़ी)

दोरावणो, दोराववो—देखो 'दोराणो, दोरावो' (रू.भे.)

दोरावणहार, हारो (हारी), दोरावणियो—वि०।

दोराविग्रोड़ो, दोरावियोड़ो, दोराव्योड़ो—भू०का०कृ०।

दोरावीजणो, दोरावीजबो—कर्म वा०।

दोराव्योड़ो—देखो 'दोरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दो'रावियोड़ी)

दोरी—देखो 'डोरी' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—पाछै मुंडै पणि घणा, डगलुं न भरइ डोलि। मोहन-दोरी वांधिया, छांना खोलइ छयल्ल।—मा.कां.प्र.

दोरीयो-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।—व.स.

दोरुखो-वि० [फा०] (स्त्री० दोरुखी) १ जिसका निचार या झुकाव दोनों पक्षों की ओर हो. २ दोनों ओर समान रंग और वेल-बूंटे वाला (कपड़ा, कागज आदि). ३ जिसके एक तरफ एक रंग हो तथा दूसरी ओर दूसरा रंग हो।
सं०पु०—स्वर्णकारों का औजार जो हँसुली बनाने के काम आता है।

दोरो—देखो 'डोरो' (रू.भे.) (व.स.)

दो'रो-वि० [सं० दुःखधर=दुहहरः=दोहरो-दो'रो] (स्त्री० दो'री)
१ पीड़ित, दुखी। उ०—१ दाधी दुखड़ै री फिरतोड़ी दो'री। गोरै मुखड़ै री गिरतोड़ी गोरी। चांमीकर धांमै कांमी कर चोड़ै। जांमी जांमी कर सांमै कर जोड़ै।—ऊ.का.
उ०—२ अळगां ही बैठां कांई चीतोड़ री भूंडी दीसै तरै जीव दो'रो होइ। तिण सु स्री दीवांण सीसोदियां किण ही रै माथै पाघ न रही छै।—राव रिड़मल री वात
२ व्याकुल, विकल, बेचैन। उ०—महा संत री मित्र रोज नहिं सोवा जाऊं। पोरीसो मुख पेख घणी दो'री घबराऊं।—ऊ.का.
ज्यूं—निकाळै रै बुखार में वो आज घणो दो'रो है।
३ असह्य, कष्टप्रद, दुष्कर। उ०—औ ऊपर ऊनाळो आयो, दीन जनां दो'रो दरसायो। पांणी क्यांन कोई नहिं पायो, कूकै लोक हुयो अति कायो।—ऊ.का.
४ कठिन, मुश्किल। उ०—खागां वाढ़ तूटै राग सिंधवो लागतो खारो, तोपां छूटै पड़ै बारूद सफीलां तोड़। लागो कोट दो'रो सेना-पति ज्यूं जमी रो गैणाग लायो, राड़ रो सांभळै कांनां नगारो राठोड़।
—नींबाज ठाकुर स्री सांवंतसिंह री गीत
५ उदास, खिन्न, दुखी, अप्रसन्न। उ०—उर जीवण नहिं आस, वास करम बाकी वसै। सो'रो है नह सास, जिय दो'रो थां विन 'जसा'।—ऊ.का.
६ मन में खटकने वाला, अप्रिय। उ०—१ दो'रो लागै दोयणां, छक तोरो उर छेक। सैणां मन सोरो रहै, पदवी डोरो पेख।
—जुगतीदांन देथो
उ०—२ कर जोड़ै साजन कहूं, हाथ कछू नहिं हाथ। दो'रो लागै देखतां, सोकड़ल्यां रो साथ।—अज्ञात
७ नाराज। ज्यूं—आजकल बोलो कोयनी, म्हांसूं दो'रा हो कांई ?
८ वह (ऊंट आदि) जिस पर सवारी करना कष्टप्रद हो.
९ मुश्किल, कठिन. १० संकटपूर्ण, आपत्तिजनक।
रू०भे०—दुहरो, दोरउ, दोहरो।
विलो०—सो'रो।

दोलक—देखो 'ढोलक' (रू.भे.)

दोलड़ौ, दोलडौ—वि॰ [सं॰ द्वि+रा॰ लड़] (स्त्री॰ दोलड़ी, दोलडी) जिसमें दो लड़ें हों, दो पंक्ति वाला। उ॰—अंग अंग में दरपण री सी दमक जिणसूं ग्रहणां री दोलडी तेलडी चोलडी चमक।
—र. हमीर

दोळलौ—वि॰ [सं॰] (स्त्री॰ दोळली) पास का, इर्द-गिर्द का।
उ॰—इसै में भांगेसुर वणायजै छै। सू किण भांत छै? केसर री क्यारी दोळलौ, वासग माथा री, थोहर रा विड़ा री, भाखर रा खुड़ा री, भूरै मोर री, काळै पांन री, आवू रा विहड़ां री, भमरमार, मिरघमाळ, लरियाळ चिड़ियाळ चोटड़ियाळ।—रा.सा.सं.

दोळां—क्रि॰वि॰—इर्द-गिर्द, चारों ओर। उ॰—१ पालणं दोळां सरप लपटांणा छै।—देवजी बगड़ावत री वात
उ॰—२ मुंह आगै निसंक सूं राड़ करां, नहीं तो दिखणी आय दोळां फिर जासी।—पदमसिंह री वात
रू॰भे॰—दोळूं, दोळयां।

दोळाजंत्र—सं॰पु॰ [सं॰ दोलायंत्र] अर्क निकालने का एक यंत्र विशेष जिसका प्रयोग प्रायः वैद्य करते हैं।
रू॰भे॰—डोलका जंत्र, डोला जंत्र।

दोलाजुध—सं॰पु॰ [सं॰ दोलायुद्ध] वह युद्ध जिसमें बार-बार दोनों पक्षों की हार जीत होती रहे और जल्दी किसी एक पक्ष की जीत न हो।

दोळी—क्रि॰वि॰—इर्द-गिर्द, चारों ओर। उ॰—तठै सांखली नूं ओलै राखी, उठै धारू जायौ, तरै पीढ़ी एकी ऊपर राखियौ, तठै साप री विल एक छै तिण मांहे सूं साप एक नीसर नै पीढी दोळी परदिखणा दे नै मोहर १ सोनौ तोला पांच भर री मेल गयौ।
—नैणसी
उ॰—२ कैरां री भीटां गांव दोळी घणी थी तिकां री मोरचौ लियौ।
—सूरे खींवे री वात
वि॰—समीप, निकट, पास।

दोळीकियौ—सं॰पु॰ [देश॰] १ आभूषणों की खुदाई में दो तार शामिल खींचने का या कोरने का एक लोहे का औजार. २ पैर की उंगली पर धारण करने का आभूषण विशेष जो दो तारों से बनता है।

दोळूं—देखो 'दोळां' (रू.भे.)

दोळू—सं॰पु॰—१ दांत, दंत (डि.को.) २ देखो 'दोळै' (रू.भे.)

दोळै—क्रि॰वि॰—इर्द-गिर्द, चारों ओर। उ॰—१ दोळै दूघाळू गळियोड़ी गेरी। ढोळै ढळियोड़ी रतनां री ढेरी।—ऊ.का.
उ॰—२ चोळै झड़ मेह वणै चत्रमास, दोळै पड़ि सास गणै जमदास। कटचा चक्र झाटक हेक रकाव, वणै चमचाटक वेख जवाव।—मे.म.

दोलोत्सव—सं॰पु॰ [सं॰] फाल्गुन की पूर्णिमा को होने वाला वैष्णवों का एक त्यौहार जिसमें ठाकुरजी को फूलों के हिंडोले में झुलाया जाता है।

दोळौ—वि॰ (स्त्री॰ दोळी) समीप, पास, निकट।
उ॰—इण खुडै ऊपर आय चढ़ियौ देखै तो गाडर व्याई ऊभी छै। 'नाहर' दोय दोळा ऊभा छै सो नैड़ा नहीं आवण देवै छै।
—नापै सांखलै री वात
क्रि॰वि॰—इर्द-गिर्द, चारों ओर। उ॰—हे कंथ! घर रै दोळौ घणी ई सांकड़ी दुसमणां री घेरी है।—वी.स.टी.

दोवड़—सं॰स्त्री॰ [सं॰ द्वि-पट] १ एक प्रकार की चादर जो कपड़े की दो परतों को एक दूसरी पर सी कर बनाई जाती है। इसके चारों ओर गोट लगी रहती है।
उ॰—चढियै ही वड़ री साख सौं डोर बांधी नै घोड़ै सूं नीचै उतरिया। पासै दोवड़ थी तिका नीचै विछाई।—नैणसी
यौ॰—दोवड़-चौवड़।
२ देखो 'दोवड़ौ' (मह., रू.भे.) उ॰—१ पग-पग बाबल चूंरी खुदायी, दीनी दोवड़ दात। ओ ल्यो भावज घर आपणूं, मैं तो जावूं पियाजी रै देस।—लो.गी.
उ॰—२ नव कोठां मझ एक तुक, लखजै चिरा लगाय। उरघ अध-बिचलौ आखर, दोवड़ वंच दिखाय।—र.ज.प्र.

दोवड़-चौवड़—वि॰यौ॰ [सं॰ द्वि-पट] १ दो या चार तह वाला.
२ दुगुना-चौगुना। उ॰—दूजा दोवड़-चौवड़ा, ऊंटकटाळउ-खांण। जिण मुखि नागर वेलियां, सो करहउ केकांण।—ढो.मा.

दोवड़ियौ—देखो 'दोवड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)
दोवड़ी—वि॰स्त्री॰—२ दो तह की, दुहरी. ३ जिसमें दो लड़ें हों. ४ दो प्रकार की. ५ दुगुनी। उ॰—थारा गुरूजी नै मुरक्यां दोवड़ी, थारी गुरांणी नै नौसर हार। वना सा थे यहां ई भणो जी।
—लो.गी.
सं॰स्त्री॰—दो तह किया हुआ वस्त्र।

दोवड़ी ताजीम—सं॰स्त्री॰यौ॰—जोधपुर नरेश द्वारा सरदारों व सामन्तों को दिया जाने वाला सम्मान जिसमें महाराजा सामंत या सरदार के आने और लौटने पर दोनों बार खड़े होते थे।

दोवड़ौ—वि॰ [सं॰ द्वि-पट] (स्त्री॰ दोवड़ी) १ दो तह का, दोहरा।
उ॰—वण पड़दा दोवड़ा, वळै तह पंच विसाळा। सोभ कळंद्री ससी सिखर फिर सांवण वाळा।—रा.रू.
२ जिसमें दो लड़ें हों. ३ दो प्रकार का. ४ द्वि, दो।
उ॰—दीह इक साझिया प्रवाड़ा दोवड़ा, सिखर घर कीध सुरराय साता। ताय रच रूप श्री ताप संवळी तणां, मारियौ काळियौ आय माता।—चौथ वीठू
५ दोनों ओर का। उ॰—रत कहतां लोही वरससी। वेपुड़ी कहतां वादळ की परि वेपुड़ी वहै छै। सु दोवड़ा वादळा आंम्हां-सांम्हां हुया। तव कहै जु मेघ वरससी तैसै फौज परि वेपुड़ी वहै छै। सु जांणीजै जु रगति वरससी।—वेलि.टी.
६ दुगुना।
यौ॰—दोवड़ौ-कुरब।

...—... एक के ऊपर दूसरा भी कर तैयार किया गया ... दाना ... । उ०—अंगिया है विसवास, नूढ़ो चित ...। ... दिल ... मांन रो दोवड़ो ।—मीरां
...—... ।
... दोवड़ ।
...कुरब, दोवड़ी-कुरब—सं०पु०यौ० [सं० द्वि+अ० कुर्ब] राजा-महा... द्वारा अपने सरदारों और सामन्तों को दिया जाने वाला ... विशेष जिसमें राजा सामन्त या सरदार के आने व जाने के ... दोनों बार खड़ा होता था । उ०—पीछे भाटी जैसलमेर रा ... नूं मा'राज रावताई रो खिताब दियो वा दोवड़ो-कुरब ... जिनै रो पूजा दसरावै नूं अै करावै । मा'राज रो बडो ... ।—द.दा.
...—सं०स्त्री० [सं० द्वि+पट+रा०प्र०ई] १ दो तह का ओढ़ने का ... जो मजबूत और गाढ़ा होता है. २ एक प्रकार का ... का आसन विशेष (मेवाड़). ३ धोती ।
...—... करै नहि जीव का, तन मन पवना फेरि । दादू महंगे ... का, द्वै दोवड़ी इक सेर ।—दादू बांणी
... एक प्रकार की मिठाई विशेष ।
...वो–वि०—दूध दोहने वाला ।
...पु०—१ दूध दुहने का पात्र. २ एक प्रकार का मिट्टी का पात्र ।
..., दोवबो—१ देखो 'दूवणी, दूवबो' (रू.भे.)
...—...ां पो'र रात ले'र ऊठती, आटो पीसती, दोवण विलोवण ... करती अर दिनुगां पै'लां-पै'लां तो वे चूला रो कांम ई ... देती ।—रातवासौ
... देखो 'दुवणी, दुवबो' (रू.भे.)
... देखो 'दूहणी, दूहबो' (रू.भे.)
...णहार, हारो (हारी), दोवणियो—वि० ।
...योड़ो, दोवियोड़ो, दोव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
...जणो, दोवीजबो—कर्म वा० ।
...–क्रि०वि०—इर्द-गिर्द, चारों ओर ।
...दोवांई–वि०—दोनों । उ०—१ पीछे दूजै दिन निवाब साथ सूं ... डेरा पर चलाय आयो । अर रावजी साथ सारै सूं सामां ... । ... दोयां फौजां रा मुठभेड़ा हुवा नै घोड़ां ... ।—द.दा.
...—२ ... री दरमस कियो दोवांई ।—द.दा.
...—देखो 'दुवारो' (रू.भे.)
...णो, दोवाड़बो—देखो 'दुवाणो, दुवाबो' (रू.भे.)
...ड़णहार, हारो (हारी), दोवाड़णियो—वि० ।
...ड़ियोड़ो, दोवाड़ियोड़ो, दोवाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
...ड़ीजणो, दोवाड़ीजबो—कर्म वा० ।
...ड़ोड़ो—देखो 'दुवाड़ोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दोवाड़ियोड़ी)
दोवाणो, दोवाबो—देखो 'दुवाणो, दुवाबो' (रू.भे.)
दोवाणहार, हारो (हारी), दोवाणियो—वि० ।
दोवायोड़ो—भू०का०कृ० ।
दोवाईजणो, दोवाईजबो—कर्म वा० ।
दोवायोड़ो—देखो 'दुवायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोवायोड़ी)
दोवारी—देखो 'दूवारी' (रू.भे.)
दोवावणो, दोवावबो—देखो 'दुवाणो, दुवाबो' (रू.भे.)
दोवावणहार, हारो (हारी), दोवावणियो—वि० ।
दोवाविओड़ो, दोवावियोड़ो, दोवाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
दोवावीजणो, दोवावीजबो—कर्म वा० ।
दोवावियोड़ो—देखो 'दुवायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोवावियोड़ी)
दोवियोड़ो—देखो 'दूवियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोवियोड़ी)
दोवै–वि०—दोनों ।
दोस–सं०पु० [सं० दोष] १ अवगुण, ऐब. २ बुराई, खराबी ।
उ०—कर प्रगट दोस खंडण करूं, धोठ रोस मत धारज्यो । आज रो वखत भूंडो अमल, बडपण राज विचारज्यो ।—ऊ.का.
३ कलंक, लांछन । उ०—समर तजण सूं सोगुणी, दुरंग तजण रो दोस ।—बां.दा.
क्रि०प्र०—आणो, देणो, लगाणो ।
४ आरोप, अभियोग । उ०—१ आदि तुज थी ऊपना, जग जीवण सह जीव । ऊंच नीच धर अवतरण, दां कई दोस दईव ।—ह.र.
उ०—२ ओळंभा दीजइ कुणह रइ रे, कुणिहिं दीजइं दोस । हीराणंद इम ऊचरइ रे, कीजइ मनि संतोस ।—विद्याविलास पवाडउ
५ गलती, अपराध, कसूर । उ०—१ दोस नहीं थारा में दोसत, दोस तिहारो दाई नै । नाळा साथै नाड़ न काटी, धाई रांड बधाई नै ।—ऊ.का.
उ०—२ सखी भणइ—सांभिलि हिव मुगधउ । एह दोस नवि कुणह तणउ ।—विद्याविलास पवाडउ
६ नुकस, खराबी, कमी. ७ पाप, पातक ।
उ०—एक दिन चरचा करतां मवाईरांम नै······कह्यो—थे म्हांनै दोमीला कहो, पिण थांरा गुरां नै पिण किवाड़िया रो दोस लागै छै ।—भि.द्र.
८ तर्क के अवयवों का प्रयोग करने में होने वाली न्याय की त्रुटि. ९ साहित्य में वे बातें जिनसे काव्य के गुण में कमी हो जाती है । राजस्थानी में यह दस प्रकार का होता है ।
(अ) अंध-दोस; (आ) छबकाळ-दोस; (इ) हीण-दोस; (ई) निनंग-दोस; (उ) पांगळो-दोस; (ऊ) जाति विरुद्ध दोस; (ए) अपस-

दोस; (ऐ) नाळछेद-दोस; (ओ) पखतूट-दोस; (औ) वहरी-दोस. १० शरीर में रहने वाले वात, पित्त और कफ जिनके कुपित होने से शरीर में विकार अथवा व्याधि उत्पन्न होती है (वैद्यक)
११ भागवत के अनुसार आठ वसुओं में से एक का नाम.
१२ तीन की संख्या॥। १३ दस की संख्या॥। १४ देखो 'दो' (रू.भे.)
रू०भे०—दोख, दोखरण, दोसरण, दोसौ, दोह।
दोसग्राही-सं०पु० [सं० दोसग्राहिन्] दुष्ट, दुर्जन।
दोसजांण-सं०पु० [सं० दोषज्ञ] १ वैद्य, हकीम, चिकित्सक.
२ दोषों को जानने वाला।
दोसण-वि० [सं० दोपरण] १ दोष उत्पन्न करने वाला, दोष-जनक.
२ देखो 'दूसरण' (रू.भे.) ३ देखो 'दोस' (रू.भे.)
उ०—काढै दोसण कायवां, वातां दिए विगोय। पूछै अरथरु पहलियां, सूंव मजाकी सोय।—वां.दा.
दोसत-सं०पु० [फा० दोस्त] १ मित्र, स्नेही। उ०—जळ छांरगै दिन जीम ही, नीली वस्त न खाय। दोसत हूं देतां दगौ, कसर न राखै काय।—वां.दा.
२ वह जिससे अनुचित सम्बन्ध हो, यार।
रू०भे०—दोस्त।
दोसतदार-सं०पु०यौ० [फा० दोस्त+दार] दोस्त, मित्र, स्नेही।
रू०भे०—दोस्तदार।
दोसतदारी-सं०स्त्री०यौ० [फा० दोस्त+दारी] दोस्ती, मित्रता।
रू०भे०—दोस्तदारी।
दोसतांनौ-वि० [फा० दोस्ताना] मित्रता का, दोस्ती का।
सं०पु०—१ मित्रता, दोस्ती. २ मित्रता का व्यवहार।
रू०भे०—दोस्तांनौ।
दोसती-सं०स्त्री० [फा० दोस्ती] १ मित्रता, दोस्ती।
उ०—दगौ दियौ कर दोसती, ठग जाहर सब ठाह। वांरगरण जाया 'वांकला', कहै महाजन काह।—वां.दा.
२ अनुचित सम्बन्ध।
रू०भे०—दोस्ती।
दोसपौ-सं०पु० [फा० दो अस्प] १ वह सैनिक जिसके पास दो निजी घोड़े हों। उ०—क्रोड़ इनांम दांम फिर कीधा। दोय अस सहंस दोसपा दीधा।—रा.रू.
२ दो घोड़ों की डाक।
रू०भे०—दुअसपह, दुअसपौ।
दोसहटी-सं०स्त्री० [सं० दौष्यिक+हट्ट] वह स्थान जहाँ कपड़े के व्यापारियों की दुकानें हों, कपड़ा बाजार। उ०—सितिरि खांन वुहुतिरि ऊवरा अनि मीर; जे नगर मांहइ, सोनहटी, दोसीहटी, वुद्धिहटी, अनेक फडीआ फोफलीआ सोनार।—व.स.
दोसा-सं०स्त्री० [सं० दोषा] १ रात्रि, रात (डिं.को.)
२ संध्या. ३ भुजा, बाँह।
दोसाकर-सं०पु० [सं० दोषाकर] चंद्रमा, शशि (डिं.को.)
दोसिकापण—देखो 'दौष्यिकापरण' (रू.भे.) उ०—अथ नगर प्रासाद प्रतोळी राजकुळ देवकुळ त्रिक चउक। चच्चर राजमारगि गंधिकापरण दोसिकापण सूपकार हट्ट।—व.स.
दोसी-सं०पु० [सं० दौष्यिक] कपड़े का व्यापारी (व.स., उ.र.)
उ०—१ दोसी वुहरइ अति घरणा वस्त्र, सुभट भला ते चहइ सस्त्र। एक बइठा कहइ कथकल्लोल, एक बइठा वीकइ मंजीठ चोळ।—नळ-दवदंती रास
उ०—२ फडीया दोसी नइ जवहरी, नांमि नेस्ती कांमइ करी। विवध वस्तु हाटे पांमीइ, छत्रीसइ किरियांरगां लीइ।—कां.दे.प्र.
वि० [सं० दोषिन्] १ जिसमें ऐब या बुराई हो, जिसमें दोष हो.
२ कसूरवार, अपराधी. ३ पापी. ४ मुजरिम, अभियुक्त।
दोसूती-सं०स्त्री० [सं० द्वि+सूत्र] दुहरे ताने की बनी एक प्रकार की मोटी चादर।
दोसौ—देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—वचन तुम्हारौ मैं कियौ, अपने केहौ दोसौ रे। स्वाद करी जीमस्यां हियै, करस्यां केहौ सोसौ रे।—प.च.चौ.
दोस्त—देखो 'दोसत' (रू.भे.)
दोस्तदार—देखो 'दोसतदार' (रू.भे.)
दोस्तदारी—देखो 'दोसतदारी' (रू.भे.)
दोस्तांनौ—देखो 'दोसतांनौ' (रू.भे.)
दोस्ती—देखो 'दोसती' (रू.भे.)
दोह—१ देखो 'दो' (रू.भे.) २ देखो 'दो'' (रू.भे.)
३ देखो 'दोस' (रू.भे.)
देखो 'दोख' (रू.भे.)
दोहखी—देखो 'दोखी' (रू.भे.)
दोहग-सं०पु० [सं० दौर्भाग्य] १ वियोगजनित दुःख।
उ०—मन मिळिया तन गड्डिया, दोहग दूरि गयाह। सज्जरण पांरगी खीर ज्यूं, खिल्लोखिल्ल थयाह।—ढो.मा.
२ दुर्भाग्य। उ०—१ प्ररणम्यां सहु पीड़ा दुरि पुळै, छळ छिद्र उपद्रव को न छळै। दुख दोहग दाळिद दूर दळै, मन वंछित लीला आइ मिळै।—घ.व.ग्रं.
उ०—२ जोयरण जोयरण आंतरइ रे, पावड़साळां आठ रे। आठ जोयरण ऊँचौ देखतां रे, दुख दोहग जायइं नाठि रे।—स.कु.
३ वैधव्य. ४ संकट, आपत्ति। उ०—वुद्धिवंत वादळ राइ ने, पूछे स्री पतिसाहि रे भाई। सलांम करि वैठौ तिसै, आलिम हुओ उच्छाहि रे भाई। 'लालचंद' कहै वुधि थकी, दोहग दूर पुलाई रे भाई।—प.च.चौ.
रू०भे०—दोहग्ग, दोहग्गु।
दोहग्ग दोहग्गु—देखो 'दोहग' (रू.भे.)
उ०—तह न रोगु दोहग्गु नह, तह मंगळ कल्लांरण। जे जिरणवल्ह

गुड़ नगर, किम्मि संक मुनिहांण ।—पदिमनतक प्रकरण

दोहड़ड-वि० [सं० द्रोहाढ्य:] द्रोह रखने वाला, द्रोही, शत्रु (ड.र.)

दोहन-सं०पु० [सं० दोहनम्] १ गाय, भैंस आदि पशुओं को दुहने की क्रिया या भाव. २ । उ०—नदधा सेनानिया भाग्लिया गार्थं । धेनड दामोदर चामोदर यांधै । मुनिया मन मोहण दोहण घर मेड़ी । गोडै टेगे हूं सूंणी में मेड़ी ।—रू.का.

दोहनी-स०स्त्री० [सं० दोहनी] १ वह बर्तन जिसमें दूध दुहा जाता है, दूध दुहने की हंडिया । उ०—नंद री धेन नै लेहतो नूंजणो । दोहतो देखतो बांधने दोहणी ।—रुकमणी हरण

२ हंडिया । उ०—तन हूटो कुटका हुई, रतो न मांनो संक । नेत मारै मन थिरि रहे, रै दोहणी निसंक ।—ह.पु.वा.

३ दूध दुहने का कार्य ।

दोहणी, दोहबो—देखो 'दूवणी, दूवबो' (रू.भे.)

दोहणहार, हारो (हारी), दोहणियो—वि० ।

दुहवाड़णो, दुहवाड़बो, दुहवाणो, दुहवाबो, दुहवावणो, दुहवावबो, दुहाड़णो, दुहाड़बो, दुहाणो, दुहाबो, दुहावणो, दुहावबो—प्रे०रू० ।

दोहिओड़ो, दोहियोड़ो, दोह्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दोहीजणो, दोहीजबो—कर्म वा० ।

दोहतो—देखो 'दोहवो' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहती)

दोहथी करोती-स०स्त्री० [सं० द्वि+हस्त+कर पत्रं] वह आरी जिसमें दोनों ओर से पकड़ कर दो मनुष्य चलाते हैं ।

दोहथो-वि० [सं० द्वि+हस्त] (स्त्री० दोहथी) १ जिसके दो हाथ हों । २ जिसको पकड़ने के लिए दो हत्थे हों ।

दोहर-कूटी-सं०पु०स्त्री० [देश०] व्यभिचार के जुर्म में सांसी जाति में पंचों द्वारा दिया जाने वाला दंड । इसमें पुरुष अगर जाति में रहना चाहता है तो उसे भोज देना पड़ता है और उपस्थित जाति के व्यक्ति की जूतियां सिर पर उठा कर दौड़ना पड़ता है । पीछे से लोग जूरमे के लिए सेके गये आटे के गोल खंड फेंक कर मारते हैं ।

दोहरीपट-सं०स्त्री०—कुश्ती का एक पेंच ।

दोहरीसटो-सं०स्त्री०—कुश्ती का एक पेंच ।

दोहरो-वि० [सं० द्वि+रा० हरो] (स्त्री० दोहरी) १ दो परत या तह का. २ दुगुना. ३ दोनों पक्ष का, दोनों ओर का, दोनों ओर झुकने वाला । उ०—होठ बुद्धि जेह ने हूवइ रे लाल, दोहरो केही वात रे मराणी । लालचंद कहि बुद्धि थकी रे लाल, वादळ खेलइ घात रे ।—प.च.चौ.

म०भे०—दोवरो ।

४ देखो 'दोरो' (रू.भे.)

उ०—१ जीव तटफड़ाटा लेगा मांडिया । वीरमदे-वाहिरी घणी दोहरी छै ।—वीरमदे सोनिगरा री वात

छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ उठो जाया घोड़लो पिलांण, दोहरो है बाई री सासरो —ल

दोहलउ-सं०पु० [सं० दोहल:] इच्छा, अभिलाषा, चाहना ।

उ०—द्राक्षा तणी आकांक्षा किम महू फीटइ, सरकरा तणी किम गुळि मूटइ, अम्रित काजि किम कांजी पीजइ, दुग्धनिरणा तक्रि विलीजइ, आंबा तणउ दोहलउ किम आविलीइं पूजइ ।—

दोहलो—देखो 'दूहो' (अल्पा., रू.भे.)

दोहां-वि० [सं० द्वि] दोनों, उभय । उ०—केहरी तणा जम मचतै कदळि, दुअै कर जोड़ियां खड़ी दोहां । पुकारै जवांनी नेस पधारो, लाजि आर्यै हमैं वाजि लोहां ।—सिरामीदास व्यास

दोहाई— १ देखो 'दुहाई' (रू.भे.) २ देखो 'दूवारी' (१, २) (

दोहाग—देखो 'दुहाग' (रू.भे.) उ०—राज वधण न दीधो । बीज कूंभै री मा नै दोहाग दीधो । जे तैं कूंभै री मा नै रात दीनी तो इसड़ो रतन २-४ पैदा हुवंत, तो घर भलो दीसंत ।—नैणसी

विलो०—सोहाग ।

दोहागण, दोहागिण, दोहागिणि—देखो 'दुहागण' (रू.भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, सीय पड़ेसी घट्ट । सोहागिण आंगणइ, दोहागिण रइ घट्ट ।—ढो.मा.

उ०—२ ता किम जाइ तनु-विकी, माधव ! माहरु मोह ? गिणि देखी दुखी, स्वांमि ! चढाविन सोह ।—मा.कां.प्र.

विलो०—सोहागण, सोहागिण, सोहागिणी ।

दोहागियो—देखो 'दुहागी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—द्राढ़मंडळ गळया, दीसंता विकराळ । सेवक तास दोहागिया, राध परनाळ ।—चौपाळ रास

(स्त्री० दोहागिण)

विलो०—सोहागियो ।

दोहागी—देखो 'दुहागी' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहागिण)

विलो०—सोहागी ।

दोहाड़णो, दोहाड़बो—देखो 'दुवाणो, दुवाबो' (रू.भे.)

दोहाड़णहार, हारो (हारी), दोहाड़णियो—वि० ।

दोहाड़िओड़ो, दोहाड़ियोड़ो, दोहाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।

दोहाड़ीजणो, दोहाड़ीजबो—कर्म वा० ।

दोहाड़ियोड़ो—देखो 'दुवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहाड़ियोड़ी)

दोहाणो, दोहाबो—देखो 'दुवाणो, दुवाबो' (रू.भे.)

दोहाणहार, हारो (हारी), दोहाणियो—वि० ।

दोहायोड़ो—भू०का०कृ० ।

दोहाईजणो, दोहाईजबो—कर्म वा० ।

(स्त्री० दोहायोड़ी)

दोहारी—देखो 'दूवारी' (रू.भे.)

दोहाळ कुंडळियौ-सं०पु०यो०—डिंगल के 'कुंडळिया' छंद का एक भेद विशेष।

वि०वि०—'दोहाळ कुंडळिया' में प्रथम एक दोहा तत्पश्चात चौबीस चौबीस मात्राओं के छः चरण रखे जाते हैं तथा दोहे के चौथे चरण का पांचवें चरण में सिंहावलोकन होता है। प्रायः प्रथम चरण और अंतिम चरण एक ही होता है।

दोहाळौ—१ देखो 'दुग्राळौ' (रू.भे.)

२ देखो 'दुहेलौ' (१, २) (रू.भे.)

३ देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.) ४ देखो 'द्वाळौ' (रू.भे.)

दोहावणौ, दोहाववौ—देखो 'दुवाणौ, दुवावौ' (रू.भे.)

दोहावणहार, हारौ (हारी), दोहावणियौ—वि०।

दोहाविग्रोड़ौ, दोहावियोड़ौ, दोहाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दोहावीजणौ, दोहावीजवौ—कर्म वा०।

दोहावियोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहावियोड़ी)

दोहि-वि०—दोनों।

दोहिता—देखो 'दुहिता' (रू.भे.)

दोहिती-सं०स्त्री० [सं० दौहित्री] १ पुत्री की पुत्री, बेटी की बेटी, नातिन।

रू०भे०—दुहीतरी, दुहोतरी, दोइतरी, दोइती, दोईतरी, दोईती, दोईत्री, दोयतरी, दोयती, दोयत्री, दोहीतरी, दोहीती, दोहीत्री।

दोहितौ-सं०पु० [सं० दौहित्रः] (स्त्री० दोहिती) १ पुत्री का बेटा, बेटी का लड़का। उ०—रावजी थाळ बैठा तद हरभू री बेटो और दोहितौ दोनूं खड़ा था।—नापे सांखले री वारता

रू०भे०—दुहीतरौ, दुहोतरौ, दोइतरौ, दोइतौ, दोईतरौ, दोईतौ, दोईत्रौ, दोयतरौ, दोयतौ, दोयत्रौ, दोहीत, दोहीतरौ, दोहीतौ, दोहीत्रौ।

दोहियोड़ी—देखो 'दूवियोड़ी' (रू.भे.)

दोहियोड़ौ—देखो 'दूवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहियोड़ी)

दोहिलउ, दोहिलउ, दोहिलुं, दोहिलु, दोहिलू, दोहिलौ-वि० [सं० दुःख, प्रा० दुक्ख, अप० दुह+रा०प्र०इलौ अथवा सं० दुर्लभ, अप० दुल्लह+रा०प्र०इलौ वर्णव्यत्य] (स्त्री० दोहिली) १ दुखी, पीड़ित।

उ०—१ बेटा रहि इकु मांनइ जाग, माथइ फाड देई इकि मागइ भाग। बेटा पाखइ इक दोहिलउं घरइं, बेटे छते इकि वढ़ि दढ़ी मरइं।

—चिहुंगति चउपई

उ०—२ आबू परवत रूयड़उ आदीसर, उंचउ गाउ सारत रे आदीसर देव। पाजइ चढ़तां दोहिलउ आदीसर, पणि पुण्य नी घणी वात रे आदीसर देव।—स.कु.

उ०—३ कीरति कहो किम हारिये, दोहिलौ जे जग मांहे रे। कन्या देतां जस रहै, तौ जस गमीयै काहे रे।—स्रीपाळ रास

उ०—४ सीत सहंतां दोहिलुं, तन सहू धूजइ तेणि। आलिंगन थी ऊतरइ, सूतां पति-संगेण।—मा.कां.प्र.

२ कठिन, मुश्किल। उ०—मोहन नेमि मिळाय दे रे लाल, नेह नवौ न खमाय हे सहेली! दिन पिण जातां दोहिलौ रे लाल, जमवारौ किम जाय हे सहेली।—ध.व.ग्रं.

३ खिन्न, उदास। उ०—सुविधि जिणंद तुम्हारी, मोनइ सूरति लागै प्यारी हो, जिनवर अरज सुणौ। अरज सुणौ इण वेळा, दोहिला छइ फिर फिर मेळा हो।—वि.कु.

४ दुष्कर। उ०—तुं सुकमाळ सोहामणउ, दोहिलउ संजम भार। बोल विचारी बोलियइ, संजम दुक्कर कार।—कविवर स्रीसार

५ विकट। उ०—जन्मेजय ना जाग-महिं, आणिउ सिं न अस्तिक? विरह-भुअंगम दोहिलु, विस वधारइ हीक।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—दुहिलउ, दुहिलौ, दुहुलूं, दुहेलउ, दुहेलु, दुहेलू, दुहेलौ, दूहेलौ।

दोही-वि० [सं० द्वि] दोनों।

दोहीत—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

उ०—१ वरदायक सतियां वचन, मांनै नांनी माय। गई सदन दोहीत नैं, पालणियै पौढ़ाय।—पा.प्र.

उ०—२ अचळदासजी नूं निबळौ सो घाव हुतौ अर ऊभौ हुतौ, वीदावतां रौ दोहीत हुतौ सु उवां ऊगरै ऊगरै, अचळदास ऊगरै, इम कहि अर अचळदास सोनगिरौ इम उगारियौ।—द.वि.

दोहीतरी—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोहीतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.) उ०—तिण बकरी सूं मैं अर निवापा म्हारै दोय दोहीतरा गुजरांन करै था सो मार खाधी।

—नी.प्र.

(स्त्री० दोहीतरी)

दोहीती—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोहीतौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

उ०—रांणौ मोकळ लाखावत, राव चूंडा री बेटी हंसबाई रौ, राव चूंडा रौ दोहीतौ, तिण नूं चाचै मेरै रांणा खेतै रै बेटां खातण रै पेट रां मारियौ। पछै चाचौ मेरौ पई रै डूंगरै चढ़िया। तिकै घेर नै राव रिणमल मारिया।—नैणसी

(स्त्री० दोहीती)

दोहीत्रउ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.) (उ.र.)

दोहीत्री—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोहीत्रौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

उ०—राव सुदरसण जगदेव रौ। मांन खींवावत रौ दोहीत्रौ।

—नैणसी

(स्त्री० दोहीत्री)

दोहुवे-वि०—दोनों।

दोहूं-वि०—दोनों ।
दोहो—देखो 'दूहो' (रू.भे.)
दौ-सं०स्त्री० [सं० दावाग्नि] दावाग्नि । उ०—तीज त्रिगुण रस पेरिके, दस्य अगनि में जारि । दौ नागी दरिया जले, तुरिया भेद विचारि ।—ह.पु.वा.
दौनो-सं०पु०—कुआ खोदने का कार्य आरम्भ करने की क्रिया ।
मि० 'चोत्र' (३,४)
दौ-सं०पु०—१ योद्धा, सुभट. २ युद्ध. ३ प्राण. ४ काम, कार्य, (एका.)
वि०—दरिद्र (एका.)
दौड़-सं०स्त्री० [सं० धौरहं, धोर्] १ दौड़ने की क्रिया या भाव । वह गति जिसमें साधारण से अधिक वेग हो ।
यौ०—दौड़-धूप, दौड़ा-दौड़ी ।
२ द्रुतगति, वेग । ३ गति की सीमा, पहुँच । उ०—१ मियां री दौड़ मसजिद तांई ।
उ०—२ पड़दै घाली पातरां, ठावी ठावी ठौड़ । परणीं नूं नह पेटियो, देखो बुध री दौड़ ।—बां.दा.
मुहा०—अकल री दौड़, बुध री दौड़, मन री दौड़—बुद्धि की पहुँच ।
४ प्रयत्न, कोशिश ।
मुहा०—दौड़ करणी, दौड़ दौड़णी—प्रयत्न करना, कोशिश करना ।
५ परिश्रम, मेहनत. ६ आक्रमण, धावा । उ०—१ सिर मांडव गुजरात गिर, दळ सफ कीधी दौड़ । उण 'सांगा' री वेसणो, चंगो गढ़ चीतौड़ ।—बां.दा.
क्रि०प्र०—करणी ।
७ देखो 'दौर' (रू.भे.)
दौड़को-वि० [सं० धौर्+रा०प्र०को] (स्त्री० दौड़की) तेज दौड़ने वाला ।
दौड़णो, दौड़बो-क्रि०अ० [सं० धोरणम्] १ चलने की साधारण चाल से द्रुत गमन करना, अधिक वेग से चलना, द्रुत गति से चलना ।
उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, दिस पूगळ दौड़ेह । सायवण लाल कवांण ज्यउं, ऊभी कड़ मोड़ेह ।—ढो.मा.
२ कोशिश करना, प्रयत्न करना, परिश्रम करना ।
मुहा०—दौड़ता घोड़ा दाळ पावै, दौड़ता घोड़ा रातब पावै—दौड़ने वाले घोड़ों को ही दाल मिलती है । परिश्रम या प्रयत्न करने पर फल अवश्य मिलता है । प्रयत्नशील ही पुरस्कृत होता है ।
३ व्याप्त होना, छा जाना, फैलना । उ०—१ लालच री दौड़ै लहर, भवन विधां घन भाळ । वैठो यावर बारमों, कांधै आंण कराळ ।—बां.दा.
४ चढ़ाई करना, आक्रमण करना । उ०—१ संमत १६६२ प्रथीराज, प्रथीराज दळपतोत राव दईसिंघ वाघोत रै दावै हमीरां-भाटियां ऊपर दौड़िया हुता ।—नैणसी
उ०—२ रांणै री फौजां पण मारवाड़ ऊपर दौड़ै, फजिया हुवै, घांणा मारजै ।—नापै सांखलै री वारता
५ लूट खसोट करना, बरबाद करना । उ०—१ उण दिना में कछवाहा अर लाडखांनी नागोर नूं उजाड़ करै । तद केसरीसिंह कागद लाडखांनियां नूं रावजी कन्है मेलिया—जे थे मोटा मगा छो, ठाकर छो, उजाड़ माफ करो । जे कोई भूखो छै तो अठै घावो । अठै पांच सेर जुवार छै सो बांट खास्यां, पण उजाड़ मत करो । तिण पर मास एक तो कोई दौड़िया नहीं ।
—अमरसिंह राठौड़ री वात
उ०—२ जिणां दिनां में खंडेलै निरवांण रिड़मल मालक है । सु करणावाटी वा बीकानेर री धरती रो घणो बिगाड़ कियो । अरु सदा दौड़ै । तद मालम रावजी खीवीकंजी सूं हुई कै रिड़मल निरवांण देस रो बिगाड करै है ।—द.दा.
६ सहसा प्रवृत्त होना, झुक पड़ना ।
ज्यूं—थे आगली-पाछली विचारो कोयनी, थोड़ी'क वात हूं तांई सारै दौड़ पड़ो ।
दौड़णहार, हारो (हारी), दौड़णियो—वि० ।
दौड़ाड़णो, दौड़ाड़बो, दौड़ाणो, दौड़ाबो, दौड़ावणो, दौड़ावबो
—प्रे०रू०
दौड़िग्रोड़ो, दौड़ियोड़ो, दौड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
दौड़ीजणो, दौड़ीजबो—भाव वा० ।
द्रउड़णो, द्रउड़बो, द्रवड़णो, द्रवड़बो—रू०भे० ।
दौड़-धपाड़, दौड़-धूप, दौड़-भाग-सं०स्त्री०यौ०—१ किसी कार्य के लिए इधर-उधर फिरने की क्रिया या भाव. २ प्रयत्न, कोशिश उद्योग ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
दौड़ादौड़, दौड़ादौड़ी-सं०स्त्री०यौ०—१ बहुत से लोगों की एक साथ इधर-उधर दौड़ने की क्रिया ।
क्रि०प्र०—होणी ।
२ दौड़-धूप. ३ हड़बड़ी, आतुरता ।
क्रि०प्र०—लागणी, होणी ।
दौड़ाड़णो, दौड़ाड़बो—देखो 'दौड़ाणो, दौड़ाबो' (रू.भे.)
दौड़ाड़णहार, हारो (हारी), दौड़ाड़णियो—वि० ।
दौड़ाड़िग्रोड़ो, दौड़ाड़ियोड़ो, दौड़ाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
दौड़ाड़ीजणो, दौड़ाड़ीजबो—कर्म वा० ।
दौड़णो, दौड़बो—अक०रू० ।
दौड़ाड़ियोड़ो—देखो 'दौड़ायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दौड़ाड़ियोड़ी)
दौड़ाणो, दौड़ाबो-क्रि०स० [सं० धोरणम्] १ मामूली चाल से तेज चलाना, अधिक वेग से गमन कराना, द्रुतगति से चलाना.
२ कोशिश कराना, प्रयत्न कराना, परिश्रम कराना. ३ व्याप्त कराना, फैलाना. ४ चढ़ाई कराना, आक्रमण कराना. ५ लूट-खसोट

करानो, बरबाद कराना. ६ सहसा प्रवृत्त कराना, झुकाना ।
दौड़ाणहार, हारौ (हारी), दौड़ाणियौ—वि० ।
दौड़ायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
दौड़ाईजणौ, दौड़ाईजबौ—कर्म वा० ।
दौड़णौ, दौड़बौ—अक०रू० ।
दौड़ाड़णौ, दौड़ाड़बौ, दौड़ावणौ, दौड़ावबौ, द्रवड़ाड़णौ, द्रवड़ाड़बौ, द्रवड़ाणौ, द्रवड़ावौ, द्रवड़ावणौ, द्रवड़ाववौ—रू०भे० ।

दौड़ायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ अधिक वेग से गमन कराया हुआ, द्रुतगति से चलाया हुआ, साधारण चाल से तेज चलाया हुआ. २ प्रयत्न कराया हुआ, कोशिश कराया हुआ. ३ प्राप्त किया हुआ, फैलाया हुआ. ४ चढ़ाई कराया हुआ, आक्रमण कराया हुआ. ५ लूट-खसोट कराया हुआ, बरबाद कराया हुआ. ६ सहसा प्रवृत्त किया हुआ, झुकाया हुआ ।
(स्त्री० दौडायोड़ी)

दौड़ावणौ, दौड़ाववौ—देखो 'दौड़ाणौ, दौड़ावौ' (रू.भे.)
दौड़ावणहार, हारौ (हारी), दौड़ावणियौ—वि० ।
दौड़ाविश्रोड़ौ, दौड़ावियोड़ौ, दौड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
दौड़ावीजणौ, दौड़ावीजबौ—कर्म वा० ।
दौड़णौ, दौड़बौ—अक०रू० ।

दौड़ाविश्रोड़ौ—देखो 'दौड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दौड़ावियोडी)

दौड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चलने का साधारण चाल से द्रुतगमन किया हुआ. २ कोशिश किया हुआ, प्रयत्न किया हुआ, परिश्रम किया हुआ. ३ व्याप्त हुवा हुआ, छाया हुआ, फैला हुआ. ४ चढ़ाई किया हुआ, आक्रमण किया हुआ. ५ लूट-खसोट किया हुआ, बरबाद किया हुआ. ६ सहसा प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ ।
(स्त्री० दौड़ियोड़ी)

दौड़ौ-सं०स्त्री०—घोड़े के पैरों की आवाज, टाप ।

दौड़ौ-सं०पु० [अ० दौर अथवा सं० धोरणम्] १ आक्रमण, धावा ।
उ०—१ ऊपर वरस छयाळी आयो, बाधै असुरां जोर सवायो। जवनां काजम वेग सजोड़ा, देस मुरद्धर मांडै दौड़ा ।—रा.रू.
उ०—२ कर दौड़ां दिस कमधजां, गौ मेड़तै सिताब । मोहकम री मन मेळवा, मिळ पूछियो जवाब ।—रा.रू.
उ०—३ अै पण पहियड़ रै डूंगरां चढ़िया । दौड़ा करै, पण जोर कोई लागै नहीं ।—नैणसी
क्रि०प्र०—करणौ।
२ समय-समय पर होने वाला आगमन, सामयिक आना जाना ।
ज्यूं०—अठै बारोटियां रा दौड़ा पाछा पड़ण लागा है ।
मुहा०—दौड़ौ पड़णौ—आक्रमण होना, धावा होना ।
३ अफसर का अपने क्षेत्र में जांच-पड़ताल के हेतु किया जाने वाला भ्रमण, निरीक्षण के लिए घूमना ।
क्रि०प्र०—करणौ ।
मुहा०—दौड़ौ आणौ—निरीक्षण के हेतु भ्रमण का समय या तकाजा आना. २ दौड़ौ पड़णौ—निरीक्षण के लिए भ्रमण का समय आना. ३ दौड़ा मातै रैणौ, दौड़ा में रैणौ—जांच-पड़ताल या देख-भाल के लिए अपने मुख्य स्थान से बाहर रहना या होना. ४ चारों ओर घूमने की क्रिया, चक्कर, भ्रमण ।
क्रि०प्र०—करणौ ।
५ चौकसी के उद्देश्य से इधर-उधर जाने या घूमने की क्रिया, गश्त, फेरा ।
क्रि०प्र०—करणौ।
६ किसी ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना जो समय-समय पर होता हो, आवर्त्तन ।
ज्यूं०—दिल रौ दौड़ौ पड़णौ, मिरगी रौ दौड़ौ पड़णौ ।
मुहा०—दौड़ौ पड़णौ—रोग के लक्षण प्रकट होना ।
रू०भे०—दौर, दौरौ।

दौढ़—देखो 'डौढ' (रू.भे.)

दौढ़ी—देखो 'डौढी' (रू.भे.) उ०—ताहरां दस दौढ़ी छै। नव दौढ़ियै तौ मरद बैसै छै। दसमी दौढ़ां स्त्रियां बैसै ।—सयणी री वात

दौढ़ीदार—देखो 'डौढीदार' (रू.भे.) उ०—जोगावत जीवण जुध जांमळ। बदरीदास पिराग महाबळ। सोभावत कुळ गुणां सवायां। दौढ़ीदार सार दरसायां ।—रा.रू.

दौढ़ौ-सं०पु० [सं० द्वि अर्द्ध (क), अप० डि-अड्ढ] १ 'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार राजस्थानी का एक गीत (छंद) जिसके प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण में प्रत्येक में चौदह-चौदह मात्राएं होती हैं, अंत में रगण होता है व तुकान्त मिलता है। चतुर्थ व अष्टम चरण में प्रत्येक में बारह मात्राएं होती हैं जिनके अंत में गुरु लघु होता है और तुकान्त मिलता है। पंचम, षष्ठम् तथा सप्तम चरण में भी चौदह-चौदह मात्राएँ होती हैं जिनके अन्त में रगण होता है और तुकान्त मिलता है ।

मतान्तर में 'रघुनाथरूपक' के अनुसार इसी गीत (छंद) के प्रथम और द्वितीय चरण में चौदह-चौदह मात्राएँ होती हैं तथा अंत में रगण युक्त तुकान्त मिलता है। इसी प्रकार पंचम और षष्ठम चरण भी होते हैं। तृतीय व सप्तम चरण में प्रत्येक में सोलह सोलह मात्राएँ होती हैं। चतुर्थ एवं अष्टम चरण में अंत में गुरु लघु युक्त दस-दस मात्राएं होती हैं तथा तुकान्त मिलता है ।
२ 'पिंगळसिरोमणि' के अनुसार राजस्थानी का वह गीत (छंद) जिसमें छः द्वाले हों. ३
४ देखो 'डौढौ' (रू.भे.)

दौढौ-कुंडळियौ-सं०पु०—राजस्थानी का एक छंद विशेष जिस में प्रथम छ चरण, १३,११. १३,११. १३,११. १३,११. १३,११. १३,११. मात्राओं के क्रमशः होते हैं। अन्तिम दो चरण उल्लाला के होते हैं

जिनमें क्रमशः १५,१३, १५,१३ मात्राएं होती हैं।

दौनौ, दौनो—१ देखो 'दूनौ' (रू.भे.)

२ देखो 'दोनौ' (रू.भे.)

दौपार—देखो 'दोपहर' (रू.भे.)

दौफारी—देखो 'दोपारी' (रू.भे.)

दौयन्द—देखो 'द्विरद' (रू.भे.) (ह.नां.)

दौर—सं०पु० [अ०] १ फेरा, चक्कर, भ्रमण. २ दिनों का फेर, कालचक्र। उ०—आगै सभी अपत नरां कत हुयगा नांमी। कहां अगूणी कोर जाय आथूणी जांमी। समझावां सौ वार जिकै समभ्रण नह जांणै। दिन ऊंचै रै दौर तिकै नित ऊंची तांणै।—ऊ.का.

३ प्रताप, प्रभाव, हुकूमत। उ०—विहसंतो निज वदन वीरारस वेस रौ। दीपायौ हद दौर मुरद्धर देस रौ।—किसोरदांन बारहठ

४ शान-शौकत।

५ बढ़ती का समय, अभ्युदय काल।

यौ०—दौर-दौरौ।

६ आकार, ढंग। उ०—दीसै बायर दौर, जळियोड़ा छांणा ज्यूंही। तन रौ सारौ तौर, जी लेग्यो थारो 'जसा'।—ऊ.का.

७ पहुँच। उ०—तुरक कहै मक्का भला, जहां साहिब की ठौर। हिंदू जाय मथूरा वस्या, यही हिंदु की दौर।—ह.पु.वा.

८ पुरुषों के पहनने का एक वस्त्र विशेष (वागा) का छोर।

उ०—१ अर आप मगरां सूं ढाल खोल माथा ऊपर लीवी। वागे रा दौर ऊपर टांक लिया छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ हुय हैरांन पलांणै हयवर, ताता खड़ै ओर ही तौर। अपणा चित रासै आगारी, दुम ऊपर वागा रौ दौर।—अज्ञात

९ वारी, पारी।

मुहा०—दौर चलणा, दौर पड़णा—शराब के प्याले का बारी बारी से सब के सामने लाया जाना. १० वार, दफा।

ज्यूं—तीजै दौर में सारो कांम पूरौ व्है जासी।

११ देखो 'दौर' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—उरध लिलाड़ नीर भव आंखें, नाक कीर छवि न्यारी। दंत भुजा वक्ष वौर धीर धर, उर तसवीर उतारी।—ऊ.का.

१२ देखो 'दौड़' (रू.भे.) १३ देखो 'दौडौ' (रू.भे.)

दौर-दौरौ—सं०पु०यौ० [अ० दौर] अत्यधिक प्रभाव।

दौरांन—देखो 'दौरांन' (रू.भे.)

दौरांणी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.)

उ०—भाभी कौ देवर लाडलो दौरांणी ये आयो ढळती सी रात। भाभी के आगो जाणो छोड द्यो मारजी मर जाऊं जहर विस खाय। मरस्यो तो जास्यो जीवनूं मारणी दे भाभी म्हारे जिवड़ा को हार। नणदाळी ये भाभी म्हारी सेजां को सिणगार।—लो.गी.

दौरांन—सं०पु० [फा० दौरान] १ सिलसिला, झौंक. २ फेरा, बारी, पारी. ३ कालचक्र, दिनों का फेर. ४ दौरा, चक्र।

रू०भे०—दोरांण।

दौरौ—देखो 'दौड़ौ' (रू.भे.)

दौळ—क्रि०वि०—चारों ओर, चहुँ ओर। उ०—कंत घणो ही सांकड़ो, घेरो घर रै दौळ। वाभी देसण हूळसै, सेलां री घमरोळ।—वी.स.

दौलत—सं०स्त्री० [अ०] १ धन, संपत्ति। उ०—१ दौलत आंणै दूर सूं, अंग वणै अदनाह। वड़ा प्रपंची वांणिया, बाप गऊ वदनाह।

—बां.दा.

उ०—२ यह 'अजमाल' परताप, प्रसिद्ध दौलत इण पाई। घार वार कीरत करै, जांणै सब लोक वडाई।—सू.प्र.

२ राज्य, सत्ता, हुकूमत। उ०—थे मोटा आदमी कारणीक म्हारी दौलत में छो तिण सूं हिमैं सवाया छो।—नी.प्र.

३ परिभ्रमण। उ०—दिल ऊजळ नर ऊजळ, लखिन ऊजळ सिर लेखीय। दौलत दौलत मिळिन, लगी दो लत द्रिढ लेखीय।—र.ज.प्र.

४ भाग्य, नसीब।

रू०भे०—दउलत, दउलती, दौलति, दौलती।

यौ०—दौलतखांनो, दौलतवंत।

दौलतखांनो—सं०पु०यौ० [अ० दौलत+फा० खानः] निवास-स्थान, घर।

वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग दूसरे के घर के लिए सम्मानार्थ होता है। अपने घर के लिए गरीबखांनो शब्द का प्रयोग होता है।

दौलतमंद—वि०यौ० [अ० दौलत+फा० मंद] धनवान, सम्पन्न।

उ०—सैणां नूं मसलत नूं पेसकार दौलतमंदां रो कहियो छै।

—नी.प्र.

दौलतमंदी—सं०स्त्री०यौ० [अ०+फा] धनाढ्यता, सम्पन्नता।

दौलतवंत, दौलतवंती, दौलतवांन—वि०यौ० [अ० दौलत+सं० वंत] १ धनी, सम्पन्न. २ भाग्यशाली। उ०—निरमळ कमळ सकोमळ नारी। सुत देसळ गाश्रै स विचारी। वारंगनाह सती विकसंती। दौलतवंती दाड़िमदंती।—ल.पि.

रू०भे०—दौलतिवंत।

दौलति—देखो 'दौलत' (रू.भे.)

उ०—सरिख रित पति दिपती सूरति। द्वारि संपति वधति दौलति।

—ल.पि.

दौलतिवंत—देखो 'दौलतवंत' (रू.भे.)

उ०—अनेक सत्रूकार, सत धरम रा राखणहार, खैराइतां रा करणहार, धजबंधी कोड़ीधज लाखेसरी दौलतिवंत चौरंग लिखमी रा लाडिला, लोक वडा वापारी, वहवारिया. सोदागर, वहरांम संद, साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै।—रा.सा.सं.

दौलती—वि० [अ० दौलत+रा०प्र०ई] १ धनी, सम्पन्न।

२ भाग्यशाली। उ०—दळ अकल पासि निरमळ कमळ दौलती। यह सगह विरिद वह खाटणौ लखपती।—ल.पि.

३ देखो 'दौलत' (रू.भे.) उ०—१ सोळ सिणगार सज्या, बीजा सघळा कांम तज्या, हाथ नी रूड़ी, विहु वाहि सळकि चूड़ी, लपुलाघवी

कळा, मन कीधा मोकळा, चित्त नो उदार, अति घणुं दातार, दौलती हाथ, परमेसर देजे तेह नो साथ ।—व.स.

उ०—२ किया रवांना दौलती, वीसळनंद विगोय । कृपण हिया मँह कांगसी, नहिं फेरे नर-लोय ।—वां.दा.

दौलेय-सं०पु० [सं०] १ दस दिग्गजों में से कुमुद नामक दिग्गज (वं.भा.) २ कछुआ, कच्छप ।

दौवारिक-सं०पु० [सं०] द्वारपाल । उ०—अनेक गणनायक दंडनायक राजेस्वर तलवर माडंवीक कोटंविक मंत्रि महामंत्रि गणक दौवारिक अमात्य चेटक ।—व.स.

दौस्यिकापण-सं०पु० [सं० दौष्यिकापण] कपड़े के व्यापारी की दुकान, कपड़ा बाजार । उ०—भांडागारिक कोस्टाकार सत्राकार मठ विहार प्रपामंडप देसमंडप त्रिक चतुस्क चत्वर चतुस्पथ राजमारग गांधिकापण दौस्यिकापण सोवरणाकार ।—व.स.

रू०भे०—दोसिकापण ।

दौहित्र—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

दौहित्री—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दौहित्रौ—देखो 'दोहितौ' (रू भे.)

(स्त्री० दौहित्री)

द्यउ-वि० [सं० द्वि] एक और एक दो ।

द्यणौ, द्यवौ—देखो 'दैणौ, दैवौ' (रू.भे.) उ०—कुंझां, द्यउ नइ पंखड़ी, थांकउ विनउ वहेसि । सायर लंघी प्री मिळउं, प्री मिळि पाछी देसि । —ढो.मा.

द्यांणूं, द्यांणौ—देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.) उ०—१ सासूड़ी, मनै वांवीं तीतर वोल्यो, अेक द्यांणी वोली कोचरी ।—लो.गी.

उ०—२ जंवाईड़ा, तनै द्यांणूं तीतर बोल्यो रे क, मेरी लाडो ना चलै ।—लो.गी.

उ०—३ पहलो तो पग जोरै पागड़ै में दीनो रे काळै मूं की कोयलड़ी कसूणी बोली रे । मोड़ो वतळायो, हंसता-खेलता वैरी जोरे ने ले चाल्या रे । बांई वोली कोचरी, खर द्यांणो वोल्यो रे, मोड़ो वतळायो ।—लो.गी.

(स्त्री० द्यांणी)

द्यांनतदार—देखो 'दयांनतदार' (रू.भे.)

द्यांमणौ—देखो 'दयावणौ' (रू भे.) उ०—१ एहवां वचन द्यांमणां वोलइ, विहुं करि पीटइ आप । केहां जनम तणां इणि वेळां, आवी लागां पाप ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ जाग्यु खग ते झाल्यु जांणी, मांडूं अति आक्रंद । सर सघळी पंखी बहु वोलो, दीन द्यांमणां मंद ।—नळाख्यांन

(स्त्री० द्यांमणी)

द्याड़ो, द्याढ़ि —देखो 'दिवस' (रू.भे.)

उ०—वाडवि वात कही विस्तरी, दमयंती वर वरसि खरी । मांनी वारता ताची सही, एकि द्याडि आव्या वही ।—नळाख्यांन

द्याळ, द्याळु—देखो 'दयाळु' (रू.भे.)

द्यावड़-सं०स्त्री०—चर्खे में माल के टिकाव के लिए घेरे (रहँट) की पंखड़ियों के मध्य वांधी जाने वाली डोरी, जतनी ।

द्यु-सं०पु० [सं०] १ दिन. २ आकाश. ३ स्वर्गलोक. ४ सूर्यलोक. ५ अग्नि ।

द्युम-सं०पु० [सं०] आकाश में गमन करने वाला पक्षी ।

द्युगण-सं०पु० [सं०] ग्रहों की मध्यगति के साधक अंग, दिन ।

द्युचर-सं०पु० [सं०] १ ग्रह. २ पक्षी ।

द्युज्या-सं०स्त्री० [सं०] अहोरात्र वृत्त की व्यास रूप ज्या ।

द्युत-सं०पु० [सं द्युत्] किरण (नां.मा.)

द्युति—देखो 'दुति' (रू.भे.)

द्युतिकर-वि० [सं०] प्रकाश उत्पन्न करने वाला, चमकने वाला ।

द्युतिधर-वि० [सं०] प्रकाश या कांति को धारण करने वाला ।

द्युतिमंत, द्युतिमांन-वि० [सं० द्युतिमत्] प्रकाशवान्, चमकीला ।

द्युतिमा-सं०स्त्री० [सं० द्युति+रा०प्र०मा] प्रकाश, तेज, प्रभा ।

द्युन-सं०पु० [सं०] लग्न से सातवां स्थान ।

द्युनिस-सं०पु० [सं० द्युनिश] अहर्निश, रातदिन ।

द्युपति-सं०पु० [सं०] १ सूर्य, भानु. २ इंद्र ।

द्युपथ-सं०पु० [सं०] आकाशमार्ग ।

द्युमण-सं०पु० [सं० द्युम्न] धन, द्रव्य (ह.नां.)

द्युमणि-सं०पु० [सं०] १ सूर्य, भानु. २ मंदार. ३ शोधा हुआ तांवा ।

द्युलोक-सं०पु० [सं०] स्वर्गलोक ।

द्यूत-सं०पु० [सं०] जुआ ।

द्यूतभेद-सं०पु० [सं०] ७२ कलाओं में से एक (व.स.)

द्यूतविसेस-सं०पु० [सं० द्यूतविशेष] ६४ कलाओं में से एक ।

द्यून-सं०पु० [सं०] लग्न स्थान से सातवीं राशि ।

द्यो-सं०पु० [सं०] १ स्वर्ग. २ आकाश, व्योम. ३ शतपथ ब्राह्मण ।

द्योत—देखो 'दुति' (रू.भे.) (अ.मा.)

द्योरांणी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.)

द्योस—देखो 'दिवस' (रू.भे.)

द्यौ-वि० [सं० द्वि] एक और एक, दो ।

द्यौस—देखो 'दिवस' (रू.भे.) उ०—द्यौस न राति जाति नहिं कोई, अन्न या जाति छोत ले ओई ।—ह.पु.वा.

द्रंग-सं०पु० [सं०] १ नगर, शहर । उ०—१ माह महारस मयण सब, अति ऊलहइ अनंग । मो मन लागी मारवण, देखण पूगळ द्रंग । —ढो.मा.

उ०—२ सूरातन जांही घणइ सूरातन, ईसर तणा वाधिया अंग । प्रळय काळ हुसी ताइ प्रिथमी, द्रोही तणा थरकिया द्रंग । —महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'दुरग' (रू.भे.) ३ देखो 'द्रग' (रू.भे.)

उ०—सोधी राजकुंवारी री द्रंग आंखियां प्रफुलित होय जचा रै तापणै (सिघड़ी) माथै पड़ै ।—वी.स.टी.

रू०भे०—द्रंग।

अल्पा०—द्रंगड़ी, धींगड़ी, धींगड़ी, ध्रंगड़ी।

मह०—धींगड़।

द्रंगड़ी—देखो 'द्रंग' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मतिवाळा घूमै नहीं, नहं घायल कणणाय। वाळूं सखी ऊ द्रंगड़ी, भड़ बापड़ा कहाय। —हा.झा.

द्रंगी—सं०पु०—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा जिसके मुख का रंग श्वेत तथा उस पर धब्बे होते हैं। ऐसा घोड़ा अशुभ माना जाता है (शा.हो)

द्रउडणौ, द्रउडबौ—देखो 'दौड़णौ, दौड़बौ' (रू.भे.)

उ०—भीमु भीडंतउ जमगणतडे कूदइ कुरववीर। पाडइ द्रउडत भेडवइ, बांधीय बोलइ नीरि।—प.पं.च.

द्रकक्षेप, द्रकखेप—सं०पु० [सं० दृक्क्षेप] १ दृष्टिपात, अवलोकन. २ दशम लग्न के नतांश की भुज ज्या जिसका कार्य सूर्य ग्रहण के स्पष्टीकरण में होता है।

द्रकनति—सं०स्त्री० [सं० दृङ्नति] ग्रहण स्पष्ट करने में पर्वान्तिकालीन सूर्य, चंद्र स्पष्ट करते हैं तथा वे भूगर्भाभिप्राय से एक सूत्र में आ जाते हैं पर भू-पृष्ठाभिप्राय (दृक्) से नहीं आते तब भूपृष्ठाभिप्राय से उन्हें एक सूत्र में लाने के लिये किया जाने वाला याम्योत्तर संस्कार।

द्रकपथ—सं०पु० [सं० दृकपथ] दृष्टि का मार्ग दृष्टि की पहुँच।

द्रकपात—सं०पु० [सं० दृकपात] दृष्टिपात, अवलोकन।

द्रकस्रुति—सं०पु० [सं० दृक्श्रुति] सांप।

द्रखद—सं०पु० [सं० दृषद] पत्थर, पाषाण (ह.नां.)

रू०भे०—द्रसद।

द्रग—सं०पु० [सं० दृग] १ आंख, नयन, लोचन।

उ०—१ देखै अमीर अणधीर द्रग, नरपत रूप अनंग रै। सब कहै न को 'अजमाल' सम, अवर साल 'अवरंग' रै।—रा.रू.

उ०—२ वेरा वैरागर सागर सम सोभा। रीती गागर लै नागर तिय रोभा। धावै द्रग धारा दारा मुख धोवै। जीवन संजीवन जीवन धन जोवै।—ऊ.का.

२ देखने की शक्ति।

३ दो की संख्या*।

रू०भे०—द्रंग, द्रिग, द्रगन।

द्रगपाळ—देखो 'दिग्पाळ' (रू.भे.)

उ०—१ दामोदर तूझ दसं द्रगपाळ, किता इक पार न जांणे काळ। उमा तो पार अगम्म अलेख, लखम्मी तूझ न जांणे लेख।—ह.र.

उ०—२ द्रगपाळ कंद करसी दुभलि, इसो तेज दरसावियो। रवि सिंह'र प्रगट हुय लेण, 'अभमल' बाहर आवियो।—सू.प्र.

द्रगोचर—वि० [सं० दृगोचर] जो आंख से दिखाई दे।

द्रगोल—सं०पु० [सं० दृग्गोल] वह वृत्त जिसे ऊर्ध्व और अध स्वस्तिक में होता हुआ कल्पित कर के जिस ओर ग्रहों का उदय होता है उस ओर घुमा कर उनकी स्थिति का पता लगाया जाये।

द्रग्ज्या—सं०स्त्री० [सं० दृग्ज्या] दृक् मंडल या दृग्गोल के ख-स्वस्तिक से जो ग्रह जितना लटका रहता है उसे नतांश कहते हैं और इसी नतांश की ज्या (दृग्ज्या कहलाती है)।

द्रग्लंबण, द्रग्लंबन—सं०पु० [सं० दृग्लंबन] ग्रहण स्पष्ट करने में जब सूर्य, चंद्र गर्भाभिप्राय से एक सूत्र में आ जाते हैं परन्तु पृष्ठाभिप्राय से एक सूत्र में नहीं आते, तब उन्हें पृष्ठाभिप्राय से एक सूत्र में लाने के लिए किया जाने वाला पूर्वापर संस्कार।

द्रजीत—देखो 'इंद्रजीत' (रू.भे.)

उ०—उगार बभीखण कीध अभीत, दिधी तैं लंक अलीध दईत। दसानन कुंभ अजीत द्रजीत, संघारिय लंक वहोड़िय सीत।—ह.र.

द्रजोण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)

उ०—अफारा पारंभ वाळा डिगै सीस सेस वाळा! महावीर डिगै जो द्रजोण वाळी मांण।—प्रभूदान मोतीसर

द्रठा—सं०स्त्री० [सं० दृश्य] आंख, नयन (अ.मा.)

द्रठि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

उ०—नाही नयण समारिया, उरि भारी सु लेइ। द्रठि लगेसी मारई, क्युं क्युं जितन करेइ।—ढो.मा.

द्रडवडणौ, द्रडवडबौ—

उ०—मठ देवकुळ खडहडत पाडतउ, चतुस्पद दडवड द्रडवडतउ, घलहल घ्रित तैल भोजन ढोळतउ।—व.स.

द्रडवडियोड़ौ—भू०का०कृ०—

(स्त्री० द्रडवडियोड़ी)

द्रढ़—वि० [सं० दृढ़] १ जो ढीला या शिथिल न हो, जो कस कर बंधा हो, प्रगाढ़. २ जो जल्दी न टूटे-फूटे, ठोस, कड़ा, कठोर।

उ०—द्रढ़ दंत दब्बि देखत दुसार। आवत न पार दुख सिंधु पार। आपकी इजाजति चहत अग्ग। मुरधरा जाण को देहु मग्ग।—ऊ.का.

३ बलवान, बलिष्ठ, पुष्ट. ४ जो जल्दी दूर, नष्ट या विचलित न हो सके, स्थायी। उ०—गावै नित सूर सकत्त गणेस। सदा द्रढ़ ध्यांन धरै सिध सेस। वदै मुनि चारण देव विसेस। आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह.र.

५ निश्चित, ध्रुव, पक्का।

ज्यूं—वात द्रढ़ करणी।

६ कड़े दिल का, निडर. ७ ढीठ।

सं०पु०—१ लोहा. २ विष्णु. ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र. ४ तेरहवां मनु।

रू०भे०—द्रिड, दढ़, दिढ़, द्रिढ़।

द्रढ़करमी—वि० [सं० दृढ़कर्म्मन्] (स्त्री० द्रढ़करमी) स्थिरता और धैर्य के साथ काम करने वाला।

द्रढ़मूठी—वि० [सं० दृढ़+मुष्टिका] कंजूस, कृपण (डि.को.)

द्रढ़क्षत्र, द्रढ़खत्र—सं०पु० [सं० दृढ़क्षत्र] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

द्रढ़णौ, द्रढ़बौ—क्रि०स० [सं० दृढ़] १ प्रगाढ़ करना, मजबूत करना. २ पक्का करना।

क्रि०अ०—३ पुष्ट या मजबूत होना, कड़ा होना।
द्रढ़णहार, हारौ, (हारी), द्रढ़णियौ—वि०।
द्रढ़िग्रोड़ौ, द्रढ़ियोड़ौ, द्रढ़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
द्रढ़ीजणौ, द्रढ़ीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

द्रढ़तरु-सं०पु० [सं० दृढ़तरु] धव का पेड़।

द्रढ़ता-सं०स्त्री० [सं दृढ़ता] १ दृढ़ होने का भाव, दृढ़त्व. २ पक्कापन. ३ मजबूती. ४ डांवाडोल न होने का भाव, विचलित न होने का भाव, स्थिरता।
उ०—पर-दुख मेटण काज, द्रढ़ता मेरी नित रहै। तींसू आयौ आज, क्षुधा दुख तूं ना लहै।—सिंघासण बत्तीसी
रू०भे०—द्रिढ़ता।

द्रढ़न्वौ-सं०पु० [सं० दृढ़धन्वन्] धनुष चलाने में दृढ़।

द्रढ़नाम-सं०पु० [सं० दृढ़नाम] वाल्मीकि के अनुसार अस्त्रों की एक रोक।

द्रढ़नेत्र-सं०पु० [सं० दृढ़नेत्र] विश्वामित्र के चार पुत्रों में से एक।

द्रढ़नेमि-वि० [सं० दृढ़नेमि] जिसकी धुरी मजबूत हो।

द्रढ़व्रती-सं०पु० [सं० दृढ़व्रती] भीष्मपितामह।

द्रढ़भूमि-सं०स्त्री० [सं० दृढ़भूमि] एक अभ्यास जिससे मन एकाग्र और स्थिर हो जाता है (योगशास्त्र)

द्रढ़मन्न-वि०यौ० [सं० दृढ़+मन] स्थिर चित का, दृढ़।

द्रढ़लोम-वि० [सं० दृढ़लोमन्] (स्त्री० द्रढ़लोमी) जिसके रोंयें या बाल कड़े हों।
सं०पु०—सूअर।

द्रढ़वंत-वि० [सं० दृढ़वंत] १ दृढ़, स्थिर। उ०—विजपाळ रांम केहर विकट्ट, भोमेण रांम फतमल सुभट्ट। हरिभांण नाथ भाराथ हांम, द्रढ़वंत सांम पेखे दुगांम।—रा.रू.
२ वीर, सुभट।

द्रढ़वरमा-सं०पु० [सं० दृढ़वर्म्मन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम (महाभारत)

द्रढ़व्य-सं०पु० [सं० दृढ़व्य] एक ऋषि।

द्रढ़व्रत-सं०पु० [सं० दृढ़व्रत] स्थिर संकल्प।

द्रढ़स्यु-सं०पु० [सं० दृढ़स्यु] अगस्त्य ऋषि का लोपामुद्रा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

द्रढ़ांग-वि० [सं० दृढ़ांग] (स्त्री० दृढ़ांगी) दृढ़ अंग वाला, हृष्ट-पुष्ट।

द्रढ़ा-वि०स्त्री० [सं० दृढ़ा] १ शक्तिशालिनी, बलवान।
उ०—दीरघा लघु वपु द्रढ़ा, सवेही रूप विरूपा। वकळा सकळा व्रजा, उपावण आप आपुपा।—देवि.
२ दृढ़, मजबूत. ३ कठोर।

द्रढ़ाड़णौ, द्रढ़ाड़बौ—देखो 'द्रढ़ाणौ, द्रढ़ाबौ' (रू.भे.)
द्रढ़ाड़णहार, हारौ (हारी), द्रढ़ाड़णियौ—वि०।
द्रढ़ाड़िग्रोड़ौ, द्रढ़ाड़ियोड़ौ, द्रढ़ाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
द्रढ़ाड़ीजणौ, द्रढ़ाड़ीजवौ—कर्म वा०।
द्रढ़णौ, द्रढ़वौ—अक० रू०।

द्रढ़ाड़ियोड़ौ—देखो 'द्रढ़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० द्रढ़ाड़ियोड़ी)

द्रढ़ाणौ, द्रढ़ाबौ-क्रि०स० [सं० दृढ़] १ दृढ़ करना, मजबूत करना. २ पक्का करना, निश्चित करना।
द्रढ़ाणहार, हारौ (हारी), द्रढ़ाणियौ—वि०।
द्रढ़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।
द्रढ़ाईजणौ, द्रढ़ाईजबौ—कर्म वा०।
द्रढ़णौ, द्रढ़बौ—अक० रू०।
द्रढ़ाड़णौ, द्रढ़ाड़बौ, द्रढ़ावणौ, द्रढ़ावबौ—रू०भे०।

द्रढ़ायु-सं०पु० [सं० दृढ़ायु] १ तृतीय मनु सावर्णि का एक पुत्र. २ उर्वशी के गर्भ से उत्पन्न ऐल राजा का पुत्र (महाभारत)

द्रढ़ायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दृढ़ किया हुआ, मजबूत किया हुआ. २ पक्का किया हुआ, निश्चित किया हुआ।
(स्त्री० द्रढ़ायोड़ी)

द्रढ़ाव-सं०पु० [सं० दृढ़] १ दृढ़ता, स्थिरता, मजबूती। उ०—जोर दिखायौ साह रौ, फोर घरै प्रसताव। घर घर हूंदा मांझियां, कर कर वात द्रढ़ाव।—रा.रू.

द्रढ़ावणौ, द्रढ़ाववौ—देखो 'द्रढ़ाणौ, द्रढ़ाबौ' (रू.भे.)
द्रढ़ावणहार, हारौ (हारी), द्रढ़ावणियौ—वि०।
द्रढ़ाविग्रोड़ौ, द्रढ़ावियोड़ौ, द्रढ़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
द्रढ़ावीजणौ, द्रढ़ावीजवौ—कर्म वा०।
द्रढ़णौ, द्रढ़वौ—अक० रू०।

द्रढ़ावियोड़ौ—देखो 'द्रढ़ायोड़ौ' (रू.भे.)

द्रढ़ासण, द्रढ़ासन-सं०पु० [सं० दृढ़ासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन-जिसमें बांयें हाथ की ठेउनी से मोड़ कर सिर के नीचे रखना और अंडकोस न दवे इस ढंग से दोनों पांवों को लंबा कर के बांयी करवट सोना होता है। इससे स्वप्न बहुत कम आते हैं। हाथ और पार्श्व के हेर-फेर से इसका दूसरा प्रकार दक्षिणासन भी कहलाता है।

द्रढ़ासु-सं०पु० [सं०] एक सूर्य वंशी राजा का नाम (सू.प्र.)
उ०—धुंवमार तणै उपजे द्रढ़ासु।—सू.प्र.

द्रढ़ियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ प्रगाढ़ किया हुआ, मजबूत किया हुआ. २ पक्का किया हुआ. ३ पुष्ट या मजबूत हुवा हुआ, कड़ा हुवा हुआ।
(स्त्री० द्रढ़ियोड़ी)

द्रढ़ै-क्रि०वि० [सं० दृढ़] दृढ़ता से। उ०—वदै तव नांम लखम्मण-वीर। नरां त्यां घात लगै नहि नीर। द्रढ़ै तव नांम सु अक्खर दोय। नेंड़ौ रह प्रांण नियारौ न होय।—ह.र.

द्रढ़वाळी-सं०स्त्री० [सं० दृढ़+आलुच् प्रत्य] दृढ़ता, स्थिरता।
उ०—जेता बोल बोलै तेता दे संभाळी। वच्चने वच्चने दिए द्रढ़वाळी।—ना.द.

द्रहट-संपु० [सं० दुर्निर्हरि] १ दैन (ह.नां.). २ वह पशु जिस पर पानी या पखाल लाद कर लाया जाता हो ।

द्रप-वि० [सं० दर्प] घमंडी । उ०—निवाळ, ऊनाळ, विमळ बरसाळ, सब मुर्गो । दवाळ, हो देवा भजन विन भेवा द्रप दुती ।—ऊ.का.

द्रपक-संपु० [सं० दर्पक] कामदेव (ग्र.मा.)

द्रपण—देखो 'दरपण' (रू.भे.)

द्रपतयो-संपु०—काव्य छंद का भेद विशेष ।

द्रब-संपु० [सं० द्रव्य] १ चांदी, रजत (ग्र.मा.)
२ देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) (नां.मा., डि.को.)
उ०—१ पग पगां संपड़ै ग्रांख संपड़ै क ग्रंधै, भूखै ग्रन्न संपड़ै जेम लोभी द्रब लद्धै ।—ज.खि.
उ०—२ जो 'दुरो' द्रब मांगियो, प्रथम न दीनो साह । च्यार किसत कीधी चतू, दिक्खण हूंदै राह ।—रा.रू.

द्रबउभेळ-वि० [सं० द्रव्य+रा० उभेळ] दातार (ग्र.मा.)

द्रबकणी, द्रबकबौ-क्रि०ग्र०—कंपना ।
उ०—डरै माढ़ मेवाड़, वळै पाहाड़ द्रबक्कै । ग्रांकपै ग्ररबद्द, सीस देवड़ा चमक्कै ।—गु.रू.बं.

द्रबड़णी, द्रबड़बौ—देखो 'दौड़णी, दौड़बौ' (रू.भे.)
द्रबड़णहार, हारौ (हारी), द्रबड़णियौ—वि० ।
द्रबड़िग्रोड़ौ, द्रबड़ियोड़ौ, द्रबड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
द्रबड़ीजणौ, द्रबड़ीजबौ—भाव वा० ।

द्रबड़ाड़णौ, द्रबड़ाड़बौ—देखो 'दौड़ाणी, दौड़ावौ' (रू.भे.)
द्रबड़ाड़णहार, हारौ (हारी), द्रबड़ाड़णियौ—वि० ।
द्रबड़ाड़िग्रोड़ौ, द्रबड़ाड़ियोड़ौ, द्रबड़ाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
द्रबड़ाड़ीजणौ, द्रबड़ाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

द्रबड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'दौड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० द्रबड़ाड़ियोड़ी)

द्रबड़ाणौ, द्रबड़ाबौ—देखो 'दौड़ाणौ, दौड़ावौ' (रू.भे.)
द्रबड़ाणहार, हारौ (हारी), द्रबड़ाणियौ—वि० ।
द्रबड़ायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
द्रबड़ाईजणौ, द्रबड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

द्रबड़ायोड़ौ—देखो 'दौड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० द्रबड़ायोड़ी)

द्रबड़ावणौ, द्रबड़ावबौ—देखो 'दौड़ाणौ, दौड़ावौ' (रू.भे.)
द्रबड़ावणहार, हारौ (हारी), द्रबड़ावणियौ—वि० ।
द्रबड़ाविग्रोड़ौ, द्रबड़ावियोड़ौ, द्रबड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
द्रबड़ावीजणौ, द्रबड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

द्रबड़ावियोड़ौ—देखो 'दौड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० द्रबड़ावियोड़ी)

द्रबत्रिया-संस्त्री० [सं० द्रव्य+स्त्री] गनिका, वेश्या (ग्र.मा.)

द्रब्ब—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) उ०—दळ वळ तुरंग गज सबय द्रब्ब । ससदिया साह तोरा सरब्ब ।—सू.प्र.

द्रब्बघर-संपु०यौ० [सं० द्रव्य+गृह] खजाना, भण्डार ।

द्रमंकणौ, द्रमंकबौ-क्रि०ग्र०-[देश०] गर्जन होना, ध्वनि होना, ग्रावाज होना । उ०—१ नाचे हर-सुत मोर द्रमंके सोह गुंजाता । कोवा जिण रा जांण चांनणी धोळ सुहाता ।—मेघ.
उ०—२ ग्राभ झरंती बूंद विचाळै चातक झंपै । डार बुगलियां वाग निदेमग साजन ज्रंपै । मांनै तो एहसांण द्रमंके भांमण डरती । हुळ-फळती घन ग्रंघ मिळै गळबत्यां भरती ।—मेघ.
द्रमकणौ, द्रमकबौ—रू०भे० ।

द्रमंको-संपु० [देश०] धमका, गर्जन । उ०—नाग द्रमंका की पड़ै, नागण धर मचकाय । इण रा भोगणहार जे, ग्राज सिडांणा ग्राय ।
—वी.स.

द्रम-संपु० [देश०] १ प्रचण्ड वायु. २ वेग या ग्रांधियों के कारण निरन्तर बदलते रहने वाले टीबों का मरु-प्रदेश. ३ मरुस्थल की वह भूमि जिसमें मनुष्य, जानवर ग्रादि धँस जाता है ।
उ०—तिकै जैसलमेर था कोस २५ ग्रायवण नूं मंगळीका-थळ छै, तठै रहै छै । वा ठोड़ मंगळीका थळ कहावै छै । तठै द्रम छै । सु भोमियो होय सु डांडी ग्रावै । ग्रसैंधो डांडी टळै सु घोड़ो ग्रसवार गरक हुवै जाय ।—नैणसी
[सं० द्रम्म] ३ तोल का नाप विशेष ।
४ देखो 'द्रुम' (रू भे.)

द्रमकणौ, द्रमकबौ-क्रि०ग्र० [देश०] १ भयभीत होना, थर्राना, कांपना । उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या ग्ररी । हुटुहुडाट हुउ हुडकी करी ।
—विराट पर्व
२ देखो 'द्रमद्रमणौ, द्रमद्रमबौ' (रू.भे.) उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या ग्ररी । हुटहुडाट हुउ हुडकी करी ।—विराट पर्व
३ देखो 'द्रमंकणौ, द्रमंकबौ' (रू.भे.)

द्रमणारजुन-संपु० [सं० द्रुम+ग्रर्जुन] ग्रर्जुन नामक वृक्ष ।

द्रमद्रमणौ, द्रमद्रमबौ-क्रि०ग्र० [ग्रनु०] (दुंदुभि, नगारे ग्रादि की) ध्वनि होना (उ.र.) उ०—धूळि मिळीय भळभळीय सयळ दिसि दिगगय छाईउ । गयणे दुंदुहि द्रमद्रमीय सुरवरि जसु गाईउ ।—पं.पं.च.
द्रमकणौ, द्रमकबौ—रू०भे० ।

द्रमद्रमाटि-संस्त्री० [ग्रनु०] दुंदुभि, नगारे ग्रादि बाद्यों की ध्वनि, ग्रावाज । उ०—वीरभ्रिदंग वाजिया, जयढक्क वाजी, गगहर मांमह्या, ग्रट्टग्रहते त्र्यंबक तणी ग्रट्टग्रहाटि त्रिभुवन टळटळिउं, भेरि भंगळ तणे भूभुवाटि भूकिइं भिळकी फाटी, काहल तणे कोलाहळि कांन कमकम्या, ढूंढि दमांमा दुडदडी द्रमद्रमाटि भयंकर हुंग्रा लागउ ।—व.स.

द्ररोळ—देखो 'दरोळ' (रू.भे.)

द्रव-संपु० [सं० द्रवः] १ पानी की तरह पतला, तरल ।
उ०—हंस मीन कूरम हुवो, ग्रोभरतार समरथ । सरित हुवो द्रव होय सो, किसू ग्रछेरा कथ ।—बां.दा.

२ भागना, पलायन (डिं.को.) ३ आंच पाकर पानी की तरह फैला हुआ, पिघला हुआ।

सं०पु०—१ द्रवत्व. २ देखो 'द्रव्य' (रू.भे.)

रू०भे०—द्रिव।

द्रवड़—देखो 'द्रविड़' (रू.भे.)

द्रवण-वि० [सं० दा] देने वाला। उ०—सरब लधु नगण आयुस द्रवण सुर सुरक, तात विध सावित्री कनक रंग तैण। भ्रिगूमुनि चढ़ण गज नऊं रस में अभंग, नृप मगध देस कुळ विप्र मुर नैण।—र.रू.

सं०पु० [सं० द्रुम] १ कल्पवृक्ष (नां.मा.)

२ देखो 'द्रविण' (रू.भे.) (अ.मा.)

द्रविड़-सं०पु० [सं० द्रविड] दक्षिण भारत का देश या इस देश का निवासी (व.स.)

रू०भे०—द्रवड़।

द्रविण-सं०पु० [सं० द्रविणः] १ धन, संपत्ति. २ सोना, हेम. ३ पराक्रम, बल. ४ कामदेव के पांच बाणों में से एक।

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक परठि द्रविण सोखण सर पंच। चितवणि हसणि लसणि गति संकुचणि सुंदरि द्वारि देहरा संच।—वेलि.

रू०भे०—द्रवण, द्रवेण।

द्रविणो, द्रविबौ-क्रि०अ०—द्रवीभूत होना, विनम्र होना।

उ०—१ सु राठौड़ देईदास वगड़ी भांज नें भाकर पैंठा नै दिन ५ तथा ७ साथ करनैं आय द्रविया था।—राव चंद्रसेण री वात

उ०—२ गाम वडुवज आवियौ, स्री नवकोट नरंद। हीण थयौ द्रवि देवडौ, ज्यों रवि ऊगां चंद।—रा.रू.

द्रवेण—देखो 'द्रविण' (रू.भे.)

द्रव्य-सं०पु० [सं०] १ वह पदार्थ जिसमें केवल गुण और क्रिया अथवा केवल गुण हो. २ पदार्थ, चीज, वस्तु. ३ धन, दौलत।

उ०—राकस त्रिपत हुग्रो। ताहरां राकस कही—'जु, सेतरांम! तूं कहै तो तोनैं द्रव्य वताऊं?' ताहरां सेतरांम कही—'द्रव्य तो म्हारै घणो ही छै, पण कोई इसो वर दे तैसूं नांम रहै।'—नैणसी

४ वह जिससे कोई वस्तु बनाई जाय, सामग्री, सामान. ५ औषधि, दवा. ६ पीतल. ७ गुणों का समूह (जैन). ८ मदिरा, शराब. ९ गोंद. १० नौ की संख्या*।

रू०भे०—दरव, दरव्व, दरव, द्रव, द्रव्व, द्रव, द्रिव।

द्रव्यउनोदरी-सं०स्त्री० [सं०] भंड उपकरण (वर्तन, वासन पात्रादि) और आहार पानी का शास्त्र में जो परिमाण वतलाया है उसमें कम करने की क्रिया (जैन)

द्रव्यनिक्षेप-सं०पु०यौ० [सं०] पदार्थ विशेष की भूत और भविष्यत् कालीन पर्याय के नाम का वर्तमान काल में व्यवहार करने की क्रिया या भाव। उ०—साधपणो न पाळै अनै साधू रो नांम धरावै तो ते द्रव्यनिक्षेप रै लेखै साध वाजै।—भि.द्र.

द्रव्यपति-सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार भिन्न-भिन्न द्रव्यों या पदार्थों के अधिपति, भिन्न-भिन्न राशियां।

द्रव्यवंत, द्रव्यवांन-वि० [सं० द्रव्यवत्] धनाढ्य, धनी। उ०—ताहरां कह्यौ—थे मोनूं द्रव्यवंत वावड़ो।—सयणी री वात

द्रव्याधीस-सं०पु० [सं० द्रव्याधीश] कुवेर (डिं.को.)

द्रव्व—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.)

उ०—दिग्रा ववारा देस दे, हैंवर द्रव्व हसत्ति। पतिसाही थां ऊपरां, यूं कहिग्रो असपत्ति।—वचनिका

द्रसट-सं०पु० [सं० दृष्ट] नेत्र, नयन, आंख। उ०—चंद्र हूंत चंद्रका द्रस्ट वीछड़ी न देखी। घण निवास वीजळी पासि तजि टळी न पेखी।—रा.रू.

वि०—१ देखा हुआ. २ जाना हुआ, प्रकट, ज्ञात।

रू०भे०—दिट्ठ।

द्रसद—देखो 'द्रखद' (रू.भे.) (अ.मा.)

द्रस्टकूट-सं०पु० [सं० दृष्टकूट] पहेली।

द्रस्टांत, द्रस्टांति-सं०पु० [सं० दृष्टांत] १ समान धर्म वाली किसी प्रचलित वस्तु या व्यापार का कथन जो अज्ञात वस्तुओं या व्यापारों का धर्म्म आदि वतलाते हुए समझाने के लिए हो।

उ०—१ रुखमणीजी कंचुकी पहिरी छै सु मांनु इभ कहतां हस्ती तै कै कुंभस्थळ ऊपरि अंधारी राखी छै। दूसरौ द्रस्टांत जांणै महादेवजी कवच पहिरचौ छै, कांम सों जुद्ध करिवा के तांई। तीसरौ द्रस्टांत स्रीक्रिस्णजी का मन के तांई मंडप छायौ छै, जु मन आय वइसिसी। चौथौ भाव यौ जु मन वांध्यौ चाहिजै, त्यें के कारणैं या वारिगह दीधी छै।—वेलि टी.

उ०—२ समस्त मनुष्य छै त्यां सिघळां हरी आंखि स्रीक्रिस्णजी रा मुख सों द्रस्टि लागि रही छै। ताकौं द्रस्टांत जैसे समुद्र कै विखै चंद्रमा का प्रतिविंव नैं मछळी सब लागि रहै छै, आंणि पासि घेरि रहै छै, इह भांति सब ही का नेत्र क्रिस्णजी का मुखारविंद नैं आरोपित किया छै।—वेलि टी.

२ उदाहरण, मिसाल। उ०—रीता हुवै हजार हां, कळस भरीज भरीज। रीता हुवै निवांण नह, इण द्रस्टांत पतीज।—वां.दा.

३ स्वप्न, सपना। उ०—मैं द्रस्टांत दीठौ छै।—पंचदंडी री वात

४ ऋतुस्नाता स्त्री का पुरुष दर्शन जिसका प्रभाव गर्भ पर होता है. ५ शास्त्र. ६ मरण. ७ एक अर्थालंकार जिसमें एक ओर तो उपमेय और उसके साधारण धर्म्म का वर्णन और दूसरी ओर विंव-प्रतिविंव भाव से उपमान और उसके साधारण धर्म का वर्णन होता है।

वि०वि०—उपर्युक्त अर्थ संख्या दो का उदाहरण है—

उ०—रीता हुवै हजार हां, कळस भरीज भरीज। रीता हुवै निवांण नह, इण द्रस्टांत पतीज।—वां.दा.

इसके अनुसार एक ओर तो उपमेय के धर्म का वर्णन है कि हम हजारों कलश भरते हैं फिर भी खाली हो जाते हैं (रीता हुवै हजार

हां—क्योंकि ये हमारे स्वार्थ के कारण खाली हो जाते हैं) दूसरी ओर बिंब-प्रतिबिंब भाव से उपमान का वर्णन है कि कूप खाली नहीं होता है (रीतो हुवै निवांण नह—अर्थात् परोपकारी या दातार होने के कारण वह खाली नहीं होता है।) इसी प्रकार उपर्युक्त अर्थ संख्या एक के दोनों उदाहरणों में भी यही अलंकार है।

रू०भे०—दस्टांत, दिट्टंति, दस्टांत, दिस्टांत।

द्रस्टा-वि० [सं० द्रष्टा] १ देखने वाला. २ साक्षात्कार करने वाला।

उ०—१ थांनी आतम स्वरूप सदाई, महा विमळ ज्यूं सर रे। यो सुखरांम सनातन अनुभव, निज तिथि द्रस्टा चेतन रे।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ जीवारांम गुरु सद चिद आणंद, केवळ ब्रह्म सुखो री। स्वयं प्रकासी निरमळ द्रस्टा, सोई सुखरांम कह्यो री।

—स्री सुखरांमजी महाराज

३ दर्शक. ४ प्रकाश।

रू०भे०—द्रिस्टा।

द्रस्टि-सं०स्त्री० [सं० दृष्टि] १ आंख की ज्योति, देखने की शक्ति या वृत्ति. २ देखने के लिये आंख की पुतली का किसी वस्तु की सीध में होने की स्थिति, टक, अवलोकन, निगाह, नजर. ३ देखने के लिये प्रवृत्त नेत्र, देखने के लिए खुली हुई आंखें. ४ आंख की ज्योति का प्रसार, दृक्पथ. ५ पहचान, परख, अंदाज. ६ मिहरबानी की नजर, कृपा-दृष्टि, हित का ध्यान. ७ आसरे की लगी हुई टकटकी, आशा की दृष्टि, उम्मीद, आशा. ८ ध्यान, विचार. ९ नीयत, उद्देश्य, अभिप्राय. १० दृष्टि-दोष, नजर।

रू०भे०—दठि, दस्ट, दस्टी, दिट्ठ, दिट्ठि, दिठ, दिसट, दिसिटी, दिस्ट, दिस्टि, दिस्टी, दीठ, दीठि, दीठी, दीस्ट, दीस्टी, दीह, द्रिठ, द्रिठि, द्रस्टी, द्रीठ, द्रेट, द्रेठि।

द्रस्टिगोचर-वि० [सं० दृष्टिगोचर] जो देखने में आ सके।

द्रस्टिफळ-सं०पु० [सं० दृष्टिफल] एक राशि में स्थित ग्रह की दृष्टि, दूसरी राशि में स्थित ग्रह पर पड़ने से होने वाला फल या प्रभाव (फलित ज्योतिष)

द्रस्टिमांन-वि०पु० [सं० दृष्टिमान] आंख वाला, दीठ वाला, जिसके दृष्टि हो।

द्रस्टिवंत-वि० [सं० दृष्टिवंत] १ ज्ञानी, जानकार, सूझ वाला. २ दृष्टि वाला, नजर वाला।

द्रस्टिवाद-सं०पु० [सं० दृष्टिवाद] १ वह सिद्धान्त जिसमें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो. २ जैनियों के बारह अंगों में से एक।

द्रस्टिस्थांन-सं०पु० [सं० दृष्टिस्थान] कुंडली में वह स्थान जिस पर किसी दूसरे स्थान में स्थित ग्रह की दृष्टि पड़ती हो।

द्रह-सं०पु० [सं० ह्रद] १ वह स्थान जहां गहरा जल हो, दह (डिं.को.)

उ०—१ इसा-अंग तई पतसाह रा कटकबंध अचळेसर ऊपरि तूटा। पाटका तरह ईंधण खूटा, द्रह का पांणी तूटा। परवतां सिरि पंथ लागा, दुघट घट भागा, सूर सूझइ नहीं रोह आगा।—अ. वचनिका

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति गढ़ कोट चोफेर कांगुरा लागा थका विराजै छै। जांणै आकास लोक गिळण नूं दांत दिया छै। ऊंची निजरि करि जोइजै तो माथा रो मुगट टड़हड़ै। तिण कोट री खाही ऊंडी द्रह नागद्रही सारीखी। जळ छेल पाताळ री जड़ां सूं लागि नै रह्यो छै।—रा.सा.सं.

२ नदी के मध्य स्थित गहरा गड्ढा। उ०—सू औ वडो अवसांण आयो। ऊंडै द्रह किलकिला ज्यूं फूलधारां विचि उडि पड़ां। पातिसाह री फौजां सूं लड़ां। महाभारत करि मरां। वगड़ी जोधांण ऊजळा करां —र. वचनिका

४ ताल, झील, ह्रद। उ०—कूंझड़ियां कळरव कियउ, धरि पाछिलै वणेहि। सूती साजण संभरया, द्रह भरिया नयणेहि।—ढो.मा.

रू०भे०—दह, द्रहा, देहड़, धै', धैड़, ह्रद।

द्रहद्रहवार-सं०स्त्री० [सं० जयद्रथ वेला] संध्या का समय (उ.र.)

रू०भे०—घरघरवेळा।

द्रहा-सं०स्त्री०—देखो 'द्रह' (रू.भे.)

उ०—दड़ी पड़तां द्रहा में चढै भांकियो कदंब डाळ, नीर थाघ अथाघ चढंतां वाद नार। खेलह बाळ व्रंद रै करंतां लगाड़ियो खेटी, काळी नाग जगाड़ियो नंद रै कंवार।—र.ज.प्र.

द्रहद्रहणौ, द्रहद्रहबौ-क्रि०अ० [अनु०] दुंदुभि, नगारे आदि वाद्यों की ध्वनि होना। उ०—मिळिया सुरवए कोडि तेत्रीस गयणे दुंदुहि द्रहद्रहीय।—प.पं.च.

द्रहद्रहाटि-सं०स्त्री० [अनु०] नगारे आदि वाद्यों की ध्वनि होना।

उ०—रथचक्र चिरकार करी जांणीइं, चिंध पताका फिकणीक्वांण करी जांणीइं, तूरय सब्द करी जांणीइं, नीसांण द्रहद्रहाटि करी जांणीइं।—व.स.

द्रहवट्ट, द्रहवट्टां-वि०—पराजित, तितर-बितर। उ०—१ जिकां माथै हाडे नरेस मऊ थी राजकुमार भाऊ भेजियो जिकण जातां ही राठौड़ द्रहवट्टां करि काढ़िया।—वं.भा.

२ देखो 'दहवाट' (रू.भे.)

रू०भे०—द्रहवाट।

द्रहवाट, द्रहवट, द्रहवाट-सं०पु० [सं० दश+वाट ?]

१ देखो 'दहवाट' (रू.भे.)

उ०—१ वांणां थट कैरव रांण विराट। ब्रहन्नट जांण करै द्रहवाट।

—मे म.

उ०—२ मांझी मोह मराट, 'पातल' रांण प्रवाड मल। दुजड़ां किय द्रहवाट, दळ मैंगळ दांणव तणा।—दुरसो आढ़ो

उ०—३ पड़ मार तरवर पाथ रां, रिण विकट कपी रघुनाथ रां। दससीस दळ भुजवळां, द्रहवट कीध अदर सकोप।—र.ज.प्र.

उ०—४ करण धकचाळ मेवाग द्रहवट करण, आउवा धणी दसदेस उजवाळ। धणी नव कोट री सरै छत्रधारियां, 'पाळ' हर जोड़ रा मरै दगपाळ।—दयाळदास आढ़ो

उ०—५ वजे रव डेरव वीस वतीस, उचे रव फेरवं देत असीस। चंडी द्रहवाट करें चतुरंग। उडे खग झाट चुखच्चुख अंग —मे.म.

२ देखो 'द्रहवट्ट' (रू.भे.) उ०—सीरोई कीधी डंड सारे, खेड़ सुपह मोटा ग्रद खाट। मेड़तो ले दीधौ 'माल' नै, 'वीरम' नै कीधौ द्रहवाट।—मेहो वीठू

द्राक-ग्रव्य० [सं० द्राक] १ शीघ्र, जल्दी (ह.नां.)

२ देखो 'दाख' (रू.भे.)

द्राक्ष, द्राक्षा, द्राख—देखो 'दाख' (रू.भे.) उ०—१ जीणइं कीधउं ग्रम्रि पांन, तसु किम हुइ ग्राछणि समाधांन, जिणि द्राक्ष फळ भरिउ हुइ कवल, तसु किसिउ रुचइ मधूकफळ।—व.स.

उ०—२ द्राक्षा तणी ग्राकांक्षा किम महू फीटइ, सरकरा तणी स्रद्धा किम गुळि त्रूटइ, ग्रम्रित काजि किम कांजी पीजइ।—व.स.

उ०—३ करहा नीरूं सोइ चर, वाट चलंतउ पूर। द्राख बिजउरा नीरती सो धण रही स दूर।—ढो.मा.

द्राखणी, द्राखबौ—देखो 'दाखणी, दाखवौ' (रू.भे.)

द्रागड़ौ-सं०पु० [देश०] मीणा जाति के व्यक्तियों की वह टोली जो चोरी या डाके के इरादे से कहीं जाती हो। रू.भे. 'धागड़ौ'।

द्राव-सं०पु० [सं० द्राव:] १ पलायन, भागना (डिं.को.)

२ देखो 'घ्राव' (रू.भे.)

द्रावक-वि० [सं०] द्रवरूप करने वाला।

द्रावकि-वि०स्त्री०—द्रवीभूत करने वाली। उ०—समऊरयुग्म कूरमोन्नत-चरण ग्रल्पमांस निरलोम दाक्षिण्यपर दयापर मयापर क्षमापर साचाबोली हितबोली मितबोली ऊपजावकि लावकि द्रावकि समयती मांनयती सतीमिती।—व.स.

द्रावड़, द्रावड—देखो 'द्राविड़' (रू.भे.)

द्रावण-सं०पु० [सं०] १ भगाने का कार्य. २ द्रवीभूत करने का काम.

३ कांमदेव के पांच बाणों में से एक। उ०—जरें स्रोतानुराग रै ही प्रभाव ग्राकरसण १ मोहण २ द्रावण ३ उन्मादण ४ बसीकरण पांचूं ही मनोज रा सायकां रौ बेझौ होय।—वं.भा.

द्राविड़-वि० [सं०] द्रविड़ देश वासी।

सं०पु० [सं० द्रविड़] द्रविड़ देश।

रू०भे०—द्रावड़, द्रावड।

द्राविड़गोड़-सं०पु० [सं० द्राविड गोड] रात के समय गाया जाने वाला एक राग (संगीत)

द्राविड़ी-सं०स्त्री० [सं० द्राविडी] १ छोटी इलायची. २ द्रविड़ जाति की स्त्री।

वि०—द्रविड़ संबंधी।

द्रासक—देखो 'दहसत' (रू.भे.) उ०—देवगुरु नमइं, ठाकुर तणइ हीग्रइ गमइं, संग्रांमदुरद्धर, परनारीसहोदर, वाढि वडइं, जेहे दीठे दुरजन नै हीए द्रासक पडइ, छांडइ घाट, घोडा तणा कांन सोरा माहि साट।—व.स.

द्रिग-सं०स्त्री०—१ पुरुष की ७२ कलाग्रों में से एक।—व.स.

२ देखो 'द्रग' (रू.भे.) (ह.नां.)

उ०—उभई द्रिग जुडिया उचक, काट भीण पटकोर। हलवौ कटक हरोळ ह्वां, ज्यूं घूमर पर जोर।—र. हमीर

द्रिगन—देखो 'द्रग' (रू.भे.)

द्रिगपाळ—देखो 'दिग्पाळ' (रू.भे.)

उ०—ग्रांक पंचमी एण उपाइ, पंगति छठी कहां परचाइ। ग्रनस्वार ससि भुज सर ग्रापि, थिर द्रिगपाळ विसुग्रा थापि।—ल.पिं.

द्रिठ, द्रिठी—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

द्रिढ़—देखो 'द्रढ़' (रू.भे.)

उ०—सावधान गुर ध्यांन, पाव द्रिढ़ सत्त परट्ठे। जुग कौतग जोड़वा पंच तत पंच पइट्ठे।—ज.खि.

द्रिढ़ता—देखो 'द्रढ़ता' (रू.भे.)

द्रियाव—देखो 'दरियाव' (रू.भे.)

उ०—सुण एम 'पेम' ग्रारंभ कीन, द्रढ़ भड़ां बांकड़ां हुकम दीन। धुर पड़ै नगारां ग्रढ़य घाव, दिढ़ चढ़े वेळ गाजै द्रियाव।—पे.रु.

द्रिव—१ देखो 'द्रव्य' (रू.भे.)

२ देखो 'द्रव' (रू.भे.)

द्रिस्टद्युमन, द्रिस्टद्युमनि—देखो 'धस्टद्युम्न' (रू.भे.)

उ०—कूडउं बोलइ धरमपूतु हथीयार छंडावइ। छेदिउं मस्तकु द्रिस्टद्युमनि क्रमु सिउं न करावइ।—पं.पं.च.

द्रिस्टांत—देखो 'द्रस्टांत' (रू.भे.) उ०—कोई वीर स्त्री ग्रापरा पती री वडाई कर कह रही छै सिंघ रौ द्रिस्टांत दे नै।—वी.स.टी.

द्रिस्टा—देखो 'द्रस्टा' (रू.भे.) उ०—ग्रचळ ग्रखंड ग्रनंत ग्रजनमा, एकातीत ग्रनूप। प्रेरक, साक्षी, द्रिस्टा वोई, सोई सुखरांम स्वरूप।

—सुखरांमजी महाराज

द्रिस्टि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—१ जरा धाग्रइं हस्ति धूमइं, ग्रस्व नइं ग्रसवार। न्यांन रूपइं कस्ण जोयुं, द्रिस्टि दीठी नारि।

—रुकमणी मंगळ

उ०—२ सूयारडउ हूग्र दाघ देवा, गिउ वेगि वेडिइं पुण कास्ट लेवा। द्रिस्टिइं न दीसइं दिसि घलि रोळी, तु ग्रांबिली भीममिइं भडिग्र मूळी।—विराट पर्व

द्रिस्टिबंधविद्या-सं०स्त्री० [सं० दृष्टिबंध-विद्या] नजरबंदी की विद्या।

उ०—हवडां मुझ नै स्परस ज थयु, झालूं एटलि ग्रलगु गयु। द्रस्टि-बंध-विद्या नुं जांण, ग्राव्यु छि को पुरुस प्रमांण।—नळाख्यांन

द्रिस्टियुद्ध-सं०पु० [सं० दृष्टियुद्ध] ७२ कलाग्रों में से एक (व.स.)

द्रिस्टिसूळ-सं०पु० [सं० दृष्टिशूल] नेत्र का रोग विशेष।

उ०—कंडूकमल कास स्वास ज्वर भगंदर जळोदर गुदकीलक कुक्षि-सूळ द्रिस्टिसूळ सिरहसूळ करणसूळ दंतवेदना ग्रजीरण ग्ररोचक कुस्टरोग प्रमुख रोगा।—व.स.

द्रिस्य-वि० [सं० दृश्य] १ जो देखने में ग्रा सके, जो देख सके, दृग्गोचर।

उ०—हरख सोक दुख सुख तहां नाहिं, सुसुप्ती समवंता। द्रिस्य

अद्रिस्य लीन द्रिस्या में, आप जीव सायंता।

—श्री सुखरांमजी महाराज

२ जो देखने योग्य हो, दर्शनीय. ३ जानने योग्य, ज्ञेय. ४ सुंदर, मनोरम।

सं०पु०—१ वह पदार्थ जो आंखों के सामने हो, देखने की वस्तु, नेत्रों का विषय। उ०— द्रस्टा मिटया द्रिस्य नहि पावै, द्रिस्य मिटया द्रस्टाजो। जो कोई मनकूं गंटया चावो, पांच विसै कूं ढाजो।

—श्री सुखरांमजी महाराज

२ आंखों के सामने होने वाला मनोरंजक व्यापार, तमाशा.

३ अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जाने वाला काव्य, नाटक.

४ ज्ञात या दी हुई संख्या—गणित।

द्रिहंग, द्रिहंगसि—सं०स्त्री०—ढोल की आवाज।

उ०—निर्मंत्रोहार अयार निसासहि, द्रिहंगसी ढोल रवद दुवाड़। विसकन्या देखे वजवाया, मुणियत मांद अनड़ मेवाड़।—दूदो

द्रीठ—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—तरै रावळ दूदै घणी वखांणियो, तरै तिलोकसी कह्यो—"भली हुई, आज ही वखांणियो।" तरै रावळ कह्यो—"म्हारी द्रीठ लागै छै।" सु तिलोकसी रो तिण ही वेळा जीव नीसर गयो।—नैणसी

द्रीयो—सं०पु० [देश०] ऊंट को पुकारने या पुचकारने का शब्द।

द्रीवह्रड़—सं०स्त्री० [अनु०] नक्कारे, ढोल या दुंदुभि आदि की ध्वनि विशेष।

द्रीह—सं०स्त्री० [अनु०] वाद्यों की भयंकर आवाज।

उ०—तदि वणै साज गयंदां तुरां, वीर त्रंबाळां द्रीह वजि। सुरतांण साह मुदफर दिसी, 'सूर' चढ़ै दळ पूरि सजि।—सू.प्र.

द्रुंग—देखो 'दुरग' (रू.भे.) उ०—सुणै वान ऐ मात नै भ्रात साथै। हसै तेम लंकेस दे ताळ हाथै। भुजा वीस सीसं दसं मूझ भाई। खितां द्रुंग लंका जळाधार खाई।—सू.प्र.

द्रु—सं०पु० [सं०] १ वृक्ष, पेड़. २ शाखा।

द्रुग, द्रुग्ग—देखो 'दुरग' (रू.भे.) (डि.को)

उ०—१ अडर पातिसाह हुवा आला आगिले रा अर भला भले रा। त्यां चउ चउरासी द्रुग लिया था पिहाड़इ पाडइ।—अ. वचनिका

उ०—२ मंत्री धाम मळेछ, खट्टण खंड द्रुग्ग चितंगो। कित्ती खंड विहंड, जित्ती हार धार सुरतांणो।—रा.रू.

उ०—३ चलै चंदोळ चैन में हरोळ दग्गती चलै। दरारहेत द्रुग्ग को निरार घुग्गती चलैं।—ऊ.का.

द्रुघण—सं०पु० [सं०] १ लोहे का मुगदर.

२ परशु या फरसे के आकार का एक अस्त्र. ३ कुठार, कुल्हाड़ी.

४ देखो 'द्रुहिण' (रू.भे.) (डि.को.)

द्रुजोण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)

उ०—मन्दर हर तुजिठ्ठ 'अजन', कमंध द्रुजोण करन्न। ओरंगसाहि मुराद ये, राना 'जसो' 'रतन्न'।—र. वचनिका

द्रुण—सं०पु० [सं० द्रुणं] १ धनुष, कमान.

२ खड्ग. ३ बिच्छू (डि.को.)

द्रुणा—सं०स्त्री० [सं० द्रुणं] धनुष की डोरी, प्रत्यञ्चा (डि.को.)

द्रुत—वि० [सं०] १ शीघ्रगामी, तेज.

२ भागा हुआ. ३ द्रवीभूत।

क्रि०वि०—जल्दी, शीघ्र, तुरन्त (ह.नां.)

उ०—पन प्रबळ पिसन पिवरैं न पिट्ठ। रजवट वट दे रट्ठोर रिट्ठ। द्रुत मरुधन्वा लीजैं दबाय। जब राजबीज निरवीज जाय।—ऊ.का.

सं०पु०—१ मध्यम से कुछ तेज लय, द्रून.

२ ताल की एक मात्रा का आधा. ३ हलका शराब. ४ बिच्छू.

५ वृक्ष, पेड़. ६ बिल्ली।

द्रुतगति—सं०स्त्री० [सं०] तेज चाल।

वि०—शीघ्रगामी।

द्रुतगामी—वि० [सं० द्रुतगामिन्] शीघ्रगामी।

द्रुतरासी—सं०स्त्री० [देश०] शराब की सब से हलकी किस्म।

द्रुतविलंबित—सं०पु० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है।

द्रुति—सं०स्त्री० [सं०] १ द्रव, तरल. २ गति।

क्रि०वि० [सं० द्रुत] शीघ्र, जल्दी (ह.नां.)

द्रुपद—सं०पु० [सं०] १ महाभारत के अनुसार उत्तर पांचाल का एक राजा। उ०—लगतां फागण लूरां लागी, अड़ै द्रोण अर द्रुपद अभागी। वीरां खाग परस्पर वागी, जिण सूं ज्वाळ लड़ण री लागी।—ऊ.का.

२ एक राग (संगीत)

रू०भे०— द्रुपद, द्रोपत, द्रोपद, द्रौपत, द्रौपद।

द्रुपदी—सं०स्त्री०—२८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद विशेष (र.ज.प्र.)

द्रुमंग—देखो 'द्रुम' (रू.भे.) (डि.को.)

द्रुम—सं०पु० [सं०] वृक्ष, पेड़ (अ.मा., नां.मा.) (डि.को.)

उ०—द्रुम सात विभेदण क्रमगत छेदण, तैं जस कह भय तिणु तर। सुत स्त्री कौसल्या तार अहल्या, करुणानिध सो याद कर।—र.ज.प्र.

रू०भे०—द्रुम, द्रुमंग, द्रुम्म।

द्रुमग्रह—सं०पु०—देवल (अ.मा.)

द्रुमपत, द्रुमपति—सं०पु० [सं० द्रुमपति] कल्पवृक्ष (अ.मा., नां.मा.)

द्रुमपाळ—सं०पु० [सं० द्रुम+पाल] पर्वत, पहाड़ (अ.मा.)

द्रुमभूप—सं०पु० [सं०] वसंत (अ.मा.)

द्रुमसार—सं०पु० [सं०] फूल (अ.मा.)

द्रुमसेन—सं०पु० [सं०] कौरवों के पक्ष का एक योद्धा (महाभारत)

द्रुमामय—सं०स्त्री०—लाख, लाक्षा (डि.को.)

द्रुमारि—सं०पु० [सं०] हाथी, गज (डि.को.)

द्रुमालय—सं०पु० [सं०] जंगल, वन।

द्रुमिल—सं०पु० [सं०(?)] १ नौ योगेश्वरों में से एक योगेश्वर.

२ एक छंद।

द्रुम्म—देखो 'द्रुम' (रू.भे.)

उ०—द्रुम्म चरम मधु भरे, पत्र अंकुरे विपुल वन। फाग राग माधुरे, सुर नर नारि हरे मन।—रा.रू.

द्रुमिला-सं०पु० [सं०] १० और १८ की यति से प्रत्येक चरण में ३२ मात्राओं का एक मात्रिक छंद विशेष जिसके चरणांत में गुरु होता है।

द्रुपद-सं०स्त्री० [सं० ध्रुवपद] १ गीत की प्रत्येक कड़ी के पश्चात् दोहराई जाने वाली पंक्ति, टेक (नळ-दवदंती रास)

२ देखो 'द्रुपद' (रू.भे.)

द्रूमंडळ, द्रूमंडळि-सं०पु० [सं० ध्रुवमंडल] ध्रुवमण्डल।

उ०—१ असवार तणी आंहसी आवेगि असणि ऊडी, दळयुगळ धूळिपटळि द्रुमंडळ छाइउं, पाखरचां तणै, पायक तणै पगपदताळै पाताळ पांणी प्रगट हूआं।—व.स.

उ० २ धाता दळ तणउ धूळीरव द्रुमंडळि लागउ, रज रमी रूप हारतउं गगन आछादिउं।—व.स.

द्रूमची—देखो 'दुमची' (रू.भे.)

उ०—विड़गां वणै द्रूमची केसवाळी, भड़ां भूप राजी हुअै रूप भाळी। जगम्मं पसम्मं मुखमल्ल जेही, दिपै जांणि आरीस सारीस देही।

—वचनिका

द्रुयमणि-सं०स्त्री० [सं० रुक्मिणी ?] रुक्मिणी। उ०—गढ़ त लंक विसहर त सेसु गह गुरुय त दिवायरु, अवल त द्रुयमणि नइ त गंगाजळ बहुल त सायरु।—अभयतिक यती

द्रूहिण-सं०पु०—देखो 'दुहिण' (रू.भे.) (डिं.को.)

द्रेठ, द्रेठि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

उ०—१ मुखमली पसम रा, कळीसी कांन रा, झूठमी द्रेठ रा, कूकड़ा कंध रा, लोहमै बंध रा, तोछड़ी पूठ रा, चोवड़ी धूब रा।—रा.सा.सं.

उ०—२ कांनै कुंडळ मोतिय जोतिय खूंपइ द्रेठि। हार निगोदर सुंदर दीसइ न सुरिज हेठि।—नेमिनाथ फागु

द्रेहड़—देखो 'द्रह' (रू.भे.) उ०—देवड़ै 'विजै' 'सूजा' नै मार नै सूजा री वसी ऊपर साथ मेलियौ, उठै मालौ सूजा रौ मरायौ, वसी सारी लूटी, प्रथीराज नै स्यांमदास री मा इणां नुं द्रेहड़ मांहै ऊपर पला नांख नै रही, वे परा गया तरै द्रेहड़ मांह थी रात रा नीसर नै आवू री गोढै बार गया।—नैंणसी

द्रोंगी-वि०स्त्री० [देश०] हतभागिनी, अभागिन।

उ०—जनम तणा जोगीह, वर्मो मो दुख द्रोंगी करै। सव दिन मन सोगीह, रोगी जेम पड़ी रहूं।—पा.प्र.

(मि० दोगी)

द्रोंण—

उ०—वीरारस घण घोख वाजई, अभिनवा सिरि द्रोंण। सेल सावळ कुंत मुंदगर, उछळई अति स्रोण।—रुकमणी मंगळ

द्रोजोवण—देखो 'दुरयोधण' (रू.भे.) उ०—जिसौ वाच जुजठिल्ल, जिसौ मांण हि द्रोजोवण।—गु.रू.बं.

द्रोण-सं०पु० [सं०] १ पत्रों का दोना. २ लकड़ी का एक पात्र जिसमें सोम रखा जाता था. ३ डोम कौआ, काला कौआ.

४ मेघों के एक नायक का नाम जो अच्छी वर्षा का सूचक होता है.

५ एक प्रकार का रथ. ६ द्रोणाचल नामक पर्वत।

उ०—सुरां झंब रूपी तरां अंब सोभै, लखै पारिजाती तजै मार लोभै। प्रभा संप चंपै कळी जाळ पेखे, लजै भौण संजीवनी द्रोण लेखै।—रा.रू.

७ देखो 'द्रोणाचारज' (रू.भे.)

उ०—लगतां फागण लूरां लागी, अड़ै द्रोण अरु द्रुपद अभागी। वीरां खाग परस्पर वागी, जिण सूं ज्वाळ लड़ण री जागी।—ऊ.का.

वि०—भयंकर, भयावह। उ०—वाजि धमस ऊडंड, वाजि झंबाळ चहूंवळ। द्रोण वाजि है खुरां, वाजि दळ सौक वळोवळ।—सू.प्र.

द्रोणकळ-सं०पु० [सं० द्रोण-कल] वैंकंक की लकड़ी का बना एक पात्र जिसमें यज्ञों में सोम छाना जाता था।

द्रोणकाक-सं०पु० [सं०] डोम कौआ, बड़ा कौआ।

द्रोणगिर, द्रोणगिरि-सं०पु० [सं० द्रोणगिरि] एक पर्वत का नाम (पौराणिक)

रू०भे०—दूणागिर, द्रोणागरंद, द्रोणागिर, द्रोणागिरि।

द्रोणगुरु—देखो 'द्रोणाचारज'।

द्रोणधार-सं०पु० [सं० द्रोण=द्रोणाचल+रा० धार] हनुमान।

द्रोणपुर-सं०पु० [सं०] द्रोणाचार्य द्वारा छापुर के निकट बसाया हुआ शहर। उ०—पांडवां कैरवां री वार मांहै, तद छापर रै परगने द्रोणाचारज आयौ। आपरै नांमै सहर छापर ता कोसे २ वसायौ। काळौ डूंगर कहीजै छै तिण री जड़ां सहर वसाय नै द्रोणपुर नांम दिरायौ।

—नैणसी

द्रोणमी-सं०स्त्री० [सं० द्रुण+रा०मी] धनुष की प्रत्यंचा, धनुष की डोरी। उ०—तू ही करती पठांण पुत्री ज्यूं तिकै द्रोणमी कसीस यूं ही गरजै धांनंक। अकाळ की झाळ अगया पळकै अंग पाराजात माळ न पीजै स्रोवण पनंक।—क.कु.बो.

द्रोण-मुख-सं०पु०यौ० [सं०] ४०० ग्रामों की राजधानी। उ०—केवडउ राज्य चक्रवरति तणउं चउद रत्न नव महानिधांन सोळ सहस्र यक्ष बत्रीस सहस्र मुकुट वरद्धन राय चवरासी लक्ष जात्य तुरगम चवरासी लक्ष रथ छन्नू कोडि पायक बहुत्तरि सहस्र पुरिवर वत्तीस सहस्र जनपद छन्नू कोडि ग्रांम नवांणु सहस्र द्रोण-मुख।—व.स.

द्रोणागरंद, द्रोणागिर, द्रोणागिरि, द्रोणागिरी—देखो 'द्रोणगिरि' (रू.भे.)

उ०—१ गजब अधोकै गयण लहण द्रोणागरंद, समंद्र जळ अधोकै मुनंद सोखै। नागयंद मरोखै खगंद्र माधव नरंद्र, जवाहर अजंद जुध तुहीज जोखै।—कविराजा करणीदांन

उ०—२ विय सामंद वंधसी, काय लेसी लंक जुध कर। काय हणमंत जिम कमंध, ग्रहै लेसी द्रोणागिर।—सू.प्र.

उ०—३ द्रोणागिर लायो दुरत, बळ बुध कर बळवंत। मातांणी लायो मरद, है पातन' हणवंत।—किसनदांन रतनू

द्रोणरिस—सं०पु० [सं० द्रोण ऋषि] देखो 'द्रोणाचारज'

उ०—दुसासण जिके जिसा दुरजोधन रिख असथांम द्रोणरिस।

—गु.रू.बं.

द्रोणाचारज, द्रोणाचारय—सं०पु० [सं० द्रोणाचार्य] भरद्वाज ऋषि के पुत्र एक प्रसिद्ध ब्राह्मण जिन्होंने कौरवों और पांडवों को शिक्षा दी थी।

उ०—१ मुजि नहूं प्रीति भारी तर्क, मो इकतारी चित मही। किन-मांगु विद्या त्यग स्रत करू', जुग द्रोणाचारज ज्यूंही।—सू.प्र

उ०—२ पांडवां कौरवां री वार मांहै, तद छावर रै परगनै द्रोणाचारज आयो। आवरै नांवै सहर छावर ता कोसै २ वसायो।—नैणसी

द्रोणि—सं०पु० [सं० द्रौणिः] द्रोणाचार्य का पुत्र, अश्वत्थामा।

उ०—छट्ठां नूं पोरस चढ़ै, वेध तणी सुण वात। तद गोरख द्रोणी तणी, सग्ब सुणाई वात। रुद्र रिझावै रात रो, निज कर सूं खग धार। असवस्थामां एकलो, हण्या अठार हजार।—पा.प्र.

द्रोणी—सं०स्त्री० [सं०] १ द्रोणाचार्य की स्त्री, कृपी।

२ नाव, नौका (डि.को.)

द्रोणु—देखो 'द्रोणाचारय'।

उ०—दटा लगइ गुरु भेटीउ द्रोणु सु बंभणवेसि। तेह पासि विद्या पढइ कृपगुर नई उपदेसि।—पं.पं.च.

द्रोपत—१ देखो 'द्रुपद' (रू.भे.) उ०—दोहयां लाग्यो दाव, द्रोपत सुत विनवै खड़ी। अब तो वेगो आव, साय करण नै सांवरा।

—रांमनाथ कवियो

२ देखो 'द्रौपद' (रू.भे.)

३ देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.) उ०—द्रोपत दुखियारीह, पुकारी अबळा-पणै। मदती हर म्हारीह, करणाकर करस्यो करां।

—रांमनाथ कवियो

द्रोपता—देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.)

उ०—हरी थे हरी जन की पीड़, द्रोपता की लाज राखी, थे वढ़ायो चीर।—मीरां

द्रोपद—१ देखो 'द्रुपद' (रू.भे.) २ देखो 'द्रौपद' (रू.भे.)

३ देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.)

द्रोपदजा, द्रोपदा—देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—जिण मरोड़ मोड़णां, धरणि पुड़ पोड़ धुजावै। दौड़ बसण द्रोपदा, ओड़ जिणरी नैड़ आवै।—मे.म.

द्रोपदि, द्रोपदी—वि० [सं० द्रौपदी] १ काला, श्याम, कृष्ण*।

२ देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.) (अ.मा.)

द्रोपां—देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.)

उ०—दुरजोधन चीर करै ग्रह द्रोपां, खांच सभा बिच चीर खड़ी। पचियो पण भीर हुवो परमेसर, चीर न खूटोय सोम चड़ी।

—भगतमाळ

द्रोब—देखो 'दोब' (रू.भे.) उ०—कनक कळस जुति कुसम पड़ै दुज पांणि पवित्रिय। हरी द्रोब दधि अखत ओप दीपक आरत्तिय।

—रा.रू.

द्रोबड़—देखो 'दोब' (मह., रू.भे.)

द्रोबड़ी—देखो 'दोब' (अल्पा., रू.भे.)

द्रोमज, द्रोमझि—देखो 'दोमज' (रू.भे.)

द्रोह—सं०पु० [सं०] १ प्रतिहिंसा का भाव, वैर।

उ०—१ घणो द्रोह कीधो प्रहळाद घाती। रयो भास देतो जिको दीह-राती।—भगतमाळ

उ०—२ गोत्र द्रोह थी जस नहीं, नृप द्रोह नीति विणास। बाळ द्रोह थी गति नहीं, तिण्है करयां अभ्यास।—स्रीपाळ रास

२ ईर्ष्या, जलन, द्वेष। उ०—ढोला सांभळि माहरी वात, ऊमर खेलेस्यइ घणी घात। मारवणी सूं लागो मोह, तुझ सूं घणी मांडि-स्यइ द्रोह।—ढो.मा.

३ अहितचिंतन। उ०—बांदर कही—मित्र-द्रोह विस्वासघात की सूं होय, अर हूं कितरै काळ जीऊं।—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—द्रौह, धोह, ध्रोह।

द्रोही—वि० [सं० द्रोहिन्] ईर्ष्या करने वाला, बुरा चाहने वाला, द्रोह करने वाला। उ०—समभावै सोही वैरी वोही, द्रोही हुय दाझंदा है। पिंड में नहि पांणी निज निरमांणी, सठहांणी साझंदा है।—ऊ.का.

सं०पु०—वैरी, दुश्मन, शत्रु।

उ०—१ सूरातन जांही घणइ सूरातन, ईसर तणा बाधिया अंग। प्रळयकाळ हुसी ताइ प्रिथमी, द्रोही तणा थरकिया द्रंग।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ उठै वांण दैतेस लंकेस आया। मिळै देव द्रोही उभै धूत-माया।—सू.प्र.

रू०भे०—धोही, ध्रोही।

द्रौणि—देखो 'द्रोणि' (रू.भे.)

द्रौपत, द्रौपद—सं०पु० [सं० द्रौपद] १ राजा द्रुपद का पुत्र।

रू०भे०—द्रोपत, द्रोपद।

२ देखो 'द्रुपद' (रू.भे.)

३ देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.)

उ०—१ दुसटां रचियो दाव, द्रौपद नागी देखवा। अब तो वेगी आव, साय करण नै सांवरा।—रांमनाथ कवियो

उ०—२ द्रौपद दवकाळाह, दुसट-सभा बिच दाखवै। लायो नंदलालाह, चीर दुमाला चौगणा।—रांमनाथ कवियो

द्रौपदी—सं०स्त्री० [सं०] राजा द्रुपद की कन्या जो पांचों पांडवों को व्याही गई थी, कृष्णा।

पर्याय०—कसणा, जग्यासेनी, पांचाळी, पंडवप्रिया, वेदजा, वेदवती, सती, सरग्रंगना, सिखवांन।

रू०भे०—दुरपदी, दूब्रय, द्रोपत, द्रोपता, द्रोपद, द्रोपदजा, द्रोपदा,

द्रोपदि, द्रोपदी, द्रोपां, द्रोपत, द्रौपद ।
द्रौपदेय-सं०पु० [सं०] द्रौपदी का पुत्र।
द्रौह—देखो 'द्रोह' (रू.भे.)
उ०—तिस वखत राव नै छळ द्रौह किया। जोधांण अपणैं मुनसफ में लिया।—सू.प्र.
द्वंद द्वंद्व—देखो 'दुंद' (रू.भे.) (ह.नां.)
द्वंदचारी-सं०पु० [सं० द्वंद्वचारिन्] चकवा पक्षी।
द्वंद्वज-वि० [सं०] १ सुख, दुख, राग, द्वेष आदि द्वंद्वों से उत्पन्न होने वाली मनोवृत्ति. २ वात, पित्त और कफ नामक त्रिदोष में से दो दोषों से उत्पन्न रोग।
द्वंद्वर, द्वंध—देखो 'दुंद' (रू.भे.)
उ०—१ भीतर द्वंद्वर भर रहै, तिनको मारै नांहि। साहिव की अरवाह हैं, ता को मारन जांहि।—दादू वांणी
उ०—२ साधु संगति पाइये, तव द्वंद्वर दूर नसाइ। दादू वोहिथ वैस कर, डूंडे निकट न जाइ।—दादू वांणी
उ०—३ दूजा ग्यांनी और सवेई, तारा चंद ज्यूं मांन। आतम ग्यांनी अधिक सव सूं, रवी वरावर जांण। तिरगुण माया रे, मिट गइ द्वंध निसा।—स्री सुखरांमजी महाराज
द्वद्वजुध-सं०पु० [सं० द्वंद्वयुद्ध] दो पुरुषों के बीच की लड़ाई, कुश्ती।
द्वजराज—देखो 'दुजराज' (रू.भे.)
उ०—सुणै वयणं इम सकाजा, रीझ वगसै महाराजा। आरती द्वजराज आंणै, प्रीत उच्छव कीध पांणै।—सू.प्र.
द्वाई—देखो 'दुहाई' (रू.भे.)
द्वाज-सं०पु० [सं०] वह पुत्र जो पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष से उत्पन्न हुआ हो, जारज पुत्र।
द्वात—देखो 'दवात' (रू.भे.)
उ०—पातसाह जी तिसां भरतां री ज्यांन कवज होणै लगी। तद साजिहांनजी कयो 'लावो भाई रजूनांमा लिख दें।' जव द्वात-कलम हाजर किया।—द.दा.
द्वादस-वि० [सं० द्वादश] १ वारह। उ०—१ ईखवा अचळ साहस उवरि, सुर दळ विमळ तरस्सिया। विसतार नूर सतियां वदन, द्वादस सूर दरस्सिया।—रा.रू.
उ०—२ ग्रहणी रोग वताये पंच, तिण विध सूं दैणा तिण संच। पंच उदर हिरदै प्रकार, इहि विधि द्वादस डंभ विचार।—ध.व.ग्रं.
२ जो ग्यारह के वाद पड़ता हो, वारहवां।
रू०भे०—दवादस, दवादस्स, दुआदस, दुवादस।
द्वादसआतम, द्वादसआतमा-सं०पु० [सं० द्वादशात्मा) सूर्य, आदित्य (नां.मा., अ.मा.)
द्वादसक-वि० [सं० द्वादशक] वारह का।
द्वादसकर-सं०पु० [सं० द्वादशकर] १ स्वामी कार्तिकेय.
२ वृहस्पति, सुर-गुरु।
द्वादसचख-सं०पु० [सं० द्वादशचक्षुस्] स्वामी कार्तिकेय (नां.मा.)
द्वादसतुरचनिनाद-सं०पु० [सं० द्वादशतूर्यनिनाद] वारह वाद्यों की ध्वनि।
उ०—तिम दधि दुरवा अक्षत चंदन कुसम कुंकम। पूज्य व्रिद्धासीरवाद, द्वादसतूरघनिनाद, विवाहादि हरखणाकळ।—व.स.
द्वादसभाव-सं०पु० [सं० द्वादशभाव] जन्मकुंडली के वे वारह घर जिनके क्रम से तनु आदि नाम फलानुसार रखे गये हैं (फलित ज्योतिष)
द्वादसलोचण, द्वादसलोचन-सं०पु० [सं० द्वादसलोचन] स्वामी कार्तिकेय।
द्वादसवरगी-सं०स्त्री० [सं० द्वादशवर्गी] फलित ज्योतिष में नीलकंठ ताजक के अनुसार वर्ष काल में ग्रहों के फलाफल निकालने के लिये वारह वर्गों की समष्टि।
द्वादसवारसिक-सं०पु० [सं० द्वादशवार्षिक] व्रह्म हत्या का पाप लगने पर वारह वर्ष तक किया जाने वाला एक व्रत।
द्वादससुद्धि-सं०स्त्री० [सं० द्वादशशुद्धि] वैष्णव सम्प्रदाय में तंत्रोक्त वारह प्रकार की शुद्धियां।
द्वादसांग-सं०पु० [सं० द्वादशांग] १ जैनों का वह ग्रंथ-समूह जिसे वे गणधरों का वनाया हुआ मानते हैं। इसके वारह भेद होते हैं।
रू०भे०—द्वादसांगी।
२ पूजा में जलाने की वह धूप जो वारह गंधद्रव्यों के योग से वनी हुई होती है।
वि०—जिसके वारह अंग या अवयव हों।
द्वादसांगी—देखो 'द्वादसांग' (१) (रू.भे.)
द्वादसि, द्वादसी-सं०स्त्री० [सं० द्वादशी] मास के प्रत्येक पक्ष की वारहवीं तिथि। उ०—१ चडियो पाछै चक्रवति, मारू कातिक मास। महि पख द्वादसि मेड़तै, नरपति कियौ निवास।—रा.रू.
उ०—२ मास मिगस्सर द्वादसी, इळ पुड़ पख अंधियार। जुड़ियौ गुणचाळै 'जगौ', 'अजमल' छळै उदार।—रा.रू.
उ०—३ मधुमास क्रसन पख द्वादसी, जुध प्रकास जग जांणियौ। अत जीप गया हरिथांन मझ, व्रत जिहांन वखांणियौ।—रा.रू.
रू०भे०—दवादसी, दुआदसी, दुवादसी।
द्वादसौ-सं०पु० [सं० द्वादश+रा०प्र०औ] १ मृत्यु के पश्चात् वारहवां दिन. २ मृत्यु के पश्चात् वारहवें दिन पर किया जाने वाला क्रिया-कर्म का संस्कार।
उ०—अरु रावजी स्री लूणकरणजी रौ द्वादसौ कर धरम-पुन कियौ। पीछै गादी रावजी स्री जैतसीजी विराजिया।—द.दा.
३ मृत्यु के पश्चात् वारहवें दिन किया जाने वाला भोज।
रू०भे०—दवादसौ, दुआदसौ, दुवादसौ।
द्वापर, द्वापुर, द्वापुरि-सं०पु० [सं० द्वापरम् अथवा द्वापरः] चार मुख्य युगों में से तीसरा युग। यह ८,६४,००० वर्ष का माना गया है (पौराणिक)
उ०—द्वापर में पांडवां रै द्वारै, दुरवासा घर आई। कोप करै कर वहु दुख दीना, तो ई रे सती सत नहीं गमाई।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ अगहन मास त्रिकू ज्यौ आनौ, पौ' त्रेताजुग बीतो पायौ। द्वापुर माघ महीनो दानौ, रमा सिधायौ मा नित राजौ।—ऊ.का.

उ०—३ तेवड़ां रीत द्वापुर तणी, इळ रातां कीरत अमर। कहि नमर बात विनगां करा, सराजांम हूंता समर।—सू.प्र.

उ०—४ आगे जोम पराक्रम इसड़ौ। जुग द्वापुरि जोवां मझि जिसड़ौ।—सू.प्र.

रू०भे०—दवापर, दवापुर, दुग्रापुर, दुवापुर।

द्वार—सं०पु० [सं०] १ दरवाजा।

उ०—१ फरी तुरी चिग्रांम केळि द्वार द्वार इंबर। गुनाल के लगत गात अंतरेस अंबर।—सू.प्र.

उ०—२ कूकर रखवाळौ करै, दूजां लोकां द्वार। देसोतां री डोढ़ियां, गोला करै गवार।—बां.दा.

उ०—३ प्रति द्वार रखै निज आसन में, मद बींद लसै रिव भासन में। पग संत धरै ग्रिह पावन कां, नित आवत नार बधावन कां।—ऊ.का.

२ मुख, मुहाना, छिद्र. ३ इंद्रियों के मार्ग या छेद।

४ उपाय, साधन, जरिया।

मुहा०—द्वार खुलणौ—उपाय निकलना।

रू०भे०—दवार, दुग्रारी, दुवार, दुवारी, दूग्रार।

अल्पा०—दवारौ, दुवारौ, द्वारौ।

द्वारका—सं०स्त्री० [सं०] पुराणानुसार काठियावाड़ गुजरात की एक प्राचीन नगरी जो सात पुरियों में से एक मानी जाती है। यह हिंदुओं के चार धामों में से एक है (अ.मा.)

उ०—मांटियो ज्याग कमधां घरै मांढ़हो, लिखत वर सुवर ईसवर लिरायौ। कथन सुण द्वारका हूंत आयौ किसन, उदैपुर हूंत इम रांण आयौ।—फमो नाई

रू०भे०—दवारका, दुवारक दुवारिका।

द्वारकाधीस—सं०पु० [सं० द्वारकाधीश] श्रीकृष्णचन्द्र।

द्वारकेस—सं०पु० [सं० द्वारकेश] द्वारकानाथ, श्रीकृष्णचन्द्र (अ.मा., नां.मा.)

द्वारपाळ—सं०पु० [सं० द्वारपाल] १ दरवाजे पर रक्षा के निमित्त नियुक्त पुरुष, ड्योढ़ीदार, दरवान.

२ वह देवता जो किसी मुख्य देवता के द्वार का रक्षक हो (तंत्र)

३ सरस्वती के किनारे स्थित एक तीर्थ (महाभारत)

द्वारपाळक—सं०पु० [सं० द्वारपालक] द्वारपाल।

द्वारमति, द्वारमती—देखो 'द्वारावती' (रू.भे.)

उ०—१ कथ इम सातम कहै, दुतह लहिजै पूरब दत। आज दोय अधिकार, मद्धि सरस्वति द्वारमति।—सू.प्र.

उ०—२ सरस्सति द्वारमती विचि सूर। थयौ अत-स 'रैण' वहै भ्रम दूर।—सू.प्र.

द्वाररोकाई—सं०स्त्री० [सं० द्वार+रा० रोकाई] १ विवाह की एक रीति। इसके अनुसार जब वर-वधू विवाहोपरात घर आते हैं तब वर की बहनें उसकी राह रोकती हैं, इस पर वर द्वारा कुछ नेग दिया जाता है तब राह छोड़ दी जाती है. २ 'द्वाररोकाई' पर दिया जाने वाला नेग।

द्वारवती, द्वारामत, द्वारामती, द्वारामत्त, द्वारामत्ति, द्वारावति, द्वारावती—सं०स्त्री० [सं० द्वारवती, द्वारावती] द्वारका (डि.को.)

उ०—१ अमल हुवौ सारी इळा, सब निरकळा सकत। कियौ मतौ दरसण करण, परसण द्वारामत्त।—रा.रू.

उ०—२ फेवी घर सैंलोट कर, कर नवकोट पवित्ति। आयौ जोधांणै 'अजौ', परसै द्वारामत्ति।—रा.रू.

उ०—३ इळ पूरब हूंता पछिम आय। जात्रा द्वारावति कीध जाय।—सू.प्र.

उ०—४ अतु लेउ विदुर गयउ वन माहि, कन्ह वळी द्वारावती जाइ।—पं.पं.च.

रू०भे०—दुग्रारामती, द्वारमति, द्वारमती।

द्वारि—देखो 'द्वार' (रू.भे.)

द्वारिक—सं०पु० [सं०] द्वारपाल।

द्वारिका—देखो 'द्वारका' (रू.भे.)

उ०—१ दादू केई दौड़ै द्वारिका, केई कासी जांहि। केई मथुरा को चले, साहिब घट ही मांहि।—दादू बांणी

उ०—२ इण कीधा अनरत्थ, द्वारिका नगरी दहवै। सुणै नहिं परम सीख, नजर में सुद्धि बुद्धि न हवै।—ध.व.ग्रं.

द्वारी—सं०स्त्री० [सं० द्वार+रा०प्र०ई] छोटा दरवाजा।

द्वारौ—सं०पु० [सं० द्वार+रा०प्र०ग्रौ] १ साधु-सन्यासियों के रहने का स्थान, रामद्वारा।

रू०भे०—दवारौ, दुवारौ।

२ देखो 'द्वार' (अल्पा., रू.भे.)

द्वाळौ—सं०पु० [देश०] गीत छंद में निश्चित चरणों का समूह।

उ०—पत्र अक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रस तंतु त्रिधि अहो-निसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि।—वेलि.

वि०वि०—प्राय: राजस्थानी गीत (छंद) में द्वाळा चार चरण का होता है किन्तु कई ऐसे गीत छंद भी हैं जिनमें तीन, पांच, छ:, सात या आठ चरणों का द्वाळा भी होता है, जैसे—त्रिपंखो, सवैयो, झमाळ, हिरणझंप, दोढ़ो, अकुटबंध, आटको आदि।

रू०भे०—दवांळौ, दवाळ, दवाळौ, दुग्राळौ, दुवाळौ, दुहाळौ।

द्वि—वि० [सं० द्वौ] दो।

सं०पु०—२ दो की संख्या।

द्विइंद्रिय—सं०पु० [सं० द्वीन्द्रिय] वह जंतु जिसके शरीर और जीभ दो इन्द्रिय ही हों (जैन)

रू०भे०—दुइंद्रिय, वेंदिय, वेइंदिय।

द्विक—सं०पु० [सं० द्विक:] कौग्रा (डि.को.)

द्विकरमक—वि० [सं० द्विकर्मक] जिसके दो कर्म हों।

द्विकळ-सं०स्त्री० [सं० द्वि+कला] छंदशास्त्र या पिंगळ में दो मात्राओं का समूह।
रू०भे०—दुकळ।

द्विगु-सं०पु० [सं०] कर्मधारय समास का एक भेद जिसका पूर्वपद संज्ञा-वाचक हो।

द्विगुण-वि० [सं०] दुगुना, दूना।

द्विज-सं०पु० [सं०] १ दो की संख्या*।
२ नारद. ३ वशिष्ठ.
४ डगण के पाँचवें भेद का नाम।
रू०भे०—दिज, दुजि, दुज्ज, दुज्जय।
५ देखो 'दुज' (रू.भे.)
उ०—१ जदि द्विज पंति निरंत्र करि जोजन। भूप समापै मनसा भोजन।—सू.प्र.
उ०—२ परब्रह्म न पाया सद सरमाया, माया मद मार्णांदा है। द्विज वरण दबाया कळपित काया, छाया जळ छांणांदो है।—ऊ.का.

द्विजन्म-सं०पु० [सं०] १ दूसरा जन्म, पुनर्जन्म. २ ब्राह्मण.
उ०—द्विजन्म पाय हव्य कव्य हव्य वाट में दहे—ऊ.का.
३ यज्ञोपवीत धारण करने वाला।
वि०वि०—यज्ञोपवीत को दूसरा जन्म माना है।
वि०—जिसका जन्म दो वार हुवा हो।

द्विजपति—देखो 'दुजपति' (रू.भे.)

द्विजराज, द्विजराय—देखो 'दुजराज' (रू.भे.)

द्विजवाहन-सं०पु० [सं०] विष्णु।

द्विजा-सं०स्त्री० [सं०] द्विज की स्त्री, ब्राह्मणी।

द्विजाग्रज-सं०पु० [सं०] ब्राह्मण।

द्विजाति—देखो 'दुजाति' (रू.भे.)

द्विजेंद्र—देखो 'दुजिंद' (रू.भे.)

द्विजेस—देखो 'दुजेस' (रू.भे.)

द्विज्ज—देखो 'दुज' (रू.भे.) उ०—जस जोतख द्विज्ज लिखंत जंत्र। मुख पढ़त महाद्विज वेद मंत्र।—सू.प्र.

द्वितीय—देखो 'दुतीय' (रू.भे.)

द्वितीयौ—देखो 'दुतीय' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—तद मनसा देवी माया तैं ऊपनी। माया थकी थोक दुइ ऊपना। आत्मा एक। द्वितीयौ परमात्मा।—द.वि.

द्विदळ-वि० [सं० द्विदल] १ जो दो खण्डों से जुड़ा हो किन्तु दाब पड़ने अथवा कूटने से दोनों खण्ड अलग हो जाते हों, जिसमें दो दल या पिंड हों. २ दो पत्ते वाला।
सं०पु०—वह अन्न जिसमें दो दल हों, दाल।
रू०भे०—दुदळ।

द्विदेह-सं०पु० [सं०] गणेश।

द्विद्वादस-सं०पु० [सं० द्विर्द्वादश] फलित ज्योतिष के अनुसार विवाह संबंध, मैत्री, साझा, नौकरी आदि निश्चित करने में देखा जाने वाला राशियों का मेल।

द्विधा-क्रि०वि० [सं०] दो प्रकार से, दो तरह से।
रू०भे०—दिधा।

द्विधातु-वि० [सं०] जो दो धातुओं के संयोग से बना हो।
सं०पु०—गणेश।

द्विप-सं०पु० [सं०] हाथी (अ.मा.)
रू०भे०—दुप, दुपी, द्विप।

द्विपदी-सं०स्त्री० [सं०] १ दो पद वाला छंद या वृत्ति.
२ वह गीत जिसमें दो पद हों. ३ एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमें किसी दोहे आदि को कोष्ठों की तीन पंक्तियों में लिखा जाता है।
उ०—पंचावयवि दसावयवि वादीसिउं वाद लिइ, छए भासा बोलइ, पठित काव्य अठोतरउ अरथ दीसइ, एक पदी, द्विपदी त्रिपदी चिंतित समस्या पूरइ, तुरगपद, क्रोस्टपद पूरइ।—व.स.

द्विपादपारस्वासन-सं०पु० [सं० द्विपादपार्श्वासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दोनों पाँवों को घुटने से मोड़ कर दोनों पंजों को पीछे से लौटा कर कटि के ऊपर के भाग में अटकाना पड़ता है।

द्विपायी-सं०पु० [सं० द्विपायिन्] हाथी।

द्विपास्य-सं०पु० [सं०] गणेश।

द्विपुस्कर-सं०पु० [सं० द्विपुष्कर] फलित ज्योतिष में एक योग जो रवि, मंगल और शनिवारों, द्वितिया, सप्तमी और द्वादशी तिथियों तथा मृगशीर्ष, चित्रा और धनिष्ठा (द्विपादर्क्ष) नक्षत्रों में से किसी एक वार, एक तिथि तथा एक नक्षत्र के एक साथ होने पर होता है। इसमें शुभाशुभ का द्विगुणित फल होता है।

द्विप्प—देखो 'द्विप' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

द्विभासी-वि० [सं० द्विभाषी] जो दो भाषाएँ जानता हो, दुभाषिया।

द्विभुज-वि० [सं०] जिसके दो भुजाएँ या हाथ हों।

द्विभूमिक-सं०पु० [सं०] दो तल्ला, दो मंजिला (भवन)
उ०—सुवरणहट्टी, रूपहट्टी, कांसहट्टी, लोहहट्टी, दंतहट्टी, चित्रकार, मणिकार, गांधी, दोसी. फोफळ, सस्त्र, सूत्र, घ्रित, तैल कण इत्यादि विचित्र हट्टिकासोभाविसाळ रमणीय चतुसाळ, द्विभूमिक, त्रिभूमिक, चतुरभूमिकादि नंदावरत्त।—व.स.

द्विमात्र-सं०पु० [सं०] दो मात्राओं का वर्ण, दीर्घ वर्ण।

द्विमात्रज, द्विमात्रिज-सं०पु० [सं० द्विमातृज=जिसकी दो माताएँ हों] १ गणेश. २ जरासंध।
रू०भे०—द्वैमातर।

द्विमीढ़-सं०पु० [सं०] हस्तिनापुर बसाने वाले महाराज हस्ति का एक पुत्र।

द्विरद-सं०पु० [सं०] १ हाथी (डिं.नां.मा.)

२ दुर्योधन का एक भाई.
३ पुरुष की ७२ कलाओं में से एक (व.स.)
वि०—जिसके दो दांत हों, दो दांतों वाला।
रू०भे०—दुरद, दुरद्, दोयरद, द्वैरद।
द्विरदासन–संपु० [सं० द्विरदासन] सिंह।
द्विरसन–संपु० [सं०] सांप।
द्विरागमन–संपु० [सं०] १ पुनः आना, दूसरी बार आना, पुनरागमन.
२ वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना।
द्विरेफ–संपु० [सं०] १ भौंरा, भ्रमर।
२ बरें।
रू०भे०—दुरेफ।
द्विविद–संपु० [सं०] रामचंद्र की सेना का एक सेनापति बन्दर। (रामायण)
द्विशरीर–संपु० [सं० द्विशरीर] ज्योतिष के अनुसार कन्या, मिथुन, धनु, और मीन राशि।
द्वीप–संपु० [सं०] १ स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो. २ पृथ्वी के सात बड़े विभाग (पौराणिक)
उ०—वस्त्रमाहि चीर, चीरमाहि सूत्रका चीर, गढ़माहि कालिजर, सागिरमाहि वडरागर, द्वीपमाहि जंबू द्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप। —व.स.
३ सात की संख्या।
४ देखो 'दीप' (रू.भे.)
रू०भे०—दीव।
द्वेष–संपु० [सं० द्वेष] १ क्रोध, गुस्सा।
उ०—यों असपत्ती आखियो, रत्ती तत्ती रार। दीठी सच्चे द्वेख में, दिल्लां चै दरबार।—रा.रू.
२ देखो 'द्वेस, धेस' (रू.भे.)
द्वेषक–संपु० [सं० द्वेषक] शत्रु (ह.नां.)
द्वेसी—देखो 'द्वेसी' (रू.भे.)
द्वैमातर—देखो 'द्विमात्रिज' (रू.भे.) (अ.मा., क.कु.बो.)
द्वेस–संपु० [सं० द्वेष] १ चित्त को अप्रिय लगने की वृत्ति, चिढ़, शत्रुता, वैर. २ ईर्ष्या, डाह।
रू०भे०—द्वेष, दवेस।
द्वेसी–वि० [सं० द्वेषिन्] १ विरोधी. २ शत्रु, दुश्मन।
३ ईर्ष्यालु। उ०—सुकवि कुकवि द्वेसी सुणें, हरखे कहिया जाव। करसी नह म्हारा कवित, न्याल उतार सराव।—बां.दा.
रू०भे०—द्वेषी, धेसी।
द्वै–वि० [सं० द्वै] दो, दोनों। उ०—१ अब ओमकार, अक्षर उचार। निस दिवस नांम, रट रांम रांम। द्वै सुनमदीप, स्रद्धा समीप। रुचि रू सु रास, दुहुं दिव्य दास।—ऊ.का.
उ०—२ आपा मेटैं स्रितिका, आपा धरै अकास। दादू जहं जहं द्वै नहीं, मध्य निरंतर वास।—दादू बांणी
द्वैअखरी, द्वैअखरी—देखो 'वेअखरी' (रू.भे.)
द्वैत–संपु० [सं०] १ अपने और पराये का भाव, भेद, अंतर.
२ दो का भाव, जोड़ा, युग्म. ३ दुविधा, भ्रम.
उ०—तिरगुण अनातम माया त्यागी, चेतन संत मुराळ। तुरीयै आतम सत सदाई, निज स्वरूप अकाळ। द्वैत नहीं लेसा रे, आपोई आप अजरे।—स्री सुखरांमजी महाराज
४ अज्ञान, जड़ता. ५ द्वैतवाद।
उ०—१ द्वैत अद्वैत कहो कहां पाता, गूंगे गुड़ का गूंगा ग्याता।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ गुणातीत विगत परै आतम, सरब विगत का भूप। अद्वै अचळ अजनमा आतम, द्वैत भरम नहि रूप।
—स्री सुखरांमजी महाराज
द्वैतभाव–संपु० [सं०] जीव और परमात्मा को दो समझने का भाव।
उ०—दादू पूरण ब्रह्म विचार लै, द्वैतभाव कर दूर। सब घट साहिब देखियें, रांम रह्या भरपूर।—दादू बांणी
द्वैतवण, द्वैतवणि, द्वैतवन–संपु० [सं० द्वैतवन] एक तपोवन जिसमें वनवास के समय पांडवों ने निवास किया था।
उ०—१ तउ जाइं द्वैतवणि वसइ वासि उडवा करी नइ। पुरत प्रियवंदु पाठविउ विदुरि वात बक नी सुणी नइ। – पं.पं.च.
उ०—२ वरसि छइइ वरसि छइइ द्वैतवणि जाइं।—पं.पं.च.
द्वैतवाद–संपु० [सं०] १ आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर को दो भिन्न पदार्थ मान कर विचार किया जाने वाला दार्शनिक सिद्धांत.
२ भूत और चित् शक्ति अथवा शरीर और आत्मा दोनों को भिन्न माना जाने वाला दार्शनिक सिद्धान्त।
द्वैतवादी, द्वैती–वि० [सं० द्वैतवादिन्, द्वैतिन्] द्वैतवाद को मानने वाला, द्वैतवादी।
द्वैपायण, द्वैपायन–संपु० [सं० द्वैपायन] व्यास का एक नाम, वेदव्यास।
रू०भे०—दीपायण, दीपायन।
द्वैमातुर–संपु० [सं०] १ गणेश।
२ जरासंध।
वि०—जिसकी दो माताएँ हों।
द्वैरद—देखो 'द्विरद' (रू.भे.) उ०—कमंध रांम कलियांण रै, जब तेग चलाया। पोगर द्वैरद काटिया, गज गरद मिळाया।—द.दा.

ध

ध—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का उन्नीसवां व्यञ्जन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंतमूल है। यह महाप्राण है और इसमें संवार, नाद और घोष नामक बाह्य प्रयत्न होते हैं। इसके उच्चारण में आभ्यंतर प्रयत्न भी आवश्यक होता है।

धं-सं०पु०—१ दान. २ मान. ३ द्रव्य. ४ सुखासन।
सं०स्त्री०—धाय (एका.)

धंक, धंका-सं०स्त्री० [सं० धाक्+अङ्क=निश्चय धंक (शक) अथवा ध्वाङ्क्ष=ध्वांक्ष=ध्वाङ्क्षा] १ इच्छा, अभिलाषा, लालसा।
उ०—१ अनंक न संक न धंक न धीस, अवास न बास न आस न ईस। निराळ न काळ त्रिकाळ नरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।
—ह.र.
उ०—२ वडा वडा पद व्रिटिस रा, धरै लियण नृप धंक। पाया वे सारा 'पतै', असपत हूंत असंक।—किसोरदांन बारहठ
२ दृढ़ संकल्प, पक्का विचार, निश्चय।
उ०—असभड़ फूल असंक, सूरा भड़ मेलै सकज। धारी 'गोगादे' धंक, 'वीरमदे' रा वैर री।—गो.रू.
३ धक्का, आघात, टक्कर।
उ०—नाप अेण-मग तुर निठुर, दोयण गळै न दाळ। अंत विरथ अपणा न अज, वज्र धंक वींबाळ।—रेवतसिंह भाटी
४ भय, डर, शंका।
उ०—१ सुण रांणी सीत असंका नै, वन मेलै लिखमण बंका नै। धारै खळ पाछै धंका नै, लैगौ गह सीता लंका नै।—रा.रू.
उ०—२ सुचित धंका जनां निवारण सांकड़ा। वाह रघुनाथ लंका लियण वांकड़ा।—र.ज.प्र.
रू०भे०—धंख, धंखा, धक, धख, धांक, धांख, ध्रंक, ध्रंका, ध्रंख, ध्रंखा।

धंकी-वि० [राज० धंक+रा०प्र०ई] प्रबल इच्छा रखने वाला, इच्छुक।
उ०—हैजमां हिलोळ हथां तेगां उछांटीलो हलै, साथ वीरां चलै चंडी चांटीलो सबंध। वेध धंकी जंगां मेलै वारंगां वांटीलो बींद, केकांण कोमंखी वागो आंटीलो कमंध।—हुकमीचंद खिड़ियो
रू०भे०—धंखी।

धंख-सं०पु० [देश०] १ क्रोध, रोष।
उ०—धर जहर देखिया गुरड़ धंख। पेखिया पटाभर अनड़ पंख। तांमस अधियांमण भूप तांम। रांमण जुध दीठा जांण रांम।
—वि.सं.
२ जोश. ३ देखो 'धंक' (रू.भे.)
उ०—धंख भुरजाळ अधरात तोपां धमत, कंक ग्रीधण भमत लाल रंग कीच। रास नागेंद्र कुरंग रोक रिझवार हुय, वार मुर मयंक थंभियौ निहंग बीच।—हुकमीचंद खिड़ियो

धंखा—देखो 'धंका' (रू.भे.)

धंखी-वि० [सं० द्वेषिन्, द्वेषी] १ वैरी, शत्रु, दुश्मन (अ.मा.)
२ देखो 'धंकी' (रू.भे.)

धंगौ—देखो 'दंगौ' (रू.भे.)
उ०—तौ पण भाटियां वडौ धंगौ राखियौ।—द.दा.

धंण—१ देखो 'धण' (रू.भे.)
उ०—पंथी एक संदेसड़इ, लग ढोलइ पैहचाइ। धंण कमलांणी कमदणी, सिसहर ऊगइ आइ।—ढो.मा.
२ देखो 'धन' (रू.भे.)
३ देखो 'धनु' (रू.भे.)

धंणी—१ देखो 'धणी' (रू.भे.)
२ देखो 'धनी' (रू.भे.)
सं०स्त्री०—३ देखो 'धनु' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—बांह चढाय धंणी चठठाय रावत सांम्हौ तीर चलायौ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

धंतर-सं०पु०—१ धनेर पक्षी (मेवाड़)
वि०वि०—देखो 'धनेर'
२ देखो 'धंतरजी' (रू.भे.)

धंतरजी-वि० [सं० धन्वंतरि] १ जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली।
रू०भे०—धनंतरजी।
२ देखो 'धनंतर (रू.भे.)

धंतूर, धंतूरौ—देखो 'धतूरौ' (रू.भे.)
उ०—१ इतर सिउं आवी रहिउ, भांड भवाईया संगि। धूरि धंतूरु सेवतु, खातु भूकि भ्रिंगि।—मा.कां.प्र.
उ०—२ धंतूरा नइं धाऊडा, धांमणि धूंगरि धूंनि। धींग धमासा धूळिया, धडहड धाता धूंनि।—मा.कां.प्र.

धंत्रणी—देखो 'धनंतर' (रू.भे.)
उ०—तुही जंत्रणी मंत्रणी अंत्र जांमा। तुही धंत्रणी तंत्रणी वुद्धि धांमा।—मे.म.

धंद—१ देखो 'धंध' (रू.भे.)

२ देखो 'धंधो' (मह., रू.भे.)

धंदड़, धंदय, धंदो—देखो 'धंधो' (रू.भे.)

उ०—नदी ज्यों नदु दीरघ थोई, सदा सुद्ध स्वरूप निरभोई। सोई सुखरांम रहित धंदा, नहीं ज्यां बंध मुक्त फंदा।
—स्री सुखरामजी महाराज

धंध-सं०पु० [सं० द्वन्द्व] १ उपद्रव, उत्पात।

उ०—१ पाधारे त्रिप जोधपुर, गड चाढ़िया कमंध। आप विरस हुए चोतियो, धरा चहूं दिस धंध।—रा.रू.

उ०—२ ठोड़-ठोड़ कागद लिखिया ज्यां में लिखियो—जमी में भोमियां, ग्रासियां धंध मचायो, रावजी देस री निगै राखै नहीं, जिणनूं पांचां ठाकुरां मांनूं चांटो मोळायो है सो हूं करूं छूं।
—बां.दा.ख्यात

२ कष्ट, दुख. ३ अंधकार. ४ धुंधलापन. ५ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा.ख्यात)

६ देखो 'धंधो' (मह., रू.भे.)

उ०—१ क्रोधी कांमी क्रिपण नर, मांनी अनै मदंध। चोर जुआरी नै चुगल, आठों देखत अंध। आठें देखत अंध, धंध रस लागा धावै। तन, धन धन री हांणि, नेटि तोइ नजरें न आवै।—घ.व.ग्रं.

उ०—२ परहर अवर धंध अपार, भज नित जांनुकी भरतार। करमत कलपना मन कोय, हरि विण विये मुकत न होय।—र.ज.प्र.

उ०—३ इ मत 'बांम' समरि स्यांम। कूड़ धंध, मत म बंध।
—र.ज.प्र.

उ०—४ उज्वळ करणी रांम है, दादू दूजा धंध। का कहियै समझै नहीं, चारौं लोचन अंध।—दादू बांणी

७ देखो 'धंध' (रू.भे.)

वि०—१ व्यर्थ, फालतू।

उ०—सुमित्र विना एक पुत्र समंध। धरा पर धंन विभो विभो सोह धंध।—रांमरासौ

२ आकाशगामी, नभचर।

धंधउ—देखो 'धंधो' (रू.भे.)

धंधक-सं०पु० [अनु०] १ एक प्रकार का ढोल।

२ काम-धंधे का आडम्बर, बखेड़ा.

धंधव—देखो 'धंधो' (रू.भे.)

उ०—देखो मात पिता प्रिय बंधव, कुळ धन धंधव काचो। चौरंग मझ जमदूंत बणायब, माहिब राघव साचो।—र.ज.प्र.

धंधागर, धंधागिर-वि० [सं० द्वन्द्व+फा० प्रत्य० गर] काम धंधा करने वाला, कार्यशील, परिश्रमी, उद्योगी।

रू०भे०—धंधागीर, धंधीगर।

धंधारथी, धंधारथू-वि० [रा० धंधो, सं० द्वंद+अर्थिन्] कार्य में रत, कार्य में संलग्न, कार्य करने वाला, कार्यशील, परिश्रमी।

धंधाळो, धंधाळू-वि० [सं० द्वंद्व+आलुच्] जिसके बहुत कार्य हों, कार्यशील, परिश्रमी, उद्योगी।

उ०—१ सोना थाळी मांहे के आरोगै साळी दाळी, सुखी वीया के हुथाळी, जिमैं पीयै चूक। एकां लोल लाली लाली, पालो धंधाळो जंजाळी एकां, सढ़ाळो अढाळोवार कमाई सलूक।—घ.व.ग्रं.

उ०—२ बहु धंधाळू आव घरि, कासूं करइ वदेस। संपत सगळी संपजै, था दिन कदी लहेस।—ढो.मा.

धंधीगर—१ देखो 'धंधींगर' (रू.भे.)

उ०—नाळ अरावां गाडियां, बोहळा आडंबर। भाड़ दियंदा राड़ कज, सझ किया धंधीगर।—द.दा.

२ देखो 'धंधागर' (रू.भे.)

धंधीयर—देखो 'धंधागर' (रू.भे.)

उ०—बोह धंधीयर आव पिव, कासूं घणौ कहेस। संपत दोनी पांमस्यां, पिण जोवन कद लहेस।—ढो.मा.

रू०भे०—धंधीगर।

धंधूणणौ, धंधूणबौ—देखो 'धंधोळणौ, धंधोळबौ' (रू.भे.)

उ०—झाबकि पइठी झालि, सुंदर कांई सळसळइ। बोलइ नहीं ज बाल, घण धंधूणी जोइयउ।—ढो.मा.

धंधूणणहार, हारौ (हारी), धंधूणियौ—वि०।

धंधूणाड़णौ, धंधूणाड़बौ, धंधूणाणौ, धंधूणाबौ, धंधूणावणौ, धंधूणावबौ
—प्रे०रू०।

धंधूणिओड़ौ, धंधूणियोड़ौ, धंधूण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धंधूणीजणौ, धंधूणीजबौ—कर्म वा०।

धंधूणियोड़ौ—देखो 'धंधोळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धंधूणियोड़ी)

धंधूणी—देखो 'धंधोळी' (रू.भे.)

धंधोळणी-सं०स्त्री० [देश०] वृक्ष विशेष।

उ०—धूंगरि धूंणी धांणकी, धातरि धणक धमाधि। धवफूली धंधोळणी, धूतो धाडा धासि।—मा.कां.प्र.

धंधोळणौ, धंधोळबौ-क्रि०स० [सं० द्रु_तम् धूनियति] १ पराजित करना, परास्त करना। उ०—पाडइ चिंध कबंध बंध धरमंडळि रोळइ। वांणि विनांणि कियांणि केवि अरीयण धंधोळइ।—पं.पं.च.

२ पकड़ कर जोर से हिलाना, झकझोरना।

उ०—वरंडा पाडतउ, मांणस मारतउ, राउत रसाडतउ, अटाळ टळवळाइ, हाटु हळहळावइ, आराम उन्मूळइ, ऊभां मनुस्य ऊलाळइ, क्षत्रिय खळभळावइ, खंडग्रिह खडहडावइ, धवळग्रिह धंधोळइ, तरळ तुरंगम त्रासइं, नाइका नासइं।—व.स.

धंधोळणहार, हारौ (हारी), धंधोळणियौ—वि०।

धंधोळाड़णौ, धंधोळाड़बौ, धंधोळाणौ, धंधोळाबौ, धंधोळावणौ, धंधोळावबौ—प्रे०रू०।

धंधोळिओड़ौ, धंधोळियोड़ौ, धंधोळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धंघोळीजणो, धंघोळीजवो—कर्म वा० ।
धंघूणणो, धंघूणवो, धंघूणणो, धंधूणवो—रू०भे० ।
धंघोळियोड़ो–भू०का०कृ०—१ पराजित किया हुआ, परास्त किया हुआ. २ पकड़ कर जोर से हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ ।
(स्त्री० धंघोळियोड़ी)
धंघोळी–सं०स्त्री० [सं० द्रुतं धूनियत] १ पराजित या परास्त करने की क्रिया या भाव. २ पकड़ कर जोर से हिलाने या झकझोरने की क्रिया या भाव ।
क्रि०प्र०—देणी ।
रू०भे०—धंघूणी, धूंधूणी, धूंधूनी ।
धंधो–सं०पु० [सं० द्वन्द्वम्] १ जीवन निर्वाह अथवा धन कमाने हेतु किया जाने वाला काम-काज, उद्योग ।
उ०—सेवक सिरजणहार का, साहिब का बंदा । दादू सेवा बंदगी, दूजा क्या धंधा ।—दादू बांणी
२ व्यवसाय, उद्यम, पेशा, कारबार, रोजगार ।
उ०—रे थोड़ी ऊमर रही, काय न छोडै कूड़ । हिय अंधा तूं नांख हव, धंधा ऊपर धूड़ ।—बां.दा.
क्रि०प्र०—करणी ।
३ सांसारिक प्रपंच ।
उ०—अंत दिनां आडो खम आसी, साचो जनां संबंधो । डिग चित अवरां दिसी म डोलै, बोलै लिछमण बंधो । रे जग धंधो, रे जग धंधो, लाहो लीजिये ।—र.ज.प्र.
रू०भे०—धंदउ, धंदव, धंदो, धंधउ, धंधव ।
मह०—धंद, धंध ।
धंन—१ देखो 'धन' (रू.भे.)
२ देखो 'धन्य' (रू.भे.)
धंनख—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—धंनख तणइ धनकार करइ धन, विढवा भुव नीमिजइ जिवार । इकवीसे ग्रहमंड अउइवइ, सहइ न वासंग भार-सहार ।
—महादेव पारवती री वेलि
धंनु—१ देखो 'धन' (रू.भे.)
२ देखो 'धनु' (१) (रू.भे.)
३ देखो 'धन्य' (रू.भे.)
उ०—धरमइं मंगळ हइं संसारि, धरम्मिइं कल्पद्रम घरबारि । देव-प्रसंसा लहइं ति धंनु. जीहंचित्ति एक वसइ सरवन्य ।
—चिहुंगति चउपइ
धंमजगर—देखो 'धमजगर' (रू.भे.)
उ०—आफळै खेद लागा धक खीजै, कटै कडां वूकडा । अंगा टुकडा उडी जै, धंमजगर छोह चडियो । करै लोहां वोहो अति लूटिया, जिण वार सूर नाहर जिही, जादव कमधज जूटिया ।
—पनां वीरमदे री वात
धंमण—देखो 'धमण' (रू.भे.)
धंमणो—१ देखो 'धमण' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'धमणो' (रू.भे.)
धंमल—देखो 'धवळ' (रू.भे.)
धंव–सं०स्त्री० [अनु०] तेज हवा से होने वाली ध्वनि ।
धंवण—देखो 'धमण' (रू.भे.)
धंवणी—देखो 'धमण' (अल्पा., रू.भे.) (अमरत)
धंवणो, धंववो—देखो 'धमणो, धमबो' (रू.भे.)
धंवळ—देखो 'धवळ' (रू.भे.)
उ०—सांध प्रभात ठोरडू ठरै, कंवल धंवळ कंवळासड़ा । गटामाटी गुड़ वाळका, हरख वरफ हिवळासड़ा ।—दसदेव
धंवियोड़ो—देखो 'धमियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धंवियोड़ी)
ध–सं०पु०—१ गणेश, गजानन. २ विष्णु. ३ नाथ, स्वामी. ४ वचन. ५ कुवेर. ६ षटमुख, स्वामी कार्तिकेय. ७ व्याख्यान. ८ कुम्हार. ९ शिर कटी हुई धड़ (एका.)
[सं० धैवत] १० मध्यम के आगे खींचा जाने वाला वह स्वर जो संगीत के सात स्वरों में से छठा है, धैवत ।
वि०—धनवान, धनाढ्य (एका.)
धईड़णो, धईड़वो—देखो 'धंईड़णो, धंईड़वो' (रू.भे.)
धईवंत, धईवत—देखो 'धैवत' (रू.भे.)
उ०—१ स्वर वाजंत्रूं का भेद कहि दिखाय सो कैसे खडज रिखव मधम पंचम धईवंत निखाख सप्त सुर के अलाप करि कोकिलूं की बांणी सैं बोलते हैं—जिसके आनंद तैं इत्यादिक नरूं के मन मोह वसि हुवा तिसका अचिरज कैसा ।—सू.प्र.
उ०—२ जिण वेळा रो देखण काज जुओ । हय कंठ धईवत नाद हुओ ।—पा.प्र.
धउळ, धउळउं, धउळऊं—देखो 'धवळ' (रू.भे.)
उ०—माथउं धउळउं देह जांजरी, वांकउ वासउ झूवइ लालरी ।
—चिहुंगति चउपई
धउळणो, धउळवो—देखो 'धोळणो, धोळवो' (रू.भे.)
उ०—१ चंद्र धउळइ कुण, दूध धउळइ कुण, मयूरपिच्छ चित्रइ कुण, साकर मधुर करइ कुण, गंगा पवित्र करइ कुण ।—व.स.
उ०—२ मोती किसिउं ओपीइं, संख किसिउं धउळीइं, प्रवाळा किसिउं रंगीइं ।—व.स.
धउळणहार, हारो (हारी), धउळणियो—वि० ।
धउळिओड़ो, धउळियोड़ो, धउळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
धउळीजणो, धउळीजवो—कर्म वा० ।
धउळहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.)
उ०—पंचवरण पटउलडां ए, रचीइ परीयछि चंग । धवळ धउळहर पेखीइ ए, विचि विचि चित्र सुरंग ।—कां.दे.प्र.

धड़ळियोड़ौ—देखो 'धोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धड़ळियोड़ी)

धड़ळौ—देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—काळां पीळां नीलां धड़ळां उजळा पटोळां, मूकड़ि ना समूह, मजूर ना पुर।—व.स.
(स्त्री० धड़ळी)

धड़ळणौ, धड़ळबौ—क्रि०स० [सं० ध्वंस] १ संहार करना. २ ध्वंस करना।
उ०—गुरिजांण सीसि वाजइ खड़ग, ऊभरड़ बूर आकासि लग्ग। वेढ़तां विलवड़ वात वार, धड़ळिया मीर मुहि मग्ग धार।
—रा ज.सी.

धड़ळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ नष्ट किया हुआ।
(स्त्री० धड़ळियोड़ी)

धड़ंकार—देखो 'धाकंकार' (रू.भे.)

धड़ंग—वि० [सं० ध्वंस] १ मूर्ख, जड़. २ असभ्य, जंगली।

धड़ंगकार—देखो 'धाकंकार' (रू.भे.)

धक—सं०स्त्री०—१ अग्नि, आग।
उ०—करि धक क्रोध हणै करि चाळा। इक लख जोध जगत छत्र-वाळा। जग छत्र सुणै कुंवर जोखमियां। धैंधींगर हूलै चख धमियां।
—सू.प्र.
क्रि०प्र०—ऊठणी, लागणी।
२ ताप, जलन।
उ०—१ सुत भ्रात कटै सक धीट वधै धक, वीस भुजांण विचारियौ जी। निरवांजा वांनर नेम गमुग्गर, खेल इसौ मन धारियौ जी।
—र.रू.
उ०—२ घावां री धक सूं तिरस लागी जद कयौ जळ लाव, सो औ बोलतां ही जळ आंणियौ।—वी.स.टी.
३ क्रोध, गुस्सा।
उ०—जवन अनेक वैर धक जुड़सी। मरसी तिकौ काय जुध मुड़सी। असुर अनेक लागि धक आसी। जुधि जुधि तिकै प्रळै हुइ जासी।
—सू.प्र.
४ शौर्यपूर्ण उमंग, साहस, जोश।
उ०—गीध कळेजौ चीलह उर, कंकां अंत विलाय। तौ भी सो धक कंत री, मूंछां भूंह मिळाय।—वी.स.
५ जोश। उ०—ले कदळीपत्र अंगि लगाए। जिम ऊठै तिम नींद जगाए। वहता रगत देखि मळ वाढ़ै। चंद्रप्रहास ग्रहे धक चाढ़ै।
—सू.प्र.
६ हिम्मत, साहस।
उ०—धरा मैं धणि हुंत धक धरी, दुगणी दीनानाथ। श्री ढळ हय मे वयण-ग्रस, आ झाळां ले बाथ।—रेवतसिंह भाटी
७ वेग (अ.मा.) ८ माया।
उ०—'जगा' हर हूंत धक जांण वीजांण रौ, घाट रै सभी कुण बाप घालै। रातणी धरा रखपाळ दीवांण रै, सेल अरियांण रै हियै सालै।—रावत अजीतसिंह सारंगदेवोत (कांनोड़) रौ गीत
९ हृदय के धड़कने या जल्दी-जल्दी कूदने का भाव या शब्द.
१० तंग मुंह के पात्र से द्रव पदार्थ को वेग से उंडेलते समय अथवा ऐसे पात्र को द्रव पदार्थ में डुबो कर भरते समय होने वाली ध्वनि।
उ०—सीसी तौ धक धक करै, प्यालो करै पुकार। हाथ प्यालो धण खड़ी, पीग्रो राजकुमार।—लो.गी.
रू०भे०—हक।
११ देखो 'धंक' (रू.भे.)
उ०—१ तरण सरस छव तरण, सरण असरण हरसण सक। मरण जनम भय मटण, धरण बड बरद रहत धक।—र.ज.प्र.
उ०—२ अति धरै धक अणभंग, जोधार मंडण जंग। जोजनां तीन जयार, वणि हले दळ विसतार।—सू.प्र.
उ०—३ भभकै धाव ऊछटै भेजा, तूटै धड़ नेजा तड़क। वैराहर पाछै दळ वारौ, धारा तीरथ तणी धक।
—महाराजा वळवंतसिंह (गोठड़े) रौ गीत
उ०—४ जरै जसराज वंबावद आइ हाडां ६१ रा पोळि पात्र सांमोर बारहठ हरसूर नूं समुझाइ या अनरथ री बात कुमार देवसिंह रै कांन पटकी तिकौ सुणतां ही 'जसा' नूं एकांत में बुलाइ पूरवा पद जांणि पहली बूंदी ही लेण री धक धारी।—वं.भा.
रू०भे०—धख, धुक।

धकड़ी—सं०स्त्री०—लड़खड़ाने की क्रिया या भाव।
ज्यूं—दारू पियोड़ा रै दाई धकड़ियां खावै है।
ज्यूं—निकाळै में कमजोरी इतरी आई कै हालतो-हालतो धकड़ियां खाऊं हूं।

धकचाळ, धकचाळण, धकचाळौ—सं०पु० [सं० धधक+चल] १ युद्ध, लड़ाई, समर (डि.को.)
उ०—१ जाइ करां जोधांण, जूथ केजम जरदाळां। दीध गुजर धर दुगम, चढां मंडण धकचाळां।—सू.प्र.
उ०—२ वेढ़क वेढ़कां 'सहसौ' इम वाचै, धीरज लेख प्रमांण धरै। धकचाळां धारां पग धरता, मरता फिरै स नाह मरै!
—सहसमल राठौड़ रौ गीत
उ०—३ रंग वाहर रूप वंधै रज रौ, मारका भड़ आय करै मुजरौ। कड़ भीढिय साज वंदूक कड़ा, धकचाळण हाथ वजै 'धुहड़ा'।—पा.प्र.
२ उपद्रव।
रू०भे०—ढकचाळ, ढकचाळौ।

धकण—देखो 'धुकण' (रू.भे.)

धकणौ, धकबौ—क्रि०अ०—१ जैसे तैसे काम चलना, निभना।
[सं० धधक=नाशने] २ क्रोधित होना, कुपित होना।
उ०—१ समर रूप सीसोद पारथ धकतै चसम, असम चित गाढ़ चढ़

रसम ऊगां। उरस छबतां भुजां 'अमर' अनाड़वी, धाड़वी चळ विचळ घणी पूगां।—अमरसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—२ मारि सकळ इम पाइ मधु, राखि सनातन राह। धकि लीधी वूंदी धरा, 'देवै' कंवर दुवाह।—वं.भा.

३ देखो 'धुकणो, धुकबो' (रू.भे.) उ०—जठै गजारूढ़ चालुक्यराज सांमुहौ धकाय अलाव धकतां लोयणां मिळाय आपरा पखरैतां नूं प्रेरणा रै काज अनेक प्रसंसा रा प्रपंच भणियौ।—वं.भा.

धकणहार, हारौ (हारी), धकणियौ—वि०।

धकाड़णो, धकाड़बो, धकाणो, धकाबो, धकावणो, धकावबो—क्रि०स०।

धकिग्रोड़ो, धकियोड़ौ, धक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धकीजणो, धकीजबो—भाव वा०।

धखणो, धखबो—रू०भे०।

धकधकणो, धकधकबो–क्रि०अ० [अनु०] १ उबक कर (द्रव पदार्थ का) निकलना। उ०—धकधकै स्रोण मिळ करद धूर, हकवकै कात्र बकवकै हूर। कर कोप अठी कमधज करूर, पिसादीय लोक भर रोस पूर।—पे.रू.

२ वेग से बहना, उमड़ना। ३ हृदय का धड़कना, कांपना, डरना। उ०—त्रिवरगा नां स्वरगा नहिन अपवरगा दिक तकै। न नरका धरकाती दुगत नहि छाती धकधकै।—ऊ.का.

४ प्रज्वलित होना, धधकना। उ०—१ धूपिया धकै चिटकां घिरत धकधकै, बाडणी डकडकै तरफ वांमी। बकवकै बीर जोगण छकै दो वखत, भकभकै हुतासण हेत भांमी।—मे.म.

उ०—२ अगूण चांदो ऊगियो, मुरधर भरम धरयो। धरती लूआं धकधकै, पाछौ भांण फिरयो।—लू

५ दुखी होना, पीड़ित होना, जलना। उ०—दो आतुर मन मिळण नै, आंमां सांमां आय। भेटचा पहलां धकधकै, लूआं जीव जळाय।—लू

धकधकणहार, हारौ (हारी), धकधकणियौ—वि०।

धकधकाड़णो, धकधकाड़बो, धकधकाणो, धकधकाबो, धकधकावणो, धकधकावबो—प्रे०रू०।

धकधकिग्रोड़ो, धकधकियोड़ो, धकधक्योड़ो—भू०का०कृ०।

धकधकीजणो, धकधकीजबो—भाव वा०।

धकधकाणो, धकधकाबो—रू०भे०।

धकधका'ट—देखो 'धकधकाहट' (रू.भे.)

धकधकाणो, धकधकाबो–क्रि०स० [अनु०] १ कंपित करना, डराना.

२ प्रज्वलित करना, धधकाना, जलाना.

३ देखो 'धखधकाणो, धखधकाबो' (रू.भे.)

धकधकाणहार, हारौ (हारी), धकधकाणियौ—वि०।

धकधकायोड़ो—भू०का०कृ०।

धकधकाईजणो, धकधकाईजबो—कर्म वा०।

धकधकणो, धकधकबो—अक०रू०।

धकधकायोड़ो–भू०का०कृ०—१ कंपित किया हुआ, डराया हुआ.

२ प्रज्वलित किया हुआ, धधकाया हुआ, जलाया हुआ.

३ देखो 'धकधकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धकधकायोड़ी)

धकधकाहट–सं०स्त्री० [अनु०] १ दिल धकधक करने की क्रिया या भाव, धड़कन. २ आशंका, खटका। ३ जलन।

रू०भे०—धकधका'ट, धकधकी।

धकधकियोड़ो–भू०का०कृ०—१ उमड़ कर निकला हुआ (द्रव पदार्थ)

२ वेग से बहा हुआ, उमड़ा हुआ.

३ (हृदय का) धड़का हुआ, कांपा हुआ, डरा हुआ.

४ धधका हुआ, प्रज्वलित. ५ दुखी, पीड़ित, जला हुआ.

(स्त्री० धकधकियोड़ी)

धकधकी—देखो 'धकधकाहट' (रू.भे.)

धकधार–सं०स्त्री० [अनु०] [राज० धक+सं० धारा] १ आवेग, वेग। उ०—चाकर कनै वंदूक थी। अर जांमगी कळ रै लागी थी। सो रोस री धकधार अर कही।—प्रतापसिंह म्हौकमसिंघ री वात

२ धारा, प्रवाह।

धकधूंण—देखो 'धकधूण' (रू.भे.)

धकधूंणणो, धकधूंणबो—देखो 'धकधूणणो, धकधूणबो' (रू.भे.)

धकधूंणणहार, हारौ (हारी), धकधूंणणियौ—वि०।

धकधूंणिग्रोड़ो, धकधूंणियोड़ो, धकधूंण्योड़ो—भू०का०कृ०।

धकधूंणीजणो, धकधूंणीजबो—कर्म वा०।

धकधूंणियोड़ो—देखो 'धकधूणियोड़ो'

(स्त्री० धकधूंणियोड़ी)

धकधूण–सं०स्त्री० [सं० धक्क=विनाशने] १ जोर से हिलाने या झकझोरने की क्रिया या भाव. २ नाम जपने की ध्वनि।

उ०—मनी मन मांह रकार मकार। लगी धकधूण-न की ललकार।

३ धुनकी की आवाज। —ऊ.का.

रू०भे०—धकधूंण।

धकधूणणो, धकधूणबो–क्रि०स० [सं० धक्क=विनाशने] १ कम्पायमान करना। उ०—धरा धकधूण गढ़ कोट चाढ़ै धकै, देस रांवण तणै दियै खग दाह। पैलकै गयो सिसपाळ माथौ पटकि, पटकि सिर हमरकै गयो पतसाह।—कमो नाई

२ हिलाना, झकझोरना। उ०—फेरि अफरि फिरणी सी फेरि, वींद 'रतनसी' वांध वड। धकधूणी फुरळी, घौ फुरळी घेर मिळी सुरतांण घड़।—दूदौ

३ गिराना. ४ ध्वंस करना।

धकधूणणहार, हारौ (हारी), धकधूणणियौ—वि०।

धकधूणिग्रोड़ो, धकधूणियोड़ो, धकधूण्योड़ो—भू०का०कृ०।

धकधूणीजणो, धकधूणीजबो—कर्म वा०।

धकचूंधणो, धकचूंधबो—रू०भे०।

धकचूंधियोड़ी—भू०का०कृ०—१ कम्पायमान किया हुआ. २ हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ. ३ गिराया हुआ. ४ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ।

(स्त्री० धकचूंधियोड़ी)

धकपंख—देखो 'धखपंख' (रू.भे.)

उ०—आगळा कंध पड़ची अलग, अलप गुलाली मूंठियां। धकपंख धाव नागां धकै, उपड़ै वागां ऊठियां।—मे.म.

धकपंखधज, धकपंखधज्ज, धकपंखध्वज—देखो 'धखपंखधज' (रू.भे.)

धकपंखी—देखो 'धखपंख' (रू.भे.)

धकपेल—सं०स्त्री० [देश०] धक्कमधक्का, रेलापेल।

धकमधका, धकमधवा—देखो 'धक्कमधक्का' (रू.भे.)

धकरूळ, धकरोळ—सं०स्त्री० [देश०] १ वायुमण्डल का धूलि से आच्छादित होने का भाव या क्रिया, तेज गति से उड़ती हुई धूलि।

उ०—१ धरा धूळ धकरूळ, करै फूंकार कराळां। ग्रहि ऊखळै गैंतुळ, तूळ जिम मूळ तराळां।—सू.प्र.

उ०—२ दुजड़ उतोळ होलोळ थाटां दुझल, दुयण धड़ रोळ फिर गोळ दोळां। रजी धकरोळ खंगोळ छायो अरक, बोळ चळवळ भुयंग बोळवोळां।—कविराजा करणीदांन

२ धारा, प्रवाह।

उ०—सोण छोळां रा कीच माचि रह्या छै। नारद रिख हंसै छै। वीर नाच रह्या छै। मोत्यां मूधा माया सिव-हार में पोवै छै। जिको कौतुग गढ़ी मढ़ी पारवती जोवै छै। लोई री धकरोळ, चादरयां चालै छै।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ तिण रजपूतां रै माथै सीरोहियां रा बाड बरणाटक करता तूटै छै नै लोहियां री धकरोळ चादरां चलै छै, जको जांणीजै क पहाड़ां उपरा थी गैरू रा खाळ उतरै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

धकांपंख, धकांपंखी—देखो 'धखपंख' (रू.भे.)

उ०—ईस धुर तीरां धांम नीरां तात रमा ओप, सूर तेजगीरां संत भीरां दैतसाळ। धकांपंखी खगां सुधां सीरां ज्यूं मुनंद्र धीरां, मही आमतीक बीरां दूजो रावांमाल।—हुकमीचंद खिड़ियो

धकाड़णो, धकाड़बो—देखो 'धकाणो, धकाबो' (रू.भे.)

धकाड़णहार, हारो (हारी), धकाड़णियो—वि०।

धकाड़िओड़ो, धकाड़ियोड़ो, धकाड़चोड़ो—भू०का०कृ०।

धकाड़ीजणो, धकाड़ीजबो—कर्म वा०।

धकणो, धकबो—अक०रू०।

धकाड़ियोड़ो—देखो 'धकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धकाड़ियोड़ी)

धकाणो, धकाबो—क्रि०स० [सं० धक्क] १ जैसे-तैसे कार्य चलाना, जीवनयापन करना, निर्वाह करना. २ निभाना.

३ धक्का लगाना, ढकेलना, पेलना।

उ०—सीख वयण गयो चीसरी, सेवक नै कहै राय। नगर विटाळयो कूंबड़ै, काढो परो धकाय।—सोपाळ रास

४ पीछे हटाना, खदेड़ना, भगाना।

उ०—१ पैलां रा सरदार तीनै ही जेठवो, भीम, काठी, हाजो, वाढेल, भांण मांगाम ७०० सूं कांम आया, पैला भागा, रावळां नूं धकाय नै धरती आप हेठै लीवी।—नैणसी

उ०—२ राव मालदेव गांगावत धणू तपियो तरै सारां गढां पाड़ोसियां नूं धकाया।—नैणसी

५ पराजित कराना, हराना।

उ०—खरा हेम रा भड़ां पीथल चढै खेड़िया, दुरत-गत घेरिया फरै दोळै। रूकड़ां पांण उफड़ांखिया रोळिया, धोळिया धकाया दोह धोळै।—दल्लो मोतीसर

६ चलाना, हांकना।

उ०—बाज कुमैत विसासतो, धीमै वेग धकाय। वाभी तोरण बींद तिम, जोवो देवर जाय।—बी.स.

७ देखो 'धुकाणो, धुकाबो' (रू.भे.) (नं.भा.)

धकाणहार, हारो (हारी), धकाणियो—वि०।

धकायोड़ो—भू०का०कृ०।

धकाईजणो, धकाईजबो—कर्म वा०।

धकणो, धकबो—अक०रू०।

धकाड़णो, धकाड़बो, धकावणो, धकावबो, धखाड़णो, धखाड़बो, धखाणो, धखाबो, धखावणो, धखावबो—रू०भे०।

धकाधकी—क्रि०वि० [अनु०] किसी प्रकार, किसी तरह।

उ०—वारणै जाय बैठे सो इसी तरह धकाधकी कर दिन काढै।

—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

सं०स्त्री०—१ देखो 'धक्कमधक्का' (रू.भे.)

२ देखो 'धाकाधीको' (रू.भे.)

धकाधूम—सं०स्त्री० [देश०] १ धक्कापेल, लड़ाई।

उ०—चोथी गाळ देनै पाछी लड़ै ए, उलटी धकाधूमां करै ए। चळै इसड़ी चलावै रग ए, खांचै दरवारां लग ए।—जयवांणी

२ देखो 'धक्कमधक्का' (रू.भे.)

धकायोड़ो—भू०का०कृ०—१ जैसे-तैसे कार्य चलाया हुआ, जीवनयापन किया हुआ, निर्वाह किया हुआ. २ निभाया हुआ.

३ धक्का लगाया हुआ, ढकेला हुआ, पेला हुआ.

४ पीछे हटाया हुआ, खदेड़ा हुआ, भगाया हुआ.

५ पराजित किया हुआ, हराया हुआ.

६ चलाया हुआ, हांका हुआ.

७ देखो 'धुकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धकायोड़ी)

धकार—सं०पु०—'ध' अक्षर।

धकावणो, धकावबौ—देखो 'धकाणौ, धकाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ धर छाती पर सेन धकावै, ताई घण खावै तड़फ। सांम्हौ कुण आवै सांफळवां, हाडो जम वाळी हड़फ। —चंडीदांन मीसण

उ०—२ सोळंकी गज फौज सज, चौड़ आयौ चाल। धारा मुंहै धकावतौ, घन नेजां गज ढाल।—कल्यांणसिंघ नगराजोत री वात

उ०—३ सलख प्रामार भी जैत कुमर संमत सोभिति सारूड़ा रै सांम्है धकावण रै काज प्रिथवीराज रा वीरां में इण तरह मिळियौ।
—वं.भा.

धकावणहार, हारौ (हारी), धकावणियौ—वि०।

धकाविश्रोड़ो, धकावियोड़ौ, धकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धकावीजणो, धकावीजबौ—कर्म वा०।

धकणो, धकबौ—अक०रू०।

धकावियोड़ौ—देखो 'धकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धकावियोड़ी)

धकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जैसे-तैसे काम चला हुआ, निभा हुआ.

२ क्रोधित हुवा हुआ, कुपित.

३ देखो 'धुकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धुकियोड़ी)

धके-देखो 'धकै' (रू.भे.)

धकेलणो, धकेलबौ-क्रि०स० [सं० धक्क] धक्का देना, ठेलना, ढकेलना।

उ०—इतरी सुण कुमार चट वांदर नूं डाळ सूं धकेलियौ सो पड़तां बार सचेत होय डाळ ऊपर चढ़ गयो।—सिंघासण बत्तीसी

धकेलणहार, हारौ (हारी), धकेलणियौ—वि०।

धकेलवाड़णो, धकेलवाड़बौ, धकेलवाणो, धकेलवाबौ, धकेलवावणो, धकेलवावबौ, धकेलाड़णो, धकेलाड़बौ, धकेलाणो, धकेलाबौ, धकेलावणो, धकेलावबौ—प्रे०रू०।

धकेलिओड़ौ, धकेलियोड़ौ, धकेल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धकेलीजणो, धकेल जबौ—कर्म वा०।

ढकेलणो, ढकेलबौ, धखेलणो, धखेलबौ—रू०भे०।

धकेलियोड़ौ-भू०का०कृ०—धक्का लगाया हुआ, ढकेला हुआ, ठेला हुआ, पेला हुआ।

(स्त्री० धकेलियोड़ी)

धकै-क्रि०वि०—१ पूर्व, पहिले, अगाड़ी।

उ०—की वाभीजी साहब म्हारौ पति लोड़ी सोक वसावैला अरथात् जुद्ध में मारीज अपछरा वरसी। हूं सत कर नै जासूं जितरै लोड़ी सोक धकै मिळसी।—वी.स.टी.

२ मुकाबले में, विरुद्ध।

उ०—१ लीधौ इण गढ नूं लड़ै, 'संग' वहादर साह। धकै हमाऊं साह रै, रण तज लागो राह।—बां.दा.

उ०—२ आगळा कंध पड़छी अलप, मलप गुलाली मूठियां। धकपंख घाव खागां धकै, उपड़ै वागां ऊठियां।—मे.म.

उ०—३ सो सत्रु ऊपर आवणो मतौ करै पण पग पाछा पड़ै है—छाती धड़कै है, धकै आवणौ काळो पीळो दीसै छै, सांम्हां आवतौ केई सुणै है तौ आंखियां भय री मारी आफेई मीचीज जावै छै।
—वी.स.टी.

मुहा०—१ धकै आणौ—सम्मुख होना, सामना करना, भिड़ना.

२ धकै होणौ—देखो 'धकै आणौ'।

३ समक्ष, सम्मुख, सामने, अगाड़ी।

उ०—धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज। सो सूरां सिर सेहरौ, नर पुंगव सुर-नैज।—बां.दा.

४ ओर, तरफ।

उ०—१ एक धकै भागा असुर, पत जवनां पड़ियौ-ह। रत भरती भोळी रवद, डोळी ऊपड़ियौ-ह।—रा.रू.

उ०—२ चरण ग्यो 'माल' गह छाड़ पैलै धकै, फेर संसार प्रथमाद फेडी।—नगराज हीमत सूजावत

५ सीधे, आगे। ज्यूं०—धकै जावण पर एक वड़ री रूंख मिळसी।

६ और दूर पर, और बढ़ कर।

ज्यूं०—उणां री मकांन और धकै है।

मुहा०—धकै निकळणौ—बढ़ जाना, तरक्की करना।

७ अनंतर, बाद में। ज्यूं०—सांवण धकै भादवो है।

८ भविष्य में। ज्यूं०—हमार सूं ही पढ़ाई री ध्यांन राखोला तो ठीक होसी नहीं तो धकै मुसकल होसी।

रू०भे०—धके, धक्कै, धखै, धिकै।

धकौ-सं०पु० [सं० धक्क=विनाशने] १ किसी पदार्थ का अन्य पदार्थ के साथ ऐसा वेगपूर्वक स्पर्श जिससे एक या दोनों पदार्थों पर एक दफा दबाव पड़ जाय अथवा गति के वेग का वह गहरा दबाव जो एक पदार्थ के साथ दूसरे पदार्थ के एकबारगी लगने से एक या दोनों पर पड़ता है। आघात, प्रतिघात, झोंका, टक्कर।

क्रि०प्र०—देणौ, मारणौ, लगणौ, लगाणौ, लागणौ, सैणौ।

यौ०—धकापेल।

२ किसी व्यक्ति या पदार्थ को उसके स्थान से दूर करने, खिसकाने, गिराने, हटाने आदि के लिए वेगपूर्वक पहुंचाया हुआ दबाव अथवा इस प्रकार के पहुंचाने की क्रिया या काम, ढकेलने की क्रिया।

मुहा०—धका खाणा—धक्का सहना। धका देनै निकाळणौ=अपमान व तिरस्कार पूर्वक सामने से हटाना।

३ टक्कर, मुठभेड़, भिड़ंत, लड़ाई, युद्ध।

उ०—१ डावी इणी मैं कंवर वीकैजी मोयलां ऊपर घोड़ा उठाय नांखिया, सु अठै वडो झगड़ो हुओ। नै मोयलां सूं धको झलियौ नहीं सु भाज नीसरिया।—द.दा.

उ०—२ वाइयां मत कावळ वैण वको। धुर आज हुसी मोय हूंत धको।—पा.प्र.

४ हमला, आक्रमण।

उ०—हाथी तहवर खान रो, गौ सो धानख भज्ज। धको न साहै मीरजां, वाहै सार गरज्ज।—रा.रू.

५ शोक या दुःख की चोट, दुख का आघात, संताप।

उ०—फूल जिसो कंवळो टाबर भूख सूं तड़फ तड़फ'र मरग्यो। मेघकी इण धक्का नैं सहन नी कर सकी। वा महीना भर तक गरीब चौधरी नैं पूरी तरै सूं संताप नैं छेवट चालती रही।—रातवासो

६ घाटा, हानि, टोटा, नुकसान।

उ०—१ राणो कुंभो पाट छै। मांहो-मांही भाइयां ग्रास वध लागो। खीमें गांव जाय पातसाही फौज आंण मेवाड़ नूं वडो धको दियो।

—नैणसी

७ प्रतियोगिता, मुकाबिला।

उ०—पमंग आरोह मूंधा अतर पहरवो, तांति रस सरस सुणवो सरस तान। विजाई 'भीम' कुण सहै दाता विनां, दैण री वहोत करड़ो धको दांन।—अज्ञात

रू०भे०—धक्को, धखो।

धक्क—देखो 'धक' (रू.भे.) उ०—खळक्कत घाट वहै रत खाळ, पियै धक धक्क छक्क पयाळ।—सू.प्र.

धक्कम-सं०पु० (बहु व०) [सं० धक्क=नाशने] १ ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों, रेलपेल.

२ बहुत से आदमियों का परस्पर बार-बार धक्का देने का काम।

क्रि०प्र०—करणा, होणा।

रू०भे०—धक्कमधक्का, धकमधका, धकाधकी, धकाधूम।

धक्कामुक्की-सं०स्त्री० [देश०] ऐसी लड़ाई जिसमें धक्कमधक्का के साथ घूंसों से परस्पर मारपीट हो।

धक्के—देखो 'धकै' (रू.भे.)

धक्को—देखो 'धको' (रू.भे.)

उ०—१ धक्का मुक्की धूप दीप लातां री देवै। नाक भांग नैवेद माथ पद इण विध मेवै।—ऊ.का.

उ०—२ मेळ में भाई-प्रसंगी मारा आया तिकै कहण लागिया—थापां मारा भेळा हां, परभात साथ संघात मंगावां, कजियो खोल्रां मूं करस्यां। मोगर आपां री धक्को झालै सो कुण।

—सूरे खीवे कांधळोत री वात

धख—१ देखो 'धक' (रू.भे.)

उ०—१ चढ़ि गयंद तुरां होतां चमर, धख दिल्ली मुख कजि धरै। मिमखां अमीर वंट जुध मंडै, साह गुरम पतिसाह रै।—सू.प्र.

उ०—२ जिण वार्चे उच्छव नृप जांणै। आरंभ समर करण धख आंणै।—सू.प्र.

उ०—३ ढिग नीम ह्यो, धख पुन्य धरो। अन ऊंच करो, सुरराज सरो।—र.ज.प्र.

२ देखो 'धख' (रू.भे.)

उ०—१ धख क्रम एम होज विध धारूं। 'मोहम' रांम 'अमर' सुत मारूं।—सू.प्र.

उ०—२ लड़ै हरिनाथ तणो धख लागि। वडो भड़ 'गोवरधन्न' अजागि।—सू.प्र.

उ०—३ सोण के फुंहारे आसमांनूं को छुट्टै। लगो धख जमीं पर लोटण ज्यूं लुट्टै।—सू.प्र.

उ०—४ लोहो धख धधक यभक्कत लाल। पड़ै धर जांणि पतंग पताल।—सू.प्र.

धखड़ो-सं०पु०—एक प्रकार की घास विशेष।

धखचाळ, धखचाळो—देखो 'धकचाळ, धकचाळो' (रू.भे.)

उ०—१ कढै खग वाह करंत कराळ, चका छळ टूक हुवै धखचाळ।

—सू.प्र.

उ०—२ जमै अमल जोधांण, करै दळ सबळ कराळा। 'अजो' करण आवियो, चंड नयरां धखचाळा।—सू.प्र.

धखणो-सं०स्त्री० [सं० धिषणा] बुद्धि (ना.मा.)

धखणो, धखबो—देखो 'धकणो, धकबो' (रू.भे.)

उ०—१ धखि दहकध सीस रघुपति धरि। इम चंद लहै जगत छत्र ऊपरि।—सू.प्र.

उ०—२ सांभळिया 'अवरंग' सा, कर धांम धखाणा। के सीतावत आय सिर, जनु रांवण रांणा।—द.दा.

धखणहार, हारो (हारी), धखणियो—वि०।

धखिओड़ो, धखियोड़ो, धख्योड़ो—भू०का०कृ०।

धखीजणो, धखीजबो—कर्म वा०।

धखपंख-सं०पु० [सं० धकपक्ष] गरुड़ (अ.मा.)

उ०—१ दूसरो मयंक दूहवै दळां देखतां, जोट वट छड़ाळै अिराग जड़ियो। हसत दीठा समा सीह वाथां हुवो, पनंग सिर कनां धखपंख पड़ियो।—राठौड़ वलू गोपाळदासोत चांपावत री गीत

उ०—२ निज सरीक पवन रो, धाव धखपंख जिम धावै। कमठ पूठि ग्रहि कमळ, धमक चवबंधा धुजावै।—सू.प्र.

रू०भे०—धकपंख, धकपंखी, धकापंखी, धखपंखी, धख्यपंख, धटपंख।

धखपंखधज, धखपंखधज्ज, धखपंखध्वज-सं०पु० [सं० धकपक्ष+ध्वज]

१ विष्णु। उ०—अइ अवरण वरण निमो निरदोस अज। धिणी सिगळां तणो प्रभु धखपंख-धज।—सू.प्र.

२ श्रीकृष्ण।

रू०भे०—धकपंखधज, धकपंखध्वज।

धखाड़णो, धखाड़बो—देखो 'धकाणो, धकाबो' (रू.भे.)

धखाड़णहार, हारो (हारी), धखाड़णियो—वि०।

धखाड़ियोड़ो, धखाड़ियोड़ो, धखाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

धखाड़ीजणो, धखाड़ीजबो—कर्म वा०।

धखणो, धखबो—अक०रू०।

धखाड़ियोड़ो—देखो 'धकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धखाड़ियोड़ी)
धखाणो, धखावौ—देखो 'धकाणौ, धकावौ' (रू.भे.)
धखाणहार, हारौ (हारी), धखाणियौ—वि० ।
धखायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
धखाईजणो, धखाईजवौ—कर्म वा० ।
धखणो, धखवौ—अक०रू० ।
धखायोड़ौ—देखो 'धकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धखायोड़ी)
धखावणो, धखाववौ—देखो 'धकाणौ, धकावौ' (रू.भे.)
उ०—विखयी नर रांमाए राचे, ते दुख पांमै नरके। लोह पुतळी धखावै अंग नें, आलिगावै धरकै ।—कवियण
धखावणहार, हारौ (हारी), धखावणियौ—वि० ।
धखाविओड़ौ, धखावियोड़ौ, धखाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धखावीजणो, धखावीजवौ—कर्म वा० ।
धखणो, धखवौ—अक०रू० ।
धखावियोड़ौ—देखो 'धकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धखावियोड़ी)
धखियोड़ौ—देखो 'धकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धखियोड़ी)
धखूण—वि० [सं० धिषण:] १ पण्डित. २ कवि (ह.नां.) ३ बृहस्पति ।
धखै—देखो 'धकै' (रू.भे.)
धखो—देखो 'धको' (रू.भे.)
धख्यपंख—देखो 'धखपंख' (रू.भे.)
उ०—पदमं गदा संख चक्रं करं, वाहणं धख्यपंखं। सुरं कोडि त्रेतीस स्रेवै भजै, तास सोभा असंख।—पिं.प्र.
धग—१ देखो 'धागौ' (मह., रू.भे.)
उ०—सुत 'परताप' धगां भर सारां, इळा उजीण दुकांन इम। काया 'अमर' गूदड़ी कीधी, जगपत गोरखनाथ जिम।
—महारांणा अमरसिंह री गीत
२ देखो 'दग' (रू.भे.)
उ०—धग धग धगती आगिन, कांई घडी ? किरतार। नर-तरणा नवि अंगमइ, अे मुझ दुख अपार।—मा.कां.प्र.
धगग—देखो 'दग' (रू.भे.)
उ०—करै नग अडिग जंग बरंग कीना किलम, स्रोण वहि धगग मग लहै न सूर। पवंग पग सूं निहंग रंग ढकियौ पतंग, पलट सितरंग पनंग पतंग रंग पूर।—कविराजा करणीदांन
धगड़—१ देखो 'दगड़' (रू.भे.)
२ देखो 'धगड' (रू.भे.)
धगड़बार—देखो 'दगड़बार' (रू.भे.)
धगड—सं०पु०—१ खड्ग; तलवार ?
उ०—भागइ कंध पडइ रिण माथा, धगड तणा घड घाई। माहो-मांहि मारेवा लागा, विगति किसी न लहाइ।—कां दे.प्र.
रू०भे०—धगड़ ।
२ देखो 'दगड़' (रू.भे.)
धगडबार—देखो 'दगड़बार' (रू.भे.)
धगणो, धगवौ—क्रि०अ० [देश०] प्रज्वलित होना, जलना ।
उ०—धग धग धगतो आगिनी, कांइ घड़ी ? किरतार। नर-तरणा नवि अंगमइ, अे मुझ दुख अपार।—मा.कां.प्र.
धगधगणो, धगधगवौ—क्रि०अ० [अनु०] कंपायमान होना ।
२ प्रज्वलित होना, जलना ।
उ०—अमसी कहै वधतै धनै, त्रिसना वधै अथाग। धुर थी अधिकी धग-धगइ, इंधन मिळियां आगि।—ध.व.ग्रं.
३ उष्ण होना, तपना, गर्म होना ।
उ०—जिसी भाद्रू तणी वेळ तिसि भूमिका धगधगई।—रा.सा.सं.
४ देदीप्यमान होना, दमकना, चमकना ।
उ०—मरकत मांणिक्य मुक्ताफळ मेघाडंबरि मयूर तणउं मंडांण छत्रदंड, अलंब चिंध चमर सन्नाह तणै सुवरण्णसिंग धगधग्यां, रत्नावळी झळकी।—व.स.
धगधगणहार, हारौ (हारी), धगधगणियौ—वि० ।
धगधगिओड़ौ, धगधगियोड़ौ, धगधग्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धगधगीजणो, धगधगीजबौ—कर्म वा० ।
धगधगणो, धगधगबौ—रू०भे० ।
धगधगियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ कंपायमान हुवा हुआ, कंपित.
२ जला हुआ, प्रज्वलित. ३ देदीप्यमान हुवा हुआ, दमका हुआ, चमका हुआ ।
(स्त्री० धगधगियोड़ी)
धगधगी—सं०स्त्री० [अनु०] १ कंपायमान होने की क्रिया, कँपकँपी, थर्राहट। उ०—१ पेखि मदझर गुमर भयंकर पहर हर, धर रज लगण असमांण धर रै। ठग ठगी लगि डरि धगधगी ठीठरां, ठहक ठठ ठोकरां नगां ठररै।—कुंभौ सांदू
उ०—२ धजा बंध देख सूमां चढी धगधगी। ठगठगी टगटगी लगी ठावां।—बखतौ खिड़ियौ
२ हृदय की धड़कन ।
रू०भे०—धगधगी ।
धगधग्गणो, धगधग्गबौ—देखो 'धगधगणो, धगधगबौ' (रू.भे.)
उ०—पांणिप तासै भेरि नद वीरारस वग्गौ। केते सिंधू राग सुणि कातर गण भग्गौ। तोपन दिघ्घ अवाज तें धरणी धगधग्गौ। कोल कमट्ठ जोर परि सिर धुनि पनग्गौ।—ला.रा.
धगधग्गियोड़ौ—देखो 'धगधगियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धगधग्गियोड़ी)
धगारौ—सं०पु०—१ आसमान, आकाश ।
उ०—१ पूर स्रोण धारां चंडी आमखां अहार पंखां, तई जेजैकार

जैरे नादरो तनत। नाटूवां हजारां भांज प्राविपो घगारां लागो, बाजता नगारां 'राजी' 'रांग' रे बनत।

—राजा रायसिंह झाला रो गीत

उ०—२ लागां बाड़ टूटे राग सींघवी बाजतां लारो, तोपां छूटे पड़े बारो मुर्कांलां ता ठोड़। लागां कोट सेना पोतो 'जगा' रो घगारां लागो, राड़ रो सांमळे कांनां नगारो राठोड़।

—गोपाळजी दववाड़ियो

२ जोश। उ०—जंग नगारां जांण रव, श्रांण घगारां श्रंग। तंग नियंतां तंडियो, तोनें रंग तुरंग।—वी.स.

घगियोड़ो-भू०का०कृ०—प्रज्वलित हुवा हुआ, जला हुआ।

(स्त्री० घगियोड़ी)

घगो—देखो 'दगो' (रू.भे.)

उ०—१ गीत पोकरण ठाकरां सवाईसींघजी रो मीरखांन घगो कीनो जिण मुदा रो। उ०—२ खोयो श्रासुरो घरम श्रापो विगोयो तैं मीरखांन, जोयो नहीं तार की न श्रागलो जवाब। सवाईसींग मारघो घगा सूं घगाखोर सिर्घो, नीत छोडे किता दीह जीवसो निवाब।

—नवलजी लाळस

यौ०—घगाखोर।

घड़ंग-वि०—वस्त्रहीन, नंगा।

घड़ंदो-सं०पु० [अनु०] किसी पदार्थ के गिरने से उत्पन्न ध्वनि।

घड़-सं०पु० [सं० घर=धारण करने वाला] १ कमर से ऊपर श्रौर गले के नीचे का वह भाग जिसमें हाथ सम्मिलित नहीं होते हैं। शिर श्रौर हाथ पैर (तथा पशु-पक्षियों में पूंछ व पंख) को छोड़ कर शरीर का शेष भाग, शरीर का स्थूल मध्य भाग जिसके अन्तर्गत छाती, पीठ श्रौर पेट होते हैं।

उ०—१ घड़ ऊपर सिर धारियो, जोध भलो जगदेव। काट कंकाळी श्रप्पियो, कीधो देव श्रदेव।—वां दा.

उ०—२ भड़ां जिकां हूं भांमणें, केहा करूं वखांण। पड़ियें सिर घड़ नह पड़ै, कर वाहै केवांण।—वा.दा.

मुहा०—घड़ैं पागड़ैं नी लागणो—घोड़ा अपनी चंचलता के कारण शरीर के रकाब स्पर्श नहीं करने देता है। चतुर मनुष्य अपने पास ही नहीं फटकने देता।

२ खंड, टुकड़ा, हिस्सा, विभाग।

उ०—समर्थ वीकेंजी कयो, "नरसिंघ तरवार यूं वै है।" इसो कह नै तरवार वाही सू नरसिंघ रा दोय घड़ हुवा।—द.दा.

३ दल, पार्टी।

रू०भे०—धुड़ो।

४ गेहूं के भूसे का ढेर. ५ पेड़ का तना.

६ वह शब्द जो किसी वस्तु के एक बारगी गिरने, वेग से गमन करने, हिलाने श्रादि से होता है. ७ बंदूक, तोप श्रादि छूटने का शब्द.

८ हृदय के धड़कने का शब्द।

उ०—पड़ पड़ बूंद पलंग पर कड़ कड़ बीज कड़क्क। सायघण से एकली, घड़ घड़ हियो घड़क्क।—लो.गी.

रू०भे०—घड़ि।

९ देखो 'घड़ो' (मह., रू.भे.)

रू०भे०—घड।

घड़क-सं०स्त्री० [अनु०] १ भय, डर, श्राशंका।

उ०—रण झणण नाद सुरसांण सागां रड़क, वाज तण सण कड़ियाळ वंदो बड़क। धरपती जठी रै तठी मांनै घड़क, कठी मारवा-राव वाळी कड़क।—महादांन महड़ू

२ दिल के कूदने या उछलने की क्रिया, हृदय का स्पंदन.

३ श्रंदेशा, दहशत, भय या श्राशंका के कारण दिल का जल्दी-जल्दी श्रौर जोर से कूदना, हृदय का श्रधिक स्पंदन, जो धक धक करने की क्रिया।

उ०—१ पग पाछा छाती घड़क, काळो पीळो दीह। नैण [illegible] सांम्हो सुणें, कवण हकाळै सीह।—वी.स.

उ०—२ फाड़ नै खाय जाऊं साळा नै समझया के नी ? जबाब ऊंठां पर बैठघोड़ां रा फगत काळजा घड़कता—धड़क ! धड़क धड़क !—रातवासो

४ दिल के कूदने की श्रावाज, हृदय के स्पंदन का शब्द।

रू०भे०—घड़क्क, घडक।

घड़कण-सं०स्त्री० [अनु०] दिल के धक-धक करने की क्रिया, हृदय का स्पंदन।

रू०भे०—घड़कन, घड़कण।

घड़कणो, घड़कबौ-क्रि०श्र०—१ हृदय का उछलना या कूदना, छाती का धक-धक करना, दिल का स्पंदन करना।

उ०—फाड़ नै खाय जाऊं साळा नै समझया कै नी ? जवाब में ऊंठां पर बैठघोड़ा रा फगत काळजा घड़कता—घड़क ! घड़क ! घड़क !

—रातवासो

२ भयभीत होना, कंपित होना, डरना, थर्राना।

उ०—वाजिंद बाज दळ जळा-बोळ। नौछट्ट खाग लुटी नारनोळ। घड़कियो श्रागरो दिली धाक। सहजां-पुर कीधो खाक-खाक।—वि.सं.

३ हिलना-डुलना, कांपना।

उ०—लांबा लांबा धर श्रांबा श्रड़ जावै। घड़ घड़ बड़ घड़कै पीपळ पड़ि जावै। टणका टणका तरु जरवैं टुरि जावै। दुरब्बा दुरब्बा गुण गरवैं दुर जावै।—ऊ.का.

४ घड़ घड़ की ध्वनि होना.

५ बंदूक, तोप श्रादि छूटना, श्रथवा छूट कर ध्वनि करना।

घड़कणहार, हारो (हारी), घड़कणियो—वि०।

घड़कवाड़णो, घड़कवाड़बो, घड़कवाणो, घड़कवाबो, घड़कवावणो, घड़कवावबो—प्रे०रू०।

घड़काड़णो, घड़काड़बो, घड़काणो, घड़कायो, घड़कावणो, घड़कायवो

—क्रि०स०।

घड़किओड़ौ, घड़कियोड़ौ, घड़क्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घड़कीजणौ, घड़कीजवौ—भाव वा० ।
घड़क्कणौ, घड़क्कवौ, धुड़ुकणौ, धुड़ुकवौ—रू०भे० ।
घड़कन, घड़कन्न—देखो 'घड़कण' (रू.भे.)
घड़काड़णौ, घड़काड़वौ—देखो 'घड़काणौ, घड़कावौ' (रू.भे.)
घड़काड़णहार, हारौ (हारी), घड़काड़णियौ—वि० ।
घड़काड़िओड़ौ, घड़काड़ियोड़ौ, घड़काड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घड़काड़ीजणौ, घड़काड़ीजवौ—कर्म वा० ।
घड़कणौ, घड़कवौ—अक०रू० ।
घड़काड़ियोड़ौ—देखो 'घड़कायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़काड़ियोड़ी)
घड़काणौ, घड़कावौ-क्रि०स० [देश०] १ दिल में धड़कन पैदा करना, जी धकधक कराना. २ खटका या आशंका उत्पन्न करना, डराना, दहलाना, भयभीत करना. ३ हिलाना, डुलाना.
४ घड़ घड़ की ध्वनि करना, किसी वस्तु को फेंक कर या छोड़ कर शब्द उत्पन्न करना.
५ बंदूक, तोप आदि छोड़ना या छोड़ कर ध्वनि करना.
घड़काणहार, हारौ (हारी), घड़काणियौ—वि० ।
घड़कवाड़णौ, घड़कवाड़वौ, घड़कवाणौ, घड़कवावौ, घड़कवावणौ, घड़कवाववौ—प्रे०रू० ।
घड़कायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
घड़काईजणौ, घड़काईजवौ—कर्म वा० ।
घड़कणौ, घड़कवौ—अक०रू० ।
घड़काड़णौ, घड़काड़वौ, घड़कावणौ, घड़काववौ, घड़क्काड़णौ, घड़क्काड़वौ, घड़क्काणौ, घड़क्कावौ, घड़क्कावणौ, घड़क्काववौ—रू०भे० ।
घड़कायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दिल में धड़कन पैदा किया हुआ, जी धकधक कराया हुआ. २ खटका या आशंका उत्पन्न किया हुआ, भयभीत किया हुआ, डराया हुआ, दहलाया हुआ. ३ हिलाया-डुलाया हुआ.
४ घड़ घड़ की ध्वनि किया हुआ, किसी वस्तु को फेंक कर या छोड़ कर शब्द उत्पन्न किया हुआ, आवाज किया हुआ ।
(स्त्री० घड़कायोड़ी)
५ बंदूक, तोप आदि छोड़ा हुआ; बंदूक, तोप आदि छोड़ कर ध्वनि किया हुआ ।
घड़कावणौ, घड़काववौ—देखो 'घड़काणौ, घड़कावौ (रू.भे.)
घड़कावणहार, हारौ (हारी), घड़कावणियौ—वि० ।
घड़काविओड़ौ, घड़कावियोड़ौ, घड़काव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घड़कावीजणौ, घड़कावीजवौ—कर्म वा० ।
घड़कणौ, घड़कवौ—अक०रू० ।
घड़कावियोड़ौ—देखो 'घड़कायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़कावियोड़ी)
घड़कियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (हृदय का) उछला हुआ, कूदा हुआ, (छाती का) धक-धक किया हुआ.
२ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ, कंपित.
३ हिला-डुला हुआ. ४ ध्वनित हुवा हुआ.
५ छूटा हुआ (बंदूक, तोप आदि) ।
(स्त्री० घड़कियोड़ी)
घड़कै-क्रि०वि० [देश०] जल्दी से, यकायक ।
घड़कौ-सं०पु० [देश०] १ गाड़ी के चलते समय मार्ग के स[...] होने के कारण लगने वाला झटका ।
उ०—हो राज ढोला घड़का ही आवै हो, म्हारा गढ़पतियां [...] भँवरजी घड़का आवै ओ ।—लो.गी.
२ भय, डर, अंदेशा, खटका । ३ हृदय की धड़कन.
४ हृदय धड़कने का शब्द.
५ किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द ।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।
रू०भे०—घड़क्कौ ।
घड़क्क—देखो 'घड़क' (रू.भे.)
घड़क्कणौ, घड़क्कवौ—देखो 'घड़कणौ, घड़कवौ' (रू.भे.)
उ०—१ पड़ पड़ बूंद पलंग पर, कड़ कड़ बीज कड़क्क । आ[...] विन अेकली, घड़हड़ जीव घड़क्क ।—अज्ञात
उ०—२ धरण घड़क्कै गिर धुक्कै, तोप कड़क्कै तेण । घण[...] न 'प्रताप' री, जुध उर वजर जंभेण ।—किसोरदांन बारहठ
उ०—३ खिवे फळ सेल खुले दळ खग्ग । दिपै दव आग कि[...] सदग्ग । हुवै रव हक्क किलक्कि हजार, घड़क्किय नाळ भ[...] अार ।—रा.रू.
उ०—४ धुक्कै सैल, धुक्कै धरा, घड़क्कै घड़ां सूं माथा, कांयरां सूर, बकै मार मार । फड़क्कै फीफरां रैणां, घड़क्कै फौज, धकै चाढ़ भाजै, उरां घणा सारधार ।—बुधसिंह सिंढा[...]
घड़क्कणहार, हारौ (हारी), घड़क्कणियौ—वि० ।
घड़क्किओड़ौ, घड़क्कियोड़ौ, घड़क्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घड़क्कीजणौ, घड़क्कीजवौ—भाव वा० ।
घड़क्काड़णौ, घड़क्काड़वौ—देखो 'घड़काणौ, घड़कावौ' (रू.भे.)
घड़क्काड़ियोड़ौ—देखो 'घड़कायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़क्कायोड़ी)
घड़क्काणौ, घड़क्कावौ—देखो 'घड़काणौ, घड़कावौ' (रू.भे.)
घड़क्कायोड़ौ—देखो 'घड़कायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़क्कायोड़ी)
घड़क्कावणौ, घड़क्काववौ—देखो 'घड़काणौ, घड़कावौ' (रू.भे.)
घड़क्कावियोड़ौ—देखो 'घड़कायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़क्कावियोड़ी)
घड़क्कियोड़ौ—देखो 'घड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़क्कियोड़ी)

घड़क्को—देखो 'धड़को' (रू.भे.)

घड़ड़-सं०स्त्री० [अनु०] १ तोप, बन्दूक आदि छूटने की ध्वनि, जोर की ध्वनि विशेष। उ०—हड़ड़ नारद बीर हड़हड़। घड़ड़ पातन सिखर धड़ड़।—र.ज.प्र.

२ मकान आदि गिरने से उत्पन्न ध्वनि।

घड़ड़णो, घड़ड़बो-क्रि०अ० [अनु०] ध्वनि विशेष का होना।

उ०—निरद विन्हे कछ पाया नेहा। नरां मुगं जनि पाया नेहा। नोबति नीर गरदि गुणि नेहा। नहि निहाउ गाजिया नेहा।

—वचनिका

२ कम्पायमान होना, धड़कना।

उ०—गंभा जब बड़ड़े, गुररब गड़ड़े, अंबर दड़ड़े, धर घड़ड़े।

—भगतमाळ

३ बंदूक, तोप आदि का छूटना।

घड़ड़ाड़णो, घड़ड़ाड़बो, घड़ड़ाणो, घड़ड़ाबो, घड़ड़ावणो, घड़ड़ावबो, घड़घड़णो, घड़घड़बो, घड़घड़ाड़णो, घड़घड़ाड़बो, घड़घड़ाणो, घड़घड़ाबो, घड़घड़ावणो, घड़घड़ावबो, घड़घड़ाणो, घड़घड़ाबो—रू०भे०।

घड़ड़ाड़णो, घड़ड़ाड़बो—देखो 'घड़ड़ाणो, घड़ड़ाबो' (रू.भे.)

घड़ड़ाड़ियोड़ो—देखो 'घड़ड़ायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़ड़ाड़ियोड़ी)

घड़ड़ा'ट—देखो 'घड़ड़ाहट' (रू.भे.)

घड़ड़ाणो, घड़ड़ाबो-क्रि०स० [अनु०] १ ध्वनि करना.

२ तोप, बंदूक आदि चलाना.

३ देखो 'घड़ड़णो, घड़ड़बो' (रू.भे.)

उ०—तोबाह लगाया, मळ निकळाया, धोम सवाया घड़ड़ाया। गिरिवादे धाया, करो सहाया, मिनटी जाया, मझ आया।

—भगतमाळ

घड़ड़ाड़णो, घड़ड़ाड़बो, घड़ड़ावणो, घड़ड़ावबो, घड़घड़ाड़णो, घड़घड़ाड़बो, घड़घड़ाणो, घड़घड़ाबो, घड़घड़ावणो, घड़घड़ावबो

—रू०भे०।

घड़ड़ायोड़ो-भू०का०कृ०—१ ध्वनि किया हुआ.

२ तोप, बंदूक आदि चलाया हुआ.

३ देखो 'घड़ड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़ड़ायोड़ी)

घड़ड़ावणो, घड़ड़ावबो—देखो 'घड़ड़ाणो, घड़ड़ाबो' (रू.भे.)

घड़ड़ावियोड़ो—देखो 'घड़ड़ायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़ड़ावियोड़ी)

घड़ड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ध्वनि किया हुआ, ध्वनित.

२ कंपायमान हुवा हुआ, कंपित, धड़का हुआ.

३ (पटाखा, बंदूक, तोप आदि) छूटा हुआ.

(स्त्री० घड़ड़ियोड़ी)

घड़च-सं०स्त्री० [सं० दृ विदारणे] १ तलवार (ना.डि.को.)

२ चीरने या फाड़ने की क्रिया या भाव।

३ देखो 'घड़चो' (मह., रू.भे.)

रू०भे०—घड़च्छ।

घड़चणो, घड़चबो-क्रि०स० [सं० दृ विदारणे] १ संहार करना, मारना, काटना। उ०—१ धारे उदर अगरत पयोधर, जार्ळ काळकूट जोगेन। जोरावरां बीस भुज जेहा, घड़चं मो तू हिज धवपेस।

—रा.रू.

उ०—२ बिड़तो 'भीम' साथियां बणतो, माती सूर उडंतो सास। घड़ पड़ियो घड़चं अरि घारां, सिर पड़ियो मारां साबास।

—कल्याणदास महडू

२ फाड़ना, चीरना। उ०—घड़च कनाता धार सूं, गो रहवास मझार।—रा.रू.

३ टुकड़े टुकड़े करना। उ०—घड़चं साळ धारुजळां, पड़ियो दारां पांण। मुह मागं माहेस रै, 'जैत' तणो कितियांण।—रा.रू.

घड़चणहार, हारो (हारी), घड़चणियो—वि०।

घड़चवाड़णो, घड़चवाड़बो, घड़चवाणो, घड़चवाबो, घड़चवावणो, घड़चवावबो, घड़चाड़णो, घड़चाड़बो, घड़चाणो, घड़चाबो, घड़चावणो, घड़चावबो—प्रे०रू०।

घड़चिओड़ो, घड़चियोड़ो, घड़च्योड़ो—भू०का०कृ०।

घड़चीजणो, घड़चीजबो—कर्म वा०।

घड़च्छणो, घड़च्छबो, घड़छणो, घड़छबो—रू०भे०।

घड़चाळी-वि०—फटी हुई। उ०—चीचड़ ईंता घुग दोळा पैंठोड़ा, आंणे भोळी में टुकड़ा ग्रैंठोड़ा। धोती घड़चाळी संधियोड़ा धागा। तुविया तुणियोड़ा बंधियोड़ा वागा।—ऊ.का.

घड़चियोड़ो-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ, काटा हुआ. २ फाड़ा हुआ, चीरा हुआ.

३ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

(स्त्री० घड़चियोड़ी)

घड़चियो, घड़चो-सं०पु० [देश०] १ फटा हुआ वस्त्र.

२ टुकड़ा, खंड (वस्त्र या शरीर का)।

यो०—घड़चाघड़च।

३ धोती (मेवाड़)

रू०भे०—घड़च्छो, घड़छो।

अल्पा०—घड़चियो, घड़छियो।

मह०—घड़च, घड़च्छ।

घड़च्छणो, घड़च्छबो—देखो 'घड़चणो, घड़चबो' (रू.भे.)

उ०—१ घड़च्छत सीस तड़च्छड़ धूप, रुपै घड़कम महाभड़ रूप। मिळम्मिळ मुंड पुवै मिव माळ, तिलत्तिल खंड हुवै रणताळ।

—मे.म.

उ०—२ सुत आणंद महेस, लगे पंचवेस घड़च्छे। पिड़ बाजै पड़िहार, व्यूह चक्राव्रत अच्छे।—रा.रू.

घड़च्छणहार, हारौ (हारी), घड़च्छणियौ—वि० ।

घड़च्छिग्रोड़ौ, घड़च्छियोड़ौ, घड़च्छयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

घड़च्छीजणौ, घड़च्छीजबौ—कर्म वा० ।

घड़च्छियोड़ौ—देखो 'घड़चियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़च्छियोड़ी)

घड़च्छौ—देखो 'घड़चौ' (रू.भे.)

घड़छ—१ देखो 'वड़च' (रू.भे.)

२ देखो 'घड़चौ' (मह., रू.भे.)

घड़छणौ, घड़छबौ—देखो 'घड़चणौ, घड़चबौ' (रू.भे.)

उ०—१ करि जांणिक आयुध इंद्र करै। घड़छै खळ जोम सदेह धरै। 'अभमाल' कणांठिय तांम इसौ। जुध लंक कणांठिय रांम जिसौ।—सू.प्र.

उ०—२ घड़छै ऊमरखांन खग धारै। साठ हजार पठांण संघारै। —सू.प्र.

घड़छणहार, हारौ (हारी), घड़छणियौ—वि० ।

घड़छिग्रोड़ौ, घड़छियोड़ौ, घड़छयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

घड़छीजणौ, घड़छीजबौ—कर्म वा० ।

घड़छियोड़ौ—देखो 'घड़चियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़छियोड़ी)

घड़छियौ—देखो 'घड़चौ' (अल्पा., रू.भे.)

घड़छौ—देखो 'घड़चौ' (रू.भे.)

उ०—धमजगर मातौ घूघड़, असमरां घड़छा ऊघड़ै। घण घाव कळह कवंध घूमत, गुड़ै भिड़ज मतंग।—र.रू.

घड़घड़णौ, घड़घड़बौ—देखो 'घड़ड़णौ, घड़ड़बौ' (रू.भे.)

उ०—घड़घड़ै घोम सूर वड़वड़ै चड़ै धारि, हड़हड़ै रंभ वाहे वरमाळ हाथि। भड़ां गजां भांजै भूरियौ वीरियौ वीराधवीर, भलौ-भलौ भाखै भांण भिड़ंतै भाराथि।

—ईसरदास कल्यांणदासोत राठौड़ री गीत

घड़घड़ाड़णौ, घड़घड़ाड़बौ—घड़ड़ाणौ, घड़ड़ाबौ' (रू.भे.)

घड़घड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'घड़ड़ायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़घड़ाड़ियोड़ी)

घड़घड़ा'ट—सं०स्त्री० [अनु०] १ घड़ घड़ की ध्वनि, ध्वनि विशेष.

२ भय के कारण दिल के तेजी से धड़कने की क्रिया या भाव, कंपकंपी, थर्राहट। उ०—उठै कायर छै त्यांह का उर कांपण लागा। घड़घड़ा'ट करण लागा।—वेलि.टी.

३ डोलने का भाव, डगमगाहट, थर्राहट।

उ०—हुय घड़घड़ा'ट धर व्योम हाक। दस ही दिस वागी प्रेत डाक।—पा.प्र.

रू०भे०—घड़ड़ा'ट, घड़ड़ाहट, घड़घड़ाहट, घड़हड़ा'ट।

घड़घड़ाणौ, घड़घड़ावौ—देखो 'घड़ड़ाणौ, घड़ड़ावौ' (रू.भे.)

घड़घड़ायोड़ौ—देखो 'घड़ड़ायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़घड़ायोड़ी)

घड़घड़ावणौ, घड़घड़ावबौ—देखो 'घड़ड़ाणौ, घड़ड़ावौ' (रू.भे.)

घड़घड़ावियोड़ौ—देखो 'घड़ड़ायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़घड़ावियोड़ी)

घड़घड़ियोड़ौ—देखो 'घड़ड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़घड़ियोड़ी)

घड़घड़ी—सं०स्त्री० [अनु०] १ भय के कारण होने वाली कंपकंपी, थरथराहट। उ०—खळकतां वकतरां मछ तोपां खड़ी, घोम सुण हियै कायां चढ़ी घड़घड़ी। घणा नर ओछटै विखम वागी घड़ी, तिकण पुळ 'अमर' चढ़वा दुरंग तेवड़ी।

—नीमाज ठाकुर अमरसिंह री गीत

२ शरीर में गड़े हुए तीर, भाले आदि को शरीर से बाहर फेंकने के निमित्त पशु-पक्षियों द्वारा शरीर जोर से हिलाने की क्रिया या ढंग जिससे शरीरस्थ तीर या भाला बाहर निकल जाय।

उ०—परली तरफ भूंडण चीलहरा लेय जाय खड़ी हुई और शरीर नूं घड़घड़ी दीवी सो तीर, भाला, बरछी बुहारी रा तिणकां ज्यूं विखर गया।—डाढाळा सूर री वात

३ जी मतलाने की क्रिया या भाव, किचकिचाहट।

ज्यूं०—घी पीवण सूं म्हनै घड़घड़ी आवै।

घड़ल्लौ—सं०पु०—१ वेग पूर्वक गिरने, पड़ने आदि का शब्द, घड़घड़ का शब्द, घड़का. २ समूह।

घड़वाई—देखो 'धाड़वी' (रू.भे.)

उ०—दांणी राहगीर घड़वाई रे।—जयवांणी

घड़हड़—सं०पु० [अनु०] १ (भवनादि) गिरने व तोप, बंदूक आदि छूटने की ध्वनि, जोर की ध्वनि विशेष।

उ०—१ घोम घड़हड़ अनड़ दीठ तोपां धुवै, रीठ पड़ि दड़ड़ गोळां विरोधा।—सू.प्र.

उ०—२ हड़ड़ नारद वीर हड़हड़, धड़ड़ आतस सिखर घड़हड़। —र.ज.प्र.

उ०—३ बोदा कपड़ा बहुत रंग, सीवणहार कुरंग। घड़हड़ टांका ऊघड़ै, घण मोड़ंती अंग।—जलाल बूबना री वात

२ हृदय धड़कने का शब्द।

उ०—हिवै नांण विनांण न सूझै, छाती घड़हड़ इम धूजै। —स्रीपाळ रास

रू०भे०—घडहड।

घड़हड़णौ, घड़हड़बौ—क्रि०अ०—१ कंपायमान होना, थरहरना, थरहराना। उ०—१ इंद्र नै चंद्र नागेंद्र चित चमकिया, घड़हड़ियौ सेस नै धरा धूजै।—प.च.चौ.

उ०—२ उळज आखड़ रूड़ रड़वड़ पंख झड़पड़ वीर वड़वड़। अछर वड़वड़ धरा घड़हड़ इसौ मचि आरांण।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ जोश पूर्ण शब्द करना, कड़ाके का शब्द करना, गर्जना ।

उ०—१ कहूं 'मनो' बंगाळ, मैंगळ कळ मांग्या महाति, 'मोर' हूरी हर घड़हड़ै, जिम सींही गज जाळ ।—र. वचनिका

उ०—२ मंमेळ नाद सुरा मळोळ, घड़हड़िय कोपि पावाड़ि ढोल ।
—रा.ज.सी.

३ ध्वनि विशेष का होना, ध्वनि होना, गड़गड़ होना ।

उ०—१ घड़हड़इ ढोल धूमड़ धरति, पड़िवाळणि वरमद मेड़-तीत ।—रा.ज.सी.

उ०—२ दळै तोप धक ज्यूं दळै गोळाम्मळ मातम । घोम धोंस घड़-हड़ै पड़ै नाळर घर पातम ।—सू.प्र.

४ ध्वनि करते हुए गिरना, ढहना, गिरना ।

उ०—रावळी वाजा वाजि रोढ़ि, गड़गाण जोगि घड़हड़िय गोढ़ि ।
—रा.ज.सी.

५ मेघ का गर्जना, घनघटा का गर्जना ।

उ०—जेठ गीली पै'ल पड़वा, जे अंबर घड़हड़ै । असाढ़ सांवण काढ़ होगे, भादरवै बरखा करै ।—वर्षा विज्ञान

क्रि०स०—६ भस्म करना, भस्मीभूत करना, जलाना ।

उ०—रद्द प्रांगनाय मारग त्रिया, धोम झाळ वप घड़हड़ै ।
—भगवानजी रतनू

घड़हड़णौ, घड़हड़बौ—रू०भे० ।

घड़ाघड़ाट—देखो 'घड़घड़ा'ट' (रू.भे.)

घड़हड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कम्पायमान हुवा हुग्रा, थरहराया हुग्रा.
२ जोश पूर्ण शब्द किया हुग्रा, कड़ाके का शब्द किया हुग्रा, गरजा हुग्रा. ३ ध्वनित.
४ ध्वनि करते हुए गिरा हुग्रा, ढहा हुग्रा.
५ गर्जना किया हुग्रा. ६ भस्म किया हुग्रा, भस्मीभूत किया हुग्रा, जलाया हुग्रा ।
(स्त्री० घड़हड़ियोड़ी)

घड़ाम-सं०पु० [अनु०] ऊपर से एक बारगी कूदने या गिरने से जोर से जमीन, पानी आदि पर पड़ने का शब्द ।

उ०—ऊपर सूं एक जमाई लात पेट पर सो हाजरसिंह घड़ाम करता धरती पर, टांगड़ा ऊपर ।—रातवासौ

घड़ारौ-सं०पु० [अनु०] धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द, घड़ घड़ शब्द ।

घड़ाघड़-क्रि०वि० [अनु०] १ लगातार घड़घड़ शब्द के साथ.
२ एक दूसरे के पीछे, लगातार, बिना रुके हुए.
३ जल्दी-जल्दी, शीघ्रता से ।

उ०—गड़ा पड़ बोगड़ै नहीं हरगिज गहूं, घड़ाघड़ न आवै रोग घाटी । न पैंडै घड़ाघड़ साथ महमदनगर, भड़ाभड़ भवांनी बोल भाटी ।—किसनौ बारहठ
(मि० धड़ाधड़)

घड़ाबंदी-सं०स्त्री० [देश०] १ युद्ध से पूर्व दो पक्षों का अपनी-अपनी सेना के बल का सन्तुलन करने का काम.
२ घड़ा बांधने का काम ।

घड़ावत, घड़ावती—देखो 'धाड़ावत' (रू.भे.)

घड़ाळ-सं०पु०—शरीर ?

उ०—धोबे सेल सनाह घड़ाळां । बरबळ कर धाड़ूं बंगाळां ।—सू.प्र.

घड़ि—देखो 'घड़' (रू.भे.)

उ०—मैं परणंती परखियौ, सूरति पाक सनाह । घड़ि सहिसी गुड़िसी गयंद, नीठि पड़ेसी नाह ।—हा.भा.

घड़ी-सं०स्त्री० [देश०] १ स्त्रियों के कान का एक आभूषण विशेष ।

उ०—कानां नै घड़ियां लाय भँवर म्हारै कानां नै घड़ियां लाय । हो जी म्हारा झूटणा हीरां जड़ाय भंवर म्हांनै रोलण दो गिणगोर ।
—लो.गी.

२ चार या पांच सेर की एक तौल, मतांतर से ढाई सेर की एक तोल ।

उ०—मूंघो मांदाण सूं मिसरी सूं मीठो । इग सूं दो घड़ियां धन बिकतो दीठो ।—ऊ.का.

यौ०—धोळा-घड़ी ।

३ रेखा, लकीर ।

घड़ूकणौ, घड़ूकबौ-क्रि०अ० [अनु०] १ मेघ घटा का गरजना ।

उ०—१ धुरि असाढ़ घडुक्या मेह । खळहळया खाळ्यां बहि गई खेह ।—वी.दे.

उ०—२ काळी घटा अटोप कर, धुर असाढ़ घड़ूकियां । काळ अवत दगो इकवार कर, उडै नउँठ अड़ूकियां ।—पा.प्र.

२ बाजों की ध्वनि होना ।

उ०—पंच सहस्र नीसांण घड़ूकड़, मेघनाद से नांम । भंडारी कोठारी सारी, बहड़ असवारी आंन ।—रुकमणी मंगळ

३ बैल या सांड का जोश पूर्ण ध्वनि करना, सांडना ।

४ सिंह का दहाड़ना ।

उ०—बोलै छै तो बोल, डूंगजी ! देवां वेगी काट, वांदै बुरज मैं बोल्यो डूंगजी, जांणै घड़ूक्यो न्हार ।—डूंगजी जवारजी री पड़

घड़ूकणहार, हारौ (हारी), घड़ूकणियौ—वि० ।

घड़ूकिग्रोड़ौ, घड़ूकियोड़ौ, घड़ूक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घड़ूकीजणौ, घड़ूकीजबौ—भाव वा० ।

दड़ूकणौ, दड़ूकबौ, धड़ूकणौ, धड़ूकबौ—रू०भे० ।

घड़ूकौ-सं०पु० [अनु०] जोर का शब्द ।

उ०—जावतां ईज धाकल रा घड़ूका साथै ढोल रो डाको डकायौ, निछरावळां करता हाथ ऊंचा रा ऊंचा ईज रैग्या अर ऊंट घोड़ता-चोड़ता बंद हूग्या ।—रातवासौ

घड़ूड़-वि० [देश०] अधिक, बहुत, ज्यादा ।

घड़ै-क्रि०वि० [देश०] तरफ, ओर ।

उ०—घड़बड़ै के घड़हड़ै आतम, जुड़ै के कज जीत । यिन समर एकण घड़ै राघव, वडै रंग बिरदैत ।—र.ज.प्र.

घड़ो–सं०पु० [सं० घटः] १ तराजू या तराजू का पलड़ा।
उ०—सीतावर सुंदर मह गुण मंदर पाय पुरंदर दास पड़ै। चव जै जस चारण 'किसन' सकारण धारण सो यक एक घड़ै।
—र.ज.प्र.
२ तराजू का संतुलन करने हेतु तराजू के एक पलड़े में रखे हुए खाली वरतन के भार के बराबर दूसरे पलड़े में रखा जाने वाला पदार्थ।
वि०वि०—प्रायः तरल पदार्थों को तोलने के लिये ही ऐसा किया जाता है।
मुहा०—घड़ो करणो—संतुलन करना।
३ समूह।
उ०—घेयनां सुसती कर हेक घड़ै। कर पैदल पीठ रखो कनलै।
—पा.प्र.
४ एक ही गोत्र या जाति का समूह या पक्ष।
उ०—१ सगा भाई दोय आपसूं छोटा अर नजीक रा। कवीलै रा आदमी चाळीस कांम आया। बीजा भला-भला रजपूत घड़ां रा धणी।—सूरे खींवे कांधळोत री वात
उ०—२ सीरोही रै देस डूंगरोतां उतरता चीवा भला रजपूत छै, इणां री ही वडी घड़ो छै, सदा सांमधरमी, वडा इतवारी छै।
—नैणसी
मुहा०—घड़ो भारी होणो—एक ही पक्ष या गोत्र के व्यक्तियों का अधिक संख्या में होना।
५ कुटुम्ब, वंश। उ०—हमीर देवराज रो। जिण रा वांसला उरजनोत भाटी सत्ता रा पोतरा। जोधपुर चाकर छै। हमीर देवराजोत रै मरोठ हुती। हमीर रो घड़ो जैसळमेर चाकर।—नैणसी
६ पक्ष, समूह, दल।
उ०—वीकमपुर वसै न बारही धूजै घर पाटण पड़ै। गींदो रोद्र भदाणियों धाए सांमेई घड़ै।—नैणसी
मुहा०—घड़ो बांधणो—अपने दल को प्रबल बनाना, शक्तिशाली बनाना।
७ विचार।
उ०—कूंतो पर धन रो करै, हाजर कळा हजार। घूत दिए आगम घडा, वंठा हाट वजार।—बां.दा.
मुहा०—१ घड़ो दैणो—विचार करना. २ घड़ो बांधणो—देखो 'घड़ो दैणो'।
८ टीवा, भीडा. ९ ढेर, राशि १० हिस्सा, भाग.
११ योग, जोड़।
उ०—तो विठ्ठळदास कही—जे हजरत आगै तो थेट सूं अजमेर छै हमैं हजरत जे वकसै सो सही। तो वादसाह फुरमाई—जे अजमेर तन की तो वुजरगां तलाक करी तींसूं तन सहर की तो अरज न करणी। बाकी सव जायगां देऊंगा। सो पांच हजार री तो विठ्ठळदास नूं, पांच हजार री बळरांम रै वेटै नूं, अढ़ाई अढ़ाई हजार री अरजुनसिंह, अनरथसिंह नूं। पछै कोई नूं दोय हजार री कोई नूं डयोढ़ हजार री। विठ्ठळदास सूं दोय छोटा भाई था तिणनूं तीन-तीन हजार री। सो सारै लोग गौड़ां सूं वादसाह वाकिफ थो सो पूछतो गयो, मांडतो गयो। दोय हजार री विठ्ठळदास रा दीवांण नूं वाकी राजपूत चाकर था त्यांनूं। सदी सूं लेय दोय हजार री तांई विठ्ठळदास रा चाकर किया। सो सारी घड़ो दियो—बावन हजारी गौड़ किया। जागीर वतन नूं जायगां सारी कर दीवी।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

घच–सं०पु० [अनु०] किसी वस्तु के गिरने पर उत्पन्न शब्द।
रू०भे०—घच्च।
अल्पा०—घचीड़ो।
मह०—घचीड़।

घचकचाणो, घचकचाबो–क्रि०स० [देश०] डराना, दहलाना।

घचकचायोड़ो–भू०का०कृ०—डराया हुआ, दहलाया हुआ।
(स्त्री० घचकचायोड़ी)

घचकणो, घचकबो–क्रि०अ० [देश०] १ झटका खाना.
२ दलदल में धँसना. ३ चोट खाना।
घचकणहार, हारो (हारी), घचकणियो—वि०।
घचकवाड़णो, घचकवाड़बो, घचकवाणो, घचकवाबो, घचकवावणो, घचकवावबो—प्रे०रू०।
घचकाड़णो, घचकाड़बो, घचकाणो, घचकाबो, घचकावणो, घचकावबो—क्रि०स०।
घचकिओड़ो, घचकियोड़ो, घचक्योड़ो—भू०का०कृ०।
घचकीजणो, घचकीजबो—भाव वा०।

घचकाड़णो, घचकाड़बो—देखो 'घचकाणो, घचकाबो' (रू.भे.)
घचकाड़णहार, हारो (हारी), घचकाड़णियो—वि०।
घचकाड़िओड़ो, घचकाड़ियोड़ो, घचकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
घचकाड़ीजणो, घचकाड़ीजबो—कर्म वा०।
घचकणो, घचकबो—अक०रू०।

घचकाड़ियोड़ो—देखो 'घचकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घचकाड़ियोड़ी)

घचकाणो, घचकाबो–क्रि०स०—१ झटका लगाना.
२ दलदल में धँसाना. ३ चोट लगाना।
घचकाणहार, हारो (हारी), घचकाणियो—वि०।
घचकायोड़ो—भू०का०कृ०।
घचकाईजणो, घचकाईजबो—कर्म वा०।
घचकणो, घचकबो—अक०रू०।
घचकाड़णो, घचकाड़बो, घचकावणो, घचकावबो—रू०भे०।

घचकायोड़ो–भू०का०कृ०—१ झटका लगाया हुआ.
२ दलदल में धँसाया हुआ.

३ चोट लगाया हुग्रा।
(स्त्री० धचकायोड़ी)

धचकावणौ, धचकाबबौ—देखो 'धचकाणौ, धचकाबौ' (रू.भे.)
धचकावणहार, हारौ (हारी), धचकावणियौ—वि०।
धचकाविग्रोड़ो, धचकावियोड़ो, धचकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
धचकावीजणौ, धचकावीजबौ—कर्म वा०।
धचकणौ, धचकबौ—ग्रक०रू०।

धचकावियोड़ो—देखो 'धचकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धचकावियोड़ी)

धचकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झटका खाया हुग्रा.
२ दलदल में धंसा हुग्रा.
३ चोट खाया हुग्रा।
(स्त्री० धचकियोड़ी)

धचको-सं०पु० [ग्रनु०] १ धक्का. २ झटका.
३ ग्राघात, टक्कर।
रू०भे०—डचको।

धचाक-क्रि०वि० [ग्रनु०] धच की ध्वनि के साथ।

धचीड़-सं०पु० [ग्रनु०] १ प्रहार या प्रहार की ध्वनि।
२ देखो 'धच' (मह., रू.भे.)
ग्रल्पा०—धचीड़ो।

धचीड़ो—१ देखो 'धच' (ग्रल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'धचीड़' (ग्रल्पा., रू.भे.)

धच्च—देखो 'धच' (रू.भे.)

धज-सं०पु० [सं०ध्वजः] १ घोड़ा, तुरंग। उ०—दुरद धज दिन गढ़राज कितरा दिया, को गिगां वडम सो ग्रचळ कीधी। तुव नमो नाथ पुर स्वांन सूकर तिकां, देव दुरलभ जिकां मुगत दीधी।—र.रू.
उ०—२ धज ठाकुर देहूं सारिसा, ग्रंग छलिता ग्रापांण। सज उतरया उरस मूं, ज्यांरा किस्या वखांण।—पनां वीरमदे री वात
२ योद्धा. ३ भाला।
उ०—विढ़े करिमाळ करे धज वाह। समोग्रम 'केहरि' 'गाजीय-साह'।—सू.प्र.
४ ग्रग्रणी, ग्रागे रहने वाला। उ०—रांमसिंघ सवळेस रो, कंपो ग्रह केवांण। फोजां धज 'फतमाल' रो, साथ 'जगड' चहुवांण।
—रा.रू.
५ देखो 'ध्वज' (रू.भे.) (ग्र.मा.)
उ०—जेण रथ धज ग्रयन जाळे, नीसरयां ग्रगुग्रस्ट न्हाळे। पहल पांणी बंध पाळे, विमळ ठाळे बोध।—र.रू.
वि०—१ सत्य।
यौ०—धज-बंदार।
२ श्रेष्ठ।
रू०भे०—धुज।

धजक्जळ-सं०पु० [सं० कज्जलध्वजः] दीपक, चिराग (ह.नां.)

धजकूंत-सं०पु० [सं० ध्वजः+रा०कूंत] भाले की नोंक या ग्रग्र भाग।
उ०—कुंभाथळ पेखि घड़ै धजकूंत। होदां मझि मोर हुवै रग हूंत।
—सू.प्र.

धजडंड, धजदंड-सं०पु० [सं० ध्वजदण्ड] ध्वजदण्ड।
उ०—एकीकइ रोम ऊपरइ ईसर, मांडिया कोट ग्रनंत ब्रहमंड। सायर सात दीपइ परिदखिणा, ग्रंबर चा ग्रंबर धजडंड।
—महादेव पारवती री वेलि

धजघर-सं०पु० [सं० ध्वज घर] देवालय, मंदिर (ग्र.मा.)

धजनी-सं०स्त्री० [सं० ध्वजिनी] सेना (ग्र.मा.)

धजवंद, धजवंदी, धजवंध, धजवंधी-वि० [सं० ध्वज+बंध] १ वीर, योद्धा। उ०—सिरी घटियाळ ग्ररोहित सेर, संदया मवताहळ माळ सुमेर। किया सरजीवत तेडि कवंध, बूझे पितु मोत कुसी धजवंध।
—मे.म.
२ पूर्ण विश्वसनीय। उ०—वहियो गजवारीह, तूं रुकमण प्यारी तजै। मदती हर म्हारीह, धजवंधी धारी नहीं।—रांमनाथ कवियो
३ सीधा।
सं०पु०—१ राजा, नृप। उ०—१ सासत पर-ग्रत सिंघ सवाई, पांणी ग्रासत जोधपुरा। सुसबद री परकर दीठो सुज, धजवंधी सांकड़ी धरा।—महाराजा बळवंतसिंह (रतलांम) रो गीत
२ ग्रश्व, घोड़ा. ३ मंदिर, देवल. ४ ध्वज रखने वाला व्यक्ति।
सं०स्त्री०—देवी, दुर्गा। उ०—२ तांमस कियउ सती तन त्यागण, ग्राप रागण चाढ़ियउ कंद(ध)। हठ कर पड़ी हुतासण मांहे, बीजउ जगन कियउ धजवंद(ध)।—महादेव पारवती री वेलि
वि०वि०—प्राचीन काल में राजा, शूरवीर ग्रौर बहुत धनाढ्य व्यक्ति ग्रपना निजी ध्वज रखते थे।
५ वह देवी या देवता जिनके देवालय पर उनके नाम का झंडा लगा रहता है।
रू०भे०—धजावंद, धजावंदी, धजावंध, धजावंधी।

धजवड़, धजव्वड़-सं०स्त्री०—देखो 'धजवट' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—किरणावळि सूरिज जेम कळवकळ, घूण धजव्वड़ रोह घणी।
—गु.रू.बं.

धजभंग—देखो 'ध्वज-भंग' (रू.भे.)

धजमोर—देखो 'मोरधज' (रू.भे.) उ०—ग्राछै दियौ मांस सिवौ तन, यूं करवत धजमोर धरी। ग्रत रजपूतां सुजस वियारो, जिण कारण ग्रै ग्रजर जरी।—ग्रज्ञात

धजरंग-वि० [सं० ध्वज+रा० रंग] ध्वज के समान नोंकदार।
उ०—सुजि तांम्रतुंड कंधा समाथ। बाजोट उवर ग्रद्याळ बाथ। केहाम विहूं धजरंग कन्न। प्रतहास गोमरिस चहर पन्न।—सू.प्र.

धजर-सं०स्त्री० [सं०ध्वज+रा० र] १ शक्ति, बल. २ शोभा, शान।
उ०—सेजां में धर धर सभी, ग्रांणै धजर ग्रजांण। धारां में राखै धजर, सो कुण कंत समांण।—वी.स.

३ कीर्ति, यश। उ०—धजर रखण कारण रांण घर, दळ श्रदतारां घणा दहंस। 'पदम' सुतन बगसै तुंही पांणां, सकव्यां नांणा पांच सहंस।—बगतरांम श्रासियौ

४ मान, प्रतिष्ठा। उ०—भिड़ण हुश्रा लाखां दळ भेळा, गढ़ साखी वागी गजर। श्राखी श्रणी भूप श्रेकल री, धणी नाथ राखी धजर।
—महादांन महडू

५ ध्वजा, पताका. ६ कटारी, बरछी। उ०—गाज घर जबर हर हर उचर धमाधम, छर दुछर तड़ सतर श्रधर छूटी। श्रजर कर नजर भर जजर कर उल्हारी, फोड़ डाडर धजर पार फूटी।
—भाखसी लाळस

सं०पु०—७ भाला। उ०—१ सत्र लोट पोट उडि दोट सिर, धजर चोट खग धोहड़ां। नवकोट छ खंड वागा निडर, लाल कोट मभि लोहड़ां।—सू.प्र.

उ०—२ घटा सिंधुर डमर पटा श्रोसर घरर, वाज साकुर पखर दरर वारी। छतर धर श्रसुर ऊपर खिवै पर छटा, थिर श्रतर श्रडर नर धजर धारी।—महाराजा श्रभयसिंह री गीत

८ देवालय, मंदिर. ६ श्रासमान, श्राकाश।

उ०—समत श्रठार साल सैंताळौ, कटकां कहर गनीमां कोप। धमचक धजर धरा सह धूजी, श्रालोचै कूंपौ श्रासोप।
—ठा० महेसदास कूंपावत री गीत

वि०—सुन्दर, मनोहर। उ०—कीधा श्रसि चाकरां, तुरत साकुरां तयारी। खुररां मांजी खेह, धजर तुररां सिर धारी।—मे.म.

धजराज, धजराळ–सं०पु० [सं० ध्वज+राज] १ घोड़ा, श्रश्व (श्र.मा.)
उ०—१ थया हरख सौ गुणां भड़ां चौगुणा वधारा। साज हूंत गजराज किताइ धजराज सिरारा।—रा.रू.
उ०—२ धजराळ नगां धरती धमसै। भालां सिर ग्रीधण भूल भ्रमै।—गो.रू.

धजरूप–सं०स्त्री० [सं० ध्वज+रूप] बरछी (डिं.नां.मा.)

धजरेळ, धजरैळ–सं०पु० [सं० ध्वज+रा० रेळ, रैळ] १ घोड़ा, श्रश्व।
उ०—धनंख कंध गेण सिर श्रड़ै धजरेळ।—चांवंडदांन दधवाड़ियौ
वि०—ध्वजा धारण करने वाला, ध्वजाधारी।

धजवड़–सं०स्त्री० [देश०] १ खड्ग, तलवार।
उ०—गयौ श्रहल गहलोतवै, कुंभकरण री क्रोध। धजवड़ बळ मेवाड़ घर, जीतौ तू यह जोध।—वां.दा.
२ मान, प्रतिष्ठा। उ०—वाघनवाड़ा बीच में, जबर करी जैसींग। वडंग मार रणबाजखां, धजवड़ राखी धींग।
—वदनोर ठा. जयसिंह मेड़तिया री दूहौ
रू०भे०—धजवड़, धजवड़ा, धजवड़ि, धजवड़ी, धजवड, धजवढ़।

धजवड़हत, धजवड़हतौ, धजवड़हत्थ, धजवड़हत्थौ, धजवड़हथ, धजवड़हथौ–वि० [सं० ध्वज+रा० वड+सं० हस्त] तलवार धारण करने वाला, खड्गधारी, योद्धा। उ०—१ धजवड़हथां मारकां धूतां, कव रजपूतां श्रमर करै।—महाराजा मांनसिंह

उ०—२ धजवड़हथ जोध कळोधर घर छळ, खेम कळह खेलंता खत। गै घड़ उर श्रागळी गड़ोगड़, गहमह वांसै रंभ गत।
—खींवकरण ऊदावत री गीत

धजवड़ा, धजवड़ि, धजवड़ी, धजवड, धजवढ़, धजव्वट—देखो 'धजवड़' (रू.भे.) (श्र.मा.) उ०—१ कड़ाजूड़ कर कोडंडा, धजवड़ा ले करग।—ठा. जोगीदास री गीत
उ०—२ राइ चूकै वात राजसी राउत, सुज श्रखियात वदै संसार। घड़ ऊठियौ ज सझियै धजवड़ि, पड़ियां कंध पछी पड़ियार।
—हरिसूर बारहठ
उ०—३ तैं वाही इकतार, मुगळां रै सिर 'माहवा'। धजवढ़ हंदी धार, सात कोस लग सीस वद।
—कांनोड़ रावत माहवसिंह री सोरठौ
उ०—४ श्रंग श्रंग श्रवल फट मिळ धाए मैमट। धार धजव्वट धोम बिखै।—गु.रू.बं.

धजसंड–सं०पु०यौ० [सं० ध्वज+षण्ड] महादेव, शिव।
उ०—सिहंड ध्वज मुख वयंड धजसंड, प्रचंड रुंड मुंड-माळ परचंड।
—सू.प्र.

धजा-गज—देखो 'धजगज' (रू.भे.) (डिं.को.)

धजा–सं०स्त्री०—देखो 'ध्वज' (श्रल्पा., रू.भे.) (ह.नां.मा., श्र.मा.)

धजाखगेस–सं०पु०यौ० [सं० ध्वज+खगेश=गरुड़] १ श्रीकृष्ण (श्र.मा.) २ विष्णु।

धजाबंध–सं०स्त्री० [सं० ध्वजाबंध] १ देवी, दुर्गा।
उ०—कुंसी रिखराज करै भणकार, धजाबंध पत्र भरै रत धार।
—मे.म.
सं०पु०—२ देवता. ३ देखो 'धजबंध' (रू.भे.)
उ०—१ धजाबंध देख सूमां चढ़ी धगधगी, ठगठगी टगटगी लगी ठावां।—बखतौ खिड़ियौ
उ०—२ धजाबंध वेहु लाग ध्रियाग, रूड़ै दळ वेहु सिंधव राग।
—गो.रू.
उ०—३ धजाबंध कवंध श्रणभंग जंगळधणी, प्रथीपत 'गंग' श्रा खबर पाई। श्राय वण ठोड़ कर जोड़ि कीधी श्ररज, बीकपुर पधारौ इंद्र-बाई।—मे.म.

धजारां–सं०पु०—१ श्राकाश, श्रासमान।
उ०—वातां श्रै श्रढंगी थारी श्रनंमी हरींद बीजा, चंगी रीजां दैण 'चांदा' गुणां लै पिछांण। बापौ चीत सदा जंगी जीवां नंद वह वांमी, पंगी तौ धजारां लागी रविनंद रै प्रमांण।—जसकरण

धजाळी–सं०स्त्री० [सं० ध्वज+श्रालुच्+रा०प्र०ई] ध्वज धारण करने वाली, देवी, शक्ति। उ०—प्रवाड़ा किसूं हेक जीहा पुणीजै। करां जोड़ियां कोड़ि श्रादेस कीजै। धजाळी हमै फ़ेर श्रोतार धारचौ। वडौ कांम स्री जोगमाया विचारचौ।—मे.म.

धजाळौ–वि० [सं० ध्वज+श्रालुच्], (स्त्री० धजाळी) ध्वज धारण करने वाला, ध्वजधारी।

घजीलो-वि० [सं० ध्वज+रा०प्र०ईलो] १ ध्वजधारी. २ सुंदर ढंग का, सज-धज वाला, सजीला।

घजन-वि० [सं० ध्वज] १ ध्वज के समान सीधा, प्रत्यक्ष सीधा।
२ देखो 'ध्वज' (रू.भे.)
उ०—'धजन' दिसावै सोनपुर, दिन गाजै कमधज्ज। मन राजा साजै मरण, तू मन गाजै घजन।—रा.रू.

घजी-सं०स्त्री० [सं० ध्वज+रा०प्र० ई] १ कपड़े, कागज, चमड़े आदि की कटी हुई लंबी पतली पट्टी. २ लोहे की चद्दर या लकड़ी के पतले तख्ते की अलग की हुई लंबी पट्टी।
मुहा०—१ धज्जियां उडणी—फट या कट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाना, विदीर्ण हो जाना। खूब दुर्दशा होना, दुर्गति होना।
२ धज्जियां उडाणी—खण्ड खण्ड करना, विदीर्ण करना। निंदा करना, बेइज्जती करना, दुर्दशा करना, दुर्गति करना।

घट-सं०पु० [देश०] १ बक पक्षी, बगुला।
यौ०—घोळो-घट।
२ देखो 'घाट' (रू.भे.)
रू०भे०—घट्ट।

घटघंत—देखो 'घणघंत' (रू.भे.)

घटी-सं०स्त्री० [सं०] १ वस्त्र विशेष, चीर (व.स.)
२ दुल्हा व दुल्हन के गठ-बन्धन का वस्त्र. ३ वह वस्त्र जो स्त्रियों को गर्भाधान के बाद पहनने को दिया जाता था।
(राजा-महाराजा, सम्पद्य)
४ देखो 'घाटी' (रू.भे.)
उ०—ग्रैराकी आरबी, घटी काछी संधारी।—सू.प्र.

घट्ट—देखो 'घट' (रू.भे.)
उ०—फागण रो महीनो अर चांदणी घट्ट रात। नीलकंठ गांव माथै ढोढ़ बोतल रो नसो चढ्योड़ो।—रातवासो

घड—देखो 'घड़' (रू.भे.)
उ०—तबल ने धबकै घर धूजवइं, अरि तणा मन नु मद खूटवइं। झिलमिलाट करी हयनो करइं, घड पडइ भड रांक रडी मरइ।
—विराटपर्व

घटघटणो, घडघडबो—देखो 'घड़हड़णो, घड़हड़बो' (रू.भे.)
उ०—घगति घडघडीव गडगडिय दम्मांम पुनि।—सीपाळ रास

घडघडियोड़ो—देखो 'घड़ड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घडघडियोड़ी)

घडहड—देखो 'घड़हड़' (रू.भे.)
उ०—१ 'मांमकंदळा' कही कहो, घडहड मूकइ धाह। पूरि नदियां पालि वहइ, लोयण ना परवाह।—मा.कां.प्र.
उ०—२ एक तणां घट घडहड बूजइ एक हीडइं भुललितइं। सिर पाखर एक कठो झूमइ मुहडा धामि फळंति।—विद्याविलासपवाडउ

घडहडणो, घडहडबो—देखो 'घड़हड़णो, घड़हड़बो' (रू.भे.)

उ०—१ आकस्मिक घडहडइ घरामंडळ।—व.स.
उ०—२ आकास घडहडइ, सोवड सडहडइ।—व.स.
उ०—३ वज्रमूष्ट प्रासाद केतउ सडहडइ, ठालउ केतउ घडहडइ, कपट पर केतउं सोचइ।—व.स.
घडहडणहार, हारो (हारी), घडहडणियो—वि०।
घडहडिग्रोड़ो, घडहडियोड़ो, घडहडयोड़ो—भू०का०कृ०।
घडहडीजणो, घडहडीजबो—भाव वा०।

घडहडियोड़ो—देखो 'घड़हड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घडहडियोड़ी)

घडूकणो, घडूकबो—देखो 'घड़ूकणो, घड़ूकबो' (रू.भे.)

घडूकियोड़ो—देखो 'घड़ूकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घडूकियोड़ी)

घण-सं०स्त्री० [सं० घनिका, घनी=हृष्ट पुष्ट जवान स्त्री] १ पत्नी, स्त्री (डि.को.) उ०—१ रांमत चौपड़ राज री, है धिक वार हजार। धण सूंपी लूठां धकै, धरमराज धिक्कार।
—रांमनाथ कवियो
उ०—२ तारां छाई रात मिजाजोड़ा फूलां छाई म्हारी धण री सेजड़ली ओ।—लो.गी.
रू०भे०—घंण, घणक, घणि, घन।
२ चमड़े की धोंकनी के आगे लगी लोहे की नाली.
३ देखो 'घन' (रू.भे.) उ०—१ मालव देस तिहां सलहीजइ घणकण कंचण सार। ऊजेणी नयरी तिहां जांणे अमरापुरि अवतार।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—२ खींची जींदराव घण चरतो हुतो, तठै सूं सरब लियां जायै छै।—नैणसी

घणक—१ देखो 'घण' (रू.भे.) उ०—घणक घोल बस्यो मन मांहि। चित चमकियउ बीसळराय।—बी.दे.
२ देखो 'घनक' (रू.भे.) ३ देखो 'घनुस' (रू.भे.)

घणत-सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का पौधा विशेष।
उ०—धूंगरि धूंणि धांणकी, धातरि घणत धमासि। धवकूटी धंधोळणी, धूती धाड़ा धासि।—मा.कां.प्र.
२ देखो 'घनक' (रू.भे.) ३ देखो 'धनुस' (रू.भे.)

घणदांण-वि० [सं० घन+दान] धन देने वाला, दाता।
उ०—महि मंडण पयडउ घण रिद्धि, नयर महेवउ नर बहु बुद्धि। ओसवंस अति घणा तिणि ठांण, वसइ सुरद्रुम जिम घणदांण।
—श्री कल्यांणचंद्र गणि
रू०भे०—धनदांण।

घणा-पंचक—देखो 'धांणा-पंचक' (रू.भे.) (अमरत)

घणि—१ देखो 'घण' (रू.भे.) उ०—संदेसा ही लख लहइ, जउ कहि जांणइ कोइ। ज्यूं घणि आलइ नयण भरि, ज्यंउ जइ आलइ सोइ।
—ढो.मा.

२ देखो 'धणी' (रू.भे.) उ०—जसु डरि करि घरि निय प्रिय, त्रिय नितु जंपइ ईम। कुडइ मनि प्रासह तणी, घणिय म लांघसि सीम। —प्राचीन फागु-संग्रह

घणिग्राप—देखो 'घणियाप' (रू.भे.)

घणिउ—१ देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—घणिउ सेत्रुंजि स्रीरिसहेस रो। घणिउ रेवति नेमि जिणेस रो।—जयसेखर सूरि

२ देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

घणिय—वि० [सं० धनित] १ अस्थिर (जैन)

२ देख 'धणी' (रू.भे.) उ०—१ आसमुद्द धरहि घणिय इक्कक्कइं कड्ढिचीरि। हाकीउ रळ जिम काढीइंउ आथमतई सूरि। —पं.पं.च.

उ०—२ महा विदेह में घणिय विराजिया जी, तिके निरघणिया किम थाय।—जयवांणी

घणियप—देखो 'घणियाप' (रू.भे.) उ०—जोगण रखे समय सुभावै, लोवड़ियाळ जेज किम लावै। घणियप विरद विचारै घावै, आई खेतल सादे आवै।—अज्ञात

घणियांणी—सं०स्त्री० [सं० धनिका+रा०प्र०आणी] १ स्वामित्ती, मालकिन। उ०—१ अर सीसोदणी तीडोजी रै राज री घणियांणी हुई।—नैणसी

उ०—२ हिवै बीजै पहर रै अमल मांहै राजा भोज बोलियो—तीन पहर रात, महल री घणियांणी बोलै नहीं, राति किसी भांति वितोल हुसी।—चौबोली

२ देवी, माता। उ०—'बांको' कहै टळै दिन निखमा, घणियांणी नै धायां। लोवड़ियाळ ताप नंह लागै, ओलै थारै आयां।—वां.दा.

रू०भे०—घणीयांणी, धिणियांणी, धिनयांणी, धिनियांणी, धिरांणी।

घणिया—देखो 'धांणा' (रू.भे.) (उ.र.)

घणियाप, घणियापण—सं० ० [सं० धनिक+रा०प्र० आप, आपण] १ स्वामित्व, मालिकपन। उ०—१ पातल, सिला, वेस्या, प्रिथ्वी, इण च्यारां री रीति इसी। ममता करै मरै सो मूरख, कहै धरमसी घणियाप किसी।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ घणियापण दाखव आज घणी। विखमी घणी आ पुळ आय वणी।—पा.प्र.

क्रि०प्र०—करणी, जताणी, होणी।

२ अधिकार, वश। उ०—पण होणी ऊपर किण री घणियाप, मरियां पछै रोवणो पोतै।—वांणी

३ कृपा, दया, महरवानी। उ०—१ बराछक वागत आयुध वोह। 'लूणा' सुत अंग न लागत लोह। तिको तिण मात तणो परताप, धरा इण जेण घणी घणियाप।—मे.म.

उ०—२ चित खून खिण न विचारचो, घणियाप निज ब्रिद धारियो। —र.रू.

रू०भे०—घणिग्राप, घणियप, घणीप, घणीयप, धिणाप।

घणियाळी—वि० [सं० धनिक+आलुच्] सौभाग्यवती।

सं०स्त्री०—वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।

घणी—सं०पु० [सं० धनिकः] (स्त्री० घणियांणी) १ ईश्वर, परमेश्वर (ह.नां.)

उ०—मन में फेर घणी री माळा, पकड़ै नंह जमदूत पलो। मिळै नहीं बकणा सूं माया; भाया कम बोलबो भलो।—वां.दा.

२ स्वामी, मालिक। उ०—१ तद 'मुकनै' 'कल्यांण' रै, और न दक्खी वांण। तेड़ धरा आवू तणी, घणी दिखायो आंण।—रा.रू.

उ०—२ आउवा रा ठाकर थांरी घोड़ी घूमर घाले ओ। गोरिया फरमावै घणियां कांई मरजी ओ छूटी देवो तो। हां ओ छूटी देवो तो होळी री गैर लड़नै देखां ओ।—लो.गी.

यौ०—घणी-धोरी।

३ पति, खाविंद (डि.को.) उ०—१ गठजोड़ा सहत वसत्र केसर गरक, पहर अत्र अगरजो रिव परार्थं। दुछर छत्रकुळ छळां घसी सीसोदणी, सुरामुख भळां मझ घणी सार्थं।—ऊमेदजी सांदू

उ०—२ गिरवर मोर गहक्किया, तरवर मूंक्या पात। घणियां घण सालण लगा, वूठं ती वरसात।—ढो.मा.

४ राजा, नृप। उ०—१ ओ 'अगजीत' आगियाकारी, पाई रेख पटा री। सुत 'कुसळेस' तूझ नै सारी, घणियां सूंपी लाज धरा री। —नींबाज ठा. अमरसिंह ऊदावत रौ गीत

उ०—२ अर थे बाई मांगी छो; अर जो म्हे द्यां, अर बाई रै छोरू हुवै सो? ताहरां चवंडोजी बोलिया—'छोरू हुवै सो चीत्रौड़ री घणी।—नैणसी

सं०स्त्री०—५ देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—मौजूद हाथियां ऊपर सब आदमी भला भला तीरमदाज घणी जळ धरी थांमण रा कांमठा, सुही रा तीर, तिण रै सवा-सवा पाव रा भाला, तीन-तीन आंगळ चौड़ा, बिलांत बिलांत भर लांबा लियां इसा इसा जवांन हाथियां चढ सांम्हा हुवा।—डाढ़ाळा सूर री वात

६ देखो 'धनी' (रू.भे.) (डि.को.)

रू०भे०—धणि, घणिय, घणीय, धिणी।

घणी-चोघार—सं०पु० [सं० धनिकः+राज० चोधार] राजा (डि.नां.मा.)

घणी-घोरी—सं०पु०यौ० [सं० धनिक+धौरेय] १ मालिक और मुखिया, स्वामी और प्रधान। उ०—तूं मरण तेवड़ नै खंगार नूं मारै तो पोहचां, नै थारा वेटा घणी-घोरी छै ईज, नै वळै घणा वधारीस। —नैणसी

उ०—२ नीघणि आया मारिये, घणी न घोरी कोइ। दादू सो क्यों मारिये, साहिब सिर पर होइ।—दादू वांणी

२ कर्त्ता-धर्त्ता। उ०—राव मांनसिंघ मूवौ तरै राव सुरतांण नै सारै रजपूते मिळ टीकै बैसांणियौ, देवड़ा विजा रो घणो कारण छै, विजो राव सुरतांण कनै घणी-घोरी छै।—नैणसी

धणोव—देखो 'धणियाव' (रू.भे.)

उ०—कह तिम धम्म मामिस धम्हारी धणोव दरिज्ज करिजो।

—पष्टिशतक प्रकरण

धणोमाळ-सं०पु० [सं० धनिकः+मालं] राजा, नृप (डि.नां.मा.)

धणोमो-वि० [सं० धन्य वयाः] बढ़िया, उत्तम।

धणोव—देखो 'धणी' (रू.भे.) उ०—आक दयंता वन दह्यो, चोळो मांहि गो दाझड छड़ गात। धणोव मतका धण ताकजे, तुरीय पलाणि वेगो पदि आव।—वी.दे.

धणोवप—देखो 'धणियाप' (रू.भे.)

धणीयांणी—देखो 'धणियांणी' (रू.भे.) उ०—१ तद नायण जूती उठाय लीनी अर पाछी आय जूती तो चाकरां नुं दीवी। कही जूती की धणीयांणी पण अठै हुसी। तद नायण गुफा मांहकर भीतर गई।

—चौबोली

उ०—२ कहै दास सगरांम सुणो धन री धणीयांणी। कर सुकित भज रांम धोय कर वहते पांणी।—सगरांमदास

धणीयाप—देखो 'धणियाप' (रू.भे.) उ०—गुण परगट करै छपावै अवगुण, पणवित वगसै धणुंधणी। की कहणो थारो केलपुरा, तो वाळो धणीयाप तणी।—चांवंडदांन दधवाड़ियो

धणीवउ—[सं० धन्यवयाः] १ दीर्घजीवी (उ.र.) २ वह जिनका वय अर्थात् जीवन धन्य (सफल) हुआ हो (उ.र.)

धणीव्रत-सं०पु० [सं० धनिकः+व्रतं] स्वामित्व, मालिकपन।

उ०—निवारण विघन सुप्रसन धणी रहै नित, सोगणी सुखद सब दिन गुदातो। ताकवां वधावै प्रभत महीया तणी, निभावै धणीव्रत तणी नातो।—नंदजी मोतीसर

धणुं, धणु, धणुह—१ देखो 'धनु' (१) (रू.भे.)

उ०—१ सिर वरि वेणीय लहकइ, वहकइ चंपक माळा। रतिपति धणु समांणउ, जांणउ भाल विसाळा।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ यादव कुळ जगचक्ष दीपै दस धणु देह। आयु थिति पाळी एक सहस वरसेह।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ गुरु ऊठाडइ अरजुन कुमरी करणिहि सरिसउं माडइ वयरी। वे माया बिहुं सर्व वहेई, करयलि विसमु धणुहु धरेई।—पं पं.च.

२ देखो 'धांणा' (रू.भे.)

धणुहर-सं०पु० [सं० धनुर्धर] धनुर्धर। उ०—जइ पडिहसि 'पास' जिणिद वसि नांणवंत निम्मळ रयण। न सु धणुहरु बांण न रूव नहि न रूप विमु हुइ इइमयण।— कवि पल्ह

धणुहि, धणुही-सं०स्त्री०—देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आंति राती, हाथि काती, हाथि सुणही, बीजइ धणुही इसी भिल्ली।—व स.

धणुहीय-सं०स्त्री०—देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—भमहि कि मनमथ धणुहीय गुण हीय वरतणु हार। वांण कि नयण रे मोहई सोहई सयल संसार।—वसंतविलास

धणूं-सं०पु० [सं० धान्यक] १ देखो 'धांणा' (रू.भे., डि.को.)

२ देखो 'धनु' (१) (रू.भे.) (डि.को.)

धणो—देखो 'धांणा' (रू.भे.) (अमरत)

धत-अव्य० [अनु०] १ दुत्कारने का शब्द. २ हाथी को पीछे हटाने का शब्द।

यौ०—धताधता, धत्ताधत्ता।

३ देखो 'धुत' (रू.भे.)

वि०—मस्त, उन्मत्त।

यौ०—धतां-धत, धता-धत्त, धत्ता-धत्त, धत्ता-धत्त।

सं०स्त्री०—१ बुरी बान, कुटेव, लत। उ०—मिदर, तीरथ, मंत्र, व्रत माळा, मोटी भूल मिटाई। पिड नस दरसण धत निलजायण, फिर क्यों सिरह फंसाई।—ऊ.का.

२ जिद्द, दुराग्रह।

रू०भे०—धत्त।

धतकार—देखो 'दुतकार' (रू.भे.)

धतकारणो, धतकारबो—देखो 'दुतकारणो, दुतकारबो' (रू.भे.)

धतकारणहार, हारो (हारी), धतकारणियो—वि०।

धतकारिओड़ो, धतकारियोड़ो, धतकारयोड़ो—भू०का०कृ०।

धतकारीजणो, धतकारीजबो—कर्म वा०।

धतकारियोड़ो—देखो 'दुतकारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धतकारियोड़ी)

धतराठ, धतरासट, धतरास्ट—सं०पु० [सं० धृतराष्ट्र] विचित्रवीर्य के क्षेत्रज पुत्र तथा दुर्योधन के पिता एक प्रसिद्ध राजा जो जन्मान्ध थे।

रू०भे०—धयरठ्ठ, धयराठ, धायरठ्ठ, धायराठ, धित्रासट, धतरास्ट्र।

धता-सं०स्त्री०—१ ३१ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।

२ हाथी को जोश दिलाने का शब्द। उ०—पीलवांण कूंभाथळां माथै पगारा आंगूठा चलावै छै। गज-वाग खैंचे छै। धता धता करै छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—धत्ता।

यौ०—धताधता, धत्ता-धत्ता।

धतानंद-सं०पु०—प्रत्येक चरण में दश और सात पर विश्राम से १७ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।

रू०भे०—धत्तानंद।

धती-वि०—दुराग्रही, जिद्दी।

धतूंरो—देखो 'धतूरो' (रू.भे.)

उ०—माहरइ मनि एह जि मति गमइ। आदरीउ नवि तिजीइ किमइ। ईसर कुसुम धतूंरा तणइ। नवि ऊतजिइ उत्तमपणइ।

—विद्याविलास पवाडउ

धतूर-सं०पु०—१ एक प्रकार का लोक गीत जो कायस्थों में प्रसव के बाद छठी के दिन गाया जाता है।

२ देखो 'धतूरो' (मह., रू.भे.)

घतूरउ—देखो 'घतूरौ' (रू.भे.)

उ०—धोवा कि तिनि खाय धतूरउ, चाढइ भसम ऊखधी चाढ़ि ।
वासउ गिरे कंदरे वासइ, तां गहिलां सरिस न कीजइ वाद ।
—महादेव पारवती री वेलि

घतूरौ-सं०पु० [सं० धुस्तुर] दो तीन हाथ ऊंचा एक पौधा जिसके पत्ते सात-ग्राठ ग्रंगुल तक लंबे ग्रौर पांच छः ग्रंगुल चौड़े तथा नोंकदार होते हैं। इसके फूल सफेद रंग के होते हैं ग्रौर फलों के बीज बड़े जहरीले होते हैं जो ग्रौषध ग्रौर नशे के लिए काम ग्राते हैं ।

रू०भे०—धतूरौ, धतूरउ, धत्तूरउ, धत्तूरौ ।

ग्रल्पा०—धतूरियौ, धतूरियउ ।

मह०—धतूर, धत्तूर ।

घतौ-सं०पु० [ग्रनु० धत] १ किसी को भ्रम में डालने की क्रिया या भाव. २ धोखा, छल ।

क्रि०प्र०—दैणौ, बताणौ ।

रू०भे०—धत्तौ ।

घत्त—देखो 'धत' (रू.भे.) उ०—हुवै घत्त लोहित्त मैमत्त हाला। नसा रा किसा पार सूळां निवाळा। मधू-मास ग्रासीज में रास मंडै। तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडै।—मे.म.

उ०—२ रजी ऊमटै वोम नूं रोसरत्ता। घुम्रांधार चारक्खिग्रां धत्त-धत्ता।—वचनिका

घत्ता—देखो 'धता' (रू.भे.) उ०—मदमत्ता घूमता बांळ धत्ता धत्ता चहुंवळ। हुपत्ता चेळा दत्ता वयंड फबता ब्रिंदाचळ।
—महादांन महड़ू

घत्तानंद—देखो 'धतानंद' (रू.भे.)

घत्तूर—देखो 'धतूरौ' (मह., रू.भे.)

घत्तूरउ—देखो 'धतूरौ' (रू.भे.) (उ.र.)

घत्तूरियउ—देखो 'धतूरौ' (ग्रल्पा., रू.भे.) (उ.र.)

घत्तूरौ—देखो 'धतूरौ' (रू.भे.)

घत्तौ—देखो 'धतौ' (रू.भे.)

घधक-सं०स्त्री० [ग्रनु०] १ ग्राग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव, ग्राग की भड़क। उ० धमक वाज धर धूज उड सोर बाळी धधक, यळा धक ग्रताळी बोहत लीधी। कमाळी चंद री तरह 'वखतै' कमंध, कराळी सेन विच दुरंग कीधी।—पीरदांन ग्राढ़ो

२ लपट, लौ. ३ क्रोध, ग्रावेग. ४ दुर्गन्ध, बदबू ।

घधकणौ, घधकबौ-क्रि०ग्र० [ग्रनु०] १ ग्राग का इस प्रकार जलना कि लपट ऊपर उठे. २ क्रोधित होना। उ०—छोडै दुलहण छेट, 'पीर' धधकै ऊठियौ।—गो.रू.

३ बदबू देना ।

घधकणहार, हारौ (हारी), घधकणियौ—वि० ।

घधकिग्रोड़ौ, घधकियोड़ौ, घधक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घधकीजणौ, घधकीजबौ—भाव वा० ।

घधक्कणौ, घधक्कबौ—रू०भे० ।

घधकाड़णौ, घधकाड़बौ—देखो 'धधकाणौ, धधकाबौ' (रू.भे.)

घधकाड़णहार, हारौ (हारी), धधकाड़णियौ—वि० ।

घधकाड़िग्रोड़ौ, घधकाड़ियोड़ौ, घधकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घधकाड़ीजणौ, घधकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

घधकणौ, घधकबौ—ग्रक०रू० ।

घधकाड़ियोड़ौ—देखो 'धधकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धधकाड़ियोड़ी)

घधकाणौ, घधकाबौ-क्रि०स० [ग्रनु०] १ ग्राग को इस प्रकार जलाना कि उस में से लपट उठे. २ क्रोधित करना.

३ बदबू उत्पन्न करना ।

घधकाणहार, हारौ (हारी), धधकाणियौ—वि० ।

घधकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

घधकाईजणौ, घधकाईजबौ—कर्म वा० ।

घधकणौ, घधकबौ—ग्रक०रू० ।

घधकाड़णौ, घधकाड़बौ, घधकावणौ, घधकावबौ—रू०भे० ।

घधकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ लपट उठाया हुग्रा. २ क्रोधित किया हुग्रा. ३ बदबू उत्पन्न किया हुग्रा ।

(स्त्री० धधकायोड़ी)

घधकारणौ, घधकारबौ-क्रि०स० [ग्रनु०] १ उत्तेजित करना.

२ बैलों का हांकना। उ०—धौळा धधकारेह, हळ लारै हलियौ नहीं। दुरभख दरबारेह, भमियौ पेटज भरण नै।—ग्रज्ञात

३ देखो 'दुत्कारणौ, दुत्कारबौ' (रू.भे.)

घधकारणहार, हारौ (हारी), धधकारणियौ—वि० ।

घधकारिग्रोड़ौ, घधकारियोड़ौ, घधकार्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घधकारीजणौ, घधकारीजबौ—कर्म वा० ।

घधकारिग्रोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उत्तेजित किया हुग्रा.

२ बैलों को हांका हुग्रा. ३ देखो 'दुत्कारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धधकारियोड़ी)

घधकावणौ, घधकावबौ—देखो 'धधकाणौ, धधकाबौ' (रू.भे.)

घधकावणहार, हारौ (हारी), धधकावणियौ—वि० ।

घधकाविग्रोड़ौ, घधकावियोड़ौ, घधकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घधकावीजणौ, घधकावीजबौ—कर्म वा० ।

घधकणौ, घधकबौ—ग्रक०रू० ।

घधकावियोड़ौ—देखो 'धधकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धधकावियोड़ी)

घधकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ प्रज्वलित, धधका हुग्रा.

२ क्रोधित हुवा हुग्रा. ३ बदबू दिया हुग्रा ।

(स्त्री० धधकियोड़ी)

घधक्कणौ, धधक्कबौ—देखो 'धधकणौ, धधकबौ' (रू.भे.)

उ०—ईख भांण ग्रारांण तमासौ तुरी तांण ऊभौ, वारंगां विवांण

हर्सं, काला मंगा बीन। फीनां झंडा फरकै, बमकै घावां तनां नावै, घघरकै बीदलां बीन, जुडै म्रगी गीन।—कुंभसिंह सिंढायच

घघरियोड़ो—देखो 'घर्घरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घघरियोड़ी)

घघमा-क्रि०वि०—बेडौल शरीर का ? उ०—डोगी-री मासी हँस'र कयो—'पण कंवरजी-री सांमणो धोळो है पर डोगी डोनडं हाड है। मठेई......।' बीच-में-ई वात काट'र डोकरो बोलो—'ग्रो-हो-हो! किसी वात करै है। वां रै घर वाळा सगळा-रा सगळा ग्रोछै सांमणे-रा ठीक है। कंवरजी-री दादी तो घघमा-री घघमा है पण दादोजी है गैण-गट्ट दाई।'—वरसगांठ

घघियो—देखो 'घ वर्ण' (रू.भे.)

घघूकणो, घघूकबो-क्रि०अ० [अनु०] कम्पायमान होना, थर्राना।

उ०—वहै घाट दहुं वळां, सरां नदियां जळ सूकं। चाकं दहुं दळ चढ़ै, धरा गुजरात घघूकं।—सू.प्र.

घघूकणहार, हारो (हारी), घघूकणियो—वि०।

घघूकिग्रोड़ो, घघूकियोड़ो, घघूक्योड़ो—भू०का०कृ०।

घघूकीजणो, घघूकीजबो—भाव वा०।

घघूकाड़णो, घघूकाड़बो—देखो 'घघूकाणो, घघूकाबो' (रू.भे.)

घघूकाड़णहार, हारो (हारी), घघूकाड़णियो—वि०।

घघूकाड़िग्रोड़ो, घघूकाड़ियोड़ो, घघूकाड्योड़ो—भू०का०कृ०।

घघूकाड़ीजणो, घघूकाड़ीजबो—कर्म वा०।

घघूकणो, घघूकबो—अक० रू०।

घघूकाड़ियोड़ो—देखो 'घघूकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घघूकाड़ियोड़ी)

घघूकाणो, घघूकाबो-क्रि०स० [अनु०] कम्पायमान करना।

घघूकाणहार, हारो (हारी), घघूकाणियो—वि०।

घघूकायोड़ो—भू०का०कृ०।

घघूकाईजणो, घघूकाईजबो—कर्म वा०।

घघूकणो, घघूकबो—अक० रू०।

घघूकाड़णो, घघूकाड़बो, घघूकावणो, घघूकावबो—रू०भे०।

घघूकायोड़ो-भू०का०कृ०—कम्पायमान किया हुआ।

(स्त्री० घघूकायोड़ी)

घघूकावणो, घघूकावबो—देखो 'घघूकाणो, घघूकाबो' (रू.भे.)

घघूकावणहार, हारो (हारी), घघूकावणियो—वि०।

घघूकाविग्रोड़ो, घघूकावियोड़ो, घघूकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

घघूकावीजणो, घघूकावीजबो—कर्म वा०।

घघूकणो, घघूकबो—अक० रू०।

घघूकावियोड़ो—देखो 'घघूकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घघूकावियोड़ी)

घघूणणो, घघूणबो—देखो 'घंघोळणो, घंघोळबो' (रू.भे.)

उ०—नाहर नव गजो हुवै, गड़ा करै सिर गाज। कचेड़ी 'भगजीत' री' घघूणै धनराज।—धनजी भीमजी रो गीत

घघूणणहार, हारो (हारी), घघूणणियो—वि०।

घघूणिग्रोड़ो, घघूणियोड़ो, घघूण्योड़ो—भू०का०कृ०।

घघूणीजणो, घघूणीजबो—कर्म वा०।

घघूणियोड़ो—देखो 'घंघोळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घघूणियोड़ी)

घघो-सं०पु० [सं० घ] वर्णमाला का घ अक्षर।

उ०—धरो सीस मोटा नो एम कह्यो घघं। बाळक जोठगा हुंस पड़बा घाजं बधं।—ध.व.ग्रं.

घनंक—देखो 'धनुस' (रू.भे.)

घनंककंध-सं०पु० [सं० धनुष+स्कंध] धनुषाकार कंधे वाला घोड़ा।

घनंकी—देखो 'धानंकी' (रू.भे.)

उ०—रहचण दससिर जिसा असह मभ राड़ रे। धेड़क धंकी वार घनंकी धाड़ रे।—र.ज.प्र.

घनंख—देखो 'धनुस' (रू.भे.) उ०—१ कर मूठ घनंख छूट विसखतं, लेखा पखतं सर लक्खतं। वध सूर हरखतं ग्रोर विलखतं, धाव परखतं रवि चक्खतं।—रा.रू.

उ०—२ राज वभीखण लाज राखण, सरणागत साधारण। घनंख सायक भुजां धारण, मह असुर खळ मारण।—र.ज.प्र.

घनंखी—देखो 'धानंकी' (रू.भे.)

घनंजय-सं०पु० [सं०] १ अर्जुन का एक नाम (ह.नां., अ.मा.)

उ०—एहिज परि थई भीरि कजि आयां, धनंजय अनै सुयोधन। मासे मगसिर भलद्र जु मिळियो, जागिया मींट जनारजन।—वेलि.

२ अर्जुन नामक वृक्ष. ३ अग्नि, ग्राग (अ.मा.). ४ भगवान विष्णु. ५ एक नाग जो जलाशयों का अधीश्वर माना जाता है. ६ शरीरस्थ दस वायुओं में से एक. ७ पवन (अनेक.)

वि०—धन को जीतने अर्थात् प्राप्त करने वाला।

रू०भे०—घनंजे, धेनंजय।

घनंजै—देखो 'घनंजय' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—धनंजै वांण री दंती उडांण री गदा-धीम, दूठ पवनती री आंण री जंबूदीप। हणू ज्यूं पांण री बोध जांण री ग्रारूढ़-हंस, मांण री द्रजोण वंस रांण री महीप।—हुकमीचंद खिड़ियो

घनंतर-सं०पु० [सं०धन्वंतरि] १ समुद्र मंथन के समय ग्रोर चौदह रत्नों के साथ समुद्र से निकलने वाले देवताओं के वैद्य।—पौराणिक

उ०—१ पांगळा खड़ै जमदूत फीटा पड़ै, जोखमी ऊघड़ै नयण जूटी। दिया वरदांन मंतर महादेव रा, वभूतो घनंतर तणी बूंटी।

—मे.म.

उ०—२ नमो हरि आप घनंतर होय। नमो सब रोग-निवारक कोय।—ह.र.

यौ०—घनंतर-वैद।

२ चौबीस अवतारों में से एक (अ.मा.)

रू०भे०—धंतरजी, धंत्रणी, धनंतरजी, धनवंतरी, धांनंतर, धांनतर, धनतार, धन्नंतरि।

३ देखो 'धनेर' (रू.भे.) (मेवाड़)

धनंतरजी—१ देखो 'धंतरजी' (१) (रू.भे.)

२ देखो 'धनंतर' (रू.भे.)

धनंद-सं०पु० [सं० धनदः] इन्द्र का कोषाध्यक्ष, कुवेर (हनां., अ.मा.)

धनंधर—देखो 'धनुधारी' (रू.भे.)

धन-सं०पु० [सं०] १ धन-दौलत, द्रव्य। उ०—१ क्रिपण जतन धन रौ करै, कायर जीव जतन्न। सूर जतन उण रौ करै, जिण रौ खाधौ अन्न।—वां.दा.

उ०—२ सदा करै सनमांन, मीठा बोलै हँस मिळै। दिए घरा धन दांन, जस खाटै ठाकुर जिकै।—वां.दा.

पर्याय०—अरथ, कसवर, गरथ, ग्रहमंडण, घरमंड, जळ, दिरव, द्युमण, द्रवण, धण, निध, निधांन, नूतनसुख, वित्त, मनरंजण, माया, माल, सद्रव, रिकथ, रिध, रै, लखमी, वसू, विभव, वुसत, संपति, सव, सार, स्व, स्वापतेय, हरिन, हेम।

मुहा०—धन उडाणौ—धन को तुरंत खर्च कर डालना।

यौ०—धन-धान्य।

२ लक्ष्मी।

यौ०—धन-तेरस।

३ सम्पत्ति, जमीन, जायदाद आदि. ४ चौपायों का झुण्ड जो किसी के पास हो, गो-धन, पशु-धन। उ०—१ न्हावण पांणी और है, मिनखां पीवण और। धांमण धन नै दूसरो, लूआं मुरधर जोर।—लू

उ०—२ नीपणां वित वाहर कोण नड़ै, चारणां धन खोस लियौ चवड़ै।—पा.प्र.

मुहा०—१ धन पड़णौ—देखो 'धन भिळणौ'. २ धन भिळणौ—गाय, भैंस, बकरी आदि का गर्भवती होना।

यौ०—धन-वाळ।

५ गणित में जोड़ी जाने वाली संख्या या जोड़ का चिन्ह.

६ मूलधन, पूँजी. ७ जन्म कुंडली में जन्म लग्न से दूसरा स्थान.

रू०भे०—धनउ, धनु।

८ देखो 'धनु' (२) (रू.भे.) (नां.मा.) ६ देखो 'धन्य' (रू.भे.)

उ०—१ आजूणउ धन दीहड़उ, साहिव-कउ मुख दिट्ठ। माथा भार उळथियउ, आंख्यां अमी पयट्ठ।—ढो.मा.

उ०—२ निज सुख रुख सेव करावी नांही, दाखै वन धन जांवूदीप। चूंडाहरा उवारण चोजां, मोजां अै हिज 'मांन' महीप।—वां.दा.

उ०—३ धन दीहाड़ो, धन घड़ी, धन वार, धन मोहरत, धन वेळा, जको राज पधारिया।—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—४ 'भारा' तो धन भाग, जाड़ेचा दाखै जगत। तीखो खाग तियाग, 'जेहल' वेटो जनमियो।—वां.दा.

उ०—५ पूरव भव तणइ करमसंयोगि, पांणिग्रहण इण परि हूउं ए। वोलइ मुनिवर हीराणंद धन नर, जीह वंछित फळ् ए।

—विद्याविलास पवाडउ

१० देखो 'धण' (रू.भे.) उ०—१ त्रीजै पहरै रैण कै, मिळिया तेहा-तेह। धन नहिं धरती हुइ रही, कंत सुहावौ मेह।—ढो.मा.

उ०—२ प्रिय वोलावै धन रोवती जाई। सूनउ मंदिर मेल्हइ छै धाह। सा धन कुरळइ मोर ज्युं। पांच पडोसण वैठी छइ आय।

—बी.दे.

११ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.) उ०—धनंख तणइ धनकार करइ धन, विढ़वा भुव नीमिजइ जिवार। इकवीसै ब्रहमंड अउइवइ, सहइ न वासंग भार-सहार।—महादेव पारवती री वेलि

रू०भे०—धन्न।

धनईस-सं०पु० [सं० धनेश] कुवेर, धनपति (डि.को.)

उ०—अंग वांम वांणि धनईस, सव कीध प्रसण सुरीस। जिण वार नृप 'जैसाह', छवि (वि) निरखि धरि अवछाह।—रा.रू.

धनउ—१ देखो 'धन' (रू.भे.) २ देखो 'धन्य' (रू.भे.)

उ०—लागउ तेथ करण मांजणउ लाडउ, इंद्र सुर कहइ धनउ दिन आज। जांणे कमळ सरोवर जाडा, कर मांडिया चरणोदक काज।

—महादेव पारवती री वेलि

धनक-सं०पु० [देश०] १ स्त्रियों के ओढ़ने का एक रंगीन वस्त्र.

२ एक प्रकार का पतला गोटा.

[सं० धनुष] ३ हथेली में होने वाला धनुषाकार सामुद्रिक चिन्ह विशेष। उ०—परचंड दंड हर गदा पांणि। विहुवै अकार वणि धनक वांणि —सू.प्र.

रू०भे०—धणक, धणख, धनख।

४ देखो 'धनुस' (रू.भे.) उ०—धू दिस रळिया राज अमीणो घर जा सोवै। तोरण धनक समांण रूपाळी रंगत होवै। वाल्हो रूंख मंदार सबखै फूलां भरियो। ऊभो जेथ अमोल मो धण-वाछळ हरियो।—मेघ.

धनकणौ-वि० [सं० धनुष+रा० णौ] इन्द्र धनुष के समान।

उ०—कांमण दांमण कोर धनकणा चित्र सुहावै। जळहर गाजण घोक म्रदंगां साज लुभावै। नीर निरमळा, रतन भोम, घर उरसां ढूकै। अलका थारी होड करण में इती न चूकै।—मेघ.

धनकधर—देखो 'धनुरधर' (रू.भे.) उ०—पगि पगि पउळि-पउळि हस्ती की गज-घटा। ती ऊपरि सात-सात सइ धनक-धर सांवठा।

—अ. वचनिका

धनकर-वि० [सं० धनम्+कर] धन पैदा करने वाला।

धनकार-सं०स्त्री० [सं० धनुष्टङ्कार] धनुष की प्रत्यञ्चा को खींच कर छोड़ने से उत्पन्न ध्वनि, धनुष्टङ्कार। उ०—धनक तणइ धनकार करइ धन, विढ़वा भुव नीमिजइ जिवार। इकवीसे ब्रहमंड अउइवइ, सहइ न वासंग भार-सहार।—महादेव पारवती री वेलि

धनकुवेर-सं०पु०यौ० [सं० धनकेलि] वह जो धन में कुवेर के समान हो।

धनकेळि—सं०पु० [सं० धनकेलि] कुबेर।

धनख—१ देखो 'धनक' (रू.भे.)

२ देखो 'धनुस' (रू.भे.)

उ०—१ साह द्वार धमसाह, जांम नरनाह सत्तो, जुड़ै लोक बाजार, न को पड़ई निरख्खंतो। रांम धनख भंजवा, जनकपुर जांणि आयो, सना सांम्ह मथुरी, सोभ सुंदर दरसायो।—रा.रू.

उ०—२ धनख चंद्रस थोभ नय धारा। अभि नौलाग्ग हज़ार अठारा।
—सू.प्र.

धनख-धारण—१ देखो 'धनुरधर' (रू.भे.)

२ देखो 'धनुस-धरण' (रू.भे.)

उ०—अभंगाण गरण आप भूपर, महर कर मन मोट। धुरधमळ ग्रहियो धनख-धारण, कनक वाळो कोट।—र.ज.प्र.

धनखु—देखो 'धनुस' (रू.भे.)

उ०—अति धणुहु गुनुं एहु तुव नांमि सवळुं देहु। इम भणी रहिउ भीमु नी धनुखु नांमइ कोमु।—पं.पं.च.

धनगैलो—वि०पो० [सं० धनम्+राज० गैलो] (स्त्री० धनगैली) १ अधिक धन के कारण पागल. २ अपने धन का घमण्ड करने वाला, अभिमानी।

धनतेरस—सं०स्त्री० [सं० धन त्रयोदशी] दीपावली के दो दिन पहले पड़ने वाली कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी।

वि०वि०—यह दिन धन्वंतरि का जन्म-दिवस माना जाता है। विशेषतः धन प्राप्ति के लिए यह बड़ा शुभ दिन माना जाता है। इस दिन रात को लक्ष्मी-पूजन होता है।

धनतार—देखो 'धनंतर' (रू.भे.)

धनद—सं०पु० [सं० धनदः] १ कुबेर, धनेंद्र (डि.को.). २ अग्नि, आग. ३ चित्रक वृक्ष. ४ ४९ क्षेत्रपालों में से ३५ वां क्षेत्रपाल।

वि०—धन देने वाला, दाता।

रू०भे०—धनदि।

धनदतीरथ—सं०पु० [सं० धनदतीर्थ] व्रज के अन्तर्गत कुबेर तीर्थ।

धनदांण—देखो 'धणदांण' (रू.भे.)

धनदा—सं०स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण एकादशी का नाम।

वि०स्त्री०—धन देने वाली।

धनदि—देखो 'धनद' (रू.भे.)

उ०—धनदि-हि सदं हुयि थापिय वापी अ वर आरांमि।
—नेमिनाथ फागु

धनदेव—सं०पु० [सं०] धनपति, कुबेर।

धनधारी—वि० [सं० धनधारिन्] सम्पन्न, धनाढ्य। उ०—अनहद नहिं धारी विसम विकारी धनधारी धोकंदा है। अगलो घर ऊंचो चेडत पूंची, फड़ कूंची तोकंदा है।—ऊ.का.

सं०पु०—कुबेर, धनेंद्र।

धननाथ—सं०पु० [सं०] कुबेर, धनेश।

धनपत, धनपति, धनपत्ती, धनपत्त, धनपत्ति, धनपती—सं०पु० [सं० धनपति] कुबेर, धनेश। उ०—१ धनपत सेंणां सिभु तणै वठ मनमथ जांणै। मंतर-प्रपंचां-वांण डरपतो हाथ न आणै।—मेघ.

उ०—२ वरण इंद सिव ब्रह्म धरम नारद धनपत्तो। 'गजन' सिस उच्चारि करै इण पर कीरत्तो।—रा.रू.

धन-पाळ—वि० [सं० धनपाल] धन का रक्षक।

धन-बाद—देखो 'धन्यवाद' (रू.भे.)

धनरसभाव—सं०पु० [देश०] हाथी की एक बीमारी जिसमें हाथी का शरीर सब सूज जाता है, वात का दौरा हो जाता है, हड्डियें अकड़ जाती हैं।

धनराज—सं०पु० [सं०] कुबेर, धनेश। उ०—देवी मसद्दा माद्दया जग माता, देवी ब्रह्म गोवींद संभु विधाता। देवी सिध्धि रै रूप नव नाथ साथै, देवी रिध्धि रै रूप धनराज हाथै।—देवि.

धनवंत—वि० [सं०] धनवान, धनाढ्य, धनी। उ०—१ पह पाळक धनवंत पुर, लांठै लूट लियाह। कांठै नदी कवेरजा, रोसा राड़ा कियाह।
—बां.दा.

उ०—२ सब लोक वसै धनवंत सुपह, सोहै रूप सुघाट रो। महतंत विकट जोधांण गढ़, वणै मुकट वैराट रो।—सू.प्र.

रू०भे०—धनवंती, धनवंतो।

धनवंतरी—देखो 'धनंतर' (रू.भे.)

धनवंती, धनवंतो—देखो 'धनवंत' (रू.भे.)

उ०—१ सूंब सूंब कहै सरब दिन, जाचक पाडै बूंब। गिड़ दिगंबर बाजही, ज्यूं धनवंतो सूंब।—बां.दा.

उ०—२ हाय 'धनवंते-रै कांटो लागै सार करै सै-कोयी, निरधनियो डूंगर-सूं गुड़ग्यो सार न लेवै कोयी।'—वरसगांठ

धनव—देखो 'धनु' (रू.भे.)

धनवती—सं०स्त्री० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र।

वि०स्त्री०—धन रखने वाली, धनवान। उ०—प्रजा पाळिया राज री, आंमद वढै अनंत। देस प्रजा नूं धनवती, सुखी होय जसवंत।
—राजसिंह कूंपावत री वात

धनवांन—देखो 'धनवंत' (रू.भे.) उ०—पोसप्प पांन कपूर प्रिथवी, वखत जग धनवांन ए। इबकार तीरथ जात उद्दम, आदि गुरनदि ग्रांन ए।—रा.रू.

धनवाद—देखो 'धन्यवाद' (रू.भे.)

धनवाळ—सं०पु० [सं० धन+आलुच्] मवेशियों का पालन-पोषण कर के जीवन निर्वाह करने वाला। उ०—१ विचि आयल लूंटन चार वळा। रन मांकल म्हे धनवाळ रळा।—पा.प्र.

उ०—२ थित थंभ थळवट राय नैं, कैहै तेडियी टगा काज। धनवाळ ले जायल धणी, आवियो 'सारंग' आज।—पा.प्र.

धनस—देखो 'धनुस' (रू.भे.)

धनसपुरी—सं०स्त्री० [देश०] स्त्रियों के ओढ़ने का एक वस्त्र विशेष।

उ०—वनी भांत बतावी हे किसीक ल्यावां घनसपुरी। बना हरया हरया पल्ला जी क लहरघा भांत घनसपुरी। वनी श्रोढ़ बतावी हे किसीक सोहवें नसपुरी।—लो.गी.

धनसारथवाह-सं०पु० [सं० धन+सार्थवाह] १ २३ वाँ तीर्थंकर को प्रथम वार भिक्षा देने वाला एक राज गृह निवासी धन नामक सेठ।

उ०—ग्यांनातिसय केवळग्यांन तणउ, तत्व तउ पंचपरमेस्टिनमस्कार तणउ, दांन तउ धनसारथवाह तणउ।—व.स.

धनसूरा-सं०स्त्री०—राठोड़ों के प्रसिद्ध १३ वंशों में से एक 　श (वां.दा. ख्यात)

धनस्वांमी- ०पु० [सं०] कुवेर।

धना—देखो 'धनासी' (रू.भे.)

धनागरउ-सं०पु० [सं० धान्य+श्रागर] अन्न का भण्डार (उ.र.)

धनाड्य, धनाढ़्य-वि० [सं० धनाढ्य] धनवान, धनी, मालदार।

उ०—१ गुमुंडे गरिमादिक ग्यांन गुनाड्य, रुड़ रुड़ त्रंवक ध्यांन धनाड्य। श्रिवें वसुधा विन व्याज विचित्र, महाजन पुन्य जनेस्वर मित्र।—ऊ.का.

धनाधन-क्रि०वि० [अनु०] विना रुके हुए, जल्दी-जल्दी, लगातार.

धनाधिप, धनाधेप-सं०पु० [सं० धनाधिप] १ कुवेर, धनेश. २ यक्ष।

धनाध्यक्ष-सं०पु० [सं०] १ कुवेर. २ कोषाध्यक्ष।

धना-वंसी—देखो 'धनावंसी' (रू.भे.)

धनारथी-वि० [सं० धनार्थिन्] धन चाहने वाला, रुपया पैसा मांगने वाला।

धनावंसी-सं०पु०यौ० [रा० धनो+सं० वंशिन्] रामानन्दजी के शिष्यों में धन्ना जाट भी था। इसी के द्वारा दीक्षित साधु धन्नावंशी कहलाये। इनका श्राचार व्यवहार रामानन्दी साधुश्रों का सा है। ये जोधपुर श्रोर वीकानेर में वहुत हैं। इनका भेष रामानन्दी साधुश्रों का सा है। रामानुज संप्रदाय का तलक लगाते हैं। खेती, मजदूरी, मंदिरों की पूजा करते हैं श्रोर भीख भी मांगते हैं। पर रोटी किसी के हाथ की नहीं खाते। श्रपनी ही जाति में विवाह करते हैं। विष्णु के सिवाय किसी देवता को नहीं मानते।

धनास-सं०स्त्री० [सं० धन+श्राशा] धन की श्राशा।

उ०—धनास मांग के सुपात्र छात्र धावते नहीं। श्रनाथ साथ हाथ श्राथ अन्न पावते नहीं।—ऊ.का.

धनासरी, धनासी, धनाश्री-सं०स्त्री [सं० धनाश्री] एक रागिनी जो हनुमत् के मत से श्रीर　की तीसरी पत्नी मानी जाती है (संगीत) (ह.पु.वा.) उ०—दोय घड़ी दिन चढ़ियां धनासरी में वाघो कोटड़ियो, तीसरे पो'र समेरी में रिड़मल, रात रो सोढ़ी महंद रो गीत गवीजे।— वां.दा. ख्यात

रू०भे०—धना, धन्यासिरी, धन्यासी।

धनि—१ देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—१ मोरवणी इम वीनवइ, धनि श्राजूणी राति। गाहा गूढ़ा-गीत-गुण, कहि का नवली वाति।
—ढो.मा.

उ०—२ सु धन्य माता कौसल्या, तात दसरथ धनि भूपति। श्रवधि पुरि धनि जवनि, प्रिया धनि सीत तास पति।—सू.प्र.

२. देखो 'धनी' (रू.भे.)

धनिक-वि० [सं०] जिसके पास धन हो, धनाढ्य।

सं०पु०—१ धनी मनुष्य. २ महाजन. ३ पति. ४ स्वामी।

धनिसा, धनिस्ठा-सं०स्त्री० [सं० धनिष्ठा] सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवां नक्षत्र।—गजमोख

उ०—चैत मास पख चांदणे, सातम तिथि सकाज। श्रर धनिसा वसपत श्रवर, सुक(भ) नक्षत्र पुखराज।—वगसीरांम प्रोहित री वात

रू०भे—धनीसा, धनेस्ठा।

धनीं, धनी-वि० [सं० धनिन्] १ धनवान, मालदार।

उ०—फिरियो पछिवाउ उत्तर, फरहरियो, सहुए सूहव उर सरग। भुयंग धनी प्रथमी पुड़ भेदे, विवर पैठा वे वरग।—वेलि.

२ जिसके पास कोई गुण श्रादि हो।

सं०पु०— धनवान पुरुष।

रू०भे०—धणी, धनि।

धनीसा—देखो 'धनिस्ठा' (रू.भे.)

धनु-सं०पु० [सं०] १ धनुष, कमान, चाप।

उ०—१ स्री रघुनाथ समत्थ, हत्थ धारण धनु सायक। सेवक सरण सधार, लेख सेवें पद लायक।—र.ज.प्र.

उ०—२ श्राश्रो राख जनक तणो पण, मोड़ खळां दळ मांनकी। धींग भुजां सत खंड करी धनु, जेण वरी प्रिय जानकी।—र.ज.प्र.

रू०भे०—धण, धनु, धणु, धणु, धणुह, धणू, धनव, धुण, धेनु, धेन्न।

श्रल्पा०—धणी, धणिउ, धणी, धणुहि, धणुही, धणुहीय, धनुहडी, धनुहर, धूणी, धूणी, धूणी।

२ ज्योतिष की वारह राशियों में से नवीं राशि।

रू०भे०—धन, धन्न।

३ फलित ज्योतिष में एक लग्न. ४ हठयोग के एक श्रासन का नाम.

५ देखो 'धन' (रू.भे.) (उ.र.)

६ देखो 'धेनु' (रू.भे.)

धनुश्रो—देखो 'धनस' (श्रल्पा., रू.भे.)

धनुक—देखो 'धनस' (रू.भे.)

धनुकबाई-सं०स्त्री० [सं० धनुर्वात] लकवे की तरह का एक वायु रोग।

धनुख, धनुखि—देखो 'धनुस' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—१ श्रत परमळ पसर पसरिया श्रांवा, सुक पिक वोलै सुखद सराग। रतिपति तांणे धनुख जठै रुच, वरसांणे देखण ज्यूं वाग।
—वां.दा.

उ०—२ मंगल क्षेत्र खेडावई, कांम कटारउं वांधइं, धनुखि वांण सांधइ, श्रनंत वासिगु श्रम्रित भरइ।—व.स.

धनुंजय-सं०पु० [सं० धनंजय] अर्जुन (ध.मा.)

धनुद-सं०पु० [सं० धनदः] कुबेर, धनेश (ध.मा.)

धनुधर—देखो 'धनुरधर' (रू.भे.) (डि.को.)

धनुधारी—देखो 'धनुरधारी' (रू.भे.)

धनुभ्रत-सं०पु० [सं० धनुर्भृत] धनुष धारण करने वाला, योद्धा, वीर (डि.को.)

धनुरजग-सं०पु० [सं० धनुर्यज्ञ] एक यज्ञ जिसमें धनुष का पूजन तथा उसके चलाने आदि की परीक्षा होती है।

धनुरद्धर, धनुरधर-सं०पु० [सं० धनुर्धरः] धनुष धारण करने वाला व्यक्ति, तीरंदाज। उ०—१ बालवंच अंगरक्ष वीरमहूर धनुरद्धर। —व.स.

उ०—२ देवांगना वीर वरइं, विद्याधरी पुस्पव्रिस्टि करइं, धनुरधर बांग तणी श्रेणि वावरइं।—व.स.

रू०भे०—धनकधर, धनखधारण धनुधर, धनुरघर, धनुसधरण।

धनुरधारी-सं०पु० [सं० धनुर्द्धारिन्] धनुर्द्धर, तीरंदाज, कमनैत, योद्धा, वीर।

वि० (स्त्री० धनुरधारणी, धनुरधारिणी) धनुष धारण करने वाला।

रू०भे०—धनुधारी।

धनुरवात-सं०पु० [सं० धनुर्वात] १ एक वायु रोग जिसमें शरीर धनुष की तरह झुक कर टेढ़ा हो जाता है। रू०भे०—धनुकबाई।

धनुरविद्या-सं०स्त्री० [सं० धनुर्विद्या] धनुष चलाने की विद्या।

धनुरवेद-सं०पु० [सं० धनुर्वेद] १ वह शास्त्र जिसमें धनुष चलाने की विद्या का निरूपण हो। उ०—कमळभू ब्रह्मा तणी बेटी, कमळमुखी, राजहंसवाहिनी, अनेक वेदवेदांकसास्त्र धरती, आयुरवेद धनुरवेद, गांमवेद, अथरविणवेद।—व.स.

२ धनुर्विद्या। उ०—राजा प्रतापि लंकेंद्र, सत्यवाचा हरिस्चंद्र, साहसिक विक्रमादित्य त्यागलीला करणा, प्रतिस्ठा युधिस्टर, धनुरवेद अरजुन, आग्या अजयपाळ, परनारी सहोदर गांगेय। —व.स.

धनुवासर-सं०पु० [देश ?] पुष्प, फूल, सुमन (नां.मा.)

धनुस-सं०पु० [सं० धनुष] १ फनदार तीर फेंकने का वह अस्त्र जो काष्ट विशेष या लोहे के लचीले डंडे को झुका कर और उसके दोनों छोरों के बीच डोरी या तांत बांध कर बनाया जाता है, कमान।

पर्याय०—अट्टारटंकी, असत्र आयदा, आसयनु, इखुवास, कबांण, करणअस्त्र, कारमुक, कोदंड, चाप, तुजीह, धनु, पिनाक, विसकस, बांणासणां, सरासण, सारंग, सारंगी।

२ इंद्रधनुष। उ०—धनुस चढावै सो धरा, इंद्र कढावै आंण। कर न सांवण मास में, पंथी पंथ पयांण।—अज्ञात

३ ज्योतिष में एक राशि. ४ हठयोग का एक आसन.

वि०वि०—देखो 'धनुसासण'।

५ चार हाथ की एक माप। उ०—चालीस धनुस सरीर। —स.कु.को.

६ एक प्रकार का वात रोग विशेष। उ०—घोर उन्मादवात कटीवात सीत अंग, सिग्गीवात कंपवात सोफोदर थेन है। जळोधर अंत्रव्रिद्धि धनुस चोवीस, रोग, ताकि कहे दंभ विया वैद्य ग्रंथ थेन है। —ध.व.ग्रं.

वि०—कुटिल, वक्र* (डि.को.)

रू०भे०—धंनस, धणक, धणख, धनंक, धनंख, धनक, धनख, धनखि, धनस, धनूंस, धांनक, धांनक्स, धांनस।

अल्पा०—धनुओ, धांनुक, धानुख।

धनुसधर, धनुसधरण-सं०पु० [सं० धनुर्धरः] १ श्रीरामचन्द्र. २ अर्जुन।

वि०—धनुष धारण करने वाला, तीरंदाज।

रू०भे०—धनख-धारण। ३ देखो 'धनुरधर' (रू.भे.)

रू०भे०—धांनख-धर, धांनुंखधार, धांनुखधर, धांनुखधार।

धनुसाकार-वि० [सं० धनुषाकार] धनुष के आकार का, टेढ़ा।

धनुसासन-सं०पु० [सं० धनुषासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन। इसमें दोनों पांवों को लंबा कर के बैठना होता है। इसके पीछे दाहिने हाथ से बांये पांव के अंगूठे को पकड़ कर एक पांव को लंबा रहने देकर और दूसरे पांव को खींच कर कान के पास लाया जाता है। इससे आलस्य दूर होकर कुंडलिनी चलायमान होती है।

धनुस्तंभ-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का वात रोग विशेष (अमरत)

धनुहडी-सं०स्त्री०—देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—इक जिसी सोवन कंब, लहिकइ वेणी लंब। मयणह धनुहडी ए, पगुणइं फिर सही ए।—प्राचीन फागु-संग्रह

धनुहर—देखो 'धनु' (रू.भे.)

उ०—मोती मूल लहइ नहीं, धनुहर केम अकज्ज ? नारि परट्ठी नाहुलइ, वसर श्रेक ज अज्ज।—मा.कां.प्र.

धनूंख—देखो 'धनुस' (रू.भे.)

उ०—उपर जियां धनूंख उणिहारै, भंमर वंक पंकति भंवहारै। —सू.प्र.

धनेर-सं०उ०लि०—कौए से कुछ बड़े आकार का बड़ी चोंच वाला पक्षी विशेष जिसका मांस खाया जाता है।

वि०वि०—इसके मांस की गोलियां बना कर रख दी जाती हैं जो प्रसूता को प्रसव काल में प्रसूती रोग होने पर खिलाई जाती हैं जिससे रोग से मुक्ति मिल जाती है।

रू०भे०—धंतर, धनेरू।

अल्पा०—धनेरियौ।

धनेरिया-सं०स्त्री०—परिहार वंश की एक शाखा।

धनेरियौ-सं०पु०—१ परिहार वंश की धनेरिया शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'घनेर' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—घनेरियो पंछी कबूतर जिसो हुवै, लाल पग हुवै, पांखां लांबी हुवै, दिन रा दिखाई न देवै, रात रो बोलै, सबदवे···बंधी ।
—बां.दा. ख्यात

घनेरू—देखो 'घनेर' (रू.भे.)

घनेस-संपु० [सं० घनेश] १ धन का स्वामी, धनपति, कुबेर (अ.मा.)
उ०—छत्रप्पती उछाह में, घनेस माल उद्धमैं ।—सू.प्र.
२ लग्न से दूसरा स्थान ।
रू०भे०—धन्नेस ।

घनेसरी—देखो 'धनेस्वरी' (रू.भे.)

घनेस्ठा—देखो 'धनिस्ठा' (रू.भे.)

घनेस्वर-संपु० [सं० धनेश्वर] धन का स्वामी, कुबेर ।
२ देखो 'धनेस्वरी' (रू.भे.)

घनेस्वरी-वि० [सं० धनेश्वर+रा०प्र०ई] धनाढ्य, धनवान ।
उ०—पाटण सहर तठै अजैपाळ साह व्यापारी रहै । वडो धनेस्वरी ।
—पलक दरियाव री बात
रू०भे०—धनेस्वर ।

घनौ-वि० [सं० धन+रा०प्र०ओ] १ धनाढ्य, धनवान ।
उ०—अमरो मरतो देखियो, धनो मांगै भीक । लिछमी छांणा बीणती, ठंठणपाळ ही ठीक ।—अज्ञात
यौ०—धनो-सेठ ।
३ देखो 'धन्य' (रू.भे.)
उ०—धनो धन्य सो लोक जो नौक धोकै, वळै गौर हूं और वातां विलोकै ।—मे.म.

धनौ-सेठ-संपु०यौ० [सं० धन+श्रेष्ठिन्] १ धनाढ्य व्यक्ति, धनवान पुरुष. २ इस नाम का एक धनाढ्य सेठ ।

धन्नंतरि—देखो 'धनंतर' (रू.भे.) उ०—धन्नंतरि मांदउं थाइ तणउ वैध ।—व.स.

धन्न—१ देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—पिंगळ पुत्री पदमिणी, मारवणी तिणि नांम । जोड़ी जोड़ विचारियउ, धन्न विधाता कांम ।—ढो.मा.
देखो 'धन' (रू.भे.) उ०—आवियां सेव पावो उतन्न, धर सहत वधारा विगुण धन्न ।—सू.प्र.
३ देखो 'धनु' (रू.भे.) उ०—अग जातै भायो मनै, आयो पोस अवन्न । पसरंतां उत्तर पवन, धर सीतळ रवि धन्न ।—रा.रू.
४ देखो 'धांन' (रू.भे.)

धन्नाट-क्रि०वि०—शीघ्र, तेज ।
संस्त्री०—धन धन की ध्वनि, ध्वनि विशेष ।

धन्ना-वंसी—देखो 'धना-वंसी' (रू.भे.)

धन्नासिका-संस्त्री० [सं०] एक रागिनी विशेष जिसका गायन वीररस या शृंगार रस में ही किया जाता है (संगीत)

धन्नेस—देखो 'धनेस' (रू.भे.) उ०—रटैत वधाई द्रवै दासरत्थं, उघम्मेस ओवेस धन्नेस अत्थं ।—सू.प्र.

धन्य-वि० [सं०] पुण्यवान, श्लाघ्य, प्रशंसा के योग्य, बड़ाई के योग्य ।
उ०—१ धन्य कह्यो सब ऊमरां, साहंस देख प्रचंड । हुवा सुरंगा बांण सुण, भुज लागा ब्रहमंड ।—रा.रू.
उ०—२ धन्य मात पितु धन्य धर, नांम धन्य निरधार । सरणायां साधार सुत, आतम रो आधार ।—ऊ.का.
रू०भे०—धंण, धण, धन, धणिउ, धनि, धनौ, धन्न, धिन, धिनि, धिनो, धिन्न ।

धन्य-वाद, धन्य-वाद-संपु०यौ० [सं० धन्यवाद] १ वाह-वाह, साधुवाद, प्रशंसा, शाबाशी. २ किसी के उपकार के बदले में प्रशंसा ।
रू०भे०—धनवाद, धनवाद, धिन्नवाद ।

धन्यवादता-संस्त्री० [सं०] शाबासी ।
रू०भे०—धिनवादता ।

धन्या-संस्त्री० [सं० धन्या=उपमाता] माता, मां ।
उ०—भूवा भगनी रा थळचट भिखियारी, धन्या कन्या रा गळकट हठ-धारी ।—ऊ.का.

धन्यासिरी, धन्यासी—देखो 'धनासी' (रू.भे.) (स.कु., कां.दे.प्र.)

धन्वंतरि—देखो 'धनंतर' (रू.भे.) उ०—अढार भार वनस्पति फूल-पगर भरइं धन्वंतरि वइदउं करइं ।—व.स.

धन्व-संपु० [सं०] मरुदेश (डि.को.)

धन्वज-वि० [सं०] मरुदेश में उत्पन्न ।

धन्वजदुरग-संपु० [सं० धन्वदुर्ग] ऐसा किला जिसके चारों ओर पांच पांच योजन तक जल का अभाव हो और मरुभूमि हो ।

धन्वदेस-संपु० [सं० धन्वदेश] १ राजस्थान में जोधपुर डिविजन का नाम, मारवाड़ । २ रेगिस्तान, निर्जल देश ।

धन्वय-संपु० [सं० धन्वस्] १ इंद्र, देवेन्द्र. २ धनुष. ३ मारवाड़ ।
उ०—नांम परतापसिंह प्यार को पितु तें पायो, व्यूढ़ बरदांन वडा धन्वय धनी को तें ।—ऊ.का.

धन्वी-वि० [सं० धन्विन्] धनुर्धारी, कमनैत (डि.को.)

धन्वौ-संपु० [सं० धन्वन्] १ धनुष, चाप. २ सूखी जमीन, स्थल. ३ मरुभूमि, रेगिस्तान. ४ अंतरिक्ष, आकाश.

धप-संपु० [अनु०] १ सोने-चांदी के आभूषणों पर मोटी खुदाई करने का लोहे का बना एक औजार विशेष (स्वर्णकार)
२ बालक (अ.मा.) ३ धौल, थप्पड़, तमाचा ।
क्रि०प्र०—देणौ, मारणौ ।
संस्त्री०—४ किसी भारी और मुलायम वस्तु के गिरने से उत्पन्न होने वाला शब्द, ध्वनि. ५ आग की लपट की ध्वनि. ६ आग की लपट, ज्वाला ।

धपड़-संस्त्री० [अनु०] १ आटा पीसने की चक्की को (घट्टी को) तीव्रता से घुमाने से उत्पन्न शब्द । चक्की को तेज घुमाने की क्रिया या भाव ।

मुहा०—घपड़ घपड़ पीसै जाणी रा घर ढीसै—किसी दुष्ट बहू के लिये कही जाने वाली उक्ति अर्थात् जब वह चक्की तेज चला कर आटा ढ़ाडा देती है अथवा कोई भी कार्य ठीक नहीं करती है तो उसका उस घर में बहुत समय तक टिकना सम्भव नहीं।

रू०भे०—घपड़, घमड़, घमड, घम्मड़।

२ देखो 'धापड़' (रू.भे.)

घपड़णो, घपड़बौ-क्रि०स० [अनु०] संतुष्ट करना, तृप्त करना।

घपड़णहार, हारो (हारी), घपड़णियो—वि०।

घपड़िग्रोड़ो, घपड़ियोड़ो, घपड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपड़ीजणो, घपड़ीजबौ—कर्म वा०।

घपणो, घपबो, धापणो, धापबो—अक०रू०।

घपडणो, घपडबौ—रू०भे०।

घपड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—तृप्त किया हुआ, संतुष्ट किया हुआ।

(स्त्री० घपड़ियोड़ी)

घपटणो, घपटबौ-क्रि०अ० [देश०] १ उत्साह पूर्वक दौड़ना।

उ०—घेटा होय नै घपटिया, दड़बड़ लागा डागा रे। वांनर जेम विलगिया, लपटी गढ़ नै लागा रे।—प.च.चौ.

२ किसी वस्तु को लेकर चम्पत हो जाना, भाग जाना।

उ०—मांभळी बात वडलोच सीमा हुता, घपटिया धेणुग्रां करै घाड़ो। खळकती लूथ में खंड करिया खळां, ग्राथियो ग्रमरसिंह तेथि ग्राडो।

—ध.व.ग्रं.

३ लूटना। उ०—घण खाटण घपटै घरा, धंधै धमरोळी। लेतां देतां लालचै, लुव्वां लपचोळी।—ध.व.ग्रं.

४ देखो 'दपटणो, दपटबौ' (रू.भे.)

घपटणहार, हारो (हारी), घपटणियो—वि०।

घपटवाड़णो, घपटवाड़बौ, घपटवाणो, घपटवाबो, घपटवावणो, घपटवावबो—प्रे०रू०।

घपटाड़णो, घपटाड़बो, घपटाणो, घपटाबो, घपटावणो, घपटावबो

—क्रि०स०

घपटिग्रोड़ो, घपटियोड़ो, घपट्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपटीजणो, घपटीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०

घपटमौ, घपटवौ-वि०—पूर्ण अघा जाय उतना (भोजन)

रू०भे०—दपटमौ, दपटवौ।

घपटाड़णो, घपटाड़बौ—१ देखो 'घपटाणो, घपटाबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'दपटाणो, दपटाबौ' (रू.भे.)

घपटाड़णहार, हारो (हारी), घपटाड़णियो—वि०।

घपटाड़िग्रोड़ो, घपटाड़ियोड़ो, घपटाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपटाड़ीजणो, घपटाड़ीजबौ—कर्म वा०।

घपटणो, घपटबौ—अक० रू०।

घपटाड़ियोड़ो—१ देखो 'घपटायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपटाड़ियोड़ी)

घपटाणो, घपटाबौ-क्रि०स०—१ दौड़ाना, भगाना।

ज्यूं—घोड़ा नै सांतरो घपटायो जु सांझ पं'ली पं'ली ठेट पूग गियो।

२ देखो 'दपटाणो, दपटाबौ' (रू.भे.)

घपटाणहार, हारो (हारी), घपटाणियो—वि०।

घपटायोड़ो—भू०का०कृ०।

घपटाईजणो, घपटाईजबौ—कर्म वा०।

घपटणो, घपटबौ—अक० रू०।

घपटायोड़ो-भू०का०कृ०—१ दौड़ाया हुआ, भगाया हुआ।

२ देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपटायोड़ी)

घपटावणो, घपटावबौ—१ देखो 'घपटाणो, घपटाबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'दपटाणो, दपटाबौ' (रू.भे.)

घपटावणहार, हारो (हारी), घपटावणियो—वि०।

घपटाविग्रोड़ो, घपटावियोड़ो, घपटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपटावीजणो, घपटावीजबौ—कर्म वा०।

घपटणो, घपटबौ—अक०रू०।

घपटाविग्रोड़ो—१ देखो 'घपटायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपटावियोड़ी)

घपटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ उत्साह पूर्वक भागा हुआ.

२ किसी की वस्तु को लेकर चम्पत हुवा हुआ.

३ देखो 'दपटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपटियोड़ी)

घपड—देखो 'घपड़' (रू.भे.)

घपडणो, घपडबौ—देखो 'घपड़णो, घपड़बौ' (रू.भे.)

घपडियोड़ो—देखो 'घपड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपडियोड़ी)

घपणो, घपबौ-क्रि०अ० [देश०] १ चलना, गतिमान होना।

उ०—तुही भेख में सूर में नूर भासै। तुही मेह कादंबणी मत्रमासै। दिपै तू घटा में छटा द्योत द्वारा। घपै तू जटा में तटा गंग-धारा।

—मे.म.

२ देखो 'धापणो, धापबौ' (रू.भे.)

घपणहार, हारो (हारी), घपणियो—वि०।

घपिग्रोड़ो, घपियोड़ो, घप्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपीजणो, घपीजबौ—भाव वा०।

घपत्रपणो, घपत्रपबौ-क्रि०अ० [अनु०] ध्वनि करना।

उ०—ध्वनाती वागधारा घरम धुनि धारा घपत्रपै। गुनाती स्त्री सारा सगुन गुनि सारा सपत्रपै।—ऊ.का.

घपत्रपियोड़ो-भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० घपत्रपियोड़ी)

घपळ-सं०स्त्री० [अनु०] १ आग जलने की क्रिया अथवा जलती हुई आग द्वारा होने वाली ध्वनि।
यौ०—घपळ-घपळ।
२ आग की लपट, ज्वाला।
घपाऊ-वि० [सं० घ्रै=तृप्तौ] पूर्ण तृप्त हो जाय उतना (भोजन) भरपेट।
उ०—त्यांनै रातब दैंणी मांडी। दोनां ही टंकां सेर दोय घीरत, रातब दैंणी मांडी। घपाऊ धांन दीजै।—जगमाल मालावत री वात
रू०भे०—धापमों, धापवों।
घपाड़णौ, घपाड़बौ—देखो 'घपाणौ, घपावौ' (रू.भे.)
घपाड़णहार, हारौ (हारी), घपाड़णियौ—वि०।
घपाड़िओड़ौ, घपाड़ियोड़ौ, घपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घपाड़ीजणौ, घपाड़ीजबौ—कर्म वा०।
घपणौ, घपबौ, धापणौ, धापबौ—अक०रू०।
घपाड़ियोड़ौ—देखो 'घपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घपाड़ियोड़ी)
घपाड़ौ-वि० [देश०] तृप्त करने वाला।
घपाडणौ, घपाडबौ—देखो 'घपाणौ, घपावौ' (रू.भे.)
उ०—मांसांचरा घपाडै मांसां, वांसां करै अमावड वाड। मावै नहीं पहाडां मांहै, हाथ्यां रा दांतूसळ हाड।
—महाराणा अमरसिंह री गीत
घपाडियोड़ौ—देखो 'घपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घपाडियोड़ी)
घपाणौ, घपावौ-क्रि०स० [सं० घ्रै, तृप्तौ] १ तृप्त करना, अघाना।
उ०—१ विहंड खळां वह स्रोण वहाऊं। पत्र भरि भरि काळिका घपाऊं।—सू.प्र.
उ०—२ औ लै म्हारी धणी जूंझण ढूकौ जद एक साथै सह सकतियां नै घपाय देसी।—वी.स.टी.
२ संतुष्ट करना. ३ तंग करना. ४ अप्रसन्न करना, नाराज करना (व्यंग्य) ५ प्रसन्न करना, खुश करना।
घपाणहार, हारौ (हारी), घपाणियौ—वि०।
घपायोड़ौ—भू०का०कृ०।
घपाईजणौ, घपाईजबौ—कर्म वा०।
घपणौ, घपबौ, धापणौ, धापबौ—अक०रू०।
घपाड़णौ, घपाड़बौ, घपाडणौ, घपाडबौ, घपावणौ, घपावबौ
—रू०भे०।
घपायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तृप्त किया हुआ, अघाया हुआ.
२ संतुष्ट किया हुआ. ३ तंग किया हुआ. ४ अप्रसन्न किया हुआ. नाराज किया हुआ. ५ प्रसन्न किया हुआ, खुश किया हुआ।
(स्त्री० घपायोड़ी)
घपावणौ, घपावबौ—देखो 'घपाणौ, घपावौ' (रू.भे.)
उ०—मयंद घपावै मोतियां, हंसा लांघणियांह। रहै नहीं जुध रोकियौ, औ धारां अणियांह।—बां.दा.
घपावणहार, हारौ (हारी), घपावणियौ—वि०।
घपाविओड़ौ, घपावियोड़ौ, घपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घपावीजणौ, घपावीजबौ—कर्म वा०।
घपणौ, घपबौ, धापणौ धापबौ—अक०रू०।
घपावियोड़ौ—देखो 'घपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घपावियोड़ी)
घपियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चला हुआ, गतिमान हुवा हुआ।
२ देखो 'धापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घपियोड़ी)
घफणौ, घफबौ-क्रि०अ० [देश०] गिरना, पड़ना।
उ०—पग हाथ पड़ै नस माथ पखै, लग चाव सुरां रव दाव लखै। अंग एक घफै तड़फै असुरां, सिर चीर नरां व्रण सेल सरां।—रा.रू.
घफणहार, हारौ (हारी), घफणियौ—वि०।
घफिओड़ौ, घफियोड़ौ, घफ्योड़ौ—भू०का०कृ।
घफीजणौ, घफीजबौ—भाव वा०।
घफियोड़ौ-भू०का०कृ०—गिरा हुआ।
(स्त्री० घफियोड़ी)
घबळौ—देखो 'धाबळौ' (रू.भे.)
घबसौ-सं०पु० [देश०] १ अंजली. २ उतना पदार्थ जितना एक अंजली में समा जाय। उ०—औरां नै तौ मा घबसै-घबसै औ खांड, मनै चिमठी, मा, लूण की जे। औरां नै तौ, मा, मिरियौ-मिरियौ औ घीव, मनै मिरियौ, मा, तेल को जे।—लो.गी.
घबाक—देखो 'धमाक' (रू.भे.)
घबूड़णौ, घबूड़बौ, घबोड़णौ, घबोड़बौ-क्रि०स० [देश०] १ प्रहार करना। उ०—मुखै चखचोळ सरूप मजीठ। घबोड़त सावळ मूगळ पीठ।—सू.प्र.
२ फेंकना, उछालना। उ०—दूर सूं कमंध धारी दिसा, घोवां धूड़ घबोड़तौ। मिळण री घड़ी कीजो मती, विछड़तां ओछौ दिन खूवतौ।
—अरजुनजी बारहठ
घबोड़णहार, हारौ (हारी), घबोड़णियौ—वि०।
घबोड़िओड़ौ, घबोड़ियोड़ौ, घबोड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घबोड़ीजणौ, घबोड़ीजबौ—कर्म वा०।
घबोड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्रहार किया हुआ।
(स्त्री० घबोड़ियोड़ी)
घबौ, घब्बौ-सं०पु० [देश०] १ किसी सतह पर थोड़ी दूर तक फैला हुआ ऐसा स्थान जो सतह के रंग के मेल में न हो और भद्दा लगता हो, दाग, निशान. २ कलंक, दोष। उ०—क्यूं घब्बौ निज नांम कहि, लगहि रिसालै लार। जे न भगहिं योरोप जुध, रहि आग्या अनुसार।—जैतदांन बारहठ
मुहा०—१ घब्बौ लगाणौ—कलंक लगाना, दोष लगाना.

२ धक्को लागणो—धक्का लगना, चोट लगना।

धमार-संस्त्री०—चौदह मात्राओं की ताल ?

धमंक-संपु० [अनु०] देखो 'धमक' (रू.भे.)

उ०—विमान भान तीर को विसाल जाळ विस्तुरे, धमंक सू धुजावणी धमंक मेघ ज्यों घुरे। महान रंज दन्नुनी अधीन दन्नुनी मही, कथै कबीर नैं कही निरास की नही नही।—ऊ.का.

धमंकणो, धमंकबो—देखो 'धमकणो, धमकबो' (रू.भे.)

उ०—एकां मादळां नाद ठेहं ठमंकै, धरा व्योम पाताळ घूजै धमंकै।—मे.म.

धमंकणहार, हारो (हारी), धमंकणियो—वि०।

धमंकिग्रोड़ो, धमंकियोड़ो, धमंक्योड़ो—भू०का०कृ०।

धमंकीजणो, धमंकीजबो—भाव वा०।

धमंकियोड़ो—देखो 'धमकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धमंकियोड़ी)

धमंद—देखो 'धमक' (रू.भे.) उ०—सघ नर नडर कर धजर असमर समंद, वजर टर गुमर धर धरर कायर वमंद। धज फरर अतर पर रारर समहर धमंद, कसर भर नजर सर केण छत्र धर कमंद।

—महादान महड़ू

धमंळ-मंगळ—देखो 'धवळ-मंगळ' (रू.भे.)

धम-संस्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने या रखने का शब्द, धमाका।

उ०—सोळा टंकियोड़ा गळ में खूंगाळो। जळ जुत ठोडी पर टिमकी जंघाळो। भीनें कांचळियै धम धम डग भरती। धसळां देतोड़ी धम-धम पग धरती।—ऊ.का.

क्रि०वि०—धम शब्द के साथ, यकायक, अचानक।

रू०भे०—धम्म, ध्रम।

धमक-संस्त्री० [अनु० धम] १ ध्वनि विशेष। उ०—रोकिया 'खुरम' 'भीमांण' रा, दळ दहुवै फाटां दळां। धण जरद धाट सेलां धमक, वाजि भाट धण वीजळां।—सू.प्र.

२ थर्राहट, कंपन. ३ आघात, चोट। उ०—धमक खोद धरणी सहै, काट सहै वनराय। कुटक वचन असली सहै, ओरां सह्या न जाय।—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—धमंक, ध्रमक।

धमकणो, धमकबो-क्रि०अ० [अनु०] ध्वनि करना, आवाज करना।

मुहा०—१ आय धमकणो—यकायक आना, अचानक पहुँचना.

२ जाय धमकणो—अचानक जाना, यकायक पहुँचना।

धमकणहार, हारो (हारी), धमकणियो—वि०।

धमकिग्रोड़ो, धमकियोड़ो, धमक्योड़ो—भू०का०कृ०।

धमकीजणो, धमकीजबो—भाव वा०।

धमंकणो, धमंकबो, धमस्कणो, धमस्कबो, ध्रमंकणो, ध्रमंकबो, ध्रमकणो, ध्रमकबो—रू०भे०।

धमकाड़णो, धमकाड़बो—देखो 'धमकाणो, धमकाबो' (रू.भे.)

धमकाड़णहार, हारो (हारी), धमकाड़णियो—वि०।

धमकाड़िग्रोड़ो, धमकाड़ियोड़ो, धमकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

धमकाड़ीजणो, धमकाड़ीजबो—कर्म वा०।

धमकणो, धमकबो—अक०रू०।

धमकाड़ियोड़ो—देखो 'धमकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धमकाड़ियोड़ी)

धमकाणो, धमकाबो-क्रि०स० [अनु०] १ ध्वनि करना, आवाज करना, बजाना। उ०—मेड़ी चढ़ अर थाळ बजाओ, थाळ बजावत बोलो यूं। च्यार कूंट चोफेरे बाजा, नोबतड़ी धमकाए तूं।—लो.गी.

२ डांटना, घुड़कना. ३ दण्ड या बुरा करने का विचार प्रकट करना, भय दिखाना, डराना. ४ पीटना।

धमकाणहार, हारो (हारी), धमकाणियो—वि०।

धमकायोड़ो—भू०का०कृ०।

धमकाईजणो, धमकाईजबो—कर्म वा०।

धमकणो, धमकबो—अक०रू०।

धमंकणो, धमंकबो—रू०भे०।

धमकायोड़ो-भू०का०कृ० [अनु०] १ आवाज किया हुआ, ध्वनि किया हुआ, बजाया हुआ. २ डराया हुआ, धमकाया हुआ.

३ डांटा हुआ, घुड़का हुआ. ४ पीटा हुआ।

(स्त्री० धमकायोड़ी)

धमकावणो, धमकावबो—देखो 'धमकाणो, धमकाबो' (रू.भे.)

धमकावणहार, हारो (हारी), धमकावणियो—वि०।

धमकाविग्रोड़ो, धमकावियोड़ो, धमकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

धमकावीजणो, धमकावीजबो—कर्म वा०।

धमकणो, धमकबो—अक०रू०।

धमकावियोड़ो—देखो 'धमकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धमकावियोड़ी)

धमकियोड़ो-भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ, आवाज किया हुआ।

(स्त्री० धमकियोड़ी)

धमकी-संस्त्री० [देश०] १ भय दिखाने के लिये अनिष्ट करने या दण्ड देने की भावना प्रकट करने की क्रिया। भय दिखाने की क्रिया।

क्रि०प्र०—देणी।

२ घुड़की या डांट-डपट।

क्रि०प्र०—देणी।

मुहा०—धमकी में आंणो—भय दिखाने से भयभीत होकर किसी कार्य में प्रवृत्त हो जाना।

धमको—देखो 'धमाको' (रू.भे.)

धमस्कणो, धमस्कबो—देखो 'धमकणो, धमकबो' (रू.भे.)

उ०—वीर बक्तर पार कै दे तीर तमक्कै। दंत दमक्कै हीर ज्यों चिनगी कि चमक्कै। सत्तलोक उप्पर सिक्कै धर सत्त धमक्कै। परि अट्ठौं दिकपाळ के कप्पाळ कसक्कै।—वं.भा.

घमक्कणहार, हारौ (हारी), घमक्कणियौ—वि०।
घमक्किग्रोड़ौ, घमक्कियोड़ौ, घमक्कयोड़ौ—भू०का०कृ०।
घमक्कीजणौ, घमक्कीजबौ—भाव वा०।

घमक्कियोड़ौ—देखो 'घमकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घमक्कियोड़ी)

घमक्को—देखो 'घमाको' (रू.भे.)

घमगजर, घमगज्ज, घमगज्र–सं०पु० [सं० घर्म+झकट=घम्म=घम +झगड=घम झगर=धमगजर वर्णविपर्य] १ युद्ध, लड़ाई। (डि.को.)
उ०—नैंड़ौ घमसांण चढ़चौ नृप नज्र। गुणां चढ़ि बांण मंडचौ धमगज्र। किया चठठारव ज्यां फटकारि। दिया घट गोळमदाज बिदारि।—मे.म.
२ उत्पात, उपद्रव, ऊधम।
रू०भे०—घंमजगर, धमजगर, घमजग्गर, घमजग्र, घमजागर, घांमजग्र, घांमाजागर, ध्रमजगर, ध्रमजघड़, घांमजग्र।

घमड़—देखो 'घपड़' (रू.भे.)

घमचक, घमचक्क, घमचख–सं०पु० [देश०] १ युद्ध, लड़ाई।
उ०—१ आरंभियौ सोई करै, बाथ गिरमेर ऊपाड़। श्रांणै माल अबंब, करै घमचक दीहाड़े।—राव रिणमल री वात
उ०—२ वध वीर किलक्कं हक्कोहक्कं, घूप सवक्कं घमचक्कं। वण वार असंकं बाधा रंकं, रूक झटक्कं रह चक्कं।—रा.रू.
२ हल्ला, शोरगुल। उ०—बैरा-टावर-टूबर घमचक मचावता अर बैंनै जिकर सुवावती कोयनी।—वरसगांठ
क्रि०प्र०—करणौ, मचाणौ, होणौ।
३ उछलकूद, ऊधम।
रू०भे०—घमचाक, घौंचक।

घमचाक–सं०स्त्री० [देश०] १ छलांग, फलांग. २ देखो 'घमचक' (रू.भे.)
उ०—तसां वरसण द्रव अट्टळ। घमचाकां ढींचाळ डोळ खग झाट लखां दळ।—र.ज.प्र.

घमचाळ–सं०पु० [देश०] युद्ध, संग्राम।
उ०—खगां की खैराते खावै र खिलावै। भीम का घमचाळ, केवियां का काळ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

घमजगर, घमजग्गर, घमजग्र, धमजागर–वि०—१ धूममय।
उ०—अनी चख भालनि भेरिय अग्र, धुवां चरखीनि मची धमजग्र।—ला.रा.
२ देखो 'घमगजर' (रू.भे.) उ०—१ धणी जकांरा धांधळोत पाबू रखवाळा। दस दस लूटण देस नै जावै कमठाळा। आवै पूगै वाहरु सीमाळ विचाळा। जबर बजै जद घमजगर नम सेस फणाळा।
—पा.प्र.
उ०—२ ऊदां बूझै 'अभो', हदौ बोलियौ बहादर। हद जूनौ खिलहार, जोध वढ़ियौ घमजग्गर।—सू.प्र.

घमण–सं०स्त्री० [सं० धमन] चमड़े का बना थैले से मिलता-जुलता एक प्रकार का लोहारों का भट्टी में आग प्रज्वलित करने का उपकरण विशेष।
वि०वि०—यह चमड़े की बनी होती है जो हवा भरने से फूलती है तथा हवा बाहर निकालने पर सिकुड़ती है।
उ०—हद, कमठ पीठ हतौड़ा वजर अहरण, तेज ज्वाळा घमण फूंक ताखै, अगन वडवा जहर कोयलां वध अच्छी, रूक अंतक रची जिका राखै।—जवांनजी आढ़ौ
रू०भे०—धंमण, धंवण, धवण।
अल्पा०—धंमणी, धंवणी, घमणि, घमनि, धमनी, धवणि, धवणी।

घमणि, घमणी–सं०स्त्री० [सं० धमनिः, धमनी] १ शरीरस्थ वह छोटी अथवा बड़ी नली जिसमें रक्तादि का संचार होता है।
२ देखो 'घमण' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—धमनि, धमनी।

घमणौ, घमबौ–क्रि०स० [सं० ध्मा+फूंकना] १ भाथी आदि में हवा भर कर छोड़ना, धौंकना. २ भट्टी में लोहे आदि को गरम करना.
उ०—आंखि उंडि, निलाडि भूंडि, धमिया लोहगोळा तिसिया बेउ डोळा।—व.स.
३ पीटना, मारना. ४ शीघ्रता से प्रस्थान करना।
घमणहार, हारौ (हारी), घमणियौ—वि०।
घमवाड़णौ, घमवाड़बौ, घमवाणौ, घमवाबौ, घमवावणौ, घमवावबौ, घमाड़णौ, घमाड़बौ, घमाणौ, घमाबौ, घमावणौ, घमावबौ—प्रे०रू०।
घमिग्रोड़ौ, घमियोड़ौ, घम्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घमीजणौ, घमीजबौ—कर्म वा०।
घंवणौ, घंवबौ, घवणौ, घवबौ—रू०भे०।

घमघमणौ, घमघमबौ–क्रि०अ० [अनु०] १ धम धम शब्द होना, धमधम शब्द करना। उ०—उठि अचूंका बोलणा, नारि पयंपै नाह। घोड़ां पाखर घमघमी, सींधू राग हुवाह।—हा.झा.
२ प्रतिध्वनित होना. ३ कुढ़ना, जलना।
उ०—अणख बोल बीबी तणा, सुणि के आलिम साहि। घमघमियौ कोप्यौ घणौ, अति अमरस मन मांहि।—प.च.चौ.
४ रौंदना। उ०—तइ संचळ तइं सूरु धूंधळिउ, धर घमघमी। खडंदाळिय खौची दिसइ कियउ पयांणउ पूरु।—अ. वचनिका

घमघमियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ घमघम शब्द किया हुआ, ध्वनित.
२ प्रतिध्वनित. ३ कुढ़ा हुआ, जला हुआ. ४ रौंदा हुआ।
(स्त्री० घमघमियोड़ी)

घमघमौ—देखो 'दमदमौ' (रू.भे.) उ०—रावजी खत्री-धरम-री क्रितारथ कीजै, लंका प्रमांण गढ़ि गागुरण लीजै। मीर मुगळ साके आंण घम-घमौ उठायौ, गढ़ि प्रमांण मोरचौ वणायौ।—अ. वचनिका

घमघम्मणौ, घमघम्मबौ—देखो 'घमघमणौ, घमघमबौ' (रू.भे.)

उ०—धुवै धारवा धोम, गाज रौद्रव गमगम्मै। प्रदमी नदर पताळ, गमर धोद्रव घमघम्मै।—सू.प्र.

घमधम्मिघोड़ी—देखो 'घमधमिघोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घमधम्मिघोड़ी)

घमनि, घमनी—देखो 'घमणी' (रू.भे.) (डि.को.)

घमरूळ, घमरोळ-सं०स्त्री० [देश०] १ किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या में कहीं आकर पड़ना, बौछार, झड़ी।

उ०—१ पड़ तोपां इक साथ पलीता धुंवाधोर गोळां घमरूळ। धायर हाथ पड़ै घड़ बूठी, सात पहर जूटो सादूळ।
—बळवंतसिंह हाडा री गीत

उ०—२ रावत छोळां रगत, घोळ बोळां चरचोळां। वाहै भेलै चोर, धजर सेलां घमरोळां।—पनां वीरमदे री वात

उ०—३ झोक पड़ै सायकां, सेल घमरोळ सताबां। मिळै लोह मारकां, नरिंद हरवळां नवाबां।—सू.प्र.

उ०—४ कठै कठैई माहोमाह बरछियां री घमरोळ पड़ै छै। इण भांत माहोमाह सरावै छै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—५ तिको कुही कुलंगरी सी चोट दिखावै छै। इण भांत कटारियां री घमरोळ पड़ै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ वायुमण्डल में किसी हलकी वस्तु का प्रचुर मात्रा में प्रसार, वायु में किसी हलकी वस्तु का फैलाव, आधिक्य।

उ०—१ वीणा रे तंदूरा हर रै वाजै रे नगारा। धूपां री घमरोळ पड़ै।—लो.गी.

उ०—२ कुंमकुमां गुलाब केसर री पिचकार छूटै छै। श्रीव ज्यां रै ऊपरै गुलाल दड़घां फूटै छै। उण समै जाड़ेची वी आय जुटी। गुलाल अबीरां री घमरोळ उठी।—पनां वीरमदे री वात

३ प्रवाह।

वि०—आनन्दपूर्वक, समोद। उ०—रोळ खोळ, रमझोळ आसां, जीवां हरस हिलोळ है। चोळ करै, छोळ घमरोळां, फोगां पोल किलोळ है।—दसदेव

रू०भे०—घमारळ।

घमरोळणौ, घमरोळबौ-क्रि०स० [देश०] १ संहार करना, मारना।

उ०—ठाकुर पहल ग्रोरलूं सारां। घमरोळूं हरवळ चोधारां।
—सू.प्र.

२ तहस-नहस करना, ध्वस्त करना। उ०—दिल्ली सूं भंडा हुआ दिठाळै, पाह अमांमा कमण थंभै। सहर वसायो हुतो साहजां, अण-भंग घमरोळियो 'अभै'।—महाराजा अभयसिंह री गीत

३ हिलाना, घुमाना, विलोड़ित करना, मथाना।

उ०—धाड़-जळै गिरंद घमरोळै, जळ टोहै दळ अवर जण। मिण पुड़ ममंद रूप राव माझ, कड़िया भूप 'अनूर' कण।—द.दा.

घमरोळणहार, हारौ (हारी), घमरोळणियौ—वि०।

घमरोळियोड़ौ, घमरोळियोड़ो, घमरोळयोड़ो—भू०का०कृ०।

घमरोळीजणौ, घमरोळीजबौ—कर्म वा०।

घमरोळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ तहस-नहस किया हुआ, ध्वस्त किया हुआ. ३ हिलाया हुआ, घुमाया हुआ, विलोड़ित किया हुआ, मथा हुआ।
(स्त्री० घमरोळियोड़ी)

घमरोळी-वि०—ध्वस्त, लीन ?

उ०—मगर पचीसी मांणती, करै कांम कल्लोळी। गाहड़ में घूमं घणुं गिलि मकरा गोळी। धन ताटन धपटै धरा, धंधै घमरोळी। लेतां देतां लालचैं, लुब्धौं लपचोळी।—ध.व.ग्रं.

घमळ-सं०पु० [सं० धवल] १ डिंगल का एक गीत छंद विशेष जिसकी रचना के लिए भिन्न-भिन्न मत हैं—

'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार प्रथम एवं द्वितीय चरण में प्रत्येक में छब्बीस मात्राएं। तृतीय चरण में तीस मात्राएं हों एवं चतुर्थ में चौबीस मात्राएं हों।

गीत 'रणधमळ' में छः तुकें होती हैं। प्रथम व द्वितीय तुकों में प्रत्येक में चौदह मात्राएं। तृतीय तुक में अठाईस मात्राएं, चतुर्थ एवं पंचम चरण में प्रत्येक में चौदह मात्राएं तथा षष्टम तुक में चौबीस मात्राएं तथा अंत में लघु हो।

'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार 'घमळ' गीत के और सुगम लक्षण—

'अकुटबंध' गीत की प्रथम पांच तुकें तथा दो तुकें इसी गीत के 'द्वाले' के अंत की, जिनमें एक अनुप्रासयुक्त तथा एक अन्य। इन दोनों की एक तुक बनानी चाहिए। इस प्रकार इन छः तुकों को इकट्ठी कर के पढ़ने से 'घमळ' गीत बनता है।

'कविकुळबोध' के अनुसार विषम चरण चौदह मात्राओं के, तथा सम चरण नौ मात्राओं के होते हैं।

२ देखो 'घवल' (रू.भे.) (अ.मा.) उ०—अटकै तार घर बेध डगिया असत, सार फाटै गयण मेळ सांघो। घणी दाखै घमळ टाळ कज इळा धुर, 'केहरी' तणा हूव मांड कांधो।
—रावत अरजुनसिंघ चूंडावत री गीत

उ०—२ अडग रासियो नेम गंगेव चो ईसवर, जठै पण दाखियो आप जाचा। घमळ सम धार विड काज धू-धारणा, विरद रा धारणा लेऊं वाचा।—भगतमाळ

उ०—३ धुनि कर अमर मंगळ-घमळ, गं तुंबर गावंत गुण। कर जोड़ एम ईसर कहै, कर पूजा जांणै कवण।—ह.र.

उ०—४ लेतां मारी लाल चोळरंग लागा चोला। कोडी फेर किया अजब द्रग घमळ अनोखा।—ऊ.का.

घमळआरोहण—देखो 'घवळ-आरोहण' (रू.भे.) (ह.नां.)

घमळगर, घमळगिर—देखो 'घवळगिरी' (रू.भे.)

घमळगिर-वाहणी—देखो 'घवळा-गिर-वासणी' (रू.भे.) (ह.नां.)

घमळघुज—देखो 'घवळ-घुज' (रू.भे.)
घमळ-मंगळ—देखो 'घवळ-मंगळ' (रू.भे.)
घमळहर—देखो 'घवळहर' (रू.भे.) उ०—कोट भुरजां रा कोसीस नैं घमळहर घवळा-गिर ज्यों बादळां रा किरण सारिखा उजळा सी-कोट सौं निजरि आवै छै।—रा.सा.सं.
घमळागर, घमळागिर, घमळागिरी—देखो 'घवळगिरि' (रू.भे.)
उ०—१ गरदां घर अंबर गूंधळियौ, घमळागर डूंगर धूंघळियौ।
—गु.रू.बं.
उ०—२ घड़हड़ियौ सुणै वाजतै ढोलै, हव वागी कळपंत हुवा। धूहड़ उलटतां घमळागिरि, खूंद पखै कुण घरै खवा।—नाथो सांदू
घवळागिरआरोहणी-सं०स्त्री० [सं० घवलगिरि+आरोहिणी] सरस्वती, शारदा (ह.नां.)
घवळागिरीदेवी-सं०स्त्री० [सं० घवलगिरिदेवी] शारदा, सरस्वती (अ.मा.)
घमस-सं०स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।
उ०— १ पमगां घमस नफेरी पांना, वाग तणी पर बेरक वांना। ऊडी गरद गैंण अब छायौ, ऊगमतौ रवि निजर न आयौ।—रा.रू.
उ०—२ घमस नाळ रज धोम, झळळ तप झंख कमळ झळ। धर धरसळ धरधरण, उतन दिस हलै 'अभैमल'।—सू.प्र.
उ०—३ रतन जडित की टोपी सिर पर, हार कंठ कौ भारी। चरण घूघरा घमस पड़त है, करी स्यांम सूं यारी।—मीरां
रू०भे०—घमस्स, घम्मस।
विशेष—यह शब्द प्राय: पदाघात से उत्पन्न वेगपूर्ण ध्वनि के लिए ही प्रयुक्त होता है।
घमसणौ, घमसबौ-क्रि०अ० [अनु०] ध्वनि विशेष का होना।
उ०—विखम तबल वाजतां, गयंद गाजतां गरूरां। असि घमसतां अनेक, सगह बहसंतां सूरां।—सू.प्र.
घमसियोड़ौ-भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ, ध्वनित।
(स्त्री० घमसियोड़ी)
घमसी-सं०स्त्री० [अनु०] आटा पीसने की चक्की को तीव्रता से घुमाने से उत्पन्न शब्द। उ०—ओ तौ घटुलियौ चोखौ म्हारौ, घमसी दे मैं पीस सूं। आ तौ घमसी चोखी म्हारी, गंऊड़ा पीसासूं। ऐ तौ गंऊडा चोखा म्हारा, लाडूड़ा सांघाऊं।—लो.गी.
घमस्स—देखो 'घमस' (रू.भे.) उ०—हैथाट हींस हींजार हमस्स। धारां पहार माती घमस्स।—गु रू.बं.
घमहमणौ, घमहमबौ-क्रि०अ० [अनु०] ध्वनित होना, वजना, आवाज करना। उ०—हाक डाक त्रंबक घमहमिया। भाखर विकट असटकुल भ्रमिया। कमघज दळ हालतां कराळां। दहसत पड़ै दसै द्रगपाळां।
—सू.प्र.
घमहमियोड़ौ-भू०का०कृ०—बजा हुआ, ध्वनित।
(स्त्री० घमहमियोड़ी)
घमाक-सं०स्त्री० [अनु०] १ बंदूक आदि के छूटने या किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि. २ ऊपर से कूदने की क्रिया, छलांग.
३ देखो 'घमाकौ' (मह., रू.भे.) उ०—आघा पाव तीर री घमाक छाती चाड आयौ।—महकरण महियारियौ
रू०भे०—घबाक, घुबाक, घुवाख।
घमाकौ-सं०पु० [अनु०] १ बंदूक, तोप आदि के छूटने अथवा किसी भारी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द। उ०—आगै दरियाव आयौ सो जलाल वीं मैं कूद पड़चौ सो घमाकौ सुण बूबना नेत्रां खवास नूं कही।—जलाल बूबना री वात
२ आघात, टक्कर।
रू०भे०—घमकौ, घमक्कौ, घम्मकौ।
३ एक प्रकार की वजनी बंदूक। उ०—१ दोऊ तरफ दगी तोपूं अताळ। झालूं का झळहळ गोळू का वरसाळ। धोमूं का अंधार, घमाकूं का धीठ। ओळूं की असण ज्यूं गोळूं की रीठ।—सू.प्र.
उ०—२ सोवोजी खोळौ उथांमण नै फौज ले आया। जंग में मूघाजी रै हाथ रौ घमाकौ छूटौ।—बां.दा.ख्यात
उ०—३ बहादुरसिंघजी रै नागौरी घमाकौ खवां में रहतौ।
—बां.दा. ख्यात
रू०भे०—घमूकौ।
मह०—घमाक।
घमाचोकड़ी-सं०स्त्री० [देश०] उछल-कूद, कूद-फांद, उपद्रव, ऊघम।
घमाड़णौ, घमाड़बौ—देखो 'घमाणौ, घमाबौ' (रू.भे.)
घमाड़ियोड़ौ—देखो 'घमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घमाड़ियोड़ी)
घमाणौ, घमाबौ-क्रि०स० [देश०] १ पीटना, मारना.
२ द्रुत गति से चलना. ३ धोंकनी से हवा भरना या फेंकना.
घमाड़णौ, घमाड़बौ, घमावणौ, घमावबौ—रू०भे०।
विशेष—यह शब्द 'घमणौ' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप भी है।
घमायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पीटा हुआ, मारा हुआ. २ द्रुत गति से चलाया हुआ. ३ धोंकनी से हवा भरा हुआ या झोंका हुआ.
(स्त्री० घमायोड़ी)
घमाघम-क्रि०वि० [अनु० घम] १ लगातार कई बार 'घम-घम' शब्द के साथ। उ०—हूकौ लेतां हाथ में, चेतौ गयौ वुळाय। पड़ै घमाघम पदमणी, अधमाधम अकुळाय।—ऊ.का.
२ कई आघातों के शब्द के साथ, लगातार कई प्रहार शब्दों के साथ। उ०—समासम पेल घमाघम सेल। अनातम आतम ठेल उठेल।
—रा.रू.
सं०स्त्री०—१ आघात, प्रतिघात, प्रहार, मार-पीट।
उ०—अर वरछियां री घमाघम लैणी होवै सो म्हारै सांम्हौ आवौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
२ उपद्रव, उत्पात।

धमार-सं०स्त्री० [देश०] १ होली के समय गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत (मीरां)
२ चौदह मात्राओं का एक ताल।
धमारळ—देखो 'धमारोळ' (रू.भे.)
धमारो-वि०—डरपो, डरातो।
धमाळ-सं०पु० [देश०] १ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रत्येक चरण में २३ मात्राएं हों तथा अंत में लघु गुरु हो.
२ होली के गीत गाने का एक ताल. ३ होली के दिनों में गाने का एक प्रकार का गीत। उ०—म्हारो वीरोजी बजावै चंग वाजणू, वांरा गायीड़ा गावै धमाळ, ए रंगीलो चंग वाजणू।—लो.गी.
४ एक राग विशेष (मीरां)
५ वर्षा ऋतु का एक पौधा जिसके गुलाबी फूल और छोटे-छोटे पत्ते होते हैं। इसके कांटे नहीं होते हैं।
धमावणो, धमावबो—देखो 'धमाणो, धमावो' (रू.भे.)
धमावियोड़ो—देखो 'धमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धमावियोड़ी)
धमासो-सं०पु० [सं० धन्वयास] रेतीली भूमि में छत्ता के आकार का भूमि पर छितराने वाला महीन कांटेदार एक पौधा, दुलाह।
उ०—वूट धमासा पत्थर खावै, कहूं कहां लग आगी। जो तन धारी सबहीं अहारी, ग्यांनी रहत अलागी।—स्री सुखरांमजी महाराज
धमियोड़ो-भू०का०कृ०—१ धौंकनी से हवा फेंका हुआ, धौंका हुआ.
२ पीटा हुआ, मारा हुआ. ३ भट्टी में गरम किया हुआ (लोहा आदि) ४ शीघ्रता से प्रस्थान किया हुआ।
(स्त्री० धमियोड़ी)
धमीड़—देखो 'धमीड़ो' (मह., रू.भे.) उ०—भड़ां मुंह थाट विखै रहै भीड़। गुटा बोह एकल सांग धमीड़।—पा.प्र.
धमीड़ो-सं०पु० [अनु०] किसी भारी वस्तु के गिरने अथवा जोर से टकराने के कारण उत्पन्न शब्द, धमाका।
रू०भे०—डमीड़ो, धमोड़ो, धम्मीड़ो।
मह०—डमीड़, धमीड़, धमोड़, धम्मीड़।
धमूको-सं०पु० [अनु०] १ प्रहार, घूंसा, मुक्का।
२ देखो 'धमाको' (रू.भे.)
धमोड़—देखो 'धमीड़ो' (मह., रू.भे.)
धमोड़णो, धमोड़बो-क्रि०स० [अनु०] १ प्रहार करना, लगाना, मारना, चलाना। उ०—१ उर सेल धमोड़ै वेळ एम, जरदैत ढहै तर सरत जेम। ऊधड़ै खाळ तन तुरंग एम, वांनूळ पूळां सूं विसेस।
—रा.रू.
उ०—२ धमोड़त मावळ मुग्गळ धींग। मुता हरिनाथ धकै हरसींघ।
—सू.प्र.
२ कूटना, पीसना। उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन मिलांमति हजारै री वाड़ी री नीपनी नीली घणी-पाकी, पुरांणी, घणै वनांणी तिण भांति री भांगि घणी एळची, मिरचां, पान, जायफळ रै मेळ सूं पानांण री कूंडियां सरबत रा घोटा सूं कागजां प्रान्तां री धमोड़ी घणै ऊजळै मिसरी रै मेळ सूं।—रा.सा.सं.
धमोड़णहार, हारो (हारी), धमोड़णियो—वि०।
धमोड़िओड़ो, धमोड़ियोड़ो, धमोड़योड़ो—भू०का०कृ०।
धमोड़ीजणो, धमोड़ीजबो—कर्म वा०।
धमोड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ प्रहार किया हुआ, लगाया हुआ, मारा हुआ. चलाया हुआ. २ पीटा हुआ. ३ पीसा हुआ।
(स्त्री० धमोड़ियोड़ी)
धमोड़ो—देखो 'धमीड़ो' (रू.भे.) उ०—१ ओपमा तेण पावै न ओर। गणपति रमावै जांण गोर। वज सेल धमोड़ा उरस वाट। घोड़ा भड़ फूटै तुरम घाट।—वि.सं.
उ०—२ रिण हुवियो विकराळ, दोहु धाड़धियां दोड़ां। वहै गजर वांणांस, धजर उर कूंत धमोड़ां।—पनां वीरमदे री वात
धमोळी, धमोळी-सं०स्त्री० [देश०] १ भाद्रपद कृष्णा तृतीया के पहले दिन की रात्रि के पिछले प्रहर में तृतीया का व्रत करने वाली स्त्रियों द्वारा किया गया आहार. २ ससुराल द्वारा कन्या के लिये तृतीया के अवसर पर आने वाला खाद्य पदार्थ।
रू०भे०—धम्मोळी।
धम्म—१ देखो 'धम' (रू.भे.) २ देखो 'धरम' (रू.भे.)
धम्मको—देखो 'धमाको' (१, २) (रू.भे.)
उ०—पैर धम्मको सोहियै, मार्थै गर बोफाळ। धोरी धोरी मालणी, तो सिर साह जलाल।—जलाल बूबना री वात
धम्मड़—देखो 'धपंड़' (रू.भे.)
धम्मचक्क—देखो 'धमचक' (रू.भे.) २ देखो 'धरमचक्र' (रू.भे.)
धम्मज्झांण—देखो 'धरमध्यांन' (रू.भे.)(जैन)
धम्मत्यिकाय—देखो 'धरमास्तिकाय' (रू.भे.)
धम्मपुत्र—देखो 'धरमपुत्र' (रू.भे.) उ०—दुज्जोहण घर परणि सांगि सिवख रंडतोय मगांइ। धम्मपुत्र वयणेण पुरा इंदपुरा तिणि गमिं लग्गइ।—पं.पं.च.
धम्मरोळ—देखो 'धमरोळ' (रू.भे.) उ०—१ मेलियां उरोळ रोळ ढीली लूण तास मीर, जंगां धम्मरोळ तेगां चढ़ै हरे जास। गोम रूपी 'रतनेस' अनम्मी सगांणी गोम, जमी तेह वांमी जूप राखी जसवास।
—सीसोदिया रावत रतनसिंघ चूंडावत रो गीत
उ०—२ अवाजै भ्रोगाढं तेगां जम्मदाढं। हैयाटै हिलोळं धारा धम्मरोळ।—गु.रू.बं.
धम्मळ—देखो 'धवळ' (रू.भे.)
उ०—किरणां कळ कळ कमळ, सकळ भाळाहळ निम्मळ। तेज पूंज राजांन, धीर कांधोवर धम्मळ।—गु.रू.बं.
धम्मळा—देखो 'धवळा' (रू.भे.)
धम्मळागिर—देखो 'धवळगिर' (रू.भे.)

उ०—देवी सिंधु गोदावरी मही संगा देवी गोमती घम्मळा वांण गंगा।
—देवि.

देखो 'धवळगिर' (रू.भे.)

उ०—उतंग चंग भीत चीत, मंड चंड मंदरं। कळी सपेत जांणि सेत, धार वम्मळागिरं।—गु.रू.बं.

घम्मळी—देखो 'धवळी' (रू.भे.)

घम्मलेसा—देखो 'धरमलेस्या' (रू.भे.)

घम्मस—देखो 'धमस' (रू.भे.)

उ०—रांमापीर ऊवी रुणेचा रै मांहि, मांगू गायां-भैंसियां री जोड़। कुळ में जाजो घम्मस विलोवणी।—लो.गी.

घम्मिल्ल-सं०पु० [सं०] लपेट कर बांधे हुए बाल, बंधी चोटी, जूड़ा।

उ०—स्रवणि तारस्फार झळकतां कुंडळ, ढीलउ धम्मिल्ल, मस्तकि समारित केसकळाप, कंठकंदळि हारि करी सोभायमांन।—व.स.

धम्मोड़—देखो 'घमीड़ो' (रू.भे.)

उ०—इतरा में तो न मालम कीकर ई सांकळ निकळगी अर हड़ड़ड़ ड़ घम्मीड़ करती पट्टी आंगणा पर।—रातवासौ

घम्मीड़ो—देखो 'धमीड़ो' (रू.भे.)

उ०—गहणा में लड़ा-झूंब हुयोड़ी लुगायां री लैं'ण लूहर री ललकार में जिण टेम सांमनैं वाळी लैं'ण नै जबाव देवण नै आगै वढ़ती तौ उणां रै पगां रै घम्मीड़ां सूं धरती धूजण लागती।—रातवासौ

घम्मु—देखो 'धरम' (रू.भे.)

उ०—समय धम्मु जो लंघिसिइ, तीण पुरखि वनवासि। बार वरिस व सवुं अवसि, अहनिसि तीरथवासि।—पं.पं.च.

धम्मोळी—देखो 'धमोळी' (रू.भे.)

घम्मौ—देखो 'धरम' (रू.भे.)

उ०—धम्मौ मंगळ महिमो नीलो, धरमे नवनिध होय। धरमे दुख दोहग टळै, रोग सोग नहिं कोय।—जयवांणी

धय-सं०स्त्री० [सं० ध्वज] ध्वजा, पताका। उ०—आदि जिणेसर वर भुवणि, ठविय नंदी सुविसाळ। धय पडाग तोरण कळिय, चउ-दिसि वंदुरवाळ।—धरमकुसळ मुनि

धयर—देखो 'धीरज' (रू.भे.)

उ०—कस आयुध पावू कमरं, धयर घणौ मन धार। करण समर 'धांधल' हुओ, भिडज भमर असवार।—पा.प्र.

धयरठू, धयराठ—देखो 'धतराठ' (रू.भे.)

उ०—१ थापीउ पंडव राजि कन्हडु ए, उत्सवु अति कर ए। कुण विहि देवि गंधारि धयरठू ए, राउ मनावीउ ए।—पं.पं.च.

उ०—२ सउ वेटां धयराठ घरे पंडु तणइ घरि पंच।—पं.पं.च.

धयवड-सं०पु०यौ० [सं० ध्वज+पट] ध्वज पट। उ०—भव सुख धयवड चंचळ चंचळ यौवन जाय।—नेमिनाथ फागु

धयाग—देखो 'धियाग' (रू.भे.)

धयो-सं०पु० [देश०] १ कलह, टंटा. २ कष्टदायक कार्य.

३ अनिच्छा का कार्य।

धरंमी—देखो 'धरमी' (रू.भे.)

धर-वि० [सं०] १ ग्रहण करने वाला, थामने वाला।

ज्यूं—गदाधर, धनुखधर, मुरळीधर।

२ ऊपर लेने वाला, धारण करने वाला, संभाले रखने वाला।

ज्यूं—गिरधर, धरणीधर।

सं०पु० [सं०] १ पर्वत, पहाड़ (अ.मा., डिं.नां.मा.)

२ विष्णु. ३ श्रीकृष्ण. ४ देखो 'धड़' (१) (रू.भे.)

उ०—कुंडळी धारे कंचवौ, आखिर उठाय भार। धर रौ धर पर धर कवच, भार हरे भरतार।—रेवतसिंह भाटी

५ देखो 'धुर' (२) (रू.भे.)

६ देखो 'धरा' (रू.भे.)

उ०—१ कंध वसण रण हाथ खग, घोड़ा ऊपर गेह। धर रुखआळी विण धरण, गिणै न त्रण सम देह।—जैतदांन वारहठ

उ०—२ दळ मिळिया कळ गळीय सुहड गयवर गळगळीया। धर धमकीय सळवळीय सेस गिरिवर टळटळिया।—पं.पं.च.

उ०—३ केवी तूं गढ कूंचियां, सूंपै छोड सरम्म। मुख ज्यांरा दीठां मिटै, धर रजपूत धरम्म।—बां.दा.

धर-कोट-सं०पु० [सं० धरा+कोटः] लकड़ियों की बनी चहारदीवारी, लकड़ियों का बना अहाता। उ०—सूका केळा काट टाप धर गायां भैंसां, खेन झूंपड़ी लेत स्त्रमित आणंद संदेसां। फळसा टाटा ठाट लाठ धर-कोट वणावै, ढूंढा पड़वा छांन कोड़वा ठांढ़ चढ़ावै।—दसदेव

धर-छाया-सं०स्त्री० [सं० धरा-छाया] अंधेरा, अंधकार (डिं.को.)

धरज-सं०पु०—ताम्र, तामा (अ.मा.)

धरड़-सं०स्त्री०—वस्त्र के फटने की ध्वनि।

धरड़णौ, धरड़बौ-क्रि०अ० [अनु०] १ विदीर्ण होना, फटना।

उ०—छाती वजर कपाट भूप दुख दीठा भारी। धरड़ियौ आकास धर धूजण सारी।—सगरांमदास

क्रि०स०—२ विदीर्ण करना, फाड़ना।

धरड़णहार, हारौ (हारी), धरड़णियौ—वि०।

धरड़िओड़ौ, धरड़ियोड़ौ, धरड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धरड़ीजणौ, धरड़ीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

धरड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ विदीर्ण हुवा हुआ, फटा हुआ.

२ विदीर्ण किया हुआ, फाटा हुआ।

(स्त्री० धरड़ियोड़ी)

धरजहर-सं०पु०यौ० [सं० धर+फा० जह्र] सर्प, सांप।

उ०—धरजहर देखिया गुरड़ धंख। पेखिया पटाभर अनड़ पंख।
—वि.सं.

धरण-वि० [सं०] ग्रहण करने, रखने, थामने या संभालने की क्रिया, धारण।

सं०पु०—१ एक नाग का नाम।

सं०स्त्री० [सं० धरणी] २ नाभि के ठीक नीचे की वह नस जो अंगुली के दबाने से रह रह कर उछलती हुई सी मालूम पड़ती है।

३ एक नाप विशेष. ४ देखो 'धारणा' (रू.भे.)

५ देखो 'धारणा' (रू.भे.) उ०—दीपाळौ सिवरांम रौ, सापै जोध सरज्ज। म्है सोची ऊंची धरन, करण जतन कमवज्ज।—रा.रू.

६ देखो 'धरणी' (रू.भे.)

उ०—तणी दयावत नेत चंन धरण मोटां तणी, तरण चंद-वदण दज वरण तानू। भ्रमर कद करण प्रदमाद सिर ऊमदा, परणवा पधारै राव पानू।—गिरवरदांन सांदू

धरणधर—देखो 'धरणीधर' (रू.भे.) उ०—सरण असरण अभंकरण मेदागरां, धरणधर नरीता चरण धावै। जोन संगट हरण वरण वेदूवे 'जगा', गिरा तारण तरण किऊं न गावै।—जगजी आढ़ौ

धरणनाग—सं०पु० [सं०] नाग को धारण करने वाले शिव, महादेव।

धरणपीतंबर—सं०पु० [सं० धरण+पीतांबर] ईश्वर (नां.मा.)

धरणिंद—सं०पु० [सं० धरण+इंद्र] नागराज, शेष नाग।

उ०—पास कुमार जिणंद के आगइ, भगति करति धर्णिंदा। माई आज हमारइ आणंदा।—स.कु.

धरणि—देखो 'धरणी' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

उ०—धुरवा धरणि लग लोढ़ा ले धावै। जीमण जीमण नै मोडा जिम आवै।—ऊ.का.

धरणिधर—देखो 'धरणीधर' (रू.भे.) उ०—पीठ धरणीधर पट्टड़ी, हरि तिय चित्रण हार। तोड तोरा चरितां तणौ, परम न लाभै पार।—ह.र.

धरणी—सं०स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती (अ.मा.)

उ०—नभ सूं पवन पवन सूं अग्नि, अग्नी जळ प्रगटासी। जळ सूं धरणी धरणी पर स्रिस्टी, नाना रूप होय भासी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

२ नाभि (अमरत)

रू०भे०—धरण, धरणि, धरन।

धरणीतळ—सं०पु० [सं० धरणीतल] धरातल, पृथ्वी।

उ०—धरणीतळ व्याकुळ हुँलो सिर धुणियो। सरणागत वच्छळ हेलो नह सुणियो।—ऊ.का.

धरणीधर, धरणीधरि—सं०पु० [सं० धरणी-धरः] १ ईश्वर, परमात्मा (नां.मा.)

उ०—आ काठां चढ़सी अवस, धरणीधर दे धोक। सठ मन मांनै सुधरसी, पातर सूं परलोक।—बां.दा.

२ विष्णु (ह.नां.) उ०—धरणीधर संकर देव धियायउ, जोति-प्रकास अलोप जग। मस्तक मुगट प्रकास मांडियउ, अनंत कोट ब्रह्मंड लग।—महादेव पारवती री वेलि

३ शिव, महादेव, शंकर. ४ कच्छप. ५ शेषनाग।

उ०—धाम विसूहां मांणसां, है घर झेलणहार। धरणीधर घर छंडियां, पाछै तूं माधार।—ह.र.

६ पर्वत, पहाड़। उ०—मावज सीह मरण संमाही, मूझै सिगा फवज्जा मांही। लग्गा पहण असंख्या लसकर, तें धूजिया तिणं धरणीधर।

—गु.रू.बं.

७ राजस्थान, गुजरात का प्राचीन एक प्रसिद्ध तीर्थ।

वि०वि०—अति प्राचीन काल से यह वाराहपुरी के नाम से प्रसिद्ध था। उत्तर गुजरात के वाव और थराद नगरों के पास ढेमा नामक ग्राम में भगवान् चतुर्भुज विष्णु का एक मनोहर और विशाल मंदिर बना हुआ है। इस मंदिर के पास एक तालाब है जिसका नाम 'मान सरोवर' है। यहां पर भगवान, महादेव, लक्ष्मीजी, गणेशजी और हनुमानजी के मंदिर भी हैं। प्राचीनकाल में पंजाब, सिंध, व्रज, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि देशों के बहुत से यात्री द्वारकानाथ की यात्रा करने जाते थे, उनको प्रथम धरणीधर के दर्शन करने पड़ते थे और यहां की तप्त मुद्राओं को अपनी भुजाओं पर लगवाना आवश्यक समझा जाता था। कहते हैं आजकल तप्त मुद्राओं के स्थान पर केसर चंदन की मुद्राएँ लगाई जाती हैं। ऐसा माना जाता है कि भगवान श्री कृष्ण द्वारका जाते समय यहां ठहरे थे, अतः लोग इसे तीर्थों में गिनने लगे।

वि०—पृथ्वी का धारण करने वाला।

रू०भे०—धरणधर, धरणिधर।

धरणीसुत—सं०पु० [सं०] १ मंगल. २ नरकासुर।

धरणीसुता—सं०स्त्री० [सं०] सीता, जानकी।

धरणूं—सं०पु० [सं० धरणम्] १ गिरवी, धरोहर, रेहन (डिं.को.)

२ देखो 'धरणौ' (रू.भे.) (डिं को.)

धरणौ—सं०पु० [सं० धरण] १ किसी शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा सताने पर अथवा ऋण दाता का ऋण निश्चित समय तक अदा न करने के कारण व्यक्ति विशेष अथवा समाज के समूह विशेष का इस निश्चय से अनशन करना कि उसकी प्रार्थना पूर्ण न होने पर आत्म-हत्या द्वारा प्राणों का त्यागना। उ०—पीछे उण हीज वरस प्रोहित मांन महेस रो पटो जवत हुवो। वा बारठ चौथजी लूंढियै री पटो पण जवत हुवो। पीछै अै धरणा कर बीकानेर आया। आखर अवार हिंगळी रहै छै तठै जुहर कर सारा मुवा।—द.दा.

२ देव विशेष के स्थान पर अभीष्ट फल प्राप्ति हेतु अनशन कर बैठना। उ०—सोलंखी आपरै थांनक आय नै कुळ देवी रै धरणै बैठो।—रा.वं.वि.

क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ, धरणौ।

धरणौ, धरबौ—क्रि०स० [सं० धरणम्] १ रूप ग्रहण करना, धारण करना, आरोपित करना। उ०—जिण दाहे वण हर धरइ, नदी खळकइ नीर। तिण दिन ठाकुर किम चलइ, धण किम बांधइ धीर।—ढो.मा.

२ व्यवहार के लिये हाथ में लेना, ग्रहण करना।

उ०—१ पहिलउं सरसति अरचिसु रचिसु वसंत विलासु। वीणि धरइ करि दाहिणि वाहणि हंसलउ जासु।—व.वि.
उ०—२ अवरु संखु धरइ रळियांमणउ। ध्वनि करी सिवपंथी सुहांमणउ।—जयसेखर सूरि
३ निश्चय करना, विचार ग्रहण करना। उ०—करइ दाहु विदाहु हियइ धरइ। कहु कीचक हुइ मरत मरइ।—विराट पर्व
४ प्रतीत करना, महसूस करना। उ०—१ इंद्र आउखउ आसनउं थाइ' कंठ तणी माळा कर माइ। धरइ कंप तें हिया मझारि 'पडिसिउं दुक्ख तणइ भंडारि'।—चिहुंगति चउपई
उ०—२ चितइं चेतुर स चिततउ, धरतउ अरति अपार।
—नेमिनाथ फागु
५ बैठाना, ग्रहण करना। उ०—आखई तो पिता नहीं ईसर, पुणइ अनेरी तूझ परि। रमाडिउ न रंग भरि रांमा, धवराडियउ न गोद धरि।—महादेव पारवती री वेलि
६ स्मरण करना। उ०—१ करुणानिध जन हितकारी रे, बांमें अंग सीत विहारी। सारी ज्यां बात सुधारी रे, धरियौ उर धांनंखधारी।
—र.ज.प्र.
उ०—२ नारदू पहुतउ सिख्या देवि पंडव बइठा ध्यांनु धरेवि। एकं पाइं दिणवर द्रेठि, हीयडइ मंत्रु पंच परमेठि।—पं.पं.च.
७ पास में रखना, रक्षा में रखना। उ०—सिर नासा कांन दसन आंखे, नख गाल वपुस ना मल नाखे। मिळणी लेखो करइ मंतरणी, विहचण अपणी करि धन धरणी।—ध.व ग्रं.
८ स्वीकार करना। उ०—१ सखी भणइं 'सांमिणि हिव सुणउ एह दोस नवि कुणह तणउ, देविहिं कीधां छंइ जे, कांम तेह मांजिवा धरइ कुण हांम।'—विद्याविलास पवाडउ
उ०—२ चउसट्ठि गाह तणी चौसणी, धरमी जन नें मन में धरणी। बीजो आउर पच्चक्खांण, चउरासी गाथा परिमांण।—ध.व.ग्रं.
९ चौकन्ना होना, ध्यान धरना। उ०—न दें साद कांय नारियण, साद दियै जो संत। आपण नांम उलांवतां, धेंनु (ही) कांन धरंत।
—ह.र.
१० संकल्प करना, दृढ़ निश्चय करना। उ०—१ रूपनुं केवळ नांण सांमीय ए, नेमि जिणेसरहं ए। सांभळी सांमि वखांणु विरता ए सावयव्रतु धरइं ए।—पं.पं.च.
उ०—२ चारित्र भणीइं खडगह धार, पुण्यवंत पालइं सविचारु। महाव्रत नउ न धरइं भार, वारव्रतं नउं करउ अंगीकार।
—चिहुंगति चउपई
११ शोभार्थ अथवा रक्षार्थ धारण करना, देह पर रखना, पहनना।
ज्यूं—माथा माथै पोतियौ धरणौ।
उ०—गुरु ऊठाडई अरजुनु कुमरो करणिहिं सरिसउं माडइ वयरो। वे भाथा त्रिहुं खवें वहेई करियळि विसमु धणुंहु धरेई।—पं.पं.च.
१२ स्थापित करना, स्थित करना, ठहराना। उ०—धेधींगर कर्दम आवळा धरतो, झड़ वरसात जेम मद झरतो।—र.ज.प्र.
१३ प्रकट करना, रखना। उ०—बेटा रहिं इकु मांनइ जाग, माथइ फाड देई इकि मागइं भाग। बेटा पाखइ इक दोहिलउं धरइं, बेटे छते इकि वढ़ी दढ़ी मरइं।—चिहुगति चउपई
१४ संलग्न होना, तत्पर होना, क्रियाशील होना। उ०—अनेकि परि जे पूजा करइं, मुगतिं जावा नी सजाई धरइं। रास भास सांमि गुण गायंति, पंचमगति निस्चंइं पांमंति।—चिहुंगति चउपई
१५ रखेली रखना. १६ वहन करना, उत्तरदायित्व लेना।
उ०—एक दिवस ते च्यारि नंदन, रमलि करंता रंगि। बापि बोलाव्या 'कहउ किम, मझ धरि भार धरेसिउ अंगि।'
—विद्याविलास पवाडउ
१७ धारण करना, ग्रहण करना (गर्भ, हर्ष, शोक, उत्साह आदि)
उ०—१ बीजी मद्रकि मद्र धूय पंडु तणइ घर नारि। गभु धरीऊ गभु धरीऊ देवि गंधारि।—पं.पं.च.
उ०—२ कांमालय अट्ठमी तणी सांझइं संहट भणेवि। राजकुंअरि नीय धरि गई ऊलट अंगि धरेवि।—विद्याविलास पवाडउ
उ०—३ इसिउ जि मूरख जांणी तेउ। नयणि न जोइ नेह धरेउ।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—४ राय आएसइं साहण समहर, सयल सुहड मेल्हेवि। भणी उजेणी दीधउं पीयांणउं, महितउं मांनि धरेवि।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—५ उजेणी नयरी तणी वर नारी, ए रंग धरेवि ऊलट आवइं आपणि भणि मोति ए थाळ भरेवि।—विद्याविलास पवाडउ
१८ गिरवी रखना, बंधक रखना. १९ किसी वस्तु को मजबूती से पकड़ना या जोर से स्पर्श करना जिससे वह इधर-उधर नहीं जा सके या हिल सके, थामना, पकड़ना।
उ०—१ केसि धरी नइ तांणीउं, दुसासणि दुरचारि। बाळप्पणि हुं नवि मूई, कांइं हुई तुम्ह नारि।—पं.पं.च.
उ०—२ हारीय ए द्रुपदह धीयं ऊदालिय सवि आभरण ए। तांणीय ए केसि धरेवि देवि दुसासणि दूजणिहिं ए।—पं.पं.च.
मुहा०—धर दवाणी या धर दवोचणी—किसी पर इस प्रकार आ पड़ना कि वह विरोध या बचाव न कर सके, बलपूर्वक अधिकार में करना। वाद-विवाद में परास्त करना।
२० कहना, डींग मारना।
ज्यूं—औ तौ गप्पां धरै है।
२१ प्रहार करना, मारना।
ज्यूं—एक इज मुक्कै री धरी, कै नीचो पड़ियो।
उ०—भूंटि धरी धूंबड धाइं तांडइ। आक्रंदती द्रूपदि बूंब पाडइ।
—विराट पर्व
२२ वश में करना, अधिकार में करना, काबू करना, रोकना।
उ०—मन देवता कुणहइं धरी न सकीइं, क्षणि जाइ सागरि, क्षणि जाइ आगरि।—व.स.

धरणहार, धारी (धारी), धरणियौ—वि०।

धरवाड़णौ, धरवाड़बौ, धरवाणौ, धरवाबौ, धरवावणौ, धरवावबौ, धराड़णौ, धराड़बौ, धराणौ, धराबौ, धरावणौ, धरावबौ—प्रे०रू०।

धरियोड़ौ, धरियोड़ौ, धरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

धरीजणौ, धरीजबौ—कर्म वा०।

धुरणौ, धुरबौ—रू०भे०।

धरती-संज्ञा०स्त्री० [सं० धरित्री] १ पृथ्वी, भूमि, जमीन (डि.को., ह.नां.)

उ०—१ धरती म्हांगी म्हे धणी, दाहण नेजां ढल्ल। किम कर दइसी ढाकरां, ऊभा सीहां सल्ल।—अज्ञात

उ०—२ आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खैंचि उरा। धणियां मरे न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा।—बां.दा.

रू०भे०—धरत्तो।

मह०—धरतो, धरत्तो।

मुहा०—१ धरतियां लेणी—मरणासन्न व्यक्ति को पलंग से उठा कर भूमि पर शयन कराना. २ धरती कुचरणी—तुच्छ या हल्का कार्य करने के कारण लज्जित होना, शर्मिन्दा होना. ३ धरती लेणी—देखो 'धरतियां लेणी'. ४ धरती हाथ टिकणा—पराजित होना, हार मानना, किसी महान कार्य में अत्यधिक व्यय होने के कारण निर्धन होना।

२ राज्य। उ०—१ राव मंडळीक गैहलो हुवो। तरै 'जैसो' मंडळीक रो लोहड़ो भाई तिण सारी धरती रो भार संभायो। धरती रा सारा राजपूत लेनै भायरै पैठो। धरती रो विगाड़ घणो करै छै। गढ़ गिरनार मांहे पातसाह रो बडो थांणो छै। धरती मांहे थांणा ठोड़-ठोड़ राखिया छै पण धरती भोग पड़ सकै नहीं।—नैणसी

उ०—२ तिण ऊपरि कहाव मांडियो रांमसिंघजी गाडा ऊंट कँवरजी कन्हां मंगाड़ी अर धरती मांह डोरो १ छोडियो नहीं।—द.दा.

रू०भे०—धरत्री, धरिती, धरित्री, धरेती, धरैती, ध्रति, ध्रती, ध्रिति, ध्रिती।

धरती-रो-करीत-संज्ञा०पु०यौ०—ऊंठ।

धरतो-संज्ञा०पु०—देखो 'धरती' (मह., रू.भे.)

रू०भे०—धरत्तो।

धरत्ती—देखो 'धरती' (रू.भे.) उ०—अजे सूर झळहळै, अजे प्राजळै हूतासण। अजे गंग खळहळै, अजे सावत इंद्रासण। अजे धरणि ब्रह्मंड, अजे फळफूल धरत्ती।—महारांणा राजसिंह रो छप्पय

धरत्तो—देखो 'धरती' (मह., रू.भे.)

धरत्री—देखो 'धरती' (रू.भे.) (डि.नां.मा.)

धर-थंभ, धर-थंभण, धरती-थंभ-संज्ञा०पु०यौ० [सं० धरा, धरित्री+स्तम्भ] १ वीर, योद्धा. २ राजा, नृप। उ०—१ धर-थंभ रखे खग पांण धरा।—सू.प्र.

उ०—२ सुत रायपाल 'कांनड़' सधीर, धर-थंभण 'जालण' सूर धीर।—सू.प्र.

धरधर—१ देखो 'धराधर' (रू.भे.) (अ.मा.)

२ देखो 'ध्रुड़हियार' (रू.भे.)

धर-धरण-संज्ञा०पु०यौ० [सं० धरा+धारण] शेषनाग।

उ०—धमस नाळ रज धोम, झळळ तप झंग कमळ झळ। धर धरमळ धर-धरण उतन दिम हले 'अभंमल'।—सू.प्र.

धर-धर-वेळा-संज्ञा०पु०यौ० [सं० जयद्रथ वेला] गोधुलिक समय के बाद का समय जब एक दूसरे को स्पष्ट देख सकते हैं, संध्या का समय।

रू०भे०—धरे-धरे-वेळा।

धर-धारक संज्ञा०पु०यौ० [सं० धरा+धारक] शेष नाग।

उ०—१ धर-धारक सीस धमधमिया, अताळी बळ बाजिद उप्रमिया।

—सू.प्र.

उ०—२ धर-धारक अंबर धड़क, चारज बैठ सुवज्ज, पंचम जारज पारखै, जिह बारज कमधज्ज।—किसोरदांन बारहठ

धरधीस-संज्ञा०पु० [सं० धराधीश] राजा, नृप। उ०—तखत भूप गुरधर तखत, धरा नमत धरधीस, पायो सुतन 'प्रतापसी', स्यांम रागवण सीस।—किसोरदांन बारहठ

धरधुख-संज्ञा०पु० [सं० धराधुक्ष] पृथ्वी की गर्मी, पृथ्वी की उष्णता।

उ०—हलै पखराळन पंच हजार, मिळियौ नभ मंडळ वेग समीर, निठयौ धरधुख सुतालन नीर।—वं.भा.

धरधूंस-वि०—जमींदोज ?

उ०—नहीं माळा नीकी रे जाळा, नहीं काटै जी की रे। धाड़ा पाड़ कर रटके धूरत, धन पटके धरधूंस। नट के साधू बणे निराळा, सटके माळा सूंस।—ऊ.का.

धरन—१ देखो 'धरणी' (रू.भे.) २ देखो 'धरण' (रू.भे.)

धर-पत, धर-पति, धर-पतौ, धर-पत्त, धर-पत्ती-संज्ञा०पु०यौ०—देखो 'धरा-पति' (रू.भे.) (अ.मा., डि.को.)

उ०—१ कीजै कुण मींड न पूगै कोई, धरपत भूटी टसक धरै। तो जिम भीम दीयै तांबापत्र, कवी अजाची भलां करै।—किसनो आढ़ो

उ०—२ धरपति रूप इसो प्रभु धरियो, अनंग जांण दूजो अवतरियो।—सू.प्र.

उ०—३ महाजांण उतमि मती, धजाबंध लाखो धरपती। कविंदां तणो रोर कापै, सिरै सार मोजां समापै।—ल.पि.

उ०—४ देखे हसम दिये दरवाजा, धरपत्त अवर न धीर धरै। 'चूंडा' हरा तणा जे चारण, करै सूम सुम राज करै।

—किसनो आढ़ो दुरसावत

उ०—५ धारै अस्त्र सस्त्र धरपत्ती, चढ़ियौ तुरंग 'अभो' चक्रवत्ती।

—रा.रू.

धर-पाड़ो-संज्ञा०पु०यौ० [सं० धरा+रा० पाड़णौ] भूमि छीनने वाला, आततायी। उ०—वट पाड़ां धर-पाड़ो वाळो, आभ जड़ां नांखै उखाड़। कोय न गांज सकै किनियांणी, झींकणियाळ तुहारा झाड़।

—बां.दा.

घर-पुड़-सं०पु०यौ० [सं० धरा+रा० पुड़] धरणी-तल ।
उ०—घर घर में धीणा घणा, घर घर घूमै माट । राग रंग रळिया-वणी, धरपुड़ मांझल धाट ।—बां.दा.

घर-बार—देखो 'दरबार' (रू.भे.) उ०—घड़क घर-बार सिरदार सोह धूंजिया, रूक हत्थ वाह करता थका राड़ । नयड़ गड़ गाजती छूटी निहंग, धड़हड़ै हुतासण कना अर धाड़ ।
—धनजी भीमजी रो गीत

घर-भार-उतारण-सं०पु०यौ० [सं० धरा-भार-उतारण] ईश्वर, परमेश्वर (नां.मा.)

घर-मंडण-सं०पु०यौ० [सं० धरा+मंडन] इन्द्र ।
उ०—गह घूमी लूंबी घटा, वादळ कियो वणाव। घर-मंडण घर आवियो, घर-मंडण घर आव।—अज्ञात

घरमंडळ, घरमंडळि-सं०पु० [सं० धरा+मंडल] भूमण्डल, पृथ्वीमंडल ।
उ०—पाडइ विध कवंध वंध घरमंडळि रोळइ । वांणि विनांणि किवांणि केवि अरीयण धंधोळइ ।—पं.पं.च.

घरम-सं०पु० [सं० धर्म, धम्मं] १ आराधना और विश्वास की विशिष्ट प्रणाली जो किसी महात्मा या आचार्य द्वारा चलाई जाती है, उपासनाभेद, पंथ, मत, सम्प्रदाय, मजहब ।
उ०—१ भिड़ तुरकांण अरिदळ भंजै, हिंदू धरम काज रै हेत । अमर नांम राखै अखवीहर, खत्री विढ़ पड़ियौ रणखेत ।
—उदयसिंह कूंपावत रो गीत
उ०—२ 'सांगौ' धरम सहाय, बाबर सूं भिड़ियौ विहस । अकबर कदमां आय, पड़ै न रांण 'प्रतापसी' ।—दुरसो आढ़ौ
उ०—३ लछी रूप हरि भगति, धरम हिंदू धांनंतर । वेद चंद्र मिण किया, भूम रंभा वळ कुंजर धेन पूज सुर धेन वि मधु चरणाम्रत वंदां, धनुख मांण नृप कळप संख जस मद्द विरद्दां । विख वेध तुरी उधम तुमुल, महण मेछ उर मंडिया । 'दुरगेस' मथे चित साह रो, रतन चवदै कड्ढ़िया ।—रा.रू.
क्रि०प्र०—छोडणौ, बदळणौ ।
मुहा०—धरम में आणौ—किसी विशिष्ट मजहब को स्वीकार करना, किसी विशेष मत को मानना, सम्प्रदाय में प्रवेश करना ।
२ समाज या लोक की स्थिति के लिये आवश्यक ऐसी वृत्ति, आचरण या आचार जिससे समाज की रक्षा एवं सुख शान्ति की वृद्धि हो तथा परलोक में भी उत्तम गति मिले, कल्याणकारी कर्म, सत्कर्म, श्रेय, सदाचार, सुकृत, पुण्य । उ०—वीरत कीरत दंस वित, मत मोजां गुण मांण । संप सुलच्छण धरम सुख, व्है यां अध सूं हांण ।
—बां.दा
मुहा०—१ धरम ओडणौ—देखो 'धरम खाणौ'. २ धरम कमाणौ—धर्म अर्थात् सत्कर्म कर के उसका फल संचित करना. ३ धरम खाणौ—धर्म की दुहाई देना, धर्म की शपथ खाना. ४ धरम बिगाड़णौ, धरम भिस्ट करणौ—धर्म भ्रष्ट करना, धर्म के विरुद्ध आचरण करना । स्त्री का सतीत्व नष्ट करना. ५ धरम राखणौ—धर्म सुरक्षित रखना, धर्म के विरुद्ध आचरण करने से बचना या बचाना. ६ धरम लैणौ—देखो 'धरम खाणौ'. ७ धरम सुहाती कैणी—उचित बात कहना, ठीक-ठीक कहना, धरम का ध्यान रख कर कहना, सत्य का कहना. ८ धरम सूं (से)—धर्म के अनुसार. ९ धरम सूं (से) कैणी—देखो 'धरम सुहाती कैणी' ।
३ आपसी व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाले वे सिद्धान्त या नियम जो किसी राजा, आचार्य अथवा किसी मध्यस्थ अधिकारी द्वारा पालन कराये जांय, कानून-कायदा, नीति, न्याय व्यवस्था ।
४ पारलौकिक सुख की प्राप्ति के अर्थ से किया गया वह कर्म या कृत्य जो किसी मान्य ग्रंथ, आचार्य या ऋषि द्वारा बताया गया हो । शुभ फल की कामना (मोक्ष प्राप्ति आदि) के कारण किया गया कृत्य या विधान जैसे अग्निहोत्र, यज्ञ, व्रत, होम आदि ।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।
यौ०—धरम-करम ।
५ वह चित्तवृत्ति जो उचित-अनुचित का विचार करती है, न्याय-बुद्धि, विवेक, ईमान ।
यौ०—रांमधरम ।
६ कभी अलग नहीं होने वाली किसी व्यक्ति या वस्तु की वह प्रकृति या वृत्ति जो उसमें सदा रहती है, स्वभाव । जैसे—गुड़ का धर्म है मीठा, शराब का धर्म मादकता, क्षत्री का धर्म है रक्षा, आंख का धर्म है देखना, दुष्ट का धर्म है कष्ट देना । उ०—करण वाखांण दुनियांण धिन धिन कहै, धरम छत्रियांण भुज अमर धारू । अटक सूं लियां हिंदवांण आयो उरड़, मुरड़ पतिसाह बीकांण मारू ।—देदो
७ वह व्यवहार या कर्म जो दुर्गति में गिरते हुए प्राणी को सुगति की ओर प्रेरित करे. (जैन)
८ समाज के कार्य्य-विभाग के निर्वाह के लिए उचित और आवश्यक समझा जाने वाला कर्म या व्यापार । मनुष्य का किसी विशेष कोटि या अवस्था में होने के कारण अपने निर्वाह तथा दूसरों की सुगमता के लिए किया जाने वाला कर्म । किसी सम्बन्ध स्थिति या गुण विशेष के विचार से किया जाने वाला वह कर्म जिसका करना आवश्यक हो । वह व्यवसाय या व्यवहार जो किसी जाति, कुल, वर्ग, पद इत्यादि के लिए उचित ठहराया गया हो, फर्ज, कर्त्तव्य । जैसे—पुत्र का धर्म, माता-पिता का धर्म, क्षत्रिय का धर्म, ब्राह्मण का धर्म ।
मुहा०—१ धरम डाड देणी—मृतक के पीछे कर्त्तव्य समझ कर रोना. २ धरम हार बात करणी—धर्म या कर्त्तव्य के विरुद्ध विचार या बात करना ।
यौ०—साम-धरम, सांमी-धरम, स्वांमी-धरम ।
९ दान, पुण्य । उ०—असी मौ'र दी नांनगसाही, साखौ दियौ जुड़ाय । धरम-पुन्न यूं बांट डूंगजी, झड़वासै नै जाय । झड़वासै में सासरौ, सालां सूं मिलवा जाय ।—डूंगजी जवारजी री पड़

मुहा०—१ धरम री गाय रा दांत नहीं देखणा—दान में अथवा मुफ्त मिली हुई वस्तु के गुण अवगुण नहीं देखना चाहिए।

मि०—मांगड़ो बैल दन्ता में नोजै।

२ धरम री जड़ हरी होणी—दान-पुण्य से शुभ फल मिलता है।

यौ०—धरम-पुत्र।

१० उपमेय और उपमान में समान रूप से होने वाली वृत्ति या गुण। वह समान गुण जिसके कारण एक वस्तु की उपमा दूसरी से दी जाती है (अलंकार शास्त्र)

जैसे—इंद्र सो उदार है नरिंद्र मारवार को।

११ युधिष्ठिर, कर्ण. १२ यमराज. १३ वर्तमान अवसर्पिणी के १५ वें अर्हत का नाम (जैन)

उ०—पनरम धरम तयाळिम गणि चौसठ हजार। साहु साहुणी बासठ सहस धर्म सयचार।—ध.व.ग्रं.

१५ छंद शास्त्र के अनुसार टगण को छः मात्राओं के बारहवें भेद का नाम (ऽ।।।) (डि.को.)

१५ जन्म लग्न से नवें स्थान का नाम जिसके द्वारा यह विचार किया जाता है कि बालक कहां तक भाग्यवान् और धर्मपरायण होगा।

१६ अटल, निश्चल, दृढ़।

रू०भे०—धम्म, धम्मु, धम्मो, धरम्म, धम, ध्रम्म।

धरमग्रात्मज–सं०पु० [सं० धर्मात्मज] युधिष्ठिर (ह.नां.)

धरमकरम–सं०पु० [सं० धर्मकर्म] १ किसी धर्म ग्रंथ के अनुसार आवश्यक ठहराया हुआ कर्म या विधान. २ ७२ कलाओं में से एक।

धरमक्षेत्र, धरमखेत, धरमखेत्र–सं०पु० [सं० धर्मक्षेत्र] १ कुरुक्षेत्र. २ भारतवर्ष।

धरमग्य–वि० [सं० धर्मज्ञ] धर्म को जानने वाला।

धरमग्रंथ–सं०पु० [सं० धर्मग्रंथ] किसी जन-समाज के आचार व्यवहार और उपासना आदि से सम्बन्धित शिक्षा का ग्रंथ या पुस्तक।

धरमघट–सं०पु० [सं० धर्मघट] काशी खंड, हेमाद्रि दान खंड आदि के अनुसार सुगंधित जल से भरा घड़ा जिसका वैशाख में दान दिया जाता है।

धरमचक्र–सं०पु० [सं० धर्मचक्र] १ धर्म का प्रकाश करने वाला जिनदेव का चक्र (जैन)

धरम-जिहान–सं०पु०यौ० [सं० धर्म+जहान] सूर्य, भानु (अ.मा.)

धरम-जीवन–सं०पु०यौ० [सं० धर्म जीवन] धार्मिक कार्यों को संपन्न करा कर जीवन यापन करने वाला ब्राह्मण।

धरम-जुद्ध–सं०पु०यौ० [सं० धर्म-युद्ध] कपट रहित वीरतापूर्वक युद्ध।

धरमचरया–सं०स्त्री० [सं० धर्मचर्या] धर्म का आचरण।

धरमदेवी–सं०स्त्री०—चारण कुलोत्पन्न एक देवी।

धरमचारी–वि० [सं० धर्मचारिन्] धर्म का आचरण करने वाला।

धरमचिंतन–सं०पु०यौ० [सं० धर्मचिंतन] धर्म संबंधी बातों का विचार, धर्म की भावना।

धरमज–सं०पु० [सं० धर्मज] १ धर्म-पुत्र युधिष्ठिर. २ नरनारायण।

धरमदान–सं०पु०यौ० [सं० धर्मदान] ग्रहों आदि की शान्ति तथा कोई विशेष फल प्राप्ति हेतु दिया जाने वाला दान।

धरमधक्को, धरमधक्कौ–सं०पु०यौ० [सं० धर्म+रा० धक्को] १ धर्म की आड़ लेकर दिया जाने वाला धक्का, धर्म की आड़ में दिया जाने वाला धोका।

धरम-धरा–सं०स्त्री०यौ० [सं० धर्मधरा] १ पुण्य भूमि, भारतवर्ष। (डि.को.)

धरम-ध्यान–सं०पु०यौ० [सं० धर्म+ध्यान] १ धर्म-चिंतन, धर्म-विचार में तल्लीनता. २ चार प्रकार के ध्यान में एक प्रकार का ध्यान। (जैन)

रू०भे०—धम्मज्भांण।

धरम-धारी–वि० [सं० धर्मधारिन्] धर्म का आचरण करने वाला, धर्म को निभाने वाला। उ०—पहि प्रमांणै जुगति जाणै, अति बतांणै जगम्र आखो। धर्मधारी प्रसिद्धि प्यारी, ललण भारी कुंमर लाखो।

—ल.पि.

धरम-धुज—१ राजा, नृप. २ देखो 'धरमध्वज' (रू.भे.)

धरम-धूरीण–वि० [सं० धर्मधूरीण] धर्म में अगुआ।

उ०—१ त्यां माही एक साह महा चतुर, सकळ कळा-प्रवीण, धरम-धूरीण, अनेक जात्रा, अनेक तीरथ को करणहार माल लेय वाणिज नूं देसांतर गयो।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ धोरी धरमधूरीण, निगम आगम अवतारी। दरसण अर उपनिसद, जिणां री टोळी न्यारी।—दरादेव

धरम-ध्वज–सं०पु० [सं० धर्मध्वज] धर्म का आडंबर करने वाला व्यक्ति, ढोंगी, पाखंडी।

धरम-नाथ–सं०पु० [सं० धर्मनाथ] जैनों के १५ वें तीर्थंकर का नाम।

धरम-नाभ–सं०पु०यौ० [सं० धर्मनाभ] विष्णु।

धरमनिस्ठ–वि० [सं० धर्मनिष्ठ] धर्म के प्रति जिसका विश्वास हो, धार्मिक।

धरमनिस्ठा–सं०स्त्री० [सं० धर्मनिष्ठा] धर्म के प्रति विश्वास।

धरमनीति–सं०स्त्री० [सं० धर्मनीति] १ ७२ कलाओं में से एक (व.स.) २ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक (व.स.)

धरमपण–सं०पु० [सं० धर्मत्व] धर्माचरण करने वाला, धर्मपरायण।

उ०—दइवांण रुद्र एकादसां, प्रांणपूर पति धरमपण। कविराय धीर कवि मंछ कहै, जय जय स्री रघुवीरजण।—र.रू.

धरमपतनी–सं०स्त्री० [सं० धर्मपत्नी] धर्मशास्त्र की रीति से विवाहित स्त्री।

धरम-पथ–सं०पु०यौ० [सं० धर्म-पथ] धर्मशास्त्र के अनुसार आचरण करने का ढंग। उ०—तहां सकळ धरम-पथ हालै।

—सिंघासण बत्तीसी

धरमपाळ–सं०पु०यौ० [सं० धर्मपाल] १ धर्म का पालन या रक्षा करने

वाला. २ सजा या दंड जिसके भय से लोग धर्म का पालन करते हैं. ३ राजा दसरथ के एक मंत्री का नाम।

घरमपुत्त-सं०पु० [सं० धर्मपुत्र] १ वह जो औरस पुत्र न हो परन्तु जिसे पुत्र मान लिया जाय. २ युधिष्ठिर, कंक. ३ नर नारायण।

रू०भे०—धम्मपुत्त, घरमपूत, घरमपूतु।

घरमपुरी-सं०स्त्री० [सं० धर्मपुरी] १ वह स्थान जहां मृत्यु के उपरांत मनुष्य के कर्मों के सम्बन्ध में विचार होता है, यमपुर.

२ न्यायालय, कचहरी।

घरमपुरो-सं०पु० [सं० धर्म+पुर] १ एक राजकीय विभाग विशेष।

वि०वि०—इस विभाग के अन्तर्गत अपाहिजों की सहायतार्थ खर्च की व्यवस्था होती है तथा देव-मन्दिरों का प्रबन्ध और उनके विभिन्न खर्चों की व्यवस्था भी इसी के द्वारा होती है।

२ दान, पुण्य।

घरमपूत, घरमपूतु—देखो 'घरमपुत्र' (रू.भे.) उ०—गयणंगणि वांणी पडीय, 'खमि दमि संजमि एकु। घरमपूतु जगि ऊपनउ, सत्यसीलि सुविवेकु।—पं.पं.च.

घरमफूल-सं०पु० [सं० धर्म+फुल्ल] स्वर्ग (अ.मा.)

घरमबुद्धि-सं०स्त्री० [सं० धर्मबुद्धि] भले और बुरे का ज्ञान।

घरमभाई-सं०पु० [सं० धर्म+भ्रातृ] १ वह व्यक्ति जिसे भाई मान लिया गया हो।

(स्त्री० धरम बैं'न)

वि०वि०—स्त्री जब पुरुष को भाई मानती है तो उसके राखी बांधती है। इस प्रकार वह पुरुष उस स्त्री के लिए 'घरम भाई' बन जाता है तथा वह स्त्री 'धरम बैं'न' बन जाती है। पुरुष जब किसी अन्य पुरुष को भाई मान लेता है तब वह उसके राखी बांधता है अथवा परस्पर पगड़ी बदल ली जाती है जिसे 'पोतिया बदळ भाई' भी कहते हैं। इसी प्रकार स्त्री जब किसी अन्य स्त्री को बहन मान लेती है तो वह उसके राखी बांधती है अथवा परस्पर ओढ़ने के वस्त्र बदल लिए जाते हैं। इस प्रकार वे 'ओडणा बदळ बैं'नां' कहलाती हैं।

घरमभिक्षुक-सं०पु० [सं० धर्मभिक्षुक] वह जिसने धर्मार्थ भिक्षावृत्ति ग्रहण की हो।

घरमभीरु-वि० [सं० धर्मभीरु] जो धर्म के भय के कारण अधर्म करने से डरता हो।

घरममंढ-सं०पु० [सं० धर्म+मण्डप] विवाह मण्डप (चौंरी) में अग्नि की परिक्रमा (भांवरी) के पश्चात् पिता की ओर से पुत्री को पहनाया जाने वाला पहनावा।

वि०वि०—'घरममंढ' पहनावा उसी दशा में दिया जाता है जब पिता ने पुत्री का विवाह बिना रुपये या धन लिये किया हो।

रू०भे०—घरममढ़।

घरममढ़—देखो 'घरममंढ़' (रू.भे.)

घरमराज-सं०पु० [सं० धर्मराज] १ धर्म का पालन करने वाला. २ राजा, नरेश. ३ यमराज (डि.को.). ४ युधिष्ठिर, कंक।

उ०—रांमत चौपड़ राज री, है धिक बार हजार। धण सूंपी लूंठां धकै, घरमराज धिक्कार।—रांमनाथ कवियौ

रू०भे०—ध्रमराज।

घरमलाभ-सं०पु० [सं० धर्मलाभ] जैन साधुओं द्वारा दिया जाने वाला आशीर्वाद।

रू०भे०—ध्रमलाभ।

घरमलेस्या-सं०स्त्री० [सं० धर्मलेश्या] तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या के समूह का नाम।

वि०वि०—देखो 'लेस्या'।

रू०भे०—धम्मलेसा।

घरमवंत-सं०पु० [सं० धर्मवंत] धर्मात्मा। उ०—सोहवत पंडितां, घरमवंतां री नैं भला सांचा महापुरुसां रै दरसणां री साथ जिका आपनूं आच्छा स्वभावां संसार नूं दिखावै।—नी.प्र.

घरमवप-सं०पु० [सं० धर्मवपु] एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

उ०—वज्रनाभ सुत सुगण घरमवप। ते सुत विधित नरेस उग्र तप।
—सू.प्र.

घरमवाहन-सं०पु०यौ० [सं० धर्मवाहन] यमराज का वाहन महिष, भैंसा (डि.को.)

घरमविचार-सं०पु० [सं० धर्मविचार] स्त्री की चौंसठ कलाओं में से एक।

घरमविवाह-सं०पु० [सं० धर्म=पुण्य, दान+विवाह] वह विवाह जिसमें वर या उसके सम्बन्धियों से कन्या के बदले में धन नहीं लिया जाता है।

वि०वि०—प्रायः ऐसा विवाह स्त्रियों का पुनर्विवाह होने वाली जातियों में किसी वृद्ध की मृत्यु के बारहवें दिन के भोज के अवसर पर किया जाता है अथवा गंगा-स्नान कर के लौटने के पश्चात् गंगाजल बरताने के उपरान्त किया जाता है।

वि०वि०—देखो 'गंगाजळ'।

रू०भे०—धरमव्याह।

घरमवीर-सं०पु० [सं० धर्मवीर] १ वह व्यक्ति जो धर्म करने में साहसी हो।

घरमव्याध-सं०पु० [सं० धर्मव्याध] कौशिक नामक एक तपस्वी वेदाध्यायी ब्राह्मण को धर्म का तत्व समझाने वाला मिथिलापुर-निवासी एक व्याध।

घरमव्याह—देखो 'घरमविवाह' (रू.भे.)

घरमव्रता-सं०स्त्री० [सं० धर्मव्रता] धर्म नामक राजा की कन्या जो विश्वरूपा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। उसने पातिव्रत्य की प्राप्ति के लिए घोर तप किया था। मरीचि ऋषि ने उसे सबसे बड़ी पतिव्रता जान कर उसके साथ विवाह किया था।

घरमसभा-सं०स्त्री० [सं० धर्म सभा] १ न्यायालय, अदालत.

२ जहां धार्मिक विषयों की चर्चा या उपदेश हो ।

रू०भे०—धरम्म सभा, ध्रम-सभा ।

धरमसाळा-सं०स्त्री० [सं० धर्मशाला] १ वह स्थान जहां यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था हो. २ पुन्य के लिए नियमपूर्वक दान आदि दिया जाने वाला स्थान, सत्र । उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिनांनति देवळां री पावतो धरमसाळा, दांनसाळा मंडोजै छै। मांहे जोगेसर पवन रा नाभणहार त्रिकुटी रा घडावणहार, सूनरांन रा करणहार उरधबाहु ठाडेसरी दिगंबर सेतंबर निरंजनी आकास-मुनी ।—रा.सा.सं.

उ०—२ जे नगर मांहइ दांनसाळा, पोसधसाळा, धरमसाळा, गढ़ मढ़ मंदिर प्रकार, चुरासी चुहटांनी हटस्रेणि, मांहइ वस्त संपूरण वरतइ ।—व.स.

धरमसावरणी-सं०पु० [सं० धर्मसावर्णि] ग्यारहवां मनु (पौराणिक)

धरमसासतर, धरमसास्त्र-सं०पु० [सं० धर्मशास्त्र] समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार सम्बन्धी नियमों का ग्रंथ। उचित आचार व्यवहार की वह व्यवस्था जो किसी जन-समूह के लिए किसी महात्मा या आचार्य की ओर से होने के कारण मान्य समझी जाती हो ।

रू०भे०—धम्मसासतर, ध्रमसास्त्र ।

धरमसास्त्री-सं०पु० [सं० धर्मशास्त्री] धर्मशास्त्र को जानने वाला, विद्वान्, पण्डित ।

धरमसीळ-वि० [सं० धर्मशील] धर्मानुसार आचरण करने वाला, धर्मात्मा ।

धरमसुभाव-सं०पु० [सं० धर्म स्वभाव] तालाब, सरोवर (अ.मा.)

धरमांग-सं०पु० [सं० धर्माङ्ग] बगुला ।

धरमातमा, धरमात्मा-वि० [सं० धर्मात्मन्] जो धर्मानुसार आचरण करता हो, धार्मिक । उ०—जणी मांहे एक रजपूत रहे, सो वडो उमराव अर वडो ग्यांनी धरमात्मा । उणी आगे एक बांमण कथा वांचे ।—गांम रा धणी री वात

रू०भे०—ध्रमआतमा ।

धरमादे, धरमाई-क्रि०वि० [सं० धर्मार्थ] धर्म या परोपकार के लिये ।

धरमादो-सं०पु० [सं० धर्म] दान, पुण्य, धर्म ।

उ०—१ सेठां ! भगवांन रा दरबार में मूंडो कीकर बतावोला ? सेठ हंस्या नै बोल्या—'धरमादो कोय बंटै है नी, पैं'ली घर में सूं मूळा री फाची व्है जिसा काड नै दिया हा, ग्यात में नाक ऊंचो राखण नै ।—रातवासो

उ०—२ थारै आंमियां-री भाव कुण समझतो हुसी ? ओझाजी-रै घरै धरमाई-रा डांगर मोकळा ऊभा हुसी ।—वरसगांठ

क्रि०प्र०—खाणो, करणो, खाणो, देणो, न्हांकणो, पाणो, राखणो ।

धरमादो-खातो-सं०पु०यौ० [सं० धर्म+अ० खत] १ व्यापारियों की बहियों में पुण्यार्थ दिया जाने वाला धन का खाता. २ व्यापारियों को पुण्यार्थ निकाली हुई रकम. ३ पुण्यार्थ ।

धरमाधिक, धरमाधिकरणिक-सं०पु० [सं० धर्माधिकरणिक] १ न्यायाधीश, धर्माधिकारी । उ०—१ राजा जुवराज कुमार राजेस्वर महामंडळे-स्वर सांमंत लघू सांमंत तलवर तंत्रपाळ चतुरसीतिक ताडकपति मंत्री महामंत्री ग्रहवाहक स्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार धरमाधिक ······ ।—व.स.

उ०—२ जुवराज कुमार राजेस्वर महामंडळेस्वर सांमंत लघु सांमंत तलवर तंत्रपाळ चतुरसीतिक ताडकपति मंत्रि, महामंत्रि ग्रहवाहक स्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक धरमाधिकरणिक ।—व.स.

२ वह स्थान जहां पर न्यायाधीश या राजा मुकदमों पर विचार करता हो, विचारालय ।

रू०भे०—धरमाधिगरणा, धरम्माधिगरणा ।

धरमाधिकार-सं०पु० [सं० धर्माधिकार] १ धार्मिक कृत्यों का प्रबंध या व्यवस्था. २ न्यायाधीश का पद ।

धरमाधिकारी-सं०पु० [सं० धर्माधिकारिन्] १ धर्म अधर्म की व्यवस्था देने वाला, न्यायाधीश. २ पुण्य खाते का प्रबंधकर्ता, दानाध्यक्ष । ३ धर्मराज ।

धरमाधिगरणा—देखो 'धरमाधिकरणिक' (रू.भे.)

उ०—सेनापति मंत्रि महामंत्रि रांणा स्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा देवगरणा नायक दंडनायक अंगलेलक भांडागारिक संधिविग्रही साहणी मसाहणि ।—व.स.

धरमारण-सं०पु० [सं० धर्मारण्य] १ गया के अन्तर्गत एक तीर्थ स्थान. २ तपोवन. ३ वह पुण्य भूमि जहां पर गुरुपत्नी तारा के हरण के कुकृत्य से धर्म-व्याकुल होकर चंद्रमा जा छुपा था ।

धरमारथ-क्रि०वि० [सं० धर्मार्थ] धर्म के निमित्त, परोपकार के लिये ।

धरमावतार-सं०पु० [सं० धर्मावतार] १ अत्यन्त धर्मात्मा, साक्षात् धर्म-स्वरूप. २ युधिष्ठिर. ३ वह पुरुष जो धर्माधर्म का निर्णय करे, न्यायाधीश ।

धरमासन-सं०पु० [सं०धर्मासन] न्यायाधीश का वह स्थान, कुर्सी, आसन या चौकी जिस पर बैठ कर वह न्याय करता है ।

धरमास्तिकाय-सं०पु० [सं० धर्मास्तिकाय] गति परिणाम वाले जीव और पुद्गलों की गति में जो सहायक हो (जैन)

रू०भे०—धम्मत्थिकाय ।

धरमियोवीर—देखो 'धरम-भाई' (अल्पा.)

उ०—सूवटा रे तूं धरमियो रे वीर, देस कठेई जामण जाया नैं आवतो । बाई ए मन में धीरज राख, वीरो वीरो मनैं आवतो ।
—लो.गी.

धरमी-वि० [सं० धर्मिन्] (स्त्री० धरमण, धरमणी) धर्मात्मा, पुण्यात्मा, धार्मिक । उ०—१ आज धरा, धरमी, धूंधळो, काळी कांठळ मेह ओ । आज नै वरसै, धरमी, मेहुड़ा, भीजै तंबू री डोर ओ ।—लो.गी.

उ०—२ घरमी नर ऊपर कोमळ कर धारै। पापी पुरुसां नै सदव्रत संहारै।—ऊ.का.

२ गुण विशिष्ठ या धर्म, जिसमें धर्म हो.

३ धर्म या मत को मानने वाला।

सं०पु०—१ धर्मात्मा मनुष्य, पुण्यात्मा व्यक्ति।

उ०—अविणासी को हलकारौ जग में आयौ, लोकन में सक्ति अलौकिक लारै लायौ। स्रुति समाचार को सार पुकार सुणायौ, घरमी सुख धार अधरमी सीस धुणायौ।—ऊ.का.

२ विष्णु. ३ यम (अ.मा.) ४ युधिष्ठिर. ५ धर्म का आश्रय या गुण, धर्म का आधार।

रू०भे०—धरंमी, धरम्मी, ध्रमी, ध्रम्मी।

धरमुरळी—देखो 'मुरळीधर' (रू.भे., नां.मा.)

धरमेलौ—सं०पु० [सं० धर्म्म+रा०प्र०एलौ] भाईचारा, बन्धुत्व

उ०—थारै बाप अर रामलै-रै बाप में धरमेलौ हौ। तूं तौ टाबर हौ।—वरसगांठ

धरमोपदेस—सं०पु० [सं० धर्मोपदेश] १ धर्म का तत्त्व समझाने या धर्म की ओर प्रवृत्त करने के लिये दिया गया व्याख्यान या कथन, धर्म की शिक्षा. २ धर्म की व्यवस्था, धर्मशास्त्र।

धरमोपदेसक—सं०पु० [सं० धर्मोपदेशक] धर्म का उपदेश देने वाला।

धरम्म—देखो 'धरम' (रू.भे.) उ०—१ भिड़ै ब्रह्म खत्रिय धरम्म अभ्यास। वधै जुध स्यांम-ध्रमी पति व्यास।—सू.प्र.

उ०—२ केवी नूं गढ़ कूंचिआं, सूंपै छोड सरम्म। मुख ज्यांरा दीठां मिटै, धर रजपूत धरम्म।—बां.दा.

उ०—३ खंध न फेरै धुर वहै, धवळा एह धरम्म। राघव ज्यां री राखही, सींगां तणी सरम्म।—बां.दा.

धरम्मसभा—देखो 'धरम सभा' (रू.भे.)

धरम्माधिकरणसभा—सं०स्त्री०यौ० [सं० धर्म्माधिकरणसभा] धर्माधिकारियों, न्यायाधीशों अथवा निर्णायकों की सभा। उ०—स्रीकरणसभा, व्ययकरणसभा, धरमाधिकरणसभा, देवकरणसभा, पंडितसभा, लेखकसभा, भांडागारिक, कोस्टाकार, सत्राकार।—व.स.

धरम्माधिगरणा—देखो 'धरमाधिकरणिक' (रू.भे.)

उ०—सभावरणनं; रायरांण मंडळिक आखंडळीक सामंत महासामंत लघुसामंत स्रीगरणा वयगरणा धरम्माधिगरणा अमात्य महामात्य सुहासोळा।—व.स.

धरम्मी—देखो 'धरमी' (रू.भे.)

धरर—सं०स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष। उ०—वोलियौ मुख चख किया चांपौ वयण, भड़ां पग मांडजौ सधर रिण री भुयण। लाभ छत्री धरम वहौ ससत्रां लयण, गाज नाळां धरर धूंवा ढकियौ गयण।—रिवदांन वारहठ

२ देखो 'धररा'ट' (रू.भे.)

धररा'ट—सं०स्त्री० [अनु०] १ कंपन, थर्राहट. २ ध्वनि विशेष।

रू०भे०—धरर।

धरवजर—सं०पु० [सं० वज्र+धर] इन्द्र, देवराज, सुरपति (ह.नां.)

धरवणौ, धरवबौ—क्रि०स० [सं० ध्रै=तृप्तौ] १ तृप्त करना, अघाना।

उ०—मोटी उफण्यौ मेह, आयौ धरती धरवतौ। मुझ पांती रौ अेह, छांट न वरस्यौ जेठवा।—जेठवा

२ पीटना, मारना. ३ रखना.

४ देखो 'धरणौ, धरबौ' (रू.भे.)

धरवणहार, हारौ (हारी), धरवणियौ—वि०।

धरविओड़ौ, धरवियोड़ौ, धरव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धरवीजणौ, धरवीजबौ—कर्म वा०।

धरवर—सं०पु० [सं० धरा+वर] राजा, नृप। उ०—नरइंद 'अभौ' नवकोट नाथ, सरि करण सतरि धरवर समाथ। अहमंद नयर खाटण अनूप, रस वीर प्रगट घट विकट रूप।—रा.रू.

धरवाणौ, धरवावौ—क्रि०स० ('धरणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ देखो 'धरणौ, धरबौ'।

('धारणौ' क्रिया का प्रे०रू०) २ देखो 'धारणौ, धारबौ'।

धरवायोड़ौ—भू०का०कृ० ('धरियोड़ौ' का प्रे०रू०) देखो 'धरियोड़ौ'।

(स्त्री० धरवायोड़ी)

धरवियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ तृप्त किया हुआ, अघाया हुआ.

२ पीटा हुआ, मारा हुआ. ३ रखा हुआ.

४ देखो 'धरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धरवियोड़ी)

धरसंडौ—देखो 'धरसूंडौ' (रू.भे.)

धरसण, धरसणी—सं०स्त्री० [सं० धर्षिणी] १ दुश्चरित्रा, कुलटा, व्यभिचारिणी (डि.को.) २ वेश्या, रण्डी।

धरसधर—सं०पु० [सं० धराधर] पर्वत, पहाड़।

उ०—मंत्री तहां मयण वसंत महीपति, सिला सिंघासण धरसधर। माथै अंब छत्र मंडांणा, चलि वाइ मंजरि ढळि चमर।—वेलि.

धरसुता—सं०स्त्री० [सं० धरा-सुता] पृथ्वी की पुत्री; सीता।

धरसूंडौ—सं०पु० [देश०] लकड़ी या लोहे का नीचे की ओर झुका हुआ वह डंडा जो बैलगाड़ी के अग्रभाग में लगा हुआ होता है। इसे बिना जुती हुई गाड़ी को जमीन पर ठहराने के लिये तथा गाड़ी के अग्र भाग को धरातल से कुछ ऊंचा रखने के लिये लगाया जाता है।

(डि.को.)

रू०भे०—धरसंडौ, धरहूंडौ।

धरहड़णौ, धरहड़बौ, धरहडणौ, धरहडबौ—क्रि०अ० [अनु०] १ कंपित होना, थर्राना। उ०—धरहड़ै क्रोध परचंड भूप। भुजडंड अड़ै अहमंड भूप।—वि.सं.

२ ध्वनि करते हुए हिलना। उ०—झळहळीय सायर सत्त सुरगिरि सिगु सिगु खडखडी। खणु एकु असरणु हूउं तिहूयणु राय सयल वि धरहडी।—पं.पं.च.

३ देखो 'घरहरणो, घरहरबो' (रू.भे.)

घरहर-संस्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष। उ०—कोपाहर की पंकति जळ बादळ रा दळांण। जळ-बादळ को घरहर मांनूं दिल्ले महिरांण। —सू.प्र.

घरहरणो, घरहरबो-क्रि०स० [अनु०] १ वर्षना, जल प्लावित करना। उ०—काळी करि कांठळि ऊजळ कोरण, धारे स्रांवण धरहरिया। गळि चालिया दिसोदिसि जळग्रभ, थंभि न विरहिण नयण थिया। क्रि०अ०—२ गर्जना, गर्जन करना। —वेलि.

उ०—घुर घुर प्रासादां अंबर घरहरियो। घोरा डंबर में संबर घरहरियो। साईं सर सरिता भाईं इकरारा। घोळा जळधर सूं घाई जळधारा।—ऊ.का.

३ तोप, बंदूक आदि की ध्वनि होना, धड़धड़ शब्द होना। उ०—हमगीर करण जुध हैमरां, घोम अरावां घरहरै। चिलतह छतीस आयध चुरस, कुळ छतीस राजस करै।—सू.प्र.

४ नक्कारे का बजना.

५ देखो 'धड़हड़णो, धड़हड़बो' (रू.भे.) उ०—जमी पुड़ घरहरै उडै हकां जरक, देस अरणां धरक पीठ दीधी। हचण रण सुकर जम दाढ़ ग्रहियां हरक, करी वाळै असुंट गरक कीधी। —रावत गुलाबसिंह चूंडावत रो गीत

घरहरियोड़ी-भू०का०कृ०—१ गरजा हुआ. २ दहाड़ा हुआ. ३ धड़ धड़ शब्द किया हुआ. ४ बर्षाया हुआ, कांपा हुआ. (स्त्री० घरहरियोड़ी)

घरहूंडो—देखो 'घरसूंडो' (रू.भे.)

घरां-पती—देखो 'धरापति' (रू.भे.) उ०—सभापती लखप्पती सुरिंद नरांपती, धरांपती निरंद गढ़ांपती करांमती।—ल.पिं.

धरा-संस्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, भूमि, जमीन (डिं.को.) उ०—१ आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खेंचि उरा। धणियां मरे न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा।—बां.दा.

उ०—२ इंद्र नै चंद्र नागेंद्र चित चमकिया, धड़हड़ची सेस नै धरा धूजे।—प.च.चौ.

२ संसार, दुनिया। उ०—सखा जग में सतसंगत सार; विना सतसंग न ग्रह्य विचार। धरा सतसंग विनां नहि ध्यांन, विनां सतसंग न ग्यांन विग्यांन।—ऊ.का.

३ राज्य। उ०—रच्यो फेर प्रासाद बाहादरा रो। घनो भाग भू भाग भाठी धरा रो।—मे.म.

४ गर्भाशय. ५ एक वर्ण वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और गुरु होता है।

धराउ, धराऊ—देखो 'धुराऊ' (रू.भे.) उ०—आज धराऊ आभो धूंधळो ए पणिहारी ए लो।—लो.गी.

धराज-संपु०—१ टेढ़ी तिरछी लकड़ी को सीधी करने का बढ़ई का एक औजार।

२ देखो 'धिराज' (रू.भे.) उ०—दुजी वार धराज दियो दुग, सांमण जबत किया हिन-साथ। दळ सिणगार मांडियो 'देवै', हिवां काज उदक नै हाथ।—लखजी बारहठ

धराड़णो, धराड़बो—देखो 'धराणो, धराबो' (रू.भे.)

धराड़णहार, हारो (हारी), धराड़णियो—वि०।

धराड़िओड़ो, धराड़ियोड़ो, धराड़योड़ो—भू०का०कृ०।

धराड़ीजणो, धराड़ीजबो—कर्म वा०।

धराड़ियोड़ो—देखो 'धरायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० धराड़ियोड़ी)

धराणो, धराबो-क्रि०स०—१ रखाना, ठहराना। उ०—थो उठाय एकंत धरायो, जा पछै नृप सिद्ध जगायो।—सू.प्र.

२ निश्चित कराना, मुकर्रर कराना। उ०—फेर मुहुरत धराय राजा भोज सिंघासण पास आयो।—सिंघासण बत्तीसी

३ स्थित कराना। उ०—अनइ तरुआरि स रमता भाला उछाळता हाक हीक करता एहवे पायके परिवारिउ, छत्र धरातइ चमर ढोळा-तइ।—व.स.

धराणहार, हारो (हारी), धराणियो—वि०।

धरायोड़ो—भू०का०कृ०।

धराईजणो, धराईजबो—कर्म वा०।

धराड़णो, धराड़बो, धरावणो, धरावबो—रू०भे०।

धरातळ-संपु० [सं० धरातल] १ भूमि, पृथ्वी. २ लंबाई चौड़ाई का गुणनफल ३ सतह।

धरातनज-संपु० [सं०] मंगल ग्रह।

धराथंब, धराथंभ-संपु० [सं० धरा+स्तम्भ] १ राजा, नृप (डिं.को.) उ०—अवतार उदार लाखो इसो, जगां जेठ दातार 'जेहे' जिसो। धरा-थंभ जाड़ेज धूनै धड़ै, अवै वाज जेहाज गीतां-चढै।—ल.पिं.

२ योद्धा, वीर। उ०—छत्र धारी दूजा 'जगा' धराथंभ नदा छात। 'सिभू' रा सिघळी 'दोला' हरा सुरतांण।—वनजी सिढ़ियो

रू०भे०—धरा रो थंभ।

धराधर-संपु० [सं०] १ शेषनाग। उ०—रैवतां वाजीय पौड़ रड़क। धराधर धूजीय कोम धड़क।—सू.प्र.

२ पर्वत, पहाड़ (ह.नां., अ.मा.) ३ विष्णु।

रू०भे०—धारीधर, धारीधरा।

धरा-धव-संपु०यौ० [सं०] राजा, नृप।

उ०—अर म्हारै तो धरा पै धरा-धवां रै धांम धांम धारा धारा री धमचक देखि ओरठै भी पग री पूरणता भरावीजै।—वं.भा.

धराधार-संपु०यौ० [सं०] शेष नाग (डिं.को.)

यौ०—धरा-धार-धारी।

धराधारधारी-संपु०यौ० [सं०] महादेव, शिव।

धराधिपति-संपु०यौ० [सं०] राजा, नृप।

धरा-धीस-संपु० [सं० धराधीश] १ राजा, नृप (डिं.को.)

२ विष्णु, ईश्वर। उ०—नरहर नाग नाथ नारायण गोव्यंद गोप-वर। घराधीस धांनख गिरधारी, कमळाकंत सकमळकर।—र.ज.प्र.

घरानायक-सं०पु० [सं०] राजा, नृप।

उ०—भूंठी घरी घूंवड घाइ ताडइ, अक्रदंती द्रूपदी वूंब पाडइ। घाए घरानायक राखि राखि, ए पापीया नइं फळ दाखि दाखि।
—विराट पर्व

घरापति, घरापती-सं०पु० [सं० घरापति] राजा, नृप।

उ०—घरम बिनां देखौ धरणी में, भये किते हक भंगी। घरम प्रताप घरापति धारत, रजधांनी बहुरंगी।—ऊ.का.

रू०भे०—घरपत, घरपति, घरपती, घरपत्त, घरांपती।

घरापुत्र-सं०पु० [सं०] मंगल ग्रह।

घरापूर-वि०—पूर्ण, पूरी। उ—कहि घरापूर घुर कथा। विसवा-मित्र विवध।—रांमरासौ

घरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ निश्चित कराया हुआ, मुकर्रर कराया हुआ. २ रखाया हुआ, ठहराया हुआ. ३ स्थित कराया हुआ।
(स्त्री० घरायोड़ी)

घरारण-सं०स्त्री० [सं० घरा] भूमि, घरा। उ०—परिवारण वारण सार संभारण तारण कारण आप लियौ। आरोह खगारण घाय घरारण चक्र चलारण काज कियौ। घिन आप अपारण सोइ विचा-रण टेर उचारण एक ररौ।—करुणा सागर

घरारूप—पर्वत तुल्य। उ०—घरारूप लंबी करां धूप धारै। नरां एक एकौ हजारां निवारै।—वं.भा.

घरा-रौ थंभ—देखो 'घराथंभ' (रू.भे., डिं.को.)

घराळ-सं०पु०—१ भूमि पर विचरने वाला, स्थलचर।

उ०—जग जाळ असराळ संभाळ छळै, इन भक्ख सदा भव सिंधु मही। नभ नाळ तंताळ घराळ मिळै, त्रयलोक सुरप्पति विद्ध सही।
—करुणा सागर

२ देखो 'घाराळी' (मह., रू.भे.) उ०—घसम्मसि घूहड़ धूणि घराळ, कमध्धज कोपि भयंकर काळ।—राज रासौ

३ देखो 'धुराळ' (रू.भे.)

घराव-सं०पु०—१ पशु. २ पशुधन।

वि०—मूर्ख।

घरावणौ-सं०पु०—'रखवाना' या 'धरवाना' क्रिया का भाव।

घरावणौ, घरावबौ—१ दिलवाना, देराना।

उ०—इतरइ आसउदे नउ गागोरणउ कहि छइ—सो नांहि हो ठाकुरे। इसउ कीजइ अेक घराळां की घार खिरी छइ ते पुनरपि घरावजइ, घाग्रे पाटा बांधिजइ।—अ. वचनिका

२ देखो 'धराणौ, घरावौ' (रू.भे.) उ०—सांप्रत मिळया सुख सागें, धुनि में ध्यांन घरावै।—ऊ.का.

घरावणहार, हारौ (हारी), घरावणियौ—वि०।

घराविओड़ौ, घरावियोड़ौ, घराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घरावीजणौ, घरावीजबौ—कर्म वा०।

घराविघूंसण-सं०स्त्री० [सं० घरा+विध्वंसिनी] तलवार (अ.मा.)

घरावियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दिलवाया हुआ।

२ देखो 'घरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घरावियोड़ी)

घरावू—देखो 'घुराऊ' (रू.भे.)

घराही-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

घरित्री, घरित्री—देखो 'घरती' (रू.भे.) उ०—माफी नर नाइक फौज रौ मौज रौ महिरांण। दातार कवि हित दाखणौ जस राखणौ घण जांण। भारथि खळां दळ भांजणौ गढ़ गांजणौ गहगीर। धरित्री सिरि नांम धारणौ कुळ तारणौ लख धीर।—ल.पिं.

घरि-धारण-सं०पु० [सं० धुर-धारण] बैल, वृषभ (डि.नां.मा.)

घरिया-सं०स्त्री०—पँवार वंश की एक शाखा (बां.दा.ख्यात)

घरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ रूप ग्रहण किया हुआ, आरोपित किया हुआ, धारण किया हुआ. २ व्यवहार के लिये हाथ में लिया हुआ, ग्रहण किया हुआ. ३ निश्चय किया हुआ, विचार ग्रहण किया हुआ. ४ प्रतीत किया हुआ, महसूस किया हुआ. ५ बैठाया हुआ, ग्रहण किया हुआ. ६ स्मरण किया हुआ. ७ पास में रखा हुआ, रक्षा में रखा हुआ. ८ स्वीकार किया हुआ. ९ चौकन्ना किया हुआ, ध्यान घरा हुआ. १० संकल्प किया हुआ, दृढ़ निश्चय किया हुआ.

११ शोभार्थ अथवा रक्षार्थ धारण किया हुआ, देह पर रखा हुआ, पहना हुआ. १२ स्थापित किया हुआ, स्थित किया हुआ, ठहराया हुआ. १३ प्रकट किया हुआ, रखा हुआ. १४ (किसी कार्य में) संलग्न हुवा हुआ, क्रियाशील हुवा हुआ. १५ रखेली रखा हुआ.

१६ वहन किया हुआ, उत्तरदायित्व लिया हुआ. १७ (गर्भ, हर्ष, शोक, उत्साह आदि) धारण किया हुआ, ग्रहण किया हुआ.

१८ गिरवी रखा हुआ, बंधक रखा हुआ. १९ किसी वस्तु को मज-बूती से पकड़ा हुआ या जोर से स्पर्श किया हुआ जिससे वह इधर-उधर नहीं जा सके अथवा हिल नहीं सके. २० डींग मारा हुआ. कहा हुआ. २१ प्रहार किया हुआ, मारा हुआ.

२२ वश में किया हुआ।
(स्त्री० घरियोड़ी)

घरू-सं०पु० [सं० ध्रुपद] ध्रुपद, (संगीत)

उ०—आंगणि जळ तिरप उरप अलि पिंअति, मरुत चक्र फिरि लियत मरू। रांमसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चंद घरू।—वेलि.

घरेट-सं०स्त्री० [सं० दृष्टि] दृष्टिदोष, नजर।

घरेती—देखो 'घरती' (रू.भे.)

घरे-घरे-वेळा—देखो 'ग्रह-ग्रह-वार' (रू.भे.)

घरेस-सं०पु० [सं० घरा+ईश] १ राजा, नृप, नरेश।

उ०—१ संग्रांमसिंह पट्टप नरेस। घरि छत्र हुवौ संभर घरेस।
—वं.भा.

२ शेषनाग। उ०—अरेस असेस दहेस अभंग, घरेस सुरेस नरेस सधीर।—र.ज.प्र.

उ०—२ उमा-देव पातिसाह-रा कटक-बंध माइ जुहइ कोन नांहि संभ्रात हुवा। सुरांम-सुरांम का ढोल वागा, तव जाइ मे गुडरवद धवळहर दीसिवा लागा।—प. चनिका

२ वह गोल इमारत जो ऊपर तक खंभे की तरह बनी हुई हो तथा जिसमें चढ़ने के लिये भीतर की ओर जीना बना हुआ हो, मीनार।

रू०भे०—धवळहर, धमळहर, धवरहर, धवळग्रिह, धवळगेह, धोळहर, धोळाहर, धोळेहर, धोळेहर, धौळहर।

धवळांग—देखो 'धवळंग' (रू.भे.)

धवळा—सं०स्त्री० [सं० धवला] १ श्वेत गाय. २ पार्वती, महामाया.

उ०—धवा धवळगर धव धू धवळा (देवि.)

३ एक नदी का नाम।

रू०भे०—धम्मळा।

धवळागर—देखो 'धवळगिर' (रू.भे.)

धवळागिर-वासणी—सं०स्त्री०यौ० [सं० धवल+गिरि+वासिनी] सरस्वती, देवी (ह.नां.)

धवळागिरि, धवळागिरी—देखो 'धवळगर' (रू.भे.)

उ०—१ पारंभ 'माल' पसरियो परखंड, अत साहस ऊमटियो। झिलणी जोध धवळगिर जंपै, हिंद्रवो रांणो हठियो।—नैणसी

उ०—२ ससिपाळ के संगि जु राजा हुंता, सु कुंदणपुर के निकट आया, तब नीलाडि हाथ दे देखण लागा, कहै छै—दूरि तें देखिजै छै, सु ऐ नगर छै, कि बादळ छै, कि धवळागिरि परवत छै, कि धउळहर छै।—वेलि.टी.

धवळित—वि० [सं० धवलित] सफेद किया हुआ, साफ किया हुआ, धवल, उज्वल, शुभ्र। उ०—धवळहरे धवळ दियै जस धवळित, घण नागर देतै सघण। सकुमळ सबळ सदळ सिरि सांमळ, पुहप वूंद लागी पहण।—वेलि.

धवळियोड़ो—भू०का०कृ०—१ उज्वल किया हुआ, सफेद किया हुआ.

२ चमकाया हुआ, उज्वल किया हुआ.

३ प्रकाशित किया हुआ।

(स्त्री० धवळियोड़ी)

धवळी—सं०स्त्री० [सं० धवली] सफेद गाय।

वि०स्त्री०—श्वेत, सफेद।

रू०भे०—धम्मळी, धोळी।

अल्पा०—धवळकी, धोळकी।

(मह० धोळ)

धवळेरण—सं०स्त्री० [सं० धवल+रा० ऐरण] मांगलिक गीत गाने वाली स्त्री।

रू०भे० धोळागर, धोळेरण।

धवळो—देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ मोगाहक मिगमद तणा, धवळा काळा टेर। कुण वन में जावस करै, साह तणो पफेर।—बां.दा.

उ०—२ धेनां दिन तीस लियां धवळै। हव कासूं-अ वीर बकूं हवळै।—पा.प्र.

उ०—३ तूं क्यूं गणपत नांम लै, जोतै धवळो ज्वार। गणपत हुंता आप री, धवळ उठावै भार।—बां.दा.

उ०—४ आतो संवळो क्यूं फिरै, धवळो चाबूकार। थो हिज पार उतारही, धळ सांम्हे अो भार।—बां.दा.

(स्त्री० धवळी)

धवांन—देखो 'ध्यांन' (रू.भे.) (ह.नां.)

धवा—सं०स्त्री० [सं० धवला] महामाया, शक्ति।

उ०—धवा, धवळगर धव धू धवळा। कमला कुबजा कनखी कमळा।—देवि.

धवाड़णो—देखो 'धवावणो' (रू.भे.)

धवाडणो, धवाड़बो—देखो 'धवाणो, धवाबो' (रू.भे.)

धवाड़णहार, हारो (हारी), धवाड़णियो—वि०।

धवाड़िओड़ो, धवाड़ियोड़ो, धवाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

धवाड़ीजणो, धवाड़ीजबो—कर्म वा०।

धवाड़िओड़ो—देखो 'धवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धवाड़ियोड़ी)

धवाणो, धवाबो—क्रि०स० [देश०] १ स्तन पान कराना.

२ 'धवणो' क्रिया का प्रे.रू.।

३ 'धावणो' क्रिया का प्रे.रू.।

धवाणहार, हारो (हारी), धवाणियो—वि०।

धवायोड़ो—भू०का०कृ०।

धवाईजणो, धवाईजबो—कर्म वा०।

धवड़ाड़णो, धवड़ाड़बो, धवड़ाणो, धवड़ाबो, धवड़ावणो, धवड़ावबो, धवराड़णो, धवराड़बो, धवराणो, धवराबो, धवरावणो, धवरावबो—रू०भे०।

धवायोड़ो—भू०का०कृ०—स्तन पान कराया हुआ।

(स्त्री० धवायोड़ी)

धवावणी—वि०स्त्री०—बच्चे को स्तन-पान कराने वाली।

रू०भे०—धवाड़णी।

धवावणो, धवावबो—देखो 'धवाणो, धवाबो' (रू.भे.) (अ्रमरत)

धवावणहार, हारो (हारी), धवावणियो—वि०।

धवाविओड़ो, धवावियोड़ो, धवाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

धवावीजणो, धवावीजबो—कर्म वा०।

धवावियोड़ो—देखो 'धवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धवावियोड़ी)

धवियोड़ो—देखो 'धमियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धवियोड़ी)

धवी—सं०स्त्री०—स्त्रियों के कान का आभूषण विशेष।

धवेचा—सं०स्त्री०—राव सलखा के पुत्र जैतमाल के वंशज राठोड़ों की एक उपशाखा।

धवेचो—सं०पु०—राठोड़ों की धवेचा उप शाखा का व्यक्ति।

घस-सं०पु० [अनु०] १ पानी, कीचड़ आदि में किसी भारी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द।
(मि० धच)
२ पानी में प्रवेश, डुबकी, गोता।
३ देखो 'घसळ' (रू.भे.)
उ०—ढकर करै अग्रजियो, चांमर सीस चढाय। घैधींगर करतो घसां, वसियो जळ में जाय।—गजउद्धार
घसक-सं०स्त्री० [देश०] धाक, ललकार।
घसकणौ, घसकबौ-क्रि०अ० [सं० दंशनं] १ नीचे को खिसक जाना, नीचे दब जाना, धँस जाना, बैठ जाना। उ०—१ मिळिया श्रणी श्रणी रसरो मिळ, सइंघे मूहे घूमिया सार। झालरियां नांखै भड भिळिया, धसकइ धरा वाजियइ धार।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ धमकनाळ धर धसकि, थाट परवस थरसल्लै। कमळसेस भिड़ कमठ, दाढ़ दाढ़ाळ दहल्लै।—सू.प्र.
२ फिसलना. ३ देखो 'धसणौ, धसबौ'।
धसकणहार, हारौ (हारी), धसकणियौ—वि०।
धसकश्रोड़ौ, धसकियोड़ौ, धसक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धसकीजणौ, धसकीजबौ—भाव वा०।
धसक्कणौ, धसक्कबौ, ध्रसकणौ, ध्रसकबौ, ध्रसक्कणौ, ध्रसक्कबौ—रू०भे०।
धसकाड़णौ, धसकाड़बौ—देखो 'धसकाणौ, धसकाबौ' (रू.भे.)
धसकाड़णहार, हारौ (हारी), धसकाड़णियौ—वि०।
धसकाड़िश्रोड़ौ, धसकाड़ियोड़ौ, धसकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धसकाड़ीजणौ, धसकाड़ीजबौ—कर्म वा०।
धसकणौ, धसकबौ—अक०रू०।
धसकाड़ियोड़ौ—देखो 'धसकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धसकाड़ियोड़ी)
धसकाणौ, धसकाबौ-क्रि०स० [दंशनम्] १ धँसाना, गड़ाना.
२ फिसलाना, नीचे को लुढ़काना।
३ 'धसणौ' क्रिया का प्रे.रू.।
धसकाणहार, हारौ (हारी), धसकाणियौ—वि०।
धसकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
धसकाईजणौ, धसकाईजबौ—कर्म वा०।
धसकणौ, धसकबौ—अक०रू०।
धसकाड़णौ, धसकाड़बौ, धसकावणौ, धसकावबौ, ध्रसकाड़णौ, ध्रसकाड़बौ, ध्रसकाणौ, ध्रसकाबौ, ध्रसकावणौ, ध्रसकावबौ—रू०भे०।
धसकावणौ, धसकावबौ—देखो 'धसकाणौ, धसकाबौ' (रू.भे.)
धसकावणहार, हारौ (हारी), धसकावणियौ—वि०।
धसकाविश्रोड़ौ, धसकावियोड़ौ, धसकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धसकावीजणौ, धसकावीजबौ—कर्म वा०।
धसकणौ, धसकबौ—अक०रू०।
धसकावियोड़ौ—देखो 'धसकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धसकावियोड़ी)

धसकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ नीचे को खिसका हुवा, नीचे को दबा हुआ, धँसा हुआ, नीचे को बैठा हुआ. २ फिसला हुआ।
३ देखो 'धसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धसकियोड़ी)
धसकौ-सं०पु० [अनु०] १ टक्कर, धक्का. २ दुत्कार, फटकार।
उ०—सोणित चसको संड श्रो, धसको लग धूजंत। खिसको सगत! न खतंग ह्वै, काढै पसको कंत।—रेवतसिंह भाटी
३ भय, आतंक, डर। उ०—केलवा में एक बाई कहै स्वांमीजी पधारै तो साधपणौ लेवूं। इम वात कर वो करै। पछै स्वांमीजी पधारया। धसका सूं बाई नैं ताव चढ गयौ।—भि.द्र.
धसक्कणौ, धसक्कबौ—देखो 'धसकणौ, धसकबौ' (रू.भे.)
उ०—वेउ हूंफइ वेउ वाकरवाइं राय तणा मनि रीझ ऊपाइं। धरणि धसक्कइ गाजइ गयणु हारिइ जीतइ जय जय वयणु।—पं.पं.च.
धसक्कियोड़ौ—देखो 'धसकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धसक्कियोड़ी)
धसड़-सं०स्त्री० [अनु०] १ शस्त्र का प्रहार अथवा प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।
उ०—वजधार अंग असुरां वीहार। सेलड़ां धसड़ भालां दुसार।
२ देखो 'धसळ' (रू.भे.) —रांमदांन लाळस
धसटौ—१ देखो 'ध्रिस्टौ' (रू.भे.) (अ.मा.)
२ देखो 'ध्रस्ट' (रू.भे.)
धसणौ, धसबौ-क्रि०अ०—१ इधर-उधर दबा कर जगह खाली करते हुए बढना, ऐसे स्थान अथवा वस्तु में प्रविष्ठ होना जिसमें पहले से ही अवकाश न हो, पैठना, अपने लिए जगह करते हुए घुसना, बलात् प्रविष्ठ होना।
जैसे—भीड़ में धँसना, पानी में धँसना।
उ०—१ इण तजबीज चढ़ी असवारी। धर बुगलांण धसै छत्रधारी।
—सू.प्र.
उ०—२ केई वेळां धसियौ, कळ रसियौ खग रंग। अरिहां उर वसियौ रहै, वो जसियौ अणभंग।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—३ धिन वे रावत धोरपै, भागा रावतियांह। धारा अणियां मैं धसै, चख मुख चोळ कियांह।—वां.दा.
उ०—४ कावेरी जळ स्रोकळस, धसियौ सनमुख धार। ऐरावत किर आवियौ, मंदायिणी मंझार।—वां.दा.
२ प्रवेश करना। उ०—देहली धसति हरि जेहड़ि दीठी, आणंद को ऊपनौ अमाप। तिण आपही किरायौ आदर, ऊभा करि रांमां सूं आप।—वेलि.
३ मिल जाना। उ०—१ सरळ सचि केण स्यांम कच, मुकता मांग मझार। तरुण तनुजा मधि तसी, धसी सुरसरी धार।
—सिवबक्स पालावत
उ०—२ मूरख माहि मूं पहिलौ लीह, जिण धरम माहि धसउं सवि दीह। कालउ गहिलउ बोलिउ ठाउ, ते सहू सुह गुरु तणउ पसाउ।
—चिहुं गति चउपइ

४ नष्ट होना, नष्ट होना. ५ नीचे की ओर धीरे धीरे जाना, नीचे खिसकना, उतरना. ६ दाब पा कर किसी कड़ी वस्तु का किसी नरम वस्तु के भीतर घुसना, गड़ना। जैसे—दल-दल में पांव फंसना, दीवार में कील धंसना, पैर में कांटा धंसना. ७ नींव पर खड़ी या गड़ी वस्तु का जमीन में और नीचे तक चला जाना, बैठ जाना।

उदा०—मानव री कड़ी इगी नाम्ही के केई हुंडा घसग्या।

८ देखो 'धसकणो, धसकबो' (रू.भे.)

घसणहार, हारो (हारी), घसणियो—वि०।

घसवाड़णो, घसवाड़बो, घसवाणो, घसवाबो, घसवावणो, घसवावबो —प्रे०रू०।

घसाड़णो, घसाड़बो, घसाणो, घसाबो, घसावणो, घसावबो— क्रि०स०।

घसिग्रोड़ो, घसियोड़ो, घस्योड़ो—भू०का०कृ०।

घसीजणो, घसीजबो—भाव वा०।

घुसणो, घुसबो—रू०भे०।

घसमस-सं०स्त्री० [अनु०] १ धंसने की क्रिया या भाव।

२ चलते समय पृथ्वी पर पांवों का बल देते हुए अथवा अस्त-व्यस्त कदम रखने की क्रिया या भाव।

उ०—गणिका सगळी देस नी, गणतां गणित न थाइ। धक पुहचइ धाढीत परि, घसमस करती थाइ।—मा.कां.प्र.

३ धीरोद्धत परन्तु आकर्षक चाल, गुरु-गंभीर चाल।

उ०—है पीळो तो ओटणो ए म्हारी जच्चा रांणी, घसमस चालै रै मथुरां री चाल।—लो.गी.

घसमसणो, घसमसबो-क्रि०स० [अनु०] १ धीरोद्धत परंतु आकर्षक चाल से चलना, गुरु-गंभीर चाल से चलना. २ लक्ष्य की ओर त्वरित गति से अग्रसर होना, व्युत्क्रम गति से चलना, नपे-तुले कदम रख कर न चलना, डांवाडोल चाल से चलना, क्रमहीन गति से चलना।

उ०—१ सगळी पांति बिठी तेतलि प्रीसणहारी पैठी, ते कहवी ? सोळ सिणगार सज्या, बीजा सगळा कांम तज्या, हाथ नी रूडी, बिहु बाहि गळकि चूडी. लतुनाघवी कळा, मन कीधा मोकळा, चित्त नी उदार, अति घणु दातार, दोलती हाथ, परमेसर देजे तेह नो साथ, घसमसतो थावी, सघळां नि मन भावी, पहिलुं फळहळ प्रीसइ, सघळा ना हीया हीसइ।—व.स.

उ०—२ धोबी धाइ घसमसइ, कापडीया केदार। जोगी जेहनइं योगिनी, विहाडी नी दस वार।—मा.कां.प्र.

उ०—३ दांगव दळि जिम दहवडंतु दंती देगि नइ। धायउ अरजुनु घसमसंतु गयरां मूंकी नइ।—पं.पं.च.

उ०—४ सतरि नूर दमइ दिसि भीमली। घसमस्या सुभट ते रिण मांमळी।—विराट पर्व

२ नीचे की ओर दबना, धंसना। उ०—घसमसै धरण फण सहस धार। धमसै नगर रज अंधकार।—वि.सं.

घसमसणहार, हारो (हारी), घसमसणियो—वि०।

घसमसिग्रोड़ो, घसमसियोड़ो, घसमस्योड़ो—भू०का०कृ०।

घसमसीजणो, घसमसीजबो—भाव वा०।

घसळ, घसळक-सं०स्त्री० [सं० घर्षणं=घर्षण] १ धाक, धमकी, डांट, ललकार।

क्रि०प्र०—देणी।

२ आक्रमण, हमला। उ०—हैजम अर जम री हणै, रग पठाह वर सूर। धार इंद्र निज पर घसळ, कढ़ पुर हूंत काफूर।

—रेवतसिंह भाटी

३ रोब, जोश. ४ जोशपूर्ण आवाज, आतंकपूर्ण आवाज।

उ०—घण सबद सुणे असुरांण दळ धाबियो, आवतो घसळ अर पूरतो आवियो। ओळदं लगण नै अभीतण अगाही, संघ दळ प्रबळ वरही असुर लगाही।—र.रू.

क्रि०प्र०—करणी।

५ जोश में आकर बैल, सिंह, घोड़ा आदि का पैरों से धूलि पीछे की ओर फेंकते हुए ताडने, दहाड़ने या हिनहिनाने की क्रिया।

क्रि०प्र०—करणी।

६ जोश या मस्ती में होने का भाव। उ०—बूग छड़ाळां विवें, होय नवकीवां हाकां। हुय दळवळ हाथियां, घसळ ऊडंड घसाकां।

—सू.प्र.

७ पृथ्वी पर बल देते हुए लम्बी डगें भरने की क्रिया।

उ०—खोळा टंकियोड़ा गळ में सूंगाळी, जळ जुत ठोडी पर टिमकी जंघाळी। भीनै कांचळियं घम घम डग भरती, घसळां देतोड़ी धमधम पग धरती।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—देणी।

रू०भे०—घस, घसड़।

घसळणो, घसळबो-क्रि०स० [देश०] डांट देना, ललकारना, फटकारना।

उ०—चोजां चटकाळा, गुरु गटकाळा, मटकाळा मुळकंदा है। माथा हद मसळै, अकेद असळै, घसळै जद धूजंदा है।—ऊ.का.

घसळियोड़ो-भू०का०कृ०—डांट दिया हुआ, फटकारा हुआ, ललकारा हुआ।

(स्त्री० घसळियोड़ी)

घसांन-सं०स्त्री० [देश०] १ धंसने की क्रिया या भाव.

२ वह स्थान जहां जमीन नीचे की ओर बैठ गई हो.

३ किसी वस्तु पर दाब आदि के कारण पड़ा हुआ चिन्ह या गड्ढा.

[सं० दशार्णं] ४ पूर्वी मालवा और बुन्देलखण्ड की एक नदी।

घसाक-सं०स्त्री० [देश०] ध्वनि, आवाज, कोलाहल ?

उ०—बूग छडाळां विवें, होय नवकीवां हाकां। हुय दळवळ हाथियां, घसळ ऊडंड घसाकां।—सू.प्र.

घसाड़णो, घसाड़बो—देखो 'घसाणो, घसाबो' (रू.भे.)

घसाड़णहार, हारो (हारी), घसाड़णियो—वि०।

घसाड़िग्रोड़ो, घसाड़ियोड़ो, घसाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

घसाड़ीजणो, घसाड़ीजबो—कर्म वा०।

घसाड़ियोड़ो—देखो 'घसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घसाड़ियोड़ी)

घसाणो, घसावो–क्रि०स० [देश०] १ तल या सतह को दबा कर नीचे की ओर करना, नीचे की ओर बैठाना।

उ०—नमो स्वांमी दयानंद दिव्य ग्यांन दाता, व्याहिती गायत्री व्रती धारत नहीं धरम धती। स्रुती ओ स्म्रती सरव धूड़ में घसाता।
—ऊ.का.

२ नर्म वस्तु में घुसाना, गडाना, चुभाना.

३ प्रविष्ठ कराना, पैंठाना. ४ मिलाना।

घसाणहार, हारौ (हारी), घसाणियौ—वि०।

घसायोड़ौ—भू०का०कृ०।

घसाईजणौ, घसाईजवौ—कर्म वा०।

ढसाणौ, ढसावौ, घसाड़णौ, घसाड़वौ, घसावणौ, घसाववौ—रू०भे०।

घसायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ तल और सतह को दबा कर नीचे की ओर किया हुआ, नीचे की ओर बैठाया हुआ. २ नर्म वस्तु में घुसाया हुआ, गड़ाया हुआ, चुभाया हुआ. ३ प्रविष्ठ किया हुआ, पैंठाया हुआ. ४ मिलाया हुआ।

(स्त्री० घसायोड़ी)

घसाव–सं०पु०—धँसना क्रिया का भाव।

घसावणौ, घसाववौ—देखो 'घसाणौ, घसावौ' (रू.भे.)

घसावणहार, हारौ (हारी), घसावणियौ—वि०।

घसाविश्रोड़ौ, घसावियोड़ौ, घसाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घसावीजणौ, घसावीजवौ—कर्म वा०।

घसणौ, घसवौ—अक०रू०।

घसावियोड़ौ—देखो 'घसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घसावियोड़ी)

घसियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बलात् प्रविष्ठ हुवा हुआ, घुसा हुआ, पैठा हुआ. २ प्रवेश किया हुआ. ३ मिला हुआ. ४ ध्वस्त हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. ५ नीचे की ओर धीरे धीरे गया हुआ, नीचे खिसका हुआ, उतरा हुआ. ६ गाड़ा हुआ, घुसा हुआ. ७ (नींव पर खड़ी या गड़ी वस्तु का) जमीन में और नीचे तक गया हुआ, नीचे धँसा या बैठा हुआ. ८ देखो 'घसकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घसियोड़ी)

घसुण–सं०पु० [सं० धिषणः] १ पंडित, कवि, विद्वान (अ.मा.)

२ बृहस्पति, सुर-गुरु।

घसुरसरी–सं०स्त्री० [देश०] दक्षिण की एक नदी, कावेरी।

घह—देखो 'दह' (रू.भे.)

घहचाळ—देखो 'घेचाळ' (रू.भे.) उ०—काया कूआ में घणो नांम नीर घहचाळ। निस दिन वै रसना अरट भागै दोनां काळ। भागै दोनूं काळ कमाई आडी आवै। करसा कंवै धांन मुगती भजनीक सिधावै। सगरांम इण सवद रो लीजो अरथ संभाळ। काया कूआ में घणो नांम नीर घहचाळ।—सगरांमदास

घहल—देखो 'दहल' (रू.भे.)

घहलणौ, घहलवौ—देखो 'दहलणौ, दहलवौ' (रू.भे.)

उ०—धागड़दि धमक ओयण घहले धर, दागड़दि दिसां दहले दिगपाळ। हागड़दि हुवै आलम हैकंपै, कागड़दि कयामत जांण कराळ।
—र.रू.

घहलणहार, हारौ (हारी), घहलणियौ—वि०।

घहलवाड़णौ, घहलवाड़वौ, घहलवाणौ, घहलवावौ, घहलवावणौ, घहलवाववौ—प्रे०रू०।

घहलाड़णौ, घहलाड़वौ, घहलाणौ, घहलावौ, घहलावणौ, घहलाववौ
—क्रि०स०।

घहलिओड़ौ, घहलियोड़ौ, घहल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घहलीजणौ, घहलीजवौ—भाव वा०।

घहलियोड़ौ—देखो 'दहलियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दहलियोड़ी)

घां–अव्य०—१ एक अव्यय शब्द जो ऐसे प्रश्नों के पूर्व प्रयोग किया जाता है जिनमें जिज्ञासा का भाव न्यून और संशय के भाव का आधिक्य हो। उ०—नेह निवांणै नांखियां, चुगली नहीं चिकणाय। लाखां गुण कर देखलो, कह घां नह बंधाय।—बां.दा.

२ देखो 'धांय' (रू.भे.)

धांअंत—देखो 'ध्वांत' (रू.भे., ह.नां.)

धांक–सं०स्त्री०—१ चिन्ह। २ देखो 'धंक' (रू.भे.)

धांकणौ, धांकवौ–क्रि०स० [सं० द्राक्षि या ध्वाक्ष] इच्छा करना, चाहना।

उ०—धांकै मन बैठूं धोळैहर, तापै सूंना ढूंढ तठै। मोटा आखर कवण मेटवै, कुटी लिखी सो महल कठै।—ओपो आढ़ो

धांकणहार, हारौ (हारी), धांकणियौ—वि०।

धांकिओड़ौ, धांकियोड़ौ, धांक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धांकीजणौ, धांकीजवौ—कर्म वा०।

धांखणौ, धांखवौ—रू०भे०।

धांकळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)

धांकियोड़ौ–भू०का०कृ०—इच्छा किया हुआ।

(स्त्री० धांकियोड़ी)

धांख—देखो 'धांक' (रू.भे.)

उ०—पंखी दीठां कनक नी पांख रे। ग्रहिवा रांनि मनि थई धांख रे।
—नळाख्यांन

धांखणौ, धांखवौ—देखो 'धांकणौ, धांकवौ' (रू.भे.)

उ०—१ घड़ मीरजां वांधि इम धांखां। नट किलकिला चौड जिम नांखां।—सू.प्र.

उ०—२ सभि अलीबंध सिलहट सपरि, धिख चख गिड़कंध धांखियां। पाघड़ा बंध ओळा प्रचंड, अंध जेम उपड़ांखिया।—सू.प्र.

धांखणहार, हारौ (हारी), धांखणियौ—वि०।

धांखिओड़ौ, धांखियोड़ौ, धांख्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धांखीजणौ, धांखीजवौ—कर्म वा०।

धांणियोड़ो—देखो 'धाणियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धांणियोड़ी)

धांणिदो—देखो 'धांनड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

धांणड़ौ—देखो 'धानड़ौ' (रू.भे.)

धांणो-सं०पु०—एक प्रकार की देशी मराठी, तांता, रग ।
उ०—सीसा में मोड़ूं अमवार, म्हारैं (नैं) गुजराती धांणो जोत सां ।
—लो.गी.

धांन-सं०पु०—ध्यान, स्वंग । उ०—धन बृटि सीधौ धांन, वधि नार-नीक दिमान्न ।—सू.प्र.

धांनका-सं०स्त्री० [सं० धनुष] १ राजस्थान में निवास करने वाली एक पिछड़ी जाति जिसके पूर्वज धनुष रखते थे ।
२ दगपत, मजान (डिं.को.)

धांनकौ-सं०पु० (स्त्री० धांणकी) १ 'धांणका' जाति का व्यक्ति.
२ दापत, महतर (डिं.को.)

धांणा-सं०पु० [सं० धान्यक] भारतवर्ष में प्राय: सर्वत्र पाया जाने वाला एक पौधा विशेष जिसके सुगन्धदार फल मसालों के काम लिये जाते हैं ।
वि०वि०—हमारे देश में इसकी खेती भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न ऋतुओं में होती है । बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब और राजस्थान में जाड़े में, बंबई प्रदेश में बरसात के दिनों में तथा मद्रास में पतझड़ ऋतु में इसकी खेती होती है ।
रू०भे०—धणा, धणियां, धणूं, धणु, धणूं, धणो ।

धांणा-पंचक-सं०पु० [सं० धान्यक पंचक] औषधि रूप से प्रयोग किया जाने वाला धनिया, सूंठ, बिल्वगिर, नागरमोथा और नेत्रवाले का सम्मिश्रण (अमरत)
रू०भे०—धणापंचक ।

धांणा-गुनड़ी—सं०स्त्री०यौ० [देश०] हाथ की कलई पर धारण करने का स्त्रियों का एक प्रकार का स्वर्ण आभूषण जिसमें बहुत से धनियों के आकार के गोल दाने कई पंक्तियों में लगे हुए होते हैं ।

धांणी-सं०स्त्री० [देश०] आग से तप्त की हुई बालू से सेंका हुआ अनाज ।

धांनुख-सं०पु० [सं० धानुष्क:] धनुष चलाने वाला ।
उ०—अहह धांनुख धांनुख सिउं जडइ । खडग धार की कोडि खड-खडइ ।—विराट पर्व
रू०भे०—धांनुखी ।

धांनो—देखो 'धांणा' (रू.भे.)

धांत—देखो 'ध्वांत' (रू.भे.) (नां.मा)

धांधल-सं०पु०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति
(बां.दा.ख्यात)

धांधल, धांधल-सं०पु०—राव आसथान के पुत्र धांधल के वंशज, राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
रू०भे०—धांधल, धांधिल ।

धांधळी, धांधली-सं०स्त्री० [सं० द्वंद्व ?] १ निरर्थक वाद-विवाद, बिना मतलब बहस, बकझक. २ बखेड़ा, फसाद. ३ उपद्रव, उत्पात. ४ मनमानी, मनचाही ।
(मि० राठौड़ी)
क्रि०प्र०—करणी, चलणी, मचाणी, होणी ।
वि०—बकझक करने वाला, बखेड़ा करने वाला, उपद्रव करने वाला ।

धांधळबाजी—देखो 'धांधळी' ।

धांधल्ल—देखो 'धांधल' ।

धांधिया-सं०स्त्री०—परिहार वंश की एक शाखा ।

धांधिल—देखो 'धांधल' (रू.भे.)

धांधी-सं०स्त्री० [अनु०] नगाड़े की ध्वनि । उ०—नगारां री धांधी बाज रही छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

धांधू-सं०पु०—१ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति.
(रा.रू.)
२ शीघ्रता, तकरार (किसनगढ़)
क्रि०प्र०—करणी ।

धांनंक—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—'पाल' भुजां साबळ पकड़, साल लखां ग्रण संक । कळह झाळ आगै कियो, ढाल जेम धांनंक ।—पा.प्र.
यौ०—धांनंक-धर ।

धांनंकी-वि० [सं० धनुष] देखो 'धांनंखी' (रू.भे.) (डिं.को.)
यौ०—धांनकी-फूल ।

धांनंख, धांनख —देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—करि संचै धांनंख चिलै बंधि टंक प्रहारै ।—रा.रू.
यौ०—धांनंख-धर ।

धांनंख-धर, धांनंख-धारी—देखो 'धनुस-धर' (रू.भे.)
उ०—'किसन' भज सिय रांम, धांनंख-धर सुत धांम ।—र.ज.प्र.

धांनंखर-सं०पु०—धनुषधारी योद्धा । उ०—माथां कटि कारगां भलि भालै । हेक साथ धांनंखर हालै ।—सू.प्र.

धांनंखी-सं०पु० [सं० धानुषक] धनुर्विद्या में प्रवीण ।

धांन-सं०पु० [सं० धान्य] अन्न, अनाज, नाज ।
उ०—आंना अध आंना अरध, तुरत विगाड़ै तांन । यदळ तुस रै वांणियो, धुर गोढा लै धांन ।—बां.दा.
रू०भे०—धन्न ।
अल्पा०—धांनड़लो, धांनड़ियो, धांनड़ो ।
मह०—धांनड़ ।
यौ०—धांन-चून ।

धांनक—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—धांनक टंकार भळकार श्रोह । ललकार मार अणपार लोह ।
—वि.सं.

धांनकी-फूल-सं०पु० [सं० पुष्प धन्वा] कामदेव, मदन (डिं.को.)

धांनंतर—देखो 'धनंतर' (रू.भे.)
उ०—जो तूं आज नहीं जीवाड़स, सरवहियौ दोनां चा सांम। तूझ तणौ ओखद धांनंतर, कीयै पछै आवसी कांम।—ईसरदास बारहठ

धांनख—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—हाथी तहवर खांन रौ, गौ सौ धांनख भज्ज।—रा.रू.

धांनड़—देखो 'धांन' (मह., रू.भे.)

धांनड़लौ, धांनड़ियौ, धांनड़ौ—देखो 'धांन' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ डीगी पाळ तळाव री, समदरियौ हिलोळा लेवै सा। आप विन घड़ियन, आळगे सा, आप विन धांनड़लौ नी भावै सा।
—लो.गी.
उ०—२ संकर री किरपा सूं धांनड़ौ तौ अबकै बीसे'क कळसी व्है जावेला, जिणमें तिलां रो पांचेक कळसी रो अंदाज है।—रातवासो
उ०—३ मौज चेत वैसाख व्यावां, भरग्यौ घर भगवांनड़ौ। आठ पौ'र चौसठ घड़ी में, धोरौ पूरै धांनड़ौ।—दसदेव

धांनमंडी—सं०स्त्री० [सं० धान्यम्+मण्डप] वह स्थान या बाजार जहां अनाज का क्रय-विक्रय होता है।
वि०वि०—अनाज का क्रय प्रायः थोक रूप में होता है जिसे किसान, आड़तिये आदि लाते हैं तथा विक्रय थोक एवं फुटकर दोनों रूपों में होता है।

धांनमाळी—सं०पु० [सं० धान्य+माली] एक असुर का नाम।
उ०—धांनमाळी पछाड़ा हुकमां चाडा सीस धणी।—र.ज.प्र.

धांनी—सं०स्त्री० [सं० धानी] १ स्थान, जगह।
ज्यूं—राजधांनी।
२ बांसुरी (अ.मा.). ३ एक राग विशेष. ४ एक वर्णवृत जिसमें एक रगण तथा अंत में लघु वर्ण होता है।—र.ज.प्र.

धांनुंक—देखो 'धनुस' (रू.भे.)

धांनुंखधर, धांनुंखधार—देखो 'धनुसधर' (रू.भे.)
उ०—१ धानुंखधर कर पंकज धारत, सेवग अगणत काज सुधारत।
—र.ज.प्र.
उ०—२ एक घड़ी मझ दास उधारै। धांनुंखधार वडा व्रद धारै।
—र.ज.प्र.

धांनुंख—सं०पु०—१ एक जाति विशेष।
२ देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—निरसंक असुर निहारियौ, धनु धरण धांनुंख धारियौ। भूथांण वांधै करण भारथ, रोख धर रघुवीर।—र.रू.

धांन्य—सं०पु० [सं० धान्य] केवल अन्न मात्र।
उ०—धन धेनु धांन्य वंटक बदांन्य। जाहर जहांन मोदी महांन।
—ऊ.का.
यौ०—धन-धांन्य।

धांन्य-धेनु—सं०स्त्री०यौ० [सं० धान्य+धेनु] पुराणानुसार दान स्वरूप में दी जाने वाली वह गाय जिसकी कल्पना धान के ढेर से की जाती है। दान विशेष, संक्रांति या कार्तिक मास में सब प्रकार के सुख, सौभाग्यादि के संचय के निमित्त किया जाता है।

धांन्यपंचक—सं०पु० [सं० धान्य-पंचक] १ शालि, व्रीहि, शूक शिंबी और क्षुद्र नामक पांच धानों का समूह. २ एक ओषधि विशेष।

धांन्यपाळ—सं०पु० [सं० धान्य+पाल] एक प्राचीन राजवंश।
उ०—गोहिल, गुहलिक पुत्रक धांन्यपाळ राजपाळ अनंग निकुंभ दधिकार काळामुह दाविक हूण हरियर डोसमार।—व.स.

धांम—सं०पु० [सं० धामन्] १ गृह, मकान, घर (अनेका.)
उ०—रे 'किसन' भजि सियारांम। धांनंखधर सुख धांम।—र.ज.प्र.
२ स्थान, जगह। उ०—सदा सुभ सीथळ धांम सुथांन। स्वरालय संकर धांम समांन।—ऊ.का.
३ देवस्थान, देवालय। उ०—जरै उठा ही सूं पीठवह भूवा रौ भवन छांडि कोईक ओघड़ अतीतां री जमाति रै साथ वेड़ी रै बळ खाडी लांघी, हिंगळाज देवी रै धांम पूगौ।—वं.भा.
४ परलोक, वैकुण्ठ, स्वर्ग, देवलोक। उ०—पीछै संवत् १५४७ रावजी स्री जोधोजी धांम पधारिया नै गादी सातळजी बैठा।—द.दा.
५ तीर्थ-स्थान। उ०—१ देवी चार धांमं स्थळं अस्ट साठै। देवी पावियै एक सौ पीठ आठै।—देवि.
६ देह, शरीर। उ०—परगह पोरस पूरियां, उर कह अड्डांणा। आरत साह जिहांन की, रचवां आरांणा। सांभळिया 'अवरंगसा', कर धांम धखांणा। के सीतापत आय सिर, जनु रांवण रांणा।—द.दा.
७ ज्योति (ह.नां., अनेका.) ८ किरण, रश्मि (अ.मा., अनेका.)
९ तेज (अनेका.)
११ चार की संख्या*।

धांम-उजासी—सं०पु०यौ० [सं० धाम+रा० उजासी] दीपक (अ.मा.)

धांमजग्र—देखो 'धमगजर' (रू.भे.) उ०—अनट्ट जे अखा अवाच्य, सूरमंस री नरा। परं सती अभेट पिंड, दास गाय दीन रा। धणी स अग्र होत ढाल, जूटि धांमजग्र में। इसा वसंत के अपार, गाढ़ पूर नग्र में।—सू.प्र.

धांमण—सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का घास विशेष जो वर्षा ऋतु में होता है. २ एक प्रकार का वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी का धनुष बनता है। उ०—भव धांमण खइर खीरणी, पास पाडल लींब। अंब जंबू आंविली, करंगची कंइवट्ठु कोब।—रुकमणी मंगळ
३ एक प्रकार का विषैला सर्प। उ०—विसधर कोट गोयरौ वीछू, फफवा धांमण वेहड़ा फोड़। अमल कराळौ जहर ऊतरै, आप नांम रौ मंत्र अरोड़।—वगतरांम आसियौ
रू०भे०—धांमणि।

धांमणि—सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
उ०—धंतूरा नइं धाऊडा, धांमणि धूंगरि धूनि। धींग धमासा धूलीया, धडहड धाता धूं नि।—मा.कां.प्र.
२ देखो 'धांमण' (रू.भे.) उ०—किहि किहि अगिगर ऊंमटइ, चाकलुंडि चित्रावि। परड पुरांणी सींघळी, धांमणि धूंसटि धावि।
—मा.कां.प्र.

धांमणी-सं०स्त्री०—१ साग पकाने का मिट्टी का बरतन, हंडिया.
२ 'धांमणो' क्रिया का भाव ।
क्रि०वि०—देखो 'धांमणो, धांमबो' (रू.भे.)

धांमणो, धांमबो-क्रि०स० [सं० धाम+अनार्दे धामन्दे इति धामयति (रा.मा.)] किसी वस्तु को लेने के लिए आग्रह करना, कहना ।
उ०—१ तरै मारग वीच पवन रौ वधीलो पातसाह मरद पकड़ायो, तरै मारग वाले हूवो प्राणो, मान उण घणो ही धांमियो।—नैणसी
उ०—२ तरै रजपूत कह्यो हूं वहस्यूं । तरै मेर कह्यो—हूं दस टका देस्यूं । हूं करतां मेर पच्चीस टका धांमिया । तरै रजपूत लिया ।
—राव मालदे री वात
धांमणहार, हारो (हारी), धांमणियो—वि० ।
धांमवाड़णो, धांमवाड़बो, धांमवाणो, धांमवाबो, धांमवावणो, धांमवावबो, धांमाड़णो, धांमाड़बो, धांमाणो, धांमाबो, धांमावणो, धांमावबो—प्रे०रू० ।
धांमिश्रोड़ो, धांमियोड़ो, धांम्योड़ो—भू०का०कृ० ।
धांमीजणो, धांमीजबो—कर्म वा० ।

धांमधूम-वि० [अनु०] वायु जनित, विकार युक्त (पेट)
सं०पु०—१ मार-काट, युद्ध । उ०—मच धांमधूम सर सेल मार । पड़ आम धाम आहूं प्रकार ।—रा.रू.
२ वायु जनित विकार. ३ देखो 'धूम-धांम' (रू.भे.)

धांमनीर-सं०पु० [सं० नीरधाम] समुद्र, सागर ।
उ०—ईस पुर तीरां धामनीरां तात रमा श्रोप, सुरतेज गीरां संत भीरां देत साझ । धकापंती मगां मुधां सीरां ज्यु मुनंद्र धीरां । मही धामनां क वीरां दूजो रायां माल ।—हुकमीचंद खिड़ियो

धांमश्री-सं०स्त्री० [सं० धामश्री] एक प्रकार की रागिनी (संगीत)

धांमहर-सं०पु० [सं० धाम+गृह] देवल (प्र.मा.)

धांमहरि-सं०पु० [सं० धाम+हरि] परलोक, वैकुण्ठ, स्वर्ग ।
उ०—अठतीसे आसोज में, सित सातम सनवार । गो सोनागिर धांमहरि, नांम करै संसार ।—रा.रू.

धांमाजागर—देखो 'धमगजर' (रू.भे.) उ०—पाड़ै त्रिगुण अपार ऊभो आगाड़ै अनड़ । गोवरधन मार्थं गहणि धांमाजागर धार ।
—वचनिका

धांमिग-वि० [सं० धार्मिक, प्रा० धम्मिय] धर्मानुसार आचरण करने वाला, धार्मिक । उ०—निज घम दिसि व्यापए थापए चउविह संघ । गुरुड तेह ज सांमिय धांमिय कांमि य रंग ।—नेमिनाथ फागु

धांमियोड़ो-भू०का०कृ०—किसी वस्तु को लेने के लिए आग्रह किया हुआ, कहा हुआ ।
(स्त्री० धांमियोड़ी)

धांमेली-सं०स्त्री० [देश०] पिता या भाई द्वारा पुत्री या बहन को दी जाने वाली गाय अथवा भैंस ।
क्रि०प्र०—देणी, हांकणी ।

धांमोलो-सं०पु० [देश०] वधू के पास प्रायः निरन्तर रहने वाले उसके छोटे भाई अथवा भतीज आदि की हंसी अथवा प्रशंसा के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द ।
वि०वि०—देखो 'धांमेली' ।

धांमो-सं०पु०—एक प्रकार का बरतन विशेष ।

धांय-सं०पु०—आग की वह लपट जिसमें कुछ अव्यक्त शब्द के साथ धूआं और चिनगारियां हों, अग्नि के जलने का शब्द ।

धांस-सं०स्त्री०—१ आभूषणों को धारण करने अथवा पहनने के लिए उनके बीच में लगाई जाने वाली कील. २ दांतों का आभूषण.
३ देखो 'धांसी' (मह., रू.भे.)
४ देखो 'धांसो' (मह., रू.भे.)
उ०—भरळ तेज उडगांण भणी विकटां भळक, पांण गणवांण श्रत जेहर पायो । वहै दइवांण रो धांस जवनां बीच, अरयां सर जांण बीजांण आयो ।—रावत अजीतसिंह सारंगदेवोत (कानोड़) रो गीत
५ देखो 'धूंसो' (मह., रू.भे.)
६ देखो 'धूंम' (रू.भे.)

धांसणो, धांसबो—क्रि०अ० [देश०] १ खांसना.
क्रि०स०—२ रगड़ना, घिसना ।
धांसणहार, हारो (हारी), धांसणियो—वि० ।
धांसिश्रोड़ो, धांसियोड़ो, धांस्योड़ो—भू०का०कृ० ।
धांसीजणो, धांसीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

धांसारो-सं०पु० [देश०] झड़बेरी के पत्तेहीन सूखे कांटों का उतना समूह जिसे एक बैलगाड़ी में लादा जा सकता हो ।

धांसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ खांसा हुआ.
२ रगड़ा हुआ, घिसा हुआ ।
(स्त्री० धांसियोड़ी)

धांसी-सं०स्त्री० [देश०] कास रोग, खांसी ।
मह०—धांस ।

धांसो-सं०पु०—१ भाला । उ०—१ धांण पाराय तणो जांण विरोध री, विकट थट रोद रोकियां धांसो । जवर भुजधारियां हणूं बळ जोध री, धमक भुज धारियां अरण धांसो ।
—रावत अजीतसिंह सारंगदेवोत रो गीत
उ०—२ लाख लशकर डमर अडर वांधे लियां, दिलीसां सदर्क नाह दहिया । 'अजावत' ताहरा बीज धांसा अगे, रोद कांसा कमळ ढांक रहिया ।—महाराजा अभैसिंघजी रो गीत
मह०—धांस ।
२ देखो 'धूंसो' (रू.भे.)

धांहणो, धांहबो— देखो 'धांमणो, धांसबो' (रू.भे.)
धांहणहार, हारो (हारी), धांहणियो—वि० ।
धांहिश्रोड़ो, धांहियोड़ो, धांह्योड़ो—भू०का०कृ० ।
धांहीजणो, धांहीजबो—भाव वा० ।

धा-सं०स्त्री० [डिं०] १ पृथ्वी, धरती, इला. २ लक्ष्मी. ३ सरस्वती, शारदा. ४ उमा, पार्वती (अनेका.)
देखो 'धाय' (रू.भे.)
सं०पु० [अनु०] ५ तबले का एक बोल।
[सं० धैवत] ६ 'धैवत' शब्द या स्वर का संकेत (संगीत)
वि०—धारण करने वाला, धारक (अनेका.)
क्रि०वि०—ओर, तरफ।
रू०भे०—धाई, धाय।
प्रत्य०—प्रकार, तरह।
उयू०—नवधा भक्ति।

धाई—१ देखो 'धाय' (रू.भे.) (उ.र.)
२ देखो 'धा' (रू.भे.)

धाईउ-वि० [सं० धावितः] दौड़ा हुआ (उ.र.)

धाईधूपी-वि०स्त्री०यौ० [सं० ध्रं रा०+धूपी] १ अघाई हुई, सन्तुष्ट, तृप्त. २ स्वच्छ, मल रहित. ३ स्नान की हुई।

धाउ-सं०पु०—१ धातु।
[सं० धाव] २ नाच का एक भेद।
क्रि०वि०—ओर, तरफ।

धाउ-धप-वि०यौ० [सं० ध्रं+रा० धप] १ उतना जितने में एक मनुष्य पूर्ण तृप्त हो जाय. २ अधिक, काफी।
रू०भे०—धाऊ-धप।

धाऊ-सं०पु० [सं० धावन] वह आदमी जो आवश्यक कामों के लिए दौड़ाया जाय।
मुहा०—धाऊ व्हैणौ—चलता बनना।
क्रि०वि०—ओर, तरफ।

धाऊकार-सं०पु० [सं० ध्वंस+कार] नाश, ध्वंस।
क्रि०प्र०—ऊठणौ, जाणौ, पड़णौ।
रू०भे०—धऊकार, धऊसकार, धहूकार।

धाउडौ—देखो 'धाव' (११) (अल्पा., रू.भे.)
उ०—धंतूरा नई धाउडा, धांमणि धूंगरि धूंनि। धींग धमासा धूळिया, धडहड धाता धूंनि।—मा.कां.प्र.

धाऊधप—देखो 'धाउधप' (रू.भे.)

धाक-सं०स्त्री० [सं० धक्क+नाशने] १ आतंक, भय, रौब, दबदबा।
उ०—१ आयौ बीजपुर 'अजौ', भांजे लसकर खांन। लग्गी धाक मळे'छ दळ, वग्गी डाक जिहांन।—रा.रू.
उ०—२ सारी हाडोती मांही गोपाळदास री तो धाक पड़ रही है।
—गौड़ गोपाळदास री वारता
२ प्रसिद्धि, ख्याति। उ०—मरद झूठ बोलै तो धाक जाती रहै।
—नी.प्र.
३ शौर्य, पराक्रम। उ०—आ ही सांची बात है, निस्चय यो ही काज। करहु तयारी संकळ मिळ, धाक जमावो राज।
—ठाकुर जैतसी री वारता

क्रि०प्र०—जमाणी, पड़णी, होणी।
रू०भे०—धाख, धूख।

धाकल-सं०स्त्री० [सं० धक्क=नाशने] जोश या रौब भरी आवाज, भयपूर्ण आवाज, ललकार, डांट, धाक। उ०—जावतां ईंज धाकळ रा घडूका साथै ढोल रो डाको रुकग्यो। निछरावळां करता हाथ ऊंचा रा ऊंचा ईंज रैग्या अर ऊंठ चौडता चौडता बंध व्हैग्या।
—रातवासौ
क्रि०प्र०—करणी, देणी।

धाकलणौ, धाकलबौ-क्रि०स० [सं० धक्क+नाशने] १ फटकारना, डराना, डांटना। उ०—हरोळ गोळ व्है चंदोळ लोळ फौज हाकळी। करी न जे निक्रिस्ट भ्रिस्ट काळ-प्रिस्ठ धाकली।—ऊ.का.
२ चलाना, हांकना।
धाकलणहार, हारौ (हारी), धाकलणियौ—वि०।
धाकलिओड़ौ, धाकलियोड़ौ, धाकलयोड़ौ—भू०का०कृ०।
धाकलीजणौ, धाकलीजबौ—कर्म वा०।

धाकलियोड़ौ-भू०का०कृ०—फटकारा हुआ, डराया हुआ, डांटा हुआ।
(स्त्री० धाकळियोड़ी)

धाकाधीकौ, धाकाधेकौ-क्रि०वि० [अनु०] किसी भी प्रकार, ज्यों-त्यों कर के।
सं०पु०—१ कार्य चलाने की क्रिया या भाव।
२ शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला। उ०—कळह कराडंबर करा, असमधिकरा विसेको रे। ऊंधाकड़ा निरबुद्धिया, करसी धाकाधेकौ रे।
—जयवांणी
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
रू०भे—धाखा-धीखौ, धाखा-धेखौ।

धा'काळ-सं०पु० [देश०] भयंकर दुर्भिक्ष, अकाल।

धाकौ-सं०पु० [सं० ध्राक्=अल्पार्थे] १ निर्वाह, गुजारा।
उ०—दुसरो अेक पांणी-री पी में ७) रुपीया मईनै-रा लावै जकै-में कट्ठी-मट्ठो धाको धकै।—वरसगांठ
मुहा०—१ धाको धकणौ—ज्यों-त्यों निर्वाह चलना, किसी प्रकार जीवनयापन होना. २ धाको धकाणौ—ज्यों-त्यों निर्वाह करना, किसी प्रकार जीवनयापन करना।

धाकौ-सं०पु० [सं० धक्क+नाशने] १ भय, डर, आतंक।
उ०—तर मुंख खंडभड़ै सहर तैरसींगरा, ऊजड़ै भांक आथूंण अरडींगरा। थरहरै धमंक धाका पड़ै धींगरा, सीस कण आज री रीस गजसींग रा।—महादांन महडू
मुहा०—धाका पड़णा—किसी का भय होना, किसी के रौब की धाक जमना, आतंक का प्रभाव पड़ना, किसी पराक्रमी के प्रभाव से वहां पर रहने वालों का आतंकित होना।
२ शंका, संशय। उ०—मळती दूसरी इम कहै, इण रा मन में धाको रे। तोरण आयां करै आरतो, टीको काढ नै सासू खांचै नाको रे।—जयवांणी

क्रि॰प्र॰—दीणी।

धाग—देखो 'धाक' (रू.भे.)

धागा-धींगी, धागा-धेनो—देखो 'धाड़ा-धेको' (रू.भे.)

उ॰—धाराँई दरवड़ हूवी, छोड़ो माया धागा-धेनो रे। सिर मुं मिस 'हरमनजी' कहै, तुमै सिद्ध तणा गुण देनो रे।—जयवांणी

धाग-सं॰स्त्री॰ [सं॰ दाह] १ तेज अग्नि, अनल. २ अति क्रोध. ३ देखो 'दाग' (रू.भे.)

धागो-सं॰पु॰ [सं॰ तार्कव, प्रा॰ तग्गो] १ बँटा हुआ सूत, डोरा, तागा। मुहा॰—धागो-धागो करणो—किसी कपड़े को फाड़ कर चिथड़े-चिथड़े करना।

२ प्रीतरीत। उ॰—तन भी लागा मन भी लागा, ज्यों बांमण गळ धागा रे। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा रे।

—मीरां

३ श्वेत पाग पर बांधने का वह काला सूत जिसके बीच में जरी का 'मोगरा' होता है (मेवाड़) ४ ध्यान, लगन।

उ॰—आदि अंत मधि एक रस, टूटै नहिं धागा। दादू एकै रह गया, तब जांणी जागा।—दादू बांणी (मि॰ डोरी ८)

मह॰—धग।

धाड़-सं॰स्त्री॰ [सं॰ धाटी = आक्रमण, हमला अथवा डाकू दल] १ लुटेरों का समूह, आक्रमणकारियों का दल, शत्रुओं का समूह।

उ॰—१ अटर मूळ डर न धारै कंस री आंण री, पिता माता तणी डर न पूछै। जतन सूं सखी दध वेचवा जावतां, अचांनक कांन री धाड़ ऊठै।—वां.दा.

उ॰—२ भागो कंत लुकाय धण, ले सग आतां धाड़। पहर धणी चा पूंगरण, जीतो खोल किंवाड़।—वी.स.

क्रि॰प्र॰—ऊठणी, पड़णी।

यौ॰—धाड़-फाड़।

२ आतंक, डर।

उ॰—भळके मंगळ झाळ टळा फिर गई उथल्ले। पड़ि गोळी अजगैब काळ टोलो कर चल्ले। धाड़ जम घड़हड़ै मेर खड़भड़ै अचूके। वीरभद्र वड़वड़ै हणूं हड़हड़ै हँके।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

३ आपत्ति, विपत्ति, संकट। उ॰—१ धवळा सूं राजै धणी, चंगी दोसे च्याड़। नारायण मत नांखजै, धवळा ऊपर धाड़।—वां.दा.

उ॰—२ भरियो गाडो भार सूं, परगट जांण पहाड़। थळ सांमै चढतां थकां, धोळै पूगी धाड़।—वां.दा.

४ जत्था, समूह। उ॰—१ हे हेली! म्हारै पती घरोघर सूं तो वैर वसायो है, दिनो दिन रोजीना दुसमण आय धाड़ री धाड़ मायँ लूंवै है।—वी.स.टी.

उ॰—२ आयी आयी राठौड़ां-री धाड़, कोई. सोटीजी-रै मैं'ल तळै कर नीसरी।—लो.गी.

५ डाका (डि.को.) उ॰—झोण गंठजोड़ पट बांध कर झालियो, जड़ै वर वींदणी हेत जोड़ी। धारणी तणी चित धाड़ में घालियो, घालियो जगत में विघन घोड़ी।—गिरवरदांन सांदू

क्रि॰प्र॰—करणी।

६ तीव्र रुदन।

क्रि॰प्र॰—पाड़णी।

७ अशुभ समाचार। उ॰—कूकै पाड़ोसण हळफळी खोल किवाड़। ताहरा पति ना कागळ मांहे मोटी धाड़।—ध.व.ग्रं.

[वि॰ अथवा अव्य॰] धन्य, वाह। उ॰—१ वाट आदू वहण रहण उपवट वसू, सामवां वहण रागझाट सुदा। वाट रा मुदागत धाड़ मांटीपणं, ऊफणै रावां रजवाट 'ऊदा'।—भीमसिंघ ऊदावत रो गीत

उ॰—२ दायक रावर रांम सिय दौड़ा, तोयक काळ नेस सिर तोड़ा। राड़ फतै पायक आरोड़ा, सायक असुर धाड़ भड़ खोड़ा।—र.ज.प्र.

उ॰—३ धिन धिन रवि उचरै धाड़ धाड़। राठोड़ मुगळ दम करत राड़।—वि.सं.

रू॰भे॰—धाड।

धाड़णो, धाड़बो-क्रि॰स॰ [सं॰ धाटी, प्रा॰ धाडी] १ डाका डालना, लूटना।

२ रुदन करना, क्रंदन करना।

धाड़णहार, हारो (हारी), धाड़णियो—वि॰।

धाड़िओड़ो, धाड़ियोड़ो, धाड़चोड़ो—भू॰का॰कृ॰।

धाड़ीजणो, धाड़ीजबो—कर्म वा॰।

धाडणो, धाडबो—रू॰भे॰।

धाड़ती—देखो 'धाड़ायती' (रू.भे.)

धाड़-फाड़-वि॰ [सं॰ धाटी + रा॰ फाड़] निडर, होशियार, निशंक।

धाड़यत—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.) (गो.रू.)

धाड़व, धाड़वी—देखो 'धाड़ायती' (रू.भे.)

उ॰—१ धन ले वीरा धाड़वी, अब कोजै न अबेर। एथ धणी जे आवसी, सो रो विकसी सेर।—वी.स.

उ॰—२ एक कोई धाड़वी आयो छै, कूंभा रै उतरियो छै।

—नैणसी

धाड़ा-सं॰पु॰—किसी उपकार या अनुग्रह के बदले में प्रशंसा, कृतज्ञता सूचक शब्द, शुक्रिया, धन्यवाद। उ॰—१ मन महरांण धिनो मेवाड़ा, दाखै धाड़ा दसूं दिसा। राजा अन वांदै रजवाड़ा, तूं गढवाड़ां अवै तिसा।—किसनो आढो

उ॰—२ घड़च दससीस सळ रहण हिक धारणा। धारणा धनस गर भुजा धाड़ा।—र.ज.प्र.

धाड़ात—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)

धाड़ा-मरद-सं॰पु॰यौ॰—१ डाकू, लुटेरा. २ शक्तिशाली व्यक्ति, जबरदस्त। उ॰—मचायो समर अप्रमांण धाड़ा-मरद, प्रांण यद

सूक काचां अपारां। फिताई रांणवत टूक चौड़ै किया, धड़च धाड़ायतां रूक धारां।—रांमकरण महडू

धाड़ायत, धाड़ायती, धाड़ायत्त, धाड़ावी—सं०पु० [सं० धाटी, प्रा० धाडी= लुटेरों का दल, या आक्रमण] डाकू, लुटेरा (डि.को.)

उ०—१ धाड़ा धाड़ायत लूटण नैं धावै। अपती कुळहीणा कूटण नैं आवै।—ऊ.का.

उ०—२ ऊपड़ी वाग धाड़ायतां, काळ रूप दावै कळां। ताखड़ा होय दोऊ तरफ, छूट छूटि उग्राछळां।—पनां वीरमदे री वात

उ०—३ कोई धाड़ायती सूरवीर आपरै दुसमणां नैं कहै है, हे वाहर कर आय नै पूगोड़ा जोधारां! पाछा कठै पधारौ।—वी.स.टी.

उ०—४ खींवो वीजो धाड़ावी वडा दौड़ा वडा चोर।—चौबोली

पर्याय०—अवकंद, झोकायत, डाकू, धाटि, परपात।

रू०भे०—धाड़ती, धाड़यत, धाड़व, धाड़वी, धाड़ात, धाड़ी, धाड़ीत, धाड़ीतौ, धाड़ेत, धाड़ैत, धाड़ैती, धाडव, धाडवी, धाडायत, धाडायती, धाडायत्त, धाडावी, धाडी, धाडीत, धाडीतौ, धाडेत, धाडैत, धाडैती, धायडेती।

धाड़ि—देखो 'धाड़ौ' (रू.भे.) (ऐ.जै.का.सं.)

धाड़ियोड़ौ—भू०का०कृ०—डाका डाला हुआ, लूटा हुआ। (स्त्री० धाड़ियोड़ी)

धाड़ी, धाड़ीत, धाड़ीतौ, धाड़ेत, धाड़ैत, धाड़ैती—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ सो दूलची धाड़ी इसौ दातार हुवौ जे लाहोर सूं दिल्ली तक का मारग मारै, फळसा मारै।—दूलची जोइये री वारता

उ०—२ भांगे अनै अनै धाड़ीतै, लयै लूटि अंज पसरि लयौ। ऊभी गई ज गोपी परिजण, गायां पड़ियै मिहर गयौ।—रतनूं भरमौ

उ०—३ अठी वंदूकां ऊपड़ी, धनंक उठी धूंकार। धाड़ैतां वाहर धकै, हुवौ हकौ जिण वार।—पा.प्र.

उ०—४ खाडाळ सूं प्राथमणा वरू रा मंदिर है। कुत्ता घणा राखै। गायां, भैंसां, सांढियां री वार चढ़ै जद डोर मांह सूं कुत्ता काढ़ देवै। कुत्ता दौड़ आपड़ नैं धाड़ैतां रा घोड़ा ज्यांरा अंडकोस पकड़ लै।—बां.दा. ख्यात

उ०—५ धाड़ैती आ वात आछी तरै सूं जांणै हा के गांव में लारै रह्योड़ा मिनख वोदा है अर इणां में सूं कोई उणां री सांमनौ करण नैं नहीं आवैला।—रातवासौ

धाड़ौ—सं०पु० [सं० धाटी] धन हरण करने के लिए सहसा किया जाने वाला आक्रमण, डाका, बटमारी। उ०—१ सांभळी बात बडलोच सीमा हुता, धपटिया धेणुआं करै धाड़ौ। खळकती लूअ मैं खंड करिवा खळां, आवियौ अमरसिंह तेथि आडौ।—ध.व ग्रं.

उ०—२ धाड़ा धाड़ायत लूटण नैं धावै। अपती कुळ हीणा कूटण नैं आवै।—ऊ.का.

उ०—३ जिकै मेवासी हुवा थका दौड़ धाड़ा करै। जिण किण ही सूं न डरै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ; पड़णौ, पाड़णौ।

रू०भे०—धाड़ि, धाडि।

धाट—सं०पु०—ऊमरकोट राज्य का नाम। उ०—१ धाट सुरंगी गोरियां, आदू कहवत एह। पदमणियां हमरोट हूं, राख म संसौ रेह।—बां.दा.

उ०—२ घण घाव घटै नह पांण धाट। धुर खेत ऊपना जिके धाट।

रू०भे०—धट।

धाटि, धाटी—वि०—ऊमरकोट सम्बन्धी, ऊमरकोट का, 'धाट' देश का।

उ०—१ जवहर जेहलियाह, तैं न किया घोड़ां तणा। दळ सुध दांन दियाह, काठी धाटी कवियणां।—बां.दा.

उ०—२ धाटी गघ धाटी धवळ, धाटी सिरै धुरज्ज। पाबू धाट पधारियौ, घण धाटेची कज्ज।—पा.प्र.

सं०पु० [सं० धाटी] १ डाकू (डि.को.). २ डाकू दल, डाकुओं का जत्था।

उ०—परंतु प्रिथ्वीराज रौ मंत्री उणरा उक्त रूप इंद्रजाळ रा उदवंधण मैं न आयौ र, लावक रा प्रेरिया समस्त ही फंद जांण लिया। निसीथ रै समय धाटि रै संपात दिवाय आपरा गहणहार गुजरात अधीस रा सांमंत मंत्री अमरसिंह समेत जठी तठी पलायमांन किया।—वं.भा.

३ धाट' देश का घोड़ा. ४ सिंधी जाति (मुसलमान) का एक भेद।

सं०स्त्री०—५ घोड़े की एक चाल विशेष।

६ देखो 'धटी' (रू.भे.)

धाटेचा—सं०स्त्री०—पँवार वंश के राजपूतों की एक शाखा (बां.दा. ख्यात)

धाटेचौ—सं०पु० (स्त्री० धाटेची) पँवार वंश के राजपूतों की 'धाटेचा' शाखा का व्यक्ति।

वि०—धाट देश का, धाट देश संबंधी।

धाड—देखो 'धाड़' (रू.भे.)

धाडणौ, धाडवौ—देखो 'धाड़णौ, धाड़वौ' (रू.भे.)

धाडव, धाडवी—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)

धाडा—सं०स्त्री०—एक प्रकार का शाक विशेष।

उ०—धूंगरि धूंणी धांणकी, धातरि धराख धमासि। धडफूडी धंधोळणी, धूती धाडा धासि।—मा.कां.प्र.

धाडायत, धाडायती, धाडायत्त, धाडावी, धाडि—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)

धाडि—देखो 'धाड़ौ' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—कांम धाडि निसि माभम धाइ, चंदलइ सुरत दुंदभि वाइ। स्यउं भणी घरवणी धरि ढीली, वीनवइ सजन लाडगहेली।—प्राचीन फागु संग्रह

धाडियोडौ—देखो 'धाड़ियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० धाडियोडी)

धाडी, धाडीत, धाडीतौ, धाडेत, धाडैत, धाडैती—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)

उ०—गणिका सगळी देस नी, गणतां गणित न थाइ। धक पुहँचइ धाडीत परि, धसमस करती धाइ।—मा.कां.प्र.

धाणौ, धायौ-क्रि०अ० [सं० घ्रा] १ पूर्ण अघाना, तृप्त होना।
उ०—१ मेरा री नोमण डटीकै गोरड़ी जो, कोई, थांरी गोरी उडावै काग, पच पच मायो जी, धाई थांरी नोकरी।—लो.गी.
उ०—२ पनड़ नवनाग रे जुन देनि धायौ भरक, ईस धायौ लहे सीस पकनूक। मकनतौ मड़ां वैरी हरां न धायौ, राज 'राघव' तणौ धमायौ नक।—झाला राजा राघवदेव (द्वितीय), देलवाड़ा री गीत
उ०—३ आदमी सो-दोड मारिया। तरां चोर कना सूं मड़ां रा माया मंगाय माताजी आगै बावर-कोट करायो नै जैतसीजी कह्यौ, माता, धाई कै न धाई, जो धाई न होय तो वळै चड़ाऊं।
—जैतसी ऊदावत री वात

[सं० भृजि] २ गिरना, पड़ना। उ०—धुरधर आसाढ़ां अंबर धर-हरियौ। धोरा ढंबर में संबर धरहरियौ। साई सर सरिता आई डकरारा। धोळा जळधर सूं धाई जळधारा।—ऊ.का.
[सं० ध्यै] ३ देखो 'धावणौ, धावबौ' (रू.भे.) उ०—१ रटियौ हरि गजराज, तज खगेस धायौ तठै। आ कंइ देरी आज, करी इती तैं कान्हड़ा।—रांमनाथ कवियौ
उ०—२ धांन दिरावण सुखदेवौ धायौ। पांणी निरमळ नित सवळां नै पायौ।—ऊ.का.
उ०—३ वांको कहै टळै दिन विखमा, धणियांणी नै धायां। लोव-ियाळ ताप नंह लागै, ओलै थारै आयां।—वां.दा.
धाणहार, हारौ (हारी), धाणियौ—वि०।
धायोड़ौ—भू०का०कृ०।
धाईजणौ, धाईजबौ—भाव वा०।
धात-संपु० [सं० धातु] १ कामदेव (अ.मा.) २ सूर्य (अ.मा.)
[सं० धातु] ३ पत्थर, पाषाण (अ.मा.)
सं०स्त्री०—४ तलवार (अ.मा., ह.नां.)
५ स्वभाव, प्रकृति। उ०—हसी कहइ कुबजक तेणी वार, 'तूं फर-सावीति किम सुविचारि? सतीपणा नी जांणी वात, ओछी मइ हवइ ताहरी धात'।—नळ-दवदंती रास
६ देखो 'धाता' (रू.भे.) ७ देखो 'धातु' (रू.भे.) (अमरत)
उ०—१ बीजु भंडार छइ प्रिथ्वी तणु, पार न पांमइ कोइ तेह तणु। वनसपती नइ सगळी धात, करसण संपजइ अनोपम वात।
—नळ-दवदंती रास

उ०—२ हीर मुदै जुहारां सपतां धातां मुदै हेम, राजै देवां मुदी अग्र-वृधी गणांराव। भोज मुदै दातारां तीरथां प्रागराज भला, सात्रां तेरां मुदै 'सुरतांण' रौ सुजाव।—नींबाज ठा. सांवतसिंघ री गीत
धातधर-संपु० [सं० धातु+धृञ्] पर्वत, पहाड़ (अ.मा.)
धातबीज-संपु० [सं० धातृ+रा० बीज] कामदेव, अनंग (अ.मा.)
धातरि-सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार की सब्जी विशेष।
उ०—धूंगरि धूंणी धांणकी, धातरि घणास घमाखि। घटफूली धंधोळणी, धूंती धाडा धामि।—मा.कां.प्र.

धात-स्वादु-वि० [सं० धातु स्वादक] धातु का स्वाद लेने वाला (ह.र.)
धातांसार-संपु० [सं० धातु+सार] सोना (अ.मा.)
धाता-संपु० [सं० धातृ] १ ब्रह्मा, विधाता, विधि (डिं.नां.मा.)
उ०—राधो राजा सीता रांणी, वेदां में धाता वाखांणी।—र.ज.प्र.
२ विष्णु. ३ शिव, महादेव, महेश. ४ शेषनाग।
५ बारह आदित्यों में एक. ६ रक्षा।
उ०—मुझ मांनो वातां रे, जिम होवै धाता रे। वळै एहवी रे धाता धाती दोहरी रे।—प.च.चौ.
७ टगण के आठवें भेद का नाम (।।ऽ।) (डिं.को.)
वि०—१ रक्षा करने वाला, रक्षक।
उ०—लाडी लाखीणी धारा धूंधाती। पीवर ऊपां री पारां पय पाती। भारा-खीणां भड़ एवड़ ले आता। धाया धीणा रा गोधन रा धाता।
—ऊ.का.

२ धारण करने वाला, धारक. ३ पालन करने वाला, पालक।
रू०भे०—धात।
धातु-सं०स्त्री० [सं०] १ वह खनिज पदार्थ अथवा मूल द्रव्य जो अपार-दर्शक हो, जिसमें से होकर ताप और बिजली का संचार हो सके, जो पीटने से खण्डित न हो. २ शरीर को बनाए रखने वाले पदार्थ, शरीर को धारण करने वाला द्रव्य।
जैसे—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र।
३ शुक्र, वीर्य. ४ शब्द का वह मूल जिससे क्रियाएँ बनती हैं।
रू०भे०—धात।
धातुकरम-संपु० [सं० धातुकर्म] ७२ कलाओं में से एक।
धातुक्षय-संपु० [सं०] १ शरीर से वीर्य निकलने का रोग, प्रमेह आदि. २ खांसी का रोग।
धातुथंभक—देखो 'धातुस्तंभक' (रू.भे.)
धातुपुस्ट-वि० [सं० धातुपुष्ट] वीर्य को गाढ़ा करने वाला।
धातुप्रधान-संपु० [सं० धातुप्रधान] प्रधान धातु, वीर्य।
धातुभ्रत-संपु० [सं० धातुभृत्] पर्वत, पहाड़ (डिं.को.)
धातुमाक्षिक-संपु० [सं०] एक उपधातु, सोनामक्खी।
धातुरेचक-वि० [सं०] जो वीर्य को बहा कर निकाल दे, वीर्य को बाहर निकालने वाला।
धातुवरद्धक [सं० धातुवर्द्धक] वीर्य को बढ़ाने वाला।
धातुवाद-संपु० [सं०] कच्ची धातुओं को साफ करने अथवा मिली हुई धातुओं को साफ करने अथवा मिली हुई धातुओं को पृथक करने का काम, ६४ कलाओं में से एक कला।
धातुवादी-संपु० [सं०] रसायन की सहायता से सोना या चांदी बनाने वाला अथवा धातुओं को साफ करने वाला।
उ०—सुजांण चित्रजांण धातुनिस्पत्तिजांण ज्योतिसजांण। मंत्रवादी यंत्रवादी तंत्रवादी धातुवादी अंजनवादी।—व.स.
धातुवैरी-संपु० [सं० धातुवैरिन्] गंधक।

धातुस्तंभक-वि० [सं०] जिससे वीर्य देरी से स्खलित हो, वीर्य का स्तंभन करने वाला।
रू०भे०—धातुथंभक।
धातोपम-सं०पु० [सं० धातु+उपमा] सोना (अ.मा.)
धात्रवादी—देखो 'धातुवाद' (रू.भे.)
धात्री-सं०स्त्री० [सं०] १ आर्या या गाहा छंद का भेद विशेष जिसके चारों चरणों में मिला कर १९ दीर्घ और १९ ह्रस्व वर्ण सहित ५७ मात्राएं होती हैं (ल पिं.)
२ भूमि, पृथ्वी (अ.मा.). ३ माता, मां. ४ गंगा.
५ आंवला का वृक्ष या फल (डिं.को.). ६ सेना, फौज.
७ देखो 'धाय' (रू.भे.)
धात्रीफळ-सं०पु० [सं० धात्रीफल] आंवला।
धाद्रिग-सं०पु० [सं० धादृग्] पुरुष की ७२ कलाओं में से एक (व.स.)
धाधूं-सं०स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष. २ शीघ्रता से कार्य करने की क्रिया या भाव. ३ लाठी प्रहार।
धाप-सं०स्त्री० [सं० ध्रै=तृप्तौ] जी भरने का भाव, तृप्ति, संतोष।
उ०—ओ इसो दरिद्र रो भाटो छै सो परो काडो, इण थकां रोटी धाप नहीं खाय सकां।—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता
धापड़-सं०पु० [सं० ध्रपक] १ सिंचाई के लिए कूए से मोट निकाल कर पानी को गिराने का स्थान, लिलारी, छिउलारा।
उ०—खाली खेळी में बाजै खणणाटा। भाजै धापड़ लै कोठा भणणाटा। वारै वारै रै धन दै बणणाटा। गांजर खांचै लै पांजर गणणाटा।—ऊ.का.
रू०भे०—धपड़, धपड।
सं०स्त्री०—२ थप्पड़, तमाचा, चपत।
क्रि०प्र०—दैणी, धरणी, पड़णी, मारणी, रखणी।
रू०भे०—धाफड़।
धापणौ, धापबौ-क्रि०अ० [सं० ध्रै=तृप्तौ] १ तृप्त होना, अघाना।
उ०—१ उर जांणै पकवांन अरोगूं, धाप'र मिळै न लूखो धांन। आदम की विध करै 'ओपला', भोळा जे रचिया भगवांन।
—ओपो आढो
उ०—२ घर हरिया चर धापिया, मातै सांवण मास। पिण बौहलिया बापड़ा, अै धुर हूंत उदास।—बां.दा.
उ०—३ जीमण नैं पुरसी लापसी, नाना मोटा धापसी।—व.स.
२ जी भरना, संतुष्ठ होना। उ०—१ प्रभु दरसण दीठां थकां, भूख त्रिखा सहू जावैजी। निरखंतां नयण धापै नहीं, अवर चिंता नहीं आवैजी।—जयवांणी
उ०—२ पर गढ़ लेणा रोप पग, अरि सिर देणा तोड़। धरा हूंत नहिं धापणौ, खूंदाळमां न खोड़।—बां.दा.
उ०—३ जळ पीधौ जाडेह, पावासर रै पावटै। नैंनकियै नाडेह, जीव न धापै जेठवा।— जेठवा
उ०—४ करम करत कबहूं नहिं धापै। कबहूं असुभ कबूं सुभ थापै।—स्री सुखरांमजी महाराज
३ लथपथ होना, तराबोर होना।
उ०—जितरै आ तरवार बैरियां रै लोही सूं नहीं धापै, उतरै हूं पांणी नहीं पी सकूं, ढील नहीं कर सकूं।—नी.प्र.
४ पूर्ण होना, परिपूर्ण होना?
उ०—१ ऊला केक अपार, पड़ै पल्ला अणपारां। धारा लड़िया धाप, करद खंजरां कटारां। मंडळावति लड़ि अमर, 'चौथ' 'वाघरो' खगां चडि। सुत 'मोकळ' हरदास, अधिक लड़ पड़ियौ ऊहड़ि।—सू.प्र.
उ०—२ लोहड़ां धाप इण विध लड़ै, सूर पड़ै हंस नीसरै। रंभ वरै सुरग वसियो 'रयण', अचड़ प्रिथी सिर ऊबरै।—सू.प्र.
५ अटल विचार करना, दृढ़ निश्चय करना।
उ०—गढ़ भुरज सझिया चहुंगमे, असमांण पड़तौ आंगमें। घण दाखि पोरस मेळि दळ घण, प्रगट नियतणि मरण धापण।—रा.रू.
६ सम्पन्न होना। उ०—पछै वळतै जैतारण री नीमाज करमचंद डेरो कियो। तिण दिन नीमाज रा लोग धापतो थो।
—राव मालदे री वात
धापणहार, हारौ (हारी), धापणियौ—वि०।
धपवाड़णौ, धपवाड़बौ, धपवाणौ, धपवाबौ, धपवावणौ, धपवावबौ—प्रे०रू०।
धपाड़णौ, धपाड़बौ, धपाणौ, धपाबौ, धपावणौ, धपावबौ—क्रि०स०।
धापिओड़ौ, धापियोड़ौ, धाप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धापीजणौ, धापीजबौ—भाव वा०।
ध्रापणौ, ध्रापबौ—रू०भे०।
धापमौ, धापवौ—देखो 'धपाऊ' (रू.भे.) उ०—कांई रे भांवटा, थारी आ पटरांणी कांई कैवै कै किसा पेटिया पूरवी हो सो महीं पीसणौ पीसां। दिराय दूं आज थांनै धापमां पेटिया।—रातवासो
धापियोड़ौ, धापोड़ौ-वि० [सं० ध्रापित] धनाढ्य, सम्पन्न।
भू०का०कृ०—१ तृप्त हुवा हुआ, अघाया हुआ.
२ सन्तुष्ठ हुवा हुआ, जी भरा हुआ. ३ लथपथ हुवा हुआ, तराबोर हुवा हुआ, तृप्त हुवा हुआ।
४ पूर्ण हुवा हुआ, परिपूर्ण हुवा हुआ. ५ अटल विचार किया हुआ, दृढ़ निश्चय किया हुआ. ६ सम्पन्न हुवा हुआ.
७ अरुचिकर हुवा हुआ, तंग हुवा हुआ, अप्रसन्न हुवा हुआ, हैरान हुवा हुआ।
(स्त्री० धापियोड़ी, धापोड़ी)
धाफड़—देखो 'धापड़' (रू.भे.)
धाब-सं०पु० [देश०] कटी हुई घास का ढेर।
धावड़िया-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का गेहूं बोने का ढंग या इस ढंग से बोये हुए गेहूं।
वि०वि०—पहले भूमि को पानी से तर कर दी जाती है, तत्पश्चात्

(?)पों में ... ... पर इन चना दिया जाता है। फिर कचारियां बना दी जाती हैं।

धावळ-संपु० [देश०] १ ऊनी वस्त्र विशेष। उ०—दाढ़ी रंग उज्जळ माग सिंदूर। प्यालां मतवाळ नमो भरपूर। लोई सिर फावत धावळ संग। चमू पर सावळ सूळ चमंक।—मे.म.

२ कपड़ा, वस्त्र। उ०—मनजांगूं पहरूं महमूदी, फाटा धावळ पहर फरूं। पामूं हुं मनसा री कीधो, करूं जको करतार करूं।—ओपो आढ़ो

३ देखो 'धावळो' (मह., रू.भे.)

धावळपाळ, धावळपाळी, धावळयाळ, धावळयाळी, धावळांणी, धावळियांणी, धावळियाळ, धावळियाळी-वि० [राज० धावळ+सं० आलुच्] 'धावळा' वस्त्र धारण करने वाली।

उ०—१ धावळयाळ घंटाळ विरांणी, लोवड़याळ लवेस। मेहाई करनल कनियांणी, केई केई रूप करेस।—अज्ञात

उ०—२ म्हारी रच्छा कीज्यो हे मा देसांणां री राय। जग जननी करनी जगदंबा, धावळयाळी ध्याय।—राघवदास भादो

उ०—३ धजाळी तुही करनला धावळांणी। बड़ाळी तनै च्यार वेदां बखांणी।—मे.म.

उ०—४ वाई इंद्र रावळी वाळक, तेडै दरसण तांणी। रांमत घुड़द पधारो रमवा, अंबा धावळियांणी।—मे.म.

उ०—५ सवरण साहल सुणी सचाळी, ताय मिलो मुझ हेकरण ताळी। 'पीथल' वाहर काघ पंचाळी। धावजे चारण धावळियाळी।

—प्रिथीराज राठौड़

संस्त्री०—१ श्रीकरणी देवी (डि.को.). २ देवी, दुर्गा, शक्ति।

रू०भे०—धावळी, धावळीयार, धावळयाळी, धावळियाळ।

धावळियौ—देखो 'धावळौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ करमां कांई थारै काकी लागी उण घर खीचड़ खायो रे। धावळिया रो पड़दो कीनो रुच रुच भोग लगायो रे।—अज्ञात

उ०—२ फाटा धावळिया घाघरिया फाटा। फरकै चोटलिया देता फरराटा। तागत तूटोड़ी तापड़ तूटोड़ा। खातां पोतां सूं पैलां पूटोड़ा।—ऊ.का.

धावळी, धावळीयार—देखो 'धावळयाळ' (रू.भे.)

उ०—रज रूप कियो अन सोस रणां। अन तेण करी कद सोल बणां। धावळी प्रतपाळण जूंझ धरै। कुण पाळ जती अन 'पाळ' करै।

—पा.प्र.

धावळौ-संपु० [देश०] १ एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो स्त्रियां कटि के नीचे पहनती हैं, अधोवस्त्र। उ०—१ कहा सेवा करी करमां भलो आयो भाय। धावळै रो धार पड़दो, खीचड़ो ग्या खाय।—भगतमाळ

उ०—२ तिका काळी, टीगी, मोटा दांत, दूवळी, घणी डरावणी, माथा रा लटा विनाऱ्या, घणा तेल मांहै चवती, धवळा केस, माथै निलाड़ सिंदूर पेपड़ियो थको, लोवड़ी काळी, काळो धावळो, कांचळी तेल मांहे गरकाव थको, उघाड़ै माथै कीधां, हाथ मांहे त्रिसूळ झालियां दरबार आई।—जगदेव पंवार री वात

२ लहंगा, घाघरा (व्यंग में)।

रू०भे०—धावळो।

अल्पा०—धावळियो, धावळियौ।

(मह० धावळ, धावळ)

धावौ—देखो 'दावौ' (रू.भे.)

धाभाई-संपु० [सं० धात्रेय भ्राता] बच्चे को स्तनपान कराने वाली स्त्री का पुत्र।

रू०भे०—धाय भाई।

धाय-संस्त्री० [सं० धात्री] १ वह स्त्री जो किसी दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करने के लिये नियुक्त हो।

उ०—१ वखतसिंहजी नागोर सूं टीका रा हाथी घोड़ा कपड़े रा थान लेय धाय नूं मेल्ही।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ चूंडैजी नूं धाय ले अर आल्हे चारण रै घरै काळाऊ गांव जाय नै रही।—नैणसी

रू०भे०—धा, धाई, धात्री, धाया।

२ कुछ पीलापन लिये हुए अनार की पत्तियों से मिलता-जुलता पुरदरी पत्तियों का एक वृक्ष विशेष जो हिमालय से लेकर सारे उत्तरीय भारत में अधिकता से होता है। यह वृक्ष 'धव' वृक्ष से भिन्न होता है।

३ दफा, बार। उ०—भ्रिग किया प्रगट जिग महा हूंती भड़, वेढीमणा कुदरथी वीर। आठे गण पाछा अउहटिया, एकण धाय मनाई हीर।—महादेव पारवती री वेलि

४ देखो 'धा' (रू.भे.)

धायक-वि० [सं० धावक] दौड़ने वाला।

उ०—कीन्हां लायक कांम, खळ लांमद लायक खगां। सग धायक मिळ सांम, सुण वायक 'पेमां' सुता।—पा.प्र.

धायडेती—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)

उ०—उत मंगिय नाळ उपाडियतां। धन वाढ अनै धायडेतियतां, रजवाटिय जोध सगां रसियां। नह टाल वखा भड़ नी धसियां।

—पा.प्र.

धायन-क्रि०वि० [देश०] लगातार, निरन्तर।

धायभाई—देखो 'धाभाई' (रू.भे.)

उ०—कांन्हो नाथा धायभाई रो जमाई।—नैणसी

धायरट्ठ, धायराठु—देखो 'धतराठ' (रू.भे.)

उ०—१ पहिलउं आवइ गुरु गंगेउ। धायरट्ठ पुरि बइसइं राउ। विदुर क्रिपा गुर अवर नरिंद। मंचि चड्या सोहइं जिम चंद।

—पं.पं.च.

उ०—२ अवकि वेटउ धायराठु सो नयणे आंधउ। अंबाला नउ पुत्तु पंडु त्रिहु भुयणि प्रसिद्धउ। पं.पं.च.

धाया—देखो 'धाय' (रू.भे.)

धायोड़ौ–वि० [सं० धें=तृप्तौ] धनी, धनवान ।

भू०का०कृ०—१ पूर्ण अघाया हुआ, तृप्त. २ गिरा हुआ, पड़ा हुआ. ३ देखो 'धावियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धायोड़ी)

धायौ—देखो 'धायोड़ौ' (रू.भे.)

उ०—१ एक बीज ताका विरछ, अनत रूप वहौ भाय। ता तरवर का फूल में, सबको रह्या समाय। सबको रह्या समाय वहोत भूखा वहौ धाया। ताहीं में उपजै खपै, आपही आप बंधाया।—ह.पु.वा.

धार–सं०स्त्री० [सं०] १ किसी काटने वाले शस्त्र या हथियार का वह तेज सिरा या किनारा जिससे किसी वस्तु को काटा जा सकता है।

उ०—१ मरणौ लाजम मांमलै, धार अणी चड धाप। पड़णौ सांकळ पींजरै, सिहां वडौ सराप।—बां.दा.

उ०—२ पिंड फूटै छूटै रुधर पूर। सिर तूटै जूटै केक सूर। धड़ डोलै खाथा तेग धार। माथा मुख बोलै मार मार।—वि.सं.

मुहा०—१ धार चढाणी (दैणी)—शस्त्र को पैना करना.

२ धार बंधणी—मंत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार का निकम्मा हो जाना. ३ धार बांधणी—मंत्र आदि के बल से किसी काटने वाले हथियार की धार को निकम्मा कर देना ।

२ तलवार । उ०—१ धड़द्धड़ वेधड़ वज्जहि धार, कड़क्कड़ आठकि काठ कुठार ।—रा.रू.

उ०—२ कियौ विच मोगर खैंग गरक्क। जरद्दां वाजिय धार जरक्क।
—रा.रू.

मुहा०—धार लागणौ (उतरणौ)—तलवार के घाट उतरना, मारा जाना ।

३ पृथ्वी, इला (डि.नां.मा.). ४ किनारा, सिरा, छोर.

५ मूसलाधार वृष्टि. ६ द्रव पदार्थ की वह गति-परंपरा जो किसी आधार से लगी हुई हो अथवा निराधार हो, द्रव पदार्थ के गिरने अथवा बहने का तार, अखण्ड प्रवाह । उ०—१ धर गंगाजळ धार, आंणी तप कर ऊजळौ। ओ मोटौ उपगार, भागीरथ कीधौ भुयण।
—बां.दा.

उ०—२ छट्टै प्रहरै दिवस कै, हुई ज जीमणवार। मन चावळ तन लापसी, नैण ज घी की धार।—ढो.मा.

मुहा०—१ धार टूटणी—किसी द्रव पदार्थ के अखण्ड प्रवाह का रुकना, कार्य में विक्षेप पड़ना. २ धार दैणी—किसी देवी, देवता या नदी आदि को द्रव पदार्थ चढ़ाना ।

जैसे—दूध, पवित्र जल, शराब आदि ।

३ धार बंधणी—किसी द्रव पदार्थ का तार के रूप में गिरना। कार्य का लगातार होना. ४ धार मातै मारणौ (पिशाव)—किसी वस्तु को तुच्छ समझना अथवा अपने योग्य न समझ कर ग्रहण न करना ।

७ प्रवाह, वेग । उ०—कावेरी जळ स्रीकळस, धसियौ सनमुख धार। ऐरावत किर आवियौ, मंदायिणी मझार।—बां.दा.

८ देखो 'धारा' (रू.भे.) (नळ-दवदंती रास)

धारक–वि० [सं०] १ धारण करने वाला। उ०—१ जोधौ जैत जुवार विभाकर वंस रौ। धारक स्यांम धरंम अछेह आहंस रौ।
—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ क्रतु करुणामय धू करतार। भणौ भव भाजन भू भरतार। उधारक धारक लोक असेस, सुधारक तारक सेस विसेस।—ऊ.का.

२ निभाने वाला ।

रू०भे०—धारक्क ।

धारकधरा–सं०पु० [सं० धरा+धारक] शेषनाग।

उ०—सुणि गाज निवांणां जळ सुकै, धुकै सीस धारकधरा। कळिचाळ एम दमगळ करै, सबळ थाट गजसाह रा।—सू.प्र.

धारकसुरत–वि० [सं० श्रुत+धारक] विद्यावंत, पंडित, ज्ञानी।

उ०—वैद पतूसतूसू लंका वस, सो आवै धारकसुरत। जिकौ वतावै जड़ी संजीवन, तौ लिखमण ऊठै तुरत।—र.रू.

धारकोर–सं०स्त्री० [देश०] खिड़की या दरवाजे के सामने पड़ने वाली अधूरी दीवार का वह किनारा जिसकी सीध कटती हो। इसको मकान के लिए अशुभ माना जाता है।

धारक्क—देखो 'धारक' (रू.भे.) उ०—रौद्रांण भचक भालां गरोठ। धारक्क वहै गज बाज धीठ।—सू.प्र.

धारजळ—देखो 'धारूजळ' (रू.भे.)

धारण–सं०स्त्री० [देश०] १ पांच सेर की एक तोल।

२ तराजू का पलड़ा। उ०—मांण थांण परसण विय 'मोकळ', धसण फौज पड धण धणी। धणी चत्रंग बैसतां धारण, धारण चूकौ दिली धणी।—महारांणा जगतसिंह रौ गीत

३ ग्रहण करने की क्रिया या भाव. ४ देखो 'धारणा' (रू.भे.)

उ०—१ वात इसी तूं हीज विचारै। धारण इसी अवर कुण धारै।
—सू.प्र.

उ०—२ धणी चत्रंग बैसतां धारण, धारण चूकौ दिली धणी।
—महारांणा जगतसिंघ रौ गीत

उ०—३ मिसण पड़िया मांमलै, 'सांमो' अनै 'रतन्न'। दिल्ली खेत न छंडियौ, धारण चारण धिन्न।—रा.रू.

धारणपितंबर, धारणपितांबर–सं०पु० [सं० पीताम्बर धारण] परमेश्वर
(ह.नां.)

धारणमात्रिका–सं०स्त्री० [सं०] स्मरण शक्ति वढ़ाने की कला, ६४ कलाओं में से एक।

धारणवज्र–सं०पु० [सं० वज्र धारण] इन्द्र (ना.डि.को.)

धारणा–सं०स्त्री० [सं०] १ मन में धारण करने या समझने की वृत्ति, किसी बात को मन में धारण करने की शक्ति, अक्ल, बुद्धि, समझ.

२ पक्का विचार, दृढ़ निश्चय। उ०—सो म्होकमसिंघ इसी मोटी वातां नूं वाथ मारै। नित धारणा आहीज धारै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ ध्यान में या मन में रखने की वृत्ति, स्मृति, याद।

उ०—धीरज [illegible] चतुराई, [illegible] महाराजां बिरद। [illegible] धारणा [illegible], [illegible] जद।—बां.दा.

४ धारण करने की क्रिया या भाव.

५ मन की वह स्थिति जिसमें कोई और भाव या विचार नहीं रह जाता, केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है। यह योग के आठ अंगों में से छठा अंग माना जाता है। उ०—भेद विवेक विचार धारणा, सुध [illegible] । [illegible] निर्वासन करके, ब्रह्म लख्यो बड़भागी।—श्री सुखरामजी महाराज

६ बुद्धि की वह स्थिति विशेष जिससे हर्ष, शोक आदि का पता चले, [illegible] करने की मनःशक्ति।

उ०—ज्यों ज्यों आहमण नजीक आवै छै त्यों त्यों रुकमणीजी आहमण री बुध की धारणा ताकै छै। यां लें आयो होसी तो बुध की धारणा नहीं होसी।—वेलि.

७ कभी विस्मृत न होने वाला निश्चयात्मक ज्ञान (जैन)

धारणी-वि० [सं० धारण] (स्त्री० धारणी) धारण करने वाला।

उ०—१ [illegible] दइतां [illegible] राकसां मारणी, भरी पळ धारणी रगत भेळो। [illegible] मन्त्रोभल मात जग तारणी, चारणी चारणां वरण भेळो।—गिरधी बारहठ

उ०—२ वीणा पुस्तक धारिणी काश्मीर कंदरि वसंति। गीत नाद गुण विमल देनि कवियण दिपति।—अ. वचनिका

उ०—३ देवांत यादिम दारणी, धर राखणी नगधीर। वर वीर [illegible] धारणी, [illegible] मारणी महधीर।—ल.पि.

उ०—४ [illegible] धारणी मुगळां जुडि जुधि मारणी। मन-मोट [illegible] निरमळ जग [illegible] भोज जांमळ।—ल.पि.

धारणौ, धारबौ-क्रि०स० [सं० धारणम्] १ ग्रहण करना, धारण करना।

उ०—१ सत पुरुष की सीख श्रवण सुण, लपलप लपत लबारी। काम क्रोध के कद टेक कर, छिती क्षमा नहिं धारी।—ऊ.का.

उ०—२ कहै सनकादिक चारूं [illegible]। पढै नित नारद धारै प्रीत।
—ह.र.

२ अंगीकार करना, स्वीकार करना।

ज्यूं—[illegible] धारणौ।

३ मानना, समझना, गिनना।

ज्यूं—थौ छोरौ म्हनै धारै कोयनी।

उ०—[illegible], पर-बुध किणी न धारतौ। [illegible] निरखै निजर।—पा.प्र.

४ विचार करना, निश्चय करना। उ०—१ धारै तो साहब धणी, [illegible]। मार उतारै मेदनी, मोहरत हेकण मांय।—ह.र.

उ०—२ दास दशा नूं होय विचारै। धारण इसी अवर कुण धारै।
—सू.प्र.

५ शोभार्थ अथवा रक्षार्थ धारण करना, पहनना।

उ०—१ हे मंदा! थौ तो थारो घड़ावोड़ो गहणो, आ थारी करावोड़ी पोशाक, अबै थे धारण करो। म्हारो तो सुहाग गयो, हूं भागत री सुहाग रातूं नहीं नें हूं हमें विधवा जोगण किसै कांम री।
—पो.स.टी.

उ०—२ भ्रकुटि पवित्र करिस विसंभर। धारै गो-चंदण धरणीपर।
—ह.र.

६ किसी पदार्थ को अपने ऊपर रखना, अपने किसी अंग में लेना अथवा वहन करना।

ज्यूं—सिवजी गंगा नैं आपरी जटा में धारी, सेसजी धरती नैं धारी।

७ थामना, झेलना, पकड़ना. ८ सेवन करना, खाना या पीना।

ज्यूं—अमल धारणौ।

९ सहानुभूति प्रदर्शित करना, दया दिखाना।

उ०—धरमी नर ऊपर कोमळ कर धारै। पापी पुरसां नै सदव्रत संहारै। तदऽनुग्रह बिन हा ग्रिह ग्रिह तूती। जिण तिण विग्रह में निग्रह दी जूती।—ऊ.का.

धारणहार, हारौ (हारी), धारणियौ—वि०।

धारिओड़ौ, धारियोड़ौ, धारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

धारीजणौ, धारीजबौ—कर्म वा०।

धारधर-सं०पु० [सं० धाराधर] १ इन्द्र (डि.को.)

उ०—हींदवां छात अलियात वातां हुई, सुज हुवै जेम सारी अरक सोम। धारधर नयण अकुळावियो धुवां सूं, भराधर कमळ अकुळावियो धोम।—महाराणा राजसिंह रो गीत

२ बादल, घन।

धारधूंस-सं०पु० [सं० धाटी, प्रा० धाडी=धार+धूस=ध्वंस] डाकुओं की मंडली। उ०—चित विपदा वारधि पार करन को चाही। अध-बिच में आती नाव भंवर में आई। दुरभागिन को हा देव भयौ दुखदाई। धन पोल पहूंच्यो धारधूंस ले धाई।—ऊ.का.

धारमिक-वि० [सं० धार्मिक] १ धर्मशील, धर्मात्मा.

२ धर्म सम्बन्धी।

धारमिकता-सं०स्त्री० [सं० धार्मिकता] धार्मिक होने का भाव।

धारवियौ-सं०पु०—राठौड़ वंश की 'धारविया' उपशाखा का व्यक्ति।

धारविया-सं०स्त्री०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा (बां.दा.ख्यात)

धारवौ-सं०पु० [सं० धारा] धारा, प्रवाह।

उ०—नैणां चाल्या धारवा जी म्हारै, काजळ मळियो कोर। बादळी बरसै वयूंनी ए, बीजळी चमकै वयूं नी ए।—लो.गी.

धारसु-सं०पु० [सं० सुधार] मंत्री (डि.नां.मा.)

धारांग-सं०पु० [सं०] १ एक प्राचीन तीर्थ.

२ तलवार, खड्ग।

धारा-सं०स्त्री० [सं०] १ द्रव पदार्थ की गति परम्परा, अखण्ड प्रवाह, बहाव, धार। उ०—कर ल्हमकर कीधा कतल, पार घर्णं परमार। हुवा मर्ठ देवरज, धारा काळी धार।—बां.दा.

२ निरन्तर वहता हुआ द्रव पदार्थ. ३ सोता, झरना, चश्मा.
४ घोड़े की पंच विध गतियों के समूह का नाम.
५ तलवार। उ०—१ लड़ै मुड़ो पतिसाह विमुहा खड़ो लसकरां, रिण पड़ै धणी धारा तणी रीठ। किम फिरै पीठ जयसिंघ कूरम तणी, प्रिथी चो भार कूरम तणी पीठ।
—महाराजा जयसिंह आमेर रै धणी री वारता
उ०—२ सोळंकी गज फौज सज, चौड़ै आयो चाल। धारा मुंहे धकावतो, धज नेजां गज ढाल।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात
यौ०—धारा-तीरथ।
६ रथ का पहिया. ७ पहिये की परिधि में प्रयुक्त होने वाला काष्ठ का धनुषाकार खण्ड (डि.को.) ८ फौज अथवा फौज का अग्र भाग। उ०—पड़वै पोढ़तां करड़ावण हर कोई करै। धारा में धसतां, आंसूं आवै ईलिया।—लाखणजी वारहठ
९ वृष्टि, वर्षा। उ०—संमा संमा रा जळ कुंडळ जोया। धारा संमा रा महिमंडळ धोया। लूवां मग लागी धरणीतळ धायां। मुसला मिटगा ज्यूं अंगरेजां आयां।—ऊ.का.
१० मालवा की राजधानी जो राजा भोज के समय प्रसिद्ध थी।
११ देखो 'धार' (रू.भे.) उ०—वहै जातरी रात री दीह वारा। धकै चाढबो माग रो खाग धारा।—मे.म.

धाराक-वि० [सं० धारक] १ तीक्ष्ण या पैनी धार वाला।
उ०—खीवरां हाथ बांणस खास। वहतीक जांण रोकी वनास। सांतरा अती धाराक सेल। तारका झव झवै अणीह तेल।—वि.सं.
२ धारण करने वाला।

धारागळ-वि० [देश०] वहुत वड़ा, लम्बा-चौड़ा (भवन)

धाराट-सं०पु० [सं०] १ वादल, मेघ. २ चातक.
३ मस्त हाथी. ४ घोड़ा।

धाराधर-सं०पु० [सं०] १ वादल, मेघ (ना.डिं.को., अ.मा., नां.मा.)
उ०—१ मिळियै तट ऊपटि विधुरी मिळिया, धण धर धाराधर धणी। केस जमण गंग कुसुम करंबित, वेणी किरि त्रिवेणी वणी।
—वेलि.
उ०—२ धाराधर खंची जळधारा। सोवा रिजक विना हुय सारा। असुरां मुलक मेघ ओछांणा। थया सचींत सहर पुर थांणा।—रा.रू.
२ इन्द्र, देवराज. ३ राजा, नृप. ४ पर्वत.
५ तलवार, खड्ग। उ०—१ गंगा री सहस्र धारा रै समांन के ही धाराधरां री ऊजळी धार कंकटां रा कदंब में कढ़ण लगी।—वं.भा.
उ०—२ कुळ लज्जा रै अनुसार धाराधर री धारां सूं तिल तिल होय पीहर सासरै पांणी चढ़ावण रो अपूरव सहगमण कीधो।
—वं.भा.
रू०भे०—धाराहर।

धारा-धांम-सं०पु० [सं० धारा+धाम] वीर गति को प्राप्त होने का भाव।
(मि० धारातीरथ)

धाराधार-त्रि० [सं० धारा+धारिन्] खड्ग धारण करने वाला, वीर, योद्धा। उ०—अर म्हारै तो धरा में धराधवां रै धांम धांम धाराधारां री धमचक देखि ओरठे भी पण री पूरणता भरावीजै।—वं.भा.

धारायणी-वि० [सं० धारणी] धारण करने वाली।
उ०—उभै रूप धारायणी साचेली जेहांन आखै, तारायणी सिला-धू नाचेली नरत्याद। पारायणी प्रवाड़ां आछैली दछा देण पातां, नारायणी रूप नमो काछेली अनाद।—नवलजी लाळस

धारायसचियाय-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम (वां.दा. ख्यात)

धारारव-सं०स्त्री० [सं०] शस्त्रों की ध्वनि।
उ०—धमचक धोम होम धारारव। पुरि सिंदूर रुहिर परनाळ। विपरति गति 'रतनै' अतवासै। विहंड धड़ा परणी विकराळ।—दूदौ

धाराळ-वि० [सं० धारा+आलुच्] १ वीर, योद्धा।
२ देखो 'धाराळी' (मह., रू.भे.) उ०—ढालां सिर धाराळ, वागा वरिआंमां तणा। गळती निसि गाजै गजर, घण धाअै घड़िआळ।
—वचनिका

धाराळा—देखो 'धाराळी' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—चोरंगवाळ गिळण चुगलाळां। धौळै दिन वाणा धाराळां।
—रा.रू.

धाराळी-सं०स्त्री० [सं० धारा+आलुच्] १ कटार।
उ०—१ धड़ विच धाराळी राव धांधळ, गाळी सत्र सांकड़ी ग्रहै। वळै कहीं रा पिता वीसरै, काका ही वीसरै कहै।
—झरड़ा वूड़ावत धांधल री गीत
उ०—२ हूंकळ पोळि उरड़ियौ हाथी, निछटी भीड़ि निराळी। 'रतन' पहाड़ तेण सिर रोपी, धूहड़िया धाराळी।—दुरसौ आढ़ौ
२ वरछी (डि.को.). ३ तलवार, खड्ग (ना डिं.को.).
४ नदी, प्रवाहिनी।
रू०भे०—धाराळा।
मह०—धराळ, धाराळ।

धारावर-सं०पु० [सं०] वादल (डिं.को.)

धारावाही-वि० [सं०] धारा के समान आगे वढ़ने वाला, जो विना रोक-टोक आगे वढ़ता हो।

धाराविस-सं०पु० [सं०] खड्ग, तलवार।

धाराहर—देखो 'धाराधर' (रू.भे.)
उ०—१ विण रवि वोम कसण ज्योति विण, धाराहर विण जसी घर। 'जैसी' हरा जिसो जांणेवो, तो विण प्रथमी कळपतर।
—महारांणा सांगा दूसरा री गीत
उ०—२ दूनां तटां जु नदी ऊपरि वही छै सु जांणे चोटी विथुरी छै। विथुरी काहे तैं। प्रिथी जु स्त्री त्यैंने धाराहर मेघ जव भरतार मिळियो छै।—वेलि टी.

धारि—देखो 'धारी' (रू.भे.)

धारिणी-सं०स्त्री० [सं०] पृथ्वी, धरती।
वि०स्त्री०—धारण करने वाली।

धारियोड़ो-वि०—१ ग्रहण किया हुआ, धारण किया हुआ. २ अंगीकार किया हुआ, स्वीकार किया हुआ. ३ माना हुआ, समझा हुआ, लिया हुआ. ४ विचार किया हुआ, निश्चय किया हुआ. ५ शरीर अथवा वस्त्र धारण किया हुआ, पहना हुआ. ६ किसी पदार्थ को अपने ऊपर रखा हुआ, अपने किसी अंग में लिया हुआ अथवा ग्रहण किया हुआ. ७ थामा हुआ, झेला हुआ, पकड़ा हुआ. ८ सेवन किया हुआ, खाया हुआ या पीया हुआ. ९ सहानुभूति प्रदर्शित किया हुआ, दया दिखाया हुआ।
(स्त्री० धारियोड़ी)

धारियौ-सं०पु० [सं० धार+रा०प्र० इय] एक प्रकार का शस्त्र।
उ०—१ पछै पोहोंमीक दूर जावतां ईज उणनै फकणौ पड़यौ। पारख के मारग रै बीच च्यार जमदूत आडा ऊभा हा। ऊंठां रै रस्तां ईज टाकर धारियौ गांधै कर नै आगै आयग्यौ।—रातवासौ
उ०—२ पद जातां मो पीन नूं, घण चोरां लिय घेर। पर हाथां वे धारियौ, गंड गळ कीधौ गेर।—रेवतसिंह भाटी
रू०भे०—धारवौ।

धारी-वि० [सं० धारिन्] (स्त्री० धारणी, धारिणी) धारण करने वाला (एक प्रत्यय रूप शब्द जो शब्दों के पीछे लगता है।)
उ०—१ देवी उम्मया रम्मया ईस नारी। देवी धारणी मुंड त्रिभुवन्न धारी।—देवि.
उ०—२ जग री गत अदभुत जिका, सत धारियां सुहाय। नर जीवै नरलोक में, जस अमरापुर जाय।—बां.दा.
उ०—३ यहि प्रमांणै जुगति जांणौ, अति बनांणै जगत्र आणौ। षडग धारी त्रिगिधि प्यारी, लतण भारी कुंवर लाखौ।—ल.पिं.
सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसका तना श्वेत एवं फूल ललाई लिये हुए होते है। इसकी छाल वस्त्रादि की रंगाई के लिये काम आती है।
सं०स्त्री०—२ रेखा, लकीर।

धारीगंग-सं०पु० [सं० गंगा+धारिन्] महादेव, शिव।

धारीगदा-सं०पु० [सं० गदा+धारिन्] १ श्रीकृष्ण, मोहन (अ.मा.) २ विष्णु. ३ हनुमान. ४ भीम।

धारीचोवण-सं०स्त्री० [देश०] सोने, चांदी के आभूषणों पर खुदाई करने का एक औजार।

धारीजणी-सं०स्त्री० [देश०] मवेशी की खरीद के रुपये देने के समय निश्चित किये हुए मूल्य में की जाने वाली कमी।
वि०—जानने वाली।

धारीजनोई-सं०पु० [सं० यज्ञोपवीत+धारिन्]] ब्राह्मण, द्विज।
उ०—जटाधारी धारीजनोई, कविताधारी कंदाधार। मारग दस मेवाड़ नरेंद्र, वहै दुहाळौ वड दातार।
—महारांणा हमीरसिंघ रो गीत

धारीदार-वि० [सं० धारा+फा० दार] जिन पर रेखाएं हों, लकीरदार।

धारीनर, धारीधरा—देखो 'धराधर' (रू.भे.) (डि.नां.मा.)

धारूंजळ—देखो 'धारूजळ' (रू.भे.)
उ०—धारूंजळ जोध समोभ्रम धींग। सूरा राळ चूर करै रायसींघ।
—स.प्र.

धारू-वि० [सं० धारिन्] धारण करने वाला।
उ०—कविंदां दियण सिर-पाव मोतीकड़ा। धरा-धंब अनेक विरद धारू।—गिरवरदांन सांदू

धारूजळ-सं०पु० [सं० धारोज्ज्वल] तलवार, खड्ग (ह.नां., डि.को.)
उ०—१ धारूजळ वाहत प्रीतम धूप। मंडै जुध 'देव' कनोत 'मनूप'।—सू.प्र.
उ०—२ धूत नाळां उछाजतो भाजतो हाथियां धके, धारूजळां गाजतै अनेक घड़ा धींग। काळकोट ऊपाजतो ऊठियो लोयणां कोप, नरवेधा दोयणां खंभ गाजतो नृसींग।—बद्रीदास खिड़ियौ
उ०—३ कळकळिया कुंत किरण कळि ऊकळि, वरजित विसिख विवरजित वाउ। धड़ि धड़ि धवकि धार धारूजळ, सिहरि सिहरि समसै सीळाउ।—वेलि.
रू०भे०—धारजळ, धारूंजळ, धीरूजळ।

धारूवारू-वि० [देश०] अत्यधिक प्रिय, सर्वस्व के समान।
उ०—तरै रावळजी कह्यौ—'इणां नूं किणहेक वात कर सीख देणी' तरै वयूं हेक कह्यौ—'इणां रै धारूवारू पाग्नियां छै सु मांगो, सु औ देसी नहीं; तरै औ आपै परा जासी।—नैणसी

धारेचणौ, धारेचबौ-क्रि०स० [सं० धारण] प्रायः विधवा होने पर स्त्री का किसी पुरुष से नाता जोड़ना, अन्य पुरुष को पति रूप में स्वीकार करना।

धारेचौ-सं०पु० [सं० धारणा] विधवा स्त्री का किसी पुरुष से नाता जोड़ने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—करणौ, धारणौ, होणौ।

धारोइया-सं०स्त्री०—राठौड़ राव मल्लिनाथजी के पुत्र जगमाल के वंशजों की शाखा।

धारोइयौ-सं०पु०—राठौड़ों की 'धारोइया' शाखा का व्यक्ति।

धारोळो-सं०पु० [सं० धारा+आलुच्] (बहु व० धारोळा) १ क्वार मास में कभी-कभी होने वाली वर्षा का नाम।
उ०—१ कैंवासर थी आधा अर देवराजसर विचाळै तेथ एक धारोळो मेह रो आयो।—द.वि.
२ बादलों में दूर से दिखाई देने वाली वर्षा की धाराएं, वह जलधारा जो वर्षा ऋतु में कहीं दूर वृष्टि होने का आभास दिलाती है।
उ०—हरिया गिरवर तर हरिया, धारोळां वादळ धर हरिया। गैंधूंबै अंबर धरहरिया, सुकवि विदा कर घर संभरिया।
—द्वारकादास दधवाड़ियौ
३ अश्रु, आंसू। उ०—हांडी रांडी नै टोई संग हालै। चख भरा खंजन में धारोळा चालै।—ऊ.का.

घारोस्ण-सं०पु० [सं० धारोष्ण] थन से निकला हुआ ताजा दूध जो कुछ गर्म होता है ।

घारो-सं०पु० [देश०] प्रथा, रीति, परिपाटी ।

उ०—१ हाको हर जण रौ सुणियां सूं बाहर चढ़ां, वाई वरजण रौ ओ कद धारो आंपणौ ।—वांकीदांन बोगसौ

उ०—२ थारी वंग्यां है, तूं माथं उखण लै, वेटा ! जगत-रौ धारो तौ इसौ कोयनी । अवै थे अंगरेजी भणियोड़ा छोरा नवी वातां-ई करसौ ।—वरसगांठ

घारचौ—देखो 'धारियौ' (रू.भे.)

घाव-सं०स्त्री० [देश०] १ मानसिक कल्पना. २ हमला, आक्रमण ।

उ०—हरी वहादर चंद रौ, धरी खळां सिर धाव । पूगो पुर मंडळ गयां, दुयण न लग्गो दाव !—रा.रू.

३ दूरी, फासला. [सं० धाव] ४ चलने की गति, चाल ।

उ०—१ आगळा कंध पड़छी अलप, मलप गुलाली मूंठियां । धकपंख धाव खागां धकै, उपड़ै वागां ऊठियां ।—मे.म.

उ०—२ आरसी से मंजुळ, मूखमलूं से मुलायम, व ागूं के सांचं पंखराव सी धाव खुरताळ् के झमके सत सिपा के सिळाव ।—र.रू.

उ०—३ लसै आळ जंगाळ सिंदूर सूंडा । इळा में घसै धाव रा पाव ऊंडा ।—वं.भा.

५ भागने की क्रिया का भाव या दौड़ । उ०—१ खगां जीतणा धाव में दाव खेल्है। मलंगै तड़ा मांकड़ां पीठ मेल्है ।—वं.भा.

उ०—२ चलंत धाव वेग वाव धाव पाव चंचळे । अही कपाळ नीठ धीर पीठ कोम आकुळे ।—रा.रू.

६ घास विशेष. ७ वेग, प्रवाह । उ०—पाव धाव सिर पनंग रै, धाव नाव धजराज । समपै भारारावं सुत, करन चाव जस काज ।

—वां.दा.

८ बालक को स्तन.पान कराने वाली स्त्री ।

सं०पु०—९ विचार । उ०—और भाव देतां करै, लेतां और ही भाव । धाव परायौ हरण धन, साहां जात सुभाव ।—वां.दा.

१० निश्चय ।

मुहा०—धाव धरणौ—निश्चय करना ।

[सं० धव] ११ प्रायः पहाड़ी स्थानों में पाया जाने वाला एक पेड़ जिसकी पत्तियां अमरूद या शरीफे की सी होती हैं । इसकी लकड़ी वहुत मजवूत होती है । इसका कोयला भी वहुत अच्छा होता है । इसकी कई जातियां होती हैं । इसकी पत्तियों से चमड़ा सिझाया और कमाया जाता है । अल्पा०—धाउड़ो, धावड़ो, धावड़्यो, धावड्यो ।

घाव-देखो—'घ्राव' (रू.भे)

उ०—आगै देखै तो कोहर तेवि नै घाव पाय नै मरद तो सोह गांम गया छै ।—नैणसी

धावक-वि० [सं०] दौड़ने वाला ।

सं०पु०—१ हरकारा, दूत. २ धोबी (डिं.को.)

धावड़-सं०पु०—१ स्तन-पान कराने वाली स्त्री का पति ।

उ०—पथ्य गोवळजी आपरै हाथि आरोगाड़ता, अर गोयलजी कुंवर स्री दळपतजी रा धावड़ सूं पथ्य भोपतजी नूं तेजौ वाघोड़ करतौ ।

—द.वि.

२ पल्लीवाल ब्राह्मणों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति.

३ देखो 'धाव' (११) (मह., रू.भे.)

धावड़ो, धावड़्यो, धावडो, धावड्यो—देखो 'धाव' (११) (अल्पा. रू.भे.)

उ०—वांमी-बंध बांधळा, सूर सगरांम सधीरा । तेज जेठ तावड़ा, आंखि धावड़ा अंगीरा ।—मे.म.

धावणा—देखो 'धावना' (रू.भे.) (डिं.को.)

धावणो, धाववो-क्रि०स० [सं० धावु] १ दौड़ना, भागना ।

उ०—१ एक वधै मन वेग सूं, अति धावत केकांण । चक्र सुदरसण गुरुड तिण, करत वखांण प्रमांण ।—रा.रू.

उ०—२ अटक गोपी मही दांण उघरावजै, पावजै मधर रस गोरधन पास । धर लुकट मुकट वन वीथियां धावजै, वांसरी वावजै अहीरां-वास ।—बां.दा.

२ स्नान करना, नहाना. ३ प्रवाहित होना, वहना ।

उ०—१ धावै द्रग धारा दारा मुख धोवै । जीवन संजीवन जीवन धन जोवै ।—ऊ.का.

उ०—२ नीचौ नैणां सूं धोवां जळ धावै। ऊंचौ ईखण रौ अभलेखौ आवै ।—ऊ.का.

क्रि०स०[सं० ध्यै] ४ स्मरण करना, ध्यान करना, पूजा करना.

[सं० धेट्] ५ स्तन पान करना । उ०—अजा ब्रक्क हुंत आथड़ै, लाग पेट री लाय । धावै थण जिण त्याग धुव, जांमण जळवा जाय ।

—रेवतसिंह भाटी

६ देखो 'धाणौ, धावौ' (रू.भे.)

धावणहार, हारौ (हारी), धावणियौ—वि० ।

धवाड़णो, धवाड़वो, धवाणो, धवावो, धवावणो, धवाववो—प्रे०रू० ।

धाविओड़ो, धावियोड़ौ, धाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

धावीजणो, धावीजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

धियावणो, धियाववो, ध्याणो, ध्यावो, ध्यावणो, ध्याववो—रू०भे० ।

धावन-सं०पु० [सं० धावन] संदेशवाहक, दूत ।

उ०—१ लिखि कग्गळ कछवाह दिय, लय धावन निज हत्थ । आतुर धावन आंणि के, दिय नवाव के हत्थ ।—ला.रा.

उ०—२ लावा-पति वंधु प्रवळ, अलवर रहत असंक । तिनको धावन पठ्ठयें, लिखे वुलावन अंक ।—ला.रा.

रू०भे०—धावण ।

धावना-सं०स्त्री० [सं०] १ प्रार्थना, स्तुति, ध्यान.

२ पूजा ।

क्रि०प्र०—करणी, राखणी ।

[illegible]

घाड़—देखो 'धाड़ो' (रू., रू.भे.) उ०—सब नगरी घर दै सोना रो, ढुरग वरै भारी धनदाव । धायक चोट नींबड़ो ढक लै, अपणा दे नगरा दोड़ाव ।—बगतबाड़

घाड़ाबाड़ी, घाड़ैबाड़—देखो 'धाड़वाड़ी' (रू.भे.)

घाड़ियो—देखो 'घाड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

घाड़ो—देखो 'धाड़ो' (रू.भे.)

घावियोड़ो—भू०का०कृ०—१ दौड़ा हुआ, भागा हुआ.
२ स्नान किया हुआ, नहाया हुआ. ३ प्रवाहित हुवा हुआ, बहा हुआ.
४ स्मरण किया हुआ, ध्यान किया हुआ, पूजा किया हुआ.
५ स्तन पान किया हुआ.
६ देखो 'धावोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घावियोड़ी)

घावो—सं०पु० [सं० धावन] १ दल बल सहित तैयार होकर शत्रु से लड़ने के लिये जाना, आक्रमण, चढ़ाई, हमला ।
उ०—कूंवर सुंदरदास अपणै साथ सारै नूं मगणकार कर घोड़ां चढ़ कर घावो बोलयो ।—सुंदरदास बीकूंपुरै री वारता
मुहा०—घावो बोलणो—आक्रमण करना, आक्रमण के लिये आज्ञा देना ।
२ तीव्र गति से जाने की क्रिया या भाव, दौड़ ।
उ०—घोर अंधार तो सत्रुआं रा गढ़ ऊपरै नीसरणी दे नै नीठ-नीठ चढ़ै घणै मारूरै पति है सो गढ़ पर घावो कर चढ़ै, उठै इतरो कूद नै ऊतर जावै है के माखड़ (निगुर) घणा कूदणा वाळा होवै है पण धावै हीं मेलै पीठ ।—बां.स.टी.
मुहा० —घावो करणो, घावो मारणो—तीव्र गति से बढ़ना, जल्दी जल्दी चलना ।

घासक—देखो 'धसमस' (रू.भे.) उ०—घर जिण घासक धूजती, सामक रहत ससंक । वही जाति दासक भई, अहो विघाता अंक ।
—केसरीसिंह बारहठ

घामसी—सं०स्त्री० [सं० ध्वंसु=हिंसार्थक=ध्वसित] १ महामारी.
२ प्लेग ।

घाह—सं०स्त्री० [देश०] १ रुदन, क्रंदन ।
उ०—१ 'आसकंदरा' वही नहीं, धड़हड़ मूकइ घाह । पूरि नदियां पाणि वहइ, लोयण ना परवाह ।—मा.कां.प्र.
२ रुदन की एक एक निकली हुई लंबी ध्वनि, चांग, चीख, चिल्लाहट । उ०—१ मुख जोवइ दीवा धरी, पाछउ करइ पलाह । मान कीटी मारविण, मोटी मेल्हइ घाह ।—ढो.मा.
उ०—२ दादू चोट न लागी विरह की, पीड़ न उपजी आइ । जागि न रोवै घाह दे, सोवत गई बिहाइ ।—दादू बांणी
क्रि०प्र०—करणी, पाड़णी, मारणी, मूकणी, होणी ।
३ सामूहिक रुदन, हाहाकार ।
क्रि०प्र०—ऊठणी, पड़णी ।
४ त्राहि-त्राहि की पुकार, करुण क्रंदन । उ०—घर मुंड रुधगड़इ रिसंगलि, लोही तणा प्रवाह । ऊभे हाथि असुर पोकारइ, पातलि पाइइ घाह ।—कां.दे.प्र.
क्रि०प्र०—पाड़णी ।
५ पुकार. ६ कोलाहल, हल्ला ।
रू०भे०—धाहि, धाहु, धाह ।
अल्पा०—धाहड़ी, धाहडी ।

घाहड़णो, घाहड़बो—क्रि०स० [देश०] १ भस्म करना, जलाना.
२ गरजना. ३ देखो 'दहाड़णो, दहाड़बो' (रू.भे.)

घाहड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—१ भस्म किया हुआ, जलाया हुआ.
२ गरजा हुआ. ३ देखो 'दहाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घाहड़ियोड़ी)

घाहड़ी, घाहडी—सं०स्त्री० [देश०] १ धव का फूल.
२ एक प्रकार का झाड़ जो प्रायः सम्पूर्ण भारत में उत्पन्न होता है (उ.र.)
३ देखो 'घाह' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ बाबा, वाळूं देसड़उ, जिहां डूंगर नहि कोइ । तिणि चढ़ि मूकउं घाहड़ी, हीयउ उरळउ होइ ।—ढो.मा.
उ०—२ आई वैसे गुजरै ऊंची रे, तिण घरि नहीं ताळा कूंची रे । दिन ऊगे धाहडी ऊठी रे, पल में जइ वैसे पूठी रे ।—ध.व.ग्रं.

घाहि—देखो 'घाह' (रू.भे.)
उ०—ऊंचे हाथि धाहि पोकारइ, बोलावइ किरतार । आंणीवार किम्हइ ऊवेळइ, करइ अम्हारी सार ।—कां.दे.प्र.

घाहु—सं०स्त्री० [देश०] १ आग की लपट ?
उ०—समुद्र खारउ, बाउळ कंटाळउ, सरप काळउ, याउ वायणउ, जन बोलणउ, सुगह भरणउ, ससउ नासणउ, रांणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ, सांड आडणउ, कुमित्र फाटणउ, दुरजन दुस्ट, स्वजन सिस्ट, आगि ताती, धाहु राती ।—व.स.
२ देखो 'घाह' (रू.भे.)

घिग—१ देखो 'घींक' (रू.भे.)
२ देखो 'घींगो' (मह., रू.भे.)

घिगांणो—देखो 'घींगो' ।
उ०—क्या जांणू किस विध मन ल्याया । तो उवो हो गया घिगांणा ग्रो नया ।—म. मानसिंघ

घिगाई—देखो 'घींगाई' (रू.भे.)

घिगाघींगो—देखो 'धींगाधींगी' (रू.भे.)

घिगो—देखो 'घींगो' (रू.भे.)

घि—सं०पु० [देश०] १ धर्म. २ संतोष. ३ धिक्कार.
४ आश्रय.
सं०स्त्री०—५ पृथ्वी, धरती (रू.भे.) (एका.)

६ देखो 'घी' (६) (रू.भे.)

धिक–अव्य० [सं० धिक्] तिरस्कार या अनादर सूचक शब्द, लानत ।

उ०—१ रांमत चौपड़ राज री, है धिक वार हजार। धण सूंपी लूंठां धकै, धरमराज धिक्कार ।—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ जा कारण जग जीजिये, सो पद हिरदै नांहि। दादू हरि की भक्ति विन, धिक जीवन कळि मांहि ।—दादू वांणी

रू०भे०—धिग, ध्रक, ध्रग, ध्रिक, ध्रिक्क, ध्रिग ।

धिकक–सं०स्त्री० [सं० धिक्षकः-धिक्ष संदीपने] आग, अग्नि (ह.नां., ना.पिं.)

धिकणौ, धिकबौ—देखो 'धुकणौ, धुकबौ' (रू.भे.)

उ०—१ रैवत वधि ओरूं धिकते रिण। तवै एम 'भगवत' 'भाऊ' तण ।—सू.प्र.

उ०—२ महिपत धिक मोटेह, असमर वूठै आछटी। नरपत धर लोटेह, सारंग सर पड़ियौ समर ।—पा.प्र.

धिकणहार, हारौ (हारी), धिकणियौ—वि० ।

धिकिओड़ौ, धिकियोड़ौ, धिक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

धिकीजणौ, धिकीजबौ—भाव वा० ।

धिकत—देखो 'दिकत' (रू.भे.)

धिकता–सं०स्त्री० [सं० धिक्] धिक्कार, फटकार ।

धिकार—देखो 'धिक्कार' (रू.भे.)

उ०—१ धिकार है हजार वार सार तार में धरयौ। अनूप रूप अच्छतैं प्रतच्छ कूप में परयौ ।—ऊ.का.

उ०—२ धन उमरांणी धाटधर, पदमणियां बिण पार। सह नारी सीकोतरी, धरती सिंध धिकार ।—वां.दा.

धिकै—देखो 'धकै' (रू.भे.)

उ०—सो हुतौ गंद्रप स्राप वासव, धिकै प्राक्रम धारिया। विण सीस दूर प्रसार बाहां घणा जीव संहारिया ।—र.रू.

धिक्कार–सं०स्त्री० [सं०] अनादर या घृणाव्यञ्जक शब्द, तिरस्कार, लानत, फटकार ।

उ०—रांमत चौपड़ राज री, है धिक वार हजार। धण सूंपी लूंठां धकै, धरमराज धिक्कार ।—रांमनाथ कवियौ

रू०भे०—धिक, धिकार, धिरकार, धिरगार ।

धिक्कारणौ, धिक्कारबौ–क्रि०स० [सं० धिक्] तिरस्कार करना, बुरा भला कहना, फटकारना। उ०—मारग में मिळ जाय धूड़ नांखौ धिक्कारौ। घर मांही घुस जाय लार कुत्ता ललकारौ ।—ऊ.का.

धिक्कारणहार, हारौ (हारी), धिक्कारणियौ—वि० ।

धिक्कारिओड़ौ, धिक्कारियोड़ौ, धिक्कारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

धिक्कारीजणौ, धिक्कारीजबौ—कर्म वा० ।

धिरकारणौ, धिरकारबौ—रू०भे० ।

धिक्कारियोड़ौ–भू०का०कृ०—तिरस्कार किया हुआ, बुरा भला कहा हुआ, फटकारा हुआ ।

(स्त्री० धिक्कारियोड़ी)

धिखण—देखो 'धिसण' (रू.भे.)

धिखणा—देखो 'धिसणा' (रू.भे.) (ह.नां., अ.मा., नां.मा.)

धिखणौ, धिखबौ—देखो 'धुकणौ, धुकबौ' (रू.भे.)

उ०—१ अथमियौ भांण 'मधुकर' हरा ऊपरा, धोम दहुवां इसौ वाद धिखियौ। वरै तूं केम रंभ उचारै विधाता, लेख मैं जीवतौ संभ लिखियौ ।—द.दा.

उ०—२ धिखै भभकै रण क्रोध धियाग। खड़ख्खड़ ढाल झड़ज्झड़ खाग ।—सू.प्र.

उ०—३ जठै 'करनाजळ' क्रोध वज्राग। ओरै असि जांणि धिखंतिय आग ।—सू.प्र.

धिखणहार, हारौ (हारी), धिखणियौ—वि० ।

धिखिओड़ौ, धिखियोड़ौ, धिख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

धिखीजणौ, धिखीजबौ—भाव वा० ।

धिखियोड़ौ—देखो 'धुकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धिखियोड़ी)

धिग—देखो 'धिक' (रू.भे.) उ०—१ तिण सयणां रा धिग जनम, जिण में ठीक न ठोर। चित ओरां हित ओर सूं, मुख भाखै कछु ओर ।—ढो.मा.

उ०—२ धिग ! धिग ! अंग वेदन करइ, धिग ! धिग ! यौवन-वेस। मोकळावउं छउं म म रहु, आज पछी अम्ह-रेसि ।—मा.कां.प्र.

धिगांणी—देखो 'धिगांणी' (रू.भे.)

उ०—कब निसरै ली आ वैरण रात, कवजा मां सूं गयौ अब होसी। किसी ये धिगांणी के साथ ।—लो.गी.

धिठाई—देखो 'धीठाई' (रू.भे.)

धिणाप—देखो 'धणियाप' (रू.भे.) उ०—भली आक्रति भाळ, धणी वणियौ थुथकारै। राखै घणी धिणाव, पेट भर सांझ संवारै ।—दसदेव

धिणियांणी—१ देखो 'धणियांणी' (रू.भे.)

उ०—जंगळ जंगळ में जूनी जिणियांणी। धौळा धोरां री धूनी धिणियांणी ।—ऊ.का.

२ एक प्रकार की लोक देवी। वि.वि.—देखो 'उररल्यां'

धिणी—देखो 'धणी' (रू.भे.) उ०—तद रावजी कयौ कै इण राज रा रुखवाळा धिणी करनीजी है, ऊ वेळ करसी। पीछे रावजी गढ़ रौ जावतौ कर देसणोक आया ।—द.दा.

धित्रासट—देखो 'धतराठ' (रू.भे.) (गजमोख)

धिधक–सं०स्त्री० [देश०] आग, अनल (ना.डिं.को.)

धिधिकट–सं०स्त्री० [अनु०] तवले की ध्वनि या वोल ।

धिन–सं०स्त्री [अनु०] १ तवले पर आघात करने से उत्पन्न ध्वनि.

२ देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—१ धिन दीहाड़ौ धिन घड़ी, धिन वेळा धिन वास। नयणे सयण निहारिया, पूरी मन री आस ।—अज्ञात

उ०—२ धिन धिन नृप नभ वांणी हुइ धुर। स्रव जग सिरै ज तूं दांनेसुर ।—सू.प्र.

उ०—३ धन धन धनकूरांम, धन धुर धनांम्‍हारां धिन । धनकूरां-
नूं धनवार, धर धन्ना ज्यां धिर धरै ।—बां.दा.

धिनवांणी—देखो 'धनियांणी' (रू.भे.) उ०—धरनक धिनियांणी धनि
धांन धिनवांणी धरक देव री ।—मे.म.

धिनवाद—देखो 'धन्यवाद' (रू.भे.)

धिनवादका—देखो 'धन्यवादका' (रू.भे.)

धिनि—देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—तूंरंगी धिनि जांणिया, दिन रजनी
धिन धार । धूंधूंगी द्रिब डारा, वारै रतन पवार ।—रा.रू.

धनियांणी—देखो 'धणियांणी' (रू.भे.) उ०—प्रारम्भना भूप री, करी
धांनां धिनिवांणी । दिवा द्रग्गा वरदांन, धरा जंगळ धिनियांणी ।
—मे.म.

धिन्न, धिन्नौ—देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—१ वंस रतनू धनौ छात
बीगोतरां, धनोतन मात री मात धापू । वार 'सागर' धनौ सकति मा
बाप रौ, वार-मत धिनौ मिवदांन बापू ।—मे.म.

उ०—२ धिनौ धिनौ भारी धरा, धिनौ मुधारधो धांम । हुव इळ में
धिन धिन हुवौ, कीना धिन धिन कांम ।—ऊ.का.

उ०—३ वरण इंद्र सिव ब्रह्म धरम नारद धनपत्ती । 'अजन' धिन्न
उच्चारि करै इण पर कीरत्ती ।—रा.रू.

उ०—४ नवा थारौ रूप है नवा थारौ रंग है—धिन रै विधाता
धिन्न ! जरा अठी नै तौ देख भली गिनज ।—रातवासौ

धिन्नवाद—देखो 'धन्यवाद' (रू.भे.)

धिप-सं०स्त्री०—दांवार, भीति ।

धिमिद्धमिद्ध-सं०स्त्री० [अनु०] मृदंग या तबले की आवाज ।
उ०—धिमिद्धमिद्ध ऊध्वनी न सिजनी सुनी नहीं । न अध्वनी न दीन
दीन आवई कुनी नहीं ।—ऊ.का.

धिय—देखो धी (६) (रू.भे.) उ०—पूतां जायां कवण गुण, अवगुण
कवण धियांह । जाया न दियौ प्रगट जग, सिघल सिध जियांह ।
—बां.दा.

धियगि—देखो 'धियाग' (रू.भे.) उ०—ऊठियउ जमहरे देय अगि ।
धुगहर गाउ लागउ धियगि ।—रा.ज.सी.

धियांन—देखो 'ध्यांन' (रू.भे.)
उ०—धरै हर केता वार धियांन । अहावण लोक अनोप्रन ग्यांन ।
—ह.र.

धिया—देखो 'धी' (६) (रू.भे.)
उ०—'सोमन' ब्राह्मण नी धिया, 'सोमा' नांमे एक । प्रत्यदा जांणै
अक्षरा, चतुराई रूप विसेस ।—जयवांणी

धियाग, धियागि, धियागि-सं०पु० [देस०] १ क्रोधाग्नि, कोप, क्रोध ।
उ०—रउद्र विकट विकरार रूप रुद्र, धखइ स तीजइ नेत्र धियाग ।
कोट मनइ ब्रह्मंड कांपियां, जटा हुंती काढीयउ ज्याग ।
—महादेव पारवती री वेलि

२ आतंक, आतमान । उ०—१ वकरै दहूंवै दळ विहूण, तायक
करताळा । क्रोह जगे लागौ धियाग, ब्रह्म लेत वडाळा ।—सू.प्र.

उ०—२ भाग्या पाय 'अजीत' री, लग्या सूर धियागि । सिरि देरां
दख सल्लले, जळ प्रळै किरि आगि ।—रा.रू.

३ असीम, अपार, अधिक । उ०—'धनावत' 'अम्मर' कोप धियाग ।
लागां घट भूक करै झट लाग ।—सू.प्र.

रू०भे०—धयाग, धियगि, ध्याग, ध्यागि, धियाग, धीयाग ।

धियारौ—देखो 'धी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

धियावणौ, धियावबौ—देखो 'धावणौ, धावबौ' (रू.भे.)

उ०—१ जदूकुळ-नायक सांमिय-जाग, पदम्म-पताक-धलंकित पाग ।
पगां री रेणु धरै सिर ब्रम्म, धियावै पग्ग अहोनिस ध्रम्म ।—ह.र.

उ०—२ धरणीधर संकर देव धियावउ, जोतिप्रकास अलोप जग ।
मस्तक मुगट प्रकास मांडियउ, अनंत कोट ब्रह्मंड लग ।
—महादेव पारवती री वेलि

धियावणहार, हारौ (हारी), धियावणियौ—वि० ।

धियाविओड़ौ, धियावियोड़ौ, धियाव्योड़ौ, ध्याव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

धियावीजणौ, धियावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

धियावियोड़ौ—देखो 'धावियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धियावियोड़ी)

धियौ-सं०पु० [सं० धृतः] १ प्रपौत्र, पोता (उ.र.). २ पुत्र, बेटा ।

धिरकार—देखो 'धिक्कार' (रू.भे.)

उ०—१ रांणी बायर नीसरी, जद कांन पड़ी भणकार । ऊभी मसालो
मारियो, थांरी दारू में धिरकार ।—डूंगजी जवारजी री पड़

उ०—२ पराधीन भारत हुयौ, प्यालां री मनुवार । मात भूम परतंत्र
हो, वार-वार धिरकार ।—अज्ञात

धिरकारणौ, धिरकारबौ—देखो 'धिक्कारणौ, धिक्कारबौ' (रू.भे.)

धिरकारणहार, हारौ (हारी), धिरकारणियौ—वि० ।

धिरकारिओड़ौ, धिरकारियोड़ौ—भू०का०कृ० ।

धिरकारीजणौ, धिरकारीजबौ—कर्म वा० ।

धिरकारियोड़ौ—देखो 'धिक्कारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धिरकारियोड़ी)

धिरगार—देखो 'धिक्कार' (रू.भे.) उ०—ताळा-ताळां री सवाल नहीं
है बाया, सवाल म्हारी इज्जत री है । म्हारै ऊभां थांनै लूटै तौ
म्हारै जीवियां नै धिरगार है । दुनियां म्हारा नांम पर थूकैला अर
म्हारै वडेरां री कीरत नै काळख लाग जावैला ।—रातवासौ

धिरट—देखो 'धीरट' (रू.भे.)

धिरांणी—देखो 'धणियांणी' (रू.भे.) उ०—धावळवाळ घंटाळ धिरांणी,
लोवड़वाळ लवेस । महाई करनल किनियांणी, केइ केइ रूप करेस ।
—अज्ञात

धिराज-सं०पु० [सं० अधिराज] राजाओं को दी जाने वाली पदवी ।
उ०—१ मात रा साज बाजां सको, दोड़ै प्रगट दराज रो । अरधड़ा
मोड़ै धाय इसा, जोड़ै कटक धिराज रो ।—साहिबौ सुरतांणियौ

उ०—२ कीधौ सेख नै हरोळ जंग घिराज उचंडे कोल, धूजिया कायरां वागौ खाडै रीठ धींग। महाराज कंवार री जावतौ न छांडै मारू, सार री किलौ ज्यूं मंडै आडौ जगसींग।
—ठा० जगरांमसिंघ री गीत

रू०भे०—घराज।

घिव—देखो 'घी' (६) (रू.भे.)

घिवड़ी—देखो 'घी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—नभ सरणी रै वात फुहारां गात सुहावै, ठाडी छांह मंदार विसांणी लैंण लुभावै। चळ करती चकचोळ सुरां-उर हांम जगाती, रमै घिवड़ियां कोड हेम-रज रतन लुकाती।—मेघ.

घिसट—देखो 'घिस्टि' (रू.भे.) (ह.नां.)

घिसण-सं०पु० [सं० घिष्णयं] १ तारा, नक्षत्र (ह नां.)
[सं० घिषणं] २ गृह, घर (डि.को.)
[सं० घिषणः] ३ बृहस्पति, गुरु. ४ ब्रह्मा. ५ अग्नि।
रू०भे०—घिखण, घिसन, घिसनु, घिस्ण।

घिसणा-सं०स्त्री० [सं० घिषणा] १ बुद्धि, अक्ल, विवेक शक्ति (डि.को.) २ पृथ्वी।
रू०भे०—घिखणा।

घिसन, घिसनु—देखो 'घिसण' (रू.भे.) (ह.नां., अ.मा.)

घिस्टडंड-सं०पु० [सं० धृष्ट दण्ट] यम (अ.मा.)

घिस्टि-सं०पु० [सं० द्वयष्ट ?] ताम्र, तांबा (ह.नां.)
रू०भे०—घिसट।

घिस्ण—देखो 'घिसण' (रू.भे.) (ह.नां.)

धींक-सं०स्त्री० [देश०] १ प्रहार हेतु बनाई हुई मुष्टिका, घूंसा. २ मुष्टिका प्रहार. ३ पैरों, पीठ आदि को सहलाने अथवा दर्द दूर करने हेतु धीरे-धीरे मुष्टिका प्रहार करने की क्रिया।
सं०पु०-४ वृक्ष विशेष ?
उ०—धंतूरा नइं धाउडा, धांमणि धूंगरि धूनि। धींग धमासा धूळिया, धडहड धाता धूंनि।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—ढींक, ढोक, धिंग, धींग, धीक।
अल्पा०—धीकड़ी।
मह०—धींकड़।

धींग—१ देखो 'धींक' (रू.भे.)
उ०—करार अैंड़ी कै भरपूर वळद रै धींग मेलै तो धरत्यां टिकाय दे।—वांणी
२ देखो 'धींगौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ बारै आव रै रिण रोपण बंका, बंधु सुग्रीव बकारै। ऊठै सुण धिम जघड़ अथायो, धींग क्रोध उर धारै। हूं हिव आवियौ पग मांड हकारै।—र.रू.
उ०—२ गोपियां दास यर जास कीधा सरद। धींग रविवंस भुज विरद धारै। रटै कवि 'किसन' महराज तन लाज रख। तेण रघुराज के संत तारै।—र.ज.प्र.
उ०—३ सलहां सम झड़ां पाखरां साकुर। घड़चण खळां वीजळां धींग। 'ऊदा' हरौ अंद्र छजै अत। साजै दन राजै बुधसींग।
—रावत बुधसिंह चौहांन कोठारिया री गीत
उ०—४ चंडी छाक ले आंमखां गूद कोण चीलां रंजां चले, धू काज दाकळै गणां भूत राट धींग। पैराक चमूरां केक ऐराक छाक ले पूरी, साकुरां हाकलै उसी वेळां उदैसींग।—हुकमीचंद खिड़ियौ
उ०—५ नगर नांम उपनांम निज, तैं चाळक जैसींग। रुद्र महालय सूं किया, घर पुड़ साचा धींग।—वां.दा.

धींगउ—देखो 'धींगौ' (रू.भे.)

धींगगणगौर—देखो 'धींगागणगौर' (रू.भे.) (मेवाड़)

धींगड़—१ देखो 'द्रंग' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'धींगौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ श्री धींगड़ री धींगड़ तिमणियो, अै चवड़चां-चवड़चां तखत्यां अर जड़ाऊ सुरलिया-पत्तां वाळी मोरमींढचां।—वरसगांठ
उ०—२ सींगड़ सींग वधारिया, अति ऊंचा असमांन हो। धींगड़ भाइ पांचसइं, घोड़ा दीधा दांन हो।—ऐ.जै.का.सं.

धींगड़मल, धींगड़मल्ल—देखो 'धींगौ' (मह., रू.भे.)
उ०—व्है हेको जिण धींगड़ै, हींगड़ धींगड़मल्ल। मोड़ो आयां ही मिळै, आटी घिरत अमल्ल।—वां.दा.

धींगड़ौ—१ देखो 'द्रंग' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—व्है हेको जिण धींगड़ै, हींगड़ धींगड़मल्ल। मोड़ो आयां ही मिळै, आटी घिरत अमल्ल।—वां.दा.
२ देखो 'धींगलौ' (रू.भे.)
३ देखो 'धींगौ' (अल्पा., रू.भे.)

धींगण—देखो 'धींगौ' (मह., रू.भे.)

धींगणियौ—देखो 'धींगौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—"पण थे बोलो-ईज कोयनी ना, नहीं जणै माजनौ है ईयां-री? घास को घलाय दां नी? वेटा धरम-री टांग-पूंछ तो जांणै-ई कोयनी, वण वैठा सुधारक—धींगणिया पंच।"—वरसगांठ

धींगल—१ देखो 'धींगलौ' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'धींगौ' (मह., रू.भे.)

धींगलौ-सं०पु० [देश०] १ गोवर में पैदा होने वाला पर-दार वड़ा कीड़ा जो उड़ते समय भूं-भूं की ध्वनि करता है।
२ मेवाड़ में प्रचलित एक प्रकार का प्राचीन सिक्का जो तांवे का बनता था।
रू०भे०—धींगड़ौ।
मह०—धींगल।
३ देखो 'धींगौ' (अल्पा., रू.भे.)

धींगांण, धींगांणी-क्रि०वि०—१ जवरदस्ती से, वलपूर्वक.
२ देखो 'धींगाई' (रू.भे.)
३ देखो 'धींगौ' (मह., रू.भे.) उ०—मिटै खैफांण धींगांण जेर हिंदवांण किया मारू, मोखांणा पुरांणा कै दिरांणा नवा मोज।
—महाराजा अजीतसिंह री गीत

धींगाणै-क्रि०वि०—जबरदस्ती से, जबरदस्ती से ।

उ०—इति बातें सुण'र बोलियौ—"धमकी-नै धींगाणी क्यों करसी, म्हारा मावा-बापां कोई-सी नामी ? धन-दौलत नै देख'र टाबरां-नै धमकाय'र डांकी-जी नगर-में धींगाणै-ई मूनी होलो । सगती-नूं ऊपर कर लियां करसी ? धींगाणै धरम कोई-ई हुवै है ।"—बरसगांठ

धींगाणौ-सं०पु० (स्त्री० धींगाणी, धींगांणी) १ अत्याचार, अन्याय, ज्यादती, जबरदस्ती । उ०—धन नूं धींगाणा हुवै, धन मूं बंधे सहू पाप रे ।—जयवांणी

रू०भे०—धींगाणौ ।

२ देखो 'धींगौ' (रू.भे.)

धींगाई-सं०स्त्री० [देश०] जबरदस्ती, ज्यादती ।

क्रि०प्र०—करणी ।

रू०भे०—धिंगाई, धींगाणा, धींगांणी ।

धींगागणगोर-सं०स्त्री० [रा०धींगा+सं०गौरी] वैशाख कृष्णा तृतीया को उदयपुर राज्य में मनाया जाने वाला गणगौर का त्यौहार विशेष ।

वि०वि०—महाराणा राजसिंह प्रथम ने अपनी छोटी महारानी को प्रसन्न करने के लिए इस त्यौहार को प्रचलित किया था ।

रू०भे०—धींगगणगौर ।

धींगाधींगी, धींगामस्ती, धींगामुस्ती-सं०स्त्री० [देश०] १ शरारत, बदमाशी. २ हाथापाई. ३ जबरदस्ती, ज्यादती ।

रू०भे०—धिंगाधींगी ।

धींगौ-वि० [देश०] १ जबरदस्त ।

उ०—धींगां जाडा मरोड़ अदर कर उभे, बांण धांनख धारै । तो नूं जोड़ा रटतां जनम अघ हरै, दास धू जेम तारै ।—र.ज.प्र.

२ वीर, साहसी. ३ शक्तिशाली, बलवान. ४ समर्थ ।

उ०—'जिनचंद्र' सूरि ना, सिस्य मांनै सहूजी, बड़ा बड़ा स्रावक तेम । धनवंत धींगा पूज्य तणइ पसाइजी, वडभागी गुरु एम ।

—सुमति वल्लभ

५ धनाढ्य, धनी । उ०—धींगां देवै ध्यांन, रांकां नूं रूठो रहै । पागै नहीं परधांन, समझावै कुण सांवरा ।—रांमनाथ कवियौ

६ हृष्टपुष्ट, पुष्ट. ७ आकार में बड़ा, वृहत् ।

रू०भे०—धिंगौ, धींगड, धींगांणौ, धींगांणौ ।

अल्पा०—धींगड़ियौ, धींगड़ौ, धींगणियौ, धींगलियौ, धींगलौ, धींगड़ौ ।

मह०—धिंग, धींग, धींगड़, धींगड़मल, धींगड़मल्ल, धींगण, धींगल, धींगांण ।

धींणोड़ी—देखो 'धीणोड़ी' (रू.भे.)

धींणौ—देखो 'धीणौ' (रू.भे.)

धींवर—देखो 'धीवर' (रू.भे.)

धींस—देखो 'धींस' (रू.भे.) उ०—धरती रवि ससि धींस, सांच तणौ नावां मरै । जग मांही जगदीस, जिसै गिणीजै जेठवा ।—जेठवा

धी-सं०स्त्री० [?] १ दीपक, दीया. २ चित्त, मन. ३ मेधा. ४ निरक (एका.)

[सं० धीः] ५ बुद्धि, ज्ञान (ह.नां., ष.भा., डि.को.)

[सं० धीता या स्तनधयी] ६ पुत्री, बेटी (डि.को.)

उ०—गोंढोनी गुजरात सूं, अगपत री धी प्रांण । राती रंग निवास में, तै जगमाल जुपांण ।—बां.दा.

रू०भे०—धि, धिय, धिया, धिव, धीय, धीया, धीव, धीवा ।

अल्पा०—धियारी, धिवड़ी, धीअड़ी, धीयड़ी, धीयवी, धीयारी, धीवड़ली, धीवड़ी, धीहड़ली, धीहड़ी, धीहड़ी ।

मह०—धीयड़, धीवड़, धीहड़ ।

धीअड़ी—देखो 'धी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

धीक—देखो 'धींक' (रू.भे.) उ०—तत वेग चहे जुदा सताग, धीका हुय वायां धूमधांम ।—रांमदांन लाळस

धीकड़ी – देखो 'धींक' (अल्पा., रू.भे.)

धीकणौ, धीकबौ—देखो 'धुकणौ, धुकबौ' (रू.भे.)

उ०—कांमकंदळा ! तूं रही, हाड हिया ना मांही । दारापणि ! दाफड़ रतै, होळी धीकइ त्यांही ।—मा.कां.प्र.

धीकियोड़ौ—देखो 'धुकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धीकियोड़ी)

धीगड़ौ—१ देखो 'ढ़ंग' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'धींगौ' (अल्पा., रू.भे.)

धीगांणौ—१ देखो 'धींगांणौ' (रू.भे.)
२ देखो 'धींगौ' (रू.भे.)

धीज-सं०स्त्री० [सं० धीङ्] १ दृढ़ता, विश्वास ।

उ०—ऐळा चीतोड़ सहे घर आसी, हूं थारा दोखियां हरूं । जगणी इसो कहै नह जायो, कहवै देवी धीज करूं ।—बारूजी सोदौ

[सं० धैर्यम्] २ धैर्य, धीरज. ३ प्रतिज्ञा, प्रण. ४ प्रतिस्पर्द्धा, होड़.

५ न्याय करने की एक कठोर तथा पुरानी परिपाटी.

६ शर्त. ७ संशय, शंका ।

उ०—रांवण पकड़ ले गयो लंका, जब लोकां में पड़ गई संका । धीज उतारी 'सीता' सतवंती, समरूं मन हरखै मोटी सती ।—जयवांणी

धीजणौ-वि० [सं० धीङ्] (स्त्री० धीजणी) १ विश्वास करने वाला.

उ०—जरै खीची रो भय टळियां, विस्वास पाय धीजियां नूं रजपूत करण रै फौज मीणां री चाल छोडण रौ पत्र कपट कर लिखावणौ ।
—वं.भा.

२ धैर्य धारण करने वाला. ३ प्रतिस्पर्द्धा करने वाला.

४ प्रसन्न होने वाला, संतुष्ट होने वाला. ५ प्रण करने वाला.

धीजणौ, धीजबौ-क्रि०अ० [सं० धीङ्] १ विश्वास करना ।

उ०—१ विना पूंजी वापार, विना ओळख धीजे । कीत सुणै बिन कांन, बिन कंद्रप परणीजे ।—ओपौ आढ़ौ

उ०—२ इणसूं थे धीजजो मती, अब दरबार कांनली तो थे जगा लागसी राखजो ।—द.दा.

२ धैर्य रखना. ३ अति प्रसन्न होना, संतुष्ठ होना. ४ प्रण करना, प्रतिज्ञा करना.
क्रि०स०—५ प्रतिस्पर्द्धा करना ।
धीजणहार, हारौ (हारी), धीजणयौ—वि० ।
धीजाड़णौ, धीजाड़बौ, धीजाणौ, धीजावौ, धीजावणौ, धीजावबौ —क्रि०स० ।
धीजिओड़ौ, धीजियोड़ौ, धीज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धीजीजणौ, धीजीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

धीजाड़णौ, धीजाड़बौ—देखो 'धीजाणौ, धीजावौ' (रू.भे.)
धीजाड़णहार, हारौ (हारी), धीजाड़णियौ—वि० ।
धीजाड़िओड़ौ, धीजाड़ियोड़ौ, धीजाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धीजाड़ीजणौ, धीजाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

धीजाड़ियोड़ौ—देखो 'धीजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धीजाड़ियोड़ी)

धीजाणौ, धीजावौ–क्रि०स० [सं० धीङ्] १ धैर्य देना, धीरज बंधाना.
२ विश्वास दिलाना । उ०—दाव घरोहड़ मांड खत, लटपट करके लाय । वड़ी बड़ाई वांणिया, धन लैणौ धीजाय ।—बां दा.
३ फुसलाना । उ०—भजन करै बुगला भगती सूं, पास बैठावै प्यारियां । घोक दे दिन रा धीजावै, आथण रा असवारियां ।
—ऊ.का.
४ प्रतिस्पर्द्धा कराना, होड़ कराना ।
धीजाणहार, हारौ (हारी), धीजाणियौ—वि० ।
धीजायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
धीजाईजणौ, धीजाईजबौ—कर्म वा० ।
धीजणौ, धीजबौ—अक०रू० ।
धीजाड़णौ, धीजाड़बौ, धीजावणौ, धीजावबौ—रू०भे० ।

धीजायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ धैर्य दिया हुआ, धीरज बंधाया हुआ.
२ विश्वास दिलाया हुआ. ३ फुसलाया हुआ.
४ प्रतिस्पर्द्धा कराया हुआ, होड़ कराया हुआ ।
(स्त्री० धीजायोड़ी)

धीजावणौ, धीजावबौ—देखो 'धीजाणौ, धीजावौ' (रू.भे.)
धीजावणहार, हारौ (हारी), धीजावणियौ—वि० ।
धीजाविओड़ौ, धीजावियोड़ौ, धीजाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धीजावीजणौ, धीजावीजबौ—कर्म वा० ।

धीजावियोड़ौ—देखो 'धीजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धीजावियोड़ी)

धीजियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ विश्वास किया हुआ. २ धैर्य धारण किया हुआ. ३ प्रतिस्पर्द्धा किया हुआ. ४ प्रसन्न हुवा हुआ, सन्तुष्ठ.
५ प्रण किया हुआ, प्रतिज्ञा किया हुआ.
(स्त्री० धीजियोड़ी)

धीजौ–सं०पु० [सं० धीङ्] १ विश्वास, भरोसा.
२ देखो 'धीरज' (रू.भे.)

धीट—देखो 'धीठ' (रू.भे.)

धीठ–वि० [सं० धृष्ट] १ निर्लज्ज, बेशर्म ।
उ०—हूं कुळ में पापी हुवौ, पत नूं दीन्हीं पीठ । तिया पतिव्रत पाळ तूं, धिक धिक मत कह धीठ ।—बां.दा.
२ मूर्ख, जड़ । उ०—कर प्रगट दोस खंडण करूं, धीठ रोस मत धारज्यो । आज रौ वखत भूंडौ अमल, वडपण राज विचारज्यो ।
—ऊ.का.
३ नीच । उ०—एक उमराव कही जिण समय उण बेसरम धीठ नूं घणौ मारणौ योग्य थौ ।—नी.प्र.
४ वीर, जबरदस्त, शक्तिशाली । उ०—मुखै चखचोळ सरूप मजीठ, घबोड़त सावल मूगळ धीठ ।—सू.प्र.
५ अटल, दृढ़. ६ जिद्दी, हठी. ७ निर्दयी, बेपरवाह.
८ क्रोधपूर्ण, क्रोधी. १० ।
उ०—जणणी बाप स्रवणे दूहौ सुणी रे, कुमरी नाचंती नयण दीठ रे । नाटकणी थइ ए सुरसुंदरी रे, स्युं कीधौ ए दैवे धीठ रे ।
—श्रीपाळ रास
११ कार्य से जी चुराने वाला, धीमा, सुस्त ।
रू०भे०—धीट, ध्रस्ट, ध्रेठउ ।
अल्पा०—धीठियौ, धीठौ, धेटौ, धेठौ, ध्रेठौ ।
मह०—धेट, धेठ ।
१२ तोप, बन्दूक आदि की ध्वनि । उ०—तोपूं का जंजीरा चौतरफ फेरे । दोऊ तरफ दगी तोपूं अताळ । झाळूं का झळहळ गोळूं का वरसाळ । धोमूं का अंधार । धमाकूं का धीठ । ओळूं की असण ज्यूं गोळूं की रीठ ।—सू.प्र.

धीठम–सं०पु० [सं० दंशनम्=दट्ठम] १ सर्प, सांप ।
२ देखो 'धीठ' (रू.भे.)

धीठाई–सं०स्त्री० [सं० धृष्ठ+रा०प्र० आई] १ मस्ती, शरारत ।
उ०—रतना में धीठाई प्रगट हुई, लाज थी सू भाजी, पायल, बिछिया, कड़ मेखळा वाजी ।—र. हमीर
२ मूर्खता, जड़ता । उ०—राजा अरु रांणां करहा कांणां, दांणां तीन दिखंदा है । इक निजर न आई धुन धीठाई, सुन आई न सिखंदा है ।—ऊ.का.
३ निर्लज्जता, बेशर्मी. ४ नीचता. ५ कार्य न करने का भाव.
६ धृष्टता. ७ जिद्द, हठ. ८ वीरता, बहादुरी ।
उ०—अमीरेल अमीराई पाई सो दिखाई आछी, अड़ीराई धीठाई वाळियौ आडै आंक ।—कविराजा करणीदांन
रू०भे०—ढिठाई, ढीठाई, धिठाई, धेटाई, धेठाई ।

धीठियौ, धीठौ—देखो 'धीठ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ जग धुतारी नारी, बारी नरक नी एह । मुह मीठी मन धीठी, मांडे नेह अनेक ।—प्राचीन फागु संग्रह
उ०—२ जुड़ण भूप जुध काज, चख चोळ धीठी नजर । समर सिरताज

अर मिगुन मर्नें, मदारों जठै महाराज मारै मरन, मरहटै भरी मिलगार मरकै ।—र.रु.वी.

उ०—३ मरां दूजरां देवता ओन धीठा । दुवै पूंमरां फौज मीमांग मीठा ।—सू.प्र.

उ०—४ मान धीनियां दुगड़ा सूरा, मिळ जावै कोई मीठा । कूड़ बोल मरदांन कहावै, कूड़ बरावर धीठा ।—ऊ.का.

उ०—५ पवनं जिम जोन पीकार समठै पड़ो, मरै नहीं अरज परिगार धीठो । राह बंधी हुई मर्ग कोई रोकसी, देवै जसवंत रो नाम दीठो ।—प.स.ग्रं.

उ०—६ रगा धीठा बग राव, राव दीठा उमरावां । धराम अंगीठां पगं, करग पीडाग कमावां ।—मे.म.

(स्त्री० धेठी)

धीन-सं०पु०—ऊन के धागे का आकार या बनावट ।

धीनकियो, धीनको—देखो 'धीणो' (अल्पा., रू.भे.)

धीणु, धीणूं-वि०—१ दूध देने वाली । उ०—रांम नह सिरजी हरि-गाई । गूरह न सिरजी धीणु गाई ।—वी.दे.

२ देखो 'धीणो' (रू.भे.)

धीणूड़ी, धीणोड़ी-सं०स्त्री०—दूध देने वाली गाय या भैंस ।

रू०भे०—धीणोड़ी ।

धीणो-सं०पु० [देश०] दूध देने वाले पशुओं का होना ।

उ०—१ थेवा पड़तोड़ी रावां घी धांणां । धाप' रि देतांला दूजे भव धीणा । हुवग्या हत आमा हक बक मुणि हाको । निरधन धन वाळां रो मोकळग्यो नाको ।—ऊ.का.

उ०—२ लाडी लाम्बीणी धारां धूंधाती । पीवर ऊवांरी पारां पय पाती । भाता सीणां मह एवड़ ले आता । धाया धीणा रा गोधन रा धाता ।—ऊ.का.

उ०—३ धन धीणा ना धाट ।—अज्ञात

क्रि०प्र०—रासणी, होणी ।

मुहा०—धीणै चढ़णी, धीणैं पड़णी, धीणैं मिळणी—गाय, भैंस, बकरी आदि का गर्भवती होना ।

यौ०—धीणो-धापो ।

रू०भे०—धीणी, धीणु, धीणूं ।

अल्पा०—धीणकियो, धीणको ।

धीन-सं०पु० [?] लोहा (टि.को.)

धीप, धीपत, धीपति-सं०पु० [रा० धी=पुत्री+सं० प(पति)]

१ दामाद (डि.को.)

[सं० धी=बुद्धि+प(पति)] २ बृहस्पति ।

[सं० अधीप] ३ राजा, नृप ।

धीब-सं०स्त्री० [देश०] १ प्रहार, चोट । उ०—१ बगतर सहित ऊछळइ बरंगा, धीब पड़ै नेजाळ पड़ । भाजइ भ्रिगट अरी चा भिड़तां, घाव वगाड़इ सि सिर पड़ ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ गाजै घनड़ धीब पड़ गोळां, नजड़ा झड़ वाजै रण-ताळ । मह 'अभमल' 'चिमनो' किम भाजै ? गिर भाजै लाजै 'गोपाळ' ।

—जादूरांम आढ़ो

२ प्रहार की ध्वनि । उ०—सर छूटइ करत सणणाटा, बकतर फोड़ि करै वे फाट । ध्रुव वाजै बरछी धीव, भाजै कायर छंडै जीव ।

—प.च.चौ.

३ ध्वनि, आवाज । उ०—बहुना कज धावुस माग वहै । ढळ पुयर ठेलेय व्योम ढहै । गित तातास पायक पाल रहै । पुरचंग बंदूकांय धीव पडै ।—पा.प्र.

रू०भे०—धीबी ।

धीबणी, धीबबो-क्रि०स० [देश०] १ प्रहार करना ।

उ०—१ धीबे सेल सनाह पड़ाळां । बरधळ कार पाड़ूं बंगाळां ।

—सू.प्र.

उ०—२ चल गुरा अरण सचोळ, बिलकुल तो वाकारतो । धीबि छड़ां धमरोळ, अरिदळ ढाहै हरिद उत ।

—रावत म्होकमसिंघ हरिसिंघोत री वात

उ०—३ किलमां उर धीबै कमंध, भालाळो भालाह ।—पा.प्र.

२ संहार करना, मारना । उ०—समर धीबि अड़साला, रवद जरदैता राळूं । आज लूंण आपरो, 'अभा' जुध करि अजवाळूं ।—सू.प्र.

३ भोजन करना, खाना (व्यंग, अवज्ञा)

धीबणहार, हारो (हारी), धीबणियो—वि० ।

धीबवाड़णो, धीबवाड़बो, धीबवाणो, धीबवाबो, धीबवावणो, धीब-वावबो, धीबाड़णो, धीबाड़बो, धीबाणो, धीबाबो, धीबावणो, धीबा-वबो—प्रे०रू० ।

धीबिओड़ो, धीबियोड़ो, धीब्योड़ो—भू०का०कृ० ।

धीबीजणो, धीबीजबो—कर्म वा० ।

ध्रिबणो, ध्रिबबो, ध्रीबणो, ध्रीबौ—रू०भे० ।

धीबि—देखो 'धीब' (रू.भे.)

धीबियोड़ो—भू०का०कृ०—१ प्रहार किया हुआ. २ मारा हुआ.

३ भोजन किया हुआ, खाया हुआ (व्यंग)

(स्त्री० धीबियोड़ी)

धीमर—देखो 'धीवर' (रू.भे.)

धीमांन-सं०पु० [सं० धीमत्] १ कवि (ह.नां., अ.मा.)

२ बृहस्पति ।

वि०—बुद्धिमान् ।

धीमैं-क्रि०वि० [सं० मध्यम] १ धीरे, शनैः । उ०—भूगी की जीभैं सिसकारा भरती । नासैं निसकारा धीमैं पग धरती । गुमड़ो कुम्ह-ळायो मांजन बिन भारी । पग पग करतोड़ी पोढ़ी पिव प्यारी ।

—ऊ.का.

२ चुपके से, आहट किए बिना ।

धीमो-वि० [सं० मध्यम] (स्त्री० धीमी) १ जिसकी चाल में तेजी न हो, जो धीरे-धीरे चले, जिसकी गति या वेग मंद हो ।

उ०—धड़कती छाती धीमी चाल। मुळकता नैणां सुरमो सार।
—सांझ

२ जो अधिक तीव्र न हो; साधारण से कम, नीचा (स्वर)।

ज्यूं—धीमैं-धीमैं बोलणौ; धीमो सुर।

यौ०—धीमो-मुधरो।

३ जिसकी तेजी कम हो गई हो, जिसका जोर घट गया हो।

ज्यूं—क्रोध धीमो पड़णौ।

मुहा०—धीमो पड़णौ—बढ़ती पर न होना, मंद होना, सुस्त होना।

४ जो अधिक उग्र, तीव्र या प्रचण्ड न हो, हल्का।

ज्यूं—धीमो चांनणौ, धीमी आंच।

क्रि०प्र०—करणौ, पड़णौ, होणौ।

धीमो-तितालो—सं०पु० [देश०] एक ताल विशेष (संगीत)

धीय—देखो 'धी' (६) (रू.भे.) (डिं.को.) उ०—१ हरिया बांसां री छावड़ी रे, मांय चंपेली रो फूल। तूं वांमण वांण्यै री कै विणजारै री धीय। ना मूं वांमण वांण्यै री, ना विणजारै री धीय।—लो.गी.

उ०—२ हैय दैवह हैय दैवह दुट्ठ परिणांमु। पियं पंचह देखतां द्रपद धीय कढि चीरु कढ्ढीय।—पं.पं.च.

धीयड़—देखो 'धी' (६) (मह., रू.भे.) उ०—१ म्हारी धीयड़ चोली पांन की, जंवाई चंपलै रो फूल, आज म्हारी अमली फळ रही।
—लो.गी.

उ०—२ मांनो मांनो मोटा घर री धीयड़, छोटे घर आवियाजी म्हांरा राज।— लो.गी.

धीयड़ी, धीयवी—देखो 'धी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—बहुवां नै दीजो डीकरा ए धीयड़ियां रो अमर अहवात। जीवा-रांमजी नै तूठै घणा हेत सूं ए, किसोरजी रै खेड़ै जीत राख। साळगजी रै तूठै घणा हेत सूं ए, महावीरजी तूं रखवाळ।—लो.गी.

धीया—देखो 'धी' (६) (रू.भे.) उ०—दोहूं पखां चाडै नीर आग झाळां होम देही, पला नेह बंदाड़ै हटाड़ै अंगपोख। कंथ साथै धीया 'दुरगेस' खमा खमा कैती, लेता प्याला अमी रा पधारी सती लोक।
—वनजी खिड़ियो

धीयारी—देखो 'धी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

धीयो—सं०पु० [सं० धीत] पुत्र, लड़का।

यौ०—धीयो-पोतो।

धीर—वि० [सं०] १ ध्यान लगाये हुए, ध्यानस्थ (जैन)

२ अटल, निश्चल, दृढ़ (डिं.को.)

३ जो जल्दी घबरा न जाय, जिसमें धैर्य हो, धैर्यवान्।

उ०—सखी अमीणो साहिवो, सूर धीर समरत्थ। जुध में वांभण डंड जिम, हेलो बाधे हत्थ।—वां.दा.

४ विनीत, नम्र. ५ गंभीर. ६ बलवान, योद्धा. ७ सुन्दर, मनोहर. ८ मंद, धीमा. ९ देखो 'धीरे' (रू.भे.)

उ०—मग नीठ चलै पग मंडन पै, डग धीर हलै जग डंडन पै।
—ऊ.का.

सं०स्त्री० [सं० धैर्यम्] १ मन की स्थिरता, धैर्य, धीरज।

उ०—रहिया हरि सही जांणियौ रुखमणी, कीध न इवड़ी ढील कई। चिंतातुर चित इम चिंतवती, थई छींक इम धीर थई।—वेलि.

यौ०—धीर-धोवना।

२ संतोष, सब्र।

[सं० धीरं] ३ केशर (ह.नां., अ.मा., डिं.को.)

सं०पु० [सं० धीरः] ४ बलि. ५ कवि (अ.मा.)

६ सूर्य, रवि (अ.मा., नां.डिं.को., डिं.को.)

उ०—भचकै फुणाटां चील लचकै कमठी मोर, वोम ढंकै उडै खेहा रुकै धीर वाट। अजादा दधेस मुकै, भैचकै भवेस मीट, तणौ धू नरेस हुकै हैजमां तुराट।—हुकमीचंद खिड़ियो

७ चार प्रकार के नायकों में एक नायक।

रू०भे०—धीरु, धीरू।

धीरच्छ—१ देखो 'धीरट' (रू.भे.)

उ०—जो तू चाहै मुकत फळ, धूनां मन धीरच्छ। तोस मांन सरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ।—वां.दा.

२ देखो 'धीरज' (रू.भे.)

धीरज—उभ०लिं० [सं० धैर्यम्] १ संकट, बाधा, कठिनाई, विपत्ति आदि उपस्थित होने पर घबराहट के न होने का भाव, अव्यग्रता, अव्याकुलता, धीरता।

उ०—१ तरै राजा अणी री बडी धीरज चंचळाई देख, मोटो आदर करै, सांई रै लेख थी देस रो फौजदार कीधो।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ आतम घात न करि सिध आखै। राजा सुणि धीरज चित राखै।—सू.प्र.

उ०—३ असाढ़ रै ज्यूं सांवण भी आधो'क बीतग्यो अर मिनख-मिनख नै खावै जीसी टैम आयगी। मांनखा री धीरज जातो रह्यो।
—रातवासो

२ आतुर या उतावला न होने का भाव, संतोष, सब्र (डिं.को.)

उ०—१ बांका धीरज धरण सूं, हूं नहि कुंजर हांण। की घर घर भटका करै, कूकर अधिक कमांण।—बां.दा.

उ०—२ जीहा जप जगदीसवर, धर धीरज मन ध्यांन। करमबंध-निकरम-करण, भव-भंजण भगवांन।—ह.र.

क्रि०प्र०—देणौ, बंधाणौ, राखणौ।

रू०भे०—धयर, धीजो, धीरच्छ, धीरज्ज, धीरठ, धीरिम, धीरोज, धीरच।

धीरजदार, धीरजमांन, धीरजवंत, धीरजवांन—वि० [सं० धैर्य+फा०दार, सं० धैर्यवान्] धैर्यवान्। उ०—१ मोट मन गह कोट मिण मथ, सकज धीरजदार समरथ। सुयण वड हथ तमण सारिख। करण पारख क्रीत।—ल.पि.

उ०—२ अर जिकै मनुख धीरजवंत है तिकां रा कारज परमेस्वरजी करसी।—चौबोली

धीरज्ज—देखो 'धीरज' (रू.भे.)

उ०—साहिबाउ गाउ धीरज्ज धू, गढ़ज मिर धावा करए।
—गु.रू.बं.

धीरट—सं०पु० [सं० धीः+रट्=राट्=राजा] हंस पक्षी
(ह.नां., डि.को.)

उ०—१ बाजु मोडि बाज उमगु विष दिजड़ी, देवे तुंड कुता प्रदत्त। मानर हरे 'मान' हर मोती, गढ़िया धीरट तणी गत।
—प्रिथीराज हाडा रो गीत

रू०भे०—धीरज्ज, धिरट, धीरठ, धीरत।

धीरठ—१ देखो 'धीरज' (रू.भे.)

उ०—१ बीहता लागी ते नारी, धीरठ करीनइ चित्त। राक्षसनइ प्रगट कहइ, वचन सुणि तूं एक मित्त।—नळ-दवदंती रास

उ०—२ दवदंती तव कहइ पति नइ, धीरठ धाउ कंत ए। साहसपणउं एक स्वामी। चिंता म करि चिंति ए।—नळ-दवदंती रास

२ देखो 'धीरट' (रू.भे., अ.मा.)

उ०—धीरट न साढी दे गैरवी, कुमवे कुवधी वींट करी।
—नवलजी लाळस

३ मांसाहारी पक्षी, पलचर।

उ०—तूं जड़-धार न ग्रासन-धीरट, पड़ै न पळ स्रोणी प्रघळ। दळ भांमणी दूगरा दूदा, दुजड़े ऊजड़ गयो दळ।
—ईसरदास वीरमदेयोत मेड़तिया रो गीत

धीरठ-भख—सं०पु०यौ० [रा० धीरठ+सं० भक्ष] मुक्ता, मोती (नां.मा.)

धीरणौ, धीरबौ—क्रि०स० [सं० धीरं] १ धैर्य धारण करना।

उ०—जगन दरै मोवायत जोला, दौड़ हुवै ग्रजमेरे दोळा। सुजावेग उडै मोवायत, गुस्स धीरियो नहीं इक सायत।—रा.रू.

२ ढाढस बँधाना, धीरज देना।

धीरणहार, हारौ (हारी), धीरणियौ—वि०।

धीरवाड़णौ, धीरवाड़बौ, धीरवाणौ, धीरवाबौ, धीरवावणौ, धीरवावबौ—प्रे०रू०।

धीराड़णौ, धीराड़बौ, धीराणौ, धीराबौ, धीरावणौ, धीरावबौ
—क्रि०स०।

धीरिग्रोड़ौ, धीरियोड़ौ, धीरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

धीरीजणौ, धीरीजबौ—कर्म वा०।

धीरत—१ देखो 'धीरज' (रू.भे.)

उ०—करुना-कर आकर कीरत के, अगम चाकर ठाकर धीरत के। जक नाद रु बिंद धरै जब वै, बकवाद रु निंद करै कब वै।—ऊ.का.

२ देखो 'धीरट' (रू.भे.)

उ०—गमणु धीरत लंक केहर, गात उर छिब कुंभ गैमर। दीप घ्रांण दसोन झगमग, भंमर भ्रूंह समाव।—क.कु.बो.

धीरता—सं०स्त्री० [सं०] चित्त की स्थिरता, संतोष, सब्र।

धीरधर—वि० [सं० धैर्यम्+धर] धैर्य रखने वाला।

उ०—एकहि वेद ग्रनादि है, ग्राधुनीक है ग्रन्य। धरम धुरंधर धीरधर, धन्न धन्न तूं धन्य।—ऊ.का.

धीरप—क्रि०वि० [सं० धैर्यम्] १ धीरे, शनैः। उ०—तुम्हें तो पळ एक संग न छोडूं, छोड कहो किहां जाऊं। अब दुक धीरप रख-राखो, थांको मैं भी थारै लारै आऊं।—जयवांणी

२ देखो 'धीरज' (रू.भे.)

उ०—१ मन नै हटक भटक मती मूरख, घट में धीरप राख घणी। सांची कलम न जावै टाळी, तीन लोक रा नाथ तणी।
—भोगजी रतनू

उ०—२ धीरप राख मती कर धोको, सोच कियां की गरज सरै। जात चोरासी लाख जीवां री, करणहार प्रतपाळ करै।
—भोगजी रतनू

उ०—३ इण नै बापड़ी नै कांई ठा? थूं धीरप राख, म्हूं थनै सब बताय दूंला।—रातवासौ

उ०—४ स्त्री कहै धणी नै धणी धीरप दी तद सूतो छै।
—पी.ग्र.टी.

धीरपण—सं०पु० [सं० धीरत्व] धीरता, धीरज, धैर्य।

उ०—सुपातां पाळ सागै समंद सीरपण, कळह हमगीरपण फतै कीजा। चित सहज धीरपण नीर थारै चलां, बीरपण ऊफणैं, 'जगड़' बीजा।—जसजी आढ़ो

धीरपणौ, धीरपबौ—क्रि०स० [सं० धैर्य] धैर्य देना, धीरज देना, ढाढ़स बंधाना, सान्त्वना देना। उ०—१ धिन वे रावत धीरपै, भागा रावतियांह। धारा ग्रणियां में धसै, चख मुख चोळ कियांह।
—बां.दा.

उ०—२ कळळ हूंकळ ग्रवसि रोति सूरा करै। धीरपै सुहड़ रिण चलण धीरा धरै।—हा.झा.

उ०—३ रमझम ग्रोसर रोळती, घम घम घोड़ां धम्म। धम धम पातू धीरपै, खम खम घोड़ी खम्म।—पा.प्र.

धीरपणहार, हारौ (हारी), धीरपणियौ—वि०।

धीरपाड़णौ, धीरपाड़बौ, धीरपाणौ, धीरपाबौ, धीरपावणौ, धीरपावबौ
—प्रे०रू०।

धीरपिग्रोड़ौ, धीरपियोड़ौ, धीरप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धीरपीजणौ, धीरपीजबौ—कर्म वा०।

धीरबणौ, धीरबबौ—रू०भे०।

धीरपियोड़ौ—भू०का०कृ०—धीरज दिया हुग्रा, धैर्य बंधाया हुग्रा, सान्त्वना दिया हुग्रा।

(स्त्री० धीरपियोड़ी)

धीरललित—सं०पु० [सं०] साहित्य में वह नायक जो सदा खूब बना-ठना ग्रौर प्रसन्नचित्त रहता हो।

धीरबणौ, धीरबबौ—देखो 'धीरपणौ, धीरपबौ' (रू.भे.)

उ०—१ चिंता डाइणि ज्यां नरां, त्यां दृढ़ ग्रंग न थाइ। जइ धीरा मन धीरबइ, तउ तन भीतर खाइ।—ढो.मा.

उ०—२ थड़क मत चीगगढ़, जोधहर धीरबै। गंज सत्रां दळां कहं

गजगाह। भुजां सूं मूझ जद कमळ कमळां भिळै, पछै तौ कमळ पग देइ पतिसाह।—राठौड़ जैमल वीरमदेवोत री गीत

धीरवणहार, हारौ (हारी), धीरवणियौ—वि०।

धीरविग्रोड़ौ, धीरवियोड़ौ, धीरव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धीरवीजणौ, धीरवीजवौ—कर्म वा०।

धीरवियोड़ौ—देखो 'धीरपियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धीरवियोड़ी)

धीरसांत-सं०पु० [सं० धीरशांत] साहित्य में वह नायक जो सुशील, दयावान, गुणवान व पुण्यवान हो।

धीरा-क्रि०वि० [सं०] १ ठहर कर, धीरे, मन्द गति से, शनैः

२ चुपके।

यौ०—धीरा-धीरा।

३ दृढ़, अटल।

सं०स्त्री०—नायक पर पर-स्त्री रमण के चिन्ह देख कर व्यंग से क्रोध करने वाली नायिका।

धीराड़णौ, धीराड़बौ—देखो 'धीरावणौ, धीरावबौ' (रू.भे.)

धीराड़णहार, हारौ (हारी), धीराड़णियौ—वि०।

धीराड़िग्रोड़ौ, धीराड़ियोड़ौ, धीराड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

धीराड़ीजणौ, धीराड़ीजबौ—कर्म वा०।

धीराड़ियोड़ौ—देखो 'धीरावियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धीराड़ियोड़ी)

धीराणौ, धीराबौ—देखो 'धीरावणौ, धीरावबौ' (रू.भे.)

धीराणहार, हारौ (हारी), धीराणियौ—वि०।

धीरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

धीराईजणौ, धीराईजबौ—कर्म वा०।

धीरायोड़ौ—देखो 'धीरावियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धीरायोड़ी)

धीरावणौ, धीरावबौ-क्रि०स० [सं० धैर्यमापनम्] धैर्य बंधाना, विश्वास दिलाना। उ०—१ सीरौ सीरावै भ्रम धीरावै, निरदावै नीरदा है। लपसी लपकावै तपसी तावै, ग्रापा सींच उठंदा है।—ऊ.का.

उ०—२ धुर धुर कर नर लागा धीरावण। वे सोनै चांदी री करिग्या सीरावण।—ऊ.का.

धीरावणहार, हारौ (हारी), धीरावणियौ—वि०।

धीराविग्रोड़ौ, धीरावियोड़ौ, धीराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धीरावीजणौ, धीरावीजबौ—कर्म वा०।

धीराड़णौ, धीराड़बौ, धीराणौ, धीराबौ—रू०भे०।

धीरावियोड़ौ-भू०का०कृ०—धैर्य बंधाया हुग्रा, विश्वास दिलाया हुग्रा.

(स्त्री० धीरावियोड़ी)

धीरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धैर्य धारण किया हुग्रा.

२ ढाढ़स बंधाया हुग्रा, धीरज दिया हुग्रा।

(स्त्री० धीरियोड़ी)

धीरासन-सं०पु० [सं०] योग के चौरासी ग्रासनों के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन। इसमें दोनों पावों को घुटने से लौटा कर पंजों को गुदा के नीचे ग्राड़े रख कर बैठने से धीरासन होता है। दाहिने पांव को नीचे रख कर बांये पैर को घुटने से मोड़ कर इनकी एड़ी जंघा के निम्न भाग को लगा कर बैठने से दक्षिणपाद धीरासन होता है तथा इससे विपरीत बैठने पर वामपाद धीरासन कहलाता है।

धीरिम—देखो 'धीरज' (रू.भे.) उ०—रहियउ सीह किसोर जिम, धीरिम हिवइ घरेवी।—प्राचीन फागु संग्रह

धीरी-सं०स्त्री०—ग्रांख की पुतली।

वि०स्त्री०—मंद गति से चलने वाली।

धीरु, धीरू—देखो 'धीर' (रू.भे.) उ०—सउ कूंयर पंचगळउ, किवहरि पढिवा जाइं। धीरु वीरु मति ग्रागळउं, करणु पढ़इ तिणि ठाइ।
—पं.पं.च.

धीरूजळ—देखो 'धारूजळ' (रू.भे.)

धीरे, धीरैं-क्रि०वि०—१ मंद गति से, ग्राहिस्ता से।

उ०—कांटौ भागौ रे देवरिया, म्हांसूं संग चल्यौ नी जाय, धीरे हाल रे देवरिया धीरे हाल।—लो.गी.

२ ग्राहट किए बिना, चुपके से।

उ०—हाजरियौ एक टूटचोड़ा मांचा पर ग्रांगणै बैठ्यौ। वो ग्रठी-उठी देख'र धीरे सी'क बोल्यौ।—रातवासौ

रू०भे०—धीर।

धीरोज—देखो 'धीरज' (रू.भे.)

धीरोदात्त-सं०पु० [सं०] साहित्य के ग्रनुसार निराभिमानी, दयालु, क्षमाशील, धीर, दृढ़ व योद्धा नायक।

धीरोद्धत-सं०पु० [सं०] साहित्य में वह नायक जो सदा ग्रपने ही गुणों का बखान करे व दूसरों का गर्व न सह सके।

धीरौ-वि०—१ धैर्यवान्। उ०—१ चिंता डाइणि ज्यां नरां, त्यां द्रढ़ अंग न थाइ। जइ धीरा मन धीरवइ, तउ तन भीतर खाइ।—ढो.मा.

उ०—२ ताहरां मेर कह्यौ—'जी, मास १ लग धीरा रहौ।' कह्यौ—'क्यूं जी ?' 'मारग में नाहरी ब्याई छै।' ताहरां रिणमल कह्यौ—'नाहरी म्हे जांणां, तूं हालि।'—नैणसी

उ०—३ सो गांम रै धणी तौ कयौ थौ धीरा रहौ, हूं पण चालसां, पण बांमण कही—राज तौ ठाकुर साहिब हौ। कांई जांणजै कदी ही चालौ।—गांम रा धणी री वात

२ मन्द, धीमा। उ०—तरै सवानंद कहिग्रो ज धीरा रहौ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

धीरच—देखो 'धीरज' (रू.भे.) उ०—सांभळता धरम सीख, धीरच बिण माथौ धूणै। को न गिणै कायदौ, खाटलौ पड़ियौ खूणै।
—ध.व.ग्रं.

धीव—देखो 'धी' (६) (रू.भे.) उ०—१ ऐ तौ देरांण्यां जेठांण्यां जाया हालरा, मारवण ये कांई जाई है धीव। लायदौ जी भंवर म्हांनै चीणोटियौ।—लो.गी.

उ०—२ ... मत रो ... मांय नहीं रै मैणां री धीव, ... री रै ... रै गोद में ।—लो.गी.

धीवड़—देखो 'धी' (६) (मह., रू.भे.)

उ०—तड़ ... रे ... , ... म्हारी मात नै जी राज । ... मा' नै मैल'र क्यों नी मंगाय, थारी धीवड़ झूरै सासरै ।
—लो.गी.

धीवड़ली, धीवड़ी—देखो 'धी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ गणगोर ऊभी ... रे मांय, मांगू धीवड़ल्यां री जोड़, कुळ में ... री ... झूलगी ।—लो.गी.

उ०—२ तू तो ... , म्हारी मावड़, गरभणी, तूं तो देस धीवड़ल्यां रो ... रे, ... ढळक'र चालै ढेलड़ी, मोळ्या मळक'र चालै मोरड़ी ।—लो.गी.

उ०—३ हे म्हे थांनै पूछां म्हारी धीवड़ी, हे इतरो मावोता रो लाड, छोड़ नै बाई सिध चालवा ।—लो.गी.

धीवर—सं०पु० [सं०] १ मछली पकड़ने का कार्य करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति, मल्लाह, केवट (डिं.को.)

उ०—१ सर कूंत पार-पार हुआ छै। बगतरां रा तवा फोड़-फोड़ पूठी परा अणीआळा अणी नीसरै छै। सु जांणां धीवर पूठै जाळ मांहै मछां मूंह काढ़िया छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ जळचर जीव वसइं जळ माहि, ते नवि छूटइ धीवर पाइ। थळचर नी कुण करिसइ सार, दवि दाझइं पुण ते सवि वार।
—चिहुंगति चउपई

२ काणा मनुष्य।

रू०भे०—धीमर, धीमर।

धीस—सं०पु० [सं० अधीश] १ राजा, नृप।

२ स्वामी, मालिक, अधीश।

उ०—अनंक न संक न धंक न धीस, अवाग न वास न आस न ईस। निराळ न काळ त्रिकाळ-नरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह.र.

रू०भे०—धीस।

धीसव्याळ—सं०पु० [सं० व्याल+अधीश] शेषनाग।

धीहड़—देखो 'धी' (६) (मह., रू.भे.)

उ०—१ मरूं अक जीवूं, मोरी माय, दूहागण को मांन ववायो, जी राज। म्हारी धीहड़ थारी मरैगी बलाय, दूहागण को मीगो मांन वधावो, जी राज।—लो.गी.

उ०—२ मात ए भाभी, पूत जगाज्यो, एक जगाज्यो डीकरी। थां री धीहड़ नै परदेस दीज्यो, ज्यूं चित आवै म्हां नणदली।—लो.गी.

धीहड़ली, धीहड़ी, धीहड़ो—देखो 'धी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—अनदाता इंद्र अवनि आहूठियां, धारा झड़ियां सहै धका। धण ... पड़ियां, ना धीहड़ियां पड़ी नका।—दुरसो आढ़ो

धु—देखो 'धू' (रू.भे.)

उ०—धुं धुं धुं नीसांण घुरै।—र.ज.प्र.

धुंअर—देखो 'धूंअर' (रू.भे.)

धुंआंधार, धुंआंधोर, धुंआधोर—सं०पु० [सं० धूमः] १ खूब घुटा हुआ धुआं, धूंए का गहरा समूह। उ०—१ दळां रोळ दंताळ ऐसा दुरम्म, जमं जालिमा सामुहा जाणि जम्मं। रजी ऊमटै वोम नूं रोस रत्ता, धुआंधार चारव्विनं धत्तधत्ता।—वचनिका

उ०—२ धुंआधोर बंधे छुटै नाळ धोरे। कहरूं मनां वीजळी च्यार कोरे।—पा.प्र.

२ धूलि मिश्रित अंधकारयुक्त हवा।

वि०—१ बहुत अधिक, बड़े वेग का, बड़े जोर का, प्रचण्ड, अति तेज।

उ०—सू दारू किण भांत रो छै? अेराक रो वैराक, संदळी रो करळो. फूल रो अतर, बातो बर्फ धुंआधोर, तिवारा रो काढ़ियो, बोदां बाढ़ में नांखियां जग ऊठै।—रा.सा.सं.

२ धुंए का सा, काला, स्याह. ३ धुंए से भरा, धूममय।

रू०भे०—धुंवांधार, धुंवांधोर, धुवांधार, धूंआधार, धूंआधोर, धूवाधार, धूवाधोर।

धुंआळ—वि० [सं० धूमः+आलुच्] धूंए के समान, धूंए जैसा।

उ०—रळियां चढ़िता मेघ उचक्के पवन हिलोळै, सापट करै खिलोळ फुहारां रंग उजोळै। लोरां-लोर धुंआळ विलसता वार न लावै, माग भरोसां पाय चोर ज्यूं नाठा जावै।—मेघ.

धुंई—सं०स्त्री० [सं० धोमी] रोग विशेष अथवा भूत प्रेतादि का प्रकोप मिटाने के लिए औषधि विशेष या लोबान, धूप आदि का किया जाने वाला धुंआ, मच्छर आदि उड़ाने के निमित्त किया जाने वाला धुंआ।

क्रि०प्र०—करणी, देणी, होणी।

मुहा०—धुंई देणी—भूत आदि छुड़ाने, रोग मिटाने के लिए किसी वस्तु का धुंआ देना।

रू०भे०—धूंई, धूंणी, धूई, धूणी।

धुंओ—देखो 'धुंवो' (रू.भे.)

उ०—उठै सोर झाळां अनळ, आभ धुंआं अंधियार। ओळां जिम गोळा पड़ै, मेघां कटक मझार।—वीं दा.

धुंकार—सं०स्त्री० [अनु०] १ जोर का शब्द. २ गर्जन, गरज.

३ देखो 'धोंकार' (रू.भे.)

४ देखो 'धुंगार' (रू.भे.)

रू०भे०—धुकार; धूंकार, धूंकारव, धूकार, धूकारव।

धुंकारणो, धुंकारबो—देखो 'धूकारणो, धूकारबो' (रू.भे.)

धुंगार—सं०स्त्री० [सं० धूमः+अंगार] १ अंगारे पर घी डाल कर रायते, शाक आदि को दिया जाने वाला धूम।

वि०वि०—अंगारे पर घृत डाल कर उस पर खाली कटोरी आदि बरतन औंधा रख दिया जाता है। फिर उस बरतन में रायता, दाळ आदि डाल कर ढक्कन लगा दिया जाता है। घृत के धुंए की सुगंधि से वह पदार्थ स्वादिष्ट बन जाता है। कटे हुए प्याज आदि में यह सुगंधि देने के लिए जिस बरतन में प्याज आदि है उसमें किसी बड़े

छिलके आदि पर अंगारा रख कर उस पर घृत डाल कर ढक्कन लगा दिया जाता है। फिर छिलके सहित अंगारा बाहर निकाल लिया जाता है।

क्रि०प्र०—देणौ।

२ मच्छर उड़ाने अथवा किसी रोग के उपचार के लिए औषधि विशेष का दिया जाने वाला धुंआ।

रू०भे०—धुकार, धूंगार।

धुंगारणौ, धुंगारबौ—क्रि०स० [सं० धूमः+कार] १ रायते, छाछ, शाक आदि में घृत का धूं देना।

वि०वि—देखो 'धुंगार'।

उ०—खाटा स्याक, खारो स्याक, मीठा स्याक, गळया स्याक, तळया स्याक, वधारचा स्याक, धुंगारिया स्याक, छमकारिया स्याक।
—व.स.

२ मच्छर उड़ाने या रोग के उपचार के लिए किसी औषधि का धुंआ देना. ३ सुलगाना, जलाना।

धुंगारियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ घृत का धूम दिया हुआ (शाक, रायता, छाछ आदि). २ धुंआ दिया हुआ (मच्छर उड़ाने या रोग के उपचार हेतु). ३ सुलगाया हुआ, जलाया हुआ।

(स्त्री० धुंगारियोड़ी)

धुंद, धुंध—सं०स्त्री० [सं० धूमः+अंध] १ हवा में उड़ती हुई धूलि अथवा उससे होने वाला अंधेरा।

उ०—१ इतरै लाभ वथूळी आवै, कहर क्रोध डडूळ कहावै। छित पर कांम धुंध नभ छावै, पात्र विवेक निजर नहिं पावै।—ऊ.का.

उ०—२ धमस विडंगां ऊधरां, रज छायौ ब्रहमंड। सेलह चमंका धुंध में, दीठा रांवण खंड।—रा.रू.

२ कुहरा। उ०—कुण माता कुण पिता, कमण त्रिय कुण कुण भाई। कमण पुत्र परवार, कमण सनमंध सगाई। धुंद वाव जग सकळ धुंध जग काची काया। धुंध मोह धुंध लोभ, धुंध ठगवाजी माया। क्रम अक्रम भ्रम अधरम कपट, अै नेड़ा मत आंण अंग। पढ़ नांम रिदै करता पुरस, जग एक अवगत्त जग।—ज खि.

३ अज्ञान। उ०—धुंध मिटचा जव निरधुंध पाया, आतम रांम अरागी। कह सुखरांम मिटी सव त्रिसणा, अनुभव उगती जागी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

४ आंख का एक रोग. ५ देखो 'दुंद' (रू.भे.)

उ०—धुंध हुअै सारी धरा, सहर दिली पड़ि सोर। मुहिम हुंता त्यां मंडिअो, ज्यां सहिजादां जोर।—वचनिका

रू०भे०—धूंद, धूंध।

धुंधक—वि० [देश०] नशे में चूर, मदमस्त।

उ०—चिलमपोस चालतां वाजै टोकर बादोड़ा। खिणं हालतां खाज धुंधक आफू ऊगोड़ा।—ऊ.का.

धुंमकार—सं०पु० [सं० धूमः+कार] १ आकाश में छाये हुए धूलि-कण अथवा उनसे होने वाला अन्धकार या धुंधलापन. २ अंधकार, अंधेरा।

क्रि०प्र०—छाणौ।

रू०भे०—धुंधुकार, धुंधूकार, धूंधळिकार, धूंधूकार।

धुंधट—सं०स्त्री० [अनु०] रूई धुनने की धुनकी से उत्पन्न होने वाली ध्वनि। उ०—बैठा विंजण विण हिंजरता वारै। धुंधट पिंजर में पिंजण धुणकारै। सुख में सांतां रा सुणता संजीरा। मुख में दांतां रा धुणता मंजीरा।—ऊ.का.

धुंधमार—सं०पु० [सं० धुंधुमार] १ राजा बृहदश्व के पुत्र कुवलयाश्व का एक नाम जिसने 'धुंधु' राक्षस को मारा था।

उ०—ब्रहदस्व तणै सुत तेण वार। महाराजा उपजै धुंधमार।
—सू.प्र.

२ धुंधु राक्षस का नाम जिसको राजा कुवलयाश्व ने मारा था।

उ०—वळ धुंधमार वैण बांणासुर। आयै दिन न कोध अवार। वडा वडा गा तोरण वांदे। नवल वना अहंकार निवार।
—ओपौ आढ़ौ

धुंधळ—सं०स्त्री० [देश०] १ धूलिकणों अथवा गर्द के अधिक उड़ने से छाने वाला धुंधलापन अथवा अंधेरा।

उ०—देव दांणू झूंझिया रिव धुंधळ छाया।—केसोदास गाडण

रू०भे०—धूंधळ, धूंधळि, धूधळ, धूधळि।

२ देखो 'धुंधळौ' (मह., रू.भे.)

धुंधळणौ, धुंधळबौ—देखो 'धूंधळणौ, धूंधळबौ' (रू.भे.)

उ०—खोहड़ खांन खड़ै खरहंडह। महण धुंधळियौ ब्रहमंडह।
—गु.रू.बं.

धुंधळाई—सं०स्त्री० [देश०] धुंधला या अस्पष्ट होने का भाव, धुंधलापन।

धुंधळौ—देखो 'धूंधळौ' (रू.भे.)

धुंधाणौ, धुंधाबौ—देखो 'धूंधाणौ, धूंधाबौ' (रू.भे.)

धुंधु—सं०पु० [सं०] एक राक्षस जो मधु राक्षस का पुत्र था और इसका वध राजा कुवलयाश्व ने किया था।

धुंधकार, धुंधूकार—सं०पु० [अनु०] १ नगाड़े का शब्द, धुंकार.

२ देखो 'धुंधकार' (रू.भे.) उ०—सुंन महा सुंन नहीं धंधूकारां, नहीं होता नूर विलासा। ज्या दिन का जोगी करो नी विचारा, किस विध रच्या संसारा।—स्री हरिरांमजी महाराज

धुंन—सं०स्त्री० [सं० ध्वनि] १ निरन्तर होने वाली ध्वनि।

उ०—रणंकार की धुंन सूं, यूं कर जीव जगीजे ए। स्रवण सुची रुचि धार के, सार अनहद की लाजे ए।—स्री सुखरांमजी महाराज

२ चित्त की एकाग्रता, तल्लीनता।

क्रि०प्र०—लागणी।

धुंवांकस, धुंवांदांन—सं०पु० [सं० धूमः+आकाश] धुआं निकलने की चिमनी।

रू०भे०—धुवाकस।

धुंवांधार—देखो 'धुंआंधोर' (रू.भे.)

धुंवाज, धुंवोकर—देखो 'धूमध्वज' (रू.भे.)

धुंवाधोर—देखो 'धुंधाधोर' (रू.भे.) उ०—दैत काळ फालनां प्रवानां चौहैर हिरे, धुंवाधोर काळ वैर री नंग छोर।

—डा. जगरांमसिंघ री गीत

धुंवोदराड़—सं०पु० [सं० धूमः+राट] डूंगरपुर राज्य में पकाने को घर की दर लिया जाने वाला कर।

रू०भे०—धुंवादरार।

धुंवौ—सं०पु० [सं० धूमः] सुलगती या जलती हुई वस्तुओं से निकलने वाली वह भाप जो कोयले के सूक्ष्म कणों से मिली रहने के कारण कुछ नीलापन या कालापन लिये होती है, धूम।

उ०—नगि-बदनी लो सिर मरज, मेचक वेस म जांण। हिए कांम दामक हुवै, तास धुंवां मन जांण।—बां.दा.

मुहा०—१ धुंवां काडणा—अत्यधिक परिश्रम करना, कार्य समाप्त करना, कुल को बाकी नहीं छोड़ना, नाश करना, ध्वंस करना.

२ धुंवो उठाणो—नाश करना, ध्वंस करना. ३ धुंवौ ऊठणो—नाश होना, समाप्त होना. ४ धूंवो करणो—अत्यधिक खर्च करना, नाश करना. ५ धुंवौ धुकणो—चूल्हा जलना, भोजन बनना।

रू०भे०—धुंवो, धुवौ, धुं, धुंओ, धूंवो, धूमड, धूओ, धूजो।

अल्पा०—धूंवाड़ो।

धुंधर—देखो 'धूंर' (रू.भे.)

धु—सं०पु०—१ शरीर, तन. २ घोड़ी. ३ पवन, हवा.

४ दोट (एका.)

५ देखो 'धुंवौ' (रू.भे.)

६ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)

उ०—पवर्द मे चोकड़ी धु कूं वरतो, माता कहै समभाई। आपा तप किसी नहीं भव आगलै, जब राजा दवाग दिराई।

—स्री हरिरांमजी महाराज

वि०—१ अधिक, ज्यादा. २ कांपा हुआ, कंपित (एका.)

धुक—देखो 'धक' (रू.भे.)

धुकट—सं०स्त्री० [अनु०] मृदंग की ध्वनि। उ०—धुनि अदंग धुधकटम, धुकट धुधुकटम, धुकट धुर। झणणणणणण जंत्र झणंकि, प्रकट भिन्न-भिन्न धुनि सुर।—सू.प्र.

धुकण—सं०स्त्री० [सं० धुक्ष] १ अग्नि, आग. २ जलन।

रू०भे०—धकण।

धुकणो, धुकबो—क्रि०अ० [सं० धुक्ष] १ प्रज्वलित होना, सुलगना, भभकना, जलना। उ०—१ सबंध जोगेस आदेस सह जग करै, दीस धाखीस नर नीस दुखी। धाम आवो तूं हीज वैरियां तणें घर, धुई भभकाण जोगेस धुखी।—महेसदास कूंपावत री गीत

उ०—२ नोन तिरी सू बापड़ो, वैरी छांनो नेह। धुकै न धूंवो नीसरै, रहै सुरंतो देह।—अग्यात

२ धुआं निकलना, धुआं उठना। उ०—हूं कुमलांणी कंत विण, जळह विहूणी वेल। विणजारा री आग जिउं, गया धुकंती मेल्ह।

—ढो.मा.

३ क्रोधित होना, क्रुद्ध होना, कुपित होना।

उ०—१ तुरं ऊठिया जिन्है भड़ धुकिया, धारां मांहे धूमिया धड़। कव दाजा नीसांण गोर रस, नागद सतवेद भड़ निवड़।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तिण सूं उवां री बकवाद घणी बढ़ गयी, लोग सुणे सो दोनूं जायगां श्रो हीं कहै तिण सूं दोनूं धुक रहिया।

—मारवाड़ रै अमरावां री वारता

४ दुखी होना, कुढ़ना, जलना। उ०—करम फूटगा कही कवण नै जाय'र कैनां। दुखड़ा मांहे दुसह रात दिन धुकता रैनां।—ऊ.का.

५ पीड़ित होना, संतप्त होना। उ०—भेतो निहाग पछि भेराता, ताळी तजै तपेसरां। धर धूजि समुद विसहर धुकै, सहस धुकै फण सेस रा।—सू.प्र.

६ नीचे की ओर ढलना, झुकना, नवना। उ०—दळ धुकि लचक सीस अहिवाळा। चंद कटक खड़िया काळ चाळा।—सू.प्र.

७ गेंद की तरह नीचे ऊपर चक्कर खाते गिरना, लुढ़कना।

उ०—विटण सु अवि चोओड़ि 'धीर' उत, वह दळ पींजरिया बांणासि। धुक धुक हेक गया धड़ धरती, अध धड़ हेक गया आकासि।

—ईसरदास मेड़तिया री गीत

धुकणहार, हारो (हारी), धुकणियो—वि०।

धुकवाड़णो, धुकवाड़बो, धुकवाणो, धुकवाबो, धुकवावणो, धुकवावबो —प्रे०रू०।

धुकाड़णो, धुकाड़बो, धुकाणो, धुकाबो, धुकावणो, धुकावबो —क्रि०स०।

धुकिग्रोड़ो, धुकियोड़ो, धुक्योड़ो—भू०का०कृ०।

धुकीजणो, धुकीजबो—भाव वा०।

धकणो, धकबो, धिकणो, धिकबो, धिखणो, धिखबो, धीकणो, धीकबो, धुखणो, धुखबो—रू०भे०।

धुकधुकी—सं०स्त्री० [अनु०] १ कलेजा, हृदय. २ कलेजे की धड़कन. ३ डर, भय, खोफ. ४ देखो 'धुगधुगी' (रू.भे.)

धुकळणो, धुकळबो—क्रि०स—१ नाश करना, संहार करना, युद्ध करना।

धुकळियोड़ो—भू०का०कृ०—नाश किया हुआ, संहार किया हुआ।

(स्त्री० धुकळियोड़ी)

धुकाड़णो, धुकाड़बो—देखो 'धुकाणो, धुकाबो' (रू.भे.)

धुकाड़णहार, हारो (हारी), धुकाड़णियो—वि०।

धुकाड़िग्रोड़ो, धुकाड़ियोड़ो, धुकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

धुकाड़ीजणो, धुकाड़ीजबो—कर्म वा०।

धुकणो, धुकबो—अक० रू०।

धुकाड़ियोड़ो—देखो 'धुकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धुकाड़ियोड़ी)

धुकाणो, धुकाबो—क्रि०स० [सं० धुक्ष्] १ प्रज्वलित करना, सुलगाना, भभकाना; जलाना. २ धुआं निकालना, धूम उठाना.
३ क्रोधित करना, कुपित करना. ४ दुखी करना, कुढ़ाना, जलाना.
५ पीड़ित करना, संतप्त करना।
६ नीचे की ओर पैठाना, दबाना, घंसाना।
७ लुढ़काना।
धुकाणहार, हारौ (हारी), धुकाणियौ—वि०।
धुकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
धुकाईजणौ, धुकाईजबौ—कर्म वा०।
धुकणौ, धुकबौ—अक०रू०।
धुकाड़णौ, धुकाड़बौ, धुकावणौ, धुकावबौ, धुखाड़णौ, धुखाड़बौ, धुखाणौ, धुखाबौ, धुखावणौ, धुखावबौ—रू०भे०।

धुकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ प्रज्वलित किया हुआ, सुलगाया हुआ, भभकाया हुआ, जलाया हुआ. २ धुआं निकाला हुआ, धूम उठाया हुआ।
३ क्रोधित किया हुआ, कुपित किया हुआ.
४ दुखी किया हुआ, कुढ़ाया हुआ, जलाया हुआ.
५ पीड़ित किया हुआ, संतप्त किया हुआ।
६ नीचे की ओर पैठाया हुआ, दबाया हुआ, घसाया हुआ.
७ लुढ़काया हुआ।
(स्त्री० धुकायोड़ी)

धुकार—१ देखो 'धुंकार' (रू.भे.) (अ.मा.)
२ देखो 'धोंकार' (रू.भे.)

धुकारणौ, धुकारबौ—देखो 'धूकारणौ, धूकारबौ' (रू.भे.)

धुकावणौ, धुकावबौ—देखो 'धुकाणौ, धुकाबौ' (रू.भे.)
उ०—धोम पात्र कळिधूत धरावै। धूणी चंदण अगर धुकावै।
—सू.प्र.
धुकावणहार, हारौ (हारी), धुकावणियौ—वि०।
धुकाविओड़ौ, धुकावियोड़ौ, धुकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धुकावीजणौ, धुकावीजबौ—कर्म वा०।
धुकणौ, धुकबौ—अक० रू०।

धुकावियोड़ौ—देखो 'धुकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धुकावियोड़ी)

धुकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ प्रज्वलित हुवा हुआ, सुलगा हुआ, भभका हुआ, जला हुआ. २ धुआं निकला हुआ, धूम उठा हुआ.
३ क्रोधित हुवा हुआ, क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ.
४ दुखी हुवा हुआ, कुढ़ा हुआ, जला हुआ. ५ पीड़ित हुवा हुआ, संतप्त हुवा हुआ. ६ नीचे की ओर पैठा हुआ, दबा हुआ, धंसा हुआ.
७ (नगारे का) लुढ़का हुआ।
(स्त्री० धुकियोड़ी)

धुकुस-सं०पु० [सं० धुक्ष] आग, अग्नि।

धुक्कणौ, धुक्कबौ—देखो 'धुकणौ, धुकबौ' (रू.भे.)

उ०—घड़हड़ै धरण पुड़ गयण धुक्कि।—रा.रू.

धुखणौ, धुखबौ [सं० धुक्ष संदीपने] १ उग्र रूप से रहना, चलना।
उ०—तिण दावै सीसोदियां हाडां रै वैर पड़ियौ, घणा दिन अदावद वुही। घणौ वैर धुखियौ। पछै सीसोदिया सूं हाडा पोंहच सकै नहीं।
—नैणसी
२ देखो 'धुकणौ, धुकबौ' (रू.भे.)
उ०—१ धुख ऊठिया विन्है भड धुकिया, धारां मांहै घूमिया धड।
रुघ वाजा नीसांण वीर रस, नाचइ ततथेइ भड निवड।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ गढ़वाड़ांय वाद धुखै गढ़ियां। सरदारांय मुज्ज सजै चढ़ियां।
उण ढांणिय कोहर ओटड़ियां। केई दोरि है तापर कोटड़ियां।
—पा.प्र.
धुखाणहार, हारौ (हारी), धुखाणियौ—वि०।
धुखवाड़णौ, धुखवाड़बौ, धुखवाणौ, धुखवाबौ, धुखवावणौ, धुखवावबौ—प्रे०रू०।
धुखाड़णौ, धुखाड़बौ, धुखाणौ, धुखाबौ, धुखावणौ, धुखावबौ—क्रि०स०।
धुखाड़िओड़ौ, धुखाड़ियोड़ौ, धुखाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धुखाड़ीजणौ, धुखाड़ीजबौ—कर्म वा०।

धुखाड़णौ, धुखाड़बौ—देखो 'धुकाणौ, धुकाबौ' (रू.भे.)

धुखाड़ियोड़ौ—देखो 'धुकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धुखाड़ियोड़ी)

धुखाणौ, धुखाबौ—क्रि०स०—१ जारी रखना, चलाना।
२ देखो 'धुकाणौ, धुकाबौ' (रू.भे.) उ०—१ धुअै करि नै तेह धुखाइयै।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ छांणौ धुखाइ नै कह्यौ—म्हारा साथी निकळिया।—चौबोली
धुखाणहार, हारौ (हारी), धुखाणियौ—वि०।
धुखायोड़ौ—भू०का०कृ०।
धुखाईजणौ, धुखाईजबौ—कर्म वा०।

धुखायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जारी रखा हुआ, चलाया हुआ.
२ देखो 'धुकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धुखायोड़ी)

धुखावणौ, धुखावबौ—देखो 'धुकाणौ, धुकाबौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धुखावियोड़ी)

धुखावियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जारी रहा हुआ, चला हुआ.
२ देखो 'धुकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धुकियोड़ी)

धुग-सं०पु० [देश०] मजबूत लट्ठ, सोंटा।

धुगधुगी-सं०स्त्री० [अनु०] १ शरीर को जोर से हिलाने या कँपाने की क्रिया। उ०—केही तीर वाह्या सो डाढ़ाळै रा डील में लागिया पण परलै पासै जाय सागी वरड़ी ऊपर आय खड़ौ रहियौ। धुगधुगी देय भाला तीर उछाळ दिया।—डाढ़ाळा सूर री वात

(मि० पड़दो २)

२ एक प्रकार का आभूषण जो गले में पहना जाता है और छाती पर लटकता रहता है।

उ०—१ ... घुघरी ... ... घुघुरी ... री एक दिन ... ... एक ... ... ।

—ढूंढाड़ी मांनना री वारता

उ०—२ ... ... कंतु(ल) ... ... । ... ... घुघरी, ... प्रतिबिंब ... ।—वगसीरांम प्रोहित री वात

३ देखो 'घुघुरी' (रू.भे.)

घुघुटी-सं०स्त्री०—मकड़, कुरट (जयसलमेर)

घुड़की—देखो 'घुड़की' (रू.भे.)

घुड़की-सं०पु० [अनु०] १ किसी वस्तु आदि के गिरने का शब्द.

२ ... ... से उत्पन्न शब्द, धड़कन।

घुड़कणौ, घुड़कबौ-क्रि०अ० [देश०] गर्जना, ध्वनि करना।

उ०—... ... ... हूर। ... ... सूर। रिण सूर ... ... । ... ... घुड़कै निहंग।—गु.रू.बं.

घुड़कियोड़ौ-भू०का०कृ०—गर्जा हुवा, ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० घुड़कियोड़ी)

घुड़णौ, घुड़बौ-क्रि०अ० [देश०] गिरना, ढहना।

उदा०—इण गांम रा मारा ही ढूंढा बरसात रै भयंकर तूफांन सूं घुड़ग्या।

घुड़णहार, हारौ (हारी), घुड़णियौ—वि०।

घुड़वाड़णौ, घुड़वाड़बौ, घुड़वाणौ, घुड़वाबौ, घुड़वावणौ, घुड़वावबौ, घुड़ाड़णौ, घुड़ाड़बौ, घुड़ाणौ, घुड़ाबौ, घुड़ावणौ, घुड़ावबौ—प्रे०रू०।

घुड़िओड़ौ, घुड़ियोड़ौ, घुड़योड़ौ—भू०का०कृ०।

घुड़ीजणौ, घुड़ीजबौ—भाव वा०।

घुडणौ घुड़बौ—रू०भे०।

घुड़हड़णौ, घुड़हड़बौ-क्रि०अ० [अनु०] नगाड़े, ढोल आदि का बजना, ध्वनि करना। उ०—... ... ... बीज। घुड़हड़िय दमांमा घुरिय ढोल। संग्राम ... ... । मेवाड़ रांण मुहि ... मीर।—रा.ज.सी.

घुड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—गिरा हुआ, ढहा हुआ।

(स्त्री० घुड़ियोड़ी)

घुड़ी—देखो 'घुड़' (रू.भे.)

उ०—... घुड़ी रवि लागी ... , ... मरिया ... । ... ... , ... बरसि ... घर आइ।

—वेलि.

घुड़ूकणौ, घुड़ूकबौ—देखो 'घड़कणौ, घड़कबौ' (रू.भे.)

उ०—... ... ... । ... ... बिचाळि। ... ... । घुड़ूकिया मीर ... ... धार।

—रा.ज.सी.

घुड़-वि० [देश०] इतना भरा हुआ कि दबाने से दब न सके, अन्दर से भरने के कारण कठोर हो जाना।

उदा०—पाप'र घुड़ हुग्या। रोट इतरा पगराया कै पाप'र घुड़ हुग्या हा।

घुड़ौ—देखो 'घड़' (रू.भे.)

घुज-सं०पु० [देश०] कलाल जाति या इस जाति का व्यक्ति

(डि.को.)

वि० १ श्रेष्ठ। उ०—साहिब सुतन जाडौ सूजौ। दळ रायाळ रघुपति दूजौ। सुत ईंद्रभांण 'पतौ' घुज सूरौ। सरद करण राळ विरुद सनूरौ।—रा.रू.

२ देखो 'धज' (रू.भे.)

उ०—केजिम सिलह सस्त्र अंग कसिया। असी सहस आयध असमिया। वणि केसरिया साज वणाया। उभै सहंस सिधुर घुज आया।

३ देखो 'ध्वज' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—पुर अवध सूं हुय निज पगां, मुनि वही आराम मारगां। संग रांम लछमण कुमर दसरथ, धरम धुज रिणधीर।—र.रू.

घुजअसमांण-सं०पु० [सं० ध्वज+फा० आसमान] सूर्य, भानु (डि.को.)

घुजट्टिय, घुजट्टी—देखो 'धूरजटी' (रू.भे.)

उ०—वही राग 'धूहड़' सीस विहार। घुजट्टिय सीस जिसी गंगधार। कटै राग झाट अनेक किलम्म। झड़ै सिर सांग सहेत झिलम्म।

—सू.प्र.

घुजदंड-सं०पु० [सं० ध्वजदण्ड] १ ध्वज का दंड. २ घोड़ा।

घुज-धोम-सं०पु०यौ० [सं० ध्वज+धूमः] अग्नि, आग।

उ०—मूंछ रोम उल्लसै, जोम भुज व्योम परस्सै। करण होम केवियां, ति फिर घुज-धोम तरस्सै।—रा रू.

घुजा-सं०स्त्री०—१ प्रथम लघु के डगण गण के एक भेद का नाम (IS)

२ देखो 'ध्वज' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—धन्य धन्य वह जंगळ धरनी। किल्ला जहां बणायौ करनी। सधिर नींव पाताळ सपरसत। धन भुरजाळ धुजा नभ धरसत।

—मे.म.

घुजाणौ-सं०पु०—कंपायमान होने की क्रिया ?

उ०—छूटै मुठी हात री आगड़ै सूमां पड़ै छाती, गाळो अणागड़ै घुजागड़ै सांगेराव। देणा वीरताई रै आगड़ै राजसींग दूजा, राई तणै पागड़ै लगाया रांणेराव।—जवांनजी आढ़ौ

घुजाड़णौ, घुजाड़बौ—देखो 'धुजाणौ, धुजाबौ' (रू.भे.)

उ०—हद हद हसत मगत मदिरा मद, धड़हड़ सेर धुवाड़ै। घड़घड़ चाव जोगण्यां चौसट, गड़घड़ भूमि घुजाड़ै।—मे.म.

घुजाड़णहार, हारौ (हारी), घुजाड़णियौ—वि०।

घुजाड़िओड़ौ, घुजाड़ियोड़ौ, घुजाड़योड़ौ—भू०का०कृ०।

घुजाड़ीजणौ, घुजाड़ीजबौ—कर्म वा०।

घूजणौ, घूजबौ—अक०रू०।

घुजाड़ियोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुजाड़ियोड़ी)

घुजाणौ, घुजावौ—क्रि०स० [सं० घू] डांवाडोल करना, डोलाना, हिलाना. २ भयभीत करना, डराना, कंपाना।
घुजावणहार, हारौ (हारी), घुजावणियौ—वि०।
घुजायोड़ौ—भू०का०कृ०।
घुजाईजणौ, घुजाईजवौ—कर्म वा०।
धूजणौ, धूजवौ—अक०रू०।
घुजाड़णौ, घुजाड़वौ, घुजावणौ, घुजाववौ, घुज्जाड़णौ, घुज्जाड़वौ, घुज्जाणौ, घुज्जावौ, घुज्जावणौ, घुज्जाववौ, धूजाड़णौ, धूजाड़वौ, धूजाणौ, धूजावौ, धूजावणौ, धूजाववौ—रू०भे०।

घुजायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ कंपाया हुआ. २ भयभीत किया हुआ, डराया हुआ।
(स्त्री० घुजायोड़ी)

घुजावणौ, घुजाववौ—देखो 'घुजाणौ, घुजावौ' (रू.भे.)
उ०—१ अिग मरोड़ मोड़णां, धरणि पुड़ पोड़ घुजावै। दौड़ बसण द्रोपदा, ओड़ जिण री नह आवै। आखत पग ऊठतां पूठ साखत पखराळी। काच हुळम कोमाच नाच पातर नखराळी।—मे.म.
उ०—२ खरां कहै खरा खरा धरा घुजावते वहै। विकार हैं कुजा कुजा भुजा खुजावते वहै।—ऊ.का.
घुजावणहार, हारौ (हारी), घुजावणियौ—वि०।
घुजाविओड़ौ, घुजावियोड़ौ, घुजाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुजावीजणौ, घुजावीजवौ—कर्म वा०।
धूजणौ, धूजवौ—अक०रू०।

घुजावियोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुजावियोड़ी)

घुजी—देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)

घुज्जणौ, घुज्जवौ—देखो 'धूजणौ, धूजवौ' (रू.भे.)
उ०—धम धमंकि वज्जत पद घुघ्घर। धम धमंकि घुज्जत जंगळधर। रचत रास नच्चत नवरत्ती। स्त्री करणी जय जयति सकत्ती।—मे.म.
घुज्जणहार, हारौ (हारी), घुज्जणियौ—वि०।
घुज्जवाड़णौ, घुज्जवाड़वौ, घुज्जवाणौ, घुज्जवावौ, घुज्जवावणौ, घुज्जवाववौ—प्रे०रू०।
घुज्जाड़णौ, घुज्जाड़वौ, घुज्जाणौ, घुज्जावौ, घुज्जावणौ, घुज्जाववौ—क्रि०स०।
घुज्जिओड़ौ, घुज्जियोड़ौ, घुज्ज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुज्जीजणौ, घुज्जीजवौ—भाव वा०।

घुज्जाड़णौ, घुज्जाड़वौ—देखो 'घुजाणौ, घुजावौ' (रू.भे.)

घुज्जाड़ियोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुज्जाड़ियोड़ी)

घुज्जाणौ, घुज्जावौ—देखो 'घुजाणौ, घुजावौ' (रू.भे.)

घुज्जायोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुज्जायोड़ी)

घुज्जावणौ, घुज्जाववौ—देखो 'घुजाणौ, घुजावौ' (रू.भे.)

घुज्जावियोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुज्जावियोड़ी)

घुज्जियोड़ौ—देखो 'धूजियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुज्जियोड़ी)

घुण—देखो 'धनु' (रू.भे.) उ०—भ्रूभंता गयवर गुडि गाजइं घुणह तणा धोंकार। सुंडादंडि ऊपाडी नइ ऊलाळइ असवार।
—विद्याविलास पवाडउ

घुणकणौ, घुणकवौ—देखो 'घुणणौ, घुणवौ' (रू.भे.)
घुणकणहार, हारौ (हारी), घुणकणियौ—वि०।
घुणकिओड़ौ, घुणकियोड़ौ, घुणक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुणकीजणौ, घुणकीजवौ—कर्म वा०।

घुणकियोड़ौ—देखो 'घुणियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुणकियोड़ी)

घुणकी—देखो 'धुनकी' (रू.भे.)

घुणणौ, घुणवौ—क्रि०स० [सं० धुज्, धूज्] १ धुनकी से रूई साफ करना, धुनना. २ हिलाना, झकझोरना. ३ खूब मारना, पीटना. ४ ध्वनि करना। उ०—वैठा विजण बिण हिंजरता बारै। धुंघट पिंजर में पिंजण घुणकारै। सुख में वातां रा सुणता संजीरा। मुख में दांतां रा घुणता मंजीरा।—ऊ.का.
५ देखो 'धूणणौ, धूणवौ' (रू.भे.)
उ०—१ रातां जागण री जंगळ में रोळौ। ढांणी ढांणी में फिरतौ ढंढोळौ। घुणता नर माथा चुणता घर धाड़ा। पावू हरवू रा सुणता परवाड़ा।—ऊ.का.
उ०—२ धरणीतळ व्यांकुळ छेलौ सिर घुणियौ। सरणागत वच्छळ हेलौ नह सुणियौ। लिछमी-वर छांनूं कांनूं ले लीनूं। दीनन वंधू हुय दीनन दुख दीनूं।—ऊ.का.
घुणणहार, हारौ (हारी), घुणणियौ—वि०।
घुणवाड़णौ, घुणवाड़वौ, घुणवाणौ, घुणवावौ, घुणवावणौ, घुणवाववौ, घुणाड़णौ, घुणाड़वौ, घुणाणौ, घुणावौ, घुणावणौ, घुणाववौ—प्रे०रू०।
घुणिओड़ौ, घुणियोड़ौ, घुण्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुणीजणौ, घुणीजवौ—कर्म वा०।

घुणियाळ—सं०पु० [सं० धनु+आलुच्] १ धनुष को धारण करने वाला, योद्धा।
उ०—१ काळवी कळ मोर तणी करियां। नख चाळ वजै पग नेवरियां। घुणियाळ दुगाळ ढवाळ थकै। अणियाळ ढालाळ 'पेमाल' अखै।
—पा.प्र.
उ०—२ घुणियाळ थकै चड खंग घणी। असमांन लगा छड़ियाळ अणी।—पा.प्र.

२ [illegible], धींग.

३ [illegible] नाम।

रू०भे०—[illegible]।

धुणियोड़ो-भू०का०कृ०—१ धुनकी से साफ किया हुआ, धुना हुआ. २ [illegible] हुआ, हिलाया हुआ. ३ खूब मारा हुआ, पीटा हुआ. ४ [illegible] किया हुआ. ५ देखो 'धूणियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धुणियोड़ी)

धुणी—१ देखो 'धुनी' (रू.भे.) उ०—धुणी [illegible] लोहित पाव धपाव। [illegible] बाहण भाव। घणा जिण जांण सुगाल घसंत। [illegible] धमंत।—मे.म.

२ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.) उ०—मलोकां धुणी पाठ दुरगा सुणावै। धुणी माड रै राग सोभाग गावै। वंबो वीण सैतार सैनाय वाजै। नगारां धुरै मेर माला नगाजै।—मे.म.

३ देखो 'धूणी' (रू.भे.)

धुतकार—देखो 'दुतकार' (रू.भे.)

धुतकारणौ, धुतकारबौ—देखो 'दुतकारणौ, दुतकारबौ' (रू.भे.)

धुतकारणहार, हारौ (हारी), धुतकारणियौ—वि०।

धुतकारिग्रोड़ो, धुतकारियोड़ो, धुतकारयोड़ो—भू०का०कृ०।

धुतकारीजणौ, धुतकारीजबौ—कर्म वा०।

धुतकारियोड़ो—देखो 'दुतकारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धुतकारियोड़ी)

धुताइय, धुताई—देखो 'धूरतता' (रू.भे.)

उ०—[illegible]विध दाखो नाभ विनूत, धुताइय मूक परी हिय धूत।
—ह.र.

धुतारक-सं०पु० [सं० ध्रुव+तारकः] ध्रुव का उद्धार करने वाला, विष्णु, हरि।

धुतारी-वि०स्त्री० [सं० धूर्तता धारिन्] १ माया रचने वाली।

उ०—देवी नारि रै रूप पुरुसां धुतारी। देवी पुरुसां रूप नारी [illegible]। देवी रोहणी रूप तूं सोम भावै। देवी सोम रै रूप तूं सुधा स्रावै।—देवि.

२ छल-छिद्र करने वाली, धूर्त। उ०—हाथ जोड़ी नै विनती [illegible], [illegible] विनय सूं भाखै रे। म्हारै ऊपर किरपा कीजै, हूं कहूं [illegible] रे। रांणी एक धुतारी रे, बोलै मीठा बोल करसी [illegible] रे।—जयवांणी

३ दूती का कार्य करने वाली, दूती।

४ देखो 'धूतारी' (रू.भे.)

धुतारो-वि०पु० [सं० धूर्तः] १ धूर्त, कपटी.

२ ठगने वाला, ठग।

धुन—देखो 'धुन्न' (रू.भे.) (जैन)

धुनकट—देखो 'धुधुकट' (रू.भे.)

उ०—धुनि [illegible] धुमकट स धुकट धुधुकटस धुकट धुर।—सू.प्र.

धुनकार—देखो 'धुंकार' (रू.भे.)

धुधकारणौ, धुधकारबौ—देखो 'दुतकारणौ, दुतकारबौ' (रू.भे.)

उ०—हरांमीखोर हूं तो जनम हारियो, धुहड़ां भडां दसदेस धुधकारियो। धुर हर तीन सूरज तर्ण धारियो, ठाकरां हमरकै घड़ी नह टारियो।—महादांन महड़ू

धुधकारियोड़ो—देखो 'दुतकारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धुधकारियोड़ी)

धुधट-वि० [अनु०] सोधा।

धुधुकट-सं०पु० [अनु०] तबले का बोल। उ०—धुनि मरदंग धुधकट स धुकट धुधुकट स धुकट धुर। झणणणणणण जंत्र झणकि प्रगट झिम झिम धुनि नूपर।—सू.प्र.

रू०भे०—धुधकट, धूधूकट।

धुधुकार-सं०स्त्री० [अनु०] १ धू धू शब्द का घोर. २ आग की लपटों से उत्पन्न ध्वनि. ३ घोर शब्द, कड़ा शब्द. ४ झंझावात युक्त भयंकर दुष्काल, वह दुष्काल जिसमें भयंकर झंझावात का प्रकोप हो.

रू०भे०—धुधकार, धूधुकार, धूधूकार।

धुनंकणौ, धुनंकबौ—क्रि०अ० [अनु०] ध्वनि करना।

उ०—हनंकिय बाजि मिळै दुहु ओर, धुनंकिय तोप धुनी उठि सोर। गनंकिय तोप तुपक्कनि-भक्त, मनंकिय ग्रांगिस-हारन लक्त।
—लावारासा

धुनंकियोड़ो-भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० धुनंकियोड़ी)

धुन-सं०स्त्री० [देश०] १ किसी कार्य को निरंतर करते रहने की इच्छा, लगन। उ०—ग्रजीत लगी जिय जोग ग्रगाध। सुजीत लगी धुन ध्यांन समाध।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—लागणी।

२ मन की तरंग।

क्रि०प्र०—ऊठणी।

३ बुद्धि (अ.मा.) ४ सम्पूर्ण जाति का एक राग (संगीत)

[सं० ध्वनि] ५ स्वरों के उतार चढ़ाव के हिसाब से किसी गीत को गाने का ढंग। ज्यूं—इण गीत नै केई धुनां में गाय सकां।

६ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.) उ०—१ इंद्रधनुस तणियो ग्रजब, चातुक धुन मन चाव। बीज न मावै बादळां, रसिया तीज रमाव।
—बां.दा.

उ०—२ हीरां सूती महल में, सखियां तणौ समाज। विरखा रिति ग्राई विसम, गगन घटा धुन गाज।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—३ उपमा रस व्यंग धुन उकत, जुगत अलंक्रत जास। भूभ्रत जम सट भास······, पिंगळ छंद प्रकास।—क.कु.बो.

रू०भे०—धुनि, धुनी, धून, धूनी।

धुनवेत्ता-सं०पु० [सं० ध्वनि-वेत्ता] साहित्य में ध्वनि को जानने वाला।

धुनि—१ देखो 'धुन' (रू.भे.)

उ०—१ पकवांन जलेबिय पावन कौं, गहरी धुनि रागनि गावन कौं।

नव नार सुयार निजारन कीं, घर नूतन वस्त्र सु धारन कीं।—ऊ.का.
उ०—२ अपछरांन मारू पह इधक, सरस गीत संगीत घुनि। ऐहड़ै अखाड़ै सूं गयौ, सूरसिंघ स्रगह भवनि।—गु.रू.बं.
२ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)
उ०—१ वेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण वळै, खट भाख जीहा वखांणै। भांत पौरांण दस आठ पिंगळ भरथ, उगत जुगतां तणां भेद आंणै। राग छतीस घुनि व्यंग भूखण सुरस पात पद। जिकै विण समझ चंडूळ पंखी जिहो जे न रघुनाथ चौ नांम जांणै।
—र.ज.प्र.
उ०—२ दांत दमकै अहर दुत, जांण चमकै वीज। ज्यांरी घुनि मधुरी सुणै, रहै तपोधन रीज।—वां.दा.
उ०—३ धुवे रणताळ सफाळ नृधोम। हकां घुनि वेद करै इम होम।—सू.प्र.
उ०—४ मुरळी नळी संख घुनि माथां। हाथी कांन ताल वजि हाथां।—सू.प्र.
३ देखो 'घुनी' (रू.भे.)

घुनिग्रह—देखो 'ध्वनिग्रह' (रू.भे.) (ह.नां.)

घुनिया-सं०स्त्री० [सं० धुन्, धून्] रूई धुनने का कार्य करने वाली एक जाति। उ०—बस राह्मण वास सुवास विभू, प्रगटे दरिया निज दास प्रभू। भवतारन कारन नेह भरी, घुनिया कुळ में धिन देह घरी।
—ऊ.का.

घुनियौ-सं०पु० [सं० धुन्] 'धुनिया' जाति का व्यक्ति।

घुनी-सं०स्त्री० [सं०] १ नदी, सरिता (डिं.को.)
उ०—भीमा घुनी पयस्वनी, गोदावरी गहीर। ऊंनत भद्रा पूरणा, किसना निरमळ नीर।—वां.दा.
२ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)
रू०भे०—घुणी, धूणी।
३ देखो 'धुन' (रू.भे.) ४ देखो 'धूंणी' (रू.भे.)

घुनीग्रह—देखो 'ध्वनिग्रह' (रू.भे.) (ह.नां., अ.मा.)

घुनौ-वि० [देश०] श्रेष्ठ, बढ़िया।
उ०—धंकी वेस माता ताता सुभावां सलोचा घुना, पड़ै टलां कोट चुना स चेजा पाखांण। धूप धार असो चौड़ै जुना हूंत मोह धारै, करगां दीवांण छुना उबारै केकांण।—महादांन महडू

घुपटणौ, घुपटबौ—देखो 'धूपटणौ, धूपटबौ' (रू.भे.)
घुपटणहार, हारौ (हारी), घुपटणियौ—वि०।
घुपटिओड़ौ, घुपटियोड़ौ, घुपट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुपटीजणौ, घुपटीजबौ—कर्म वा०।

घुपटियोड़ौ—देखो 'धूपटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुपटियोड़ी)

घुपणौ, घुपबौ-क्रि०अ० [सं० धूप संतापे] १ क्रोधित होना, क्रुद्ध होना. २ दूर होना, हटना. ३ मिटना.
४ धोया जाना, धुलना। उ०—१ सरीर सूं अनेक प्राचत वण आवै तिकै और कोई तरै सूं उतरै नहीं नै जुध रै धारा तीरथ में सह पाप घुप जावै अनै सरीर निकळंक होय जावै छै।—वी.स.टी.
उ०—२ वंध वंदूकां वंध, घुपै छौळां जळधारां। दिपै फूल दारुवां रजिक पाड़िजै अपारां।—सू.प्र.
घुपणहार, हारौ (हारी), घुपणियौ—वि०।
घुपवाड़णौ, घुपवाड़बौ, घुपवाणौ, घुपवावौ, घुपवावणौ, घुपवावबौ, घपाड़णौ, घुपाड़बौ, घपाणौ, घुपावौ, घुपावणौ, घुपावबौ—प्रे०रू०।
धोवणौ, धोवबौ—सक रू०।
घुपिओड़ौ, घुपियोड़ौ, घुप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुपीजणौ, घुपीजबौ—भाव वा०।

घुपाड़णौ, घुपाड़बौ—देखो 'घुपाणौ, घुपावौ' (रू.भे.)
घुपाड़णहार, हारौ (हारी), घुपाड़णियौ—वि०।
घुपाड़िओड़ौ, घुपाड़ियोड़ौ, घुपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुपाड़ीजणौ, घुपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

घुपाड़ियोड़ौ—देखो 'घुपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुपाड़ियोड़ी)

घुपाणौ, घुपाबौ-क्रि०स० ('घुपणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ धुलाना, स्वच्छ कराना. २ दूर कराना, हटाना. ३ मिटाना.
४ क्रोधित करवाना।
घुपाणहार, हारौ (हारी), घुपाणियौ—वि०।
घुपायोड़ौ—भू०का०कृ०।
घुपाईजणौ, घुपाईजबौ—कर्म वा०।
घुपणौ, घुपबौ—अक०रू०।
घुपाड़णौ, घुपाड़बौ, घुपावणौ, घुपावबौ, घुवाड़णौ, घुवाड़बौ, घुवाणौ, घुवावौ, घुवावणौ, घुवावबौ—रू०भे०।

घुपायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धुलाया हुआ, स्वच्छ कराया हुआ. २ दूर कराया हुआ, हटाया हुआ. ३ मिटवाया हुआ.
४ क्रुद्ध करवाया हुआ।
(स्त्री० घुपायोड़ी)

घुपारणौ—देखो 'धूपियौ' (रू.भे.)

घुपावणौ, घुपावबौ—देखो 'घुपाणौ, घुपावौ' (रू.भे.)
घुपावणहार, हारौ (हारी), घुपावणियौ—वि०।
घुपाविओड़ौ, घुपावियोड़ौ, घुपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुपावीजणौ, घुपावीजबौ—कर्म वा०।
घुपणौ, घुपबौ—अक०रू०।

घुपाविओड़ौ—देखो 'घुपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुपावियोड़ी)

घुपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धुला हुआ. २ दूर हुवा हुआ. ३ मिटा हुआ।
(स्त्री० घुपियोड़ी)

घुपेड़ौ, घुपेरणौ—देखो 'धूपियौ' (रू.भे.)

धुव—[illegible]—ध्वनि, शोर, गीत ।

धुवकार—सं०पु० [सं० [illegible]] कम्प, घरघराहट ।

उ०—[illegible] करै धुवकार [illegible] । [illegible] तम जाळ तुरी । [illegible] —[illegible]

धुवणो, धुवबो—क्रि०अ० [सं० धुर संतापे] १ नगारा, ढोल आदि का बजना, ध्वनि करना । उ०—१ तठा उपरांति वरि नै राजान सिलां-[illegible] गजराज गजावत [illegible] रै [illegible] हाथी आयो छै । जिण जीत नगारा धुवै छै । [illegible] रा मैदानां वाजा छै ।—रा.सा.सं.

उ०—२ [illegible] धुवै [illegible] नाद [illegible], [illegible] लागै गयण भुवन [illegible] । [illegible] रै बड़ [illegible], 'माहवै' मूगलां घड़ा [illegible] ।—भाटी महासिंघ [illegible] रो गीत

उ०—३ [illegible] बंधि बोल । घुड़हड़िय दमामा धुविय ढोल ।—रा.ज.सी.

२ तोपों, बन्दूकों आदि का छूटना, ध्वनि करना ।

उ०—१ [illegible] धुव नाळां, धर रांग होए तो धकचाळ । [illegible] धुड़ता [illegible], तूं [illegible] पाधर रणताळ ।

—रावत प्रिथ्वीसिंघ चूंडावत आमेट रो गीत

उ०—२ [illegible] तोपां धुवै, रीठ पड़ि दड़ड़ गोळां [illegible] । 'अजा' रै [illegible] जोधार [illegible] असुर, जवन रा [illegible] इकवीस [illegible] ।—सू.प्र.

३ बाजों का बजना, ध्वनि होना । उ०—रजा ब्रह्म री रूप अनेक [illegible] । [illegible] बाजणा धुधरा धम्मधम्मै । घटा भद्द ज्यों नद्द [illegible] [illegible] । धुवै [illegible] मांगत [illegible] ।—मे.म.

४ क्रोध में जलना, क्रोधित होना ।

५ प्रज्वलित होना, जलना । उ०—धुवि चराकां हा दिन धोळै, [illegible] शोर मचायो । नाद [illegible] पत्ति निसादिन, सादिन नहीं [illegible] ।—ऊ.का.

६ युद्ध होना, संग्राम होना ।

उ०—धानक कर धूंकार, [illegible] आया धुळै । [illegible] हको जिण वार, [illegible] धुविया दोहू [illegible] ।—पा.प्र.

७ नष्ट होना, फटना ।

उ०—धुवै [illegible] 'नाहर' [illegible] धार । [illegible] तणो जुधवार ।

—सू.प्र.

८ प्रचण्ड होना, तीव्र होना, तेज होना ।

उ०—१ [illegible] निहार अंदर धर [illegible] । धुवतो समर चोगुणो [illegible] । 'पदम' [illegible] दप [illegible] । राजा हूंत [illegible] राजा ।

—सू.प्र.

उ०—२ [illegible] सुनंद [illegible], पड़िया जुध [illegible] । '[illegible]' [illegible] मारां, धुविया [illegible] धारां ।

—सू.प्र.

उ०—३ '[illegible]' सूर '[illegible]' [illegible] । [illegible] दिखावत ख्याल । तठै धुवियो जुध लोह प्रताप । पाड़ै राण 'भाण' समोभ्रम 'पाप' ।—सू.प्र.

९ जोश पूर्ण होना । उ०—धुवै राग सिधवां, गजै नाळियां अंबा-गळ । मेळा भड़ गहमहै, वहै गोळा वींझाझळ ।—सू.प्र.

क्रि०स०—१० प्रहार करना, वार करना ।

धुवणहार, हारो (हारी), धुवणियो—वि० ।

धुवनाड़णो, धुववाड़बो, धुवावणो, धुवावबो, धुववावणो, धुववावबो, —प्रे०रू० ।

धुवाड़णो, धुवाड़बो, धुवाणो, धुवाबो, धुवावणो, धुवावबो —क्रि०स० ।

धुविप्रोड़ो, धुवियोड़ो, धुव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

धुवीजणो, धुवीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

धुव्वणो, धुव्वबो, धुवणो, धुवबो, धूवणो, धूवबो, ध्रुवणो, ध्रुवबो —रू०भे० ।

धुवाक, धुवाख—सं०स्त्री० [देश०] १ नीची जगह ।

उ०—धुरी धुवालां धुरी, कुरी कूवै ज्यूं भावै । लाल संतियां लियां धूळिया पाळ बंधावै ।—दसदेव

२ देखो 'धमाक' (रू.भे.)

धुवाड़णो, धुवाड़बो—देखो 'धुवाणो, धुवाबो' (रू.भे.)

धुवाड़णहार, हारो (हारी), धुवाड़णियो—वि० ।

धुवाड़िप्रोड़ो, धुवाड़ियोड़ो, धुवाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

धुवाड़ीजणो, धुवाड़ीजबो—कर्म वा० ।

धुवणो, धुवबो—अक०रू० ।

धुवाड़िप्रोड़ो—देखो 'धुवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धुवाड़ियोड़ी)

धुवाणो, धुवाबो—क्रि०स० [सं० धूप संतापे] १ जलाना, प्रज्वलित करना ।

उ०—दयतां का एवास सब जद आग जळाया । महलां ऊपर फुदक-फुदक सब सहर धुवाया ।—केसोदास गाडण

२ नगारा, ढोल आदि बजाना. ३ तोपों, बन्दूकों आदि को छोड़ना.

४ वाद्य बजाना, ध्वनि करना. ५ क्रोधित करना, कुपित करना.

६ युद्ध करना, संग्राम करना. ७ नष्ट करना, काटना.

८ प्रहार करना. ९ प्रचण्ड करना, तीव्र करना, तेज करना.

१० जोशपूर्ण करना ।

धुवाणहार, हारो (हारी), धुवाणियो—वि० ।

धुवायोड़ो—भू०का०कृ० ।

धुवाईजणो, धुवाईजबो—कर्म वा० ।

धुवणो, धुवबो—अक०रू० ।

धुवाड़णो, धुवाड़बो, धुवावणो, धुवावबो—रू०भे० ।

धुवायोड़ो—भू०का०कृ०—१ नगारा, ढोल आदि बजाया हुआ.

२ वाद्य बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ. ३ तोपों, बन्दूकों आदि को छोड़ा हुआ. ४ प्रज्वलित किया हुआ, जलाया हुआ.

५ क्रोधित किया हुआ, कुपित किया हुआ.

६ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. ७ नष्ट किया हुआ, काटा हुआ. ८ प्रहार किया हुआ. ९ प्रचण्ड किया हुआ, तीव्र किया हुआ. १० जोशपूर्ण किया हुआ।

(स्त्री० घुवायोड़ी)

घुवावणी, घुवावबौ—देखो 'घुवाणौ, घुवावौ' (रू.भे.)

घुवावणहार, हारौ (हारी), घुवावणियौ—वि०।

घुवाविप्रोड़ौ, घुवावियोड़ौ, घुवाय्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घुवावीजणौ, घुवावीजवौ—कर्म वा०।

धुवणौ, घुववौ—अक०रू०।

घुवाविप्रोड़ौ—देखो 'घुवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धुवावियोड़ी)

घुवियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ध्वनि किया हुआ, बजा हुआ (नगाड़ा, ढोल, वाद्य आदि) २ छूटा हुआ, चला हुआ, (तोप, बंदूक आदि) ३ क्रोध में जला हुआ, क्रोधित हुवा हुआ।

४ प्रज्वलित हुवा हुआ, जला हुआ. ५ युद्ध हुवा हुआ, संग्राम हुवा हुआ. ६ नष्ट हुवा हुआ, कटा हुआ.

७ प्रहार किया हुआ, चोट लगाया हुआ, वार किया हुआ.

८ प्रचण्ड हुवा हुआ, तेज हुवा हुआ, तीव्र हुवा हुआ.

९ जोशपूर्ण हुवा हुआ।

(स्त्री० घुवियोड़ी)

घुव्वणौ, धुव्ववौ—देखो 'घुवणौ, घुववौ' (रू.भे.)

उ०—राठौड़ रिणवट वद्धि। जमदूत निहटा जुद्धि। हकळळ हूकळ हुव्वि, दम्मांम दोमझि घुव्वि।—गु रू.बं.

घुव्वियोड़ौ—देखो 'धुवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घुव्वियोड़ी)

घुमची-सं०स्त्री०—देखो 'दुमची' (रू.भे.)

धुमाळ-सं०स्त्री० [रा० धू=मस्तक+सं० माला] मुण्ड-माला।

उ०—कळकै चांमंडा चलै संभु घुमाळ रै काज, तठै वाज रुकै भाळ रै तमास। हुआं प्रात समै प्रळै काळ रै होवतां हलौ, 'चांपा' लंकाळ रै धकै वागां चंद्रहास।—मोडजी आढ़ौ

धुम्मदोस-सं०पु० [सं० धर्म्म+दोष] जैनियों के अनुसार भोजन की निन्दा करने पर माना जाने वाला एक दोष।

घुरंडी—देखो 'धूळैरी' (रू.भे.)

धुरंधर-वि० [सं०] १ उठाने वाला, धारण करने वाला।

उ०—साभाव की सक्ति समुद्र तैं गंभीर, जुद्ध की वेर सुमेर तैं सधीर। सूरज वंस के सूरज सूरज के रूप। कुळ भार धुरंधर धमळ तैं अनूप।—रा.रू.

२ जो सब से भारी, बड़ा और बली हो, जबरदस्त, महान्।

उ०—१ धांधू कुळ हरदास धुरंधर, वळै रांम जोड़ै वीरवर। 'उर-जावतं' दोनूं भड़ आगळ, अघपत सुछळ लियां व्रत उज्जळ।—रा.रू.

उ०—२ धरमवंत सुत वडो धुरंधर। दादा सूरराज छक उंवर।—सू.प्र.

३ प्रधान, मुखिया, नेता। उ०—जिण समय वळभद्र नांम मेड़तियौ राठौड़ धाड़ायतां में धुरंधर कहावै। जिण रा आतंक करि दूर दूर रै मारग भी सौदागर न हालै।—वं.भा.

सं०पु०—रामायण के अनुसार एक राक्षस जो प्रहस्त का मंत्री था।

रू०भे०—धोरींधर।

धुर-सं०पु० [सं० धुर्] १ बोझ, भार। उ०—१ रसिक जिकण जग रटत। मुण रघुवर अघ मटत। धनख धरण धुर धमळ। 'किसन' समर मुख कमळ।—र.ज.प्र.

उ०—२ धरहरिया चर धापिया, मातै सांवण मास। पिण वोहलिया वापड़ा, औ धुर हूंत उदास।—बां.दा.

२ कर्जा लेने वाला, कर्जदार, ऋणी, आसामी।

उ०—१ आंना अध आंना अरथ, तुरत विगाड़ै तांन। बदळै तुस रै वाणियौ, धुर गोढा लै धांन।—बां.दा.

उ०—२ करतां बहु कागद मुकता कर, कव वोहरौ यह अरज करै। खूबी करां ऊग्रावां खावां, सदा सबळ धुर गरज सरै।—गोगादांन

उ०—३ धुर धुर कर कर नर लागा धीरावण। सोने चांदी रौ करग्या सीरावण।—ऊ.का.

रू०भे०—धर।

अल्पा०—धुरियौ।

३ देखो 'धुरी' (मह., रू.भे.)

४ निश्चय। उ०—एकोतरै अठारसौ, सांवण दसमी स्यांम। बुध धुर रची वतीसका, पोखण सुकव तमांम।—बां.दा.

५ प्रारम्भ, शुरू।

उ०—१ धुर तैं भ्रम भंजन नांम धरै, भ्रमहीं भ्रम तै मन बुधि भरै। कुळ लाज अजाद सुत्याग करौ, सुभ सांध समाज सदा सुमरौ।—ऊ.का.

६ यान-मुख (डि.को.) ७ बैलों आदि के कंधों पर रखा जाने वाला जुआ। उ०—महीयळ गढां मचोळ, नर केई होवै निबळ। धुर आयां विन धोळ, भार न खांचै भैरिया।—रतलांम नरेस बळवंतसिंघ

८ देखो 'धुराऊ' (रू.भे.) उ०—फागणियौ ओढूं तो रे, धुर में चमकै बीजळियां।—लो.गी.

९ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)

वि०—१ प्रारम्भ का, प्रथम का। उ०—कहि धरा पूर धुर कथा विसवामित्र विवध।—रांमरासौ

२ प्रथम, पहला। उ०—१ साच दिखावण झूठ दा, धुर झूठ धरंदा।—केसोदास गाडण

उ०—२ सझ तेरह धुर फेर दस, जांणै निस्रेणी। रिख नारी तरगी हरी, परसत पग रैणी।—र.ज.प्र.

उ०—३ अमसी कहै वधतै धनै, त्रिसना वधै अथाग। धुर थी अधिकी धग-धगइ, इंधन मिळियां आग।—ध.व.ग्रं.

क्रि०वि०—१ पुरे में, प्रारम्भ में, पहिले।

उ०—करी नर करि मून करि, सारू धुर तप कीव। जग दाता जनम लियौ, दई धणी मैं दीव।—बां.दा.

२ अगाड़ी, अग्र। उ०—१ पवड़ न पटकां धुर वहै, कासूं पांणी कीम। इण री जननी ताणही, वैतरणी रै बीच।—बां.दा.

उ०—२ पाप न फेरै, धुर वहै, पवड़ा एह धरम्म। राघव ज्यारै रागही, सींतां तणी मरम्म।—बां दा.

३ पर्यन्तिक नजदीक, पास।

उ०—कठियां हुड़ मजोठियां, कढियौ श्रीराम गाड़। माळगुवां वद्रम लियौ, आयौ धुर आगाड़।—पा.प्र.

अव्य०—घुरो आदि को दुत्कारने का शब्द।

धुरकारणौ, धुरकारबौ—देखो 'दुतकारणौ, दुतकारबौ' (रू.भे.)

धुरकारणहार, हारौ (हारी), धुरकारणियौ—वि०।

धुरकारिग्रोड़ौ, धुरकारियोड़ौ, धुरकारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

धुरकारीजणौ, धुरकारीजबौ—कर्म वा०।

धुरकारियोड़ौ—देखो 'दुतकारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धुरकारियोड़ी)

धुरज—देखो 'धूरज' (रू.भे.) (ह.नां.)

उ०—नित जावै आगेट सदा नीसांण मंडावै। लियां साथ नायकां धुरज केमर धम लावै।—पा प्र

धुरजटी—देखो 'धूरजटी' (रू भे.)

धुरजी—देखो 'ध्रुव' (रू.भे)

धुरज्ज—देखो 'धूरज' (रू.भे) उ०—घाटी गघ घाटी घमळ, घाटी सिरै धुरज्ज। पातू घाट पधारियौ, घण घाटेती कज्ज।—पा.प्र.

धुरणौ, धुरबौ—देखो 'धरणौ, धरबौ' (रू.भे.)

उ०—धज कुळ वाट मेड़ता धुरतौ। 'सेरावत' बोलै भड़ 'सुरतौ'। धणभग राजसिघ 'पेमावत'। सिमूसिघ बोलियौ 'हटौ' सुत।—सू प्र.

धुरधमळ-वि० [सं० धुर्+धवल] १ अगुवा, मुखिया।

उ०—मारणा केमतांनी अवाह, मुज पड़ियौ घर लोहां जसाह। 'भोमेत' तांम चहुवांन वीर, धुरधमळ पड़ै लोहां सधीर।—सि.सु.रू.

२ सद्गुणों से सम्पन्न, कर्तव्य पूर्ण करने वाला।

उ०—वदो ग्रह जनमे पुत्र च्यार। धुरधमळ वरद सरणाय साधार।—रांमदांन लाळस

३ महान् उदार, ऊँचे दिल का।

उ०—अभीमण सरण थाप अपर, महर कर मनमोट। धुरधमळ दखियौ धमर-धरण, ध्रनक थाळो कोट।—र.ज.प्र.

धुरपट—देखो 'धूपट' (रू.भे.

धुरपद—देखो 'ध्रुपद' (रू.भे

धुरळ—देखो 'दुरळ' (रू.भे.)

नै कियौ सरणौ सवार। स

पट इसड़ौ दरोळ।—पे.रू.

धुरवहौ-वि० [सं० धुर्वह] १

उ०—जग में धवळ कहाव

धुरवहौ, समझ लियौ सह

२ आगे चलने वाला।

३ रथ आदि खींचने वाला

सं०पु०—वह बैल जो गाड़

धुरवा·धुरवा··सं०पु० [रा० ध

उ०—१ कैसौ लगै सुवा

सुरवां करै, धुरवां-गण म

उ०—२ कित सोभति रेस

अति उग्र तुरंगम अंग

उ०—३ धुरवा धरणी ल

जिम जावै। मोरां अनुमो

भमनां भव भागी।—ऊ.

उ०—४ नभ देव विमान

चली। दळ येम नरूकन

धुरां-क्रि०वि० [सं० धुर्] पह

उ०—१ धुरां तूं सुराराय

तुही भीलणी भेख संभू

उ०—२ रोलै इम सांभ

कारिण करै, सदा कुळ ध

धुरा-सं०पु०—अंत, आखिर

धुरा लगइ अवचळ अव

चाढ़इ नहीं वभूत।—महा

क्रि०वि०—१ अंत में।

कोठी यतरउ रूप कर। जु

धर।—महादेव पारवती रं

२ प्रारम्भ आदि का।

मुहा०—धुरा पेट सं—शुरू

उ०—२ आज घुराऊ घरा घूंधळो ए, पिणिहारी ए लो। कोई मोटोड़ी छांटां रो बरसै मेह वाला जी ओ।—लो.गी.

वि०—उत्तर दिशा का।

रू०भे०—धराउ, धराऊ, धरावू, घुर, घुराद, घोराऊ।

घुराद-क्रि०वि० [सं० धुर्+रा०प्र० आद] १ आदि काल से, आरम्भ से। उ०—मही प्रमार री थिरू, हूती घुराद मंड सू। अरोग गोम भूप आय, हो जको अफंद सूं।—पा.प्र.

२ देखो 'घुराऊ' (रू.भे.)

घुराळ-वि० [सं० धुर्+आलुच्] प्रथम, पूर्व।

उ०—जनमाळ घुराळ दुधाळ सिरज्जत, काळ ते क्यों न गवाळ करें।
—करुणासागर

सं०पु०—रथ, बैलगाड़ी या अन्य किसी यान के अगले हिस्से में पिछले हिस्से की अपेक्षा अधिक बोझ हो जाने से संतुलन बिगड़ने की क्रिया।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

रू०भे०—धराळ।

घुरि-वि० [सं० धुर्] १ प्रथम, पहला। उ०—स्रीसरसति घुरि वीनवउं, मागुं बुद्धि प्रकास। अहमद गुण वक्खांणतां, मझ मनि पूजउ आस।—व.स.

२ प्रधान, मुख्य। उ०—जोतां नविरस एणि जुगि, सवि हूं घुरि सिणगार। रागइं सुर-नर रंजियइ, अबळा तसु आधार।—ढो.मा.

३ श्रेष्ठ, सर्वोत्तम। उ०—तसु घरि नंदन च्यारि निरोपम पहिलउ घुरि धनसार। बीजउ बंधव बहुगुण भविउ वुद्धिवंत गुणसार।
—विद्याविलास पवाडउ

[प्रा० घूरिअ, अप० घूरिय=दीर्घ] ४ लम्बा, दीर्घ।

उ०—घमधमिउ घुरि नाद नीसांण नउ। गहगहिउ सुरवरग मसांण नउ।—विराट पर्व

क्रि०वि० [सं० धुर्] प्रारम्भ में। उ०—रसहि राज्यकळा घुरि आदरी। अवरि मूळ लगइ स निरकारी।—जयसेखर सूरि

सं०पु०—सिरहाना। उ०—पहिलउं आवइ गुरु गंगेउ, धायरट्ठ घुरी बइसइं राउ। विदुर क्रिपा गुरु अवर नरिंद, मंचि चडया सोहइ जिम चंद।—पं.पं.च.

रू०भे०—घुरी।

घुरिया-सं०स्त्री०—पंवार वंश की एक शाखा।

घुरियामलार, घुरीयामलार-सं०पु० [देश० घुरिया+मल्लार] सम्पूर्ण जाति का एक प्रकार का मल्लार जिसमें सभी शुद्ध स्वर लगते हैं।

घुरियौ-सं०पु०—१ पंवार वंश की 'घुरिया' शाखा का व्यक्ति.

२ देखो 'घुर' (२) (अल्पा., रू.भे.) (डिं.को.) (शेखावाट)

३ देखो 'घुरौ' (अल्पा., रू.भे.)

घुरी-सं०स्त्री०—१ देखो 'घुरौ' (अल्पा., रू.भे.) (डिं.को.)

२ देखो 'घुरि' (रू.भे.)

घुरीण-वि० [सं०] १ बोझा सम्भालने वाला, वहन करने वाला.

२ प्रधान, मुख्य। उ०—वाल्हा तुं तउ हो धरम घुरीण; पर उपगारी परगड़उ। वाल्हा मुझ नइ हो देखी दीण, सेवक करिनइ तेवड़उ।—वि.कु.

३ पंडित।

घुरू—देखो 'ध्रुव' (रू.भे.) उ०—रांम नांम परताप, घुरू अवचळ हुइ रहियौ।—ह.र.

घुरेंडी—देखो 'धूळेरी' (रू.भे.)

घुरौ-सं०पु० [सं० धुर्] १ बैलों के कंधों पर रखा जाने वाला जुआ।

२ पहिये की गड़ारी अथवा कूप से जल निकालने वाली चरखी या घिरनी के बीचोबीच रहने वाला लकड़ी या लोहे का वह डंडा जिसमें पहिया या चरखी पहनाई रहती है और जिस पर वह घूमती है, धुरा, अक्ष, घूरी (रू.भे.)

अल्पा०—घुराई, घुरियौ, धुरी।

मह०—घुर।

घुलंडी—देखो 'धूळेरी' (रू.भे.)

घुलणौ, घुलबौ-क्रि०अ० [राज० धोणौ का अक० रू०, सं० धावनम्] धोया जाना, धुलना।

ज्यूं—मेह रा पांणी सूं म्हारी गाड़ी सांतरी धुल गई है।

घुलणहार, हारौ (हारी), घुलणियौ—वि०।

घुलवाड़णौ, घुलवाड़बौ, घुलवाणौ, घुलवाबौ, घुलवावणौ, घुलवावबौ, घुलाड़णौ, घुलाड़बौ, घुलाणौ, घुलाबौ, घुलावणौ, घुलावबौ
—प्रे०रू०।

घुलिओड़ौ, घुलियोड़ौ, घुल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घुलीजणौ, घुलीजबौ—भाव वा०।

धोणौ, धोबौ, धोवणौ, धोवबौ—सक०रू०।

घुलहड़ी, घुलहडी-सं०स्त्री० [सं० धूलिपटिका] हिंदुओं का एक त्योहार जो होलिकोत्सव के बाद मनाया जाता है। रजोत्सव।

वि०वि०—देखो 'धूळेरी'।

घुलाई-सं०स्त्री० [सं० धावनम्] १ धोने का कार्य या भार.

२ धोने की मजदूरी।

घुलाड़णौ, घुलाड़बौ—देखो 'घुलाणौ, घुलाबौ' (रू.भे.)

घुलाड़णहार, हारौ (हारी), घुलाड़णियौ—वि०।

घुलाड़िओड़ौ, घुलाड़ियोड़ौ, घुलाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घुलाड़ीजणौ, घुलाड़ीजबौ—कर्म वा०।

घुलणौ, घुलबौ।—अक०रू०।

घुलाड़ियोड़ौ—देखो 'घुलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घुलाड़ियोड़ी)

घुलाणौ, घुलाबौ-क्रि०स० ('धोनौ' क्रिया का प्रे०रू०, 'धुलणौ' क्रिया का प्रे०रू०) स्वच्छ करवाना, धुलवाना, धुलना।

घुलाणहार, हारौ (हारी), घुलाणियौ—वि०।

घुलायोड़ौ—भू०का०कृ०।

घुनाईजणो, घुनाईजबो—कर्म वा०।
घुनणो, घुनबो—अक०रू०।
घुनाड़णो, घुनाड़बो, घुनावणो, घुनावबो—रू०भे०।
घुनाणोड़ो-भू०का०कृ०—स्वच्छ करवाया हुआ, धुलवाया हुआ।
(स्त्री० घुनाणोड़ी)
घुनावट-सं०स्त्री० [सं० धावनम्] धोना क्रिया का भाव।
उदा०—इण धोबी री घुनावट सुथरी है। थारै कपड़ां री घुनावट ठीक नीं है।
घुनावणो, घुनावबो—देखो 'घुनाणो, घुनाबो' (रू.भे.)
घुनावणहार, हारो (हारी), घुनावणियो—वि०।
घुनाविग्रोड़ो, घुनावियोड़ो, घुनाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
घुनावीजणो, घुनावीजबो—कर्म वा०।
घुनणो, घुनबो—अक०रू०।
घुनावियोड़ो—देखो 'घुनायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुनावियोड़ी)
घुनियोड़ो-भू०का०कृ०—स्वच्छ हुवा हुआ, धुला हुआ।
(स्त्री० घुनियोड़ी)
घुलियो-सं०पु०—देखो 'घूल' ? (अल्पा., रू.भे.)
उदा०—मावड़ियां तो आ नरना करी, घोक छै यारा जोयणां। पछै कठा नूं आदमी, लागो घुलियो जोवणां। तठै तो अणां री दया ई नै आवै रै, अबै री बणसि। आला आछा आदमी तड़ाछ लावै छै।
—पनां विरमदे री वात
घुळी—देखो 'घूळ' (रू.भे.)
उदा०—मणिमेर मेरागिर मेलछा, थियो घुळी रव धूंधळा।—गु.रू.बं.
घुळेंडी, घुळेडी, घुळेरी—देखो 'धूळेंडी' (रू.भे.)
घुव-सं०पु०—१ शोर, शोध (डि.को.)
२ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.) (डि.को.)
उदा०—१ पवै गुरु आठ (सात) हू सात समंद, उचारै नांम करै आनंद। रवां घुव चंदह ध्यांन धरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।
—ह.र.
घुवड़-सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा. ख्यात)
घुवणो, घुवबो—१ देखो 'धुवणो, धुवबो' (रू.भे.)
उदा०—गुंजार व गैमरां घुवै हुव मांमळ ढोलां, जादम सूं कर जंग पड़ै सिर भारी भोलां।—द.दा.
२ देखो 'धुळणो, धुळबो' (रू.भे.)
घुवमंडळ—देखो 'ध्रुवमंडळ' (रू.भे.)
घुवराज—देखो 'ध्रुव'।
उदा०—... जग दीध राज धुवराज जेम।
—सू.प्र.
घुवसंधि—देखो 'ध्रुवसंधि' (रू.भे.)

उदा०—१ 'घुव' संभ्रम घुवसंधि प्रथिपति। सुत सुदरसण उदारह दति सति।—सू.प्र.
घुवांकस—देखो 'घुंवांकस' (रू.भे.)
घुवांधज—देखो 'धूमधज' (रू.भे.)
घुवांधार—देखो 'धुंग्रांधोर' (रू.भे.)
घुवांधुज—देखो 'धूमधज' (रू.भे.)
घुवांधोर—देखो 'धुंवांधोर' (रू.भे.)
घुवांन—देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)
घुवाड़णो, घुवाड़बो-क्रि०स०—१ दौड़ाना।
उदा०—हड़ हड़ हसत, असत मदिरा मद, धड़ हड़ सेर धुवाड़ै। घड़ चड़ चाव जोगण्यां चोसट, भड़बड़ भूमि धुजाड़ै।—मे.म.
२ देखो 'घुपाणो, घुपाबो' (रू.भे.)
घुवाड़णहार, हारो (हारी), घुवाड़णियो—वि०।
घुवाड़िग्रोड़ो, घुवाड़ियोड़ो, घुवाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
घुवाड़ीजणो, घुवाड़ीजबो—कर्म वा०।
घुवणो, घुवबो—अक०रू०।
घुवाड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ दौड़ाया हुआ.
२ देखो 'घुपायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुवाड़ियोड़ी)
घुवाणो, घुवाबो—देखो 'घुपाणो, घुपाबो' (रू.भे.)
ज्यूं०—आज धोबी कै जा'र सै कापड़ा धुवा देस्यूं, काल गांव जाणो छै।
घुवाणहार, हारो (हारी), घुवाणियो—वि०।
घुवायोड़ो—भू०का०कृ०।
घुवाईजणो, घुवाईजबो—कर्म वा०।
घुवणो, घुवबो—अक०रू०।
घुवाड़णो, घुवाड़बो, घुवावणो, घुवावबो—रू०भे०।
घुवायोड़ो—देखो 'घुपायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुवायोड़ी)
घुवावणो, घुवावबो—देखो 'घुपाणो, घुपाबो' (रू.भे.)
घुवावणहार, हारो (हारी), घुवावणियो—वि०।
घुवाविग्रोड़ो, घुवावियोड़ो, घुवाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
घुवावीजणो, घुवावीजबो—कर्म वा०।
घुवणो, घुवबो—अक०रू०।
घुवावियोड़ो—देखो 'घुपायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुवावियोड़ी)
घुवियोड़ो-भू०का०कृ०—१ देखो 'धुवियोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'धुळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुवियोड़ी)
घुवो—देखो 'धुंवो' (रू.भे., डि.को.)
घुसणो, घुसबो-क्रि०अ० [सं० ध्वंस] १ ध्वंस होना, संहार होना, नाश

होना। उ०—१ भिडइ सहड रडवडइं सीस धड नड जिम नच्चइं। हसइं घुसइं ऊससइं वीर मेगळ जिम मच्चइं।—पं.पं.च.

उ०—२ दह जिसि वाजइं हाक वहु जीव विणासइं। एकि घुसइं एकि घायइं एकि आगळि नासइं।—पं.पं.च.

२ देखो 'धसणौ, धसबौ' (रू.भे.)

घुसणहार, हारौ (हारी), घुसणियौ—वि०।

घुसवाड़णौ, घुसवाड़बौ, घुसवाणौ, घुसवाबौ, घुसवावणौ, घुसवावबौ, घुसाड़णौ, घुसाड़बौ, घुसाणौ, घुसाबौ, घुसावणौ, घुसावबौ—प्रे०रू०।

घुसिश्रोड़ौ, घुसियोड़ौ, घुस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घुसीजणौ, घुसीजबौ—भाव वा०।

घुसरी, घुसली—सं०स्त्री० [देश०] रज, धूलि, रेणु।

घुस्सौ—देखो 'घूंसौ' (रू.भे.)

घूं—१ देखो 'धुंवौ' (रू.भे.) (डि.को.)

२ देखो 'घू' (रू.भे.) उ०—करै घाव छछोहा छटाका टूक झड़ै केई पड़ै, केई उथल्लै अळूझ अंत्र पाय। परी रथां चडै केई खवां घूं हींडळै पेचां, खांगी बंधे लड़ै केई ऊठै झोक खाय।—सू.प्र.

घूंग्रर—देखो 'घूंर' (रू.भे.) उ०—कांम कुतूहळ केळविसि, आंणिसि मागिसि तेह। परहरि माधव मुख-थिकी, ते घूंअरि हुं मेह।—मा.कां.प्र.

घूंआधार, घूंआधोर—देखो 'धुंआंधोर' (रू.भे.)

घूंआरव-सं०पु० [सं० धूमः-रव] धूम, घूंआ। उ०—घूंआरव दव धोम, खेहा-रव डंबर खरा।—वचनिका

घूंई—१ देखो 'घूंणी' (रू.भे.) उ०—मंज देस तहं मढी हमारी, तन वाघंबर कीया। घूंई ध्यांन सहज की मुद्रा, अगम पियाला पीया।—ह.पु.वा.

२ देखो 'धुंई' (रू.भे.)

घूंग्रौ—देखो 'धुंवौ' (रू.भे.)

उ०—यह तन जारी मसि करूं, घूंआ जाहि सरग्गि। मुझ प्रिय बद्दळ होइ करि, वरसि वुझावइ अग्गि।—ढो मा.

घूंकणी—देखो 'धौंकणी' (रू.भे.) (डि.को.)

घूंकर-सं०स्त्री० [देश०] १ जोश दिलाने की आवाज. २ प्रताड़ने की आवाज।

घूंकळ-सं०पु० [देश०] १ युद्ध, लड़ाई।

उ०—१ अर सांमोर वारहठ लोहठ री पाघरै आंटै मंडोउर रा नरेस पड़िहार हमीर १ नूं गांजि रांणा लाखा २ रौ आपरै अगार ही अवसांण आयौ। इण रीति अनेक घूंकळ करि भुजां री कंडूया भागि न जांणि जगमाल कुमार अहमदावाद रा अधीस नूं पांहुणौ नूंतियौ।—वं.भा.

उ०—२ खळां घूंकळां आदरै वीर खेळा, मिळै वाघरै जोगण्यां जुत्थ मेळा। भरै पत्र भैंसां अजां रत्त भोगं, अछव ां छकां छाक दारू अरोगं।—मे.म.

२ उत्पात, उपद्रव। उ०—तुरक घड़ा नव तेरही, तेरह साख कमंध। इळ घूंकळ कळि ऊपजे, ज्यां कपि दळ दसकंध।—रा.रू.

३ टंटा, फिसाद, बखेड़ा।

रू०भे०—धांकळ, घूंखळ, घूकळ, घूखण, घूखळ, धौंकळ, धौंखळ, धौकळ, धौखळ, घ्रंखळ।

घूंकळणौ, घूंकळबौ—देखो 'धौंकळणौ, धौकळबौ' (रू.भे.)

घूंकळसी, घूंकळी-वि० [देश०] योद्धा, साहसी।

घूंकळियोड़ौ—देखो 'धौंकळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूंकळियोड़ी)

घूंकार, घूंकारव—१ देखो 'धौंकार' (रू.भे.)

उ० —१ घांनक कर घूंकार, पाराधी आया पुळै। वुहौ हकौ जिण वार, पिड़ धुविया दोहु नरपति।—पा.प्र.

उ०—२ दोड़ भमर वज दड़ौ, हुवौ मढ हूंकारव। वीर हाक सवळां धनुस टंकी घूंकारव।—पा.प्र.

२ देखो 'धूंकार' (रू.भे.)

घूंखळ—देखो 'घूंकळ' (रू.भे.) उ०—धरती मांहि मचांणी घूंखळ, किधर रखेगी माल कह। बाप करै बेटा वोहतेरा, बेटी खेटा करै बह।—महाराज कुमार अभयसिंह री गीत

घूंखळणौ, घूंखळबौ— देखो 'धौकळणौ, धौकळबौ' (रू.भे.)

घूंखळणहार, हारौ (हारी), घूंखळणियौ—वि०।

घूंखळिश्रोड़ौ, घूंखळियोड़ौ, घूंखळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

घूंखळीजणौ, घूंखळीजबौ—कर्म वा०।

घूंखळियोड़ौ—देखो 'धौकळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूंखळियोड़ी)

घूंगरि-सं०पु० [?] १ वृक्ष विशेष।

उ०—धंतूरा नइं धाऊडा, धामणि घूंगरि घूंनि। धींग धमासा धूलिया, धडहड धाता धूंनि।—मा.कां.प्र.

२ शाक विशेष ?

उ०—घूंगरि घूंणी धांणकी, धातरि धणख धमासि। धडफूडी धंधोळणी, धूती धाडा धासि।—मा.कां.प्र.

घूंगार—देखो 'धुंगार' (रू.भे.)

घूंगारणौ, घूंगारबौ—देखो 'धुंगारणौ, धुंगारबौ' (रू.भे.)

घूंगारणहार, हारौ (हारी), घूंगारणियौ—वि०।

घूंगारिश्रोड़ौ, घूंगारियोड़ौ, घूंगारघोड़ौ—भू०का०कृ०।

घूंगारीजणौ, घूंगारीजबौ—कर्म वा०।

घूंगारियोड़ौ—देखो 'धुंगारिश्रोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूंगारियोड़ी)

घूंण-सं०स्त्री० [सं० अर्द्ध+राज० मण] १ आधे मन की माप का एक पात्र विशेष। उ०—छलती हिक मूंणी सराब छकै। भर घूंण पुलाव कबाब भखै। गहलो घट पिंड प्रतीत गणै। घरसै नभ मुंड घमंड घणै।—मे.म.

२ [illegible] ३ [illegible], [illegible], [illegible]।

[illegible]—[illegible] घूण [illegible] ([illegible])—किसी बात के पसन्द न होने, असहमत, [illegible] [illegible] करने के मारे सीस हिलाना।

[illegible]—[illegible]।

[सं० [illegible] घूर्णन] ३ [illegible] (डि.को.) ४ देखो 'घूंन' (रू.भे.)

[illegible]—घूण।

घूंणणो, घूंणबो-क्रि०स० [सं० घुर्, घूर्] १ हिलाना, झकझोरना।

उ०—१ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] भुज [illegible], [illegible] गड घूंणिया [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सांम्ही मड़ै, सिवा री [illegible] [illegible] मांहै।—[illegible].

उ०—२ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कढियो। घूंणि नटा सिस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।—सिवबगस पाल्हावत

उ०—३ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] घूंणै सीस। फंसियो कांमण फंद में, [illegible] [illegible] न [illegible]।—बां.दा.

उ०—४ घूंणै सिर [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] जे भार। बोहळिया बिर-दाळियां, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।—बां.दा.

मुहा०—१ [illegible] घूणणो—कंपायमान करना, भयभीत करना.

२ माथो घूणणो—इनकार करना, टालना या शर्म के मारे शिर हिलाना। जोश या क्रोध के आवेग में आकर शिर हिलाना।

२ प्रहार हेतु शस्त्र को ऊपर उठा कर जोर से घुमाना।

उ०—घूंणै [illegible] न घूंणै [illegible], मारै रीस सहे मन मांय। 'जगा' [illegible] [illegible] [illegible], जवन तणा घट हूंत न जाय।

—महारांणा राजसिंघ री गीत

३ विलोड़ित करना, मथना। उ०—साग सात सुर असुर समेळा, [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] रासावत, घूणै सायर अमर [illegible]।—र.रा.

४ देखो 'घुणणो, घुणबो' (रू.भे.)

घूणणहार, हारो (हारी), घूणणियो—वि०।

घूणिप्रोड़ो, घूणियोड़ो, घूण्योड़ो—भू०का०कृ०।

घूणीजणो, घूणीजबो—कर्म वा०।

घूणणो, घूणबो—रू०भे०।

घूंणब-सं०स्त्री०—[संघू] एकाएक जोर से शरीर हिलाने की क्रिया या भाव। उ०—[illegible] [illegible] घूंणब [illegible] [illegible]। [illegible] गोविंद भूम प्रभंक [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] तणी...यो। किरणाळ नुं 'पाल' प्रणांम [illegible]।—पा.प्र.

घूंणियोड़ो-भू०का०कृ०—१ हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ.

२ घुमाया हुआ. ३ देखो 'घुणियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घूंणियोड़ी)

घूंणी-सं०स्त्री० [सं० घूमः] १ साधुओं के तापने की आग जिसे वे ठंड से बचने अथवा शरीर को कष्ट पहुंचाने के लिए अपने सामने [illegible] हैं।

मुहा०—१ घूंणी तापणी—तपस्या करना, कष्ट सहन करना, शरीर को कष्ट पहुंचाना, शारीरिक परिश्रम करना, घूंणी धुकणी—(साधुओं के पास) अग्नि प्रज्वलित होना. ३ घूंणी जगाणी, घूणी धुकाणी—साधुओं का अपने सामने अग्नि जलाना। तपस्या के हेतु शरीर को तपाना। विरक्त होना। सन्यास लेना, साधु हो जाना।

२ वह अग्निकुण्ड अथवा स्थान जहां साधु आग जला कर ताप करते हैं. ३ [illegible], दसनामी व नाथ संप्रदाय के फकीरों का निवास-स्थान. ४ देखो 'घुंई' (रू.भे.) ५ [illegible] विशेष। उ०—घूंगरि घूंणी [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]-फूली धंधोळणी, घूणी [illegible] [illegible]।—मा.कां.प्र.

६ देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जद स्वांमीजी बोलिया—दांमां साह नोधी घूंणी नै दोय तीर ले'र संग्राम मांडयां जिम जीतै।—भि.द्र.

रू०भे०—धुणी, धुनी, घूई, घूणी, घूनी।

घूंणो—देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

घूंद, घूंध—१ देखो 'धुंद' (रू.भे.) उ०—सुंड सूंडाळो गणपत घूंध घूंधाळो, ओछी पीढयां री कांमणगारो ए, म्हारो बिड़द बिनायक।

—लो.गी.

२ देखो 'धुंध' (रू.भे.) उ०—१ सो घोड़ां रा पोड़ां सूं नै गजां रा खुरां सूं रंजी उठी है। असमांन घूंध घूंधाळो होय गयो है।

—वी.स.टी.

उ०—२ धिप सूतोस नींद मुरद्धर रा, गड घाट उलंग हली गिर रा। भड़कै सुरहो हय अग्र भगै, असमांन न सूजत घूंग धगै।—पा.प्र.

उ०—३ घूंध न चूकै डूंगरां, कड़वापण नींबांह। प्रीत न चूकै सज्जणां, देस विदेस गयांह।—अज्ञात

घूंघड़े, घूंघड़ै, घूंधडे, घूंधडै—देखो 'धूधडै' (रू.भे.)

उ०—घूंघड़ै आज अग कोच पिणि धापसी, अधिकि गुन बांभणा साधुआं आपसी।—पी.ग्रं.

घूंघळ—१ देखो 'घूंघळो' (मह., रू.भे.)

उ०—सट पटत भर सेस अति चकित अरेग, दिन घूंघळ दिसै अर-राहट अर साथ।—र.ज प्र.

२ देखो 'धुंधळ' (रू.भे.)

घूंघळणो, घूंधळबो-क्रि०स० [सं० धूम:+आकुल] धुआं, धूलि, कोहरा आदि से आच्छादित होना, धुंधला होना, अस्पष्ट होना।

उ०—१ इण भांति रा पांच पांच मण, दस दस मण गेहूं, चावळ आदियां जाजमां धातिआं रोळीजै छै। काकरा काढीजै छै। धूंए अंबर घूंधळियो छै।—रा.सा सं.

उ०—२ गरदां घर अंबर गूंधळियो। धमळागिर डूंगर घूंधळियो।

—गु.रू.बं.

उ०—३ बटा बटा भड़ विकराळ, समधज्ज चढि कढवाळ। धर धूजि अग नग थोम, वणि गरद घूंधळि वोम।—सू.प्र.

धुंधळणो, धुंधळबो, धूमळणो, धूमळबो—रू०भे०।

घूंघळि—देखो 'धुंधळ' (रू.भे.)

उ०—मल्हप्यौ जांण कि मेघ मंडांण। भिळि रज धूंधळि रूंध्यौ भांण।—रा.ज. रासौ

धूंधळिकार—देखो 'धुंधकार' (रू.भे.)

धूंधळियोड़ौ-भू०का०कृ०—धुग्रां, धूलि ग्रादि से ग्राच्छादित हुवा हुग्रा। (स्त्री० धुंधळियोड़ी)

धूंधळीमल्ल, धूंधळीमाल-सं०पु०—एक प्रसिद्ध सिद्ध का नाम जिसने क्रोध ग्रावेश में ग्राकर पट्टन नगर का विध्वंस कर दिया था (पा.प्र.)

धूंधळौ-वि० [सं० धूम:+ग्रालुच] (स्त्री० धूंधळी) १ धूम, धूलि ग्रादि ग्राच्छादित। उ०—१ धूंधळौ ग्रंबर खांखळ मांझ, नित नर नवौ हूक भर जाय। भेळतां सपनां वीतै रात, प्रात नै सांझ ग्रेक व्हे जाय।—सांझ

उ०—२ सो घोड़ां रा पौड़ां सूं नै गऊवां रा खुरां सूं रंजी उडी है। ग्रसमांन धूंद धूंधळौ होय गयौ है।—वी.स.टी.

२ कुहरे युक्त, कुहरे से ग्राच्छादित। उ०—ग्राज धुराऊ घण धूंधळौ ए, पिणिहारी ए लो, मोटोड़ी छांटां रौ बरसै मेह, वाला जी ग्रो।—लो.गी.

३ जो साफ दिखाई न दे, ग्रस्पष्ट।

४ मटमैले या भूरे रंग का। उ०—जळ ऊंडा थळ धूंधळा, पातां मैंगळ पेस। बलिहारी उण देस री, रायांसिंघ नरेस।—रंगरेलौ वीठू

५ जो साफ दिखाई न दे, ग्रस्पष्ट।

रू०भे०—धूंधळौ।

ग्रल्पा०—धूंधळियौ।

मह०—धुंधळ, धूंधळ।

धूंधाड़ौ-सं०पु०—धुंए या महीन धूलि कणों का ऊपर उठा हुग्रा समूह। उ०—डेरां में लोग सारी रोटी टुकड़ी करै छै, धूंधाड़ौ छा रह्यौ छै।—गौड़ गोपाळदास री वारता

धूंधाड़णौ, धूंधाड़बौ—देखो 'धुंधाणौ, धुंधावौ' (रू.भे.)

धुंधाड़णहार, हारौ (हारी), धुंधाड़णियौ—वि०।

धुंधाड़िग्रोड़ौ, धुंधाड़ियोड़ौ, धुंधाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धुंधाड़ीजणौ, धुंधाड़ीजबौ—कर्म वा०।

धूंधाड़ियोड़ौ—देखो 'धुंधायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० धुंधाड़ियोड़ी)

धूंधाणौ, धूंधावौ-क्रि०स० [देश०] १ तेज गति देना, चलाना। उ०—लाडी लाखीणी धारां धूंधाती। पीवर ऊधांरी पारां पय पाती। भाखा खीणां भड़ एवड़ ले ग्राता। धाया धीणा रा गोधन रा धाता।—ऊ.का.

२ तेजी से श्वास लेना व छोड़ना।

उ०—सूतळ नाया सर नासां सणकारी। फुरणी धूंधातां रासां फण-कारी। भूसर धायां गळ ग्रावड़ कढ़ भांखे। नम नम सावढ़ नै नायां कण नांखै।—ऊ.का.

धूंधाणहार, हारौ (हारी), धूंधाणियौ—वि०।

धूंधायोड़ौ—भू०का०कृ०।

धूंधाईजणौ, धूंधाईजबौ—कर्म वा०।

धुंधाड़णौ, धुंधाड़बौ, धुंधाणौ, धुंधावौ, धुंधावणौ, धुंधाववौ, धूंधाड़णौ, धूंधाड़बौ, धूंधावणौ, धूंधाववौ—रू०भे०।

धूंधायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तेज गति से कार्य किया हुग्रा।

२ तेजी से श्वास लिया हुग्रा या छोड़ा हुग्रा। (स्त्री० धूंधायोड़ी)

धूंधाळ, धूंधाळौ-वि० [सं० तुंद+ग्रालुच्], (स्त्री० धूंधाळी) १ तोंद वाला। उ०—सूंड सूंडाळी गणपत, धूंध धूंधाळौ, ग्रोछी पींडघां री कांमणगारौ ए, म्हारी विड़द विनायक।—लो.गी.

२ धूम या धूलि युक्त। उ०—सो घोड़ां रा पौड़ां सूं नै गउवां रा खुरां सूं रंजी उडी है, ग्रसमांन धूंद धूंधाळौ होय गयौ है।—वी.स.टी.

रू०भे०—दंदलौ, दुंदाळौ, दूंदलौ दूंदाळौ।

मह०—दुंदाळ, दूंदाळ, धूंधाळ।

धूंधावणौ, धूंधाववौ—देखो 'धूंधाणौ, धूंधावौ' (रू.भे.)

धूंधावणहार, हारौ (हारी), धूंधावणियौ—वि०।

धूंधाविग्रोड़ौ, धूंधावियोड़ौ, धूंधाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धूंधावीजणौ, धूंधावीजबौ—कर्म वा०।

धूंधावियोड़ौ—देखो 'धूंधायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० धूंधावियोड़ी)

धूंधि-सं०स्त्री० [देश०] १ ग्रांख के दृष्टि पटल का एक रोग जिससे स्पष्ट दिखाई नहीं देता है (ग्रमरत)

२ धुंधलापन, ग्रस्पष्टता।

रू०भे०—धूंध।

ग्रल्पा०—धूंधियौ।

मह०—धूंधड़।

धूंधियौ-सं०पु०—१ देखो 'धूंधि' (ग्रल्पा., रू.भे.) (ग्रमरत)

२ वह जिसे नेत्रों से स्पष्ट दिखाई न देता हो।

धूंधौ-सं०स्त्री० [देश०] १ ग्रत्यधिक क्रोध के कारण शरीर में पैदा होने वाली झनझनाहट, कंपन, कंपकंपी।

उ०—घणा ग्रधीरा ग्राखता, रीस थी ऊठै धूंधी रे। ग्राप वळै ग्रौरां नै वाळै, ग्रकल तिणां री ऊंधी रे।—जयवांणी

२ देखो 'धुंधि' (रू.भे.)

धूंधूकार—१ देखो 'धुंधकार' (रू.भे.) उ०—ऊगतै उण तारै परभात, पड़ै ग्रो मोळौ धूंधूकार। पवनियौ सांसां में भर सांस, सांवटै जग री काळी कार।—सांझ

२ देखो 'घुघुकार' (रू.भे.)

धूंधूणौ, धूंधूनौ—देखो 'धंघोळी' (रू.भे.)

धूंधेड़-सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (वं.भा.)

[illegible] ।

उ० — [illegible] भांमौ' सिरि सुजस गाई ।
—[illegible]

रू०भे० — [illegible] ।

[illegible] ।

धूंजि-[illegible] — [illegible] ?

उ० — [illegible] पारवत्ता, घांसति धुं'गरि धुनि । धींग धमामा धूकिया, [illegible] ।—[illegible]

धूंट— देखो 'धूंट' (रू.भे.) उ०—१ मन्नि लिग्गु दनक सकति धरि धुरति । [illegible] धूंट लेवै धनि ।—सू.प्र.

उ०—२ जिण दिन मैं मैंगा करूं, जिण दिन मेळूं धूंट । हरिया [illegible] नी, पद पद पावत रूंट ।—श्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ धूंट नहीं देसां, म्हारा जोधी रा भरतार, भंवरजी, धूंट नहीं देसां ।—लो.गी.

धूंटियौ — देखो 'धूंटियौ' (रू.भे.)

धूंटैरौ— देखो 'धांटियौ' (रू.भे.)

धूंध-सं०पु० [फा० दुम] १ बैल के पिछले पैरों का ऊपरी भाग.

२ नर भेड़ की पूंछ पर एकत्रित हुआ हुआ मांस-पिण्ड ।

अल्पा०—धूंधी ।

३ देखो 'धूंधौ' (मह., रू.भे.)

धूंधड़ौ—१ देखो 'धूंघड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'धूंधौ' (अल्पा., रू.भे.)

धूंधट-वि० [सं० धुमट] १ तीव्र, प्रचण्ड । उ०—झूंटि धरी धूंधड पाड़ पाड़इ । [illegible] तूंब पाडइ ।—विराट पर्व

२ देखो 'धूंधौ' (मह., रू.भे.)

धूंधा रौ गाम, धूंधा रौ गांव—देखो 'धूंधे रौ गांव' (रू.भे.)

धूंधी—१ देखो 'धूंध' (१) (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'धूंधौ' (अल्पा., रू.भे.)

धूंदी-गेडौ-सं०पु०स्त्री०—वह नर भेड़ जिसकी पूंछ पर मांस पिण्ड एकत्रित हो गया हो ।

धूंधे रौ गाम, धूंधे रौ गांव-सं०पु० [सं० दांभिक ग्राम] वह ग्राम जिसका शासक पर निश्चित की हुई रकम सरकार को देता हो ।

रू०भे०—धूंधा रौ गाम, धूंधा रौ गांव ।

धूंधौ— देखो 'धूंधौ' (रू.भे.)

धूंधर-सं०पु० [सं० धुर] सिर, मस्तक ।

उ०—[illegible] धीहा । हुवै धूंधरां कीन नीसांण [illegible] ।—सू.प्र.

धूंधर-सं०स्त्री० [सं० धुमरी] १ आकाश में छाई हुई बहुत महीनतम [illegible] नहीं देता है ।

२ आकाश में छाया हुआ धुंध या कुहरा ।

क्रि०प्र० — [illegible] ।

रू०भे०—धुंधर, धूंदर, धूंधर, धूंहर, धूंहरि, धूंहरी, धूमर, धूमरि, धूंर ।

धूंवाड़ौ—देखो 'धूंवौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—धुनि भ्राळ कराळ धुरा धूंवाड़े, ज्वाळ कराळ विसाळ जळै । इक सूर लड़ै रिण सूर हुवै, धरि पूर धकै इक दूर धुळै ।—रा.रू.

धूंवारवण-सं०पु० [सं० धूमः+रा.रवण] धूम, धुम्रा ।

उ०—रव धमनि ध्वाळ धूंवारवण, सोर ज्वाळ दळ संमिळै । सुज सती होम करतां सुवणि, मिळै धोम नभ मंडळै ।—रा.रू.

धूंवावाळ, धूंवावास-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का कर ।

धूंवौ—देखो 'धुंवौ' (रू.भे.)

उ०—जाग्रत भ्राळ सुपन ज्यूं धूंवा, जब लग कारठ सब लग हूवा ।
—श्री सुखरांमजी महाराज

धूंस-सं०स्त्री० [सं० ध्वंस] १ बाजों के बजने से होने वाली ध्वनि, घोष । उ०—सोळ सिणगार करइ सुंदरी, सिर ऊपर पूरण कुंभ धरइ । विहिउं विहिउं वहकइ नफेरी, त्रि धुंधु दमामा की धूंस धरइ ।
—स.कु.

२ राजा के किसी जागीरदार पर नाराज हो जाने के कारण उसके घर भेजे जाने वाले राज कर्मचारी जिनके खर्च का प्रबन्ध उसे करना पड़ता था (मेवाड़ राज्य की एक प्राचीन प्रथा)

क्रि०प्र०—घालणी, मेलणी ।

३ धाक, रोब ।

क्रि०प्र०—घालणी, पड़णी ।

४ धमकी, घुड़की ।

क्रि०प्र०—जमाणी, देणी, बताणी ।

[सं० ध्वंसिनी] ५ फौज, सेना (ह.नां.). ६ समूह ।

उ०—गाज नगारां चहुंवळ घर माग ढकांणी । चढिया धूंस बहादुरां बंधे किरवांणी—वी.मा.

७ नगाड़े पर किया जाने वाला डंके का प्रहार.

८ देखो 'धूंसौ' (मह., रू.भे.)

रू०भे०—धांस, धुस, धींस ।

धूंसणौ, धूंसबौ-क्रि०स० [सं० ध्वंसनम्] विध्वंस करना, ध्वंस करना (उ.र.)

उ०—१ गुड़ै मयमंत सेना सुहर गैमरां, प्रकटिया मारका थाट जोधापुरा । धूंसियै हैदपुरा थाय अरबद, पतरिये 'सिव' परवत थया पाधरा ।—द.दा.

उ०—२ धूंसतै नारनौळां धरा जवन गया अग्ग जूटिया । ऊकळै देखि पतिसाह उर, साहिजहांपुर लूटिया ।—रा.रू.

धूंसणहार, हारौ (हारी), धूंसणियौ—वि० ।

धूंसिओड़ौ, धूंसियोड़ौ, धूंस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

धूंसीजणौ, धूंसीजबौ—कर्म वा० ।

धूंसरौ-वि० [सं० धूमल] (स्त्री० धूंसरी) वह रंग जो स्पष्ट मालूम न हो, वह रंग जो मैला सा हो, धुंधला (अमरत)

घूंसाळौ-संपु० [देश०] १ गप्प, डींग।
उ०—जे हुं पूछूं उवा तौ वात बोलौ नहीं अर बीजा ही पण घूंसाळा मारै।—कुंवरसी सांखलै री वारता
२ देखो 'घूंसौ' (अल्पा., रू.भे.)

घूसौ-संपु० [सं० घूस्=कांति करणो] १ धातु का बना हुआ एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा जिसे केवल एक डंडे से बजाया जाता है।
उ०—घूंसौ वाजै अो महाराजा थांरी मारवाड़ में घूंसौ वाजै अो।
वि०वि०—यह नक्कारखाने में अन्य वाद्यों के साथ ताल को नियमित करने का काम करता है। इसको लकड़ी की चौखटी पर रखा जाता है और खड़े खड़े बजाया जाता है। इसका घोष बहुत गहरा व दूर तक जाने वाला होता है।
२ नगाड़ा (डिं.को.) ३ नगाड़े पर होने वाला प्रहार.
४ नगाड़े को बजाने का लकड़ी का बना उपकरण.
५ एक राजस्थानी लोक गीत. ६ सामर्थ्य.
७ एक प्रकार का अोढ़ने का ऊनी वस्त्र.
वि०वि०—यह प्रायः काली ऊन का बना हुआ होता है और किनारियें लाल होती हैं। यह रेशम का भी बनाया जाता है।
रू०भे०—घांसौ, धुस्सौ, घौंसर, धौंसौ।
मह०—घांस, घूंस, घूस।

घूंहर, घूंहरि, घूंहरी—देखो 'घूंर' (रू.भे.) उ०—१ आतत्त घोर अंधार में, सोर घोर मावै सघण। बोम्र रिख जांणि घूंहर रचै, जोजन गंधा रित रमण।—गु.रू.बं.
उ०—२ घूंहरि पडय अथाह ते, विरहानळ नो धूम। वेगा जावौ कोइ, पिघळावौ प्रिय मन मूंम।—घ.व.ग्रं.

घूंहो—देखो 'घुंवौ' (रू.भे.)

घू-संपु० [सं० घूः] १ शिव, महादेव. २ हाथी, गज, कुंजर.
३ भार, बोझ. ४ विचार. ५ चित्त, मन, हृदय.
६ हाथ, कर (एका.)
[सं० धुर्=चोटी, शिर] ७ शिर, मस्तक (ह.नां.)
उ०—१ आछै दियौ मास सिवौ तन, घू करवत धजमोर धरी। अत रजपूतां सु-जस पियारौ, जिण कारण अे अजर जरी।
—क्षत्रिय प्रसंसा रौ गीत
उ०—२ पैंडा नीत रा चलाक घू छ-च्यार भंज पलीत रा, सूर धीर चीत रा अछेह अोप संस। धोत रा कीतरा रिखी सुकंठ मीत रा धनौ, वाहरू सीत रा रांम अदीत रा वंस।—र.ज.प्र.
उ०—३ अोपण नांम चरित्रां आंगण विमळ निरंतर भेद सुवेस। घोकै कह लै लखै जिकै घन, घू रसणा सव चख अवघेस।—र.रू.
उ०—४ विनां घू विहंड, सवै जंग संडे। कढ़ी खाग कोपै, जिसा राह जोपै।—सू.प्र.
उ०—५ मिळ सुत सुभड़ जूथ जुत महपति। सिध आसण आए तिण सायति। असिहूं क्रम चत्र दस ऊतरिया। घू नमाय पावां सिध धरिया।—सू.प्र.

अल्पा०—घूअौ।
[सं० ध्रुव] ८ निश्चय। उ०—दादू दुई दरोग लोग को भावै, सांई सांच पियारा। कौन पंथ हम चलैं कहौ घू, साधौ करौ विचारा।
—दादू वांणी
९ दिन, दिवस. १० तबले का बोल।
उ०—घू घू कटां ध्रुकटां ध्रुकटां धूधू कटां धार। ता गिना ता विना धिन्ना ता धिन्ना सुताळ।—र.ज.प्र.
११ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.) उ०—१ दादू भावै तहां छिपाइये। साच न छांना होइ। सेस रसातळ गगन धू, प्रकट कहिये सोइ।
—दादू वांणी
उ०—२ सचा अचळ पेखिए घू अंबर तारा।—केसोदास गाडण
उ०—३ घू पहळाद भभीखण सिंधुर, अपणाया सुख आपै। पीतंबर काटे दुख पासां, थिरकै दासां थापै। रे हरि जापै रे हरि जापै लाहौ लीजिये।—र.ज.प्र.
उ०—४ घू अंबर जां लग धरा, रिधू रांम ज्यां राज। तां पिंगळ अखी तवां, सकळ सिरोमणि साज।—डिं.नां.मा.
संस्त्री०—१२ ध्वनि विशेष, आवाज (आग, धुनकी, नगाड़े आदि की)। उ०—भभकी आग भरज, घू घू गरज कड़ कड़ घखै। कर कर ईस अरज, फरज धरम चुकव्यौ सती।
—रिड़मलसिंघ सोनगिरौ
१३ तरफ, अोर।
१४ उत्तर दिशा; ध्रुव का स्थान।
[सं० दुहितृ] १५ कन्या, पुत्री। उ०—पूगळ हुंता आविया, पूगळ म्हांकउ वास। पिंगळ राजा तास घू, मेल्ह्या थांकइ पास।
—ढो.मा.
रू०भे०—धूग्र, धूआ, धूय।
१६ चिंता, फिक्र. १७ आग, अग्नि (एका.)
वि०—१ वीर, बहादुर। उ०—१ कळपतरू ऊखळि पड़ै, 'जसौ' महा घू जांम। माळां गाळां ठांम महि, तिकौ न सूझै तांम।
—हा.झा.
उ०—२ अवै काय रंभ रथ जुथ जांणै सुवर। पड़ै कवि-पंखियां 'जसौ' घू कळपतर।—हा.झा.
२ निश्चल, अटल, ध्रुव, स्थिर (डिं.को.)
उ०—क्रतु, करुणामय घू करतार, भणै भव भाजन भू भरतार। उधारक धारक लोक असेस, सुधारक तारक सेस विसेस।—ऊ.का.
३ प्रथम, पहले। उ०—हथणापुर घू आवियौ, परम तणौ वर पाय। आयौ तिण छाजै 'अभौ', सब धर करै सहाय।—रा.रू.
[सं० घुः] ४ कांपने वाला, डरने वाला, कायर.
५ धूर्त, कपटी (एका.)
क्रिवि०—तरफ से, अोर से।
उ०—उठी घू 'विलंदेस' आयौ अछायौ। अठी हूंत राजा अभैसिंघ

[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] (रा.सा.)

[illegible]

२ [illegible] (रू.भे.)

उ० [illegible] मोतिन [illegible] । [illegible] [illegible]

[illegible] —[illegible]

उ० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सांभी ।

[illegible] [illegible] [illegible] समानी ।

—[illegible]

२ [illegible] (रू.भे.)

[illegible] [illegible] (रू.भे.) (उ.र.)

[illegible] [illegible] (रू.भे.) (उ.र.)

[illegible] [illegible] (१४) (रू.भे.) (उ.र.)

[illegible] [illegible] (रू.भे.)

उ०—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तो [illegible] [illegible] बैठा छै । ६ [illegible] । [illegible] घूई [illegible] । [illegible] घूई [illegible] [illegible] [illegible] बैठा छै ।

—[illegible]

२ देखो 'घूई' (रू.भे.)

उ०—[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] । मरचां री घूई दीधी ।

—मि.द्र.

घूघो—१ देखो [illegible] ([illegible], रू.भे.)

उ०—[illegible] [illegible] [illegible] '[illegible]', [illegible] [illegible] [illegible] घूमो । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] हुवो ।—[illegible]

२ देखो [illegible] (रू.भे.)

घूक—देखो [illegible] (रू.भे.)

उ०—[illegible] [illegible], '[illegible]' [illegible] न [illegible] । '[illegible]' [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

घूकणौ, घूकबौ-क्रि०अ०—१ ध्वनि करना, बजना ।

उ०—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] घूकंता है । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] है ।—ऊ.का.

२ देखो '[illegible], [illegible]' (रू.भे.)

३ देखो '[illegible] [illegible]' (रू.भे.)

घूकणहार, हारौ (हारी), घूकणियौ—वि० ।

घूकाड़णौ, घूकाड़बौ, घूकाणौ, घूकाबौ, घूकावणौ, घूकावबौ—प्रे०रू० ।

घूकिओड़ौ, घूकियोड़ौ, घूक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घूकीजणौ, घूकीजबौ—कर्म वा० ।

घूकड़—देखो 'घूकर' (रू.भे.)

घूकणौ, घूकबौ—देखो 'घोकणौ, घोकबौ' (रू.भे.)

घूकियोड़ौ—देखो 'घोकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूकियोड़ी)

घूकार—देखो 'घुंकार' (रू.भे.) उ०—असमांन विहूंदै सर असंग । घूकार वजावै गुण धनंग । सूरज्ज चोम बाघो सरेय । फिरि जाण राह हाथां करेय ।—सु.प्र.बं.

घूकारणौ, घूकारबौ-क्रि०अ०—(पशु, पक्षी आदि से) ध्वनि करना । उ०—वैठा पिंजरा बिच होजरता वारै । घूंघट पिंजर में पिंजरा घूकारै ।—ऊ.का.

घूकारव—१ देखो 'घोंकार' (रू.भे.)

उ०—घूकारव बाजतां रीठ वजियो चिह्‌ चंगां । घोर सोर उह गजर वगो अमगजर वंदूकां ।—पा.प्र.

२ देखो 'घुंकार' (रू.भे.)

घूकारियोड़ौ—भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ ।

(स्त्री० घूकारियोड़ी)

घूखण, घूखळ—देखो 'घूंकळ' (रू.भे.)

उ०—बचै नहीं कोय वाहत वेताड़ विचाळा । घूखण मचियो घरण मे कुण मेटण वाळा ।—पा.प्र.

घूखळणौ, घूखळबौ—देखो 'घोकळणौ, घोकळबौ' (रू.भे.)

घूखळियोड़ौ—देखो 'घोकळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूखळियोड़ी)

घूड़-सं०स्त्री० [सं० धूलि] धूलि, रेणु, मिट्टी, रज ।

उ०—१ जिण दिन थी मन जांणसी, सोनौ घूड़ समांन । उण दिन सूरज ऊगसी, मोना रो गुणदांन ।—बां.दा.

उ०—२ रे बांठी ऊपर रही, काय न छोडै घूड़ । हिव थांगा तूं नांस जव, थंधा ऊपर घूड़ ।—बां.दा.

उ०—३ मांग बोलियां टुकड़ा सूका, मिळ जावै गोट मीठा । घूड़ बोत पकवान करावै, धूड़ बराबर मीठा ।—ऊ.का.

उ०—४ सीमनि उतार आव्यो सही, तमने पहचो करयो नहीं । मीठा ते टम न करै मूळ, मा(य)र चिकी किम उडै घूड़ ।—प.च.चं.

पर्याय०—रज, रेह, गरद, चर, पतम्हसुता, पांसु, वाळू, रज, रेणु, रेत, वेळू, सरकरा, सिकता ।

मुहा०—१ घूड़ उडणी—धूल उड़ना । नष्ट होना, समाप्त होना, बरबादी होना । रौनक न रहना, सन्नाटा छाना, चहल-पहल न रहना । धनादि का अभाव होना, धनहीन होना. २ घूड़ उडाणी—धूल उड़ाना । बदनामी करना, बुराइयों व दोषों को प्रकट करना । हंसी करना, उपहास करना. ३ घूड़ उडाता फिरणा—धूल उड़ाते फिरना । मारा-मारा फिरना, भटकना.

४ धूड़ करणी—नाश करना । खराव करना, विकृत करना । व्यर्थ श्रम करना. ५ धूड़ खायां काळ नीकळणौ (नीसरणौ)—धूल खाकर अकाल में जीना । वेईमानी से निर्वाह करना, धोखा-धड़ी से पेट भरना. ६ धूड़ खायां पेट भरीजणौ—देखो 'धूड़ खायां काळ निकळणौ' ७ धूड़ चटाणी—धूल चटाना । परास्त करना, हराना. ८ धूड़ चाटणी—धूल चाटना । परास्त होना, हारना । गिड़गिड़ाना, आजीजी करना. ९ धूड़ छांणणी—धूल छानना । मारा मारा फिरना, भटकना. १० धूड़ जांणणी—धूल जानना । तुच्छ समझना. ११ धूड़ झड़णी—धूल झड़ना । पिटना; मार खाना. १२ धूड़ झाड़णी—धूल झाड़ना । पीटना, मारना । खुशामद करना. १३ धूड़ डाळणी—देखो 'धूड़ नांकणी' (न्हांकणी) (रू.भे.) १४ धूड़ धक्कड़ (धक्कळ) उडणा—व्यर्थ खरचा होना, अत्यधिक व्यय होना. १५ धूड़-धांणी—बरवाद होना, नष्ट होना. १६ धूड़-धांणी नै राख छांणी—देखो 'धूड़-धांणी' (रू.भे.) १७ धूड़-धाड़—नष्ट-भ्रष्ट, बरवादी. १८ धूड़ नांकणी (न्हांकणी) धूल डालना । फटकारना, दुत्कारना. १९ धूड़ पड़णी—देखो 'धूड़ वाळणी'—धूल पड़ना । तौहीन होना, बेइज्जती होना. २० धूड़ पटकणी—धूल डालना । तौहीन करना, बेइज्जती करना । फटकारना. २१ धूड़ फांकणी—धूल फाँकना । इधर-उधर भटकना, दुर्दशाग्रस्त होना, मारा मारा फिरना । बिल्कुल झूठ बोलना. २२ धूड़ बरसणी—धूल बरसना । रौनक हटना, बरबादी होना. २३ धूड़ बराबर—धूल के समान । तुच्छ. २४ धूड़ भेळी करणी—देखो 'धूड़ में मिळाणी' । २५ धूड़ भेळी होणी—देखो 'धूड़ में मिळणी' २६ धूड़ में माथौ देणौ—धूल में सिर देना । खराब वस्तु को ग्रहण करना । निकृष्ट वस्तु लेना । खूब परिश्रम करना. २७ धूड़ में मिळणी—धूल में मिलना । बरवाद होना, नष्ट होना २८ धूड़ में मिळाणी—धूल में मिलाना । बरवाद करना, नष्ट करना. २९ धूड़ में लट्ठ लागणौ—धूल में लठ लगना । सरलता से अधिक लाभ होना. ३० धूड़ रा दो दाणा—धूल के दो दाने । तुच्छ. ३१ धूड़ वगाणी, धूड़ बघाणी—देखो 'धूड़ वाळणी' । ३२ धूड़ वाळणी—ध्यान न देना, जाने देना, छोड़ देना. ३३ धूड़ वावणी—देखो 'धूड़ वाळणी' । ३४ धूड़ समझणी—देखो 'धूड़ जांणणी' । ३५ धूड़ समांन—देखो 'धूड़ बराबर' । ३६ माथा में धूड़ घालणी (राळणी)—सिर में धूल डालना । बहुत पछताना । विलाप करना ।

रू०भे०—धुली, धूड़ि, धूड, धूडि, धूर, धूरि, धूरी, धूल, धूलि, धूळि, धूली, धूहड़ ।

अल्पा०—धूड़िया ।

मह०—धूड़ीड़, धूड़ोड़, धूड़ोड़ी, धूड़ी ।

धूड़कोट-सं०पु०यौ० [सं० धूलिः+कोटः] मिट्टी का बना कच्चा गढ़ या किला । उ०—अरु चूंडेर में खार बारै रायमल वाळी तथा रांणीर रा ठाकर जगरूपसिंघ वा विहारीदास गढ़ सझियौ. अरु धूड़कोट पण कियौ हजार दोय आदमियां सूं ।—द.दा.

रू०भे०—धूलकोट ।

धूड़गढ़-सं०पु० [सं० धूलिः+गडः] समतल भूमि पर बना हुआ वह गढ़ जिसकी दीवार के सहारे बहुत ऊंचाई तक धूल की तह इसलिए जमाई गई हो कि तोपों, बन्दूकों आदि से दीवार की रक्षा हो सके ।

उ०—बारली तोपां रा गोळा धूड़गढ़ में लागै औ, मांयली तोपां रा गोळा तंवू तोड़ै औ, झल्लै आउवौ । हां औ झल्लै आउवौ, आउवौ धरती रौ दावौ औ, झल्लै आउवौ ।—लो.गी.

धूड़ि—देखो 'धूड़' (रू.भे.) उ०—ढोलइ चढ़ि पड़ताळिया, डूंगर दीन्हा पूठि । खोजे वावू हथ्थड़ा. धूड़ि भरेसी मूठि ।—ढो.मा.

धूड़िया—देखो 'धूड़' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जद-ई तौ कैवूं हूं पिंडतजी कनै गुर मिंतर ले लेवौ अर इयां झंझटां-नै धूड़िया वधावौ ।—वरसगांठ

धूड़ीड़, धूड़ोड़, धूड़ोड़ी, धूड़ी—देखो 'धूड़' (मह., रू.भे.)

धूज-सं०स्त्री० [सं० धू] 'धूजणौ' क्रिया का भाव, कांपने की क्रिया ।

धूजट, धूजटी-सं०पु० [सं० धूर्जटिः] १ वटवृक्ष (अ.मा.)
२ देखो 'धूरजटी' (रू.भे.) (डिं.को.)

धूजण, धूजणी-सं०स्त्री० [सं० धू] थर्राने की क्रिया या भाव, कांपना ।
उ०—जुध रा वाजा सुण सूरवीरां नै तौ सूरापणौ छूटसी नै कायरां नै जुद्ध रा नगारा सुण धूजणी चढ़सी ।—वी.स.टी.

धूजणौ, धूजबौ-क्रि०अ० [सं० धू] धक्का, अशक्ति, भय अथवा किसी आवेग के कारण डोलना, हिलना, थर्राना, काँपना ।

उ०—१ धूज पुड़ धर अगम अंवर, गरज सुर नीसांण गरहर । फबै लसकर चौंध फरहर, पंथ झंगर नयर पाधर ।—रा.रू.

उ०—२ तणं तार संतार वीणादि तंत्री । वणै वीस वत्तीस भैरू वजंत्री । डफां मादळां नाद डैरू डमंकै । धरा व्योम पाताळ धूजै धमंकै ।—मे.म.

उ०—३ किड़की कारायण कनफड़ियां कूटी । तिड़गी तारायण सो पुरसां तूटी । प्रतिदिन मोळा पड़ भिन भिन पद पूजै । धौळा नीरण विन जीरण जिम धूजै ।—ऊ.का.

उ०—४ दिल्ली भगांण पड़ै मन आगरौ करै डर, पांनड़ै जेण पतसाह पायौ । 'जगा' भैं जोधपुर साह धूजै जवन, अजैगढ़ ओद्रकै 'जगौ' आयौ ।—तेजसी खिड़ियौ

उ०—५ चोजां चटकाळा गुरु मटकाळा मटकाळा मुळकंदा है । माथा हद मसळै अकेद असलै धसळै जद धूजंदा है ।—ऊ.का.

उ०—६ पड़ै सिंघ गैल जड़ै रह पट्ट । थरथ्थर धूजि गुड़ै गज थट्ट । आछी भड़ चाढ़ि घकै अखड़ैत । जड़ै जम दाढ़ लड़ै छळ 'जैत' ।
—मे.म.

उ०—१ [illegible], [illegible] । तूं घुजी [illegible] !—[illegible]
उ०—२ [illegible] घुजी [illegible] । तूं घुजी धरति [illegible]—[illegible]
उ०—३ [illegible] घुजइ घुजइ धुजति मरोर । चिहुर [illegible] घुजइ [illegible] ।—[illegible]

घुजणहार, हारो (हारी), घुजणियो—वि० ।
घुजवाड़णौ, घुजवाड़बौ, घुजवाणौ, घुजवाबौ, घुजवावणौ, घुजवावबौ
—प्रे०रू० ।
घुजाड़णौ, घुजाड़बौ, घुजाणौ, घुजाबौ, घुजावणौ, घुजावबौ, घूजाड़णौ, घूजाड़बौ, घूजाणौ, घूजाबौ, घूजावणौ, घूजावबौ—क्रि०स० ।
घूजियोड़ौ, घूजियोड़ौ, घुज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घूजीजणौ, घूजीजबौ—भाव वा० ।
घुजणौ, घुजबौ—रू०भे० ।

घुजाड़णौ, घुजाड़बौ—देखो 'घुजाणौ, घुजाबौ' (रू.भे.)
उ०—[illegible] घुजाड़ियो, गिरां गुंजाड़ियो [illegible] । [illegible] काड़ियो आचा, [illegible] पाड़ियो मचंद ।—[illegible]
घुजाड़णहार, हारो (हारी), घुजाड़णियो—वि० ।
घुजाड़ियोड़ौ, घुजाड़ियोड़ौ, घुजाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घुजाड़ीजणौ, घुजाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
घुजणौ, घुजबौ—अक०रू० ।

घुजाड़ियोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुजाड़ियोड़ी)

घुजाणौ, घुजाबौ—देखो 'घुजाणौ, घुजाबौ' (रू.भे.)
घुजाणहार, हारो (हारी), घुजाणियो—वि० ।
घुजायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
घुजाईजणौ, घुजाईजबौ—कर्म वा० ।
घुजणौ, घुजबौ—अक०रू०

घुजायोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुजायोड़ी)

घुजावणौ, घुजावबौ—देखो 'घुजाणौ, घुजाबौ' (रू.भे.)
घुजावणहार, हारो (हारी), घुजावणियो—वि० ।
घुजाविशोड़ौ, घुजावियोड़ौ, घुजाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घुजावीजणौ, घुजावीजबौ—कर्म वा० ।
घुजणौ, घुजबौ—अक० रू० ।

घुजावियोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुजावियोड़ी)

घूजियोड़ौ-भू०का०कृ०—धड़का, धमकि, मद अथवा किसी आवेग के कारण [illegible] हुआ, हिला हुआ, धर्राया हुआ, कांपा हुआ ।
(स्त्री० घूजियोड़ी)

घूजी—देखो 'धूज' (रू.भे.)
घूट—देखो 'घूंट' (रू.भे.)
घूण—देखो 'घूंण' (रू.भे.)
घूणणौ, घूणबौ—देखो 'घूंणणौ, घूंणबौ' (रू.भे.)
उ०—१ सिर घूणै बोलै मदा, हाम चूक जिण होय । कूकजि सभा जिण मंनरे, सभा प्रभा हत होय ।—बां.दा.
उ०—२ रोसाणिउ ते मेल्हइ झाळ । सिर घूणइ मुणि पडइं लाळ ।
—पिहुंगति चउपई
उ०—३ वारंभ, दीपक पवन भग, मंगळ सारण पवट्ठ । कर होणइ घूणइ कमल, वांणि पयोहर दिट्ठ ।—ढो.मा.
उ०—४ भिड़ भिड़ज जिसा गज घटा भयंकर, घूणण अरध गड़ जिती घड़ी । प्रबुद्धोक्त 'जैत' ऊदावत, 'जैत' वापजती जेहड़ी ।
—दुरसो आढ़ो
उ०—५ वरढाई सोळ'कियां, घूणै वळो पहाड़ । धर बाळीगा सींदला, गमिया जड़ां उपाड़ ।—गु.रू.बं.
उ०—६ गजवंधी दम भाजियो, करि घूणै करमाळ । 'गोइंद' माथै भावसी, ज्यों सिर भायो काळ ।—गु.रू.बं.
घूणणहार, हारो (हारी), घूणणियो—वि० ।
घूणिओड़ौ, घूणियोड़ौ, घूण्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घूणीजणौ, घूणीजबौ—भाव वा० ।

घूणियल-सं०पु० [?] सुमेरु पर्वत ।
उ०—आहंस कमंध तूझ पग ऊंडा, हाथां गयण लिये हुयनाह । मथियळ नै घूणियळ न मीढ़ां समवड़ तूझ तणीं 'गजसाह' ।
—किसनौ आढ़ौ दुरसावत

घूणियाळ—देखो 'घुणियाळ' (रू.भे.)
घूणियोड़ौ—देखो 'घूंणियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घूणियोड़ी)

घूणी—१ देखो 'घूंणी' (रू.भे.)
उ०—१ कमंध जोगेस आदेस सह जग करै, दीप धातीस कर रीस दूणी । घाल आवी तूं हीज वैरियां तणैं घर, धुकै धमसांण जोरांण घूणी ।—महेसदास कूंपावत रो गीत
उ०—२ धामपात्र कळियुत धरायें । घूणी चंदण अगर धुकायें ।
—सू.प्र.
२ देखो 'धुंई' (रू.भे.)
३ देखो 'धुनी' (रू.भे.)

घूणौ—देखो 'धनु' (अल्पा., (रू.भे.)
घूणौ, घूबौ—देखो 'धोणौ, धोबौ' (रू.भे.)
उ०—अंगयोआं चंदण घूओ, देह माहारांनि कसि । अरवश जूओ पारणुं, विसवर जेणि बहु वसि ।—नळाख्यांन

घूत-वि० [सं० धूर्त=ठगाती, उपद्रवी] १ उन्मत्त, मस्त ।
उ०—१ वहि वांण वजर हूंका वहै, मतवाळा ओघा मजां । ज्वाळ में हुवै ममहूत जंग, घूत पठांणां कमधजां ।—सू.प्र.

उ०—२ वडा खळ ढाहत सावळ वाह। 'गजावत' 'खीम' करै गज-गाह। धसै जुध मांगळिया भड़ धूत, हुसै दळ मारण नेजम हूंत।
—सू.प्र.

२ योद्धा, वीर। उ०—१ धांनुख हत्था धूत भयांनक भूत सा। मन का अति मजबूत दिपै जम दूत सा।—सिववक्स पालावत

उ०—२ वरसां दस तणौ बापरै वदळै, राजा कनै रहै रजपूत। देस विदेस चाकरी दौड़े, धजवड़ हाथां पकड़ै धूत।—अज्ञात

उ०—३ राजी सरव सभा नै राखै, सहज सुभावां घणा सरै। धज-वड़ हुता मारका धूतां, कव रजपूतां अमर करै।
—जोधपुर नरेस महाराजा मांनसिंघ

अल्पा०—धूतारौ, धूतौ, धूत्यौ।

३ देखो 'धूरत' (रू.भे.)

उ०—१ थळ कतार लांघण घटै, लै जिहाज जळ अंत। भोळी-डाळी व्रांमणी, वेटा धूत जणंत।—बां.दा.

उ०—२ विधो-विध दीठौ मांय विभूत, धूताई छोड परी सब धूत। मांहिलौ ठाकुर लाधो मांय, पुजावै आपो आप ही पांय।—ह.र.

धूतड़ेल, धूतड़ैल—देखो 'धूत' (मह., रू.भे.)

उ०—खैंग बादळां ज्यूं बहै जरद्दां जड़ेल खेल। मरद्दां अड़ेल आंमा सांमुहा मांडीस। छड़ाळां साहु रां नीरां धार बापड़ेल छूटा। प्रळै धूतड़ेल तूटा माथा पांडीस।—हुकमीचंद खिड़ियौ

धूतणौ, धूतबौ—क्रि०स० [सं० धूर्त] धूर्तता करना, ठगना।

उ०—१ ठगिया देवतां नर नाग ठगारी, है लछमी सुण वात हमारी। विलसणहारी 'कमौ' विहारी, धूतै तौ जांणूता धूरी।
—कमा विहारी री गीत

उ०—२ जदपि मछिंदर मन डिग्यां देखि नाटकी घट नारी। राजा जत जतन करत धूत्यौ धूतारी।—ह.पु.वा.

धूतपाप—सं०स्त्री० [सं०] काशी की एक पुरानी छोटी नदी या नाला जो आजकल पट गया है।

धूताई—देखो 'धूरतता' (रू.भे.)

धूतारण—सं०पु० [सं० ध्रुवः+तारण] १ विष्णु।

उ०—क्रसन राखि हिव हूं तूं करतौ। धरणीधर ममता मन धरतौ। तुझ विखै मत दै धू-तारण। कूप संसार काढ़ सब-कारण।—ह.र.

२ परमेस्वर, ईस्वर (ह.नां., अ.मा.)

धूतारणौ, धूतारबौ—क्रि०स० [सं० धूर्तम्] भड़काना, सिखाना।

उ०—सखी मइ अपराध न को कियउ, यदुराय रीसणे केम रे। हां हां मरम पिछाण्यउ, सिव नारि धूतारै नेमि रे।—स.कु.

धूतारणहार, हारौ (हारी), धूतारणियौ—वि०।

धूतारिओड़ौ, धूतारियोड़ौ, धूतारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

धूतारीजणौ, धूतारीजबौ—कर्म वा०।

धूतारियोड़ौ—भू०का०कृ०—भड़काया हुआ, सिखाया हुआ।

(स्त्री० धूतारियोड़ी)

धूतारी—सं०स्त्री० [सं० धूर्तम्] पृथ्वी, धरती।
(डि.नां.मा., ना.डि.को., डि.को.)

वि०स्त्री० [सं० धूर्त+रा०प्र०आरी] ठगने वाली, ढोंग करने वाली, चालाक, धूर्त। उ०—तिण वचनि राजा कहइ, तूं सूघी धूतारी। तई मसवासिणि मिस करिउं, घणा पुरुस नइं मारी।—मा.कां.प्र.

धूतारौ—१ देखो 'धूत' (१, २) (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'धूरत' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ ठगिया देवता नर नाग ठगारी, है लछमी सुण वात हमारी। विळसणहारी कमौ विहारी, धूतै तौ जांणू धूतारी।
—कमा विहारी री गीत

उ०—२ ए जरा धूतारी, धोइ देस विदेस। विण साबू पांणी, उज्जळ करस्यइ केस। तिणि विण आव्यइ जे, मइ कीधा बहु पाप। ते मुझ मनि जांणइ, जिण मा जांणइ बाप।—कवि-गुणविजय

उ०—३ खोटारा नइं खुसकीया, धूतारा धाडीत। जाट जूआरी जाउडी, तरवरीआ जिम ईति।—मा.कां.प्र.

उ०—४ धूतारा जोगी एकर सूं हंसि बोल। जगत वदीत करी मन-मोहन, कहा वजावत ढोल।—मीरां

(स्त्री० धूतारी)

धूतियोड़ौ—भू०का०कृ०—धूर्तता किया हुआ, ठगा हुआ।

(स्त्री० धूतियोड़ी)

धूती—सं०स्त्री०—शाक विशेष ?

उ०—धूगरि धूणि धांणाकी, धातरि धणख धमासि। धडफूली धंधो-ळणी, धूती धाडा धासि।—मा.कां.प्र.

वि०स्त्री०—ढोंग करने वाली, ठगने वाली, चालाक, धूर्त।

उ०—नट विट नाडी त्रोडणा, ति आवइ तु म वारि। धूती जाइ धूत की, उरिम नी उगारी।—मा.कां.प्र.

धूतौ, धूत्यौ—१ देखो 'धूत' (१, २) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—रजपूतां री आथ जकां रै, कूंतां री भरळाट करां। सकळ कहै जावै सूतां री, धूतां री किम जाय धरा।
—उम्मेदसिंघ सीसोदिया री गीत

२ देखो 'धूरत' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—हे तुरकां पूरवियां हेतु दखां दिली री दूतौ, दावां घाव छळां में देखौ धूत पणा में धूतौ।—अज्ञात

(स्त्री० धूती)

धूधड़ाक—वि०—निशंक, निडर।

धूधड़े, धूधड़ै, धूधडे, धूधडै—वि० [सं० ध्रुव+घटः] अटल, दृढ़।

उ०—१ कंत बळिहार लै मनाविय कांमणी। धरै मन धूधड़ै साथि सकळा धणी।—हा.झा.

उ०—२ राठोड़ राव असमांन रुक्ख, सींचियौ भ्रित्त करि सुरां-मुक्ख। चढ़ि कोप ओप धूधड़ै चीत, ऊगा वदन्न वारै अदीत।
—गु.रू.बं.

२ [illegible], [illegible], [illegible]। उ०—१ [illegible] धुपड़ै। [illegible] ।—र.रू.

उ०—२ [illegible], [illegible] [illegible] धुपड़ै, देवतो ऊपरै नागिया [illegible] ।—[illegible]

३ [illegible] । उ०—[illegible], गुमी [illegible] । [illegible] धुपड़ै मुजाळा । [illegible] जम [illegible] ।—[illegible] रो गीत

रू०भे०—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ।

धुपर-सं०पु० [राज० धु=सिर+सं० धर] शरीर, देह (डि.को.)

धुपळ—देखो 'धुंपळ' (रू.भे.)

उ०—धोरा धोरां धर धुपळ धुरणाई । पळ पळ ऊपळती वळती धुर-णाई । वळती धुळ धुळ धर धुळ धुळ भर धुंजै । गरकर सर सोभत गिरवर धर गुंजै ।—ऊ.का.

धुपळणो, धूपळबो—देखो 'धुंपळणो, धुंपळबो' (रू.भे.)

उ०—सठा उपरांति करि नै राजांन मिलांमनि चोमासा री छावणी हुई छै । पावस रित आवी छै । आगाढ़ धुपळिओ छै ।—रा.सा.सं.

धुपळियोड़ो—देखो 'धुंपळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धुपळियोड़ी)

धुधारण-वि० [सं० ध्रुव+धारण] अटल, दृढ़, स्थिर ।

उ०—१ पहला चिता प्रवेस कियो दोनूं अंतेवर, सनमुख भुजां सूं धार पड़ै पगराय नरेसर । उभय सती भर अंक धरै चिता धुधारण, हाजर खड़ी हजूर समर ढाळै सोनारण ।—साहिबो सुरतांणियो

उ०—२ रात दिवस भज राम नरेसर, पात राम नहचो मन पूरो । धुधारण धारण नग धूरो उधारण रो किसो अधूरो ।—र.ज.प्र.

उ०—३ सेवक रिख मुनि भगत संन्यासी, अरज करै हुय दीन उदासी । त्रिभवणनाथ जगत निसतारण, धरम वेद कीजै धुधारण ।
—रा.रू.

धुधुकट—देखो 'धुधुरट' (रू.भे.)

उ०—धुधुकट ध्रिरट ध्रिरट धमधम धपमप, बाजा विविध बजाड़ै । थेई थेई थुंग थुंग नृत नावन, गीत संगीत गवाड़ै ।—मे.म.

धुधुकार-अव्य० [देश०] १ अत्यधिक अधिकता बोध कराने का शब्द ।

२ देखो 'धुधुकार' (रू.भे.)

धुन-सं०स्त्री० [सं० धुन] १ धुनने की क्रिया या भाव ।

२ देखो 'धुंन' (रू.भे.)

३ देखो 'धुन' (रू.भे.)

उ०—दटा [illegible] धुन वाह [illegible], समाचार नारद संखेप गाई । [illegible] धुन बाजी [illegible], वळी वेसना व्रज रा माय वाळी ।
—ना.द.

धुनी—१ देखो 'धुन' (रू.भे.)

उ०—[illegible] नदी, 'हुहु हुहु' नद्द निवारि । माधव नई मोरद मनि गिको, धुनी फेरण्हारि ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'धुंणी' (रू.भे.)

३ देखो 'धुंन' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जंगळ जंगळ में धुंनी जगियांसी । धोळा धोरां री धुनी धिगियांसी । गोदै टोटै नग कळियां बोलरसी । मोहर मोटै दुग जोटगियां भरसी ।—ऊ.का.

४ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)

धूनो-सं०पु० [देश०] १ जाति विशेष का घोड़ा ।

उ०—धूना सिणगारिया धेन । मेरू रा नीपना रंग ।—सु.प्र.सं.

२ देखो 'धुंन' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—१ करै सरवस नजर रसत चाढ़ै किलै, धार सिर पर धणी मांण धूनो । लूण री सरीयत बहै कुळवट लिया, जुरी नह होयसी कमध जूनो ।—महेसदास कूंपावत रो गीत

उ०—२ सिर सोच न सूंना ऊठ अभूंना, धूना मार धड़ंदा है । साहब मन मोहा दुग सूं दोहा, लोहां लोह लड़ंदा है ।—ऊ.का.

धूप-सं०पु० [सं०] १ कपूर, चंदन, अगर, गुग्गल आदि गंध द्रव्यों को मिला कर बनाया जाने वाला पदार्थ विशेष जिसको अंगारे पर रखने से महकयुक्त धूम निकलता है ।

उ०—१ गिलका-सिला सिला-गोमती, मंडावै संजम मूरती । साळग-रांम सिला सुध सेविस, अगर चंदण धूप उखेविस ।—ह.र.

उ०—२ हुवै होम आगावरी धूप हूंमै । धणां सांधणां धीप गागीप धूंमै ।—मे.म.

क्रि०प्र०—होणी ।

मुहा०—१ धूप करणी—देखो 'धूप खेवणी' ।

२ धूप खेवणी—देव पूजन के लिए अंगारे पर सुगंधित पदार्थ रख कर धूम उठाना ।

२ वह सुगंधित धूम जिसे देव पूजन के लिए अंगारे पर सुगंधित पदार्थ डाल कर उठाया जाता है ।

रू०भे०—धूव ।

३ सूर्य का प्रकाश, आतप, ताप ।

उ०—तूं भरयु रे भाद्रवा, पूरण पंचद रूप । खणु वरसाद खणु बादळउ, खणु सीतळ खणु धूप ।—मा.कां.प्र.

पर्याय०—आतप, तावड़ो, परकास ।

मुहा०—१ धूप खाणी—धूप में गरम होना, तपना.

२ धूप खवाणी—धूप लगने देना, धूप में रखना.

३ धूप चढ़णी—(सूर्योदय के काफी समय बाद) धूप तेज हो जाना.

४ धूप दिखाणी—देखो 'धूप खवाणी' ।

५ धूप देणी—देखो 'धूप खवाणी' ।

६ धूप निकळणी—धूप फैलना, प्रकाश फैलना.

७ धूप पड़णी—आतप बढ़ना, तेज धूप होना.

८ धूप में बाळ पकाणा—धूप में बाल सफेद करना, बुड्ढा हो जाना,

कुछ अनुभव न होना. ६ धुप लेणी—देखो 'धूप खाणी'।

सं०स्त्री० [सं० धूप=संतापे] ४ तलवार, खड्ग। उ०—१ घड़च्छत सीस तड़ताड़ धूप। रुपै धड़कन्न महा भड़ रूप।—मे.म.

उ०—२ धुबै 'अजवेस' खळां भळ धूप। रिमां धड़ मांहि समोभ्रम 'रूप'।—सू.प्र.

उ०—३ ठांम ठांम तोपां तणी जाळ रै मोरचै ठहै, धूवै जेठ आदित्य मालदे वाळी धूप। हल्लै वांध चाल रै हवेली माथै हुवो हाकौ, 'सुरतांण' रुपै महा काळ रै सरूप।—नींवाज ठा. सुरतांणसिंघ रौ गीत

धूपघड़ी-सं०स्त्री० [सं० धूप+घटिका] धूप में समय का ज्ञान कराने वाला एक यंत्र।

धूपघटी-सं०स्त्री० [सं०] १ धूप रखने का छोटा बरतन, धूपदानी. २ धूप जलाने का पात्र। उ०—१ चिहू पखै परिअचि अतिभली, धूपघटी चिहु पासै वळी। मंच महामंच कीधा घणा, पार न पांमइ कोइ तेह तणा।—नळ-दवदंती रास

उ०—२ रत्नमय दंड चांमर ढाळइं, हरस लगइं आप न संभाळइं, नव सुवरणकमळ पाय हेठि संचारइं, अस्ट मंगळीक नवा अवतारइं, इंद्रध्वजादि ध्वजा लहलहइं, धूपघटी परिमळ महमहइं।—व.स.

रू०भे०—धूपहट।

धूपछाया-सं०पु० [राज० धूप+सं० छाया] एक ही स्थान पर कभी एक ओर कभी दूसरा रंग दिखाई देने वाला एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।

धूपट-सं०स्त्री० [सं० धूप=संतापे] ऐसा सम्बन्ध जहां से खूब माल मिले अथवा खूब आनन्द और आराम मिले।

मुहा०—धूपट लागणी—मौज मिलना, आनन्द मिलना।

रू०भे०—धुरपट

धूपटणौ, धूपटबौ-क्रि०स० [देश०] १ खूब खर्च करना, वितरण करना। उ०—१ भाळै दीठ सुधा जठी आसगीरां भूक भागै, आचां खाटी सोभा जोस अथागै अरोड़। 'वीसळै'स' बीस कोड़ दटी सो गमाई वागै, राजा रीभ छंदा लागा धूपटी राठौड़।

—महाराजा वळवंतसिंघ (रतलांम) रौ गीत

उ०—२ सार आचार समराथ बळवंत सुपह, धूपटण आथ दातार धूना। ते गयंद फूंक रज अवै अणतोलड़ा, सूवड़ां खोलड़ा हुवै सूना।

—तिलोकजी वारहठ

२ अधिकार करना। उ०—१ धर पतसाही धूपटै, वळपांण बहादुर। आयो कमरो पातसाह, सज सैन्या आसुर।

—ठा. जुझारसिंघ मेड़तियो

उ०—२ विरद धारियां भुजां भड़ लियां ऊवांवरां। हचै खळ ढाल पाखर जड़ै हेमरा। धणी छळ स्यांमध्रम रखण चत्रगढ़ धरा, धूपटी नाहरै खगां ईडर धरा।—रावत सारंगदेव (द्वितीय) कांनोड़ रौ गीत

३ लूटना। उ०—रूपा मुलाय रूक नूं उर अंजस मत आंण। धाड़ आय जद धूपटण, देखीजै उण दांण।—ठा. रेवतसिंह भाटी

४ आनन्द मनाना, खुशी मनाना, मौज करना।

धूपटणहार, हारौ (हारी), धूपटणियौ—वि०।

धूपटिओड़ौ, धूपटियोड़ौ, धूपटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

धूपटीजणौ, धूपटीजबौ—कर्म वा०।

धुपटणौ, धुपटबौ—रू०भे०।

धूपटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ अधिकार किया हुआ. २ लूटा हुआ. ३ खूब खर्चा किया हुआ, वितरण किया हुआ. ४ आनन्द मनाया हुआ, खुशी मनाई हुई, मौज किया हुआ। (स्त्री० धूपटियोड़ी)

धूपणौ—देखो 'धूपियौ' (रू.भे.) उ०—१ गंधवती म्रिगमद अगर, सेल्हारस घनसारु। धरि प्रभु आगळि धूपणौ, चवदम अरचा चारु।

—ध.व.ग्रं.

उ०—२ धीरज मन करौ धूपणौ, तप अगरज खेव। स्रद्धा पुस्प चढाय नैं, इम पूजो जिन देव।—जयवांणी

धूपणौ, धूपबौ-क्रि०स० [सं० धूप] १ अंगारे पर सुगंधित पदार्थ डाल कर देव पूजन करना। धूप देना, गंध द्रव्य जलाना (उ.र.) २ सूर्य के आतप में रखना, धूप देना।

उ०—१ लागी बिहु करे धूपणै लीधै, केस पास मुगता करण। मन म्रिग चै कारणै मदन ची, वागुरि जांणै विसतरण।—वेलि.

उ०—२ इस्या अस्व गंगोदिक स्नांन कराव्या, तीहं कंठकंदळि कठूंवरि तणी माळ वाली, धूपहट धूप्या।—व.स.

धूपणहार, हारौ (हारी), धूपणियौ—वि०।

धूपिओड़ौ, धूपियोड़ौ, धूप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धूपीजणौ, धूपीजबौ—कर्म वा०।

धूपत-सं०पु० [सं० ध्रुवः+पति] ध्रुव के स्वामी, विष्णु।

उ०—भगत-जुगत भगवंत भज, धूपत रसणा धार। चित हर हर निस दिन उचर, सह तज नांम संभार।—ह.र.

धूपदांन-सं०पु० [सं० धूप+आधान] १ धूप आदि गंध द्रव्य जलाने का पात्र. २ धूप रखने का बर्तन या डिब्बा।

रू०भे०—धूपधांणउ।

अल्पा०—धूपदांनी।

धूपदांनी-सं०स्त्री०—देखो 'धूपदांन' (अल्पा., रू.भे.)

धूपधांणउ—देखो 'धूपदांन' (रू.भे.) (उ.र.)

धूपधारकौ-वि० [देश०] तलवारधारी, योद्धा, वीर।

उ०—पंगी उबारकां चंगी चोढ़ाड़ै जोधांण पांणी, मारकां पौढाड़ै भड़ां पोढ़ियौ सु-मीच। येळा सांम ध्रमौ धूपधारकां समांन ऊगौ, बीजो कांन पूगौ वंदारकां लोक बीच।—महादांन महडू

सं०पु०—सूर्य्य, भानु।

धूपबत्ती-सं०स्त्री० [सं० धूपवर्ती] मसाला लगी हुई सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धूम उठ कर फैलता है।

मुहा०—१ धूपबत्ती करणी—देव पूजन के लिए धूपबत्ती जलाना। २ धूपबत्ती खेणी—देखो 'धूपबत्ती करणी'।

धूधर — [illegible] (रू.भे.)

उ०— [illegible] [illegible] धूधर [illegible]। — [illegible]

धूधा — देखो [illegible] (१) (रू.भे.)

उ० [illegible] धूधा [illegible] धूदा [illegible]। धाड़ी धानीजा [illegible]। [illegible]

धूपरणी — देखो 'धूपियो' (रू.भे.)

धूपिनोड़ी-भू०का०कृ०— सुगंध पर धूप दे कर देव पूजन किया हुआ, धूप दिया हुआ, धूप द्वारा सुगंधित किया हुआ।
 (स्त्री० धूपियोड़ी)

धूपियो, धूपेड़ो, धूपेणो-सं०पु० [सं० धूप+रा०प्र०इयो, इड़ो] मिट्टी, पत्थर अथवा धातु का बना हुआ वह पात्र जिसमें देवी-देवताओं के निमित्त सुगंध हेतु धूप आदि जलाया जाता है, धूपदान।

उ०—१ धूपिया पड़ै चिहुं दिस त्रिगट धमधमै, बौहली ढकढकै तरफ बाधा। मन्त्रहै बीर जोगण धड़ै दो बगल, अरबकै हुतासण हेत आधा।—मे.म.

उ०—२ धूप नहीं सांभळ राय, कोई देव पूजण नैं जाय। स्नांन सिनान करी ए, धूपेणो कर धर धरी ए।—जयवांणी

रू०भे०—धूपारणी, धूपेड़ो, धूपेरणो, धूंपियो, धूंपेड़ो, धूपणो, धूपेरणी।

धूपेरण-सं०स्त्री०—सनाई या गुग्गुल का पेड़ जिसका गोंद धूप की सामग्री में काम आता है।

धूपेरणी -देखो 'धूपियो' (रू.भे.)

धूपेल-सं०पु०—सुगंध का तेल।

उ०—धूपेल चांपेल मोगरेल करणोल जइतेल एवं विधि तेलिइं चोळा भीआइ।—व.स.

धूब-सं०स्त्री०—१ दोनों पैरों को मिला कर पानी में कूदने की क्रिया या भाव. २ गिरने अथवा कूदने से उत्पन्न ध्वनि.
३ घोड़े की पीठ या पीठ का भाग जहां दुमची बंधती है ?

उ०—घुड़ला कंध रा, छोह में बंध रा, तोखड़ी पूंठ रा, चोवड़ी धूब रा, सांकड़ी पूंछ रा, निमसी नळी रा।—रा.सा.सं.

धूबक-सं०स्त्री०—१ शोक सूचक समाचार से पहुंचने वाला मानसिक धक्का. २ बंदूक छूटने से उत्पन्न शब्द।

धूबको-सं०पु० [अनु०] १ किसी भारी वस्तु के पृथ्वी पर गिरने से उत्पन्न शब्द, आवाज, ध्वनि।

उ०—१ [illegible] पड़नादां पड़िगे पड़ा। सनेंड्रां [illegible] धूबका।—पी.ग्रं.

उ०—२ [illegible] धूबका। [illegible] जाणि कुण [illegible] ।— पी.ग्रं.

२ देखो '[illegible]'।

धूबड़ नाथ-सं०पु०—नाथ संप्रदाय का एक सिद्ध, संन्यासी (ना.प्र.)

धूबणो, धूबबो-क्रि०अ०—देखो 'धूबणो, धूबबो'।

उ०—१ [illegible] धूबे, पतंग धूपि मेलियो दळ [illegible]। [illegible] 'भड़ाभर' [illegible] [illegible]।—मगरा राठौड़ री गीत

उ० —२ टांग ढांग तोनां तणी जाळा रै मोरचै तठै। धूबै जेठ माहिय 'मासरै' वाळो धूर।—ठा. सुरतांणसिंह ऊदावत रो गीत

उ०—३ 'धाटरमी' तणा धमणीर बांदर जिसा, जिहंर गांद गांद रिया बोलतो बाट। [illegible] धूबतो धड़ा जुध छोडिया, गढो 'सिंघ' तणा इक धारियां-कुट।—महाराज प्रतापसिंघ (किसनगढ़) रो गीत

धूबणहार, हारो (हारी), धूबणियो—वि०।

धूबियोड़ो, धूबियोड़ो, धूबोड़ो—भू०का०कृ०।

धूबीजणो, धूबीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

धूबाक-सं०स्त्री०—ऊपर से नीचे कूदने की क्रिया, कूदन, छलांग।

धूबियोड़ो— देखो 'धूबियोड़ो' (रू.भे.)
 (स्त्री० धूबियोड़ी)

धूबो-वि०—१ संहारक, मारने वाला।

उ०—प्रथी-पत हुकम आंटा धड़ै प्रथी सूं। भजर आंटा घड़ै सत्रां धूबो। बाप-नांमी तणा बिरद नित बुलाड़ै। थाप नांमी रहो ठौर ऊभो।—ठाकुर सुरतांणसिंह ऊदावत रो गीत

२ देखो 'धोबो' (रू.भे.)

धूमंगर-सं०पु० [सं० धूम+अंग] आग, अग्नि।

उ० -तुरां चढे तिण वार, बडी फौज रा बहादर। हाजर पैदल हुआ, धिकत तोड़ा धूमंगर। —सू.प्र.

रू०भे०—धोमंग।

धूमंडळ—देखो 'ध्रुवमंडळ' (रू.भे.)

धू-मंडळ-सं०पु०यौ० [सं० ध्रुव मण्डल] १ पुराणानुसार एक लोक जो सत्यलोक के अन्तर्गत माना जाता है।

उ०—त्रिया जात अकल री ओछी, उनको करत बड़ाई। धू-मंडळ से पकड़ मंगाऊं, रांम लखण दोनूं भाई।—संतवांणी

२ वह भू भाग जहां तक ध्रुव तारा दिखाई देता है, संसार।

उ०—जांववती नै कह्यो, कदेई कंवरजी सूं मुजरो करो। दृकोनी बैठी घोड़ा दोय लियां बैठी छै। धूरे मंडळे बैर जात न क्रीठी। कहता जिसी छै।—जगदेव पंवार री वात

३ जिस ओर ध्रुव हो, उत्तर। उ०—दुरजणां घणै रण भोम वाहे दुवड़, वडा जोगेस वोह क्रीड़ वहिया। पराक्रम कुरंभां राव धूमंडळ पंथ, रीझ सहको जगत उरे रहिया रहिया।—साळो गोदू

धूम-सं०पु० [सं० धूमः] १ धूआं, धूम (डि.को.)

उ०—१ अवधि एतलइ पहुतउ काळ, थयउ आकासि धूम विकराळ। मानळ मगड़ धुरइ सोकळन, चानिमाइ कहसि हूं मलउ।—कां.दे.प्र

उ०—२ धूंहरि पटण अयाट ते, विरहानळ नो धूम। येगा जायो थोड़ विरहाथी त्रिय मन मूंम।—[illegible]

उ०—३ हण ताडका निज ठाहरां, जिग मांड ग्रारंभ जाहरां। उत होम धूम विलोक ग्राया, निडर राकस नीच।—र.रू.

उ०—४ नहिं काहू के संगी, ग्यांनी जग में यूं निरलेपा, जैसे गगन ग्रसंगी, धूम नहीं मेघ लिपंता।—स्री सुखरांमजी महाराज

रू०भे०—धौम।

२ युद्ध। उ०—माती धूम मुरद्धरा, तातौ जोस कटक्क। 'सोनग' रातो वेध लख, जातो साह ग्रटक्क।—रा.रू.

सं०स्त्री०—३ उत्पात, उपद्रव। उ०—वादसाह कस्मीर में रहै, ऐ हिंदुस्थांन में रहै, बड़ी धूम मांडी।—गौड़ गोपाळदास री वारता

क्रि०प्र०—मांडणी।

४ उछल-कूद; हल्ला-गुल्ला, शरारत।

ज्यूं—छोरां ग्रठै धूम मती करो, ग्रागा जावो परा।

क्रि०प्र०—करणी, मचाणी।

५ वह हलचल, रेलपेल ग्रथवा ग्रान्दोलन जो बहुत से लोगों के ग्राने-जाने, इकट्ठे होने, हिलने-डोलने ग्रथवा शोर-गुल करने से होती है।

ज्यूं—राजातिलक री धूम, मेळा री धूम।

क्रि०प्र०—होणी।

६ भारी ग्रायोजन, भीड़-भाड़ ग्रौर तैयारी, समारोह, ठाट-वाट।

ज्यूं—राजाजी री सवारी बड़ी धूम सूं नीकळी, बरात बड़ी धूम सूं गई।

यौ०—धूमक-धैया, धूम-धड़क्की, धूम-धांम, धूम-मारग।

७ चारों ग्रोर होने वाली चरचा, जनरव।

८ ग्राहार करते समय ग्राहार ग्रथवा ग्राहारदाता की निंदा करने का एक दोष (जैन)

९ देखो 'धोम' (रू.भे.) (डिं.को.)

वि०—धुएं के समान, श्याम, काला (ग्र.मा.)

क्रि०वि०—१ जोर-शोर से, धूम-धाम से।

उ०—सभिया-स कोट गढ़ साह रा, धूम लूटि धन ऊधमैं। ऊगतौ भांण बाळक 'ग्रभो', राय ग्रांगण इण विध रमैं।—सू.प्र.

धूमग्रालम—सं०पु० [सं० धूम+ग्रलि] भौंरा, भ्रमर (ग्र.मा.)

धूमकधैया—सं०स्त्री०यौ० [देश०] १ हल्ला-गुल्ला, शोर-गुल.

२ उछल-कूद, उत्पात, उपद्रव।

क्रि०प्र०—करणी, मचाणी, होणी।

धूमकेतन, धूमकेतु—सं०पु० [सं०] १ वह जिसकी ध्वजा धूम्र हो, ग्रग्नि, ग्राग. २ भाप या धुएं के ग्राकार की पूंछ वाला, केतु ग्रह.

३ पुच्छल तारा. ४ वह घोड़ा जिसकी पूंछ में भंवरी हो (ग्रशुभ)

५ शिव, महादेव. ६ रावण की सेना का एक राक्षस।

रू०भे०—धूम्रकेतु।

धूमड़ो—देखो 'धूमडो' (रू.भे.)

धूमज—सं०पु० [सं०] १ वादल, मेघ (डिं.को.)

२ नागरमोथा (डिं.को.)

धूमडो—सं०पु० [देश०] मारवाड़ राज्यान्तर्गत एक पर्वत श्रेणी जिसका प्राचीन नाम सुभद्रार्जुन था। (कहा जाता है कि वीर ग्रर्जुन सुभद्रा को लेकर कुछ समय तक इसी पहाड़ में रहा था। ग्रब यहां पर सुभद्रा का एक मंदिर भी है जिसे चौधरा माता का मंदिर कहते हैं।)

रू०भे०—धूमड़ो।

धूमधड़क्को, धूमधड़ाको—सं०पु०यौ० [ग्रनु०] वह ग्रायोजन जिसमें गाजे-वाजे हों, भीड़-भाड़ ग्रौर तैयारी।

धूमधज—सं०स्त्री० [सं० धूमध्वज] ग्रग्नि, ग्राग (ह.नां., ग्र.मा., नां.मा.)

रू०भे०—धुंवांधज, धुंवांधुज, धुवांधज, धुवांधुज, धोमधुज।

धूमधर—सं०पु० [सं०] ग्रग्नि, ग्राग।

धूम-धांम—सं०पु०यौ० [ग्रनु०] भारी ग्रायोजन, ठाटबाट, भीड़भाड़ ग्रौर तैयारी, समारोह।

रू०भे०—धाम-धूम।

धूमपांन—देखो 'धूम्रपांन' (रू.भे.) (ग्रमरत)

धूममारग—सं०पु०यौ० [देश०] वह ग्राम रास्ता जिस पर खूब चहल-पहल रहती हो।

रू०भे०—धोम-मारग।

धूमर—सं०पु० [सं० धुर्+चोटी] १ शिर, मस्तक।

उ०—वादळा कनक रा गंगवार, धूमरां मंजरां तुळछ धार। निजमन पढ़ गीता सहस नांम, पढ़ हर पुरांण कर हर प्रणांम।—वि.स.

२ एक ग्रसुर का नाम (रा.रा.)

३ देखो 'धूम्र' (रू.भे.)

सं०स्त्री०—४ रंग विशेष की गाय।

उ०—मोडी गोडी दै पसवाड़ा मोड़ै। तड़छां वातोड़ी धड़छां तन तोड़ै। पीळी पाडळ पर फिर फिर कर फेरै। धोळी धूमर नै धिर धिर धर घेरै।—ऊ.का.

वि०—काला, श्याम (ग्र.मा.)

धूमरक—सं०पु० [सं० धूम्र] ग्रंधेरा (ह.नां.)

धूमरतन—सं०पु० [सं० धूम्र+तन] धुग्रां उत्पादक, ग्रग्नि, ग्राग।

धूमरपांन—देखो 'धूम्रपांन' (रू.भे.)

धूमराई—सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)

धूमलोचन, धूमलोचन्न—सं०पु० [सं० धूम्रलोचन] १ शुंभ-नामक दैत्य का एक सेनापति। उ०—देवी धूमलोचन्न हूंकार धोंस्यो. देवी जाडवा में रगतबीज सोस्यो। देवी मोड़ियो माथ नीसुंभ मोड़ै, देवी फोड़ियो सुंभ जी कुंभ फोड़ै।—देवि. २ कबूतर, कपोत।

धूमविराळ—सं०स्त्री०यौ०—धूम-वाक्य (?)

उ०—ग्रांबुलइ मांजरि लागीय जागीय मधुकर माल। मूंकइ मार कि विरहीय होग्रइ स धूमविराळ।—व.वि.

धूमसौ—सं०पु०—धुग्रां, धूम (ग्रमरत)

धूमाळौ—सं०पु० [सं० धुर, चोटी+ग्रालुच] सर्दी से बचने के लिए ग्रोढ़ने

[illegible] ।

घूमरी–[illegible] [illegible] सात प्रकार [illegible] में से एक देवी ।

घूमोरम, घूमोरमय–[illegible] [सं०] [illegible] (डि.को)

घूमो–[illegible] [illegible] (राजस्थानी)

घूम–सं०पु० [सं०] १ धुआं, धूम ।

मी०—धूम-तान ।

२ [illegible] ज्योतिष में एक योग का नाम ।

३ [illegible] सेना का एक [illegible] ।

४ [illegible] का [illegible] जो एक दोष समझा जाता है ।

वि०—[illegible] ।

रू०भे०—[illegible] ।

घूमकेतु—देखो 'धूमकेतु' (रू.भे.)

धूम्रपान–सं०पु०स्त्री [सं० धूम्रपान] १ रोग विशेष की निवृत्ति के लिए औषधि विशेष का धूम नाक द्वारा खींचने की क्रिया या भाव ।

२ तम्बाकू तथा चरस आदि [illegible] द्वारा खींचने की क्रिया या भाव ।

उ०—[illegible] बरि नै राजांन गिनांमति देवतां री पायती धरम-माळा दांन-माळा मांडीजै छै । मांहे जोगेसर पवन रा साभण-हार त्रिकुटी रा गढ़ावलहार धूम्रपांन रा करणहार उरधबाहु ठाडे-सरी दिगंबर सेवंबर निरंजनी आकाश मुनी ।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—करणौ ।

रू०भे०—धूमरपांन, धूमरपांन ।

धूम्राक्ष–सं०पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष में वार और नक्षत्रों संबंधी बनने वाले २८ योगों में से तीसरा योग. २ रावण की सेना का एक सेनापति जो हनुमान के हाथ से मारा गया था ।

धूय, धूयर—देखो 'धू' (१५) (रू.भे.) (जैन)

उ०—अक्खलियदढ केरी धूय, गंगा नांमि रइ सायइय ।—पं.पं.च.

धूयोड़ी–भू०का०कृ०—देखो 'धुवोड़ी' (रू.भे.)

(स्त्री० धूयोडी)

धूर—देखो 'धूड़' (रू.भे.)

धूरज–सं०पु० [सं० धूर्त] १ धतूरा (अ.मा.)

२ धोखा, बदि ।

रू०भे०—धूरत, धूरज्ज ।

धूरजट, धूरजटि, धूरजटी, धूरजट्टी–सं०पु० [सं० धूर्जटिः] १ शिव, महादेव (अ.मा., डि.को.)

उ०—१ देव धूरजट गण [illegible], दांन देव बहु मांनि जि मारी । [illegible] धनुष री [illegible], एम श्रीकृष्ण इंद्र वनांणइ ।

—विराटपर्व

उ०—२ [illegible] जटा, [illegible] । [illegible] धूरजटि [illegible] ।—[illegible]सिंह भाटी

उ०—३ [illegible] धूरजट्टी [illegible], वरां कंठ लपट्टी [illegible] । [illegible] धूरजट्टी

[illegible] ।—[illegible]दास [illegible]

२ देखो 'धूजटी' (रू.भे.)

रू०भे०—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ।

धूरणौ, धूरबौ–क्रि०अ० [सं० धूर्वति, धरति] उदास होना, मलिन होना । उ०—[illegible] धूरइं भूरइ [illegible] । [illegible] । उ[illegible] ।—नेमिनाथ फागु

धूरत–वि० [सं० धूर्त] १ धोखा देने वाला, दगाबाज, प्रतारक, वंचक (डि.को.)

उ०—१ भगति दंभन बंधा बंधन बंधा, धंधापुंण धमांदा है । धूरत दे धोखा बोड़ा बोला, नोखा रस चातंदा है ।—ऊ.का.

उ०—२ तजै मती तिरिया पितु माता, होठिन घोरो होठा । घोटि घोटि घनै मति धूरत, लेकर घोट लंगोटा ।—ऊ.का.

२ छली, मायावी, चालबाज, ढोंगी, पाखण्डी ।

३ दुष्ट, खल । उ०—१ नह मानत धूरत बात लहूं । कालवी धम देवण केम कहूं । जिण धीर रहै हम येम जहूं । प्रसणां जिण एहन 'पाल' पहूं ।—पा.प्र.

उ०—२ घाड़ा पाड़ कर खटके धूरत, धन पटकै धरपुंस । नटके साधू वर्ण निराळा, मटके माळा सूंस ।—ऊ.का.

४ ठगने वाला, ठग ।

उ०—बावन चंदण ग्रंमई परिमळ, धूरत तणइ निसंभ । उर पेहराउ दीसइ उरवंमी, रूप तिमिराइ रंभ ।—रुकमणी मंगळ

पर्याय०—कुहक, जाळिक, वंचक, सठ ।

सं०पु०—सठ नायक का एक भेद (साहित्य)

रू०भे०—धुत्त, धूत ।

अल्पा०—धूतारौ, धूतौ, धूत्यौ ।

धूरतक–सं०पु० [सं० धूर्तक] १ दांव-पेच करने वाला आदमी, जुआरी. २ गीदड़, शृगाल ।

धूरतचरित–सं०पु० [सं० धूर्त चरत] धूर्तों का चरित्र ।

धूरतता, धूरतताई–सं०स्त्री० [सं० धूर्तता] वंचकता, चालबाजी, माया, चालाकी । उ०—मठना धूरतता महित, छंद रचै मद छाय । निपट लियां निरलज्जता, कुकवी किसौ कहाय ।—बां.दा.

रू०भे०—धुताइय, धुताई, धूताई, धूर्तता ।

धूरतसंबळ–सं०पु० [सं० धूर्त+संबल] ७२ कलाओं में से एक ।

धूरतियौ—देखो 'धूरत' (अल्पा., रू.भे.)

धूरतौ–वि०—१ धूर्तता करने वाला. २ देखो 'धूरतता' (रू.भे.)

धूरधर–सं०पु० [सं० धुर्धरः] बोझा ढोने वाला, भारवाही ।

धूरां–क्रि०वि० [सं० धुर्=चोटी] ऊंचा ।

उ०—अरक दुत सोम सम, नमे लोयणां अगम, धूरां तम सोम लग धूरां धूरां । तठै सूर नदीना थटै घण तंदूरां, हुरम सूरां निरख रंभ हूरां ।—कविराजा बांकीदास

धूरा—देखो 'धूरा' (रू.भे.)

उ०—गुण सतावीस जेहनइ पूरा रे, सुद्ध किरिया मांहि घूरा रे। तप वारै भेदै सूरा रे, सियल व्रत सनूरा रे।—स.कु.

घूरि—देखो 'धूड़' (रू.भे.)

घूरी—१ देखो 'धूड़' (रू.भे.)

२ देखो 'घूरो' (अल्पा., रू.भे.)

घूळ, घूल—देखो 'धूड़' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ गैल को असूल सूल घूळ में गह्यौ। मूळ को गमाय मूळ फूल क्यों रह्यौ।—ऊ.का.

उ० —२ बंधी गठड़िया घूल की, रही पवन में फूल। गांठ जतन की खुल गई, अंत धूळ की धूळ।—अज्ञात

घूलकोट—देखो 'धूड़कोट' (रू.भे.)

उ०—ढोळै घूलकोट मजबूत करायो, भली तरह सूं रहणै लागिया, लोग सारां नूं सबळायो।—गौड़ गोपाळदास री वारता

घूलधोया-सं०स्त्री० [सं० धूलि+धौत] स्वर्णकारों की एक शाखा।

घूलपांचम-सं०स्त्री० [सं० धूलि+पंचमी] होलिकोत्सव के बाद आने वाली चैत्रकृष्णा पंचमी, रजोत्सव।

घूलरोट-सं०पु० [राज० रोट+सं० धूलि] नाथ संप्रदाय में मसांणिया जोगियों द्वारा मृत्यु के तीसरे दिन किया जाने वाला भोज विशेष।

घूलहडी, घूलहरी—देखो 'धूळेरी' (रू.भे.)

उ०—घूलहडी ना राय नइ, न घटइ स्वेत छत्र रे। त्राटीहर भीति जिहां नवि घटइ, वारु चित्रांम रे।—नळ-दवदंती रास

घूलि—देखो 'धूड़' (रू.भे.)

उ०—१ धूलि मिलीग झळमळीय सयल दिसि दिणयरु छाईउ। गयणे दुंदुहि द्रमद्रमीय, सुरवरि जसु गाईउ।—पं पं.च.

उ०—२ गडियो जिण रै चित्त गुण, धन तिण रै मन धूलि। दुर-बिध सो ही विबुध दुज, मांनै जीवन मूळि।—बं.भा.

घूलिधूत्रा-सं०स्त्री०—१ एक प्राचीन जाति विशेष ?

उ०—धूलिधूत्रा जडीया जिके, राजि रसणिआ जाइ। गोला गांछा गारडी, साथरिया सज थाइ।—मा.कां.प्र.

२ एक प्रकार का गेहूं बोने का ढंग या इस ढंग से बोये हुए गेहूं।

वि०वि०—देखो 'धावड़िया'।

घूळियाभात-सं०पु० [सं० धवल भक्त] वर-वधू के पाणि ग्रहण के पूर्व बारात को दिया जाने वाला भोज।

वि०वि०—इस भोज में चावल बनाये जाते हैं किन्तु कायस्थ जाति में मांस रोटी भी खिलाई जाती है।

घूलियालुहार-सं०स्त्री० [सं० धूलि+लोहकार] लुहारों की एक जाति विशेष।

वि०वि०—देखो 'गाडोलिया'।

घूली—देखो 'धूड़' (रू.भे.) उ०—तो पं घूली सिल तरगी, वारी सारै हि······। ॐ ही राघो तरणि उडै, छै थ्यो साको स कुळ छुडै। धोवो पं तो कदम धरो, कं कीरो कं करो।—र.ज.प्र.

घूळीयो-सं०पु० [?] वृक्ष विशेष।

उ०—धंतूरा नई धाऊडा, धामणि धूंगरि धूंनि। धींग धमासा धूळीया, धडहड धाता धूंनि।—मां.का.प्र.

घूळेड़ी, घूळेटी, घूळेरी-सं०स्त्री० [सं० धूलि, प्रा० धूलही] होली के दूसरे दिन पड़ने वाला त्यौंहार जिस दिन एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि फेंकते हैं।

वि०वि०—इस दिन अत्यधिक खुशी के आवेग में आकर सगे-सम्बन्धियों और इष्ट मित्रों पर धूलि और राख भी फेंक दी जाती है।

रू०भे०—धुरेंडी, धुलंडी, धुलहड़ी, धुलहडी, धुलेंडी, धुलेडी, धुळेरी, धूलहडी; धूळहरी।

घूव—देखो 'धूप' (रू.भे.) (जैन)

घूवणो, घूवबौ-क्रि०अ० [?] आलोकित होना, प्रकाशित होना।

उ०—आइ नै कळस दूरि नै छिप रह्यो। भाख धूबी। दीवै री जोति मंद पड़ी। ज्युं दिन चढण लागो त्युं त्युं दीवा री जोति मिटती गई।

—चौबोली

घूवाधार, घूवाधोर—देखो 'धुंआधोर' (रू.भे.)

घूवेल-सं०स्त्री० [देश०] एक लता विशेष।

उ०—खांडामांनि पडीआरि, धनुखमांनि पिणच, सरीरमांनि छाया, पगमांनि वांणही, आंखिमांनि भरण, व्रिखमांनि फळ, जाखमांनि वळ, भिराडीमांनि घूवेल, क्रयाणामांनि हाथसन, प्रीतिमांनि समाचार।

—व.स.

घूवो—देखो 'धुंवो' (रू.भे.) (अमरत)

घूस-सं०स्त्री० [सं० ध्वंसिनी] १ सेना, फौज।

उ०—गजदळ धूस गड़ूस, मेल चतुरंग महादळ। पाइल वांणावळी खड़ै खंधार चहुंवळ।—गु.रू.बं.

सं०पु०—२ समूह, झुण्ड।

उ०—धरती धमस तुरिया धाउ, आकंप हैकंप अहिराउ। धसमस धरणि फौजां धूस, गजदळ गरट थाट गड़ूस।—गु.रू.बं.

३ देखो 'धूसो' (मह., रू.भे.)

४ देखो 'धूंस' (रू.भे.) उ०—घोडा पिलांण हुवा। नगारा री धूस पड़ी। सूरा-पूरा असवार हुवा।—रीसाळू री वात

घूसको-सं०पु०—ध्वनि, आवाज।

उ०—त्रंवक तणै धूसकै सुरधव्रित्ति प्रकटितउ, दुरजन जन क्षोभ उपजावतउ।—व.स.

रू०भे०—ध्रूस।

घूसमधूस—देखो 'धूंसमध्रूंस' (रू.भे.)

घूसर-वि० [सं०] १ मटमैले रंग का, धूल के रंग का।

उ०—मेटिया केइक पीळा पमंग। सोनरे कइक धूसर सुरंग।

—पे.रू.

२ जिसमें धूल लिपटी हो, धूल से भरा, धूल लगा हुआ।

उ०—[illegible] धूमर घर। [illegible]। —वेलि.

२ [illegible]। उ०—धूमर हैंना मूं [illegible] धारा। धूमर हैना [illegible]। —रू.रा.

सं०पु० [सं० धूमर:] १ मटमैला रंग, भूरा रंग.

[सं० धूमर:] २ धूमर रंग का घोड़ा. ३ सेना (डि.को.)

(मा० धूसर)

धूमरड़—देखो 'धूमर' (मह., रू.भे.)

उ०—धूवि नाग [illegible] धूमरड़, रथ पदरां मग रोकिया। नाळा निराव होता निरंमि, भाळा दिसि मनि झोकिया। —सू.प्र.

धूमरी-सं०स्त्री० [सं० धूमर] धूलि, रज (ह.ना.)

उ०—धमी धराम धूमरी, कि वात मेन विस्तुरी। निमांण पांण मद्दयं, सुधीर जोर सद्दयं। —रा.रू.

वि०—धूमर रंग की। उ०—धग धूमरी धूरि आकास लगी, हय पूठ ते सीस धुनं पनगी। सबै सूरवीरं परची सिव भेसं, करयौ पदरि मेन 'लावं' प्रवेसं। —ला.रा.

धूमड़-सं०पु० [देश०] लड़ाई, टंटा।

उ०—मेरांजी सांगोजी एक दिन झरणा में भीर बांट जळदांटा री मेल कियौ। भाजणा री दोनां नूं परत। बोलै बोलै भारी हुवौ। जद मेरांजी धूमड़ करणी विचारियौ। —बां.दा. ख्यात

धूमसी-सं०स्त्री० [सं० धूमरी] धूलि, रज (ग्र.मा.)

धूहकार—देखो 'धाड़कार' (रू.भे.) उ०—हुय करै विनां धड़ धूहकार। धू विनां करै धड़ पलट धार। —सू.प्र.

धूहड़-सं०पु०—१ सिंह नरेश राठौड़ राव धूहड़ के वंशजों की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—धोहड़।

अल्पा०—धूहड़ियौ।

[?] २ पतंग, गाज, भड़क (डि.को.)

३ देखो 'धूड़' (रू.भे.) उ०—जीवौ हाल्यौ जदी, दीह झंको दरगाणौ। 'जीवौ' हाल्यौ जदी, विरंग धूहड़ वरमांणौ।

—अरजुनसिंघ बारहठ

धूहड़ियौ—देखो 'धूहड़' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ धूहड़िया गढ धाक, तो थाळी 'वगतेस' तणा। वैरी हुवै विधाक, दिड़ पतवोह 'प्रतापसी'। —किसोरदान बारहठ

उ०—२ हुंकळ पोळि उरड़ियौ हाथी, निहटी भीड़ि निराळी। रतन पड़ाड़ नहीं सिर रोकी, धूहड़िया धाराळी।

—राठौड़ रतनसिंघ (जोधा) रो गीत

धूहर—देखो 'धूंहर' (रू.भे.)

धेंस्ट-सं०पु० [अनु०] नगारे का बोल।

उ०—[illegible] धीस, [illegible] आडम नीस। बाजै धौं धौं मंगळ संग, भिभिकट सेकट धार प्रसंग। —[illegible]विलास पवाड़ौ

धेंग—देखो 'धेग' (रू.भे.)

धे-सं०पु० [?] १ पारसनाथ. २ पुत्र, पेट.

३ धर्म. ४ पति. ५ कार्य, काम।

सं०स्त्री०—६ धरती, भूमि (एका.)

धेयभाग-सं०पु० [सं० धेय भाग] धर्म (अ.मा.)

धेक-वि० [देश०] १ सहायक, मददगार. २ उत्तरदायित्व लेने वाला।

धेक—देखो 'धेग' (रू.भे.) उ०—देवळ गाळजळ देग, पाटू मिरजो पकड़ियौ। धरियौ म्हांसूं धेक, विजलग हल्ला थाकिया। —पा.प्र.

धेकियौ—देखो 'धेगी' (अल्पा., रू.भे.)

धेकौ—देखो 'धेगी' (रू.भे.)

धेग-सं०स्त्री० [सं० द्वेष] १ शत्रुता, वैर।

उ०—रासै धेग न राग, भारी न जिहा भुरी। दरसण करतां दाग, मिटै जनम रौ मोतिया। —रायसिंह सांदू

२ द्वेष, डाह, ईर्ष्या।

उ०—१ मुत भ्रात कटे मक धीट वधे धक, बीस भुजांण विचारियौ जो। निरखीजां वांनर नेग नमुन्नर, धेग दुणौ मन धारियौ जी।

—रा.रू.

उ०—२ साधु न जाता देग, राजा नै जायौ धेग, सुकोमळ साग। तह करम मोडै किया ए। —जयवांणी

३ प्रतिस्पर्धा, होड़। उ०—तन प्रथक नरां गण सुरंग तुंड, मट जेण फूटै गज कितां मुंड। रह धरकि रह्यौ थकि अरक रत्थ, संपेत धेग कंदळ समरत्थ। —रा.रू.

रू०भे०—धेक, धेस।

धेगियौ—देखो 'धेगी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—धेगियां रा मन वंछत घाव धरै। किम नाथ थमां अग नाथ करै। असवार हुए पुळ राज दुवा। वैरियां रा करौ मत नीतविया।

—पा.प्र.

धेगी-वि० [सं० द्वेषिन्] १ द्वेष रखने वाला, ईर्ष्यालु।

उ० असतरै उठै कोदक नृप आयौ, हवा निहाळै छांह हरी। धीरठ नै आटी दे धेगी, कडवै कुबधी सीट करी। —नवलजी लाळस

२ विरोध करने वाला, विरोधी। उ०—धरम रा धेगी धेटा दुख कहै रे। —जयवांणी

सं०पु०—शत्रु, वैरी।

रू०भे०—धेकौ।

अल्पा०—धेकियौ, धेगियौ।

धेण—देखो 'देणौ' (मह., रू.भे.) उ०—भंजाई री धेणां वगैरे चीजां लीवी। पीछै माजी सूं सीख कर रावजी फौज री कूंच कियौ सू देसणोक सीकरनीजी री दरसण कर बीकानेर गढ दाखल हुवा।

—द.दा.

घेट—देखो 'घीठ' (रू.भे.)

घेटाई—देखो 'घीठाई' (रू.भे.)

घेटो—देखो 'घीठ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ काज खोटा करै आज सोचो किसूं, धार भुज लाज कर गजां घेटो। सिरै वांमी मिसल वकारै 'सेरसा', जीमणी मिसल रा थाव जेठी।

—सेरसिंघजी कोळसिंघजी री गीत

उ०—२ जुध चढ़ियो जगमाल दे, कर टोप लपेटो। वगतर कूंटा वीड़िया, धिक पोरस घेटो।—वी.मा.

उ०—३ हमलां आठ मिसल हीलोहण, भुज बळ ठळां दियण गज भार। आपमला खेटायत आजो, 'दला' हरा घेटा सिरदार।

—रतनसिंघ कूंपावत री गीत

उ०—४ जाजुली 'वहादुरेस' भूप देव असी जोध, वीर नारसिंघ रूप घेटो क्रोध वार।—हुकमीचंद खिड़ियो

उ०—५ लंगर फौजां तणा लार अत लगाया, धकाया कमधजां कमध घेटं। भाग बळ भली जी भली कहियो भड़ां, खाग बळ प्रवाड़ो लयो खेटं।—राठौड़ राव करमसी री गीत

उ०—६ धरम रा घेखी घेटा इम कहै रे, बोलै मूंडै सूं खोटी वांण रे। रिध संपदा रमणी पांमी अति घणी रे, पिण परमेसर नहीं देवै खांण रे।—जयवांणी

(स्त्री० घेटी)

घेठ—देखो 'घीठ' (मह., रू.भे.) उ०—गंजे रिम केलां गरब, धार सरब व्रद घेठ। दै कोड़ां दुजवर दरब, जीत परब जग जेठ।—र.ज.प्र.

घेठाई—देखो 'घीठाई' (रू.भे.)

घेठो—देखो 'घीठ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ मिरजो रीस वधै मन मारै। उर अप्रीत मुख प्रीत उचारै। घेठां भड़ां इसारत धारै। वात करै उर घात विचारै।—रा.रू.

उ०—२ जीहो नरक निगोद मां उपनो, जीहो छेदन भेदन मार। जीहो तो पिण घेठा जीव नै, जीहो नहीं आवै लाज लिगार।

—जयवांणी

उ०—३ सखी री जळ सीतब पीजै जेठो, पीउ नायो अजहु घेठो। जांण्यो कुण करि है वेठो, नांणी मुझ नजरां हेठो हो लाल।

—ध.व.ग्रं.

उ०—४ घेटा होय नै घपटिया, दड़वड़ लागा डागा रे। वांनर जेम विलगिया, लपटी गढ़ नै लागा रे।—प.च.चौ.

(स्त्री० घेठी)

घेणु—देखो 'धेनु' (रू.भे.) उ र.)

घेघंगर, घेंघिगर, घेघींग, घेघींगड़, घेघींगर, घेघीग, घेघीगर—देखो घंघींगर (रू.भे.) उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति हाथी सज कीआं वहै छै। सु किसड़ा वखांणीजै छै। घेट सिंघल दीप अनोप देस रा नीपना, घेघंगर तांह, भद्र जातीआं, हाथियां रा कूंभा-थळ भांजिआं, सवामण मोती आंमल प्रमांण नीसरै, अढार भार वनसपती सूं ओघसतां थकां हमला खाई नै रहिआ छै।

—रा.सा.सं.

उ०—२ मचोळा पूर देता मसत, तेम रोड़ जबरा तरां। ज्यां करो आखै जरू, घरै साज घेघंगरां।—बखतो खिड़ियो

उ०—३ करि कोप दळां प्रारंभ कहर, घेंघिगर आगै धरै। मांडिओ मुगल्लै मारण, रिण 'ओरंग' 'जसराज' रे।—वचनिका

उ०—४ जमातां भांजणी गजां धधकी नागणी जेही, धरा सीस रखी वातां कीरती घेघींग। दखी चहु ओर हातां वीक भोज जोध दूजै, सोर भखी समापी सुपातां गैनसींघ।—मेघराज आढ़ो

घेनंजय—देखो 'धनंजय' (रू.भे.) (ह.नां.)

घेन—देखो 'धेनु' (रू.भे.) उ०—१ फजरै अर फरियो-ह, घेनां थट घरियो धकै। कहै यम केसरियो-ह, म्है तो आदरियो मरण।—पा.प्र.

उ०—२ घेन पूज सुर घेन, विबुध चरणाम्रत वंदां। धनुख मांण न्रिप कळप, संख जस मद्द विरद्दां।—रा.रू.

घेनक—देखो 'धेनुक' (रू.भे.)

घेनड़ियो—सं०पु० [सं०धेनुः+रा.प्र.ड़ियो] १ गोवत्स, बछड़ा. २ पुत्र, बेटा। उ०—थेइ ओ मांनेतण रांणी, थेइ ओ बालेसर रांणी, हालरियो जिणजो, घेनड़ियो जिणजो, ओ अजमो म्हारा माताजी सोवसी।

—लो.गी.

घेनु—सं०स्त्री० [सं० धेनुः] १ गौ, गाय। उ०—न दै साय काय नारियण, साद दियै जो संत। आपण नांम उलावतां, धेनु (ही) कांन धरंत।—ह.र.

रू०भे०—धनु, धेणु, घेन, घेनूं, धेयन।

२ देखो 'धनु' (१) (रू.भे.) (डिं.को.)

घेनुक—सं०पु० [सं०] १ एक तीर्थ स्थान का नाम (महाभारत)

२ एक असुर का नाम.

३ सोलह प्रकार के रति बंधों में से एक।

रू०भे०—धेनक।

घेनूं—देखो 'धेनु' (रू.भे.) उ०—घेनूं चरतोड़ी घोरां खड़ धाती। ऊखां भरतोड़ी लोरां भड़ आती। राती बासै री माती रंभाती। जाया गोपासै जाती जंभाती।—ऊ.का.

घेम—सं०पु० [देश०] ढेर।

उ०—जरी, रेसम नै जोरजट री घेम सौ लग्योड़ो। जरी री एक एक दुपटो पांच पांच सौ री कीमत रो।—रातवासो

घेय—वि० [सं०] १ धारण करने योग्य, धार्य्य।

उ०—१ घेय को विधांन साधि ध्यांन नां धरचो। गेय को अग्यांन तैं प्रमांन नां परचो।—ऊ.का.

२ सं०स्त्री० [सं० धीता] पुत्री, लड़की।

उ०—'स्वांमी! कुण ते कांमनी? कुण पंडित नी घेय! किणि कारणि ते वेगली? भलइं सुणावउ भेय।—मा.कां.प्र.

३ उद्देश्य। उ०—'सुण माधव! मोरु वछ तुं, कांमकंदळा घेय।

[illegible] —ना.कां.द.

[illegible] देखो [illegible] (रू.भे.)

उ० [illegible] —पा.प्र.

[illegible]—सं०पु० [देश०] एक जाति विशेष ।

[illegible] —[illegible] के लिए [illegible] द्वारा बोया जाने वाला [illegible] ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

उ० —[illegible] नी वै [illegible], पछ लूंटैगी हैंगी । [illegible] ठग [illegible], [illegible] री पेगी ।—डूंगजी जवारजी री पड़

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

उ०—[illegible] सुरत में गमाया । रीझ का एक धेला भी न पाया ।—दुरसादत्त बारहठ

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.) उ०—[illegible] विन बाहर कोण नहं । [illegible] लिया नवई । पट जीद कुमनिय पेस पगो । तिम [illegible] मुजत लगो ।—पा.प्र.

धेंग-सं०स्त्री० [देश०] १ ऊंचे स्थान से नीचे कूदने की क्रिया या भाव ।

मुहा०—१ धेंग देणी—ऊंचे स्थान से नीचे कूदना, छलांग मारना । किसी जोखिम के कार्य को हाथ में ले लेना ।

२ धेंग मारणी—देखो 'धेंग देणी' ।

सं०पु०—२ जाति विशेष का घोड़ा ।

उ०—तुरकी ताजी तुरंग, निलाती देसी विटंग । घूना चित्रांगिया धेंग । [illegible] री नीपना धेंग ।—गु.रू.बं.

धेंट-सं०पु० [देश०] वह रोटी जो आकार में साधारण रोटी से बड़ी व भारी हो ।

अल्पा०—धेंटियो ।

धेंटियो—१ देखो 'धेंट' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—काचा पाका धेंटिया न्हांक'र, जीम'र झट हाली जिकी बात करो ।

मुहा०—धेंटिया करणा—देखो 'धेंटिया न्हांकणा' ।

२ धेंटिया न्हांकणा—बड़ी बड़ी रोटियां बनाना (जो शीघ्र बन जाय) ।

धेधींगर—देखो 'धेधींगर' (रू.भे.)

उ०—सिर डोलो लागो धेधींगर, पवै मेर सूं कंपणो । उण रितमें [illegible] पावै, तद वेटो धयआम तणो ।—नवलजी लाळस

धैं-सं०पु० १ रावण, दसानन. २ गरदन, ग्रीवा. ३ सुग्रीव. ४ [illegible] (एका.)

धैं'—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

धैंईड़णी, धैंईड़बौ-क्रि०स०—पीटना, मारना ।

धईड़णी, धईड़बौ—रू०भे० ।

धैंकाळ-सं०पु० [सं० द्रह+काल] भयंकर दुर्भिक्ष ।

धैंड़-सं०स्त्री० [सं० द्रह] १ नदी का वह स्थान जहां पानी बहुत गहरा हो. २ गहरे पानी का प्राकृतिक गड्ढा. ३ बड़ा व गहरा वह गड्ढा जिसका पानी सूख गया हो. ४ सिंचाई के लिए खेत के आस-पास खोदा जाने वाला कच्चा कूआ. ५ किसी कूए के बैठ जाने से बनने वाला गड्ढा ।

रू०भे०—धैंड़ ।

अल्पा०—धोड़ियौ, धोड़ौ, धोहियौ, धोडौ ।

धोड़ियो, धोड़ौ—देखो 'धोड़' (अल्पा., रू.भे.)

धैंचाळ-वि० [सं० द्रह+राज. चाळ] १ बहुत गहरा. २ असीम, अथाह ।

रू०भे०—धड़चाळ ।

धैंड—देखो 'धैंड़' (रू.भे.)

धैंडियो, धैंडौ—देखो 'धैंड' (अल्पा., रू.भे.)

धैंधंगर, धैंधिगर, धैंधींग, धैंधींगड़, धैंधींगर, धैधींग, धैधींगर-सं०पु० [देश०] १ हाथी, गज (अ.मा.)

उ०—धैधींगर कदम आवळा धरतो । झड़ वरसात जेम मद झरतो । सुज आयो जळ पीवण सरतो । करणी जूथ बीच सुख करतो ।

—र.ज.प्र.

२ सांप, नाग (अ.मा.)

वि०—१ बड़े डील-डौल वाला, भीमकाय, प्रचण्डकाय ।

उ०—पखरिया है पड़ै, ढहै ढैंचाळ धैधींगर । जीण साळ ऊगई, पड़ै सुहड़ा पंचाहर ।—गु.रू.बं.

२ जबरदस्त, महान शक्तिशाली । उ०—जाड़ा तोड़ केवियां जलाला नाठ आडा जीत, धूंकळां विभाड़ा धीट अरंदा धैधींग, चौगणां अवाड़ा हूं राजंद कुळां आव चाड, सांमध्रमी अहाड़ा सवाई भीमसिंघ ।—अमरसिंघ सीसोदिया री गीत

रू०भे०—धंधींगर, धंधीगर, धेधंग, धेधिंगर, धेधींगड़, धेधींग, धेधींगर, धेधीग, धेधीगर, धैंधींगर, धोंधीगर, धोधीगर ।

धैनव-वि० [सं०] गाय से उत्पन्न ।

सं०स्त्री०—गाय ।

धैळ—देखो 'धोळियौ' (मह., रू.भे.)

धैस—देखो 'दहल' (रू.भे.)

धैळियौ-सं०पु० [देश०] प्रायः पशुओं के लिए सानी पकाने का मिट्टी का बना बड़ा पात्र, मोटी हांडी ।

मह०—धैळ ।

धैलीजणौ, धैलीजबौ—देखो 'दहलणौ, दहलबौ' (रू.भे.)

धैलीजणहार, हारौ (हारी). धैलीजणियौ—वि० ।

धैलीजियोड़ौ, धैलीजियोड़ौ, धैलीज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

धैवत-सं०पु० [सं० धैवतः] संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर

रू०भे०—धईवत, धइवत । (डि.को.)

धेस—देखो 'धेख' (रू.भे.)

उ०—छावै आतंक आगरो, खापां न मावै अमावै खळां, धावै थावै अजांण लगावै चौड़ै धेस। ऊगां भांण नागवंसां माथै खगां राज आवै, दावै लागो पजावै फिरंगी वाळा देस।—गिरवरदांन कवियौ

धेह—देखो 'द्रह' (रू.भे.)

धोंकार, धोंकारि-सं०स्त्री० [अनु०] १ मादल, ढोलक आदि ताल वाद्यों की ध्वनि। उ०—१ राग छत्तीसे होवती जी, मादल ना धोंकार। नाटक विध बत्तीस ना जी, रंग विनोद अपार।—जयवांणी

उ०—२ संख तणै ओंकारइ, तिविल तणै दोंकारि, मादळ तणै धोंकारि।—व.स.

२ धनुष की प्रत्यञ्चा, धुनकी आदि से होने वाली ध्वनि।

उ०—झूझंता गयवर गडि गाजइं, धुणह तणा धोंकार। सूंडादंडि ऊपाडी नइ उलाळइ असवार।—विद्याविलास पवाडउ

रू०भे०—धुंकार, धुकार, धूंकार, धूंकारव, धूकार, धूकारव, धोऊंकार, धोकार, धौंकार, धोकार।

धोंधीगर—देखो 'धेधींगर' (रू.भे.)

उ०—गंग पाप नहिं गमैं, धौसै धर भार मिणंधर। धोंधीगर धुर धमळ, भार नहिं खींचै भूसर।—चौथ विठू

धो-सं०पु० [?] १ धर्म. २ सागर, समुद्र. ३ शकट। ४ अर्थ. ५ वृषभ, बैल (एका.)

वि०—सुखद (एका.)

धोअणौ, धोअबौ—देखो 'धोणौ, धोबौ' (उ.र.)

धोऊंकार—देखो 'धोंकार' (रू.भे.)

उ०—सू इसी भांति नर नांमै कोई पंखी ही जावण पावै नहीं, इसी तालब खांनी मंडै छै, धोऊंकार पड़ि रहै छै।—सयणी री वात

धोक-सं०पु० [देश०] नमस्कार, प्रणाम।

उ०—१ उठै गयां मिळै अन आदर, धौळहरा अळगां सूं धोक। पयावर रा झूंपा कांटाळा, ले विसरांम वटाऊ लोक।

—कविराजा बांकीदास

उ०—२ आ काठां चढ़सी अवस, धरणीधर दे धोक। सठ मन मांनै सुधरसी, पातर सूं परलोक।—बां.दा.

२ धव वृक्ष (शेखावाटी)

रू०भे०—धोख।

अल्पा०—ढोक, धोकड़ी, धोकड़ो।

धोकड़-सं०स्त्री०—तराजू की वह स्थिति जो तोली जाने वाली वस्तु की ओर झुके, नमन। उ०—देतां अधपाव घड़ी, लेतां धोकड़ पाव री। साहुकार पुत्र कहीजै, बाजारां बैठा वावरी।—अज्ञात

धोकड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'धोक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—कड़ी आसरां जड़ी आछी, रिपिया लगै न रोकड़ी। मुरधर दांनी देव थांनै, करसा देवै धोकड़ी।—दसदेव

धोकड़ौ—देखो 'धोक' (अल्पा., रू.भे.)

धोकणौ, धोकबौ-क्रि०स० [सं० ढौकृ गतौ] नमस्कार करना, प्रणाम करना। उ०—भैरूंजी, पीवरियै रै मांय थरपूं देवळो। हूं आवती नै जावती थांनै धोकसूं। भैरूंजी, अेक अरज म्हारी हेलो सांभळो।

—लो.गी.

धोकणहार, हारो (हारी), धोकणियौ—वि०।

धोकवाड़णौ, धोकवाड़बौ, धोकवाणौ, धोकवाबौ, धोकवावणौ, धोकवावबौ, धोकाड़णौ, धोकाड़बौ, धोकाणौ, धोकाबौ, धोकावणौ, धोकावबौ—प्रे०रू०।

धोकिओड़ौ, धोकियोड़ौ, धोक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धोकीजणौ, धोकीजबौ—कर्म वा०।

ढोकणौ, ढोकबौ, धूकणौ, धूकबौ, धोखणौ, धोखबौ—रू०भे०।

धोकरणौ, धोकरबौ-क्रि०अ० [देश०] १ गरजना।

क्रि०स० [देश०] २ दहलाना।

धोकरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गरजा हुआ।

२ दहलाया हुआ।

(स्त्री० धोकरियोड़ी)

धोकार—देखो 'धोंकार' (रू.भे.)

धोकियोड़ौ-भू०का०कृ०—नमस्कार किया हुआ, प्रणाम किया हुआ।

(स्त्री० धोकियोड़ी)

धोकेबाज-वि० [राज० धोकौ+फा० बाज] धोखा देने वाला, कपटी, धूर्त।

रू०भे०—धोखेबाज।

धोकेबाजी-सं०स्त्री० [राज० धोकौ+फा० बाज+रा०प्र० ई] छल, कपट, धूर्तता।

रू०भे०—धोखेबाजी।

धोकौ-सं०पु० [सं० धूकता=धूर्तता] १ किसी को कर्तव्यच्युत करने के लिये की जाने वाली युक्ति या चालाकी, दूसरे को भ्रमित करने के लिये किया जाने वाला छल या धूर्तता, दूसरे के मन में झूठी प्रतीति पैदा करने के लिये किया जाने वाला झूठा व्यवहार, भुलावा।

उ०—१ मणि बंधन नंधा बंधन बंधा अंधाधुंध अणंदा है। धूरत दे धोका बोड़ा बोखा, चोखा रस चाखंदा है।—ऊ.का.

उ०—२ मोडां मांनो रे रांम का मारचां। बूडो मत विनां विचारचां। भजन करै बुगला भगती सूं, पास बैठावै प्यारचां। धोकौ दे दिन रा धीजावै, आथण रा असवारचां।—ऊ.का.

मुहा०—धोकौ देणौ—धोखा देना। भुलावा देना। भ्रम में डालना। वुत्ता देना, छलना।

यौ०—धोका-घड़ी, धोकेबाज।

२ वह भ्रांति जो किसी दूसरे के कपट या छल द्वारा हुई हो, डाला हुआ भ्रम, वह झूठा विश्वास जो किसी की चालाकी से उत्पन्न हुआ

[illegible] जे धोका राखै न दगौ, धोखा सब ही कोय। जे धोखा राखै हिया, धोखा मुक्का न होय।—केहर प्रकास

उ०—२ [illegible] गोविन्द [illegible] जिण री पर सोचै। धोखै प्रभ-[illegible] विश्व [illegible]।—केहर प्रकास

मुहा०—धोखो खाणो— किसी की धूर्तता को न समझ सकने के कारण प्रवंचित होना, किसी के छल या कपट के कारण भ्रम में पड़ना, ठगा जाना।

३ मौके को हाथ से खोकर अनुकूल परिस्थिति का फायदा न उठा सकने के कारण होने वाला पश्चाताप।

उ०—१ मुझै पदमणी मनरी सरखी लागिया—जे उणरै मरोनै इतरा दिन निरफळ गया। सो एक बटेरी पो लागु पड़ी—मोटो सर-दार नै, मैं इणरी चरची देवै छै सो ना'रा पग देवौ। गोठ करो। तद सेई सगळे लागिया—जे आवता दिन बैठा रहिया तिण रा धोका मारै छै।—धमरसिंघ राठौड़ री वात

उ०—२ 'करणा' री 'जसवत' कियो, धीरज राज कुरब्ब। मन जिण धोखो ले मुवा, नाह दिलेस नवाब।—डा. करणीदान बारहठ

उ०—३ खोन दियां मूं मार मिळै कोई धोखो हिये न धारो। मूंक मोर पधरावै मोटी नदि मौसी निरधारो।—ऊ.का.

मुहा०—१ धोखा खाणा—सुश्रवसर को खो देने से मन में पश्चाताप उठना. २ धोखा करणा—सुश्रवसर को खो देने से होने वाली हानि का विचार करना, पछताना।

४ प्रयासर समाप्त होने, नष्ट होने अथवा मरने से अथवा किसी वस्तु के अभाव से होने वाला असन्तोष, मन को पहुंचने वाला धक्का, दुःख, शोक। उ०—नाजां वाजी सुरन निचायो, मिळै दांन सत दुवां मद। भेट हुवो मेंहु जसो मावजगो, कूरम धोको मूझ कद।—बां.दा.

५ वह भावना जो किसी प्राप्त दुःख व भावी दुःख की आशंका से हो, चिंता, सोच, फिक्र। उ०—धीरज राख मती कर धोको, सोच विया सी सरज सरै। जात चोरासी लाख जीवां री, कामाहार प्रणाम करै।—भीखजी रतनू

६ भुलावा देने की भावना, कपट करने की वृत्ति, छल, कपट।

उ०—जे धोका राखै न दगौ, धोखा सब ही कोय। जे धोखा राखै हिया, धोखा मुक्का न होय।—केहर प्रकास

७ वह अनुचित धारणा जो किसी वस्तु के बाहरी रूप-रंग आदि से उत्पन्न हुई हो, ठीक ध्यान न देने के कारण होने वाली मिथ्या प्रतीति, भ्रांति, भ्रम।

ज्यूं—मारवाड़ री सुनारां सूं धमणी रो धोको हुं गयो।

मुहा०—धोखो खाणो—और का और समझना, भ्रांत होना, भ्रम में पड़ना।

८ ऐसा आयोजन, विषय या वस्तु जिससे भ्रांति उत्पन्न हो, भ्रम में डालने वाली वस्तु, माया।

उ०—प्रगट नहीं यह प्रभु दिखाता, अद्भुत मोह बनाया है। यह मुलराज मिथ्या सब धोखा, जीवन मुक्ति पाया है।

—श्री मुलरामजी महाराज

९ जानकारी का अभाव, अज्ञान।

ज्यूं— धोखै सूं थारै गुनो रो पड़ो लागो है, माफ करो।

१० अनिष्ट की सम्भावना, मरने की आशंका।

उ०—धणी वड जुधां धमचार मडावता, कमट दस वार फणरां मगोबा। हवै धमचार जिण वार 'मारण' हर, भावतां पड़ै दस वार धोका।—प्रमरसिंघ सीसोदिया री गीत

ज्यूं— इण काम में जांन जावण री धोको है।

मुहा०—धोको उठाणो—सावधान न रहने के कारण नुकसान सहना।

११ जैसा कहा जाय उसके विरुद्ध होने की आशंका, शक, संशय।

ज्यूं—सिवजी समेत कैलास परवत नै रावण आपरी भुजावां री ताकत सूं उठाय लियो। पंडितां री आ वात धोकै री हुं सकै।

१२ भय, डर, भीति। उ०—जंगी हुवां गजां भड़ां गहलां जड़ै, नाकुरां तिरारो धीह धूंसा कड़ै। धोमणा धमळ कर हुणरा सहलां चडै, 'पता' हर रुप नग भरद धोका पड़ै।

—महोकमसिंघ (किसनगढ़) रो गीत

१३ त्रुटि, चूक, भूल।

ज्यूं—जितरो काम मैं करतां उण में धोको नहीं हुंवा। इतरो देख'र कांम कियो तोई धोको हुं गयो।

रू०भे०—धोखो।

धोका-घड़ी—सं०स्त्री०यौ०—धूर्तता, चालाकी।

रू०भे०—धोखाघड़ी।

धोकायती—वि० [राज० धोकौ+स०प्र० आयती] १ धोखेबाज, छली, कपटी. २ जबरदस्त। उ०—रोस रढ वंबी आयांण रोकायती, सबै मोहायती समर भर खेळ। धार महाराज धर तंत धोकायती, पळ विचळ हुआ भोकायती पेळ।—महादान महडू

रू०भे०—धोखायती।

धोल—देखो 'धोक' (रू.भे.)

उ०—जठै मार मार कर तरवार री भाट दीधां। क्रमळ री राजा कमळ री ज कीधां। धोल करण देवां रा महाधो ज्यों परियो। काम देवां री बडगांव मंदिर जिको ज्यों करियो।—केहर प्रकास

धोखणी, धोखबो—देखो 'धोकणी, धोकबो' (रू.भे.)

उ०—बांकम तन धर बगस बिजाई, महि मारगा सोदरा अहमंद। मांडा चंद जठै सो मांडो, धाड़ोवा धोखै नवचंद।

—महाराजा मानसिंह, जोधपुर री गीत

धोखियोड़ो—देखो 'धोकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धोखियोड़ी)

धोखेबाज—देखो 'धोकेबाज' (रू.भे.)

धोखेबाजी—देखो 'धोकेबाजी' (रू.भे.)

घोखो—देखो 'धोको' (रू.भे.)

उ०—१ पसरै तीनों लोक में, लिपत नहीं धोखे। सो फळ लागै सहज में, सुंदर सब लोके।—दादू वांणी

उ०—२ सकजो न कोइ मो सारिखो, वहु मूरख गरवै वकै। धरम सीख धारि धोखो म धार, जीती कुरण जाइ सकै।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ असतखांन मन धोखो आयो। लोभ विना दुख वाग लगायो। असुरां तरां उकत उपजाई, वाता लालच तरणी वताई।—रा.रू.

उ०—४ कुहाड़ां मार जिहाज वटका करै, धरि सारां धरै मेट धोखो करां खग तोल मुख वोल कहियो करण, जितै ऊभो इतै नहीं जोखो।—ह.दा.

धोड़—१ देखो 'धोड़' (रू.भे.)

उ०—१ गाजै त्रंवाळां निहाव घाव पिनाकां भणंकै गांण, धारियां उनाग खाग खत्री ध्रंम धोड़। दूठ जसो हुओ हेक आविया दक्खरणी दळां, रांग दळां आडो कोट सारंभै राठोड़।—दांनो बोगसो

उ०—२ धूंरणै भुज खग धोड़, पांण दियै मूंछां परै। रण जूं भो राठोड़, विजड़ हथो फिर वोलियो।—पा.प्र.

उ०—३ कहै पातसाह पत्ता दो कूंची, घर पलटचां न कीजै धोड़। गढ़पत कहै हमैं गढ़ माहरो, चूंडा हरो न दियै चीतोड़।

—रावत पत्ता चूंडावत (आंमेट) री गीत

२ देखो 'धोड़ो' (मह., रू.भे.)

धोड़ो—वि० [सं० धाटी] १ वीर, वहादुर।

उ०—नीभड़ थट लास जरदार कारज नको, जमी छत्रधर सको गरथ जोड़ो। वसावण सुरग घड़ मोड़ विसरांमियौ, धसावण लोड रजपूत धोड़ो।—आउवै ठाकुर कुसळसिंघ री गीत

२ डाकू, लुटेरा।

३ देखो 'धोडो' (रू.भे.)

(मह० धोड़)

धोटी—देखो 'ढोटी' (रू.भे.)

धोटौ—देखो 'ढोटो' (रू.भे.) (डि.को.)

धोडो-सं०पु०—१ प्रवाह, धारा।

उ०—घटा लूंब आई। पांणी री धमचोळां पड़ै छै। तिण में धोड़ा खड़ै छै। (पाघां रा रंग रा धोडा उतरिया छै। जांणै सांवठा वींदां केसरिया किया छै। सायजादा वना, छोगाळा पना इण तरै सैहर में छौळां करता आया है।—पनां वीरमदे री वात

२ बड़ा काला कौवा।

रू०भे०—धोड़ो।

धोणो, धोबो-क्रि०स० [सं० धावनम्] १ पानी आदि तरल पदार्थ डाल कर किसी वस्तु को साफ करना, प्रक्षालित करना, स्वच्छ करना।

ज्यूं—कपड़ा धोणा, हाथ धोणा, बाजोट धोणो।

उ०—१ छींपा ! तुं छांनु रहै, घडी म घातिसि पोत। कोइलिनी परि कुहु कुई, धोबी ! म धोइसि धोति।—मा.कां.प्र.

उ०—२ जे कठड़ै ओ भैरव कठड़ै ओ किया सिरणगार। कठड़ै ओ भैरव कठड़ै धोया धोतिया।—लो.गी.

यौ०—धोयो-धायो।

मुहा०—१ हाथ धोणा—किसी वस्तु से हाथ धोना, खो देना, गँवा देना, वंचित रह जाना. २ हाथ धोय नै लारै पड़णो—हाथ धोकर पीछे पड़ना। सब छोड़ कर लग जाना, प्रवृत्त होना।

२ दूर करना, हटाना, मिटाना। उ०—वीर होइ धरणी वळवंड, तेह सैन्य धरणी भुजदंड। राजचिन्ह जणमेलु जोईइ, एकलै समरि पाप धोइयइ।—विराटपर्व

धोणहार, हारौ (हारी), धोणियौ—वि०।

धोयोड़ौ—भू०का०कृ०।

धोईजणौ, धोईजबौ—कर्म वा०।

धूणौ, धूबौ, धोवणौ, धोवबौ, धोवणौ, धोवबौ—रू०भे०।

धोत, धोतड़—देखो 'धोती' (मह., रू.भे.)

धोतपड़णो-सं०पु० [देश०] तालाब या नदी के पानी का ऊपर से गिरने की क्रिया या भाव।

धोतपट्ट-सं०स्त्री० [सं० अधोपट] पुरुष के पहनने का अधोवस्त्र, धोती।

उ०—पुस्पागर जादर मेघाडंबर नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट गजवडि हंसवडि वोरिआवडी ऊमावडि।—व.स.

धोति—देखो 'धोती' (रू.भे.)

उ०—सीलू थांन घरण मुगटा, अनेक जाति नी पाघडी, पोति धोति प्रमुख पांच वरण्ण वागा पहिराव्या।—व.स.

धोतियो—देखो 'धोती' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ आदमी धोतियो पकड़ै तौ पोतियो बिखर जावै अर पोतियो संभाळै तौ धोतियो खुल जावै।—रातवासो

उ०—२ हां रे वाला, इण सरवरिया री पाळ। जंवाई धोवै धोतिया जी म्हारा राज।—लो.गी.

धोती-सं०स्त्री० [सं० अधोवस्त्र] १ पुरुष के कटि से घुटनों के नीचे तक तथा स्त्रियों का प्राय: सर्वांग ढकने का नौ-दस हाथ लम्बा और दो-ढाई हाथ चौड़ा वस्त्र जिसे कमर में लपेट कर खोंसा या ओढ़ा जाता है। उ०—सिखा फरहरती, उत्तरासंगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीऊं जनोइ, सिर भद्रिउं तिलक वधारिउं गायत्री साधनु।—व.स.

यौ०—धोती-जोड़ो।

मुहा०—धोती खोळी होणी—धोती ढीली होना। डर जाना, भयभीत होना।

अल्पा०—धोतियो।

मह०—धोत, धोतड़, धोतीड़, धोतो।

[सं० धौति] २ शरीर को भीतर और बाहर से शुद्ध करने के लिए की जाने वाली हठयोग की एक क्रिया।

वि०वि०—घेरंडसंहिता के अनुसार यह चार प्रकार की होती है। अंतर्धौति; दंतधौति; हृद्धौति और मूलशोधन। अंतर्धौति के भी

चार भेद हैं—वातसार, वारिसार, वह्निसार और बहिष्कृत। वातसार में मुंह को कौवे की चोंच की तरह सिकोड़ कर हवा खींच कर पेट में भरते हैं और फिर मुंह से निकालते हैं। वारिसार में गले तक पानी पी कर अधोमार्ग से निकालते हैं। वह्निसार में नाभि को खींच कर और पेट को दबाकर नाभि को सौ बार मेरुदंड (रीढ़) से लगाया जाता है। बहिष्कृत में कौवे की चोंच की तरह मुंह करके पेट में हवा भरते हैं और उसे चार दंड तक रख कर अधोमार्ग से निकालते हैं। इसके पीछे नाभि तक जल में खड़े होकर आंतों को बाहर निकाल कर मल धोते हैं और फिर उन्हें उदर में स्थापित करते हैं। दंतधौति भी पांच प्रकार की होती है—दंतमूल, जिह्वामूल, रंध्र, कर्णद्वार और कपाल रंध्र। रंध्र धौति में नाक से पानी पीकर मुंह से और मुंह से खींच कर नाक से निकालना पड़ता है। इसी प्रकार और भी शुद्धियों को समझिए। ३ आंतें शुद्ध करने की योग की एक क्रिया जिसमें चार अंगुल चौड़ी और पन्द्रह हाथ लम्बी कपड़े की धज्जी मुंह से पेट में धीरे उतारते हैं, फिर पानी पीकर उसे धीरे-धीरे बाहर निकालते हैं। इस क्रिया से आंतें शुद्ध हो जाती हैं. ४ कपड़े की वह लंबी धज्जी जो योग की क्रिया में काम आती है।

रू०भे०—धोति, धोवती, धोत, धौति, धोती।

धोतीड़—देखो 'धोती' (१) (मह., रू.भे.)

धोती-जोड़ो—सं०पु०यौ०—दो धोतियों का लम्बा वस्त्र जो बीच में से जुड़ा हुआ रहता है।

धोतो—सं०पु०—देखो 'धोती' (मह., रू.भे.–अल्पार्थक)

उ०—१ तपू भल जिम धनिनाथ गु नाथं। समै तेणि दासातन माथं। जतिम गिनान करावै भांणे। पीतांबर धोता वर पांणे।

—सू.प्र.

उ०—२ बैंगला बोजणियां बंधणा विगताऊ। लट्ठै धोतां रा गुंजा लटकाऊ। गांवां गांवां री पोतड़ियां छूटी। ऊंनी लोवड़ियां बगलां में छूटी।—ऊ.का.

धोधर—सं०पु० [देश०] ठोठी।

धोधा—सं०स्त्री० [देश०] क्षत्रियों का एक वंश।

उ०—धारै बापू री धरती रा धणी धोधा हुवा, यु धाधड़ी नगरी धोधो करनराव करै छै।—नैणसी

धोधीगर—देखो 'धंधीगर' (रू.भे.)

धोधो—सं०पु० [देश०] 'धोधा' वंश का क्षत्री।

धोन—देखो 'धोव' (रू.भे.)

धोरटो—सं०पु० [देश०] जहां खूब भोजन मिले, दावत।

धोरणो, धोरबो—क्रि०स० [देश०] डराना, धमकाना.

२ देखो 'धोणो, धोबो' (रू.भे.)

धोरणहार, हारी (हारी), धोरणियो—वि०।

धोरियोड़ो, धोरियोड़ो, धोर्योड़ो—भू०का०कृ०।

धोरीजणो, धोरीजबो—कर्म वा०।

धोवाड़णो, धोवाड़बो—१ देखो 'धोवाणो, धोवाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'धुवाणो, धुवाबो' (रू.भे.)

धोवाड़णहार, हारी (हारी), धोवाड़णियो—वि०।

धोवाड़ियोड़ो, धोवाड़ियोड़ो, धोवाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

धोवाड़ीजणो, धोवाड़ीजबो—कर्म वा०।

धोवाड़ियोड़ो—१ देखो 'धोवायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'धुवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धोवाड़ियोड़ी)

धोवाणो, धोवाबो—क्रि०स० ['धोवणो' क्रिया का प्रे०रू०] १ डांट दिलवाना, डरवाना।

२ देखो 'धुवाणो धुवाबो' (रू.भे.)

धोवाणहार, हारी (हारी), धोवाणियो—वि०।

धोवायोड़ो—भू०का०कृ०।

धोवाईजणो, धोवाईजबो—कर्म वा०।

धोवाड़णो, धोवाड़बो, धोवावणो, धोवावबो—रू०भे०।

धोवायोड़ो—भू०का०कृ०—१ डांट दिलवाया हुआ, डरवाया हुआ.

२ देखो 'धुवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धोवायोड़ी)

धोवावणो, धोवावबो—१ देखो 'धोवाणो, धोवाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'धुवाणो, धुवाबो' (रू.भे.)

धोवावणहार, हारी (हारी), धोवावणियो—वि०।

धोवावियोड़ो, धोवावियोड़ो, धोवाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

धोवावीजणो, धोवावीजबो—कर्म वा०।

धोवावियोड़ो—१ देखो 'धोवायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'धुवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धोवावियोड़ी)

धोवियोड़ो—भू०का०कृ०—१ डराया हुआ, धमकाया हुआ.

२ देखो 'धोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धोवियोड़ी)

धोव—सं०स्त्री०—१ धोये जाने की क्रिया, धुलाई.

२ देखो 'दोव' (रू.भे.)

धोबण—सं०स्त्री०—१ कपड़े धोने वाली स्त्री.

२ धोबी जाति की स्त्री.

३ एक पक्षी विशेष।

धोवणो, धोवबो—देखो 'धोणो, धोबो' (रू.भे.)

उ०—केस जरा धोवण करै, धोळा ग्रनही धोय। अंतक रांगे रंगना, हाथ न मैला होय। —बां.दा.

धोवियोड़ो—देखो 'धोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धोवियोड़ी)

धोबी—सं०पु० [सं० धावक] (स्त्री० धावण) १ कपड़े धोकर अपनी

जीविका चलाने वाला, कपड़े धोने का कार्य करने वाला.

२ एक जाति या इस जाति का व्यक्ति। इस जाति के व्यक्ति प्रायः धुलाई का कार्य करते हैं (डिं.को.)

पर्याय०— गंजी, धावक, रजक।

मुहा०—धोबी री कुत्तौ घर री न घाट री—जो एक स्थान पर जम कर कार्य नहीं करे, इधर-उधर भटकने वाला।

धोबीघटी, धोबीघाट, धोबीघाटी-सं०पु० [सं० धावक घट्ट] वह स्थान जहां धोबी कपड़े धोते हैं। उ०—चमकती छटा लख श्रटा सु-घटा चतुर, याद कज घटा मोह ग्रटकै। जिकै धोबीघटा तणा दुपटा जुही, पेख काळी घटा जटा पटकै।—सुभरांम बारहठ

धोबीपछाड़-सं०स्त्री०—कुश्ती का एक पेच जिसमें जोड़ का हाथ पकड़ कर अपने कंधे की ओर खींचते हैं और कमर पर लाद कर चित्त गिरा देते हैं। उ०—सूर-सस्त्र खूटघा सकळ, धुंसै, धुंसै धाड़। पिसणां फ़ेर पछाड़िया, पर दे धोबीपछाड़।—रेवतसिंह भाटी

धोबौ-सं०पु० [सं० द्विवाहु ?] १ दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ खाली स्थान या गड्ढ़ा जिसमें किसी वस्तु को रखी या भरी जा सके, दोनों हथेलियों को मिला कर बनाया हुआ संपुट, अंजली।

२ अंजली में समा सके उतना पदार्थ।

उ०—१ धोबौ मूठी धांन, मांगे ज्यांनै ना मिळै। पर काढ़े पकवांन, ना ना करतां नाथिया।—अज्ञात

उ०—२ बीजोड़ां नै, श्रे मा, धोबां-धोबां खांड, बाई नै दीनी सासू चिमठी लूण री। बीजोड़ां नै, श्रे मा, चरी-चरी घीव, बाई नै दीनो श्रे सासू डोरौ तेल रौ।—लो.गी.

उ०—३ धोबां धोबां धूड़ वगावौ श्रमलां बांसै। मती लगावौ मैल सैल मन धरौ न सांसै।—ऊ.का.

मुहा०—धोबां धोबां—बहुत अधिक।

रू०भे०—धूबौ।

धोमंग—देखो 'धूमंगर' (रू.भे.)

धोम-सं०पु० [सं० धूमः या धौम] १ अग्नि, आग (ना.डिं.को.)

उ०—सौन चख विनाय एक मिरजा सकळ, धोम चख सहत एराक धीठौ। दिली रा समंद बिच देख मुकनौ दुरद, दंताळा दुरद जिम कमध दीठौ।—नीवाज ठा. अमरसिंघ ऊदावत री गीत

यौ०—धोमझळ, धोमझाळ।

२ वायु, हवा। उ०—गाजतै चलै राकसूं का दरसाव। धमण से धोम फीफरू का फुलाव।—सू.प्र.

३ तोप। उ०—धड़हड़ै धोमां रव्व चरख धोम। बणि धोम अंधारव गोम वोम।—सू.प्र.

४ तोपों, बन्दूकों आदि की ध्वनि। उ०—सळकता बकतरां मच्छ तोपां खड़ी, धोम सुण हियै काचां चढ़ी धड़धड़ी। घणा नर श्रौछटै विखम वागी घड़ी, तिकण पुळ 'अमर' चढ़वा दुरंग तेवड़ी।

—नीवाज ठा. अमरसिंघ ऊदावत री गीत

५ कोप, क्रोध (डिं.को.)

६ देखो 'धूम' (रू.भे.)

उ०—धड़हड़ै धोमां रव चरख धोम। बणि धोम अंधारव गोम बोम।—सू.प्र.

वि०—१ जबरदस्त, बड़ा, महान्। उ०—१ गोहिलां री बडौ धोम राज।—नैणसी

उ०—२ कातिग सुर नांम दियउ ब्रह्मादिक, राजै अचळ अचळ जग रिद्ध। दइत तणउ सिंहासण डिगियउ, कोई धोम प्रगटिश्रो वडसिद्ध।

—महादेव पारवती री वेलि

२ प्रचण्ड, तेज।

धोमझळ, धोमझाळ-सं०स्त्री०यौ० [सं० धूमः+ज्वाला या धूमज्वाला] अग्नि, तेज आग। उ०—१ होम तन करण नृप 'अमर' साथै हलौ, मेड़तण धोमझाळ पट तणै माह।—रांमकरण महडू

उ०—२ मेछां धड़ां अभनमौ 'मांडण', सांकळगी पुळगी सबळ। बटका होय कटका बांणासां, झटकां भटकै धोमझळ।

—केसोदास गाडण

धोमपात्र-सं०पु० [सं० धूम+पात्र] धूपदानी।

उ०—धोमपात्र कलिधूत धरावै। धूणी चंदण अगर धुकावै।—सू.प्र.

धोमबांण-सं०स्त्री० [सं० धूमः+बाण] एक प्रकार की तोप।

उ०—दगै तोप वळ दहूं, उडै गोळा झळ आतस। धोमबांण धड़हड़ै, पड़ै सायक झड़ पावस।—सू.प्र.

धोममारग—देखो 'धूममारग' (रू.भे.)

धोमर-सं०पु०—१ एक राक्षस, भस्मासुर।

उ०—देवी भूतड़ां अम्मरी बीस भूजा, देवी त्रीपुरा भैरवी रूप तूजा। देवी राखसं धोमरे रक्त रूती, देवी दुरज्जटा विक्कटा जम्म-दूती।—देवि.

२ धूम, धुआं।

उ०—वड्डा वड्डा गोळा वज्जर। धू आंधार उवंदा धोमर। श्रारब्बी असमांन अवादर। गड़ड़ नाळि अण गाळिक अंबर।—गु.रू.बं.

धोमरिख-सं०पु० [सं० धूम+ऋषि] पराशर ऋषि का एक नाम।

उ०—आतस घोर अंधार मैं, सोर घोर माची सघण। धोमरिख जांण धूंहर रचै, जोजन गंध्रा रित रमण।—गु.रू.बं.

वि०वि०—ऐसी किंवदंती प्रचलित है कि पराशर ऋषि को एक बार धीवर कन्या मत्स्यगंधा अकेली नदी पार लेजा रही थी। उसकी सुन्दरता पर मोहित होकर ऋषि ने उसके साथ रमण करने की इच्छा व्यक्त की। कन्या शाप के डर से राजी हो गई किन्तु उसने कहा इस समय दिन है। इस पर ऋषि ने अपने योग बल से वहां कोहरा पैदा कर के अंधेरा सा कर दिया और उसके साथ रमण किया जिससे वेदव्यास पैदा हुए। कोहरा पैदा करने के कारण ही पराशर ऋषि को राजस्थान में धोमरिख कहा जाता है।

रू०भे०—धोमारिकव।

धोमानळ-सं०स्त्री० [सं० धूमानल] आग, अग्नि।

उ०—दरजड हुवै गई धोमरख, कर देवरा मानै मह नाव। गई गई कदर्ई नहीं मह, तद पावो मरणो ना जाव।—दुरसो आढ़ो

धोमरिक्ख—देखो 'धोमरिख' (रू.भे.)

उ०—जिर पलोगे गाम जिल नाम धोगे सुरगो। पड़िया धोमारिक्ख नाम धामर जिरगो।—मैंगनी

धोवग-संप्डु० [सं० धावनम्] १ धोना, साफ करने की क्रिया (ड.र.)

२ देखो 'धोवण' (रू.भे.)

धोयोड़ी-भू०का०कृ०—१ पानी आदि तरल पदार्थ डाल कर साफ किया हुआ, प्रक्षालित किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।

२ दूर किया हुआ, हटाया हुआ, मिटाया हुआ।

(स्त्री० धोयोड़ी)

धोयौ-धायौ-वि०यौ०—१ साफ-सुथरा, स्वच्छ. २ निष्कलंक।

धोरंमनाथ-संपु०—१ विष्णु का एक नाम.

२ इस नाम का एक तीर्थ-स्थान।

धोर—देखो 'धोरो' (मह., रू.भे.)

उ०—धीगा धीगा फोग, मुरट बुई बरसावै। मुरट आंगड़ी लुकै, गजब सेवा गरणावै। हरियो भरियो धान, ऊवरै सदा सतोलो। सर्व समान, धोर डिगना घन देवरा धोलो।—दसदेव

मुहा०—धोर फूटणा—महक फैलना, सुगन्ध फैलना।

धोरड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'धोरी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—कोरड़ियां कंटाळियां, धोरड़ियां चित धार। तोरड़ियां मेहा-तणी, बोरड़ियां बलिहार।—चोथ बीठू

धोरड़ो—देखो 'धोरो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—धान अंकुर ऊपर उगावै, भूल उठग रा रोलड़ा। धोरड़ा छिब करै धोगणी, हरिया लामा केलड़ा।—दसदेव

धोरडी-सं०स्त्री०—देखो 'धोरी' (अल्पा., रू.भे.)

धोरडो—देखो 'धोरो' (अल्पा., रू.भे.)

धोरण-सं०स्त्री० [सं० धोरणम्] १ घोड़े की सरपट चाल.

२ सवारी, यान (डि.को.)

धोरणि, धोरणी-सं०स्त्री० [सं० धोरणि: धोरणी] १ पंक्ति, कतार।

उ०—दाग धोरणि बिहुं पखि छूटइं, नाद नीसाणि तणै गुणि गूंबइं। घोरइं नीरविहि सिउं मही भाजइं, गूढ़ गयमर तणी गुडि गाजइं।
—विराटपर्व

२ परम्परा. ३ श्रेणी।

धोरणी—देखो 'धोरण्यो' (रू.भे.)

धोरणो, धोरब —क्रि०स०—पीटना, मारना।

धोरण्या-सं०स्त्री०—सीसोदिया वंश की एक शाखा।

धोरण्यो-सं०पु०—सीसोदियों की 'धोरण्या' शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—धोरणो।

धोराऊ—देखो 'धुराऊ' (रू.भे.) उ०—आज धोराऊ धरती धूंधळो, काळी कांठळ मेह धो। आज नै वरसै धरती मेहड़ा भीजै, तंदू री चोर धो।—लो.गी.

धोराळो-सं०पु० [सं० धोरणि:—रा० धोरो, आलुच्] १ वह कपड़ा जिस पर सुन्दरता के लिये कोर, गोटे आदि की पट्टियां लगाई गई हों.

२ कोर गोटे की बनी पट्टी। उ०—साळूड़ो साळूड़ो गोरी काई जिसी, मेह बिना भरती तरसै, मेहड़ो हूगण दै, साळू रे दिरावूं धोराळा, मेहड़ो हूगण दै।—लो.गी.

धोरिउ—देखो 'धोरी' (रू.भे.)

उ०—विसइ तंदणि धोरिउ उल्लसइ, सु भव पंकि पडमा जन तारि-सिइ। भरह संगु धरइ रळियांमणुउ, ध्वनि करी तिमपंचि सुहाम-णुउ।—जयशेखर सूरि

धोरियोड़ी-भू०का०कृ०—मारा हुआ, पीटा हुआ।

(स्त्री० धोरियोड़ी)

धोरियौ-सं०पु० [सं० धुर] १ कारणे में लकड़ी का बना हुआ वह उप-करण जिसमें धुर का छोर लगा रहता है। ये संख्या में दो होते हैं.

२ देखो 'धोरो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ बलूनी रोभी बिरले रूप, बैठोनी ऊभी कर बणाव। भरा नो हरियो मखमल ठाळ, धोरिया प्रगटै इमि प्रगणाव।—सांभ

उ०—२ सांभ सांड टोरड़ा टुळके, घर आवै ताज धोरिया। हाली खुशाळ टांग छोड़ता, गुणै बोरिया खोरिया।—दसदेव

धोरींधर—देखो 'धुरंधर' (रू.भे.) उ०—चाहुवांण कुळि जे धोरींधर, जांगड़ राज विवेक। तेडावी धीरमदे कुंअर, सिरि कीधउ अभिसेक।
—का.दे.प्र.

धोरी-सं०पु० [सं० धौरेय] १ बैल, वृषभ (डि.को.)

उ०—१ वचन सुणै तिण वार, तै धोरी मांगण तणो। नर कीधी नाकार, धूणे कांधी धोरड़ै।—गो.रू.

उ०—२ ज्यां रै ज्यो बेगड़ो, ज्यां रा सींग समंत। औ जूपै जिण रथ अकळ, सोही रण सोहंत।—बां.दा.

सं०स्त्री०—२ देखो 'धोरी' (अल्पा., रू.भे.)

वि०—१ अगुआ, मुखिया, प्रधान।

उ०—१ इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद, नमाए हैं ब्रिद आणंद विधाता। धोरी धरम को धीर धरा धर, ध्यांन धरै 'धरमसी' गुण ध्याता।
—ध.व.ग्रं.

उ०—२ सच्चा वे साहिब तूं ध्रम धोरी, शिवपुर सुख दे मैं थूं मोरी। समयसुंदर मन रंग रिसभ जी, आउ अगाड़ा फोज।—स.कु.

यौ०—धणी-धोरी।

२ भार उठाने वाला।

रू०भे०—धोरिउ।

धोरीयाव, धोरीयावो-सं०पु० [सं० धुर्+स्थान] खलिहान में प्रथम बार साफ किये हुए अनाज का ढेर।

वि०—श्रेष्ठ, बढ़िया।

धोरीधर-सं०पु० [सं० धुर्धर] बैल, वृषभ (ह.नां.)

घोरीभाव-सं०पु०यौ० [सं० ध्रुव+राज०भाव] सामान्य तौर पर स्थिर दर ।

घोरै-क्रि०वि० [देश०] १ पास, निकट, समीप ।

उ०—छाजै री बैठक बुरी, पर-छावण री छांय । घोरै रो रसियो बुरो, नित उठ पकड़ै बांय ।—अज्ञात

घोरौ-सं०पु० [सं० घोरणि: घोरणी] १ कोर, गोटे आदि की वह लंबी पट्टी या फीता जिसे शोभा के लिये स्त्रियों के पहनने के वस्त्रों पर लगाया जाता है । उ०—१ ग्वाळा, वगसिया, रेसमी कांचळियां, मलमल रा धोतिया, घोरां वाळा फेटिया, चौथै फेरै री चूनड़ियां, हींगळू री कूंपियां, सुरमे री डिबियां अर न मालम कांई कांई चीजां ठेट तक मारग में बिखरयोड़ी पड़ी ही ।—रातवासो

उ०—२ करहा रै गोडा गूगरा, गळ नै गूगरमाळ । बावेली ए जंवायां रै ढाल बंदूक । घोरा तो लागा रज री जांमकी ।—लो.गी.

२ मार्ग, रास्ता, पंथ ।

उ०—तजै मती तिरिया पितु, माता, छोडिन घोरो छोटा । धोती छोडि बनै मति धूरत, लेकर घोट लंगोटा ।—ऊ.का.

३ प्रवाह, लपट, लहर ।

उ०—१ सुगंध रै घोरै जोवन मद चुवंतो प्रेमातुर हुवंतो सुखां नूं साथै ले चवड़ा रो मारग टाळियो ।—र. हमीर

उ०—२ अतरां घोरां उड केसरं सूंधां कुमकुमां ।—बुधजी आसियो (मि० झोलो (३))

४ जीवन को प्रभावित करने वाली परिस्थिति, वातावरण ।

उ०—१ हमैं मयारांम नै जसां रंग राग मांणै छै, जकां नै इंद्र भी वखांणै छै । रंग-राग रो घोरो लागो छै । विरह रो झोलो भागो छै ।
—मयारांम दरजी री वात

उ०—२ राज विनां दिन रात, दुरंग जोधांणो दोरो । आप थकां ऊडतो, धुवै रंग-रागां घोरो ।—बुधजी आसियो

उ०—३ तुहकै तूर अमाळ, धोरां खंभायच धुवै । पोहचावण पूंछाळ, जांनै 'दलो' चढ़ियो जयो ।—गो.रू.

क्रि०प्र०—लागणो ।

५ पहाड़ी के आकार का (प्रायः पहाड़ियों से छोटा) वालू का ढेर, टीबा, भीटा, ढूह । उ०—जंगळ जंगळ में जूंनी जणियांणी । धोळा घोरां री धूनीं धिणियांणी । खोटै टोटै नग कणियां वीखरणी । माहव मोटै दुख जाटणियां मरणी ।—ऊ.का.

मुहा०—धोरा किण रा अहसांन राखै—टीवे किसके अहसान रखते हैं, चूंकि टीवे पर चढ़ते समय कठिनाई होती है किन्तु उतरा आसानी से जाता है अतः योग्य अथवा बड़े आदमी किसी का अहसान नहीं रखते हैं ।

६ खेत की रक्षार्थ खेत के किनारों पर ऊँची उठाई हुई भूमि, रेत से बनाई हुई दीवार, मेढ़. ७ जल-प्रवाह रोकने का बांध.

८ खेत में क्यारियों तक पानी पहुँचाने की नाली ।

उ०—नै एक मया आ छै जितरी हो सके मिनखां नूं खेती इमारत नूं खपावै, कारज चलावै, नेहर काटण में तळाव बांध मोरी राखणै, कुवा करणै में इतरी मदत घोरा बंधावण में करै ।—नी.प्र.

९ तट; किनारा ।

घोवण-सं०पु० [सं० धावनम्] १ वह तरल पदार्थ (प्रायः जल) जिसमें या जिससे कोई वस्तु धोई गई हो ।

उ०—काफरलां में साध गोचरी गया । एक जाटणी रै घोवण पिण वहिरावै नहीं । कहै—देवै जिसो पावै सो धोवण म्हांसूं पीवणी आवै नहीं ।—भि.द्र.

यौ०—घोवण-धावण ।

२ धोने की क्रिया या भाव । उ०—म्हैं तो जाऊं जळ जमना रै पांणी, थे आईजो उठै न्हावण नै । न्हावण करजो, धोवण करजो, वंसी री टेर सुणावण नैं, थे म्हारै घर आवो सांवरा, माखण मिसरी खावण नै ।—संत वाणी

३ कुछ जातियों में मृतक की भस्मी को कोई तीर्थ स्थान या नदी में डाल कर वहीं पर सम्बन्धियों को दिया जाने वाला भोज ।

रू०भे०—घोवन, घोवनू ।

घोवणी-सं०स्त्री० [सं० धावनिका] धोने का उपकरण (उ.र.)

घोवणो, घोवबो—देखो 'धोणी, धोबो' (रू.भे.)

उ०—१ कांन्ह कंवर सो वीरो मांगां, राई सी भोजाई । सांवळियो बहनोई मांगां, सोदरा बहन मांगां, हांडा घोवण फूफो मांगां, झाडू देवण भूवा ।—लो.गी.

उ०—२ बेरा वैरागर सागर सम सोभा, रीतो गागर लेई नागर तिय रोभा । धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै, जीवन संजीवन जीवन घन जोवै ।—ऊ.का.

उ०—३ अर अंगज रै आगै डोढ़ी पर आइ एक कपाट रै अंतर हालू नरेस नूं बुलाई वैर धोवण रै काज, इण रीति वरजियो—वं.भा.

घोवणहार, हारो (हारी), घोवणियो—वि० ।

घोवाड़णो, घोवाड़बो, घोवाणो, घोवाबो, धोवावणो, धोवावबो
—प्रे०रू० ।

घोविओड़ो, घोवियोड़ो, घोव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

घोवीजणो, घोवीजबो—कर्म वा० ।

धुपणो, धुपबो—अक० रू० ।

घोवती—देखो 'धोती' (रू.भे.)

उ०—१ म्हारो वनो विलायत जासी, वनड़ो नै ओळयूं आसी । वना जातां री पकड़ू घोवती, म्हांनै ल्यादो साचा मोती ।—लो.गी.

उ०—२ कर विन कूंची घर विन ताळा, सो खोलै जोगी मतवाळा । धरम घोवती ब्रह्म अचारा, औघट घाट न्हावै संत प्यारा ।
—स्री हरिरांमजी महाराज

घोवन, घोवनू—देखो 'धोवण' (रू.भे.)

उ०—स्वांत को सुसांति सांति सोवनूं करयो । धोवनूं न कौन ताहि रोब नूं परचो ।—ऊ.का.

धौंकियोड़ो—देखो 'धौंकोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धौंकियोड़ी)

धौंह-सं०पु० [सं० द्रोह] १ धोखा, दगा ।
उ०—पछै गुजरात मांहे गोड़ करै, कुरखो हुवो, मोरिमाहां में खबर हुई, देस सारै मेंवा हुवो, जैणसी खानो—खांनो नाठो, राजा सूं धौंह हुवो । इणी मांहळ में मनहीं मांग दोह मची ।
—जैतसी ऊदावत री बात
२ देखो 'द्रोह' (रू.भे.)

धौंहड़—देखो 'धूहड़' (रू.भे.)
उ०—गज मोट मोट उडि कोट गिर, धजर चोट सग धौंहड़ा । सब कोट ग गंड बाजा निडर, लाग कोट भक्ति लोहड़ां ।—सू.प्र.

धौंकणी-सं०स्त्री० [सं० ध्मा] १ बांस या धातु की एक नली जिससे लोहार, सोनार आदि आग फूंकते हैं, भाथी ।
२ देखो 'धमण' ।
रू०भे०—धूंकणी ।

धौंकणौ, धौंकबौ-क्रि०स० [सं० ध्मा=शब्दाग्नि संयोगयोः] अग्नि को प्रज्वलित करने के लिए भाथी द्वारा वायु का झोंका पहुचाना, अग्नि को दहकाने के लिए वायु का आघात पहुंचाना ।
धौंकणहार, हारौ (हारी), धौंकणियौ—वि० ।
धौंकियोड़ो, धौंकियोड़ो, धौंक्योड़ो—भू०का०कृ० ।
धौंकीजणौ, धौंकीजबौ—कर्म वा० ।

धौंकळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)
उ०—अजब साह अणपतियां, प्रगट दिखायो पांण । कणै दिन धौंकळ कस्या, कणै दिन आरांण ।—रा.रू.

धौंकळणौ, धौंकळबौ—देखो 'धोकळणौ, धोकळबौ' (रू.भे.)

धौंकळियोड़ो—देखो 'धोकळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धौंकळियोड़ी)

धौंकार—देखो 'धोंकार' (रू.भे.)
उ०—पंचगव्द वाजिन्न वाजइ सद्द । गल्यां पीतळ रजत तणा दमामउ धौंकार करइ सद्द ।—कां.दे.प्र.

धौंकियोड़ो-भू०का०कृ०—अग्नि को प्रज्वलित करने के लिये भाथी द्वारा वायु का झोंका पहुँचाया हुआ, भाथी से आग दहकाया हुआ ।
(स्त्री० धौंकियोड़ी)

धौंखळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)
उ०—धजबंधी सम धीर करै निति धौंखळा । काइम साज अजाद सदा पखी कळा ।—म.वि.

धौंखळणौ, धौंखळबौ—देखो 'धोकळणौ, धोकळबौ' (रू.भे.)
उ०—धौंखळै रिमां सम भट धजर, धुर मोहर चोसर धह । कर सूर मराहै इम कहर, कहै 'सूरजाळो' कह ।—सू.प्र.

धौंखळियोड़ो—देखो 'धोकळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धौंखळियोड़ी)

धौंखर, धौंखरक—देखो 'धमचक' (रू.भे.)
उ०—धणुमैं बांणी बाण धरा, उहां मनोरथ तीर । मोह अनेक धौंखर करै, कायर करै न धीर ।—ह.पु.वा.

धौंस—देखो 'धूंस' (रू.भे.)

धौंसर, धौंसौ—देखो 'धूंसौ' (रू.भे.) उ०—बजै गंगक धौंसर बजै, नोबति सबद निराट । मरमत संभु ढोल मप, घटै गयंदां घाट ।
- बगसीराम प्रोहित री बात

धौ-सं०पु०—१ देवता. २ धर्म.
३ तट, किनारा ।
सं०स्त्री०—४ वाणी. ५ धरती (एका.)

धौक—उदर (सिरोही)

धौकळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)
उ०—करै राज इम कमध, 'जसौ' छत्रपति जोधांणै । इतै दिल्ली कठियौ, सेव धौकळ पुरतांणै ।—सू.प्र.

धोकळणौ, धोकळबौ-क्रि०स० [देश०] १ युद्ध करना, लड़ाई करना ।
उ०—धोकळै रांण मेवाड़ धर, 'करण' साह चाकर कियौ । 'गजसिंघ' सिंघ सूरा सभा, इम तारा गढ़ आवियौ ।- सू.प्र.
२ ध्वंस करना, नष्ट करना ।
उ०—साटकी गढ़ धोकळै, गोळकूंडौ गाहटै । लागि लियो तेलणो, झाड़ि दळ दळ सग आहटै ।—सू.प्र.
३ प्रहार करना, मारना.
४ उत्पात करना, उपद्रव करना ।
धोकळणहार, हारौ (हारी), धोकळणियौ—वि० ।
धोकळिओड़ो, धोकळियोड़ो, धोकळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
धोकळीजणौ, धोकळीजबौ—कर्म वा० ।
धूंकळणौ, धूंकळबौ, धूंखळणौ, धूंखळबौ, धूकळणौ, धूकळबौ, धूखळणौ, धूखळबौ, धौंकळणौ, धौंकळबौ, धौंखळणौ, धौंखळबौ, धोकळणौ, धोकळबौ, धोखळणौ, धोखळबौ—रू०भे० ।

धोकळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ युद्ध किया हुआ, लड़ाई किया हुआ.
२ ध्वंस किया हुआ, नष्ट किया हुआ.
३ संहार किया हुआ, मारा हुआ.
४ उत्पात् किया हुआ, उपद्रव किया हुआ ।
(स्त्री० धोकळियोड़ी)

धोकार—देखो 'धोंकार' (रू.भे.) उ०—नाराजे कोमंडै, कर तीर उडै । धनंखे धोकार, भालोहै भंभार ।—गु.रू.बं.

धोखळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.) उ०—परा करै धोखळा, करै दमगळा कराळां । बैर पिता बीजरां, हणै गळ हणै हठाळां ।—सू.प्र.

धोखळणौ, धोखळबौ—देखो 'धोकळणौ, धोकळबौ' (रू.भे.)

धोखळियोड़ो—देखो 'धोकळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धोखळियोड़ी)

धोड़-वि० [देश०] रक्षा करने वाला, रक्षक ।

उ०—निहसिया जोध नीसांण घण नींधसैं, धार आंवाहि निरवाहि कुळ धौड़। पाट छळि जोवती तिसौ जुड़ियौ परब; रूक हथ पागड़ौ छांडि राठौड़।—राठौड़ सेखा दुरजनसालोत पातावत रौ गीत

सं०पु०—१ जिद्द, हठ।

उ०—मेवाड़ौ ओळभियौ, धारि यहौ मन धौड़। जोधपुरौ जीपै सदा, जुध हारै चीतौड़।—गु.रू.बं.

२ ध्वनि विशेष। उ०—अंत दिन लगन महूरति ऊपरि। धवळ मंगळ दळ हूं कळ धौड़। मीरां धड़ परणण कोमारीं। मारू 'रयण' बांधियौ मोड़।—दूदौ

रू०भे०—धोड़।

धौड़ैय-सं०पु०—वेग (अ.मा.)

धौत-वि० [सं०] १ धुला हुआ (डिं.को.) उ०—कुमकुमै मंजण करि धौत वसत धरि, चिहुरे जळ लागौ चुवण। छीणैं जांणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूळ गुण।—वेलि.

२ देखो 'धोती' (२, ३, ४) (मह. रू.भे.)

उ०—निज आठ जोग अभ्यास अहनिंस, सधै सुर घर जुगम रवि सस। करै रेचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठांम। असौ च्यार सुधार आसण, धौत वसती नीत धारण, करौ अेता कठण विधक्रम, सम राघव नांम।—र.ज.प्र.

धौति, धौती—देखो 'धोती' (रू.भे.)

धौप-सं०स्त्री० [देश०] १ जोश भरी वह आवाज जिससे भय लगे।

क्रि०प्र०—दैणी।

२ आतंक, भय, रौब।

क्रि०प्र०—राकणी।

३ तलवार, खड्ग।

रू०भे०—धोप, धौफ, ध्रोप, ध्रोफ।

धौपटणौ, धौपटबौ-क्रि०स० [देश०] १ उपद्रव करना, लूटना।

उ०—इतै खुरम आवियौ, साह परि सझि दळ सब्बळ। धर साहां धौपटै, खलक मंड पड़ै खळभळ।—सू.प्र.

२ अधिकार करना, कब्जा करना।

धौपट्टणौ, धौपट्टबौ—रू०भे०।

धौपटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उपद्रव किया हुआ, लूट-मार किया हुआ. २ अधिकार किया हुआ, कब्जा किया हुआ।

(स्त्री० धौपटियोड़ी)

धौपट्टणौ, धौपट्टबौ—देखो 'धौपटणौ, धौपटबौ' (रू.भे.)

उ०—धौपट्टै लीध धरत्ती। 'जिहंगीरै' आंण वरत्ती। वीरातन वागां जोड़ै। चांपा भुइ चढियौ चौड़ै।—गु.रू.बं.

धौपट्टियोड़ौ—देखो 'धौपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धौपट्टियोड़ी)

धौफ—देखो 'धौप' (रू.भे.)

धौम—देखो 'धूम' (रू.भे.) उ०—वधै वीर हाकां धाकां धौम गैणाग धूवै, पवंग जुधि मेळियौ दळां पहिलै। आप छळ बाप छळ सांमि छळ आवरां, 'गदाधर' खडगधर झूझि गहिलै।

—राठौड़ गदाधर जैमालोत, गिरधरदासोत रौ गीत

धौमधूज—देखो 'धूमधज' (रू.भे.) (ह.नां.)

धौमाळ-सं०स्त्री० [सं० धूम+आलुच्] अग्नि, आग।

उ०—उडि पड़ै पाट दिवाल, लगि लार पाथर लाल। धड़ड़ंत झळ धौमाळ, कड़ड़ंत वीज कराळ।—सू.प्र.

धौम्य-सं०पु० [सं०] एक ऋषि (महाभारत)

धौरंग-वि० [देश०] लहु-लुहान, क्षत-विक्षत।

उ०—वणि होळिका थंभ जुध वेरां। सिर पर बह झेलूं समसेरां। धार विहार अणी घट धौरंग। चुख चुख होय पड़ूं रिण चौरंग।

—सू.प्र.

धौरितक-सं०पु० [सं० धौरितकम्] घोड़े की पांच चालों में से एक।

धौळ-सं०पु० [देश०] १ शिर, मस्तक।

उ०—धारा पुड़ वेधि रंगे अहि धौळ। छिलै दहिराळ तणौ अति छौळ।—सू.प्र.

२ देखो 'धवळ' (मह., रू.भे.)

उ०—महीथळां, गढ़ां मचौळ, नर कोई होवै निबळ। धुर आयां विन धौळ, भार न खांचै भेरिया।—महाराजा बळवंतसिंघ रतलांम

३ देखो 'धौळौ' (मह., रू.भे.)

४ देखो 'धवळी' (मह., रू.भे.)

५ देखो 'धौळख' (मह., रू.भे.)

धौल-उभ०लिं० [अनु०] हाथ के पंजे का भारी आघात जो पीठ या सिर पर पड़े, थप्पड़, धप्पा।

धौळक—देखो 'धौळख' (रू.भे.)

धौलक—देखो 'ढोलक' (रू.भे.)

धौळकियौ—देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० धौळकी)

धौळकी—देखो 'धवळी' (रू.भे.)

धौलकी—देखो 'ढोलक' (अल्पा., रू.भे.)

धौळकौ—देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पूगां देस दसांण केवड़ा फूल वनां में, महकीजै मुळकाय धौळकौ आभ जिणां में। माळा बिरछां मांय घणेरा पंछी घालै, वन जांमूनां जेथ हंसला दिन दो मालै।—मेघ.

(स्त्री० धौळकी)

धौळख-सं०स्त्री० [सं० धवल] वह सफेद मिट्टी जिससे मकानों की पुताई होती है। उ०—धौळख रूप सरूप, धवळ माटी गारळी। कैंकळ काळै रंग, डागळां न्हांखण हाळी।—दसदेव

रू०भे०—धौळक।

अल्पा०—धौळौ।

(मह० धौळ)

धौरहर—[illegible] (रू.भे.)

धौर[illegible]—[illegible] [illegible] देखो, [illegible]।

धौ[illegible]—[illegible] [सं० [illegible]] वह बैल जिसकी जिह्वा [illegible]।

धौ[illegible]—[illegible] [सं० [illegible]] १ मकान आदि पोतने का पदार्थ, चूना.
२ मकान पोतने की क्रिया, पुताई।
क्रि०प्र०—[illegible]।

धोळणो, धोळबो—देखो 'धवळणो, धवळबो' (रू.भे.)
उ०—[illegible] धौळण मांडली, भीतां रा करो रे जतन। मद ममतां [illegible] [illegible], [illegible] मन [illegible]।—ठगारी
धोळणहार, हारो (हारी), धोळणियो—वि०।
धोळवाड़णो, धोळवाड़बो, धोळवाणो, धोळवाबो, धोळवावणो, धळो-वावबो, धोळाड़णो, धोळाड़बो, धोळाणो, धोळाबो, धोळावणो, धोळा-वबो—प्रे०रू०।
धोळियोड़ो, धोळियोड़ो, धोळ्योड़ो—भू०का०कृ०।
धोळीजणो, धोळीजबो—कर्म वा०।

धोळणी-सं०स्त्री० [सं० धवल] गाय।
उ०—भैंसां भरावै, वो तो भुरड़ो, वो तो ल्यावै-ल्यावै धरां ए चराय, भैंसा चारणा। धोळणी चरावै, वो तो कुंवरजी, कोई ल्यावै-ल्यावै धरां ए चराय, [illegible]।—लो.गी.

धोळपूंछियो-सं०पु० [सं० धवल+पुच्छ] १ एक प्रकार का घास.
२ वह बैल जिसके पूंछ का छोर श्वेत हो।

धोळहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.) उ०—सांत सणंका जगह या, मद [illegible] [illegible]। धोळहरां चमरां ढुळै, रू 'भारांणी' भाळ।
—बां.दा.

धोळा-सं०स्त्री० [सं० धवल] ढोलियों की एक शाखा जो चारण जाति को अपना यजमान मानते हैं—चारणों के याचक ढोली।

धोळागर, धोळागिर, धोळागिरि—देखो 'धवळगिरि' (रू.भे.)
उ०—१ [illegible] रहियांमणो, धोळागर रो धांन। तर नीभर भंकर [illegible] [illegible] [illegible] समान।—दुरसादत्त बारहठ
उ०—२ [illegible] [illegible] मंडप नहीं, कोई माळणो न पार। डेरा दिगम-[illegible], [illegible] धोळागिर पार।—ग्रु.रू.बं.

धोळाहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.)

धोळायोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'धवळियोड़ो' (रू.भे.)

धोळियो-वि०—१ [illegible] [illegible] [illegible] का एक विशेषण सूचक नाम।
उ०—[illegible] [illegible] [illegible] आवगो धरणी पारणा, मनें नै मादरवा रो [illegible] धोळिया [illegible] [illegible]।—लो.गी.
२ देखो 'धोळो' (अल्पा., रू.भे.)
३ देखो 'धोळणी' (रू.भे.)

धोळी—देखो 'धवळी' (रू.भे.)

धोळेरू—देखो 'धवळेरू' (रू.भे.)

धोळेहर, धोळेहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.)
उ०—मारै मन बैठ धोळेहर, तानै सूना ढुंड तळै। मोटा [illegible] [illegible] देखै, ह्टी जिमो हो मस्त मळै।—ग्रोतो धाडो

धोळो-सं०पु० [सं० धवल] १ एक प्रकार का सफेद पत्थर विशेष।
२ श्वेत बाल।
मुहा०—१ धोळां नै धोक देणी—वृद्ध को नमस्कार करना.
२ धोळां में धूड़ पड़णी—वृद्धावस्था में कलंकित होना, अपमानि[illegible] होना. ३ धोळां री ईजत राखणी—वृद्धावस्था का ख्याल रखना, मान देना, संचित ख्याति का ह्रास न होने देना.
४ धोळां रो धणी—श्वेत बाल वाला, वृद्ध. ५ धोळा आणा—सफे[illegible] बाल उगना, वृद्ध होना।
३ श्वेत प्रदर, सोम रोग।
४ देखो 'धोळप' (अल्पा., रू.भे.)
५ देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ जंगळ जंगळ में जूंनी जळियांणी। धोळा धोरां री धू[illegible] विणियांणी। मोटै टोटै नग कळियां धीतरणी। माहुर मोटै ढु[illegible] चाटणियां मरणी।—ऊ.का.
उ०—२ धोळा बुगला ध्यांन लगावै, खावै मछियां खूब। पाणी [illegible] पल पाप कमावै, ज्याँ जावै डूब।—ऊ.का.
उ०—३ केस जरा धोवण करै, धोळा धत ही धोय। अंतक रा[illegible] पैंचतां, हाथ न मेला होय।—बां.दा.
उ०—४ प्रतिदिन धोळा पड़ भिन्न भिन्न पद पूजै। धोळा गीर[illegible] विन जोरण जिम धूजै।—ऊ.का.
उ०—५ धोळा धपकारेह, हळ लारै हुलियो नहीं। दुरभत दरबारे[illegible] भमियो पेटज भरण नै।—अज्ञात
उ०—६ कळू कोच जाडो जिकण बीच गाडो कळै, कोत थाको [illegible] जीव कायो। होड करता जिकै धीन धोळा हुवा, ऊठ धोळा धु[illegible] भार धायो।—हरनाथसिंघ चांपावत रो गीत
मुहा०—१ धोळां मायं काळो मांडणो—कागज या बही में लिखा[illegible] ऋणी करना. २ धोळां रो धणी—बैलों का मालिक, बैलों वाला[illegible]
३ धोळो धोळो दूध जांणणो—रंग के अनुसार गुणों को मान लेना, भला समझना।
यौ०—धोळो-धट, धोळो-फट, धोळो-धूड़।
रू०भे०—धोळयो।

धोळ्यो-सं०पु० [सं० धवल] १ सफेद धव के समान किन्तु उस[illegible] छोटा एक वृक्ष विशेष जिसको बकरी, ऊँट आदि बहुत खाते [illegible] इसके फल चिरमी के आकार के गोल व सफेद होते हैं।
२ देखो 'धोळो' (रू.भे.)
३ देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)

ध्यान-सं०पु० [सं० ध्यान] १ अंतःकरण में उपस्थित करने की क्रि[illegible] या भाव, बाह्य इंद्रियों के प्रयोग के बिना केवल मन में लाने

क्रिया या भाव, मानसिक प्रत्यक्ष।

उ०—जीहा जप जगदीसवर, घर धीरज मन ध्यांन। करमबंध-निकरम-करण, भव-भंजण भगवांन।—ह.र.

क्रि०प्र०—करणौ, लगाणौ, लागणौ।

मुहा०—१ ध्यांन धरणौ—स्वरूप आदि को मन में लाना, मन में स्थापित करना. २ ध्यांन में डूबणौ—मन की वह स्थिति जिसमें मन एक बात में इतना तल्लीन हो जाता है कि अन्य बातों का ख्याल ही नहीं रहता है। किसी एक बात की ओर ही चित्त का प्रवृत्त होना. ३ ध्यांन में लागणौ—किसी को मन में लाकर मग्न होना।

२ ख्याल, विचार, भावना। उ०—अवर ग्यांन न ध्यांन उचारैं। आप जेम प्रिय प्रिया उचारैं।—सू.प्र.

ज्यूं—मारग वैतां थकां थांनै कांटै री ई ध्यांन को रै' नी ?

क्रि०प्र०—होणौ।

मुहा०—१ ध्यांन आणौ—विचार उत्पन्न होना, ख्याल आना, भावना होना. २ ध्यांन जमणौ—ख्याल बैठना, भावना स्थिर होना, विचार जमना. ३ ध्यांन बंधणौ—लगातार विचार बना रहना, विचार का बराबर या बहुत देर तक बना रहना. ४ ध्यांन राखणौ—ख्याल रखना, न भूलना, विचार बनाये रखना. ५ ध्यांन लागणौ—बराबर विचार बना रहना, मन का प्रवृत्त हो जाना। मन में विचार बराबर बना रहना।

३ चिंतन, मनन, विचार, सोच।

ज्यूं—इतरा दिन थां किण ध्यांन में रह्या हा।

४ किसी सम्बन्ध में अन्तःकरण की जागृत स्थिति, मन की किसी विषय की ओर ऐसी प्रवृत्ति जिससे उस विषय का अन्तःकरण में सबसे ऊँचा स्थान हो जाय, चेतना का लक्ष्य, ख्याल, चेत।

उ०—वह अपराध गांठियो चित में, धारै सिखां छांटियो ध्यांन। चारु प्रसाद वांटियो चेलां, गुरां इसौ ई छांटियो ग्यांन।

—बांकीदास बीठू

मुहा०—१ ध्यांन जमणौ—एक ही विषय को ग्रहण करने में मन का बराबर तत्पर रहना। एकाग्रचित्त होना। विचार या ख्याल का इधर-उधर न जाना २ ध्यांन जाणौ—किसी बात का बोध होने अथवा किसी ओर दृष्टिपात करने से मन का उस ओर प्रवृत्त होना। ३ ध्यांन दिराणौ—किसी का चित्त प्रवृत्त करना, चेत कराना, ख्याल कराना, सुझाना, दिखाना. ४ ध्यांन देणौ—मन प्रवृत्त करना, एकाग्रचित्त होना, गौर करना, ख्याल करना. ५ ध्यांन में चढ़णौ—किसी विशेषता के कारण चित्त से न हटना, मन में स्थान कर लेना. ६ ध्यांन में बैठणौ—देखो 'ध्यांन में चढ़णौ'. ७ ध्यांन बंटणौ—मन का स्थिर न रहना, चित्त एकाग्र न रहना. ८ ध्यांन बंटाणौ—ख्याल इधर-उधर ले जाना, चित्त को एकाग्र न रहने देना. ९ ध्यांन बंधणौ—एकाग्रचित्त होना, मन का एक ही ओर लीन होना, प्रवृत्त होना. १० ध्यांन लगाणौ—देखो 'ध्यांन देणौ'. ११ ध्यांन लागणौ—चित्त का एक ओर प्रवृत्त होना, एकाग्रचित्त होना। मन का किसी विषय को ग्रहण करने के लिये तत्पर होना.

५ चित्त की वह ग्रहण-वृत्ति जिसमें रूपों या भावों को भीतर ग्रहण किया जाता है, अन्तःकरण विधान, मन, चित्त।

उ०—वरजइ ताइ सती ध्यांन बइठी वळि, परम दयाळ किसी पर-वाह। मिस इण मिळवा मावीतां, चींत सती चइ लागउ चाह।

—महादेव पारवती री वेलि.

क्रि०प्र०—में आणौ, में लाणौ।

मुहा०—ध्यांन में लाणौ—विचारना, समझना, सोचना, चिंता करना. परवाह करना।

६ वह वृत्ति जिससे बोध हो, बुद्धि, समझ।

मुहा०—१ ध्यांन में आणौ—देखो 'ध्यांन में चढ़णौ'. २ ध्यांन में चढ़णौ—समझ में आना, अनुमान या बोध होना. ३ ध्यांन में जमणौ—विश्वास के रूप में स्थिर होना, चित्त में स्थिर होना, मन में बैठना।

७ ७२ कलाओं में से एक.

८ स्मृति, धारणा, याद।

ज्यूं०—म्हारै कैयोड़ो तौ पूरौ है पण थूं थोड़ौ'क ध्यांन दिरा दीजै।

क्रि०प्र०—होणौ।

मुहा०—१ ध्यांन आणौ—स्मृति में आना, याद होना. २ ध्यांन दिराणौ—याद दिलाना, स्मरण कराना. ३ ध्यांन में चढ़णौ—स्मरण होना, स्मृति में आना, याद होना. ४ ध्यांन राखणौ—न भूलना, स्मृति बनाये रखना, याद रखना. ५ ध्यांन रै'णौ—स्मरण रहना, याद रहना. ६ ध्यांन सूं उतरणौ—विस्मृत होना, भूलना, याद न रहना, स्मृति में न रहना।

९ चित्त को एकाग्र कर के किसी ओर लगाने की क्रिया, चित्त को सब ओर से हटा कर किसी एक विषय (जैसे परमात्मा) पर स्थिर करने की क्रिया।

वि०वि०—धारणा और समाधि के बीच की अवस्था 'ध्यान' है जो योग के आठ अंगों में सातवां अंग है।

उ०—१ बुद्धि बोध सकै नहिं ताकूं, अपना आप जताया। ध्याता ध्यांन ध्येय सूं न्यारा, अध्येय चेतन राया।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ रहै रत ध्यांन अठयासी रिखं। लहै नंहं पार ब्रहम्मा लक्ख। सदा जस नव्व कहै मुख सेस। आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह.र.

क्रि०प्र०—करणौ, लगाणौ, लागणौ।

मुहा०—१ ध्यांन छूटणौ—चित्त का इधर-उधर हो जाना, मन एकाग्र न रहना. २ ध्यांन धरणौ—परब्रह्म चिंतन आदि के लिए एकाग्र-मन होकर बैठना।

रू०भे०—धियांन।

ध्यांनींद्री—देखो 'ईंद्रियो' (रू.भे.) (शेखावाटी)
ध्यानेंद्री—देखो 'ईंद्री' (रू.भे.) (शेखावाटी)
ध्यानयोग-सं०पु०यौ० [सं० ध्यानयोग] १ वह योग जिसमें ध्यान मुख्य हो. २ ध्यान का उपयोग की तरह सिद्धि।
ध्यान-धारण-सं०पु० [सं० ध्यान+धारण] महादेव, शिव (ड.कु.को.)
ध्यानमग्न-वि०—ध्यान में लीन।
ध्यानी-वि० [सं० ध्यानिन्] १ ध्यान करने वाला, जो ध्यान में रहता हो। उ०—ध्यानी तन सीरा पड़े, सीरा जांनी सार।—ऊ.का.
२ ध्यान युक्त, समाधिस्थ।
उ०—देह कोय ध्यानी नहिं ध्यानो, सुई पटक रह जायगा है।
—सांगी प्रकास
ध्यानु—देखो 'ध्यान' (रू.भे.) उ०—नारदु पहुतउ सिध्या देखि, पंडत पड़डा ध्यानु धरेवि।—पं.प.च.
ध्यान, ध्यानि—देखो 'धिनाण' (रू.भे.)
उ०—१ गुण सागर दुःदह सउब सति, राह सिरि अवगरि रमइ रति। मनरंग पड़ा मूगळो मागि, लगचोर नईयउ ध्यानि लागि।
—रा.ज.सी.
उ०—२ वाजिया धांमळो मांमळो वागड़, माट जड़ंती विवध पड़। मटकड़ चढ़ी रूठकी मारो, ध्यानि माया पड़इ धड़।
—महादेव पारवती री वेलि.
उ०—३ माह गयर सांमळो, सीम कळळो बारहे। साहूळो सुस ढांण सारा मनडाबो सूते। गीर ध्रम सपरस, पिना वडयाण प्रकारी। माण इण गाघड़ ध्याण बरसण उरधागी। इम कोप लोप 'अवरंग' रो विण गोतंम दुरंग विण, दळ करे कयण मांडे अडी, जण घड़ घड़ी पवांण जिम।—रा.रू.
ध्याणी, ध्यावो-क्रि०स० [सं०] १ देखो 'धावणो, धाववो' (रू.भे.)
उ०—सांगर तरा सांमी नित ध्याइं, सहस पल्योपम करम नवी खाइं।—सिंहंगति चउपइ
२ देखो 'धाणो, धावो' (रू.भे.)
ध्याता-वि०—ध्यान करने वाला।
उ०—१ बुद्धि बोध सकै नहिं ताकूं अपना आप जताया, ध्याता ध्यान ध्येय सूं न्यारा अध्येय भेत न गाया।
—श्री सुखरामजी महाराज
उ०—२ तूं ही ध्याता ध्येय प्रति मति विख्याता प्रत तूं ही।—ऊ.का.
ध्यादोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'धावियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ध्यादोड़ी)
ध्यावणो, ध्याववो—देखो 'धावणो, धाववो' (रू.भे.)
उ०—रूप देख बहु रंग ध्यान ओलगार ध्यावै।—ह.र.
ध्यावना—देखो 'धावना' (रू.भे.)
ध्यायियोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'धावियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ध्यायियोड़ी)

ध्येय-वि० [सं०] १ ध्यान करने योग्य।
उ०—तूं ही ध्याता ध्येय प्रति मति विख्याता प्रत तूं ही।—ऊ.का.
२ जो ध्यान का विषय हो, जिसका ध्यान किया जाय।
उ०—बुद्धि बोध सकै नहिं ताकूं अपना आप जताया। ध्याता ध्यान ध्येय सूं न्यारा, अध्येय भेउन गाया।—श्री सुखरामजी महाराज
ध्रंगळ—देखो 'धूंगळ' (रू.भे.)
उ०—धरियाण लगे केई तुरस थोट। दहिवाळ करे केई ध्रंगळ गोट।—पा.प्र.
ध्रंग—देखो 'ध्रंग' (रू.भे.)
ध्रंगड़ो—देखो 'ध्रंग' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ माल अटूट अखूट धन, प्रजा घणो सुख पोख। धन 'बांका' ऊ ध्रंगड़ो, साहिब जे संतोख।—बां.दा.
उ०—२ धन देखो जिण ध्रंगड़ै, हेको पुरस न होय। सुपने ही नहिं संचरै, लोभी संगम लोभ।—बां.दा.
ध्रंम—देखो 'धरम' (रू.भे.)
उ०—धनध्येस राजा प्रभू ध्रंम अंसी। नहीं रीत चाले सदा भांण वंसी।—सू.प्र.
ध्र—देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)
उ०—नीर परवति गोरी ? कइ चलइ पाय ? गंग अपूठी पयूं वहई ? ध्र टारो कम छूंडइ ठांमि ? सूरज पछिम किम ऊगमइ ? इसीग चालतां क्युं रह्यो आज।—बी.दे.
ध्रक—देखो 'धिक' (रू.भे.)
उ०—अपणी छांड पराई ताकै, ध्रक जीवन ध्रकजी।—मो.मी.
ध्रक-वि०—१ बड़ा. २ देखो 'धिक' (रू.भे.)
उ०—ध्रक रण गयो माल दे गेह छाड रोहले, घणी फेर अपवाद संसार फेडी। तात रै वैर में गुर जाय तांणियो, गाज बाज सो जोधपुर माट मेडी।—ठाकुर जैतसी री वारता
ध्रकध्रकी—देखो 'धकधकी' (रू.भे.)
उ०—श्री बदन बोलता चित व्याकुळता, हियै ध्रकध्रकी मेद हुइ। भरि भरि लाज वयं नेउर धुनि; करै नियारणा कंठ कुइ।—वेलि.
ध्रग—देखो 'धिक' (रू.भे.)
उ०—दसकंध के कायरां ध्रग दीधो। कठोठी उरां घाव प्राहार कीधो।—सू.प्र.
ध्रतकेतु-सं०पु० [सं०] वसुदेव के बहनोई।
ध्रतदेवा-सं०स्त्री० [सं० धृतदेवा] देवक की एक कन्या का नाम।
ध्रतरास्ट्र—देखो 'धतराट' (रू.भे.)
ध्रतराष्ट्री-सं०स्त्री० [सं० धृतराष्ट्री] १ धृतराष्ट्र की रानी, पत्नी.
२ कश्यप ऋषि की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न ५ कन्याओं में से एक।
ध्रति, ध्रती-सं०स्त्री० [सं० धृति] १ धरने या पकड़ने की क्रिया, धारणा.
२ स्थिर रहने की क्रिया या भाव, ठहराव.
३ धीरता, धैर्य.

४ संतोष (डिं.को.)

५ फलित ज्योतिष के अनुसार २७ योगों में से एक.

६ चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक।

सं०पु०—७ राजा जयद्रथ का पौत्र।

८ देखो 'धरती' (रू.भे.)

रू०भे०—ध्रिति, ध्रिती।

ध्रतू-वि० [सं० धृत] १ ग्रहण किया हुआ, धारण किया हुआ।

२ पकड़ा हुआ, धरा हुआ.

३ गिरा हुआ, पतित.

४ स्थिर किया हुआ, निश्चित।

ध्रपण-सं०पु० [राज० धापणौ] तृप्त करने की क्रिया या भाव।

ध्रब-सं०पु० [अनु०] नक्कारे का शब्द, नक्कारे की आवाज।

उ०—नकार ध्रब ध्रब पै नकीब बोलते नहीं। खनंक खग्ग बग्ग तैं सु अंख खोलते नहीं। पटादि सेल पेल कै सटा संभाळते नहीं। घुसैं गयंद की घटा मयंद मालते नहीं।—ऊ.का.

ध्रमंकणौ, ध्रमंकबौ—देखो 'धमकणौ, धमकबौ' (रू.भे.)

उ०—चमकंत सेल पाखर प्रचंड, दमकंत ढाल नीसांण दंड। ध्रमकंत घोड खुर धरण धज, रमकंत गगन मग चढीये रज।

—बगसीरांम प्रोहित री वात

ध्रमंकियोड़ौ—देखो 'धमकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रमंकियोड़ी)

ध्रम—१ देखो 'धम' (रू.भे.)

उ०—ध्रमं ध्रम हैखुर सेस धुजाव। जुटै खग 'नाहर' क्रम्न सुजाव।

—सू.प्र.

२ देखो 'धरम' (रू.भे.)

उ०—१ कंवरी सूरजकंवर, 'अजन' ध्रम रचै अपंपर। जै नांनी 'ध्रमरेस', धरा 'जैंसांण' छतर-धर।—रा.रू.

उ०—२ धरो ध्रम सीळ लहो निज लील, जहां गुण ग्यांन अनंत अथाग। संभव संभव भाव भलै भज, संभव सौं भव के भय भाग।

ध्रमआतमा—देखो 'धरमात्मा' (रू.भे.) —ध.व.ग्रं.

ध्रमक—देखो 'धमक' (रू.भे.)

उ०—रैत थळी री रात-दिन, मन में धड़कंदे। कोटड़िया ध्रमका करै, चौवीस भड़ंदे।—पा.प्र.

ध्रमकणौ, ध्रमकबौ—देखो 'धमकणौ, धमकबौ' (रू.भे.)

उ०—वेपख सूध जिकै सालहोतर मां वखांणियां तिहड़ा इण भांति रा तेजी, धरा रा खूंदणहार, खुरताळां रा अधखुरां सूं धरती ध्रमकि नै रही छै।—रा.सा.सं.

ध्रमकियोड़ौ—देखो 'धमकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रमकियोड़ी)

ध्रमजगर, ध्रमजघड़—देखो 'धमगजर' (रू.भे.)

उ०—१ अंव-खास विचै वांणास आछटै, करग 'पदम' ध्रमजगर कर। 'मोहण' वैर लियौ छिन मांहे, एकण घाव छ-टूक कर।

—द.दा.

उ०—२ वारै आव रे रिण रोपण वंका, बंधव सुग्रीव वकारै। उठै सुण ध्रमजघड़ अघायौ, ध्रोंग क्रोध उर धारै।—र.रू.

ध्रमपाळ—देखो 'धरमपाळ' (रू.भे.) (अ.मा.)

ध्रमराज, ध्रमराय—देखो 'धरमराज' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—क्रम बहोत मै तो किअा, जीव जंत की जोर। किम छूटै ध्रमराय पै, अब मनुआ सब छोर।—वाढेल कल्यांणसिंघ नगराजोत री वात

ध्रम-लाभ—देखो 'धरम-लाभ' (रू.भे.)

उ०—स्राविका मिळी आवी सहु वांदर वेकर जोड़ि, वंदावी ध्रमलाभ द्यउ जिम पहुंचै मन कोडि।—स.कु.

ध्रमसीळ—देखो 'धरमसीळ' (रू.भे.)

ध्रमी—देखो 'धरमी' (रू.भे.)

उ०—धजाबंधी धरा ध्रमी पराक्रमी प्रजा पाळै।—ल.पिं.

ध्रमसास्त्र—देखो 'धरमसास्त्र' (रू.भे.)

ध्रम्म—देखो 'धरम' (रू.भे.)

उ०—१ मिरजौ पेठौ कोट में, ओट थया कूरम्म। रिध ऊंठां बीबी रथां, कर पर हथां ध्रम्म।—रा.रू.

उ०—२ उभै वात रौ पात दाखै अहांचौ, खत्री ध्रम्म छाडीक धांनख खांचौ।—सू.प्र.

ध्रवण-सं०पु० [सं० द्रव=टपकने वाला] मेघ, बादल।

(ना.डिं.को., डिं.को.)

ध्रवणौ, ध्रवबौ-क्रि०स० [सं० द्रव, द्रवण] १ तृप्त करना, संतुष्ट करना।

उ०—१ भेळौ तैं कीधौ भलौ, जळहर ओ जळ जाळ। धुन सुधरी पुहमी ध्रवै, दुसह निवार दुकाळ।—बां.दा.

उ०—२ गिर री ऊपर वसै गढ, खींवौ साल खळांह। कमधज केवा काढिया, डाकण ध्रवी डळांह।—राव मालदे री वात

उ०—३ रातल सावज ध्रविया 'रतनै', पूजवियौ प्रघळ प्रवाह।

—दूदौ

उ०—४ वायस रांण चहुंवांण तणै वंस, गज सीसोद सरीखौ गांज। धरती ध्रवै पळचरां ध्रविया, भोगी काढ कूंभाथळ भांज।

—अजीतसिंघ हाडा (वूंदी) रो गीत

२ वूंदों की तरह ऊपर से गिराना, जल की तरह अविरल रूप से गिराना, वरसाना। उ०—ऊसर वैणां सूं स्रवती अलआरां, धूसर नैणां सूं ध्रवती जळधारां।—ऊ.का.

३ बहुत अधिक मात्रा या संख्या में प्राप्त कराना, दान रूप में देना।

उ०—१ रीज सदांमा सूं गिरधारी, ध्रवी आथ वाथां गिरधारी।

—र.ज.प्र.

उ०—२ करि करि न्योछावर द्रव केक ऊछळंत हीर मोती अनेक, पन्ना स लाल मांणिक अपार ध्रवि जांणि जवाहर सघण धार।

—सू.प्र.

४ मारना, संहार करना।

उ०—पिरथी दुनिया थरकै मारे रे, बिजिया करै मोरन बारे रे। ध्रप-ध्रप धरि रण जावै रे, धणिया करि कूंत धमाका रे।

—गजन धनरूपाम मगरवज री गीत

ध्रपणहार, हारौ (हारी), ध्रपणियौ—वि०।

ध्रपवाड़णो, ध्रपवाड़बो, ध्रपवाणो, ध्रपवाबो, ध्रपवावणो, ध्रप-वावबो, ध्रपाणो, ध्रपाबो—प्रे०रू०।

ध्रपियोड़ो, ध्रपियोड़ो, ध्रप्योड़ो—भू०का०कृ०।

ध्रपीजणो, ध्रपीजबो—कर्म वा०।

ध्रूपणो, ध्रूपबो—रू०भे०।

ध्रपीन—देखो 'ध्यान' (रू.भे.) (डि.ना.)

ध्रपियोड़ो-भू०का०कृ०—१ तृप्त किया हुआ, संतुष्ट किया हुआ.

२ जल की बूंदों की तरह निरंतर गिराया हुआ, बरसाया हुआ.

३ बहुत अधिक मात्रा में दिया हुआ, दान रूप में दिया हुआ.

४ मारा हुआ, संहार किया हुआ।

(स्त्री० ध्रपियोड़ी)

ध्रमंडी-वि०—जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली।

ध्रसकणो, ध्रसकबो—देखो 'धसकणो, धसकबो' (रू.भे.)

उ०—दल मिळियां कळ मळीय मुहड़ धधवर गळगळिया। धर ध्रस-कीय सहसीय सेस सिरधर टळटळिया।—पं.वं.च.

ध्रसकणहार, हारौ (हारी), ध्रसकणियौ—वि०।

ध्रसकियोड़ो, ध्रसकियोड़ो, ध्रसक्योड़ो—भू०का०कृ०।

ध्रसकीजणो, ध्रसकीजबो—भाव वा०।

ध्रसकाड़णो, ध्रसकाड़बो—देखो 'धसकाणो, धसकाबो' (रू.भे.)

ध्रसकाड़णहार, हारौ (हारी), ध्रसकाड़णियौ—वि०।

ध्रसकाड़ियोड़ो, ध्रसकाड़ियोड़ो, ध्रसकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

ध्रसकाड़ीजणो, ध्रसकाड़ीजबो—कर्म वा०।

ध्रसकाड़ियोड़ो—देखो 'धसकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसकाड़ियोड़ी)

ध्रसकाणो, ध्रसकाबो—देखो 'धसकाणो, धसकाबो' (रू.भे.)

उ०—ऊभी अधिक नड़ाप नै रे लाग, नांमी धरि ध्रसकाय है नहंसी।—ध.व.ग्रं.

ध्रसकाणहार, हारौ (हारी), ध्रसकाणियौ—वि०।

ध्रसकायोड़ो—भू०का०कृ०।

ध्रसकाईजणो, ध्रसकाईजबो—कर्म वा०।

ध्रसकणो, ध्रसकबो—अक०रू०।

ध्रसकायोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'धसकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसकायोड़ी)

ध्रसकावणो, ध्रसकावबो—देखो 'ध्रसकाणो, ध्रसकाबो' (रू.भे.)

ध्रसकावणहार, हारौ (हारी), ध्रसकावणियौ—वि०।

ध्रसकावियोड़ो, ध्रसकावियोड़ो, ध्रसकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

ध्रसकावीजणो, ध्रसकावीजबो—कर्म वा०।

ध्रसकावियोड़ो—देखो 'धसकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसकावियोड़ी)

ध्रसकियोड़ो—देखो 'धसकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसकियोड़ी)

ध्रसरकणो, ध्रसरकबो-क्रि०अ०—१ भयभीत होना, कंपायमान होना, घबराना। उ०—हीयो ध्रसरकइ कायर लोग, संत तणो मन करइ सजोग।—पं.दं.च.

२ देखो 'धसकणो, धसकबो' (रू.भे.)

उ०—तसुं धरि जेठि पईठा तुंग, बिहूं घई पोमर ऊर्भ बुंग। ध्रसरकं कुंत वहै हुव धार, गयो हुइ पुरो ऊलटि पार।—रा.जै. रासो

ध्रसूकणो, ध्रसूकबो, ध्रासकणो, ध्रासकबो—रू०भे०।

ध्रसटी—१ देखो 'धिस्टी' (रू.भे.)

२ देखो 'धिस्ट' (रू.भे.)

ध्रसहसणो, ध्रसहसबो-क्रि०अ०—धमकना, धंसना।

उ०—कुंवारव पाटा, तारागण तूटा, तुरंगम नाठा बिहुं दळि। मिळि हूंतै पाट ध्रसहस्या, मोजड़ा कसकस्या।—व.स.

ध्रसहसणहार, हारौ (हारी), ध्रसहसणियौ—वि०।

ध्रसहसियोड़ो, ध्रसहसियोड़ो, ध्रसहस्योड़ो—भू०का०कृ०।

ध्रसहसियोड़ो-भू०का०कृ०—धसका हुआ, धंसा हुआ।

(स्त्री० ध्रसहसियोड़ी)

ध्रसूकणो, ध्रसूकबो-क्रि०अ०—१ ढोलादि वाद्यों का बजना।

उ०—ढोल ध्रसूकई डूंगर कंपइ। चालीउ राउळ कान्ह।—कां.दे.प्र.

२ भयभीत होना, कंपायमान होना।

उ०—एतलइ सुभटमा दळि ढोल वाजइ, जांणी अषाढ़ गिरि मेह गाजइ। हीया ध्रसूकइ सर सेस सूकई, भय मोहता कायर जीव मूकई।—विराटपर्व

३ देखो 'ध्रसरकणो, ध्रसरकबो' (रू.भे.)

ध्रसूकणहार, हारौ (हारी), ध्रसूकणियौ—वि०।

ध्रसूकवाड़णो, ध्रसूकवाड़बो, ध्रसूकवाणो, ध्रसूकवाबो, ध्रसूकवावणो, ध्रसूकवावबो—प्रे०रू०।

ध्रसूकाड़णो, ध्रसूकाड़बो, ध्रसूकाणो, ध्रसूकाबो, ध्रसूकावणो, ध्रसू-कावबो—क्रि०स०।

ध्रसूकियोड़ो, ध्रसूकियोड़ो, ध्रसूक्योड़ो—भू०का०कृ०।

ध्रसूकीजणो, ध्रसूकीजबो—भाव वा०।

ध्रमूकाड़णो, ध्रमूकाड़बो—देखो 'ध्रमूकाणो, ध्रमूकाबो' (रू.भे.)

ध्रमूकाड़ियोड़ो—देखो 'ध्रमूकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रमूकाड़ियोड़ी)

ध्रमूकाणो, ध्रमूकाबो-क्रि०स०—१ ढोल बजाना.

२ भयभीत करना, कंपित करना।

ध्रमूकाणहार, हारौ (हारी), ध्रमूकाणियौ—वि०।

ध्रसूकायोड़ो—भू०का०कृ० ।
ध्रसूकाईजणो, ध्रसूकाईजबो—कर्म वा० ।
ध्रसूकणो, ध्रसूकबो—अक०रू० ।
ध्रसूकाड़णो, ध्रसूकाड़बो, ध्रसूकावणो, ध्रसूकावबो—रू०भे० ।
ध्रसूकावणो, ध्रसूकावबो—देखो 'ध्रसूकाणो, ध्रसूकाबो' (रू.भे.)
ध्रसूकावियोड़ो—देखो 'ध्रसूकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ध्रसूकावियोड़ी)
ध्रस्ट—सं०पु० [सं० द्वयष्ट] ताम्र, तांबा (अ.मा.)
वि० [सं० धृष्ट] १ लज्जा या संकोच न रखने वाला, निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म, प्रगल्भ ।
२ बार बार अपराध करते हुए व अपमान सहते हुए भी नायिका के साथ लगा रहने वाला नायक (साहित्य)
३ अनुचित साहस करने वाला, ढीठ ।
ध्रस्टकेतु—सं०पु० [सं० धृष्टकेतु] शिशुपाल का पुत्र जो पांडवों की सेना के मुख्य सात सेनापतियों में से एक था ।
ध्रस्टद्युमन—सं०पु० [सं० धृष्टद्युम्न] पांचाल देश के राजा द्रुपद का पुत्र और द्रोपदी का भाई जो पांडव सेना के सात सेनापतियों में से एक था ।
वि०वि०—राजा द्रुपद के पिता का नाम पृषत था । भरद्वाज ऋषि और राजा पृषत के घनिष्ट मित्रता थी । इससे वे नित्य द्रुपद को लेकर मुनि के आश्रम में जाया करते थे । इस कारण से भरद्वाज ऋषि के पुत्र द्रोणाचार्य में और द्रुपद में भी घनिष्ट मित्रता हो गई । जब द्रुपद राजा हुआ तब द्रोणाचार्य उसके पास गये परन्तु उसने ऋषि कुमार समझ कर सम्मान नहीं किया । द्रोणाचार्य दीन भाव से इधर-उधर भटकने लगे और अंत में उन्होंने कौरवों और पाण्डवों की अस्त्र-शिक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया । अर्जुन गुरु का बदला चुकाने के लिये राजा द्रुपद को पकड़ कर ले आया । द्रुपद द्रोण को अपने राज्य का अर्द्धभाग देकर मुक्त हुआ ।
द्रुपद ने ऋषि कुमारों याज और अनुयाज की सहायता से एक बड़ा यज्ञ किया । इस यज्ञ में से एक तेजस्वी पुरुष खड्ग, कवच, धनुपादि से सुसज्जित उत्पन्न हुआ । इस पर आकाशवाणी हुई कि यह राजपुत्र द्रुपद के शोक के नाश का कारण बनेगा और द्रोणाचार्य का वध करेगा । महाभारत के युद्ध के समय जब द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु की असत्य खबर सुन कर योग में मग्न हुए थे उस समय इसी धृष्टद्युम्न ने उनका शिर काटा था । महाभारत के युद्ध के पश्चात् अश्वत्थामा ने अपने पिता का बदला लिया और सोते हुए धृष्टद्युम्न का शिर काट डाला ।
रू०भे०—ध्रस्टद्युमन् ।
ध्रांसाड़णो, ध्रांसाड़बो—क्रि०अ० [देश०] गरजना, दहाड़ना ।
उ०—दळ भंजे डेरा फुरळि, गमि दखोरा दहवाट । 'गज' केसरि ध्रांसाड़ियो, दोइणां वाळै दाट ।—गु रू.बं.

ध्रापणो, ध्रापबो—देखो 'धापणो, धापबो' (रू.भे.)
ध्रापणहार, हारो (हारी), ध्रापणियो—वि० ।
ध्रापिओड़ो, ध्रापियोड़ो, ध्राप्योड़ो—भू०का०कृ० ।
ध्रापीजणो, ध्रापीजबो—भाव वा० ।
ध्रापिओड़ो—देखो 'धापियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ध्रापियोड़ी)
ध्राव—सं०पु० [देश०] पशु, मवेशी ।
उ०—खरगो, लुद्रवा कनै । घोड़ां, ध्राव वडी वांकी ठौड़, मुंहारा दिसी जैसळमेर था कोस १६, खडाला में ।—नैणसी
रू०भे०—द्राव, धाव ।
ध्रासकणो, ध्रासकबो—देखो 'ध्रसक्कणो, ध्रसक्कबो' (रू.भे.)
उ०—सो धनुसु नांमइ कीमु काटकि धरणि ध्रासकि धडहडी । बंभंड खंड विखंड थाइ कि सगि सयल वि रडवडी ।—पं.पं.च.
ध्रासकणहार, हारो (हारी), ध्रासकणियो—वि० ।
ध्रासकिओड़ो, ध्रासकियोड़ो, ध्रासक्योड़ो—भू०का०कृ० ।
ध्रासकीजणो, ध्रासकीजबो—भाव वा० ।
ध्राह—देखो 'धाह' (रू.भे.)
उ०—'वीरम' खाग बजाड़, कळचाळ कीधौ किलो । दौडी भाडंगनेर दिस, ध्राह देती धायड़ी ।—गो.रू.
ध्राहुरणो, ध्राहुरबो—क्रि०अ०—भयंकर आवाज करना, गरजना ।
उ०—अनेक मेक तोर की दुरुह तोप ध्राहुरै, उडै दुरंग की सफील फील फौज के गुरै ।—ला.रा.
ध्राहुरणहार, हारो (हारी), ध्राहुरणियो—वि० ।
ध्राहुरिओड़ो, ध्राहुरियोड़ो, ध्राहुरयोड़ो—भू०का०कृ० ।
ध्राहुरीजणो, ध्राहुरीजबो—भाव वा० ।
ध्राहुरियोड़ो—भू०का०कृ०—भयंकर आवाज किया हुआ, गरजा हुआ ।
(स्त्री० ध्राहुरियोड़ी)
ध्रिक, ध्रिक्क, ध्रिग—देखो 'धिक' (रू.भे.)
उ०—१ हीण राव विण न्याव, न्याव ध्रिक पक्ष उपज्जै ।
पक्ष हीण धन सटै, हीण धन धरम न पुज्जै ।
धरम हीण सादंभ, दंभ ध्रिक झूठ दिखावै ।
झूठ ध्रिक्क विणकाज, काज ध्रिक सांम न भावै ।
ध्रिक सांमि किया गुण वीसरै, गुण विकार विण हरि तरणि ।
सुजि ध्रिक तरणि पिय अंत सुणि, धर तक्कै मोटा धरणि ।
—रा.रू.
उ०—२ तेड़ी भाखें वेद ने, नांम म्हारो मत लीजो रे । ध्रिग ध्रिग लोभ ने, आवै उदाई ओसध भणी । तिण नै थे विस दीजो रे ।
—जयवांणी
ध्रित, ध्रिति—१ देखो 'धरती' (रू.भे.)
२ देखो 'ध्रति' (रू.भे.)
उ०—१ सत्य पुरुस की सीख स्रवण सुन, लपलप लपत लवारी । कांम क्रोध के कंद छेक कर, ध्रिती क्षमा नहिं धारी ।—ऊ.का.

उ०—२ कर्णांरी लाजरी दिसी, फरक नहीं धरम दिसी। मरुदी री दिसी मरद, घुर के धमगर।—रू.भा.

उ०—३ दरद दरां दमेर प्रकृते, महामारु कुरसीन संभारे। धारे धरां मंदिर करे दिन, मह्रिपति पमिहुनि हायड है सिर।—सू.प्र.

ध्रिबणौ, ध्रिबबौ—देखो 'धीबणौ, धीबबौ' (रू.भे.)

ध्रिबियोड़ौ—देखो 'धीबियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रिबियोड़ी)

ध्रिमाण—देखो 'धिमाण' (रू.भे.)

उ०—पसरोल पड़ै सेना ध्रिमाण। साता कर नीहट पड़ै साण।

—सू.प्र.

ध्रिसट—देखो 'ध्रिस्टी' (रू.भे.)

ध्रिसटद्युमनु—देखो 'धृस्टद्युमन' (रू.भे.)

उ०—धनिय उतर धनु बदराट्ठ निकित्ति बाण पंचव नउं गाट्ठ। ध्रिस्ट-द्युमनु सेनानी बीर बीजउ कन्हद् दळ नामसउ।—पं.पं.च.

ध्रिस्टी—सं०पु० [सं० धृष्टि] सूअर, वराह (ह.नां.)

वि० [सं० धृष्ट] १ नीच, दुष्ट। उ०—धीरट ने धाड़ी दे ध्रिस्टी कुंपे कुवधी चौट करी।—नवलदांनजी लाळस

२ ढीठ, धृष्ट।

रू०भे०—ध्रसटी, ध्रस्ट, ध्रिसट।

ध्रींगां-ध्रन्य० [ध्रनु०] ढोल, नगाड़े अथवा ढोलकी के बजने से उत्पन्न शब्द। उ०—ध्रींगां ध्रींगां ढोलकी 'सहवांण' वजांणी।—वी.मा.

ध्री—देखो 'ध्रीह' (रू.भे.)

ध्रीब, ध्रीबद्द-ध्रव्य० [ध्रनु०] १ नृत्य के समय नगाड़े या ढोल की होने वाली ध्वनि विशेष। उ०—ध्रीबद्द ध्रीबद्द मक्र पग धरंती, कूलट नट-वटा ज्यूं मक्र करंती। काळका-चक्र ज्यूं नावड़ी केवियां, भड़ां सिर काळमी डक भरती।—गिरवरदांन सांदू

२ देखो 'धीब' (रू.भे.)

उ०—ध्रीब पड़ै तरवारियां, के भाजै कायर।—वी.मा.

ध्रीबणौ, ध्रीबबौ—देखो 'धीबणौ, धीबबौ' (रू.भे.)

ध्रीबियोड़ौ—देखो 'धीबियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रीबियोड़ी)

ध्रीया—देखो 'धी' (६) (रू.भे.)

उ०—समर ध्रमंक जुड़तां सूरां, कांमण सुर धाई वर कांम। उरग ध्रीया हुवड़ै या धाटै, वेरा मे घमियो परिणांम।

—प्रयागदास राठौड़ री गीत

ध्रीमाण—देखो 'धिमाण' (रू.भे.)

उ०—१ धारै सीस ध्रीमाण, जंगम चढ़िया जोड़या।—पा.प्र.

उ०—२ धुरै मग धूहड़ लाग ध्रीमाण। उडै पड़ जांण संडीवत माण।—पा.प्र.

ध्रीवणौ, ध्रीवबौ—देखो 'धीवणौ, धीवबौ' (रू.भे.)

उ०—धमंकै धमड़ां सीस जग रा नेजांरा ध्रीवै, किरदां वधारै तणा जग हूंता वंस। 'केसरी' मुजाळ करी उपरा मजाळा जिता, र मांगा भरांगै भला वगाड़ौ कमंध।

—हरिसिंह (या हरराज) राठौड़ री गीत

ध्रीवणहार, हारौ (हारी), ध्रीवणियौ—वि०।

ध्रीवियोड़ौ, ध्रीवियोड़ौ, ध्रीव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ध्रीवीजणौ, ध्रीवीजबौ—कर्म वा०।

ध्रीवियोड़ौ—देखो 'धीवियोड़ौ' (रू.भे.)

ध्रीह-सं०स्त्री० [ध्रनु०] नक्कारे की आवाज, ध्वनि (डि.को.)

उ०—१ वजि ध्रीह नगारां जेण वार। धर धंवर गरहर जहरधार।

—सू.प्र.

उ०—२ सनो ध्रमीणो साहिबो, सुणै नगारां ध्रीह। जावै पर दळ सांमुहो, ज्यूं सादूळो सीह।—बां.दा.

रू०भे०—ध्री।

ध्रुपद-सं०पु० [सं० ध्रुव-पद] उत्तरी भारत की एक विशिष्ट गायन शैली। इसके चार भाग होते हैं—ग्रस्थायी, ग्रंतरा, संचारी और आभोग। इसमें रागात्मक पदों का काफी महत्व होता है। इन पदों के विषय अधिकतर शौर्य, धर्म, भक्ति एवं प्रेम से संबंधित होते हैं।

रू०भे०—धुरपद।

ध्रुव-सं०पु० [सं०] १ उत्तर दिशा की ओर स्थित एक प्रसिद्ध तारा जो अपने स्थान पर अटल रहता है और सप्तर्षि तारे इसकी परिक्रमा करते हैं। उ०—निरभय किय बीकांण नरेसुर। पुनि देसांण बसायौ निजपुर। ध्रुव जो लौं आकास धरत्ती। सौ करणी जय जगति सकत्ती।—मे.म.

२ पुराणानुसार राजा उत्तानपाद का पुत्र।

उ०—अवळा बाळक एक, ग्ररज कम्' ऊभी ग्रठै। टावर ध्रुव री टेक, तैं राखी वसुदेव तण।—रांमनाथ कवियौ

३ बरगद वट

४ आठ वसुओं में से एक. ५ पर्वत, पहाड़.

६ ध्रुवक, ध्रुपद. ७ ब्रह्मा (डि.को.)

८ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से एक योग.

९ फलित ज्योतिष में एक नक्षत्रगण जिसमें उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तर भाद्रपद और रोहिणी हैं.

१० नाक का ग्रगला भाग.

११ टगण की छः मात्राओं के ग्यारहवें भेद का नाम (।ऽ।।)

१२ भूगोल के अनुसार पृथ्वी का अक्ष स्थान। पृथ्वी के ये दोनों सिरे जिनसे होकर अक्ष रेखा गई हुई मानी जाती है।

वि०वि०—उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव को राजस्थानी में 'उतराद्ध' व 'दिखणाद्ध' कहते हैं।

१३ उत्तर दिशा. १४ छप्पय छंद का ५३ वां भेद जिसमें १८ गुरु और ११६ लघु से १३४ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं।

वि०—१ प्रथम, पहले-पहल। उ०—सुण हूंतो सिव मंदोदरी, ध्रुव सुजस ग्रंतेवर धरी।—र.रू.

२ स्थिर, अचल. ३ जो सदा एक ही अवस्था में रहे, नित्य. ४ निश्चित, दृढ़, पक्का. ५ एक॰।

रू०भे०—द्रु, ध्रु, धुजी, धुर, धुरजी, धुव, धूम्र, ध्रु, ध्रू, ध्रूम्र।

ध्रुवक-सं०पु० [सं०] नक्षत्र की दूरी।

ध्रुवकेतु-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का केतु तारा।

ध्रुवचरण-सं०पु० [सं०] रुद्रताल के बारह भेदों में से एक भेद।

ध्रुवणो, ध्रुवबो—१ देखो 'ध्रवणो, ध्रवबो' (रू.भे.)

उ०—जांणै हर घट घट री जो पिण, सोजै आसम सारा। पूछै पाहण रूंख पंखेरू, ध्रुवे चखां जळधारा।—र.रू.

२ देखो 'धुवणो, धुवबो' (रू.भे.)

उ०—१ ध्रूसमध्रूस जांगिये ध्रुवते। चित अपवर घड़ वेल चढ़े। मद उदमाद विरह गहमाती। खांन वरेवा खयंग खड़े।—दूदो

उ०—२ भाख सत्रां खटतीस भाखीजै। घरपुड़ घाय निहाइ ध्रुवै। फीरोहर कर झाट जूंबरिक। हुल हाथळ जिहिं भगति हुवै।—दूदो

ध्रुवणहार, हारौ (हारी), ध्रुवणियौ—वि०।

ध्रुविश्रोड़, ध्रुवियोड़ौ, ध्रुव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ध्रुवीजणो, ध्रुवीजबो—भाव वा०।

ध्रुवतारौ-सं०पु० [सं० ध्रुव+तारक] मेरु के ऊपर रहने वाला उत्तर का एक तारा, सदा ध्रुव।

ध्रुवदरसक-सं०पु० [सं० ध्रुवदर्शक] १ सप्तर्षि मण्डल.

२ कुतुबनुमा।

ध्रुवदरसन-सं०पु० [सं० ध्रुवदर्शन] विवाह-संस्कारों के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें वर-वधू को मंत्र पढ़ कर ध्रुव तारा दिखाया जाता है।

ध्रुवपद-सं०पु० [सं०] ध्रुपद, ध्रुवक।

ध्रुवमंडळ-सं०पु० [सं० ध्रुव-मण्डल] सप्तर्षि तारों का समूह।

रू०भे०—द्रुमंडळ, द्रुमंडळि, धुवमंडळ, ध्रूमंडळ।

ध्रुवसंधि-सं०पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा।

रू०भे०—धुवसंधि।

ध्रुवियोड़ौ—१ देखो 'ध्रवियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'धुवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रुवियोड़ी)

ध्रूसमध्रूस-क्रि०वि० [अनु०] जोर-शोर से, तेजी से।

उ०—ध्रूसमध्रूस जांगियै ध्रुवतै। चित अकवर घड़ वेल चढ़ै। मद उदमाद विरह गहमाती। खांन वरेवा खयंग खड़ै।—दूदो

रू०भे०—धूंसमधूंस, धूसमधूस, ध्रूसमध्रूस।

ध्रू—१ देखो 'धू' (७) (रू.भे.)

उ०—इखे पित ऊपर लोह अपार। करै खग झाट 'गुमांन' कुंवार। धारूजळ मुगळ तूटत ध्रूह। विढै 'अभमुन्य' ज्युंही चक्रव्रूह।—सू.प्र.

२ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—१ भणि तेरह सौ छासठि भेद। विगति मात्र सोळह ध्रू वेद। आखर लुघू गुरु इगियार। वदां सुभंकर छंद विचार।—ल.पिं.

उ०—२ तप उल्हास तरसि मुणि सातन, चढ़ि वर सोह चढै ध्रू चीत। वीरत 'रयण' तणै तिण वेळा, ऊगा मुहि बारह आदीत।

—दूदो

ध्रूम्र—१ देखो 'धू' (रू.भे.) २ देखो 'धूम्र' (रू.भे.)

३ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)

ध्रूजटी—देखो 'धूरजटी' (रू.भे.)

उ०—नरां सीस धायौ झीक उडायौ ध्रूजटी नचै, सोहथां उठायौ वूर लोहां सूर साथ। राहजादै बचायौ 'भीमेण' नै सुरंग रोळै, नरां ज्यूं दुरंगां थयौ कूंपांनाथ।—गजसिंहपुरा रा ठाकुर जगरांमसिंह री गीत

ध्रूबकणो, ध्रूबकबो-क्रि०अ०—टूटना, खंडित होना।

उ०—उडुं कपाळ खग ओझड़ांह, दीझंति जांण दोटा दड़ांह। हम्मलां ढहै ढालां हसत्ति, ध्रूबकै दांत वाजै धरत्ति।—गु.रू.वं.

ध्रूबकणहार, हारौ (हारी)), ध्रूबकणियौ—वि०।

ध्रूबकिश्रोड़ौ, ध्रूबकियोड़ौ, ध्रूबक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ध्रूबकीजणो, ध्रूबकीजबो—भाव वा०।

ध्रूबकियोड़ौ-भू०का०कृ०—टूटा हुआ, खंडित।

(स्त्री० ध्रूबकियोड़ी)

ध्रूमाळा-सं०स्त्री०यौ० [रा० धू+सं० माला] मुण्ड-माला।

उ०—पारस प्रासाद रोग संपेखै, जांणि मयंक कि जळहरी। मेरु पाखती नखित्र माळा, ध्रूमाळा संकर धीर।—वेलि.

ध्रूय-देखो 'धू' (१५) (रू.भे.)

उ०—धवराडव ध्रूय म जांणै धरतां, चित्र पुहर करतां चाळ। मन लागौ बाळक माईतां, दूजी छोडी सहु दुवाळ।

—महादेव पारवती री वेलि.

ध्रूस-सं०स्त्री० [देश०] १ काली घटा।

उ०—चडिया भड़ तुरे चड चोट। काळी ध्रूस उपड़ै कोट। वागा जोड़ फौज वणाव। दम्मै दगियौ दरियाव।—गु.रू.बं.

२ देखो 'धूस' (रू.भे.)

ध्रूसकणो, ध्रूसकबो-क्रि०अ० [अनु०] ढोल, नगारे आदि वाद्यों का वजना, ध्वनि करना। उ०—माह महीना मांय, ढोल त्रंबाळू ध्रूसकै। लगन चोखा ले आव, वधावुं वेगु ना घणी।—अज्ञात

ध्रूसकणहार, हारौ (हारी), ध्रूसकणियौ—वि०।

ध्रूसकिश्रोड़ौ, ध्रूसकियोड़ौ, ध्रूसक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ध्रूसकीजणो, ध्रूसकीजबो—भाव वा०।

ध्रूसकियोड़ौ-भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ, वजा हुआ।

(स्त्री० ध्रूसकियोड़ी)

ध्रूसटणो, ध्रूसटबो-क्रि०स० [देश०] ध्वंस करना।

उ०—धार सनाह प्रसिद्ध ध्रूसटिया। नांमी सिंदूरी मुख नारि। भिड़ मदन गह विरह भांजियौ। 'रतनै' वांकुड़ै भरतारि।—दूदो

ध्रूसटणहार, हारौ (हारी), ध्रूसटणियौ—वि०।

ध्रूसटिश्रोड़ौ, ध्रूसटियोड़ौ, ध्रूसट्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ध्रुसटीजणौ, ध्रुसटीजबौ—कर्म वा० ।
ध्रुसणौ, ध्रुसबौ—रू०भे० ।
ध्रुसटियोड़ौ-भू०का०कृ०—ध्वंस किया हुआ ।
(स्त्री० ध्रुसटियोड़ी)
ध्रूमध्रूम—देखो 'ध्रूमधूम' (रू.भे.)
ध्रेठ—देखो 'धीठ' (रू.भे.)(उ.र.)
ध्रेठौ—देखो 'धीठ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० ध्रेठी)
ध्रोन-सं०पु० [रा० ध्रू] मस्तक, सिर ।
उ०—अम देस स्वरग सज नह भारत पज, दूठ 'दूदड़ै' दळपा दुजोण ।
पह निम मवर्ग-निर्ग पेखियो, पड़ पार्ग नानंतो ध्रोण ।
—हूंफो सांदू
ध्रोप, ध्रोफ—देखो 'धोप' (रू.भे.)
उ०—दरको मगनां सांप भांप करै । कळ पांण ग्रठोरिय ध्रोफ करै ।
जिण वार यळांराय सोर जठै । ग्रस जांण मळांराय मोर उठै ।
—पा.प्र.
ध्रोब—देखो 'दोब' (रू.भे.) (उ.र.)
ध्रोबग्राटम-सं०स्त्री०[सं० दुर्वा+ग्रष्टमी] भाद्रपद शुक्ला ग्रष्टमी जिस दिन रणछोड़राय का मेला लगता है ग्रौर बड़ा पवित्र दिन माना जाता है ।
ध्रोळहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.)
उ०—१ हूं जामूं सग ध्रोळहर, उर तज मोटी ग्रास । ग्रब देखूं जाय ग्रांगणै, ग्रण घर रा ऐवास ।—पा.प्र.
उ०—२ मूतो जायलपत सदा, ग्रंबर तणै धरांह । तेम मुवा परताप सूं, हणियो ध्रोलहरांह ।—पा.प्र.
ध्रोह—देखो 'द्रोह' (रू.भे.)
उ०—१ वेसासै दाखै क ल वचन्न । माहै राव ध्रोह धरै वड मन्न ।
—गो.रू.
उ०—२ 'सूर' 'गजण' कथ सांभळै, लगि ध्रोह सिलग्गी । करि तुरांण मज फेजमां, भड़ सिलह समग्गी ।—सू.प्र.
उ०—३ जैसिघ ध्रोह जणाय, रचि दोव चित मझि राय । सो मांनि फररफसाह, नित हूंमै मारण चाह ।—सू.प्र.
ध्रोही—देखो 'द्रोही' (रू.भे.)
उ०—फौजां लहंग दोड़ै फजर, धड़छै मग खळ ध्रोहियां । सिर छाव भरै थांणै सुभड़, सरदां जिम सीरोहियां ।—सू.प्र.
ध्रोही-वि०—द्रोह रखने वाला, शत्रु ।
उ०—बराहर मुख मोड़ो घणौ बोलतौ, तोलतौ गयण हाथां ग्रथागौ । गहै ग्रन दध्रोहा 'केर' दाखै सझी, उदर ध्रोहा हूंमै ग्राव ग्रागौ ।
—पहाड़खां ग्राढ़ो
ध्वंस-सं०पु० [सं०] नाश, विनाश, हानि, क्षय ।
उ०—ग्रद ध्वंस मंमर्मा बक्र प्रशंसा भारी । मुख ग्रागै छिपतै फिरतै मांसाहारी ।—ऊ.का.
ध्वंसक-वि० [सं०] नाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।
ध्वंसन-सं०स्त्री० [सं०] १ विनाश, तबाही, क्षय.
२ नाश करने की क्रिया ।
ध्वंसी-वि० [सं० ध्वंसिन्] नाश करने वाला, विध्वंस करने वाला ।
ध्वंस्त—देखो 'ध्वस्त' (रू.भे.)
ध्वज-सं०पु० [सं०] १ वह छड़ या दण्ड जिस पर पताका बांधी जाती हो, निशान. २ वह वस्त्र जिसे चिन्ह स्वरूप किसी देवालय ग्रथवा राष्ट्रीय इमारतों ग्रादि पर दण्ड के ऊपर बांध कर फहराया जाता है, झंडा, पताका ।
पर्याय०—केत, झंडो, नेजो ।
३ डगण के प्रथम भेद का नाम (IS)
४ फलित ज्योतिष के ग्रनुसार वार व नक्षत्र के सम्बन्ध से बनने वाले २८ योगों में से एक.
५ सामुद्रिक शास्त्र के ग्रनुसार हाथ में होने वाला ध्वजा के ग्राकार का चिन्ह जो शुभ माना जाता है ।
उ०—भुज प्रलंब ग्राजांन, कमळ ग्राक्रिति पद कोमळ । जग ग्रंगुज ध्वज कळस, मीन ग्रंकुस जंबूफळ ।—रा.रू.
६ वह घर जिसकी स्थिति पूर्व की ग्रोर हो.
७ पुरुषेन्द्रिय, लिंग ।
यौ०—ध्वज भंग ।
रू०भे०—धज, धज्ज, धुज ।
ग्रल्पा०—धजा, धुजा, ध्वजा ।
ध्वजचिध-सं०पु०यौ० [सं० ध्वज चिन्ह] पताका, निशान ।
उ०—सुभट तणा कड कड वाजिवा लागि, भटकबंध नाचिवा लागा, ध्वजचिध फाटिवा लागां ।—व.स.
ध्वजभंग-सं०पु०यौ० [सं०] क्लीवता, नपुंसकता ।
रू०भे०—धजभंग ।
ध्वजवान-वि० [सं० ध्वजवान्] १ जो ध्वज या पताका लिये हो, ध्वज वाला. २ चिन्ह वाला, चिन्हयुक्त ।
ध्वजा-सं०स्त्री० [सं० ध्वज] १ डगण के पांचवें भेद का नाम (पिंगळ)
२ देखो 'ध्वज' (ग्रल्पा., रू.भे.)
ध्वजादिगणना-सं०स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष के ग्रनुसार एक प्रकार की गणना जिसमे प्रश्न के फल कहे जाते हैं ।
ध्वनि-सं०स्त्री० [सं०] १ शब्द, नाद, ग्रावाज ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
२ ग्रावाज की गूंज, शब्द का नाद, शब्द का स्फोट.
३ काव्य की वह विशेषता या चमत्कार जो शब्दों के नियत ग्रर्थों के योग से सूचित होने वाले ग्रर्थ की ग्रपेक्षा प्रसंग से निकलने वाले ग्रर्थ में होती है । वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की ग्रपेक्षा व्यंग्यार्थ ग्रधिक विशेषता वाला होता है.
४ गूढ़ ग्रर्थ, मतलब, ग्राशय ।

रू०भे०—धन, धुणी, धुन, धुनि, धुनी, धुवांन, ध्वनी।

ध्वनिग्रह–सं०पु० [सं०] कान।

रू०भे०—धुनिग्रह।

ध्वनी—देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)

ध्वस्त–वि० [सं०] १ टूटा-फूटा, खंडित, भग्न.

२ नष्ट-भ्रष्ट.

३ गिरा हुआ, गलित, च्युत।

रू०भे०—ध्वंस्त।

ध्वांक्ष–सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार वार व नक्षत्रों से बनने वाले २८ योगों में से एक।

ध्वांत–सं०पु० [सं०] १ एक नरक का नाम, तामिस्र.

२ अंधेरा, अंधकार।

रू०भे०—धांम्रंत, धांत, ध्वांतस।

ध्वांतचर–सं०पु० [सं०] राक्षस, निशाचर।

ध्वांतस—देखो 'ध्वांत' (रू.भे.) (ह.नां.)

ध्वांतसत्रु–सं०पु० [सं० ध्वांतशत्रु] १ अग्नि, आग.

२ सूर्य, भास्कर. ३ चन्द्रमा।

ध्वांन–सं०पु० [सं० ध्वान] शब्द, आवाज, ध्वनि।

उ०—तांन गांन ततकार वजंत्रन। ध्वांन सिसर तत घन आनद्धन।

—मे.म.

ध्विज—देखो 'ध्वज' (रू.भे.) उ०—ध्विज पताका नि नहीं मंडप, राज पुत्र नवि दीसि। चिंता मनि करि ते राजा, विप्रि वाह्या रीसि।

—नळाख्यांन

ध्वेस—देखो 'द्वेस' (रू.भे.)

उ०—निज रोस रु ध्वेस से कांम नहीं। उर हांम आरांम हरांम नहीं।—ऊ.का.

न

न—जीभ की नोक से ऊपर के मसूड़ों को छू कर उच्चरित होने वाला संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का बीसवां तथा त वर्ग का अंतिम वर्ण प्राण, अघोष, अल्पप्राण व अनुनासिक व्यंजन।

नं-सं०पु०—१ सुख. २ मोक्ष. ३ संसार. ४ श्रृंगार. ५ काम.
६ रति. ७ हाथी. ८ दर्जी. ९ स्वामी (एका.)

नगी—देखो 'नगी' (रू.भे.)

नंग-सं०पु० [सं० अनंग] १ कामदेव, अनंग.
२ देखो 'नग' (रू.भे.)
उ०—गळे कुजेस गावरा, सधीर जे समावरा। अमंग हेम अग्रसा, अछोह नंग धार।—र.ज.प्र.

नंगर-सं०स्त्री० [देश०] कुलीन ? उ०—जांणि उलट्टी दोवड़ी, लिय नंगर नट्टी। पड़े 'गोवंद' ऊपरि गजर, खागां खळ खट्टी।—सू.प्र.

नंगळियो-सं०पु०—मिट्टी का बना विशेष बनावट का जल-पात्र जो शव-यात्रा के समय विश्राम स्थान तक जल भर कर साथ लिया जाता है। उ०—जो'ड़े सनै जिराण, जठै नर मितक जळावै। सोडी घोरै मे'ल विसूणी बीच नरावै। जळ रो कर छिड़काव, नंगळियो फटकै फोड़ै। हांडी पावक हेत, दागवै पाळा जो'ड़े।—दसदेव

नंगाती-वि०—कुच वक्षस्थल वाली।
उ०—बावर बीनरिया मोडणियें आई। हावर नयणां री टावर वय हाई। नवला नंगाती संगाती सैणी। निरखी नव अंगा गंगाजळ नैणी।—ऊ.का.

नंगारची—देखो 'नगारची' (रू.भे.)

नंगारो—देखो 'नगारो' (रू.भे.)

नंगोड़ो—देखो 'नगोड़ो' (रू.भे.)

नंगो—देखो 'नागो' (रू.भे.)

नंचणी—देखो 'नाचणा' (रू.भे.) उ०—नंचणी जात पर पंचणी हूई नहूं। कंचणी वात अणियात कीधी।
—महाराजा अभयसिंह की उपपत्नी लालां रो गीत

नंद-सं०पु० [सं०] १ गोकुल के गोपों के मुखिया, जिनके यहां श्रीकृष्ण का जन्म काल बीता था।
यौ०—नंद-नंद, नंद-नंदन।
२ मगध देश के राजाओं की उपाधि, जो विक्रम से २५० वर्ष पूर्व राज्य करते थे. ३ पुत्र, लड़का (डि.को.)
उ०—१ वसिस्ट साथ जेणु वार, ग्यांन कोध सू-मती। दईव सेस पूत नंद, मैं न कोट सूवती।—सू.प्र.
उ०—२ नंद 'सुजांण' सदा निकळंकन, बाधै छ्त्रधरां डण वार। कर खागार ऊजळौ कीधौ, इळ 'गजबंध' तणौ आचार।—बां.दा.
४ आनन्द, हर्ष. ५ सच्चिदानंद, परमेश्वर.
६ विष्णु. ७ एक नाग का नाम.
८ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम.
९ आदि गुरु लिका (डगण के एक भेद का नाम ऽ।) (पिंगळ)
१० एक प्रकार का मृदंग.
११ एक राग का नाम, जिसे मालकौस का पुत्र मानते हैं.
१२ ग्यारह अंगुल लंबी बांसुरियों का एक भेद विशेष.
१३ नौ निधियों में से एक निधि का नाम.
१४ देखो 'नंदन'।
अल्पा०—नंदो।

नंदकंवर—देखो 'नंदकुमार' (रू.भे.)
उ०—फुल कळि सूं गजरा संवार कै, रंगीला राज अलबेलो छिव सूं द्वारै नंदकंवर के।—रंगीलोराज

नंदक-वि० [सं०] १ आनन्ददायक. २ कुलपालक.
३ देखो 'निंदक' (रू.भे.) उ०—तूं नंदक कुळहीण तूं, तूं कायर करतार।—गजउद्धार

नंदकिसोर-सं०पु०यौ० [सं० नन्दकिशोर] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण (ह.नां.)

नंदकुंअर, नंदकुंआर, नंदकुमार, नंवकुमार-सं०पु०यौ० [सं० नंद-कुमार] श्रीकृष्ण (ह.नां.) उ०—सागुणां सुधार सांगी आवियै निजारसाह, कादमो नंदकुंआर, कंस मार कंस।—पी.ग्रं.
रू०भे०—नंद कंवर।

नंदगर—देखो 'नंदगिरि' (रू.भे.) उ०—परा हुकम नीठो लियो सगह पतसाह रै। आवियो 'विजो' गढ़ नंवगर ऊपरै।—दुरसो आढो

नंदगांव—देखो 'नंद-ग्राम' (रू.भे.)

नंदगिर, नंदगिरि-सं०पु०यौ० [सं० नंदगिरि] १ आबू पर्वत की एक चोटी का नाम. २ आबू पर्वत।

नंदग्राम-सं०पु०यौ० [सं० नंद-ग्राम] १ वृन्दावन का एक ग्राम जहां नंद गोप के यहां श्रीकृष्ण रहते थे.
२ देखो 'नंदिग्राम' (रू.भे.)
रू०भे०—नंदगांव।

नंदण—१ देखो 'नंदन' (रू.भे.) उ०—दसरथ नृप नंदण हर दुख दाळद मिटण फंद जांमण मरण। (र.ज.प्र.)
२ देखो 'लंदन' (रू.भे.) उ०—मचै नेह विकराळ, जरमन ईंगळ मारकां। पड़ै लग धारकां रीठ आर्मी। पताकण फारकां पीठ नंदण 'पती'। मारकां मकां लज पीठ सामी।—किसोरदान बारहठ

नंदणी—देखो 'नंदनी' (रू.भे.)

नंदणु—देखो 'नंदन' (रू.भे.)
उ०—आदि जिणेसर केरउ नंदणु। कुम्मरिंदु हुउ कुळमंडणु।
—पं.पं.च.

नंदणी—देखो 'नंदन' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—सिरिवंत साहि सुतन्न । माता सिरिया देवी नंदणी ।—स.कु.
नंदणौ, नंदवौ—देखो 'निंदणौ, निंदवौ' (रू.भे.)
नंदनंद-सं०पु०यौ० [सं०] १ नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण ।
उ०—उर नंदनंद प्रदुमन आराधै ।—सू.प्र.
२ विष्णु (अ.मा.). ३ ईश्वर (नां.मा.)
नंद-नंदन-सं०पु०यौ० [सं०] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण ।
नंद-नंदिनी-सं०स्त्री०यौ० [सं०] (जिसे कंस ने मारने का प्रयत्न किया था पर वह आकाश में चली गई) नंद की कन्या, दुर्गा, योगमाया ।
नंदन-सं०पु० [सं०] १ इंद्र की पुष्पवाटिका, देवोपवन (नां.मा.)
२ महादेव ।
यौ०—नंदन वन ।
३ विष्णु. ४ लड़का, पुत्र. ५ देखो 'लंदन' (रू.भे.)
उ०—जोधो रूप जरद्द जरमनां जाळसी । भारत वरस भुवाळ नंदन पत नाळसी ।—किसोरदांन बारहठ
वि० [राज०] मूर्ख, पागल ।
रू०भे०—नंदण, नंदणु ।
अल्पा०—नंदणी ।
नंदनवन, नंदनवन-सं०पु० [सं० नंदनवन] इंद्र का वन, इंद्र की वाटिका (अ.मा.)
उ०—१ रांणी इंद्रांणी मनहु, राजा इंद्र समांन । सखी सहेली देख सब, परत अप्सरा जांन । दिस परत उद्यांन सो, नंदनवन सम तात । देखत चित्त प्रसन्न हो, सोभा वरणी न जात ।—सिंघासण बत्तीसी
उ०—२ मन नंदनवन माहरू, माधव तुं म्रिगराज । नर कुंजरवन सारिखा, नावइ माहरी काजि ।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—नंदीवन ।
नंदनी-सं०पु० [सं० नंदिनी] १ पुत्री. २ कामधेनु ।
३ मुनि वशिष्ठ के आश्रम में रहने वाली कामधेनु की पुत्री विशेष, जिसकी सेवा कर के दिलीप ने रघु (पुत्र) को प्राप्त किया था ।
रू०भे०—नंदणी ।
नंदप्रयाग-सं०पु० [सं०] बदरिकाश्रम के पास में सप्त प्रयागों में गिना जाने वाला एक तीर्थ ।
नंदरवारी-सं०स्त्री० [देश० ?] एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—नीलवटां चकवटां घौंतवटां मुहिवटां नाटी दोटी घटी कठपोठ पाघड़ी वींडी रेट चूंनडी पातलसाडी नंदरबारी पाघड़ी पांमडी लोमडी बाहण वही लोवडी पछेडी चूंनडी... ।—व.स.
नंद-रांणी-सं०स्त्री०यौ० [सं० नंदराज्ञी] नंद की स्त्री, यशोदा ।
नंद-लाल-सं०पु०यौ० [सं० नंद+लालक] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण ।
नंदलोक-सं०पु०यौ० [सं०] वृन्दावन ।
उ०—लछवर लार गोपियां लूटां, मारग मांह दही रा माट । इंद्रलोक वैकूंठ ईखतां । नंदलोक फूटरो नराट ।—अज्ञात
नंद-वंस-सं०पु०यौ० [सं० नंद-वंश] मगध का विख्यात राजवंश ।
नंदसेण—देखो 'नंदिसेण' (रू.भे.) उ०—पतित थका ही परत्रणी, गुणी करै उपगार । नर दस दस नंदसेण, नित, बोधै वेस्या बार ।—ध.व.ग्रं.
नंदादूहौ-सं०पु० [रा०] प्रथम व तृतीय चरण में बारह बारह मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में सात-सात मात्राओं का मात्रिक छंद विशेष ।
नंदा-सं०स्त्री० [सं०] प्रत्येक पक्ष की प्रतिपदा, षष्ठी व एकादशी तिथि का नाम. २ वर्तमान अवसर्पिणी के दसवें अर्हंत की माता का नाम (जैन)
३ संगीत की एक मूर्च्छना.
४ देखो 'निंदा' (रू.भे.) (डि.को.)
नंदातीरथ-सं०पु०यौ० [सं० नंदातीर्थ] हेमकूट पर्वत का एक तीर्थ और वहां बहने वाली एक नदी ।
नंदादेवी [सं०] दक्षिण-हिमालय की एक चोटी ।
नंदावरत-सं०पु०— देखो 'नंद्यावरत' (रू.भे.)
नंदिकर-सं०पु० [सं०] शिव (डि.को.)
नंदिकुंड-सं०पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ ।
नंदिकेस-सं०पु० [सं० नंदिकेश] शिव के द्वारपाल, नंदिकेश्वर ।
नंदिकेस्वर-सं०पु० [सं० नंदिकेश्वर] शिव के द्वारपाल, बैल का नाम ।
नंदिग्राम-सं०पु० [सं० नंदिग्राम] अयोध्या के पास एक गांव जहां भरत ने राम के वनवास काल में चौदह वर्ष तप किया था ।
नंदिघोस-सं०पु० [सं० नंदिघोष] अर्जुन का वह रथ जिसे अग्निदेव ने प्रसन्न होकर दिया था. २ शुभ व मंगल घोषणा ।
नंदिमुख-सं०पु० [सं०] १ पक्षी विशेष.
२ शिव ।
नंदिरुद्र-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव ।
नंदिवरधन-सं०पु० [सं० नंदिवर्द्धन] शिव, महादेव ।
वि०—आनन्द बढ़ाने वाला ।
नंदिसेण-सं०पु० [सं० नन्दिसेन] जंबूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र में उत्पन्न वर्तमान अवसर्पिणी के चतुर्थ तीर्थंकर (व.स.)
रू०भे०—नंदसेण ।
नंदी-सं०पु० [सं० नंदिन] १ शिव का द्वारपाल व परमप्रिय बैल ।
२ एक सूत्र ग्रंथ (जैन)
उ०—नंदी सूत्र में कह्या, न्यारा न्यारा अरथ लगाया ।—जयवांणी
३ उड़द (डि.को.)
४ वह बैल जिसके शरीर पर मांस-विकार के कारण अलग-अलग आकार बन कर शरीर पर लटकने लगते हैं ।
रू०भे०—नांदी ।
अल्पा०—नांदियौ ।
५ देखो 'नदी' (रू.भे.)
नंदीगण-सं०पु०—१ शिव के द्वारपाल व परमप्रिय बैल ।
उ०—नंदीगण चढ़ो आठ गण आगळ, लोपी अगड तणी ताइ लाज ।

[illegible] सिर पर मूंड [illegible], करै [illegible] ।

—महादेव पारवती री वेलि.

२ सिर के [illegible] वाला बैल, सांड ।

नंदीसिर— देखो 'नंदीस्वर' (रू.भे.)

उ०—[illegible] कर्यो होत, नंदीसिर [illegible] दूसरी मेरगिर [illegible] ।—रा.सा.सं.

नंदीपमळ—सं०पु०[illegible] [सं० नंदी-[illegible]] महादेव का द्वारपाल व परम-[illegible] बैल । उ०—[illegible] बार बार मातोमाते बोलि बोलि नै [illegible], [illegible] नै महादेव नंदीपमळ कूंदता फिरै छै सो [illegible] नहीं छै ।—रा.सा.सं.

नंदीपति-सं०पु० [सं०] १ शिव, महादेव.

२ देखो 'नदीपति' (रू.भे.)

नंदीवन—देखो 'नंदनवन' (रू.भे.)

उ०—सिंधु तट थान सहलि मुरां, जिस्में रूप निरसंद रो। नवरंग घन वाड़ी निपुन, किरि नंदीवन इंद रो ।—रा.रू.

नंदीस-सं०पु० [सं० नंदीश] १ शिव. २ संगीत के तालों के साठ भेदों में से एक.

[सं० नदीश] ३ समुद्र ।

नंदीस्वर-सं०पु० [सं० नंदीश्वर] १ शिव. २ नंदीश ताल.

३ शिव का एक गण ।

नंदौ—देखो 'नंद' (अल्पा., रू.भे.)

उ० —पग घग समुद्र विजय जी रा नंदा रे ।—जयवांणी

नंद्यावरत्त(क)-सं०पु० [सं० नंद्यावरत्तक] एक प्रकार का भवन विशेष जिसके चारों ओर बरामदा हो और जिसके पश्चिम में द्वार न हो ।

रू०भे०—नंदावरतक ।

नंद्रा—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

उ०—दूजो रात आप अरध नंद्रा सूता छै ।

—कल्यांणसिंघ राठ़ेल री वात

नंन—देखो 'नन' (रू.भे.) उ०—कहै थोक निहो नंन पार कोइ सग्ध आत माणी नहीं ।—पी.ग्रं.

नंबर—सं०पु० [अं०] (वि० नंबरी) गिनती, संख्या, अंक ।

क्रि०प्र०—देणो, लगाणो, लागणो ।

मुहा०—१ नंबर आवणो—बारी आना, मौका मिलना.

२ नंबर धर्‌ लेणो—बुरी तरह से फटकारना.

३ नंबर लागणो—बिगड़ जाना ।

रू०भे०—नंबर ।

नंबरदार—सं०पु० [अं० नंबर+फा० दार] मालगुजारी आदि वसूल करने में सहायता देने वाला व्यक्ति ।

रू०भे०—नंबर-दार ।

नंबरी-वि० [अं०] १ श्रेष्ठ, प्रसिद्ध, मशहूर.

२ वह जिस पर नंबर लगा हुआ हो. ३ कुख्यात ।

न्ह, नंह—देखो 'नहीं' (रू.भे.) उ०—१ एकै जग जीह कहे कुरा पंत, पाये नह प्रांमै मेम पुरांत ।—ह.र.

उ०—२ दै नह सेंघा नूं दगो, बहै कुतोही ग्यांन। देवे सेंघा नूं दगो, नाह करै सनमांन ।—बां.दा.

नंहकार—देखो 'नकार' (रू.भे.) उ०—मुग हाजर बोलत पुत्र मही, नंहकार करे जग पाप नहीं ।—ऊ.का.

न-सं०पु०—१ बुद्ध. २ पंडित. ३ प्रभु. ४ बंधन. ५ अहमेव.

६ सोना (एका.)

वि०—१ प्रगत, गुप्त.

२ दूसरा, अन्य (एका.)

अव्यय—१ निषेधसूचक शब्द, नहीं ।

उ०—पग्गइ न तूनइं, थोडलइं अपमांनि रूसइ ।—व.स.

२ देखो 'नौ' (रू.भे.) उ०—तेह नी विरति नथी आवती तउ महउ न अजांण नई किम विरति आवइ ?—षष्ठिशतक प्रकरण

३ देखो 'नै' (रू.भे.)

नअण—देखो 'नयन' (रू.भे.) उ०—पाट तास भीमस नसूं कुंडणपुर। को कीधो राज दस नअण भरती कुंअर ।—रुकमणी हरण

नइं, नइ—१ देखो 'नदी' (रू.भे.) उ०—१ नइ नाळा पूरइं वहइं, वटूकइ वीजइ रे। भीजइ नइ गीजइ चींकरा सपगरणइ ए ।

—नळ-दवदंती रास

उ०—२ नइ मइ माछा हीटइं ।—उ.र.

उ०—३ तात मसवाचा नइ वहइ ।—उ.र.

२ देखो 'नाई' (रू.भे.) उ०—सोनी, नइ, सुतार, पणि, वागड़, वागड़ वंस । तोली, तंबोळी, वळी, दोसी ऊपरि हंस ।—गा.का.प्र.

३ देखो 'नै' (रू.भे.) उ०—१ बाबीहयउ नइ विरहणी, दुहुंवा एक सहाव । जब ही बरसइ घण घणू, तबही कहइ प्रियाव ।

—ढो.मा.

उ०—२ परवत नइ अहिनांणि गांमु वसइ ।—उ.र.

उ०—३ तात ! जो आवु नळ धणी, सूं जीवी सइ काज रे । पाज-नइ आज ज दूत ज मोकळु ए ।—नळ-दवदंती रास

नइड़ो, नइडउ, नइडो—सं०पु०—हाथ की किसी उंगली के नाखून के मध्य में होने वाला फोड़ा विशेष. २ ऊंट या पशुओं के पैर का रोग विशेष ।

रू०भे०—नईड़ो ।

३ देखो 'निकट' (अल्पा., रू.भे.) उ०—हिमाचळ नइया हुई भार ।

—महादेव पारवती री वेलि.

नइण—देखो 'नयन' (रू.भे.) उ०—ऊनमि आई वदळी, ढोलउ मायउ चित्त। यो वरसट गितु आपणी, नइण हमारे नित्त ।—ढो.मा.

नइति—देखो 'नैरत' (रू.भे.)

नइर—देखो 'नगर' (रू.भे.)

उ०—जिन्नी विहार अम्मणह याह, ममणमा देस अहिया गिराह। ओढ़ला नइर कु गिणइ भंग, पंउवइ लगउं फेरिय पवंग ।

—रा.ज.सी.

नई—१ देखो 'नदी' (रू.भे.) उ०—मुकरमैं प्रोळि प्रोळिमैं मारग, मारग सुरंग अबीरमई। पुरी हीर सेन एम पैसार्यौ, नीरोवरि प्रवसन्ति नई।—वेलि.

वि०स्त्री०—२ देखो 'नवौ' (पु०) (रू.भे.)

३ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

नईड़—सं०पु०यौ० [सं० नदी-तट] १ नदी के इधर-उधर स्थित भू-क्षेत्र.

२ देखो 'निकट' (अल्पा., रू.भे.)

नईड़ौ—देखो 'निकट' (रू.भे.)

नईयौ—सं०पु०—लकड़ी में छेद करने का बढई का छोटा ओजार विशेष।

नईस—देखो 'नदीस' (रू.भे.)

नउं—देखो 'नै' (रू.भे.) उ०—रामसिंघजी कहियौ तूं कुंभळमेर जाहि तौ नउं भांणजी नूं भळावौ।—द.वि.

नउ—प्रत्यय—१ सम्बन्ध सूचक विभक्ति, का।

उ०—१ कुमति घणी मुझ मन वसइ, सुमति थकी नहिं नेह। माठी करणी मां मडघउ, हूं अवगुण नउ गेह।—वि.कु.

उ०—२ पाम्यउ मुगति नउ राज रे।—स.कु.

२ देखो 'नवौ' (रू.भे.) उ०—नितकउ हुवइ जोग नउ नवलउ, घणा जुग वउळिया अनंत।—महादेव पारवती री वेलि.

३ देखो 'नै' (रू.भे.)

४ देखो 'नव' (रू.भे.)

नउकार—देखो 'नवकार' (रू.भे.) उ०—नउकार तणउ तप पहिलउ वीसड़ जांणि।—स.कु.

नउकारवळि—देखो 'नवकार-वाळी' (रू.भे.)

नउतणौ, नउतवौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रवौ' (रू.भे.)

उ०—राजमतीं कउ रचउ वीवाह। च्यारि खंड जीव नउतीया।
—बी.दे.

नउद—सं०स्त्री० [सं० नवत] १ चित्रकारी की हुई हाथी की झूल (उ.र.)

२ ऊनी वस्त्र, झूल।

नउय— [सं० नयुत] नयुत (नयुतांग को ८४ लाख से गुणा करने पर एक नयुत होता है) एक काल विभाग (जैन)।

नउरता—देखो 'नोरता' (रू.भे.)

उ०—नव दिन पूंगा नउरता। वळि वाकुळ पूजा रचौ ढाई।—बी.दे.

नउल—देखो 'नकुळ' (रू.भे.) (उ.र.)

नऊं—सं०स्त्री०—१ नवमी तिथि.

२ देखो 'नव' (रू.भे.) उ०—समाधी साधू मैं अवर न अराधूं उर अरू। नऊं नारें लांघूं दसम निज द्वारे धुन धरूं।—ऊ.का.

नक—देखो 'नाक' (मह., रू.भे.) (अ.मा.)

नकछींकणी—सं०स्त्री० [सं० नासिका+छिक्कनी] काँटेदार महीन-महीन पत्तियों वाली एक प्रकार की घास विशेष जो औषधि प्रयोग में ली जाती है, जिसके सूंघने से छींकें आती हैं (अमरत)

नकटाई—सं०स्त्री० [सं० नक्र+कर्त्तन+रा०प्र०आई] १ नाक काटने की क्रिया. २ निर्लज्जता, धृष्टता. ३ वेहयापन।

रू०भे०—नगटाई।

नकटौ—वि०पु० [सं० नक्र+कर्त्तनम्] (स्त्री० नकटी) १ कटी हुई नाक वाला। उ०—नकटौ बूचौ निरख अंग अंग में उफणायौ। बोलें गूंगौ बोल सबद सुण इधक सुणायौ।—ऊ.का.

२ निर्लज्ज, ढीठ। उ०—दुरभिख निकटासण किण नैं नह दीधौ। नकटैं नकटापण कृपणासय कीधौ।—ऊ.का.

३ वेहया।

मुहा०—नकटा देव सूंमड़ा पुजारी—जैसे को तैसा।

रू०भे०—नगटौ।

अल्पा०—नकटियौ, नगटियौ।

नकटियौ—देखो 'नकटौ' (अल्पा., रू.भे.)

नकटियौ-कोट—सं०पु०यौ०—ताश के चौकड़ी के खेल में रंग बोलने वाले पक्ष की वह हार जिसमें विपक्षी लगातार नौ हाथ बनाने में सफल हो जाते हैं।

रू०भे०—नगटियौ-कोट।

क्रि०प्र०—देणौ, लेणौ।

नकतोड़—ऊँट के नाक में डाली जाने वाली वाली विशेष।

उ०—राईकां रावतां, जकडि लीधा जाकोड़ां। बदन कड़ां बीटिया, तरां घाती नकतोड़ा।—मे.म.

नकद—देखो 'नगद' (रू.भे.)

नकदी—देखो 'नगदी' (रू.भे.)

उ०—थां अठै टिकौ जोख आवै तौ जायगां लेवौ, जै भावै तौ नकदी लेवौ।—गोपाळदास गौड़ री वारता

नकफूल—सं०पु० [सं० नक्र+राज० फूल] नाक का आभूषण विशेष।

अल्पा०—नकफूली।

नकफूली—सं०स्त्री०—देखो 'नकफूल' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—सुंदरि चोरे संग्रही, सब लीया सिणगार। नकफूली लीधी नहीं, कहि सखि कवण विचार।—ढो.मा.

नकवेसर—सं०पु० [सं० नक्र+वेसर=लम्बोतरा या सुराहीदार मोती] स्त्रियों के नाक में धारण करने का आभूषण विशेष।

उ०—१ नाक नवल्ली नारि रै, नकवेसर घण नूर। मोती अहियां चांच मझ, जांणक कीर जरूर।—बां.दा.

उ०—२ बनी ए थांनै ल्याद्यां सांचा मोती, थै वयां मैं वैठ पुवाती। बनाजी मैं फोणी में रे पुवाती, नकवेसर वैठ जड़ाती। ए थारी बोर जड़ाऊं टीकौ, थै काढ़ घूंघटौ तीखौ।—लो.गी.

उ०—३ मगमद कुंकमचंद मिळ, द्रग अंजन छवि दीन। नकवेसर झमकत किनक, नाग पांन मुख लीन।
—वगसीरांम प्रोहित री वात

रू०भे०—नकवेसर।

नकर—देखो 'नक्र' (रू.भे.) उ०—जा रे नकर कर देखियौ थंनै।

नकराक्रत—वि० [सं० नक्र+आकृति] मगरमच्छ की आकृति वाला।

नक्कर-देखो 'निक्कर' (रू.भे.) उ०—कोन कहै कीधा नर कंत, 'सीहां' नर आवंत अकंत। कलिजेर नकर न दुजो कोई, पतुरे हरे किसो वरोत।—दुरसाजी राठौड़ री गीत

नकल-सं०स्त्री० [अ०] १ मूल वस्तु को देख कर उसके अनुसार बनाई हुई। उ०—असल सूं नकल मोटी श्रदल, दुरस्त होणां गम नहीं। सकलित हुंत देखो श्रदत, हुवा नाका गम नहीं।—ऊ.का.

२ अनुकरण लेख आदि की अक्षरशः प्रतिलिपि. ३ स्वांग.

४ अद्भुत और हास्यजनक आकृति.

५ नकार। जैसे—तू नकला करो हो, नुकादो तो मारो भी आवैला।

क्रि०प्र०—उतारणी, उतारणी, करणी, करावणी, बणणी, बणा-वणी, मारणी, होरणी।

६ नकल बही।

नकलची-वि० [अ० नकल+रा०प्र०ची] नकल करने वाला, नक्काल।

नकलनवीस-सं०पु० [अ० नकल+फा० नवीस] दूसरे के लेखों की नकल करने वाला (फरासतो)।

नकलनवीसी-सं०स्त्री०—दूसरे के लेखों की नकल करने का कार्य (फरासती)।

नकलबही-सं०स्त्री०—वह बही जिसमें दुकानदार उधार संबंधी लेन-देन का हिसाब रखता है।

नकलियो—देखो 'नगलियो' (रू.भे.)

नकली-वि० [अ०] १ नकल कर के बनाई जाने वाली, कृत्रिम, बनावटी.

२ जो असली न हो, खोटा, जाली, झूठा।

नकल्यो—देखो 'नगलियो' (रू.भे.)

नकवाल-सं०पु० [सं० नक+वालः] नाक के भीतर के बाल।

नकवेसर—देखो 'नकवेसर' (रू.भे.)

उ०—१ श्रवण-श्रवण कुंडळ सारीसा। श्रांत-भांत प्रत श्रंजण एम। संभ्रम 'सूर' तुम्हाळी समवड़। जुड़ै नहीं नकवेसर जेम।
—सांदियां मूलो

उ०—२ उदमाद हुई छिव देख अनोपम, वळ छळ तणउ विचारत बंध। थांना जड़ित पहिरी नकवेसर, मद आविया ज्यांही मदगंध।
—महादेव पारवती री वेलि.

नकस-सं०पु० [अ० नक्श] बेल-बूटे, उभरा हुआ चित्र या फूलपत्ती का वह काम जो किसी वस्तु पर खोद कर बनाया जाय।

उ०—म बरछी हुण भात री छै। ताड़ रा बह, पीतळ रा भरता, कूड़ा मजबेत दांणै रा दळ, रांमपुरै रा घड़ियोड़ा, रूपै रा सोने रा नकस छै।—रा.सा.सं.

नकसदार-वि० [अ० नकस+फा० दार] खोद कर या कलम से सोने, चांदी के बेल-बूंटों वाला, नक्काशीदार।

उ०—सोनै रूपै रे गरकाव कीधी थकी, नकसदार जांणै गोडियै नाळ सांधी कीधी छै।—रा.सा.सं.

नकसबंदिया-सं०पु० [अ० नकस+बंध] मुसलमानों के सूफी मत के फकीरों का एक सम्प्रदाय जो पहलवानी भी करते हैं (मा.म.)

नकसानवीस-सं०पु० [अ० नक्शा+फा० नवीस] किसी प्रकार का नक्शा बनाने वाला।

रू०भे०—नक्सानवीस।

नकसानवीसी-सं०स्त्री० [अ० नक्शा+फा० नवीसी] नक्शा बनाने का कार्य।

रू०भे०—नक्सानवीसी।

नकसीर-सं०पु० [सं० नक्+शिरा] नाक से बहने वाला रक्त।

रू०भे०—नकीर, नकेर, नसीर, नसेर।

नकसो—देखो 'नक्सो' (रू.भे.)

नकांम—देखो 'निकांम' (रू.भे.)

उ०—घणौ सकोप रहै कर फेरा, फोजां साह तणी चौफेरा। श्रागम निस दिस विदिस अंधेरा, हालण सोध नकांम नहेरा।—रा.रू.

नका—देखो 'निका' (रू.भे.)

उ०—असपत इह श्रवनि आहुड़ियां, धारा भड़ियां सहै धका। धण पड़ियां सांकड़िया घड़ियां, ना धीहड़ियां पड़ी नका।—दुरसो आढ़ो

नकाब-सं०स्त्री० [अ०] मुंह छिपाने के लिए सिर पर से गले तक डाला जाने वाला महीन-महीन रंगीन कपड़े या जाली का बना हुआ टुकड़ा। उ०—म्हैं सूतां सूतां, बिना हिलयां ई थोड़ी-थोड़ी आंख्यां खोल'र देख्यो तो दरवाजे रै मांयला कांनी मूंडा पर काळो नकाब नांख्यां अर हाथ में छुरी लियां एक मूरत ऊभी ही।—रातवासो

नकार-सं०पु० [सं०] १ निषेध सूचक शब्द, 'न' या 'नहीं' का बोधक शब्द, अस्वीकृत।

उ०—मन माया लालच लियां, विसळो लियां लिलाट। रसण नकार लियां रहै, श्रो सूंमां रो घाट।—बां.दा.

२ 'न' वर्ण। उ०—एक बरस में ऊपना, सूंम कहै इकसार। दोलत हुई दकारियो, दोलत थंभ नकार।—बां.दा.

३ कृपण, कंजूस. ४ देखो 'नगारो' (मह., रू.भे.)

उ०—नकार धुवधुवै नकी, बोलतै नहीं। रातांक राग कण रै सु श्रंग खोलतै नहीं।—ऊ.का.

५ देखो 'निकार' (रू.भे.)

६ छंद शास्त्र में नगण का एक नाम।

रू०भे०—नंहकार।

अल्पा०—नकारो, नाकारउ, नाकारो, नाधारो।

नकारखांनो—देखो 'नगारखांनो' (रू.भे.)

नकारची—देखो 'नगारची' (रू.भे.)

नकारणो, नकारबो—देखो 'नाकारणो, नाकारबो' (रू.भे.)

नकारो—१ देखो 'नकार' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पदम हर सीह साहूळ उग्रवटपणै, समवड़ी हुवै नह मूळ गर्भ्रै। जग तणै मूळ जग तिलक दीघो जको, नकारां ऊपरै मूळ नांकै(रै)।
—तिलोकजी बारहठ

२ देखो 'निकारो' (रू.भे.)

नकाळ—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)

नकाळौ—१ देखो 'निकाळ' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'निकाळौ' (रू.भे.)

नकास—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)

नकासणौ, नकासबौ—क्रि०अ० [सं० निष्कासन्] निकलना।
उ०—ओपै लपेटो अपार सीस वागो घोरादार अंगां। कुळै ताज पैठां जोत नगारीं करूर। आवळां दळां में 'म्यारा' प्रकासियौ रीत एही। सांवळां वादळां मांहे नकासियौ सूर।
—मयारांम दरजी री बात

नकासी—सं०स्त्री० [अ० नक्काशी] १ किसी वस्तु आदि पर खोद कर बनाये गये वेल-बूटों आदि का कार्य।
२ उपर्युक्त विधि से बनाए गए वेल-बूटे आदि।
रू०भे०—नक्कासी, नखसी।
३ देखो 'निकासी' (रू.भे.)

नकासीदार—वि० [अ० नक्काशी+फा० दार] जिस पर नक्काशी की गई हो, वेल-बूटे दार।
रू०भे०—नक्कासीदार।

नकासौ—देखो 'निकाळौ' (रू.भे.)

नकी—वि० —१ निश्चित, दृढ़, खरी.
२ देखो 'नकूं' (रू.भे.) उ०—नकी खेह लागी रही देह नीकी, तसूं नागणी गाय री चंद्रटीकी।—ना.द.
क्रि०वि०—१ निश्चय कर के, निःसंदेह, जरूर, अवश्य।

नकीतळाव, नकीताळाव—सं०पु०—एक तालाव जो आवू पर्वत पर स्थित है, जिसे हिन्दू लोग तीर्थ स्थान मानते हैं।
रू०भे०—नक्कीतळाव।

नकीब—सं०पु० [अ०] १ राजा-महाराजा की सवारी के समय आगे आवाज लगाते हुए चलने वाला चौवदार. २ दरवार के समय बादशाह से भेंट करने के लिए जाने वाले का नाम जोर से पुकारने वाला व्यक्ति। उ०—१ फिर नकीब चहुंतरफ, एम वक कही आवाजां। वेग चढो वेढकां सजै जुध काज सकाजां।—सू.प्र.
उ०—२ धम धम वागे नमागळां, हुवे नकीवां हल्ल। सादां आजै सम्मळी, किनियांणी करनल्ल।—अलवर नरेस वख्तावरसिंह
रू०भे०—नक्कीव।

नकीर—देखो 'नकसीर' (रू.भे.)

नकुळ—सं०पु० [सं० नकुलः] १ राजा पांडु के चौथे पुत्र का नाम (डिं.को.)
२ गिलहरी के आकार का किन्तु उससे कुछ वड़ा और भूरे रंग का एक मांसाहारी जंतु विशेष जो चूहों आदि को खा कर पेट भरता है। सांप को मारने के लिए यह विशेष रूप से प्रसिद्ध है (डिं.को.)
रू०भे०—नउळ, नकुली, नकुलु।
अल्पा०—नवळियौ, नोळियौ।

नकुलांध—सं०पु० [सं०] नेत्र का एक रोग, जिसमें वस्तुएँ रंग-विरंगी दिखने लग जाती हैं और आंखें नेवले की तरह चमकने लगती हैं।

नकुळीस—सं०पु० [सं० नकुलीश] तांत्रिकों के एक भैरव का नाम।

नकुलु—देखो 'नकुळ' (रू.भे.)
उ०—चउपउ नकुलु असंधउ थाइ, सहदे वारह नरवइ गाइ।
—पं.पं.च.

नकूं—अव्यय [सं० नखलु, प्रा० णक्खु] १ कुछ भी नहीं, नहीं।
उ०—करै जकौ करतार, नर कीधौ होवै नकूं। सह खावै संसार, मन रा लाडू मोतिया।—रायसिंह सांदु
२ कुछ भी। उ०—देस सिंघ 'ऊनड़' दियौ, दीधौ सिर जगदेव। 'बांका' जस रै वासतै, दाता नकूं अदेव।—वां.दा.
रू०भे०—नकी, नकौ।

नकेर—देखो 'नकसीर' (रू.भे.)

नकेल—सं०स्त्री० [सं० नक्रम्+रा०प्र०एल] १ ऊँट की नाक में बंधी लकड़ी या धातु का टुकड़ा जो रस्सी बांधने को डाला जाता है।
उ०—१ नकेलां नके घात गोळां नुखत्तां। रसै वांधियै खोलिया कोप रत्तां।—रा.रू.
उ०—२ मोहरी डोरी रेसमी, नौखी चंदण नकेल। रूपाळक फण नाग रंग, वाळक जुंग वकेल।—सू.प्र.
रू०भे०—नाकेल।
अल्पा०—नाकेलियौ, नाकोलियौ।

नकेवळ, नकेवळौ—देखो 'निकेवळौ' (रू.भे.)
उ०—१ पड़चां पग देवळ थंभ प्रमांण। नकेवळ पिंड अद्रां अहनांण।
—मे.म.
उ०—२ इण भाव में अर पाई एक कोई री देवणी नहीं, साफ नकेवळौ।—रातवासौ

नकै—अव्यय [सं० कर्णे, प्रा० कण्ण, रा० कन्नै वर्णविपर्यय नकै] निकट, समीप, पास। उ०—पांच कोस पांचेटियौ, इग्यारै आलास। नानांणी म्हारी नकै, समवौ सोडावास।—महादांन महडू
रू०भे०—नखैं, नखै।

नकौ—देखो 'नकूं' (रू.भे.) उ०—दासरथी सुखदाई सुंदर, नमैं पगां सुर नर आनूप। नरकां मिट जन तारै नकौ, भाख पयोध प्रभाकर भूप।—र.ज.प्र.

नक्क—देखो 'नाक' (मह., रू.भे.)

नक्कारची—देखो 'नगारची' (रू.भे.)

नक्काल—वि० [अ०] १ नकल करने वाला.
२ वहुरूपिये. ३ भांड।

नक्काली—सं०स्त्री०—१ नकल करने का काम.
२ वहुरूपियों का कार्य।
३ भांड-विद्या।

नक्कासी—देखो 'नकासी' (रू.भे.)

नक्कासीदार—देखो 'नकासीदार' (रू.भे.)

नक्कीतळाव—देखो 'नकीतळाव' (रू.भे.)

नक्कीव—देखो 'नकीव' (रू.भे.)

उ०—घण हुलं गयंद वजि घरर घोर। सहनाय तूर नक्कीव सोर।
—सू.प्र.

नक्को—सं०पु० [देश०] आभूषणों पर खुदाई के काम में सफाई लाने का एक औजार विशेष। (स्वर्णकार)

नक्खत्त—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

नक्र—सं०पु० [सं० नक्रः] १ मगरमच्छ, घड़ियाल (डिं.को.)

उ०—कजाकां महा दोहियो रूप कंसो। 'अमो' नक्र वोछोड़वा चक्र अंसो।—रा.रू.

२ काला, श्यामः (डिं.को.)

[सं० नक्रम्] ३ नाक, नासिका।

रू०भे०—नक्कर, नक्रण।

नक्र-केतन—सं०पु०यौ० [सं० नक्रः+केतनम्] मगर की ध्वजा वाला, कामदेव (डिं.को.)

नक्रण—देखो 'नक्र' (रू.भे.)

उ०—हरण नक्रण वहै सुदरसण हरोळी। पाय तंता गरण छिद अपाळी।—र.ज.प्र.

नक्सो—सं०पु० [अ० नक्शः] १ रेखाओं द्वारा आकार व सीमादि का निर्देश, नक्शा. २ किसी पदार्थ का स्वरूप, आकृति, चाल-ढाल।

रू०भे०—नकसो।

नक्षत्र—सं०पु० [सं०] १ आकाश (खगोल) में स्थित वे तारक-पुंज या तारक-गुच्छ विशेष जिनके मध्य क्रांतिवृत्त है।

वि०वि०—ये तारक-पुंज सूर्य की परिक्रमा नहीं करते और सूर्य की परिक्रमा करने वाले ग्रहों से भिन्न हैं। आकाश में इनकी स्थिति, परस्पर दूरी आदि स्थिर जान पड़ती है। हमारे सूर्य और ग्रहों की अपेक्षा ये बहुत ऊंचे या दूर तथा बड़े माने जाते हैं। ऐसे दो-चार पास-पास रहने वाले तारों की स्थिति का ध्यान कर के उनको सदा पहचाना जा सकता है। अतः सुविधा के लिए इन पास-पास रहने वाले तारों से बनने वाली विशिष्ट आकृति को देख कर उसके अनुसार नाम रख लिया गया है।

चन्द्रमा इन तारक-पुंजों के मध्य से गमन करता हुआ लगभग २७-२८ दिन में पृथ्वी की परिक्रमा कर लेता है। चूंकि एक-एक तारक-पुंज या तारक-गुच्छ एक-एक नक्षत्र हैं अतः पूरे वृत्त को नक्षत्र-चक्र कहते हैं। इस चक्र में पड़ने वाले नक्षत्र २७ माने गये हैं किन्तु एक अभिजित नक्षत्र और है जो उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण और श्रवण नक्षत्र के $\frac{1}{15}$ भाग के अन्तर्गत आ जाता है। अतः विशिष्ट गणना में ही इसे अलग मान कर कुल २८ नक्षत्र गिने जाते हैं किन्तु साधारणतया नक्षत्र २७ ही माने गये हैं। [पृ० सं० १६७९ एवं पृ० सं० १६८० पर विवरण देखें]

चान्द्रमासों का नामकरण भी नक्षत्रों के आधार पर हुआ है। चन्द्रमा का पूर्ण होना पूर्णिमा कहलाया। जिस नक्षत्र के आसन्न चन्द्रमा पूर्ण होता है उसी के नाम के अनुसार उस मास का नामकरण किया गया है। जैसे—चित्रा से चैत्र, विशाखा से वैशाख आदि।

पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा एक वर्ष में पूर्ण करती है। इस कारण ऐसा प्रतीत होता है कि सूर्य एक-एक नक्षत्र पर कुछ काल तक रहता है। अतः ये ही नक्षत्र सौर नक्षत्र भी कहलाते हैं।

चूंकि नक्षत्र भी स्थिर हैं और सूर्य भी स्थिर है किन्तु पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है। अतः पृथ्वी वालों को सूर्य के प्रकाश के कारण जो नक्षत्र दिखाई नहीं देता है उसी नक्षत्र पर उस काल के लिए सूर्य माना जाता है। कुछ काल के पश्चात् पृथ्वी अण्डाकार वृत्त पर आगे बढ़ जाती है अतः वह नक्षत्र पुनः दिखाई देना शुरू हो जाता है और उससे आगे वाला नक्षत्र दिखाई नहीं देता है। अतः तब यह माना जाता है कि सूर्य अमुक नक्षत्र पर से हट कर उससे आगे वाले पर आ गया है। वास्तव में सूर्य हटता नहीं है; पृथ्वी के ही अपने वृत्त पर आगे बढ़ती रहने के कारण ऐसा होता है। तात्पर्य यह है कि पृथ्वी की दैनिक (अपने अक्ष पर घूमने की) तथा वार्षिक (अण्डाकार वृत्त पर सूर्य की परिक्रमा करने की) गतियों के कारण क्रमशः एक-एक नक्षत्र सूर्य की आड़ में आता रहता है और दिखाई नहीं देता है। अतः तदनुसार सूर्य उन नक्षत्रों पर माना जाता है। वर्ष पूरा होने तक क्रमशः सभी नक्षत्र, प्रत्येक लगभग १३ या १४ दिन के समय के लिए, सूर्य की आड़ में आ जाते हैं और इस प्रकार सौर-नक्षत्र कहलाते हैं।

राजस्थान में वर्षा विज्ञान में इन सौर नक्षत्रों का विशेष महत्व है। निम्न दोहा प्रसिद्ध है—

'मिगसर वाय न वज्जियो, रोयण तपी न जेठ।
कथा म बांधे झूंपड़ो, रहसां वड़ला हेठ॥'

ज्येष्ठ मास में जब रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य होता है तब यदि तेज गर्मी न पड़े, तत्पश्चात् मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य होने पर यदि तेज वायु न चले तो वर्षा न होगी। अतः उक्त दोहे में एक नारी अपने पति को कहती है कि हे पति! झोंपड़ी मत बांधना, वटवृक्ष के नीचे ही रहेंगे अर्थात् वर्षा के अभाव में निर्वाह के लिए दूसरे स्थानों (जैसे मालवा आदि) पर जाना पड़ेगा जहां वृक्षों के नीचे ही रहना पड़ेगा। यों भी कहते हैं कि 'रोयण तपणी अर मिगसरा वाजणा' अर्थात् सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर होने पर तेज गर्मी पड़नी चाहिए और सूर्य के मृगशिरा नक्षत्र पर होने पर तेज हवा चलनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो अकाल का लक्षण माना जाता है।

मृगशिरा के बाद आर्द्रा नक्षत्र लगता है। उसके लिए यह प्रसिद्ध है कि—'आदरा भरै खादरा' अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र के समय में कुछ वर्षा हो जाती है जिससे साधारण गड्ढे आदि भर जाते हैं।

निम्न तालिका में उक्त प्रत्येक नक्षत्र (तारक-गुच्छ) का नाम, उस समूह में होने वाले तारों की संख्या, प्रत्येक गुच्छ से बनने वाली विशिष्ट आकृति का नाम व उस नक्षत्र के देवता का नाम दिया गया है ।

नक्षत्र - तालिका

क्र० सं०	नक्षत्र का नाम (राजस्थानी में)	संस्कृत नाम	नक्षत्र में होने वाले तारों की संख्या	आकृति नाम	आकृति	नक्षत्र-देव का नाम
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
१	असनी, अस्विनी	अश्विनी	३	घोड़ का मुख	नोट – आकृति के लिए आगे दिये हुए चिन्हों को क्रमशः देखें ।	अश्विनी कुमार
२	भरणी	भरणी	३	योनि		यम
३	किरती	कृत्तिका	६	नापित क्षुरा, उस्तरा		अग्नि
४	रोयण	रोहिणी	५	गाडी		ब्रह्मा
५	म्रिग, हिरणी	मृगशिरा, मृगशीर्ष	३	हरिण-मुख		चन्द्र
६	आदरा	आर्द्रा	१	मणि		रुद्र
७	पुनरस	पुनर्वसु	४	घर		अदितिः
८	पुख	पुष्य	३	धनुष पर चढ़ा हुआ तीर		बृहस्पति
९	असलेखा	अश्लेषा	६	चक्र		सर्प
१०	दात, मघा	मघा	५	दात्र, हंसिया		पितर
११	पूरवा फागुणी	पूर्वफल्गुनी	२	खाट, चारपाई		भग (सूर्य)
१२	उतरा फागुणी	उत्तरफल्गुनी	२			अर्यमा (सूर्य)
१३	हस्ता	हस्त	५	हाथ का पंजा		रवि
१४	चिड़कली, चिड़ी, सूली	चित्रा	१	मोती		त्वष्टा (विश्वकर्मा)
१५	स्वात, स्वाति	स्वातिः	१	प्रवाल		वायु
१६	तोरणियी	विशाखा	४	तोरण		इंद्राग्नी (इंद्र एवं अग्नि)
१७	अनुराधा	अनुराधा	४	मणि		मित्र (सूर्य)
१८	जेठा	ज्येष्ठा	३	कुण्डल		शक्र (इंद्र)
१९	मूळा	मूल	११	सिंह की पूंछ		निर्ऋति (राक्षस)
२०	पूरवा खाढ़ा	पूर्वाषाढ़ा	२	खाट, चारपाई		क्षीर (जल, उदक)
२१	उत्तराखाढ़ा, आउगाल्	उत्तराषाढ़ा	२			विश्वे देवा
२२	अभिजित	अभिजित	३	सिंघाड़ा		विधि (विधाता)
२३	कावड़, सरवण	श्रवण	३	वहंगी		विष्णु
२४	धनिस्ठा	धनिष्ठा	४	मर्दल		वसवः (आठ देवता विशेष)
२५	सतभिखा	शतभिषा	१००	मण्डलाकार		वरुण
२६	पूरवा भाद्रपदा	पूर्व भाद्रपदा	२	खाट, चारपाई		अज चरणः (रुद्र)
२७	उतरा भाद्रपदा	उत्तर भाद्रपदा	२			अहिर्बुध्न्य (रुद्र)
२८	रेवती	रेवती	३२	माला		पूषा (सूर्य)

ज्यो० श्री मांगीलाल रामरत्न दवे (पीपाड़ वाला) के सौजन्य से प्राप्त

अश्विनी	३	पुष्य	३	स्वाति	१	अभीच	३
भरणी	३	अश्लेषा	६	विशाखा	[illegible]	श्रवण	३
कृत्तिका	६	मघा	५	अनुराधा	४	धनिष्ठा	४
रोहिणी	५	पूर्वाफाल्गुनी	२	ज्येष्ठा	४	शतभिषा	
मृगशिर	३	उत्तराफाल्गुनी		मूल	११	पूर्वाभाद्रपद	२
आर्द्रा	१	हस्त	५	पूर्वाषाढ़ा	४	उत्तराभाद्रपद	२
पुनर्वसु	४	चित्रा	[illegible]	उत्तराषाढ़ा	४	रेवती	३

ज्यो० श्री मांगीलाल रामरत्न दवे (पीपाड़ वाला) के सौजन्य से प्राप्त

इसका संबंध पूर्व के रोहिणी और मृगशिरा से भी जोड़ा गया है, यथा—

'रोयणी तपै, मिगसरा वाजै
तो आदरा अणचींतिया गाजै'

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में गर्मी पड़ने और मृगशिरा में तेज हवा चल जाने के उपरांत तो आर्द्रा नक्षत्र में बादल अवश्य गरजते हैं और वर्षा करते हैं। इसके विपरीत यदि मृगशिरा नक्षत्र के समय में तेज हवा न चल कर उससे आगे वाले आर्द्रा नक्षत्र के समय में चल जाती है तो यह भी अकाल का लक्षण माना जाता है। यथा—

'आद पड़िया वाव,
झूंपड़ झोला खाव'

आर्द्रा में हवा चल जाने से झोंपड़े झोला ही खाते हैं अर्थात् वर्षा नहीं होती है।

आर्द्रा के पश्चात् पुनर्वसु नक्षत्र सूर्य की आड़ में आता हैं या यों कहा जाता है कि सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र पर आता है। इसके लिए प्रचलित है कि—'पुनरस भरै तळाव' अर्थात् पुनर्वसु के समय खूब वर्षा हो जाती है जिससे तालाब आदि भर जाते हैं।

पुनर्वसु के पश्चात् पुष्य नक्षत्र पर सूर्य आता है। अतः प्रचलित है कि 'पुख भांगै गायां री दुख' अर्थात् इस समय तक इतनी वर्षा हो जाती है कि गायों को घास के अभाव का दुख प्रतीत नहीं होता क्योंकि पर्याप्त वर्षा के कारण घास बहुत पैदा हो जाता है।

तत्पश्चात् अश्लेषा नक्षत्र लगता है। इसके लिये कहा जाता है कि 'असलेसा सावदेसा' अर्थात् इस समय सब स्थानों पर वर्षा हो जाती है।

अश्लेषा के बाद मघा नक्षत्र लगता है। इस समय कहा जाता है कि—'मघा माचत मेहा कै उडत खेहा' अर्थात् मघा के लगते ही यदि मेह बरसना प्रारम्भ हो जाता है तो इसके १३-१४ दिन के समय तक वर्षा होती रहती है और यदि मघा के प्रारम्भ में तेज वायु चल जाती है तो फिर वर्षा नहीं होती और धूल उड़ती रहती है।

अन्त में यह कहा जाता है कि—'अगस्त ऊगा अर मेह धरै पुगा' उन दिनों अगस्त्य तारा उदय होता है। उसके बाद प्रायः वर्षा नहीं होती है। अतः अगस्त्य वर्षा की समाप्ति का सूचक माना जाता है। ऐसा उल्लेख गोस्वामी तुलसीदासजी ने 'रामचरितमानस' में भी किया है, यथा—

'उदित अगस्ति पंथ जल सोषा'

२ क्रांतिवृत्त के प्रत्येक १३ अंश २० कला के विभाग का नाम।
वि०वि०—इस प्रकार क्रांतिवृत्त के २७ विभाग होते हैं।
३ पंचांग का तृतीय अंग.
४ तारा।
रू०भे०—नक्खत्र, नख, नखत, नखतर, नखत्र, नखित, नखितर, नखित्र, नख्यत, नछत्र, नाखत, नाखित, नाखितर, नाखित्र, नाख्यत्र, निखत, निखतर, निखत्र।

नक्षत्रगण—सं०पु०यौ० [सं०] फलित ज्योतिषानुसार कुछ विशिष्ठ नक्षत्रों का पृथक-पृथक समूह या गण।
वि०वि०—वृहत्संहिता के अनुसार ये गण भिन्न भिन्न नक्षत्रों के समूह से सात माने गये हैं जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—
१ ध्रुवगण—इसमें निम्नलिखित चार नक्षत्र सम्मिलित माने गये हैं १ रोहिणी, २ उत्तराषाढ़ा, ३ उत्तर भाद्रपदा और उत्तर फल्गुनी। ध्रुवगण के नक्षत्रों में अभिचक्र, शान्ति, वृक्ष, नगर, धर्म, बीज और ध्रुव कार्य का आरंभ करना उचित माना गया है।
२ तीक्ष्ण गण—इसमें निम्नलिखित पांच नक्षत्र सम्मिलित माने गये हैं। मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेषा। इन नक्षत्रगण के नक्षत्रों के स्वामी तीक्ष्ण माने गये हैं। इन नक्षत्रों में अभिघात, मंत्र साधन, वेताल, बंध, वध और भेद संबंध कार्य सिद्ध होते हैं।
३ उग्र-गण—इसमें निम्नलिखित पांच नक्षत्र सम्मिलित माने गये हैं। पूर्वाषाढ़ा, पूर्व-फल्गुनी, पूर्व-भाद्रपदा, भरणी और मघा। इन नक्षत्रों में, उजाड़ने, नष्ट करने, शठता करने, बंधन, विष, दहन और शाखा घात आदि कार्यों की सिद्धि के नक्षत्र उपयुक्त माने गये हैं।
४ लघु गण—हस्त अश्विनी और पुष्य के समूह को कहते हैं। इन नक्षत्रों में पुण्य, रति, ज्ञान, भूषण, कला, शिल्प आदि के कार्य करने में सफलता मिलती है।
५ मृदु गण—अनुराधा, चित्रा, मृगशिरा और रेवती के समूह का नाम माना गया है। इन नक्षत्रों में वस्त्र, भूषण, मंगल, गीत और मित्र आदि के संबंध हितकारी और उपयुक्त माने गये हैं।
६ मृदु तीक्ष्ण-गण—विशाखा और कृत्तिका के समूह को माना गया है। इनका फल मृदु और तीक्ष्ण गणों के फल का मिश्रण माना गया है।
७ चर-गण—श्रवण, धनिष्टा, शतभिषा, पुनर्वसु और स्वाति के समूह का नाम माना गया है। इन नक्षत्रों में चर कर्म करना उपयुक्त माना गया है।
रू०भे०—नखतगण, नखत्रगण।

नक्षत्रचक्र—सं०पु० [सं०] क्रांतिवृत्त के आस-पास स्थित नक्षत्रों का समूह, राशिचक्र।
रू०भे०—नखत-चकर, नखत्रचक्र।

नक्षत्रदरस—सं०पु० [सं० नक्षत्रदर्श] १ नक्षत्र देखने वाला.
२ ज्योतिषी।

नक्षत्रदांन—सं०पु० [सं० नक्षत्रदान] भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में भिन्न-भिन्न पदार्थों के दान का विधान। जैसे—रोहिणी नक्षत्र में घी, दूध और रत्न, मृगशिरा नक्षत्र में बछड़े सहित गौ आदि।
रू०भे०—नखत-दांन।

नक्षत्र-धारी—वि० [सं० नक्षत्र-धारिन्] श्रेष्ठ नक्षत्र में जन्म लेने वाला, भाग्यशाली। रू०भे०—नखत-धारी, नखतर-धारी।

रू०भे०—नखतचारी, नच्छत्रचारी।

नक्षत्रनाथ-संज्ञा पु० [सं०] चन्द्रमा, मयंक।

रू०भे०—नखत-नाथ।

नक्षत्रप-संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा, रजनीपति।

नक्षत्रपति-संज्ञा पु० [सं०] चन्द्रमा।

रू०भे०—नखत-पति।

नक्षत्रपद-संज्ञा पु०स्त्री० [सं०] वह पद जिस पर नक्षत्र स्थित है।

नक्षत्रपुरुष-संज्ञा पु०स्त्री० [सं० नक्षत्रपुरुष] फलित ज्योतिष में भिन्न-भिन्न नक्षत्रों को शरीर के भिन्न-भिन्न अंग मान कर कल्पना किया हुआ पुरुष जिसका व्रत सौंदर्य प्राप्ति के उद्देश्य से किया जाता है।

इसका व्रत चैत्र कृष्णा अष्टमी को जब कि चन्द्रमा मूल-नक्षत्र-युक्त हो, किया जाता है। दिन भर उपवास किया जाता है तथा विष्णु और नक्षत्रों की पूजा की जाती है। इस व्रत को नक्षत्र पुरुष के पैरों वाले स्थान से जिसका नक्षत्र मूल है, प्रारम्भ कर के प्रति मास हर एक अंग के नक्षत्र के नाम से भी व्रत करने का विधान है।

बृहत्संहिता के अनुसार मूल नक्षत्र को नक्षत्र पुरुष के पाँव, अश्विनी और रोहिणी को जांघ, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा को उरु, उत्तरफल्गुनी और पूर्व फल्गुनी को गुह्य, कृतिका को कमर, पूर्व-भाद्रपदा और उत्तर-भाद्रपदा पार्श्व, रेवती को कोख, अनुराधा को छाती, धनिष्ठा को पीठ, विशाखा को बांह, हस्त को हाथ, पुनर्वसु को उंगलियां, अश्लेषा को नाखून, ज्येष्ठा को गरदन, श्रवण को कान, पुष्य को मुख, स्वाति को दांत, शतभिषा को हास्य, मघा को नाक, मृगशिरा को आंख, चित्रा को ललाट, भरणी को सिर और आर्द्रा को बाल मान कर कल्पना की गई है।

रू०भे०—नखतर-पुरुष।

नक्षत्रभोग-संज्ञा पु० [सं०] आकाश में परिभ्रमण करते हुए चंद्रादि ग्रहों को २७ नक्षत्रों में से प्रत्येक नक्षत्र-विभाग में परिभ्रमण करते हुए लगने वाला समय जो प्रत्येक ग्रह के लिए पृथक-पृथक होता है।

रू०भे०—नखत-भोग।

नक्षत्रमाळा-संज्ञा स्त्री० [सं० नक्षत्र माला] १ सताईस मोतियों का हार. २ नक्षत्रों की पंक्ति या श्रेणी।

रू०भे०—नखतमाळ, नखतमाळा, नक्षत्रमाळ, नखत्रमाळा, नछित्रमाळ, नछित्रमाळा, नाखतमाळ, नाखतमाळा, नाखत्रमाळ, नाखत्रमाळा।

नक्षत्रयाजक-संज्ञा पु० [सं०] ग्रहों और नक्षत्रों आदि के दोषों की शान्ति कराने वाला, ब्राह्मण।

नक्षत्रयोग-संज्ञा पु० [सं०] नक्षत्रों के साथ ग्रह का योग।

नक्षत्रयोनि-संज्ञा पु०स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष में विशिष्ट नक्षत्रों के अनुसार विशिष्ट प्राणियों की कल्पित योनि विशेष।

वि०वि०—विवाह सम्बन्ध स्थिर करते समय ज्योतिष संबंधी जिन आठ बातों पर विचार किया जाता है उनमें चौथी बात योनि की होती है। यथा—वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट और नाडी।

२८ नक्षत्रों को १४ योनियों में कल्पना की गई है। तात्पर्य यह है कि दो नक्षत्र एक योनि के माने जाते हैं तथा उस योनि का दूसरे दो नक्षत्रों की किसी अन्य योनि विशेष से जो उसके विरुद्ध हो, वैर माना जाता है।

निम्न तालिका में सात योनियों और उनके नक्षत्रों के नाम के सामने परस्पर वैर होने वाली क्रमशः दूसरी सात योनियां और उनके नक्षत्रों के नाम दिये गये हैं—

नक्षत्र योनियों की परस्पर वैर योनि तालिका

क्र०सं०	योनि नाम व उसके नक्षत्र नाम: योनि	नक्षत्र	क्र०सं०	योनि नाम व उसके नक्षत्र नाम: योनि	नक्षत्र
१	अश्व	अश्विनी, शतभिषा	८	महिष	हस्त, स्वाति
२	गज	भरणी, रेवती	९	सिंह	पूर्वभाद्रपदा, धनिष्ठा
३	मेष	कृतिका, पुष्य	१०	वानर	पूर्वाषाढ़ा, श्रवण
४	सर्प	रोहिणी, मृग	११	नकुल	उत्तराषाढ़ा, अभिजित
५	श्वान	आर्द्रा, मूल	१२	मृग	अनुराधा, ज्येष्ठा
६	बिलाव	पुनर्वसु, अश्लेषा	१३	मूषक	मघा, पूर्वाफल्गुनी
७	गौ	उत्तरफल्गुनी, उत्तरभाद्रपदा	१४	व्याघ्र	चित्रा, विशाखा

यदि वर-कन्या समान नक्षत्रयोनि के हों जैसे अश्व नक्षत्रयोनि का वर और अश्व नक्षत्रयोनि की ही कन्या तो विवाह संबंध करना श्रेष्ठ होता है; यदि वर-कन्या विरुद्ध या वैर नक्षत्रयोनि के हों जैसे अश्व नक्षत्रयोनि का वर और महिष नक्षत्रयोनि की कन्या तो ज्योतिष संबंधी उक्त आठ बातों में से योनि के अनुसार तो संबंध स्थिर करना निषिद्ध समझा जाता है और यदि वर-कन्या न समान नक्षत्र-योनि के और न वैर नक्षत्रयोनि के हों तो संबंध स्थिर करना सामान्य या उदासीन समझा जाता है।

रू०भे०—नखतजोगी।

नक्षत्रराज–सं०पु० [सं०] चंद्रमा, नक्षत्रपति।

रू०भे०—नखतराज, नखतराय।

नक्षत्रलोक–सं०पु० [सं०] नक्षत्रमण्डल।

नक्षत्रवीथि–सं०पु०यौ० [सं०] शुक्रग्रह द्वारा क्रमशः तीन-तीन नक्षत्रों को पार किए जाने वाले विभाग या मार्ग का नाम।

वि०वि०—वीथियां नौ मानी गई हैं। देवल व कश्यप के मतानुसार अश्विन्यादि तीन-तीन नक्षत्रों की एक-एक वीथि क्रमशः इस प्रकार है—

(१) अश्विनी, भरणी और कृतिका नक्षत्रों से नागवीथि।
(२) रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा नक्षत्रों से गजवीथि।
(३) पुनर्वसु, पुष्य और अश्लेषा नक्षत्रों से ऐरावतवीथि।
(४) मघा, पूर्वफल्गुनी और उत्तरफल्गुनी नक्षत्रों से वृषभवीथि।
(५) हस्त, चित्रा और स्वाति नक्षत्रों से गोवीथि।
(६) विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्रों से जारदग्वीवीथि।
(७) मूल, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों से मृगवीथि।
(८) श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों से अजावीथि।
(९) पूर्वभाद्रपदा, उत्तरभाद्रपदा और रेवती नक्षत्रों से दहनावीथि।

किन्तु बृहत्संहिता के अनुसार नौ वीथियां इस प्रकार हैं—

(१) नागवीथि—भरणी, कृत्तिका और स्वाति।
(२) गजवीथि—रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा।
(३) ऐरावतवीथि—पुनर्वसु, पुष्य और अश्लेषा।
(४) वृषभवीथि—मघा, पूर्वफल्गुनी और उत्तरफल्गुनी।
(५) गोवीथि—अश्विनी, रेवती, पूर्वभाद्रपदा व उत्तरभाद्रपदा।
इस मत में इसमें चार नक्षत्र माने गये हैं—
(६) जारदग्वीवीथि—श्रवण, धनिष्ठा व शतभिषा।
(७) मृगवीथि—अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल।
(८) अजावीथि—हस्त, चित्रा और विशाखा।
(९) दहनावीथि—पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा।
इसमें केवल दो ही नक्षत्र माने गये हैं।

इन नौ वीथियों में क्रमशः प्रथम तीन वीथियों का समूह क्रांतिवृत्त के उत्तर का, यथा नाग, गज और ऐरावत। बाद की तीन वीथियों, यथा—वृषभ, गो और जारदग्वी का समूह क्रांतिवृत्त के मध्य का तथा अंतिम तीन वीथियों, यथा—मृग, अजा और दहना का समूह क्रांतिवृत्त के दक्षिण का माना जाता है।

उक्त तीनों भागों में भी प्रत्येक में फिर तीन-तीन विभाग हैं जैसे उत्तर की तीन वीथियों में नाग उत्तर की, गज मध्य की तथा ऐरावत दक्षिण की है। इसी प्रकार मध्य की तीन वीथियों के समूह में वृषभ उत्तर की, गो मध्य की और जारदग्वी दक्षिण की हैं। तृतीय तीन वीथियों के समूह में मृग उत्तर की, अज मध्य की और दहना दक्षिण की हैं।

उक्त तीनों भागों में उत्तर की तीन वीथियां यथा—नाग, गज और ऐरावत शुभ फलदायिनी, मध्य की तीन यथा वृषभ गो और जारदग्वी मध्यफलदायिनी तथा दक्षिण की तीन यथा—मृग, अज और दहना मंद या बुरा फलदायिनी मानी जाती हैं।

इतना ही नहीं इन तीनों भागों में उत्तर के समूह की प्रथम नागवीथि सर्वश्रेष्ठ, मध्य की गजवीथि श्रेष्ठ और दक्षिण की ऐरावतवीथि अच्छा फल देने वाली है। फिर मध्य की तीन वीथियों के समूह में उत्तर की वृषभ ठीक, मध्य की गो कुछ ठीक तथा दक्षिण की जारदग्वी न ठीक और न बुरा फल देती है। तत्पश्चात् दक्षिण की तीन वीथियों के समूह में उत्तर की मृग वीथि में बुरा फल, मध्य अज वीथि में उससे भी बुरा फल और दक्षिण की अंतिम दहना वीथि में शुक्र का चार होने पर अत्यधिक बुरा फल होना माना गया है।

रू०भे०—नखतबीथि।

नक्षत्रव्यूह–सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष में विशिष्ट प्राणियों और पदार्थों के समूह का अधिपति-नक्षत्र विशेष।

वि०वि०—बृहत्संहिता के अनुसार कवि, लेखक, वैयाकरण, ज्योतिषी, अग्निहोत्री, मंत्र जानने वाले, सूत्र की भाषा जानने वाले, खान में काम करने वाले, हज्जाम, द्विज, कुम्हार, पुरोहित और वर्षफल जानने वाले, सफ़ेद फूल आदि कृतिका नक्षत्र के अधीन हैं। सुव्रत, पुण्य, राजा, धनी, योगी, शाकटिक, गौ, बैल, जलचर, किसान और पर्वत रोहिणी के अधिकार में। इसी प्रकार और भी भिन्न भिन्न पदार्थों आदि के सम्बन्ध में यह बतलाया गया है कि वे किस नक्षत्र के अधिकार में हैं।

रू०भे०—नखत-व्यूह।

नक्षत्रव्रत–सं०पु० [सं०] किसी विशिष्ट नक्षत्र के उद्देश्य से किया जाने वाला व्रत। इस दिन उस नक्षत्र के देवता का पूजन भी किया जाता है।

नक्षत्रसंधि–सं०स्त्री० [सं०] पूर्व नक्षत्र मास में से उत्तर नक्षत्र मास में चंद्रादि ग्रहों का संक्रमण।

नक्षत्रसाधन–सं०पु० [सं०] नक्षत्र विशेष पर ग्रह विशेष के रहने का समय ज्ञात करने के लिए की जाने वाली गणना।

रू०भे०—नखत्र-साधन।

नक्षत्रसूचक, नक्षत्रसूची–सं०पु० [सं०] दूसरों के मतानुसार ज्योतिष संबंधी साधारण कार्य करने वाला ज्योतिषी, साधारण ज्ञान वाला ज्योतिषी।

रू०भे०—नखत्र-सूचक।

नक्षत्रसूळ–सं०पु० [सं० नक्षत्रशूल] फलित ज्योतिष में शूल का वह निवास जो विशिष्ट दिशा में विशिष्ट नक्षत्र के कारण होता है।

वि०वि०—यदि पूर्व में जेष्ठा, दक्षिण में पूर्व भाद्रपदा, पश्चिम में रोहिणी और उत्तर में उत्तर फल्गुनी हो तो उस दिशा में यात्रा करना निषिद्ध माना जाता है।

रू०भे०—नखत-सूळ।

नक्षत्रावळी-सं०स्त्री० [सं० नक्षत्रावली] १ सत्ताईस मोतियों का बना हार। उ०—कदंब, कंकण, केयूर, हार, कण्ठ-कुंडल, एकावळी, कनकावळी, रत्नावळी, मुक्तावळी, पद्मावळी, चंद्रावळी, सूर्यावळी, नक्षत्रावळी······इति आभरण······।—व.स.

२ नक्षत्रों की पंक्ति।

रू०भे०—नखतावळी।

नक्षत्री-सं०पु० [सं०] चंद्रमा, विष्णु।

वि० [सं० नक्षत्र+रा०प्र०ई] शुभ नक्षत्र में जन्म लेने वाला, भाग्यशाली।

रू०भे०—नखती, नखत्री।

नक्षत्रेश-सं०पु० [सं० नक्षत्रेश] १ चंद्रमा, चांद. २ कपूर।

रू०भे०—नखतेस।

नक्षत्रेस्वर-सं०पु० [सं०] चंद्रमा, रजनीपति।

रू०भे०—नखतेसर।

नखमानवीस—देखो 'नकमानवीस' (रू.भे.)

नखमानवीसी—देखो 'नकमानवीसी' (रू.भे.)

नख-सं०पु० [सं०] उंगलियों के छोर पर चिपटे किनारे या नोंक की तरह निकली हुई कड़ी वस्तु, नाखून।

उ०—नख हरणांख नधेहि नांखियो, असुरां रिपि जुग-जुग अलग।
—ह.ना.

पर्याय०—करज, करसूक, नखर, पलवसुव, पुनरनव, पुनरभव, भुजाकंठ, मारांकुश और बिलदातो।

यौ०—नख-क्षत, नख-घात, नख-सिख, नखा-घात, नखा-युद्ध।

मुहा०—१ नख आणा—अयोग्य को पद या अधिकार मिलना।

२ नख देणा—गरीब को हानि पहुँचाना।

२ किसी ज्याति के अन्तर्गत पूर्व ज्याति के वंश का सूचक शब्द। जैसे—दर्जी, माली आदि ज्यातियों में भाटी, राठोड़, सांखला प्रभृति नख पुकारे जाते हैं।

वि०वि०—राजपूतों और ब्राह्मणों में नख नहीं होते हैं।

३ सीप या घोंघे आदि के मुखावरण का गन्धद्रव्य। यह नखाकार होता है। छोटा-बड़ा और कई रंगों का होता है, जलने पर दुर्गन्धि किन्तु तैलादि में सुगन्धि देता है। यह औषधियों में भी काम आता है।
(अमरत)

४ बीस की संख्या० (डि.को.)

५ साल वर्ष (डि.को.)

६ नक्षत्र। उ०—नख इंण भांत जगड़िया छै जांणै कनक मांहै मांणक जड़िया छै।—पनां वीरमदे री वात

७ देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) उ०—मुज भाई काका समेत छजिया छत्रपति। पुन्नम चंद्र प्रकासिया नख जांण नखत्री।—वचिन्नैरासौ

रू०भे०—नह।

अल्पा०—नखड़ियो, नखल्यो।

नख-आयध—देखो 'नखायुध' (रू.भे.) (डि.को.)

नख-क्षत-सं०पु०यौ० [सं०] नख से बना या बनाया हुआ चिन्ह।

नखघात—१ हज्जामों का नाखून काटने का औजार (डि.को.)

२ देखो 'नखाघात' (रू.भे.)

नख-चख—देखो 'नख-सिख' (रू.भे.)

उ०—यूं कही नै पचास चमचार जीन सालिया नख-चख सूधा था त्यां री गोळ कर नै उपाड़ नाखिया।—नैणसी

नखच्छेद्य-सं०स्त्री० [सं०] ७२ कलाओं में से एक कला विशेष जिसमें नख से छेद कर कलाकार अपनी कला प्रदर्शित करता था।

नखछीकणी-सं०स्त्री० [सं० छिक्किका] छिकनी, नख-छिकणी।

नखत—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ कदता भिड़ै छूटै उडै, असण जेम गोळा अगत। अनेक जांण छूटै अरक, नवै लाख तूटै नखत।—सू.प्र.

उ०—२ केहरि छोटो बहुत गुण, मोड़ै गयंदां मांण। लोहड़ बडाई को करै, नरां नखत परमांण।—ह्रा.झा.

यौ०—नखत-माळ, नखत-धारी, नखत-नांमी।

नखतचकर—देखो 'नक्षत्रचक्र' (रू.भे.)

नखतजोग—देखो 'नक्षत्रयोग' (रू.भे.)

नखत-जोणी—देखो 'नक्षत्रयोनि' (रू.भे.)

नखतधारी—देखो 'नक्षत्रधारी' (रू.भे.)

उ०—घूमड़ै आज नह 'बाघ' ओपम धारा, 'धीर' नह मनांणं नखत-धारी। 'सेर' 'दूदो' नहिं अभंग रियां सरस, माड़ री टेगियां सेड़ मारी।—सुरतो बोगसो

नखत-दांन—देखो 'नक्षत्रदांन' (रू.भे.)

नखत-नांमी-वि० [सं० नक्षत्र+नामिन्] १ विशिष्ट-विशिष्ट नक्षत्र में जन्म लेने वाला जिसके नामकरण में उक्त नक्षत्र का संबंध हो।

वि०वि०—अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, अश्लेषा, मघा, जेष्ठा, मूल, श्रवण और रेवती। इन नक्षत्रों में जन्म लेने वाले व्यक्ति के नामकरण में प्रायः नक्षत्रों के प्रथम वर्ण का आना आवश्यकीय समझा जाता है यथा—अश्विनी से आसकरण, पुष्य से पुखराज, मूल से मूलसिंह।

२ भाग्यशाली, खुशकिस्मत।

नखत-नाथ—देखो 'नक्षत्रनाथ' (रू.भे.)

नखत-वीथी—देखो 'नक्षत्रवीथि' (रू.भे.)

नखत-भोग—देखो 'नक्षत्र-भोग' (रू.भे.)

नखत-माळ—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

नखतमाळा-सं०स्त्री०—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

उ०—आभूखण ऐसा विराजमांन हुवा छै जांणे मेर-गिर दोळी नखत-माळ विराज रही छै।—रा.सा.सं.

नखतर—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) (डिं.को.)

मुहा०—१ नखत्र नावणौ—अशुभ नक्षत्र में संतान के उत्पन्न होने पर २७ दिन के बाद प्रसूता (माता) को कर्मकांड की विधि से स्नान कराना।

वि०वि०—मूल, मघा, ज्येष्ठा—नक्षत्रों में बच्चे का जन्म अशुभ माना जाता है अतः इन नक्षत्रों में बच्चे का जन्म होने पर उसकी शांति हेतु जन्म से २७ दिनों बाद यज्ञादि करवाया जाता है, ब्रह्म-भोज होता है और २७ वृक्षों के पत्तों तथा २७ जलाशयों का जल आदि एकत्र करवाए जाते हैं।

२ नखतरां होवणौ—बच्चे का उपर्युक्त चार अशुभ नक्षत्रों में जन्म लेना।

नखतर-गण—देखो 'नक्षत्रगण' (रू.भे.)

नखतरधारी—देखो 'नक्षत्रधारी'

नखतरपुरख—देखो 'नक्षत्रपुरुस' (रू.भे.)

नखतराज, नखतराय—सं०पु० [सं० नक्षत्रराज] देखो 'नक्षत्रराज' (रू.भे.)

नखतवंत—सं०पु० [सं० नक्षत्रवंत] जिसके नक्षत्र शुभ हों, भाग्यशाली।

उ०—हेमकरमणि हंस कमळ ऊहासिया, सत्रावंस त्रासिया तमर-सीमा। नखतवंत रांण घर असा नग नीपजै, भरतखंड तो जसा कंवर भीम।—कंवर भीमसिंघ री गीत

नखत-व्यूह—देखो 'नक्षत्रव्यूह' (रू.भे.)

नखत-समाज, नखत-समाजा—सं०पु० [सं० नक्षत्र-समाज] चन्द्रमा (डिं.को.)

नखत-सूळ—देखो 'नक्षत्र-सूळ' (रू.भे.)

नखतावळी—सं०स्त्री० [सं० नक्षत्रावलि] नक्षत्रों की पंक्ति।

उ०—हा हा दुखदाई छपना हतियारा, सज्जन सुखदाई सावळ सधियारा। निसनह निसनायक, नभ नहिं नखताळी, करदी पूनम नै अम्मावस काळी।—ऊ.का.

वि०स्त्री० [सं० नक्षत्र+आलुच्] सुनक्षत्र वाली स्त्री, भाग्यशालिनी।

ज्यूं—आ बड़ी नखताळी है, इणरै आणै रै बाद घणौ आणंद ही आणंद हुवौ।

नखतेस—देखो 'नखत्रेस' (रू.भे.) उ०—फरस पांणि फाबेस उभै डस-रोस अघक्कर। निलै अरघ नखतेस मसत भणरोस मधुक्कर। —सू.प्र.

नखतेसर—देखो 'नक्षत्रेस्वर' (रू.भे.)

नखतैत—सं०पु० [सं० नक्षत्र+एत] सुनक्षत्र में जन्मा हुआ, भाग्यशाली।

उ०—साथ दिया सिरदार सोह नखतैत वडा नर। वाज त्रंवाळा वीर घंट असवारी इंदर।—दुरगादत्त बारहठ

रू०भे०—नखितैत, नखतौ।

नखतौ—देखो 'नखतैत' (रू.भे.)

उ०—हट कारेय खीज अमां हकतौ। निज बांधव आज मिळचौ नखतौ।—पा.प्र.

नखत्ती—देखो 'नक्षत्री' (रू.भे.) उ०—सुज भाई काका समेति, छजिया छत्रपत्ती। पुन्यम चंद प्रकासिया, नख जांण नखत्ती।—विन्है रासौ

नखत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) उ०—१ पारवती कांन पहिराया कुंडळ, सूरिज तिण ऊगा संसार। जवहर नखत्र पाखती जड़िया, अरक तणा रथ रइ आकार।—महादेव पारवती री वेलि.

उ०—२ अळै साधवा फूटियौ सिंध वारध के लोप पाजां, करी घू पटंत हकै छूटियौ क्रोधार। काळै पाख महा वेग तूटियौ नखत्र किना, 'जालमौ' उताळै रोस जूटियौ जोधार।—हुकमीचंद खिड़ियौ

नखत्रगण—देखो 'नक्षत्रगण' (रू.भे.)

नखत्रचक्र—देखो 'नक्षत्रचक्र' (रू.भे.)

नखत्रप—देखो 'नक्षत्रप' (रू.भे.)

नखत्रमण—सं०पु० [सं० नक्षत्रमणि] सूर्य।

उ०—भड़ परवत खोसिया न भागै, जावौ सरपट कै जवण। ऊतर डिगै तौ डिगै 'अमरसी', मेर ऊपलौ नखत्रमण।

—महारांणा अमरसिंह प्रथम री गीत

नखत्रमाळ, नखत्रमाळा—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

उ०—तैं धर अंबर सह किया, जमी असमांणा। नखत्रमाळा पयाळ नद, नदियां ससि भांणा।—गजउद्धार

नखत्रसाधन—देखो 'नक्षत्रसाधन' (रू.भे.)

नखत्र-सूचक—देखो 'नक्षत्र-सूचक' (रू.भे.)

नखत्रावळी—देखो 'नक्षत्रावळी' (रू.भे.)

नखत्री—देखो 'नक्षत्री' (रू.भे.)

नखत्रेस—देखो 'नक्षत्रेस' (रू.भे.)

नखत्रैत—देखो 'नखतैत' (रू.भे.) उ०—वड हथ वड चीत लखपती वीरवरं, निज भल नखत्रैत विरिद घण सूरनरं।—ल.पिं.

नखनिर्वायौ, नखन्यायौ—वि०पु० [सं० नख-निर्वातः] नखों को सामान्य उष्ण लगने वाला, मामूली गर्म।

नखबिन्दु—सं०पु० [सं०] स्त्रियों द्वारा नखों के ऊपर महावर या मेंहदी से बनाया जाने वाला गोल या चन्द्राकार चिन्ह।

नखर—सं०पु० [सं० नखरं, नखरः] १ नख, नाखून (ह.नां., डिं.को., अ.मा.)

उ०—कर होप डाच फाड़ै कराळ। झड़पियौ डकर उर नखर भाळ।—रांमदांन लाळस

२ पंजा।

रू०भे०—नहर, नहराद।

नखरादार—वि० [फा० नखरः+दार] जिसमें बहुत नखरा हो।

उ०—छळबळिया घोड़ा भला, अलवलिया असवार। मदछकिया मारू भला, मरवण नखरादार, दारूड़ी दाखां री।—लो.गी.

नखरावाज—देखो 'नखरेवाज' (रू.भे.)

नखराळ, नखराळौ—वि०पु० [फा० नखरः सं० आलुच्=नखराळौ] (स्त्री० नखराळी) १ नखरा करने वाला, शौकीन, छैल, छबीला।

उ०—१ पेचौ तौ सवा लाख रौ ल्यादूं, किलंगी पर भाभी अरज

करै। सुण सुण ऐं नखराळा [illegible] देवर, थो नखरो [illegible] न्यारो [illegible] को।—लो.गी.

उ०—२ [illegible] [illegible] [illegible] जो कोई [illegible]-भोजाई पाणी [illegible]। कोई [illegible] [illegible] [illegible] बाई जी जाय, थारां नखराळी [illegible] [illegible]।—लो.गी.

२ बदमाश। उ०—१ [illegible] या [illegible], है नखराळो, पै'र [illegible] बूढी गी; [illegible] [illegible] टूटी री।—लो.गी.

उ०—२ [illegible] [illegible] निज नखराळो, [illegible] चीतंदा है।
—ऊ.का.

[सं० नखरं, या नखर:+आलुच्] ३ जिसके नाखून हों, नाखूनधारी।

सं०पु०—सिंह, चीता।

रू०भे०—नहराळ, नहराळो।

नखरेखा–सं०स्त्री० [सं०] नख का लगा या लगाया गया चिन्ह, नखक्षत।

नखरेबाज–वि० [फा० नखर:+बाज] नखरे करने वाला, जो खूब नखरे करे।

नखरेबाजी–सं०स्त्री० [फा० नखर:+बाज+रा०प्र०ई] नखरा करने की क्रिया।

नखरो–सं०पु० [फा० नखर:] १ बनावटी चेष्टा, चंचलता, चुलबुलापन, हावभाव आदि। उ०—सजि सोळह सिणगार, केळधज कांमणी। नाजक नवली नारि भरी नखरां भरी।—सिवबगस पाल्हावत

२ बनावटी चेष्टा, चंचलता, चुलबुलापन, हाव-भाव आदि की क्रिया। उ०—गर्व वांण मीठी गजब, वहै प्रार की पार। उळभै नखरा ऊपरै, नखरा कई सिरदार।—महाराज महडू

वि०—१ बुरा, खराब, अशुभ। उ०—विष 'पाळ' इणीमत केम वहै, करमाळुंद घात विदात वहै। निज लागत दीह घणूं नखरो, सुकनां दिन काल किसो नखरो।—पा.प्र.

२ जो खरा न हो, खोटा।

नखलियो, नखल्यो–सं०पु०—१ पैर की अंगुली पर धारण करने का मंदा और चपटा आभूषण विशेष.

२ बढई का एक औजार. ३ सितार व वीणा आदि बजाने के लिए तर्जनी पर धारण किया जाने वाला उपकरण।

४ देखो 'नख' (मत्स्या., रू.भे.)

रू०भे०—नखलियो, नकल्यो।

नखविस–सं०पु० [सं० नखविष] १ वह जिसके नाखूनों में विष हो.

२ नख के लगने से घाव में उत्पन्न होने वाला विष।

नखसिख–सं०पु० [सं० नख-शिख] १ पैर के नख से लेकर शिखा तक के सब अंग. २ पाद-नख से लेकर शिखा तक के अंगों के शृंगार और आभूषण।

वि०—सब अंगों का।

रू०भे०—नख-चख।

नखसी–सं०स्त्री०—देखो 'नकासी' (रू.भे.)

उ०—सरा पर्छ तरगस कढ़ियो मनावै। तिकण में काहरूत री भोंस मोटो थाकैरै गजबेल रा भळका, सोनै री नखसी, तिकै सांमीजै।
—जैतसी ऊदावत री बा

नखहरणी–सं०स्त्री० [सं०] हज्जामों का नाखून काटने का औजार
(डिं.को.)

रू०भे०—नहरणी, नहहरणी, नीरणी, नैणी, नैणी, नैरणी।

नखाघात–सं०पु० [सं० नख+आघात] नखों के द्वारा बना या बनाया गया चिन्ह, नखक्षत।

रू०भे०—नख-घात।

नखाजुध—देखो 'नखायुध' (रू.भे.)

नखानुराग–सं०स्त्री० [सं०] मेंहदी, महावर।

उ०—निदाघ में निदाघदेह बाग भाग में नहीं। नखानुराग त्याग तड़ाग भाग में नहीं।—ऊ.का.

नखायुध–सं०पु० [सं०] नख के शस्त्र वाला, सिंह, शेर।

उ०—बहावत 'केहरि' केहरि बाग। नखायुध गाजत भाजत नाग।

रू०भे०—नख-आयध, नखायध, नखीयुध।

नखि—देखो 'नखी' (रू.भे.) (ह.नां., डिं.को.)

नखित—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) उ०—अगमद बेंदो भाल मझ, कही छवि जोन। निस अस्टम ससि री नखित, भयो उदै स भोन।—अज्ञात

नखितैत—देखो 'नखतैत' (रू.भे.)

नखित्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—१ गजरा नवग्रही प्रोचिया प्रोंचे, वळै वळै विधि विधि वळि हसत नखित्र वेधियौ हिमकरि, अरध कमळ अलि आवरित।—वे

उ०—२ माहो श्रेताजुग चैत्रमास संक्रान्ति मेति सरि। करक स पख सुकल धरा पुन्नवसु नखित्र पुरि।—सू.प्र.

नखित्र-माळ, नखित्र-माळा—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

उ०—पारस प्रासाद सेन संपेखै, जाणि मयंक की जळहरी। पासती नखित्रमाळा, घू संकर धरी।—वेलि.

नखिद्ध–सं०पु० [सं० निषिद्ध] निषिद्ध कार्य या पदार्थ।

वि०—बुरा, निषिद्ध।

नखी–वि० [सं० नखिन्] जिसके नख हों।

उ०—कै दंती स्रंगी किता, किता नखी वन जंत। समभाया दे सजा, माइळै बळवंत।—बां.दा.

सं०पु०—१ सिंह, चीता. २ नख नामक गंध द्रव्य।

उ०—नेतु निगुडि निरंजनी, नाळकेर नारिंग। नागवला निरवि नखी, निकुली निरमळ संग।—मा.कां.प्र.

रू०भे—नंखी, नखि।

नखीयुध—देखो 'नखायुध' (रू.भे.) (अ.मा.)

नखीर—देखो 'नकसीर' (रू.भे.)

नखेद, नखेध—वि० [सं० न+खेदः] १ वह जिसे खेद न हो, उदासी-रहित, दुःख रहित.
२ वह जिसे शर्म न हो, शरारती.
३ कुलटा.
४ मूर्ख (ग्र.मा.)
सं०स्त्री०—मृत व्यक्ति के यहां संवेदना प्रकट करने के लिए जाने की प्रथा (शेखावाटी)।
रू०भे०—निखेद।

नखेर—देखो 'नकसीर' (रू.भे.)

नखैं, नखै—देखो 'नर्क' (रू.भे.)
उ०—१ बादसाह साहजहां नखै ग्रागरै गयौ, पांव जा लागियौ।
—राठौड़ राजसिंह री वारता
उ०—२ ग्रणी चढि खेत्रि जसवंत सूं ग्राहुड़ी। पिय नखैं पोढ़सी नहीं पणिहारड़ी।—हा.झा.

नख्ख—देखो 'नख' (रू.भे.)
उ०—हिरणाकुस नें हणैं, निडर फाड़े उर नख्ख।—र.रू.

नख्यत—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

नग—सं०पु० [सं० न गच्छतीति नगः] १ पर्वत (डि.को.)
उ०—नग ग्रळगौ रजनी हद नेड़ी, ग्रासो कद भडलै उचत। सुणता वैद उचार सियापत, दिल विचार रहिया दुचित।—र.रू.
२ चरण, पैर (डि.को.)
उ०—१ नग रज गोतम नार, जेण ऊधरी जग जांणै। धनुख भंज सीय वरी, प्रथीभुज जोर प्रमांणै।—र.ज.प्र.
उ०—२ बड-बडा भड़ विकराळ, कमधज्ज चढ़ि कळचाळ। धर धूजि ग्रस नग धोम, वणि गरद धूंधळि वोम।—सू.प्र.
३ वृक्ष, पेड़ (डि.को.) उ०—जठै झाड़ियां खंड स्रीखंड जेड़ी। नगां पुंजरी मंजरी रूप नेड़ी।—मे.म.
४ कुपुत्र के लिए रत्न-रूप में व्यंग्य।
उ०—मात पिता में दोसण मोटौ, प्रथम मिळचा सुख पाई नै। नग दोनां मिळ ग्रौ निपजायौ, हिया फूट हरखाई नै।—ऊ.का.
५ संतान, पुत्र। उ०—१ छोकड़ा मांहे जोवै, तठै देखै तौ ग्रस्त्री छै। देख नै माथौ धूंणै छै। नै जांण्यौ परमेसर रा घर मांहे घणी रिध छै नै ग्रा जो म्हारै वैर होय नै इण रै पेट री कोई नग नीपजै तौ हूं प्रथ्वी मांहे ग्रमर होवूं।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
उ०—२ भूप ग्रपछर भेळाह, रंग मांणण दोहूं रहै। वध की सुभ वेळाह, नग पावू सिध नीपनो।—पा.प्र.
६ मोती। उ०—केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगलौ कीध। हंसां नग हर नूं तुचा, दांत किरातां दीध।—बां.दा.
७ रत्न, जवाहर। उ०—१ के जहुरी कविराज, नग मांणस परखै नहीं। काज क्रपण वेकाज, रळिया सेवै राजिया।—किरपारांम
उ०—२ निधि गजराज तुरंग नग, मेछ करी मनुहार। हित दीधी राखी निजर, कीधी विदा सवार।—रा.रू.
८ बहुमूल्य पत्थर ग्रादि का वह रंगीन चमकीला टुकड़ा जो शोभा के लिये ग्राभूषणों, वस्त्रों ग्रादि में जड़ा जाता है।
उ०—ग्रंतर नीळंबर ग्रवळ ग्राभरण, ग्रंगि ग्रंगि नग नग ग्रदित। जांणे सदनि सदनि संजोई, मदन दीपमाळा मुदित।—वेलि.
९ संख्या, चीज, इकाई।
ज्यूं—इण में कुल कितरा नग है? इण में लिफाफौ, पोटळी, तसवीर नै घड़ी कुल चार नग है।
१० सात की संख्या*. ११ नागौर शहर का एक नाम।
उ०—सबळ ग्रचड़ नग-कोट सराहै, साराहै ग्रखियात सुर। प्रिथम-कळोधर पड़ियां पाछै, प्रिसणै लीधौ वीकपुर।
—महेसदास सांखला रौ गीत
(मि० नगीनो २)
वि०—गमन नहीं करने वाला, ग्रचल, स्थिर।
रू०भे०—नंग।

नगज—सं०पु० [सं० नग+ज] हाथी।

नगजा—सं०स्त्री० [सं० नग+जा] १ पार्वती. २ नदी।

नगटाई—देखो 'नकटाई' (रू.भे.)

नगटौ—देखो 'नकटौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नगटी)

नगण—सं०पु० [सं०] एक गण विशेष, जिसमें तीनों वर्ण लघु होते हैं।

नगणी, नगांणी—सं०स्त्री०—प्रथम एक जगण फिर एक दीर्घ वर्ण का छंद विशेष (पिंगळ)

नगदंती—सं०स्त्री० [सं०] विभीषण की स्त्री का नाम (रामकथा)

नगद—स०पु० [ग्र० नक़द] १ तैयार रुपया, रुपया पैसा, सिक्कों के रूप में धन।
वि०—१ जो तैयार हो (रुपया), (धन) जो तुरंत काम में लाया जा सके।
मुहा०—नगद नांणा नै बींद परणीजै कांणा—पैसों से सभी कार्य संभव हैं।
२ खास।
मुहा०—नगद जंवाई होवणौ—१ खास होना. २ उसके ऊपर का होना।
रू०भे०—नकद।

नगदी [ग्र० नक़द+रा०प्र०ई] रोकड़, धन, रुपया-पैसा, सिक्का।
उ०—चूकै नगदी नेग, गाण ग्रह देंग्यां भांडै।—दसदेव
रू०भे०—नक्दी।

नगधर—सं०पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण. २ हनुमान. ३ गरुड़।
उ०—सिथळ पर घर जांण ईसर, छांड नगधर धरण दूछर। मकर यर सर चकर मोखर, फंद हर पग सथर कर फिर।—र.ज.प्र.

नग-नंदनी—सं०स्त्री० [सं०] १ हिमालय की पुत्री, पार्वती. २ गंगा. ३ नदी।

[illegible]—सं०पु० [सं० [illegible]] [illegible], [illegible], [illegible]।

उ०—[illegible] कोई नग, [illegible] अपार। [illegible] ... —डो.मा.

[illegible]—१ [illegible] (राजा) [illegible].

२ कैलाश पर्वत। उ०—[illegible], जिण जरकूट बणावियो। [illegible] —बां.दा.

नगपति—सं०पु० [सं०] १ पर्वताधिराज, हिमालय.

२ चन्द्रमा.

३ कैलाश पर्वत के स्वामी, शिव.

४ सुमेरु।

रू०भे०—नगांपत।

नगभिद—सं०पु० [सं० नगभिद्] पर्वत को भेदने वाला, इन्द्र।

नगभित्प्रभा—सं०पु० [सं० नगभित्प्रभा] सुमेरु, पर्वत (अ.मा.)

नगरंध्रकर—सं०पु० [सं०] कार्तिकेय।

नगर—सं०पु० [सं० नगरम्] शहर (उ.र) (डि.को.)

पर्याय०—अधिस्थान, निगम, निवेसन, पुरस्थान, पट्टण, पुरभेदण, पुरपतन, निवेसण, पुर, पुरी, पत्तन, पुरधाम, सहर।

रू०भे०—नइर, नगर, नग्गर, नग्र, नयर, नयरि।

अल्पा०—नगरी, नग्री, नयरी, नेर, नियरि।

मह०—नगरौ।

नगर-कीरतन—सं०पु० [सं० नगरकीर्तनम्] ईश्वर के नाम व गुणों का संगीतात्मक गायन, जो नगर की सड़कों और गलियों में घूम-घूम कर कुछ लोगों से किया जाय।

नगरतीरथ—सं०पु० [सं० नगर+तीर्थ] गुजरात का एक तीर्थ विशेष जहाँ शिव का निवास माना जाता था।

नगरनाइका, नगरनायका, नगरनायिका—सं०स्त्री० [सं० नगर+नायिका] वेश्या, रंडी, नगरवधू (डि.को.)

उ०—१ ताहरो राजा नगरनाइका वेढ़ो। तूं कुंवरी रै महल में... निगाह कर।—चौबोली

उ०—२ नगरनायका रूप अपार, नितु नितु करइ नवा सिणगार।
—कां.दे.प्र.

उ०—३ सोहई मांहै नगरनायिका वेस्या नाज नखरा री लहरणहार मोटी निजरदार टिकियां घणां फूलां रा चोसर पैहरियां घणां टोप [illegible] [illegible] टणिया घणां बांका नैणां री नोक नाखती पायल रै [illegible] [illegible] [illegible] सूं बिछियां रै छमकै सूं रमझोळ करती [illegible] [illegible] करती बाजारि मांथी जाय छै।—रा.सा.सं.

नगरनारी—सं०स्त्री० [सं०] वेश्या, रंडी।

नगर-पाल—सं०पु०यौ० [सं० नगरपाल] नगर रक्षक।

नगर-मारग—सं०पु०यौ० [सं० नगर+मार्ग] शहर का बड़ा और चौड़ा रास्ता, राजपथ।

नगर-सेठ—सं०पु०यौ० [सं० नगर+श्रेष्ठिन्] १ नगर का सब से धनाढ्य व्यक्ति. २ एक पदवी जो राजाओं द्वारा अपने नगर या राज्य के किसी सेठ (वणिक) को दी जाती थी।

उ०—नगर-सेठ घर चोधरी, भोजीधज के कत। मोटा पुंगळ देस में, नेमीसाह रतन।—पना वीरमदे री वात

रू०भे०—नग-सेठ।

नगराध्यक्ष—सं०पु० [सं०] नगर का स्वामी।

नगरी—सं०स्त्री० [सं०] देखो 'नगर' (अल्पा., रू.भे.)

नगरू—देखो 'नगर' (रू.भे.) (उ.र.)

नगरौ—१ देखो 'नगर' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'कोड़ी नगरौ'।

नगवार—सं०पु० [देश० नग+धार] १ मकान बनाने में विशेष अवसर (स्थान) पर प्रयुक्त किया जाने वाला महत्वपूर्ण आधार-पत्थर।

वि०वि०—यह पत्थर द्वार के चौखटे के ऊपर तथा ऊपर की छत के नीचे आधार-रूप में प्रयुक्त किया जाता है, इस पत्थर को भली-भांति गढ़ कर लगाया जाता है।

नगांपत—देखो 'नगपति' (रू.भे.)

नगाड़-बंद(ध), नगाड़ाबंद(ध)—देखो 'नगार-बंध' (रू.भे.)

नगारखांनौ—सं०पु० [फा० नक्कार+खाना] १ राजकीय नगाड़े रखने का स्थान. २ राजा या बादशाह की ड्योढ़ी पर नगाड़े रखने का स्थान जहाँ यथा समय नगाड़े बजा करते थे।

वि०वि०—ये ड्योढ़ी के नगाड़े राजा के गमनागमन के तथा प्रातः, मध्याह्न या सायं समय सूचक के रूप में बजा करते थे।

रू०भे०—नकारखांनौ।

नगारची—सं०पु० [फा० नक्कार+रा०प्र०ची] १ राजा, सामन्त आदि धनाढ्यों के यहाँ नगाड़ा बजाने वाला।

उ०—१ 'निजह' अनै 'करीम' बिन्है पड़दार बहादर। नगारची 'नाहरौ' हाक करी ओरै हैमर।—सू.प्र.

उ०—२ विचित्र कुंवर री नगारची, बाजदार बैठा टावका उवां रा गुण गुण लजाय बैठा। भली-भांति गुंजाई जीमिया।
—पलक दरियाव री बात

२ एक जाति विशेष, जिसके व्यक्ति नगाड़ा या नौबत बजाने का कार्य करते हैं। उ०—डूंगरोह रण धावां अरोड़ महावीर पड़ रांण अमुर मोड़। त्रिधिया थाट हलसेत राज, पाड़ियो गैत नगारची बाज।—शि.सु.रू.

रू०भे०—नंगारची, नकारची, नक्कारची, नगारी।

नगारबंद(ध), नगाराबंद(ध) नगारिय-सं०पु० [फा०नक्कार+रा० बंध]

१ वह सामन्त या ठाकुर जिसे यथावसर बजाने के लिए राजा या बादशाह द्वारा अपना नगाड़ा बांधने व बजाने का अधिकार प्राप्त हो. २ नगाड़ा धारण करने व बजाने का अधिकार-प्राप्त वीर।

उ०—१ ससक्कै नगारबंध लटक्कै नाग रा सीस। आगरा अंगार तोपां भटक्कै आवाज।—रावत भीमसिंह चूंडावत रौ गीत

उ०—२ भुरजां भुरजां वापू कारिया एड़ियां भड़ां, ठलै हलो जनेवां भेड़िया ठांम ठांम। नवा कोटां नाथ रा छेड़िया काळा नाग नांई, तै सीस नगारावंध तेड़िया तमांम।—गोपाळजी दधवाड़ियौ

नगारी—१ देखो 'नगारची' (रू.भे.)

उ०—१ लोभइ धरमलोप आदरइ, लोभइ सगा सहोदर मरइ। लोभइ एक नर पाड़इ वार, मारइ विपु नगारी भाट।—का.दे.प्र.

उ०—२ पायक तणॅ पहटि, वहुली लागि तणइ चीत्कारि, भाट नगारी तणइ कणवारि, राजा राजवाटिकां चडिउ।—व.स.

२ देखो 'नगारौ' (अल्पा., रू.भे.)

नगारौ—सं०पु० [फा० नक्कार] बाएं तबले के आकार का एक बृहद् वाद्य, नगाड़ा।

वि०वि०—यह मंदिर, राजद्वार आदि स्थानों पर प्रायः युग्म रूप में रहता है। पूजाकाल में मंदिर में यथा प्रातः, मध्यान्ह व सायंकाल में राजा रानी के गमनागमन पर राजद्वार पर इसे बजाया जाता है। नगारचियों के यहाँ भी यह युग्म रूप में रहता है किंतु वहाँ इसका बायां बहुत छोटा होता है और इनका मिश्रित रूप 'नौबत' के नाम से पुकारा जाता है। विवाह, उत्सव व युद्धकाल में यह युग्म रूप में सेनादि के आगे ऊँट या घोड़े पर स्थित रहता है और इसे जोरों से बजाया जाता है। उस समय यह 'नगारा-निशान' का नाम धारण करता है।

उ०—वापू तणा नगारौ वागौ, जागौ सा कमधजिया जागौ।
—लालसिंघ जोधा रौ गीत

पर्याय०—ईडक, जांगी, त्रंबक, त्रंबाळ, दमांम, दुंदुभि, दुजीह, धूंसौ, नीसांण, वंब, भेरी।

मुहा०—१ नगारा री चोट—खुले आम, डंके की चोट.
२ नगारा री ऊँट—निर्लज्ज, ढीठ. ३ नगारौ घुरणौ—यश फैलना, आतंक या प्रभाव बढना. ४ नगारौ बजाणौ—सावधान होना.
५ नगारौ देरावणौ—ललकारना।
६ नगारौ वाजणौ—युद्ध की सूचना होना।

यौ०—नगारखांनौ, नगारबंध।

रू०भे०—नंगारौ, नकारौ, नगारौ, नागारौ।

अल्पा०—नगारी।

नगीन—सं०पु०—१ प्रवाल, मूंगा (अ.मा.)
२ देखो 'नग' (रू.भे.)

वि०—श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—इण रै जगत्र महं, नागोर नगीनह दादौ जागतउ। भाव भगति सुं भेटंतां, भव दुख भागतउ।—स.कु.

नगीनासाज—सं०पु० [फा० नगीना साज़] नगीना बनाने या जड़ने का काम करने वाला।

नगीनौ—सं०पु० [फा० नगीनः] १ शीशे या पाषाण का चमकने वाला कीमती पदार्थ, रत्न। उ०—महिमा तिनकी महि में महि में, जिन दीनो मह इक ग्यांन नगीनौ। दूर भग्यौ भ्रम सो तम देखत, पूर जग्यौ परकास नवीनौ।—ध.व.ग्रं.

२ राजस्थान का इतिहास-प्रसिद्ध शहर, नागौर।

उ०—१ चालो चालो नगीनौ रे देस मा'री सुंदर गोरी रे। थां रौ पीहरियौ म्हांरौ सासरौ हो राज।—लो.गी.

उ०—२ मांझी जिकै हुता गढ़ मांहे, खिसि गा आयै मरण खरै। इम लीजतौ नगीनौ आखै, 'मधकर' हुवै त तूटि मरै।
—महेस कल्यांणमलोत सांखला रौ गीत

उ०—३ सुण पतसाह कोपसर सेरी, 'अजन' मिळण चढ़ियौ आंवेरी। हूंत नगीनै 'अजमल' हालै, चतुरंगी सेन्या संग चालै।—रा.रू.

नगेंद्र—सं०पु० [सं० नग+इन्द्र] पर्वतराज, हिमालय।

नगेम—वि० [सं० निस्+गमः=बुरा=पाप] निष्पाप, निष्कलंक।

उ०—नकळंक, नपाप, नगेम, नेरहण, अवतरिया जा कुळ अमर। हिंदू सो को उरै हमीरां, हिंदवै वडा हमीर हर।—दुरसौ आढौ

रू०भे०—निगेम।

नगेस—सं०पु० [सं० नग+ईश] पर्वतों का स्वामी, हिमालय।

नगोड़ौ, नगोडौ—वि० [सं० नक्र रा०प्र० वढियौ नगउढियौ, नगोढियौ, नगोडौ] (स्त्री० नगोड़ी, नगोडी) १ नकटा, निकम्मा, निर्लज्ज.
२ कम्बख्त, हतभाग्य। उ०—अब मोहबत कौन कांम की, गिरधर विनाह नगोडौ। लोग कहै काळी कांमळी वाळी, म्हारै तौ लाख किरोड़ी।—मीरां

रू०भे०—नंगोडौ, निगोड़ौ, निगोडौ।

नगोदर, नगोदरु, नगोदरू—देखो 'निगोदर' (रू.भे.) (व.स.)

उ०—१ अह निरतीय कज्जळरेह नयणि मुहकमळि तंबोळी, नगोदर कंठळउ कंठि अनुहार विरोळी।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ कंठु नगोदरु फुल्लमाळ उरि नवसर हारो। करै ठिय कंकण रयणवळय, मुंद्रडिय अपारो।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—३ ससि रविमंडळ मांनि, दीपइं कुंडळ कांनि, तिलक मनोहरू ए, कठि नगोदरू ए।—प्राचीन फागु-संग्रह

नगोरौ—देखो 'नगारौ' (रू.भे.)

उ०—इतरै उण वखत रा ढोल नगोरा वाजिया जिका सुण'र पूछी।—पदमसिंह री वात

नग्गर—देखो 'नगर' (रू.भे.)

उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, पाछै पीळी पज्ज। नव पाड़ा नग्गर वसइ, मो मन सूंनउ अज्ज।—ढो.मा.

नग्गौ—देखो 'नागौ' (रू.भे.)

नग्र—देखो 'नगर' (रू.भे.)

नग्र-सेठ—देखो 'नगर-सेठ' (रू.भे.)

नग्री—देखो 'नगर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—नदी [illegible] नहीं मोर नाचै। [illegible]
नहीं।—ओ.स.

नचोन—देखो 'नचीन' (रू.भे.) (रा.मा.)

नचर—सं०पु० [देश०] ऊंट की नाक में डाली जाने वाली रस्सी, नाथ।
उ०—ऊंटा रै मुख न सोभसी, नाकै नचर नाल रै लार।
—[illegible]

नचाग—देखो 'निराग' (रू.भे.)

नड़—सं०पु० [सं० नल=प्रा० णड] १ नदी, नाला।
उ०—नरगनै दूजर नड़ ऊनड़ वाजिया, गघण गाजियौ गुहिर सदि।
जड़नीधि हौ मामाद नहीं जड़, जड़वाळा न समाइ जळदि।
—वेलि.
२ मुँह पर टेढ़ा रख कर बजाया जाने वाला एक वाद्य।
३ मंडूर की नली में पड़ी हुई तिरछी व सीधी धारें, जिन पर छोटी-छोटी छिद्रें होती हैं।
४ देखो 'नौलिका' (मह., रू.भे.)
५ देखो 'नद' (रू.भे.)
६ देखो 'नाड़ी' (मह., रू.भे.)
७ देखो 'नट' (रू.भे.)
वि०—बंधन में आने वाला, कायर।

नड़ण—सं०पु०—योद्धा, वीर।
वि०—बंधन में डालने वाला।

नड़णौ, नड़बौ—क्रि०स० [सं० अदि बंधने के विपर्यय से नड] १ बांधना.
२ बंदी बनाना। उ०—१ नवड़ कमधज जंतु अनड़ नड़िया। ऊद ठन तुझ भय भांण ऊत अहोनिस।—देवराज रतनू
उ०—२ नड़ै हाथि नाग अनैं नरइंद।—रा.रू.
३ रुकावट डालना, रोकना। उ०—नोपणां चित बाहर कोण नड़ै, चारणां मन मोम लियो चवड़ै।—पा.प्र.
नड़णहार, हारौ (हारी), नड़णियौ—वि०।
नड़वाड़णौ, नड़वाड़बौ, नड़वाणौ, नड़वाबौ, नड़वावणौ, नड़वावबौ, नड़ाड़णौ, नड़ाड़बौ, नड़ाणौ, नड़ाबौ, नड़ावणौ, नड़ावबौ—प्रे०रू०।
नड़िओड़ौ, नड़ियोड़ौ, नड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नड़ीजणौ, नड़ीजबौ—कर्म वा०।
नडणौ, नडबौ, नाड़णौ, नाड़बौ—रू०भे०।
२—देखो 'नेड़ौ' (रू.भे.) उ०—दड़रियां मोरि देखाळि वहु, गोरियां गाढ साहिया गढ़ु। हिंदुआं तुरकां टाळि हाथ, नड़ि लगड़ं छतीसह वगनाथ।—रा.ज.सी.

नड़ियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ बंदी बनाया हुआ. २ रोका हुआ, रुकावट डाला हुआ. ३ बांधा हुआ।
(स्त्री० नड़ियोड़ी)

नड़ी—देखो 'नाड़ी' (रू.भे.) उ०—नड़ी प्रमोणां फंद री, अंग ढीली अचंत। नड़ी टहरकै वगतगां, नड़ी नड़ी नाचंत।—हा.झा.

नचंत—देखो 'निश्चिंत' (रू.भे.) उ०—पोस जोस सरद तनो, आदौ पड़ै अनंत। दिलवर मसत दिखावरो, बैठघा आप नचंत।—सो.गी.

नचणौ, नचबौ—देखो 'नाचणौ, नाचबौ' (रू.भे.)
उ०—१ पतित स्याम हूं पीत पट, दिपै निकट रितदेव। नचै मुगत नटनार ज्यूं, सीमंत तट सेव।—बां.दा.
उ०—२ वस प्रांणी सब करम रै, करम सु प्रेरणहार। नाच नचावै त्यां नचै, ज्यों पुतळी खेलार।—रा.रू.
नचणहार, हारौ (हारी), नचणियौ—वि०।
नचिओड़ौ, नचियोड़ौ, नच्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नचीजणौ, नचीजबौ—भाव वा०।

नचनची—सं०स्त्री० [सं० नृत्] नाचने की प्रबल इच्छा, मुणमुणी (?)
उ०—हर नाचया लागी बडी बडी। जिण भांत ढोलड़ी बागां नट नूं नचनची लागै, इण भांत इण बेळा रजपूतां री रजपूतवट जागै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
क्रि०प्र०—आणी, उठणी।

नचाड़णौ, नचाड़बौ—देखो 'नचाणौ, नचाबौ' (रू.भे.)
नचाड़णहार, हारौ (हारी), नचाड़णियौ—वि०।
नचाड़िओड़ौ, नचाड़ियोड़ौ, नचाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नचाड़ीजणौ, नचाड़ीजबौ—कर्म वा०।
नाचणौ, नाचबौ—अक०रू०।

नचाड़ियोड़ौ—देखो 'नचायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नचाड़ियोड़ी)

नचाणौ, नचाबौ—क्रि०स० [सं० नृत्, प्रा० णच्च] १ नाचने का काम कराना; नाचने में प्रवृत्त कराना, नृत्य कराना.
२ इधर-उधर हिलाना, घुमाना, फेरना (किसी वस्तु आदि को)
ज्यूं—लट्टू नचाणौ।
मुहा०—आंखियां नचाणी—आंखों की पुतलियों को इधर-उधर घुमाना, आंखें चंचल करना, चंचलता पूर्वक इधर-उधर देखना।
३ किसी को बार-बार इधर-उधर घुमाना, अनेक कार्य करने के लिए विवश कर के तंग करना, हैरान करना।
मुहा०—नाच नचाणौ—बार-बार इधर-उधर घूमने अथवा उठने-बैठने के लिए बाध्य कर के हैरान करना, अनेक कार्य करने के लिए विवश कर के तंग करना।
नचाणहार, हारौ (हारी), नचाणियौ—वि०।
नचायोड़ौ—भू०का०कृ०।
नचाईजणौ, नचाईजबौ—कर्म वा०।
नचाड़णौ, नचाड़बौ, नचावणौ, नचावबौ—रू०भे०।
नाचणौ, नाचबौ—अक०रू०।

नचायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ नाचने का कार्य कराया हुआ, नाचने में प्रवृत्त किया हुआ, नृत्य कराया हुआ. २ इधर-उधर हिलाया हुआ, घुमाया हुआ, फेरा हुआ (किसी वस्तु आदि को).

३ किसी को बार-बार इधर-उधर घुमाया हुआ, अनेक कार्य करने के लिए विवश कर के तंग किया हुआ, हैरान किया हुआ ।

(स्त्री० नचायोड़ी)

नचावणो, नचाववो—देखो 'नचाणो, नचावो' (रू.भे.)

उ०—अखंडा ब्रह्मंडा अखिल इक दोसी तव अगे । जराहा श्राहा तूं सुलभ सब देसी सव जगे । रचै तूं ढाहै तूं नियम जुत चाहै फिर रचे । नचावै जीवां को निडर निज वाह्यांतर नचे ।—ऊ.का.

नचावणहार, हारो (हारी), नचावणियो—वि० ।

नचाविश्रोड़ो, नचावियोड़ो, नचाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नचावीजणो, नचावीजबो—कर्म वा० ।

नचावियोड़ो—देखो 'नचायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नचावियोड़ी)

नचिंत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

उ०—१ साधु जन सोई रे, बरतै ग्यांन इसा । तन मन जीता रे, निरभै नचिंत दिसा ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ लड़ नचिंत लोह नह लागै । जिको सूर तपसी सम जागै ।
—सू.प्र.

नचिंतो—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—'भीमाजळ' वळ आगलो, भीम अरज्जण जेम । करण नचिंता राठवड़, ओडी चिंता एम ।—रा.रू.

नचिकेता—सं०पु० [सं० नचिकेतस्] १ वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था. २ आग ।

नचींत—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ ऊंची सी मेड़ी रावटी, बै में माळी को सोवै ए नचींत, म्हांरै रंग बनड़े रा सेवरा ।—लो.गी.

उ०—२ जंवक सवद नचींत कर, डर कर तूं मत भाज । सादूळो खीजै सुणै, जळहर हंदो गाज ।—वां.दा.

नचींतड़ो—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आवो प्यारी धण, मते ए बैठां । करां ए नचींतड़ी वात ।
—लो.गी.

(स्त्री० नचींतड़ी)

नचीत—देखो 'निश्चित' (रू.भे.)

नचीताई—देखो 'निस्चितता' (रू.भे.) उ०—भारमलजी स्वांमी नै स्वांमीजी कह्यो—अबे थांरै नचीताई थई । आगै तो म्हें हां अनै अबै पाखंडियां सूं चरचादिक रो कांम पड़ै तो हेमजी हैईज ।—भि.द्र.

नचीतो—देखो 'निस्चित' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—१ आभ पड़ी बरसै अबै, मेहां झड़ी अमंत । ऐसी रुत में एकला, कियां नचीता कंत ।—अज्ञात

उ०—२ गाल बजावै गोलणां, गोल संवारै गात । सदा नचीता संचरै, सदा सुहागण मात ।—वां.दा.

(स्त्री० नचीती)

नचीयण—वि० [सं० नृत्] नाचने वाला । उ०—लयण मारवण चयण लोभण, नथण अहफुंण चढण नचीयण ।—मुरारदास बारहठ

नच्चणो, नच्चबो—देखो 'नाचणो, नाचबो' (रू.भे.)

उ०—१ मिळै नत्रीठ वेग रीठ खाग रीठ मच्चए । निरखि धीर खेत वीर प्रेत वीर नच्चए ।—रा.रू.

उ०—२ अनेक पद्मणी अवास, रूप भोमि रच्चए । अनेक राग रंग ओप, नृतकार नच्चए ।—सू.प्र.

नच्चन—सं०पु० [सं० नर्तनम्] नाच, नृत्य ।

नच्चियोड़ो—देखो 'नाचियोड़ो' (रू.भे.)

नच्यंत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

उ०—जोगी कहै प्रतीव्रता ! सुणेस हुइ नच्यंत । प्रीव थारो आव्यो है छइ मास वसंत ।—वी.दे.

नछत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—पुख नछत्र नई कातिक मास ।—वी.दे.

नछत्री—१ देखो 'निक्षत्री' (रू.भे.)

उ०—कथां नांमी साजियो, हरांमी भड़ां तणै कहै, कीधी की अमांमी कीधां नमांमी कुलाट । सुछत्री मारियो दगा सूं राज हिंदवां सूर, पाट पती तीं सूं हुयो नछत्री मेवाट ।—राजा राघोदेव री गीत

२ देखो 'नक्षत्री' (रू.भे.)

नजदीक—वि० [फा०] पास, निकट ।

उ०—१ अनुज नमै तदि अग्रजै, ठह ताजीमां ठीक । करो कुरव्वां पलक करि, दिय आसण नजदीक ।—सू.प्र.

उ०—२ रोम रोम आमय रहै, पग पग संकट पूर । दुनियां सूं नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दूर ।—वां.दा.

रू०भे०—नजिक, नजीक, नजीग, निजिक, निजीक, निजिकी, निजीख ।

नजदीकी—सं०स्त्री० [फा०] सामीप्य, निकटता ।

वि०—निकटता ।

रू०भे०—नजीकी ।

नजर—सं०स्त्री० [अ० नज़र] १ चितवन, दृष्टि, निगाह ।

उ०—दिल साजनां दुमेळ, नीच संग ओछी नजर । अति सवळां ऊखेल, पैलां घर वांछै पिसण ।—वां.दा.

मुहा०—१ नजर आणी (आणो)—नजर आना, दृष्टिगोचर होना, दिखाई देना. २ नजर चढ़णी (चढ़णो)—नजर पर चढ़ना, भला मालूम होना, पसन्द आ जाना, भा जाना । यकायक दिखलाई देना, दीख पड़ना. ३ नजर पड़णी—देखने में आना, दिखाई देना. ४ नजर फेंकणी—नजर फेंकना, सरसरी दृष्टि से देखना । दृष्टि डालना, दूर तक देखना. ५ नजर बांधणी—किसी की दृष्टि में जादू या मंत्र आदि के जोर से भ्रम पैदा कर देना, कुछ का कुछ कर दिखाना ।

२ आंख, नेत्र (ना.डि.को.)
३ किसी अच्छे पदार्थ, सुन्दर मनुष्य आदि पर पड़ कर उसे विकृत अथवा खराब कर देने वाला दृष्टि का कल्पित प्रभाव जिसे प्राचीन काल से अब तक बहुत से लोग मानते हैं, दृष्टि-दोष।
ज्यूं—छोरा नैं डा'रै मती लिजा, नजर लाग जाई।
मुहा०—१ नजर उतारणी—नजर उतारना। किसी मंत्र या युक्ति से दृष्टि-दोष को हटाना. २ नजर लगाणी—बुरी दृष्टि का प्रभाव डालना, दृष्टि-दोष लगाना. ३ नजर लागणी—बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना, दृष्टि-दोष होना. ४ नजर होणी—देखो 'नजर लागणी'।
४ मेहरबानी से देखने का भाव, कृपा-दृष्टि, शुभ-दृष्टि।
ज्यूं—म्हारैं माथै बस आपरी नजर बणी रहै पछै म्हांनै की सोच कोयनी।
क्रि०प्र०—रैणी।
मुहा०—नजर राखणी—मेहरबानी रखना, कृपादृष्टि रखना।
५ ख्याल, ध्यान।
ज्यूं—थांरी नजर में थाई रै सगपण सारू कोई टाबर है कई?
मुहा०—नजर में होणी—जानकारी में होना।
६ देखरेख, निगरानी।
ज्यूं—म्हे तीरथां जावां हां, आप म्हांरै घर माथै नजर राखजो।
क्रि०प्र०—राखणी।
७ पहचान, परख, शिनाख्त।
ज्यूं—बिसनोई घी लायो है, सैंग कैवै चोखो है अबै देखां आपरी नजर कैड़ी'क है।
ज्यूं—थे कहो हो कै रिपियो खोटो कोयनी, पण थांरै कैयां सूं कांई हुवै, म्हारी नजर में तो ओ रिपियो साव खोटो हो, पछै चार भायां नै देखाय लो।
ज्यूं—म्हारी नजर में ओ आदमी ठीक नी है।
[अ० नज्र] ८ उपहार, भेंट। उ०—हासंग पेस महराज रंग। उड पवण बाज तुररा अठंग। भेजे सताब नजरां भुआळ। रवदाळ असर जवहर रसाळ।—वि.सं.
९ राजा-महाराजाओं के समय में प्रचलित अधीनता सूचित करने की एक रस्म विशेष जिसमें छोटे लोग और अधीनस्थ या प्रजा वर्ग राजा, महाराजाओं और जमींदारों आदि के सामने किसी विशिष्ट उत्सव, दरबार अथवा त्यौहार के अवसर पर हथेली में नकद रुपया अथवा अशरफी रख कर लाते थे। इस धन को कभी तो छू कर छोड़ दिया जाता था और कभी ग्रहण कर लिया जाता था।
उ०—बरसै रंग बिसेस, कमरां ऊपरै। करै नजर कर जोड़, मह मूं सिर मूंछ रै। मिळ कोई माहोमाह दियै रंग डोलियां। गोट सूं उडै गुलाब, खडै अणतोलियां।—सिवबगस बारहठ
क्रि०प्र०—करणी, मेलणी, देणी, लेणी।

रू०भे०—नजरि, नज्र, निजर।
नजर-कैद-संस्त्री०यौ० [फा०] एक प्रकार की सजा जिसमें कैदी को किसी स्थान की निश्चित सीमा से बाहर नहीं जाने दिया जाता है तथा हथकड़ी नहीं पहनाई जाती है।
रू०भे०—निजर-कैद।
नजर-दौलत-संस्त्री०यौ० [अ० नज़र+दौलत] राजा महाराजाओं तथा बादशाहों की सवारी के समय सवारी के अगाड़ी चलते नकीब द्वारा उच्चारण किया जाने वाला शब्द युग्म।
उ०—मसालचियां आंण मुजरो कियो छै। नजर दौलत सड़ीदार कर रह्या छै।—रा.सा.सं. रू०भे०—निजर दौलत।
नजर-बंद-वि० [अ० नज़र+फा० बन्द] कड़ी निगरानी में रखा हुआ, जो कहीं आ जा नहीं सके, जिसे नजरबंदी की सजा दी गई हो।
संपु०—जादू या इंद्रजाल का खेल, जिसमें प्रसिद्ध है कि लोगों की नजर बांध दी जाती है अतः मदारी जो कहता है वैसा ही उन्हें दिखता है।
रू०भे०—निजरबंद।
नजर-बंदी-संस्त्री०—१ सजा विशेष, जिसमें व्यक्ति को राजाज्ञा द्वारा किसी निश्चित स्थान पर खुले तौर पर रखा जाता है किन्तु उसे आने-जाने व मिलने-भेंटने की स्वतंत्रता नहीं रहती.
२ लोगों की दृष्टि में भ्रम उत्पन्न करने की क्रिया, जादूगरी, बाजीगरी।
रू०भे०—निजर-बंदी।
नजर-बाग-संपु० [अ०] महल या मकान के अहाते के भीतर बना हुआ बगीचा।
रू०भे०—निजर-बाग।
नजरसांनी-संस्त्री०यौ० [अ० नजर+सानी] पुनर्विचार, पुनरावृत्ति।
रू०भे०—निजरसांनी।
नजरांण, नजरांणो-संपु० [अ० नज्र+फा० आनः] १ भेंट, उपहार, नजर। उ०—नरियंद गह नजरांण, भूप करसी मरसी जिका। पसरैली किम पांण, पांण थकां थारो 'फता'।—केसरीसिंह बारहठ
२ भेंट की हुई वस्तु।
रू०भे०—निजरांण, निजरांणो।
नजरि, नजरियो—देखो 'नजर' (रू.भे.) उ०—पारवती कांम विराजइ पहिली, लाजी किउं हिक संवाहि लियउ। करटी नजरि जोवतां कहिरो, कहर असम ताइ मदन कियउ।—महादेव पारवती री वेल
नजरीजणो, नजरीजबो-क्रि०अ० भाव वा० [अ० नजर] दृष्टि-दोष से प्रभावित होना।
वि०वि०—देखो 'नजर' (३)।
नजरीजणहार, हारो (हारी), नजरीजणियो—वि०।
नजरीजिग्रोड़ो, नजरीजियोड़ो, नजरीज्योड़ो—भू०का०कृ०।
निजरीजणो, निजरीजबो—रू०भे०।

नजरीजियोड़ी–भू०का०कृ०—दृष्टिदोष से प्रभावित हुवा हुआ।
(स्त्री० नजरीजियोड़ी)

नजळौ–सं०पु० [अ० नजल:] १ शिर में उष्णता के कारण होने वाला एक रोग, जिसमें मस्तिष्क का विकारयुक्त पानी भिन्न-भिन्न अंगों में ढल कर विकार उत्पन्न कर देता है।
२ जुकाम।
रू०भे०—निजळौ; नरजळौ।

नजाकत–सं०स्त्री० [फा०] सुकुमारता, कोमलता, नाजुकमिजाजी।

नजामत–सं०स्त्री० [अ०] नाजिम का पद।

नजारत–सं०स्त्री० [अ०] नाजिर का पद, नाजिर का कार्यालय।

नजारेबाजी–सं०स्त्री०यौ० [अ० नज्जार:, फा० बाजी] स्त्री या पुरुष का दूसरे पुरुष या स्त्री को लालसाभरी नजर से देखना, ताका-झांकी। (बाजारू)

नजारौ–सं०पु० [अ० नज्जार:] १ स्त्री या पुरुष का दूसरे स्त्री या पुरुष को लालसा भरी नजर से देखना, ताका-झांकी।
उ०—हे गवरल, रूड़ो है नजारौ तीखौ है नैणां री गाढ़-गढां नै कोटां सूं गवरल ऊतरी हां जी, वैरे हाथ कँवळ के री फूल।—लो.गी.
मुहा०—नजारा मारणा—ताक-झांक करना।
२ दृश्य। उ०—रावळी प्रोळ, पुरोहितां रा घर, अर संतां स्रीमाळियां रा आंगण मिनखां सूं भरीजग्या। कोई धूजै, कोई रोवै तौ कोई कळपै। एक अजब नजारौ।—रातवासौ
रू०भे०—निजारौ।

नजिक, नजीक—देखो 'नजदीक' (रू.भे.)
उ०—१ कितक भरथ हुण लियत कळह कर, उत्तर धनुस गह उठिय अभंग। तिकण वखत भित सह लसकर तज, चपळ सिखर गय नजिक सुचंग।—र.रू.
उ०—२ नांन्हा मिनख नजीक, उमरावां आदर नहीं। ठाकर जिण नै ठीक, रण में पड़सी राजिया।—किरपारांम

नजीकि—देखो 'नजदीक' (रू.भे.)

नजीकी—देखो 'नजदीकी' (रू.भे.)

नजीग—देखो 'नजदीक' (रू.भे.)

नजीर–सं०स्त्री० [अ० नज़ीर] १ दृष्टान्त, उदाहरण, मिसाल.
२ मुकदमे का वह फैसला जो इसी प्रकार के किसी अन्य मुकदमे के लिए उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया जाय।

नज्र—देखो 'नजर' (रू.भे.) उ०—नैड़ी घमसांण चढ़यौ नृप नज्र। गुणां चढ़ि बांण मंड्यौ घमगज्र।—मे.म.

नट–सं०पु० [सं०] (स्त्री० नटणी, नटी) १ एक जाति विशेष जिसके स्त्री-पुरुष प्राचीन काल में नाटक किया करते थे और आजकल खेल-तमाशे, कसरत करने, रस्सी व बांस आदि पर नाचने के कौतुक दिखा कर अपना भरण-पोषण करते हैं।
रू०भे०—नट्ट।
अल्पा०—नटड़ौ, नटवौ, नटियौ।
२ सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब स्वर शुद्ध लगते हैं। भिन्न-भिन्न रागों के साथ मिलाने से दूसरी रागें भी बनती हैं यथा—कामोदनट, केदारनट, छायानट आदि. ३ महादेव.
४ श्रीकृष्ण. ५ नाच-नृत्य।

नटखट–वि०यौ० [सं० नट, अनु० खट] १ नट की तरह खटपट करते रहने वाला, चंचल, ऊधमी, उपद्रवी. २ चालाक, चालबाज।

नटखटी–सं०स्त्री०—बदमाशी, शरारत, ऊधम।
वि०—देखो 'नटखट'।
ज्यूं—श्री बडी नटखटी छोरी है।

नटणौ, नटबौ–क्रि०अ० [सं० नष्ट रा०प्र०णौ] १ मना करना, इन्कार करना। उ०—कोई बात पूछै तौ नटौ मतां। अर नटौ तौ कहौ मतां। अरु बाट नटि नैं कहियौ तौ थारौ मरण हुसी।—चौबोली
२ मुकरना।
नटणहार, हारौ (हारी), नटणियौ—वि०।
नटवाड़णौ, नटवाड़बौ, नटवाणौ, नटवाबौ, नटवावणौ, नटवावबौ, नटाड़णौ, नटाड़बौ, नटाणौ, नटाबौ, नटावणौ, नटावबौ—प्रे०रू०।
नटिग्रोड़ौ, नटियोड़ौ, नटयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नटीजणौ, नटीजबौ—भाव वा०।
नाटणौ, नाटबौ—रू०भे०।

नटन–सं०पु० [सं० नर्त्तन] नृत्य, नाच।

नटनागर–सं०पु० [सं०] श्रीकृष्ण। उ०—प्रकृति सुख उपभोग करण ईंमी री आगर। सौ सालां सिग करै, अमर ओसथ नटनागर।
—दसदेव

नटनारायण–सं०पु० [सं०] १ सब शुद्ध स्वरों का संपूर्ण जाति का एक राग (संगीत) २ श्री कृष्ण।

नट-पट्टी, नटवट, नटवट्ट, नटवट्टा—देखो 'नटवट' (रू.भे.)
उ०—१ एक फिरत उचकै उरध, मति जग विरध विमोह। नट-पट्टी दीखै निपट, घटी पलट्टी सोह।—रा.रू.
उ०—२ आगळ फौज अधीस कूंत भळकावतौ, तुररौ सिर जरतार निहंग नचावतौ। नटवट्टा ज्यूं निपट फिलै वळ झंपतौ, वण जोधौ असवार चील फण चंपतौ।—किसोरदांन बारहठ

नटबाजी–सं०स्त्री० [सं० नट, फा० बाजी] नट द्वारा किये जाने वाले खेल, कौतुक, जादू, इन्द्रजाल। उ०—एक चलै एक आवही संसार सराई। उतपत परळै काळ नटबाजी नांई।—केसोदास गाडण

नटभूसण–सं०पु० [सं० नट+भूषण] हरताल।

नटमंडण, नटमंडन–सं०पु० [सं० नट+मण्डनम्] हरताल (डि.को.)

नटमल्लार–सं०पु० [सं०] संपूर्ण जाति का एक संकर राग जिसमें सभी स्वर शुद्ध हों (संगीत)

नटराज–सं०पु० [सं०] नटनारायण, श्रीकृष्ण।
उ०—कुमलिया पीड सिर विकट आग्राज कर। कड़छियौ कांन नट-राज काळौ।—वां.दा.

नटवट, नटवट्ट-संस्त्री० [सं० नट+वर्तनम्] १ नट-क्रिया।
उ०—औसाण छैरसद फक पग परंगी, दुनट नटवटा ज्यूं मक करी।—सिवदांन गाडू
[सं० नट+पट्ट] २ नट का खेला या भेद।
उ०—सांसै मगर तिरै मीन्हा, नाटो तूत पया नट-पट्टा। पति सोनै नमनाम पधांगै, तिग नजरां तिग तारत मांनै।—रा.रू.
वि० [सं० नट+वत्] नट की तरह। उ०—कुनट नटवट उघट ...। ... प्रगट ...।—सू.प्र.
रू०भे०—नट-पट्ट, नट-पट्टी, नटवट, नटवट्ट, नटवट्टा।

नटवर-संपु० [सं०] १ नटों में श्रेष्ठ, प्रधान नट, नाटयकला में प्रवीण व्यक्ति। उ०—...मोर मोर तंडवि प्रत। नटवर गांन संगीत करै गुन।—सू.प्र.
२ श्रीकृष्ण, विष्णु। उ०—ठनट मुलट मिति वट झपट, दुघट लिपट चढ़ि दाट। परम विकट घमगति लगै, नट नटवर उर लाइ।
—रा.रू.

नटवर-नागर-संपु० [सं०] श्रीकृष्ण।
उ०—एजी म्हारां नटवर नागरिया, भगतां रै क्यूं नहिं आयो रै। थंने भोळो गो नांम भोळायो रै। ए जी म्हांरा···।—लो.गी.

नटवौ—देखो 'नट' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ यो हुती मेरी रांम झूंपड़ी, यां कोई नृपति आ उतरै। मृदंग ताळ पखावज बाजै, नटवा नृत्य करै। मंदिर देख डरै रै सुदांमा, मंदिर देख डरै रै डरै।—लो.गी.
उ०—२ नेहवैं ते मदहर प्रिया रे, देखण आवि दौड़ि नटवी रूप निहाल मैं रे। ठिक न रह्यौ दिल ठौड़ि।—ध.व.ग्रं.
(स्त्री० नटव)

नटसाळ-संस्त्री०—१ देखो 'नाटसाळा' (रू.भे.)
उ०—बाजा बजावै रे, देखण बहु आवै रे। नटसाळा सुहावै हो राजिंद अति घणी।—जयवांणी
२ देखो 'नाटसाळ' (रू.भे.) उ०—चौथी 'सांगा' रांण री, मेड़तियो 'धनमाल'। सेव करै 'अगजीत' री, 'सैद' हियै नटसाळ।
—रा.रू.

नटसाळा-संस्त्री० [सं० नाटयशाला] नाटयशाला।
रू०भे०—नटसाळा।

नटारंभ—देखो 'नाटारंभ' (रू.भे.)

नटियौ—देखो 'नट' (अल्पा., रू.भे.)

नटेस्वर-संपु० [सं० नटेश्वर] महादेव, शिव।
रू०भे०—नाटेसर।

नट्ट—देखो 'नट' (रू.भे.)
उ०—आ धान दान रमतौ दनौ, पहिम भ्रम्म भूलिस पगा। हरिनांम ... , ... नट्ट जेहा जगा।—ज.खि.
(स्त्री० नट्टी)

नट्टारंभ—देखो 'नाटारंभ' (रू.भे.) उ०—नयर लोक नइ तुल्लि प्रहा धाम सोभिउं जालउं मेल्ही काज। तुम्ह परणी सिउं नट्टारंभ करिसउ इसी सवि प्रारंभ।—विद्याविलास पवाडउ

नट्ठ—देखो 'नष्ट' (रू.भे.)

नट्ठणौ, नट्ठबौ, नठणौ, नठबौ, नट्ठणौ, नट्ठबौ-क्रि०अ० [सं० नष्ट् रा० प्र०णौ] १ नष्ट होना।
उ०—१ कुपाह तणउं धन उपारजिउं जळि उपतिरदइ, कुपाह तणउं धन ऊपारजिउं भणसालइं यूटइ। कुपाह तणउं धन ऊपारजिउं ऊम नट्ठ जाइ, कुपाह तणउं धन ऊपारजिउं वांणउत खाइ।—प.स.
२ देखो 'न्हाठणौ, न्हाठबौ' (रू.भे.) उ०—हुवौ जिण ठौर बडौ घमसांण। नठी तज दूमल वाज निसांण।—पा.प्र.
उ०—२ असी सहंस सेना भठी, सहंस उठी वासट्ठि। भड़ां कोपियां भीरवां, नीर गया मुख नट्ठि।—वं.भा.
१ देखो 'नट्टणौ, नट्टबौ' (रू.भे.)

नड-संपु० [देश०] १ धड़, कबंध। उ०—पकणाळ हुवइ उतबंग पड़इ घड, नड नाचइ अपछर निर(भंग) पळ। भारथ तणउ पहाड महा-भड, जुडता अणी करइ वड जंग।—महादेव पारवती री वेलि
२ देखो 'नाडौ' (मह., रू.भे.) उ०—कुसुमल छौळ भरै नड तहु। करद्दम आंमिख हड्ड कवह्व।—मे.म.
३ कुबेर का पुत्र नळ। उ०—ताड वृक्ष अमूल्या कान्हड, सिकटा-सुर संघारघा। नड कूबड नई भंगण कराव्या, ताड-ताड लंबक मारघा।—रुकमणी मंगळ
रू०भे०—नड़।

नडणौ, नडबौ—देखो 'नड़णौ, नड़बौ' (रू.भे.)

नडर—देखो 'निडर' (रू.भे.) (डिं.को.)

नडि—देखो 'नेड़ौ' (रू.भे.) उ०—पासा परवस थया प्रीतनि, पुस्कर ना मवळा पड़ि। विपरीत छि कांइ वारता, माहा दिहनि आवीसि नडि।
—नळाख्यांन

नडडौ—देखो 'नाडौ' (रू.भे.)

नड्डणौ, नड्डबौ-क्रि०अ० [सं० नद्ध] जड़ाई का काम करना, जड़ देना।
उ०—घर कावल खग धार किलम्मां कड्डिया। नांमा इंद दइंद नखत ज्यू नड्डिया।—प्र.प्र.

नड्डियोड़ौ-भू०का०कृ०—जड़ा हुआ, पच्चीकारी किया हुआ।
(स्त्री० नड्डियोड़ी)

नणंद-संस्त्री० [सं० ननान्दृ] पति की बहिन।
उ०—१ भादव घण भल गाजियो, नदियां खळक्या नीर। पपीहो पिव-पिव करै, आव नणंद रा वीर।—लो.गी.
उ०—२ जको म्हारी जोड़ रो उदियापुर मालै रे। वीरो मोळी नणंद रो म्हारो हुकम उठावै रे।—लो.गी.
रू०भे०—नणंदर, नणद, नणदळ, नणदल, नणदी।
अल्पा०—नणदलड़ी, नणदली, नणदिया, नणंदेली, नाणदूली।

नणंदर, नणद, नणदळ, नणदल—देखो 'नणंद' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ सासू नणंदर जेह पूज्यवा गए, कहिउं करेयो तेह तणूं ए। तेहवी चालि चाल्यो जेणि वातिइ ए, लाज न आवइ इम भूणूं ए।
—नळ दवदंती रास

उ०—२ नणदल बाई तोड़िया नीबूड़े रा पांन, ओ थां पर वारी रे सैंयां। देवरजी छुंदगाळा तोड़ै कांमड़ी ओ राज। नणदल बाइसा नैं सासरियै पहुंचाय, ओ थां पर वारी रे सैंयां।—लो.गी.

उ०—३ भली थूं सांझ सुखां री देंण, दाभ़तै दिनड़ै री ठाडोळ। नींद री नणदल, सपनां सेज, परणती सरग परी री खोळ।—सांझ

नणदलड़ी, नणदली—देखो 'नणंद' (अल्पा., रू.भे.)

नणदिया—देखो 'नणंद' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—भूलण म्हें तो जांणूं री वितहिया। तूं हठ लागी म्हारी नणदिया।—लो.गी.

नणदी—देखो 'नणंद' (रू.भे.) उ०—म्हे सराहियां नणदी थारै बालम वीर नूं।—लो.गी.

नणदूतरी-सं०स्त्री० [सं० ननान्दृ+पुत्री] पति की बहिन की पुत्री।

नणदूतरो, नणदूतो, नणदूत्रो-सं०पु० [सं० ननान्दृ+पुत्र] (स्त्री० नणदूतरी, नणदूत्री) पति की बहिन का पुत्र।

रू०भे०—नणदोतो, नणदोत्रो।

नणदूली—देखो 'नणंद' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जेठूते के सिर पर हाथ फेरीज्यो छोटी सी नणदूली नैं म्हारो याद कहीज्यो, ए उडती कूंजरियां। सनेसो म्हारो लेती जाज्यो, ए उडती कूंजरियां।—लो.गी.

नणदोइ, नणदोई-सं०पु० [सं० ननान्दृ+पति] पति की बहिन, ननद का पति। उ०—१ ओ म्हारा चांद सूरज नणदोई सा, म्हे तो फाग खेलवा आईस्यां।—लो.गी.

उ०—२ साळाहेली बगड़ बुहारती। नणदोई नै लटक जुहार।
रू०भे०—नणंदोई। —लो.गी.

नणदोतरी, नणदोती, नणदोत्री—देखो 'नणदूतरी' (रू.भे.)

नणदोतो, नणदोत्रो—देखो 'नणदूतरो' (रू.भे.)

नत-वि० [सं०] १ नमित, झुका हुआ, विनम्र.

२ देखो 'नित' (रू.भे.) (डि.को.) उ०—१ ऊगां सूर समो ऊदावत, बढ़ै बसू छळ बोल विरोळ। चळ्‌मळ अरी तणै चीतोडा, चंद्रप्रहास रहै नत चोळ।—प्रिथीराज राठौड़

उ०—२ प्रगट घूपटै दरव अठ पहर अपापार रे, वड़म कुळ भार रे भुजां वाधा। बिलाला खड़ै नत तुरंग इण वार रे, माग आचार दूवा 'माधा'।—मेगी महड़ू

नत-प्रत—देखो 'नित्यप्रति' (रू.भे.) (डि.को.)

नतांस-सं०पु० [सं० नतांश] वह वृत्त जिसका केंद्र भूकेंद्र पर हो और विषवत् रेखा पर लम्ब हो। इस वृत्त का उपयोग ग्रहों की स्थिति निश्चित करते समय होता है।

नता-सं०पु० [सं० अनृतं] असत्य, झूठ। उ०—लछी रा चहन घणां वीज वाळी लपट। क्रोध ममता नता मूढ तज रे कपट।—र.ज.प्र.

नति-सं०पु० [सं० नतिः] १ नमस्कार, प्रणाम।

उ०—महम्मा जांणै ब्रह्म महेस। पगां रिख लाग करै नति पेस।

२ विनय, नम्रता, झुकाव। —र.र.

नतीजो-सं०पु० [फा० नतीजः] फल, परिणाम।

नतीठ, नतीठो—देखो 'नत्रीठ' (रू.भे.) उ०—१ तुरी जुघ मेळि लड़ै 'सगतेस'। नतीठ घसै जिम पंड नरेस।—सू.प्र.

उ०—२ नहंगां राजांन वाळो हाकलै नतीठ।—हुकमीचंद खिड़ियो

नत्त—देखो 'नित' (रू.भे.)

नत्ताळ—देखो 'निराताल' (रू.भे.)

नत्तिकांत-सं०पु० [सं० नत्तिक्रान्त] ४९ क्षेत्रपालों में से ३६वां क्षेत्रपाल।

नत्थ—१ देखो 'नथ' (रू.भे.) उ०—गह्यो कर वांन उदग्गनि हत्थ, महिस्थ समांन उनत्थहि नत्थ।—ला.रा.

२ देखो 'नाथ' (रू.भे.)

नत्थणी—देखो 'नथणी' (रू.भे.)

नत्थणो, नत्थबो—देखो 'नाथणो, नाथबो' (रू.भे.)

नत्थि—देखो 'नथी' (रू.भे.) उ०—'रहि रे तूं चाली म कहि, इम अवनी-तटि नत्थि'। कहितां कोड़ि सवा तणउं, मांणिक आपिउं हत्थि।—मा.कां.प्र.

नत्थी, नत्थीय-सं०स्त्री० [सं० नाथ] १ कागज-पत्रादि में छेद करके या पिन आदि के सहारे एक साथ लगने की क्रिया. २ उपर्युक्त विधि से एक ही में नत्थी किये हुए पत्रादि जो प्रायः एक ही विषय से संबद्ध रखते हों, मिस्ल।

वि०—१ एक साथ लगा हुआ, संलग्न.

२ देखो 'नथी' (रू.भे.) उ०—१ चिहुं गति मांहि कांइ नत्थी सार दीसइ, दुक्ख तणउ भंडार।—चिहुंगति चउपइ

उ०—२ तसु रूपह जामलिहिं त्रिहउं भूयणि कइ नारि नत्थीय। पाधारउ कुमरि सहीय आठ चक्र छइ थंभि थंभीय।—पं.पं.च.

नत्रीठ, नत्रीठि, नत्रीठो-सं०पु० [सं० न+तृष्टि] १ योद्धा, वीर।

उ०—१ न लाभत सावत सीस नत्रीठ, देतो चक्र दंड फिरै त्रणदीठ।—मे.म.

उ०—२ सादूळो वाकारियै, त्यां वाजिया नत्रीठ। लग्गो सूर परक्खणै, वग्गो धारा रीठ।—रा.रू.

उ०—३ प्रिसणां साथ कासळो पड़ियो, आंगम लखां दुओ आखड़ियो। निस गळती भूंवियो नत्रीठो, रूक तणो मच आका रीठो।
—रा.रू.

२ अत्यंत प्रहार, बौछार. ३ घोड़ा।

उ०—१ सांम्हा दूत अभूत सिधाया, उण दिस मेछ पेच धर आया। निस आया खेड़िया नत्रीठां, दीठा पुर नैड़ा रवि दीठां।—रा.रू.

उ०—२ ओडै वीर घटा घोख मातंगां ताजांनआळो, रोड़ै विजय विखम्मी वाजांनआळो रीठ। ओक जंघां एराक ले भूडंडां आजांनआळो, निहंगां राजांनआळो हाकले नत्रीठ।—हुकमीचंद खिड़ियो

वि०—१ निःशंक, निर्भय।

उ०—जिनहि जोग नवोढि, जिन मन नारहि रोडि ।—ढु.रू.बं.

२ पैन्युर्वक । उ०—१ निसीध रै समय कुमार हुई तिको मार्दै जाय नवोढा बागे वर्हिया ।—नं.सा.

उ०—२ मो पद्मिया दुजा मुद्रत, धन कावड़िया गेह । धंग नवोढा नांविकर, धार 'दुरन' मनेह ।—रा.रू.

उ०—३ गोरख रंगा महागुय मनमें, बनतां सर नवोढ बहे । 'पातल' मुज मरा पाड़िवासन, धवर परनियो मदा रहे ।—प्रथीराज राठौड़

३ मदंतर, तेज । उ०—नवोढा वं बाक पड़पड़े 'कुसियाळ' नंद, सवो मद मदे डर बिन रहे संग । किनम दळ भिड़े 'सबळेस' तोसूं कमण पवन भिड़ता पड़े पड़े मातंक ।—गुनजी भाड़ो

रू०भे०—नवोढ, नवोढो ।

नथ-संज्ञा०स्त्री० [सं० नाथ] १ नाक में छेद कर पहना जाने वाला स्त्रियों का आभूषण ।

वि०वि०—सौभाग्यवती स्त्रियाँ इस आभूषण को धारण कर के नाथ (पति) का अस्तित्व सूचित करती हैं अतः नाथ से नथ शब्द बना ।

उ०—१ गाढा बीनां री पहाई नथ मुळ मुळ जाय । लीलां री पोवाई नथ टघोड़ा मोला खाय ।—लो.गी.

उ०—२ उत्तर जाइज्यो दिखरण जाइज्यो जाइज्यो समदां पार । मारवणी रे नथ लाइजो मोती लाइजो चार ।—लो.गी.

२ तलवार की मूठ पर लगा हुआ छल्ला.

३ बेधने की क्रिया ।

मुहा०—नथ उतारणी—किसी वेश्या का प्रथम समागम कराना, कौमार्य-भंग करना ।

रू०भे०—नाथ, नाथ ।

अल्पा०—नथकी, नथड़की, नथड़ली, नथड़ी, नथणी, नथली, नथुली ।

मह०—नथड़, नथड़ ।

नथड़ी, नथकी—देखो 'नथ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मुलड़ै नै वेसर लाव भंवर म्हारे मुलड़ै नै वेसर लाव । हांजी म्हारी नथड़ी रतन जड़ाव भंवर म्हांनै रोवण दो गणगोर ।—लो.गी.

नथणो-सं०पु० [सं० नस्तः] नाक का अगला भाग ।

रू०भे०—नस्थणो ।

नथणो, नथबो-क्रि०अ०—१ किसी के साथ नत्थी होना, छेदा जाना.

२ देखो 'नाथणो, नाथबो' (रू.भे.)

नथ-बीजळी-सं०स्त्री० [सं० नस्तः अथवा नाथ+विद्युत] नाक का आभूषण विशेष ।

नथली—देखो 'नथ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—तीजो सखी मेरो पहर टेवटो नथली सूं रूप संवारयो, चौथी सखी मेरो घूंनड़ ओढी, गळै में मोतीड़ां रो हारो ।—लो.गी.

नदि—देखो 'नदी' (रू.भे.) उ०—श्रीहरि जे सागरि सूइ छि, सही ए सर नदि आंगू । नारायण आगळि नारदजी सूं ए सर नदि दिखाड़ूं ।—नागदमांण

नदिपत्र-सं०पु० [सं० नस्ता=पशुओं के नाक का छेद+रा०प्र० पत्र] १ काली नाग. २ शेषनाग । उ०—रे नदिपत्र रे नदिपत्र फिर रहो, दरक म कनक कोट फिर धाव । 'गोगावत' गाजियो न गाजै, गाजै राव अगंजियो गाव ।—राव मालदेव रो गीत

नदी-क्रि०वि० [सं० नास्ति] १ नहीं ।

उ०—कंत लखीजै दोहि कुळ, नथी फिरंती छांह । मुड़िया मिळसी गीदवी, वळै न धण री बांह ।—वी.स.

२ देखो 'नत्थी' (रू.भे.)

रू०भे०—नत्थी, नत्थीय ।

नथुली—देखो 'नथ' (अल्पा., रू.भे.)

नद-सं०पु० [सं० नद] १ पहुंचे पर पहिनने का आभूषण विशेष (?)

उ०—पग पहरी सकल बाजणी पायल, नै आंपद आगळी नद ।

—महादेव पारवती री वेल.

रू०भे०—नद्द ।

२ देखो 'नदी' (मह., रू.भे.) (अ.मा.)

३ देखो 'नाद' (रू.भे.) उ०—धुनि वेद सुणित, कहूं सुणति संख धुनि, नद झलरि नीसांण नद । हेका कह हेका हीलोहळ, सायर गयर सरीस सद ।—वेलि.

नदर—देखो 'नजर' (रू.भे.)

नदारत, नदारद-वि० [फा०] गायब, लुप्त ।

रू०भे०—नदारत ।

नदि—देखो 'नदी' (रू.भे.) उ०—ऊंचो लूंबो हूंत धनैसी, सर भद्द वळी वहीरां तैसी । ओपै पंथ कतारां ऐसी, जळ धारा नदि सांवण जैसी ।

—रा.रू.

नदियांण-सं०पु० [सं० नदी+रा०प्र० यांण] सागर, समुद्र ।

उ०—सिसट्ट उपाइ ब्रम्म सब, थावर जंगमांणा । जळ थळ महियळ गिर किया, नद्द नदियांणा ।—गज उद्धार

नदी-सं०स्त्री० [सं०] १ जल का प्राकृतिक और भारी प्रवाह जो किसी पर्वत अथवा जलाशय आदि से निकल कर किसी निश्चित मार्ग से होता हुआ बारहों महीने अथवा वर्षाकाल में बहता रहता हो, सरिता ।

पर्याय०—आपगा, कूलय, कूल्यंकषा, जंभाळणी, जळधार, जळधिया, जळमाळा, तटणी, तरंगणी, तरंगाळी, तरपोस, दकसीर, दीपवती, धुनी, निमनगा, निरझरणी, परबतजा, प्रवाहा, भवसुता, भूमविहार, वरनीर, वाहणी, संमलाय, सरत, साव, सिंधु, सेवळनी, स्रयंती, स्रोत ।

क्रि०प्र०—आंणी, बैवणी ।

मुहा०—नदी आंणी—खूब अधिक होना । नदी बैंवाणी—खूब अधिक कर देना ।

२ तेरह की संख्या* ।

रू०भे०—नंदी, नदं, नद, नदइं, नई, नदी, नद्दी ।

(मह० नद, नद्द)

नदी-ईसवर—सं०पु० [सं० नदीश्वर] समुद्र, सागर (डि.को.)

नदी-कूल—सं०पु०यौ० [सं०] १ नदी का तट।
२ दो की संख्या*। (डि.को.)

नदी-नाथ—सं०पु०यौ० [सं०] नदी-पति, सागर, समुद्र।

नदी-निवास—सं०पु०यौ० [सं० नदी+राज० निवास] समुद्र, सागर।
उ०—सउ सहसें एकोतरें, सिरि मोतीहरि सुघ। नदीनिवासउ उत्तरी, आंयूं एक अविघ।—ढो.मा.

नदीपति—सं०पु०यौ० [सं०] सागर, समुद्र।
रू०भे०—नंदीपति।

नदीमुख—सं०पु० [सं०] नदी का मुहाना।

नदीराज—सं०पु० [सं०] सागर, समुद्र।

नदीस—सं०पु० [सं० नदीश] सागर, समुद्र।
रू०भे०—नईस।

नद्द—१ देखो 'नदी' (मह., रू.भे.) उ०—१ जळ थळ महियळ गिर किया, नद्द नदियांणं। सुर, नर, नागा, राखसां, रचना रच्चाणं।
—गजउद्धार

उ०—२ नववती राग घड़ियाल नद्द। सागर जिम नगर उछाह सद्द।—सू.प्र.
२ देखो 'नद' (१) (रू.भे.)
३ देखो 'नाद' (रू.भे.) उ०—१ नद्द करंती नेउरी, कटि मेखळि उर हार। कंठि निगोदर पदिकडी, चंपकळी अति सार।—मा.कां.प्र.
उ०—२ वीरांण सब्द सुणिया विहद्द। नीसांण तूर अनह नद्द।
—वि.सं.

नद्दा—देखो 'नाद' (रू.भे.)

नद्दी—१ देखो 'नादी' (रू.भे.) उ०—यम सद्द नवीन के सुनें, जरिगे खद्दन के हियें। चहुं ओर चल्लिय वत्त यौं लरि कोट भारथसी लियें।
—ला.रा.

२ देखो 'नदी' (रू.भे.)

नद्ध—वि० [सं०] १ बद्ध, बंधा हुआ (डि.को.)
२ नथा हुआ।

नध—सं०पु० [जल निधि ?] समुद्र, सागर। उ०—हुओ बंधांण नध, ग्रहां उग्रहण हुओ, समर ओसर हुओ सुरां साथैं। हुवो सीता वळण लंक पालट हुओ, हुओ रांमण मरण रांम हाथैं।—अज्ञात
२ देखो 'निधि' (रू.भे.) (डि.को.)

नधपुर—सं०पु० [अं० लण्डन+सं० पुर] इंगलैंड की राजधानी, लन्दन नगर। उ०—थिर रण अरियां थोगणो, नधपुर पूगो नांम। आठवो खुसियाळ इळ, गावैं गांमोगांम।—आठवा रा क्रांति संबंधी दूहा

नधांन—देखो 'निधांन' (रू.भे.)

नधि—देखो 'निधि' (रू.भे.)

नधी—देखो 'निधि' (रू.भे.) (डि.को.)

नधुस—देखो 'नहुस' (रू.भे.) उ०—दूसण देखी देव नूं, दिसि गय देवेस। तव इंद्राणी आगमती, हूंती नधुस नरेस।—मा.कां.प्र.

ननंग—सं०पु० [सं० नग] १ वृक्ष, पेड़. २ देखो 'निनंग' (रू.भे.)

नन—क्रि०वि० [सं०] कठिनता से, मुश्किल से।
उ०—लाख हमालैं मंख लगि, नन आंणियो पिनाक।—रांमरासो
अव्य०—नहीं।
रू०भे०—नंन।

ननसार, ननसाळ—सं०स्त्री० [राज० नन=नाना+सं० शाला] नाना का घर, ननिहाल।
उ०—ढोली का, चढ़ ढोल दें, रांणी, गढ़ सरवरियें री पाळां जी। क्यों सुणें मेरे बाप के, रांणी, लाडलड़ी ननसाळांजी।—लो.गी.
रू०भे०—ननिहाळ, ननीहाळ।

ननियो—१ देखो 'नन्नो' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'नंनो' (अल्पा., रू.भे.)

ननिहाळ, ननीहाळ—देखो 'ननसाळ' (रू.भे.)
उ०—पूठो भारी रावजी स्री बीकोजी रो। ननिहाळ मोहिलां रै सो भारी, तिण सूं आसंग पण किहीं री नहीं पड़ै।
—सूरे खींवे कांधळोत री वात

ननु—देखो 'नन्नो' (रू.भे.) उ०—सत्यवंत दातार छै नि ननु ति भणियु नथी। अथवा सूं ते वीसरचु ? संदेह सूं कहीइ कथी।—नळाख्यांन

नन्नो, नन्नो [सं० न] १ 'न' अक्षर।
उ०—१ हहो करै हित हांण। भभो तन व्याध जगावै। घघो राज भय धरै, ररो धन नास करावै। घघो घरण घट घाट, नूफळ कर ननो निमाड़ै। खय जस करै खकार, भभो परदेस भ्रमाड़ै।—र.रू.
उ०—२ बावन आखर में वडो, नन्नो आखर सार। दद्दो तो जांणूं नहीं, लल्लै आखर प्यार।—अज्ञात
अव्य०—२ न या नहीं का बोधक शब्द, नहीं।
मुहा०—एक ननो सो रोग टाळै—एक नहीं कहना अनेक विपत्तियों से छुटकारा दिलाता है।
३ अस्विकार, असहमति, इन्कार।
उ०—रत ज्यूं दत जाचक रसक, जाचै वे कर जोड़। ननो भणै नव-नार ज्यूं, मूढ़ कृपण मुख मोड़।—बां.दा.
रू०भे०—नन, ननु।
अल्पा०—ननियो।

नपट—देखो निपट' (रू.भे.) उ०—विकट रजवट ऊछट अघट वेवा-ह सा। नपट त्रसळो भ्रगुट कठी नव साहसा।—महादांन महड़ू

नपणो, नपबो—क्रि०अ० [सं० मापन] १ किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई, गहराई आदि का निश्चय होना, कोई वस्तु कितनी लम्बी, चौड़ी, गहरी, मोटी है इसकी परीक्षा होना।
२ कोई वस्तु कितने परिमाण या मात्रा में है इसका निश्चय होना।

नपाई—सं०स्त्री० [सं० मापनम्] नापने का भाव, नापने का काम।
क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी।

नकलंक-वि० [सं० निष्कलंक] निष्कलंक, दाग रहित।

रू०—नकळंक नराण नीम नकेरळ, दातारिया अकू हुइ 'दमर'।

हिंदू मो को उरे रखाणी, जिणरै मदा हुवैर हर।—दुरसौ आढ़ौ

नखित—देखो 'नक्षित' (रू.भे.)

नखियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ लम्बाई, चौड़ाई आदि का निश्चय हुवा हुआ. २ किसी वस्तु के परिमाण या मात्रा का निश्चय हुवा हुआ।

(स्त्री० नखियोड़ी)

नपुंगौ—देखो 'निपूगौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नपुंगी)

नपुंसक-सं०पु० [सं०] १ वह पुरुष जिसमें कामेच्छा जागृत नहीं होती हो अथवा बहुत ही कम होती हो.

२ जो न पुरुष हो न स्त्री, नामर्द, हिजड़ा।

उ०—इमर हुय तत रूप हुय ध्यान सदा उरंत, नांम नारी पुरुष नीर निगुण, कहत नपुंसक कंत।—ऊ.का.

३ डरपोक, कायर।

नपुंसकता-सं०स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का रोग जिसमें मनुष्य का वीर्य नष्ट हो जाता है और वह स्त्री-संभोग के योग्य नहीं रहता है.

२ नपुंसक होने का भाव।

नपूतौ—देखो 'निपूतौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नपूती)

नफर-सं०पु० [फा०] १ व्यक्ति (अ.मा.) उ०—१ दहां अरज कीवी जे दोय नफार नै दोय नफर पियादा द्यां।—दूलची जोइये री वारता

२ दास, सेवक, नौकर (अ.मा.) उ०—हाजर रहै हुकम में हाडा, दाम न खरचै नफर दुवा। भाटी जांणै याद भवांनी, हाला-झाला नफर हुवा।—ओपौ आढ़ौ

३ साईस।

नफरत-सं०स्त्री० [अ०] घृणा, घिन।

नफरी-सं०स्त्री० [फा० नफर+रा०प्र०ई] १ मजदूर का एक दिन का कार्य. २ मजदूरी का एक दिन।

रू०—पांच नफरी में पूरो पत्थर हुं जाई।

३ मजदूर की एक दिन की मजदूरी. ४ सूची।

नफस-सं०पु० [अ० नफ्स] विषय-वासना, काम-वासना।

उ०—दादू नफस नांम सौं मारियै, गोसमालि दे पंद। दुई है सो दूर कर, तब घर में आनंद।—दादू बांणी

नफेर, नफेरि, नफेरिय, नफेरी-सं०स्त्री० [फा०, अ० नफीरी] शहनाई।

उ०—१ नीसांण वाजि नरगा नफेरि। रद्दगति दउंडि भरहरी भेरि।—रा.ज.सी.

उ०—२ जवनिद नेन उठैं फिर ज्वाळ, धमंधम धत्तर घुग्घर माळ। दमंकि ददन्त नफेरिय दीप, नूंमाव भवक बात मजीप।—रा.रू.

उ०—३ नफेरी न भेरी निसांण न नद्दा। रबं तूर वाजे न धौरे रवद्दा। नकै शाजनाबाद देवाळ वाई। धरै ऊजळी रैण रैणां न साई।—ना.द.

रू०भे०—निफेरी।

नफौ, नफ्फौ, नफ्फो-सं०पु० [अ० नफा] फायदा, लाभ।

उ०—१ बैर मही तोटो बसै, बसै नफौ न 'बंक'। सिया विरह राघव सह्यो, रांवण पलटी लंक।—बां.दा.

उ०—२ काया कोट काच सो काचो, जतन करंता जावै। भणै गुर ग्यांन नफो इक माया, अरथ धीर के आवै।—ऊ.का.

उ०—३ सफ्फा होवै सालक पर, रफ्फा डावांडोल। नफ्फा धारै है नही, गफ्फा खावै गोल।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—उठाणौ, करणौ, होणौ।

नबंध—देखो 'निबंध' (रू.भे.)

नबंधणौ, नबंधबौ—देखो 'निबंधणौ, निबंधबौ' (रू.भे.)

नबंधियोड़ौ—देखो 'निबंधियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नबंधियोड़ी)

नबळ—देखो 'निरबळ' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—आइयो धणियाई, घर पुड़ किणी न धारसी। बसी घणी आयौह, नबळ हुवो निरबै निजर।—पा.प्र.

नबरंगौ—देखो 'नवरंगौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ईसा गुपती वचन सी वंचिया। नव जोबन नबरंगो नेह। अहि निसि रमरई गोरड़ी। सांभळा-राजा तणौ सनेह।—बी दे.

नबाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.) उ०—मरहठां करै सिर 'विलंद' मेळ। अहमदाबाद मंडियौ उरेल। सुण पातसाह फेरै सिताब। नरियंद सकळ हाजिर नबाब।—वि.सं.

नबाबजादौ—देखो 'नव्वाबजादौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नबाबजादी)

नबाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)

नबाळिग—देखो 'नाबाळिग' (रू.भे.)

नबी-सं०पु० [अ०] १ ईश्वर का दूत, पैगंबर।

उ०—नबियां में सुतर सवार महमद हुवौ।—बां.दा. ख्यात

२ ईश्वर, भगवान। उ०—चित में साह विचारियौ, राजा नबी जवांन। परवस मेरी पोतरी, ग्रै तिरजोर निदांन। जो पकड़ाऊं 'दुरस' कूं, तौ आवै गुन साथ। दुरस कबोले की तबै, सरम नबी के हाथ।

—रा.रू.

३ मुखिया, पंच, अगुआ। उ०—नबी हुवोड़ा नीच हवी भर लेवै हाकौ। बैठ सभा रै बीच करै मनवार कजाकौ।—ऊ.का.

४ मुसलमान। उ०—ओढ़ण पुड़ एक एक पुड़ असमर, हाथै मूंठ ज हात लियां। कोप सुधारे थकै तन काटां, दांणव भांत नबी दळियां।

—महारांणा सेता री गीत

रू०भे०—नबिय, नब्बी।

नबे—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

नबेड़णौ, नबेड़बौ—देखो 'निपटाणौ, निपटावौ' (रू.भे.)

नवेड़णहार, हारो (हारी), नवेड़णियो—वि०।
नवेड़िग्रोड़ो, नवेड़ियोड़ो, नवेड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
नवेड़ीजणो, नवेड़ीजबो—कर्म वा०।
नवेड़ियोड़ो—देखो 'निवेड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नवेड़ियोडी)
नवेड़ो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)
नव्ज-सं०स्त्री० [ग्र०] हाथ की वह धमनी अथवा नाड़ी जिसकी गति से रोग की पहचान की जाती है।
नव्व—देखो 'नव' (रू.भे.)
नव्वाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.) उ०—ग्रासुर दिल्ली राह गया, पगवाहि सिपाई। ग्राव जनम उतराय लियो नव्वाब सवाई।—रारू.
नव्वाबजादो—देखो 'नव्वाबजादो' (रू.भे.)
(स्त्री० नव्वाबजादी)
नव्वाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)
नव्विय, नव्वी—देखो 'नवी' (रू.भे.) उ०—१ गुड़ै हुय विंभळ गात गनीम। रटै मुख नव्विय रब्ब रहीम। छेकी कर छूटक वार छडाळ। भली थरकंत पटाफर भाळ।—ढो.मा.
उ०—२ कोपियां किया फण फैंतकार। दाविया पूंछ जिम काळिंदार। नव्वी कुरांण पढ़ पीर नांम। महूमद ग्रली हजरत इमांम।
—वि.सं.
नव्वे—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)
नव्यासी—देखो 'निवियासी' (रू.भे.) उ०—बासठ सहस मुनिराज थया, वळी सहस नव्यासी हुई ग्रज्जिया। प्रभु तारो नै वळी ग्राप तरो, स्त्री सांति जिनेस्वर सांति करो।—जयवांणी
नभ-सं०पु० [सं० नभम्] १ ग्राकाश, ग्रासमान।
उ०—वैरी वैर न वीसरै, बिनां हियै ही 'बंक'। राहु ग्रहै राकेस नूं, नभ सिर माग्र निसंक।—बां.दा.
[सं० नभस्य] २ भादो मास, भाद्रपद।
उ०—ग्रादि पक्ख ग्रस्टमी मास नभ सुभ गुण मंडित। रूपतिपुरी मणि मुकट खेत्र मधुपुरी ग्रखंडित।—रा.रू.
[सं० नभः] ३ सूर्य वंशी राजा निषध के पुत्र का नाम. ४ श्रावण मास (डि.को.). ५ जन्म कुण्डली में लग्न से दसवां स्थान.
६ मेघ, बादल।
रू०भे०—नह।
नभग-सं०पु० [सं०] पक्षी, खग।
नभगनाथ-सं०पु० [सं०] गरुड़।
नभगांमी-सं०पु० [सं० नभोगामिन्] १ सूर्य, रवि.
२ चन्द्रमा (डि.को.) ३ पक्षी, खग. ४ देवता, सुर. ५ तारा।
वि०—जो ग्राकाश में विचरण करे, ग्राकाश में विचरण करने वाला।
नभगेस-सं०पु० [सं० नभगेश] गरुड़।

नभचक्र-सं०पु० [सं०] ग्राकाश, गगन।
उ०—विवध घणमाळ नभचक्र मांभळ वसी। रवि ससि न दीसै दिवस रजनी। मनोभव लगाड़ बांण मोहण मरण। सहंस वातां सजन ग्रांण सदनी।—बां.दा.
नभचर, नभचार-सं०पु० [सं० नभश्चर] १ पक्षी, खग।
उ०—१ नभचर विहंग निरास, विन हिम्मत लाखां वहै। बाज छत्र कर वास, रजपूती सूं राजिया।—किरपारांम
उ०—२ सेलां ग्रंबर ढंकिया नभचार रुकाया।—वं भा.
२ पवन, वायु, हवा. ३ बादल, मेघ.
४ देवता, गंधर्व, ग्रहादि।
उ०—धरता स्यांमळ भेख, नीर-नद लेण लुभावै। पासर सरिता ग्राप, पातळी जदै लखावै। पेखै नभचर गैण, ग्रोपमा इण विध ग्रांणै। पहुमी गळ ज्यूं हार, बिचाळै नीलम जांणै।—मेघ.
रू०भे०—निभचर।
वि०—ग्राकाश में चलने ग्रथवा विचरण करने वाला।
नभधज, नभधुज—देखो 'नभोध्वज' (रू.भे.) (डि.को.)
नभनीरप-सं०पु० [सं० नभोनीरप्] पपीहा, चातक (डि.को.)
नभपंत, नभपंथ-सं०पु० [सं० नभपंथ] ग्राकाश मार्ग।
नभमंडळ-सं०पु० [सं० नभमंडल] ग्राकाश-मण्डल।
उ०—चहुं घां चकचूरण खुरणी खे चढ़तौ। मसळत महिमंडळ नभमंडळ मढ़ती। रैणूं रवि मंडळ रसमी रय रोकी। तन मन प्रज कांपत ढांपत त्रयलोकी।—ऊ.का.
नभमण, नभमणि, नभमणी, नभमिण—देखो 'नभोमणि' (रू.भे.)
उ०—धूजसर सेस उड रजी नभमण ढकै, घणा दळ मिळै कण सीस ग्रणघाट। वळोवळ प्रसण तज मांण सूधा वहै, जुड़ै रण ग्राय कुण वगां खग भाट।—गुलजी ग्राढ़ो
नभराट-सं०पु० [सं० नभोराट्] मेघ, बादल (ह.नां., ग्र.मा.)
नभवटी-सं०पु० [सं० नभवर्तिन्] पक्षी, खग (ग्र.मा.)
नभवांणी-सं०स्त्री० [सं० नभोवाणी] १ वह शब्द वा वाक्य जो ग्राकाश से देवता लोग बोलें. देववाणी. २ ग्राकाशवाणी, वितन्तुक।
रू०भे०—नभवैण।
नभवैण—देखो 'नभवांणी' (रू.भे.)
नभसरणी-सं०स्त्री० [सं०] ग्राकाश गंगा।
उ०—नभसरणी रै बात फुहारां गात सुहावै, ठाडी छांह मंदार कोड विसांणी लेण लुभावै। चळ करती चकचोळ सुरां-उर हांम जगाती, रमै धिवड़ियां हेम-रज रतन लुकाती।—मेघ.
नभसांस-सं०पु० [सं० नभस्वास्] पवन, हवा (ग्र.मा.)
नभस्य-सं०पु० [सं०] भादों का महिना, भाद्रपद।
नभोग-सं०पु [सं०] १ जन्मकुण्डली में लग्न स्थान से दसवां स्थान.
२ ग्राकाश में चलने वाले ग्रह, देवता, पक्षी ग्रादि।

नभोचर-सं०पु० [सं०] वह जो आकाश में चलता हो (पक्षी, देवता, बादल आदि)।

नभोदुह-सं०पु० [सं०] मेघ, बादल।

नभोद्वीप-सं०पु० [सं०] बादल, जलद।

नभोरज-सं०पु० [सं०] बादल, जलद।

रू०भे०—नभरज, नभरुज।

नभोनदी-सं०स्त्री० [सं०] आकाश गंगा।

नभोमणि, नभोमणी-सं०पु० [सं० नभोमणि] सूर्य, रवि।

रू०भे०—नभमण, नभमणि, नभमणी, नभमिण।

नमंत—देखो 'निमित' (रू.भे.) उ०—पूं भी रामबगस मयतार है, सो या मूं भी कोई बात छांनी नहीं है। पा लाय नदियां की मालीत है, सो मरा पूगी के नमंत है।—मयाराम दरजी री वात

नमथ—देखो 'निबंध' (रू.भे.)

नमंधणौ, नमंधबौ—देखो 'निमंधणौ, निमंधबौ' (रू.भे.)

उ०—नमंधियौ मनंदळ नाद दंनम नरी, वीर गळ मंडळ वसुधा मंडळ बीच।—कविराजा करणीदान

नमंधणहार, हारौ (हारी), नमंधणियौ—वि०।

नमंधियोड़ौ, नमंधियोड़ौ, नमंध्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नमंधीजणौ, नमंधीजबौ—कर्म वा०।

नमंधियोड़ौ—देखो 'निमंधियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नमंधियोड़ी)

नम-वि० [फ़ा०] १ भीगा हुआ, आर्द्र, गीला, तर।

[सं० नमस्] २ नमस्कार।

३ देखो 'नरमी' (रू.भे.) उ०—१ आसाढ़ां री सूद नम, घण बादळ घण बीज। नाळा कोठा मोल दो, राखो हळ नै बीज।

—वर्षा विज्ञान

उ०—२ कट्टारै तेवागियै, पंत मास नम स्यांम। रूपक 'पंक' वणायियौ, धनळ-नर्मासी नांम।—बां.दा.

नमक-सं०पु० [फ़ा०] भोज्य पदार्थों में एक प्रकार का स्वाद पैदा करने के लिये थोड़े मात्र में प्रयोग किया जाने वाला एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ, लवण, नोन।

यौ०—नमकहरांम, नमकहरांमी, नमकहलाल, नमकहलाली।

रू०भे०—नमग, निमक, निमग।

नमकसार-सं०पु०—एक प्रकार का सरकारी कर।

रू०भे०—निमकसार।

नमकहरांम-सं०पु०यौ० [फ़ा० नमक+अ० हराम] किसी का अन्न खा-कर उसी को हानि पहुँचाने वाला, कृतघ्न।

रू०भे०—नमकहरांमी, निमकहरांम।

नमकहरांमी-सं०स्त्री० [फ़ा० नमक+अ० हराम+रा०प्र०ई]

१ कृतघ्नता, नमकहरामपन. २ देखो 'नमकहरांम' (रू.भे.)

—निमकहरांमी, निमकहरांमी।

नमकहलाल-सं०पु० [सं० नमक+अ० हलाल] अपने स्वामी या अन्नदाता की सदैव भलाई चाहने वाला, स्वामिनिष्ठ, स्वामिभक्त।

रू०भे०—नमकहलाली, निमकहलाल, निमगहलाली।

अल्पा०—नमकहलालियौ, निमकहलालियौ।

नमकहलालियौ—देखो 'नमकहलाल' (अल्पा., रू.भे.)

नमकहलाली-सं०पु० [फ़ा० नमक+अ० हलाल+रा०प्र०ई] १ नमक-हलाल होने का भाव, स्वामिभक्ति।

२ देखो 'नमकहलाल' (रू.भे.)

रू०भे०—निमकहलाली।

नमकीन-वि० [फ़ा०] नमक के स्वाद वाला।

रू०भे०—निमकीन।

नमग—देखो 'नमक' (रू.भे.) उ०—जुहे भर तंदळ रांण दूजा 'जगह', ढाहण दळां बीजूजळां ढांण। अभंग रांण तणी नमग अजुआळियौ, पमंग भातां लियौ बीन पीठांण।—भाटी माहसिंह मोहीं रौ गीत

नमठणौ, नमठबौ—देखो 'निपटणौ, निपटबौ' (रू.भे.)

नमठणहार, हारौ (हारी), नमठणियौ—वि०।

नमठिओड़ौ, नमठियोड़ौ, नमठ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नमठीजणौ, नमठीजबौ—भाव वा०।

नमठाड़णौ, नमठाड़बौ—देखो 'निपटाणौ, निपटाबौ' (रू.भे.)

नमठाड़णहार, हारौ (हारी), नमठाड़णियौ—वि०।

नमठाड़िओड़ौ, नमठाड़ियोड़ौ, नमठाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नमठाड़ीजणौ, नमठाड़ीजबौ—कर्म वा०।

नमठाड़ियोड़ौ—देखो 'निपटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नमठाड़ियोड़ी)

नमठाणौ, नमठाबौ—देखो 'निपटाणौ, निपटाबौ' (रू.भे.)

नमठाणहार, हारौ (हारी), नमठाणियौ—वि०।

नमठायोड़ौ—भू०का०कृ०।

नमठाईजणौ, नमठाईजबौ—कर्म वा०।

नमठायोड़ौ—देखो 'निपटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नमठायोड़ी)

नमठावणौ, नमठावबौ—देखो 'निपटाणौ, निपटाबौ' (रू.भे.)

नमठावणहार, हारौ (हारी), नमठावणियौ—वि०।

नमठाविओड़ौ, नमठावियोड़ौ, नमठाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नमठावीजणौ, नमठावीजबौ—कर्म वा०।

नमठावियोड़ौ—देखो 'निपटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नमठावियोड़ी)

नमठियोड़ौ—देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नमठियोड़ी)

नमण-सं०स्त्री० [सं० नमन] १ नमस्कार, प्रणाम।

उ०—१ हरि कुंजर वंदन करै, नमण करै कर भाय। महाप्रभू कुण राज बिण, मेरी करै सहाय।—गजउद्धार

२ विनीतता, विनम्रता । उ०—वीदग विरचो वीनड़ी, हठ गाढो ले हूलह । नमण खमण छोडै नहीं, जोड़ै कर जेहल्ल ।—वां.दा.
क्रि०प्र०—करणी, राखणी ।
२ नमना क्रिया का भाव, नम्रता ।
उ०—नर सबळां आगै निबळ, नीर घकै वांनीर । वाय घकै त्रिण जाय वच, भलो नमण गुण भीर ।—बां.दा.
३ नीचा स्थान, झुकाव (अ.मा.)

नमणि, नमणी—देखो 'नमण' (रू.भे.)
उ०—१ ऐरावणकुंभ समांन कुच युगळ, स्रावण नी जातो समांन भुज, रताळ नेत्र, कुंवा समांन नमणि, वइरागर हीरा समांन दंतपंक्ति घटा रणितस्वर, त्रस्तहरिणी सदृस नयन ।—व.स.
उ०—२ नारिंगपुर मंडण मणि, नमणि करइ नर नारि । समयसुंदर एहवि नति, विनति करइ वार वार ।—स.कु.

नमणो–वि० [सं० नमन] (स्त्री० नमणी) १ विनयशील, विनीत, नम्र ।
उ०—नमणी खमणी बहुगुणी, सुकोमळी जु सुकच्छ । गोरी गंगा-नीर ज्यूं, मन गरवी तन अच्छ ।—ढो.मा.
२ जिसमें झुकने का गुण हो, नमनीय ।
उ०—धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि । मज्जीठां जिम रच्चणा, दई सु सज्जण मेळि ।—ढो.मा.

नमणो, नमबो–क्रि०अ० [सं० नमनम्] १ नीचे की ओर प्रवृत्त होना, झुकना । उ०—रंभ विचै वणराय, जिल्है दळ जाहरां । नमि नमि द्रुम फळ-फूल, करै नवछाहरां ।—बां.दा.
क्रि०स०—२ नमस्कार करना, प्रणाम करना ।
उ०—१ दुरयोधन चित्रंगदह मेल्हावि उहि पत्थि । विज्जाहर रायहं नमइ दुरयोधनु लेउ सत्थि ।—पं.पं.च.
उ०—२ दांनव सहि तुं सां डरै, अमर करै आदेस । नाग सेस तुं नां नमै, मोटा देव महेस ।—पी.ग्रं.
नमणहार, हारो (हारी), नमणियौ—वि० ।
नमवाड़णो, नमवाड़बो, नमवाणो, नमवाबो, नमवाड़णो, नमवाड़बो,
—प्रे०रू० ।
नमाड़णो, नमाड़बो, नमाणो, नमाबो, नमावणो, नमावबो
—क्रि०स० ।
नमिओड़ो, निमियोड़ो, नम्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नमीजणो, नमीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।
नम्मणो, नम्मबो, नवणो, नवबो, निमणो, निमबो, निवणो, निवबो
—रू०भे० ।

नमत–सं०पु० [सं० नमत] नीचा स्थान, झुकाव (अ.मा.)
वि०—नम्र, विनीत. २ झुकने वाला.
३ टेढ़ा, तिरछा. ४ देखो 'निमित्त' (रू.भे.) (डि.को.)

नमदो–सं०पु० [फ़ा० नमदा] जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा ।

नमन—देखो 'नमण' (रू.भे.)

नमसकार—देखो 'नमस्कार' (रू.भे.) (अ.मा.)
उ०—१ स्री सरसत गणपत नमसकार । दीजिये मुज्ज वर बुध उदार । अवसांण सिध रहमांण अंस । वाखांण करूं नृप भांण वंस ।—वि.सं.
उ०—२ च्यारि धूंई आगै च्यार तपसी बैठा छै । राजा जाइ अर तपसियां नूं नमसकार कियो । तपेसरियां कह्यो—आव भांणेज तो नं राजा अजैपाळ मेल्हियो छै ।—चौबोली

नमसक्रत–सं०पु० [सं० नमस्कृति] नमस्कार ।

नमसते—देखो 'नमस्ते' (रू.भे.)

नमस्कार–सं०पु० [सं०] प्रणाम, अभिवादन (डि.को.)
उ०—नमस्कार सूरां नरां, पूरा सापुरसांह । भारथ गज थाटां भिड़ै, अड़ै भुजां उरसांह ।—बां.दा.
रू०भे०—नमसकार, नमिस्कार, नमुकार, नमोकार, निमसकार, निमस्कार, निमिसकार, निमिस्कार ।

नमस्ते [सं०] एक वाक्य जिसका अर्थ है—आपको नमस्कार है ।
रू०भे०—नमसते ।

नमांम–सं०पु० [सं० नम्] १ नमस्कार ।
उ०—कळू मांय हेम पंथ डोहता सभद्रा काळी, मेहाळी सोहता नेत्र जाळी खळां मांम । आसुरांण रोहता दोहता देवी वेदवाळी, मोहता अभेद वाळी डाढ़ाळी नमांम ।—नवलजी लाळस
रू०भे०—निमांम ।
२ देखो 'नमांमी' (रू.भे.)

नमांमी–वि० [देश०] १ बुरा, खराब (डि.को.)
उ०—१ जे अंतरजांमी वार नमांमी, स्वांमी जग साधार जोड़ी चिरजीवं पतनी पीयं, सुजं सस दीवं सार ।—र.ज.प्र.
उ०—२ कथां नांमी साजियो हरांमी भड़ां तणौ कहै, कीधी की अमांमी कीधी नमांमी कुलाट । सुछत्री मारियो दगा सूं राजा हिंदवां सूर, पाट पती ति सूं हुवो नछत्री मेवाट ।
—राजा राघोदेव झाला-रो गीत
[सं० नमनम्] २ नमस्कार ।
रू०भे०—नमांम, निमांमी ।

नमाड़णो, नमाड़बो—देखो 'नमाणो, नमाबो' (रू.भे.)
नमाड़णहार, हारो (हारी), नमाड़णियो—वि० ।
नमाड़िओड़ो, नमाड़ियोड़ो, नमाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नमाड़ीजणो, नमाड़ीजबो—कर्म वा० ।
नमणो, नमबो—अक०रू० ।

नमाड़ियोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नमाड़ियोड़ी)

नमाज–सं०स्त्री० [फ़ा० नमाज] मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना (जो दिन में पांच बार होती है) ।
क्रि०प्र०—पढ़णी ।

रू०भे०—नमाज, नमाज, निमाज, निमाज, निवाज।

नमाजगाह-संस्त्री० [फा० नमाजगाह] मस्जिद का वह स्थान जहां नमाज पढ़ी जाती है।

रू०भे०—निमाजगाह।

नमाजी-संपु० [फा० नमाजी] १ नमाज पढ़ने वाला.

२ वह कपड़ा जिस पर खड़े हो कर नमाज पढ़ी जाती है।

रू०भे०—निमाजी।

नमाणी, नमाबौ-क्रि०स० [सं० नमनम्] १ झुकाना, मोड़ना।

उ०—पाय नमावौ शांमनंद, कुनि धनि भ्रुव नमै दुरि।—रांमरासौ

२ नमस्कार कराना, प्रणाम कराना. ३ बाध्य करना, मजबूर करना. ४ झुकाना ५ 'नमणौ' क्रिया का प्रे.रू.।

नमाणहार, हारौ (हारी), नमाणियौ—वि०।

नमायोड़ौ—भू०का०कृ०।

नमाईजणौ, नमाईजबौ—कर्म वा०।।

नमणौ, नमबौ—अक०रू०।

नमाड़णौ, नमाड़बौ, नमावणौ, नमावबौ, नवाड़णौ, नवाड़बौ, नवाणौ, नवाबौ, नवावणौ, नवावबौ, नांमाड़णौ, नांमाड़बौ, नांमाणौ, नांमाबौ, नांमावणौ, नांमावबौ, निमाड़णौ, निमाड़बौ, निमाणौ, निमाबौ, निमावणौ, निमावबौ, निवाड़णौ, निवाड़बौ, निवाणौ, निवाबौ, निवावणौ, निवावबौ, नीमाड़णौ, नीमाड़बौ, नीमाणौ, नीमाबौ, नीमावणौ, नीमावबौ—रू०भे०।

नमायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ झुकाया हुआ, मोड़ा हुआ.

२ नमस्कार कराया हुआ, प्रणाम कराया हुआ.

३ बाध्य किया हुआ, मजबूर किया हुआ।

नमावणौ, नमावबौ—देखो 'नमाणौ, नमाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ माथ पगां गुरनाथ नमावै। गौरव सारद नारद गावै।

—र.ज.प्र.

उ०—२ नाहर तुरंग नमावियौ। दम फतै कर घर आवियौ।—सू.प्र.

उ०—३ वन नाहर नाहर वसै, नाहर घाट विहार। सरवर गुलम गंभीर दिस, न को नमावणहार।—बां.दा.

नमावणहार, हारौ (हारी), नमावणियौ—वि०।

नमावियोड़ौ, नमावियोड़ौ, नमाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नमावीजणौ, नमावीजबौ—कर्म वा०।

नमणौ, नमबौ—अक०रू०।

नमावियोड़ौ—देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नमावियोड़ी)

नमि-संपु० [सं०] चालू अवसर्पिणी के २१वें तीर्थंकर का नाम (म.कु.)

२ देखो 'नवमी' (रू.भे.)

नमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ नीचे की ओर प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ. मुड़ा हुआ. २ नमस्कार किया हुआ, प्रणाम किया हुआ।

(स्त्री० नमियोड़ी)

नमियौ-संपु० [सं० नवम्] १ मृत्योपरांत नौवां दिन.

२ मृत्योपरांत नौवें दिन किया जाने वाला संस्कार विशेष।

रू०भे०—नमीयौ, नविधौ, नौवां।

नमिस्कार—देखो 'नमस्कार' (रू.भे.) उ०—नमो, नमो अजंपा नमिस्कार. श्रोउं श्रोउं मंत्र अणपार पार। आदेस अजंपा हो अलेख, तू भव सबंध समार भेख।—पी.ग्रं.

नमी-संस्त्री० [फा०] १ गीलापन, आर्द्रता.

२ देखो 'नवमी' (रू.भे.)

३ देखो 'नमियौ' (अल्पा., रू.भे.)

नमीयौ—देखो 'नमियौ' (रू.भे.)

नमुकार—१ देखो 'नवकार' (रू.भे.)

२ देखो 'नमस्कार' (रू.भे)

नमुचि-संपु० [सं०] १ समुद्री भाग जैसे वज्रास्त्रकी सहायता से इन्द्र द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य. २ एक दैत्य का नाम जो शुंभ-निशुंभ का छोटा भाई था. ३ कामदेव, अनंग. ४ एक ऋषि का नाम.

नमुचिसूदन- संपु० [सं०] नमुचि दैत्य का नाश करने वाला, इंद्र।

नमूनौ-संपु० [फा० नमूना] १ मूल पदार्थ के गुण और स्वरूप आदि का ज्ञान करने के लिये उस पदार्थ में से निकाला हुआ छोटा या थोड़ा अंश. २ वह वस्तु जिसके द्वारा उसके सदृश दूसरी वस्तुओं के गुण या स्वरूप का ज्ञान हो जाय. ३ वह वस्तु जिसे देख कर वैसी ही दूसरी वस्तुओं की रचना की जाय।

नमेड़णौ, नमेड़बौ—देखो 'निपटाणौ, निपटाबौ' (रू.भे.)

नमेड़णहार, हारौ (हारी), नमेड़णियौ—वि०।

नमेड़िओड़ौ, नमेड़ियोड़ौ, नमेड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नमेड़ीजणौ, नमेड़ीजबौ—कर्म वा०।

नमेड़ियोड़ौ—देखो 'निपटायोड़ौ' (रू.भे)

(स्त्री० नमेड़ियोड़ी)

नमोकार—१ देखो 'नवकार' (रू.भे.)

२ देखो 'नमस्कार' (रू.भे.)

नमो-अव्य० [सं० नमः] अभिवादन प्रकट करने का शब्द, नमस्कार।

(अ.मा.) (डि.को.)

वि०—जो आठ के बाद पड़े, नवमा।

उ०—अस्टम लग उण वार, लहै 'सेतल' कवि लाळस। सुकवि हेम गंभीर, जेण लग नमो काज जस।—सू.प्र.

संपु०—नौ का अंक।

रू०भे०—निमो, नीमो।

नम्म—देखो 'नवमी' (रू.भे.) उ०—लागे वाण लारला, मांभी मेर मरम्म। धांणा नाळीमें धरत, पोह उजाळी नम्म।—रा.रू.

नम्मणौ, नम्मबौ—देखो 'नमणौ, नमबौ' (रू.भे.)

उ०—तबं अग्रज सुग्रीव तांम वर बुद्धि विचारे। भारी हूँ सो नृपति भर नम्मं भारे।—सू.प्र.

नम्मणहार, हारौ (हारी), नम्मणियौ—वि० ।
नम्मिग्रोड़ो, नम्मियोड़ो, नम्मचोड़ो—भू०का०कृ० ।
नम्मीजणौ, नम्मीजबौ—भाव वा० ।
नम्माज—देखो 'नमाज' (रू.भे.)
नम्मियोड़ो—देखो 'नमियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नम्मियोड़ी)
नम्र—वि० [सं०] १ जिसमें नम्रता हो, विनीत. २ झुका हुआ ।
नम्रता—सं०स्त्री० [सं०] नम्र होने का भाव ।
नय—सं०पु० [सं०] १ नीति । उ०—करुणा निधांन कोदंड कर, नित चालण यळ रीत नय । रघुकुळ दिनेस जन लाज रख, जग अधार ग्रौधेस जय ।—र.ज.प्र.
२ पदार्थ के किसी एक अंश जानने वाले और अन्य अंशों का खंडन न करने वाले ज्ञाता के अभिप्रायः का नाम । यह सात प्रकार की होती है यथा नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द समभिरूढ़ और एवंभूत । ३ न्याय (डि.को.) ४ देखो 'नदी' (रू.भे.)
उ०—१ सेस हिमाळय स्रंग, सुरगय हय नय पय दरस । रुद्र सिलो॰ चय रंग, जय जय लंक वरीस जस ।—बां.दा.
उ०—२ खेलत खेलत रायकुमर, अंतेउरि जुत्ता । गंग जवणि नय अंतराळि, कुळगिरि संपत्ता ।—प्राचीन फागु संग्रह
५ देखो 'नै' (रू.भे.)
नयड़ौ—देखो 'निकट' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० नयड़ी)
रू०भे०—नइड़ौ, नइडौ ।
नयडउ—देखो 'निकट' (रू.भे.) (उ.र.)
नयडौ—देखो 'निकट' (अल्पा., रू.भे.) उ०—नयडौ मुझ मांत हमै नेहड़ौ । सुपियार रखै किम तेल चढ़ौ ।—पा.प्र.
(स्त्री० नयडी)
नयड्डु—देखो 'नाडी' (मह., रू.भे.) उ०—नेहली नीर भरिया नयड्डु, वांकउ दुरंग पाखी विहड्डु । सारीख जइत सुरितांण साज, रामावतार राठउड़ राज ।—रा.ज.सो.
नयण—देखो 'नयन' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—राज कंवर रळियावणा, नयणां रा हे धन जीवण जेह के । हरसावण हिवड़ां तणा, बरसावण हे आनंद-रस मेह के ।—गी.रां.
नयणगोचर—वि० [सं० नयनगोचर] जो आँखों के सामने हो, समक्ष ।
नयणड़ौ—देखो 'नयन' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ पाई नी आंगुळी पोल रा परठव्या, नेवरा संठवी नाद सारा । पहिर पटोलड़ो होन नी चोलड़ी, नारी नै नयणड़े हरण हारा ।—रुकमणी मंगळ
उ०—२ बलिहारी गुरु वयणड़े, बलिहारी गुरु मुख चंद रे । बलिहारी गुरु नयणड़े, पेखहतां परमाणंद रे ।—स.कु.
नयणपट—सं०पु० [सं० नयनपट] आंख की पलक ।
नयणी—सं०स्त्री० [सं० नयन+रा०प्र०ई] आंख की पुतली ।
नयणौ—देखो 'नयन' (अल्पा., रू.भे.) उ०—सरध्या निरग्रंथ वयणौ, उघड़िया नयणौ रे । मोने परतीत आई रे, धरम नी रुचि पाई रे ।
—जयवांणी
नयन—सं०पु० [सं०] आँख, चक्षु, नेत्र. । उ०—करि सहाय कमळासन केरी । हरन दनूज दसों दिस हेरी । देखि देखि दांनव अति दारुन । राजिव नयन भये रोखारुन ।—मे.म.
रू०भे०—नअण, नइण, नयण, नैण ।
अल्पा०—नयणड़ौ, नयणौ, नयनडौ ।
नयनडौ—देखो 'नयन' (अल्पा., रू.भे.) उ०—गंग-यमुन-परि नयनडौ, वहइ निरंतर पूरि । तरइ नहीं तन नावडी, करता झूरि म झूरि ।
—मा.कां.प्र.
नयर—वि० [सं० निकट] (स्त्री० नयरी) नजदीक, समीप, पास ।
सं०पु०—१ आर्या गीति या स्कंध का एक भेद विशेष ।
२ देखो 'नगर' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—१ तांम साह तजबीज, एक चित मझि ओधारै । नयर जोध अंब नयर, वडा दो भूप विचारै ।—सू.प्र.
उ०—२ दहल पुर नयर पुगी महळ दोयणां । भय रहित किया सुर नाग नर-भोयणां । उमंग जुध करण-चंचळ अचळ ओयणां । लेख लंकेस अवधेस दळ लोयणां ।—र.ज.प्र.
नयरि—देखो 'नगर' (अल्पा., रू.भे.)
वि०स्त्री०—निकट, पास, समीप ।
नयरी—देखो 'नगर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—वळिभद्र बंधव तेड़ियौ जी वीजउ प्रसंकुंमार । वईदभी नयरी वीवाह छइजी, रहीय म लावौ वार ।—रुकमणी मंगळ
नयसील—वि० [सं० नयशील] १ विनीत, नम्र. २ नीतिज्ञ ।
नयसेन—सं०पु०—वीर, अर्जुन (अ.मा.)
नयौ—देखो 'नवौ' (रू.भे.) उ०—१ तद कांधळजी ऊठ मुजरौ कियौ··· नयौ धरती खाटियांईज रैसी ।—द.दा.
उ०—२ कीच सो गलीच कांम, भूलि तैं भयौ । नीच कांम बीच अजौं, नीच तूं नयौ ।—ध.व ग्रं.
(स्त्री० नयी)
नरंग—सं०स्त्री० [सं० नरांग] नारी, स्त्री ।
उ०—सोभत रंग सुगंध री, कंफ नरंग सुरंग । महल सुरंगा मोहियौ, राजेस्वर नवरंग ।—रा.रू.
नरंजण—देखो 'निरंजन' (रू.भे.) उ०—सुरह दुज देव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तिलक तुळसी नरंजण जाप । राह हिंदू धरम तणै सावत रहै, प्रगट मुरधर धणी तणौ परताप ।
—महाराजा जसवंतसिंह री गीत
नरंजणी—देखो 'निरंजनी' (रू.भे.)
नरंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ अतुळीवळ घट्ट मेल्हिया आंहचइ, महूरत गिर साझिवां मसंद । प्रभु तिण घमंड किया पइसारइ, दळ मेले आविया नरंद ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कातन बहुत कंग, जन गाल रंग कनेर। नरहरवंग नरंग, नारंगं हव मन हर।—सू.प्र.

नरंग—देखो 'नारंग' (रू.भे.) उ०—मनि रूप 'जैनाट' सूं, मिळिया घाव घणंग। उगर देस 'पमीत' री, मानस लेग नरंग।—रा.रू.

नर-संपु० [सं०] (स्त्री० नारी) १ पुरुष, मर्द, पादमी.

२ भागवत के भाई और ईश्वर के अंशावतार माने जाने वाले एक पौराणिक ऋषि जो धर्मराज और दक्ष प्रजापति की कन्या से उत्पन्न हुए थे. ३ शिव, महादेव. ४ विष्णु. ५ अर्जुन, पार्थ

(म.मा., डि.को.)

उ०—नमो नर संभु हाकणहार, सबे दळ कौरव करण संहार।

—ह.र.

६ सेवक. ७ राजा गुणनि के पुत्र का नाम.

८ मय राक्षस के पुत्र का नाम.

९ जल, पानी (ना.डि.को.) १० एक राजपूत वंश (वां.दे.प्र.)

११ १८ लघु और १५ गुरु कुल ३३ वर्ण या ४८ मात्रा का दोहा नामक छंद विशेष (र.ज.प्र.)

१२ छप्पय छंद का ६३ वां भेद जिसमें ८ गुरु और १३६ लघु से १४४ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं (र.ज.प्र.)

१३ आर्या गीति या खंधाणा (स्कंधक) का एक भेद विशेष

(पिंगळ प्रकास)

वि०—१ जो (प्राणी) पुरुष जाति का हो, मादा का उलटा.

२ वीर, योद्धा। उ०—कायळता वूकी मती, है नह कोतक हास। नाहर सूं लड़णो नरां, पड़णो मो जम पास।—बां.दा.

नरमानक-संपु०—वह यान जिसे मनुष्य कंधे पर रख कर खींचते हैं, पालकी। उ०—नर-प्रामण नेहर तणो, पुगग न नभ चढ़ पाय। मत हुंत गगळो सपजै, झट उड़ लग जाय।—रेवतसिंह भाटी

नरइंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ को तो मोड़ दियो नरइंद।

—रांमरासो

उ०—२ नरइंद 'अभो' नवकोट नाथ। सरि करण सतरि घरवर समाथ।—रा.रू.

नरक-संपु० [सं०] १ धर्म शास्त्रों और पुराणों के अनुसार वह स्थान जहां पापी आत्माओं को फल भोगने के लिये भेजा जाता है, जहन्नुम, दोज़ख (डि.को.) उ०—नरक समो दुख-दळ नहीं, वाडव समो न ताव। लोभ समो औगण नहीं, धुनची समो न पाव।—बां.दा.

क्रि०प्र०—में जाणो, में पड़णो, भोगणो

२ वह स्थान जहां बहुत अधिक पीड़ा या कष्ट हो।

मुहा०—१ नरक भोगणो—बहुत कष्ट सहना.

२ नरक में पड़णो—दुख आना, विपत्ति में ग्रसित होना, कष्ट झेलना.

३ नरक रा दिन बीताणा—कष्ट के दिन व्यतीत करना, दुख सहना।

३ बहुत ही गंदा स्थान।

रू०भे०—नरकाणु, नरग, नरय, नरिग, नारकी, नारगी।

नरकगति-संस्त्री० [सं०] वह कर्म जिसको करने से मनुष्य को नरक में जाना पड़ता है (जैन)

नरकगामी-वि० [सं० नरकगामी] जो नरक में जाने योग्य हो।

नरकचतुरदसी, नरकचवदस-संस्त्री० [सं० नरकचतुर्दशी] कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी का दिन।

वि०वि०—इस दिन यम की पूजा होती है। घर को अच्छी तरह साफ कर के सारा कूड़ा-करकट बाहर फेंका जाता है।

नरकचूर—देखो 'कचूर' (रू.भे.) (अमरत)

नरकांण—देखो 'नरक' (रू.भे.)

उ०—पित गुरां वयण प्रमाण रे, जो करै नांहि प्रजाण रे। नर भोगवै नरकांण रे, भू जितै अवर भांण रे।—र.रू.

नरकांतकत-संपु० [सं० नरकांतकृत] श्रीकृष्ण (अ.मा.)

नरकार—देखो 'निराकार' (रू.भे.)

नरकारिसत-संपु० [सं० नरकारिसुत] वीर अर्जुन (अ.मा.)

नरकासुर-संपु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध असुर जो पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। उ०—महाराजा तसयौ कही नै कंग नामो नरकासुर बेटा निज नेह।—पी.ग्रं.

रू०भे०—नूकासुर।

नरकुटक-संपु० [सं० नकुंटकम्] नाक, नासिका (डि.को.)

नरकेसरी-संपु० [सं०] १ नृसिंह भगवान.

२ नरक में गिरने वाला, दुरात्मा, पापी।

रू०भे०—नरकेहरी।

नरख—देखो 'निरख' (रू.भे.) (डि.को.)

नरखणो, नरखबो—देखो 'निरखणो, निरखबो' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ सांवण पहिरण यादर चीर, परणालिइ वहइ अरघळ नीर। सइरि मोंदूरी कांचळी कसइ, नरखइ नारि ते मरकलइ हसइ।

—प्राचीन फागु संग्रह

उ०—२ सकर धनस नरग रस सदन सत, नरख वदन जग भय नमत। तन मन वय मम स जन सहज तप, लछण भरथ अरियण लसत।—र.ज.प्र.

नरखणहार, हारो (हारी), नरखणियो—वि०।

नरखिप्रोड़ो, नरखियोड़ो, नरख्योड़ो—भू०का०कृ०।

नरखीजणो, नरखीजबो—कर्म वा०।

नरखयकार-संपु०—[सं० नर+क्षयकर] असुर, दैत्य, राक्षस (डि.को.)

नरखियोड़ो—देखो 'निरख्योड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नरखियोड़ी)

नरग—देखो 'नरक' (रू.भे.) उ०—निदक निश्चय नरग द जाई, निंदक चउयत चंडाळ कहाई।—स.कु.

नरगण-संपु० [सं०] फलित ज्योतिष में नक्षत्रों का एक गण।

नरगत-संपु० [सं० नरगति] मनुष्य का रंग-ढंग।

ज्यूं०—राजगत, देवगत, नरगत।

नरगस—देखो 'नरगिस' (रू.भे.) (रा.सा.सं.)

नरगियौ कोट-सं०पु० [देश०] १ ताश के खेल में रंग बोलने वाले पक्ष की हार विशेष।
(मि० नकटियौ कोट)

नरगिस-सं०पु० [फ़ा०] १ प्याज के पौधे से मिलता-जुलता एक प्रकार का पौधा जिस पर कटोरीनुमा सफेद फूल लगते हैं जो बहुत सुगंधित होते हैं।
२ इस पौधे का फूल।
रू०भे०—नरगस।

नरगौ-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वाद्य।
उ०—नीसांण वाजि नरगा नफेरि, रउद्र गति डउंडि भरहरी भेरि। मरुग्राहि सेन हालिया मसत्त, साइयर जांणि फाटा सपत्त।
—रा.ज.सी.

नरड़ियौ—देखो 'नरड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

नरड़ौ-सं०पु० [देश०] चमड़े या सूत आदि की बनी हुई बांधने की डोरी, बंधन। उ०—गोवै चरतोड़ी वेड़ां थिग गेडी। भैं भैं करतोड़ी भेडां ढिग मेडी। ऊणा ऊरणियां खरसणियां ग्रोलै। डरड़ा नरड़ा विण ग्ररड़ा दे टोळै।—ऊ.का.
(मि० नाड़ौ)
अल्पा०—नरड़ियौ।

नरजंत्र-सं०पु० [सं० नरयंत्र] सूर्य सिद्धान्त के अनुसार एक प्रकार का शंकु यंत्र।

नरज-सं०पु० [देश०] १ बड़ा तराजू।
उ०—काळी भोत कुरूप, कस्तूरी कांटै तुलै। सक्कर बडी सुरूप, नरजां तूलै नाथिया।—अज्ञात
२ चंद्र, चन्द्रमा (ना.डि.को.)

नर-जांन-सं०पु० [सं० नर+यान] मनुष्यों द्वारा उठा कर ले जाया जाने वाला यान, पालकी। उ०—नरजांन वळै तखत रेवांन, ध्रांहगीर जांणी रचै समांन।—विन्हैरासौ

नरजू-सं०पु० [देश०] खपरैल के मकान की दीवार के बाहर के हिस्से में लगाई जाने वाली वह लकड़ी जो ऊपर की छाजन को थामे रहती है।

नरझर—देखो 'निरझर' (रू.भे.) उ०—गुण में जण जण कंठ गवीजै, नरमळ ज्युं नरझर में नीर। जग माझल वसतार घणै जस, हुम्रो अमावड़ हुम्रा हमीर।—जोधपुर नरेस महाराजा मांनसिंह

नरणेजक-सं०पु० [सं० निर्णेजक] रंगरेज (डि.को.)
रू०भे०—निरणेजक।

नरणौ—देखो 'निरणौ' (रू.भे.)

नरत—देखो 'निरत' (रू.भे.) उ०—भेचको फरत जांणै चरत भूतरी, वेग मारूत री हरत वाचै। कवियणां दियौ काछी नरत करंतौ, सुतन 'रांमेण' सतवरत साचै।—जसजी म्राढ़ौ

नरतक-सं०पु० [सं० नर्त्तक] १ नाचने वाला. २ नट.
३ शिव, महादेव।
रू०भे०—नरत्तक, निरतक।

नरतकी-सं०स्त्री० [सं० नर्त्तकी] नाचने वाली, वेश्या, रंडी।
उ०—करघणियां री झणक सांझ नित नाच करंतां। थाकी कंवळी बांह रतन-जुत चंवर ढुळंतां। नरतकियां नख पाय मेह री पहली बूंदां। लांबा भंवर कटाछ नांखती प्रीत विलूंदां।—मेघ.
रू०भे०—नरत्तकी, निरतकी।

नरतन-सं०पु० [सं० नर्त्तन] नृत्य, नाच (डि.को.)
रू०भे०—नरत्तन, निरतन।

नरतनसाळ, नरतनसाळा-सं०स्त्री०यौ० [सं० नर्त्तनशाला] नृत्यशाला, नाचघर।
रू०भे०—नरत्तनसाळ, नरत्तनसाळा।

नरतात-सं०पु० [सं०] राजा, नृपति।

नरति-सं०स्त्री० [सं० निरुक्तिः] सुधि, खबर।
उ०—निसि ए हुइ सही, बोलावूं वाला ग्राज। नरति लाधि नारी नी, तु सरि माहारूं काज।—नळाख्यांन

नरतू-वि०—हलका, छोटा (?)
उ०—एक नरनइं नरतू कहइ, जिमतां मूंकी जाई। वनिता मिसि वधामणां, घवळ देयंती धाई।—मा.कां.प्र.

नरतौ-वि० [सं० न-रतः] १ हीन, नीच. २ कम, थोड़ा।

नरत्तक—देखो 'नरतक' (रू.भे.)

नरत्तकी—देखो 'नरतकी' (रू.भे.)

नरत्तन—देखो 'नरतन' (रू.भे.)

नरत्तनसाळ, नरत्तनसाळा—देखो 'नरतनसाळा' (रू.भे.)

नरत्रांण-सं०पु० [सं० नरत्राण] १ श्रीकृष्ण. २ नरपाल राजा।

नरदणौ, नरदबौ-क्रि०अ० [सं० नर्द] भीषण शब्द करना, भयंकर ग्रावाज करना, जोर से शब्द करना।
उ०—मठ देवकुळ खडंहडत पाडतउ, चतुस्पद दडवड द्रडवडतउ, घलहल घ्रित तैल भोजन ढोळतउ, खळहळ ढळत परहकरासि राळतउ, मसमसत क्र्यांण करहमतउ, टसटसत वनभंगि नरदतउ सुंडादंड ग्राच्छोडतउ, परचक्रजिम भांड भांडइ फोडतउ, लागउ नगर भांजेवा, जन गांजेवा।—व.स.

नरदेव-सं०पु० [सं०] १ ब्राह्मण, विप्र. २ राजा, नृप।

नरदौ-सं०पु० [फ़ा० नावदान] मैला पानी बहने की नदी।

नरधरम, नरधरमौ-सं०पु० [सं० नरधर्मन] कुबेर
(ह.नां., अ.मा , डिं.को.)

नरनराड़णौ, नरनराड़बौ—देखो 'नरनरावणौ, नरनरावबौ' (रू.भे.)

नरनराड़ियोड़ौ—देखो 'नरनरावियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नरनराड़ियोड़ी)

नरनराणौ, नरनराबौ—देखो 'नरनरावणौ, नरनरावबौ' (रू.भे.)

नरनरायोडौ—देखो 'नरनरावियोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नरनरायोडी)

[illegible]-[illegible] ।

उ० [illegible] ! [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] ।—[illegible]

[illegible], [illegible], [illegible], नरनराबी—रू०भे० ।

[illegible]-भू०का०कृ०—[illegible] हुआ ।

(स्त्री० [illegible])

नरनाद, नरनाथो-सं०पु० [सं० नरनाथ] राजा, नृप (डि.को.)

उ०—[illegible] कभी [illegible], [illegible] न [illegible] न [illegible] रे । [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] नरनाथो रे ।—जयवांणी

रू०भे०—नरनाह, नरांनाथ, नरांनाह ।

अ०रू०—नरनाथो ।

नरनायक-सं०पु० [सं०] राजा, नृप ।

रू०भे०—नरांनायक ।

नरनारण, नरनारायण-सं०पु०यौ० [सं० नरनारायण] नर और नारायण नामक दो ऋषि जो विष्णु के अवतार कहे जाते हैं ।

उ०—नमो नरनारण जोग निवास, नमो [illegible] हूं त उधारणदास ।

—ह.र.

नरनारि-सं०स्त्री० [सं० नर=अर्जुन+नारी=स्त्री] अर्जुन की पत्नी, पांचाली, द्रोपदी ।

नरनाह—देखो 'नरनाथ' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—[illegible] प्रमुख, नदियां री नरनाह । हैवर ढोया 'भीम' हूर, [illegible] ।—बां.दा.

नरनाहर-सं०पु० [सं० नर+नाहरि] नृसिंहावतार ।

उ०—१ नाहर [illegible] तणौ नरनाहर, जवनां गजां सिकारी जाहर ।

—रा.रू.

उ०—२ [illegible] प्रह्लाद को नरनाहर आया ।—वं.भा.

नरप—देखो 'नृप' (रू.भे.) (डि.को.)

नरपत, नरपति, नरपती, नरपत्त, नरपत्ति, नरपत्ती-सं०पु० [सं० नरपति] १ राजा, नृपति, नृप । उ०—१ नरपत [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] प्रमाणे [illegible] ।—रा.रू.

उ०—२ [illegible] देखतां, सो नरपति 'अममाह' । पायो रस [illegible], [illegible] ।—रा.रू.

उ०—३ [illegible] माहि, [illegible] [illegible] । नरपति [illegible], [illegible] ।—[illegible] बारहठ

उ०—४ [illegible] नवो [illegible], [illegible] [illegible] बात । [illegible], [illegible] नरपतियां [illegible] ।—बां.दा.

उ०—५ [illegible] [illegible], [illegible] । [illegible] हजार [illegible], [illegible] 'दलो' नरपत्त ।—रा.रू.

उ०—६ [illegible], [illegible] दूर । नरपती 'जग-[illegible]' रो, [illegible] हजूर ।—रा.रू.

रू०भे०—नृपत, नरपइ, नरपव, नरांपत, नरांपति, नरांपती, नरांपत्त ।

नरपसु-सं०पु० [सं० नरपशु] नृसिंह ।

नरपाळ-सं०पु० [सं० नृपाल] मनुष्यों का पालक, राजा, नृप

(अ.मा., डि.को.)

उ०—कहियो नरपाळ मानियो कटको, पुणि रूढाळ धरा पै पोळि । पोळि सदा गजराजि प्रांमतो, पड़ै भार न लाडूं पोळि ।

—बारहठ सोदा नरू अमरावत रो गीत

नरपीठ-सं०पु० [सं०] बनावट विशेष का भवन (व.स.)

नरपुर-सं०पु० [सं०] मर्त्यलोक, भूलोक ।

नरबदा-सं०स्त्री० [सं० नर्मदा] अमरकंटक से निकल कर भड़ौंच के पास खंभात की खाड़ी में गिरने वाली मध्यप्रदेश की एक नदी ।

उ०—सुणतां पाठ मिसल भइ सारी । हित पत लाइण तोलियो हारी । यों मन नदी नरबदा आयो । वळियो 'अजन' भड़ां रसवायो ।—रा.रू.

रू०भे०—नरमदा, नरवदा, निरमदा ।

नरबांण—देखो 'निरवांण' (रू.भे.) उ०—जाग छळां हिंदवांण जटैत योरांण जकै, जोम छकै जोरांण कटैत मोह जाळ । येतु करवांण फाटा देवाळ वटैत थकै, नरबांण पटैत हुचकै नराताळ ।

—दयाळदासजी रै सायां रो गीत

नरबाह—देखो 'निरवाह' (रू.भे.)

नरबाहण—देखो 'नरवाहण' (रू.भे.) (डि.को.)

नरबाहणो, नरबाहबो—देखो 'निरवाहणो, निरवाहबो' (रू.भे.)

उ०—हाक रणडाक मल वीर मरदां हला, राम गळा विल्पा लूंब सूरा । अगें राग सोल कर तोपखळ ऊथला, भलो नरबाहियो बोल भूरा ।—रावत संग्रामसिंह सक्तावत रो गीत

नरबाहियोड़ो—देखो 'निरवाहियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नरबाहियोड़ी)

नरभक्षी-सं०पु० [सं० नरभक्षिन्] मनुष्यों को खाने वाला, दैत्य, राक्षस ।

नरभव-सं०पु०यौ० [सं०] मनुष्य योनि, मनुष्य जन्म ।

उ०—१ केसर चंदन पूज करेव रे, लाहो नरभव इह विध लेव रे । कहै धरमसी जोड़ि कर बेव रे, तुझ सेवा मुझ या हीज देव रे ।

—ध.व.ग्रं.

उ०—२ सो धम्म रम्म जो गुण सहिय, दांनसीळ तव भव भउ । भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नरभव आलि म नीगमउ ।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ रतन चिंतामण नरभव पाय नै, चित्त राखीजो रे ठांम । निद्रा विकथा रे आळस छोड नै, लो भगवंत रो रे नांम ।—जयवांणी

नरभुवन-सं०पु०यौ० [सं० नर+भवन] मर्त्यलोक ।

नरभै—देखो 'निरभय' (रू.भे.) उ०—केसव नाम बिना अरणभै कर । कौवळनंद जनं नरभै कर ।—र.ज.प्र.

नरम-वि० [फा० नर्म] १ सख्त का विपरीत, जो कड़ा न हो, जो खुरदरा न हो, मुलायम ।

२ कोमल, मृदुल, नाजुक, सुकुमार। ज्यूं—नरम गात री सुंदरी। उ०—नरम मनहु नवनीत अरुण रंग एडियां।—सिववक्स पाल्हावत
३ लचकदार, लचीला। ज्यूं—नरम बेंत, नरम कांवड़ी।
४ तेज का उलटा, मंदा। ज्यूं—नरम आंच।
५ धीमा, मद्धिम. ५ सुस्त, आलसी. ६ सरल, सीधा, विनीत, विनम्र। उ०—गुण सूं तजै न गांस, नीच हुअै डर सूं नरम। मेळ लहै खर मांस, राख पड़ै जद राजिया।—किरपारांम
७ शीघ्र पचने वाला, हलका। ज्यूं—नरम भोजन, नरम थूली।
८ आलसी, सुस्त. ९ जिसकी सतह दबाने से सरलता से दब जाय, जो दबाने से सुगमता से दब जाय, मुलायम. १० जिसकी प्रकृति कोमल हो, जो रूखा न हो। ज्यूं—इण री दिल घणौ नरम है, इणनै झट दया आजावैला।
११ जो तोल में अपेक्षाकृत कम वजनी हो, हलका.
१२ कमजोर, निर्बल. १३ जिसमें पौरुष का अभाव हो।
सं०पु० [सं० नर्मन्] १ परिहास, हंसी, ठट्ठा।
उ०—रांणै समांन वय रा विवाह रौ नरम कीधौ, सुणि कुमार चूंडै वडा प्रसन्न रै प्रमांण पिता रौ संबंध करवाइ आप चीतौड़ री गादी छोडण रौ लेख करि मारवाड़ रै अधीन कीधौ।—वं.भा.
२ देखो 'नरमौ' (मह., रू.भे.) (व.स.)
रू०भे०—नरंम, नरमउं, नरम्म।

नरमउं—१ देखो 'नरम' (रू.भे.) २ देखो 'नरमौ' (रू.भे.)

नरमखरब-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

नरमदा—देखो 'नरबदा' (रू.भे.) (डिं.को.)

नरमदेस्वर-स०पु० [सं० नर्मदेस्वर] नर्मदा नदी से निकलने वाले एक प्रकार के शिवलिंग।

नरमयंद-सं०पु० [सं० नर+रा० मय+सं० इंद्र] नृसिंह भगवान।

नरमळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.) उ०—जग जनक धनक हर हरण करण जय। चत नरमळ नहचळ चरण। अकरण करण समरण अघ अणघट। सक रघुबर असरण सरण।—र.ज.प्र.

नरमांनी—देखो 'नरमौ' (रू.भे.) (व.स.)

नरमाई, नरमी-सं०स्त्री० [फा नर्म+रा०प्र० आई, फा० नर्म+रा०प्र०ई] १ नम्रता, विनम्रता। उ०—१ वडां रौ विनय विवेक, राखै नरमाई विसेस।—जयवांणी
उ०—२ तौ एक वडेरौ थौ उण कही—मोटौ सरदार छै जे इतरी नरमी देवै छै सो नारा परा देवौ।—अमरसिंह राठौड़ री वात
२ विनय। उ०—१ इण इसड़ी नरमाई कीधी रे। इंद्र जब दिलासा दीधी रे।—जयवांणी
उ०—२ तांछ ताछ वंटि अतर, मंडि डंबर मनुहारां। नरमी करै अनेक, 'अभा' आगळि उण वारां।—सू.प्र.
३ कोमलता, मृदुता, लचक।
उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमत चंदावदन री देह री नरमाई गुलाब फूल, तिलफूल सारीखी। हंस गमणी री गज गति लाड गति छै। इण भांत नख-सिख सुधा सोळै सिणगार कियां बारै आभूखण विराजिया छै।—रा.सा.सं.
रू०भे०—नरम्मी।

नरमु—देखो 'नरमौ' (मह., रू.भे.) (व.स.)

नरमेध-सं०पु० [सं०] चैत्र शुक्ला दशमी से शुरु होकर चालीस दिन तक चलने वाला एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीन समय में मनुष्यों के मांस की आहुति दी जाती थी।

नरमौ-सं०पु० [?] एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)
रू०भे०—नरमउं, नरमांनी, नरमु।
अल्पा०—नरमियौ।
मह०—नरम, नरम्म।

नरम्म—१ देखो 'नरम' (रू.भे.) उ०—इळ चढै पहु उण बार, पहु चढै दुरंग पगार। पगमंडां हीर पसम्म, नवरंग वांणि नरम्म।—व.स.
२ देखो 'नरमौ' (मह., रू.भे.) (व.स.)

नरम्मी—देखो 'नरमी' (रू.भे.) उ०—मिळियौ 'अजमाल' सूं, आइ उज्जळ सपतम्मी। खां 'इतकाद' निबाव, जाव विण ताव नरम्मी।—रा.रू.

नरयंद-सं०पु० [सं० नर+इंद्र] १ विष्णु (डिं.नां.मा.)
२ शिव, महादेव (डिं.नां.मा.)
३ देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—गुडि सीकळस गयंद, चाळक तूं जिण दिस चढै। उण दिस रा दरयंद, सकळस आवै सांमहा।—वां.दा.

नरय—देखो 'नरक' (रू.भे.)
उ०—लाख जीभ जेहइ मुख माहि, नरग तणां दुक्ख तिणि न कहाइं। नरय वेयण जो कहइ विचार, केवळ नांणि न जाइं पारि।—चिहुंगति चउपई

नरलंग—देखो 'निरलंग' (रू.भे.) उ०—रोदा' भांज ऊजळा रूकां, वैर-वाळ उजवाळ वट। पग नरलंग नरलंग अंग पाड़ै, भुज नरलंग नर-लंग भ्रगुट।—संकरजी बारहठ

नरलोक, नरलोग-सं०पु० [सं० नरलोक] मनुष्यलोक, मृत्युलोक, संसार। उ०—नागलोक नरलोक की, नह सुरलोक समाय। जेथ तेथ प्रांणी जळै, लालच हंदी लाय।—वां.दा.
रू०भे०—नरलोय।

नरलोभ—देखो 'निरलोभ' (रू.भे.) उ०—नडर सधर नरलोभ वैर जूना उधरावै। पारथियां सिध 'पाळ' छतै नाकार न लावै।—पा.प्र.

नरलोय—देखो 'नरलोक' (रू.भे.) उ०—हरि रस सुं सुधबुध हुवै, कस्ट न व्यापै कोय। हरि रस सूं सद गति सदा, लहै सकळ नरलोय।—ह.र.

नरवंस—देखो 'निरवंस' (रू.भे.)

नरवइ—देखो 'नरपति' (रू.भे.) (जैन)

उ०—[illegible] मरवर [illegible] । पंगर [illegible] मरवर [illegible] ।—द.दे.स.

नरवर—देखो 'नरवर' (रू.भे.)

नरवर—देखो 'नरपति' (रू.भे.) उ०—[illegible] कुमरपाळ, नरवर [illegible] । [illegible] सुणि [illegible] रेणा [illegible] ।—[illegible]

नरवर, नरवर—सं०पु० [सं० नर+वर—श्रेष्ठ, पति] राजा, नरेश (डि.नां.मा.)

वि०—नरों में श्रेष्ठ । उ०—१ मधुरकुल मधुरगण मधुरातमक, [illegible] । मरत जीव निम्वरित [illegible] सूं, नरवर [illegible] ।—वेलि.

उ०—२ [illegible] रवराउर नांमि । रयणसिहर नरवर [illegible] बाड़ जाईय ।—पं.पं.च.

नरवाग—सं०पु० [सं० नरव्याघ्र] एक प्रकार का जल-जन्तु जो नीचे से मनुष्य के आकार का तथा ऊपर से बाघ के आकार का होता है ।

वि०—मनुष्यों में श्रेष्ठ ।

नरवाहन—सं०पु० [सं० नर वाहन] कुबेर, धनेश (ह.नां., अ.मा., नां.मा.)

रू०भे०—नरवाहण ।

नरवाहणो, नरवाहबो—देखो 'निरवाहणो, निरवाहबो' (रू.भे.)

उ०—[illegible] जोधै [illegible] तमामा, रीझ वाताणियो दहूं राहे । [illegible] नरवाह कर मांन री, 'मांन' री मळै भ्रम जोत माहे ।—[illegible] रो गीत

नरवाहणहार, हारो (हारी), नरवाहणियो—वि० ।

नरवाहियोड़ो, नरवाहियोड़ो, नरवाह्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नरवाहीजणो, नरवाहीजबो—कर्म वा० ।

नरवाहियोड़ो—देखो 'निरवाहियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नरवाहियोड़ी)

नरविंदो—देखो 'नरेंद्र' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—[illegible] नाभि नरिंद सुय, [illegible] जिणचंदो । [illegible] मास [illegible], [illegible] नरविंदो ।—प्राचीन फागु-संग्रह

नरवैद—सं०पु०यौ० [सं०] मनुष्यों की चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक । उ०—[illegible] नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य [illegible] ।—व.स.

नरसंग, नरसघ—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.)

उ०—१ [illegible] नरसंग [illegible] धारियो, [illegible] ताणियो वेद [illegible] । [illegible] नाहै नवो, पार कुण भलाई तणो पावै ।—प्रह्लाद दादूपंथी

उ०—२ [illegible] नमो नरसंघ [illegible] कीधो ।—पी.ग्रं.

नरसट—सं०पु० [देश०] ईख से मिलता-जुलता एक प्रकार का पौधा जो प्रायः जलाशयों के निकट पैदा होता है । इसका डंठल भीतर से पोला होता है, नरसल ।

रू०भे०—नड़ ।

नरसाह—सं०पु० [सं० नर+फा० शाह] राजा, नृप (डि.नां.मा.) ।

उ०—सुरन नरसाह अवसाह सारो सरै, घाततो धोम धमसोळ घेरै । गोर दळ भाजतो पाछतो मार रिम, डांण भर नमो सुरतांण डेरै ।—पातो बारहठ

नरसिका—सं०पु०—एक प्रकार का कटार ।

नरसिंघ, नरसिंघ—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.)

उ०—१ दम गमाणियो नाद अविवादो । कमि नरसिंघ जाण थंभ फाटो ।—सू.प्र.

उ०—२ नमो बपु दीरघ वांमन वेस, भिखत पुरंदर भाजण भेस । नमो नरसिंघ लिछमी-नाह, विसंभर विट्ठल आदि वराह ।—ह.र.

नरसिंघो—सं०पु० [देश०] १ तांबे का बना तुरही के आकार का एक प्रकार का बड़ा बाजा जो फूंक कर बजाया जाता है ।

२ देखो 'नरसिंह' (अल्पा., रू.भे.)

नरसिंह—सं०पु० [सं० नृसिंह] १ विष्णु का चौथा अवतार जिसमें आधा शरीर मनुष्य का तथा आधा सिंह का था ।

२ राजा, नृप (डि.नां.मा.) ३ एक रति बंध ।

वि०—मनुष्यों में श्रेष्ठ ।

रू०भे०—नरसंग, नरसंघ, नरसिंग, नरसिंघ, नरसींग, नरसींघ, नरसीह, नरस्यंघ, ना'रसिंघ, ना'रसिंह, ना'रसींग, ना'रसींघ, नारसिंह, नारसी, निरसिंह ।

अल्पा०—नरसिंगो, नरसींघो,

नरसिंहपुरांण—सं०पु० [सं० नृसिंहपुराण] एक उपपुराण ।

नरसींग—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.)

उ०—कहूं भांमणा जेण नरसींग थारी कळा, श्राद लग साजोवण सत साहा । गाजतै गाज असमांन गुंजाड़ियो, फाड़ियो थंभ चौफाड़ फाड़ा ।—प्रह्लाददास दादूपंथी

नरसींगचवदस—सं०स्त्री० [सं० नृसिंह चतुर्दशी] वैसाख शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी जिस दिन भगवान ने नृसिंह रूप धारण कर हिरण्यकश्यपु को मारा था ।

नरसींघ—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.) उ०—मछ कोम नरसींघ वाह वांमण कहि वांमण ।—पी.ग्रं.

नरसी—सं०पु०—एक कृष्ण भक्त, नरसी मेहता ।

नरसीह—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.) उ०—तट गंगा तपियो नहीं, नह जपियो नरसीह । जड़ तैं आरण गमण जिम, दस गमिया वहु दीह ।—बां.दा.

नरस्यंघ—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.)

उ०—टेर प्रह्लाद की सुणत नरस्यंघ रूप, प्रगटे अगंम रयौं ही थंभ ते गयाज के ।—र.ज.प्र.

नरहर, नरहरि, नरहरी—सं०पु० [सं० नरहरि] नृसिंह भगवान, नृसिंह अवतार । उ०—१ रांम किसन हर नारियण, सचिदानंद गोविंद । वासुदेव बीठ्ठळ बिसन, नरहर गोकळचंद ।—ह.र.

उ०—२ नरहरि थंभ विदारियो, सेवग हंदी चाड। हेक थाप चूरण हुवा, हिरणाकुस रा हाड।—बां.दा.

नरही-सं०पु० [देश०] तलवार की मूठ का सबसे निचला छोर जिसमें तलवार का ऊपरी भाग (दुमाला) मजबूती के साथ लगा कर तलवार को मूठ से जोड़ा जाता है।

नरहीरौ-सं०पु० [सं० नर+हीरक] खूब तेज किनारे वाला आठ या छः पहल का बड़ा हीरा (उत्तम)।

नरांअंतक—देखो 'नरांतक' (रू.भे.)

नरांइंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) (डिं.को.)

नरांण—देखो 'नारायण' (रू.भे.)

नरांतक-सं०पु० [सं०] रावण के एक पुत्र का नाम

रू०भे०—नरांअंतक।

नरांनाथ—देखो 'नरनाथ' ((रू.भे.) (डिं.को.)

नरांनायक-सं०पु० [सं० नरनायक] १ श्रीकृष्ण, नंदनंदन।

उ०—पेसारा ओसारा खरा पायकां रा। लहै नाग लारां नरांनायकां रा। मचे मूठ मारा झरे लोण झारा, फणां रा घणां रा करै फूतकारा।—ना.द.

२ देखो 'नरनायक' (रू.भे.) (डिं.को.)

नरांनाह—देखो 'नरनाथ' (रू.भे.) (डिं.को.) उ०—१ नरांनाह पतसाह छोडाड़ सकियौ नहीं, समांमो कमंध जोय निमांमो सिध। आपरा वडेरां खाटिया अखाड़ा। 'करण' ग्यौ प्रवाड़ा बांधियां कंध।

—महाराजा करणसिंघ री गीत

उ०—२ 'मधकर' हर हिम्मत महण मत्य, मेड़तै 'रूप' हिम्मत समत्य। एतलां आद दूहा अथाह, नवकोटां आगळ नरांनाह।—रा.रू.

नरांपत, नरांपति, नरांपती, नरांपरा—देखो 'नरपति' (रू.भे.)

उ०—१ सुणै जद बच्चन 'भैरव' सूर, नरांपत धोय चखां चढ़ नूर। भ्रगूटिय रेख चढ़ै सुर भाळ, भिड़ै भ्रूह मूछ अड़ै भुव पाळ।—पे.रू.

उ०—२ समांपती लखप्पती सुरिंद नरांपती, धरांपती नरिंद गढ़ांपती करांमती दळांपती कछपती दुबाह।—ल.पि.

नरांयंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ लाट मुरधरा जोधांण के वरस लग, सुदतपण प्रगट कर चीत सांमंद। पंच सत उदक दे कवां नृप वीकपुर, निडर वाघ नरे संघ नरांयंद।—देवराज रतनू

उ०—२ अई 'अजा' महाराज धांणैरगढ़ नरांयंद, समवड़ां भड़ां सरताज साजा। विखम घर बचाळा आज आंणै वणै, राज नै जाचवा काज राजा।—दुरगादत्त बारहठ

नरांयण—देखो 'नारायण' (रू.भे.) उ०—जुग जुग में जगदीस, धरै अवतार नरांयण।—गजउद्धार

नराकार-अव्य०—१ निषेध सूचक शब्द। उ०—मगरां विच फिरतौ, सहर सलूंबर आयौ। स्रवणां रावत सूणै, कथन नराकार केवायौ।

—कोठारिया रावत जोधसिंह री छप्पय

२ देखो 'निराकार' (रू.भे.)

नराच—देखो 'नाराच' (रू.भे.)

नराज—१ देखो 'नाराच' (रू.भे.)

उ०—१ नग-जड़ित सुजड़ नराज, वडवडा मदफर वाज। पोसाक ऊंच अपार, भलि लुटै द्रव्य भंडार।—सू.प्र.

उ०—२ चमराळ दळां अति रीस चढ़ी। करि क्रोध धिराज नराज कढी। सत्र थाट घड़ां चवगांन सिरै। कवियांण रैवत-पसाव करै।

—सू.प्र.

२ देखो 'नाराज' (रू.भे.)

नराजगी, नराजी—देखो 'नाराजगी' (रू.भे.)

नराट, नराठ-सं०पु० [सं० नरराट्] १ राजा, नृप, नरेंद्र।

२ देखो 'निराट' (रू.भे.)

नराताळ, नराताळां, नराताळी, नराताळौ—देखो 'निराताळ' (रू.भे.)

उ०—१ लोही धारां आपगा अपारां आट-पाटां लागी। चंडी पीवै पत्रां कंठां लागी बंधेचाळ। भखै धाया ग्रीध का अंकाया फील थाटां भागी, नाराजां त्रभागां झाटां वागी नराताळ।—चांवंडदांन महड़ू

उ०—२ कोम पीठ भोम भार घूमें घड़ा नाग काळां, वरं माळ लूंबै रथां रंभ चाळा वेस। वाजतां त्रंबाळा के करमाळां झाळां बीच, नेज वाजां नराताळां संभरी नरेस।—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—३ जुड़ै सेन थंडां जाडावाळी घोम जाळा री सावात जागी, खंडां आडावाळा री लागी हाला री खुलास। जोम गाडावाळी प्रळैकाळा री उनागी जठै, वागी हाडावाळी नराताळा री बांणास।

—दुरगादत्त बारहठ

उ०—४ बाजतां त्रंबाळां थ्रीह नराताळौ खड़ै बाज, तोलियां छड़ाळी पांण पंखाळै सुतांण। बाकारियौ पाट री हटाळौ खळां भूरौ बाघ, आवियौ 'उमेद' वाळौ सींधाळौ आरांण।—पहाड़खां आढ़ौ

नराधिप-सं०पु० [सं०] राजा, नृप।

रू०भे०—नराहिव, नराहिवु।

नराळ—१ देखो 'निराताळ' (रू.भे.) उ०—नृत थाळ नचत नराळ ततछन, ताळ अछी प्रत दुरलीयै निस दीह दता तुरंगांण तता, निज दांन सु जीवण सीह दियै।—किसनजी दधवाड़ियौ

२ देखो 'निराळ' (रू.भे.)

नराळौ—देखो 'निराळौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नराळी)

नरावत-सं०पु०—राठौड़ों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—नरावत 'रूप' लड़ै नरनाह। 'रासौ' भड़ 'खेतल' रो रिमराह।

—सू.प्र.

नराहिव, नराहिवु—देखो 'नराधिप' (रू.भे.)

उ०—साहु कही नइ गयणि पहूंतउ। पंडु नराहिवु हूयउ सयंतउ।

—पं.पं च.

नरिंद, नरिंदर, नरिंदि, नरिंदु-सं०पु०—१ प्रथम लघु की पांच मात्रा का नाम (ISS) (डिं.को.) २ देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.)

उ०—१ [illegible] नरिंद । [illegible]

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ [illegible] । [illegible]

—[illegible]

उ०—३ [illegible] नरिंद्र, [illegible] । [illegible] —सू.प्र.

उ०—४ नरिंदि मोटो [illegible] ।—वी.दे.

उ०—५ [illegible] । सोहिउ [illegible] ।—पं.पं.च.

उ०—६ [illegible] नरिंद ।—वी.दे.

नरिंदि—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०— [illegible] नरिंदि, समर जीत [illegible] ।—वी.दे.

नरिंदो—देखो 'नरेंद्र' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ [illegible] पासि तुम्हि [illegible] । [illegible] निगुणीउ घरि [illegible] नरिंदो, [illegible] नरिंदो ।—पं.पं.च.

उ०—२ [illegible] समर नरिंदो । [illegible] परमाणंदो ।—विद्याविलास पवाडउ

नरिंद्र, नरिंद्रव—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ सुर किन्नर नागिंद्र [illegible] नरिंद्र ।—महादेव पारवती री वेलि

नरिंन—देखो 'नरन' (रू.भे.)

नरिबाहणौ, नरिबाहबौ—देखो 'निरबाहणौ, निरबाहबौ' (रू.भे.)

उ०—[illegible] नरिबाहणो । [illegible] सुनार [illegible] नार ।

—वी.दे.

नरियंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ नरियंद मह नजराण, [illegible] । [illegible] 'फता' ।

—केसरीसिंह बारहठ

उ०—२ [illegible] नरियंद 'धर्मेमल' राजै । जिसको [illegible] मुनियंद राजै ।—सू.प्र.

नरिमन—सं०पु०—१ राजा, नृप. २ देखो 'नारायण' (रू.भे.)

नरियौ—सं०पु०—[illegible] की कड़ी ।

नरींद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—[illegible] नरींद । [illegible] ।—रामदान लालस

नरी—देखो 'नारी' (रू.भे.) उ०—[illegible] सोभा सिणागे । नरी [illegible] ।—सू.प्र.

नरींदंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—'चंद' बीदो [illegible], [illegible] । [illegible] नरींदंद, [illegible] ।—[illegible]

नरीस—देखो 'नरेस' (रू.भे.) उ०—१ मझे दंडनी सुरीस, देव तो नवे दवीस । नाम...चतीस, भोमतो नरीस ।—र.ज.प्र.

उ०—२ मोभिर उत्तम नरन हो, लंका रत के ईस । सब दखिन पै एक ची, भावरसिष नरीस ।—लि.वं.

नरु, नरू, नरु—देखो 'नर' (रू.भे.) उ०—१ लिया जोवा तोण पचासि, धरिसु मिणा रचो आकासि । राजा भीडो चखपहु सीह, पद-दिसि नरु पुरेवउ दीह ।—पं.पं.च.

उ०—२ रूउ रूपउ रमाउलि मूंकइ, तेह तणु तिमणो जण चूकइ । मावनी न छक्कि जे नर नासइ, भीर मांहि सु पड़इ पुणि हासइ ।

—विराटपर्व

नरूका—सं०स्त्री०—कछवाहों की एक शाखा ।

नरूकौ—सं०पु० (स्त्री० नरूकी) कछवाहों की 'नरूका' शाखा का व्यक्ति ।

नरेंद्र—सं०पु० [सं०] १ राजा, नृप, नरेश । उ०—नरेंद्र के सुरेंद्र के भए परेंद्र के धितू । अकारनीक याप नांहि कारनीक हो तितू ।

—ऊ.का.

२ सांप बिच्छु आदि काटने पर चिकित्सा करने वाला, विष वैद्य. ३ प्रत्येक चरण में सोलह मात्राओं पर विराम से कुल अठाइस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं ।

रू०भे०—नरंद, नरां-इंद, नरांयंद, नरिंद, नरिंदर, नरिंदि, नरिंदु, निरंद, नरिंद्र, नरिंहंद, नरिंदंद, नरींद, नरींयंद, नरयंद ।

अल्पा०—नरविंदो, नरिंदो ।

नरेण—देखो 'नरेहण' (रू.भे.)

नरेस—सं०पु० [सं० नरेश] राजा, नृप (ह.नां., अ.मा.)

उ०—१ जपै नर-नार उभै कर जोड़, करै सुर सेव तेतीसूं कोड़ । नागेस नरेस सुरेस मुनेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।—ह.र.

उ०—२ तूठा दूधां बादळा, तूठा देव मुरार । जेहल आज जुहारिया, काछ नरेस कुंवार ।—बां.दा.

रू०भे०—नरीस, नरेह ।

नरेसर, नरेसउ, नरेसळ, नरेसरो, नरेसुर, नरेस्वर—सं०पु० [सं० नरेश्वर] १ राजा, नृप (डि.को.) उ०—१ रात दिवस भज रांम नरेसर, पात राम नहचो मन पूगे । सुधारण कारण सब सूरो, ऊधारण रो किसी अपूंगे ।—र.ज.प्र.

उ०—२ तूं उपगार करै जु अपार अनाथ अधार भये गुणकंदा । जिन जगदेव करै तुम्ह सेव जिनेसर नाभि नरेसर नंदा ।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ पूछे किसण नरेसरूजी, आंदयो जिम संसार । रमणीय सुहावणो हो, रुप मदन अवतार ।—जयवांणी

उ०—४ नगर कविल नरेसरू, राजा श्री क्रिनधरमो जी । अद्भुत नामु अंतेउरी, ज्यांना नांम सुधरमो जी ।—स.कु.

उ०—५ निरभय किय श्रीरांम नरेसुर । पुनि देवांण बधायो निजपुर । अमर जोधां आकास अरत्ती, सो करवी जय जयति सकत्तीं ।—मे.म.

उ०—६ हर हर तणा हमीर नरेसुर, लाभ थका मूका रह लोय। एकरा ग्रास तुहाळी ऊपर, सीसोदा ग्रावै सह कोय।
—महाराणा हमीर री गीत

उ०—७ नांमै सीस ग्रनेक नरेसुर, रैत सुखी ग्ररणरेह। चारुहि चक्क ग्रदल्लां चालै, तेज घरै सिर तेह।—र.रू.

उ०—८ पंडु नरेसरो सइंवरि, जाइ हथिणाउरपुर संचरए। राइं दळै सरिसा कूंयर, लेउ तारे सुं जिम चांदुलउ ए।—पं.पं.च.

२ जिसकी नर ग्राराधना करते हैं, ईश्वर, परमात्मा।

उ०—ग्रादि ग्रंत ग्रादेस, मेक ग्रादेस नरेसर। ग्रलख तूझ ग्रादेस, ग्रगह ग्रादेस ग्रनंतर। एक तूझ ग्रादेस, जगत-पति तुझ जोगेस्वर। निरविकार ग्रादेस, नेति ग्रादेस नरेस्वर।—ह.र.

३ श्रीकृष्ण, वासुदेव। उ०—सो जिरण चौकी दैरण मनोभव साखियो। रूप नरेसुर ग्राप क सीदी राखियो।—बां.दा.

ग्रल्पा०—नरेसरो।

नरेह—१ देखो 'नरेश' (रू.भे.)

२ देखो 'नरेहरण' (रू.भे.) उ०—१ कोडा द्रव खरचे करो वीर, चहुं तिरण वार। उतरे फील ग्रंबाडिया, दौढ़ी सिरै दवार। दौढ़ी सिरै दवार, नरेह निहारती। मिळ कवसल्या मात उतारी ग्रारती।
—र.रू.

उ०—२ हूं तो हत्थां भांमरणं, बडा समत्थां वेह। ज्यां जेहा जादव जिसी, नर निरमियो नरेह।—बां.दा.

नरेहण—वि० [सं० निर+ग्रा+इहन] १ निष्कलंक, पवित्र, उज्ज्वल। उ०—१ नृप होसी तौ जोड़ नरेहण। इता नृपति तौ वंस ग्ररेहरण। वधसी कुळ वह कीत वडाई। ग्रस मरदन खत्रवट ग्रधिकाई।
—सू.प्र.

उ०—२ पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर। मन निरमळ गंगाजळ जेम। नर नादैत नरिंद नरेहरण। निकळंक निघुट निपाप निगेम।
—दूदो

२ पाप रहित, निष्पाप। उ०—जाळ देह पावक्क पाळ पतिवरत महापरण। कुळ लज्या उजयाळ रीत रखवाळ नरेहण। नांम राख नव खंड प्रसिध चाडे दहुं पक्खे। साथि सांमि समरत्थ रथे बैठी कथ रक्खे।—रा.रू.

३ छलछिद्र रहित, निष्कपट। उ०—जोध सहरि गढ़ जतनि सद्रढ़ जादव परण सच्चे। सूर पर्णं समरत्थ रीत ग्रनि पंथ न रच्चे। सामि घरम चित सरम, ग्रादि रज करम ग्ररेहरण। परम भगत पुन्यवंत रीत खग सकति नरेहण।—रा.रू.

४ देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.)

रू०भे०—नरेरण, नरेह, नरेहर, निरेरण, निरेह, निरेहरण।

नरेहर—देखो 'नरेहण' (रू.भे.) उ०—घर खेहां छाई घूहड़ियै, खेड़ेचै ग्रस खेड़िया। नर हैवर नागंद्र नरेहर, गैवर गाडा देख गया।
—राव जोधा री गीत

नरोतम, नरोत्तम—सं०पु० [सं० नरोत्तम] ईश्वर, भगवान।

उ०—ग्रजोणिय जोगिय जांणिय ईस, सुरासुर स्वांमिय कों धर सीस। नरोत्तम उत्तम तार नितार, चराचर चिंतनहार चितार।
—ऊ.का.

नरोवर—सं०पु० [सं० नराम्वर] समुद्र, सागर। उ०—प्रमेसर सांभळ देव-पुकार, विढेवा सज्ज हुवो तिरण वार। विहां सूं हेकां लीधी वाथ, नरोवर मांझ कियो जुध नाथ।—ह.र.

नरयंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—ग्रदु कंठ गांन तरुणी मुखे, निरखै रूप नरयंद री। नव रंग पत्रवाही निपुरण, किरि नंदी वन नंद री।—रा.रू.

नलंप—सं०पु० [सं० निलिम्प] देवता, सुर (डिं.को.)

रू०भे०—निलंपका।

नलंपिका—सं०स्त्री० [सं० निलिम्पिका] गाय, गौ (ग्र.मा., डिं.को.)

नळ—सं०पु० [सं० नल] १ निषध देश के चन्द्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र ग्रौर दमयंती के पति। उ०—नळ राघव जुजठळ नहीं, भू बीकम नह भोज। है जेही ऊनड़हरौ, हैं नहं कळू हनोज।—बां.दा.

२ राम की सेना का एक बन्दर जो विश्वकर्मा का पुत्र माना जाता है। उ०—सुखेरणां नळं नील सुग्रीव साथां। हरणू ग्रादि ग्राए मिळे जोड़ि हाथां।—सू.प्र.

३ यदु के एक पुत्र का नाम. ४ सिंहिक के गर्भ से उत्पन्न होने वाले एक दानव का नाम जो विप्रचित्ती का चौथा पुत्र था।

[सं० नाल] ५ एक नद का नाम. ६ युद्ध के समय बजाया जाने वाला एक प्राचीन वाद्य विशेष। उ०—नळ वाजिय तुरियां वाजि नास, वाजिय पयाळ पाग्रे व्रहास। 'जइतसी' राउ जंगमां, जोळ, कांपियउ सेस कूरम्म कोळ।—रा.ज.सी.

७ सिंह का ग्रागे का पैर। उ०—उस तरफ केसरसिंघ पटैत नळै झाड़ भभकार सांमुहे ग्राए। नळूं हाथळूं का दाव ग्रोझड़ि झड़ सूंगू का घाव दारुणूं के हाथळ लगणै न पावै।—सू.प्र.

८ एक प्रकार का ग्रायुध (व.स.) ९ तलवार के मध्य भाग के पार्श्व में पड़ने वाले वे लम्बोतरे भाग जो 'धार' ग्रौर 'पेटे' के पास होते हैं। १० वह गहरी लकीर जो तलवार के मध्य भाग पार्श्व में पूरी लम्बाई तक गई होती है। ये मध्य भाग के दोनों ग्रोर होती हैं किन्तु तलवार के दोनों किनारों से कुछ ऊपर की ग्रोर होती हैं.

११ नरकट, नरसल. १२ कमल, पद्म. १३ ग्रमृत सागर के ग्रनुसार वह हड्डी जिसके ग्रन्दर नरसळ के समान सीधा छेद हो.

१४ (घोड़े ग्रादि जानवरों के नाक का) नथुना। उ०—नळं क्रहक्क हेमरां, सरे क बोल दद्द रां। रजी सुभट्ट पीजरै, तुरंग जेम हींजरै।—गु.रू.बं.

१५ पानी, हवा, धुग्रा, गैस ग्रादि ले जाने के लिए धातु, काठ या मिट्टी ग्रादि का बना हुग्रा लंबा गोल खंड. १६ पेड़ू के ग्रन्दर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाव नीचे उतरता है।

[illegible]—[illegible] का निश्चित होकर नीचे की ओर [illegible] (एक रोग विशेष)
[illegible]—नळियौ, नळी, नळौ।

नळकौ, नळकियौ—देखो 'नळौ' (अल्पा., रू.भे.)

नळकूबर-सं०पु० [सं० नलकूबर] १ कुबेर के एक पुत्र का नाम जो नारद के शाप से वृक्ष योनि में आ गया था और उसका उद्धार [illegible] के बाल रूप श्रीकृष्ण ने किया था। (महाभारत)
२ [illegible] के आठ [illegible] में से एक जिसमें चार गुरु और चार लघु मात्राएं होती हैं।

नळणी—देखो 'नळिनी' (रू.भे., ध.मा.) उ०—निय नाम गीत [illegible], जाळं नळणी परी जळि। पालिग [illegible] द्वारिका न [illegible], अजिकै [illegible] मन लागै नहि।—वेलि.

नळणौ, नळबौ-क्रि०अ०—पंजेदार जानवर का पिछले पांवों पर खड़ा होकर अगले पांव [illegible] कर [illegible] करना।

नळपुर-सं०पु०स्त्री० [सं० नलपुर] निषध देश की राजधानी का नाम जहां राजा नल राज्य करते थे (डिं.को.)

नळफड़, नळफड़ि—देखो 'निरै' (रू.भे.) उ०—नळफड़ि करद करि [illegible], कटहिं [illegible] नह मयूर। कमळी वेलि अंबोदा भरइ, भमर गुंजारव करइ।—प्राचीन फागु-संग्रह

नळबार-सं०पु०—बबूड़ा (अ.मा.)

नळबन-सं०पु०—तलवार।

नळसेतु-सं०पु० [सं० नलसेतु] रामेश्वर के निकट समुद्र पर बंधा हुआ एक पुल (रामायण)

नळांध-सं०पु०—रात्रि में दिखाई न देने का नेत्र का एक रोग विशेष

नलाट—देखो 'निलाट' (रू.भे.)

नळिका-सं०स्त्री० [सं० नलिका] १ वैद्यक में एक प्रकार का प्राचीन यंत्र जिससे जलोदर रोग से पीड़ित व्यक्ति के पेट का पानी निकाला जाता था. २ आजकल की बंदूक से मिलता-जुलता प्राचीन काल का एक शस्त्र विशेष. ३ बाण रखने का तरकश. ४ पुदीना. ५ देखो 'नळी' (अल्पा., रू.भे.)

नलिन-सं०पु० [सं०] १ कमल, पद्म. २ सारस पक्षी।
रू०भे०—निलन।

नलिनि, नलिनी-सं०स्त्री० [सं० नलिनी] १ कमल, कमलनी (डिं.को.)
२ एक प्रकार का शाक (भाजी) विशेष। उ०—नेत्र निहाळौ [illegible], नलिनी मानह [illegible]। नही [illegible], [illegible] —[illegible].
३ [illegible] की शराब. ४ नाक का बांया नथुना. ५ नदी, सरिता. ६ गंगा की एक धारा का नाम (पौराणिक)
७ [illegible] (डिं.को.)
रू०भे०—नळणी।

नलिनीनंदन, नलिनीनंदन-सं०पु० [सं० नलिनीनंदन] कुबेर के एक उपवन का नाम।

नळियौ—देखो 'नळ' (६ से १५) (अल्पा., रू.भे.)

नळी-सं०स्त्री० [सं० नली] १ पैर के घुटने के नीचे से पंजे तक गई हुई सामने की सीधी हड्डी। उ०—१ नरा अहिरण घज नळी, कळी बाजू पीठ पक। अर्ज नास बोसली, ताम बीजळी हळी हक।
—सू.प्र.

उ०—२ भमता भवसागर ममता मड़ियोड़ी। केवळ नळियां री नळियां कड़ियोड़ी।—ऊ.का.
रू०भे०—नाळ, नाळी।
२ नलिका नाम का गंध द्रव्य जो औषधि के काम आता है.
३ एक प्रकार का वाद्य विशेष। उ०—मुरली नळी संख धुनि आयां। हाथी कांन ताल वजि हायां।—सू.प्र.
४ सुरणाई नामक संगीत वाद्य में छेदों वाला वह स्थान जो शहतूत की लकड़ी के मध्य के कठोर भाग से बना हुआ होता है.
५ बुनकरों की ढरकी में कांटे के बल सूत लपेटी हुई रखी जाने वाली काष्ठ की छोटी नलिका। उ०—आ जाति जाति पट घूंघट अंतरि। मेळण एक करण अमिळी। मन दंपति कटाछि दूति मैं, निय मन सूत कटाछि नळी।—वेलि.
६ देखो 'नळ' (६ से १५) (अल्पा., रू.भे.) उ०—आंत ओज भेजो असत, नैण नळी भग नेह। आंमिख नर नांतै उदर, आंणै हरख अछेह।—बां.दा.
७ देखो 'नाळ' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—नाळी।

नळीआरड़-सं०स्त्री०—पेट पर पड़ने वाली त्रिवलि ?
उ०—नाभि-विवर छ अधु, घण नळीआरड़ पेटि। उघन नर विसाळ, पण भल तद सकइ न भेटि। -मा.कां.प्र.

नलै—देखो 'निलै' (रू.भे.) उ०—अटा टोप वगां री नवणां श्रोपां मळै अद्र, संभु नलै ऊजळै वलाळं मणां सेण। दोपै मांन ताळ हूंगा मंडळी नयास टोधा, कवंदां मंडळी लीघां दूसरा कुंभेण।
—कविराजा बांकीदास

नळौ-सं०पु० [सं० नाल] १ प्रायः अग्निमंथ या आक की लकड़ी की वह बड़ी नलिका जिस पर बुनकर सूत लपेट कर ताना तानते हैं।
२ ठीक करनी के आकार का किन्तु उससे छोटा एक ओजार जिससे पलस्तर, टीपें आदि की घिसाई की जाती है. ३ सिंह, घोड़ा आदि जानवरों के अगले पैर के घुटने के नीचे की सामने की सीधी हड्डी.
उ०—१ किसा हेक घोड़ा छै ? वे पग भला, ऊंचा अवलळा, कटारा-नगा, आरणी मारीखा। तिमंगळ घाळा मुठिया धीन फळा। निसंग नळा गोडा नाळेर फळा।—रा.सा.सं.
उ०—२ मारग में जायतां स्यार नाहर नळौ साय नै बैठा छै।
४ देखो 'नळ' (६ से १५) (रू.भे.) —नैणसी
५ देखो 'नाळौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ आई देखि फौजां

उदैपुर सूं तौ उपड़िगा। सारा भोज गढ़ का जो नळा में जारि वढ़िगा।—शि.वं.

उ०—२ भूंडरा चीलहरां नूं लियां नळां, खाडरां, रूंखां, झाड़ां री भंगी रै ग्रोल्हे चालै। डाढ़ाळी चौड़ै पाधरी धरती चालै।

—डाढ़ाळा सूर री वात

नलो-वि०—बुरा, खराब। उ०—वा'दर ढाढ़ी बोलियौ नीसांणी गल्ला, नल्ला सल्ला नर नीवड़ै यूं जांणै अल्ला।—वी.मा.

नवंवर-सं०पु० [अं०] अंग्रेजी वर्ष का ग्यारहवां महीना।

नव-वि० [सं०] नया, नूतन, नवीन (डि.को.) उ०—१ फागण मास वसंत रितु, नव तरुणी नव नेह। कहौ सखी कैसे सहूं, ग्यार अगन इक देह।—अज्ञात

उ०—२ मिळतां रांण घरै महाराजा, ऊछव प्रगटै मिटै अकाजा। जिती वस्त नित अम्रत जोड़ां, राजै नव नव भांत रसोड़ां।—रा.रू.

उ०—३ फागण मास सुहामणउ, फाग रमइ नव वेस। मो मन खरउ उमाहियउ, देखण पूगळ देस।—ढो.मा.

[सं० नवन्] २ दस से एक कम, आठ और एक नौ (डि.को.)

उ०—ग्रह माथै रांग आभ लग ऊंचौ, नव खंडे जस झालर नाद। रोप्या भला रायपुर रांणा, पड़ै न सासण तणा प्रसाद।

—दुरसौ आढ़ौ

सं०पु०—नौ की संख्या, नौ का अंक। उ०—१ नीचौ जावै नीर ज्यूं, जग नव नहचै जांण। सकळ पदारथ सार री, हुवै खिण खिण में हांण।—बां.दा.

उ०—२ कर पारौ काचै कळस, जळ राखियौ न जात। नव नहचै ठहरै नहीं, विदर उदर में वात।—बां.दा.

मुहा०—नव नहचै—अटल, दृढ़, पक्का।

रू०भे०—नउ, नऊं, नव्व, नवउ, नव्व, नौंऊं, नोऊं।

अल्पा०—नवियौ, नवौ।

नवका—देखो 'नौका' (रू.भे.) उ०—वड़वा कोप खाग झड़ वाजै, गाजै नंद 'गुमांन' गहीर। वीया जैसींग तणौ खंभ वरड़ै, नवका खड्ड डूबिया नीर।—महाराजा मांनसिंह रौ गीत

नवकार, नवकारु-सं०पु० [सं० नमस्कार=प्रा० णमुकार, णमोक्कार, णवकार=रा० नवकार] जैन समाज में प्रचलित वह नमस्कार मंत्र जिसमें अरिहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधुओं को नमस्कार किया जाता है।

वि०वि०—इस मंत्र की रचना निम्न प्रकार है।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं॥

श्री अरिहंत भगवान को मेरा नमस्कार है। श्रीसिद्ध भगवान को मेरा नमस्कार है। श्री आचार्य महाराज को मेरा नमस्कार है। श्री उपाध्याय महाराज को मेरा नमस्कार है। संसार के सब साधुओं को मेरा नमस्कार है।

इस मंत्र का जैन समाज में बड़ा महत्व है। यथा—

'एसो पंच णमुकारो, सव्वा पावप्पणासणो
मंगला च सव्वेसिं, पढम हवइ मंगलं।

इस महामंत्र के पांच पद हैं और पैंतीस अक्षर हैं। प्रथम पद में सात द्वितीय पद में पांच, तृतीय पद में सात, चतुर्थ पद में सात और पांचवें पद में नव अक्षर हैं। इस महामंत्र में किसी व्यक्ति विशेष या महात्मा विशेष का नाम न होकर मात्र गुण युक्त अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं संसार के सब साधुओं को नमस्कार किया जाता है। पांचों पदों के सब मिला कर एक सौ आठ गुण माने गये हैं। इसी कारण माला के मनके भी एक सौ आठ रखे गये हैं।

रू०भे०—नउकार, नमुकार, नमोकार, नमोक्कार, नवयार।

नवकारवाळी-सं०स्त्री० [सं० नमस्कार+अवलि] नवकार मंत्र जपने की माला (जैन)

रू०भे०—नउकारवळि, नौकारवाळी।

नवकारसी—दस "प्रत्याख्यानों" में से प्रथम प्रत्याख्यान जिसमें सूर्योदय से ४८ मिनट तक अशनादि चारों प्रकार के आहार का त्याग कराया जाता है।

रू०भे०—नौकारसी।

नवकुमारी-सं०स्त्री० [सं०] नवरात्र में पूजी जाने वाली नौ कुमारियां जिनमें निम्न लिखित की कल्पना की जाती है—कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंडिका, शांभवी, दुर्गा और सुभद्रा।

नवकुळी—नाग वंश के नवकुल। उ०—नवकुळी नाग अठकुळ अनड़, सरव जीव ना सति नहीं।—पी.ग्रं.

नवकोट, नवकोटी-सं०पु०—नौ गढ़ वाला, मारवाड़ राज्य का एक नाम। उ०—१ महाराजा दळ मेलिया, वरस वधै चड चोट। अधपति पय आया इता, कमंध जिता नवकोट।—रा.रू.

उ०—२ जोधा जोध लंकपत जेहा। ए नवकोट तणा छळ एहा।

—रा.रू.

उ०—३ मगरै थई लड़ाई मोटी, किलवां हरख सुणी नवकोटी।

—रा.रू.

उ०—४ फूंकण नवकोटी झंडा फरहरिया, घर घर जाती रा-टांमक घरहरियां। खाली जळ धरती जळधर जळ खूटौ, ततखिण जीवण विण जगजीवण तूटौ।—ऊ.का.

रू०भे०—नवांकोट, नवांकोटी।

नवकोटौ-सं०पु०—१ नव कोट वाले मारवाड़ राज्य का अधिपति।
२ राठौड़। उ०—कसियै जरिद मरद नवकोटौ, चौरंगि चढ़ियै प्रभत चड़ै। ऊभौ जां वांसै आसावत, परिहंस सु नहं पुरांणि पड़ै।

—राठौड़ अमरसिंह आसकरणोत कूंपावत रौ गीत

रू०भे०—नवांकोटौ।

नवखंड-सं०पु० [सं०] जंबू द्वीप के नौ खण्ड यथा—भारत, इलावृत्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश।

[illegible]

[illegible] (रू.भे.)

[illegible] [illegible] के लिए प्रयुक्त होने वाला [illegible]। [illegible] नवग्रहड़। [illegible] [illegible] [illegible] —[illegible]

वि०—[illegible]।

[illegible]—[illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]—[illegible]।

[illegible]—[illegible]।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible] १ देखो '[illegible]' (रू.भे.) २ देखो 'नौगरो' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.) उ०—[illegible] उप्परि धरणि-[illegible] उप्परि जिम गिरिवर। गिरिवर उप्परि मेर मेरु उप्परि रवि [illegible]। [illegible] उप्परि तिवण तिवण उप्परि जिम सुरवर। [illegible] [illegible] उप्परि पंगुनर।—वमनपतिक पति

नवगुन-सं०पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनेऊ।

रू०भे०—नौगुन।

नवग्रह-सं०पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष के अनुसार नौ प्रकार के ग्रह—सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु (मतांतर से [illegible] और [illegible], वरुण और यम भी कहते हैं।)

उ०—१ [illegible] [illegible] [illegible], रहिर मचावै कोप। ज्यांरै नवग्रह [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] कोप।—बां.दा.

उ०—२ [illegible] राजधानि, चित्रकूट दुरग, जीणइं [illegible] बांधी [illegible] [illegible], नवग्रह [illegible] [illegible] पाइ बांधा, वायु देवता अंगणइ [illegible]।—[illegible]

रू०भे०—नवगिरै, नवैग्रह।

२ देखो '[illegible]' (रू.भे.) उ०—[illegible] पढी मुकट तिलक कुंडळ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बहिरखा नवग्रहा मुंदड़ी कंदोर हथसांकळी [illegible] [illegible] प्रमुख [illegible]।—व.स.

नवग्रहबंध-सं०पु० [सं०] नौ ग्रहों को बांध कर कैद करने वाला, रावण, [illegible]।

नवग्रही-सं०स्त्री० [सं० नवग्रह+रा०प्र०ई] कलाई पर धारण किया [illegible] वाला एक आभूषण विशेष जिसमें नौ ग्रहों के सूचक नौ प्रकार के [illegible] जड़े हुए होते हैं। उ०—१ [illegible] नवग्रहो [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] विधि विधि [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] हिमकरि, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।—वेलि.

उ०—२ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मेंहदी रै रंग लागा [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] रह्या छै। [illegible] [illegible] नवग्रही [illegible] [illegible] छै।—रा.सा.सं.

उ०—३ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]। [illegible] घुघघुगी नवग्रह [illegible]। जहांगीर [illegible] सांकळी सोभा का [illegible] [illegible]।—सू.प्र.

वि०—[illegible] का सूचक।

रू०भे०—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।

नवड़—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

नवड़ियौ—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

नवचंगी-वि०—१ [illegible], होशियार।

२ देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

नवछावरेस—देखो '[illegible]' (मह., रू.भे.)

उ०—१ नवछावरेस [illegible], मोतियां मंडियौ मेह। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]।—सू.प्र.

उ०—२ बाजत बजत [illegible], [illegible] राग रंग अनेक। नवछावरेस नरंद, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।—सू.प्र.

नवछाहर—देखो '[illegible]' (रू.भे.) उ०—[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] करै, रंभ [illegible] [illegible]। रंभ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाहरां। [illegible] [illegible] द्रुम फळफूल करै नवछाहरां।—बां.दा.

नवजण—देखो 'नूंजणो' (मह., रू.भे.)

नवजणियौ—१ देखो 'नूंजणियौ' (रू.भे.)

२ देखो 'नूंजणो' (अल्पा., रू.भे.)

नवजणी-सं०स्त्री०—देखो 'नूंजणी' (अल्पा., रू.भे.)

नवजणी—देखो 'नूंजणी' (रू.भे.)

नवजणो, नवजबो—देखो 'नूंजणो, नूंजबो' (रू.भे.)

नवजणहार, हारो (हारी), नवजणियौ—वि०।

नवजिओड़ो, नवजियोड़ो, नवज्योड़ो—भू०का०कृ०।

नवजीजणो, नवजीजबो—कर्म वा०।

नवजरी-सं०स्त्री०—एक आभूषण विशेष जो हाथ में पहना जाता है।

उ०—मज्जन सोळ सिणगार, आभरण दूण अठार। नवजरी [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।—सू.प्र.

नवजवान-वि० [सं० नवयुवक] नवयुवक।

रू०भे०—नौजवांन।

नवजोगेसर-सं०पु० [सं० नवयोगेश्वर] नौ योगेश्वर—शुक्राचार्य, नारायण (श्रीकृष्ण), अंतरिक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस और करभाजन।

नवजोवन—देखो 'नवयौवन' (रू.भे.)

नवजोवना—देखो 'नवयौवना' (रू.भे.)

नवट—देखो 'निवट' (रू.भे.) उ०—[illegible] डूंगरे [illegible] [illegible] नवट [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। 'छद' [illegible] [illegible] [illegible] 'भांण' [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।—डूंगजी जवारजी री [illegible]

नवणीय—देखो 'नवनीत' (रू.भे.) (जैन)

नवणो, नवबो—देखो 'नमणो, नमबो' (रू.भे.) उ०—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] नवतै नरां, [illegible] [illegible] अनींद।—हा.झा.

उ०—१ जे संतोस सुमेर, चढ़ बैठा मानव चतुर। देख नवै ज्यां देर, कुवचन सर लागै कठै।—बां.दा.

उ०—३ रांम भणंतां रे हिदा, कह केता गुण होय। ठाकुर मां नै जग नवै, पिसण न गंजै कोय।—ह.र.

उ०—४ कर कफनी कोपीन कर, कर करवा भर ग्राब। ग्रब मक्का जंबो उचित, नवणी नहीं नवाब।—ला.रा.

नवणहार, हारौ (हारी), नवणियौ—वि०।

नविग्रोड़ौ, नवियोड़ौ, नव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नवीजणौ, नवीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

नवतन—देखो 'नूतन' (रू.भे.)

उ०—धरिया सु उतारै नवतन धारै, कवि तै ग्राखोरण किमग्र। भूखण पुहप पयोहर फळ भति, वेलि गात्र तो पत्र वसत्र।—वेलि.

नवतर-सं०पु० [देशज] उर्वरा शक्ति बढ़ाने हेतु जोतने से छोड़ी हुई भूमि।

नवदुरगा-सं०स्त्री० [सं० नव दुर्गा] नौ दुर्गाएं जिनकी नवरात्र में नौ दिनों तक क्रमशः पूजा होती है। यथा—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंद माता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा (पौराणिक)।

नवद्वार-सं०पु० [सं०] शारीरिक नौ द्वार यथा—दो नाक के, दो आँखें, दो कान, एक मुख, एक गुदा और एक लिंग या भग।

नवधा-वि० [सं०] नौ प्रकार। उ०—मनि नवधा पूजं परमेसुर। खट रुत धरम करै खत्रियां गुर।—सू.प्र.

नवधाभक्ति-सं०स्त्री० [सं०] नौ प्रकार की भक्ति यथा—श्रवण, कीर्तन स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।

रू०भे०—नोधा भगति।

नवनध—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

नवनाड़ी-सं०स्त्री० [सं०] योग विद्या की शरीरस्थ नौ नाड़ियां—इडा, पिंगला, सुषुम्ना, गंधारी, पूषा, गज-जिव्हा, प्रसाद, शनि, शंखिनी।

नवनाथ-सं०पु० [सं०] नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सिद्धि प्राप्त नौ महायोगी। उ०—सांई तूं सिरदारड़ो, सखरौ थारौ साथ। तूं देवां रौ देवलो, नवनाथां र नाथ।—पी.ग्रं.

वि०वि०—देखो 'नाथ' (रू.भे.)

रू०भे०—नवेनाथ, नव्वनाथ।

नवनिद्धि, नवनिद्धी, नवनिध, नवनिधि—देखो 'निधि' (१)

उ०—१ अस्ट सिद्धि नवनिधि अखंडित। परम सती जुवीत सुत पंडित।—व.स.

उ०—२ अरज सुण नवलख आजो जी, सिंह थांरी वेग सभाज्यो जी। दैणी नवनिद्धी दरस हरसिद्धी हिंगळाज आखां कीरत ऊजळी लाखां राखण लाज।—वालाबख्श बारहठ

उ०—३ आय खोलियौ आंगणां, माजी जिण दिन मौड़। हेक साथ नवनिद्धि हुई, उण दिन सूं इण ठौड़।—बां.दा.

उ०—४ जांणे धनद यक्ष तूठउ, जांणे वेताळ सेवाहि पइठउ, जांणे किरि कल्पद्रुम फळिउ, किरि कांमघट आवि मिळिउ, किरि कांमधेनु ग्रिहांगणि बांधि, किरि नवनिधि तीणि लाधी, किरि चिंतामणी रत्न हाथि चडिउं।—व.स.

रू०भे०—नवनध, नवेनिध, नवेनिद्धि, नवेनिधि, नवैनिध, नवैनिधि, नव्वनीद्धि, निद्धनव, नोऊं निध, नोऊंनिधि, नौनिध, नौनीधि।

नवनीत-सं०पु० [सं० नवनीत] १ मक्खन (अ.मा., डि.को.)

उ०—पन्नग रदन प्रमांण प्रमांण परम छ पैंडियां। नरम मनहुम नवनीत अरुण रंग एडियां।—सिवबक्स पाल्हावत

२ श्रीकृष्ण (डि.को.)

रू०भे०—नवणीय, नोनीत।

नवनीतधेनु-सं०स्त्री० [सं०] दान के लिए एक प्रकार की कल्पित गौ। (वाराह पुराण)

नवपंचम-सं०पु०यौ० [सं०] जेष्ठ कृष्ण पक्ष के धनिष्ठा नक्षत्र से जेष्ठ शुक्ल पक्ष के रोहिणी नक्षत्र तक नौ दिन का समय।

नवपण-सं०स्त्री० [सं० नव+त्व] यौवन, जवानी। उ०—अरजण भीम जिसा आलीजा रोसे वेदल धाया रंग, जारै तौ विण कवण जोजरी नवपण जिसा अमोलक नग।—ओपो आढ़ो

नवपद— [सं०] जैनमतानुसार निम्नांकित नव पद—अरिहंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय, साधु, ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप।

उ०—धवळ सहित वाहण चढ़ी, नवपद जपि चई चाक। सीहतणि परि गाजतो, सीपे मेल्ही हाक।—स्रीपाळ रास

नवपत्रिका-सं०स्त्री० [सं०] केले, अनार, धान, हळदी, मानकच्चू, कच्चू वेल, अशोक और जयन्ती इन नौ वृक्षों के पत्ते जिनका व्यवहार 'नवदुर्गा' के पूजन में होता है।

नवबत, नववती, नवबत्ती, नवब्बती—देखो 'नौबत' (रू.भे.)

उ०—१ सहनाय मुरसळां रंग सुवाद। नववती घोर मंगळीक नाद।—सू.प्र.

उ०—२ असुर प्रळय अरि जय करि आई। व्रंदारकन व्रंद बिरदाई। वरखिय सुमन घुरिय नवबत्ती। स्री करणी जय जयति सकत्ती।—मे.म.

उ०—३ नेजा खासा तोग नवब्बती। पह दीधा मो विनां दिलीपति।—सू.प्र.

नवबहारी नगरी-सं०स्त्री० [सं० नव+द्वार+नगरी] नव दरवाजे वाला शहर।

उ०—१ पणि लक्ष्मीकृत स्रिस्टि मांनीइ, जेह कारणतउ योजन सहस्र परइं सजीव निरजीव वस्तु करतलगत दिखाडइ, एक रायतन थापइ, एकि ऊथपई, जं चीतवइ तउं करइ, संध्या ग्रोहरी नवबहारी नगरी करइ, प्रिथ्वीपीठि अमारि प्रवरत्तावइ।—व.स.

उ०—२ १४ मंत्रीस्वर, ३२ सहस्र नवबहारी नगरी।—व.स.

नवम-वि० [सं० नवम] जो नौ के स्थान पर हो, नवां।

रू०भे०—नमौं, नवमौं, नुमु, नोमों, नोमौं, नौवौं।

नवमई, नवमइ-सं०स्त्री० [सं० नवमति] एकदम सोचने की शक्ति,

नवमांशस्वरूप-सं०पु०—नौ प्रकार के स्वरूप कौन ?

उ०—[illegible] नवरत्नि [illegible], [illegible], नवमहानिधान [illegible] ।—[illegible]

नवमासियो-वि० [सं० नव+मास+रा.प्र.ई] नौ मास गर्भ में रह कर उत्पन्न हुआ हुआ, जो नव मास गर्भ में रह कर उत्पन्न हुआ हो।

नवमि, नवमी-सं०स्त्री० [सं० नवमी] चन्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की नौवीं तिथि। (डि.को.)

उ०—१ पाखाळा सुद नवमि, सुरा कामै दिन सेन। जिके समसर जोधपुर, गजहद थको गिगन।—रा.रू.

उ०—२ पख चैतागर तिथि नवमि, पनरोतरै वरसिम। वारि सुकर पदिसा [illegible], [illegible] सुकर [illegible]।—ननविरा

वि०स्त्री०—क्रमशः नौ के स्थान पर पड़ने वाली।

रू०भे०—नम, नमि, नमी, नम्म, नवी, नुवी।

नवमोहरो-सं०पु०—बादशाह द्वारा दिया हुआ वह आदेश पत्र जिस पर शाही नव मुहरें अंकित होती थीं।

उ०—इसो दरबार देख नकल उतार बादशाह सलामत री हुजूर हाजिर हुवा, बादशाह नवमोहरो कराइयो।—राठौड़ राजसिंह री वारता

नवमो-वि० [सं० नवम्] (स्त्री० नवमी) क्रमशः नौ के स्थान पर, नौवां। उ०—जिण नृप पुंज तणै रवि जोरै। उग्रप्रभा नवमो सुण थोरै।—सू.प्र.

नवयरामजलामन, नवयराजलक्षमा-सं०पु० [सं० नव्यराजलक्ष्मण, नव्य-राजलक्ष्मा] । युधिष्ठिर। (ह.ना.)

नवयौवन-सं०पु०—[सं०] १ नई जवानी, तरुणाई. २ तरुण नवयुवक।

उ०—दुजाण दुसह, कहह, अरे अयाण ? अबूझ। नवयोवन निकळंक नर ? सनि सौ जदिम तुझ ?—बा.दा.प्र.

रू०भे०—नवजोवन।

नवयोवना-सं०स्त्री० [सं०] जवान स्त्री, तरुणी।

रू०भे०—नवजोवना।

नवरंग-सं०पु० [सं०] १ छप्पय छंद का ५६ वां भेद जिसमें १२ गुरु और १२८ लघु से १४० वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। (र.ज.प्र.) २ चार जगण और अंत में गुरु लघु वर्णो का कुल १४ वर्ण का छंद विशेष। (ल.पि.) ३ कामदेव, अनंग. ४ सुंदरता, लावण्य।

उ०—नलि त्रिया लागि गनाय सोधा, अंग नवरंग ओरण।—रा.रू.

वि०—१ नये ढंग का, नये प्रकार का। उ०—नवरंग सनेह सारंग नव, उमड़ प्रसुन उमाह सूं। रतिराज जोड़ नर रजिया, महाराज 'अभमाल' सूं।—सू.प्र.

२ सुन्दर, रूपवान।

अल्पा०—नवरंगो, नवरंगौ।

नवरंगी-वि० [सं० नवरंग+रा०प्र०ई] १. अनोखा, अद्भुत, विचित्र।

उ०—१ दुज वेसर धार अनूप दीध, दंपा नवरंगी निजह कीध। जट धार बंध नखी जड़ाव, भावणा धीर अंजन भड़ाव।—वि.सं.

उ०—२ कसमेरी कांनेह कांपा नवरंगी किया। एकल उण्यांनेह [illegible] रिसाणी फौजड़ी।—पा.प्र.

२ नित नये आनन्द करने वाला।

नवरंगो—देखो 'नवरंग' (अल्पा०, रू०भे०)

नवरतन-सं०पु० [सं० नवरत्न] १ नौ प्रकार के रत्न या जवाहिर, यथा मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूंगा, लहसुनिया, पद्मराग [illegible] नीलम।

वि०वि०—फलित ज्योतिष के अनुसार ये नौ रत्न पृथक-पृथक ही ग्रहों के दोषों को शान्ति के लिए उपकारी माने जाते हैं, यथा सूर्य के लिए माणिक्य, चंद्रमा के लिए मोती, मंगल के लिए प्र[illegible] बुध के लिए पन्ना, बृहस्पति के लिए पुखराज, शुक्र के लिए ही[illegible] शनि के लिए नीलम, राहु के लिए गोमेद और केतु के लिए [illegible] लहसुनिया। उ०—कंचळ करां में नवरतन की पोंचां सोहै छै, रंग लोभ पराग निगोहै छै।—पना वीरमदे री वात

२ वह आभूषण जिसमें नौ ग्रहों के सूचक नौ रत्न जड़े हों, नौ [illegible] से जटित आभूषण।

नवरता, नवरतौ, नवरत्ती—देखो 'नवरात' (रू.भे.)

उ०—मधु आसोज मास रै मांही, निरत करत नवरत्तौ। विलास पधारत रमवा, जगदंबा जगजत्ती।—मे.म.

नवरस-सं०पु० [सं०] काव्य के नौ रस, यथा शृंगार, करुण, हास्य, [illegible] वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त। उ०—तउ दव[illegible] रितुपति तपति सु मन्मथ पूरि, जिम नारीय निरीक्षिण [illegible] मेल्हइ सूरि। कीजइं अवसरि अवसरि नवरसि राग वसंत।

—नेमिनाथ

नवरा—देखो 'नौरा' (रू.भे.)

नवरात, नवरात्र, नवरात्रि-सं०पु० [सं० नवरात्र] १ नवदुर्गा का घट-स्थापन तथा पूजन करने के नौ दिन जो चैत्र शुक्ल प्रतिपद[illegible] नवमी तक तथा आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के [illegible] दिन।

उ०—१ इकताळा रै चैत सुद, आद उदै नवरात। असुरां सिर [illegible] 'अभो', विचारै परभात।—रा.रू.

उ०—२ तठा उपरांति करि नै नवरात होम व्याग हुई नै [illegible] छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—नवरता, नवरतौ, नवरत्ती।

अल्पा०—नउरतो, नांरतो, नुंरतो, नोरतो।

नवरोज, नवरोजो-सं०पु० [सं० नव+फा० रोज:]

नवरोजो-सं०पु०—ईरानियों द्वारा मनाया जाने वाला एक महत्[illegible] उत्सव जो वर्ष के पहिले दिन मनाया जाता है।

वि०वि०—भारत में गर्मी की ऋतु में सम्राट अकबर द्वार[illegible] उत्सव मनाया जाता था जिसमें मुगल साम्राज्य के अधीनस्थ [illegible] नवाब, स्त्रियां, पुरुष आदि भाग लेते थे किन्तु उनके स्थान [illegible]

अलग होते थे। सम्राट ने इस उत्सव को नौ दिन से उन्नीस दिन तक बढ़ा दिया था। इस अवसर पर मुगल-काल की कलायुक्त वस्तुओं की प्रदर्शनी लगती थी और सम्राट का शानदार दरबार लगता था।

उ०—१ रोजायतां तरणै नवरोजे, जेथ मुसांणा जणोजण। हिंदूनाथ दिली चै हाटे, 'पतो' न खरचै खत्रीपण।

—प्रिथीराज राठौड़, बीकानेर

उ०—२ नीख न जोख करै नवरोजे, जोख न भूखण घरै जवाहर। दसकत करै न मिळै दिवांणां, अरजी फरज मतालब ऊपर।

—सू.प्र.

रू०भे०—नव रोज, नौ रोज, नौ रोजौ।

नवरौ-वि०पु० सं० केवलम्-प्राणवरम् = रा० नवरो] (स्त्री० नवरी) १ वह जिसके पास कोई काम करने को न हो. २ वह जिसने सब प्रकार के कार्यों से मुक्ति पा ली हो. ३ बेकार. ४ निष्क्रिय।

उ०—रह रत दिन घर-कज्ज रत, सुपण न बिगड़ सकाय। नवरी रहे न नार जो, जग किम नातै जाय।—रेवतसिंह भाटी

५ 'नौ'रौ' (रू.भे.)

नवल-वि० [सं० नव+रा. प्र. ल] १ नवीन, नया।

उ०—१ नव नव उच्छव नवल सुख, सब जण नवल सिंगार। नवल चित्रा में धवळहर, पायौ नवल कुमार।—रा.रू.

२ नवयुवा, नवयौवना।

उ०—२ बिहुं वै तरफ बाजार री, गोख झरोख सुघाट। गावै चढ़ि छंद-गारियां, नाजुक नवल निराट।—सिवबक्स पाल्हावत

रू०भे०—नवलउ, नवल्ल, नवल्लिय।

नवलअनंगा-सं०स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक।

नवलउ—देखो 'नवल' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—१ जग पुढि (ताइ) जइ रउ नांम जपंतां, आंवण जांण नहीं भव अंत। नितकउ हुवइ जोग नउ नवलउ, घणा जुग वउळिया अनंत।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कीजइ अवसरि अवसरि नवरसि रागु वसंत, तरुणी दळ दोला रस सारस भमइ हसंत। लिंपइ ताव निकंदनि चंदनि चंदनि देहु, निज निज नाथ संभारिय नारिय नवलउ नेहु।—नेमिनाथ फागु

नवलकिसोर-सं०पु० [सं० नवलकिशोर] (स्त्री० नवलकिसोरी) १ श्रीकृष्ण, घनश्याम। २ युवा पुरुष।

नवलकिसोरी-सं०स्त्री० [सं० नवलकिशोरी] युवा स्त्री।

उ०—बहार में आयो हे मा आज नवलकिसोरी रो नाह।

—रसीलैराज

नवलक्ख-सं०स्त्री० [सं० नवलक्ष] नौ लाख देवियों का समूह।

उ०—हुव मुक्ख ललक्क कलक्क हली, नवलक्ख थई चख लक्ख लली। भड़ खल्ल झगल्ल बगल्ल भड़ं, धड़ नल्ल पगल्ल नहल्ल धड़ं।

—पा.प्र.

वि०पु०—नौ लाख का।

नवलखी-सं०स्त्री० [सं० नवलक्ष+रा०प्र०ई] ताने को दबाने के लिए एक लकड़ी जिसमें इधर-उधर वजनी पत्थर बंधे रहते हैं।—जुलाहा

अल्पा०—नवलखी।

वि०स्त्री०—नौ लाख की।

रू०भे०—नौलखी।

नवलखौ-वि० [सं० नवलक्ष] (स्त्री० नवलखी) नौ लाख का।

उ०—१ ऊजेणी जई ऊतरया, आपापणैं आवासि। धूनां धवळहर नवलखा, तिहां लेई माधववासि।—मा.कां.प्र.

उ०—२ घोड़ी तौ भीजै पीया नवलखौ रे, कोई भीजै रे बनाती, भीजै रे बानाती रे साज। हो जी ढोला साज, अब घर आय जा गोरी रा वालमा हो जी।—लो.गी.

यौ०—नवलखौ-हार।

२ बहुमूल्य, मूल्यवान. ३ देखो 'नवलखी' (अल्पा. रू.भे.)

४ देखो 'नवलखौ हार'।

रू०भे०—नौलखौ।

नवलखौ-दरंग-सं०पु०यौ०[सं० नवलक्ष=मारवाड़, मि० नवकोट+द्रंग] मारवाड़ राज्यान्तर्गत कोटड़ा नगर जो बाघा कोटड़िये की राजधानी था।—ऐति०

नवलखौ-हार-सं०पु०यौ [सं० नव+लक्ष+हार] नौ लाख का हार, मूल्यवान हार।

उ०—उड गयौ नवलखौ-हार-देख, मिणियां री माळा पड़ी अठै। उड गई चूड़ियां सोने री, लाखां रो चुड़लो उडै कठै।—चेतमांनखा

नवलबनो—देखो 'नवलबनौ' (रू.भे.)

नवलबनी—देखो 'नवलबनी' (रू.भे.)

उ०—मांय घालौ मरवौ नै मखतूली, ओ, मांय घालौ (राळो) जायफळ नै जांवतरी, ओ तेल नवलबना रै अंग चढ़सी।—लो.गी.

(स्त्री० नवलबनी)

नवलबनी-सं०स्त्री०यौ० [सं० नव+रा० बनी] १ नवोढ़ा, नववधू। २ नवयुवती।

नवलबनौ-सं०पु०यौ० [सं० नव+रा० ल+बनौ] १ नवयुवक, नौजवान। (स्त्री० नवलबनी)

२ दूल्हा बना हुवा युवक।

उ०—नगरी कुंवारा परणसी, म्हारै नवलबनै को ब्याव, चोखा सेवरड़ा गूंथ ल्याय।—लो.गी.

नवलासी-वि० [सं० नव+रा० लासी] नवीन, नूतन।

उ०—१ हाथां खास बंदूकां नवलासी ज्यों लीयां फिरै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ मणि कंकण अंगद अमूल्य पद हाटक नूपर। नवलासी नवरंग संग भुजबंसी सुंदर।—रा.रू.

रू०भे०—नवीनो ।

नवीनौ—देखो 'नवीनो' (अल्पा., रू.भे.)

नवलौ—देखो 'नवलो' (रू.भे.)

नवली-वि०स्त्री० [सं० नव+रास. ल+रा०प्र०ई] नयी, नवीन ।

उ०—[illegible] नवली [illegible], [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] नवली [illegible] ।—ढो.मा.

रू०भे०—नवलडी ।

उ०—[illegible] हुवो मनो, घोड़ो मनो कुमेत । नारी तो नवली भली, कपड़ो भलो सपेत ।—अज्ञात

रू०भे०—नवलडी ।

नवलो-सं०पु० [देशज] खलिहान में भूसे से पृथक किया हुआ अनाज का बड़ा ढेर ।

नवलो-वि० [सं० नव+रास. ल+रा०प्र०ओ] नवीन, नया ।

(स्त्री० नवली) उ०—१ धूप पड़ै धरती तपै, नरवर सूखा जायँ । [illegible] घर नवली गोरडी, वे क्यूं बाहर जायँ ।—लो.गी.

उ०—२ नितु नितु नवला मांड़िया, नितु नितु नवला साजि । [illegible] राजा वाहड़, ढोला रीस न [illegible] ।—ढो.मा.

सं०पु०—नवयुवक, तरुण ।

रू०भे०—नवल्लो ।

नवल्ल—देखो 'नवल' (रू.भे.)

उ०—१ हुवा मनमंगळ हरिख, वधिया नेह नवल्ल । सूंर रतन [illegible], मिळिया आइ महल्ल ।—वचनिका

उ०—२ मोहणवल्लि नवल्लिय, सोहइ गा जगि वाळ । रूपि [illegible] पूरिय, हूरिय हूणा जाळ ।—प्राचीन फागु-संग्रह

नवल्ली—देखो 'नवली' (रू.भे.)

उ०—नार नवल्ली नारि रै, नकवेसर घण नूर । मोती प्रहिया [illegible], [illegible] वीर जहूर ।—बां.दा.

नवल्लो—देखो 'नवलो' (रू.भे.)

(स्त्री० नवल्ली)

नववली—देखो 'नौवल' (रू.भे.)

उ०—नववली राग वदिवाळ नद । मागर जिम नगर उछाह मद ।

—सू.प्र.

नववासुदेव-सं०पु० [सं०] जैन धर्म में माने जाने वाले निम्न नौ वासुदेव—त्रिपृष्ट, द्विपृष्ट, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, सिंहपुरुष, पुंडरीक, दत्त, [illegible] और श्रीकृष्ण ।

नवविख-सं०पु० [सं० नवविष] नव प्रकार के विष—वत्सनाभ, हारिद्र, [illegible], प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगक, कालकूट, हलाहल और [illegible] ।

नवव्यायाम-सं०पु० [सं०] [illegible] की पहली मेद, नया [illegible], [illegible] [illegible] ।

नवसंदी-सं०पु० [फा० नवीसिंदः] लेखक, मुहर्रिर, कर्मचारी ।

उ०—तिद्रस उजीर, मरेसुर बगसी, दोई धीर धरम सिकदार । तिलकुचा पुरंभर पाता, दफ्तर नवसंदा दरवार ।—र.रू.

रू०भे०—नवसंदो, नवीसंदो ।

नवसगति-सं०स्त्री० [सं० नवशक्ति] नव शक्तियां, यथा—प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा ।

—पौराणिक

नवसदी-सं०स्त्री० [सं० नव+फा. सदी] बादशाही अहलकारों का एक विभाग । उ०—आगरै बादसाह कनै गयो । उठै नवसदी रो मुनसब हुवो ।—अमरसिंह राठौड़ री वात

नवसर-वि० [सं० नवसृ] नौ लड़ी का, नौ लड़ी वाला ।

यौ०—नवसर-हार ।

सं०पु०—१ नौ लड़ी का हार. २ मारवाड़ का किला, गढ़ ।

उ०—'मान' सु रूठ रहियो राव मारू, रूग हूत माहै पात ररा । नवसर गढ दातो नागळियो, हाती रिप ज्यूं 'जगड़' हरा ।

—राजूराम बारहठ

रू०भे०—नौसर, नोसर ।

नवसरहार-सं०पु०यौ० [सं० नवसृ+हार] नौ लड़ी का हार ।

उ०—थाले तो पहराय दूं सर्ग बाहलो ए निणिआरो प लो । थाजै तो पहरायो नवसरहार वाला जी थो ।—लो.गी.

रू०भे०—नउसरहार, नोसरहार ।

नवसहंस, नवसहंसउ, नवसहंसो, नवसहस, नवसहसो-सं०पु०यौ० [सं० नवसहस्र] राठौड़ वंश के क्षत्रियों के लिए डिंगल साहित्य में प्रयुक्त होने वाला उपाधिस्वरूप शब्द, राठौड़ वंश का व्यक्ति ।

उ०—१ अत दग करि 'रिणमाल', गिळै सग लोक गभारा । सुणी चूक नवसहंस, 'जोध' मांवियो जिवारा ।—सू.प्र.

उ०—२ डोहळै मीर घड़ा गजडंबर, वजित्रि भर हैमर भार वेस । घाऊगमि हिंदूआ ऊपरि, दससहंसि नवसहंसउ देस ।—दूदो

उ०—३ नवसहंसा दससाहसा, गेळ गया राज भोग । प्रहियै री मदसा गई, ज्यां उप्रहियै सोग ।—रा रू.

उ०—४ हिंदुवइ राइ देवाळि हथ, सांकड़उ कियउ सुरिताण सथ । आपणइ पाणि आपणइ अंगि, नवसहस धणी आगन निहंगि ।

—रा.ज.सी.

उ०—५ कळि वाधी जैतमल कळोधर, गज फौजां ढोहण गहण । नमहर भर ऊपरि नवसहसो, साइ घोड़ायजै भांण सण ।

—राठौड़ नरपाळ पांचावत रो गीत

रू०भे०—नवसाहसो ।

नवसादर—देखो 'नौसादर' (रू.भे.)

नवसाहसो—देखो 'नवसहंस' (रू.भे.)

उ०—१ मताग पद्टग भणी निहंग छिपती मझरि, अधिपति असंग भुज तेण पूजो । सुरंग आवां लियां जोध नवसाहसो, तुरंग मांका लियै 'कमो' दूजो ।—अनोपसिंह सांदू

उ०—२ धायो असंग नवसाहसो । गेहि सुरंग दसगइण ।—गु.रू.बं.

नवसूज-सं०पु० [सं० नवसृज] कामदेव, अनंग।
नवहत्य—देखो 'नवहत्थो' (मह० रू.भे.)
नवहत्थो-वि० [सं० नव हस्त] (स्त्री० नवहत्थी) नौ हाथ का (लंबा)
उ०—१ नवहत्थी झोक रा, मसत फीफरा भरारा। बगला उरली विहूं, वगलि नीकळै छिकारा।—सू.प्र.
उ०—२ खीरोदक ततखेव मांहां, आप्यां लूंछरण अंग। पछइ पटुलां पहिरणइ, नवहत्यां नवरंग।—मा.कां.प्र.
सं०पु०—१ सिंह, शेर।
उ०—१ नवहत्थो मत्थो वडो, रोस झटक्के रार। ओ कूंभाथळ ऊपरा, हाथळ वाहणहार।—बां.दा.
उ०—२ कळह घणा हो कटक नूं, सूछम गणै समाथ। नवहत्था वाळी नरां, है छाती सो हाथ।—बां.दा.
२ वीर, बहादुर।
रू०भे०—नवहथो, नोहतो, नोहत्थो, नोहथो, नोहथ्थो।
मह०—नवहत्थ, नवहथ, नवहथेस, नवहथ्थ, नोहतेस, नोहत्थेस, नोहथेस।
नवहथ—देखो 'नवहत्थो' (मह., रू.भे.)
उ०—जड़ी तुपक उत मंगज के, पड़ी भ्रकुट परमांण। नवहथ वेहरी नींसरी, पापणि ले संग प्रांण।—सिववक्स पाल्हावत
नवहथो—देखो 'नवहत्थो' (रू.भे.)
उ०—सहै न किणरी सीख, हाक सिर नवहथा। गाहै घड़ा गयंद, मयंद डाला मथा।—सिववक्स पाल्हावत
नवहथ्थ—देखो 'नवहत्थो' (मह., रू.भे.)
उ०—दवै रद खोट न ओट दकूळ, फबै हंसि होठ चंडयां मुख फूल। हुकाळत बीसहथ्थां नवहथ्थ, रूड़ा सुखपाळक हालत रथ्थ।—मे.म.
नवांकोट, नवांकोटि—देखो 'नवकोट, नवकोटी' (रू.भे.)
उ०—जंगम पाखरां सजै नच वीर खेळा जठै, उखेला समै येळा रखै ओट। जोवजो 'सांवतो' भोम भेळा जठी, कनोजां नमै चेळा नवांकोट।
—जसजी आढ़ो
नवांणियो-वि० [सं० नव+उष्ण] थन से निकला हुवा ताजा दूध जो कुछ गरम होता है, धारोष्ण।
नवांणु, नवांणू—देखो 'निनांणु' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—नवांणु थया जब पूरा राज।—घ. पत्र
नवांणो- वि० [सं० नवीन] (स्त्री० नवांणी) नवीन, नया, नूतन।
उ०—मांणी माया न ओढ़ा सुवांणी वापरांणी मही, ऊवमांणी जलाल गहांणी जेम हाथ। दवागीरां पातां घरा दुदांणी नवांणी देवै, न लेवै पुरांणी उदकांणी प्रथीनाथ।—दुरगादत्त बारहठ
नवांस-सं०पु० [सं० नवांश] फलित ज्योतिष के अनुसार किसी राशि का नवां भाग जिसका व्यवहार किसी नवजात शिशु के चरित्र, आकार और चिन्ह आदि का विचार करने में होता है।
नवाई—देखो 'निवाई' (रू.भे.)

नवाड़णो, नवाड़बो—१ देखो 'नमाणो, नमाबो' (रू.भे.)
२ देखो 'नवाणो, नवाबो' (रू.भे.)
नवाड़णहार, हारो (हारी), नवाड़णियो—वि०।
नवाड़िओड़ो, नवाड़ियोड़ो, नवाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
नवाड़ीजणो, नवाड़ीजबो—कर्म वा०।
नवाड़ियोड़ो—१ स्नान कराया हुआ. २ देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० नवाड़ियोड़ी)
नवाज—१ देखो 'नमाज' (रू.भे.)
२ देखो 'निवाज' (रू.भे.) (डिं.को.)
नवाजणो, नवाजबो—देखो 'निवाजणो, निवाजबो' (रू.भे.)
उ०—दे दे रीझ कविंदां नूं नवाज दीधा, सोभाग हजारां लीधा ताळै सोभवांन। हजारां भाराथ कीधा भूरं उभे राहां हूंत, उभै राहां हूंत कीधा हजारां आसांन।—चांवडदान महडू
नवाजणहार, हारो (हारी), नवाजणियो—वि०।
नवाजिओड़ो, नवाजियोड़ो, नवाज्योड़ो—भू०का०कृ०।
नवाईजणो, नवाईजबो—कर्म वा०।
नवाजियोड़ो— देखो 'निवाजियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० नवाजियोड़ी)
नवाणो, नवाबो—१ स्नान कराना।
२ देखो 'नमाणो, नमाबो' (रू.भे.)
उ०—जंगळ ईस कहाये जेतै, तव पद सीस नवाये तेते। बरतमान नृप 'बंग' महाबळ, पाघ पराग घरत चरनोत्पळ।—मे.म.
नवाणहार, हारो (हारी), नवाणियो—वि०।
नवायोड़ो—भू०का०कृ०।
नवाईजणो, नवाईजबो—कर्म वा०।
नवायोड़ो—१ स्नान करवाया हुआ. २ देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० नवायोड़ी)
नवात-सं०स्त्री० [देशज] मिश्री।
नवादी-सं०स्त्री [सं०नव+आदि] १ नववधू २. तरुणी।
वि०स्त्री०—नयी, नूतन।
नवादो—वि० [सं० नव+आदि] (स्त्री० नवादी) नवीन, नया, नूतन।
उ०—घोड़ा आसवारां राख बाकी सोल जादा। तोपां की तयारी सोर सीसो ले नवादा।—शि.वं.
(स्त्री० नवादी)
सं०पु०—नवयुवक, तरुण।
नवाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)
नवाबजादो—देखो 'नव्वाबजादो' (रू.भे.) (स्त्री० नवाबजादी)
नवाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)
नवायो—देखो 'निवायो' (रू.भे.)
नवार—देखो 'निवार' (रू.भे.)

नवास—देखो 'निवास' (रू.भे.)
नवास-मंत्र-सं०पु० [सं० नवार्णमंत्र] नौ अक्षर का मंत्र।
नवासणो, नवासबो—देखो 'निवासणो, निवासबो' (रू.भे.)
उ०—देसी निवसर नरद नवासै, बरजो नाग पुनारै। मोतडियार मना सब माडा, धोम न दाखै धारै।—कविराजा बांकीदास
नवासणहार, हारो (हारी), नवासणियो—वि०।
नवासियोड़ो, नवासियोड़ो, नवास्योड़ो—भू०का०कृ०।
नवासीजणो, नवासीजबो—कर्म वा०।
नवासियोड़ो—देखो 'निवासियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नवासियोड़ी)
नवासी-सं०स्त्री० [देशज] देशी सूत की बनी हुई वह चादर की टुकड़ी जो रजाई में लगी होती है।
नवाड़—देखो 'निवाड़' (मह., रू.भे.)
नवाड़ो—देखो 'निवाड़ो' (रू.भे.)
उ०—थोरा चंगी पवाड़ा नवाड़ा धोप भरी थोग, दूध मीनै साळा माळा मुजामा जे दीठ। दुजामा बिमाला भाला भचाळा दताणी दडा, कर माता जंगी गंजा दामा माता रीठ।
—राजा रायसिंघ भाला (सादड़ी १) रो गीत
नवायणो, नवायबो—देखो 'नमाणो, नमाबो' (रू.भे.)
नवायोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नवायोड़ी)
नवाब—देखो 'निवाब' (रू.भे.)
नवासो-सं०पु० [फा० नवास:] (स्त्री० नवासी) बेटी का बेटा, दौहित्र (मेवात)
नवाह-वि० [सं०] नौ दिन का, नौ दिन सम्बन्धी।
यौ०—नवाह पाठ।
नवि—अव्य० [सं० न+अपि] १ न, नहीं। उ०—१ तुलसीपान कान्ह नवि पूज्या, जीवदया नवि पाळी। अंगी करीया वचन कह लोप्या, कह रह्या बाहुरि।—कां.दे.प्र.
२ नहीं तो। उ०—बादल आवत ताहिया, बोलण लागा मोर। कंत तूं घरि आव नवि, जोबन कीयउ जोर।—ढो.मा.
३ देखो 'नवी' (रू.भे.)
नवियोड़ो—देखो 'नमियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नवियोड़ी)
नविरो—१ देखो 'नमियो' (रू.भे.)
२ देखो 'नव' (अल्पा०, रू.भे.)
नवी—वि०स्त्री० [सं० नव] १ नवीन, नूतन। उ०—१ आवै घन ज्यां आवंदा, जिकै नवी नित जोड़। अदभुत दुर लालच अठै, कळा दिखावै कोड़।—बां.दा.
उ०—२ कनक्या बहि देवही, मगरन जाल महबर। माक दाड़म फूल सिन, निरखिन नवी दरबार।—ढो.मा.
रू०भे०—नुई, नूंई, नूवी।
नवीन-वि० [सं०] १ नया, नूतन (डि.को.) २ हाल का, ताजा। ३ विचित्र, अद्भुत, अपूर्व।
रू०भे०—नवीनू।
अल्पा०—नवीनो, नवेलो, नुहालो, नुहेलो।
नवीनता-सं०स्त्री० [सं० नवीनत्व] नूतन या नया होने का भाव, नवीनता, नूतनता।
नवीना, नवीनी-सं०स्त्री० [सं० नवीना] १ नव वधू, दुल्हन
२ नवयौवना।
वि०स्त्री०—नयी, नवीन।
अल्पा०—नवेली।
नवीनू—देखो 'नवीन' (रू.भे.)
उ०—बेटो एक तेतणी, कूंति जायो ती नवीनूं। पैला पोदि सीनूं ती जर्क में दूरि कीनूं।—शि.वं.
नवीनो-सं०पु० [सं० नवीन] (स्त्री० नवीनी) १. नवयुवक, नौजवान।
२ देखो 'नवीन' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत, पूर जग्यो परकास नवीनो।
—ध.व.ग्रं.
नवीसंदो—देखो 'नवसंदो' (रू.भे.)
उ०—बीजो कलम रो साथ वजीर नवीसंदा पे पवन ज्यूं जाणजे।
—सी.प्र.
नवीस-सं पु० [फा०] लिखने वाला, लेखक।
नवीसी-सं०स्त्री० [फा] लिखने की क्रिया या भाव, लिखाई।
नवे—देखो 'नेक' (रू.भे.)
नवे'क-वि० [सं० नव+एक] नौ के लगभग।
नवेक्षेत्र- [?]
उ०—गुरउपदेस आवइं, परमतत्व न हावइं। नवेक्षेत्रे वेगइ धन, जिसिउ बावनुं चंदन हरया सीतळ मन।—व.स.
नवेतंद—देखो 'नवगंड' (रू.भे.)
नवेद—देखो 'निवेद' (रू.भे.)
उ०—राजा पूजै सिव सकति, चाढ़े धूप नवेद।—रा.रू.वं.
नवेड़ो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)
उ०—रात्र मांनू कूड़ो कळंक दे चोरी रो काढ़ियो थो सु हमें साच कूड़ रो भातकरण में पूछे नै नवेड़ो कीजै।—नैणसी
नवेनाथ-सं०पु०—श्री कृष्ण ?
उ०—विद्राणी नवेनाथ जाणी वहेला, हुया दोढ़िया धेन गोवाळ हेला। जगाड़े जसोदा जदूनाथ जाणी, महिमाट धूमै नवेनिद्धि माणी।
—ना.द.
नवेनिद्धि, नवेनिधि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—१ विहांणै नवेनाथ जागो वहेला, हुवा दोढिवा घेन गोगाळ हेला। जगाड़ै जसोदा जदूनाथ जागो, महीमाट घूमै नवेनिधि मागो।
—ना.द.

उ०—२ सांम्हउ जिण कळस आंणियउ सुंदर, वंदायउ कर भली विधि। जनम जनम वैकुंठ पांमिस्यइ, वळै वंदावइतां नवेनिधि।
—महादेव पारवती री वेलि

नवेरु, नवेरौ—वि० [सं० नवतर, प्रा० नवअर, अप० नवयर] नवीन, नया, नूतन। उ०—१ आखडीए रस कजळ करइं नवेरु मार, कांनि मोतीलग खींटली, कंठि नगोदर हार।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ गोरी अवे रमइं, करइ नवेरा भोग। अणहिलवाडी पुर पाटणि, वसइं ति वेधिया लोक।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—३ जरासंध विरताव वसावी, वसावी द्वारका नगरी नवेरी।
—स.कु.

नवेली—सं०स्त्री० [सं० नवीन] १ नवयोवना, तरुणी।

उ०—मोरा मिल विहार व्रजपत संदेसो। गावै नवेली नवेली व्रज त्रिया।—रसीलैराज

२ नव वधू, दुल्हन।

वि०स्त्री०—नवीन, नूतन।

उ०—फूली वसंत रसराज नवेली।—रसीलैराज

रू०भे०—नुहेली।

नवेलौ—सं०पु० [सं० नवीन] (स्त्री० नवेली) १ नौजवान, तरुण।

उ०—नव द्वारां रा रसिक नवेला, अलवत भग इधकाई। देख विचार द्वार दसवें दिस, बिलकुल राख बगाई।—ऊ.का.

रू०भे०—नुहालौ, नुहेलौ।

२ देखो 'नवीन' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—बालम मिळण नै परदेस चलण री, करी नै तयारी म्हांरी आल, घड़ीयक मुखड़ो दिखाय नवेलौ, बिछुर गयो जांणै देकर ताळी।
—रसीलैराज

नवै—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

नवैग्रह—देखो 'नवग्रह' (रू.भे.)

उ०—१ तळै पग छांह नवैग्रह तांम, पगां दिगपाळ करंत प्रणांम। वडा जोगींद्र वंछै पग वास, तुहाळा पग्ग न मेल्हूं तास।—ह.र.

उ०—२ प्रसन नवैग्रह सिव प्रसन, हरि आग्या सुर राय। आगम जनम कुमार रै, उच्छव प्रगट्या आय।—रा.रू.

नवैनिध, नवैनिधि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—१ तळोसै पग्ग नवैनिध तुम्ह, मोटा सिध साधक जांणै भ्रम्म। महम्मा जांणै ब्रह्म महेस, पगां रिख लाग करै नित पेस।—ह.र.

उ०—२ वधै दुजां सू त वांणि, वधै कवि वांणि सुजस विध। वधै अस्ट सिध विमळ, नरिंद घरि वधै नवैनिध।—सू.प्र.

नवोड़ौ—देखो 'नवौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—जिकण मैं वी तेली आ सांझ, वितांणी काळी रातां लाख। नवोड़ौ आयो नीं परभात, भुलांणी रात रात में झांख।—सांझ

(स्त्री० नवोड़ी)

नवोढ़, नवोढ़ा—सं०स्त्री० [सं० नव+ऊढ़ा] १ भय और लज्जा के कारण नायक के पास नहीं जाना चाहने वाली वह नायिका जो साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत ज्ञात योवना नायिका का एक भेद है।

उ०—लोभांणी नवोढ़ नेह नसा रा फचोळा लेती, भासै अंग अचोळा सचोळा लेती भाव। करां केतमक्र रैल चोळा लेती तूंजी कना, नक्र रै मचोळा सूं हचोळा लेती नाव।—र. हमीर

२ नव विवाहिता स्त्री, वधू। उ०—जाय नवोढ़ा सासरै, आंसू नांख उसास। मावड़िया जावै मुहम, इण विध हुवै उदास।—बां.दा.

३ नवयोवना, नवयुवती, जवान स्त्री। उ०—१ आधी रात न जक पड़ै, लूआं थारै कैर। उठ भागे तड़कै बडै, बडो नवोढ़ा वैर।—लू

उ०—२ कहो लुवां कित जावसी, पावस घर पड़ियांह। हियै नवोढ़ा नार रै, बालम बीछड़ियांह।—अज्ञात

नवोतरौ—सं०पु० [?] नौवां वर्ष।

नवौ—वि० [सं० नव+रा०प्र०ओ] (स्त्री० नवी) १ जो थोड़े समय से बना, चला या निकला हो, पुराने का उल्टा, हाल ही का, नूतन, नवीन, ताजा।—डि.को.

उ०—हेको काज न व्है सकै, आवौ संत असंत। मावड़िया खिण खिण मता, नवा नवा निरमंत।—बां.दा.

मुहा०—नवौ करणौ—पुराने (खाते आदि) लिखे हुए को हटा कर नया लिखना, पुनः लेख-बद्ध करना।—महाजनी

कपड़ा आदि फाड़ देना, जला देना अथवा किसी वस्तु को तोड़ डालना। (प्रायः अशुभ बात मुंह से निकालने से बचने के लिये इसका मुहावरे का प्रयोग किया जाता है।)

२ पहले किसी के द्वारा काम में नहीं लिया हुआ, पहले किसी के द्वारा व्यवहार में नहीं लाया हुआ।

ज्यूं—आगली गिलास तो फोड़ दी, आ नवी लाया हां।

३ जो हाल ही में सामने आया हो, जो पहले तो विद्यमान था किन्तु जिसका ज्ञान अभी हुआ हो।

ज्यूं—मांनसिहजी रै समै री एक नवी किताब मिळी।

उ०—सांम्हां आया राठवड़, कोप अछाया वीर। संग मिळियौ 'जोधौ' 'सिवौ', कळहण नवौ कंठीर।—रा.रू.

४ जिसकी शुरूआत पुनः हुई हो, जो फिर से चला हो, जिसका आरम्भ पुनः किन्तु हाल ही में हुआ हो।

ज्यूं—रींछड़ै सूं बच'र नवौ जीवण पायो। कालै बीज रो नवो चांद ऊगसी। गरमी री छुट्टियां पछै नवै सिरै सूं पढ़ाई शुरू व्है जावैला।

५ वह जो पहले वाले के स्थान पर सामने आया हो, पहले वाले से भिन्न। ज्यूं—हर साल जूना छोरा पढ़ाई पास कर'र जाय परा'र नवा आय जावै।

६ जो पुराने नाम के बदले में प्रयोग में आने लगा हो।

[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—[illegible] नवौ, नूंवौ, नुवौ ।
अल्पा०—नवोड़ौ ।
मह०—[illegible] ।

नव्वू—देखो 'नवौ' (रू.भे.)
उ०—[illegible] मांझ में पड़े, [illegible] —ऊ.का.

नव्वांनु—देखो 'निवांणु' (रू.भे.)
उ०—[illegible] 'विमल गिर' पाग । नव्वांनु [illegible] मन गाढ़ी पाग ।—ए.जै.का.सं.

नव्वाणौ—देखो 'निव्वाणौ' (रू.भे.) (न.र.)

नव्वै—१ देखो 'नव' (रू.भे.)
२ देखो 'नवौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—नून रस गुरन नूनौ गमान, नूनौ ये दुल्लह नव्व जांन । नूनौ प्रताप द्विज मानमान, नूनौ नज पिरलौ विनंद सांन ।—वि.सं.

नव्वनाथ—देखो 'नवनाथ' (रू.भे.)
उ०—उरण अमर उद्धरण, वेद ब्रह्मा गायाळण । दळ दाणव निरदळण, दइव दानव भौ टाळण । [illegible] जगकरण, सबळ देता साधारण, नव्वनाथ निमधिपण निविध सोहा ऊजावण ।—ज.ति.

नव्वनीद्धि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)
उ०—देवी पोर रूपा धणा नवनिद्धि, देवी सकळा अनुकळा सव्व सिद्धि । देवी ब्रज विमोहणी बोल वाणी, देवी तोतला गूंगला बोलवाणी ।—देवि.

नव्वाब-सं०पु० [अ०] १ किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिए बादशाह की ओर से नियुक्त प्रतिनिधि ।
उ०—हरनाथ मोगलौ माहवीर, धुर पमंग जोगड़ौ रण सधीर । [illegible] तद दळ अनंक, नव्वाब हुंत मिळिया निसंक ।
—सि.गु.रू.
वि०वि०—मुगल सम्राटों ने अपने प्रान्तीय प्रतिनिधियों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया था ।
२ छोटे मुसलमानी राजाओं द्वारा अपने नाम के आगे लगाई जाने वाली एक उपाधि ।
३ अंग्रेजों के समय में अंग्रेजों द्वारा भारतीय मुसलमान अमीरों को दी जाने वाली एक उपाधि ।
वि०—खूब खर्च करने वाला, अमीरी ढंग व शान-शौकत से रहने वाला । उदा०—आपरी काई बात, आप तो नव्वाब साहब है सो छोटा-मोटा काम रौ विचार करै नहीं ।
रू०भे०—नबाब, नब्बाब, नवाब, निबाब, निब्बाब, निवाब, निव्वाब, नौबाब ।

नव्वाबजादौ-सं०पु०यौ० [अ० नव्वाब+फा० जादः]
(स्त्री० नव्वाबजादी) नवाब का बेटा, नवाब का पुत्र ।
वि०—जो बहुत शौकीन हो (व्यंग्य) ।
रू०भे०—नवाबजादौ, नब्बाबजादौ, नवाबजादौ, निबाबजादौ, निव्वाबजादौ, निवाबजादौ, निव्वाबजादौ ।

नव्वाबी-सं०स्त्री० [अ० नव्वाब+रा०प्र०ई] १ नवाब का कार्य ।
क्रि०प्र०—करणी ।
२ नवाब का पद ।
क्रि०प्र०—मिळणी ।
३ अमीरों की सी फिजूल-खर्ची का नाम, अमीरों का सा अपव्यय ।
४ बहुत अधिक अमीरी ।
रू०भे०—नवाबी, नब्बाबी, निबाबी, निव्वाबी, निवाबी, निव्वाबी ।

नसंक—देखो 'निसंक' (रू.भे.)
उ०—अद्र जाती पुरी सीत मोती खोण पंका मळै, खास मोती गुराळी नसंका घुगे गूद । बंका कोप लंका राम मळै बंका रोत एम, क्रोध फंका असंका नमका लिये गूद ।—बद्रीदास खिड़ियो

नस-सं०स्त्री० [सं० स्नस] १ शरीर में पेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों या अस्थि आदि कड़े स्थानों से जोड़ने वाला तंतुओं का लच्छा या बंध. २ शरीर के भीतर रक्तवाहिनी नली ।
उ०—नसां काढ लीवी नसा, नसा कियो सब नास । नसा ल्हाकिया नरक में, अड़ी नसां में आस ।—ऊ.का.
मुहा०—नस नस में-सारे शरीर में, सर्वांग में ।
३ पत्तों के बीच में दिखाई देने वाले पतले रेशे या तंतु ।
४ गरदन, ग्रीवा ।—डि.को.
उ०—१ ढळती उमर वाळे एक सांकड़ी अंधारी गळी में बड़'ब धोमै-धोमै अेक घर-रै किंवाड़-री कड़ी खड़खड़ायी । टाणळै ऊपर-सूं किणी नस कां'ढ कैयौ—ठैरौ, आयौ ।—वरसगांठ
उ०—२ हुतरां नै हुकम हुवै छै । कुतां रा डोर छूटै छै । लाहोरी ताजी खूब वांण विलजा पहाड़ी । जिकां री गूढ़ड़ब मोड़-नाळ, हाथ भर नस, बड़ पांन जिमा कांन ।—रा.सा.सं.
५ देखो 'नासा' (रू.भे.)
६ देखो 'निस' (रू.भे.)
उ०—नस महल न पोढ़ै प्रसण नचींता, विमरै गिरे वसाव किया । थम लखो·········धीठरै, सोमोदा राव संकिया ।—मेंगो बारहठ
रू०भे०—नह ।

नसचर—देखो 'निसचर' (रू.भे.)

नसधार, नसधारी—देखो 'निसधारी' (रू.भे.)—डि.को.

नसणौ, नसबौ-क्रि०अ० [सं० नश] नष्ट होना, नाश होना ।
उ०—१ मखियो मड़ मकरंद माधवी, नंद गुनन पुन मधप नसंत । बलियो रहे वाड़ियां वागां, बरसांणे गाजतो वसंत ।—बां.दा.
उ०—२ मकर धनम नरम दश मदन मान, तरन मदन जग भय

नसत । तन मन वय सम सजन सहज त्रय, लछण भरथ अरिघण लसत ।—र.ज.प्र.

नसणहार, हारो (हारी), नसणियो—वि० ।

नसवाड़णो, नसवाड़बो, नसवाणो, नसवाबो, नसवावणो, नसवावबो, नसाड़णो, नसाड़बो, नसाणो, नसाबो, नसावणो, नसावबो—प्रे.रू. ।

नसिओड़ो, नसियोड़ो, नस्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नसीजणो, नसीजबो—भाव वा० ।

नसतरंग-सं०पु० [सं० स्नस्+तरंग] पीतल का बना एक प्रकार का बाजा विशेष जिसका आकार शहनाई का सा होता है ।

नसतर-सं०पु० [फ़ा० नश्तर] शल्य-चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का छोटा और तेज चाकू जिसके दोनों ओर धार होती है और आगे से नुकीला होता है ।

उ०—गंज सीसा घण गळै, भरै सच्चळ भरारां । गंज पड़ै गोळियां, विखम गोळां विसतारां । नसतर धर नायकां, मिळै पायकां समेळा । मेवा जेसळ मिळै, ऊर रूपा सम चेळा ।—सू.प्र.

रू०भे०—नस्तर, निसतर, निस्तर ।

यौ०—नसतर-विद्या ।

नसतार—देखो 'निस्तार' (रू.भे.)

नस-दरवी-सं०पु० [राज० नस=गर्दन+सं० दर्वी=सांप का फन] सांप, सर्प (अ.मा.)

नसबिंब—देखो 'निसाबिंब' (रू.भे.)

नसलंब, नसलंबड़-सं०पु० [रा. नस+सं० लंब] ऊंट, उष्ट्र (डि.को.)

अल्पा० नसलांबड़ ।

नसल-सं०स्त्री० [अ० नस्ल] १ वंश, कुल ।

उ०—ब्रह्मा जो न करत विदर, जग मांहे जगजीत । असल नसल री ऊघड़त, रूड़ापो किण रीत ।—बां.दा.

२ संतान, औलाद । उ०—मोटा घरां अजादा मिटगी, वंगळां रै सो वारी रे । गोला जुगळी मांय गई जद, नसल बिगड़गी न्यारी रे ।—ऊ.का.

वि०—निर्लज्ज, बेशर्म, नीच ।

उ०—नगारा रोड़ चढ़ जाय ऊभो नसल, फतै री वार सरदार पड़िया फसळ । आद हूं न आया पूठ देतां असल, माजनो गमायो मलो आठो मसल ।—महादांन महड़ू

रू०भे०—निसल ।

नसलांबड़—देखो 'नसलंब' (अल्पा., रू.भे.)

नसवार-सं०स्त्री० [?] सूंघने की तबाकू के पीसे हुए पत्ते, सूंघनी ।

नसाखोर-सं०पु०यौ० [अ०+फ़ा] नशे का सेवन करने वाला, नशेबाज ।

नसाड़णो, नसाड़बो—देखो 'नसाणो, नसाबो' (रू.भे.)

उ०—इसइं कहियै ऊपरि ताहरां नाई सहि नसाड़िया ।—द.वि.

नसाड़णहार, हारो (हारी), नसाड़णियो—वि० ।

नसाड़िओड़ो, नसाड़ियोड़ो, नसाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नसाड़ीजणो, नसाड़ीजबो—कर्म वा० ।

नसणो, नसबो—अक०रू० ।

नसाड़ियोड़ो—देखो 'नसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नसाड़ियोड़ी)

नसाचर—१ देखो 'निसाचर' (रू.भे.) (डि.को.)

२ देखो 'नासाचर' (रू.भे.)

उ०—चाचर मांगणहार नसाचर, चतुर प्रेत ग्रवै निरवांण । सकति समाळि सिध्दि ग्रीधाणि, 'रतनै' मोकळिया आरांण ।—दूदो

नसाणो, नसाबो-क्रि०अ० [सं० नश्] १ नाश को प्राप्त होना, नष्ट होना । उ०—दादू चंदन बावना, बसै बटाऊ आइ । सुखदाई सीतळ किये, तीन्यौं ताप नसाइ ।—दादूबांणी

२ बिगड़ जाना, खराब हो जाना ।

क्रि०स० ['नसणो' व 'नासणो' क्रियाओं का प्रे०रू०] ३ नष्ट कराना, नाश कराना. ४ भगाना ।

नसाणहार, हारो (हारी), नसाणियो—वि० ।

नसायोड़ो—भू०का०कृ० ।

नसाईजणो, नसाईजबो—कर्म वा० ।

नसणो, नसबो—अक०रू० ।

नसाड़णो, नसाड़बो, नसावणो, नसावबो—रू०भे० ।

नसाप(फ)—देखो 'इंसाफ' (रू.भे.)

उ०—सबळा पकड़ै जकड़ै सांकळां, निबळा कीजै अदल नसाप ।—जवांनजी आढ़ो

नसापत—देखो 'निसापत' (रू.भे.)

उ०—साखी रै भांण नसापत सारै, कीध महाजुध क्रीत सकांम । साच तको कज सांधां सारत, राच महीप सु रांमण रांम ।—रा.ज.प्र.

नसाबाज—देखो 'नसेबाज' (रू.भे.)

नसायोड़ो-भू०का०कृ०—१ नाश को प्राप्त हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ बिगड़ा हुआ, खराब हुवा हुआ. ३ नाश कराया हुआ, नष्ट कराया हुआ. ४ भगाया हुआ ।

(स्त्री० नसायोड़ी)

नसावणो, नसावबो—देखो 'नसाणो, नसाबो' (रू.भे.)

नसावणहार, हारो (हारी), नसावणियो—वि० ।

नसाविओड़ो, नसावियोड़ो, नसाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नसावीजणो, नसावीजबो—कर्म वा० ।

नसणो, नसबो—अक०रू० ।

नसावियोड़ो—देखो 'नसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नसावियोड़ी)

नसि—देखो 'निसा' (रू.भे.)

उ०—भरसारिद्द सूं भद्रवइ मासि, हींडोळाटइ करइ विलास । नसि अंधारी विजळी खवइं, गमे गमे दादर डांलवइं ।—प्राचीन फागु-संग्रह

[illegible] [illegible] १ [illegible] में
[illegible] (जैन)।
[illegible] (जैन)।
[illegible]
[illegible]

[illegible]—[illegible] हुआ हुआ, [illegible] हुआ हुआ।
([illegible])

[illegible]—कठोर अथवा कंकरीली भूमि पर [illegible] के कारण खुर का छिल छिल कर निरंतर [illegible] से अंग की [illegible] जाना।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
उ०—[illegible] नसीन [illegible], मैं पायगाह चोड़ै दै, चोड़ै हुवै [illegible] दै।—[illegible]-प्रकास

नसीन—वि० [फा० नशीन] १ बैठा हुआ. २ बैठने वाला।
वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दों के अंत में ही होता है।
उदा०—[illegible] नसीन, तखत नसीन।

नसीनी—सं०पु० [फा० नशीनी] बैठने की क्रिया या भाव।
वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग भी यौगिक शब्दों के अंत में ही होता है। उदा०—[illegible] नसीनी, तखत नसीनी।

नसीब—सं०पु० [अ०] भाग्य, प्रारब्ध (डि.को.)
उ०—[illegible] पातसाह री जीव देख दया आई सो पताका सूं बांध तोल [illegible], चोरी मालूम हुवो।—साह रामदास री वारता
मुहा०—नसीब-फूटणो, हत-भाग्य।

नसीबर—देखो 'नसीहत' (रू.भे.)

नसीलो-वि०पु० [अ० नश्शः+ईला प्र०] (स्त्री० नसीली) १ नशा उत्पन्न करने वाला, मादक. २ जिस पर नशे का प्रभाव हो।
उ०—[illegible] कर सुगाया मनव्हाई मस्त हियोड़ा जांणै हुवा ईंग नसीली [illegible]।—[illegible]

नसीहत—सं०स्त्री० [अ०] उपदेश, शिक्षा, सीख, शुभसम्मति।
रू०भे०—नसीत, नसीयत।

[illegible]—सं०पु० [फा०] पारसी मजहब को मानने वाले वे व्यक्ति जो मुर्दे उठाने आदि का कर्म करते हैं। (मा.म.)

[illegible]—वि० [अ० नश्शः+फा० बाज] वह जो निरंतर किसी मादक पदार्थ का सेवन करता हो।
रू०भे०—[illegible]।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
उ०—[illegible], जो सार मर्क [illegible] बाकड़ो [illegible] मोढै, [illegible] नसीली [illegible]।—बा.दा.

[illegible]—वि० [अ० नश्शः+रा०प्रत्य] नशाखोर, नशेबाज।

नसो—सं०पु० [अ० नश्शः] १ मादक पदार्थ के सेवन से उत्पन्न होने वाली उन्मत्तता।
उ०—मद चढ़ि पोरहिया नीदाला नैंण, नसो करि मैंस मरुयो नए नैंण।—बे.म.
मुहा०—१ नसै मोड़ै होणो—गुप्त मंत्रणा करना, गुप्त वार्तालाप करना. २ नसो उतरणो—नशे का प्रभाव हटना, मादक पदार्थ के प्रभाव का नष्ट होना. ३ नसो किरकिरो होणो—किसी विघ्नकारक बात के होने से नशे का आनंद बीच में ही मिट जाना, नशा करते समय विघ्न पड़ना. ४ नसो चढ़णो—नशे का होना, मादक पदार्थ के सेवन करने का प्रभाव होना. ५ नसो छाणो—भली प्रकार मादक पदार्थ का प्रभाव होना, मस्ती चढ़ना, उन्मादकता आना. ६ नसो जमणो—अच्छी तरह से नशा होना. ७ नसो टूटणो—नशे का प्रभाव हट जाना, नशा उतरना।
२ वह पदार्थ जिसका सेवन करने से मादकता आती हो, मादक द्रव्य।
उ०—नसा काढ़ सीवो नसा, नसा किये सब नास। नसा न्हाकिया नरक में, पड़ी नसां में प्रास।—ऊ.का.

नसिचत—देखो 'निसिंचत' (रू.भे.)
उ०—नसिचत पतिव्रत लोक नेम। प्रत्येक करहि परलोक प्रेम।
—ऊ.का.

नस्ट-सं०पु० [सं० नष्ट] पिंगल शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा वर्ण मात्रा प्रस्तार के भेद का रूप जाना जाता है।
वि०—१ जो बरबाद हो गया हो, जिसका नाश हो गया हो. २ अधम, नीच, दुष्ट. ३ जो दिखाई न दे, जो गायब हो गया हो, जो अदृश्य हो।
रू०भे०—नट्ट, निस्ट।

नस्टचंद्र—वह चंद्र जो भादों मास के दोनों पक्षों की चतुर्थी को दिखाई देता हो। (अशुभ)
वि०वि०—कुछ लोग भादों मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी के चंद्रमा को ही नष्ट चन्द्र मानते हैं।

नस्टजातक—सं०पु० [सं० नष्टजातक] फलित ज्योतिष की एक प्रकार की क्रिया जिसके द्वारा ऐसे मनुष्य की जन्म-कुण्डली बनाई जाती है जिसके जन्म, समय, तिथि और नक्षत्रादि का कोई पता न हो।

नस्टदेव—सं०पु० [सं० नष्टदेव] दुष्ट देव।

नस्ट-बुद्धि—वि० [सं० नष्ट-बुद्धि] मूर्ख।

नस्ट-भ्रस्ट—वि० [सं० नष्ट-भ्रष्ट] जो बिलकुल नष्ट हो गया हो।
सं०पु०—नाश, ध्वंस?

नस्टात्मा—वि० [सं० नष्टात्मा] दुष्ट, नीच, खल।

नस्तर—देखो 'नश्तर' (रू.भे.)

नसतरणो, नस्तरबो—क्रि०अ० [सं० निस्तरणम्] १ समाप्त होना।
उ०—ऊन्हाळ प्रावित मोहामणउ, सगी भांनज नट सोहामणउ। पाउल परिमल मनु विस्मरई, रात्रि पाराह चंद न नसतरई।
—नळदवदंती
२ देखो 'निस्तरणो, निस्तरबो' (रू.भे.)

निसतरणो, निसतरबो—रू०भे० ।

नस्तरियोड़ो—भू०का०कृ०—१ समाप्त हुवा हुआ ।

२ देखो 'निस्तरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नस्तरियोड़ी)

नस्तार—देखो 'निस्तार' (रू.भे.)

नस्यां—देखो 'नसियां' (रू.भे.)

नस्वर—वि० [सं० नश्वर] नाश होने वाला, मिटने वाला ।

नस्वरता—सं०स्त्री० [सं० नश्वरता] नाश होने का भाव ।

नहं—देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—तीन महिनां रहिया ताकं, लड़ण बीड़ो किणी नहं लियो ।

—आणंदसिंघ सोळंकी री गीत

नहंकार—अव्य०—देखो 'नंहकार' (रू.भे.)

नहंग—१ देखो 'निहंग' (रू.भे.)

उ०—१ पडंते भार पाहड़ ज वडा प्रचंड, ओडवै भुजा डंड नहग आडा ।—गोपाळदास राठौड़ री गीत

उ०—२ ओडै बीर घंटा मातंगां ता जांन आळी, रोड़ै बाज विखमी बाजांन वाळी रीठ । ओक जंगां अैराक लै भुडंडां आजांन आळी, नहंगां राजांन वाळी हाकलै नत्रीठ ।—हुकमीचंद खिड़ियो

यौ०—नहगराज ।

२ देखो 'नंग' (रू.भे.)

नहंगराज, नहंगराजा—देखो 'निहंगराज' (रू.भे.)

उ०—राहां सकाजां अलंगां संग दौड़ में वहंगराजा । ताव तेज झौड़ में नहंगराजा तास ।—हुकमीचंद खिड़ियो

नहंचै—देखो 'निश्चय' (रू.भे.)

उ०—१ देखे नहीं कदास, नहचै कर कुनको नको । रोळायां इकळास, रोळ मचावै राजिया ।—किरपाराम खिड़ियो

नहंचौ—देखो 'नहचौ' (रू.भे.)

नह—१ देखो 'नख' (रू.भे.) (जैसलमेर)

उ०—१ तसु कडि कंचण घग्घरिय, झणणणणणण बाजंतै चरणि हि नेउर रुणझुणइं नहि आलतइ उजंति ।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ करै तिकांरा कांठला, कंठ नृपत कुंवरांह । वघ नहियां ज्यां सिर वणै, कीरत जेण करांह ।—बां.दा.

२ देखो 'नभ' (रू.भे.) (जैन)

३ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—पड़दे घालो पातरां, ठावी ठावी ठौड़ । परणीं नूं नह दो पेटियो, देखो बुध री दौड़ ।—बां.दा.

४ देखो 'नस' (रू.भे.) (जैसलमेर)

नह-कुण—देखो 'निहकुण' (रू.भे., ह.नां.)

नह-कोड—सं०पु०—योद्धा, वीर (डिं.को.)

नहच, नहचय—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)

उ०—नहच वभीख कह्यो नारायण । विन रवि ऊगां जाय वह ।

—र.रू.

नहचळ—वि०—देखो 'निस्चळ' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ नहचळ नांम खुदाय का, कुछ और न बाकी ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ नहचळ अत रहण कना ना रे ना, आदम काळ नदी आ रे आ । खाट म दाट क्यूं खा रे खा, गिर जळ जिम दीहाड़ा गा रे गा ।

—ओपो आढ़ो

नहचे, नहचेण, नहचै—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)

उ०—१ नीची जावै नीर ज्यूं जग नव नहचे जांण, सकळ पदारथ सार री हुवै खिण खिण में हांण ।—बां.दा.

उ०—२ छोटा बड़ा सांणोर री नेम नहीं नहचेण । निमंधै त्रिण दूहा निपट, तवै पंखाळी तेण ।—र.ज.प्र.

उ०—३ प्रेत हुवै जद प्रसन, मोहर रुपिया दे जावै । तारां घटतां तेज जोत जद खंची जावै । रुपिया कंचन जात, हुवै हुंडी रा गरथां, नहचै नांणो नहीं हुवै आरण रा अरथां । परभात भांण ऊगां पछै, किणी न आवै कांम रै । मौकमा कमंध मोटा मिनख, वचन भूत रा दांम रै ।—अरजुणजी बारहठ

उ०—४ जिण तिण री मुख जोय, नहचै दुख कहणो नहीं । काढ़ न दे वित कोय, रीरायां सूं राजिया ।—किरपारांम

नहचौ—सं०पु० [सं० निश्चय] १ धीरता, धैर्य ।

उ०—१ रात दिवस भज रांम नरेसुर, पात राख नहचौ मन पूरौ । ध्रू-धारण कारण लख धूरौ, उधारण रौ किसौ अधूरौ ।—र.ज.प्र.

२ विश्वास, यकीन ।

उ०—२ वाराधिय सेतां बंधण री, कुळ राखस जूथ निकंदण री । दिल तूं 'किसना' जग-वंदण री, नहचौ रख कौसळ-नंदण री ।

—र.ज.प्र.

रू०भे०—नहच्चो, नहच्यो, नैंचो, नैंहचो ।

नहच्चौ—देखो 'नहचौ' (रू.भे.)

उ०—धर रहसी रहसी धरम, खप जासी खुरसांण । 'अमर' विसंभर ऊपरा, राख नहच्चो रांण ।—अब्दुल रहीम खानखाना

नहच्यंत—वि० [सं० निश्चिंत] जिसको किसी प्रकार की चिंता या फिकर न हो, जो चिंता से मुक्त हो गया हो, बेफिक्र ।

उ०—जीवण सुख नहीं जिकां, नहीं ज्यां मुवां मुकत निज । नहीं जिकै नहच्यंत, कदे ज्यां नहीं सरै कज ।—र.ज.प्र.

सं०स्त्री०—निश्चित होने का भाव, बेफिक्री ।

नहच्यौ—देखो 'नहचौ' (रू.भे.)

उ०—निज संतां तारै घणनांमो, नहच्यौ ज्यां नैड़ो घणनांमी ।

—र.ज.प्र.

नहणो, नहबो—क्रि०स०—१ धारण करना, उठाना, उठाये रखना, थामना । उ०—१ कपीलां हणूं देवां दळां सिव सगत, नाग दळ सेस सिर भार नहियो । गरव गाळण तणी ठौड़ अब गाळियो, कुळी खट-तीस धिन पदम कहियो ।—पदमसिंह राठौड़ री गीत

[illegible] ।

उ०—[illegible], [illegible] नहि । [illegible] भई मंदर रई ।
[illegible] । [illegible] सीसमदा हई ।—वेलि

[illegible]—[illegible] (हि.को.)

[illegible]—१ देखो '[illegible]' (रू.भे.)
उ०—[illegible] बिरै, [illegible] नाम । नीर [illegible] ।—[illegible]
२ देखो '[illegible]' (रू.भे.)
उ०—[illegible] केसरी, [illegible] रोम [illegible] । [illegible] । पाव नहरो करण [illegible] ।—[illegible] दादूपंथी

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—[illegible] ऊपर, महद जिके ताह [illegible] ।
[illegible], महरणियो कोरण नह नग ।
—महादेव पारबती री वेलि

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
उ०—[illegible] प्रबळ, [illegible] सबळ । मझिपरियो [illegible] । नार [illegible] नहराव [illegible] रोम विकराळ जड़ा दढ़ ।—सू.प्र.

[illegible]—सं०पु०—१ वह घोड़ा जिसकी पीठ का रंग सफेद हो और [illegible] शरीर का रंग भिन्न हो । (शा.हो.)
२ देखो '[illegible]' (रू.भे.) (अ.मा.)
उ०—१ [illegible], नाको नह मेली महराळ ।
[illegible], [illegible] ऊभो [illegible] ।
—महादान महड़ू
उ०—२ [illegible] पुन [illegible], [illegible] पेर रची ।
[illegible] महराळा [illegible] माट मधी ।—दूदो

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
(स्त्री० [illegible])

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
(स्त्री० [illegible])

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
(स्त्री० [illegible])

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
उ०—१ [illegible], [illegible] रंग विभाग ।
—गो.रू.
उ०—२ '[illegible]' '[illegible]' 'मान' [illegible], '[illegible]' 'ऊदो' 'अनो' 'जैत' हरनाथ । 'जैतसी' बहादर 'केसोरी' 'सीम' भड़, साथ सऊ रहसिया महसिया साथ ।—सांईदान बारहठ

नहसणहार, हारो (हारी), नहसणियो—वि० ।
नहसियोड़ो, नहसियोड़ो, नहस्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नहसीजणो, नहसीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

नहसियोड़ो—देखो 'निहसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नहसियोड़ी)

नहाणो, नहाबो—देखो 'न्हाणो, न्हाबो' (रू.भे.)
उ०—ब्रह्म-हत्यादिक पाप गंगा नहाया छूट जाय पर मित्र सूं कियो विश्वासघात नहीं छूटै ।—सिंघासण-बत्तीसी
नहाणहार, हारो (हारी), नहाणियो—वि० ।
नहायोड़ो—भू०का०कृ० ।
नहाईजणो, नहाईजबो—भाव वा० ।

नहायोड़ो—देखो 'न्हायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नहायोड़ी)

नहाळ—सं०पु० [सं० नर+आलुन] सिंह, शेर (ना.डि.को.)

नहाळणो, नहाळबो—क्रि०स० [देशज] निहारना, देखना, ताकना ।
उ०—शुभ नजर नहाळे सदा पाळे सुकव, जस हुवा ऊबारै भाव जाई । दसकतां बचावै सरी दीवाण रा, पड़ावै मसत कांपै ता चाई ।
—जवानजी आढ़ो
नहाळणहार, हारो (हारी), नहाळणियो—वि० ।
नहाळियोड़ो, नहाळियोड़ो, नहाळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नहाळीजणो, नहाळीजबो—कर्म वा० ।

नहाळियोड़ो—भू०का०कृ०—निहारा हुआ, देखा हुआ ।
(स्त्री० नहाळियोड़ी)

नहावण—देखो 'न्हावण' (रू.भे.)
उ०—कैई जाऊं जळ जमना रै पांणी, ए आइजो उठै नहावण नै । नहावण करजो धोवण करजो, बंसी री टेर सुणावण नै । ये म्हारे घर आवो सांवरा, मातरा मिसरी खावण नै ।—मीरां

नहावणो, नहावबो—देखो 'न्हाणो, न्हाबो' (रू.भे.)
उ०—एकणी छाह नहावै नीर, लहरां धुपै सहरियो रंग । सांझ री लूटण रूप प्रयाग, पयनियो तिरसो वरणै तरंग ।—सांझ

नहि, नहि, नहीं, नही—अव्य० [सं० नहि] निषेध या अस्वीकृति-सूचक शब्द । उ०—१ नेह निवाणै नांखियां, चुगली नहि मिकणाय । लाखां गुण कर देखलो, वह घां नेह वधाय ।—बां.दा.
उ०—२ मिळियो सोनो मंगणां, अवियो फन सो यंक । नितपर कुळ पायो नहीं, तै नहि दूजो लक ।—बां.दा.
उ०—३ मद्द मोगवयूं सही, आपापणूं कीधूं, पर-उत्ता को पामि नहि ये चीयूं दीधूं ।—नळाख्यांन
उ०—४ नैमध नामि देस मनोहर, वीरसेन वसुधेस । प्रांणीमात्र नहीं को दुखियू, जिहां परमिस्ट नरेस ।—नळाख्यांन

उ०—५ जस ग्रपजस जाचक पढ़ै, मांगै चाळ विलूंब। नही चिढ़ै उत्तर न दै, थांम घूंम वो सूंब।—बां.दा.

उ०—६ चिहूं गति तणउ तीहं नहीं कोई गंमु, जिहि चिति एक वसइ जिण धंमु।—चिहुंगति चउपई

रू०भे०—नंहं, नंह, नह, नांय, नांह, नांहि, नांही, नाय, नि, निहि, निही; नुं, नु, नूं, नू, नो, न्ही।

नहुं, नहु–ग्रव्य० [सं० खलु, प्रा० स्लु-क्लु,-खु-हु] निषेध या ग्रस्वीकृति-सूचक शब्द।

उ०—१ तां फुणिंदु फणमंडप मांडइ, जां पडइ गुरुड नइं नहुं फांडइ। तां फिरिउ दळ सहित कुरुवीर, जां न हूं चडउं संगरि धीर।—विराटपर्व

उ०—२ ग्रस्वार फिरतां नहु सूझइ. ए रणांगणि किसी परि भूझइं।—विराट पर्व

उ०—३ गह छंडइ गहिलउ हुग्रउ, पूछइ वळि पूछंत। मारू-तणइ संदेसडइ, ढोलउ नहु पावंत।—ढो.मा.

सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

नहुतरिउ–वि० [सं० निमंत्रित] निमंत्रित (उ.र.)

नहुस–सं०पु० [सं० नहुष] १ इक्ष्वाकुवंशी ग्रंबरीष का पुत्र ग्रौर ययाति का पिता एक राजा जो एक बार इन्द्र का सिंहासन पाकर भी ग्रगस्त मुनि के शाप से सर्प बना. २. एक नाग का नाम. ३. मनुष्य, ग्रादमी।

वि०—१ मूर्ख, जड़. २. नीच।

रू०भे०—नघुस।

नां–ग्रव्य० [सं० न] नहीं। उ०—१ नां मूं बांमण वाणियै री, नां विणजारै री धीय।—लो.गी.

उ०—२ कै तौ मांमला का दांम बेगा लेर ग्राणा। नां तौ खंडपुर नैं छोडि दूरा भागि जाणा।—शि.वं.

उ०—३ नां नारी नां नाह, ग्रदविचला दीसै ग्रपत। कारज सरै न काह, रांडोलां सूं राजिया।—किरपाराम

प्रत्यय—षष्ठि ग्रथवा सम्बन्धकारक का चिन्ह, का।

उ०—१ बीका टीका जोधहर घर जंगळ नां।—मालो सांदू

२. कर्म ग्रौर संप्रदान का विभक्ति प्रत्यय, को।

उ०—१ सुभराज करै त नां सुर सांमिणी, ताहरै नांम सांम्हेई तरां। जयो निमो तुं नां जग-जांमिणि, कतियांणी ग्रादेस करां।—पी.ग्रं.

उ०—२ तूं एकल मल ग्रातमा, तूं सबळो समराथ। तीन भुवन सेवै त नां, नाग नरां सुर नाथ।—पी ग्रं.

नांई–वि० [देशज] समान, तुल्य, जैसा। उ०—एक चलै एक ग्रावही, संसार सराई। उतपत परळै काळ, नट-बाजी नांई।—केसोदास गाडण

रू०भे०—नांय, नाय, न्यांई, न्याय।

२. देखो 'नाई' (रू.भे.)

उ०—कूमठ री हळ चक्र सुरंगी, नांई बीजळी सोवै। काढ़ ऊमरा धरती धारी, ग्राभै नै कांइ जोवै।—चेतमांनखा

नांउ, नांऊ—देखो 'नांम' (रू.भे.)

उ०—दादू द्वै पख दूर कर, निरपख निरमळ नांउ। ग्रापा मेटै हरि भजै, ताकी मैं वळि जांउ।—दादूबांणी

नांक—देखो 'नांख' (रू.भे.)

नांकणौ, नांकबौ—देखो 'नांखणौ, नांखबौ' (रू.भे.)

उ०—गाज गुण बांण नीसांण सर गड़गड़ै, चाल वेहुवै कुटक ग्राविवा चापड़ै। धुणियां सेल भोकै कियौ धूघड़ै, देवड़ां ऊपरै नांकिया देवड़ै।—ग्रज्ञात

नांकर—देखो 'नौकर' (रू.भे.)

(स्त्री० नांकरांणी)

नांकरांणी—देखो 'नौकरांणी' (रू.भे.)

नांकियोड़ौ—देखो 'नांखियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नांकियोड़ी)

नांख–सं०पु० [देशज] वह भूमि जिसमें उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए फसल नहीं बोई गई हो।

रू०भे०—नांक।

नांखणौ, नांखबौ–क्रि० स० [सं० निक्षिपणम्, निक्षेपणं] १ एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ पर ऊपर से गिराना, गेरना, फेंकना, डालना।

उ०—१ बांम बांम बकता वहै, दांम दांम चित देत। गांम गांम नांखै गिडक, रांम नांम में रेत।—ऊ.का.

उ०—२ रे थोड़ी ऊमर रही, काय न छांडै कूड़। हिय ग्रंधा तूं नांख हव, धंधा ऊपर धूड़।—बां.दा.

२ जोशपूर्वक ग्रागे की ग्रोर बढ़ाना, बलपूर्वक ग्रागे की ग्रोर बढ़ाना, भोकना। उ०—१ ग्रस नांखै गाहण ग्रसह, रिण माथै रजपूत। ग्रावध नांखै ग्राचसूं, दासी केरा पूत।—बां.दा.

उ०—२ ग्रांसूं नांखै ग्रांख सूं, कर हूंता करमाळ। भागल नंह नांखै भिड़ज, ग्रसहां सिर ग्राताळ।—बां.दा.

३ किसी पकड़ी हुई वस्तु को इस प्रकार छोड़ना कि वह गिर पड़े, गिराना, गेरना, छोड़ना, डालना। उ०—परदेसां प्री ग्रावियहु, मोती ग्रांण्या जेण। घण कर कंवळां भालिया, हसि करि नांख्या केण।—ढो.मा.

४ परित्याग करना, छोड़ना, डालना।

उ०—१ ग्रस नांखै गाहण ग्रसह, रिण माथै रजपूत। ग्रावत नांखै ग्राचसूं, दासी केरा-पूत।—बां.दा.

उ०—२ ग्रावध कसंता उमंग सूं, विदर लगावै वार। नहीं लगावै नांखता, जेज वडा जूंभार।—बां.दा.

मुहा०—नीसासा नांखणा—खिन्न चित्त होना, उदास होना, दुख प्रकट करना।

५ जल या ग्रन्य द्रव पदार्थ को ग्राधार से नीचे गिराना, टपकाना, गिरा कर बहाना।

उ०—१ घन घरोड़ा गाजई, घोड़ू नांख नगारा । मारूड़िया मारै मुरड, इण दिस हुवै नगारा ।—बां.दा.

उ०—२ घोड़ू नांखै घोड़ा हूं, कर हूंणा निरमाळ । मांगड़ नह माणै मिळण । घणा गिर धाराळ ।—बां.दा.

६ ऊपर की ओर अथवा सम्मुख फेंकना, उछालना ।

उ०—१ विधि कीधो मझ बोरगह तोरण, हूंग नांखियो जोई हुंत । फूल लेतरा हुई निरखी ही, दहुं घघड मह घघड हुंत ।

—महादेव पारबती री वेलि

उ०—२ बखतर बिच घोड़ बाजिदै घोरांग, राउ राठोड़ विलम नांह कर । ईसर ! नखो तुहाळो मारांत, तेण दिसा नांखै गज-रूप ।

—ईसरदास मेड़तिया री गीत

७ किसी पदार्थ को दूसरे पदार्थ में रखने, ठहराने, मिलाने के लिए उसमें गिराना, किसी वस्तु को दूसरी वस्तु में इस प्रकार छोड़ना जिससे वह उसमें ठहर या मिल जाय । उ०—नेह निवांणै नांखियो, पुण्पो मही बिकसाय । माना गुण कब देखसो, वह था मह बंधाय ।—बां.दा.

८. किसी वस्तु को आधार या अवरोध आदि हटा कर उसे अपने स्थान से नीचे डालना, पतन करना, गिराना । उ०—१ संमद हाथी ऊपर चढ़ियो नमकारा करै छै, इतरै में व्यासजी कह्यो—हवेली नूं तोपखाना सूं लिखाय देवछे, पछै लोग जखमी होयसी तो बेतरह काम आवसी, तिणसूं किवाड़ नांख नीसरो ।

—अमरसिंह री बात

उ०—२ गढ़ पाछण री रांग रोपाई । भीत हूंण लागी, सू उठै बेड़ा देवळ सु भीत दोहा री करै, तिसड़ी ही रात री पाड़ नांखै ।

—नैणसी

९. झोंके के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना, इस प्रकार गति देना कि वह दूर जा गिरे, फेंकना । उ०—राठोड़ वीरमदे बेरसलोत बेरसल गांगावत री ए दोय काम आया । बीजा नीसरिया । राव नूं दाग महाकाळ दीयो । रूपसेन नूं पीस मैं नांख्यो ।

—राव चंद्रसेण री बात

१० लटकाना । उ०—ऊरली माहै छात कठैक ? उरसा सुगन-चिड़ी री पांख । देरणा तीरा पांण पयांण, हुंसला पोड़ांणा नख नांख ।—दांति

मुहा०—नख नांखणो—निद्रावस्था में होना, झपकी आना, अचेतन होना, बेहोश होना ।

११ पहुंचाना, भेजना । उ०—थली डाहरै नाम नो जिके थागै, नरां ताहू नां नांखि सग-लोक मांगै ।—पी.ग्र.

१२ मारना, संहार करना । उ०—निसाचरा प्रमासुरा अधा सुरी मारि, बकासुरा वाल्हासुरा कीधा बाहि ।—पी.ग्र.

१३. पटकना, गिराना । उ०—हणमत किया हनन, सहस दाणव हुंकारे । ऊंचो नांखि सनीच, वळै हरि थनति पधारे ।—पी.ग्र.

नांखणहार, हारो (हारी), नांखणियो-वि० ।

नंखाड़णो, नंखाड़बो, नंखाणो, नंखाबो, नंखावणो, नंखावबो, नखाड़णो, नखाड़बो, नखाणो, नखाबो, नखावणो, नखावबो ।—प्रे.रू.

नांखियोड़ो, नांखियोड़ो, नाख्योड़ो—भू०का०कृ०

नांखीजणो, नांखीजबो—कर्म वा० ।

नाकणो, नाकबो, नींनणो, नींनबो, न्हांखणो, न्हांखबो, न्हाकणो, न्हाकबो, न्हाखणो, न्हाखबो—रू०भे० ।

नांखियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ऊपर से गिराया हुआ, फेंका हुआ, डाला हुआ. २ जोरपूर्वक आगे की ओर बढ़ाया हुआ, बलपूर्वक आगे की ओर बढ़ाया हुआ, झोंका हुआ. ३ किसी पकड़ी हुई वस्तु को छोड़ा हुआ. ४ परित्याग किया हुआ, त्यक्त. ५ (जल या अन्य द्रव्य पदार्थ को) आधार से नीचे गिराया हुआ, गिरा कर बहाया हुआ. ६ ऊपर की ओर अथवा सम्मुख फेंका हुआ, उछाला हुआ. ७ एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ को मिलाने के लिये गिराया हुआ ।
८. अवरोध से हटाया हुआ, आधार से गिराया हुआ. ९. झटके के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डाला हुआ, गति देकर दूर किया हुआ. १०. लटकाया हुआ. ११. भेजा हुआ, पहुंचाया हुआ. १२. मारा हुआ, संहार किया हुआ ।
(स्त्री० नांखियोड़ी)

नागर-सं०पु० [सं० नागरम्] १ सोंठ (उ.र.)
२ लंगर । उ०—कूड़ कापिउ, सिढ़ संकेलिउ, नांगर वाहन होया-उला वहइं नहीं ।—व.स.

नांगरी—१ देखो 'नवग्रही' (रू.भे.)
२ देखो 'नोगरी' (रू.भे.)

नागळ-सं०स्त्री० [सं० नाग+बलि] १ गृह-निर्माण पूर्ण होने पर की जाने वाली स्थापना, प्रतिष्ठा ।
२ देखो 'नागळो' (मह०, रू०भे०)

नांगळणो, नांगळबो-क्रि०स० [देशज] १ बांधना । उ०—१ इसा तीरा सूं ठाठा भरिया थका । सू उणहीज बड़-पीपळां रा दरख्तां सूं नांगळजै छै ।—रा.सा.सं.
उ०—२ इण भांत री ढालां सूं उणहीज दरख्तां री साखां सूं नांगळीजै छै ।—रा.सा.सं.
उ०—३ कूंची नांगळियां नरतां करड़ाता । ऊंचो आंगळियां करता अरड़ाता । नाड़ो नीसरगी जाड़ातळ भळकै । प्यारी प्यारी निज पांगळियां पळकै ।—ऊ.का.
२ (नये मकान में) स्थापना करना, प्रतिष्ठा करना ।
नांगळणहार, हारो (हारी), नांगळणियो—वि० ।
नांगळवाड़णो, नांगळवाड़बो, नांगळवाणो, नांगळवाबो, नांगळवावणो, नांगळवावबो, नांगळाड़णो, नांगळाड़बो, नांगळाणो, नांगळाबो, नांगळावणो, नांगळावबो—प्रे०रू० ।
नांगळियोड़ो, नांगळियोड़ो, नांगळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नांगळीजणौ, नांगळीजबौ—कर्म वा०।

नांगळियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बांधा हुआ.
२ (नये मकान में) स्थापना किया हुआ, प्रतिष्ठा किया हुआ।
(स्त्री० नांगळियोड़ी)

नांगळी–सं०स्त्री०—देखो 'नांगळौ' (अल्पा.रू.भे.)
उ०—तन मन जुगती री जागी तलकाळी, त्यारी सुकती री लागी अब ताळी। ठिरता दांतां में नांगळियां ठेली। मरता दांतां में आंगळियां मेली।—ऊ.का.

नांगळियौ, नांगळौ–सं०पु० [देशज] १ (कूए की) मोट की ऊपरी किनारों पर बंधा हुआ मजबूत रस्सा जिससे लाव बांधी जाती है. २ मोटी डोरी, बांधने का मजबूत रस्सा. ३ मिट्टी की छोटी बटलोई अथवा ऐसे ही अन्य पात्र को लटकाने के लिये उसके मुंह पर बांधा जाने वाला रस्सी का फंदा।
क्रि०प्र०—घालणौ।
अल्पा०—नांगळियौ, नांगळी।
मह०—नांगळ।

नांड़ियौ—देखो 'नौड़ियौ' (रू.भे.)

नांज—देखो 'नौज' (रू.भे-)
उ०—मरसी माया तणा मेळगर, कदै न पर-उपकार करै,
'माधौ' अमर हुवौ यळ मांहै, 'माधौ' कमधज नांज मरै।
—ओपो आढ़ौ

नांजण—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)

नांजणियौ—१ देखो 'नूंजणियौ'।
२ देखो 'नूंजणौ' (अल्पा०, रू०भे०)

नांजणौ—देखो 'नूंजणौ' (अल्पा०, रू०भे०)

नांड, नांढ–वि० [देशज] १ मूर्ख, गँवार। उ०—वात मांनली लंपेवांढां नीत विगड़गी निलजां नांढां मिळगी जोड़ी जांनां मांढ़ां। ढेढ़ कह्यो ज्यूं सुणियो ढ़ांढ़ां।—ऊ.का.
२. अपठित. ३. जो व्यवहारकुशल न हो।
रू०भे०—नंड।

नांण–सं०पु० [सं० ज्ञान] ज्ञान। उ०—१ जोसी जग कहइ ए जुडता जोडइ, वदइ तिके ही ज नांण वखांण। अवरां दीहां तणो उतारी, जोडी आ करतइ घणजांण।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ नांण प्रभावइं गणहर बोलइ पूरव भव विरतांत। नंद ग्रांमि तूं स्रावकनंदन हूतउ विद्यावंत।—विद्याविलास पवाडउ

नांणउ—देखो 'नांणौ' (रू.भे.) (उ०र०)

नांणदउ—देखो 'नांणदौ' (रू.भे.)

नांणदी–सं०स्त्री० [सं० ननंदृ या ननांदृ] पति की बहिन की पुत्री।

नांणदौ–सं०पु० [सं० नानान्द्रः] (स्त्री० नांणदी) पति की बहिन का पुत्र।
रू०भे०—नांणदउ, नांणिद्रउ।

नांणवंत–वि० [सं० ज्ञानवंत] ज्ञानवान्। उ०—जइ पड़िहसि 'पास' जिणिंद वसि नांणवंत निम्मळ रयण। न सु घणुहरु वांण न रूव नहि न रूय पिमु हुइ हद्दमयण।—ऐ.जे.का.सं.

नांणि—देखो 'नांणी' (रू.भे.)
उ०—अवहि नांणि जांणि जिण जम्म, ततखिण करिवा निय निय कम्म। आवइं सुरपति मनि गह गही, सुर नर लोकां अंतर नहीं।
—स.कु.

नांणिदउ—देखो 'नांणदौ' (रू.भे.) (उ.र.)

नांणी–वि० [सं० ज्ञानी] १ ज्ञानवान, ज्ञानी। उ०—१ एक सहस हुवा केवळ नांणी। स्री पास भजौ पुरुखादांनी।—जयवांणी
उ०—२ जळ करै सीतळ हीय-तळ जेठ मैं ए ठहराय। जोथिक जोतसी ते कहौ कदि मिळै जेठ कौ भांय। यादव कुळ ना सेठ नैं जेठ कहौ समझाय। नांणी द्रेठ नैं हेठते मो मैं कवण अन्याय।—घ.व.ग्रं.
रू०भे०—नांणि।

नांणु—देखो 'नांणौ' (रू.भे.)
उ०—गौतम नांमइ नांणु मूकीयइ समगय ग्यांन उदय होइ।
—वि.कु.

नांणुटी–सं०स्त्री० [सं० नाणक+हट्ट] रुपए-पैसे का आदान-प्रदान करने वाले वे व्यापारी जो अपनी दुकान में केवल रेजगारी व रुपए रखते हैं। उ०—१ सितिरि खांन बुहुतिरि ऊंबरा अनी मीर, जे नगर मांहइ सोनहटी नांणुटी दोसीहटी बुद्धिहटी, अनेक फडीआ फोफळीआ सोनार, अवरि बीजा व्यापारी तणु न जांणूं पार।
—व.स.
उ०—२ कंसारा नट नांणुटोआ, घडिया घाट वेचइ लोहटीआ। कापल कापड नइ हथीयार, साथि सुदागर तेजी सार।—कां.दे.प्र.

नांणुं, नणूं, नांणौ–सं०पु० [सं० नाणक] १ रुपया-पैसा।
उ०—१ खैर उण वखत तौ थारो हाथ काठौ हो पण अबै तो रांमजी राजी है। देख रणछोड़ा ! नांणौ हाथ में आय जावै पण टांणौ नीं आवै।—रातवासो
उ०—२ नांणौ गुर नांणौ इसट, नांणौ-रांणौ राव। नांणा विन प्यारौ न को, साहां जात सुभाव।—बां.दा.
२ धन-दौलत, द्रव्य। उ०—१ नरहर समरतां नह बीतै नांणौ, लव सूं तिको न लेवै। परनारी निरखै कर प्रीतां, दांम हजारां देवै
—र.रू.
उ०—२ जस प्यारौ पुरसां जिकां, नांणौ प्यारौ नांह। नांणौ थिर टहरै नहीं, जस जुग जुग रह जांह।—बां.दा.
३ कर, टैक्स। उ०—अनमी कंध नमाविया, नांणौ भरै नरेस। जीतो तूं जैसिंघ दे, दिखण तणा सौ देस। बां.दा.
क्रि०प्र०—देणौ, भरणौ, लागणौ।
रू०भे०—नांणु, न्यांणूं, न्यांणौ।

[illegible] [सं॰ ...] [illegible] पितरों के लिए श्राद्ध, [illegible] [illegible] का [illegible] श्राद्ध ।

नांदड़ी—देखो 'नंदी' (अल्पा॰, रू॰भे॰)
उ॰—[illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] ।—मेह.

नांदी—देखो 'नंदी' (रू.भे.)

नांदीमुख-सं॰पु॰ [सं॰] पुत्र जन्म, विवाह आदि मंगल अवसरों पर किया जाने वाला एक आभ्युदयिक श्राद्ध विशेष, वृद्धि श्राद्ध ।

नांन—देखो 'नांम' (रू.भे.)

नानक-सं॰पु॰—सिक्ख सम्प्रदाय के प्रवर्तक, गुरु नानक ।
रू॰भे॰—नांनक ।

नानकड़ो—देखो 'नंनो' (अल्पा॰, रू॰भे॰)
उ॰—[illegible] नानकड़ी सी नार । राय [illegible] [illegible] ।—बो.दी.
(स्त्री॰—नानकड़ी)

नानकशाही-वि॰ [हि॰ नानकशाही] गुरु नानक से सम्बन्ध रखने वाला ।
सं॰पु॰—नानकशाह का शिष्य या अनुयायी ।
रू॰भे॰—नानगशाही ।

नानकियो—१ देखो 'नंनो' (अल्पा॰, रू॰भे॰)
उ॰—पण नानकिया टाबरियां रै तो जावक ई हटावण को होती नी ।—वरसगांठ
२ देखो 'नानो' (अल्पा॰, रू॰भे॰)
(स्त्री॰—नानकी)

नानग—देखो 'नानक' (रू.भे.)

नानगशाही—देखो 'नानकशाही' (रू.भे.)
उ॰—पछी मो'र दो नानगशाही सागो दियो चुकाय ।
—डूंगजी जवारजी री पड़

नानड़ियो, नानड़ो—१ देखो 'नंनो' (अल्पा॰, रू॰भे॰)
उ॰—१ [illegible] रै [illegible] जो, नानड़ियै री माय । [illegible] [illegible] ।—बो.दी.
उ॰—२ [illegible] में [illegible], [illegible] बहु दुख दे । बालक [illegible] नानड़ो [illegible] सुख दे ।—रीसालू री वात
२ देखो 'नानो' (अल्पा॰, रू॰भे॰)
(स्त्री॰ नानड़ी)

नानस, नानसा—देखो 'नानस' (रू.भे.)
उ॰—[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] । नानसी [illegible] नूं [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] नूं [illegible] [illegible] ।—वीर-प्रसंसा रो गीत

नानरखा—सं॰पु॰ [देशज] छोटा बछड़ा (मेवाड़)

नानस—देखो 'नानीसासू' (रू.भे.) (शेखावाटी)

नानसराध—सं॰पु॰ [राज॰ नानो+सं॰ श्राद्ध] आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, महालय में आश्विन की अमावस्या के दिन अपने नाना के लिए किया जाने वाला श्राद्ध ।
वि॰वि॰—केवल वही व्यक्ति इस दिन अपने नाना का श्राद्ध कर सकता है जिसका पिता जीवित हो ।

नानसरी—देखो 'नानी-सुसरो' (रू.भे.) (शेखावाटी)

नानांणो-सं॰पु॰ [देशज] नाना का घर, ननिहाल । उ॰—यूं करतां बरस च्यार व्यतीत हुवा । कुंवररै कुंवर हुवा । बडो हरख हुवो । नानांणे मधुर बधाई गई । तद राजा हरसवंत होय घोड़ो एक, सिरपाव, कड़ा-मोती, रिपिया हजार दोय दे नै विदा किया ।
—पलक दरियाव री वात
रू॰भे॰—ननेरो ।

नानांणियो—वि॰ [देशज] ननिहाल का, ननिहाल सम्बन्धी ।

नाना—वि॰ [सं॰ नाना] १ अनेक, बहुत । उ॰—पतक सुरगाणी सही, कुरभां करती केळि । पंखी नाना भांत रा, मिळी भली है मेळि ।
—गजउद्धार
२ अनेक प्रकार के, विविध । उ॰—नाना भूखण नांमही, रागनि राग-विसेस । बोलण चालण बूझवण, देताहद सवि देस ।
—मा.कां.प्र.

नानियो—१ देखो 'नंनो' (अल्पा॰, रू॰भे॰)
२ देखो 'नानो' (अल्पा॰, रू॰भे॰)
(स्त्री॰ नानी)

नानी—सं॰स्त्री॰ [देशज] मां की माता, माता की मां ।
मु॰—१ नानी मर जाणी—होश ठिकाने हो जाना, प्राण सूख जाना, संकट में फंस जाना, दुख पड़ना ।
२ नानी याद आवणी—देखो 'नानी मर जाणी' ।
वि॰स्त्री॰—छोटी, लघु । उ॰—१ कटारी जगत में प्रगट थांरी करी, नरिंद था कटारी नाम नानी । 'सवाई' थाह री भरोसी दीव सह, महपती 'विजै' जद साच मानी ।
—पोकरण ठा. सवाईसिंह री गीत
उ॰—२ तरै नागड़ी सारा सोरठ रा ससकर नूं नानी सी कोठी मांहि सूं सींधो दियो ।—नैणसी
रू॰भे॰—नान्ही ।

नानीबाई—सं॰स्त्री॰—गुजरात के प्रसिद्ध भक्त नरसी मेहता की बहिन का नाम ।
रू॰भे॰—नैनी-बाई ।

नानीसासरो, नानीसासरो—सं॰पु॰ [राज॰नानी+सं॰ श्वशुर+रा.प्र.ओ] पति या पत्नी का ननिहाल ।

नानीसासू, नानीसासू—सं॰स्त्री॰ [राज॰ नानी+सं॰ श्वश्रू] पति या पत्नी की नानी ।
रू॰भे॰—नानस ।

नांनीसुसरो, नांनीसुतरो [राज० नानी+सं० स्वशुरः] पति या पत्नी का नाना।

रू०भे०—नांनसरो।

नांनूं, नांनूं—१ देखो 'नैनो' (रू.भे.)

उ०—म्हे नांनूं कूटचो बाजरो म्हे मीठी छांटी दाळ। मीठो खीचड़ो। खदवद सीजै बाजरो कोई, लथपथ सीजै दाळ। मीठो खीचड़ो।—लो.गी.

२ देखो 'नांनो' (रू.भे.)

नांनेरो—१ देखो 'नांनांण' (रू.भे.)

उ०—नांनै नांनी समझायो तिणरो कारण पिता जुद्ध में कांम आयो नै माता सत कियो तरै नांनेरै मोटो हुवो।—वी.स.टी.

२ देखो 'नैनेरो' (रू.भे.)

(स्त्री०—नांनेरी)

नांनो—सं०पु० [देशज] (स्त्री० नांनी) १ माता का पिता।

उ०—कंवरी सूरजकंवर, अजन भ्रम रचे अपंपर। जै नांनो 'अमरेस', घरा 'जेसांण' छतर धर। परणावण 'जैसाह' व्याह रचियो 'जोवांणै'। पूछ आदि पंडितां, वेद मरजाद प्रमांणै।—रा.रू.

२ देखो 'नैनो' (रू.भे.)

उ०—१ उदियापुर से सायवा पीळो मंगा, म्हो जी। तो नांनी सी बंधण बंधावो गाढ़ा मारूजी।—लो.गी.

उ०—२ ताहरां राजा कह्यो-थे क्यां न जांणो, थांहरो सहर छै पण म्हारै सहर हालो, छतीसां ओळखै कै नहीं। म्हारै पण हाथां में नांनै सूं मोटो हुवो छै।—पलक दरियाव

उ०—३ लाखै री तो अकल गई और हमीर थांहरै घरै आयो परो कूट मारो। डावड़ो नांनो छै उड जासी।—नैणसी

(स्त्री० नांनी)

रू०भे०—नांन्हूं, नांन्हो, न्हांनो।

अल्पा० रू०भे०—नांनकियो, नांनड़ियो, नांनड़ो, नांनियो, न्हांनड़को, न्हांनड़ियो, न्हांनड़ो।

नांन्यो—देखो 'नैनो' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० नांनी)

नांन्हउ—१ देखो 'नैनो' (रू.भे.) (उ.र.)

२ देखो 'नांनो' (रू.भे.)

नांन्हकड़ो, नांन्हड़ियउ, नांन्हड़ो, नांन्हडियउ, नांन्हरियो—देखो 'नैनो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ नांन्हकडी कुंडी चरू, कळसा कुंभ कचोळ। थाळी भारी हेम नी, रांमतिडां नु रोळ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ भरत नइ घइ ओळभड़ा रे। मरुदेवी अनेक प्रकार रे, म्हारउ बाळूयड़उ। वाळूयड़उ नयणि दिखाड़ि रे, म्हारउ नांन्हड़ियउ। —स.कु.

उ०—३ नांना भूसण नांन्हड़ी, रांमति राय-विसेस। बोलण चालण बूझवण, देखाडइ सवि देस।—मा.कां.प्र.

उ०—४ राजकुंवर एक नांन्हड़ो, आवी मिळियो मांय। ते पिण कोढ़ी फरस थी, उंबर रोग लहाय।—सीपाळ

उ०—५ तुं नांन्हडियउ माहरइ, तुं मुझ जीवन-प्रांण। एक घड़ी पिण दिन समी, तोरइ विरह सुजांण।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—६ सुहा ताइ विसन ब्रह्म ताइ सुहा, इंद्र सुहा आसीस दीयइ। न कहइ सुंहा घणूं नांन्हडियउ, कवळ मजीठउ राव कीयइ।
—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'नांनो' (रू.भे.)

स्त्री०—नांन्हकड़ी, नांन्हड़ी, नांन्हरी।

नांन्हियो—१ देखो 'नैनो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—निमो निमो नांन्हियो, किसन कनहहिया काळा। प्रांण जसोदा प्रभु, विसन नंद आंगण वाळा।—पी.ग्रं.

२ देखो 'नांनो' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० नांन्ही)

नांन्ही—देखो 'नैनी' (रू.भे.)

उ०—नांन्ही बूंदन मेहा बरस, ऊपर सुरपति गरजे हे मा। कैसी रितु आई मेरो हियो लरजै हे मा।—मीरां

नांन्हीओ, नांन्हीयो—१ देखो 'नैनो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—अलख नांन्हीयो निपट मोटो अपारू, अलख रूप अणरूप भगतां उधारू।—पी.ग्रं.

२ देखो 'नांनो' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० नांन्ही)

नांन्हूं—१ देखो 'नैनो' (रू.भे.)

उ०—जउ जूनु तुहइ भलु अगर, जउ सूनूं वसमूं तुहइ नगर। जउ नांन्हूं तुहइ प्रवहण, जउ खंड हुइ तुहइ सूरचग्रहण।—नळदवदंती रास

२ देखो 'नांनो' (रू.भे.)

नांन्हो—१ देखो 'नैनो' (रू.भे.)

उ०—१ नांन्ही-नांन्ही बूंदी मेवड़ो वरसै। तो लागी वादळी गरज्या नै। मेरो मन मारूजी मिळवा नै।—लो.गी.

उ०—२ लाखो जिको अवतारीक मरद नांन्हो ही सारी साहवी रो मदार हुवो।—नैणसी

उ०—३ नांन्हां नि द्वारि जातां नवि नमि, थाइ मोकल्यूं यम ते गमि। एहवी वात माहारि मनि वसी, जोई किहिवा आवी घसी।
—नळाख्यांन

२ देखो 'नांनो' (रू.भे.)

(स्त्री० नांन्ही)

नांवरी—देखो 'नांमवरी' (रू.भे.)

उ०—जसवंत जमी कावुल जवून, खत्री कुळ गारित करत खून। नांवरी नियत हम जियत नांहि, आकासन आवंहि मुट्टि मांहि।
—ऊ.का.

नामंजूर—वि० [फा०+अ०] १ जो कबूल न किया गया हो, अस्वीकृत २ जो माना न गया हो।

नांमरद-वि० [फा० ना-मर्द] १ पुंसत्वहीन, नपुंसक, क्लीव.
   २ कायर, डरपोक, भीरु।

नांमरदी-संज्ञा स्त्री० [फा० नामर्दी] नपुंसकता, क्लीवता।
   उ०—कुटलीयां सूं कूण समाज, नांमरदी किर म्हारी रे। भागा गरजा लेगे साला, कोई न आवै कारी रे।—ऊका.

नांम-संज्ञा पु० [सं० नामन्] (रू० भे० नांमौ) किसी वस्तु या व्यक्ति या समूह का निर्देश करने वाला शब्द, अभिधान, संज्ञा।
   मुहा०—१ थे म्हारौ नांम नीं—तो मुझे कुछ भी मत समझना, तो मुझे कुछ मत समझना, तो मैं कुछ भी नहीं।
   (२) नांम—किसी के सम्बन्ध में, किसी को लक्ष्य कर के। किसी के लिए, किसी के पक्ष में।
   (३) नांम ई नीं लेणौ—अरुचि, घृणा, भय आदि के कारण चर्चा तक न करना। संकल्प या विचार तक न करना। दूर रहना। बचना।
   (४) नांम ई नीं होणौ—कहने सुनने को भी नहीं, जरा सा भी नहीं। देखो 'नांम मातर'।
   (५) नांम ऊं—यह प्रकट करके कि कोई बात किसी की ओर से है। सम्बन्ध बता कर, जिम्मेदारी बता कर, नाम लेकर।
   (६) नांम ऊं डरणौ—बहुत भय मानना, नाम सुनते ही डर जाना।
   (७) नांम ऊठणौ—स्मरण मात्र भी न रहना, चर्चा बन्द हो जाना, चिन्ह मिट जाना, नाम न रहना।
   (८) नांम ऊपर मरणौ—प्रेम के आवेश में अपने हानि-लाभ या वस्तु की ओर कुछ भी ध्यान न देना, किसी के प्रेम में लीन होना, किसी के प्रेम में खपना।
   (९) नांम करणौ—यश का कार्य करना, ऐसा कार्य करना जिससे प्रसिद्धि मिले। बदनामी का कार्य करना, दूसरे पर दोष लगाना। कहने भर के लिए थोड़ा सा करना, दिखाने या उलाहना छुड़ाने भर के लिए थोड़ा सा करना। यथोचित करना, किसी के लिए या किसी के पक्ष में करना।
   (१०) नांम काढ़णौ—बदनाम होना, कलंक लगा लेना। प्रसिद्धि का कार्य करना। बुरा या भला ऐसा कार्य करना जिससे नाम मशहूर हो।
   (११) नांम चमकणौ—यश फैलना, कीर्ति फैलना, प्रसिद्ध होना।
   (१२) नांम चलणौ—यादगार बनी रहना, लोगों को नाम याद रहना, लोगों में नाम का स्मरण बना रहना।
   (१३) नांम चढ़णौ—नाम लिखा जाना, नाम दर्ज होना।
   (१४) नांम चाढ़णौ—नाम दर्ज करना, नाम लिखाना, नामावली में नाम लिखाना।
   (१५) नांम जपणौ—प्रेम या भक्ति के कारण ईश्वर या देवता का बार-बार नाम लेना। ईश्वर या देवता का स्मरण करना। किसी के नाम का बार बार उच्चारण करना।
   (१६) नांम डुबोणौ—कलंकित होना, कलंकित करना, बुरा कार्य करना जिससे प्रसिद्धि न रहे।
   (१७) नांम डूबणौ—नामोनिशान मिटना, कीर्ति न रहना, अपकीर्ति होना।
   (१८) नांम दिराणौ—नामकरण कराना।
   (१९) नांम देणौ—नामकरण करना, नाम रखना।
   (२०) नांम धरणौ—देखो 'नांम देणौ'।
   (२१) नांम धराणौ—देखो 'नांम दिराणौ'।
   (२२) नांम निकळणौ—ऐसा कार्य करना जिससे प्रसिद्धि या बदनामी हो। नाम का कहीं प्रकट या प्रकाशित होना। किसी स्थान से लिखा हुआ नाम कट जाना, नामावली में से नाम हट जाना।
   (२३) नांम निकाळणौ—कोई कार्य विशेष करके या तो प्रसिद्ध हो जाना या बदनाम हो जाना। किसी नामावली में से नाम हटा देना। नाम को कहीं प्रकाशित या प्रकट करना।
   (२४) नांम निसांण—किसी वस्तु के होने को प्रमाणित करने वाला चिन्ह या निशान, खोज, पता।
   (२५) नांम नीसांण नीं रैंणौ—एक भी या लेश मात्र भी न बचना, एकदम अभाव होना। एकदम नाश होना। पता न रहना।
   (२६) नांम निसांण मिटणौ—देखो 'नांम निसांण नीं रैंणौ।'
   (२७) नांम नीं लेणौ—देखो 'नांम ई नीं लेणौ'।
   (२८) नांम पड़णौ—व्यक्ति विशेष की आदतों के अनुसार प्रायः लोगों द्वारा उसको चिढ़ाने या कुढ़ाने के लिए नया नाम का रखा जाना।
   (२९) नांम पाड़णौ—चिढ़ाने या कुढ़ाने के लिए व्यक्ति विशेष का नया नाम रखना।
   (३०) नांम बदनांम करणौ—अपकीर्ति करना।
   (३१) नांम बिगाड़णौ—बदनामी करना, कलंकित करना।
   (३२) नांम-भर—किंचित मात्र, जरासा।
   (३३) नांम मातर—जरा सा, थोड़ा, तुच्छ।
   (३४) नांम माथै (माथै) जूती—अपकीर्ति, कलंक।
   (३५) नांम माथै गोबर फेरणौ—दिवालिया घोषित करना, कलंकित करना।
   (३६) नांम माथै धब्बौ लागणौ—कलंक का टीका लगना, कलंकित होना।
   (३७) नांम माथै (माथै) गोबर फिरणौ—दिवालिया होना, कलंकित होना।
   (३८) नांम माथै पांणी फिरणौ—देखो 'नांम डूबणौ'।
   (३९) नांम माथै पांणी फेरणौ—देखो 'नांम डुबोणौ'।
   (४०) नांम माथै बट्टौ लागणौ—देखो 'नांम माथै धब्बौ लागणौ'।
   (४१) नांम माथै बैठणौ—किसी आवश्यक या स्वाभाविक कार्य

को किसी के ख्याल या किसी की उम्मीद के कारण न करना। किसी के ऊपर यह विश्वास करके धैर्य धारण करना या उद्योग छोड़ देना कि जो कुछ उसे करना होगा करेगा। किसी के विश्वास या भरोसे पर संतोष करके स्थिर रहना।

(४२) नांम मातै मरणौ—किसी के प्रति प्रेम या भक्ति के आवेश में अपने प्राणों तक की परवाह न करना। किसी के प्रेम में इस प्रकार लीन होना कि अपने हानि-लाभ या कष्ट का कुछ भी ध्यान न रहे।

(४३) नांम मिटणौ—लोगों की स्मृति से निकल जाना। देखो 'नांम डूबणौ'।

(४४) नांम रटणौ—देखो 'नांम जपणौ'।

(४५) नांम राखणौ—बच्चे का नामकरण करना। वंश-क्रम को चलाते रहना। ऐसा कार्य करना जिससे यश या कीर्ति बनी रहे।

(४६) नांम रौ—कहने सुनने भर को, उपयोग के लिए नहीं, काम के लिए नहीं, नामधारी।

(४७) नांम रौ—किसी के निमित्त, किसी को अर्पित करके, किसी का नाम चलाने या किसी के प्रति आदर-भक्ति प्रकट करने के लिए, किसी के स्मारक या तुष्टि के लिए। किसी के सम्बन्ध में, किसी को लक्ष्य करके।

(४८) नांम लिखणौ—किसी नामावली में नाम अंकित करना। किसी संस्था, समूह या मण्डल में सम्मिलित करना। किसी के जिम्मे लिखना या टांकना, किसी के नाम के आगे लिखना।

(४९) नांम लिखाणौ—किसी मण्डली, संस्था या कार्यालय में सम्मिलित होना। किसी कार्य या विषय आदि में सम्मिलित होने के लिए रजिस्टर, बही आदि में नाम दर्ज कराना।

(५०) नांम ले नै—किसी देवता, ईश्वर या पूज्य पुरुष का स्मरण कर के। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम के प्रभाव से, किसी बड़े आदमी या प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम से लोगों का ध्यान आकर्षित करके।

(५१) नांम लैणौ—किसी का नाम पुकारना। किसी को दोष देना, किसी को अपराधी ठहराना। ईश्वर का स्मरण करना। ईश्वर का भजन करना।

(५२) नांम वाजणौ—यशस्वी होना, कीर्ति फैलना।

(५३) नांम सूं—देखो 'नांम ऊं'।

(५४) नांम सूं डरणौ—देखो 'नांम ऊं डरणौ'।

(५५) नांम होणौ—कीर्तिवान होना, यशस्वी होना। किसी नामावली में आ जाना, लोगों को किसी की स्थिति का भान होना।

(५६) नांमो-निसांण—देखो 'नांम-निसांण'।

२ प्रसिद्धि, ख्याति, यश। उ०—१ अठतीसै आसोज मैं, सित सातम सनवार। गो 'सोनागिर' धांम हरि, नांम करै संसार।—रा.रू.

उ०—२ 'जगड़' रांण दीधा जिता, गैंवर हैंवर गांम। अब पातां देसी इता, नृप कुण राखण नांम।—बां.दा.

मुहा०—(१) नांम कमाणौ—प्रसिद्धि प्राप्त करना, यश प्राप्त करना, यशस्वी होना।

(२) नांम करणौ—विख्यात होना, यशस्वी होना।

(३) नांम चलणौ—देखो 'नांम चालणौ'।

(४) नांम चालणौ—यश का बहुत दिनों तक बना रहना, कीर्ति बनी रहना।

(५) नांम डुबोणौ—मान-प्रतिष्ठा खोना, यश और कीर्ति गँवाना।

(६) नांम डूबणौ—यश या कीर्ति का लुप्त होना। यश और कीर्ति का नाश होना।

(७) नांम मातै धब्बौ लागणौ—कीर्ति पर लांछन लगाना, बदनामी करना।

(८) नांम मातै मरणौ—कीर्ति के लिए उद्योग करना, यश के लिए प्रयत्न करना।

(९) नांम रैंणौ—कीर्ति का बना रहना।

रू०भे०—नांउ, नांऊ, नांमउ, नांमू, नाउं, नाउ, नाऊं।

अल्पा०—नांमको, नांमगो, नांमड़ियो, नांमड़ो, नांमो, नांवड़ो।

नांमउ—देखो 'नांम' (रू.भे.)

उ०—दोधी दीक्षा बड़इ विरद्द, नांमउ दीयउ 'राजसमुद्र'। हिव सास्त्र भण्यां असमांन, ते गिणतां नावइ गांन।—ऐ.जै.का.सं.

नांमक-वि० [सं० नांमक] १ नाम वाला. २ नाम से प्रसिद्ध।

नांमकम्म—देखो 'नांमकरम' (रू.भे.)

नांमकरण-सं०पु० [सं०नामकरण] १ नाम निश्चित करने की क्रिया, नाम रखने का काम. २ जन्म के पश्चात् बच्चे का नाम रखने के लिए शुभ मुहूर्त में किया जाने वाला सोलह संस्कारों के अन्तर्गत एक संस्कार विशेष।

नांमकरम-सं०पु० [सं० नामकर्म] १ नामकरण संस्कार। २ जैन शस्त्रानुसार कर्म का एक भेद।

रू०भे०—नांमकम्म।

नांमकीरत्तन-सं०पु० [सं० नामकीर्त्तन] ईश्वर के नाम का जप या उच्चारण।

नांमको, नांमगो, नांमड़ियो, नांमड़ो—देखो 'नांम' (अल्पा., रू.भे.)

नांमजद, नांमजदीक, नांमजद्दी, नांमजाद, नांमाजादी, गांमजादीक—वि० [फा० नामज़द] प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात। उ०—१ प्रिथी रा लिछ्मै भोग ऐसा प्रचंडं। खयां मारि डंडै जिकै नव्व खंडं। हजारी सदी पंचसद्दी विसद्दी। जगज्जेठ जोधा मिळै नांमजद्दी।

—वचनिका

उ०—२ वाघै रै भरमल सूं ही प्यार हुवौ। भरमल नांमजाद सिद्ध हुई।—ऊमांदे भटियांणी री वात

उ०—३ सु स्रीक्रिस्णजी रौ वेटौ स्यांम नै प्रदुमन वड़ा नांमजाद हुवा।—नैणसी

उ०—४ करै ऊजळा कोप्ररां नांमजादी नरां। राज राजेसरां रूप।

—ल.पिं.

उ०—३ नांमी, सूबो, सूबो, नींबो, रामू—ये बारोठियों में डाका डालने वाले प्रसिद्ध थे। ... नांमजादीक हुवी।—बां.दा.ख्यात

उ०—४ रवं दुरगाह मांनी लाख सोवातें हुवै, घरं रसाळ ... सुजोर ... । कारी हुवा मारीके मलीरा नांमजादिक सूमो। नांमी मारं दोवो ... सुहाव।

—इनायतसिंह मोहब्बत रो गीत

मि०क०—नामी, हेमी।

रू०भे०—नांमजादीक, नांमजाद, नांमजादी, नांमजादीक।

नांमणी-वि० [स्त्री० नांमणी] नमाने वाला, झुकाने वाला।

उ० १ नांमणी मननी नाद नवो-कोटां धारें नीर, घाव··· धाव जिणी 'ऊदा' हुवो नंद।—जगमाल राठौड़ रो गीत

उ०—२ नरां वरणी मुरीम, देवता जदे दनीम साम्ह नांमणी नरीम।—र.ज.प्र.

नांमणी, नांमबो-क्रि०स० [सं० नम्] १ नमाना, नमस्कार कराना, झुकाना। उ०—१ जग नायक जगजीत, जगत उपायण जगतगुर। सुर नर नांमें सीस, नमसि प्रभु ममरण सरण।—वि.व.

उ०—२ परियां ग्रपरी कहा किम 'पातल' रावां तिलक हिंदवा रांण। सिर नांमियो नहीं सुरतांणां, 'नांमें' बंध किया सुरतांण।

—दुरसो आढ़ो

२ अधीन करना, मातहत करना, पस्त करना। उ०—१ मुगळ महीनें माह रे, मिळ पूगो गुजरात। भूपत नांमण भोमियां, दिल्ली बांधी हात।—रा.रू.

३ किसी तरल पदार्थ को एक पात्र से दूसरे पात्र में डालना, ढालना, उँडेलना। उ०—सर नांमियो गंगाजळ सोवणी, सत सीधो 'कल्याण'। हकाव। ममतो पोहा तणं ग्रामदियो, धनह प्रवीत हुवो तिण ग्राज।

—दूदो ग्रासियो

नांमणहार, हारो (हारी), नांमणियो—वि०।

नांमवाड़णो, नांमवाड़बो, नांमवाणो, नांमवाबो, नांमवावणो, नांमवावबो, नांमाड़णो, नांमाड़बो, नांमाणो, नांमाबो, नांमावणो, नांमावबो

—प्रे०रू०।

नांमियोड़ो, नांमियोड़ो, नांम्योड़ो—भू०का०कृ०।

नांमीजणो, नांमीजबो—कर्म वा०।

नांमणो, नांमबो, न्हांमणो, न्हांमबो—रू०भे०।

नांमदार-वि० [फा०] प्रसिद्ध, विख्यात, नामवर।

उ०—दियंत दांन मांन दातार, ग्रमर नांमदार उदार।—म.वि.

नांमदेव-सं०पु० [सं०नामदेव] ये दमसेठी नामक दर्जी के पुत्र थे। इनका जन्म सन् १२७० ई० में सतारा के पास नरसी बमनी नामक स्थान में हुआ था। ये मराठी साहित्य में प्रसिद्ध संत माने जाते हैं। इनके ग्रभंग सामान्य जनता में बड़े प्रेम से गाये जाते हैं। इन्होंने हिंदी और मराठी दोनों भाषाओं में रचनाएँ की हैं। इस प्रकार से ये हिन्दी और मराठी दोनों के इतिहास में कवि और संत के रूप में मान्य हैं। इनकी रचना के विषय में माधव राव सप्रेजी मुळे ने लिखा है "इनमें सत्य, विश्वास और भक्ति का तथा प्रेम में आत्म-समर्पण, प्रकाश तथा लोकोत्तर ग्रानंद का आलोक है—यह हृदय के प्रति हृदय का गीत है।" नामदेव के काव्य में सरसता और सुबोधता दोनों का ग्रद्भुत सम्मिश्रण है। उन्होंने ऐसे गीतों व ग्रभंगों की रचना की है कि उनके जीवन काल में ही उनका यश समस्त भारतवर्ष में फैल गया था।

इनकी धर्मपत्नी का नाम राजबाई था। इनके चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः नारायण, महादेव, गोविंद और विट्ठल हैं।

इनकी मृत्यु ८० वर्ष की ग्रायु में सन् १३५० ई० में पण्ढरपुर में हुई थी। इनकी समाधि पण्ढरपुर में बनी हुई है।

नाभादास ने भी ग्रपनी भक्तमाल में इनके ग्रलौकिक चमत्कारों का वर्णन किया है।

रू०भे०—नांवदेव।

नांमद्वादसी-सं०स्त्री० [सं० नामद्वादशी] ग्रगहन शुक्ला तृतीया को बारह देवियों की पूजा का एक व्रत।

नांमधन-सं०पु० [सं० नामधन] एक संकर राग (संगीत)।

नांमधारक-वि० [सं० नामधारक] जिसमें नाम के ग्रनुसार गुण न हो, नाम के ग्रनुसार कार्य न करने वाला, केवल किसी नाम को धारण करने वाला, नाम मात्र का।

नांमधारी-वि० [सं० नामधारिन्] १ जिसका कोई नाम, नाम धारण करने वाला, नाम वाला, नामक. २ नामी, प्रसिद्ध।

नांमधेई, नांमधेय-सं०पु० [सं० नामधेय] नाम निर्देशक शब्द, नामकरण, नाम। (नां.मा.प्र.मा.)

उ०—धुरा तू सुराराय नो नांमधेय। कहजे पुन रावळा रूप केई। तुही भीलणी भेस संभू भुलावै। रजो मूरती लेस तू ही पळावै।

—मे.म.

नांमनिखेव, नांमनिक्षेप, नांमनिखेपो, नांमनिखेव-सं०पु० [सं० नाम निक्षेप] लोक-व्यवहार चलाने के लिए किसी गुण विशेष के न होने पर भी उस गुण के ग्रनुसार किसी वस्तु, व्यक्ति ग्रादि का नाम रख देने की क्रिया या भाव। उ०—स्वांमीजी बोल्या—एक भाव निखेपो तो म्हे पिण वांदां पूजां छां। बाकी तीन निखेपा नीं चरचा रही तिण में प्रथम नाम निखेपो। किण ही कुंभार नो नांम भगवांन दियो। तिण नै थे वांदो के नहीं ? जद ते बोल्यो—तिण नै सूं वांदियै ? प्रभु ना गुण नथी।—भि.द्र.

नांममाळका-सं०स्त्री० [सं० नाममालिका] नामों की सूची, कोश।

उ०—कीनी पूरी नांममाळका दीपमाळका तेण दिन।—ह.नां.

रू०भे०—नांममाळिका।

नांममाळा-सं०स्त्री० [सं० नाममाला] १ ७२ कलाग्रों में से एक (व.स.) २ नामों की सूची, कोश। उ०—नाममाळा नह व्याकरण कीधा कंठ ग्राभरण।—गुण विजय कवि

नांममाळिका—देखो 'नांममाळका' (रू.भे.)

नांमरद-वि० [फा० नामर्द] १ पुरुषत्वहीन, क्लीव, नपुंसक ।
उ०—मनवारां करो उण दिन मरद, मिळे घड़ी मनवार री । मनवार वणासी नांमरद, मोज इसी मनवार री ।—ऊ.का.
२ कायर, डरपोक ।

नांमरदी-सं०स्त्री० [फा० नामर्दी] १ नपुंसकता, क्लीवता ।
उ०—घुड़दौड़ां सूं ढूंगा घसगा, नांमरदी फिर व्यारी रे । लाखां रुपया लेखै लागा, कोई न लागी कारी रे ।—ऊ.का.
२ कायरता, भीरुता ।

नांमरूप-सं०पु० [सं० नामरूप] इन्द्रियों को जान पड़ने वाले सब के आधार-स्वरूप अगोचर वस्तु तत्व के परिवर्तनशील नाना रूप या आकार तथा उनके भिन्न-भिन्न नाम जो भेद-ज्ञान के अनुसार रखे जाते हैं ।
उ०—जो सुख नित्य प्रकास विभौ, नांमरूप आधार । मति न लिखै जाहि मती लिखै, सो मैं सुद्ध अपार ।—निसचळदास

नांमवर-वि० [फ़ा० नामवर] प्रसिद्ध, मशहूर, नामी ।

नांमवरी-सं०स्त्री० [फा० नामवरी] प्रसिद्धि, शोहरत, कीर्ति ।
रू०भे०—नांवरी ।

नांमवाळो-वि० [सं० नामन्+आलुच्] १ नामवाला, नामक ।
२ प्रसिद्ध, नामी ।

नांमसाद-वि० [सं० नाम+सादः] ख्याति-प्राप्त, विख्यात ।
उ०—देवराज नांमसाद इसड़ो जु सको जांणै मूंहडा बारै काढ़ी छै तौ करसी ।—नैणसी

नांमसेस-वि० [सं० नामशेष] १ जो नाम मात्र के लिए शेष हो, जिसका केवल नाम रह गया हो, नष्ट, ध्वस्त ।
२ मरा हुआ, मृत ।

नांमा-वि० [सं० नामा] १ नामधारी, नाम वाला. २ नामी, प्रसिद्ध ।
सं०पु०—यश, कीर्ति, प्रशंसा ।

नांमाकूळ-वि० [फ़ा० ना+अ० माकूल] १ अनुचित. २ जो योग्य न हो, अयोग्य, नालायक ।

नांमाड़णो, नांमाड़बो—देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)

नांमाड़ियोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नांमाड़ियोड़ी)

नांमाजादीक—देखो 'नांमजद' (रू.भे.)

नांमाजोड़, नांमाजोड़ो-सं०पु० [सं० नाम+राज० जोड़] ज्योतिष के अनुसार विवाह अथवा सगाई से पूर्व वर-वधू के नामों के अनुसार अथवा जन्म-कुण्डलियों के अनुसार किए गए मिलान की क्रिया का नाम जिससे यह मालूम पड़े कि विवाह कर देना ठीक है अथवा नहीं ।
उ०—जुड़णा जोड़ण नांमा जोड़ो । नारि नवो निवतै रो नाह । घावै खांन हजन खाफर घड़ । वीरति सिरजीयो वीमाह ।—दूदो
क्रि०प्र०—करणो, कराणो, लाणो ।
रू०भे०—नांवाजोड़, नांवाजोड़ो ।

नांमाणो, नांमाबो—देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)

नांमायोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नांमायोड़ी)

नांमारूम-वि० [देशज ?] बेचैन, व्याकुल, विकल ?
उ०—सो आ खबर अमरसिंहजी नूं गई, सो सुणत सु वौ काळो मरट हुय गयो । हाथ पटकै, दांतां सूं हथेळी नूं बटका भरै, कटारी सूं तकियो फाड़ नांखियो । जे म्हांरी घणा दिनां री संची जाजम बीकानेर रा खाली कर दीवी । मैं तौ इहां नूं जोधपुर रै पगां संचिया था सो हमैं जोधपुर री आस तौ चूकी दीसै छै । मुत्सदी अमराव हजूर री धीरज बंधावै, पश्चावै पण अमरसिंह तौ बावळै रै सी बात करै । आठ पहर तौ नामारूम थाळी न बैठो । सारा हठ कर नीठ थाळी पर बैठायो । अन्न छूट गयो ।
—अमरसिंह राठौड़ री वात

नांमालय-सं०पु० [सं० नामालय] पुरुष की ७२ कलाओं में से एक । (व.स.)

नांमालूम-वि० [फा० ना+अ० मालूम] जिसका ज्ञान न हो, जिसकी खबर न हो, जो मालूम न हो, अज्ञात ।

नांमावणो, नांमावबो—देखो 'नमाणो, नमावो (रू.भे.)
उ०—रूप अगर 'वगतेस' रै, मांन अगर 'वगतेस' । नांमावण अनमी नरां, दबावण दस देस ।
—ठाकुर वगतावरसिंघजी नै रूपजी कछवाह रो दूहो

नांमावळी-सं०स्त्री० [सं० नामावली] १ नामों की सूची ।
उ०—भक्ति रै प्रभाव जैतमाल और भी इसड़ा अनेक दुष्कर कांम करि आपरो नांम ख्यात कीधो, सो अजै भी भक्तलोकां री नांमावळी में प्रधांनता जणावै ।—वं.भा
२ श्रद्धालु भक्तों के ओढ़ने का एक प्रकार का कपड़ा जिस पर चारों ओर भगवान का नाम छपा होता है, रामनामी ।

नांमावियोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नांमावियोड़ी)

नांमि—देखो 'नांमी' (रू.भे.)
उ०—नवकोटी नांमि भणूं मारूआडि घण देस । घण कण घरि सविकहि तणइ कप्पड़ कणय सुवेस ।—कां.दे.प्र.

नांमित—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)

नांमियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नमाया हुआ, झुकाया हुआ ।
२ अधीन किया हुआ, मातहत किया हुआ । ३ एक पात्र से दूसरे पात्र में डाला हुआ, उंडेला हुआ ।
(स्त्री० नांमियोड़ी)

नांमी-वि० [सं० नामिन्] १ नामवाला, नामधारी ।
उ०—१ नयण निपाप करिस नारायण, पेख रूप तो भगत-परायण । सुक्रियथ स्रवण करिस हूं सांमी, नित-प्रत कथा सुणे बोह नांमी ।
—ह.र.

२ [illegible] नांमी [illegible], [illegible] में [illegible] मन।
—[illegible] मोदी

३— [illegible], विख्यात, मशहूर।

उ०— [illegible] मन [illegible] मुजरा है। नामा [illegible] नांमी [illegible], [illegible] नांमी मुंजरा है।—ऊ.का.

३ [illegible], [illegible], [illegible] ४ सुंदर।

उ०—[illegible] नांमो निडुरो गुन गारि। मिट [illegible] 'नांमी' बाहुई मरगारि।—दुरो

५ जबरदस्त, [illegible], बड़ा।

उ०—[illegible] में नागोर ग्रोर बीकानेर पातन में कजियो हुवो—गोर [illegible] वादन, सो नागोर री फोज भागी। बीकानेर री फतह हुई। [illegible] जोरो काम आयो। करण सोतलो पांचावत काम आयो। गोविंददास, [illegible], मेहतियो बिहारीदास, गोकुलदास, [illegible] गोविंद [illegible], मोहनसिंह, करणोत गेलागो, रावसिंह, [illegible] करमसदोत, [illegible] पातावत, जगो बारहठ, इतरा तो नांमी; दोनों ही धणो लोग काम आयो—अमरसिंह राठोड़ री वात

६ जो ठीक न हो, बुरो।

रू०—मैं जग में नांमी कीदी, मादहा मायो डुबोयो।

रू०—नोकरी सूं तो काढ़ दियो हमैं जग में नांमो ह्वो है।

यौ०—नांमी-नांमी।

स०पु० [सं० नमिः] विष्णु, नारायण।—डि.नां.मा

रू०भे०—नांमि, नांमीक, नांमु, नांमूं नांमिता, नीमी।

नांमीक—देखो 'नांमी' (रू.भे.)

नांमीगिरामी, नांमीनांमी, नांमीग्रांमी—वि०यौ० [सं० नाम—ग्राम] जिसकी ख्याति फैली हुई हो, जिसका बड़ा नाम हो, मशहूर।

नांमु—१ देखो 'नांम' (रू.भे.)

उ०—निसुणउ मइ जि प्रतिग्या कीजइ, पाहुनइइ चिय नांमु लिहीजइ।—पं.पं.च.

२ देखो 'नांमो' (रू.भे.)

नामुनासिब-वि० [फा० ना+अ० मुनासिब] जो उचित न हो, अनुचित।

नामुमकिन-वि० [फा० ना+अ० मुमकिन] जो संभव न हो, असंभव।

नांमू, नांमु—१ देखो 'नांम' (रू.भे.) २ देखो 'नांमो' (रू.भे.)

उ०—जिन नांमू [illegible] सै दांणिक सेइनि वांळि। तिम ध्याताए [illegible] रविनांम नि [illegible]।—नळाख्यान

२ देखो 'नांमो' (रू.भे.)

नांमूइ, नांमून—वि० [सं० नामन्+रा० प्र० ऊइ, ऊन] जिसका बड़ा नाम हो, विख्यात, प्रसिद्ध।

सं०पु०—प्रसिद्धि, ख्याति, यश।

रू०—[illegible] नाम्हुन [illegible]।

नांमैक—वि० [सं० नामन्+एक] नाम मात्र, किंचित्, जरा सा।

नांमेरा—देखो 'नांमो' (रू.भे.)

उ०—माल भड़ी पड़िया नांमेरा। मांझ सुप झीता नांमेरा। सूटे गांम दिता धन सीधा। दिस थ्याह पातरणा दीधा।—रा.रू.

नांमेदार-वि०—हिसाब रखने वाला।

नांमिहरबान-वि० [फा० ना+मेहरबान] जो नाराज हो, जिसकी कृपा न हो।

नांमोसी-सं०स्त्री० [फा० नामूसी] १ बदनामी, अपकीर्ति, बेइज्जती।

उ०—१ फेर लोगां में नांमोसी दिखाई। आज पहलां गेरी कठै ही नांमोसी न हुई। इण भाई पड़ोसी हुतां कह्यो—जे सवारी री पांडो ही न रह सको।—सूर सीगे कांधळोत री वात

उ०—२ जे मैं हुकम देऊ ग्रोर ना करें तो लोक में नांमोसी हो ग्रोर चाकर रै जीव में गहरी पड़ें।

—महाराज जयसिंह ग्रामेर रै धणी री वारता

उ०—३ तोसूं आप तो सवारी कर रांगो, ग्रागे तो परणाय देयस्यां। नहीं तो हमे धणी री नांमोसी हुई बिना नारेळ फालियां उतार देवता तो बीजी बात थी।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ नासमझी, मूर्खता। उ०—बादसाह सलामत थोड़ो मंताम दे दियो, गुजरो कर नै उठा सूं वहता बहिर हुवा सो सांझ रा री सराय जाय रहिया। उठै कई लोगां पूछी कुण छो ने कठै जावस्यो। सो इहां कह्यो सिपाही छां ग्रोर बादसाह रा नोकर छां। दूलचो जोइया ऊपर विदा किया छां। पकड़णो नूं सो सांहै पकड़ कर ल्यावस्यां। तद लोगां कह्यो ऊ तो जबरो छै। बाहुरी जगीयत कठै छै। पूठै आवै छै कना आगे गई। तद इहां कह्यो—दोनां हम असवार हैं, दोनां घोड़े साथ। चाकर दोनां हैं यह बस गो पूरी साथ। इतरी सुण सगळा चुप रहिया। केई तो बादसाह री नांमोसी बताई केई उण सिपाहियां री कहणी लागिया।

—दूलचो जोइया री वारता

नांमो-स०पु० [सं० नामन] १ अभिलेख, लिखावट, लेख। उ०—ताहरां सूरज्यो बोलियो—जो देवी सारदा मोनुं वर दियो हियै हूं सुरित नहीं। सचीत मता हुवो। इम करतां एकै सहर जाइ ठिकांणो ले नै जाइ उतरिया। मास २-३ तिहां रहा। तिहरै सहर विचै एक तळाव गणीजतो थो। तिण मैं कीरतथंभ नीसरियो। तिण ऊपर एक नांमो सु किण ही बचै नहीं। एकै दिन सुरिज्यो जाइ नीसरियो सु सुरिज्यै नांमो वांचियो। तै नीचे ग्रथ करोड़ वित बतायो। ताहरां राजा सुणाय वित कढ़ायो।—चौबोली

२ लेन-देन सम्बन्धी हिसाब। उ०—घरां रोटी जीम बाजार आयो। देवीदास नै भीतर बैसांणियो। साह हाट रै बारणै बैठो नांमो मांडै छै।—दयक दरियाव री वात

वि०वि०—महाजनी बहीखाता प्रणाली के अनुसार वस्तुगत खातों में प्राप्त करने वाले अथवा पाने वाले खाते के उतनी राशि नाम (नामे) तथा देने वाले खाते के उतनी राशि जमा लिखी जाती है,

व्यक्तिगत व नाम मात्र (nominal) के खातों में उनके सम्बन्ध में दी जाने वाली राशि उनके नाम (नामै) लिखी जाती है और प्राप्त होने वाली राशि को जमा में लिखी जाती है। कच्ची रोकड़ बही, पक्की रोकड़ बही, खाता बही, कच्चा आंकड़ा, पक्का आंकड़ा आदि में बायां भाग जमा का तथा दायां भाग नाम (नामै) का होता है किन्तु नकल बहियों में इस प्रकार के दो भाग नहीं होते हैं।

यौ०—नामो-ठामो, नामोले-खो।

३ देखो 'नांम' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ रिण 'जोधो' 'रिणछोड़' पड़ै खग दाख पराक्रम। पीथळ वीठळदास, धार चंद्रभांण सांम ध्रम। 'दीपो' कुंभकरन्न, पड़ै माहव जगपत्ती। 'रांमो' नांमो राख, पांत वसियो सुरपत्ती।—रा.रू.

उ०—२ वजाड़ै खाग कुंभाथळां वारणा, राड़ रा थंभ खत्रवाट रसिया। अमर नांमो करै देस दस ऊपरै, वर अछर 'रुघा' हर सुरग वसिया।—पहाड़खां आढ़ो

उ०—३ कल्यांण तणो 'रांमो' कहै, सझूं समांमां खग समर। करि जीत विहद कांमो करूं, इळा सुजस नांमो अमर।—सू.प्र.

नांय—१ देखो 'नांई' (रू.भे.)

उ०—पोह दूजा देसां परवेसां, जोया वोह गढ़ कोटां जाय। मैं राखियो थूअे मेड़तिया, निरधन रा आभूखण नांय।—ओपो आढ़ो

२ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—१ भलां ब्राह्मणी वात तूं, काहे करत बणाय। या कूं मैं भक्षण करूं, छोडूं किंहि विध नांय।—सांई री पलक में खलक

उ०—२ कव को टेरत कांन जू, करुणा आवत नांय। दीनानाथ दयाळ जू, अजू न आवो काय।—गजउद्धार

नांरतो—देखो 'नवरात्र' (अल्पा., रू.भे.)

नांरा—देखो 'नौरा' (रू.भे.)

नांरो—देखो 'नोहरो' (रू.भे.)

नांळ—देखो 'नौळ' (रू.भे.)

नांलायक—देखो 'नालायक' (रू.भे.)

नांळी—देखो 'नौळी' (रू.भे.)

नांव—देखो 'नांम' (रू.भे.)

उ०—१ चारण कवि थाट वड चौकी। वड दातार चढंती वेस। रांम अघो ऊगतां अघो रवि। नांव जपै नव सहस-नरेस।

—महाराजा करणसिंघ रो गीत

उ०—२ खुधा न भाजै पांणियां, त्रखा न भाजै अन्न। मुकत नहीं हर नांव विन, मांनव साचै मन्न।—ह.र.

उ०—३ हर हर करै न पांतरै, हर रो नांव रतन्न। पांचूं पांडव तारिया, कर दागियो करन्न।—ह.र.

उ०—४ अरजन भींव रा वेटा कांम आया, वडो नांव कियो।

—नैणसी

उ०—५ गढ़ खडि पडंती गागुरण, दिढ़ राखै सुरतांण दळ। संसारि नांव आतम सरगि, अचळ वेवि कीधा अचळ।—अ० वचनिका

नांवड़ो—देखो 'नांम' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ लीलोती चौवीस मांगै, गिणै न छोटी गांवड़ो। जद नींम सगळां सूं पहली, थारो ही सुभ नांवड़ो।—दसदेव

उ०—२ अबै धावण ज्यांका वधांवणा नांवड़ा उबारणा। हर गीतड़ा गवांवणां।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

नांवजाद, नांवजादो, नांवजादीक—देखो 'नांमजद' (रू.भे.)

उ०—१ पवारां रै एक मुहतो वडो आदमी छै। परधांन वडो आदमी नांवजाद छै।—नैणसी

उ०—२ तिण समै चारण भांणो, मीसण जात रो, गौड़ां रो बारहट, चीतोड़ रै गांव राठ कंकोदमियै रहै छै; सु नांवजादो चारण छै। वडा आखरां रो कहणहार छै।—नैणसी

उ०—३ तरै देवराज री धाय डाही थी, तिण देवराज नूं प्रौ।। लूंणा नूं सूंपियो, कह्यौ—"थारै सांढ़ १ हाथबाथ छै तिका नांवजादीक छै। थे इतरो आपणा धणी रो बीज उबारो, ले नीसरो।

—नैणसी

नांवणो, नांवबो—क्रि०स०—१ चलाना, खेना। उ०—सांच झूठ झूठ सांच राचतो रह्यो। रूप कूं कुनाव नाव नांवतो रह्यो।—ऊ.का.

२ देखो 'नांमणो, नांमबो' (रू.भे.)

नांवणहार, हारो (हारी), नांवणियो—वि०।

नांवाड़णो, नांवाड़बो, नांवाणो, नांवाबो, नांवावणो, नांवावबो—प्रे०रू०।

नांविओड़ो, नांवियोड़ो, नांव्योड़ो—भू०का०कृ०।

नांवीजणो, नांवीजबो—कर्म वा०।

नांवदेव—देखो 'नांमदेव' (रू.भे.)

नांवियोड़ो-भू०का०कृ०—१ चलाया हुआ, खेया हुआ।

२ देखो 'नांमियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नांवियोड़ी)

नांह, नांहि, नांही—देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—१ जस प्यारो पुरसां जिकां, नांणो प्यारो नांह। नांणो थिर ठहरै नहीं, जस जुग जुग रह जांह।—बां.दा.

उ०—२ जीभ कंठ हिय प्रकत जुग, कहियो नांहि करंत। कहै दुओ कहियो करो, कुकवि कुलच्छणवंत।—बां.दा.

उ०—३ निज सुखरुख सेव करावो नांही, दाखै घन घन जांबूदीप। चूंडा हरा उवारण चौजां, मोजां अहिज 'मांन' महीप।—बां.दा.

ना—सं०पु० [सं० नृ] १ मनुष्य, नर (डि.को.)

२ मुख (एका०)

सं०स्त्री०—३ वनिता (एका०)

वि०—निपुण (एका०)

अव्य० [सं०] निषेध या अस्वीकृति सूचित करने के लिए बोला जाने वाला शब्द। नहीं, न। उ०—१ चीतै घण सैलांण कूंतड़ी इण विघ आंणै। संख पदमणा वार पेखतां मो घर जांणै। ना

[illegible] कूकरो [illegible] । [illegible] म [illegible] [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] मार ढींढी मो बोनो । दीनी बाळक [illegible] ना मंगोहर मेर, मेर मीठा ना [illegible] । ना [illegible] विरोम, [illegible] री रमतो ।—दसदेव

उ०—३ [illegible] ना मिट्ठै । पट काढै पकवान, ना [illegible] ।

प्रत्य०—१ [illegible] का [illegible] का चिन्ह के । उ०—१ दुरमति [illegible] ।—म.कु.

उ०—२ [illegible] ना, सेर नै ढोरो परिस्त ।—जसवाणी

२ [illegible] का चिन्ह, को । उ०—[illegible] ना तोवाह मला ।
—पी.ग्रं.

ना'—१ देखो 'नाद' (रू.भे.)

२ देखो 'नाभि' (रू.भे.)

३ देखो 'नाह' (रू.भे.)

नाइर—देखो 'नाहर' (रू.भे.)

नाइ—देखो 'नाई' (रू.भे.)

नाइक—देखो 'नायक' (रू.भे.)

उ०—१ देवपति गुन सागर दाइक, नाम रतारण नरां नाइक । दक्खिण भंवरा देव दरसण, प्रिथी सागे पाय ।—ल.पि.

उ०—२ रमै नाना विधि नाइक रघु ।—रा.रा.

नाइका—देखो 'नायका' (रू.भे.)

उ०—१ नाइका नाइक दीध नरिंद । मांणो रित संग सयं जिम इंद ।—रा.रा.

उ०—२ पवळग्रिह धंपोळई तरळ तुरंगम नासई नाइका नासई ।
—व.स.

नाइतफाकी—सं०स्त्री० [फा० नाइत्तिफाकी] जहां वैमनस्य हो, जहां मेल न हो, विरोध, फूट ।

नाइन—देखो 'नायण' (रू.भे.)

उ०—इतरी कहि नाइन पास जाइ बैठी । कही तू म्हारी मांणोजी रौ हूं थारी माली हूं ।—पोघोली

नाइब—देखो 'नायब' (रू.भे.)

उ०—इमांम परम के सच्चे गुमवसतो नाइब । सिंधु के समाव सरस्वती के नाइब ।—सू.प्र.

नाइबी—देखो 'नायबी' (रू.भे.)

नाई—सं०स्त्री० (बहु० नाया) १ हल के साथ बांध कर बीज बोने का उपकरण जो पोलमें बांस आदि के डण्डे का बना होता है ।

रू०भे०—नाइ, नायी ।

यौ०—नाई-बंधणी

अल्पा०—नायली, नायडी ।

२ बैल गाडी के पहिए के मध्य धुरा के ऊपर लगाए जाने वाले लकड़ी के डण्डे ।

अल्पा०—नायली ।

सं०पु० [सं० नापित] (स्त्री० नायण) ३ नापित, हज्जाम (हि.को.)

उ०—पराक मतारा कांम में, मो दरसावै गैर । नाई नूं दीधी मुहर, बाह्मन टाकर पैर ।—बां.दा.

रू०भे०—नाइ, नाउं, नाउ, नाऊं, नाऊ ।

४ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—रांम सनेहा सांई हो, रासो भोट पोट सबूं सागै । समझि पड़ै कछु नाई हो ।—ह.पु.वा.

५ देखो 'नाई' (रू.भे.)

उ०—सारं आदमी भी जाट नाई सा बताया । भैली में कबोला ईं सझाई तोर पाया ।—शि.वं.

नाई बधणी-सं०स्त्री०—सूत या चमड़े की बनी वह रस्सी जिससे हल के साथ खोखले बांस का बना बीज बोने का उपकरण (नाई) बांधते हैं ।

नाउं, नाउ, नाऊं, नाऊ—१ देखो 'नांम' (रू.भे.)

उ०—नाउ छोटी मोटी कहोटी मोक्ष नहीं, विकट जटा मुकुटि मोक्ष नहीं ।—व स.

२ देखो 'नाई' (रू.भे.)

नाउमेदी, नाउम्मीदी-सं०स्त्री० [फा० ना-उम्मेदी] (वि० नाउमेद, नाउम्मेद) निराशा ।

नाऊं, नाऊ—१ देखो 'नांम' (रू.भे.)

२ देखो 'नाई' (रू.भे.)

३ देखो 'नाउ' (रू.भे.)

नाएट—देखो 'नासेट' (रू.भे.)

नाएटू—देखो 'नासेटू' (रू.भे.)

नाओलाव, नाओलाद-वि० [फा० ना+अ० ओलाद] जिसके सन्तान न हो, निसन्तान । उ०—रायांताल राजा के समूंचा पूत बारा । नाओलाव रैगा पांच सातां का पसारा ।—शि.वं.

नाकंद-वि० [फा०ना+कंदः] बिना सिखाया हुआ अशिक्षित, अल्हड़ ।

वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग प्रायः दो साल से कम उम्र वाले घोड़े के बच्चे के लिए होता है ।

नाक-सं०पु० [सं० नक्रम्] १ सूंघने व सांस लेने की इन्द्रिय, नासा, नासिका (हि.को.) ।

उ०—१ हाजरियो रंभा ने विना बारी ई टोळ'र से आवतो अर अवरां सूं अवगो कांम मळावतो पण रंभा कोई दिन नाक में मळ नहीं घाल्यो ।—रातवासो

पर्या०—गंधजांण, गंधवह, गंधहर, ग्रहणगंध, घ्रांण, तिलकमाण, नासका, सुरवप्रदि ।

मुहा०—(१) नाक ऊंचो राखणो—इज्जत बनी रखना, प्रतिष्ठा बनी रखना ।

(२) नाक कटणो—प्रतिष्ठा जाना, इज्जत नष्ट होना ।

(३) नाक कटाणी— तिष्ठा विगड़वाना, इज्जत नष्ट करवाना।

(४) नाक कान काटणा—कठोर सजा देना।

(५) नाक काटणो—प्रतिष्ठा विगाड़ना, इज्जत नष्ट करना।

(६) नाक घसणो—बहुत विनती करना, मिन्नत करना, गिड़गिड़ाना।

(७) नाक घुड़णो—देखो 'नाक काटणो'।

(८) नाक चढ़णो—त्यौरी चढ़ना, क्रोध ग्राना।

(९) नाक चढ़ाणो—क्रोध की ग्राकृति पैदा करना, क्रोध से नथुने फुलाना, क्रोध करना, ग्ररुचि दिखाना, पसन्द न करना, घृणा प्रकट करना, घिन खाना।

(१०) नाक डुवाणो—ग्रप्रतिष्ठा का कार्य करना, बुरा कार्य करना।

(११) *नाक डुवो नै मरणो—ऐसा बुरा कार्य करना* जिससे किसी को मुंह दिखाने योग्य न रहे। ऐसा कार्य करना जिसके कारण ग्रात्महत्या करना बेहतर समझा जाय।

(१२) नाक फाटणो—बहुत बदबू मालूम होना, ग्रसह्य दुर्गन्ध ग्राना।

(१३) नाक वहणो—देखो 'नाक वैणो'।

(१४) नाक बींधणो—देखो 'नाक वींदणो'

(१५) नाक मातै(माथै)टींचियो देणो—बेइज्जती करना, ताना देना।

(१६) नाक मातै ठोकणो—देखो 'नाक मातै टींचियो देणो'।

(१७) नाक मातै देणो—देखो 'नाक मातै टींचियो देणो'।

(१८) नाक मातै माखी बैठणो—कलंकित होना, एहसानमंद होना, दोषयुक्त होना, त्रुटिपूर्ण होना, खरा न होना।

(१९) नाक में दम करणो(लाणो)—बहुत तंग करना, सताना, हैरान करना।

(२०) नाक से बोलणो—नाक से बोलना, ग्रनुनासिक ध्वनि में बोलना, स्पष्ट न बोलना, बहुत बारीक ग्रावाज में बोलना।

(२१) नाक रगड़णो—देखो 'नाक घसणो'।

(२२) नाक राखणो—प्रतिष्ठा रखना, इज्जत वाला होना, इज्जत बचा लेना।

(२३) नाक री डांडी वळणी—नाक का बांसा टेढ़ा हो जाना जो मरने का लक्षण समझा जाता है।

(२४) नाक री सीध में—विना इधर-उधर मुड़े, ठीक सामने।

(२५) नाक रैणो—प्रतिष्ठा बनी रहना, इज्जत बच जाना।

(२६) नाक वाढ़णो—देखो 'नाक काटणो'।

(२७) नाक वींदणो—नथनी ग्रादि पहनाने के लिए नाक में छेद करना।

(२८) नाक वैणो—नाक में से कपाल-कोशों का मल निकलना।

(२९) नाक सळ घालणो—ग्ररुचि प्रकट करना, घृणा प्रकट करना, ग्रनिच्छा प्रकट करना।

(३०) नाक सिकोड़णो—देखो 'नाक में सळ घालणो'।

(३१) नाकां छेक—पांवों से लगा कर नाक तक।

ग्रल्पा०—नाकड़लो, नाकूंडियो, नाकूंडो, नाको।

मह०—नक, नक्क, नाकीड़।

[सं०] २ स्वर्ग, देवलोक (ग्र.मा., नां.मा.)

उ०—तो भी तत्काळ ही ऊठि बाहण बिहूणो भी नाक री नारियां रा झुंड झुकावतो निसंक जूटियो। (वं.भा.)

यौ०—नाकनटी, नाकपति।

नाकड़लो—देखो 'नाक' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—नाकड़लो मूमल रो खांडइयै री धार ज्यों, हां जी रे, ग्रांखड़ल्यां मूमल री प्याला मद भरघा, म्हारी इमरत-भरी मूमल, हालै नी रसीलै रै देस में।—लो.गी.

नाकदर—वि० [फ़ा०ना+ग्र० क़द्र] १ जिसकी कोई इज्जत या प्रतिष्ठा न हो। ज्यूं—ग्रो तौ बडो नाकदर ग्रादमी है।

२ जो किसी के गुणों का ग्रादर न करे, क़द्र न करने वाला।

नाकदरी—सं०स्त्री० [फ़ा०ना+ग्र० क़द्र+रा०प्र०ई] बेइज्जती, ग्रप्रतिष्ठा।

नाकनटी—सं०स्त्री०यौ० [सं०] स्वर्ग में नाचने वाली ग्रप्सरा (डिं.को.)

नाकपत, नाकपति—सं०पु०यौ० [सं० नाकपति] इन्द्र, देवराज।

नाकफूली—सं०स्त्री० [सं० नक्र+फुल्ल+रा.प्र.ई] स्त्रियों के नाक में धारण करने का एक ग्राभूषण। (व.स.)

नाकबूल—वि० [फ़ा०ना+ग्र० कबूल] जो स्वीकार न हो, जो मंजूर न हो, ग्रस्वीकृत, नामंजूर।

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

नाकबूली—सं०स्त्री० [फ़ा०ना+ग्र० क़ुबूल+रा०प्र०ई] नामंजूरी, ग्रस्वीकृति।

नाकवा'—सं०पु० [सं० नौकावाह] केवट, खेवैया (ग्र.मा.)

नाकांम—वि० [फ़ा०ना+काम] जो ग्रपने लक्ष्य पर नहीं पहुंचा हो, जिसका उद्देश्य सिद्ध न हुग्रा हो, जिसका मनोरथ पूर्ण न हुग्रा हो।

ना'का—देखो 'नासका' (रू.भे.)

नाकादार—देखो 'नाकेदार' (रू.भे.)

नाकाबंदी—सं०स्त्री० [राज० नाको+फा० बंदी] १ किसी रास्ते या प्रवेश-द्वार में जाने की रुकावट।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

सं०पु०—२ वह सिपाही जो किसी द्वार या रास्ते पर पहरे के लिए खड़ा किया गया हो. ३ चौकीदार, पहरेदार।

नाकाबिल—वि० [फ़ा०ना+ग्र० क़ाबिल] १ जिसमें काबलीयत न हो, ग्रयोग्य. २ जो शिक्षित न हो, ग्रशिक्षित।

नाकार—वि०—१ कृपण, कजूस (डिं.को.)

२ बुरा, खराब, निकम्मा। उ०—कुटल निपट नाकार, नीच कपट छोडै नहीं। उत्तम करै उपकार, रूठां तूठां राजिया।—किरपारांम

३ देखो 'नकार' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ ग्रावै कोई सरणि है जौ, न करै ताल नाकार । घर कर ग्राधि कर करै है तौ, करमैं सुजस ग्रपार ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] जाळोर [illegible] जुग नवराजै, वारदियौ निरवाळ नहैं नाकार न कादै ।—[illegible]

उ०—३ [illegible] नाकारेबौ हो, [illegible] हरि नारेबौ हो । सेवक [illegible] नाकारे बौ हो ।—[illegible]

नाकारज—देखो 'नाकार' (रू.भे.)

उ०—[illegible] नाकारज [illegible] दीसा मोसो माई बहूमानि रे ।

—प.कु.

नाकारणौ, नाकारबौ-क्रि०स० [सं० ना+कार+रा.प्र.णौ] नामंजूर करना, ग्रस्वीकृत करना, मना करना, इन्कार करना ।

उ०—१ सो पाछा जोधपुर ग्राई, ग्राद मौतर नू देणरो करायो, टीको दियो सो रामसिंहजी नाकारियो । ग्राद नूं कह्यौ—कारीजी नूं कहाबो, ग्राडोर छोडो, थानै टीको देस्यां ।

—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

उ०—२ राहरा रिणधीर चाचड़ो ग्राड ग्रायनै सतां रै टीको कियो । रिणमलजी नूं कह्यो—जो पटो लेवो तो ग्रावो राहरा रिणमलजी पटो नाकार मोकळिया ।—नैणसी

उ०—३ जोघा नाकारी जरी, सिर ग्राया गुरसांण । गिर पहुंचळ गज मासळो, सिर मासो ग्रारांण ।—रा.रू.

नाकारणहार, हारो (हारी), नाकारणियो—वि० ।

नाकारियोड़ो, नाकारियोड़ो, नाकारयोड़ो—भू०का०कृ० ।

नाकारीजणो, नाकारीजबौ—कर्म वा० ।

नकारणौ, नकारबौ—रू०भे० ।

नाकारियोड़ो-भू०का०कृ०—नामंजूर किया हुग्रा, ग्रस्वीकृत किया हुग्रा, मना किया हुग्रा, इन्कार किया हुग्रा ।

(स्त्री० नाकारियोड़ी)

नाकारो—देखो 'नकार' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—१ तद ग्रैगै हरदास ऊहड़ नूं पूछियो । तद हरदास नाकारो कियो ।—द.दा.

उ०—२ ग्रब जाणै 'विजो' विड़ण विधि जांणै, जांणै नाद भेद गुण जाण । बिहूं हेक ग्रगवाट न जांणै, हेकै नाकारै ग्रणजांण ।

—ईसरदास बारहठ

उ०—३ ऊमर कह्यो—'ढोलाजी ! दारू पीवीजै ।' ढोलैजी रै नाकारो करण री ग्राखड़ी है । पछै ढोलोजी दारू ग्रमल पीवण लागा ।—ढो.मा.

उ०—४ पछै रांणी बुलाई तो उण नाकारो कियो । मागण ग्रसवार [illegible] ।—[illegible] री वारता

नाकासण-सं०पु० [सं० नाक+ग्रासन] १ इन्द्र का ग्रासन, इन्द्र का राज (ना.मा.) ।

[सं० नाक+ग्रसन] २ नाक का मल जो ग्रपान-कोशों से ग्राता है ।

नाकी-सं०पु० [सं० नाकिन्] १ इंद्र, देवराज (ग्र.मा.)

२ देवता, सुर (ग्र.मा., डि.को.)

३ देवताग्रों की एक जाति (ग्र.मा.)

सं०स्त्री०—४ इज्जत, प्रतिष्ठा, मान ।

उ०—१ दंताळा उवेह जाडा भूरा डाडेराव झाकी, पैला गार पातिसा गुराको सळा पाण । ग्राव राखी कजाकी ग्रावगी राजा ग्रणी ग्राखी, ग्रवीनाथा तणी नाकी भुजा ग्रवीनाथ ।

—महाराजा मानसिंह रो गीत

उ०—२ रावणहारा रहमांण है, निरधारां नाकी ।

—केसोदास गाडण

५ मर्यादा. ६ रस्सी, डोरी ग्रादि का वह छोटा फंदा जिसमें किसी वस्तु को फंसाई या ग्रटकाई जा सके. ७ बटन डालने का छेद ।

यौ०—नाकी-बोरियो ।

वि०—मान रखने वाला, प्रतिष्ठा रखने वाला ।

उ०—ऐराकी नाकी किया, सुभट कजाकी सत्थ । ऐवाकी साहौ 'ग्रभो', नाकी हिंदु समत्थ ।—रा.रू.

नाकीड़—देखो 'नाक' (मह., रू.भे.)

नाकूंडियो-सं०पु० [सं० नाक कुंडिक] १ गोवत्स के नाक के साथ पहिनाया जाने वाला चन्द्राकार काष्ठ का बना उपकरण विशेष जिससे वह ग्रपनी माता के साथ रहने पर भी दुग्धपान नहीं कर सकता ।

[सं० नाक कुंडिक] २ गोवत्स के नाक में होने वाला रोग विशेष ।

३ पशु की नाक पर चोट लगने से होने वाला रोग विशेष जिससे उसे सांस लेने में कठिनाई होती है.

४ देखो 'नाक' (ग्रल्पा०, रू०भे०)

नाकूंडो—देखो 'नाक' (ग्रल्पा०, रू०भे०)

नाकू-सं०पु०—दीमक का बनाया हुग्रा शिखरनुमा मिट्टी का बमीट, वल्मीक (डि.को.)

नाकेदार-सं०पु० [रा० नाको+फा० दार] १ नाका या मुख्य द्वार पर रहने वाला, चौकीदार. २ वह कर्मचारी या ग्रफसर जो प्रायः सीमा के ग्राने-जाने के स्थानों पर किसी प्रकार का कर वसूल करने के निमित्त रहता हो ।

वि०—जिसमें नाका या छेद हो ।

रू०भे०—नाकादार ।

नाके-बंदी—देखो 'नाका-बंदी' (रू.भे.)

नाकेल—देखो 'नकेल' (रू.भे.)

नाकेलियो, नाकेलियो—१ देखो 'नकेल' (ग्रल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'नाको' (ग्रल्पा., रू.भे.)

नाको-सं०पु० [देशज] १ किसी नगर, बस्ती ग्रादि में ग्रमना-गमन

करने के रास्ते का प्रारंभ-स्थान। उ०—सहर रै नाकै ऊपर फौज रै मांहि जाय डेरौ कियौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ नगर, दुर्ग आदि में गमनागमन करने का स्थान, फाटक, दरवाजा मुहा०—नाको बांधणौ, नाको रोकणौ—आने-जाने का रास्ता बन्द करना।

३ किसी मार्ग का वह अन्तिम स्थान जहां होकर लोग मुड़ते, घुसते या निकलते हैं।

४ किसी देश, राज्य, प्रान्त आदि का वह सीमावर्ती स्थान जहां पर कर वसूल करने के लिए सिपाही या अफसर रहता हो।

५ वह स्थान या चौकी जहां पर चौकीदार कर वसूल करने के निमित्त रहता है।

६ साहस, हिम्मत, शक्ति। उ०—हुयग्या हत आसा हकबक सुणि हाको, निरधन धनवाळां नीकळग्यो नाको।—ऊ.का.

७ सूई या सूए का छेद जिसमें डोरा डाला जाता है।

८ रस्सी आदि के छोर पर बना हुआ छेददार स्थान।

९ देखो 'नाक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—वळती दूसरी इम कहै, म्हारा मन में धाको रे। तोरण आयां करै आरती, टीको काढ़ नै सासू खांचै नाकौ रे।

—जयवांणी

नाखत—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

नाखत-माळा—देखो 'नक्षत्र-माळा' (रू.भे.)

नाखत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—थया व्रंद नाखत्र कै चंद्र साथै। कना 'सोभियो-सिभु जिकेस माथै।—रा.रू.

नाखत्र-माळ, नाखत्र-माळा—देखो 'नक्षत्र-माळा' (रू.भे.)

उ०—जूटै इम 'पावू' 'जींद' जंग। नाखत्र-माळ तूटै निहंग।

—पा.प्र.

नाखित्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—उडै घरण बांण खतंग अंगार, पड़ै झड़ि नाखित्र जांणि अपार।—वचनिका

नाखित्रमाळ—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

उ०—गड़ां सवावा गणणिया, नाखित्रमाळ निहंग।—वचनिका

नाखून-सं०पु० [फा० नाखुन] नख, नाखून (डि.को.)

नाख्यत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—हिक नाख्यत्र 'पाल' जनम्म हुवो। दखजै कुण नाख्यत्र मींढ़ हुवो।—पा.प्र.

नागंद, नागंद्र-सं०पु०यौ० [सं० नाक+इन्द्र] १ इन्द्र, सुरपति।

उ०—ग्रहै खग नागंद कोप गिरंद, मथै सुर अस्सुर जांणि समंद।

—वचनिका

२ देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)

उ०—धर खेहां छाई घूहड़िये, खेड़ं चे असं खेड़िया। नर हैवर नागंद्र नरेहर, गैवर गाडा देख गया।—राव जोधा री गीत

३ देखो 'नागेंद्र' (रू.भे.)

नाग-सं०पु० [सं० नाग] (स्त्री० नागण) १ सर्प, सांप (अ.मा.)

उ०—सखी अमीणो साहिबो, निरभै काळो नाग। सिर राखै मिण सांमध्रम, रीझै सिंधू राग।—बां.दा.

२ कश्यप और कद्रू से उत्पन्न सन्तान।

वि०वि०—पुराणानुसार सृष्टि के प्रारम्भ में कश्यप और उनकी पत्नी कद्रू से निम्न आठ पुत्र हुए जो अष्टकुली नाग कहलाए—अनंत, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शङ्ख, कुलिक और अपराजित। मतांतर से—अनंत, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शङ्ख तथा कुलिक।

इनके कारण जब त्रैलोक्य में बहुत उपद्रव होने लगे तो ब्रह्मा ने इन्हें शाप दिया कि जनमेजय के नाग यज्ञ में तुम सपरिवार नष्ट हो जाओ। मतांतर से ब्रह्मा ने इन्हें कहा कि तुम अपनी माता के शाप से नष्ट हो जाओगे तदनुसार कद्रू ने कुछ नागों को जिन्होंने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया जनमेजय के यज्ञ में नष्ट होने का शाप दिया। ब्रह्मा के आगे अनुनय करने पर उन्होंने द्रवित होकर इनको पाताल, सुतल और वितल नामक स्थानों या लोकों में भेज दिया।

३ शेष नाग। उ०—१ आग भड़हड़ै ढूंढै रमै रण मांगणी, नाग फण नमै करै ससत्र नागा। कठा लग कवादी व्यूह रचना करै, लठा-वन तणा भड़ लड़ण लागा।—कविराजा बांकीदास

उ०—२ छोनि मचक्की भारकै, फन नाग डगाया। चौकै दिग्गज चिक्क रै, उर कल्प भ्रमाया।—वं.भा.

४ सर्प जाति विशेष जिनका ऊपरी शरीर मनुष्याकृति का और नीचे का धड़ सर्प शरीराकृति का होता है।

उ०—नाग देव नर तोहि मनावत, पढ़ि पढ़ि सुयस पार नहिं पावत।

—मे.म.

५ हाथी, गज (डि.को., अ.मा.)

उ०—१ बढ़ावत 'केहरी' केहरि बाग, नखायुध गाजत भाजत नाग।

—मे.म.

उ०—२ आलम सूं मालम थई, विदिसा दिसा विगत। असवारी कज आखियो, आणो नाग उचित।—रा.रू.

६ ऐरावत. ७ काजल (अ.मा.)

८ ज्योतिष के चार स्थिर करणों में तीसरे करण का नाम.

९ शरीरस्थ दश प्रकार के वायु में से छठवां वायु जिसके द्वारा डकार आती है. १० सीसा धातु (डि.को.)

११ कालीदह का नाग।—दहै काज जळ डोहि नाग नाथियो निभै नर।—पी.ग्रं

१२ एक प्राचीन राज वंश जिसका विवरण महाभारत, पुराणादि ग्रंथों में मिलता है।

वि०वि०—[illegible]
[illegible] है। महाभारत काल में अनेक नाग-वंशी राजा विद्यमान थे। इनकी भी अद्भुत लीला व अलौकिक शक्ति संबंधी कथाएं बौद्ध ग्रंथों में तथा राजतरंगिणी में मिलती हैं। इस वंश में कई राजा हुए हैं जिनमें तक्षक, कर्कोटक, धनंजय, अश्वसेन आदि प्रसिद्ध गिने जाते हैं। तक्षक के ही वंशज तक्ख, ताक, टक्क, टाक, टोक आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। टाक वंश के राजपूत अभी राजस्थान में मिलते हैं और वे अपने वंश का सीधा सम्बन्ध तक्षक से मिलाते हैं। विष्णु पुराण में नव नागवंशी राजाओं का पद्मावति (ग्वालियर राज्य) कांतिपुरी और मथुरा में राज्य करना लिखा है, यथा—'नव नागाः पद्मावत्यां कान्तीपुर्यां मथुराम्' (विष्णु पुराण, अंश ४, अध्याय २४)। इसी प्रकार वायु और ब्रह्माण्ड पुराण में भी नागवंशी नव राजाओं का चंपापुरी और सात का मथुरा में होना बतलाते हैं, यथा—नव नागास्तु भोक्ष्यन्ति पुरी चम्पावती नृपाः मथुरां च पुरीं रम्यां नागा भोक्ष्यंति सप्तवैः।

(वायु पुराण ९९/३८२ और ब्रह्माण्ड पुराण ३/७४/१९४)

जब सिकंदर भारत आया तो उससे पहले पहल तक्षशिला का नागवंशी राजा ही मिला। उसने सिकन्दर का कई दिनों तक तक्ष-शिला में आतिथ्य किया और अपने शत्रु पौरव राजा के विरुद्ध चढ़ाई करने में सहायता पहुँचाई।

इतिहास से पता चलता है कि महाप्रतापी गुप्तवंशी राजाओं ने नागवंशियों को परास्त किया था। प्रयाग के किले के भीतर जो स्तंभ है उस पर स्पष्ट लिखा है कि महाराज समुद्रगुप्त ने गणपति नाग को पराजित किया था।

बाण भट्ट द्वारा रचित हर्ष चरित्र में भी नागवंश के राजा नागसेन का उल्लेख मिलता है। उसने लिखा है कि—'नागकुल जन्मनः सारिका श्रावित मन्त्रस्यासीन्नाशो नागसेनस्य पद्मावत्याम्।'

(हर्ष चरित्र उच्छ्वास ६, पृ. १९८)

नागवंशी राजा नागसेन सारिका द्वारा गुप्त भेद प्रकट हो जाने के कारण मारा जाना माना जाता है।

मालवे के परमार राजा भोज के पिता सिंधुराज का विवाह भी नागवंश की राजकन्या शशिप्रभा के साथ होने का उल्लेख मिलता है। नागवंश की कई शाखाएँ थीं। उनमें से टाक या टाक शाखा का छोटा सा राज्य यमुना के तट पर काष्ठा या काठा नगर में विक्रम की १४ वीं और १५ वीं शताब्दी तक था।

नागवंश का अधिकार प्राचीन काल में राजस्थान के भूभाग पर भी अवश्य रहा होगा, इसके चिन्ह मिलते हैं। मारवाड़ की प्राचीन राजधानी मंडोवर (जो जोधपुर शहर से लगभग ६ मील दूर है) के आस-पास कुछ ऐसे स्थान मिलते हैं जिनसे सिद्ध होता है कि मार-वाड़ पर प्राचीन काल में नागवंश का राज्य था, यथा—नागकुण्ड और इसी कुण्ड के पास बहने वाली नदी नागादरी नाम से कहलाती है और यहां भादरव सुदि ५ को अब भी एक बड़ा मेला लगता है जो 'नागपंचमी का मेला' के नाम से विख्यात है। ऐसा अनुमान है कि यह दिन नागवंश के राजाओं के स्मारक का कोई त्यौहार-दिन होना चाहिए। मनोहर से इसका उल्लेख श्रावण सुक्ला पंचमी माना जाता है और इसका संबंध उस घटना से जोड़ा जाता है जब कश्यप के पुत्रों ने ब्रह्मा से प्रार्थना की थी और यह 'नागपंचमी' के नाम से प्रख्यात हो गई। इतना ही नहीं जिस पर्वत पर मंडोवर का किला बना हुआ है उसका नाम भोगी शैल है। 'भोगी' नाग का पर्याय है। भोगी शैल अर्थात् नागों का पहाड़।

मारवाड़ का प्रसिद्ध नगर नागोर भी नागवंश के राजाओं का बसाया हुआ है। नागोर नगर के भी पर्यायवाची शब्दों में—नाग-पत्तन, नागपुर, नाग दुरंग, अहिच्छत्रपुर आदि शब्द मिलते हैं। इसी प्रकार कोटा राज्य के शेरगढ़ कस्बे के दरवाजे के पास वि० सं० ८४७ माघ सुदि ६ का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें निम्न चार नागवंशी राजाओं के नाम मिलते हैं, यथा—बिंदुनाग, पद्म-नाग, सर्वनाग और देवदत्त।

अब तो राजस्थान में नागवंशियों का कोई खास स्थान नहीं है परन्तु राजस्थान में टाक वंश के राजपूत अब भी हैं।

१३ नागोर नगर का नाम। उ०—१ नाग दुरंग की तरफ फरासू ने पेसखाना खड़ा किया।—सू.प्र.

उ०—२ नाग दुरंग पति जवन साह दौलत दळ सब्बळ।—सू.प्र.

१४ नाग केसर।

१५ एक प्रकार का स्त्रियों का आभूषण विशेष (व.स.)

१६ आठ की संख्या सूचक शब्द॰.

१७ नौ की संख्या सूचक शब्द (डि.को.)

१८ अश्लेषा नक्षत्र।

१९ देखो 'नाक' (रू.भे.) (अ मा.)

अल्पा०—नागड़ियो, नागड़ो।

मह०—नागड़, नागेस।

नागउर—देखो 'नागोर' (रू.भे.)

उ०—गंगेवि राइ नागउर गढ्ढ सोकइद घाति भीड़िय गलग्ग।
—रा.ज.सी.

नागकंद-सं०पु०॰यौ० [सं०] हस्तिकंद।

नागकन्या, नागकिन्या-सं०स्त्री०यौ० [सं० नागकन्या] नाग जाति या वंश की कन्या।

वि०वि०—नागकन्याएं अत्यधिक सुन्दर मानी जाती थीं। (पुराण)

उ०—राजा कहै मोर तो मांहे किसो गुण छै। ताहरा मोर कहै। सुणि राजा हूं तोनूं नागलोक दिखाऊं तिण उर्थ नागकन्या देखिनै ऊभो मता रहै।—चौबोली

नाग-कुळ-संकेत-सं०पु० [सं० नागकुल-संकेत] नागवंश की विरुदावली।

उ०—एकि गारुड़ मंत्र जपइं छइं, एकि नागकुळ-संकेत पढ़इं छइं, एकि तोतला कुरुकुल्लाना मंत्र जापइं।—व.स.

नाग-केसर, नाग-केसरी–सं० पु० [सं० नागकेसर] एक सीधा सदाबहार सुंदर वृक्ष जो हिमालय के पूर्वी भाग, पूर्वी बंगाल, आसाम, बर्मा, दक्षिण भारत में बहुतायत से उत्पन्न होता है। इसके सूखे पुष्पों की पंखुड़ियां औषध-प्रयोग में काम आती हैं।

नाग-खड–सं०पु० [सं०] जंबु द्वीप के अन्तर्गत भारत खण्ड का एक विभाग जहां पर प्राचीनकाल में नागों का राज्य था।

नागड़—१ देखो 'नाग' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'नागो' (मह., रू.भ.)

नागड़ियो, नागड़ो—१ देखो 'नाग' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'नागो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—टांगड़ो भ्रूर लांगां टळे, पड़ै खिसकनै पागड़ो। नागड़ो तोई देखो मिलज, अमल न छोडै आगड़ो।—ऊ का.

नागचंपो–स०पु० [सं० नागचपक] नागचंपा।

नागचूड़–सं०पु० [सं० नागचूड] महादेव, शिव।

नाग-छतरी–सं०स्त्री०यौ० [सं० नाग+छत्र+रा.प्र.ई] बुरी गन्ध वाली एक प्रकार की खुमी, कुकुरमुत्ता।

नागछोर–सं०पु०यौ० [सं० नाग+राज. छोर] एक मादक द्रव्य, अफीम।

नागज–सं०पु० [सं०] सिंदूर (डि.को.)

उ०—प्रति दिन होत वेद विधि पूजन। घुरियत तत आनघ सिसर घन। धूप दीप नैवेद पुस्य फळ। कस्मीरज मलयज नागज कळ।
—मे.म.

नागजावी–सं०स्त्री० [सं० नाग+फा० जाद+रा०प्र०ई] नागकन्या।

उ०—जोइ गात्र टोळी मळी नागजावी, बढ़ै सांप ने सांमळी सूरवादी। अभे जग्गजेठो फरी नीर ऊंडे, काळी नाग सूं आवियौ कांन कूंडे।
—ना.द.

नागझाग–सं०पु० [देशज] एक मादक द्रव्य, अफीम (डि.को.)

नागड–सं०पु० [देशज] एक प्रकार का वाद्य विशेष। उ०—धां धां धपमु मुहर भ्रिदंग। चचपट चचपट तालु सुरंग। कधुंगनि धोंगनि धुंधा नादि, गाइं नागड दों दों सादि।—विद्याविलास पवाडउ

नागण, नागणि, नागणी–सं०स्त्री० [सं० नागिनी] १ मादा सांप, नागिन (डि.को.)

उ०—१ अहिल्या रेस दियौ तैं अंग। सरीर कुवज्जा कीध सुचंग। दीधी नळकूबर उत्तम देह। न भांग्यौ नागण नाग सनेह।—ह.र.

उ०—२ सू बंदूकां किण भांत री छै। गंगापार री, सीहनंद समियांणै री, लाहोर री, करनाटक री, फिरंग री थटा री। घणै सोनै रूपै में गरकाब कीवी थकी। नकसदार जांणै गोडियै नागण लांबी कीवी छै।—रा.सा.सं.

उ०—३ सित कुसमां गूंथी सुखद, वेणी सहियां अंद। नागणि जांणै नीसरी, सांपड़ि खीर समंद।—वां.दा.

उ०—४ वरत तणी तूटतां गुणी कोहर विचाळै, घणी सूथार निरधार धाई। लागणी संध तद सागणी लाव रै, उठै कर नागणी रूप आई।—बालावक्स बारहठ (गजूकी)

उ०—५ लागां नागणी जागणी नींद लोपै, अंगां दागणी लागणी भाग ओपै।—वं.भा.

२ कुलटा एवं दुष्ट स्त्री. ३ नाग जाति की स्त्री।

४ पीठ या गरदन पर होने वाली रोयों की लंबी भौंरी (स्त्रियों के लिए अशुभ)।

५ बैल, घोड़े आदि चौपायों की पीठ पर होने वाली एक भौंरी विशेष (अशुभ)।

६ एक प्रकार की तलवार।

रू०भे०—नागिणी।

नागणेच, नागणेचियां, नागणेची–सं०स्त्री० [देशज] राठौड़ों की कुल-देवी, चक्रेश्वरी। उ०—१ परठि नागांणै सझि परेच। निज नाम हुवौ जिण नागणेच।—सू.प्र.

उ०—२ बजै माल्हणा मात तुही बिराई। बळू तू प्रिथीराज रै राजबाई। पुनः माय गीगाय तुही पुणीजै। भुजाळी तुही नागणेची भणीजै।—मे.म.

नागदमणि, नागदमनी–सं०स्त्री [सं० नागदमनी] १ नागदौने का पौधा जो औषधि में काम आता है। उ०—डंक भरि सके न कोय जुगति जांणै जब जागै। नागदमणि हरि नांव रहै मन के मुख आगै।
—ह.पु.वा.

२ एक प्रकार का आभूषण ?

उ०—रुद्राखमाळा पहिरिणि एक नै हाथै नागदमनी वांधी छइ।
—व.स.

नागदह, नागदहो, नागदो, नागद्रह–सं०पु० [सं० नागहृद] १ मेवाड़ में एकलिंगजी के स्थान के समीप का एक जलाशय व जलाशय के समीप का गांव। उ०—एकलिंगजी थी नजीक उदैपुर दिसा कोस १ नागदहो गांव छै, नागदहा गांव रा उगवण नूं वडो तळाव छै, पड़िया साजा घणा देहुरा छै। तिण गांव इणां रा वडेरा रह्या छै।
—नैणसी

२ इस जलाशय के समीप बना हुआ बापा रावल का समाधि-स्थान।

वि०वि०—इस समाधि-स्थान के नाम के अनुसार बापा रावल के वंशजों (गहलोतों) के लिए बोला जाने वाला उपाधिसूचक शब्द।

उ०—नमते निय सेन तणी नागद्रह, भारथ भू भड़ विरतो भीर। पग किम रावत परठै पाछा, जड़िया परियां तणा जंजीर।
—रावत रतनसिंह चूंडावत सीसोदिया री गीत

३ इस नाम से प्रसिद्ध ब्राह्मण जाति का व्यक्ति जो इस स्थान से निकले हुए माने जाते हैं।

४ भारत के एक प्राचीन प्रदेश का नाम (व.स.)

५ वृंदावन के पास यमुना नदी का वह स्थान जहां कालो नाग रहता था।

रू०भे०—नागंद्र, नागंद्र, नागद्रहो, नागद्रह, नागध्रह, नागध्रहो, नागंद्र, नागद्रह, नागद्रहो, नागंद्र।

नागदही-संस्त्री० [सं० नाग+द्रह+रा.प्र.ई] वृंदावन के पास यमुना नदी का वह स्थान जहाँ कालीनाग रहता था।

उ०—तिण मोड़ री मारी करी उण नागदही मारोसी। पछ दीन दयाळ री जद्दां सूं सामिलै रही ही।—रा.सा.सं.

नागद्रही, नागदैह—देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)

उ०—अैरावण सौ सूं नागद्रम, जोते नह कामियो जुध। हाथां सूम अमर 'हाद्र' रर, भड़ारो भीत करियो भजुप।

नागद्वीप-संपु० [सं०] (जंबुद्वीप के) भारतवर्ष के नौ भागों में से एक। (पौराणिक)

नागधर-संपु० [सं०] शिव, महादेव।

नागनद्र, नागनद्रो—देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)

उ०—नागदा मझा गज गीर घर पयोजै, ताप पड़ नागदा तंक ताई। घर नडा नागदा बदल मायो उदग, नागद्रह नागदा गीर नाई।

—बद्रीदास गिड़ियो

नागनाथ-संपु० [सं०] १ जोगियों के रावल जाति के आदि पुरुष. २ नाग को नाथने वाले, श्रीकृष्ण। उ०—नरहर नागनाथ नारायण, गोम्यंद गोविंद गोवधर। घरापीस धानंख गिरधारी, कमलाकांत मछमछर।—र.ज.प्र.

नागपंचमी-संस्त्री० [सं०] श्रावण शुक्ला पंचमी (कहीं-कहीं भाद्रपद कृष्णा पंचमी) का पर्व। इस तिथि को भारत में प्रायः सर्वत्र नागों की पूजा की जाती है।

रू० भे०—नागपांचम।

नागपति-संपु० [सं०] १ सर्पराज वासुकी. २ ऐरावत हाथी।

नागपतिफेन-संपु० [सं० नागपति फेन] एक मादक द्रव्य, अफीम। (हि.को.)

नागपांचम—देखो 'नागपंचमी' (रू.भे.)

नागपा'ड़-संपु० [सं० नाग+पाषाण] अजमेर के पास अरावली पहाड़ का हिस्सा जहाँ से लूनी नदी निकलती है।

रू०भे०—नागपाड़।

नागपास-संस्त्री० [सं० नागपाश] वरुण का शत्रुओं को बांधने का एक अस्त्र या फन्दा।

नागपुत्री-संस्त्री० [सं०] नागकन्या। उ०—जर्म नागपुत्री रात्रि रूप जोती। महामद भाती लगो कान मोती। पगां सांमळो गात्र पीरा निचोरा। कसी ऊजरा नंग मोर्ये कंदोरा।—ना.द.

नागपुर-संपु० [सं०] राजस्थान के नागोर नामक कस्बे का नाम।

उ०—१ पह खानबारा पाहटै। दळ नागपुर गढ़ आहटै।

—सू.प्र.

उ०—२ गहरै मंगळ त्रिहौवरै, उज्जवळ चीत्र प्रकास। तजियै गूंदै नागपुर, नागनु हुवै नास।—रा.रू.

२ मध्य भारत का एक नगर. ३ नागलोक।

उ०—इन्द्रपुर चन्द्रपुर नागपुर शिवपुर परमपुर, तांई ऊपरि पार। गजा सरग सातमै 'रतनो', मिळियो जोत सरूप मझार।—दूदो

नागपुरी-संस्त्री० [सं०] १ एक नागों की पुरी जो पाताल में है, भोगवती (हि.को.)

२ देखो 'नागपुर' (अल्पा., रू.भे.)

नागपोतरी-संस्त्री०—एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—ऊपरि एकाउळिहार, सरिसु मोती तणुहार, झूमणा तणा झमकार, कंठी कनकमय पदकड़ी महाविशल्यानि जड़ि नाग-पोतरी धनि निगोदरी प्रमुख पोटली साहित घूघरी दसु सासु तणु सणगार।

—व.स.

नागफणी-संस्त्री [सं० नाग+फन+रा.प्र.ई] १ थूहर की जाति का बिना टहनियों वाला एक पौधा विशेष जिसके कांटे विषैले होते हैं।

२ एक प्रकार का शाक विशेष। उ०—नेत्र निहाळो नीलूह, नमिजी नागरवेलि। नही नवीनों नींदारडी, नागफणी गुण-गेलि।

—मा.कां.प्र.

नागफांस—देखो 'नागपास' (रू.भे.)

नागफूली-संस्त्री० [सं० नाग+फुल्ल] स्त्रियों का एक आभूषण विशेष (व.स.)

उ०—हांस नागहथ सांकळां, नागफूली भमरी जेह। गाठीमां गह घळी गोमती, दीपइ सारी तेह।—नळ-दवदंती रास

नागफेन-संपु० [सं० नाग+फेन] एक मादक द्रव्य, अफीम (हि.को.)

नागबला [सं०] एक प्रकार का वृक्ष विशेष। उ०—नेतु निगुडि निरंजनी, नाळकेर नारिंग। नागबला निरविसि नली, निकुली निरमळ संग।

—मा.कां.प्र.

नागबाई-संस्त्री०—चारण-कुलोत्पन्न एक देवी का नाम।

रू०भे०—नागवी, नागाई।

नागबेध-संपु० [देशज] बढ़ई द्वारा काष्ठ में बनाया जाने वाला एक प्रकार का छेद विशेष।

नागबेणी-संस्त्री०—एक देवी का नाम।

नागभगिनी-संस्त्री० [सं०] सर्पराज वासुकि की बहिन।

नागभाखा-संस्त्री० [सं० नाग+भाषा] एक भाषा। उ०—जिनकी सात प्रथम भाखा संसक्रत सो तो अनुभूति अरथ सारस्वत सो पाई। दूसरी नागभाखा सो नागपिंगळ सो भाई।—सू.प्र.

नागभुवण-संपु० [सं० नागभवन] नागलोक, पाताल।

नागम-संपु० [फा० ना+अ० गम] १ अज्ञानावस्था. २ छुट्टी, अवकाश। उ०—चंचळ चपळा सी चितवन चिरताळी। निरखें निगमागम नागम निरताळी। मादा मरजादा जादा मदमस्ती। वैसी अलबेली छैली छदमस्ती।—ऊ.का.

नागमरोड़-संपु० [देशज] 'धोबी पछाड़' से मिलता-जुलता कुश्ती का एक पेच जिसमें जोड़ को अपनी गर्दन के ऊपर से या कमर पर से एक हाथ से घसीटते हुए गिराते हैं।

नागमाता-संस्त्री० [सं०] १ नागों की मां कद्रू।

२ सुरसा।

नागमुख—सं०स्त्री० [सं०] गजानन, गणेश।

नागरंग—सं०पु०—नारंगी (डि.को)

नागर—सं०पु० [सं०] १ सभ्य, शिष्ट और चतुर व्यक्ति।

उ०—१ महावळ सागर मेह मुदार, उजागर नागर नेह उदार।
—ऊ.का.

उ०—२ अज भेक उजागर नर खर नागर। गुण सागर गूजंदा हैं।
—ऊ.का.

२ स्वामी, मालिक। उ०—गौतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुचितां ध्यावै। प्रभु वैमुख जिण री रिपु प्राणी, ताह न कदे सतावै
—र.रू.

३ ईश्वर, प्रभु। उ०—चिंता हर नागर चिंता नह चीन्ही, करुणा-सागर भी करुणा नह कीन्ही।—ऊ.का.

४ नगर में रहने वाला मनुष्य।

५ नागरमोथा।

६ सोंठ (अ.मा., डि.को.)

७ गुजरात में रहने वाले ब्राह्मणों की एक जाति (रा.रू.)

सं०स्त्री०—८ पनिहारी। उ०—वेरा वैरागर सागर सम सोभा। रीती गागर ले नागर तिय रोभा। धावै द्रग धारा दारा मुख धोवै। जीवन संजीवन जीवन घन जोवै।—ऊ.का.

९ देखो 'नागरी' (रू.भे.)

वि०—१ चतुर, निपुण, पटु (डि.को.)

उ०—१ धवळ हरे धवळ दियै जस धवळित, धण नागर देखै सघण। सकुसळ सवळ सदळ सिरि सांमळ, पुहप वूंद लागी पड़ण।
—वेलि

उ०—२ ऊंडै जळ में ले चल्यो, गजकूं विकटो ग्राह। तब ततकार संभारियो, राधा नागर नाह।—गजउद्धार

२ नगर में रहने वाला. ३ नगर सम्बन्धी।

नागरता—सं०स्त्री० [सं०] १ चतुराई, निपुणता।

२ शिष्टता, व्यवहारकुशलता. ३ नागरिकता, शहरीपन।

नागरवल—सं०स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान की वेल, तांबूल (डि.को.)

उ०—दूजा दोवड़-चौवड़ा, ऊंट कटाळउ-खांण। जिण मुखि नागर-वेलियां, सो करहउ केकांण।—ढो.मा.

रू०भे०—नागरवेलि, नागरबेली, नागरवेल, नागरवेलि, नागरवेली।

अल्पा०—नागरवेलड़ी, नागरवेलड़ी।

नागरवेलड़ी—देखो 'नागरवेल' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ जिण मुखि नागरवेलड़ी, करहउ एह सुरंग। मांगळोर वाड़ी चरइ, पांणी पीवइ गंग।—ढो.मा.

उ०—२ नागजी नागरवेलड़ी रे वैरी पसरे पण फूलै नहीं ओ नागजी।—लो.गी.

नागरवेलि, नागरवेली—देखो 'नागरवेल' (रू.भे.)

उ०—करता विस्वंभर कसरांका कांई। नागरवेली दळ निरफळ फळ नाहीं। दाता घर दाळद भुगते हठ भाया। मूंजी मिनखां नै सूंपै सठ माया।—ऊ.का.

नागरमुस्ता, नागरमोथा—सं०पु० [सं० नागरमुस्ता] एक प्रकार की घास या तृण जिसकी जड़ें सूत में फँसी हुई गांठों के समान होती हैं और सुगंधित होती हैं। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कसैला, ठंडा और ज्वर, पित्त, अतिसार, अरुचि, तृषा और दाह को दूर करने वाला माना जाता है।

नागरवेल—देखो 'नागरवेल' (रू.भे.) (उ.र.)

नागरवेलड़ी—देखो 'नागरवेल' (अल्पा., रू.भे.)

नागरवेलि, नागरवेली—देखो 'नागरवेल' (रू.भे.)

उ०—१ करहा नीरू जड़ चरइ, कंटाळउ नइ फोग। नागरवेलि किहां लहइ, थारा थोबड़ जोग।—ढो.मा.

उ०—२ ढोलउ मारू एकठा, करइ कतूहळ-केळि। जांणै चंदन-रूंखड़इ, विळगी नागर-वेलि।—ढो.मा.

उ०—३ नेत्र निहाळी निलूइ, नलिनी नागरवेलि। नहीं नवीनी नींछारडी, नागफणि गुण गेलि।—मा.कां.प्र.

नागराइ, नागराज, नागराव—सं०पु० [सं० नागराज] १ शेषनाग
(डि.को.)

उ०—नागपासह नागपासह वंध छोडिवि। इंद्राइसि पंडवह नागराइ निजराजु दिद्धऊ। हारु समोपीउ नरवरह सतीय रेसि अनुकमळु लिद्धऊ।—पं.पं.च.

२ सर्पराज वासुकि जिसका रंग श्वेत माना जाता है. ३ सर्पों में बड़ा सांप. ४ हाथियों में बड़ा हाथी. ५ ऐरावत।

वि०—१ श्वेत, सफेद* (डि.को.)

२ काला, श्याम* (डि.को.)

नागरिक—सं०पु० [सं०] शहर का रहने वाला व्यक्ति, नगर-निवासी।

वि०—१ चतुर, सभ्य. २ नगर का. ३ नगर-सम्बन्धी.

४ नगर में रहने वाला, शहराती।

नागरी—सं०स्त्री० [सं०] १ भारत की प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि लिखी जाती हैं. २ नगर में रहने वाली स्त्री, शहर-निवासिनी. ३ चतुर स्त्री.

रू०भे०—नागर।

४ कपट से भरी चालाक स्त्री, धूर्त्त स्त्री।

उ०—अग मरकट मनमीन, नाव नागरी नयण नट। देख हुवै श्री दीन, अस 'जेहल' वगसे इसा।—बां.दा.

५ देखो 'नगरी' (रू.भे.)

उ०—सम्मन प्रीत लगाइकै, दूर देस मत जाव। वसो हमारी नागरी, हम मांगै तुम खाव।—अज्ञात

नाग री मासी—सं०स्त्री०—एक प्रकार का जंतु।

नागलता—सं०स्त्री० [सं०] १ पान की वेल (अ.मा.)

उ०— [illegible] । [illegible] ।
—[illegible]

[illegible]—एक प्रकार का [illegible] विशेष (अ.मा.)

[illegible]-सं०पु० [सं०] [illegible] (डि.ना.मा., डि.को.)

उ०—१ [illegible] [illegible], [illegible] । [illegible] [illegible] ।—बां.दा.

उ०—२ [illegible], [illegible] [illegible] राज-[illegible] । [illegible] आयो, [illegible] [illegible] ।—[illegible]

नागवंश-सं०पु० [सं० नागवंश] १ नागों की कुल-परम्परा, एक प्राचीन [illegible] ।

नागवंशी-वि० [सं० नागवंशिन्] नागों के वंश या कुल का ।

[illegible]-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०— [illegible] [illegible] [illegible], नागवटी [illegible] [illegible] ।—व.स.

नागवल्ली-सं०पु०स्त्री० [सं०] पान, ताम्बूल ।

नागवल्ली-सं०स्त्री० [सं०] पान की बेल (डि.को.)

रू०भे०—नागबेल ।

नागवाड़—देखो 'नागवाड़ौ' (रू.भे.)

उ०—१ [illegible] [illegible] मारवाड़ । कनकी नदी मिळ नागवाड़ ।
—पे.रू.

उ०—२ [illegible] [illegible] पड़ विभाड़ण, सरण जण [illegible] [illegible] । [illegible] नागवाड़ा तणा पहाड़ां, दिल्ली रा पहाड़ां [illegible] ।—महाराजा [illegible] रो गीत

ना-गवार-वि० [फा०] जो अच्छा न लगे, अग्राह्य, अप्रिय ।

नागवी—देखो 'नाग-बाई' (रू.भे.)

उ०—[illegible] [illegible], तो जिणो [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] नागवी ।—पा.प्र.

नागवीथी-सं०स्त्री० [सं०] चन्द्र-ग्रह की चाल में वह मार्ग जो स्वाती, भरणी और कृत्तिका नक्षत्रों में हो ।

नागवेल—देखो 'नागवल्ली' (रू.भे.)

नाग-शुद्धि-सं०स्त्री०पो० [सं० नागशुद्धि] नवीन भवन बनाने में नींव खोदते समय नाग की स्थिति का विचार ।

वि०वि०—ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार मीन, मेष और वृषभ की सूर्य संक्रांति में नागों का मुख पश्चिम दिशा में तथा मस्तक उत्तर दिशा में; मिथुन, कर्क और सिंह की सूर्य-संक्रांति में नागों का मुख उत्तर में तथा मस्तक पूर्व में; कन्या, तुला और वृश्चिक की सूर्य संक्रांति में नागों का मुख पूर्व में तथा मस्तक दक्षिण में; धन, मकर और कुंभ की सूर्य संक्रांति में नागों का मुख दक्षिण में तथा मस्तक पश्चिम में रहता है ।

नींव खोदते समय यदि नाग के मस्तक पर खात-मुहूर्त हुआ तो घर के मालिक तथा उसके माता-पिता का नाश होगा और यदि पीठ पर खात-मुहूर्त हुआ तो घर की हानि तथा भय होगा और यदि नाग की कुक्षि पर खात-मुहूर्त हुआ तो सब प्रकार से मंगलकारक होगा ।

नाग के मुख की ओर भवन का द्वार रखना निषेध समझा जाता है ।

नागहारी-वि० [सं०] सर्पों का हार धारण करने वाला ।

सं०पु०—रुद्र, महादेव ।

उ०—नागहारी मोहा संग्री, पैताळ सगोह नग्गे । महाकाळ होहा तग्गं कोहा मग्गं, गीत ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

नागांण-सं०पु० [सं० नाग+रा०प्र० आण] १ हाथी, गज (डि.ना.मा.)

२ राजस्थान का एक प्रसिद्ध कस्बा, नागोर ।

उ०—घण सघण घाम चहु तरफ घेर, दुरग घी काढ़ियौ आत देर । लड़ एण तरह नागांण लीघ, दरवांण बंध घन पटै दीघ ।—वि.सं.

नागांनण-सं०पु० [सं० नागानन] हाथी जैसे मुँह वाला, गणेश ।

रू०भे०—नागाणण ।

नागांनराइ, नागांणराय-सं०स्त्री० [राज० नागाण+सं० राज] राठौड़ों की कुलदेवी, नागणेची । उ०—सिंहाण चढ़ै करवी सहाय, राजरै पीठ नागांनराय । कुविचार तणा सायब सधीर, घन पाळ करण नव लाख वीर ।—पा.प्र.

नागांणी—देखो 'नागांण' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—सोवाळै आबू भलौ, कनाळै अजमेर । नागांणौ नित-नित भलौ, सांवण बीकानेर ।—प्रवात

नागांतक-सं०पु० [सं०] १ रावण का एक पुत्र (रा.रा.)

२ गरुड़, खगेश (डि.ना.मा.) ३ सिंह ।

नागांपति-सं०पु० [सं० नागपति] १ शिव, महादेव (डि.ना.मा.)

२ शेषनाग. ३ ऐरावत ।

नागा-सं०स्त्री० [प्रा० नागः अथवा सं० नंगा] १ हमेशा या नियत समय पर होने वाले कार्य का किसी दिन अथवा नियत समय पर होने वाली कार्य-परम्परा का भंग, अंतर, बीच ।

उ०—देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री प्रतिग्या सो सहर सूं बाहिर अधकोस देहरौ तठै श्री लिखमीनाथजी बिराजै सो देवीदास नित दरसण करवा नै जावै । पइसौ एक भेंट रो चढ़ावै । यूं करतां घणा बरस बितीत हुवा । सांची प्रीत सूं दरसण करै । कदेई नागा न घालै । पहल दरसण करि, भेंट करि, पछै भोजन करै ।

—पलक दरियाव री बात

२ अनुपस्थिति, गैरहाजिरी ।

क्रि—छोरा ! थांनै स्कूल री नागा नीं करणी चाईजै । आज मैं नोकरी मांथे ग्यो कोयनीं, नागा करली ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

रू०भे०—नागो ।

३ एक जंगली जाति जो आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसती है ।

४ दादूपंथी सम्प्रदाय में साधुओं की वेष संबंधी चार संज्ञाओं में से एक जो महात्मा दादू के शिष्य सुन्दरदासजी की छठी पीढ़ी में होने वाले महात्मा केवलरामजी के शिष्यों द्वारा चलाई गई थी।

वि०वि०—इस संज्ञा के साधु शरीर पर कम से कम वस्त्र धारण करते हैं। केवल एक कोपीन ही धारण करते हैं और शरीर पर भस्मी लगाते हैं इसी से इनका नाम नागा पड़ा। इन साधुओं की यह विशेषता है कि ये समूह के रूप में रहते हैं जिसे जमात कहते हैं। ये जमातें पहले घुम्मकड़ होती थीं। जमातें बड़ी लड़ाकू होती हैं। इनके पास शस्त्र भी होते हैं। इन जमातों ने कई बार जयपुर राज्य की रक्षार्थ लड़ाइयां भी लड़ी थीं। बाद में जयपुर राज्य के शासकों की इच्छा पर ये जमातें राज्य के विभिन्न भागों में रक्षा के लिए स्थायी रूप से रख ली गई थीं। वहां पर इनके अखाड़े बन गए जो आज भी स्थाई रूप से हैं।

नागों की जमातें संवत् १८०० से संवत् १९३० तक राज्य की सहायक रूप में रहीं और बाद में अंग्रेजी शासन काल में इन जमातों के नागे दादू पंथियों को राज्य के रेवेन्यू कर को वसूल करने के लिए एक जिम्मेदार कार्यकर्ता के रूप में लगाया गया। संवत् १९३२ से १९९४ तक ये जमातें इस कार्य को करती रहीं। बाद में अंग्रेज अफसरों के नियुक्त हो जाने के कारण नाजिम शिवप्रसाद के षड्यंत्र से संवत् १९९५ में इन जमातों का २०० वर्षों से चला आने वाला राज्य का चिर सम्बन्ध विच्छिन्न कर दिया गया।

राज्याश्रय के हटने पर भी ये जमातें अभी तक उसी रूप में स्थापित हैं और परम्परा के अनुसार चल रही हैं। इन जमातों में कई शूरवीर, मल्ल, त्यागी, महात्मा, भजनीक, परोपकारी, विद्वान्, कवि एवं संगीतज्ञ भी हुए हैं।

नागाई-सं०स्त्री० [देशज] १ शरारत, ऊधम, नटखटी, उद्दण्डता २ बुरी वृत्ति, खोटाई।

उ०—बैन ! थारी नागाई हद है। मार'र रोवण-ई की देवैनी। —वरसगांठ

३ देखो 'नागबाई' (रू.भे.)

उ०—नयण तूं नागाई कळा नूर। जयंत मंगळा तूं जरूर। —रामदांन लाळस

नागाणंद-सं०पु० [सं० नग्नः+आनंद] शिव, महादेव (डिं.नां.मा.)

नागाणण—देखो 'नागांणण' (रू.भे.)

उ०—सिभू गवरि सुतनं वारण डसण मेक लंबोदर। सिद्धि वुद्धि सुप्रसन सुग्यांन नागाणण तुम्यो नमो।—रा.रा.

नागारजण, नागारजुण, नागारजुन-सं०पु० [सं० नागार्जुन] एक प्रसिद्ध बौद्ध महात्मा जो चिकित्सक भी थे।

नागारो—१ देखो 'नगारो' (रू.भे.)

२ देखो 'नकार' (रू.भे.)

उ०—परवांणो पाछा बुलावण रो बादसाह रो आयो तद नागारो करायो। सवारी बाहिर चलती कीवी।—जलाल बूबना री वात

नागासन-सं०पु० [सं० नागाशन] १ गरुड़, खगेश. २ मयूर, मोर. ३ सिंह, शेर।

नागास्त्र-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

उ०—नागास्त्र, गुरुडास्त्र, संवर्त्तकास्त्र, मेघास्त्र, प्रळयकाळास्त्र, रिक्षास्त्र, आग्नेयास्त्र, वारुणास्त्र, दांनवास्त्र, माहेंद्रास्त्र, तिमिरास्त्र, डिंभककरास्त्र, नारायणास्त्र, अस्वग्रीवास्त्र, ब्रह्मास्त्र, मेघास्त्र इति अस्त्रांणि।—व.स.

नागिंद, नागिंद्र—देखो 'नागेंद्र' (रू.भे.)

उ०—१ कटि सिंघ नितंब जंघा कदळी, चित नित्त प्रवित्त मराळ चली। तन रंभह खंभ कनंक तिसी, ओपै सिरि नागिंद वेणि इसी। —वचनिका

उ०—२ साख साख मिळि भाख लाख लाखीक लसक्कर। च्यारि च्यारि चक्क नव-खंड हिलै फौजां गज डंबर। कसमस्सै कोरम सेस नागिंद्र सळस्सळि, सात समंद्र गिर आठ तांम धर मेरु टळट्टळि। —वचनिका

उ०—३ घर सारी पड़ि धाक, पुर तर कीजै पहट। हैकंप उर नागिंद्र हुअ, चक च्यारू चढ़ि चाक।—वचनिका

उ०—४ जांनी एक अनेक जोवतां, नर सुर वडा वडा नागिंद्र। वडइ सुपहि बोलता वडावडि, आया जुडे अठारह इंद्र। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—५ जगदीस अछइ माहै वड जांनी, आछइ ब्रह्म तइ आछइ इद्र। सुर किन्नर नागिंद्र निरखतां, नव-खंड रा आछइ नरिंद्र। —महादेव पारवती री वेलि

नागिणी—देखो 'नागण' (रू.भे.)

उ०—वदन चुंबि म वांनर वाघिणी, करु म घालिसि नीलज नागिणी। वदनि सिउं विसवेलि न घुंटिइ, गुरुड पांख नखे नवि खुंटियइ। —विराट पर्व

नागींद, नागींद्र—देखो 'नागेंद्र' (रू.भे.)

उ०—पुड सातइ धूजिय पवंग पाइ। नागींद नाचि नौवित निहाइ। —रा.ज.सी.

नागी-वि० [सं० नग्ना] १ जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, वस्त्र-हीना, नग्ना। उ०—इसी म्हारी लंबी सीरख कोयनी, थे जांणो ई हो। आगै जाय'र मनै मिळै तो खाली पंदरै रुपट्टो ही है। नागी क्या धोवै क्या निचोवै ?—वरसगांठ

२ कुलटा, व्यभिचारिणी। उ०—हंसियो जय आसक हुए, वसियो खोवण वीत। रसियो नागी रांड सूं, फसियो होण फजीत। —बां.दा.

३ बिना शर्म वाली, निर्लज्जा। उ०—च्यारू खांण चतुर लख जाती, भूख सबन के लागी। देवत दांनव मांनव मोनी, कोइयन छोडया इण नागी।—स्रो सुखरांमजी महाराज

४ जिस पर किसी प्रकार का आवरण न हो, निरावरणा।

[illegible]
[illegible] हाथ के कड़े [illegible] हैं [illegible]
[illegible]
[illegible] — [illegible] नगर, नागौर।
उ०—[illegible] वाली [illegible] में [illegible]।
[illegible] नग [illegible]।
—[illegible]

[illegible]—देखो [illegible] (रू.भे.)
[illegible] मरो हूं, महाराज। [illegible] देखो
[illegible]।—[illegible]

[illegible] [illegible] नगाड़ों के बजने की ध्वनि।
[illegible] नालिय नागड़
[illegible]।—[illegible]

[illegible], नागड़, नागेंद्र-सं०पु० [सं० नागेन्द्र] १ शेषनाग [illegible]
[illegible] जाता है।
२ [illegible]। उ०—[illegible] नगेसर, [illegible] पाताळ। [illegible]
[illegible]।—[illegible]
३ [illegible]। उ०—१ [illegible] दीवाण [illegible]।
[illegible] नागेंद्र [illegible]।—[illegible]
उ०—२ [illegible] 'प्रजन' [illegible], महामन मोन [illegible]। [illegible]
[illegible] पाई। [illegible], कुंवर कोमळ
[illegible]। [illegible] मरसी। [illegible]
[illegible] नागेंद्र [illegible],
[illegible]।—[illegible]
४ [illegible]. ५ बड़ा हाथी. ६ महादेव, शिव।
रू०भे०—नागद, नागद्र, नागिंद, नागिंद्र, नागींद, नागींद्र, नागेंद।

[illegible]-सं०पु० [सं० नागेश] १ शेषनाग। उ०—१ [illegible]
[illegible]। नागेश [illegible]।—[illegible]
उ०—२ [illegible] कोड़।
[illegible]। [illegible]।
—[illegible]
२ [illegible]।
३ [illegible]। उ०—[illegible] [illegible]
[illegible]।—[illegible]
४ [illegible]।
५ [illegible] (रू.भे.)

[illegible], [illegible]-सं०पु० [सं० नागेश्वर] १ शेषनाग.
२ [illegible]. ३ [illegible]. ४ नागकेसर।
५ [illegible] (रू.भे.)
६ [illegible] रू.भे.)

नागोर-सं०पु० [सं०] १ उदर पर धारण करने का कवच, उदरत्राण (डि.को.)
२ शस्त्रों के आघात से बचने के लिए छाती पर धारण करने का कवच विशेष, छोटवेद।
उ०—[illegible] हांक, [illegible] मराता [illegible]।
[illegible] मोसर [illegible], [illegible] नागोर आसे।
—[illegible]

नागोर-सं०पु०—राजस्थान का एक प्रसिद्ध कस्बा।
रू०भे०—नागउर।

नागोरण-सं०स्त्री० [देशज] दक्षिण और पश्चिम के मध्य से चलने वाली वायु (संगावाटी)।
वि०वि०—यह वायु वर्षा को रोकती है अतः श्रावण और भाद्रपद में इसे 'नाड़ा टाकण' (देखो 'नाड़ा टाकण') कहते हैं और अशुभ मानी जाती है किन्तु आश्विन मास में यह फसल के पकने में सहायक होती है इसलिए लाभप्रद होती है। चूं कि नागोर शेखावाटी के दक्षिण पश्चिम में स्थित है और यह वायु भी उधर ही से चलती है इसलिए इसे शेखावाटी वाले नागोरण कहते हैं।
वि०स्त्री०—नागोर की, नागोर-संबंधी।
रू०भे०—नागोरण।

नागोरपटी, नागोरपट्टी-सं०स्त्री०—१ नागोर प्रान्त।
२ नागोर कस्बे के आस-पास का भू-भाग।
उ०—प्रांण वसी नागोर री, पटी मरव पातोह। आण पड़ै आसण तणी, सारी चोरासीह।—पा.प्र.
रू०भे०—नागोरपटी, नागोरपट्टी।

नागोरियो, नागोरयो—देखो 'नागोरी' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—दूध दही म्हारै घणकर खावै, धन रा भरया भंडारा। बीकाणी रा मदवा पाजै, बैल बड़ा नागोरया।—लो.गी.

नागोरी-वि०—नागोर का, नागोर-संबंधी।
सं०पु०—१ नागोर का बैल जो उत्तम माना जाता है।
२ देसवाली मुसलमानों के एक भेद का नागोर में प्रचलित नाम।
रू०भे०—नागोरी।
अल्पा०—नागोरियो, नागोरयो।

नागोरीगहणी, नागोरीगैंणी-सं०पु० [राज. नागोरी+सं० ग्रहण धारण करना] हथकड़ी। उ०—जै हाथ उठायो आगै नै, नागोरीगहणी जड़ दाला। जै पग धर दीनो नैठो पर, तो पगां सांकळी कर डाला।
—[illegible]
रू०भे०—नागोरी गहणो, नागोरी गैंणो।

नागो-वि० [सं० नग्न] (स्त्री० नागी) १ जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो, वस्त्रहीन, निर्वस्त्र, नंगा। उ०—नागो गयो निरधार, नागो रह्यो न देव रै। लेवो धोवळ धार, माया मोटो माहिला।
—रायसिंह गोड़

२ चालाक, धूर्त, लुच्चा।
३ जबरदस्त, लड़ाकू। उ०—अथवा देव पितर कहै रे लाल, कोई वळवंत थाय सुविचारी रे। कोई गुरु-जन्म मोटको रे लाल, नागो अड़ै कोई आय सुविचारी रे।—जयवांणी
४ निर्लज्ज, बेशर्म। उ०—नागो ह्वै नाचै बणक, मांग्यो सूंपै माल। अदभुत ठागो जात इण, लागो लोभ कमाल।—बां.दा.
५ जो किसी प्रकार ढका हुआ न हो, जिस पर किसी प्रकार का आवरण न हो, निरावरण।
ज्यं—नागी तरवार, नागी पीठ, नागा पग, नागो भाखर।
उ०—१ जांणी वल्लभ जीवणो, कायर नांणै कोह। लोपै सांकळ लोह री, लख रण नागो लोह।—बां.दा.
उ०—२ भूका पोसणहार यूं, ज्यूं जग कमळाकंत। नागां ढांकणहार इम, जिम तरवरां वसंत।—बां.दा.
उ०—३ सो राजा सुणतां ही आप नागै पगां क्षिप्रा-तट गयो।
—सिंघासण-बत्तीसी
सं०पु०—१ शैव साधुओं के सम्प्रदाय का वह व्यक्ति जो नंगा रहता है।
२ आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसने वाली 'नागा' जाति का व्यक्ति।
३ गुरु नानक साहिब के पुत्र श्रीचंदजी को अपना गुरु मानने वाले उदासी साधुओं के सम्प्रदाय का साधु जिसे इल्म कम होता है. नंगा रहता है; शिर पर जटा रखता है और बदन पर राख मलता है।
४ नाथ सम्प्रदाय का वह व्यक्ति जो विवाह नहीं करता है।
५ 'दसनांमी' सम्प्रदाय के अंतर्गत विवाह नहीं करने वाला व्यक्ति।
६ दादू पंथियों की नागा शाखा का व्यक्ति।
रू०भे०—नगो, नागु।
अल्पा०—नागड़ियो, नागड़ो।
मह०—नागड़।

नागो-लड़ंग—वि०यौ०—जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, बिल्कुल नग्न, नंग-धड़ंग।

नागोद्रहो—देखो 'नागद्रहो' (रू.भे.)
उ०—नेत बंधो नागोद्रहो, मेवाड़ो मसंदजी। (गु. रू. बं.)

नागो-बूचो—वि०यौ० [सं० नग्न+व्युच्छः] १ कुटुम्बहीन, अकेला.
२ नंग-धड़ंग।

नागो-भूंगो, नागो-भूखो—वि०यौ० [स० नग्न+बुभुक्षित] १ दरिद्र, कंगाल, निर्धन।
२ नंग-धड़ंग।

नागोर—देखो 'नागौर' (रू.भे.)

नागोरण—देखो 'नागोरण' (रू.भे.)

नागोरपटी, नागोरपट्टी—देखो 'नागोरपटी' (रू.भे.)

नागोरी—देखो 'नागोरी' (रू.भे.)

नागोरीगहणो, नागोरीगैणो—देखो 'नागोरीगहणो' (रू.भे.)

नागौरी—वि०—नागौर का, नागौर-सम्बन्धी।

नाग्रंद—१ देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)
२ देखो 'नागेंद्र' (रू.भे.)

नाग्रद्रह, नाग्रद्रहो—देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)

नाघा—देखो 'नागा' (रू.भे.)
उ०—दूध मण एक रोजीनां री प्रोहित नूं मेल देवै, खाडूकरां नूं कहि देयजे नाघा करै नहीं करै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

नाड़—सं०स्त्री० [सं० नाडिः, नाडी] १ ग्रीवा, गरदन (डि.को.)
उ०—१ दोस नहीं थारा में दोसत, दोस तिहारी दाई नै। नाळा साथै नाड़ न काटी, धाई रांड बधाई नै।—ऊ.का.
(मि० 'नस' (४)
मुहा०—१ नाड़ नीची करणी—शर्मिदा होना। २ नीची नाड़ करणी—नीचे की ओर देखना, शर्मिन्दा होना।
रू०भे०—नार
अल्पा०—नाड़की।
२ देखो 'नाड़ी' (रू.भे.)
उ०—नाड़ां निसर गई, आंतड़ा चैंठा ऊंडा।—ऊ.का.
मुहा०—१ नाड़ चढ़णी—दौड़ने या तनाव खिचाव आदि के कारण शरीर के किसी अंग की नस का अपना स्थान छोड़ देना या बल खा जाना जिससे दर्द होता है।
२ नाड़ां खोळी करणी—खूब पीटना।
नाड़ां खोळी (ढीली) पड़णी—वृद्धावस्था आना, कमजोर होना, अशक्त होना।

नाड़कियो—देखो 'नाड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

नाड़की—१ देखो 'नाड़ी' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'नाड़' (१) (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

नाड़ा-टांकण—सं०स्त्री० [देशज] आषाढ़ और श्रावण मास में दक्षिण और पश्चिम के मध्य से चलने वाली वायु का नाम जो वर्षा का अवरोध करती है अतः अशुभ मानी जाती है।
वि०वि०—चूंकि आषाढ़ और श्रावण मास में इस वायु के चलने के कारण वर्षा नहीं होती है इसलिए हल का सामान (नाड़े आदि) जो किसान द्वारा जोतने के लिए तैयार किया हुआ होता है पुनः टांग दिया जाता है इसीलिए इस वायु को 'नाड़ा टांकण' की संज्ञा दी गई है।
(मि० नागोरण)

नाड़ाळी—सं०स्त्री०—१ बैलगाड़ी के अग्र भाग में डाली हुई वह कीली जिसके सहारे रस्सा अटका कर जुआ बांधा जाता है।

२ [illegible] का [illegible] जिसमें [illegible] को [illegible] जाता है।

नाड़ि—देखो 'नाड़ी' (रू.भे.)

उ०—[illegible] नाड़ि [illegible] [illegible] नाड़ी [illegible] [illegible] [illegible]

नाड़िवण—देखो 'नाड़ीव्रण' (रू.भे.)

नाड़ी-संस्त्री० [सं० नाड़ि, नाडी] १ नबज, नस, रग (डि.को.)

उ०—[illegible] विनसत में [illegible] नाड़ी नाड़ी में नारायण [illegible] ।—[illegible]

२ शरीर के अन्दर [illegible] (इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना) [illegible] और ज्ञान-तन्तुवाहिनी नलिका।

३ [illegible] (डि.को.)

४ पलंग की वह रस्सी जिससे हल की हरिसा पर जुआ कसा जाता है।

५ नाड़ी को [illegible] करने का मोटा रस्सा विशेष।

उ०—[illegible] नाड़ियो [illegible] [illegible] [illegible] नाड़िया [illegible] ।

—गु.रू.

६ वर-वधू की [illegible] [illegible] में [illegible] नक्षत्र-समूह।

७ देखो 'नाड़' (रू.भे.)

रू०भे०—नड़, नाड़ो, नाड़ि, नाड़ी।

अल्पा०—नाड़ड़ी।

नाड़ीचक्र-सं०पु० [सं० नाड़ीचक्र] १ नक्षत्रों के उन भेदों को सूचित करने वाला चक्र या [illegible] जिन्हें नाड़ी कहते हैं। (फलित ज्योतिष)

२ [illegible] [illegible] आकार [illegible] जो सभी नाड़ियों का केन्द्र है और [illegible] नाभि देश में माना गया है। (हठयोग)

नाड़ीजंग, नाड़ीजोर-वि० [देशज] मजबूत, दृढ़।

नाड़ीजोद-वि० [देशज] शक्तिशाली, बलवान। उ०—[illegible] हजारी बाज [illegible], नाड़ीजोद [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], रमै [illegible] रंग।

—महादान महडू

रू०भे०—नाड़ीजोद।

नाड़ीधमन-सं०पु० [सं० नाड़ि-धमः नाडी-धमः] स्वर्णकार, सुनार।

(डि.को.)

नाड़ीव्रण-सं०पु० [सं०] घाव, फोड़े आदि में दूर तक गया हुआ नली [illegible] जिससे मवाद निकलता रहता है और वह जल्दी ठीक नहीं होता है, नासूर (प्रमेह)।

रू०भे०—नाड़िवण

नाड़ीसंकर-सं०पु० [सं०] वर वधू की [illegible] देखने के लिए फलित [illegible] [illegible] [illegible]।

नाड़ो-सं०पु० [सं० नाड़ि, नाड़ी] १ वह डोरी जिससे अधोवस्त्र बांधा जाता है, इजारबंद, नीवी। उ०—१ जांनी जिसड़ी भरमो रे केसरी, नाग मोड़द [illegible] रो। [illegible] जिसड़ी भरमो रे केसरी, नाड़ो [illegible] रो।—लो.गी.

उ०—२ गोई पोडण में नाड़ो झुलाणो। कूटर [illegible] नाड़ो फूंदाळो। नाड़ा पचरंगी पतरलिया पैरे। [illegible] जिसड़ा गो पत जगड़ बैरे।—ऊ.का.

मुहा०—१ नाड़ा छूट करणो—पेशाब करना।

२ नाड़ा छोड—पेशाब, मूत्र।

३ नाड़ा छोड करणो—देखो 'नाड़ा छूट करणो'।

२ चमड़े का मोटा रस्सा जिससे हल की हरिसा पर जुआर बांधा जाता है।

३ देखो 'नाळो' (१) (रू.भे.)

उ०—दोस नहीं थारा में दोसत, दोस तिहारी दाई नै। नाड़ा माथै माड़ न काटी, माई गांठ बणाई नै।—ऊ.का.

रू०भे०—नाड़ी।

अल्पा०—नाड़कियो।

नाच-सं०पु० [सं० नृत्य] संगीत के ताल और गति अनुसार अथवा उमंग व उल्लास के कारण हाथ-पांव हिलाने, उछलने-कूदने आदि का व्यापार, नृत्य। उ०—१ इण परि सोमिणि सुभणी, बोली मधु दिढ्ढं ति। नाच मनाबी परि गई, हीयडइ हरष धरंति।

—विद्याविलास पवाड़ा

उ०—२ बस प्राणी सब करम रे, करम सु प्रेरणाहार। नाच नचावै त्यां नचै, ज्यां पुतळी गोवार।—रा.रू.

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

यौ०—नाच-कूद।

नाचक-वि० [सं०] नाचने वाला। उ०—थारै थागो थापरै, नाचक-नाचंता।—द.दा.

नाच कूद-सं०पु०यौ०—नृत्य, तमाशा।

मुहा०—नाच-कूद करणो—अपने गुणों का बखान करना, डींग हांकना, क्रोध करना।

नाचघर-सं०पु० [सं० नृत्य+गृह] नृत्यशाला।

नाचण-वि०स्त्री० [सं० नर्तकी] १ नृत्य करने वाली, नर्तकी।

२ कुलटा, बेशर्म।

ज्यूं—जा ए रांड नाचण, देखी गई।

उ०—नाचण साथणी रे घी को मालपुओ।—लो.गी.

३ वेश्या। उ०—नरै बूंदी रै मैली हुई नाचण रो घर थो तठै नूं आयने दिखाई।—नैणसी

रू०भे०—नचणी, नाचणि, नाचणी, नाचिण, नाचेवी।

नाचणि, नाचणी—देखो 'नाचण' (रू.भे.)

उ०—जिम जिम नाचणि नरह रंगि, खोवणु खलकावइ। तिम तिम मालुम कवण मात, मुझ मागह आवइ।—प्राचीन फागु-संग्रह

चणो-वि० [सं० नृत्य] (स्त्री० नाचणी) नाचने वाला।
उ०—आछी रे नाच्यो नाचणा, थारै नाचण में पड़ग्यो फेर।
—लो.गी.
सं०पु०—नृत्य, नाच। उ०—कळाबातु सागतां जरी रा लुंबझुंबां किया, संगीत नाचणा भाव परी रा सारीख। आक रा झालियां पाव तुरी रा साबता ऊठै, अढ़ाई खुरी रा घाव छुरी रा आरीख।
—जवानजी आढ़ौ

नाचणौ, नाचबौ-क्रि०अ० [सं० नृत्] १ ताल-स्वर के अनुसार और संगीत के मेल से अंग-प्रत्यग को हिलाना, हाव-भावपूर्ण उछलना, कूदना, नृत्य करना, थिरकना।
उ०—सुजळ गिनांन मजन तन सारिस, ध्रम-क्रम जप-तप नेम वधारिस। चरण पवित्र करिस इम चत्रभुज, त्रिगुणनाथ नाचै आगळ तुझ।—ह.र.
२ हृदयोल्लास, हर्ष, जोश अथवा मन की उमंग के कारण स्थिर न रह सकना, अंगों को गति देना, उछलना, कूदना।
उ०—हुलंब काच तौ देह को माचतौ हदोहद, साचतौ राग बागां सजीलौ। आज री वार 'संभमाल' घन आचतौ, नाचतौ दियौ गुल-दार नीलौ।—महादांन महड़ू
३ कांपना, थर्राना।
४ किसी वस्तु का फिरना, घूमना, भ्रमण करना, चक्कर मारना।
ज्यूं—लट्टू रो नाचणौ।
मुहा०—माथा माथै नाचणौ—समीप होना, पास होना, निकट होना।
५ क्रोध के कारण चंचल होना, उद्विग्न होना, बिगड़ना।
६ किसी कार्य के लिए इधर-उधर घूमना, प्रयत्न या उद्योग में फिरना, स्थिर न रहना, दौड़-धूप करना, कार्यसिद्धि के लिए चंचल होना। उ०—नाचै लाज निवार नित, बांका जांण वनोक। जग में भटकै स्वांन जिम, लोभ तणौ बस लोक।—बां.दा.
नाचणहार, हारौ (हारी), नाचणियौ—वि०।
नचवाड़णौ, नचवाड़बौ, नचवाणौ, नचवाबौ, नचवावणौ, नचवावबौ—प्रे०रू०।
नचाड़णौ, नचाड़बौ, नचाणौ, नचाबौ, नचावणौ, नचावबौ—क्रि०स०
नाचिओड़ौ, नाचियोड़ौ, नाच्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नाचीजणौ, नाचीजबौ—भाव वा०।
नचणौ, नचबौ, नच्चणौ, नच्चबौ—रू०भे०।

नाचमहल-सं०पु०यौ० [सं० नृत्य+अ० महल] नाचघर, नृत्यशाला।

नाचरंग-सं०पु० [सं० नृत्य+फा० या सं० रंग] हँसी-खुशी, आमोद-प्रमोद, उत्सव।
क्रि०स०—करणौ, होणौ।

नाचवणौ, नाचवबौ-क्रि०स० [सं० नृत] नचाना।
उ०—पावहियौ करै गिरनारपत, नाचवियौ घर घर तिकौ। खरा र वेचि मैहर किय, मांग 'पाळ' हेकणमुखौ।—पा.प्र.

नाचवियोड़ौ-भू०का०कृ०—नचाया हुआ।
(स्त्री० नाचवियोड़ी)

नाचिकेता-सं०पु० [सं०] १ एक ऋषि का नाम.
२ पावक, अग्नि।

नाचिण—देखो 'नाचण' (रू.भे.)
उ०—तितरै विजै पिण कटारी वाही। चोर मारि नांखियौ। तितरै नाचिण बोली हाइ हाइ कह्यौ हूं ऊबरूं! कह्यौ तुनुं वळै राखि नै कांई करिस्यां। ताहरां नाचिण नुं ही मारी।—चौबोली

नाचियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ताल-स्वर के अनुसार और संगीत के मेल से अंग-प्रत्यंग को हिलाया हुआ, हावभावपूर्ण उछला हुआ, कूदा हुआ. २ हृदयोल्लास, हर्ष, जोश अथवा मन की उमंग के कारण उछला हुआ, कूदा हुआ, अंगों को गति दिया हुआ, नाचा हुआ. ३ कांपा हुआ, थर्राया हुआ. ४ किसी वस्तु का फिरा हुआ, घूमा हुआ, भ्रमण किया हुआ, चक्कर मारा हुआ।
५ क्रोध के कारण चंचल हुवा हुआ, उद्विग्न हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ।
६ किसी कार्य के लिए इधर-उधर घूमा हुआ, प्रयत्न या उद्योग में फिरा हुआ, स्थिर न रहा हुआ, दौड़-धूप किया हुआ, कार्यसिद्धि के लिए चंचल हुवा हुआ।
(स्त्री० नाचियोड़ी)

नाचीज-वि० [फा० नाचीज] निकृष्ट, तुच्छ।

नाचेली-वि०स्त्री० [सं नृत्य+रा.प्र. एली १ नृत्य करने वाली, नाचने वाली।
उ०—उभै रूप धारायणी साचेली जेहांन आखै, तारायणी सिला-धू नाचेली नरत्याद। पारायणी प्रवाड़ा आचेली दछा दैण पातां, नारायणी रूप नमो काचेली अनाद।—नवलजी लाळस
२ देखो 'नाचण' (रू.भे.)

नाछत्री-वि०—क्षत्रियत्वहीन।

नाज-सं०पु० [फा० नाज] १ गर्व, घमण्ड. २ स्वाभिमान.
३ नखरा, ठसक, चोचला.
४ देखो 'अनाज' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—१ चारण एम बोल्यौ आप सारी बात जोगा। पांणी नाज छोडयां नै अठारा जांम होगा।—शि.वं.
उ०—२ विण ग्रहणै दीजै मत व्याज। निस्चै वरस नै राखै नाज।
—घ.व.ग्रं.

नाजक—देखो 'नाजुक' (रू.भे.)
उ०—१ लागां कुसुम सरीस बप, ज्यां रै पड़ै खरोट। हद नाजक हिरणाखियां, है मांझल हमरोट।—बां.दा.
उ०—२ घरां नै पधारो विदेसीड़ा, छोटी सी नाजक धण रा पीव। यो सांवणियौ उमड़ रह्यौ छै, हरि नै सोहै छै दिस दिस सीव।
—रसीलेराज

उ०—३ नाजक नरमी नारि, घणी भवरां भरी । महलनशीन मह माय, मन्दर मधु भवन भी ।—[illegible]

नाजकड़ी—देखो 'नाजुक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—कोयलियां कीई नाजकड़ी सी नार, मिरगानयणी, मदुल चढ़ती सूंदर का सई री म्हारा राज ।—लो.गी.

(स्त्री० नाजकड़ी)

नाजकता—देखो 'नाजुकता' (रू.भे.)

उ०—जिण पग नाजक सूंपा रो भी भार है । इण नाजकता रो किसो पार है ।—र. हमीर

नाजम-सं०पु० [अ० नाज़िम] वह प्रधान कर्मचारी या शासक जिसकी नियुक्ति बादशाह द्वारा देश के किसी भाग की व्यवस्था करने के लिए की जाती थी ।

वि०—प्रबन्ध करने वाला, इन्तजाम करने वाला, व्यवस्थापक ।

नाजर-सं०पु० [अ० नाज़िर] एक प्रकार का सरकारी कर ।

वि०—१ हींजड़ा, खोजा, नपुंसक ।

उ०—हुरमां राखे मंदरें, उड़दाबेगण दूद । हाजर खिजमत कारणे, घुज नाजर हुलसंद ।—रा.रू.

२ जो रण्डियों के यहां दलाल का काम करे ।

रू०भे०—नाजिर, नादर, नादार, नादिर ।

अल्पा०—नाजरियो ।

नाजरियो—देखो 'नाजर' (अल्पा.रू.भे.)

नाजिर-सं०पु० [अ० नाज़िर] १ किसी कार्यालय या अदालत में लेखकों का अफसर, प्रधान लेखक. २ देखभाल करने वाला, निरीक्षक ।

३ देखो 'नाजर' (रू.भे.)

वि०—देखने वाला, दर्शक ।

नाजुक-वि० [फा० नाजुक] १ सुकुमार, कोमल ।

उ०—मावड़िया पग मोलिया, नाजुक अंग निराट । गुपत रहै ऊमर गयां, ताय न निबळा लाट ।—बां.दा.

२ अनिष्ट या हानि की सम्भावना वाला, जिसमें अनिष्ट या हानि की आशंका हो ।

ज्यूं—मामलो बड़ो नाजुक है ।

ज्यूं—टैम बड़ो नाजुक है ।

ज्यूं—भगवान रो भरोसो है, दसा बड़ी नाजुक है ।

३ महीन, बारीक, पतला. ४ सूक्ष्म, गूढ़. ५ अपरिपक्व, कोमल ।

उ०—पाणी री पिणियारियां ए सुणज्यो म्हारी बात, सूंदरी म्हारी मारवण कोई म्हानें भी ओळखाय । म्हैं तो आयो उण रै काज म्हारो नाजुक जीव घबराय ।—लो.गी.

६ थोड़ी सी असावधानी, आघात या धक्के से जिसके टूटने-फूटने का डर हो, जो जरा सी असावधानी से नष्ट हो जाय ।

ज्यूं—गाडी रै डोबरां जैड़ी नाजुक चीजां रो तो रेलगाडी में टूटण रो डर बण्यो रहै ।

रू०भे०—नाजक ।

अल्पा०—नाजकड़ो, नाजुकड़ो ।

नाजुकड़ो—देखो 'नाजुक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ म्हंनें चूंटी-चूंटी नाजुकड़ी-सी नार, पेम-रस म्हनें राखणी ।—लो.गी.

उ०—२ रिमझिम करती पाणीड़े नै जासी, कूंजां ज्यूं बिच में कूंजड़ली । पणघट ऊपर ऊभा माळजी. देख लिजायी नाजुकड़ी । जेठाणी नै मर दियो, दोराणी नै मर दियो. बा ऊभी देखै नाजुकड़ी ।—लो.गी.

उ०—३ पेटड़लो मूमल रो पीपळियें रो पान ज्यूं, हां जी रे, हिवड़ो नै मूमल रो सर्प डाळियो, म्हारी नाजुकड़ी ए मूमल, हालै नी ले चालूं रसीलै रै देस में ।—लो.गी.

उ०—४ हिय रो तजियो हार, तन तजियो तोरै सिमै । नाजुकड़ी मो नार, जोगण करगो जेठवा ।—जेठवा

(स्त्री० नाजुकड़ी)

नाजुकता-सं०स्त्री० [फा० नाजुक+रा०प्र०ता] सुकुमारता, कोमलता ।

रू०भे०—नाजकता ।

नाजुक-दिमाग-वि०यौ० [फा० नाजुक+अ० दिमाग] १ घमण्डी, अभिमानी. २ जो थोड़ी-सी बात में कोपित हो जाय, जरा सी बात से जो उत्तेजित हो उठे, चिड़चिड़ा ।

क्रि०प्र०—करणो, होणो ।

नाजुक-दिमागी-सं०स्त्री०यौ० [फा० नाजुक+अ० दिमाग+रा०प्र०ई] १ चिड़चिड़ापन. २ घमण्ड, अभिमान ।

क्रि०प्र०—उतारणी, राखणी, होणी ।

नाजुक-बदन-वि०यौ० [फा० नाजुक बदन] १ जिसका शरीर कोमल और सुकुमारता. २. दुबला-पतला ।

नाजुक-बदनी-सं०स्त्री०यौ०[फा० नाजुक बदन+रा०प्र०ई] १ कोमलता, सुकुमारता. २ दुबलापन, कृशता ।

नाजुक-मिजाज-वि०यौ० [फा० नाजुक+अ० मिज़ाज] १ जो जल्दी चिढ़ता हो, जल्दी बिगड़ने वाला, चिड़चिड़ा ।

२ जो जरा-सा भी कष्ट नहीं सह सके, सुकुमार, कोमल ।

३ घमण्डी, अभिमानी ।

क्रि०प्र०—होणो ।

नाजुक-मिजाजी-सं०स्त्री०यौ० [फा० नाजुक+अ० मिज़ाज+रा.प्र.ई]

१ चिड़चिड़ापन. २ सुकुमारता, कोमलता ।

३ घमण्ड, अभिमान ।

क्रि०प्र०—होणी ।

मुहा०—नाजुक मिज़ाजी उतारणी—किसी को दण्ड देकर अभिमान दूर करना ।

नाजोग, नाजोगो-वि० [फा० ना+सं० योग्य] अयोग्य ।

नाजोर-वि०यौ० [फा० ना+ज़ोर] निर्बल, शक्तिहीन ।

नाजोरी-सं०स्त्री०यौ० [फा० ना+ज़ोर+रा.प्र.ई] अशक्तता, कमजोरी, निर्बलता ।

जोरी—देखो 'नाजोर' (अल्पा., रू.भे.)

ट–सं०पु०—[देशज] १ निषेधसूचक शब्द, नहीं, इन्कार।

उ०—फौजें फिरंगांण करारी फौजां, आफळती भारी अवियाट। धारी 'मांन' भुजां छत्रधारी, राजां री सारी रजवाट। जिण री जग साखी जोधपुरी, नह दाखी करवा जुध नाट। खत्रियां री आखी खेडेचा, खवां भली राखी खत्रवाट।—नाथूराम लाळस

मुहा०—नाट मारणी, नाट वाळणी—इन्कार करना, मना करना। किसी बात पर अड़ कर बैठ जाना।

[सं०] २ नृत्य, नाच। उ०—नाट चिरत फिरता रिख नारिद, गिरिद तणइ प्राहुणा गया। चलणे ऊठि लागा हेमाचळ, मंन सूधे जांणी घणी मया।—महादेव पारवती री वेलि

३ दीपक राग मतान्तर से मेघ राग का पुत्र, एक राग जिसमें वीर रस गाया जाता है।

४ देखो 'नट' (रू.भे.)

१ उ०—विकल थयु इम विलखतु, बहितु ऊवट वाट। कइ राउलि ? कइ रम्नि छउं ? निरति न जांणइ नाट।—मा.कां.प्र.

उ०—२ चोर चरड नइ चाडीया, गांठी छोडा गाहाट। वाटपाडा नइ फांसिया, नाडीत्रोडा नाट।—मा.कां.प्र.

नाटईउं–सं०पु० [देशज] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

उ०—अंतर दीसइ एवडू, पटउलउं कछोटो रे ? अंतर दीसइ एवडू, जेवडउ पासा नइत्रोटी रे। किहां नाटईउं नइ किहां फाली ! किहां रूपवत नइ हाली रे ? किहां राजकुमरु किहां माळी ! किहां कीडीआ मोती जाळी रे।—नळ-दवदंती रास

नाटक–सं०पु० [सं०] १ वह दृश्य जिसमें स्वांग के द्वारा चरित्र घटनाएँ आदि दिखाई जाय, रंगमंच पर हावभावयुक्त प्रदर्शन, अभिनय।

उ०—१ पाठ पुहर नित पूजा करइ, ईडे ध्वजा वस्त्र फरहरइ। वळतइ वारि हुइ नितु जात्र, नाटक नित्य नचावइ पात्र।—कां.दे.प्र.

उ०—२ च्यारि गति मांहि प्रांणी भमिउं। नव नव वेसे नाटक रमिउ।—नळ दवदंती रास

उ०—३ बलि बाकुल क्रिया दिकपाळ पूजिया, नाटक पेखणां करावीयां।—व.स.

२ ७२ कलाओं में से एक।

३ अभिनय या नाट्य करने वाला नट।

उ०—१ चउद रत्न, नव-निधान, सोळ सहस्र यक्षेस्वर, ३२ सहस्र नरवर, ३६ सहस्र कुळांगना, ३२ सहस्र वारांगना, ३२ भेद भिन्न बत्रीस सहस्र नाटक छन्नव्वय पाला पायक।—व.स.

उ०—२ स्री स्रीपाळ नरेसर तिणि समैं रे, दीधौ नाटक नौ आदेस रे। नाटक व्रिंद बुलावौ माहरौ रे, जोवैं सहु नरनारि नरेस रे।—स्रीपाळ

४ नाच, नृत्य (डिं.को.)

उ०—१ चौळ रुधर मद पियै सचाळी, विकट करै नाटक विकराळी।—सू.प्र.

उ०—२ मधुर गीत नाटक करइ, भलां छइ वाजित्र। अपूरव ठांम रहिवां तणा, चित्रांम सुंदर विचित्र।—नळ-दवदंती रास

५ अद्भुत लीला, आश्चर्यजनक क्रीड़ा।

उ०—कृपण बराटक पावियां, नाटक करै निलज्ज। सूण जाचक खाटक करै, सब दिन फाटक सज्ज।—बां.दा.

६ स्वांग के द्वारा दिखाए जाने वाले चरित्र का ग्रन्थ या काव्य अभिनय-ग्रन्थ।

रू०भे०—नाटिक, नाठक, नाडय।

नाटकणी, नाटकिणी–सं०स्त्री० [सं० नाटक+रा०प्र०णी] नाट्य या अभिनय करने वाली स्त्री। उ०—१ जणणी बाप स्रवणे दूहो सुणी रे, कुमरी नाचंती नयणे दीठ रे। नाटकणी थइ ए सुरसुंदरी रे, स्युं कीधौ एं दैवे धीठ रे।—स्रीपाळ

उ०—२ नाटकिणी पेठी ते नाचिवा रे, जोवा मिळिया रांणी-रांण रे। दूहो एक कहाय तिण अवसरे रे, मनमोहन मुखे मधुरी वांण रे।—स्रीपाळ

नाटकसाळा–सं०स्त्री० [सं० नाटकशाला] वह स्थान जहां नाटक किया जाता हो, नाट्यशाला।

नाटकी–सं०पु० [सं० नाटक+रा०प्र०ई] १ नाटक करने वाला। नाटक करके जीवनयापन करने वाला।

नाटणो, नाटबो—देखो 'नटणो, नटबो' (रू.भे.)

उ०—सिवू यूं सुणी जणा पीठ फेर कही मियां तूं क्या कही ? तौ उण कही फकीर साहिब कुछ नहीं कही तुम तो जावो। सिवो कही ना क्यूं तूनें कुछ तो कहो ? तद फेर उवैं नाटियो। तौ सिवो फिर कर कन्है बैठ गयो।—महाराजा जयसिंह आमेर रै धणी री वारता

२ देखो 'न्हाठणो, न्हाठबो' (रू.भे.)

नाटरंभ—देखो 'नाटारंभ' (रू.भे.)

नाट वसत–सं०पु० [सं०] एक राग।

नाटवाळ–वि० [देशज] कृपण, सूम, कंजूस (डिं.को.)

नाटसळ, नाटसल्ल, नाटसाळ–वि० [सं० नष्ट-शल्य] १ खटकने वाला, शल्य रूप से रहने वाला। उ०—१ लाखां सरस पूजवण लोहै, सरसां सूं सरसो सहल। हूं भांमी 'रांमा' भारी हथ, सत्रां न रहियो नाटसळ।—पदमा सांदू

उ०—२ सारीख रिप्पमणिमतंथ सिग्घ। बगड़ी वक्क मनि साख-म्रिग्घ। सूत 'अम्मर' सतां उरि नाटसल्ल। मछराइतइ चडियउ सहसमल्ल।—रा.ज.सी.

उ०—३ निवो सेवाळोत साख राठोड। धिणला री धणी। लाखां री लोडाऊ। रूळियारां री जोड......सयणां री सेहरौ, दुसमणां री नाटसाळ वडो झोकाइत।—वीरमदे सोनिगरा री वात

२ [illegible] ।

उ०—[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।

—[illegible] री बात

३ [illegible], [illegible] (हि.को.)

[illegible]—[illegible] । उ०—[illegible] [illegible], [illegible] रहे दिर [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] कोय ।—बां.दा.

[illegible]—[illegible], [illegible], [illegible] ।

[illegible], [illegible]—सं०पु० [सं० [illegible]] नृत्य, नाच ।

उ०—१ [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] । [illegible] प्रतम, [illegible] [illegible] ।

—पु.रू.बं.

उ० २—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रसंग । [illegible]-[illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] रंगे समरसी प्रागं नट नाटारंभ ।

—ल.पि.

उ०—३ [illegible] [illegible] [illegible] नाडियो [illegible], गंभ ठोर मराव [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहे, रंगे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।—र.ज.प्र.

उ०—४ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], नाटारंभि [illegible] नवण । [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहद ।

—रा.ज.सी.

रू०भे०—[illegible], नाटरम ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

उ०—[illegible] [illegible] री [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] है, [illegible] री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], मंगळाचार करि, दुलह-दुल-[illegible] रा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छै ।

—[illegible] विलास

[illegible]-सं०पु० [सं० [illegible]] १ नाटक [illegible] [illegible] का कार्य । २ ६४ कलाओं में से एक ।

[illegible]-वि०[देशज] १ जबरदस्त, बलवान । उ०—'करन' [illegible] '[illegible]', [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ।—रा.रू.

२ एक प्रकार का [illegible] विशेष । उ०—[illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], रेट [illegible], [illegible]-[illegible] ।

—व.स.

[illegible]—सं०पु० [सं० [illegible]] १ [illegible] । उ०—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।—ह.र.

२ [illegible], [illegible] ।

३ [illegible] ४ [illegible] [illegible] [illegible], ।

४ देखो 'नाटेसर' (रू.भे.)

नाटो-वि० [सं० नत + नीचा] (स्त्री० नाटी) छोटे डील का, छोटे कद का, ठिगना ।

नाट्य-सं०पु० [सं०] १ वेश-भूषा, हाव-भाव या स्वांग के द्वारा चरित्र या घटनाओं का प्रदर्शन, अभिनय ।

२ नटों का कार्य, नृत्य, गान, संगीत आदि ।

३ ६४ कलाओं में से एक ।

नाट्यालंकार-सं०पु० [सं०] वह अलंकार विशेष जिससे नाटक का सौदर्य बढ़ जाता है ।

नाठक—देखो 'नाटक' (रू.भे.)

नाठणो, नाठबो—देखो 'न्हाठणो, न्हाठबो' (रू.भे.)

उ०—१ सुणियो 'मजन' महाबळी, नठ नाठो पुर छोड । भेळाऊ सापं हुवा, नाठो हाथां मोड ।—रा.रू.

उ०—२ जहं विरहा तहं ओर क्या, सुधि बुधि नाठे ग्यान । लोक वेद मारग तजे, दादू एकै ध्यान ।—दादूबाणी

उ०—३ आसोज वद १४ बाहदर पातसाह नाठो, धीव गयो ।

—बेलामी

नाठणहार, हारो (हारी), नाठणियो—वि० ।

नाठिग्रोड़ो, नाठियोड़ो, नाठ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नाठीजणो, नाठीजबो—भाव वा० ।

नाठियोड़ो—देखो 'न्हाठियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नाठियोड़ी)

नाड़—देखो 'नाड़ी' (मह., रू.भे.)

उ०—जगपत पूजू तो कनै, गोविंद हूं ज गिवार । नाड़ घसंती देह री, पूगुं नमंदा पार ।—ह.र.

नाड़कियो—देखो 'नाड़ी' (अल्पा., रू.भे.)

नाड़की-सं०स्त्री०—देखो 'नाड़ी' (अल्पा., रू.भे.)

नाड़को—देखो 'नाड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

नाड़णो, नाड़बो—देखो 'नड़णो, नड़बो' (रू.भे.)

उ०—लोह ना पूतळी पाटी लोहां, पउरासी फूलडी करकरता पउपुरव, अरडधड बांग, बावन्न तीरी, तोमर भिडमाळ माला नाडता, कोदंड धनुष चढाव्या, कुंत कराग्रि कीध ।—व.स.

नाड्य—देखो 'नाटक' (रू.भे.)

उ०—गुरु तारक कउन नाड्य पयूठ, जिनजा साम पगिट्ठ सर । परि-हरवि आवि विहि पयइ कद, पुहवि पसगिजद गुरत्तरि ।

—ऐ.जै.का.सं.

नाड़िका-सं०स्त्री० [सं०] २४ मिनट का काल, एक घड़ी ।—हि.को.

रू०भे०—नाडी ।

नाड़ियो—देखो 'नाड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ माय काळी रे काळायण ऊमड़ी, माय धुरळा ना बरसे मेह । पदडयो बोलो हरियाळी रोत में । माय भर रे नाडा भर नाडिया,

ाय भरियौ रे भीम तळाव। पपइयौ बोल्यौ खावड़ रै खेत में।
—लो.गी.

०—२ कुण जी खुदाया नाडा नाडिया ए पिणयारी जी ए लो, कुण ी खुदाया रे तळाव, बाला ओ।—लो.गी.

-सं०स्त्री०—१ देखो 'नाडौ' (रू.भे.) (अ.मा.)

देखो 'नाडिका' (रू.भे.)

०—इहि अवसर अवसेस अब, दुव नाडी दिवसेस। बूंदी भट छिज्जत ढ्चौ, विजय कूरमन वेस।—वं.भा.

ोत्रोड—देखो 'नाड़ीतोड़' (रू.भे.)

उ०—चोर चरड नइ चाडीया, गांठी छोडा गाहाट। वाटपाडा नइ फांसीया, नाडोत्रोडा नाट।—मा.कां.प्र.

ळा—देखो 'नाडोळा' (रू.भे.)

ली-सं०स्त्री० देखो 'नाडौ' (अल्पा., रू.भे.)

ळौ—देखो 'दाडोळौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नाडूळी)

ौ—देखो 'नाडौ' (अल्पा., रू.भे.)

ोळा-सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा जो नाडोल पर राज्य करती थी।

रू०भे०—नाडूळा।

डोली-सं०स्त्री०—देखो 'नाडौ' (अल्पा., रू.भे.)

डोळौ-सं०पु० (स्त्री० नाडोळी) चौहान वंश की 'नाडोळा' शाखा का क्षत्रिय।

रू०भे०—नाडूळौ।

डोलौ— देखो 'नाडौ' (अल्पा., रू.भे.)

ाडौ-सं०पु० [देशज] छोटा तालाब, पोखर (अ.मा.)

उ०—१ भरिया है नाडा नाडिया ए पिणयारी ए लो। भरिया है समंद तळाव बालाजी ओ।—लो.गी.

उ०—२ जळ पीधौ जाडेह, पाबासर रै पावटै। नैंनकियै नाडेह, जीव न धापै जेठवा।—अज्ञात

अल्पा०—नाडकियौ, नाडकी, नाडकौ, नाडियौ, नाडी, नाडूली, नाडूलौ, नाडोली, नाडोलौ।

मह०—नड़, नयड्ड।

ा'णौ, ना'बौ—देखो 'न्हाणौ, न्हाबौ' (रू.भे.)

ना'णहार, हारौ (हारी), ना'णियौ वि०।

ना'योड़ौ—भू०का०कृ०।

ना'ईजणौ, ना'ईजबौ—कर्म वा० भाव वा०।

नात—देखो 'न्याति' (रू.भे.)

नातणौ-सं०पु० [देशज] रूमाल, गमछा। उ०—गवां चिणां री घूघरड़ी रधाय। चिणा का ऊपर टोटळा जी म्हारा राज। हरियै वांस को छावड़लो मंगाय। दरियायी ऊपर नातणौ जी म्हारा राज।
—लो.गी.

नातर-सं०पु०—[देशज] रक्त प्रदर।

नातरउ—देखो 'नातौ' (रू.भे.)

उ०—ज्यूं थे जांणउ त्यूं करउ, राजा आइस दीध। रांणी राजा नूं कहइ, ओ म्हां नातरउ कीध।—ढो.मा.

नातरायत-सं०स्त्री०—१ वह जाति जिसमें स्त्री के पुनर्विवाह की प्रथा हो।

रू०भे०—नातरिया।

२ वह स्त्री जिसने पुनर्विवाह किया हो।

नातरिया-सं०पु०—१ देखो 'चौरासिया, चौराया'।

२ देखो 'नातरायत' (१) (रू.भे.)

नातरौ—देखो 'नातौ' (अल्पा., रू.भे.)

नाताकत-वि० [फा० ना+अ० ताकत] अशक्त, निर्बल, शक्तिहीन, कमजोर।

नाताकती-सं०स्त्री० [फा० ना+अ० ताकत+रा.प्र. ई] निर्बलता, कमजोरी, अशक्तता।

नाती-वि० [सं० ज्ञाती] १ सम्बन्धी, रिश्तेदार।

२ जाति का, जाति सम्बन्धी।

रू०भे०—न्याती।

अल्पा०—नातेलौ, न्यातीलौ।

नातेदार—वि० [सं० ज्ञाती+फा० दार] १ रिश्तेदार, सम्बन्धी.

२ पुनर्विवाह करने वाली जाति का।

नातेलौ—देखो 'नाती' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—मुरधर ओखद मूळ, सनेपी सांचौ सारौ। ऊपर खारौ खूब, मांय सूं मीठौ न्यारौ। नातेलां री नीत, बात वै खारी कैवै। पण सीखां री सार, उमर भर चेतै रैवै।—दसदेव

(स्त्री० नातेली)

नातौ-सं०पु० [सं० ज्ञाति] १ हिन्दुओं की कुछ जातियों में प्रचलित एक प्रथा जिसके अनुसार पति की मृत्यु अथवा अन्य किसी कारण से स्त्री का किसी दूसरे पुरुष के साथ पत्नी रूप में सम्बन्ध किया जा सकता है।

२ उक्त प्रथा पर लिया जाने वाला एक सरकारी कर।

३ एक ही कुल में उत्पन्न होने या विवाह आदि के कारण होने वाला लगाव, कौटुम्बिक घनिष्टता। उ०—निवारण विघन सुप्रसन घणी रहै नित, सौ गुणी सुसबद सब दिन सदा तौ। ताकवां वधावै प्रभत 'मेहा' तणी, निभावै धणी व्रत तणौ नातौ।—नंदजी मोतीसर

४ सम्बन्ध, रिश्ता। उ०—१ जोड़ ज्यूं ही जोड़, विणजारा रा व्याज ज्यूं। तनक जोड़ मत तोड़, नातौ तांतौ नागजी।—अज्ञात

उ०—२ स्वांग सगाई कुछ नहीं, रांम सगाई सांच। दादू नाता नांम का, दूजे अंग न राच।—दादूवांणी

उ०—३ कळिया दुख सागर जन काढै, विपत रोग अघ आगर बाढै। नातौ दीनदयाळ निहाळै, पाळै रे संतां हरि पाळै।
—र.ज.प्र.

[illegible] — [illegible], [illegible]।

[illegible] — [illegible], [illegible], [illegible]।

[illegible] (ह.मे.)

उ०—[illegible] ।—मैनिनाथ [illegible]

[illegible] (ह.का., क.कं.)

उ०—१ [illegible] गोविंद [illegible] ।

[illegible] नाथा [illegible] ।

—पद्मिनाक प्रकरण

उ०—२ [illegible] मीरां री नाथ छोड रजूड़ा री राह में [illegible] मगल [illegible] में धावे। फेर भी कोई [illegible] मांहि मीरां नूं जका जोवरण [illegible], [illegible] कांठा नूं कहता बिहूंण रातरो तो म्हारा [illegible] जावसी।—र.मा.

नाथ-संज्ञा० [सं०] १ श्रीकृष्ण, गोपाल (म.मा.)।

रू०भे०—नाथड़ो।

उ०—[illegible] सौत [illegible]। नमो नाथ तो नाच नारद [illegible]। [illegible] नाथ [illegible]। नमो नंदकीसोर नारद [illegible]।—ना.द.

२ विष्णु (डि.को.)

३ ईश्वर। उ०—१ हरि अकळ सकळ विसपाळ, नाथ निरभै निरधार। निराकार निरलेप, पार नहि पामै पार।—ह.पु.वा.

उ०—२ [illegible] जनम मत हारै, नाथ समर नयलोक नरेस।

—ओपो आढ़ो

४ स्वामी, प्रभु, मालिक (डि.को.)।

उ०—[illegible] दूरा तजै, मन्नूं केम नमि-नाथ। [illegible] सह धारा [illegible], [illegible] नाथ।—ह.र.

५ पति (डि.को.)

६ राजा। उ०—१ [illegible] तूटे [illegible], तारा तिम तिण वार। [illegible] में, उडि जावै असवार। उडि जावै असवार, [illegible] सूंड री। [illegible] मांहि, [illegible] सूंड री। [illegible], [illegible] नाथ रा। [illegible] रथ पर जाएा, पांण [illegible] रा।—[illegible]

उ०—२ [illegible] विसरावै। प्राण नाथ हा नाथ! [illegible] ।—ऊ.का.

७ मत्स्येन्द्रनाथ द्वारा प्रवर्तित एक सम्प्रदाय।

वि०वि०—नाथ सम्प्रदाय को सिद्धमत, सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योग-सम्प्रदाय, अवधूतमत, अवधूतसम्प्रदाय आदि भी कहा जाता है। [illegible] हर भाग में इसके अनुयायी मिलते हैं। इस मत का [illegible] 'सिद्ध-सिद्धान्त-पद्धति' है। इसका संक्षिप्त रूप [illegible] शताब्दी में [illegible] भाग में काशी के बलभद्र पंडित द्वारा किया गया था जिसका नाम 'सिद्ध-सिद्धान्त-संग्रह' है। 'नाथ' शब्द में 'ना' का अर्थ किया जाता है, अनादि-रूप और 'थ' का अर्थ किया जाता है। स्थापित होना या तीन लोकों का स्थापित होना अर्थात् अनादि रूप का तीन लोकों के रूप में स्थापित होना। इसके अतिरिक्त 'ना' का अर्थ नाथब्रह्म और 'थ' का अर्थ हटाने वाला (अज्ञान के आवरण को) अर्थात् वह ब्रह्म जो अज्ञान को हटा कर ब्रह्मानंद या सच्चिदानंद में विलीन करे।

नाथ सम्प्रदाय का विस्तार आदि में होने वाले नव मूल नाथों से माना जाता है तथा उन्हीं को नव नारायण का अवतार भी माना जाता है। राजस्थान में शरीर के लिए 'नव नारायण री देह' कहा जाता है, इसका तात्पर्य यही हो सकता है कि शरीर में नव नारायण हैं। 'योगिसंप्रदायाविष्कृति' के अनुसार निम्न नव नारायण नव नाथों के रूप में अवतरित हुए किन्तु इनमें आदिनाथ (शिव) और गोरक्षनाथ का नाम नहीं है—

१. कविनारायण	–	मत्स्येंद्रनाथ
२. करभाजननारायण	–	गाहनिनाथ
३. अंतरिक्षनारायण	–	ज्वालेंद्रनाथ (जालंधरनाथ)
४. प्रबुद्धनारायण	–	करणिपानाथ (कानिपा)
५. आविर्होत्रनारायण	–	(?) नागनाथ
६. पिप्पलायननारायण	–	चर्पटनाथ (चर्पटी)
७. चमसनारायण	–	रेवानाथ
८. हरिनारायण	–	भर्तृनाथ (भरथरी)
९. द्रुमिलनारायण	–	गोपीचन्द्र

नव नाथों के सम्बन्ध में अलग अलग नाम मिलते हैं। आदिनाथ शिव, नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक मत्स्येंद्रनाथ, जालंधरनाथ, गोरक्षनाथ, कृष्णपाद आदि को नव नाथों में से ही माना जाता है किन्तु कहीं इनसे भिन्न नाम मिलते हैं। गोरक्षनाथ नव नाथों में से हैं या अलग इस सम्बन्ध में भी प्रामाणिक रूप से नहीं कहा जा सकता है। अतः मूल नव नाथ कौनसे थे इसका ठीक निर्णय तब तक कठिन है जब तक कोई ठोस प्रमाण न मिले।

इस सम्प्रदाय के आदिनाथ शिव माने जाते हैं जो इस सम्प्रदाय के उपास्यदेव हैं। वह शिव जो सब से परे ब्रह्म या ज्योतिस्वरूप एक मात्र सच्चिदानंद रूप है; जो ब्रह्मा, विष्णु महेश, इंद्र, वेद, यज्ञ, सूर्य, चंद्र, निधि, जल, स्थल, अग्नि, वायु, दिक् और काल सब से परे है, यथा—न ब्रह्मा विष्णु रुद्रो न सुरपति सुरा नैव पृथ्वी न चापो, नैवाग्निर्नापिवायुर्न च गगनतलं नो दिशो नैवकाल:। नो वेदा नैव यज्ञा न च रविशशिनौ नो विधि नैंविकल्पः, स्वज्योतिः सत्यमेकं जयति तव पदं सच्चिदानन्द मूर्ते।

—सिद्ध-सिद्धान्त-पद्धति

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार ईसवी की नवीं शताब्दी में पूर्वी भारत के कामरूप प्रदेश के निकट किसी चंद्रगिरि नामक स्थान में

नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक मत्स्येंद्रनाथ का जन्म हुआ था। नाथ-परम्परा में आदिनाथ के बाद सब से महत्वपूर्ण आचार्य मत्स्येंद्रनाथ ही हैं। चूंकि आदिनाथ शिव का ही नामान्तर है अतः मानव गुरुओं में मत्स्येंद्रनाथ ही इस परम्परा के सर्व-प्रथम आचार्य माने जाते हैं। इनके सम्बन्ध में अनेक दन्तकथाएँ प्रसिद्ध हैं। यह बात सत्य ही प्रतीत होती है कि मत्स्येंद्रनाथ प्रारम्भ में एक साधना में रत हुए थे। फिर वे एक ऐसे स्थान या आचार में जा फँसे जहां स्त्रियों का साहचर्य प्रधान था। वे अपनी साधना को भूल रहे थे। वहां से उनका उद्धार उन्हीं के प्रधान शिष्य गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) ने किया था।

मत्स्येंद्रनाथ द्वारा अवतारित कौलज्ञान प्रसिद्ध है। उन्होंने 'कौलज्ञान-निर्णय' नामक ग्रंथ भी लिखा है। शाक्त आचारों में भी वाम, दक्षिण और कौल उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं और कौल-मार्ग ही अवधूत-मार्ग है। इस प्रकार तंत्र-ग्रंथों के अनुसार कौल या अवधूत-मार्ग श्रेष्ठ है इसलिए शाक्त तंत्र भी नाथानुयायी ही हैं। 'कौलज्ञान निर्णय' के अतिरिक्त भी इन्होंने कई अन्य ग्रन्थों की रचना की थी।

मत्स्येंद्रनाथ के मुख्य शिष्यों में गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) का नाम अधिक प्रसिद्ध है। विक्रम संवत् की दशवीं शताब्दी में भारतवर्ष के इस महान गुरु का आविर्भाव हुआ था। शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित महापुरुष भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। भारतवर्ष के कोने कोने में उनके अनुयायी आज भी पाए जाते हैं। गोरक्षनाथियों की मुख्य बारह शाखायें प्रसिद्ध हैं जो निम्न हैं—सत्यनाथी, धर्मनाथी, रामपंथ, नटेश्वरी, कन्हड़, कपिलानि, बेराग, माननाथी, आईपंथ, पागलपंथ, धजपंथ और गंगानाथी। भक्ति आंदोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आंदोलन गोरखनाथ का योगमार्ग ही था। भारतवर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसमें गोरक्षनाथ सम्बन्धी कहानियां नहीं पाई जाती हों। इन कहानियों में परस्पर ऐतिहासिक विरोध बहुत है किन्तु यह बात स्पष्ट है कि वे अपने युग के सब से बड़े नेता थे। इन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की जिनमें से कई प्रकाशित हैं।

जालंधरनाथ मत्स्येंद्रनाथ के गुरुभाई और समकालीन माने जाते हैं। तिब्बती परम्परा में ये मत्स्येंद्रनाथ के गुरु भी माने जाते हैं। उक्त परंपरा के अनुसार नगर भोग देश में (?) ब्राह्मण कुल में इनका जन्म हुआ था। पीछे ये एक अच्छे पंडित भिक्षुक बने किन्तु घंटापाद के शिष्य कूर्मपाद की संगति में आकर ये उनके शिष्य हो गए। मत्स्येंद्रनाथ, कण्हपा (कृष्णपाद) और तंतिपा इनके शिष्यों में से थे। भोटिया ग्रंथों में इन्हें आदिनाथ भी माना जाता है। 'तनजूर' में इनके लिखे हुए सात ग्रंथों का उल्लेख है।

नाथ सम्प्रदाय के आदिनाथ और उपास्य देव शिव-मुद्रा, नाद और त्रिशूल धारण करने वाले हैं अतः नाथ सम्प्रदाय वाले कानों में कुण्डल या मुद्रा धारण करते हैं जिन्हें दर्शन भी कहते हैं। इस सम्प्रदाय में कान छिदवा कर कुण्डल धारण कर लेने के बाद योगी कनफटा कहलाते हैं और इससे पूर्व औघड़ कहलाते हैं। ऐसा माना जाता है कि जालंधरनाथ मुद्रा धारण नहीं करते थे, वे औघड़ थे। किन्तु 'सिद्धांत वाक्य' में जालंधरपाद के एक श्लोक के अनुसार पता चलता है कि मुद्रा, नाद और त्रिशूल धारण करने वाले नाथ ही इनके उपास्य हैं, यथा—

वन्दे तन्नाथतेजो भुवनतिमिरहं भानुतेजस्करं वा,
सत्कर्तृ व्यापकं त्वा पवनगतिकरं व्योमवन्निर्भरं वा।
मुद्रानादत्रिशूलैर्विमलरुचिधर खर्पर भस्ममिश्रं,
द्वैत वाऽद्वैतरूपं द्वयत उत परं योगिनं शङ्करं वा।

—स० म०, सू०, पृ० २८

यह अनुमान लगाया जाता है कि नाथ-साधना बौद्ध दर्शन का ही एक रूप है अथवा उससे सम्बद्ध है। ऐसा माना जाता है कि बौद्ध कापालिक मार्ग और शैव कापालिक मार्ग का स्वतंत्र अस्तित्व था जो बाद में गोरखपंथी साधुओं में अन्तर्भुक्त हो गया। पं० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा प्रकाशित 'बौद्धगानम्रोदोहा' नामक संग्रह के भाग 'चर्या-चर्यविनिश्चय' के अनुसार कान्हूपाद या कृष्णपाद एक बौद्ध सिद्ध था जो अपने आप को बौद्ध कापालिक कहता था, यथा—

(१) आलो डोम्बि तोए संग करिब मो सांग।
निघंन कान्ह कापालि जोइ लांग॥

—चर्या०, पद १०

(२) कइसन होलो डोम्बि तोहरि भाभरि आली।
अन्ते कुलीन जन माझे कावाली॥

(३) तुलो डोम्बी हाउँ कपाली—

—वही, पद १०

यही कृष्णपाद अपने आप को जालंधरनाथ का शिष्य कहता है, यथा—

शाखि करिब जालंधरि पाए।
पाखि ण राहअ मोरि पांडिआ चादे॥

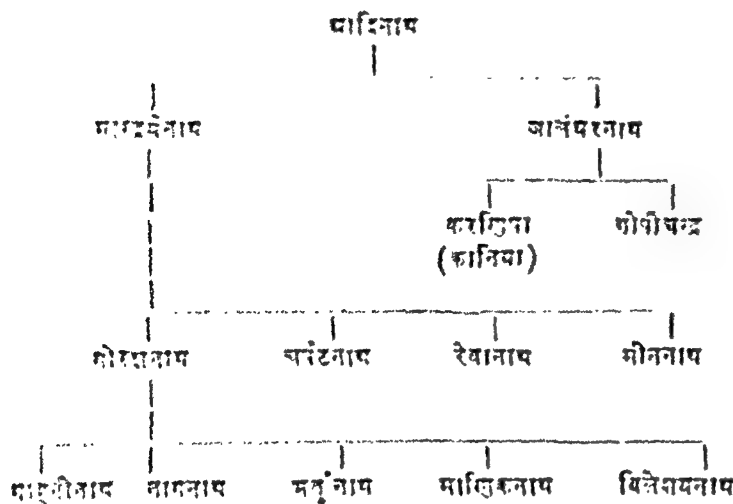
—वही, पद ३६

यह बात तो सर्वमान्य है कि जालंधरनाथ के शिष्य कृष्णपाद थे जिन्हें कण्हपा, कान्हूपा, कानपा, कानफा, कनिपाव आदि नामों से लोग याद करते हैं। श्री राहुलजी ने तिब्बती परम्परा के आधार पर इन्हें कर्णाटदेशीय ब्राह्मण माना है पर डॉ० भट्टाचार्य ने इन्हें जुलाहा जाति में उत्पन्न और उड़ियाभाषी लिखा है। शरीर का रंग काला होने से इन्हें 'कृष्णपाद' कहा गया है। महाराज देवपाल (८०९-८४९ ई०) के समय में यह एक पंडित भिक्षु थे और कितने ही दिनों तक सोमपुरी विहार (पहाड़पुर, जिला राजशाही, बंगाल) में रहा करते थे। आगे चलकर सिद्ध जालंधर पाद के शिष्य हो गये। चौरासी सिद्धों में कवित्व और विद्या दोनों दृष्टियों से ये सब से श्रेष्ठ थे। इन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की थी।

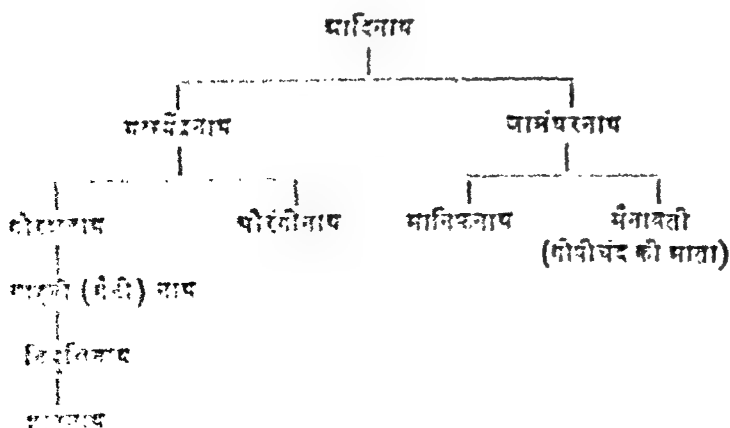
नाथ सम्प्रदाय में कानिपा-सम्प्रदाय कृष्णपाद से ही चला है। अपेरे

...संप्रदाय के साथ है जिसे राजस्थान में 'कानफड़िया' कहा जाता है। ये अपने आदि गुरु कणिपाद (कृष्णपाद) को मानते हैं। [illegible] कहा जाता है कि कानिपा-संप्रदाय बाद में गोरखनाथी संप्रदाय में अन्तर्भुक्त हो गया। [illegible] यह बात [illegible] ठीक है कि कानिपा-संप्रदाय को अब भी पूर्ण रूप से गोरखनाथी संप्रदाय में नहीं माना जाता है। कृष्णपाद द्वारा प्रवर्तित कहा जाने वाला एक उपसम्प्रदाय बालनाथ (बाल नाथी) अब भी जीवित है। ये अपने को कृष्णपाद का शिष्य गोपीचंद के अनुयायी मानते हैं। गोरखपंथियों से कुछ बातों में ये लोग अब भी भिन्न हैं। मुद्रा गोरखनाथी योगियों का चिह्न है। गोरखपंथी योगी कान के मध्य भाग में ही कुंडल धारण करते हैं पर कानिपा योग कान की लौरों में भी पहनते हैं। गोरख पंथ में मुद्रा के अनेक आध्यात्मिक अर्थ भी बताए जाते हैं।

१. 'आदिनाथकालनिर्णय' के अनुसार मत्स्येंद्रनाथ और जालंधरनाथ (ज्वालेंद्रनाथ) की शिष्य-परम्परा इस प्रकार है—



२. 'श्री ज्ञानेश्वर चरित' में पं० लक्ष्मण रामचंद्र पांगारकर ने ज्ञाननाथ तक की गुरु-परम्परा इस प्रकार बताई है—



३ उक्त सम्प्रदाय के अनुयायियों के नाम के साथ लगाई जाने वाली उपाधि या उपनाम।

९ संन्यासी, योगी।

१० [illegible]।

रू०भे०—नत्थ, नथ।

११ वह रस्सी जिसे बैल, भैंसे आदि का नाक छेद कर नथुने में डाली जाती है जिससे वे वश में रहें।

उ०—मद नायड़िया नाथ, एकण बाड़ बाड़िया। रांण न मानी नाथ, गाढै माढ 'प्रतापसी'।—दुरसो आढ़ो

मुहा०—नाथ घालणी—वश में करना।

१२ वह कील जिसे गाड़ी का पहिया लगा देने के बाद धुरी के छेद में फंसा दी जाती है जिससे पहिया बाहर न निकल सके।

१३ देखो 'नथ' (रू.भे.)

रू०भे०—ना', नाह।

अल्पा०—नाथो, नाहलउ, नाहलियो, नाहलु, नाहलो।

नाथग्रनाथ-सं०पु० [सं० अनाथ-नाथ] अशरणशरण, ईश्वर।

उ०—अनामय अव्यय अनाथ नाथ। निरालय निरभय नाथग्रनाथ।—ऊ.का.

नाथक-सं०पु० [सं०] स्वामी राजा।

नाथड़ो-सं०पु०—वह बैल या भैंसा जिसके नाक में नाथ हो।

नाथचिड़िया—देखो 'चिड़ियानाथ' (रू.भे.)

उ०—नाथियो नाथचिड़िया पर्वं ठोड़ तद, सबूरण नाथियो नाहूं जोधं। अचळ 'मेहा' तणु हुकम तद आवियो, जदी गढ नाथियो राव 'जोधं'।—दोतसी बारहठ

नाथण-वि०—१ नाथ डालने वाला। उ०—नाथण नाग नागर ब्रज नाटक, भायण महर मागणां।—पि प्र.

२ वश में करने वाला।

नाथणकाळो-सं०पु० [सं० नाथ्+कालियः] काली नाग को नाथने वाले, श्री कृष्ण।

नाथणो, नाथबो-क्रि०स० [सं० नाथ्] १ बैल, भैंसा आदि की नाक छेद कर रस्सी डालना ताकि उन पर नियंत्रण किया जा सके या उनको वश में किया जा सके। उ०—१ काळो नाग नाथू न जो एक मायो। जसोदा प्रभू नंद धाये न जायो। नहीं नागणी नाग नारी नवारे। हूवै हेकणी गाठ हेकं हजारे।—ना.द.

उ०—२ उवारे घणा थाप आपै अरज्जे, तुवै पंदरां कासमीरी परज्जे, अहो नाथियो पोयणीनाळ आणं। अहग्रसार आपै हुवं अप्पणाणं।—ना.द.

२ काबू में करना, वश में करना, अधीन करना, बाध्य करना।

उ०—१ अधी कुपया मवा तणी पूणी परण, नरीवत ऊनवी पणा नाथं। पालमा माह गिर झालर ऊथोन्दिया, मेलियो गरीबां तणां माथं।—महाराजा अजीतसिंह जोधपुर री गीत

उ०—२ अनमी नाम उनदर्वा नाथै, बळवंत मदं पवण गूं बाथ।

अममर त्याग कमधजां आगै, हिंदू यमन न काढ़ै हाथ।
—कूंपा महराजोत री गीत

३ वस्तु को छेद कर उसमें तागा डालना।

४ वस्तुओं में छेद करके तागे आदि में पिरोना।

नाथणहार, हारो (हारी), नाथणियौ—वि०।

नथवाड़णो, नथवाड़बो, नथवाणो, नथवाबो, नथवावणो, नथवावबो, नथाड़णो, नथाड़बो, नथाणो, नथाबो, नथावणो, नथावबो—प्रे०रू०

नाथिओड़ो, नाथियोड़ो, नाथ्योड़ो—भू०का०कृ०।

नाथीजणो, नाथीजबो—कर्म वा०।

नत्थणो, नत्थबो, नथणो, नथबो—रू०भे०।

नाथता-सं०स्त्री० [सं०] प्रभुता, स्वामित्व।

नाथत्व-सं०पु० [सं०] स्वामित्व, प्रभुता।

नाथदवारो, नाथदूवारो, नाथद्वारो-सं०पु० [सं० नाथद्वार] महाराणा राजसिंह द्वारा निर्मित उदयपुर राज्यान्तर्गत बना हुआ श्रीनाथजी का प्रसिद्ध मन्दिर जो वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णवों का एक स्थान है।

वि०वि०—श्रीनाथजी का मन्दिर पहले मथुरा के निकट गिरिराज पर्वत पर था। सन् १६६६ के १० अक्टूबर को बादशाह औरंगजेब के भय से गोस्वामी विट्ठलदास के पौत्र दामोदरजी श्रीनाथजी की मूर्ति को रथ में बैठा कर छिपते छिपते राजस्थान में आए। यहाँ पर किसी रजवाड़े की हिम्मत उन्हें खुले आम पनाह देने की नहीं हुई क्योंकि बादशाही नाराजगी को झेलने की शक्ति किसी में नहीं थी। तब तक वे लोग उदयपुर नहीं गए थे। अन्त में टीकैत गोस्वामी दामोदरजी के काका गोविन्दजी उदयपुर महाराणा राजसिंह के पास गए और उन्हें परिस्थिति से अवगत किया। महाराणा ने बड़े सम्मानपूर्वक सभी गोसांइयों के साथ श्रीनाथजी को अपने राज्य में बुला लिया और श्रीनाथजी के उदयपुर राज्य में पहुँचने पर स्वयं अगवानी के लिए आए। उन्होंने उदयपुर से २४ मील उत्तर की ओर बनास नदी के किनारे सीहाड़ ग्राम के पास मन्दिर बनवा कर बड़ी धूमधाम से श्रीनाथजी को सन् १६७२ की २० फरवरी शनिवार को पाट बिठाया। राणा ने पूजा आदि की व्यवस्था के लिए बहुत बड़ी जागीर दी और कहा कि राजपूतों के शिर काटे बिना औरंगजेब श्रीनाथजी को छू नहीं सकेगा।

नाथपूत-सं०पु०यौ० [सं० नाथपुत्र] कामदेव, मदन (डि.को.)

नाथवाळ-वि० [सं० नाथ+आलुच्] १ जिसके नाक में नाथ डाली हुई हो (चौपाया पशु आदि) २ अधीन, वशवर्त्ती (डि.को.)

नाथहर-सं०पु० [सं० नाथहरि] बैल, वृषभ (ह.नां.)।

नाथावत-सं०पु० [सं० नाथ+पुत्र] १ सोलंकी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा.ख्यात)।

२ कछवाह वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
(बां.दा.ख्यात)

रू०भे०—नाथोत।

नाथियउ, नाथियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नाक छेद कर नाथ डाला हुआ।
(उ.र.)

२ काबू में किया हुआ, वश में किया हुआ, अधीन किया हुआ.

३ नत्थी किया हुआ, छेदा हुआ।

(स्त्री० नाथियोड़ी)

नाथी-री-बाड़ो-सं०पु० [रा० नाथी री+सं० पाटकः] व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा, कसबीखाना, चकला।

नाथौ-वि० [सं० नाथ+रा०प्र० औ] १ नाक में नाथ डाला हुआ।
(चौपाया आदि)

२ देखो 'नाथ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—बत्तीस लाख विमांन नाथौ रे, एक पल्य सागर री साथौ।
—जयवांणी

नाथोत-सं०पु०—१ राठौड़ राव रिडमलजी के पुत्र नाथोजी के वंशज राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'नाथावत' (रू.भे.)

नादंग—देखो 'नाद' (रू.भे.)

उ०—वजि अदंग चंग रंग उपंग वारंग। अनंग छबि चंग उमंग अंग अंग। नृतंग रित अंग करंग नादंग। रस तरंग बह तरंग रंगरंग।
—सू.प्र.

नाद-सं०पु० [सं०] १ ध्वनि, आवाज, शब्द (डि.को.)।

उ०—१ सहनाय मुरसलां रंग सवाद। नवबती घोर मंगळीक नाद।
—सू.प्र.

उ०—२ अड़ड़ाट नाद वैराट अज, घट्ट जांणि दूजी घड़ै। वरसाळ झाळ गोळां वहनि, प्रळै काळ छौळां पड़ै।—सू.प्र.

उ०—३ झणणाट नाद नूपर झंझर, सुर वाजंत्र सैतीसमौं। रंभ हूर रथां ढकियौ अरक, मंडि ब्रह्मंड बावीसमौ।—सू.प्र.

२ वह वर्ण जिसका उच्चारण अनुस्वार के समान हो, सानुनासिक स्वर।

३ वर्णों का उच्चारण करते समय कंठ स्वर निकालने का एक प्रयत्न।

४ संगीत। उ०—१ तळिया-तोरण बांधा, हाट सिंगारी, पोळि सिंगारी, घरि घरि गूडी ऊछळी। थांनिक थांनिक गीत, नाद, नाटक नगरि वधाई वाजी।—द.वि.

उ०—२ भँवर लुबधी बास का, मोह्या नाद कुरंग। यों दादू का मन रांम सौं, ज्यों दीपक ज्योति पतंग।—दादूवांणी

५ योनि, भग। उ०—१ धरम्म करम्म परम्म सुधांम, रहित-सबद्द निकेवळ रांम। अमाप-कळा बिंदु नाद उदास, निरंजण भूत सरव्व-निवास।—ह.र.

उ०—२ देवी नाद तूं बिंदु तूं नव्व निध्धि, देवी सीव तू सवित्त तूं सव्व सिध्धि। देवी बापडां मांनवी कांइ बूझै, देवी ताहरा पार तूहीज सूझै।—देवि.

उ० — ७ [illegible] सबदी [illegible] वरिजत [illegible]। [illegible] ।
—श्री हरिरामजी महाराज

उ० — ८ [illegible] दूर [illegible] विकार। नाद [illegible] ।
—श्री हरिरामजी महाराज

९ [illegible] नाद-योगी [illegible] हैं।

उ० — १ [illegible] देवराज नूं कयो—'[illegible] गो निरद गयो।' [illegible] कयो—'[illegible] नाद [illegible]।' [illegible] वार कयो नु मो कबूल [illegible]। [illegible] नाद, [illegible] देवराज नूं दियो। [illegible] देवराज [illegible] माहें [illegible], [illegible] ।—[illegible]

उ० — २ [illegible] बरत की सोभा, [illegible] जोडूं करोड़। [illegible] [illegible] मुण मोड़।—मीरां

उ० — ३ [illegible] नाद [illegible] वीलादि [illegible]। [illegible] बनीय [illegible]। [illegible] नाद [illegible]। [illegible] पाताळ पूजे [illegible]।—दे.स.

७ [illegible], [illegible] जिसे गुरु दीक्षा देते समय अपने [illegible] है।

८ [illegible] (नाद)। उ० — [illegible] नाद [illegible] परबोधै, निमिदिनि [illegible]। [illegible] विष [illegible], [illegible] ।—वेलि.

९ [illegible], गर्व, अभिमान।

उ० — १ [illegible] नाम [illegible], [illegible] नाद उतारिसी।—पी.ग्रं.

उ० — २ [illegible] नाद।—[illegible]

१० देखो '[illegible]' (रू.भे.)—अ.मा.

रू०भे० — नादन, नादि, नादु।

[illegible], नादबन — सं०पु० [देशज] कपास (अमरत)

नादमुद्रा — सं०पु० [सं०] तंत्र की एक मुद्रा जिसमें दाहिने हाथ की मुट्ठी बांध कर अंगूठे को ऊपर की ओर उठाये रहना पड़ता है।

नादर — १ देखो 'नाजर' (रू.भे.)

उ० — १ [illegible] एक जानवर आयो सो [illegible] बादसाह नू [illegible]। [illegible] थी। उपने [illegible] — [illegible] बादसाह [illegible] बादसाहों दे [illegible]। ताहरो नादर [illegible] — [illegible] दीवाण पर [illegible] नू नाखी।
—[illegible] गी वचन में [illegible]

२ देखो 'नादिरसाह' (रू.भे.)

[illegible], [illegible] — देखो 'नादिरसाह' (रू.भे.)

[illegible] — सं०स्त्री० [फा० नाद-ए-अली] १ [illegible], जहरमोहरे या मंत्र पढ़ कर नादअली नामक पत्थर की चौकोर टिकिया जिस पर कुरान की एक विशेष आयत खोदी जाती है और बच्चों के गले में रोग, भय आदि को दूर करने के लिए पहनाई जाती है। २ संगमूसा या मोहरे का बना चौकोर टुकड़ा जिसे बच्चों के गले में रोग, भय आदि दूर करने के लिए पहनाया जाता है।

नादांन — देखो 'नादान' (रू.भे.)

नादांनियो, नादांणो — देखो 'नादान' (अल्पा., रू.भे.)

उ० — १ रमक बजाय गया मोरई नादांनिया। कदै मिळे रसराज मोवणा, मुजरो की नाई मानू हो रसा॥—रसीलेराज

उ० — २ मोनू ले चल नादांनिया, मुलक बिगाना थारी चोज निगाना रब रे हाथ सदा॥—रसीलेराज

उ० — ३ मिळ के नादांण मैनू निरख गया वे। कया जाणां किस विध मन लिया प्रब तो नादां हो गया निरखण भी गया। —रसीलेराज

नादांनी — देखो 'नादानी' (रू.भे.)

नादांन — वि० [फा० नादान] नासमझ, अनजान, मूर्ख।

उ० — १ पना साम सदा नै थारे रा मिजमान, अजी कांई मोलवरा नादांन। रात अनत प्रात म्हारै आया, तन पर केई सेनांण।
—रसीलेराज

उ० — २ अब के ओळंगाणी पनामारू नणदोईजी नै भेज, अब की ओमासो फूलां-सेज पै, जी म्हारा राज। नणदोईजी के थारो नादांन' बा दरवी महला में बैठी अेकली, जी म्हारा राज।—लो.गी.

रू०भे० — नादांण।

अल्पा० — नादांनियो, नादांणो।

नादांना — सं०स्त्री० [फा० नादानी] नासमझी, मूर्खता।

क्रि०प्र० — करणी होणी।

नादार — वि० [फा०] १ जिसके पास कुछ न हो, दरिद्र, गरीब, निर्धन।

[अ० नाजिर] २ डरपोक, कायर।

उ० — थाईसी गांव मांग रया हूं नै भे बाजरी में लुक रया हो! फिट रे नादारो थांनै।—रातवासो

३ देखो 'नाजर' (रू.भे.)

नादारगी, नादारी — सं०स्त्री० [फा० नादारी+रा. प्र. गी.] दरिद्रता, निर्धनता, गरीबी।

नादि — देखो 'नाद' (रू.भे.)

उ० — द्रैं द्रैं गदि गदि दहु दहु नादि बाजीय गुहिर गोधांग। रणकाहली सुणी समरंगणि कायर पड़इ परांण।—विद्याविलास पवाड़उ

नादिर — वि० [फा०] १ अनोखा, अद्भुत।

उ० — ऊट राता केसा, काळो आंख्या, मोटे मूंबे रा संगाया सौ ऊट इसी तरह रा अरब देस में नादिर है। मर्दा मिळे छै।—नी.प्र.

२ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया। ३ देखो 'नाजर' (रू.भे.)

उ० — नादिर हाथ खबर कराय अंदर नूं आई। सलांमी कीवी, तद बादसाह फुरमाई 'क्यूं तरै आज अवसणी हुयी।'
—जगदेव पंवार री वात

४ देखो 'नादिरसाह' (रू.भे.)

नादिरसा, नादिरसाह–सं०पु० [फा० नादिरशाह] फारस का एक शक्तिशाली और क्रूर बादशाह जिसने सन् १७३८ में भारत में प्रवेश किया और सन् १७३९ में मुगल बादशाह मुहम्मदशाह को बुरी तरह हराया। उसने दिल्ली में कत्लेग्राम करवा दिया और लगभग बीस हजार आदमियों, स्त्रियों और बच्चों को तलवार के घाट उतार दिया। बादशाह शाहजहां द्वारा बनवाया हुआ प्रसिद्ध तख्त ताऊस और कोहनूर हीरे के साथ अपार सम्पत्ति लूट कर वह अपने देश लौटा।

रू०भे०—नादर, नादरसा, नादरसाह, नादिर।

नादिरसाही–वि० [फा० नादिरशाही] १ बादशाह नादिरशाह से सम्बन्धित. २ बहुत उग्र या कठोर।

सं०स्त्री०—अत्याचार।

नादी–वि० [सं० नादिन्] ध्वनि करने वाला।

रू०भे०—नद्दी।

नादु–देखो 'नाद' (रू.भे.)।

उ०—अरजुन वनचर लागउ वादु, करउं झूझु ऊतारउ नादु। एक सर कारणि झूझइं वेउ, करइ परीक्षा ईसर देउ।—पं पं.च.

नादेसुर–सं०पु० [सं० नंदीश्वर] १ शिव, महादेव. २ नंदी।

उ०—गौरी को पति बीनवां जी, नादेसुर असवार। भाळ अरध सिर राजई जी, गळै सेसफण हार।—रुक्मणी मंगळ

नादैत–वि० [फा० ना+सं०दैत्य] जिसमें आसुरी प्रवृत्ति न हो।

उ०—पवित्र प्रयाग 'रतनसी' पोहकर, मन निरमळ गंगाजळ जेम। नर नादैत नरिंद नरेहण, निकळंक निघुट निपाप निगेम।—दूदो

नादोत–सं०पु०—सीसोदिया वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

नाप–सं०स्त्री० [सं० मापनम्] १ किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई या गहराई जिसकी छोटाई, बड़ाई (वा न्यूनता, अधिकता) का निश्चय जो किसी निर्दिष्ट लम्बाई के साथ मीलान करने से किया जाय, माप। २ किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई आदि कितनी है इसको ठीक-ठीक स्थिर करने के लिए की जाने वाली क्रिया, विस्तार का निर्धारण, नापने का काम।

यो०—नाप-जोख, नाप-तोल।

३ निर्दिष्ट लम्बाई-चौड़ाई की वह वस्तु जिसका व्यवहार करके यह स्थिर किया जाय कि कोई वस्तु कितनी लम्बी या चौड़ी है या कितने परिमाण में है, मापने की वस्तु, नपना, मानदंड।

नाप का सर–सं०पु० [देशज] एक ही माप के टुकड़े काटने का लोहे का औजार।

नाप-जोख—देखो 'नाप-तोल'।

नापणौ, नापबौ–क्रि०स० [सं० मापनं] १ लंबाई, चौड़ाई, मोटाई या गहराई की परीक्षा करना, किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई आदि कितनी है यह निश्चित करना।

मुहा०—कनपड़ी नापणी—तमाचा मारना, चपत लगाना।

२ कोई वस्तु कितने परिमाण में या मात्रा में है इसका निश्चय करना, कोई वस्तु कितनी है इसका पता लगाना, अंदाज करना।

नापणहार, हारौ (हारी), नापणियौ।—वि०।

नपवाड़णौ, नपवाड़बौ, नपवाणौ, नपवाबौ, नपवावणौ, नपवावबौ, नपाड़णौ, नपाड़बौ, नपाणौ, नपाबौ, नपावणौ, नपावबौ।—प्रे०रू०।

नापिओड़ौ, नापियोड़ौ, नाप्योड़ौ।—भू०का०कृ०।

नापीजणौ, नापीजबौ—कर्म वा०।

नपणौ, नपबौ—अक० रू०।

नाप-तोल–सं०स्त्री०यौ० [सं० मापनं+तोल] १ नापने या तोलने का काम, नापने या तोलने की क्रिया. २ नाप कर वा तोल कर स्थिर किया हुआ किसी वस्तु का परिमाण या मात्रा।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

नापसंद–वि० [फा०] १ जो अच्छा न लगे, जो पसंद न हो. २ अरुचिकर, अप्रिय।

नापाक–वि० [फा०] १ अपवित्र, अशुद्ध. २ मैला-कुचैला।

नापाकी–सं०स्त्री० [फा०] अपवित्रता, अशुद्धता।

नापित–सं०पु० [सं०] नाई, हज्जाम (डिं.को.)।

रू०भे०—नपित।

नापियोड़ौ–भू०का०कृ०—जिसका नाप कर लिया हो, नपा हुआ। (स्त्री० नापियोड़ी)

नापौ—देखो 'नाप' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—वागो कुंवरसी रै पहरण रौ थो सौ दोपहरां पौढ़िया जणा लिय आई सो उण रै नापै सूं करायो।—कुंवरसी सांखला री वारता

नाफ–सं०स्त्री० [फा० नाफ मि० सं० नाभि] नाभि, तोंदी।

नाफरम, नाफुरम–सं०पु० [फा० ना-'फ़रमान] एक प्रकार का पौधा जिसके फूल ऊदे या बैंगनी होते हैं।

उ०—१ नाफरमां हजारा औरे गुलहूवास। गुल लाल के डंवर सूरगुलूं का प्रकास।—सू.प्र.

उ०—२ खमखी दावदी पुन पळास, नाफुरमा परगस आस पास। —मयाराम दरजी री वात

नाफेरी—देखो 'नफेरी' (रू.भे.)

उ०—नाफेरी भेरी सद्द नद्द, हुव्वै घुव्वै नीसांण।—ग.रू.बं

नाफौ–सं०पु० [फा० नाफः] कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृग की नाभि में होती है।

नाबाळक—देखो 'नाबालिग' (रू.भे.)

उ०—कोई एक वीर पुरस मारीज गयो नै लारै नाबाळक जांण सत्रुआं हलौ करणौ विचारियौ।—वी.स.टी.

नाबाळकी—देखो 'नाबालिगी' (रू.भे.)

नाबालग—देखो 'नाबालिग' (रू.भे.)

नाबालगी—देखो 'नाबालिगी' (रू.भे.)

नाबालिग-वि० [फा० ना+अ० बालिग] १ जो वयस्क न हुआ हो, जो पूरा बड़ा न हुआ हो। २ कानून द्वारा वयस्क के लिये निश्चित उम्र से कम आयु वाला।

रू०भे०—नाबालग, नाबालक।

नाबालिगी-सं०स्त्री० [फा० ना+अ० बालिग+रा० प्र० ई] १ वयस्क न होने की अवस्था, नाबालिग अवस्था। २ वह अवस्था जिसमें कानून द्वारा वयस्क न किया जाय।

रू०भे०—नाबालगी, नाबालगी।

नाबी-सं०स्त्री० [देशज] प्रायः मानव-चित्र चित्रित करने का मोहे का एक उपकरण विशेष।

नाबूद-वि० [फा०] १ जो बरबाद हो गया हो, जिसका अस्तित्व न रह गया हो। २ जो नाश होने वाला हो, नष्ट होने वाला, नश्वर।

नाबेड़ो-सं०पु० [देशज] हाथ की उंगली के नाखून के बीच में होने वाला फोड़ा विशेष जिससे नाखून हमेशा के लिए विकृत हो जाता है।

नाभग—देखो 'नाभाग' (रू.भे.)

उ०—भागीरथ गंभम सुत भुवाळ। नाभंग हुवो स्रुत सुत नृपाळ।
—सू.प्र.

नाभ—देखो 'नाभि' (मह., रू.भे.)

उ०—१ निराकार निरवांण, जोगेसवरी दुरस जाण तेजोमय। रूप बिनु रहमांण, पदम नाभ ब्रहम उतपन्नो।—सू.प्र.

उ०—२ जिणरी रक्तूरता जिणरी ही नाभ। पण मोरमा सरीखी दशा में दोरी न लाभ।—र. हमीर

उ०—३ पंचमी पारनी नाभ गुंजाना, अष्ट कळी पर भंवर बिलाणा। छठी पारनी निरख दिया गूं, दे परकमा सीस निवाणूं।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—४ परा नाभ में बसत है, पस्यंती हिरदे मंझार। मध्यमा कंठ मे सुनत है, बैखरी मदर उचार।—स्री हरिरांमजी महाराज

नाभकज-सं०पु०यौ० [सं० नाभिकंज] जिसकी नाभि में कमल है, विष्णु। उ०—देव देव दीन-नाथ राज राज स्री दयाळ, वासुदेव विश्वदेव बंदनीक नै विसाल। नारसिंघ नार पेसु नरानाह नाभकज, रामचंद्र रावणेस कंसराम रमा-रंज।—र.ज.प्र.

नाभकंवळ, नाभकमळ, नाभकवळ-सं०पु० [सं० नाभिः+कमल] तंत्र के अनुसार छः चक्रों में से तीसरा चक्र जो नाभि के पास माना जाता है, मणिपुर। उ०—नाभकवळ में नाथ नचावें, सब रग रग [illegible]। बारह द्वार बजे इकतारा, गगन मंडळ गरणावें।
—ऊ.का.

रू०भे०—नाभिकंवळ, नाभिकमळ, नाभिकवळ।

नाभनरेस-सं०पु० [सं० नाभिनरेश] जैनियों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जो नाभिराजा के पुत्र थे।

उ०—नाभनद प्रातःनित, भरत जन्म करतार। निजाणंद दरसण नूतन, प्रगटेस्वर मोकार।—बा.दा.

नाभाग-सं०पु० [सं०] १ प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा भगीरथ का पौत्र और श्रुत का पुत्र (भागवत)।

२ वाल्मीकि रामायण के अनुसार इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो ययाति के पुत्र थे. ३ मार्कंडेय पुराण के कारुष वंश के एक राजा जो दिष्ट के पुत्र थे।

रू०भे०—नाभग, नाभ।

नाभादास-सं०पु० [देशज: नाभा+सं दास] दक्षिण देश में उत्पन्न डोम जाति के एक प्रसिद्ध ईश्वर-भक्त जो जन्मांध किन्तु बाद में उनकी आंखें अच्छी होगई थीं। इन्होंने 'भक्तमाल' नामक ग्रंथ की रचना की थी।

अल्पा०—नाभो।

नाभावली-सं०स्त्री० [सं० नाभ्यावर्त] घोड़े की नाभि के नीचे होने वाली भौंरी।—(शालि)

नाभि-सं०स्त्री० [सं० नाभि] १ जरायुज प्राणियों के पेट के बीच का वह गड्ढा या चिह्न जहां गर्भावस्था में जरायुज नाल जुड़ा रहता है, तुंदी। उ०—१ कस्तूरी नाभि निसचि निकेवळ, उडियण जाइ तास आकासूं। तिण तेपि थकत हुआ मन मांहे, वाजइ पवन तणी सुर वास।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वेल लियो बिसतार मनोभव बागवा। ईगे नाभि-निवाण उपाई अनुभवा।—बा.दा.

२ पहिये का मध्य भाग, चक्रमध्य।

वि०वि०—बैलगाड़ी के पहिये के मध्य यह बड़ा सा उभरा हुआ होता है। इसके बीच में एक धातु का गोल घेरा और फंसाया जाता है जिसे 'नायी' कहते हैं। इसी के बीच में धुरी रहती है।—हि.कों.

३ कस्तूरी।

सं०पु०—४ जैनियों के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता का नाम। भागवत के अनुसार ये आग्नीध्र राजा के पुत्र थे।

रू०भे०—ना', नाभी, नाह, नाहि, नाही, नाहु।

मह०—नाभ।

नाभिकंवळ, नाभिकमळ, नाभिकवळ—देखो 'नाभकवळ' (रू.भे.)

नाभिनरिंद-सं०पु०यौ० [सं० नाभिनरेन्द्र] ऋषभदेव स्वामी के पिता का नाम। उ०—थे तो नाभि-नरिंद कुल चन्दा।—वि.कु.

नाभिपाक-सं०पु० [सं०] बालकों का एक रोग जिसमें नाभि में घाव हो जाता है और उसमें मवाद पड़ जाता है।

नाभिराय-सं०पु० [सं० नाभिराज] जैनियों के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता।

नाभिवरस-सं०पु० [सं० नाभिवर्ष] राजा नाभि के नाम पर पड़ा हुआ भारतवर्ष का एक नाम।

नाभिसुत-सं०पु० [सं०] राजा नाभि के पुत्र, ऋषभदेव।

उ०—नाभिसुत नमो रिखभ नरेस।—पी.ग्रं.

नाभी—देखो 'नाभि' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—१ नाभी निरत लगाय सुखमरा जोइये, पांचू उलट समाय लेहर जम खोइये।—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ ऊंडी नाभी री भाभी अकुळाती।—ऊ का.
नाभीसंभव-संपु० [सं० नाभिसंभव] ब्रह्मा (डि.को.)
नाभो—देखो 'नाभादास' (अल्पा., रू.भे.)
नाय-संस्त्री०—१ वह गड्ढ़ा जहां कुम्हार कच्चे मिट्टी के बरतनों को अग्नि में पकाता है।
२ देखो 'नांई' (रू.भे.)
उ०—पोह दूजा देसां परदेसां, जोया वोह गढ़ कोटे जाय। मैं राखियौ थुग्रै मेड़तिया, नर धन रा आभूखरा नाय।—स्रोपो आढ़ो
३ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
४ देखो 'न्याय' (रू.भे.)
नायए-संपु० [सं० ज्ञातक] ज्ञातपुत्र श्री महावीर (जैन)।
नायक-संपु० [सं०] (स्त्री० नायका) १ स्वामी, प्रभु, नाथ (डि.को.)
उ०—१ लिछमीवर भगतां धू-लायक। नायक जगत दासरथ नंद।
—र.ज.प्र.
उ०—२ कियौ हरख कमधज निरख, नायक ब्रहमंडां। भेज ग्रांम गज भिड़ज, पुज प्रम-धांम घमंडां।—रा.रू.
२ मालिक, अधिपति।
उ०—१ नायक मांने चुगल नूं, परगह करै पुकार। मांहरा सिर रा मोड़ नूं, कर बोळौ किरतार।—बां.दा.
उ०—२ सुणे भयकर सबद, थांन कोळाहळ थायौ। वखत असुभ रौ वडो, स्रवण हहकार सुणायौ। जिण तिण पूछै जिको, हुवौ किण विध की होसी। जुडूं न पाछौ जाव, रैत गुण कहकह रोसी। गढ़पती 'मांन' सुरलोक गौ, नायक जोधां नेर रौ। कव लोक यसौ कुण कर सकै, वरुण जिसौ जिण वेर रौ।—चैनदांन वणसूर
३ पति (डि.को.)
उ०—१ नदियां सुत तासु सुता रौ नायक, जिण नूं काठौ झालै। जळ सुत मीत तासु सुत जिण नूं, घात कदे न घालै।—र.रू.
उ०—२ सुखदातासरणायां, निज संतां जांनकी। नायक दस सिर भंज दुबाह, राह जग कीत राजेस्वर।—र.ज.प्र.
४ श्रेष्ठ पुरुष।
उ०—१ जदूकुळ-नायक सांमिय-जग्ग, पदम्म-पताक-अलंक्रित पग्ग। पगां री रेणु धरै सिर ध्रम्म, धियावै पग्ग अहोनिस ध्रम्म।—ह.र.
५ लोगों को किसी ओर प्रवृत्त करने वाला या इस प्रकार का अधिकार रखने वाला, जनता को अपने कहे पर चलाने वाला पुरुष, नेता।
६ सरदार, अगुआ।
उ०—नायक पूगा नेह तोड़, कूबा वढ़ ताटा। गाडा दिया गुड़ाय, मही घ्रित भरिया माटा।—पा.प्र.
७ मुखिया, प्रधान। उ०—मेड़तिया 'मधकर' हर मेड़तै सहायक, सहंस के सादूळ वंस के नायक।—रा.रू.
८ वह पुरुष जो संगीत कला में प्रवीण हो, कलावंत।
९ दीपक राग का पुत्र माना जाने वाला एक राग (संगीत)।
१० साहित्य में वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक आदि का मुख्य विषय हो अथवा शृंगार का आलम्बन या साधक रूप-यौवन-सम्पन्न पुरुष।
११ मध्य गुरु की चार मात्राओं का नाम (।ऽ।)।—डि.को.
१२ मरहम-पट्टी करने वाला। उ०—नसतर धर नायकां, मिळै पायकां समेळा। मेवा जेसळ मिळै, अर रूपा सम चेळा।—सू.प्र.
१३ मारवाड़ में निवास करने वाली एक मुसलमान जाति या इस जाति का व्यक्ति।
१४ थोरी जाति या इस जाति का व्यक्ति।
१५ भील जाति या इस जाति का व्यक्ति।
१६ शिकारी, आखेटक, आहेड़ी (डि.को.)।
१७ बनजारा जाति के व्यक्ति के लिए आदर-सूचक शब्द।
रू०भे०—नाइक।
नायका-संस्त्री० [सं० नायिका] १ वह स्त्री जिसके चरित्र का वर्णन नाटक, काव्य आदि में हो अथवा जो शृंगार रस का आलंबन हो, रूप-गुण-सम्पन्न स्त्री।
उ०—वेलां तरवर वीटियां, दुति कुसुमां दरसंत। निजर पिया व्रज-नाह रै, बनमय सदन वसंत। बनमय सदन बसंत अलोक बणाविया। गुण सुक पिक कळहंस क मोरां गाविया। नेह घणै जिण ठौड़, पधारै नायका। गहि बीणां सुर गांन, हुवै जस गायका।—बां.दा.
२ देखो 'नासका' (रू.भे.)
रू०भे०—नाइका।
नायका-मल्लार-संपु० [सं० नायक-मल्लार] संपूर्ण जाति का एक राग। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं (संगीत)।
नायण, नायणी-संस्त्री० [सं० नापित] नाई जाति की स्त्री, नाइन।
उ०—१ नायण दूती हूंती। नाई जाय राजा नूं कही। म्हाराज म्हारी नायण कहै छै। म्हाराज कहै तौ मोजडी री कासूं चली जे री आ जोड़ी री मोजड़ी छै तै नुं पैदास करूं।—चौबोली
उ०—२ सहज ललाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पाय। निरखै भरमै नायणी, जावक दे मिळि जाय।—बां.दा.
रू०भे०—नाइन।
अल्पा०—नायलो।
नायत-संपु० [देशज] १ वैद्य, हकीम (डि.को.)
२ देखो 'नायतौ' (रू.भे.)
नायता, नायता नाई-संस्त्री० [देशज] नाई जाति की एक शाखा जो घायलों की चिकित्सा करते थे।
उ०—नीजांमां नइ नायता, माछी मिळ्या गुग्रार। मीणा मोची मोकळां, मूकी गया दुग्रार।—मा.कां.प्र.

[illegible]-सं०पु० [देशज] [illegible] 'नायबी' [illegible] ।

[illegible] सनद [illegible] ।

[illegible] ।

नायब-सं०पु० [अ०] १ किसी के स्थान की देख-रेख करने वाला, किसी की ओर से काम करने वाला, मुख्तार ।

उ०—१ [illegible] , कागज लागी निरोत । नायब हुतो [illegible] ।—रा.रू.

उ०—२ नायब जाणी [illegible], देणवणी सुलतान । 'सोनगिर' [illegible], [illegible] 'सकबान' ।—रा.रू.

२ [illegible] देने वाला, नायब, सहायक ।

यौ०—नायब [illegible] ।

उ०—[illegible] नायब [illegible], मुख कीजो 'गिरिनाह' । [illegible] नायब [illegible] ।—र. हमीर

३ प्रतिनिधि । उ०—सुल [illegible] हम दी दिनेम । पटकार [illegible] । नाट रे नायबां नाट गुर । कर पाट [illegible] ।—वि सं.

रू०भे०—नाइब ।

नायबी-सं०स्त्री० [अ० नायब+रा.प्र.ई] १ नायब का पद ।

उ०—[illegible] नायबी, जो पावै पतसाह । निजमत सांनाजाद [illegible] ।—रा.रू.

२ नायब का कार्य, नायब का काम ।

रू०भे०—नाइबी ।

[illegible]-सं०पु० [देशज] एक प्रकार का गेहूँ बोने का ढंग व इस ढंग से बोया हुआ गेहूँ ।

वि०वि०—इस ढंग में 'नाई' (जो बांस आदि के [illegible] पर [illegible] बनाई जाती है) को हल के साथ बांध दी जाती है, [illegible] साथ-साथ गेहूँ भी पास की [illegible] मुट्ठी भर-भर कर धीरे-धीरे [illegible] हैं ।

[illegible]—१ देखो 'नाई' (१) (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो [illegible] (अल्पा., रू.भे.)

[illegible]—देखो 'नाई' (१, २) (अल्पा., रू.भे.)

[illegible]—देखो 'नाई' (रू.भे.)

उ०—[illegible] नायड़ [illegible] ।—[illegible]

[illegible]—१ देखो [illegible] (रू.भे.)

२ देखो [illegible] (रू.भे.)

(स्त्री०—[illegible])

[illegible]-सं०पु० [सं० नाभि] [illegible] के [illegible] की नाभि के मध्य [illegible]

हुआ [illegible] का गोलाकार [illegible] जिसके [illegible] जाती है ।

वि०वि०—देखो 'नाभि' (३)

नारंग-सं०पु०—१ रक्त, खून, शोणित (डि.को.)

उ०—१ [illegible] 'विगर' [illegible] । [illegible] नारंग [illegible] [illegible] । [illegible] 'जैसिंघ' [illegible] गुर इम [illegible] । [illegible] आरण ।—सू.प्र.

उ०—२ जरदाल [illegible] जुटि, विहंड [illegible] नारंग बहै । [illegible] करी इसो [illegible] हूँ, करी [illegible] सुजि कहै ।—सू.प्र.

२ तीर, बाण, शर ।

३ तलवार । उ०—उठि [illegible] तीर [illegible], [illegible] । [illegible] पड़ि [illegible], [illegible] नारंगा । हुर वरं वर बहु हूर, [illegible] नारंगा ।—सू.प्र.

४ देखो 'नारंगिया' (मह., रू.भे.)

५ देखो 'नारंगी' (मह., रू.भे.) (डि.को.)

उ०—जगदइ ए [illegible] लहिय सुं [illegible] गिरनार । [illegible] केवड़ी जेवड़ो [illegible] । [illegible] नारंग रंग ना [illegible] [illegible] । हिव मइ हरवा [illegible] माधवी वेलि न [illegible] ।

—नेमिनाथ-फागु

नारंगफळ-सं०पु० [सं० नारंग+फलं] स्तन, कुच ।

उ०—गेल पयोहर किम लागा, किम सहिया गजदंत । कठिण पयोहर लागता, [illegible] तूं कंत । कंत सू [illegible] दिपो इण कांमणी । [illegible] घट आज रा [illegible] सहिया [illegible] । [illegible] नारंग-फळ [illegible] । [illegible] किम [illegible] घट गेल रा ।—हा.झा.

नारंगिया-सं०पु० [सं० नारंग+रा.प्र. इया] पीला रंग जिसमें हलकी लाल झाई प्रतीत होती हो, पकी हुई नारंगी जैसा रंग ।

वि०—पीलापन लिए हुए लाल रंग का । उ०—[illegible] नारंगिया, [illegible] सोहंत । [illegible] लियो, [illegible] बसंत ।—पनां वीरमदे री वात

रू०भे०—नारंगी ।

मह०—नारंग ।

नारंगी-सं०स्त्री० [सं० नागरंग, नारङ्ग] १ मीठे, रसीले और सुगंधित फलों वाला नीबू की जाति का एक पेड़ या इस पेड़ का फल । पकने पर इसके फल का छिलका नरम और पीला होता है जिसमें हलकी लाल झाई प्रतीत होता है । यह सरलता से हट जाता है और अंदर रसीली फांकें निकलती हैं । उ०—१ [illegible] अपारा, [illegible] बादाम [illegible] । [illegible] नारंगियो रंग सोहै, महादेव देवेस [illegible] ।—रा.रू.

उ०—२ [illegible] आयो [illegible], नींबू ल्याज्यो चार । छोटी नारंगी ल्याज्यो [illegible] ।—लो.गी.

उ०—३ [illegible] नारंगिया, [illegible] । [illegible] महरा [illegible] ।—[illegible]

२ देववृक्षों में से एक, सुरवृक्ष (अ.मा.)

३ देखो 'नारंगियो' (रू.भे.)

उ०—घावां अंगां वड़ंगां वेढ़ंगां तंगां वीर घाट, भोम रंगां स्रोण हूंत नारंगां भेवांत। जोध चंगां वारंगां सुरंगां बींद वरै जठै, अभंगां सीसोद भुजां अड़ै आसमांन।—फतहरांम

नारंज-सं०स्त्री० [फ़ा० नारंगी] [रा०] अप्सरा।—(डिं.को.)

नार—१ देखो 'नाड़' (रू.भे.)

२ देखो 'नारी' (रू.भे.)

उ०—१ जपै नर नार उभै कर जोड़। करै सुर सेव तेतीसूं कोड़। नागेस नरेस सुरेस मुनेस। आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह.र.

उ०—२ जावा द्यो म्हारी प्यारी नार जावा द्यो ना ए। थांनै आय पुजावां गणगोर म्हारी मिरगानैणी जावा द्यो ना ए।—लो.गी.

ना'र-सं०पु० [सं० नारकः] देखो 'नाहर' (रू.भे.) (डिं.को.)

ना'रकंकरी—देखो 'ना'र ककरी' (रू.भे.)

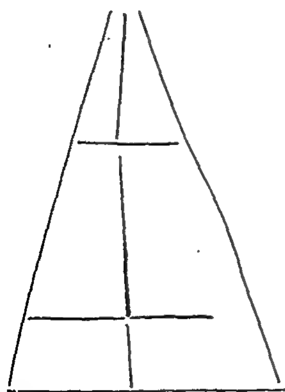
नारक—१ नरक (डिं.को.)

२ नरक में गिरा हुआ, नरकनिवासी, नरकवासी।

उ०—कुळ रूप नारक पांमियौ।—वि.कु.

वि० [सं० नारक] नरक संबंधी, नरक का।

ना'रककरी-सं०स्त्री० [सं० नरहरि+कर्करः+रा.प्र ई] दो व्यक्तियों द्वारा खेला जाने वाला एक देशी खेल विशेष जिसमें एक ही प्रकार के सात कंकर होते हैं जिन्हें बकरी माना जाता है और उनसे कुछ बड़े आकार के दो कंकर होते हैं जिन्हें नाहर माना जाता है। एक त्रिभुजाकार रेखा-चित्र पर इस खेल को खेला जाता है जिसमें दस बिन्दु (Cross Points) होते हैं।



रू०भे०—ना'र कंकरी।

ना'रकांटौ-सं०पु० [देशज] एक प्रकार की वेल जिसकी जड़ और बीज औषध में काम आते हैं।

वि०वि०—देखो 'सतावर'।

रू०भे०—नाहर-कांटौ।

ना'रकियौ—१ देखो 'ना'रौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)

नारकी, नारगी-वि० [सं० नारकिन्] १ नरक में जाने योग्य, पापी, पातकी। उ०—१ भूख त्रिसा सीत तापनी जीवा, रोग, सोक, भय जांण। दुख भोगवै जे नारकी जीवा, करम तणै अहिनांण।

—जयवांणी

उ०—२ देवता नै नारकी रै हुवौ, सुखियौ दुखियौ जीव बहु मुवौ। भारत गया देव देवाधो, इम जांणी दया धरम आराधौ।—जयवांणी

उ०—३ पारा नी परि देह वळी मिळइ, पडिउ भूमि गाढ़उ टळवळइ। आरडइ नारगी पाडइ बूंब, आवइं पखिया सिरि दिइं चूंब।

—चिहुंगतिचउपई

२ देखो 'नरक' (रू.भे.)

उ०—विकरंद वास हूंता विविध, हाय हमैं हूं हारगी। भरतार मती भुगताय रे, निलज जीवतौ ही नारगी।—ऊ.का.

ना'रड़ी-सं०स्त्री०—१ तरुण गाय।

२ देखो 'नाहरी' (अल्पा., रू.भे.)

ना'रड़ौ—१ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'ना'रौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० ना'रड़ी)

ना'रचाळी, ना'रछाळी—देखो 'ना'रककरी'।

नारणोट, नारणोत, नारणौट, नारणौत-सं०पु०—बीकावत राठौड़ वंश की उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति (द.दा.)।

नारद-सं०पु० [सं०] १ ब्रह्मा के पुत्र एक ऋषि जो देवर्षि भी कहे जाते हैं (डिं.को.)।

उ०—विढ़तां नारद संकर वखांणे। पह तो रिजक लियौ परमांणे।

—सू.प्र.

वि०—१ इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करने वाला, कलहप्रिय, चुगलखोर।

रू०भे०—नारद्द, नारिद।

अल्पा०—नारदियौ।

२ श्वेत * (डिं.को.)

नारदपणौ-सं०पु० [सं० नारदत्व] चुगलखोरी, लड़ाने का काम।

ज्यूं—क्यूं बैठा बैठा सूने कांम री नारदपणौ करौ हौ।

क्रि०प्र०—करणौ, चलाणौ हलाणौ।

नारदपुरांण-सं०पु० [सं० नारद-पुराण] एक पुराण जो अठारह महा-पुराणों में से एक है।

नारदरख, नारदरिख, नारदरिखी-सं०पु० [सं० नारद ऋषि] नारद ऋषि, देवर्षि। (अ.मा.)

उ०—उडै खाग ऊपरा, हसै नारदरिख हासौ। विढ़ण एम वेखवै, तरण रथ थांमि तमासौ।—सू.प्र.

नारदा-सं०स्त्री० [?] एक देवी का नाम।

उ०—तुही सारदा नारदा कासमेरी। तुही काळिका भास मद्रास केरी।—मे.म.

नार[illegible] — देखो '[illegible]' (रू.भे.)

नारदी-सं०पु० [सं० नारदीय] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

नारदौ-सं०पु० [सं० [illegible]] १ मकान के नीचे पानी का निकास-स्थान, नाला, मोरी। उ०—[illegible] मकान [illegible] बगर मैं, जिनम [illegible] करतौ। बह [illegible] बैठा रहै, नाक [illegible] जिम नारदौ। —ऊ.का.

२ [illegible]। उ०—[illegible] री जिम [illegible], नारदौ घोर मचाडौ। [illegible] बणाचर जिम, मदा [illegible] संगाडौ। —ऊ.का.

नारद—देखो 'नारद' (रू.भे.)

नारमद-वि० [सं० नार्मदः] नर्मदा नदी संबंधी, नर्मदा का।

नार'सिंघ—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.)

उ०—१ [illegible] कोड़ि जिनको तवै, दूजौ कोड़ि जपवाय हरि। [illegible] री मनू [illegible], नारसिंघ दाखै निजरि। —पी.ग्रं.

उ०—२ नारसिंघ नीलाई, नीलाई मगत महगार दृगा उर। काळू-[illegible] [illegible], बाग विकराळ भ्रहार। —सू.प्र.

नार'सिंघी—देखो 'नार'सिंघी' (रू.भे.)

नार'सिंह—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.)।

उ०—१ [illegible] वाराह धरणीधर, नार'सिंह वामन फरसाधर। [illegible] रघुबीर [illegible], बिरद बिराळ बंधु जुत हळधर।

—गजउद्धार

उ०—२ मच्छ कच्छ वाराह महमहण, नारसिंह वामन नारायण। दुजराम रघुराम दमोदर, बगन बुद्ध कलकी करुणाकर।

—ह.र.

नारसिंघी-वि०—नृसिंह सम्बन्धी।

सं०स्त्री०—१ एक देवी. २ देवी का एक रूप।

रू०भे०—नार'सिंघी।

नारसींग, नारसींघ, नार'सी—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.)

उ०—१ देव देव दीननाथ राज राज श्री दयाळ। वासुदेव विस्व-देव [illegible] मैं विसाळ। नारसींघ नार धंग नरांनाह नामकंज। [illegible] राघवेस [illegible] रमाउज। —र.ज.प्र.

उ०—२ प्रभु कृपा आशियां गाय री पारसी। जिसौ दसि नीसरै [illegible] नार'सी। —पी.ग्रं.

नारांतक-सं०पु० [सं०] रावण का पुत्र, एक राक्षस।

नाराइण—देखो 'नारायण' (रू.भे.)

नाराइणी—देखो 'नारायणी' (रू.भे.)

नारा री ओलाद-सं०स्त्री० [सं० नरहरि+अ० औलाद] घोड़ों की एक जाति विशेष।

विशेष—इस जाति की घोड़ी बच्चा देते ही मर जाती है। यदि उसी समय उसको चीर डाल दिया जाय तो वह अपने बच्चे को [illegible] है और उसका वह बच्चा 'नारा री ओलाद' जाति का कहलाता है।

नार'गी-दरोगांणौ-सं०पु० [रा० नार'ग+फा० दरोगाना] वह स्थान जहां [illegible] या लोगों को राजा-महाराजाओं का दरबार लगता था (उदयपुर)।

नाराइण —देखो 'नारायण' (रू.भे.)

उ०—उभै मगण गण धारिजै, भेला ऐसा छंद। नाराइण निरकार नर, भजै रीतोरिद। —रि.प.

नाराइणि, नाराइणी, नाराईणी—देखो 'नारायणी' (रू.भे.)

नाराच-सं०पु० [सं०] १ पूरा लोहे से बना बाण विशेष।

उ०—बिहूं दळां सिरज भरत नाराच कुंतळ करवाळ नाराच पड़िया लागा। —व.स.

२ बाण, तीर (डि.नां.मा.)।

३ छत्तीस प्रकार के आयुधों में से एक (व.स.)।

४ तलवार. ५ एक गुरु एक लघु इस क्रम से १६ वर्ण और २४ मात्रा का वर्ण मात्रिक छंद विशेष. ६ प्रत्येक चरण में दो नगण और रगण वाला एक वर्णवृत्त विशेष. ७ २४ मात्राओं का एक छंद. ८ देखो 'नाराज' (रू.भे.)।

रू०भे०—नराच, नराज, नाराज, नाराय।

नाराज-वि० [फा० ना+अ० राज] अप्रसन्न, नाखुश, खफा।

सं०स्त्री० [सं० नाराच] १ तलवार (डि.को.)।

उ०—१ जिमन मुळां तम भाडि करि, धारां धोवटी। नाराजां घणौ निहाय, उरसोत अपटी। —सू.प्र.

उ०—२ ग्रहि हाथ 'अरजण' गौह, चरठि मनवार प्रमारां। नजर टाळि न राज, वहै घट हुवौ विहारां। —सू.प्र.

उ०—३ फुंकार ग्रहेस, हरी चंदणा पवोण पीरा, माहेस निर्णन्न छंद जुत्राई समाय। निरखांणां सहाई मनोज चेनु ध्यांन गोभा, नाराज, वरीत, सोभा हुवी प्रधीनाय। —र.रू.

२ माला।

३ देखो 'नाराच' (रू.भे.)

रू०भे०—नराज, नाराजक, नाराजी।

नाराजक—देखो 'नाराज' (रू.भे.)

उ०—याहै तन तुहुहतान विझाळ। नाराजक वाज तणौ मुहिनाळ।

—सू.प्र.

नाराजगी—सं०स्त्री० [फा० ना+अ० राज+रा०प्र०गी] रुष्टता, अप्रसन्नता।

रू०भे०—नराजगी, नाराजी।

नाराजी—देखो 'नाराज' (रू.भे.)

उ०—१ पातिसाह रा गुरज गाहीजै छै। गज ढलता गाहीजै छै। वीरा रस ऊगतौ छै। वीरा रस मातौ छै। वीर हाक वाजिनै रही छै। नाराजियां री झाट पड़िनै रही छै। बगतरां ऊपरां तरवारियां रा दांत भूटिनै रहिया छै। —रा.सा.सं.

उ०—२ घमि वाजित घण घाट, धमरमि अपछर घूघरा। वाग

वीरारस तणा, नाराजिग्रां निहाउ ।—वचनिका

२ देखो 'नाराजगी' (रू.भे.)

नाराट-सं०पु० [सं० नाराच] तीर, बाण (डिं.नां.मा.)

नाराय—देखो 'नाराच' (रू.भे.) (जैन)

नारायण-सं०पु० [सं०] १ विष्णु (डिं.को.)

उ०—१ सिव सांति करइं, वैसवानर कापडा पखाळइं, ब्रह्मा पुरोहित, नारायण दीवटिग्रो, विस्वामित्र ग्राभरण घडावइ ।—व.स.

उ०—२ परनारी सहोदर गांगेय, निरभय भीम, ग्रापन्नसत्व, जीमूतवाहन, विवेकि नारायण, विद्या ब्रहस्पति ।—व.स.

२ श्रीकृष्ण (ग्र.मा.)

३ ईस्वर, परमेस्वर । उ०—१ धवळा सूं राजै घणी, चंगौ दीसै ग्वाड़ । नारायण मत नाखजै, धवळा ऊपर धाड़ ।—बां.दा.

उ०—२ ग्रखिलेस ग्रनूपम एक ग्रज, ग्रजरांमर महिमा ग्रजय । नित निरविकार निरभय निपुण, नारायण करुणानिलय ।

—ऊ.का.

उ०—३ नारायण न बिसारजै, लीजै नितप्रत नांम । लाभीजै मिनखां-जनम, (तौ) कीजै उत्तम कांम ।—ह.र.

४ पोष का महीना (डिं.को.)

५. 'ग्र' ग्रक्षर का नाम. ६. देखो 'नारायणास्त्र' ।

रू०भे०—नाराण, नरांयण, नरियण, नारांयण, नाराइण, नारिग्रण, नारियण, नारीयण ।

नारायणक्षेत्र, नारायणखेत-सं०पु० [सं० नारायण क्षेत्र] गंगा के प्रवाह से ४ हाथ तक की भूमि ।

नारायणतैल-सं०पु० [सं०] ग्रायुर्वेद का प्रसिद्ध तेल ।

नारायणप्रिय-सं०पु० [सं०] १ महादेव, शिव ।

२ सहदेव ।

नारायणवळि-सं०पु० [सं० नारायणबलि] ग्रात्महत्या ग्रादि द्वारा मरने वाले पापी के लिए किया जाने वाला प्रायश्चित विशेष।

नारायणास्त्र-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का ग्रस्त्र । उ०—नागास्त्र, गुरुडास्त्र, संवरत्त कास्त्र, मेघास्त्र, प्रळयकास्त्र, रिक्षास्त्र, ग्राग्नेयास्त्र, वारुणास्त्र, माहेंद्रास्त्र, तिमिरास्त्र, डिंभककरास्त्र, नारायणास्त्र, ग्रस्वग्रीवास्त्र, ब्रह्मास्त्र, मेघास्त्र इति ग्रस्त्रांणि ।—व.स.

नारायणी-सं०स्त्री० [सं०] १ ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्राठ देवियों में से एक ।

२ गौड़ वंश की ग्राराध्य देवी का नाम (बां.दा.ख्यात) ।

३ दुर्गा, शक्ति ।

४ लक्ष्मी, श्री (डिं.को.)

५ गंगा. ६ सतावर ।

७ महाभारत युद्ध में दुर्योधन की सहायतार्थ दी जाने वाली श्रीकृष्ण की सेना का एक नाम ।

रू०भे०—नारांयणी, नाराइणि, नाराइणी, नाराईणी ।

नारिंग—देखो 'नारंगी' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—१ गोरा गल्लस्थळ विमळ, जांणइ जुग नारिंग । नयण नरेसर पारधी, सोभि चडियां सारिंग ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ दाडिम नी कुळी, तरुणां, करुणां, जंबीर, बीजपुरक नी घणी चडउडी, सरंग नारिंगि नो फाडि, ग्रति गुल्यइ ग्रांगि, पूरी रंगि ।—व.स.

नारि—देखो 'नारी' (रू.भे.) (ह.नां.)

उ०—नाक नवल्ली नारि रै, नकवेसर घणनूर । मोती ग्रहियां चांच मभ, जांणक कीर जरूर ।—बां.दा.

नारिग्रण—देखो 'नारायण' (रू.भे.) (ह.नां.)

उ०—कळै री मूळ कड़वौ घणौ कुटंब सूं, नारिग्रण नांम मन माहि ना'णै । उठा रा दूत खोटी हुवै ग्रांगणै, जीव तौ ग्रठारी ग्रास जांणै ।—ग्रोपौ ग्राढ़ौ

नारिकेर, नारिकेल-सं०पु० [सं० नालिकेर] नारियल (डिं.को.)

रू०भे०—नारियळ, नारिकेर, नारीकेल, नारेळ, नाळकेर, नाळिकेर, नाळियर, नाळीग्रर, नाळीयर, नाळेकेर, नाळेर ।

ग्रल्पा०—नारेळियौ, नारेळौ, नाळेरियौ, नाळेरी, नाळेरौ ।

नारिद—देखो 'नारद' (रू.भे.)

उ०—नाट चिरत फिरता रिख नारिद, गिरिंद तणइ प्राहुणा गया । चलणे ऊठि लागा हेमाचळ, मन सूधे जांणि घणी मया ।

—महादेव पारवती री वेलि

नारियण—देखो 'नारायण' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—ग्रजामेळ पर ग्राविया, साठ सहंस जम साज । नांम लियां हिक नारियण, भड़ सो छूटा भाज ।—र.ज.प्र.

नारियळ—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.)

ना'रियौ-सं०पु० [देशज] १ कुए से पानी निकालने की लाव के छोर पर नाहर के मुंह की ग्राकृति का बना उपकरण जो मोट या चरस को पकड़ता है ।

२ चमड़े का रस्सा जो हल पर जुग्रा बांधने के काम ग्राता है ।

३ देखो 'ना'रौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

४ देखो 'नाहर' (ग्रल्पा., रू.भे.)

नारिसिंघ—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.)

उ०—नारसिंघ नरनाहो रेवंत सिरि चढ़िसै रहमांण ।—पी.ग्रं.

नारी-सं०स्त्री० [सं०] १ ग्रौरत, स्त्री (ग्र.मा.)

उ०—तेल हींग रौ त्याग, व्रिद्ध नारी बिलगावै । निज इंद्री कर नास, ग्यांन विन जनम गमावै ।—ऊ.का.

२ पत्नी, ग्रर्द्धांगिनी ।

३ छः मात्राग्रों का एक मात्रिक छंद जिसको 'वांम' भी कहते हैं ।

४ पुरुष की ७२ कलाग्रों में से एक (व.स.)

५ तीन लघु ढगण के तृतीय भेद का नाम (।।।) (डिं.को.)

६ तवले में बायां, ठेका, डुग्गी ।

२ देखो [illegible] (रू.भे.)
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] (रू.भे.)

नारीकवच-संपु० [सं०] सूर्यवंशी मूलक राजा जो अश्मक का पुत्र था।
विवरण—जब परशुरामजी क्षत्रियों का संहार कर रहे थे तब इसको स्त्रियों ने चारों ओर से घेर कर बचा लिया इसी से इसका यह नाम पड़ा और फिर इसी से वंश का विस्तार हुआ अतः यह मूलक कहलाया।

नारीकुंजर-संपु० [सं०] एक प्रकार का चित्र विशेष।
उ०—[illegible], कमळी, अरबाब, कसीदा, जलाइया, नारीकुंजर प्रमुख [illegible]।—[illegible]

नारीळ, नारीयेर—देखो 'नारिकेर, नारियेल' (रू.भे.)

नारीतीरथ-संपु० [सं० नारीतीर्थ] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम जहां एक ब्राह्मण के शाप द्वारा पांच अप्सराएं जल-जन्तु हो गई थीं जिनका उद्धार अर्जुन ने किया।

नारीयण—देखो 'नारायण' (रू.भे.)
उ०—[illegible] मधुरा नारीयण निर्मि नर।—पी.ग्रं.

नारीव्रत-संपु० [सं०] एक पत्नीव्रत।
उ०—[illegible] न आणतो निठुर, निलज जांणी नहि नोखी। निज नारी-व्रत [illegible], [illegible] जांणी नहि नोखी। परदार प्यार [illegible] अमत, बिन [illegible] की [illegible]। [illegible] कंवळा अधर, गयो जनम सब [illegible]।—ऊ.का.

नारू-संपु० [देश०] प्रायः कटि के नीचे जांघ पैरों आदि पर होने वाला एक रोग विशेष जिसमें उस स्थान पर फुंसियां सी हो जाती हैं और उसमें से तागे जैसा [illegible] कीड़ा निकलता है जो सूत के आकार का होता है। यह बढ़ते-बढ़ते कई हाथ तक लम्बा हो जाता है।
रू.भे.—[illegible]।

नारेळ—देखो 'नारियेल' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—१ [illegible] मोड़ बिधा, [illegible] हाथ नै रावजी मोहैजी नूं नारेळ दियो।—नैणसी
उ०—२ नारेळा बधावो [illegible] नाहियां ए [illegible]। [illegible] बधावो र [illegible], [illegible] जो [illegible]।—लो.गी.
मुहा०—१ नारेळ झालणौ—किसी लड़के के घर पर कन्या के घर वालों की ओर से विवाह-सम्बन्ध निश्चित करने के लिए नारियल का भेजा जाना (एक प्रथा)।
मुहा०—२ नारेळ देणौ—किसी पर्व विशेष पर दामाद आदि को [illegible] दिया जाना जिसमें आर्थिक स्थिति के अनुसार रुपये, बहु-मूल्य वस्तुएं, आभूषण आदि होते हैं (एक प्रथा)।
देखो 'नारेळ भेजणौ'।
मुहा०—३ नारेळ भेजणौ—कन्या के घर वालों की ओर से किसी लड़के के साथ (जिसे वे उपयुक्त समझें) कन्या का विवाह सम्बन्ध निश्चित करने के लिए नारियल का भेजा जाना (एक प्रथा)।
मुहा०—४ नारेळ मांगणौ—लड़के के घर वालों की ओर से किसी कन्या के घर वालों से लड़के का विवाह सम्बन्ध निश्चित करने के लिए नारियल मांगना अर्थात् विवाह के लिए लड़की मांगना।
मुहा०—५ नारेळ मेलणौ—देखो 'नारेळ भेजणौ'।

नारेळियो—१ देखो 'नारिकेल' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'नाळेरो' (अल्पा., रू.भे.)

नारेळो-संस्त्री० [सं० नारिकेल+आलुच् प्रत्य०] १ नारियल की जटा के नीचे वाले या गिरी के ऊपर वाले भाग को तोड़ कर किये गये टुकड़े या बीचोंबीच से तोड़ कर बनाया गया कटोरीनुमा अर्द्धभाग।
२ देखो 'नाळेर' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—आवा रावण नारेळी तणो रे।—लि.कु.
रू०भे०—नाळेरो।

नारेळी-पूनम-संस्त्री० [सं० नारिकेल-पूर्णिमा] श्रावण की पूर्णिमा।
रू०भे०—नाळेरी-पूनम।

नारेळो—१ देखो 'नारिकेल' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'नाळेरो' (रू.भे.)

नारो—१ देखो 'ना'रो' (रू.भे.)
२ देखो 'ना'री' (मह., रू.भे.)
उ०—१ संत राजा रै यसोमती राणी, जिण सायां नै गैरणो दाता री वाणी, हुवा 'नेम कवर, राजुल' नारो, गुण दान पर्या रो पारो।—जयवाणी
उ०—२ जो थांरा मन में आ हुती रे हूं नहीं परणूं नारो रे सो इणड़ी जान जळण सूं रे, मो नैं नहीं लावण था नारो रे।
—जयवाणी
३ देखो 'न्यारो' (रू.भे.)
उ०—तठै उवै नारो कुंवर सीन्ह चाकर रात आयो हुतो तिका हुजर मौलिया।—चौबोली
(स्त्री.—नारी)

ना'रो-संपु० [सं० नाग:, हरि:] १ युवा, बैल।
उ०—१ गेढां री मवाड़ सूं चौपगी भूंडा गोधां री जोड़ी पेच नैं आठ सौ में नवा ना'रा ले लिया हा।—रातवासो
उ०—२ पूठै कछवाहा समझनै करणौ लागिया—जे इण रै अठैनै इतरा दिन निकळा पड़ा। तो एक बड़ेरो थो उण कही—मोटो सरदार छै, जे इणरो नरमी देवै छै तो ना'रा परा देवो। मोठ करी।
—राठौड़ अमरसिंह री बात
उ०—३ न आवै आगमण बीज नारो नवा, छांड़ मारा पुगर गात छीजा। रखी कर कादियो पावळो तणो रथ, वळ नखी गमाळ,

'पाल' बीजा ।—आउवै ठा. हरनाथसिंह रौ गीत
अल्पा०—ना'रकियौ, ना'रड़ियौ, ना'रड़ौ, ना'रियौ ।
२ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)
नाळंग-संoस्त्री० [देशज] किंवदंती, जनश्रुति, अफवाह।
नालंदा-संoपु० [सं०] १ बौद्धों का एक प्राचीन मठ और विद्यापीठ जो हर्ष के समय में एक बहुत बड़े विश्वविद्यालय के रूप में स्थित था ।
नाळ-संoस्त्री० [सं० नाल: या नालि:] १ बंदूक ।
उ०—गोळा नाळ चत्रंग गढ़ गाजै, गाहै मोर साधीर घणौ । 'जगा' सुत नह दीयें जीवंतां, तीजो लोचण प्रिथी तणौ ।
—रावत पत्ता चूंडावत (ग्रांमेट) रौ गीत
२ तोप (डि.को.)
उ०—१ नूरमली तिण नाळ रो, कीधौ एक कहाव । नाळचां नौरंगजेब री, लीधां लम्भै साव ।—रा.रू.
उ०—२ अवै पातिसाहजी घोड़ो लाख दोय लीयो नै गढ़ री घणी गाढ़ सुणियौ । जरै बही बडी नाळ सौ जूंट जुटै तिसी सईकड़ांबंध लीनी । जिके दोय मण तीन मण री गोळी खाय । हाथी पूठै टल्ला दै तरै खिजै ।—वीरमदे सोनिगरा री वात
३ बन्दूक, तोप आदि की वह नली जिसमें बारूद, गोला आदि भरे जाते हैं, बन्दूक के आगे निकला हुआ पोला डंडा, बन्दूक की नली ।
उ०—दगै नाळ रवदाळ, जड़ै विकराळ जजीरां । कमंध दळां कळिचाळ, उडै भळ नाळ अंगीरां ।—सू.प्र.
४ जल में होने वाला एक प्रकार का पौधा ।
५ कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली और लंबी डंडी, डांडी ।
उ०—१ भांमणि रा सुकमार भुज, साहब गळै सुहाय । जांण नाळ जळजात रा, कांम पताका काय ।—बां.दा.
उ०—२ ललक्कै गजां पोगरां नाळ लोभा । भळक्कै मुखां सूरमां भांण सोभा ।—सू.प्र.
६ जल बहने का स्थान ।
उ०—नदी बह नाळ, त्रुटै जळ ताळ । भिळै रज भांण, मंडै तिमरांण ।—सू.प्र.
७ योनि ।—उ०—दूजै पहरै रैणि वै, वणिजारिया, तू रत्ता तरुणी नाळ वे । माया मोह फिरै मतवाळा, रांम न सक्या सभाळ वे ।
—दादूवांणी
८. लिंग, शिश्न ।
९. स्त्रियों के शिर के 'बोर' नामक आभूषण के पीछे का भाग जिसमें रंगीन धागे बांधते हैं ।
१० पहाड़ी रास्ता, पहाड़ी तंग मार्ग ।
उ०—१ नाळ नृपत 'कुरमाळ' री, आयो भाळ जवन्न । सांझ तुरंगां भीड़ियां, स्री महाराज 'अजन्न' ।—रा.रू.
उ०—२ दहबा री घाटी सहर था कोस ३ छै, केवड़ा री नाळ सहर सूं कोस १ कूंण रूपारास मांहे छै ।—नैणसी

११ सीढ़ी, जीना ।
१२ मकान का वह भाग या तंग गली जिसके दोनों ओर दीवारें हों और वह ईंधन आदि डालने के काम आता हो (शेखावाटी) ।
१३ गेहूँ, जौ आदि अनाज के पौधे की पतली लंबी डंडी जिसमें बाल लगती हैं. १४ कूए की उस बंधाई का नाम जिसे ऊपर से देखने पर गोल नल के समान सीधी दिखाई दे. १५ कुए बांधते समय अन्दर जाने का तिरछा रास्ता. १६ आग को प्रज्वलित करने के लिए धातु, लकड़ी, बांस आदि की वह नली जिसमें मुँह से फूंक मारी जाती है. १७ सुनारों की फूंकनी. १८ सूत लपेटने के लिए काम आने वाली जुलाहों की एक नली. १९ जुलाहों का एक उपकरण जिसके द्वारा वे बाने का सूत फेंकते हैं । इसकी आकृति कुछ नाव की सी होती है और भीतर से पोली होती है । खाली स्थान पर एक किनारे पर सूत लपेटा रहता है जो कांटे के बल पर रहता है । जब इसे ताने के बीच में से होकर एक ओर से दूसरी ओर तथा दूसरी ओर से पुनः उसी ओर फेंका जाता है तो उसमें से सूत खुल कर बाना भर जाता है. २० लता का अग्र तंतु जिसके बढ़ने से लता बढ़ती रहती है (शेखावाटी) ।
(मि० तांतौ (२))
२१ पशुओं को औषधि देने के लिए बांस या धातु का बना उपकरण जो नली नुमा होता है तथा एक ओर बन्द होता है व दूसरी ओर से कलम की नोंक के समान तिरछा कटा हुआ होता है । इसकी लंबाई लगभग एक फुट होती है ।
उ०—१ ताळ वाळ दीजै नहर, मनखां फूलां माळ । बळदां दीजै नाळ घी, पण नह दीजै गाळ ।—बां.दा.
उ०—२ लीली बांधी ठांण में, घी का दे भर-भर नाळ वारी, म्हारा गूगा, भल रही वो ।—लो.गी.
२२ वंश-परम्परा । उ०—खीच रा डळा खावै खिसक, नींच तळा कुळ नाळ रा । नित मींच आंख बैठे निलज, भीछ अमल भूपाळ रा ।
—ऊ.का.
मुहा०—नाळ भ्रस्ट करणी—वंश बिगाड़ना ।
२३ बैल आदि पशुओं के नाक का ऊपरी भाग. २४ जंगलों में गायों आदि के आने जाने से उनके खुरों के चिन्हों से बना हुआ रास्ता, खुरहर. २५ चींटियों की पंक्ति. २६ चींटियों के चलने से बनने वाला तंग रास्ता. २७ दसनामी संन्यासियों को दफनाने का खड्डा ।
[अ० नाल] २८ लोहे का वह अर्द्ध चन्द्राकार खण्ड जिसे घोड़े की टाप के नीचे, बैलों के खुरों के नीचे (सड़क पर चलने वाले) या जूतों की एडी के नीचे रगड़ से बचाने के लिए जड़ते हैं ।
उ०—१ जड़ै वज्र नाळां झड़ै फूल ज्वाळा । मनो मेघ खद्योत खद्योत माळा ।—वं.भा.
उ०—२ खणंक नाळि हैखुरां, पडंति आगि पत्थरां ।—गु.रू.बं.

[illegible]—[illegible] ।

२९ [illegible] की ओर [illegible] बने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. ३० [illegible] आदि के [illegible] की [illegible] [illegible] नाली [illegible]. ३१ [illegible] की [illegible] करने के [illegible] लकड़ी का [illegible]. ३२ संगीत की [illegible] ([illegible]). ३३ [illegible] के [illegible] एक ओर से [illegible] के समान दूसरी ओर के [illegible] के समान [illegible] का [illegible] [illegible] ।

३४ देखो '[illegible]' (रू.भे.)

३५ देखो '[illegible]' (रू.भे.)

३६ देखो '[illegible]' ([illegible], रू.भे.)

[illegible]—[illegible], [illegible], नाळियो ।

क्रि०वि० [दे.] १ एक दूसरे के साथ, आपस में, परस्पर ।

उ०—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] रे [illegible] । [illegible] नाळ [illegible] मारिया, [illegible] एक [illegible] न [illegible] [illegible] ।—[illegible] [illegible] री [illegible]

[illegible]—१ एक [illegible] [illegible] जिसमे प्रायः मल्हार का बोध होता है, साथ, सहित, से । उ०—रती रब ना बीसरे, मरे संभाळ संभाळ । दादू मोहाई रहे, आशिक अल्लह नाळ ।—दादूवांणी

रू०भे०—नाळि ।

नाळक-सं०पु० [देशज] उदर ।

वि०—[illegible] प्राचीन, प्राचीन । उ०—चलती दळ दीठोय राव [illegible], मन [illegible] गोरम बोल सुणै । कुळरवत तणी बुध ओट कही, [illegible] दीठाव नाळक बैग सही ।—पा.प्र.

रू०भे०—नाळंग, नाळग ।

नाळकटाई-सं०स्त्री० [सं० नालि:+कृत] १ नवजात शिशु की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम. २ नाल काटने के कार्य का पारिश्रमिक, नाल काटने की मजदूरी ।

नाळकायत्र-सं०पु० [सं० नालिका यत्र] १ बंदूक. २ तोप ।

नाळकी—देखो 'नाळ' (अल्पा., रू.भे.)

नाळकेर—देखो 'नारियल' (रू.भे.)

उ०—[illegible] निरंजनी, नाळकेर नारिग । नागवला निरविसी [illegible], [illegible] निरमळ [illegible] ।—मा.कां.प्र.

नाळखोली-सं०स्त्री० [देशज] तलवार को डालने की चमड़े की [illegible] नाली ।

नाळग—देखो 'नाळक' (रू.भे.)

नाळचूनी-सं०स्त्री० [देशज] कृषि की एक लाग विशेष जिसे जागीरदार [illegible] से लेता था ।

नाळछेद, नाळछेदक—सं०पु० [सं० नाळ+सं० छेद] डिंगल साहित्य में, [illegible] गीतों में जहां जथाओं का पूर्णतया निर्वाह नहीं होता है [illegible] [illegible] एक दोष । उ०—१ अरथ अपूरब अरथ, सबद [illegible] [illegible] [illegible] मार्ग । नाळछेद [illegible] नोष, जथा [illegible] दूषण आखै ।

—र.रू.

उ०—२ अरथ होत अपूरब अरथ, सो देत उचारत । जथा [illegible] [illegible] [illegible], नाळछेदक निरधारत ।—र.ज.प्र.

नाळणो, नाळबो-क्रि०स० [देशज] १ अवलोकन करना, निहारना, देखना ।

उ०—१ नाक कुण ठोहैं नरन रा नाथ रै, नाग रै गणी दिस [illegible] नाळै । कोहिया जिकण दिव नमोदा आगरे, यहै कुण आग रै पोल नाळै ।—बुधजी आसियो

उ०—२ इण भांत पना बाट नाळै छै । पे भी ताता [illegible] छै ।

—पना वीरमदे री वात

२ तलाश करना. ३ डालना, गिराना. ४ समझना ।

नाळणहार, हारो (हारी), नाळणियो—वि० ।

नाळिओड़ो, नाळियोड़ो, नाळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नाळीजणो, नाळीजबो—कर्म वा० ।

नाल्हणो, नाल्हबो, न्हाळणो, न्हाळबो—रू०भे० ।

नाळबंद-सं०पु०वि० [अ० नाल+फा० बद] १ घोड़े की टाप या बैलों के खुरों के नीचे नाल जड़ने वाला ।

२ एक प्रकार का कर जो मवेशी रखने वालों पर लगाया जाता था । उ०—बूंदी सूं नाळबंद, राव रतनसल आया । कछवाहा नै भाटियां नारियळ पठाया ।—नापै सांखलै री वारता

रू०भे०—नाळबदी, नाळबंधी ।

नाळबंदी-सं०स्त्री०यो० [अ० नाल+फा० बदी] १ घोड़े की टाप या बैलों के खुरों के नीचे नाल लगाने का काम ।

२ नाल जड़ने की मजदूरी ।

३ देखो 'नाळबंद' (रू.भे.)

रू०भे०—नाळबधी ।

नाळबंध—देखो 'नाळबंद' (रू.भे.)

नाळबधी—देखो 'नाळबंदी' (रू.भे.)

नाळव-सं०पु० [स. नाल:] पानी निकलने का स्थान ।

नाळस—देखो 'नालिश' (रू.भे.)

नाळा-सं०स्त्री०—तोप । उ०—नाळा पड़ धमक अवनी धीधड़ । गोळा 'जगो' कमधज तिरकट । मार पड़'स 'पदम' नंद मागो । दयाराम अण बागो दूठ ।—दयाराम आसिया री गीत

नालायक-वि० [फा० ना+अ० लायक] जो लायक न हो, अयोग्य, निकम्मा, मूर्ख । उ०—जगपत दोनां जीव नै, राजी होवै राम । नालायक सूं की नहीं, की लायक सूं काम ।—ऊ.का.

रू०भे०—नालायक ।

नाळि—देखो 'नाळ' (रू.भे.)

उ०—१ तठै नाळि गोळा चलावता एक नाळि फाटि पाछी पड़ी । [illegible] बारै पातिसाह नाळि हुवा निजीक हुंता । तिणि दाम पातिसाह बाळि मारियो ।—द.वि.

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति किलकिला नाळि छूटी सु गोळां री आगाज सूं धरती धमकिनै रही छै। जबरजंग नाळियां रा निहा उपड़ि नै रहिया छै। गजनाळ्यां, सुतरनाळ्यां, जंमूरानाळ्यां, रांमचंगी हथनाळ्यां रा घणणाट वाजै छै। आकास छायो छै।—रा.सा.सं.

उ०—३ हाथ वधिया……सु कमल करि वरणया। अर ए बाह सु कमळ री नाळि वरणई। कांम रा बांण कह्या छै। सु कमल। —वेलि.

उ०—४ करपूरवासी बि आंगुळी सालि, मंडोर तणा मग तणी दाळि, सोना तणइं स्थाळि, सालणा तणी पाळि, सुरहा घी तणी नाळि, बि पहर तणइं काळि, परीसइ आंखडियाळि, इसउं पुण्य विणु न प्रांमीयइं।—व.स.

नाळिकेर—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.)

उ०—फुट वांनरेण कच नाळिकेर फळ, मज्जा तिकरि दधि मंगळिक। कुंकुम अखित पराग किंजळक, प्रमुदित अति गायंति पिक।—वेलि.

नालिनी-सं०स्त्री०—जल में चलने वाला एक प्रकार का यान।

उ०—जळचर जीव आवि प्रवहणि वाजइं, सुकांणना वंध सळसळ्या, पवननउं पूर, कूआथंभउ डोलइ, तिवारइं मालिम छांडइ, अक्समात् धूंअरि पडिवा लागी, एतलनइं नालिनी वेगलि भागी। —व.स.

नाळिय-सं०स्त्री०—देखो 'नाळ' (रू.भे.)

उ०—कलंग परज कन्हडां, सुरां सवाद सुघडां। निवास सात नाळियं, त्रिग्रांम मूळ तालियं।—रा.रू.

नाळियर—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.) (अ.मा.)

नाळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ अवलोकन किया हुआ, निहारा हुआ, देखा हुआ. २ तलाश किया हुआ. ३ डाला हुआ, गिराया हुआ. ४ समझा हुआ।

(स्त्री० नाळियोड़ी)

नाळियौ-सं०पु० [सं० नालः] १ गंदे पानी का निकास-स्थान, मोरी।

२ देखो 'नाळ' (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'नाळौ' (अल्पा., रू.भे.)

नालिस-सं०स्त्री० [फा० नालिश] किसी के विरुद्ध फरियाद, अभियोग।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

रू०भे०—नालस, न्यालस।

नाळी-सं०स्त्री० [सं० नालिः] १ गंदे पानी के बाहर निकलने का मार्ग, मोरी. २ नाड़ी, धमनी. ३ नली, नलिका।

उ०—१ नाळी ताइ नाभ निरखंतां, घणूं स ऊजळ ऊपर घणउ। चकवा रइ बचइ ज्युं चुगती, तंत छाडियउ कुमोद तणउ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ नाळी ताइ कंठ तणी निरखंतां, रची अचंभ परजापति राव। विगताहीण रेखता वणाई, घण अहिरण अणलागइ घाव। —महादेव पारवती री वेलि

४ जल बहने का पतला मार्ग. ५ नदी।

उ०—वाघै फौज अकव्वर वाळी, नीरध जांण पलट्टी नाळी।—रा.रू.

६ सारंगी के बीच का मुख्य अंग जिस पर तार रहते हैं।

७ देखो 'नळी' (रू.भे.)

उ०—पींडियां तणी ओपमा पुणतां, अति नाळी जोबत अनूप। मछि ताइ महे महोदधि माहे, रहिया थरक थायंकवा रूप। —महादेव पारवती री वेलि

८ देखो 'नाळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ नाळी निहाव गोळा वुहाव। गढ़ सिखर उडी, कायरां का जीव तुडी।—अ. वचनिका

उ०—२ खुलै सिद्धां ताळियां रूप रा नचै वीर खेळा, रचै गांन चाळियां धूप रा रखां राज। चमंक्कै भाळियां बीच भूप रा हाथियां चली, नाळियां ऊपरां प्रळयकाळियां नाराज।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ पोहण रा पांन लिसा कर पुणइ, नाळी जिम आंगळी निरेह। रूप अनूप विचाळइ रेखा, दिणियर जांहि ऊजळी देह। —महादेव पारवती री वेलि

नाळीअर—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.)

उ०—हरमजी दाडिम, तेहनी कुळी, खळहइलां, मलबारी नाळीअर, कोलंबी नाळीअर, मुठीआं नाळीअर, दीवाइ नाळीअर, तेहनी खडहिडी।—व.स.

नाळीक-सं०पु० [सं० नालिकं] कमल (ह.नां., अ.मा.)

नाळीयर—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.)

उ०—१ खारिक द्राख नाळीयर नीला, फोफळ अनइ खिजूर। वारू वाड सेलडी केरा, वाडी नां केलिहरां।—कां.दे.प्र.

नाळुं, नाळु, नाळूं, नाळू-सं०पु०—१ राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा. ख्यात)

२ देखो 'नाळौ' (रू.भे.)

नाळेकेर, नाळेर-सं०पु० [सं० नालिकेर] १ देववृक्षों में से एक, सुरवृक्ष (अ.मा.)

२ देखो 'नारिकेल (रू.भे.)।

उ०—तन वरतै काळी कळस तेम। जुध गिणै सती नाळेर जेम। (वि.सं.)

नाळेरगरौ-वि० [सं० नालिकेर] नारियल की आकृति का, नारियल जैसा।

उ०—काठा गोहुवां री आटौ मंगायजै छै। सू नाळेरगरा गोळवां रोटा वणायजै छै। मूंगां री पातळी दाळ घणा मसालां सुं कीजै छै। —रा.सा.सं.

नाळेरियौ—१ देखो 'नारिकेल' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'नाळेरौ' (अल्पा., रू.भे.)

नाळेरी—देखो 'नारेळी' (रू.भे.)

नाळेरी-पूनम—देखो 'नारेळी-पूनम' (रू.भे.)

नाळेरौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का हुक्का जो नारियल की गिरी के

[illegible] मैं कई [illegible] को [illegible] करके बतलाया जाता है।

२ [illegible] ([illegible])

[illegible]—[illegible]।

[illegible]—[illegible], [illegible]।

३ देखो '[illegible]' ([illegible], रू.भे.)

[illegible] [सं० नाडि या नाल:] १ रक्त की नलियों तथा एक प्रकार के [illegible] से बनी हुई रस्सी के आकार की वस्तु जो एक छोर से [illegible] बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर योनि वाली के [illegible] में [illegible] की दीवार से मिली होती है। उदरस्थ बच्चे के शरीर में रक्त का आदान-प्रदान इसी द्वारा होता है। बच्चे का जन्म होने पर इस नली को काट दी जाती है।

उ०—[illegible] [illegible] री [illegible], [illegible] (गरभ में) जीव वा [illegible] ने [illegible] [illegible] [illegible] देवे है सो [illegible] रा हाथ री नाळो [illegible] री [illegible] नै [illegible] [illegible] होय बाहर [illegible]।—वी.स.टी.

[illegible]—नाड़ो।

२ [illegible] की भूमि में नीची वह भूमि जो प्रायः वर्षा के पानी के बहने से दूर तक लकीर के रूप में कट गई हो, भूमि पर लकीर के रूप में दूर तक बना हुआ वह गड्ढा जिससे प्रायः बरसाती पानी किसी नदी आदि में जाकर गिरता हो, जल मार्ग (हि.को.)।

उ०—[illegible] रा नाळा बीच [illegible]।—रा.सा.स.

३ उक्त मार्ग में बहता हुआ जल, जल-प्रवाह। उ०—१ सूरा [illegible] [illegible] [illegible] नाळा बाळ्हा [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। छिड़ छिड़ [illegible] पै [illegible] [illegible]।—ऊ.का.

उ०—२ [illegible] [illegible] डेरां ऊपरै आवता हुता सु बीचि नाळा ऊंडा बहता हुता। पांणी का पूर बहुत था।—द.वि.

उ०—३ नदियां, नाळा नीझरण, पावस चढ़िया पूर। करहउ कादिम [illegible], पंथी पूगळ दूर।—ढो.मा.

४ देखो 'नाळ' (मह्रा., रू.भे.)

[illegible]—नाळो।

[illegible]—नाळियो, नाळियो।

[illegible]—नाळ।

[illegible]—नाळड़ो, नाळड़ो।

[illegible]—नाळो, नाळड़ो।

[[illegible]] ५ गोला-[illegible], बावेला।

उ०—[illegible] रा [illegible] [illegible] हुवा। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] में नाळा मारिया।

—बां.दा. ख्यात

नाळ्हणो नाळ्हबो—देखो 'नाळणो, नाळबो' (रू.भे.)

उ०—[illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] ने [illegible] निजर भर नाळ्हो।

—[illegible]बाई

नाळ्हणहार, हारो (हारी), नाळ्हणियो—वि०।

नाळ्हियोड़ो, नाळ्हियोड़ो, नाळ्ह्योड़ो—भू०का०कृ०।

नाळ्हीजणो, नाळ्हीजबो—कर्म वा०।

नाळ्हियोड़ो—देखो 'नाळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नाळ्ह्योड़ी)

नाव-सं०स्त्री० [सं० नौः बहु०, फा०] १ जल के ऊपर तैरने या चलने वाली वह सवारी जो लकड़ी व लोहे आदि की बनी हुई होती है, किश्ती, जलयान, नौका (प्र.मा.) (उ.र.)

उ०—१ नाव तो नावड़ियो चालै, नदियां पाणी फिरती रे। चांद-सुरज सरोदै चालै, नखतर चालै फिरती रे। बिन माता बिन परसी रे।—महाराजा मानसिंह (जोधपुर)

उ०—२ नाव तिरै नह नीर में, निबळो नावड़ियाह। राजस नंद साबत रहै, मिनखां मावड़ियाह।—बां.दा.

२ शव को दाह-क्रियार्थ रख कर ले जाने के लिए बनाया गया ठट्ठर, रथी।

मह०—नावड़ी, नावड़ी।

३ देखो 'न्याव' (रू.भे.)

नावक-सं०पु० [फा०] १ एक प्रकार का छोटा बाण।

२ देखो 'नाविक' (रू.भे.)

नाव-घाट-सं०पु०यौ० [फा० नाव, सं० घाट] समुद्र, झील, नदी आदि के तट का वह स्थान जहाँ नावें ठहरती हों, नावों के ठहरने का घाट।

नावड़-सं०स्त्री०—पहुँच।

नावड़णो, नावड़बो-क्रि०स० [सं० नौ+अटन नावटन या अन्वागत या अन्वापदन] १ (पीछे से भाग कर या तेज चल कर) निकट पहुँचना, आगे जाने वालों के साथ हो जाना, आगे जाने वालों को पकड़ लेना, पहुँचना।

उ०—१ इगड़ा तो झूरणा ए जीण सगलो झूरसी, गई गई कोस दोय च्यार। देव्यां री ए देवी फाकड़ियैं वळगा ए हरसो नावड़ियो।

—लो.गी.

उ०—२ दीयघड़ दीयघड़ अक्क पग धरंती, कुलट नटवटां ज्यूं मक्क करती। काळका-चक्र ज्यूं नावड़ी फेथिया, मह्ला-सिर काळगो हक्क भरती।—गिरवरदान सांदू

२ पदार्पण करना, आना, पहुँचना।

उ०—वावड़ प्याया वीदणी, पायड़ कर आणीग। कावड़ नै सावड़ करण, नावड़ विरद निमीण।—बालाबख्श बारहठ राजूरी

३ मुकाबला करना।

उ०—वीको बाहर मावड़ियो, सूंवर नकोदर हाथ। हम तुम आगड़ी नीवड़यो, नरसिंघ जाट्र साथ।—नैणसी

४ अधिकार में करना, कब्जा करना।

५ कार्य को पूरा करना ।

नावड़णहार, हारो (हारी), नावड़णियो—वि० ।

नावड़िग्रोड़ो, नावड़ियोड़ो, नावड़चोड़ो—भू०का०कृ० ।

नावड़ीजणो, नावड़ीजबो—कर्म वा० ।

नावड़णो, नावड़बो—रू०भे० ।

नावड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ निकट पहुंचा हुआ, पास गया हुआ, भाग कर सम्मिलित हुवा हुआ। २ पदार्पण किया हुआ, आया हुआ ।

३ मुकाविला किया हुआ ।

४ अधिकार में किया हुआ, कब्जे में किया हुआ ।

५ कार्य को पूरा किया हुआ, कार्य को पूरा करने की स्थिति तक पहुचा हुआ ।

(स्त्री० नावड़ियोडी)

नावड़ियो-सं०पु०—केवट, मल्लाह । उ०—१ नाय तिरै नहं नीर में, निवळा नावड़ियांह ।राजस नहं सावत रहै, मिनखां मावड़ियांह । —बां.दा.

उ०—२ नाव तो नावड़ियां चालै, नदियां चालै फिरती रे। चांद-सूरज सरोदे चालै, नखतर चालै फिरती रे। धिन माता धिन धरती रे ।—महाराजा मांनसिंह जोधपुर

नावड़ो, नावडो—देखो 'नाव' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ गग-यमुन-परि नयनडां, वहइ निरंतर पूरि । तरइ नहीं तन नावडी, करती झूरि मझूरि ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ नीजांमां विण नावडी, किणी-परि पांमइ पार ? डगमगती नहू डग तरइ, मांहि माधव-भार ।—मा कां.प्र.

नावण-सं०स्त्री०—१ दौड़ने या भागने की क्रिया या भाव ।

२ —देखो 'न्हावण' (रू.भे.)

नावणो, नावबो-क्रि०स० [सं० ज्ञापयति] १ विदित करना, वतलाना ।

उ०—पंडु पुच्छीउ पडु पुच्छीउ विदुर घरि कन्हु । रोसारुणु चल्लीयउ मग्गि मिळीउ सहूइ नावइ ।—पं पं.च.

२ देखो 'न्हाणो, न्हाबो' (रू.भे.)

नावणहार, हारो (हारी), नावणियो—वि० ।

नाविग्रोड़ो, नावियोड़ो, नाव्योडो—भू०का०कृ० ।

नावीजणो, नावीजबो—कर्म वा० ।

ना'वणो, ना'वबो—१ देखो 'न्हाठणो, न्हाठबो' (रू.भे.)

२ देखो 'न्हाणो, न्हाबो' (रू भे)

उ०—दिन में वेळा दोय, ना'वै धोवै नीर सूं। हिय ज कपटी होय, मैल न जावै मोतिया ।—रायसिंह सांदू

ना'वणहार, हारो (हारी), ना'वणियो—वि० ।

ना'विग्रोड़ो, ना'वियोड़ो, ना'व्योड़ो—भू०का०कृ० ।

ना'वीजणो, ना'वीजबो—कर्म वा० ।

नावांहाकण-सं०पु० [सं० नौ+हुकार] केवट (अ.मा.)

नावाकिफ-वि० [फा० ना+अ० वाकिफ] अनभिज्ञ, अनजान, अपरिचित ।

नावाजिव-वि० [फा० ना+अ० वाजिब] जो वाजिब न हो, अनुचित, गेरवाजिव, ना-मुनासिव ।

नावादौड़-सं०स्त्री०यौ०—दौड़-भाग, दौड़-धूप ।

रू०भे०—नाहा-दौड़ ।

नाविग्र, नाविक-सं०पु० [सं० नाविक] केवट, मल्लाह । (उ.र.)

उ०—देखै भव दरियाव, रची पगां सूं स्त्री-रमण । नरां अपूरब नाव, नाविक विण निरझर नदी ।—बां.दा.

रू०भे०—नावक ।

नावियोड़ो-भू०का०कृ०—१ विदित किया हुआ, बतलाया हुआ ।

२ दौड़ा हुआ ।

३ स्नान किया हुआ ।

(स्त्री० नावियोड़ी)

ना'वियोड़ो—१ देखो 'न्हाठियोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'न्हायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ना'वियोड़ी)

नावी-सं०पु० [सं० नापित] हज्जाम, नापित (उ.र.)

नास-सं०पु० [सं० नासा] १ नाक, नासिका (डि.को.)

उ०—१ मुख निकट प्रकासित नास मंज, क्रित उलट प्रगट किरि सुघट कंज । सुंदर सरूप चखि परखि स्यांम, रस मंजण करि जुग सरति रांम ।—रा.रू.

उ०—२ नहीं तुझ नैण नहीं तुझ नास । नहीं तुव सुन्न नहीं तुव सास ।—ह.र.

२ किसी पदार्थ को नाक से सुंघाए जाने की क्रिया या भाव । (अमरत)

३ नाक से सुंघाया जाने वाला पदार्थ ।

[सं० नाश] ४ न रह जाने का भाव, लोप, समाप्ति ।

उ०—पारस नह नह पोरसो, पातर राखै पास । जिणरे आयो जांणजे, नैड़ो धन रो नास ।—बां.दा.

५ ध्वंस, बरबादी ।

उ०—म्हांनै गिणज्यो मूढ़, अमलियां ओगणगारां । करणा परउपकार, लार थांनै ललकारां । निज कीनो थे नास, कहो किण रक्षा करस्यो । बात खरी है बपण, मौत विन नाहक मरस्यो ।—ऊ.का.

६ संहार ।

उ०—सादूळो वन संचरै, करण गयंदां नास । प्रबळ सोच भंवरां पड़ै, हंसां होय हुलास ।—बां.दा.

७ मृत्यु, मौत (डि.को.)

रू०भे०—नासण ।

नासक-वि० [सं० नाशक] १ नाश करने वाला, मारने वाला ।

उ०—अन्न-पूरणा ज्वाळा जपू, अस्ट प्रहर जग जोति जगांणी । नवलखां देव्यां सिर नाऊं, सब सत्रुन की नासक जांणी ।

—राघवदास भादो

[illegible] २ [illegible] मास का वह [illegible] के कोठे में [illegible] है ।

३ देखो '[illegible]' (रू.भे.)

उ०—[illegible], [illegible] । [illegible] —[illegible]

नासका—सं०स्त्री० [सं० नासिका] १ सूअर की थूथन. २ नाक में [illegible] विशेष (अलवर)।

रू०भे०—नासिका, [illegible], नासिका।

३ देखो 'नासिका' (रू.भे.) (डि.को.)

नासकारी—वि० [सं० नाशकारिन्] नाश करने वाला।

नासक—देखो 'नास' (रू.भे.)

नासणउ, नासणौ—वि० [सं० नश्] (स्त्री० नासणी) १ दौड़ने वाला, भागने वाला।

उ०—[illegible] मारण, [illegible], [illegible], [illegible] काढ़ण, [illegible] पापणव, [illegible], [illegible], [illegible] नासणव, [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], कुमित [illegible], दुरजन दुस्ट, [illegible], [illegible] नासी, [illegible] ।—[illegible]

२ नष्ट होने वाला, समाप्त होने वाला. ३ नाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

रू०भे०—नासिणउ, नासिणौ।

नासणौ, नासबौ—क्रि०अ० [सं० नश्, नश्यति] १ दौड़ना, भागना (उ.र.)

उ०—१ नास लिया जम-किंकर नासै।—र.ज.प्र.

उ०—२ तुरकम छोडै मेड़तो, नास गयो नागोर। पूछै जाकर जोधपुर, कठै गई कठै ठौर।—रा.रू.

उ०—३ कहै राव मालदेव जोधपुर आया। कइक तुरक था सो नास गया।—नैणसी

२ नष्ट होना, समाप्त होना, मिटना।

उ०—उदित प्रगट मणि ईस कहै घन विमल प्रकासै। तम नासै [illegible] नाम कहणा सब नासै।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—१ नष्ट करना, समाप्त करना, मिटाना।

नासणहार, हारो (हारी), नासणियौ—वि०।

नासिओड़ौ, नासियोड़ौ, नास्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नासीजणौ, नासीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

नासिणौ, नासिबौ, न्हासणौ, न्हासबौ—रू०भे०।

नासत—देखो 'नास्ति' (रू.भे.)

उ०—[illegible] जिम हुत न होई, बहुगुण सब मनमेव न कोई। [illegible] कोई [illegible], नासत जिम [illegible]।

—सू.प्र.

नासति—१ देखो 'नासती' (रू.भे.)

२ देखो 'नास्ति' (रू.भे.)

उ०—दुरी करी नह विमल नाम नासति बहुनामि।—पी.ग्रं.

नासतिक—देखो 'नास्तिक' (रू.भे.)

उ०—समरथ वेदवाद, निरधारा मत नासतिक। नर सब सार प्रकार, [illegible] नांही [illegible]। —बां.दा.

नासती—सं०स्त्री० [सं० नास्ति] असत्यता।

वि०—१ बुरा (खराब) (डि.को.)

उ०—नासती सबै छोडैर आतो नजर, भला कर [illegible] फेर मंडो। [illegible] परत [illegible] फेर [illegible], [illegible] आपार [illegible]।

—रे.रू.

२ देखो 'नास्ति' (रू.भे.)

३ देखो 'नास्तिकता' (रू.भे.)

रू०भे०—नासति।

नासतीक—देखो 'नास्तिक' (रू.भे.)

नासपती, नासपाती—सं०स्त्री० [तु० नाशपाती] १ मझोले डील-डौल का एक पेड़ जो समशीतोष्ण स्थानों में प्रायः अधिक उगता है या लगाया जाता है। इसका फल मेवों में गिना जाता है। यह सेब की जाति का पेड़ होता है किन्तु फल का गूदा सेब से कड़ा होता है और सफेद होता है। यूरोप के उन सभी स्थानों में यह पेड़ होता है जहां सरदी कम पड़ती है। भारत में यह हिमालय की तराई और कश्मीर में अधिक होता है। कश्मीर में होने वाले पेड़ों के फल उत्तम होते हैं जिन्हें नाख, नाग या नाक कहते हैं।

२ इस पेड़ का फल।

नासफरिम—वि० [सं० नाशः फा० फर्मा] वह जिसकी आज्ञा भंग हो।

उ०—गत प्रभा थियो ससि रयणि गळंती, वर मंदा सह मदन वरि। दीपक परजळतो इ न दीपै, नासफरिम सू रतनि नरि।—वेलि

नासमझ—वि० [फा० ना+सं० सज्ञान] जो समझदार न हो, बेवकूफ।

नासमझी—सं०स्त्री० [फा० ना+सं० सज्ञान+रा.प्र. ई] मूर्खता, बेवकूफी।

नासवंती—सं०स्त्री० [सं० नाश] घोड़े के नाक के नथुनों पर होने वाली भौंरी (अशुभ)—शा.हो.

नासवान—वि० [सं० नाशवान्] जिसका अस्तित्व बना न रहे, नाश को प्राप्त होने वाला, अनित्य, नश्वर।

नासा—सं०स्त्री० [सं०] १ नाक, नासिका (डि.को.)

उ०—वांणी पवित्र करिस सीतावर, नित-प्रत कीत प्रकासै नरहर। नासा विमल करिस इम निरमळ, प्रभु धूंटे तो परमळ।

—ह.र.

२ नाक का छेद, नासारंध्र, नथना। उ०—ऊपड़ी रवि गति [illegible] अरक एहवो, [illegible] गिरि पत्र थगंति। मद नीझर सींगाळ न मुणिजै, वरहासा नासा वाजंति।—वेलि.

३ देखो 'नस' (रू.भे.)

उ०—मस्तक पाळ बंधी माटी की मुनिवर समता रस भरिया। [illegible] ना गोरा, मुनिवर नै सिर धरिया। तड़बड़ [illegible] लागी परै [illegible], नस नस नासां तूटे, मुनिवर समता भाव करि नै, भाव अनंतो लूटै।—जयवांणी

नासाचर-संपु० [सं० नासा=तुण्ड+चर=भक्षणे] १ मांसाहारी पक्षी
उ०—पीतकां जगत छळ-भोम न पड़ियो, अवधारां आवटियो अंग।
'चांपो' चंच ग्रीधां रिण चाढ़ियौ, नासाचर लेगी निहंग।
—राव चांपा रौ गीत

रू०भे०—नसाचर।

नासानुगी-संपु० [सं०] नाक के बल चलने वाला जानवर।
उ०—कुवके कोड कराहि के, कमटेस मचवकै। नीसासा नासांनुगी, आसा गज तवकै।—व.भा.

नासापुट-संपु० [सं०] नाक के छेदों के किनारे का चमड़ा जो परदे का काम देता है, नथना।

नासारोग-संपु० [सं०] नाक में होने वाला रोग।

नासिक-संपु० [सं० नासिक्य] महाराष्ट्र प्रान्त का एक तीर्थ।

नासिका-संस्त्री० [सं०] १ नाक, नासा (डि.को.)
उ०—१ वनि नयरि घराघरि तरि तरि सरवरि, पुरुख नारि नासिका पथि। वसंत जनमियौ देण वधाई, रमै वास चढ़ि पवन रथि।—वेलि.
उ०—२ चंदवदण म्रिगलोयणी, भीसुर सस दळ भाल। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ गरभ सुकमाळ।—ढो.मा.
उ०—३ सुकीर नासिका सरूप, वेस रीत राजियै। सुरू गुरु र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै।—सू.प्र.
२ देखो 'नासका' (रू.भे.)
उ०—जरदी पीवण न जोग नासिका नरक निसांणी।—ऊ.का.
वि०—श्रेष्ठ, प्रधान।

नासिणउ, नासिणौ—देखो 'नासणउ, नासणौ' (रू.भे.)
उ०—जिण पय मंदाकिण जनम, अघ नासिणौ अपार। जिण भजतां अघ जांण रौ, विसमय किसुं विचार।—र.ज.प्र.
(स्त्री० नासिणी)

नासिणौ, नासिबौ—देखो 'नासणौ, नासबौ' (रू.भे.)
नासिणहार, हारौ (हारी), नासिणियौ—वि०।
नासिओड़ो, नासियोड़ो, नास्योड़ो—भू०का०कृ०।
नासीजणौ, नासीजबौ—कर्म वा०।

नासियोड़ो-भू०का०कृ०—१ दौड़ा हुआ, भागा हुआ. २ नष्ट हुवा हुआ, समाप्त हुवा हुआ, मिटा हुआ. ३ नष्ट किया हुआ, समाप्त किया हुआ, मिटाया हुआ।
(स्त्री० नासियोड़ी)

नासूर-संपु० [अ०] वह घाव जिसमें भीतर ही भीतर नली की तरह छेद हो जाय और उसमें से बराबर मवाद निकला करे, नाड़ीव्रण।

नासेट-संस्त्री० [सं० नष्ट+ऐस=नष्टैष] खोये हुए पशुओं के ढूंढ़ने की क्रिया या भाव।
रू०भे०—नाएट, नाहेट।

नासेटू-वि० [सं० नष्टैषिन्] खोये हुए मवेशी की तलाश करने वाला।
रू०भे०—नाएटू, नाहेटू।

नास्ति-अव्य० [सं०] नहीं।
संस्त्री०—१ नहीं होने का भाव, अभाव।
२ देखो 'नासती' (रू.भे.)
रू०भे०—नासत, नास्ती।

नास्तिक-संपु० [सं०] ईश्वर, परलोक आदि का अस्तित्व नहीं मानने वाला, ईश्वर को जगत का उपादान कारण न मानने वाला।
उ०—१ कुपि नास्तिक कौं किये, आस्तिक कर किलकारी।—ऊ.का.
उ०—२ अर टोळा रा बचन रौ तिरस्कार करि इण रीति उच्चारण रौ आरंभ कीधौ, नीच नास्तिकां रौ वंस प्रमार राज विक्रम १ भोज २ रा वंस रौ संतांन किण रीति पावै।—वं.भा.
रू०भे०—नासतिक, नासतीक।

नास्तिकता-संस्त्री० [सं०] ईश्वर, परलोक आदि को नहीं मानने का विचार, ईश्वरीय सत्ता को नहीं मानने की बुद्धि, नास्तिक होने का भाव।
रू०भे०—नासति, नासती।

नास्तिकदरसण, नास्तिकदरसन-संपु० [सं० नास्तिकदर्शन] नास्तिकों का दर्शनशास्त्र।

नास्तिकवाद, नास्तिवाद-संपु० [सं०] नास्तिकों के विचार, नास्तिकों द्वारा दिया जाने वाला तर्क, वह सिद्धान्त जिसमें ईश्वर का होना नहीं माना जाता है।

नास्ती—देखो 'नास्ति' (रू.भे.)
उ०—१ आस्ती नास्ती मन कर होई, स्वारथ अरु परमारथ दोई। विधि निसेध का करता योई, चेतन निसप्रिय निरमोई।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ० २—कहां आसति कहां नास्ती, कहां अंदर कहां बाहर। निजानंद सुखरांम है, स्वते प्रकासणहार।—श्री सुखरांमजी महाराज

नास्तौ-संपु० [फा० नाश्ता] प्रातःकाल का अल्पाहार, कलेवा, जलपान।

नाह-अव्य०—१ निषेधसूचक शब्द, नहीं (रू.भे.)।
उ०—ईखे पित मात ऐरिसा अवयव, विमळ विचार करे वीवाह। सुंदर सूर सील कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूझै नाह।—वेलि
२ देखो 'नाथ' (रू.भे.) (अ.मा., डि.को.)
उ०—१ दिसि दिसि सीकिरि डांमर चांमर ढळइं सभावि। वाजइ तूर अनाहत नाह तणइ अनुभावि।—नेमिनाथ फागु
उ०—२ मैं परणंती परखियौ, सुरति पाक सनाह। घड़ि लड़िसी गुड़िसी गयंद, नीठि पड़ेसी नाह।—हा.झा.
उ०—३ नहीं तू जीव नहीं तू जम्म, नहीं तो देह नहीं तो दम्म। नहीं तू नार नहीं तू नाह, नहीं तू घांम नहीं तू छांह।
उ०—४ अहर फरक्कै तन फुरै, तन फुर नैण फुरंत। नाभी-मंडळ सह फुरै, सांझै नाह मिळंत।—अज्ञात

३ देखो [illegible] [illegible] (डि.को.)

[illegible], [illegible]-[illegible] [illegible] १ [illegible] की [illegible] के [illegible] के [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]।
२ [illegible] [illegible], [illegible], घोड़ा।
उ०—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] नाहरंगी।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] में [illegible] [illegible] करै।
—रा.रु.

[illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible]।
उ०—[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible], सिरोही [illegible] रे। [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] रे।—[illegible] [illegible]

[illegible]-सं०पु० [सं० स्नान] स्नान।
उ०—१ [illegible] [illegible] [illegible] जी रो मंदर है, [illegible] सोमजी समुंदर रो [illegible] [illegible], सु [illegible] [illegible] [illegible] करै।—द.दा.
उ०—२ [illegible] दरबार सू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करी जो [illegible] हुवै तो [illegible] तो [illegible] [illegible] नाहण रो है सू पधारावो।
—द.दा.

[illegible]—[illegible]।

[illegible]-दुनियान-सं०पु० [सं० नाथ+फा० दुनिया] १ राजा, नृप (डि.को.)
२ [illegible], बादशाह।

[illegible]-सं०पु० [सं० नखरः या नागरः] १ सिंह, शेर।
(अ.मा., डि.को., ह.र.)
(स्त्री० नाहरी)
उ०—१ [illegible] [illegible] नाहर [illegible], वाहर [illegible] [illegible]। तरवर गुलम [illegible] [illegible], न को [illegible]।—बां.दा.
उ०—२ [illegible] [illegible] [illegible] राजा रो, [illegible] से रजवाळो। [illegible] नाहर [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] '[illegible]'।—[illegible] [illegible]
२ चीता. ३ भेड़िया. ४ योद्धा, वीर।
उ०—[illegible] [illegible] [illegible]-हा म्हारी नाहर, [illegible] [illegible] [illegible]।
—वीरमदे सोनगरा री वात
५ शरद् ऋतु में होने वाला मच्छरों से कुछ बड़ा उड़ने वाला कीड़ा जो मक्खियों को मारता है।
[illegible]—[illegible], [illegible]। उ०—[illegible] नूं करै [illegible], [illegible] विनोद [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] नूं, [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नूं [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] नूं [illegible]।
—नवलजी लाळस

रू०भे०—[illegible], ना'र, [illegible], न्हार।
अल्पा०—ना'रड़ो, ना'रियो, नाहरो, न्हारियो, न्हारियो।

[illegible]—देखो 'ना'[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]-सं०पु० [सं० नाहर+फा० [illegible]] वह घोड़ा जिसके शरीर का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वाला हो (अशुभ)।
—शा.हो.

नाहरस्यांम-सं०पु० [सं० नाहर+सं० श्याम] घोड़ों की एक बीमारी जिससे उनका दम फूलता है।—शा.हो.

नाहरी-सं०स्त्री० [सं० नाहर+ई] मादा सिंह, शेरनी।
उ०—१ [illegible] मैं [illegible] [illegible] होगें [illegible] नाहरी [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] है।—[illegible] [illegible] री वात
उ०—२ [illegible] [illegible] [illegible] मारियो। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देखै तो मुंआई [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] हुआ। [illegible] [illegible] हुआ नै [illegible] [illegible]। [illegible] नै [illegible]-[illegible] रै [illegible] एक नाहर नाहरी [illegible] है। नाहरी [illegible]-[illegible] [illegible]।
—[illegible]
रू०भे०—ना'री, न्हारी।
अल्पा०—ना'रड़ी।

नाहल-सं०पु०—१ मोट खींचने का रस्सा. २ चमड़े का टुकड़ा.
३ देखो 'नाळ' (रू.भे.) ४ देखो 'नाहर' (रू.भे.)
उ०—१ न [illegible] ये हो नाहलं का नाहर [illegible], '[illegible]' [illegible] [illegible] सा कहावै। आदम 'किशोर' [illegible] का जाया, [illegible] के [illegible] सा विरद जिण पाया।—रा.रू.
उ०—२ [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] सूं करै। नाहल रजपूतों की [illegible] [illegible] [illegible]। सूरज भी रथ [illegible] [illegible] [illegible] देखै।—सू.प्र.

नाहरो—१ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—[illegible] [illegible] [illegible] पार। [illegible] [illegible] [illegible] पार। [illegible] विलंद [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] नाहरो [illegible] पाय।
—[illegible]

नाहलउ—देखो 'नाथ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ [illegible] [illegible] नाहलउ, [illegible] [illegible] [illegible] मीत। [illegible] [illegible] [illegible] स्वामिनु, [illegible] [illegible] मीत।—मा.कां.प्र.
उ०—२ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नेहलउ, [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] नयण [illegible], नाहलउ नयण न देखूं नेम।—[illegible]

नाहला-सं०पु०—म्लेच्छ जाति का एक भेद (डि.को.)

नाहलियो, नाहलू—देखो 'नाथ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ चांदलिया [illegible] रे, [illegible] म्हारा [illegible] रे, [illegible] [illegible] [illegible] रे [illegible]। नाहलिया [illegible] रे नारि हूं [illegible] रहूं रे।
—[illegible]
उ०—२ एक वार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रे [illegible] [illegible] [illegible] नारि [illegible] नाहलू ए।—[illegible]-[illegible] रास

नाहळो-सं०स्त्री०—देखो 'नाळो' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—[illegible] नाळा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] में [illegible] नाळा [illegible] नाहळो।—[illegible]

नाहळो—देखो 'नाळो' (रू.भे.)

नाहलो-सं०पु०—१ म्लेच्छ जाति 'नाहला' का व्यक्ति।

(स्त्री० नाहली)

२ देखो 'नाथ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ मन वसियौ वइराग हो राजेस्वरजी, मूकी हो माया ममता मोहनी जी। ति कीवउ खट खंड त्याग हो राजेस्वरजी, इम किम निठुर हुग्रा नाहला जी।—स.कु.

उ०—२ सगुण सनेही नाहला, वाला वेग पधार। अलवेला अलजौ घणौं, देखण पीय दीदार।—ढो.मा.

उ०—३ नारी मंडण नाहलो, धरती मंडण मेह। पुरखां मंडण धन सही, या में नहि संदेह।—अज्ञात

नाहा-दौड़—देखो 'नां'वा-दौड़' (रू.भे.)

नाहानौ—देखो 'नंनौ' (रू.भे.)

उ०—जन्म पी वि भ्रू भ्र मध्यि तिल छि सुविसाळ, मि ते रमतां दीठु हुतु याहि नाहानौ बाळ।—नळाख्यांन

(स्त्री० नाहानी)

नाहि, नाही—१ देखो 'नाभि' (रू०भे०)

उ०—लवणिमरसभरकुवडिय जसु नाहि य रेहइ, मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरु सोहइ। जसु नह पल्लव कांमदेव अंकुस जिम राजइ, रिमझिमि रिमझिमि ए पायकमळि घाघरिय सुवाजइ।

—प्राचीन फागु-संग्रह

२ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—इतरौ सुण देवीदास दोपहरां रा घरे आइयौ। आगे देवीदास री मा जीमण लियां वैठी थी कह्यौ जीमण ठंडो होय गयौ। ताहरां देवीदास कह्यौ—ताळ तो कांहीं लागी नाही।

—पलक दरियाव री वात

नाहु, नाहू—१ देखो 'नाभि' (रू.भे.) (डिं.को.)

२ देखो 'नाथ' (रू.भे.)

नाहेट—देखो 'नासेट' (रू.भे.)

नाहेट्ट—देखो 'नासेट्ट' (रू.भे.)

मुहा०—नाहेट्ट नै कूड़ प्यारौ—अति दर्दवान व्यक्ति को आत्मानुकूल बात ही प्यारी लगती है चाहे वह असत्य हो।

निंगळणौ, निंगळबौ–क्रि०अ० [सं० निर्गलनम्] १ किसी मिट्टी के बरतन का अधिक दिन पानी भरा रहने से अथवा पानी आदि के सम्पर्क में आते रहने से मजबूती प्राप्त करना, पूर्ण परिपक्व होना।

[सं० निर्गद] रोगादि से मुक्ति प्राप्त कर लेना।

निंगळणहार, हारौ (हारी), निंगळणियौ—वि०।

निंगळवाड़णौ, निंगळवाड़बौ, निंगळवाणौ, निंगळवावौ, निंगळवावणौ, निंगळवावबौ, निंगळाड़णौ, निंगळाड़बौ, निंगळाणौ, निंगळावौ, निंगळावणौ, निंगळावबौ—प्रे०रू०।

निंगाळणौ, निंगाळबौ—क्रि०स०।

निंगळिओड़ौ, निंगळियोड़ौ, निंगळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निंगळीजणौ, निंगळीजबौ—भाव वा०।

नींगळणौ, नींगळबौ—रू०भे०।

निंगळियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ मजबूत हुवा हुआ, परिपक्व हुवा हुआ।

२ रोगादि से मुक्ति पाया हुआ।

(स्त्री० निंगळियोड़ी)

निंगाळणौ, निंगाळबौ–क्रि०स०—१ मिट्टी, काष्ठ, पत्थर आदि के बरतन को बहुत समय तक पानी में रख कर अथवा पानी के सम्पर्क में लाकर मजबूत करना, दृढ़ करना. २ मजबूत या दृढ़ करने के लिए पात्र को पानी में रखना।

निंगाळणहार, हारौ (हारी), निंगाळणियौ—वि०।

निंगाळिओड़ौ, निंगाळियोड़ौ, निंगाळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निंगाळीजणौ, निंगाळीजबौ—कर्म वा०।

निंगळणौ, निंगळबौ—अक. रू०।

निंगाळियोड़ौ–भू०का०कृ०—मिट्टी आदि के पात्र को पानी में रख कर मजबूत किया हुआ, दृढ़ किया हुआ।

(स्त्री० निंगाळियोड़ी)

निंगै—देखो 'निगाह' (रू.भे.)

निंद—१ देखो 'निंदा' (रू.भे.)

उ०—करुनाकर आकर कीरत के, धरम चाकर ठाकर श्रीरत के। जक नाद रु बिंद धरैं जब वे, बकवाद रु निंद करैं कब वे।—ऊ.का.

२ देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

उ०—नीकळि जा रे अंखडी, निंद मनावी ल्यावि। जु हूं सुख-दुख वीसरूं, तु इणि थांनकि आवि।—मा.कां.प्र.

निंदक–सं०पु० [सं०] दूसरों की बुराई करने वाला, निंदा करने वाला।

उ०—१ दादू निंदक बपुड़ा जनि, मरे पर उपकारी सोइ। हमको करता ऊजळा, आपण मैला होइ।—दादूवांणी

उ०—२ उन रौ धन फलांणी जागां गड्यौ ते पिण बता देवतौ। इम कुबध कर नै बाकी रह्या ते पिण बताय दीधा। तिम निंदक कुबद हुवै ते निंदा करतो कूड़ बोल नै अळगौ रहै।—(भि.द्र.)

रू०भे०—नींदक, निंदुक।

निंदड़ली—देखो 'निद्रा' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पिया विन मो निंदड़ली नहि आवै रे।—लो.गी.

निंदणा–सं०स्त्री० [?] १ निरीक्षण (जैन)

२ देखो 'निंदा' (रू.भे.)

उ०—दादू जिहि विधि आतम उद्धरे, परसे प्रीतम प्रांण। साधु सब्द को निंदणा, समझै चतुर सुजांण।—दादूवांणी

निंदणौ, निंदबौ–क्रि०स० [सं० निंदन] १ बुरा कहना, बदनाम करना।

—(उ.र.)

उ०—१ कोउयेक निंदौ कोउयेक विंदौ, नांम सुधारस पागा। जन मीरां गिरधर वर पायौ, भाग हमारा जागा।—मीरां

उ०—२ सतगुरु धारैं ब्रह्म विचारैं, अवधूता जरणा जारैं। किसकूं निंदूं किसकूं वंदूं, एक सूत पोया सारैं।—स्त्री हररिांमजी महाराज

[illegible] [सं० निंदक] २ [illegible]।

३ [illegible], [illegible]।

निंदणहार, हारो (हारी), निंदणियो—वि०।

निंदणवाणो, निंदणवाबो, निंदवाणो, निंदवाबो, निंदरावणो, निंदरावबो—प्रे०रू०।

निंदाणो, निंदराबो, निंदाणो, निंदाबो, निंदावणो, निंदावबो—क्रि०प्र०।

निंदियोड़ो, निंदियोड़ो, निंदयोड़ो—भू०का०कृ०।

निंदीजणो, निंदीजबो—कर्म वा०।

नंदणो, नंदबो, निंदणो, निंदबो, नींदणो, नींदबो, नींदणो, नींदबो—रू०भे०।

निंदरा—१ देखो 'निंद्रा' (रू.भे.)

उ०—थारां निंदरा करै ग्रोर माताजी री बडाई करै।

—डा० स्यामसींघ सीयल

२ देखो 'निंद्रा' (रू.भे.)

निंदवणो, निंदवबो—१ देखो 'निंदणो, निंदबो' (रू.भे.)

उ०—१ नो थारै घोड़ा चढणो चाहूं किणा दिन मारू सोनिया [illegible], मारणो हाथ, कुछ करणा मारूं घोड़ा री बागां उठाणो, [illegible], देखें निंदवबै न जाय यहीं।—बी.स.टी.

उ०—२ पंडरो चढ़ई मिल-परणु, रोअई गोमछ राग। [illegible] निंदवियो जग नाग।—बा.दा.

उ०—३ [illegible] कह्यो, बडा गिरदार, नर निंदवीजै नहीं। नरां रो [illegible] ज्यूं करै नै कहै जो चाहुरी भली चितवा [illegible]। [illegible] वीरा मोटा वीर सो तो नारायणजी नै दाजै।

—वीरमदे सोनगरा री वात

२ देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)

निंदवणहार, हारो (हारी), निंदवणियो—वि०।

निंदवाड़णो, निंदवाड़बो, निंदवाणो, निंदवाबो, निंदवावणो, निंदवावबो—प्रे०रू०।

निंदवियोड़ो, निंदवियोड़ो, निंदव्योड़ो—भू०का०कृ०।

निंदवीजणो, निंदवीजबो—कर्म वा०।

निंदवियोड़ो—१ देखो 'निंदियोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निंदवियोड़ी)

निंदाम—देखो 'निंदाण' (रू.भे.)।

निंदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऐसी बात कहना जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के दुर्गुण, कुरूपता, दोष आदि प्रकट हों, दोष-कथन, बुराई का वर्णन, अपवाद, कुत्सा, बदनाई, कुत्सा (डि.को.)

उ०—१ कारण घणूं किती, पर निंदा रो पोट। निंदा न्याय पण [illegible], कुशील मत पोट।—बां दा.

उ०—२ [illegible] बनाणो [illegible] है, ग्रोर चुगाई बात। [illegible] निंदा करै, जठै कदी मत जाव सात।—श्री हरिरामजी महाराज

उ०—३ दादू निंदक घर निंदा न्यारु करो, जो पर घरै चाहू। जिनकी मीत न पाइये, मीत न जाय न घर।—दादूवाणी

२ अपकीर्ति, कुख्याति, बदनामी।

उ०—दुरगा मोत नहि छिनै, मुयम निंदा नहिं मारे। मीतणु मरण जिहीन, मन्नो है मालो मारै।—ऊ.का.

३ देखो 'निंद्रा' (रू.भे.)

रू०भे०—नंदा, निंद, निंदरा, निंद्या, निंद्या, निंद्रा।

निंदाड़णो, निंदाड़बो—१ दोरक गुमाना।

२ देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)

निंदाड़ियोड़ो—देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निंदाड़ियोड़ी)

निंदाणो, निंदाबो—देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)

निंदायोड़ो—देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)

निंदाळ—१ देखो 'नींदाळ' (रू.भे.)

२ देखो 'निंद्राळु' (मह., रू.भे.)

३ देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)

निंदाळवो—१ देखो 'निंदाळु' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'निंद्राळु' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निंदाळवी)

निंदाळु-वि० [सं० निंदा+आलुच्] १ निंदा करने वाला, बुराई करने वाला।

२ देखो 'निंद्राळु' (रू.भे.)

रू०भे०—निंदराळुम, नींदाळ, नींदाळुम, नींदाळु, नींदाळु, नींदाळुन।

अल्पा०—निंदाळवो, निंदाळुवो, नींदाळो।

मह०—निंदाळ, नींदाळ।

निंदाळुवो—१ देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)

२ देखो 'निंद्राळु' (अल्प., रू.भे.)

उ०—तेरा रे वीरा भुख्याळवा, पणदेवां नै भात पगाव। तेरा रे वीरा तिसाळुवा, पणदेवां नै सरबत घोळ पिलाव, तेरा रे वीरा, निंदाळुवा, पणदेयां नै पिलंग बिछाय।—लो.गी.

(स्त्री० निंदाळुवी)

निंदावणो, निंदावबो—देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)

निंदावियोड़ो—देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निंदावियोड़ी)

निंदास्तुति-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्तुति जो निंदा के बहाने से की जाय, व्याजस्तुति।

निंदित-वि० [सं०] जिसे लोग बुरा कहते हों, बुरा, दूषित।

उ०—भो दा बिरियां भाग, नर थारी पै ही भगो। निंदित किम हुऔ नाक, कुछ कुळ-लगाणु मत करो।—रामनाथ कवियो

ंदिया—१ देखो 'निंदा' (रू.भे.)

२ देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

ंदियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बुरा कहा हुआ, बदनाम किया हुआ, निंदा किया हुआ. २ बुझा हुआ (दीपक). ३ निद्रा के वशीभूत हुवा हुआ, निद्रित हुवा हुआ, सोया हुआ ।

(स्त्री० निंदियोड़ी)

ंदीजणौ, निंदीजबौ—देखो 'नींदीजणौ, नींदीजबौ' (रू.भे.)

ंदुक—देखो 'निंदक' (रू.भे.)

उ०—आस्तिक विन इंदुक नास्तिक निंदुक, सास्तिक मत सोखंदा है। तज धरम त्रिदंडी अधिक अफंडी, पाखंडो पोखंदा है ।—ऊ.का.

निंदोड़णौ, निंदोड़बौ—देखो 'निंदोवणौ, निंदोवबौ' (रू.भे.)

निंदोड़ियोड़ौ—देखो 'निंदोवियोड़ौ' (रू.भे.)

निंदोणौ, निंदोबौ—देखो 'निंदोवणौ, निंदोवबौ' (रू.भे.)

निंदोयोड़ौ—देखो 'निंदोवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निंदोयोड़ी)

निंदोवणौ, निंदोवबौ–क्रि०स० [सं० नि+उंदन=न्युंदन] १ साफ करना. २ पानी में डालना. ३ चरखे पर कते हुए सूत की कोकड़ी को भिगोना ।

निंदोवणहार, हारौ (हारी), निंदोवणियौ—वि० ।

निंदोविओड़ौ, निंदोवियोड़ौ, निंदोव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निंदोवीजणौ, निंदोवीजबौ—कर्म वा० ।

निंदोड़णौ, निंदोड़बौ, निंदोणौ, निंदोबौ—रू०भे० ।

निंदोवियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ साफ किया हुआ. २ पानी में डाला हुआ ।

(स्त्री० निंदोवियोड़ी)

निंदय–वि० [सं० निंद्य] जो निंदा के योग्य हो, बुरा ।

निंद्या—१ देखो 'निंदा' (रू.भे.)

उ०—वेटा नै सीख दै, म्हारी छाती बाळै है। ज्यूं साधु साधु रौ आचार वतावै जद भेखधारी सुण नै कूड़ै । कहै म्हारी निंद्या करै ।—भि.द्र.

निंदावरत–सं०पु० [सं० निन्द्यावर्त] एक प्रकार का वृक्ष (अ.मा., डि.को.)

निंद्रा—१ देखो 'निंदा' (रू.भे.)

२ देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

उ०—भमर गुफा मझि रमै तजै भ्रम । जीतै निंद्रा त्रिकुटी संजम ।
—सू.प्र.

निंद्रालु—देखो 'निद्रालु' (रू.भे.)

निनांण—देखो 'निदांण' (रू.भे.)

उ०—१ जद गुलजी बोल्यौ—स्वांमीनाथ ! रुपिया दस लागा, कायक हळ रै भाड़ा रा, कांयक निनांण रा, कांयक बीज रा, सरव दस रुपिया लागा ।—भि.द्र.

उ०—२ जेठ वूजियां फोग, असाढां हळां हिडावै । भादू सांवण घास, निनांणां घणी कटावै ।—दसदेव

निंब–सं०पु० [सं०] नीम का पेड़ (डि.को.)

निंबादित्य–सं०पु० [सं०] श्री राधिकाजी के कङ्कण के अवतार माने जाने वाले निंबार्क सम्प्रदाय के आदि आचार्य जिनका दूसरा नाम 'अरुणि' भी था ।

निंबारक–सं०पु० [सं० निंबार्क] १ वैष्णव सम्प्रदाय जो निंबादित्य द्वारा प्रवर्तित माना जाता है ।

२ निंबादित्य ।

निंबु—देखो 'नींबू' (रू.भे.)

निंबोळी, निंबौळी–सं०स्त्री० [सं० निंब+फल रा.प्र ई] १ नीम का फल ।

उ०—निमझर जीरै भांत, निंबोळी दाखां जेड़ी । आंम उण्यारै रूंख, एकसा डाळा पेडी ।—दसदेव

२ स्त्रियों के कण्ठ का आभूषण विशेष ।

रू०भे०—निबोळी, निवोळी, निमोळी, निमौळी, नींबोळी, नीबोळी, नीमोळी ।

निंवायौ—देखो 'निवायौ' (रू.भे.)

उ०—नीर निंवायौ वारौ आयौ, थोरा पाळी बांधजै । घणी भोळावण कांई देऊं, हेलौ म्हारी सांमजै ।—चेतमांनखा

निंवार—देखो 'निवार' (रू.भे.)

उ०—साथीड़ां नै घलास्यां, जंवाईजी, पिलंग निंवार का कोई, जंवाईजी नै हिंगळू ढोलियौ लाड-जंवाइजी एक बर आवौ म्हारै घर पांवणा ।—लो.गी.

निंहंग, निंहग—देखो 'निहंग' (रू.भे.)

निंहसणौ, निंहसबौ—देखो 'निहसणौ, निहसबौ' (रू.भे.)

उ०—नर निंहसियौ विकोदर नांमी ।—चतरौ मोतीसर

निंहसणहार, हारौ (हारी), निंहसणियौ—वि० ।

निंहसिओड़ौ, निंहसियोड़ौ, निंहस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निंहसीजणौ, निंहसीजबौ—कर्म वा० ।

निंहसियोड़ौ—देखो 'निहसियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निंहसियोड़ी)

नि–अव्य० [सं०] १ उपसर्ग ।

२ एक संयोजक शब्द, और ।

उ०—तेहि दयूत रमोनि हारयु राज रिधि भंडार । एकेके वस्त्रि वनि चाल्या ते बेहू नर नि नारि ।—नळाख्यांन

[सं० नु] ३ सम्भावना, सन्देह और अनिश्चितता सूचक अव्यय ।

उ०—ते जोतां तह्यो सा दूखिया ? जु नि, धीरय आंणु । करम तणि वसि सघळा प्रांणी, एहवूं अंतरि जांणु ।—नळाख्यांन

४ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—ढोला रहिसि नि वारियउ, मिळिसि दई कइ लेखि । पूंगळ हुइस ज प्राहुणउ, दसराहा लग देखि ।—ढो.मा.

सं०पु०—१ नृत्य, नाच ।

२ निश्चय (एका.)

[illegible] —१ [illegible] ([illegible])
[illegible] —२ [illegible] ([illegible])
३ देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible] —देखो '[illegible]' ([illegible])
उ०—१ [illegible] [illegible] निच [illegible] ।
[illegible] [illegible] के [illegible] ।
—[illegible]
उ०—२ [illegible] । [illegible]
[illegible] ।—[illegible]

[illegible]—१ देखो '[illegible]' (रू.भे.)
उ०—[illegible] । निजरूप [illegible] ।
[illegible] । [illegible] ।
—पा.प्र.

२ देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible], [illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
उ०—[illegible], निउंद्रावदि [illegible] ।
[illegible], [illegible] ।—वेलि.

[illegible], निउंजबौ—देखो '[illegible], [illegible]' (रू.भे.) (उ.र.)
[illegible], हारौ (हारी), निउंजणियौ—वि० ।
[illegible], [illegible], निउंजोड़ौ—भू०का०कृ० ।
[illegible], [illegible]—कर्म वा० ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
(स्त्री० [illegible])

निउंबणौ, [illegible]—देखो 'निभंवणौ, निभंवबौ' (रू.भे.)
उ०—[illegible] । अरजुनि [illegible] ।
—पं.पं.च.

[illegible], हारौ (हारी), निउंबणियौ—वि० ।
[illegible], [illegible], निउंबोड़ौ—भू०का०कृ० ।
[illegible], [illegible]—कर्म वा० ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.)
(स्त्री० [illegible])

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.) (जैन)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.) (जैन)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू.भे.) (उ.र.)

[illegible]—सं०पु० [सं० [illegible]] १ [illegible] (ना.मा.)
२ देखो—'[illegible]' (रू.भे.)
उ०—[illegible] 'आरभा', [illegible] । [illegible]
[illegible] ।—बां.दा.

निकंद, निकंदण—सं०पु० [सं० नि+कंद] नाश, विनाश ।
उ०—[illegible], [illegible] । [illegible] [illegible] ।—र.ज.प्र.
वि०—नाश करने वाला । उ०—१ [illegible] हुआ [illegible], [illegible] । [illegible] होयो, [illegible] ।—र.रू.
उ०—२ [illegible] रो, [illegible] निकंदण रो । [illegible] 'निकंदन' [illegible] रो, [illegible] रो ।
—र.ज.प्र.

रू०भे०—निरकंदन, निरकदनि, निरकंद ।

निकंदणौ—देखो 'निकंदणौ' (रू.भे.)

निकंदणो—वि० [सं० निकंद] (स्त्री० निकंदणी) नाश करने वाला, संहार करने वाला, मारने वाला ।

निकंदणौ, निकंदबौ—क्रि०स० [सं० नि+कंद्] १ संहार करना, मारना
उ०—१ [illegible] निकंदिया, कोट भयंकर काळ । [illegible] बिछोहिया, [illegible] ।—नैणसी
उ०—२ [illegible] राकस निकंदण नूं नामी धार उपाया । १ पंवार, २ पड़िहार, ३ सोलंकी, ४ हाडी ।
—नैणसी

२ नाश करना, मिटाना । उ०—कांन [illegible], कुंडल धारण कीन्ह । झळहळ तारा झूमका, दुहुं पासा ससि दीन्ह । दुहुं पासा ससि दीन्ह, अंधार निकंदवा । तेजोमय रथ साम, [illegible] गया ।
—पा.प्र.

निकंदणहार, हारौ (हारी), निकंदणियौ—वि० ।
निकंदियोड़ौ, निकंदियोड़ौ, निकंदयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
निकंदीजणौ, निकंदीजबौ—कर्म वा० ।

निकंदन, निकदनि—देखो 'निकंदण' (रू.भे.)
उ०—१ [illegible] निकदन [illegible] ।—ह.र.
उ०—२ [illegible] निकंदनो, [illegible] । [illegible] संमारिय, [illegible] ।—नेमिनाथ फागु

निकंदनी—वि० स्त्री० [सं० नि+कंदनम्] नाश करने वाली, संहार करने वाली, मारने वाली । उ०—बलिस्ट [illegible] सुंभ [illegible] निकंदनी, नमामि [illegible] 'नमंद' नंदनी ।—मे.म.
सं०स्त्री०—देवी, शक्ति, दुर्गा ।
रू०भे०—निकंदणी ।

निकंदियोड़ौ—भू०का०कृ०—संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ, मिटाया हुआ ।
(स्त्री० निकंदियोड़ी)

निकंध—देखो 'निकंद' (रू.भे.)
उ०—'[illegible]' [illegible], [illegible] '[illegible]' [illegible] । [illegible]

जरमनी, कीधा 'पतै' निकंध ।—किसोरदांन बारहठ

निकख–सं०पु० [सं० निष्कख] हीरा (अ.मा.)

निकट–क्रि०वि० [सं०] नजदीक, पास, समीप (अ.मा.)

उ०—१ जोग-नींद बस भये निरंजन । गज्जे असुर पितामह गंजन । आकृति विकट निकट चलि आये । काढ़ि दसन विधि ग्रसन धिकाये । —मे.म.

उ०—२ पतित न्याय व्है पीतपट, दिपै निकट रिखदेव । नचै मुगत नटनार ज्यूं, स्री गंगा तट सेव ।—बां.दा.

उ०—३ इम गढ़ निकट विकट थट आया । छपन कोड़ि जांणै घण छाया ।—सू.प्र.

वि०—१ जो दूर न हो, समीप का, पास का ।

२ रिश्ते में जिससे खास अन्तर न हो ।

रू०भे०—नइडउ, नियड़उ, निकटी, निकट्ट, नीड़, नीड़ैं, नीड, नीडैं, नेरउ ।

अल्पा०—नइड़ो, नइडो, नईडो, नयड़ो, नयडो, नीड़ो, नीडो ।

निकटता–सं०स्त्री० [सं०] समीपता, सामीप्य ।

निकटवरती–वि० [सं० निकटवर्तिन्] नजदीक का, पास वाला, समीपस्थ ।

निकटासण–सं०स्त्री०—निर्लज्जता, नालायकी, शैतानी, बदमाशी ।

उ०—दुरभिख निकटासण किण नै न दीधो । नकटै नकटायण कृपणासय कीधो । मिळगा धूळि ज्यूं जेस्टास्रम जूना । साले सूळी ज्यूं स्रेस्टास्रम सूना ।—ऊ.का.

निकटि, निकट्ट—देखो 'निकट' (रू.भे.)

उ०—१ अनंत सूर निकटि नूर, जोति जोति मिळावै । जन हरिदास निकटि बास, दास व्है सो पावै ।—ह.पु.वा.

उ०—२ ज्यां निकट्ट भो नहीं, निपट संग्रांम निहट्ट ।—ग.रू.बं.

निकपट—देखो 'निस्कपट' (रू.भे.)

निकमाई–सं०स्त्री० [सं० निष्कर्म्म+रा.प्र.आई] वह समय जब कोई कार्य करने को न हो, निकम्मा होने का भाव ।

निकमाळो–सं०पु० [सं० निष्कर्म्म+आलुच् प्रत्य०] कार्य न होने का भाव, वह समय जब कोई कार्य करने को न हो ।

उ०—निकमाळै री रुतां, कमनीय किरवा काढ़ां । साळ तिवारां सफां मथ सांतीरां चाढ़ां । आळां ओबरडांह जुगत रो घरिया जोड़ां । आंकड़ हाळा गेड़, अवढ़ गुवाळां अकोड़ां ।—दसदेव

निकमू, निकमौ, निकम्मौ–वि० [सं० निष्कर्म्म] (स्त्री० निकमी, निकम्मी)

१ जो किसी काम में न आ सके, जो किसी काम का न हो, बुरा ।

उ०—१ ओखदि पिछांण खावो अमल, ओखदि है नह अकल रो । असल रो मजो क्यूं और है, निकमू आनंद नकल रो ।—ऊ.का.

२ व्यर्थ, फिजूल । उ०—१ नून चाहजै सो पद सो नहिं । पद निकमो है अधिक पद । पद इक द्वै वरियां सु कथित पद । हव सुण पतत प्रकरख हद ।—बां.दा.

उ०—२ जद ते ग्रहस्थ बोल्या, थे पूंजो जायने । निकमा खूंचणा काढ़ो । इसा मूरख ग्रहस्थ ।—भि.द्र.

३ जिससे कुछ करते-धरते न बने, जो कोई काम-धंधा न करे ।

उ०—बिलळा ग्रंथ बांचै रसिक न राचै, छब छाती छोलंदा है । निकमा नर नारी बारंबारी, बळिहारी बोलंदा है ।—ऊ.का.

४ जिसके पास कुछ कार्य करने को न हो, बेकार, बिना कार्य का ।

उ०—१ पूठै कछवाहा मसकरी करण लागिया—जे इण रैं भरोसैं इतरा दिन निकमा रह्या ।—अमरसिंह राठौड़ री वात

उ०—२ नांव तुम्हारो रामजी, लेतां लगे न दांम । मन निकमो बैठो रहै, करै और ही कांम ।—ह.पु.वा.

५ नीच, पतित । उ०—अजामेळ सा घोर अधम्मी । नारी गणिका भील निकम्मी ।—र.ज.प्र.

६ आवारागर्द, निकम्मा ।

रू०भे०—नकांम, निकांम, निकांमौ ।

अल्पा०—नकांमो, निकांमू ।

निकर–सं०पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड (ह.नां.)

उ०—१ की लोक निकर सुर नर किसूं, पत उर धांम पवीत रो । वाधियो ताप दूजां विचै, आज प्रताप 'अजीत' रो ।—रा.रू.

उ०—२ एही भुजे अरीत, तसलीम ज हींदू तुरक । माथै निकर मजीत, परसाद के 'प्रतापसी' ।—दुरसो आढ़ो

२ ढेर, राशि. ४ निधि ।

वि०—१ सम्पूर्ण, तमाम, समस्त । उ०—निरबीज करूं राकस निकर, मेटूं फिकर त्रिलोक मिण । धारूं बभीख लंका धणी, तो हूं दसरथ राव-तण ।—र.रू.

रू०भे०—निगर, नियरू ।

२ देखो 'नेकर' (रू.भे.)

निकरकट–वि० [सं० निकर+रा० कट] (स्त्री० निकरकटी) स्वार्थी, नीच, क्षुद्र ।

रू०भे०—निगरगंठ ।

निकरम—देखो 'निस्करम' (रू.भे.)

उ०—जीहा जप जगदीसवर, धर धीरज मन ध्यांन । करमबंध-निकरम-करण, भव-भंजण भगवांन ।—ह.र.

निकरमौ—देखो 'निस्करम' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निकरमी)

निकरि—देखो 'निकर' (रू.भे.)

उ०—सोभि जांन सिरदार रूप अणपार विराजै । रतन निकरि किरि रुचिर भोमि वैरागर भ्राजै ।—रा.रू.

निकरोसी—देखो 'निकासी' (रू.भे.)

निकरौ–वि० [देशज] १ निखालिस, साफ (गेहूं, घी आदि)

२ निकम्मा ।

निकळंक, निकळंकत, निकळंकि, निकळंकिय, निकळंकी, निकळंकीय–वि०

[सं० निष्कलङ्क] १ [illegible], [illegible], [illegible] ।

उ०—१ [illegible] 'केर' [illegible] ।—बां.दा.

उ०—२ [illegible] ।—[illegible]

२ जिस पर किसी प्रकार के कलंक का धब्बा न लगा हो । कलंक-रहित, निष्कलंक, बेदाग ।

उ०—१ [illegible] है जद थारै माता पिता [illegible] निकळंक है ।—पी.ग.ग्रो.

उ०—२ [illegible] ! तूं निकळंक नर, पावन [illegible] । [illegible] ।—मा.का.प्र.

उ०—३ [illegible], निकळंक [illegible] रहोगे । गुरु [illegible], नहीं [illegible] पोर पड़ोगे ।

—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—४ नह 'कुमार' [illegible] निकळंक, [illegible] दूण बार । [illegible] 'गजबंध' तणो आचार ।—बां.दा.

उ०—५ [illegible] तेज [illegible] दिन माह दुराला । नृप निकळंकी [illegible], माह जिम [illegible] ।—द.दा.

३ जिसको किसी प्रकार का पाप न लगा हो, पापरहित, निष्पाप ।

उ०—[illegible] 'मोकळ', पंट [illegible] भेटतां पाप । [illegible] निकळंक [illegible], देगौ [illegible] 'परताप' ।

—महाराणा प्रताप रो गीत

४ जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो, दोषरहित, निर्दोष ।

सं०पु०—भगवान विष्णु के मुख्य दस अवतारों में से एक । (अ.मा.)

उ०—१ [illegible] निकळंक का, भोम उतारण भार । [illegible] संसार मे, ए दस ही अवतार ।—[illegible]

उ०—२ नमो निकळंकिय नाथ नरेह, नमो कळि काळग नाम [illegible] । नमो अवतार अनंत अपार, नमो [illegible] नहि पार ।

—ह.र.

उ०—३ [illegible] हरि [illegible], सुरज संकट निवारण । निकळंकी [illegible], [illegible] ।—ह.पु.वा.

रू०भे०—नकळंक, निकळंक ।

निकळ, निकल-सं०स्त्री० [अं० निकल] साफ की जाने पर चांदी की तरह चमकने वाली एक धातु विशेष जो खानों में गंधक, कोयले, [illegible], [illegible] आदि के साथ मिलती है ।

निकळणौ, निकळबौ-क्रि०अ० [सं० निष्कासनम्] १ भीतर से बाहर आना, [illegible] होना, बाहर होना । उ०—१ [illegible] संग, [illegible] । निकळण रो [illegible] नहीं, [illegible] में [illegible] । [illegible], [illegible] । [illegible] निठ [illegible], [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] । [illegible] पानी सूं [illegible] । पाणी निकळण रो ठौर को नहीं ।—[illegible]

उ०—३ [illegible] नहीं मन मांहे [illegible] । [illegible] राम [illegible] निकळियो ।

—राम [illegible] री बात

मुहा०—१ निकळ जाणौ—चला जाना, मन के किसी उद्वेग के कारण घर से चला जाना, आगे बढ़ जाना, नष्ट हो जाना, न रह जाना, ले लिया जाना, खो जाना, भाग जाना, न पकड़ा जाना । कम हो जाना, घट जाना ।

२ गुजरना, मरना, प्राणान्त होना. ३ गमन करना, गुजरना, जाना । ज्यूं—राजाजी री सवारी बडी धूमधाम सूं निकळी । ज्यूं— [illegible] आवण वाळी मोटर रोज ई' सड़क सूं निकळै ।

४ ठहराया जाना, निश्चित होना ।

ज्यूं—नतीजो निकळणौ, रास्तो निकळणौ, [illegible] निकळणौ ।

५ किसी समस्या या प्रश्न का हल प्राप्त होना, उत्तर मिलना ।

ज्यूं—ओ सवाल टेढो है थांसूं नहीं निकळैला ।

६ आविष्कृत होना, ईजाद होना, नई बात का प्रकट होना ।

ज्यूं—[illegible] निकळणौ ।

७ लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु का अलग होना, ओतप्रोत या व्याप्त वस्तु का अलग होना ।

ज्यूं—पत्ती सूं रस निकळणौ, तिलां सूं तेल निकळणौ ।

८ किसी श्रेणी आदि के आगे बढ़ना, उत्तीर्ण होना ।

ज्यूं—इण साल छठी सूं मोतीसिंह निकळ ग्यो । अब वो सातवीं में बैठ ग्यो ।

९ एक ओर से दूसरी ओर चला जाना, पार होना, अतिक्रमण करना ।

ज्यूं—रेल रै डब्बै री बारी में सूं इतरी मोटी गांठ [illegible] निकळै ।

१० उत्पन्न होना, पैदा होना, प्रादुर्भूत होना ।

ज्यूं—इण जाग इतरा कीड़ा [illegible] निकळ ग्या ।

११ उदय होना । ज्यूं—सूरज निकळणौ, चांद निकळणौ ।

१२ स्पष्ट होना, प्रकट होना, खुलना ।

ज्यूं— ओ [illegible] पोथा सूं कैड़ो [illegible] निकळियो है ।

१३ दिखाई पड़ना, उपस्थित होना ।

ज्यूं—अरे ! अठै थे अचानक कठा सूं निकळ ग्या हो भाई ।

१४ किसी वस्तु का ढेर या राशि से पृथक होना, मेल से अलग होना ।

ज्यूं—बाजरी में सूं इतरा [illegible] निकळिया है ।

१५ किसी तरफ बढ़ा हुआ होना ।

ज्यूं—घर रो एक खूणो उत्तर कांनी निकळियोड़ो है ।

ज्यूं—[illegible] रो सिरो डण बारू [illegible] निकळ ग्यो है, पाछो टोरो ।

१६ सर्व साधारण के सामने आना, प्रस्तुत होना, प्रकाशित होना ।

ज्यूं—गीता प्रेस सूं कैई किताबां निकळी है ।

१७ विकना, खपना ।
ज्यूं—म्हारै वैठां वैठां मालण रा ओडा मांसूं पांच सेर काकड़ियां निकळगी ।
१८ पाया जाना, प्राप्त होना, मिलना ।
ज्यूं—कीकर ही कर नै चोरी रो माल निकळ जावतो तो इतरो नुकसांण नहीं होवतो ।
ज्यूं—राज कनूं रुपया निकळवायां विना आ किताब नीं छप सकै ।
१६ हिसाब होने पर किसी निश्चित रकम का उत्तरदायित्व पड़ना ।
ज्यूं—थांरै में म्हारा इतरा रुपया निकळै है सो परा दो ।
ज्यूं—म्हां में थांरो जो भी हिसाब निकळतो व्है वो लो ।
२० बीतना, व्यतीत होना, गुजरना ।
ज्यूं—यूं करतां करतां सैंग दिन निकळ ग्यो अर कांम वळै सरयो नीं ।
२१ न रह जाना, जाता रहना, हट जाना, दूर होना, मिट जाना ।
ज्यूं—दारू री एक छाक लेतां ई सरदी निकळगी ।
ज्यूं—आंबा हळदी नै मैंदा लकड़ी रो लेप करतां ई पीड़ निकळगी ।
२२ शुरु होना, आरम्भ होना छिड़ना ।
ज्यूं—चरचा निकळणी, वात निकळणी ।
२३ दूर तक लकीर के रूप में जाने वाली वस्तु का विधान होना, जारी होना । ज्यूं—हत्थो निकळ ग्यो है ।
ज्यूं—अठै सड़क निकळैला ।
ज्यूं—इण खेतां नै पांणी देवण सारूं आ नहर निकळ रही है । राजस्थांन नहर निकळण सूं रेगिस्तांन हरो व्है जावसी ।
२४ सिद्ध होना, प्राप्त होना, सरना ।
ज्यूं—मतळब निकळणो, कांम निकळणो ।
२५ जारी होना, प्रचलित होना ।
ज्यूं—रीत नीकळणी, चाल निकळणी, कांनून निकळणो ।
२६ (शरीर) पर उत्पन्न होना ।
ज्यूं—माता निकळणी, खील निकळणी ।
२७ मुक्त होना, वंधा न रहना, जुड़ा या फँसा न रहना, छूटना, वंधनमुक्त होना ।
ज्यूं—बोरियो निकळणो, वेगार सूं निकळणो, जेळ सूं निकळणो ।
२८ साबित होना, सिद्ध होना, प्रमाणित होना ।
ज्यूं—वो नोकर तो चोर निकळियो ।
ज्यूं—थांरी वात कदैई साची निकळी ई ही ?
२६ किनारे हो जाना, अलग हो जाना, लगाव न रहना ।
ज्यूं—थैं ठीक करी ! म्हनै मुकदमै में फंसाय नै खुद निकळ ग्या ।
३० चलता बनना, बच जाना ।
ज्यूं—फलांणो आधी वात कै नै इज निकळ ग्यो ।
३१ चोरी होना ।
ज्यूं—माल रा डब्बा मूं खांड री दो बोरियां रात रा निकळगी ।
३२ अपनी कही हुई बात से टलना, मुकरना, नटना ।
ज्यूं—थे उण टैम तो हूंकारो भर दियो अर हमैं निकळो क्यूं हो ।
३३ मर्यादा का उलंघन होना । ज्यूं—रांड पति नै छोड निकळगी ।,
ज्यूं—छोरो मां-बाप नै छोड नै निकळ ग्यो ।
३४ कम होना, घटना ।
ज्यूं—आज पचास छोरा इण स्कूल मूं निकळ ग्या ।
३५ नोकरी से बरखास्त होना, काम से हटना ।
ज्यूं—रिस्वत ली जणै निकळिया हो ।
३६ निर्वाह होना, गुजर होना ।
ज्यूं—आं री कांम तो नीठ निकळै है नै थे खरचो करावता जावो हो ।
३७ उद्धार होना, निस्तार होना, बचाव होना, संकट से छूटना ।
ज्यूं—म्हैं तो हेमाळा री ठंड सूं नीठ निकळ'र जोधपुर आया हां ।
निकळणहार, हारो (हारी), निकळणियो —वि० ।
निकळवाड़णो, निकळवाड़बो, निकळवाणो, निकळवाबो, निकळवावणो, निकळवावबो, निकळाड़णो, निकळाड़बो, निकळाणो, निकळाबो, निकळावणो, निकळावबो—प्रे०रू० ।
निकळिओड़ो, निकळियोड़ो, निकळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निकळीजणो, निकळीजबो—भाव वा० ।
निकळणो, निकळबो, नीकळणो नीकळबो ।—रू०भे० ।

निकळवाणो, निकळवाबो— देखो 'निकळाणो, निकळाबो' (रू.भे.)

निकळाड़णो, निकळाड़बो—देखो 'निकळाणो, निकळाबो' (रू.भे.)
निकळाड़णहार, हारो (हारी), निकळाड़णियो—वि० ।
निकळाड़िओड़ो, निकळाड़ियोड़ो, निकळाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निकळाड़ीजणो, निकळाड़ीजबो—कर्म वा० ।
निकळणो, निकळबो—अक० रू० ।

निकळवायोड़ो—देखो 'निकळायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निकळवायोड़ी)

निकळाड़ियोड़ो—देखो 'निकळायोड़ो'—भू०का०कृ० ।
(स्त्री० निकळाड़ियोड़ी)

निकळाणो, निकळाबो–क्रि०स० ['निकळणो' क्रिया का प्रे०रू०]
निकालने का काम दूसरे से करवाना, किसी दूसरे को निकालने की प्रेरणा देना, निकालने के लिए प्रेरित करना ।
निकळाणहार, हारो (हारी), निकळाणियो—वि० ।
निकळायोड़ो—भू०का०कृ० ।
निकळाईजणो, निकळाईजबो—कर्म वा० ।
निकळणो, निकळबो—अक० रू० ।
निकळवाड़णो, निकळवाड़बो, निकळवाणो, निकळवाबो, निकळवावणो निकळवावबो, निकळाड़णो, निकळाड़बो, निकळावणो, निकळावबो —रू०भे०

निकळायोड़ो—भू०का०कृ०—निकालने के लिए प्रेरित किया हुआ, निकालने का काम दूसरे से कराया हुआ ।
(स्त्री० निकळायोड़ी)

निकळणहारी, निकळणहारौ—देखो 'निकळणी, निकळणौ' (रू.भे.)
निकळणहार, हारौ (हारी), निकळणियौ—वि०।
निकळियोड़ौ, निकळियोड़ौ, निकळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निकळीजणौ, निकळीजबौ—कर्म वा०।
निकळणी, निकळबौ—रूप भे०।

निकळियोड़ौ—देखो 'निकळ्योड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निकळियोड़ी)

निकळिंक—देखो 'निकळंक' (रू.भे.)
उ०—निकळिंक अंग रतो ही रहौ, रता नहीं गुन ज्यों दरै। ज्यौं नहीं ... गगन, जिर्ण नहीं रघुवर मरै।—र.ज.प्र.

निकळ्योड़ौ-भू०का०कृ०—१ भीतर से बाहर आया हुआ, निर्गत हुआ हुआ, बाहर हुआ हुआ।
२ गुजरा हुआ, गया हुआ।
३ गमन किया हुआ, गुजरा हुआ, गया हुआ।
४ हल पाया गया हुआ, निश्चित हुआ हुआ।
५ किसी समस्या या प्रश्न का हल प्राप्त हुआ हुआ, उत्तर मिला हुआ।
६ आविष्कृत हुआ हुआ, ईजाद हुआ हुआ, (नई बात का) प्रकट हुआ हुआ।
७ (सटी हुई, मिली हुई, पैवस्त, ओत-प्रोत या व्याप्त वस्तु का) अलग हुआ हुआ।
८ किसी पंक्ति आदि के आगे बढ़ा हुआ, उत्तीर्ण हुआ हुआ।
९ एक ओर से दूसरी ओर चला गया हुआ, पार हुआ हुआ, अतिक्रमण किया हुआ।
१०—उत्पन्न हुआ हुआ, पैदा हुआ हुआ, प्रादुर्भूत हुआ हुआ।
११ उदय हुआ हुआ।
१२ स्पष्ट हुआ हुआ, प्रकट हुआ हुआ, खुला हुआ।
१३ दिखाई पड़ा हुआ, उपस्थित हुआ हुआ।
१४ किसी वस्तु का ढेर या राशि से पृथक हुआ हुआ, मेल से अलग हुआ हुआ।
१५ किसी एक ओर बढ़ा हुआ, किसी एक तरफ निकला हुआ।
१६ सर्व साधारण के सामने आया हुआ, प्रस्तुत हुआ हुआ, प्रकाशित हुआ हुआ।
१७ बिका हुआ, खपा हुआ।
१८ पाया गया हुआ, प्राप्त हुआ हुआ, मिला हुआ।
१९ हिसाब होने पर किसी निश्चित धन की राशि का उत्तरदायित्व ठहरा हुआ।
२० व्यतीत हुआ हुआ, बीता हुआ, गुजरा हुआ।
२१ न रहा हुआ, गया हुआ, छूटा हुआ, दूर हुआ हुआ, मिटा हुआ।
२२ शुरू हुआ हुआ, आरम्भ हुआ हुआ, छिड़ा हुआ।
२३ दूर तक शरीर के अन्दर गई वस्तु का विधान हुआ हुआ, जारी हुआ हुआ।
२४ सिद्ध हुआ हुआ, साबित हुआ हुआ, खरा हुआ हुआ।
२५ जारी हुआ हुआ, प्रचलित हुआ हुआ।
२६ (शरीर पर) उत्पन्न हुआ हुआ।
२७ छुटा, फंसा या बंधा न रहा हुआ, मुक्त हुआ हुआ।
२८ साबित हुआ हुआ, सिद्ध हुआ हुआ, प्रमाणित हुआ हुआ।
२९ किनारे हुआ हुआ, अलग हुआ हुआ, लगाव न रहा हुआ।
३० बचता बना हुआ, बच गया हुआ।
३१ चोरी हुआ हुआ।
३२ कही हुई बात से टला हुआ, मुकरा हुआ।
३३ मर्यादा का उल्लंघन किया हुआ।
३४ कम हुआ हुआ, घटा हुआ।
३५ नौकरी से बरखास्त हुआ हुआ, काम से हटा हुआ।
३६ निर्वाह हुआ हुआ, गुजर हुआ हुआ।
३७ उद्धार हुआ हुआ, निस्तार हुआ हुआ, बचाव हुआ हुआ, संकट से छूटा हुआ।
(स्त्री० निकळियोड़ी)

निकळ्ळणी, निकळ्ळबौ—देखो 'निकळणी, निकळबौ' (रू.भे.)
उ०—बेटो गोकळदास रो, यों बोल्यो हठमल्ल। जो अवसाणे ना मरै, सो जमराण निकल्ल।—रा.रू.

निकळ्ळियोड़ौ—देखो 'निकळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निकळ्ळियोड़ी)

निकस-सं०पु० [सं० निकषः] १ हथियारों पर सान चढ़ाने का पत्थर। (डि.को.)
२ कसौटी पर चढ़ाने का काम।
३ कसौटी।
रू०भे०—निकष।

निकसण-सं०पु० [सं० निकषण] १ रगड़ने या घिसने का काम।
२ सान पर चढ़ाने का काम।
३ कसौटी पर चढ़ाने का काम।

निकसणी, निकसबौ—देखो 'निकळणी, निकळबौ' (रू.भे.)
उ०—१ दादू हम कायर कहया कर रहे, सूर निराळा होइ। निकस खड़ा मैदान में, ता सम और न कोइ।—दादूबाणी
उ०—२ पंथी, एक संदेसड़ौ, धण ढोलइ पैहचाइ। निकसी येणी सापणी, स्यातन बरसन आइ।—ढो.मा.
उ०—३ हूद रे जीव, निकज्जन तूं, निकसूं जात न मोहि। प्रिय बिछुड़न निकस्यउ नहीं, रावत लजायण मोहि।—ढो.मा.
उ०—४ संग गये हम मोहन नंदन में, बहु काळ रहे तिन बगन में। हित हानि हुई हद हीरन की, निकसी बहु भांत कथीरन की।
—ऊ.का.
उ०—५ चंदन नेड़ा घर सूं नीसरयो रे। जिम रण माहि निकसे

सूरवीर रे। वाजित्र वाजे सबद सुवावणा रे। कायर इण वेळा होवै दलगीर रे।—जयवांणी

उ०—६ तीर भंवारां बीच भ्रकुटी मांहां कर पार नीसरियो सो सांस री साथ हो प्रांण निकस गया।

—सूरे खींवे कांधळोत री वात

निकसणहार, हारौ (हारी), निकसणियौ—वि०।

निकसवाड़णौ, निकसवाड़बौ, निकसवाणौ, निकसवाबौ, निकसवावणौ, निकसवाववौ, निकसाड़णौ, निकसाड़बौ, निकसाणौ, निकसाबौ, निकसावणौ, निकसाववौ—प्रे०रू०।

निकसिग्रोड़ो, निकसियोड़ो, निकस्योड़ो—भू०का०कृ०।

निकसीजणौ, निकसीजबौ—भाव वा०।

निकसा-सं०स्त्री० [सं० निकषा] रावण, कुम्भकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण की माता एक राक्षसी जो सुमालि की कन्या और विश्रवा की पत्नी थी।

निकसासुत-सं०पु० [सं० निकषा+सुत] राक्षस, निसाचर (डि.को.)

निकसियोड़ो—देखो 'निकळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निकसियोड़ी)

निकां-क्रि०वि० [फा. नेक ?] भली प्रकार से, अच्छी तरह से, उचित रूप से।

निकांम-वि० [सं० निष्काम] १ जिसमें किसी प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा न हो।

२ जो बिना किसी प्रकार की कामना या इच्छा के किया जाय।

३ निकृष्ट, बुरा।

उ०—बिनिंदिनीय वांम ग्राम नांम तैं नटचो नहीं, करचो निकांम कांम हा हरांम तैं हटचो नहीं। धिकार है हजार बार सार तार में धरचो, अनूप रूप अच्छ तैं प्रतच्छ कूप में परचो।—ऊ.का.

४ नीच, दुष्ट।

उ०—कै तूं माया-बस हुवो, कै तूं हुवो निकांम। दीनबंधु को विरद तुम, कहां गमायो रांम।—गजउद्धार

५ व्यर्थ, बेकार, फिजूल।

उ०—१ साठ सहस सुत सगर रा, नहचै मुवा निकांम। तै धन ग्रीध जटाय तूं, रिण रह्यो छळ रांम।—र.ज.प्र.

उ०—२ कहणी जाय निकांम, आछोड़ी आंणी उगत। दांमां-लोभी दांम, रंजै न वातां राजिया।—किरपारांम

उ०—३ जे नयणां नंहि रांम निहारे, हां जो, स्वांमी वे हिज नयण निकांम हो।—मी.रां.

उ०—४ रांम विनां जीणो जग मांहै हां हे! म्हांनै लागै तो घणो ही निकांम।—मी.रां.

६ देखो 'निकम्मो' (रू.भे.)

रू०भे०—नकांम, निकांमी, निरकांम, निसकांम, निस्कांम, निहकांम।

अल्पा०—निकांमो।

निकांमी-वि० [सं० निष्कामिन्] १ जिसके हृदय में किसी प्रकार की कामना या आसक्ति न हो (मनुष्य विशेष)

२ देखो 'निकम्मो' (रू.भे.)

३ देखो 'निकांम' (रू.भे.)

उ०—अज भेक उजागर नर खर नागर, गुण सागर गूंजंदा है। नाभा क्रित नांमी कथा निकांमी, भ्रमगांमी भूंजंदा है।—ऊ.का.

रू०भे०—निरकांमी, निसकांमी, निस्कांमी, निहकांमी।

निकांमु-१ देखो 'निकम्मो' (रू.भे.)

उ०—दव जिम दीठइं करुण ए करणइ ए हियुं निकांमु। मरूउ वरूउ दमनकि मन किहिं नहीं या विसांमु।—नेमिनाथ फागु

२ देखो 'निकांम' (रू.भे.)

निकांमो—१ देखो 'निकम्मो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'निकांम' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निकांमी)

निकारी-ग्रोरी-सं०स्त्री० [देश०] राजा-महाराजाओं का वस्त्रागार।

उ०—उदैपुर आबदारखांनो पांणेड़ो कहावै। कपड़ां री कोठार निकारी ओरी कहावै। दवाखांना ओखद री ओरी कहावै। तंबोळखांना री ओरी बीड़ा बणै। सिलहखांना री ओरी ससतर रहै।

—बां.दा. ख्यात

निका-सं०स्त्री० [अ० निकाह] १ मुसलमानी ढंग से किया हुआ विवाह, निकाह।

२ इस्लाम धर्म में विवाह करने की रीति का नाम।

उ०—अकबर री मा मक्का वगैरै मकां-सरीफ ज्यांरी ज्यारत करण गयी। पातसाह मिरजा सरफुद्दीन नुं साथै मेलियो। एक पीर विलायत में जिणरी ज्यारत सुहागवती करै, विधवा न करै। ज्यारत करण वास्तै विधवा अन्य पुरख सूं अवध करि निका पढ़ लै। उण पीर री ज्यारत करण नूं अकबर री मां मिरजा सरफुद्दीन साथ निका पढ़ी। दिली अकबर री मां पाछी आई। जद आ वात सुणी अकबर फुरमायो—आगै तो सरफुद्दीन हमारा चाकर रहा, अब हमारा बावा है। आ वात सरफुद्दीन किणी कै पास सुण लीवी। जठै हुतो जठां सूं वीठळदास जैमलोत नूं साथ ले भागो सो मेड़तै आयो।—बां.दा. ख्यात

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, पढ़णी, पढ़ाणी।

रू०भे०—नका, निकाह, नीकाह।

निकाइय—देखो 'निकाचित' (रू.भे.) (जैन)

निकाई-सं०स्त्री० [फा० नेक+रा०प्र०आई] १ भलाई, अच्छापन।

उ०—निकाई छाई तें प्रकट प्रभुताई सिख नखा। समस्टी व्यस्टी ते सजन दिव द्रस्टी रिखि सखा।—ऊ.का.

२ सुंदरता, सौंदर्य, खूबसूरती।

निकाचित, निकाचित करम, निकाचिय-सं०पु० [सं० निकाचित, निकाचित कर्म] जैन शास्त्रानुसार वे कर्म जिनका फल भोगना ही पड़ता है

उ०—१ नि निकाचित करमनउं प्रमांण। जीवनां चतुरविध करम हुइं। एक स्पष्ट करम। बीजउं बद्ध करम। त्रीजउं निधत्त करम। चउथउं निकाचित।—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—२ अनइ जिम नीलो छोहि नउं मोति विणी हुइ अनइ मोति नी छोहि मूकी कूटिइं वज्र एकपणउं हुई तिम निकाचित करम। जीव नइं करम एक हुवां। जूजूयां न थाइं। जां जीवइ जीव तां ते करम भोगवइ। गाढ़ अनते उपसमे फोथे न जाइं। संपुरण करम भोगवीइ ते निकाचित करम।—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—३ 'गुण विजय' कहइ सेत्रुंज तणी, आखडी मोटी मरम। लाग पल्योपम संचिया, टळइ निकाचित करम।—गुणविजय

रू०भे०—निकाइय, निकायण।

निकाज-वि० [सं० नि+कार्य] निकम्मा, बेकाम, बेकार।

उ०—निरमोही निरलज्ज सुण, काहे हुग्रो निकाज। माधव विरियां माहरी, कहां गमाई लाज।—गजउद्धार

निकाय-सं०पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड. २ घर, आवास. ३ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—सुकाय सीत भीत में निसीथ धूजती सही, निकाय हाय धाय में उपाय सूझती नहीं। निदाघ में निदाघ देह बाग आग में नहीं, नरानुराग त्याग ह्वं तड़ाग भाग में नहीं।—ऊ.का.

निकायण—देखो 'निकाचित' (रू.भे.)

निकार-सं०पु० [सं०] १ हार, पराभव (डि.को.) २ तिरस्कार, अनादर. ३ अपकार. ४ अपमान, मानहानि।

रू०भे०—नकार।

निकारो-सं०पु० [सं० नि+कार्य] (स्त्री० निकारी) १ वह जो किसी काम या उपयोग का न हो, व्यर्थ का (मनुष्य). २ स्वार्थी, मतलबी. ३ निकम्मा, बेकार।

रू०भे०—नकारो।

निकाळ-सं०पु० [सं० निष्कासन] १ निकलने की क्रिया या भाव। २ निकलने का अवसर, मौका या समय।

ज्यूं—मिळण नै कीकर जाऊं? घर माऊं तो निकाळ ही नी होवै।

३ निकालने के लिए खुला स्थान या छेद, वह स्थान जहां से कुछ निकले।

ज्यूं—इण खेत रै पांणी रो निकाळ कठै है। म्हे गांव रै निकाळ मायं ऊभा हा। इण सीसी रै दो निकाळ है।

४ लकीर के रूप में दूर तक जाने वाली या फैलने वाली वस्तु का आरम्भ स्थान, मूल स्थान, उद्‌गम।

ज्यूं—इण नदी रो निकाळ कठा सूं है।

५ वंश का मूल. ६ आमदनी का सूत्र, लाभ या आय का रास्ता, प्राप्ति का ढंग. ७ निकालने का काम, निकालने की क्रिया या भाव. ८ रक्षा का उपाय, बचाव का रास्ता, छुटकारे की तदबीर, संकट से बचने की युक्ति, कठिनाई से निकलने की तरकीब।

ज्यूं—फंस तो ग्या हां, अबै निकाळ सोचो।

९ मार्ग, रास्ता. १० कुश्ती में प्रतिपक्षी की घात से बचने की युक्ति. प्रतिपक्षी द्वारा प्रयुक्त पेंच की काट, तोड़. ११ कुश्ती का एक पेंच।

रू०भे०—नकाळ, नकास, निकास, नीकाळ, नैकाळ।

अल्पा०—नकाळो, नकासो, निकाळो, निकासो, नैकाळो।

निकाळणौ, निकाळबौ-क्रि०स० [सं० निष्कासनम्] १ भीतर से बाहर करना, निर्गत करना।

ज्यूं—ठोरियोड़ी मेक निकाळणी, बगस सूं गावो निकाळणौ, कोठी सूं पांनो निकाळणो. २ गमन कराना, गुजराना, ले जाना।

ज्यूं—राजाजी री सवारी निकाळण रो इन्तजांम इण सड़क माथै जोरां सूं ह्वै रह्यो है. ३ निश्चित करना, ठहराना।

ज्यूं—अठै एक सड़क निकाळणी है। दूजां रा दोस निकाळणा साव सोरा है पण घर रा दोस लोगां नै निगै नीं आवै।

४ किसी समस्या या प्रश्न का हल प्राप्त करना, उत्तर प्राप्त करना।

ज्यूं—बीजगणित रा सवाल तो म्हूं मिनटां में निकाळ सकूं हूं।

५ नई चीज को प्रकट करना, आविष्कृत करना, ईजाद करना।

ज्यूं—आजकल लोग चांद माथै पूगण रा साधन निकाळ रह्या है।

६ लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु को अलग करना, ओत-प्रोत या व्याप्त चीज को पृथक करना।

ज्यूं—नारंगी सूं रस निकाळणो, तिलां सूं तेल निकाळणो।

७ किसी श्रेणी आदि के आगे बढ़ाना, उत्तीर्ण करना।

ज्यूं—इण साल म्हनै तो भगवांन ईज नमीं सूं निकाळ'र दसमीं में बैठांणियो।

८ एक ओर से दूसरी ओर ले जाना, अतिक्रमण कराना, पार करना।

ज्यूं—दरवाजो नीं खुल सकै तो बारी सूं निकाळ दो।

९ उत्पन्न करना, पैदा करना, प्रादुर्भूत करना, उपस्थित करना।

ज्यूं—अठै बाजरी बिखेर नै कितरी कीड़ियां निकाळ दी है।

१० स्पष्ट करना, प्रकट करना, खोलना।

ज्यूं—ओ जवांन तो हमार धोती री पांण काढ नै ऊजळी-पट्ट निकाळ दै ला।

११ उपस्थित करना, दिखाना।

ज्यूं०—इण अपराधी नै थे इतरा अरसा रै बाद कठा सूं निकाळियो।

१२ किसी वस्तु को ढेर या राशि से पृथक करना, मेल से अलग करना।

ज्यूं—धांन सूं ओवरण निकाळ नै कबूतरां चुगै उठै उछाळ देणा चाहीजै।

१३ किसी तरफ को बढ़ा हुआ करना।

ज्यूं—घर री उत्तर कांनली खुणी थोड़ी आगै निकाळी तो फूटरी दीखै।

१४ सर्व साधारण के सामने लाना, प्रस्तुत करना, प्रकाशित करना ।

ज्यूं—आजकल लोग अनोखी-अनोखी किताबां निकाळ रह्या है ।

१५ बेचना, खपाना ।

ज्यूं—पांच मोटरां कबाड़खांना मूं लेय नैं ठीक की अर चोखा दामां में पाछी निकाळ दी ।

१६ प्राप्त करना, पाना, बरामद करना ।

ज्यूं—नवो थांणेदार बौ'त हुसियार है ! चोरी रो माल तुरत निकाळ दै ।

१७ रकम जिम्मे ठहराना, देना, निश्चित करना ।

ज्यूं—सेठां हिसाब सावळ करो । इतरा रुपिया कीकर निकाळिया ?

१८ व्यतीत करना, गुजारना, बिताना ।

ज्यूं—अरे भाई ! थैं तो सारो दिन निकाळ दियो अर कांम कीं करियो कोयनी ।

१९ न रहने देना, दूर करना, हटाना, मिटाना ।

ज्यूं—बिस्की री प्यालो पाय नैं थैं म्हारे डील री सरदी निकाळ दी ।

ज्यूं—छोरी घणो अकड़तो हो सो एक ही झापट में सारी अकड़ निकाळ दी ।

ज्यूं—मैंदा लकड़ी नैं आंवा हळदी रो लेप कर नैं म्हे तो म्हारै गोडै री पीड़ निकाळ दी ।

२० शुरू करना, आरम्भ करना, छेड़ना ।

ज्यूं—चरचा निकाळणी, बात निकाळणी ।

२१ दूर तक लकीर के रूप में जाने वाली वस्तु का विधान करना, जारी करना ।

ज्यूं—कॉलेज बणाय नैं राज हरथो निकाळ दियो है ।

ज्यूं—आ नहर सरकार खेतां नैं पांणी देवण सारूं निकाळी है ।

ज्यूं—सरकार सड़कां निकाळ नैं गांवां नैं नगरां सूं जोड़ दिया है ।

२२ फलीभूत करना, सिद्ध करना, प्राप्त करना ।

ज्यूं—वो आदमी आपरो कांम निकाळण में वडो हुसियार है ।

२३ जारी करना, प्रचलित करना ।

ज्यूं—रीत निकाळणी, चाल निकाळणी, कांनून निकाळणो ।

२४ शरीर पर उत्पन्न करना ।

ज्यूं—जणै तो ना देतां-देतां आंबा खाया, हमैं ए आंवा थारै डील माथै इतरी खीलां निकाळ दी है जिकी सोरै-सास सावळ नी हुवै ।

ज्यूं—इण ऊनाळै तो सैंग डील माथै इळायां निकाळ दी है ।

२५ मुक्त करना, छोड़ना । ज्यूं—बंधन सूं निकाळणो ।

ज्यूं—अरे भाई ! ओ कांई कांम दियो है । अबै तो म्हारै गळै सूं फंदो निकाळ ।

२६ साबित करना, सिद्ध करना, प्रमाणित करना ।

ज्यूं—म्हे इण बात रो सूवो-दूवो निकाळ नैं छोडूं ला ।

२७ लगाव न रखना, किनारे करना, अलग करना ।

ज्यूं—थूं वडो नारद आदमी है । दोनां नैं भेळा करया, पछै एक फंसाय दियो नैं एक नैं निकाळ दियो ।

२८ चलता करना, भगाना, दूर करना ।

ज्यूं—मुनीमजी रुपिया मांगण आया पण बुत्ता देय नैं निकाळ दिया । छोरो चाय रा पइसा मांगण आयो पर आंखियां काढ़ नैं निकाळ दियो ।

२९ चोरी करना ।

ज्यूं—गुंडां रात रा पांच बोरी गुळ निकाळ लियो ।

३० मर्यादा का उलंघन करना ।

ज्यूं—लुगाई नैं निकाळ नैं ठीक नहीं कियो ।

३१ प्रकट करना, सबके सामने लाना, देख में करना ।

ज्यूं—अबार क्यूं निकाळो हो, छोरा देखसी तो रोवण लाग जासी ।

३२ कम करना, घटाना ।

ज्यूं—पचास मूं पैंताळीस तो निकाळ दियां हो अबै लारै रह्यो ई कांई है ।

३३ (किसी व्यक्ति को) काम से हटाना, बरखास्त करना, नौकरी से हटाना ।

ज्यूं—मुंसी नैं रिस्वत खावण रै कारण सरकार निकाळ दियो ।

३४ दूर करना, पास न रखना, हटाना ।

ज्यूं—टाला बूढ़ा हुवै ग्या । अबै आनैं नीं राखां, निकाळ दां ला ।

ज्यूं—औ सांड किण कांम रो ? आगो निकाळो ।

३५ गुजर करना, निर्वाह करना, चलाना ।

ज्यूं—ऐ तो किणई तरह सूं आपरो कांम निकाळै है नैं थे आनैं काया क्यूं करो हो ।

३६ उद्धार करना, निस्तार करना, बचाव करना, संकट से बचाना, कठिनाई से छुटकारा करना ।

ज्यूं—रोगियां नैं इण ठंड सूं पैं'ली निकाळो, पछै बच्चां नैं अर औरतां नैं निकाळो तिण पछै आंपांरी बारी आवैला ।

३७ वस्तु लेना, प्राप्त करना ।

ज्यूं—कालै बैंक सूं पांच सो रिपिया निकाळिया पण आज कनै एक पयो भी नी है ।

निकाळणहार, हारो (हारी), निकाळणियो—वि० ।

निकळवाड़णो, निकळवाड़बो, निकळवाणो, निकळवाबो, निकळवावणो, निकळवावबो, निकळाड़णो, निकळाड़बो, निकळाणो, निकळाबो, निकळावणो, निकळावबो—प्रे०रू० ।

निकाळिओड़ो, निकाळियोड़ो, निकाळयोड़ो—भू०का०कृ० ।

निकाळीजणो, निकाळीजबो—कर्म वा० ।

निकळणो, निकळबो—अक० रू० ।

निकासणो, निकासबो—रू०भे० ।

निकाळियोड़ो—भू०का०कृ०—१ भीतर से बाहर किया हुआ, निर्गत किया हुआ ।

२ गमन किया हुआ, गुजरा हुआ, गया हुआ।
३ ठहराया हुआ, निश्चित किया हुआ।
४ किसी समस्या या प्रश्न का हल प्राप्त किया हुआ, उत्तर किया हुआ।
५ नई चीज को प्रकट किया हुआ, आविष्कृत किया हुआ, ईजाद किया हुआ।
६ लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु को अलग किया हुआ, ओत-प्रोत या व्याप्त वस्तु को पृथक किया हुआ।
७ किसी श्रेणी आदि के आगे बढ़ाया हुआ, उत्तीर्ण किया हुआ।
८ एक ओर से दूसरी ओर ले जाया हुआ, अतिक्रमण कराया हुआ, पार किया हुआ।
९ उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ, प्रादुर्भूत किया हुआ, उपस्थित किया हुआ।
१० स्पष्ट किया हुआ, प्रकट किया हुआ, खोला हुआ।
११ उपस्थित किया हुआ, दिखाया हुआ।
१२ किसी वस्तु को ढेर या राशि से पृथक किया हुआ, मेल से अलग किया,हुआ।
१३ किसी ओर से बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ।
१४ सर्व साधारण के सामने लाया हुआ, प्रस्तुत किया हुआ, प्रकाशित किया हुआ।
१५ बेचा हुआ, खपाया हुआ।
१६ प्राप्त किया हुआ, बरामद किया हुआ, पाया हुआ।
१७ रकम जिम्मे ठहराया हुआ, देना निश्चित किया हुआ।
१८ व्यतीत किया हुआ, गुजारा हुआ, बिताया हुआ।
१९ न रहने दिया हुआ, दूर किया हुआ, हटाया हुआ, मिटाया हुआ।
२० शुरू किया हुआ, आरम्भ किया हुआ, छोड़ा हुआ।
२१ दूर तक लकीर के रूप में जाने वाली वस्तु का विधान हुवा हुआ, जारी किया हुआ।
२२ फलीभूत किया हुआ, सिद्ध किया हुआ, प्राप्त किया हुआ।
२३ जारी किया हुआ, प्रचलित किया हुआ।
२४ (शरीर) पर उत्पन्न किया हुआ।
२५ मुक्त किया हुआ, छोड़ा हुआ।
२६ साबित किया हुआ, सिद्ध किया हुआ, प्रमाणित किया हुआ।
२७ लगाव न रखा हुआ, किनारे किया हुआ, अलग किया हुआ।
२८ चलता किया हुआ, दूर किया हुआ, भगाया हुआ।
२९ चोरी किया हुआ।
३० मर्यादा का उलंघन किया हुआ।
३१ प्रकट किया हुआ, सबके सामने लाया हुआ, दृष्टिगत किया हुआ।
३२ कम किया हुआ, घटाया हुआ।
३३ (किसी व्यक्ति को) काम से हटाया हुआ, बरखास्त किया हुआ, नौकरी से हटाया हुआ।
३४ दूर किया हुआ, पास न रखा हुआ, हटाया हुआ।
३५ गुजर किया हुआ, निर्वाह किया हुआ, चलाया हुआ।
३६ उद्धार किया हुआ, निस्तार किया हुआ, बचाव किया हुआ, संकट से बचाया हुआ, कठिनाई से छुटकारा किया हुआ।
३७ वस्तु लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ।
(स्त्री० निकाळियोड़ी)

निकाळो-सं०पु० [सं० निष्कासनम्] १ आयुर्वेद के अनुसार एक प्रकार का मयादी बुखार, आंत्रिक ज्वर।
२ दूर करने का भाव, निकाले जाने का दण्ड, निष्कासन, बहिष्कार।
क्रि०प्र०—देणौ, मिळणौ, होणौ।
यौ०—देस-निकाळो।
रू०भे०—नकाळो, नेकाळो।
३ देखो 'निकाळ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—सो गांव रै निकाळै एक बडी खेजड़ी छै, जठै हींड बांधी छै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

निकावळो-वि० [देशज] (स्त्री० निकावळी) १ निर्दोष.
२ निकालने वाला।

निकास-वि० [सं० निकाश: या निकास] समान, तुल्य (डि.को.)
स०पु०—१ सामीप्य, पड़ोस, सादृश्य (डि.को.)
२ देखो 'निकाळ' (रू.भे.)
उ०—हलणौ करौ तो भलां करौ, म्हे सहर रै निकास खड़ा रहां, नातर थे बाहरी जांणौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

निकासणौ, निकासबौ—देखो 'निकाळणौ, निकाळबौ' (रू.भे.)
उ०—पंडित हुय सत्यासत्य प्रमांण प्रकासे। निज बळ से नित्या नित्य निदांन निकासे।—ऊ.का.
निकासणहार, हारौ (हारी), निकासणियौ—वि०।
निकसवाड़णौ, निकसवाड़बौ, निकसवाणौ, निकसवाबौ, निकसवावणौ, निकसवावबौ, निकसाड़णौ, निकसाड़बौ, निकसाणौ, निकसाबौ, निकसावणौ, निकसावबौ—प्रे०रू०।
निकासिओड़ो, निकासियोड़ो, निकास्योड़ो—भू०का०कृ०।
निकासीजणौ निकासीजबौ—कर्म वा०।
निकसणौ, निकसबौ—अक०रू०।

निकासियोड़ो—देखो 'निकाळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निकासियोड़ी)

निकासी-सं०स्त्री० [सं० निष्कासनम्] १ किसी स्थान से बाहर जाने का काम, निकलने की क्रिया या भाव, रवानगी, प्रस्थान।
ज्यूं—जळूस री निकासी।
२ वर का अपने घर से विवाह हेतु प्रस्थान करने की क्रिया का नाम।
ज्यूं—जांन री निकासी।

रू०भे०—निकरोसी ।

निकाह—देखो 'निका' (रू.भे.)

निकियावरौ–सं०पु० [सं० निः+क्रिया+वर+रा.प्र.श्रौ] वह कुल या पुरुष जिसके घर में यश का कोई बड़ा कार्य नहीं हुआ हो ।

उ०—सगा घणा सामठा, कोई मनीजै केई रीसै । पइसा री चौपार, दोहू कानी नह दीसै । त्याग री फिकर किण नूं तठै, पेट्या तुलै न पाव रा। मोहकमा कमंध मोटा मिनख, दोनूं ही घर निकियावरा ।—अरजुणजी बारहठ

विलो०—किरियावरौ ।

निकुंचणौ, निकुंचबौ–क्रि०अ० [सं० निकुंचनम्] सकुचित होना ।

उ०—एकि अरजनि करघा तिनि कुंची । आघि ऊडी हूया ति निकुंची ।—विराटपर्व

निकुंचणहार, हारौ (हारी), निकुंचणियौ—वि० ।

निकुंचिश्रोड़ौ, निकुंचियोड़ौ, निकुंच्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निकुंचीजणौ, निकुंचीजबौ—भाव वा० ।

निकुंचियोड़ौ–भू०का०कृ०—संकुचित हुवा हुआ ।

(स्त्री० निकुंचियोड़ी)

निकुंज–सं०पु० [सं०] १ वह मण्डप जो लताओं से ढका हुआ वा आच्छादित हो ।

२ वह स्थान जो घने वृक्षों और घनी लताओं से घिरा हुआ हो, लता-गृह ।

३ उपवन, वाटिका ।

निकुंप–सं०पु०—एक प्राचीन राजवंश या इस राजवंश का व्यक्ति ।

रू०भे०—निकूंप ।

निकुंभ–सं०पु० [सं०] १ राजा हर्यश्व का पुत्र ।

उ०—धुंधमार तणै उपजै द्रढ़ासु । सुत जयद्रढ़ासु हरिजस प्रकास । जे सुत निकुंभ कीरति उजास । सुत निकुंभ तणै नृप संहितासु ।
—सू.प्र.

२ हनुमान द्वारा मारा जाने वाला रावण का एक मंत्री जो कुंभकर्ण का पुत्र था ।

३ कृष्ण के मित्र ब्रह्मदत्त की कन्याओं का हरण करने वाला शत-पुर का एक असुर राजा जो कृष्ण द्वारा मारा गया था ।

४ कौरवों के सेनापतियों में एक (महाभारत)

५ प्रह्लाद के एक पुत्र का नाम ।

६ एक क्षत्रिय वंश (व.स.)

उ०—चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायंगणि गया । जयवंता यादव वीहल्ल, नर निकुंभ गिरूया गोहिल्ल ।—कां.दे.प्र.

७ चौहान राजवंश की एक शाखा. ८ दंती वृक्ष. ९ भगवान शंकर का एक गण ।

उ०—विढता कूंभ निकुंभ वाकारइ, नव नाडिया जोयइ रे नरिंद । ऊंचउ ग्रहे आछटइ अंबर, ग्रहइ वळै आवतउ गिरिंद ।
—महादेव पारवती री वेलि

१० स्वामी कार्तिकेय के एक गण का नाम ।

रू०भे०—निकूंभ ।

निकुंभी–सं०स्त्री० [सं०] कुम्भकर्ण की कन्या ।

निकुटणौ, निकुटबौ–क्रि०स० [सं० नि+कृतम्] खोद कर बनाना, (पत्थर को) गढ़ना ।

उ०—मन पंगु थियौ सहु सेन मूरछित, तह नह रही संपेखतै । किरि नीपायौ तदि निकुटी ए, मठ पूतळी पाखांण में ।—वेलि.

निकुटणहार, हारौ (हारी), निकुटणियौ—वि० ।

निकुटिश्रोड़ौ, निकुटियोड़ौ, निकुट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निकुटीजणौ, निकुटीजबौ—कर्म वा० ।

निकुटियोड़ौ–भू०का०कृ०—खोद कर बनाया हुआ, गढ़ा हुआ ।

(स्त्री० निकुटियोड़ी)

निकुटी–सं०पु० [सं० निष्कुट्टी] पत्थर तोड़ने वाला, पत्थर पर खुदाई का काम करने वाला ।

निकुल–सं०पु०—शराब के साथ चर्वण के रूप में खाया जाने वाला पदार्थ, गजक ।

उ०—विगती भटी रौ तेज पूंज आसव अरोगीजै छै । घणा जड़ाव नै चीणी रा प्याला फिर नै रह्या छै । इण भांति री दारू पांणिगौ मंडियौ छै । इणि भांति रौ मांस इणि भांति रौ सुगहेतौ इणी भांति भरतां सुळां रौ निकुळ कीजै छै ।—रा सा. सं.

वि० (स्त्री० निकुळी) बिना कुल, वंशहीन, कुल या वंशरहित ।

उ०—अद्रिस्टि अक्षिर अरूप, अथाह निरमोहसन्यारम् । निरामूळ निरधार, निकुळ निरपख निजसारम् ।—ह.पु.वा.

अल्पा०—निकुळौ ।

निकुळी–सं०पु०—१ एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

उ०—नेतु निगुंडि निरंजनी, नाळकेर नारिंग । नागबला निरविखि नखी, निकुळी निरमळ संग ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'नकुळ' (रू.भे.)

उ०—ऐसा घोड़े राव चाकरां रै हाथां में काढ़णा । सू मोर ज्यूं तंडव करै छै । निकुळी ज्यूं अंग भांजै छै, ऋग ज्यूं उलहसै छै ।
—रा.सा.सं.

निकुळौ—देखो निकुळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जात न न्यात न माय बाप, निकुळा निराकारा ।
—केसोदास गाडण

(स्त्री० निकुळी)

निकूंप–वि० [सं०] १ विना किसी कमी के, ठोस ।

उ०—मयाळ मंडपाळ मेघमाळ मोहनी नहीं । हिलंब से प्रलंब थंभ बिंब सोहनी नहीं । सरोख सात गोख तैं झरोख झांकनी नहीं । निकूंप चोक चांदनी निमोक नांखनी नहीं ।—ऊ.का.

२ परिपूर्ण, पूर्ण ।

उ०—मिळिया जांणे सिहर वीजळी, मांहे कळा चढंती रूप । निकूंप

जिण हीं विध जोवइ (तिण ही विध) दीसइ, रूप वणव आगर बहु रूप ।—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'निकुंद' (रू.भे.)

निकूळ—देखो 'नकुळ' (रू.भे.)

उ०—जुजट्ठळ भीम करै पग जाप, वंदै पग रेण अरज्जुण आप। देखे पग छांह रहै सहदेव, सदा ही नकूळ करै पग सेव।—ह.र.

निकेत-सं०पु० [सं०] १ मकान, घर (डि.को.)

२ जगह, स्थान. ३ खजाना, भण्डार ।

उ०—एकोतरै अठारसै सांवण दूवियक स्वेत। 'वांकै' ग्रंथ बणा-वियो, कायर कुजस निकेत।—बां.दा.

रू०भे०—निकेय ।

निकेतन-सं०पु० [सं०] वास-स्थान, घर, मकान (डि.को.)

निकेद-सं०पु०—युद्ध। उ०—विढंतै 'जैत' वडै घर वेद, निकंदै मुगळ तेणि निकेद। खळक्कै स्रोणि पल्लर खाळ, वधै घण लोण हूओ वरसाळ।—रा.ज.रासौ

निकेय—देखो 'निकेत' (रू.भे.) (जैन)

निकेवळ, निकेवळो-वि० [सं० निष्कैवल्य] (स्त्री० निकेवळी)

१ नितान्त, बिल्कुल ।

उ०—१ धरम्म करम्म परम्म सुधांम, रहित सवद्द निकेवळ रांम। अमाप-कळा विंदु-नाद उदास, निरंजण भूत-सरव्व निवास।—ह.र.

उ०—२ समापत भोग न रोग न सोग, जपंत निकेवळ केवळ जोग। प्रत्यागम भो लिव भक्ति प्रदीप, समागम सो सिव सवित समीप।
—ऊ.का.

२ ऋण-मुक्त ।

३ बन्धन से छुटकारा पाया हुआ, स्वतंत्र ।

४ रोग-मुक्त ।

सं०पु०—सात वर्णों का छंद विशेष। उ०—पूरा छयासी रूप पणि, सहि अखर गणि सात। नांम निकेवळ कहिनवा, वरण छंद विख्यात।
—ल.पि.

रू०भे०—नकेवळ, नकेवळो ।

निको-वि० [देशज] श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया। उ०—एक अखिल तूं एक, किसन तु अखिलि कहीजै नीर खीर जद निहीं दांन दीजै नह लीजै। जडा-धार सुर-जेठ निको कोई दीह निका निसी निका भोमि न निहंग देस विदेस निका दिसि।—पी.ग्रं.

निक्स—देखो 'निकस' (रू.भे.)

उ०—राजै मुखं सवाधि रूप, जोति चंद्र हूं जहीं। रहे सदा अखंड रूप, निक्स सांमता मही। सिंदूर बिंदु भाळ सोभ, ओपियो आणंद रै। जिको उरम्म-माळ जांणि, चाढि दीघ चंद रै।—सू.प्र.

निक्खेव—देखो 'निक्षेप' (रू.भे.)

निक्र-सं०पु० [सं० निकर] समूह। उ०—अनंग बांण लाजि जाइ, ईस नैण अंजणं। मनो तजै कुरंग मीन, जोय रूप रंजणं। जड़ाव मैं तिलक जोति, एम भाळ अंक रै। निजं वरंध 'जोति' निक्र, ओपियो मयंक रै।—सू.प्र.

निक्रत-वि० [सं० निकृत] १ कपट करने वाला, कपटी (डि.को.)

२ धूर्त, छली. ३ नीच. ४ अधम, पतित. ५ तुच्छ।

निक्रस्ट-वि० [सं० निकृष्ट] बुरा, अधम, नीच, तुच्छ।

उ०—आगे तो क्यूं ही करम किया तीं कर निक्रस्ट जूंण पाई। इवकी होणहार छै ?—दाढ़ाळा सूर री वात

निक्रस्टता-सं०स्त्री० [सं० निकृष्टता] बुराई, अधमता, नीचता, मंदता।

निक्षत्री-वि० [सं० नि+क्षत्रिय] १ क्षत्रियहीन. २ क्षत्रियत्वहीन।

उ०—धुर तें सील फरसधर धारयो, विसय विकार विहाई रे। क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, वार ईकीस बणाई।—ऊ.का.

रू०भे०—नछत्री, निछत्री ।

निक्षेप-सं०पु० [सं०] १ छोड़ने की क्रिया का भाव, त्याग ।

२ फेंकने या डालने की क्रिया या भाव ।

३ प्रतिपाद्य वस्तु का स्वरूप समझाने के लिए नाम, स्थापना आदि भेदों से स्थापना करने की क्रिया या भाव (जैन)

उ०—जद खंति विजय बोल्या, तुमारै सूं निक्षेपां नीं चरचा करवी छै। स्वामी जी बोल्या—निक्षेपा किता ? ते बोल्यो-निक्षेप चार-नाम १, स्थापना २, द्रव्य ३, भाव ४।—भि.द्र.

रू०भे०—निक्खेव, निखेव ।

निखंग-सं०पु० [सं० निषंग[तरकश, तूणीर, तूण, भाथा।
(अ.मा., डि.को.)

उ०—१ धन धन हरि चाप निखंग धरी, धर सील सधर क्रत ऊंच करी। करतार करां जग भोक जपै, जय क्रती जिकै खळ पाप खपै।
—र.ज.प्र.

उ०—२ पीत दुकूळ कटि लपटांणो, बीर अंग निखंग बंधांणो। अंस अजेव धनू उरमांणो, रूप यसै नृप रांम।—र.ज.प्र.

२ तलवार, खड्ग. ३ मुंह से फूंक कर बजाया जाने वाला एक प्राचीन बाजा ।

रू०भे०—निसंग ।

निखंगी-सं०पु० [सं० निषंगी] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
(महाभारत)

वि० [सं० निषंगिन्] १ बाण चलाने वाला, धनुर्धारी.

२ खड्ग धारण करने वाला ।

रू०भे०—निसंगी ।

निखंगी-वि० [सं० निषंगिन्] १ निषंग धारण करने वाला।

२ शक्तिशाली, महान् ।

उ०—तुरगां कव्वंदा बावराड़ भड़ां रांम तासा। निखंगां रीझणा धाहा जांनकी नरेस।—र.ज.प्र.

निखंड-वि० [सं० निः+खंड] अखण्ड, पूर्ण ।

निखकुटी-सं०स्त्री० [सं० निष्कटि, निष्कुटी] इलायची (अ.मा.)

निखटू-वि० [देशज] १ इधर-उधर मारा मारा फिरने वाला, कहीं न टिकने वाला. २ जिससे कोई काम-काज न हो सके, जो जम कर कोई काम-धंधा न कर सके, निकम्मा, आळसी।

निखणौ, निखबौ—देखो 'निरखणौ, निरखबौ' (रू.भे.)

निखणहार, हारौ (हारी), निखणियौ—वि०।

निखिओड़ौ, निखियोड़ौ, निख्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निखीजणौ, निखीजबौ—कर्म वा०।

निखत-वि० [?] १ जबरदस्त। उ०—इम अरज मारुत करी सियवर, पडत झांझर सिखर ऊपर। मिळीजै चढ़ आप लिखमण क्रपा सिर कीजै। विघ चढ़े सुण रिखमुकर परवत, पग ग्रहे सुग्रीव कपिपत। नील नळ फिर निखत वांनर, भाल दुति भीजै।—र.रू.

२ देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

निखतैत—देखो 'नखतैत' (रू.भे.)

उ०—इम राज करै अजनंद अयोध्या नेत-बंधी निखतैत। जंगांजीत तपोबळ जालम ओप बड़ै अखड़ैत।—र.रू.

निखत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—१ सभा भूप दसरथ सुत, रूप इसौ रघुराज। सहु निखत्रां मधि ससी, ससि मधि सूरिज रांम।—रांमरासौ

उ०—२ आभूसण अंग इसा, जिगमगै नग निखत्र जिसा। सिख-नख लगै सिणगार सझी, लज लोक तजे विधि सत्ति लजी।

—वचनिका

निखद-वि० [सं० निषध] १ बुरा, नीच, अधम, निकृष्ट।

उ०—भली बुरी री भीत, न आंणै मन में निखद। निलजी सदा नचीत, रहै सयांणा राजिया।—किरपारांम

२ देखो 'निसाद' (रू.भे.)

रू०भे०—निखध।

निखदणौ, निखदबौ—देखो 'निसेधणौ, निसेधबौ' (रू.भे.)

उ०—चोर हिंसक नै कुसीलिया, यांरै तांई ही साधां दियौ उपदेस। यांनै सावद्य रा निखध किया, एहवौ छै हो जिन दया धरम रेस।

—भि.द्र.

निखद-सं०पु० [देशज] तीर, बाण (डिं.नां.मा.)

निखध, निखधि-सं०पु० [सं० निषध] १ सूर्यवंशी राजा निषध जो भगवान राम के पुत्र कुस का पौत्र था।

उ०—रांम पाट कुस भूप विराजे। सुज कुस पाटि अतिथ दिन साजे। संभ्रम अतिथ निखधि नृप सोहत। राजा निखध पाटि नभ राजत।

—सू.प्र.

२ देखो 'निखद' (रू.भे.)

निखरणौ, निखरबौ-क्रि०अ० [सं० निक्षरणम्] १ स्वच्छ होना, निर्मल होना। उ०—भाखरिया हरिया हुआ, पोखर भरिया पास। तरवरिया प्रफुलत थया, नीर निखरिया खास।—अज्ञात

२ कांतियुक्त होना, आभायुक्त होना।

३ अच्छी स्थिति में आना, रंगत पर आना।

निखरणहार, हारौ (हारी), निखरणियौ—वि०।

निखरिओड़ौ, निखरियोड़ौ, निखरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निखरीजणौ, निखरीजबौ—भाव वा०।

निखरणौ, निखरबौ—रू०भे०।

निखरब, निखरव-वि० [सं० निखर्व] दस हजार करोड़, दस खरब।

सं०पु०—दस हजार करोड़ की संख्या, दस खरब की संख्या।

निखरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ निर्मल हुवा हुआ, स्वच्छ।

२ आभायुक्त हुवा हुआ, कांतियुक्त।

(स्त्री० निखरियोड़ी)

निखरौ-वि० [देशज] (स्त्री० निखरी) खराब, बुरा। उ०—१ अमल ने कीजै होडै अधिका, दरा करीजै घर में विधिका। गरथ परायौ तु मत गरहे, निखरै पाडोसै पिण न रहे।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ जग निखरौ छै रूठो जावै। न सखरौ पख तूज तणा।

—मालो सांदू

विलो०—सखरौ।

निखल-सं०पु०—१ गरुड़ (ना.डि.को.)

२ देखो 'निखिल' (रू.भे.)

उ०—करड़ा बरमा काबुली, उर बरड़ा अहंकार। वार न लागी नमावतां, त्यां हंदी तरवार। त्यां हंदो तरवार पगां पतसाह रै, लंदन घराई लाय, निखल नर नाह रै। स्री महरांणी साह निपट सनमांनियौ, उरस लगौ उतमंग वीर अहवांनियौ।

—किसोरदांन बारहठ

निखाख—देखो 'निसाद' (रू.भे.)

उ०—वाजंत्रूं का भेद कहि दिखाय सो कैसे, खडज रखब गंधार मधम पंचम धईवंत निखाख सप्त सुरां के अलाप।—सू.प्र.

निखात-सं०पु० [सं० खन् व. का.] खजाना, निधि। उ०—नमो ऽनंत नित्य अन्नत निखात।—ह.र.

निखाद—१ देखो 'निसाद' (रू.भे.)

उ०—खडग रिखभ गंधार मद्धि पंचहम निखाद।—ग.रू.बं.

२ लूट खसोट करने वाला। उ०—केमरां भड़ा तन दवा सूं काढ़िया, झड़ा रण गाडिया क्रोध झाले। चंचळां धकै खागां झपट चाढ़िया, बोढ़िया निखादां 'मेर' वाळै।—रावत हमीरसिंह चूंडावत रौ गीत

निखार-सं०पु०—१ निर्मलपन, स्वच्छता. २ कांति, दीप्ति, आभा।

निखारणौ, निखारबौ-क्रि०स०—१ निर्मल करना, साफ करना

उ०—दूध चरू में था सू घात खांड निखारी, गळणी में घाती नीचै चरू राख दियौ। राजा भोज अर खापरै चोर री वात

२ कांतियुक्त करना, आभायुक्त करना।

निखारणहार, हारौ (हारी), निखारणियौ—वि०।

निखारिओड़ौ, निखारियोड़ौ, निखारयोड़ौ—भू०का०कृ०

निखारीजणो, निखारीजबो—कर्म वा०

निखारियोड़ो-भू०का०कृ०—निर्मल किया हुआ, साफ किया हुआ, कांतियुक्त किया हुआ, आभायुक्त किया हुआ।

(स्त्री० निखारियोड़ी)

निखालस, निखालिस-वि० [रा.नि+अ.खालिस] १ जिसमें कोई दूसरी चीज न मिली हो, विशुद्ध, शुद्ध, स्वच्छ।

२ जिस पर किसी प्रकार का दुहरा शासन न हो, जो पूर्ण स्वतंत्र हो, जिस पर किसी एक ही व्यक्ति का शासन हो।

उ०—पछै कल्याणदास घोड़ा हिज साथ सूं आयो, तरै 'रतन' आप हाथ सूं बरछी री दे कल्याणदास नूं मारियो, नै सैणो लीयो, बाकी रा नास नै सीरोही रा देस में गया, सैणो निखालिस हुवो, नै आगै नवघण, विजो वडा आखाड़सिंघ रजपूत हुवा छै।

—नैणसी

निखिल-वि० [सं०] सम्पूर्ण, पूर्ण। उ०—१ निरालंब निरलेप, अनंत ईसर अविनासी, थावर जंगम थूळ, सुख्म जग निखिल निवासी।

—ह.र.

निखूंती-वि० [सं.नि+क्षुत.प्रा०नि+खुंती] निमग्न।

—नळदवदंती रास

निखेत, निखेद-वि० [सं० निषेध] दुष्ट, नीच, पाजी, पतित।

उ०—१ कांई बताऊं भाई! रांड वडी निखेत है। इयं नै लाख वार पालदी कै तूं पाड़ोसण्यां रै घर मत जाया कर। (वरस गांठ)

उ०—२ बिन मतळब बिन भेद, कोई पटवया रांम का। खोटी करै निखेद, रांमत करता राजिया।—किरपारांम

रू०भे०—निखेध।

निखेध-वि [देसज] १ मूर्ख (अ.मा.)

२ देखो—'निखेद' (रू.भे.)

३ देखो—'निसेध' (रू.भे.)

उ०—आस्तो नास्तो मन कर होई, स्वारथ अरु परमारथ दोई। विधि निखेध का करता दोई, चेतन निसप्रिय निरमोई।

—श्री सुखरांमजी महाराज

निखेधणो, निखेधबो—देखो 'निसेधणो, निसेधबो' (रू.भे.)

उ०—१ रोयां में बखांण बाचता आचार री गाथा सुण नै मोतीरांम बोहरो बोल्यो; भीखणजी बांदरो बूढो हुवो है तो हि गुलांच खेलणी छोडै नहीं। ज्यूं थ बूढा थया तो ही बीजां नैं निखेधणा छोडा नहीं।—भि.द्र.

निखोटो-वि० [सं० नि+खोट] (स्त्री० निखोटी) १ जिसमें किसी प्रकार का ऐब या खोट न हो.

उ०—सैंग अवध वळ फेर निखोटा, सोळ भर पद सच्चरां सिरै। बणज कार गोण वसुधारा, फूलता ज्यूं घण घाट फिरै।—क.कु.बो.

२ खालिस, साफ।

निगड़, निगड-सं०पु० [सं० निगड] १ हाथी के पैर बांधने की लोहे की जंजीर, बेड़ी (डि.को.)।

२ एक प्रकार का देव वृक्ष (अ.मा.)

३ कैद, कारागार, बन्धन। उ०—उण समै असुर दळ अपण आय, घण मर्च वीर जुध रुक घाय। 'सेखा' नै पकड़ै महासूर, पुंगळ सूं धरियावरपूर। ज्यां दीध निगड मुलतान जाय, जंजीर तोक सांकळ जड़ाय।—रांमदांन लाळस

निगडित-वि० [सं०] बन्धन में डाला हुआ, बद्ध, कैद किया हुआ (डि.को)

निगद-सं०पु० [सं० निर्गद] चन्द्र, चन्द्रमा (अ.मा.)

वि०—स्वास्थ्यप्रद। उ०—तताऊ घेवर, पायल घेवर, तळया गुंद, कुंडळाकृत जळेबी, मीठऊ मगद, आछुमाल निगद प्रीसयूं सीरं जिमतां मन हुइ आ धीरु।—व.स.

निगम-सं०पु० [सं०] १ ईश्वर, परमात्मा (नां.मा.)

उ०—निराकार निरलेप निगम निरदोस निरंजन, दीरघ दीनदयाळ देव दुख दाळद भंजन।—ऊ.का.

२ वेद (डि.को.)। उ०—१ सो भज 'किसन' रांम सीतावर, संत तार अद निगम सखै।—र.ज.प्र.

उ०—२ दुस्टी असभ्र वेद छिन्न बहु दस्भ्र अज्ज ए। हा हा! विसभ्र हूय प्रसन्न धारि तभ्र कज्ज ए। मच्छा हयग्रीवूं भक्ति सीवूं निगम कीवूं ठांम ए, ऐसा गोविंदु कृपासिंधु दीनबंधु रांम ए जी दीनबंधू रांम ए।—करुणा सागर

३ शहर, नगर (अ.मा.) ४ मार्ग, रास्ता (ह.नां.)

उ०—परणीजै मधुपुरी, 'अभो' व्रंदावन आयो। पेखि धांम सुख परम, अहां तीरथ मन भायो। परखि निगम द्रुम पुंज, हेक सुख कुंज निहारै। हेक पुलिण हित करै, हेक जळ जमण विहारै।—रा.रू.

५ समूह, झुण्ड। उ०—फूलत कंवळ कमोदणी, रवि ससि को डर मांहि। आस पास मधुकर निगम, रहै तहां मंडराइ।—गज उद्धार

६ शास्त्र। उ०—दादू निरंतर पिव पाइया, जहं निगम न पहुंचे वेद। तेज स्वरूपी पिव बसे, कोई विरळा जांणैं भेद।

—दादूवांणी

वि० [सं०] जहां न पहुंच सके, अगम्य।

उ०—निगम भोम गुरुदेव की, ज्यां हंस पठाया हो। हरिरांम उण देस कूं, अनुभव ले गाया हो।—श्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—निगम्म, निगेम, निगम, नीगम।

निगमणो, निगमबो—देखो 'नीगमणो, नीगमबो' (रू.भे.)

उ०—१ केहीज राव राखिया, भोम निगमी भ्रांमतां। केहीज राव राखिया, भये खुरसांण पुळतां। केहीज लोम राखिया, तणा पातसाह टहकाळै। केहीज रंक राखिया, महारोरवे दुकाळै।—नैणसी

उ०—२ येह नि मरण जरा नि व्याधि, एके सुख नहीं तां साधि। करम तणे वसियि जे भमि, ते मानव मरख निगमि।—नळाख्यान

निगमणहार, हारौ (हारी), निगमणियौ।—वि०

निगमिश्रोड़ौ, निगमियोड़ौ, निगम्योड़ौ।—भू०का०कृ०

निगमीजणौ, निगमीजबौ—भाव वा०

निगमनिवासी-सं०पु० [सं०] वेदों में रहने वाला, विष्णु, नारायण।

निगमागम-सं०पु०यौ० [सं०] वेद शास्त्र, निगम।

उ०—१ महातम ध्येय रती नहि गम्य। गनी निगमागम गेय अगम्य। —ऊ.का.

उ०—२ आदि पख अस्टमी, मास नभ सुभ गुण मंडित। सपतिपुरी मणि मुकट, खेत्र मधुपुरी अखंडित। जगत प्रसिध जैसाह, रचे बीमाह सुरंगम। स्रुति संम्रति व्रत सार, ग्रंथ पूछे निगमागम।—रा०रू०

निगमियोड़ौ—देखो 'नीगमियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निगमियोड़ी)

निगमी-वि० [सं०नि+गम्य] जो पहुँच के बाहर हो, अगम्य।

उ०—कागा काय न काय, सूण सु कहै सुहावणा। निगमी मिळसी नाय, जो-जो हारी जेठवा।—जेठवा

रू०भे०—निगम्मी।

निगम्म—देखो 'निगम' (रू.भे.)

उ०—१ ब्रहम्मा रुद्र बिचार ब्रहम्म। न जांणै तोरा पार निगम्म। प्रमेसर तोरा पांय प्रळोय। कुरांण पुरांण न जांणै कोय।—ह०र०

उ०—२ नमो बचि व्यास निगम्म वखांण। नमो पह कीध अठार पुरांण। नमो पह मेटण पाप अपार। नमो बरताइय सतजुग वार। —ह०र०

निगम्मी—देखो 'निगमी' (रू.भे.)

निगर—सं०पु० [देशज] पौधा विशेष (रू.भे.)

उ०—ताळ साळ मालिक बकुल कुवजक खरजूरी। वोलसरी माधुरी निगर भर हरी सनूरी। कुमुद ढाक कल्हार वेण कचनार विराजै। सोन जाय पल्लव असोक सुर धोक सु साजै।—रा०रू०

निगरगंठ-वि० (स्त्री० निगरगंठी) १ जो किसी के काम न आवे।

२ देखो 'निकरकट' (रू.भे.)

निगरब, निगरभ-वि० [सं० नि+गर्व] अभिमानरहित, घमण्ड-रहित।

सं०पु० [सं० नि+गर्भ] वह जो गर्भवास में न आया हो, परब्रह्म, परमात्मा।

निगरभर-वि० [सं० निकर+भरित अथवा नि+गह्वर] खूब भरे हुए, भरपूर, सघन। उ०—१ लिखमीवर हरख निगरभर लागी, आयु रयण त्रूटंति इम। क्रीड़ाप्रिय पोकार किरीटी, जीवितप्रिय घड़ियाळ जिम।—वेलि.

उ०—२ निगरभर तरुवर सघण छांह निसि, पुहपित अति दीपगर पळास। मौरित अंब रीझ रोमंचित, हरखि विकास कमळ कृत हास। —वेलि.

निगरांणी-सं०स्त्री०—देख-रेख, निरीक्षण।

क्रि०प्र०—करणी, राखणी।

निगरियौ-सं०पु०—देखो 'निगर' (अल्पा. रू.भे.)

निगरू-वि०—जबरदस्त, बड़ा।

निगरौ—देखो 'नुगरौ' (रू.भे.)

उ०—न करै मूळ किण हि री निंदा, छावीजै वळि गुर रा छंदा। नांम लोपी नै न हुजै निगरौ, नवि थांपीजै कोड़ीनगरौ। —घ.व.ग्रं.

निगळणौ, निगळबौ-क्रि०स० [सं० निर्गलनम् अथवा निगरणं] १ मुंह में रख कर गले के नीचे उतारना, गटक जाना, घोंट जाना।

उ०—मांडा पोवत दाभियौ, रांणी ज्यूं रे वासदेहाजी। ज्यूं जळ निगळै माछळी, रांणी ज्यूं रे वास देहाजी।—लो.गी.

२ खा जाना।

३ दूसरे की वस्तु या धन हड़प लेना, रुपया या धन आदि हजम कर लेना।

निगळणहार, हारौ (हारी), निगळणियौ—वि०।

निगळवाड़णौ, निगळवाड़बौ, निगळवाणौ, निगळवाबौ, निगळवावणौ, निगळवावबौ, निगळाड़णौ, निगळाड़बौ, निगळाणौ, निगळाबौ, निगळावणौ, निगळावबौ—प्रे०रू०।

निगळिश्रोड़ौ, निगळियोड़ौ, निगळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निगळीजणौ, निगळीजबौ—कर्म वा०।

नीगळणौ, नीगळबौ—रू०भे०।

निगळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मुंह में रख कर गले के नीचे उतारा हुआ, गटका हुआ, घोंटा गया हुआ।

२ खा गया हुआ, खाया हुआ।

३ दूसरे की वस्तु या धन हड़पा हुआ।

(स्त्री० निगळियोड़ी)

निगल्लिका-सं०स्त्री०—'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार एक प्रकार का चार वर्ण का वृत विशेष।

निगस—देखो 'निघस' (रू.भे.) (अ.मा.)

निगहणौ, निगहबौ-क्रि०स० [सं० निगृहीत] नियंत्रण करना।

उ०—स्वजन वेवाहिय घूरइ भूरइ निगहिय नेह, लेई अचेत ऊपाडिय माडिय आंणीय गेहि। भूतळि भंमर भोलिय डोलिय जिम न चडंत, विलवइ कुमरि विलक्खिय देखिय ते व्रितांत। —नेमिनाथ फागु

निगहणहार, हारौ (हारी), निगहणियौ—वि०।

निगहिश्रोड़ौ, निगहियोड़ौ, निगह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निगहीजणौ, निगहीजबौ—कर्म वा०।

निगहियोड़ौ-भू०का०कृ०—नियंत्रण किया हुआ।

(स्त्री० निगहियोड़ी)

निगांमसिज्जाए-सं०पु० [सं० निगम सैय्या] वह बिछौना जो मर्यादा से अधिक लम्बा, चौड़ा और मोटा हो।—(जैन)

निगा, निगाह-संस्त्री० [फा०] १ नजर, दृष्टि। उ०—ग्रोर ग्रनतसिंघजी ग्रावतो जावतो कर सहर में ठठ्ठो पधार सहर सारो निगाह में नांखियो। पछै सहर पनाह कोट सारो निगाह में काढ़।

—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

क्रि०प्र०—१ राखणी. २ ताकाई, चितवन, देखने का ढंग।

क्रि०प्र०—देणी।

३ ध्यान, विचार।

उ०—ग्रादमी बैठा था सो ई बात री विसेस निगाह नहीं राखी।

—गोपाळदास गोड़ री वारता

मुहा०—१ निगा देणी—ध्यान देना, किसी ग्रोर रुख करना, किसी ग्रोर प्रवृत्त होना, विचार करना।

२ निगा राखणी—ध्यान रखना, सचेत रहना।

४ पहचान, समझ, परख।

क्रि० प्र०—होणी।

५ तलाश, खोज।

क्रि०प्र०—करणी।

६ खबर, सुधि।

उ०—निरधनियां ग्राप समापण नहचै। दियण ग्रन्यायां न्याह दुवाह। जोधा पति सकळ जीवां री, न्यारी न्यारी लिये निगाह।

—महादांन महड़ू

रू०भे०—निगे, निगै, निघै।

निगुंडि-संपु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष। उ०—नेतु निगुंडि निरंजनी, नाळकेर नारिंग। नागबळा निरविसि नखी, नकुली निरमळ सग।—मा.कां.प्र.

निगुण-वि०—१ कृतघ्न।

(मि० गुणचोर)

ग्रल्पा०—निगुणो।

२ कायर, डरपोक, भीरु। उ०—कांकण सर्मं कुवेळियां, सरकण तणो सुभाव। निगुणा थिर होवै नहीं, पाव घड़ी ही पाव।—बां.दा.

३ देखो 'निरगुण' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

उ०—ग्रारंभ में कियो जेणि उपायो, गावण गुणनिधि हूं निगुण। किरि कठचीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण।—वेलि.

रू०भे०—नुगुण।

ग्रल्पा०—नुगणो, नुगुणो।

निगुनो—१ देखो 'निरगुणी' (रू.भे.)

उ०—मैं निगुनी गुण एको नाहीं, तुम हो बगसणहारा। मीरां कहै प्रभु कबहि मिळोगे, थां विण नैण दुख्यारा।—मीरा

२ देखो 'निगुण' १।

निगुणो—१ देखो 'निगुण' (ग्रल्पा, रू०भे०)

उ०—१ सगुणा गुण केते करै, निगुणा नांखै ढाहि। दादू साधू सब कहै, निगुणा निरफळ जाइ।—दादूवांणी

उ०—२ सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मांनै कोइ। दादू साधू सब कहैं, भला कहां थैं होइ।—दादूवांणी

(स्त्री० निगुणी)

२ देखो 'निरगुण' (ग्रल्पा० रू०भे०)

उ०—माल मत्रो गहणो गढ-किला, यह सब निगुणा नै निवगा छै। इणां रो भरोसो नहीं करणो।—नी. प्र.

(स्त्री० निगुणी)

रू०भे०—निग्गुणो।

निगुर, निगुरु, निगुरो—१ देखो 'नुगरो' (रू.भे.)

उ०—१ ग्रागिड़ि या पूछाड़िसै, पिढतां निहिं पिछांण। साहिब चढ़सै सेतलै, हुइसै निगरां हांणि।—पी.ग्रं.

उ०—२ सुगरा रे सहु सिद्धि ग्यांन, गुण निगुरै गमिये। सीख कहै घरमसीह, नांमि मस्तक गुरु नमिये।—ध.व ग्रं.

उ०—३ भौंहि मांहि अंतरि विथा, बोलै मीठे भाय। जन हरिदास निगुरा तिके, निहचै नरकां जाय।—ह.पु.वा.

२ देखो 'निरगुण' (रू.भे.)

उ०—वेद न भेद न परब्रह्म, महजन सील संतोख। मेघ नै माप नै महमहण, तु निगुरो निरदोख।—पी.ग्रं.

निगूढ़-वि० [स०] १ अत्यन्त, गुप्त. २ मजबूत, दृढ़।

निगूढ़ारथक-वि० [सं० निगूढ़ार्थक] जिसके ग्रर्थ में ग्रस्पष्ट ध्वनि निकलती हो, जिसका ग्रर्थ गुप्त हो।

निगे—देखो 'निगाह' (रू.भे.)

उ०—१ म्हांरी दांनाई तौ डूबगी सिरदार! जद-ई इसां सूं पांनो पड़ियो। ग्रबै-ई निगे राखिया। बायां-बेट्यां नै उपासरै चढ़ाय दिया।—वरसगांठ

उ०—२ कोई कहै पात्रां नै दुरंगा क्यूं रंगो। जद स्वामीजी बोल्या, कुसुंबारी निगे चोखी तरह पड़ै, एक रंग दूसरा रंग रै ऊपर ग्रा जावै जद दीसणो सोरो।—भि.द्र.

निगेम-वि०—१ पवित्र, निष्पाप। उ०—१ नरवर सूर निगेम, भारथ मधि-रीती भरी। ग्रावै जावै ग्रपछरा, जगि ग्ररहट घड़ि जेम।

—वचनिका

उ०—२ पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर, मननिरमळ गंगाजळ जेम। नर नादेत नरिंद नरेहण, निकळ निघुट निपाप निगेम।

—दूदो

(मि० ग्रणगेम)

२ कल्याण करने वाला, कल्याणकारक। उ०—पहलौ गुर गणि लघु पछै, ग्रगियारा लग एम। सेस कहै गुण सेणिग्रा, गोविंद समरि निगेम।—पि.प्र.

३ उज्ज्वल, निष्कलंक। उ०—ब्रह्म छंद वाखांणण, गुण लखपती निगेम।—ल.पिं.

४ जबरदस्त, शक्तिशाली। उ०—'मधकर' का जूझारमल, 'राजड़'

जिसा निगेम। ऐ पांचूं दळ साह रा, पांचूं पांडव जेम।—बां.दा.ख्यात
७ देखो 'निगम' (रू.भे.)
नगे—देखो 'निगाह' (रू.भे.)
उ०—१ मानुस देह नूर नरहर को, निगै करै निरखैलो। रोम रोम में साहब सांमल, गुरु से गुरुगम लहेलो।
—स्रो सुखरांमजी महाराज
उ०—२ श्रो संसार मोहनी माया, देख रीझ मति भायां रे। म्रिग-जळ नीर निगै करना ई, परतक मिथ्या थाया रे।
—स्रो सुखरांमजी महाराज
उ०—३ सो सिवो नजर करतां बादसाही निगै नोंधी दीठी जो दुरुस्त नहीं कहीजै हूं तो ठगाइयो।
—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता
निगैदारी-सं०स्त्री० [फा० निगाह+दार+रा०प्र०ई] निगरानी, देख-रेख। उ०—रोटी जीम बजार गयो। बजार कांम-काज करण लागो। बाप पण निगैदारी राखण लागो। देखां कोई हमार ही आवै।—पलक दरियाव री बात
निगैदासत-सं०स्त्री० [फा० निगहदाश्त] देख-रेख, निगरानी, संरक्षा, हिफाजत। उ०—हजारूं की आसीस, हजारूं की सलांम, हजारूं की निगैदासत, हजारूं पर इतमांम।—सू.प्र.
निगोड़ो—देखो 'नगोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० निगोड़ी)
निगोट-वि० [सं० निघोट] जो खोखला न हो, ठोस।
उ०—उर ढाल त्रंबागळ बाहुवै बाबळ, गोडीय स्रीफळ ज्यूं गिणजै। नळ जत्र निगोट मुठागळ नीमण, बाटक वज्र नखा वळजै।
—किसनजी दधवाड़ियो
निगोडो-वि०—देखो 'नगोडो' (रू.भे.)
उ०—मुरधर में मोडा नीच निगोडा, नाहक कांन कपंदा है। निरभय नीसांणां सद सेनांणां, जन 'उमरेस' जपंदा है।—ऊ.का.
(स्त्री० निगोडी)
निगोद-सं०पु० [सं०] अनन्त जीवों के पिण्ड-भूत का एक शरीर, अनंत जीवों का एक साधारण शरीर विशेष।—(जैन)
उ०—१ पांच स्थावर तीन विकळेंद्रिय गयो, संख्यात असंख्यात काळ रयो। हिवै निगोद री सुणो संवादो, इम जांणी दया धरम आराधो।
—जयवांणी
उ०—२ मरण वाळो बूडै कै मारण वाळो बूडै। नरक निगोद में गोता कुण खासी।—भि द्र.
यौ०—नरग-निगोद।
रू०भे०—निगोदि, निगोदो।
निगोदर-सं०पु० [देशज ?] कंठ पर धारण करने का आभूषण विशेष। उ०—१ नद्द करंती नेउरी, कटि मेखळी उरि हार। कंठि निगोदर पदिकडी, चपकळी अति-सार।—मा.कां.प्र.
उ०—२ हार निगोदर बहिरखा, सखो नेउर रणझणकार कि।
—कां.दे.प्र.
रू०भे०—नगोदर, नगोदरु, नगोदरू।
अल्पा०—निगोदरी।
निगोदरी—देखो 'निगोदर' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—करि ककण सोवरण मि चूडी, रूपइ रंभा अनि रूअडी, चित्र विच्यत्रि करी उपइ, ऊपरि एकाउळि हार, सरिसु मोती तणु हार, झूमणां तणु झमकार, कंठि कनकमय पदकडी, महाविगन्यांनि जडी, नाग पोलरी अनि निगोदरी।—व.स.
निगोदि-वि०—१ निगोद में निवास करने वाला, निगोदाश्रित रहने वाला।
२ देखो 'निगोद'।
उ०—अणंत काळ जीव रहइ निगोदि। सूक्ष्म बादर छइ बिहु भेदि। वस्तिग।—चिहुंगति चउपई
रू०भे०—निगोदी।
अल्पा०—निगोदियो।
निगोदियो—देखो 'निगोदी' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—सिद्ध अलोक काळ ग्यांन ते, जीव पुंगळ वणसई काय। निगोदिया जीव अनंत कह्या, ठांणे आठमें मांय।—जयवांणी
निगोदी—१ देखो 'निगोद' (रू.भे.)
उ०—मध्य अनंतानंत छयें में, थोवा सिद्ध अनंता। एक निगोदी जीव अनंता, वलिय वनस्पति वंता।—ध.व.ग्रं.
२ देखो 'निगोदि' (रू.भे.)
निग्गंथी-सं०पु० [सं० नैर्ग्रन्थ] १ निर्ग्रन्थ सम्बन्धी (जैन)
२ देखो 'निरग्रंथ' (रू.भे.)
रू०भे०—निग्रंथ, निग्रंठ।
निग्गंथी-सं०स्त्री० [सं० निर्ग्रन्थी] साध्वी (जैन)
निग्गत, निग्गय-वि० [सं० निर्गत] १ निकलने वाला, दूर होने वाला (जैन)
[सं० निर्गतः] २ निकला हुआ, दूरस्थ (जैन)
रू०भे०—निग्गह।
निग्गह—१ देखो 'निग्गत' (रू.भे.)
२ देखो 'निग्रह' (रू.भे.)
निग्गही-वि० [सं० निग्राही] निग्रह करने वाला (जैन)।
निग्गुणो—देखो 'निगुणो' (रू.भे.)
निग्घ-वि० [सं० निघ्न] आज्ञाकारी, अधीन।
उ०—खतंगा कराड़े झाट बागे राठ रीठ खगे। जगे पाह प्रेत काळी अनाढ़ जवांण। सतारा हजार आठ लोह-लाट आयो सजे। 'रासा' रा निग्घ से साठ नीमजे आरांण।—रायसिंह झाला रो गीत
निग्रंथ—१ देखो 'निरग्रंथ' (रू.भे.)
२ देखो 'निग्गंथ' (रू.भे.)

उ०—सुगना ध्यावना छंद, काउना सुन्दर ततनिसे । सत्य बोले निप्रंद, नामानुनाम नै जोड़ने ।—रविदास

निग्रह्–सं०पु० [सं०] १ मन की एकाग्रता, संयम ।

उ०—सन्यासिए जोगिए तपसि तापसिए, काइ इवडा हठ निग्रह किया । प्रांणी भवसागर वेनि पइंतां, पिया पार तरि पारि पिया । —वेलि.

२ दमन ।

३ रोक, अवरोध ।

४ रोकने का उपाय ।

५ बन्धन ।

६ दण्ड । उ०—धरमी नर ऊपर कोमळ कर धारै, पापी पुरुसां नै सद ग्रस संहारै । तदनुग्रह बिन हा ! ग्रिह ग्रिह तूतो, जिण तिण विग्रह में निग्रह दो जूतो ।—ऊ.का.

रू०भे०—निग्गह ।

निग्रहण–सं०पु० [सं०] १ रोकने या थामने का काम ।

२ दमन करने का काम ।

३ दण्ड देने का कार्य ।

क्रि०प्र०—करणो, होणो ।

निग्रहणो, निग्रहबो–क्रि०स० [सं० निग्रहणनम्] १ दमन करना ।

उ०—१ पंच इंद्री निग्रहै ग्रहै छत्तीसे ई प्रावध ।—गु.रू.बं.

२ रोकना, थामना । उ०—पैसतां लार लाख दळ पैठा, ढाल वाळियां लोथां ढेर । निग्रह फौज फाड़ नीसरतै, 'सतै' घातिया पाखर सेर ।—नैणसी

३ दण्ड देना । उ०—पोस मास सुरधरपती, दोस लखे दुग्वेस । जोस जवन्नां भंजियौ, निग्रहो रोस नरेस ।—रा रू.

निग्रहणहार, हारौ (हारी), निग्रहणियौ—वि० ।

निग्रहिग्रोड़ो, निग्रहियोड़ो, निग्रह्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निग्रहीजणो, निग्रहीजबो—कर्म वा० ।

निग्रहि–सं०पु०—युद्ध ।

निग्रहियोड़ो–भू०का०कृ०—१ दमन किया हुआ ।

२ रोका हुआ, थामा हुआ ।

३ दण्ड दिया हुआ ।

(स्त्री० निग्रहियोड़ी)

निग्रही–वि० [सं० निग्रहिन्] १ दमन करने वाला ।

२ रोकने वाला, अवरोध करने वाला ।

३ दण्ड देने वाला ।

निग्रोध—देखो 'न्यग्रोध' (रू.भे.) (ग्र.मा., नां.मा.)

उ०—धरहरयो भरयो निग्रोध गिरयो जसधारी ।—ऊ.का.

निघंट, निघंटु–सं०पु० [स० निघंटु] १ वैदिक कोश ।

२ शब्द संग्रह मात्र (अमरत)

निघटणो, निघटबो–क्रि०अ० [सं० निघटनं, घटना] १ कम होना, थोड़ा होना, घटना । उ०—चिड़ी चंचु भर ले गई, नीर निघट नहि जाइ । ऐसा बासण ना किया, सब दरिया मांहि समाइ ।—दादूवांणी

२ देखो 'निघटणो, निघटबो' (रू.भे.)

निघटणहार, हारौ (हारी), निघटणियौ—वि० ।

निघटिग्रोड़ो, निघटियोड़ो, निघटयोड़ो—भू०का०कृ० ।

निघटीजणो, निघटीजबो—कर्म वा० ।

निघटियोड़ो–भू०का०कृ०—१ कम हुवा हुआ, थोड़ा हुवा हुआ, घटा हुआ ।

२ देखो 'निघट्टियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निघटियोड़ी)

निघट्टणो, निघट्टबो–क्रि०अ०—१ उत्पन्न होना, लगना ।

उ०—फूलां फळां निघट्टियां, मेहां घर पड़ियांह । परदेसां का सज्जणा, पत्तीजूं मिळियांह ।—ढो.मा.

२ देखो 'निघटणो, निघटबो' (रू.भे.)

निघट्टणहार, हारौ (हारी), निघट्टणियौ—वि० ।

निघट्टिग्रोड़ो, निघट्टियोड़ो, निघटयोड़ो—भू०का०कृ० ।

निघट्टीजणो, निघट्टीजबो—कर्म वा० ।

निघट्टियोड़ो–भू०का०कृ०—१ उत्पन्न हुवा हुआ, लगा हुआ ।

२ देखो 'निघटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निघट्टियोड़ी)

निघनक–वि० [सं० निघ्नक] पराधीन, अधीन (डि.को.)

निघस–सं०पु० [सं० निघस] भोजन (ह.नां.)

रू०भे०—निगस, निघास ।

निघात–सं०पु० [सं०] चोट, प्रहार । उ०—१ ………………………………………, पोरस महण कना भीम जेहो पाथ । हरनाथ वाळा तणे निघात रो सांम्हे हियै, 'सदा' वाळै सेल बणी घोल तणी साथ ।—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

२ मर्म, भेद, रहस्य । उ०—पायउ जिम बांमण परमारथ, कहतउ वात निघात कहइ । जांणीयउ पारवती जांणपणउ, कोई गहिली सुं आखडी ग्रहइ ।— महादेव पारवती री वेलि

वि०—१ विशेष । उ०—जघ ग्रलोम अनूप जुग, नाजुक पणं निघात । केळि करीकर कळभ कै, सकनकूर साखात ।—बां.दा.

२ भयंकर । उ०—घनघोर वग्रोळ वज्ज निघातं, उडै गैन पंखी मनो तूल पातं । 'रणो' सूर वीरं चढ्यो वाजि तत्तो, भये रोम की ज्वाळ तैं नैन रत्तो ।—ला.रा.

३ अधिक । उ०—पहल अठारह वी चवद, सोळ चवद लघु ग्रंत । ग्राद ग्रंत गिणती ग्रखर, गुण सुपंखरो गिणात । कंठ सुपंखरा बीच कह, ग्राठ प्रथम वी सात । ग्राठ सात क्रम यण ग्रधिक, नावै कंठ निघात ।—र.ज प्र.

४ जबरदस्त । उ०—खटमास लगइ तप कियउ ग्रखंडित, श्री ग्रसही खेलतां निघात । सिव सिव सिव हिज कहत सघतं, वदइ न काई बीजो वात ।—महादेव पारवती री वेलि

क्रि०वि०—१ विशेषकर, विशेषतया । उ०—दुहुं पाखां ससि दोन्ह अंधार निकंदवा । तेजोमय रथ तास निघात पहीनवा ।—वां.दा.

२ बहुत तेजी से । उ०—हूं अब जाऊं हाथळां, वाहण फौज विचाळ । भजि वाघणि चढ़ि भाखरां, परतछ बच्चा पाळ । परतछ वच्चा पाळ, इसूं कहि ऊठियो । घूणि सटा रिस धार, तड़ित जिम तूटियो । सजि घण गरज सवद्द, क नट निघात रो । तूटो जांण नखत, उलक्का पात रो ।—सिवबक्स पाल्हावत

रू०भे०—नघात, निघात ।

निघास—देखो 'निघस' (रू.भे.)

निघिणु-वि० [सं० निर्घृण] दयारहित, कठोर । उ०—निलजु निघणु मइं अजांणु, कांइ मारइ मांरो । ईणि जनमि मुझ पंडुकुमर विणु, नहीं य भतारो ।—पं.पं.च.

निघुट-वि०—दृढ़, अटल । उ०—पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर । मन निरमळ गगाजळ जेम । नर नादेत नरिंद नरेहण । निकळ निघुट निपाप निगेम ।—राठौड़ रतनसिंह री वेलि

निघे—देखो 'निगाह' (रू.भे.)

उ०—तठै 'नगै' भारमलोत कयौ, जी निघे कर बोलौ, थांनूं तौ रावजी रा पांडे ही मारसी ।—द.दा.

निघोट-वि० [देशज] १ जिसने कुछ भी खाया या पिया न हो, निराहार । २ पूर्ण, पूरा. ३ दृढ़, मजबूत ।

निघोस-सं०स्त्री० [सं० निघोष] आवाज, ध्वनि । उ०—हुय हाक वीरां हडहडे, घर धूज कायर घड़घड़े । वज तवल तूर निघोस वंबी, सरां सोक असंक ।—र.रू.

निचंत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

उ०—ढाढ़ी रात्यूं ओळग्या, गाया बहु बहु भंत । मांगण-पंथी जांणि कइ, तब छंडिया निचंत ।—ढो.मा.

निचंतौ—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निचंती)

निचंद्र-सं०पु० [सं०] एक दानव का नाम ।

निचत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

निचतौ—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निचती)

निचलौ-वि० [सं० नीच+रा.प्र.लौ] (स्त्री० निचली) १ नीचे का, नीचे वाला ।

२ देखो 'निस्चळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—फूल वेल रंगवेल रै, पेट तणी बस पोल । निचला रहिया मास नव, गरवा अदभुत गोल ।—वां.दा.

रू०भे०—नीचरलौ, नीचलौ ।

निचाई-सं०स्त्री०—१ नीचे की ओर विस्तार या दूरी ।

२ नीचे होने का भाव, नीचापन ।

ज्यूं०—आ भींत ऊंचाई में नीं है, निचाई में है ।

३ नीच होने का भाव, ओछापन, कमीनापन ।

रू०भे०—नीचाई ।

निचारौ-सं०पु० [देशज] रसोई के बरतन साफ करने का स्थान ।

निचिंत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

उ०—१ चर अचर चिंत, निस्चळ निचिंत । नहि आदि अंत, अगहर अनंत ।—ऊ.का.

उ०—२ जब लग 'पातल' खग्ग झल, सिर कंधर उससंत । तो लौं पत दिल्ली तखत, चित नित रहो निचिंत ।—जैतदांन बारहठ

निचिंता, निचिंताई, निचिंती—देखो 'निस्चितता' (रू.भे.)

उ०—वजीर उमरावां पूछी निचिंती री मारग फुरमावौ ।—नी.प्र.

निचिंतौ—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—चोज न चूकै रीत की, 'भोज' तणां हरनाथ । जुध चिंता भुज ओडवण, करण निचिंता साथ ।—रा.रू.

(स्त्री० निचिंती)

निचिताई—देखो 'निस्चितता' (रू.भे.)

निचींत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

निचीताई—देखो 'निस्चितता' (रू.भे.)

निचीतौ—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ज्वाळ झळ जेम अस गांव अरि जाळवा, खागजुत जहर हूं कहर खारो । करण भय सचीतौ न्याय ओरंग कहै, सिंघ बळ निचीतौ देस सारो ।—द.दा.

(स्त्री० निचीती)

निचुड़णौ, निचुड़बौ-क्रि०अ० [सं० नि+च्यवनं] १ दाब पाकर भरे या समाए हुए जल का टपकना या अलग होना, चूना ।

ज्यूं०—आली अंगरखी रो पांणी निचुड़णो ।

२ किसी गोली वस्तु या रस से भरी वस्तु का इस प्रकार संकुचित होना या दबना कि पानी या रस टपक जाय, दाब पाकर पानी या रस छोड़ना । नारंगी रो रस निचुड़णो ।

३ किसी वस्तु का सार या रसहीन होना ।

४ शरीर का सार या रस निकल जाने से थक जाना, दुबला हो जाना, शक्ति और तेजहीन होना ।

निचुड़णहार, हारौ (हारी), निचुड़णियौ—वि० ।

निचुड़िओड़ौ, निचुड़ियोड़ौ, निचुड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निचुड़ीजणौ, निचुड़ीजबौ—भाव वा० ।

निचुड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दाब पाकर भरे या समाए हुए जल का टपका हुआ, अलग हुवा हुआ, चूया हुआ ।

२ रस से भरे या गीले पदार्थ का संकुचित हुवा हुआ, दवा हुआ ।

३ किसी पदार्थ का सारहीन हुवा हुआ, रसहीन हुवा हुआ ।

४ शरीर का सार या रस निकला हुआ, दुबला हुवा हुआ, शक्ति या तेजहीन हुवा हुआ ।

(स्त्री० निचुड़ियोड़ी)

निचोड़-सं०पु० [सं० नि+च्यवन] १ वह रस या जल आदि जो निचोड़ने से निकला हो, निचोड़ने से निकली हुई वस्तु।

२ सार वस्तु, सार।

३ मुख्य तात्पर्य, कथन का सारांश, खुलासा।

रू०भे०—नीचोड़।

निचोड़णो, निचोड़बो—देखो 'निचोणो, निचोवो' (रू.भे.)

उ०—ऐसी जांणु नै दया-धरम पाळजो। संका कंखा नै कुरांगत टाळजो। सूत्र 'समवायंग' मांहे निचोड़ए। तिण अनुसारे रिख जयमलजी कीनी जोड़ ए।—जयवांणी

निचोड़णहार, हारो (हारी), निचोड़णियो—वि०।

निचोड़िग्रोड़ो, निचोड़ियोड़ो, निचोड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

निचोड़ीजणो, निचोड़ीजबो—कर्म वा०।

निचुड़णो, निचुड़बो—अक० रू०।

निचोड़ियोड़ो—देखो 'निचोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निचोड़ियोड़ी)

निचोणो, निचोवो-क्रि०स० [सं० नि+च्यवन] १ किसी रसयुक्त या गीली चीज को दबा कर या ऐंठ कर उसका रस या पानी निकालना, दबा कर या ऐंठ कर रस या पानी टपकाना।

उ०—राति ज रूंनी निसह भरि, सुणी महाजनि लोइ। हाथाळी छाळा पड़्या, चीर निचोइ निचोइ।—ढो.मा.

२ किसी वस्तु का सार निकालना।

३ कंगाल करना, सर्वस्व हरण कर लेना, सब कुछ ले लेना।

निचोणहार, हारो (हारी), निचोणियो—वि०।

निचोड़ाड़णो, निचोड़ाड़बो, निचोड़ाणो, निचोड़ावो, निचोड़ावणो, निचोड़ावबो, निचोवाड़णो, निचोवाड़बो, निचोवाणो, निचोवावो, निचोवावणो, निचोवावबो—प्रे०रू०।

निचोयोड़ो—भू०का०कृ०।

निचोईजणो, निचोईजबो—कर्म वा०।

निचुड़णो, निचुड़बो—अक० रू०।

निचोड़णो, निचोड़बो, निचोवणो, निचोवबो, नीचोड़णो, नीचोड़बो, नीचोणो, नीचोवो, नीचोवणो, नीचोवबो—रू०भे०।

निचोयोड़ो—भू०का०कृ०—१ किसी रसयुक्त या गीली चीज को दबा कर या ऐंठ कर उसका रस या पानी निकाला हुआ, दबा कर या ऐंठ कर रस या पानी टपकाया हुआ।

२ (किसी वस्तु का) सार निकाला हुआ।

३ सर्वस्व हरण कर लिया हुआ, सब कुछ ले लिया हुआ, कंगाल किया हुआ, निर्धन किया हुआ।

(स्त्री० निचोयोड़ी)

निचोवणो, निचोवबो—देखो 'निचोणो, निचोवो' (रू.भे.)

उ०—१ अैसो तो कुळ में कांई नीसरै जी, कोई लहरयो तो आय निचोवै जी, क लहरयो ले दो जी। अैसो तो कुळ में घण रो सायबो जी, कोई लहरयो आय निचोवै जी, क लहरयो ले दो जी।—लो.गी.

उ०—२ सज्जण चाल्या हे सखी, नयणे कियो सोग। सिर साड़ी गळि कंचुवउ, हूवउ निचोवण जोग।—ढो.मा.

निचोवणहार, हारो (हारी), निचोवणियो—वि०।

निचोविग्रोड़ो, निचोवियोड़ो, निचोव्योड़ो—भू०का०कृ०।

निचोवीजणो, निचोवीजबो——कर्म वा०।

निचुड़णो, निचुड़बो—अक०रू०।

निचोवियोड़ो—देखो 'निचोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निचोवियोड़ी)

निच्च—देखो 'नित' (रू.भे.) (जैन)

निच्चय—देखो 'निश्चय' (रू.भे.)

उ०—निंदक निच्चय नरगइ जाई, निंदक चवथउ चंडाळ कहाई।—ऊ.का.

निच्चळ—देखो 'निश्चळ' (रू.भे.)

निच्चु—देखो 'नित' (रू.भे.) (जैन)

निछंटणो, निछंटबो—देखो 'नीछटणो, नीछटबो' (रू.भे.)

निछंटणहार, हारो (हारी), निछंटणियो—वि०।

निछंटिग्रोड़ो, निछंटियोड़ो, निछंट्योड़ो—भू०का०कृ०।

निछंटीजणो, निछंटीजबो—कर्म वा०।

निछंटियोड़ो—देखो 'निछटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निछंटियोड़ी)

निछटणो, निछटबो—देखो 'नीछटणो, नीछटबो' (रू.भे.)

निछटणहार, हारो (हारी), निछटणियो—वि०।

निछटिग्रोड़ो, निछटियोड़ो, निछट्योड़ो—भू०का०कृ०।

निछटीजणो, निछटीजबो—कर्म वा०।

निछटिग्रोड़ो—देखो 'नीछटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निछटियोड़ी)

निछट्टणो, निछट्टबो—देखो 'नीछटणो, नीछटबो' (रू.भे.)

उ०—भाला झलि हल्ले भिड़ण, करि फौज विकट्टी। खारखंधां असि खेड़िया, धार्य बह घट्टी। दारुण 'गोयंद' चौगड़द, फिरिया पह फट्टी। अोमी आगि अजागि अंग, नाराज निछट्टी।—सू.प्र.

निछट्टणहार, हारो (हारी), निछट्टणियो—वि०।

निछट्टाड़णो, निछट्टाड़बो, निछट्टाणो, निछट्टावो, निछट्टावणो, निछट्टावबो—प्रे०रू०।

निछट्टिग्रोड़ो, निछट्टियोड़ो, निछट्टयोड़ो—भू०का०कृ०।

निछट्टाजणो, निछट्टीजबो—कर्म वा०।

निछट्टियोड़ो—देखो 'नीछटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निछट्टियोड़ी)

निछत्र-वि० [सं० निःछत्र] १ जिसके शिर पर छत्र न हो, बिना राज-चिन्ह का, छत्रहीन।

२ देखो 'निक्षत्री' (रू.भे.)

निछत्री—देखो 'निक्षत्री' (रू.भे.)

निछमाळी-वि०स्त्री० [सं० निमिष+आलुच् प्रत्य०] हिलती हुई पलकों वाली। उ०—कवण तूं कवण तूं घरि नारी, स्वरगिक लोकि कइ तूं अवतारी। नारि कोइ न थी तुझ सिरखी, त्रिरयलोकि कइ तूं अनिमेखी। नागलोकि असणाहार काळी, मांनवी घटिसि तूं निछमाळी। तिरयलोकि कोइ देव न दीसइ, ताहरउ जनम जेणि कहीसइ।—विराटपर्व

निछरावळ-सं०स्त्री० [सं० न्यास+आवर्तः] १ मंगल-कामना और कल्याण हेतु द्रव्यादि को किसी ऊपर से घुमा कर या फेर कर दान देने या लुटाने के लिए डाल देने की क्रिया या भाव।

उ०—१ नैण सलोने सांइया, देख्यां सूं जीजै हो। तन मन जोबन वार के निछरावळ कीजै हो।—मीरां

उ०—२ हीरां बार बार मुजरौ कर हरख धरै छै। मोती, मोहोर, मूंगियां सूं निछरावळ करै छै।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—३ रांणी सगळी वातां सुणी जद पांच सौ रोकड़ी रुपिया गोपाळदास ऊपर निछरावळ किया।

—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—४ नाव महल पास पहुंची जद जलाल उतर महल मांही गयौ। बूबना मुजरौ करती साम्ही आई। हाथ पकड़ भीतर लेय गई। पोसाक बदळाय, पलंग पर बैठाय, निछरावळ कर नेत्रां खवास नूं दीन्ही। मांहोमांहे मिळिया। घणा दिन रा वियोग री तपत मिटाई।—जलाल बूबना री वात

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

२ किसी देवता आदि को सन्तुष्ट करने हेतु तथा किसी व्यक्ति को उसकी कुदृष्टि से बचाने, पीड़ा से छुड़ाने व रक्षा करने के लिए कोई वस्तु या कुछ द्रव्य उस व्यक्ति के सिर या सारे शरीर के ऊपर से फेर कर दान करने या डाल देने का एक प्रकार का टोटका या उपचार विशेष, उतारा, वारफेर।

३ किसी के ऊपर से घुमा कर दान कर दी जाने वाली या छोड़ दी जाने वाली वस्तु या द्रव्य।

उ०—१ पिंड री गई प्रतीत, मांण मिटग्यौ मरदां में। ग्यांन मिळ गयौ गरद, दांम रुळग्यौ दरदां में। लात घूंथ लाठियां, बणी आछी वरखा वळ। जूत भेट व्हा जठै, नाक हुइग्यौ निछरावळ। विभचार मांय पायौ विभौ, जातां जुगां न जावसी। नित स्वाद लियौ परनार मे, याद घणा दिन आवसी।—ऊ.का.

उ०—२ सुरंग महूरत सुभ घड़ी, इळ प्रगटयौ 'अजमाल'। आगम दरसण आवियौ, हाडौ दुरजणसाळ। नर आया नवकोट रा, लख धर वार सुरंग। निजर हुवै निछरावळां, मोती रतन तुरंग।

—रा.रू.

उ०—३ तंसे बूबना अम्मा नूं कही—जलाल साहिब नूं देखणे जावूं। कछु निछरावळ जे करूं? तद मां हुकम दियौ।

—जलाल बूबना री वात

रू०भे०—नवछावर, नवछावरि, नवछाहर, नवछाहळ, निउंछावर, निउंछावरि, निछरावळ, निछरावळि, निछावर, निछावरि, निछावळ, निछावळि, निवछावर, निवछावळि, नूछावर, नेवछावर, नोछावर, नोछार, नौछावर, नौछावरि, नौछावळ, नौछाहळ, न्यूंछावर, न्यौछावर, न्यौछावळ।

मह०—नवछावरेस।

निछरावळखांनौ-सं०पु० [रा० निछरावळ+फा० खान] १ निछरावल करने की सामग्री रखने की जगह. २ निछरावल करने की प्रथा या परिपाटी।

उ०—सो जांगळू में आ खबर आई ताहरां निछरावळखांनौ सुरु जे हुवौ, बधाई बटणे लागी।—कुंवरसी सांखला री वारता

निछरावळि—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)

उ०—१ तिण दिन आय तमांम, अनड़ भड़ ऊमरा। व्है निछरावळि नजर, घोड़ भड़ घुमरा।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—२ निछरावळि कीध नांखि नजीख, मोताहळ उच्छाळए। राठोड़ां गंजण देवमै राजा, चिहूं दिसि चम्मर ढाळए।

—ग.रू.बं.

निछळ-वि० [सं० निश्छल] १ कपटहीन, छलरहित।

२ देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)

निछावर, निछावळ—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)

उ०—प्रतिस्ठा करि, निछावर करि दांन मुंहमांगिया दिया छै।

—सिंघासण बतीसी

निछोह-वि० [सं० निःक्षोभ] १ जिसे प्रीति या प्रेम न हो।

२ कठोर, निर्दय, निष्ठुर।

निजंत्रणौ, निजंत्रबौ-सं०पु० [सं० नियंत्रणम्] नियंत्रण करना (उ.र.)

निजंत्रियोड़ौ-भू०का०कृ०— नियंत्रण किया हुआ।

(स्त्री० निजंत्रियोड़ी)

निज-सर्व० [सं०] स्वयं, खुद।

वि०—स्वकीय, अपना। उ०—म्हांनै गिणग्यौ मूढ़, अमलियां ओगणगारां। करणा पर-उपकार, लार थांनै ललकारां। निज कीनौ थे नास, कहो किण रक्षा करस्यौ। वात खरी है बपणा, मौत विण नाहक मरस्यौ।—ऊ.का.

रू०भे० —नज, निम्र, निय, नीअ, नीय।

निजघास-सं०पु० [सं० निजघासः] एक गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुआ था।

निजड़णौ, निजड़बौ-क्रि०अ० [रा०] टूटना, कटना।

निजड़णहार, हारौ (हारी), निजड़णियौ—वि०।

निजड़िओड़ौ, निजड़ियोड़ौ, निजड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निजड़ीजणौ, निजड़ीजबौ—भाव वा०।

निजड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—टूटा हुआ, कटा हुआ।
(स्त्री० निजड़ियोड़ी)
निजमंदिर-सं०पु० [सं०] देवालय का वह भाग जिसमें देव-मूर्ति स्थापित रहती है।
निजर—देखो 'नजर' (रू.भे.)
उ०—१ ताहरां नवाब री निजर टाळ पसवाड़ै मळको पड़ियो हुंतो, तै सूं उवास नै टोळो रूमाल में घाल दीन्हो।—नैणसी
उ०—२ मोड़ गुरसाण रांण दळ मागा, समहर असर भांजिया गार। उभै दळां निजर जद आयो, असि नीलो कमंध असवार।
—बां.दा.
उ०—३ यद्रा म्हे थांनै फूटरमल्ल ओ यूं कैयो। वन्नजी भटकै नै सरवरियै मत जाय, पिणियारयां री निजर लागणी।—लो.गी.
उ०—४ गाहट हरवळ गोळ, चोळ चंदवळ करि चुखचुख। निजर चोळ घज नहर, मसत चख-चोळ चोळ-मुख।—सू.प्र.
उ०—५ कीधो निछरावळ निजर, मिळमांनो मनुहार। दरसण कीधो सांम रो, 'दुरस' मोती वार।—रा.रू.
उ०—६ कर जोड़े अरजां सुज करसी। धणी जेम निजरां अब धरसी।—सू.प्र.
उ०—७ लहि फतै भड़ां निजरां लियै, सभि नोबति नंद तिण समै। ऊगतो भांण बाळक 'अभो', राय-आंगण इण विध रमै।
—सू.प्र.
निजरफेद, निजरकैद देखो 'नजर-कैद' (रू.भे)
उ०—पर साहिजादै सुरम सूं पातसाहजी वेराजी था सू निजरकैद मैं साहजादो—द.दा.
निजरदौलत—देखो 'नजर-दौलत' (रू.भे.)
निजर-बंद—देखो 'नजर-बंद' (रू.भे.)
निजर-बंदी—देखो 'नजर-बंदी' ((रू.भे.)
निजर-बाग—देखो 'नजर-बाग' (रू.भे.)
निजर-बाज-वि० [अ० नज़र+फा० बाज] तिरछी नजर से देखने वाला। उ०—तठा उपरांति करि नै भोगिया भंमर लंजा छयल हुसनाक जुवांन निजर-बाज बाजार मांहे ऊभा जोहां खाए छै।
—रा.सा.सं.
निजर-सानी—देखो 'नजर-सांनी' (रू.भे.)
निजरांण, निजरांणो—देखो 'नजरांण, नजरांणो' (रू.भे.)
उ०—१ केसां धूप-सुगंध लईजै जाय झरोखां। मोर करै निजरांण मिल नै नाच अनोखा। महंदो चरण मंडांण फूलड़ा रळिया राजै। थाकैलो घण नूक निरखतां पल में भाजै।—मेघ.
उ०—२ सटतीमूं वंस तणा खितधारी, विग्रह रूप वरारा है। धू नांमें भाप करै निजरांणां, लै धन जिके धरा रा है।—र.रू.
उ०—३ कुंवर दैपाळदे नै राजा गोद में बैठाय राजा री पाघ बंधाई। तिलक कर सगळा लोकां री जुहार करायो। सारा भाई, मुहता, अमराव मुतसद्दियां कन्है निजरांणो करायो।
—पलक दरियाव री बात
निजराणो, निजराबो-क्रि० स० [अ० नजर+रा० आणो] दिखाई देना, नजर आना, दृष्टिगोचर होना, दृश्य दिखना।
उ०—गाडा भरियोड़ा नैड़ा निजराता। गाडा गुड़काता पैड़ा रड़ पाता। लाखं फूलांणी झीणां सुर लेता। डीघा गाडीणा डब-डब धुनि देता।—ऊ.का.
निजराणहार, हारो (हारी), निजराणियो—वि०।
निजरायोड़ो—भू०का०कृ०।
निजराईजणो, निजराईजबो—कर्म वा०।
निजरावणो, निजरावबो—रू०भे०।
निजरायोड़ो-भू०का०कृ०—दिखाई दिया हुआ, नजर आया हुआ, दृष्टिगोचर हुवा हुआ।
(स्त्री० निजरायोड़ी)
निजरावणो, निजरावबो-क्रि०स०—१ देखना, लखना।
२ देखो 'निजराणो निजराबो' (रू.भे.)
निजरावणहार, हारो (हारी), निजरावणियो—वि०।
निजराविओड़ो, निजरावियोड़ो, निजराव्योड़ो—भू०का०कृ०।
निजरावीजणो, निजरावीजबो—कर्म वा०।
निजरावियोड़ो-भू०का०कृ०—१ देखा हुआ।
२ देखो 'निजरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निजरावियोड़ी)
निजरि—देखो 'नजर' (रू.भे)
उ०—१ दीठां हीज बणि आवै। न जाइ कही। हो भाई भाई एकणि रित रा कासूं। एकणि दीहाड़ै छ-रित नव-रस निजरि आवै। कहि दिखावै किणि भांति।—वचनिका
उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति गढ कोट चौफेर कांगुरा लागा थका विराजै छै जांणै आकास लोक गिळण नूं दांत दिया। ऊंचो निजरि करि करि जोइजै तौ माथा री मुगट खड़हड़ै।
—रा.सा.सं.
उ०—३ महिपुडि मंडळी सांम साख री जी। भालिम भुजि भलो सोव्रन समपणो जी। कर नवली कळी निजरि निरमळी जी।
—ल.पिं.
उ०—४ जन हरिदास परनारियां, रोपै निजरि गंवार। गगन चढ्या घर में घसै, बूडा काळीधार।—ह.पु.वा.
उ०—५ देव दया कर ठाकर चाकर निजरि निहाळि। दुखटाळक जगपाळक निजबाळक प्रतिपाळ।—प्राचीन फागु सग्रह
निजरीजणो, निजरीजबो—देखो 'नजरीजणो, नजरीजबो' (रू.भे.)
निजरीजणहार, हारो (हारी), निजरीजणियो —वि०।
निजरीजिओड़ो, निजरीजियोड़ो, निजरीज्योड़ो—भू०का०कृ०।
निजरीजियोड़ो—देखो 'नजरीजियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निजरीजियोड़ी)

नेजळ-वि० [सं० निः+जल] १ जल से रहित, शुष्क।

उ०—देस सुरंगउ भुइं निजळ, न दियां दोस थळांह। घरि घरि चंद वदन्नियां, नीर चढइ कमळांह।—ढो.मा.

२ निर्बल, अशक्त।

३ निर्लज्ज, बेशर्म। उ०—लुळि लुळि लपाक भ्फोटा लिवै, ऊंचा नीचा आवता। नमि नमि नाक धमली निजळ, जमीं लगावै जावता।
—ऊ.का.

निजवा-वि० (बहु व०) [सं० निः+यव] बिलकुल स्वच्छ, निखालिश (गेहूं)

निजांम-सं०पु० [अ० निज़ाम] १ प्रबन्ध, इन्तजाम।

२ हैदराबाद के नव्वाबों का पदवीसूचक नाम।

निजांमत-सं०स्त्री० [अ० निज़ामत] १ नाजिम का कार्यालय।

२ नाजिम का कार्य।

३ नाजिम का पद।

४ प्रबन्ध, व्यवस्था।

निजायक-वि० [अ० निज़ाअ+रा.प्र. क] शत्रु, वैरी, दुश्मन।

उ०—खड़ं असि 'सेर' दिसी चढ़ि खाग। निजायक जाणि खिजायक नाग।—सू.प्र.

निजार-वि० [फा० निजार] १ गरीब, दरिद्र।

२ दुबला, दुर्बल।

३ निर्बल, कमजोर, असमर्थ।

निजारणौ, निजारबौ-क्रि०स० [फा० नजर] निरखना, देखना, लखना।

उ०—१ पकवांन जळं बिय पावन कौ, गहरी धुनि रागनि गावन कौं। नव नार सुयार निजारण कौ। धर धूतन वस्त्र सुधारण कौ।
—ऊ.का.

उ०—२ मुकती समजी झख मारन में, जुगती सब नार निजारण में। बुगला कर बैन पोटाथ पती, कर चेलिय कंथ बणै कुमती।
—ऊ.का.

निजारणहार, हारौ (हारी) निजारणियौ—वि०।

निजारिग्रोड़ौ, निजारियोड़ौ, निजारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निजारीजणौ, निजारीजबौ—कर्म वा०।

निजारियोड़ौ-भू०का०कृ०—निरखा हुआ, देखा हुआ, लखा हुआ।

(स्त्री० निजारियोड़ी)

निजारौ—देखो 'नजारौ' (रू.भे.)

उ०—वना गगा तट न्हाबा नै मती जावौ, क सरदी लग जायगी। वना नयनां रौ निजारौ मत मारौ, क नजरियां लग जायगी।
—लो.गी.

निजिक, निजीक, निजीकी, निजीख—देखो 'नजदीक' (रू.भे.)

उ०—१ यहां वड़ोदा वा रांमवाग इस तरफ से फौज हजार बत्तीस अपणैं सांमल लई। फेर मारवाड़ आय कर दिलोनूं निजिक जावतां फौज लाख दौढ़ हुई। अरु जाय दिली कै घेरौ दियौ नै मोरचा वैठाया।—द.दा.

उ०—२ पछै हुंसार री फौजदार सारंगखांन लारै वार चढ़ियौ, सू साहवै आयौ। तद कांधलजी सारै साथ सूं चढ सांमा आया, नै सारंग खांन री साथ निजीक आयौ।—द.दा.

उ०—३ यां करतां फौजां आय निजीक लागी। बीच खेत वुहारांणो खंभो रोपियो।—नैणसी

उ०—४ वीवाह करण तेथ वैठा व्राह्मण, समधा अगिनि सींचतइ सारि। नवग्रह दस दिग्पाळ निजीकी, अथवा वरइ करइ आचार।
—महादेव पारवती री वेलि

निजुगति—देखो 'निरयुक्ति' (रू.भे.)

निजूम-सं०पु० [अ०] ज्योतिषी। उ०—पुणं निजूम अरज मत प्राजो। सनि रवि राहु केत दन साजो।—सू.प्र.

निजोख-वि०—निशंक, वेफिक्र।

निजोग—देखो 'नियोग' (रू.भे.)

निजोड़णौ-वि०—१ काटने, मारने, संहार करने वाला. २ नाश करने वाला।

रू०भे०—निज्झोड़णौ, निझोड़णौ।

निजोड़णौ, निजोड़बौ-क्रि०स० [सं० नि+जुड्] १ काटना, मारना, संहार करना। उ०—१ रहचै पिसण जुतं भड़ 'रासा' धारा मूहै निजोड़ वड़। गिळती मांस रंगी रिण ग्रीजण, उडंती रंगिया अनड़।
—रंगरेलौ बीठू

उ०—२ तरै आत वेवै हुवै दीध ताळी। भखेवा कजै राखसी सीत भाळी। अहै वाघसी राकसी सीत ग्रासा। निजोड़ै जती जेण रा कांन नासा।—सू.प्र.

उ०—३ समोभ्रम 'पेम' 'हिंदाळ' सकाज। निजोड़त मुगगळ थाट नराज।—सू.प्र.

२ नाश करना। उ०—दमगळ रवि थांभै वाग दीठ। रिम घटां दियौ खग झटां रीठ। जाजुळि पड़िहारां कुळ निजोड़ि। इम लायौ मंडोवर गढ़ अरोड़ि।—सू.प्र.

३ पृथक करना, अलग करना।

रू०भे०—निजुणौ निजुबौ।

निजोड़णहार, हारौ (हारी), निजोड़णियौ—वि०।

निजोड़वाड़णौ, निजोड़वाड़बौ, निजोड़वाणौ, निजोड़वाबौ, निजोड़-वावणौ, निजोड़वावबौ, निजोड़ाड़णौ, निजोड़ाड़बौ, निजोड़ाणौ, निजोड़ाबौ, निजोड़ावणौ, निजोड़ाववौ—प्रे०रू०।

निजोड़िग्रोड़ौ, निजोड़ियोड़ौ, निजोड़योड़ौ—भू०का०कृ०।

निजोड़ीजणौ, निजोड़ीजबौ—कर्म० वा०।

निज्झोड़णौ, निज्झोड़बौ, निझोड़बौ, निझोड़णौ, निझोरणौ, निझोरबौ।—रू०भे०

निजोड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ काटा हुआ, मारा हुआ, संहार किया

हुआ. २ नाश किया हुआ।
३ पृथक किया हुआ, अलग किया हुआ।
(स्त्री० निजोड़ियोड़ी)

निजोरी-वि० [सं० नि+फा० जोर+रा०प्र० ओ] (स्त्री० निजोरी) कमजोर, अशक्त, शक्तिहीन।

निज्जणौ, निज्जबौ-क्रि०स०—विजय करना, जीतना।
उ०—१ नवलग कुळि धणसीहनंदणु सुप्रसिद्धउ, सेताहि तिय कुखि जाउ बहु गुणह समिद्धउ। बाळकाळि निज्जणवि मोह संजम सिरि रत्तउ, गोयम चरिय पयास करणु इणि काळि निरुत्तउ।
—अभयतिक यती
उ०—२ बालत्तणि वय गहण सुपुणि मुणिवर संभाळियउ। अट्टकम्म निज्जणवि गमण दुग्ग गढ टाळियउ।—पहराज
निज्जणहार, हारौ (हारी), निज्जणियौ—वि०।
निज्जिओड़ौ, निज्जियोड़ौ, निज्ज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निज्जीजणौ, निज्जीजबौ—कर्म वा०।
निज्जिणौ, निज्जिबौ—रू०भे०।

निज्जर—देखो 'निरजर' (रू.भे.)

निज्जिणौ, निज्जिबौ—देखो 'निज्जणौ, निज्जबौ' (रू.भे.)
उ०—ता उन्हउ सीयळु जयइ जळु, फासुय थप्पिय विवहप्परि। निज्जिणिउ विजयणंद तिहि, अभय तिलकि चउपट्टि धरि।
—अभयतिक यती

निज्जियोड़ौ—भू०का०कृ०—जीता हुआ, विजय किया हुआ।
(स्त्री० निज्जियोड़ी)

निज्जुत्ति—देखो 'निरयुक्ति' (रू.भे.) (जैन)

निज्झोड़णौ—देखो 'निजोड़णौ' (रू.भे.)
उ०—स्यांम धरम्मी स्यांम रा, वाजै सुहड़ वरंम। वे छत्री भल ऊपना, आरज-वंस अनंम। आरज वंस अनंम गयंदां गोड़णा। पह माते पीठांण झिलम निज्झोड़णा। एक अनेकां सीस निग्रोठा नवखणा। भिड़ियां भीम भुजाट रजव्वट रखणा।
—किसोरदांन बारहठ

निज्झोड़णौ, निज्झोड़बौ—देखो 'निजोड़णौ, निजोड़बौ' (रू.भे.)
निज्झोड़णहार, हारौ (हारी), निज्झोड़णियौ—वि०।
निज्झोड़िओड़ौ, निज्झोड़ियोड़ौ, निज्झोड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निज्झोड़ीजणौ, निज्झोड़ीजबौ—कर्म वा०।

निज्झोड़ियोड़ौ—देखो 'निजोड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निज्झोड़ियोड़ी)

निझर-सं०पु०—बांसुरी, वंशी (अ.मा.)

निझर, निझरण—देखो 'निरझर, निरझरण' (रू.भे.)
उ०—१ भड़ पावस में म्हारी आंखां निझर हो रही हो, लता विरहा के असुवन तैं, कुण सुनै उस बेदरदी बिन टप टप मोती हंस वे।—रसीलै राज
उ०—२ अवै अठै रतनां विसूरणा करै है, नैण जांणै निझरण झरै है।—र. हमीर

निझरणी—देखो 'निरझरणी' (रू.भे.)

निझरणौ—देखो 'निरझर, निरझरण' (अल्पा., रू.भे.)

निझरणौ, निझरबौ—देखो 'नीझरणौ, नीझरबौ' (रू.भे.)

निझोड़णौ, निझोड़बौ—देखो 'निजोड़णौ, निजोड़बौ' (रू.भे.)
उ०—सवाइय 'मांन' तणौ सिरताज। निझोड़त मुगळ झाट नराज।
—सू.प्र.
निझोड़णहार, हारौ (हारी), निझोड़णियौ—वि०।
निझोड़वाड़णौ, निझोड़वाड़बौ, निझोड़वाणौ, निझोड़वाबौ, निझोड़वावणौ, निझोड़वावबौ, निझोड़ाड़णौ, निझोड़ाड़बौ, निझोड़ाणौ, निझोड़ाबौ, निझोड़ावणौ, निझोड़ावबौ—प्रे०रू०।
निझोरिओड़ौ, निझोरियोड़ौ, निझोरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
निझोड़ीजणौ, निझोड़ीजबौ—कर्म वा०।

निझोरियोड़ौ—देखो 'निजोड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निझोरियोड़ी)

निटोळ, निटोल, निटोलि-वि०—१ कटु, तीक्ष्ण (शब्द)
उ०—परिपरि-थिकां प्रीछवी, वाली दीइ न बोल। सहस-गमी सुनी थई, सुणया सब्द निटोळ।—मा.कां.प्र.
२ जो भला न हो, जो भला न लगे, असुहावना, बुरा।
उ०—कां रे रहिउ कुद्रस्टीआ, निसिहर! थई निटोळ। गुरांणी नई गुरवी वली, वहिन-तणउ सरि बोल।—मां.कां.प्र.
३ व्यर्थ, फिजूल। उ०—वरसइ थोड़उं, बहु लवइ, गाजइ गयणि निटोल। अभिकुं दाखी ऊसरइ, जिम नीस तना बोल।
—मा.कां.प्र.
४ गंवार, नासमझ, मूर्ख। उ०—इम निज निज मुख बोलै बोल, समझ विहूणा निगुण निटोळ। कहै 'जिनहरख' ए चउदमी ढाल, पांणी पांणी नै जास्यै ढाल।—स्रीपाळ रास
५ उद्धत, उद्दण्ड। उ०—चातक! तु तक चूकिउ, इहां म आवी बोलि। मरडी नांखिसि मुंडडी, हुं छउं नेटि निटोलि।
—मा.कां.प्र.
६ मान रखने वाला, गर्वीला, घमण्डी।
उ०—चित्रसाळि चउमास रहै, लहै गुरु आदेस। कोसि कामिनी नित्य करइ, सुर-सुंदरी जैसा। हाव-भाव विभ्रम करइ, कुं भये निठुर निटोल। पूरव-प्रेम संभाळ प्रियु, तुं मांन हमारौ बोल।—स.कु.
रू०भे०—निठोळ, निठोल।

निट्ठ, निठ—देखो 'नीठ' (रू.भे.)
उ०—१ पति अति आतुर त्रिया मुख पेखण, निसा तणौ मुख दीठ निठ। चंद्र-किरणि कुलटा सु निसाचर, द्रवडित अभिसारिका द्रिठ।
—वेलि.
उ०—२ ऊंडा पांणी कोहरइ, थळे चडीजइ निट्ठ। मारवणी कइ कारणइ, देस अदीठा दिट्ठ।—ढो.मा.

उ०—३ इण दिस 'अजन' लियां दळ आयौ, सांभर वाळे कोट संमायौ। क्यों मुंह-मेळ प्रथम दिन कीधौ, लुड़ मुड़ गयौ कोटि निठ लीधौ।—रा.रू.

उ०—४ सारा कूपा सारखा(का), पारा अक पोलाद। ऊंटां छकड़ां ऊपरै, लावै निठ निठ लाद।—सिववक्स पाल्हावत

ठणौ, निठबौ–क्रि०अ० [सं० नस्] १ समाप्त होना।

उ०—१ वाल्यौ डाकू डूंगसिंघ, थूं सुण रै लोटचा जाट। मिनखां निठगी मोठ-बाजरी, घोड़ां निठग्यौ घास।

—डूंगजी जवारजी री पड़

उ०—२ मुहारा रै खड़ीण री उनाव जैसळमेर सूं कोस ६ तथा ७ दिखण नूं वडी ठोड़ कोस ५ मांहे उनाव भरीजै। पाखती रा भाखरां री पांणी आवै। मांहे गोहूं मण ५००० बीज वहै, तितरो भोग अखै। पांणी निठै जदी वेरा मांहे २० तथा २५ बधायोड़ा, पांणी घणौ मीठो।—नैणसी

२ कम होना।

ज्यूं—रुपया है जिका तौ दिन दिन निठ रह्या है, सैंग खतम व्है जासी जदी कांई करस्यां।

निठणहार, हारौ (हारी), निठणियौ—वि०।

निठवाड़णौ, निठवाड़बौ, निठवाणौ, निठवाबौ, निठवावणौ, निठवावबौ—प्रे०रू०।

निठाड़णौ, निठाड़बौ, निठाणौ, निठाबौ, निठावणौ, निठावबौ—

—क्रि. स.।

निठिग्रोड़ौ, निठियोड़ौ, निठ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निठीजणौ, निठीजबौ—भाव वा०।

नींठणौ, नींठबौ, नीठणौ, नीठबौ—रू०भे०।

ठल्लू, निठल्लौ–वि० [सं० निः स्थल] (स्त्री० निठल्ली) १ जो कोई काम-धन्धा न करे, निकम्मा।

२ जिसके पास कोई काम-धन्धा न हो, खाली।

३ रोजगाररहित, बेरोजगार, बेकार।

ाड़णौ, निठाड़बौ—देखो 'निठाणौ, निठाबौ' (रू.भे.)

निठाड़णहार, हारौ (हारी), निठाड़णियौ—वि०।

निठाड़िग्रोड़ौ, निठाड़ियोड़ौ, निठाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निठाड़ीजणौ, निठाड़ीजबौ—कर्म वा०।

निठणौ, निठबौ—अक रू०।

ाड़ियोड़ौ—देखो 'निठायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निठाड़ियोड़ी)

ाणौ, निठाबौ–क्रि०स०—१ समाप्त करना, खतम करना।

२ कम करना।

निठाणहार, हारौ (हारी), निठाणियौ—वि०।

निठवाड़णौ, निठवाड़बौ, निठवाणौ, निठवाबौ, निठवावणौ, निठवावबौ—प्रे०रू०।

निठायोड़ौ—भू०का०कृ०।

निठाईजणौ, निठाईजबौ—कर्म वा०।

निठणौ, निठबौ—अक० रू०।

निठाड़णौ, निठाड़बौ, निठावणौ, निठाववौ—

नीठाड़णौ, नीठाड़बौ, नीठाणौ, नीठाबौ, नीठावणौ, नीठावबौ—

—रू०भे०।

निठायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ समाप्त किया हुआ, खतम किया हुआ।

२ कम किया हुआ।

(स्त्री० निठायोड़ी)

निठावणौ, निठावबौ—देखो 'निठाणौ, निठाबौ' (रू.भे.)

निठावणहार, हारौ (हारी), निठावणियौ—वि०।

निठाविग्रोड़ौ, निठावियोड़ौ, निठाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निठावीजणौ, निठावीजबौ—कर्म वा०।

निठणौ, निठबौ—अक० रू०।

निठावियोड़ौ—देखो 'निठायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निठावियोड़ी)

निठि—देखो 'नीठ' (रू.भे.)

उ०—राईकां रावतां जकड़ि, लीधा जोकोड़ां। बदन कड़ा बीटिया, तरां घाती नकतोड़ां। मुसकिल कूंच्यां मांडि, तिका निठि कीधा ताबै। अड़ता सिर आकास, फेण भड़ता मुख फाबै।—मे.म.

उ०—२ दिन तौ यैसें संकुचिवा लागौ जैसे रिणाई को देखैं दांम को देणहार सकुचै। क्रमि क्रमि यां दिन संकुचै छै अर पोस कै विखै रात्रि छै सु आकास कौं निठि छोड़ै छै। जैसे प्रऊढ़ा नाइका नाइक कौं।—बेलि टी.

निठियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ समाप्त हुवा हुआ, खतम हुवा हुआ।

२ कम हुवा हुआ।

(स्त्री० निठियोड़ी)

निठुर—देखो 'निस्ठुर' (रू.भे.)

उ०—१ चित्रसाळि चउमास रहे, लहे गुरु आदेसा। कोसि कामिनी नित्य करइ, सुरसुंदरी जैसा। हाव-भाव विभ्रम करइ, कुं भये निठुर निटोल। पूरव-प्रेम संभाळ प्रियु तूं, मांन हमारौ बोल के।

—स.कु.

निठुरई, निठुरता, निठुराई—देखो 'निस्ठुरता' (रू.भे.)

निठुराव–सं०पु० [सं० निष्ठुर+रा० प्र० आव] निर्दयता, कठोरता, निष्ठुरता।

निठोळ, निठोल—देखो 'निटोळ' (रू.भे.)

निठोड़–सं०स्त्री० [सं० निः+स्थल] बुरी जगह, कुठौर।

निठोड़ौ–वि० [सं० निः+स्थल+रा.प्र.ड़ौ] (स्त्री० निठोड़ी) जिसके टिकने का कोई स्थान न हो, जिसके पास कोई जगह न हो, ठौररहित।

निडर–वि० [सं० निः+डर] जो न डरे, जिसे डर न हो, निर्भय, निःशंक। उ०—१ ऐसे वन में रत थकौ, करतौ केळि किलोळ। निडर थकौ विचरत सदा, संग लिए सब टोळ।—गजउद्धार

उ०—२ नहर नीलांण निरवांण हरमांण तन, चितां सरसांण रंग-मांण चाड़ै। निडर निमरांण गलगांण बीणा नचै, मांण रथ तांण पमगांण माड़ै।—र.रू.

२ हिम्मत वाला, साहसी।

रू०भे०—निडार, निडुर, निड्डुर, निरडर।

निडरता, निडराई-सं०स्त्री० [सं० नि+डर+ता, श्राई प्रत्य०] निर्भय होने का भाव, निर्भीकता, निर्भयता।

निडार—देखो 'निडर' (रू.भे.)

उ०—नरपाळ काळ मांझी निडार। भांणी भुज्ज नवकोट भार।
—ग.रू.बं.

निडुर, निड्डुर—देखो 'निडर' (रू.भे.)

उ०—१ निडुर हियइ नाहुर नेठद्दइ, वूं किय हरि जिम रिणवट वद्दइ।—रा.ज.सी.

उ०—२ नवकुळ नाराज मालक निड्डुर, बारह मेघ की सातइ सायर।
—ग.रू.बं.

नितंब-सं०पु० [सं० नितम्बः] १ स्त्रियों के शरीर के पीछे की ओर कटि से कुछ नीचे का उभरा हुआ भाग, कटिपश्चाद्भाग, चूतड़।

उ०—१ हुवइ घटि नदी हेम हेमाळै, विमळ लिंग लागा वधण। जोवनागमि कटि किस थायै जिम, थायै थूळ नितंब थण।
—वेलि.

उ०—२ बांमा भार नितंब तिलंगी वारियां। नहीं इसी अंग वासक तिहुलनारियां।—बां.दा.

उ०—३ माता पिता कै आगै खेलतां कांम रा जु विरांम छै, सु छिपाया चाहिजै। सु कांम रा विरांम कुण। जु एक तउ कुच प्रकट हुया। नेत्रां चंचळता हुई। नितंब भारी दीसै लागा। ए कांम का विरांम।
—वेलि टी.

२ पहाड़ के बीच का भाग (डिं.को.)

३ कन्धा।

वि०—१ बड़ा* (डिं.को.)

२ अति तीक्ष्ण* (डिं.को.)

नितंबणी नितंबिणी-सं०स्त्री० [सं० नितंबिनी] सुघड़ व सुन्दर नितंब वाली स्त्री, कामिनी. २ सुन्दरी (अ.मा.)

उ०—स्वतंत्र नृत्यसाळ में नितंबनी नचै नहीं। सुहागिनी स्वराग राग रागनी रचै नहीं। तथुंग थुंग तत्थ थेई ताल साजती नहीं। वधू उमंग संग में, म्रिदंग बाजती नहीं।—ऊ.का.

वि०स्त्री०—सुन्दर नितंब वाली। उ०—नितंबणी जंघ सु करभ निरूपम, रंभ खंभ विपरीत रख। जुग्रळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणै थाणांणै विदुख।—वेलि.

नित-अव्य० [सं० नित्य] १ सदा, सर्वदा, हमेशा।

उ०—१ सोक री दसा नित मिटावण सेवगां, गुण घणा पोक री द्रवण गाढां। चाढ अहुं लोक री निसुंभ सुंभ बाध चढ, ढोकरी गहै खळ विकट ढाढां—खेतसी बारहठ।

उ०—२ जब लग 'पातल' खग झल, सिर कंधर उससंत। तो लो पत दिल्ली तखत, चित नित रहो निचिंत।—जैतदान बारहठ

२ प्रतिदिन, रोज।

ज्यूं—थे नित श्रो कांई धंधौ छेड़ दो?

सं०पु०—१ श्रीकृष्ण (अ.मा.)

२ देखो 'नित्य' (रू.भे.)

रू०भे०—नत, नत्त, निच्च, निच्चु, नित, निति, नितु, नित्त, नीत।

नितक्रत-सं०पु० [सं० नित्यकृत] १ देवल, देवालय (अ.मा.)

२ नियमपूर्वक नित्य किए जाने वाले कार्य।

नितनेम—देखो 'नित्यनियम' (रू.भे.)

उ०—मात पिता री मोह, कुटंब छोड़ै जिण कारण। धरै पतीव्रत धरम, तेण समजै भवतारण। जीमै नित जीमाय, ताप देयै तोई तुठै। आग्या जुत अरधंग, रांड कवणा सूं रूठै। नितनेम हियै भूलै नहीं, पालै सदा सचेत नै। भोगना-कूट पर प्रिय भजै, हाय तजै इण हेत नै।—ऊ.का.

नितप्रत, नितप्रति, नितप्रति—देखो 'नित्यप्रति' (रू.भे.)

उ०—१ नारांयण न बिसारजै, लीजै नितप्रत नांम। लाभीजै मिनखा-जनम, (तो) कीजै उत्तम कांम।—ह.र.

उ०—२ वांणी पवित्र करिस सीतावर, नित-प्रत कीत प्रकासै नर-हर। नासा विसन करिस इम निरमळ, प्रभु घूंटे तो चरणां-परमळ।
—ह.र.

उ०—३ ब्रह्म सिव सनकादि मुनिवर, ध्यांन नित-प्रत चित धरै। अगुण पर उर वसै निज तत, राज भक्ति 'जसराज' रै।—सू.प्र.

उ०—४ खान-पांन उत्तम जुगत, रस विलास रति रंग। नव-जोवन नित-प्रति रहै, परै न कवहूं भंग।—गजउद्धार

उ०—५ नरां सह प्राक्री तुझ्झ नियाउ। राठोड़ां रूपक घूहड़' राउ। सु मांहि कमध्वज जांणै सूर। नितप्रति 'जैत' चढंतै नूर।
—रा.जै.रासो

नितमजा-सं०स्त्री० [सं० नितम्ब=पर्वत का मध्य भाग+जा]

१ गिरिजा, पार्वती (अ.मा.)

२ नदी।

नितरणौ, नितरबौ—देखो 'नीतरणौ, नीतरबौ' (रू.भे.)

नितरणहार, हारौ (हारी), नितरणियौ—वि०।

नितरवाड़णौ, नितरवाड़बौ, नितरवाणौ, नितरवाबौ, नितरवावणौ, नितरवावबौ, नितराड़णौ, नितराड़बौ, नितराणौ, नितराबौ, नितरावणौ, नितरावबौ।
—प्रे०रू०।

नितरिग्रोड़ो, नितरियोड़ो, नितर्‌योड़ो—भू०का०कृ०।

नितरीजणौ, नितरीजबौ—भाव वा०।

नितरियोड़ो—देखो 'नीतरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नितरियोड़ी)

नतल-सं०पु० [सं०] सात पातालों में से एक ।
नतांत-वि० [सं०] १ सर्वथा, बिल्कुल, निरा, एकदम, निपट।
२ बहुत अधिक, अतिशय ।
नता-सं०पु० [सं० नेतृ] १ प्रजापति, राजा, भूप (ह.नां.)
२ मुखिया (ह.नां.)
नतार—देखो 'नीतार' (रू.भे.)
नतारणौ, नितारबौ—देखो 'नीतारणौ, नीतारबौ (रू.भे.) (अमरत)
उ०—नरोत्तम उत्तम तार नितार, चराचर चितनहार चितार ।
—ऊ.का.
नितारणहार, हारौ (हारी), नितारणियौ—वि० ।
नितारिओड़ौ, नितारियोड़ौ, नितार्‌योड़ौ—भू०का०कृ० ।
नितारीजणौ, नितारीजबौ—कर्म वा० ।
नितरणौ, नितरबौ—अक० रू० ।
नतारियोड़ौ—देखो 'नीतारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नितारियोड़ी)
नताळौ-सं०पु० [देशज] योद्धा, वीर । उ०—निहसि खेत बाजिया निताळा, विढै पूत जिम साहांवाळा । वडै पराक्रम 'आजम' वीतौ, जुध गरीठ हठ 'आलम' जीतौ ।—रा.रू.
२ देखो 'निराताळौ' (रू.भे.)
नति-सं०स्त्री० [सं० न्यात] १ जाति, समुदाय ।
२ देखो 'नित' (रू.भे.)
उ०—१ धरापति आज लखधीर रजधणी । घणी भुइ जास जसवास रिधि घणी । कवी निति देखि मन मांहि विळकुळै । भली विधि तेज रवि जेम भळहळै ।—ल पिं.
उ०—२ कह्यउ हमारउ जइ सुणउ । थारइ छइ साठि अंतेवरी नारि । कर जोड़ै धन वीनवइ । राजकुंवरी निति भोगवि राय ।
—वी.दे.
नितीठ, नितीठौ—देखो 'नत्रीठ, नत्रीठौ' (रू.भे.)
उ०—बडौ रीठ बाजियौ सीधा मुंहडां आय कर मिळिया, फेर मोटा बोल बोलियोड़ा था सो निराठ नतीठा वाजिया ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
नितु—देखो 'नित' (रू.भे.)
उ०—१ नितु नितु नवला सांढिया, नितु नितु नवला साजि । पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेड़ण काजि ।—ढो.मा.
उ०—२ जे नितु रोजु करइ, नितह निम्माज गुंजारइं । पंच वखत सम धरइं, धणी जे एक संभारइ ।—व.स.
उ०—३ नियरि पुरि हुइ वधांमणां ए, वर नितु नितु आवइ भेटणां ए । आछण पांणी छांडती ए, दवदंती मंदिर प्रापती ए ।
—नळ-दवदंती रास
नितुर-वि० [सं० निः स्तुल] नीच । उ०—न्याय न जांण्यौ नितुर, मिलज जांणि नहि नीती । निज नारी-व्रत नेम, रुगड आंणी नहि रीती । पर-दार प्यार हुयमौ प्रमत, बिन सींगां रौ वैलियौ । भोग रै मांय भंवतौ भंवर, गयौ जनम सब गैलियौ ।—ऊ.का.
नितेई-सं०स्त्री० [सं० नि+तत्व] वह गाय या भैंस जिसके दूध में घी की मात्रा बहुत कम हो ।
नित्त—देखो 'नित' (रू.भे.)
उ०—१ नैण भलांई लागजो, तूं मत लागै चित्त । नैण छूटसी रोय नै, (थूं) बंध्यौ रहसी नित्त ।—अज्ञात
उ०—२ ऊनमि आई बद्दळी, ढोलउ आयउ चित्त । यो बरसइ रितु आपणी, नइण हमारे नित्त ।—ढो.मा.
नित्ततायौ, नित्तोतायौ-वि० [सं०नित्यतूर] (स्त्री० नित्तताई, नित्तोताई, नित्तोतायी] अधिक लाड़-प्यार के कारण उद्दण्ड, प्यार में उन्मत्त, प्यार में पागल ।
ज्यूं—आ छोरी तौ तित्तोतायी है ।
रू०भे०—नीतोतायौ, नीत्ततायौ, नीत्तोतायौ ।
नित्य-वि० [सं० नित्य] १ जिसका कभी भी नाश न हो, शाश्वत, अविनाशी ।
ज्यूं—वेदांत तौ केवळ ब्रह्म नै हीज नित्य मांनै है ।
२ हमेशा का, रोज का, प्रतिदिन का ।
सं०पु०—१ नित्य कर्म, नित्य नियम ।
उ०—नित्य मेहेल्यूं, धरम छांड्यू, त्यज्यु पंडित संग । राजकारज वीसरयां, नि दुरोदर सूं रंग ।—नळाख्यांन
२ देखो 'नित' (रू.भे.)
नित्यकरम-सं०पु० [सं० नित्यकर्म] प्रतिदिन का काम, नित्य की क्रिया ।
नित्यक्रिया-सं०स्त्री० [सं०] नित्यकर्म ।
नित्यचरचा-सं०स्त्री० [सं० नित्यचर्या] नित्यनैमित कर्म, आचरण ।
उ०—अर मीणां नै जोर कीधौ क नहीं इसड़ौ हेलौ पाड़ि कुळवंत खेत रा बाजी रै बळ उण ही दिन पाछौ गागरोणि जाइ देह री नित्यचरया साधै जिकण नै सुणतां ही मीणां ओद्राव धारै ।
—वं.भा.
नित्यनियम, नित्यनेम-सं०पु० [सं० नित्यनियम] हमेशा नियमपूर्वक किया जाने वाला कार्य, प्रतिदिन का निश्चित व्यापार ।
उ०—नित्यनेम पूजन कुंवरजी करी छायादांन नित्य करता सो कियौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता
रू०भे०—नितनेम ।
नित्यपिंड-सं०स्त्री० [सं०] एक ही घर से नित्य ली जाने वाली खान-पान की सामग्री, प्रतिदिन एक ही घर से ग्रहण किया जाने वाला आहार । (जैन)
उ०—१ किवाड़ जड़ै सो साध हीज नहीं जद स्वांमीजी कह्यौ, केई किवाड़ जड़ै है । एक घर नौ नित्यपिंड लेवै है । जद ते बोल्यौ, हां महाराज किवाड़ जड़ै है नित्यपिंड लेवै है ।—भि.द्र.

उ०—२ जयमलजी रा टोळा मांहि थी संवत १८५२ रै ग्रासरै गुमानजी, दुरगादासजी, पेमजी, रतनजी ग्रादि सोळै जरणा नीकळ्या।
थांनक निरविंद कलाल रो पांणी वहिरणो पचखो।—भि.द्र.

निरय-प्रति-ग्रव्य० [सं०] हमेशा, हर रोज, प्रतिदिन।
रू०भे०—नत-प्रत, नित-प्रत, नित-प्रति, नित-प्प्रति।

नित्यप्रळय, नित्यप्रळै-सं०पु० [सं० नित्यप्रलय] वेदान्त के अनुसार चार प्रकार के प्रलयों में से एक जो सुषुप्ति अवस्था है, वह प्रलय जो नित्य हो।

नित्यांन-ग्रव्य० [सं० नित्य] हमेशा, नित्य।
उ०—थापै सोजत थांन, 'पातू' रै पड़ियो पगां। नृप कर धूप नित्यांन, मूरत राखै गळ मई।—पा.प्र.
सं०पु०—प्रातःकाल किया जाने वाला दान।

नित्या-सं०स्त्री० [सं०] १ उमा, पार्वती।
२ एक शक्ति का नाम।
३ मनसा देवी।

नित्याभियुक्त-सं०पु० [सं०] वह योगी जो इतना ही भोजन करे जिससे देह की रक्षा होती रहे, बाकी सब त्याग कर योग साधन में ही रत रहे।

नित्याशी-सं०पु० [सं० नित्याशी] भोजन (ग्र.मा.)

निश्रीठ, निश्रीठो—देखो 'नश्रीठ, नश्रीठो' (रू.भे.)
उ०—१ एक ग्रनेकां सीस, निश्रीठा नक्खरणा। भिड़ियां भोम भुजाट, रजव्वट रक्खरणा।—किसोरदांन बारहठ
उ०—२ मिळै निश्रीठ वेग रीठ खाग रीठ मच्च ए। निरक्खि धीर खेत वीर-प्रेत वीर नच्च ए।—रा.रू.
उ०—३ गोळं नाळियं वाजंती, घड़ा गाजंती करंती घोरि। खिवंती ऊनागे खागे, रचावंती रीठ। टीलां वागां रागां चाढ़ि, घूमरंतो वीच घोड़ो। नांखियो सूजांणी, लोहै पांखियं निश्रीठ।
—दूदो सुरतांणोत वीठू

निदड़ली—देखो 'निद्रा' (ग्रल्पा., रू.भे.)

निदरसना-सं०स्त्री० [सं० निदर्शना] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय-उपमान वाक्यों के ग्रर्थों में भिन्नता होते हुए भी एक में दूसरे का इस प्रकार से आरोप किया जाय, जिससे उनमें समानता जान पड़े।

निदरसी-वि० [सं० निदर्शिन्] प्रकट करने वाला, बताने वाला।
उ०—निरखे ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणै लागा कहण। सगळै दोख विवरजित साहो, हूंतो जई हुग्रो हरण।—वेलि.

निदांण-सं०पु० [सं० नि+दाप=लवने अथवा नि+दान=खण्डने]
१ फसल के पौधों के ग्रास-पास उगने वाले घास, तृण ग्रादि को दूर करने का काम, निराई। उ०—साटो घास सिनावड़ो जी, वेकरियो नै कांटो। सळियो खेत करै नीं जद तक, खेती वधै न लांठो। लागै तीखी धार कसी रै, बाढै जड़ां समेत। करसा चेत सकै तो चेत, पैली करलै रे निदांण।—चेतमांनखा

क्रि०प्र०—ग्राणो, करणो, होणो।
रू०भे०—निदांण, निनांण, निनांण, नेदांण, नेदांणो।
यौ०—निदांण-पाळो।

निदांणणो, निदांणबो-क्रि०स० [सं० नि+दाप=लवने] १ फसल के पौधों के ग्रास-पास उगने वाले घास, तृण ग्रादि को दूर करना, निराई करना।
[सं० निर्दलनम्] २ नाश करना, संहार करना, मारना।
उ०—हिरणाकुस राकस तू ही नरसिंघ निदांणा।—केसोदास गाडण
निनांणणो, निनांणबो।—रू भे.

निदांणियोड़ो-भू०का०कृ०—१ फसल के पौधों के ग्रासपास से तृण, घास ग्रादि दूर किया हुग्रा, निराई किया हुग्रा।
२ नाश किया हुग्रा, संहार किया हुग्रा, मारा हुग्रा।
(स्त्री० निदांणियोड़ी)

निदांणो—देखो 'निदांण' (रू.भे.)

निदांन-सं०पु० [सं० निदान] १ रोग की पहचान, रोग निर्णय।
उ०—भ्रमै न भिच्छु भिच्छु की मया न दांन मांन की। न ग्रोसधी चिकत्सयांन दोसर्धा निदांन की।—ऊ.का.
२ ग्रादि कारण। (डि.को.)
३ कारण (डि.को.) उ०—ग्रोरंग सा पातसाह ग्रालम कूं चितारै, ग्रकबर के ग्रास की चिंता नां विचारे। साह ग्रवरंग के पास या समै ग्रावै, सो तो मनसब रीझ इनांम मन वंछा पावै। ग्रकबर साह गाफल गुमांन सूं भारयो, तहवर खांन हाथ सब राज बोझ धारयो। निवाब निदांन पाए सुधबुध विसराई, ग्रौर सूं ग्रौर विचार बावळै की नांई।—रा.रू.
४ परिणाम, फल, नतीजा।
उ०—एक दिन राजा रै ग्ररथ कोई तपस्वीन महारसायण रो निदांन एक ग्रपूरव स्वादु फळ दीधो। सो राजा नै ग्रापरा प्रांण रो ग्रोसध ग्रनंग सेना जांणि ग्रवरोध जाय रांणी रै ग्ररथ निवेदन कीधो।—वं.भा.
५ प्रधानता। उ०—ग्रायो फेर इकावनो, 'काजम' लह्यो निदांन। नायब हुग्रो नवाब रै, रिवत-पुड लसकर खांन।—रा.रू.
६ ग्रंत, नाश।
७ पवित्र, शुद्धि।
८ देखो 'निधांन' (रू.भे.) उ०—ग्रोरंगसा पातसा ग्रासुर ग्रवतार, तपस्या के तेज-पुंज एकसे विसतार। माप का विहाई सा प्रताप का निदांन, मारतंड ग्रागे जिसी जोतसी जिहांन।—रा.रू.
९ देखो 'नियांण' (रू.भे.)
वि०—बहुत, ग्रधिक।
उ०—२ चित मैं साह विचारियो, राजा थयो जवांन। परवस मेरी पोतरी ऐ सिरजोर निदांन।—रा.रू.
ग्रव्य०—१ ग्राखिरकार, ग्राखिर में, ग्रंत में।

उ०—१ नारी नागिन जे डसे, ते नर मुये निदांन। दादू को जीवै नहीं, पूछो सवै सयांन।—दादूवांणी

उ०—२ अरु ब्रह्महत्या को प्राछत करावो। नहीं तो पछै ही पिछतावस्यो। निदांन मारघा जावस्यो।—नैणसी

२ अच्छी तरह से, पक्का, तय, नक्की।

उ०—नळ सिरि वि अवोडा बांध्या, करवां तां मल स्नांन। सांम कळंक रह्या सिरि वि, ए जांणु राय, निदांन।—नळाख्यांन

रू०भे०—निदांनि, निदांनिइ।

निदांनि, निदांनिइ—देखो 'निदांन' (रू.भे.)

उ०—१ सासरा नूं दोहिलूं, उत्तम वैठी रहेइ। निदांनि हुइ सुख भलू, कुळवंती सखी नइ कहेइ।—नळ-दवदंती रास

उ०—२ आवडूं कूड नुहतूं जांणिउं, नरनी निरगुण जाति रे। पुरुस निदांनिइ छेह आपइ, ते तु कहीइ कुजात रे।—नळ-दवदंती रास

निदांनी—वि०—अंतिम आखिरी। उ०—निदांनी निरवांनी निगम गम छांनी नित नई। दिवांनी दिव्यांनी न प्रभु गत जांनी गत दई। अया नेता रावै असत नहिं भाखै अत त्रपा। कवी को बखांणै कछुक हम जांणै तव क्रिपा।—ऊ.का.

सं०स्त्री०—रोग-परीक्षा करने की विद्या।

स०पु०—रोग-परीक्षक, वैद्य।

निदांळु—देखो 'निद्राळु' (रू.भे.)

निदांळुवौ—देखो 'निद्राळु' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—सूअर सूतौ नींद भर, भूंडण पोहरा देह। ऊठो नाहिं निदांळुवां, घर रूंधो धोड़े ह।—डाढाळा सूर री वात

(स्त्री० निदांळुवी)

निदाघ—सं०पु० [सं०] १ गरमी, आतप, ताप (डिं.को.)

उ०—माघ निदाघ परइं दहै, ए अदभुत रस देखूं जो। सीतळ पणि जड़ता घणु; प्रीतम परतिख पेखूं जी।—वि.कु.

२ धूप, घाम।

३ ग्रीष्म काल, गरमी। उ०—निदाघ में निदाघ बाग आग में नहीं। नखानुराग त्याग व्है, तडाग भाग में नहीं।—ऊ.का.

४ पुराणानुसार पुलस्त्य ऋषि का एक पुत्र।

निदाघकर—सं०पु० [सं०] सूर्य, रवि।

निदाघकाळ—सं०पु० [सं० निदाघकाल] गर्मी की ऋतु, ग्रीष्मकाल।

निदाडियौ, निदाढियौ—वि० [सं० नि+दंष्ट्रा] १ बिना दाढ़ी मूछ का।

उ०—प्रगटे वांम प्रवीण रौ, नर निदाडियो नांम। नर मावडिया नांम त्यूं, विनां पयोधर वांम।—बां.दा.

२ पुरुषत्वहीन।

उ०—प्रथम अचळदास खीची गढ़ गागुरन को धणी। गढ़ गागुरन राज्य करै छै। तिण रै रांणी लालां मेवाड़ी। दस सहस मेवाड़ रौ धणी रांणो मोकळसी तिणरी बेटी। निदाढिया पुरखराज सगळी ही लालां रै हाथ।—लाली मेवाड़ी री वात

निदिध्यास, निदिध्यासन—सं०पु० [सं० निदिध्यासः, निदिध्यासनम्] बारम्बार ध्यान में लाना, बारम्बार स्मरण करना।

उ०—इण आगै हठ जोग कहीजै, सम दम साजन तांई। सुरत सबद की करी एकता, निदिध्यास कहाई।

—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—निधिध्यासन, निध्यासन।

निदेस, निदेसण—सं०पु० [सं० निदेशः] १ निर्देश, आदेश, आज्ञा, हुक्म (डिं.को.)

उ०—१ नरेस देस देस के निदेस मांनते नहीं। थिरांन थांनथांन के जवांन जांणते नहीं। धरा अमात्य व्रात्य माक माक मा धरै नहीं। करोर हा भ्रितादि आ खमां खमां करै नहीं।—ऊ.का.

उ०—२ पतसाही सेनापती, चहै उन्नती चीत। तो निदेस लखतेस तण, रहचे उर धर रीत।—किसोरदांन बारहठ

२ शासन। ३ कथन।

निद्दळणौ, निद्दळबौ—क्रि०स० [सं० निर्दलनम्] संहार करना, नाश करना, मारना, काटना। उ०—दस दसारह बहिनडीय, बीनउं घरइ आथांनु। 'दांणव दळ सवि निद्दळउं', मनि एवडु अभिमांनु।

—पं.पं.च.

निद्दा—देखो 'निद्रा' (रू.भे.) (जैन)

निद्देस—देखो 'निदेस' (रू.भे.) (जैन)

निद्ध—वि०—१ स्निग्ध, चिकना (जैन)

२ देखो 'निधि' (रू.भे.)

निद्धंधस—सं०पु० [सं० निद्धन्वसः] निद्धन्वस। (उ.र.)

निद्धड़णौ, निद्धड़बौ—क्रि०स०—१ परास्त करना। उ०—सयल गरुय गुण गण गणिद गण सीस मउड़ मणि। निय वयणिहिं पर वादि निद्धड़इ सुतक्खणि।—अभयतिक यती

निद्धड़ियोड़ौ—भू०का०कृ०—परास्त किया हुआ।

(स्त्री० निद्धड़ियोड़ी)

निद्धनव—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—देह साथ छाया जैसे, करम साथ काया देखो। माया साथ उद्यम के, संभू महामाई के। ध्यांन साथ सिद्धी जैसे, ग्यांन साथ रिद्धी गेह। नीती साथ निद्धनव सेस रघुराई के।—ऊ.का.

निद्धि—देखो 'निधि' (रू.भे.)

निद्र—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

निद्रा—सं०स्त्री० [सं०] प्राणियों की वह निश्चेष्ट अवस्था जो उनकी सचेष्ट अवस्था के बीच बीच होती रहती है जिसमें उनकी चेतन वृत्तियां व कुछ अचेतन वृत्तियां भी रुकी रहती हैं, सुप्ति, नींद।

(डिं.को.)

उ०—१ नहिं पहुंच नीच, मारज्जारि मींच। सावजन संक, निद्रा निसंक।—ऊ.का.

उ०—२ अतुळीबळ आणंद में, सूतो सहज सुभाय। मन चिंता

ध्यारं नहीं, मुक्त तें निद्रा भाय ।—गजउद्धार

उ०—३ क्षुधा त्रिषा निद्रा नहीं, नहि लोही नहि मास । पंजर छंडइ प्रांणीड, पणि माधव नी भ्रास ।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—नंद्रा, निंद, निंदा, निंदिया, निंद्रा, निंद्रा, निद्दा, निद्र, नींद, नींद्र, नींद्रा, नीद, नीद्र, नीद्रइ ।

अल्पा०—निंदड़ली, निदड़ली, नींदड़ली, नींदड़ी, नींद्रडी, नीदड़ली, नीदड़ी, नीद्रलड़ी ।

मह०—नींदल ।

निद्रालस्‍ट-वि० [सं० निद्रालक्षः] निद्रासक्त ।

निद्राळु, निद्रालु-वि० [सं० निद्रा+आलुच् प्रत्य.] निद्रा के वशीभूत, निद्रा लेने वाला, जिसको नींद आ रही हो ।

रू०भे०—निदाळु, निंद्राळु, निम्रद्राळुम, निदांळु, नींदाळु, नींदाळूव, नींदाळू, नीदाळु, नीदाळू ।

अल्पा०—निदाळवो, निदाळूवो, निदांळूवो, निद्राळो, नींदाळको, नींदाळवो ।

मह०—निंदाळ, नींदाळ, नीदाळ ।

निद्रालुद्ध, निद्रालुध-वि० [सं० निद्रा+आलुद्ध] निद्रा के वशीभूत ।

निद्रालुधी-वि०स्त्री० [सं० निद्रालुद्धि] नींद लेने वाली, वह जिसे नींद आ रही हो, निद्रा के वशीभूत ।

उ०—चोबारा तळ नीसरचा, ढोलो आयो बार । करहा किया टहूकड़ा, निद्रालुधी नार ।—ढो.मा.

निद्राळो—देखो 'निद्राळु' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निद्राळी)

निधंक-वि० [देशज] दृढ़, मजबूत, अटल । उ०—तळा नीम मजबूत दे सूत गजधर तसां, मेखळा जड़ा निधंक'र सुतन मेर । वणायो बहादरसींघ पहुंएवळां, ईसवर ऊजाळा जसो आसेर ।—उमेदजी सांदू

निध-वि० [?] अटल ।

उ०—बाळ घू वन जाय बेंठो, करण सेव-स कांम । देख अपणी ओट लीनो, घणी अवचळ धांम । तो निध नांम जी निध नांम, जग में व्यापियो निध नांम ।—भगतमाळ

सं०पु०—१ सन्तान । उ०—जिण कुळ रो खोटो दिन व्है जद, निध जनमै निरताई नैं । बाळापणो जवांनी बोई, बोवण चहत बुढाई नैं ।—ऊ.का.

(मि० 'नग' संख्या ४)

२ गाय, घेनु (अ.मा.)

३ देखो 'निधि' (रू.भे.)

उ०—१ हुवै वसीरो वांणियो, पातर हुवै खवास । हुवै किमियांगर ठग, निध हर जावै नास ।—बां.दा.

उ०—२ दरो ममु जुगम ऐ अंक बाकी रह्या, प्रसिव तिणसूं करै लिया प्यारा । जेण परभाव निध सिधादिक मो जुमैं, सुर असुर नाग नर नमै सारा ।—र.रू.

निधईसवर—देखो 'निधीस्वर' (रू.भे.)

निधगुण-सं०पु० [सं० गुणनिधि] गणेश, गजानन (अ.मा.)

निधड़क-क्रि०वि० [देशज] १ विना किसी भय या चिंता के, निःशङ्क, बेखटके । उ०—१ म्हारा पती री टेक प्रतंग्या और निधड़क अभिमांन । देख रात में सोवै जद नींद वस असावधान होवै तद सत्रुआं री वार लागै पण आ ही बात तनक समझ गेह घर री किमाड़ ही न जड़ै ।—वी.स.टी.

उ०—२ सिंघ निधड़क सूतो छै तो हो आंरा पाछा पग पड़ै है अनै भागै छै ।—वी.स.टी.

२ बिना आगा-पीछा सोचे, बिना संकोच के, बिना हिचक के ।

३ बिना किसी रुकावट के, बेरोक ।

वि०—चितारहित, निर्भय । उ०—किसूं सफीलां भुरज की, काहू वजर कपाट । कोटां नूं निधड़क करै, रजपूतां रा थाट ।—बां.दा.

निधणीको-वि० (स्त्री० निधणीकी) १ स्वतन्त्र, आजाद ।

२ महान, बड़ा ।

३ जबरदस्त, शक्तिशाली ।

४ असहाय, दीन, गरीब ।

५ बिना स्वामी का, अनाथ ।

निधत्तकरम-सं०पु० [सं० निधत्तकर्म] उद्वर्त्तना और अपवर्त्तना करण के अतिरिक्त विशेष करणों के अयोग्य कर्मों को रखने की क्रिया । (जैन)

उ०—तिम निधत्तकरम । जीवहइं करम लागइ । जीव भोगवइ । काळांतरि गाढइ उपक्रमि जे करम फीटइ ते करम निधत्त नांम जांणिवउं ।—षष्टिशतक प्रकरण

निधनंद-सं०पु०—नवनिधि ।

उ०—कुळवांन पुरख विभचार क्रित, भख बतीस भूतां भरण । निधनंद कांम आवै नहीं, कूप छांह माया क्रपण ।—अज्ञात

निधन-सं०पु० [सं०] १ मृत्यु, मरण, अवसान (डि.को.)

उ०—कविवर तूझ विजोग हा, सालत है दिन-रात । हा 'केहर' ! तव निधन थी, थई निधन सह जात ।—रूपसिंह बारहठ

२ नाश ।

३ जन्म नक्षत्र से सातवां, सोलहवां और तेईसवां नक्षत्र ।

४ फलित ज्योतिष में लग्न से आठवां स्थान ।

वि०—निर्धन, धनहीन ।

निधनपति-सं०पु० [सं०] शिव ।

वि०—धनरहित, कंगाल ।

निधनव—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—पतपच्छी जुग पांण सरोरुह पल्लवां । नग जुत वलय अमोल दिया जे निधनवां ।—बां.दा.

निधपत—देखो 'निधिपति' (रू.भे.) (अ.मा.)

निधवन—देखो 'निधुवन' (रू.भे.)

उ०—जैसे निघवन कहतां सुरत सु भोग के विसै, अस्त्री की लाज सरव सरीर छोड़ि के नेत्रां मांहै जाय रहै छै, तैसे प्रिथी छांडि तळावां पांणी जाय रह्यौ छै।—वेलि. टी.

निघवांणी-सं०स्त्री० [सं० वाणीनिधि] शारदा (अ.मा.)

निघस—देखो 'नीघस' (रू.भे.)

निघसणौ, निघसबौ—देखो 'नीघसणौ, नीघसबौ' (रू.भे.)

उ०—सुरतांण विन्हैं परियां सधां, निघसै गजां कसिया नीसांण।
—विनयरासौ

निघसणहार, हारौ (हारी), निघसणियौ—वि०।

निघसिग्रोड़ौ निघसियोड़ौ, निघस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निघसीजणौ निघसीजबौ—भाव वा०।

निघसियोड़ौ—देखो 'नीघसियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री० निघसियोड़ी)

निघसुजळ-सं०पु० [सं० निधिसुजल] समुद्र। उ०—तिण दिन वंहीर डेरां तरफ, हाल कळोहळ करहली। निघसुजळ जांणि नवसै नदी, एकण साथै ऊझळी।—सू.प्र.

निघांन, निघांनु-सं०पु० [सं० निधान] १ खान, आकर।

उ०—१ हरिरस सूं सब सुख हुवै, हरिरस सूं सब ध्यांन। हरिरस सूं नव-निधि हुवै, हरिरस रूप-निघांन।—ह.र.

उ०—२ जिण राजा भीम आबू गढ़ रा अघीस प्रामार राज सलख रै इच्छणी नांम री पुत्री अलौकि गुण रूप री निघांन सुणी।
—वं.भा.

उ०—३ एकली करवक नी कळी नीकळी गिउ अभिमांनु। मांनि असोक अनोहक सोकह तणउ निघांनु।—नेमिनाथ फागु

२ खजाना (डिं.को.)

उ०—सहस अठयासी आगइ सर्या, जांणे वली तेहजि अवतर्या। लिखमी तणउ इसूं वरदांन, एह घरि खूटइ नहीं निदांन।
—कां.दे.प्र.

३ धन, निधि (अ.मा.)

उ०—१ तावीत होम रा मांण अदातां जावते वाळै, नेत्रां ठाळै वारूंबार संभाळै निघांन। खांगीबंध मोजां ठाळै अखूट खजांनां खोलै, चाळै लागो आळै माट ऊघमै चौगांन।
—महाराजा बळवतसिंह (रतलांम) रो गीत

उ०—२ स्रीतीरथंकर तणइ गरभावतारि माता अद्‌भुत स्वप्न लहइं। चलितासन देवेंद्र तेऊ फळ कहइं, देवता ग्रिहांगणि निघांन संचारइं, रत्न मणि मौक्तिक प्रवाळ पद्मराग दक्षणावरत्त संखे करी भंडार भरइं।—व.स.

४ आश्रय, आधार। उ०—ऊरघ अकास, पाताळ पास, सब ठौर सिद्ध परिकर प्रसिद्ध। वैराग व्रिद्धि; सुख बळ सम्रिद्धि, निरभय निसांन, निरधन निघांन।—ऊ.का.

५ वह स्थान जहां जाकर कोई वस्तु लीन हो जाय, लय-स्थान।

उ०—परम्मळ कम्मळ सद्रस पग्ग, निघांन परम्म निवारण नग्ग। इसा पग तूझ तणा ऊदार, सेवंता पाप टळै संसार।—ह.र.

६ मुक्ति, मोक्ष।

रू०भे०—नघांन, निदांन, निहांण।

निघाड़णौ, निघाड़बौ—देखो 'निघाडणौ, निघाडबौ' (रू.भे.)

निघाड़ियोड़ौ—देखो 'निघाडियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निघाड़ियोड़ी)

निघाडणौ, निघाडबौ-क्रि०स० [सं० निर्घटित, निर्घटनम्] परास्त करना।

उ०—अइ बळवंतु सु मोहराउ जिणि नाणि निघारिउ, झांण खडग्गिण मयणसुभड समरंगणि पाडिउ। कुसुमवुट्टि सुर करइ तुट्टि हुउ जय जय कारो, धनु धनु एहु जु थूलिभद्द जिणि जीतउ मारो।
—प्राचीन फागु संग्रह

निघाडणहार, हारौ (हारी), निघाडणियौ—वि०।

निघाडिग्रोड़ौ, निघाडियोड़ौ, निघाड्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निघाडीजणौ, निघाडीजबौ—कर्म वा०।

निघाड़णौ, निघाड़बौ—रू०भे०।

निघाडियोड़ौ-भू०का०कृ० —परास्त किया हुआ।

(स्त्री० निघाडियोड़ी)

निधि-सं०स्त्री० [सं०] १ कुबेर के नौ प्रकार के रत्न, यथा—पद्म, महापद्म, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और वर्च्च।

२ गड़ा हुआ द्रव्य।

३ खजाना।

४ धन, द्रव्य, सम्पत्ति।

उ०—१ जे निधि कहीं न पाइये, सो निधि घर-घर आहि। दादू महंगे मोल बिन, कोई न लेवै ताहि।—दादूबांणी

उ०—२ मन सुध एकाग्र चित करि, रुखमणी जी को जु मंगळ वेलि, तैनै पढ़ै तौ इतरा थोक होइ—निधि संपति होइ, सदा कुसळ होइ। इती बातां हुए।—वेलि. टी.

उ०—निधि गजराज तुरग नग, मेछ करी मनुहार। हित दीधौ राखौ निजर, कीधौ विदा सवार।—रा.रू.

५ लक्ष्मी।

६ नौ की संख्या* (डिं.को.)

७ समुद्र।

८ आधार, घर।

ज्यूं—गुणनिधि, जळनिधि।

९ आर्यागीति या खंधांण (स्कंधक) का भेद विशेष (पिं.प्र.)

रू०भे०—नध, नधि, नधी, निद्ध, निद्धि, निध, निधी।

निधिध्यासन—देखो 'निदिध्यासन' (रू.भे.)

उ०—स्रवण मनन निधिध्यासन स्रद्धा, संत रमे या होरी। इन होरी में सुद्ध स्वरूपा, चेतन ब्रह्म मिळो री।—स्री सुखरांमजी महाराज

निधिनाथ-सं०पु० [सं०] निधियों के स्वामी, कुवेर।

निधिप-सं०पु० [सं०] कुबेर, निधिपति ।
निधिपति-सं०पु० [सं०] कुबेर, निधिप ।
रू.भे.—निधपत ।
निधिजळ—देखो 'जळनिधि' (रू.भे.)
उ०—के सग वजि निसांण जांण गड़ड़ंत निधिजळ ।—ग.रू.बं.
निधिपाळ-सं०पु० [सं० निधिपाल] कुबेर, धनेश ।
निधी—देखो 'निधि' (रू.भे.)
उ०—विन्नूंचो निधी नीर ज्यौ हाथ वांमै । पुरी में सको सीर हमोज पांमै ।—मे.म.
निधीस्वर-सं०पु० [सं० निधीश्वर] निधियों का स्वामी, कुबेर ।
रू०भे०—निधईसवर ।
निधुवन-सं०पु० [सं० निधुवनम्] मैथुन, रति, सम्भोग ।
उ०—१ बीसळ दोरि गहि तस बांहो, निपट कुप्पि जुगिननि किय नाहीं । तदपि ताहि ले सठ भुज-अंतर । निधुवन किय अनुचित कामुक नर ।—वं.भा.
उ०—२ वरिखा रितु गई सरद रितु वळती, वाखांणि सु वयण वयणि । नीसर घर जळ रहित निवांणै, निधुवनि लज्जा श्री नयणि । —वेलि.

रू०भे०—निधवन ।
निधू-सं०पु०—१ इन्द्र, देवराज, सुरेन्द्र (अ.मा.)
२ निश्चय ।
वि०—१ अटल. २ अमर ।
रू०भे०—निध्रू ।
निधूम-वि० [सं० निर्धूम] १ धूमरहित, धूएं से रहित ।
उ०—निधूम अगनि विप्रां मुख नाद ।—रा.रा.
२ बिना धूमधाम, सादा ।
निधूवर-सं०पु० [सं० निधिवारि]—समुद्र, जलधि (ना.डिं.को.)
निध्यमी-वि०स्त्री० [स० निधि+मी] नवमी* ।
उ०—रचै सातमो रूप तू काळ रात्री । दिगी गोरि तू निध्यमी सिद्धिदात्री ।—मे.म.
निध्यांन—देखो 'निधांन' (रू.भे.)
उ०—इसी इसी खोडस वरसां री मुगधा मध्या प्रोढ़ा रूप रो निध्यांन ।—रा.सा.सं.
निध्यासन—देखो 'निदिध्यासन' (रू.भे.)
उ०—भेद विवेक विचार धारणा सुध बुध सरधा सागी । स्रवण मनन निध्यासन करके, ब्रह्म लख्यो वडभागी ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

निध्रस—देखो 'नीध्रस' (रू.भे.)
निध्रसणो, निध्रसबो—देखो 'नीधसणो, नीधसबो' (रू.भे.)
उ०—'माल' तणी घड़ ऊपरा, निध्रसिया नीसांण । खळभळिया खुरसांणिया, ऊकळिया आरांण ।—बो.मा.
निध्रसणहार, हारो (हारी), निध्रसणियो—वि० ।
निध्रसवाड़णो, निध्रसवाड़बो, निध्रसवाणो, निध्रसवाबो, निध्रसवावणो, निध्रसवावबो, [निध्रसाड़णो, निध्रसाड़बो, निध्रसाणो, निध्रसाबो, निध्रसावणो, निध्रसावबो—प्रे०रू० ।
निध्रसिओड़ो, निध्रसियोड़ो, निध्रस्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निध्रसीजणो, निध्रसीजबो—भाव वा० ।
निध्रसियोड़ो—देखो 'नीधसियोड़ो' (रू भे.)
(स्त्री० निध्रसियोड़ी)
निध्रू—देखो 'निधू' (रू.भे.)
उ०—साख रो सिणगार सांमो निध्रू राखण अमर नांमो । करै खग-वट तणो कांमो, राजहंस राजांन ।—ल पि.
निनंग-सं०पु० [सं० निम्नांग] १ वृक्ष, पेड़ (अ.मा., नां मा.)
२ डिंगल साहित्य में एक साहित्यिक दोष जो प्रायः डिंगल गीतों में क्रम-भंग वर्णन पर माना जाता है । उ०—रुळै उकत रो रूप, अध सो नांम उचारै । कहै वळै छवकाळ, विरध भासा विसतारै । हीण दोस सो हुवै, जात पित मुदो न जाहर । निनंग जेण नै निरख, विकळ वरणण बिन ठाहर ।—र.रू.
निनद, निनद्द-सं०पु० [सं० निनदः] १ शब्द, आवाज ध्वनि (ह नां., अ.मा.)
उ०—निसांण निनद्दं पंच-सबद्दं । रोड़ि रवद्द घण सद्दं ।
—गु रू.बं.

२ कोलाहल ।
निनांण—देखो 'निदांण' (रू.भे.)
उ०—१ चोधरण बोली—अबै तो दो चार दिन जमीन आली है, जितरै निनांण तो व्है कोयनी सो थे सहर जाय नै चीज-वस्त ले आओ नी ।—रातवासो
उ०—२ सांवण खेती, भंवरजी थे करी जे, हां जी ढोला, भादूड़ै करयो जी निनांण । सिट्टां री रुत छाया, भंवरजी परदेस में जी, ओ जी म्हारा घणा-कमाऊ उमराव, थांरी प्यारी नै पलक न आवड़ैजी ।
—लो.गी.

निनांणओ—देखो 'निनांणवो' (रू.भे.)
उ०—वारो संवत पेख, निस्चै वरस निनांणओ । पावू जनम संपेख, मासोतम फागुण सुकर ।—पा.प्र.
निनांणणो, निनांणबो—देखो 'निदांणणो, निदांणबो' (रू.भे.)
उ०—क्या से निनांणूं डोडा इळायची रे म्हारे, लोटण करवा क्या से निनांणूं नागरवेल, ए जी ओ बादीला भंवरजी माळड़ी उडीकै घर आव ।—लो.गी.
निनांणणहार, हारो (हारी), निनांणणियो—वि० ।
निनांणाड़णो, निनांड़ाड़बो, निनांणाणो, निनांणाबो, निनांणावणो, निनांणावबो—प्रे०रू० ।

निनांणिग्रोड़ौ, निनांणियोडो, निनांणमोडो—भू०का०कृ० ।
निनांणीजणौ, निनांणीजबौ—कर्म वा० ।
निनांणियोड़ौ—देखो 'निदांणियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निनांणियोड़ी)
निनांणवे, निनांणवै—देखो 'निनांणू' (रू.भे.)
उ०—सहर रै दरवाजै चिठी वांधी। नव चोर मारचा, तिणरा इग्यारा गुणां निनांणवै मनुस्य मारयां पछै विस्टाळौ करसूं। साहुकार नै न मारूं।—भि.द्र.
निनांणवौ-सं०पु०—९९वां वर्ष।
वि० (स्त्री० निनांणवी) गिनती के क्रम से जिसका स्थान निन्यानवे पर हो, निनानवां।
रू०भे०—निनांणग्रो, निनांणूमौं।
निनांणु, निनांणू-वि० [सं० नवनवतिः] जो कि संख्या में एक कम सौ हो, नव्वे और नौ।
उ०—१ वरस निनांणु विचै, सुकृत एको नह कीधौ। रांणो 'अड़सी' छोड, पटौ रतना रो लीधौ।—अरजणजी वारहठ
उ०—२ भवनपति व्यंतर नै जोतसी, भद विमांणिक पावै। सुर वर ते मिळ नै सगळा, नांम निनांणू आवै।—जयवांणी
सं०पु०—निनानवे की संख्या।
रू०भे०—नवांणूं, नव्यांणु, निन्नांणवै, निन्यांणवै, निन्यांनवै।
निनांणूक-वि०—निनानवे के लगभग।
निनांणूमौ—देखो 'निनांणवौ' (रू.भे.)
निनांम, निनांमौ-वि० (स्त्री० निनांमी) नामरहित।
निनाग्र, निनाद, निनादि-स०पु० [सं० निनादः] १ नाद, आवाज, शब्द।
उ०—१ वेगि वाळि रथ हो व्रिहन्नडा, कउण सैन्य फिरइ कौरव बापुडा। तांम हस्ति मदिमातउ गाजइ, जांम केसरि निनाद न वाजइ।—विराट पर्व
उ०—२ वाद ओ विवाद को सवाद ते सह्यौ। रावरो निनाद ऊंट पाद ज्यूं गयौ।—ऊ.का.
उ०—३ इंद चंद पमुख देव बीहना, हाथिया जिम निनादि सीह ना पुछदंड गउरी सवि वाळी, भूरइ नगर उपरि चालि।
—विराट पर्व
उ०—४ इसी अेक त्या पटउडि चश्र दिसि पडि तिण वाजितकर निनादि घर-आकास चडहडी।—अ. वचनिका
२ एक प्रकार का वाद्य विशेष।
उ०—प्रासाद मांही निनाद वाजै, करइ पूजन मात। ताहरइ सरणै आविया, दई अंबिके अहिवात।—रुकमणी मंगळ
निनिखुणि, निनिखुणी-सं०स्त्री० [अनु०] वाद्य की ध्वनि विशेष।
उ०—मपघुनि मपघुनि झझणण वीण, निनिखुणि ज्रेंखणि आउज लीण। वाजी ओं ओं मंगळ संख, धिधिकट धेंकट पाड असंख।
—विद्याविलास पवाडउ
निन्नांणवै—देखो 'निनांणू' (रू.भे.)
उ०—नृप माया तजि सिद्ध थिउ, निन्नांणवे करोड़ि।—ग.रू.वं.
निस्नेह-वि० [सं० निः स्नेह] स्नेह से रहित (जैन)
निन्याणवै, निन्यांनवै—देखो 'निनांणू' (रू.भे.)
उ०—स्री अचळ सरजी रै दरसण करण रै पगां फेर अठयासी रिसी नवनाथ चौरासी सिद्ध निन्यांणवै किरोड़ राजा, सिद्ध, तैतीस किरोड़ देवता मेळै भरै। इसौ अरबद छै। म्रित्युलोक मांही सरग छै।
—डाढाळा सूर री वात
निन्हव-सं०पु० [सं० निन्हव, प्रा० णिण्हव] १ सत्य को छिपाने वाला, सत्य का अपलाप करने वाला, मिथ्यावादी (जैन)।
उ०—१ रुघनाथजी सिज्यांतर नै घणोई कह्यौ थे जागा क्यूं दीधी। ए अवनीत निन्हव छै।—भि.द्र.
उ०—२ भीखन जी चोखा साध है पिण म्हांनै भेखधारी कहै तिण सूं म्हेई निन्हव कहां छां।—भि.द्र.
२ अपलाप (जैन)
निपंग-वि० [सं० नि+पंगु] जिसके हाथ-पैर कार्य करने योग्य न हों, जिसके हाथ-पांव टूटे हुए हों, निकम्मा, अपाहिज।
निप-सं०पु० [सं० निपः या निपम्] १ घड़ा, गगरी, कलश (डिं.को.)
२ कदम का वृक्ष (डिं.को.)
रू०भे०—नींप।
निपगाई-सं०स्त्री० [सं० नि+पद] अविश्वास।
उ०—१ ओर इब हूं भाठौ हठावणौ नूं हुकम करूं तौ मिनख म्हारी निपगाई रौ भरम धरै तिण सूं उवौ भाठौ तौ उठै ही रहसै।
उ०—२ सपगाई सरदारगण, राखै हियै विचार। अमर रहै राजस अठळ, निपगाई नित टार।—नी. प्र.
निपगौ-वि० [सं० नि+पद] (स्त्री० निपगी) जिसका कोई विश्वास न करे, अयोग्य, निकम्मा। उ०—ए सब निगुणा नै निपगा छै, इणां रौ भरोसो नहीं करणौ।—नी. प्र.
निपज—देखो 'नीपज' (रू.भे.)
निपजणौ, निपजबौ—देखो 'नीपजणौ, नीपजबौ' (रू.भे.)
उ०—१ म्हारी हळदी रो रंग सुरंग निपजै माळवै। हळदी मोल पसारी री हाट बनड़ा रै सिर चढ़ै।—लो.गी.
उ०—२ थे दाड़म हूं दाख हंगांमी ढोला, हेके नै बागां में दोय निपज्या हो राज।—लो.गी.
उ०—३ सवळौ भरीजै तद हासल इजाफा हुवै। काठा गोहूं मण १५००० बीज वावै तिकै सांठा निपजै।—नैणसी
उ०—४ दादू बहु गुणवंति वेलि है, ऊगी कालर मांहि। सींचै खारै नीर सौं, तायैं निपजै नांहि।—दादूवांणी
निपजणहार, हारौ (हारी), निपजणियौ—वि०।
निपजवाड़णौ, निपजवाड़बौ, निपजवाणौ, निपजवावौ, निपजवावणौ, निपजवावबौ—प्रे०रू०।

निपजाड़णो, निपजाड़बो, निपजाणो निपजाबो, निपजावणो, निपजाववो —क्रि०रू० ।
निपजिम्रोड़ो, निपजियोड़ो, निपज्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निपजीजणो, निपजीजबो—भाव वा० ।

निपजाड़णो, निपजाड़बो—देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)
उदा०—हिम्मत व्है तो इण जाव में गहूं निपजाड़ो ।
निपजाड़णहार, हारो (हारी), निपजाड़णियो—वि० ।
निपजाड़िम्रोड़ो, निपजाड़ियोड़ो, निपजाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निपजाड़ीजणो, निपजाड़ीजबो —कर्म वा० ।
निपजणो, निपजबो, नीपजणो, नीपजबो—अक० रू० ।

निपजाड़ियोड़ो—देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपजाड़ियोड़ी)

निपजाणो, निपजाबो–क्रि०स० [सं० निष्पादनं] १ उत्पन्न करना, पैदा करना । उ०—मात पिता नै दोसण मोटो, प्रथम मिळया सुख पाई नै । नग दोनां मिळ ओ निपजायो, हिया फूट हरखाई नै ।
—ऊ.का.

२ उपजाना, उगाना ।
३ बढ़ाना, बड़ा करना ।
४ घटित करना, सम्पन्न करना ।
५ परिपक्व करना, पकाना ।
६ तैयार करना, बनाना ।
निपजाणहार, हारो (हारी), निपजाणियो—वि० ।
निपजवाड़णो, निपजवाड़बो, निपजवाणो, निपजवाबो, निपजवावणो, निपजवाववो—प्रे०रू० ।
निपजायोड़ो—भू०का०कृ० ।
निपजाईजणो, निपजाईजबो—कर्म वा० ।
निपजणो, निपजबो, नीपजणो, नीपजबो—अक० रू० ।
निपजाड़णो, निपजाड़बो, निपजावणो, निपजावबो, निपाड़णो, निपाड़बो, निपाणो, निपाबो, निपावणो, निपावबो, नींमजाड़णो, नींमजाड़बो, नींमजाणो, नींमजाबो, नींमजावणो, नींमजाववो, नीपजाड़णो, नीपजाड़बो, नीपजाणो, नीपजाबो, नीपजावणो, नीपजावबो, नीपाड़णो, नीपाड़बो, नीपाणो, नीपाबो, नीपावणो, नीपावबो
—रू०भे०

निपजायोड़ो–भू०का०कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ ।
२ उपजाया हुआ, उगाया हुआ ।
३ बढ़ाया हुआ, बड़ा किया हुआ ।
४ घटित किया हुआ, सम्पन्न किया हुआ ।
५ परिपक्व किया हुआ, पकाया हुआ ।
६ तैयार किया हुआ, बनाया हुआ ।
(स्त्री० निपजायोड़ी)

निपजावणो, निपजाववो—देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)
ज्यूं—धांन निपजावणो आंपां रै हाथ कोयनी । आ वात कंवरियां निपगा नै फायर है ।
निपजावणहार, हारो (हारी), निपजावणियो—वि० ।
निपजाविम्रोड़ो, निपजावियोड़ो, निपजाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निपजावीजणो, निपजावीजबो—कर्म वा० ।

निपजावियोड़ो—देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपजावियोड़ी)

निपजियोड़ो—देखो 'नीपजियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपजियोड़ी)

निपट–वि० [सं० निविड] १ बहुत, अधिक ।
उ०—१ ताहरां फेर दीवांण रा परधानां अरज कीवी नै रावजी रा उमरावां परधानां नै कह्यो—'जु, धरती दीवो । अर सरत री वेढ करो । आ वात दीवांण रा परधानां कबूल कीवी ।' पाछा दीवांण पासै आया । दीवांण निपट राजी हुआ ।—नैणसी
उ०—२ रावळ जैतसी वडेरा भाई सारा हाथ किया । भाटियां सारां आगै कह्यो—म्हांरो जीव निपट दोहरो हुवो छै ।—नैणसी
उ०—३ दाखे सो दस दोख रो, निरणै निपट अनूप । ग्रयण सगाई बरणवूं, रीति किती कवि रूप ।—र.रू.
२ केवल, एक मात्र, और कुछ नहीं, निरा ।
३ खाली, विशुद्ध. ४ अद्वितीय, श्रेष्ठ ।
क्रि०वि०—बिलकुल, सरासर, नितान्त, एकदम ।
उ०—१ सठता धूरतता सहित, छद रचै मद छाय । निपट लियां निरलज्जता, कुकवी जिको कहाय ।—बां.दा.
उ०—२ समज तमाकू सूगली, कुत्तो न खावै काग । ऊंट टाट खावै न आ, अपणो जांण अभाग । अपणो जांण अभाग, गधव नहिं खाय गधेड़ो । सूकर भूंडी समझ, निपट निकळै नहिं नैड़ो ।—ऊ.का.
उ०—३ बैठी गहन गुफा बिच बांमा । राजा वह निरखी अभिरांमा । बीसळ दोरि गही तस बांही । निपट कुप्पि जुगिगनि किय नांही ।
—वं.भा.

रू०भे०—नपट, नवड़, नवड, निवड़, निवड ।

निपटणो, निपटबो–क्रि०अ० [सं० निवर्त्तनं] १ रह जाना, खतम होना, चुकना । उ०—बींझा काचा करसला, म्हे छां कड़वी वेल । म्हे नीरां (यें) घर जावसो, निपट जासी खेल ।—अज्ञात
२ किए जाने को बाकी न रहना, समाप्त होना, पूरा होना ।
ज्यूं—सांम तक ओ कांम निपट जावसी ।
३ निवृत्त होना, फुरसत पाना, छुट्टी पाना, फारिग होना, खाली होना ।
ज्यूं—इण मसला पर विचार कांम निपट्यां पछै करांला ।
४ शौचादि से निवृत्त होना ।
५ अनिश्चित दशा में न रह जाना, निर्णीत होना, तय होना
ज्यूं—बराबर पांच बरसां ताई घर बिचै नै कचैड़ी बिचै पगरकियां

फाड़ी जद श्रो झगड़ो निपट्यो है।
६ देखो 'निवड़णो, निवड़बो' (रू.भे.)
७ देखो 'नीमड़णो, नीमड़बो' (रू.भे.)
निपटणहार, हारो (हारी), निपटणियो—वि०।
निपटवाड़णो, निपटवाड़बो, निपटवाणो, निपटवाबो, निपटवावणो, निपटवावबो—प्रे०रू०।
निपटाड़णो, निपटाड़बो, निपटाणो, निपटाबो, निपटावणो, निपटावबो—क्रि०स०
निपटिश्रोड़ो, निपटियोड़ो, निपट्योड़ो—भू०का०कृ०।
निपटीजणो, निपटीजबो—भाव वा०।
नमठणो, नमठबो, निबड़णो, निबड़बो, निबटणो, निबटबो, निमड़णो, निमड़बो, निमटणो, निमटबो, निवड़णो, निवड़बो, नींमड़णो, नींमड़बो, नींवड़णो, नींवड़बो, नीमड़णो, नीमड़बो, नीमटणो, नीमटबो, नीमडणो, नीमडबो, नीवड़णो, नीवड़बो—रू०भे०।
निपटाड़णो, निपटाड़बो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)
निपटाड़णहार, हारो (हारी), निपटाड़णियो—वि०।
निपटाड़िश्रोड़ो, निपटाड़ियोड़ो, निपटाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
निपटाड़ीजणो, निपटाड़ीजबो—कर्म वा०।
निपटणो, निपटबो—श्रक० रू०।
निपटाणो, निपटाबो-क्रि०स० [सं० निवर्त्तनं] १ चुकाना, भुगताना, बाकी न रखना।
ज्यूं—लैंणो निपटाणो।
२ करने को बाकी न छोड़ना, समाप्त करना, खतम करना, पूरा करना।
ज्यूं—थे तो हद कीवी भाई जु कांम इतरो वेगो निपटाय दियो।
३ निवृत करना।
४ श्रनिश्चित दशा में न रखना, निर्णीत करना, तय करना।
निपटाणहार, हारो (हारी), निपटाणियो—वि०।
निपटवाड़णो, निपटवाड़बो, निपटवाणो, निपटवाबो, निपटवावणो, निपटवावबो—प्रे०रू०।
निपटायोड़ो—भू०का०कृ०।
निपटाईजणो, निपटाईजबो—कर्म वा०।
निपटणो, निपटबो—श्रक० रू०।
नमठाड़णो, नमठाड़बो, नमठाणो, नमठाबो, नमठावणो, नमठावबो, नबेड़णो, नबेड़बो, नमेड़णो, नमेड़बो, निपटाड़णो, निपटाड़बो, निपटावणो, निपटावबो, निबड़ाड़णो, निबड़ाड़बो, निबड़ाणो, निबड़ाबो, निबड़ावणो, निबड़ावबो, निबटाड़णो, निबटाड़बो, निबटाणो, निबटाबो, निबटावणो, निबटावबो, निबेड़णो, निबेड़बो, निमटाणो, निमटाबो, निमटावणो, निमटावबो, निमेड़णो, निमेड़बो, निवेड़णो, निवेड़बो, नींमेड़णो, नींमेड़बो—रू०भे०।
निपटायोड़ो-भू०का०कृ०—१ बाकी न रखा हुश्रा, चुकाया हुश्रा, भुगताया हुश्रा।
२ समाप्त किया हुश्रा, खतम किया हुश्रा, पूरा किया हुश्रा।
३ निवृत्त किया हुश्रा।
४ श्रनिश्चित दशा में न रखा हुश्रा, निर्णीत किया हुश्रा, तय किया हुश्रा।
(स्त्री० निपटायोड़ी)
निपटारो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)
निपटावणो, निपटावबो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)
ज्यूं—थूं तो कीं को करै नी पण श्रो श्रादमी एकलो इतरो धंधो रोज निपटावै है।
निपटावणहार, हारो (हारी), निपटावणियो—वि०।
निपटाविश्रोड़ो, निपटावियोड़ो, निपटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
निपटावीजणो, निपटावीजबो—कर्म वा०।
निपटणो, निपटबो—श्रक० रू०।
निपटावियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपटावियोड़ी)
निपटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ न रहा हुश्रा, खतम हुवा हुश्रा, चुकाया हुश्रा।
२ किए जाने के लिए बाकी नहीं रहा हुश्रा, समाप्त हुवा हुश्रा, पूरा हुवा हुश्रा।
३ निवृत हुवा हुश्रा, फुरसत पाया हुश्रा, छुट्टी पाया हुश्रा, फारिग हुवा हुश्रा, खाली हुवा हुश्रा।
४ शौचादि से निवृत्त हुवा हुश्रा।
५ श्रनिश्चित दशा में नहीं रहा हुश्रा, निर्णीत हुवा हुश्रा, तय हुवा हुश्रा।
(स्त्री० निपटियोड़ी)
निपटेरो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)
निपण—देखो 'निपुण' (रू.भे.)
निपतन-सं०पु० [सं०] श्रधःपतन, गहरा पतन।
निपत्त, निपत्तो, निपत्र, निपत्रो-वि० [सं० निष्पत्र] (स्त्री० निपत्ती, निपत्री] पत्रहीन।
निपन, निपन्न—देखो 'निस्पन्न' (रू.भे.)
उ०—१ दादू जब लग मन के दोइ गुण, तब लग निपना नांहि।
द्वै गुण मन के मिट गये, तब निपना मिळ मांहि।—दादूवांणी
उ०—२ गुण को निपन्न नांम, धांम को सहस्र धांम, ऐसो है श्रजित स्वांमी, विस्व में विख्यात है। दूसरे जिनंद जैसो, दूसरो न देव कोऊ, ध्यावो एक यो ही धरम, सीख जो धरातु है।—ध.व.ग्रं.
निपराट-वि० [देशज] निकृष्ट, नीच। उ०—जतरी दी ठाकर जमी, खग हूंत दूणी खाट। जे न समापै लड़ जदी, नर कुळ तो निपराट।
—रेवतसिंह भाटी
निपाड़णो, निपाड़बो—१ देखो 'निपाणो, निपाबो' (रू.भे.)
२ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)

निपाड़णहार, हारो (हारी), निपाड़णियो—वि० ।

निपाड़िग्रोड़ो, निपाड़ियोड़ो, निपाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निपाड़ीजणो, निपाड़ीजबो—कर्म वा० ।

निपजणो, निपजबो, नीपजणो, नीपजबो—अक० रू० ।

निपाड़ियोड़ो—१ देखो 'निपायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निपाड़ियोड़ी)

निपाणो, निपाबो-क्रि०स० ('नीपणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ लीपने का काम कराना, लीपाना ।

२ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)

उ०—१ गाड़ भायो रेत विची हळ हाली, रोत निपाया हेत खरै ।
—भगतमाळ

उ०—२ माधवणो भगताविया, मारू राग निपाइ । दूहा संदेसा तणा, दीया तियां सिखाइ ।—ढो.मा.

उ०—३ मेटे सुर-लोक पैठो जळ मांह । तठै इक मंठ निपायो ताह ।—ह.र.

निपाणहार, हारो (हारी), निपाणियो—वि० ।

निपायोड़ो—भू०का०कृ० ।

निपाईजणो, निपाईजबो—कर्म वा० ।

निपजणो, निपजबो, नीपजणो, नीपजबो—अक० रू० ।

निपात-सं०पु० [सं०] १ पतन, गिराव । उ०—केहर रा नख रंध्र सूं, गज मोतियां निपात । सूरत कीरत वेल रा, बीज ववै अवदात ।
—बां.दा.

२ मृत्यु, मौत । उ०—खेस जंद द्वंद रांम दंध रा सिधार खरा । दहे बाळ रा अनंद रा मांण दात । दासरथी सिंध रा अबंध रा बंध रा दैण । पंच दूण कंध रा कवंध रा निपात ।—र.ज.प्र.

३ संहार, विनाश, नाश । उ०—नृप रिख साथ निबाह नंद रख नाहरां । पंथ ताड़का निपात जिका कथ जाहरां ।—र.ज.प्र.

४ प्रहार, आघात । उ०—कठण घोर जिण सूं कटी, पंख पहाड़ां गात । कृपाण कपटां ऊपरै, होज्यो जाय निपात ।—बां.दा.

५ अध:पतन ।

६ यह शब्द जो व्याकरण में दिए नियमों के अनुसार न बना हो अर्थात् जिसके बनने के नियम का पता न चले ।

वि०—संहार करने वाला, विनाश करने वाला । उ०—निवाह सीतनाथ बाह संत चा नेहड़ा । अमोघ बांण चाप पांण बांण जे अछेहड़ा । जुधां निपात सांमराथ लंकनाथ जेहड़ा । कहो नरिंद दासरथ्थनंद जोट केहड़ा ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—निवाम, निवाय ।

निपातन-सं०पु० [सं० निपातन] १ गिराने का काम ।

२ मारने का काम ।

३ संहार करने का कार्य, नाश या ध्वंस करने का कार्य ।

निपातणो, निपातबो-क्रि०स० [सं० निपातनं] १ पतन करना, गिराना ।

२ वध करना, मारना ।

३ संहार करना, विनाश करना, नाश करना, ध्वंस करना ।

४ प्रहार करना, आघात करना ।

निपातणहार, हारो (हारी), निपातणियो—वि० ।

निपातिग्रोड़ो, निपातियोड़ो, निपात्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निपातीजणो, निपातीजबो—कर्म वा० ।

निपातियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पतन किया हुआ, गिराया हुआ ।

२ मारा हुआ, वध किया हुआ ।

३ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, ध्वंस किया हुआ ।

४ प्रहार किया हुआ, आघात किया हुआ ।

(स्त्री० निपातियोड़ी)

निपाप-वि० [सं० निष्पाप] १ पापरहित, निष्पाप ।

उ०—पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर । मन निरमळ गंगाजळ जेम । नर नादेत नरिंद नरेहण । निकळंक निघुट निपाप निगेम ।—दूदो

२ पवित्र ।

उ०—मुख इम पवित्र करिस कंस भंजण, भखे प्रसाद तुझ दुख-भंजण । रसण निपात करिस इम राघव, भणे तूझ गुण तारण दधि-भव ।—ह.र.

३ बिना किसी कमी का, श्रेष्ठ । उ०—मिळियो माहव महर मूं, नर तन तुनै निपाप । पेख हुवो सो पंक रै, त्रिगमद हुंत मिळाप ।
—बां.दा.

४ निष्कलंक, कलकरहित ।

अल्पा०—निपापो ।

निपापो—देखो 'निपाप' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निपापी)

निपायोड़ो-भू०का०कृ०—१ लीपने का काम कराया हुआ, लीपाया हुआ ।

२ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निपायोड़ी)

निपावट-वि० [सं० निष्प्रवंत:, प्रा० निप्पवट्ट] १ भद्दा, खराब, बुरा ।

२ कमजोर, अशक्त ।

निपावणो, निपावबो—१ देखो 'निपाणो, निपाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)

उ०—१ वैराट समांन निपावै अवख, दुनै फळ जेण किया सुख-दुख । निपावै रूप उभै नर नार, चियारै खांणी बांणी च्यार ।
—ह.र.

उ०—२ एकै खिण मांय भांजे घर ग्राम, निपावै एकण पद्मनाभ । उथापै थापै ब्रह्मा इंद, चतुरभुज मांज घड़ै रवि चंद ।—ह.र.

उ०—३ देवी मांणसर रूप मुगता निपावै, देवी मराळं रूप मुगता तुं पावै । देवी वांमणं रूप बळराव भाटै, देवी रूप बळराव मेरु उपाटै ।—देवि.

उ०—४ विख हळाहळ वाय कर कोई अमी नियावें ।
—केसोदास गाडण

निपावणहार, हारी (हारी), निपावणियो—वि० ।
निपावियोड़ो, निपावियोड़ो, निपाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निपावीजणो, निपावीजबो—कर्म वा० ।
निपजणो, निपजबो, नीपजणो, नीपजबो—अक० रू० ।

निपावियोड़ो—१ देखो 'निपायोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपावियोड़ी)

निपीड़क-वि० [सं० निपीडक] १ कष्ट देने वाला, पीड़ा देने वाला, दुःखदायक।
२ निचोड़ने वाला।
३ पेरने वाला।
४ दलने या मलने वाला।

निपीड़न-सं०पु० [सं० निपीडनं] १ पीड़ा पहुंचाने या कष्ट देने का कार्य।
२ पसेव निकालने का काम।
३ पेरने का काम, पेराई।
४ मलने या दलने की क्रिया।

निपीड़णो, निपीड़बो-क्रि०स० [सं० निपीडनं] १ कष्ट पहुंचाना, दुःखी करना।
२ मलना, दलना, दबाना।

निपीड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ कष्ट पहुंचाया हुआ, दुखी किया हुआ।
२ मला हुआ, दला हुआ, दबाया हुआ।
(स्त्री० निपीड़ियोड़ी)

निपुण-वि० [सं०] १ कार्य करने में पटु, प्रवीण, चतुर, दक्ष, होशियार (डि.को.)
उ०—१ महाराजा बखतसिंहजी बडो बुद्धिमान राजा थो, राह-वेधी थो, सांम दांम दंड भेद चारूं बात में निपुण थो।
—मारवाड़ रा उमरावां री वारता
उ०—२ भूप तणा अक्षर भणी, अति आनंदित चिति। 'भलु-भलु' भाखी कहइ, निपुण न चूकु नीति।—मा.कां.प्र.
२ कवि (अ.मा.) ३ पण्डित (डि.को.)
४ चारण (डि.को., अ.मा.)
रू०भे०—निउण, निपण, निपुन, नीपण।

निपुणता, निपुणाई-सं०स्त्री० [हि० निपुणता] कुशलता, दक्षता।

निपुन—देखो 'निपुण' (रू.भे)
उ०—न्याव नीत सब विध निपुन, वह मुलक बसाया। मन अनुसार विचार मत, गुण सांदू गाया।—महेसदास सांदू

निपूत, निपूतो-वि० [सं० निष्पुत्र] (स्त्री० निपूती) जिसके संतान न हो, निसंतान। उ०—ठाकर गढ़ सिवांणा में कांम करतां एक एलकार री चाकरी में रह्यो हो। एलकार जात रो बिरांमण पण घर में निपूतो हो।—रातवासो
रू०भे०—नपूंतो, नपूतो।

निपोंचियो, निपोंचो-वि० [सं० निष्+प्रभूत+रा०प्र०यो] (स्त्री० निपोंचण, निपोंची) अशक्त, निर्बल, कमजोर; पुरुषार्थहीन

निप्पट—देखो 'निपट' (रू.भे.)
उ०—कैल-पुरो कुंभल-मेरो निप्पट निराटजी।—ग.रू.बं.

निफळ—देखो 'निरफळ' (रू.भे.)

निफेरी—देखो 'नफेरी' (रू.भे.)
उ०—निफेरी भेरी निनंद नीसांण धुबै।—गु.रू.बं.

निबंध-सं०पु० [सं०] १ बंधन। उ०—वाधैपउ अधिक तेज तनु वाधइ, बाळक तणा जोवतां बंध। दिन दिन लई अंतरा देवी, वरस मास रा किसा निबंध।—महादेव पारवती री वेलि
२ लिखित प्रबंध, लेख।
३ रचना करने की क्रिया या भाव (साहित्य व काव्य)
४ मूल कारण. ५ कारण, हेतु. ६ रोक-थाम।
७ वीणा की खूंटी. ८ प्रबंध, इंतजाम।
रू०भे०—नबंध, नमंध, निमंद, निमंध, निमंधण।

निबंधणो, निबंधबो—देखो 'निमंधणो, निमंधबो' (रू.भे.)
निबंधणहार, हारो (हारी), निबंधणियो—वि०।
निबंधिओड़ो, निबंधियोड़ो, निबंध्योड़ो—भू०का०कृ०।
निबंधीजणो, निबंधीजबो—कर्म वा०।

निबंधियोड़ो—देखो 'निमंधियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निबंधियोड़ी)

निबंधु-वि० [सं० नि+बंधु] भाईहीन, भाईरहित।
उ०—बलु बोलीउ बलबंधु सुभद्रा लेई सांचरए। हिव पुणु हूउ निबंधु कुंती थुं सरसा सात जए।—पं.पं.च.

निब-(उभ० लिं०) [अं०] पीतल, लोहे आदि के चद्दर की बनी हुई चोंच जिसे पीछे से कलम में खोंस कर लिखने के काम में ली जाती है।
रू०भे०—निप।

निबड़-सं०पु०—१ सेना, फौज।
२ शत्रु, दुश्मन, वैरी।
वि०—१ निःशंक. २ बहुत, अधिक, गहरा।
२ देखो 'निविड़' (रू.भे.)

निबड़णो, निबड़बो—देखो 'निपटणो, निपटबो' (रू.भे.)
उ०—और कसालो देखजै तो बात निबड़ गई।
—नापै सांखले री वारता
निबड़णहार, हारो (हारी), निबड़णियो—वि०।
निबड़ाड़णो, निबड़ाड़बो, निबड़ाणो, निबड़ाबो, निबड़ावणो, निबड़ावबो—क्रि०स०।
निबड़िओड़ो, निबड़ियोड़ो, निबड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवड़ीजणो, निवड़ीजवो—भाव वा० ।

निवड़ाड़णो, निवड़ाड़वो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)

निवड़ाड़णहार, हारो (हारी), निवड़ाड़णियो—वि० ।

निवड़ाड़ियोड़ो, निवड़ाड़ियोड़ो, निवड़ाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।

निवड़ाड़ीजणो, निवड़ाड़ीजवो—कर्म वा० ।

निवड़णो, निवड़वो—अक० रू० ।

निवड़ायोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवड़ायोड़ी)

निवड़ाणो, निवड़ावो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)

निवड़ावणहार, हारो (हारी), निवड़ाणियो—वि० ।

निवड़ावियोड़ो—भू०का०कृ० ।

निवड़ाईजणो, निवड़ाईजवो—कर्म वा० ।

निवड़णो, निवड़वो—अक० रू० ।

निवड़ायोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवड़ावियोड़ी)

निवड़ावणो, निवड़ावयो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)

निवड़ावणहार, हारो (हारी), निवड़ावणियो—वि० ।

निवड़ाविग्रोड़ो, निवड़ावियोड़ो, निवड़ाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निवड़ावीजणो, निवड़ावीजवो—कर्म वा० ।

निवड़णो, निवड़वो—अक० रू० ।

निवड़ावियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवड़ावियोड़ी)

निवड़ियोड़ो—देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवड़ियोड़ी)

निवटणो, निवटवो—देखो 'निपटणो, निपटवो' (रू.भे.)

निवटणहार, हारो (हारी) निवटणियो—वि० ।

निवटवाड़णो, निवटवाड़वो, निवटवाणो, निवटवावो, निवटवावणो, निवटवावयो—प्रे०रू० ।

निवटाड़णो, निवटाड़वो, निवटाणो, निवटावो, निवटावणो, निवटावयो—क्रि०स० ।

निवटिग्रोड़ो, निवटियोड़ो, निवटचोड़ो—भू०का०कृ० ।

निवटीजणो, निवटीजवो—भाव वा० ।

निवटाड़णो, निवटाड़वो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)

निवटाड़णहार, हारो (हारी), निवटाड़णियो—वि० ।

निवटाड़िग्रोड़ो, निवटाड़ियोड़ो, निवटाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निवटाड़ीजणो, निवटाड़ीजवो—कर्म वा० ।

निवटणो, निवटवो—अक० रू० ।

निवटाड़ियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवटाड़ियोड़ी)

निवटाणो, निवटावो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)

निवटाणहार, हारो (हारी), निवटाणियो—वि० ।

निवटायोड़ो—भू०का०कृ० ।

निवटाईजणो, निवटाईजवो—कर्म वा० ।

निवटणो, निवटवो—सक० रू० ।

निवटायोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवटायोड़ी)

निवटारो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)

निवटावणो, निवटावयो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)

निवटावणहार, हारो (हारी), निवटावणियो—वि० ।

निवटाविग्रोड़ो, निवटावियोड़ो, निवटाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निवटावीजणो, निवटावीजवो—कर्म वा० ।

निवटणो, निवटवो—अक० रू० ।

निवटावियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवटावियोड़ी)

निवटेरो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)

निवणो, निववो—देखो 'निभणो, निभवो' (रू.भे.)

निवणहार, हारो (हारी), निवणियो—वि० ।

निविग्रोड़ो, निवियोड़ो, निव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निवीजणो, निवीजवो—भाव वा० ।

निवद्ध-सं०पु० [सं०] ताल, मान, अक्षर, गमक, रस आदि नियमों का ध्यान रख कर गाया जाने वाला गीत ।

वि०—बंधा हुआ, ग्रथित ।

निवळ—देखो 'निरबळ' (रू.भे.)

उ०—सबळां नै देवै सजा, निबळां करै निसाफ। तुरंग अनै रजपूत री, पाळग कमंध 'प्रताप'।—चिमनदान रतनू

निवळाई—देखो 'निरबळता' (रू.भे.)

उ०—१ एक जूझार ग्ररब री बूढ़ो हुवो सो बुढ़ापै री निवळाई सूं घोड़ै नहीं चढ़ सकै ।—नी.प्र.

उ०—२ अर निवळाई डर सुस्ती मन भंगाई वैरी नूं आपरै ऊपर मनगरो करै छै ।—नी.प्र.

निवळियो, निवळोड़ो, निवळो—देखो 'निरबळ' (ग्रल्पा, रू.भे.)

उ०—१ साथ घणो कांम आयो, ठाकुराई निवळी पड़ी ।

—नैणसी

उ०—२ आहियो ग्रासाडाह, गाजै नै गुड़को कियो । वूठो भेदाळाह निवळी भुंय पर नागजो ।—ग्रज्ञात

उ०—३ इंउं कै'तो जसवंत ग्रधिप, विमळ विचार विचार । इळ सबळां रै ग्रासरै, निवळोड़ा नर नार ।—ऊ.का.

उ०—४ त्यां रा छोरू हाला नै रायधण कहांणा । निवळा पड़िया तरै घांवां री ठाकुराई मांहे मुकाती थका रैहता ।—नैणसी

उ०—५ वैरसल टीकै वैठो । रांणो वैरसल हुवो, सु निवळोसो ठाकुर हुवो ।—नैणसी

(स्त्री०, निवळी, निवळोड़ी)

निवहणौ, निवहबौ—देखो 'निभणौ, निभबौ' (रू.भे.)

उ०—१ कोयक सकट कुसागड़ी, भार विसेस भरंत । धवळ पड़प्पण आपरै, कांधे ले निवहंत ।—वां.दा.

उ०—२ जाहर आखड़ियां जिते, निवहै साजै नाद । जीवण तणौ कहत जग, सोहां इतै सवाद ।—वां.दा.

निवहणहार, हारौ (हारी), निवहणियौ—वि० ।

निवह्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निवहीजणौ, निवहीजबौ—भाव वा० ।

निवांण—१ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—निजांण निवांण मारग ए सही ।—जयवांणी

२ देखो 'निवांण' (रू.भे.)

निवाड़णौ, निवाड़बौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)

निवाड़णहार, हारौ (हारी), निवाड़णियौ—वि० ।

निवाड़िओड़ौ, निवाड़ियोड़ौ, निवाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निवाड़ीजणौ, निवाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

निवणौ, निवबौ—अक० रू० ।

निवाड़ियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवाड़ियोड़ी)

निवाणौ, निवाबौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)

निवाणहार, हारौ (हारी), निवाणियौ—वि० ।

निवायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निवाईजणौ, निवाईजबौ—कर्म वा० ।

निवणौ, निवबौ—अक० रू० ।

निवांयोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवायोड़ी)

निवापौ—वि० [सं० निः+पितृ] (स्त्री० निवापी) जिसके पिता न हो।

उ०—तिण वकरी सूं मैं अर निवापा म्हारै दोय दोहितरा गुजरांन करै था सो मार खाधी ।—नी.प्र.

निवाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)

उ०—१ साह अमीरां सोचतां, जग विसतरै जबाब । रहै एकठा रूकहथ, नरपत अनै निवाब ।—रा.रू.

उ०—२ लसियौ निवाब कटिया किलम, गह नृप घरि गजगाहरो । लसकरि खांन लूटे लियौ, सोवौ औरंगसाह रौ ।—सू.प्र.

निवाबजादौ—देखो 'नव्वाबजादौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवाबजादी)

निवाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)

निवाव—देखो 'निभाव' (रू.भे.)

निवावणौ, निवावबौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)

निवावणहार, हारौ (हारी), निवावणियौ—वि० ।

निवाविओड़ौ, निवावियोड़ौ, निवाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निवावीजणौ, निवावीजबौ—कर्म वा० ।

निवणौ, निवबौ—अक० रू० ।

निवावियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवावियोड़ी)

निवास—देखो 'निवास' (रू.भे.)

उ०—नरपति आयौ जैनगर, निज उर हरख निवास । सुपह सुरंगौ सासरै, लग्गौ सांवण मास ।—रा.रू.

निवाह—देखो 'निभाव' (रू.भे.)

उ०—१ बादसाह कही—दस हजार री जागीर पावौ छौ, सागै तीन हजार रोकड़ हाथ खरच रा ही पावौ छौ, तो ही निवाह क्यूं ना हुवै ।—जलाल बूबना री वात

उ०—२ अरेस असेस दहेस अभंग, धरेस सुरेस नरेस सधीर । अरोड़ अमोड़ अबीह अलार, निवाह अथाह चढै कुळ नीर ।
—र.ज.प्र.

उ०—३ बहु राजस सुखदांन बहु, बहु जुध फतै निवाह । सो जग ऊपरि कीत सकि, सुगि गौ पह 'गजसाह' ।—सू.प्र.

निवाहक-वि० [सं० निर्वाहिक] निवाहने वाला, निर्वाह करने वाला।

उ०—'अजन' कुरब मुख उच्चरै तब यौं कह्यौ नवाव । अै सब फरजंद आपरा, आप निवाहक आव ।—रा.रू.

निवाहणौ-वि०—निवाहने वाला । उ०—सुज व्रद साहणौ रे, निवळ निवाहणौ, चित जिस चाहणौ रे, गज थट गाहणौ ।—र.ज.प्र.

निवाहणौ, निवाहबौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)

उ०—रांणी स्त्री जसराज री, कमंध निवाहण कज्ज । अत सोचे आलोजतां, वारै मात वरज्ज ।—रा.रू.

निवाहणहार, हारौ (हारी), निवाहणियौ—वि० ।

निवाहिओड़ौ, निवाहियोड़ौ, निवाह्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निवाहीजणौ, निवाहीजबौ—कर्म वा० ।

निवाहियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवाहियोड़ी)

निवीजौ—देखो 'निरबीज' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—बीड़ा फेरि पाछै बादसाहा यों कहाई । सारी बादिस्याही मैं निवीजौ भोमि पाई ।—शि.वं.

(स्त्री० निवीजी)

निवियोड़ौ—देखो 'निभियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवियोड़ी)

निवीह-वि० [सं. नि+राज. वीह] निडर, निर्भय । उ०—लाखीक तुरंगसप मूलि नक्ख,

पूरउ प्रचंड जइ सूध पक्ख । नगराज चडिय मुहतउ निवीह, सांमि छळि कळहिवा जेम सोह ।—रा.ज.सी.

निवूल-वि० [सं० निर्मूल] १ निर्वंश ।

२ व्यर्थ, फिजूल, खाली ।

सं०पु०—रक्त ।

निवे—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

निवेड़णो, निवेड़बो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)

निवेड़णहार, हारो (हारी), निवेड़णियो—वि० ।

निवेड़िग्रोड़ो, निवेड़ियोड़ो, निवेड़योड़ो—भू०का०कृ० ।

निवेड़ीजणो, निवेड़ीजबो—कर्म वा० ।

निवेड़णो, निवेड़बो—अक० रू० ।

निवेड़ियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवेड़ियोड़ी)

निवेड़ो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)

निवोळहार-सं०पु० [देशज] १ स्त्री का कंठाभरण, कंठ का आभूषण ?

उ०—माथा का केस मुगता हुआ । छूटो छै मुगता निवोळहार थो गु छूटो छै । कनुकी को कस छूटो छै अर कटि मेखळा वंधण थे छूटो छै ।—वेलि. टी.

निवोळी, निवोळी—देखो 'निबोळी' (रू.भे.)

निव्वाव—देखो 'निव्वाव' (रू.भे.)

निव्वावजादो—देखो 'नव्वावजादो' (रू.भे.)

(स्त्री० निव्वावजादी)

निव्वावी—देखो 'नव्वावी' (रू.भे.)

निव्वे—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

निब्भंत—देखो 'निरभ्रांत' (रू.भे.)

उ०—भणय इंदु तय जतु मुणिहु, उहारिय निब्भंत मइ । जं करउं विनांण आंणण घुणि, मइ नि होइ संजम किमइ ।

—अभयतिक यती

निब्भय—देखो 'निरभय' (रू.भे.)

निभ-सं०पु० [सं०] कपट (ह.नां.)

निभचर—देखो 'नभचर' (रू.भे.)

निभणो, निभबो-क्रि०स० [सं० निर्वहनम्] १ किसी सम्बन्ध स्थिति आदि का निरन्तर बना रहना, बराबर चला चलना, निर्वाह होना ।

उ०—साधुपणो लेइ चोखो पाळै ते मोटा पुरुस । कइ कहै—पांच में आरा में साधुपणो पूरो पळै नहीं, इसो हिज अवाह निभै ।

—भि द्र.

२ पार पाना, बचना, निकलना, छुट्टी पाना ।

३ किसी निश्चित बात के अनुसार लगातार व्यवहार होना । चरितार्थ होना, पालन होना, पूरा होना ।

ज्यूं—रांणाजी आपरी आंन बराबर निभाई ।

४ व्यवस्थित रूप से होता चलना, पूरा होना ।

उ०—घनांजी री प्रकृति करड़ी जांण नै स्वांमीजी विचारयो भ्रा मारमलजी सूं निभणी कठिन है ।—भि.द्र.

निभणहार, हारो (हारी), निभणियो—वि० ।

निभवाड़णो, निभवाड़बो, निभवाणो, निभवाबो, निभवावणो, निभवावबो—प्रे०रू० ।

निभाड़णो, निभाड़बो, निभाणो, निभाबो, निभावणो, निभावबो

—क्रि०स०

निभिग्रोड़ो, निभियोड़ो, निभ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निभीजणो, निभीजबो—भाव वा० ।

निबणो, निबबो, निबहणो, निबहबो, निम्हणो, निम्हबो, निवहणो, निवहबो—रू०भे० ।

निभरम—देखो 'निरभ्रम' (रू.भे.)

निभरमो—देखो 'निरभ्रम' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—तरै मचकूर कियो, वळ रातब करणी छै, सो साम्हो गांव कोस ऊपर छै तठै चालो, निभरमा पिण रहां । तरै गांव गया । वळ रातब कीधी ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

(स्त्री० निभरमी)

निभरांताई—देखो 'निरभ्रांतता' (रू.भे.)

निभा—वि० [सं० निभ] सदृश्य, समान, तुल्य (जैन)

निभाग-सं०पु० [सं० निर्भाग्य] अभाग्य, बदकिस्मती ।

निभागो-वि० [सं० निर्भाग्य] (स्त्री० निभागण, निभागी) अभागा, बदकिस्मत ।

रू०भे०—निरभागो ।

निभाड़णो, निभाड़बो—देखो 'निभाणो, निभाबो' (रू.भे.)

ज्यूं—गरीब आदमी है, थनै निभाड़णो चाहीजे ।

निभाड़णहार, हारो (हारी), निभाड़णियो—वि० ।

निभाड़िग्रोड़ो, निभाड़ियोड़ो, निभाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।

निभाड़ीजणो, निभाड़ीजबो—कर्म वा० ।

निभणो, निभबो—अक० रू० ।

निभाड़ियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निभाड़ियोड़ी)

निभाणो, निभाबो-क्रि०स० [सं० निर्वाहनं] १ परम्परा या सम्बन्ध की रक्षा करना, (किसी बात को) बराबर चलाए चलना, बनाए रखना, जारी रखना, निर्वाह करना ।

ज्यूं—प्रीत निभाणी, नातो निभाणो, धरम निभाणो ।

उ०—१ घुड़ला थे लाइजो खुरसांणी देस रा, घुड़लां री घूमर पधारजो रे तो रे आवजो, जिसड़ी बाळपण री प्रीत बुढ़ापै निभायजो ।—लो.गी.

उ०—२ नागजी भलो निभाई प्रीत रे, वैरी रैण विछाग्रो कर चाल्यो ओ नागजी ।—लो.गी.

उ०—३ 'रघुवर प्यारा रे, हां रे रांम प्यारा रे, हां रे गोविंद प्यारा रे, नेह लग्यो सो निभाय लै रे ।'—गी.रां.

उ०—४ ऊधो भलो निभाई रे, त्यागे गोपी गोकळ म्हांनै यूं तरसाई रे ।—मीरां

उ०—५ रितुगांमी व्है सीळ राखियो, पुत्रोत्पत्ति फळ पाई । पतिपतनी दंपति पिए प्यारी, नवला नेह निभाई ।—ऊ.का.

२ बराबर करते जाना, लगातार साधन करना, निरन्तर पूरा करते जाना।

ज्यूं—इतरी वेगी नोकरी छोड दी, थोड़ा दिन तौ ग्रौर निभाणी ही।

३ किसी बात के अनुसार निरन्तर व्यवहार करना, पालन करना, पूरा करना, चरितार्थ करना।

ज्यूं—वचन निभाणौ, प्रतिग्या निभाणी।

उ०—बावड़ ध्याया बीदगां, ग्रावड़ कर ग्रापांण। कावड़ नैं सावड़ करण, नावड़ विरुद निभांण।—बालावक्स बारहठ

निभाणहार, हारौ (हारी), निभावणियौ—वि०।

निभवाड़णौ, निभवाड़बौ, निभवाणौ, निभवाबौ, निभवावणौ, निभवावबौ—प्रे०रू०।

निभायोड़ौ—भू०का०कृ०।

निभाईजणौ, निभाईजबौ—कर्म वा०।

निभणौ, निभबौ—अक० रू०।

निबाड़णौ, निबाड़बौ, निबाणौ, निबाबौ, निबावणौ, निबावबौ, निबाहणौ, निबाहबौ, निभाड़णौ, निभाड़बौ, निभावणौ, निभावबौ, निभाहणौ, निभाहबौ, निम्हाड़णौ, निम्हाड़बौ, निम्हाणौ, निम्हाबौ, निम्हावणौ, निम्हावबौ, निरभाड़णौ, निरभाड़बौ, निरभाणौ, निरभाबौ, निरभावणौ, निरभावबौ, निवहाड़णौ, निवहाड़बौ, निवहाणौ, निवहाबौ, निवहावणौ, निवहावबौ, निवहाणौ, निवहाबौ

—रू०भे०

निभायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ परम्परा या सम्बन्ध की रक्षा किया हुआ, (किसी बात को) बराबर चलाए चला हुआ, बनाए रखा हुआ, जारी रखा हुआ, निर्वाह किया हुआ।

२ बराबर करते गया हुआ, लगातार साधन किया हुआ, निरन्तर पूरा करते गया हुआ, चलाये गया हुआ।

३ किसी बात के अनुसार निरन्तर व्यवहार किया हुआ, पालन किया हुआ, पूरा किया हुआ, चरितार्थ किया हुआ।

(स्त्री० निभायोड़ी)

निभाव-सं०पु० [सं० निर्वाह] १ बचाव का ढंग, मुक्ति पाने का रास्ता।

ज्यूं—इण ग्रापत में तौ निभाव दोरौ ईज दीखै।

क्रि०प्र०—करणौ, दीखणौ, सजणौ, होणौ।

२ किसी दशा में जीवन बिताने का काम, निबाहने की क्रिया या भाव, गुजारा।

ज्यूं—थे म्हो नैं निभाव करौ, ऐड़ी जागा म्हांसूं तौ निभाव नी व्है

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

३ पूरा करने का काम, चरितार्थ करने का कार्य, पालन।

ज्यूं—हे भगवांन ! म्हारी प्रतंग्या रौ निभाव अब थारै हाथ में है।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

४ (किसी बात को) चलाए या जारी रखने का काम, किसी बात के अनुसार निरन्तर व्यवहार, लगातार साधन, सम्बन्ध या परम्परा की रक्षा।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

५ देखो 'निरवाह' (रू.भे.)

रू०भे०—निबाव, निबाह, निवाह, निव्वाह।

निभावणौ, निभावबौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)

उ०—प्रेम रौ पारावार अली हे ग्रौ तौ सारां रौ ततसार। हां हे हरि नेह निभावण हार, हां हे प्रभु पार लगावण हार।—मी.रां.

निभावणहार, हारौ (हारी), निभावणियौ—वि०।

निभाविग्रोड़ौ, निभावियोड़ौ, निभाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निभावीजणौ, निभावीजबौ—कर्म वा०।

निभणौ, निभबौ—अक० रू०।

निभावियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निभावियोड़ी)

निभाहणौ—देखो 'निबाहणौ' (रू.भे.)

उ०—पवा समरथां ग्रागळा, हत्थां चंद सुजाव। भालां जैत निभाहणा, 'बालांहदा राव।—रा.रू.

निभाहणौ, निभाहबौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ धिन ग्राजूणौ दीहड़ौ, यां कहियौ रघुनाथ। धरम निभाहां साम छळ, साहां सूं भाराथ।—रा.रू.

उ०—२ बळ दूणौ 'विजपाळ' रौ, जोड़ धमळ 'जगपत्त'। बोझ निभाहण मारवां, गाहण मेछ दुरत्त।—रा.रू.

निभाहणहार, हारौ (हारी), निभाहणियौ—वि०।

निभाहिग्रोड़ौ, निभाहियोड़ौ, निभाह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निभाहीजणौ, निभाहीजबौ—कर्म वा०।

निभणौ, निभबौ—अक० रू०।

निभाहियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निभाहियोड़ी)

निभियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (किसी सम्बन्ध, स्थिति ग्रादि का) निरन्तर बना रहा हुआ, बराबर चलता रहा हुआ, निर्वाह हुवा हुआ

२ पार पाया हुआ, बचा हुआ, निकला हुआ, छुट्टी पाया हुआ।

३ (किसी निश्चित बात के अनुसार) लगातार व्यवहृत हुवा हुआ, पालन हुवा हुआ, पूरा हुवा हुआ।

४ व्यवस्थित ढंग से होता चला हुआ, पूरा हुवा हुआ।

(स्त्री० निभियोड़ी)

निभै, निब्भै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)

उ०—१ नारण 'केसव' तणौ निभै नर। वन्नर नील जिसौ बळ वांनर।

उ०—२ धांधळ 'उदैकरण' हित धारै, 'किरतौ' 'गोयंद' मतै करारै। 'सांमळ' 'विजौ' सांमपण सद्धर, 'नरहर' 'ग्राणंद' तणौ निभै नर।

—रा.रू.

उ०—२ सीसोदो कल्याण रहै रावत निर्भे-मण हरीदास रहवह रहै 'तणो' सिर सोहण।—ग.रू.बं.

उ०—३ सुर्ता जवाद नवाब निर्भे-मण, दिया दलां आडो दळ थंमण।
—गु रू.बं.

निभ्रंछणो, निभ्रंछबौ—क्रि०स० [देशज] निंदा करना, फटकारना।

उ०—१ जिणे तुरने तिमहीज करघो, सोमति रांणी दीठ। कोप करी राजा प्रते, निभ्रंछे धिग धीठ।—नौपाळ रास

उ०—२ माथा पति नो अपराधी थाय ए। तिणने बाळै तिणा नगाय ए। निभ्रंछै वारवार ए, कहीजे न्यात रै बार ए।
—जयवांणी

निभ्रंत—देखो 'निरभ्रांत' (रू.भे.)

उ०—नगण यगण पायै निरखि, भणि चोरसा निभ्रंत। पावै खट आगर प्रविल, करि जस कमळा कंत।—पि.प्र.

निभ्रमी—देखो 'निरभ्रम' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निभ्रमी)

निभ्रम्म—देखो 'निरभ्रम' (रू.भे.)

उ०—नित :साह नितवे, भीम इक राह निभ्रम्मां। खुरसांण धमसांण, रांण घेरियौ मुहम्मां।—रा.रू.

निमंत—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)

निमंतण, निमंतरौ, निमंत्रण—सं०पु० [सं० निमंत्रणम्] १ किसी को किसी स्थान पर बुलाने का अनुरोध।

ज्यूं—म्हे आपनै निमंत्रण दूं हूं कै कदेई म्हारै घरै पधारजो।

२ वह अनुरोध जो किसी कार्य हेतु नियत स्थान पर आने के लिए किया जाय, आव्हान, बुलावा।

ज्यूं—म्हांरा गुरुजी एक महात्मा नै स्कूल में भासण देवण सारू निमंत्रण दियौ।

३ नियत समय पर भोजन आदि के लिए आने का अनुरोध, न्योता

ज्यूं—आज सांम सारू तौ भोजन रौ निमंत्रण आयोड़ौ पड़ियौ है

रू०भे०—निमतरौ, निमतौ, निवतरौ, निवतौ, नूंतौ, नूतौ, नूंतणौ, नैंतौ, नैंहतौ, नोतौ, नौतौ, नौहतौ, न्यूंतौ, न्योतौ।

निमंत्रण-पत्र—सं०पु०यौ० [सं०] वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को निमन्त्रण दिया गया हो।

निमंत्रणौ, निमंत्रबौ—क्रि०स० [सं० निमंत्रणम्] निमंत्रित करना, न्योता देना, निमन्त्रण देना। उ०—द्रोण सोण तुरगे रथ दीसइ, जेउ बुधि कृण हीण कलीसइ। युद्धसत्रि जिम राउ जि मंत्रइ, एक दीहि भड कोडि निमंत्रइ।—विराट पर्व

निमंत्रणहार, हारौ (हारी), निमंत्रणियौ—वि०।

निमंत्राड़णौ, निमंत्राड़बौ, निमंत्राणौ, निमंत्राबौ, निमंत्रावणौ, निमंत्रावबौ—प्रे०रू०।

निमंत्रिओड़ौ, निमंत्रियोड़ौ, निमंत्र्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निमंत्रीजणौ, निमंत्रीजबौ—कर्म वा०।

नउतणौ, नउतबौ, निउंत्रणौ, निउंत्रबौ, निमतणौ, निमतबौ, निवतणौ निवतबौ, निवतरणौ, निवतरबौ, निहुतरणौ, निहुतरबौ, निहुतणौ, निहुतबौ, नीमतणौ, नीमतबौ, नीवतणौ, नीवतबौ, नूंतणौ नूंतबौ, नूंहतणौ, नूंहतबौ, नूतणौ, नूतबौ, नूतरणौ, नूतरबौ, नेवतणौ, नेवतबौ, नैंतणौ, नैंतबौ, नैंहतणौ, नैंहतबौ, न्यूंतणौ, न्यूंतबौ, न्योतणौ, न्योतबौ—रू०भे०।

निमंत्रियोड़ौ—भू०का०कृ०—निमंत्रित किया हुआ, न्योता दिया हुआ, निमन्त्रण दिया हुआ।

(स्त्री० निमंत्रियोड़ी)

निमंत्रीहार—सं०पु० [सं. निमंत्रणं+रा. प्र. हार] वह व्यक्ति जिसे निमन्त्रण दिया गया हो, निमन्त्रित किया जाने वाला व्यक्ति।

वि०—निमंत्रित किया हुआ, जिसे निमन्त्रण दिया गया हो।

उ०—निमंत्रीहार अयार निसासहि। द्रिहुंगसि ढोला रवद दुवाड। विसकन्या देखे वजवाया। मुणियउ मांड अनड़ मेवाड़।—दूदो

रू०भे०—निमंतियार, नूंतियार, नूतियार, नैंतियार, नैंहतियार, न्यूंतियार, न्यूंतिहार, न्योतिहार।

निमंद—देखो 'निबंध' (रू.भे.)

निमंदणौ, निमंदबौ—देखो 'निमंधणौ, निमंधबौ' (रू.भे.)

उ०—महमद जैसा मसहपी निवाज निमंदे।—केसोदास गाडण

निमंदणहार, हारौ (हारी), निमंदणियौ—वि०।

निमंदिओड़ौ, निमंदियोड़ौ, निमंदयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निमंदीजणौ, निमंदीजबौ—कर्म वा०।

निमंदियोड़ौ—देखो 'निमंधियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री० निमंदियोड़ी)

निमंध, निमंधण—देखो 'निबंध' (रू.भे.)

उ०—१ नव अढ़ार आवै निमंध, मात्र एक पय माहि। रूडी विधि कहिया रुचिर, सुथिर छंद साराहि।—ल.पिं.

उ०—२ अरि दूनाड़ आवियौ, वणियौ जुद्ध निमंध। दळं सझ भाद्राजण दिसा, आयौ 'अजण' कमंध।—रा.रू.

उ०—३ निमी गोदावरी नदी धारा निमध, सांम नै तुहारै कहो कद रो संबंध।—पी.ग्रं.

उ०—४ परमेसर त्रैलोकपति, पतत उतारण पारि। जगत निमंधण गुर जगत, बळबंधण बळिहारि।—पि.प्र.

निमंधणौ, निमंधबौ—क्रि०स० [सं० निबंधनम्] १ करना, बनाना, रचना।

उ०—१ तैं परठै पचीस तत पंचभूतक प्रांणी। भेद पचास निमंधिया, घट मंझ मंडांणी।—केसोदास गाडण

उ०—२ जांमण मरण विमंधिया दोजग डंडा।—केसोदास गाडण

उ०—३ भेद पचासां निमंधिया घट मंड घडांणी।
—केसोदास गाडण

उ०—४ बोल नवाब सरस द्रढ बंधे, सुत पितु हूंत महा छळ संधे। यूं रिम सूरत सुत प्रबधे, नेम लियौ विधि जेम निबंधे।—रा.रू.

उ०—५ उगणत्रीस लख श्रावगा, सहस पचांणु सोइ। नवसौ रूप निमंध करि, दाखि त्रीस वळि दोइ।—ल.पि.

उ०—६ छोटा वडा सांगोर री, नेम नहीं नहचेण। निमंधे त्रिण दूहा निपट, तवे पंखाळौ तेण।—र.ज.प्र.

२ रखना। उ०—१ मात्र आठ पाये निमंध, धारीजे निरधार। जगण अंत आवे जरू, भाखि छंद मधुभार।—पि.प्र.

उ०—२ रूपमाळ रूपक्क रै, नव गुर पाइ निमंध। मनमरा भूलै महमहण, कळह दहण दहकंध।—पि.प्र.

३ बंध तैयार करना।

[सं० नियमनं] ४ संकल्प करना, निमित्त करना।

ज्यूं—म्हारै पांच रुपिया कबूतरां सारू निमंधियोड़ा है।

उ०—सुतण 'दीप' तन सूर। नूर खत्रवाट निमंधे।—विनय रासो

निमंधणहार, हारौ (हारी), निमंधणियौ—वि०।

निमंधवाड़णौ, निमंधवाड़बौ, निमंधवाणौ, निमंधवाबौ, निमंधवावणौ, निमंधवावबौ, निमंधाड़णौ, निमंधाड़बौ, निमंधाणौ, निमंधाबौ, निमंधावणौ, निमंधावबौ—प्रे०रू०।

निमंधिग्रोड़ौ, निमंधियोड़ौ, निमंध्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निमंधीजणौ, निमंधीजबौ—कर्म वा०।

नबंधणौ, नबंधबौ, नमंधणौ, नमंधबौ, निबंधणौ, निबंधबौ, निमंदणौ, निमंदबौ, निमधणौ, निमधबौ, निमिधणौ, निमिधबौ—रू०भे०।

निमंधियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किया हुआ, बनाया हुआ, रचा हुआ।
२ रखा हुआ।
३ बंध तैयार किया हुआ।
४ संकल्प किया हुआ, निमित्त किया हुआ।
(स्त्री० निमंधियोड़ी)

निमंसी—वि० [देशज] ठोस, कठोर। उ०—मुखमली पसम रा, कळी सी कांन रा, भूठमी ग्रेठ रा, कूकड़ा कंध रा, लोह में बंध रा, तोछड़ी पूंठ रा, चोवड़ी घूव रा, चांमरी पूंछ रा, निमंसी नळी रा, वाटके नख रा, घावणी ग्रोड रा।—रा.सा.सं.

निमक—देखो 'नमक' (रू.भे.)

निमकसार—देखो 'नमकसार' (रू.भे.)

निमकहरांम—देखो 'नमकहरांम' (रू.भे.)

निमकहरांमी—देखो 'नमकहरांमी' (रू.भे.)

निमकहलाल—देखो 'नमकहलाल' (रू.भे.)

निमकहलालियौ—देखो 'नमकहलाल' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पीछे माराज कांम आया तिण री पातसाही सूं औरंगाबाद में मालम हुई। तठै वडो अपसोस कियो अर फुरमायो के वडा सचा निमकहलालिया था, अब मेरी पातसाही में ऐसा जमा-मरद बाकी रया नी कोई।—द.दा.

निमकहलाली—१ देखो 'नमकहलाल' (रू.भे.)

उ०—बादसाह सुण घोखो कर कही-हिंदू ऐसा सिपाही होणा नहीं। भला सांचा निमकहलालो था।—महाराजा स्रो पदमसिंह री वात

२ देखो 'नमकहलाली' (रू.भे.)

निमकीन—देखो 'नमकीन' (रू.भे.)

निमख—१ देखो 'नमक' (रू.भे.)

उ०—खावंद के हुकम पर जम सेती जंग करै। निमख की सरीयत पर ज्यांन कुरबांन करै।—सू.प्र.

२ देखो 'निमिस' (रू.भे.)

उ०—१ ऐकीकइ निमख तेज तनु अधिकउ, भांण जांहि ऊगतउ प्रभात। कंमळ ताय अत राजकुमारी, गोरी कमळ सरीखइ गात।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कांकळ समे कुवेलियां, म दे संग महमाय। निजरां आगै निमख में, हार-मोर व्है जाय।—बां.दा.

उ०—३ हरिरांम नांम व्रत हिरदै धारू, परम उदार निमख न विसारूं।—ह.पु.वा.

उ०—४ भौसागर वार पार कधि नांही, (घट) घाट तजि अघट विचारो। परम ध्यांन पर ध्यांन हरि, निजनाथ नहिं निमख बिसारो।
—ह.पु.वा.

निमखहरांमी—देखो 'नमकहरांमी' (रू.भे.)

निमग—देखो 'निगम' (रू.भे.) (डिं.को.)

निमड़णौ, निमड़बौ—देखो 'निपटणौ, निपटबौ' (रू.भे.)

उ०—रांणोजी तौ घणाही म्होरा करै छै, हुई जिकी तौ हुई, निमड़ी पण इब थां कहो सो करस्यां।—नापै सांखलै री वारता

मुहा०—कांम निमड़णौ—देखो 'कांम निवड़णौ'।

निमड़णहार, हारौ (हारी), निमड़णियौ—वि०।

निमड़ाड़णौ, निमड़ाड़बौ, निमड़ाणौ, निमड़ाबौ, निमड़ावणौ, निमड़ावबौ—प्रे०रू०।

निमेड़णौ, निमेड़बौ—क्रि०स०।

निमड़िग्रोड़ौ, निमड़ियोड़ौ, निमड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निमड़ीजणौ, निमड़ीजबौ—भाव वा०।

निमड़ियोड़ौ—देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निमड़ियोड़ी)

निमचालखलाई-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

निमजणौ, निमजबौ—देखो 'निमज्जणौ, निमज्जबौ' (रू.भे.)

निमजणहार, हारौ (हारी), निमजणियौ—वि०।

निमजिग्रोड़ौ, निमजियोड़ौ, निमज्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निमजीजणौ, निमजीजबौ—भाव वा०।

निमजर—देखो 'नौमजर' (रू.भे.)

निमजा, नौमजा-सं०पु० [देशज] नौजा।

उ०—१ छौहारी खारिकि, जालिकी खारिकि, पिस्तांनी खारिकि, भुंगडी खारिकि, सिलेमांनी खारिकि, नीली खारिकि, अखोड बदांम, कागदी बादांम, कठ बदांम, सकरी बदांम, पस्तां, निमजा, चाइम चारुळी, जरगोजा अंजीर।—व.स.

उ०—२ नीनां नारिंगां रंगि दीसतां सुरंग, नीकोळी रायण, ते प्रीयां मन मानइ, दाडिम नी कुळी, लातां पूजं रूळी, निमजा निम्बोट, रातां दरजि फोट ।—व.स.

उ०—३ मारिक सुरमा रे द्रास छोपारियां, निमजा ने नाळेर । इत्यादिक नय नय भागळि धरैं, पांमि मोटिम मेर ।—सोपाळ रास

निमजियोड़ो—देखो 'निर्मज्जियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमजियोड़ी)

निमज्जन-सं०पु० [सं०] डूब कर किया जाने वाला स्नान ।

निमज्जणो, निमज्जबो-क्रि०प्र० [सं० निमज्जनम्] १ अवगाहन करना, गोता लगाना, डूबना ।

क्रि०स०—२ युद्ध करना ।

उ०—हुए नाळ गोळा, पड़ै जांणि प्रोळा । करग्गे केवांणं, निमज्जे जयांणं ।—ग.रू.वं.

निमज्जणहार, हारो (हारी), निमज्जणियो—वि० ।

निमज्जियोड़ो, निमज्जियोड़ो, निमज्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमज्जीजणो, निमज्जीजबो—भाव वा० ।

निमज्जियोड़ो-भू०का०कृ०—१ अवगाहन किया हुआ, गोता लगाया हुआ, डूबा हुआ । २ युद्ध किया हुआ ।

(स्त्री० निमज्जियोड़ी)

निमझर—देखो 'नीमजर' (रू.भे.)

उ०—जेठ मास सास रै सायं, सोरम देवै सातरी । साड़ मांय सांचरै निमझर, धांणं जीरै जातरी ।—दसदेव

निमटणो, निमटबो—देखो 'निपटणो, निपटबो' (रू.भे.)

उ०—१ फेर पती री कवणैती पणा री कहै छै, हे सखी ! इण कवणैती पती री मोज रीस नैं दूजो कोई पूगै नहीं । तीर छूटतां चिपटी खाली होयतां ही निमटी नीवड़ती चाली चाली जावै है फोज ।—वी.स.टी.

उ०—२ दया प्रभात ग्रमोघ, गोरवो किणनै भावै । प्रांख्यां बढ़ै प्रधेर, विनां निमटै ना जावै । कोठो राखै साफ, उदर रा रोग मिटावै । जठै नहीं है नीम, फोडणी कबजी जावै ।—दसदेव

उ०—३ सोच सदा निमट नर प्रावै, हाथ साफ सारा करै । ऊजळां घोरां घूड़ प्रागै, साबण भो पांणी भरै ।—दसदेव

निमटणहार, हारो (हारी), निमटणियो—वि० ।

निमटवाड़णो, निमटवाड़बो, निमटवाणो, निमटवाबो, निमटवावणो, निमटवावबो—प्रे०रू० ।

निमटाड़णो, निमटाड़बो, निमटाणो, निमटाबो, निमटावणो, निमटावबो—क्रि०स०

निमटियोड़ो, निमटियोड़ो, निमट्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमटीजणो, निमटीजबो—भाव वा० ।

निमटाड़णो, निमटाड़बो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)

निमटाड़णहार, हारो (हारी), निमटाड़णियो—वि० ।

निमटाड़ियोड़ो, निमटाड़ियोड़ो, निमटाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमटाड़ीजणो, निमटाड़ीजबो—कर्म वा० ।

निमटणो, निमटबो—अक० रू० ।

निमटाड़ियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमटाड़ियोड़ी)

निमटाणो, निमटाबो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)

निमटाणहार, हारो (हारी), निमटाणियो—वि० ।

निमटायोड़ो—भू०का०कृ० ।

निमटाईजणो, निमटाईजबो—कर्म वा० ।

निमटणो, निमटबो—अक० रू० ।

निमटायोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमटायोड़ी)

निमटावणो, निमटावबो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)

निमटावणहार, हारो (हारी), निमटावणियो—वि० ।

निमटावियोड़ो, निमटावियोड़ो, निमटाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमटावीजणो, निमटावीजबो—कर्म वा० ।

निमटणो, निमटबो—अक० रू० ।

निमटावियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमटावियोड़ी)

निमटियोड़ो—देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमटियोड़ी)

निमण—१ देखो 'निमन' (रू.भे.)

२ देखो 'नीमण' (रू.भे.)

निमणो-वि०—१ उदास, खिन्न चित्त । उ०—ग्रर करै न ऊभी ग्रंगुळी, निमणो तो पिण नाथ । सिरज लजाळू इण सिरज, हरि धुए जिण हाथ ।—रेवतसिंह भाटी

२ हलका, तुच्छ, नमने वाला । उ०—निमणो पड़ मत रह निडर, राच्यो नृप किम रंज । सह मढ़ किवाड़ साख रा, भिड़ करि संकै न भंज ।—रेवतसिंह भाटी

निमणो, निमबो—देखो 'नमणो, नमबो' (रू.भे.)

उ०—१ मेको हाथी मोकळयो, जोपै जोरावर । उठै न कोइ उपाव सूं, निम रह्या सको नर ।—ठा. जुझारसिंह मेड़तियो

उ०—२ रीझ दिया रिड़माल नैं, नव कोट नृमै-नर । राव मुकन इम रट्टियो, कमधज जोड़ै कर । ग्राप बिराजो ईस्वरी, थिरपो मढ़ सढ़र । दस गांवां सूं देसणोक, निमि कीधी निज्जर ।

—ठा. जुझारसिंह मेड़तियो

निमणहार, हारो (हारी), निमणियो—वि० ।

निमिग्रोड़ो, निमियोड़ो, निम्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमीजणो, निमीजबो—भाव वा० ।

निमत—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)

निमतणो, निमतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

निमतणहार, हारौ (हारी), निमतणियौ—वि०।
निमतवाड़णौ, निमतवाड़बौ, निमतवाणौ, निमतवाबौ, निमतवावणौ, निमतवावबौ, निमताड़णौ, निमताड़बौ, निमताणौ, निमताबौ, निमतावणौ, निमतावबौ—प्रे०रू०।
निमतिग्रोड़ौ, निमतियोड़ौ, निमत्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निमतीजणौ, निमतीजबौ—कर्म वा०।

निमतरौ—१ देखो 'नैत' (रू.भे.)
२ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

निमति—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)
उ०—रुत प्रति चंदण कपूर सभै समसांण सभाई। विविध अमित सुचि वसत चेहग्नि निमति चलाई।—रा.रू.

निमतियार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

निमतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निमतियोड़ी)

निमतौ—१ देखो 'नैत' (अल्पा., रू.भे.)
ज्यूं०—फलांणै री वियाव है जिकी पांच रिपिया निमता रा घालणा जाणौ है।
२ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)
३ देखो 'निवतौ' (रू.भे.)

निमत्त—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)
उ०—१ राठौड़ां पण झल्लियौ, नृप 'अगजीत' निमत्त। सुण तहवर उर छौजियौ, अत खीजियौ दुरत्त।—रा.रू.
उ०— मन मूझ तणौ वीमाह जिसौ अत, मारूं गोइंद आप मरै। आग्रो भड़ साथि जिकौ मो आवै, काळ निमत्त सरीर करै।
—गु.रू.वं.

निमघणौ, निमघबौ—देखो 'निमंधणौ, निमंधबौ' (रू.भे.)
निमघणहार, हारौ (हारी), निमघणियौ—वि०।
निमघिग्रोड़ौ, निमघियोड़ौ, निमध्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निमधीजणौ, निमधीजबौ—कर्म वा०।

निमधियण-वि०[?]रचने वाला, रचयिता। उ०—उरध अंबर उद्धरण, वेद ब्रहमा गावाळण। दळ दांणव निरदळण, ग्रब्ब रांमण चौ गाळण। बम्भीखण जण करण, सबळ दैतां संघारण। नव्वनाथ निमधियण, त्रिविध लोकां ऊपावण। ससि सूर पवन पांणी सती, मुगति कीग्र जांमण मरण। त्रैलोकनाथ 'जगियौ' तवै, सरण राख असरण सरण।—ज.खि.

निमधियोड़ौ—देखो 'निमंधियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निमधियोड़ी)

निमन-सं०पु० [सं० निम्नतः] १ वह नीचा स्थान जहाँ वर्षाकाल में पानी भर जाता हो।
२ गहरा पानी (डिं.को.)
३ पूज्य स्थान।
रू०भे०—निमण।
४ देखो 'नीमण' (रू.भे.)

निमनगा-सं०स्त्री० [सं० निम्नगा] नदी, सरिता (ह.नां., अ.मा., डिं.को.)

निमळौ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)
उ०—मोत्यां रै सरीसौ थांरौ धण निमळौ ग्रो राज, राखौ नी कांनां रै मांय।—लो.गी.
(स्त्री० निमळी)

निमसकार, निमस्कार—देखो 'नमस्कार' (रू.भे.)
उ०—गुरड़ ऊपरा चढै वैकूंठ ग्रांमी, निमस्कार तो नां निमो सहस-नांमी।—पी.ग्र.

निमांण—१ देखो 'निमांणौ' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'निवांण' (रू.भे.)

निमांणी-वि०स्त्री०—ढीठ, मानहीना।
उ०—१ रमसां दे नाळ मोही वे, जंग सयाळै दी हो परी हीर निमांणी।—रसीलैराज
उ०—२ जांणी जांणी रे गलां दोस्त दो, रसराज एक में हीर निमांणी।—रसीलेराज
उ०—३ सइयां कुण छै, ए लागै छै ग्रमीर किण उळगांणी रा भंवरजी। लटपटिया सिरपेच पाग रा, भूह कबांण सी तांणी रा निमांणो रा।—रसीलैराज

निमांणौ-वि० [सं० नि+मान] (स्त्री० निमांणी) १ मानरहित, निर्लज्ज, धृष्ठ, ढीठ।
उ०—१ रैणां सावण तूझ, निमांणौ विरह दझावै। दिनां बिलमतां काज, म इतरौ जोर जतावै। रसिया ईखो वांम, गोखड़ै जाय बिराजो। घर पोढ़ो मझ रात, अमीणा बोल सुणाजो।—मेघ.
उ०—२ निमांण विसर गयां मिळ के।—रसीलैराज
उ०—३ नर तेथ निमांणा निलजी नारी, अकबर गाहक बट अवट। चोहटे तिण जाय'र चीतोडौ, वेचै किम रजपूत बट।
—महारांणा प्रताप रौ गीत
२ निम्न, खराब, बुरा, मर्यादाहीन।
मह०—निमांण।

निमांम, वि० [देशज] १ मर्यादा-हीन।
उ०—१ निलज निमोही नाथ, निपट निमांम हूं।—र.ज.प्र.
उ०—२ निमांमो थाइ न थाइ नेह। मिटै घर बीज घटै तर मेह।
—रांमरासौ
२ बुरा, खराब।
उ०—१ नरनाह पतसाह छोडाड़ सकियौ नहीं, समांमौ कमंध जोय निमांमी सिंध। आपरा वडेरां खाटिया अखाड़ा करण रयो प्रवाड़ा बांधियां कंध।—महाराज करणसिंह रौ गीत

निमाई-सं०स्त्री०—१ कुम्हार की मिट्टी।
२ कुम्हार का बर्तन पकाने का स्थान।

निमाड़णो, निमाड़बो—देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)
निमाड़णहार, हारो (हारी), निमाड़णियो—वि०।
निमाड़िग्रोड़ो, निमाड़ियोड़ो, निमाड़योड़ो—भू०का०कृ०।
निमाड़ीजणो, निमाड़ीजबो—कर्म वा०।
निमणो, निमबो—ग्रक०रू०।
निमाड़ियोड़ो—देखो 'नमाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमाड़ियोड़ी)
निमाज—देखो 'नमाज' (रू.भे.)
निमाजगाह—देखो 'नमाजगाह' (रू.भे.)
उ०—उठै दग रै मांगळियांणो में पुत्र चूंडा री जन्म हुवो जिकण री ही वधाई में जाएं ढोलां रै ग्रांटै जवनां री निमाजगाह रा फरास वढ़ाई कवरां रै मार्थ वाराह विगासि।—वं.भा.
निमाजी—देखो 'नमाजी' (रू.भे.)
निमाणो, निमावो—देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)
निमाणहार, हारो (हारी), निमाणियो—वि०।
निमायोड़ो—भू०का०कृ०।
निमाईजणो, निमाईजबो—कर्म वा०।
निमणो, निमबो—ग्रक० रू०।
निमायोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमायोड़ी)
निमावणो, निमावबो—देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)
ज्यूं—इण लोह रै खीलै नै ऊंचो टेरण सारूं थोड़ो निमावणो पड़ैला।
निमावणहार, हारो (हारी), निमावणियो—वि०।
निमाविग्रोड़ो, निमावियोड़ो, निमाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
निमावीजणो निमावीजबो—कर्म वा०।
निमणो, निमबो—ग्रक० रू०।
निमावियोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमावियोड़ी)
निमि—सं०पु० [सं०] १ दत्तात्रेय के पुत्र एक ऋषि।
२ राजा ईक्ष्वाकु के एक पुत्र।
३ ग्रांखों के मिचने की क्रिया या भाव, पलक का ऊपर नीचे होना, पलक झपकना।
४ देखो 'नेमी' (रू.भे.)
निमिख—देखो 'निमिस' (रू.भे.)
उ०—१ जे उवै वाहर ग्राया तो एक निमिख लागसी।
—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता
उ०—२ पलक निमिख मत पांतरे, दाखै कव दीनदयाळ।—ह.र.
निमिणि—देखो 'नमण' (रू.भे.)
उ०—रांमचद ग्रजोध्या मांहि राघव रमै। निमिणि ब्रह्मा करै ग्रावि नारद नमै।—पी.ग्रं.

निमित, निमित्त—सं०पु० [सं० निमित्त] १ कारण, हेतु (डि.को.)
उ०—१ ढोढ महीनै रै राह-हूं चाळीस, मरूं तो सयणी निमित्त।
—सयणी री वात
उ०—२ दादू नांम निमित रांमहि भजै, भक्ति निमित भज सोय। सेवा निमित सांई भजै, सदा सजीवन होइ।—दादूवांणी
२ फल की ग्रोर लक्ष्य, उद्देश्य।
ज्यूं—वरसात रै निमित्त हवन करणो।
उ०—१ दीवांनो कही जिण निमित्त देणो कियो थो उण ही नूं जे देवो।—नी.प्र.
उ०—२ इण तरह पत्र लिखाय पातसाह री भेट निमित्त एक सत १०० तुरंग।—व.भा.
३ शकुन। उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित। दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासे दुसुपन दुर निमित्त।—वेलि.
४ चिन्ह, लक्षण।
क्रि०वि०—लिए। उ०—१ ऐ तो पांच सो ग्रादमी थां निमित्त तैयार हुवा छै। संकळप भरता यूं कहै छै ग्रा देही ठाकुरजी निमित्त छै।
—पलक दरियाव री वात
उ०—२ सब कोई मनुस्य भार लिया फिरै छै सीत की रिख्या निमित्त।—वेलि.
रू०भे०—नमंत, नमत, नांमित, निमंत, निमित, निमति, निमत्त, नीमंत, नेम।
निमित्तकारण—सं०पु० [सं०] वह जिसके कार्य व मदद से कोई वस्तु बने।
निमित्तियो—देखो 'निमित्ती' (रू.भे.)
उ०—तेह नै कह्यो निमित्तियै जी, वाळ पणै निमंत्र जिणसी पुत्र मुवा थकाजी, करम तणै विरतंत।—जयवांणी
निमित्ती [सं० नैमित्तिक] जो किसी कारण विशेष वश किया जाय, जो निमित्त या कारण उपस्थित होने पर हो। (उ.र.)
[सं० नैमित्तिकः] ज्योतिषी (उ.र.)।
रू०भे० निमित्तियो।
निमिधणो, निमिधबो—देखो 'निमंधणो, निमंधवो' (रू.भे.)
निमिधणहार, हारो (हारी), निमिधणियो—वि०।
निमिधिग्रोड़ो, निमिधियोड़ो, निमिध्योड़ो—भू०का०कृ०।
निमिधीजणो, निमिधीजबो—कर्म वा०।
मिमिधियोड़ो—देखो 'निमंधियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमिधियोड़ी)
निमियोड़ो—देखो 'नमियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमियोड़ी)
निमिराज—सं०पु० [सं०] निमिवंशी राजा जनक।
निमिस—सं०स्त्री० [सं० निमिष] १ ग्रांखों के मीचने वा पलकों के

गिरने की क्रिया या भाव, निमेष।

२ आंख के एक बार झपकने में लगने वाला समय, उतना समय जितना पलक गिरने में लगता है, पलक मारने भर का समय।

उ०—१ ।नामस पळ घसंति सारिखो अहोनिसि, एकण एक न दाखै अंत। कंत गुणे वसि थायै कांता, कांता गुणि वसि थायै कंत।
—वेलि.

उ०—२ निमिस पळ वसंत रै विसै रात्रि अर दिन सरीसा निरवहै छै, एकै थे एक कहुं वात जणावै नहीं छै।—वेलि. टी.

३ पलक पर होने वाला एक रोग—(सुश्रुत)।

क्रि०वि०—पलक भर में, क्षण में ही।

रू०भे०—निमख, निमिख।

निमिसकार, निमिस्कार—देखो 'नमस्कार' (रू.भे.)

उ०—गरुड ऊपरा चढ़े वैकूंठ-ग्रांमी, निमिस्कार तोने निमो सहस-नांमी। पी.ग्रं.

निमूळ-वि० [सं० निमूल] विना मूल का, मूल रहित।

निमेख—देखो 'निमेस' (रू.भे.)

उ०—पलक निमेख न पांतरां, दाखां दीनदयाळ। धरणीधर हिरदै धरां, गुण गावां गोपाळ।—ह.र.

निमेड़णो, निमेड़बो-क्रि०स०—१ दूर करना, मिटाना।

उ०—विमुह करण रण साह दळ, मुहकम का हरियंद। सोच निमेड़ण निय दळां, खळां उखेलण कंद।—रा.रू.

२ देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)

निमेड़णहार. हारो (हारी), निमेड़णियो—वि०।

निमेड़िग्रोड़ो, निमेड़ियोड़ो, निमेड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

निमेड़ीजणो. निमेड़ीजबो—कर्म वा०।

निमड़णो, निमड़बो—अक०रू०।

निमेड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ दूर किया हुआ, मिटाया हुआ।

२ देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमेड़ियोड़ी)

निमेस-सं०स्त्री० [सं० निमेषः] १ आंख के झपकने वा पलक के गिरने की क्रिया या भाव (डिं.को.)।

२ उतना काल जितना स्वभावतः पलक गिर कर उठने में लगता है, पलक मारने भर का समय (डिं.को.)

३ क्षण, पल। उ०—विरहइ-पीडित वरसनां, दैव-दह्यां जे देह। निसा एक निमेस-महि, नव-पल्लव थ्यां तेह।—मा.कां.प्र.

४ आंख फड़कने का एक रोग।

५ महाभारत के अनुसार एक यक्ष का नाम।

रू०भे० निमेख।

निमोळी—देखो 'निंबोळी' (रू.भे.)

निमोही-वि० [सं० निर्मोही] प्रेम न करने वाला, निर्मोही।

उ०—कपटी कळ की कूर कातर कुचाल कोर, 'किसन' कहत कैसो कळ ही अकांम हूं। वैंडो हूं बकोरो हूं वुरो हूं वेसहूर वादी, निलज निमोही नाथ निपट निमांम हूं।—र.ज.प्र.

निमो—देखो 'नमो' (रू.भे.)

उ०—१ इंमिया खिमिया मांस अहारिणि, चारिणि निमो संघाल चारिणि।—पी.ग्रं.

उ०—२ सोव्है सिल पर जेथ पगलिया सिंभु-केरा। करो परकमा मेघ निमो दे मांन घणेरा। भगतां-दरसण-भाग मिटै सह पाप जिणांरा। अमरापुर ही जाय, छूटतां प्रांण तिणांरा।—मेघ.

निम्मळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.) (जैन)

उ०—१ दिपै गुण निम्मळ मुत्तियदांम, सेवं मन सुद्ध तिको हिज स्वांम।—ध व.ग्रं.

उ०—२ भोग तणउं अंतराई इण, परि बांधी संजम लेवि। निम्मळ विपुळ कीया तप गाढ़ा, हिम्रडइ भाव धरेवि।
—विद्याविलास पवाडउ

निम्मांण, निम्मांन—देखो 'निरमांण' (रू.भे.)

निम्माज—देखो 'नमाज' (रू.भे.)

उ०—१ जे नितु रोजु करइं नितह निम्माज गूंजारइं। पंच वखत सम धरइं धणी, जे एक संभारइं।—व.स.

उ०—२ पंच वखत निम्माज ताज कुलहराह सोहइ, खोजा खांन वजीर मलिक उंबरे मन मोहइ।—व.स.

निम्हणो, निम्हबो—देखो 'निभाणो, निभावो' (रू.भे.)

निम्हणहार, हारो (हारी), निम्हणियो—वि०।

निम्हवाड़णो, निम्हवाड़बो, निम्हवाणो, निम्हवावो, निम्हवावणो. निम्हवावबो—प्रे० रू०।

निम्हाड़णो, निम्हाड़बो, निम्हाणो, निम्हावो, निम्हावणो, निम्हावबो
—क्रि०स०।

निम्हिग्रोड़ो, निम्हियोड़ो, निम्ह्योड़ो—भू०का०कृ०।

निम्हीजणो, निम्हीजबो—भाव वा०।

निम्हाड़णो. निम्हाड़बो—देखो 'निभाणो, निभावो' (रू.भे.)

निम्हाड़णहार, हारो (हारी), निम्हाड़णियो—वि०।

निम्हाड़िग्रोड़ो, निम्हाड़ियोड़ो, निम्हाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

निम्हाड़ीजणो, निम्हाड़ीजबो—कर्म वा०।

निम्हणो, निम्हबो—अक० रू०।

निम्हाड़ियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निम्हाड़ियोड़ी)

निम्हाणो, निम्हाबो—देखो 'निभाणो, निभावो' (रू.भे.)

उ०—मन भांमण सांमण महीं, कीधो आवण कोल। तरसाजो मत तीज नैं, वलम निम्हाजो बोल। वलम निम्हाजो बोल बचाजो विरह सौं। पिव बिन रहसी प्रांण, तीज किण तरह सौं। दिल मतो धारो देर, पधारो पांमणा। समझूं जरै सनेह, अचांणक आंमणा।
—सिवबक्स पाल्हावत

निम्हानहार, हारो (हारी), निम्हाणियो—वि० ।
निम्हवाड़णो, निम्हवाड़बो, निम्हवाणो, निम्हवावो, निम्हवावणो, निम्हवावबो—प्रे०रू० ।
निम्हायोड़ो—भू०का०कृ० ।
निम्हाईजणो, निम्हाईजबो—कर्म वा० ।
निम्हणो, निम्हबो —अक०रू० ।
निम्हायोड़ो—देखो 'निमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निम्हायोड़ी)
निम्हावणो निम्हावबो—देखो 'निमाणो' निमाबो' (रू.भे.)
निम्हावणहार, हारो (हारी), निम्हावणियो—वि० ।
निम्हाविथोड़ो, निम्हावियोड़ो, निम्हाव्योड़ो —भू०का०कृ० ।
निम्हावीजणो, निम्हावीजबो—कर्म वा० ।
निम्हणो, निम्हबो—अक० रू० ।
निम्हावियोड़ो—देखो 'निमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निम्हावियोड़ी)
निम्हियोड़ो—देखो 'निमियोड़ो (रू.भे.)
(स्त्री० निम्हियोड़ी)
नियंठ—१ देखो 'निग्गंथ' (रू.भे., जैन)
२ देखो 'निरग्रंथ' (रू.भे.)
नियंता-सं०पु० [सं० नियंतृ] १ व्यवस्था करने वाला, नियम बांधने वाला। उ०—हितू सेवा पूजा अवर नहिं दूजा ब्रह्म में। नहीं नेमा प्रेमा यम नहि न तेमा दगन में। नियंता यंता ना चपल चित चिंता मन चुके। अचेता चेता ना जियत हम प्रेता बन चुके।
—ऊ.का.
२ हुकूमत करने वाला शासक. ३ विष्णु ।
रू०भे—नीयंता ।
निय—देखो 'निज' (रू.भे.)
उ०—१ विमुह करण रण साह दळ, मुहकम का हरियंद। सोच निमेड़ण निय दळां, सळां उखेलण कद ।—रा.रू.
उ०—२ रुकमइयो पेखि तपत आरणि रणि, पेखि रुखमणी जळ प्रसन। तणु लोहार वांम कर निय तणु, माहव किउ सांडसी मन।
—वेलि.
नियक, नियक, नियगं, नियग-वि० [सं० निजक] खुद का, अपना।
रू०भे०—नियय ।
नियड़-सं०स्त्री० [सं० निकट] नदी के तट के आसपास का भू-भाग ।
नियट्ट-वि० [सं० निवृत्त] निपटा हुआ, निवृत्त ।
नियत-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव ।
वि०—१ मुकर्रर किया हुआ, ठहराया हुआ, ठीक किया हुआ, निश्चित, स्थिर ।
ज्यूं—चोकीदारी रो पगार सो रिपिया नियत हुवो है थांरै नोकरी करणी व्है तो करो।
ज्यूं—गोठ करण सारू पै'ली दिन नियत करलो।
२ कायदे के अनुसार निश्चित, नियम से बंधा हुआ, पाबंद, बद्ध, परिमित ।
३ प्रतिष्ठित, तैनात, मुकर्रर, स्थापित, नियोजित ।
ज्यूं—मेहमांनां री खातरी करण सारू पांच आदमी नियत है।
४ देखो 'नियति' (रू.भे.)
५ देखो 'नीयत' (रू.भे.)
उ०—नांवरी नियत हम जियत नांहि। आकास न आवहि मुट्ठि मांहि।—ऊ.का.
रू०भे०—नियय, नीत ।
नियतव्यावहारिककाल-सं०पु० [सं०] ज्योतिष के अनुसार नियत समय जिसमें विवाह, यात्रा, दान, श्राद्ध, व्रत आदि हों ।
नियति-सं०स्त्री० [सं०] १ भवितव्यता, होनहार ।
२ अवश्य होने वाली बात, बधी हुई बात ।
३ दैव, भाग्य, अदृष्ट ।
४ बद्ध होने का भाव, नियत होने का भाव, बंधेज ।
५ स्थिरता, ठहराव, मुकर्ररी ।
६ वह परिणाम जिसका होना पूर्वकृत कर्मों के कारण निश्चित होता है। (जैन)
७ जड़-प्रकृति ।
८ नीति। उ०—लोपै नियति चो प्रजा, कोपे 'अयरंग' साह। पड़ी तुरगां पाखरां, अंगे जडी सनाह।—रा.रू.
रू०भे०—नियत, नियत्ति, नीयति, नेत ।
नियती-सं०स्त्री० [सं०] भगवती, दुर्गा ।
नियतीवंत-वि० [अ० नीयत+सं० वंत] जिसकी नीयत ठीक हो, ईमानदार ।
उ०—अति प्रगट रस शुद्ध ढाळ अदभुत, गोपि अतिरंग आदरे। जिम पुरख नियतीवंत नृप जग, प्रजा उर सुख पाव रे।—रा.रु.
नियत्तण-क्रि०वि० [सं० निवर्त्तन] निवृत्ति के लिए (जैन)
नियत्ति-सं०स्त्री० [सं० निवृत्ति] १ निवृत्त होने का भाव, निवृत्ति।
२ देखो 'नियति' (रू.भे.)
नियम-सं०पु० [सं०] १ निश्चित की हुई विधि, रीति, ठहराई हुई पद्धति, जाब्ता, कानून, कायदा। उ०—अखंडा ब्रह्मंडा अखिल इकदेसी तव अगे। जराहा आहा तूं सुलभ सब देसी सब जगे। रचे तूं ढाहे तूं नियम जुत चाहे फिर रचे। नचावै जीवां को निडर निज बाह्यांतर नचै।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—करणो, बांधणो, होणो ।
२ चला आता हुआ विधान, बंधा हुआ क्रम, दस्तूर, परम्परा ।
ज्यूं—दसरावै रै दिन देवी रै आगै बकरो कटण रो नियम है।
ज्यूं—म्हारो तो रोज सुबह स्वांमीजी नै याद करण रो नियम है।
क्रि०प्र०—करणो, होणो ।
३ ऐसी बात को निश्चित करना या ठहराना जिस पर किसी

दूसरी बात का होना निर्भर हो।

ज्यूं—गरीब मास्टरां रै सारू राज रा नियम वौ'त कठोर है।

क्रि०प्र०—करणी, राखणी, होणी।

४ शासन, दबाव।

५ सुचारु रूप से किसी बात को करते रहने की प्रतिज्ञा, व्रत, संकल्प।

६ वह रोक जो निश्चय या विधि के अनुसार लगाई गई हो, प्रतिबन्ध, पाबंदी, नियन्त्रण, परिमिति।

ज्यूं—छोरां ! थे थांरी पढाई यूं रमता-रमता ईज कीकर करो हो, थांनै नियम सूं करणी चाहिजै।

क्रि०प्र०—करणी, बांधणी।

७ शिव, महादेव. ८ विष्णु।

रू०भे०—नीम, नेम, नेमा।

नियमबद्ध—वि० [सं०] कायदे का पाबन्द, नियमों के अनुकूल, नियमों से बंधा हुआ।

नियमी—वि० [सं०] जो नियम पालन करे, नियम पालन करने वाला।

नियय—१ देखो 'नियक' (रू.भे.)

उ०—तं जि वयणु राइं मांनीजइ, जम्हराय वेटी परिणीजइ, पंरिणी पहुतउ नियय घरे।—पं.पं.च.

२ देखो 'नियत' (रू.भे.) (जैन)

नियरी—देखो 'नगर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—नियरि पुरि हुइ वधांमणा ए, वर नितु नितु अवइ भेटणा ए। आछण पांणी छांडती ए, दवदंती मंदिर प्रापती ए।

—नळ-दवदंती रास

नियरू—देखो 'निकर' (रू.भे.)

उ०—अज्जवि जसु जस पसरु महि छहखंड वरत्तिहि। अज्जवि जसु गुण नियरु धुणहि पंडिय बहु भत्तिहि।—ऐ.जै.का.सं.

नियांण, नियांणु, नियाणु—सं०पु० [सं० निदान] अपने सब सद्कर्मों या तपस्या के प्रतिफल स्वरूप भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए की जाने वाली याचना। उ०—१ पांच भरतारी नारी द्रूपदी रे, तउ पणि सतीय कहाय रे। नारी नियांणुं कीधुं भोगवइ रे, करम-तणी गति काइ रे।—स.कु.

उ०—२ राय युधिष्ठिर मनि लाजीजइ, तिणि खणि चारणि मुनि बोलीजइ। निसुणउ लाडीम तपह प्रमांणुं, पूरविलइ भवि कियउं नियांणु। भवि पहिलेरइ बंभणि हूंती, कडुउ तुंबु मुणिवर दिंती। नरग सहि वलि साहुणि हुई, पांचह पुरिस नियाणु धरेई।

—पं.पं.च.

नियाई—देखो 'न्यायी' (रू.भे.)

उ०—घणा अमीरां धारका तीरथ करवाई। सूरां आगळ सांम रै झूंझार हुवाई। नंद 'गुमांन' 'विजेस' के कुंवरेस कहाई। घण दातार 'गुमांन' घर नृप 'मांन' नियाई।—मोडजी आसियो

नियाग—सं०पु० [सं०] मोक्ष (जैन)

नियागट्ठी—वि० [सं० नियागार्थी] मोक्ष को चाहने वाला, मोक्षार्थी।

रू०भे०—नियाग।

नियाज—सं०स्त्री० [फा० नियाज़] १ प्रेम प्रदर्शन।

२ आजीजी, दीनता।

३ बड़ों का प्रसाद।

४ इच्छा, कामना।

५ मृतक के उद्देश्य से गरीबों को भोजन आदि देने की क्रिया, दुरूद, फातिहा।

६ बड़ों से होने वाला परिचय।

मुहा०—नियाज हासिल करणी, किसी बड़े की सेवा करना।

७ उपहार, भेंट।

नियात—देखो 'न्याति' (रू.भे.)

नियाब—सं०पु० [अ० नियाबत] प्रतिनिधित्व।

उ०—अला बुध अवतार तूं बाप बाबा, निमो धरम ना कीध निरबळ नियाबा।—पी.ग्रं.

नियामकगण—सं०पु० [सं०] औषधियों का वह समूह जो रसायन में पारे को मारता है।

नियामत—सं०स्त्री० [अ० नेअमत] १ उत्तम भोजन, स्वादिष्ट व्यञ्जन।

उ०—१ ऐ दिन दोजैं, ऐ खाणा नियामतां थाळ खलक रै जीमण नूं तयार रहै छै।—नी.प्र.

नियायो—देखो १ 'न्यायो' (रू.भे.)

२ धन-दौलत।

३ दुर्लभ वस्तु, अलभ्य पदार्थ।

रू०भे०—निआमत।

नियार—सं०पु० [राज० न्यारो] सोनारों की दुकान तथा आभूषण बनाने की भट्टी की राख व कूड़ा-करकट।

नियारिया—सं०स्त्री० [रा०] सोनारों की दुकान की राख व कूड़ा-करकट छानने का कार्य करने वाली एक जाति विशेष।

नियारियो—सं०पु० (स्त्री० नियारी) १ 'नियारिया' जाति का व्यक्ति।

२ मिली हुई वस्तुओं को अलग करने वाला।

३ सोनारों और जौहरियों की राख व कूड़ा-करकट आदि में से माल निकालने वाला।

वि०—चतुर, चालाक।

नियारो—देखो 'न्यारो' (रू.भे.)

उ०—वदै तव नांम लखम्मण वीर, नरां त्यां घात लगै नह नीर। द्रढै तव नांम सूं अक्खर दोय, नेड़ो रह प्रांण नियारो न होय।

—ह.र.

नियाव—१ देखो 'न्याय' (रू.भे.)

२ देखो 'न्याव' (रू.भे.)

नियुंजणो, नियुंजबो—क्रि०स० [सं० नियुनक्ति] प्रबन्ध करना, नियोजन करना।

उ०—गोत्रदी सिहिरि सस्त्र नियुंज्या। देवरूप बलि मंत्र प्रयुंज्या।

—विराटपर्व

नियुंजणहार, हारी (हारी), नियुंजणियौ—वि०।

नियुंजियोड़ी, नियुंजियोड़ी, नियुंज्योड़ी—भू०का०कृ०।

नियुंजनी, नियुंजवौ—कर्म वा०।

नियुंजियोड़ी-भू०का०कृ०—प्रबन्ध किया हुआ, नियोजन किया हुआ। (स्त्री० नियुंजियोड़ी)

नियुत, नियुक्त-वि० [सं० नियुक्त] १ ठहराया हुआ, स्थिर किया हुआ।

२ लगाया हुआ, नियोजित।

३ (किसी काम में) जोता हुआ, लगाया हुआ, तैनात।

४ प्रेरित किया हुआ, तत्पर।

रू०भे०—निकत।

नियोग-सं०पु० [सं०] १ अपने पति से सन्तान न होने पर किसी अन्य गोत्रज व्यक्ति से सन्तान उत्पन्न करा लेने की शास्त्रानुसार एक प्रथा (प्राचीन)।

२ किसी काम में लगाने की क्रिया, नियोजित करने का काम, तैनाती।

उ०—फळसांत प्रासाद, नरकांत राज्य, गोरसांत भोजन, वंधनांत नियोग, विपदांत लछमंत्री, गजांत लक्ष्मी, नायकांत समर, हट्टांत व्यवहार, कसवटांत सुवरण, राजसभांत वाद, प्रवासांत स्नेह, नामांत जोस, हारांत स्रंगार, वच्चांत गणित।—व.स.

३ प्रेरणा। उ०—करी बुरी सु पायली, अबै बुरी करूं नहीं। क्रपाळ की क्रपाळता, काळ ते डरूं नहीं। दयाळ दीनबंधु, दांन में निदांन दीजिये। प्रयोग हूं कुयोग में, यथा नियोग कीजिये।

— ऊ.का.

४ आज्ञा, हुक्म।

५ निश्चय।

६ अवधारणा।

नियोड़ी-सं०स्त्री० [देशज] १ नाई का नाक के अन्दर के बाल उखाड़ने का उपकरण।

निरंकार—देखो 'निराकार' (रू.भे.)

निरंकारी-सं०पु०—नानक (सिख) मत की एक शाखा।

निरंकुस-वि० [सं० निरंकुश] १ जिसके लिए कोई बन्धन या रोक न हो, जिस पर कोई दबाव न हो, स्वेच्छाचारी (डिं.को.)।

२ निर्भय, निडर। उ०—अर जिण रा आतंक करि दूर दूर रै मारग भी सौदागर न हालै अर केही देस निरंकुस वसण न पावै।

—वं.भा.

निरंग-वि० [सं० नि+रंग] १ बदरंग, बेरंग।

ज्यूं०—औ रंगरेज कांम ठीक नी करै, म्हारी साफौ कड़प दिरावण सारूं दियौ जु निरंग कर दियौ।

२ बेरौनक, फीका।

३ जिसे राग-रंग पसंद न हो, विरक्त, उदासीन।

४ जिसमें कुछ न हो, केवल, खाली।

ज्यूं—आ कांई भैंस री छाछ है, औ तौ निरंग पांणी है।

५ अंग-रहित।

सं०पु०—रूपक अलंकार का एक भेद।

रू०भे०—नीरंग, नीरंगु।

निरंजण—देखो 'निरंजन' (रू.भे.) (ह.नां., नां.मा.)

उ०—१ इळ रचण उभै किय सिव सगत, अलख निरंजण आप हुव। नर-नाग-असुर-सुर नीमवण, अलख पुरुस आदेस तुव।

—ह.र.

उ०—२ अरज कीधी जु राजांन राजेसर री तपतेज परमेसर परब्रह्म, अजनम, निरंजण, निराकार, संसार-सिरोमणि, संसार-साधार, ईस्वर-अवतार।—रा.सा.सं.

निरंजणा-सं०स्त्री० [सं० निरंजना] १ दुर्गा का एक नाम।

२ पूर्णिमा।

निरंजणी—देखो 'निरंजनी' (रू.भे.)

निरंजन-वि० [सं०] १ दुनिया से अलग, माया से निर्लिप्त (ईश्वर का एक विशेषण)

उ०—१ नमो सच्चिदानंद भक्तवत्सळ भयहरता, सास्वत असरण-सरण करणकारण जगकरता। निराकार निरलेप निगम निरदोस निरंजन, दीरघ दीनदयाळु देव दुख-दाळद भंजन।—ऊ.का.

उ०—२ परमारथ को राखियै, कीजै पर-उपकार। दादू सेवक सो भला, निरंजन निराकार।—दादूवांणी

२ दोष-रहित, निष्कलंक, पवित्र। उ०—सेवै तुझ पांव सदा मद सक्ख, इळा पग छांह मयंक अरक्क। सेवै तो पांव समुंदर सात, निरंजन पांव नमो निरगात।—ह.र.

सं०पु०—१ ईश्वर, परमात्मा। उ०—१ खूबी रही न काय, खतंगां खंजनां। नेही व्है मुनिराज, विसारि निरंजनां।—बां.दा.

उ०—२ दादू पखापखी संसार सब, निरपख विरला कोय। सोई निरपख होइगा, जाकै नांम निरंजन होय।—दादूवांणी

उ०—३ प्रथम जळजळाकार हुतौ। तिहां निरंजन निराकार वडपात मांहि पोढ़िया हुता।—द.वि.

२ शिव, महादेव, शंकर। उ०—जोग नींद वस भये निरंजन। गज्जे असुर पितामह गंजन।—मे.म.

३ विष्णु (डिं.को.)

रू०भे०—नरंजण, निरंजण।

निरंजनी-सं०पु० [सं० निरंजन+रा०प्र० ई] १ साधुओं का एक सम्प्रदाय। उ०—मांहे जोगेसर पवन रा साझणहार, त्रिकुटी रा चढावणहार, धूम्रपांन रा करणहार, उरधबाहू, ठाढ़ेसरी, दिगंबर, सेतंबर, निरंजनी, आकास-मुनी।—रा.सा.स.

२ वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद ।

रू०भे०—नरंजणी, निरंजणी ।

निरंजनराय-सं०पु०[सं० निरंजन+राज] परब्रह्म, ईश्वर । उ०—रमता राम निरंजनराय अब तो मन तहां रह्या समाय ।—ह.पु.वा.

निरंत, निरंतर, निरंतरि, निरंत्र-क्रि०वि० [सं० निरंतर] लगातार, बराबर, हमेशा, सदा । उ०—१ अगनिहोत्र दिढ वरस इकीसां । रहै निरंत तिण ग्रेह रिखीसां ।—सू.प्र.

उ०—२ मारग वाग तणी मति मेर्ट, भगत निरंतर उर धर भाव । तूठै सुतन 'महेस' तूठिया, सिख मयनक 'गुमनेस' सुजाव ।

—बां.दा.

उ०—३ जग संतोस तुखार नर, वसै निरंतर 'बंक' । तियां लोभ ग्रीखम तणी, सुपनै ही नंह संक ।—बां.दा.

उ०—४ जमीया जोगी जोग कमावै, लगी निरंतर डोरी । हिंदू मुसलमांन सूं न्यारा, ऐसी उलटी फोरी ।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—५ प्रगटि ऊंच-ग्रह पंच, राग उच्छाह निरंत्रा । जनमे भरथ केकई, सत्रघण लखण सुमित्रा ।—सू.प्र.

वि०—१ लगातार बने रहने वाला, सदा रहने वाला, हमेशा बना रहने वाला, स्थायी, अविचल । उ०—१ मुदै एह खट महल सहल ग्रत गिणै सुपावन, पड़दायत हित प्रिया अघट सति मिळी अठावन । तिण समयै तिण वेर उभै नाजर व्रत आदर, पावक करण प्रवेस तरण-पति धरण निरंतर ।—रा.रू.

उ०—२ आंण अनेरा रायनी, तिहां रहिवुं तइं देव । मनि सिधि माहरी मानजै, सदा निरतर सेव ।—मा.कां.प्र.

२ (कल के सम्बन्ध में) बराबर होने वाला, अखण्डित परम्परा वाला, अविच्छिन्न ।

३ (देश के सम्बन्ध में) जिसके बीच या जिसमें फासला या अन्तर न हो, जो बराबर चला गया हो, अंतररहित ।

४ जो एक या समान ही हो, जिसमें अंतर या भेद न हो ।

उ०—नवा नवा पंथ चल्या इस जग में, आप आपरी गाया । जोवै नूर निरंतर देख्या, कटो वडी क्यूं भाया ।

स्री हरिरांमजी महाराज

५ जिसके बीच में अन्तर या फासला कम हो, निविड, घना (डि.को.)

निरंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) (ह.नां.)

निर-अव्य० [सं० निर्] संस्कृत के निस का पर्यायवाची जिसका अर्थ है बाहिर, दूर, बिना, रहित । उ०—इक राह चाह लागो असुर, निर सहाय प्राकार नव । 'अवरंग' प्रथी पर उलटियो, दंग प्रगटियो जांण दव ।—रा.रू.

निरइयार—देखो 'निरतिचार' (रू.भे.) (जैन)

निरकांम—देखो 'निकांम' (रू.भे.)

उ०—नमो निरकत्य नमो निरकांम, नमो निरजीत नमो निरयांम । नमो निरभूप नमो निरभेख, नमो निर-रूप नमो निररेख ।

—ह.र.

निरकांमी—देखो 'निकांमी' (रू.भे.)

निरकार, निरकारि—देखो 'निराकार' (रू.भे.)

उ०—वैकुंठ विलासि अपुन्न प्रकासि, अपार अपार अप्रंमपरं । निरकारि नरं मनु-कंटक मारण, बिघन विडारण केवळ रूप वराह करं ।—पि.प्र.

उ०—१ केम हुवो ? ईसर कहै, कै जायो करतार । ब्रह्मा रुद्र विचार भ्रम, नहं जांणै निरकार ।—ह.र.

उ०—२ करतारलछिमतार कांन्हउ केसवं । जगदीस जैत जुरार ओपम जादवं । महरांण बांधण रांण मारण रांमणं । निरकारि कारि ध्याइ अनाथ नाथ निरंजणं ।—पि.प्र.

निरकार-रूपी-सं०पु० [सं० निरन्तर प्रशस्त=लगातार अच्छे काम करने वाला] अर्जुन (ह.नां.)

निरकुरणो, निरकुरबो-क्रि०अ० [देशज] खिन्न होना, उदासीन होना ।

उ०—सो ओ तो सदाई रोवातो नै निरकुरतो दीठो ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

निरकुरो-वि० [देशज] उदासीन, खिन्न । उ०—केई केईक सासभोक विधांन अपसांण समैया रै ऊपरै निरकुरा हुवा थका बिह्य सिव इस्ट अरचा करै छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

निरक्कणो, निरक्कबो-क्रि०स० [सं० निराकृतस्] पराजित करना, जीतना (जैन)

निरक्कणहार, हारो (हारी), निरक्कणियो—वि० ।

निरक्किओड़ो, निरक्कियोड़ो, निरक्कयोड़ो—भू०का०कृ० ।

निरक्कीजणो, निरक्कीजबो—कर्म वा० ।

निरक्कियोड़ो-भू०का०कृ०—पराजित किया हुआ, जीता हुआ ।

(स्त्री० निरक्कियोड़ी)

निरक्खणो, निरक्खबो—देखो 'निरखणो, निरखबो' (रू.भे.)

उ०—वंकां गिरां वधाय क थागै थाहरां । विलद मचांणां वैठि निरक्खै नाहरां ।—सिवबक्स पाल्हावत

निरक्खणहार, हारो (हारी), निरक्खणियो—वि० ।

निरक्खिओड़ो, निरक्खियोड़ो, निरक्खयोड़ो, निरख्योड़ो

—भू०का०कृ० ।

निरक्खीजणो, निरक्खीजबो—कर्म वा० ।

निरक्खियोड़ो—देखो 'निरखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निरक्खियोड़ी)

निरक्षणो, निरक्षबो—देखो 'निरखणो, निरखबो' (रू.भे.)

उ०—नीरि निरक्षिय नीरज नीरज हाववं केमु । टाळइं ए केळीहर दीहर खळ जिम खेपु ।—नेमिनाथ फागु

निरक्षियोड़ो—देखो 'निरखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निरक्षियोड़ी)

निरख-संस्त्री० [सं० निर+ईक्ष्, फा० निर्ख़] १ देखना क्रिया का भाव।

२ नेत्र, नयन (ध.मा.)

३ राज्य द्वारा वस्तु का तय किया गया भाव। उ०—गांव रै काज शीवांण रासो गुमट, लगोबग भाव निज कांन लागा। चाटगा हजारां मान पौंतीस री, निरख ले धांन री वळै नागा।
—ऊमरदांन लाळस

क्रि०प्र०—बांधणी।

रू०भे०—नरख।

निरखणो, निरखबो-क्रि०स० [सं० निर+ईक्षणम्] १ अवलोकन करना, ताकना, देखना। उ०—१ फिर फिर निरख्यो है बाग सैंया म्हारी ए। कोई दांतण तौ तोड्यो है काची केळ रो जी राज।
—लो.गी.

उ०—२ नाळी ताई नाम निरखंतां, घणूं स ऊजळ ऊपर घणउ। चकया रइ बचइ ज्यूं चुगती, तंत छाडियउ कुमोद तणउ।
—महादेव पारवती री वेलि

२ परीक्षा करना, जांच करना, देखना। उ०—दादू निरखि-निरखि निज नांम लै, निरखि निरखि रस पीव। निरखि निरखि पिव को मिळै, निरखि निरखि सुख जीव।—दादू वांणी

निरखणहार, हारो (हारी), निरखणियो—वि०।

निरखवाड़णो, निरखवाड़बो, निरखवाणो, निरखवाबो, निरखवावणो, निरखवावबो, निरखाड़णो, निरखाड़बो, निरखाणो, निरखाबो, निरखावणो, निरखावबो—प्रे०रू०।

निरखिग्रोड़ो, निरखियोड़ो, निरख्योड़ो—भू०का०कृ०।

निरखीजणो, निरखीजबो—कर्म वा०।

नरखणो, नरखबो, निखणो, निखबो, निरखखणो, निरखखबो, नीरखणो, नीरखबो—रू०भे०।

निरखदरोगो-स०पु०यौ० [फा० निर्ख़+दारोग:] मुसलमानों के राजत्वकाल में बाजार का वह दारोगा जो चीजों के भाव या किस्म आदि की निगरानी करता था।

निरखनांमो-सं०पु०यौ० [फा० निर्ख़+नाम+रा.प्र.ओ] मुसलमानों के राजत्वकाल की वह सूची जिसमें बाजार की प्रत्येक वस्तु का भाव लिखा रहता था।

निरखबंद, निरखबंदी-सं०स्त्री० [फा०निर्ख़-बंदी] किसी चीज का भाव या दर निश्चित करने की क्रिया।

निरखर-वि० [सं० निरक्षर] निरक्षर।

सं०पु०—ब्रह्मा।

उ०—अवधू मन कुं पकड़िवा, सेस कूं चूरिवा, मोह का मेटिवा पसारा, निरखर सबद ले निरभै खेलिवा, मन पवना गहि बांधिया पारा।—ह पु वा.

निरखियोड़ो-भू०का०कृ०—१ अवलोकन किया हुआ, ताका हुआ, देखा हुआ।

२ परीक्षा किया हुआ, जांच किया हुआ।

(स्त्री० निरखियोड़ी)

निरगंध-वि० [सं० निर्गंध] जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो, गंधहीन।

निरगंधता-सं०स्त्री० [सं० निर्गंधता] गंधहीन होने का भाव, गंधहीनता।

निरगम-सं०पु० [सं० निर्गम] निकास।

निरगमण-सं०पु० [सं० निर्गमन्] १ वह द्वार जिसमें से होकर निकलते हैं. २ निकलने की क्रिया या भाव।

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

निरगात-वि० [सं० निर्गात] निराकार। उ०—सेवै तुझ पांव सदा मदसवल(?), इळा पग छांह मयक अरक्क। सेवै तो पांव समुंदर सात, निरजन पाव नमो निरगात।—ह.र.

सं०पु०—विष्णु।

निरगुंडी-सं०स्त्री० [सं० निर्गुंडी] एक प्रकार का क्षुप जिसकी जड़ ओषधियों में व्यवहृत होती है।

निरगुंडीकल्प-सं०पु०यौ० [सं० निर्गुंडीकल्प] वैद्यक के अनुसार विशेष ढग से निर्गुंडी और शहद को मिला कर तैयार की हुई एक औषध।

निरगुंडीतेल, निरगुंडीतैल-सं०पु० [सं० निर्गुंडीतैल] वैद्यक में एक विशप ढग से तैयार किया हुआ निर्गुंडी का तेल।

निरगुण-वि० [सं० निर्गुण] १ जो सत्व, रज और तम इन तीन गुणों से परे हो। उ—१ कि कहिसु तासु जसु अहि थाको कहि, नारायण निरगुण निरलेप। कहि रुखमिणि प्रदुमन अनिरुध का, सह सहचरिए नांम सखेप।—वेलि.

उ०—२ उंकार अरूप रूप निरगुण निरवांण।—केसोदास गाडण

२ स्वरूपरहित।

३ जिसमें कोई अच्छा गुण न हो, गुणरहित, बुरा, खराब।

उ०—१ एता दीह न जांणिया रे, निरगुण जांणी कत। हिव खिण जातउ वरससउ रे, जाइ मुझ खिळवंत।—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ निरगुण अणविद्या छाई जग जिस्णू, विद्या वीसरिगी सदगुण बस विस्णू। हा हा जगदीस्वर कैड़ी पुळ हेरी, गाफल दुनियां पर अैड़ी पुळ गेरी।—ऊ.का.

उ०—३ अरुच अलंकृत अरथ सूं, निरगुण मन निरवाह। कुकवि ब्रह्मग्यांनी तणो, रात दिवस इकराह।—बां दा.

४ मूर्ख, नासमझ।

सं०पु०—१ सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों से परे, ईश्वर, परमेश्वर। उ०—१ परमारथ रै कारणै, प्रभु संत बणाया ए। निरगुण से सरगुण होय स्वांमी, धरो जन काया ए।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ किण री गुरुजी मैं तिलक बणाऊं, किणरी माळा फेरुं रे लोय। पंचमुदरा री चेला तिलक बणावो, निरगुण माळा फेर रे लोय।—स्री हरिरांमजी महाराज

२ विष्णु ।

रू०भे०—निगुण, निगुरो, निग्गुण, निरग्गुण, नुगुण ।

अल्पा०—निगुणो, निग्गुणो, निरगुणो ।

निरगुणगारु, निरगुणगारो—वि० [सं० निर्गुण+कारक] (स्त्री० निरगुणगारी) १ गुणों को निगुण करने वाला, गुणों को न मानने वाला, कृतघ्न ।

२ जो गुणों से रहित हो, नासमझ ।

उ०—ऐ ऐ ताहरा गुण किस्या ? निरगुणगारा कंत ! दाखवि रंग पतंग नुं, पछइ ऊतारिउ चित ।—नळ-दवदंती रास

निरगुणता—सं०स्त्री० [सं० निर्गुण+रा. ता] गुणरहित होने का भाव ।

निरगुणियौ—वि० [सं० निर्गुण+रा०प्र० इयो] जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करता हो ।

निरगुणी—वि० [सं० निर्गुण] १ गुणों से रहित, मूर्ख ।

२ अवगुणी ।

वि०स्त्री०—बिना गुणों वाली ।

रू०भे०—निगुणी ।

निरगुणौ—देखो 'निरगुण' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निरगुणी)

निरगेह—वि० [सं० निर्गृहिन्] १ सर्वत्र निवास करने वाला, ईश्वर ।

उ०—नमो निरध्रम्म नमो निराधार । नमो निरक्रम्म नमो निराकार । नमो निरनांम नमो निरनेह । नमो निरगांम नमो निरगेह ।
—ह.र.

२ जिसके घर न हो, बिना घर का, निवासस्थान रहित ।

निरग्गुण—देखो 'निरगुण' (रू.भे.)

उ०—निरग्गुण नाथ नमो जियनाथ, सबंगत देव नमो ससिमाथ ।

निरग्रंथ—वि० [सं० निर्ग्रंथ] १ जिसकी कोई मदद करने वाला न हो, निःसहाय ।

२ गरीब, निर्धन ।

३ नासमझ, बेवकूफ, मूर्ख ।

सं०पु०—१ एक प्राचीन मुनि का नाम ।

२ बौद्ध क्षपणक ।

३ दिगंबर ।

४ राग द्वेष अथवा परिग्रह रहित साधु, जो बाह्य एवं आभ्यान्तर ग्रंथि से मुक्त हो ऐसा साधु (जैन)

उ०—१ एहवो जांण निरग्रंथ गुरु धारियै । कुगुरु, कुदेव, कुधरम निवारियै ।—जयवांणी

उ०—२ अनै जो गुरु मिळै निरग्रंथ तो देव बतावै असल अरिहत ।
—भि.द्र.

रू०भे०—निग्रंथ ।

निरघात—सं०पु० [सं० निर्घात] १ वायु के तीव्र गति से चलने के कारण उत्पन्न शब्द जिस दिन के विभिन्न भागों में उत्पन्न होने के अनुसार फलित ज्योतिष द्वारा उसके आधार पर शुभ व अशुभ परिणाम निकाले जाते हैं । ऐसा शब्द होने के समय मंगल कार्य करना वर्जित है ।

२ एक प्रकार का अस्त्र जिसका प्रचलन प्राचीनकाल में था ।

निरघोख, निरघोस—सं०पु० [सं० निर्घोष] १ ध्वनि, शब्द, आवाज ।

उ०—१ तेणि कतनु जांणी मोख, नळ ना सरखु रथ-निरघोख ।
—नळाख्यांन

उ०—२ बजे निरघोस निसांण निहाव । गजे घर बोम सु मेघ हनाव ।—शि.सु.रू.

उ०—३ पंच सब्द सम सम सरइ, निज निरघोस निपात । हल्ल करीनइ हलमलिउं, वीरसेन विख्यात ।—मा.कां.प्र.

२ ध्वनिरहित, शब्दरहित ।

निरछेह—वि० [सं० निर्+रा. छेह] जिसका छेह या अन्त न हो ।

सं०पु०—ईश्वर ।

उ०—निरालंब निरलेप अचळ चरणां चित धारं । हरि निरगुण निरछेह, वार नहिं लाभै पारं ।—ह.पु.वा.

निरजणौ, निरजबौ—क्रि०स० [सं० निर+जयति] अजय पद प्राप्त करना, विजय करना, जीतना । उ०—रथगजास्ट सहस्र जउ निरजणइ, दस सहस्र महाभट जो हणइ । फुरसरांम महाहवि निरजणिउ, इसिउं भीस्म पितामह मइं थुणिउ ।—विराटपर्व

निरजणहार, हारौ (हारी), निरजणियौ—वि० ।

निरजणिओड़ौ, निरजणियोड़ौ, निरजण्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निरजणीजणौ, निरजणीजबौ—कर्म वा० ।

निरजणियोड़ौ—भू०का०कृ०—अजय पद प्राप्त किया हुआ । विजय किया हुआ, जीता हुआ ।

(स्त्री० निरजणियोड़ी)

निरजर—सं०पु० [सं० निर्जर] १ वह जो जरा से बचा हुआ हो, देवता, सुर (डि.को.)

उ०—१ अंबर अहनर अवर निरजर । वरण हर हर रखी तिण घर ।
—र.रू.

उ०—२ जहर घर सु नर निरजर नगर जोवतां, वहर तप हेक दिल गहर बीजो । वंवहर सूर गुर 'अमर' तण वेखतां तुलै नह बराबर भूप तीजो ।—कविराजा करणीदांन

२ अमृत, सुधा ।

३ देखो 'निरझर' (रू.भे.)

वि०—कभी बुड्ढा न होने वाला, जिसे कभी बुढ़ापा न आवे ।

रू०भे०—निज्जर, निरजुर ।

निरजरानायक—सं०पु० [सं० निर्जर+नायक] इन्द्र, देवराज (डि.को.)

निरजरा—सं०पु० (ब० व०) [सं० निर्झरा] १ देव, देवता ।

उ०—सरब सरब तू सांइआं, रांम किसन मां रांम । नाग नरां मां निरजरा, नांम मांहि न नांम ।—पी.ग्रं.

[सं० निर्जरा] २ तपस्या के द्वारा कर्म फल का विच्छेद होने की क्रिया (जिससे आत्मा उज्ज्वलता को प्राप्त करता है।)

निरजळ-सं०पु० [सं० निर्जल] वह स्थान जहां जल का अभाव हो या जल न हो (हि.को.)

वि०—१ जल के संसर्ग से रहित, बिना जल का।

उ०—१ रणधीर सुरधर राव, दइवंत-गति दरसाव। रिम काळ रूप नरेस, दळ प्रकळ निरजळ देस।—रा.रू.

उ०—२ बन मारूत बघवाव सूं, दुरद विसूके दांण। जेठ नुवां मृगेंद्र जिम, निरजळ देस निवांण।—बां.दा.

उ०—३ तप जिण गह्व निरजळ तप्या, बार बरस घुरि मुंन म्हारा लाल। तिण में पारण दिन तिके, ऊंठसै में इक ऊंन म्हारा लाल।
—ध.व.ग्रं.

२ जिसमें जल पीने का विधान न हो।

ज्यूं—निरजळ बरत।

रू०भे०—निरजळि।

अल्पा०—निरजळौ।

निरजळव्रत-सं०पु० [सं० निर्जलव्रत] १ वह उपवास या व्रत जिसमें जल पीने का विधान न हो।

२ वह व्रत या उपवास जिसमें उपवास या व्रत करने वाला जल भी न पिए।

निरजळा, निरजळा इग्यारस, निरजळा एकादसी-सं०स्त्री० [सं० निर्जला, निर्जला एकादशी] ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, इसका उपवास रखने वालों के लिए किसी भी प्रकार का आहार, पेय पदार्थ अथवा जल ग्रहण न करने का विधान।

उ०—जइ तुं पूछइ हो धरह नरेस! वनखंड रहती हरिणि कइ वेस। निरजळा करती एकादसी। एक अहेड़ी वनह मंझारी।
—बी.दे.

निरजळि—देखो 'निरजळ' (रू.भे.)

उ०—टळवळइ जिम निरजळि माछिळी। वळवळइ प्रति अंगि वळी वळी।—विराट पर्व

निरजळौ—१ देखो 'नजळौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निरजळ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निरजळी)

निरजित, निरजीत-वि० [सं० निर्जित] १ जो वश में कर लिया गया हो।

२ जिसे जीत लिया गया हो, जीता हुआ। ३ वह जो जीता न जा सके। उ०—नमो निरअत्य नमो निरकाम, नमो निरजीत नमो निरधाम। नमो निरभूप नमो निरभेस, नमो निर-रूप नमो निर-रेख।
—ह.र.

निरजीव-वि० [सं० निर्जीव] १ प्राणरहित, जीवहीन, बेजान।

२ मृतक।

३ अशक्त, कमजोर।

निरजीवण-वि०—१ साहसहीन, पुरुषार्थहीन।

२ नपुंसक।

३ निर्बल, कमजोर।

४ बेजान, जीवरहित।

५ मृतक।

निरजुकति, निरजुगति—देखो 'निरयुक्ति' (रू.भे.)

निरजुर—देखो 'निरजर' (रू.भे.)

उ०—महामत महण जसगाथ मुनि वालमिक, कोट सत चिरत रघुनाथ कीधौ। इधक अनुराग कर पुरत निरजुर अही, लोह त्रिय भाग कर बांट लीधौ।—र.रू.

निरजोर-वि० सं० तिर+फा. जोर] १ निर्बल, बलहीन।

उ०—जुलफकार खां मारियौ, मुगल थया निरजोर। माह महीनै जेठ ज्यौं, सैद वहै सिरजोर।—रा.रू.

२ दुर्बल।

निरज्जरा—देखो 'निरजरा' (रू.भे.)

निरझर, निरझरण-सं०पु० [सं० निर्झर, निर्झरण] १ बादल, घन
(अ.मा.)

२ झरना, चश्मा, स्रोत (डि.को.)

उ०—निरझरा निहार, अपुटी नितार। निरतेय नीर सुध कर सरीर।
—ऊ.का.

३ देखो 'निरजर' (रू.भे.)

वि०—श्वेत, सफेद* (डि.को.)

रू०भे०- नरझर, निझर, निझरण, नीझर, नीझरण।

अल्पा०—निझरणी, नीझरणी।

निरझरणी-सं०स्त्री० [सं० निर्झरिणी] सरिता, नदी (ह.नां., डि.को.)

रू०भे०—निझरणी, नीझरणी।

निरझरनदी-सं०स्त्री० [सं० निर्जरनदी] गंगा नदी। उ०—धोळी तो जळधार, नह न्हाया निरझरनदी। ग्या वै डूम गिवार, मांनव काळीधार मझ।—बां.दा.

निरडर—देखो 'निडर' (रू.भे.)

उ०—लाट सुरधरा जोधांण के वरस लग, सुदतपण प्रकट कर चीत सांमंद। पंच सत उदक दे कवां नृप बीकपुर, निरडर वाध नरे संघ नरायंद।—द.दा.

निरणय-सं०पु० [सं०] १ किसी विवाद को सुन कर सत्य और असत्य के सम्बन्ध में कोई विचार स्थिर करने की क्रिया, निबटारा, फैसला।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।

२ किसी विषय के दो पक्षों पर औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके किसी एक पक्ष को ठीक ठहराना, किसी विषय में कोई सिद्धान्त स्थिर करना।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी।

३ किसी स्थिर सिद्धान्त के द्वारा किसी विषय की मीमांसा करते समय कोई परिणाम निकालना।

क्रि०प्र०—निकाळणी।

रू०भे०—निरणे, निरणी, निरनउ।

निरणयोपमा-सं०पु० [सं० निर्णयोपमा] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है।

निरणीत-वि० [सं० निर्णीत] जिसका फैसला हो चुका हो, निर्णय किया हुआ।

निरणेजक—देखो 'नरणेजक' (रू.भे.)

निरणे—देखो 'निरणय' (रू.भे.)

उ०—१ रे नीसांणी छंद रा, पढिया च्यार प्रकार। तिण लछण निरणे तिको, वरणे सुकवि विचार।—र.ज.प्र.

उ०—२ दाखे सो दस दोस री, निरणे निपट अनूप। वयण सगाई वरणवूं, रीति किती कविरूप।—र.रू.

उ०—३ निरखे ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणे लागा कहण। सगळे दोख विवरजित साहो, हूं तो जई हुओ हरण।

—वेलि.

उ०—४ चंचळ चपळा सी चितवन चिरताळी। निरणे निगमागम नागम निरताळी। मादा मरजादा जादा मदमस्ती। वेली अलवेली छैली छदमस्ती।—ऊ.का.

निरणी-वि० [सं० निरन्न] (स्त्री० निरणी) १ बुभुक्षित, भूखा।

उ०—१ बाबर बीखरिया ओढणियें आडें। डाबर नयणां री टाबर वय डाडें। नवला नंगाती संगाती सणी। निरणी नव अंगा गंगा-जळ नैणी।—ऊ.का.

उ०—२ मरज्यो मरज्यो ए मिनड़ी थारोड़ो पूत, म्हारोड़ो बाटचो तूं ले गयी। रातां री निरणी वीरां री बहनड़ी।—लो.गी.

उ०—३ च्यार महीना धूजी पांन-फूल खइया। च्यार महीना धूजी पवन ज भखिया। च्यार महीना धूजी निरणा रह्या। च्यार महीना धूजी जळ में रह्या।—लो.गी.

उ०—४ नारायण रो नांम ज्यां, नह लीधो निरणांह। वां जमवारो वोळियो, ज्यूं जंगळ हिरणांह।—ह.र.

रू०भे०—नरणो।

२ देखो 'निरणय' (रू.भे.)

उ०—१ साधो भाई यो निरणा सब पारा, माया उदै अस्त ही माया, चेतन रह एक सारा।—स्रो सुखरांमजी महाराज

उ०—२ स्वामीजी सूं चरचा करतां न्याय निरणो बतायां पिण मांने नहीं।—भि.द्र.

निरतंत-सं०स्त्री० [सं० नृतकी] १ अप्सरा (अ.मा.)

२ वेश्या।

३ देखो 'निरत' (रू.भे.)

उ०—थळ भांति गात निरतंत थाळि, भ्रम जात अतन तन रूप भाळि। जिण सक्ति परखि लजि तड़िति जात, व्रत गवन पवन मत ज्यों विख्यात।—रा.रू.

रू०भे०—निरतत, निरतति, नृतंत।

निरत-सं०पु० [सं० नृत्य] उछलने कूदने, हाथ पांव हिलाने आदि का व्यापार जो संगीत के ताल और गति के अनुसार होता है।

उ०—१ गणगोर नै सिणगार करावै छै। काजळ टीकी वा महंदी लगावै छै। सहेल्यां का झूल में अहली-महली फिरै छै। हर गणगोर आगैं निरत करै छै।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ मधु आसोज मास रै मांही, निरत करत नवरत्ती। रास विलास पधारत रमबा, जगदंबा जगजत्ती।—मे.म.

२ ६४ कलाओं में से एक।

३ ७२ कलाओं में से एक।

४ दृष्टि, निगाह। उ०—१ किण नै गुरुजी मैं पंथ चलाऊं, किण नै जोवण मेलूं रे लोय। सुरत नै चेला पंथ चलावो, निरत नै जोवण मेलो रे लोय।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ कंचन एक कांच में देख्या, है दीपक देह मांई। सुरत निरत की चढ़या पावड़ी, सतगुरु सैन बताई।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ चित चेतन का किया चाबका, लिवरी लगांम लगांणा। मन पवन का घोड़ा कीजै, सुरत निरत चढ़ जाणा।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—४ नाभी निरत लगाय, सुखमण जोइयें। पांचूं उलट समाय, लें हर जम खोइयें।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—५ रच्या रंग भांत भांत बहुता, खेल सब चेतन ते होता। निरत घर निगे करै थाता, सबी रंग देख्या फेर जाता।

—स्री सुखरांमजी महाराज

वि० [सं० निरत] १ किसी कार्य में अनुरक्त, लगा हुआ, व्यस्त, मशगूल, लीन, तत्पर। उ०— रंभा जिम रूप संपन्न, पारबती जिम नि:सीम सोभाग्य लावण्य। अरुंधती जिम निजपति, पद चरण निरत।—सभा.

२ आसक्त, अनुरक्त। उ०—साथ करै सिवदत्त रो, धन चंद्रा सुरधांम। गुण सीता सत्वर गई, लै गळबांह ललांम। वंधुगढ़ जदुबंस फबै, हर राज बिनाफर। जमना तनया जास, सदन आंणी वरि संभर। रुद्रदत्त जिण निरत, पुत्र जणिया कुळ दीपक। सात जिकै रणसूर, प्रथम ईस्वर अवनीपक। भैरव तदग्ग खयरब अभय, अभ्रवाज तिम बघउर। बळि ब्रह्मदेव सरखेल बुध, धारण सब कुळ धरमधर।—वं.भा.

देखो 'निरति' (रू.भे.)

देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)

रू०भे०—नरत, निरतो, निरतु, निरत्त, नृत्त, नृत, नृत्य, नित, निरत ।
मुहा०—नृत्तारू ।
निरतक—देखो 'नरतक' (रू.भे.)
ज्यूं—भगवान भूतनाथ निरतक रो निरत देख राजी व्हे गया ।
निरतकर, निरतकार-वि० [सं० नृत्यकार] (स्त्री० निरतकारण, निरतकारणी) नृत्य करने वाला, नाचने वाला, नट ।
उ०—१ कलहंस जोगागर मोर निरतकर, पवन ताळधर ताळपत्र । आरि तंतिसर भमर उपंगी, तीवट उघट चकोर तत्र ।—वेलि.
उ०—२ मूं मोर ज्यूं तंडव करै छै, निकुळी ज्यूं भंग भांजै छै, भ्रग ज्यूं उलहूतै छै । नागा काळा मांकड़ा ज्यूं झांफां भरै छै । निरतकारण ज्यूं नाचै छै, नट ज्यूं उळटा खावै छै ।—रा.सा.सं.
उ०—३ इण भांति री भालाड़ै रंभा पात्र निरतकारणी ।
—रा.सा.सं.
रू०भे०—नृतकार, नृताकार, नृत्यकारी, नितकार ।
निरतकी—देखो 'नरतकी' (रू.भे.)
निरतणो, निरतबो-क्रि०अ० [सं० नृती] नृत्य करना, नाचना ।
उ०—चेत चेतन में चेतै सोई, नांम रूप मन सहित जो कोई । जैसे चुंबक लोह निरतावै, निरतै लोह चुंबक निरदावै ।
—स्री सुखरांमजी महाराज
निरतणहार, हारो (हारी), निरतणियो—वि० ।
निरतवाड़णो, निरतवाड़बो, निरतवाणो, निरतवाबो, निरतवावणो, निरतवावबो, निरताड़णो, निरताड़बो, निरताणो, निरताबो, निरतावणो, निरतावबो—प्रे०रू० ।
निरतिप्रोड़ो, निरतियोड़ो, निरत्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निरतीजणो, निरतीजबो—भाव वा० ।
नृत्तणो, नृतबो—रू०भे० ।
निरतत, निरतनि—देखो 'निरतंत' (रू.भे.)
उ०—कुसमाकर आयो नवप्रिय मिळ मिळ । निरतत बाजै रतन रचै नूंपर झंझत ।—रसीलैराज
निरतन—देखो 'नरतन' (रू.भे.)
उ०—मेड़त्यां कुळ मुरधरा भक्त, अग्रपत्यां आयार । मगन सूरत मांहि निरतन, लई मीरां सार ।—भगतमाळ
निरतनसाळ, निरतनसाळा—देखो 'नरतनसाळ, नरतनसाळा' (रू.भे.)
निरतप्रिय-स०पु० [सं० नृत्यप्रिय] १ शिव, महादेव ।
२ स्वामी कार्तिकेय का एक अनुचर ।
रू०भे०—नृत्यप्रिय ।
निरतसाळ, निरतसाळा-सं०स्त्री० [सं० नृत्यशाला] नृत्य करने का स्थान, नाचघर ।
रू०भे०—नृत्यसाळ, नृत्यसाळा, नित्यसाळ, नित्यसाळा ।
निरताई-सं०स्त्री० [देसज] १ कायरता, नीचता, क्षुद्रता ।
उ०—जिण कुळ रो खोटो दिन व्है जद, निप जनमै निरताई नै । बाळापणो जवांनी बोई, बोवण चहत बुढ़ाई नै ।—ऊ.का.
२ दरिद्रता, दारिद्रय ।
३ अनुरक्तता, लीन होने का भाव ।
निरताड़णो, निरताड़बो—देखो 'निरताणो, निरताबो' (रू.भे.)
निरताड़णहार, हारो (हारी), निरताड़णियो—वि० ।
निरताड़िप्रोड़ो, निरताड़ियोड़ो, निरताड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निरताड़ीजणो, निरताड़ीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।
निरतणो निरतबो—अक० रू० ।
निरताड़ियोड़ो—देखो 'निरतायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निरताड़ियोड़ी)
निरताणो, निरताबो-क्रि०अ०—१ लीन होना । उ०—कहै दास सगरांम साच सांई नै भावै । देखो दिल निरताय जाट तेजा नै गावै ।
—सगरांम
२ द्रव पदार्थ का बहना ।
क्रि०स० ('निरतणो', क्रिया का प्रे०रू०) नृत्य कराना, नाच कराना ।
निरताणहार, हारो (हारी), निरताणियो—वि० ।
निरतवाड़णो, निरतवाड़बो, निरतवाणो, निरतवाबो निरतवावणो, निरतवावबो—प्रे०रू० ।
निरतायोड़ो—भू०का०कृ० ।
निरताईजणो, निरताईजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।
निरतणो, निरतबो—अक०रू० ।
निरताड़णो, निरताड़बो, निरतावणो, निरतावबो—रू०भे० ।
निरतायोड़ो-भू०का०कृ०—१ लीन हुवा हुआ ।
२ (द्रव पदार्थ का) बहा हुआ ।
३ नृत्य कराया हुआ, नचाया हुआ ।
(स्त्री० निरतायोड़ी)
निरताळ—देखो 'निराताळ' (रू.भे.)
निरताळी-वि०स्त्री० [सं० नृत्य+आलुच्] नृत्य करने वाली, नाच करने वाली ।
निरताळो-वि०पु० [सं० नृत्य+आलुच्] (स्त्री० निरताळी) नृत्य करने वाला, नाचने वाला, नर्तक ।
निरतावणो, निरतावबो- क्रि०अ० [देसज] नाक बहना ?
उ०—सासा सणकावै नासा निरतावै । जीता मरिया जुग भिभरो भररावै । पल पल पलकां सूं पड़ता परनाळा । मोटा मूंगां री होठां में माळा ।—ऊ.का.
२ देखो 'निरताणो, निरताबो' (रू.भे.)
उ०—चेत चेतन में चेतै सोई, नांम रूप मन सहित जो कोई । जैसे चुंबक लोह निरतावै, निरतै लोह चुंबक निरदावै ।
—स्री सुखरांमजी महाराज
निरतावणहार, हारो (हारी), निरतावणियो—वि० ।

निरताविग्रोड़ो, निरतावियोड़ो, निरताव्योड़ो—भू०का०कृ०।
निरतावीजणो, निरतावीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।
निरतणो, निरतबो—अक० रू०।

निरताधियोड़ो-भू०का०कृ०—१
२ देखो 'निरतायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निरतावियोड़ी)

निरति-सं०स्त्री०—समाचार, खबर, सुध।
उ०—राजा कउ जन पाटवइ, ढोलइ निरति न होइ। मालवणी मारइ तियउ, पुंगळ पंथ जिकोइ।—ढो.मा.
२ धैर्य, सान्त्वना।
३ खाली, रिक्त ?
उ०—नितु नितु जोसी पूछीइ, नितु नितु सुकन सुभाव। नित नित निरति-विहूणडां आविइ वली वधाव।—मा.कां.प्र.
४ देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—ग्रम मूरति व्रजराज निरति खेलियौ निरंतर।—पी.ग्रं.
५ देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)
उ०—निरति कुण की वाउ वाजै छै।—वेलि. टी.
रू०भे०—नृति।

निरतिकुण-देखो 'नैरित्यकोण' (रू.भे.)

निरतिचार-वि० [सं०] बिना अतिचार के, विशुद्ध। उ०—गुण सराइस दीपता जी, पाळै है निरतिचार। भवि जीवां रा तारका जी, कर दियौ खेवौ पार।—जयवांणी
रू०भे०—निरइयार।

निरतियोड़ो-भू०का०कृ०—नृत्य किया हुआ, नाचा हुआ।
(स्त्री० निरतियोड़ी)

निरतौ निरतु-वि० [सं० निरुक्त] १ स्पष्ट, निश्चित।
उ०—१ अह निरतिय कज्जळरेह नयणि मुहकंमळि तंबोळो। नगोदर कंठलउ कंठि अनुहार विरोळो। मरगदजादर कंचुयउ फुडफुल्लहं-माळा, करि ककण मणि वलय चूड़ खळकावइ बाळा।
—प्राचीन फागु-संग्रह
उ०—२ स्री जिन सासनि गाइसिउं, लाभइ सुख अपार। अहे तप कूग्रो निरतु करै, दया वि दस्तूरह जांणि।
—प्राचीन फागु-संग्रह
२ देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—तुझ थी विस्वनइ घणु उपगार, तूं मोटउ गुण नु भंडार। भाग्य सोभाग्य करीनइ सार, तूं उत्तम निरतु सदाचार।
—नळ-दवदंती रास
रू०भे०—निरुतउ, निरुतउ, निरूतउ, निरूत्तउ, निरूतु।

निरतौ-वि०—१ कम, न्यून। उ०—लाभइ खारिक फोफळ द्राख, वळी नाळीयर लाभइ लाख। लाभइ सावू नइ कंटोळ, हाटि हाटि छइ निरतां तोल।—कां.प्र.
२ हलका, पोचा, कटु।
उ०—घर में मत खा फिरतौ घिरतौ, न कहै मरम बोलीजै निरतौ। तारू सूं मत तोड़ै विरतौ, बडां रै कांम म थाए विरतौ।
—ध.व.ग्रं.
४ नीच, पतित।

निरत्त—देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—१ एक एक मुनिवर एहवा जी, सूत्र में कहियै निरत्त। संकल्प आथमियां पछै जी, उगियां पछै विरत्त।—जयवांणी
उ०—२ चक्रवति दिन पांचमै, कियो दरबार सकारण। अदब थयो ऊमरां, पटां ऊधरां वधारण। वळै भाग सेवगां, लाग धारी समसत्तां। मागध वंदीजणां, सूत अदभूत निरत्तां।—रा.रू.

निरत्तारणो, [निरत्तारबो-क्रि०स०—उद्धार करना, मोक्ष देना।
निरत्तारणहार, हारौ (हारी), निरत्तारणियौ—वि०।
निरत्तारिग्रोड़ो, निरत्तारियोड़ो, निरत्तारयोड़ो—भू०का०कृ०।
निरत्तारीजणो, निरत्तारीजबो—कर्म वा०।

निरत्तारियोड़ो-भू०का०कृ०—उद्धार किया हुआ, मोक्ष दिया हुआ।
(स्त्री० निरत्तारियोड़ी)

निरत्याव-सं०पु० [सं० नृत्य] नृत्य, नाच। उ०—उभै रूप धारायणी साचेली जेहांन आखै, तारायणी सिला-धू नाचेली निरत्याव। पारायणी प्रवाड़ां आचेली दछा देण पातां, नारायणी रूप नमो काचेली अनाद।—नवलजी लाळस

निरथक- देखो 'निरस्थक' (रू.भे.)
उ०—लगी गांव में लाय, तकै तोई डूंम तिवारी। साध सराहै सती निरथक व्है विधवा नारी। जावै मूरख जेळ, देखज्यो रह्यो न दोरी। नकटी कटियां नाक, सास आवण कह सोरी।—ऊ.का.

निरथौ-वि०—खराब, बुरी, नीच ?
उ०—कोऊ ऊंट जो कढै तो डांग विन पैंड न सरकै। कोऊ दासी लै चलै तो निपट निरथो को निरखै।—अरजुणजी बारहठ

निरदंड-वि० [सं० निर्दण्ड] जिसे सब तरह की सजा दी जा सके, जिसे दण्ड दिया जा सके।
सं०पु०—शूद्र (जिसे सब प्रकार के दण्ड दिए जा सकें)।

निरदंद—देखो 'निरद्वंद' (रू.भे.)
उ०—१ यहु मन दाता होय दत करै, यहु मन भूखा मांगै मरै। आरंभ करै रहै निरदंद, यहु मन मुक्ता यहु मन बंध।—ह.पु.वा.
उ०—२ निरसंसै निरदंद, जोर नहि जेर न जरणा। नाद बिंद नहि जीव, जनम नहि अवधि न मरणा।—ह.पु.वा.

निरदंभ-वि० [सं० निर्दंभ] जिसे दंभ या अभिमान न हो, दंभहीन।

निरदय-वि० [सं० निर्दयी] दयाहीन, क्रूर, निष्ठुर।
उ०—१ ताजदार बैठो तखत, रज में लोटे रक। गिणै दुना नूं हेक गत, निरदय काळ निसंक।—बां.दा.
उ०—२ निरदय दीठा प्रांन भड़, कूकावै पर सैन। वाहै कंत दयाळ व्है, अरियां हाय सुणै न।—वी.स.

रू०भे०—निरदयी, निरदेई, निरद्दय ।

निरदयता-संज्ञा०स्त्री० [सं० निर्दयता] निर्दयी होने की क्रिया या भाव, निष्ठुरता । उ०—ग्रमरस बेडतबार, निरदयता मन नासतिक । नर सम मार असार, पैलां घर वांछै पिसण ।—बां.दा.

निरदयी—देखो 'निरदय' (रू.भे.)

निरदळण-वि० [सं० निर्दलनम्] १ संहार करने वाला, मारने वाला, नाश करने वाला । उ०—उरध ग्रबर उदरण, वेद ब्रहमा गाया-ठण । दळ दांणव निरदळण ग्रव्व रांमण चो गाळण । बम्भीखण जग करण, सवळ दैतां संघारण । नव्वनाथ निमधियण, त्रिविध लोकां ऊपावण । ससि सूर पवन पांणी सती, मुगति कीग्र जांमण मरण । त्रैलोकनाथ 'जगियो' तवं, सरण राख असरण सरण ।

—ज.खि.

२ कष्ट देने वाला, दुःख देने वाला, पीड़ा पहुँचाने वाला ।

निरदळणो, निरदळबो-क्रि०स० [सं० निर्दलनम्] १ संहार करना, नाश करना, मारना । उ०—१ दळपति कोइ न दूजो वरदळि, निरदळिया मात लोक नर । करि ऊद्धजि विसकन्या कहियो, राव तणै घरि लहीस वर ।—दूदो

उ०—२ ऊपर खांन तणैं दळ ग्राया । ग्रर निरदळता कमंघ ग्रछाया । ऊठी वाग दवाग ग्रलल्लै । हेवै मार लियो हरवल्लै ।

—रा.रू.

उ०—३ हरिणाकस निरदळियो हाथै । गिळियो गूद नमो ग्रम-य्यांन ।—पी.ग्रं.

उ०—४ घोडइ घाली द्रुपदि देवि साटै, मारइं कटकु मिळेवि । ग्ररजुनि जांमुं दळु निरदळुं, राय तणुं तां सूकउं गळुं ।

—पं.पं.च.

२ कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना ।

निरदळणहार, हारौ (हारी), निरदळणियौ—वि० ।

निरदळाड़णो, निरदळाड़बो, निरदळाणो, निरदळाबो, निरदळावणो, निरदळावबो—प्रे०रू० ।

निरदळिग्रोड़ौ, निरदळियोड़ौ, निरदळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निरदळीजणो, नीरदळीजबो—कर्म वा० ।

निरदळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ, नाश किया हुआ ।

२ कष्ट दिया हुआ, पीड़ा पहुँचाया हुआ ।

(स्त्री० निरदळियोड़ी)

निरदाई, निरदायौ-वि० [सं० निर्+रा० दायौ] बिना, बगैर, रहित । उ०—१ ग्रातम न्यांनी पुरस जो निरालंब निरदाई । नित निरमळ ग्राकास ज्यूं, त्रिगुण लिपै न ताई ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ इच्छा रूपी ग्रोमकार उपाया, सोई पुरस सोई माया । माया मांय मांड सब मांडो, पारब्रह्म निरदाया ।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ उत्पति अरु तिथि लय वाहुते, वे निरदाया ए । गुप्त सूं गुप्त प्रगट सूं प्रगट द्रस्टा रहवाया ए ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—४ साधो भाई ग्रातम ग्रखै ग्रजाया, चेतन लियां चेत सब चेतै, ग्राप रहत निरदाया ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—५ साधो भाई कर निरणय दरसाया, ग्यांन ग्रग्यांन बताई माया, निज ग्रनुभव निरदाया ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—६ नहि ज्यां फुरणा नहीं ग्रफुरणा, नहि जीव नहि माया । ईस्वर ब्रह्म कोऊ नहि तामे, नहि दाया निरदाया ।

—स्री सुखरांमजी महाराज

निरदावै-क्रि०वि० [सं० निर+ग्र० दावा] १ बिना उज्र के, बिना ऐतराज के ।

उ०—१ ग्रंधे को ग्रंधा घर के कंधा, चल कर पार चहुंदा है । नगटा निरदावै जमपुर जावै, खरहर खाड खपिंदा है ।—ऊ.का.

उ०—२ खट उरमी का जीत विकारा । सदा सुछद संत जन प्यारां, रह नित ही निरदावै ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ ग्रळगा एकांयत नीयत निरदावै । धूणीं ग्रवधूतां दूणीं धुक-वावै । पूरा पोमाहै सूरा सत सावै । पीता मरियोड़ा जीता पद पावै ।

—ऊ.का.

२ देखो 'निरदायौ' (रू.भे.)

निरदावौ-सं०पु० [सं० निर+ग्र० दावा] स्वत्व हटाने का लेख, सुलहनामा ।

वि०—ग्रधिकारहीन, ग्रनधिकार ।

निरदिस्ट-वि० [सं० निर्दिष्ट] १ जिसके सम्बन्ध में पहले ही कुछ बतलाया या निश्चय कर दिया गया हो, नीयत किया हुआ, बतलाया हुआ, ठहराया हुआ, निश्चित ।

ज्यूं—म्हारी गाडी निरदिष्ट टैम मातै रवांना व्हैगी ।

ज्यूं—दिन वदतां वदतां म्हे सैंग जणा निरदिस्ट जगै मातै ग्राय ग्या ।

२ जिसका निर्देश हो चुका हो ।

निरदूख, निरदूखण, निरदूस, निरदूसण—देखो 'निरदोस' (रू.भे.)

उ०—१ खट कास्ठें निरदूख लित, ग्राहुत घिरत कपूर । दिव पंडित वेदी सद्रढ़, सोभत ग्रगनि सनूर ।—रा.रू.

उ०—२ मुहादाई नै मुहाजीवी ले, निरदूसण ग्राहारी रे । निरजरा हेते करै तपस्या, फिर फिर न करै हारी रे ।—जयवांणी

निरदेई—देखो 'निरदय' (रू.भे.)

निरदेस-सं०पु० [सं० निर्देश] १ किसी के सम्बन्ध में संकेत करना, किसी पदार्थ को बतलाना ।

२ निश्चित करने या ठहराने की क्रिया या भाव ।

३ नाम, संज्ञा ।

४ उल्लेख, जिक्र ।

५ कथन ।

६ वर्णन ।

७ हुक्म, आज्ञा, आदेश (डिं.को.)

रू०भे०—निद्देस ।

निरदेसक-वि० [सं० निर्देशक] १ निर्देश या आदेश देने वाला । (डिं.को.)

२ सूचित करने वाला, संकेत करने वाला, उपाय, तरीका, रीति या मार्ग दिखलाने वाला, प्रदर्शक ।

निरदेह-वि० [सं० निर्+देह] बिना आकृति या देह का, निराकार ।

उ०—नमो निरव्रत नमो निरनेह । नमो निरदत्त नमो निरदेह । —ह.र.

रू०भे०—निरादेह ।

निरदोख—देखो 'निरदोस' (रू.भे.)

उ०—१ वसंत पंचमी करी विमाहौ । सुघ निरदोख वेद विघ साहौ । —सू.प्र.

उ०—२ नमो निरलेप नमो निरकार । नमो निरदोख नमो निरधार ।—ह.र.

निरदोखता—देखो 'निरदोसता' (रू.भे.)

निरदोखी—देखो 'निरदोसी' (रू.भे.)

निरदोखौ—देखो 'निरदोस' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आस्रव संबर नै निरजरा, जांण्या छै बंध नै मोखो रे । दांनं दै चवदे प्रकार नो, सुव साधवां भणी निरदोखौ रे । —जयवांणी

निरदोस-वि० [सं० निर्दोष] जो किसी दोष से सम्बन्धित न हो, जिसने कोई अपराध न किया हो, वेकसूर ।

ज्यूं—इण गरीब आदमी रौ कों कसूर कोयनी औ तौ बापड़ौ बिलकुल निरदोस है ।

उ०—भूम वहंतौ को जण भाळै, वडवाग जिम समंद विचाळै । कमंघ खड़ा आगै दस कोसां, दाखै कथ निरदोसां दोसां । —रा.रू.

२ जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो, बे-ऐब, दोषरहित, निष्कलंक, बेदाग ।

उ०—१ नमो सच्चिदानंद भक्तवत्सल भयहरता, सास्वत असरण सरण करण कारण जग करता । निराकार निरलेप निगम निरदोस निरंजन, दीरघ दीनदयाळ देव दुख दाळद भंजन ।—ऊ.का.

रू०भे०—निरदूख, निरदूखण, निरदूस, निरदूसण, निरदोख, निरदोह ।

अल्पा०—निरदोखौ ।

निरदोसता-सं०स्त्री० [सं० निर्दोष+रा.प्र.ता] निर्दोष होने की क्रिया या भाव, शुद्धता ।

रू०भे०—निरदोखता ।

निरदोसी-सं०स्त्री० [सं० निर्दोषिन्] जिसने कोई अपराध न किया हो, निरपराध, वेकसूर ।

रू०भे०—निरदोखण, निरदोखी, निरदोसण, निरदोही ।

निरदोसण—देखो १ 'निरदोस' (रू.भे.)

उ०—निरदोसण अंत भोगवी, जीतसी हो मोहमाया री मांनु । —जयवांणी

२ देखो 'निरदोसी' (रू.भे.)

निरदोह—देखो 'निरदोस' (रू.भे.)

उ०—अलिप अछिप जहां तहां छिपा, छाया पड़ै न छोह । सकळ भवन पति सति सदा, निरामोह निरदोहा ।—ह.पु.वा.

निरदोही—देखो 'निरदोसी' (रू.भे.)

निरद्दय—देखो 'निरदय' (रू.भे.)

निरद्धाटणौ, निरद्धाटबौ—देखो 'निरघाटणौ, निरघाटबौ' (रू.भे.)

उ०—सीमाड़ा सवे वस कीधा, सवे गढ़ लीधा, गढवइ सवि निरद्धाटिया, दुरग सबे आपणा कीधा, समुद्र लगि आपणी आंण फेरि ।—व.स.

निरद्धाटणहार, हारौ (हारी), निरद्धाटणियौ—वि० ।

निरद्धाटिओड़ौ, निरद्धाटियोड़ौ, निरद्धाटयोड़ौ—भ०का०कृ० ।

निरद्धाटीजणौ, निरद्धाटीजबौ—कर्म वा० ।

निरद्धाटयोड़ौ—देखो 'निरघाटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निरद्धाटियोड़ी)

निरद्वंद, निरद्वंद्व-वि० [सं० निर्द्वंद्व] १ जो सुख दुःख, मान अपमान, राग द्वेष आदि द्वंद्वों से परे या रहित हो, जो हर्ष शोक से रहित हो ।

उ०—निरद्वंद नाथ, आस्रम अनाथ । वह सस्टीवार, प्रळयांत पार । —ऊ.का.

२ जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी न हो, जिसका कोई विरोध करने वाला न हो ।

३ बिना बाधा का, स्वच्छंद ।

४ विकाररहित ।

रू०भे०—निरदंद, निरधुंद ।

निरघण-सं०पु० [सं० निर+रा० घण] १ वह पुरुष जिसके पत्नी न हो, विधुर ।

उ०—नरति प्रसरि निरघण गिरि नीझर, घणी भजै घण पयोधर । झोलै वाइ किया तरु झखर, लवळी दहन कि लू लहर ।—वेलि.

२ देखो 'निरघणियौ' (मह., रू.भे.)

३ देखो 'निरघन' (रू.भे.)

उ०—रुपैया तौ भोतेरा ले लौ, म्हांरां रौ निरघण अंत न पार । तिलां तौ भोतेरी ले लौ, अंगिया री निरघण अंत न पार । —लो.गी.

रू०भे०—निरध्धण ।

निरघणियौ—१ देखो 'नीघणी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—महाविदेह में धणिय विराजिया जो, तिकै निरधणिया किम थाय ।—जयवांणी

२ देखो 'निरधण' (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'निरधन' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ जे म्हे होता निरधणियां घर नार, थारी किस विध ल्याता धूघरी जो म्हारा राज ।—लो.गी.

उ०—२ ना मूं बांमण-वांणियां री ए, ना विणजारै री धीय। हूं तो सकळ जळ देवता ए, निरधणिया धन देय ।—लो.गी.

उ०—३ धन वाळां रै धाम, जांण विनां जावै जगत । निरधणियां रो नाम, कोई न पूछै 'किसनिया' ।—अज्ञात

निरधन-वि० [सं० निर्धन] जिसके पास धन न हो, सम्पत्तिहीन, कंगाल, दरिद्र, गरीब ।

उ०—१ भुरसी निरधन नूवळ हजारां, रीझां दियण सिरै दोय राह । पहतै 'पदम' कमध पाटोघर, पाड़ लियो दिखण्यां पतसाह ।
—पदमसिंघ करणसिंघोत राठौड़ री गीत

उ०—२ अदतां टाणा ऊपरै, नाणो खरचै नांहि । हाथ घिसै निरधन हुवां, मालो ज्यों जग मांहि ।—बां.दा.

उ०—३ हां हे श्री तो निरधारां आधार, हां हे श्री तो निरधन रो धन सार ।—मी.रां.

रू०भे०—निरधण ।

अल्पा०—निरधणियो, निरधनियो, नीधनो ।

निरधनता-स०स्त्री० [सं० निर्धन+रा.प्र.ता] धनहीन होने का भाव, दरिद्रता, कंगाली, गरीबी ।

निरधनियो—देखो 'निरधन' (रू.भे.)

उ०—निरधनियां आथ समापण नहचै, दियण अन्यायां न्याय दुवाह ।—महादांन महडू

निरधरम, निरधरम्म-सं०पु० [सं० निर्धर्म्म] जो धर्म में रत न हो, जो धर्म से रहित हो, धर्महीन ।

रू०भे०—निरध्रम्म ।

निरधाटणौ, निरधाटबौ-क्रि०स० [सं० निर्घाटनम्] पराजित करना । दबा देना । उ०—सवे सीमाळ भूपाळ वसि कीधा, गढ सवे ढाळ्या रिपु सवे निरधाट्या, दुरग सवे आपणाव्या, समुद्र परयंत आंण फेरवीं ।—व.स.

निरधाटणहार, हारौ (हारी), निरधाटणियौ—वि० ।

निरधाटिग्रोड़ौ, निरधाटियोड़ौ, निरधाट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निरधाटीजणौ, निरधाटीजबौ—कर्म वा० ।

निरद्धाटणौ, निरद्धाटबौ—रू०भे० ।

निरधाटियोड़ौ-भू०का०कृ०—दबा दिया हुआ, अधीनस्थ किया हुआ । (स्त्री० निरधाटियोड़ी)

निरधार, निरधारन-सं०पु० [सं० निर्धार, निर्धारण] १ निश्चित करना या ठहराने की क्रिया या भाव ।

उ०—लख एकोतर लेखिजै, निवै सहस निरधार । वाचां बिसो छत्रीस वळि, इसो रूप अधिकार ।—ल.पि.

२ निश्चय । उ०—१ सत हुवै जा पुरस कै, करै सहगवन नार । जाय वसै तप लोक में, यह जांणो निरधार ।—गजउद्धार

उ०—२ नागो गयो निरधार, तागो रह्यो न तेण रै । लेगी 'वीछळ' नार, माया सांसो 'मोतिया' ।—रायसिंह सांदू

उ०—३ विप्र आंनूप सरूप स्यांम, घट वरसण वार । कसियो कट तट कोमळा, चपळा पट-चार । भुज-अजांन विसाळ भाळ, कट संघ प्रकार । नयण भ्रू ह नासिका कमळ, धनु सुक निरधार ।
—र.ज.प्र.

उ०—४ दोयण मारै दाव सूं, नीत बात निरधार । पेल हिरण चीतो प्रगट, मूंसै पेल मजार ।—बां.दा.

उ०—५ निरखि कह्यो तद नाहरी, निज मन करि निरधार । भैंसो 'जालम' भूप रो, बालम हतो विचार ।
—सिवबखस पाल्हावत

३ निर्णय । उ०—लखियां दोसै नव अखिर, ऊचरियां अगीयार । जाळीबंध जिण गीत रो, नांम सुकव निरधार ।—र.ज.प्र.

४ विश्वास । उ०—जगडइ ए जासक जूहिय, मूं हियडउ निरधार । देखउं केवडी केवडी, जेवडी करवत धारि ।—नेमिनाथ फागु

५ गुण वा कर्म आदि का विचार करके किसी एक जाति के पदार्थों में से कुछ को अलग करना (न्याय)

वि०—१ पक्का, दृढ़ । उ०—सेर खटै मन जोर संभाया, यों लखि दूत सिताबि आया । समाचार निरधार सुणाया, आसुर आया कोप अछाया ।—रा.रू.

२ देखो 'निराधार' (रू.भे.)

उ०—१ प्रजा पुकारै हो प्रभूजी, भवन पधारो नाथ । अरे हां-के दासी दास खड़ा, दास खड़ा छै हो प्रभूजी न छोडो निरधार ।
—मी.रां.

उ०—२ आनद रो आगार, आली हे म्हारो सुघड़ां रो सरदार । हां हे श्री तो निरधारां आधार, हां हे श्री तो निरधन रो धन सार ।
—मी.रां.

उ०—३ सोवन्न लंक भभीखणह, दी सरण सधार । श्री जगनायक रांमचंद, निरधार अधार ।—र.ज.प्र.

निरधारणौ, निरधारबौ-क्रि०स० [सं० निर्धारणम्] निश्चय करना, निर्धारण करना । उ०—अरथ होय आंमूंझ, अपस ७ सौ दोस उचारत । जथा निभै नह जेण, नाळ छेदक निरधारत ।—र.रू.

निरधारणहार, हारौ (हारी), निरधारणियौ—वि० ।

निरधारिग्रोड़ौ, निरधारियोड़ौ, निरधारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निरधारीजणौ निरधारीजबौ—कर्म वा० ।

निरधारित-वि० [सं० निर्धारित] जिसका निश्चय या निर्धारण हो चुका हो, निश्चित किया हुआ, ठहराया हुआ ।

निरधारियोड़ौ-भू०का०कृ०—निश्चित किया हुआ, निर्धारित किया हुआ (स्त्री० निरधारियोड़ी)

निरधारौ—देखो 'निरधार' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—तीन दिनां सूं साक मिळै तोई घोको हियै न धारौ। सूंक लेर पधरावै सीरौ, नहीं नीको निरधारौ।—सू.प्र.

निरधुंद—देखो 'निरद्वंद' (रू.भे.)

उ०—१ ब्रह्मानंद निरधुंद स्वच्छंदा, सत सरवग्य वेद संत कहंदा।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ धंद मिटिया जन निरधुंद पाया, आतम रांम अरागी। कह सुखरांम मिटी सब त्रिस्णा, अनुभव उगती जागी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

निरधूंम, निरधूम-सं०पु० [सं० निर्+धूम्र] १ धुआंरहित।

उ०—भरमल री दोनूं आंख्यां रा पटल दूर हुयग्या, जिसा निरधूम दिया होय।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ किसी प्रकार की रुकावट के बिना, निःशंक।

उ०—धारूजळ झाट धुवै निरधूम, भिड़ै 'कुसळेस' समोभ्रम 'भूंम'।
—सू.प्र.

निरध्धण—देखो 'निरधण' (रू.भे.)

उ०—उत्तार आज स वज्जियउ, सीय पड़ेसी पूर। दहिसी गात निरध्धणा, घण चंगो घर दूर।—ढो.मा.

निरध्रम्म—देखो 'निरधरम' (रू.भे.)

उ०—नमो निरध्रम्म नमो निराधार, नमो निरक्रम्म नमो निराकार। नमो निरनांम नमो निरनेह, नमो निरगांम नमो निरगेह।
—ह.र.

निरनउ—देखो 'निरणय' (रू.भे.)

उ०—अढार लिपिनइं विसय कुसळ चऊद विद्याविसाळ, अढ़ार व्याकरण निरनउ दिइ।—व.स.

निरपक्ख, निरपख, निरपख-सं०पु० [सं० निर्पक्ष] १ जिसके किसी प्रकार का पक्ष न हो या जो किसी प्रकार का पक्ष न रखता हो, ईश्वर।

उ० —१ नमो निरव्यंग नमो निरवांण, नमो निर-प्रग नमो निर-पांणि। नमो निरपक्ख नमो निरप्रेह, नमो निरदक्ख नमो निरदेह।
—ह.र.

उ०—२ चौरासी लाख भख दियण, निरपख निरवांणी।
—केसोदास गाडण

२ मातृ-पितृ पक्ष-रहित।

उ०— अद्रिस्टि अक्षिर अरूप, अथाह निरमोह सन्यारं। निरामूळ निरधार, निकुळ निरपख निजसारं।—ह.पु.वा.

३ निष्पक्ष।

उ०—अप मारग की आपदा, धुळि गांठि न खोलै। लोक लाज लालचि पड्यां, निरपख न्है बोलै।—ह.पु.वा.

४ वह व्यक्ति जिसका सहायक, मित्र आदि न हो।

उ०—निज संतां तारै घणनांमी, नहच्चो ज्यां नेड़ो घणनांमी। निरपखां पखी घणनांमी, नाथ अनाथां चो घणनांमी।
—र.ज.प्र.

निरफळ—देखो 'निस्फळ' (रू.भे.)

उ०—१ भंडसुरी सदगति लहे रे, करणी निरफळ न जाय। सुक-देव प्रमुख सिद्ध हुवा रे, वेद ई वरता थाय रे।—जयवांणी

उ०—२ करता विस्वंभर कसरां काह कांई। नागरवेली दळ निरफळ फळ नाहीं। दाता घर दाळद भुगतै हठ भाया। मूंजी मिनखां नै सूंपै सठ माया।—ऊ.का.

रू०भे०—नरफळ, नूफळ।

निरबंद, निरबंध, निरबंधन-वि० [सं० निर्+बंध या बंधन] बंधन-रहित बंधनमुक्त। उ०—१ ग्यांन कथे अरु माया संग्रह, मन तो मैला भाई। ग्यांनी सोई निरबंद माया सूं, द्रव्य गहै नहिं काई।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ राजा भरथरी गोपीचंदा, माया तज रहता निरबंदा, ग्यांन फकीरी ग्रोई।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ ललत त्रिभंगी लाडले, मेघ वरण महाराज। ग्राह फंद निरबध कर, तुमें हमारी लाज।—गजउद्धार

उ०—४ सांच न सूझै जब लगैं, तब लग लोचन नांहि। दादू निरबध छाड कर, बंध्या द्वै पख मांहि।—दादूबांणी

उ०—५ कइक सती कइक यती, दोऊ बंद बंधाया। निरबंधन अलख अविनासी, जिन खोज्या सोइ पाया।
—स्री हरिरांमजी महाराज

निरबंस—देखो 'निरवंस' (रू.भे.)

उ०—किल मारवारि बस करहि कोय। हम हंस-वंस निरबंस होय।
—ऊ.का.

निरबद-वि० [सं० निर्वद्य] दोषरहित, विशुद्ध। उ०—आय नै उतरया कोस्टक बाग में रे, निरबद जायगा जोय।—जयवांणी

निरबरणन-सं०पु० [सं०] देखना क्रिया का भाव (डिं.को.)

निरबळ-वि० [सं० निर्बल] बलहीन, कमजोर (डिं.को.)

उ०—रुदन करै कळपै तिया, पिय कूं निरबळ देख। कित कजळी-वन उदधि कित, लिख्यौ विधाता लेख।—गजउद्धार

रू०भे०—नबळ, निबळ, निवळ, नूबळ।

अल्पा०—निबळियौ, निबळोड़ौ, निबळोड़ौ, निबळौ, निवळौ।

निरबळता-सं०स्त्री० [सं० निर्बल+रा.प्र.ता] कमजोरी, सुस्ती, शक्तिहीनता।

रू०भे०—निबळाई।

निरबहणौ, निरबहबौ—देखो 'निरवहणौ, निरवहबौ' (रू.भे.)

निरबहणहार, हारौ (हारी), निरबहणियौ—वि०।

निरबहिओड़ौ, निरबहियोड़ौ, निरबह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निरबहीजणो, निरबहीजवो—कर्म वा० ।

निरबहियोड़ो—देखो 'निरवहियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निरबहियोड़ी)

निरबांण, निरबांणी-सं०पु०—१ चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

२ तीर, शर (डि.नां.मा.)

३ पाताल (डि.नां.मा.)

उ०—पाचर मांगणहार नसाचर । चतुर प्रेत धवै निरबांण । सकति समळि सिद्धि ग्रोघणि । 'रतनै' मोकळिया मारांण ।—दूदो

४ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—१ अवधू जोगी जुगते न्यारा, पद निरबांण निरंतर बैठा, चिंता करि चारा ।—ह.पु.वा.

उ०—२ तत ले निरबांण क राज तियाग, गोपीचंद भरत्थरियं ।
—गु.रू.बं.

उ०—३ दादू पहली आप उपाइ कर, न्यारा पद निरबांण । ब्रह्मा विस्णु महेस मिळ, बांध्या सकळ बंधांण ।—दादूबांणी

उ०—४ निज घर परा पार निरबांना, थकत वैखरी गांना ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

निरबाचन—देखो 'निरवाचन' (रू.भे.)

निरबाह—देखो 'निरवाह' (रू.भे.)

उ०—१ अवर दवाळा अवर विध, नहीं मत्त निरबाह । ईसर बारठ अविलयो, असम चरण थण राह ।—र.ज.प्र.

उ०—२ द्रग देख दया उपदेस दिए, निरबाह विसेसन सेस लिये ।
—ऊ.का.

निरबाहणो, निरबाहबो—देखो 'निरवाहणो, निरवाहबो' (रू.भे.)

निरबाहणहार, हारो (हारी), निरबाहणियो—वि० ।

निरबाहिप्रोड़ो, निरबाहियोड़ो, निरबाह्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निरबाहीजणो निरबाहीजबो—कर्म वा० ।

निरबाहियोड़ो—देखो 'निरवाहियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निरबाहियोड़ी)

निरबिकार—देखो 'निरविकार' (रू.भे.)

उ०—एक तूझ आदेस, जगत-पति तुझ जोगेस्वर । निरबिकार आदेस, नेति आदेस नरेसर ।—ह.र.

निरबीज-वि० [सं० निर्बीज] जिसका वंश चलाने वाला कोई न हो, निःसंतान । उ०—१ द्रुत मरुधन्वा लीजै दबाय । जब राजबीज निरबीज जाय ।—ऊ.का.

उ०—२ निरबीज करूं राकस निकर, मेटूं फिकर त्रिलोकमिण । थारूं बभीखण लंक धणी, तो हूं दसरथ राव तण ।—र.रू.

उ०—३ मुंड चंड महिसासुर मारे । सुंभ निसुंभ सकळ संहारे । जनमें रक्तबीज तन ज्यों ज्यों । तैं निरबीज किये हनि त्यों त्यों ।
—मे.म.

२ जिसमें बीज न हो, बीजरहित । उ०—चिरजीव जरा जननी न जनै । निरबीज धरा कबहू न बनै ।—ऊ.का.

३ जो कारण से रहित हो, जो कारण से परे हो ।

रू०भे०—निरवीज, निब्बीज ।

अल्पा०—निबीजो, नीबीजो ।

निरबुद्धि, निरबुधी-वि० [सं० निर्बुद्धि] जिसे समझ न हो, बुद्धिहीन उ०—मेट मेद्यांण धींगांणा जेण हिंदवांण किया मारू । मोसांणा पुरांण के दिरांणा नवा मोज । निरबुधी रांणा जिसा सांसणां रा लिय नांणा । नांणा ले जोधांण घणी सांसणां सा नोज ।
—महाराजा मानसिंह री गीत

निरबोध-वि० [सं० निर्बोध] जिसे भले-बुरे का कुछ भी ज्ञान न हो, जिसे कुछ भी बोध न हो, अनजान, अबोध ।

निरबोह, निरबौह-वि० [सं० निर्+फा बू] गंधरहित, वासनारहित ।

निरब्भै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)

निरभ्रती-सं०पु० सं०] सुख (डि.को.)

निरभय-वि० [सं० निर्भय] जिसे किसी प्रकार का भय न हो, जिसे कोई डर न हो, निडर, बेखौफ । उ०—१ अखिलेस अनूपम एक अज, अजरामर महिमा अजय । नित निरविकार निरभय निपुण, नारायण करुणानिलय ।—ऊ.का.

उ०—२ वैरागवृद्धि, सुख बळ सम्रद्धि । निरभय निसांन; निरधन निधांन ।—ऊ.का.

पात बिन महाप्रतापी, निरभय तेज उतंगी ।—ऊ.का.

रू०भे०—नरभै, निब्भय, निर्भै, निर्भ्भै, निरब्भै, निरभै, निरम्भय, निरम्भै, नीभर, नीरभै, नूभै, निभै ।

निरभयता-सं०स्त्री० [सं० निर्भयता] १ भयरहित होने का भाव । निडरता ।

२ भयरहित होने की अवस्था । उ०—कायरता सुणत न कथा, नित निरभयता मन्न । पवन गता तत्ता पमंग, 'पत्ता' चढ़ण प्रसन्न ।
—जैतदांन बारहठ

निरभर-वि० [सं० निर्भर] १ आश्रित, अवलम्बित ।

२ भरा हुआ, पूर्ण ।

३ मिला हुआ, युक्त ।

रू०भे०—नीभर ।

निरभागी—देखो 'निभागी' (रू.भे.)

उ०—हूं तो घणी-ई बेटी वणावण नै त्यार हू, पण मैं निरभागण री बेटी वर्ण कुण ?—वरसगांठ

(स्त्री० निरभागण)

निरभाड़णो, निरभाड़बो—देखो 'निभाणो, निभाबो' (रू.भे.)

निरभाड़णहार, हारो (हारी), निरभाड़णियो—वि० ।

निरभाड़िप्रोड़ो, निरभाड़ियोड़ो, निरभाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निरभाड़ीजणो, निरभाड़ीजबो—कर्म वा० ।

निरभाड़ियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निरभाड़ियोड़ी)

निरभाणौ, निरभावौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)
उ०—सांम के घरम की सरम सिध साही। ऐसी कौन करै जैसी कायथ निरभाई।—रा.रू.
निरभाणहार, हारौ (हारी) निरभाणियौ—वि०।
निरभायोड़ौ—भू०का०कृ०।
निरभाईजणौ, निरभाईजबौ—कर्म वा०।

निरभायोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निरभायोड़ी)

निरभावणौ, निरभाववौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)
निरभावणहार, हारौ (हारी), निरभावणियौ—वि०।
निरभाविग्रोड़ौ, निरभावियोड़ौ, निरभावचोड़ौ—भू०का०कृ०।
निरभावीजणौ, निरभावीजवौ—कर्म वा०।

निरभावियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निरभावियोड़ी)

निरभीक-वि० [सं० निर्भीक] जिसे भय न हो, निडर, निर्भय।

निरभीकता-सं०स्त्री० [सं० निर्भीक+रा.प्र.ता] निडर होने की क्रिया या भाव, निडरता।

निरभीत-वि० [सं० निर्भीत] जो निडर हो, निर्भय।

निरभै, निरभ्भै, निरभ्भय—देखो 'निरभय' (रू.भे.)
उ०—१ सखी अमीणी साहिबौ, निरभै काळो नाग। सिर राखै मिण सांमध्रम, रीझै सिंधूराग।—बां.दा.
उ०—२ जड़ चेतन कूं जोय, हंस निरभै थया। तन मन गया विलाय, ब्रह्म केवळ रया।—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—३ बुध व्याधिय ग्राधि उपाधिय में, सुध लाधिय सुन्य समाधिय में। निरभै तन रोग वियोग नहीं, सुपनै मन संसय सोग नहीं।
—ऊ.का.
उ०—४ निरभ्भै डड निरास ग्रधारी, कंथा ग्रजर ग्रपारं। भिख्या ग्रगम निरंतरि दीवी, ग्रासण सुनि हमारं।—ह.पु.वा.
उ०—५ निरभ्भय कौन 'ग्रभैमन' नार।—ह.र.
उ०—६ करणहार कुरवांण, ग्रनंमां नांमणा। भारत वेरस सदैव भलां लै भांमणां। राठोड़ां कुळ रीत ग्रवंनी ग्रजसै। वसुधा ज्यांरै पांण निरभ्भै व्है वसै।—किसोरदांन वारहठ

निरभ्रम-वि० [सं० निर्भ्रम] जिसमें संदेह न हो, भ्रमरहित, शंकारहित, निश्चित, निःशंक।
क्रि०वि०—विना भय के, विना संकोच के, निधड़क, वेखटके, स्वच्छंदता से।
रू०भे०—निभरम, निभ्रम।
ग्रल्पा०—निभरमो, निभ्रमो।

निरभ्रांत-वि० [सं० निर्भ्रांत] १ जिसको कोई शंका न हो।
२ जिसमें कोई संदेह न हो, भ्रमरहित, निश्चित।
रू०भे०—निभ्रंत, निभ्रंत।

निरभ्रांतता-सं०स्त्री० [सं० निर्भ्रांत+रा.प्र.ता] भ्रमरहित होने का भाव, चित्त का स्थिर होना, शान्ति।
रू०भे०—निभरांताई।

निरमणौ, निरमवौ-क्रि०स० [सं० निर्मनम्] १ उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना। उ०—१ ज्यूं राखै ज्यूं रहै, जहां निरमै तहीं जावै। हुकम सो ही सिर हुवै, जिको मीरां फुरमावै।—ह.र.
उ०—२ हूं तो हत्थां भांमणां, बडा समत्था वेह। ज्यां 'जेहा' जादव जिसौ, नर निरमियौ नरेह —बां.दा.
२ निर्माण करना, वनाना, रचना।—उ०—हेकौ काज न व्है सकै, ग्रावो संत ग्रसंत। मावड़िया खिण खिण मता, नवा नवा निरमंत।—बां.दा.
निरमणहार, हारौ (हारी), निरमणियौ—वि०।
निरमवाड़णौ, निरमवाड़बौ, निरमवाणौ, निरमवाबौ, निरमवावणौ, निरमवाववौ—प्रे०रू०।
निरमिग्रोड़ौ, निरमियोड़ौ, निरम्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निरमीजणौ, निरमीजवौ—कर्म वा०।
निरमाणौ, निरमावौ. नींमजणौ, नींमजवौ, नींमणौ, नींमवौ
—रू०भे०

निरमद-वि० [सं० निर्मद.] विना मद का, मद उतरा हुग्रा (हाथी)

निरमदा—देखो 'नरमदा' (रू.भे.)
उ०—महारास्ट्र कांमाक्ष ग्राभीर, कच पापांतिक निरमदा नीर। वोढ़उर ग्रनइ सलूं स्रीमाळ, दक्षणदेसि जीपीग्रा भूपाळ।
—नळ-दवदंती रास

निरमन-वि० [सं० निर्मन]—मनरहित।
उ०—निरमन सता हमारी केवळ, मनमाया नहिं बाजी। है सुखरांम बोध सोई बोधक, सुद्ध स्वरूप सदा जी।—स्री सुखरांमजी महाराज

निरमळ-वि० [सं० निर्मल] १ जिसमें मल न हो, मलरहित, साफ, स्वच्छ। उ०—१ सूक्यां सघळां सुरहां घोळ। जिमवानउ हिव हूउ निरोळ। ग्राव्यां वास्यां निरमळ नीर। ग्राव्यां कर लूहेवा चीर।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—२ ग्रगणित ग्रवळावां छावां जुत ग्राई। निरमळ नैणां जळ बळ बळ विलळाई। भारी नांणा विन दांणा विन भूमै। घर री रदनोरी सदनां विन घूमै।—ऊ.का.
२ पवित्र। उ०—१ वांणी पवित्र करिस सीतावर, नित-प्रत क्रीत प्रकासै नरहर। नासा विसन करिस इम निरमळ, प्रभु घूंटे तो चरणां-परमळ।—ह.र.
उ०—२ पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर। मन निरमळ गंगाजळ जेम। नर नादैत नरिंद नरेहण। निकळंक निघुट निपाप निगेम।
—दूदौ
३ पापरहित, निष्पाप, शुद्ध।

उ०—१ धरमी धम्मि नालई सवि वार। एक सागर करम दही करई छार। मांमि दरिसण नउ फळ जोइ, पीह नउं समकित निरमळ होइ। —विद्दगति चउपई

उ०—२ जळ जेथ जगदीस, मार्थे जग नागोरथी। सो व्है पुहमी सीस, तो जळ सूं निरमळ तुरत।—बां.दा.

उ०—३ नाम निरंजण वार न पारा, निराकार निरमळ ततसारा। ताहि भेद जांणै नहि कोय, भेदी हरि सूं न्यारा नहि होय।

—ह.पु.वा.

उ०—४ सत की नाव सतगुरु खेवटिया, सतसंग सुगरा पाई। निरमळ संत समझ को मारग, हिळमिळ नाव चलाई।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—५ धरती जैसी धीरज कहियै, समुद्र ज्यूं गंभीर। आरपार कोई थाह न आवै, यूं संतां मत धीर। निरमळ पीवे रे, दूजा मळ दूर करो।—स्री सुखरांमजी महाराज

४ दोषरहित, निर्दोष, निष्कलंक।

उ०—१ भलावा इण रै सब सूं मोटी बात ही ठाकर रो निरमळ चाल-चलण। इण रै वास्तै मोटी सो मा अर नैनी सो बैन।

—रातवासो

उ०—२ तुझ नांमै पांमै वांछित फळ, तुझ नांमै बहु वद्धि जी। तुझ नांमै लहियै जस निरमळ, तुझ नांमै कुळ सुद्धि जी।

—स्रीपाल

५ सफेद, श्वेत*।

सं०पु०—१ आंख, नयन।

२ देखो 'निरमळी' (रू.भे.)

रू०भे०—निम्मळ, निरम्मळ, नृम्मळ, नृमळ, निृमळ, निृम्मळ।

अल्पा०—निमळो, निम्मळो, निरमळो, निृमळो, निृम्मळो।

निरमळा-सं०स्त्री० [सं० निर्मल+रा.प्र.आ] १ एक नदी का नाम।

२ आंख, नेत्र।

३ नानगशाही साधुओं की एक शाखा विशेष।

वि०वि०—इस शाखा के प्रवर्त्तक रामदास नामक महात्मा थे।

—मा.म.

रू०भे०—नृमळा, निृमळा, निृम्मळा।

निरमळी-सं०स्त्री० [सं०निर्मली] १ बंगाल, मध्यभारत, दक्षिण भारत, बरमा आदि में पाया जाने वाला एक प्रकार का मझला सदावहार वृक्ष जिसके फल के गूदे व बीजों का वैद्यक मे उपयोग होता है।

(अमरत)

वि०स्त्री०—देखो 'निरमळो' (रू.भे.)

उ०—१ महि पुहि मंडळी सांमां साख री जी। मालिम भुजि भली सोवन समपणी जी। कर नवली कळी निजरि निरमळी जी।

—ल.पि.

उ०—२ तठा उपरांति राजांन सिलांमति सरद रित रै समै री पूनिम रो चंद्रमां सोळै कळां लियां संपूरण निरमळी रैण रो उजळी चांदळो रै किरण करि नै हंस नूं हंसणी देखै नहीं नै हंसणी हस देखै नहीं छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—निरम्मळी, नृमळी।

निरमळो-सं०पु०—१ नानगशाही साधुओं की 'निरमळा' शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'निरमळ' (रू.भे.)

उ०—१ हरि जैसा हरिजन जोय निरमळा, जिन संग फाग रमो री ब्रह्म भटी को दारू पीके, घूमर गुस्ट फुरो री।

स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ जब रुखमणीजी रो हरण हुम्रो छै। तब सगळा दोखे रहित निरमळो साहो थो।—वेलि टी.

उ०—३ तठा उपरांति राजांन सिलांमिति खट रित रा बखांण कीजै छै। प्रथम सरद रिति बखांणी जै छै। आसोज लागै छै। पितर पख पूजीजै छै। धरती रो मैल कादम जळ पखाळ निरमळो कियो छै।—रा सा.सं.

उ०—४ माघ सुदी पूनम दिवस, चांद निरमळो जोय। पसु वेचो, कण संग्रहो, काळ हळाहळ होय।—वर्षा विज्ञान

उ०—५ तब मन निरमळो रे, जब लागो हरिनांव। भरमै तो लागै नहीं, लागै तो भरमै कांय।—ह.पु.वा.

(स्त्री० निरमळी)

निरमांण-सं०पु० [सं० निर्माण] १ बनाने का काम।

२ बनावट, रचना।

रू०भे०—निम्मांण, निम्मांन।

निरमांस-सं०पु० [सं० निर्मांस] भोजन आदि के अभाव में अत्यधिक दुबला हो जाने वाला मनुष्य।

ज्यू—उण भूरकी भाकरी माथै एक निरमांस तपसी तारै है।

निरमाड़णो, निरमाड़बो—देखो 'निरमाणो, निरमाबो' (रू.भे.)

निरमाड़ियोड़ो—देखो 'निरमियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निरमाड़ियोड़ी)

निरमाणो, निरमाबो-क्रि०स० [निरमणो क्रिया का प्रे०रू०]

१ निर्माण करना, उत्पन्न कराना, रचाना।

२ देखो 'निरमणो, निरमबो' (रू.भे.)

उ०—१ निरमोही निरमाय, इरधा जोवता जाय, सुकोमळ साध। राउ तणी परै गोचरी ए।—जयवाणी

नींमजाड़णो, नींमजाड़बो, नींमजाणो, नींमजाबो, नींमजावणो, नींमजावबो—प्रे०रू०।

निरमाया-वि० [सं० निर्माया] मायारहित।

उ०—ग्यांन अग्यांन विग्यांन नांई, सुद्ध स्वरूप निजानंद मांई। है सुखरांम सोई निरमाया, अपणो निस्चै कह दरसाया।

—स्री सुखरांमजी महाराज

निरमायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ निर्माण कराया हुआ, उत्पन्न किया हुआ, रचा हुआ।
२ देखो 'निरमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निरमायोड़ी)

निरमावणौ, निरमावबौ—देखो 'निरमाणौ, निरमावौ' (रू.भे.)

निरमावियोड़ौ—देखो 'निरमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निरमावियोड़ी)

निरमित-वि० [सं० निर्मित] बनाया हुआ, रचा हुआ।

निरमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ, जन्मा हुआ।
२ निर्मित किया हुआ, बनाया हुआ, रचा हुआ।
(स्त्री० निरमियोड़ी)

निरमुकत, निरमुगत-वि० [सं० निर्मुक्त] १ जिसके लिए किसी प्रकार का बंधन न हो।
२ जो छूट गया हो, जो मुक्त हो गया हो।
सं०पु०—ऐसा सर्प जिसने हाल ही में कैंचुली उतारी हो।

निरमुकती, निरमुगती-सं०स्त्री० [सं० निर्मुक्ति] १ मोक्ष।
२ मुक्ति, छुटकारा।

निर-मूळ-वि० [सं० निर्मूल] १ जिसका किसी प्रकार का कोई आधार न हो, बुनियाद न हो, बेजड़।
२ जिसमें जड़ न हो, बिना जड़ का।
३ जिसका मूल ही न रहा हो, जो सर्वथा नष्ट हो गया हो।
४ जड़ से उखाड़ा हुआ, जिसकी जड़ न रह गई हो।
रू०भे०—निरामूळ।

निरमूळण, निरमूळन-सं०पु० [सं० निर्मूलन] निर्मूल करना या होना, नाश, विनाश।

निर-मोक-सं०पु० [सं० निर्मोक] १ सांप की कैंचुली।
उ०—धज फरकावै जीवतौ, जोड़ कोड़ धन रोक। नांखै मर उण ठौड़ पर, नाग हुवै निरमोक।—बां.दा.
२ देखो 'निरमोख' (रू.भे.)

निरमोक्ष, निरमोख-सं०पु० [सं० निर्मोक्ष] पूर्ण मोक्ष।
रू०भे०—निरमोक

निरमोल-वि० [सं० निर्+मूल्य] जिसका मूल्य असीम हो, अमूल्य।

निरमोई, निरमोयौ—देखो 'निर-मोह' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ हर निरमोइया रे! कहां तुम्हारा देस। बिरहण डोलै बिलकती, कर कर छूटा केस।—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—२ थांरी तौ ओळूंड़ी घणा नै आवती हो राज। हूं थांनै पूछां वात हंस हंस निरमोया भंवरजी रे कड़ियां रो कटारी ढीलो क्यों पड़ची राज।—लो.गी.

निरमोह-वि [सं० निर्मोह] जिसके मन में ममता या मोह न हो।
उ०—१ पदमासण आसण जोग पूर, क्रोध में हुतासण तप करूर। जोग में धुनी चड छोह जंग, उनमनी मुद्रा निरमोह अंग।—वि.सं.
उ०—२ निरमोह हंदी निहचळ वासा, जगण की जटा सिर देखिवा तमासा।—ह.पु.वा.
रू०भे०—निरमोई, निरमोहि, निरमोही।
अल्पा०—निरमोयौ, निरमोहियौ।

निरमोहि—देखो 'निरमोह' (रू.भे.)
उ०—निरामूळ निरपख कहो, कहो निरक्षर नांव। निरमोहि निरदंद कहो, वा अरचित की बली जांव।—ह.पु.वा.

निरमोहियौ—देखो 'निर-मोह' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—म्हे थांनै पूछां वात हंस हंस पूछां वात निरमोहिया भंवरजी रे कड़ियां रौ कटोरौ ढीलौ क्यों पड़चौ हो राज।—लो.गी.

निरमोही—देखो 'निरमोह' (रू.भे.)

निरम्मळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.) (डि.नां.मा.)
उ०—१ सुख धाम नांम परखै सकळ, हित सुदांम विस्रांम हरि। नवकोट नाथ नवकोट दळ, किया निरम्मळ जात्र करि।
—रा.रू.
उ०—२ आसोज आवतां ही नभ कहतां आकास थें वादळ दूरि हुआ। प्रथी के पंक कहतां कादौ दूरि हुऔ। जळ की गुडळता दूरि हुई। निरम्मळ हुऔ।—वेलि. टी.

निरम्मळी—देखो, निरमळी' (रू.भे.)
उ०—बाहु चळी निरम्मळी, चख बींभळी सुरत्त। आजै करनळ अवकळी, संवळी रूप सगत्त।—राव सेखो भाटी

निरय-सं०स्त्री० [सं० निरयः] नरक, दोजख (डि.को.)

निरयांण-सं०पु० [सं० निर्याण] १ आंख की पुतली।
२ यात्रा, रवानगी, प्रस्थान।

निरयात-सं०पु० [सं० निर्यात] बेचने के लिए माल बाहर भेजने की क्रिया या भाव, निकास।

निरयुक्ति-सं०स्त्री० [सं० निर्युक्ति] १ वह ग्रंथ जो युक्ति सहित सूत्र का अर्थ बतावे (जैन)
२ व्याख्या, टीका।
उ०—स्वांमीजी री जोड़ां सुण नै घणौ राजी हुवौ। ए जोड़ां नहीं एह तौ सूत्रां री निरयुक्तियां छै।—भि.द्र.
रू०भे०—निजुगति, निज्जुति, निरजुकति, निरजुगति।

निररथ-वि० [सं० निरर्थ] १ निष्फल, व्यर्थ।
२ अर्थहीन।

निररथक-वि० [सं० निरर्थक] १ बिना मतलब का, निष्प्रयोजन, व्यर्थ।
उ०—एक डकी नौबत एक री एक अंगरेजी राज री सुण नै सूरवीरां आपरी जात री नै कुळ री स्वभाव वीर पणौ भूला और वां सूरमां आळस में अर एस में सरीर निररथक बीतावणौ सुरू कीधौ।
—वी.स.टी.
२ जिससे कोई अर्थ न निकले, अर्थशून्य।
उ०—निहतारथ लै अरथ प्रगट नहिं, अनुचित अरथ न अरथ

प्रसंग । दूरग् रग निररथक व्है पद, तैं अश्लील समझ विध लोग ।—बां.दा.

वि०वि०—काव्य में निरर्थक वाक्य का एक दोष माना जाता है ।

३ जिससे कोई लाभ न हो, जिससे कोई कार्य-सिद्धि न हो सके ।

४ न्याय में एक निग्रहस्थान ।

निररबुद-सं०पु० [सं० निरर्बुद] एक नरक का नाम ।

निररूप-वि० [सं० निरूप] जिसका कोई रूप न हो, रूपरहित, निराकार । उ०—नमो निरभूप नमो निरभेख, नमो निररूप नमो निररेख ।—ह.र.

निरळंग, निरलंग-वि० [देशज] १ निलिप्त ।

उ०—नमो मतुळीबळ तात अनग, नमो निरवांण नमो निरळंग । नमो पति सूरज कोटि प्रकास, नमो वनमाळी लीलविलास ।

—ह.र.

२ कटा हुआ, अलग, पृथक ।

उ०—१ रणंकत धार भरणंकत खाग, रणंकत मुंड दुखंड कराग । भिड़े भुज 'चंप' हुरा भणभग, सवां निरलंग भुजां धड़ संग ।

—रा.रू.

उ०—२ रुंड रकत भारिया, मुंड भारिया खडग्गां । किता अंग निरलंग, कटे मह पग्ग करग्गां । दंतकुळी अंगुळी, करो कोपरी कपाळां । बीच खेत विखरी, फरी विहूरो किरमाळां ।

—रा.रू.

सं०पु०—खण्ड, टूक ।

उ०—१ हे असि तरवार रा घावण सुधारण वाळा री स्त्री, असि धावण री लुगाई थारे पीव रै हाथां री बळिहारी, वारणा लेऊं, इसी तरवार गुरसांण चढ़ाय तयार कर दीधी है सो रिण में दुसमणां ऊपरे भाटकतां हाथ रै नांम भर भटको हचको नहीं आवै, जिण दुसमण माथै वहै सो निरलंग होतो निजर आवै ।

—वी.स.टी.

उ०—२ थनै म्हारा पती री जिण माथै वहै वे निरलंग होय जावै, सो कोई हाथ व्है न बोध व्है ।—वी.स.टी.

उ०—३ रोदां भांजि ऊजळा रूकां, वैर वाळि, उजवालि वट । पग निरलंग, निरलंग अंग पड़ै, भुज निरलंग, निरलंग भ्रकुट ।

—राठौड़ पदमसिंघ करणसिंघोत री गीत

रू०भे०—नरलंग ।

निरलज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

निरलजता—देखो 'निरलज्जता' (रू.भे.)

निरलजो—देखो 'निरलज्ज' अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निरलजी)

निरलज्ज-वि० [सं० निर्लज्ज] जिसे लज्जा न आती हो, बेशर्म, वेहया

उ०—१ कथ म राखो कटक में, नर कायर निरलज्ज । काळा मछ्दां काढ़नै, काकळ जीपण कज्ज ।—बां.दा.

उ०—२ निरमोही निरलज्ज सुण, काहे हुआ निकाज । माधव विरियां माहरो, कहा गमाई लाज ।—गजउद्धार

रू०भे०—निरलज, निरलाज, निलज्ज, नीलज, नीलजु, नीलज्ज ।

अल्पा०—निरलजो, निलजो, निलज्जो, नीलजो, नीलज्जो ।

निरलज्जता-सं०स्त्री० [सं० निर्लज्जता] निर्लज्ज होने का भाव । बेशर्मी, वेहयाई ।

उ०—सठता धूरतता सहित, छंद रचे मद छाय । निपट लियां निरलज्जता, कुकवो जिको कहाय ।—बां.दा.

उ०—२ वांनर री निरलज्जता, उपल कठणता लीध । वायस तणी कुकंठ ले, कुकवि विधाता कीध ।—बां.दा.

रू०भे०—निरलजता, निलजई, निलजता ।

निरलाज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

उ०—जां दिनां फतैपुर कांमखान्यां को राज । गादी पर अलपखान कांमी निरलाज ।—शि.वं.

निरलिप्त-वि० [सं० निर्लिप्त] १ जो कोई सम्बन्ध न रखता हो, जो लिप्त न हो ।

२ जो किसी विषय में आसक्त न हो, राग द्वेष आदि से मुक्त ।

निरलेखण, निरलेखन-सं०पु० [सं० निर्लेखन] १ सुश्रुत के अनुसार मैल खुरचने का एक उपकरण विशेष ।

२ किसी वस्तु पर जमी हुई मैल आदि खुरचने की क्रिया या भाव ।

निरलेप-वि० [सं० निर्लेप] राग-द्वेषादि सांसारिक गुणों से निर्मुक्त, विषयों आदि से अलग रहने वाला, निर्लिप्त, अनासक्त ।

उ०—१ कि कहिमु तासु जसु अहि थाको कहि, नारायण निरगुण निरलेप । कहि रुखमिणि प्रदुमन अनिरुध का, सह सहचरिए नांम संखेप ।—वेलि.

उ०—ना कोई से न्यारा कहिये, नहि काहू के संगी । ग्यांनी जग में यूं निरलेपा, जैसे गगन असंगी ।—स्री सुखरांमजी महाराज

सं०पु०—ईश्वर (नां.मा.)

उ०—निरालंब निरलेप अनंत ईसर अविनासी । थावर जंगम थूळ सूछम जग निखिल निवासी ।—ह.र.

निरलोइ, निरलोई-वि० [सं० निर्+लोभिन्] निर्लोभी, निस्वार्थी ।

उ०—पांतरियां पहलोइ, जाय जुहारो जखड़ो । नरबीजा निरलोइ, आंख्यां तळ आवै नहीं ।—जखड़ा-मुखड़ा भाटी री वात

निरलोभ, निरलोभी-वि० [सं० निर्लोभ+रा.प्र.ई] जिसे लोभ न हो, लालच न करने वाला ।

उ०—१ राय तणी ते सेवा करइ, राति दिवस तीरइं संचरइ । राय तणइ मनि वसिउ अपार, निरलोभी नइ निरहंकार ।

—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ इण रा कई कारण हा जिणमें सबसूं पैंलो कारण हो ठाकरां री निरलोभी सुभाव ।—रातवासो

रू०भे०—नरलोभ ।

निरवंस-वि० [सं० निर्वंश] जिसका वंश नष्ट हो गया हो, जिसका वंश चलाने वाला कोई न हो। उ०—राजा किसनसिंघ उदैसिंघोत रै वेटा च्यार हुवा—सहसमल १ भारमल २ हरिसिंघ ३ जगमाल ४। भारमलजी रो वंस रह्यौ। तीन निरवंस गया।—बां.दा.ख्यात

रू०भे०—निरवंस।

निरवंसता-सं०स्त्री० [सं० निर्वंशता] निर्वंश होने का भाव।

निरवद्य-वि० [सं०] निर्दोष। उ०—निरवद्य एक उपाय छै, चउदे पूरव सार। जेह थी सहु सुख पामीये, नवपद स्रो नवकार।

—स्रीपाळ

रू०भे०—निरवद।

निरवपण-सं०पु० [सं० निर्वपण] दान (ह.नां., अ.मा.)

निरवलंब-वि० [सं०] १ जिसका कोई सहायक न हो, निराश्रय।

२ अवलंवनहीन, आधाररहित।

निरवह-वि० [सं० निर्‌वहनम्] १ निभाने वाला, पूरा करने वाला। उ०—लखधीर कुंअर सुलख्यणं, रज रीति काइम रख्यणं। वर वीर हेल हमीर, वडहथ वयण निरवहणं।—ल.पिं.

२ वहन करने वाला, धारण करने वाला।

उ०—कौसल्या सुख करण, नेतवंध दसरथ नंदणं। व्रत खत्रवट निरवहण, दुसट ताड़का निकंदण।—र.ज.प्र.

सं०पु०—१ निर्वाह, गुजारा।

२ समाप्ति।

३ निभाना या वहन करना क्रिया का भाव।

निरवहणौ, निरवहबौ-क्रि०स० [सं० निर्‌वहनम्] १ निभाना, पूरा करना, पालन करना।

उ०—१ ऊहड़ वागो आसुरां, 'भोज' अनै 'भगवांन'। पण निरवहियो पाट छळ, भुज ग्रहियो असमांन।—रा.रू.

उ०—२ चुरस चित व्रत नीत चारी, निरवहइ व्रत हेक नारी।

—र.ज.प्र.

उ०—३ निरवहइ व्रति रोजा निवाज। वंवळीवाळ के तवलबाज।

—रा.ज.सी.

क्रि०अ०—२ चलना, निभना।

उ०—निमिख पल वसंत रै विखै रात्रि अर दिन सरीखा निरवहै छै। एकै थे एक कहु' वात जणावै नहीं छै।—वेलि. टी.

निरवहणहार, हारौ (हारी, निरवहणियौ—वि०।

निरवहिओड़ौ, निरवहियोड़ौ, निरवह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निरवहीजणौ, निरवहीजबौ—कर्म वा०।

निरवहणौ, निरवहबौ—रू०भे०।

निरवहियोड़ौ-भू०का०कृ०—निभाया हुआ, पूरा किया हुआ, पालन किया हुआ।

(स्त्री० निरवहियोड़ी)

निरवांण-सं०पु० [सं० निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष।

उ०—१ पाया पद निरवांण, काळ नहिं लूट हो। हरिया होय हुसियार, पूगा गुरु भेट हो।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ सिर संती जिणेसर, सेवत ही सुखखांण। इण भव लहै लीला, परभव पद निरवांण।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ अगन-सोर है मरण आहिव, नारद वेद भणै निरवांण। फिर फिर लियै अछर वर फेरा, अजमेरा परणै आरांण।

—गोपाळदास गौड़ री वारता

२ शुद्धचेतन, परब्रह्म।

उ०—१ सब्द ही मुसलमांन कुरांणा, सब्द ही जैन बखांणा। सब्द सरब मतांतर कहिये, सब्द परे निरवांणा।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ निरालंब निरवांण निरंतर, सब प्रकासी वोई। सोई सुखरांम सुधातमा चेतन, मत बुध लखै न मोई।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०— विष्णु वोह दिन हुवा पोढ़िया, न जगै निरवांणो। चिंता नहीं लिगार मन, साहिब सुभियाणं।—गजउद्धार

३ न रह जाने का भाव, समाप्ति।

४ शून्य। उ०—सांख्य जोग निज ग्यांन कहीजै, सार असार पिछांणै। मिथ्या त्याग सत्त को संग्रह, औ विहंग राह निरवांणै।

—स्री हरिरांमजी महाराज

५ शान्ति। उ०—पुहपावती जइ तइं पुहंता, कुंदण पुरू मेल्हांण। गूझ तणा गुण गोव्यंद वाचई, नयण भर्‌या निरवांण।

—रुकमणी मंगळ

६ प्रथम गुरु के डगण के द्वितीय भेद का नाम (डिं.को.)

७ चौहान राजपूत वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

वि—१ बिना वाण का।

२ शून्यता को प्राप्त।

३ निश्चल।

४ स्वर्ग ले जाने वाला, स्वर्ग में प्रवेश कराने वाला, स्वर्ग्य।

उ०—गौ-डंडा कपटी-नरां, वेड गयां विरचंत। पुर-पंथां उत्तम-नरां, ले निरवांण चढ़ंत।—अज्ञात

५ मरा हुआ, मृत।

रू०भे०—नरवांण, नरवांण, निवांण, निरवांण, निरवांणी, निरवांणि, निरवांणी, निरवांणु, निरवांणू, निवांण, निव्वांण।

अल्पा०—निरवांणी।

निरवांणि-क्रि०वि०—१ निःसंदेह, अवश्य। उ०—तु तां पापी नुं देह पडज्यो, जाज्यु एह ना प्रांण रे। एहवूं किहितां मरण तो पांम्यु, अधम व्याधि निरवांणि रे।—नळाख्यांन

२ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—अरसीमेर विजेसी वळी, सांगउ सिङार सलूणउ मिळी। जेसल लखमण लूणउ जांणि, ए नौसत नाठा निरवांणि।

—कां.दे प्र.

निरवांनी—देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—१ यां तो नहीं निरवांनी वांणी, नहीं उरे नहीं पर रे। सो सुखराम सदाई चेतन, अज अविनासी रह रे।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ आतम आप आप मांही पूरण, निसफंद है निरवांणी। चित मकंद वातें फुरिया, ज्यूं बांझ पुत्र प्रगटांणी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ सतगुरु मिळ्या सहज घर पाया, बिछड्या हंस मिळाया। उलटा सहज आप में मिळग्या, पद निरवांणी पाया।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—४ तूं जोगी जाहर अलख, निरगुण निरवांणी।

—केसोदास गाडण

निरवांणु—देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—सांभळी नेमि निरवांणु चारण ए सवहण सुणि वयणि।

—पं.पं.च.

निरवांणो—देखो 'निरवांण' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—संसार ना सुख असासता, एक सासता सुख निरवांणो रे। जो डर राखो परभव तणो, नव तत्व हिरदै आंणो रे।

—जयवांणी

निरवांनी—देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—१ नित निरवांनी थकत सब वानी, आपोई आप अनूप।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ निज स्वरूप मम अज अविनासी, निर उपाधी सुख कंदा रे। कहि सुखरांम निरवांनी वांनी, अपणा आप लखंदा रे।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ कहि सब में आ वांनी, चेतन अमित अनूप अनंता। सोई सुखरांम है ग्यानी, निर धुंद निरवांनी सिधंता।

—स्री सुखरामजी महाराज

उ०—४ जियारांम गुरु साहब साचा, निरवांनी अरज चित लाई। जन सुखरांम साधु की संगत, सदा रहो सुखदाई।

—स्री सुखरांमजी महाराज

निरवाचक—सं०पु० [सं० निर्वाचक] निर्वाचन करने वाला।

निरवाचन—सं०पु० [सं० निर्वाचन] निर्वाचित करने का काम।

रू०भे०—निरवाचन

निरवात—वि० [सं० निर्वात] १ स्थिर रहने वाला, जो चंचल न हो।

२ जहां हवा का झोंका न लगे, जहां हवा न हो।

निरवासन—सं०पु० [सं० निर्वासन] १ दण्डस्वरूप गांव, शहर, देश आदि से बाहर निकाल देना, देश-निकाला।

२ निकालने की क्रिया या भाव।

३ विसर्जन, समाप्ति, भंग।

४ मार डालना, वध।

निरवाह—सं०पु० [सं० निर्वाह] १ गुजारा, पालन, निवाह।

२ पूरा होना, समाप्ति।

३ कही हुई या सोची हुई किसी बात के अनुसार बराबर आचरण, पालन।

उ०—१ एक हजार मुगळ सूर तैं सूरे, सहजादे की सनाह निरवाह के पूरे।—रा.रू.

उ०—३ केसरीसिंघ रामचंदोत सामंव्रत सूरा। पातसाह के वूझे निरवाह किया पूरा।—रा.रू.

४ संबंध या परंपरा की रक्षा। उ०—बारठ केसरिसिंघ सूं, अवखो 'सोनग' साह। खत्रि सपूताचार रो, थां हूंता निरवाह।

—रा.रू.

४ किसी परंपरा या क्रम का जारी रहना, किसी बात का चला चलना।

ज्यूं—कांम रो निरवाह, प्रेम रो निरवाह।

५ देखो 'निभाव' (रू.भे.)

रू०भे०—नरवाह, निरवाह, निवाह, निव्वाह।

निरवाहण—वि० [सं० निर्वाहनम्] निभाने वाला, निर्वाह करने वाला।

उ०—आपणपा सयण तेडिया आह(व)इ, लांजउ घणी निरवाहण लाज। वर ईसर जगनाथ अणवर, प्रेम तणी ताइ बाधी पाज।

—महादेव पारवती री वेलि

निरवाहणौ, निरवाहबौ—क्रि०स० [सं०] १ निर्वाह करना, पालन करना, निभाना।

उ०—१ निरवाहै पण आपणो, जे चाहै जसवास। मांगण ज्यां हूंता मिळै, नंह जावही निरास।—बां.दा.

उ०—२ प्रथम दळ आरंभ पतसाहे, साह दरीखंम बीड़ौ साहै। वदिया वयण जिकै निरवाहै, गढ़ सिवियांण 'कलै' पड़ गाहै।

—प्रिथीराज राठौड़

२ उत्तरदायित्व लेना, वहन करना, झेलना, सहना।

उ०—१ तांहरां ओढ़ै कह्यो—तो थे वाहर पालो, म्हे घोड़ा निरवाहिस्यां, ताहरां हांसू ऊभो रह्यो। ओढ़ै रै साथ घोड़ा निरवाह्या।—कूंगरै बळोच री वात

उ०—२ महाराजा स्री रायसिंघजी, रांणी स्री जसवंतदेजी, कुंवर पदवी पाळता सुख राजभार निरवाहतां रांणी स्री जसवत दे जी रै पुत्र रत्न ऊपना।—द.वि.

निरवाहणहार, हारौ (हारी), निरवाहणियौ—वि०।

निरवाहिओड़ौ, निरवाहियोड़ौ, निरवाह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निरवाहीजणौ, निरवाहीजबौ—कर्म वा०।

नरवाहणौ, नरवाहबौ, नरवाहणो, नरवाहबो, नरिवाहणौ, नरिवाहबौ रू०भे०।

निरवाहियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ निर्वाह किया हुआ, पालन किया हुआ, निभाया हुआ।

२ उत्तरदायित्व लिया हुआ, वहन किया हुआ, झेला हुआ, सहन किया हुआ।

(स्त्री० निरवाहियोड़ी)

निरविकल्प-सं०पु० [सं० निर्विकल्प] १ वह अवस्था जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय दोनों एक हो जाते हैं, दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता है (वेदांत)

२ बौद्ध शास्त्रों के अनुसार प्रमाणित माने जाने वाला ज्ञान जो न्याय के अनुसार इन्द्रियजन्य ज्ञान से बिल्कुल भिन्न होता है तथा अलौकिक व आलोचनात्मक होता है।

निरविकल्पसमाधि-सं०स्त्री० [सं० निर्विकल्पसमाधि] योग की सुषुप्ति अवस्था के समान एक समाधि जिसमें ज्ञानात्मक सच्चिदानंद ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई नहीं देता है तथा जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि का कोई भेद नहीं रह जाता है।

निरविकार-वि० [सं० निर्विकार] जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो, विकाररहित।

उ०—१ एक दोय के मांय है, भेदा भेद विकार। निरविकार निरधुंद में, नहीं निराकार आकार।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ अखिलेस अनूपम एक अज, अजरामर महिमा अजय। नित निरविकार निरभय निपुण, नारायण करुणानिलय।

—ऊ.का.

रू०भे०—निरबिकार, निव्विकार।

निरविघन, निरविघ्न-वि० [सं० निर्विघ्न] जिसमें कोई विघ्न न हो, विघ्नरहित, बाधारहित।

क्रि०वि०—बिना किसी प्रकार के विघ्न या बाधा के।

उ०—माता मोद मांन्यौ पिता मांन्यौ मोद पूरण, पुत्र जन्म निरविघ्न जन्म घरा जसधारा तें।—ऊ.का.

निरविचार-सं०पु० [सं० निर्विचार] बुद्धि को सर्व प्रकाशक और चित्त को निर्मल करने वाली एक प्रकार की सबसे उत्तम सबीज समाधि जो किसी सूक्ष्म आलंबन में तन्मय होने से प्राप्त होती है। इसमें उस आलंबन के केवल आकार का ही ध्यान रहता है, उसके नाम और संकेत का ज्ञान नहीं रहता है (योग दर्शन)।

वि०—जिसमें कोई विचार न हो, विचाररहित।

निरवितरकसमाधि-सं०स्त्री० [सं० निरवितर्कसमाधि] किसी स्थूल आलम्बन में तन्मय होने से प्राप्त होने वाली एक प्रकार की सबीज समाधि जिसमें आलंबन के केवल आकार का ही ज्ञान रहता है उसके नाम, संकेत आदि का कोई ज्ञान नहीं रहता है।

(योगदर्शन)

निरविधि-वि० [सं० निर्विधि] बिना विधि के, विधिरहित।

उ०—गतास्ट करम्म संबंध, निरविधि पुण्य प्रबंध।—व.स.

निरविवाद-वि० [सं० निर्विवाद] जिसमें किसी प्रकार का तर्क-वितर्क न हो, बिना विवाद का, बिना झगड़े का, विवादरहित।

क्रि वि०—बिना तर्क-वितर्क किए, बिना विवाद के।

ज्यूं—झगड़ौ निरविवाद निवड़ग्यौ।

निरविवेक-वि० [सं० निर्विवेक] जिसमें विवेक न हो, विवेकहीन।

निरविवेकता-सं०स्त्री० [सं० निर्विवेकता] निर्विवेक होने का भाव, नासमझी।

निरवीज—देखो 'निरबीज' (रू.भे.)

निरवृं-वि० [सं० निर्वृत] प्रसन्न, खुश। उ०—अगनाभिइं महमहतीय पहुतीय गउखि कुमारि। नयणि निरवूं ते निरखिय हरिखिय नेमि सा नारि।—नेमिनाथ फागु

निरवेग-वि० [सं० निर्वेग] गति या वेगरहित, जिसमें वेग न हो।

निरवेद—देखो 'निव्वेय' (रू.भे.)

निरवैर-वि० [सं० निर्वैर] जिसमें द्वेष न हो, वैररहित।

निरव्रती—देखो 'निरब्रती' (रू.भे.)

निरसंक—देखो 'निसंक' (रू.भे.)

उ०—१ निरसंक असुर निहारियौ, धनु-धारण धांनुस धारियौ। भुथांण बांधे करण भारथ, रोस धर रघुवीर।—र.रू.

उ०—२ निज करम परम निरसंक व्है, बीदग धरम बजावणूं। हित हरख सवाया पूंण हुय, लूण न कदै लजावणूं।—ऊ.का.

निरसंध, निरसंधि-वि०—संधिरहित, संधिविहीन।

उ०—निरसंध नूर अपार है, तेज पुंज सब मांहि। दादू ज्योति अनंत है, आगो-पीछो नांहि।—दादूबांणी

रू०भे०—निर्रसिध।

निरसंसै-वि० [सं. निर्+संशय] संशयरहित।

उ०—निरसंसै निरदंद जोर नहि जेर न जरणा। नाद बिंद नहि जीव, जनम नहि अवधि मरणा।—ह.पु.वा.

निरस-वि० [सं०] १ निम्न, हल्का, छोटा।

उ०—मुरधर माथासरौ, जिकौ थारौ हूं जांणूं। तूझ वडेरां तणी, विगत कह कह वखांणूं। हाथां हळ हाकता, नार करती नेदांणी। निरस घरां सनमंध, कदै ठकुरात न जांणी।

—अरजुणजी बारहठ

२ जिसे यह संसार रसमय न लगे, जो रसिक न हो, विरक्त।

३ जिसमें स्वाद न हो, फीका, बदजायका।

४ रूखा-सूखा।

५ जिसमें सार न हो, असार, निस्तत्व।

६ जिसमें रस न हो, बिना रस का, रसविहीन।

रू०भे०—निरस्स, नीरस।

अल्पा०—निरसौ।

निरसण-सं०पु० [सं० निरसन] दूर करना, हटाना क्रिया।

उ०—सुरगारोहण पण निरसण नवसूती। सूधी लहु सूती सूती बहु सूती।—ऊ.का.

निरसहाय—देखो 'निसहाय' (रू.भे.)

निरसिंघ—देखो 'निरसंघ' (रू.भे.)

उ०—जन हरिदास हरि नां भजै, नारायण निरसिंघ। पड़त पड़त पड़ि पड़ि घरद, भरत करत भए भ्रंध।—ह.पु.वा.

निरसिंह—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.)

उ०—नमो नमो रमता रांम, नारायण निरसिंह। सकळ निरंतरि नरहरि, निरवांण निरविग्रह।—ह.पु.वा.

निरसो—देखो 'निरस' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—एक बुरो भ्रहिकार, भरम निरसो भाखीजे।—पी.ग्रं.

निरस्त-सं०पु० [सं०] १ समाप्त करना क्रिया का भाव, मिटाना, नाश। उ०—पाछै सूं यटाह भी उठै ही पूगो जठै भ्राकास सरस्वती कहियो। भ्रवंती रै भ्रधीस विक्रम विभाकर धारो दुख निरस्त कीधो।—वं.भा.

२ बिगाड़ा हुआ, निराकृत।

निरस्स—देखो 'निरस' (रू.भे.)

निरस्साग्र, निरस्साय-वि० [सं० निःस्वाद] जिसमें स्वाद न हो, स्वाद-रहित (जैन)

निरहार—देखो 'निराहार' (रू.भे.)

उ०—एक वांम भ्रंगुस्ठ भ्राधारैं। नव दिन राति रहै निरहारैं।
—सू.प्र.

निरांत, निरांति—देखो 'नेरांत' (रू.भे.)

उ०—प्रभु न मुद्रा देखिनइ रे, मुझनइ थइ रे निरांति। हिव सेवा करिवा तणी रे, मनड़ा मइं छइ खांति।—वि.कु.

निराउध—देखो 'निरायुध' (रू.भे.)

उ०—निराउध कियो तदि सोनांनांमो, केस उतारि विरूप कियो। छिणियै जोवि जु जीव छंडियो, हरि हरिणाखी पेखि हियो।
—वेलि.

निराकरण-सं०पु० [सं०] १ किसी दलील या युक्ति को काटने का काम, खण्डन।

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

२ किसी बुराई को दूर करने का काम, निवारण, परिहार, शमन।

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

३ दूर करने या हटाने का काम।

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

४ रद्द करने या मिटाने की क्रिया या भाव।

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

५ भ्रलग करने या छांटने की क्रिया या भाव।

क्रि०प्र०—करणो।

निराकरणो, निराकरबो-क्रि०स० [सं० निराकृतम्] परित्याग करना, दूर करना, हटाना। उ०—रिसहि राज्यरुळा धुरि भ्रादरी। भ्रवरि मूळ नगइ म निराकरी।—जयसेखर सूरि

निराकार-वि० [सं०] जिसके भ्राकार की कोई भावना न हो, जिसका कोई भ्राकार न हो। उ०—१ वे तो भ्रगम भ्रगोचर कहियै, रांड ब्रह्म'ड पारा। दिस्ट-मुस्ट में भ्रावत नाहीं, निराकार निरधारा।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ धरणी नीर तेज वायु नभ, सबे सता प्रकासी। निराकार भ्राकार में पूरण, नहिं भ्रावै नहिं जासी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

सं०पु०—१ ब्रह्म ईश्वर। उ०—१ प्रथम जळजळाकार हुतो तिहां निरंजन निराकार वडपात मांहि पोढ़िया हुता।—द.वि.

उ०—२ निराकार निरलेप निगम निरदोस निरंजन, दीरघ दीन-दयालु देव दुख-दाळद-भंजन।—ऊ.का.

२ ब्रह्मा।

३ भ्राकाश, शून्य।

रू०भे०—नराकार, निरंकार, निरकार, निरकारि, निरीकार।

भ्रल्पा०—निरकारो।

निरकारो—देखो 'निराकार' (भ्रल्पा., रू.भे.)

उ०—निराकारो कावै कहत, नहिं भ्रावै तन नमो। निराधारो धारो जपत, जस गावै जन नमो।—ऊ.का.

निराक्रंद-वि० [सं०] १ जो सहायता या रक्षा न करे, जो फरियाद या पुकार न सुने।

२ जिसकी कोई रक्षा या सहायता न करे, जिसकी फरियाद या पुकार न सुनी जाय।

३ जहां कोई सहायता या रक्षा करने वाला न हो, जहां कोई फरियाद या पुकार सुनने वाला न हो।

निराखर-वि० [सं० निरक्षर] १ जिसे भ्रक्षर-ज्ञान न हो, जिसे भ्रक्षरों का बोध न हो, भ्रपढ़।

२ जिसमें भ्रक्षर न हो, बिना भ्रक्षर का।

३ बिना भ्रक्षर या शब्द का मौन।

निराट-वि० [देशज] १ बहुत।

उ०—१ बेह कळायां बाधरी, घड़ी भयंकर घाट। मूसळदंता मेंगळां, नित डर रहै निराट।—बां.दा.

उ०—२ धांन न भावै नींद न भ्रावै, चिंता लगी निराटां। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, देख देख हिय फाटां।—मीरां

२ सूक्ष्मतम, भ्रति सूक्ष्म। उ०—कहै दास सगरांम, कांम माछर रो करड़ो। मोटो होय तो करै पापी, भ्रो पिरथी परड़ो। पिरथी रो परड़ो करै, ऐड़ो देख्यो घाट। भ्राछी कीवी रांमजी, नैंनो कियो निराट। नैंनो कियो निराट, तो ही कररावै बरड़ो। कहै दास-सगरांम, कांम माछर रो करड़ो।—सगरांमदास

३ केवल, मात्र, सिर्फ। उ०—सबळा संपट-पाट, करता नह राखै कसर। निबळां एक निराट, रांम तणो बळ 'राजिया।
—किरपाराम

४ जबरदस्त, महान्। उ०—नभ घरां घूमरां भड़ निराट। घूमरां उडै भिड़ भिड़ज घाट।—वि.सं.

क्रि०वि०—१ बिलकुल, निपट। उ०—१ मावड़िया अंग मोलिया, नाजुक अंग निराट। गुपत रहै ऊमर गर्म, खाय न निज-बळ खाट। —बां.दा.

उ०—२ कर जोड़े भाळ कंवर, नटियौ साच निराट। साहै हठ तौ भी 'सतो', पांण घरियौ पाट।—वं.भा.

उ०—३ ताहरां फेर रांमदांन कह्यौ, भाई, सागी कुंवर छै। मुजरौ करौ। ताहरां निराट कन्है जाय ऊभा रह्या।

—पलक दरियाव री वात

रू०भे०—नराट, नराठ, निराठ।

निराठ—देखो 'निराट' (रू.भे.)

उ०—१ गोधूळक वेळा हुई। हीरू लिखमजी री पूजन करण बैठो। कयो—मा, मा! तूं मा हो'र पखपात कियां करण लागगी? कठैई सांमगरी री ठाट अर कठैई सांसौ निराठ? मा! आज किताक थारी साची पूजा करसी?—वरसगांठ

उ०—२ अमरसिंह गजसिंह रै बडौ कुंवर। सांचोर रा चहुवांणां री दोहितो। सो गजसिंहजी री रजा नहीं। अमरसिंह निराठ सारी बात में अव्वल वडौ देसोत, मांटीपणै री आंक।

—अमरसिंह राठौड़ रा वात

उ०—३ राव मालदेव निराठ टणका मोटा सिरदार हुवा, तद बादसाह राव रौ खिताब दियौ।—राजसिंह कूंपावत री वात

उ०—४ कुंवरजी घोड़ा दोय च्यार मोल लेवौ, निराठ घोड़ां बिनां सरै नहीं।—सुंदरदास भाटी री वात

उ०—५ वडौ रीठ वाजियौ। सीधा मुंहडां आयकर भिळिया, फेर मोटा बोल बोलियोड़ा था सो निराठ नतीठा बाजिया।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

निराणंद—वि० [सं० निरानन्द] आनन्दरहित (जैन)

निरांतक—वि० [स०] १ भयरहित, निर्भय।

उ०—निरांतक निज अनिर सुभाऊं, नहिं जागत नहिं सूता। नहिं वे जीवत नहिं वे मरता, नहिं दीरघ नहिं लघुता।

—स्रो सुखरांमजी महाराज

२ मृत्युरहित। ३ बिना रोग का, नीरोग।

स०पु०—रावण का एक पुत्र।

निरात—देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)

निरातप—वि० [सं०] आतपरहित, शीतल, ठंडा।

उ०—ढाळ ढोलिया लोग, ठोड़ इण ठंडी छाया। उस्णकाळ रो भोग, गिणै ना गांवां जाया। पंचायतड़ी जोड़, जुड़ै सै आथण तांई। नीम निरातप व्रिक्ष, संतोखै ऊपर सांई।—दसदेव

निराताळ, निराताळां, निराताळा, निराताळी, निराताळौ—वि०

१ बहुत, अत्यन्त, अधिक। उ०—१ मरण गिणै तिल-मांन, हाथ जीव हाजर रहै। औघट घाट अताळ, निराताळ म्हांखे निडर।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ भयंकर। उ०—लपटां कराळ झाळ तोपां आसमांन लागी, दैव बोम जागी कीधां प्रळै-काळ दीठ। नाराजां उनागी ठाळ त्रमागी तराळ नेजा, राठौड़ां गनीमां वागी निराताळ रीठ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

क्रि०वि०—निर्भयता से, निधड़क होकर, बेखटके।

उ०—उडै पग हात किरका हुवै अंग रा, बहै रत जेम सांवण बहाळा। आप-आपौ वरी जोयनै आडियां, लड़ै रिण भलभला निराताळा।—र.रू.

रू०भे०—नताळ, नराताळ, नराताळां, नराताळी, नराताळौ, नराळ, निताळौ, निरताळ।

निरादर—सं०पु० [सं०] आदर न करने का भाव, आदर का अभाव, बेइज्जती, अपमान।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

निरादेह—वि० [सं० निर्देह] देहरहित, निराकार, अव्यक्त।

उ०—रस रोग भोग जोगी नहीं, निरादेह निरवास। वरण विवरजित कहि अकहि, उदर उवर नहि सास।—ह.पु.वा.

निराधार—वि० [सं०] १ जो सहारे पर न हो या जिसे सहारा न हो, आश्रय व अवलंबरहित।

२ जो प्रमाणों द्वारा सत्य साबित न हो, झूठ, मिथ्या, बेबुनियाद, अयुक्त।

३ जो अन्न, जल आदि ग्रहण किया हुआ न हो, जो बिना अन्न आदि के हो।

४ जिसे जीविका आदि का सहारा न हो, जिसमें जीवन-निर्वाह सम्बन्धी आश्रय न हो।

५ मायिक विषयों के आश्रय से रहित। उ०—जब निराधार मन रह गया, आतम के आनंद। दादू पीवै रांमरस, भेटै परमानंद।

—दादूवांणी

६ जो किसी आश्रय से परे हो, जिसे किसी आश्रय या आधार की आवश्यकता न हो (परब्रह्म, ईश्वर)।

उ०—१ निराधार निज भक्ति कर, निराधार निजसार। निराधार निज नांम ले, निराधार निराकार।—दादूवांणी

उ०—२ निराधार निज रांम रस, को साधू पीवणहार। निराधार निरमळ रहै, दादू ग्यान विचार।—दादूवांणी

रू०भे०—निरधार।

निरानंद—सं०पु० [सं०] १ आनन्द न होने का भाव, आनन्द का अभाव।

२ कष्ट, पीड़ा, दुःख।

वि०—१ जिसे आनन्द न हो, आनन्दरहित।

२ जहां आनन्द न हो।

निरापद-वि० [सं०] १ जहां किसी प्रकार का खतरा या डर न हो, जहां किसी तरह की विपत्ति या अनर्थ की आशंका न हो।
२ जिसे कोई आफत या भय न हो, जिसे कोई आपदा न हो, सुरक्षित।
३ जिससे अनर्थ या हानि की सम्भावना न हो, जिससे किसी तरह की विपत्ति आने की आशंका न हो।

निरापेखी, निरापेखी-वि० [सं० निर्+पक्ष] वह जो किसी का पक्ष न ले।
उ०—श्री सोभागचंद सेवग निरापेखी है। मिसरजी नैं जांणै जिसा इजसी।—मि.द.

निराब-वि० [सं० उप० नि:+फा० आब] आभारहित, कांतिहीन।
उ०—परा केतकी केवड़ा वास पावै, अनेकां जणां दूर सौरंभ आवै। नमै निद सानंद कूंदं गुलाबं, निरक्खे हुवै इंद्रवाही निराबं।—रा.रू.

निरामय-वि० [सं०] जो रोगी न हो, नीरोग, तन्दुरुस्त।
उ०—अनांमय अव्यय अक्षय आप। निरामय निरभय नाथ अनाथ।
—ऊ.का.

सं०पु०—१ ईश्वर। उ०—नमो नमो परब्रह्म परमगुरु नमस्कारं, आत्मारांम, परमात्मा, प्राणनाथ, परम पुरुस, निरंजन निराकार, निरामय, निरविकार, निराधार, अविनासी।—ह.पु.वा.
२ सूअर।
३ जंगली बकरा।

निरामिस-वि० [सं० निरामिष] १ जिसमें मांस न हो, मांसरहित।
२ जो मांसाहारी न हो, जो मांस न खाय।
३ धन-धान्य से रहित (जैन)

निरामूळ-सं०पु० [सं० निर्+मूल] १ वह जिसका कोई उत्पत्ति स्थान न हो, ईश्वर। उ०—अद्रिस्टि अखिर अरूप, अग्राह निरमोह सप्यार। निरामूळ निरधार, निकुळ निरपख निजसारं।—ह पु.वा.
२ देखो 'निरमूळ' (रू.भे.)

निरामोह-वि०—मोहरहित।
उ०—अलिप अछिप जहां तहां छिपा, छाया पड़ै न छोह। सकळ भवन पति सति सदा, निरामोह निरदोह।—ह.पु.वा.

निरायुध-वि० [सं० निरायुध] १ अस्त्र-शस्त्रविहीन, बिना अस्त्र-शस्त्र का, नि:शस्त्र, निरस्त्र।
रू०भे०—निराउध।

निरारंभ-वि० [सं०] आरम्भ से रहित (जैन)

निरार—देखो 'निराळ' (रू.भे.)

निरालंब-वि० [सं०] १ बिना आलम्ब या सहारे का, निराधार।
उ०—१ उत्पति थिति लय नहीं ज्या में, कारण कारज विलांणी। संत सुखरांम आतमारांमी, निरालंब निरवांणी।
—श्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ निरालंब निरलेप, अनंत ईसर अविनासी। थावर जंगम थूल, सुखम जग निखिल निवासी।—ह.र.
उ०—३ नाथ निरालंब निराकार प्रांण हंदा प्रांण।
—केसोदास गाडण
उ०—४ रहिस निरालंब एकलो, तज काया मझ वास। साधी तैं दिन संतघर, सुरग तणौ पंथ सास।—ह.र.
२ बिना ठिकाने का, निराश्रय।
सं०पु०—पर-ब्रह्म।
रू०भे०— निरलंब।

निराळ, निराल-वि० [सं० निर+आहार] जिसने कुछ भी खाया या पीया न हो, निराहार, भूखा।
२ देखो 'निराळो' (मह; रू.भे.)
उ०—१ अनंक न संक न धंक न धीस, अवास न वास न आस न ईस। निराळ न काळ त्रिकाळ-नरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।
—ह.र.
उ०—२ तुरियै तत्व अखंडी चेतन, सबही दिखावै ख्याल। ख्याल मांयै नहिं ख्याल स्वरूपी, रहता आप निराळ।
—श्री सुखरांमजी महाराज
रू०भे०—नराळ, निरार।

निराळस-सं०पु० [सं० निरालस] जो आलसी न हो, जिसमें आलस्य न हो, चुस्त, फुरतीला, तत्पर।
उ०—आळस न राख्यो अंग निराळस चाल्यो नेक, काळस न लागी काया साळस सफाई तैं।—ऊ.का.

निराळु, निरालु, निराळो, निरालो-वि० [सं० निरालय]
(स्त्री० निराळी, निराली) १ अनोखा, अपूर्व, अनुपम, भव्य।
उ०—निराळो फबै फूटरो भूंठ नांही। मनो मेर रो कूट वैकुंठ मांही।—मे.म.
२ अजीब, अद्भुत, विलक्षण, विचित्र। उ०—१ अनंग न अंग उमंग इलोळ, हरी पद संगम गंग हिलोळ। निराळिय नीति उदंगळ नांय, मुनि किय मंगळ जंगळ मांय।—ऊ.का.
उ०—२ निरत सुरत पाया निवास, निजतंत निराळा।
—केसोदास गाडण
३ जिसकी जोड़ का दूसरा न हो, अद्वितीय, विशिष्ट।
उ०—रूठी दळां केवियां कै, छूटी सांकळां सूं सेर, उलवकापात रो तारो, तूटो आसमांण। जोसेल कंवारी घड़ां, छैल केळ माथै छूटो, खंडाळां निराळा एम, दूसरो खूमांण।—बुधसिंह सिढ़ायच
४ अलग, पृथक, जुदा, तटस्थ। उ०—१ कोई आज पाछै आंट राखै वैर गावै। सो ही खांप दोनां सूं निराळी होय जावै।
—शि.वं.
उ०—२ सरणागत पाळो हो लाल, अंतर दुख टाळो हो। तुं तउ माया गाळो हो लाल, म्है मोसूं निराळो हो।—वि.कु.
५ जहां बस्ती या मनुष्य न हो, निर्जन, एकान्त।

उ०—निरालु एक ठांम जोई मंहिलि याहारि राय। सरप एणी पिरि वोलियु: जु दया मन मांहां थाय।—नळाख्यांन

सं०पु०—वस्ती या मनुष्यों से रहित स्थान, एकान्त स्थान, निर्जन स्थान।

रू०भे०—नराळो, नीराळो।

मह०—निराळ, निराल।

निरावर-सं०पु० [सं०निर्+रव] शब्द (अ.मा.)

निरावलंब-वि० [सं०] विना अवलंब का, बिना सहारे का, निराधार।

निरास-वि० [सं० निराश:] १ जिसे आशा न हो, नाउम्मीद, आशाहीन। उ०—१ निरवाहै पण आपणो, जे चाहै जसवास। मांगण ज्यां हूंता मिळै, नंह जावहो निरास।—वां दा.

उ०—२ सो उडीक निरास थकी अपणैं घर आई, इब खरी उदास रहै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ इतरी सुण सुमित्र निरास होय हालियो।

—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—निरासी।

२ देखो 'निरासा' (रू.भे.)

उ०—१ गति ग्यांन विग्यांन गुनागार बहै, सत्य ध्यांन विधांन सु सागर बहै। बसु आस निरास सुवास वसै, लख खास विनास उदास लसै।—ऊ का.

उ०—२ निर्भ नद आस न आस निरास, वस्यौ हरिरांम अभैपद वास। दुरासद मारण त्रास दुकाळ, सुधा झड़ि वारह मास सुकाळ।

—ऊ.का.

रू०भे०—नीरास।

निरासा-सं०स्त्री० [सं० निराशा] आशा न होने का भाव, आशा का अभाव, नाउम्मेदी। उ०—बडी बडी आसा वही, हुई निरासा हेर। विखम दास के वेव तैं, गिरधो रसा गिरमेर।—ऊ.का.

रू०भे०—निरास।

निरासिस-वि० [सं० निराशिष] १ आशीर्वाद का अभाव, आशीर्वादशून्य।

२ तृष्णारहित, इच्छारहित।

निरासी-वि० [सं० निराशिन्] १ जो आशा न रखता हो, तृष्णारहित।

२ देखो 'निरास' (रू.भे.)

निरास्रय-वि० [सं० निराश्रय] १ विना आश्रय का, बिना सहारे का, आश्रयरहित।

२ जिसे कहीं ठिकाना न हो, निराधार।

३ जिसे मोह न हो, जिसें शरीर आदि पर ममता न हो, निर्लिप्त।

निरहपण-सं०पु० [?] १ निराशापन। उ०—पतसाह रहे गहपूरियौ, सुर निराहपण संधियौ। खित गई ठौड़ ठौड़ां खबर, वळ राठौड़ां वंधियौ।—रा.रू.

निराहार-वि० [सं०] १ जिसने कुछ खाया न हो।

क्रि०प्र०—होणौ।

२ जो कुछ न खाय, जो विना भोजन के हो, आहाररहित।

क्रि०प्र०—रैणौ।

३ जिसमें भोजन करने का निषेध हो, जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाता हो।

निरीकार—देखो 'निराकार' (रू.भे.)

निरीक्षक-सं०पु० [सं०] देख-रेख करने वाला, जांच करने वाला।

निरीक्षण, निरीक्षिण-सं०पु० [सं० निरीक्षण] १ देख-रेख, निगरानी।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

२ देखना, दर्शन।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

वि० [सं० नीरक्षण] रक्षा से रहित। उ०—रमइं रमापति रागिय आगिय आंपणइ पासि, तीणि छळइं नवि छीपइ ए दीपइ ए ग्यांनप्रकासि। तउ अवतरिउ रितुपति लपति सु मन्मथपूरि, जिम नारीय निरीक्षण दक्षिण मेल्हइ सूरि।——नेमिनाथ फागु

निरीखणौ, निरीखबौ—देखो 'निरखणौ, निरखबौ' (रू.भे.)

उ०—१ निरधार मूरति नयणे निरीख, समयसुंदर गुण गावइ हरीख।—स.कु.

निरीखियोड़ौ—देखो 'निरखियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निरीखियोड़ी)

निरीति-वि० [सं०] अति वृष्टि आदि से रहित।

निरीस-वि० [सं० निरीश] १ जो ईश्वर में विश्वास न करे, जिसकी समझ में ईश्वर न हो, नास्तिक अनीश्वरवादी।

२ बिना स्वामी का, बिना मालिक का।

[सं० निरीष] ३ हल का हरिस (डि.को.)

निरीस्वरवाद-सं०पु० [सं० निरीश्वरवाद] ईश्वर का अस्तित्व अस्वीकार करने का सिद्धान्त।

निरीस्वरवादी-सं०पु० [सं० निरीश्वरवादी] ईश्वर का अस्तित्व नहीं मानने वाला।

निरीह-वि० [सं०] १ जो सब बातों से किनारे रहे, उदासीन, विरक्त।

उ०—विस्रांम व्यूढ़, गोतीत गूढ़। निरगुण निरीह, आधार ईह।

—ऊ.का

२ जिसे किसी बात की चाह न हो।

३ जो किसी झगड़े आदि में न पड़े, तटस्थ।

४ शान्तिप्रिय।

५ जो किसी बात के लिए प्रयत्न न करे, चेष्टारहित।

अल्पा०—निरीहौ।

निरीहा-सं०स्त्री० [सं०] १ चाह या इच्छा न होने का भाव, विरक्ति।

२ प्रयत्न न करने का भाव, चेष्टा का अभाव ।

निरीहौ—देखो 'निरीह' (मह०, रू.भे.)

उ०—तेह गछ सिरि जिणप्रभ सूरि, मुणिवरो अति निरीहो । श्रीमुनि सर्वहित पाटमाहि, विविह परि सुणि सोहो ।
—ऐ.जै.का.सं.

निरक्त, निरक्ती, निरुक्त-सं०स्त्री० [सं० निरुक्त, निरुक्ति:] वेद के छः अंगों में से एक (डि.को.)

निरजसिंह-सं०पु० [सं०] एक प्रकार की तपस्या, तपस्या विशेष (जैन)

वि०वि०—आठ उपवासों के बाद एक आचाम्ल से पारणा किया जाता है । यह व्रत कृष्ण पक्ष में ही होता है ।

उ०—कनकावळि रत्नावळि मुक्तावळि सिंहविक्रीडित, महासिंह विक्रीडित, गुणरत्न संवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सरवतोभद्र यवमध्य चंद्रायण वज्रमध्य चंद्रायण आचाम्लवरद्धमान अस्टकरम-घातन सरवांगसुंदर निरजसिह परमभूसण सोभाग्यकल्पव्रिक्ष इंद्रिय-जय कसायजय योगसुद्धिप्रमुख तपो विसेस ।—व.स.

निरतउ, निरत्तउ—देखो 'निरतु' (रू.भे.)

उ०—१ देखिवि नेमि सु निरतउ, विरतउ भव सुहावसि, कान्हिडि माइ रमाडिउ, पाडिउ श्रीनइ पासि ।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ नवलख कुळि घणसोहनदणु सुप्रसिद्धउ, खेताहि तिय कुखि जाउ बहु गुणह समिद्धउ । बाळकाळि निज्जणवि मोह सजम सिरि रत्तउ, गोयम चरिय पयास करणु इणि काळि निरत्तउ ।
—अभयतिक यती

निरत्तर-वि० [सं०] १ जिसका कुछ उत्तर न हो ।

२ जो उत्तर न दे सके ।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

निरत्साह-वि० [सं०] जिसमें उत्साह न हो, उत्साहहीन ।

निरुद्ध-सं०पु० [सं०] योग में पांच प्रकार की मनोवृत्तियों में से एक ।

वि०—अवरुद्ध, रुका हुआ, बंधा हुआ ।

निरुद्यम-वि० [सं०] जिसके पास कोई धंधा या काम करने को न हो, जिसके पास कोई उद्यम न हो बेकाम, उद्योगरहित ।

निरुद्यमता-सं०स्त्री० [सं०] उद्योगरहित होने की क्रिया या भाव, उद्यम का अभाव, बेकारी ।

निरुद्यमी-वि० [सं०] जिसके पास कोई कार्य या धन्धा करने को न हो, जिसके पास कोई उद्योग न हो, निकम्मा, उद्योगरहित, बेकार ।

निरुद्योग-वि० [सं० निरुद्योगिन्] जो कुछ उद्योग न करता हो, जो उद्योग न करे, निकम्मा, बेकार ।

निरुद्योगी-वि० [सं० निरुद्यगिन्] जो कोई उद्यम न करे, जो कोई उद्यम न करता हो, बेकार, निकम्मा ।

निरुपक्रम-सं०पु० [सं०] पलायनरहित, ठप्प (?)

उ०—सिहगुहां पइसी कवण थाइ निसंक, सरप साधि घालिउ कवण थाइ निरवधान, प्रदीपन कि कवण निद्रा करइ, दुस्ट करि-स्कंध चडिउ कवण दिसि पखा राहइ, अंधकूप तडि बइठउ कवण ऊंघइ, काळकूट विसपानि कवण निरुपक्रम अछइ, संसार महारण्यि किम प्रमाद कीजइ ?—व.स.

निरुपद्रव-वि० [सं०] १ जो उपद्रव या उत्पात करने वाला न हो, जो उत्पात या उपद्रव न करता हो ।

२ जिसमें किसी प्रकार का उपद्रव न हो, जिसमें कोई उत्पात न हो ।

निरुपद्रवता-सं०स्त्री० [सं० निरुपद्रव+रा.प्र.ता] उपद्रव या उत्पातरहित होने की क्रिया या भाव, उपद्रव या उत्पात का अभाव ।

निरुपद्रवी-वि० [सं० निरुपद्रविन्] उत्पात या उपद्रव न करने वाला, जो उपद्रव या उत्पात न करे, शांत ।

निरुपम-वि० [सं०] जिसके समान और न हो, जिसकी उपमा न हो, बेजोड़, उपमारहित । उ०—पूगळ नयरी मरुधर देस, निरुपम पिंगळ नांमि नरेस । मारुवाडी नवकोटो धणी, उत्तर सिंधु भूमि तसु-तणी ।—ढो.मा.

रू०भे०—निरूपम, निरूवमी, निरोपम, नीरोपम, नीरोपमी ।

निरुपवाद-वि० [सं०] त्रुटिरहित, अपवादरहित ।

उ०—सिख्या नहीं वावि अनेक सत गावि, उत्तगतोरण प्रासाद, त्रिसंध्य सांभळीइ तूरयनिनाद, साकटिक तणा संवाद, लोक तणा प्रवाद, सुविसाळ पथिकसाळ, निरुपवाद प्रासाद, नाना प्रकार सप्राकार ।—व.स.

निरुपाधि-सं०पु० [सं०] ब्रह्म ।

वि०—१ बिना उपाधि का, उपाधिरहित, बाधारहित ।

२ माया से दूर, मायारहित ।

निरुपाय-वि० [सं०] १ जिसके लिए कोई युक्ति न हो, जिसका कोई उपाय न हो ।

२ जो किसी प्रकार की युक्ति लगाने में असमर्थ हो, जो कुछ उपाय न कर सके, जिससे कोई उपाय न हो सके ।

निरुहवस्ति—देखो 'निरूहवस्ति' (रू.भे.)

निरूंखौ-वि० (स्त्री० निरूंखी) जहां वृक्ष न हो ।

ज्यूं—आ जमी निरूंखी है ।

उ०—भाखर निरूंखौ छै ।—वां.दा.ख्यात

निरूढ़लक्षणा-सं०स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमें शब्द का गृहीत अर्थ रूढ़ हो गया हो ।

निरूतउ, निरूतऊ, निरूतु—देखो 'निरतु' (रू.भे.)

उ०—१ कांन हेठि कर करिउ जु सूतउ, तउ अम्हि कहीयइ करणु निरूतउ । इसीय वात मन भीतरि जांणी, गूझ न कहीउ कूंती रांणी ।—पं.पं.च.

उ०—२ भीमि कीचक तणा सवि मांन मोडी, देवी तणा बंधन सरव छोडी। तु दाप्र देई भीम वली पहुतु, नरेंद्र सयारपणइ निरूत्त।—विराटपर्व

निरूप-वि० [सं०] जिसका कोई रूप न हो, निराकार।

उ०—१ निरालंब निरलेप, अचळ चरणां चित धारं। हरि निरगुण निरछेह, वार नहिं लाभै पारं। अकळ अभेद अछेह, निरूप निरभै घर पाया। निराकार निरवांण, प्रांण मन तहां समाया।
—ह.पु.वा.

उ०—२ ऊंकार अपार रूप, नह पार प्रमांणं। तूंहीज रूप निरूप तूं, तूं गुण निगुण कहांणं।—गजउद्धार

उ०—३ उपज्या अग्यांन ज्यूं ई ग्यांना, ताते निसेध निरूप। गुणातीत विगत परे आतम, सरव विगत का भूप।
—स्री सुखरांमजी महाराज

सं०पु०—१ परब्रह्म, ईश्वर।

निरूपण-सं०पु० [सं०] १ विवेचनापूर्वक विचार, निर्णय।

उ०—१ निज आखं किव 'किसन' निरूपण, सुणो गाहा गुण दोस सुलछण। सात चतुरकळ अंत गुरु सज्ज, देह छठै थळ जगण तथा दुज।—र.ज.प्र.

उ०—२ किया निरूपण 'किसन' किव, गुण हर विघ विघ गीत। जड़ता दाघव कविजनां, जस राघव जगजीत।—र.ज.प्र.

२ दर्शन।

३ प्रकाश।

निरूपम, निरूपमी—देखो 'निरुपम' (रू.भे.)

उ०—१ नांव निरूपम परम सुख, जांणै विरला कोय। जन हरिदास ताकूं भजै, तब ही आनंद होय।—ह.पु.वा.

उ०—२ अनांमय अव्यय अक्षय आथ, निरामय निरभय नाथ-अनाथ। अनूप स्वरूप निकूप अलेख, निरूपम भूप न रूप न रेख।
—ऊ.का.

उ०—३ नितंबणी जंघ सु करभ निरूपम, रंभ खंभ विपरीत रुख। जुअळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणे वाखांणै विदुख।
—वेलि.

उ०—४ हुईय कांमिनि रूपि निरूपमी, रहिउ भीम तमी मुख वीसमी। बहुत भक्ष मनुक्ष करे करी, गयउ सो तडि कीचक सुंदरी।
—विराटपर्व

निरूपित-वि० [सं०] जिसकी विवेचना हो चुकी हो, जिसका निर्णय हो चुका हो, निरूपण किया हुआ।

उ०—भज रे मन रांम सियावर भूपत, अंग घणाघण सोभ अनूप। नीरज जात सुगाथ निरूपित, कोटिक कांम सकांम।
—र.ज.प्र.

निरूहवस्ति-सं०स्त्री० [सं० निरुह वस्ति] डाक्टरी एनिमा प्रणाली के समान वैद्यक में एक प्रकार की पिचकारी (वस्ति) जिससे एक विशेष प्रकार की नली द्वारा रोगी की गुदा में कुछ औषधियां पहुंच ई जाती हैं।

रू०भे०—निरुहवस्ति।

निरेखणो, निरेखबो-क्रि०स० [सं० निरीक्षण] निरीक्षण करना, देखना।

निरेखियोड़ो-भू०का०कृ०—१ निरीक्षण किया हुआ, देखा हुआ। (स्त्री० निरेखियोड़ी)

निरेजम-वि० [देशज] साहसहीन, नामर्द।

उ०—सत म्हांठोय नासत आयो सही। रजपूती निरेजम नांह रही। किम 'पाल' रसातळ डोर कटै। नरनाथ 'बूडा' पुळ एण नटै।
—पा.प्र.

निरेण—देखो 'नरेहण' (रू.भे)

निरेह-वि०—१ कृश ?

उ०—पोइण रा पांन तिसा कर पुणइ, नाळी जिम आंगळी निरेह। रूप अनूप विचाळइ रेखा, दिणियर जांहि ऊजळी देह।
—महादेव पारवती री वेलि.

२ देखो 'नरेहण' (रू.भे.)

निरेहण—देखो 'नरेहण' (रू.भे.)

उ०—१ अवतार लखप्पती एवहो, जस ग्राह 'जेहळ' जेहवो। मन-मोट निरेहण मंडळी, इळ मांहि खत्रीवट ऊजळी।—ल.पिं.

उ०—२ अलव घण सुयण मिणि खत्रीवट ऊजळी। मन-महण गुण-ग्रहण निरेहण मंडळी। दळ अकळ पासि निरमळ कमळ दोलती। पहसगह बिरिद बह खाटणी लखपत्ती।—ल.पिं.

उ०—३ कीत खग निरेहण उनड कळा।—क.कु.बो.

उ०—४ रुघनाथ निरेहण रेसण रांमण, डंबर मेलिय लंब दळं। मांडे महिरांण पाजि पखांण, बांण घनंख सझे सबळं।—पिं.प्र.

निरेहणा-वि० [सं० निरेषण] कामनारहित, इच्छारहित।

उ०—आकुळी सुरहि नोद सांभळी, जीह नइं मनि हूई भडांबळी। तीणि गांमि वसतइं लोक ना, नीर पूरवज लहइं निरेहणा।
—विराटपर्व

निरोग-सं०पु०—१ चंद्रमा, चंद्र (ह.नां. ना.डिं.को.)

२ देखो 'नीरोग' (रू.भे.)

निरोगता—देखो 'नीरोगता' (रू.भे.)

उ०—१ सुक्र निरोगता रो रोगियां नै अन्याय रा दुखियां नै पूरण औसध देय तगड़ा करणा।—नी.प्र.

उ०—२ निरोगता रो नास करै, निरख पराई नारी रे।—ऊ.का.

निरोगी—देखो 'नीरोगी' (रू.भे.)

उ०—१ देवी जरखणी भरखणी देव जोगी, देवी नूम्मळा भोज भोगी निरोगी। देवी मात जांनेसुरी ब्रम्ह मेहा, देवी देव चांमुंड संख्याति देहा।—देवि.

निरोगो—देखो 'नीरोग' (अल्पा., रू.भे.)

ज्यूं—निरोगै अंग रो है।

उ०—१ कब हूवो रनो चंगो, पायो मीठो स्वादो रे। कबही डोल निरोगो नागो, कब खाना तणो असमाधो रे। —जयवाणी
(स्त्री० निरोगी)

निरोध-सं०पु० [सं०] १ अवरोध, रुकावट, रोक, बंधन (उ.र.)
२ योग के अनुसार चित्त की समस्त वृत्तियों को रोकने का काम।
३ घेरने की क्रिया, घेरा।
४ नाश, ध्वंस।

निरोधणौ, निरोधबौ-क्रि०स० [सं० निरोधनम्] रोकना।
उ०—उलटा गंग काय सब सोधै। सुन्न मढळ में पवन निरोधै।
—ह.पु.वा.

निरोधणहार, हारौ (हारी), निरोधणियौ—वि०।
निरोधवाड़णौ, निरोधवाड़बौ, निरोधवाणौ, निरोधवाबौ, निरोधवावणौ, निरोधवावबौ, निरोधाड़णौ, निरोधाड़बौ, निरोधाणौ, निरोधाबौ, निरोधावणौ, निरोधावबौ—प्रे०रू०।
निरोधियोड़ौ, निरोधियोड़ौ, निरोध्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निरोधणौ, निरोधबौ—कर्म वा०।

निरोधन-सं०पु० [सं०] १ वैद्यक के पारे का छठा संस्कार।
२ अवरोध, रुकावट, रोक।

निरोधपरिणाम-सं०पु० [सं० निरोधपरिणाम] योग के अनुसार व्युत्थान और निरोध के मध्य होने वाली चित्त-वृत्ति की एक अवस्था।

निरोधियोड़ौ-भू०का०कृ०—रोका हुआ।
(स्त्री० निरोधियोड़ी)

निरोप—देखो 'निरोळ' (रू.भे.)
उ०—कुपरणि महा कुहाडि सदा धरइ आटोप, वइठी भरतार दिइ निरोप, खोइला हेठैं किंकिउ धरइ, मुहि सांम्ही चीवर वरइ, रांधणां सोधणां नितु मणाहर करइं, सकळ दिवस सूअर जिम चरइ।
—व.स.

निरोपम—देखो 'निरुपम' (रू.भे.)
उ०—तसु घरि नदन च्यारि निरोपम, पहिलउ धुरि धनसार। बीजउ बंधव बहुगुण भरिउ, वुद्धिवत गुणसार। त्रीजउ मूरतिवतउ सागर, सागर जिम गंभीर। चउथउ बंधव सुणि घनसागर, समरथ साहस धीर।—विद्याविलास पवाडउ

निरोळ, निरोल, निरोव-सं०पु० [प्रा० णिरोव] आज्ञा, आदेश।
उ०—मूक्यां सघळां सुरहां घोळ। जिमवांनउ हिव हूउ निरोळ। आव्या वास्या निरमळ नीर। आव्यां कर लूहेवा चीर।
—विद्याविलास पवाडउ

रू०भे०—निरोप।

निरोवर-सं०पु० [सं० नीरवर] समुद्र, सागर, जलधि (डि.को.)
उ०—मुकरम प्रौढि प्रौढि मैं मारग, मारग सुरग अवीरमई। पूरि हरिमेन एम पंसारघौ, निरोवरि प्रवसंति नई।
—वेलि.

निरोस-वि० [सं० नि+रोष] जिसे रोष न आता हो, शांत।
उ०—सीतळ पातळ मंदगत, अलप अहार निरोस। ऐ तिरियां में पांच गुण, ऐ तुरियां में दोस।—अज्ञात
रू०भे०—निरोह।

निरोह-सं०पु० [स० निरोधः, निरोधं] १ रोक, रुकावट।
उ०—अथ वरसा, आविउ आसाढ़, अंतरंग संबाढ़, काटईइ लोह, घांम तणउ निरोह, छासि खाटी।—व.स.
२ युद्धस्थल। उ०—'गजवंधी' नाहर गज्जे, दसणी गा कुंजर भज्जे। 'गजवंधी' निरोहे पूगा, मुख बारह सूरज ऊगा।
—ग.रू.वं.
३ देखो 'निरोस' (रू.भे.)

निरोहर-सं०पु० [सं० नीर-घर] समुद्र, सागर।
उ०—बिहां सूं हि हेकण लीधी बाथ। निरोहर मांय कियो जुध नाथ।—ह.र.

निरौ-वि० (स्त्री० निरी) १ बहुत, अधिक। उ०—सेठ ऊठ नै चाल्या गया, दिन निरौ-ई चढ़ग्यौ।—रातवासौ
[सं० निरालय] २ जिसके साथ और कुछ न हो, केवल मात्र।
३ बिना मेल का, विशुद्ध, खालिस।
४ बिलकुल, एकदम, निपट, नितांत।

निलंपका—देखो 'नलपिका' (रू.भे. अ.मा.)

निल—१ देखो 'निलै' (मह., रू.भे.)
उ०—नव नूर चढियो भड़ निलां। गढ लाज बांधो जिण गलां।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
२ देखो 'नीलौ' (मह,रू.भे.)
उ०—बाबहिया निल-पंखिया, मगरि ज काळी रेह। मति पावस सुणि विरहणी, तलफि तलफि जिउ देह।—ढो.मा.

निलइ—१ देखो 'निलै' (रू.भे.)
उ०—निलइ तणी महिमा निरखंतां, राज कुंआर तणउ तप व्याघ। मदन तणा सिहर चइ माथइ, बारइ तेज तपइ बांणाथ।
—महादेव पारवती री वेलि.
२ देखो 'निलय' (रू.भे.)

निलउ—देखो 'निलय' (रू.भे.)
उ०—१ पुहवि पसिद्धउ सूरि सूरिस्वर, सम दम संयम सिरि तिलउ ए। इणि कळिकाळहि एह जो जुगपवर, जिणवइ सूरि महिमा निलउ ए।—साह रयण
उ०—२ पीपलिगच्छि गरुउ गुण निलउ ए, वीरदेवसूरिहिं पाटि ए, अचळ वधामणूं ए।—विद्याविलास पवाडउ
उ०—३ मुगति निलउ जांणि करि, मुनिवर कोहि अनंत। इण गिरि आवी समोसर्या, सिद्ध गया भगवंत।—स.कु.
उ०—४ अस्टापद जिम अरचियइ, भरत भराया बिंबोजी। ग्वालेरइ गढथड़ि निलउ, बावन गज परलंबोजी।—स.कु.

उ०—५ स्री जिनभद्रसूरिसर भलउ, स्री जिनचंद्र सकळगुण निलउ।
—स.कु.

२ देखो 'निलै' (रू.भे.)

निलखणउ, निलखणो-वि० [सं० निर्लक्षणः] लक्षणहीन, गुणहीन। (उ.र.)

निलखणौ, निलखबौ-क्रि०स० [सं० नि+लिख्] अंकित करना, लिखना।

उ०—विहि अम्हारी वैरणी, पैला भव नी होय। सज्जन-सिउं सुख मांणीइ, निलवटि निलख्या जोय।—मा.कां.प्र.

निलखणहार, हारौ (हारी), निलखणियौ—वि०।

निलखाड़णौ, निलखाड़बौ, निलखाणौ, निलखाबौ, निलखावणौ, निलखावबौ—प्रे०रू०।

निलखिग्रोड़ौ, निलखियोड़ौ, निलख्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निलखीजणौ, निलखीजबौ—कर्म वा०।

निलखियोड़ौ-भू०का०कृ०—अंकित किया हुआ, लिखा हुआ।
(स्त्री० निलखियोड़ी)

निलज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

उ०—१ खीच रा डळा खावै खिसक, नींच तळा कुळ नाळ रा। नित मींच आंख वैठै निलज, भींच अमल भूपाळ रा।—ऊ.का.

उ०—२ दे दे दरसण दौड़ निलज भागै लै नारी।—ऊ.का.

निलजई, निलजता, निलजताई—देखो 'निरलज्जता' (रू.भे.)

उ०—नाच गाय कर निलजता, रच वप भूखण रास। मार निजारा मोहियौ, हंजो मुबरै हास।—बां.दा.

निलजौ—देखो 'निरलज्ज' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ नर तेथ निमांणा निलजी नारी, अकबर गाहक वट अवट। चोहटै तिण जाय'र चीतोड़ौ, वेचै किम रजपूत वट।
—प्रिथीराज राठौड़

उ०—२ नहिं बोलां तौ नीच, जो बोलां निलजा जपै। वसणौ दोजक बीच, जग हसणौ बाकी 'जसा'।—ऊ.का.
(स्त्री० निलजी)

निलज्ज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

उ०—१ हइ रे जीव निलज्ज तूं, निकस्यू जात न तोहि। प्रिय विछुड़त निकस्यउ नहीं, रह्यउ लजावण मोहि।—ढो.मा.

उ०—२ क्रिपण बराटक पावियां, नाटक करै निलज्ज। सुण जाचक खाटक करै, सब दिन फ़ाटक सज्ज।—बां.दा.

निलज्जौ—देखो 'निरलज्ज' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० निलज्जी)

निलन—देखो 'नलिन' (रू.भे.) (ह. नां)

निलय-स०पु० [सं०] १ स्थान, जगह।

२ घर, मकान (डि.को.)

उ०—जननी तुझ हस्त मस्तक जिह। त्रिदसालय सुख वसत निलय तिह।—मे.म.

३ समूह, पुंज।

४ देखो 'निलै' (रू.भे.)

रू०भे०—निलइ, निलउ, निलौ।

निलवट, निलवटि, निलवट्ट—देखो 'निलै' (रू.भे.)

उ०—१ धडछइ धार विट्रक हुवइ धड, खाग ग्रजाग वाव रण खेत्र। गण ग्राठै वाजिया विसमगति, निलवट सुर बांधियौ नेत्र।
—महादेव पारवती री वेलि.

उ०—२ वांम ग्रंगई ब्रह्म ऊभा, हूग्रा ग्रणवर इंद। दक्षणां दिसि ईस ऊभा, नाथ निलवट चंद।—रुकमणी मंगळ

उ०—३ सोभागी महिमा निलौ, निलवट पीपई नूर। नरनारी पाय कमळ नमइ हींडोळणा रे, प्रगटचो पुण्य पडूर।—स.कु.

उ०—४ नित नित कुमर वाधइ बहु लक्खणि, सुरतरु नउ जिम कंद रे। नयणी ग्रनोपम निलवट सोहइं, वदन पुनम नउ चंद रे।
—धरमकीर्ति

उ०—५ निलवटि तिलक जटित मुगताफळ, ग्रठुमि चंदि जेम तारा-वळि, ग्रागळि थई सेवंति तु, जय जय।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—६ निलवटि कस्तूरी-तिलक, म करिसि मुधि ग्रयांण। सहिजि ससिहर लेखवी, करसि राहु विनांण।—मा.कां.प्र.

उ०—७ भमहि चक्र कोदंड सम, मुकिउ मयण-सुभट्ट। इंदुकळा ग्राठमि तणी, इम सोहइ निलवट्ट।—मा.कां.प्र.

निलांवर-सं०पु० [सं० नीलांवर] बलराम (ग्र.मा)।

निलांम—देखो 'लीलांम' (रू.भे.)

निलागर-सं०पु०—रंग विशेष का घोड़ा।

वि०—जिको जुध वार 'भोजावत' जेम। उछट्टत वाज निलागर एम।
—सू.प्र.

निलाड़, निलाड़ि, निलाट, निलाटि, निलाड, निलाडि—देखो 'ललाट' (रू.भे.)

उ०—१ तिण समै विजैराव लांजो ग्राबू रा पंवारां रै परणियौ, तरै सासू निलाड़ दही दियौ।—नैणसी

उ०—२ हाजीखांन तेजसी नुं वाही सु टोप माथै लागी, नै कितरी हेक निलाड़ में लागी, दोय दांत पाड़िया।
—राव मालदेरी वात

उ०—३ ससिपाळ के संगि जु राजा हुंता सु कुंदणपुर के निकट ग्राया। तब निलाड़ी हाथ दे देखण लागा। कहे छै—दूरि तैं देखिजै छै।—वेलि. टी.

उ०—४ ग्रगनयणी, ग्रगपति-मुखी, ग्रगमद तिलक निलाट। ग्रग-रिपु-कटि सुंदर वणी, मारू ग्रइहइ घाट।—ढो.मा.

उ०—५ पुंहरी रा छेह ढळकतां पासइ, लाज करै ग्रंजळउ लीयउ। कोरज वळ पहरि रायकुंवरी, कूंकम तिलक निलाट कीयउ।
—महादेव पारवती री वेलि.

उ०—६ ग्रांगण-मांहि उग्रसिउ, नयन चढियां निलाटि। परि परि

करनद दरिनरिद, बनौड बडठड पाटि ।—मा.कां.प्र.

उ०—७ मीमहिया नैणां में मलियाळो काजळ सारियो । सोनै री भाट निलाड रैं ऊपर दीनो । कुरजां री टोळो, सहेल्यां रो हबोळो ।
—पनां वीरमदे री वात

उ०—८ पग ग्रापरी, कांन टापरी, श्रांखि उडि, निलाडि मूंडि ।
—व.स.

उ०—९ मलिकइ सोही समणा वणउं, लंई निलाडि कीउं मगं कहूता निलाव वांदणउं ।—कां.दे.प्र.

निलाव-वि० [रा. निल+फा. ग्राव] स्वच्छ, निर्मल । उ०—नदि नांम मगं कहूता निलाव, सुरसाव होय उभ्भळ सताव ।—सू.प्र.

निलि—देखो 'नील' (रू.भे.)

निलीह-वि०—गुप्त (ग्र.मा.)

निलै-सं०पु० [सं० निटलं, निटिलं] १ ललाट, भाल ।

उ०—१ फरस पाणि फावेस उभै हसलेस ग्रघवकर । निलै ग्ररघ नसतेस मसत मणगेस मधुक्कर ।—सू.प्र.

उ०—२ दुरत निलै तसळै बळ दीधो । कमधज घनख टंकारव कीधो ।—सू.प्र.

उ०—३ निलै त्रिण रेख हसै ग्रणुहारि ।—रा.ज.रासो

उ०—४ खांव दर सकळ हैं खांन राजा खड़ा, निलै नीची निजर भूप ग्रानेक । वाळ वळ मूंछ वणिया तठै दाख वळ, ग्रकळ ग्रंबखास जंगळ सुपह एक ।—ब.दा.

रू०भे०—नलवट, नलवटि, नलै, निलइ, निलवट ।

ग्रल्पा०—निलवटि, निलावट, निलो ।

मह०—निल ।

२ देखो 'निलय' ।

निलोह, निलोही, निलोहो-वि०—बिना शस्त्र प्रहार का, शस्त्र प्रहार से जख्मी हुए विना, ग्रक्षत ।

उ०—१ निलोह थकियो परलै पासै जाय ऊभो खेरू करै छै ।
—डाढ़ाळा सूर री वात

उ०—२ ग्रादमी पचासां कांम ग्राय गया । ग्रादमी डेढ़ सौ खोखर कांम ग्राया । बाकी सघळा ही घोड़ा घणा घायल हुवा । निलोही तो कोई'क नहीं रहियो ।—सूरे खींवे कांधळोत री वात

उ०—३ तरै पातसाह नै ग्ररज पोहचाई. वीरमदे बहुत जंग जुलम करै है । तद पातसाह कह्यो—वीरमदे मारै सो मारणै द्यो, पिण वीरमदे नैं लोह कोई मती करो । ढालां री ग्रोट दे नैं जीवतो निलोहो पकड़ि हजूर ले ग्रावो ।—वीरमदे सोनिगरा री वात

उ०—४ पूजीजे गज मोतियां, सखी महां भुज ग्राज । नाह निलोहो ग्रांणियो, करै ग्रगाऊ काज ।—वी.स.

निलो—१ देखो 'निलय' (रू.भे.)

उ०—१ सोभागी महिमा निलो, निलवट दीपइ नूर । नर नारी पाय कमळ नमइ हींडोळणा रे, प्रगटचो पुण्य पडूर ।—स.कु.

उ०—२ सूरि सिरोमणि गुण निलो, गुरु गोयम ग्रवतार हो । सद-गुरु तुं कलियुग सुरतरु समो, वांछित पूरण हार हो ।
—ऐ.जै.का.सं.

उ०—३ 'बाफणा' गोत्र कळा निलो रे, साह 'रूपसी' नो नंद । 'स्री जिन समुद्र' कहइ पूज्यजी रे, प्रतपी ज्यूं रवि चंद ।
—ऐ.जै.का.सं.

२ देखो 'निलै' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—नवनूर चढ़ियो भड़ निलां, गढ़ लाज बांधी जिण गळां ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ देखो 'नीलो' (रू.भे.)

उ०—रोझा, निला, गंगाजळ, हुंसला, नैण काजळ । ग्रस सेराह ग्रऊव, खेंग रोहला हाबूब ।—ग.रू.बं.

निल्लाट—देखो 'ललाट' (रू.भे.)

उ०—निल्लाटं पट्टं तप्पं दिप्पं, भांण दूण भेमट्टं ।—ग.रू.बं.

निव—देखो 'नृप' (रू.भे.)

उ०—गिरि वेयट्ट तलि थयऊ पणमिउ नाभि मल्हारु । निव मणि चूडह राजु दिइ पहिलउ एउ उपकारु ।—पं.पं.च.

निवड़-वि० [सं० निबिड] १ दृढ़, मजबूत ।

उ०—घण घण साम्रव धाय, नह फूटै पाहड़ निवड़ । जड़ कोमळ भिद जाय, राड़ पड़ै जद राजिया ।—किरपारांम

२ बहादुर, वीर, पराक्रमी । उ०—१ एक मांगळियो 'तेजसी' ग्रन 'साहिबो' ग्रबीह । सकळा निवड़ भड़ ग्राठ सो, घावड़ ठाकुरसीह।
—रा.रू.

उ०—२ भुजबळ सिंघ जिसा भारायं । सो ग्रण निवड़ भड़ थया सायं ।—रा.रू.

३ जबरदस्त । उ०—विचित्रांण निवड़ घड़ महण वेळ । मुरधरा नरां हुय निजरमेळ । वळ दाख दहूं दिस ग्रस्त्र-बंध । किलवांण पेल वळिया कमंध ।—रा.रू.

४ ग्रद्वितीय । उ०—मैं परणंती परखियो, सूरति पाक सनाह । घड़ि लड़सि गुड़िसी गयंद, नीठि पड़िसी नाह । नाह नीठि पड़िसी खेत मांभी निवड़ । गयंद पड़िसी गहर करड़ घड़ भड़ गहड़ ।
—हा.भा.

५ देखो 'निपट' (रू.भे.)

उ०- वैनांणी ढोलो घड़ैं, मो कंथ तणो ननाह । विकसै पोइण फूल जिम, पर दळ दीठां नाह । नाह विकसै घणो कमळ जिम भड़ निवड़ । भड़ घणा पाड़तो सोभियो महामहं ।—हा.भा.

६ देखो 'निवड' (रू.भे.)

७ देखो 'निविड' (रू.भे.)

निवड़णो, निवड़बो-क्रि०ग्र० [सं० निवर्तनं] फलीभूत होना, तैयार होना ।

ज्यूं—इण पेड रा ग्रांबा चोखा (सकरा) निवड़िया है ।

ज्यूं—म्हारै भाई रा वेटा सैंग सकरा निवड़िया है ।

२ देखो 'निपटणो, निपटबो' (रू.भे.)

उ०—१ मेड़तियां सूं वेढ़ हुई। राठौड़ प्रथीराज कांम आयौ। वेढ़ हारी वा राजा रांणा री तौ वात यठै हीज निवड़ी।—नैणसी

३ देखो 'नीमड़णी, नीमड़बो' (रू.भे.)

मुहा०—कांम निवड़णी—समाप्त होना, प्राण छूट जाना, मर जाना।

निवड़णहार, हारो (हारी), निवड़णियो—वि०।

निवड़ाड़णो, निवड़ाड़बो, निवड़ाणो, निवड़ाबो, निवड़ावणो, निवड़ावबो—प्रे०रू०।

निवड़िग्रोड़ो, निवड़ियोड़ो, निवड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवड़ीजणो, निवड़ीजबो—भाव वा०।

नींमड़णो, नींमड़बो, नींवड़णो, नींवड़बो, नीमड़णो, नीमड़बो, नीमटणो, नीमटबो, नीमडणो, नीमडबो, नीवड़णो, नीवड़बो —रू०भे०

निवड़ियोड़ो—देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवड़ियोड़ी)

निवछावळ, निवछावळि—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)

उ०—पाका दाड़िमां का बीज। जु छिटकि पड्या छै। एही वसंत पाठ बैठै नै निवछावळि कीया छै।—वेलि. टी.

निवड-वि० [सं० निबिड] १ प्रगाढ़, गहरा, घनिष्ठ।

उ०—१ मुंह मांग्या वरसई मेह, लोकै लोकै निवड सनेह। सगळई जगि हुयउ सुगाळ, गुण गावइ बाळगोपाळ।—सीसार

उ०—२ बीज तणी चन्द्रलेखा जिम सरववंदनीय, चक्रवाकी जिम निवड प्रेम, वचनि करी कोकिला स्वरूप।—व.स.

२ मजबूत, दृढ़। उ०—१ एक वार दांनसाळा आगळि पेखिउ चोर एक दे। निवड वंधणे वांधिउ सवळु लेई जाइ छेक दे। —नळ-दवदंती रास

उ०—२ अथ हस्तीवरणनं, आलांनस्तंभ मोडी, निवड लोह तणी सांखळा तोडी।—व.स.

३ भयंकर। उ०—आज संसार समुद्र निस्तरिउ, आजु दुक्ख। जळांजळि दीधी, निवड करम्म निगड ओडी।—व.स.

४ देखो 'निपट' (रू.भे.)

उ०—१ धुख ऊठिया विन्हे भड धुकिया, धारां मांहै घूमिया धड। रुघ वाजा नीसांण वीर रस, नाचइ तत थेइ भड निवड।—महादेव पारवती री वेलि.

उ०—२ प्राफी नवखंडे प्रसिध, माफी अमणी-मांण। भालिम खाटण निवड भड, जालिम जोध जुआंण।—ल.पि.

५ देखो 'निविड' (रू.भे.)

निवणो, निवबो—देखो 'नमणो, नमबो' (रू.भे.)

उ०—१ पगां तुझ पूज करै प्रहलाद, निवै पग छांह वडा नरनाद। इसा पग तेज तणा अंबार, तिकै पग सेवै ईसर तार।—ह.र.

निवणहार, हारो (हारी), निवणियो—वि०।

निवाड़णो, निवाड़बो, निवाणो, निवाबो, निवावणो, निवावबो —प्रे०रू०।

निविग्रोड़ो, निवियोड़ो, निव्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवीजणो, निवीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

निवतणो, निवतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

उ०—निवत कटक नव लाख, जद हेकण जिमवाइया। सूरज ससिहर साख, विरद तुहाळा विरवड़ी।—अज्ञात

निवतणहार, हारो (हारी), निवतणियो—वि०।

निवताड़णो, निवताड़बो, निवताणो, निवताबो, निवतावणो, निवतावबो—प्रे०रू०।

निवतिग्रोड़ो, निवतियोड़ो, निवत्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवतीजणो, निवतीजबो—कर्म वा०।

निवतरणो, निवतरबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

उ०—नव लाख निवतरे सहत नूर। नित दिवस वदै रंग रळी पूर। —रामदांन लाळस

निवतरणहार, हारो (हारी), निवतरणियो—वि०।

निवतराड़णो, निवतराड़बो, निवतराणो, निवतराबो, निवतरावणो, निवतरावबो—प्रे०रू०।

निवतरिग्रोड़ो, निवतरियोड़ो, निवतरयोड़ो—भू०का०कृ०।

निवतरीजणो, निवतरीजबो—कर्म वा०।

निवतरियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवतरियोड़ी)

निवतरो—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

ज्यूं—आज म्हारै जीमण रो निवतरो आयो है सु म्हे घरै नीं जीमां।

२ देखो 'नेत' (अल्पा०, रू.भे.)

निवतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवतियोड़ी)

निवतैरो-वि० [सं० नमनम्] ढलती उम्र का, हलका।

उ०—जुड़णण जोड़ण नांमाजोड़ो। नारि नवी निवतैरो नाह। धावै खांन हजन खाफरघड़। वीरति सिरजीयो वीमाह।—दूदो

निवतो—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—१ सो हे घणी इसा सूरवीर घरां नै छेड़णा ठीक नहीं, क्यूंकि ऐड़ा घर नै जुद्ध रो निवतो देवणो आपरा घर में जळ (पांणी) देणो है।—वी.स.टी.

उ०—२ ऐ विनां निवता रा पांहुणा (सत्रु) ढळिया आय नै ऊतरिया छै। पण म्हारो पती परूस जांणै है। (सस्त्र वाय जांणै है) सो भूखो जांणो कोई नई जावैला।—वी.स.टी.

२ देखो 'नेत' (अल्पा०, रू.भे.)

निवरत्ती-वि० [सं० निवर्तिन्] १ निर्लिप्त।

५ जो युद्ध में से भाग आया हो, जो पीछे की ओर हट आया हो।

निवरौ-वि० [सं० निवृत्त] (स्त्री० निवरी) १ जिसने काम-काज निपटा दिया हो, जो छुट्टी पा गया हो, खाली।
२ छूटा हुआ।
३ जो दूर हट गया हो, जो अलग हो गया हो, विरक्त।
४ व्यर्थ, बेकार।
उ०—दादू निवरे नाम बिन, झूठा कथें गियान। बैठे सिर खाली करें, पंडित वेद पुरांन।—दादूवांणी

निवळ—देखो 'निरबळ' (रू.भे.)
उ०—ननीयो कहै हूं निवळ, नांम किण ही में न पढ़ूं। छिप्पो चरण रै छेह, देगि तोड़ कहै मुक्त दुपढूं।—ध.व.ग्रं.

निवळोड़ो, निवळो—देखो 'निरबळ' (अल्पा०, रू.भे.)
(स्त्री० निवळोड़ी, निवळी)

निवसणौ, निवसबौ-क्रि०अ० [सं० निवसनम्] निवास करना, रहना।
उ०—१ तां वणि पेसइ मणिमइ भूयणु, तींछे निवसइ नारीरयणु रागिणि पहुतउ राउ पवळहरे।—पं.पं.च.
उ०—२ निवसइ लोक तिहां प्रति घणा, जिहं घरि रिद्धि तणा नहीं मणा। जांणे अभिनव कमळा गेह, भूमडळि अवतरिउं एह।
—विद्याविलास पवाडउ
निवसणहार, हारौ (हारी), निवसणियौ—वि०।
निवसिम्रोड़ो, निवसियोड़ो, निवस्योड़ो—भू०का०कृ०।
निवसीजणौ, निवसीजबौ—भाव वा०।

निवसथ-संपु० [सं० निवसथः] १ हद, सीमा।
२ गांव (डि.को.)

निवसन-संपु० [सं० निवसनं] १ स्त्री का अधोवस्त्र (डि.को.)
२ भीतर पहनने का वस्त्र।
३ डेरा, मकान, घर।
४ गांव।

निवसियोड़ो-भू०का०कृ०—निवास किया हुआ, रहा हुआ।
(स्त्री० निवसियोड़ी)

निवह-संपु० [सं० निवहः] १ समूह, यूथ।
२ सात पवनों में से एक पवन।

निवहणौ, निवहबौ—देखो 'निभणौ, निभबौ' (रू.भे.)
उ०—पंग न छूटै आसही, सोहां सापुरसांह। आसड़ियां मळगी रहै, कुतरां कापुरसांह। जाहर आसड़ियां जिते, निवहै साजै नाद। जीवण तणो कहंत जग, सोहां इतै सवाद।—बां.दा.
निवहणहार, हारौ (हारी), निवहणियौ—वि०।
निवहाड़णौ, निवहाड़बौ, निवहाणौ, निवहाबौ, निवहावणौ, निवहावबौ—क्रि०स०।
निवहिम्रोड़ो, निवहियोड़ो, निवह्योड़ो—भू०का०कृ०।
निवहीजणौ, निवहीजबौ—कर्म वा०।

निवहाड़णौ, निवहाड़बौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)

निवहाड़ियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवहाड़ियोड़ी)

निवहाणौ, निवहाबौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)

निवहायोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवहायोड़ी)

निवहावणौ, निवहावबौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)

निवहावियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवहावियोड़ी)

निवहियोड़ो—देखो 'निभियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवहियोड़ी)

निवांण-संपु० [सं० निपान] १ सरोवर, जलाशय तालाब (अ.मा.)
उ०—१ रीता हुवै हजारहां, कळस भरीज भरीज। रीता हुवै निवांण नह, इण द्रस्टांत पतीज।—बां.दा.
उ०—२ दळ अकबर तोपां दगै, सूकै नीर निवांण। गोळा लागै चीत गढ़, मैंगळ माछर जांण।—बां.दा.
उ०—३ बावेली ए भूरा भूरा बुरजा रे हेट, चमकै हजारी ढोला बीजळी। बावेली ए खिव खिव भरिया रे निवांण, जठै नैं जंवाई धोवै धोतिया।—लो.गी.
उ०—४ कहियौ वंधव तेम नृप कीधौ। दुति निज नगर नगर रचि दीधौ। बाग निवांण अवास बणाए। लार सहंस दस गांम लगाए।
—सू.प्र.
उ०—५ राजा ओड तेड़ाविया, खोदण काज निवांण। गूजर खंड सों आविया, करि पूरौ परवांण।—जसमां ओडणी री वात
२ कूप, कूआ। उ०—अलक डोरि तिल चड़सवौ, निरमळ चिबुक निवांण। सींचै नित माळी समर, प्रेम बाग पहचांण।
—बां.दा.
३ गड्ढा. ४ नीची भूमि. ५ समुद्र, सागर।
उ०—ज्यूं राखै त्यूं रहै, जिहां निरमै त्यां जावै। हुकम सो ही सिर हुवै, जिको मीरां फुरमावै। कांम क्रोध मद लोभ, मोह पड़िया भ्रम बीजै। तूं ही मार जीवाड़, तूं ही दीजै तूं ही लीजै। ध्यावतां निजर तो सूं घरै, तो निवांण निसचै तिरै। राजाधिराज तोरी रजा, 'ईसर' चा सिर ऊपरै।—ह.र.
६ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)
वि०—नीचा। उ०—ज्यां का ऊंचा बैसणा, ज्यां का खेत निवांण। ज्यां का वैरी क्या करै, ज्यां का मीत दिवांण।—अज्ञात
रू०भे०—निमांण, निवांण, निवांणणौ, निवांणि, निव्वांण, नीवांण।
अल्पा०—नीवांणौ।

निवांणणौ—देखो 'निवांण' (रू.भे.)

निवांणभर-संपु०—बादल, घन (नां.मा.)

निवांणियो-वि० [सं० निवात] धारोष्ण (दूध)

निवांणू, निवांणो-वि० [सं० निवात] १ गुनगुना, गरम, उष्ण।

२ देखो 'निवांण' (रू.भे.)

उ०—१ देस निवांणू, सजळ जळ, मीठा बोला लोइ। मारू कांमणि दिखणिधर, हरि दीयइ तउ होइ।—ढो.मा.

उ०—२ वरिखा रितु गई सरद रितु वळती, वाखांणी सु वयण वयणि। नीखर घर जळ रहित निवांण, निधुवनि लज्जा ग्री नयणि।—वेलि.

निवा—देखो 'न्याव' (रू.भे.)

निवांन—देखो 'निवांण' (रू.भे.)

निवाग्र—देखो 'निपात' (रू.भे.) (जैन)

निवाई-वि०स्त्री० [सं० निवात] १ हवा के झोंकों से रहित, बिना वायु की। उ०—१ दीपमाळिका नीके जोय। निस्चय रात निवाई होय।

—वर्षा विज्ञान

उ०—२ वीभर प्रति बोलै रात निवाई।—अज्ञात

२ किंचित उष्ण, हलकी गरम, गुनगुनी।

३ देखो 'न्याव' (अल्पा०, रू.भे.)

रू०भे०—नवाई।

निवाड़णो, निवाड़बो—१ देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)

२ देखो 'निवाणो, निवावो' (रू.भे.)

निवाड़णहार, हारो (हारी), निवाड़णियो—वि०।

निवाड़िग्रोड़ो, निवाड़ियोड़ो, निवाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवाड़ीजणो, निवाड़ीजबो—कर्म वा०।

निवणो, निववो—अक०रू०।

निवाड़्योड़ो—१ देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवाड़ियोड़ी)

निवाज-वि० [फा० नवाज़] दया करने वाला, कृपा करने वाला।

ज्यूं—गरीब-निवाज।

सं०पु०—१ घोड़ा, अश्व।

२ देखो 'नमाज' (रू.भे.)

उ०—१ संध्योपासन तजि बांग साज। निस दिवस वुजू रोजा निवाज। सांमरत्थ सिंह हम नहिं सिगाळ। गो-मांस नांम पै देत गाळि।—ऊ.का.

उ०—२ निरवहइ ग्रत्ति रोजा निवाज, वंवळीवाळ के तबलबाज। जब्बा पलीत मूगुल्ल जूह, सारक्क जांणि बोलइ समूह।—रा.ज.सी.

अल्पा०—निवाजो।

निवाजण-वि० [फा० नवाज़+रा.प्र.ण] प्रसन्न होकर दान देने वाला, प्रसन्न होने वाला। (ह.नां.)

उ०—१ विलसण गज बाजि निवाजण खटग्रंन, काइम राज ग्रजाद सकाज।—ल.पिं.

उ०—२ साजण जुधां वीसभुज ग्रासुर, दीन निवाजण ग्रनुज सहोदर। बोलै साख त्रिकुट लिछमीबर, उमंग रीसवाळो ग्रवधेस्वर।—र.ज.प्र.

निवाजणो, निवाजबो-क्रि०ग्र० [फा० नवाज+रा.प्र.णो] १ खुश होना, प्रसन्न होना। उ०—१ निसचै मरद निवाजिया, नित तुरी खाको।

—केसोदास गाडण

उ०—२ ढ ढी गाया निसह भरि, राग मल्हार निवाज। च्यार पहर झड़ मंडियउ, घण गुहिरइ सुर गाज।—ढो.मा.

२ तुष्टमान होना। उ०—१ नेस संतोसणां भूपत्यां निवाजै, खोसणां ऊपरै रहै खीजी। राठवड़ थाट 'दूदा' हरा राज में, बिराजै ग्राज हिंगळाज बीजी।—मे.म.

उ०—२ पत रहती पतनी सबै, दिनै वैकूंठां वास। पतिव्रत पाळ्यो हरि भज्यो, प्रभू निवाजै तास।—गजउद्धार

क्रि०स०—कृपा करना, महरबानी करना।

उ०—यूं विचार करै छै। तितरै नरो पोकरण जाय पुहतो। ग्रागै प्रोहित जायनै प्रोळियै नूं साद कियो। कह्यो—'वेगो थारो कटोरो ल्यै।' उतावळ सूं ऊठण लागो, त्युं उतावळा साद किया। ताहरां प्रोळियो ऊठियो। नींदाळ थकै हीज खिड़की खोली। कह्यो—'कटोरो दो उरहो' ताहरां प्रोहित कह्यो—'बाळ रे भाई! थारो कटोरो। म्हारै मांस रे हाथ लगावै कुण?' ताहरां प्रोळियो बोलियो—'राज! निवाजिया म्हांनूं। जिसड़ै हाथ ग्राघो काढियो, तिसड़ै नरै बरछी वाही सु पूठ मांहै जाती नीसरी। धरती ढह पड़ियो।—नैणसी

३ दया करना। उ०—१ हाथ सूंड बाहर रही, ग्रोर सबै जळ मांय। कीजै दया दयाळ जू, वेग पधारो ग्राय। केते संत निवाजियै, कहो न मो पै जाय। मोहि छुटावो ग्राह सूं, वेगो करो सहाय।

—गजउद्धार

उ०—२ निरधार निवाजण भै ग्रघ भांजण, सेवग तार सधीर सो जी। दुख देवां दहण दैत दपट्टण, बीर निको रघुबीर सो जी।

—र.ज.प्र.

४ दान देना। उ०—वागो थाळ जनम री वेळा, भागो ग्रदिन ग्रमंगळ भेळा। वाजत्र ससुर वधावा वाजै, नरपत मंगण जणां निवाजै।—रा.रू.

५ पुरस्कार देना।

निवाजणहार, हारो (हारी), निवाजणियो—वि०।

निवाजिग्रोड़ो, निवाजियोड़ो, निवाज्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवाजीजणो, निवाजीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

निवाजस सं०स्त्री० [फा० निवाज़िश] १ पारितोपिक, पुरस्कार, इनाम। उ०—१ केवां भड़ां निवाजस कीजै, दांन प्रसन मन पातां दीजै। ग्रतरै दूत खबर ले ग्राया, समाचार सह विवह सुणाया।

—रा.रू.

उ०—२ तरै पातसाह री बीजो मनड़ै हो कटक मांहै फिरियो, 'निवोईं चा कवाण चाढै तिकै नूं म्हे बहोत निवाजस करां।'
—नैणसी

२ कृपा, महरबानी, अनुग्रह।

उ०—१ म्हांनूं हजरत निवाजस कर विदा करै तो म्हे गड़ ल्यां।
—नैणसी

उ०—२ महाराज निवाजस उच्च मन। कविराव रीझ कहियो 'करन'। जद खासिस पद्धरि छंद जोड़। कायम्म राज नृप जुग करोड़।—वि.सं.

उ०—३ स्री महाराज आप कुळ सूरिज। धरपति तेरह सास धमंधज। कर ग्रहि मूझ निवाजस कीधो। दूजो राज नागपुर दीधो।
—सू.प्र.

३ दान।

रू०भे०—निवाजिस।

निवाजियोड़ो-भू०का०कृ०—१ खुश हुवा हुआ, प्रसन्न हुवा हुआ।

२ मेहरबान हुवा हुआ।

३ कृपा किया हुआ, महरबानी किया हुआ।

४ दया किया हुआ।

५ दान दिया हुआ।

६ पुरस्कार दिया हुआ।

(स्त्री० निवाजियोड़ी)

निवाजियो-सं०पु०—नमाज पढ़ने वाला, मुसलमान।

निवाजिस—देखो 'निवाजस' (रू.भे.)

निवाजो—देखो 'निवाज' (अल्पा०, रू.भे.)

निवाणो, निवाबो—देखो 'नमाणो, नमाबो' (रू.भे.)

निवाणहार, हारो (हारी), निवाणियो—वि०।

निवायोड़ो—भू०का०कृ०।

निवाईजणो, निवाईजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

निवात-सं०स्त्री०—मिश्री।

रू०भे०—नवात।

निवाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)

उ०—फौज हजार ५०००० मदत में दीनी। निवाब जावदीनखां नूं सागै कियो फौज मुसायब।—द.दा.

निवाबजादो—देखो 'नव्वाबजादो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवाबजादी)

निवाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)

निवाय—देखो 'निपात' (रू.भे.) (जैन)

निवायोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवायोड़ी)

निवायो-वि० [सं० निर्वात] (स्त्री० निवाई] १ किञ्चित उष्ण, हलका गरम, गुनगुना।

२ हवा के झोंकों से रहित, बिना वायु का।

उ०—अंधारै री मांदीत, भरस री भमरी, सरग री झांप, विरह रो समूह, रूप रो निधान, पाका हंस री टोळी, निवायै री होळी, घणै हाट नै चीरमां लपेटी थकी विराजमांन होइनै रही छै।
—रा.सा.सं.

रू०भे०—नवायो, निवायो, निवायो, नूनवायो, न्यायो।

निवार-सं०स्त्री० [देशज] १ एक प्रकार का अनाज।

[फा० नवार] २ पलंग आदि बुनने की मोटे सूत की बनी हुई तीन-चार अंगुल चौड़ी पट्टी।

उ०—लायो नटड़ो टूटसी खाट जी, कोई जद चित आयो पलंग निवार को। लायो नटड़ो फाटयो पुरांणो पूर जी, कोई जद चित आया सांड़'र गींदवा।—लो.गी.

रू०भे०—नवार, निवार, नीवार।

निवारक-वि० [सं०] १ दूर करने वाला, मिटाने वाला।

२ रोकने वाला, रोधक।

निवारण-सं०पु० [सं०] १ दूर करने, हटाने या मिटाने की क्रिया।

उ०—१ सीत निवारण जीरण कंथा, ताकै थेगल लागी। गिर तरु मंढी मसांण चौड़ै, ऐसै रह अनुरागी।
—स्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ राह भवन धन धन सुख राखै, दुनी कुबेर सरोतर दाखै। केत अस्टमै थांन सकारण, नितप्रत ततपर कस्ट निवारण।
—रा.रू.

उ०—३ परम्म निवास निवारण पाप, जोगेसर भद्र अजल्पा जाप। दातार-मुकत्ति दिनंकर देव, सारूप सालोक सामीप समेव।
—ह.र.

२ रोकने या बंद करने की क्रिया। उ०—श्री वदन पीतता चित व्याकुळता, हियै अगअगी खेद हुइ। धरि चल लाज पगे नेउर धुनि, करे निवारण कंठ कुहु वेलि।—वेलि.

३ छुटकारा, निवृत्ति।

रू०भे०—नवारण, निवारन।

निवारणो, निवारबो-क्रि०स० [सं० निवारणम्] १ त्यागना, छोड़ना।

उ०—१ वळ दुंधमार वयण बांणासुर, आयै दिन न कोध अवार। वहा वहा गा तोरण वांदै, नवल वना अहंकार निवार।
—ओपो आढ़ो

उ०—२ घोड़ा हींस न झल्लिया, पिय नींदड़ी निवारि। वैरी आया पांवणा, दळथंभ तूझ दुवारि।—हा.झा.

उ०—३ पावस-मास प्रगट्टियउ, पगइ बिलंबइ नारि। धण की आही वीनती, पावस पंथ निवारि।—ढो.मा.

२ दूर करना। उ०—१ नाई होय करै अंग मरदन, चाकर होय निवारै चींत। विरद निहार भासरी वैठै, मूरत छिप पलटै मावीत।
—भगतमाळ

उ०—२ जग में सयल समत्थ जळ, प्रगट निवारण पंक। पातक हरण समत्थ श्रो, स्रो गंगाजळ 'वंक' ।—बां.दा.

३ नाश करना, मिटाना। उ०—१ भेळो तैं कीवो भलो, जळहर श्रो जळजाळ। धुन मधुरी पुहमी ध्रवै, दुसह निवार दुकाळ।
—बां.दा.

उ०—२ वंदूं चरण गुरुदेव के, निज बुध अनुसारे, गाऊं हूं गुण जगपतो, ततसार तुमारे। जनम जनम के करम, जे हुय खीण हमारे, संतां कौन सहाय तें, निज दुक्ख निवारे।—भगतमाळ

उ०—३ पगग ते जांणे पाछणां, पवन ते लाइ लूण। पडी पडी हूं तडफडुं पोडि निवारइ कुंण।—मा.कां.प्र.

उ०—४ को अपार धरि कमळि सेख विण भार-स धारै। सूर विगर संसार कमण अंधार निवारै।—रा.रू.

उ०—५ मेह अकाळै मावचै, रित काळ निवारै।
—केसोदास गाडण

४ छुटकारा दिलाना, बंधनमुक्त करना, छुड़ाना।

उ०—कळह रचै दसकंध, नवग्रह बंध निवारियौ। हुवा धनुख गुण सबद व्है, गतमद जग मदगंध।—बां दा.

५ अलग करना, हटाना। उ०—अन तैं मन निवारियां रे, मोहि एकै सेती काज। अनत गये दुख ऊपजै, मोहि एकहि सेति राज रे।
—दादूवांणी

६ रोकना। उ०—धरा रूप लंबो करां घूप वारै, नरां एक एको हजारां निवारै।—वं.भा.

७ अतिक्रमण करना, हद से बाहर होना, मर्यादा उल्लंघन करना। उ०—हरि चाहे सुज हुअै, लंख चाहे सुर-लोयी। भू-मडळ भोगवै, करम प्राचीन सकोयी। अटक हीण असपती, पाप छित श्रोसर पायी। रद करवा रज्जियां, दुरद जेहो मद श्रायो। सांकियो राज रांणा सकळ, अकळ पांण छिलियो असुर। लहरीस जांण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर।—रा०रू०

निवारणहार, हारौ (हारी), निवारणियौ —वि०।

निवाराड़णौ, निवाराड़बौ, निवारणौ, निवारबौ, निवारावणौ, निवारावबौ—प्रे०रू०।

निवारिश्रोड़ो, निवारियोड़ौ, निवारचोड़ौ—भू०का०कृ०।

निवारीजणौ, निवारीजबौ—कर्म वा०।

नवारणौ, नवारबौ, नीवारणौ नीवारबो—रू०भे०।

निवारन—देखो 'निवारण' (रू.भे.)

उ०—नित भूधर सीत निवारन कां, घिन जे गल गूदर धारन कां। करले धर लेर कमंडळ की, महिमा हरलै महिमंडळ की।
—ऊ.का.

निवारस-वि० [सं०नि+अ. वारिस] जो वारिश या हकदार न हो।

निवारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

२ दूर किया हुआ।

३ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ।

४ छुटकारा दिलाया हुआ, बंधनमुक्त किया हुआ, छुड़ाया हुआ।

५ अलग किया हुआ, हटाया हुआ।

६ रोका हुआ।

७ मर्यादा उल्लंघन किया हुआ, अतिक्रमण किया हुआ, हद से बाहर हुया हुआ।

(स्त्री० निवारियोड़ी)

निवाळ—देखो 'निवाळौ' (मह., रू.भे.)

उ०—निवाळनि घप्पिय लेत डकार, किते सद तोपनि फट्टि पहार।
—ला.रा.

निवाळौ-सं०पु० [फा० निवाला] १ एक बार में मुंह में डाला जाय उतना भोजन, ग्रास, कौर।

उ०— हुवै घत्त लोहित्त मैमत्त हाला, नसा रा किसा पार सूळां निवाळा। मधूमास आसोज में रास मंडै, तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडै।—मे.म.

२ वह भोज जो नगर के बाहर किसी बाग या उपवन में या अपने भवन में ही इष्ट मित्रों को आमन्त्रित कर किया गया हो।

उ०—तद 'गोपो' रिणमलोत विकूंपुर धणी हुतो, कपूत सो ठाकुर हुतो। सु 'हरा' रा हेरू लागा हुता। श्रो कठै के निवाळ खाण गयो हुतो, पछै 'हरे' 'गोवा' कना विकूंपुर लियो।—नैणसी

रू०भे०—नवाळौ, न्याळौ।

मह०—नवाळ, निवाळ।

निवावणौ, निवावबौ —१ देखो 'नमाणौ, नमावौ' (रू.भे.)

निवावणहार, हारौ (हारी), निवावणियौ—वि०।

निवाविश्रोड़ौ, निवावियोड़ौ, निवाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निवावीजणौ, निवावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

निवणौ, निवबौ—अक० रू०।

निवावियोड़ौ—१ देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवावियोड़ी)

निवास-सं०पु० [सं०] १ रहने की क्रिया या भाव।

उ०—१ उदैसिंघ लखधीर तण, रहियो रांणै पास। बीजा साजा राठवड़, राजा पास निवास।—रा.रू.

उ०—२ ग्यांन लहर जहां थैं उठै, वांणी का परकास। अनुभव जहं थै ऊपजै, सब्दैं किया निवास।—दादूवांणी

२ रहने का स्थान। उ०—१ जिणरी संगति रै प्रभाव सूं स्वरग लोक रौ मारग मुद्रित कराय कुंभी पाक रौ निवास भाळियो।
—वं.भा.

३ घर, आवास (ह.नां, अ.मा.)

४ उतनी उष्णता या ताप जिससे शरीर को शीत का अनुभव न हो, किञ्चित उष्णता।

उदू—अरै टाबर ! निवां नी को मरै है नी ? तद टाबर कह्यो—म्हं नी रड़ाई घोड़ी होज है थोड़ी देर सूं निवाय माही जणां ठा' पड़सी ।

५ आश्रय, सहारा ।

उदू—बेटा ! म्हारै बीजो है कुंण ? म्हारै एक थारो ईज निवास है ।

उ०—रावजी मालिया—म्यांनी, थारै पगां रै कांमूं हुवो ? तद नाथ कह्यो—बावाजी बाळिया छै महिना दोय मरतां नूं हुवा । जद इतां नाथरां कह्यो—तूं गांव मांही हाल, तो तूं उठै राखस्यां, गांगुं तूं देस्यां, पाटा बांधस्यां, थारो जापतो जे करस्यां । सुण कर भूधर कह्यो—गांव माहो तो हूं कोई आऊं नहीं, म्हारै झाड़ रो मुलकित, बीजो तळाव पर पाणी रो निवास छै. कोई नीम उतार दे, कोई हळद तेल मांग देवै, पाळ रै नीचै हूं झाड़ फिर आऊं । सां अठै ही एक झोंपड़ी बांध देवो तो पड़ियो रहूं, थांनूं असीस देऊं ।—सूरै खींवै कांधळोत री वात

[सं० निवऽऽस] ६ घड़े में रहने वाला जल (मि० कुंभ)

उ०—सोरपत नाथ अथत कपीठ निवास पथ तोय अधर तरतात, जाद निवास कबंध जप वसुधा घोख विख्यात ।—अ.मा.

७ आराम, चैन ।

उ०—आयो भाद्राजण 'अभो', पायो प्रजा निवास । मिळिया जोध महाबळी, चळचळिया मेवास ।—रा रू.

सं०स्त्री०—दक्षिण दिशा का एक नाम ।

रू०भे०—नवास, निवाम, निहिवास, न्यावास ।

निवासणो, निवासबो–क्रि०अ० [सं० निवास] निवास करना, रहना ।

उ०—१ मुणे महतत मंद, पांचतत चाकर पासैं । गंग नदी गोविंद, नाम निति पलण निवासैं ।—पी.ग्रं.

निवासस्थान–सं०पु० [सं०] १ वह स्थान जहां कोई रहता हो, रहने का स्थान, रहने की जगह ।

२ मकान, घर ।

निवासियो—देखो 'निवासी' (३) (अल्पा०. रू भे.)

निवासी–वि० [सं० निवासिन्] १ रहने वाला, वास करने वाला, वासी । उ०—१ राजस्थान में रमै, नितै मुरधरा निवासी । बगाळै सूं वेर, लियां आसांम उदासी । न पंजाब सूं प्रेम, फोग दीनी फिटकारयां । ना विहार रै वाग, नहीं कसमीरी क्यारयां ।

—दसदेव

उ०—२ गणपत गिरा-निवासी सुरगण । मंगळ करण अमंगळ मेटण । करो दया मो सीस दयाकर । आपो सार चार गुण अर कर ।—रा.रू.

३ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा संबंधी ।

२ जो सर्वत्र हो, व्यापक । उ०—वासुदेव परब्रह्म, परम आतम परमेस्वर । अखिल ईस अणपार, जगत जीवण जोगेस्वर । निरालंब निरलेप, अनंत 'ईसर' अविनासी । थावर जंगम थूळ, सुछम जग निखिल निवासी ।—ह.र.

सं०पु०—दक्षिण दिशा में बोलने वाला पक्षी (तीतर)

उ०—१ झांझरकै निवासी बोलिया जद सारां रो मन प्रसन्न हुआ ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पो पंचादो ओर सांझ निवासी, सो नर यूं उदासी ।

—अज्ञात

४ देखो 'निविवास' (रू.भे.)

निवाह–सं०पु० [सं० निर्वास (वासृ-शब्दे) प्रा० निहाव]

१ नगाड़े की ध्वनि, नगाड़े की आवाज (डिं.को.)

२ देखो 'निभाव' (रू.भे.)

उ०—एम सुजायत खान नूं, लिखियो 'अवरंगसाह' । झूठ सफीला झालिया, सो क्यां हुवै निवाह ।—रा.रू.

३ देखो 'निरवाह' (रू.भे.)

उ०—बारहठ 'भीम' राजांन का सूरां की सनाह । स्रोमहाराज कै कांम चाहै प्रतग्या के निवाह ।—रा.रू.

निवाहण, निवाहणो–वि०—निवाहने वाला, कार्य साधने वाला, उत्तरदायित्व लेने वाला ।

उ०—आयो तद राजा 'अजो', मेलै दळ अणमंघ । साथै भार निवाहणा, वीस हजार कमंध ।—रा.रू.

निवाहणो, निवाहबो—देखो 'निभाणो, निभावो' (रू.भे.)

उ०—१ ऐ च्यारूं 'ऊदा' हरा, विखो निवाहण कज्ज । नेम घणी छळ झलियो, ज्यां हरि प्रेम अनज्ज ।—रा.रू.

उ०—२ रूपसिंह 'केहर' का केहर के कांटै, लड़ाई के पाए घन वधाई बांटै । 'उगरावत' आसखांन आसमांन साहै, उदैसिंघ चिम्र-कियो सो निवाहै ।—रा.रू.

उ०—३ ग्यांन रो गोरख, सहदेव ज्यूं सारी वात समरथ, अरजुण ज्यूं बांण, करण ज्यूं दांन-पांण, बत्तीस आखड़ी रो निवाहणहार, वैरियां विभाड़णहार ।—रा.सा सं.

उ०—४ करण अखियात चढ़ियो भलां काळमी, निघ हुण वयण भुज बांधिया नेत । पंवारां सदन वरमाळ सूं पूजियो, खळां किर-माळ सूं पूजियो खेत ।—वां.दा.

निवाहणहार, हारो (हारी), निवाहणियो—वि० ।

निवाहियोड़ो, निवाहियोड़ो, निवाह्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निवाहीजणो, निवाहीजबो—कर्म वा० ।

निवाहव–वि० [सं० निर्वास (सं० वासृ शब्दे प्रा० निवाह)] बजाने वाला, आवाज करने वाला ।

उ०—नागलोक के नायक, नाग कन्या समेत सरभ ही आय उभे उर दरसणूं हेत नोपतूं के निवाहव वसाजू के ततकार खटरागू के घोर ।—र.रू.

निवाहियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवाहियोड़ी)

निविड़—देखो 'निविड' (रू.भे.)

निविड़ता—देखो 'निविडता' (रू.भे.)

निविड-वि० [सं०] १ महान्, बड़ा। उ०—लाखीक व्रवण 'लाखों', दातार निविड दाखो। उदार कुंग्रर एहो, जाडे जतमणा जेहो। —ल.पिं.

२ घना, घनघोर, गहरा।

३ देखो 'निपट' (रू.भे.)

४ देखो 'निवड़' (रू.भे.)

५ देखो 'निवड' (रू.भे.)

उ०—गरुई पोलि, निविड कमाड लोह भोगळ।—व.स.

रू०भे०—निविड़।

निविडिता-सं०स्त्री० [सं०] १ सघनता।

२ वंशी या इसी प्रकार के अन्य वाद्य के स्वर का गम्भीर होना जो उसके पांच गुणों में से एक माना जाता है।

रू०भे०—निविड़ता।

निविद्धणौ, निविद्धबौ-क्रि०स० [निर्बंधनम्] रचना, बनाना।

उ०—सनमुख साह निविद्धियौ, कीधौ नारद कांम। कळि लग्गी रट्ठौड़ हद, मरसी के वरियांम।—गु.रू.ब.

निविद्धणहार, हारौ (हारी), निविद्धणियौ—वि०।

निविद्धिग्रोड़ौ, निविद्धियोड़ौ, निविद्धयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निविद्धीजणौ, निविद्धीजबौ—कर्म वा०।

निविद्धियोड़ौ-भू०का०कृ०—रचा हुग्रा, बनाया हुग्रा।

(स्त्री० निविद्धियोड़ी)

निवियासिग्रौ—देखो 'निवियासियौ' (रू.भे.)

निवियासिमौं-वि० (स्त्री० निवियासिमीं) जिसका स्थान नवासी पर हो, नवासीवां।

निवियासी-वि० [सं० नवाशीति] ग्रस्सी ग्रौर नौ, ग्यारह कम सौ।

सं०स्त्री०—८९ की संख्या।

रू०भे०—नव्यासी नव्यासी, निवासी।

निवियोड़ौ—देखो 'नमियोड़ौ' (रू.भे.)

निविरइ-वि० [सं० निर्वृत] प्रसन्न, खुश।

उ०—सखी भणइ सांमिणि जिसउ, वाजउ वाजइ छंदि। नाचेवउं लोकह कहइ, निविरइ तिणि ग्राणंदि।—विद्याविलास पवाडउ

निवेड़-स०स्त्री० [सं० निवर्तनम्] १ पूर्ण या समाप्त करने की क्रिया या भाव।

२ तय करने की क्रिया या भाव।

३ मुक्ति, छुटकारा, रिहाई।

४ निर्णय, फैसला।

निवेड़णौ, निवेड़बौ-क्रि०स० [सं० निवर्तनम्] १ फलीभूत करना, तैयार करना।

२ देखो 'निपटाणौ, निपटाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ लुगायां पौ'र रात लेर ऊठती, ग्राटौ पीसती, दोवण-विलोवण रौ कांम करती ग्रर दिनुगां पं'ली ईं'ली तौ वे चूला रौ कांम ई निवेड़ देती।—रातवासौ

उ०—२ तुरत वात मांनी तिणें रे, नाटिक परौ निवेड़। नाटकियौ नारि नें रे, ग्रायौ करिवा केड़ि।—ध.व.ग्रं.

ज्यूं—काल बोहरा कनै जाय'र घणा दिनां रौ लेणा रौ हिसाब करस्यां ग्रर जितरा निकळसी सैं निवेड़ देस्यां।

निवेड़णहार, हारौ (हारी), निवेड़णियौ—वि०।

निवेड़ाड़णौ, निवेड़ाड़बौ, निवेड़ाणौ, निवेड़ाबौ, निवेड़ावणौ, निवेड़ावबौ, निवेड़ाड़णौ, निवेड़ाड़बौ, निवेड़ावणौ, निवेड़ावबौ —प्रे०रू०।

निवेड़िग्रोड़ौ, निवेड़ियोड़ौ, निवेड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निवेड़ीजणौ, निवेड़ीजबौ—कर्म वा०।

निवड़णौ, निवड़बौ—ग्रक० रू०।

नींमड़णौ, नींमड़बौ—रू०भे०।

निवेड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ फलीभूत किया हुग्रा, तैयार किया हुग्रा।

२ देखो 'निपटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवेड़ियोड़ी)

निवेड़ौ-सं०पु० [सं० निर्वतनम्] १ फैसला, निर्णय।

२ कार्य पूरा करने की क्रिया या भाव।

३ मुक्ति, छुटकारा।

४ तय करने की क्रिया या भाव।

क्रि०प्र०—करणौ।

रू०भे०—नवेड़ौ, नवेड़ौ, निपटारौ, निपटेरौ, निबटारौ, निबटेरौ, निवेड़ौ, निमटारौ, निमटेरौ, निमेड़ौ।

निवेदण—देखो 'निवेदन' (रू.भे.)

उ०—सउच न्हांण मुख साधि सब, राचै राज सराह। क्रम पैठौ संभ्या करण, दूदा कवर दुबाह। करि सभ्या जप ग्रादि क्रम, पूजि इस्ट गोपाळ। स्वकरां करि भोजन सदा, करी निवेदण काळ। —वं.भा.

निवेदणौ, निवेदबौ-क्रि०स० [सं० निवेदनं] १ विनय करना, प्रार्थना करना। उ०—दूत वलिउ दारु घडा, दीधां दिसि जेह। कांमसेन कारण सहू, राय निवेदिउ तेह।—मा.कां.प्र.

२ नैवेद्य चढ़ाना।

३ नजर करना, ग्रर्पित करना।

४ सुनाना, कहना।

निवेदन-सं०पु० [सं०] १ विनय, प्रार्थना, विनती।

उ०—निवेदन चंद धजावंध नांम, सुणौ सब 'इंद' सको सगरांम। लियां खग खप्पर 'गोंद' 'गुलाल', खळां घट धावक जाव पखाळ। —मे.म.

२ प्रस्तुत करने या नजर करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ एक दिन राजा रै परद कोई तपस्वी महारसायण रो निदान एक पदूरव म्याउ फळ दीधौ। सो राजा नै आपरा प्रांण रो जीवण जांण सेना वांछि पदरांण जाय रांणी रै अरद निवेदन कीधो।—वं.भा.

३ चढ़ाने की क्रिया या भाव, अर्पण, भेंट।

४ समर्पण।

५ कहने या सुनाने की क्रिया या भाव।

रू०भे०—निवेदन।

निवेदित-वि० [सं०] १ प्रार्थना किया हुआ, विनती किया हुआ।

२ चढ़ाया हुआ, अर्पित किया हुआ।

३ सुनाया हुआ, कहा हुआ।

४ समर्पण किया हुआ।

निवेदियोड़ो-भू०का०कृ०—१ विनय किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ।

२ नैवेद्य चढ़ाया हुआ।

३ नजर किया हुआ, अर्पित किया हुआ।

(स्त्री० निवेदियोड़ी)

निवेध—देखो 'नैवद्य' (रू.भे.)

निवेधो—देखो 'नैवेद्य' (रू.भे.)

निवेद्य—देखो 'नैवेद्य' (रू.भे.))

निवेधणो, निवेधबो—क्रि०स० [देशज] मारना, संहार करना।

उ०—'करण' निवधी वेधट, सोधी सांम छळांह। अस तोरे सांम्हा किया, फोरे सेल-फळांह।—रा.रू.

निवेस-सं०पु० [सं० निवेशः] १ घर, मकान।

२ स्थान, जगह। उ०—१ जंबू दीपह काळ समांण, लख जोयण तेह नो परिमांण। 'दक्षिण' 'भरतइ' आरिज देस, 'मरुधरि' देस निवेस।—धर्मकीर्ति

उ०—२ सरस सकोमळ सुललित वांणी दीधु गुरु उपदेस। पच्छइ राजा गणधर पूछिआ पूरव भवह निवेस।—विद्याविलास पवाडउ

३ पड़ाव, छावनी, डेरा।

४ नगर शहर। उ०—नव निधांन, १४ रत्न, सोळ सहस्र यक्ष, बत्तीस सहस्र मुकुटबरद्धन राय, ६४००० अंतहपुर, ३२००० देस, सवालाख वारांगना, १४००० वेलाउल, ३२००० देस, २१००० निवेस ५६ अंतरद्वीप, ६६ सहस्र द्रोणमुख, ६६ कोडि ग्राम, ६६ कोडि पदाति।—व.स.

५ निवास। उ०—लगाय गळै जिण अंतर लाय, सह्या नहिं जाय हिवै सब वाय। दिगंभर खव्व तुम्हीणो वेस, नहीं कुछ जेथ सो तेथ निवेस।—ह.र.

निवेसन—देखो 'निवेसन' (रू.भे.) (म.मा.)

उ०—वरदवान घरु कटक निवेसण। सकर भूप अपर तिय संघण।

—वं.भा.

निवेसणो, निवेसबो-क्रि०स० [सं० निवेशनम्] रखना।

उ० दुट्ठिहि विरह संतावण सावण, सुदि अरिहंत, संगारइ सुर दांनव मांनव मांन वहंत। निपुण निवेसइ अंचडी केवडी आलउ सुंन, दीसइ मुकुट कटीरकि हीरकि नवनवउं रूप।

—नेमिनाथ फागु

निवेसणहार, हारौ (हारी), निवेसणियौ—वि०।

निवेसिग्रोड़ो, निवेसियोड़ो, निवेस्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवेसीजणो, निवेसीजबो—कर्म वा०।

निवेसन-सं०पु० [सं० निवेशनं] १ नगर, शहर (ह.नां.)

२ स्थान, जगह।

३ छावनी, पड़ाव, डेरा।

४ घर, मकान।

रू०भे०—निवेसण।

निवेसियोड़ो-भू०का०कृ०—रखा हुआ।

(स्त्री० निवेसियोड़ी)

निवैं—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

उ०—जीवै के वरस असी धनजोड़ा, नर जीवै के वरस निवैं। चाळीसां मांहे जस छायो, सुरियंद जायो भलो 'सिवैं'।

—ग्रोपो ग्राढो

निव्रिति, निव्रिती-सं०स्त्री० [सं० निवृत्ति] १ मोक्ष, मुक्ति।

उ०—अगम निगम का ढोल बजत है, सतसंग चोक सजो री। डंडियो सबद जोड़ संतन सूं, नाच निव्रिती नचो री।

—स्री सुखरांमजी महाराज

२ प्रवृत्ति का उलटा, छुटकारा।

निव्वत्तण-सं०स्त्री० [सं० निर्वर्त्तन] तलवार, बरछी, भाला आदि की बनावट (जैन)

निव्वांण—१ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

२ देखो 'निवांण' (रू.भे.)

उ०—फटो आभ के जांणि सांमंद्र फट्टं, प्रिथम्मी गिरां थूंब कीजै पहट्टं। वहै ऊरटां थट्ट राठोड़वाळा, नदी सोखिजै नीर निव्वांण नाळा।—वचनिका

निव्वांणगुणावह-वि० [सं० निर्वाणगुणावह] जो निर्वाण के गुणों को धारण करे [जैन]

निव्वांणमग्ग-सं०पु०यौ० [सं० निर्वाणमार्ग] मोक्ष मार्ग (जैन)

निव्वाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)

निव्वाबजादो—देखो 'नव्वाबजादो' (रू.भे.)

(स्त्री० निव्वाबजादी)

निव्वाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)

निव्वावार-वि० [सं० निर्व्यापार] व्यापाररहित (जैन)

निव्वाह—१ देखो 'निभाव' (रू.भे.) (जैन)

२ देखो 'निरवाह' (रू.भे.) (जैन)

३ देखो 'निवाह' (१) (रू.भे.) (जैन)

निव्विकार—देखो 'निरविकार' (रू.भे.)

निव्विज्जं-वि० [सं० निर्विद्यः] विद्यारहित (जैन)

निव्विण्णकांम-वि० [सं० निर्विण्णकाम] जो निवृत्त होने की कामना रखता हो (जैन)

निव्वितिगिच्छा-सं०स्त्री० [सं० निर्विचिकित्स्य] धर्मादि के फल में संदेहरहित होने का भाव (जैन)

निव्विसय-वि० [सं० निर्विषय] विषयरहित (जैन)

निव्वुयय-वि० [सं० निवृतहृदय] जिसका हृदय चिन्ता से रहित हो, चिन्तारहित हृदय वाला (जैन)

निव्वेगणीकहा-सं०स्त्री० [सं० निर्वेगनीकथा] वह कथा जिसको सुन कर चित्तवृत्ति संसार से निवृत्ति धारण करे (जैन)

निव्वेय-सं०पु० [सं० निर्वेद] १ वैराग्य।

२ खेद, दुख।

३ अनुताप।

४ अपमान।

रू०भे०—निरवेद।

निसंक-वि० [सं० निःशंक] १ जिसे डर न हो, भयहीन, निर्भय, निडर। उ०—वैरी वैर न वीसरै, बिना हियै ही 'बंक'। राहु ग्रहै राकेस नूं, नभ सिर मात्र निसंक।—बां.दा.

उ०—२ ताजदार वैठो तखत, रज में लोटै रंक। गिणै दुनां नूं हेकगत, निरदय काळ निसंक।—बां.दा.

उ०—३ है जीवण मुसकिल हमैं, पिसणां रूंधो पंथ। सिर पर काळ न सूझवै, किण विध सूतो कंथ। किण विध सूतो कंथ, निसंक नेठाव सूं। व्रथा वसाय'र वैर, रिसायळ राव सूं।

—सिववक्स पाल्हावत

उ०—४ सांई मन सहंठो करो, करही जूझ निसंक। जीवण अत तोसूं लग्यो, नहीं चाढसां कळंक।—गजउद्धार।

२ जिसे किसी प्रकार की हिचक या खटका न हो, वेहिचक, वेखटक।

उ०—माता पिता कै आगै खेलतां, कांम रा जु विरांम छै, सु छिपाया चाहिजै। सु कांम रा विरांम कुण? जु एक तउ कुच प्रगट हुया, नेत्रां चंचळता हुई, नितंब भारी दीसै लागा। ए कांम का विरांम। पहिले बाळकपणै निसंक खेलती थी, अब इया बात री लाज कीधी चाहीजै।—वेलि. टी.

रू०भे०—नसंक, निरसक, निसंग, नैसंक।

अल्पा०—नसंको, निरसंको, निसंको, नैसंको।

निसंकोच-क्रि०वि० [सं० निःसंकोच] बिना संकोच के, वेधड़क।

ज्यूं—पैं'ली प्रजा रो कोई भी आदमी निसंकोच राजा कनै जाय सकतो हो।

नसंको—देखो 'निसंक' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० निसंकी)

निसंग-वि० [सं० निःसंग] १ निर्लिप्त।

२ जो मेल या लगाव न रखता हो, बिना मेल या लगाव का।

३ जिसमें अपने मतलब का कुछ अर्थ वा लगाव न हो।

४ देखो 'निखंग' (रू.भे.)

५ देखो 'निसंक' (रू.भे.)

निसंगी—देखो 'निखंगी' (रू.भे.)

निसंडो-वि० [देशज] (स्त्री० निसंडी) जो कहने के उपरांत भी ध्यान न दे, धृष्ट, धीठ, निर्लज्ज।

रू०भे०—निसरडो, निहडो, नींडो, नेंडो, नेहडो, नेहढो।

मह०—निसड्ड।

निसंतत, निसंतति-वि० [सं० निःसंतति] बिना औलाद का, निःसंतान

उ०—रावळ मनोहरदास कल्यांणदासोत, वरस २२ राज कियो। निसंतत।—नैणसी

निसंतांन—देखो 'निस्संतान' (रू.भे.)

निसंदेह—देखो 'निस्संदेह' (रू.भे.)

निसंबळ, निसंबळउ-वि० [सं० निःशंबलः, निःसंबल] १ बिना भोजन का। उ०—१ जोउ मग्गि निसंबळा, पांचइ पंडव जंति। राजु छंडाव्या वणि फिरइं, धिगु धिगु दुख सहंति।—पं.पं.च.

उ०—२ मरण सहु नइ सारखउ रे, कुण राजा कुण रांक। पणि जायइ जीव निसंबळउ रे, एहिज मोटउ बांक।—स.कु.

निसंभ-वि०—१ भयरहित।

उ०—बावन चंदन अंगई परिमळ धूरत तपई निसंभ। उर जेहवउ दीसइ उरवंसी, रूप विसेखइ रंभ।—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'निसुंभ' (रू.भे.)

उ०—सिंभ निसंभ संघारिया, महसासुर मारे। चंड मुंड संचरिया, कै असुर अपारे।—गजउद्धार

निस-स०स्त्री० [सं० निश्] १ रात्रि, रात, रजनी (अ.मा.)

उ०—१ अहो-निस कागभुसंड आराध, पढ़ै तो नांम सदा प्रहळाद। जपै सुखदेव जिसा जोगेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह.र.

उ०—२ अथ ओमकार, अक्षर उचार। निस दिवस नांम, रट रांम रांम।—ऊ.का.

२ हल्दी।

रू०भे०—नस।

निसकर-सं०पु० [सं० निश्+कर] चन्द्रमा, चांद (डिं.को.)

निसकरस-सं०पु० [सं० नि+कृश=तनुकरणे] १ स्वर साधन की एक प्रणाली जिसमें प्रत्येक स्वर को दो दो बार अलापना पड़ता है।

[सं० नि+कृष=विलेखने] २ सार, तत्व, निष्कर्ष।

निसकांम—देखो 'निकांम' (रू.भे.)

निसकांमी—देखो 'निकांमी' (रू.भे.)

उ०—१ गी इन्द्रारा की नग्ग्ा मरहिन गोस्वांमी, करुणानिधांन करुणामय निन निसकांमी ।—ऊ.का.

उ०—२ गुरु सिख धरम ग्रधरम न जा में, नहि कांमी निसकांमी। सदगुरु सुख दीठ जहां नाहीं, नहि कोई नांम ग्रनांमी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

निसकारण–वि० [सं० निष्कारण] बिना कारण, व्यर्थ।

निसकारो–सं०पु० [सं० निस्+कार] नाक से निकलने वाला वह प्राण वायु जो शोक या दुख को सूचित करता है, निश्वास।

उ०—१ सूगी की जीभं सिसकारा भरती। नांसं निसकारा धीमं पग धरती। सुगाड़ी कुम्हलायो भोजन बिन भारी। पग पग करतोड़ी पीड़ी प्रिय प्यारी।—ऊ.का.

उ०—२ धोधरो बीरै में पाछा भतीरा घालतो-घालतो निसकारो नाख'र बोलियो—म्हारो घरम डूबियो रे।—वरसगांठ

उ०—३ दाना सोग गयो प्रभु प्यारो, नित नासां निसकारो। नहि ग्रांखां तोहि हुवै न न्यारो, ग्रांसां सूं उणियारो।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—करणो, न्हांकणो।

निसकासित–वि० [सं० निष्कासित] निकाला हुआ (हि.को.)

निसकुट–सं०पु० [सं० निष्कुटः] घर के समीप का बगीचा, छोटा बगीचा, वाटिका (हि.को.)

निसगदइ–सं०स्त्री० [सं० निसर्गरुचि] किसी प्रकार के धार्मिक उपदेश के श्रवण किए बिना ही उत्पन्न होने वाली धर्म के प्रति स्वाभाविक रुचि, श्रद्धा (जैन)

निसचय—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)

निसचर–सं०पु० [सं० निश्+चर] असुर, राक्षस (ह.नां., अ.मा.)

उ०—नमो नाम नीमवण, नमो नर सुर नीपावण। नमो पनंगधर नमो, गयण थंभा बिन थभण। नमो वेद विस्तरण, नमो निसचर थोह नामण। नमो सेस-सायंत, नमो हव कव्व हुतासण।

—ह.र.

रू०भे०—नसचर, निसहर।

निसचरण–सं०पु० [सं० निश्चरण] चन्द्रमा (ना.डि.को)

निसचरत्रास–सं०पु० [सं० निशचरत्रास] प्रकाश, उजाला (अ.मा.)

निसचळ, निसचल–सं०पु०—१ निःसंदेह धारणा, अवश्य, निश्चय।

उ०—कप कही रचना सकळ अणकळ, चितभ्रम मिट जाय निसचळ। सपत तप दै भेद इकसर, गरज तो गाहै।—र.रू.

२ निसाचर, राक्षस। उ०—मुख कूती तिय मंदोदरी, ध्रुव सुजण ग्रतेवर धरी। धर महल मधतळ विरळ उज्जळ, अनुग निसचळ मग्रत ग्रत मळ।—र.रू.

३ देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)

उ०—निस्चळ सोळावस नांम निज, कमधा कवि 'किसोर'। संवत गुणी तेहोंतरै, तवियो जस नृप तोर। तवियो जस नृप तोर, प्रयोप 'प्रताप' रो। निसचळ रहमी नांम, जगत जस जाप रो।

—किसोरदांन बारहठ

निसचारी–सं०पु० [सं० निश्+चारिन्] राक्षस, असुर।

उ०—कदमां गयो भगत हितकारी, चयो विगत सगळो निसचारी। ग्रापरै चरण री सरण हूं ग्रावियो।—र.रू.

रू०भे०—नसचार, नसचारी।

निसचै, निसचौ—देखो 'निस्चय' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ जन सोच बिभंजण ग्राचत पंजण, दोन ग्रभैवर दैण रो जी। 'किसना' निसचै कर राच सियावर, जांण भरोसो जेण रो जी।

—र.ज.प्र.

उ०—२ हुई सु ठोक धांधळा हूंता, जतरै निसचै थई जगूंता। ग्रायो 'जगड़' 'पतावत' ग्रातुर, भुजपति तुरंत बुलायो भीतर।

—रा.रू.

उ०—३ ध्यावतां निजर तो सूं धरै, तो निवांण निसचै निरै। राजाधिराज तोरी रजा, 'ईसर' चा सिर ऊपरै।—ह.र.

उ०—४ किम ग्राप कमाण न जाय कितं। निसचै सिर भोगवणी नृपतं। कप कूड़ उपावय साच करो। हित सूं दुमणापण ढेग हरो।—पा.प्र.

उ०—५ सच्चा था पैहळाद साद, निसचै निसतारा।

—केसोदास गाडण

उ०—६ धरमी जे धरमं धरै, निसचौ न तजै नेट। चक्रवतंसक नां चल्यो, थिर दिवालगि थेट।—ध.व.ग्रं.

उ०—७ असुरांण ग्रांण मिटसी इळा, सुरवध पांण वसंधरा। नवकोट नाथ निसचौ निजर, उर धारो हरि ऊपरा।—रा.रू.

निसठपा–सं०स्त्री० [देशज] म्लेच्छों की एक जाति (डि.को.)

निसट्ठ—देखो 'निसंठो' (मह०, रू.भे.)

उ०—तो राख्यो नहि खावस्यां, रे वासदड़े निसट्ठ। मो देखत तूं बाळिया, लाला दे ना हट्ठ।—प्रथ्वीराज राठौड़

निसणात–वि० [सं० निष्णात] १ प्रवीण, चतुर, निपुण, पारंगत (डि.को.)

२ पण्डित, विज्ञ।

निसणो, निसवो–क्रि०स० [सं० निशामनम्] श्रवण करना, सुनना।

उ०— सरसति सांमणि सगुरु पाय हीयडइ समरेवी। कर जोडी सासण देवि ग्रंबिक पणमेवी। नळ-दवदंती तणु रास भावइ पभणेइ। एक मना थइ भवीद लोक विगतइ निसणेइ।

—नळ-दवदंती रास

निसतंस—देखो 'निसत्रंस' (रू.भे.) (ह.नां.)

निसत–वि० [सं० नि+सत्य] जो सत्य न हो।

उ०—सोक ग्रनै संताप, विढ ग्रावै परसेवो। भय कपणि गति भंग, निसत निज लाज न सेवो।—ध.व.ग्रं.

निसतर—देखो 'नसतर' (रू.भे.)

निसतरणो–सं०पु० [सं० निस्तरणम्] उद्धार, मोक्ष। उ०—किम तरिस्यै भव हव कापूं करणो, निज निसतरणो धारो नांम। धणियां जेम

उधारो घरणी, निज निसतरणौ थारो नांम ।--पी.ग्रं.

निसतरणौ, निसतरबौ—१ देखो 'नस्तरणौ, नस्तरबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निस्तरणौ, निस्तरबौ' (रू.भे.)

निसतरणहार, हारौ (हारी), निसतरणियौ—वि० ।

निसतरिग्रोड़ौ, निसतरियोड़ौ, निसतरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निसतरीजणौ, निसतरीजबौ—भाव वा० ।

निसतरियोड़ौ—१ देखो 'नस्तरियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निस्तरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निसतरियोड़ी)

निसंतांन्यौ—देखो 'निसंतांन' (अल्पा० रू.भे.)

उ०—सा घन कुरळइ मोर ज्युं । पांच पडोसण बैठी छइ आय । श्री निसंतांन्यौ ज्या करि गयौ । दिवसनइं रात नौ चिंतातां जाई ।
—वी.दे.

निसतार—देखो 'निस्तार' (रू.भे.)

निसतारण—देखो 'निस्तारण' (रू.भे.)

उ०—१ सेवक रिख मुनि भगत संन्यासी । अरज करै हुय दीन उदासी । त्रिभवणनाथ जगत निसतारण । धरम वद कीजै धू धारण ।—रा.रू.

उ०—२ तूं भगवंत अनंत गति, निसतारण नित भेव । संपति गति सुख सुमति, दायक लायक देव ।—पलक दरियाव री वात

निसतारणौ, निसतारबौ—देखो 'निस्तारणौ, निस्तारबौ' (रू.भे.)

उ०—१ एकोतर वंस उधारै रे, निज लोक उभै निसतारै । साराह जिका जग सारै रे, अवधेसर जीह उचारै ।—र.ज.प्र.

उ०—२ वांको एक न होवै वाळ । सुचतो नांम लियां निसतारै । कर पर गिरधारै किरपाळ ।—भगतमाळ

उ०—३ सच्चा था पैहलाद साध, निसचै निसतारा ।
—केसोदास गाडण

उ०—४ माधवदास चरण-रज महिमा, नौका कुटंब कीर निसतारै
—रा.रा.

उ०—५ संतां ! सो जोगी निसतारै, उलटी चाल सदा रस पीवै । उलटा भेद विचारै ।—ह.पु.वा.

निसतारणहार, हारौ (हारी), निसतारणियौ—वि० ।

निसतारिग्रोड़ौ, निसतारियोड़ौ, निसतारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निसतारीजणौ, निसतारीजबौ—कर्म वा० ।

निसतरणौ, निसतरबौ—अक० रू० ।

निसतारियोड़ौ—देखो 'निस्तारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निसतारियोड़ी)

निसतारौ—देखो 'निस्तार' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ बन बैठो भलां चढो गिर-बदरी, धरा भेख के धारै । चित नह लग्यौ रांम रै चरणां, नह जब लग निसतारौ ।—र.रू.

निसती-वि० [सं०=नि=नहीं+रा० सती=वीर] १ कायर, भीरु ।

उ०—वांसै साह हुयौ हक वागी, निसती तजि चलिया नेठाह । सुजसै कमळ कांधळै संभ्रम, स्यांम कहै रहि स्यांम सनाह ।
—रावत रतनसिंह चूंडावत सीसोदिया रौ गीत

२ जो सती या पविव्रता न हो,

निसतेयस, निसतेस—देखो 'निसत्रंस' (रू.भे.) (अ.मा.)

निसत्रंस-सं०स्त्री० [सं० निस्त्रिंश] तलवार (ह.नां.)

रू०भे०—निसतेस, निसतेयस ।

निसत्व-वि० [सं० निःसत्व] जिसमें कुछ असलियत न हो, जिसमें कुछ तत्व या सार न हो, सारहीन, तत्वहीन ।

निसदिन, निसदीह, निसदीहा-क्रि०वि० [सं० निशदिन, निशदिवस] प्रति दिन, रात दिन, हर समय । उ०—१ भगत-जुगत भगवंत भज, धू-पत रसणा धार । चित हर हर निसदिन उचर, सह तज नांम संभार ।—ह.र.

उ०—२ जवण हेक जेण री, आंख नाहर उणहारै । जगजाहर जोधार, लाख घांसाहर लारै । दळ आगळ निसदीह, विजय त्रांमागळ वाजै । दहसत गालिब देस, आग कहतां मंह दाजै ।—मे.म.

उ०—३ तवो राघो राघो करम अघ दाघो तन तणा । महाराजा सीतावलभ कुळ मीता विण-मणा । यरां जैत जंगां अडर यक-रंगां जग अखै । सको गावो जीहा अवस निसदीहा अज सखै ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—निसादिन ।

निसद्द-सं०पु० [सं० निःशब्द] ध्वनि, रव, शोर, आवाज, शब्द ।

उ०—पावस मास विदेस प्रिय, घरि तरुणी कुळ सुध्ध । सारंग सिखर निसद्द करि, मरइ स कोमळ मुध्ध ।—ढो.मा.

निसध-सं०पु० [सं० निषधः] १ श्रीराम का प्रपौत्र और कुश के पौत्र का नाम (सू.प्र.)

२ विंध्याचल पर्वत के समीप के एक प्राचीन देश का नाम ।
(पौराणिक)

३ एक पर्वत का नाम ।

४ देखो 'निसाद' (रू.भे.)

वि०—कठिन ।

निसध-सं०स्त्री० [सं० निषधः] राजा नळ की राजधानी का नाम ।
(डिं.को.)

निसनाथ, निसनाथौ-सं०पु० [सं० निश्+नाथ] चन्द्रमा, चांद ।

निसनायक-सं०पु० [सं० निश्+नायक] चन्द्रमा ।

उ०—निसनह निसनायक नभ नहिं नखताळी । करदी पूनम नै अमावस काळी ।—ऊ.का.

निसनेत, निसनेत्र-सं०पु० [सं० निश्+नेत्र] चंद्रमा, राकेश (अ.मा.)

उ०—करै चख नाहर राह'र केत । नेत-अण भाळ डरै निसनेत । अंबा इण आदक और अनेक । हिचै रण हेकण हूं बढ़ि हेक ।
—मे.म.

निसनैण-सं०पु० [सं० निश्+नयन] चंद्रमा, चांद (ना.डिं.को.)

निसप—देखो 'निसपति' (रू.भे.)
२ देखो 'वनिस्पत' (रू.भे.)
३ देखो 'निस्पत' (रू.भे.)

निसपति-सं०पु० [सं० निस्+पति] १ चन्द्रमा, चांद।
अल्पा०—निसपत।
२ देखो 'वनिस्पत' (रू.भे.)
उ०—निहुट घनै हदलापुर तीजो, पहा गूह सरा एकरण घाय। तरा निसपति असपति सूं अवडो, रिण काढियौ ज काछौ राय।
—नैणसी

निसपतियौ—देखो 'रिस्वतियौ' (रू.भे.)

निसफंद-वि० [सं० निस्+बंध] सांसारिक उलझनों से रहित।
उ०—आतम मांय आप मांही पूरण, निसफंद है निरवांणी। चित्त सरूप थारी कुरिया, ज्यूं बांझ पुत्र प्रगटांणी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

निसफजर, निसफज्जर-सं०पु० [सं० निश्+अ० फज्र] प्रतिदिन, निसदिन (हमेशा प्रातःकाल)
उ०—भड़ आण माण ऊगै मिळै, फौज मिळै निसफज्जरां। जळ वेळ वधै सामुद्र ज्यां, मेळ दळां कमधज्ज रां।—रा.रू.

निसफळ—देखो 'निस्फळ' (रू.भे.)
उ०—रुपियो यों बहोत लगायो, सब निसफळ हुवो।
—सिंघासण बत्तीसी

निसबत—१ देखो 'निस्बत' (रू.भे.)
२ देखो 'रिस्वत' (रू.भे.)

निसबळ-वि० [सं० निस्+बल] निर्बल, कमजोर।
उ०—सगळे असुरे मार संभाया। अधपत सुहड़ ठिकांणै आया। वाजी निसबळ कितरा पुळांणा। मेळावां वदन मुरझांणा।
—रा.रू.

निसमंडण-सं०पु० [सं० निश्+मंडन] चांद, चंद्रमा (ना.डि.को.)

निसमुख-सं०पु० [सं० निश्+मुख] सन्ध्या, सांझ (अ.मा.)

निसम्मणौ, निसम्मबौ-क्रि०स० [सं० निशामनम्] श्रवण करना, सुनना। उ०—सुमे एह वारता मां नहीं गम्य अमे कहीये ते तुम निसम्मे रे।—कवियण

निसरग-सं०पु० [सं० निसर्ग] १ स्वभाव, आदत, प्रकृति (अ.मा.)
२ आकृति, रूप।
३ सृष्टि ४ दान।

निसरडौ—देखो 'निसडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निसरडी)

निसरण-सं०पु० [सं० निःसरण] १ निकलने का मार्ग।
२ उपाय, तरकीब।
३ निकलने की क्रिया या भाव।
४ निर्वाण।
५ मरण, मृत्यु।

निसरणी-सं०स्त्री० [सं० निश्रेणी] १ शरीर की बनावट, ढांचा।
उ०—मटिया आंटाळो पोतियो, कांटा छाप लट्ठा रो धोतियो अर जाळोर रै टुकड़ी री अंगरखी ठाकर रो बारो मास री पोसाक ही। राजपूती हाड अर लाबी निसरणी पर औ कपड़ा फाबता जरूर हा, पण ठाकर रो चेहरो वडो फड़ोपो हो।—रातवासो
२ देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)
उ०—......खे निसरणीह, सिसु गोखां पर चाढियो। तकण कपाट तणीह, जड़ सांकळ कीन्ही जरू।—पा.प्र.

निसरणी-बंध-सं०पु०यौ० [सं० निश्रेणी+बध] छप्पय छंद का एक भेद (र.ज.प्र.)

निसरणौ, निसरबौ—देखो 'नीसरणौ, नीसरबौ' (रू.भे.)
उ०—१ कही घर में घसता आदमी हुं तो पकड़ो मती नै निसरता हुं, पकड़ लीजो।—बंधी बुहारी री वात
उ०—२ पछै दिन पांच दस फेर गोळां री राड़ जाय जाय करै सो उठा मांहे बाहर निसरणे वाळो कोई नहीं।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
निसरणहार, हारौ (हारी), निसरणियौ—वि०।
निसरिओड़ौ, निसरियोड़ौ, निसरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
निसरीजणौ, निसरीजबौ—भाव वा०।

निसरनी—देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)

निसरम-वि० [सं० नि+ फा. शर्म] निर्लज्ज, बेशर्म।
अल्पा०—निसरमौ।

निसरमौ—देखो 'निसरम' (अल्पा०, रू.भे.)
(स्त्री० निसरमी)
ज्यूं०—फेर रांड सांमी बोलै है, निसरमी।

निसरियोड़ौ—देखो 'नीसरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निसरियोड़ी)

निसल—देखो 'नसल' (रू.भे.)

निसलाक-वि० [सं० निःशलाक] निर्जन, एकांत, सुनसान।

निसवाद [सं० निः+वादः] रहित। उ०—निगुण नांम नह नांम निसवाद नाथू। हुअै मुगति देतां सरिस तूझ ह.थूं।—पी.ग्रं.

निसवादी-वि० [सं० नि+स्वादः] स्वादरहित, विना स्वाद का।
उ०—घणी तोड एक एकोड घणी, गोविंद तु सुहअै गमा।
देवे सवाद दुख रो तूं निसवादी ओकमा।—पी.ग्रं.
[सं० निः+वाद+रा प्र.ई] वादरहित। उ०—सरव मूरति साधार, विमव मूरति निसवादी। आदि पुरख अविणास, आदि वाहिरो अनादी।—पी.ग्रं.

निसवासर, निसवासुर-क्रि०वि० [सं० निश्+वासर] १ नित्य, सदा, हमेशा।
२ रात-दिन, हर समय।

निसहर–सं०पु० [सं० निश्+घर] १ मुसलमान।
२ देखो 'निसचर' (रू.भे.)
निसहाय–वि० [सं० निस्+सहाय] जिसको किसी की सहायता या किसी का आश्रय न हो, निस्सहाय।
रू०भे०—निरसहाय।
निसां–सं०पु० [फा० निशां] आदर, सम्मान।
उ०—बादसाह री क्रपा सूं उण अमीर री सब भांति निसां हुई। —नी प्र.
क्रि०वि०—लिए, वास्ते।
उ०—सात बरस रै मांहीं अठारह लाख री फेर पड़ियो सो अठारह लाख री निसां करी।—राजसिंह कूंपावत री वारता
निसांखातर–सं०पु० [फा०निशां+अ० खातिर] तखल्लीस, खातिर।
निसांण–सं०पु० [फा०निशान] १ वह चिन्ह जो किसी पदार्थ से अंकित हो या और किसी प्रकार बना हो।
ज्यूं—गाबा माथै रग रो निसांण।
२ अपढ़ व्यक्ति द्वारा किसी कागज आदि पर अपने हस्ताक्षर के स्थान पर बनाया हुआ चिन्ह।
३ किसी वस्तु को पहचानने का लक्षण, चिन्ह।
ज्यूं—राजा रै महल रो निसांण औ हिज है कै औ इकथंभियो बणियोड़ो है।
४ वह चिन्ह जो शरीर पर किसी कारण से अथवा स्वाभाविक रूप से बना हुआ हो, दाग, धब्बा।
५ किसी प्राचीन या पहले की घटना अथवा पदार्थ का परिचय मिलने का चिन्ह या लक्षण।
६ किसी विशेष काम या पहचान के लिये नियत किया हुआ चिन्ह।
७ झंडा, ध्वजा, पताका।
उ०—१ फौज सारी भाज गई, निसांण रो हाथी, सवारी रो हाथी, नौबत नकारा रा हाथी सैं घेर लिया।—गोपाळदास गौड़ री वारता
उ०—२ दुरद लगा तळ-डांण, पमंग वड पांण रा। फौलां फरकि निसांण, 'मंगळ' मघवांण रा।—शिवबक्स पाल्हावत
[सं० निः स्वान] ८ नगारा
उ०—१ ढोलो चाल्यो हे सखी, बाज्या विरह निसांण। हाथे चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुआ संधांण।—ढो.मा.
उ०—२ अनहद घुरै निसांण, वाजा वाजै भैरवा। सुणै कोई संत सुजांण, पाई मन ठहरवा।—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—३ पावक में ले डारै मोहि, जरे सरीर न छाडूं तोहि। अब दादू ऐसी बन आई, मिळूं गोपाळ निसांन बजाई।—दादूवांणी
९ देखो—'निसांणी' (रू.भे.)।
रू०भे०—निसांणि, निसांन, नीसांण, नीसांणि, नीसांन।
निसांणची–सं०पु० [फा० निशान+रा.प्र.ची] १ दल, सेना आदि के आगे झंडा लेकर चलने वाला। २ लक्ष्य पर निशाना लगाने वाला।
रू०भे०—निसांनची, नीसांणची।
निसांण-देही–सं०स्त्री० [फा० निशान+देह+रा.प्र.ई] आसामी की पहचान करवाने का काम, आसामी का पता बतलाने का काम।
रू०भे०—निसांन-देही, नीसांणदेही।
निसांणबरदार–सं०पु० [फा० निशानबरदार] सेना, राजा आदि के आगे आगे झंडा लेकर चलने वाला, निशानची।
रू०भे०—निसांनबरदार।
निसांणि—१ देखो—'निसांण' (रू.भे.)
उ०—१ दुरवेस कन्हा गरहावि देस, नमि कोट विची न रहिय नरेस। पतिसाह सेन दीठइ प्रमांणि, नीसरिय 'जइत' रुड़तइ निसांणि। —रा.ज.सी.
उ०—२ पह भलइ लियउ नागउर प्रांणि, नवसहसधणी रुड़तइ निसांणि।—रा.ज.सी.
२ देखो—'निसांणी' (रू.भे.)
निसांणी—सं०स्त्री० [फा० निशानी] १ किसी का स्मरण दिलाने वाली अथवा स्मृति के उद्देश्य से रखी हुई वस्तु या पदार्थ, वह वस्तु जिससे किसी का स्मरण हो, स्मृति-चिन्ह, यादगार।
उ०—१ बादसाह कही एक निसांणी मया री आ छै।—नी.प्र.
उ०—२ जरदो पिवण न जोग, नासिका नरक निसांणी। मांन कळू मनवार, उत्तम सब रीत उडांणी।—ऊ.का.
ज्यूं—आ तरवार म्हारै वडेरां री निसांणी है।
ज्यूं—सुहागरात मनायां पैली इज जुद्ध में वीर होतां होतां चूंडावत रांणी खनां सूं निसांणी मांगी तद रांणी आपरो सीस काट'र निसांणी रै रूप में हाजर कर दियो।
ज्यूं—म्हारै घर में पैंली घणी ई ओद वाळी गायां ही पण हमें आ एक टोगड़ो इज उणां री निसांणी है।
२ वह वस्तु या चिन्ह जिससे कोई वस्तु पहचानी जाय, पहचान, निशान।
उ०—१ सिकंदर पूछी बादसाह री मनगराई री निसांणी कांई छै। —नी.प्र.
उ०—२ माता हे आ मुंदड़ी, प्रभु दीन्ही नेह निसांणी हे। —गि.रां.
३ देखो 'नीसांणी' (रू भे.)
रू०भे०—निसांणि, निसांनी।
निसांणो–सं०पु० [फा० निशाना] १ वह वस्तु, पदार्थ, स्थान या चिन्ह आदि जिसकी ओर ताक कर किसी अस्त्र या शस्त्र का वार किया जाय, लक्ष्य।
२ किसी लक्ष्य की ओर अस्त्र या शस्त्र को साध कर वार करने की क्रिया।
क्रि०प्र०—बांधणो, मारणो, लगाणो।
३ किसी को लक्ष्य करके कहा हुआ व्यंग्य या बात।

रू०भे०—निसांण, निसान, निसानो, नीसांण, नीसांणो, नीसानो।
निसांत-सं०पु० [सं० निशांत] १ पिछली रात, रात्रि का अंत, तड़का, प्रभात।
वि०—जो शांत हो, बहुत शांत।
निसांध-वि० [सं० निशांध] जिसे रात को दिखाई न देता हो।
निसांन—१ देखो 'निसांण' (रू.भे.)
उ०—पावक में ले डारै मोहि, जरे सरीर न छाडूं तोहि। अब दादू ऐसी बन आई, मिलूं गोपाळ निसान बजाई।—दादूबांणी
२ देखो 'निसांणो' (रू.भे.)
निसानची—देखो 'निसांणची' (रू.भे.)
निसांन-देही—देखो 'निसांण-देही' (रू.भे.)
निसानन—देखो 'निसानन' (रू.भे.)
निसानबरदार—देखो 'निसांणबरदार' (रू.भे.)
निसानाथ—देखो 'निसा-नाथ' (रू.भे.)
निसानो—देखो 'निसांणो' (रू.भे.)
निसानो—देखो 'निसांणो' (रू.भे.)
निसांसो—१ देखो 'निस्वास' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पहलै सूं पहलो घसै, वेरयां कूंडी भीड़। बारी ठाली वाजतां, छोड निसांसा छीड़।—वू
२ देखो 'निसासो' (रू.भे.)
(स्त्री० निसांसी)
निसा-सं०स्त्री० [सं० निशा] १ रात्रि, रात (डि.को.)
उ०—१ उर नम जिते न ऊगमै, श्रो सतोस अदीत। नर तिसना निगना निसा, मिटै इते नह मीत।—बां.दा.
उ०—२ सरळ सचिक्कण स्याम कच, मुकता मांग मझार। तरुण तनुजा मधि तसी, धसी सुरसरी धार। धसी सुरसरी धार, सरळ कच संधणां। निसा कहूं नाखित्र सझै आभूखणां। मन चुरियो इण मांहि, फ हेला दै कठी। अरध निसा इण ओड, अरध निसा है उठी।—मियवपस पाल्हावत
उ०—३ सात वरन तन तन मझै, वह भांत मडांणं। उरध केस विम्ब रूप गुज निसा समांण।—गजउद्धार
२ हल्दी।
वि०—काला, स्याम* (डि.को.)
निसाकर-सं०पु० [सं० निशाकर] १ चंद्रमा, राकेश (अ.मा.)
२ शिव, महादेव।
३ मुर्गा ४ कपूर।
निसाचर-सं०पु० [सं० निशाचर] १ राक्षस, दानव।
उ०—१ चितां वध वरंगा उठे कट किरमरां, सघर घर लड़ै उतवंग दोनै सरां। मापड़ै मचै रिण निसाचर वनचरां, वीर कौतिक रचै जाणु बाजीगरां।—र.रू.
उ०—२ निरग रूप मारीच निसाचर, रघुवर सर सूं मारयो जी, नारायणजी परमेसरजी।—गी.रां.
उ०—३ साळ भग्गा देखतां, घोर दळ जोर निसाचर। सुधम दांन सिनांन, ब्रहम जाय वधे सियावर।—सू.प्र.
२ गीदड़, शृगाल।
३ उल्लू।
४ प्रेत, भूत।
५ चोर।
६ वह जो रात्रि में विचरण करता हो, रात्रि में चलने या घूमने वाला। उ०—पति प्रति आतुर त्रिया मुख पेखण, निसा तणो मुख दीठ निठ। चंद्र किरणि कुलटा सु निसाचर द्रवडित अभिसारिका द्रिठ।—वेलि.
रू०भे०—नसाचर।
निसाचरपति-सं०पु० [सं० निशाचरपति] १ शिव, महादेव।
२ रावण।
निसाचरम-सं०पु० [सं० निशा+चर्म] घोर अंधकार (डि.को.)
निसाचरी-सं०स्त्री० [सं० निशाचरी] १ पिशाचिनी, राक्षसी।
२ कुलटा।
३ अभिसारिका नायिका।
निसाचारी-सं०पु० [सं० निशाचारिन्] १ शिव, महादेव।
२ राक्षस, पिशाच।
निसाट-सं०पु० [सं० निशाटः] १ राक्षस, असुर, निशाचर।
२ मुसलमान। उ०—१ दियै खग झाट निसाट दुझाळ। हिचै जुध 'नाथ' सुजाव 'हिंदाळ'। जुटै जुध 'नाहर' रो 'जगसाह'। उडावत लोह कहै रवि वाह।—सू.प्र.
उ०—२ पड़ झाट खगे द्रढ़ घाट पगे। जुध काट निसाट निराट जगे। बहु रुंड उठै मुख मुंड बकै। धड़ खड हुवै भड़ चंड धकै।
—रा.रू.
३ उल्लू।
रू०भे०—नीसाट।
निसामण, निसामणि-सं०पु० [सं० निशामणि] चंद्रमा, चांद।
उ०—यथा क्षीर मांहि गो क्षीर जळ मांहि गंगा नीर, पट्ट सूत्र मांहि हीर, वस्त्र मांहि चीर, अलंकार मांहि चूडामणि, ज्योतिष मांहि निसामणि।—व.स.
निसातक-सं०पु० [सं० निशान्तक] दीपक (नां.मा.)
निसाद-सं०पु० [सं० निषाद] १ एक प्राचीन अनार्य जाति।
२ मेहतर, भंगी, हरिजन (डि.को.)
३ मुसलमान। उ०—जसवंत विना जिहांन, पांन चल जांणै पवनै कना केतु साकप, यथा मन हिंदसथांनै। घटै क्रिया बांमणां, मिटै झालर परसादां। ईत प्रजा ऊपजै, निरख दुर नीत निसादां। इक राह चाह लागो असुर, निर सहाय प्राकार नव। 'अवरंग' अथी पर उलटियो, दग प्रगटयो जांण दव।—रा.रू.

४ संगीत के सात स्वरों में अंतिम और सबसे ऊंचा स्वर ('नि')।
रू०भे०—निखद, निखाख, निखाद।

निसादियत-सं०पु० [सं० निषादित] महावत के पैर हिलाने की क्रिया (डि.को.)

निसादिन—देखो 'निसदिन' (रू.भे.)

निसादी-सं०पु० [सं० निषादिन्] महावत, हाथीवान (डि.को.)
उ०—किते कुप्पि होदन में कुद्दै। मरोरै निसादीन के कंठ मुद्दै।
—व.भा.

निसाधीस-सं०पु० [सं० निशाधीश] निशापति, चन्द्रमा।

निसानन-सं०पु० [सं० निशा+आनन] सन्ध्या का समय, सायंकाल, सांझ।
रू०भे०—निसांनन।

निसानाथ-सं०पु० [सं० निशा+नाथ] राकेश, चन्द्रमा।

निसापत, निसापति-सं०पु० [सं० निशापति] १ चन्द्रमा, राकेश।
२ कपूर।
रू०भे०—नसापत, नसापति।

निसापाळ-सं०पु०—१५ वर्ण का एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में एक गुरु फिर एक नगण इस क्रम से उस चरण के तीन गुरु और तीन नगण तथा अंत में एक रगण होता है (पि.प्र.)

निसापसब, निसापुस्प-सं०पु० [सं० निशापुष्प] कुमुदिनी।

निसाफ—इन्साफ, न्याय।
उ०—साच झूठ इजहार सुण, नृप करै निसाफ। आंख देख नै ओळखै, पारख कमध 'प्रताप'।—चिमनदांन रतनू

निसाबळ-सं०पु० [सं० निशाबल] फलित ज्योतिष के अनुसार रात्रि के समय बलवती मानी जाने वाली राशि।
वि०वि०—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धन और मकर इन छः राशियों को रात्रि के समय बलवती माना जाता है।

निसामणि, निसामणी-सं०पु० [सं० निशामणि] १ चन्द्रमा, राकेश।
२ कपूर।

निसामुख-सं०पु० [सं० निशामुख] संध्या का समय, सायंकाल, सांझ।

निसार-सं०पु० [अ०] १ रुपए के चौथाई भाग के बराबर अथवा चार आने (२५ नए पैसे) के बराबर का एक सिक्का जो मुगलों के राज्य काल में प्रचलित था।
२ न्यौछावर करने की क्रिया या भाव।
३ यवन। उ०—अंग्रेज, पुरतगीज, दिलदेज, फरासीस, फिरंगी, डीगमार, गुरजी, इस्काटलैंड, जरमनी, चिलवी, कुतबी, डरैसी ऐ वारै टोपी निसारां री।—बां.दा.ख्यात
४ निकलना क्रिया या निकलने का स्थान।
वि०—१ न्यौछावर किया हुआ।
२ देखो 'निस्सार' (रू.भे.)

निसारण-सं०पु० [सं० निःसारण] १ वह द्वार या मार्ग जिससे कोई वस्तु निकल सके या निकाली जा सके।
२ निकालने की क्रिया या भाव।

निसारिप, निसारिपु-स०पु० [सं० निशारिपु] सूर्य (ह.नां.)

निसारुक-सं०पु० [सं०] सात प्रकार के रूपक तालों में से एक (संगीत)

निसाळ, निसाळा—देखो 'नेसाळा' (रू.भे.)
उ०—१ ताकवां निसाळां खुलै भेटियां बिलंद ताळा, विलाला नरिंद्र इंद्र सारूप वाखांण। पांणां थारा 'अमरेस' नचीतौ चीतोड़पती खांडै थारै दुचितौ छः-खडो खुरसांण।
—अमरसिंह सीसोदिया रो गीत
उ०—२ कुमर वधै दिन दिन प्रतइ, सेठजी हृदय विमासै रे। पुत्र निसाळै मोकळू, अध्यापक नै पासै रे।—लाधो साह

निसास, निसासउ—देखो 'निस्वास' (रू.भे.)
उ०—१ निसास तूं भल सरजियौ, आधौ दुक्ख सहंति। जो निसासउ सरजत नहि, तौ हीयाइ मरंति।—अज्ञात
उ०—२ इण भांत कजियौ हार झालौ ठाकुरसिंह पाछौ गयौ। राजपूत दिलासा करता परचावता नीठ-नीठ जे जावै छै। ठाकुरसिंह मार्गे मन उदास थको निसास गेरतौ जावै छै। रात घड़ी च्यार रै गयां, पाधरौ आपरै डेरै आयौ।
—डाढ़ाळा सूर री वात
उ०—३ अकबरियौ हत आस, अंबखास झांखै अधम। नांखै हियै निसास, पास न रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ
उ०—४ वालम थांरा विरह री, लागी लार बलाय। मन अभिलाखा भर रह्यौ, जीव निसासां जाय।—अज्ञात
उ०—५ इसइ आरखइ मारुवी, सूती सेज विछाइ। साल्ह कुंवर सुपनइं मिळयउ, जागि निसासउ खाइ।—ढो.मा.

निसासणौ, निसासबौ-क्रि०अ० [सं० निःश्वासनम्] निश्वास डालना, दुःखी होना, चिंतित या खिन्न होना। उ०—१ भख मुहंगौ करतै भुमंतर, वनचर ऊसर थया वैरंग। निसदिन अरज करै निसासै, सस आगळ ऊभौ सारंग।—रुघो मुहतौ
उ०—२ निमंत्रीहार अयार निसासहि। द्रिहंगसि ढोलां रवद दुवाइ विसकन्या देखै वजवाया। मुणियउ मांड अनड़ मेवाड़।—दूदौ

निसा-सरोज-सं०पु०यौ० [सं० निशा-सरोज] चन्द्र, चांद, चंद्रमा।
उ०—सदा प्रिया सु प्रीति रीति गीत सारनी नहीं। निसा-सरोज आननी उरोज धारनी नहीं। क्रिसोदरीय कांमिनी विभा वयोधरी नहीं।—ऊ.का.

निसासौ-वि० (स्त्री० निसासी) १ दुःखी, खिन्न, चिंतित, बेचैन।
उ०—जीण म्हारी बाई ए इतरी निसासी ए वैनड़ मत हुवै, हरसो तो चालै थारै साथ।—लो.गी.
२ देखो 'निस्वास' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ ताहरां नरी बोलियौ—'मा ! निसासौ क्यूं मूं कियौ।
—नैणसी

उ०—२ इनरै जवाब रात घड़ी दोय तीन बोलियो निसासो मेल, तुरत दसा जवाब नूं लादो जवाद ऊठियो ।
—जलाल बूबना री बात

निसि-संस्त्री [सं० निशि] १ रात्रि, रजनी ।

उ०—१ माझी मावस मारसी, घटा मंडांणी आज । आजूणी निसि घरना, नासी स्यूं जमराज ।—बखराज

उ०—२ इम निसि गुरळ वाग नृप आए । विमळ चंद्रका साज सजाए ।—सू.प्र.

उ०—३ इमा मन छवि परस, सरब चल वदन सुरंगे । यों लग्गे नभ मन, सगिर सिर कागद अग्गे । कै चकोर नभ भोर, सरद राका निसि सुंदर । हेत नेत्र हरसंत, रूप निरखत सुधाकर ।
—रा.रू.

उ०—४ मजति सुप्रिह हेमंति सीत मैं, मिळि निसि तु न कोई वहै मगि । कोई कोमळ वसत्र कोई कंबळि जण मारियौ रहति जगि ।
—वेलि.

२ हळदी ।

निसिचर-संपु० [सं० निशि+चर] राक्षस, असुर ।

रू०भे०—निसियर, निसियद ।

निसिचरराज-संपु०यौ० [सं० निशिचर+राज] १ राक्षस, असुर ।

२ राजा बलि ।

३ रावण ।

४ विभीषण ।

५ हिरण्यकश्यपु ।

निसित-वि० [सं० निशित] तीक्ष्ण, तेज ।

संपु०—लोहा ।

निसिद्ध-वि० [सं० निषिद्ध] १ जिसके लिए मनाही हो, जिसका निषेध किया गया हो, जो न करने योग्य हो ।

२ बुरा, खराब ।

निसिनाथ-संपु० [सं० निशि+नाथ] १ चंद्रमा, राकेश ।

२ कपूर ।

निसिनायक-संपु० [सं० निशि+नायक] रजनीपति, चंद्रमा ।

निसिपति-संपु० [सं० निशि+पति] १ रजनीपति, चद्रमा, राकेश ।

उ०—निसिपति नारी मोहनगारी, रोहणि नइ रंगराती । प्रभु चरणां परणी तजि तरणी, अद्भुत गुण करि माती ।—वि कु.

२ कपूर ।

निसिपाळ-संपु० [सं० निशिपाल] चंद्रमा, मयंक ।

निसियर, निसियद—देखो 'निसिचर' (रू.भे.)

उ०—अमर त जिणवर गिर त मेरु निसियर तद सासणु, तरु त अमर नर धन त धनु महता पंचाणणु । गढ़ त लंक विसहर त सेसु गह गुरुद त दिवायर, मयम त दूधमणि नइ त गंग जळ बहुळ त सायर ।—समयतिरु यती

निसीय-संपु० [सं० निषीद] बैठने की क्रिया या भाव (जैन)

निसियांन, निसीयनि-संपु० [सं० निस्वन, निस्वानः] शब्द, आवाज (ह.ना.)

निसीत, निसीद-संपु० [सं० निशीथ] १ रात्रि, रजनी, रात ।

उ०—सुकाय सीत भीत मे निसीथ धूजती सही । निकाम हाय पाय में उपाय सूझती नहीं । निदाघ में निदाघदेह बाग आग में नहीं । नरानुराग त्याग व्है तड़ाग भाग में नहीं ।—ऊ.का.

२ अर्द्ध रात्रि, आधी रात ।

उ०—१ ससै एम निसीत लग, पेरै प्रेम-प्रगास । जगि रति मदन विलास ज्यों, हित चित परस हुलास ।—रा.रू.

उ०—२ लग्गी हाम विलासं, विती अग्यात प्रात मध्यातं । सायंकाळ निसीतं, रत भूप चूंप मदानयं ।—रा.रू.

उ०—३ एक राति निसीथ रै समय एकला वराह नूं पुर बारै जावतो देखि विक्रम भी प्रछन्न पीठि लागो थको एक नदी रै तीर स्मसांण देस गयो ।—वं.भा.

निसीथणी, निसीथिणी-संस्त्री० [सं० निशिथिनी] रात्रि, रजनी ।

निसीनर-संपु० [सं० निशि+नर] राक्षस, असुर ।

निसीनत्र-संपु० [सं० निशि+नेत्र] चंद्रमा, चांद, मयङ्क ।

निसीम-वि० [सं० निःसीम] १ जिसकी कोई सीमा न हो । सीमा-रहित, अपार, बेहद ।

२ बहुत अधिक, बहुत बड़ा, अत्यन्त ।

निसुंभ-संपु० [सं० निशुंभ] कश्यप ऋषि की स्त्री दनु के गर्भ से पैदा होने वाला एक प्रसिद्ध और शक्तिशाली असुर जिसने अपने भाई शुंभ के साथ इंद्रादि देवताओं को पराजित करके स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था । अंत में दुर्गा से युद्ध कर के मारा गया ।
(पौराणिक)

रू०भे०—निसंभ, निसुंभ ।

निसुंभमरदिनी-संस्त्री० [सं० निशुंभमर्दिनी] दुर्गा, देवी ।

निसुणणौ, निसुणबौ-क्रि०स० [सं० नि+श्रु] श्रवण करना, सुनना ।

उ०—१ माइ भणइ निसुणि वच्छ भोलिम घणी, तउं नवि जांणए तासु सार । रूपि न रीजए मोहि न भीजए, दोहिलो जालवीजइ अपार ।—उपाध्याय मेरुनंदन गणि

उ०—२ पय ठवणुच्छव जुगवरह, करावितु बहु रंगि । तांम सुगुरु आइसु दियए, निसुणवि हरिसिउ अंग ।—मुनिसारमूर्ति

उ०—३ निसुणि नारि विचारि ण पयसियइ, प्रोय तणो तटि कउतिगि वयसियइ ।—विराट पर्व

निसुणियोड़ौ-भू०का०कृ०—श्रवण किया हुआ, सुना हुआ ।
(स्त्री० निसुणियोड़ी)

निसुर-वि० सं० निः+स्वर] शब्दरहित, बिना आवाज के, मौन ।

उ०—पीळांणो धरा ऊळघी पाकी, सरदि-काळि एहवी सिरी । कोकिल निसुर प्रस्वेद ओस कण सुरति अंति मुख जिम सुत्री ।
—वेलि

निसूरण-वि० [सं० निषूदन ?] विनाश करने वाला, विनाशक (जैन)

निसेजा, निसेज्ज–सं०स्त्री० [सं० निषद्या] १ किसी वस्तु के विकने का स्थान, हट (उ.र.)
२ खाट, चारपाई ।
३ शय्या (जैन)

निसेणी—देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)
उ०—छटा अलौकिक छाय, ऊंची लहरां ऊपड़ै । मुगत निसेणी माय, सुखदैणी असुरां सुरां ।—वां.दा.

निसेद, निसेध–सं०पु० [सं० निषेध] १ न करने का आदेश, मनाही, वर्जन ।
उ०—विधि निसेध करम नहि क्रिया, बुद्धि उगत थकांणी । सत सुखरांम परम प्रकासी, आपकूं आप पिछांणी ।
—स्री सुखरांमजी महाराज
२ अवरोध, रुकावट, वाधा ।
रू०भे०—निखेद, निखेध ।

निसेधक–सं०पु० [सं० निषेधक] निषेध करने वाला, रोकने वाला, मना करने वाला, अवरोध करने वाला ।

निसेधणौ, निसेधबौ–क्रि०स० [सं० निषेधनम्] १ निषेध करना, मना करना, रोकना (उ.र.)
२ खण्डन करना ।
निसेधणहार, हारौ, (हारी), निसेधणियौ—वि० ।
निसेधवाड़णौ, निसेधवाड़बौ, निसेधवाणौ, निसेधवाबौ, निसेधवावणौ, निसेधवावबौ, निसेधाड़णौ, निसेधाड़बौ, निसेधाणौ, निसेधाबौ, निसेधावणौ, निसेधावबौ—प्रे०रू० ।
निसेधिओड़ौ, निसेधियोड़ौ, निसेध्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निसेधीजणौ, निसेधीजबौ—कर्म वा० ।
निखेधणौ, निखेधबौ—रू०भे० ।

निसेधियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ निषेध किया हुआ, मना किया हुआ, रोका हुआ ।
२ खण्डन किया हुआ ।
(स्त्री० निसेधियोड़ी)

निसेविय–वि० [सं० निषेवित] परिसेवित (जैन)

निसेस–सं०पु० [सं० निशीश] रजनीपति, चंद्रमा, मयङ्क ।

निसैनी—देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)
उ०—दरसन परसन स्नांन जोई करैं जप ध्यांन, नांव सुणैं मुख आंन गांन कर गाईयैं । सातू विध मोख दैणी निसैनी सरगलोक ऐसी भागीरथी ताहि ध्यांन कर ध्याईयैं ।—गजउद्धार

निसोग–वि० [सं० निःशोक] १ दुःख, चिन्ता या शोक से मुक्त, शोक-रहित ।
२ प्रसन्न, सुखी ।

निसोच–वि० [सं० निःशोच] चिन्तारहित, निश्चिन्त ।

निसोत, निसोथ–सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की लता ।

निस्कंटक–वि० [सं० निष्कंटक] झंझट या आपत्तिरहित, निर्विघ्न ।
रू०भे०—निकंटक, निहकंट, निहकंटक ।

निस्कंट–सं०पु० [सं० निष्कंठ] वरुण नाम का पेड़ ।

निस्कंप–वि० [सं० निष्कंप] कम्पनरहित, स्थिर ।
रू०भे०—निहकप ।

निस्कंभ–सं०पु० [सं० निष्कंभ] गरुड़ के एक पुत्र का नाम ।

निस्क–सं०पु० [सं० निष्कः] एक प्रकार की स्वर्ण-मुद्रा ।
उ०—सो देखतां ही प्रतिहायन बांणवै लाख निस्क मुद्रा री मुलक माळव भण रै समांन छोडि प्रामार वंस रै प्रभाकर जोग लियौ ।
—वं.भा.

निस्कपट–वि० [सं० निष्कपट] छलरहित, कपटरहित, सीधा, सरल ।
उ०—इकळास सूं निस्कपट अंदेखा बिगर पक्ष बिगर म्हारा थारा विगर गादी राज री बैठै ।—नी.प्र.
रू०भे०—निकपट ।

निस्कपटता–सं०स्त्री० [सं० निष्कपट+रा.प्र.ता] निष्कपट होने का भाव, सरलता ।

निस्कपटी–वि० [सं० निष्कपटिन्] १ जो छली न हो, कपट नहीं करने वाला ।
२ कपटरहित, सरल ।

निस्करम, निस्करमी–वि० [सं० निष्कर्मन्] जो कामों में लिप्त न हो, अकर्मा ।
रू०भे०—निकरम, निहकरम, निहकरमी ।
अल्पा०—निकरमौ ।

निस्करुण–वि० [सं०निः+करुण] जिसमें करुणा या दया न हो, निष्ठुर, बेरहम ।

निस्कळंक–वि० [सं० निष्कलंक] बिना किसी कलंक का, निर्दोष ।
उ०—राठोड़ सूरौ खींवौ, कांधळ जी रा वेटा, मोहिलां रा दोहिता सो बड़ा सूर, धीर-वीर राजपूत, चोसठ-आखड़ी निवाहणहार, खाग त्याग पूरा काछ-वाच निस्कळंक, सरणाई-साधार, पर-भोम-पंचायण, पार की छटी जागै, इण भांत रा दातार जूंझार ।
—सूरे खींवे कांधळोत री बात
रू०भे०—निकळंक, नीकळंक ।

निस्कळंकतीरथ–सं०पु० [सं० निष्कलंकतीर्थ] एक तीर्थ (पौराणिक)

निस्कळ–वि० [सं० निष्कल] १ कलारहित ।
२ पूरा, समूचा ।
३ नपुंसक ।
४ जिसका वीर्य नष्ट हो गया हो, वृद्ध ।
सं०पु०—ब्रह्मा ।

निस्कांम—देखो 'निकाम' (रू.भे.)

निस्कांमी—देखो 'निकांमी' (रू.भे.)
उ०—१ मन चित मनसा पलक में, सांई दूर न होइ । निस्कांमी निरखै सदा, दादू जीवन सोइ ।—दादूबांणी

उ०—२ निरह निरंजन नाम रटू, जब मन भलग अभेव। दादू दौरै राम रम, निहकामी निज सेव।—दादूवाणी

निस्कारण-वि० [सं० निस्+कारण] १ अकारण, बेसबब।

२ वृथा, व्यर्थ।

निस्क्रमण-सं०पु० [सं० निष्क्रमण] बाहर निकलने की क्रिया या भाव।

निस्क्रिय-वि० [सं० निष्क्रिय] जो निश्चेष्ट हो, क्रिया या व्यापार-रहित, कर्मशून्य, निश्चेष्ट।

निस्क्रियता-सं०स्त्री० [सं० निष्क्रिय+रा.प्र.ता] वह अवस्था या भाव जिसमें सक्रियता न हो, निश्चेष्टता, कर्मशून्यता।

निस्क्लेस-वि० [सं० निष्क्लेश] कष्टों से छुटकारा पाया हुआ। क्लेशरहित।

निस्चंद्रअभ्रक-सं०पु० [सं० निश्चंद्रअभ्रक] नर-मूत्र, ग्वारपाठा, बकरी का दूध आदि वस्तुओं को मिला कर और सौ बार पुट देकर तैयार किया हुआ एक अभ्रक विशेष जो वीर्यवर्द्धक और ज्वरनाशक माना जाता है (वैद्यक)।

निस्चय-सं०पु० [सं० निश्चय] १ संशयरहित धारणा, सन्देहरहित ज्ञान, अवश्य। उ०—१ बिना बिचारियां कियो काम निस्चय दुखदायी होय।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ राखस एक महाबळी, महा दुस्ट सो आहि। पर-दुखनासी है नृपति, निस्चय नासो ताहि।—सिंघासण बत्तीसी

२ निर्णय, फैसला।

ज्यूं—हमेसां यो कांई रगड़ो ! आज इण बात रो निस्चय हो जाणो चाहिजै, म्हांसूं इब दुख नी देखीजै।

३ तय करने की क्रिया या भाव।

४ यकीन, विश्वास।

५ दृढ़ विचार, पक्का विचार, संकल्प।

ज्यूं—आगली गरमियां में कास्मीर री सैर करण री तो निस्चय है ईज।

रू०भे०—नहंचै, नहच, नहचे, नहचैण, नहचै, निच्चय, निसचय, निसचे, निसचै, निसचो, निहचै, निहचो, नेहचै, नैहचै।

निस्चयातर-भ्रांति-जथा-सं०स्त्री०—डिंगल में गीत (छंद) की वह रचना जिसमें संदेह अलंकार का प्रयोग हो (क.कु.बो.)

निस्चर-सं०पु० [सं० निश्चर] एकादश मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

निस्चळ, निस्चल-वि० [सं० निश्चल] १ अविचल, दृढ़, अटल।

उ०—साधो निस्चळ पद सुखदाई। फिरता कूं थिरता कर राखो, सरक ध्यान के मांई।—स्री हरिरांमजी महाराज

२ अपने स्थान से नहीं हटने वाला, अचल।

उ०—च्यार मास निस्चळ रह्या, सरवर-तणै प्रसंगि। पिंगळ नळ-राइ सूरती, मिळिया मन में रंगि।—ढो.मा.

३ जो जरा भी न हिले-डुले, स्थिर।

उ०—१ दादू मन फकीर सदगुरु किया, कह समझाया ग्यान। निस्चळ आसन बैस कर, अलक पुरस का ध्यान।—दादूवांणी

उ०—२ धर अचर चित, निस्चळ निंचित। नहि आदि अत, अग-हर अनंत।—ऊ.का.

उ०—३ प्रीति चंद्र कमोदिनी नइ, धरणी पावस जेम। तिम रुकमणी सूं नेह धरज्यो, नाथ निस्चळ प्रेम।

—रुकमणी मंगळ

४ शांत, अचपल।

सं०पु०—१ परब्रह्म। उ०—निस्चळ का निस्चळ रहै, चंचळ का चल जाय। दादू चंचळ छाडि सब, निस्चळ सौं ल्यौ लाय।

—दादूवांणी

२ देखो 'निसचळ' (रू.भे.)

उ०—पूरण जोगी सोई अवधूता, आसण छोड न जाई। राज जोग मत निस्चळ कीवी, सोळं कळा सदाई।

—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—नहचळ, निच्चळ, निछळ, निस्चिळ, निहिचळ, निहचळ।

अल्पा०—निचळो।

निस्चळता-सं०स्त्री० [सं० निश्चल+रा.प्र. ता] स्थिरता, दृढ़ता, अचलता।

निस्चिंत-वि० [सं० निश्चिंत] जिसे चिंता न हो या जो चिंता न करे, चिंता रहित, बेफिक्र।

रू०भे०—नचंत, नचिंत, नचींत, नचीत, नच्यंत, नस्चित, निचंत, निचत, निचिंत, निचित, निचींत, निचीत, नीचंत, नीचिंत, नोचींत।

अल्पा०—नचितो, नचींतड़ो, नचीतेड़ो, नचीतो, निचतो, निचतो, निचिंतो, निचींतो, निचीतो, निहचत।

निस्चिंतता-सं०स्त्री० [सं० निश्चिंत+रा.प्र. ता] निश्चिंत होने का भाव, बेफिक्री।

रू०भे०—नचीताई, निचिंता, निचिंताई, निचिंती, निचिताई, निचीताई।

निस्चित-वि० [सं० निश्चित] १ तय किया हुआ, निर्णीत।

ज्यूं—टैम निस्चित करणी, दिन निस्चित करणो, कामकाज निस्चित करणो।

२ पक्का, दृढ़।

ज्यूं—निस्चित बात कैणी।

निस्चिळ—देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)

उ०—अचेतनि केतउं चेईइ, वडमूळ प्रासाद केतउं खडहडइ, ठालउ केतउ धडहडइ, कपटपर केतउं सोचइ, दुमीळ केतउ इंद्रिय खांचइ, परहाथउ केतउं हालउ, निस्चिळ केतउ चालइ, सस्त्रसमरहित केतउं धाउ वंचइ, दुरवळ केतउ माचत, ठूंटउ केतउं लांखइ सत-पुरस केतउं झखइ ?—व.स.

निस्टि-सं०स्त्री० [सं० निष्टि] असुरों की मां दिति का एक नाम जो कश्यप ऋषि की पत्नी और दक्ष प्रजापति की कन्या थी। (पौराणिक)

निस्ठा-सं०स्त्री० [सं० निष्ठा] १ किसी बड़े, गुरु या धर्म आदि के लिए श्रद्धा की भावना, पूज्य बुद्धि, श्रद्धा-भक्ति।
२ ज्ञान की वह अंतिम अवस्था जिसमें आत्मा और ब्रह्म की एकता हो जाती है, सिद्धावस्था की चरम सीमा या स्थिति।
३ चित्त का स्थिर होना, मन की एकांत स्थिति।
४ अवस्था, स्थिति, ठहराव।
५ निश्चय, विश्वास।
६ निर्वाह।
७ इति, समाप्ति।
८ नाश।
सं०पु०—९ विष्णु जिनके लिए माना जाता है कि उनमें प्रलय के समय समस्त भूतों की स्थिति होगी।

निस्ठावांन-वि० [सं० निष्ठावान्] जिसमें श्रद्धा या निष्ठा हो।

निस्ठुर-वि० [सं० निष्ठुर] १ जिसमें दया न हो, कठोर दिल का, बेरहम, क्रूर।
२ कटु, अप्रिय। उ०—मूझ तणां गुण वाचंता जी, नयण न खांडइ धार। सांमळ व्रण सांसइ थया जी, निस्ठुर वयण विचार।
—रुकमणी मंगळ
३ सख्त, कठिन, कड़ा, कठोर।
रू०भे०—निठुर, नींठर, नीठर, नीठुर।

निस्ठुरता, निस्ठुराई-सं०स्त्री० [स० निष्ठुर+रा.प्र. ता]
१ क्रूरता, बेरहमी, निर्दयता।
ज्यूं—अरे! बापड़ा माथै इती निस्ठुरता क्यूं करै है। थनै ई भगवांन रै घरै जवाब देणौ पड़सी। जिण धन रै लारै दीवांनो होय नै इतरी निस्ठुराई बरतै है वौ धन कीड़ी संचै तीतर खाय जियां व्हे जासी।
२ निष्ठुर होने का भाव, सख्ती, कठोरता, कड़ाई।
ज्यूं—धीमा रो ठाकरां धीमा! इती निस्ठुरता सूं कांम करण वाळा री मन नी वधै, घोड़ो हूंस सूं दौड़िया करै।
रू०भे०—निठुरइ, निठुरता, निठुराई।

निस्तरण-सं०पु० [सं० निस्तरणम्] १ पार जाने की क्रिया या भाव।
२ उद्धार, छुटकारा, निस्तार।

निस्तरणौ, निस्तरबौ-क्रि०अ० [सं० निस्तरणम्] १ मुक्त होना, निस्तार पाना, छूटना।
२ पार होना। उ०—जो रे भाई रांम नहिं करते, नवका नांम खेवट हरि आपै, यों बिन क्यों निसतरते।—दादूबांणी
३ देखो 'नस्तरणौ, नस्तरबौ' (रू.भे.)
निस्तरणहार, हारौ (हारी), निस्तरणियौ—वि।
निस्तरिओड़ौ, निस्तरियोड़ौ, निस्तरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
निस्तरीजणौ, निस्तरीजबौ—भाव वा०।
निस्तारणौ, निस्तारबौ—सक०रू०।
निसतरणौ, निसतरबौ—रू०भे०।

निस्तरियउ [सं० निस्तीर्ण] उद्धार पाया हुआ, मुक्त। (उ.र.)

निस्तरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मुक्त हुवा हुआ, निस्तार पाया हुआ, छूटा हुआ।
२ पार हुवा हुआ।
३ देखो 'नस्तरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निस्तरियोड़ी)

निस्तार-सं०पु० [सं० निस्तारः] १ उद्धार, छुटकारा, मोक्ष।
उ०—१ केइ उपाय करी मेळण करूं, परिग्रह विविध प्रकार। विरति करूं पिण मन न रहे वळि, तौ किम हुवै भव पार निस्तार।
—ध.व.ग्रं.
उ०—२ तेड़ो राजा तेह नें ए, सखरौ दें सतकार। स्रीमती तूं मोटी सती ए, नांम थकी निस्तार।—ध.व.ग्रं.
२ पार होने का भाव।
रू०भे०—नसतार, नस्तार, निसतार।
अल्पा०—नसतारौ, नस्तारौ, निसतारौ, निस्तारौ।

निस्तारण-वि० [सं० निस्तारः] १ जिससे निस्तार हो, उद्धार करने वाला।
२ पार करने वाला।
सं०पु०—१ उद्धार करने का भाव, निस्तार।
२ पार करने की क्रिया या भाव।
रू०भे०—निसतारण।

निस्तारणौ, निस्तारबौ-क्रि०स० [सं० निस्तरणम्] १ उद्धार करना, मुक्त करना, छुड़ाना।
उ०—साठ हजार सग हालिया, तें कर निस्तारे। मिनड़ी का नीवाह में, निरदाघ निवारे।—भगतमाळ
२ पार करना।
निस्तारणहार, हारौ (हारी), निस्तारणियौ—वि०।
निस्तारिओड़ौ, निस्तारियोड़ौ, निस्तारयोड़ौ—भू०का०कृ०।
निस्तारीजणौ, निस्तारीजबौ—कर्म वा०।
निस्तरणौ, निस्तरबौ—अक० रू०।
निसतारणौ, निसतारबौ—रू०भे०।

निस्तारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पार किया हुआ।
२ उद्धार किया हुआ, मुक्त किया हुआ, छुड़ाया हुआ।
(स्त्री० निस्तारियोड़ी)

निस्तारौ—देखो 'निस्तार' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ हाथी कीड़ी कांटै हेकण सौ तोलै, जग जांणै सारौ। रंकां रावां जोड़ राखत, तै कीजै निवळां निस्तारौ। दीनां लंका जे

हादी न करै, हीया, जग सारो जांणै। देखी भेदी धाता वीठळ, वारवार रहै बागाणै।—र.ज.प्र.

उ०—२ पनरै कर्मादान न परिहर्‌या, आदर्‌या पाप अठार। निरतागे हीजुं पासै नहीं, तुं हिव मुझ नै तार।—ध.व.ग्रं.

निरतेज-वि० [सं० निस्तेजस्] जिसमें तेज न हो, तेजरहित, अप्रभ, मलिन।

निरपख-वि० [सं० निष्पक्ष] पक्षपातरहित।

रू०भे०—निरपख, निसपख।

निरपखता-सं०स्त्री० [सं० निष्पक्षता] पक्षपात न करने का भाव।

रू०भे०—निरपखता।

निरपख—देखो 'निस्पक्ष' (रू.भे.)

निरपखता—देखो 'निस्पक्षता' (रू.भे.)

निरपत—१ देखो 'वनिस्पत' (रू.भे.)

२ देखो 'रिस्वत' (रू.भे.)

निस्पन्न-वि० [सं० निष्पन्न] १ पूर्ण, पूरा।

उ०—संवत सतर छेताळा वरखे, जन्म्यो ते पुत्र छळे हरखे रे। गुण निस्पन्न ते नांम निधांन, 'देवचंद्र' अभिधांन रे।—कवियण

२ जो पूरा या समाप्त हो चुका हो, जिसकी निष्पत्ति हो चुकी हो।

रू०भे०—निपन, निपन्न।

निस्प्रभ-वि० [सं० निष्प्रभ] कांतिरहित, तेज-रहित, प्रभाशून्य।

निस्प्रयोजन-वि० [सं० निष्प्रयोजन] १ स्वार्थशून्य, बेमतलब, प्रयोजन-रहित।

२ निरर्थक, व्यर्थ।

३ बिना अर्थसिद्धि का, जिसमें अर्थसिद्धि न हो।

क्रि०वि०—बिना किसी अर्थ या मतलब के, व्यर्थ।

निस्प्रांण-वि० [सं० निष्प्राण] मरा हुआ, प्राणरहित, मुर्दा।

निस्प्रिय-वि० [सं० निस्पृह] जिसे लोभ या कामना न हो।

निस्प्रियता-सं०स्त्री० [सं० निस्पृहता] लालसा या लोभ न होने का भाव।

निस्फळ-वि० [सं० निष्फल] निरर्थक, व्यर्थ, फालतू, फलरहित।

उ०—१ सहु भूत प्रेत ग्रह व्है समा, सुपात्रे व्है धरमसी सही। देगिज्यो दांन दीधो थको, नेट कठै निस्फळ नहीं।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ सगुण गुण केते करै, निगुणा नांखै ढाहि। दादू साधू सब वहै, निगुणा निस्फळ जाहि।—दादूबांणी

रू०भे०—निफळ निरफळ, निसफळ।

निस्फीबटाई-सं०स्त्री० [फा. निस्फ=अर्द्ध+सं० वट=विभाजने] आधी उपज जागीरदार और आधी उपज आसामी द्वारा ली जाने वाली बंटाई।

निस्बत-सं०स्त्री० [अ०] १ अपेक्षा, तुलना, मुकाबिला।

रू०भे०—निसबत।

२ देखो 'रिस्वत' (रू.भे.)

निस्रेणिका, निस्रेणिका, निस्रेणी-सं०स्त्री० [सं० निश्रेणिका, निश्रेणी]

१ सीढ़ी, जीना (अ.मा.)

२ १३ और १० पर यति से २३ मात्रा का एक मात्रिक छन्द।

उ०—सभ तेरह धुर फर दस, जांणो निस्रेणी। रिरा नारी तरणी हरी, परसत पग रेणी।—र.ज.प्र.

३ खजूर का पेड़।

४ मुक्ति।

रू०भे०—नसैणी, निसरणी, निसरनी, निसेणी, नीरणी, नीसरणी।

निस्रेय-सं०पु० [सं० निश्रेय] कलंक, अपयश, बदनामी।

उ०—अनाळासी न आळासी न नाळसी निस्रेय को। सुस्वामिभक्त स्वांमि को सदानुगामि स्रेय को।—ऊ.का.

निस्रेयस-सं०पु० [सं० निःश्रेयस्] मोक्ष, कल्याण।

निस्वास-सं०पु० [सं० निःश्वास] १ प्राण वायु के नाक के बाहर निकलने का व्यापार।

क्रि०प्र०—करणो।

२ नाक या मुंह के बाहर निकलने वाला श्वास, उसास।

क्रि०प्र०—छोडणो, न्हांकणो।

३ शोक या चिंता के कारण मुंह या नाक द्वारा तेजी से छोड़ी जाने वाली श्वास।

उ०—उर निस्वास प्रमुक्के, भग्गो जास चीत साश्र'म। यो चिंता उद्वेगो, लग्गो अग्ग वंस धासांणं।—रा.रू.

क्रि०प्र०—छोडणो, न्हांकणो।

वि०—मृतप्राय, बेदम।

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

रू०भे०—निसांस, निसास, निसासउ, नीसास, नेसास।

अल्पा०—निसांसो, निसासो, नीसासो, नेसासो।

निस्वासन-सं०पु० [सं० निःश्वासन] चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन जिसमें दोनों पांवों को सामने लम्बा करके एड़ियों को पृथ्वी पर रख कर पंज को ऊंचा रख कर दोनों पांवों के अंगूठों को पास-पास रख के बैठना होता है।

निस्संक-वि [स०निः+शंक] निर्भय, शंकारहित, निडर, बेधड़क।

उ०—नागणी लेती तोप रै अभिमुख धकावै जिण तरह काळेजा करां में लीधां प्राणां री दुरभिक्ष पटकता चहुवांण रा सांमंत बीच हूवा। अर सस्त्रां रै संपात जीवां री यात्रा रै माथां रा व्यापार मंडिया जुवा जुवा।—वं.भा.

उ०—२ भालो सिंहदेव तो प्रथम अणी में ही लोहछक होय प्राणां रा पोखण में लुभायो थको प्रमदा री पांहुणो अपूठो खड़ियो। अर कठीरव कांन्ह चालुक्य राज रै विजय री संकळप बधावतो निस्संक थको एक मुहूर्त्त लड़ियो।—वं.भा.

निस्संतांन-वि० [सं० नि सन्तान] संतति-रहित, नाऔलाद।

रू०भे०—निसंतान ।

निस्संदेह-क्रि०वि० [सं० निःसंदेह] विना किसी संदेह के, वेशक ।

वि०—१ जिसमें कुछ सन्देह न हो।

ज्यूं—आ वात निस्सदेह सांची है कि क्षत्रांणी आपरो सीस काट'र चूंडावत कनै सैनांणो निमत्त भेज्यो ।

२ जिसे कुछ सन्देह न हो।

ज्यूं—औ आदमी निस्संदेह है ।

रू०भे०—निसंदेह ।

निस्सस-वि०—सन्देहरहित (जैन)

निस्सार-वि० [सं० निःसार] साररहित, तत्वहीन ।

रू०भे०—निसार ।

निस्सेस-सं०पु० [सं० निःश्रेयस] मोक्ष, कल्याण (जैन)

निस्सृत-सं०पु० [सं० निस्सृत] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

निस्स्वादु-वि० [सं०] विना स्वाद का स्वादरहित ।

निस्स्वारथ-वि० [सं० निस्स्वार्थ] जिसमें खुद के स्वार्थ की भावना न हो, स्वार्थ से रहित ।

निहंग-वि० [सं० निःसंग] १ निर्लिप्त । उ०—नमो जप तप्प किता जोगिंद, राजा स्रीरांम नमो राजद । नमो सब-व्यापक अग अनंग, नमो निसवासर रैण निहंग ।—ह.र.

२ वस्त्रहीन, नग्न । उ०—मार मार विस्थार वार ऊठियो विकासै । खुरासांण खळभळै निहंग सा वच्चा नासै ।—नैणसी

३ [फा०] अकेला ।

उ०—नट कछनी करि निहंग, धरै अंगरखा वहादर । जमदाढ़क गजवाग, कसै सहटी कर कम्मर । आडि पेच करि अडिग, पाघ पर धर हम्मां पर । लाज विरज ताईत, जत्र मुहरा सिर ऊपर । इम सजै साज मुख करि अरण, जांणै सीह हकाळिया । सुत वळ वंधाय कहि कुळ-कसब, चढ़ण महावत चालिया ।—सू.प्र.

सं०पु० [देशज] १ घोड़ा, बाजि (डिं.को.)

उ०—आगळ फौज अधीस कूंत भळकावतो । तुररो सिर जरतार निहंग नचावतो ।—किसोरदांन बारहठ

२ आकाश, आसमान (डिं.को.)

उ०—१ जूटै इम 'पावू' 'जींद' जंग। नाखत्र माळ तूटै निहंग । दळ नेत भड़ै जुध देव देत । पिड़ खेत लड़ै कन भूत प्रेत ।—पा.प्र.

उ०—२ जटी ऊधड़ीक पब्बै चखा अरावां सावात जागै, संघां ऊवड़ीक पब्बै भूमंडां सामाज । मामलां घड़ीक वूठी सतारां गिरंद माथै, निहगां तड़ीक जेम तुहाळो नाराज ।

—रावत हमीरसिंह चूंडावत री गीत

उ०—३ पोह काज गऊ छळ भोम न पड़ियो, अर धारा आवटियो अंग । 'चांपो' चच ग्रीधण चढ़ियो, नासाचर लगो निहंग ।

—राव चांपा री गीत

उ०—४ किसन सिर फूल विरखा करै, अमर तमासै आइया । निहंग धरि वीच मावै नहीं, सुरै विवांण संबाहिया ।

—पीरदांन लाळस

३ स्वर्ग । उ०—निहंग वखांणै अमर घर वखांणै सको नर, तूटियो 'अणखळो' दुरंग तारां । साथ-धण आग भळ मांहि सांपड़ै, धणी रिण सांपड़ै खागधारां ।—दूदो आसियो

४ शिव, महादेव । उ०—पेचां मझि स्रोण वहै अणपार, जटा गंग जांणिक धार हजार । वघंवर जेम सिलै विकराळ, मंडै गळिमाळ जिका रुंडमाळ । नंदीगण जेम तुरंग निहंग, जोगारंभ आठ सझै रिण जंग । दळै खग 'सूर' तणी विरदैत, जटाधर रूप कियां भड़ जैत ।—सू.प्र.

५ पक्षी, खग । ६ घड़ियाल, मगर ।

७ देखो 'नैंग' (रू.भे.)

रू०भे०—नहंग, निंहग, निंहग निहंगि ।

निहंगराज-सं०पु०यौ० [देशज] सूर्य ।

रू०भे०—नहगराज ।

निहंगसावझड़ो-सं०पु०—डिंगल का एक छंद विशेष ।

निहंगि—देखो 'निहंग' (रू.भे.)

उ०—हिंदुवइ राइ देखाळि हत्थ । सांकड़उ कियउ सुरितांण सत्थ । आपणइ पांणि आपणइ अंगि । नवसहस धणी लागउ निहंगि ।

—रा.ज.सो.

निहंटो-वि०—वीर, योद्धा ।

निहंस—देखो 'निहस' (रू.भे.)

उ०—१ हड़वड़ भड़ हैमरां, निहस बाजतां नगारै ।—गो.रू.

उ०—२ सहस तेर असवार, सीह सादूळ समोसर । वीत गयंद वेछाड़, निहस पावस गिर नीझर ।—सू.प्र.

निहंसणो, निहंसवो—देखो 'निहसणो, निहसवो' (रू.भे.)

उ०—१ निहसत नीसांण, हुवै बाज हींसांण । सझ काज घमसांण, अपांण भड़ ओघ ।—र.ज.प्र.

उ० –२ नित खग्गां खड़खड़ै, नित पळचरां घ्रवीजै । नित्त जोध निहंसति, नित्त गज दळां गाहीजै ।—गु.रू.बं.

निहंसणहार, हारौ (हारी), निहंसणियौ—वि० ।

निहंसिओड़ो, निहसियोड़ो, निहंस्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निहसीजणो निहसीजवो—भाव वा० ।

निहंसियोड़ो —देखो 'निहसियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निहसियोड़ी)

निहकंट, निहकटक—देखो 'निरकंटक' (रू.भे.)

उ०—१ उवा निहकंट करै घर आपां । वे सथांन तो राजस थापां । अजुगति एह मतो ऊथपियो । जेठो हूंता कणैठि जपियो ।—सू.प्र.

उ०—२ गढ़ ऊपरा वरस एक रह्या । तठा सूं कूंच चितोड़गढ आया । कुंभा रांणा नै निहकटक राज दीनो ।

—राव रिणमल री वात

निहकंप—देखो 'निकंप' (रू.भे.)

उ०—नेह कवार निरंजन, हरीनांव होतव, निहकंप कबीर, पीदरीनार परमोद, नांम देव नेठाव, धूंधळीनन ध्यान, रहति रैदास, गोरखनाथ प्रगट।—ह.पु.वा.

निहकरम, निहकरमी—देखो 'निसकरम, निसकरमी' (रू.भे.)

उ०—राम नाम गुरु सबद सूं, रे मन पेल भरम। निहकरमी सूं मन मिल्या, दादू काटि करम।—दादूवांणी

निहकाम—देखो 'निकाम' (रू.भे.)

उ०—जन हरिदास गोविंद विमुख, करै न नर निहकाम। भूलि गया भाटी कगे, परम सनेही राम।—ह.पु.वा.

निहकामी—देखो 'निकामी' (रू.भे.)

उ०—निरालंब निरलेप, निडर निरभै निहकांमी। निरामूळ निस्करम, सुनौ हरि अंतरजामी।—ह.पु.वा.

निहक्कुण, निहक्कुण-सं०पु० [सं० निक्वाण या निक्वण] शब्द। (ह.नां., अ.मा.)

निहसरणौ, निहसरबौ-क्रि०स० [सं० निः+सेटन] १ (खूब तेजी से) दौड़ाना, हांकना।

उ०—सारोवरि अग विस्रांम कि लिखियां, निहसरता नरवरै नर। मोताण पोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर।—वेलि.

क्रि०स० [सं० निः+सरण, प्रा० निस्सरणे अथवा निः+क्षरण] २ बाहर निकलना, निकलना।

निहसरणहार, हारौ (हारी), निहसरणियौ—वि०।

निहसरियोड़ौ, निहसरियोड़ौ, निहसरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निहसरीजणौ, निहसरीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

निहसरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (तेजी से) दौड़ाया हुआ, हांका हुआ। २ बाहर निकला हुआ, निकला हुआ।

(स्त्री० निहसरियोड़ी)

निहघोस-सं०पु० [सं० निर्घोष] शब्द, घोष (अ.मा.)

निहचंत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

उ०—हव देसी असपति सूंक हाथ। निहचंत करां सुख दिली राज।—सू.प्र.

निहचळ, निहचल—देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)

उ०—१ 'चक' तेज कारण वर्णं, निहचळ तप निरदोस। ग्यांन मोख कारण गिणं, सुख कारण संतोस।—बां.दा.

उ०—२ नित चचळ निहचळ भया, मन के पड़ै न राय। हरि निरगुण निरभै मतै, जहां तहां समि जाय।—ह पु वा.

निहचै, निहचौ—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)

उ०—१ तीरथ वरत करै समि भाई, तंत मंत सीखै मन लाई। तुला बैसि कंचन दे काटा, निहचै बिकै विहाणै हाटा।—ह.पु.वा.

उ०—२ माटो-तूटो पोे-पड़ो, छूटा केसां नार। बिना तिलक बांमण मिलै, निहचै तूटो काळ।—अज्ञात

उ०—३ किताईक वरसां मांहोमांह मतो कियो पंचामती किया नूं मापांनूं घणा वरस हुवा सो हमैं निहचौ करो।—बां.दा.ख्यात

उ०—४ सितपति सुणै अधिक हरखांणौ। ठीक बात निहचौ ठहरांणौ।—सू.प्र.

निहटणौ, निहटबौ—देखो 'निहट्टणौ, निहट्टबौ' (रू.भे.)

उ०—१ राठौड़ रणवट बद्धि जमदून निहटा जुद्धि।—गु.रू.बं.

उ०—२ जिहंगीर सुरम जुड़सी उभै, सारी चंद दुहिद सुर। जोगणी पीठ निहटा जवन, फिर हथणापुर पंड-कुर।—गु.रू.बं.

निहटियोड़ौ—देखो 'निहट्टियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निहटियोड़ी)

निहट्टणौ, निहट्टबौ-क्रि०स० [सं० निः+घट्टन] १ आक्रमण करना, हमला करना।

उ०—पन्नंग पेलियौ, जांणि पंखराउ अपट्टौ। किरि दीठौ कुंजरां, सीह सादूळ निहट्टौ।—गु.रू.बं.

२ टक्कर लेना, भिड़ना, युद्ध करना।

उ०—१ सुरतांण तणा दळ सत्थं, छड़ि आया तिण्ही मत्थं। 'गजबंध' कमध निहट्टा, तब साहनिवाज पलट्टा।—गु.रू.बं.

उ०—२ असमांण उभै दळ ऊलट्टां, उदधि जांण उलट्टियां। पाधरै खेत पति साह वे, नेजा गाडि निहट्टियां।—गु.रू.बं.

उ०—३ घसस्सै घणूं घाट घोसाह घट्टा। फुणां फाट अहिराउ दरियाव फट्टा। दिलावै सुरतांण उट्टाह दुंदं। निहट्टा फिरै रांमणा रामचंदं।—गु.रू.बं.

उ०—४ विचित्र खंड वप भड़ै, मुंड रहवड़ै धरत्तो। घटै दंड वेहड़ा चड गह भड़ै दुसत्तो। तूंड पड़ै तेजियां, नृपति बळवंड निहट्टौ। अर्ळ मंड कारणै, काळ परचंड कि जुट्टौ।—रा.रू.

क्रि०अ०—लगना, लीन होना।

निहट्टणहार, हारौ (हारी), निहट्टणियौ—वि०।

निहट्टिअोड़ौ, निहट्टियोड़ौ, निहट्टयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निहट्टीजणौ, निहट्टीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

निहटणौ, निहटबौ, नीहट्टणौ, नीहट्टबौ—रू०भे०।

निहट्टियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ आक्रमण किया हुआ, हमला किया हुआ।

२ टक्कर लिया हुआ, भिड़ा हुआ, युद्ध किया हुआ।

३ लगा हुआ लीन हुवा हुआ।

(स्त्री० निहट्टियोड़ी)

निहडौ—देखो 'निसंडौ' (रू.भे.)

निहणणौ, निहणबौ-क्रि०स० [सं० निहननं] १ मारना, संहार करना।

उ०—पाछवीळि पापी करइ कुड्डु दोषउ रतिवाउ। निहणीय पंच पंचाळ बाळ, अनु राखसि जाउ।—पं.पं.च.

निहणियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ, हनन किया हुआ।

(स्त्री० निहरिणयोड़ी)

निहतरणौ, निहतरबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)

उ०—हिव दिन दसमइ आवियइ ए, करइ दसूटण प्रेम । सगा सहि निहतरइ ए, असूचि उतारइ एम ।—ऐ.जै.का.सं.

निहतरणहार, हारौ (हारी), निहतररणियौ—वि० ।

निहतरिओड़ौ, निहतरियोड़ौ, निहतरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निहतरीजणौ, निहतरीजबौ—कर्म वा० ।

निहतरियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निहतरियोड़ी)

निहतारथ-सं०पु० [सं० निहत अर्थ] प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध दोनों शब्दों के प्रयोग से उत्पन्न होने वाला साहित्य का एक दोष ।

उ०—निहतारथ लै अरथ प्रगट नहि, अनुचित अरथ न अरथ अजोग । पूरण रण निररथक व्है पद, लै अस्लोल समझ विध लोग ।—बां दा.

निहत्त-सं०पु० [सं० निघत्त] किसी वस्तु को स्थापित करने की क्रिया या भाव अथवा स्थापित वस्तु (जैन)

निहत्थौ, निहथ, निहथौ-वि० [सं० निः+हस्त] १ जिसके हाथ में कोई अस्त्र-शस्त्र न हो, अस्त्र-शस्त्रहीन ।

उ०—वाजा अति वाजसी, भेर मादळ नै भूंगळ । काहळ संख अनेक, तांम धूजसी रसातळ । नीसांण रुड़ै कांपै निहथ, सहि जांणि गाजै सघण । बरधू दमांम करवाळि वह, घोड़े ढोल कंसाळ घण ।

—पी.ग्र.

२ खाली हाथ, निर्धन ।

निहरवाळणौ, निहरवाळबौ-क्रि०स०[देशज] खड्डे में डाल कर दबा देना ।

उ०—इवइ यउं कीजइ, वाहण वहण अरथ भंडार । सभाळिजइ, जळइ सू जउहर जाळिजइ, नहीं त्यउ खाडइ निहरवाळिजइ, अवधू पुरखारथ कीजइ ।—अ वचनिका

निहरवाळियोड़ौ-भू०का०कृ०—खड्डे में डाल कर दबाया हुआ ।

(स्त्री० निहरवाळियोड़ी)

निहलौ-वि० [देशज] (स्त्री० निहली) निष्फल, बेकार ।

उ०—काचौ देह तणौ कमठांणौ, पड़तां नह लागै पलक । दुनियां तणी निहली दौलत, हटवाडा वाळी हलक ।—बां.दा.

निहल्ल-वि० सं० नि+हल्लनम्] १ गति नहीं करने वाली ।

उ०—सिंधु परइ सउ जोअणां, नीचौ खिवइ निहल्ल । उर भेदंती सज्जणां, ऊचेडती सल्ल ।—ढो.मा.

निहस-सं०स्त्री० [देशज] १ प्रहार, चोट (डंके की)

उ०—१ आगमि सिसुपाळ मंडिजै ऊछव, नीसांणे पड़ती निहस । पटमंडप छाइजै कुंदणपुरि, कुंदण मै बाझै कळस ।—वेलि.

उ०—२ आतस दगि झड मंडै अंगारां, निहस पड़ै रण तूर नगारां । घर अंबर रज घोम अधारै, जोगणि चंडी वीर जैकारै ।

—सू.प्र.

२ ध्वनि, घोष (वाद्यों का)

रू०भे०—निहंस, नीहस ।

निहसणौ, निहसबौ-क्रि०अ० [देशज] १ (वाद्य आदि का) बजना, ध्वनि करना ।

उ०—'सूराचंद' 'अजन' दळ साजै । वस घर करी निहसते वाजै । इतै चैत वद बीज अधारी । आवी सुर-धम आणंदकारी ।

—रा.रू.

२ गरजना । उ०—१ निहसै वूठौ घण विणु नीलांणी, वसुधा थळि थळि जळ वसइ । प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीधै किरि ग्रहणा लसइ ।—वेलि.

उ०—२ रिण सूर तिकां मुख नूर रचै । मिळ दीठ दुहूं दळ रीठ मचै । मल दोय दुहूं दिस धाय मिळै । निहसै किर नाग दुवाघ निलै ।—रा.रू.

३ भयानक आवाज करना ।

उ०—लख लख नाव महिख घड़ लाधै । सोकोतर तिण पर नृत साधै । कटिया सीस अनेक जियां करि । निहसै हसै झाळ मुख नीसरि ।—सू.प्र

४ हँसना ।

५ जोश में आना, जोशीला होना । उ०—निहसि खेत वाजिया निताळा । विढै पूत जिम साहां वाळा । वडै पराक्रम 'आजम' वीतौ । जुध गरीठ हठ आलम जीतौ ।—रा.रू.

६ बौछार होना, बरसना ।

उ०—धुवि नास फड़ड़ रज धूसरड़, रथ अछरां मग रोकिया । नाळां निहाव गोळां निहसि, झाळा दिसि असि झोकिया ।—सू.प्र.

७ चमचमाना, चमकना ।

उ०—दधि वीणि लियौ जाइ वणातौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससत । नासा अग्रि मुताहळ निहसति, भजति कि सुक मुख भागवत ।

—वेलि.

८ वीरगति को प्राप्त होना, मरना ।

उ०—जिम रावळ 'दूदौ' 'जैसांणै,' निहसै 'चूंड' राव 'नागांणै' । 'सातळ' 'सोम' मुआ 'सिवियांणै', कीनौ मरण जिसौ 'कलियांणै' ।

—प्रिथीराज राठौड़

क्रि०स०—९ संहार करना, मारकाट करना, मारना ।

उ०—डूंगरोत 'मांनौ' पड़े, रिण कायथ हरिराय । 'विसनौ' मुहतौ वाजियौ, दुयणां हाथ दिखाय । निहसै खळां 'नवल्ल' रौ, अग्गे दळां दुझाल । हिच पड़ियौ रज रज हुवै, सांदू 'सूरजमाल' ।

—रा.रू.

१० प्रहार करना ।

उ०—गइवर-गळइ गळत्थियउ, जहं खंचइ तहं जाइ । सोह गळत्थण जइ सहइ, तउ दह लक्खि विकाइ । तउ दह लक्खि विकाइ, मोल जांणवि मुहंगे रा । कड़वा कारणि कथिन, कोपि खउंदाळिम केरा । वेढ कीध पड़ियार, निहसि कट्टारउ दुहुं करि । राइ न ग्रहउ नरसिंघ

नहर, नद्रुप बड़े नद्बरि ।—द. वचनिका

११ युद्ध करना, जूझना ।

उ०—१ माई मर्मरि निहार, मार्ग सार्ग निहसियो । सार तणं भरि गोहियो, 'जीबो' ही बिहि वार ।—वचनिका

उ०—२ निहसंति जोध नमोठि । रिण रूक बाधरि रीठि । वेनिहस मेन निमंर । हिरि राम रामण लक ।—गु रू बं.

निहसणहार, हारो (हारी), निहसणियो—वि० ।

निहसवाड़णो, निहसवाड़बो, निहसपाणो, निहसपाबो, निहसवावणो, निहसवावबो, निहसाड़णो, निहसाड़बो, निहसाणो, निहसाबो, निहसावणो, निहसावबो—प्रे०रू० ।

निर्हसियोड़ो, निहसियोड़ो, निहस्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निहसीजणो, निहसीजबो—भाव वा० ।

नहसणो, नहसबो, निहसणो, निहसबो, निहंसणो, निहंसबो, निहससणो, निहससबो, नोहसणो, नोहसबो—रू०भे० ।

निहसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ (वाद्य आदि) बजा हुआ, ध्वनि किया हुआ ।

२ गरजा हुआ ।

३ भयानक आवाज किया हुआ ।

४ हंसा हुआ ।

५ जोश में आया हुआ, जोशीला हुवा हुआ ।

६ बरसा हुआ ।

७ चमचमाया हुआ, चमका हुआ ।

८ वीर गति को प्राप्त हुवा हुआ, मरा हुआ ।

९ संहार किया हुआ, मारकाट किया हुआ, मारा हुआ ।

१० प्रहार किया हुआ ।

११ युद्ध किया हुआ, जूझा हुआ ।

(स्त्री० निहसियोड़ी)

निहससणो, निहससबो—देखो 'निहसणो, निहसबो' (रू.भे.)

उ०—१ भ्रं वरियांम निहस्सिया, दोय घड़ी इक जांम । 'अजबो' घोटळवास रो, पड़ियो खेत दुगांम ।—रा.रू.

उ०—२ नगारा निहस्सै, सनूरा तरस्सै । दुसेन्या दरस्सी, कहै कंठळी सी ।—रा.रू.

उ०—३ हिंदुवांण तुरकांण करण घमसांण कटक्कै । सझि कवांण गुण बांण दळां प्रारंभ बळ दक्कै । भड़ भिड़ज्ज गज घज्ज घड़ा चतुरंग कमक्कै । सिधू सद्द रवद्द नद्द नीसांण निहस्सै ।—वचनिका

निर्हसियोड़ो—देखो 'निहसियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निहस्सियोड़ी)

निहांन—देखो 'निधांन' (रू.भे.) (जैन)

निहाई, निहाद, निहाई-सं०स्त्री० [सं० निघात] १ प्रहार ।

उ०—'धूप' हर बरसतां धन्न धन्न । गुरिजां निहाइ बाजइ गिगन्न ।

—रा.ज.सी.

२ ध्वनि । उ०—१ घुड़ सातइ घूजिय पवंग पाइ, नागींद नाचि नोबति निहाइ ।—रा.ज.सी.

उ०—२ भाल सबा राटतीस भासीजै । धरपुड़ पाय निहाइ धमुवै । भोरोहर कर भाट जंबूरिक । हुल हाथळ जिहि भगति हुवै ।

—दूदो

३ शोरगुल, हल्ला । उ०—मारक्त कुंभस्थळ, आपणी छाया देखि, गुहिरा गाजइ, गोत्र नीमजइं, सैन्य छोपइं, अलुआरी मांडइं, कठ पूरइं, गढ चूरइं, घाय रचइ, निहाइ माचइं, करदंत ताकइ ।

—व.स.

४ सोनारों और लोहारों का वह उपकरण जिस पर वे धातु को रख कर हथौड़े से पीटते हैं ।

निहाउ, निहाऊ—देखो 'निहाव' (रू.भे.)

उ०—१ घणि वाजित्र घण घाउ, घमघमि अपछर घूघरा । याना वीरारस तणा, नाराजिआ निहाउ ।—वचनिका

उ०—२ निपट बिन्है दळ आया नेड़ा । नरां सुरां अति आया नेड़ा । नोबति सोर घड़ड़ि धुबि नेड़ा । नाळि निहाउ गाजिआ नेड़ा ।

—वचनिका

निहाज-सं०स्त्री० [सं० निह्नवः या निर्ह्लादः] नगाड़े की आवाज, ध्वनि (डि.को.)

निहाद-सं०पु० [सं० निर्ह्लादः] नाद, शब्द, ध्वनि (डि.को.)

निहायत-वि० [अ०] अत्यन्त, बहुत ।

ज्यूं—इण कांम नै आज रो आज निपटाणो निहायत जरूरी ।

ज्यूं—चीज निहायत बढ़िया है ।

सं०स्त्री०—सीमा, हद ।

निहार-सं०पु० [सं० निभालनं] देखने की क्रिया या भाव, अवलोकन ।

उ०—नजरूं का निहार पंजूं का दाव । कदमूं का फुरत छोरघूं का घाव ।—सू.प्र.

रू०भे०—निहाळ, निहाल ।

निहारणो, निहारबो-क्रि०स० [सं० निभालनम्] १ दर्शन करना, अवलोकन करना, निरखना, देखना ।

उ०—१ रांम सजीवण-मंत्र रट, वयणां रांम विचार । स्रवणां हर गुण संभळै, नैणां रांम निहार ।—ह.र.

उ०—२ राज कुंवर वर सहज सलूणा, नगर निहारण आया रे लो । बाळ, जुवा, वूढ़ा नर नारी, छवि निरखै छक छाया रे लो ।

—गी.रां.

उ०—३ धिन दीहाड़ो धिन घड़ी, धिन वेळा धिन वास । नयणे सयण निहारिया, पूरी मन री आस ।—अज्ञात

उ०—४ चित्त चढ़ी म्हारै माधुरी मूरत, हिवड़ा अणी गड़ी । कबरी ठाढी पंथ निहारां, अपणे भवण खड़ी ।—मीरां

उ०—५ आपरा पांम्हणा (दुसमण) तो पंथ निहारै, झगड़ा री वाट जोवै अनै रिण खेत मैंमांस रुधिर भरवण वाळी ग्रीधां गैण

आकास में निहारें उड रही है।—वी.स.टी.

मुहा०—वाट (पंथ, मारग,) निहारणी—प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना।

२ ध्यान देना। उ०—पत तूं भूखौ प्रीत कौ, चित्त देख विचारें। भीलण का फळ भोगतां, नह झूठ निहारें।—भगतमाळ

३ प्रतीत करना, महसूस करना, जानना।

उ०—१ सिव अचल कन्या हूंत संभव, अगनि जोति अनोप ए। सुभ द्रिस्ट भूप निहारि प्रज सहि, अघट किरि सुख ओप ए।

—रा.रू.

उ०—रस झरत अम्रत सरद राका, रैण वण जण कारणं। दिन सुखद राति विलास दायक, हित चकोर निहारणं।—रा.रू.

निहारणहार, हारौ (हारी), निहारणियौ—वि०।

निहारिओड़ौ, निहारियोड़ौ, निहारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निहारीजणौ, निहारीजबौ—कर्म वा०।

निहाळणौ, निहाळबौ, निहालणौ, निहालबौ, निहावणौ, निहावबौ, निहेरणौ, निहेरबौ, निहोरणौ, निहोरबौ, नीहाळणौ, नीहाळबौ, नीहालणौ, नीहालबौ—रू०भे०।

निहारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दर्शन किया हुआ, अवलोकन किया हुआ, निरखा हुआ, देखा हुआ।

२ ध्यान दिया हुआ।

३ प्रतीत किया हुआ, महसूस किया हुआ, जाना हुआ।

(स्त्री० निहारियोड़ी)

निहारी-वि०—अलग, दूर, पृथक।

निहाळ, निहाल-वि० [फा० निहाल] १ जो सब प्रकार से सन्तुष्ट हो गया हो, पूर्ण काम। उ०—१ राजावां री रीज, सुखदाई सारां सुणी। खांवद थारी खीज, जग निहाल करती 'जसा'।—ऊ.का.

उ०—२ सेंवज जिण बरस इण गांव में पाकती मिनख निहाल व्है जावता।—रातवासौ

उ०—३ लोहड़ न मानें डर लिगार। आपड़ पड़ें जुध केक वार। मन दिया आवतां रीझ माल। नायता किता कीधा निहाल।

—वि.स.

मुहा०—१ निहाल करणी—मालामाल करना, सन्तुष्ट करना।

२ निहाल व्हैणौ—मालामाल होना, पूर्ण सन्तुष्ट होना, किसी प्रकार की कमी वा अभाव न रहना।

२ जो बहुत राजी हो गया हो, प्रसन्न, खुश।

उ०—१ मोर सिखर ऊंचा मिळै, नाचै हुआ निहाल। पिक ठहकै झरणा पड़ै, हरिए डूंगर हाल।—बां.दा.

उ०—२ हळहळियो महराब खां, आयौ घर 'अजमाल'। जतरा मत असुरां जुआ, हिंदू हुवा निहाल।—रा.रू.

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

३ कृतकृत्य, कृतार्थ, सफल।

उ०—१ राजभोग आरोगौ गिरधर, सनमुख राखां थाळ। मीरां दासी सरणां ज्यासी, कीज्यौ वेग निहाल।—मीरां

उ०—२ ए तौ दसरथ जी रा लाल, भला मन भावणा हे। ए तौ कर रह्या नयण निहाल, घणा रळियावणा हे।—गी.रां.

उ०—३ नांम महातम वरण कर, हमकूं किये निहाळ। सुणियौ गुरु हरनाथ सूं, दादू दीनदयाळ।—भगतमाळ

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

४ देखो 'निहार' (रू.भे.)

रू०भे०—नीयाल, न्याल।

निहाळणौ, निहाळबौ, निहालणौ, निहालबौ-क्रि०स० [सं० निभालनम्]

१ खोजना, ढूंढ़ना।

उ०—१ ऊलवे सिर हथ्थड़ा, चाहंदी रस लुब्ध। विरह-महाधण ऊमटयउ, थाह निहाळइ मुध्ध।—ढो.मा.

उ०—२ थाह निहाळइ, दिन गिणइ, मारू आसा-लुब्ध। परदेसे घांघल घणा विखउ न जाणइ मुध्ध।—ढो.मा.

उ०—३ सखी री मिळि अरज करत है आली, कहा वात करत है काली। नवलो कोइ कुमर निहाळी, तुम परणावां ततकाळी हो लाल।—ध.व.ग्रं.

२ सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, कृतकृत्य करना।

३ देखो 'निहारणौ, निहारबौ' (रू.भे.)

उ०—१ उवकंबी सिर हथ्थड़ा, चाहंती रस-लुब्ध। ऊंची चढ़ि चात्रंगि जिउं, मागि निहाळइ मुध्ध।—ढो.मा.

उ०—२ निज गउखे चढ़ि चढ़ि वाट निहाळइ, महूरत पिण आयौ तिल मात। तीजइ भवण वांधियउ तोरण, गिर मंडप छायउ वडगात।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ बाक घणा फाटा रहै, नाहर डाच निहाळ। किर काळी रा करग रौ, कोयक खडग कराळ।—बां.दा.

उ०—४ दियां ओळभो हुंस दियें, नीचो निजर निहाळ। सूंस करै गाळां सहै, चुगल बडो चिरताळ।—बां.दा.

उ०—५ भरे मांग सिंदूर मारग भाळै, वहै सांमळो व्रज्ज सेरी विचाळै। वहै लार लेवार पिंडार वाळै, नवा नेह सूं देह गोपी निहाळै।—ना द.

उ०—६ निज गुण सांम्हो जोइज्यो रे, माहरा अवगुण म निहाळ दे।—स्रीपाळ

उ०—७ अनेकि परिछइं ते विनडंत दीण वयण जीव विलवंत। नरग तणां दुक्ख अनी निहालि ते मेल्हइं करवत कपालि।

—चिहुंगति चउपई

उ०—८ आरोही भ्रत रोस अकब्बर, अगे सिलह तुरंगे पक्खर। एक हजार मुगळ मुख आगै, भिड़तै काळ निहाळ न भागै।

—रा.रू.

उ०—९ कळिया दुख सागर जन काढै, विपत रोग अघ आगर

काई । म्हारौ जीवनदान निहाळै, पाऊँ रे संतां हरि पाऊ ।

—र.ज.प्र.

निहाळणहार, हारो (हारी), निहाळणियौ—वि० ।

निहाळिश्रोड़ो, निहाळियोड़ो, निहाळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निहाळीजणो, निहाळीजबो—कर्म वा० ।

नीहाळणो, नीहाळबो, न्यहाळणो, न्यहाळबो, न्याळणो, न्याळबो

—रू०भे० ।

निहाळियोड़ो, निहालियोड़ो-भू०का०कृ०—खोजा हुआ, ढूंढ़ा हुआ ।

२ प्रसन्न किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ, कृतार्थ किया हुआ ।

३ देखो 'निहारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निहाळियोड़ी, निहालियोड़ी)

निहाव—सं०पु० [सं० निपाति] १ ध्वनि, आवाज, निर्घोष, शब्द ।

उ०—१ छतीस राग वाजती, निहाव घाय नोबतो । भजै विभास भैरव, रळी कळो कळो रवं ।—रा.रू.

उ०—२ धुबि नास फड़ड़ रज धूसरड़, रव श्रद्धरां मग रोकिया । नाळी निहाव गोळां निहसि, भाळां दिसि श्रसि भोकिया ।

—सू.प्र.

२ प्रहार । उ०—१ छोडै भूप दास सळ छोडै । जजर निहाव वजर चै जोडै । दहुवां सर वहुवेवळ छूटै । तीड अनेक जांणि दळ तूटै ।—सू.प्र.

उ०—२ 'गोवंद' वह दीधां गजर, श्रर घड़ा श्राछ्टी । साथी गोयंददास रां, श्रति रीस उपट्टी । 'किसन' घड़ा खग भाहि, करि वारां घोपट्टी । नाराजां वग्गी निहाव, उरसीस श्रघट्टी ।—सू.प्र..

३ लोहे का घन, बड़ा हथोड़ा ।

४ श्राकाश, श्रासमान । उ०—१ जवड़ाटां साचवै हकाळै वळां महा जोध, नोहसं बाणासां वाढ़ गाजियो निहाव । श्रघायो 'रमेद' रोळै वाढ़ थम रहै ऊभो, रोळै घाप हालियो गाढ़ै मारू राव ।

—हरदान भादो

उ०—२ दुयणा कोट संभावियो, गोळां चोट निहाव । भोट पड़ंते गोळियां, म्रोट न रक्खै राव ।—रा.रू.

रू०भे०—निहाउ, निहाऊ नीहाव ।

निहावणो, निहावबो-क्रि०स० [सं० निभालनम्] १ शोभायमान होना, सुन्दर व श्राकर्षक प्रतीत होना । उ०—नूर सूर सम वदन निहावै । श्रावै मात रतन धन श्रावै । सहर गळी प्रत गळी सुहावै । गुड़ बांटै नित मंगळ गावै ।—रा.रू.

२ देखो 'निहारणो, निहारबो' (रू.भे.)

निहावणहार, हारो (हारी), निहावणियौ—वि० ।

निहाविश्रोड़ो, निहावियोड़ो, निहाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निहावीजणो, निहावीजबो—भाव वा० ।

निहावियोड़ो-भू०का०कृ०—१ सुन्दर व श्राकर्षक प्रतीत हुवा हुग्रा, शोभायमान हुवा हुग्रा ।

२ देखो 'निहारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निहारियोड़ी)

निहिचळ, निहिचल—देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)

उ०—१ मन निहिचळ निरभै सुरत लागा, रहै सकळ तै न्यारा । गगा मूळ समूळ श्रधर धर, तहां पंडित रह्या विचारा ।

—ह.पु.वा.

उ०—२ श्रासा नदि श्रगूटि वहै, श्रम्रित झरै गगन रस रहै । नो सै नदी निवासो निहिचळ भई, श्रासा त्रिस्णा भूली गई ।

—ह.पु.वा.

निहिवास—देखो 'निवास' (रू.भे.)

उ०—सास श्रास निहिवास, वांणि नह रांण न वेदू ।—पी.ग्रं.

निहीं, निही—देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—१ रूप रेल निहीं रग, कहो हव काहिज काई ।—पी.ग्रं.

उ०—२ क्रोध कळह कुछि निही, दांन श्रविगत दाखीजे ।—पी.ग्रं.

निहुतणो, निहुतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

उ०—निहुत जिमावै बहु जणा रे, करै वीनती सराय । राजा री भगत ज देख नै रे, तापस बोल्यो वाय रे ।—जयवांणी

निहुतणहार, हारो (हारी), निहुतणियौ—वि० ।

निहुतिश्रोड़ो, निहुतियोड़ो, निहुत्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निहुतीजणो, निहुतीजबो—कर्म वा० ।

निहुतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निहुतियोड़ी)

निहुरा—देखो 'नौरा' (रू.भे.)

उ०—सारो खोय सबाब, पडि फीटो पावां पड़्यो । निहुरा खाय नवाब, नारि छुडाई निठ्ठरसं ।—ला.रा.

निहेरणो, निहेरबो-क्रि०स० [सं० निभालनम्] १ खोजना, ढूंढ़ना ।

उ०—कर दोनों कटि ऊपरै, पुरुस फिरै चोफेर । श्रो श्राकार तिहु लोक नो, काढ़यो ग्रंथ निहेर ।—जयवांणी

२ देखो 'निहारणो, निहारबो' (रू.भे.)

निहेरणहार, हारो (हारी), निहेरणियौ—वि० ।

निहेरिश्रोड़ो, निहेरियोड़ो, निहेरयोड़ो—भू०का०कृ० ।

निहेरीजणो, निहेरीजबो—कर्म वा० ।

निहेरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ खोजा हुग्रा, ढूंढ़ा हुग्रा ।

२ देखो 'निहारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निहेरियोड़ी)

निहोर—देखो 'नौरा' (मह.रू.भे.)

उ०—१ विनि विलसित श्रहिलो नहीं, नहीं केहू नो जोर । पिण मुझ वयण म लोपसो, तुमने करूं निहोर ।—स्रीपाळ

उ०—२ स्वांमि कल्पतरु सारिखो सखी, बीजा बावळ बोर । मनवंछित दायक मिळ्यो सखी, न करूं श्रवर निहोर ।—ध.व ग्रं.

उ०—३ प्रियु प्रियु पपीयन रटत प्रगटत, पवन के झकझोर । इस मास सांवन दिल दिढावन, सजन मांनि निहोर ।—वि.कु.

निहोरड़ा—देखो 'नो'रा' (अल्पा० रू.भे.)
उ०—हुं मांगूं हो हिव अविहड़ प्रेम, कि नित नित करूंय निहोरड़ा। —स.कु.

निहोरणौ, निहोरबौ-क्रि०स० [सं० निधोरणं] १ मनौती करना, प्रार्थना करना। उ०—नरपत्ती दीठौ निजर, अस छोडिया सडोर। सेव तणां फळ पांमिया, देव निहोर निहोर।—रा.रू.
२ आग्रह करना, अनुरोध करना।
३ गरज करना, खुशामद करना।
४ देखो 'निहारणौ, निहारबौ' (रू.भे.)
उ०—उपजै कवता आपरो, इसो न उपजै ग्रौर। भीत प्रमांणै चीत व्है, रीत 'प्रताप' निहोर।—जैतदांन बारहठ
निहोरणहार, हारौ (हारी), निहोरणियौ—वि०।
निहोरिग्रोड़ौ, निहोरियोड़ौ, निहोर्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निहोरीजणौ, निहोरीजबौ—कर्म वा०।

निहोरा—देखो 'नो'रा' (रू.भे.)
उ०—१ वाघा म्हांनूं हींडिण दै। दांत काढै, निहोरा करै। —देवजी बगड़ावतां री वात
उ०—२ मैं करूं निहोरा तेरा, तूं मत कर मारुजी नै दोरा रे खटमल सोवा दै।—लो.गी.

निहोरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मनौती किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ।
२ आग्रह किया हुआ, अनुरोध किया हुआ।
३ गरज किया हुआ, खुशामद किया हुआ।
४ देखो 'निहारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निहोरियोड़ी)

नीं—१ देखो 'नी' (रू.भे.)
उ०—आगमिया काळ नीं अप्रतीत आंण नै पांचूं जण्यां नै सांघे छोड दी।—भि.द्र.

नींखणौ, नींखबौ—देखो 'नांखणौ, नांखबौ' (रू.भे.)
उ०—तिहां नु रे थांभु तेह नींखीउ तेणइ ठाइ, कुतूहळ कीधु तेणइ वळवंतइ ए।—नळ-दवदंती रास

नींखियोड़ौ—देखो 'नाखियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींखियोड़ी)

नींगमणौ, नींगमबौ-क्रि०स० [सं० निर्गमयति] १ व्यतीत करना, गुजारना। उ०—१ एयुं सुखिहि दिहाडा नीगमइ।—स.कु.
उ०—२ उत्तर दिसि थी उल्लरइ, आभ धरणि इक साथ। नींठइ नहीं तु नींगमूं, निसि रोती निरनाथ।—मा.कां.प्र.
नींगमणहार, हारौ (हारी), नींगमणियौ—वि०।
नींगमिग्रोड़ौ, नींगमियोड़ौ, नींगम्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नींगमीजणौ, नींगमीजबौ—कर्म वा०।

नींगमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ व्यतीत किया हुआ, गुजारा हुआ।
(स्त्री० नींगमियोड़ी)

नींगळणौ, नींगळबौ—देखो 'निगळणौ, निगळबौ' (रू.भे.)
नींगळणहार, हारौ (हारी), नींगळणियौ—वि०।
नींगळिग्रोड़ौ, नींगळियोड़ौ, नींगळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नींगळीजणौ, नींगळीजबौ—भाव वा०।

नींगळियोड़ौ—देखो 'निगळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींगळियोड़ी)

नींगा—देखो 'नैंगी' (रू.भे.)

नींगाळणौ, नींगाळबौ—देखो 'निगाळणौ, निगाळबौ' (रू.भे.)
नींगाळणहार, हारौ (हारी), नींगाळणियौ—वि०।
नींगाळिग्रोड़ौ, नींगाळियोड़ौ, नींगाळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नींगाळीजणौ, नींगाळीजबौ—कर्म वा०।

नींगाळियोड़ौ—देखो 'निगाळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींगाळियोड़ी)

नींगाह—देखो 'नैंगी' (रू.भे.)

नींछटणौ, नींछटबौ—देखो 'नीछटणौ, नीछटबौ' (रू.भे.)
उ०—ग्रावइ नव नवा भड अणी ए, छोड कमांण नींछटइ बांण। देव करारा हाथ दाखवइ, असुरां घड चूकइ अवसांण। —महादेव पारवती री वेलि
नींछटणहार, हारौ (हारी), नींछटणियौ—वि०।
नींछटिग्रोड़ौ, नींछटियोड़ौ, नींछट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नींछटीजणौ, नींछटीजबौ—कर्म वा०।

नींछटियोड़ौ—देखो 'नीछटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींछटियोड़ी)

नींछारडी-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की लता।
उ०—नेत्र निहाळी नीलूइ, नळिनी नागरवेलि। नहीं नवीनीं नींछारडी, नागफणी गुण-गेलि।—मा.कां.प्र.

नींजांमा—देखो 'नीजांमा' (रू.भे.)
उ०—नींजांमा-विण नावडी, किणी-परि पांमइ पार? डगमगती नहु डग तरइ, मांहि माधव भार।—मा.कां.प्र.

नींझर—देखो 'निरझर' (रू.भे.)

नींठ—देखो 'नीठ' (रू.भे.)
उ०—मख ग्रेह पैठै करै मेख मल्लां। हमालां लखां ग्रांणियौ नींठ हल्लां।—सू.प्र.

नींठणौ, नींठबौ—देखो 'निठणौ, निठबौ' (रू.भे.)
उ०—उत्तर दिसि थी उल्लरइ, आभ धरणि इक साथ। नींठइ नहीं तु नींगमूं, निसि रोती निरनाथ।—मा.कां.प्र.
नींठणहार, हारौ (हारी), नींठणियौ—वि०।
नींठिग्रोड़ौ, नींठियोड़ौ, नींठ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नींठीजणौ, नींठीजबौ—भाव वा०।

नींठर—देखो 'निस्ठुर' (रू.भे.)
उ०—'रंड' कहीनइ रोळवी, रमतां पीऊ संघाति। निद्रा! तूं नींठर थई, मइं दूहवी तिणि राति।—मा.कां.प्र.

नींटियोड़ी—देखो 'नींटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींटियोड़ी)

नींडी—देखो 'निन्दी' (रू.भे.)
(स्त्री० नींडी)

नींदेड़-वि० नपुंसक, बेकार ?
उ०—नारि नपुंसक-वेरड़ी, नाळिकेर नी भांगि। यौवन माहरु देव ? मट, इम नींदेड़ो नांगि।—मा.का.प्र.

नींद-सं०स्त्री० [सं० निद्रा] १ जामाता को गाया जाने वाला गीत।
२ देखो 'निद्रा' (रू.भे.)
उ०—२ मछली ही दर में बसै, नींद न आवण देह। ससि वदनी री माहिबी, कै दीवग पतनेह।—बां.दा.
उ०—३ सूतो बाहर नींद सुख, साहूळो बळवत। वन कांठै मारग वहै, पग पग होत पड़ंत।—बां.दा.
मुहा०—१ नींद आणी—निद्रा के वशीभूत होना, निद्रित होना।
२ नींद उचटणी—नींद का दूर होना।
३ नींद उडणी—जग जाना, निद्रा दूर होना।
४ नींद खराब करणी—सोने में बाधा डालना, सोने में हर्ज करना।
५ नींद खराब होणी—नींद में बाधा पहुंचना, नींद का हर्ज होना।
६ नींद खुलणी—निद्रा का दूर होना, जग जाना, सो कर उठना।
७ नींद टूटणी—जग जाना, निद्रा का दूर होना, नींद छूटना।
८ नींद न पड़णी—नींद न आना, न सो सकना।
९ नींद में विघन पटकणी- नींद में बाधा डालना, नींद खराब करना।
१० नींद में विघन पड़णी—नींद में बाधा पहुचना, नींद खराब होना।
११ नींद रो कुंभकरण—वह जिसे नींद बहुत आती हो, अत्यधिक सोने वाला।
१२ नींद रो दुखियारो—हमेशा सोने के लिए इच्छुक रहने वाला अधिक सोने वाला।
१३ नींद लेणी—निद्रा के वशीभूत होना, नींद लेना, सोना।
१४ नींद हराम करणी—नींद न लेने देना, सोना छुड़ा देना।
१५ नींद हराम होणी—नींद में बाधा पहुंचना, सोने का मौका न मिलना, सोना छूट जाना।

नींदक—देखो 'निंदक' (रू.भे.)
उ०—मानमद्यानी आगरो, जारे बीकानेर। राग दोस गुजरात में, नींदक जेसळमेर।—अज्ञात

नींदड़ली, नींदड़ी—देखो 'निद्रा' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ नींदड़ली वैरण हुय रही, इण मरीजी हो मूंढो नहीं कोय के। मूळ तो मिळे नारसी, गति माटी में कोई फेर न जोय।—जयवांणी
उ०—२ रात कतावै कातणो, लूम्बां री डोरी, दिन पीसावै ज्वार, वारी ए लूम्बां री डोरी। झुळ-झुळ आवै नींदड़ली लूम्बां री डोरी, सासू चबीणो देय, वारी ए लूम्बां री डोरी।—लो.गी.
उ०—३ सुहिणा आया फिर गया, मद सर भरिया रोइ। आव सोहागण नींदड़ी, वळि प्रिय देखूं सोइ।—ढो.मा.
उ०—४ सातम दिन सांनी हुई, सात बरस री रैण। नैण न आवै नींदड़ी, सालै घट में सैण।—अज्ञात
उ०—५ घोड़ां हींस न झल्लिया, पिय नींदड़ी निवारि। वैरी आया पांवणा, दळथंभ तूझ दुवारि।—हा.झा.

नींदणो, नींदबो—देखो 'निंदणो, निंदबो' (रू.भे.)
उ०—पछै मालवणी मारवाड़ नैं नींदण लागी।—ढो.मा.
नींदणहार, हारो (हारी), नींदणियो—वि०।
नींदाड़णो, नींदाड़बो, नींदाणो, नींदाबो, नींदावणो नींदावबो
—प्रे०रू०
नींदिओड़ो, नींदियोड़ो, नींद्योड़ो—भू०का०कृ०।
नींदीजणो, नींदीजबो—भाव वा०।

नींदल-वि० [सं० निद्रा+आलुच्] १ अधिक नींद लेने वाला, आलसी, निकम्मा।
ज्यूं—भो तौ बडो नींदल मिनख है
२ देखो 'निद्रा' (मह., रू.भे.)

नींदव-वि० [सं० निन्द्] १ निंदा करने योग्य, निंदनीय।
उ०—इस नरां नींदवां बचायो जीव दुहुं ओरां, वारेगा बींदवां घोरां बचायो बीरांण। राटणी तवल्ला सोरां रचायो सवेरो राग, पाटणी हिंदवां गोरां मचायो पाठांण।—दुरगादत्त बारहठ
२ निंदा करने वाला।
अल्पा०—नींदवो।

नींदवणो, नींदवबो—१ देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)
२ देखो 'निंदणो, निंदबो' (रू.भे.)
उ०—१ घटै आव जस घन घटै, अकल हटै बळ भंग। नींदवियो दांना नरां, पातर तणो प्रसंग।—बां.दा.
उ०—२ 'किसन' तणो सांम्है कर्पै, चढतो बांकिम बींद। नींदवतै नवतै नरां, अणभंग रहै अनींद।—हा.झा.
नींदवणहार, हारो (हारी), नींदवणियो—वि०।
नींदविओड़ो, नींदवियोड़ो, नींदव्योड़ो—भू०का०कृ०।
नींदवीजणो, नींदवीजबो—कर्म वा०।
निंदवणो, निंदवबो—रू०भे०।

नींदवियोड़ो—१ देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'निंदियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींदवियोड़ी)

नींदवो—देखो 'नींदव' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० नींदवी)

नींदाड़णो, नींदाड़बो—देखो 'नींदाणो, नींदाबो (रू.भे.)'
नींदाड़णहार, हारो (हारी), नींदाड़णियो—वि०।
नींदाड़िओड़ो, नींदाड़ियोड़ो, नींदाड़्योड़ो।—भू०का०कृ०।
नींदाड़ीजणो, नींदाड़ीजबो।—कर्म वा०।
नींदणो, नींदबो—अक०रू०।

नींदाड़ियोड़ो—देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींदाड़ियोड़ी)

नींदाणो, नींदाबो–क्रि०स० [सं० निद्रा] १ निद्रित करना, सुलाना।
ज्यूं—पै'लो टाबर नै नींदाय दूं पछै चालस्यां।
[नींदणो क्रिया का प्रे०रू०] २ निंदा कराना, बुराई कराना।
ज्यूं—चुगलखोर सा'व झूंठ ईज सती नार नै पंचां खना सूं नींदाय दी। [सं० नंदि] ३ दीपक बुझाना।
नींदाणहार, हारो (हारी), नींदाणियो—वि०।
निंदवाड़णो, निंदवाड़बो, निंदवाणो, निंदवाबो, निंदवावणो, निंदवावबो, नींदवाड़णो, नींदवाड़बो, नींदवाणो, नींदवाबो, नींदवावणो, नींदवावबो—प्रे०रू०।
नींदायोड़ो—भू०का०कृ०।
नींदाईजणो, नींदाईजबो—कर्म वा०।
निंदणो, निंदबो, नींदणो, नींदबो—अक० रू०।
निंदवणो, निंदवबो, निंदाड़णो, निंदाड़बो, निंदाणो, निंदाबो, निंदावणो, निंदावबो, नींदवणो, नींदवबो, नींदाड़णो, नींदाड़बो, नींदावणो, नींदावबो—रू०भे०।

नींदायोड़ो–भू०का०कृ०—१ निद्रित किया हुआ, सुलाया हुआ।
२ निंदा कराया हुआ, बुराई कराया हुआ।
३ (दीपक) बुझाया हुआ।
(स्त्री० नींदायोड़ी)

नींदाळ–वि० [सं० निंदनं+आलुच्] १ जिसकी निंदा बहुत होती हो।
रू०भे०—निंदाळ, नीदाळ।
२ देखो 'निद्राळु' (मह., रू.भे.)
उ०—ताहरां प्रोळियो ऊठियो, नींदाळ थकै हीज खिड़की खोली।
—नैणसी
३ देखो 'निंदाळु' (मह., रू.भे.)

नींदाळको, नींदाळवो—देखो 'निद्राळु' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ सूवर सूतो नींद में, भूंडण पहरा देत। ऊठो सूवर नींदाळका, फौज हिलोळा लेत।—लो.गी.
उ०—२ घणा नींदाळवां नींद वारो घणी। तूंग न छै भली हींस घोड़ां तणी।—हा.झा.
(स्त्री० नींदाळकी, नींदाळवी)

नींदाळु—१ देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)
२ देखो 'निद्रालु' (रू.भे.)
उ०—तरै कंवर वीरमदे आवा की तैयारी करी। सारत्ती कैई सारै। खवास दारू की सीसी भरै। नींदाळु वाघ जिम आळस मोड़ियां ऊठियो इण तरै।—पनां वीरमदे री वात

नींदाळुद्ध–वि० [सं० निद्रा+आलुद्ध] घोर निद्रा में मग्न, निद्रित, सुप्त।
उ०—काळो मंजीठो कियां, नइणे नींदाळुद्ध। अंबर लागो ऊठियो, विढ़वा वंस विसुद्ध।—हा. झा.

नींदाळुव—देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)
२ देखो 'निद्राळु' (रू.भे.)

नींदाळू—१ देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)
२ देखो 'निद्राळु' (रू.भे.)
उ०—म्हारै पतीव्रतापणा री नेम है कै पती नै नहीं जगावणो सो आज नींदाळू नींद में सो म्हारा पीन (मोटा मोटा) कुच बाथ में भीड़ सूतो है तिणां सूं अब छोडणो न्यारो करणो जगावूं तो म्हारो धरम जावै, नहीं जगावूं तो पती रो धरम जावै है। अब कांई करणो चाहीजै।—वी.स.टी.

नींदाळो—१ देखो 'नींदाळु' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'निद्राळु' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—बावेली ए मैड़ियां मांहि ढोलियो ढळाव, घणो नै नींदाळो सिगरत पावणो।—लो.गी.
(स्त्री० नींदाळी)

नींदियोड़ो—देखो 'निंदियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींदियोड़ी)

नींदीजणो, नींदीजबो–भाव वा०—निद्रा के वशीभूत होना, निद्रित होना, नींद आना।
नींदीजणहार, हारो (हारी), नींदीजणियो—वि०।
नींदीजिओड़ो, नींदीजियोड़ो, नींदीज्योड़ो—भू०का०कृ०।
निंदीजणो, निंदीजबो—रू०भे०।

नींदीजियोड़ो–भू०का०कृ०—निद्रा के वशीभूत हुवा हुआ, निद्रित, सुप्त।
(स्त्री० नींदीजियोड़ी)

नींद्र—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)
उ०—हूं ऊपजतां ऊपनी, नारी जेह नरेंद्र। माधव-जातइ ते गई, भूख पिपासा नींद्र।—मा.कां.प्र

नींद्रड़ी—देखो 'निद्रा' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ नीसति जाणी नींद्रड़ी, रहिती मुझ समांन। बाई तुं! वाधी गई, माधव साथइ कांन।—मा.कां.प्र.
उ०—२ नादइं आवइ नींद्रड़ी, वेदइ जागइ विप्र। भेद समस्या भाखीइ, ख्याति कहीज्जइ क्षिप्र।—मा.कां.प्र.

नींद्रा—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)
उ०—नै आपनूं नींद्रा आवी।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

नींपणो, नींपबो—देखो 'नीपणो, नीपबो' (रू.भे.)

नींपियोड़ो—देखो 'नीपियोड़ो' (रू.भे.)

नाग गालगा सुभाज नम मर। बाजा कनो पातर अमारदोला गर
डेडो, न नावै भक्षीयो मोटो कनो रायानेर।—बां.दा.

उ०—२ जहां मव फळ वच्छ तहां नींब फळ न पांमस। जहां
मिलो दरवान, तहां भीकम रच मांनस।—नणसी

नींबगोळ-सं०पु० [सं० नेम-गोल] जिसका आधा भाग गोल हो।

नींबड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नींबड़लो—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नींबड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नींबड़ो-सं०पु०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—कोई कहै जीविया कीकर तो हूं कहूं हूं तो नींवड़ा री बळी-
हारी जाऊं सो इण नीव म्हांने पाछो सुहाग दीधो है। घाव ऊपर
नींब रो पाटो फायदो करै छै।—वी.स.टी.

नींबज-सं०स्त्री०—झालरा-पाटण रियासत में बहने वाली एक नदी
का नाम जो परवन नदी की सहायक नदी है।

नींबू-सं०पु० [सं० निम्बूक] १ पृथ्वी के गरम प्रदेशों में पाया जाने
वाला मध्यम आकार का एक पेड़ या झाड़ जिसके फल गोल या
लम्बोतरा होता है और खाने के काम आता है।

वि०वि०—मीटा नींबू, संतरा, नारंगी, बिजोरा, चिकोतरा आदि
वृक्ष भी इसी की जाति के माने जाते हैं। भारत में नींबू देव वृक्ष
माना जाता है (अ.मा.)

२ इस वृक्ष का फल। उ०—अजरख जमीकद रताळू का विसतार।
अबु नीबू अगीर कैरू का आचार।—सू.प्र.

३ एक लोक गीत का नाम।

रू०भे०—नींबू।

अल्पा०—नींबूड़ो, नीबूड़ो, नीबूडो।

नींबूड़ो—देखो 'नींबू' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ तीजो मास उतरियो ए जच्चा नींबूड़े मन जाय। चौथो
मास उतरियो ए जच्चा लाडूड़े मन जाय।—लो.गी.

उ०—२ प्यारी धण पै नीबूड़ा कुण वाया म्हारा राज।

—लो.गी.

नींबोळी—देखो 'निंबोळी' (रू.भे.)

उ०—परतख पाप पटतरो, बहनड़ सुण बोलीह। जोहा चाखी
दाख ज्यां, न रुचै नींबोळीह।—र. हमीर

नींबो-सं०पु०—१ देखो 'निंबारक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—'वल्लभ' रूप लिखायो वैड़ो, भरियो नीर भरावो भैंड़ो।
'नींबे' तणो निकाळयो नैंड़ो। जिणरो धाव नांम रै जैड़ो (ऊ.का.)

२ देखो 'नीम' (अल्पा., रू.भे.)

नींमाड़ियोड़ो—१ देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निवड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नींमड़ियोड़ी)

नींमजणो, नींमजबो—१ देखो निरमणो, निरमबो' (रू.भे.)

उ०—जांणी सहि वहि जुडता जोडइ, धड नींमजइ ऊघगइ धार।
आवध ग्रहियां हाथ आपरा, भंवर लागउ वडउ इयार।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'नीपजणो, नीपजबो' (रू.भे.)

नींमजणहार, हारो (हारी), नींमजणियो—वि०।

नींमजाड़णो, नींमजाड़बो, नींमजाणो, नींमजायो, नींमजावणो,
नींमजावबो—क्रि०स०।

नींमजिग्रोड़ो, नींमजियोड़ो, नींमज्योड़ो—भू०का०कृ०।

नींमजीजणो, नींमजीजबो—कर्म वा०।

नींमजाड़णो, नींमजाड़बो—१ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमाणो, निरमाबो' (रू.भे.)

नींमजाडणहार, हारो (हारी), नींमजाड़णियो—वि०।

नींमजाड़िग्रोड़ो, नींमजाड़ियोड़ो, नींमजाड़योड़ो—भू०का०कृ०।

नींमजाड़ीजणो, नींमजाड़ीजबो—कर्म वा०।

नींमजाड़ियोड़ो—१ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नींमजाड़ियोड़ी)

नींमजाणो, नींमजाबो—१ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमाणो, निरमाबो' (रू.भे.)

नींमजाणहार, हारो (हारी), नींमजाणियो—वि०।

नींमजायोड़ो—भू०का०कृ०।

नींमजाईजणो, नींमजाईजबो—कर्म वा०।

नींमजायोड़ो—१ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नींमजायोड़ी)

नींमजावणो, नींमजावबो—१ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमाणो, निरमाबो' (रू.भे.)

नींमजावणहार, हारो (हारी), नींमजावणियो—वि०।

नींमजाविग्रोड़ो, नींमजावियोड़ो, नींमजाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

नींमजावीजणो, नींमजावीजबो—कर्म वा०।

नींमजावियोड़ो—१ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नींमजावियोड़ी)

नींमजर—देखो 'नीमजर' (रू.भे.)
नींमजयोड़ौ—१ देखो 'निरमियोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'निपजयोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींमजियोड़ी)
नींमणौ, नींमबौ—देखो 'निरमणौ, निरमबौ' (रू.भे.)
उ०—पुनिम पख मुणिंद साळिभद्र ए सूरिहिं नींमीउ ए। देवचंद्रउपरोधि पंडव ए रासु रसाउलु ए।—पं.पं.च.
नींमणहार, हारौ, (हारी), नींमणियौ—वि०।
नींमाड़णौ, नींमाड़बौ, नींमाणौ, नींमावौ, नींमावणौ, नींमावबौ —क्रि०स०।
नींमिओड़ौ, नींमियोड़ौ, नींम्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नींमोजणौ, नींमीजबौ—कर्म वा०।
नींमियोड़ौ—देखो 'निरमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींमियोड़ी)
नींमेड़णौ, नींमेड़बौ—१ देखो 'निवेड़णौ, निवेड़बौ' (रू.भे.)
२ देखो 'निपटाणौ, निपटाबौ' (रू.भे.)
नींमेड़णहार, हारौ (हारी) नींमेड़णियौ—वि०।
नींमेड़िओड़ौ, नींमेड़ियोड़ौ, नींमेड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नींमेड़ीजणौ, नींमेड़ीजबौ— कर्म वा०।
नींमड़णौ, नींमड़बौ—अक० रू०।
नींमेड़ियोड़ौ—१ देखो 'निवेड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'निपटायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींमेड़ियोड़ी)
नींव-सं०स्त्री० [सं० नेमि, प्रा० नेड] १ दीवार उठाने के लिए गहरी नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा जिसके भीतर से दीवार की जोड़ाई आरम्भ होती है।
ज्यूं—अठै कोलेज बणैला, नींवां खुदण लागगी है।
क्रि०प्र०—खुदणी, खोदणी, भरणी।
मुहा—१ नींव देणी—दीवार बनाने के लिए गहरी नाली खोद कर स्थान बनाना। दीवार की मूल जमाने के लिए भूमि खोदना। मकान बनाने का प्रारम्भ करना। आरम्भ करना। सामान तैयार करना। उपक्रम करना। आधार खड़ा करना।
२ नींव भरणी—पत्थर, कंकड़ आदि से दीवार उठाने के लिए गहरे किए हुए स्थान को पाटना।
२ वह मूल भित्ति जो दीवार के लिए गहरे किए हुए स्थान में ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि जोड़ कर या जमा कर ऊपर उठाई जाती है, दीवार का आधार व जड़।
उ०—कांतिधर सेठ एक नवौ मंदिर बणावै सो पुष्य नक्षत्र रविवार नूं वैरी नींव लगाई।—सिंघासण बत्तीसी
मुहा०—१ नींव जमाणी, नींव डाळणी, नींव देणी—दीवार की जड़ जमाना, ईंट पत्थर आदि से नींव के गड्ढे को पाट कर दीवार के लिए आधार उठाना, स्थापित करना, स्थिर करना, आधार दृढ़ करना, गर्भ ठहराना, बुनियाद डालना, सूत्रपात करना, आरम्भ करना।
२ नींव पड़णी—मकान बनना आरम्भ होना, दीवार के लिए आधार बनाना, जड़ी खड़ी होना, आरम्भ होना, सूत्रपात होना, जमना।
नींव री भाटी—मकान बनाने के आरम्भ में पहले-पहल नींव में रखा जाने वाला पत्थर, दृढ़ आधार।
४ नींव लगणी—देखो 'नींव जमाणी, डाळणी, पड़णी'।
५ नींव लागणी—देखो 'नींव पड़णी'।
३ आधार, स्थिति।
४ जड़, मूल।
रू०भे०—नींम, नीम, नीवं, नीव।
नींवड़णौ, नींवड़बौ—१ देखो 'निपटणौ, निपटबौ' (रू.भे.)
उ०—पिड खीचिय साथ घणूं पडियूं। वढ़ 'पाल' पड़ै जुध नींवडियूं। विय सोतर वेध खळां वहियूं। रवि असिय 'पाल' कटै रहियूं।
—पा.प्र.
२ देखो 'निवड़णौ, निवड़बौ' (रू.भे.)
नींवड़णहार, हारौ (हारी), नींवड़णियौ—वि०।
नींवड़िओड़ौ, नींवड़ियोड़ौ, नींवड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नींवड़ीजणौ, नींवड़ीजबौ—भाव वा०।
नींवड़ियोड़ौ—१ देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'निवड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींवड़ियोड़ी)
नींवत—देखो 'नीयत' (रू.भे.)
उ०—कोई कंवै लोगां री नींवत खोटी हुयगी।
—वरसगांठ
नींवेड़णौ, नींवेड़बौ—१ देखो 'निपटाणौ, निपटाबौ' (रू.भे.)
२ देखो 'निवेड़णौ, निवेड़बौ' (रू.भे.)
नींवेड़णहार, हारौ (हारी), नींवेड़णियौ—वि०।
नींवेड़िओड़ौ, नींवेड़ियोड़ौ, नींवेड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नींवेड़ीजणौ नींवेड़ीजबौ—कर्म वा०।
नींवेड़ोयोड़ौ—१ देखो 'निपटायोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'निवेड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निवेड़ियोड़ी)
नींसरणौ, नींसरबौ—देखो 'नीसरणौ, नीसरबौ' (रू.भे.)
उ०—१ उठै म्हांनूं कुंवरजी नींसरण नहीं दै।—द.वि.
उ०—२ रांमदास री मारग रूड़ौ, उण रै नह आभड़िया। घर घर सूं नींसर नै घोड़ां, खाली ऊभड़ खड़िया।—ऊ.का.
नींसरणहार, हारौ (हारी), नींसरणियौ—वि०।

नींगरियोड़ौ, नींगरियोड़ौ, नींगरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नींगरावणौ, नींगरीजवौ—भाव वा०।
नींगरियोड़ौ—देखो 'नींगरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींगरियोड़ी)
नी-सं०पु०—१ प्रेम, स्नेह।
२ नृप, राजा।
सं०स्त्री०—३ अनन्य भक्ति।
४ दशा, अवस्था (एका०)
वि०—१ अतिशय, बहुत ज्यादा।
२ नीरोग, चंगा, स्वस्थ (एका०)
प्रत्यय०—सम्बन्ध या षष्ठी विभक्ति अथवा इस विभक्ति के चिन्ह 'ना' का स्त्री०, 'की'।
उ०—१ रायणो नट परणवा चाल्यउ, कुमर कनकरथ नांम रे। रिसिदत्ता तापस नी पुत्री, दीठी अति अभिराम रे।—स.कु.
उ०—२ हू सोनां नी मुंदड़ी सुपियारा हो, तूं हिव हीरो होय, नेम सुपियारा हो।—स.कु.
उ०—३ 'लखो' अधो धी अंधी, अंधो 'लखा' नी लोय। आंख तणूं फरमाड़ूं, क्या जांणू क्या होय।—अज्ञात
अव्य०—१ एक आदरदर्शक वा अनुरोधसूचक अव्यय।
ज्यूं—आवै नी। बैठै नी। जीमै नी। जावै नी। लावै नी।
२ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—१ पीछे मा'राज काम आया तिणरी पातसाहजी सूं औरंगाबाद में मालम हुई। तठै बडो अपसोस कियो अर फुरमायो कै यहां सचा निमकहलालिया था, अब मेरी पातसाही में ऐसा जमामरद बाकी रया नी कोई, धरती मेरी रही, मुलक में भी चैन किया, पण 'पदमै' जिसा सचा सूरा होणें का फेर नहीं, दोवां हरांमखोरां कु अपणें हाथ में मार डाला।—द.दा.
उ०—२ नोटो चोथे मांय, गूंथो गुणां सजाय नै। हेताळू री गांठ, जाकै कुम में नी खुलै।—अज्ञात
३ देखो 'नि' (रू.भे.)
रू०भे०—नीं।
नीअ—देखो 'नीच' (रू.भे.) (जैन)
नीइ—देखो 'नीति' (रू.भे.)
उ०—नीइ तुमारी नमो जुग अगनेहि जरिया।—पी.ग्रं.
नीक-सं०स्त्री० [सं० नीका] १ खेतों की सिंचाई के लिए पानी का रास्ता या नहर (उ.र.)
२ देखो 'नीको' (मह., रू.भे.)
उ०—ठायें हम ठक्कुर राहुळ टीक, नोकरी चहत नजदीक नीक।
—ऊ.का.
नीकउ-सं०पु० [सं० निष्क:] १ स्वर्ण का कंठा या हार (उ.र.)
२ सोना, स्वर्ण, कनक (उ.र.)
३ सोने की तोल विशेष (उ.र.)
४ देखो 'नीको' (रू.भे.)
उ०—नव तत नव निधांन जिन पाए, आगम गंगा कुरि। षवद विद्या गुण रतन सग करि, नीकउ नोलवट नूरि।
—ऐ.जै.का.सं.
नीकळंक—देखो 'निकळंक' (रू.भे.)
उ०—जउ ए विरुउं आचरइ, तउ पण बहु पवित्र। परमेस्वर ए पूजीइ, ए नीकळंक चरित्र।—मा.कां.प्र.
नीकळणौ, नीकळबौ—देखो 'निकळणौ, निकळबौ' (रू.भे.)
उ०—१ जदी रजपूतांणी घणी ही रजपूत नै समजावै। पण आ मानै नहीं। जदी रजपूत तो उठा सूं नीकळ्यो जो घरै आयो।
—पंचमार री वात
उ०—२ मेळ थयो सैंधै मुहे, रैंणा देता रेस। अर मिळिया दिन ऊजळै, थया नीकळै 'महेस'।—रा.रू.
उ०—३ अस्व रथ गज चढी भूपति, नगर थी सहू नीकळया, कुंडिनपुर भणि सांचरि, पदाति बहु आवी म्यल्या।
—नळाख्यांन
उ०—४ किसा नगर रा नीकळया जी, स्वांमी! बसता कुण से ग्रांम। किण रा छो दीकरा जी, पिता रो कहो नांम।
—जयवांणी
उ०—५ नगर बीच हो नीकळया, गया वीर जिणंद रै पास। वदणा करी कर जोड़ै नै, कहै तारो भवजळ तास।—जयवांणी
उ०—६ कितरायक दिन नीकळया, रुघनाथजी नै खबर हुइ जद जोधपुर चाल्या।—मि.द्र.
नीकळणहार, हारो (हारी), नीकळणियौ—वि०।
नीकळिग्रोड़ौ, निकळियोड़ौ, नीकळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नीकळीजणौ, नीकळीजबौ—भाव वा०।
नीकळियोड़ौ—देखो 'निकळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीकळियोड़ी)
नीकाळ—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)
नीकाह—देखो 'निका' (रू.भे.)
नीकां-क्रि०वि० [देशज] अच्छी तरह से, ठीक प्रकार से।
उ०—सूरे कही—दीठो तो सही पण विसेस रुयांत नहीं कीवी। खींवै कही—धोड़ी मैं नीकां दीठी। थे तो बातां रै घमभोळै मांही था, पण हूं दीठी थी।—सूरे खींवे कांधळोत री वात
नीको-वि० [सं० निरक्त=साफ, स्वच्छ] (स्त्री० नीकी)
१ अच्छा, ठीक। उ०—१ नहीं जग माळा नीकी रे, जाळा नहीं फाटै जी की रे।—ऊ.का.
उ०—२ फुरियो भादरवो धुरियो नह फीको। नीरद रज आगै लागै नह नीको। तिसिया संगारा भू पर नर तिरसै। धिसिया अंगारा ऊपर सूं बरसै।—ऊ.का.

उ०—३ आली मोहि लागत व्रिंदावन नीको।—मीरां

२ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया। उ०—१ विमळ कवेसर विलै साधु सुखदेव सरीखा। वालमीक जैदेव नांम नरहर कवि नीका।

—पी.ग्रं.

उ०—२ नीको जग री नांम निज, पणिजै निकळंक पात्र। सहि छात्रा ऊपरि सरै, स्त्रिया कंत रो छात्र।—पी.ग्रं.

उ०—३ अइ ए आंवळियांह. गुणसागर गोढांण री। फूलां बहु फळियांह, नीका दांतण नीपजै।—अज्ञात

३ सुन्दर, भला। उ०—१ ससीवयणी अगनयणी, नव सति सजि सिणगार। नवयोवन सोवन वन, अलि अपछर अवतार। सिर सिंघो फूली, बहुमूली राखडी सार। सीस फूलमणि टीकी नीको कंत अपार।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ बभूती की टीकी निज अलिक निकी नित बसै। कड़ा डोरो मूरती लवंग परि पूरती स्तुति लसै।—मे.म.

उ०—३ रमाकंत ची वंक वेभ्रूंह रंजी। लखै कांम सूर सांम ची चाप लज्जी। त्रिहूं लोक चा ग्वाळ रै भाळ टीको। नरां भूप सोभा लखै रूप नीको।—रा.रू.

४ सम्मानपूर्वक। उ०—सो अमरसिंहजी नूं बादसाह नीकी तरह राखै।—राठौड़ राजसिंह री वारता

रू०भे०—नीकउ।

मह०—नीक।

नीखर-वि० [सं० निक्षरणं=छंटना] स्वच्छ, निर्मल, साफ।

ज्यूं—नीखर पांणी, नीखर धांन।

नीखरणौ, नीखरबौ—देखो 'निखरणौ, निखरबौ' (रू.भे.)

उ०—वरिखा रितु गई सरद रितु वळती, वाखांणि सु वयण वयणि। नीखर धर जळ रहित निवांणै, निधुवनि लज्जा त्री नयणि।—वेलि.

नीखरणहार, हारौ (हारी), नीखरणियौ—वि०।

नीखरिओड़ौ, नीखरियोड़ौ, नीखरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीखरीजणौ, नीखरीजबौ—भाव वा०।

नीखरियोड़ौ—देखो 'निखरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीखरियोड़ी)

नीखाखा-सं०पु० [देशज] केवट (अ.मा.)

नीगम—देखो 'निगम' (रू.भे.)

उ०—प्रिथु वेलि कि पंचविध प्रसिध प्रणाळी, आगम नीगम कजि अखिळ। मुगति तणी नीसरणी मंडी, सरग लोक सोपांन इळ।

—वेलि.

नीगमणौ, नीगमबौ-क्रि०स० [सं० निर्गमननम्] १ व्यतीत करना, बिताना। उ०—१ राव उडीसइ रहीयो जाई। राजमतो अजमेरां मांहि। दस बरस ईम नीगम्या। बरस ईग्यारमउ पहतऊ आई।

—बी.दे.

उ०—२ दीह दुहेलो जाइ, निसि नीसासै नीगमूं। दुखिया देखो दाइ, आवै तो आवै 'जसा'।—जसराज

२ खोना, गमाना।

उ०—सो धम्म रम्म जो गुण सहिय, दांनसीळ तव भाव मउ। भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नरभव आलि म नीगमउ।

—अभयतिक यती

३ गमन करना, जाना। उ०—१ बीजुळियां पारोकियां, नीठ ज नीगमियांह। अजइ न सज्जन बाहुड़े, वळि पाछी वळियांह।

—ढो.मा.

उ०—२ जउ तूं ढोला नावियउ, मेहां नीगमतांह। किया करायइ सज्जणां, दाधा मांहि घणांह।—ढो.मा.

४ प्रदान करना, देना।

५ साबित होना, प्रमाणित होना, सिद्ध होना।

नीगमणहार, हारौ (हारी), नीगमणियौ—वि०।

नीगमिओड़ौ, नीगमियोड़ौ, नीगम्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीगमीजणौ, नीगमीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

निगमणौ, निगमबौ, नींगमणौ नींगमबौ—रू०भे०।

नीगमियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ व्यतीत किया हुआ, बिताया हुआ।

२ खोया हुआ, गमाया हुआ।

३ गमन किया हुआ, गया हुआ।

४ प्रदान किया हुआ, दिया हुआ।

५ साबित हुवा हुआ, प्रमाणित हुवा हुआ, सिद्ध हुवा हुआ।

(स्त्री० नीगमियोड़ी)

नीगळणौ, नीगळबौ—देखो 'निगळणौ, निगळबौ' (रू.भे.)

उ०—तद मोजडी मछ रै हाथ आई। सु मछ नीगली। तद रांणी दीठो एक मोजड़ी नहीं तो हेके नूं कासूं करूं।—चौबोली

नीगळणहार, हारौ (हारी), नीगळणियौ—वि०।

नीगळिओड़ौ, नीगळियोड़ौ, नीगळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीगळीजणौ, नीगळीजबौ—कर्म वा०।

नीघरियौ-वि० [सं० नि+गृह] जिसके घर न हो, बिना घर का।

उ०—पर घर रीझण करहला, नीघरिया घर आव। बीजां अेक झबूकड़ा, वेलां एको साव।—जलाल बूबना री वात

नीघात—देखो 'निघात' (रू.भे.)

उ०—साकुरां ऊपड़ी बागां हेकपै आलमां सारी, हणु मार लंक नै दिखाया भारी हाथ। वेढीगारां रांगड़ा ऊं लगाई घगारां वातां, नगारां वागतां गांम लूटिया नीघात।—विसनसिंह राठौड़ री गीत

नीड़-सं०पु० [सं० नीड] १ चिड़ियों का घोंसला।

२ स्थान, जगह रहने का स्थान।

उ०—'अजै' कंवर सूं आखियो, मिळतां साचै मन्न। भीड़ न भाजै दूसरां, तो विण नीड़ जतन्न।—रा.रू.

३ नदी के किनारे का प्रान्त या नगर।

४ कूपों द्वारा सींचा जाने वाला भू-भाग ।

सं०स्त्री०—५ सरिता, नदी ।

वि०—१ स्तुति योग्य ।

२ देखो 'निकट' (रू.भे.)

उ०—'गुरजन' नृप रत्त मस्त सह, भोज कुमार क भीड़ । भांमी मरवट मंजिया, नांमी प्रति-भट नीड़ ।—वं.भा.

नीड़ै—देखो 'निकट' (रू.भे.)

उ०—१ अर रांमपुरै आपरो सगपण हुवो जिण रा विवाहण में दगोरा फौजदार नूं नीड़ै जांणि जिको ही आप नैं अवलंब रो देणहार जांणियो ।—वं.भा.

उ०—२ भाट घणा दिन भाखता, कुळ मूला मूकंत । रहिया नीड़ै वीर ही, जाणा विरद जपंत ।—वी.स.

नीड़ो—देखो 'निकट' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ ढांणी धुलाइ नैं कह्यो म्हारा साथी नीकळिया, कह्यो जी अैही जाइ । चलिया मसांण नीड़ो छै ।—पंच दंडी री वारता

(स्त्री० नीड़ी)

नीचन, नीचंघ-सं०पु० [सं० नीचग] पानी, जल (ना.डि.को.)

नीचंत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

नीच-वि० [सं०] १ जिसका स्थान उत्तम और मध्यम के बाद पड़ता हो, निकृष्ट, बुरा, अधम (डि.को.)

२ कर्म, गुण, जाति या और किसी बात में घट कर या न्यून, तुच्छ, हेठा, अधम । उ०—आदि तूझ था ऊपना, जगजीवण सह जीव । ऊंच नीच घर अवतरण, दां कइ दोस दईव ।—ह.र.

यौ०—ऊंच-नीच ।

सं०पु०—ओछा आदमी, क्षुद्र मनुष्य । उ०—१ कायर अवरम कुजस सूं, नीच न डरपै नाह । डरपै परदळ देखियां, रण तज लागै राह ।
—बां.दा.

उ०—२ आव घटै घर ओर री, वयण इस्ट दे वीच । आ आछी न करै अठै, न दियै पाछी नीच ।—बां.दा.

२ भ्रमण काल के सम्बन्ध में किसी ग्रह के भ्रमण वृत्त का वह स्थान जो पृथ्वी से अधिक निकट हो ।

३ फलित ज्योतिष में किसी ग्रह के उच्च स्थान से सातवां स्थान ।

४ चोर नामक गंध द्रव्य ।

५ दशार्ण देश के एक पर्वत का नाम ।

६ शूद्रवर्ण (डि.को.)

७ देखो 'नीचो' (मह., रू.भे.)

रू०भे०—नींच, नीचउ, नीय ।

नीचउ—१ देखो 'नीच' (रू.भे.)

२ देखो 'नीचो' (रू.भे.)

नीचकमाई-सं०स्त्री० [सं० नीचः+राज० कमाई] १ बुरे कामों से पैदा किया हुआ धन ।

२ बुरा धन्धा, निंद्य व्यवसाय ।

नीचग-सं०पु० [सं०] १ अपने उच्च स्थान से सातवें स्थान पर पड़ने वाला ग्रह । (फलित ज्योतिष)

२ पानी, जल ।

वि०—१ पामर, ओछा ।

२ नीचे जाने वाला ।

नीचगांमी-वि० [सं० नीचगामिन्] नीचे जाने वाला, ओछा ।

नीचगा-सं०स्त्री० [सं०] नदी, सरिता ।

नीचगिर, नीचगिरि-स०पु० [सं० नीचगिरि] दशार्ण देश के एक पर्वत का नाम ।

उ०—लेण थमो विसरांम नीचगिर परवत माथै । घण पुहुपां रोमांच मिळ'तां कदमां साथै । गंधै लोह, सुगंध विलासण कांमणियां रै । मद छक-जोबन पूर जतावै मण पुरसां रै ।—मेघ.

नीचग्रह-सं०पु० [सं० नीचगृह] वह स्थान जो किसी ग्रह के उच्च-स्थान से गिनती में सातवां हो ।

नीचता-सं०स्त्री० [सं० नीच+रा.प्र.ता] १ क्षुद्रता, तुच्छता, अधमता, खोटाई, कमीनापन ।

२ नीच होने का भाव ।

रू०भे०—नीचाई ।

नीचघूणियो [स० नीच+राज. घुणियो] नीचे देखते हुए चलने वाला (अशुभ)

नीचरलो, नीचलो—देखो 'निचलो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीचरली, नीचली)

नीचांत-सं०स्त्री० [सं० नीच+रा.प्र. अंत] नीची भूमि, ढाल ।

नीचाई—देखो 'निचाई' (रू.भे.)

२ देखो 'नीचता' (रू.भे.)

नीचित, नीचींत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

उ०—१ वार निहारूं पंथ बुहारूं, ज्यूं सुख पावै चित । मेरा मन की तुमही जांणो, मेरो ही जीव नीचित ।—मीरां

उ०—२ ताहरां पछीत खोदणी वैठे नीचींत थको खोदै छै । खोदतै खोदतै गळी की जिसड़ी में माथो मावै ।—चौबोली

नीचे, नीचै-क्रि०वि० [सं० नीचैः] १ नीचे की ओर, अधोभाग में ।

२ कम, घटकर, न्यून ।

३ अधीनता में, मातहती में ।

रू०भे०—नीय, नेचा ।

नीचोड़—देखो 'निचोड़' (रू.भे.)

उ०—अह नर सुर कह कवण ओड़, जै दत खग जोड़ । चक्रवत कर सुधा नीचोड़, मद वंका मोड़ ।—र.ज.प्र.

नीचोड़णो, नीचोड़बो—देखो 'निचोणो, निचोबो' (रू.भे.)

नीचोड़णहार, हारो (हारी), नीचोड़णियो—वि० ।

नीचोड़िओड़ो, नीचोड़ियोड़ो, नीचोड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नीचोड़ीजणो, नीचोड़ीजबो—कर्म वा० ।

नीचोड़ियोड़ौ—देखो 'निचोयोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीचोड़ियोड़ी)

नीचोणौ, नीचोबौ—देखो 'निचोणौ, निचोबौ' (रू.भे.)
नीचोणहार, हारौ (हारी), नीचोणियौ—वि०।
नीचोयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नीचोड़ीजणौ, नीचोड़ीजबौ—कर्म वा०।

नीचोयोड़ौ—देखो 'निचोयोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीचोयोड़ी)

नीचोवणौ, नीचोवबौ—देखो 'निचोणौ, निचोबौ' (रू.भे.)
नीचोवणहार, हारौ (हारी), नीचोवणियौ—वि०।
नीचोविश्रोड़ौ, नीचोवियोड़ौ, नीचोव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नीचोवीजणौ, नीचोवीजबौ—कर्म० वा०।

नीचोवियोड़ौ—देखो 'निचोयोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीचोवियोड़ी)

नीचौ-वि० [सं० नीच] (स्त्री० नीची) १ जो कुछ उतार या गहराई पर हो, जिसका तल आसपास के तलों की अपेक्षा गहराई पर हो, जिस तल से उसके आसपास के तल ऊपर हों, निम्न।
ज्यूं—थांरै खेत में ईज पांणी भेळो व्है, इण री कारण थांरौ खेत बीजा खेतां सूं नीचौ है।
यौ०—नीचौ-ऊंचौ।
२ जो साधारणतया दूसरों से ऊंचाई में कम हो, जो ऊपर की ओर दूसरों के या आसपास की वस्तुओं के बराबर गया हुआ न हो।
ज्यूं—हवेली सूं तौ औ घर घणौ नीचौ है।
३ जो ऊपर की ओर पूरा उठा हुआ न हो, झुका हुआ, नत।
ज्यूं—नीचौ माथौ, नीची निजर।
ज्यूं—राजाजी देवलोक हुआ जद किलै माथै झंडो नीचौ कर दियौ हो।
४ जो ऊपर से जमीन की ओर अधिक दूर तक लटका हुआ हो।
ज्यूं—नीची धोती, नीचौ कुड़तौ।
५ जो उत्तम और मध्यम कोटि का न हो, निकृष्ट।
६ ओछा, छोटा, बुरा, क्षुद्र, तुच्छ। उ०—कांम थैं इसो नीचौ कियौ, चार पगां धग चाढियौ।—ऊ.का.
७ जो कर्म गुण या जाति आदि में घट कर हो, न्यून।
उ०—१ ऊंचां नीचां में आगळ वह ईखै। मागळ भख-भूरां भेळा भड़ भीखै।—ऊ.का.
उ०—२ नीची न्यातां रा ऊंचा ऊधरिया, ऊंची जातां रा नीचा ऊतरिया।—ऊ.का.
उ०—३ नीची जात री ठणको पण न्यारौ, ऊंची जातां री उड़ग्यौ उणियारौ।—ऊ.का.
८ जो तीव्र न हो, जो चढ़ा हुआ न हो, जो जोर का न हो, मध्यम, धीमा।
ज्यूं—नीचौ सुर, नीची आवाज।
क्रि०वि०—ऊंचे से नीचे की ओर, नीचे की तरफ।
उ०—१ नीचौ जावै नीर ज्यूं, जग नव नहचै जांण। सकल पदारथ सार री, व्है खिण खिण में हांण।—बां.दा.
उ०—२ गहर आंखियां गीड़, झपक नीचौ झड़ जावै। नाक न पूंछै नींच, मांय मांख्यां भर जावै।—ऊ.का.
उ०—३ नीचौ नैणां सूं धोवां जळ धावै। ऊंचौ ईखण री अभलेखौ आवै। गाढ़ी गयणांगण रज ले गरणाटा। सांवण सूकौ गौ देतौ सरणाटा।—ऊ.का.
मुहा०—१ नीचौ-ऊंचौ करणौ—धमकी, प्यार आदि से समझाना।
२ नीचौ-ऊंचौ होणौ—किसी वस्तु की दर का बढ़ना या घटना, अवसरवादी होना।
३ नीचौ जोवतौ करणौ—इज्जत में बट्टा लगाना, शर्मिंदा करना।
४ नीचौ देखणौ—शर्मिंदा होना।
५ नीचौ देखाणौ—शर्मिंदा करना, हराना, इज्जत में बट्टा लगाना।

नीछंटणौ, नीछंटबौ—देखो 'नीछटणौ, नीछटबौ' (रू.भे.)
उ०—कविळउ कलूळ कंदळ करेय, फारकां पूठि फिरणी फिरेय। नीछंटिया गोळा तंत्र नाळि, पावक्क जांणि पइठउ पलाळि।
—रा.ज.सी.
नीछंटणहार, हारौ (हारी), नीछंटणियौ—वि०।
नीछंटिश्रोड़ौ, नीछंटियोड़ौ, नीछंट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नीछंटीजणौ, नीछंटीजबौ—कर्म वा०।

नीछंटियोड़ौ—देखो 'नीछटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीछंटियोड़ी)

नीछटणौ, नीछटबौ-क्रि०स०—१ फेंकना, छोड़ना।
उ०—१ नयण कटाछ बांण नीछटती। कसि चिहुं दिस फेरती कटाह। ऊठ 'रयण' वर परणण आवी। घूमर कीयां मीर घड़ाह।
—दूदौ
उ०—२ नयणां तणा बांण नीछटता, निमख निमख ताइ वाधइ नेह। रुत जांणती समउ जांणीयउ, सांईं सूं पहिलकउ सनेह।
—महादेव पारवती री वेलि
२ प्रहार करना। उ०—धमरोळ पड़ै सेलां ध्रियाग। खागां कर नीछट वहै खाग।—सू.प्र.
नीछटणहार, हारौ (हारी), नीछटणियौ—वि०।
नीछटाड़णौ, नीछटाड़बौ, नीछटाणौ, नीछटाबौ, नीछटावणौ, नीछटावबौ—प्रे०रू०।
नीछटिश्रोड़ौ, नीछटियोड़ौ, नीछट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नीछटीजणौ, नीछटीजबौ—कर्म वा०।
निछंटणौ, निछंटबौ, निछटणौ, निछटबौ, निछट्टणौ, निछट्टबौ,

नीछटणो, नीछटबो, नीछंटणो, नीछंटबो, नीछट्टणो, नीछट्टबो —रू०भे०।

नीछट्टियोड़ो-भू०का०कृ०—१ फेंका हुआ, छोड़ा हुआ। २ प्रहार किया हुआ। (स्त्री० नीछट्टियोड़ी)

नीछट्टणो, नीछट्टबो—देखो 'नीछटणो, नीछटबो' (रू.भे.)
उ०—वाजिद बाज दळ जळा-बोळ। नीछट्ट खाग लूटी नारनोळ। पदरियो भागरो दिली धाक। साहजांपुर कीधो खाक-खाक।
—वि.सं.

नीछट्टणहार, हारो (हारी), नीछट्टणियो—वि०।
नीछट्टिग्रोड़ो, नीछट्टियोड़ो, नीछट्टयोड़ो—भू०का०कृ०।
नीछट्टीजणो, नीछट्टीजबो—कर्म वा०।

नीछट्टियोड़ो—देखो 'नीछटियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० नीछट्टियोड़ी)

नीजण, नीजणि—देखो 'नीजन' (रू.भे)
उ०—१ ग्रासाढ़ का दिना को तपन कहतां सूरजि इसो अधिक ताप्यो छै। दुपहरा की वरीयां यैं सो नीजण होय गयो छै जु कोई मनुष्य फिरै टोलै न छै।—वेलि.टी.
उ०—२ इसो धूप ताप्यो छै। नीजणि कहतां कोई मनुष्य चलै न देतीयो। वैसी महा की अधराति जैसी नीजणि होय छै।
—वेलि.टी.

नीजांमा-सं०पु० [देशज] मल्लाह। उ०—१ समुद्र अगाधि मध्य गुहिर, गंभीर असं प्राप्त तीर। तेह समुद्र नइ तीरि वावनउ वोहित्य नागरिउ ग्राउलां सूत्रिया देसांतरोचित क्रयांणां भरियां कूयखंभो उभवीयउ नीजांमा सज्ज हुआ भेळा लोक माडिग्रा।—व.स.
उ०—२ नीजांमा नई नायता, माछी मिळया गुग्रार। मीणा मोची मोकळां, मूकी गया दुम्रार।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—नीजांमा।

नीजुड़णो, नीजुड़बो—देखो 'निजोड़णो, निजोड़बो' (रू.भे)
उ०—ऊजड़ै कड़ा जिरहां अप्रग, खड़खड़ै जोध वाहै खड़्ग। रासरम पटै खांटै खड़ाक, नीजुड़ै नरां सिरि रहै नाक।
—गु.रू.बं.

नीजुड़णहार, हारो (हारी), नीजुड़णियो—वि०।
नीजुड़िग्रोड़ो, नीजुड़ियोड़ो, नीजुड़योड़ो—भू०का०कृ०।
नीजुड़ीजणो, नीजुड़ीजबो—कर्म वा०।

नीजुड़ियोड़ो—देखो 'निजोड़ियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० नीजुड़ियोड़ी)

नीझणि, नीझणी-वि० [सं० निर्ध्वनि] ध्वनिरहित, चुप्प, शान्त।
उ०—१ मन करि मधुकरि रणझुणि, नीझणि रहण सुहाइ; मलयानिल क्षण माहरो, पाहरो क्षण इकु वाइ।—नेमिनाथ फागु

नीझर, नीझरण—देखो 'निरझरण' (रू.भे.)
उ०—१ धुरवा धरणी लग लोड़ा ले धावै। जीमण जीमण नै मोडा जिम जावै। मोरी अनुमोदित सोरो सड़ लागी। नीझर नव-नीरद ममना मव भागी।—ऊ.का.
उ०—२ नेरति निरधण गिरि नीझर, धणी भजै धण पयोधर। झोलै वाइ किया तरु झंखर, लवळी दहन कि लू लहर।
—वेलि.
उ०—३ उठै झाड़ कंडीर पाहाड़ ऐंडा। घणं मंगरां हालणो पंथ बैंडा। सळक्कै सदा नीझरां नीर खोळां। छळै कुंड अल्लोल सल्लोल छोळां।—मे.म.
उ०—४ ग्रागळ रितुराय मंडियो अवसर, मंडप वन नीझरण म्रिदंग। पंचबांण नायक गायक पिक, वसुह रंग भेळगर विहंग।
—वेलि.
उ०—५ देवी नीझरण नवे सो नदी नाळा, देवी तोय ते तवां रूप तुहाळा। देवी मथुरा माईया मोक्षदाता, देवी अवंती अजोध्या अघ हाता।—देवि.
उ०—६ नदियां, नाळा, नीझरण, पावस चढ़ियां पूर। करहउ कादिम तिलकस्यइ, पंथो पूंगळ दूर।—ढो.मा.
२ देखो 'नीझरणो' (अल्पा०, रू.भे.)
३ देखो 'निरझर, निरझरण' (रू.भे.)

नीझरणी—देखो 'निरझरणी' (रू.भे., अ.मा.)

नीझरणो-सं०पु० [सं० निर्झरं या निर्झरः] १ आंसू, अश्रु।
उ०—ग्राठ नारी नैं मायड़ी, बाप बांधव नै परिवारो रे। सहू आंख्यां नीझरणा नांखता, पाछा आया घर मझारी रे।
—जयवांणी
२ देखो 'निरझर, निरझरण' (अल्पा०, रू.भे)
उ०—१ निरमळ सरवर भरिया, नीझरणै झरै नीर। नयणां नीर तियै विण, मांड्यो जिण सुं सीर।—ध व.ग्रं.
उ०—२ नगि नगि नीझरणा वहइ, माहि जलूका मच्छ। कातरीया नई काच्छिया, ग्राडा ग्रावइं लक्ष।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—नीझर, नीझरण।

नीझरणो, नीझरबो-क्रि०अ० [सं० निर्झरं] टपकना, झरना, चूना।
उ०—उभै मिसल अंबखास, पडै धड़हड़ अणपारां। राव जांणि नरसिंघ, हलै करि दयत विहारां। नख जमदढ़ नीझरै, रुधर मुख चख रातंबर। काळरूप विकराळ, 'अमर' छिबतो भुज अंबर।
—सू.प्र.

नीझरणहार, हारो (हारी), नीझरणियो—वि०।
नीझरिग्रोड़ो, नीझरियोड़ो, नीझरयोड़ो—भू०का०कृ०।
नीझरीजणो, नीझरीजबो—भाव वा०।

नीझरियोड़ो-भू०का०कृ०—टपका हुआ, झरा हुआ, चूआ हुआ। (स्त्री० नीझरियोड़ी)

नीझांमणो, नीझांमबो-क्रि०स०—पार पहुंचाना।

उ०—'नाय सागर, नीझांमता, नीरखि परिणिति सांति । उत्तराध्यन आदे वहु, संभळावै सिद्धांत ।—लाधौ साह

नीझांमियोड़ौ—भू०का०कृ०—पार पहुंचाया हुआ ।
(स्त्री० नीझांमियोड़ी)

नीठ—क्रि०वि० [सं० निष्ठा] मुश्किल से, कठिनाई से ।
उ०—१ थहै जातरी रातरी दीह वारा । धकै चाढ़वौ मागरौ खागधारा । उदै अद्र जो बारमौ भांण ऊगै, पबै-ग्रस्त सो पूगियां नीठ पूगै ।—मे.म.
उ०—२ पूगौ नीठ पिछांणियौ, किसूं वुलायौ काळ । कै पग मंडौ ठाकुरां, कै छंडौ करवाळ ।—वी.स.
उ०—३ बीजुळियां पारोकियां, नीठ ज नीगमियांह । अजइ न सज्जन वाहुडै, वळि पाछी वळियांह । ढो.मा.
उ०—४ दुख भर इण परिचालतां, नीठ थयौ परभात । कोढ़ी नौ सवळ, आगळि एक दिखात ।—स्रीपाळ
वि०—मुश्किल, कठिन । उ०—रही किती मिळ राजवण, सोनजूही मघ सोय । सोधि तिकां ल्यावै सखी, जुगत नीठ सी जोय । जुगति हूत निठ जोय, हेरि हुलसै हंसै । लता लवंग री ललित, लहलही त्यौं लसै ।—सिववख्स पाल्हावत
रू०भे०—निट्ट, निठ, निठि, नींठ, नीठां, नीठि, नीठी ।

नीठणौ, नीठबौ—देखो 'निठणौ, निठबौ' (रू.भे.)
नीठणहार, हारौ (हारी), नीठणियौ—वि० ।
नीठाड़णौ, नीठाड़बौ, नीठाणौ, नीठाबौ, नीठावणौ, नीठावबौ —क्रि०स० ।
नीठिओड़ौ, नीठियोड़ौ, नीठ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
नीठीजणौ, नीठीजबौ—भाव वा० ।

नीठर—देखो 'निस्ठुर' (रू.भे.)
उ०—१ वालपणइ लालीइ, जेतलइं योवन भरि जाए, तेतलइं माविञ सांह्यां थाइं, क्रित्य अक्रित्य न गुणइं, वडां तणा वचन निहणइं, माविञ सांह्यां नीठर बोल भणइं ।—व.स.
उ०—२ नीरगुण नीसत नीठर, इम मुकि नर को जाइ । प्रीत मांडी छेह दीधु, यौवन दोहेलउं थाइ ।—नळ-दवदंती रास
उ०—३ नीठर नेमि गदाधरू, पाधर सीह विमासि । परि अ सरीखीय माडइ ए, मांडइ ए पाडिसु पासि ।—नेमिनाथ फागु

नीठां—देखो 'नीठ' (रू.भे.)
उ०—गहकै आरंगपुर सारंग सुर गावै । वांणिक दीठांई नीठां वणि आवै । फूलर झांखळ विन खांखळ दिन ढक्यौ । हींडै हींडण विन हींडै हिय हक्यौ ।—ऊ.का.

नीठांनीठ, नीठांनीठि—क्रि०वि०—बड़ी मुश्किल से, बहुत कठिनाई से, ज्यों त्यों करके ।
रू०भे०—नीठानीठ, नीठानीठि ।

नीठाड़णौ, नीठाड़बौ—देखो 'निठाणौ, निठावौ' (रू.भे.)
नीठाड़णहार, हारौ (हारी), नीठाड़णियौ—वि० ।
नीठाड़िओड़ौ, नीठाड़ियोड़ौ, नीठाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
नीठाड़ीजणौ, नीठाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
नीठणौ, नीठबौ—अक० रू० ।

नीठाड़ियोड़ौ—देखो 'निठायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीठाड़ियोड़ी)

नीठाणौ, नीठाबौ—देखो 'निठाणौ, निठाबौ' (रू.भे.)
ज्यूं०—सीरो तो घणोई दस मण को रांध्यो थो पिण मल्ला भाई टिकिया जु सैंग नीठाय दियो तद बीजो रांधणो पड़ियो ।
नीठाणहार, हारौ (हारी), नीठाणियौ—वि० ।
नीठायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
नीठाईजणौ, नीठाईजबौ—कर्म वा० ।
नीठणौ, नीठबौ—अक० रू० ।

नीठानीठ, नीठानीठि—देखो 'नीठांनीठ' (रू.भे.)

नीठायोड़ौ—देखो 'निठायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीठायोड़ी' (रू.भे.)

नीठावणौ, नीठावबौ—देखो 'निठाणौ, निठावौ' (रू.भे.)
नीठावणहार, हारौ (हारी), नीठावणियौ—वि० ।
नीठाविओड़ौ, नीठावियोड़ौ, नीठाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
नीठावीजणौ, नीठावीजबौ—कर्म वा० ।
नीठणौ, नीठबौ—अक० रू० ।

नीठावियोड़ौ—देखो 'निठायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीठावियोड़ी)

नीठि—देखो 'नीठ' (रू.भे.)
उ०—१ दिन जेहि रिणौ रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा संकुडिणि । नीठि छुडै आकास पोस निसि, प्रोढ़ा करखणि पंगुरिणि । —वेलि.
उ०—२ नाह नीठि पड़िसी खेत मांझी निवड़ । गयंद पड़िसी गहर करड़ घड़ भड़ गहड़ ।—हा.झा.
उ०—३ वारण हय भूखण बसण, 'सतै' करै बखसीस । 'भाऊ' पाछौ भेजियौ, नीठि हठां अवनीस ।—वं.भा.

नीठियोड़ौ—देखो 'निठियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीठियोड़ी)

नीठी—देखो 'नीठ' (रू.भे.)

नीठुर—देखो 'निस्ठुर' (रू.भे.) (उ.र.)

नीठोनीठ—देखो 'नीठांनीठ' (रू.भे.)

नीडज—सं०पु० [सं०] पक्षी (डि.को.)

नीत—१ देखो 'नेती-धोती' (रू.भे.)
उ०—असी च्यार सुधार आसण, धोत बसती नीत धारण । करौ एता कठिण विधक्रम, न सम राघव नांम ।—र.ज.प्र.
२ देखो 'नीति' (रू.भे.)

उ०—१ दोयण मारै दाय सूं, नीत बात निरधार। देख हिरण धीरी प्रकट, ग्रूमे देन संसार।—बां.दा.

उ०—२ नीत परीखत राजियो, नीत निधांन नरेस। 'बगत' पाट म्हाराजिनद, यह तर भूप बनेस।—सिवबगस पाल्हावत

उ०—३ पदम सेज पगुपघ सरद ध्यांन स्तुति भासती, नीम धर नार फळ जोग जप नाम। दिर प्रमा नीरपय चंद बुध नीत घट, मेर दिग समंद नंद भय ब्रहम राम।—र.ज.प्र.

उ०—४ वेग वधतो सांम रो, वाधै वुद्ध विसेस। रीत सत्रै नूप नीत री, उर धारी अवरेस।—रा.रू.

३ देखो 'नीयत' (रू.भे.)

उ०—१ देगो विगड़ी देह, ढोळ बीगड़गो देखो। विगड़ गई सब बात, मारलो सं कुण लेखो। सभा बिगड़गी संग, नीत बीगड़गी न्यारी। देख बिगड़ती दसा, वयारी सूं पीगी वयारी।—ऊ.का.

उ०—२ सच्चा हुंदी नीत थी, पेखै सिरजणहार।—केसोदास गाडण

नीतचारी-वि० [सं० नीति+चारिन्] नीति के अनुसार आचरण करने वाला।

नीतरणौ, नीतरबौ-क्रि०अ० [सं०-निःस्तरण] द्रव पदार्थ में घुली हुई वस्तु का नीचे बैठ जाना, द्रव का स्वच्छ हो जाना।

उ०—निकंमी नीयत रा सरवर नीतरिया। बींठा बीजां रा तरवर बीपरिया। चतुरां चयूं ऊंडी चिंता चांपां री। आछी ईसुर री भूंटी आपां री।—ऊ.का.

२ सारहीन होना, तत्वरहित होना।

नीतरणहार, हारौ (हारी), नीतरणियौ—वि०।

नीतराड़णौ, नीतराड़बौ, नीतराणौ, नीतराबौ, नीतरावणौ, नीतरावबौ—प्रे०रू०।

नीतारणौ, नीतारबौ—क्रि०स०।

नीतरिग्रोड़ौ, नीतरियोड़ौ, नीतरचोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीतरीजणौ, नीतरीजबौ—भाव वा०।

नितरणौ, नितरबौ—रू०भे०।

नीतरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (द्रव पदार्थ) घुली हुई वस्तु के तल में बैठ जाने से जो अलग हुवा हुआ हो।

२ सारहीन हुवा हुआ, तत्वरहित हुवा हुआ।

(स्त्री० नीतरियोड़ी)

नीतवंत, नीतवांन—देखो 'नीतिवांन' (रू.भे.)

उ० १ सेरसाह सांचो सोळवंत आदिल, नेक, नीतवंत, खबरदार, अवनियां रैत रो पीहर, सिपाह रो मित्र, चाकरां ऊपर मिहरबांन, वडो पातसाह हुवो।—बां.दा.ख्यात

उ०—२ मुनहि तोप भूप के सुलच्छ साधतै नहीं। विनीत नीतवांन जे अनीत वाधतै नहीं।—ऊ.का.

नीतसास्त्र—देखो 'नीतिसास्त्र' (रू.भे.)

नीतार—सं०पु०—१ घुली हुई वस्तु के तल में बैठ जाने या जमा हो जाने से अलग हुआ साफ द्रव पदार्थ।

२ तल में बैठी हुई चीज।

३ सार, सारांश।

रू०भे०—नितार।

नीतारणौ, नीतारबौ-क्रि०स० [सं० निःस्तरण] १ द्रव को रखना या स्थिर करना जिससे उसमें घुली हुई वस्तु तल में बैठ जाय और द्रव स्वच्छ हो जाय, द्रव को स्थिर करके स्वच्छ करना।

२ ऊपर के स्वच्छ द्रव को धीरे-धीरे दूसरे पात्र में उंडेल कर लेना।

३ किसी घोल में स्वच्छ द्रव को अलग करना। द्रव को छान कर अलग करना।

नीतारणहार, हारौ, (हारी), नीतारणियौ—वि०।

नीतारिग्रोड़ौ, नीतारियोड़ौ, नीतारचोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीतारीजणौ, नीतारीजबौ—कर्म वा०।

नीतरणौ, नीतरबौ—अक० रू०।

नितारणौ, नितारबौ—रू०भे०।

नीतारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ स्थिर करके स्वच्छ किया हुआ (द्रव)।

२ ऊपर के स्वच्छ द्रव को धीरे धीरे दूसरे पात्र में उंडेल कर लिया हुआ।

३ किसी घोल में से स्वच्छ द्रव को अलग किया हुआ, द्रव को छान कर अलग किया हुआ।

(स्त्री० नीतारियोड़ी)

नीति-सं०स्त्री० [सं०] १ दूसरे को बाधा पहुंचाए बिना अपने कल्याण और भलाई की चाल, वह रीति जिससे अपनी भलाई के साथ समाज की बुराई न हो।

२ लोक-मर्यादा के अनुसार व्यवहार, समाज के कल्याण के लिए उचित ठहराया हुआ आचार-व्यवहार, अच्छी चाल, सदाचार।

३ व्यवहार की रीति, आचार पद्धति।

ज्यूं—दुरनीति, सुनीति।

४ किसी कार्य की सिद्धि के लिए चली जाने वाली चाल, युक्ति, उपाय।

५ राज्यादि की प्राप्ति के लिए या राज्य की रक्षार्थ चली जाने वाली चाल।

६ वह विद्या जिसके द्वारा राज्य की व्यवस्था की जाय। राज्य की रक्षा के लिए निर्धारित विधि।

रू०भे०—नीइ, नीत, नीती।

नीतिग्य-वि० [सं० नीतिज्ञ] नीतिकुशल।

रू०भे०—नीतीग्य।

नीतिमांन-वि० [सं० नीतिमत्] नीति को मानने वाला, नीति के अनुसार चलने वाला, नीतिपरायण, सदाचारी।

नीतिवंत, नीतिवांन-वि०—१ नीति को जानने वाला, नीतिज्ञ, नीति-कुशल। उ०—१ नीतिवांन गुनवांन समय गुर्जांन जांन, गुन के निधांन सूर सूरिप स्वदेस के। क्षत्रिय कुळ धरम्म में निपुन परम्म परमारथ, स्वारथ अचाह धुर धरम धरेस के।—ऊ.का.

२ नीतिपरायण, सदाचारी।

रू०भे०—नीतवंत, नीतवांन, नीतिवांन, नीतीवंत।

नीतिसास्त्र-सं०पु० [सं० नीतिशास्त्र] १ वह शास्त्र जिसमें मानव समाज के कल्याण वा हितार्थ देश, काल और पात्रानुसार प्रबन्ध, शासन, आचार, व्यवहार आदि का विधान हो।

२ नीतिसम्बन्धी शास्त्र।

रू०भे०—नीतसास्त्र, नीतीसासतर, नीतीसास्त्र।

नीती—देखो 'नीति' (रू.भे.)

उ०—१ वेद न सुणियो विमळ, खेद पाई तन खोयो। सांड हुय रह्यौ सदा, रांड रांडहि कर रोयो। न्याय न जांण्यो निठुर, निलज जांणी नहि नीती। निज नारी-व्रत नेम, रुगड आंणी नहि रीती। परदार प्यार हुयगो प्रमत, बिन सींगां रा बैलिया। भोग रै मांय भंमतां भमर, गयो जनम सब गैलिया।—ऊ.का.

उ०—२ ठाकर री नीती ही कै याद आयां दं उण री ई भलो अर नी दं उण री ई भलो। इण सुभाव सूं ठाकर बणी नुकसांण में रैवतो।—रातवासो

नीतीग्य—देखो 'नीतिग्य' (रू.भे.)

नीतीवंत, नीतीवांन—देखो 'नीतिवांन' (रू.भे.)

नीतीसासतर, नीतीसास्त्र—देखो 'नीतिसास्त्र' (रू.भे.)

नीतोतायो, नीत्ततायो, नीत्तोतायो—देखो 'नित्तोतायो' (रू भे.)

उ०—तीजण्यां तो सारी ही आई, ज्यां में आ उदमादणि नीतोताई बाग में मैमंत हुइ फिरै छै, सहेल्यां रा भूल में कतूळ करै छै।

—पनां वीरमदे री वात

(स्त्री०—नीतोताई, नीतोतायी, नीत्तताई, नीत्ततायी, नीत्तोताई, नीत्तोतायी)

नीद—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

उ०—सुणीजै अलकार झंकार सूतां। हुवै नीद बिक्षेप ताकीद हूंतां।—मे.म.

नीदड़ली, नीदड़ी—देखो 'निद्रा' (अल्पा०, रू.भे.)

नीदाळ—१ देखो 'नींदाळ' (रू.भे.) (डिं.को.)

२ देखो 'निद्राळू' (मह, रू.भे.) (डिं.को.)

३ देखो 'निंदाळू' (मह., रू.भे.)

नीदाळु, नीदाळू—१ देखो 'निंदाळू' (रू.भे.) (डिं.को.)

२ देखो 'निद्राळू' (रू.भे.)

नीद्र, नीद्रइं—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

उ०—१ जिम निद्र भरि हुई सुखि सूता। तेम कौरव ति नीद्र विगूता।—विराटपर्व

उ०—२ सखी नयण तव नीद्रइं घुळइ। मारू तणी आंखि नवि मिळइ।—ढो.मा.

नीद्रलड़ी—देखो 'निद्रा' (अल्पा०; रू.भे.)

उ०—गजेंद्र कुंभस्थळ सीस ढोळइं, कोई हींडोळ जिम सीस डोलइ। तुरंग मातंग ति नीद्र घोरइ; न पक्षीया नीद्रलडी वगोरइ।

—विराटपर्व

नीधणि—देखो 'नीधणी' (रू.भे.)

उ०—दादू प्रांणी बंध्या पंच सौं, क्यों ही छूटै नांहि। निधणि आया मारियें, यहु जीव काया मांहि।—दादूबांणी

नीधणिको, नीधणियो—देखो 'नीधणी' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० नीधणिकी)

नीधणी-वि०—बिना मालिक का, स्वामीहीन।

रू०भे०—नीधणि।

अल्पा०—निरधणियो, नीधणिको, नीधणियो।

नीधनो—देखो 'निरधन' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—दादू सब जग नीधना, धनवंता नहिं कोइ। सो धनवंता जांणियें, जाकै रांम पदारथ होइ।—दादूबांणी

(स्त्री० नीधनी)

नीधस-सं०स्त्री० [देशज] नगाड़े की ध्वनि, आवाज (डिं.को.)

रू०भे०—निधस, निध्रस, नीध्रस।

नीधसणो, नीधसबो-क्रि०अ० [देशज] १ नगाड़े का बजना, ध्वनि करना। उ०—१ मन खट राग वधा लग मोजां। कटि मेखळ कसियो कुरबांण। आवै मीर घड़ा उपडंखी। नीधसतै नेवर नीसांण।

—दूहो

उ०—२ होदा कसिया हाथियां, नीधसिया नीसांण। लारै रंभ रसिया लिया, ऊससिया अप्रमांण।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ सोभत सै लूंट लूंट सरियारी। मिळ 'गोरंभ' महातम मांण। सिध' तणा ऊपर 'समियाणी'। नीधसिया जस रा नीसांण।

—द.दा.

उ०—४ कूंकतड़ी मेल्ही चिहुं कनारां, नीधसजइ आगळि नीसांण। ब्रह्मा विस्णु पधारउ वहिला, जोगेसर तेडिया जांण।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—५ पारेवइ धावतइ अति पाइ, नीधसइ घरा पुड़ तिणि निहाइ। पंचाइण चडियउ ऊभि पांण, भूगळी घड़ा अद्दिवा मांण।

—रा.ज.सी.

नीधसणहार, हारो (हारी), नीधसणियो—वि०।

नीधसवाड़णो, नीधसवाड़बो, नीधसवाणो, नीधसवाबो, नीधसवाणो, नीधसवाबो, नीधसवावणो, नीधसवावबो, नीधसाड़णो, नीधसाड़बो, नीधसाणो, नीधसाबो, नीधसावणो, नीधसावबो—प्रे०रू०।

नीधसियोड़ो, नीधसियोड़ो, नीधस्योड़ो—भू०का०कृ०।

नीधसीजणो, नीधसीजबो—भाव वा०।

निधसणो, निधसबो, निध्रसणो, निध्रसबो, नीध्रसणो, नीध्रसबो

—रू०भे०।

नीधसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ बजा हुआ, ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० नीधसियोड़ी)

नीध्रस—देखो 'नीघस' (रू.भे.)

उ०—साह' रह चमर अंबाडां नीध्रस, नीग 'जदो' कमधज सिर मड़। मार दहन 'दरम' नह मांगो, 'दयारांम' लग वागो दूठ।

—दयारांम घाडिया रो गीत

नीध्रसणौ, नीध्रसबौ—देखो 'नीघसणौ, नीघसबौ' (रू.भे.)

उ०—पाखि पांना गजे भारमल अंगोभव, दिलो दळ सकळ भागव छोहे। निजुड़ नीसांण सुसबद तणा नीध्रसे, सीसि सकबंध निर नमणु सोहे।

—रूपसिंह भारमलोत राजावत रो गीत

नीध्रसणहार, हारो (हारी), नीध्रसणियो—वि०।

नीध्रसिग्रोड़ो, नीध्रसियोड़ो, नीध्रस्योड़ो—भू०का०कृ०।

नीध्रसीजणौ, नीध्रसीजबौ—भाव वा०।

नीध्रसियोड़ो—देखो 'नीघसियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीध्रसियोड़ी)

नीप-सं०पु०—देखो 'निप' (रू.भे.)

नीपक-सं०पु० [देशज] १ याचक (ह.नां.मा.)

२ कवि. ३ पण्डित।

नीपज-सं०स्त्री० [सं० निष्पदनम्] उत्पत्ति, पैदावार।

रू०भे०—निपज।

नीपजणौ, नीपजबौ-क्रि०अ० [सं० निष्पदनं] १ उत्पन्न होना, पैदा होना। उ०—१ ऊंची नीची सरवरिया री पाळ, जठै नै सोळमियो सोनो नीपजै।—लो.गी.

उ०—२ बात छै अचिरज सारिखी जी, माहरै हियै न समाय। कह्यां में नफो नहीं नीपजै जी, बिन कह्यां रह्यो न जाय।

—जयवांणी

उ०—३ वैरागर हीरा हुए, कुळवंतियां सपूत। सीपै मोती नीपजै, सब ग्रम्मा रा सूत।—बां दा.

उ०—४ जिणि रिति मोती नीपजइ, सीप समंदां मांहि। तिणि रिति ढोलउ ऊमहउ, हंस को मांणस जाहि।—ढो.मा.

उ०—५ घन वूठइ, घण नीपजइ, वूठा विण ये जाय। तिम करवूं तई ? माघवा ! घाइ अनीठी राइ(ति)।—मा.कां.प्र.

उ०—६ घणा सैंवज गोहूं सारी सींव काठा नीपजै छै। मण १ गोहूं वाया मण ६० मण गोहूं हुवै छै।—नैणसी

२ अंकुरित होना, उगना, उपजना।

३ बढ़ना, बड़ा होना।

४ घटित होना, सम्पन्न होना, होना।

उ०—तेडीउ ए देवु मुरारि राउ, दुरयोधनु आवीउ ए। इछीय ए दीजइ दान, बिंब प्रतीस्ठा नीपजै ए।—पं.पं.च.

५ परिपक्व होना, पकना।

६ तैयार होना, बनना।

नीपजणहार, हारो (हारी), नीपजणियो—वि०।

नीपजिग्रोड़ो, नीपजियोड़ो, नीपज्योड़ो—भू०का०कृ०।

नीपजीजणौ, नीपजीजबौ—भाव वा०।

निपजणौ, निपजबौ, नींमजणौ, नींमजबौ, नीपणौ, नीपबौ, नीपनणौ, नीपनबौ, नीमजणौ, नीमजबौ—रू०भे०।

नीपजाड़णौ, नीपजाड़बौ—देखो 'निपजाणौ, निपजाबौ' (रू.भे.)

नीपजाड़णहार, हारो (हारी), नीपजाड़णियो—वि०।

नीपजाड़िग्रोड़ो, नीपजाड़ियोड़ो, नीपजाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

नीपजाड़ीजणौ, नीपजाड़ीजबौ—कर्म वा०।

नीपजणौ, नीपजबौ—अक० रू०।

नीपजाड़ियोड़ो—देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपजाड़ियोड़ी)

नीपजाणौ, नीपजाबौ—देखो 'निपजाणौ, निपजाबौ' (रू.भे.)

उ०—घनै धीरज धार मन में, कियो हरि सूं काज। बिना वायां नीपजायो, हुवो बहतो नाज।—भगतमाळ

नीपजाणहार, हारो (हारी), नीपजाणियो—वि०।

नीपजायोड़ो—भू०का०कृ०।

नीपजाईजणौ, नीपजाईजबौ—कर्म वा।

नीपजणौ, नीपजबौ—अक० रू०।

नीपजायोड़ो—देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपजायोड़ी)

नीपजावणौ, नीपजावबौ—देखो 'निपजाणौ, निपजाबौ' (रू.भे.)

नीपजावणहार, हारो (हारी), नीपजावणियो—वि०।

नीपजाविग्रोड़ो, नीपजावियोड़ो, नीपजाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

नीपजावीजणौ, नीपजावीजबौ—कर्म वा०।

नीपजणौ, नीपजबौ—अक० रू०।

नीपजावियोड़ो—देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपजावियोड़ी)

नीपजियोड़ो-भू०का०कृ०—१ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ।

२ अंकुरित हुवा हुआ, उगा हुआ, उपजा हुआ।

३ बढ़ा हुवा हुआ, बढ़ा हुआ।

४ घटित हुवा हुआ, सम्पन्न हुवा हुआ।

५ परिपक्व हुवा हुआ, पका हुआ।

६ तैयार हुवा हुआ, बना हुआ।

(स्त्री० नीपजियोड़ी)

नीपण-सं०पु० [सं० लिप, लेपनम्] १ आंगन आदि लीपने के लिए तैयार किया हुआ गोबर।

२ लीपने का काम।

उ०—नीपण घोळण मांडणै, जीवां रा करो जतन्न। भय ममतां दुलहो लह्यो, मांनव भव रतन्न।—जयवांणी

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

३ देखो 'निपुण' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ अछेहां पै घाव सिघां सभाव पटैत अंगां, कछ अंबा भांण कुळां अरेहां सकांम। दौड़ वाड़ जीपणां लूण चै काज भंजै देहां, रेवंतां नीपणां सूरां रजै एहां रांम।—र.ज.प्र.

उ०—२ जस 'पातल' रौ जगत में, औ भरियौ अणपार। नीपण निज पावै नहीं, पोथी लिखियां पार।—ऊ.का.

नीपणौ, नीपबौ—क्रि०स० [सं० लिप्, लेपनम्] १ किसी गीली वस्तु वा गाढे घोल की पतली तह चढ़ाना, लीपना, पोतना।

ज्यूं—घर नीपणौ, आंगणौ नीपणौ।

२ देखो 'नीपजणौ, नीपजबौ' (रू.भे.)

उ०—१ बढ़ की सुभ वेळाह, नग 'पाबू' सिध नीपियौ। —पा.प्र.

नीपणहार, हारौ (हारी), नीपणियौ—वि०।

निपवाड़णौ, निपवाड़बौ, निपवाणौ, निपवाबौ, निपवावणौ, निपवावबौ—प्रे०रू०।

नीपाड़णौ, नीपाड़बौ, नीपाणौ, नीपाबौ, नीपावणौ, नीपावबौ —प्रे०रू०।

नीपिओड़ौ, नीपियोड़ौ, नीप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपीजणौ, नीपीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

नीपनणौ, नीपनबौ—देखो 'नीपजणौ, नीपजबौ' (रू.भे.)

उ०—१ घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊंच छिळ ऊछळै अति। पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाळी, सिरां हंस नीसरै सति।—वेलि.

उ०—२ तुरक्की ताजी तुरंग, विलाती देसी विडंग। घूना चित्रांगिया धंग, खेड़ रा नीपना खंग।—गु.रू.बं.

उ०—३ तांमस अहंकार तैं पांच महाभूत पांच सूक्ष्म भूत नीपना। —द.वि.

उ०—४ जाहरां परमात्मा माया दिसि देख्यां लियां थी महतत्व नीपना। महतत्व थकी अहंकार नीपनौ।—द.वि.

उ०—५ ताहरां तेजल घोड़ौ नीसर नै घोड़ी नू लागौ तै री काळवी वछेरी नीपनी।—नैणसी

उ०—६ नवखंड रा नीपना, प्रवळ पिंड रा पाथ। आरण पग अणचल जिकै, भड जीपण भाराथ।—सिववक्स पाल्हावत

नीपनणहार, हारौ, (हारी), नीपनणियौ—वि०।

नीपनिओड़ौ, नीपनियोड़ौ, नीपन्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपनीजणौ, नीपनीजबौ—भाव वा०।

नीपनियोड़ौ—देखो 'नीपजियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपनियोड़ी)

नीपवण—वि०—उत्पन्न करने वाला।

नीपाड़णौ, नीपाड़बौ—१ देखो 'नीपाणौ, नीपाबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निपजाणौ, निपजाबौ' (रू.भे.)

नीपाड़णहार, हारौ (हारी), नीपाड़णियौ—वि०।

नीपाड़िओड़ौ, नीपाड़ियोड़ौ, नीपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपाड़ीजणौ, नीपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

नीपणौ, नीपबौ—अक० रू०।

नीपाड़ियोड़ौ—१ देखो 'नीपायोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपाड़ियोड़ी)

नीपाणौ, नीपाबौ—क्रि०स० ('नीपणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ लीपने का काम कराना।

उ०—केसर कूंकूं री गार घलावौ साहिब जिण सूं नीपावौ गुल सेरी रे। हां जी रे भायां प्यारी रा साहिब किण विलमायां रे। —लो.गी.

२ देखो 'निपजाणौ, निपजाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ मन पंगु थियौ सहु सेन मूरछित, तह नह रही संपेखतै। किरि नीपायौ तदि निकुटी ए, मठ पूतळी पाखांण तै।—वेलि.

उ०—२ जिण दिन पवन पांणी नहीं। जिण दिन स्वांमी अभ न गभ। ये तो जुग सूना गया। तदि तौ दीप नीपायौ हो आप। —बी.दे.

उ०—३ तव वींभू वांणी वदइ, सांभळि, नरपति देव! नीपाई निज कन्यका, स्वांमी करे वा सेव।—मा.कां.प्र.

उ०—४ ॐ नमौ वीतरागाय। ऊपेलइ माळि, प्रसंनइ काळि, वारू मंडप नीपाइउ, पोइणि नै पांनि छाइउ, कूंक ना छावड़ा मोती ना चउक, तेह माहि सारूआर घाट।—व.स.

नीपाणहार, हारौ (हारी), नीपाणियौ—वि०।

नीपायोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपाईजणौ, नीपाईजबौ—कर्म वा०।

नीपणौ, नीपबौ—अक० रू०।

नीपाड़णौ, नीपाड़बौ, नीपावणौ, नीपावबौ—रू०भे०।

नीपायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ लीपने का काम कराया हुआ।

२ देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपायोड़ी)

नीपावणौ, नीपावबौ—१ देखो 'निपजाणौ, निपजाबौ' (रू.भे.)

उ०—नमो नांम नीमवण नमो नर सुर नीपावण। नमो पनंग-धर नमो गयण थंभां बिन थंभण।—ह.र.

देखो 'नीपाणौ, नीपाबौ' (रू.भे.)

नीपावणहार, हारौ (हारी), नीपावणियौ—वि०।

नीपाविओड़ौ, नीपावियोड़ौ, नीपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपावीजणौ, नीपावीजबौ—कर्म वा०।

नीपणौ, नीपबौ—अक० रू०।

नीपावियोड़ौ—१ देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'नीपायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपावियोड़ी)

नीवियोड़ो-भू०का०कृ०—१ सीया हुआ, पोया हुआ।
२ देखो 'नीवजियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीवियोड़ी)
नीवियो-नीवियो-वि०पो०—निरा-पुरा।
नीब—देखो 'नीम' (रू.भे.)
नीबड़—देखो 'नीम' (मह., रू.भे.)
नीबड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा, रू.भे.)
नीबड़लो देखो 'नीम' (अल्पा., रू.भे.)
नीबड़ियो—देखो 'नीम' (अल्पा., रू.भे.)
नीबड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा., रू.भे.)
नीबड़ो—देखो 'नीम' (अल्पा., रू.भे.)
नीबाण-सं०स्त्री०—नींबू का वृक्ष।
नीबात-सं०पु० [सं० नवनीत] १ मक्खन, नवनीत।
उ०—जोगी ! थां कोन कहै हो बात। दुपइ त्रिहावऊं घणी हो नीबात। भैंस को दही घर गरड़ा को भात।—बी.दे.
२ मिश्री।
वि०—१ कमजोर, असक्त।
२ कायर, डरपोक।
नीबाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)
नीबी-सं०स्त्री० [सं० निविकृतिक] घी, दूध, दही, गुड़, तेल आदि विकृति पैदा करने वाले पदार्थों को त्याग करने का नाम (जैन)
उ०—प्रायंबिल नीबी, पुरिमड्ढ, करें द्रव्य अनुमांन। भिन्न-पिंडवाहए पांचमो, ए आग्या भगवांन।—जयवांणी
नीबीजो—देखो 'निरबीज' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० नीबीजी)
नीबू—देखो 'नींबू' (रू.भे.) (अ.मा.)
उ०—नीबूड़ै री जड़ गई पताळ, ओ थां पर वारी रे सैंयां। सोयां नै कोसां पर नीबू फैलियो ओ राज।—लो.गी.
नीबूड़ो, नीबूड़ो—देखो 'नींबू' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—नीबूड़ै री गहरी गहरी छांय, ओ थण वारी रे हुंजा। कोई नै मत तोड़ो भवरजी रो नीबूड़ो ओ राज।—लो.गी.
नीबोळी—देखो 'निंबोळी' (रू.भे.)
नीभर—१ देखो 'निरभय' (रू.भे.)
उ०—जां निसि सूतिय देसउ, नीभर नींद्र मझारि। गोयज सुमिणइ आविया, दोलिया बोल विचारि।
—प्राचीन फागु-संग्रह

२ देखो 'निरभर' (रू.भे.)
नीमंत-देखो—'निमित्त' (रू.भे.)
नीम-सं०पु० [सं० निम्ब] १ द्विदलांकुर से उत्पन्न होने वाला एक पेड़ जो पत्ती झाड़ता है। यह अपने कड़ुएपन के लिए प्रसिद्ध है और औषध में काम आता है। दूषित रक्त को शुद्ध करने का इसका गुण प्रसिद्ध है। इसकी लकड़ी इमारती होती है। इसका फल निंबोली कहलाता है। यह वृक्ष देववृक्षों के अन्तर्गत माना गया है। इसकी टहनियां दातुन करने के लिए अधिक तोड़ी जाती हैं। ऊंट, बकरी आदि पशु इसकी पत्तियां खाते हैं (डि.को.)।
रू०भे०—नींब, नींम, नीब।
अल्पा०—नींबड़ली, नींबड़लो, नींबड़ियो, नींबड़ो, नींबड़ो, नींबो, नीबड़ली, नीबड़लो, नीबड़ियो, नीबड़ी, नीबड़ो, नीमड़ली, नीमड़लो, नीमड़ियो, नीमड़ी, नीमड़ो।
मह०—नींबड़, नीबड़, नीमड़।
सं०स्त्री०—२ गहराई।
ज्यूं—बेरा में पांणी री नीम घणी है।
३ तालाब के मध्यस्थान की गहराई एवं भूमि की कठोरता।
वि० [फा०] आधा, अर्द्ध।
४ देखो 'नींव' (रू.भे.)
उ०—आवै जो अकलीम, सात हेक सुरतांण रै। नहीं जिका दै नीम, ईछै लेवा आठमी।—बां.दा.
५ देखो 'नियम' (रू.भे.)
उ०—मनसा वाचा करमणा ए नीम तेणीए करघु। भाव भक्ति भामिनी भरत्ता भूपति तूं वरघु।—नळाख्यांन
नीमगिलोय-सं०स्त्री० [सं० निम्ब+फा० गिलोय] नीम के वृक्ष के सहारे फैलने वाली गिलोय नामक लता।
नीमड़—देखो 'नीम' (मह०, रू.भे.)
नीमड़णो, नीमड़बो-क्रि०अ० [सं० निवर्तनम्] १ नष्ट होना, समाप्त होना। उ०—१ कूच विहांणै ऊगणै, अरि घर सोच अथाह। घास उजाड़ां नीमड़ै, पड़ै पहाड़ां राह।—रा.रू.
उ०—२ जर जवहर घर जोरवां, लूंटांणी सम लाज। मेछां नीमड़ियो विभो, सुण चढियो महाराज।—रा.रू.
२ मर्यादा छोड़ना।
उ०—चडतां नृपति समा भड चड़िया। जोपै रूप सनाहां जड़िया। खह रुकि गरद वधै अस खड़िया। नीरध वध जाणि नीमड़िया।
—रा.रू.

३ उत्तरदायित्व निभाना।
उ०—'अजमाल' तणै बळ धार इम, नर दुकाल भ्रम नीमड़ै। भाजियो खेत 'मुहकम' भिड़े, अै घायल हुय ऊपड़ै।—रा रू.
४ देखो 'निपटणो, निपटबो' (रू.भे.)
उ०—राखै संप जिका घन राखै, 'बांको' दाखै साच विध। न्याय नीमड़ै जितै नीमड़ै, राज चढ़ै ज्यां तणी रिध।
—बां.दा.

५ देखो 'निवड़णो, निवड़बो' (रू.भे.)
नीमड़णहार, हारो (हारी), नीमड़णयो—वि०।
नीमड़िओड़ो, नीमड़ियोड़ो, नीमड़योड़ो—भू०का०कृ०।

नीमड़ीजणौ, नीमड़ीजबौ—कर्म वा०

नीवड़णौ, नीवड़बौ—रू०भे० ।

नीमड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे)

उ०—१ गुड़ घी बंधावौ नीमड़ली री पाळ पन्ना मारू। दूध सिंचाग्रो हरियै रूंख नै जी म्हारा राज ।—लो.गी.

उ०—२ चाल्या पन्ना मारू जोधांणै रै देस पन्ना मारू। जोधांणै री बाड़ी नीमड़ली झुक रही जी म्हारा राज ।—लो.गी.

नीमड़लौ—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नीमड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ नष्ट हुवा हुआ, समाप्त हुवा हुआ ।

२ मर्यादा छोड़ा हुआ ।

३ उत्तरदायित्व निभाया हुआ ।

४ देखो 'निवड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

५ देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमड़ियोड़ी' (रू.भे.)

नीमड़ियौ—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नींमड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नीमड़ौ—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.) (डि.को.)

नीमचमेली-सं०स्त्री०—चमेली के समान सफेद फूलों वाला एक वृक्ष विशेष ।

नीमचा-सं०स्त्री० [फा०] एक प्रकार की तलवार ।

नीमजणौ, नीमजबौ-क्रि०स० [सं० निष्पदनं] १ ठानना ।

उ०—नह सादूळौ नीमजे, जुध जिण तिण सूं जाय । ग्रो वाहरुग्रां ग्राफळै, कुंजर हलकां काय ।—बां.दा.

[सं० निमज्जनम्] २ घुसना, प्रविष्ट होना ।

उ०—मदोन्मत्त, त्रिदंडवरित, त्रिपाटभरित, चारुरूप, ग्रारक्त-कुंभस्थळ, ग्रापणी छाया देखी गुहिरा गाजइं, गोत्र नीमजइं, सैन्य छांडइं, ग्रलुग्रारी मांडइं ।—व.स.

३ देखो 'नीपजणौ, नीपजबौ' (रू.भे.)

नीमजणहार, हारौ (हारी), नीमजणियौ—वि० ।

नीमजिग्रोड़ौ, नीमजियोड़ौ, नीमज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

नीमजीजणौ, नीमजीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

नीम-जमीर-सं०स्त्री० [स निम्ब+जमीर] एक प्रकार का वृक्ष ।

उ०—सातवों तौ वासौ चंवरियां जी वसियौ, चंवरियां में बैठा लाडो-लाडली । वधज्यै ए लाडी, वड-पीपळ ज्यूं, फळज्यै नीम-जमीर ज्यूं, लाडली री चीर वधज्यौ, रायवर री वागौ-मोळियौ ।

—लो.गी.

नीमजर-सं०स्त्री० [सं० निम्ब+राज० जर=पुष्प] नीम के वृक्ष की बौर जो छोटे-छोटे सफेद फूलों वाली गुच्छों के रूप में होती है और चैत्र व वैशाख मास में ग्राती है। तत्पश्चात् यह निबौलियों में परिवर्तित हो जाती है। रक्त-शुद्धि व शीतलता के लिए इसे घोट कर व छान कर पीते हैं।

रू०भे०—निमजर, निमझर, नींमजर।

नीमजियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ठाना हुग्रा ।

२ घुसा हुग्रा, प्रविष्ट हुवा हुग्रा ।

३ देखो 'नीपजियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमजियोड़ी)

नीमटणौ, नीमटबौ—देखो १ 'निवड़णौ, निवड़बौ' (रू.भे.)

उ०—लोहां, लाकडां, चामडां, पहलां किसा बखांण । वहू वछेरा डीकरा, नीमटियां निरबांण ।—ग्रज्ञात

२ देखो 'निपटणौ, निपटबौ' (रू.भे.)

उ०—निसा फोज घटी तौ नीमटती, फिरतै नर नाखत्र ग्रणफेर । उरधर कियो न 'जैंत' ग्रंगोग्रम, मन 'मूळरज' ज्यूं ही घू मेर ।

—नैणसी

नीमटणहार, हारौ (हारी), नीमटणियौ—वि० ।

नीमटिग्रोड़ौ, नीमटियोड़ौ, नीमट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

नीमटीजणौ, नीमटीजबौ—भाव वा० ।

नीमटियोड़ौ—देखो 'निवड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमटियोड़ी)

नीमडणौ, नीमडबौ-१ देखो 'नीमड़णौ, नीमड़बौ (रू.भे.)

उ०—तीह संग्रमि सांचरतां वादित्र वाजिवा लागा, ग्राकासि डमरू डमडम्यां, काहली कंसाल तणै कोलाहलि करण्ण कमकम्या, झल्लरी झणत्कार हुग्रा, भेरी भांकारि भूंगल तणै भूभूग्राटि भूमि फाडी, नीमडयां नीसांण नै नादि नदी निरझर प्रतिनाद नीपना ।

—व.स.

२ देखो 'निवड़णौ, निवड़बौ' (रू.भे.)

उ०—ते काव्य जे सभा बोलीइ, ते ग्राभरण जे हीरे जडीइ, ते सुवरण्ण जे कसवट्टइ नीमडइ, ते वैद्य जे व्याधि फेडइ, ते राजा जे राज्य पालइ ।—व.स.

३ देखो 'निपटणौ, निपटबौ' (रू.भे.)

नीमडणहार, हारौ (हारी), नीमडणियौ—वि० ।

नीमडिग्रोड़ौ, नीमडियोड़ौ, नीमड्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

नीमडीजणौ, नीमडीजबौ—भाव वा० ।

नीमडियोड़ौ-१ देखो 'नीमड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निवड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

३ देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमड़ियोड़ी)

नीमडौ—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नीमण-वि० [सं० निर्मन] १ वह जो खोखला न हो, ठोस ।

२ नीरोग ।

३ अच्छा, भला ।

रू०भे०—निमण, निमन ।

नीमजान-वि० [फा०] मजनूं, दुःखी। उ०—एक तरह इण भांति, नीमजान नर निजर। हरमी जिम मह महल, तिको घरि भंगा नजर।—सू प्र.

नीमणौ, नीमबौ-क्रि०स०—१ संकल्प करना, विचार करना, निश्चय करना। उ०—१ सुत 'सांमत' सुरतांण सवायौ, डर पण मरण नीमियौ आयौ। सुहियक दळां 'जसावत' 'माधौ', 'लाखै' विघन जांणि मन साधौ।—रा.रू.

उ०—२ गोगादे गजगाह, नर नाहर चित नीमियौ। मंडै 'दलै' निबाह, मह उण समै मतीज री।—गो.रू.

उ०—३ बळिवंत जोध 'बूड़ण' हरौ, सूर धीर साकौ करण। सज्ज्ळवि प्रांण जाळोर सूं, नीमं रहियौ निज मरण।

—गु.रू.बं.

२ प्राप्त करना, पाना।

क्रि०अ०—३ जन्म लेना, उत्पन्न होना, जन्मना।

उ०—'कूंडळ' वीरमदे कमंध, पिरणो भटियांणी। नर 'गोगादे' नीमीयौ, जग सास जपांणी।—वी.मा.

नीमणहार, हारौ (हारी), नीमणियौ—वि०।

नीमिग्रोड़ौ, नीमियोड़ौ, नीमयोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमीजणौ, नीमीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

नीमतणौ नीमतबौ-क्रि०स० [सं० निमित्त] १ किसी वस्तु को दूसरे के निमित्त करना।

२ देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)

नीमतणहार, हारौ (हारी), नीमतणियौ—वि०।

नीमतिग्रोड़ौ, नीमतियोड़ौ, नीमतयोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमतीजणौ, नीमतीजबौ—कर्म वा०।

नीमतियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (किसी वस्तु आदि को) किसी के निमित्त किया हुआ।

२ देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमतियोड़ी)

नीमदर-सं०पु० [फा०] कुश्ती का एक पेच।

नीमवण-वि० [सं० निर्मनम्] रचने वाला, रचयिता।

उ०—इळ रचण उर्भ किय सिव सगत, अलख निरंजण आप हुव। नर-नाग-असुर-सुर नीमवण, अलख पुरुस आदेस तुव।—ह.र.

नीमवणौ, नीमवबौ-क्रि०स० [सं० निर्मनम्] निर्माण करना, रचना करना, रचना, बनाना।

नीमवियोड़ौ-भू०का०कृ०—निर्माण किया हुआ, रचा हुआ, बनाया हुआ।

(स्त्री० नीमवियोड़ी)

नीमसारण्य—देखो 'नैमिसारण्य' (रू.भे.)

नीमाड़णौ, नीमाड़बौ—देखो 'नमाणौ, नमाबौ' (रू.भे.)

नीमाड़णहार, हारौ (हारी), नीमाड़णियौ—वि०।

नीमाड़िग्रोड़ौ, नीमाड़ियोड़ौ, नीमाड़योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमाड़ीजणौ, नीमाड़ीजबौ—कर्म वा०।

नीमाड़ियोड़ौ—देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमाड़ियोड़ी)

नीमाणौ, नीमाबौ—देखो 'नमाणौ, नमाबौ' (रू.भे.)

नीमाणहार, हारौ (हारी), नीमाणियौ—वि०।

नीमायोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमाईजणौ, नीमाईजबौ—कर्म वा०।

नीमायोड़ौ—देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमायोड़ी)

नीमावणौ, नीमावबौ—देखो 'नमाणौ, नमाबौ' (रू.भे.)

नामावणहार, हारौ (हारी), नीमावणियौ—वि०।

नीमाविग्रोड़ौ, नीमावियोड़ौ, नीमाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमावीजणौ, नीमावीजबौ— कर्म वा०।

नीमावत-सं०पु०—१ निम्बकाचार्य का अनुयायी।

२ वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद।

३ रामावत साधुओं की एक शाखा।

४ उक्त शाखा या सम्प्रदाय का एक व्यक्ति।

रू०भे०—नीवावत।

नीमावियोड़ौ—देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमावियोड़ी)

नीमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ संकल्प किया हुआ, विचार किया हुआ, निश्चय किया हुआ।

२ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ।

३ जन्म लिया हुआ, उत्पन्न हुवा हुआ, जन्मा हुआ।

(स्त्री० नीमियोड़ी)

नीमियौ-वि०—नियम लिया हुआ, व्रतधारी।

नीमोळी—देखो 'निमोळी' (रू.भे.)

उ०—नीमोळी रसदार, भार ईं मिसी चोखी। पोखै बाळक काय, माय मन लाय अणोखी। ना संतोळा सेव, मेव मीठा ना पिसता। ना अंगूर विदांम, आंम किसमिस री रसता।—दसदेव

नीयौ—देखो 'नमौ' (रू.भे.)

नीयता—देखो 'नियंता' (रू.भे.)

उ०—निरभय नीयता, यता नर नारी। करता वीसंभर, भरता सुख भारी।—ऊ.का.

नीय—१ देखो 'निज' (रू.भे.)

उ०—१ कन्हडि वोधीउ सूयण, लोकु सहु सोगु निवारीउ। पहूतुं सहूड नीय नयरि, परियणि परिवारीय।—पं.पं.च.

उ०—२ कांमालय अट्ठमी तणी, सांभई संहट भणेवि। राजकुंअरि नीय घरि गई, ऊलट अंगि घरेवि।—विद्याविलास पवाडउ

२ देखो 'नीचं' (रू.मे.)

उ०—सपत दीप रिख सात, सातइ समदु। नवइ नीय ही, हाथ जोड़ै नरिंदु।—पी.ग्रं.

३ देखो 'नीच' (रू.भे.) (जैन)

नीयत—सं०स्त्री० [अ०] १ आन्तरिक भावना, संज्ञा, उद्देश्य, लक्ष्य, संकल्प। उ०—१ अळगा एकांयत नीयत निरदावै। धूणी अवधूतां दूणी धुकावै। पूरा पोमाहे सूरा सत सावै। पोता मरियोड़ा जीता पद पावै।—ऊ.का.

उ०—२ क्यों जे बादसाहां री नीयत माफिक असर होय छै।
—नी.प्र.

मुहा०—१ नीयत खराब करणी—बुरा संकल्प करना, मन में विकार उत्पन्न करना, ठीक सोचे हुए या अच्छे व उचित संकल्प को दृढ़ न रख सकना।

(२) नीयत खराब होणी—अच्छे व उचित संकल्प पर दृढ न रहना, बुरा संकल्प होना, मन में विकार पैदा होना।

(३) नीयत डिगणी—देखो 'नीयत खराब होणी'।

(४) नीयत डिगाणी—देखो 'नीयत खराब करणी'।

(५) नीयत बदळणी—अनुचित और बुरी बात की ओर प्रवृत्त होना, बेईमानी सूझना, बुरा संकल्प वा बुरी इच्छा होना, बुरा विचार होना।

(६) नीयत बांधणी—मन में ठानना, इरादा करना, संकल्प करना।

(७) नीयत बिगड़णी—देखो 'नियत खराब होणी'।

(८) नीयत बिगाड़णी—देखो 'नीयत खराब करणी'।

(९) नीयत भरीजणी—संतुष्ट होना, इच्छा पूरी होना, जी भरना, मन तृप्त होना।

(१०) नीयत में फरक आणी—बुरी बात की ओर प्रवृत्त हो जाना, उचित व अच्छे संकल्प पर दृढ़ रहना।

(११) नीयत लागणी—प्रवृत्त करना, दृढ़ करना, उन्मुख करना।

(१२) नीयत लागणी—जी ललचाना, इच्छा लगना।

(१३) नीयत होणी—इच्छा होना, आकांक्षा होना।

यौ०—नीयत-बायरौ।

२ नीति। उ०—मत छत सार धार अप्रमांणै, जिको सकळ नीयत व्रत जांणै। सरम सांम ध्रम हूंत सपग्गो, अधरम हूंता रहै अळग्गो।—रा.रू.

रू०भे०—नियत, नींवत, नीत, नेत।

नीयति—देखो 'नियति' (रू.भे.)

उ०—रवि चै उदय रात मिट जावै, खुटै तेल मुसाल बुझावै। यों नीयति व्रत वेद बतावै, तप तीखै नृप राज गमावै।—रा.रू.

नीयांणा—देखो 'नियांण, नियांणु' (रू.भे.)

उ०—करोत ले नै देह त्यागी। तिको जाळोर कांनड़दे रै घरै वीरमदे कंवर हुवौ। तिण सूं पैला भव री नीयांणा सूं बेगम रो नेह लागो।—वीरमदे सोनिगरा री वात

नीयाळ—देखो 'निहाल' (रू.भे.)

नीरंग, नीरंगु—देखो 'निरंग' (रू.भे.)

उ०—मिळिया नेमि नारायण गायण गीत सुणेउ, वारवधू मदि मातती नाचती जोइं बेउ। बेउ खेलइ सरसी तलि सीतलि लाखारांमि, नीरंगु नेमि न भीजइ खीजइ नारी नांमि।—नेमिनाथ फागु

नीर—सं०पु० [सं० नीरम्] १ जल, पानी (डि.को.)

उ०—१ ऊपरि पदपलव पुनरभव ओपति, निंमळ कमळ दळ ऊपरि नीर। तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरि हंस सावक ससिहर हीर।—वेलि

उ०—२ नदि दीह वधे सर नीर घटै निसि, गाढ धरा द्रव हेमगिरि। सुतरु छांह तदि दीध जगत सिरि, सूर राह किय जगत सिरि।
—वेलि

२ ओज। उ०—भोग्य चित भजै, ग्रीवणी गरज्जै। नीर धार निजै, सोहड़ै सलज्जै।—रा.रू.

३ शोभा, कांति, दीप्ति।

उ०—१ देवी नीर देख्यां अघ ओघ नासै। देवी आतमानंद हैवे हुलासै।—देवि.

उ०—२ लखधीर वडो लखलूट, खिति खमिति आगि अखूट। निज-वंसि चडावण नीर, हद वेहद हेल हमीर।—ल.पि.

उ०—३ देस सुरंगो जळ सजळ, न दियौ दोस थळांह। घर-घर चंद-वदनियां, नीर चढै कमळांह।—बां.दा.

४ गौरव, मान, प्रतिष्ठा।

उ०—१ नामणै अनंमा नाद नवा कोटां चाढै नीर, आच व्रवा आज जिसो 'ऊदा'-हरो इंद। दाखणै अदेखां देख दीपियो हींदू दुभाळ, मारुवौ महीप दूजो 'मालदे' मसंद।
—जगमाल राठौड़ रो गीत

उ०—२ 'उदयवत' आज दुनियांण सह ऊपरा, सार रौ तार लागौ सबां हीं। हंस राखै जिकां नीर अळगौ हुवै, नीर राखै जिकां हंस नांहीं।—महाराणा प्रताप रो गीत

उ०—३ नह पंचां जाय लाकड़ी नांखै, घणा जोर सज बियां घरां। चाड़ी करै कचेड़ी चढ़िया, नीर ऊतरै तुरत नरां।—बां.दा.

५ आंसू, अश्रु।

वि०—१ श्वेत कृष्ण* (डि.को.)

२ कृष्ण, काला (डि.को.)

रू०भे०—नीरि, नीरु, नीरू।

अल्पा०—नीरौ।

नीरअ—देखो 'नीरज' (रू.भे.) (जैन)

नीरखणौ, नीरखबौ—देखो 'निरखणौ, निरखबौ' (रू.भे.)

उ०—जांघ जोड़ावौ नू नीरखियौ, रंग-भरि रयण नू माड़ीयौ खेल। देव सतावौ राजा तुं फिरइ, घीव वीसाही तु जीमौ छइ तेल।
—वी.दे.

नीरलणहार, हारौ (हारी), नीरलणियौ—वि० ।

नीरलियोड़ो, नीरलियोड़ो, नीरल्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नीरलीजणौ, नीरलीजबौ—कर्म वा० ।

नीरलियोड़ो—देखो 'निरलियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीरलियोड़ी)

नीरज, नीरज्ज—सं०पु० [सं० नीरज] १ कमल, पुंडरीक (अ.मा.)

उ०—१ नीरि निरखिय नीरज नीरज हावउं केमु । टालइ ए केलीहर, दीहर लल जिम लेमु ।—नेमिनाथ फागु

उ०—२ ग्रादि ग्रगम ग्रविकार, एक ईस्वर ग्रविणासी । पछै प्रक्रति तत पंच, विविध सुर ईसज-वासी । ईंडो कनक ग्रछेह, देह धरि हरि तिण द्वारे । रचे नाभ नीरज्ज, रज्ज ग्रज प्रज गुण सारे । मन तेण वियो मारीच मुनि, उण थी कासिप ऊपनो । धर नूर प्रकासी प्रीत धर, सूर तेण घर संपनो ।—रा.रू.

२ मोती ।

वि० [सं० नीरज या निस्+रजस्] १ रजरहित, धूलिरहित ।

उ०—नीरि निरखिय नीरज, नीरज हावउ केमु । टालइ ए केलीहर, दीहर लल जिम लेमु ।—नेमिनाथ फागु

२ मलरहित 'कर्म' (जैन)

रू०भे०—नीरम, नीरय ।

नीरण—देखो 'नीरणौ' (मह०, रू.भे.)

उ०—किड़की कारायण कनफड़ियां कूटी । तिड़गी तारायण सों पुरली तूटी । प्रतिदिन मोळा पड़ मिन मिन पद पूजै । धोळा नीरण बिन जीरण जिम धूजै ।—ऊ.का.

नीरणौ—सं०स्त्री० [सं० नितरां-हरणं=नीरणं+रा०प्र०ई]

१ पशुओं को चराने के लिए घास आदि डालने की क्रिया या भाव । उ०—आठ बळदां की ए, मा मेरी नीरणी, आठ हाळघां की छाक, बावैजी नै कहियो ए, हाळी नै बेटी क्यूं दयी ।

—लो.गी.

क्रि०प्र०—करणी ।

२ पशुओं के चरने के लिए डाला जाने वाला घास आदि ।

क्रि०प्र०—करणी ।

३ देखो 'निरंणी' (रू.भे.)

४ देखो 'नलहरणी' (रू.भे.)

मह०—नीरण ।

नीरणौ, नीरबौ—क्रि०स० [सं० नीरणं] पशुओं को चराने के लिए घास आदि डालना । उ०—१ बांधउं वड़ री छांहड़ी, नीरूं नागर वेल । हांम संभाळूं करहला, चोपड़िसूं चंपेल ।—ढो.मा.

उ०—२ करहा ! नीरूं सोइ चर, वाट चलतउ पूर । द्राख बिजउरा नीरती, सो धण रही स दूर ।—ढो.मा.

उ०—३ धन्नण नीरूं वण चरै, वण नीरूं सण खाय । ए हर दीसो करहलो, जित बरजूं तित जाय ।—ग्रज्ञात

उ०—४ भेद कहि साजा मरा, थांनै भासो रोस । थारै आंगण बेलड़ी, थे नीरो हूं करीस ।—ग्रज्ञात

उ०—५ जद धर पर जोवती, देल मन मांह डरंती । गामनो संग्रहण, द्रस्ट नागोर धरंती । सुर तेतीसूं कोट, आण नीरता चारो । नह खावत नह चरत, मनै करती हहकारो ।

—महाराणा कुंभा री छप्पय

नीरणहार, हारौ, (हारी), नीरणियौ—वि० ।

नीरवाड़णौ, नीरवाड़बौ, नीरवाणौ, नीरवाबौ, नीरवावणौ, नीरवावबौ, नीराड़णौ, नीराड़बौ, नीराणौ, नीराबौ, नीरावणौ, नीरावबौ

—प्रे०रू० ।

नीरियोड़ो, नीरियोड़ो, नीरयोड़ो—भू०का०कृ० ।

नीरीजणौ, नीरीजबौ—कर्म वा० ।

नीरद—सं०पु० [सं०] १ बादल, घन (ह.नां., अ.मा., नां.मा.)

उ०—फुरियो भादरवो धुरियो नह फोको । नीरद रज आगै लागै नह नीको । तिसिया संगारा भू पर नर तिरसै । बिसिया अंगारा ऊपर सूं बरसै ।—ऊ.का.

२ मोर, मयूर ।

रू०भे०—नीरध, नीरोद ।

नीरदनादानुळ—सं०पु० [सं० नीरदनादानुलासी] मयूर, मोर (नां.मा) ।

नीरध—१ देखो 'नीरद' (रू.भे.)

२ देखो 'नीरधि' (रू.भे.)

उ०—वाधै फौज अकब्बर वाळी, नीरध जांण पलट्टै नाळी ।

—रा.रू.

नीरधबंध—सं०पु०यौ० [सं० नीरद+बंध] समुद्र, सागर ।

उ०—चढतां नृपति समा भड़ चढ़िया, जोधं रूप सनाहां जड़िया । खह रुकि गरद वर्ध ग्रस खड़िया, नीरधबंध जांणि नीमड़िया ।

—रा.रू.

नीरधर—सं०पु० [सं०] बादल, मेघ ।

उ०—१ दीन करण प्रतपाळ दासरथ, भारत खळदळ सबळ बिभंजै । घनस धरण तन बरण नीरधर, रघुवर जनकसुता मन रंजै ।—र.ज.प्र.

उ०—२ नीरधर साहसां मीर 'तख्तेस' नंद । हीरकण साह तो 'पतो' नृप हेम ।—किसोरदान बारहठ

नीरधारा—सं०स्त्री० [सं०] जलधारा, सरिता ।

नीरधि—सं०पु० [सं०] समुद्र, सागर ।

रू०भे०—नीरध ।

नीरनिध, नीरनिधि—सं०पु० [सं० नीरनिधि] समुद्र, सागर ।

नीरनिवास—सं०पु० [सं०] तालाब (अ.मा.)

नीरनेता—सं०पु० [सं०] वरुण (नां.मा.)

नीरपत, नीरपति—सं०पु० [सं० नीरपति] वरुण (अ.मा.)

नीर-बहणी—सं०स्त्री० [सं० नीर+बहः] नाव, नौका (डि.को.)

नीरभव-सं०पु० [सं०] कमल । उ०—उरध लिलाड नीरभव आंखैं, नाक कीर छिव न्यारी । दंत भुजा वछ दौर धीर घर, उर तसबीर उतारी ।—ऊ.का.

नीरभै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)

नीरय—देखो 'नीरज' (रू.भे.) (जैन)

नीरवाली-सं०स्त्री० [देशज] पुष्प विशेष की बेल, निवारी ।
उ०—पाका पांन घवंटहुली, जाई सेवती, नीरवाली का फूल । सांझ समइ राय बोलसी । हंसि हसि बोल अंबला मूंघ ।—बी.दे.

नीरस—देखो 'निरस' (रू.भे.)
उ०—मेल्हि वात परही सवि बाई, स्त्री तणउं सवि हुउं जांणूं माई । नारि नीरस न सांणि न राचइ, पुण्यहीन पति पद्मनि वंचइ ।
—विराटपर्व

नीरसमीप-सं०पु० [सं०] वरुण ।

नीरस्त-सं०पु० [सं० निस्त्रिंश=तलवार, खग] तीर, बांण
(डिं.नां.मा.)

नीरांत—देखो 'नैरांत' (रू.भे.)
उ०—१ मुज अवळा नै मोटी नीरांत थई रे, छांमलो घरेणु म्हारै सांचुं रे ।—मीरां
उ०—२ होळी-रा दिन हा । जोधपुर री फौज-रा सिपाही नीरात-सूं बैठा 'हा-हा-फी-फी' कर रया हा ।—वरसगांठ

नीरांतर-वि० [सं० निर्+अंतक] शांत, चुपचाप । उ०—हीलाकर हिणकं ईला हुय आधा । लीला भगवत री लीला नहिं लाधा । ढालां ढालांतर सांतर ढळियोड़ा । बैठा नीरांतर आंतर बळियोड़ा ।
—ऊ.का.

नीरांयत—देखो 'नैरांत' (रू.भे.)

नीराग-वि० [सं० निः राग] १ राग-द्वेषरहित, विरक्त, उदासीन ।
उ०—धिग धिग एह ससार नइ, आवियउ परम वइराग रे । किम प्रतिबध जिनवर करइ, ए अरिहत नीराग रे ।—स कु.
२ आनन्दरहित ।
सं०पु०—जिन भगवान (जैन)

नीरागी-वि० [सं० निः रागिन्] १ राग-द्वेषरहित, उदासीन, विरक्त । उ०—तुमे नीरागी निसप्रीही पणि म्हारइ तो तुमे जीवन प्रांण । समयसुंदर कहइ सिव पांमुं तां सीम तउ करज्यो कल्यांण ।—स कु.
२ आनंदरहित ।
सं०पु०—जिन भगवान (जैन) ।

नीराजण, नीराजन, नीराजना-सं० स्त्री० [सं० नीरजन या नीराजना] आरती उतारने की क्रिया, दीप-दान, परछन ।
उ०—१ कर पुचकारै घण कहै, जांण धणी री जैत । नीराजण बाधावियो, हूं बळिहार कुमैत ।—वी.स.
उ०—२ नीराजन प्रमुख ही विधांन करि अरबुद रै अधीस दुरलभ प्रथ्वीराज नूं आपरै अंतहपुर आंणि बेद मंत्रां रा बिधांनपूरबक अंगजा इच्छणी परिणाय दीधी ।—वं.भा.
क्रि०प्र०—उतारणी, करणी ।

नीराळौ—देखो 'निराळौ' (रू.भे.)
उ०—आज नीराळइ सीय पड्यो । च्यारि पहूर मांहो नू मीली अंख । उछइ पांणी ज्युं माछळी, जिव जागुं तिव उटुछुं झंखि ।
—बी.दे.

नीरास-सं०पु०—१ निःश्वास ।
उ०—बूढ़ापे सुखणी हुंस्युं जी, होती मोटी रे आस । घर सूनौ करि जाय छै रे, माता मूकी नीरास ।—जयवांणी
२ देखो 'निरास' (रू.भे.)
उ०—विक्ष्यादिक नइं सेवतां रे लो, पूगइ मन नी आस रे सनेही । तउ साहिब तुझ सारिखउ रे लो, किम राखइ नीरास रे सनेही ।
—वि.कु.

नीरासइ-सं०पु० [सं० नीराश्रय] तालाव, सरोवर ।
उ०—पति पवन प्रारथित त्री तत्र निपतित, सुरत अंत केहवी स्त्री । गजेंद्र क्रीडता सु विगलित गति, नीरासइ परि कमलिनी ।
—वेलि.

नीरि—देखो 'नीर' (रू.भे)
उ०—१ भीमु भीडंतउ जमणतडे कूटइ कुरव-वीर । पाडइ द्रवडइ भेडवइ बांधीय बोलइ नीरि ।—पं.पं.च.
उ०—२ भीमि भिडिउ भद्रु पाडीयउ बांधीउ घालिउ नीरि । जागिउं त्रोडइ बंध बलि नवि दूमिइ सरीरि ।—पं.पं.च.

नीरियोड़ौ-भू०का०कृ०—चरने हेतु पशु के आगे घास आदि डाला हुआ ।
(स्त्री० नीरियोड़ी)

नीरु, नीरू—देखो 'नीर' (रू.भे.)
उ०—१ सहू पराधु निद्रा करीइ, पांणी कारणि वणि वणि फिरइ । भीमु जांम लेउ आवइ नीरु, पाछलि जोअइ साहस धीरु ।
—पं.पं.च.
उ०—२ ध्रुव वन सिधारधो, वचन मारधो ध्यांन धारयौ एक ए । तजि पांन नीरू महा धीरू परा पीरू पेख ए । सब ब्रह्म मंजू उर समंजू सुरत रंजू तांम ए । ऐसा गोविंदू कृपासिंधू दीनबंधू रांम ए ।—करुणासागर

नीरोअर—देखो 'नीरोवर' (रू.भे.)

नीरोग-वि० [सं०] जिसे रोग न हो, तन्दुरुस्त, स्वस्थ ।
उ०—घट नीरोग सुभ घरणि, वळि नहीं रिण-भय वात । सुपुत्र सुराज कटुंब सुख, धरमसीह कहै सात ।—ध.व.ग्रं.
रू०भे०—निरोग ।
अल्पा०—निरोगो, नीरोगो ।

नीरोगता-सं०स्त्री० [सं० नीरोग+रा०प्र०ता] स्वास्थ्य आरोग्यता

उ०—रोगी रहै जग री जीवन नूं परब पाणी नूं प्रबंध होय तो कारण नीरोगता। कुसळता नै बढ़ै ही मारांन नूं होय।

—नी.प्र.

नीरोगी-वि० [सं० नीरोगिन्] बिना रोग का, नीरोग, स्वस्थ।

उ०—इण नीरोगी पंग वडौ गुण बुद्धि वखांणो। वळि साचविजै विनय प्रसिद्ध गुण उदम मांणो।—ध.व.ग्रं.

रू०भे०—निरोगी।

नीरोगो—देखो 'नीरोग' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० नीरोगी)

नीरोद—देखो 'नीरद' (रू.भे.)

नीरोपम, नीरोपमो—देखो 'निरुपम' (रू.भे.)

उ०—जनम हुवउ बारउ माह कइ देस। राज कुंवरि अति रूप सुवेस। रूप नीरोपमो मेदनी। भाग्यां कापड़ भीणइ लंक।

—बी.दे.

नीरोवर, नीरोवरि-सं०पु० [सं० नीरं+वर=पति] १ समुद्र, सागर।

उ०—मुकरमं प्रोळि प्रोळि मैं मारग, मारग सुरंग अबीरमई। पुरि हरि सेन एम पैसारघो, नीरोवरि प्रवसंति नई।—वेलि.

२ वरुण (ह.नां.)

[सं० नीरम्+वरम्] ३ जल, पानी। उ०—मदतळ डांणां मसत, झरै झरणा गिर नीझर। अन पारा तजि अरध, पियै तड़कां नीरोवर।—सू.प्र.

रू०भे०—नरोवर, नीरोसर।

नीरो-सं०पु० [देसज] १ भूसा, घास, चारा। उ०—१ प्रोझाजी रै घरै घणा-ई डांगरा हा। कुण इण गाय री परवा करतो हो। दूध दियो जितै तो माथो मारियो, नीरो नांखियो। टळियां पछै दिनूंगै सूं दिचकारी दे'र घर सूं बारै टोर देवता।—वरसगांठ

उ०—२ मोसर मोसर माथ व्यावड़ां प्राड़ी प्रावै। चारै पारै मिला, फरवला मोज मणावै। कूतरड़ी रै भेळ, गिणीजै नीरो माड़ो। पण! घिटाळै टळै, नरां अपजस अंबाड़ो।—दसदेव

२ देखो 'नीर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ भाग संजोगइ रे अम्रत पीजियइ, सउ कुण पीवइ नीरो रे। धावळ कांबळ धुंसइ को नहीं, जउ पांमीजइ चीरो रे।

—स.कु.

उ०—२ प्रासू प्रासा सहू फळी, निरमळ सरवर रो नीरो जी। सहगुरु उपसम रस भरचा, सायर जेम गंभीरो जी।—स कु.

नीलक, नीलंग-सं०पु० [देसज] एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष।

उ०—गुराकां प्रवाकां ततमाल खावै। भलो चीज प्रित्यो जिकै मन भावै। जरी वाफ नीलंग जांमा जड़ावै। वपै अन्न अन्नेक धारा वणावै।—वचनिका

नीलंगु-सं०पु० [सं०] शरीर का एक कीड़ा विशेष (हि.को.)

नीलंजना-सं०पु० [सं०] १ इन्द्र की सेना के सात सेनापतियों में से एक।

उ०—कटक, नाटघ गंधरव हय गज प्रसम रथ पदाति रूपक तणा स्वामी नीलंजणा रिद्धजस हरि एरावण मातलि दामिष्टी हरिणे-गमेसी सरवागि सन्नाह पहिरि, द्रढ कसा बंधि, धनुसि गुण चढावी रह्या।—व स.

सं०स्त्री० [सं० नील+अंजना] २ विद्युत, बिजली।

नीलंठ, नीलठो-सं०पु० [देसज] जल, पानी (ना.डि.को.)

नीळंबर, नीलंबर—देखो 'नीलांबर' (रू.भे.) (अ.मा., नां.मा.)

उ०—१ फरर तुरां नीलंबरां आभरण फूल में, बदन कूंतरण तणी चढी वांनै। द्वारकादास घर जवांनी दवांनी, मारका तो जता भीच मांनै।—बद्रीदास खिड़ियो

उ०—२ अंतर नीलंबर प्रबल आभरण, अंगि अंगि नग नग उदित। जांणे सदनि सदनि संजोई, मदन दीपमाळा मुदित।—वेलि.

नीलमणी—देखो 'नीलमणि' (रू.भे.)

उ०—देवी रगत नीलमणी सीत रंगं, देवी रूप अंबार वीरूप अंगं। देवी बाल जूवा विधं वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसां भुजाळी।

—देवि.

नील-सं०पु० [सं० नीलिका] १ एक पोधा जिससे नीला रंग निकाला जाता है (अमरत)

उ०—चुगलां जीभ न चालही, पर-उपगार प्रसंग। नह नीपजही नील सूं, राजहंस रो रंग।—बां.दा.

[सं०] २ नीला रंग।

३ लांछन, कलंक।

४ राम की सेना का एक प्रसिद्ध बंदर।

उ०—१ सुखेणा नळ नील सुग्रीव साथां। हणूं आदि आए मिळै जोड़ि हाथां।—सू.प्र.

उ०—२ सत्र हणं बळ समराथ रा, रिण लड़ै भड़ रघनाथ रा। तदि लखण अंगद सुग्रीव हणवंत, नील नळ नरनाह।— सू.प्र.

५ पवन (ह.नां., अ.मा.)

६ इलावर्त्त खंड का एक पर्वत।

७ मंगल-घोष।

८ एक प्रकार का घोड़ा। उ०—अरब छइ जे घोडा, हरमा हरी-अहा नील नीलडा कालू आ काजळा किहाडा कोसीरा।— व.स.

९ एक नाग का नाम।

१० नृत्य के १०८ करणों में से एक।

११ दस हजार अरब की संख्या।

१२ एक प्रकार का सरकारी कर।

१३ एक प्रकार का फल।

१४ महिष्मती के एक राजा का नाम (हि.को.)

१५ विष, जहर।

१६ एक यम का नाम।

१७ आर्या गीति या स्कंधाण (स्कन्धक) का भेद विशेष (पि.प्र.)

१८ प्रत्येक चरण में पांच भगण और अंत में गुरु वर्ण से १६ वर्ण का वर्णिक वृत्त विशेष (पि.प्र.)

सं०स्त्री०—१६ मकान पर वर्षा के पानी के कारण दिखाई देने वाली कालिमा या जमने वाली काली पपड़ी।

उ०—ठिकांणां री मकांन वड़ौ लंबौ-चौड़ौ अर बावा आदम रै जमांना रौ बण्योड़ौ हो। बरसात में सालोसाल नील जम जम नै धवळा माळिया काळा भरंग पड़ग्या हा।—रातवासौ

क्रि०प्र०—आणी, जमणी।

२० पानी के ऊपर जमने वाली काई।

२१ धोने के पश्चात सफेद कपड़ों पर चढ़ाया जाने वाला हल्का आसमानी रंग जिससे कपड़ों की सुंदरता बढ़ती है।

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी।

२२ नीलाई, नीलापन। उ०—छच्छ मास छाकियां, हुवा डाकियां हठीलां। प्रचंड नील जमि पीठ, निलै त्रसळै जमि नीलां। सघण गाज जिम सुणै, गाज मद मसत गयंदां। सादूळौ सिर पटकि, मरै संगार मयंदां।—सू.प्र.

२३ शरीर पर चोट के कारण पड़ने वाला नीले या काले रंग का दाग।

क्रि०प्र० -पड़णी।

२४ नव-निधियों में से एक (डि.को.)

२५ इंद्र नील मणि, नीलम।

२६ काले रंग के स्तनों वाली गाय।

वि०—१ नीले रंग का, आसमानी।

रू०भे०—निलि, लील।

नीलअंजनी-सं०पु० [देशज] एक ही रंग के संपूर्ण शरीर पर नीले धब्बों वाला घोड़ा विशेष जैसे पूरे शरीर का रंग सफेद हो या लाल हो और उस पर नीले धब्बे हों (अशुभ)

नीलउंनेत्र, नीलउनेत्र-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)

रू०भे०—नीलनेत्र।

नीलकंठ-वि० [सं०] १ जिसका कंठ नीला हो।

सं०पु०—१ मोर, मयूर (डि.को., अ.मा., ह.नां., नां.मा.)

२ शिव, महादेव (क.कु.बो.)

उ०—१ कंठ पोत कपोत कि कहूं नीलकंठ, वडगिरि कालिंद्री वळी। समै भागि किरि संख संख घर, एकणि ग्रहियौ अंगुळी।—वेलि.

३ मूली (डि.को.)

४ एक चिड़िया।

५ गोरा पक्षी।

नीलकंठी-सं०स्त्री० [सं०] १ हिमालय पर पाई जाने वाली एक छोटी चिड़िया।

२ शोभा के लिए बगीचे में लगाया जाने वाला एक पौधा।

नीलक-वि०—नीला, आसमानी (डि.को.)

सं०पु०—१ आसमानी रंग, नीला रंग।

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष। उ०—१ जरदोज कसबौ मुंगीपटण तपई अतलस मुलमुल जांमाबाडि लखारस बासतौ मछीपटण ताखौ साळू जरकसी दुमेणा कचीयौ तनसुख नीलक पटोली सुप चुंनडी अटांयण मीसंजर तासतौ चोरसौ (व.स.)

उ०—२ कंचू नीलक को कीयौ, ऊपरि चीर उढ़ाइ। लिधौ लुंगी भाति को, सुंदर नें बहोत सुहाय।—व.स.

उ०—३ भर मोल नीलक भार, आसावरीस उदार। दुल्लीच गिलम दुसाळ, थिरमा सफंभ सुथाळ।—सू.प्र.

३ नीले रंग का घोड़ा (डि.को.)

नीलकांत-सं०पु० [सं०] १ हिमालय के अंचल में पाई जाने वाली एक चिड़िया।

२ एक मणि, नीलम।

नीलवक—देखो 'नीलक' (रू.भे.)

उ०—जगमगै जोत कसमी अनूप। नीलवक मसंजर लाल सूप।
—गु.रू.बं.

नीलकौंच-सं०पु० [सं०] काला बगला।

नीलगर-सं०पु० [फा० नीलगर या सं० नीलकर] १ मुसलमानी धर्म के अंतर्गत कपड़े रंगने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष अथवा इस जाति का व्यक्ति। उ०—धोबी सवणीगर न्यारा रे, नाई नीलगर पीनारा। सकलीगर गांछा नै घोसी रे, कल्लाल तरमां मोची।
—जयवांणी

२ देखो 'नीलगिरि' (रू.भे.)

नीलगाय-सं०स्त्री० [सं० नील+गौ] लगभग गाय के बराबर और गाय से कुछ मिलता-जुलता नीलापन लिए हुए भूरे रंग का बड [illegible]रन।

नीलगिरि, नीलगिरी-सं०पु० [सं० नीलगिरि] दक्षिण देश [illegible] एक पर्वत।

रू०भे०—नीलगर।

नीलग्रीव-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव (डि.को.)

नीलडौ—देखो 'नीलौ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—अभयचद दियौ राई पंख। सकत स्यंध है दीयौ नं लडौ हंस।
—बी.दे.

नीलचर-सं०पु० [सं०] मछली। उ०—हर रूपा सुख हेम मंजरां कि मोदहर। नीलचरां वन नाथ गैमरां निवांण। माधव पायाळ मुखा कमळा आधार मांण। रैणवां अधार राव राठौड़ां रौ रांण।
—आसौ बारहठ

नीळज नीलज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

उ०—१ निवळ पुरख नइ नीळज नारि, किम तिहां दोजइ राजकुमारि। करते तउ कीधउ नातरउ, पाणि जांणै पडीयउ पांतरउ।
—ढो.मा.

उ०—२ लंपट तजि प्रौळीयौ, निगुण प्रभु नीलज नारी। चौकीदार ज चोर, जोरवर जोध जुआरी।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ एक दिस्साला नीलज निनि दमयंतीनि सरजो, प्राक्त मागि नीराई नि लिखित अति नदि वर जो ।—नहारदान

नीलजा-सं०स्त्री० [सं०] नील पर्वत से उत्पन्न एक नदी, झेलम ।

नीलजु—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

उ०—नीलजु निपिनु मई अजांगु मांड मारद मारो । ईहि जनमि मुख रंडुनर बिनु नहीं द मतारो ।—पं.पं.च.

नीलजो—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

(स्त्री० नीलजी)

नीलज्ज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

नीलज्जो—देखो 'निरलज्ज' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० नीलज्जी)

नीलटांच, नीलटांस-सं०पु० [देशज] १ गरुड़ पक्षी (अमरत)

२ हरे रंग की चंचू वाला पक्षी विशेष ।

उ०—१ अक्षत, पुस्प, फळ, स्वेत चमरसत्रु, पतिव्रता पुत्रवती स्त्री, आरती री वस्तु, मोती, मूंगा, पंचाम्रत, छत्र, आरती, कुमारी कन्या, रथ, ध्वजा, सार, पाट, बळि, सप्त धान, युग्म, मत्स्य, अस्व गज, नीलटांस, वृषभ, सिंह ।— सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ राजा नंद रा ठावा आदमियां वन में पाटळा व्रख री डाळ बैठा पंखी नीलटांच, जिण रा मुख में विनां उद्यम कियां लटां पड़ै, जिका देखिया हा । विचारियो अठै सहर वसावजे तो इण सहर रा लोक नूं आप ही नूं रजक मिळै । पछै सहर (वसायो) । पटणो कहै । मुसलमान अजीमाबाद कहै ।—बां.दा.ख्यात

नीलड़ू नीलड़ो—देखो 'नीलो' (अल्पा०, रू.भे.) (व.स.)

उ०—१ हांसइं हयवर नीलडा हरीयडा गगाजळा सांमळा । तेहे यादव सचरया परवरया तेजी तुखारै चडया ।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ पांणी पंथ नइ तुरखांणी, एक तुरकी तुरंग । सूडा पंखा नइ किहाडा, एक नीलडा तुरग ।—का.दे.प्र.

नीलण-सं०स्त्री० [सं० नील+रा.प्र.ण] हरी सब्जी । उ०—कोई कहै साध रो धरम ओर नै ग्रहस्थ रो धरम ओर । जद स्वांमीजी बोल्या, चोथा गुण ठांणा री अनै तेरमा गुण ठांणा री स्रद्धा तो एक छै अनै फरसणा जुदी छै । काचा पांणी में अपकाय रा असंख्यात जीव अनै नीलण रा अनंत जीव चोथा छठा तेरमा गुण ठांणा में सरब सरधै पहदै ।—भि.द्र.

नीलणो, नीलवो-क्रि०अ० [सं० नील+रा. प्र. णो] १ हरित होना, हरा-भरा होना । उ०—अरे म्हारा लोटण करहा, मारगियो नीलांणो अब घर आव ।—लो.गी.

२ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

उ०—देखतां पथिक उतामळा दीठा, भ्रांखांणा उरि उठी झळ । नीठ हाल करि देखी नीलांणा, कुसुमपक्षी वासी कमळ ।

—वेलि.

नीलणहार हारो (हारी), नीलणियो—वि० ।

नीलियोड़ो, नीलियोड़ो, नील्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नीलीजणो, नीलीजबो—भाव वा० ।

नीलधुज, नीलध्वज-सं०पु० [सं० नीलध्वज] १ एक राजा का नाम जिसकी कन्या के स्वयंवर में नारद जी हरि (वानर) रूप में गए थे । उ०—जठै स्वयंवर जोय घीय वीमांहि नीलधुज । नृप कन्या रो नूर देख प्रभु कनै गयो दुज ।—र.रू.

२ तमाल ।

नीलनायक—एक प्रकार का आभूषण विशेष (व.स.)

नीलनेत्र—देखो 'नीलउनेत्र' (रू.भे.)

उ०—१ अथ वस्त्र देवदूष्य चीनांसुक गोजी पउठसी नीलनेत्र सचोपा पाटणीयां हीरपट्ट साउला ।—व.स.

उ०—२ सलहिती बारबती फरोदस्ती चूडोभाति सकलात पोतु तास्तु नीलनेत्रं बासत्या ।—व.स.

नीलपट-सं०पु०—नीला वस्त्र, नीलांबर ।

उ०—वारद विद्युत वरण, पीत अरु धरण नीलपट । तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट ।—र.रू.

नीलवा-सं०स्त्री०—भाटी वंश की एक शाखा ।

नीलपो-सं०पु० (स्त्री० नीलपी) भाटी वंश की 'नीलपा' शाखा का व्यक्ति ।

नीलफुरमास-सं०पु० [देशज] एक प्रकार का सरकारी लगान ।

नीलम-सं०पु० [सं० नीलमणि] नीले रंग का रत्न, नीलमणि ।

(अ.मा.)

उ०—कळ रंग घाट कुमाच, पन्नास नीलम पाच ।—सू.प्र.

रू०भे०—नीलवो ।

नीलमण, नीलमणि, नीलमणो, नीलमिण, नीलमिणी-

सं०पु० [सं० नीलमणि] नीले रंग का रत्न, नीलमणि ।

उ०—१ मद सिलल तणां चांटा हियै नीलमण, राजिया उपर चांटा पदमराग । अडग पग मांड राधारमण उद्घायो, नग समो विलंद मग विप गगन मग नाग ।—बां.दा.

उ०—करि ईंट नीलमणि कादौ कुंदण, थंभ लाल पट पाचि थिर । मदिरै गोख सु पदमराग मै, सिखरि सिखि रमै मंदिर सिर ।

—वेलि

रू०भे०—नीलंमणि ।

नीलमोर-सं०पु० [सं० नीलमयूर] हिमालय पर पाया जाने वाला एक प्रकार का कुररी पक्षी ।

नीलरतन, नीलरत्न-सं०पु० [सं० नीलरत्न] नीलमणि, नीलम ।

उ०—१ अथ ग्रंथांतर तो भोजनविच्छित्ति कथ्यते । मांडयउ उतंग तोरण मांडवउ, तुरत नवउ वइसिवांनउ आंगणउ, ते तु नीलरत्न ऊपरलइ माहि ।—व.स.

उ०—२ माडिउं ऊतंग तोरण मांडवु, तुरंत नवउ वेसवांनउ आंगणु, नीलरत्न तणुं सखरा माहि आसन ।—व.स.

नीललेसा-संस्त्री० [सं० नील-लेश्या] आत्मा को शुभाशुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त करने वाले छः तत्वों में से द्वितीय श्रेणी का मलिन परिणाम वाला तत्व जिसका उद्भव नील पुद्गालों के संयोग से होता है (जैन)।

नीलवंत-संपु० [सं०] एक पर्वत का नाम (जैन)

नीलवट, नीलवड, नीलवडि-संपु०—१ वस्त्र विशेष (व.स.)
२ देखो 'निलै' (रू.भे.)

नीलवण, नीलवणि-संस्त्री० [देशज] हरी सब्जी।
उ०—१ चौथुं व्रत कोई आदरै कोई नीलवण परिहार। अगडो नीम केइ ऊचरै, केई स्रावक व्रत बार।—लाधौ साह
उ०—२ रात्रि भोजन परिहरइ, चितहंसा रे। कोई नीलवणि नवि खाय, लाल चित हंसा रे।—प्राचीन फागु-संग्रह
रू०भे०—लीलवण

नीलवी—देखो 'नीलम' (रू.भे) (अ.मा.)
उ०—१ प्रघळ परोक्षा नीलवी, मुक्तफळ ता मांहि। लसत हसत से लसणिया, सोभा कही न जाय।—गजउद्धार
उ०—२ मिणी लाल माणक माळ मोती चिंतामण। नवनीधी नीलवी केक कोसव फटकामिण। पीरोजा पुखराज पनां चूनी परवाळा। हीरा पारस हेम सात धातां सिखराळा।—क कु बो.

नीलव्रख-संपु० [सं० नीलवृषभ] १ विशेष प्रकार का सांड या बछड़ा।
२ मृत पुरुष के ग्यारहवें दिन के वृषोत्सर्ग रूप से छोड़ा जाने वाला बैल।

नीलांबर-संपु० [सं०] १ नीले रंग का कपड़ा, नीला वस्त्र।
उ०—सोहै नीलांबर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमांण। चपकमाळा हरत चित, जुत भमरावळि जांण।—बां.दा.
२ श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम, बलदेव।
३ शनिश्चर।
४ राक्षस।
वि०—नीले वस्त्र वाला।
रू०भे०—नीलंबर।

नीलांबरी-संस्त्री०—एक राग विशेष (मीरां)

नीलांबुज-संपु० [सं०] नीलकमल।

नीलांम—देखो 'लीलांम' (रू.भे.)

नीलांमघर—देखो 'लीलांमघर' (रू.भे.)

नीलांमी—देखो 'लीलांमी' (रू.भे.)

नीला-संस्त्री० [सं०नील] कुबेर की नौ निधियों में से एक निधि(डि.को.)

नीलाचळ, नीलाचल-संपु० [सं० नीलाचल] नीलगिरि पर्वत।

नीलाब्ज-संपु० [सं०] नीलकमल।

नीलावट—देखो 'निलै' (रू.भे.)
उ०—बंकै भौंह विसाळ भाळ नीलावट नूरांणी। नैण विराजै चोळ रंग मुख अच्छा पांणी।—गजउद्धार

नीलावर-संपु०—रंग विशेष का घोड़ा।
उ०—दहावट राजथांन तेथ आया। नीलावर घोड़ै चढिया आया। आई नै घोड़ै चढिया आलोप हुवा।—देवजी बगड़ावतां री वात

नीलियोड़ौ-भू०का०कृ०—हरा-भरा हुवा हुआ, हरित हुवा हुआ।
(स्त्री० नीलियोड़ी)

नीलुहर-संपु०—वस्त्र विशेष
उ०—पीतांबर चादर रक्तांबर नेत्रांबर खासरी सालूर चोल हिरां नीलुहरां जरजरी मलबारी।—व.स.

नीलूइ-संपु० [सं०] शाक विशेष।
उ०—नेत्र निहाली नीलूइ, नलिनी नागरवेलि। नहीं नवी नीं नींछारडी, नागफणी गुण-गेलि।—मा.कां.प्र.

नीलोतरी, नीलोती-संस्त्री० [सं० देशज] हरी सब्जी।
उ०—१ गुजरमलजी बोल्या, चारित्र आतमा स्रावक मैं नहीं होवै तो नीलोतरी रा त्याग रौ कांई कांम।—भि.द्र.
उ०—२ कोई कहै भगवांन नीलोती खावा नै बणाई है। जद स्वांमीजी बोल्या—थारै लेखै नाहर आयां तूं क्यूं न्हासै।
—भि.द्र.
रू०भे०—लीलोतरी, लीलोती, लीलोत्री।

नीलोत्पळ-संपु० [सं० नीलोत्पल] नील कमल।

नीलोदव्वा-संपु० [सं० नीलोद्वाह] प्रथमाब्दिक (वर्ष) पर क्रिया जाने वाला कर्म (श्रीमाली)

नीलौ-वि० [सं० नीलिनं] (स्त्री० नीली) १ आसमानी रंग का, आकाश के रंग का।
२ गहरा हरा, हरा।
उ०—१ थळ मथ्थइ जळ बाहिरी, तूं कांइ नीली जाळ। कंइ तूं सींची सज्जणै, कंइ वूठउ अग्गाळि।—ढो.मा.
उ०—२ निय नांम सीत जाळै वण नीलां, जाळै नळणी थकी जळि। पातिग तिण द्वारिका न पैसै, मेंजियै विणु मन तणै मळि।
—वेलि.
उ०—३ ऊंडा वन सूकै अवस, नीलौ वन जळ जाय। चुगल तणां पगफेर सूं, बसती ऊजड़ जाय।—बां.दा.
उ०—४ क्षणु राता क्षणु पीअळा, क्षणु नीला क्षणु सेत। चोळी चरणा पालटइ, हैडउ पूछी हेत।—मा.कां.प्र.
३ तुरंत का, ताजा (घास आदि)।
उ०—म्हारै घरै बीस बकरा बंध्या है सो आप कहो तो नीलौ चारौ नीरूं अनै काचो पांणी पाऊं।—भि.द्र.
४ आर्द्र, गीला। उ०—पहिलउं नीली सूकिय मूंकिय फलहलि तीह। देखीय मोदक मुरकीय फुरकीय जीमतां जीह।
—नेमिनाथ फागु
संपु०—१ रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—१ मन मों' मदिरा रो उन्माद चाये। नीला नै तमारी कर जाजम बैठायो।—दमा नीरजदे री वात

उ०—२ सोमं इतर नीम फमीलो। नेजाळतां तर्णं विच नीलो।

—सू.प्र.

२ घास। उ०—स्वामीजी दिसा जातां एक······साथै थयो। तै नै नीलां ऊपर चालतौ देखी स्वामीजी बोल्या—इसै चोर्स मारग नीलां ऊपर क्यूं हालो।—भि.द्र.

अल्पा०—निलो, नीलो।

नीलो-राजन-सं०पु०यौ०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष जिसके पार्श्व में नीला धब्बा हो (अनुभ)

नीलो-फंसी-सं०पु०यौ०—१ मध्यम आकार का एक वृक्ष विशेष जिसके नील फूल होते हैं।

२ इस वृक्ष का फूल।

नीलो-चँ'र-सं०पु०—बिलकुल नीला, एकदम हरा।

नीलो-तूथो, नीलो-थोथो-सं०पु०यौ० [सं० नीलतुत्थ] तांबे का नीला क्षार या लवण, तांबे की उपधातु, तूतिया। (अमरत)

नीवं, नीव—देखो 'नींव' (रू.भे.)

उ०—दादू जिहिं घर निंदा साधु की, सो घर गये समूळ। तिनकी नीव न पाइये, नाम न ठांव न धूळ।—दादूवाणी

नीवड़णो, नीवड़बो-क्रि०स० [सं० निवर्तनं] १ निवृत्ति प्राप्त करना, संसार छोड़ना, देह त्यागना।

उ०—रवगि भुजावळ आफळ 'रतनो'। सारां चढि नीवड़ असमांण। जामण मरण तणो लगि चिहुं जुग। भागो फेरो कविलै भांण।

—दूदो

२ देखो 'निपटणो, निपटबो' (रू.भे.)

उ०—१ ढीली वात म ढाहि, पुन्य रो कारज पड़तां। ढीली वात म ढाहि, न्याय सूधो नीवड़तां। ढीली वात म ढाहि, वहस सूं पड़ियै बोलै। ढीली वात म ढाहि, दमकिए वाहर ढोलै। सहु करै वृद्ध आगै सुजस, ढीली तठै न ढाहिजै। आविये दाव ओठभतां, कुळ धरमगीह वहाइजै।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ 'वीरो' बाहर नावड्यो, भुंवर 'नकोदर' हाथ। हम तुम झगड़ो नीवड्यो, नरनिध जाट्ट साथ।—नैणसी

उ०—३ तरै आदरां नूं कह्यो 'सूजो मारो' तरै सिगळै कह्यो 'आ वात मत करो, सीरोही रो धणी सुरतांण हुय नीवड़ियो, थे राव रो सादो मत मारो' पिण 'विजो' किण रो कह्यो मानै ?

—नैणसी

३ देखो 'निवड़णो, निवड़बो' (रू.भे.)

उ०—ती रै पेट री उठै घोड़ी सुन्दर आई थी सो जोगियां कन्है राजू नां रा आदमी मोल लाया था। गिणिया हजार ठेट देय लाया था। घोड़ी इसी नीवड़ी सो मांणस का सूं तारीफ करै, घोड़ी री तारीफ कुण करै।—सूरै सीवै कांधळोत री वात

४ देखो 'नीमड़णो, नीमड़बो' (रू.भे.)

उ०—१ 'रतन' पड़ै रिणि नीवड़ै, 'औरंग' अड़ै अररिस। सूर दाड़ै नड़ि रत्थ सझि, नौबति तूरि निहसिस।—वचनिका

उ०—२ इतरै सो भगवंतजी लीलिदमीजी नै फुरमायो। लिछमीजी देखो पलक दरियाव रो तमासो नीवड़ै छै।

—पलक दरियाव री वात

उ०—३ मांणस २ रुड़ा मेल नै रायसिंघ नूं कहाड़ियो' थे नै 'जसं' वेई वाद कियो छै। थे स्यांणा छो, 'जसो' मोटयार छै। थे नीसरता घोळहर या कोस ४ अळगा नीसरजो'। आ वात जाइ आदमियां रायसिंघ नूं कही। तरै रायसिंघ कह्यो—आ वात तो नीवड़ी। घणा मांणसां सुणी।—नैणसी

उ०—४ तीन भडारी नीवड़ै, मुंहतो पड़ै 'सुजांण'। फौजदार वरियांम भड़, 'रांमो' पड रिण-ढांण।—रा.रू.

उ०—५ भर चोघड़ चालै घरै, जठै तिसाया जीव। त्याता त्याता नीवड़ै, वरतै जळ ज्यूं घीव।—लू

नीवड़णहार, हारो (हारी), नीवड़णियो—वि०।

नीवड़िओड़ो, नीवड़ियोड़ो, नीवड़योड़ो—भू०का०कृ०।

नीवड़ीजणो, नीवड़ीजबो—भाव वा०।

नीवड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ निवृत्ति प्राप्त किया हुआ, संसार छोड़ा हुआ, देह त्यागा हुआ।

२ देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

३ देखो 'निवड़ियोड़ो' (रू.भ.)

४ देखो 'नीमड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीवड़ियोड़ी)

नीवडणो, नीवडबो-क्रि०अ० [सं० निवर्तनम्] १ पृथक होना, अलग होना। (उ.र.)

२ देखो 'निपटणो, निपटबो' (रू.भे.)

३ देखो 'नीमड़णो, नीमड़बो' (रू.भे.)

४ देखो 'निवड़णो, निवड़बो' (रू.भे.)

उ०—ते द्रव्य साचउ द्रव्य जे सुपात्रि वावि, ते काव्य जे सभाइ पढिइ ते आभरण जे हीरे चडिइ, ते सोनु जे कसवट नीवडइ, ते वैद्य जे व्याधि फेडइ।—व.स.

नीवडणहार, हारो (हारी), नीवडणियो—वि०।

नीवडिओड़ो, नीवडियोड़ो, नीवडयोड़ो—भू०का०कृ०।

नीवडीजणो, नोवडीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

नीवडियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पृथक हुवा हुआ, अलग हुवा हुआ।

२ देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

३ देखो 'नीमडियोड़ो' (रू.भे.)

४ देखो 'निवड़ियोड़ो' (रू भे.)

५ देखो 'नीवड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीवडियोड़ी)

नीवतणो, नीवतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)
उ०—तुर्द भैंसां गजां टलां सु हलाई नीठ हलै तोपां, आई 'बगतेस' कुमी न लाई आपांण। वेहू भुजां माथै खत्रीवाट री तुलाई बाजी, आउवै नीवत नै फोजां बुलाई आयांण।
—आऊवा ठा. बखतावरसिंघ री गीत
नीवतणहार, हारो (हारी), नीवतणियो—वि०।
नीवतिओड़ो, नीवतियोड़ो, नीवत्योड़ो—भू०का०कृ०।
नीवतीजणो, नीवतीजबो—कर्म वा०।
नीवतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीवतियोड़ी)
नीवांण—देखो 'निवांण' (रू.भे.)
उ०—जळ नदियां थळ ऊपड़े, थळ नई नीवांण।
—केसोदास गाडण
नीवांणो—देखो 'निवांण' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—भल आयउ भाद्रवउ नीर भरयां नीवांणो जी। गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सहगुरु करिहि वखांणो जी।—स.कु.
नीवा—देखो 'न्याव' (रू.भे.)
नीवाई—वि०स्त्री—१ उष्ण, गर्म।
२ देखो 'न्याव' (अल्पा०, रू.भे.)
नीवार—देखो 'निवार' (रू.भे.)
उ०—रूमाल के से हैनांण पनां फांकी, दूसरा ढोलिया की नीवार चोवड़ी कर नै नीची नांखी।—पनां वीरमदे री वात
नीवारणो, नीवारबो—देखो 'निवारणो, निवारबो' (रू.भे.)
नीवारणहार, हारो (हारी), नीवारणियो—वि०।
नीवारिओड़ो, नीवारियोड़ो, नीवारयोड़ो—भू०का०कृ०।
नीवारीजणो, नीवारीजबो—कर्म वा०।
नीवारियोड़ो—देखो 'निवारियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीवारियोड़ी)
नीवालूवो-वि०[देशज] निर्लज्ज, निगोडा। उ०—रहि रहि वेहनड़ी! वच न तू रोई। ले लोटीका जळ मुख धोई। फटी रे हिया! नीवालूवा, पाथरी घड़ियो के त्रीघट लोह।—बी.दे.
नीवाह—देखो 'न्याव' (रू.भे.)
उ०—नीवाह लगाया, फळ निकळाया, घोम सवाया घड़ड़ाया। 'सिरियादे' धाया, करो सहाया, मिनड़ी जाया, मफ आया।
—भगतमाळ
नीवि-सं०स्त्री० [सं०] १ स्त्रियों द्वारा कमर पर लपेटी हुई धोती की गांठ।
२ इजारबंद, नाड़ा।
रू०भे०—नीवी।
नीवी-सं०स्त्री० [देशज] १ खर्च करने के बाद बची हुई पूंजी।
२ स्थायी कोश का धन।
३ देखो 'नीवि' (रू.भे.) (डिं.को.)
रू०भे०—नीमी।
नीवेद—देखो 'नैवेद्य' (रू.भे.)
नीवेदन—देखो 'निवेदन' (रू.भे.)
नीव्रत, नीव्रति-सं०पु० [सं० नीवृत] देश (ह.नां., अ.मा.)
नीसंक—देखो 'निसंक' (रू.भे.)
उ०—ते सवि हरि सतकारिय धारिय जिम घूमंत। ताइं ओडिय कमलिनी रमळि नीसंक भमंत।—नेमिनाथ फागु
नीसत-वि० [सं० निःसत्त्व] १ कायर, डरपोक।
उ०—१ 'अरसीमेर' 'विजैसी' वळी, 'सांगउ' सिलार सलूणउ मिळी। 'जैसल' 'लखमण' लूणउ जांणि, ए नीसत नाठा निरवांणि।
—कां.दे.प्र.
उ०—२ सुहड कन्हलि अणीयालां आयुध सूर किरण झलकंति। देखी सुहड सयल रोमंच्या नीसत नासीजंति।
—विद्याविलास पवाडउ
२ शक्तिहीन, निर्बल। उ०—नीरगुण नीसत नीठर, इम मूकी नर को जाइ। प्रीत मांडी छेह दीधु, योवन दोहेलउ थाइ।
—नळ दवदंती रास
नीसरणी—देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)(अ.मा., डिं.को., उ.र.)
उ०—१ जळ निश्रित खाइ तणउ दुरग प्रवेस नहीं, हाथीयां ढोव नहीं, पाखरिया रहण नहीं, नीसरणी ठाउ नहीं, भेद संभव नहीं।
—व.स.
उ०—२ धिन मुरळी महाराज जिकां या वांणी वरणी। भोसागर की नाव मुगति की है नीसरणी।—सगरांमदास
उ०—३ प्रिथु वेलि कि पंचविध प्रसिध प्रणाळी, आगम नीगम कजि अखिल। मुगति तणी नीसरणी मंडी, सरगलोक सोपांन इळ।
—वेलि.
नीसरणो, नीसरबो-क्रि०अ० [सं० निः स्रि=निस्सरणम्] १ निगत होना, जाना (उ.र.)
उ०—सूअडउ ऊवाडइ पंजरइं एक दिवसि बाहिरि नीसरइ। ऊडी राजकुंअरि आवासि आवी बइठउ तेह नइ पासि।
—विद्याविलास पवाडउ
२ व्यतीत होना।
३ पलायन करना, भागना। उ०—१ 'जेमल'-हरा जांणता जिसड़ी, साच प्रचो पूरियो सही। बढ़ पड़ियो कागदां बचांणो, नीसरियो बाचियो नहीं।—वां.दा.
उ०—२ नाठी अगन नइ राव नीसरियउ, भड मिटिया छडे भाराथ। जावा न दइ किसी दिस जावइ, बळवंत तरइ पसारो बाथ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ भाटी नै तुरक मिळ नै आया। ताहरां रिणमल नूं कह्यो—'तूं नीसर। जे तूं जीवतो छै तो तूं म्हारो वैर लेईस।'
—नैणसी

४ गमन करना, चला जाना। उ०—ताहरां रिणधीर पागड़ौ हाथ पाय नै 'नरै' रै टीको कियो। रिणमलजी नूं कह्यौ—'जो पटौ लेवो तो पाधरो।' 'ताहरां' रिणमलजी पटौ नाकार नीसरिया। ठांसै मोकळ पाछै पड़ा। ठांसूं मोकळ रिणमलजी रो ऊजर कियो।
—नैणसी

५ चलना, निकलना। उ०—तव जादव अगुरागिय लागिय रहिया पाखि। वीटिउ प्रभु परमेसरी नीसरी न सकइ मांगि।
—नेमिनाथ फागु

६ संचरित होना, गुजरना। उ०—पणघट पर पणहार, नीर कज नीसरी। सोकळ तणै प्रमांण, क सोभा सोस री।
—सिववगस पाल्हावत

७ पास से होकर निकलना, गुजरना। उ०—कंचन म्रिग रूप मरीच कियो, सीता मुख आगळ नीसरियो। हेरे सिय एम उमंग हियो, कंतू कज लोवत नूं कहियो।—र.रू.

८ बाहर निकलना, बाहर आना। उ०—जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ वनराइ दाह। जिण रित मालवणी कहइ, कुंण परदेसां जाह।—ढो.मा.

९ प्रदत्त होना, मिलना। उ०—पातिसाह जो प्राछो रजपूत देखि परखो डील, रीभ रो मरोड़ देख नैं तीनहजारी रो मुनसब दीधी, टोड़ बताई, सिरपाव, हाथी, घोड़ो, मोतियां री माळा, किलंगी, नजर दे विदा कियो। जागीरी नीसरी। मोटै तोल में वदियो। पातिसाही मांहे नांमजादीक हुवो।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

१० पार होना। उ०—१ तुरातुर नीसरजा भवतीर, विखं विख बीसरजा वरवीर। ह्मं गुरुवायक मां वुघहार, समं निजनायक की सुग सार।—ऊ.का.

उ०—२ ताहरां पातिसाह जी पहिलो ही घोड़ो पांणी मांहे दियो, ताहरां पातिसाहजी तरि नीसरिया।—द.वि.

११ एक तरफ से घुस कर दूसरी ओर निकल जाना, छेद कर निकल जाना।

उ०—१ वह नीसरै लिलह घट वूटै, अहिवहो जांण परां लग ऊडै।
—सू.प्र.

उ०—२ इतरै पेमसिंह चांपावत वरछी री दीन्ही सो सक्तिसिंह रै परलै पासै नीसरी।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

१२ प्रयाण करना, प्रस्थान करना। उ०—महीपति सहूनि मोकळी, तेणि गांमि गांमि (क) कोतरी। सुणो स्वयंवर नीसरि, नरपति सेना परवरी।—नळाख्यांन

१३ आभासित होना।

उ०—घुहला रुधिर भकोळिया, ढीला हुआ सनाह। रावतिया मुख भाखणां, मही-क मिळियो नाह। नाह मिळियो सही विरंग रत नीसरै। अमंगां ग्रधी सिर सेज नह को करै। रीसियै 'जसै' भड़ रिमां पड़ रोळियां। भूहि भ्रम भसमरां रुधिर भकबोळियां।
—हा.भा.

१४ जन्म लेना, जन्मना।

उ०—ऊंधो मुख दस मास गरभ में, असुचि तणो पिंड बाघो रे। नीसरियो जब दुख विसरियो, मूक दीनो मरजादो रे।
—जयवांणी

१५ उत्पन्न होना, पैदा होना। उ०—किमइ निगोदह जीय नीसरइ, ववहार रासि ते जाई नय वरइ। असंत सइर तणउ करइ संहार, जीव-जीव करइ आहार।—चिहुंगति चउपई

१६ (गुप्त या दबी हुई वस्तु का) प्रकट होना।

उ०—१ तिणि नयरि जैसिंग दे राउ, नवउ खणावइ तिहा तळाव। ते खणावतां लिपि नीसरी, ते न वचाइं कुणहि खरी।
—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ इण वात रै अनंतर ही एक समय चीतोड़ में कमठांणा रो कांम चालतो कोई धातु री एक मूरति च्यारि हाथ धारण कीधां भूतळ मांहि थी नीसरी।—वं.भा.

१७ अचानक प्रकट होना, एकदम आना, निकलना।

उ०—कतराक दीहाड़ा जातां दखण दसा समंदां तट आय नीसरिया।—कल्यांणसिंह बाढेल री वात

१८ प्रकट होना। उ०—१ राजा तौं सूअर रै पाछै आय गुफा में गया। सो पाताळ लोक जाय नीसरिया।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ तरै देवी नागही कह्यो—'थे सवार रा सूता ऊठो, तरै थांहरी पाघ मांहे सूं चावळ रंगिया नीसरै तो साच कर जांणीजै।' तरै सवारै चावळ नीसरिया।—नैणसी

१९ उद्भूत होना, झरना। उ०—जठै प्रतपियो प्रगट जो, हर अवतार हमीर। नीसरतो जूहा महीं, नित निरभर नद नीर।
—बां.दा.

२० लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु का अलग होना, ओत-प्रोत या व्याप्त वस्तु का अलग होना।

उ०—अमरांणं में मेहुड़ै री पेड़, मेहुड़ा पीलीजै आछो मद नीसरै।
— लो.गी.

२१ देखो 'निकळणौ, निकळबौ' (रू.भे.)

नीसरणहार, हारौ (हारी), नीसरणियौ—वि०।

नीसरिओड़ौ, नीसरियोड़ौ, नीसरचोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीसरीजणौ, नीसरीजबौ—भाव वा०।

निसरणौ, निसरबौ, नींसरणौ, नींसरबौ—रू०भे०।

नीसरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ निर्गत हुवा हुआ, गया हुआ।

२ व्यतीत हुवा हुआ।

३ पलायन किया हुआ, भागा हुआ।

४ गमन किया हुआ, चला गया हुआ।

५ चला हुआ, विचरा हुआ।

६ संचरित हुवा हुआ, गुजरा हुआ।
७ पास से होकर निकला हुआ, गुजरा हुआ।
८ बाहर निकला हुआ, बाहर आया हुआ।
९ मिला हुआ, प्रदत्त।
१० पार हुवा हुआ।
११ एक तरफ से घुस कर दूसरी तरफ निकला हुआ, छेद कर निकला हुआ, आरपार हुवा हुआ।
१२ प्रयाण किया हुआ, प्रस्थान किया हुआ।
१३ आभासित हुवा हुआ।
१४ जन्म लिया हुआ, जन्मा हुआ।
१५ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ।
१६ (गुप्त या दबी हुई वस्तु का) प्रकट हुवा हुआ।
१७ अचानक प्रकट हुवा हुआ, एकदम आया हुआ, निकला हुआ।
१८ प्रकट हुवा हुआ।
१९ उद्भूत हुवा हुआ, झरा हुआ।
२० लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु का अलग हुवा हुआ, ओत-प्रोत या व्याप्त वस्तु का अलग हुवा हुआ।
२१ देखो 'निकळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीसरियोड़ी)

नीसांण—देखो 'निसांण' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—१ थटै सांमद्रां हाथियां पाळि थाई। उभै जम्म री जांणि जम्मात आई। घरां गुजरां देवतां क्रोध धीठां। दुवै घूमरां फील नीसांण दीठां।—सू.प्र.
उ०—२ दुसमणां री नौबत तौ पुड़ फूटोड़ै वजै छै अर नीसांण (धजाआं) रा डंड तूटोड़ा है सो हे सखी! म्हारा पती रै देख आपांण पुणचा में वधियो।—वी.स.टी.
उ—३ जोइ जलद पटळ दळ सांवळ ऊजळ, धुरै नीसांण सोर घण-घोर। प्रोळि प्रोळि तोरण परठीजै, मंडै किरि तडव गिरि मोर।
—वे[illegible]..
उ०—४ रोस कसीय घुमंती रमती। चुंवती मदन महारस चोळ। हालै घड़ नीसांण हूबाए। रिण पाखर करि नेवर रोळ।—दूदो
उ०- ५ सोफत सै लूंट लूंट सरियारी। मळ 'गोरंभ' माहातम मांण। 'सिंघ' तणा ऊपर सामियांणो। नीधसिया जस रा नीसांण।
—द दा.
उ०—६ दासी हवै न देर कर, उठ तुर उतवंग आंण। नीचो पड़ण निसांण रो, नाह मरण नीसांण।—रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'निसांणी' (रू.भे.)
उ०—मन को मूठि न मांडियै, माया के नीसांण। पीछे ही पछताहुगै, दादू खूटै बांण।—दादूबांणी

नीसांणचो—देखो 'निसांणचो' (रू.भे.)

नीसांण-देही—देखो 'निसांण-देही' (रू.भे.)

नीसांणबरदार—देखो 'निसांणबरदार' (रू.भे.)

नीसांणि—देखो 'निसांण' (अल्पा०, रू.भे.)

नीसांणी-सं०स्त्री०—१ २३ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें १३ व १० पर यति होती है और अंत में गुरु होता है।
वि०वि०—पृथक पृथक लक्षणों से इसके १२ भेद माने गए हैं।
२ देखो 'निसांणी' (रू.भे.)

नीसांणो—देखो 'निसांणो' (रू.भे.)

नीसांन—देखो 'निसांण' (रू.भे.)

नीसाट—देखो 'निसाट' (रू.भे.)
उ०—सहलां ऊपर सार में, नीसाटां वगे।खेचर भूचर देव रिक्ख, पळचर उछरंगे।—द.दा.

नीसार-सं०पु०—धुआं, धूम्र।
उ०—१ सौरंभ म्रिघमद गंध, सार घणसार सनेवत। नित नवसार संकेत, अगर नीसार उखेवत।—रा.रू.
उ०—२ तारागढ़ छायो रहै, सोर तणै नीसार। आवू जांणक ओपियो, वांणक बद्दळ धार।—रा.रू.

नीसास—देखो 'निस्वास' (रू.भे.)
उ—१ सूती सेज करै वेखासं, मोडइ अंग मूंकइ नीसास।
—ढो.मा.
उ०—२ परजापति! तूं परजळेसि, संकर सिउं कैलासि? नारायण! तूं नहीं खमइ, जउ मूंकसि नीसास।—मा.कां.प्र.

नीसासौ—देखो 'निस्वास' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ महलां मुरधर री तरसै अन तांई। तीजै पो'रां तक बीजै दिन तांई। नांखै नीसासा आसा अड़ियोड़ी। पांमर पुरुसां रै पांनै पड़ियोड़ी।—ऊ.का.
उ०—२ नीसासै क्षिति बाहरइ, असूअडै सींचाइ। पग पाछै डग आगलै, माधव मारगि जाइ।—मा.कां.प्र.

नीहंचइ-क्रि०वि०—निश्चय ही। उ०—लाख चरित्र आगइं मइं कीया। चोळी खालि दीखाल्या छइ गात। तउ पती न उबाल हो। नीहंचइ सखी! ओलिग जाईणहार।—बी.दे.

नीहट्टणो, नीहट्टबो—देखो 'निहट्टणो, निहट्टबो' (रू.भे.)
उ०—गुजरवै पोह ग्रहै सिंघ समुहो नीहट्टै। देतो परदक्षणा आव दिल्ली अरहट्टै।—नैणसी

नीहट्टियोड़ो—देखो 'निहट्टियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीहट्टियोड़ी)

नीहस—देखो 'निहस' (रू.भे.)

नीहसणो, नीहसबो—देखो 'निहसणो, निहसबो' (रू.भे.)
उ०—जमाडाढां साचवे हकाळै बळा महा जोध, नोहसै बांणासां वाढ़ गाजियो निहाव। अघायो 'उमेद' रोळै गाढ़-थभ रहै ऊभो, रोळै धाप हालियो गाढ़ै मारू राव।—हरदांन भाटो

नीरहरणहार, हारो (हारी), नीर्हरणियो—वि० ।
नीर्हरियोड़ो, नीर्हरियोड़ो, नीर्हर्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नीर्हरीजणो, नीर्हरीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।
नीर्हरियोड़ो—देखो 'निर्हरियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीर्हरियोड़ी)
नीहार-सं०पु० [सं० नीहारः] १ अंधकार, अंधेरा (डि.को.)
२ कुहरा ।
३ हिम, बर्फ, पाला ।
४ त्याग, मरना ।
५ शौच क्रिया का भाव । उ०—जिसउ गुरु तिसउ अभ्यास, जिसी दीक्षा तिसी सीख, जिसउ आहार तिसउ नीहार, जिसउं वाविदइ तिसउं लणीदइ, जिसउं कमाईयइ तिसउं प्रामीयइ ।—व.स.
नीहारी-सं०पु० [सं० निर्हारि] नगर से बाहर किसी पर्वत आदि की गुफा में किया जाने वाला अनशन, मरण ।
नीहाळणो, नीहाळबो, नीहालणो, नीहालबो—१ देखो 'निहारणो, निहारबो' (रू.भे.)
उ०—पीतारंती सज्जणां, नीहाळंती मग्ग । घण कुंभाइ-बचाहि जिउ, नावा हुवा पग्ग ।—ढो.मा.
२ देखो 'निहाळणो, निहाळबो' (रू.भे.)
नीहाळणहार, हारो (हारी), नीहाळणियो—वि० ।
नीहाळियोड़ो, नीहाळियोड़ो, नीहाळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नीहाळीजणो, नीहाळीजबो—कर्म वा० ।
नीहाळियोड़ो—१ देखो 'निहारियोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'निहाळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीहाळियोड़ी)
नीहाव—देखो 'निहाव' (रू.भे.)
उ०—मुरवां दोघ 'सरूपसी' पीळो मझज प्रभाव । अदत कपोळां नाळां वजं नीहाव ।—घिमनजी आढ़ो
नुं—देखो 'नूं' (रू.भे.)
उ०—गुरु नुं दाटियो मोहनगारो रे, सहु संघ नइ लागे छंइ रे । गुरु उपदेस घइ मुता वारु रे, भवि जीव नइ भव निधि तारु रे ।—स कु.
नुंह—देखो 'नख' (रू.भे.)
नु-सं०पु०—१ राजा जनक, विदेह ।
२ शरीर ।
३ वन, कानन ।
४ बाण ।
५ शक्ति, बल ।
६ अशक्ति, कमजोरी (एका०)
७ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—पूनगीनइ रे दांन देवा नी मति घणी, येहू योग रे सरिखा नु हइ पर-घणी । स्त्री नइ सदा रे तु पुरुस नइ सदा नु हइ, पुरुस नइ सदा रे तु नारी सदा नु हइ ।—नळ-दवदंती रास
८ देखो 'नूं' (रू.भे.)
नुई—देखो 'नवी' (रू.भे.)
नुकताचीणो—देखो 'नुकताचीनी' (रू.भे.)
नुक्ताचीन-वि० [फा०] दोष ढूंढ़ने वाला, छिद्रान्वेषी ।
नुकताचीनी-सं०स्त्री० [फा०] दोष निकालने का काम, छिद्रान्वेषण ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
रू०भे०—नुकताचीणी ।
नुकत, नुकता—देखो 'नुखत, नुखता' (रू.भे.)
नुकती-सं०स्त्री० [फा० नखुदी] बेसन से छोटी-छोटी बुंदियों के रूप में बनाया हुआ मिष्ठान्न ।
रू०भे०—नुखती ।
नुकतो-सं०पु० [अ० नुकतः] १ वह सूक्ष्म, गूढ़ व बुद्धिमतापूर्ण बात जिसे हर एक आदमी आसानी से नहीं समझ सके ।
२ लगी हुई उक्ति, चोज भरी बात, चुटकला ।
३ दोष, त्रुटि, ऐब ।
४ बिन्दी, बिन्दु ।
५ विशेष समय या अवसर जब धन खर्च करने की प्रथा है । (विवाह, मृत्यु-भोज आदि ।) उ०—थोड़ी देर अठीनै-बठीनै-री वातां हुयां रै बाद गोपाळ मीठास सूं पूछियो—'थांरै माथै कित्तोक करजो है ?' 'अंदाजन कोई तीन सौ साढ़ी तीन सौ रौ ।' 'कंई मायरो-मोसेरो अथवा नुकतो काढ़ियो हो ?' 'नहीं, आयं महीनै पचीस तीस टूटता रवै है । इण तरै साल भर में इत्ती रकम माथै हुयगी' ।—वरसगांठ
नुकरी-वि० [अ० नुकरः] १ चांदी के समान श्वेत रंग का (घोड़ा)
उ०—सुर-काज पिरोजीय केहरड़ा सज, चंपहरी महुवा चकरी । सदळी भरड़ाज भसमीयै चीत्रस, नील पीळा गुरड़ा नुकरी ।
—किसनो दधवाड़ियो
२ श्वेत, सफेद ।
सं०स्त्री०—१ श्वेत रंग की घोड़ी ।
२ चांदी ।
नुकरौ-वि० [अ० नुकरः] (स्त्री० नुकरी) सफेद रंग का (घोड़ा)
उ०—कुमेत नीला समंदा मकड़ा सेली समंद भूवर बोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळा नुकरा केला महुवा घूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्यांण पवण गुरड़ संजाव संदळी सीहा चकवा अबलख सिराजो । फेर ही अनेक रग रा घोड़ा तयार कीजै छै ।
—रा.सा.सं.
सं०पु०—१ रजत, चांदी ।
२ घोड़े का सफेद रंग ।
३ छोटा टुकड़ा, खण्ड, टूक । उ०—नुकरा नान्हां निपट खरळ कर

पीवै खोटो। पंलै भव री पाप महा ऊघड़ियौ मोटो।

—ऊ.का.

नुकळ, नुकल-सं०पु० [अ० नुक्ल] १ वह वस्तु जो शराब या अफीम लेने के बाद मुंह के स्वाद को ठीक करने के लिए खाई जाती है, गजक (डि.को.)

उ०—१ कंवर वीरमदे गैला का साथ्यां नैं अमल हाथ सूं देवै छै। घणा मनमेळू छै। ज्यां की पण मनवारयां हुवै छै। ऊणा अमलां में मिसरी हर विदामां री नुकळां करै छै, हर घोड़ां तजबीजां वांदीजै छै।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ सोनै रूपै जड़ाउ के तुंग ऐराक फूल सूं भरवाए। रस के पूर सूळूं की नुकल बांटि प्याला फिरवाए।—सू.प्र.

रू०भे०—नुकुल।

२ देखो 'नकुळ' (रू.भे.)

नुकळौ—देखो 'नकुळ' (अल्पा०, रू.भे.)

नुकस—देखो 'नुक्स' (रू.भे.)

नुकसांण, नुकसांन-सं०पु० [अ० नुकसान] १ हानि, घाटा।

उ०—१ ठाकर री नीती ही के याद आयां दै उण री भलो अर नहीं दै उण री ई भलो। इण सुभाव सूं ठाकर घणो नुकसांण में रैवतो।—रातवासो

उ०—२ दारू परदार दोहूं, है तन धन री हांण। नर सांप्रत देखो निजर, नफो अोर नुकसांण।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ, पहुंचणौ, पहुंचाणौ।

२ ह्रास, कमी।

३ बिगाड़, खराबी, विकार।

४ खराबी, दोष।

नुकीलौ-वि० [फा० नोक] (स्त्री० नुकीली] १ जो छोर की ओर लगातार पतला होता गया हो, जिसमें नोंक निकली हुई हो, नोंकदार।

२ सुंदर ढब का, सजीला, तिरछा, बांका।

नुकुळ—१ देखो 'नकुळ' (रू.भे.)

२ देखो 'नुकुळ' (रू.भे.)

नुकुळौ—देखो 'नकुल' (रू.भे.)

नुक्कड़-सं०पु० [फा० नोक] छोर, अंत, कोना।

नुक्स-सं०पु० [अ०] ऐब, दोस, खराबी, त्रुटि, कसर।

रू०भे०—नुकस।

नुखत, नुखता-सं०स्त्री० [अ० नुख्तः] ऊंट के नाक में फंसाए हुए लकड़ी के टुकड़े से जुड़ी हुई वह रस्सी जो दूसरी ओर से हांकने वाले के हाथ में रहती है। उ०—मजबूत थूंम डाचा मगर, जियां पूंछ करवत जिसा। झोखियां सिंधु नुखतां झटकि, अंध कंध राकस इसा।

—सू.प्र.

नुखती—देखो 'नुकती' (रू.भे.)

नुखतौ—देखो 'नुकतौ' (रू.भे.)

उ०—जद ए कह्या—भीखणजी! थे वैरागी वाजो नैं इण मोहला में नुखतौ थयौ तिण रा घर सूं पकवांन लाया।—भि.द्र.

नुखत्त, नुखत्ता—देखो 'नुखत, नुखता' (रू.भे.)

उ०—निठानिट्ट वैंसाड़ झाड़ै नुखत्तां। खरा भारिया भार पूतारि खित्ता। दिया भारिसा बोझ दावै विदावै। कमाळां तणी पीठ डेरा कसावै।—रा.रू.

नुगट—देखो 'निगोट' (रू.भे.)

नुगणौ—देखो 'निगुण' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० नुगणी)

नुगतौ—देखो 'नुकतौ' (रू.भे.)

उ०—१ नुगतौ बीतण रै बाद हिसाब-किताब हुग्रो। सतरै कळसी घांन सेठां नैं भराय नै बाकी रा आठ सौ रुपियां रौ खातौ पाड़ नै चौधरी अंगूठो चेप दियौ।—रातवासो

उ०—२ कहै दास सगरांम हमै तूं हूग्रो पुगतौ। किया मोकळा कांम राख खाविंद रौ नुकतौ।—सगरांम

नुगरौ-वि० [सं० निगुरु] (स्त्री० नुगरी) १ जिसने गुरु से ज्ञान न लिया हो। उ०—१ मेरे परतीत तुमारी, बचनां किया निवेरा। नुगरा नर री च्यारूं दिस फौजां, छाय रही चौफेरा। आप मेहर कर क्रिपा कीजे, प्रांण बचावो मेरा। गुरां रा वचन राख सिख हिरदै, अंतर होय उजेरा।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ० —२ देव उदासी स्वरग में, कर कर मन मैं चिंत। जम हसता है नरक में, आयौ नुगरौ मित।—स्री हरिरांमजी महाराज

२ कृतघ्न। उ०—१ खीमरा खारौ देस, मीठा बोला मानवी। नुगरा किसा सनेह, जेठी रांणा बोल्या नहीं।

—जेठवा रा सोरठा

उ०—२ आच लियां उतमंग, आयस दीठौ आवतो। रावत झरडा रंग, सत्रु नुगरौ साजियौ।—पा.प्र.

रू०भे०—निगरौ, निगुरौ, नुगुरौ।

नुगुण—देखो 'निगुण' (रू.भे.)

उ०—नुगुण मांनव नीच, सुगुणां रै मन संकवै। बुगलां रै मन बीच, भावै हंस न भेरिया।—महाराजा बळवंतसिंह, रतलाम

नुगुणौ—देखो 'निगुण' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० नुगुणी)

नुगुरौ—देखो 'नुगरौ' (रू.भे.)

उ०—तांणै तूटै तंत्र, स्राप दियौ जद सूं इनूं। मनै न कुळना मंत्र, 'वूढ़ौ' स्राप नुगुरौ विवध।—पा.प्र.

(स्त्री० नुगुरी)

नुचणौ, नुचबौ-क्रि०अ० [सं० लुंचन] १ झटके के साथ उखड़ना, एकदम खिंचना।

२ नाखून आदि से छिलना, खरोंचा जाना।

नुकणहार, हारो (हारी), नुकणियो—वि०।

नुकिवाड़ो, नुकियोड़ो, नुकयोड़ो—भू०का०कृ०।

नुकीजणो, नुकीजबो—कर्म वा०।

नुकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झटके के साथ उखड़ा हुआ, एकदम खिंचा हुआ।

२ नाखून आदि से खिंचा हुआ, एकदम खरौंचा गया हुआ।

(स्त्री० नुकियोड़ी)

नुति, नुती-सं०स्त्री० [सं० नुतिः] १ स्तुति, वंदना (डि.को.)

२ पूजा।

नुमाइस-सं०स्त्री० [फा० नुमाइश] १ नाना प्रकार की वस्तुओं का दर्शन और कुतूहल के लिए एक स्थान पर दिखाया जाना, प्रदर्शनी।

२ दिखाने या प्रकट करने का भाव, दिखावा, दिखावट, प्रदर्शन।

३ सजधज, ठाटबाट, तड़क-भड़क।

नुमाइसगाह-सं०स्त्री० [फा० नुमाइश-गाह] वह स्थान जहां नाना प्रकार की विचित्र और अद्भुत वस्तुएं कुतूहल या प्रदर्शन हेतु रखी जाय।

नुमाइसी-वि० [फा०] १ जिसमें केवल ऊपरी तड़क-भड़क हो, जिसमें कुछ सार न हो, जो किसी काम का न हो, बिना प्रयोजन का।

२ जो केवल दिखावट के लिए हो, दिखौवा।

नुमु—देखो 'नवम' (रू.भे.)

उ०—माळी कंदोई कुंभार, गांछा मरदनीआ सूत्रधार। मदसाहत तंबोळी जांणि, नुमु सोनार तूं हईइ आंणि।—नळ-दवदंती रास

नुल-सं०पु०—नेवला, नकुल (ध.स.)

नुसखो-सं०पु० [अ० नुसखा] वैद्य या चिकित्सक द्वारा रोगी के लिए औषधि और सेवन विधि लिखा हुआ पत्र या चिट।

नुहालो, नुहेलो—१ देखो 'नवेलो' (रू.भे.)

२ देखो 'नवीन' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ नो लाख कटक नोधण तणौ, चहै जिसो विधि सिध चड़ी। विरवड़ां हाट कुम्मेर री, किनां नुहालो कूलड़ी।

—हिंगळाजदांन कवियो

उ०—२ ए मा, चंप बाग में हींडो घला दे, तीज नुहेली आई। ए मा, और सहेल्यां रै घर रो हींडो, म्हारै हींडो नाही।

—लो.गी.

(स्त्री० नुहाली, नुहेली)

नूं-प्रत्य०—१ कर्म और सम्प्रदान का विभक्ति प्रत्यय, को।

उ०—१ सींहर परहर अवर नूं, मत संभरै अयांण। तरु छंडै लागी लता, परहर थे मछ प्रांण।—ह.र.

उ०—२ भगत तुम्हारा नहिं भगा, मिळै अरिजण भीम। भगति हीर्दै नो भाग्य, तो तो नूं तकझीम।—पी.ग्रं.

उ०—३ राजा गांगो नूं कहइ, बात विचारउ जोइ। आज विवाहउ चां दीकरी, हांमउ हसिसी लोइ।—ढो.मा.

उ०—४ सुण नवकोटा सोविया, असुरां कियो उछाह। राबर गई अजमेर नूं, सुणियो अवरंग साह।—रा.रू.

उ०—५ दे नह सैंधा नूं दगो, अहै कुतो ही ग्यांन। देवै सैंधा नूं दगो, साह करै सनमांन।—बां.दा.

२ तृतीया या करण तथा पंचमी या अपादान का विभक्ति प्रत्यय, से।

उ०—एहिवी वारता राय करि छि, एटलि आव्यु मुंनि। विहृदस्व तां नाम तेहि नूं, हरख्यो भूपति मंनि।—नळाख्यांन

३ चतुर्थी या संप्रदान का विभक्ति प्रत्यय, लिए।

उ०—ताहरां कह्यो—'राज! पांणी मांहि किहांण नूं आऊं।

—सयणी री वात

४ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—मुझ वैण विया तूं गणौ मत नु, परणाउं अवै न महीपत नूं। कंहजै रवि जैचंद रै कुळ रो, फिर लाऊं अ भूप अठै थळ रो।

—पा.प्र.

५ देखो 'नत' (रू.भे.)

रू०भे०—नुं, नु, नू।

नूंई—देखो 'नवी' (रू.भे.)

नूंजण—देखो 'नूंजणो' (मह०, रू.भे.)

नूंजणियो-वि०—१ दुहने के लिए गाय के पिछले पैरों को बांधने वाला।

२ देखो 'नूंजणो' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—नवजणियो, नांजणियो, नूजणियो, नैजणियो, नैनणियो, नौंजणियो, नोजणियो।

नूंजणी-सं०स्त्री०—देखो 'नूंजणो' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—नंद री धेन नैं लेहतो नूंजणो। दोहतो बैसतो चोछले दोहणी।

—रुकमणी हरण

नूंजणो-सं०पु० [सं० न्युब्जनः] १ गाय दुहते समय उसके पिछले पैरों को बांधने की रस्सी।

२ गाय दुहते समय उसके अगले पैर से बछड़े को बांधने की रस्सी।

रू०भे०—नवजणो, नांजणो, नूजणो, नैंजणो, नैनणो, नौंजणो, नोजणो।

अल्पा०—नवजणियो, नवजणो, नांजणियो, नांजणो, नूंजणियो, नूंजणी, नूजणियो, नूजणी, नैंजणियो, नैंजणी, नैनणियो, नैनणी, नौंजणियो, नौंजणी, नोजणियो, नोजणी।

मह०—नवजण, नांजण, नूंजण, नूजण, नैंजण, नैनण, नौंजण, नोजण।

नूंजणो, नूंजबो-क्रि०स० [सं० न्युब्जनम्] १ दुहने के लिए गाय के पिछले पैरों को रस्सी से बांधना।

२ गाय दुहते समय बछड़े को उसके अगले पैर से बांधना।

३ बांधना।

नूंजणहार, हारो (हारी), नूंजणियो—वि०।

नूंजवाड़णो, नूंजवाड़बो, नूंजवाणो, नूंजवाबो, नूंजवावणो, नूंजवावबो, नूंजाड़णो, नूंजाड़बो, नूंजाणो, नूंजाबो, नूंजावणो, नूंजावबो—प्रे०रू०।

नूंजिग्रोड़ो, नूंजियोड़ो, नूंज्योड़ो—भू०का०कृ०।

नूंजीजणो, नूंजीजबो—कर्म वा०।

नवजणो, नवजबो, नाजणो, नाजबो, नूजणो, नूजबो, नैंजणो, नैंजबो, नैंनणो, नैंनबो, नौंजणो, नौंजबो, नोजणो, नोजबो—रू०भे०।

नूंत—देखो 'नैंत' (रू.भे.)

नूंतणो—देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—भीड़ पलटांणा भिड़ज, नीड़ घण नाळेर। नाह! इसा घर नूतणा, आप घरां जळ दे'र।—वी.स.

नूंतणो, नूंतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

उ०—१ कजाकणि डाकणि काढ़ि कळेज। जिमावत साकणि जूह अजेज। चुडावळि नूंतत भूत पिसाच। अछे रणताळ पखाळत आच।—मे.म.

उ०—सीप भर रोळी थाळी भर मोती, मेरा भतई नूंतण म्हे गई जी।—लो.गी.

नूंतणहार, हारो (हारी), नूंतणियो—वि०।

नूंतवाड़णो, नूंतवाड़बो, नूंतवाणो, नूंतवाबो, नूंतवावणो, नूंतवावणो नूताड़णो, नूंताड़बो, नूताणो, नूताबो, नूंतावणो, नूंतावबो—प्रे०रू०।

नूंतिग्रोड़ो, नूंतियोड़ो, नूंत्योड़ो—भू०का०कृ०।

नूंतीजणो, नूंतीजबो—कर्म वा०।

नूंतार—सं०पु०[सं० निमंत्रणम्] १ निमंत्रण देने वाला.

२ निमंत्रित व्यक्ति।

नूंतारो—वि० [सं० निमंत्रित] (स्त्री० नूंतारी) निमंत्रित।

नूंतियार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

नूंतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नूंतियोड़ी)

नूंतो—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—तुळा रूपा री पांच हुई जिणरी विगत—रूपा री तुळा १, रांणा जी री रांणी परमार जी कीवी। रूपा री तुळा १ ऊदावतजी टूंक तोडा री राजा रांमसिंघ भीम री जिण री मा नूंतै आया उवां कीवी। रूपा री तुळा १ सोदै बारट केहरीसिंघ खीमराजोत कीवी। रूपा री तुळा १ पुरोहित गरीबदास रै बेटै किवी।

—बां.दा.ख्यात

२ देखो 'नैंत' (अल्पा०, रू.भे.)

नूंथर, नूंथोर—सं०स्त्री० [सं० नख+राज०थूर] नाखून में गड़ी फांस (शेखावाटी)

नूंद—सं०स्त्री०—१ हाथी के लिए भोजन सामग्री।

२ सामान।

३ भोज, गोठ।

अल्पा०—नूंदडली।

नूंदडली—देखो 'नूंद' (अल्पा०, रू.भे.)

नूंदणो, नूंदबो—क्रि०स० [देशज] स्मरणार्थ बही में लिखना, दर्ज करना।

२ अंकित करना।

३ नकल उतारना।

४ 'नूंद' की सामग्री तोलना।

नूंदणहार, हारो (हारी), नूंदणियो—वि०।

नूंदाड़णो, नूंदाड़बो, नूंदाणो, नूंदाबो, नूंदावणो, नूंदावबो—प्रे०रू०।

नूंदिग्रोड़ो, नूंदियोड़ो, नूंद्योड़ो—भू०का०कृ०।

नूंदीजणो, नूंदीजबो—कर्म वा०।

नूंदरी-बही—सं०स्त्री०यौ० [देशज] १ वह बही जिसमें खास-खास बातें दर्ज की जाती हों, अंकित करने की बही।

२ नकल रखी जाने वाली बही।

नूंदियोड़ो—भू०का०कृ०—१ स्मरणार्थ बही में लिखा हुआ, दर्ज किया हुआ।

२ अंकित किया हुआ।

३ नकल उतारा हुआ।

४ नूंद की सामग्री तोला हुआ।

(स्त्री० नूंदियोड़ी)

नूंन—१ देखो 'नूनी' (मह०, रू.भे.)

२ देखो 'न्यून' (रू.भे.)

नूंनकड़ी, नूंनकी—देखो 'नूनी' (अल्पा०, रू.भे.)

नूंनता—देखो 'न्यूनता' (रू.भे.)

नूंनी—देखो 'नूनी' (रू.भे.)

नूंपुर—देखो 'नूपुर' (रू.भे.)

उ०—कडि मणि मेहल नूंपुर रूप रहावइ पाय। पहरणि सेत्र पटउलीय कुलीय पांन न माइ।—नेमिनाथ फागु

नूंर—देखो 'नूर' (रू.भे.)

उ०—खागां नयण खतंग मझ, काजळ सार कहर। चीतालंकी चतुर रै, वदन्न वरसै नूंर।—पनां वीरमदे री वात

नूंवो—देखो 'नवो' (रू.भे.)

उ०—'ए मा! पटाका नहीं तो वै सरप वाळी टिकड़ियां-ई दिराय दै।' 'ना बेटी! नूंवै दिन घर में सरप रा सुगन कुण करै?'

—वरसगांठ

(स्त्री० नूंवी)

नूंहतणो, नूंहतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

उ०—तथा दोय जणां रै घणा काळ री वैर हुंतो। पछै हेत कीधो। तिण नै नूंहती नै जीमावा घरै ले गयो।—भि.द्र.

नूंहतणहार, हारो (हारी), नूंहतणियो—वि०।

नूंहतिग्रोड़ो, नूंहतियोड़ो, नूंहत्योड़ो—भू०का०कृ०।

नूंहतणो, नूंहतबो—कर्म वा० ।

नूंहतोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नूंहतियोड़ी)

नू-सं०पु०—१ स्त्रियों के पांव का आभूषण, नूपुर ।

२ ...।

३ ताल, तीर, नद ।

४ ...।

५ पति-पत्नी, दम्पति ।

६ स्त्री, नारी (एका०)

७ देखो 'नूं' (रू.भे.)

८ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—...पावें देव हद । वचन हमारउ मानो नू मान । कर जोड़ें ... । ... नालो, नू लायो हो वार ।—बी.दे.

नूजण—देखो 'नूंजणो' (मह०, रू.भे.)

नूजणियो—१ देखो 'नूंजणियो' (रू.भे.)

२ देखो 'नूंजणो' (अल्पा., रू.भे.)

नूजणी-सं०स्त्री—देखो 'नूजणो' (अल्पा०, रू.भे.)

नूजणो—देखो 'नूंजणो' (रू.भे.)

नूजणो, नूजबो—देखो 'नूंजणो, नूंजबो' (रू.भे.)

नूजणहार, हारो (हारी), नूजणियो—वि० ।

नूजियोड़ो, नूजियोड़ो, नूज्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नूजीजणो, नूजीजबो—कर्म वा० ।

नूत-सं०पु० [सं० नूत] १ आम्र, आम (अ.मा.)

उ०—...मकळ, चळ सुषिर, गुप्त, ...गिरात, अक्रमत । सुरभि ...ोम, घन, ..., नूत, पल्लव सुगंध, पित ।—र.ज.प्र.

२ देखो 'नेत' (रू.भे.)

नूतणो, नूतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

उ०—...रे नूतियो पधारे, वळ धारे भुज बिरद विसेस । कोयो ... 'कूंभा', मुकव बिरद गिरमेर सुरेस ।

—किसनो आढो

नूतणहार, हारो (हारी), नूतणियो—वि० ।

नूतियोड़ो, नूतियोड़ो, नूत्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नूतीजणो नूतीजबो—कर्म वा० ।

नूतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नूतियोड़ी)

नूतन-वि० [सं०] १ नवीन, नया । उ०—आया रण काम जिका ...राय । पाया तन नूतन प्राण पसाय । जिकां घजराज पचीस ...साद । जोई छवि ...ण नदी तट जाय ।—मे.म.

२ ताजा, हाल का ।

३ अनोखा, विलक्षण, अपूर्व । उ०—वैराट त्रिढ, सानन्द सिद्ध । ... ..., नूतन निराट ।—ऊ.का.

रू०भे०—नवतन, नौतन ।

नूतरणो, नूतरबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

उ०—कठई घो भैरव कठई लागो इतो वार, सगळा घो भैरव सगळां घो पैला नूतरिया ।—लो.गी.

नूतरणहार, हारो (हारी), नूतरणियो—वि० ।

नूतरिश्रोड़ो, नूतरियोड़ो, नूतरयोड़ो—भू०का०कृ० ।

नूतरीजणो, नूतरीजबो—कर्म वा० ।

नूतरियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नूतरियोड़ी)

नूतारा-सं०स्त्री०—जाति विशेष । उ० -मांछा छीपा परियटा सुइ ताई तेली मोची सतूओरा वंधारा चीतारा नूतारा कोळी पंचोळी ।

—व.स.

नूतारी-सं०स्त्री० (स्त्री० नूतारी) नूतारा जाति का व्यक्ति ।

नूतियार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

नूतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नूतियोड़ी)

नूतो—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

२ देखो 'नेत' (रू.भे.)

नून—१ देखो 'नूनी' (रू.भे.)

२ देखो 'न्यून' (रू.भे.)

उ०—१ अस्थि आप्यां दधीचि निज, मांस सिबि राजांन । ते थकी तूं नून नथी, चोतवी जूवो ग्यांन ।—नळाख्यांन

उ०—२ नून विसेस समान भाव तिहुं, प्रकृति मांय बंध्यो री । भेद अनंता तिरगुण माहीं, दुख सुख बहुत संध्यो री ।

—श्री सुखरामजी महाराज

नूनकड़ी, नूनकी—देखो 'नूनी' (अल्पा०, रू.भे.)

नूनड़—देखो 'नूनी' (मह. रू.भे.)

नूनता, नूनताई—देखो 'न्यूनता' (रू.भे.)

नूनवायो—देखो 'निवायो' (रू.भे.)

नूनी-सं०स्त्री० [देशज] लिंगेंद्रिय—विशेषतः बच्चों की ।

रू०भे०—नूंनी ।

अल्पा०—नूंनकड़ी, नूंनकी, नूनकड़ी, नूनकी ।

मह०—नूंन, नूंनड़, नून, नूनड़ ।

नूप-वि० [सं० अनूप] अद्भुत, अनोखा, अपूर्व, अनूप ।

उ०—१ रांम राजे रसा रूप रे, नेतबंधी वणे नूप रे । 'सीत' वाळो पती साच रे, रे मना जेण हूं राच रे ।—र.ज.प्र.

उ०—२ जिण जोय रद छबि हुवै जाहर, कोट कांम कांम । सुत भूप दसरथ नूप सोभा, रूप रवि कुळ रांम ।—र.ज.प्र.

नूपर, नूपुर-सं०पु० [सं० नूपुर] १ स्त्रियों के पांवों में धारण करने का आभूषण । उ०—१ देहरि दंडकळस आंमल सारा सोना तणा जळकइ । जळदिरिणि कुळवधू तणे पगि नूपुर खळकइं ।

—व.स.

उ०—२ धुनि श्रदंग धुधकटस, धुकट धुधुकटस धुकट धुर। झणणणणणण जंत्र झणकि, प्रगट झिम झिम धुनि नूपुर।
—सू.प्र.

उ०—३ चरणे चांमीकर तणा चंदाणणि, सज नूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराइत, कमळ तणा मकरंद कजि।—वेलि.

२ एक प्रकार का बाजा (डिं.को.)

३ प्रथम गुरु के गण के प्रथम भेद का नाम। (डिं.को.)

रू०भे०—नेपुर।

नूर-सं०पु० [अ०] १ कांति, दीप्ति, श्री, शोभा, आभा।

उ०—१ नूर सूर सम वदन निहावै। आपै मात रतन धन आवै। सहर गळी प्रत गळी सुहावै। गुळ वांटै त्रिय मंगळ गावै।—रा.रू.

उ०—२ धरपति लखधीर हेल हमीर, बावन बीर दुबाह। निरमळ मुखि नूर परगह पूर, सांमल सूर सगाह।—ल.पिं.

उ०—३ हिंदवा पाट रा ओट 'जसराज' हर, दळां घण थाट रा मोड़ दरसै। आट रा दुयण खतवाट रा ईखतां, वदन खतवाट रा नूर वरसै।—आईदांन सौदो

मुहा०—नूर वरणौ, नूर वरसणौ—सौंदर्य टपकना, बहुत सुंदर लगना।

२ प्रकाश, रोशनी।

उ०—तुही भेख में सूर में नूर भासै। तुही मेह कादंबणी चत्रमासै। दिपै तू घटा में छटा द्योत द्वारा। धपै तू जटा में तटा गंगधारा।
—मे.म.

३ तेज। उ०—स्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, वेढ सत्र दसमाथ विहंडण। जाहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूरकुळ-मंडण।—र.ज.प्र.

४ शौर्य। उ०—जिम कायर थरहरै, तिम तिम फैलै नूर। जिम-जिम बगतर ऊबड़ै, तिम तिम फूलै सूर।—वी.स.

५ जोश। उ०—'वखतौ' 'मांन' बिन्है रण वेळा, खगै सु भावत होळी खेळा। सूरां आपण नूर सवाई, 'मांन' तणौ उर खळां समाई।—रा.रू.

६ सच्चिदानंद, परब्रह्म, ईश्वर।

उ०—१ सतगुरु सबद वडा कुरसांणी, जिण तिण लख्या न जावै। जो लखसी कोई संत सूरमा, नूर में नूर समावै।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ दादू मन माळा तहं फेरिये, जहं प्रीतम बैठे पास। आगम गुरु थैं गम भया, पाया नूर निवास।—दादूबांणी

७ सौंदर्य, सुन्दरता, लावण्य।

उ०—जणणी जण एहड़ा जणौं, कै दाता कै सूर। नातर रहजै वांझड़ी, मती गमाजै नूर।—अज्ञात

८ रूप, स्वरूप, शक्ल।

उ०—१ क्रोधी कपटी पूर, भूंडौ दीसै नूर। घरम रौ द्वेसियौ ए, मच्छर विसेसियौ ए।—जयवांणी

उ०—२ तरै जोगी देरावर आयौ। देवराज पहलां हीज जांणियौ—'ओ कूंपा वाळो जोगी छै।' तरै निलाड़ पिण दीठी, मूंहडा री नूर अटकळियौ। देवराज आय सांम्है पगै लागौ।—नैणसी

९ नेत्र की वह शक्ति जिससे दिखाई देता है।

उ०—आवौ जी आवौ जी म्हारा सुखड़ा रा सूर। आवौ जी आवौ जी म्हारा नयणां रा नूर।—गी.रां.

१० प्रतिबिंब, बिंब। उ०—१ पारब्रह्म का सब्द विचारौ, पाप पुण्य सूं न्यारा। सब में नूर उसी का जोवौ, तौ भेटौ किरतारा।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ मांनुस देह नूर नरहर कौ, निगै करै निरखैलौ। रोम रोम में साहब सामळ, गुरु से गुरुगम लहेलौ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

११ कीर्ति, प्रतिष्ठा, सुयश। उ०—धरा जंगळ देस सुध्रम, अव-तरी इळ आय। चारणां व्रण नूर चाढ़ण, 'मेह' घर महमाय।
—खुसाळ

रू०भे०—नूर।

अल्पा—नूरौ।

नूरतौ—देखो 'नवरात्र' (रू.भे.)

उ०—प्रमदा! ताहरै प्रेम-जळ, ऊंडेरै अवगाहासि। आसौ-केरां नूरतां, नित नित ऊठी नाहासि।—मा.कां.प्र.

नूरियौ—देखो 'नौरियौ' (रू.भे.)

नूरबांणी, नूरांणी-सं०स्त्री [अ० नूरानी] १ प्रकाश, चमक, दमक।

उ०—वंके भौंह विसाळ भाळ, नीलावट नूरांणी। नैण विराजै चोळ रंग, मुख अच्छा पांणी।—गजउद्धार

२ रूप, सौंदर्य, लावण्यता।

३ मुख की आकृति, भाव।

उ०—करड़ा होय नै बोल्या—म्है तौ चरचा करवा आया नै थे दिसां जावौ छौ। उणां री नूरांणी देखनै स्वांमीजी बोल्या—आज तौ थे कजिया रै मतै आया दीसौ छौ।—भि.द्र.

नूरी-वि०—प्रकाशमान, उज्ज्वल। उ०—दादू नूरी दिल अरवाह का, तहं देख्या करतार। तह सेवक सेवा करै, अनंत कळा रवि सार।
—दादूबांणी

नूरौ—१ देखो 'नूर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ सब में नूर निरंतर देखौ, अलख अखंडी नूरा। उलट-पुलट घट प्याला पीजो, होय भरम करम सब दूरा।
—स्री हरिरांमजी महाराज

२ देखो 'नोहरौ' (रू.भे.)

उ०—हद बेहद वांणी नहिं, खांणी, सुंन असुंन नहीं धारा। जोत अजोत निरमळ नहिं नूरा, स्वप्रकास भरपूरा।
—स्री हरिरांमजी महाराज

नूवी—१ 'नवमी' (रू.भे.)

२ देखो 'नवी' (रू.भे.)

नूंरो—देखो 'नूरो' (रू.भे.)
(स्त्री० नूंरी)
नूह-सं०पु० [ग्र०] इस्लामी या इबरानी मतों के अनुसार एक पैगम्बर।
नेंडो—देखो 'निमड़ो' (रू.भे.)
ने-सं०पु०—१ कुत्ता, स्वान।
२ पवन।
३ तेज, पशु।
४ नदी (एका०)
५ देखो 'नै' (रू.भे.)
नें—देखो 'नेण' (४,५, रू.भे.)
नेंदड़ो-सं०पु० [देशज] १ जलाशय में उसकी क्षमता से ग्रधिक जल ग्रा जाने पर बाहर निकलने वाला जल।
२ वह स्थान जहां से जलाशय में ग्रधिक ग्राने वाला जल बाहिर निकलता हो।
३ देखो 'नेठो' (रू.भे.)
रू०भे०—नेहड़ो, नेंहड़ो।
नेघड़ो—देखो 'निमड़ो' (रू.भे.)
नेघर—देखो 'नेवर' (रू.भे.)
उ०—कण्ठ सिंगार मार गळइ हार, चरणे नेघर ना झमकार। सिणगारिइ ति कुच कठोर, पड़ती रसीग्रां चित्त चकोर।
—प्राचीन फागु-संग्रह
नेउग्रो-वि० [सं० नवति] (स्त्री० नेउग्री) जो नवासी के बाद पड़ता हो, नब्बेवां।
नेउर—देखो 'नेवर' (रू.भे.)
उ०—१ हंसा-गति तणी ग्रातुर थया हरि सूं, वाघाळपा जेही वहै। सू पाग्रास ग्रनै नेउर सद, क्रमि ग्रागं ग्रागमन कहै।—वेलि.
उ०—२ गुण देखी राचइ सहु को, ग्रवगुण राचइ न कोई रे। हार मकी हियडइ धरइ, नेउर पायतळि होय रे।—स.कु.
उ०—३ हार निगोदर वहिरणा, सरी नेउर रणझणकार कि।
—कां.दे.प्र.
उ०—४ गुरां नेउरां पायरां नाद गुल्लै। तिको वाह री इंद्र रै नाह तुल्लै।—वं.भा.
नेउरिया—देखो 'नौ'रा' (ग्रल्पा०, रू.भे.)
नेउरियो—देखो 'नौरियो' (रू.भे.)
नेउरी—देखो 'नेवर' (ग्रल्पा., रू.भे.)
उ०—१ टोळी टोळी पडइ कराति, नीर प्रवाह वहइ जिम भ्रांति। एक पाइइ पहिरण सूंथणी, पाए नेउरी माजइ घणी।
—कां.दे.प्र.
उ०—२ नर धरंती नेउरी, कटि मेखळि उरि हार। कंठि निगोदर पहिरणी, पंरराळी ग्रनिमार।—मा.कां.प्र.
नेउल—देखो 'नकुल' (रू.भे.)

उ०—सिव हिरण हिळ-मिळ रहै हो, नेउल मेळा नाग। चित्रकूट रघुवर रमै हो, जिण रा मोटा भाग।—गी.रां.
नेउ-वि० [सं० नवति] जो सौ से दस कम हो, जो योग में नवासी ग्रौर एक हो, नब्बे।
सं०पु०—पचास ग्रौर चालीस की संख्या के योग का ग्रंक (९०)
रू०भे०—नवै, नव्वे, नवे, नयं, निऊ, निवे, निव्वे, नियै, नेवै।
नेऊंक-वि०—नब्बे के लगभग।
रू०भे०—नेवैंक।
नेऊमों-वि० (स्त्री० नेऊमीं) नब्बे वां।
सं०पु०—नब्बे वां वर्ष।
रू०भे०—नेवो।
नेऊर—देखो 'नेवर' (रू.भे.)
नेऊरी—देखो 'नेवर' (ग्रल्पा०, रू.भे.)
नेक-वि० [फा०] १ सज्जन, शिष्ट।
उ०—१ बांका चौथा चरण में, ग्रंतज ग्राखर एक। उण सूं ग्रळगो राखही, नर बुधवंता नेक।—बां.दा.
उ०—२ बद सं तो बद बसै, नेकां पासै नेक। मन तो सारीसा मिळै, ग्रा लोकोक्ती एक।—ऊ.का.
२ ग्रच्छा, उत्तम, भला।
उ०—'पतो' 'माल' गढ़ पुरस रा, वळिया भुज वरियांम। दांतूसळ गढ़ दुरदरा, नेक उबारण नांम।—बां.दा.
३ ईमानदार।
यौ०—नेकचलण, नेकचलनी, नेक-नांम, नेकनांमी, नेक-नीयत, नेक नीयती।
नेकचलण, नेकचलन-वि० यौ० [फा० नेक चलन] ग्रच्छे चाल-चलन का, सदाचारी।
ज्यूं—वडो नेक चलण ग्रादमी है।
नेकचलनी-सं०स्त्री०यौ० [फा० नेक+सं० चल्] भलमनसाहत, सदाचार
नेकनाम-वि०यौ० [फा० नेकनाम] जिसका नाम विख्यात हो, कीर्तिवान्, यशस्वी।
नेकनांमी-सं०स्त्री०यौ० [फा० नेकनामी] १ ईमानदारी।
ज्यूं—ग्रापरो कांम नेकनांमी सूं करै है।
मुहा०—नेकनांमी राखणी—ईमानदार होना, सच्चाई रखना।
२ सुयश, कीर्ति, नामवरी।
नेकनीयत-वि० [फा० नेक+ग्र० नीयत] जिसका ग्राशय या उद्देश्य ग्रच्छा हो, ग्रच्छे विचार का, भलाई का विचार रखने वाला, उदाराशय।
नेकनीयती-सं०स्त्री०यौ० [फा० नेक+ग्र० नीयत+रा.प्र.ई] १ सच्चा ग्रौर ईमानदार होने का भाव, ईमानदारी।
ज्यूं—नेकनीयती सूं रैणो।
२ ग्रच्छा संकल्प, भला विचार।

नेकर-सं०पु० [अं०] १ बड़ी व खुली मोरियों का कमर से घुटनों तक लंबा, पतलून के समान सीया जाने वाला एक प्रकार का वस्त्र जो प्राय: बालकों और पुरुषों द्वारा पहना जाता है।

सं०स्त्री०—२ हल के पीछे के भाग में निकले हुए हरीसा के छिद्र में फंसाई जाने वाली कीली जिससे हरीसा बाहर नहीं निकल सके।

रू०भे—निकर।

अल्पा०—नेकरियौ।

नेकरियौ—देखो 'नेकर' (अल्पा०, रू.भे.)

नेकाळ—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)

उ०—विचार बुद्धि बळ पूरा राखता होय पैसांर बेकाळ लड़ाई रा जांणता होवै।—नी.प्र.

नेकाळौ—१ देखो 'निकाळ' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'निकाळौ' (रू.भे.)

नेकी-सं०स्त्री० [फा०] १ सज्जनता, सौजन्य।

उ०—सत संतोख ग्यांन मोख, नेकी आदरणा।

—केसोदास गाडण

२ भलमनसाहत, भलाई, सद्व्यवहार।

उ०—१ सब चलै वैकुंठ कूं जग नेकी लारा।

—केसोदास गाडण

उ०—२ बद सदी बदी नेकी निहार। देखेंगे दोजख बस्ति द्वार।

—ऊ.का.

३ ईमानदारी। उ०—क्रम क्रम तीरथ कीध, धन ध्रम नेकी धारणा। लेटे लाहौ लीध, मिनख जमारै मोतिया।

—रायसिंह सांदू

नकीबंध-वि० [फा. नेकी+संबंध] भला, उदार, सज्जन।

नेखम-वि० [देशज] १ दृढ़, स्थिर। उ०—हरि का सुदरसण 'मांन' का कुरु नाथ। प्रतंग्या के भीसम से नेखम भाराथ।—रा.रू.

२ स्थायी।

३ सीमा पर गाड़ा हुआ पत्थर जिससे सीमा का भान हो।

नेखवा-वि० [अ० नेक-ख्वाह] शुभचिंतक। उ०—चढै कुदरती हुकमती असलिजद्दा, चढै दौलती नेखवा हुकम वंदा।—गु.रू.बं.

नेग-सं०पु० [सं० णिजिर् शौच पोषणयोः] १ सम्बन्धियों, आश्रितों तथा कार्य वा कृत्य में योग देने वाले लोगों को विवाह आदि शुभ अवसरों पर कुछ दिए जाने का नियम, देने, पाने का हक या दस्तूर।

उ०—तूटै कमळ बहै वळ तेगां, नेगी त्रपत करण रिण नेगां। पहिले घकै पांच सौ पड़िया, मुगळां प्रांण चकासे मुड़िया—रा.रू.

मुहा०—नेग लागणौ—रीति के अनुसार कुछ देना, जरूरी होना, पुरस्कार देना, आवश्यक होना।

२ विवाह आदि शुभ अवसरों पर सम्बन्धियों, नौकरों, चाकरों तथा नाई बारी आदि काम करने वालों को उनकी प्रसन्नता के लिए दी जाने वाली वस्तु या धन, बंधा हुआ पुरस्कार, बख्शिश, इनाम। उ०—पौळ-प्रवाह करै पग पूजन, बडा अवास छौळ द्रव वेग। सिंधुर सात दोय दस सांसण, नागद्रहै दीधा इण नेग।

—बारूजी सौदौ

यौ०—नेग-दापौ।

रू०भे०—नेवग।

नेगट-सं०पु० [देशज] 'तरवण' नामक पौधे के बीज जो दवाई के काम आते हैं।

नेगदार-सं०पु० [सं० नेग+फा० दार] नेग पाने वाला व्यक्ति।

उ०—मांणिकचंदजी की जांन उदैपुर आई छै। कलावत भगतण्यां गावै छै। नेगदार नेग पावै छै।

—बगसीरांम प्रोहित री वात

नेगधर [सं०] सं०पु०—विवाहादि शुभ अवसरों पर रीति के अनुसार पुरस्कार या दस्तूरी लेने वाला व्यक्ति। उ०—रख पिता पाट 'धूहड़' सुराय। खाग री खाटियौ आप खाय। नृप 'रोहड़' हूंता मांग लीन। नेगधर कियौ मीसण नवीन।—पा.प्र.

नेगवीन—देखो 'नैंगवीन' (रू.भे.)

नेगायण-वि० [सं० नेग+रा.प्र. आयण] नेग लेने वाला, नेग लेने का अधिकारी।

उ०—प्रोयत सुण्यौ नह पोळ, नह हुतौ कोई नेगायण। आदू घरवट रीत, पीळा आखती डूमायण।—धरजुणजी बारहठ

नेगी-वि० [सं० नेग+रा.प्र.ई] १ नेग पाने वाला या नेग पाने का हकदार।

उ०—१ सु रावळ साथै महिपो जैतुंग कोल्हा रौ बेटो साथै हुतौ, तिण रै पइसा था, सु उणरा पइसा खरच तालीको करायौ और ही इणै पईसौ टकौ सारां नेगियां-लागदारां नूं दियौ।

—नैणसी

उ०—२ तूटै कमळ बहै वळ तेगां, नेगी त्रपत करण रिण नेगां। पहिलै घकै पांच सौ पड़िया, मुगळां प्रांण चकासै मुड़िया।

—रा.रू.

२ देखो 'नेवगी' (रू.भे)

(स्त्री० नेगण)

३ देखो 'नैंगी' (रू.भे.)

नेड़ी—देखो 'नेहड़ी' (रू.भे.)

उ०—ताखी ताख तमांम पीनणी अर पुसळाई। नेड़ी थेड़ी तणी जाळ वसतुवां वणाई।—दसदेव

नेचा—देखो 'नीचे' (रू.भे.)

उ०—आइ नै पछोतरां नेचा ऊभौ रह्यौ। माहे खीवौ सूतौ छै जागै छै।—चौबोली

नेचौ—देखो 'नैचौ' (रू.भे.)

नेज—देखो 'नेजो' (रू०, रू.भे.)

उ०—सांमत सांमद घमसांणो, पग नेज फरक्के ।

—वी.मा.

नेजबंद, नेजबंधी-वि० [फा० नेज+सं. बंध] भाला रखने वाला, योद्धा ।

उ०—१ सूर मन नेज मजबूत धीरम सरम, लिख सुरक्ष जेज न धरी [illegible] । नेजबंध वेहू योद्धाह कोटां नवा, धधा सुद्ध-मेज धरणी [illegible] ।—[illegible] आढ़ो

उ०—२ [illegible] बलाढ़ा जोर लहै वेहूं धाम लागा, भाळाळा [illegible] जोग गेग दे मगाग । रोसाळा रढाळा वेहूं धोम भाळ [illegible], नेजबंधी भाळाधारा दूटे काळा नाग ।

—चतुरोजी सिढ़ियो

नेजबाज—सं०स्त्री० [फा० नेज+बाज] एक प्रकार की बंदूक ।

उ०—छूटै [illegible] रजरा फळा फायां वेग सोहां छेदै, भाघ पाव तोर मळे मपातां मजूक । कड़के निघातां हाक जेहड़ी कपीसो कीसो, गजे माघोसींग हाथां एहड़ी बदूक पूर । छाती पाड धार मोगाड [illegible] दळां, मजार वारां ही टोहै घटा ज्यूं भप्राज । प्रळैकाळ रूपी [illegible] हजारां सभोहै पैला, नंद 'ग्रमरेस' भुजां सोहै नेजबाज ।

—माघोसिंह सीसोदिया रो गीत

वि० [फा० नेज़ा बाज़] नेजा या भाला चलाने वाला बरछैत ।

उ०—धोम पीठ भोम भार घूमें पड़ा नाग काळा, वरै माळां लूंवै रंभां रंभ पाळा वेम । बाजतां नंबाळां के करमाळां भाळां बीच, नेजबाजां नराताळो 'संभरी' नरेस ।—हुकमीचंद सिढ़ियो

नेजम—देखो 'नेजो' (मह०, रू.भे.)

उ०—धरै जुध मांगळिया भड़ धूत । हुसै दळ मारण नंजम हूंत ।

—सू.प्र.

नेजरूप—सं०पु० [फा० नेज:+सं० रूप] बरछो (डि.नां.मा.)

नेजाइत—देखो 'नेजायत' (रू.भे.)

उ०—नेजा न संग नेजाइतां, न को संल पाई दळां ।

—गु.रू.बं.

नेजादाऊजी, नेजादायजी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का पुष्प (ग्र.मा.)

नेजाबरदार-सं०पु० [फा० नेज:बरदार] १ राजा-महाराजाओं की ध्वजा, निशान ग्रादि लेकर चलने वाला ।

२ भाला लेकर चलने वाला ।

नेजायत-वि० [फा० नेजा+रा०प्र० ग्रायत] १ ग्रपना खुद का झंडा रखने वाला, वीर, योद्धा । उ०—ग्रनंग लपेटा बंध गजकध तोड़ण भपट, तेण धारक मगज साग तेरा । निहंग उतोळ भड़ राहि नेजायतां, सदा मड़दायतां धाहि 'सेरा' ।

—राठोड़ सेरसिंह मेड़तिया रो गीत

२ भालाधारी, वीर । उ०—ग्रोड़ं ऊधट जोम ग्रलोलो । नेजायतां हगे विच नीलो ।—सू.प्र.

रू०भे०—नेजाइत ।

नेजाळ—१ देखो 'नेजाळो' (मह०, रू.भे., डि.को.)

उ०—पड़ियो नेजाळ विडै पाटरियै, भगवट वाट न कम भरिया । 'मजमल' तणै तड़ग रै ग्रोजै, ग्रधिपति मोठा ऊबरिया ।

—ग्रजा राजपरोत झाला रो गीत

२ देखो 'नेजो' (मह०, रू.भे.)

उ०—बगतर सहित ऊदळइ बरंगा, घीव पड़ह नेजाळ घड । भाजइ भिगिट ग्ररी चा भिडता, घाय रमाडइ ति विध घड ।

—महादेव पारवती री वेलि.

नेजाळो-वि० [फा० नेजः+स० ग्रालुच्-प्रत्यय] १ भाला रखने वाला, वीर, योद्धा (डि.को.)

उ०—१ ग्रमां सूं धाड़ो करै, टोळा सै है तळाह । काफर जो ग्रायो कदन, लारै नजाळाह ।—पा.प्र.

उ०—२ बागां नेजाळा कजाक बीर वैताळा बाहा क बागा, माळा काज बागा डाक डमरू महेस । हाथियां मदाळां काळां बाथियां जे संग हूंता, बांध चाळां नराताळां बागो 'बगतेस' ।

—पहाड़ खां ग्राढ़ो

२ (खुद का) झंडा रखने वाला, वीर, योद्धा ।

उ०—रोळा कराळा भाळा ग्रताळा विछूटै बांण, तड़ रोत्रपाळा मंडै वैताळा तमास । मदाळा दताळा काळ नेजाळा सुंडाळा माथै, बांध चाळा 'कीता' धाळो ग्राछटै बांणास ।

—राजा रायसिंह झाला रो गीत

मह०—नेजाळ ।

३ देखो 'नेजो' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

नेजो-सं०पु० [फा० नेज:] १ झंडा, पताका (डि.को.)

उ०—१ धरती म्हारी म्हैं धणी, ढाहण नेजां ढल्ल । किमकर पड़सी ठाकुरां, ऊभा सीहां खल्ल ।—वी.स.टी.

उ०—२ पग पग नेजा पाड़िया, पग पग पाड़ी ढाल । बीबो पूछै खान नूं, जग केता 'जगमाल' ।—वी.मा.

२ भाला (डि.को.)

उ०—नेजा खासा तोग नवळ्ळति । पह दीघा मो विनां दिलीपति । सो ऊजाळा कहं कसि सारां । भिड़ज वधै ग्रोरू गज-मारां ।

—सू.प्र.

३ बरछा ।

४ देखो 'नोजा' (रू.भे.)

ग्रल्पा०—नेजाळो ।

मह०—नेज, नेजम, नेजाळ ।

नेट, नेटि, नेठ-सं०पु० [देशज] १ मर्म, भेद, थाह ।

उ०—राजा घरै ग्रायो, सिंगार मंजरी क्षिप्रा माहे स्नान करि ग्रग्नि-प्रवेस कियो, राजा विचार करियो इण वात रो नेट लेणो ।

—सिंघासण बत्तीसी

२ निश्चय । उ०—१ सुगुण सुग्यांनी स्वामि नें जी, स्यूं कहियइ

समझाइ। पण प्रभु सूं विनती पखैं जी, नेट ए कांम न थाइ।
—ध.व.ग्रं.

उ०—२ वैर वण वालीयै, राज तौ वयुं रही। नेट सूरी हणै, तो असुर आवै नहीं।—रुखमणी हरण

क्रि०वि०—१ अन्त में, आखिर में।

उ०—१ दादू सब ही वेद पुरांण पढ़ि, नेटि नांम निरधार। सब कुछ इनहीं मांहि है, क्या करियै विस्तार।—दादूबांणी

उ०—२ इसी बातां सुण देवीदास री बहू मन मां राखी। विचारियो, आंख्यां देखी पछै कहीस। नेट गोली री बात छै। मांनणी न आवै।—पलक दरियाव री वात

उ०—३ अर कुंवरजी नूं इसा खुस किया जे रच रहिया। नेट दिन आडा पड़ता गया तीसूं वात बिसारै पड़ती गई।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ बिल्कुल, निपट। उ०—१ तुंकारो काढै तुरत, मुंह मुलाजो मेट। कुळ उत्तम जनम्यां किसुं, नीच कहीजे नेट।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ सहू भूत प्रेत ग्रह व्हे समा, सुपात्रे व्हे धरमसी सही। देखिज्यौ दांन दीधो थको, नट कठै निस्फळ नहीं।
—ध.व.ग्रं.

उ०—३ चातक ! तुं तक चूकिउ, ईहां म आवी बोलि। मरडी नांखिसि मुंडडी, हुं छउं नेट निटोलि।—मा.कां.प्र.

३ नहीं तो। उ०—पाछा घिरियां पछे राव 'सेखै' 'वीकै' जी नूं कहायौ— जे थे कोट परं नै कोस पांच सात मांडो नेट अठै थां सूं उपद्रव होयवा करसै।'—नापै सांखलै री वारता

४ देखो 'नीठ' (रू.भे.)

उ०—नवाब पाछली कांनी डेरां में जाय पड़ियो सो लूट लीन्हा नेट घण जीपै देख बखतसिंह जी बागा झाल अमरावां काढिया सो 'रेयां' आइया।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

नेठवणो, नेठवबौ-क्रि०स० [सं० निष्ठा] १ प्रकट करना।

उ०—सिव तिण वार पनांग साहियइ, वंगाळी दाखवइ वळ। उण वेळा सिवरइ मुंह आगळ, दूजा कुण नेठवइ वळ।
—महादेव पारवती री वेलि

नेठवणहार, हारौ (हारी), नेठवणियौ—वि०।

नठविग्रोड़ौ, नेठवियोड़ौ, नेठव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नेठवीजणौ, नेठवीजबौ—कर्म वा०।

नेठवियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्रकट किया हुआ।

(स्त्री० नेठवियोड़ी)

नेठा, नेठाउ, नेठाव, नेठाह-सं०पु० [सं० निष्ठा] धीरज, संतोष, धैर्य।

उ०—१ वीधिउ मन रखि नवमइ नवमइ निज नेठाउ। देई दांन संवत्सर मत्सर मिल्हिय नाहुं।—नेमिनाथ फागु

उ०—२ किण विध सूतो कंय निसंक निठाव सूं। व्रधा विसायर वैर, रिसायळ राव सूं।—सिववगस पाल्हावत

उ०—३ निहकंप कवीर, मींडकी पाव परमोद नामतेव नेठाव। धूंधळीमल ध्यांन, रहित रैदास औघड़नाथ अघट।—ह.पु वा.

उ०—४ असंख सेन स्राई सहू ग्रासिया एकठा, साथ विरळा सूहड़ चीत सूधै। 'चंद' गढ़ साहता निमी अहंकार चित, राखता निमी निठाव रूधे।—राव चंद्रसेण मालदेवोत राठौड़ री गीत

रू०भे०—नेठौ, नैठाव।

नेंठौ-सं०पु० [सं० नष्ट] १ समाप्त होने का भाव, समाप्ति, अन्त।

क्रि०प्र०—आंणणौ, आणौ।

२ छोर, सिरा।

रू०भे०—नेग्रटौ।

'नेठौ—देखो 'नेठाव' (रू.भे.)

नेत-सं०पु०—१ भाला (डि.को.)

उ०—१ करण अखियात चढियौ भलां काळमी, निहावण वयण मुज बांधिया नेत। पंवारां सदन वरमाळ सूं पूजियौ खळां किरमाळ सूं पूजियौ खेत।
—वां.दा.

२ झंडा, ध्वज, पताका। उ०—जिन्हैं साहि राजा जिन्हैं नेत बांधै। वणी फौज देखै घणी सोह वाधै। जैजैकार जीहा हरीरांम जप्पै। असव्वार हूआ मुंछां पांणि अप्पै।—वचनिका

३ मर्यादा। उ०—इम राज करे अजनंद अयोध्या, नेतवंधो निखतंत। जंगा जीत तपोवळ जालम, ओप वडै अखडैत।—र.रू.

यौ०—नेतबंध।

४ देखो 'नियति (रू.भे.)

५ देखो 'नीयत' (रू.भे)

६ देखो 'नेति' (रू.भे.)

७ देखो 'नेत्र (रू.भे.)

उ०—१ मारू देस उपन्नियां, तांह का दंत सुसेत। कूंझ-बचां गोरंगियां, खंजर जेहा नेत।—ढो.मा.

उ०—२ सिरोरुह कोसेय काळा सरीखा। तियो आंक भू बांकड़ा नेत तीखा। भर्ग भाळ सिंदूर ज्यों ज्वाळ झाळा। मुद्राळी गळै हिंडुळै मुंडमाळा।—मे.म.

८ देखो नेतरौ' (मह., रू.भे.)

उ०—पातसाह अणथाह, कोप जळ थाह न कोई। रतन रूप सुर धरम, गिळण हटियो अन्याई, इद्र जही आरंभ, कीध प्रारंभ सकज्जां। सुर समाय जिम हाथ, बाथ ओडी कमधज्जां। कर मेर अकब्बर साह नूं, सेस जोस नेते सरू। सुरतांण महण हीलोळियौ, दुरगदास आसंगरू।—रा.रू.

नेतड़े-क्रि०वि०—निश्चय ही। उ०—साथि 'जसवंत' रै सांव बहु सम चड़ो। गाविजै नेतड़ै रोहड़ 'गांगड़ो'।—हा.झा.

नेत्रत्रण-सं०पु० [सं० त्रि-नेत्र] शिव, महादेव।

उ०—करे चख नाहर राहर केत। नेत्रत्रण भाळ डरै निस-नेत। अंबाइण आदक और अनेक। हिचै रण देकण दू वधि हेक।—मे.म.

नेतबंध, नेतबंधी-सं०पु० [राज० नेत (=मर्यादा)+सं० बंध] १ मर्यादा बांधने वाला, मर्यादा रखने वाला।

उ०—[illegible] सूरज [illegible], [illegible] सूर समाद। [illegible] नेतबंध रघुनाथ।—र.ज.प्र.

२ [illegible] वाला, छत्रधारी, योद्धा, वीर।

उ०—१ [illegible] मांजिया सनाथो। मांजा [illegible] हद [illegible]। [illegible] जनदाड़, सेल [illegible]। [illegible] नेतबंध 'जैत' निहारया।

—मे.म.

उ०—२ नेतबंध नीमु [illegible], 'जोध' नहं आवियो जुध। हाथां [illegible] 'राम' [illegible], [illegible] भीत करियो कहुथ।

—रावत चूंडा लाखावत सीसोदिया रो गीत

३ राजा, नृप।

रू०भे०—नेतबंध, नेतबंधण, नेतबंधी, नेत-बंध, नेतबंधा।

नेतर—देखो 'नेत' (रू.भे.)

उ०—१ [illegible] पण श्रोड़ै। प्रमुदा आलय विण प्रमदालय पोढ़ै। भुर भुर कुरजांणो उरजा सुक झड़कै। तीखा नेतर री [illegible] मे तड़कै।—ऊ.का.

उ०—२ [illegible] रा नेतरो री पल उघड़ी। किनां प्रळैकाळ को [illegible] जाव पड़ि।—पनां वीरमदे री वात

२ देखो 'नेतरो' (मह०, रू.भे.)

नेतरो-सं०पु० [सं० नेत्रं] १ मथ दण्ड को घुमाने की रस्सी, मन्थन-रज्जु।

२ गाय दुहते समय उसके पिछले पैरों को बांधने की रस्सी।

रू०भे०—नेतो, नेत्रो।

मह०—नेत, नेतर।

नेता-सं०पु० [सं० नेतृ] १ अगुआ, नायक। उ०—लेतो कर कर लाड, दूसरां हूंस हूंस देतो। नेता हूग्यो नाम, बणायो पूरो बेतो।

—ऊ.का.

२ स्वामी, प्रभु, निर्वाहक। उ०—निज नेता री भव भव में भूंडी [illegible] नेता बिण [illegible] ऊंडी। बनुग बीजांकुर विध विध [illegible]। [illegible] सुर आसुर विध विध निमतारै।—ऊ.का.

३ देखो—'नित्र' (रू.भे.)

उ०—देवी [illegible] मैना ममेता, देवी नेतना तप्पना जया [illegible]। देवी [illegible] कांम कांमा, देवी रेणुका सम्मळा रांम [illegible]।—दे.दि.

अल्पा०—नेतो।

नेति-सं०स्त्री० [सं० नेति] १ अनन्तता सूचित करने वाला एक वाक्य जिसका अर्थ है 'इति नहीं' अर्थात् 'अंत नहीं है', अपार। ईश्वर या ब्रह्म के लिए यह वाक्य प्रयुक्त होता है।

उ०—आदि मन आदेस, नेत आदेस नरेसर। अलख तूझ आदेस, अगम आदेस अनंतर। एक तूझ आदेस, जगत-पति तूझ जोगेसर। निरविकार आदेस, नेति अ देस नरेसर। ॐ नमो आदिस आदेस तूं, कहै ईसर जंपै गुणी। आदेस अलख इक तूझ तूं, नमो नाथ त्रिभुवनधणी।—ह.र.

२ देखो 'नेत' (रू.भे.)

उ०—रहहि सोह ज्यूं सोह कळोधर, निडर निहसियो वांधै नेति। राड़िया दळ देखे नह राड़ियो, राड़ियै दळि लड़ियो रिणरेति।

—नाहरखांन किसनदासोत रो गीत

नेती-सं०पु०—१ राजा, नृप (अ.मा.)

२ देखो 'नीति' (रू.भे.)

उ०—प्रगट सूं प्रकट गुप्त सूं गुप्ता, आतम अज अवांणी। हेती नेती वर्ण विसरै, अधिस्ठांन चित जांणी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

नेतीधोती-सं०स्त्री०—कपड़े की एक लम्बी धज्जी को मुंह से निगल कर पेट की आंतें साफ करने की हठयोग की एक क्रिया।

नेतो—१ देखो 'नेतरो' (रू.भे.)

उ०—कर नेतो क्रम रद कठण, दोयण दहि घण दड्ढ। विलोवणो रण नू बिलो, कत चरबी घ्रत कड्ढ।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'नेता' (अल्पा०, रू.भे.)

नेत्र, नेत्र, नेत्रड-सं०पु० [सं० नेत्रं] १ आंख, चक्षु, लोचन (ह.नां.)

उ०—जसराज रा वचनां में मीणा रो इसो अधरम जाणि नेत्रां में जळ आंणि कुमार कहियो—चोड़ै चढ़ चाल्यां इसड़ा अनरथ रा करणहार अत्यज पुळियार होइ जीवता रहो जावै।—वं.भा.

२ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र विशेष (व.स.)

३ एक प्रकार की लता व उसका फल।

उ०—नेत्र निहाली नीलूद, नलिनी नागरवेलि। नहीं नवीनीं नींद्रारडी, नागफणी गुण-गेलि।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—नेत, नेतर।

४ देखो 'नेतरो' (मह०, रू.भे.)

नेत्रज-सं०पु० [सं०] आंसू, अश्रु।

नेत्रजगदीस्वर-सं०पु० [सं० नेत्रजगदीश्वर] सूर्य जो कि परमेश्वर का नेत्र रूप है (डिं.को.)

नेत्रजळ-सं०पु० [सं० नेत्रजल] आंसू, अश्रु।

नेत्रजूंण, नेत्रजोनी-सं०पु० [सं० नेत्रयोनि] १ इन्द्र।

वि०—गौतम के शाप से इन्द्र के शरीर पर सहस्र योनि चिन्ह बन गये थे जो बाद में नेत्र रूप में परिवर्तित हो गए।

२ चन्द्रमा, चन्द्र। (नां.मा.)

वि०वि०—चंद्रमा अत्रि की आंख से उत्पन्न हुआ माना जाता है।

नेत्रपट्ट [सं०] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र विशेष। उ०—मेघा-डंबर नेत्रपट्ट गोत पट्ट राज पट्ट गज पट्ट गजवड़ि।—व.स.

नेत्रपालवणी-सं०स्त्री०—डिंगल का गीत छंद विशेष।

वि०वि०—देखो 'झड़लुपत'।

नेत्रवंध, नेत्रवंधण, नेत्रवंधी—देखो 'नेतवंध' (रू.भे.) (र.ज.प्र.)

उ०—१ मारको अभंगनाथ राजवी मसंद 'लाखो'। नेत्रवंध नखत्रेत जादवां नरेस 'लाखो'।—ल.पि.

उ०—२ दूसरो खेंग दूवाह रूकहथो रिमां-राह नेत्रवंधी नर-नाह। —ल.पि.

नेत्रवाळो-सं०पु० [सं० वाल] एक प्रकार की क्षुप जाति की वनौषधि जो सिंध (पश्चिमी पाकिस्तान) पश्चिमोत्तर प्रदेश पश्चिमी प्रायः-द्वीप लंका आदि देशों में बाहुल्यता से पाई जाती है। यह औषधि के प्रयोग में लिया जाता है। (अमरत)

रू०भे०—नेत्रवाळो, नैत्रवाळो।

नेत्रभाव-सं०पु०यौ० [सं०] केवल नेत्रों की चेष्टा द्वारा संगीत या नृत्य में सुख दुख का बोध कराया जाने वाला भाव।

नत्रमंडळ-सं०पु०यौ० [सं० नेत्रमंडल] १ नेत्र का घेरा।

२ आंख का डेला।

नेत्रमळ-सं०पु०यौ० [सं० नेत्रमल] नेत्र का मैल, गिद्द।

नेत्रमूढ़-वि० [सं०] मिलित नेत्रों वाला, बन्द नेत्रों वाला।

उ०—इसड़ो वचन सुणि विरोध रौ क्रोध विचारि विजयसूर री जोड़ायत कर में कटार झालि साहस ढबण रै काज रीढक रै समीप आपरी पीठ फाड़ि नेत्रमूढ़ मूरछित बाळक नु काढ़ि नणद रै हाथ दीधो।—वं.भा.

नेत्रवाळो—देखो 'नेत्रवाळो' (रू.भे.)(अमरत)

नेत्रौ—देखो 'नेतरौ' (रू.भे.)

उ०—आंणे सुर असुर नाग नेत्रै नहि, राखियो जई मंदर रई। महण मथै मूं लीध महमण, तुम्हां किणे सीखव्या तई। —वेलि.

नेदांण, नेदांणी—देखो 'निदांण' (रू.भे.)

उ०—हाथां हळ हाकता, नार करती नेदांणी। निरस घरां सनमंध, कदे ठकुरायत न जांणी।—अरजुणजी बारहठ

नेपत, नेपति, नेपती, नेपत्ति—देखो 'नेपै' (रू.भे.)

उ०—१ नित सूर गरजत नूर नेपत, पूर सुख पुर गांम ए। मन भ्रमत किरि हरि सेव मिळतां, वणै जग विसरांम ए।—रा.रू.

उ०—२ मिणि-अड नेपति भडां, खग्गवाहां खत्र-घोडां। खुरासांण सम सांण, तखत आद्रू राठौडां।—गु.रू.बं.

उ०—३ लीजियो नयरेण हीरा, सायर मझेण रतन नेपती। स्रोवण मेर सिखरे, सुहडा सिध खेत मंडोवर।—गु.रू.बं.

नेपथ्य-सं०पु० [सं०] १ नृत्य, अभिनय, नाटक आदि में परदे के पीछे का वह स्थान जहां पात्रों द्वारा वेश-भूषा आदि पहने जाते हैं।

२ नृत्य, अभिनय आदि होने का स्थान, रंगशाला, रंगभूमि।

नेपथ्यकरम-सं०पु० [सं० नेपथ्यकर्म] ७२ कलाओं में से एक।

नेपथ्य-योग-सं०पु० [सं० नेपथ्य-योग] देश व समय के अनुकूल कपड़े, गहने आदि पहनना जो कि ६४ कलाओं में से एक हैं।

नेपुर—देखो 'नूपुर' (रू.भे.)

उ०—गढि गोळ गोफळ अलति पीनहि, जिहां रतन पायल रेख। नेपुरां नादइं रूणझूणइं, बहु विवधि प्रतिरव भेख। —रुकमणी मंगळ

नेपै-सं०पु० [सं० निष्पदनम्] १ उपज, पैदावार।

उ०—भाद्रेच नांम नगर निवास करै जठै खड़ रो महा दुकाळ पड़ियो जांणि आपरी वसी रा लोकां सहित छकड़ा में भार घलाइ सकुटुंब सिरोही जाळोर गुजरात रै कांकड़ संधै त्रण नेपै देखि आइ रहिया।—वं.भा.

२ उत्पत्ति-क्षेत्र।

३ प्रचुरता, वृद्धि। उ०—खाटी कुळ री खोवणां, नेपै घर घर नींद। रसा कंवारी रावतां, वरती को हीं बींद।—वी.स.

रू०भे०—नेपत, नेपति, नेपती, नेपत्ति, नैपत्ति।

नेफावार, नेफेदार-वि० [फा०] जिसमें इजारबंद या नाड़ा पिरोने का स्थान हो (लहंगा या पायजामा)।

नेफो-सं०पु० [सं० नीविप अथवा फा०नेफः] लहंगे या पायजामे के घेर में इजारबन्द पिरोए जाने का स्थान, वह स्थान जहां नाड़ा पिरोया जाता हो।

नेम-सं०पु० [सं० नियम] १ व्रत, उपवास (डिं.को.)

२ प्रतिज्ञा, प्रण। उ०—१ नै रावळ दूदो पाट बैठो, सु दूदो पण वडो ओनाड़ हुवो नै रावळ मूळराज रांणो रतनसी जैसळमेर नेम घातियो, तद दूदै पण नेम घातियो थो तिका वात मूळराज रतनसी री वात मांहे लिखी छै।—नैणसी

उ०—२ तब कुंजर ऐसैं कह्यो, सुणो पियारी वात। तजो नेह मो देह को, क्यूं न घरां कूं जात। कहै तिया गजराज कूं, हम सब लीनो नेम। तुम कूं ऐसे छांड कै, हम घर जावैं केम। —गजउद्धार

उ०—३ सुत भ्रात कटै सक घीट बधै धक, बीस भुजांण विचारियो जी। निरवीजां वानर नेम गमुन्नर, येख इसो मन धारियो जी। —र.रू.

उ०—४ सो पति रै तो दुसमणां सूं जुद्ध करणो ओ नेम है नै म्हारै पतीव्रतापणा रो नेम है कै पती नै नहीं जगावणो सो आज नींदाळू नींद में है सो म्हारा पीन (मोटा मोटा) कुच बाथ में भीड़ सूतो है।—वी.स.टी.

क्रि०प्र०—करणो, घातणो, देणो, लेणो।

३ देखो 'नियम' (रू.भे.)

उ०—१ सुजळ गिनांन मंजन तन सारिस, ध्रम क्रम जप तप नेम वधारिस। चरण पवित्र करिस इम चत्रभुज, त्रिगुणनाथ नाचै आगळ तुझ।—ह.र.

उ०—३ [illegible] मंडाण, [illegible] रा तुरंग नचाईजी [illegible] । [illegible] मंडाणी, [illegible] रो तुरंग नचावो रे [illegible] ।—[illegible]

उ०—३ [illegible] वरीसा, [illegible] नेम तोड़यो पड़ली । [illegible], माड़े मनै तोड़यो पड़ी ।

—नेनमांनवा

उ०—४ [illegible] —म्हारे तो ठाकुरजी री दर- [illegible] नेम पण [illegible] दरसण कीधा नहीं तोमूं दरसण [illegible] ।—[illegible] री वात

क्रि०प्र०—तोड़णो, पाड़णो, मांणो, राखणो, होणो ।

यौ०—[illegible] ।

४ देखो '[illegible]' (रू.भे.)

उ०—'[illegible]' पीरस अनंद । 'अगजीत' नेम जूंझो अरांड । [illegible] मंजण पण अचूक ।

—रा.रू.

५ देखो 'नेमिनाथ' ।

उ०—१ मोटो सतन गोपदा री स्वांमी । नांचै घणी धांमी नै नांमी । 'नेम' री बांह नमावण कांमी । तो पिण 'नेम' री बांह न नांमी ।—जयवांणी

उ०—२ 'नेम' तणी वांणी गुणी जी, मीठी दूधाधार । प्रतिबोध्या [illegible] जी, जांणी अथिर संसार ।—जयवांणी

नेमनायत, नेमणियायत-वि० [सं० नियम] दृढ़प्रतिज्ञ, दृढ़ निश्चय ।

उ०—१ तद बादसाह नारनोळ रै फोजदार नूं लिखी सु फोज [illegible] रा फोजदार रै भेळी हुवै । दस हजार फौज दिल्ली सूं [illegible] । तद सारा भेळा हुवा सुणे, ठाकुरसी कबिला काढ़िया, आप नेमनायत हुय रहियो ।—ठाकुरसी जैतस्योत री वारता

उ०—२ नै रावळ अोळ रा किंवाड़ नांख नै दूजो तिलोकसी गढ सूं [illegible] नूं उतारिया सु साथै दो रजपूत नेमणीयायत उतरिया, घोडो ही घणी साथ उतरियो ।—नैणसी

नेमणो, नेमबो-क्रि०स० [सं० नियमनम् अथवा सं० नियमित=यम (उतार के) [illegible]]

१ निश्चय करना, दृढ़ विचार करना ।

क्रि०अ०—स्त्री के गर्भ रहना, स्त्री का गर्भवती होना ।

नेमप्रात-सं०पु० [सं० नियमः+प्रातः] दानवीर राजा कर्ण ।

(अ.मा.)

नेमा—देखो 'नियम' (रू.भे.)

उ०—[illegible] नेमा प्रेमा पल नहिं नेमा दरन में ।—ऊ.का.

नेमि-सं०स्त्री० [सं० नेमिः] १ चक्र की परिधि, पहिए का घेरा ।

२ भूमि, धरती (डि.को.)

३ देखो 'नेमिजन' (रू.भे.)

४ देखो 'नेमिनाथ' (रू.भे.)

उ०—१ करणी नेमि की, काटू अोर न कीजी जाय । तरुण वय परणी नहीं हो, राजिमती यदुराय ।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ समुद्र विजय राजा कउ अंगज, सुर नर नामइ सीस । समय सुंदर कहै नेमि जिणंद कउ, नाम जपूं निसदीस ।—स.कु.

नेमिजन-सं०पु० [सं०] १ महाविदेह क्षेत्र में होने वाले २० विहरमानों में से १६वां विहरमान ।

वि०वि० जन्मभूमि—विजयोका नगरी ।

पिता—राजा वीरसेन ।

माता—रानी सेनादेवी ।

पत्नी—मोहनादेवी ।

उ०—विहरमान सोळमउ तुं नेमि नाम ।—स.कु.

२ देखो 'नेमिनाथ' (रू.भे.) (स.कु.)

नेमिनाथ-सं०पु० [सं०] २२वें तीर्थंकर ।

वि०वि०—जन्मभूमि—शौरिपुर नगर ।

पिता—राजा समुद्रविजय ।

माता—रानी शिवादेवी ।

शरीर का वर्ण—नीलम जैसा, श्याम ।

लक्षण-चिन्ह—शङ्ख ।

उ० —सम्यक्त्व तउ स्रेणिक महाराज तणउं, रिधि परिहार तउ स्रीसांतिनाथ तणउं, अभयप्रदानं स्रीनेमिनाथ तणउं ।

—व.स.

नेमी-सं०पु० [सं०] १ चन्द्रमा (डि.को.)

२ नियमपूर्वक स्नान-ध्यान, पाठ-पूजा, अर्चन आदि करने वाला ।

३ नियमपूर्वक कार्य करने वाला, नियम का पालन करने वाला ।

४ देखो 'नेमि' (रू.भे.)

नेमीसर—देखो 'नेमिनाथ' ।

उ०—१ धन धन राजल साज ले दीक्षा नौ तजि धांम । केवल लहि नै पहिलो हिज पहुंतो सिव ठांम । जोगीसर नेमीसर सिव सुख विलसै सार । स्री धरमसींह कहै ध्यांन धरयां सुख व्है स्रीकार ।

—ध.व.ग्रं.

उ०—२ स्रीगिरनार नमूं नेमीसर, स्रीजिनवर जादव कुळ भांण। जिहां प्रभु त्रिण्ह कल्यांणक हूयउ, दीक्षा ग्यांन अनइ निरवांण ।

—स.कु.

नेर—देखो 'नगर' (रू.भे.)

नेरउ—देखो 'निकट' (रू.भे.)

उ०—चद्रबाहु चरण कमळ, मधुकर मन मेरउ हो । अवर देव तिके वसाइ, नावइ कदि नेरउ हो ।—स.कु.

नेरणो—देखो 'नैरणो' (रू.भे.)

नेरतियो-वि०—नैर्ऋत्य दिशा की ओर का ।

सं०पु०—नैर्ऋत्य दिशा की ओर बहने वाली पवन ।

रू०भे०—नैरतियो ।

नेरू-सं०पु० [सं० नख+आलुच् प्रत्य०] १ वह मांसाहारी जानवर जो अपने नाखूनों से किसी पदार्थ को चीर या फाड़ सकता हो।
२ एक रोग विशेष, नहरुआ।
वि०वि०—देखो 'वाळौ' (रू.भे.)
रू०भे०—नेहरू, नेहरौ, नेंरू, नैरू, म्हारूओ।
नेरै—देखो 'नैरै' (रू.भे.)
नेलियौ—१ देखो 'नैरणौ' (रू.भे.)
२ देखो 'नै'लौ' (अल्पा०, रू.भे.)
ने'ली—देखो 'नै'लौ' (अल्पा.रू.भे.)
नेलौ—१ देखो 'नैरणौ' (रू.भे.)
२ देखो 'नै'लौ' (रू.भे.)
नेव-सं०पु० [देशज] १ ढलुवां छप्पर या मकान में दीवार पर से बाहर की ओर रहने वाला वह छज्जेनुमा भाग जहां से वर्षा का पानी गिरता है, अरवाती, ओलती। उ०—पहिलउं छांटणा तणउ सूसूआट, लोक तणउ कूकूआट, नेव अअडडइं, खोलड खडहडइं, वीज झळहळ परनाळ खळहळइं, पांणी तणी झुणइं, झुणइं।—व.स.
२ देखो 'न्याव' (रू.भे.)
३ देखो 'नैव' (रू.भे.)
नेवग—देखो 'नेग' (रू.भे.)
नेवगी-सं०पु० (स्त्री० नेवगण) नाई, हज्जाम (डिं.को.)
२ देखो 'नेगी' (रू.भे.)
नेवड़-सं०पु० [देशज] आंख, लोचन, नयन। उ०—संइयां मोरी ए, वांकड़ली मूंछां रो जलालो म्हनै मेळ दै, अन हिवड़ा सूं लेवां लगाय। संइयां मोरी ए, पटियां पेचांळो जलालो म्हनै मेळ दै, अन नेवड़ां सूं लेवां समझाय।—लो.गी.
नेवड़ियौ—देखो 'नौड़ियौ' (रू.भे.)
नेछावर—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)
उ०—रतन करां नेवछावरां, ले आरत साजां हो। प्रीतम दिया सनेसड़ा, म्हारी घणी नेवजां हो।—मीरां
नेवज, नेवज्ज—देखो 'नैवेद' (रू.भे.)
उ०—१ कुळदेवी ग्रह पूज सकारण, विजन नव नेवज विसतारण।
—रा.रू.
उ०—२ भाखर माथै मंदिर छै, सेखाळा सूं खिरजां प्रगटियौ छै, मीठी नेवज्ज चढै छै।—वां दा.ख्यात
उ०—३ हुव सुरपत तरपत हुवौ, नरपत कियौ नेवज्ज।
—पा.प्र.
नेवतणौ, नेवतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)
नेवतणहार, हारौ (हारी), नेवतणियौ—वि०।
नेवतिओड़ौ, नेवतियोड़ौ, नेवत्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नेवतीजणौ, नेवतीजबौ—कर्म वा०।
नेवतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नेवतियोड़ी)
नेवर-सं०पु० [सं० नूपुर] १ स्त्रियों के पांवों में पहना जाने वाला एक आभूषण जो चूड़ी की तरह गोल होता है और भीतर से खोखला होता है।
उ०—१ सीस फूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली सोभा न्यारी। गळै गूजरी कर में कंकण, नेवर पहिरै भारी।—मीरां
उ०—२ सह रांचै जन सादियां, मन बहरी कर मांन। कीड़ी पग नेवर झणक, भणक सुणै भगवांन।—र.ज.प्र.
उ०—३ पछटत खग राठौड़ पठांण। भयंकर कौतिग देखत भांण। रूणंझण नेवर हूवर रंभ। उठै हसि नारद होय अचंभ।
—सू.प्र.
२ घोड़े के आगे वाले पांव की जांघ और नली के मध्य के जोड़ पर पहनाया जाने वाला आभूषण विशेष जिससे घोड़े के चलने पर मधुर ध्वनि निकलती है। उ०—१ धर अंबर क्रम धोम, घटा डंबर रज घुम्मट। हाक वीर हैहींस, झूल नेवर झणणाहट।—सू.प्र.
उ०—२ कीधा असि चाकरां, तुरत साकुरां तयारी। खुररां मांजी खेह, चजर तुररां सिर धारी। खणणाहट पाखरां, नाद झणणाहट नेवर। पट जेवर पहराय, किया सिणगार कलेवर।—मे.म.
उ०—३ सब साज सजायर, चोट पटासिर, नेवर पायर बाज नखो। गजगाह दुतंगर भीड़ खतंगर, ओप उजाळ'र चोव रखो।
—किसनो दधवाड़ियौ
३ घोड़े के पांव से दूसरे पांव पर होने वाली रगड़ या घाव।
४ मनुष्यों के पांव की नली और तलुए के मध्य के जोड़ अर्थात गट्टे पर उस पांव के दोनों टखनों में से भीतर की ओर रहने वाले टखने की उभरी हुई हड्डी।
रू०भे०—नेअर, नेउर, नेवुर।
अल्पा०—नेउरी, नेवरी।
नेवरा-सं०स्त्री०—१ सात मात्राओं की ताल।
२ देखो 'नौ'रा' (रू.भे.)
नेवरिया—देखो 'नौरा' (अल्पा०, रू.भे.)
नेवरियौ-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा जिसके अगले पैर चलते समय परस्पर टक्कर या रगड़ खाते हैं।
नेवरी—देखो 'नेवर' (अल्पा०, रू.भे.)
नेवळियौ, नेवळौ, नेवलौ—देखो 'नकुळ' (२) (अल्पा०, रू.भे.)
नेवारी-सं०स्त्री० [देशज] १ जूही या चमेली की जाति का एक पौधा।
नेवासियौ—देखो 'निवासी' (अल्पा. रू.भे.)
नेवासी—देखो 'निवासी' (रू.भे.)
उ०—कोई जांनवर बोल्यौ नहीं, खूडियै रै उनवै में गयौ जठै नेवासी बोलिया।—मापै सांखलै री वारता
नेवुर—देखो 'नेवर' (रू.भे.) (डिं.को.)
नेवै—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

नेईंद—देखो 'नेडंद' (रू.भे.)

नेडो—देखो 'नेड़ो' (रू.भे.)

नेरा—देखो 'नोंरा' (रू.भे.)

नेस-वि०—बना हुआ।

उ०—उमरावां री साथ धरती हाथ लगाय नै मुजरा करि करि लै छै। निपट आगराई नेस अमल काळीनाग रै रंग, तिको देवगिरी प्याली मांहे घाल अमल फेरीजै छै, तिको गाळियो पीवै छै।

—राव रिणमल री वात

सं०पु० [सं० निवेश=प्रा० निएस – राज० नेस] १ निवास-स्थान, घर।

उ०—१ केहरी तणा जमरांण मचतै कंदळि, दुम्रे कर जोड़ियां मही दोहां। पुकारै जवांनी नेस दिस पधारो, लाजि आवै हमैं याजि लोहां।—लिखमीदास व्यास

२ चारणों का जागीर में प्राप्त गांव (डिं.को.)

उ०—नेस संतोसणां भूपत्यां निवाजै, सोसणां ऊपरै रहै खीजी। राठवड़ थाट 'दूदा'-हरा राज में, विराजै आज हिंगळाज बीजी।

—मे.म.

३ नगर, शहर। उ०—१ पह परचाड़ां आगळा, है राठोड़ हमेस। 'पतै' लिया पतसाह कज, निहस जरमनां नेस।—किसोरदान बारहठ

उ०—नेस बचाया कोळिया, पेस धरै नृप पाय। पाटण 'अजन' पधारिया, अरि पागटै लगाय।—रा.रू.

४ जंगली जानवरों के नुकीले दांत।

५ ऊंट के अगाड़ी के दांत और दाढ़ों के मध्य के दांत जो उसकी आयु के सूचक माने जाते हैं तथा प्रायः इन्हीं दांतों से वह काटता है। उ०—नोहरयो भोक भागूंड भल्लेस। कहै छंट चसळकतै नेस।—सू.प्र.

रू०भे०—नें'।

६ असुर, राक्षस।

उ०—दायक खबर रांम सिय दोहा। तोयक काळ नेस सिर तोड़ा।

—र.ज.प्र.

७ एक प्रकार का बहुत तेज शराब जो नौवीं बार उलटाने पर तैयार होता है।

उ०—१ हरख जलालो चित हुवै, पीदां प्यालो नेस। पीव विलालो पिलंग परि, वालो लागै वेस।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति दारू री पांणीगो मंडियो छै, सो किण भांत रो दारू उलटे रो पलटे, पलटे रो अंराक, अंराक रो वैराक, वैराक रो संदळी, संदळी रो कंदळी, कंदळी रो कहर, कहर रो जहर, जहर रो कटाव, कटाव रो नेस, नेस रो जेस, जेस रो मोद, मोद रो कमोद।— रा.सा.सं.

८ देखो 'निसा' (रू.भे.)

उ०—दीरघ नेसां री द्यांणां तप देती। लांबा केसां री दांणां नप लेती। वेगी छेटी बिन भेटी भुज भारी। पातळ पेटी निज बेटी सम प्यारी।—ऊ.का.

अल्पा०—नेसड़ो, नेसडो।

नेसड़ू, नेसड़ो, नेसडू, नेसडो—देखो 'नेस' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—नाह नूं नेसडू जिहां हुई नवि घटइ प्राकार रे, गहिला नइ नवि घटइ सुभ असुभ विचार रे।—नळदवदंती रास

नेसन-सं०स्त्री० [अं० नेशन] जाति, वर्ण।

उ०—धाइयो अंगरेजां अदभुत गतिवाळो, इंगळिस नेसन रा देसन उजवाळो।—ऊ.का.

नेसला-सं०स्त्री० [देशज] ऊंट के चारजामे को 'पड़ों' से बांधने की रस्सी (शेखावाटी)

नेसार, नेसारू—देखो 'नेसावर' (रू.भे.)

नेसाळ, नेसाळा-सं०स्त्री० [सं० लेखशाला] १ पाठशाला।

उ०—१ पांच वरस नूंते थयूं ए, पिता मनि विमासइ। पुत्र नेसाळइ मेल्हीइ ए, जिम विद्या अभ्यासइ।—नळदवदंती रास

उ०—२ फिरति फिरंतइं नयरह माहि दीठी तिणि नेसाळ। तिहि आवि पंडित पणमी नइ बइठउ अति सुकमाळ।

—विद्याविलास पवाडउ

२ देखो 'नेसाळो' (मह०, रू.भे.)

रू०भे०—निसाळ, निसाळा, नेसाळा, लेहाळा।

नेसाळियो-सं०पु० [सं० लेख+शाला+रा.प्र. इयो] १ विद्यार्थी।

उ०—गाढो खांतिइं तेह भणंतां अक्षर एक न आवइ। तेह रहइ तीणइं असमाधिइं भोजन भावि न भावइ नेसाळिया ते देखि मूरख मूरख चट्ट कहंति। तिम तिम ते मनि दूहवीइ अंतराय फळ हूंति।

—विद्याविलास पवाडउ

२ देखो 'नेसाळो' (अल्पा०, रू.भे.)

नेसाळो-सं०पु० [राज० नेस+सं० आलुच्] वह ऊंट जिसके चौभड़ के दांत पूरे आ गए हों।

अल्पा०—नेसाळियो, नेसावरियो।

नेसावर-सं०पु० [देशज] वह ऊट जिसके नेस (चौभड़) के दांत पूरे आ गए हों।

रू०भे०—नेसार, नेसारू।

अल्पा०—नेसावरियो।

नेसावरियो—देखो 'नेसावर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—कोड करायां करै भरण नै पालो भारी, ऊंटां ढेरा ढोय छापवै वाड़ां सारी। मावट पोवट मध्य गुलम गण कूंपळ काढे, नेसावरिया डगा घणरा घुरडै वाढै।—दसदेव

नेसास—देखो 'निस्वास' (रू.भे.)

उ०—वढियो सदा सिंघासण वणतां. रोस रीभ सिधुरां सिरै। पड़िया खळ नेसास करै पग, कव चढिया आसीस करै।

—महारांणा सांगा दूसरा रो गीत

नेसासो—देखो 'निस्वास' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—फौज रा आदमी उण आदमी री आस उण रा वसण याद करै है तौ नेसासा न्हांखतां जीव जावै ।—वी.स.टी.

नेस्ती-सं०पु०—जाति विशेष ।

उ०—सोनी पारखी जवरीह गांधी दोसी नेस्ती कणसारा ।

—व.स.

नस्तावळ—देखो 'निछरावळ (रू.भे.)

नेह—देखो 'सनेह' (रू.भे.)

उ०—१ वार-वधू ही हरण वित, नेह जणावै नैण । यूं सिर लेवा ऊवरै, वैरी मीठा वैण ।—बां.दा.

उ०—२ मन मांणक गहणौ धर्यौ, मित तुमारे पास । नेह व्याज अति बाढयौ, नहिं छूटण की आस ।—अज्ञात

उ०—३ वळ नेह दिवलौ बळै, औ भरियौ अपकार । राख नेह बळतां रथी, विधु वदनौ बळिहार ।—रेवतसिंह भाटी

उ०—४ आंत ओज भेळी असत, नैण नळी भख नेह । आमिख नर नाखै उदर, आंणै हरख अछेह ।—बां.दा.

नेहड़लौ—देखो 'सनेह (अल्पा., रू.भे.)

उ०—फंदा मैं मोडां रै फसगी, रुळगी रेहड़ली । भेख धारतां कीधी भूंडी, कुबधां केहड़ली । मात पिता की छोडी मोबत, मोजां मेहड़ली । सात जात मोडां सूं सांधी, नाहक नेहड़ली । बणियौ नहीं आछौ कांम, बीर यूं ही बीती बेहड़ली ।—ऊ.का.

नेहड़ी-सं०स्त्री०—मथनिया (मथनी) के ठीक पास खड़ा वह काष्ठ या डंडा जिसको दही मथते समय मथानी के साथ बंधन से जोड़ते हैं जिससे मथानी मथनी के ठीक मध्य में सीधी रह सके ।

रू०भे०—नेंडी ।

नेहड़ौ—देखो 'सनेह' (अल्पा. रू.भे)

उ०—१ प्रभूजी थे कहां गया नेहड़ो लगाय ।—मीरां

उ०—२ नेहड़ा जोड़ अछरां नयण, जुध हणमत पथ जेहड़ा । नव सहस तणा कर बहसि नर, उरस छिवै भड़ एहड़ा ।—सू.प्र.

नेहचै—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)

उ०—बीकानेर भोज, वाढाळै सारां मुंह ओडवे सरीर । 'रूपा-हरे' राखियौ रूड़ो, नेहचै इ ऊतरतौ नीर ।

—भोजराज रूपावत री गीत

नेहचौ—देखो 'नैंचौ' (रू.भे.)

नेहटौ, नेहठौ—देखो 'नेअटौ' (रू.भे.)

नेहडौ, नेहढौ—देखो 'निसंडौ' (रू.भे.)

(स्त्री०—नेहडी, नेहढी)

नेहणौ—१ देखो 'नैरणौ' (रू.भे.)

२ देखो 'नैंणौ' (रू.भे.)

३ देखो 'नयन' (अल्पा०, रू.भे.)

नेहणौ, नेहबौ—क्रि०स० [सं० स्नेहनम्] स्नेह करना, प्रेम करना ।

उ०—गज रथ रमणि तुरंगम रंग महा भलउ तांम, जन परिजन परिपालन काल न पुजइं जांम । जोइन तउ संयम नी संयम नी ज सीख, परिहरि नारि न नेहिय रे हियडा लइ दीख ।

—नेमिनाथ फा

नेहणहार, हारौ (हारी), नेहणियौ—वि०

नेहियोड़ौ—भू०का०कृ०

नेहीजणौ, नेहीजबौ—कर्म वा० ।

नेहप्रिय, नेहप्रीय-सं०पु०यौ० [सं० स्नेहप्रिय] दीपक (नां.मा.)

नेहरु, नेहरौ—देखो 'नेरू' (रू.भे.)

नेहलउ, नेहलु, नेहलौ—देखो 'सनेह' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ हा हा ! वीर तइं स्यूं करयुं जी रे जी, गौतम कर अनेक विलाप रे । जेतलउ कीजइ नेहलउ जी रे जी, जिवड़ा तेतल हुयइ पछताप रे ।—स.कु.

उ०—२ देवदंती नु नेहलु, जैसीउ रंग पतंग ।

—नळ दवदंती रा

उ०—३ ढांक्यौ न रहै किम ही नेहलौ । जो करै कोडि उपाय ।

—स्रीपा

नेहवाळ, नेहवाळौ-वि० [सं० स्नेह+आलुच्] संतान के प्रति पू स्नेहयुक्त, वत्सल (डिं.को.)

नेहवी-वि०स्त्री० [सं० स्नेह+रा.प्र. ई] प्रेयसी, प्रेमिका ।

उ०—उज्जल दंता घोटड़ा, करहइ चढ़ियउ जाहि । तइं घर मु कि नेहवी, जे कारणि सी खाहि ।—ढो.मा.

नेहा-नेह, नेहानेह-सं०पु० [सं० स्नेहा] दीपक (अ.मा.)

नेहा—देखो स्नेह' (रू.भे.)

उ०—गायब अरच चींतव सुख गेहा, भत छोडै नेहा मत्त भंद ।

—र.ज.

नेहालंदी-वि०स्त्री० [सं० स्नेहानंदिनी] प्रेयसी, प्रेमिका ।

उ०—दिसि चाहंती सज्जणा, नेहालंदी मुंध । सा धण कुंभि बचाह ज्यउं, लंबी थई तु कंध ।—ढो.मा.

नेहाळ, नेहाळू, नेहाळौ-वि० [सं० स्नेह+आलुच्] (स्त्री० नेहाळी) प्रेमी । उ०—नेहाळू नजरांह, जोइ कांमण पर हत्थ 'जसा' । विरा पारेवाह, तारा हूं तूटे पड़ै ।—जसराज

नेहियोड़ौ-भू०का०कृ०—स्नेह किया हुआ, प्रेम किया हुआ ।

(स्त्री० नेहियोड़ी)

नेही—देखो 'सनेही' (रू.भे.)

उ०—१ खूबी न रही काय, खतंगां खंजनां । नेही हुवै मुनिरा विसारी निरंजनां ।—बां.दा.

उ०—२ ममहां ऊपरि सोहलौ, परिठिउ जांणिक चंग । ढोला ए मारुवी, नव नेही नव रंग ।—ढो.मा.

नेहु—देखो 'सनेह' (रू.भे.)

उ०—लिपइ ताव निकंदनि, चंदनि चंदनि देहु । निज निज ना संभारिय, नारिय नवलउ नेहु ।—नेमिनाथ फागु

नेरो—१ देखो 'नेहर' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'नेहरी' (अल्पा०, रू.भे.)

नै—देखो 'नैं' (रू.भे.)

नैठ-सं०पु० [सं० नैष्ठिक] वह साधु या संन्यासी जिसने विवाह न किया हो।

रू०भे०—नईठ, निठिक।

नेंगी-सं०स्त्री० [सं० ?] काष्ठ का बना उपकरण जिस पर घास रख कर गंडासा से काट कर महीन किया जाता है, अहुटन।

रू०भे०—नींगा, नींगार।

नेंज-सं०पु० [देशज] प्रपंच। उ०—'आजम' दाखण हूंत उलट्टो, विकट चतुर भर जाण विहट्टो। उत्तर धरा सूं 'आलम' आयो, सौज नेंज दळ नेज मणायो।—रा.रू.

नेण—देखो 'नयन' (रू.भे.)

उ०—चार वधू री हरण चित, नेह जगावै नेण। यूं सिर सेवा ऊपरे, वैरी मीठा वैण।—बां.दा.

नेंणी—देखो 'नयनहरणी' (रू.भे.)

नेंतणो, नेंतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

नेंतणहार, (हारो, हारी) नेंतणियो—वि०।

नेंतिओड़ो, नेंतियोड़ो, नेंतयोड़ो—भू०का०कृ०।

नेंतीजणो, नेंतीजबो—कर्म वा०।

नेंतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नेंतियोड़ी)

नेरात—देखो 'नैरात' (रू.भे.)

नेहार—देखो 'निसार' (रू.भे.)

उ०—ए सवा जाडा आदमी, गत कुटळ जींद अमीर। पैंसार सूं नेसार मुसकल, वर्ण सो गुणं वीर।—पा.प्र.

नैं-अव्यय [सं० कर्णे, प्रा० कण्णहि=कनइ=नइ=ने=नैं] दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाला शब्द, एक संयोजक अव्यय।

उ०—१ तरै तोत करनै रावळ नैं लाहक चढ़भड़िया।—नैणसी

उ०—२ विजाजी ! तूं नैं थारो भाई बवै वडा रजपूत छै।

—चोबोली

उ०—३ धे धरती दाबी छै सु थांहरी नै म्हां हेठै छै सु मांहरी छै, इण वात रो सील कोल करो।—नैणसी

क्रि०वि०—ओर, तरफ।

ज्यूं—अठी नैं, उठी नैं, अठी नैं।

प्रत्यय—१ कर्मकारक का विभक्ति, प्रत्यय, को।

उ०—१ गरदो गवारीह, जिण नैं पूछो जायनै। सो कहसी सारीह, भव अपार री केरवां।—रांमनाथ कवियो

उ०—२ रथ थभि मारथी विप्र छंडी रथ, श्री पुर हरि बोलिया इम। आयो हाइ रहि नाम अम्हीणो, जा सुख दे स्वांमा नै जिम।

—वेलि.

[सं० कृत्वा, मा० कणु=नै ?] २ पूर्वकालिक क्रिया के साथ जुड़ने वाला प्रत्यय।

उ०—१ अठै रहतां करतां वरस १ हुवो ताहरां गोद रो बचो एक पाळियो। पाळि नैं हार ही में सफाई।—चोबोली

उ०—२ बोजो तो धाड़ा धगाही करो सो छोटा मोटा। इतरो कहता वेउ जणां ऊठि नै चळू करेनै बोलिया।—चोबोली

[सं० तुमुन्] ३ असमापिका अथवा उत्तर कालिक क्रिया के साथ जुड़ने वाला प्रत्यय।

ज्यूं—पढ़ण नै आयो हूं। खेलण नै आयो हूं।

रू०भे०—न, नइ, नउ, नऊं, ने, नें।

सं०स्त्री० [फा०] १ हुक्के की निगाली।

रू०भे०—नय।

२ देखो 'नदी' (रू.भे.)

नैउरियो—देखो 'नोरियो' (रू.भे.)

नैकाळ—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)

उ०—सरब सजानो साथ ले, राजा कनकरथ कूच कियो सो महिनै डेढ़ सूं पाटण पूगो। सहर रै नैकाळ मखो ताळाब हुतो।

—पलक दरियाव री वात

नैगवीन-सं०पु० [सं० नवगवीन या नवगव्य] मक्खन, नवनीत (अ.मा.)

रू०भे०—नेगवीन।

नैंड़ो-सं०स्त्री० [देशज] दही मथने की मथानी के सहारे का मथ दण्ड।

उ०—तासी, ताव तमांम, चोनणी अर पुसळाई। नैंड़ो मैंड़ी तणी, जाळ वसतुवां वणाई।—दसदेव

नैड़ै, नैड़ैरो, नैड़ो-वि० [सं० निकट, प्रा. निग्रड] (स्त्री० नैड़ी)

निकट, पास, समीप।

उ०—१ यूं लड़ता भगड़ता दोनूं नवनाथ चोरासी सिद्धां रै नैड़ै गया। तद उहां दणां री वातां सुण इण रै पुरब जनम री वात जांण'र कही।—डाढ़ाळा सूर री वात

उ०—२ हाजर दीठां हजूरिया, नैड़ां नैड़ै रा।

—केसोदास गाडण

उ०—३ काळ ऊभो 'जसो' संकै नैड़ा करी। कुणि सती पयोहर मूछ लै केहरी।—हा.भा.

उ०—४ अर द्वारिका दूरि छै। सु राजि तहां विराजो छो। अर विवाह रउ दिन नैड़ो आयो। अर दुसमन आय नैड़ो बइठो।

—वेलि.टी.

उ०—५ दिन लगन सु नैड़ो, दूरि द्वारिका, भो पहुचेस्यां किसी मति। सांझ सोचि कुंदणपुरि सूतो, जागियो परभाते जगति।

—वेलि.

उ०—६ अळगी ही नैड़ो की ऊखवते। देठाळो हुओ दळां दुंह। वाणां ढेरवियो वाहरण, मारकुए फेरिया मुंह।—वेलि.

रू०भे०—नइड़ो, नइडउ, नइड़ो, नैरो।

नैचाबंद-वि० [फा०] हुक्के का नैचा बनाने वाला।
नैचौ-सं०पु० [फा० नेच:] हुक्के की निगाली।
नैंचौ—देखो 'नहचौ' (रू.भे.)
नैछै-क्रि०वि० [सं० निश्चय] निशंक, निश्चित।
उ०—नैछै नींद लियां जा नैणां यां सुं कदै न डरणौ। जीणौ जग में गाजा-बाजा, ढोल घुरंतां मरणौ।—चेत मांनखा
नैछौ-सं०पु० [सं० निश्चय] निशंकता, निश्चय, तसल्ली।
उ०—रंभा रौ सरीर जांणै सांचा में ढळयोड़ो हो। सांवरियै सायद फुरसत में बैठ'र नैछा सूं घड़ियौ हो।—रातवासौ
नैजण—देखो 'नूंजणौ' (मह०, रू.भे.)
नैजणियौ—१ देखो 'नूंजणियौ' (रू.भे.)
२ देखो 'नूंजणौ' (अल्पा०, रू.भे.)
नैजणी-सं०स्त्री—देखो 'नूंजणौ' (अल्पा०, रू.भे.)
नैजणौ—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)
नैजणौ, नैजबौ—देखो 'नूंजणौ, नूंजबौ' (रू.भे.)
नैजणहार, (हारौ) हारी, नैजणियौ—वि०।
नैजिग्रोड़ौ, नैजियोड़ौ, नैज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नैजीजणौ, नैजीजबौ—कर्म वा०।
नैजियोड़ौ—देखो 'नूंजियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नैजियोड़ी)
नैठाव—देखो 'नेठाव' (रू.भे.)
नैड—देखो 'नांड' (रू.भे.)
नैण—१ देखो 'नयन' (रू.भे.)
उ०—सिणगारी भूखण सिलह, अति छवि धारी आज। प्यारी किण ऊपर प्रगट, सजै सिकारी साज। सजै सिकारी साज, आज किण ऊपरै। मारण कारण अगाक रसिया रूप रै। चपळ चलाक चुटैत दियै दिल-दारकां। नैण भळक्का नेह भळक्का सार का।
—सिवबक्स पाल्हावत
२ दो की संख्या* (डि.को)
नैणझर-सं०पु० [सं० नयन-क्षरणम्] १ ऊंट का एक नेत्र रोग जिससे ऊंट की आंख से निरन्तर पानी टपकता रहता है।
२ इस रोग से पीड़ित ऊंट।
नैणसुख-सं०पु०यौ० [सं० नयन+सुख] एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।
नैण-हजार-सं०पु०यौ० [सं० नयन+फा० हजार] इन्द्र (डि.को.)
नैणी—देखो 'नखहरणी' (रू.भे.)
नैण-सघण-सं०पु०यौ० [सं० नयन-सघन] मेघ, बादल।
(ना.डि.को.)
नैंणौ-सं०पु० [देशज] घास-फूस, मूंग, मोठ, गवार आदि को उखेड़ कर या काट कर बनाया हुआ छोटा ढेर।
रू०भे०—नेहणौ।

नैत-सं०स्त्री० [सं० निमंत्रणं] १ विवाहादिक मांगलिक अवसरों पर कुटुम्बियों, सगे-सम्बन्धियों तथा इष्ट-मित्रों के यहाँ रुपया आदि देने की एक प्रथा या रस्म।
२ वह भेंट या धन जो मांगलिक अवसरों पर कुटुम्बियों, सगे-सम्बन्धियों द्वारा दिया जाता है।
रू०भे०—नूंत, नूत, न्यूंत।
अल्पा०—निमतरौ, निमतौ, निवतरौ, निवतौ, नूंतौ, नूतौ, नैतौ, नैहतौ, नोतौ, नोहतौ।
यौ०—नैत-पांत।
नैतणौ, नैतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)
नैतणहार, हारौ (हारी), नैतणियौ—वि०।
नैतिग्रोड़ौ, नैतियोड़ौ, नैत्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नैतीजणौ, नैतीजबौ—कर्म वा०।
नैतबंध, नैतबंधी—देखो 'नेतबंध' (रू.भे.)
उ०—पीठ घणी फेरतां, अणी मुड़िया असुरांणां। मद 'विलंद' मूकियौ, मुगळ सैयद पट्ठांणां। नैतबंध बांनैत, मेळ रणखेत महंतां। विना दिवाळी वंध, जीण खाली मेमंतां। वय सोच कंप सम्मर विरह, करै संकोच फकीर री। कारण अथाह वरणै कमण, उर दुख दाह अमीर री।—रा.रू.
नैतरौ—देखो 'निमंत्रण' रू.भे.)
नैतियार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)
उ०—नैतियार जिणरौ नृपत, समाधांन सरसाय। विदा किया दसरथ वडौ, पह दे कुरब प्रसाय।—र.रू.
नैतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नैतियोड़ी)
नैतौ-सं०पु० [सं० निमंत्रणं] १ एक प्रकार का सरकारी कर जो मांगलिक अवसरों पर प्रजा से वसूल किया जाता था।
२ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)
नैन—१ देखो 'नैनम' (रू.भे.)
२ देखो 'नयन' (रू.भे.)
नैनकड़ौ, नैनकियौ—देखो 'नैनौ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ रात री ए नैनकड़ी बैन, उडै कूंकूं थाळ संभाळ।
—सांझ
उ०—२ जळ पीधौ जाडेह, पावासर रै पावटै। नैनकियै नाडेह, जीव न धापै जेठवा।—जेठवा
(स्त्री० नैनकड़ी, नैनकी)
नैनणौ—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)
नैनणौ, नैनबौ—देखो 'नूंजणौ, नूंजबौ' (रू.भे.)
नैनप, नैनम-सं०स्त्री० [सं० न्यंच] जवानी को प्राप्त न होने की अवस्था, अवयस्कता, नाबालिगी।
क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।

रू०भे०—नैण, नैन।

नैनिको—देखो 'नैनो' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० नैनकी)

नैनो-वि० [सं० न्यून] (स्त्री० नैनी) १ जो आकार में कम या न्यून हो, जो बड़ाई या विस्तार में कम हो, जो डीलडौल में कम हो। उ०—कहै दास सगराम काम मादर रो करड़ो, मोटो होय तो करै, पाती को निरधीरकड़ो। जिरदी रो पगड़ो करै, ऐड़ो देख्यो थाट। आगी चीवो रामजी, नैनो कियो निराट। नैनो कियो निराट, गोडै कस्यार्व करड़ो। कहै 'दास सगरांम', काम मादर रो करड़ो।

—सगरांमदास

यौ०—नैनो-मोटो।

२ जो आयु में कम हो, जिसकी वय अल्प हो, जो छोटी आयु का हो। उ०—बनावा इण रै सब सूं मोटी वात हो ठाकर रो निरमळ चाल-चलण। इण वास्तै मोटी सो मा अर नैनो सो बहन।

—रातवासो

३ जो पद, प्रतिष्ठा, शक्ति, गुण, योग्यता, मानमर्यादा आदि में न्यून हो।

ज्यूं—नैना मिनखां रो आदर कम होवै है।

४ जो महत्व का न हो, जिसमें कुछ सार या गौरव न हो।

५ ओछा, क्षुद्र, नीच। उ०—नैना मिनख नजीक, उमरावां आदर नहीं। ठाकर जिण री ठीक, रण में पड़सी राजिया।

—किरपारांम

सं०पु०—बच्चा।

ज्यूं—ओ किणरो नैनो है।

रू०भे०—नांनूं, नांनू, नांनो, न्हांनूं, न्हांनू, न्हांनो, नांन्हउ, नांन्हो।

अल्पा०—नांनकड़ो, नांनकियो, नांनड़ियो, नांनड़ो, नांनियो, नांन्यो, नांन्हकड़ियो, नांन्हकड़ो, नांन्हड़ियो, नांन्हड़ो, नैनकड़ो, नैनकियो, नैनियो, नैन्यो, न्हांनड़ियो, न्हांनड़ो।

नैन्यो—देखो 'नैनो' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—घरै आवां सूं चोधरण थोड़ी हिम्मत बंधाई, भगवान राजी-खुसी राखो थांनै अर म्हारा नैन्या नै।—रातवासो

नैन्हो—देखो 'नैनो' (रू.भे.)

उ०—१ इतरै जांझरकै री बरात रो ठाडो पवन आई। तीं पवन रै माय हरिया जवां री बोय आई। तद भूंडण ऊठ बैठी हुई और कही—हरिया जवां री सुगन्ध आवै छै। हालो जो चरां। तद टाटाई कही—जब सिरोही रै धणी रा छै। इयां जवां ऊपर पजियो होसो। धोल्हर नैन्हा छै। मारिया जासो।

—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ इण नग वरसै आग, जद नजर म्हांनूं जोवै। नैन्हो दाटक नाग, ओ दमधा रै केड़ रो।—पा.प्र.

नैपत्ति—देखो 'नेपै' (रू.भे.)

उ०—गुरासांण नैपत्ति, अमल ऐराकी चंचळ। पाखर मैं परचंड, पंख पाखड़ प्रचगळ।—गु.रू.बं.

नैमखार, नैमसार, नैमसारण्य—देखो 'नैमिसारण्य' (रू.भे.)

उ०—१ नैमखार मिस मैं सरब तीरथ आया। पुसकर, प्रयाग न आया। एक गुर, एक राजा तीरथां री जिणसूं।—बां.दा.ख्यात

उ०—२ प्रथम दंडकारण्य सिधु मारण्य वखांनो। जांगु सु पुस्कर जान उत्पलावरत स मांनो। नैमसारण्य वसेरा कुरुह जांगळय कहीजै। अरबुद हेमवत निमरा जो वास लहीजै।—गजउद्धार

नैमित्य-वि० [सं०] नियमपूर्वक। उ०—दिपै आवड़ा आद प्रासाद दूजा। पुजारा करै नित्य नैमित्य पूजा। चवै चंडिका चंडिका दीप चासै। दिसै ठीक बाल्हीक सोरांड पासै।—मे.म.

नैमिस-सं०स्त्री० [सं० नैमिष] १ महाभारत के अनुसार यमुना के दक्षिण तट पर बसने वाली एक जाति।

सं०पु०—२ नैमिषारण्य तीर्थ।

नैमिसारण्य-सं०पु० [सं० नैमिषारण्य] एक प्राचीन वन जो हिन्दुओं का तीर्थस्थान माना जाता है।

रू०भे०—खारणनैम, नीमखार, नीमसारण्य, नैमखार, नैमसार, नैमसारण्य।

नैयण—देखो 'नयन' (रू.भे.)

नैयर—देखो 'नगर' (रू.भे.)

नैयो—देखो 'नैरणो' (रू.भे.)

नैरति—देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)

उ०—नैरति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, धणी भजै धण पयोधर। झोलै वाइ किया तरु झखर, लवली दहन कि लू लहर।—वेलि.

नै'र-सं०स्त्री० [फा० नह्र] १ वह कृत्रिम जलधारा जो खेतों की सिंचाई, नावें चलाने, जलाशयों या झीलों को भरने अथवा दो बड़ी झीलों को परस्पर जोड़ने के उद्देश्य से बनाई जाती है।

उ०—छेकड़ धोरी धाप जावै, छोड़ै लामा खाळिया। सांच जांणै समदर खेलै, नै'र नदी अर नाळिया।—दसदेव

रू०भे०—नहर।

नैर—देखो 'नगर' (रू.भे., डिं.को.)

उ०—१ तई नैर ओछाड़ियो हेम तारां, हुवा भांण उद्दोत जांणै हजारां। सझै गायणी सोळ सिणगार साजा, वजावै छहै तीस आणंद वाजा।—सू.प्र.

उ०—२ पहली प्रस्थांन प्राची में ही करि खटपुर रा धणी गौड़ गजमल्ल नूं गंजि पाटणि रा अधीस मोहिल मनोहरदास नूं मारि दो ही नैर आपरै वसीभूत किया।—व.भा.

नैरणी—देखो 'नखहरणी' (रू.भे.)

नैरणो-सं०पु० [देशज] बढ़ई का एक औजार।

रू०भे०—नेरणो, नेलियो, नेलो, नेहणो, नैयो, नैलियो, नैलो, नैहणो।

नैरत—देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)
उ०—तठां उपरांत करि नै राजांन सिलांमति इतरा मां ग्रीखम रित आई छै, सो किण भांत री वखांणीजै छै। नैरत दिसा री ऊनो पवन वाजियो छै, उन्हाळसी प्रगटियो छै, जेठ मास लागो छै।
—रा.सा.सं.

नैरतां-सं०स्त्री० [सं० नैर्ऋती] दक्षिण पश्चिम के मध्य की दिशा, दक्षिण व पश्चिम के बीच का कोण।
उ०—इंद अगन जम राखसां, नैरतां वाळां, वरुण पवन कुबेर ईस, आठूं द्रिगपाळां।—गजउद्धार

नैरतियौ—देखो 'नेरतियौ' (रू.भे.)

नैरांत-सं०स्त्री० [सं० निर्+अंतक] १ शांति, चैन।
२ चित्त की स्थिरता, धैर्य्य, धीरज, सब्र।
३ तृप्ति, संतोष।
४ क्षोभ, वेग आदि का अभाव।
५ स्वास्थ्य, तंदुरस्ती
रू०भे०—निरांत, निरांति, नीरांत, नीरांयत।

नैरावौ-सं०पु० [सं० नीराज] १ ब्राह्मण को भिक्षा के रूप में दिया जाने वाला अन्न।
२ पूजा, पूजन।
३ स्वागत, सम्मान।

नैरित-सं०पु० [सं० नैर्ऋत] १ दक्षिण पश्चिम कोण का स्वामी जो ज्योतिष के मत से राहु माना जाता है।
२ मूल नक्षत्र।
३ दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा का पुत्र, राक्षस।
वि०—१ दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा सम्बधी
२ देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)

नैरिती-सं०स्त्री० [सं० नैर्ऋती] १ दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।
२ देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)

नैरित्य-सं०स्त्री० [सं० नैर्ऋत्य] दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।
वि०—१ दक्षिण और पश्चिम के मध्य का।
२ निर्ऋति देवता का। (पशु आदि)
रू०भे०—निरत, निरति, निरात, नेरंति, नैरत, नैरिती।

नैरित्यकोण-सं०पु० [सं० नैर्ऋत्य कोण] दक्षिण और पश्चिम के मध्य का कोना, दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।

नै'री-वि० [फा० नह्र] १ जिसमें नहर द्वारा सिंचाई होती हो (भूमि)
२ नहर का, नहर संबंधी।
रू०भे०—नहरी।

नैरूं, नैरू—देखो 'नेरू' (रू.भे.)

नैरै-सं०पु० [सं० निरहर] शव को श्मशान भूमि में ले जाने की क्रिया, शव ढोने की क्रिया।
रू०भे०—नेरै

नैरौ—१ देखो 'न्यारौ' (रू.भे.)
२ देखो 'नेड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नैरी)

नैलियौ—१ देखो 'नैरणौ' रू.भे.)
२ देखो 'नैलौ' (रू.भे.)

नैली—देखो 'नैलौ' (अल्पा०, रू.भे.)

नैलौ-सं०पु०—१ ताश के खेल में वह पत्ता जिस पर नौ बूंटियां या चिन्ह हों।
रू०भे०—नेलौ।
अल्पा०—नेलियौ, नेली, नैलियौ, नैली।
२ देखो 'नैरणौ' (रू.भे.)

नैव-क्रि०वि० [सं०] बिलकुल नहीं, नहीं। उ०—ए गंधकारी मिसि रूप दासी, रही अछइ उत्तम नारि नासी। किमइ न जांणिउं फळ नैव खाजइ, अणजांणतु अंध उबाडि दाझइ।—विराटपर्व

नैवेद, नैवेद्य, नैवेध, नैवेंध्य-सं०पु० [सं० नैवेद्य] १ देवता को अर्पित किया जाने वाला भोज्य पदार्थ, देव-भोग।
उ०—१ प्रतिदिन होत वेद विधि पूजन, घुरियत तत आनद्ध सिसर घन। धूप दीप नैवेद पुस्प फळ, कस्मीरज मलयज नागज कळ।
—मे.म.
उ०—२ देवी कहां द्वारामती कांचि कासी, देवी सातपुरी परम्मा निवासी। देवी रंग रंगे रमै आप रूपै, देवी ध्रित नैवेद ले दीप धूपै।
—देवि.
उ०—३ नांना विधि ना सूखडां, नांना विधि नैवेद्य। नाना रति मांणीइ, भक्ति माहि नहि भेद।—मा.कां.प्र.
उ०—४ नैवेद्य पहली संकल्प सुणै पछै अबोट लोटा भर नै चौसठ विध्यारथी चौसठ जोगणी छै।—पंचदंडी री वारता
उ०—५ नांना प्रकार का नैवेधा धरिया। तांबूळ करपूर सुवासित धरिया।—सिंघासण बत्तीसी
रू०भे०—निवेद्य, निवेध, निवेधी, नीवेद, नेवज, नेवज्ज।

नैसंक—देखो 'निसंक' (रू.भे.)
उ०—व्रिछ छै एही पुरस हुआ। वेलि छै सु अस्त्री हुई। सु वेलि नैसंक हुई। आप आपणा भरतार नै आलिंगण देण लागी।
—वेलि. टी.

नैसंकौ—देखो 'निसंक' (अल्पा०, रू.भे.)

नैस्टिक, नैस्ठिक-सं०पु० [सं० नैष्ठिक] उपनयन काल से लेकर मृत्यु-पर्यंत ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला।
उ०—नैस्ठिक ब्रह्मचारी निपुण, भयो संन्यासी भूर। इकदम आरचा वरत को, दुख कीनो सब दूर।—ऊ.का.
वि०वि०—याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार नैष्ठिक ब्रह्मचारी को

मात्र जीवन गुरु के पास या गुरु-माध्यम में ही रहना चाहिए।

नेरसें—देखो 'निरसे' (रू.भे.)

उ०—वीर दुरग री रसों मद्दे है माता! हथळेवा में हाथ देता ही मैं नेरसें (निरसें) ही या वात म्हाडी तरह समझ्यी कि रात दिन तरवार पर्नं रहता सूं हाथ में तरवार री मूठ रा आंटण पड़ गया है।—वी.स.टी.

नेहड़ो—देखो 'नहड़ो' (रू.भे.)

नेहड़ो—१ नाटो वय को नेहड़ा लाला या व्यक्ति।

उ०—नवदां मुक्त मोत हुवं नेहड़ो। मुपियार रसं किम तेल चढ़ी।
—पा.प्र.

२ देखो 'निमंड़ो (रू.भे.)

(स्त्री० नेहड़ी)

नेहणो—देखो 'नेरणो' (रू.भे.)

नेहतणो, नेहतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

उ०—तिण ही साहूकार आरो कियो। घणा गांम नेहत्या। लोक जीमता थाक बारदानो घट गयो।—भि.द्र.

नेहतणहार, हारो (हारी), नेहतणियो—वि०।

नेहतिग्रोड़ो, नेहतियोड़ो, नेहत्योड़ो—भू०का०कृ०।

नेहतीजणो, नेहतीजबो—कर्म वा०।

नेहतियार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

नेहतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नेहतियोड़ी)

नेहतो—१ देखो 'नेत' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—जद सांमीजी बोल्या कोई रं किरियावर पयां गांम में नेहता फेरै। जद कहै अमकड़िया रं नेहतो खेमासाह रै घर रो।—भि.द्र.

नेहराई-सं०स्त्री० [देशज] १ विलम्ब, देरी।

२ दांविलप। उ०—फेर स्वामीजी द्रस्टांत दियो। किणहि दातार साधु नं घ्रत वहिरायो। साधु नेहराइ राखी। तिण घ्रत सूं अनेक कीड़ियां मूई तो पाप साधु नं लागो पिण दातार नं न लागो।
—भि.द्र.

३ धैर्य।

नौऊ—देखो 'नव' (रू.भे.)

नोंक-सं०स्त्री० [फा० नोक] १ उत्तरोत्तर पतली पड़ती गई हुई वस्तु का अंग, भाग, सूक्ष्म अग्रभाग।

उ०—लगं मूळ सिंदूर री झोक लेती। सज्यो मात सोहाय त्रि-नोंक सेती।—मे.म.

यौ०—नोंक-चोख, नोंक-झोंक।

२ किसी वस्तु का एक ओर बढ़ा हुआ पतला अग्रभाग।

३ चोंच। उ०—होको होंठ हाय लटकतो लड़ियो लारे। पड़ पड़ पाड़े पाद नोंक जिम पड़ो नगारे।—ऊ.का.

रू०भे०—नोंख, नोक, नोख, नौक, नौख।

नोंकचोख—देखो 'नोंखचोख' (रू.भे.)

नोंकदार-वि० [फा० नोकदार] १ नोक वाला, जिसमें नोक हो।

२ नुकीला, चुभने वाला, पैना।

३ शानदार।

नोंखचोख, नोंकझोंक-सं०स्त्री०यौ० [फा० नोक+राज० चोक या झोंक] बनाव-सिंगार, सजावट, ठाटबाट।

उ०—हीरा मुगधा ग्यातजोबना कहावै छै, दिल बीच चंपचतराय भावै छै। अब नोंकचोख को वाता वणावै छै।
—बगसीराम प्रोहित री वात

रू०भे०—नोंकचोख।

नोंरा—देखो 'नो'रा' (रू.भे.)

नो-सं०पु०—स्वामी कार्तिकेय।

२ नमस्कार।

३ निषेध (एका०)

वि०—१ प्रसिद्ध, विख्यात (एका०)

२ देखो 'नव' (रू.भे., डि.को.)

अव्य०—१ संबंध या षष्ठी का चिह्न, का।

उ०—जेह ना हुकम कथन नहीं लोपै, जिण नो ईज न यो गाई रे। जिण घर नो तूं टुकड़ो खावै, सो घर नांखै ढाई रे। दुनिया में बहुत दगाई रे।—जयवांणी

२ नहीं।

उ०—देवी मारकंडे महा पाठ बांच्यो। देवी लगो तब पाय नो पार लाध्यो।—देवि.

नोऊं—देखो 'नव' (रू.भे.)

नोऊनिध, नोऊनिधि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—परख्या पहैं त्रिलोकी पूजै। करै ध्यांन ज्यां मिटै कळेस। परसै पाव नोऊंनिधि पावै। हरख वधै सुख लहै हमेस।
—अज्ञात

नोक—देखो 'नोंक' (रू.भे.)

उ०—गोरी नैणां री काजळ लागै ए तीखी तीखी नोकां रो। रसराज या नैणां रं कारण सांवरो सारी रैण जागै ए।
—रसीलेराज

नोकारमंत्र—देखो 'नवकारमंत्र' (रू.भे.)

नोकारसी—देखो 'नवकारसी' (रू.भे.)

नोकीरदो-सं०पु० [फा० नोक+सं० रदन=काटना, ईलो प्रत्यय] बढ़ई का एक औजार।

नोखंगी-वि० [सं नवखांगी] अद्भुत, अनोखा, विलक्षण।

नोख—१ देखो 'अनोखो' (मह०, रू.भे.)

उ०—१ जगाजोत आदीत री जोत ओपै। उभै हीर चांमीर में संग ओपै। त्रिया देख दासं प्रभू काज सारो। त्रिगो नोख रूपी

ग्रहो काय मारो।—सू.प्र.

उ०—२ पहरण घण ग्रोढ़ण पसमीना। नोख तोस घणमोल नवीनां।—सू.प्र.

२ देखो 'नोक' (रू.भे.)

नोखीलो-वि० [रा० ग्रनोखा+रा०प्र०ईलो] (स्त्री० नोखीली) ग्रद्भुत, सुंदर, ग्रनोखा।

उ०—ढसै गढ टकर लगां पड़ ढोल। वाळपणै टीला वडवार। नोखीला झोख ग्रस नीला। चटकीला झोख चढ़णार।—ग्रज्ञात

रू०भे०—नौखीलो।

नोखो—देखो 'ग्रनोखो' (रू.भे.)

उ०—१ वळ ग्रह-पिंगळ कवित री, वदी जात बावीस। तवूं नाम सारा तिकै, वळ नोखा वरणीस।—र.ज.प्र.

उ०—२ खुदाबाद विरोळै गैणाग तोलै व्रीर खत्री। चाहि चक्र जती वातां चाढी भोम चाहि। दळां खाटणोत दोखी दाखी देस घणी दाद। 'मांडणोत' नोखी वातां राखी भोम माहि।

—हरनाथसिंह भांदणोत री गीत

(स्त्री० नोखी)

नोचणो, नोचबो-क्रि०स० [सं० लुंचन] किसी वस्तु में नख, पंजा या दांत धंसा कर उसका कुछ ग्रंश खींच डालना, नख ग्रादि से विदीर्ण करना, खरोंच डालना, खरोंचना।

उ०—जे तूं रोवतो रोवतो जाय गाहणी नूं खबर कर जे ग्राज सिकार में जलाल ग्रौर सेर रै ग्रापस में कुस्ती हुई सो जलाल तो सेर नूं मारियो ग्रोर सेर नोचियो तींसू जलाल मर गयो।

—जलाल बूबना री वात

नोचणहार, हारो (हारी), नोचणियो—वि०।

नोचिग्रोड़ो, नोचियोड़ो, नोच्योड़ो—भू०का०कृ०।

नोचीजणो, नोचीजबो—कर्म वा०।

नोचियोड़ो-भू०का०कृ०—नख ग्रादि से विदीर्ण किया हुग्रा, खरोंचा हुग्रा।

(स्त्री० नोचियोड़ी)

नोछावर—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)

उ०—नोछावर भूप की तमांम सैं'र कीनी। ग्रासागीर पूरणय नांम रीझ लीनी।—शि.वं.

नोजा-सं०पु० [ग्र० लोज ग्रथवा चिलगोजा] एक प्रकार का सूखा मेवा, चिलगोजा।

उ०—पिस्तां सूं ना प्रेम, कोड काजू री कोनी। नोजा लागै निकांम, किसमिसी भावै कोनी। खारक ना खुस करै, खुमांणी दाय न ग्रावै। खारी वणी विदांम, दांम ग्रखरोट लगावै। मारवाड़ मलांणी मगरै, खोखो चोखो मेवड़ो। सूको ससतो देवै सदा, मुरधर खेजड़ देवड़ो।

—दसदेव

नोट-सं०पु० [ग्रं०] १ राज्य संस्था द्वारा रुपए के स्थान पर प्रचलित किया हुग्रा वह कागज जिस पर उतने ही रुपयों की संख्या ग्रंकित होती है जितने का वह होता है, सरकारी हुंडी।

२ ध्यान रखने के लिए लिख लेने का काम।

क्रि०प्र०—करणो।

३ छोटा पत्र, लिखा हुग्रा परचा।

यौ०—नोट पेपर।

४ ग्राशय या ग्रर्थ प्रकट करने का लेख।

नोट-पेपर-सं०पु०यौ० [ग्रं०] पत्र लिखने का कागज।

नोटबुक-सं०स्त्री०यौ० [ग्रं०] वह पुस्तिका जिसमें जरूरी बातें स्मरणार्थ लिखी जाती हैं।

नोटिस-सं०पु० [ग्रं०] १ सूचना।

२ इश्तिहार, विज्ञापन।

नोता-सं०पु० [पं० ज्ञातिः] सम्बन्धी, रिश्तेदार, नातेदार।

उ०—रूळै कंसरै राज परवेस पोता। तदा नंद रै नेह वळभद्र नोता।—ना.द.

नोतो—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

२ देखो 'नेंत' (रू.भे.)

नोपत—देखो 'नौबत' (रू.भे.) (डिं.को.)

नोबत, नोबति, नोबती—देखो 'नौबत' (रू.भे.)

उ०—नोबति पै ग्रकबर, बादसाह ग्राया। बावन बार डंका, बादिसाहां ले लगाया।—शि.वं.

नोम—देखो 'नवमी' (रू.भे.)

उ०—देवी सप्तमी ग्रस्टमी नोम तूजा। देवी चौथ दौदस्स पूनम्म पूजा।—देवि.

नोमाळी-सं०स्त्री० [सं० नवमालिका] नवमालिका (उ.र.)

नोय—देखो 'नव' (रू.भे.)

नो'रा—देखो 'नौ'रा' (रू.भे., डिं.को.)

उ०—वतळावै जद वांम, वतळायां बोलो नहीं। कदियक पड़ियां कांम, नो'रा करसो नागजी।—ग्रज्ञात

नो'रो—देखो 'नोहरो' (रू.भे.)

उ०—ग्राईदांन साथै होय कोटड़ी ग्राया। ग्राय नै कोटड़ी में एक ग्रलायदो नो'रो छै तिण में डेरो दिरायो।

—जैतसी उदावत री वात

नोहर-सं०पु० [सं० नख-घर] मांसाहारी पक्षी विशेष।

नोहरा—देखो 'नौ'रा' (रू.भे.)

उ०—पूठै सूं राजू खां ग्राइयो, हाथ झाल कही—एक दोय दिन रह पछै चढ़ि जाज्यो, नहीं तो ग्राज रात रह परभात रा चढ़ जाज्यो। मिजमांनी जीम जाज्यो। इण तरह मतां जावो। तद सूरो घणो ही जांणी जे राजूखां सरीखो सरदार इतरी ग्राजीजी नोहरा करै छै तो टिकणो वाजिब छै।

—सूरे खींवे कांधळोत री वात

नौंकणी-संस्त्री० [सं० नव-कणिका] नवीन-किरणावली, नवीन-कलिका (ड.र.)

नौंकंबी-संपु० [देशज] १ एक मुस्लिम सम्प्रदाय विशेष।
२ इस सम्प्रदाय का व्यक्ति।

नौंजण—देखो 'नूंजणी' (मह., रू.भे.)

नौंजणियौ—देखो 'नूंजणियौ' (रू.भे.)

नौंजणी-संस्त्री०—देखो 'नूंजणी' (अल्पा०, रू.भे.)

नौंजणौ—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)

नौंजणौ, नौंजबौ—देखो 'नूंजणौ नूंजबौ' (रू.भे.)
नौंजणहार, (हारौ, हारी), नौंजणियौ—वि०।
नौंजियोड़ौ, नौंजियोड़ौ, नौंज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नौंजीजणौ, नौंजीजबौ—कर्म वा०।

नौंजियोड़ौ—देखो 'नूंजियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नौंजियोड़ी)

नौक—देखो 'नोंक' (रू.भे.)
उ०—अगमद बेंदी भाळ मक, जाय कही छवि जोन। निस अस्टम ससि रो नखित, भयो उदै ससि भोन। भयो उदै ससि भोन, वंक ग्रहुवा वणी। नयणां अंजन नोक, अणी सवणां अणी।
—सिववक्स पाल्हावत

नौकर-संपु० [फा०] (स्त्री० नोकरांणी) १ वेतन आदि पर नियुक्त किया हुआ वह मनुष्य जो टहल या सेवा करे, घर का काम धन्धा करने वाला मनुष्य, खिदमतगार, चाकर, भृत्य।
२ वेतन पर नियुक्त किया हुआ कर्मचारी, वेतनिक कर्मचारी।
उदा०—पटवारी तो एक सरकारी नोकर है।
रू०भे०—नोकर।

नौकरसाही-संस्त्री० [फा० नोकरशाही] शासन की वह प्रणाली जिसमें राजसत्ता केवल उच्च राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है।

नौकरांणी-संस्त्री० [फा० नोकर+रा.प्र. आंणी] घर का काम-धंधा करने वाली स्त्री, दासी।

नौकरी-संस्त्री० [फा० नोकर+रा.प्र.ई] १ भृत्य का काम, खिदमत, टहल, सेवा।
२ वेतन लेकर किया जाने वाला कोई काम।
उदा०—टेम मायं पोंचणो पड़ै, थकै सरकारी नोकरी है।
क्रि०प्र०—करणी, कराणी, लगाणी, लागणी, होणी।

नौकरी-पेसौ-संपु० [फा० नोकर+रा.प्र. ई+पेश:] जिसकी जीविका नोकरी से चलती हो, जिसका काम नोकरी करना हो।

नौका-संस्त्री० [सं०] नाव, तरणि (डि.को.)
रू०भे०—नवका।

नौकार, नौकारमंत्र—देखो 'नवकार' (रू.भे.)
उ०—नाभनंद प्रणदनिय, भरत जन्म करतार। सिद्धाचळ दरसण सुजद, अडीस्वर नौकार।—बां.दा.

नौकार—देखो 'नवकारसी' (रू.भे.)

नौकोट, नौकोटी—देखो 'नवकोटी' (रू.भे.)
उ०—मारू राव सोहता मामरै कियां दाकै मुंह। हाथळां टाहता रखो लाग रै ही कोट। भरोसै भाग रै बोहता फाळियां भूरै। नोहया वाघ रै गळै हार ज्यूं नौकोट।—महाराजा मानसिंह रौ गीत

नौत—देखो 'मनोती' (मह०, रू.भे.)
उ०—१ निज पोसाक सु केसरि नोता। जवहर ग्रतर सिंगेमद जोता।—सू.प्र.
उ०—२ कोट सेस आकार, वणे कांगुरा चहुंवळ। वही अंबारति वणे, जोत घण नौत छिलै जळ।—सू.प्र.

नौतीलौ - देखो 'नोतीलौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नौतीली) (रू.भे.)

नौतौ—देखो 'मनोती' (रू.भे.)
(स्त्री० नौती)

नौगरी, नौग्रही-संस्त्री० [सं० नव+ग्रह+रा.प्र.ई] १ स्त्रियों की कलाई पर धारण करने का सोने या चांदी का एक आभूषण विशेष।
उ०—प्रवीण कंकिणी-स पोच, गज्जरा-ज नौग्रही। हिमंकरं रसत हस्त, भेद जांणि सोभही।—सू.प्र.
रू०भे०—नवगरी, नांगरी।
२ देखो 'नवग्रही' (रू.भे.)

नौगुण—देखो 'नवगुण' (रू.भे.)
उ०—जिम नौगुण अवनी अमर, जिम हिरणांळी हार। इम गढ़वा वाघा गळै, 'जेहल' राजकुंवार।—बां.दा.

नौघण-वि० [सं० नवघन] मूसलाधार, अत्यधिक (वर्षा)
उ०—जिण समै गहरो गुघरो गुघरो गाजै है। पवन सीतळ मंद वाजै है। नौघण मेह री सघण छोळां परनाळां पड़ती जिकै जगी नीठ समै है।—र. हमीर

नौड़िया-संस्त्री० [देशज] भाटी वंश की एक शाखा जो बाद में मुसलमान हो गई।

नौड़ियौ-संपु० [देशज] १ 'खींप', क्षुप या 'सिणिये' के ताजे तृणों को बट कर बनाई जाने वाली रस्सी।
रू०भे०—नवड़ियौ, नांड़ियौ, नेवड़ियौ।
मह०—नड़।
२ भाटी वंश की नौड़िया शाखा का व्यक्ति।

नौछावर, नौछावरि, नौछाहर—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)
उ०—१ ऊपरि राई लूण उतारै। वळि नौछावर प्रांण विचारै।
—रा.रू.
उ०—२ करि करि नौछावर द्रव्य केक। उछळंत हीर मोती अनेक।—सू.प्र.

नौज-अव्यय [सं० नवद्य, प्रा० नवज्ज] (मि० अ० नऊज)

१ ईश्वर न करे, ऐसा न हो।
उ०—नौज किणी सूं लागजो, नैणां हंदो नेह। धुकै न धूंग्रो नीसरै, जळै सुरंगी देह।—अज्ञात
२ नहीं।
उ०—१ ज्यां घर धवळ सनाथ तूं, व्है वे नौज अनाथ। थळ ऊतरियो तूझ वळ, गाडो भरियो आथ।—बां.दा.
उ०—२ थूं विसवास राख मन थारै। सांमळियो जन नौज विसारै।—र.ज.प्र.
रू०भे०—नांज।
नौजण—देखो 'नूंजणी' (मह., रू.भे.)
नौजणियौ—देखो 'नूंजणियौ' (रू.भे.)
नौजणी-सं०स्त्री—देखो 'नूंजणी' (अल्पा., रू.भे.)
नौजणौ—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)
नौजणौ, नौजबौ—देखो 'नूंजणौ, नूंजबौ' (रू.भे.)
नौजवांन—देखो 'नवजवांन' (रू.भे.)
नौतन—देखो 'नूतन' (रू.भे.)
उ०—जु धोया वसत्र स्नांन करि पहिरीया था सु ऊतारिया। नौतन वसत्र पहिरीया त्यांह कौ वरणन करिवा कवि कहै छै।
—वेलि.टी.
नौतौ—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)
उ०—देस माळागिर भोज छइ राव। राजमती कौ रच्यौ हो विवाह। जांन माहइ नौता फिरइ। चउथ व्रहसपतिवार आदीत।
—बी.दे.
२ देखो 'नैत' (रू.भे.)
नौधा-भगति—देखो 'नवधा-भक्ति' (रू.भे.)
उ०—स्वांमीजी कौंण घटै तब कौंण प्रकासै, नौधा-भगति न भावै। सीतळ ठौर सदा रस पीवै, निरभै निज घरि आवै।
—ह.पु.वा.
नौधारियौ-सं०पु० [सं० नवम्+धारा+रा.प्र. इयौ] स्वर्णकारों का एक औजार विशेष जिससे आभूषणों पर नौ रेखाओं की खुदाई की जाती है।
नौनिध, नौनिधि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)
उ०—हिरदै रांम रहै जा जन के, ताकौ उरा कौन कहै। अठ सिधि नौनिधि ताकै आगै, सन्मुख सदा रहै।—दादूवांणी
नौनीत—देखो 'नवनीत' (रू.भे.)
नौपत, नौबत-सं०स्त्री० [फा० नौबत] १ देव-मन्दिरों, राजप्रासादों तथा बड़े बड़े आदमियों के यहां हमेशा या विशेष अवसरों पर बजाया जाने वाला वाद्य जो वैभव, उत्सव, युद्ध या मंगल सूचक होता है। समय समय पर बजने वाला वाद्य जो प्राय: शहनाई आदि के साथ बजाया जाता है।
उ०—१ म्हांरी आद भुवांनी ये! नीर छिड़का दूं गंगा माय रो। जीए मेरी माता ये! नौपत चढवाय म्हांरी आद भुवांनी। जगमग जगवाधूं ये थारै देवरै।—लो.गी.
उ०—२ दुसमणां री नौबत तौ पुड़ फूटोड़ो बजै छै अर नीसांण (धजाआं) रा डंड तूटोड़ा है।—वी.स.टी.
उ०—३ मुख दरवाजै नौबत वाजै। सूरा खबर करैला रे।
—स्री हरिरांमजी महाराज
मुहा०—१ नौबत घुरणी—ऐश्वर्य या प्रताप की घोषणा होना। आनन्द उत्सव होना।
२ नौबत घुराणी—दबदबा प्रकट करना। आतंक दिखाना। प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा करना। आनन्द-उत्सव करना। खुशी मनाना।
३ नौबत बजाणी—देखो 'नौबत घुराणी'।
४ नौबत वाजणी—देखो 'नौबत घुरणी'।
२ गति, हालत, दशा।
३ स्थिति में कोई परिवर्तन करने वाली बातों का घटना, उपस्थित दशा, संयोग।
क्रि०प्र०—आणी, होणी।
रू०भे०—नवबती, नवबत्ती, नवव्वती, नोपत, नोबत, नोबति, नोबती, नौबति, नौबती, नौवत, नौवति।
अल्पा०—नोबतड़ी, नौबतड़ी।
नौबतड़ी—देखो 'नौबत' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—मैड़ी चढ अर थाळ बजायौ, थाळ बजावत बोली यूं। च्यार कूंट चौफेरै बाला, नौबतड़ी धमकाए तूं।—लो.गी.
नौबतखांनौ-सं०पु० [फा०] बादशाह या राजा महाराजाओं के गढ या राजप्रासाद के मुख्य द्वार पर बना हुआ वह स्थान जहाँ पर नौबत बजाने हेतु रखी जाती है तथा यथा अवसर बजाई जाती है।
उ०—महाराज बखतसिंहजी उणी सायत गढ ऊपर चढण नूं असवार हुइया और कहियो कांम सारो आपरै साये सूं पेस चढियो छै, आप प्रभात सुवारां ही पधारजो। सो महाराज गजसिंहजी नौबतखांनो बजायो। प्रभात सुवारा ही सेवा पूजा कर सारी जिनस वस्तु साथ लेय महाराजा गजसिंहजी सवार हुइया।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
नौबति, नौबती-सं०पु० [फा० नौबत+रा.प्र. ई] १ नौबत बजाने वाला, नक्कारची।
२ कोतल घोड़ा, बिना सवार का सुसज्जित घोड़ा।
३ वह घोड़ा जिस पर स्वयं राजा सवार होता हो।
४ देखो 'नौबत' (रू.भे.)
उ०—१ निकट बिन्हैदळ आया नैड़ा, नरां सुरां अति आया नैड़ा। नौबति सोर धड़ड़ि धुबि नैड़ा, नाळि निहाउ गाजिया नैड़ा।
—वचनिका
उ०—२ सुरचार पंदारवं तार साजै। वणं नौबती सोभती रीत वाजै।

त्रिगर्जे कुतायान, देवो विनेगी। वदे भारती, राम वांदी वर्लती।
—रा.रू.

नौमि, नौमी—देखो 'नवमी' (रू.भे.)

उ०—१ तिथि नौमि चैत महीनो नांम।—रामरासो

उ०—२ नौमी नवै नवारिए, अनड़ न मोड़ै अंग।
—ह पु.वा.

नौरंग-सं०पु० [देशज] १ एक प्रकार का पुष्प विशेष।

उ०—अठा उपरांत माळा फूलां री छाबां आगै हाजर कीजै छै। सु फूल कुण भांत रा छै? हजारा नौरंग तुररो मेहंदी किलगो सोनजुही दमरदेनो गेरी कोयल मालती चांदणी मुखमल नरगस हवास गुलअनार वाकडी केवड़ो अोर ही अनेक भांत रा फूलां री माळा तिलंगी छड़ी सेहरा गूंथिया छै।—रा.सा.सं.

२ देखो 'नवरंग' (रू.भे.)

नौरतो—देखो 'नवरात्र' (रू.भे.)

नौ'रा-सं०पु० (बहु व०) [सं० निघोरणः] १ विनती, प्रार्थना।

२ आग्रह, अनुरोध।

क्रि०प्र०—करणा, साणा।

उ०—छोडै लोक छाप मार्थं वहा री न धारी चाल, खोटी सला विचारी लगाई कुळां खोड़। नौ'रा ले ले पीव सूं सांभरियां तणी कहै नारी, मेल आया सारी छत्रीपण री मरोड़।
—दलजी महड़ू

रू०भे०—नवरा, निहुरा, निहोरा, नेवरा, नेव्हरा, नौ'रा, नोहरा, नौहरा, न्योरा, न्होरा।

अल्पा०—निहोरड़ा, नेवरिया, नेवरिया।

मह०—निहोर।

नौरियो-सं०पु० [देशज] नख, नाखून।

रू०भे०—नउरियो, नूरियो, नेउरियो, नैउरियो।

नौरोज, नौरोजो—देखो 'नवरोजो' (रू.भे.)

नौ'रो—देखो 'नोहरो' (रू.भे.)

नौळ-सं०पु० [देशज] एक प्रकार की लोहे की जंजीर जो चोरों से बचाने के लिए या जंगल में चरने के लिए छोड़ते समय ऊंट के अगले पैरों में जकड़ दी जाती है। इसके ताला भी लगाया जाता है।

रू०भे०—नाळ, न्योळ।

अल्पा०—नौळी।

नौलखो—देखो 'नवलखो' (रू.भे.)

नौलखो—देखो 'नवलखो' (रू.भे.)

नौलासी—देखो 'नवलासी' (रू.भे.)

उ०—यमुना के तीरे धेनु चरावै, हां लालाजी, हाथ लियै नौलासी।
—मीरां

नौळियो—देखो 'नकुळ' (२) (अल्पा०, रू.भे.)

नौळी-सं०स्त्री० [देशज] १ एक प्रकार का घास विशेष।

२ चमड़े या कपड़े की बनी हुई एक लम्बी थैली जिसमें रुपये आदि डाल कर कमर में लपेटी जाती है।

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या किणही रै रुपिया री नौळी कड़ियां रै बांधी देखनै चोर लारै न्हाठो।—भि द्र.

३ योग-साधन की एक क्रिया. इसमें दोनों हाथों को घुटनों पर टिका कर नल को ऊपर की ओर उठा कर पेट को पानी की भंवरी के समान घुमाया जाता है। इस क्रिया से वायु रोग नष्ट होते हैं।

उ०—दोउ कंध नीचे कर, नळ सु उठाइए। वारि भंवर सम दक्षिण वाम घुमाइए। नौळी यही वातादिक रोग हटाय है। अग्निद सुखद रु सद् में मुख्य कहाय है।—साधक सुधा

४ अस्थि-पंजर, धड़।

उ०—सासा नौळि में अटकायां सांसै, बाळक झोळी में लटकायां वांसै। मावै ओढी घर साखीणां माडै। छपनै लाखीणां अपणां घर छाडै।—ऊ.का.

५ सांप-कंचुकी (शेखावाटी)।

सं०पु०—६ सांप, सर्प, नाग।

७ देखो 'नौळ' (अल्पा०, रू.भे.)

नौळचो—देखो 'नकुळ' (२) (अल्पा०, रू.भे.) (अमरत)

नौवत, नौवति—देखो 'नौबत' (रू.भे.)

उ०—'माल' चढै दळ मेलि, घुरै नौवति घण घुम्मर। इक लारा असी हजार, भिड़ज असवार भयंकर।—सू.प्र.

नौवों-वि० [सं० नवम्] जिसका स्थान क्रमशः आठ के बाद पड़े, जो क्रम में नौ के स्थान पर हो।

२ नौ की संख्या का (अंक)।

नौसर—देखो 'नवसर' (रू.भे.)

उ०—१ करणफूल नौसर सिर वैनी। कंकन बाजूबंध किंकनी नूंपुर। रसराज विजळी अकास की मांनूं। उतरी है भू पर आकर।
—रसीलैराज

उ०—२ हांडै वळ घाल्यो, रे छैला नथड़ी रै। नौसर तोड़ गयो नौलख रो, दाग दे गयो चुंनड़ी रै।—रसीलैराज

नौसरहार—देखो 'नवसरहार' (रू.भे.)

उ०—१ सांप पिटारो राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़तणी गळ डार। हंस हंस मीरां कंठ लगायो, यो तो म्हारै नौसरहार।—मीरां

उ०—२ थारा गुरुजी नै मुरकयां दोवड़ी। थांरी 'गुरांणी' नै नौसरहार।—लो गी.

नौसरो-वि० [सं० नव+सरः] नौ लड़ का।

उ०—चमकै छै भूहां विच गोरियां ए जरी रो तारो। 'रसराज' तिलक हीरां रो चमकै। हार चमकै छै नौसरो रो प्यारो।
—रसीलैराज

नौसादर-सं०पु० [फा० नौशादर, सं० नरसार] एक तीक्ष्ण क्षार या लवण (अमरत)

रू०भे०—नवसादर।

नौसेरवां—सं०पु० [फा० नौशेरवां] सासानी वंश का एक ईरानी बादशाह जो अपनी न्यायपरायणता के लिए प्रसिद्ध है। यह सन् ५३१ ई० में तख्त पर बैठा था। हज़रत मुहम्मद साहब इसी के समय में उत्पन्न हुए थे।

नौहतेस—देखो 'नवहत्थौ' (मह०, रू.भे.)

उ०—अड़ खेत गनीमां झला रा रूपी आया खगे, विजुजळां दळां रा आछटे धके वैर। धाट-पती दो-हतेस राखियो मळा रा थंभ, नौहतेस गळा रा हार जूं 'उदेनेर'।

—रावत भीमसिंह चूंडावत रो गीत

नौहतौ—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—तिण ऊपर स्वांमीजी दिस्टांत दियौ—किणही चौकारा नौहता फेरचा अनै जीमण वेळा एकीका नैं मांहि आवा दे।

—भि.द्र.

२ देखो 'नैत' (रू.भे.)

३ देखो 'नवहत्थौ' (रू.भे.)

उ०—१ हंगांमा संपेखे हंस वारंगां मोहता हूरां, दोमजां दुरदां धड़ा डोहता दवांन। विजाई खूटिया सीह सांकळां सोहता वागा, जूटिया जटैल नागा नौहता जवांन।—महेसदास कूंपावत रो गीत

उ०—२ वांमी-बंध गादी जिण 'बगतौ', नर नौहतौ निसंक निहार। राजेसरां रहतौ रखवाळौ, भाळौ अवस पड़ंतां भार।

—पहाड़खां आढ़ौ

नौहत्थेस—देखो 'नवहत्थौ' (मह०, रू.भे.)

नौहत्थौ—देखो 'नवहत्थौ' (रू.भे.)

उ०—१ मारू राव सोहता आगरै कियां दाझै मुंह, हाथळां ढाहता खळां खाग रै ही कोट। भरोसै भाग रै थोहता भाळियां भूरं, नौहत्था बाघ रै गळै हार ज्यूं नौकोट।

—महाराजा मांनसिंह रो गीत

उ०—नौहत्थौ झोक भागूंड झल्लेस। कड़ छंट चसळकते नेस।

—सू.प्र.

(स्त्री० नौहत्थी)

नौहथेस—देखो 'नवहत्थौ' (मह० रू.भे)

नौहथौ, नौहथ्थौ—१ देखो 'नवहत्थौ' (रू.भे.)

उ०—१ निकाळण वंक जरमन तणौ नौहथौ, बबर अणसंक पतसाह चे वेल। नृपत सुकळांण कोमंड सर नीछटण, त्वह-पत लंदन ते रूप ऊझेल।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ आपड़ी ककपत्यां अठी, अठी सकत्यां अड़वड़ी। अपछरां चढ़ी रथ्यां, अतै चंडयां नवहथ्थां चढ़ी।—मे.म.

नौहरौ—सं०पु० [सं० नवगृह=नवघर] १ रहने के मुख्य भवन के पास अथवा कुछ दूर बना हुआ वह अहाता जो पक्की दीवारों से घिरा हुआ होता है। इसमें प्रायः खुला स्थान अधिक होता है और मकान कम बने हुए होते हैं।

२ किसी राजा, सामंत आदि बड़े आदमी के रहने के मकान के अतिरिक्त बना हुआ निजी मकान जहां उसके निजी कर्मचारी रहते हैं। इसमें मालिक के ठहरने की भी व्यवस्था होती है।

३ कच्ची दीवार या कांटों की बाड़ का घेरा हुआ वह अहाता जिसमें घास-फूस, चारा आदि रखा जाता है और मवेसी बांधे जाते हैं।

रू०भे०—नौ'रौ, नोहरौ, नौ'रौ, न्हौरौ।

न्यग्रोध—सं०पु० [सं०] वट-वृक्ष।

रू०भे०—नग्रोध, निग्रोध।

न्यग्रोधादिगण—सं०पु०यौ० [सं०] वैद्यक में वृक्षों का एक वर्ग या समूह जिसमें निम्न वृक्ष माने जाते हैं—

बड़, पीपल, गुलर, अरलू, अमलतास, असन (विजयसार), आम, जामुन, कैथ, चिरोंजी, अर्जुन, धाय, महुआ, मुलहठी, लोध, वरना, नीम, पाखर, कदम, बेर, सलई, धामन, साबर, करंज, भिलावा आदि।

न्यच्छ—सं०पु० [सं०] अमृतसागर के अनुसार एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें शरीर पर काले या श्वेत चिन्ह हो जाते हैं।

न्यजर—देखो 'नजर' (रू.भे.)

उ०—फौज बराबरि न्यजर भर, अरि पाधरी आई।—मालो सांदू

न्याळणौ, न्याळबौ—देखो 'निहाळणौ, निहाळबौ' (रू.भे.)

उ०—एहवूं कही रा करि रुदन न्याहाळि नारी तणूं वंदन। वळी नीसारि पाछुं वळि आंणी दुख राजा टळवळी।—नळाख्यांन

न्याळणहार, हारौ (हारी), न्याळणियौ—वि०।

न्याळिओड़ौ, न्याळियोड़ौ, न्याळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

न्याळीजणौ, न्याळीजबौ—कर्म वा०।

न्याळियोड़ौ—देखो 'निहाळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० न्याळियोड़ी)

न्यांई—देखो 'नांई' (रू.भे.)

उ०—ता पीछै पातसाहजी री तपस्या प्रथ्वी-चक्र पर सूरच की न्यांई फैलती भई।—द.दा.

न्यांणूं, न्यांणौ—देखो 'नांणौ' (रू.भे.)

उ०—अर घोड़ा वाळा नूं न्यांणूं सारो चुकाय सिरोपाव दे विदा किया। कहियौ घोड़ा सताब ल्यावौ।

—भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

न्याइ, न्याई—१ देखो 'नांई' (रू.भे.)

उ०—तरु लता पल्लवित त्रिणे अंकुरित, नीलांणी नीलंबर न्याइ। प्रथमी नदिए हार पहरिया, पहिरे दादुर नूपुर पाइ।—वेलि.

२ देखो 'न्यायौ' (रू.भे.)

उ०—१ मेड़तियौ 'कुपळौ' मुदै, धांधल गोयंदास। मेल्हे राजा मेड़तै, जग न्याई विसवास।—रा.रू.

उ०—२ विलायत पै बादसाह सुल्तांन हुसैन। दातार जूंझार, न्याई, समझणौ पंडित।—नी.प्र.

न्यात—देखो 'न्याति' (रू.भे.)

उ०—१ न्यात नेगरा निज निठुर, पांमर मांगी परजिया। प्रम-लिगो देख भारी पगम, होंग पारी हरमिया।—ऊ.का.

उ०—२ नाम न न्यात न माय बाप, निगुणा निराकारा।

—केसोदास गाडण

यौ०—न्यात-गंगा, न्यात-पांत।

न्यातगंगा-स०स्त्री०यौ०—न्याति या जाति-समूह।

उ०—देख रघुनोहा। नांणो हाथ नै आय जावै पण टांणो नी आवै। म्हारो तो कैवणो है कै अबकै छोकरा रै लारै न्यातगंगा नै जिमाय दें।—रातवासो

न्यात-पांत—देखो 'न्याति पांति' (रू.भे.)

उ०—न्यात-पांत में म्हूं जठै कठैई जाऊं म्हनै माथो नीचो करनै बैठणो पड़ै पर थो फगत इण कारण ईज।—रातवासो

न्यातरौ—देखो 'नातौ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—गांवीणा जोड़ी सारीखी, वरदळ रच न्यातरौ विचार। हसत लगन मेलियउ हथळेवउ, अवर करण लागा आचार।

—महादेव पारवती री वेलि

न्याति-सं०स्त्री० [सं० ज्ञाति, प्रा० णाती] हिन्दुओं में मनुष्य समाज का वह विभाग जो पहले पहल कर्मानुसार किया गया था पर पीछे से सम्भवतः जन्मानुसार हो गया, हिन्दुओं की वर्ण-व्यवस्था के पश्चात् आगे चल कर होने वाले किसी वर्ण का विशिष्ट विभाग, जाति।

उ०—१ नकटा री नहि न्याति, बिलग बोळां रो न वाड़ो। बूचां रो नहि वास, ज्यूं न गूंगां रो जाड़ो।—ऊ.का.

उ०—२ तेह नही पंडित सद्रूप, तेह तुम्हारी न्याति। कामकंदळा केरडी, शिति-उळि मोटी ख्याति।—मा.कां.प्र.

यौ०—न्याति-पांति।

रू०भे०—नात, नियात, न्यात, न्याती।

न्याति-पांति-सं०स्त्री०यौ०—जाति (किसी जाति के सामूहिक रूप के लिए कहा जाने वाला शब्द।

उ०—परदेसी नवि ओळखै, न्यातिपांति कुळसील। अणजांण्यो परणावता, वास्ये तुम्ह नी हील।—ढोला मारू

रू०भे०—न्यात-पांत।

न्याती—१ देखो 'न्याति' (रू.भे.)

२ देखो 'नातौ' (रू.भे.)

उ०—१ 'प्रान' के जे न्याती रोके, नाग की सी नांई।

—रा.रू.

उ०—२ चन्द्र के न्याती, सूर के तेज।—रा.रू.

न्यातीलौ—देखो 'नातौ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ वो नर करै तोसूं परदास, म्हांनै मेलो न्यातीलां रै पास। हूं जाय नै वठ्ठै रहो ए, मो जिम मतो करो ए।—जयवांणी

उ०—२ ज्यूं साधपणो लेवै जरै न्यातीला रोवै ते तो आपरै स्वारथ लिए वळां री देखादेख दीक्षा लेण वाळो रोवा लाग जायं तो बात विपरीत।—भि.द्र.

न्याद-सं०पु० [सं०] भोजन (ह.ना.)

रू०भे०—नाद।

न्याय-सं०पु० [सं०] १ विवाद या व्यवहार में उचित अनुचित का निबटेरा, प्रमाणपूर्वक निश्चय, दो पक्षों के बीच निर्णय। किसी मुकदमे, मामले आदि में अधिकारी या अनधिकारी, दोषी या निर्दोष आदि का निर्धारण।

उ०—निरधनियां आव समापण नहचै, दियण अन्यायां न्याय दुवाह। जोधांपती सकळ जीवां री, न्यारी न्यारी लियै निगाह।

—महादान महड़ू

२ नियम के अनुकूल बात, नीति, इंसाफ, उचित बात।

उ०—ऊपाड़ै आयु जिती, पर निंदा री पोट। पिसण न्याय पग डग पड़ै, दुरासीस लग दोट।—बां.दा.

३ किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिए विचारों की उचित योजना को निरूपित करने वाला शास्त्र, प्रमाण, तर्क, दृष्टांत आदि युक्त वाक्य।

क्रि०वि०—१ निश्चय ही, अवश्य। उ०—१ आव अमोलक ऊजळी, समर गुणां ततसार। न्याय इसा नग नीपजै, माजी कूख मझार।—बां.दा.

उ०—२ आवै अंनदातार नूं, भारथ साळो भळाय। पितरेसुर जिण रा पड़ै, नरक विचाळै न्याय।—बां.दा.

२ देखो 'नांई' (रू.भे.)

रू०भे०—नाय, नाव, नियाव, न्याव।

अल्पा०—न्यावडौ।

न्यायकारी-वि० [सं०] इंसाफ करने वाला, न्यायकर्ता।

उ०—जिण लागां हुय जाय, न्यायकारी अन्याई। जिण लागां हुय जाय, भाई रो दुसमण भाई। जिण लागां हुय जाय, बुद्धि वाळो बेबुद्धी। जिण लागां हुय जाय, सुधि वाळो बेसुद्धी। पिंड रै आंण लागां पछै, पड़ै सीस पैजार री। मेट रे मेट ! मोगा मरद, बुरी फेट बिभचार री।—ऊ.का.

न्यायछांणी-वि० [सं० न्याय+राज० छांणी] खूब छानबीन करके न्याय करने वाला।

उ०—जैपुर में रिकाटि साहब भादूर न्यायछांणी। सीकरि सापरा की जाळसाजी नै पिछांणी।—शि.वं.

न्यायधांमी-वि० [सं० न्याय+धामी] न्यायकर्ता, न्यायाधीश।

उ०—जैपुर जा उकीलां में सुपार्श्वसिंघ नांमी। वेलणसाब सीकरि में पधारया न्यायधांमी।—शि.वं.

न्यायपथ-सं०पु० [सं०] उचित, रीति, न्यायसम्मत मार्ग।

न्यायपरता-स०स्त्री० [सं०] न्यायी होने का भाव, न्यायशीलता।

न्यायवट-सं०पु० [सं० न्याय+वर्त्मन्] न्यायमार्ग, न्यायपथ।
उ०—न्यायवटइ नरपति पलइ, सरखइ सीह-सीयाळ। कां वेटउ कां अवर को, कां वूढउ कां वाळ।—मा.कां.प्र.

न्यायव्रत, न्यायव्रित-सं०पु०यौ० [सं० न्यायव्रत] न्याय का व्रत, न्याय करने का दृढ़ संकल्प।
उ०—द्रढ मंत्री दिल्लेस पास 'अमरेस' भंडारी, रीत नीत ऊजळी प्रीतधारी हितकारी। सुपनै ही साभाय न्यायव्रित चाय न चूकै, राजकाज चित राग माग अनि समळ प्रमूकै।—रा.रू.

न्यायव्रती-वि० [सं० न्याय+व्रतिन्] न्याय करने का व्रत निभाने वाला, न्यायशील।

न्यायसभा-सं०स्त्री० [सं०] वह सभा जहां विवादों का निर्णय हो।

न्यायाधीस-सं०पु० [सं० न्यायाधीश] किसी मुकदमे, विवाद या व्यवहार का निर्णय करने वाला अधिकारी, जज, न्यायकर्त्ता।

न्यायालय-सं०पु० [सं०] वह स्थान जहां विवादों का निर्णय हो अदालत।

न्यायास—देखो 'निवास' (रू.भे.)
उ०—उन्नाळै दै ईल, लील चौमास खुलावै। सीयाळै न्यायास, आखरयां सुखी सुलावै।—दसदेव

न्यायी-सं०पु० [सं० न्यायिन्] उचित पक्ष ग्रहण करने वाला, नीति पर चलने वाला, न्यायसम्मत आचरण करने वाला।
रू०भे०—निआई, नियाई, न्याई।

न्यायौ—देखो 'निवायौ' (रू.भे.)
उ०—लादां लकड़ी जगै, नीकळै न्याई लपटां। खनै खरीदा खड़ा, वांनकी निरखै कपटां।—दसदेव
(स्त्री० न्याई)

न्यार-सं०पु० [देशज] १ घास, चारा।
२ देखो 'न्यारियौ' (मह०, रू.भे.)

न्यारिया-सं०स्त्री० [देशज] स्वर्णकारों का एक भेद विशेष जिसके व्यक्ति प्रायः स्थान स्थान पर राख छानते हैं। इनको धूल-धोया भी कहते हैं (मा.म.)

न्यारियौ-सं०पु०—१ स्वर्णकारों की भट्टी की तथा अन्य स्थान की राख या धूलि छान कर उससे धन प्राप्त कर जीवन व्यतीत करने वाली न्यारिया जाति का व्यक्ति।
२ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)

न्यारौ-वि० [सं० निर्निकट, प्रा० निनिअड, अप० निलियर]
(स्त्री० न्यारी) १ जो मिला या लगा न हो, जो पास न हो, अलग, जुदा।
उ०—१ 'अभौ' चालियौ आसुरां सीस अंसी, जळ निद्धि उच्छेदियां वंध जैसौ। तुरंगां वर्णै तेज अंगां अतारौ, नहीं जागियां सोर सूं जोर न्यारौ।—सू.प्र.
उ०—२ पाखां खोस गयौ प्रभु प्यारौ, नित नांखां निसकारौ। नहीं आंखां तोई हुवै न न्यारौ, आंखां सूं उणियारौ।—ऊ.का.
उ०—३ पछै मारि नै तोलियौ, घटचौ बध्यौ न लिगार। तिण कारण म्हैं जांणियौ, जीव काया नहीं न्यारा।—जयवांणी
२ अद्भुत, अनोखा, विचित्र, विलक्षण।
उ०—उरघ लिलाड़ नीरभव आंखैं, नाक कीर छबि न्यारी। दंत भुजा वछ दौर धीर धर, उर तसबीर उतारी।—ऊ.का.
३ जो पास न हो, दूर। उ०—पापी पाप न कीजिए, न्यारा रहिए आप। करणी आपी आपरी, कुण वेटौ कुण बाप।—बां दा.
४ और ही, अन्य, भिन्न।
रू०भे०—नारौ, नियारौ, नैरौ, न्हारौ।

न्याल—देखो 'निहाल' (रू.भे.)
उ०—अतर रंग रेलियौ तेलियौ अहंसी। कवर अलवेलियौ न्याल कर दे।—जगौ खिड़ियौ

न्याळणौ, न्याळबौ—देखो 'निहाळबौ' (रू.भे.)
उ०—ढोलोजी बोलिया आया तो नळवरगढ सूं ज्यास्यां पूंगळ, ताहरां गढवी बोल्यौ महाराज कंवार आपरी वाट न्याळै छा। वेगा पधारो।—ढो मा.
न्याळणहार, हारौ (हारी), न्याळणियौ—वि०।
न्याळिओड़ौ, न्याळियोड़ौ, न्याळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
न्याळीजणौ, न्याळीजबौ—कर्म वा०।

न्यालस—देखो 'नालिस' (रू.भे.)
उ०—पीछै पातसाहजी रै आगै महाराज री न्यालस करी।
—द.दा.

न्याळौ—देखो 'नवाळौ' (रू.भे.)
उ०—ताहरां 'इंदो' अपुठो आई। ऊनाळो ऊतरियौ। वरसाळो ऊतरियौ। सीयाळो आयौ। न्याळा हुवै छै। राव नूं न्याळा री वुलावो आयो।—नैणसी

न्याव-सं०पु० [सं० निर्वात] १ कुम्हार का मिट्टी के बर्तन अग्नि में पकाने का स्थान, आवा।
रू०भे०—नियाव, निवा, नीवा, नीवाह, नेव।
अल्पा०—निवाई, नीवाई, न्याही।
२ देखो 'न्याय' (रू.भे.)
उ०—न्याव किया नोसेरवां, सुविहांना सिरदार। आज करै माजी इसा, न्याव संदेह निवार।—बां.दा.
३ देखो 'नाव' (रू.भे.)
उ०—पीछै पातसाहजी रै लस्कर रा अटक आय डेरा हुवा तठै राजावां सारां मनसोभौ कियौ। जो किणी तरै साची खबर मंगावौ, कांई मचकूर है। तद औ साहबै री फकीर वडौ नेक है। अरु करणसींघजी रै सागै हो सू इण कयौ 'हूं अस्तखांन नूं पूछ'र पकी खबर लाऊं छूं' तद करणसिंघजी वगेरै सारांई राजावां इणरी महमा करी। अरु मेलियौ। पछै इण अस्तखांन नूं पूछियौ कै मीर

बादशाह रो क्या मत है ? तद मक्काणां आखियो हमारी जात का पैगंबर का हुक्म है। तू हिंदू नूं कहेगा नहीं। पछै जाणु क्यो जो हजरत का हुक्म दीन रखण का विचार है। पोछै मो तुरत पाछो पाय बादशाहजी नूं सारी हकीकत कही। पोछै राजा सारा ई भेळा हुआ ने मतो करी जो तिस्ये मारां नू मुसलमान करसी। पण पोतां पहल दे'सा मत उतरो। मुसलमानां सारां ई नूं पैहला उतरण दो। पण एक डाव है, पयार मुसलमान बद सैतान बोहत जबर है, सु पोतां मा कह्या के म्हे हिंदू हां सू थांसूं पैहला उतरसां तिण मार्थ थे बाद कर दे'सा उतरसी पोछै आंपां सारी बात करसां। पोछै उतरण री बगत हजारां न्यावां त्यारी हुई। तठै राजावां रा हजारां न्यावों जाय।

न्यावदावाव–सं०पु०यौ० [सं० न्याय] १ न्याय, इंसाफ।

२ न्याय करके निर्णय लिखने की तारीख।

न्यास–सं०पु० [सं०] १ यथास्थान रखना, स्थापन।

२ धरोहर, थाती।

न्यास-स्वर–सं०पु० [सं०] किसी राग का समाप्त करने का स्वर।

न्याही–सं०स्त्री०—देखो 'न्याव' (मत्वा०, रू.भे.)

उ०—कुल्हड़, कटोरदान, कचोळा, लोटा, कळाळ, माटड़ी। साह गंगेव दास प्रजापत, न्याही नगरां हाटड़ी।—दसदेव

न्यूजणउं—देखो 'नूंजणो' (रू.भे., उ.र.)

न्यूत—देखो 'नेत' (रू.भे.)

न्यूतनो, न्यूंतवो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रवो' (रू.भे.)

उ०—परमळ प्रीति उमगि जळ उलटया, गगन गरजि घन आया।
दामणि उलटि आभ में बैठी, नोघण न्यूंति बुलाया।
—ह.पु.वा.

न्यूंतणहार, हारो (हारी), न्यूतणियो—वि०।

न्यूंतिप्रोड़ो, न्यूंतियोड़ो, न्यूत्योड़ो—भू०का०कृ०।

न्यूंतीजणो, न्यूंतीजबो—कर्म वा०।

न्यूंतियार, न्यूंतिहार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

न्यूंतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० न्यूंतियोड़ी)

न्यूंतो—देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—पे तो दो ना सूरजजी घर न्यूंतो। थे तो द्यो ना महादेव घर न्यूंतो।—लो.गी.

न्यून-वि० [सं०] १ कम, थोड़ा।

२ नीच, क्षुद्र।

३ राजस्थानी छंद-शास्त्र के अनुसार 'वयणसगाई' का एक भेद।

उ०—आरारादि घट वरण ये, जुग जुग अवर सुजांण। इधक थोर सम न्यून इम, चित्त तीनूं पहिचांण।—र.रू.

रू०भे०—नूंन, नून।

न्यूनमधा–सं०स्त्री० [सं० न्यून+मधा] डिंगल के गीतों की वह रचना जिसमें प्रथम द्वाले में जो वर्णन हो उससे अगले द्वाले में क्रमशः वर्णन न्यून हो।

न्यूनता–सं०स्त्री० [सं० न्यून+रा.प्र. ता] १ कमी।

२ क्षुद्रता, नीचता।

३ बदनामी, अपयश।

रू०भे०—नूंनता, नूनता, नूनताई।

न्योळ—देखो 'नोळ' (रू.भे.) (शेखावाटी)

न्योळयो—देखो 'नकुळ' (२) (अल्पा०, रू.भे.)

न्योछावर, न्योछावरि—देखो 'निछरायळ' (रू.भे.)

उ०—करि न्योछावरि नजर, होय भड़ हाजरी। ओपै तद उमराव, सभा सुरराज री।—सिवबक्स पाल्हावत

न्योतणो, न्योतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

न्योतणहार, हारो (हारी), न्योतणियो—वि०।

न्योतिओड़ो, न्योतियोड़ो, न्योत्योड़ो—भू०का०कृ०।

न्योतीजणो, न्योतीजबो—कर्म वा०।

न्योतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० न्योतियोड़ी)

न्योतिहार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

उ०—जान री विदा आवण री तयारी हुई। कितराहेक आप न्योतिहार तेड़िया तिके आय भेळा हुवा।—नैणसी

न्योतो—देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

न्यौ'रा—देखो 'नौ'रा' (रू.भे.)

नृंमळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)

उ०—नरेस राम नृंमळा। उरां सभाव ऊजळा।—र.ज.प्र.

नृकासुर—देखो 'नरकासुर' (रू.भे.)

उ०—गोवाळ सहेत राखी तैं गाय, महा दुख हूंत बिछोड़ी माय। नृभै व्रज कीधी तैं नर-नार, मिलाई गाय नृकासुर मार।—ह.र.

नृग—देखो 'नृप' (रू.भे.)

नृगुण—देखो 'निरगुण' (रू.भे.)

उ०—निराकारो कावै, कहत नहि आवै, तन नमो। निराधारो धारो, जपत जस गावै, जन नमो। नमो भेवा भेवा, सरण भव देवा, मुनि नमो। नमो गरवाहारी, नृगुण गुणधारी, मुनि नमो।—ऊ.का.

नृग—देखो 'नरग' (रू.भे.)

उ०—परम्मळ कम्मळ सद्रस पग्ग, निधांन परम्म निवारण नृग्ग। इसा पग तूझ तणा ऊदार, सेवंतां पाप टळै संसार।—ह.र.

नृजान–सं०पु० [सं० नृ+यान] मनुष्यों द्वारा उठा कर ले जाया जाने वाला यान, पालकी (वं.भा.)

नृतंग—देखो 'निरत' (रू.भे.)

उ०—नृतंग रित अंग करंग नादंग। रस तरंग बहु तरंग रंग रंग।
—सू.प्र.

नूतंत—देखो 'निरतंत' (रू.भे.)
उ०—ठाढी नूतंत आय मुनि वन थित। रति अरु साथि कांम बहुवै रति।—सू.प्र.
नूत—देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—जंघा पवित्र करिस हूं जटधर, नूत करतौ आगळ नाटेसर। इंद्रियां पवित्र करिस अप्रंप्रम, दमे गिनांन तूझ दयतां दम।—ह.र.
नूतकार—देखो 'निरतकर' (रू.भे.)
नूतांण—देखो 'निरत' (मह०, रू.भे.)
उ०—हिंदवांण तुरक्कांण हिचै। रिण-ढांण वीरांण नूतांण रचै।
—सू.प्र.
नूति—देखो 'निरति' (रू.भे.)
नृती-सं०स्त्री० [सं० नृत्य+रा.प्र ई] वेश्या, गनिका (अ.मा.)
नृत्त—देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—संगीत नृत्त सोहती, मुनेस हंस मोहती। अनंग रंग आतुरी, प्रिया नचंत पातुरी।—सू.प्र.
नृत्तकार—देखो 'निरतकर' (रू.भे.)
उ०—अनेक पद्मणी अवास, रूप भोमि रच्चए। अनेक राग रंग ओप, नृत्तकार नच्चए।—सू.प्र.
नृत्तणौ, नृत्तबौ—देखो 'निरतणौ, निरतबौ' (रू.भे.)
नृत्तणहार, हारौ (हारी), नृत्तणियौ—वि०।
नृत्तिओड़ौ, नृत्तियोड़ौ, नृत्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नृत्तीजणौ, नृत्तीजबौ—भाव वा०।
नृत्तियोड़ौ—देखो 'निरतियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नृत्तियोड़ी)
नृत्य—देखो 'निरत' (१, २, ३) (रू.भे.)
उ०—गुणी सुपंखरा गीत में, वरणण नृत्य वखांण। कहियौ धुर पिंगळ सुकव, जिको पाड़गति जांण।—र.ज.प्र.
नृत्यकारी—देखो 'निरतकर' (रू.भे.)
उ०—हंस तौ सब विधि को जांणणहार हुओ, मोर नृत्यकारी नाचै पवन ताळधारी हुओ।—वेलि. टी.
नृत्यकी—देखो 'नरतकी' (रू.भे.)
नृत्यप्रिय—देखो 'निरतप्रिय' (रू.भे.)
नृत्यसाळ, नृत्यसाळा—देखो 'निरतसाळ, निरतसाळा' (रू.भे.)
नृधोम-वि० [सं० निर्+धूम] धूआंरहित, धूम्ररहित।
उ०—धुवै रणताळ सझाळ नृधोम। हुकां धुनि वेद करै इम होम।
—सू.प्र.
नृप-सं०पु० [सं० नृप] राजा, नरेश।
उ०—१ रजंग नृप अंग सुरग चतुरंग। सीत संग करि खतंग सारंग।—सू.प्र.
रू०भे०—नरप, निव, निप।
मह०—नृपेस।
नृपत—देखो 'नृपति' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—करै तिकारां कांठला, कंठ नृपत कुंवरांह। वधनहियां ज्यां सिर वणै, कीरत जेण करांह।—बां.दा.
नृपता-सं०स्त्री० [सं० नृपता] राजा का गुण, राजत्व।
नृपति-सं०पु० [सं० नृपति] राजा, नरेस।
उ०—सुर करै हरख वरखै सुमन, अमर तरणि धिन उच्चरै। नर-भुवण हूंत सतियां नृपति, सुरपुर-मारग संचरै।—रा.रू.
२ कुबेर।
रू०भे०—नृपत, निपत, निपति।
नृपथांन-सं०पु० [सं० नृप+स्थान] राजधानी।
२ शहर, नगर (डि.को.)
नृप-द्रोही-सं०पु०यौ० [सं० नृप+द्रोहिन्] राजाओं का शत्रु, परशुराम।
नृप-वास-सं०पु०यौ० [सं० नृप+वासः] १ नगर (अ.मा.)
२ राजधानी।
नृपाळ-सं०पु०यौ० [सं० नृ+पालनम्] प्रजा का पालन-पोषण करने वाला, राजा, नृप। उ०—भागीरथ संभ्रम भुवाळ। 'नाभंग' हुवौ 'स्रुत' सुत नृपाळ।—सू.प्र.
नृपेस—देखो 'नृप' (मह०, रू.भे.)
उ०—रटै नृपेस हो रिखेस आप एह उच्चरी।—सू.प्र.
नृफळ—देखो 'निरफळ' (रू.भे.)
उ०—घणौ घड़ण घट घाट नृफळ नर ननौ निमाड़।—र.रू.
नृबळ—देखो 'निरबळ' (रू.भे.)
उ०—फुरसी निरधन नृबळ हजारां।
—महाराजा पदमसिंह री गीत
नृभै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)
उ०—कीरतसिंघ 'कूंपा' हरौ, सरणायां साधार। कर आदर सरणै लियौ, नृभै कियौ तिणवार।—रा.रू.
नृभै-मण-वि० [सं० निर्भय-मन] निर्भय मन वाला, निशंक, वीर।
उ०—हेकण हाथ धिनो चित हेकण, मौज वरीसण नृभैमणा। सो अधियाळ सुंडाळ सांवठा, तै पीधा 'कल्यांण' तणा।
—महाराजा रायसिंह री गीत
नृमळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)
उ०—१ मधिजळ नृमळ पियै हित मन्नै। अनि भोजन बहुधा अवन्नै।
—सू.प्र.
उ०—२ इळ सिर भांण 'विजा' हर ओपै, नाथ क्रपा प्रभता नमळ। जळज गुणिंद हरख मय जाजा, खूटै रिख वळ छोड खळ।
—महाराजा मानसिंह री गीत
नृमळी—देखो 'निरमळी' (रू.भे.)
नृमेघ—देखो 'नरमेध' (रू.भे.)
नृम्मळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)
नृमळा—देखो 'निरमळा' (रू.भे.)

नृपेत—देखो 'निरपेत' (रू.भे.)
नृपोत—देखो 'नरपोत' (रू.भे.)
नृबाण—देखो 'निरवाण' (रू.भे.)
उ०—निरजन नाद परम्म नृबांण। निमग्न महारघण मन कल्यांण।
—ह.र.

नृमन—देखो 'निमंन' (रू.भे.)
नृसिंह—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.)
नृसिंहचतुर्दसी—देखो 'नरसिंहचवदस' (रू.भे.)
नृसींग—१ देखो 'नरसींगो (मह०, रू.भे.)
उ०—रण जुध वेद नृसींग हैमारव। काटरड़ो वाजै केवांण। सादलि घड़ा 'रतनसी' साटो। जुधि हवळेवँ जुड़ै जवांण।
—दूदो

२ देखो 'नरसींग (रू.भे.)
निृग, निृघ, निृगु-सं०पु० [सं० नृग] १ महाभारत के अनुसार एक महादानी राजा जिन्हें एक ब्राह्मण के असन्तुष्ट हो जाने के कारण गिरगिट की योनि मिल जाने के पश्चात् श्री कृष्ण ने इनका उद्धार किया।
उ०—उधारण निृघ अरिजण ग्रास, पुरावण गोविंद टाळण प्रास। ममापण वामण ना रिघ सिध, दमोदर दान वडो तैं दीध।—पी.ग्रं.
२ मनु के एक पुत्र का नाम।
रू०भे०—नृग।
निृत—देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—ऊछळंत हाथ पाव, घाट सीस दाव घाव। मंड ईस रुंडमाळ, वीर निृत विकराळ।—सू.प्र.
निृतकार—देखो 'निरतकर' (रू.भे.)
उ०—१ निृतकार ततकार थेईकार नाचै, नमै रमै 'लखपती' आगै वाटारंभ।—ल.पि.
उ०—२ थिमतार थ्यांन जैंकार वाच। निृतकार करै तितकार नाच। हद रीझवार रिम गण हसत। वणियो अपार रण छिब वसंत।
—वि सं.

निृतमाळ—देखो 'निरतमाळ' (रू.भे.)
निृत्य—१ देखो 'निरत' (१, २, ३) (रू.भे.)
नृत्यकारी-वि० [सं० नृत्यकारिणी] नाचने वाली स्त्री, नर्त्तकी।
उ०—निृत्यदा द्रूपदि निृत्यकारी। ए उतरा नइ गुरु रूपि नारी।
—विराट पर्व

२ देखो 'निरतकर' (रू.भे.)
निृत्यसाळ—देखो 'निरतसाळ' (रू.भे.)
उ०—स्वतन्त्र निृत्यसाळ में निर्तविनी नचै नहीं। सुहागिनी स्वराग राग रागनी रचै नहीं।—ऊ.का.
निृप—देखो 'नृप' (रू.भे.)
निृपत, निृपति—देखो 'नृपति' (रू.भे.)
उ०—१ आलिंगन देई नरनाह, दीधी वेस्या मनि उछाहि। अरध राज दिउं राजकुंमारि, परिणावी निृपतइं भ्रावारि।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—२ घोर मद घोम जस तणा वादित्र घुरै, जोध सामंत में घाट जोपै। चमर ढळतै निृपति अमिनको 'चोंडरज', अमर मेघाडंब(र) सीसि ओपै।—अमरसिंह राठोड़ री गीत
निृपसेवन-सं०पु० [सं० नृप—सेवन] ७२ कलाओं में से एक।—व.स.
निृव्बीज—देखो 'निरबीज' (रू.भे.)
उ०—हुई मोम निृब्बीज दारं हुकम्मं। कंवारी रही कन्यका लेस क्रम्मं।—सू.प्र.
निृभै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)
उ०—नाह महुंगा दियण झूंपड़ा निृभै-नर। जावसी कड़तला केगि जरसी जहर।—हा.का.
निृमळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)
उ०—१ ऊपरि पदपलव पुनरभव ओपति, निृमळ कमळ दळ ऊपरि नीर। तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरिहंस सावक ससिहर हीर।
—वेलि.
उ०—२ कर रत्ता मोती निृमळ, नयणे काजळ रेह। थण भूली गुंजाहळे, हसिकरि नांख्या तेह।—डो.मा.
निृमळा—देखो 'निरमळा' (रू.भे.)
निृमळो—देखो 'निरमळ' (अल्पा., रू.भे.)
निृम्मळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)
उ०—चद्रप्रभा भळकं अहि चंचळ। मिळियो वीच गंगाजळ निृम्मळ।
—सू.प्र.
निृम्मळा—देखो 'निरमळा' (रू.भे.)
निृम्मळो—देखो 'निरमळ' (अल्पा., रू.भे.)
निृलक्ष्मी-सं०पु० [सं० नृलक्ष्मी] पुरुष की ७२ कलाओं में से एक।
—व स.
निृसस-वि० [सं० नृशंस] १ कष्ट देने वाला, निर्दय, क्रूर।
२ अत्याचारी, जालिम, अनिष्टकारी, अपकारी
रू०भे०—नृसंस।
निृसंसता-सं०स्त्री० [सं० नृशंसता] निर्दयता, क्रूरता।
नीजण, नीजन-वि० [सं० निर्जन] सुनसान, एकाकी, निर्जन।
उ०—मिळि माह तणो माहुटि सूं मसि अन, तपि आषाढ तणो तपन। जन नीजन पणि अधिक जांणियो, मध्यरात्रि प्रति मध्याह्न।
—वेलि.
रू०भे०—नीजण, नीजणि।
म्हंखणो, म्हंखबो—देखो 'नांखणो, नांखबो' (रू.भे.)
उ०—जडियाळ खजर जमडढ जडै, बांधि वेवे बडियाळ। सोरठियाळ रूप देखे रंभा, 'म्हंखे हीर लडियाळ।—पना वीरमदे री वात
म्हलाड़णो, म्हलाड़बो—'म्हाड़णो, म्हाड़बो' (रू.भे.)
म्हलाड़णहार, हारो (हारी), म्हलाड़णियो—वि०।

न्हलाड़िओड़ो, न्हलाड़ियोड़ो, न्हलाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
न्हलाड़ीजणौ, न्हलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
न्हलाड़ियोड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० न्हलाड़ियोड़ी)
न्हलाणौ, न्हलाबौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हलाणहार, हारौ (हारी), न्हलाणियौ—वि० ।
न्हलायोड़ो—भू०का०कृ० ।
न्हलाईजणौ, न्हलाईजबौ—कर्म वा० ।
न्हलायोड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० न्हलाड़ियोड़ी)
न्हलावणौ, न्हलावबौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हलावणहार, हारौ (हारी), न्हलावणियौ—वि० ।
न्हलाविओड़ो, न्हलावियोड़ो, न्हलाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
न्हलावीजणौ, न्हलावीजबौ—कर्म वा० ।
न्हलाव्योड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० न्हलावियोड़ी)
न्हवण—देखो 'सनांन' (रू.भे.)
उ०—१ संकेती नर ले गया जी, मुहता मंदिर वाडि । न्हवण वसन भोजन करधउ जी, वेसा स्यउ मन माडि ।—प्राचीन फागु-संग्रह
उ०—२ नवमे दिवस विसेस न्हवण पंचाम्रिते हो लाल ।—स्रोपाळ
न्हवरावणौ, न्हवरावबौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
उ०—माता सुत नइले धवरावइ, बेटा बेटा कहिय बुलावइ । उन्हउ नीर लेइ न्हवरावइ, इम माता मनि आणंद पावइ ।—स्रोसार
न्हवरावणहार, हारौ (हारी), न्हवरावणियौ—वि० ।
न्हवराविओड़ो, न्हरावियोड़ो, न्हवराव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
न्हवरावीजणौ, न्हवरावीजबौ—कर्म वा० ।
न्हवरावियोड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हवरावियोड़ी)
न्हवाड़णौ, न्हवाड़बौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हवाड़णहार, हारौ (हारी), न्हवाड़णियौ—वि० ।
न्हवाड़िओड़ो, न्हवाड़ियोड़ो, न्हवाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
न्हवाड़ीजणौ, न्हवाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
न्हवाड़ियोड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हवाड़ियोड़ी)
न्हवाणौ, न्हवाबौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हवाणहार, हारौ (हारी), न्हवाणियौ—वि० ।
न्हवायोड़ो—भू०का०कृ० ।
न्हवाईजणौ, न्हवाईजबौ—कर्म वा० ।
न्हवायोड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हवायोड़ी)
न्हवावणौ, न्हवावबौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हवावणहार, हारौ (हारी), न्हवावणियौ—वि० ।
न्हवाविओड़ो, न्हवावियोड़ो, न्हवाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
न्हवावीजणौ, न्हवावीजबौ—कर्म वा० ।
न्हवावियोड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हवावियोड़ी)
न्हांकणौ, न्हांकबौ—देखो 'नांखणौ, नांखबौ' (रू.भे.)
उ०—घणी तरवारियां रा बाढ़ झड़ै छै । हा हू होय रही छै । डाढ़ाळौ घणां नूं तूंड सूं उलाळ-उलाळ न्हांकिया छै ।
—डाढ़ाळा सूर री वात
न्हांकणहार, हारौ (हारी), न्हांकणियौ—वि० ।
न्हांकिओड़ो, न्हांकियोड़ो, न्हांक्योड़ो—भू०का०कृ० ।
न्हांकीजणौ, न्हांकीजबौ—कर्म वा० ।
न्हांकियोड़ो—देखो 'नांखियोड़ो' (रू.भे.)
न्हांखणौ, न्हांखबौ—देखो 'नांखणौ, नांखबौ' (रू.भे.)
उ०—इतरी बात धार रावत प्रतापसिंघ नूं कहायो । इसा दावां सूं तो हूं मरस्यूं । श्री म्होकमसिंघजी कूं हांसी में जहर चाखै छै । ऐ तो मोटा सिरदार छै । पण ठीकरी घड़ा नूं फोड़ न्हांखै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
न्हांखणहार, हारौ (हारी), न्हांखणियौ—वि० ।
न्हांखिओड़ो, न्हांखियोड़ो, न्हांख्योड़ो—भू०का०कृ० ।
न्हांखीजणौ, न्हांखीजबौ—कर्म वा० ।
न्हांखियोड़ो—देखो 'नांखियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हांखियोड़ी)
न्हांण—देखो 'सनांन' (रू.भे.)
उ०—१ जगदंबा कहियौ, चाहै जिसौ कस्ट करो, भावना सुद्ध न होय जरै उ कस्ट मातंगरा न्हांण जिम व्रथा फळ पावै ।
—वं.भा.
उ०—२ इम छत्रियां तणा वैत वेहुं आचछा, भूंडइ कळू न कोच भरइ । कंवर सिनांन करै करमाळां, कंवरी झाळां न्हांण करइ ।
—अज्ञात
न्हांणी-सं०स्त्री० [सं० स्नान+रा.प्र.ई] स्नानघर, स्नानागार, हम्माम (डिं.को.)
न्हांन—देखो 'सनांन' (रू.भे.)
उ०—रूड़ै तीरथ राज रै, नित जळ कीजै न्हांन । तो पिण न हुए पाक तन, मूल पुरीस मकांन ।—बां.दा.
न्हांनड़कौ, न्हांनड़ियौ, न्हांनड़ौ—१ देखो 'नैनौ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ साधपणौ नहीं सहेल, जाया जांमण कहे रे जाया । तूं न्हांनड़ियौ बाळ, परीसा किम सहै ।—जयवांणी
उ०—२ मोनै इस्ट नै कंत व्हालो हतौ, हूं देख नै पामती साता रे । पिण म्हारो राख्यो न रह्यो न्हानड़ो, इण विध बोलै माता रे ।
—जयवांणी
२ देखो 'नांनौ' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हांनड़की, न्हांनड़ी)
न्हांनूं, न्हांनू, न्हांनौ—१ देखो 'नैनौ' (रू.भे.)

२ देखो 'न्हाखो' (रू.भे.)

म्हाड़णो, म्हाड़बो-क्रि०स० [सं० स्नानम्] १ स्नान कराना।

२ दौड़ाना, भगाना।

म्हाड़णहार, हारो (हारी), म्हाड़णियो—वि०।

म्हाड़ियोड़ो, म्हाड़िवोड़ो, म्हाड़योड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाड़ीजणो, म्हाड़ीजबो—कर्म वा०।

नहलाड़णो, नहलाड़बो. नहलाणो, नहलाबो, नहलावणो, नहलावबो, म्हलाड़णो, म्हलाड़बो, म्हलाणो, म्हलाबो, म्हलावणो, म्हलावबो, म्हवाड़णो, म्हवाड़बो, म्हवाणो, म्हवाबो, म्हवावणो, म्हवावबो, म्हाळणो, म्हाळबो—रू०भे०।

म्हाड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ स्नान कराया हुआ।

२ भगाया हुआ, दौड़ाया हुआ।

(स्त्री० म्हाड़ियोड़ी)

म्हाटणो, म्हाटबो—देखो 'म्हाठणो, म्हाठबो' (रू.भे.)

म्हाटणहार, हारो (हारी), म्हाटणियो—वि०।

म्हाटियोड़ो, म्हाटियोड़ो, म्हाटयोड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाटीजणो, म्हाटीजबो—भाव वा०।

म्हाटियोड़ो—देखो 'म्हाठियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० म्हाटियोड़ी)

म्हाठणो, म्हाठबो-क्रि०अ० [सं० नष्टम्=अदृश्य हो गया हो]

१ भगना, दौड़ना, दौड़ जाना।

उ०—तरै जळ पीधो। सुरत जीव में हुवो। तरै पूछियो—थांहरा ऐ लवेस कासू ऐड़ा? तरै कूंभै कह्यो—स्री दीवांण सूं चाचै मेरे पाट चूक हुवो नै अबै म्हारै वांसै साथ फोज चढ़ी छै। म्हाठो आयो छूं।—राव रिणमल री वात

२ नष्ट होना, मिटना।

म्हाठणहार, हारो (हारी), म्हाठणियो—वि०।

म्हाठिओड़ो, म्हाठियोड़ो, म्हाठयोड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाठीजणो, म्हाठीजबो—भाव वा०।

नाटणो, नाटबो, नाठणो, नाठबो, म्हाटणो, म्हाटबो—रू०भे०।

म्हाठियोड़ो-भू०का०कृ०—१ भगा हुआ, दौड़ा हुआ।

२ नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुवा हुआ।

(स्त्री० म्हाठियोड़ी)

म्हाणो, म्हाबो-क्रि०अ० [सं० स्नानम्] १ स्नान करना, नहाना।

उ०—पीठवइ वाटी नूं म्हारी, तिकण री मस्तक ले हालियो जालि महा पतिव्रता आपरी भुवा सहगमण रै काज मांगियो तो भी मस्तक पाछो दे'र न आयो। जो सती रा स्राप हूं कलेवर में कोढ पाट पुस्कर प्रयाग प्रमुख तीरथां में म्हाइ और भी औखधादिक अनेक उपाय करि थाको परंतु पाटव न पायो।—वं.भा.

२ भागना, दौड़ना।

म्हाणहार, हारो (हारी), म्हाणियो—वि०।

म्हायोड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाईजणो, म्हाईजबो—भाव वा०।

नां'णो, नां'बो, ना'वणो, ना'वबो, न्हावणो, न्हावबो—रू०भे०।

म्हायोड़ो-भू०का०कृ०—१ स्नान किया हुआ, दौड़ा हुआ।

(स्त्री० म्हायोड़ी)

म्हार—देखो 'नाहर' (रू.भे.)

उ०—'डूंग' म्हार री कोटड़ियां, जुड़ी कचेड़ी आय। जाजम ऊपर जाजम बिछ रही, गूंब पड़ै रजवाड़ ।—डूंगजी जवारजी रो पढ़

(स्त्री० म्हारी)

म्हारियो—देखो 'नाहर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ म्हारी म्हारी छाळियां नै दूधो दही पाऊं। म्हारियो आवै तो सोटा रो मचकाऊं।—लो.गी.

उ०—२ जे कोई सुणतो, घिरतो होवे रे। नान्यां नै जाय खबर कर दे। मोड़ो वतळायो मोड़ो वतळायो। 'जोर' जी म्हारी को जायो रे! आे सिंघणी को जायो रे! मोड़ो वतळायो।—लो.गी.

(स्त्री० म्हारी)

म्हारम्रो—देखो 'नारू' (२) (अल्पा०, रू.भे.) (शेखावाटी)

म्हारो—१ देखो 'न्यारो' (रू.भे.)

उ०—साहिब के चोथो वरण, छोटो बेटो जांण। हाथ लगावै काम रै, (तो) सारा करै वखांण। (तो) सारा करै वखांण, पिता नै लागै प्यारो। मोटो करै न काम, कूट नै कर दें म्हारो।

—सगरांमदास

२ देखो 'ना'रो' (रू.भे.)

म्हाळणो, म्हाळबो—१ देखो 'नाळणो, नाळबो' (रू.भे.)

उ०—सात जंनम आगई साम्हळिया। तिणि कारणि मन मोहइ। आंसू ढाळइ चिहुं दिसी म्हाळइ, गोख चढि दळ जोवइ।

—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'म्हाड़णो, म्हाड़बो' (रू.भे.)

म्हाळणहार. हारो (हारी), म्हाळणियो—वि०।

म्हाळिओड़ो, म्हाळियोड़ो, म्हाळयोड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाळीजणो, म्हाळीजबो—कर्म वा०।

म्हाळियोड़ो—१ देखो 'नाळियोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'म्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० 'म्हाळियोड़ी)

म्हावण—देखो 'सनांन' (रू.भे.)

उ०—मांग्या खावां टुकड़ा, म्हे रटां रांम को नांम। आबूजी हूं आया उतर, म्हे गंगा म्हावण जावां।—डूंगजी जवारजी री पड़

म्हावणो, म्हावबो—१ देखो 'म्हाणो, म्हाबो' (रू.भे.)

उ०—१ म्हाबो क्यूं ना जी गोरी रा भरतार, म्हाबो क्यूं ना जी वादीला भरतार।—लो.गी.

उ०—२ आंमी सांमी होद देवरिया, नित उठ म्हावण आवो जी।

इण आवण रै कारणै देवर, प्यारा लागो जी।—लो.गी.

२ देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)

न्हावणहार, हारौ (हारी), न्हावणियौ—वि०।

न्हाविओड़ौ, न्हावियोड़ौ, न्हाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

न्हावीजणौ, न्हावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

न्हावियोड़ौ—देखो 'न्हायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० न्हावियोड़ी)

न्हासणौ, न्हासबौ—देखो 'नासणौ, नासबौ' (रू.भे.)

उ०—१ कूद गयौ तूं द्वारका, दैतां आगळ न्हास। सरम न आई सांवळा, वळै कहै विसवास।—गजउद्धार

उ०—२ वेग परक्खी तेग भळक्की। तुरी फेर न्हासाण री तक्की। —रा.रू.

न्हासणहार, हारौ (हारी), न्हासणियौ—वि०।

न्हासिओड़ौ, न्हासियोड़ौ, न्हास्योड़ौ—भू०का०कृ०।

न्हासीजणौ, न्हासीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

न्हासियोड़ौ—देखो 'नासियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० न्हासियोड़ी)

न्ही—देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—इण रीत रै वासतै कहायौ। न्ही तो उण नूं उण हीज वेळा रोस आयौ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

न्हौरा—देखो 'नौ'रा' (रू.भे.)

उ०—जग में जीया तौ पाछा सुख पासां। बौ'रा वतळावै न्हारा कर न्हासां।—ऊ.का.

न्हौरौ—देखो 'नोहरौ' (रू.भे.)